# প্রবাসী, ৪৮শ ভাগ, দ্বিতীয় খণ্ড, ১৩৫৫

# সূচীপত্ৰ

## কার্ত্তিক—হৈচত্র

# क्लाबनाथ ठ्याभाषात्र

# ণ ও তাঁহাদের রচনা

শ্ৰীমঞ্জিতরঞ্জন ভট্টাচাধ্য			শ্রীকৃষ্ণরঞ্জন হলিক		
খোং ফু জু ও চীনের আক্-দার্শনিক বুদ	•	>42	—গ্রামের মেলা (কবিতা)	•••	૭૭૨
श्रीवर्शक्क छहै। हार्या			—ডা <b>ক</b> ( 최 )	•••	612
—এবার অবল্পঠন খোলো (কবিডা)		4>	শ্ৰীকিতীশচন্দ্ৰ নিয়োগী		
শ্রীত্মস্থার সেন			—বর্তমান শিক্ষা-সমস্তা ও রবীক্রনাথের ভাবধারা	•••	48-
. —বম্বা (কবিডা)	•	465			
<b>জী ম</b> মনে <del>ন্</del> দন্ত			শ্ৰীক্ষীরোদচন্দ্র মাইতি		244
— মনিৰ্কাণ (কৰিডা)	••	882	— সম্বান্ধ	•••	96.0
শ্ৰষ্ণ্ৰেপাণ দেন			🖣 গিরিধারী বার চৌধুরী		
—সমালোচকের দৃষ্টিতে শিক্সা ও শিশ্বকলা (সচিত্র)	••	848	– আচীন বাংলাদেশ	•••	२७२
শ্ৰীৰ্মযোধানাথ শান্ত্ৰী			बैक्षांभागमान स		
— রাজস্থানী সাহিত্যে বীরুরদ	•.	<b>3</b> v	—'মেঘনাদ্বধ' কাব্যের রস	***	797
শ্রীষরণকুষার রার (ও শ্রীনলিনীভূষণ দাশগুপ্ত)			वैं(जोत्रत्भानीमान वांशकी		
—ভারতের খনিজ সম্পদ—রত্নরাঞ্জির কণা	••	¢٤	वृन्तावत्न वांडाली-भश्चा		980
चाक्रत्र खानो, ५२.			•	•	Ψ,
আরব রাসায়নিক <b>প্রক্রিয়া</b>	••	216	श्रीतभावन पाम प		
শ্ৰীৰা শ্ৰভোৰ সাকাল			—দেকোরার পথে (সচিত্র)	•••	٩,
কল্মৈ দেৰায় (কবিডা)		131	পৌরীহর মিত্র		
<u> এটপেক্ষৰাণ সেন</u>			— বীরভূমের জাতি-প্রদঙ্গ (সচিত্র)	•••	154
—দৰিজ বাভালী	••	9,6	ছদ্রুদ্দিন, এম.		
बीউरम्मध्य चंद्रीधर्मा			ইভিহাস-শিকা	•••	(89
— <b>অহি:স</b> া	100	>	<b>এছগরাথ সরকার</b>		
—'ভগৰদ্শীভা' (সমালোচনা)		413	की दन-इन्म (शब)	104	<b>9)</b> ¢
बिউব। বিখাস			শ্রীতেকেপচস্রা সেন		
শিক্ষার হ্রন্তশিবের স্থান	***	. 32 9	—ৰৌ শিপড়ের মধুর জাগা (সচিত্র)	•••	₹86
वैक्मनप्रानी मिन			क्रिकेट-नाइक क्रीहार्थ।		
ৰিজাসা (কৰিতা)		236	—মধ্যভারতের গৌড়রাজসভার বাঙালী পণ্ডিত	•••	•
– তোমার সাধনা বন্ধ-কঠোর হোক ( ঐ )	104	٤5	শ্রিক্রামোহন ভটাচার্য্য		
नै क्षर्वाव मानुसानी			আধুনিক ব্যবহারে প্রাচীন সংজ্ঞার উপযোগ	•••	865
—ভারতের জনসম্পদ		833	श्रीप्रत्यक्रवाच हट्यां शास्त्र		• •
শ্ৰীকামিনীকুমার রাম			রবীক্সনাথ ও আমাদের দাহিত্ব	•••	389
—পদী-পাধার উপমা ও বর্ণনার স্থপক্ষতি		<b>0</b> 6.	विद्यारक्षां विज		• • •
वैकानियाम बाब			থাত-বিভাগ সম্বন্ধে করেকটি কণা	•	440
- वनवारम (कविकी)	•••		निरम्दर्गाठन्य मोग		440
— ৰসজের বিহার ( ঐ )		889	— শ্বাসীর শরং (ক্বিতা)		<b>a</b> .ı.
একানীকিছর সেন্তপ্ত		•	विशेदव्यकुक हवा		16
—মুনি (কবিভা)		₹8•	नारी (कविका)		
শ্ৰীকালীচরণ খোৰ			विरोदक्तनाथ मृत्यानाम	•••	386
ন্ – ভারত ও পাকিছান	100	390	—কামনা (কবিভা)		
वैन्धविहांकी भाग	•		— कारना (कारका) रेबीननीमांसर कोयुत्री	***	264
—আর্ডিন	***	<b>.</b>	वानापर कार्या वानाणी (१८)		•
শীৰুৰাবলাল দাশগুৱ	•	- 3.	— नामपाण (त्रज्ञ) — नगीत छोक (क्षे)	•••	300
<b>– क्यार (श्रा)</b>	***	240		***	•••
, · •		400	—সিমুমর্শ শ্রীদেবতার উপাত্রনা	•••	.8 . 6

#### লেখকগণ ও তাঁহাদের বচনা

শ্রীনলিনীকুমার ভক্ত			ৰভৰ্নীগোল সাক্তাল		
—স্কটতাণ (গঞ্চ)		99	—বুৰুকালীন গোভিয়েট কবিভা	104	451
—"ৰেধা নয়, অস্ত কোন থানে" (ঐ)	•••	863	শ্ৰীৰন ৰাহাছুৱ সিংহ		
শ্ৰীনলিনীভূষণ দাশগুপ (ও শ্ৰীশক্ষণকুষার রার)		•	ছারী বাঙ্গলী পণ্টন	•••	241
— ভারতের খনিজ সম্পদ—রছুরাজির ক্থা	•••	• 2	শীমনকুষার দেন		
वीनित्रक्षम निरम्भी			—কেন্দ্রীর রাজখনীতি ও পশ্চিম বঙ্গের দাবি	•••	₹81
— কেশবচন্দ্রের জাতিগঠনের পরিকল্পনা		39.	শ্রীষাণিকলাল বন্দ্যোপাধ্যায়		
শ্রীনির্দ্ধান্য দাশগুপ্ত			—বাংলার চিত্রশিল ও করেকলন শিলী (সচিত্র)	•••	રા
—সংগ্রাম ও শান্তি	, •••	84-	শ্ৰীমীয়া ভট্টাচাৰ্য্য		
জীনিঙ্গপন। দন্ত			—"নিষ্ঠুর ধরার বুকে" (কবিতা)	•••	₹81
—ভাষসিক (সচিত্ৰ)	•••	484	म्र्ह्नन हेननाम, अन. अम.		
— <b>এ</b> শচ <b>ন্ত্র ও</b> হ (ঐ )	•••	248	— তারা দেখাবেই আলোর পথ (কবিতা)	***	8 67
<u>এ</u> নীগরতন দাশ			<b>बैभूगानका हि मान</b>		
—- সাহিত্য ও জনগণ	***	444	—লিপি (কৰিতা)	•••	<b>३</b> २०
बीनी निमा (होपुत्री			জ্ঞীৰোহিতকুমার সেন্তপ্ত		
— যুক্তরাষ্ট্রের বরকরার কথা (সচিত)	•••	44)	ওয়াৰ্দ্ধা শিক্ষা-পদ্ধ 🤊	***	٠,٠
শ্ৰীণীহাররপ্রন ছোষাল			শ্ৰীমোহিনীমোহন বিশাস		
— কমলমণির ডাঙা (গঞ্জ)	•••	**	—পৃথিৰীর পাশ্সমস্তা ও ভারতবৰ	•••	200
बीनुरशक्तरमारून मङ्ग्रमात्र			শ্ৰীযত্ৰাথ সৰকাৰ		
— <b>মুক-শিক্ষা (সচিত্ৰ)</b>	•••	७२৯	—শামার জীবনের ভন্ন	•••	२५७
শ্রাপরিমল গোস্বামী			— ৰঙ্গদাহিত্যে ইভিহাদের সাধনা	•••	434
—বাতিল পৰীকার কাহিনী (সচিত্র গল্প)	•••	8 >	<b>শ্র</b> যাদবে <i>জনা</i> প রার		
শ্রীপিনাকীলাল বন্দ্যোপাধ্যায়			— ৰাষ্ট্ৰভাষা ও সঙ্কীৰ্ণতা		860
—অধ্যপেক সাহার আধুনিক গবেষণা	•••	810	জীবোগেশ চন্দ্ৰ ৰাগন		
শ্রীপ্রযুরপুমার সরকার			– ড≹লিয়ৰ ইয়েট্স (সচিঞ)	•••	434
—জানপদ সেনা	•••	>>e	— কুক্ষমোহন ৰন্দ্যোপাধ্যায় ( ঐ )	• •••	
শ্ৰীৰামনদাস মুখোপাধায়		-	জ্বীধোগেশচন্দ্ৰ বায়		
—শিক্ষার মূল উদ্দেশ্য ও শিক্ষার ভিত্তি	• • •	388	- জয়নেৰের ছুকুল	•••	4>6
बीरामची हज्बरही			— क इटमरवड़ जेवकां मि क्या खुष्ण	•••	229
— আমার দাদামশার—রাজনারারণ বস্	•••	२०১	—বেতস লভা (সচিত্র)	194	9.3
ৰীৰিজয়কেতৃ বহু			শ্ৰীৰঘূনাথ খোষ		
—সক্ষা ও সিদ্ধি	•••	885	বুধাই এছরী জার (ক্ৰিডা)		
ৰীবিৰয়গোপাল বহু		•••		•••	467
—চ <b>ত্ৰকান্ত</b> দন্ত খা			শ্বীরণজিৎ সাম্ভাল		
विवित्रकृष्ण क्छ	•	•••	স <b>ৰাজ</b> -সংখ্যাৰে বিধৰা-বিৰাহ	•••	729
– হিমালয়-ক্রোড়ে গিভারী গ্লেসিয়ার দর্শন		480	শ্ৰীরশীন চৌধুরী		
व्यविनयक्ष मात्रक्ष	•••		— চৈতস্তপূৰ্ব বুগের বৈক্ষ কাৰ্য কথ	•••	49
—ৰিমানে ভূ-প্ৰদক্ষিণ (সচিত্ৰ) ••• ১৪৯ ২৭		4.55	- জীরবীস্ত্রনার ব্যু		
শীবিভূতিভূষণ গুণ্ড	٠٠, حره,	•00	— উাবু পের)		963
— শ্ৰাহ (উপস্থাস) ২২,,১৬৮, ২১৯, ৬		434	_		•••
वित्र्रि छिर्वर्ग स्टबोर्गामा	•», •»<,	440	জীরমেশ দাশ		
— वर्षाक(अह)			—চম্পৰ (কৰিন্তা)	•••	••
चैवित्रमाठबन (क्व	•••	<b>3</b> 2 )	জীৱামপদ মৃথোপাধাার		
व्यवश्रा ७ वावश्			—विद्याशे (भव)	•••	•>
ठांति मूर्ग	***	31	শ্ৰীশান্তৰীল দাশ		
वार प्रा विद्यु शक्षांशांबा	***	೦೦೨	অচেনা (কৰিতা)	•••	₹€•
সাম্প্ৰতিক কৰিতা সাম্প্ৰতিক কৰিতা			শ্রীশান্তি পাল		
ा जारू कार्या वैडरङ्खनार्थ्यं राम्याभाषा	•••	>11			
			— রাণা বন্ধন_(কবিতা)	•••	२१४
— লিগিডম্বৰিং ক্ষলাকান্ত বিভালম্বার (সচিত্র) —সেকালের সচিত্র বাংলা,পত্র-পত্রিকা (ঐ)		<b>68</b>	— সেকালে বাঙালীয় শক্তিচৰ্চা	P44	10
(अक्टाक्ट्रण अक्टाक्टर-क्टाक्टर क्टाक्टर-४ क्र ४	***	49	वैभाविनाम्बत्र नामध्य		
		-	•		

বিষয়-সূচী

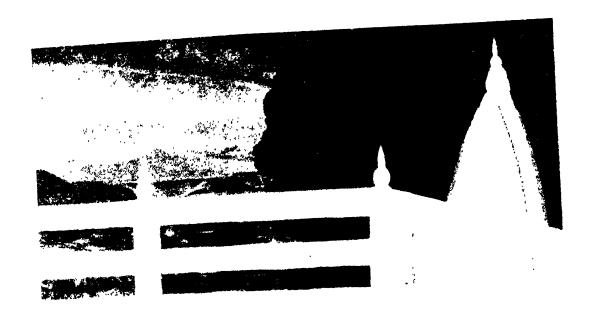
•		1443	( <b>(b</b> )		•
এনৈবেক্ত্ৰক লাহা			<del>ৰ</del> হনীলগুকাশ সোম		
—খাচাৰ্য্য ৰছুমাৰ্থ (কৰিতা)	•••	478	– ৰাণানের কথা (সচিত্র)	•••	6 24
পরস হব (কবিডা)		48	শ্ৰীস্নীলয়ঞ্জন গোৰ		
—শরৎচক্র (কবিতা)	•••	877	—বি <b>জনসিংহের সম্ভবাত্তা</b> (কবিতা)	•••	745
শৌরীক্রনাপ ভটাচার্য্য			विश्वनम्भा बत्नाभिक्षाव		
—মৃত্:লয়ের অ্এদ্ত (কবিডা)		8 33	- মহাকাৰোর দিনগুলি এলো (ক্বিডা)		
चैभव्य बाह्महोधूबी			<i>ञ्चैश्व</i> रत्रभव्यः बम्बो		
—চট্টপ্রাম বিদ্যব-কাহিনী •••	847		—বৌদ্ধবুণে গান্ধাৰ	•••	243
সতাশচন্ত্ৰ চৌধুরী —লিপি-বিত্ৰাটে অনৰ্থপাত		45.	<b>बैक्ट</b> बन्डक नोर्थ-प्रसूपशंत		
—াগাস-বিবাচে অন্ত্যাত প্রতিত্যার মুগোগায়ার		•	—ৰালালা রূপের উত্তৰকাল বিচার	•••	413
व्यापार्वे व्यापार्वाप्य व्यापार्वे विक्तार्वे व्यापार्वे		<b>e</b> 20	শ্বীসূৰ্ব্যপ্ৰসন্ন বাজপেরী চৌধুৰী		
नरा राज्यानस्यक्ति । यूर्यस्य ।व्यवस्थितिमन मृद्यंशांवाति		• • • •	महांडीर्वकः महांदीत		222
—উত্তর-রঙ্গের কথা (সচিত্র)		<b>२</b> २१			
— उक्तरम्र न व विवासी	•••	810	ঞ্জিছবিচৰণ ৰব্যোপাধাৰ		-000
াহ্রধামরী সেনগুপ্ত			—নেপালচন্দ্র রার	•••	<b>U</b> 78
—সারিপুত্র ও যোগ্গলান		२१১	শ্রীহরেক্সচক্র পাল		
वशिक्षनात्राचन निरम्भी			— হ <b>কী ভ</b> দ্বাচনা    •	•••	843
—এক ৰপ্ন (ক্ৰিন্ডা)	ı	635	শ্রীহিরপার <b>ঘোষাল</b>		
— ছ <b>ৰ্লভ</b> (ঐ)		200	5 박제 ( <b>개최</b> )		
ক্ষীরকুমার চৌধুবী			শ্ৰীহেমেন্দ্ৰ বল্লিক		
– ৰাংশা লিপি	•••	૭ર	সংকার (গ∎)	•••	243
ceনা (কবিভা)—ই শা <b>ন্তনী</b> ল দাশ	•••	₹€•	কলৈ দেবায় (কৰিডা) —শীআগুডোৰ দান্যাল	•••	626
খাপক সাহার আধুনিক গবেৰণা		,,,,	কামনা (কবিভা)— ই্মীরেন্দ্রনাথ মুখোগাধার		369
— শ্বীপনা শীলাল বন্দ্যোপাখ্যার	•••	8 94	কুক্ষোত্ৰ বন্দ্যোপাধায় (সচিত্ৰ) – জ্বীবোগেণচন্দ্ৰ বাগল	•••	8 >
নিৰ্মাণ (কৰিতা) —শ্ৰীঅমণেন্দু খন্ত	•••	888	কেন্দ্রীয় রাজ্যনীতি ও পশ্চিম বলেব দাবি		
ৰছা ও ৰাবছা—জীবিষল(চরণ দৈৰ		31	—-শ্রীষনকুষার সেন	•••	284
<b>হিং</b> সা— <b>ঐট্যেশচন্দ্র ভটাচার্ব্য</b>	900	4.5	কেশবচন্দ্রের কাতিগঠনের পরিকল্পনা — জ্ঞীনিরঞ্জন নিয়োগী	•••	>9.
চাৰ্য ৰছনাৰ (ক্ৰিডা)—এশৈলেজভুক লাহা	•••	<b>C</b> ) <b>S</b>	খাছ-বিভাগ সকৰে কয়েকটি কথা—জ্ৰীদেবেজনাৰ সিত্ৰ	•••	648
चिपाछी (भव)—जीवनीयायव होधूती	•••	>+0	খোং ফু জু ও চীৰের প্রাক্-দার্শনিক বুগ		
াধুনিক ব্যবহারে প্রাচীন সংজ্ঞার উপব্যোগ			শ্ৰীশঞ্জিজনপ্ৰন ভটাচাৰ্ব্য	•••	> < >
— শীহুর্গাবোহন ভটাচার্গ্য	•••	863	প্রামের মেলা (কবিতা)—ৠকুমুদরঞ্জন মলিক	•••	405
ার জীবনের তন্ত্র—শ্রীযত্নাথ সরকার	•••	<b>570</b>	<b>ठ</b> ढेञाय विश्वय-काहिनी—ची चीलठळ बाब ८ठोधुत्री ···	847,	444
াৰার দাগামশান — রাজনারাধে বস্থ — শ্রীৰাসন্তী চক্রবন্তী ারব রাসারনিক প্রক্রিয়া — এম. আকবর আলী	•••	₹83	চক্ৰকান্ত দত্ত বাঁ—-জীৰিকয়গোপাল বস্থ	•••	816
रन्ति। रन्तिन्त्र	***	२१६	চম্পক (কবিতা) — শীরমেশ দাশ	•••	••
উহাস-শিক্ষা—এস এম. ছদুকুদ্দিন	***	464	চশমা (গল)— 🖺 হিরগর বোষাল	•••	8 4 >
লিয়ণ ইংৰট্স (সচিত্ৰ)—ছীবোগেশচঞ্ছ বাগল	•••	410	চারি বুগ—জীবিসলাচরণ দেব	•••	999
ার-ব্রহ্মের কথা (সচিত্র)—শ্রীপ্থাংগুবিমল মুখোপাখ্যায়	•••	६३६ २२१	टेड छ मूर्व यूराव टेश्कर काश-क्था — श्रेत्रवीन टारेश्रवी		49
ক্ষিবতা)—শ্বীপুধীক্ষনারামূল নিয়েকী	•••	635	করণেবের ভুকুল—ছীবোগেশচন্দ্র গায়		२ऽ७
।বার অব্ভঠন খোলো (কবিডা) ইঅপ্রকৃত ভটাচার।	•••	**	कन्नद्रश्यत्र मयत्राप्ति यम <b>स-भूषा—यः</b> कानभर दमनावैशक्तक्षमात्र मनकात्र		339 366
ৰাদ্ধা বিদ্ধানপদ্ধতি— দ্বীৰেছিতকুষাৰ সেৰ্ভপ্ত	•••	990	জাণশধ দেশা —আমপুনার সরকার জাপানের কথা (সচিত্র) — শ্রীফুনীলপ্রকাশ দোস	•••	305
ुननमानम ७।६। (त्रज)श्रेनीश्वमञ्जन त्यांचान	•••	"	जाराज्य रूपा (गाठ्य)—व्यवसान्यकान रमान विकामा (क्षिण)—व्यक्षणतानि विव		576
ীৰলকিভি বিভাল্ভার, নিগিতছবিং (সচিত্ৰ)			कोरन-स्न (श्रत)—धिकश्वाप श्रवकात		0;6
- ব্যৱদেশৰ বন্যোগাধাৰ	•••	***	चंश (क्रिडा)—श्री जनकांक्रांत्र तम		963
লক্ (গছ)—শ্ৰিকুৰায়লাল বাগভণ্ড	***	<b>₹₩</b>	णांक (कविछा) बैर्प्यक्क्षान बहिक		102

তাঁবু (পল)—জীরণীস্তকুমার বহু	•••	969	ভারতের জনস্পদ—জীকস্তরটাদ লাপুরানী	***	832
তামসিক (সচিত্র)—শ্রীনিক্লপমা দত্ত	•••	689	মধ্ <del>য-ভারতের গৌড়রালসভার</del> বাঙালী পণ্ডিত		
ভারা দেখাবেই আলোর পথ (কবিতা)			শ্রীণীনেশচন্ত্র ভট্টাচার্ব্য	•••	5.
—এস. এম. মুয় ছুকুগ ইস্লাম	•••	`8 <b>6</b> 1	সহাকাব্যের দিনগুলি এলো (কৰিতা)		
তোষাৰ সাধনা বন্ত্ৰ-কঠোর হোক (ক্বিতা)			अञ्चरमञ्बा रटकाशिधाय	•••	990
শ্রীকমলরাণী মিত্র	•••	२>	মহাভীৰ্জন মহাণীন— ইত্ৰাধসন্ত ৰাজপেনী চৌধুনী	•••	2+2
দ্বিদ্ৰ বাঙালীইউপেন্সনাধ সেন		990	ষহাপরিনির্বাণের পূর্বে—- শীহু বিভকুষার মুখোপাধার	•••	६२७
ছুৰ ভ (কবিতা)জ্বিখালুনারায়ণ নিয়োগী	•••	200	মুনি (কবিহা)—শ্ৰীকালীকিকর সেনগুপ্ত	•••	₹8•
(मर्ग-विस्तरमञ्ज कथ) ••• ১••, ३৯७,	: 32	· • •	ষ্ক-শিকা (গতিত্র) ই নৃপেক্রখোহন সম্পুষ্ণার	•••	49.3
नणोत जाक (तक)श्रीननीमाध्य (ठोधुत्री	•••	4.9	মৃত্যজন্মের আগ্রন্ত (কৰিতা)—শ্রীশোরীক্রনাথ ভট্টাচার্ব্য	•••	8 00
ৰাণী (কবিতা)শ্ৰীণীণেশ্ৰকুক চন্দ্ৰ	•••	>80	'रमघनापवध' कोरबाज जनश्रीरबालीननान प्र	•••	70;
"নিষ্ঠুর ধরার বুকে" (কবিতা)—-শ্রীমীরা ভট্টাচাযা	•••	₹88	মৌ-পি'পড়ের মধুৰ জালা (সচিত্র)—জ্রীতেজেশচন্দ্র সেন	•	₹8¢
ट्रिकालिक ब्रांब—शिश्विष्ठवर व्यन्माभाषाः।	•••	918	युरुवारद्वेत चत्रकत्रात्र कथा (निहज्ज)—विभीनिमा ट्रीयुक्री	•••	40.
পরম ক্ষণ (কবিতা)—শ্রীশৈলেক্সকৃষ্ণ লাহা		48	বৃদ্ধকালীন সোভিষেট (ক্ৰিডা)—শ্ৰীভবানীগোপাল সাম্ভাল	•••	69.
পলী-গাৰায় উপমা ও বৰ্ণনায় স্থসন্ত 🖣 কামিনীকুমার রায়	•	<b>9</b> 6.	রবীক্সনাথ ও আমাধ্যের দায়িত-জ্রীদেবেক্সনাথ চটোপাধার	•••	284
পুত্তক-পরিচর ৯০, ১৯১, २৮৬, ७৮২,		, 492	রাখী বন্ধন (কবিভা)—শ্রীশান্তি পাল	•••	₹98
পৃথিবীর খাত্ত-সমস্তা ও ভারত বর্ধ-শ্রীমোহনীমোহন বিধাস		200	ৰাজ্ছানী সাধিত্যে বীরুরস—শ্রীক্ষযোগাদাপ শালী	•••	46.
	•••	16	রাষ্ট্রভাষা ও সঙ্কীর্ণতা — শ্রীযাদধেন্দ্রনাথ রায়	•••	800
প্রবাহ (উপস্থাস)— শ্রীবিভূতি ভূষণ শুপ্ত · · ২২, ১৩৮,	<b>ج ز ۶</b> ,	48),	লিপি-বিজাটে এনর্থপাতশীসতীশচন্দ্র চৌধুরী	•••	45
		, 426	শরংচন্দ্র (কবিতা)—শ্রীশৈগেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা	•••	8 2
আচীন বাংলংদেশ-জ্ঞাগিরিধারী রায় চৌধুনী	•••	<b>২</b> ৩২	শিক্ষার হস্তশিধের স্থান—জ্রীউবা বিশাস	•••	33
থেম (কবিভা)— দ্বীশৈকেন্দ্র বিশ্বাস	•••	46	শিক্ষার মূল উদ্দেশ্য ও শিক্ষার ভিডি		
বঙ্গাহিতে: ইভিহাসের সাধনা—ছীযতুনাথ সরকার	•••	670	— শ্রীবামনকাস মুখোপাধায়ে	•••	368
वनवादम (कविका)— श्रीकाविष्यम् ज्ञान्न	•••	1.6	শ্রীশচন্ত্র গুহ (সচিত্র)—শ্রীনিরূপমা দত্ত	***	208
বর্তমান শিক্ষা সমস্তা ও রবীক্রনাথের ভাবধারা			সংগ্রাম ও শক্তি শ্রীনির্মাণ্য দাশগুপ্ত		81.
— अभिक्रोनाम्स विद्यानी		48.	সংখার (গ্রা)—শ্রীহেমেস্র মরিক	•••	<b>2</b> 13
বনস্থের বিদায় (কবি হা) — শ্রীকালিদাস রার	•••	887	সঙ্কটভাণ (গল্প:—- শ্রীনলিনীকুমার ভঙ্গ	•••	. 4
বংশা বিজ্ঞান সংগ্রিমের সমস্থা—ইনাজিবাশকর দাশগুপ্ত	***	949	সঙ্ক ও সিদ্ধি – শ্ৰীবিজয়কেতু ৰহ	•••	8 6 %
वाश्वा निभि-श्रिक्षोत्रक्षात्र (होयुरी	104	<b>છ</b> ર	गमनात्र — <b>स्थानात्रक माहे</b> छि	•••	9; 1
बारमान किया । व व व व व व व व व व व व व व व व व व		•	সমাজ-সংস্থারে বিধবা বিবাহ	•••	22.9
— श्रीभागिकनांन वरमांशांतांत्र	•••	२४	সমালোচকের দৃষ্টিতে শিল্পী ও শিল্পকলা (সচিত্র)		
বালালা-কংগ্র উত্তৰকাল বিচারজীহুরেশচন্দ্র নাথ-মজুমদার		613	— श्रैष्यम्गारभाभाग स्मन		8.08
वांटिन পরীকার কাছিনী (সচিত্র গঞ্জ)—শ্রীপরিমন গোৰামী		83	সম্প্রেতিক কবিভা— <b>বিং</b> বৰু গ <b>লোপাধা</b> য়ে	,	399
विक्रितिरहित मृश्यांका (कविका)—श्रीकृतीनत्रक्षत (वाव	•••	343	সারিপুত্র ও মোগুগরান— <b>অ</b> হুধামন্ত্রী সেন <b>গুও</b>	•••	<b>૨</b> ૧:
विद्यांशे (अब) — श्रीवाया (कावण) — मार्गाणप्रक्रम स्थाय	•••		সাহিত্য ও জনগণ	•••	411
· ·		_	নাৰেজ্য ও জনগু—আনাগয়তন দান সিন্ধুধৰ্শ্বে স্ত্ৰীদেৰতার উপাসনা—জীননীমাধ্য চৌধুৰী		8.0
False Control of			युक्ती क्वांत्वाचना — वेह्दब्रक्कक थान	***	8 99
विभारत कृ-अप किन (मिहिज) औविन्द्रकृष्णे एरिमश्रेश •••		, २७६,	স্বৰ ওৰালোচনা — এইয়েলচল শাল সেকালে বাঙালীয় শক্তিচচা — শ্ৰীশান্তি পাল	000	¥ (
A	७२४	, 400	সেকালের সচিত্র বাংলা পত্র-পত্রিকা (সচিত্র)	•••	
বীরস্থার সাতি-প্রস্থ (সচিত্র) - পৌরীহর মিত্র	•••	824		_	4 1
বুণাই অহরী অার (কবিতা) - গ্রীরল্নাপ দেখ	•••	२८१		•	_
वृन्मावत्न वाढानी-मश्च चैश्योव्यामीनाम वावादी	•••	939	নেকাগের সাময়িক-পত্তে ব্যঙ্গচিত্র (সচিত্র)		308
अक्षरणात्र अधिवानी — केश्याः श्वित्रम मृत्यानाशात्र	•••	880	— শ্বীব্ৰজ্ঞেলাথ বন্দ্যোপাধ্যার	•••	44
বেতস-লতা (সচিত্র)শ্রীবোগেশচন্দ্র রায়	•••	4.5	দেকোরার পথে (সচিত্র)—শ্রীগোরখোহন দাস দে	•••	د. زور
বৌদ্ধ যুগে গান্ধার - শ্রীহরেশচন্দ্র নদ্দী	•••	39>	বরাজরেলে (গর)—শ্রীবিভূতিভূষণ মুখোণাখার	•••	267
<b>७११रम्भेटा (प्रमात्नाहर्ना)— अ</b> डिट्सम्बद्धः <b>छ</b> डे। हार्गः	•••	995	वाबी बाढानो भण्डेन-श्रीमन बाहाइव निःह	•••	* = *
ভারত ও পাকিস্থান জীকালীচরণ ঘোষ	•••	210	হিমালর-ক্রোড়ে পি <b>ভা</b> রী মেনিয়ার দর্শন (সচিত্র)		
ভারতের খনিল সম্পদ—রত্বাজির কথা			— श्रीवनप्रप्राप	***	-161
— শ্রনলিনীভূষণ লাশগু <b>ত ও শ্রীমরণকুষার</b> রায়	•••	43	"হেখা নয়, অন্ত কোন থানে" (গল)—জীনলিনীকুষার ভজ	•••	<sub>6</sub> e⊰

# বিবিধ প্রসঙ্গ

চাৰ্য্য বছৰাৰ সৱকাৰের অস্মেৎসৰ	8 - 8	পশ্চিমবঙ্গের শিক্ষা বিভাগ	•••	>
'দাগত ও পঞ্চারেং-র' স্ব	2.5	পশ্চিমবঙ্গে সামরিক শিক্ষা	•••	7 - 8
बाह्यः धार्तिनिक श्रेष्ठांत्रमध्यि मस्त्रानन	8	পশ্চিম ৰাংলা	***	२३७
আন্দামাদ	<b>૨.</b> ૭	পশ্চিম বাংলা ও বিহারের সীমাস্ত অঞ্চল	•••	8
জান্দামানে ৰাঙালী উপনিবেশ	₹•₹	পশ্চিম ৰাংলার লোক-সংগঠন	•••	۶.
আসামে বাঙালী বিভাড়ন আরম্ভ	२.8	পাকিয়ান ও ত্রিপুরা রাজ্য	•••	<b>ą.</b> .
আসায়ে বাঙালী বিভাগয়ে অগমীয়া প্ৰবৰ্তন	4>4	পাকিশ্বানের রাজস্ব নীতি		829
ইলোনেশিরার অবস্থা	٤٧)	পাৰ্ণাৰ প্ৰসিকিউটাৱের যোগ্যভা	•••	020
ইলোবেশিয়ার উপর ডাচ আক্রমণ	9-1	পাৰলিক সার্ভিন্ন কমিশন		•
এশিরার এর বিজ্ঞাস্	8->	পূর্ব্ব-এশিরার বুগ-পরিবর্ত্তন	•••	२∙≱
কংগ্ৰেস অধিবেশন	201	পূৰ্ববন্দের অবস্থা	•••	>>•
কলিকাতা টেলিফোন-কেন্দ্রে অগ্নিকাণ্ড	7 •>	পূর্ববঙ্গের "পাকিস্থানী" মতিগতি	•••	•
ক্লিকাড়া পুলিদ	3-1	পূর্বাচল প্রদেশ	<i>ه</i> , ۵۵۶	, २०२
ক্লিকাতায় জনতার বিক্ষোভ	رده	প্রমধনাথ রারচৌধুরী	***	9.7
কলিকাভার হুর্গোৎসব	>••	वाःनारम् नमवात्र जारमामन	•••	3.5
কলিকাতার মহরম	3.0	ৰাংলাল ধৰ্মঘট	+44	>>-
কিরণশকর রায়	874	बाहानी-ध्वराहानी	•••	>=>
কুষি-বিভাগের প্রচার-পত্রি◆া	22	বাঙালী ও সামরিক বৃত্তি		٥٠>
কেন্দ্রীয় গবর্মে টের বারের বছর	8>.	বাঙালী ব্যাক্ত পতনের ফল	***	7
ছাবের জমি ও ৰাড়ীর ক্ষমি	>6	ৰাঙালী মুদলমানের সংস্কৃতি	•••	8 • •
र्बरम् निविधान	>>4	বাঙালী যুবশক্তির সমাদর	•••	ર
गांकी अवसी	5	বাঙালী সম্মেলন	•••	٠.٠
গুহাবাদের সম <del>স্তা</del>	>8	বাঙালীর সামরিক বৃত্তি	•••	•
গাঁহাটির ঘটনার শীকৃতি	4	বাৰতাৰি সমস্তা	***	8>8
शिमिना श्रक्षांचर विम	458	विक्रत-कत्र সংশোধন	•••	8 2 4
ছোৰেবুলা খাঁ	24	বিভক্ত পৃথিবী		829
विषय अधि अधिकी	77.5	বিশ্ববিশ্বালয় ভদত্ত ক্ষিপন	•••	₹•٧
লাপানী সামরিক নেতৃর্ন্দের বিচার	228	विहारत वाःका ভाষা		760
লাহাল নিৰ্মাণ ও নৌ-বাহিনী	>>	त्यक्षांत्रियः वर्षाः विक्षांत्रियः वर्षाः	•••	334
লাহিদ শোহরাওরার্দি	4.7	বৌদ্ধরূপের শ্বতি		•••
টিকা প্ৰজা বিল	840	बाक्टि-शंबोन्छ।	•••	223
তেজ বাহ'ছুর সাঞ্	8 - 8	बावज्ञा-शक्तियम बांटकरे आंटगांठना	•••	806
দক্ষিণ আফ্রিকার হন্তি	78	ব্যরবৃদ্ধির করেকটি নমূনা	•••	873
দক্ষিণ আফ্রিকার ভারতীয়দের শতি তুর্বাবহার ধৃত্বি	4.5	ভারতবর্ষে অশিকা	•••	3.4
<b>हमहरम</b> त चंडेन।	874	ভারতরাষ্ট্র, কান্দ্রীর ও "পাকিস্থান"	•••	221
গুৰোপৰ কৰ্পোৰেশনেৰ বাজেট	ર• ક	ভারতরাষ্ট্রে খাত্ত-শক্তের উৎপাদন	•••	848
দুষ্পাপ্য বন্ধ	•	ভারতরাষ্ট্রে নৈরাক্ত ও ডিক্ততা	•••	660
ক্লেশব্যাপী অসম্ভোব	238	ভারতরাষ্ট্রের <b>আন্তর্জা</b> তিক নীতির মধ্যে <b>অসঙ্গ</b> তি	•••	<b>₹•</b> >
নরেক্সনাথ শেঠ	>>4	ভারতর্যেইর ও পাকিস্থানের সীমানা	***	799
মুভন বিজয়-কর	<b>48</b> 2	ভারতরাষ্ট্রের ব্যর-বাহুল্য		
ংনতা <b>≅</b> ী*	۷.۶	ভারতরাষ্ট্রের সহিত ব্রিটেনের সম্বন্ধ	3	२२8
শতিত জমির উদ্ধার	954	ভারতরাট্টে শিক্ষা-বিস্তার	***	2>6
শশু-কল্যাণ সম্মেলন	8>1	ভারতরাষ্ট্রের সামরিক ব্যন্ত		883
শশ্চিমবঙ্গে ক্ষাত্ৰবৃদ্ধি	<b>ર••</b>	ভারতশাস্ক আইন সংশোধন	•••	₹ <b>%</b> b
र्गन्तम्बरम् हारवद् चवश्च	9.6	ভারতীয় রাষ্ট্রবিধিতে সংখ্যালঘূদের আসন সংবক্ষণ		•
শক্তিমবন্ধে জাহাঞ্চ-নিৰ্দ্ধাণ	824	ভারতের গৃহসম্ভা		9) 9 9) 9
गण्डियरक लिकात खर्श	830	ভাগ ও নিশির যুদ্ধ	•••	
শান্তবংকে শোক্ষার অবহা শান্তবংকের উরতিধিবরক পরিকল্পনা	>•4	ভাষার ভিত্তিতে প্রবেশ গঠন	***	25
শভিষ্যকের উরভির পরিকল্পনা	9.8		•••	2.2
াত্যবংশের ভ্রাভির সারক্ষম। াত্যিবংশের কৃষি-বিভাগ	476	ভাষার ভিত্তির উপর প্রচ্নেশ গঠন —শ্রী ধরবিন্দের মত	•••	8>0
ान्यवरक्षत्र प्रवासकार्यः क्षित्रवरक्षत्र "लाकत्रमाहि"		"स्वान-स्वान-सव्य" स्वानाम्यः स्थानम्बद्धाः	•••	9.1
ाक्तवराज्य रनाकानार क्तिवराज्य मामन ७ (माव)	٠.١	নাজালে স্পোনাল পে বাভিজ যাধ্যমিক শিক্ষা বিজ	***	200
	5.2	4,144(4 <b>4</b> ) 5 7 4 1 4 6	***	. 4.2

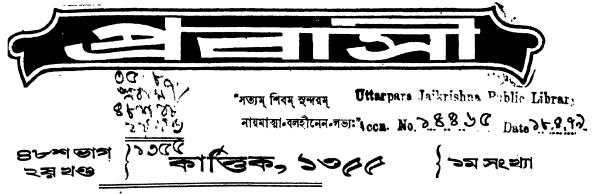
•		চিজ	-रही		
মার্কিনে ভারতীয় পুস্তক ও সংবাদপত্ত	•••	g. o	্ শিশু-মঙ্গল প্ৰদৰ্শনী	•••	844
মার্কিনের আর্থিক সহযে।গিতা	•	8>>	সংবাদপত্ত্বের দারিত্ব		823
মুধাকীতি স্থাৰে ডাঃ সিংছের মন্তব্য	•••	4 6 5	সন্মিগিত জাতিপুঞ্জ সংসদ	•••	24
মেদিনীপুর কলেজ	•••	222	স্রোজিনী নাইডু	•••	86
যুব∵ক্তি ও গণ ঋান্দোলৰ	•••	9F >	সদ্ধার পাাটেল ও পুলিস	•••	25
त्राभानमः (द्वीलाशांत्र मृजुारार्थिकी	•••	346	मस्यानम् कर्खवा-मिर्द्भम	•••	40
थाङ्क स्ट व्हान्त्रका अस्त्राच्या व्हान्त्रकात्रका	•••	7•7	সর্কোণর দিবস	•••	40
		-	সাম্বিক শিকা	•••	••
রেল হুর্ঘটনা		२•३	ডাঃ স্বন্দরীযোহন দাদের বিনবতিত্তম জন্মদিবস	•••	8 - 1
লোক-সংখ্যা ও খাদ-উৎপদেন		735	"সেনদীবি সংক্ষের চাব"	•••	₹•1
লোকসমন্ত ৬ ভাহার সংস্কৃতির ধ্বংস	•••	<b>6</b> >>	সেনাপতিবর্গের শিক্ষা	•••	8>:
শরণাধী <b>ছা</b> ংদের উপর চাপ	•••	>€	সৈয়দ আবর্ত্না ব্রেশভি	•••	<b>♥</b> •1
मामनकार्या कःश्विम-कश्रीतित इन्हरूक्ष	•••	72r	रेमद्रण हरमन	•••	•••
শিক্তকের ধশ্মঘট -	•••	₹•¶	জ্ঞী-শিক্ষায় শিক্ষ-শিক্ষার স্থান	•••	4+4
লিক ব সংখ্যর		975	স্বাধীন এক্ষের সমস্ত।	•••	8
	fs	<b>a</b> 3	<b>नू</b> ठी		
3 6	(0	<b>4</b>	_		
রঙীন চিত্র			থীতিলতার <del>প</del> ত্র		• ( :
জ্ঞান হ ও কুণাল শীর্ণবীর শক্সেনা		>•>	ফকিরের আন্তানা—শ্রীনরেন্দ্রনাপ মিত্র	. •••	٥,
কৃষ্ণ বলবাম ও মাতা বলোদা—≣চিত্রনিভা চৌবুরী	***	826	বলীৰীপের মন্দির-নৃত্য	•••	<b>cg.</b>
কৈ∙েরী ও মন্থ্রা——≒ীরশ্বীর শক্ষেনা	•••	>	নাউল — শ্বাণিকলাল বন্দ্যোপাংশার	•••	> 3
দেবদন্ত ও মন্ধা গুলক্র—শ্রীসন্তোষ সেনগুর		24 5	বিজয়লন্ধী পণ্ডিভ	9 04	241
জোণাচাগের প্রতিমূর্ত্তির সম্মুখে একলবা—ই:চিত্রনি <b>ত</b> ।		2 20	ৰীরভূমের বিভিন্ন কাতি	_	> <b>3</b> -60
বেলাশেষের তান—শ্রীপ্রিরপ্রসাদ গুপ্ত	•••	> 4	বেতস-লভা		• 3-5:
একবৰ্ণ চিত্ৰ			ব্যঙ্গটিত্র—বাংলা সামন্ত্রিক-পত্তে	3,	•8 &• • • • • •
ইরেট্স, উইলিয়ম		439	বন্ধদেশ : — অমরপুরপ্যাগোডা	•••	3;•
একট চিত্ৰ—জনীলয়তন চটোপাধ্যায়		846	ঐ —সভাস উইভিং ইন্ <b>ট</b> টিউট —খাভা বিজ	***	> <b>? ?</b>
ক্ষনওৱেলধ প্রাণ্টস্ কমিশন		8.0		•••	22)
কৃষ্ণমাহন বন্যোপাধায়	83,		— সাগাইং—পাগেডা		<b>ર્</b> ડ. કડ.
গাৰী		88	मानाम, सर्क. मि	***	261
ভাফ আলেকজাওার	•••	86 80	মালয় ঃ কোয়ালা লাম্পুর	•••	4.
ডিয়ে কিও, খেনরি লুই খিলিয়ন	•••	83		•••	• (
होसः करान्त्रेन सम्बद्धाः		) 39	— <b>(可</b> 奪	•••	46
#16ীর - —- মুক্তেন	-	62	শ্বাম-উপসাগর		43-4
চীনা প্লা	8	8 4	শুভিন্তন্ত		46
চীনের কমানিষ্ট সেনানায়ক	•	લ્ટ	মিনি ও কাবুলিওয়ালা—শ্রীসভোঞ্রনাথ বন্দোপাধাায়	•••	٠.
হৈছজ-কীলা ই অমুক্ত পোল পেন	•••	26	সুক-ৰধির বিদ্যালয় ও ভাহার প্রতিষ্ঠাতৃবর্গ	•2	3.93
জাতিপুঞ্চ-পরিষদের দৃগ্য	>68	-92	ৰূবিক-বাহন—শ্ৰীপ্ৰিরপ্ৰ <b>নাদ গুপ্ত</b>	•••	•
काशानवत्र-वध्	··· € 6	-ર્. ૨	মৌ-পি'পড়ে	<b>ર</b> 8	14-8"
কোলা, সার উইলিয়ম	<	46	ववदीश—विन्दिरहार वांछा		420
টবের গাভজ্লামু মজ্মদার	••• 6	80	যুক্তরাষ্ট্রের খরকরার চিত্র		)-bi
<b>ট</b> রেশ, ¢ ন্রি	••• •	••	गृब-काशक 'मिली'	•••	ર્લઃ
<b>हि</b> त्था <b>टलंदका</b>	(	. 99	রন্ধনর ডা—এী ভীবেন্দ্রকুষার সেন	•••	{, <b>⊙</b> (
ভক্লীছিদোমনাৰ ধোড়	••• (	36	রবীন্দ্রনাথ—শ্রীসভ্যেন্দ্রনাথ যন্দ্যোপাধ ার	•••	4
ভাষসিক—চিত্ৰাৰলী	484	42	রামানন্দ তীর্থ ও পঞ্চিত <b>অবাহরলাল</b>	•••	8 8
ৰৱেক্সনাথ শেষ্ট	•••	26	শারণেৎসৰ—শ্রীৰাণিকলাল বন্দ্যোপাধার	994	:
নেডানী প্ৰভাষ্চন্দ্ৰ	••• 🔻	) b >>	শ্রীচৈতজ্ঞের সমুজে রম্পপ্রদান—শ্রীক্ষমূলাগোপাল সেন	***	૭
त्वङ्क, क्षत्राहत्रमान	m 210, 2	>0	बैगव्य ६१	•••	\$6,
भूबो शांख-विनीमञ्जन हरहां भाषात्र	6	48	সরোজিনী নাইড্	•••	Np:
পিঞারী মেসিয়ার		• 6 2	সাংহাই: 'বুলেভার'	•••	291
नार्टन, गर्कात्र	••• २६२, ६	***	সাদ্ধ্য অবগাহন —এ হেরস্কুমার গালুনী	•••	ą?





কৈকেয়া ও মনুৱা দ্বীবাধকদেও





## বিবিধ প্রসঙ্গ

গান্ধী জয়ন্তা

গান্ধী **ভয়ন্তী উপলভে বে**তার-বক্তৃতার পণ্ডিত নেহরু লেন:—

"বাহাকে আমরা জাতির পিতা বলিয়া অভিহিত করি । হার জন্ম বিশেষভাবে উৎসর্গীকৃত দিনে আমি আর আপনানর কি বলিব ? ভারতের বাবীনতা অর্জনের দীর্ঘ যাত্রাপথে কলের ভার একজন তীর্থাত্রী, যে গুরুর পদতলে বসিয়া । রিতের সেবা এবং সত্যবর্দ্ধ শিক্ষা করিবার স্থযোগ পাইয়ালে সেই জবাহরলালরপেই আরু আপনাদের নিকট কিছু লিব, ভারতের প্রধানমন্ত্রী হিসাবে নর।

"কেবলমাত্র বাজ্ঞিগত জীবন নয় সাধারণ ক্ষেত্রে এবং খোল দেশের সহিত বাবহারে তিনি আমাদের সভ্যের প্রতি। জা রাখিতে এবং স্পষ্টবাদী হইতে শিক্ষা দিয়াছিলেন। বিশ্বাহারের মর্থাদা সম্বন্ধে তিনি আমাদের শিক্ষা দিয়াছেন। দ্বণা এবং হিংসা হইতে দ্বণা, হিংসা এবং বংগই আসে—এই পুরাতন শিক্ষারই তিনি পুনরার্ম্বি দরিয়াছেন। স্থতরাং তিনি আমাদের নির্ভাকতা, ঐক্য, বিষ্কৃতা ও শান্তির প্র সম্বন্ধে শিক্ষা দিয়াছেন।

"গত বংসরাধিককালে ভারতে এমন অনেক ঘটনা নটরাছে যাহাতে আমি অত্যন্ত মন্দ্রাহত; কারণ ঐগুলি লভার। কিছু কান্দ্রীর ও হারদরাবাদে যাহা করিয়াছি ও করিতেছি তাহার জন্ত আমাদের কোনও চুংধ নাই; আমরা নদি হারদরাবাদ ও কান্দ্রীরের ব্যাপারে হন্তক্ষেপ না করিতাম বে আরও বেশী ছুংধ কট্ট ও হালামা দেখা দিত। কান্দ্রীরকে কা করিবার জন্ত অধ্বা জ্বনা রভ্যমন্ত্র হইতে হারদরাবাদের ধিবাসিগণকে রক্ষা করিবার জন্তু যদি ভারতবর্ষ অঞ্সর না ইত ভবে লক্ষা রাধিবার স্থান ধাকিত না।

অভাভ দেশে যাহাই বচুক না কেন, আমরা যেন শাস্ত এবং গাড়ীজীর শিক্ষার প্রতি অবিচল থাকিতে চেষ্টা করি। তাঁহার প্রতি যদি আমাদের বিশাস থাকে, তবে নিকেদের প্রতিও আমরা বিশাস রাধিতে পারিব এবং তাহাতে আমাদের প্রিয় মাতৃত্মির মদলই হইবে।"

ঐদিনই দিলীর জনসভার ৪০ বংসর পূর্ব্বে রাষ্ট্রনৈতিক গগনে গামীলীর আবির্ভাবের উল্লেখ করিয়া তিনি আরও বলেন :— "তাঁহার প্রথম মন্ত্র ছিল "ভয় পাইও না।" এই
মন্ত্রে লোকের মনে নৃতন আশা দেখা দিল; দেশের
অবস্থাও অনেক পরিবর্ত্তিত হইল। তাঁহার আদর্শ আমি এবং গবমেন্টি অনুসরণ করিতেছি। অবশা সর্বাদা আমরা তাঁহার উচ্চ আদর্শের সম্মান রক্ষা
করিতে পারি নাই।"

কলিকাতা বেতার কেন্দ্রে বস্তৃতা প্রসঙ্গে পশ্চিমবঙ্গের প্রদেশপাল ডাঃ কৈলাসনাথ কাটভূ বলেন ঃ---

"কীবনের শেষ কয়মাস আমরা গাছীকীকে বুবই ছংখ
দিয়াছি। সেজ্প আমরা যথোচিত অস্তপ্ত হইরাছি কি-মা
কানি না। তিনি বলিতেন, আমার আর বাঁচিয়া থাকিবার
ইচ্ছা মাই। চতুর্দিকে ঘণা বিষেষ লইরা বাঁচিয়া থাকা
পানীকীর পক্ষে অসহনীর ছিল। স্প্তরাং পানীকার জভ ছংখ
করিবার সময়ে আমাদের মনে রাখিতে হইবে তাঁহার দেহও
নখর ছিল। কিন্তু আমাদের কর্তব্য রহিয়া গিয়াছে। তিনি
কীবিত থাকিতে যে আলো বিচ্ছুরিত হইত, তাঁহার মৃত্যুর
পরে তাঁহার উপদেশ হইতে যে আলোকরন্ধি বিচ্ছুরিত
হইতেছে, তাহা আমাদের পথ প্রদর্শন করিবে। গানীকীর
মৃত্যুতে সে আলো মান হয় নাই।"

"তাহার মহত্তের কথা, তাহার সৌরবসর সাকলোর কথা অধিক বলিয়া লাভ নাই। আমরা যথন বলি, তিনি আমাদের বাপু, জাতির জনক, আমরা যাহা কিছু পাইয়াহি, তাঁছারই জনা পাইয়াহি ইহাই যথেষ্ট।"

মহান্ত্রাকীর পূর্ণাক জীবন জাতির পক্ষে কত দূর কল্যাণমর ছিল সে কথা আৰু আমাদের অভাব-অভিযোগপূর্ণ ছঃব-ভর-ক্লিষ্ট দেশের জনসাবারণ উপলব্ধি করিতে আরম্ভ করিয়াছে। তিরোবানের মধ্যেও তিনি সাম্প্রদায়িকতার বিষ নিজে বারণ করিয়া জাতির অঞ্জাতির পথ উন্বুক্ত করিয়া দিয়াছেন। আজ্ হারদরাবাদের সমন্তা যে এইরপে, বিনা রাষ্ট্রবিক্লোভে, পূরণ করা সম্ভব হইল তাহার কারণ মহান্ত্রাকীর আত্মাহতি।

মহান্ধানীর ভান্ধা ও চিত্ত সম্পূর্ণ নির্মাণ ও হিংসাবজ্ঞিত হিল বলিয়াই তিনি অভের দোষ ক্ষমা করিয়া তাহার গুণের সমাক উপলবি করিতে পারিতেন; নিজের মধ্যে অহভারের লেশমান্ত ছিল না বলিয়া অপরকে হেয়জ্ঞান করা তাঁহার পক্ষে অসম্ভব ছিল। নিজের বিশ্বাস পূর্ণক্ষপে সত্যের উপর প্রতিটিত ছিল বলিয়াই অপরের বিচারের সময় তিনি তাহার মধ্যে যাহা অসত্য তাহাকে বর্জন করিয়াও যেটুকু সত্য তাহাকে গ্রহণ করিতে পারিতেন। তাঁহার শিশুবর্গ থদি তাঁহার পথ সত্য সত্যই অবলম্বন করিয়া চলিতেন তবে দেশে আৰু আশার আলে। উদ্ধানতর হুইয়া উঠিত।

তিনি নিৰে সম্পূৰ্ণৰূপে অহিংসাৱতী ছিলৈন। কিছ আমরা নিক্কের অভিজ্ঞতায় সাক্ষ্য দিতে পারি যে তিনি বীরতের সম্মানদানে হিংসা-অহিংসার মধ্যে কঠোর প্রভেদ করিতেন না। ১৯৪৫ সালে মগনলাল বাগরী নামক বিপ্লব-বাদী যথম গুড হট্য়া নাগপুরের বিচারালয়ে চরম দণ্ডের সমূৰীন হয় তৰ্ন মহাগ্ৰাজী তাহার পক সমৰ্থনের জ্ঞ দেখানকার এক প্রসিদ্ধ ইষ্টান ব্যবহারাজীবকে বিশেষ অমুরোধ করেন এবং সকল ব্যয়ন্তার বহুনের প্রতিশ্রুতি দেন। ব্যবহার।-জীব বলেনঃ "বাপুজী, ইসনে তো অহিংসা ছোড় কর ছুসরা রান্তা লিয়া, তো ফির ইনকো আপ মণত দেনা কেঁও চাহ তে হুঁয় ?" আমর। আক্র্যা হুইয়া তাঁহার উত্তর শুনিলাম "ভাই, হিশ্বত তো দেবলায়া ? হিশ্বত কি কদর দেনা তো চাহিয়ে ?" বস্তুত: পক্ষে বীরত্বের সন্মান তিনি সর্ব্বদাই সকল ক্ষেত্রে করিতেন। মেদিনীপুরের ১৯৪২-৪৫ সালের অসহযোগ সংগ্রাম कारम करेनक क्रमजारमाजी निजाब हकारक ममिरिएक अ বিশেষ মনোমালিজের স্টি হয়, খাহাব ফল অত্যম্ভ বিষময় ছট্রা উঠে। মহাত্মকীর মেদিনীপুর যাত্রার পূর্বে ঐ নেতার দল মহাথানীর নিকট বিপক্ষলের বিরুদ্ধে হিংসাথক কার্ব্যের অভিযোগ করিয়া বিচার প্রার্থনা করেন। সেই দলের কয়েকজন আমাদের নিকট আসিলে আমরা তাঁহাদের বলি মহান্ত্ৰাক্ষীকে অকপটে সমন্ত সত্য ঘটনা বলিতে। তাঁহাৱা ঐ পরামর্শ গ্রহণ করিয়া, অসহযোগ সংগ্রামের সমস্ত বিবরণ মহাস্থান্তীকে নিবেদন করেন। বলা বাছলা, মহাস্থিতীর বিচারে বীরছের সমাক উপলব্ধি দেখা যায়। আৰু এমন কে আছেন যিনি ঐক্লপ নিরপেকভাবে বিচার করিতে সমর্থ ?

#### বাঙালী যুবশক্তির সমাদর

মুগলীম লীগের প্রতাক সংগ্রাঘের পরে স্থ্রাবৃদ্ধি মন্ত্রি-সভার কলিকাতা দখলের কল সশুদ্র অভিযানের সময় প্রায় ছই হাজার বাঙালী যুবক ও কিশোর জীবনমরণ পণ করিয়া যুদ্দানে তংপর হয়। কলিকাতার হিন্দু সাধারণের ধন, প্রাণ এবং খ্রীলোকের মান-ইজত রক্ষার অভতম কারণ উহাদের প্রবল প্রতিরোধ-সংগ্রাম। বঙ্গবিভাগের পর প্রধানমন্ত্রী প্রস্কুচজ্ঞ ঘোষকে অভ্রোধ করা হয় যেন ঐ সকল যুবককে সশস্ত্র পুলিস ও সামরিক বিভাগে প্রহণ করিয়া দেশের শাসন রক্ষণে নিযুক্ত করা হয় কেননা অভ্যায় উহারা বিপথে যাইতে পারে। প্রক্লবাবু তাঁহার একান্ত নিক্ষ দিব্যজানের আলোকে বিপরীত ব্যবস্থা করেন। তাহার পর শ্রীবৃক্ত কিরণশন্তর রায়ের হাতে পুলিস বহিয়াছে হয় মাসের জবিক। নিয়লিখিত সংবাদ ক্কিরণবাবু নিশ্চয়ই জানেন। আমরা দেখিতে চাহি এ বিষয়ে তিনি কি করেন কেননা তাহাতেই তাঁহার ব্যবস্থার পরিঃ পাওয়া ঘাইবে।—

"২৭শে সেপ্টেম্বর ভোর ভিনটার সময় একজন পুলির ইলপেক্টর দলবল সহ ২৭।৩ বৈঠকধানা রোডের শ্রীক্ষীক্ষভ্ষণ সেন বরাটের গৃহে হানা দেন। ধানাভল্লাসীর জন্ত দমকলের মই দিয়া পুলির তেভলা বাড়ীর ছাদে উঠে। বিবরণে প্রকাশ, ছাদে লোকের পায়ের শব্দ পাইয়া চোর মনে করিয়া বাড়ীর মালিকের পুত্র শ্রীক্ষরীর সেন শন্তনগৃহ হইতে বাহির হইয়া আসে এবং পুলিসের গুলি ধাইয়া পড়িয়া যায়। গুলির শব্দ ভিনিয়া ক্ষরীরের বড়ভাই পুলিসকে প্রশ্ন করিলে ভাহার প্রভিও গুলি ভোঁড়া হয় বলিয়া প্রকাশ। সৌভাগ্যক্রমে সে আহত হয় নাই। আহত ক্ষরীর মেডিক্যাল কলেজ হাসপাতালে মারা যায়। বড়ভাইট আছেন পুলিসের হেপাকতে।"

পূর্ববঙ্গের "পাকিস্থানা" মতিগতি মূশিদাবাদ কেলার কংগ্রেসী পত্রিকা "গণরাক"-এ নিম-লিখিত বিবরণ ও মন্তব্য প্রকাশিত হইমাছে,—

মুর্লিদাবাদ জেলার সীমাস্তবর্তী অঞ্চলসমূহে পাকিপ্তানী জ্পুম যে নিভানৈমিতিক বাাপার হইয়া দাড়াইয়াছে, একৰা আমরাবহু পূর্বে হইতেই বলিয়া আসিতেছি। স্বাধীনতা লাভের পর এক বংসর অভিবাহিত হটয়া সেল : কিছু অবস্থার ত কোন পরিবর্ত্তন হইলই না, উপরস্ত 'রাডিক্লিফ' রোয়েদাদ অনুসারে সীমান্তবর্তী অঞ্লের যে সকল চর মুশিদাবাদ জেলার **অভ**ভূক্ত হইতে পারিত, তাহা পাকিস্থানী সরকারের দখলে থাকা অবহায় উভয় ভোমিনিয়নের প্রধান সচিবছয় একত্তে মিলিত হইয়া 'status quo' রক্ষা করিবার যে চুক্তি সম্পাদন করিলেন, তাহার ফলে মুশিদাবাদ কেলার অভত্ত উল্লেখযোগ্য ক্তিপয় চর হুইতে কেলার অধিবাসিগণ বিভাঞ্চিত হুইবার কলে খুতি, সমসেরগঞ্রাণীনগর, জলদী প্রভৃতি ধানার অবিবাসিগণের একাংশ তাহাদের পৈতৃক বাসভূষি হইতে যে বিতাভিত হইলেন এবং অন্নসংস্থানের ব্যবস্থা হইতে বঞ্চিত হইলেন, তাহা অস্বীকার করিবে কে? পুর্ব পাকিস্থানের সরকার সীমানিদ্ধারণ ব্যাপারে ভারত-রাষ্ট্রেন নিকট সহযোগিতার হন্ত প্রসারিত করিবার যে আকুল আহ্বান জানাইয়াছিলেন, তাহাতে সাভা দিয়া ভারত-সরকার ও পশ্চিমবলীয় সরকার তাঁহাদের উদারতারই পরিচয় দিয়াছিলেন ; কিন্তু পাকিস্থানী সরকার তাঁহাদের স্বভাবসিদ্ধ প্রচলিত রীতি অস্থসারে কোন চুক্তিই প্রতিপালন করেন নাই। তাই বার বার আমরা চুক্তি-ভদের দুটাভ দেবিয়াছি। আমরা দেবিয়াছি ভাঁহাদের মেসিনগানবারী প্রমারকে মুশিদাবাদ জেলার বুকের উপর দিয়া চলিয়া যাইতে। আমরা দেবিয়াছি যে তাঁহাদের जनक तकी चार्याएक वानिनगंद थानांद दायनगंद, त्नारसय-কান্ত্ৰ, বাঁশগাড়া ও বেগমপুর মৌকায় অনৰিকার প্ৰবেশ

করিয়া গরীব নিরীষ্থ প্রকাদিগের উপর অত্যাচার করিয়াছে—এমন কি আমাদের পাহারারত রক্ষীবাহিনীর
উপর গুলি ছুড়িতেও সাহসী হইয়াছে। আমরা দেবিয়াছি
পাকিছানী সরকার অভারভাবে অকারণে মুরপুর সীমাছ
হইতে আমাদের সশত্র রক্ষীবাহিনীকে গ্রেপ্তার করিয়।
ছায়-নীতির সীমা লচ্চন করিয়াছে।

টভা পাঠ করিয়া ইহাই মনে হয় যে পাকিস্থানের নৃত্তন রাইপাল জনাব বাজা নাজিমউদিন ও পুর্ববঙ্গের মৃতন প্রবান মন্ত্রী জনাব কুরুল আমিন যে সব ভরসার কথা আমাদের ক্ষুনাইতেছেন, তাহার উপর বনেক দিন নির্ভর করিয়া থাকা ষাইবে না। ভারতবর স্বাধীনতা পাইবার পুর্বেও সঙ্গে সঙ্গে পাকিস্থানী বর্বারতার যে বৃহিঃ-প্রকাশ হইয়াছে পশ্চিম পাকিপ্তানে ও কাশ্মীর রাজ্যে তাহার ফল উভয় রাষ্ট্রের নাগরিকবর্গকে ভোগ করিতে হইবে। পূর্ববিধে অন্তর্টপুনী দিয়া হিন্দুর সম্মানের ও স্বার্ণের উপর নিয়ত আঘাত করা হইতেছে। এই অবস্থায় যদি 'গণরাজ' পত্রিকায় বর্ণিত কার্য্য-কলাপ চলিতে থাকে তবে ভারতরাষ্ট্রের পূর্ব্ব সীমান্তে থে-্কান দিন আগুন জালিয়া উঠিতে পারে। ইহা আমরা চাই না। কারণ ভারতবাসীর নিজেদের মধ্যে হানাহানি করিয়া যে সংধীনতা আসিয়াছে আমাদের ছয়ারে তাহা বিমুখ হটয়া চলিয়া যাইবে যদি এই ছুই রাষ্ট্রের মধ্যে সহযোগিতার ভাব না থাকে। জনাব পুরুল আমিনকে এই কথাটাই মনে রাখিতে বলি: ভারতরাই পাকিস্থানের শত্রু এই কথা গুনাইতে শুনাইতে একদিন সভাই "বাখ" আসিয়া পড়িতে পারে। পশ্চিমবদের মন্ত্রিমণ্ডলী বেশী দিন লাগাম ক্ষিয়া রাখিতে পারিবেন না। লোকের সহেরও একটা সীমা আছে।

#### বাঙালীর সামরিক রুত্তি

হায়দরাবাদ রাজ্যের রাজাকার গুঙামি দমন করিবার ৰঙ্গ যে অভিযান আরম্ভ হইয়াছিল ভাহা প্রায় পাঁচ ভাগে বিভক্ত হইয়া অগ্রসর হয়। ইহার মধ্যে ছই দিকের নেতৃত্ব करतन ध्रे कन वांडाली रिश्लाशाक-बिराणियात क्लारतल চৌধুরী ও ব্রিগেডিয়ার কেনারেল রুঞ্জ; আকাশ-পথের আক্রমণে বিমানাধ্যক মুখাকি নেতৃত্ব করেন। এই উপলক্ষে পশ্চিমবঙ্গের প্রধান মন্ত্রী ডা: বিধানচন্ত্র রায় এই তিন জন বাঙালী প্রধানকে অভিনন্দন জাপন করেন, এবং ভাঁহাদের ফভিছের গৌরব বাঙালী জাতির প্রাপ্য বলিয়া দাবি করেন। তাঁহার বিব্রতিটি উত্তর-ভারতের কোন কোন সাংবাদিকের মন:প্ত হয় নাই; এই বিবৃতির মধ্যে তাঁহারা প্রাদেশিকতার ইদিত পাইয়া ছঃৰ প্ৰকাশ করেন। এই বিবৃতি পাঠ করিয়া चांचारमञ मत्न किंच जन्नजात्व इः त्वेत छेम्ब स्टेबाहिन। সৈভাব্যক্ষ চৌধুরী, সৈভাব্যক স্কন্ত্র ও বিমানাব্যক স্থত্রত ষুণার্জির কৃতিছে আমরা গৌরব অভ্তব করি। কিন্ত रिज्ञांदाक, त्नी-रामांदाक ७ दियानादारकत चाळात्र दांडांनी সৈনিক, বাঙালী নৌ-সেনা ও বাঙালী বৈমানিক চলিলে সেনাধ্যক্ষ ও বিমানাধ্যক্ষের ক্লভিত্বে একটা জ্বাভির ক্ষত্রিয় রম্ভির প্রকৃত পরিচয় পাওয়া বার না। এইরূপ অসমান উন্নতিতে জ্বাভির পক্ষে উৎকৃত্ব হইবার কোন কারণ নাই।

ইংরেজের জামলে বাঙালীর কপালে "অ-সামরিক কাতি" বলিয়া একটা কলঙ্কের ছাপ লেপিয়া দেওয়া হটয়াছিল। চৌধুরী, ক্রন্ত্র মুখাজি, সেন প্রভৃতি উচ্চশ্রেণীর ছ-চার জন সামরিক জীবনে সাফলা অর্জন করিলে, বাঙালী জাতির মধ্যে সামরিক বৃত্তি পুন: প্রতিষ্ঠা হইবে না। ধর্মন লক্ষ্ণক বাঙালী সামন্ত্রিক রন্তির নানা বিভাগে যোগদান করিবে তথনট দমরাব্যক্ষবর্গের গৌরব বংশারুক্রমে সংক্রামিত ছটবে। এইভাবে বিষয়ট। বিচার করিলে ডাঃ বিধান-চন্স রায়ের সন্মবে বিরাট কর্ত্তবা পড়িয়া রহিয়াছে: স্বাধীন ভারতরাষ্ট্রের বৃদ্ধা-কল্পে কেবল বাড়ালী সমরাবাদ্ধের আভি-জীব হইলে চলিবে না। প্রত্যেক বাঙালীকে অন্তর্গক্ষ করিয়া ডুলিতে হইবে.; প্রত্যেক বাঙালীকে ভারতরাষ্ট্রের ধাধীনতা রক্ষার জন্ত বর্তমান মুগোপযোগী সামরিক শিক্ষা-দীক্ষার পারদর্শী করিয়া ভূলিতে হটবে। এই বিষয়ে ডা: প্রকল্পচন্দ্র বোষের মন্ত্রি-মণ্ডলীর অপদার্থতার কথা আমরা জানি। ডাঃ বিধানচন্দ্ৰ ৱাথের মন্ত্রি-মণ্ডলী ৭০০ শত জাতীয় রক্ষী বাহিনীর সামরিক শিক্ষাদানের ব্যবস্থা করিয়া আত্ম-প্রসাদ লাভ করিতে পারিবেন না; ১৭০০, ১৮০০ শত লোককে বাঙালী পণ্টনে ভর্মি করিবার সংবাদ প্রচার করিয়া কর্ত্তব্য শেষ হইয়াছে এই ধারণার স্ট্র করিলে চলিবে না। কথা ছিল যে ৬.০০০ হাজার পদ্ধীবাসীকে এক বংসরের মধ্যে সামরিক অ, আ, ক, ব শিক্ষাদান করিয়া তাহাদের গৃহে কিরাইয়া দেওয়া হইবে : তাহাদের গ্রাম পশ্চিমবলের পূর্ব-সীমাজে অব্ধিত। এই সীমাজরক্ষার প্রথম চোটটা তাহাদের উপরই পছিবে।

মুশিদাবাদের "গণরাজ" পত্রিকা হইতে সংবাদ ও মন্তবা উদ্ধত করিয়া দেখাইবার চেষ্ঠা করিয়াছি যে আমাদের পর্ব-সীমাজের প্রতিবাসী "পাকিস্থানীরা" খুব শান্তিপ্রিয় লোক নতে। বিগত এক বংসরের মধ্যে ভাহারা নানাভাবে আমাদের পূর্ব্ব-সীমান্তের প্রামবাসীর উপর অভ্যাচার ক্রিয়াছে। ভাহা বন্ধ করিতে পশ্চিম বাংলার গ্রাম্য-অঞ্চলের লোককে সামরিক শিক্ষা দিতে হইবে। তাহাদের পৃষ্ঠ-রক্ষা করিবে ত্রীতিমত সামরিক শিক্ষাপ্রাপ্ত বাঙালী সৈনিক, নৌ-বাছিনী ও বৈমানিক ৷ এই জিবিৰ শিক্ষার কি আয়োকন করা হইতেছে তাহা জানিবার অধিকার আমাদের আছে। এই বিষয়ে গব্দোণ্টের মা পশ্চিমবঙ্গ দায়িত্রটা কাহার--কেঞ্রীয় গৰুৰে ক্টেব্ৰ ? চুড়াম্ভ দায়িত্ব ভারতরাষ্ট্রের কেন্দ্রীয় গবর্নেটের, ইহা আমরা অসুমান করিতে পারি। কিন্তু পশ্চিমবঙ্গ প্ৰদ্ৰেক্টের দায়িষ্টা কোন্ধানে আরম্ভ ও কোন্ধানে তাহার শেষ হইয়াছে, ভাহা আমাদের কানিতে হইবে। পশ্চিম-বঙ্গ প্রমেশ্ট একটি বিরাট প্রচার বিভাগ পোষণ করিতে- আমরা পাইয়া থাকি। কিছ আমাদের মনে পড়ে না যে বাঙালীর মধ্যে সামরিক বৃদ্ধি উচ্চীবিত করিবার কোন চেপ্তার সংবাদ এই প্রচার বিভাগের নিকট ছইতে পাইয়াছি। প্রধান মন্ত্রীর সাংবাদিক সন্মেলনে ছিটেকোঁটা সংবাদ যাহা পাই তাহা অকিঞ্চিংকর। আর পশ্চিমবঙ্গ পরিষদের সভ্যান্ত্রন্দের গুণের কথা বলিতে গেলে পূঁধি বাডিয়া যায়। সামরিক জীবন সহুদে যে একটা কলত বাঙালীর কপানে দাগিয়া দেওয়া হইয়াছে তাহা দূর করিবার জ্লা কোন উড়োগ তাহাদের মধ্যে ও দেখিতে পাই না। এই কলত মোচনের চেটা করিবে কে তাহা জানিতে ইচ্ছা হয়।

িপশ্চিম বাংলা ও বিহারের সীমান্ত অঞ্ল

পশ্চিম বাংলা ও বিহারের মধ্যে সীমান্ত-অঞ্চল লইয়া একটা বিতর্ক চলিতেছে। এই বিষয়ে পশ্চিম বংলার মন্ত্রিমঙলী. পশ্চিম বাংলার পরিষদের সভারন্দের বিরুদ্ধে আমাদের একটা অভিযোগ আছে। সেই অভিযোগ পশ্চিমবঙ্গ হটতে কেন্দ্রীয় পরিষদে প্রেরিত সভারদের বিক্দ্নেও প্রযোজা। আমাদের জভিযোগ তাঁছাদের সকলের নিশ্চেষ্টতার বিরুদ্ধে, এই বিষয়ে তাঁহাদের অসহায়তার বিরুদ্ধে। বিহার-পরিষদে বিহারী মন্ত্ৰিমণ্ডলী ও সভাবন্দ এই সম্বৰে অধিক সন্ধাগ বলিয়া মনে হয়। এই সেদিন মন্ত্রী শ্রীকৃষ্ণবল্পত সহায় ত আমাদের সকলকে শাসাইয়া দিয়াছেন এবং একছন সভা বাংলাদেশের मानपर क्लार উপর একটা দাবী পেশ করিয়া রাবিয়াছেন। আর পশ্চিমবলের মন্ত্রি মহাশয়গণ এই বিষয়ে নীরব : পশ্চিম-বল পরিষদের সভ্যরক্ষের বক্ততা-শক্তি নিশ্চল হটয়া পভিয়াছে। কেন্দ্রীয় বাবস্থাপক সভা ও গণ-পরিষ্টের বাঙালী সভ্যবন্দ গত আট মাস পর্যান্ত ঘুমের খোরে ছিলেন ৷ উৎকলের প্রতি-নিধি ঐবিধনাথ দালের প্রশ্নের উত্তরে প্রধান মন্ত্রী প্রীঞ্চবাহর-লাল নেহর ভাষার ভিত্তিতে প্রদেশ পুনর্গঠন সম্বন্ধে তাঁহার অনিচ্ছার কথা একটু রুক্স-ভাবে, বোধ হয়, প্রকাশ করেন। বাঙালী সভ্যরন্দের টনক তাহার পুর্ব্বেই নড়িয়াছিল বলিয়া মনে হয়। গণ-পরিষদের সভাপতি বাবু রাজেঞ্জপ্রসাদ ভাষার ভিভিতে দাকিণাতোর প্রদেশসমূহ পুনর্গঠন সম্বন্ধে অমুসন্ধান করিবার জ্ঞ একট কমিশন নিযুক্ত করিয়াছেন : সেই কমি-শনের কার্যাবলী হটতে উত্তর-ভারতে কোন সীমান্তের অদল-বদল করার প্রশ্নটাকে সাবধানতার সহিত এড়াইয়া যাওয়া হইরাছে। বাঙালী সভারন্দ একট ব্যাপকতর মীমাংসার জন্ত গণ-পরিষদের সভাপতির নিকট একধানি পত্র লিখেন: তাহার উত্তরে এমন একটা সমস্থার স্ট্রী হইরাছে যে বাঙালী সভ্যপৰ ভারতরাষ্ট্রের প্রধান মন্ত্রীর নিকট একটা অভিযোগ করিতে বাধ্য হইয়াছেন। তাঁহার। বাবু রাজেপ্রপ্রসাদকেও এই বিষয়ে পুনর্বিবেচনা করিবার ক্ষণ্ড আর একখানি পত্র দিয়াছেন। ভাষার কোন সম্ভৱ পাওয়া গিয়াছে কিনা ভাষা আমরা ভানি না। পভিত ভবাহরলালের নিকট লিখিত পত্রে ব্যাপারটার মোটাষ্ট একটা পরিচয় পাওয়া যায়। স্তরাং তাহা আমরা নিয়ে উদ্ধৃত করিয়া দিলাম।

"প্রিয় মহাশয়,

ভাষার ভিন্তিতে প্রদেশ বিভাগ সম্পর্কে ১৯৪৮ সালের ৩০শে আগষ্ট ভারিবে শ্রীবিখনাথ দাশের প্রশ্নের উত্তরে আপনি লিখিতভাবে পরিষদে যাহা বলিয়াছিলেন, আমরা ভাহার উল্লেখ করিতেছি।

এই বিশেষ সমস্ভাটি সমাধানের জন্ম বর্ত্তমানে কোন কাজ করা সম্পর্কে গবর্গ্য কিন্ত অনিচ্ছার বিষয় আমরা অবগত আছি। কিন্তু করেকটি অঞ্চল সম্বন্ধে এই বিষয়ে কাজ আরপ্ত করা হইয়াছে। অন্তর্, কর্ণাটক, কেরল ও মহারাষ্ট্র এই চারিটি পুতন প্রদেশ গঠন সম্বন্ধে অন্থপদান করিবার জন্ম ও তংশম্বন্ধে একটা রিপোর্ট দিবার জন্ম গণপরিষদের সভাপতি যে কমিশন গঠন করিয়াছেন, গবর্গে তাহা সমর্থন করিয়াছেন। উক্ত কমিশন কাজ আরম্ভ করিয়াছে। আমরা বলিতে চাহি যে, বিহারের বাংলাভাষা অঞ্চল সম্পর্কিত সমস্ভাটিও বর্ত্তমানে স্থলিক রাবা উচিত নয়। বাংলা-বিহার সমস্ভা ভাষাগত প্রদেশ গঠন সমস্ভার অংশবিশেষ। বিহারের বাংলা-ভাষাভাষী অঞ্চল বাংলার (বর্ত্তমানে পশ্চিম বাংলার) অন্তর্ভুক্ত করার দাবী ভাষার ভিত্তিতে কয়েকটি সূতন প্রদেশ গঠনের দাবীর ভাষাই পুরাতন।

গণ-পরিষদের কোন প্রস্তাব বা নির্দেশ অফুসারে সভাপতি মহাশয় এই কমিশন নিযুক্ত করেন নাই : যদিও খদভা প্রণয়ন কমিটির একটা নির্দেশ অধুসারে এই ক্মিশন নিযুক্ত করা হটয়াছে, এরপ একটা ইঞ্চিত আছে। খসড়া প্রণয়ন কমিট নুতন শাসনতন্ত্র কার্যাকরী করার शूटर्स नृजन अरम्भत्रम् गर्रन कदात कथा विषयात्वन । ১৯৩৫ সালের ভারত আইনের ২৯০ ধারা অন্থযায়ী এক-মাত্র গবল্বে ভিট তাহা করিতে পারেন। আমরা এই শাসনভান্ত্ৰিক প্ৰশ্নটি ভূলিভাম না। কিছ বিহার ও পশ্চিম বাংলার সীমানা নির্দারণের সমস্তাট কমিশনের কার্য্য-স্ক্রীর অন্তর্ভুক্ত করিবার জ্ঞ গণপরিষদের সভাপতিকে যে অনুরোধ করিয়াছিলাম সেই অনুরোধ রক্ষিত না হওয়ার আমাদের এই শাসন-তান্ত্রিক সমস্তাটর উল্লেখ করিতে হুটয়াছে। আমরা বলিতে চাই যে গ্র-পরিষদের সভাপতি ক্ষিশন নিযুক্ত ক্রিলেও প্রয়োধন বোবে তাহার কর্মখনী বাড়াইবার বা সঙ্কোচ করিবার অধিকার গব-র্ন্মেরে আছে। ১৯৪৮ সালের ২৫শে আগষ্ট ভারিখে গণ-পরিষদের সভাপতির নিকট যে পত্র আমরা লিবিয়া-ছিলাম তাহার প্রতিলিপি আপনার নিকটেও প্রেরিড হইয়াছিল। গণ-পরিষদের সভাপতি মহাশয় আমাদের অমুরোধ প্রত্যাখ্যান করিয়া যে উত্তর দিয়াছেন, কমিশনের কার্য-স্থচী বাড়াইয়া বাংলা-বিহারের সম্ভাটা ভাহার

অন্তর্ভ করিবার যে দাবী আমরা করিয়াছিলাম তাহা প্রত্যাধ্যান করিয়া যে উত্তর দিয়াছেন, তাহা আমরা পাইয়াছি। ক্ষিশন কেবল নুতন প্রদেশ কয়ট গঠন সম্পর্কে তদন্ত করিবেন, এই কথাটা আমাদের জানাইয়া দেওয়া হইয়াছে।

এই শ্ববছায় ১৯০৫ সালের ভারত আইনের ১৯০ ধার।
জন্সারে গবনে উই কেবল পশ্চিম বাংলা ও বিহারের
সীমানা পুনঃ নির্দারণের জ্ঞ কাজ করিতে পারেন।
ংখন গণ-পরিষদ এই বিষয়ে ব্যবস্থা শ্ববলগন করে নাই,
তথন এই ক্লপ প্রশা উঠিতে পারে না। এবং অবস্থা
উপযোগী ব্যবস্থা অবলথন করিবার ৯৯ স্থামরা গবনো বেটর
নিকট অস্বোধ কানাইতেছি।

ব্যুমান সম্ভট্জনক সময়ে প্রুমেণিকে বপদে পড়িতে হয় এইরূপ কোন কিছু করিলে 'খামরা চাহি না বা এরূপ কোন প্রস্থাবত্ত করিতে চাহি না। বর্তমানে পশ্চিম বাংলার প্রতিবর্গ মাইলে লেকি সংখ্যা প্রায় ৮০০ শত হওয়ায় এবং পূর্ববঙ্গ হটতে ক্রমাগত আশ্রয়-প্রার্থী আসায়, পশ্চিম বাংলার সীমানা পুননির্দ্ধারণের সমস্তাটি বিশেব অরুত্র-পূর্ণ হইয়া পড়িয়াছে। কিন্তু সমগ্র ভারতে ভাষাগত ভিত্তিতে প্রদেশ পুনর্বিভাগের প্রশ্নটি যদি বর্ত্তমানে স্থগিত রাধা হটত তাহা হইলে আমরা অবিলপে এই সমস্তা সমাধানের জন্ম চাপ দিতাম না। এটরাপ ক্ষেত্রে আমরা ছইট প্রতিশ্রুতি চাহিতাম। প্রথমতঃ, বিহারের বাংলা-ভাষাভাষী অঞ্চলের ভাষাগত বর্তমান অবস্থা পরিবর্তনের ক্ষ্য কোন কিছু করা হইবে না, এবং ভবিষ্যতে বিহারের বাংলা-ভাষাভাষী অঞ্জ পশ্চিম বাংলার সহিত যুক্ত করা সম্পর্কে বাধা স্ষ্টি হইতে পারে, নুত্রন শাসনতথে সেইক্রপ कान दिशान वा निर्फल शक्टित ना ।

শীধই এই পত্তের উত্তর পাইলে বাবিত হইব।"

পঙিত ক্ষবাহরলাল নেহরণর নিকট হইতে এই পত্রেব কোন সহন্তর পাওয়া গিয়াছে কিনা কানি না; গণ-পরিষদের সভাপতি বাবু রাক্ষেপ্রপ্রসাদ কোন যুক্তি দেখাইয়া বাঙালী সভাগণের অহরোব প্রত্যাব্যান করিয়াছেন, তাহাও আমরা কানি না। কোন সংবাদপত্রে তাহা প্রকাশিত হইলে, তাহা আমরা দেখি নাই। গত ১৯শে সেপ্টেম্বর (৩রা আম্বিন) তারিখের "হরিক্ষন" পত্রিকায় পুরুলিয়ায় কংগ্রেস-নেতা প্রত্যাকর ঘোষের একখানি পত্র প্রকাশিত হইয়াছে; তাহাতে তিনি বলিয়াছেন যে তাহারা কোন প্রকাশ আংলোনলনের পক্ষপাতী মছেন, তাহারা কংগ্রেসের সর্কোচ্চ নেতৃত্বানীয় ব্যক্তিবর্দের হাতে এই সমন্তার মীয়াংসার ভার দিয়াছেন, ভার ও কংগ্রেসের বছ বিঘোষিত নীতির উপর নির্ভর করিয়া কংগ্রেস নেতৃবর্গ তাহা মীয়াংসা করিয়া দিবেন; এই ভরসা

অতুলবারু করেন। পশ্চিম বাংলার মন্ত্রিমঙলী, পশ্চিম বাংলার পরিষদের সভ্যরন্দ, কেন্দ্রীয় ব্যবস্থাপক সভায় পশ্চিম বাংলার প্রতিদিধিবর্গ-সকলেই মনে হয় এক্লপ একটা ভরসায় বুক বাঁৰিয়া আছেন। তাঁহাদের ভরসা সার্থক হউক। কিন্তু রাজনীতি ক্ষেত্রে এরণ ভাবে সদভাবের উপর একান্ত নির্ভর করিয়া চলা যুক্তিযুক্ত কিনা তাহা ভিজ্ঞাসা করিতে ইচ্ছা হয়। কামড়াইতে নিষেধ করা হুইয়াছিল বলিয়া কোন কারতে ও কোন নিষেধ ছিল না -এরূপ একটা গল "রামকুফ কথামতে" পড়িয়াছি। এই গলের শিক্ষা ছিল যে, নিদিষ্ট লোককে হিংসা হটতে দুরে রাবিতে হঠলে একট ৬য় দেখাইতে হয় ' সেইক্লপ রাষ্ট্রকেও অঞ্যায়ের পথ হটলে নিওও ক্রিতে হটলে জনমণ্ডের রুদ্র-মৃত্তির প্রয়োজন হয়। অন্তপ্রদেশের ও কর্ণাট প্রদেশের নেডবর্গ ভারতরাধ্রে কর্ণাররক্ষের কানে এরপ একটা সাবধান বাণী উচ্চারণ করিয়াছিলেন তাহা আমরা জানি ৷ কেন্দ্রীয় বাবস্থাপক পরিষদের বাঙালী সভারন্দের কি এই কথা স্বান্ধানা ?

### গোহাটির ঘটনার স্বাকৃতি

গৌহাটতে পত মে মাসে অস্মিয়র বাধালীদের উপর চডাও ছইয়া যে শুগুমি কবে তাহার ফলে একজন বাঙালী নিহত এবং ৪০ জন আহত হয় এবং লুঠিত ও ক্ষতিগ্ৰন্ত সম্পত্তির পরিষাণ দীড়ার ৮১,৯৪৫। ৮০ আন।। সম্রতি আসাম বাবছা-পরিষদে এক প্রশ্নের উত্তরে রাজ্বস্চিন শ্রীবিষ্ণুরাম মেধী এই ভথা স্বীকার করিয়াভেন। যাহারা দালা বাধাইয়াছিল এবং লোকক্র আহত ও সম্পত্তি ক্ষতিগ্রন্থ করিয়াছিল তাখাদিগকে গ্রেপ্তার করিয়া মামলা চালানো হইতেছে কিনা এই প্রশ্নের উত্তরে মেৰী মহাশয় বলিয়াছেন যে তদক্তে সমস্ত অভিযোগ সতা প্রমাণিত হইয়াছে কিন্তু কোন লোকের বিরুদ্ধে যথেষ্ঠ প্রমাণ নাই বলিয়া মামল: চালানো যাইবে না। গৌছাটির ছুইটি ডাক্তারখানা এই দাখায় ধ্বংসপ্রাপ্ত হয়, যাহারা ডাক্তার-ধানাটি ভাঙিয়াছে তাহাদের বিরুদ্ধে ভারতীয় দওবিধি আইনের ৩২৬ ধারাপুগারে ৬৪ (৫) নং মামলা দায়ের করা হয়: তদত্তে অভিযোগপতা বলিয়া কানা যার-এতগুলি কৰা খীকার করিয়াও মেধী মহাশয় তাঁহার জ্বাবে সার কথা এই বলিলেন যে "প্ৰমাণ নাই" ( No evidence ) !

আসাম গবন্ধে নি দালাকারী আসামীদের বাঁচাইবার চেষ্টা করিতেছেন—লোকের মনে অতঃপর এই বারণা বন্ধুল হওয়াই সম্পূর্ণ স্বাভাবিক। গোঁহাটির ঘটনা এবং উহাতে সংশ্লিষ্ট দালাকারীদের বিরুদ্ধে অভিযোগ তদন্তে সত্য প্রতিপন্ন হওয়া সত্ত্বেও সরকারের দয়ায় তাহাদের "প্রমাণাভাবে" মুক্তিলাভ হইতে আসামবাসী বাঙালীদের অসহায় অবস্থা যে কতদূর গভীর তাহা বুঝা যায়।

#### পূৰ্বাচল প্ৰদেশ

আসামের প্রাদেশিক বিষেধে কর্জনিত হইরা সেখানকার বাঙালীরা যে সতপ্র কংগ্রেস প্রদেশের দাবী তুলিয়াছিলেন কংগ্রেস ওয়ার্কিং কমিটির বিগত অবিবেশনে তাহা অক্যোদন করা হয়। স্থানীয় লোকদের দাবী অস্পারে কাছাড়, ত্রিপুরা. মণিপুর ও লুমাই পাহাড় লইয়া একটি আলাদা কংগ্রেস প্রদেশ পূর্বাচল প্রদেশ নামে গঠিত হয়। ওয়ার্কিং কমিটির এই সিদ্ধান্তের কয়েক দিন পরে অক্যাং কংগ্রেস-সভাপতি বারু রাক্ষেপ্রসাদ নিক্ষে এক আলাদা হতুমনামা জারী করিয়া ঐ অস্থবাদন বাতিল করিয়া দিয়াছেন।

পূর্বাচল প্রদেশ লইয়া বাহারা আন্দোলন করিতেছেন দেখা যাইতেছে তাঁহারা স্বতন্ত্র কংগ্রেস প্রদেশ দইয়া সম্ভ্রষ্ট পাকিতে চাহিতেছেন। হয়ত তাঁহারা ভাবিতেছেন যে একবার উহা কংগ্রেস-প্রদেশে পরিণত হইলে উহাকে শাসন-ভান্তিক প্রদেশ রূপে পুষক করিয়। লইভে বিলপ বা অসুবিধা হইবে না। কিছ এই ধারণা সম্পূর্ণ ভূল। দীর্ঘকাল যাবং কংগ্রেসের গঠনতন্ত্রে ভাষার ভিত্তিতে অন্ত্রামিলনাদ, কর্ণাটক প্রস্তৃতি প্রদেশের অভিধ রহিয়াছে কিছ এণ্ডলি স্বতন্ত্র প্রদেশে পরিণত করিবার চেষ্টা কংগ্রেস কর্ত্তপক্ষ করেন নাই। ভারত-শাসন আইনের যে ধারা অমুসারে এখন অন্ত্রকে আলাদা করা হইয়াছে সেই বারায় অভাভ প্রদেশকেও তাঁহারা পুথক করিতে পারিতেন সে ক্ষমতাও তাঁহাদের হাতে অনেক দিন যাবং আসিয়াছে। নুতন রাষ্ট্রবিধিতে প্রদেশ পুনর্গঠন সথপে যে কঠোর ব্যবস্থা করা হইতেছে তাহাতে ভবিয়তে আসামের বাংলা-ভাষাভাষী অঞ্চল লইয়া নুডন প্রদেশ গঠন, বাংলা-বিহারের পুর্বাঞ্চল পুন:-প্রাপ্তির স্বায় অসম্ভব হুইয়া উঠিবে। নুতন প্রদেশ গঠন করিতে হইলে তীত্র আন্দোলনের ধারা নুজন রাষ্ট্রবিধি প্রবর্ত্তিত হওয়ার পুর্বে তাহা করিতে হইবে, নতুবা আর উহা হইবে মা। গোয়ালপাড়া, গারে। পাছাড় এবং বাসিয়া ও কৈছিয়। পাহাড়কেও পুর্বাচল প্রদেশ হইতে বাদ দেওয়া উচিত নহে।

পূর্ব্বাচল প্রদেশের উভোক্তার। উহাকে কংগ্রেস প্রদেশে পরিণত করিয়া সম্ভই থাকিতে চাহিবারে আরও ছইট কারণ থাকিতে পারে। প্রথমতঃ, তাঁহারা হয়ত ভাবিতেছেন যে পূর্ব্বাচল প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিট আসাম প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিট হইতে পৃথক হইলে তাঁহার। নিজ এলাকায় সাধারণ নির্ব্বাচনে কংগ্রেস মনোনয়ন দেওয়ার স্বাধীনতা লাভ করিবেন। কিন্তু তাঁহাদের মনে রাখা উচিত যে যেখানে একট লাসন-তান্ত্রিক প্রদেশে ছইট প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিট সেখানে নির্ব্বাচনে মনোনয়ন দানের জন্ম ইলেকশন-ট্রবিউনাল গঠিত হইবেই এবং আসাম প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিট ভাতির জোর তাঁহাদের চেয়ে বেশী থাজিবেই। মুসলমান

ভোটারের জভ নির্দিষ্ট আসনে নিজের দলের হিন্দু আমদানী করিয়া কংগ্রেস কমিট কবলিত করার যে দৃষ্টান্ত শ্রীযুক্ত সুরেজ মোহন বোষ মহাশয় দেবাইয়া গিয়াছেন, পাৰ্বত্য জাতির নাম করিয়া অসমিয়া আমদানী করিয়া ঠিক সেই ব্যাপার আসাম কংগ্রেসের নেতারা করিবেন না এটা মনে করা মারাত্মক ভুল হইবে। তিন জন সদস্ত লইয়া গঠিত ইলেকশন-ট্ৰিউনালে পুর্ব্বাচল একটার বেশী আসন কিছুতেই পাইবে না এবং ফলে মণোনয়ন কোন্দিক দিয়া প্ৰবাহিত হইবে তাহাও অনুমান ক্রিয়া লওয়া যায়। দিতীয়ত: তাঁহারা হয়ত ভাবিতে পারেন যে পুর্বাচল কংগ্রেস আলাদা হইলে তাঁহার। আসাম ব্যবস্থা-পরিষদের ঐ এলাকার সদভদের আসাম প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিট কর্ত্তক প্রদত্ত নির্দেশের বিরুদ্ধে পুথক নির্দেশ দিতে পারিবেন। এটাও মারাগ্রক ভুল ধারণা। একই ব্যবস্থা-পরিষদের ছুই দল সদস্তকে হুই প্রাদেশিক কংপ্রেস ক্মিট ছুই প্রকার নির্দেশ দিলে কংগ্রেস পার্লামেন্টারী পার্টীর সভায় তাহার চুড়াছ মীমাংসা হইবে, এবং সেবানে ভোটে জিভিবে পুর্বাচল প্রদেশ নয়, আসাম।

গৌহাটির ঘটনার পরও যদি আসামবাসী বাঙালীদের
চৈত্য সম্পাদিত না হয়, এখনও যদি তাঁহারা নিজ নিজ স্বতস্ত্র
ব্যক্তিগত স্বার্থকে প্রাধান্ত দেন এবং দল ও দলীয় 'নমিনেশনের'
কথাই বেশী করিয়া ভাবিতে থাকেন তবে তাঁহাদের আরও
আনেক লাঞ্চনা সহিতে হইবে। আন্দোলনটা সবেমাত্র জমিয়া
উঠিয়াছে, এখন একটু জোর দিলে সাফল্যলাভ এবং স্বত্তপ্র
প্রদেশ গঠনের পূর্ব সন্তাবনা রহিয়াছে। বিহারের বাংলাভাষী
অঞ্চল প্রত্যেপ্রের আন্দোলন এবং পূর্ব্বাচল প্রদেশ গঠনের
আন্দোলন একই সঙ্গে তীত্র ভাবে চলা উচিত ছিল; বাঙালীর
ফুর্ভাগ্য যে এখনও তাহা হইল না।

#### ভারতরাষ্ট্রের ব্যয়-বাহুল্য

কেঞ্জীয় ব্যবস্থাপক সভার বিগত অবিবেশনে শ্রীছরিবিফ্
কামাথের প্রশ্নের উত্তরে ভারভরাষ্ট্রের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত
কবাহরলাল নেহরু আমাদের রাষ্ট্রপালের (গবর্ণর-জেনা-রেলের) বেতন ও তাহার উচ্চপদের আক্রমন্দিক ব্যরের বহর
সম্বন্ধে একটি বির্তি দান করেন। সেই বির্তি পাঠ করিয়া
আমরা কানিতে পারি যে, রাষ্ট্রপালের বেতন ও অভাভ ব্যর
বাবদ মাসিক ১ লক্ষ ১ হালার চাঁকার অবিক ব্যর হয়। গাড়ীজীর আদর্শ-পৃত রাষ্ট্রের পক্ষে এই ব্যর অপব্যর, ইহা কভটা
র্ক্তিসহ ভাহা কাহাকেও বলিয়া দিতে হইবে না। ভাহা
হাড়া একটা প্রশ্ন ভূলিলে চলিবে না। ইংরেজের আমলে
আমরা এই বলিয়া প্রতিবাদ করিয়াছি বে আমাদের দরিজ্ঞ
দেশের পক্ষে ইংরেজের দরাক-হাতে ব্যরের বহর সহু করা
অসক্তব: বিদেশী বলিয়াই ইংরেজ এইরপভাবে আমাদের

শোষণ করিতেছে। এই প্রতিবাদ মনে করিয়া রাখিবার লোকের অভাব এবনও আমাদের দেশে হয় নাই। সেইজ্জ পণ্ডিত ক্লবাহরলাল নেহরুকে আম্তা-আম্তা করিয়া রাষ্ট্র-পালের বায়ের সপক্ষে অনেক কথাই বলিতে হইয়াছে—রাষ্ট্র-পালের পদের একটা মর্যাদা আছে; সেই মর্যাদা ভারত-রাষ্ট্রের মর্যাদা হইতে পৃথক করা যায় না, ইত্যাদি, ইত্যাদি। এই যুক্তিতে দেশের লোকের মনে কোন সাস্থ্রনা আসে নাই; পণ্ডিত নেহরু সাস্থ্রনা পাইয়াছেন, এরূপ মনে করিয়া তাঁহার উপর অবিচার করিতে চাই না।

কিছ এটকপ প্রশ্নোভবে এই বিষয়ের মীমাংসা হটবে না। গত ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগটের পর দেশের সম্পদ রন্ধি হয় নাই: কেংই এক্সপ কোন প্রমাণ উপস্থিত করিতে পারেন না এবং দেশের লোক ভাবিয়াকোন উত্তর পাইতেছে না ক্তন আমাদের অবস্থার মত দেশে রাষ্টের ব্যয় সম্বন্ধে এরূপ-ভাবে পরাতন রীতি (ইংরেন্ডের স্বামলের রীতি) চলিতে দেওয়া হইবে। দিল্লী আমাদের পক্ষে বহুদূর; সেধানে ব্যয়ের বহুর কি তং-সম্বদ্ধে আমাদের ধারণা করিতে হয় লোকের কথা ভনিয়া। কিন্তু আমাদের চোধের সামনে কলিকাতা নগরীর লালদীধির পাড়ে ও আলীপুর এগ্রারসন ছাউদে যে ব্যয়বাছলা দেখিতে পাই তাহা আমাদের চিম্বার পক্ষে পীড়াদায়ক। কেন্দ্রীয় ব্যবস্থাপক সভার একজন বাঙালী সভোর বিবৃতি হ'ইতে ও নানা কনের অভিজ্ঞতা সংক্ষেপ क्रिया निम्नानिकिक विवद्मनिक्त शाख्या याथ । देश्टबक जामतन পেকেটারীয়েটে (বেশল) ২৭৫০, টাকা বেভনের সেঞ্-টারীর পদ ছিল মাত্র ছয়টি। অবিভক্ত বাংলার জভ ভারত-পচিব এই বেতনের ছয়টির বেশী পদ রাখিবার আবশুকতা নাই বিশিষা সম্পষ্টভাবে নির্দেশ দিয়াছিলেন। মুসলিম লীগ গবংশ তি এই নির্দেশ অমাজ করিতে পারেন নাই। কিছ বর্ত্তমানে বিভক্ত পশ্চিম বাংলার ব্যবস্থা এ বিষয়ে কি প্রকার **হট্মাছে ? বর্ত্তমানে এক-তৃতীয়াংশ বাংলায়** ২৭৫০ টাকার সেকেটারীর পদও ছুই-ততীয়াংশ ক্ষমিয়া হওয়া উচিত ছিল ছুইটি; কিন্তু প্রকৃতপক্ষে উহা দ্বিশুর বাড়িয়া হুইয়াছে বার্ট । এতদিন একজন সেক্রেটারী জনস্বাস্থ্য, স্থানীয় স্বায়ন্তশাসন এবং শিকা বিভাগের কাৰ করিয়াছেন, এখন কাৰ ক্ষিয়াছে, কিছ খালাদা তিন ধন সেক্ষেটারী করা হইয়াছে এবং শেষোক্ত হুই বিভাগের সেক্রেটারীছয় প্রভ্যেকে পাইতেছেন ২৭৫০, টাকা। এতদিন সমবায় ও পুনর্ব্বসতি বিভাগের সেকেটারী ছিলেন একজন, বেতন ২৭৫০, টাকা। এবার হইয়াছেন ছই জন---প্রত্যেকের বেভন ২৭৫০, টাকা। কাইনাল বিভাগে এভদিন সেকেটারী ছিলেন একজন, বেতন ২৭৫০ টাকা: এবার একৰন সেকেটারী এবং একৰন স্পেশাল অফিসার বসানো হইরাহে—প্রত্যেকের বেতন ২৭৫০, টাকা। দেকেটারীর বেতন এক ধাপে ৮০০ টাকা হইতে বাছিয়া ২৭৫০ টাকা হইয়াছে। বর্ত্তমান কাইখাল সেক্রেটারীকে বসানে। হইয়াছে আর একজনের দাবি অভিক্রম করিয়া। 'গোলমাল' বন্ধ করিবার জ্ঞা 'দাবি-অভিক্রান্ত' কর্ম্মচারীর বেতনন্ত ২৭৫০ টাকা করা হইয়াছে।

আমাদের বাধীন রাষ্ট্রের বাঙালী কংগ্রেসী কর্ণবারবুদ্দক্তে জিল্লাসা জুরিতে ইচ্ছা হয়—'এইজ্ছই কি জুদিরাম, প্রস্কুল, কানাই ও "নেতাজী" দেশের বাধীনতার জ্ঞ আত্ম-বিসর্জন করিয়াছিলেন? যদিও এইরূপ প্রশ্ন করিতে আমাদের লক্ষা

#### পাবলিক সাভিস কমিশন

हेश्टबक এवर मुमलिम लीन चामटल भाजाकावांनी अवर সাম্প্রদায়িক প্রয়ো**ল**নে পাবলিক সাভিস কমিশনকে অবভা করা হইয়াছে। কমিশনের স্থপারিশ নাক্চ করিয়া উচ্চপদে লোক নিয়োগ তখনকার প্রথেতির রেওয়াল ছিল, কারণ উচ্চতম পদগুলিতে নিজ্ব লোক বসাইতে না পারিলে জাতীয় খাৰ্থের স্বলে সাম্রাক্ষ্যবাদী বা দলগত স্বার্থ বন্ধায় রাখা যায় না। কমিশনের সিঙান্ত পদে পদে নাক্চ করিলে ধারাপ দেবার বা উহা প্রকাশ হইয়া পভিলে সমালোচনার স্টি হয় বলিয়া কমিশনকে ফাঁকি দেওয়ার জ্বন্ত একটি পতা আবিছত হয়। ছয় মাসের কম সময়ের জন্ত লোক নিয়োগ করিলে ক্ষিশনের অন্নুযোদন প্রয়োজন হয় না বলিয়া বড় বড় পদে ছয় মাপের নামে লোক নিয়োগ করা হটত: তারপর ক্রমাগত তাহাদের কার্য্যকাল চার মাস হয় মাস করিয়া বাডাইতে বাডাইতে বছর ছয়েক তাহাদিগকে দিয়। কাৰ করাইয়া শেষে এমন অবস্থায় উহা কমিশনের নিকট পাঠানো হটত যে ঐ নিয়োগ অমুমোদন ভিন্ন কমিশনের পক্ষে পড়াম্বর থাকিত না ৷ এই চালাকিটা মুসলিম লীগ আমলে বুব বেশী পরিমাণে হইয়াছে। লীগের যে নেতার। এবানে ইছা করিয়া গিয়াছেন তাঁহারা পাকিস্থান প্রথেতি স্থাসীন হওয়ার পর কিছ আর এই কাছ করেন না। পাকিস্তান গবথে ও উচ্চতম পদে লোক নিয়োগ সম্বদ্ধে অত্যন্ত কড়াকভি করিতেছেন। সতর বংসরের অভিজ্ঞতা না থাকিলে কাহাকেও ডেপ্ট সেক্রেটারী করা হয় না এবং ২০ বংসরের কম অভিয়তা-সম্পন্ন লোককে সেক্ষেটারী করা হয় না। কোন মন্ত্রী নিজের ইচ্ছামত সেক্রেটারী লইতে পারেন না। সেক্রেটারী, ডেপুট সেকেটারী প্রস্থৃতি বাছিয়া দিবার ক্স একট বোর্ড আছে। ঐ বোর্ডের সি**ডাভ পা**ণ্টাইবার ক্ষমতা কাহারও নাই। অভান্ত উচ্চপদে লোক নিয়োগ সম্পর্কে পাবলিক সাভিস ক্ষিশনের সিদ্ধান্ত চূড়ান্ত।

নিজের দেশে পাকিছান যাহা করিতেছে, নিজের দেশে আমরা কিছ তাহা করিতেছি না; বরং হিন্দুরাজ্যে আন্ধ- প্রতিষ্ঠার ক্ষম্ম লীগ এখানে যে সব কীণ্ডি করিয়া গিয়াছে, সেইঞ্লিই এখানে এখনও অনুস্ত **হইতেছে। বছসংখ্যক** নিয়োগে পাবলিক সাভিদ কমিশনকে কাঁকি দেওয়া হইতেছে। এখানে ছুইটি মাত্র দুঙাভ দেওয়া যাইভেছে। সরকারী বাস পরিচালনার জ্বন্ধ একটি নুতন পদ স্পষ্ট হইল এবং উহার বেতন निक्षांत्रिक इटेन ১२৫० होकां; इस मान नात्म छेहा नांजिसा ১৫০० होको इहेरत । अवह धहे भन भूदरनद कम् भावनिक সাভিস কমিশনকে থ্যোগ দেওয়া হইল না. কোন বিজ্ঞাপন দেওয়া হইল না লোক নিযুক্ত হইয়া কাকে লাগিয়া গেল। ক্রয়ন্তম আপিসের একজন এসিপ্টান্ট কমিশনার ছুনীতিদমন বিভাগের তদত্তে ব্যতিবাস্ত হট্যা শেষে চাণকানীতি অনুসর্গ করিয়া আট মাসের ছুটি লইয়া বিলাত চলিয়া গিয়াছেন। ভাঁহার স্থলে আট মাসের জন্ম লোক নিযুক্ত হওয়ার কথা এবং নিয়মান্ত্রসারে উহার ভ্রম্ম পাবলিক সাভিস কমিশনের অন্ত্র-মোদন আবক্তক। কিন্তু কমিশনকে না জানাইয়া সেখানে লোক নিয়োগ করা হটয়া গিয়াছে। ক্রয়গুৰু বিভাগের কর্ত্ত-পক্ষ কেন এক্সপ করিলেন তাহার কারণ আছে। এস্থানে মাস-খানেক পূর্বে আর একটি এদিষ্টার্ট ক্ষিশনারের পদ খালি হয়। ইঁহারা বাঁহাকে স্থপারিশ করিয়াছিলেন কমিশন তাঁখাকে অযোগ্য বিচার করিয়া তাঁখার চেয়ে জুনিয়র এক জনকে ঐ পদে নিযুক্ত করেন। মাত এক যাস পূর্বে কমিশন হাঁহাকে বাতিল করিয়াছেন তাঁহার নাম আবার ঐ এসিষ্টার্ট ক্ষমিশনার পদেরই জন্ত পাঠানো নিরাপদ নতে মনে করিয়াই ছয়ত এবার তাঁহাকে সরাসরিভাবে নিয়োগ করা হইয়াছে। আমাদের মতে ক্রয়শুক বিভাগীয় কর্তাদের এই কান্ধ পাব-লিক সাভিস কমিশনের মর্থাদার হানিকর হুইয়াছে এবং এ বিষয়ে ওাঁছাদের হন্তক্ষেপ করা উচিত। ক্মিশনের সদস্তেরা এখনও যদি কমিশনের মধ্যাদা রক্ষা করিতে অপারগ হন. এবং তাঁহাদের যদি এখনও এইভাবে অবজ্ঞাত হইতে হয় তবে আমৱা বলিব যে পাবলিক সাভিদ কমিশন তুলিয়া দিয়া জন-সাধারণকে একটা বড় খরচ হইতে অব্যাহতি দেওয়াই ভাল।

#### তুপ্রাপ্য বৃত্ত্র

বন্ধ এখনও জনসাধারণের নিকট যথাপুর্ক ছ্প্রাণ্য এবং ছর্মুল্য রহিয়া গেল। এদিকে পূলা আসিয়া পড়িয়াছে। বন্ধপ্রাপ্তির আখাস লোকে অসংখ্য বিশ্বতি মারফত পাইয়াছে এবং পাইতেছে, কিছু আসল বস্তুর দেখা এখনও মিলে নাই।

কাপড় সহয়। ভারত-সরকার কিছুতেই যেন মনস্থির করিতে পারিতেছেন না। ভারতীয় পার্লামেকে এক প্রান্তর উত্তরে ডাঃ ক্লামাপ্রসাদ মুবোপাবাায় সরকার কর্তৃক আটক বন্ধ ও বল্লের ভবিষ্যৎ মূল্য সম্পর্কে সরকারী কার্য্যক্রম বিব্বত ক্রেম। ডাঃ মুবোপাবাায় বলেন যে গত ৩০কে জুলাই সমন্ত মিলের গুলামকাত কাপড় সরকার আটক করিয়াছেন এবং মিল কর্তৃপক্ষকে তাঁহাদের গুলামকাত বন্ধ সম্বন্ধ সমন্ত তথ্য সরকারকে সরবরাহ করিতে নির্কেশ দেওয়া হইয়াছে।
মিল কর্তৃপক্ষ যে তথ্য সরবরাহ করিয়াছেন তাহা হইতে দেখা
যাইতেছে প্রায় ৪,১৭,৩০০ গাঁহট কাপড় আটক করা হইয়াছে।
কেন্দ্রীয় সরকার কেবল মিলের কাপড় আটকাইয়াছেন,
ব্যবসায়ীদের কাপড়ে তাঁহারা হাত দেন নাই, উহা আটক
করিবার দায়িছ প্রাদেশিক সরকারসমূহের হাতে ছাড়িয়া
দেওয়া হইয়াছিল। এই কাপড়ের পরিমাণ কত ডাঃ শ্রামা—
প্রসাদ তাহা বলিতে পারেন নাই,কারণ প্রাদেশিক সরকারের
উহা ভারত-সরকার
কর্তৃক আটক গাঁহটগুলির মধ্যে ১,৫৭,০০০ গাঁইট বিলি
করিবার কণ্ড ইতিমধ্যে নির্কেশ দেওয়া হইয়া গিয়াছে।

কাপড়ের দাম সন্থকে ডাঃ মুবোপাধাায় বলেন যে টেরিফ বোর্ডের স্থারিশের যথোপযুক্ত মর্যাদা রাখিয়া সাময়িক ভাবে মূল্য নির্দ্ধারণ করা হইয়াছে। আমাদের মতে মূল্য নির্দ্ধারণের ভার টেরিফ বোর্ডের উপরেই সম্পূর্ণক্রপে ছাড়িয়া দিলে ভাল হইত। তাহাতে বাবসায়ী বা জনসাধারণ কাহারও বলিবার কিছু থাকিত না। কিছু এই দায়িত্ব শেষ পর্যান্ত সরকারী কর্মচারী এবং মিল মালিকদের উপর অপিত হওয়ায় দাম চড়া করিয়া বরা হইয়াছে এবং জনসাধারণ ইহাতে অসপ্তই হইয়াছে! চিনি, কয়লা প্রভৃতির মূল্য নির্দ্ধারণ সম্বন্ধে গবর্মেণ্ট যে ভাবে বাবসায়ীদের অভায় আবদার এবং উচ্চপদম্ব সরকারী কর্মচারীদের স্বাব্দ্ধিপ্রণোদিত সমর্থনকে প্রাথান্ত দিয়া চলিয়াছেন, কাপড়ের বেলাতেও ভাহাই ঘটতেতে বলিয়া লোকে সম্পেহ করিতেছে।

छो: यूरवीशीवारियद यटि काश्र होनान जन्मर्क खाख:-প্রাদেশিক বাধানিষেধই বল্লসফটের জ্ঞা দায়ী নতে। একং নিষের না থাকিলে সীমান্ত পার হইয়া কাপড়ের চোরাকারবা वाष्ट्रिया छिठित्य। निज्ञप्रक्ति याहाहे वन्न, এहे वाबानित्यवर বিশেষ নির্ভরযোগ্য নছে, কারণ দেখাই গিয়াছে যে কাপছ চালান সম্বদ্ধে প্রচুর কড়াকড়ি থাকা সম্বেও পূর্বপঞ্চাব, বোম্বা এবং পশ্চিমবদ হইয়া বহু কাপড় পাকিস্থানে গিয়াছে; 🐯 তাহাই নয়, পাকিস্থান হইয়া চীন হইতে আরব পর্যান্ত সম্ এশিয়ায় ভারতীয় কাপড় চোরাই চালান গিয়াছে। পশ্চি: বলের সীমান্তবর্তী কয়েকটি কেলায় কাপড় চালান সম্ব কঠোরতা অবলম্বনের পর পাকিস্থানী চালান কভক ক্ষিয়াছে, কিছ বন হইয়াছে ইহা আমরা বিখাস করিট প্ৰস্তুত নহি। কাপড় চালান কাহাৱা দেয় গবন্ধে উ তাহা ছাতে ना, वा शादामा जागारेया अक मखाद्य मदश मानिट পারেন নাইহা আমরা বিশ্বাস করি না। আসামে কাণ পাঠাইবার নাম করিয়া মন্তবড় ব্যবসায়ী পাকিস্থানে চোর

কারবার চালাইয়াছে, ইহার প্রতাক্ষ প্রমাণ সত্ত্বেও এবানকার উদ্ধানন কর্ত্বেল বা সংশ্লিষ্ট পুলিস উহা বদ্ধ করিবার চেষ্টা মাত্র করেল নাই। পাকিছানে কাপড়ের ব্যাপক চোরাকারবার চালাইতে গেলে যে অর্থ, বন্ধ্র-ব্যবসায়ে অভিজ্ঞতা এবং সংগঠন থাকা আবক্তক, কলিকাভার বেনী লোকের ভাহা নাই। ইহাদের থাতাপত্র এবং কার্য্যকলাপ পরীক্ষা করিলে কাপড়ের চোরাকারবারের ব্লণ্ডছ বরিয়া টান পভিবে এবং এরূপ লোকের সংখ্যা মোটেই বেনী নহে।

ভারত-সরকারের নৃতন বল্পনীতি কার্যাকরী করিবার কল ভা: মুখোপাধ্যায় একট নৃতন বিল পার্লাদেণ্টে পাল করাইয়া লইয়াছেন। উহাতে অপরাধীদের কঠোর শান্তির বাবছা করা হইয়াছে। বিলটির একট ধারার বলা হইয়াছিল যে কোন ব্যক্তি চোরাকারবারী প্রমাণিত হইলে আদালত তাহার সমন্ত সম্পত্তি বাক্ষোপ্ত করিবার আদেশ দিতে পারিবেন। দক্ষিণ-ভারতের মুই কন সদন্তের প্রভাব জ্বমে এই ধারা বদলাইয়া এয়প করা হইয়াছে যে, অপরাধের শুরুত্ব অস্থায়ী আদালত সমপ্র সম্পত্তি অধবা উহার অংশ বিশেষ বাক্ষোপ্ত করিতে পারিবেন।

ভারতবর্ষের ছর্নীভিপরায়ণ ব্যবসায়ী এবং সরকারী কর্ম-চারী উভয়েই বুৰিয়া লইয়াছে যে তাহাদের প্রতি অমুক লাশীল লোকের অভাব নাই। আত্কাল নিমু আদালতে দভিত হইলেও হাইকোটে উহারা ধালাদ পাইয়া যাইতেছে। চোরা-কারবারীর মামলার বিচার সমগ্র ভাবে না হট্যা উচালের সপক্ষে আইনের কাঁক বাছির করিয়া সেই রদ্ধপথে উহাদিগকে ছাড়িয়া দেওয়া হইলে ছুৰ্নীতি কখনও বন্ধ হইতে পারে না। সন্দেহের সুখোগে ইহাদিগকে মুক্তিদান তে। আরও মারাত্মক। ইহাদের টাকার জোর, সমাজে প্রতিঠা অসাধারণ: মন্ত্রী এবং फैक्ट नवकाती कर्यां जीता जाता है। भानीस्थरके अवर बाहिनक वावश-भविषक महरक देवारक প্রভাবশালী প্রতিনিধিবৃদ্ধ রছিয়াছেন। অপরাধ অমুঠানের সমর ইহারা উচ্চতম ডিগ্রাপ্রাপ্ত অডিটার এবং একাউণ্টান্ট, পুলিস প্রভৃতির সাহায্য পায়। ধরা পঢ়িবার পর আদালতের भर्त्सीक छेकीन-वाबिशेद्ववा देशाया शक मधर्मन क्रवन अवर অনেক কম সাহেব ইহাদের প্রতি যে অমুকম্পা প্রদর্শন করিয়াছেন ভাহাতেও অনেক সমালদ্রোহী অকারণে নিভার পাইরাছে মনে হর। ইহাতে চোরের সাহস বাড়িরাছে এবং জনসাবারণ হতাশ হইরা পভিতেছে।

প্রায় ছই বংসর পূর্ব্বে সর্দার পাটেল ছ্নীতিদ্যন আইন পাস করিবা দিয়াছিলেন। সরকারী কর্মচারীদের ছ্নীতি নিবারণের জন্ত উহা পাস করা হর। অসং সরকারী কর্ম-চারীরাই দেশের সর্কবিধ ছ্নীতি এবং চোরাকারবারের ভক্ত; ইহারা সারেভা হইলে চোরাকারবার বন্ধ হইতে কিছুমান দেরী मानित्व ना । किन्न इनौंि एयन चारेन वचावसी स्रेयारे दृष्टिम । वाश्माद्याप्य च चार्त्माम्यवद करम कांद्राकादवाद বিল যদি বা ব্যবস্থা-পরিষদে পাস হটল তো ভারত-সরকার **छेश आहेकारेबा बाबिस्मन। आस्मानन वस ना रखबाब छेरा** অভিনালরণে কারী হইল কিছ ঐ অভিনাল অমুসারে একট মামলাও দায়ের হইল না : চোরাকারবার দমন ভো বহু দুরের কথা। রাজনৈতিক আন্দোলনের সময় যে সকল সেক্রেটারী কঠোর ছত্তে দমননীতি প্রয়োগ করিয়া এবং নিবিচারে শ্রেপ্তার চালাইয়া অসংখ্য নিরপরাধ পরিবারকে পথের ভিখারী করিয়াছিল, আৰু সেই সিভিলিয়ানেরাই চোরাকারবার এবং ছুৰ্নীতিদমন আইন কঠোর হতে প্রয়োগের বিরোধী এই কারণে যে তাহাতে বুৰি বা কাহারও প্রতি অবিচার ঘটে। উপযুক্ত সন্দেহে দঙ্গান চোরাকারবার এবং ছ্রনীতি দমনের মূল স্থ্য হইলে তবেই এই পাপ বন্ধ হইতে পারে। সন্দেহের মুযোগ, আইনের কাঁকড়া প্রভৃতি ইহাদের সপক্ষে গেলে কোন षिनहे इनीं छि पृत्र स्टेरन ना।

#### পশ্চিমবঙ্গের শিক্ষা বিভাগ

এই বংসরের পশ্চিমবছের বাজেটে শিক্ষা বিভাগের প্রভি খুব সুবিচার করা হইয়াছে বলিয়া মনে হয় না। মোট ৩১'১ কোট টাকা রাজ্যের মধ্যে শিক্ষা-খাতে মাত্র ২'১ কোট টাকা —অৰ্থাৎ মোট ব্যৱের শতকরা ৬'৭ অংশ মাত্র বরাছ করা হইয়াছে। এমন কি উন্নয়ন পরিকল্পনার বস্তু যে ৮৪ লক টাকা দাহায্য করা হয় তাহা পর্যন্ত এই ২'১ কোট টাকার মধ্যে ধরা হইয়াছে। करण अरे श्रीपाय मिका-विश्वक খরচের পরিমাণ একেবারে নিয়তম শুরে নামিয়া পিয়াছে। এই প্রসক্ষে এ কথা শারণ করা উচিত যে দশ বংসর আবা মুসলিম লীগের আমলেও মোট রাক্ত্রের শতকরা দশ ভাগেরও অবিক শিক্ষা বিভাগের অভ ব্যয়িত হইত, অবস্ত ছভিক্ষের সময় ইহার ব্যতিক্রম হইয়াছিল। শিকার ক্য বোহাই প্রদেশ তাহার রাজবের প্রায় শতকরা ১৭ ভাগ, মধ্যপ্রদেশ শতকরা ১৫ ভাগের অধিক, মান্তাৰ শত করা ১৪ ভাগের অধিক, এবং যুক্তপ্রদেশ শতকর। ১০ ভাগে অধিক বরচ করে। এই সকল প্রাদেশের রাজ্যভাঙারে মুদ্ধের বংশরগুলিতে প্রচুর বাছতি টাকা কমা হইয়াছে যাহা এখন কাতিগঠনমূলক কাৰ্যো ব্যৱিত ছওয়ার সম্ভাবনা। কিছ এই ছুর্ডাগা প্রদেশের নিৰুষ তেমন কোন বাছতি টাকা নাই। উপরস্থ আয়কর বাক্ষের দিক দিয়াও ইহার ধুব পুবিধা হয় নাই। আশা করা যায় যে প্রাদেশিক সরকারের পক্ষে অদূর ভবিষ্যতে ইহার রাক্ষরের অভত: শতকরা দশ ভাগ শিক্ষা সম্প্রসারণকল্পে ব্যয় করিবার ছন্ত ঐকাছিক প্রচেষ্টা করিবেন।

আমরা কানিরা উবির হইলাম, কেন্দ্রীর সরকার ইহাই দ্বির করিয়াছেন যে বর্তমান বংসরে পশ্চিমবদকে দ্বীর রাজ্য হইতেই উন্নয়ন পরিকল্পনার ৮৪ লক্ষ্য টাকার ব্যবস্থা করিতে হইবে। আমরা আশা করি যে বর্তমান রাজস্ব মন্ত্রী যিনি এক সময় কেন্দ্রে শিক্ষা, স্বাস্থ্য এবং কৃষি মন্ত্রী ছিলেন—বিষয়টি সম্বন্ধে উদার দৃষ্টিভঙ্গীর পরিচয় দিবেন এবং বর্তমান বংসরে শিক্ষা উন্নয়নকলে যে ৮৪ লক্ষ্য টাকা বরাদ্ধ আছে তাহা আর ইটিই করিবেল না। পশ্চিম বন্ধকে স্বীয় রাজস্বাদি হইতে উপরোক্ত অর্থের ব্যবস্থা করিবার ক্ত চাপ দিয়া যদি কেন্দ্রীয় সরকারের সাহায্য হইতে বক্তিত করা হয় তাহা হইলে তাহা আইনিভিক্ষ বিষয়ে দ্রদৃষ্টির পরিচায়ক হইবে না। বর্তমান শিক্ষাপদ্ধতির উৎকর্ম সাধনের প্রয়োক্ষন দীর্ঘকাল যাবং অমৃত্ত হইতেছে এবং আমরা বিশ্বাস করি যে শিক্ষা এখং রাজস্ব মন্ত্রীয়া এ বিষয়ে প্রগতিশীল মনোভাব অবলম্বন করিবেন।

মাধামিক বিভালয়সমূহের প্রচলিত শিক্ষাপছতির উন্নয়নকলে মাধামিক শিক্ষাকে ঠিক পথে পরিচালিত করিবার ভঙ্গ যে চেটা পুরু হইয়াছে আমরা উহাকে অভিনন্দিত করি এবং বর্ত্তমান শিক্ষাপদ্ধতি যে মূল নীতির উপর প্রতিষ্ঠিত তাহার পরিবর্তন সাধন করিবার বছ যে সাহাযাসুলক পরিকলনা প্রণয়ন করা হইয়াছে তাহার প্রতিও আমাদের আছরিক সমর্থন জানাই। ইহা বলাই বরং অধিকতর যুক্তিযুক্ত হটবে বে বর্ত্তমাদ পদ্ধতি আদে কোন মূল নীতির উপর প্রতিষ্ঠিত হয় নাই এবং এ পৰ্যায় অনেকটা বামবেরালী ভাবে অর্থ-সাহায্যাদিও বিভরণ করা হইয়াছে। প্রায় ৭৫০টি শ্বলের মধ্যে মাত্র ৩১৫টি স্কল এখন সরকারী সাহায়া পাইয়া থাকে। মনে एव যে এই ব্যবস্থার করেকটি সচ্চল অবস্থার বিভালরেরই উপকার হইতেছে এবং পল্লী অঞ্চলের যে সকল বিভালয়ের সাহায্য পাইবার দাবী অধিক সেগুলি উপেক্ষিত হই-ভেছে। পুতন স্বীম অসুসারে গবধেনি প্রাথমিক অবস্থার অভিরিক্ত তের লক্ষ্ণ টাকা ধরচ করিতে প্রস্তুত আছেন. প্রক্রেডির সিভান্ত এই যে, প্রভোক্ট সরকারী সাহায্যপ্রাপ্ত বিভালত্ত্ব (nided school) নিম্নলিখিত বিষয়গুলির উপযুক্ত বাবস্থার দিকে বিশেষ লক্ষ্য রাখিতে হইবে :

- ১। যোগ্যতাসম্পন্ন শিক্ষদের যথোচিত তত্তাবধান :
- ২। বেডনের ম্যুনতম হার নির্দারণ এবং শিক্ষকদের ক্ষ Provident Fund বা সক্ষ-ভাঙারের ব্যবস্থা করা।
- ৩। ছাত্র এবং শিক্ষকদের সংখ্যাস্থারী একটা বুক্তি-সদত অস্থাত নির্দারণ। মোট সংখ্যার অস্থাত হইবে ১:২০।
- ৪। বর্ত্তমান বেতনের হার কিঞ্চিৎ বর্দ্ধিত করিতে হইবে কিছ দয়িল ও মেধাবী ছাল্লদের উপর্ক্ত কনসেশনের ব্যবস্থা বাকিবে।
- ৫। ছুলের মর্ব্যাদা অস্থারী অবস্থান স্থল, বাড়ী, বেলার

  দার্ক এবং স্থান্তারকার ব্যবস্থা ইত্যাদির মান নির্মারণ।

७। যোগা পরিচালন-ব্যবস্থা।

এই প্রদেশের ইতিহাসে এই প্রথম প্রাইডেট ছুলের শিক্ষকদের প্রেড্যুক্ত বেভনের হার বাঁবিয়া দেওরা হইল। আশার কথা যে, বিলম্বে হইলেও ক্লাসগুলির আয়তন এবং শিক্ষকদের গুণপনা ইত্যাদি বিষয়ে সরকারের মনোযোগ আফুট হইয়াছে। বর্ত্তমান জীবনযাত্রা নির্বাহের ব্যয়বাছল্যের কথা বিচার করিয়া দেখিলে অবক্ত নির্দারিত বেভনের হার যথেট্ট বলিয়া বিবেচিত হইবে না। কিন্তু একথা অরণ রাধা উচিত যে যদি কোন বিভালয়ের পরিচালকবর্গ অধিকভর উচ্চহারে বেভন দিতে প্রস্তুত্ত থাকেন তাহা হইলে সরকার তাহাদের আংশিক ব্যয়ভার বহন করিবেন। এই শীম ক্তকগুলি সুদ্দু মুলনীতির উপর প্রতিষ্ঠিত বলিয়া ইহা সম্বর্শনযোগ্য।

#### পশ্চিম বাংলার লোক-সংগঠন

ভারত বিভাগের পর পশ্চিমবঙ্গ প্রদেশের সমস্ভাসমূহের
মীমাংসার পথ প্রায় দ্রতিক্রম্য হইয়া উঠিয়াছে। সংর্জ্ত
বাংলার বাওয়া-পরার ক্ষ অন্ত প্রদেশ বা দেশের উপর
নির্ভর করিতে হইত। বঙ্গ বিভাগের কলে সেই পর-নির্ভরতা
বাভিয়াছে। পশ্চিমবঙ্গ সম্পর্কে এই কথা বলা যায়, যে
শক্তির বলে মাত্র্য, সমষ্টিবঙ্গ মাত্র্য, বাঁচিয়া থাকে, সেই শক্তির
অভাব আমাদের মধ্যে দেখা দিয়াছে। কলিকাতা নগরীর
ঐশব্য আমাদিগকে আমাদের প্রকৃত দারিদ্যের কারণ অন্থসভান, করিবার প্রবৃত্তি দিতেছে না। এবং আমাদের রাষ্ট্রনেতা ও সমাজ-নেত্গণের এই সম্বন্ধে কোন স্ম্পন্ট বারণা
আছে কিনা সেই বিষয়ে আমাদের মনে নানা সম্পেহের উদয়
হইয়াছে। একট দৃষ্টাছ দিয়া তাহা বুঝাইতে চেটা করিব।

সম্প্রতি পশ্চিম বাংলার পরিষদে একট আইন পাস

হইয়াছে পশ্চিমবদের ভূমির উন্নতির কল। প্রদেশ-পালের
নামে আদেশ সিয়াছে প্রতি কেলার কর্ত্বপক্ষের নিকট বালি
ক্ষার বোঁক করিবার কল। এই ক্ষার উপর নৃতন শহর
রডিয়া তোলা হইবে মাহা হইবে ময়ংসম্পূর্ণ অর্বাং এই পরিক্ষাত শহরের অবিবাসীরা এই নগরমগুলীর উংপাদিত সম্পদ

হইতে নিকেদের জীবিকা উপার্জন করিতে পারিবেন।
এতদর্শে নদীয়া ক্ষনগর শহরের নিকট, কলিকাতার নিকটবর্ত্তী
ঢাক্রিয়া ক্ষন ও যাদবপুরের পথে যোধপুর ক্লাবের পার্শ্বর্ত্তী
ছানে ও মুর্শিদাবাদ ক্লোর বহরমপুর শহরের রেল-লাইন
ও সেনা-নিবাসের নিকটবর্ত্তী ৬০০ বিদা বাস মহল ক্ষার
উপর শহর গড়িয়া ভূলিবার পরিকল্পনা তৈয়ার হইতেছে।
বেসরকারী প্রতিষ্ঠানকেও এই কার্ব্যে সহযোগিতা করিবার
স্বযোগ দেওয়া হইবে।

बरे विवरत माणातरे बक्ती क्षत्र कता वारेरण भारत।

পশ্চিমবদের প্রধান প্রয়োজন কি-- ফুবির বিভার না শিল্প-বাণিজ্যের প্রতিষ্ঠা ? কোন্টা অনতিবিদ্যমে প্রয়োজন তাহা चित्र वा क्हेटल अहे बारमान लाक-गरगईरनत कहा वार्य कहेवात সম্ভাবনা আছে। স্বাস্থ্য সম্পদের হুত্ত পশ্চিমবদের নদী-দালা সংস্কৃত করিয়া দেশে কৃষির বিভারের উপর সমভ ট্রন্তির চে**টা** নির্ভর করিতেছে. এই বিষয়ে কি কোন তর্কের অবসর আছে ? পশ্চিম বাংলায় শিল্পপ্রিচার অবসর কতটা আছে: এই প্রশ্নের মীমাংসা হওয়াও প্রয়োজন। লিল্লের জন্ত প্রয়োজন সূলধনের, কাঁচা মালের, শ্রমিকের। পশ্চিম-বলের বাঙালীর মুলবন কি পরিমাণ বাটিতেছে, বিশেষজ্ঞগণ ভাহা বলিতে পারেন। এবানে বদের এমন বিশেষ কি কাঁচা মাল আছে, যাহা বুঁজিয়া পাওয়া সহজ নহে। পশ্চিমবক্তে যে সকল শিল-প্রতিষ্ঠান চলিতেছে, তাহার অধিকাংশ শ্রমিক ত অ-বাঙালী। পরিকল্পিত শহরসমূহ পূর্ববিদ্ধ হইতে আগত লোকের আশ্রয়ম্বল হইতে পারে। এই আগত ১৫।২০ লক লোকের মধ্যে বেশীর ভাগই মধ্যবিত্ত সম্প্রদায়পুত্ত। তাঁহারা কি শারীরিক পরিশ্রম করিয়া শিল্পের সেবা করিতে পারিবেন ? এবং এই জন-সমষ্ট্রিকে প্রামের আবহাওয়ার মধ্যে না বসাইতে পারিলে সমাজ-জীবনে এমন একটা বিপর্যায় দেখা দিবে যে রাষ্ট্রের পক্ষে ভার ভাল সামলাইবার চেটা কঠিন হুইবে ৷ বর্ত্তমান যুগে ধাষ্ট্রকে সর্ব্বকার্য্যে অঞ্জী হুইতে ইটবে, সকল কর্ম্মপ্রচেষ্টার নিয়ামক হইতে হইবে। পশ্চিম-বঙ্গের বিশেষ অবস্থায় এই দায় বিশেষভাবে অপরিহার্য। স্ত্রাং বড় বড় পরিকল্পনা গ্রহণ করিবার পূর্বে পশ্চিম বাংলার শাসক সম্প্রদায়কে স্থির করিতে হইবে কোনু কাজে তাঁহারা সর্বাপ্রথমে হাত দিবেন-ক্রমি-বিভারে না শিল্প-প্রতিষ্ঠায় ? এই ছুইটার মধ্যে অগ্র-পশ্চাৎ স্থির করিয়া কর্তব্য পথে অগ্রসর হইতে হইবে।

### কৃষি-বিভাগের প্রচার পত্রিকা

ক্ষিবিদ্ গ্রীদেবেজ্বনাথ মিত্র "ধাছ-উৎপাদন"—এই নামে একথানি ক্ষুদ্র পত্রিকা প্রকাশ করিতেছেন। কৃষক-কীবনের প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার আলোকে নানা সমস্থার আলোকনা এই কাগজে হয় বলিয়া ইহার একটা বিশেষ উপযোগিতা আছে। গত ১৬ই ভাজে তারিখের "ধাছ-উৎপাদনে" সরকারী কৃষি-বিভাগের যে কৃতিছের নমুনা দেওয়া হইয়াছে তাহা হাসির ধোরাক যোগাইবে বলিয়া আমরা উদ্ধৃত করিয়া দিলাম,—

সম্প্রতি পশ্চিমবদ কৃষি-বিভাগের একধানি সচিত্র প্রচার পত্রিকা আমাদের হস্তপত হইরাছে। পত্রিকাধানির নাম "অধিক ধান্ত উৎপাদন আন্দোলন—১৯৪৮-১৯৪৯।" আমরা আর্ট ছানি না, বুঝি না, স্বতরাং চিত্রগুলি সম্বন্ধে কিছু বলিলাম না। ভাষা সম্বন্ধে নীর্ব রহিলাম। কিছু ছই-একট্ট কথা না বলিয়া থাকিতে পারিলাম না। 'কাওপীর' বাংলা করা হইরাছে—এক প্রকার কড়াই ভাটি; ফ্রকগণ "এক প্রকার কড়াই ভাটি" কথার হারা কি ব্রিবেশ লামি না; "কাওপীর"-এর বালা প্রতিশব্দ আমরা লানি বলিয়াই ইহা ব্রিতে পারিলাম। খ্বই হুংখের ও আক্রর্যের বিষয় যে কৃষি বিভাগের পরিচালক-গণ লানেন না, "কাওপীর"-এর বাংলা হইভেছে বরবটি। দিতীয় ইংরেছী কথাটি দেওয়া হইয়াছে "সান হেল্ল"; ইহার কোন বাংলা প্রতিশন্ধ দেওয়া হয় নাই; খ্ব সম্ভব ইহা যে কি রকম বন্ধ তাহা প্রবধের রচমিতা মহাশ্ম জানেন না; লানিলে হয় ত লিখিতেন "এক রকম—"। ভাহাকে জানাইতেছি যে সাম হেল্লের বাংলা হছে—শণ পাট। তৃতীয় কথাটি হছে হাড়ের ওঁড়া একটি কৃত্রিম সার। এইয়প প্রিকা মুদ্রিভ ও বিতরিত করিয়া কোন ফলই হয় না; কেবল অর্থ নাই হয়।

#### জাহাজ নিৰ্মাণ ও নৌ-বাহিনী

ভনিতেছি পশ্চিম বাংলার মন্ত্রিমঙলী ভারতরাষ্ট্রের কেন্দ্রীয় গব্দেক্তির নিকট কলিকাতা নগরীর নিকটে ভাছাত-নির্মাণের কারধানা ও ডক নির্মাণের ব্যবস্থা করিবার জন্ম একট প্রভাব পাঠাইরাছেন। এ সম্বন্ধে ভাঁহারা কি উত্তর পাইয়াছেন জানি না। পত ১ই ভাত্ত (২৫শে আগষ্ট) তারিখে কেন্দ্রীয় ব্যবস্থাপক পরিষদে যে প্রশ্লোভরের বিবরণ প্রকাশিত হইয়াছে, তাহা পভিয়া মনে হয় যে কেন্দ্রীয় গবন্দেও ভাহাত নির্মাণ কার্য্যটা নিজের হাতে রাখিতে চান। ঐ তারিখে বাণিকা-মন্ত্ৰী শ্ৰীকিতীলচন্দ্ৰ নিয়োগী কাহাক নিৰ্ম্মাণ ও কাহাকী ব্যবসায় সম্বন্ধে গবলে তেঁর খীতির বর্ণনা করেন। সিদ্ধিয়া ষ্ট্ৰীম নেভিগেশন কোং, ইণ্ডিয়া গ্ৰীম নেভিগেশন কোং ও ভাৱত লাইন্স লিমিটেড এই তিন্ট কোম্পানীর হাতে ভারতরাষ্ট্রের ভাহাতী ব্যবসায়ের সম্প্রসারণের দায়িত হাড়িয়া দেওয়া ছইবে। এই সকল কোম্পানী রাষ্ট্রের সাহায্য পাইবে; রাষ্ট্র হইতে মূল ধন কোগান হইবে কিনা, তৎসম্বন্ধে কোন স্পষ্ট অভিযত পাওয়া যায় নাই। বে-সরকারী এই সব কোম্পানীর কর্ম-কর্তারা ভাষাত নির্দ্ধাণ করিবেন না। ভারতের উপকূলে ও অন্তর্বাণিজ্যের ক্ষেত্রে ভারতের জাহাজের স্থান প্রসার করিবার উদ্বেশ্ব লইয়াই তাঁহাদের সম্বাঠ থাকিতে হইবে।

এই সম্পর্কে একটা প্রশ্ন অপ্রাসন্ধিক হইবে না। জাহান্ত-নির্দ্ধাণ ও জাহাজী ব্যবসায়ের উন্নতির উপর নৌ-বাহিনীর উন্নতি নির্ভর করে। জাহাজী ব্যবসায়ে নিযুক্ত খালাসীরাই নৌ-বাহিনীর গোড়া-পঞ্জন করে। এই নৌ-বাহিনীর নির্দ্ধাণ সম্বন্ধে নানা জন্মনা-কর্মনা চলিতেছে। এখন পর্যন্ত আমর্মা ইংরেজের অভিজ্ঞতার হাত বরা হইরা আছি। ইংরেজ আমলে জাহাজী ব্যবসায়ে ও নৌ-বাহিনীতে বে খালাসী নিযুক্ত হইত বেশীর ভাগই সেই অঞ্চলের মুসলমান যাহা বর্তমানে 'পাকিছান' রাষ্ট্রের অভ্যূক্ত। এক মর্মন্দিংহ, চইগ্রাম, নোরাধালিশিও গ্রহুই হুইভেই প্রায় ৬০।৭০ হাজার ধালাসী রংকট করা হুইত। কলিকাভার বন্দর হুইতে যে সব জাহাজ সমুদ্র-পথে দেশ-বিদেশে গমন করে তাহাদের ধালাসী এখন পর্যান্ত এই চারিটি জেলা হুইতে আসে। এই অবস্থার কলিকাভার জাহাজ নির্মাণের কারধানা ও ডক নির্মাণ করিলেই বাঙালীর বৃদ্ধি ও প্রমের সার্থকতা হুইবে না। এই জাহাজ চালাইবার জন্ত ধালাসী চাই। এই ধালাসী আসিবে কোধা হুইতে ?

সমুদ্রগমন সম্বধে হিন্দু সমাক্ষের একটা সংস্থার বা কুসংস্কার খালাসী রংকট বিষয়ে হিন্দুর পক্ষে একটা বাধাসক্রপ ছইয়া দাঁড়াইয়া আছে। পূর্ববঙ্গের যে শ্রেণীর মুসলমান ধালাসী হইবার জন্ম কলিকাতা নগরীর বিদিরপুর অঞ্চলে ভীড় জমাইয়া থাকে, তাহাদের সম-শ্রেণীর হিন্দুরা এই বৃত্তির দিকে ছুটিয়া আসিবে, এরপ ধারণা আমাদের মাই। তাহার কারণ হিন্দু সমাজের সামাজিক রীতি একরূপ: খর-মুখো প্রকৃতি ও প্রবৃত্তি অন্তর্মণ। কারণ যাহাই হউক, যে অভাবের তাড়নায় পুর্ববেদের মুসলমান ভাহাজী ব্যবসায়ের কল্যাণে 'মামুষ' হটয়া উঠিতেছে, সেক্সপ অভাবের মধ্যে না পড়িলে বাঙালী হিন্দু "চাঁদ সদাগৱে"র অভ্করণে সপ্তডিকার খৃতি কিরাইয়া আনিতে পারিবে না। পশ্চিম বাংলার রাষ্ট্রনায়কগণ এই বিষয়ে একট চিন্তাশক্তি প্রয়োগ করিলে ভাল হয়। বাঙালী, কাওরা, **জেলে, ছলে, নমশু** ইত্যাদি নানা শ্রে**ণির** মধ্যে জলের ভর কম। তাছাদের মধ্যে ঠিক মত প্রচার করিলে তাহারাও লন্ধর বালাসী হইয়া চু'পয়সা উপার্জন করার পব পায় এবং ভারত-সরকারের নৌসেনার রংক্রটের একটা মৃতন ক্ষেত্র খুলিয়া যায়।

### ভাষা ও লিপির যুদ্ধ

শ্রাবণ মাসের "বাংলার শিক্ষক" মাসিক পঞ্জিকার প্রথম প্রবাধ করিলেবর শ্রীকালিদাস রায় ছ:ব করিয়া লিবিয়াছেন: "যদি বাঙালী-বিদ্বেম বশতঃ কোন ভারতীয় ছাঞ্র বাংলা পড়িবে না মনস্থ করে অথবা কোন প্রদেশ যদি বাংলা ভাষাকে বিদ্রিত করে তবে বাংলা ভাষার কোন ক্ষতি হইবে না; বদেশের সাহিত্য-শিক্ষার্থীরই কৃতি হইবে না এই সম্পর্কে তিনি অহম ভাষাভাষী লোকসমন্ত্রীর একাংশের উংকট মনোভাবের নিন্দা করিয়া বলিয়াছেন: "আসামে অসংখ্য বাঙালী বাস করেন…কিছ স্বাধীনভাবে নিজেদের মাতৃভাষা অস্থীলন করিতে পারিবেন না, নিজের ভাষা প্রকাশ ছলে ব্যবহার করিতে পারিবেন না অথবা মাতৃভাষার সাহাব্যে শিক্ষালাভ করিতে পারিবেন না—এ ব্যবহা হইলে ভারতে মাতৃবের চরম পরাধীনভার প্রতিঠা হইবাছে ব্রিতে

হইবে।" কিছ ভাগ অঞ্চলের অবস্থা দেখিরা মনে হয় বে আমালের দেশের চিন্তামারকগণও এইরূপ উৎকট মনোভাব পোষণ করিয়া থাকেন। এই সম্পর্কে মহা-পণ্ডিত রাহল সাংফ্রত্যায়ণ মহালরের একটি বিশ্বভির প্রতি মনোযোগ আকর্ষণ করিতে চাই। এলাহাবাদের দৈনিক "লিভার" পাত্রকায় ২৯শে আগই তারিবে চার কলমব্যাপী এই বিশ্বভিটি প্রকাশিত হইয়াছে।

গত জুলাই মালে গানীশীর কথা প্রতিধ্বনিত করিয়া ভারতরাষ্ট্রের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত ক্বাহরলাল নেহের মান্ত্রাকে এক বক্ততা প্রদান করেন। রাষ্ট্রের ভাষা ও লিপি সম্বন্ধে তিনি "হিদ্যুস্থানী" ভাষার সমর্থন করেন: তাহা লিখিত হইবে ছুই লিপিতে—দেবনাগরী ও উর্দ্ধতে। মহা-পভিতের বিবৃতি তারই প্রতিবাদ। যে ভাষার তিনি তাহা করিয়াছেন, তাহা যুদ্ধ-খোষণার সমান। পণ্ডিত জবাহরলালের কলরব (uproar) হিন্দীকে ভার আসন হইতে টলাইতে পারিবে না : এমন পরাক্রমশালী কেং কি আছেন যিনি সব প্রদেশে হিন্দীকে রাষ্ট্রভাষার পদে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন—হিমাচল প্রদেশ, যুক্ত-लापन, विदात, मधालापन, मालवा-ताक्दान ७ मध्य प्राप्त ---সেই উচ্চপদ হইতে ঠেলিয়া ফেলিতে পারিবেন ?" এইরপ চেষ্টা বাৰ্থ ছইবে। "মহান বাঞ্জিগণ" এই চেষ্টা যে করেন নাই তাহা নয়। কিন্তু সংখ্যা-পরিষ্ঠের ছর্কার মত পোবিন্দ-বল্লভ পদ্ধের মন্ত্রীসভাকে বাধা করিয়াছে হিন্দী ভাষাকে প্রাষ্ট্রভাষাক্রপে অবলম্বন করিতে।

রাহলকী পণ্ডিত ক্ষ্যাহ্যলালকে বিদ্রুপ করিয়াছেন যে তিনি গ্রন্থকার হইয়াও "ক্ষনতার ভাষায় সাহিত্য স্ট্রী করিতে পারেন নাই" এবং উর্জু লিপিতে ও দেবনাগরীতে লিখিত হিপুন্থানী ভাষার সমর্থনের শক্ষাতে একটা কৃটবুদ্ধি সূক্যায়িত আছে। ইংরেকী ভাষার প্রাধান্তকে বজার রাখিবার ক্ষরই এয়প করা হইয়াছে। আর একটা প্রভাব কাক করিতেছে। মুক্তপ্রদেশের কয়েকট সম্লাভ পরিবারের (noble class families) হিন্দী সম্বন্ধে যে অবহেলার ভাব ছিল ভাহা আকও বিভ্যমান আছে; সেই পবিত্র আবহাওয়ার (holy atmosphere) মধ্যে হাহারা বৃদ্ধিত হইয়াছিলেন তাহারাই আক হিন্দীর মাহাল্য উপলব্ধি করিতে পারিতেছেন না।

হিন্দী বনাম উর্জ্ব মোক্ষমায় যে মতান্তরের স্ট হইরাছে
তার পরিণতি দেখিতেছি মনান্তরে গড়াইয়া যাইবে। রাজ্লজীর মত পণ্ডিত লোক যে ভাষায় হিন্দুখানীর সমর্থকদের
আক্রমণ করিয়াছেন, তাঁহার চেলা-চামুগুরা কি করিতেছেন
তাহার পরিচয় পাই বিহারের বহু-ভাষাভাষী অঞ্চা
আসংব্য সমস্তাসভুল ভারতরাট্রে ভাষা ও লিপি লইয়া একটা
রীতিয়ত বৃদ্ধ চলিবে দেখিতেছি। রাট্রের পরিচালক বাঁহারা
তাঁহারা ইছা আটকাইতে পারিবেন বলিয়া মনে হয় মা।

সন্মিলিত জাতিপুঞ্জ সংসদ

ভারতরাই সন্মিলিত কাতিপুঞ্ব সংসদের আদালতে ছট্ট নালিশে করিয়াদিরণে উপস্থিত হইরাছে: একটিভে দক্ষিণ-আফ্রিকার খেতাল শাসক-গোচীর ভাগামীরূপে। বিক্লভে নালিশ পুরাতন হইলেও নৃতন করিয়া আবার ইছা আনা হইয়াছে, কারণ পুরাতন অত্যাচার এখনও চলিতেছে। प्रक्रिय-चाक्किकांत शरदार्थित श्रीणिनिति पार्यी करत स धरे নালিশ বারিক করিয়া দেওয়া হউক। সন্মিলিত কাতিপুঞ্জ সংসদ এই দাবী প্রহণ করে নাই; নালিশটাকে নথিভুক্ত রাখিবার নিৰ্দেশ দিয়াছে। যে বৰ্ণবিদ্বেষে পুৰিবীর সর্বশ্রেষ্ঠ গণতান্ত্রিক রাষ্ট্র আমেরিকার যুক্তরাষ্ট্র দোষী, সেই দোষে অভিযুক্ত ছইয়া দক্ষিণ-আফ্রিকার শ্বেতাঞ্চ প্রব্যেষ্টকে কেন কাঠগড়ায় দ্বাভাইতে হুইবে, এবং হুইলে যুক্তরাষ্ট্র কেন তাহার পক্ষ হুইয়া ছুইট ক্লাবলিবে না, এই বিষয়ে একটা এ২স পাকিয়া ঘাইতেছে। শেষ পৰ্যান্ত দক্ষিণ-আফ্ৰিকা মোকৰ্মায় ছারিয়া ঘাটবে কিনা, এ সম্বন্ধে নিশ্চিত করিয়া কোন কথা বলা কটন। তাহারা ত শাদাইয়া রাবিয়াছে যে তাহাদের ষ্বোয়া ব্যাপারে নাক গলাইলে ভাছারা স্থিলিত জাতিপুঞ্জ সংসদ ত্যাগ করিয়া চলিয়া ঘাইবে।

ভারতরাষ্ট্রের দ্বিতীয় নালিশ পাকিয়ানের বিরুদ্ধে। এই ছই রাষ্ট্র উভয়েই সন্মিলিত জাতিপঞ্চ সংসদের সভ্য। এই প্রতিষ্ঠানের আইন অনুসারে কোন সভ্য অন্ত সভ্যের বিশ্লবে যুদ্ধ পরিচালনা করিতে পারেনা। এই আইনের আশ্রয়ে ভারতরাষ্ট্র পাকিস্থানের বিরুদ্ধে নালিশ দায়ের করিয়াছে যে. ভারতরাষ্ট্রের অন্তর্ভুক্ত কাশ্মীর রাজ্যের বিরুদ্ধে পাকিস্থান রাষ্ট্র ভাহার দৈওবাহিনী ও গুঙাবাহিনীকে লেলাইয়া দিয়াছে, তাহারা কাশ্মীর রাজ্যের প্রকার বনসম্পত্তি দুঠন ক্ষিয়াছে, খুৱবাড়ী পুড়াইয়া দিয়াছে এবং স্ত্ৰীলোকের উপর পশুস্তভ অত্যাচার করিয়াছে। গত জাতুয়ারি মাসে এই নালিশ দারের করা হইরাছিল : প্রার পাঁচ মাস তাহার শুনানী চলে। এই সম্বৰে "পাকিস্থানের" পরবাষ্ট্র-মন্ত্রী ক্রনাব কাকর-উল্লার্থী षत्नक कृष्ठेजक करवन , षत्नक विशा कथा वरमन : কাখীরে "পাকিস্থান" সৈঞ্জের উপস্থিতি শ্রেক্ অধীকার করেন। সন্মিলিভ স্থাভিপুঞ্জ সংসদের এই কথাটা বুঝা উচিত ছিল যে "পাকিছান" রাষ্ট্রের এলাকা অতিক্রম না করিয়া পশ্চিম সীমান্তের শুঙাবাহিনী কোন প্রকারে কাশ্মীর আক্রমণ করিতে পারে না ৷ তাহাদের অঞ্জসর হইতে দেওয়াই কাশীর রাক্য আক্রমণে সাহায্য করার সামিল। সন্মিলিভ ভাতিপুঞ্ব সংসদ এই কৰা ভানিয়া এবং বুৰিয়াও বোকা সাবিষাহে এবং জান-পাৰীর মত আচরণ করিয়াছে। এট विवरत जारमिक्कात मुक्कताहै । ब्रिटिन्त मात्रिक । मार्थे বেৰী। কেন ভাহারা ভারের পথে চলিতে পারিল না:

কোন্ খাৰ্থবৃদ্ধির প্ররোচনার ভাছার। "পাকিছানে"র অভারকে প্রশ্রম দিল এবং কাশ্মীর-রাজ্যের প্রজাপুঞ্জের যগ্রণা বিলম্ভিড করিল, তাছা আমরা জানি না।

সে যাহাই হউক, মুক্তরাষ্ট্র ও ত্রিটেনের সহায়তায় "পাকি-স্থানের" মুখ রক্ষা হইল: সরেক্ষিনে তদভ করিয়া কে দোষী কে নির্দোষী ভাহা ছির করিবার হুছ একট প্রস্তাব প্রহণ করা ছইল। ভারতরাষ্ট্রোক্ষ্মায় হারিয়া গেল: "পাকিস্থানীর্ণ" এইক্লপে প্রশ্রম পাইমা দিওণ উৎসাহে অভার করিয়া চলিল। সন্মিলিত ভাতিপঞ্ল সংসদ কর্ত্তক প্রেরিত কমিশন করাচী দিল্লী জীনগরে মন্তিবর্গের সঙ্গে দেখা-সাক্ষাৎ क्रिल: डांक्रांस्त्र वक्क्ता छनिल: "পाकिशनी" रेमल-বাহিনী ও ওপাবাহিনী কর্ত্তক বিধ্বত অঞ্চলে ঘোরাফেরা করিল; অত্যাচরিত লোকের মুখে তাহাদের ছঃখের কৰা क्षिनित । (प्रविद्या-क्षिनिश्चा, "शक्षिक्षान" बार्छेद कर्गवादशरणद মুবে তাহাদের সৈত্বাহিনীর কাশীর আক্রমণে সহায়-ভার স্বীকৃতি ভনিষা এবং স্বচক্ষে ভাহার প্রমাণ দেবিয়াও "পাকিস্থানের" বিরুদ্ধে কোন শান্তির প্রভাব করিতে পারিল না। তংপরিবর্ত্তে ছই পক্ষের আক্রমণকারী ও আক্রান্থের নিকট যুদ্ধ হইতে বিরত হইবার ব্রুছ অনুরোধ জানাইল। ভারতরাষ্ট্র তাহা স্বীকার করিল: আক্রমণকারী "পাকিস্থান" নানা কূট-ভৰ্ক তুলিয়া তাহা অধীকার করিয়া ৰসিয়া আছে। তাহাতে তাহার কোন লক্ষা নাই : শান্তির ভয়ও নাই। কারণ তাহার পশ্চাতে আছে ব্রিটেনের গোপন উৎসাহ এবং এই উৎসাহে আমেরিকার সুক্তরাষ্ট্রের ইবন প্রদান। কমিশন কিরিয়া গিয়াছে পূর্বভন রাষ্ট্রসভ্সের শ্বাশানে, কেনেভা নগরীতে বসিয়া রিপোর্ট লিখিতেছে। এবং জারও কিছু ক্ষয়তালাভ করিরা কাশ্মীরে কিরিয়া জাগিবে বলিয়া লোনা যায়।

ভারত সংক্রান্ত তৃতীয় নালিশে ভারতরাষ্ট্রকে আসামীরপে স্থিলিত কাতিপুঞ্জ সংস্থান উপস্থিত হইতে ইইরাছে। ফরিয়াদি নিকাম বাহাছর। পাঁচ দিন ভারতরাষ্ট্রের সৈষ্ট্র-বাহিনীর সঙ্গে কুরাইয়া তাঁহার মুদ্ধের স্থাদ মিটয়াছে; তিনি পূর্বাতন লাম্বেক আঁলী মন্ত্রিমণ্ডলীর বাড়ে দোয় চাপাইয়া দিয়া নিক্ষের নির্কোষিতার প্রমাণ করিতে চান, এবং ভাহার প্রাতন পার্বাবর্গ রালিশ উঠাইয়া লইতে চান। কিন্তু তাঁহার প্রাতন পার্বাবর্গ আচল ভঠাইয়া লইতে চার না; ভাহারা নিকামবাহাছরের আদেশ অগ্রান্থ করিয়া মোক্রমা চালাইয়া মাইতে দুচ্সকল। বুঁটির কোরে ভেড়া নড়ে; তাহাদের বুঁটি ইল সেই চক্রান্থকারিশ যাহারা কাল্মীরের ব্যাপারটাকে এলপভাবে ঘোরাল করিয়াছে। নিকামবাহাছরকে কোর করিয়া মোক্রমা ভূলিয়া লইবার ক্ষম্ব বার্য করা হইয়াছে, এই অন্ত্রাতে হারদরাবাদের ঘটনাকে নিবি হইতে গারিক করিয়া

দিবার একটা চেঙা চলিতেছে। এই চেঙার মূলে যে ব্রিষ্টশের হাত ভাবে, এই বিষয়ে ভাষাদের মনে কোন সন্দেহ নাই। সরকারী ভাবে ভারতরাষ্ট্রের বরোয়া ব্যাপারে ভড়িত না হইয়া পড়ার একটা ভান চলিতেছে: এই ভানের মধ্যেও ব্রিটেনের স্বার্থ আছে। পররাষ্ট্র-দচিব মি: বেভিন এই ক্ৰাটাই স্পষ্টভাবে গভ ১৫ই গেণ্টেম্বর (১লা আহিন) ভারিবে ভাষাদের ভনাইয়াছেন। হায়দরাবাদ একটা রাষ্ট্র কিনা, এই বিষয়ে চূড়ান্ত মীনাংসার পূর্বে আমাদের একট। কথা সর্বদা মনে রাখিতে হইবে: ব্রিটিশ সাঝাকোর অন্তর্ভু অনেক দেশ সধরেও এই প্রশ্ন উঠিতে পারে এবং হারদরাবাদকে রাষ্ট্র বলিয়া স্বীকার করিয়া लहरण चार्यात्मद शत्क श्रुविश इटेटर नां. अकृष्टे। निक्रत পাকিয়া থাইবে যাহা আমাদের বিরুদ্ধে প্রয়োগ হইতে পারে। "...On the question obit (Hyderabad) being a state or not a state, I have always to keep in mind that there are other cases even within the empire, for which it might create a precedent..." এত সাবধানতা সত্তেও মি: বেভিন তাঁহার বা ত্রিটিশ শাসক গোষ্টির প্রকৃত মনোভাব চাপিয়া রাখিতে পারেন মাই। তিনি ভারতরাষ্ট্রের মধ্যে একটা যোদ্ধ-মনোভাবের আবিষ্কার করিয়া (I regret, as every one must, that in this new Dominion a war-like spirit has developed) হায়দরাবাদ সম্পর্কে আমাদের আক্রমণকারী রাজ্য বলিয়া একটা প্রমাণ সংগ্রহ করিয়া দিয়াছেন।

এই বিষয়ে ছ:খ করিয়া লাভ নাই'। এইরপ অভিযোগ, মিধাা অভিযোগ, আমাদের বিরুদ্ধে ইংরেজের পক্ষ হুইতে আসিবে এবং ইংরেজের কেউ বরার লোকের অভাব হুইবে না। এমন কি ইংরেজের বিরুদ্ধপক্ষায় সোভিয়েট রাষ্ট্র হুইতে প্রচার করা হুইভেছে যে ভারতরাষ্ট্র এবন হুইভেই পূর্ব্ব এশিয়ায় সামাল্য বিভারের কল্পনা করিতেছে। স্মৃতরাং মিঃ বেভিনের ব্যবহারে আমাদের উত্তেজিত হুইলে চলিবে না।

#### দক্ষিণ আফ্রিকার হুম্কি

সন্মিলিত কাতিপুঞ্জ সংসদের অবিবেশন চলিতেছে করাসীদেশের রাজবানী প্যারিসে। ভারতরাষ্ট্র দক্ষিণআফ্রিকার বিরুদ্ধে তার অভিযোগ লইয়া আবার উপস্থিত
ছইয়াছে। এই বিষয়ে আলোচনা স্থগিত রাখা ছইরাছে; দক্ষিণ আফ্রিকার এই আবদার সন্মিলিত কাতিপুঞ্জ সংসদের বর্তমান অবিবেশনে গৃহীত ছইয়াছে। এই আবদার সম্বন্ধে দক্ষিণ আফ্রিকার মনোভাব এইরূপ: এই রাষ্ট্রের লোক সংখ্যা ১ কোটির কিছু বেশী। ভাহার মধ্যে দক্ষিণ আফ্রিকার আদিম অবিবাসী বাক্ট্রভাতির সংখ্যা প্রার ৭৫ সক্ষ: উভিয়া আসিয়া ভূভিয়া-বসা খ্রভাক

সম্প্রদায়ের সংখ্যা প্রায় ২৫ লক্ষ। ভারতবাসীর সংখ্যা মাত্র ২ লক ৫০ হাজার। ২৫ লক খেতার রাষ্ট্রে সমস্ত ক্মতা অবিকার করিয়া আছে: অ-খেত কেছ কোনৱপ রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা ভোগ করিবে, এই কথায় তাহারা শিহরিয়া উঠে: কামান-বন্দুক, গোলাগুলির অধিকার তাহাদের হাতে বলিয়া তাহার৷ ভাষ ও স্থবিচারের উপর পদক্ষেপ করিয়া ভার্মায় চলিয়া যাইতে পারিতেছে। "রাষ্ট্র ও সমাব্দে শ্বেত ও অ-খেতের মধ্যে সাম্যোর কোন স্থান নাই"-এই কথা বলিয়াও দক্ষিণ আফ্রিকার এই খেতাক সম্প্রদায় ত্নিয়ার বুকে সভ্য বলিয়া পরিচয় দিতেছে। এই অক্টায় সম্ভব হইশ্বাছে এই জ্ঞায়ে বেওঁমান জগতে খেতাল জাতিসমূহ গায়ের জোরে ও বিজ্ঞানের কল্যাণে ছনিয়ার উপর নবাবী চালাইয়া যাইতেছে। এই সাহসেই দক্ষিণ আফ্রিকার অর্থ-সচিব মি: এরিক লোউ সন্মিলিত জাতিপুঞ্ল সংসদকে শাসাইয়াছেন যে যদি ভারত্রহের অভিযোগ স্বীকার করিয়া লওয়া হয় বা তংসম্বন্ধে কোন আলোচনা চলিতে দেওয়া হয় তবে "দক্ষিণ আফ্রিকা জাতিপুঞ্জ সংসদ পরিত্যাগ করার কথা বিবেচনা করিতে বাধা হইবে।" এবং এই হুম্কিলে উহার: ভারতবর্ষের অভিযোগ সম্বন্ধে সব আলোচনা স্থগিত রাখিতে বাধা ছইয়াছে। এই সংবাদে আনামরা আন্দর্যায়িত হট নাই। ইটালিও জাপান এইরূপ ছম্কি দেখাইয়াই আবিদিনিয়া ও মাঞ্রিয়া দ্বল করিয়াছিল। দশ বংসর যাইতে না ধাইতে আমাদের সেইক্লপ একটা অক্তায়ের সপুৰীন হটতে হটয়াছে। পুৰ্বতেন রাষ্ট্রসঞ্জ লীগ অব নেক্সনস্ ) যেরপভাবে বার্থতায় বিলীন হটয়া গিয়াছিল, সন্মিলিত জাতিপুঞ্জ সংসদ (ইউনাইটেড নেজনস্ অরগেনিজেশন) কি সেই পথেই চলিতেছে না ? এই প্রশ্ন তুলিয়া কোন সান্ত্ৰনা পাওয়া যাইবে না। কিন্তু বিশ্ব-বিবানে জ্ঞায়, অবিচার ও অংহমিকা স্থায়ী হয় না। তাহার জঞ্জ রক্ত-গঞ্চা বহিয়া যায়, ইহা ভানি। মানব-প্রকৃতি এই রক্ত-ক্ষে অপ্রসর হয়, তবুও অঞায়কে সহা করে না। ইহাও ইতি-হাসের সাক্ষ্য।

#### গৃহাবাদের সমস্যা

"সংগঠন" জাতিগঠন কর্দ্বের একমাত্র মাসিক মুখপত্র।
ব্যাতনামা কংগ্রেসকর্মী শচীন্দ্রনাথ মিত্র ইহার প্রতিষ্ঠাতা
এবং শ্রীমতী অংশুরাণী মিত্র ইহার সম্পাদিকা। গঠনমূলক
কর্ম্ব সম্বন্ধে এই পত্রিকাটির মতের মূল্য আছে। ভাত্র মাসের
সংগঠনে গৃহাবাসের সমস্তা সম্বন্ধে যে সম্পাদকীয় মন্তব্য
প্রকাশিত হইয়াছে ভাহা বিশেষভাবে প্রণিবানযোগ্য।
উহাতে বলা হইয়াছে যে "যদিও মহামুহের সময় ইংলত্রের
মত ভারতের কৃটির ও অট্টালিকা শক্রবিমানের হারা ধ্বংসপ্রাপ্ত
হয় নাই, তথাপি ভারতের ক্ষনাবারণের ক্ষত্র বাসোপ্যোগ্র
গৃহাবাসের সমস্তা আছে। ইহা দৈত্রপ্ত ভারতের বহু

পরাতন সমস্থা। স্বাধীন ভারতে স্বাতীয় উন্নতির পরিকল্পনা অফুসারে বছ নগর, উপনগর, কারধানা, উপনিবেশ প্রভৃতি প্রতিষ্ঠা করিবার প্রয়োক্ষনও দেখা দিয়াছে। স্থতরাং গ্রহ নিশ্বাণের উপাদান কোণা হইতে আসিবে, ইহা এক সমসা। সিমেন্ট, কংক্রীট, রঙ, ইম্পাতের সরঞ্চাম ইত্যাদি গৃহনির্মাণের টেপকরণ স্বদেশে যথেষ্ট পরিমাণে উৎপন্ন হয় না. এবং বিদেশ ছইতেও বিশেষ পরিমাণে পাইবার উপায় নাই কারণ সেধানেও এ বিষয়ে সমস্তা বর্তমান। পাকিস্থান হইতে আগত শরণার্থী সমাজের জ্ঞ গৃহাবাস নির্মাণের প্রয়োজনীয়তা দেখা দিয়া সম্ভাও অভাব আরও কটিল হইরা উঠিয়াছে। কিছ আমরা বুরিতে পারি না, এ ক্লেজে কেন গবন্মে উ এবং জ্বনসাধারণ স্বয়ং–সম্পূর্ণতা ও আজুনির্ভরতার সহক আদর্শটি ভূলিয়া ব্হিয়াছেন। দেশে মাটির অভাব নাই, বাঁশ খড় কাঠও পাওয়া যায়। সুকৃচি থাকিলে এবং দেশের ইঞ্জিনিয়ার সমাজ কৃতক্টা বৈজ্ঞানিক বুদ্ধি দিয়া সাহায্য করিলে, ঐ উপাদান দিয়াই সুত্রী ও স্বাস্থ্যসন্মত গৃহাবাস লক্ষ্ণ রচিত হইতে পারে। পণ্ডিত নেহর একবার এ বিষয়ে জনসাধারণের প্ৰতি আবেদন কানাইয়াছিলেন কিছু তাহার কোন কল হটয়াছে কি না বলিতে পারিনা। কিছ সর্কটকালেও যদি আগুনির্ভরতার এই সকল সহজ্ব পথা গ্রহণ না করিয়া আমরা চপ করিয়া বসিয়া থাকি, তবে চৈতত হইবে কবে ?"

বাংশা-সরকারের পুনর্ব্বসতি বিভাগের পক্ষে এই মন্তব্যট অবঙাপাঠ্য বলিয়া আমরা মনে করি।

#### ক্লাবের জমি ও বাড়ার জমি

কলিকাতায় টালিগঞ্জে ইংরেজদের ছইটি বড় ক্লাব আছে---যোৰপুর ক্লাব এবং গল্ফ ক্লাব। তদ্বাতীত একটি ব্লেসকোস রহিয়াছে। যোৰপুর ক্লাবের এলাকা প্রায় ৩০০ বিদা এবং গল্ফ ক্লাবের প্রায় ১১০০ বিধা। কলিকাতার বুকের উপর এই পরিমাণ কমি মৃষ্টিমেয় কয়েকজন ইংরেজের ধেলাবুলার ব্যবহাত হইয়া আগিতেছে। ইহা ছাড়া তাঁহাদের আরও অনেকগুলি বিভীৰ্ণ কমিসমেত ক্লাব আছে, গড়ের মাঠ ভো আছেই। কয়েক বংসর আগে বাংলা-সরকারের কর্মচারীরা একটি সমবায় গৃহনিশ্বাণ সমিতি গঠন করিবা যোধপুর ক্লাবের অমিটা উহার মালিকের নিকট হইতে গ্রহণ করিয়াছেন কিছ ফ্লাবের ইন্ধারা ১৯৪৯ সাল পর্যন্ত আছে ব্লিয়া দ্বল লইতে পারেন নাই। ইজারার সর্ভাত্মসারে যোগপুর ক্লাব আরও প্ৰব বংসর উহার মেয়াদ বাড়াইবার দাবি করিতে পারেন এবং সেই দাবি তাঁহারা তুলিয়াছেন। ইহাতে সম্বায় সমিতি কলিকাতার বাসন্থান সমস্তা সমাধানের পথে থেটুকু অঞ্জসর क्रेबाएक जोका गार्व क्रेबा याहेरत । अस्तक हेश्टबक स्मर्टन চলিয়া গিয়াছেন, বাঁহারা বহিয়াছেন ভাঁহাদের ধেলার অনেক 'ছান রহিয়াছে। তাহার জ্ঞ শহরের উপরে বাদোপযোগী **এতিশুলি ক্**ষি **আট**কাইয়া বসিয়া থাকা উচিত নহে।

এ বিষয়ে সবচেয়ে আশ্চর্য্যের বিষয় প্রবর্মন্টের বিক্রিয়তা।

ক্রাবের কর্তাব্যক্তিদের আপত্তির কলে ভ্রি-

পরীবদের ভিটানাট এবং চাষের ক্ষম হইতে উচ্ছেদ করিবার ক্ষল দ্যাও একুইকিশন আইনের প্রয়োগ অ্বরহীনভার সহিত যে ইংরেকোর করিয়া গিয়াছেন। এবন তাঁহারাই এই আইনের কবল হইতে নিকেদের ক্লাবের ক্ষমি বাঁচাইবার প্রাণপণ চেটা করিতেছেন এই দৃষ্ঠ বিচিত্র হইতে পারে, কিন্তু গবর্মে ক এই কার্য্যে স্কৃতিত হইতেছেন ইহাই আক্রম্য। অনাবশ্রক খোবনপুর এবং গল্ককার ত্লিয়া দিয়া ঐ ক্ষমি অবিলব্দে অভ্যাবশ্রক বাসগৃহ নিশ্বাণের ক্রপ্ত সরকারের দখন পর্যা কর্ত্রা; তুইটারেসক্রোদ্যর্ম একটাতে সাহেবদের গল্ক বেলার স্থান করিয়া দিলেই যথেই।

সরকারী কর্ম্বচারীদের গৃহনির্মাণ সমিতি স্থির করিষাছেন যে, তাঁহারা বে-সরকারী লোকদেরও ঐ স্বীমের
স্থযোগ লইতে দিবেন। তাহার কল্প তাঁহারা যোবপুর প্লাবসংলপ্প আরও কিছু কমি ধবল লইতে চাছেন। ঐগুলি
কলিকাতার পেশাদার কয়েকজন অবাঙালী ফাটকাবাজের
কমি এবং ইহারাও ঐ সব কমি অতিরিক্ত চড়াদরে বিক্রের
করিবার লোভে সমবায় সমিতিকে ছাড়িতে রাজি হইতেছেন
না। ল্যাও একুইজিশন আইন অন্থারে এই ক্রমিগুলিও
উহাদের কেনাদামে দবল লইয়া সমবায় সমিতির হাতে অর্পন
করা সরকারের একাত্ত কর্ত্তবা। সরকারী কর্ম্বচারীদের
এই সমবায় সমিতির কার্যা অবিলম্বে সকল হওয়া উচিত
এইজ্ব যে উহার সাকলা দর্শন করিলে অন্থ্রপ সমবায় সমিতি
গঠনের হারা গৃহসমস্যা নিবারণে লোকের উৎসাহ ক্রিবে এবং
দেশের মললের কর্ম ইহা একাত্ত লেয়াজন।

#### শরণার্থী ছাত্রদের উপর চাপ

কলিকাতা বিশ্ববিভালথের ভাইস-চ্যান্সেলারকে সভাপতি করিয়া শরণার্থী ছাত্রদের সাহায্যের ক্রন্ত একট ক্ষিটি গঠিত হইয়াছে। ছাত্রদের পড়াওনার স্থবিধার্থ প্রয়োজনীয় অর্থ-সাহায্য এবং থাকিবার স্থান সংগ্রহ করিবার জ্বন্ত কেন্দ্রীয় ও প্রাদেশিক গবন্দে ণ্টের সহিত দরবার করাই ক্ষিটির প্রধান কাভ হইবে বলিয়া মনে হইতেছে। যে সভায় কমিট গঠিত হয় সেখানে জনৈক বক্তা বলেন যে, প্ৰায় ২০০ ছাত্ৰ বভিতে অবৰ্ণনীয় ছৰ্মশার মধ্যে বাস করিয়া পড়াগুনা চালাইতে বাধ্য ছইতেছে। কলিকাতা শহরের উপকঠে বহু স্থি আছে। भिषात वीन वेष कार्र किया बाहित यह निर्माण कविया जिल्ला অনেকের থাকার স্থবিধা হইতে পারে। পাকা বাড়ী ছাড়া পাকা চলিবে না এমন কোন কথা নাই, শরণার্থীরা মাটির ধরে থাকিতে আপতি করিবে ইহা বিশ্বাসযোগ্য নছে। যাহারা কলিকাতায় পড়ে ভাহাদিগকে শহরের কলেভে আসা-যাওয়ার ব্যবস্থা করিয়া দেওয়া উচিত এবং যথাসম্ভব অপর সকলকে বিভিন্ন মকখল কলেকে ছড়াইয়া দেওয়া উচিত। সিমেন্ট লোহার আশার বসিয়া না থাকিয়া সেবানেও অনায়াসে মাটির ধর তৈরি করিয়া লওয়া যায়।

উপরোক্ত সভার অধ্যাপক প্রমদারশ্বন মত্মদার পরণার্থী

যাহা বিশ্ববিদ্যালয় অনায়াসে দূর করিতে পারেন। তিনি বিলয়াছেন যে বিশ্ববিদ্যালয় এই সব ছাত্রের নিকট হইতে ২০ টাকা 'মাইগ্রেশন কী' এবং ৫ টাকা 'লেট কী' আদায় করিতেছেন। সর্ব্বায়ান্ত পরিবারগুলির উপর এটা একটা বন্ধ বোকা। আসলে ইহারা সকলেই কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্র; রাষ্ট্রবিপ্লবে ইহারা পাকিস্থানে পড়িয়া গিয়াছে বলিয়া ঢাকা বোর্ডে পরীক্ষা দিতে বাব্য হইয়াছে এবং বোর্ডের পরীক্ষার কল দেরীতে বাহির হুইয়াছে বলিয়া ইহাদের নিকট হইতে 'লেট কী' আদায় করা হুইতেছে। বিশ্ববিদ্যালয় কর্ত্বক ছাত্রদের নিকট হুইতে এই অভিরিক্ত অর্থ আদায়ের কারণ আমরা বুবিতে অক্ষম। বদান্তভাটা অপরের উপর দিয়া যাক, আমার স্বার্থ যোল আনা বন্ধার থাকুক এই মনোভাব বিশ্ববিদ্যালয়ের গক্ষে শোভন হয় না।

#### ছোয়েবুলা থাঁ

নিভাষ রাজ্যের রাজাকার-বর্মরতার শেষ হইয়াছে। কিছ ভাছারা রাজ্যের ভীবনে যে বিপর্যায় আনিয়াছে, মামুষের মনকে যেরপভাবে বিষাক্ত করিয়াছে, সেই বিষ-ক্রিয়া দূর হইতে এখনও অনেক দিন লাগিবে। সেই বিষের উৎসমুখ মুসলমান সমাজের সংকীর্ণতার মধ্যে নিছিত, যে সংকীর্ণতার দক্ষন তাহারা ভারতবর্ষকে সাত-আট শত বংসবের মধ্যে মনেপ্রাণে গ্রহণ করিতে পারিল না। সকল মুসলমানই এই (मार्य इहे हिल्मन ना वा अधनक नाहे। कि**न्ध** अहे वाणिकम সংখ্যার এত কম যে তাঁছারা মুসলমান সমাব্দের চিন্তার ও কর্ম্মের উপর কোন প্রভাব ছাপন করিতে পারেন নাই বা পারিতেছেন না। দৃষ্টাভ-খরপ বাদশাহ আকবরের ভাষ প্রবল প্রতাপ তীফুষী ও দুরদৃষ্টিসম্পন্ন একছত সমাটেরও वार्यकांत्र कथा वसा यादः। सामन्त्रावान बादमान नारवानिक ছোৱেবুলা খাঁও এই পৰ্যাৱভুক্ত। সাম্প্ৰদায়িক সমৰৱপ্ৰৱাসী এই যুৰক রাজাকাবের ছাতে বিনষ্ট হটয়াছেন। কাসিম রেজভি নাকি ত্রুমভারী করিরাছিল যে, যে মুসলমান হারদরাবাদ রাজ্যে মুসলমান প্রভূত্বের বিরুদ্ধে কথা কহিবে, ভাহার হাত পা কাটিয়া পরে হত্যা করা হইবে। হোয়েবুলা বাঁতে এই ভাবে হতা। করা হয়।

হারদরাবাদ রাজ্যে যে অত্যাচার ও গণতম্ববিরোধী কার্য্যকলাপ চলিতেছিল তাঁহার নিজের "ইম্রোক" পত্রিকার দিনের পর দিন তাহার বিরুদ্ধে তং সনা কর। হইতেছিল। সেইজভ তিনি পাসকশ্রেণী ও ভাহাদের পৃষ্ঠপোষিত রাজাকার ওভাদের চক্ষ্পুল হইয়া পড়েন। ওসমানিয়া বিশ্ববিভালয় হুইভে পাঠ সমাপ্ত করিয়া যৌবনের প্রারম্ভ হুইতে তিনি নিজামশাহী রাজ্যের অনাচারের বিরুদ্ধে সংগ্রামের ব্রুত্ত প্রহুদ্ধ করেন। ১৯১৯ সালের ১৮ই অক্টোবর তারিবে তাঁহার জন্ম; ২৯ বংসর বরসে তিনি গুরুষাত্রকের হাতে প্রাণ হারাইলেন। "তাক" নামক উর্ক্ সাপ্তাহিকে তাঁহার সাংবাদিক জীবন আরম্ভ হয়। সরকারের আদেশে যথন তাহা বছ হইয়া যায় তথন তিনি ব্রীনরসিংহ রাও পরিচালিত

করেন। সরকারী ও রাজাকর জত্যাচারের বিরুদ্ধে সংগ্রাম বন্ধ করিবার উদ্ধেক্ত এই পত্রিকাধানিকেও গলা টিপিয়া মারা হয়। ভারপর "ইমরোজের" আবির্ভাব।

ছোরেবুরা খাঁ বীরের মত বাঁচিয়াছিলেন; মৃত্যুও হইল উাহার বীরের মত। সাদেশিকতার পেবার কতটা আন্ধ্রুলালা হইলে নিবের সমাব্দের বিরুদ্ধে লোকে মাইতে পারে, তাহার মাহাত্ম আমাদের অদর্ভম করিতে হইবে। ছোরেবুরা বাঁর বেচ্ছামৃত্য ভারতরাষ্ট্রের মুসলমানের অবিকার প্রতিষ্ঠা করিয়া পেল; ভারতরাষ্ট্রের কর্তব্য নির্দেশ করিয়া পেল। এই ত্যাগ তাঁহার সহধর্ষিণীর জীবনে সান্ত্রনা আনিবে। তাহার ছইটি সম্ভান এই আদর্শে অন্প্রাণিত হইয়া দেশের মনকে বিশুধ্ব করিবে। তাহারাই হইবে ভারতরাষ্ট্রের প্রতী; ভারতপদ্ধার প্রচারক।

#### রামানন্দ চট্টোপাধ্যায়-মৃত্যুবার্ষিকী

প্রসিদ্ধ সাংবাদিক রামানক চটোপাধ্যারের পঞ্চ মৃত্যু-বার্ষিকী উপলক্ষে গত ১৩ই আধিন সাধারণ রাজ্যমান মন্দিরে এক মৃতিসভা হয়। ত্রীযুক্ত হেমেক্সপ্রসাদ ধোষ সভাপতির আসন প্রহণ করেন।

অধ্যাপক প্রিয়রঞ্জন সেন বলেন—"প্রবাসী পত্রিকার স্থচনা হইতে শেষ পর্যান্ত রামানক বাবু নিক্তে আভালে থাকিয়া অভ্যের ক্ষত ক্ষেত্র প্রত্তিত করিয়া দেন। চিন্তালীল পাঠকদের কাছে প্রবাসী ছিল অপরিছার্য।"

শ্রীযুক্ত মাধনলাল দেন বলেন—রামানন্দবাব্ ছিলেন অপূর্ব্ব মনীবাসন্পর কর্মবোরী। অধদের শিক্ষার কর্ম অকর এবং বালকবালিকার শিক্ষার কর্ম সচিত্র বর্ণপরিচয় তিনি লিখিতে আরম্ভ করেন। ভবিষ্যং রাষ্ট্র ও সমাক্ষ কীবনের উদ্ধল স্বপ্র দেবিয়া তিনি শিক্ষারত এহণ করিয়াছিলেন। তাঁহার হৃদয় ছিল আকাশের মত উদার এবং মনীবা ছিল সাগরের মত গভীর।

শ্রীমুক্ত হেমেশ্রপ্রসাদ বোষ সভাপতির বক্তৃতায় বলেন—
"বাসী" পত্রিকার সন্পাদকরণে রামানন্দবাবু মেরেবিগকে
সেবাপরারপতায় উবু ছ করিতে চেটা করেন। তিনি প্রধীপ,
প্রবাসী ও মডার্ণ রিভিন্ন পত্রিকার সন্পাদক ছিলেন। তাঁছার
সাংবাদিক সাধুতা সকলের অক্করনীয়। তাঁছার সন্পাদকীয়
মন্তব্যে গভীর জান শুবু নয়, সভ্যের প্রতি নিটা এবং দেশ ও
লাতির প্রতি গভীর ভালবাসার পরিচয় বাকিত। সেই আদর্শ
আন্ধ একান্ত প্রয়োলন হইরাছে। তাঁছার সাংবাদিক তার আদর্শ
আনাদের কাছে প্রবতারার মত উক্ষ্য হইরা বাকিবে। কোন
বিন ভিনি বার্থ-প্রবোদিত হইরা সাংবাদিকের কান্ধ করেন
নাই। সাংবাদিক হিসাবে তিনি শিক্ষকের কান্ধ করিরাছেন।
সেইক্রভ তাঁছার প্রতি অল্পরের প্রভা নিবেদন করিতেছি।

## পূজার ছুটি

শারদীর। পূজা উপলক্ষে প্রবাসী কার্য্যানর ২২শে আরিম (৮ই অক্টোবর) হইতে ৪ঠা কার্ষ্টিক (২১শে অক্টোবর) পর্যন্ত বন্ধ থাকিবে। এই সমরে প্রাপ্ত চিষ্টিপত্র-টাকাক্ডি

### অবস্থা ও ব্যবস্থা

#### ঞীৰিমলাচরণ দেব

"অবস্থা ব্ৰিয়া বাবস্থা" আমাদের দেশের একটা প্রাচীন প্রবাদবাক্য। এই অল্লাক্ষরের মধ্যে কতকালের পৃর্বাস্ক্রমে সঞ্চিত অভিজ্ঞতা অন্তর্নিহিত এবং এই "অভিজ্ঞতা" সবটাই নিষ্ট নহে। কারণ অভিজ্ঞতা বলে বে, অবস্থা ব্রিয়া যদি বাবস্থা করা যার, তাহা হইলেই কল্যাণ হয়। আর, অবস্থা না ব্রিয়া ব্যবস্থা করিলে বা অবস্থা ন্রিয়াও একটা কাল্লনিক লোকের ভাবে আবিষ্ট হইয়া ব্যবস্থা করিলে অকল্যাণ অবশুগুরাবী। কল্পলাকের দোহাই পাড়িলে সে অকল্যাণ ব্যাধ করা যায় না।

তাই যথন মহাভারতে পাইলাম "বর্মো ছাবছিক: স্বভ:" বড আনন্দ হইল।

এখন "ধর্ম" কি ? সাধারণতঃ পুরিয়া থাকি সম্প্রদায়বিশেষের এক প্রকার বিশাস। যথা—হিন্দু ধর্ম, মুসলমান
ধর্ম, খ্রীষ্টান ধর্ম ইত্যাদি। বস্তুতঃ "ধর্ম" শব্দের ব্যুৎপত্তিগত মূল অর্থ ইইতেছে "যাহা ধারণ করিয়া রাথে, যাহা
মান্থ তথা সমাজকে অবসন্ন ইইতে দেয় না।" প্রকৃতই,
যথন মান্থ্য সংসারের ও নিজ মনের মধ্যে ঘাত-প্রতিঘাতে
"কান্দিশীকো ভয়ক্ততঃ" ইইয়া বিপ্রান্ত ইইয়া পড়ে তথন সে
অবসন্ন হয় ও নাশের দিকে যায়। সে সম্বে যদি সে
এমন কোন ও অবলম্বন পায় যাহাকে ধরিয়া সে দাড়াইতে
পারে, সে বাচিয়া যায়। এই অবলম্বই আদিম ধর্ম"।

আমার মনে হয় প্রাকৃতিক শক্তির উদাম অভিব্যক্তিই আদিম "ধর্মে"র মৃল। যথন প্রবল ঝড় বহে, যথন প্রবল ঝড় ছইটা বৃক্ষশাথা ঘুট ইইয়া অগ্নুংপাদন করে এবং দেই অগ্নিতে সমগ্র বন দগ্ধ ইইয়া যায়; যথন অবিশ্রাস্ত বৃষ্টিতে সমগ্র পৃথিবী প্লাবিত হয় এবং জীবজ্বন্ধ অসহায় ভাবে ভাসিয়া চলিতে থাকে, তথন এই সমস্ত প্রাকৃতিক বিপর্যায়ের শক্তি যে অবারণীয় তাহা অহতব করিয়া মাছ্য বিহলে ও বিশ্রাস্ত ইইয়া পড়ে। তথন দে স্বভাবতঃই মনে করে যে, যদি দে এই বায়ুর নিয়ামক শক্তি, এই বৃষ্টির নিয়ামক শক্তি, এই অগ্রির নিয়ামক শক্তির গরণাপন্ন হয়, ভাহা হইলে দেই অ-প্রাকৃত (supernatural) শক্তি প্রস্ন ইইবে ও ভাহাকে বক্ষা করিবে। এইরূপে দে যথন যে শক্তির শরণাপন্ন হয়, স্বভাবতঃই দে সেই-শক্তিকে সর্বময় সর্বপ্রধান বলিয়া স্তুতি করে। পরে কালক্রমে দে অহত্ব করে বে, দে ভিন্ন ভিন্ন শক্তির যে উপাদনা করিতেছে, দে

এই এক মহাশক্তির অন্তিম্ব ও সর্বব্যাপিত্র অমুভব করিয়া তাহাকেই অবলম্বন করে। এইরপে মান্ত্র "বহুদেব" হইতে "একদেব" ধারণায় উপস্থিত হয়। জনমে একান্ত প্রাণাদান বারা বুঝে যে, গাহাদের "বহু" মনে করিতেছে তাহারা তক্তঃ "এক" এবং এই "এক"ই বিভিন্ন অভিব্যক্তি দারা "বহু" রূপে প্রকাশ পাইতেছেন। বাহাই হউক, মান্ত্র্য এই "একদেব" অবলমনেই বিশ্রান্ত অবজা হইতে উত্তীণ হইয়া স্থৈয়া লাভ করে।

এই অবস্থাতেই শুব, স্বভি, পূজাদির উৎপত্তি। এদেশে এই স্তব-স্বৃতি পূজা ক্রমে যাগযজ, শ্রোভ, মার্র, গুহাদি ক্রিয়ার্মণে পরিণত হয়। ইহাই ২ইল ''অ-প্রাক্কত ধন্''।

ধর্মের অপর এক রূপ আছে—"সমাদ্রধর্ম।" যথন মন্থ্য-মিথ্ন একেলা থাকে, তথন অপর কোনও জন্তু-মিথ্ন হইতে তাহার বিশেষ প্রভেদ থাকে না। এমন কি, প্রথম প্রথম যথন একাধিক মন্থ্য-মিথ্ন একত্র অবস্থানাদি করে তথনও স্থায়ী বন্ধন কিছুমাত্র থাকে না। স্বল্পমাত্র কারণে ইতস্ততঃ বিচ্ছিন্ন হইয়া পড়ে। তথনও "সমজ" মাত্র। কিন্তু ক্রমে মন্থ্য্য-মিথ্নের। সংগবদ্ধ হয়। তথন নিয়মাদির আবিভাব হয়। ত নিয়মাদির দ্বারা নবগঠিত সংগ চালিত হওয়ায় ক নিয়মগুলিই সংগকে স্থায়ী বন্ধনের দ্বারা ধারণ করে এবং বিক্লিপ্ত বা বিচ্ছিন্ন অবস্থা হইতে রক্ষা করে। এই স্থায়ী বন্ধনই "সমাজ"-এ পরিণত করে। এই নিয়মগুলিই "সমাজ্বম্ম"।

কাল কমে পূর্বোক্ত প্রাক্ত ধর্ম সমগ্র সমাজকে প্রভাবিত করিয়া ব্যাপকতর "সমাজধর্মে"র অন্তর্ভুক্ত হয় এবং ঐ যুক্তধর্ম সমাজের সর্বাঞ্চীণ বন্ধনের স্বষ্টি করে। এই যুক্তধর্মই শুধু "ধর্ম" বলিয়া অভিহিত হইবার যোগ্য, কারণ এই যুক্ত ধর্মই সমাজকে স্বতোভাবে স্বপ্রকারে বারণ করিয়া রাথে।

হিন্দুগণের নীতির বিশেষত্ব এই যে উথাতে "ধর্ম" অর্থে পূর্বোক্ত তৃই ধর্মের যুক্তরূপ নুঝায়। প্রতীচ্যের religion শব্দ আমাদের "ধর্মে"র ঠিক প্রতিশব্দ নতে। প্রতীচ্যের religion পূর্বোক্ত "অ-প্রাকৃত ধর্ম" মাত্র নুঝাইয়া জাতির জীবনের অংশমাত্রে আবদ্ধ। হিন্দুর "ধর্ম" জাতিকে স্বাঙ্গীণ ব্যাপিয়া আছে।

"অ-প্রাক্ত ধর্ম", "সমাজ ধর্ম" ও তাহাদের যুক্তরূপের

মূলস্ত্র এক হইলেও সকল সমাজে উগদের কেহই একই আকাবে আবিভূতি হয় না। সংসারের সকল **ক্রিনিষের মত "ধর্ম"ও একাধিক কারণ দ্বারা সভ্যটিত।** উৎপত্তির সময় যে সমস্ত কারণ যে ভাবে স্ক্রিয় থাকে, তদ্বারাই "ধর্মে"র আকার নিয়মিত ও নিধারিত হয়। কারণ-সমূহ একই ভাবে বা পরিমাণে বা শক্তিতে সকল সমাজে. কোনও সময়েই থাকে না ও থাকিতে পারে না: এইজন্ম "ধর্মে"র আকার কোনও তুই সমাজে ঠিক এক হইতে পারে না। কিছু না কিছু পার্থক্য থাকিবে। এই পার্থক্যের প্রধান কারণ দেশের ভৌগোলিক অবস্থান ও জলবায় ও জাতি (Ethnology or race); বাস্তবিক পঙ্গে দেখা যায় যে, তংকালীন সমগ্র অবস্থা অর্থাৎ দেশের ভৌগোলিক অবস্থান, ধলবায়, জাতি, অপরাপর জাতির সহিত নৈকট্য বা দূরত্ব প্রভৃতি নানাপ্রকার অন্তক্তন ও প্রতিকৃত্ত কারণের সহিত সামঞ্জু করিয়া যে নিয়মসমষ্টি হয়, তাহাই "ধর্ম"। সমগ্র "অবস্থা" দারা নিয়মিত ও নিধারিত ২য় বলিয়া "বর্ম" সতাই "আবম্বিক"।

ইহা হইতে স্পষ্ট বুঝা যায় যে অবস্থার পরিবর্তন হইলে "ধর্ম"ও তদক্তরূপ পরিবর্তিত হয়। এক অবস্থায় যাহা "ধর্ম" অপর অবস্থায় অর্থাৎ পূবাবস্থা পরিবতিত হইলে তাহা আর "ধর্ম" থাকে না, ভাহা "অ-ধর্ম" হট্যা পড়ে। "অ-ধর্ম" অকল্যাণের আকর। যেমন, ব্যক্তিগত ভাবে বলি, আজ আমার শরীর বেশ স্কন্ত, এক প্রকারের আহারাদি আমার শরীরের পক্ষে অন্তক্ল, অর্থাৎ স্বাস্থ্য ও পুষ্টি বিধান করে। অবস্থানুষায়ী বলিয়া ইছ। "ধৰ্ম"। আগামী কাল যদি আমার শরীর স্থত না থাকে, তাহা হইলে পুর্বদিনের আহারাদি আমার শরীরের পক্ষে অন্তুকুল ইইতে পারে না, বিশেষ প্রতিকৃল হইবে। পরিবতিত অবস্থাতে পূর্ববৎ আহারাদি করিলে স্বাস্থ্যের হানি, এমন কি প্রাণনাশ পর্যান্ত, হইতে পারে। অবস্থান্ত্যায়ী নহে বলিয়া ইহা "অ-ধর্ম" এবং দেই-জন্মই অকল্যাণের কারণ। যদি বাঁচিতে হয়, নিজ সত্তার অন্তিত্ব বজায় রাখিতে হয় তাহা হইলে অবস্থার পরি-বত নের সঙ্গে সঙ্গে ব্যবস্থার সামঞ্জ্য রাথিয়া চলিতে হইবে। তাহা না করিলে বিনষ্ট হইতে হইবে। ইংরেজীতে বলে "Adapt or perish"। হতুমান নিজ চিরজীবিত্বের কারণ ভীমকে বলিয়াছিলেন—"যুগং সমস্থবর্তামি কালো হি তুর্তিক্রম:"।

"ধর্ম" ও "অ-ধর্ম" সম্বন্ধে এই মূল ভিত্তিগত সত্য মনে রাখিয়া আমাদের দেশের "অ-প্রাক্তত ধর্ম" সম্বন্ধে তৃই-একটি কথা বলি। পূর্বেই বলিয়াছি, আমাদের আদিম "অ-প্রাক্তত ধর্ম" ক্রমে যাগযক্ষাদি রূপে পরিণ্ড হয়। ক্রমে অফুষ্ঠানের প্রবিশ্য কিয়ার উদ্দেশ্য চাপা পড়িয়া গেল। এই প্রিণিতিতে সাহায্য করিল নানাপ্রকার খুঁটিনাটি বিধিনিবেধের আবির্ভাব। এই ভাবে ও ক্রমবর্ধ মান বিধিনিবেধের আবরণে ও চাপে অ-প্রাকৃতিক ধর্মের প্রকৃত উদ্দেশ্য (অর্থাং স্বনিয়য়ী শক্তির অভুভৃতি ও মনন) অভুহিত হইয়া সমন্ত ব্যাপারটা একটা প্রাণহীন ক্রিয়াকাণ্ডে পরিণত হইল। এইরপ বিধিনিবেধের ত্ই একটা উদাহরণ দিই—অমুক দ্রব্য সম্মুখে রাখিতে হইবে, বামে বা দক্ষিণে রাখিলে সমন্ত মাটি; জল মাটিতে ফেলিবে, কোনও পাত্রে ফেলিলে স্বনাশ; খবরদার, "মালা" বলিবে না, "শুজ্" বলিবে, যদি ভূল করিয়া "মালা" বলিয়া ফেল, প্র্ গুড়িবলিয়৷ "শুজ্" বলিবে, ইত্যাদি। এই সব খুটিনাটি সম্বন্ধে সাবধান হইতে সমন্ত মন ব্যস্ত রহিল। আমল কাজের জন্ত কিছুই রহিল না।

এইরপে ধর্মে গ্লানি আসিল। ধর্মে গ্লানি আসিলেই ভগবানের আবির্ভাব অবশুঞ্জাবী। এখানে আবির্ভাব ছইল বৃদ্ধদেবের। বৌদ্ধধ্য সম্বন্ধে বিস্তৃত আলোচনার স্থান ইহা নহে। মোটাম্টি বলা যায় যে, বৃদ্ধদেব তদানীস্তন বেদের অক্ষরমাত্র ও বিধিনিষেধ দারা জটিলীক্কত ক্রিয়া-কাণ্ডের বিক্ষদে দাড়াইয়াছিলেন এবং তাহার দৃষ্টিতে যাহা ধর্মের সায়তত্ত্ব, অথাং শীল ও আচার, প্রচার করিয়া-ছিলেন। এই সম্পর্কে তিনি নৈত্রীভাবনা, ক্রুনাভাবনা, অহিংসা প্রভৃতির মূল্যুর প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন।

কিন্তু এ কথা কোপাও পাই না যে, তিনি মৈত্রীভাবনা, অহিংসাদি প্রয়োগ অবস্থানিবিচারে করিতে বলিয়াছিলেন। বরং পাই যে, যথন মগধসেনাপতি সিংহ তাঁহার নিকট অহিংসা সম্বন্ধে প্রশ্ন করেন, তথন তিনি উত্তরে বলিয়াছিলেন যে, যেগানে হিংসা করিলে অনেক লোকের উপকার হইবে, সেগানে হিংসা অবশ্রুকতব্য। বলা বাহুলা, ইহাই "অবস্থা বৃষিয়া ব্যবস্থা", ইহাই "ধর্ম"।

কিন্তু কালক্রমে তাঁহার পরবন্তী লোকেরা "অবস্থা"র সহিত "ধর্মে"র সম্পর্ক ভুলিয়া গেল। অবস্থা বিচার নাই, স্থান অস্থান বিচার নাই; সর্বত্র সর্বকালে মৈত্রীভাবনা, করুণাভাবনা, অহিংসাদি "ধর্ম", ইহাই প্রচার হইতে লাগিল। অবস্থাবিশেষে যে মৈত্রীভাবনা, অহিংসাদি পরম অধর্ম, তাহা কেহ ভাবিল না।

এইরপ প্রচার চিস্তাশীল ব্যক্তিগণের মনে বিশেষ প্রভাব বিস্তার হয় ত প্রথমে করিতে পারে নাই। কিছ জনসাধারণের মধ্যে ইহার প্রভাব খুব বিস্তৃত হইয়াছিল। জনসাধারণের মধ্যে চিস্তাশক্তি বিশেষ থাকে না। চিস্তা-শক্তির অভাবে মানসিক জড়তা ও তৎপ্রস্ত "গড়ুলিকা- বৃদ্ধি' অবশৃষ্কাবী। জনসাধারণের মধ্যে এইরপ বিরুত বৌদ্ধভাবগুলির প্রচার ও প্রশারই বৌদ্ধগণের সম্প্রাণায়রণে অন্তিত্ব নাশের অন্ততম ও প্রধান কারণ। সহাবস্থান জন্ম বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ে ও প্রাচীনপদ্ধী হিন্দুসম্প্রদায়ের মধ্যে পরস্পর ভাবের অবশ্বস্থাবী আদান-প্রদান হইয়া তুই সম্প্রদায়ে ক্রমে এরপ ভাবসমীকরণ হইয়া গেল যে, বৌদ্ধসম্প্রদায়ের স্বতন্তর আজিও থাকার আবশ্রকতা রহিল না এবং ক্ষ্রত্ব বৌদ্ধ-সম্প্রদায়ে অনায়াসে মিলিয়া গেল। যে বৃদ্ধ প্রচলিত হিন্দুধর্মের বিরোগী ছিলেন, খাহাকে মহাভারতে এক স্থলে 'চৌর' প্রস্তু বলা হইয়াছে, হিন্দু বৌদ্ধ মিলিয়া গেলে দেই সৃদ্ধই হিন্দুর দশাবভার মধ্যে ক্রম্বকে স্বাইয়া ভাহার স্থানে বিগলেন।

শুনিতে পাই অনেকে বলেন যে, এই বৌদ্ধ প্রভাবের যুগ নাকি আমাদের ইতিহাদে স্বোজ্জল যুগ। এই যুগের সাহিত্য, দর্শন, কলা, স্থাপত্য, নাগার্দ্ধনাদির বস্বিজ্ঞাচচা প্রভৃতি আমাদের জাতির পক্ষে নাকি চিরম্মরণীয়। সাহিত্যাদি সম্বন্ধে এইরূপ উক্তি (কিঞ্ছিৎপরিমাণে প্রোটীবাদ হইলেও) প্রতিবাদ করিতেছি না। কিন্তু এ যুগ আমাদের দেশের "স্বোজ্জল যুগ", ইহা ঠিক নহে।

"লাভ" এর কথা বলিলেই "লোকসান"-এর কথা আসে। সাহিত্যাদি সম্বন্ধে বৌদ্ধমুগে লাভের কথা শুনিলাম। লোকসান কিছু হইয়াছিল কি ? ত্ইয়ের মণ্যে কোন্ট। বেশী ?

ছই-একটা কথা বলি—Transfusion of blood নাকি আধুনিক পাশ্চান্তা চিকিৎসা-শাশ্বের একটা বছ অবদান। কিন্তু বোৰ হয় অনেকে থবর বাথেন না যে, চরক সংহিতায় Transfusion of blood-এর ব্যবস্থা আছে, সভোহত ছাগের রক্তবারা। অনেকেই জানেন যে, স্কশ্রুতসংহিতা প্রধানতঃ শল্যতন্ত্রের এই, এদেশের Surgeon's Handbook বলিলেই হয়। স্কশ্রুত মতে চিকিৎসা-শাশ্বের আট তন্ত্রের প্রথম তন্ত্র "শল্য"। ইহাতে এত প্রকার শল্য তন্ত্রের ব্যাদির (surgical instruments and appliances) বর্ণনা আছে যে, আশ্বয় হইতে হয়। কিন্তু এই সমস্তই ও এই প্রকারের আরও কত কিছু লোপ পাইয়াছে, যত দূর মনে হয়, "অহিংসা"র বিক্লত বৌদ্ধ প্রচারে।

কিন্তু এই বিকৃত বৌদ্ধ প্রচার স্বাপেক্ষা অনিষ্ট করিয়াছে আর এক ভাবে—"অহিংসা, মৈত্রীভাবাদি অবস্থা নির্বিচারে কর, ইহাই পরম ধর্ম", এই নীতি নিরম্ভর প্রচার দারা জনসাধারণকে সম্মোহিত করিয়া, ভূতাবিষ্টের মত করিয়া, সমগ্র জ্বাতিকে যুদ্ধবিমুধ ও নির্বীধ্য করিয়াছে। এই কুব ও গভীর আঘাত হানিয়াছে, তাহা দ্বির ভাবে ভাবিয়া দেখিলে কেইই অস্বীকার করিতে পারিবেন না। ইহার ফলে সমগ্র জাতি একান্ত যুদ্দবিমূধ ও সর্বাবস্থায় অবস্থানিবিচারে শান্তিকামী (peace at any price) হইয়া পড়ায় আমাদের জাতীয় তুর্দশা, যাহা আন্তও কাটাইয়া উঠিতে পারিতেছি না। বৌদ্ধ প্রভাবের যুগ আমাদের ইতিহাদে জাতীয় স্বনাশের যুগ।

ভারতের বাহিরেও দেখি, মোন্ধল জাতির যে অংশ মুদলমান ধর্ম অবলম্বন করিল, তাহারা কি ভাবে বিশ্ব বিজয় করিয়াছিল। 'আর—বৌদ্ধর্মাবলম্বী চীনের অবস্থা।

যদি মান্ত্ৰের মত অস্তিত্ব বদায় রাখিতে চাও, শাস্তি-বাদী হইলে চলিবে না, ইতিহাস একবাক্যে ইহা বলে।

নৌদ্ধ প্রভাব বঙ্গে খুবই বেশী হওয়ায় এপানে বৈদিক ধর্ম একেবাবে লোপ পাইয়াছিল। পরে হিন্দুবর্মের পুন-কথানের চেটা হয় পশ্চিম অধল হইতে রান্ধণ আনিয়া, ইহা সকলেই জ্ঞানেন। কিন্ধ ইহারই পরে আর এক আবিভাব হইল—রঘুনন্দন। পুনংপ্রভিষ্ঠিত হিন্দুবর্মে রান্ধণ-প্রাবাভ্ত স্পন্ধ জন্ত রঘুনন্দন প্রচার করিলেন—দেশে রান্ধণ অট্ট আছে, কাল-বিপ্যয়ে অনেক কিছু গিয়াছে, কিন্ধু রান্ধণের কোনও ক্ষতি হয় নাই, রান্ধণকে স্পন্ধ করিতে পারে নাই। কিন্ধু সেই কাল-বিপ্যয়েই ক্ষত্রিয়, বৈশ্ত, সমস্ত শুদ্দ হইয়া গিয়া শ্রের (অর্থাৎ রান্ধণের পরিচারকের) সংখ্যা বৃদ্ধি করিয়াছে। তাহার এই মতের "প্রমাণ" কি, এ কথা ভুলিলেই "স্গোজাত সংহিত্য"র গল্প মনে পড়ে।

ভুখন দেশের পণ্ডিত সমাঙ্গের এরপ হীন অবস্থা যে র্ঘনন্দ্রের বিক্রদে প্রতিবাদ করিবার লোক নাই। এব মাত্র রঘুনাথ শিরোমণির কথা শুনা সায়, যিনি কথঞিং প্রতিবাদ করিয়াছিলেন। রম্বনন্দন নিজ প্রণীত "তম্ব" অন্ত্রপারে পুত্রের উপনয়ন দিয়া রখুনাথের নিকট লইয়া গেলে তাঁহার ঐ পুত্র রঘুনাথকে অভিবাদন করিলেন। কিন্তু ব্যুনাথ প্রত্যভিবাদন না করায় ব্যুন্দন ক্ষুদ্ধ হটয়া বলিলেন-- "গ্রান্ধণ আপনাকে অভিবাদন করিলেন, আপনি প্রত্যভিবাদন করিলেন না।" রঘুনাথ তথন বলিলেন---"তোমার 'ভব' অমুদারে তোমার প্রত্রের উপনয়ন হইয়াছে কিছু আমার উপনয়ন তোমার 'তত্ত্ব' অন্তদারে হয় নাই। তাহা হইলে তোমার পুত্র যদি ব্রান্ধণ হয়, আমি ব্রান্ধণ নহি। আবার আমার যে প্রথায় উপনয়ন ২ইয়াছে, তোমার পুত্রের দে প্রথায় উপনয়ন হয় নাই। ভাহা হইলে আমি যদি ব্রাহ্মণ হই, ভোমার পুত্র ব্রাহ্মণ নহে। এ অবস্থায়, হয় আমি উহার অভিবাদনের যোগ্য নহি বা 'তোমার পুত্র

অভিবাদন করিবার অধিকার তাহার নাই।" ইহার ফলে রঘুনন্দনের উপনয়ন স্থন্ধে "তত্ত্ব" চলিত হয় নাই।

কিন্তু প্রতিবাদের অভাবে রঘুনন্দনের এই আহ্মণ-শুদ্র মত চলিয়া গেল। প্রতিবাদের অভাবের কারণ অহমান-সাপেক।

অপেক্ষাকৃত উচ্চতর শুর হইতে নিরম্বর প্রচারের ফলে সম্মোহন হইল। জনসাগারণ সম্মোহিত হইয়া সতাই শৃদ্রত্ব প্রাপ্ত হইল। ব্রাহ্মণ বলিল—"শাস্ত্র সব আমার, আমি যথন যাহা বলিব, তাহাই শাস্ত্র তোমরা বেদাদি শাস্ত্র পড়িলে অনন্ত নরকে যাইবে; ওঁকার উচ্চারণ করার অধিকার কেবল আমাদের এবং তোমরা উহা উচ্চারণ করিলে তোমাদের জিহনা থসিয়া পড়িবে"—(এই শেষ কথাটি বাল্যকালে আমি এক নিরক্ষর ক্রটিওয়াল। "ব্রাহ্মণ"কে ধলিতে শুনিয়াছি) ইত্যাদি। এই উদ্দেশ্যে শাস্ত্রাদিতে প্রক্রেপের কথাও অবিদিত নহে। Herrenvolk পত্ন প্রতীচ্যের অবদান নহে।

এইরূপে দেশের জনসাধারণের মনে পরাভূত মনোরৃত্তি (inferiority complex) জন্মাইয়া দেশের কি পরিমাণ অনিষ্ট করিয়াছে, ভাহা সহজে অহুমেয়।

বাংলা শক্তিপূজার দেশ। সহজে কাব্ হইতে চাহে
না। রঘুনন্দনের "তত্ব" মানিয়া লইয়া বাঙালী ক্ষত্রিয়ের
ক্ষত্রিয় মনোবৃত্তি লুপু হইল না। তাই দীতারাম, মেনাহাতি,
প্রতাপাদিত্য প্রমুথ ব্যক্তিগণ মুদলমানদের বিরুদ্ধে বিপুলবিক্রমে লড়িয়া দেশের জাতির অন্তিত্ব সগৌরবে বক্ষার
চেষ্টা করিতে লাগিলেন।

কিন্ত বিধাতা বিরূপ। চৈতন্তের উদয় হইল। চৈতন্তের সমর্থকেরা বলিয়া থাকেন যে, তাঁহার আবির্ভাব না হইলে সারা বাংলা মুসলমান হইয়া বাইত। হয় ত। কিন্তু পঞ্চাবেও ত ঐ অবস্থা, মুসলমানদিগের প্রচণ্ড চাপ। সেধানে ঠিক চৈতন্তের সময়ই নানকের আবির্ভাব। তুই জনে সমসাময়িক। কিন্তু এক দিকে নানক ও তাঁহার শিখ এবং অপর দিকে চৈতন্ত ও তাঁহার বৈষ্ণব! Look on this picture and on this! এই পার্থক্যের কথা ভাবিলে মনে পড়ে "মাটির গুণে"র গল্প!

চৈতন্য প্রচারিত বৈষ্ণব ধর্মের মূল মন্ত্র "অহেতৃকী প্রেম"—"সর্বাবস্থায় নিবিচারে প্রেম বিলাও," "মেরেছ কলসীর কানা, তা বলে কি প্রেম দিব না ?" আর, আমাদের সনাতন হিন্দুধর্ম বলে, "অবস্থা-বিশেষে প্রেম পরম ধর্ম"—কিন্তু ইহাও বলে, "যদি অত্যন্ত পূজ্য বেদান্তপারগ ব্যক্তি তোমার বিরুদ্ধে আত্তায়ীরূপে আদেন দে অবস্থায় কর্ত্তব্য অকর্ত্তব্য, ধর্ম অধর্ম যে অবস্থা-বিশেষের উপর
নির্ভর করে, ইহা ভূলিয়া বাওয়ার মত মারাত্মক ভূদ আর
হইতে পারে না। এইখানে কাশ্মীরের অন্তর্গত দরদিস্থানের
একটি প্রবাদ বাক্য মনে পড়িতেছে—"রাজার সমুগ দিয়া
বা ঘোড়ার পিছন দিয়া চলিবে না, লাখি খাইবে।"

চৈতন্যপ্রচারিত বৈষ্ণব ধর্ম নির্বীণ নিম্নশ্রেণীর
মধ্যে প্রসার লাভ করিয়াছিল। উচ্চশ্রেণীর মধ্যে
বিশেষ কিছু করিতে পারে নাই। কিন্তু দেশের ত্র্তাগ্য
এরপ যে, এই নিবিচার প্রেমের ভাব ও ভাবালুতা সারা
সমাজকে ক্রমে আবিষ্ট করিয়াছে। এই প্রেমপন্থ দেশের
উদপ্র জাগ্রত ভাবকে বিদায় দিয়া তংগুলে আনিয়া দিয়াছে
"ভাব লাগা"—মান্সিক অবসাদ ও অবন্তি। প্রমাণের
আবশ্রকতা নাই, শুনু একবার চারিদিকে চাহিয়া দেখ।

আরও কি করিয়াছে ? যে দেবতা ক্ষরিয়শেষ্ঠ, বাহার এক হত্তে যুদ্ধবাত শহ্ম, অপর চুই হত্তে প্রচণ্ড আয়ুর, চক্র ও গদা এবং শেষ হতে ক্ষরিয়বীযাজিত পদাউপলক্ষিত শ্রী; যিনি প্রতোদমার অবলম্বনে ভীমের মত যোদ্ধার সহিত যুদ্ধের জন্য উদান বেগে বাবনান ইয়াছিলেন, তাহার হাতে দিল বেণু ও নাবায় দিল প্রেমের পদরা! কি মর্মান্তিক রূপান্তর!

প্রেমে গণগদ করিয়া দেশকে নিবীষ্য করার জন্ম চৈতন্ত্র-প্রচারিত বৈষ্ণব ধর্ম এদেশের ইতিহাসে চির্মারণীয়।

আশ্চয এই যে, এখনও এদেশে আর এক আকারে এই অহেতুকা সর্বাবস্থায়, অবস্থা যাহাই হউক, প্রেমের পর্ব জোর চলিতেছে। কেহ তোমাকে কাপুরুষের মত ছুরি মারিলে তাহাকে প্রেম করিবে। তোমার বাড়ী লুঠ করিয়া আগুন দিলেও ঐ ব্যবস্থা। এক পরসাও পাইবার অধিকার না থাকিলেও তাহাকে "কোরা চেক" লিখিয়া দিয়া প্রেমের পরাকাষ্ঠা দেখাইবে। অবস্থা বিবেচনার কোন প্রয়োজন নাই। কেবল প্রেম করিবে।

চৈতন্যের প্রেমপত্থে শ্রীক্তফের দারুণ রূপান্তর হইয়াছিল বলিয়াছি। বর্তমান প্রেমপত্তে আর এক ক্ষত্রিয় বীরের শোচনীয় অবস্থা হইয়াছে। যে দিন প্রথম "রামধৃন" শুনি তথনই মনে হইল যে, এ হুর খুবই চেনা, কোথায় শুনিয়াছি? ভাবিতে ভাবিতে মনে পড়িল। মনশ্চক্ষে একথানি ছবি ভাগিয়া উঠিল। রান্তার ধারে ছিল্লবম্ব পরিহিত হিন্দীভাষী ভিক্ষ্ক প্রসারিত পাণি দক্ষিণ হইতে বামে ও বাম হইতে দক্ষিণে সঞ্চালিত করিয়া করুণ হুরে কম্পিত কঠে গাহিতেছে—"একটো আবেলা দেলা দে

মনে পড়ে, "রাঘবং রাবণারিম্"; তুর্ধর, ত্রৈলোক্যবিজয়ী, দেবদানবগদ্ধবাদির যমস্বরূপ, লোকরাবণ রাবণকে যে রাম যুদ্ধে সবংশে নিধন করিগাছিলেন; বিনি কটাক্ষমাত্রেই মদদ্প্র পরশুরামের দর্প ও তেজ হরণ করিয়াছিলেন, দে রামের সম্বন্ধে গানের হুর হইল "একঠো আধেলা দেলা দে রা—া—

1—ম"! যদি রামের নামে গান বাঁধ, ত এমন গান বাঁধ যাহার শব্দে ভূত প্রেত পালাইবে ও ভক্তজনের মনে অতুল সাহস আসিবে। আমাদের "বন্দেমাতরম্" গর্জনের কথা মনে পড়ে। এ গর্জন শুনিলে আমাদের শক্রদের মানসিক অবস্থা কি হইত এবং এখনও হয়, জানিতে বাকি নাই।

আর এই নব প্রেমপথ ও কাছনী স্থরে রামের গান কথন? যথন দেশের ও জাতির অবস্থা-দর্গট; স্তিকাগারে নবজাত রাইকে বালগ্রহে ঘেরিয়াছে। যথন ইংরেজ অবস্থা ভারতকে ৬০২ টুকরার ভাগ করিব। দিরা মজা দেগিতেছে ( অর্থাং ৬০০ "স্টেট", ইন্ডিয়া ও ইংরেজের শেন দাটি পাকিস্থান); যথন স্বপ্রানেন আমাদের অন্তিম্ব রাখিবার চেন্তা করিতে হইবে; যথন আমাদের সামান্ত মাত্র ত্রলতার লক্ষণ প্রকাশ পাইলে শক্ত অভিরিক্ত শাহদে আমাদিগকে আক্রমণ করিবে; যথন নিজেকে শান্তিবাদী প্রচার করার একমাত্র ফল শক্তর আক্রমণ আকর্ষণ করা, দেই সময়ে এই প্রেমপন্থ ও এই গান ? মনে পড়ে আমাদের "প্রাণীনতা" লাভের সময় ব্রাবর একথানা ইংরেজী কাগজ ইয়ং চাপ। উল্লাদের দহিত লিখিয়াছিল.

"Henceforth it will not be our hands which will be dyed with Indian blood."

দেশের এই অবস্থার মত ব্যবস্থা হইতেছে কি? বরং
দেখিতেছি যে দেশে কিছুকাল ধরিয়া একটা অলক্ষণ দেখা
দিয়াছে—"অর্থকিরী রাজনীতি" অর্থাং যে রাজনীতির শরণ
লইলে রাভারাতি ভিক্ষক ক্রোরণতি ও অজ্ঞাতকুলশীল
অভিজ্ঞাত বর্নিয়া যায়। এই "অর্থকরী রাজনীতি" আর
কিছুই নহে—প্রেমপন্থের দোহাই দিয়া বৈশ্য ও শুদুর্ত্তি।
নিজ ব্যক্তিগত স্বার্থের জন্ম দেশ ও জাতিকে বলি দেওয়া।

আজিকার অবপা দেখিয়া মনে পড়িতেছে যথন বিশুদ্ধ ক্ষরিয় মনোবৃত্তির দারা অন্ধ্রপ্রাণিত হইয়া বাঙালীর ছেলে প্রবল পরাক্রান্ত স চাকর-খিদ্মদ্গারে ইংরেজের সহিত অসমান যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল। সেই পারীনতা সংগ্রামে দেশের মাটিতে প্রথম যে রক্ত পড়িল তাহা এই বিশুদ্ধ মনোবৃত্তিদম্পন্ন বাঙালীর ছেলের। তাহারা এই "মর্থকরা রাজনীতি"র ধার ধারিত না। তাহাদের রক্তে পদ্ধিল দেশের মাটি ইইতে আওয়াঙ্গ উঠিতেছে—দেশের সৃদ্ধ অবস্তা দেখ। এখন একমাত্র ব্যবস্থা বিশুদ্ধ ক্ষত্রিয় মনোবৃত্তিরে আবাহন সমগ্র জ্বাতিতে! এই ক্ষত্রিয় মনোবৃত্তিতে "আমি দীন, আমি হান" বা "প্রেমের" স্থান নাই। দেশের পরিপন্ধী যে ই ইইবে তাহাকে নির্মান্তাবে ধ্বংস করিতে ইইবে। "অর্থকরী রাজনীতি" দ্ব করিয়া এই ভাবে অম্প্রাণিত ইইয়া বাবস্থা করে।

# তোমার সাধনা বজ্র-কঠোর হোক

#### গ্রীকমলরাণী মিত্র

তবু বোচে নাকো শহা ও সংশয়,
তিমির-রাত্রি বুবি বা হ'ল না শেষ !

—তবু দিকে দিকে ধবনি উঠে জয় জয়
ভবিয়তের নিশ্চিত নির্দেশ ॥

চরম-লক্ষ্যে বাকী আছে আরো পণ,
আরো পণ-চলা আরো দৃচতর পারে —

তবুও চলিছে ঘর্ষর জয়য়ঀ,
বিজয়-পতাকা গর্বে উভিছে বায়ে !

মহা-ভারতের অযোগ অভয় বাকী
নিবিল-বিশ্বে আলোকের বভিকা—

ৰ্জ্ডি-তীৰ্থে পথিক অগ্ৰগামী
ভালো সে-আলোক পক্ষ দীপ্ত শিবা।
সাধনা ভোমার বস্তু-কঠোর হোক
ভ্যাগ-সভ্যের স্বার্থবিহীন ব্রতে,
ভোমার পূণ্যে পূণ্য পিত্লোক
ভৃপ্তি লভিবে সপ্ত-স্বর্গ হ'তে ॥
কর্বোক্ত করি আলোকের বন্দনা,
উদয়-শিবরে রাধিত্ব নমঝার;

ভব্ সংশ্ব করিছে অভ্যমনা—
এখনো বৃধি বা খোচেনি অভ্নার।

### প্ৰবাহ

### শ্ৰীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত

পরদিন প্রত্যুষে ।•••

মুনার প্রাত্যহিক উষাত্রমণ সমাপ্ত করিয়া এই মাত্র কিরিয়া আসিরাছে। দেশে ফিরিলে এটা তার নিতাকর্ম। অল-কণেই মুব ছাত পা ধুইয়া একবানা বই বুলিয়া বসিল। গত রাতটা তার একটা অত্যমুত সপ্পের মধ্য দিয়া কাট-রাছে। কালো বিভালটার অলজলে ছটো চোল, রোগা বৌটার দাঁত-বাহির-করা হাসি বছকণ তার চেতনাকে আচ্ছন্ন করিয়া রাধিয়াছিল। তারপর কর্মন এক সমম্ব যে ঘুমাইয়া পভিয়াছিল ভার নিজেরই হঁস নাই। কিছু প্রভূথে ঘুম ভালিতে অতি সহজেই সে আবিষ্কার করিল যে, গত রাত্রের মনের উপরকার সে পাষাণভার আজ্ব আর নাই।

যেমন ছীর নাপিত তেমন রাধু বোষ্টম। ভয় দেখাইতে

 কেছই কম যায় না। আর তেমনি তার মনের জোর। মূল্ম একলা একলাই থানিকটা হাসিল।

মা আসিয়া শুৰাইলেন, ভোর চা এবানে পাঠিয়ে দেব মিস্?

मृत्रय दलिल, मां थ मां।

মা পুনরার ক্রিজাসা করিলেন, চাধের সঙ্গে কি খাবি ? গোটা ক্ষেক মুভির মোয়া দেব ? কাল করেছি।

খ্ৰয় কহিল, আপন্তি নেই মা, কিন্তু নারকেল কোৱা দিতে ভূলো না যেন।

মা চলিয়া গেলেন এবং কিছুক্ষণের মধ্যেই আছার্য্য ও চা টেবিলের উপর রাখিয়া গেলেন।

মুখ্য রবীজনাথের "রাশিয়ার চিঠি"র পাত। উন্টাইতেছিল এবং মাবে মাবে অঞ্চমনগুভাবে চায়ের পেয়ালায় চূমুক দিতে-ছিল। মঞ্যার আকন্মিক আগমনে বইখানা মুভিয়া রাখিয়া মিতহাজে কহিল, এত সকালে তুমি ?

মঞ্যা কহিল, চা খেতে এলাম। কিন্তু কাল তুমি গেলে না কেন মিহুদা ?

মূলর বলিল, নানা কারণে হয়ে ওঠেনি। আৰু যাব। একটু বামিরা অকমাং প্রসলান্তরে উপস্থিত হটল। কহিল, তোমাকেই যে এতক্ষণ মনে মনে চাইছিলাম এ কবাটা ভূমি কাছে আগতেই আরও পরিকার হয়ে গেল মঞ্।

বিশিত চোবে মুশ্বয়ের মুবের পানে বানিক চাহিয়া থাকিয়া মঞ্যা কহিল, তার মানে ?

मुश्रम करिल, वरीश्रमार्थित वाणियात 6िक्रियाना श्रम्भिलाम ।

মঞ্যা বলিল, সে তো দেখতেই পাচ্ছি, কিছ তার সঙ্গে আমার আসার সম্পর্ক কি ?

মুগ্র কহিল, এ সব বই একলা পড়ে আনন্দ পাওয়া যায় নামস্থু।

মঞ্যা কহিল, কিছ আমার এবনও চা থাওরা হয় নি।
তা ছাঞ্চা ঐ পব ছাটল তত্ত্ব আমি বৃবিনে, ভালও লাগে মা।
মঞ্যা আর অপেকা না করিয়া চলিয়া গেল। মুল্ম চেয়ারটা
ঘুরাইয়া ছয়ারের দিকে মুখ করিয়া গন্তীরভাবে বসিয়া
রহিল এবং থানিককণ চুপচাপ বসিয়া থাকিয়া অভাছ
বিরক্ত ভাবেই সে উঠিয়া পভিল। মঞ্যার সাক্ষাং মিলিল
ছাড়ার-খরে। মুল্মেরে মায়ের নিকট বসিয়া সে নির্বিকার
ভাবে কুটনা কুটতেছে ও মাঝে মাঝে নিভান্ত অভিজ্ঞের
ভার কথা কহিতেছে।

মূল্ম লোরগোড়ায় আসিয়া দাঁড়াইতেই মা কহিলেন, তোর আবার কি চাই মিসু ?

অকথাৎ মুখামের মুখ দিয়া বাহির হইল, আর ছটো মুভির মোয়া। কিছা পরমূহুর্ভেট অভ কথা পাছিল, কিছা কাকে দিয়ে কি করাছে মা !

মা জিজাসু দৃষ্টিতে পুত্রের মুখের পানে চাহিলেন।

মুখ্য হাসিয়া কহিল, অভ্যাসের গুণে ছাতের আহবানা ও যদি নামিয়েই দেয় ভ্ৰন কিন্তু দোধের বোকা ভোমার মাধায়ই পঢ়বে।

এ এক আছে। পরিহাস বটে। মা হাসিয়া কহিলেন, তোর অন্ত কোন কথানা থাকলে এখন যেতে পারিস। মোয়া আমি পাঠিমে দিছি।

মুখার আক মুহূর্ত দাড়াইল না।

ধানিক পরে মঞ্যা আসিরা যধন যুবারের ছরে প্রবেশ করিল তথন সে চোধ বুজিয়া কি চিছা করিতেছে। মঞ্যার আগমন টের পায় নাই।

মঞ্যা কহিল, অতগুলো মোয়া পড়ে আছে আর যোয়ার নাম করে মিছিমিছি যা নয় তাই বলে এলে।

মুখার চোপ চাহিরা স্বৃত্ত কহিল, মিপ্যা সকলের কাছেই পীড়াদারক মঞ্ছ।

মঞ্বা কহিল, এ তোৰার অন্তার রাগ নিছুদা। যা সভ্যিই আমি বুবি না, তা কেমন করে ভূমি আমার কোর করে ভাল লাগাবে। তোমার নাঙ্কদার কবিতা শোনাতে চাইলে ভ ক্রনো ভাল না লাগার দোহাই দিরে আমি পালিরে যাই না।

হে যেমন লোক তার তাল লাগাটাও ঠিক তেমনি হয়ে থাকে। এ সোজা কথাটা যদি না বোক তবে আমি কি করি।

স্বৰত্ন হো হো করিব। হাসিবা উঠিল। কহিল, ভোমার বলতে ভূলেহি, কাল নাস্থ্য চিঠি পেয়েহি।

মঞ্যা কহিল, এই প্রায় চার বছর সে নিরুৎেশ হয়েছে আর এত দিন পরে তার মনে পড়ল। কোথায় আছে সে? লিবেছে কি?

মূনম কহিল, জানি না। ঠিকানা দেয় নি। লিবেছে, প্রয়োজনমত জানাবে, কিন্তু কভাবে ছাপ দেবলুম এক পাহাড়িয়া জকলের। ওবানে নাকি সে বেশ আছে। স্বচ্ছন্দ, স্বাধীন ওর পতি। তার জবারিত চিন্তার পথে কেউ বাবার স্ট করে না। ওবানে কোন এক ধনী পাহাড়িয়া মেয়েকে নায়ু বাংগা শেখায়। ওর প্রয়োজনের অতিরিক্ত তারাই দিয়ে থাকে।

মঞ্ধা কহিল, নাকুদার বাড়ীতে এ থবর দিয়েছ ?

মুন্মর কৃছিল, না। নাজুর খবর গোপন রাখতে সে বিশেষ করে আমার অস্থরোধ করেছে। ওর খোঁক করতে গেলে লাভ কিছু ছবে না। মাবো খেকে তাকে আবার নূতন পথের সন্ধানে বেরুতে ছবে। ধরকে সে নাকি ছাড়বার ক্ষেত্র ছেছে, ফেরবার ক্ষেত্র নর। ওখানে সে বেশ গুছিরে নিয়েছে। কারগটাও চমংকার।

মঞ্যা পুনরায় জিজাসা করিল, আমাদের কথা কিছু লেখে নি ?

মুখ্য হাসিধা কহিল, লিবেছে বৈ কি। তোমার কথা নিয়ে প্রায় পাতাবানেক ভরিয়ে ফেলেছে। লিবেছে—মঞ্জু এবন কত বড়ট হয়েছে। আগের মত এবনও মর্র, বরগোস আর ডল নিয়ে মেতে থাকে কিনা ? তেমনি করে কথায় কথায় তোর ঘাড়ের উপর বুঁকে পড়ে কিনা। ছুইুমি করলে কান মলে দিই কিনা…

মন্থ হাসিয়া ফেলিল, কহিল, সব কথা মনে আছে ত বেশ !

ম্বার প্নশ্চ কহিল, লিবেছে, এবানে সকলে আমায়
মাধার করে রেবেছে। এতটা আমার ভাল লাগে না। এর
চেরে মন্থুর মত একটি মেরের প্রয়োজন আমার বেশী, যে
কথার কথার অভিমান করে কথা বন্ধ করতে পারে…রাগ
করে কিল চড় দিতেও যার বিশ্বমাত্র কুঠা নেই। এমনি একটি
সহজ সকোচহীন মেরেকে যদি পেতাম তা হলে দিনগুলি
আমার আরও মধুর হবে উঠত।

ষ্পর থামিল। একটু হাসিয়া কহিল, পাগল আর কাকে বলে। ওর বারণা ভূমি এবনও ঠিক ভেমনিই আছ। তেমনি সহক আর ভেমনি সরল। বরোবর্দ্ধকে পর্যন্ত নার্ ভূলতে বসেছে। ও সব দিক কিয়েই কবি হয়ে উঠেছে। সে বাই হোক নাছ কিছ মঞ্চে বুব ভালবাসে। মঞ্ ভার প্রবাস-বাসের একটা সচেত্র নিশ্

মঞ্যা রাগ করিয়া কছিল, এ সব ভোমার গায়ের কোরের কণা। অভায় কণা অসহত কণা।

ষ্মায় তেমনি হাসিমুবে কহিল, মঞ্ রাগ করেছ। কিছ সভিটে এতে বিরক্ত হবার কিছু নেই। একটু ভেবে দেবলে তুমিও একথা বুবতে পারবে। নার্-বর্ণিত মঞ্যা মুম্মায়ের খাড়ে চড়ে। প্রোজনমত কিল-১ড় দেয়—দিনের মব্যে পাঁচ:বার আড়ি করে, সাত বার ভাব করে। তাকে ভালবাসা মানে নিতাছাই প্রেহু করা। ব্যসের তঞ্চাতেই ওর রূপ আলাদা হয়—এ সাধারণ কথাটাও তুমি বুববে না এ আমি কেমন করে ভানব।

মঞ্ষা তথাপি নীরব।

মূলম পুনরাম একটু ঠাটার ভঙ্গিতে কহিল, তোমাকে দোষ দেব না, কারণ ভোমার আসল বাাধি কোণায় সে আমি কানি।

মঞ্ধা কহিল, ডাজারী বিজেটাও আয়ত করেছ দেবছি, কিঙ আমার যতদূর বিখাদ এবনো শিকানবিশী চলছে। ভাই বলছিলাম যে, রোগনির্ণয়ের আগে ছ'এক জন জভিজের সাহাযা নিয়ে, তাতে হয়তো অনেকের যন্ত্রণার লাখব হবে।

মুন্ম হাসিমূৰে উত্তর দিল, কিছে যে ইচ্ছে করে কেউটে সাপের মূবে হাত ঠেকিমে যন্ত্রণাকে ডেকে আনে তার করে কোন বিধি-বাবস্থাই চলে না। না হাতুড়ের না অভিজ্ঞের।

ষঞ্বা হাসিয়া ফেলিল। মুগায়ের কানের কাছে মুব আনিয়া মৃত্ কঠে কহিল, ইচ্ছে করে কেউ কেউটে সাপের মৃথে হাত দিতে যায় না মিফ্দা, যদি না এর পেছনে বন্ধ কোন আকাজ্যা লুকানো থাকে। মঞ্থা ক্লিকের জ্ঞ থামিয়া পুনরায় কহিল, সেপ টিক হবার কোন আশকা নেই জেনেও যারা কাটা-খায়ে টিংচার আইভিন লাগায়, ভারা অভ্যাধিক হঁসিয়ার হলেও যার প্রয়োগ করা হয় তার কাছে ভা যগ্রণাদায়ক হয় যে মিছ্দা।

মূশায় কহিল, সামাত একটু কাঁটার আঁচড়ে যারা ডাক্তারের শরণাপন্ন হয় তালের সন্ধনে তুমি কি বিধান দেবে মঞু ?

মঞ্ধা রাগ করিয়া উঠিয়া দাঁড়াইল, কহিল, আমি জানি না। তেও প্রস্থানোগুত হইতেই যুগর তাহাকে বারা দিল, কহিল, যেয়ো না মঞ্জু, দরকার আছে।

মঞ্যা থামিল। থীরে ধীরে অপ্রসর হইয়া আসিয়া মূলয়ের গা বেঁষিয়া দাঁড়াইল। মূল্য নির্বাক ভাবে বসিয়া আছে। মঞ্যা হ্থানি হাত আলগোছে ভার হুই কাঁবের উপর রাধিয়া মৃছ কঠে কহিল, কি—ডাকলে কেন?

মুন্ময় তথাপি নীরব।

মঞ্যা আরও একটুখন হইরা দাঁতাইল। যুহ কঠে কৰিল, কথার অবাব দিছে না কেন? চলে যাব নাকি? চোৰ ছটি ওর অবাভাবিক উজ্লে হইরা উটিয়াছে। কপালে ফুটিয়া মুদার তার কাঁথের উপরে ছন্ত মঞ্র ছ্বানি হাতে ইয়ং চাপ দিরা কহিল, ছটো মোরা বেরে যাও মঞ্।

মঞ্যা সহসা তার হাত টানিরা লইয়া কবিল, দা---জামি যাই। সে ফত প্রছাম করিল।

মুমার কতকটা বিশ্বিত এবং বিহবল দৃষ্টিতে মঞ্যার ফ্রন্ড অপম্রেমনাণ মৃত্তির প্রতি চাহিয়া রহিল।

¢

এই ঘটনার দিন কয়েক পরে মঞ্যার সাক্ষাং মিলিল 
যুবায়ের শয়নককে। যুবায় তথন ঘরে ছিল না। শয়ার উপর
ধানকরেক বই ইতন্তত: ছড়ান ছিল। মৃত্তিমান বিশৃথলা।
মঞ্যা আপন মনে গক গক করিতেছিল, মিল্-দা যেন কি!
এর মধ্যে আবার মাত্মর থাকতে পারে। যত বাবয়ানা জামাকাপড়ে। সঙ্গে সকেই মঞ্যার হাত ছখানিও স্কিয় হইয়া
উঠল। ইতন্তত: বিক্লিপ্ত বইগুলি টেবিলের উপর ভূলিয়া
রাখিতে গিয়া সে আবিজার করিল নাত্মর একবানি স্থাপীর্ধ
পত্র। মঞ্যার মন কুত্হলী হইয়া উঠিল। এই চিঠি লইয়াই য়ৢবায়
সেদিন কত না আক্ষোকে মঞ্যা খানিকটা যেন করণার চোধে
দেখে।

নাকু লিবিয়াছে--জনেক দিনের একটা পুরনো কৰা चाक वांत वांत मत्न भएरह । ध्व (हरमदानांत्र मारक ছারিয়েছি। বাল্যকালটা হয়তে। সেইজ্ভই খুব আদরে কেটেছে। লোকে বলত-জভাগা। যাদের মা আছে সেই সব ছেলের সঙ্গে নিজের তুলনা করতে গিয়ে মনে মনে হেসেছি, আর থারা আমায় কুপার চক্ষে দেখেছে ভাদের বলেছি নিৰ্বোধ। কিছ আৰু মনে হচ্ছে ভাৱা মিধ্যে বলত না। মার স্নেহের কোল যদি আৰু আমার অপেকায় খালি থাকত কি সাধ্য ছিল আমার এমনি করে খেসে বেড়াবার। ভূমি হয়ভো একুনি প্রতিবাদ করে বসবে বলবে আমার দাদার কথা আমার বৌদির কথা বারা আৰও আমায় স্লেহ করেন। করেন না এমন কথা আমি বলছিনে, কিন্তু সাংসারিক অভবি-অন্টনের চাপে তাদের স্নেছের রূপ বদলে গেছে। তাদের প্রীতি আৰু আমার উপাৰ্জিত অৰ্থের প্রয়োজনে স্বভাবধর্মকে ভুলেছে। আমি খামধেরালী—উপার্জনের প্রতি কোন দিনই আমার তেমন আগ্রহ নেই, কিন্তু অভাবের সংসার সে কথা ভনবে কেন। সে তার অসংখ্য দাবি নিষে আমার পিছনে তাড়া করছিল। কিন্তু জামাকে যে নিজের মত করে বাঁচতে হবে তাই গৃহত্যাগ করেছি। তার পর ত্বরু হ'ল নিকেকে নিয়ে ভেসে বেড়ান। দীৰ্ঘ চাৰু ৰংস্ত্ৰের খোৱাকেরার পর ছির হয়ে দাঁড়াবার একটা ভালার পেতেই সর্কারণম ভোমার কথা মনে পড়ল। ভেবে-

ৰিলাম আর হয়তো উদ্বেজ্ঞীন ভাবে গুরে বেড়াতে হবে না, কিছ জীবনের খুচনার বে হুর্তাগা জীবনসংগ্রামে হেরে গেছে তার ভবিত্তং সাবারণতঃ একটু অন্ধ্যারই হরে থাকে। আমিও তার থেকে বাদ পঞ্চি নি।

ভূমি হেসো না মিছ। এ আমার ভাবপ্রবণতা নয়।
ভীবনের একটি অতি সতা অপুভূতির কথা তোমাকে
ভানাছি। আমি বড় আখাত পেরেছি, যার করে মোটেই
প্রস্তুত ছিলাম না। তাই এর আকস্মিকতা আমার পাগল ক'রে
ভূলেছে। আমি কবিতা লিখি। মেরেপুরুষের মনের বছ অলিগলির সধান আমার ভানা এমনি একটা অকারণ দম্ভ আমার
মধ্যে ছিল। আমার নির্কোধ অহস্কারই আমার সর্কানাশ
ডেকে এনেছে। আমি হেরে গেছি এক সহক্ষ সরল পাহাড়ী
মেরের কাছে।

চন্দনাকে আমি বাংলা পঞ্চাতায়। মেয়েটর চালচলন, কথাবার্ত্তা সব কিছুর মব্যেই একটা পুঠু ভাব ছিল। আঁটসাঁট বলিঠ গছন। তার পরিপূর্ণ যৌবন কোথাও বিন্দুমাত্র কৃষ্ঠিত নয়, আপন মহিমায় তা স্প্রকাশ। চোবে বিলোল কটাক্দ নেই, রুদ্রমধুর ভাবে তা উজ্জল। আলা নেই, আছে ছাতি। চন্দনাকে আমার বড় ভাল লেগেছিল।

ওকে দূর থেকে দেবতে ভাল লাগে, কাছে গিয়ে ঘনিষ্ঠতা করতে বুক কাঁপে। অথচ অনাবশ্যক ক্লচ্তা না আছে তার কোন কাকে, না কথায়।

এই বিচার-বৃদ্ধি যদি প্রথম থেকেই আমার থাকত, হয়ত আৰু আবার আমাকে নতুন করে অকানার পথে পা বাড়াতে হ'ত না। কিন্তু আমার লোভী মন আমাকে বিভ্রান্ত করেছে। চন্দনার অকপটত। আমার ভাবপ্রবণ মনকে উল্লোভ করেছে।

ছর্বল মন যথন এমনি এক সিক্ষণে দোলারমান, চন্দনার সাগ্রহ আহ্বান এল। তাকে নিয়ে বেড়াতে বেরিয়েছি। পাহাড়িয়া নদী মুর্থিমতীর তীরে এসে ছ'বনে উপস্থিত হলাম। এমন ত আরও কত দিন এসেছি, কিছু আছকের দিনের বিভ্রাপ্তি আমার জীবনকে তিক্ত করে দিয়েছে। একথানা বড় পাধরের উপরে ছ'বনে পাশাপালি বসেছি। পাড়াগার গলে ওকে মাতিয়ে ভূলেছি। কথনও বিশ্বয়ে বড় বড় চোঝে আমার মুখের দিকে চেয়ে দেখে, কথনও হেসে গড়িয়ে পরে। আমি অভ্যন্ত হয়ে বাই।

চন্দনা প্রশ্ন করে, মাষ্টার বাবু তুমি দেশে যাও না কেন ? কি উত্তর দেব । বলি, দেশে আমার কেউ নেই। আমি একেবারে একা।

অস্কস্পায় চম্দনার চোৰ ছট ছল ছল করে ওঠে। জিজেস করলে, ভূমি বিষে করবে না মাষ্টারবাবু ?

**ट्रिंग क्यांव फिलाब, बा । क्यांबाद ब्राह्मक ट्रिंग** 

চক্ষা কথা বললে না, মুখ মত করলে। ছ'হাতে ভার মুখ ভূলে ধরলাম, চোখে ভার কল।

অবাক হরে গেলাম, এবং সেই মুহুর্ছে নিজেকে বড় বেশী ছুর্বল বলে মনে হ'ল। বুকের মধ্যে উচ্চ রক্তপ্রোভ উদায হয়ে উঠেছে। আমি ভূল করলাম।

চন্দনার মুবের ভাব কঠিন হয়ে উঠল। চোল হটি মুহুর্তের জ্ঞ ফলে উঠল, কিন্তু কথায় তার প্রকৃত মনোভাব প্রকাশ শেল না। শাল্ত মূহকঠে সে বললে, 'মাষ্টারবাবু, তুমি দেশে চলে যাও। জামি তোমায়…' তাকে বাধা দিলাম, আমি ভূল করেছি চন্দনা।

চন্দনা যে কত কঠিন তা এবাবে বোঝা গেল। পে বিক্লুত কঠে বললে, ভূল ভূমি কর নি-—আর সেইক্টেই তোমাকে থেতে হবে। আমার কথার অবাধ্য হয়োনা। ভাহলে নিক্রে আরও চের বেশা অনিষ্ট ভূমি করবে।

স্থামি গুনরায় একটা কৈফিয়ং দেবার জন্ম প্রস্তুত ছতেই চন্দ্রনা স্থামায় থামিয়ে দিয়ে, তীর স্থামের সঙ্গে বললে, তোমার দোষ কি মাষ্টারবাবু—বোনের স্থেছ ত কোন দিন পাও নি…

আমারই শেবনি কথা আৰু আমার উপর প্রয়োগ করেছে।

চন্দনার বাবার কাছে জামি চির বিদায় প্রাথনা করেছি, কিন্তু তিনি তা মন্ত্র করতে চান নি। চন্দনা বঙ্গে, বাংলা ভাষার উপর সে প্রদা; হারিয়েছে। যেটুক্ আয়ন্ত করেছে ভাও দে ভূলে যেতে চেষ্টা করবে।

নিঙ্কেং পুনরায় ধিকার দিলাম। এর চেয়ে বড় অপমান আর কি হতে পারে। এবানে আর এক মুহুর্ত থাকবার ইচ্ছা নেই। আগামী কাল কোথায় থাকব তা কানি না।

ইভি--- নাঙ্ক

মঞ্যা বার বার চিঠিখানা আগাগোড়া পড়িল। মনে মনে নাঞ্চকে অমুখোগ দিল। ছি ছি নাঞ্দা এমন চঞ্চমাতি। আর চন্দনা কে জানি কেমন মেয়ে সে। •••

মূথ্য ইতিমধ্যে বারক্ষেক খরের পাশ দিয়া উঁকি মারিয়া গিয়াছে। মঞ্ধা তাহা টের পায় নাই। খরে প্রবেশ করিয়া কথাটা সে মঞ্কে জানাইয়া দিল।

মঞ্ধা হাসিয়া কহিল, সতিটে বড্ড অভ্যন্ত হয়ে গিয়েছিলাম। নাঙ্কুদায় চিটিটা পড়ছিলাম। নাঙ্কুদা যেন কি! একটা উচিত অনুচিত জ্ঞান প্র্যাস্ত নেই।

মুন্মর কহিল, উচিত-অঙ্চিতের প্রশ্ন এবানে না তোলাই ভাল। মাস্থের মনের বিচিত্র গতি কখন যে কোন্পথ অক্সরণ করতে চাম তা বোঝা বঢ় শক্ত ব্যাপার। তোমার দাদার বিষয় নিয়েও এতক্ষণ এই সব কথাই হচ্ছিল।

मध्यां करिल, बांगारमत वांशी (बरकरे बांशह वृति ?

মঁটুৰা ক্ৰিল, দাদার সক্কে মার সদে বুঝি আলোচনা ক্ষিত গ

মুখার সম্বভিষ্ঠক বাড় নাড়িয়া কহিল, হঁ ··· তিনি কি বলেন জান? হেলের অভায়কে তিনি জনীকার করেন না, কিছ তার মতে তাকে ত্যাগ করা কিছুতেই উচিত হয় নি।

মঞ্মা কৃহিল, কিন্তু তাকে পুরোপুরি তাগে বাবা ত করেন নি। মাসে মাসে পাঁচ শ' করে তা হলে দিয়ে থাছেন কিসের জন্ত । অথচ মা কিছুতেই বুধবেন ন।। অনেক ১৮৪। করেও বোধাতে পারি নি।

মৃত্যম কহিল, আমিও পারি নি। ঠিক এই কারণেই তোমার বার বার বলা সভ্তেও এতদিন থাই নি। তিনি বলেন ভোমার দাদার পাওনা মাত্র পাচ প' টাকায় শেষ হয়ে যায় না। উপরগু তিনি যেন বিরক্তিপূর্ণ কঠে আমায় উদ্বেশ করে বললেন থে, সবাই মিলে আমরা ভোমার দাদার বিরুদ্ধে ষভ্যন্ত করছি। এই ভয়ই আমার সবচেয়ে বেশী ছিল মঞ্ছ।

মঞ্যা মূহকঠে কহিল, মার কথায় পুমি ছ:খিত হয়ে। না
মিহুদা। নইলে বাবাকেও মা বুখবার চেপ্তা করেন না।
আমার মূখে হয়ত এসব কথা ঠিক শোভন হছে না। তবুও
না ব'লে পারছি না যে, বাবা, আমার বাবা বলেই আজও
দাদার কথা তিনি ভাবছেন। সকলেই বাবার নিলিপ্ত ভাবতী।
লক্ষা করে, কেউ তলিয়ে দেখতে চেপ্তা করে ন'। আমার
মা পর্যন্ত না। আর এইটেই আমার কাছে সবচেয়ে মর্মান্তিক।
মা বলেন, মায়াদয়া বাবার শরীরে নেই। আছে। মিন্দা,
ছ:খ প্রকাশের শ্রেষ্ঠ নিদর্শন কি খালি চোখের জল কেলা?
যে আখাত দিনে দিনে একটা লোকের স্বভাব পর্যন্ত বদলে
দিয়েছে তা লোকের চোধে পড়ে না কেন?

মঞ্ষা পামিল। তার ছই চোব ছল ছল করিয়া উঠিল। মূনয় নিঃশব্দে বসিয়া আছে।

মঞ্যা পুনরায় কহিল, বাবার মুখের পানে তাকাতে আমার ভয় করে মিহুদা। মার কাছে গেলে উঠি হাঁপিয়ে। তাই যথন তথন তোমার কাছে ছুটে আসি। বাহীর আবহাওয়া আমার অসহ হয়ে উঠেছে।

যুবার এতক্ষণে পুনরায় কথা কহিল, তোমার মাকে দোষ দেওয়া হথা। সব মা-ই ঠিক এই কথা বলতেন। তর্কবিচার নেই, কোন বিধান নেই, এমনি যুক্তিহীন তাদের হুর্বলত।—মেরেদের মাতৃত। অথচ এই নিয়েই তাদের গর্বের অভ নেই।

মঞ্যা খির দৃষ্টিতে মুন্মরের মুবের প্রতি চাহিরা রছিল। তার চোধে মুধে কেমন এক প্রকারের বিশ্বর। তার এই কোন ব্যক্তিবিশেষকে উপলক্ষা করে একথা আমি বলি নি।
নইলে কে না কানে যে, পৃথিবীতে মাত্ম বলে পরিচয়
দিতে গেলে মেয়েদের আঁচল বর্ষেই সকলকে উঠে দাঁড়াতে
হয়। ওদের বুকের কোমল, বৃত্তিগুলিই আমাদের বেঁচে
থাকবার শ্রেষ্ঠ উপক্রণ।

মঞ্যা একটু হাসিয়া কহিল, যদি তোমার কণাই সতা বলে ধরে নেওয়া যায় তা হলেও কি মেয়েদের গর্ম করবার মত কিছু নেই মিছদা। যে ছর্মলতা মাছ্য পট্ট করে তা কি এতই উপেকার বস্ত ? কিছু তর্ম ধাক। অনেকক্ষণ এসেছি এখন যাই।

মুনায় কহিল, জার একটু বসবে না ?

মঞ্যা কহিল, না। আর একদিন তোমার কথা রাখব।
মুখ্র কহিল, যে কাজে হাত দিয়েছিলে তাও কি শেষ না
করেই যাবে ? না সেটাও আর এক দিনের কনো মূলতুবী
ধাকবে।

মঞ্যার মুবে হাসির রেখা ফুটিয়া উঠিল, কহিল, আক্কের জনো না হয় একটু থাবলখা হলে। সময়ের বেয়াল ছিল না। তুমি রাগ করে। না মিথ-দা— একটু থামিয়া মঞ্ পুনরায় কহিল।

মূলার হাসিমূবে কছিল, রাগ করন কেন। তা ছাড়া সব অবস্থার সঞ্চেত আমি মানিরে চলতে পারি। কিছু অসুবিধে হয় না।

মন্ত্রা কহিল, সে তো দেখতেই পাচ্ছি। মন্ত্রা ক্ষণকাল পরে পুনরায় কহিল, তোমার কলকাতা যাবার দিন ত প্রায় ধনিয়ে এল। বিকেশে একবার যেয়ো। সত্যি নিকেকে বড় একলা মনে হয়।

মূলর প্রতিক্রতি দের। মঞ্ধা প্রস্থান করে। ইহারই দিন কয়েক পরে মূলর গ্রাম তাাগ করিল।

প্রায় দেড় বছর পরে।

এই দীর্ঘ সময়টা মুন্নরের এক প্রকার ভালই কাটিয়াছে।
ইতিমধ্যে বার্থতিনেক সে প্রামে গিয়াছে। প্রামের
সে দিন আর নাই। ও তরকের বড়বাবুর বিরাট কারখানা
এ তরকের বছ ক্ষমক্তির কারণ হইমা দাঁডাইয়াছে।
হাডি, বাগ্দী ও নমঃশুদ্রপাডার কোয়ান পুরুষরা বড়বাবুর
ক্ষমণানে প্রামকে সরগরম করিয়া তুলিয়াছে, কিন্তু তাদের
গৃহলন্দ্রীরা দিবারাত্র অভিশাপ দিয়া চলিয়াছে। বড়বাবুর
কারখানা প্রসা দেয় ভাল। তিনি সক্ষন ব্যক্তি। ক্ষমক্রদের
ক্রথ-স্বিধার প্রতি তার প্রথম দৃষ্টি। কারখানার সক্ষে তিনি
শ্রাবধানা খুলিয়াছেন। মজ্রদের সপ্তাহাতে বেতনের বার
আনা কারখানায়ই দিয়া আসিতে হয়। গুহলন্দ্রীদের অভিশাপ

বোৰ করি সেইজ্ঞাই। শান্তি গিরাছে, অভাব বাড়িরাছে ববরগুলি মঞ্নার চিঠিতে মুন্মর জানিরাছে এবং গত বাহ দেশে গিরাও নিজে প্রত্যক্ষ করিয়াছে। প্রামকে মুন্মঃ ভালবাদে। বিশেষ করিয়া এই প্রেণীর জীবত্ত মাম্বরুগুলিকে, যারা প্রামের ছংম্পদ্দাবরূপ, প্রকৃতির প্রশ্বর্য শত অভাব, শত অন্টনের মধ্যেও যারা সোকা হইয়া দাড়াইয়া লড়াই করিতে পারিত আরু তাহারা কারখানার প্রমিক—শরাবধানার দাস। ভাবিত্তেও মুন্মর ব্যথিত হয় ইচ্ছা হয় উহাদের মধ্যে ছুটয়া যায়। ওদের বর্তমান জীবনের কদয়া দিকটা চোধে আফুল দিয়া দেখাইয়া দেয়, কিছে সময় কোথার। আর কয়েকটা মাদের ব্যবধানে তার হাতে পর্যাপ্র সময় দেখা দিবে। তথ্ন—

রুদ্ধ জানালাটা সশব্দে খুলিয়া যাইতে মুন্মরের চিল্লাধারায় বাৰা পড়িল। বাহিরে বেগে বাতাস বহিতেছে। ছুর্যোগ-দিন ৷ আকাশে ভবকে ভবকে সাদা মেঘ ভাসিয়া বেড়াইতেছে --কোণাও ক'লো মেবের জমাট গুপ। ছোষ্টেলের ছেলেরা অনেককণ হইল দল বাঁধিয়া সহরের অবস্থা পর্যাবেকণ করিতে বাহির হইয়াছে। এত জল নাকি দশ বংসবের মধ্যে হয় নাই। মূল্য কতকটা দলছাড়া। কোন প্রকার উচ্ছ খল মাতা-মাতির মধ্যে সে নাই। নিজের পড়াওনা লইয়াই ব্যস্ত। কিন্তু আজিকাব এট বৰ্ষণক্লান্ত আকাশ উন্মন্ত প্ৰকৃতি তাহাকে আনমনা করিয়া তুলিয়াছে। মনে পড়িতেছে মঞ্ধাকে, গ্রামকে আর তার অসহায় সম্ভানদের। সেই সঙ্গে ভিড় করিয়া দ্বাড়াইয়াছে তার বহু সহপাঠী। বি-এ পরীক্ষার পর তাহারা ছত্তভ হইয়া পড়িয়াছে। বিমান কেল ক্রিয়াছে। অশোক কোন রক্ষে তরাইয়া গিয়াছে। নিতাম্ব সাধাসিধা ছেলে ফুশীল গিয়াছে বিলাত। অঙ্কশান্ত্রে ক্লাসের মধ্যে যে ছিল সকলের চেয়ে কাঁচা, সে গিয়াছে ইঞ্জিনিয়ারিং পড়িতে। আর সকলের চেয়ে আভর্ষ্য ব্যাপার এই যে, ছলাল গিয়াছে ডাক্তারি পভিতে। অবচ দিনে ছুপুরে ভূতের ভয়ে সে কাঁপিত। ডিলেক্সন ক্লাসে জান না হারাইলে রকা ৷

ষ্থায়ের চিন্তার ক্ষ পুনরার ছিডিয়া গেল। এমান দেবল আসিরাছে। দেবল ক্ষ কঠে কহিল, আপনি গেলেন না মুম্মবাবু—আজকের বেড়ানটা সত্যই উপভোগ্য হয়েছে।

য়শ্য় একটু হাসিল। কবাব দিল না।

দেবল কহিল, আপনি হাসছেন। কিছ দীবনে এও এক চমংকার রোমাল। আমাদের বাঙালী দীবন এমন একথেরে এবং বেহুরো যে…

মুন্দর তেমনি হাগিমুবে কহিল, আপনার বভূতা সেদিন ইউনিভারসিট ইনষ্টিটুটে ভনেছি, চমংকার বলেন আপনি।

म्पर्म विवक्तिभूर्व कर्छ कृष्टिन, और अक जानमाह मच

দোষ। নি**কে পছন্দ ক**রেন না বলে আর কাউকে তা আলোচনা করতেও দেবেন না। সে চলিয়াগেল।

এদের এই হৈ চৈ মুখাযের আৰু ভাল লাগিতেছিল না।
নির্দ্ধনে চিন্তাম্ব সময় কাটাইতে পারিলেই ভাল হয়। কিছু
দিন যাবং প্রতিনিয়তই সে ভাবিতেছে। মঞ্বার মার অবস্থা
মাকি মোটেই ভাল নয়। যে-কোন মুখুত্তে একটা কিছু
মাকি যাইতে পারে। ফলে মঞ্বার সহিত বিবাহ ব্যাপারটা
জনতিবিলম্বে চুকাইয়া ফেলিতে উভয় পক্ষ হইতে তাগিদ
আসিয়াছে। মঞ্বাকে বিবাহ—কথাটা যে আৰু নুতন
করিয়া সে ভাবিতেছে তা নয়। মুখায়ের অন্তরের অনেকবানি
জুডিয়া সে বিরাক্ষ করিতেছে। কিন্তু এম-এ পাস না
করিয়া সে বিবাহ করিতে অনিছুক। এ কথাটা সে পরিছার
করিয়াই তার বাপমাকে জানাইয়া দিয়াছে।

মঞ্ধার নিকট যুন্মকে নিষ্ণাত চিট্ট দিতে হয়। মঞ্ বেপরোয়া। সঙ্গোচের ধার ধারে না। চিট্টর উওর দিতে বিলম্ব হুইলে নানা অমুখোগ এবং লক্ষা লগা উপদেশ বর্ষিত হয়। মূন্ময়ের হাসি পায়। আমোদ লাগে। মঞ্যা তার গোপন চিপ্তায় দেখা দেয়—দেখা দেয় মূন্ময়ের মনের নিভূতে। মূবে তার নাম পর্যান্ত প্রকাশ করে না। তার আন্দেপাশের সকলকেই সে জানে। মঞ্ধার চিন্তবৃত্তিকে টানিয়া ছিড়িয়া টুকরা টুকরা করিয়া সকলে বিচার করিতে বসিবে একথা ভাবিতেও নিদারণ বিভ্ফায় মূন্ময়ের মন সঙ্গুচিত হুইয়া উঠে। কথার কথায় মঞ্যাকে লইয়া উহারা বিদ্দাপ করিবে, তার সারলাকে ছলনা অথবা বাভাবাভি বলিয়া উপহাস করিবে, কিংবা মূখে যুবে তার কথা আলোচিত হুইবে এ যেন নিভান্তই একটা সন্তা নাটকীয় ব্যাপার। স্লেহের পাত্রীকে সাধারণের চোবের স্বান্থে দাভ করাইয়া যাহারা বাহাছেরি নেয় মুন্ময় সে শ্রেক্টর ময়।

দেবল আসিয়া পুনরায় দেখা দিল, কছিল, বলতে ভূপে-ছিলাম—মাপ করবেন।

মুন্ম বিশ্বিত চোবে দেবলের মুখের প্রতি চাহিল। দেবল কহিল, আপনার বড়লোক বন্ধু স্থনির্ম্বল বাবু এসে ফিরে গেছেন। মুন্ময় কহিল, কিন্তু আমি ত সারাদিন কোপাও বেমুইনি।

দেবল কহিল, সে ধবর আমার রাধবার কথা নয়। মোটের উপর তিনি এসেছিলেন এবং এই চিঠিখানা আপনাকে দেবার জন্ত রেখে গেছেন। দেবল হাত বাড়াইয়া চিঠিগানি মুল্লয়কে দিল।

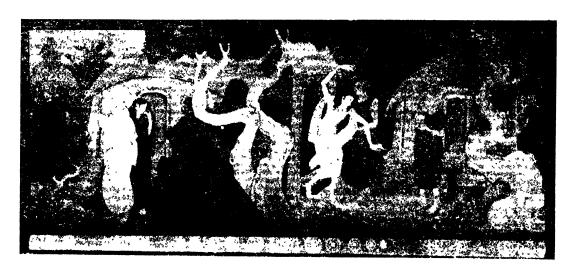
যুদ্দর আর থিতীয় কথা না বলিয়া ধামধানা ছি ডিয়া ফোলল। দেবল বিনা বাকাবারে যুদ্দরের পদ্চাতে আসিয়া দাঁড়াইল। একবার চিঠিবানার উপর দৃষ্টি বুলাইয়া লইয়া কহিল, আছেন বেশ। আমাদের ছুর্ভাগ্য তাই কোন বড়লোক বন্ধু নেই। দেবল প্রস্থান করিল।

স্থানির্মালের বাড়ীতে হঠাৎ এমন কি উৎসব দেখা দিল যার জন্ম এই সাদর আহ্বান। কিকিদ্ধিক দেড় বংসরের কলিকাতা বাসকালে তাহাকে বহু বার স্থান্দ্রলের বাড়ী যাইতে হুট্যাছে যদিও সে তার গতিবিধি বহিবাটা প্রাঞ্জ সীমাবল রাখিষাছিল। স্বেছার কোন দিন সে কারুর বাড়ী যায় নাই। স্থনির্মানের বাড়ীতেও নয়। অতীতেও সে ডাকিয়াছে, আৰুও আমন্ত্ৰণ কানাইয়াছে। কৈন্তু তুইয়ে তঞ্চাৎ অনেক। এ আহ্বান যুক্তি-বিচার দারা এড়ান যাইবে না। দেখা না করিয়া চিঠি রাবিয়া যাওয়ার ইহা ছাড়া আর কি কারণ থাকিতে পারে। বড় লোকের একমাত্র ছেলে। সবই ওর কেমন ধাপ-ছাড়া। মুন্নয়ের সহিত কোথাও ওর এতট্ট মল নাই। তথাপি সে তাহাকে এড়াইতে পারে না। পরীক্ষার ওজুহাতে এবারে প্ৰায় বাড়ী যাওয়া পৰ্যান্ত বাতিল করিয়া দিয়াছে। মাভার সকরণ আহ্বান, মন্ত্রধার স্পষ্ট মিন্তি সে খণ্ডন করিয়াছে। মঞ্ধা ত সেই ছইতে চিঠি লেখাও বন্ধ ক্রিয়াছে। অবচ ধ্নির্মাণ আসিয়া সেই মহামূল্য সময়ের উপর যথন তখন ভাগ বসাইতেছে। তাড়াইলেও খাইবে না। কটক্তি করিলে মুখ টিপিয়া হাসে। ইহাকে লইয়া সে কি করিতে পারে ।

খাবার তাগিদ স্থাসিয়াছে। মুন্নয়কে উঠিতে হইল।

্জিম্প:





চৈত্ৰ্য-লীলা

ি শ্রীঅমলাগোপাল দেন

# বাংলার চিত্রশিষ্প ও কয়েকজন শিশ্পী

শ্রীমাণিকলাল বন্দ্যোপাধ্যায়

চিত্রশিল্প নিয়ে আলোচনা যতটা দরকার, বাংলাদেশে ভতটা হয় না। অধ্য প্রতিভার চাপ যাদের ছবিতে রয়েছে তাঁদের ছবি নিয়ে অ'লোচনা হলে তাঁর৷ যে উৎসাহিত হন ভাতে সন্দেহ নেই। সম্বাদার বাক্তির উৎসাহে শিল্পীর মনে ভাল ছবি আঁকার স্পৃহা বাড়ে, অনুপ্রেরণা আচে—নইলে অবসর মনে কর্মের প্রেরণা কাগে না---মনের স্ষ্টপ্রেরণার উৎস ক্রমশঃ ভক্তিয়ে আসে। সাধারণতঃ খ্যাতিমান শিল্পীদের বা তাঁদের চিত্রকলার আলোচনা অল্পন্ন হয়, কিছু থানের ব্যাতি ক্য তাদের ভাল চিত্রেরও আলোচনা আমাদের দেশে বছ একটা হয় না। বর্ত্তমান মুগকে অতিপ্রচারের মুগ বলা খেতে পারে। মুক্তাখন্তের স্থলভ-প্রচার, দৈনিক ও মাসিক কাগজে বিজ্ঞাপনের প্রাচর্যা সত্ত্বে বাংলার চিত্র-শিল্পীর প্রতিভার উপযুক্ত সমাদর হচ্ছে না। দোষ হয়ত দেশের প্রচলিত শিক্ষা-পদ্ধতির যাতে শিল্পকলার উপযুক্ত মর্যাদা নেই। তাই কলা-শিংগর প্রতি অভ্রাগ দেশের লোকের মনে ব্যাপকভাবে আৰও ছাগে নি। ওদিকে, ভাল ছবি একৈ সচ্চলভাবে জীবিকার সংস্থান করা অধিকাংশ চিত্রকরের পক্ষে স্মৃক্ঠিন। অর্থনৈতিক ছরবস্থার চাপে আর উংসাহের অভাবে অনেক শিল্পীরই ছবি আঁকার স্বাভাবিক প্রবণতা ও শক্তি ক্রমশঃ লোপ পেতে থাকে। বিগত কয়েক বংসর যাবং কলিকাতার বড় বড় চিত্রপ্রদর্শনীতে ভাল ছবির সংখ্যা কম দেখা যাছে, ভাল **ছবি বিজীর পরিমাণও কমে যাচেছ, ছবির যথাযোগ্য বিচারও** राष्ट्र ना। वह भूत्रकात्रशांश्व हिव एक्के हिमादि मार्चक किना, त्म विश्वतंत्रश्च वज्ञाक्य वज्ञात्वरं मान्य व्यवस्थाः

বাংলার চিত্রকলার ব্যাতি ভ্রম্মাত্র ভারতে নয় পাশ্চাভ্যের বহু দেশেও ছড়িয়ে পড়েছে। ভারত-শিল্পে



রবীন্দ্রনাথ 🏻 🖺 সভ্যেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধার



বাউল ্শ্রীমাণিকলাল বন্দ্যোপাধ্যার

এই প্রচার ও প্রসারের মূলে রয়েছে শিল্পাচার্য্য অবনীক্র-নাথের প্রতিভা। অবনীজনাথ তো শুবুমাত্র স্রষ্টা নন, শিল্পীর মনে ক্লপসাধনার উৎসাহ ও উদ্বীপনা কাগিয়ে কি করে তাকে সার্থক প্রষ্টকার্য্যে প্রয়ন্ত করতে হয় সে দিক দিয়েও তিনি ৰ্ম্বৰিতীয়। ভিন্ন ভিন্ন শিল্পীর মানসিক স্বাতন্ত্রোর গতি অফু-বাবন করে, তাদের প্রত্যেকের নিজ্ব বৈশিষ্ট্যকে বজায় রেখে তিনি তাদের হাতে-কল্মে শিক্ষাদান করেছেন। তাঁরই निर्कादिक शब अक्षुत्रद्रभ करद बारलाद हित्कला विट्य विशिष्ठ আসন পেয়েছে। বাংলার এই প্রতিষ্ঠাকে অকুর রাধতে হলে শিলীর প্রাণে উৎসাহ অন্থপ্রেরণা লাগিয়ে তার রূপস্ঞ্রির ধারাকে জ্বাহত রার্ভে হবে। বিদেশীর শাসন-শৃত্রল আমাদের শাতীয় শীবনের উন্নতির নানা পথ এত কাল রুদ্ধ করে প্লেখে দিবেছিল। পরাধীনভার এই নাগপাশ থেকে আৰু আমরা মুক্তিলাভ করেছি। খাৰীনভা প্রাপ্তির সলে সঙ্গে দেশকে উন্নভ कदा गए पृमवात नानाविव উट्यांग-वादाक्त छलाइ। निध-কলার কেন্ত্রেও এ উভ্তম প্রসারিত হওয়া বাস্থনীয়।

নিক্রতার বছল প্রকাশ হাচের চিত্রস্থাতে বিশিষ্ট রাপ

নিষেছে এমনি কয়েক জন শিল্পীর শিল্পকলার আলোচনা প্রসংস দেশবাসীর মধ্যে যে বস্তুর অভাব মনকে পীভিত করেছে সে সম্বন্ধে ছই-একটা কথা বললায়। ১৯৩২ সালে চিত্ৰকৰ্ম লেখার মান্তে কলিকাভার গ্রপ্মেন্ট আট স্থলে ভারতীয় চিত্রকলা বিভাগে যোগদান করি। ত্রীয়ঞ্জ সভ্যোক্তনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় সেই বংসরই ঐ বিভাগের ভারপ্রাপ্ত অধ্যাপক নিযুক্ত ২ন। ইনি শান্তিনিকেতন কলাভবনে নক্ষবারর কাছে শিক্ষালাভ করেন : ভদানীশ্বন অধ্যক্ষ এয়িক মুক্ল দে-ই বোধ হয় তাঁকে বেছে নিমেছিলেন। এর পূর্বের ঐ পদে নিমুক্ত ছিলেন বিগাতি শিল্পী ঈশ্বরীপ্রসাদ। সভ্যেশবাবু গুরুর সাধক শিয়। চিত্র-রচনার আঞ্চিক হিসেবে ইনি প্রচলিত ভারতীয় পদ্ধতিরই অভুসরণ করে চলেছেন--রুসোপল্রির সুষ্ঠ প্রকাশেই এর ছবির সার্থকতা। এঁর আঁকা ছবিগুলিকে স্লিম্ব রং এবং লীলাথিত রেখার সমাবেশে যে কমনীয় রসখন পরিবেশ মুর্ত্ত হয়ে উঠেছে, অভি সহজেষ্ট তা রসজ মনের তন্ত্রীতে সাভা জাগিয়ে তোলে। সংগ্রন্থবাবুর আকা - "থলোদাও কৃষ্ণ", "ম। ও ছেলে", "বাটল", "ভোক", "কাব্লিওয়াল। ও মিনি" ইত্যাদি ছবি রসিক-সমাজে স্মাদৃত হ্য়েছে। শিক্ষ



THE WIPSTON

। शिक्टरराज्यां व शांक्रवि



মৃষিক-বাহন শ্রীপ্রিয়প্রসাদ শুপ্ত ছিসাবেও তার কার্যা সার্থক। প্রাচানকালের গুরু-শিখ্যের আদর্শকে তিনি নিজের জীবনে খেনে নিয়েছেন। মাত্র করেক বংসরের মধ্যেই তার কয়েকজন ছাত্র বিশেষ ফুতিত্ব অর্জ্ঞন করতে পেরেছেন।

অবনীক্রনাথ একদা অধ্যক্ষ হাভেল সাহেবের অহুরোধে কলিকাতা আট স্কলে ভারতীয় চিত্রকলা বিভাগকে গড়ে ভূলেছিলেন। এবানেই তাঁর ছাত্র ছিলেন হুরেন্দ্রনাথ গাঙ্গুলী, নন্দলাল, শৈলেন দে, সমরেন্দ্র গুপ্ত প্রভৃতি-- এবানেই হুরু হুরেছিল বাংলার চিত্রশিলের পুনরুজ্জীবনের সাধনা।

আমাদের ছাত্রাবস্থায় আট স্থলে পৌরাণিক কাহিনী নিয়ে ছবি আঁকার রেওয়াক কমে যেতে দেখেছি-- তার বদলে मानुराय देवनिक्त कीवनयां दारक विषयवञ्च करत श्रव हरि कांका চলভ। আমরা তখন নেচার থেকে ধুব স্কেচ করতাম---যেমনটি দেৰতাম, ঠিক তেমনি করতে ১৫টা করতাম। নানা রক্ষ ভণীতে মাসুষের, জীবজন্তর ক্ষেচ করতাম—আবার গাছপালা, কুঁড়েখর এবং নানা প্রাকৃতিক দুর্গাদির ছবিও আঁকিতাম। তথনকার অধাক মুকুল দে এবং প্রধান শিক্ষক রমেজ্ঞনাথ চক্রবর্ত্তী এ বিষয়ে খুব উৎসাহ দিতেন। এর ফলে বাংলার সমাজ-জীবনের বিষয়বস্তু নিয়ে প্রচুর ছবি আঁকা হ'ত। প্রচলিত ভারতীয় পদ্ধতিতেই সেগুলো অভিত হ'ত, তবে আলো-ছায়ার সমাবেশ এবং পরিপ্রেক্তিতের ব্যবহার থাকত। পৌরাণিক কাহিনী নিয়েও যে ছবি আঁকা হ'ত নাতা নয়। মাপুষের মডেল সামনে রেখেও আঁকভাম—সাপুড়ে বাউল এমনি ধারা বেছে বেছে মডেল নিতাম। পুরোপুরি ভারতীয় .পছতিভেই আঁকতাম। এ রকম করে আঁকাতে ডুয়িং বেশ **লোৱালো হ'ল, আ**র প্রচলিত প্রতির গতামুগতিকভার প্রভাব (बर्क् थामिक्टी मुक एथरा (शन। (त्रहे नमस्कात जास्नुन বৈনের আঁকা "অব পুঠে জাহাদীর" ছবিট এত ভাল হয়েছিল যে তার হাপ এখনো মনে আহে। সম্রাট ভাহাদীর বর্ণাহত্তে অখ-পৃঠে বনমধ্যে শিকারের অন্বেষণে বহির্গত

হরেছেন, এই হচ্ছে ছবির বিষরবন্ত। য়ুখল-পদ্ধতির অমুকরে ছবিটি আঁকা, নিবুঁত ডুরিং—বুব ভাবব্যঞ্জক। ইন্দু রক্ষিতেং "কলিকাতা শহরের রাভা" স্কেচ থেকে আঁকা ছবি; এ বরণে বিষয়বন্ত নিয়ে ভারতীয় পদ্ধতিতে যে এত ভাল ছবি আঁকা যেতে পারে, এক সময় তা ভাবতেই পারা যাং নি। উক্ত ছবিতে কিছা, বিষয়বন্তর অভিনবত এবং বাত্তবন্দ্র অফনশৈলীর সমধ্য মোটেই দৃষ্টিকট্ট হয় নি। সত্য মন্ত্র্ম দারের "তৃতীয় শ্রেণীর যাঞীর টিকিট কাটার দৃশ্য", "কাহাক্ষে যাঞী," "বাহ্বার ঘাঞীর টিকিট কাটার দৃশ্য", "কাহাক্ষে যাঞী," "বাহ্বার ঘাঞীর নিয়ে আঁকা ছবিগুলিতে অভিনহ দৈনন্দিন জীবনের বিষয়বন্ত নিয়ে আঁকা ছবিগুলিতে অভিনহ শিল্পন্ট এবং আলিকের কি অনায়াস অভিব্যক্তি । ভব্মারে গতান্থগতিক আলিকের অমুকরণ না করাতে শিল্পীর অভরেই রসাগ্রুত্তির পরিচয় ছবিগুলিতে কোবাত যাহত হয় নি ক্ষীয় বৈশিষ্ট্যে এদের আঁকা ছবিগুলি মনোরম। এঁর

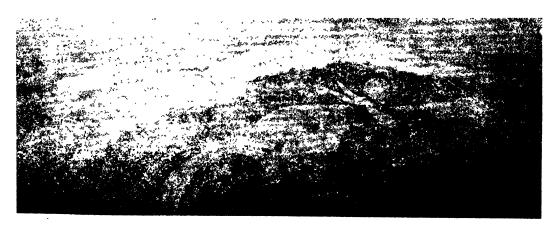


মিনি ও কাণুলিওয়ালা [ শ্রীসত্যেক্সনাপ বন্দ্যোপাধান্ত কীবনকে বীকার করে নিয়েছেন—তাই এঁদের ছবিতে চিরছেই প্রাণধর্ম্ম রূপায়িত হয়ে উঠেছে। সভ্যেক্স বাবুর তদানীছেই ছাত্রদের মধ্যে সভ্য মছুমদার, ত্তিপুরেখর মুবোপাব্যায়, কমলার্ম্মন ঠাকুর, অমৃল্য সেন, হেরছ গালুলী, প্রিয়প্রসাদ গুরু, বীরেক্স ব্রহ্ম প্রভৃতির ছবি বিশেষ করেই উল্লেখযোগ্য। বর্জ্মার লেখকও এই গুলী শিলীর কাছে শিল্পচর্চা করে হাত



ফ্কিরের আথানা [ এনরেন্দ্রনাণ মিত্র
পাকাবার চেঙা করেছিলেন। অমূল্য সেনের আঁকা
চৈতন্যের চিত্রাবলী এবং রাধাক্তকের ছবিগুলি রচনা-নৈপুণো
স্থীসমাজে খুবই আদৃত হয়েছে। এটা আশা করা অসঞ্জ নয় যে, উপযুক্ত শিক্ষকের শিক্ষাধানের ফলে একদা এদের শিক্ষকার ভাঙার সমুদ্ধ হবে। আর্ট ছলে তথন ইউরোপীর পছতিতে চিন্ধান্ধন বীরা শিখতেন, তাঁদের মবো করেকনন প্রাচা চিন্ধকলা পছতিতে ছবি এঁকে ফুভিছ অর্জন করেছেন। এঁদের মবো স্থান সেন, সমর ঘোষ, রাধাচরণ বাগচী, বাহ্দেব রাম প্রভৃতির নাম উল্লেখযোগ্য। অধ্যক্ষ মুকুল দে এবং রমেন্দ্রবারু তথন ভারতীয় চিত্রকলা বিভাগের উপর বিশেষ ভাবে নক্ষর রাখতেন এবং ছাত্রদের মধ্যে কর্ম্মোংলাছ ও তাঁদের মনে মৃতনের প্রতি অনুরাগ সঞ্চার করতেও তাঁরা সক্ষম হয়েছিলেন। রমেন্দ্রবারু নিক্ষের অক্ষন-রীতিকে বিশেষ আদিকের গভীর মধ্যে সীমাবদ্ধ করে রাখেন নি, ছাত্রেরাও যাতে পুরাতনের মোহ ত্যাগ করে নিক্ষ নিক্ষ শিক্ষপ্রতিত মৃতন রূপ দিতে পারে সে বিধয়ে তাদের নির্দ্ধেশ দিতেন ও সহায়তা করতেন। আট ছলে বাভবকীবনের বিষয়বস্ত অবলম্বন করে ছবি আ্লারার রেওয়াক্ষ সন্তব্তঃ ঐ সময় থেকেই বেশী করে আরম্ভ হয়।

হাতে কলমে চিত্রকর্ম্ম শিক্ষার সংশ্ব পর্বেশ দেশের শিল্পকলার ইতিহাস এবং ভিন্ন ভিন্ন চিএকলার অঞ্কন-পদ্ধতি ও বৈশিষ্টা এবং রূপ ও রস ইত্যাদি সম্বন্ধে শিক্ষাদানের বাবস্থা আটমূলগুলিতে থাকা দরকার। বিশেষ করে আমাদের প্রাচীন ভারতের চিত্রকলা চর্চার রূপ, রীতি ও পদ্ধতি সম্বন্ধে, প্রাচীনকালের গুণী শিল্পীদের আকা ধবি—বিশেষতঃ "অক্কা", "রাক্রপুত" ও "মুখল" পদ্ধতির আদিক ও আদর্শ সম্বন্ধে আমাদের যথোচিত শিক্ষার প্রয়োজন। এ সম্বন্ধে উপযুক্ত শিক্ষাদানের বাবস্থা নেই বলেই চিত্রচর্চার আমাদের দৃষ্টির প্রসারতা রদির স্থোগ হয় না। চিত্রশিল্পীদের মবোও অনেকেরই যথন বিভিন্ন পদ্ধতির সম্বন্ধে সমাক্ জান নেই, তথন অক্তে পরে কা কথা। এই শোচনীয় উদাসীনতা দেশের শিল্পকলার অগ্রগতি অনেকটা বাছিত করেছে সে বিষয়ে সম্বেশ্ধ নেই।



শ্রীচৈতক্ষের সমূত্রে ঝল্পপ্রদান

[ শ্রীঅম্ল্যগোপাল সেন

# বাংলা লিপি

### **এ**স্থীরকুমার চৌধুরী

প্রতিবেশীকে গিয়ে বদ্ধাম, "মুশাম, আপনার কুকুরটার চীংকারে পাড়ার লোকে সারারাত দুমোতে গারে না, এর একটা বিহিত কিছু করুন।" তিনি বললেন, "আরে, এ ত ধুব সোজা কথা। এর জভে সাত সকালে আমার কাছে ছুটে আসবার দরকার কি ছিল ? তোমরা সব কানে তুলো গোঁজো।" তুলো গুঁজে রেখে দেবার জভেই যে ভগবান্ কান-ছটো আমাদের দেন নি, সেকথা কিছুতেই তাঁকে বোঝাতে পারলাম না।

তেমনি, বাংলা লিপির সংস্কারের কথা ভূললেই যারা সর্বাত্যে বানান বদলাবার পরামর্শ দেন, তাঁরাও আমাদের সংপ্রামর্শ দেন না।

এঁরা বলেন, "coolট টাইপ নিয়ে হাব্ছুব্ বাচছ ব'লে অভিযোগ করতে এসেছ, তাত বাবেট; তোমাদের যেমন বৃদ্ধি। ই ই ছটো, উ উ ছটো, ন ণ ছটো, য জ ছটো, শ ধ স তিনটের দরকার কি শুনি, এক-একটাতেই যবন কাজ চলতে পারে? রি, অই, অউ, ক্ধ, গ্ল লিবলেই যবন চলে তথন ঝ, ঐ, ঔ, জ, জ, এই অক্ষর ক'টাকে রেখেছ কেন অকারণ? আবার রেক লাগিয়েছ কি দিছ। তোমাদের ছর্ভোগ হবে নাত কার হবে ?"

কথাটা এত লোকের কাছ থেকে এত বেশী শুনতে হয় যে, যা হোক একটা নিম্পত্তি হয়ে এ আলোচনা এবারে শেষ হয়ে যাওয়া দরকার। একই ধরণের কথা ক্রমাগত কত আর শোনা যায় ?

বান্তবিক, একটা কুক্রের মুখে একটা muzzle না পরিয়ে পাড়ার ছেলেবুড়ো সকলের ছটো ক'রে কানে ডুলো ওঁজবার পরামর্শ যতথানি মূল্যবান্, লিপিসমন্তা-সমাধানের উদ্দেক্তে বানানগুলো বদ্দে দেবার পরামর্শের মূল্য ততথানিও নয়।

প্রথমতঃ, বাংলা লিপির যে ধরণের যতটা সংখ্যার আমাদের প্রয়োজন এবং কামা, বানানের কিছুমাত্র অদণবদল না ক'রেও তা যে করা সম্ভব, বর্ত্তমান প্রবজ্ঞেতা আমি প্রমাণ করতে পারব আশা করছি।

দিতীয়তঃ, বানানের যত সরলীকরণই আমরা করি, তাতে আমাদের লিপিসমন্তার মীমাংসা কিছুই হবে না। ৫০০ থেকে কমিরে টাইপের সংব্যা ৪৯০ করবার ছভে বাংলা বানানে বিপ্লব বাবিরে দেবার প্রভাবটাকে অত্যন্ত হাত্তকর বেহিসাব ব'লে মনে করি। এতে ভাষার একেবারে ভিত্তিমূলে ভাঙম ব'রে যাবে; তা ছাড়া, এই উপায়ে টাইপের সংব্যা কমিয়ে যদি ২০০ ১৫০ এমন কি ১০০-তেও নামিরে আনা যার, বে-সমত্ত

প্রয়োজনে লিপি-সংস্কার চাচ্ছি তার বেশীর ভাগ তাডে মিটবে না।

তৃতীয়ত:, বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের অতাভ সুদ্রপ্রসাং গভীর এবং ব্যাপক ক্ষতি না ঘটিয়ে বানানের এই জার্ত সর্বাক্রণ সম্ভব নয়।

এবারে আমার এই তিন দকা বক্তব্যের ভিতর শেষ দক নিম্নে আলোচনা হুরু ক'রে প্রথম দফাটতে গিয়ে শেষ ব যাক।

বানানের সরলীকরণ থেকে আমাদের ভাষা ও সাহিতে
কি লাভীয় ক্ষতি কতথানি হতে পারে তার কিছু আছি
দেবার চেষ্টা করছি।

- (১) বাংলায় তংগম শব্দ ব'লে কিছু প্রায় আর বা থাকবে না; ফলে, তাদের আগ্রীয়তার স্ত্র ব'রে নৃতন পু: তংসম শব্দ আৰু যেমন ভাষার ভিতর-মহলে অব প্রবেশাবিকার পাছে, অতঃপর তা আর পাবে না। 'জ্ঞ রয়েছে ব'লে 'কিজ্ঞাসা'কে নিতে দ্বিল করবার কিছু থাকে ভ কিছু গানের হাত ব'রে কিগ্রাশা এলে তাকে প্রপ্ন করমে
- (২) সংশ্বত যে শশ্বসন্থারকে আমাদের পরিবার ই ক'রে নিয়ে আমরা ভাষার আমর ক্রমিরেছি, তারা নিকেরে কৌলিক আচারের অনেকবানিকেই সঙ্গে ক'রে নিয়ে এসেরে ফলে, বাংলা ব্যাকরণর অনেকবানিই আসলে সংশ্বত ভাষা ব্যাকরণ। এই ব্যাকরণ আমাদের বুব অন্তই আর কা লাগবে ব'লে আমাদের ছর্ভোগের শেষ থাকবে না। প্রসম্বিত্র রচনা করতে হবে শ-ছুএক, নয়ত দুরাভ হয়ে যাবে পির্যালয়। প্রতায়াদির ন্তন শ্বে রচনা করতে হ হাজারখানেক, তা না হলে গ্যানের সঙ্গে বিশ্বার্গার, কোমে সঙ্গে বিশ্বোরের সঙ্গে বিশ্বের সঙ্গে বিশ্বের সঙ্গে বিশ্বের সঙ্গে বিশ্বের সংশ্বতির সংশ্বতির বাশের সংশ্বতের ব্যাবের না। এ ছাড়া অন্ত বিপদ্ও আলে আছে।
- (৩) সদ্ধি ক'রে ও প্রত্যয়-উপসর্গাদি ছুড়ে তৎসমসৃ মুজন শব্দ গঠন প্রায় বন্ধ হবে।
- (৪) চেহারাটা আলাদা ব'লে, সংস্কৃত থেকে এমন আ শব্দ আমরা নিয়েছি, নিতে পেরেছি, যার উচ্চারণটা ভিয়া

 <sup>&</sup>quot;वाःना वानात्वत्र कृतिका", पिश्रख, २०६६ ।

জন্ধ বাংলা অথবা সংস্কৃত শব্দেরই মত। চেহারাটাও এক হয়ে গেলে এই শব্দগুলির ব্যবহার স্বাভাবিক নিয়মে ভাষায় ক্রমশঃ ক্রমে ভাগবে, যে কারণে খোড়া অর্থে ছয়' কথাটা বাংলায় এখন আর চলে না। পুর ও হর এ ছটোকেই যদি শুর লিখতে হয়, ৩। হলে হরের জঙে শুর রেখে শুর বোঝাতে বীর বলতেই চেটা করব। দীনকে দিন, বীণাভারকে বিনাভার, পীঠকে পিঠ, বলীকে বলি, বিঞ্ভ এবং বিক্রীভ ছটোকেই বিক্রিভ, যমককে জমক, স্বচীকে শুনি, নিঃসদ ও নিঃসংজ্বকে নিঃশল, যদি আমাদের লিখতে হয়, তবে ফেকাটা কম চলে অন্তঃ সেটার জভে সমার্থক আলাদা চেহারার শ্রম ভাষায় অনেক আছে ব'লে ভাষার শর্মশুদ্ এতে কমবে। অভদিকে, ঘার্থক শব্দ ভাষার বাংলা-ভাষাটাকে শিক্ষাথার পঞ্চে করতে চাই, য়য়হতর করতে চাই না।

- (৫) বৃং:পভিবিচারে শব্দার্থগ্রহ অনেক ক্ষেত্রেই আর হবে না। যাওয়া যদি জাওয়া হয়ে যায়, যা বাতু হবে জা, যাত হবে জাত এবং জন্ম-জাত-র সঞ্চে তার তফাং কিছু থাকবে না ব'লে, অগ্রন্ধ যে জাগে জন্মেছে, না যে আগে চ'লে গিয়েছে তা বোকা যাবে না।
- (৬) ইস্বদীর্ঘ স্বরের বিচারে বাংলায় কবিতা রচনা কমবে। যা-ও বা লেখা হবে, ভাতে ঈ, উ থাকবে না ব'লে ধ্বনি-বৈচিত্রের বিশেষ কিছু আর অবশিষ্ট থাকবে না।

"পথি, কি পুছপি অঞ্ভব মোয়। সে হো পারিতি **অহু**রাগ বাৰানিতে তিলে তিলে পুতৰ হোয়।" "মণিময় মঞ্জির পায়। দুৰহি তেজি চলি যায়॥" "নব নব পল্লবে শোভিত ডাল। সারী শুক পিক গাওয়ে রসাল।" "বুট কি কহব কানাই। ৰুৱত ভুষা বিহু রাই ॥" "पिटन पिटने पिनकद एडल किल्माद । শৈত ভীত রহুঁ শীধর-কোর ॥" "ৰুমরি দাছরি বোল। ब्रेमें अपन-शिलान ॥" "ডাকে ডাহক ব্যক্ত ব্যক্ত ৰাবি ৰলকত ৰাবিয়া। ভিভিমায়িত মতুকীবর ময়ুর নাচত সাজিয়া।" "কত শত স্বন্ধর নগরী তীরে রাজিছে ভটরুগ ভূষি' ও 1

পড़ि' क्लनील बदल ओब ছবি অপুকারিছে নত-অঞ্চন ও ॥" "নীল-সিকুঞ্জ-বৌত-চরণতল, প্ৰনিল-বিকম্পিত ক্সামল অঞ্জ, অম্বর-চুম্বিত-ভাল হিমাচল ভভ-ভূধার-কিরীটিনী।" "পুরব পশ্চিম আসে তব সিংহাসন পাশে, প্রেমহার হয় গাঁধা।" "খোর ভিমিরখন নিবিড় নিশাবে পাড়িত সুছিত দেশে. কাত্রত ছিল তব অবিচল মঙ্গল নত নয়নে অনিমেধে।" "পকল যোগী সকল ত্যাগী, এস হঃসহ হঃখ ভাগী. এস ছুৰ্জীয় শক্তিসম্পদ মুক্তবন্ধ সমাজ হে। এস জানী, এগ কমী, নাশ ভারত লাক হে:"

এ সব বিশিষ পার চলবে না। নৃতন আর লেখাই থে
- চলবে না কেবল তা নয়, পুরাণো বিশিষগুলিকেও আর নৃতন
ক'রে ছাপতে পারা যাবে না।

(৭) ভাষার ধ্বনি-বৈচিত্তা ক্রমে কমবে।
ভাষাৎ, সব মিলিয়ে বাংলা ভাষাটার যা চেহারা ছবে
ভা একেবারে চমৎকার।

এর পরে দেখা যাক, এ সমন্ত ক্ষতি স্বীকার ক'রে নিম্নেও বানানের সরলীকরণ যদি আমরা করবই দ্বির করি, তাতে আমাদের আঞ্চকের দিনের লিপি-সম্ভার মীমাংসা কিছুমান্ত ছবে কি না, এবং যদি হয় ত কতটা হবে।

বাংগা লিপির সবচেয়ে বড় সমস্তা, এর অক্ষর বা ধ্বানচিক্তের অকারণ বাছলা। কয়েক শ টাইপের মধ্যে থেকে,
আঙুলে ক'রে গোনা যায় এমন কয়েকটিকে বাছাই ক'রে বাদ
দিয়ে আমাদের লাভ ঠিক ততটাই হবে, ধর-ভরতি মশার
বাঁকের হু'তিনটাকে মেরে বাকীগুলোর কামড় খাওয়াতে
যতটা লাভ।

বাংলা লিপির ভার-এক সমস্থা, এর ঠাটটা ফ্রনি-জন্থুসারী, কিছ কার্য্যতঃ এ লিপি সর্ক্রত হ্রনি-ভন্থুসারী নয়। বানানের সরলীকরণ হলে প্রাজ্ঞকে প্রাণ্, রভাকে রক্ষা, ইপ্রকে ইন্র, পল্লকে পদুঁ, মাত্কে মাত্রি, খাত্তকে বাছি, ভালকে থাছ লিখে, লিপির ফ্রনি-জন্থুসারিছ কিছু বাড়ালাম মনে ক'রে ভাত্মপ্রসাদ হয়ত ভামরা জন্তুত্ব করতে পারি। কিছ দীর্থয়র লুপ্ত হবে ব'লে হে-সব ক্লেত্রে এখন আমরা স্বর্জনির দীর্থ উচ্চারণটাই ক'রে থাকি, সে-সব জ্লেত্রে লিপির হ্রনি-জন্থুসারিছ কমবে। চিহ্ন-ধ্রীম ব্যঞ্জন সংস্কৃতে সর্ক্রত আকারাছ, কিছ বাংলায় কোথাও ভকারাছ, কোথাও হসভবং, কোথাও তার জন্তবিত্তর ওকার-

বেঁষা উচ্চারণ। বাংলা লিপি ধ্বনি-অনুসারী হবার পথে এইটেই হচ্ছে সবচেয়ে বড় বাখা, कांत्रन वांश्ला मटकत यांहे সংখ্যা যদি ৬০,০০০ হয় ত তার মধ্যে অস্ততঃ ৮০,০০০ চিহ্-খীন বাঞ্চনের বাবখার রয়েছে। সুতরাং দেখা যাচেছ, বানানের সরলীকরণ ক'রে এদিক দিয়েও লাভ আমাদের প্রায় কিছুই হবে না। অকারাম্ভ উচ্চারণ বোঝাতে ওকার (ए**७३) ठलट्य ना. क**ात्रण (अठे। श्रिशाहात १८४। **७का**त-বেঁধা অকার উচ্চারণ ওকার দিয়ে বোঝাতে গেলে বাাবির চেয়ে চিকিৎসাটা বেশী মারাগ্রক হয়ে দাড়াবে। প্রথিত-প্রোপিত একাকার হয়ে যাবে: মহাত্তব, মহার্ণ, মহারণ্য হয়ে যাবে মোহ।মুভব, মোহান বি, মোহারল। মোহের অনুভব, যোহের অর্থ, মোহরূপ অর্ণোর সঙ্গে তাদের আর কোনোও পাৰ্থক্য থাকবে না। চিঞ্ছীন ব্যপ্তন বাংলায় যেসব ক্ষেত্ৰে হসত্তবং উচ্চারিত হয় তার সর্বত্ত উচ্চারণটা পুরোপুরি হসন্ত এয় ব'লে হস চিত্তের ব্যবহারও মিখ্যাচারের সামিল হবে: হসভবেৎ উচ্চারণ বেশ্বাবার ক্রতে সর্বত্ত হস্ চিঞ্বাবহারের অন্ত অনেক বিপদও আছে।

বাংলা লিপির আরও এক সমস্তা, এ লিপি তিন বাকে পেবা হরে বজ্ঞ বেনী কামগা কোচে। ই, ই, উ, উ, উ, উ, উ, ইকার, ইকার, ঐকার এবং উকারের আঁকড়গুলো, ট-ঠ-এর ল্যাক ছটো, রেফ ও চপ্রবিন্ধ, এইগুলির খান উপরতলাম; উকার, উকার, বকার, প্রকার, একার ও হস্চিশু বাকে নীচতলায়; বাকী সব অক্ষর মাবের তলায়। ট-ঠ-এর ল্যাক হেটে দেওয়া যখন সম্ভব নয়, তখন উপরতলাটাকে রাখতেই হবে; মাবের তলাটার ত ক্বাই নেই; একমাম নীচতলাটাকে বাদ দিয়ে চলে কিনা দেবা দরকার। বানানের সরলীকরণ হলে উকার, থকার, প্রকার, একার অবস্থা বাদ পড়বে, কিন্তু উকার এবং হস্ চিশ্রের ব্যবহার থাকবে ব'লে নীচতলাটাকে আমরা ছাড়তে পারব না। অতএব সরলীকরণ ধেকে এদিক্কার লাভও কিছুই আমাদের হবে না।

বাংলা লিপির বিরুদ্ধে এও আর-এক অভিযোগ, যে এর কোনোও কোনোও ধ্বনিচিহ্ন, যেমন ইকার-জ্বকার, অভ ধ্বনিচিহ্নের ঘাড়ের উপর এসে হুমড়ি থেরে পড়ে। ছাপাধামার এ জন্তে যে শিং বাগানো টাইপ ব্যবহার করা হয় সে টাইপ ভাঙে বড় বেশী, আর টাইপরাইটারে ক্রমাগত back-shift চেপে চেপে ছাপতে হয় ব'লে কান্ধ একটুও এগোর না। বামানের সরলীকরণ থেকে এ সমস্ভার কোনোও মীমাংসা হওয়া সম্ভব নয়।

এর পর নিঃসন্দেহে এই সিদ্ধান্তে আমরা পৌছতে পারি

"বাংলা বানানে অ এবং অকার," বিশভারতী পৃত্রিকা, ষ্ঠ বর্ষ
 ভিডার সংখ্যা।

যে, লিপিসম্ভা সমাধানের স্বন্ধে বানানের সরলীকরণ করবার পরামর্শটা একেবারেই অপ্রাসন্ধিক, বাজে পরামর্শ।

এবাবে আমি দেখাব, থে, বানানের কিছুমাত্র অগলবদল
না ক'রে, বাংলা ভাষার ঐতিছের ধারাবাহিকতা সম্পূর্ণ বন্ধার রেখে, এবং বাংলা লিপির যেটা character বা স্বর্থা, সেটাকে একটুও নষ্ট হতে না দিয়ে আমাদের এই লিপি-সমস্থার সমাধান কেবল যে সম্ভব তা নয়, অত্যন্তই সহক্ষাধা।

একটে সকলের আগে এবং সবচেরে বেশী প্রয়োজন, একটি জকার চিহ্ন গ্রহণ করা। সংস্কৃত লিপিতে জকারের প্রয়োজন নেই, কারণ সে লিপিতে চিহ্নহীন ব্যক্ত্রণ মাত্রেই সর্ব্রুত্র সমভাবে অকারান্ধ উচ্চারিত হয়। বাংলায় চিহ্নহীন বাস্ত্রনের উচ্চারণ সর্ব্রেগ্র জকারান্ধ নম ব'লে, একটি অকারচিহ্নের জভাব উপস্থিত হয়েছে। ছুবের সাব খোলে মেটাবার মত ক'রে জনেকে তাই আজ চিহ্নহীন বাস্ত্রনের অকার উচ্চারণ নির্দেশ করবার জলে কোথাও কোথাও কোরার জলের বিশেশ করবার জলে কোথাও কোরার বিশেশ করবার জলে কারহার করছেন। এ কার্ধ্ব মিদ সর্ব্রুত্রাম, কিন্তু কেন থে সেটা করা যায় লা তা অভ্যান বিশাদভাবে বলেছি।

বাংলায় যে-সমন্ত ধ্বনির উচ্চারণ নেই তাদের ক্রেও একাধিক প্রতন্ত্র অক্ষর বা ধ্বনিচিহ্ন রয়েছে, আর যে অকারাম্ব ধ্বনি আমাদের প্রায় প্রত্যেকটি কথায়, তার ক্রন্তেই কোনোও চিহ্ন নেই, এটা যে ভিন্ন দেশীয় লোকের কাছে. কতথানি অভূত ঠেকতে পারে একটু চিছা করলেই সেটা বোঝা যায়। কিছু বিদেশীয়েরা কি ভাবছে ব'লে নয়, আমাদের নিক্ষের গরকেই অকার চিহ্ন একটি আমাদের নেওয়া উচিত।

অব্দর থেকে মাত্রা টেনে যেখানে আমরা অব্দরাপ্তরে চ'লে যাই সেইখানে ছোট একটি v চিহ্নকে অকাররপে প্রছন্দে ব্যবহার করা চলে। আকারের সঙ্গে অকারের আঞ্তিগত যে একটু সাদৃত্ত থাকা বাঞ্নীর, এর মধ্যে সেই সাদৃত্ত অন্ধ একটু পাওয়া যাবে; চিহ্নটি দেখতেও কিছু মন্দ নয়। ত্বস্থাকোণ সম্বলিত দিতুক, কি বাংলা-লিপির অনেক অব্দরের উপাদান; সেনিক্ থেকে দেখলেও খীকার করতেই হবে যে, আমার প্রভাবিত ধ্বনিচিহ্নটি, যা একটি ত্বশ্বকোণ সম্বলিত ছোট দিতুক ছাড়া আর কিছুই নয়, খুব বেশী পরিমাণে বাংলা লিপির বাতেরই ব্নিন্ধ। যে খকারটা কাত হয়ে বসে, সেইটেই যেন উপরে উঠে চিত হয়ে বসবে। নাগরী

 <sup>&</sup>quot;বাংলা লিপির সংখ্যার," বিশ্বভারতী পঞ্জিকা, তৃতীয় বর্ব, প্রথম সংখ্যা। "নৃতন বাংলার বর্ণমালা", বিশ্বভারতী পত্রিকা, ষষ্ঠ বর্ব, চতুর্ব সংখ্যা।

লিপিতে এ চিহ্নট হয়ত তত মানানসই হবে না, কেননা, নাগরী লিপিতে স্ক্রকোণ জিনিধটার একান্তই অভাব। এই চিহ্নট লেখাও সহজ, টানালেখার লাইনটাকে অল্প একট্র কাপিয়ে দিলেই অকার হয়ে যাবে, বাংলা লিপির একটানা যাত্রাসমাবেশের একথেরেমিও এতে কাটবে। নৃতন একট ফানিচিহ্ন যে বাবহার করতে হচ্ছে, কিছুদিন পরে কারও আর তা বিশেষ মনেই পাকবে না: আর বান্তবিক, বাংলার অকারান্ত ধননি এত বেশী, যে, গুব সহজে লেখা যায় এমন চিহ্নই অকার্য়ণে আমাদের প্রহণ করা উচিত।

সংশ্বত স্থিত্ত ইত্যাদির বাবহার যাতে অব্যাহত থাকে, সেহতে ত্বত্ত রচনা করতে হবে, যে, তংসম শশগুলির অকার বাংলার কোপাও অকারান্ত, কোপাও হসন্তবং উচ্চারিত হয় ব'লে বাংলা লিপিতে সেই উচ্চারণ অন্থ্যায়ী অকারান্ত ব্যপ্তন ও চিহ্নহীন ব্যপ্তন ব্যবহার ক'রে লেখাও হয়ে থাকে। বলা বাহলা, চিহ্নহীন ব্যপ্তনের উচ্চারণ সর্ব্বত্তই হবে হসন্তবং। মৃক্তাক্ষরের প্রথম অক্ষর বিষ্কৃত্ত অবস্থার হস্চিহ্নিত হওয়া উচিত, কিন্তু তার দরকার কিছু নেই। কেবল ব্যাক্রণ-বিভ্রাক্টের স্কি যাতে না হয়, সেক্ত্রে আরও একটি নিয়ম রচনা করতে হবে এই ব'লে যে, এক্যোগে লেখা হলে পূর্ব্বপদের হসন্তবর্ণ হস্চিহ্নত তাগ করে।

ৰাঞ্চনবৰ্ণ নিয়ে আমাদের প্রায় একমাত্র এবং খুব বেশী অস্থবিধার কারণ যুক্তবাঞ্জনগুলি। একটি অকার চিহ্ন এহণ করনে ছটি বা তিনটি বাঞ্জনকে একত্র জুড়ে সভন্ত অক্ষর ভৈরি করবার প্রয়োজন আর থাকবে না। যে বর্ণ স্থরান্ত নয় তাকেই হসন্তবং ব'লে চিনতে পারছি, স্থতরাং স্থরান্ত বাঞ্জনের প্রেক্সার একটি বা ছটি চিহ্নীন বাঞ্জনের হসন্তবং উচ্চারণ তার সঙ্গে যুক্ত হয়ে নিজে থেকেই যুক্ত বাঞ্জনগুনির স্টি

ষে বৃক্তাক্ষর কর্মটকে ছেন্ডে দেওরা বাচ্ছে না, তারা হছে ক্ষ, জ আর জা। কারণ মিলিত বাঞ্চনধ্বনিগুলি এদের প্রচলিত বাংলা উচ্চারণের মত নর। আমার ছেলেবেলার বর্ণপরিচয়ের বইরে অন্ধ বাঞ্জনবর্ণগুলির সঙ্গে ক্ষ-কেও জারগা দেওরা হ'ত, জন্ম মুক্তবাঞ্জনগুলির থেকে তার বাতস্তোর এই যে বীক্ষতি, এটা খুবই সমীচীন ছিল। এই স্বাতন্ত্রা জ্ঞ পুরামান্তায় এবং জ কিছু পরিমাণে দাবি করতে পারে। এঃ-র জন্ম বাঞ্জননিরপেক্ষ বাবহার বাংলার এখন আর নেই, তা ছাড়া জ্ঞ ভিন্ন জন্ম সমস্ত বুজ্জবর্ণে তার উচ্চারণ ন, তাই ক, হু, গ্লু, ক্ষ ইত্যাদিকে এই স্বাতন্ত্র্য দেওয়া যেতে পারে না। ৬-র উচ্চারণ বাংলার সর্বন্ধই জন্ম্বারের মত ব'লে যে মুক্তব্যঞ্জনগুলিতে ও রয়েছে, সেগুলিরও এই স্বাতন্ত্রের উপরে কোনোও দাবি নেই।

ব'লে ম ফলা য ফলাকে রেখে দিতে হবে। এতে আর-এফটা স্বিধা এই হবে যে খাট্স লিগতে ম, স্থাতা লিগতে ম ফলা, ইাা লিগতে র, সঞ্চলিবতে য ফলা বাবহাব করতে পারব। মনে রাখতে হবে, ম ফলা যফলা মূল অফবেব সঞ্চে লেপটে বসবে না, বেশ ভদ্রলোকের মত পাশ খেষে আলাদা হয়ে বসবে।

বাংলায় শ্রেম্মন্ত ব এবং ধর্গীয় বকে আমরা মিশিয়ে কেলেছি। এ অবস্থার প্রতিকার সহজ নয় কিছ সক্ষবরে অভয় ব-এর ধতার উচ্চারণ রয়েছে, যেমন স, আখাস, বিখ্ किए, अवस, विष, रेजापि। अध्य त-এর উচ্চারণ নির্দেশ করবার কলো, 'ৱ' এই অক্সটিকে যদি আমরা অস্তম্ভ ব-এর বৈক্ষিক রূপ হিসাবে গ্রহণ করি ভাহলে ব ফলা রাখতে হয় না। অনেক সময় প্রতিবর্ণীকরণের কালে রু অক্রটির আমাদের প্রোক্তন হয়, অনেক ছাপাধানায় সে কারণে এই **অক্**রটি আক্কাল ধাকেও দে**বতে পাই। ব ফলা ছে**ড়ে র রাখবার এট স্থবিধার জন্মে আমি ত্র-এরট পক্ষপাতী : ত্র-ফলার উচ্চারণ যদিও বাংলায় দিছের মত অনেকটা, কিছু অন্ত বাঞ্জন-নিরপেক অভয় ব উচ্চারণ বাংলায় নেট ব'লে যুক্তবর্ণে ভার উচ্চারণ-বৈকলা ঘটে একথা বলা চলে না। তা ছাড়া বিশ্ব. বিষ, এই কথাগুলিতে অন্তত্ত্ব ব-এর ঠিক উচ্চারণটা কেউ যদি ভুল ক'রে ক'রেই ফেলেন, তাতে ধুব বেশী ভয় পাবার কিছ কি আছে গ

চিহুংখন সমস্ত বাঞ্চলেরই উচ্চারণ হসপ্তবং হবে বলে কেং-রাধবার পরকার কিছু থাকবে না। শৃগাল, সান ইত্যাদি কথার শ-স এর দন্তা উচ্চারণ একটি ফুট্কি যোগ ক'বে নির্দেশ করা চলবে। চ বর্গের দন্তা উচ্চারণ এবং প বর্গের দন্তোষ্ঠ্য উচ্চারণ এই উপায়েই এখন নির্দেশ করা হয়ে থাকে।

হাপার কাবে ড, চ, র চলবে। টাইপ-রাইটারের অকর-সংখ্যা ক্যাতে হলে ড, ঢ, এবং য-কেই বিশ্যুক্ত ক'রে এদের কাল চালানো বেতে পারে।

চজবিন্দু যদি মাধার উপর থেকে নেমে মূল বর্ণের ভান পাশ খেঁষে মাঝতলাতে এসে বসেন, তা হলে সব দিক্ দিয়েই ভাল হয়।

সমস্ত রকমের ব্যঞ্জনধ্বনির স্বত্তে এই ক্রট অক্সরকে রাধলেই তা হলে আমালের চলে:

কৰাগৰত চেছ্জৰ এংগ উঠিত চণ তথালখনপা ফ বিভাষ খারলার্হেশাধাস ভাচ্যং : "কং ভালোগু ু

वर्षार, त्यां 8 व है।

উ-কারের ছোঁওয়া লাগলে গ, শ এবং ২-এর চেহারটি এখন বদলে যায়। সেটা কিছু সমস্তাই নয়। ছোঁওয়া এর পর আর লাগবে না। এইজনে, যে, ব্যক্তমনিরপেক্ষ বাবহারের জন্ন অ আ প্রাপ্ততি একপ্রস্থ পূর্ণবিশ্বব স্বরবর্গ, আকার ইকার প্রস্থৃতি দিতীয় একপ্রস্থ সংক্ষিপ্ত ব্যবহানিচিক্ত এবং সংক্ষিপ্ত চিক্তপ্তলির ভিতরে আবার ছ-তিন রকমের উকার, উকার, অকার মিলিয়ে অকারণ অনেকগুলি ফানিচিক্ত আমাদের ব্যবহার করতে হয়। তার উপরে সংক্ষিপ্ত স্বর্থননিচিক্তপ্রলির মধ্যে আকার ও ইকার ছাড়া অন্ত সব কর্মটিই ফানিক্রম অক্সারে তাদের যেখানে বসা উচিত, অধাৎ মূলবর্ণের ডাইনে, না ব'সে কেউ বা বদে উপরে, কেউ বা নীচে, কেউ বাঁদিকে, কেউ ছ'দিক্ জুড়ে, কেউ আবার তিন দিক্ জুড়েও বসে।

হ'প্রস্থা বরধ্বনি িথ রাখব না স্থির ক'রে আমাদের ভাবতে হবে, মূলবর্ণ ও সংক্ষিপ্ত ধ্বনিচিক্রের মধ্যে কোন্গুলিকে রেখে কোন্গুলিকে ছাড়ব। সভ্যন্তাবে স্বর্বর্ণের যত ব্যবহার, ব্যঞ্জন-সহযোগে অর্থাং আকার ইকার প্রভৃতি রূপে তাদের ব্যবহার বহুণ্ডণ বেশী; তহুপরি আকার ইকার লেখা সহন্ধ, তারা আয়ারা কোড়ে কম: তাদের কিছুতেই ছাড়া চলতে পারে না। লিপিকারের কান্ধকে সহন্ধ করাই লিপিসংকারকের কর্তবা, কঠিনতর ক'রে তোলা নয়। অঞ্জিকে, জারগা এত কম জোড়ে ব'লেই, সতন্ধ, অর্থাং ব্যঞ্জন-নিরপেক্ষ, স্বর্বর্ণের কান্ধে আকার ইকার ব্যবহার ক্রতে গেলে অভ্যন্ত সেটা বিশ্বী দেখতেও হয়, এবং খাংলা লিপির বৈশিষ্টাও তাতে একেবারে নষ্ট হয়ে যায়।

সবদিক কিসে রক্ষা হয় তার ইঞ্চিত বাংলা লিপিতেই একটি এবং নাগরী লিপিডে করেকটি রয়েছে। বাংলায় যেমন অ-তে আকার দিয়ে আ হয়, নাগরীতেও তাই হয়, ভদ্পরি অ-তে ওকার ওকার যোগ ক'রে ও-ওয়ের কাজও নাগরীতে দিবাি চ'লে যাচেছ্ বাংলাতেও চলতে পারে এবং ক্ষেক্টির কাৰ যদি চলে ভ বাকীগুলিরই বা কেন চলবে না ? সরধ্বনির বাহন হবে অ : বাংলা অক্ষরগুলির মধ্যে রেখা-চিত্রের যা উপাদান, সরলরেখা चुन्त-কোণ, রন্তাংশ এবং कृतिक जात मन्द्रे अत भारता तासाक : वाक्षनवर्ग वतास इतन অ লোপ পাবে ৷ সেবাগ্রামে basic হিন্দীর পাঠ্যপুস্তক এই রীতি অহুসরণ ক'রে ছাপা হচ্ছে, তাতে কারও কোনোও অমুবিধা হচ্ছে ব'লে এখন পৰ্যাত্ম ত শুনিনি। আৰু থেকে ঠিক চার বংসর আগে বিশ্বভারতী পত্তিকার মারফং এই প্রস্থাব এবং একটি অকার চিহ্ন প্রহণের প্রস্থাব আমি করে-'৬লাম: কিন্তু বাংলাদেশের সুধীন্তনের দৃষ্টতে আমার সে ্লখাটা পভেছে ব'লে মনে হয় না।

্নকারের ব্যবহার বাংলার নেট, কিন্তু সংস্কৃতের উদ্ধৃতি ইত্যাদির জতে একে রাখতে হবে। ্ন, এই সংখ্যাচিক্টি দিয়ে নকারের কান্ধ, আর ঋকারের দ্বিত্ব ক'রে ঋ্কারের কান্ধ যদি চালানো যার, তা হলে অকার চিক্টকে এবং বরধনের বাহনরপী অ-কে হিসাবে ধরে বাংলা বরবর্ণমালার সংখ্যা দাঁভার ১২। মোট অক্ষরের সংখ্যা হয় ৫৭। যদি ফুটকি থোগ ক'রে ড, চ, য় নিপান্ন করতে আপত্তি না থাকে ত টাইপ-রাইটারের কাল ৫৪টি অক্ষর হলেই বছকে চলতে পারে। বড় হাতের ও ছোট হাতের অক্ষর মিলিমে এবং (lipthong ছটকে নিয়ে রোমকলিপির বর্ণমালার সংখ্যা ৫৬।

এর পর ধ্বনিক্রমের কথা।

আকার আর ঈকারকে নিয়ে ধ্বনিক্রমের গোলযোগ কিছু নেই, কেবল ঈকারের আাঁকড়িটা অল অক্সরের এলাকায় বুঁকে না পড়ে সেটা দেখলেই হ'ল। ইকারের আঁকড়ির সম্বন্ধে বস্তুবা সেই একই, ভবে ইকারটাকে আগে বাঁদিকৃ থেকে ডাইনে নিয়ে এসে ভার আঁকড়ির বোঁকটাকে বাঁদিকে কিরিয়ে দিতে হবে।

উকার, উকার ও ধ্বকারকে নীচতলা থেকে মাঝতলায় তুলে এনে মূলবর্ণের পায়ের কাছে ডানদিক্ বেঁষে বসিয়ে দিলেই কাছ ৮'লে যাবে। রু-রু লিখতে আমরা যে উকার উকার ব্যবহার ক'রে ধাকি, সে ছটিকে নিলে টানা লেখার প্রবিধা অনেক বাড়ে এবং অক্ষর-সমাবেশের দিক্ থেকেও সেটা ভাল হয়। তবে অনভ্যাসের কল্পে অক্ষরক্ত লোকদের প্রথম প্রথম প্রব অস্থবিধা হবে তাতে। পরিবর্গন ২ত কম ক'রে লিপি-সংস্কার করা সম্ভব, তাই আমাদের করতে চেষ্টা করা উচিত।

একারটাকে ও ঐকারটাকে ডানদিকে সরিয়ে এনে তাদেরও বোঁক বাঁদিকে ফিরিয়ে দেওয়া যায়, কিছ বাংলা বাঁদিক থেকে ডাইনে লেখা হয় ব'লে, উণ্টোদিকে বোঁক, এয়ন অক্ষর লিখতে লিপিকারের অন্থবিধা। ইকার-ঈকারের এই অন্থবিধা নেই, কায়ণ টানা লেখায় প্রভাবিত ইকারের জাঁকড়ির টানকে স্বছন্দেই ডানদিকে পুরিয়ে জানা যাবে, জার ঈকার সাধারণতঃ বাঁদিক থেকে ডাইনেই লেখা হয়ে থাকে।

নাগরী একার ঐকার নেওয়া চলতে পারে। কিছু এখনকার মত অন্ত অক্তরের মাথার উপরে তারা বসতে পাবে না ব'লে মাঝতলাটার সবটাই একেবারে কাঁকা পড়ে থাকবে, কলে, বাংলা এখন যেমন ঠাসাঠাসি হয়ে লেখা হয় তা আর হবে না। এ অসুবিধাটা নাগরী ওকার-ঔকারের নেই। কিছু নাগরী ও-কার থদি আমরা নিই তা হলে তার সঙ্গে যাতে গোল না বাবে এই কলে ই-কারের আক্তিটাকে বদলে ই-র আঁক্ভির ধরণের ক'রে নেওয়া প্রোক্তর হবে!

এ-ঐ-ও-ও লিখতে এখনকার এ-কার ঐ-কার ও-কার ও-কারের চেয়ে বেশী সময় লাগে না ; সেইজভে মনে হয়, এইগুলিকেই একটু বদ্লে অথবা বেশ খানিকটা ছোট ক'রে লিখে এ-কার ঐ-কার ও-কার ও-কারের কাজ যদি আমর। চালাই, কোনও দিক্ দিয়েই অস্বিধা কিছু হয় না। ছোট ক'রে লিখবার কথার মনে পড়ল, আমার প্রভাবিত লিপিতে মূল বর্ণগুলি এবং অ যদি প্রত্তে পাঁচ মাত্রা স্থান কোড়ে, অ-কার আ-কার ই-কার ইত্যাদি সংক্ষিপ্ত বরধ্বনিচিহুগুলি এবং অস্থার-বিস্প-চন্দ্রবিন্দু, য-কলা, য-কলা ও হস্চিহু মানাধিক हे মাত্রা স্থান জুড়বে। টাইপরাইটারের key-beard-এ এদের কথা ভেবে এক সার চাবির জঙ্গে আলাদা

পরিচয়ের সীমানা খুব বেশী ছাড়িয়ে না গিয়ে সংক্ষিপ্ত স্বরধ্বনিচিহ্নগুলির চেহারা মোটামুট যত রক্ষের হতে পারে ব'লে স্থামার মনে হয়েছে তার একটা ছক এবারে দিছি:

এর মধ্যে একেবারে প্রথম সারের অক্তরগুলোর আমি পক্ষপাতী।

এই অক্ষরগুলিকে আমাদের ধরবর্ণমালা ব'লে এছণ করলে বাংলা গিপি সম্পূর্ণ বাংলা লিপিরই কাতের ধেকে বাবে এবং অভের বারস্থ তাক্তে হতে হবে না। ∙ে, এই ুচিফ্ট

ক্রেবল আমাদের লিপির থেকে বাদ পড়বে ; ৮, এই একটি মাত্র নৃতন চিঞ্জামরা নেব। উ, উ থাকবে না, কিছ ড পাকবে, আঁকভিও পাকবে। ই যাবে, কিছ হ পাকবে; ঈর হাড়গোড় ভাঙা চেহারাটার আদল দ-এর মধ্যে রয়ে যাবে ধানিকটা। যুক্তাক্ষর পাকবে না ব'লে এ, জ, ভ, ভ বাদ পড়বে, কাক্ষেই এ এবং ও যদি যায় ত একেবারে নিশ্চিঞ হয়েই যাবে, কিন্তু অক্ষর হটি স্বদৃষ্ঠ , আমার প্রভাবিত স্বরবর্ণ-याना गृहील हरन এरपतरक । हाएल हरन ना। नाविल अ বোঝাবার ক্রে এ-র গাড়িটাকে টেনে নীচ অবধি নামিয়ে দিতে পারা যাবে ; যেন এ-কার এবং আকার মিলিয়ে তৈরি হবে অক্ষরটা; বাার্ভ এ-র উচ্চারণও সেই স্বাতীয়ই ভ বটে। স্ত্রহবেঃ তৎসম শব্দের একার এবং এ বাংলায় ছ'রকমে উচ্চারিত এবং ছ্রকম লেখা হয়ে পাকে। হাতের লেখায় এ-এ-ও-ওকে ছোট ক'রে লিখতে কেউ না চান, मिश्रत्य ना ; इ-कांत्र क्र-कारतत, ঐ-कांत्र छ-कार्यत আঁকড়ি হাতের লেখায় অন্ন অক্ষরের উপরে চ'লে এলেও কিছুই এসে যাবে না ; উ-কার, উ-কার, ঋ-কার ও হস্ চিঞ এখনকার মত ক'রেই লেখা চলবে।

যারা বাংলা লেখাপড়া জানেন, তাঁরা অ-কার চিঞ্চিকে একবার দে'খে নিলেই প্রস্তাবিত নুতন লিপির লেখা অনর্গল পড়তে পারবেন, অনায়াসে লিগতেও পারবেন। নাগরী লিপি একটানে লেখা যায় না, বাংলা সে তুলনায় অনেক বেশী একটানা লেখা যায়, প্রস্তাবিত লিপিও ওতটাই বা তার চেয়েও বেশী একটানা লেখা চলবে।

নুতন শিক্ষার্থীদের আর দ্বিতীয় ভাগ নিয়ে হাবুডুবু খেতে হবে না। পুরুষাপুক্রমিক অশিক্ষায় ছর্বলবুদ্ধি, এদেশের লক লক্ষ্ নিরক্ষর লোক এর পর দেলের ভাষার বর্ণমালার সক্ষে পরিচয় সাধন করতে দলে দলে এগিয়ে আসবে। মাত্র ৫৭টি অকর, ১০ট সংখ্যাচিক এবং বিরাম্চিক করেকটি আয়ত্ত কঁরতে পারলেই ভাদের বাংলা পাঠ-পরিচয় সমাপ্ত হবে। থে-গমল্ভ বট নুতন লিপিতে ছাপা হয়ে উঠবে নাবা ছাপা **एटज टान्डि एटन, भूनीयद्वर लाहे। भैं। टाक अंतर्व, अकात हि**रूहि যার সঙ্গে আকার এবং আকড়ি ভুড়ে ঐকার ওকার এবং ঔকার তৈরি হয়, রফসা, রেফ এবং চার-পাঁচটি যুক্তাক্ষর চিনে নিলেই সে সমস্ত বইও তারা পড়তে পারবে; বাকী যুক্তাক্রগুলিতে যুক্ত অক্রগুলির চেহারাবেশ স্পষ্ট, থেজন্তে युक्ताक्रत जात शोकरव भा वरत इ: श कतवात जामारमत किहू নেই। অক্ষরগুলি কড়াক্ডি করে ভালগোল না পাকিয়ে পাশাপাশি বসজে যদি আমাদের কাজ চলে ও চলুক না ? সচ্চল, আহ্বান লিখতে চ-ছ এবং হ-বকে পাশাপাশি বসিয়েই এখনও অনেকে লিখে পাকেন।

বুজাকর থাকবে না এবং অকার, উকার, উকার একার,

চদ্রবিন্দু, হস্চিগ পাশে বসবে বলে প্রের দিকে জারুগা জুড়বে খানিকটা বেনী; কিন্তু প্রভাবিত লিপি তিন খাকের বদলে ছট থাকে লেখা ছবে ব'লে ছরেদরে আমাদের পৃষিয়ে যাবে।

প্রেড বলেছি, আবার বলছি, আমার প্রভাব গৃহীত হলে ছাপার্থনার মালিকদেব এক প্রসা গরচ হবে না। গোটাদশেক শুতন টাইপ ঢালাই করিয়ে নিতে যা বরচ পড়বে, বর্জিত অক্ষরগুলির টাইপ ওক্ষদরে বিক্রশ্ন ক'রে তার চেয়ে অনেক বেশী তাঁরা লাভ করবেন।

প্রছাবিত লিপিতে টাইপরাইটার, লিনোটাইপ, টেলি-

থাক, টেলিপ্রিন্টার প্রস্কৃতির কাক অনারাসে চলবে। এক কথার, যে-লিপি আক তার অসংবা অযোগাতা, অসম্পূর্ণতা, কটিলতা, বিশ্ববলতা প্রস্কৃতি নিয়ে মবায়ুদীর লিপির পর্যায়ে পড়ে রয়েছে, কোথাও কোনোও বিপ্লব না বাবিয়ে, কারও কোনোও অস্থবিষা না ঘটিয়ে এক দিনে তাকে সমন্ত দিক্ দিয়ে স্পম্পূর্ণ ও বভ্রমানকালোপথোগা ক'বে নেওয়া থেতে পারে। এ লিপি যে সর্প্রতভাতাবে অন্যাদের পক্ষে রোমক লিপি অপেক্ষাও তের বেনী কাকের হবে, সাক্ষত এবং সংস্কৃতমূলীয় ভাষাগোষ্ঠীর বর্ণমালার প্রেষ্ঠতা যে কি নিয়ে এবং কোবার তা যারা কানেন, তাঁলের সেটা আর ব'লে ব্রিয়ের দিতে হবে না।

## রাজস্থানা সাহিত্যে বীররস

### অধ্যাপক শ্রীস্থোধ্যানাথ শাস্ত্রী

ভারতের বিভিন্ন প্রাদেশিক সাহিত্যের মধ্যে রাজস্থানী সাহিত্য বিশিষ্ট শ্বান অধিকার করিয়া আছে। রাজস্থানী সাহিত্যে থে উদীপনাপূর্ণ ভাবধারার সন্ধান পাওয়া যায় তাহা কেবল রাজস্থানেরই নয়, সমন্ত ভারতের পক্ষেট অতি গৌরবের বিষয়। রাজস্থানী কবিদের বীররসাথাফ কবিতা এত স্ক্রমন্ত ও এত উন্নত যে তাহার সমকক্ষ কবিতা ভারতীয় জ্ঞান্ত ভাষায় বিরল। ইহার কারণ এই যে, রাজস্থানী কবিরা কেবল নিজেদের কল্পনা-বলেই ঐরপ কবিতা রচনা করেন নাই, প্রত্যুত সমন্ত ঘটনা প্রত্যক্ষ করিয়াই তাঁহারা লিখিয়াছেন। রাজস্থান ভারতের অন্তত্ম শ্রেষ্ঠ বীর-প্রস্থ ভূমি। মুদ্ধবিগ্রহ তত্রতা ক্ষান্ত্রিমদের একটি দৈনন্দিন ব্যাপার ছিল। মুদ্ধবিগ্রহ তত্রতা ক্ষান্ত্রদের একটি দৈনন্দিন ব্যাপার উপস্থিত থাকিতেন। কেবল উৎসাহ বর্ধনের ক্ষন্ত কবিগণ উপস্থিত থাকিতেন। কেবল উৎসাহ-দানেই তাঁহাদের কাজ সীমাব্র ছিল না; স্বসর পাইলে, তরবারি নিজোধিত করিয়! তাঁহারা শক্রম শিরছেদ করিতেও পরান্ত্রণ হইতেন না।

সেইজগুট রাঞ্চানী ভাষায় এক ক্ষর বীররসপ্রধান কাব্য রচিত হইতে পারিয়াছে। অগুল ভারতীয় ভাষায় যে কাব্যের অভাব তাহা নহে; তবে সেগুলিতে মুখত: রাধা-কৃষ্ণের প্রণম্বকে অবলম্বন করিয়া কাব্যের স্কষ্ট হুইয়াছে। ভক্তি-কাব্যের স্কৃষ্টিও রাধা-কৃষ্ণকে অবলম্বন করিয়াই হুইয়াছে। বাংলা ভাষায়ও চঙীদাস, বিদ্যাপতি প্রভৃতি বৈক্ষব ক্রিগণ স্ব কাব্যে ভক্তি-ধারা প্রবাহিত করিয়াছেন। আমাদের ভক্ত ক্রিগণ যে ছলে এফুকের বিরহে কাত্রভাবাপন্না গোপিনীদের অক্রবারিধারায় কাব্যাদন সিক্ত ক্রিয়াছেন, সেম্বলে রাজ্যানী ক্রিগণ, লাক্তগণের শতবাধভিত শরীর ও ছিন্ত-মন্তক্ত হুইতে নিঃস্ত

শোণিতে মৃহক্ষেত্র রঞ্জিত করিবার জন্ত বাস্ত ছইয়াছেন। রাজস্থানী কবিদের সম্বন্দে রবীক্ষনাপত এক সময় বলিয়া-ছিলেন—"ভারতের প্রত্যেক প্রান্তেই ভক্তিরসের কাবা পাওয়া যায়, রাশা-ফুফকে জাপ্রয় করিয়া প্রত্যেক প্রান্তই উচ্চ কিম্বা নিম্নভরের সাহিত্য উৎপন্ন করিয়াছে; কিন্তু রাজস্থান নিম্নভরের সাহিত্য উৎপন্ন করিয়াছে; কিন্তু রাজস্থান নিজের রক্ত প্রবাহ করিয়া যেরূপ সাহিত্যের স্কট্ট করিয়াছে, ভাহার তুলা সাহিত্য অন্ত কোপাও পাওয়া যায় না।"

ভাষা:—রাজস্থানী কবিগণ তুই প্রকার ভাষায় কাবা রচন করিয়াছেন (১) পিজল ও (২) ডিঙ্গল ভাষায়। মীরাবালী, বৃন্দ ও বিহারী প্রভৃতি কবিগণ পিঙ্গল ভাষায় লিবিয়াছেন এবং চন্দরবরদান্ত্রী, ছরশান্ত্রী, পৃথীরাক প্রস্থুক কবিগণ ডিঙ্গল ভাষায় লিবিয়াছেন। ভক্ত কবিদের মধ্যে মীরা এবং শৃগারী কবিদের মধ্যে বিহারীর স্থান অতি উচ্চ। মীরার ক্ষ-ভক্তির গীত কোন্ হিন্দু নরনারীর হাদয়ে না কাছত হইয়া থাকে? তবে আমরা প্রভাবিত প্রবদ্ধে বীর-রস-প্রধান কাবা পদ্পেই আলোচনা করিব। বীর-রস-প্রধান কাবা প্রায় ভিন্নল ভাষাতেই লিপিত।

ডিকল-ভাষা ও তাহার উৎপত্তি:—ডিকল ভাষা রাজহানের ক্ষিত ভাষারই সাহিত্যিক রূপ। পিকল ভাষার অপেকা ইহা অবিক প্রাচীন, সাহিত্যগুণ সম্পন্ন ও ওজ:গুণবিশিষ্ট। ইহার উৎপত্তি অপত্তংশ হুইতে হুইরাছে। সংস্কৃত হুইতে প্রাকৃত ও প্রাকৃত হুইতে অপত্তংশ ভাষার উৎপত্তি। যঠ কিয়া সপ্তম বিক্রম-শতকে অপত্তংশই লোক-ভাষার রূপ ধারণ করিরাছিল। ভাষাতত্ত্বিদের। অভ্যান করেন যে,বিক্রমের সপ্তম শতক হুইতে দশন শতক পর্যান্ত কেবল রাজহানেই নর, সমভ উত্তর-ভারতে

এই অপতংশই লোক-ভাষার রূপ ধারণ করিরাছিল; কিছ পরবর্তী কালে ইহাও প্রাকৃতের ছায় সাহিত্যিকতার গঙীতে আবদ্ধ হুটলে, এই অপতংশ হুইতে আবার তিনটি উপভাষার স্কৃতি হুইল—(১) নাগর; (২) উপনাগর ও (৩) ত্রাচড়। নাগর অপতংশ হুইতেই রাজস্থানী ভাষার ক্রন। আর রাজ-খানী ভাষার যে সাহিত্যিক রূপ তাহাই হুইল ভিক্লল-ভাষা।

ব্যুৎপত্তি:—ডিগলের ব্যুৎপত্তি সম্বন্ধে অনেক বিদানের অনেক মত।

- (১) ডক্টর এল. পি. ট্যাসিটরী বলিয়াছেন,—"ডিফলের আসল অর্থ অনিয়মিত কিখা চাষার ভাষা। ব্রক্তাষা পরিষার্ক্তিত ও সাহিত্য-শাগ্র-দম্বনীয় নিয়মের ধারা নিয়প্তিত ছিল; কিছ ইহা তাহার বিপরীত—অপরিমার্ক্তিত ও অনিয়প্তিত ছিল বলিয়া ইহাকে ডিফল বলা হইত।"১
- (২) ৬ ক্টর হরপ্রসাদ শান্ত্রী বলিয়াছেন,—"প্রারম্ভে এই ভাষার নাম ভগল'ছিল, পরে "পিঙ্গল" শব্দের সহিত অক্ষর-মিলন করিবার জ্ঞা ইহার নামকরণ "ডিঙ্গল" করা হট্যাছে।"২

ছুইটি মতই যুক্তিসকত বলিয়া মনে হয় না। সাছিত্যিক স্ক্রণ পাইবার পরেই যথন ইহা "ডিছল" নামে প্রসিদ্ধ হুইল, তথন ইহাকে অশিক্ষিত চাধীর ভাষা বলা চলে না। আর "ডগল" বলারই বা কি অর্থ ? ডগল শক্ষের অর্থে মাটির ঢেলার মত রুক্ষ ও অনিয়ন্তিত বলাও সক্ষত মনে হয় না। কারণ চভূষণ শতকের ব্রহ্ম ভাষাকে অনিরায়ত বলা চলে না। রাজ্যানীর ক্ষিত ভাষা অপেকাইহা অবশ্রই পরিমাজিত ছিল নচেৎ সাহিত্যিক ক্রপেই বা পরিণত হুইল কেন ?

(৩) বামী পুরুষোন্তম দাস বলিয়াছেন,—"ডিম্+ গল হইতে ডিক্ল শব্দ হইয়াছে। ডিম্ শব্দের অর্থ ডমরার ধ্বনি। ডমরা বাজিলে ডিম্ ডিম্ শব্দ হয়, এবং ইছা রণচন্তীর আবাহন করিয়া থাকে। ডমরার ধ্বনি ভানিলে বীর-ছদয়ে অপূর্ব্ব উৎসাহ জাগ্রত হয়। মহাদেব বীর-রসের দেবতা, আর মহাদেবের বাজ ডমরা। কণ্ঠ হইতে যে কবিতমরী ভাষা বহির্গত হইয়া ডিম্ ডিম্ ধ্বনির মত বীর-ছদয়ে উৎসাহ বৃদ্ধি করে, সেই ভাষাকে ডিক্ল-ভাষা বলা হয়। ডিক্ল-ভাষার এটরূপ কবিতারই প্রাযায়।৩

কেছ কেছ বলেন যে, ডিঙ্গল প্রথমে চারণ ও ভাটদের ভাষা ছিল। উহারা নিজ নিজ আগ্রয়দাতাদের কার্যাকগাপের, শৌর্য-পরাক্তমের বর্ণনা অতিশরোক্তিপুর্ণ ভাষার করিত। অর্থের লোভে কাপুরুষকে শ্র, কুরুপকে হ্রুপ, বৃধকে পণ্ডিত, কুপণকে অতি দাতারূপে বর্ণনা করা তাহাদের স্থভাব ছিল। আসলে কবিতা রচনা করা ছিল তাহাদের জীবিকা। যেরূপ বর্ণনা করিবার নিমিপ্ত যে আশ্রয়দাতা যে পরিমাণ অর্থ ব্যয় করিত, তাহার ঠিক সেইরূপ বর্ণনা করা হউত। সেইরূপ অতি ভাষণ করা অর্থে বন্ধমান তীপ শব্দ হউতে তীলল ব্যুপ্ত হউল। যাহার ধারা অতিশয়োজ্ঞিপুর্বাক বর্ণনা করা হয়, সেইরূপ ভাব-ব্যঞ্জনায় তীপল শব্দ প্রযুক্ত ও ভামার্ক্ত ব্রায় সেইরূপ ভাব-ব্যঞ্জনায় তীপল শব্দ প্রযুক্ত ও ভামার্ক্ত ব্রায় সেইরূপ ভাব-ব্যঞ্জনায় তীপল শব্দ পর্যুক্ত ও ভামার্ক্ত ব্রায় সেইরূপ ভারত্ত অর্থে প্রযুক্ত তীপল শব্দ পরে ভিন্ত হল। আরু পর্যান্ত রাজপুতানার র্ছ চারণ-ভাটগণ "তীক্ষল" এইরূপ দীর্ঘ ইকার্যুক্ত রূপই প্রয়োগ করিয়া থাকেন। তিকল শব্দের ব্যুৎপত্তি বিষয়ে এইরূপ অনেক মত দেখা যায়।

ডিঙ্গল কাবোর ঐতিহাসিকতা:--একাদশ ও খাদশ শতকের মধ্যে ডিগল কাবা অতি অল মাঞাম রচিত হট্যা ছিল। উপরস্ক থাহা রচিত হইয়াছিল, তাহা সাধারণ কোটির। মুসলমানের আক্রমণ হওয়ার পর হুইতেই ডিল্ল কাব্যের ইতিহাস আরম্ভ হয়। সঙ্কট হইতে দেশরকা ক্রিবার নিমিত, সে সময়ে রাজা-মহারাজাদের অর্থবায় ও লোকক্ষ্য করিতে হইত। খাতখ্রা-রক্ষার জ্ঞা সর্বধাই সৈঞ্চ-বল ও শুপ্তবল মজুত রাখিতে ২ইত। ইহার সঙ্গে কবিদেরও প্রয়োজন হইত। তাহাদের কাজ ছিল বীর-রসপূর্ণ কবিভার ধারা যোধাদের প্রোৎসাহিত করা। যোধাদের জনমে প্রেরণা সঞ্চার করিবার জন্মই ডিঞ্চল কাব্যের স্প্রী। ঐ সন্থে ঐত্তরপ কাৰু প্ৰায় চাৰণ-ভাটৱাই কৰিত। তাহারা উচ্চশ্রেণীর কবি তো ছিলই, যোগা হিসাবেও কম যাইত না। প্ৰয়োজন হইলে শত্রুদের সমূখীন হইয়া সংগ্রাম-নৈপুণ্য দেখাইভ। চন্দর বরদার, ছরশাজী প্রভৃতি কবিগণ এই শ্রেণীর ছিলেন। ইঁহারা ধনসম্পদ লাভ ও প্রতিষ্ঠা লিন্সায় কাব্য-কলা-কৌশল আয়ত করিবার জ্ঞা অনেক সময় ব্যয় করিতেন, সংস্কৃত ও প্রাকৃত ভাষায় বিশেষ পাঙিতালাভ করিতেন। প্রারখে ডিগ্ল क्षांचाय कावा-ब्रह्मा हाबन-काहिएबर अकटहाँमा हिल वटहे. কিন্তু যথন ইহার সন্মান বৃদ্ধি পাইতে লাগিল তথন ব্ৰাহ্মণ, ক্ষাত্রর প্রভৃতি উচ্চবর্ণের লোকেরাও ঐ ভাষায় কাব্য-রচনা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন—ক্যোতিষ, বেদান্ত, বর্ণা, নীতি ও শালিহোত আদি বিষয়েও অনেক এও এই ভাষার লেখা ছইল।

মহাকবি চন্দরবরধাই—ডিক্ল ভাষার প্রপ্রসিদ্ধ ও প্রাচীন কবি চন্দরবরধাই কাভিতেভাট ছিলেন। লাহোরে ইঁহার কর। চন্দের কর্মকাল সহতে মতভেদ আছে। ক্ষিত আছে যে, ইঁহার আপ্রয়দাতা পৃথীরাক ও ইনি একই সময়ে কর্মগ্রহণ করেন। পৃথীরাক্ষের ক্ষাকাল বৈক্রেম সহত ১২০৫। তাহা

<sup>(3)</sup> Journal of the Asiatic Society of Bengal Vol X, No 10, p, 576.

<sup>(\*)</sup> Preliminary report on the operation in search of MSS, of Bardie chronicles, p. 15.

<sup>(</sup>৩) নাগরী প্রচারিণী পঞ্জিকা, , ভাগ ১৪, পু. ১২২।।

হইলে চন্দের ক্ষকাল ইহার কাছাকাছি সময়েই বুবিতে ছইবে।

অসমেরের চৌহান বংশীয় ভত্তিয়দের সহিত ইহার পূর্ব-পুরুষের সম্বন্ধ ছিল। ঐক্লপ পরম্পরাগত সম্বন্ধ থাকায় • শৈশবকাল হইতেই পৃথীৱান চৌহানের সহিত চন্দের খনিষ্ঠতা ৰুমিয়াছিল। পৃথীরাকের মতই ইনিও অখারোহণে, অসি-সঞ্চালনে ও তীর নিক্ষেপে অতিশয় দক্ষতা লাভ করিয়া-ছিলেন। পৃথীরাঞ্ও ইহাকে রাজ-কবিরূপে আশ্রয় দিয়া-ছিলেন। ইনি যুদ্ধক্ষেত্রে ওজ্বিনী কবিতা রচনার দারা আশ্রয়-দাতা পুধীরাক ও তাঁহার সৈনিকগণকে প্রোৎসাহিত করিতেন এবং অবসর পাইলে শীম রণনৈপুণ্যের পরিচয়ও দিতেন। ৮শরবরদাই ব্যাকরণ, সাহিত্য, ষড়ভাষা, ছন্দ:শাগ্র, ক্যোতিষ, আরুর্বেদ ও সঞ্চীতবিদ্যায় পারদর্শী ছিলেন। ইনি "পৃথীরাজ রাসে।" নামক পৃথীরাক্ষের স্থাহৎ শীবনকাহিনী রচনা করেন। "পৃথ্যীরাক রাসো" অভ্যে বিশদ আলোচনা করা এ প্রবর্কের উচ্ছেঞ্চ নয়; তবে সংক্ষেপে এইটুকু বলিতে পারা যায় ্য "পৃথীরাক রাসো" উৎকৃষ্ট মহাকাব্যসমূহের সগোতা। ইহাতে প্রায় এক লক্ষ কবিতা দৃষ্ট হয় ৷ ইহার ভাষায় সংস্কৃত, প্রাকৃত ও অপভংশের সংমিশ্রণ দেখা যায়, কোন কোন খানে আরবী, ফারসী ও তুকী ভাষার শব্দও দেখা যায়। বীর-রস-প্রধান এক্রপ সুন্দর মহাকাব্য গ্র্লিড।

পৃথ্বীরাজের সজে গন্ধনীদেশের শাহবুদীন খোরীর যে প্রচণ্ড যুদ্ধ হর, সেই যুদ্ধের দীবগু বর্ণনা এই মহাকাব্যে পাডায়া যায়। উদাহরণের ক্ষ চন্দরবরদাইয়ের একটি কবিতা উদ্ধৃত করিলাম, পাঠকগণ ইহা হইতে তাঁহার রচনা-নৈপুণেরে বৈশিষ্ট্য উপলব্ধি করিতে পারিবেন---

#### ক্বিভাট এই হ্রপ---

মচে কৃষ্কৃষ্ং বহৈ সার সারং চমকৈ চমকৈ করারং সুধারং। ভভকে ভভকৈ বহৈ রওধারং সনকৈ বহৈ বাদ-ভারণ॥

ছবকৈ হবকৈ বহৈ বেল-ভেলং হলকৈ ফলকৈ মটী ঠেল ঠেলং। কুকৈ কৃক কৃটি সুৱতান ঠানং বকী কোগ-মাৱা সুৱং অপ্লধানং॥ वटेक ठडेशडेर छेबडेर छेबडेर कूलडो बटेड चडा चडार छेरडेर। प्रकार वटेक जप मधार क्रुडेडेर कफकर वटेक जन-(जन) क्रूबडेर॥

বহৈ হব্য পরমার সিরদার সারং পরে সেন গোরী বহৈ বও বারং। পর্যো বাঁ নিম্মরডি সেনা সহিভং ছও মুর মধ্যান দিল্লেদ ভিডং॥

**মচে কৃহ কৃহং—( মুদ্ধে ) হটগোল মাচিয়া গেল**।

বহৈ সার সারং—সর্ সর্ শব্দ করিতে করিতে তরবারি চলিতে লাগিল। করারং স্থারং তীঞ্চধার (অসি) চমকাইতে লাগিল। ভভকৈ ভভকৈ বহৈবও বারং—ধল্ ধল শব্দ করিয়া রক্তধারা প্রবাহিত হইতে লাগিল। সনকৈ সনকৈ বহৈ বাণ ভারং—সন্ সন্ শব্দ করিতে করিতে বাণ সমুদায় চলিতে লাগিল ছবকৈ হবকৈ বহৈ শেল ভেলং—ভল্ল (অল্লবিশেষ) হবক হবক করিয়া শরীরমকে প্রবিষ্ঠ ও তথা হইতে নির্গত হইতে লাগিল। হলকৈ হলকৈ মচী ঠেল ঠেলং—হায় হায় ও বাকাবাকি হইতে লাগিল। কুকৈক্ কৃত্যী স্বরতান ঠানং—স্পলতানের সৈল মধ্যে হাহারব আরপ্ত হইল।

বহৈ চটপটং উলটং উলটং—(বীরগণ) অতাস্ত ধরা সহকারে উল্টে পাল্টে (সামনে ও পশ্চাতে) বাণ চালাইতে লাগিল। ডবং ববৈদদ—বস্ক হইতে টকার শব্দ উবিত হইল। মধ্য স্টেটং—(বড় হইতে পৃথক হইয়া) গাদা গাদা ছিন্ন-মওক এক্তিত হইয়া গেল। কডবং ববৈ সেন-সেনা—সেনাদলের মধ্যে কড়াকা বাজিয়া উঠিল, অবাং আত্ম বিভীণ হইয়া গেল।
সেনা স্মটং—বৈভসমূহে সক্ষৰ্থ আরম্ভ হইল।

বহৈ হ্ব্যপর্মার সরদার সারং—পর্মারবংশীর ক্ষিমেধের থাছার। সর্কার, তাঁহাদের হাত তাঁর বেঙ্গে চলিতে লাগিল। পরে সেন গোরী --লাহবৃদ্ধীন গোরীর সৈত পতিত হইল। বহৈবও ধারং—রক্তবারা প্রবাহিত হইতে লাগিল। পর্রো। বাঁ নিম্মান্ত সেনা সহিওং—(সেনাপতি) নিম্মন্তি বাঁ সৈত সিহিত (ভূ-পূঠে) পতিত হইল। হওঁম্ব মধ্যান দিলেসন্তিওং—মধ্যাক্কাল হইতে না হইতেই দিল্লীপতি পূধীরাজের বিজয় লাভ হইয়া গেল।

এইরূপ বছ কবিতা আছে থাহা পাঠ করিবামাত্র পাঠকের হুদরে বীররসের উত্তেক হয় এবং প্রাচীন ভারতীয় শ্রগণের অক্য-কীর্তির শ্বতি হুদয়ে জাগিয়া উঠে।

### কৃষ্ণমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়

### ত্রীযোগেশচন্দ্র বাগল

( ) 4 3 0- 2 4 4 6 )

হিন্দু কলেজের প্রথম মুগের প্রবাত ছাত্রগণের মধ্যে ক্রফ-মোহন বন্দ্যোপাধ্যায় জ্বলত্য। তিনি নিজ কর্ম ও জাচরণ দার। বাঙালী সমাজের জ্বাড় দেহে চেডনা সঞ্চারে সহায়তা করিয়াছিলেন। ক্রফহোহন যৌবনে ইউইম্ম গ্রহণ করিয়াছিলু সমাজ হইতে সম্পূর্ণ আলাদা হইয়া যান। তিনি বরাবর হিন্দুর প্রচলিত বর্ম এবং ব্রীতিনীতির বিরুদ্ধাচরণ করিয়াছেন, হিন্দু সমাজও তাঁহাকে অধিকাশে ক্লেৱে ক্ষমা করিছে পারে নাই। তথাপি এক্জ্ডরের সংখাতে যে অমুতের উদ্ধব হয় তাহা দারা ব্যস্মাজ নযজীবন লাভ করে এবং নিজেকে পরিজ্ঞ করিয়া কোলো। এ দিক দিয়া ক্লেম্যোহনের কাল্যাবলী বিশেষভাবে স্থলীয়।

কৃষ্ণোহন ১৮১০ ইটাকের ২৪শে যে কলিকালার এক দরিদ্র রাক্ষন পরিধারে জন্মগ্রহণ করেন। পিতা জীবনক্ষের তিন পুনের মধ্যে কৃষ্যোহন মধ্যম, জোটের নাম ভুবনমোহন এবং কনিট কালীচরণ। কৃষ্যমোহনের শৈশব ও কৈশোর নিবারণ দারিদ্রোর মধ্যে কাটে। কিন্তু এট দারিদ্যদোষ তাহার অন্তনিহিত ওগরাশিকে বিনষ্ট করিতে পারে নাই।

পাচ বংসর বয়সে কৃষ্ণাছনের হাতে বভি হয়। ইহার এক বংসরের মধ্যেই তিনি ভোডিও হয়বের ঠন্ঠনিয়ার পাঠশালায় ওঠি হন। ১৮২১, ফেল্ডারী মাসে কৃষ্ণ-মোহন হিন্দু কলেজে প্রবেশ করেন। একানে তিনি ইংরেফীর সঙ্গে সংস্কৃত্ত রীতিমত ক্ষায়ন করেন। ১৮২৮ সনের প্রথমে তিনি কলেজের প্রথম শেষতে উন্নীত হন এবং এই বংসরের মারামারি মাসিক যোল টাকার একটি রভি লাভ করেন। কলেজের অধ্যায়ন শেষ ক্রিবার পরও যাহারা উচ্চতর বিষ্ঠা আয়ত ক্রিতে রত থাকিতেন ভাহাদের ক্ষত এইরূপ রতির বার্থা ছইন। রাধানার সিক্ষার এইরপ রতিভোগী ছিলেন।

এই সময়, দিল্লী কলেকে যাসিক আশী টাকা বেতনে একটি শিক্ষকতা কর্মের প্রতাব আসিলে ক্ষনোহন ইহা গ্রহণে সম্মত হন। কিন্ধ কলিকাতার 'ক্ষনারেল কমিটি অফ পাবলিক ইন্ট্রাকশন' দিল্লীর ছানীয় কমিটির প্রভাবে মত না দেওয়ায় ইহা বাতিল হইয়া যায়। ইতিমবো ক্ষনোহনের বিবাহ হয়। ১৮২৯ সনের ১লা নবেধর কলেকীয় শিক্ষা সমাপনাছে তিনি হিন্দু কলেক ভাগে করেন। ইহার পর তিনি স্থল সোগাইটির পটলভালা কুলে সহকারী শিক্ষকের পদে নিম্ক্র হলৈন। লোকে এই স্থলটিকে হেয়ার সাহেবের স্থল বলিত। ফ্রন্মোহন ছাঞাবস্থায় ডেডিড হেয়ারের নিকট হইতে বিশেষ সাহায্য লাভ করেন—এথানে এ কথার উল্লেখ নিতাভ

জ্ঞাসশ্লিক হউবে না। তিনি ১৮৪৯, ১লা জুন হেয়ার যতিসভায় স্থাং বলিয়াছেন—

"... I may perhaps venture to vey that I waindebred to him for a longer period than any in this assembly. At the age of six I became his boy at honor which I continued to enjoy as long as any other friend now present in this hall."\*



কৃষ্ণমোহন বন্দ্যোপাধা।

[ কোলসওয়াদি গ্রাণ্ট কর্ত্তৃক অস্কিত

হিন্দু কলেকের চঙূর্থ শৈক্ষক ছেন'র পুই ভিভিয়ান ডিরোজিওর শিক্ষায় ছাত্রগণ এক শৃতন প্রেরণা লাভ করিলেন। তাঁহার শিক্ষাগুণে ছাত্রেরা প্রভ্যেক বিষয়ই যুক্তি ধারা পরব করিয়া লইতে আরম্ভ করেন। ১৮২৯ সনে তাঁহারা ডিরোজিওর সভাপতিত্বে একাডেমিক এসোদিয়েশন প্রতিষ্ঠা করিলেন। এবানে বর্দ্ম, সমান্ধ, শিক্ষা, দেশপ্রেম প্রভৃতি নানা বিষয়েরই আলোচনা হইত। কৃষ্ণমোহন ডিরোজিওর ছাত্র' ছিলেন না,

\* A Discourse delivered at the Hindu College on the Harc Anniversary, June 1, 1849. By K. M. Banerjee, এসোসিয়েশন প্রতিষ্ঠার পূর্ব্বেই তিনি কলেও তাগে করেন।
কিন্তু ডিরোজিওর শিক্ষা এবং এসোসিয়েশনের প্রভাব ওাঁহার
উপরও পড়িয়াছিল। ফুফুমোছনের একটি জীবন-কাছিনী †
১৮৪২ সনের অক্টোবর সংখ্যা 'ইভিয়া রিভিয়ু'তে প্রকাশিত
হয়। অনেকের বিশ্বাস, এই কাছিনীট ফুফুমোছনের ব-রচিত।
ইছা হইতে উক্ত বিষয় আমরা সবিশেষ জানিতে পারি।
তৎকালীন ছাত্রসাক্ষ তথা ফুফুমোছনের উপর ডিরোজিওর



দ্রেক্ষিড হেরার

শিকা এবং আজোচনার প্রভাব সম্বন্ধে ইহাতে এই মর্ম্মে লিবিত হইরাছে,—

"এই সময় হিন্দু কলেজের ছাত্রদের মব্যে দর্শন () বিধ্বphysics) আলোচনার ধুম পড়িয়া যায়। কলেজের সহকারী
কিক্ক মিঃ এইচ, এল, ডি. ডিরোজিও দর্শনশাল্রের আলোচনা
করিতে ভালবাসিতেন। তিনি ছাত্রদের মনেও এই বিষয়ে
প্রেরণা দিতেন। কৃষ্ণমোহন কলেজে ডিরোজিওর নিকট
ক্রমও পড়েম নাই, তিনি এই সময় কলেজের বাহিরেই
ছিলেন। তথাপি ভাঁছাকেও ডিরোজিও প্রবর্তিত আলোচনার
ছোঁয়াচ লাগে; এবং ভিনি নব্য হিন্দু সংস্কারক দলে যোগ
দিয়া ভাঁছাদের আদর্শ কার্য্যে পরিণত করিতে চেষ্টা করেন।
এই সক্ল ব্বক আপনাদের সত্যের বন্ধু এবং মিধ্যার শত্রু
বিলয়া পরিচয় দিতেন। ভাঁছারা দর্শন আলোচনায় নিবিষ্ট
ছইলেন এবং বােষণা করিলেন ভাঁছাদের জীবনের সর্ব্যোচ

লক্ষা হিন্দু পৌণ্ডলিকভার বিলোপ সাধন। তাঁহারা নৈতিক আদর্শের উপরেই ক্ষার দিতেন। যদিও ধেরাল ব্যতীত অন্ত কোন উচতের ভাবধারার তাঁহারা উব্দ্ধা হন নাই, তথাপি তাঁহার। সকল রকম পাশকর্ম ভ্যাগ করিতে এবং মন্থ্য-প্রকৃতির কল্মিত বাসনাগুলির বিরুদ্ধে সংগ্রাম ঘোষণা করিতে লাগিয়া গেলেন। দেশবাসীরা তাঁহাদের নিকট হুইট কারণে অবজার বিষয় ছিল — (১) পৌতলিকভা এবং (২) পাশকর্ম ও দ্যিত চরিত্র। ত্রাহ্মণ্য ধর্মের বিরুদ্ধে গোংসাহে ও সাহসের সক্ষে অভিযান চালাইবার কল্প তাঁহারা পরস্পরের সহিত পালা দিয়া চলিতেন। তাঁহারা মনে ক্রিভেন, প্রচলিত ধর্ম্মের রীতিনীতি মানিয়া চললে তাঁহাদের মর্যাদাহানি ঘটবে। যে-সব বিষয় কতক্টা মানিয়া চলা আবশ্রুক ব্রেমন, পিতামাতা ও আগ্রীয়বক্ষনকে প্রশ্বভিত্ত বা সম্মান-প্রদর্শন), তাহা নিভান্ধ কাপুরুষের কর্ম্ম বলিয়া তাহারা বিবেচনা করিতে লাগিলেন। ত

"হিন্দ্ধর্মের ভাষ ঐইবর্মের প্রতিও নব্যদলের বিরোধিত।
বুবই স্পষ্ট হইয়া উঠে। বন্ধুদের সঙ্গে রুফ্মোহনও কয়েক
রাজি কলিকাতার বড় বড় রাভায় ঘুরিয়া ঐইলে পাঞ্জীদের
নানা ভাবে লোকচকে হেয় প্রতিপন্ন করিবার প্রয়াস
পাইলেন। তাঁহারা কথনও সন্পেল প্রচার করিবার ভান
করিতেন, কথনও পাঞ্জীদের বাংলা শব্দের ভূল উচ্চারণ
অক্ষ্করণ করিভেন, কথনও বা ভাষার বিভিন্ন শব্দ ও বাক্যাংশভালির ভূল প্রয়োগ দর্শাইয়া দিতেন।"

শীঘ্রই নবাদলের একখানি মুখপত্তের প্রয়োজন অনুভূত ছইল। এ সম্বন্ধ উক্ত কাহিনীতে আছে,—

"প্রসম্ক্রমার ঠাকুরের পৃষ্ঠপোষকভাষ ও পরিচালনায় ১৮৩১ সনে 'রিফর্মার' সংবাদপত্র প্রকাশিত হয়। ইনি সংশ্বারপদ্ধী ছিলেন, কিন্তু ভাই বলিয়া ছিপুবর্শের সবকিছুরই বিরোধিতা করিতে হইবে যোহা নব্যদল করিত), ইহা তিনি চাহিতেন না। নব্যদলের কোন মুবপত্র ছিল না। এ অভাব মিটাইবার জ্ঞ ঐ বংসর মে মাসে [১৭ই মে] কৃষ্ণ মোহন 'এন্কোয়ারার' নামে একখানা ইংরেন্সী সাপ্তাহিক প্রকাশ করেন। ছিপুবর্শের সর্দম রীতিনীতির বিরুদ্ধে আন্দোলন চালান হইত বলিয়া রক্ষণশীল হিন্দু সমাক্ষ ইহার উপর ভীষণ বার্মা হইয়া উঠিল। সম্পাদক ও সাহাযা-কারীদের উপর গালিগালাক বর্ষিত হইতে লাগিল।"

কৃষ্ণনাহনের গৃহত্ও নব্যদল সমবেত হইতেন এবং বিভিন্ন
বিষয়ে আলোচনা করিতেন। তাঁহার। বাগুণাক্তক সম্বদ্ধে
কোনরূপ বাহ-বিচার করিতেন না। একদা তাঁহাদের মব্যে
এক ক্ষম প্রতিবেশীর গৃহে এক বও গো-হাড় নিক্ষেপ করেন।
ইহার কলে ঐ অঞ্চলে ভীষণ গোলবোগ উপস্থিত হইল।
হিন্দুর গৃহে গো-মাংগ ভক্ষণ এবং তথা হইতে প্রতিবেশী
হিন্দুর গৃহে গো-হাড় নিক্ষেপ—এ সব ক্ষা গ্রহিত

<sup>†</sup> ৪৭শ বর্ব ১ম সংখ্যা 'সাহিত্য-পরিবং-পত্রিকা'র বর্ত্তমান লেথকের "কুফমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়" প্রবন্ধে (পু. ১৪-৩৫) ইহার বঙ্গামুবাদ দ্রষ্টব্য ।

হটরা শহরময় ছড়াইরা পড়িল। ঠিক ঐ সময়টতে ফ্রুক্নমাহন গৃহে না থাকিলেও বছুদের অপরাধ তাঁহার উপর বর্ত্তিল। সমাজ-নেতাদের চাপে পড়িয়া তাঁহার অভিভাবকের। তাঁহাকে প্রারুক্তিও করিবার জন্ম ধরিয়া বসিলেন। ত্রুক্তমাহন এই অন্তায় আদেশ মানিতে রাজী হটলেন না। অগতা। তাঁহাকে গৃহত্যাগ করিতে হটল। ইহার পর তিনি এক বছুর গৃহে আশ্রুয় পান। কিন্তু সেখানেও বেশী দিন থাকিতে পারিলেন না, হিন্দু মহলায় কেহ তাঁহাকে ঘরঙাড়াও দিল না। ক্রুক্মমাহন শেষে এক ইউরোপীয়ের বাড়ীতে বাসা ভাঙ়া করিয়া সেখানে চলিয়া মান, পত্রিকাও সেধান হইতে বাহির করিতে থাকেন। তিনি উক্ত ব্যাপারের জন্ম ভর্ ত্র্পু হিন্দু বর্দ্ম লহে, আত্মীয়-সক্তন হইতেও বিচ্ছিল্ল হট্মা পড়িলেন।

পৃহত্যাপের অধ্যবহিত পরেই, ১৮৩১ সনের নবেম্বর মাপে কৃষ্ণমোহন The Perse ated নামে একখানা পঞ্চাল্প নাটক লিখিয়া প্রকাশ করিলেন। হিন্দু মূবকদের নামে ইহা উৎসর্গীকৃত হয়। হিন্দু সমাজে রাহ্মণ গুরু-পুরোহিত এবং তথাক্ষিত পতিতদের দৌরাত্মা ও ভঙামি এবং নেতৃত্বানীয় ব্যক্তি-দের হ্নীতি, বাভিচার প্রভৃতিতে আসক্তির বিষয় এই নাটকে বর্ণিত হয়। পৃত্তকখানি ঐ সময়ে বিভিন্ন সংবাদপত্তে আলোচিত হয়। বলা বাহুলা, প্রীষ্টানগণ ইহার প্রশংসা করিয়াছিলেন।

এই সময়ে কৃষ্মোহন পাত্রী আলেককাণ্ডার ডাকের সঞ্চে পরিচিত হুইলেন। ডাফ উপযুক্ত ক্ষেত্র পাইয়া ঐইতত্ব সহধে তাঁহাকে উপদেশ ও শিক্ষা দিতে আরম্ভ করেন। বংসর-বানেক এইরপ উপদেশ ও শিক্ষালাণ্ডের দরুন কৃষ্ণমোহন বীরে বীরে ঐইবর্দ্ধে অন্ত্রাগী হুইয়া উঠেন। শেষে নিজ 'এন্কোয়ারার' পত্রে ঐইবর্দ্ধ গ্রহণের সম্বল্পর কথাও তিনি ব্যক্ত করিলেন। ১৮০২ সনের ১৬ই অক্টোবর ডাকের-গৃহে তৎকর্তৃক ক্লফমোহন ঐইবর্দ্ধে দীক্ষিত হন। বন্ধুবর গোবিক্ষচক্র বগাককে এই উপলক্ষ্যে তিনি নিমের পত্রবানি লিবিয়াছিলেন....

Wednesday, 16th October, 1832.

My dear friend.

Through the mercy of a Gracious Providence, I intend being baptized this evening at the house of the Rev. A. Duff, and as you were one of those with whom 'ast year about this time, I began first to examine the laims of Christianity, it will give me great pleasure to ce you witness my declaration before God and man, of what is now my faith, and my admission into the isible Church of Christ.

Your most affectionate friend, Krishna Mohana Banerjea.\* পান্ত্রী ভাক স্কচ চার্চ্চ ভূক্ত ছিলেন। দীক্ষা গ্রহণান্তর যুক্তিবাদী ক্ষকথোহন স্কচ চার্চ্চের ক্রিয়াকলাণের সঙ্গে নিকেকে ধাপ ধাওয়াইতে পারিলেন না। ভাক কর্ত্তক দীক্ষিত হুইলেও স্কচ চার্চ্চের অনুবর্তী না হুইয়া তিনি চার্চ্চ অন্ধ ইংগতের অন্তর্ভুক্ত হুইলেন। ইহার ক্ষল্প ওাহাকে ভাক্ষ এবং তাঁহার অনুচরবর্গের নিক্ট ক্য নিন্দিত হুইতে হয় নাই!



হেনরি লুই ভিভিয়ান ভিরোজিও

কৃষ্যোহন এত দিন হেরার সাহেবের পটলভালা রূলে শিক্ষকতা-কর্মে লিও ছিলেন। প্রইবর্ম গ্রহণের কথা প্রকাশ হটয়া পভিলে তাঁহাকে এই পদ ত্যাগ করিতে হয়। অতঃপর তিনি চার্চ্চ মিশনরী সোসাইটির কলিকাতা কমিটি কর্ত্তক্ মির্জাপুর ইংরেজী স্থলের স্থপারিন্টেওন্টের পদে নিয়োজিত হইলেন। হেয়ার সাহেবের স্থলে প্রইবর্ম শিক্ষা দেওয়া নিষিদ্ধ ছিল। এই স্থলে প্রইবর্ম শিক্ষা পাঠ্য বিষয়ভূক্ত। কাকেই কৃষ্যোহন শীয় অভিরুচি অন্থ্যায়ী এখানে হাজদের শিক্ষাদানের স্থোগ পাইলেন। তিনি এ সময় প্রইবর্ম প্রচারে এতই আরহানিত হইয়া উঠিলেন যে, ১৮৩০ সালে ক্রক্ষনাণ খোষ নাবে এক অপরিণ্ডবর্ম্ব ছাত্রকে প্রীপ্রান করিবার কর্ম

<sup>\*</sup> Reminiscences and Ancedotes of Great Men of India, etc. By Ramgopal Sanyal. Part 1, 1894. Pp. 8, 9.

পিতৃপুৰ হইতে লইবা আলেন। ইহা লইবা কলিকাতা প্ৰশ্ৰম কোটে যোক্ষমা হয় এবং ক্লকমোত্ন বিচারপতি সার এডওয়ার্ড রায়ানের বিচারে ব্রজনাথকে কিরাইরা দিতে বাধ্য হন। ক্লমোহন ইহার পর উত্তর-পশ্চিমাকলে অমণে বাহির হইলেন। কিরিয়া আসিরা ১৮৩৫ সনে নিক ব্রীকে তদীর পিতৃপুৰ হইতে আনিরা উট্টবর্শে দীক্ষিত করিলেন।

চার্চ্চ মিশনরী সোসাইটর সভ্যদের মধ্যে ১৮৩৬ সন নাগাদ গোলযোগ উপস্থিত হওয়ার ক্রফনোহন ছুল হইতে পদত্যাগ করিতে বাব্য হন। আর্কডিকন ডিরাল্ট্র তাঁহার এক জন পৃঠপোষক ছিলেন। তাঁহারই সহায়তার বিশপ কলেজে একটি রভিলাভ করিয়া তিনি সেধানে করেক মাস অব্যরনে রত থাকেন। শেষে ১৮৩৭ সনে বিশপ কলেজের সংলগ্ন বেগম সমক্রর শীর্জায় পাঞ্রী হইলেন। ১৮৩৮ সালের শেষ দিকে কলেজে প্রাচ্য বিভার আলোচনাতেও তিনি রত হন। এইবর্ষ প্রচারে তিনি কান্ত ছিলেন না। অভালের সঙ্গে ক্রিকর প্রচারে তিনি কান্ত ছিলেন বসিয়াই এইবর্ষে দীক্ষিত করেন।

ভাফ, ডিলাল্ট প্ৰযুধ সে যুগের ব্যাভনামা পাদীপণ হিন্দু नमार्क बेहेबर्च अठारत मण्ड वानुष्ठ विरामन এवर छीहारमत कार्या क्रकट्यांच्य प्रक्रिनच्छ ब्रह्मभ निरन्तिण एडेरन्य। विष्यु करणास्त्र वृत-शांबारम्य भारता बैक्षेण्यु क्षांत्रात्र पण देशांत সৰ্বভারেই-বর্তমান প্রেসিডেলী কলেকের সীমানার মধ্যে একট বীৰ্জা স্থাপনের আরোক্য ক্টল! আরও স্থির ক্টল বে, এখানে ক্লফ্ডমোহন পাঞীর কার্য্য করিবেন। বিষয়ট व्यथम मिटक बूदरे शिशम त्रांबा एता। शत्त त्य मिन किछि-প্ৰভৱ স্থাপনের কথা সেই দিন প্রাতঃকালে এ বিষয় প্রকাশ रहेशा शिक्ष । जन्म हिन्दू करनास्त्र कर्डशक रहनाहै नर्छ चक्जार्डिय निकृष्ठे गमन कृतिया এ विषय्यय श्रीक्रवाम कानाहे-লেন। তিনিও কালবিলয় না করিয়া লর্ড বিলপতে ভাকিয়া शांठीरेलन अवर छांशांक पिश्व रेश वस कविश्व पिटलन। কলেব-কর্ত্তপক ঐ ছানের পরিবর্তে হেচুয়ার দক্ষিণ-পশ্চিম কোৰে পাঞ্জীদের এক ৰঙ ভূমি ক্রয়ের প্রবিধা করিয়া দিলেন। প্রভাবিত দর্জা এইবানেই প্রতিষ্ঠীর আরোজন চলিল। ১৮০১ ২৭শে সেপ্টেম্বর স্বিকার হার উন্মোচন হয়, ইহার নাম্করণ क्टेन क्रांवेट ठार्क। क्रक्टबारन वेशांव जावशांत क्रेश के वरत्रवरे चार्ठार्वा-भटन चिकित्रक रहेटनन । निक चिक्रिकि मछ ইইবর্শকোচনার উপর্ক্ত ক্ষেত্র এতদিনে তিনি প্রাপ্ত হউলেন।

কৃষ্ণবোহন ১৮৫২ সন পর্যন্ত প্রার তের বংসর ক্রাইট্ট চার্কের আচার্ব্য-পরে বৃত থাকেন। এথানে তিনি বরাবর বাংলার প্রার্থনা করিতেন। কিছুকাল যাবং প্রতি রবিবারে তিনি যে প্রার্থনা করিলেন তাহা একত্র করিয়া তিনি ১৮৪০ সঙ্গে উপদেশ কথা বানে প্রকাশ করেন। এই বংনর ত্রী-শিকার

উপরেও ইংরেখীতে একট প্রবন্ধ লিধিয়া হুই শত টাকা পুরস্কার পান। কিছ কি বকুতা কি রচনা প্রত্যেকটভেই তিনি এই-মাহান্ত্র প্রচার করিতে ক্রট করেন নাই। তিনি ১৮৩১ সনে পাত্রী ডিয়াল্ট্র সলে কুঞ্নগরে গিয়া বহু শত হিন্দুকে এইবর্ষে দীক্ষিত করিলেন। ভাক, ভিরাল্ট্র প্রমুধ ধেতাক পাঞ্জীদের নৰে কক্ষোহনও গত শতাকীর চতুৰ দশকে হিন্দু স্বাজে এইতত্ব প্রচার এবং হিন্দু সম্ভানগণকে এইবর্ণ্ডে দীকাদান ব্যাপারে অত্যবিক তৎপর হইরা উঠেন। রাখনোহন রারকে কুক্ৰোহন শ্ৰছা প্ৰদৰ্শন করিলেও তংগ্ৰবন্তিত ত্ৰাছ বা বৈদাছিক ধর্মের তিনি যোরতর বিরোধী ছিলেন। মছর্ষি দেবেজনার ঠাকুরের তম্ববোধিনী-সভার কার্যাকলাপ ভাষার ভীত্র সমা-লোচনার হাত হইতে নিভার পায় নাই। ভত্তবোধিনী-সভার সভ্যপণ বেদাভ সহত্তে আলোচনাকালে প্রতীচা যুক্তিবাদের আশ্রর লইতেন, এইবর ইহাকে বিলাতী বেলাগ্রবাদ বলিরা ক্ষমোহন ঠাটা-বিজ্ঞপ করিতে ছাঞ্চিতেন না। পাত্রী ভাক India and India Missions পাৰ্ক এক পুন্তৰ লিবিয়া **হিন্দুবর্ষের প্রতি কশাখাত করিতে কত্মর করেন নাই।** এইছপে ঘৰন খেতাৰ পাত্ৰীগণ এবং ক্লমোহন প্ৰযুখ ৰৰ্মান্তৱিত এটানেরা হিন্দু ধর্ম ও সমান্তকে নানা ভাবে আক্রমণ ক্ষিতে থাকেন ভৰন হিন্দু সমাকেও ইহার প্রতিক্রিয়া উপস্থিত হইল। পাত্রীগণ তাহাদের অবৈতনিক স্থলগুলিকে ৰীষ্টাৰীর কেন্দ্র করিয়া ভূলেন। ছিন্দুনেভ্বর্গও অঞ্জপ অবৈত্ৰিক বিদ্যালয় প্ৰতিষ্ঠা করিয়া এটানীর প্ৰোত রোধ করিতে প্রবাসী হন। পূর্বে সরকার এটান পাঞ্জীদের বভ একটা আমল দিতেন না। এ সময় কিছ বিভিন্ন বিষয়ে এবং বিশেষ করিয়া শিক্ষা ব্যাপারে ভাষাদের পরামর্শ গৃহীভ হইতে লাগিল। কৃষ্যোহনের সহায়তার হিন্দু কলেজের বিতীয় শ্ৰেণীয় ছাত্ৰ মাইকেল সধুস্থান মন্ত ১৮৪৩ সনে **এ**ট-ধর্বে দীব্দিত হন। প্রসন্ত্রার ঠাকুরের একমার পুত্র হিন্দু কলেকের প্রাক্তন হাত্র জানেক্রমোহন ঠাকুরকে ক্রফ্রোহন বরং ১৮৫১ সবের ১০ই জুলাই এইধর্মে शौका दिन। চতুর্ব রুপকে হিন্দু কলেন্দের কোন কোন শিক্ষক ও ছাত্রদের খাবে মাবে এটান হওয়ার দক্ষন কলেবের অব্যক্ষ-সভা এবং কাউলিল অক এড়কেশনের মধ্যে বিটমিট উপস্থিত হইত। অধ্যক্ষ-সভা চাহিতেন বাহাতে হিন্দু ব্যতীত লভ কেহ কলেলের गरन्यार्थ ना चारत । कांधेनिन चक अष्ट्रावनन हेशांक तकन শ্ৰেণীর বিভাগার করিয়া ভূলিবার পঞ্চপাতী ছিলেন। এটান জালোলনের শেব পরিণতি হইল ১৮৫০ সবে দেশীর এটাবদের সপক্ষে 'লেক্স লোসি' বা ধর্মান্তরিভাষের পৈডক সভান্তিভে **উख्याविकाब-मामबुगक जारेटमब बट्या । ब्रेडीय क्षांबक এবং हिन्यू नर्गात्मव भटना नश्यर्थ (इकु क्वक्श्वनि प्रकाश** मिनादिन । रिपू नवार्यक वर्धाविक विकिन्न ननरवन्न विरक्

সমাজগতিগণের দৃষ্টি পড়ে এবং তাঁহার। সময়ের সঙ্গে তাল রাখিরা ইহাকে দোবমুক্ত করিয়া তুলিতে উড়োদী হন। ক্ষ-মোহন প্রমুখ এইান প্রচারকগণের আক্রমণাত্মক কার্গ্যের ফলেই ইহা ফ্রান্ত সম্ভব হইরাছিল বলিতে হইবে।

क्करमार्न कांग्रम्त औहेवई क्षेत्रांत त्र इट्टान के সমরে শিক্ষা, সাহিত্য, সংস্কৃতি, রাজ্মীতি প্রস্তৃতি নানা বিষ্য়ের আলে:চনায়ও মন:সংযোগ করিয়াছিলেন। ছিন্দু কলেজের সতীর্ব্যশের সঙ্গে একথোনে তিনি এ সকল কর্ম্মে লিপ্ত হয়। ১৮৩০ সনে ডেভিড হেয়ারকে কলিকাতার ছাত্রসমাক একবানি মানপত্ত দেন। কৃষ্ণমোহন এ বিষয়ে বিশেষ তংপর ছিলেন। এইকম্ভ অমুষ্ঠিত একট সভায় তিনি সভাপতিছও করেন। ১৮০৪-৩৫ সালে শিক্ষার বাহন লট্ডা বে বিভৰ্ক উপস্থিত হয় তাহাতে নবাবদ, বিশেষ ভাবে ক্ষ-মোহন যোগদান করেন। তাঁহার এবং ডফ্টর টাইটলারের মধ্যে এই সুম্পর্কে বোরতর বাদ-প্রতিবাদ হয় ৷ ইছা হটতে ভানা यात, ज्यंन हेश्टबकीत नमर्यन कतित्वक कुक्कत्याहत्नत बातना ছিল-বাংলা একলা শিক্ষার বাহন হইবে। শত বর্ষ পরে ক্রকমোছনের এই ধারণা কতকটা কার্ব্যে পরিণত হইরাছে। সাৰারণ জানোপার্ক্ষিকা সভার প্রথম অধিবেশনে ১৮৩৮ সনের ২৩শে যে কৃষ্যোহন ইতিহাস পাঠের আবস্তকতা সমূহে একট সারগর্ভ প্রবন্ধ পাঠ করেন। ব্রকগণের মধ্যে পাঠ্যাতিরিক বিষয়সমূহে জানদানের উদ্দেশ্তে এই সভা গটিত হটয়াছিল। ক্লমোহন সংখবদ ভাবে কার্য্য করার পক্ষপাতী ছিলেন। ভাষাটাদ চক্রবর্তী, পাারীটাদ মিত্র প্রভৃতির সহ্যোগে রাম-গোপাল খোষ প্রধানতঃ রাজনৈতিক আলোচনার ভল ১৮৪১ সালে 'বেঙ্গল স্পেষ্টেটর' নামে একধানি বিভাষী পত্তিকা বাহির করেন। কুফমোহন ইছার একজন নিয়মিত লেখক নির্কাচিত হন। ইহার পর বংসর ১৮৪৩ সনের ২০লে এপ্রিল তারিখে কর্ফ টমসনের সহায়তায় বেচ্চ ব্রিটাশ ইভিয়া সোগাইট প্রতিষ্ঠিত হয়। ইহা একট পুরাপুরি রাধনৈতিক প্রতি-ষ্ঠান। ইহার উদ্যোক্তা এবং পরিচালকদের মধ্যে ক্রফমোহন बिल्म अक क्या अहे अन्तर के ब्रब्धियां हा पद क्रक-त्यांचन चवर अकांबिक जरवांपणं जन्नांपना कटवन । 'जरवांप-ত্বাংড' ১৮৫০, ৭ই সেপ্টেম্বর তাহারই সম্পাদনায় বাহির হয়। খন ক্লাৰ্ক মাৰ্শিशান বিলাত গেলে ভাঁছার ছলে **স্বক্ষোত্ন** ১৮৫২ সনে 'গবর্ণমেণ্ট গেজেটে'র (বাংলা) সম্পাদক হুইলেন। ডেভিড হেয়ারের মৃত্যুর পর তাঁহার মৃতি-রক্ষা কলে আহামী টাদার দারা হেয়ার প্রাইক কও পঠিত रत । धेरके वारमा ध्रवच-मिनक्ति हैना वहेटल चर्न किया পুষ্ণত করা হইত। কুক্ষোহন ইহারও এক জন পরিচালক হিলেন। প্রতি ব্ংসর ১লা জুন তারিবে হেরার স্বৃতি-সভা ব্ৰত। ক্ৰমোহন ইহার একানিক সভার এবৰ পাঠ করেন.

সভাপতিখও করিয়াছিলেন। সাহিত্য; ইতিহাস, ভ্রোল, গণিত প্রভৃতি সুঠুভাবে শিক্ষা দিবার ক্ষম সে বুলে উংকৃত্তী পুতকের অভাব ছিল। ক্ষমেছিল 'বিদ্যাকল্পক্রম' (ইংরেজী নাম—Encyclop-tedia Bengalensis) নামে খতে বতে কতকগুলি বিশেষ শ্রেণীর পাঠ্যপুতক রচনা করেন। ইহার ইংরেজী-বাংলা এবং বাংলা সংশ্বরণ প্রকাশিত হয়। 'ক্যালকাটা রিভিছ্' ১৮৪৪ সনে প্রকাশিত হয়। ক্ষমেছেন ইহারও লেখক শ্রেণীভুক্ত হলৈন।



আলেকজাণ্ডার ডাফ

ক্ষমোহন ক্রাইট চার্চ হটতে ১৮৫২ ঐটাকে অবসর প্রহণ করেন। তথন তাহার নিকট একট সরকারী কর্মের প্রভাব আগে, তিনি ইহা এইণ করেন নাই। এই বংসরেই তিনি শিবপুরে বিশপ কলেকের দিতীর অব্যাপকের পদ প্রহণ করিলেন। এই পদে তিনি একালিক্রমে বোল বংসর অবিপ্রতিগণাক্রয় ১৮৬৮ সনে উহা ত্যাগ করেন। বিশপ কলেকে অব্যাপনা কালে যে প্রচুর অবসর পান তাহা তিনি সাহিত্য-চর্চার সমাক্ রূপে নিরোজিত করেন। এখানে উরোধযোগ্য যে, ক্লকমোহন বিশপ কলেকে আট হাকার টাকা দান করেন। বল-ভাষার ঐট-প্রহ প্রকাশ এবং দক্ষিত আরুদের পর্বনপাঠনের ব্যর নির্বাহারে এই অর্থ প্রদন্ত হয়।

বীটন সাহেবের মৃত্যুর (১৮৫১, ১৩ই আগঠ) পর ডাঃ

মৌএটের চেষ্টার পরবর্তী ১১ই ডিলেম্বর কলিকাভার তাঁহার ৰাষের সলে জড়িত হইয়া 'বীট্ৰ সোগাইট' প্ৰতিষ্ঠিত হয়। সমগামরিক রাজনীতির আলোচনা এখানে নিবিদ হিল। শিকা, সাহিত্য, বিজ্ঞান, দর্শন প্রভৃতি যাবতীর বিষয়ের আলোচনা এবানে হইত। কলিকাতার পদঃ ইংরেজ बावर वांधानीमंग देशांत जाए मुख्य एन । देशांतक ७ वांधानीत रेरा अक्षे शक्के विनय-क्ष्य रहेन । क्ष्यावारन्य हेरांत अक् क्य विनिधे ज्ञा स्टेटलम । ১৮७१ जटम छिमि ट्रेसां प्रस्काती সভাপতি হন। মুদ্যকাল পৰ্যাত্ত তিনি এই পৰে অবিচিত बिरमम। সংइष्ठ कारा, हिन्तू ७ (बोड वर्गन, फैक्रमिकांड **প্রাচ্য বিভার ছাব∌ প্রভৃতি** নানা বিষয়ে ক্লক্ষোহন এই সভার প্ৰবন্ধ পাঠ কৰেন। 'কেমিলি লিটারারি ছাব' নামে আর একট সাহিত্য-সংৰ ১৮৫৭ সনের যে মাসে প্রতিষ্ঠিত হয়। ক্রফযোহন रेरांच भरक्ष विश्व कार्य बुक्त स्टेश्यन । ১৮৬৫ मन्न चडेब বাৰ্ষিকীতে তিনি ইহার মডাপতির কার্য্য করেন। এই সভাও रेक्केट्सांगीय अवर जायजीयरमय अक्के मिलमपल परेवांचिल अवर এবানে সাহিত্য-সংস্কৃতি বিষয়ে জন্মতাপূৰ্ণ আলোচনা হইত। ক্লকবোহন এই ক্লাবেও বছ বার প্রবভানি পাঠ করেন। এতহাতীত কেনারেল এসেন্দ্রি ইন্টটিউশন সেউ পল্স ক্যাবিদ্রাল প্রভৃতি প্রতিষ্ঠানেও বর্ষ ও অন্যান্য বিষয়ে বিভিন্ন সৰৱে ভিনি ৰক্তভা দিতেন।

প্রায় প্রতিষ্ঠা অববিই কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সলে ক্রক-বোড়নের বোলাবোগ ঘটে। তিনি ১৮৫৮ সনে বিশ্ববিদ্যালয়ের সেনেটের বেশর নির্ভ হন। একবার তিনি "Faculty of Arts"-এর তীন বা সভাপতি হইরাছিলেন (১৮৬৭)। বিশ্ব-

🚧 বিবরে কৃষ্মোহনের অভিনত বিশেব উল্লেখবোগ্য। তিনি বলেন,—

—The Proceedings and Transactions of the Bethune Society from November 10th 1859 to April 20th 1869: "The proper place of Oriental Literature in Indian Collegiate Education." (A Lecture read before the Bethune Society, in February, 1868). বিদ্যালরের সিভিকেটেরও ভিনি সহত হন। শিক্ষর বিষয়দি নির্দারের এবং পাঠ্য পুরুক নির্মাচনে কৃষ্ণনাহন বিশ্ববিদ্যালরের কর্তৃপক্ষকে প্রধানবি বিশেষ রূপে সাহার্যা করিতেন। প্রবেশিকা হইতে বি-এ পর্যান্ত বাংলা ও সংক্ষতে তিনি বিভিন্ন সমরে পরীক্ষক ছিলেন। উভিনা, হিনী প্রভৃতি দেশভাষার পরীক্ষাও তিনি মারে মারে এহণ করিতেন। এই প্রসদে আর একট বিষয় উরেশ করা প্রবোলন। কলিকাতা কোট উইলিয়ন কলেক উঠিয়া সেলে, সিবিলিয়ানদের দেশীর ভাষাদি শিক্ষা দানের ক্ষম বোর্ড আৰু এককামিনাসাল গঠিত হয়। কৃষ্ণনাহন মাসিক হুই শত টাকা বেতনে এক ক্ষম এক-কামিনার নির্কৃত্ব। তিনি সিবিলিয়ানদের বাংলা, সংকৃত ও হিনী পরীকা লইতেন।

কুক্ষোহন হিন্দুকলেজে সংস্কৃত অধ্যয়ন করিয়াছিলেন। তিনি পাশ্চান্ত্য বিভাৱ বেমন, প্রাচ্য বিভারও তেমনি পক্ষপাতী हिल्म अवर बदाबब आहा विद्याद हुई। क्विदाह्म । विम्न करमरक बद्यापनाद जबद जिनि मुब्हें क् बरमद देशद ठकींब অভিবাহিত করেন বলা চলে। বিশপ কলেছে অব্যাপকের **१म अक्टानेड गुर्क वरमंड ১৮৫১ मान वेराडकी जन्मवीममक्** সংস্কৃতে 'পুরাণ সংগ্রহ' প্রকাশ করেন। ইহার পর হইতে তিনি সংস্থত তথা প্রাচ্য বিভার চর্চার যে পুরাপুরি মনোনিবেশ করেন বীটন সোসাইট এবং কেমিলি লিটারারি ক্লাবে পঠিত প্রবন্ধলি হইতে আময়া তাহার আভাস পাইরাহি। ক্লমোহন ১৮৬১ এটাজে ছাত্র সাংখ্য বেলাছ এবং বেলের धोषांगुका जन्मदर्क हेश्द्रबनीटक चार्लाहनावृत्तक Dialogues on the Hindu Philosophy क्षेत्रम कृत्यम । अरे পুভক্ৰানি ভাৰার অভতম শ্রেষ্ঠ এছ বলিরা উল্লিখিড रुरेबाट्ट। 'ब्रुप्पर्यम সংবাদ' बाद्य रेराब वर्षाञ्चीम ১৮৬१ সনে প্রকাশিত হয়। প্রাঞ্জন বাংলার কটল বিষয়ের আলো-চনার এবানি একট উৎকৃষ্ট নিদর্শন। কুক্ষবোহন পরেও শাস্ত্ৰচৰ্চা অব্যাহত ৱাৰিৱাছিলেন। ১৮৭৫ সনে 'ৰগুবেছ সংবিতা'র কতকাংশ ঘকীর দীকা এবং বেরপাঠ সম্পূত্ত একট ভষিকাসহ প্ৰকাশিত করেন। এই বংসরই তাঁহার বিধ্যাত Arian Witness अब अवानिक एवं। त्वरण वाराव रेनिक. वाहेरवरन छाराज चिवाकि--शुक्कवानिर्छ धरे विवस्त्रज्ञ বিভূত আলোচনা আছে। পুৰুক্ৰানি এটান দুটভনী হইতে निविच इरेन्छ थे जबद प्रीयमद मिक्ट वित्वय जवाबद লাভ করে। এবানি তাহার বিভীর শ্রেষ্ঠ এছ বলিরা কেহ কেৰ বনে করেন। ইহার বে-সব স্বালোচনা হর ভাহার নিরিবে ১৮৮০ সবে ইহার পরিপুরক বরণ ভাঁহার আর একথানি পুতক বাহির হর। ছালদের श्रुविवाद क्षत्र क्षकारमास्य द्वत्रुवरायद क्षत्रकारमा सूत्राद्वत्रक्ष এবং ভট্টকার্য সংস্কৃত দ্বীকা ও ইংলেজী অনুবাৰসহ প্রকাশিত ক্ষেন। ভাষার স্কলা বে বিশেষ পাভিত্যপূর্ব ভাষা বলাই

<sup>&</sup>quot;Academic education for natives must, for years to come, comprise both English and Oriental literature; the one for introducing, the other for naturalising the enlightenment of Europe in Asia.

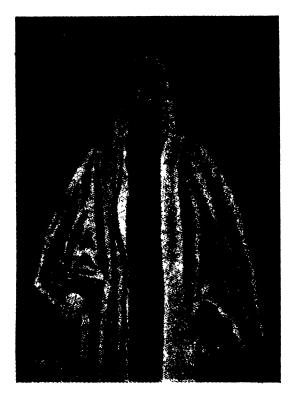
<sup>&</sup>quot;It should not be exclusively English, it must have Sanscrit or Arabic by its side—for even the subtleties of which the late Ram Mohun Roy spoke are worth our study with a view to arrive at an accurate knowledge of the mind of our ancestors. The Sanscrit language and grammar have also an intrinsic value in a philological point of view, and throw much light on the origin of the human species and human language. The purity of the vernacular again depends in a great measure on the proper cultivation of Sanscrit. No scheme of education would be of much value that excludes the Oriental element from its higher offices."

বাহল্য। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় ১৮৭৬ সনে মার্চ্চ মাসে রাজেঞ্জলাল নিত্র এবং মনিয়ন উইলিয়ামসের সলে ক্লফ-নোহ্মকেও 'জনায়ারি ভক্তর জক ল' উপাবিতে ভূষিত করেন। উপাবিদান কালে ভাইস-চ্যাজেলর আবার হর্ষ্টস ক্লফ-নোহ্দের পাঙ্ডিত্য সক্ষমে বে-সব কথা বলেন এবানে ভাষা উল্লেখ ক্ষিতেহি.—

"He, too, has laboured long, honourably and successfully at the literature of his country. Of his Dialoques on Hindu Philosophy, it has been said by Dr. Hull that they are a 'mine of new and authentic indications.' His Bengal Encyclopaedia and other works have greatly advanced our knowledge of Indian literature, politics and religion. I may add that one who has left a revered name in this country, the late Bishop Cotton, when advocating the institution of Honorary Degrees, since 15 years ago, mentioned even then the name of Mr. Banerjea as a conspicuous example of those who might fitly receive such a Degree."\*

ক্রফযোহন ১৮৬৮ সমে বিশ্বপ কলেকের অধ্যাপক-পদ ভ্যার করেন। পেলন প্রাপ্ত হওয়ায় আর্থিক ছল্ডিভা হইতে ভিনি অনেকটা বৃক্তি পাইরাছিলেন। কুফুমোহনের পাভিত্যের ভণা বিভেন্দ পণ্ডিত মহলেও জানাজানি হইল। এই সময় जनकार्छ विश्वविद्यानक 'वार्यन श्वाक्त्रव' शर्व डीहाक निर्दार्शत क्षेष्ठांव एत. किष्ठ छिनि छोश। अर्व करतन नारे। এই পদে ডক্টর ভোরেস ছেয়ান উইলসন দীর্ঘকাল নিযুক্ত ছিলেন। দেশ-বিদেশের ব্রম্থলীতেও কুফ্মোহন যোগ্য আসন পাইলেন। ১৮৬৪ সনের ৪ঠা জুলাই তারিবে ক্ষুয়োচন ও বিভাসাগর মহাশহ বিলাতের রহাাল এশিরাটক সোসাইটর সভা নির্বাচিত হন। ক্ষমোহন বছের এশিরাটক সোসাইটির সঙ্গেও ঘনিঠ ভাবে রক্ত হট্যা পড়েন। ভিনি निटक नमछ जायात बूर्शन दिलन-वारना, मरक्छ, दिकी, উভিয়া, कारजी, উর্ব্, ইংরেজী, লাটন, এীঞ্ ও হিল্প। পুতরাং লোগাইটির ভাষাভত বিভাগে ক্লফ**ৰোহন বিশেষ ক্রতি**ভের সহিত কাৰ্য্য ক্রিয়াহেন। রাকেজনাল নিত্র, ই, ট্নাস প্রভৃতিও তাঁহার সহিত কার্য্য করেন। ক্রকমোহন কলিকাভা चून बूक (जाजारेक्टेब अक क्य अवक विराम । यहाँव (वरवन-নাৰ ঠাকুৱের ভবনে বৃহভাষার উন্নতি বিধানাৰ যে 'বিভক্ষন-সমাগম' হয় ভাহাতেও ভিনি বোগ দিভেন। বাংলা ভাষার উন্নতিমূলক বে-কোন প্রচেটাই তাঁহার ভাতরিক সহযোগিতা লাভ করিত।

ক্ষমোহৰ পূৰ্বোক্ত বেছল ত্ৰিট্টশ ইতিয়া সোসাইটয় এক ক্ষম উংগাহী সভ্য ছিলেন বটে, ক্ষিত্ৰ পৌৱসংভাৱ কি রাজনৈতিক কার্ব্যে সাক্ষাং ভাবে এতবিধ বোগবান করেন নাই। বিশপ কলেক হইতে অবসর গ্রহণের পর কিছুকালের নবোই তিনি এই ছই বিষয়ের দিকে আক্সপ্ত হন। কুক্ষোহম বিদেশীর বর্ষ গ্রহণ করিলেও, আচারে আচরণে সম্পূর্ণ হদেশী ভাবাপর ছিলেন। ভারতবর্ষের যাবতীর উর্লিজ



কুফ্ৰোহন ৰন্যোপাধ্যার ( বার্ছকো )

পক্ষে যে ভারতবাসীর রাদ্ধীর অধিকার সাভ প্রবাহন ইবা তিনি মনে প্রাণে বিশ্বাস করিতেন, এবং এই বিশ্বাস বলেই গত শতাকীর সপ্তম লগকের প্রত্যেক রাজনৈতিক প্রচেষ্টার সলে নিক্ষেকে বুক্ত করিবা লন। নিশিরকুষার বাবের ইতিরান নীপের (১৮৭৫, সেপ্টম্বরে প্রতিষ্ঠিত) তিনি সভাপতি হইলেম। তাঁহার সভাপতিম্ন কালে নীপের আহক্ল্যে এবং সরকারী ও বেসরকারী অর্থে কলিকাতার একট কারিগরি-বিভা শিক্ষালর প্রতিষ্ঠার আবোহন হয়। আনন্দরেশন-প্রবেজনাথ প্রতিষ্ঠিত (১৮৭৬, জুলাই) ইতিরান এসোসিরেশন বা ভারত-সভারও তিনি সভাপতি হইরাহিলেন। প্রপ্রসিদ্ধ ব্যবহা-দর্শন প্রবেশন সাম্বিদ ভারতীর নিবাস, দেশীর বুরাবন্ধ আইন, অন্ত আইন প্রকৃতির বিরুদ্ধে উক্ত সভা বে সব আবোলন চালান বৃদ্ধ ক্ষরেশন প্রবেশন বিরুদ্ধে প্রবেশন প্রবিশ্বাভাগে হিলেন। বিশ্বিদ ইতিরান এসোসিরেশন

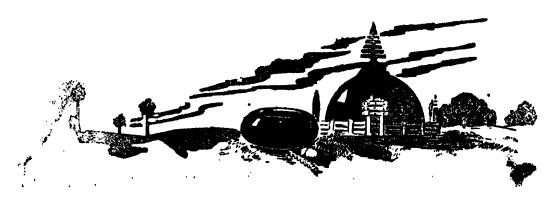
<sup>\*</sup> Convocation Address, Vol. I, pp. 342-3. Calcutta University.

ভণা ক্ষিদার সম্প্রদায়ের প্রবল বিরোধিতা সভেও মুদ্রায়য় क्षांहेरमञ्ज श्रीजवारम ३৮११ जरम कमिकाका हेछिन श्रम अक বিরাট জনসভা হয়, ভাছাতে ক্লমোহন সভাপতিত্ব করেন। चारात कर चारेम छुनिया नश्या स्टेल ১৮৮२ मत्मव ক্ষেত্ৰারি মাসে টাউন হলে যে সভা হইল ভাহাতেও তিনি সভাপতি হইলেন। ভারত-সভা সিবিল সাবিস, মুদ্রাযন্ত আইন, আত্র আইন প্রভৃতি সম্পর্কে বিলাতের অনসাধারকে ভারতীয় মভামত অবগত করাইবার বর লালমোহন বোষকে প্রেরণ करवन। जिमि कितियां जातिल ১৮৮० त्रम १ठी गार्क তাঁহাকে অভিনন্দন জাপনের উৎেত্তে এক বিরাট জনসভা হয়। हेहार७७ क्करबाह्म भीरदाहिला कवित्रावित्मम । ১৮१७ जटन প্রধানত: ইতিয়ান লীগের আন্দোলনের ফলে কলিকাত: করপোরেশনে নির্বাচন-প্রধা প্রবর্ত্তিত হয়। ক্রফমোর্থন এই ন্বগঠিত করপোরেশনে একজন সদস্ত নির্বাচিত হইলেন। এবানেও তিনি সোৎসাহে কার্য্য করিয়াছিলেন। কৃঞ্চাস পালের সঙ্গে পৌরসভার প্রায়ই তাঁহার মতহৈব হইত। ক্লফদাস ভাছাকে "hoary-headed Padre" বা 'পৰুকেশ পাত্ৰী' বিলয়া নিজ 'হিন্দু পেট হটে' বাজ বিজ্ঞাপ করিতেন। ১৮৮৩ সনে বদেশে ও বিদেশে রাষ্ট্রার কার্যা পরিচালনার অভ বলে একট ভাপনাল কও বা ভাতীয় ভাঙার গঠিত হয়। এই करवत होका जरकानीन मदकारी वादि ( वादि अरु (वनन ) গঞ্জিত রাখিতে অধীকৃত হইলে কুক্ষোহন সভাপতি রূপে স্বয়ং বিহা আমানত ৱাবিহা আসেন। ভাছার নিকট অসন্ততি প্রকাশ করিতে ভারপ্রাপ্ত কর্মচারী ভরসা পান নাই। श्रुतक्रमां A Natio i in Making পুष्ठक ( १. ७) कक्रावारन जयरब यथार्थे जिनिवारसन.---

"The Rev. Krishna Mohan Banerjea (better known as K. M. Banerjea) was among the earliest recruits to Christianity. A scholar and a man of letters, it was not till late in life that he began to take an active part in politics. He was associated with the Indian League and became president of the Indian Association . . . He was then past sixty; and though growing years had deprived him of the alertness of youth, yet in the keenness of his interest, and in the vigour and out-

spokenness of his utterances, he exhibited the ardour of the youngest recruit to our ranks. Never was then a man more uncompromising in what he believed to be the truth, and hardly was there such amiability combined with such strength and firmness."

च्रुदब्बनार्थव अरे गर्निध छेक्टिव मर्या क्रुक्टबांस्ट्यव চারিত্রিক বৈশিষ্ট্য সুষ্টীয়া উঠিয়াছে। পাপকর্পু, কুসংস্থার ছর্নীতি প্রভৃতির প্রতি দ্বণা এবং সতোর প্রভি শ্রদ্ধা---ভিবোজিওর সংস্পর্শে জাসিয়া তাঁহারই শিক্ষাগুণে নব্যদল এই करबक्रि श्रद्धत अविकारी रुन। क्रुक्त्याहरनद এ मध्डरे भतिकार काल প্রতিক্লিত হুইরাছিল। এইংর এইণাশ্বর তাঁহার মধ্যে আভিকাবৃদ্ধিও কাগ্রত হয়। সদেশ-শ্ৰেম তাঁহাতে পূৰ্ণমাত্ৰায় বিভ্ৰমান ছিল। গ্ৰ-স্মান্তের আবৰ্জনা मृत कतिवा अवर विरम्पनत याना कि इ छेरक्कर मकनहे अवन করিয়া আমরা বনেশকে বিরুসভায় উন্নত মণ্ডকে ইড করাইব-কুফমোছনের অভিপার এইরূপ ভিল। সাহিত্য-সংস্কৃতি, আচার-বাবহার, পোষাক-পরিজ্ঞ সকলই আমাদের নিক্ষ। আমাদের এই নিক্ষ সম্পদ আকর রাধিবার ভক্ত তিনি বরাবর সচেট ছিলেন। সংস্কৃত ও বাংলা সাহিত্যের চর্চা দ্বারা তিনি দেশবাসীর অলেষ্ উপকার সাৰন করিয়াছেন। বদেশপ্রেমিক হইলেও ক্লম্মোহন ঘ্রন্থ সমাজকে জাৰাত দেওয়া প্ৰয়োজন, বিবেচনা করিয়াছেন, कानक्रभ (कोर्समारमणः छारा क्रिए भन्तारभा रूप मारे। তিনি প্ৰবন্ন আন্নৰ্ম্যাদাভাষসম্পন্ন তেক্ষী পুরুষ ছিলেন। **এটান পান্তীনহলেও যথন বর্ণগত বিভেদের স্থান পাই**য়া*ে*ন ভাৰনও তিনি ইছার বিজ্বে দাড়াইরাছেন। ১৮৪৭ সনে क्लिकाणांत विभेश छांशांक महकातीरमत मर्या अध्य प्रान দিলেও তাঁহার অবস্তন খেতাল সহকারীর সলে বেভানের ভারতমা করিলে তিনি ঐ পদ গ্রহণে অসমত হটলেন। শেষ শীবনে রাজনৈতিক কার্য্য পরিচালনেও তিনি অহরণ তের ও আত্মৰ্যাদা দেবাইয়া গিয়াছেন। ১৮৮৫ সনের ১১ই মে ক্রুমোছদের কর্ত্বমর জীবদের অবসান ঘটে। তাঁহার মুদ্রাতে ভাতি-বর্ণ-নির্বিলেষে সকলেই আত্মীরবিয়োগের অহতব করিয়াছিল।





করেক বঁধর আগে কোনো একট পরীকা কেন্দ্রে বই-টোকা অপরাবে সমন্ত পরীকাবাঁর পরীকা বাতিল করা হয়। কিছ কেন হয় তা হয় তো অনেকেট জানেন না। আমি বহু চেটা করে সেট আবিকার করেছি। ঘটনাট্র যে রক্ষ ঘটেছিল আমি হথাসাধা বর্ণনা করছি।

পদীক্ষার প্রশক্ত হল। প্রার ছলো পরীকার্থী নিক নিক আসনে বসে গেছে নির্দিষ্ট সময়ের কিছু পূর্ব থেকেই। তালের বাতা বিতরণ পর্ব শেষ হয়ে গেছে, এবারে প্রদ্রপঞ্জ আসছে।— প্রবেশিকা পরীক্ষার প্রশ্নপঞ্জ।

্ট্রীকিছ কালের কি রক্ষ ক্রত পরিভাগ ঘটেছে, আশ্রুর্থ হৈ কোনো লোক্ট এটা বুবতে পারবে, কারণ আক্রের দিনের পরীকার্থীরা যে রক্ষ চিছাপ্ত, ভরভাবনাপ্ত, আগর প্রশ্নপত্রের অব্যবহিত পূর্বেও বেষন উদ্বেগপ্ত এবং যে রক্ষ বেপরোয়াভাবে ক্তিয়ক্ত তা অস্ততঃ প্রবীণ দর্শকের দৃষ্টি এছাবার ক্যা নর।

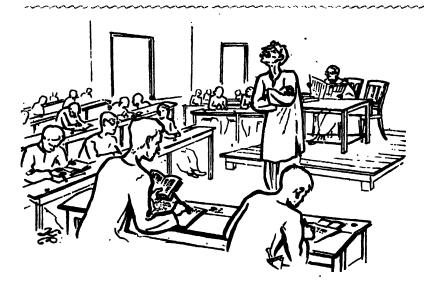
পূর্বে ভো এ রক্ষ হিল মা। তখন পরীকার্থীরা ইইদেবতাকে বা গুরুজনকে ভক্তিভরে প্রণাম কানিরে জীবনের
এই প্রথম জাত্তিমূহুতের জন্তে পাত পত্তীর গুলচিত্তে এসে
আপেন্দা করত। তখন পরীকার্থীকের আনেকেরই হাতে
বাঁবা থাকত সর্বসিদ্ধি মাহলী, অথবা কানে গোঁজা থাকত
আনির্বাদী বিশ্বপত্র। কিন্তু আজকের দিমে গুস্ব আর হরকার
হর না। এখন পরীকার্থীকের পকেটে থাকে টোকার লভে
বই আর আমার নিচে থাকে ছোরা। এখন পরীকার পাস
করার লভে রাভ জেনে পভতে হর না; রাজী হুত, কসকোসেসিধিন, বুতসন্ধীননী, এগদ্ধিণ অথবা অবান বেতে হর না।
এখন পরীকার পূর্বদিন পর্বান্ত নিক্ষিত্ব মনে সিনেমা দেখা
ইলে।

"निवटणक क्रिक पमरपन इरे-रे चक्रियांग । गंबीकार्यावाः

একটিরে ত্যাগ করে আর একটকে গ্রহণ করেছে। বস্ততঃ
একটর অনিবার্থ পরিণতি অন্তট, 'পুবর্ণ মধামের' ছাল এর
মধ্যে রভাবতই থাকতে পারে না, কেননা সিপাদী বিজ্ঞাদের
পর থেকে নৌবিদ্রোহ পর্যন্ত এই পুলীর্থ সমস্কের মধ্যে পরীক্ষা
এহনের পদ্ধতির কোনো পরিবর্তন ঘটে নি। কে জানে হর
তো পরীক্ষাবাদের এই বেপরোরা গুলাসীত অন্তর তবিশ্বতে
বর্তমান শিক্ষাপ্রতির 'বিরুদ্ধে একটি বড় রক্ষমের ছাল্লবিজ্ঞাদেরই ইন্সিত দিচ্ছে।

এই কথাগুলো লেথকের মর, পরীক্ষার হলের যাবতীর হৈহলার মধ্যে সমীরণ একা গলীরভাবে এই সব ভাবছিল। সে সপুবে থাভা নিরে প্রশ্নপত্তের কল্পে অপেকা করছিল আর সবারই সলে। প্রবেশিকা পরীক্ষার এই কেল্পে অপেকাক্ত অধিক বয়ক যে সব প্রাইভেট পরীক্ষার্থী ছিল সমীরণ তাদের মধ্যে একজন। কিন্তু ভবু যে সেই কারণেই সে চিন্তাশীল তা মর, চিন্তার অভ কারণ ছিল।

বধাসময়ে প্রশাস বিলি হতে গেল, এবং কিছুক্পের মধ্যেই পরীক্ষাগৃহ বেল বাজারে পরিণত হ'ল। প্রথম কিস্ক্রিস, তার পর একটু কোর, তার পর খোলাগুলি আলোচনা। নকরলারের চক্রাকার দৃষ্টি-পথকে অহুসরণ করছে করতে লকতরক বেল নাইক্রোনের মত সমস্ত হল-খরে চক্রাকারে ব্রহে। নকরলারের দৃষ্টি বাহুত: অতি সতর্ক, কিছ কেন বেন ক্রিক দর্শনীর মুহূত চি তার দৃষ্টি বার বার এভিনে বেতে লাগল। নকল করা এবং নকল বরার ব্যবহা, এ হইরের মধ্যে এই রক্ষ স্ক্রেচ্রির সম্পর্কটাই লোভনীর, এবং এটাই প্রচলিত রীতি। কিছ তবু বারা বরা পড়ে তারা বেন বরা গড়তেই এলেছে। নইলে সর্বক্ষ কেউ বই পুলে রাথে সন্ধুবে ? ক্ষম গুলতে হবে, কবন স্ক্রেভি হবে তার একটা প্রচলিত রীতি আছে—এই রীতি বেনে চললে পরীকার্যানিরাপদ এবং



এই বিশ্বদ্ধ বিজ্ঞপের একমান্ত্র বাব—সমীরপক্ষ অবিলয়ে বের করে বেওরা, কিছ তা পারা পেল না। কবাটার বব্যে এমন একট ব্যক্তিত্ব হিল বা অপ্রান্ত করা সম্ভব হল না। তার উচ্চারপের সাজীবপূর্ব ভলিতে তাকে দারিদ্বহীন বালক মনে করা পেল না। তাই অত্যম্ভ আর্হ্ন আবিকারিক তাকে আত্মপক্ষ সমর্থনের সুযোগ দিলেন। বলনেন, "ভোষার কি বক্তব্য আহে বল।"

সমীরণের মুখচোখের ভাব দীপ্ত হয়ে উঠল, নাকের নিচের ক্লব গোঁক

নক্ষমারও নিশিস্ত। এই রীতি লব্দন করলে নক্ষমার তাকে বরবেই, এবং তাতে তার অপরাধও হবে না।

আর সবচেরে বিশ্বর, ধরা পড়ল সমীরণ। সে নজরলারকে আলে। প্রান্থ করে নি। তাই ধরা পড়া সম্ভেও জন্ত পরীক্ষাবাঁরা তার প্রতি সহাত্ত্তি দেখাল না, কারণ তারা বহু আগে থেকেই তাকে অতটা হংসাহসী হতে নিষেধ করেছিল। কারণ এতে তালেরও বিপদ ছিল। একজনের ধরা পড়া বানে তালের কিছুক্দ টোকা বছ। তবে সৌতাগ্যের বিশ্বর এই বে ঘটনাট ঘটল প্রথমাধের লেষ ঘটা বাজার করেক রুতুর্ত আগে। হর তো নজরদার ইচ্ছে করেই দেরিতে ধরেছে। মার্ববানে ধরলে গোলমালে অভদের কিছু অস্থবিধা হ'ত।

সমীরণের বরা পড়ার প্রার সজে সকেই বন্টা বেজে গেল।
পরীক্ষার্থীরা বেরিরে পেল একবন্টার বিরাম ভোগ করতে।
অভবিকে থাতা বই এবং পরীক্ষার্থী-সমীরণ গেল আযুক্ত
আবিকারিকের ঘরে (পাঠক, মাপ করবেন, কথাট সরকারী
পরিভাষা থেকে গৃহীত)। সেথানে সমীরণের পরীক্ষা
একেবারে বন্ধ করে দেওরা হবে মা কেন ভার কৈন্দিরং
চাওরা কৃষ্ণ ভার কাহে এবং একক্ষনকে ধরার সমন্ত হাজের
বিরোহ আশহার সকে সকে থানার দারোগাকে ভেকে
পাঠানো হ'ল।

সমীরণ গভীর ভাবে এবং খড়ান্ত সপ্রতিভভাবে বলল, "আমি ভো কিছু খভার করি নি।"

্ৰত্নাৰী এবন একট অপ্ৰত্যাশিত দৃচতা, আত্মপ্ৰত্যৰ এবং ্ৰন্ধান্তবিক্তাৰ সকে উচ্চাহিত হ'ল বে আৰ্ক্ত আধিকাহিক হঠাৎ তাৰ বিকে আত্মই না হয়ে পাৰলেন না।

সমীরণ বলন, "আপনালেরই অপরাবের কতে আনাকে শাভি দিতে চান ?" জোড়া উৎসাহে কাঁপতে লাগল, মনে হ'ল লে যেন কিছু বলার ছন্তেই প্রস্তুত হয়ে এসেছে। সে তার তীক্ষ গৃষ্টীর ফলক আর্ক্ত আবিকারিকের চোবে বিঁবিরে প্রস্তুত করল, "আয়ার বা বলবার আহে শুনবেন সতিটই ?"

আর্ক্ত আধিকারিক গভীর স্থরে উত্তর দিলেন, "ভোমাকে অসমতি দেওরা হরেছে।"

"কিছ আমাকে এখনও একটু বসতে অভ্যতি কেওৱা হয় নি।"

"ভূমি বসভে পার।"

ইতিমধ্যে দারোগা এসে পৌছলেন কনষ্টেবল সলে নিরে। তিনিও বসে ভনতে লাগলেন ব্যাপার কি।

সমীরণ পাশের বালি চেরারটাতে বসে বলল, "বেশ, তা হলে শুরুন। কিছু আমি প্রথমেই বলি, পরীক্ষার হল-এ নজরলারের ব্যবহাটা মল নর, কিছু তাকে তার কর্ড ব্য সহছে অতি উৎসাহী হতে নিষেধ করা উচিত ছিল আপনাদের। কারণ এবানে পরীক্ষার্থীদের উদ্বেশ্ত পরীক্ষা পাস করা, লে অতে তার। যবারীতি টাকা ক্ষা দিরেছে।"

"অভএব ভারা কিছু না শিবে নকন করে পাস ক্রবে ?" —আযুক্ত আধিকারিক প্রশ্ন করনেন ।

সমীরণ বলতে লাগল, "এ তাবে পাল করে কেট বে সমাজের পালে বিপক্ষনক লোক হরেছে তার প্রমাণ নেই, পালারে যারা কেলের শক্ত তাদের মধ্যে অনেকেট হয় তো নকল না করে পাল করেছে। প্রত্যাং হরের মধ্যে কোনো তকাং নেই। কিছু পোধার কথা বে বলহেন, তাই বলি এ শিক্ষার উল্লেখ হ'ত তা হলে নোট মুখ্য করে পাল করা সম্ভব্ হয় কি করে ? বলতে পারেল লে কথা ? প্লারেল না। কিছু পোধানোই বলি আপনাবের উল্লেখ হ'ত তা ক্লাল শিক্ষাপথতি এবং পরীক্ষার পছতি এ রক্ষর বাক্ত
না। না পিবে পাস করার যদি আপনারা
বাবা দিতেন তা হলে বিববিভালর
টাকার অভাবে কবে উঠে বেত। কিছ
সে কথা বাক। বরা বাক, কিছু শেখাই
উল্লেখ কিছ তবু আজ বে বাট হাজার
পরীক্ষার্থী প্রবেশিকা পরীক্ষা দিছে
তালের মধ্যে পাস করবে অভ্যান চল্লিখ
হাজার, এবং তালের মধ্যেও বেকার
হরে বসে থাকবে অভত বিশ হাজার।
তারা নানা জারগার চাকরির চেটা করে
বেডাবে এবং সেই চেটার কলে ঐ বিশ
হাজার ছেলের মধ্যে ছ চার শ ছেলে হয়
তো চাকরি পাবে। কিছ সে চাকরির
সলে শিক্ষার কোনো সম্পর্ক থাকবে

না ভাদের। স্থুতরাং এই যদি অবস্থা তবে কিছু শেবার উপর
অতিরিক্ত জোর কেন দিচ্ছেন আপনারা? আর এবন যদি
কিছু শেবেও, তবে ক'দিন তা মনে থাকবে? এবং এ বিষয়ে
ওপু প্রবেশিকা পরীকা কেন, যে-কোনো পূর্বে পাস করা
এম এ-কে হঠাং আবার এম-এ পরীকার বসিরে দিন দেববেন
পাস করতে পারবে না। অবক্ত হাজার হাজার হেলের
মধ্যে হু' একজন ব্যতিক্রম থাকতে পারে, কিছ আমি তাদের
কথা বসহি না। আককের কিছু শেবা, চর্চার অভাবে কালই
ভূল হয়ে যাবে। আর হাজার হাজার হেলে বেকার বসে
ধেকে শিকার চর্চা রাধ্যে কিসের গরছে হু"

সমীরণ বলে বেতে লাগল, "বারা সমস্ত জীবন সাহিত্য-ব্যাকরণ নিরে বাক্বে, ভারা সাহিত্য-ব্যাকরণ শিবুক, কিংবা বারা ইতিহাস ভূগোল চর্চা করবে একমাত্র তারাই ইতিহাস-ভূগোলে ভান লাভ কলক। ভালা এনের মধ্যে শভকর। একজন কিংবা তারও কম। কিছু সেই জনিন্দিত একজনের **ঘটে এত হেলের পাস করার আনন্দ ন** করা কি উচিত ? কাৰণ বারা নকল করে পরীকা দিক্ষে তারা বদি বুৰে থাকে এবেশিক। পাস করলেই তারা দশ-বিশ টাকার চাকরি পেলে ৰুষ থাকবে এবং না পেলেও আর পড়বে না, তবে ভারা বে শেবা হ'দিনে নিশ্চিত ভূলে যাবে সেই-শেবার খতে পরিশ্রম গরবে কেন ? তা ছাড়া রবীজনার কি বলেন নি যে পরীকার াভার এর দেখার খড়ে বিভাকে করে বহন করাও বা, াদরের নিচে বহন করাও তা ? তবে এই আত্মপ্রবঞ্চনা কেন ? ্ৰে এই ভঙাৰি কেন ? আপৰি কি Stephen Leacock-ात्र वृज्यवीय कथांके कारमय मा त्व Every man has omewhere in the back of his head the wreck f something which he calls education?

'<sup>#</sup>সাগনি **খানে**ৰ বা বছুৰ ভারভবৰ্ণে শিভার বারা আগা-



গোড়া না বদলালে দেশ উৎসন্নে বাবে ? দেশে কর্মী বাহ্যবান লোকের দরকার এখন। দেশের লক্ষ্য লক্ষ্য হেলের
সন্মুখে শত রক্ষরে কর্মক্ষে উন্নুক্ত করে দিতে হবে, দেশের
বেকার সমন্তা মেটাতে হবে, এমনি অবস্থার এই মিখ্যা
শিক্ষার নামে আগনারা ঠিক উপ্টোটাই করছেন—অকর্মণ্য
হেলে, স্বাস্থানীন হেলে এবং বেকার হেলের সংখ্যা বাড়াছেন।
এমনি অবস্থার এই শিক্ষার যে কোনো দামই এখন নেই
সে কথা অবস্থাই বোকেন, স্কুতরাং এ শিক্ষার যা উদ্দেশ্ত অর্থাং
সার্টিকিকেট পাওয়া তা যত সহক্ষে পাওয়া যার ততই ভাল
নয় কি ?"

সমীরণ এমন আবেগের সঙ্গে কথাওলো বলে বাছিল খে আযুক্ত আবিকারিক এর মার্থানে কোনো কথা বলার স্থানা পান নি, কথাও পুঁজে পান নি। তাঁর কেবলই বনে হছিল তাঁর কর্তব্য আরক্ষের (আমার কথা মর, সরকারী পরিভাষা) হাতে সমীরণকে সমর্শণ করা। কারণ তাঁর মনে একটা বোর সন্দেহের উদর হরেছিল প্রবেশিকা পরীকার্থীর মূবে এই সব কথা ভানে।

স্থীবণের তা না বোঝবার কথা নয়। তাই সে তার
সন্দেহকে তার নিজের র্জির সমর্থক হিসাবে ব্যবহার করার
প্রবিধা পেরে গেল। সে বলল, "আবার কথা বে কত সত্য
তা আপনার রুবের তাব দেবে আরও বেলি বোঝা যাছে।
আপনি আবাকে সন্দেহ করেছেন। অর্থাং গৌণতাবে আপনি
এই কথাই বলতে চাছেন বে প্রবেশিকা পরীকা যে দেবে সে
তো রুর্গ, সে আবার এত কথা বলবে কোথেকে। অর্থাং
প্রবেশিকা পরীকার্থী বে কিছুই কানে না, এ কথা এক রক্ষ
বরেই নিরেছেন। তালই করেছেন। তথু আত্মপ্রবক্ষাটি
টিক রেবে তাহের বক্ল করার বাবা বিছেন। এটা কিছু
ভাল করছেন বা।"

বাইতেহে। সেবানকার নীলা প্র্যানাইট প্রভৃতির সংগ প্রকলে অবহান করে। নীলার সহিত কিছু কিছু নিঅত চুবী এবং উপরম্বও পাওরা বার। কাশ্বীরী নীলার বর্ণসম্পদ অতি উচ্চ শ্রেবীর। কাশ্বীরী নীলাতে বেন আকাশের নীলিনা বৃষ্ঠ হইরা আছে।

সৌগৰিক :— ন্যাগনিসিরন্-এলিউমিনিরান্ আলাইড্লোগৰিকের উপালান। চুনীর সহিত ইহার বর্ণ-সোসাদৃত এত বনির্চ যে লৌগৰিককে অনেক সমর চুনী বলিরা তুল করা হয়। একটু পরীকা করিলেই এই তুল বরা গড়িয়া যার। সৌগৰিক চুনীয় ভার শক্ত নহে এবং ইহার আপেক্ষিক শুরুত চুনী হইতেক্য। ক্ষিক-ভরের মধ্যে সৌগরিক বুবই উজ্জল এবং বাঁটি রজের ভিতরে বর্ণের্বাণ্ড দেবা যার। কৃত্তিম উপারে সৌগরিক নির্মাণকার্য্য বুবই চলিতেতে, কিছা কৃত্তিমতা সহকেই বরা পভিয়া যার।

সিংহল, ব্রহ্মদেশ ও ভাষদেশে সৌগনিক পাওরা বার--ভারতেও অরবিভর উংপর হয় । চুণীর ভার উদ্দল সৌগনিক
অনেক বেশী ব্লো বিক্রীত হয় । যাদাগাভার, অক্টেলিয়া,
ভাকগানিছান এবং ব্রেজিলে সৌগনিকের আকর আছে ।

বৈদ্ধা :—এলিউমিনিরম অস্তাইড ইহার উপাদান।

ক্ষাং মলিম শীত আতা, শিকল ও সবুক্তের বিচিত্র বর্ণসমাবেশে
বৈদ্র্ব্যের কর। বৈদ্র্ব্য-রত্বকে তিনট শ্রেশীতে বিভক্ত করা

হাইতে পারে:—

- ্ক) শীত ও সবৃদ্ধ বর্ণের বৈদুর্বাকে অনেকাংশে অলিভিনের সহিত ভূগ করা হয়। অলিভিন এক প্রকারের শীত ও সবৃদ্ধ বর্ণের রম্ববিশেষ।
- (খ) 'বিভালাক'— অভকারে বিভালের চক্ বেষন অলে বিভালাক-বৈদ্র্ব্যের আভা অনেকটা সেই প্রকারের। ইবং হরিভাভ, গিলল ও সব্দ এক প্রকার মতন রেশমের অভ্যন্তরে ইহার বভাবদাভ লৌকর্যা সর্কানাই আছ-প্রকাশের্ব। গোল পৃঠ করিরা কাটলে মধ্যে একট উজ্জলরেবা দৃঠ হয়। বিভিন্ন দিক হইতে পর্যাবেকণ করিলে মনে হইবে বে রেবাট একই কক্ষে বিচরণ করিভেছে। বিভালাকের কনপ্রিক্তা ধ্ব বেলী প
- ্পে) ু আলেকজাও টিট নামে বৈদ্ধ-রছের আর একট শ্রেই আহে। দিনের আলোতে ইহাকে গভীর সমুক বর্ণের কেবার, কিন্ত ক্রিম আলোতে ইহা বন রক্তবর্ণ দৃষ্ট হর।

ভারতবর্বে কইবাটুর ও কালারৰ জিলার বৈদ্ব্য-রম্ব কিছু কিছু পাওবা বাব, কিছ বাঁট বৈদ্ব্যের পর্ব্যারে ইবার। পড়ে বা । উচিয়ার কটক জেলার বৈদ্ব্য পাওরা বাব । কিংবল, উরাল পর্বাত ও ট্যাসব্যানিরাতে আলেক্লাও বিট জেনীর বৈদ্বা পাওরা বার ।

विका :-- विक्रियेत् अभिक्रेनियम् देशाः वेशानाम ।

হুইট অব্লা রত্ব বন্ধে বারণ করিবা বেরিলরত্ব এর্চবের অবিকারী—একট পারা, আর একট একোরাবেরিন, মরকত, হরিবনি, গারুত্বত প্রভৃতি বিভিন্ন নাবে পারা অভিহিত। কুত্রিন আলোকে পারা এবং একোরামেরিন অপূর্ক জী বারণ করে। হুপ্রাপ্য রত্ন হিসাবে ইহালের ববেট আভিজাত্য আহে।

বেরিলখাতীর ক্টকতর বহু মণ ওজনের পাওয়া বার;
কিছ রত্ন পর্ব্যারে ইহারা ছানলাত করে না। এই খাতীর বেরিল এলিউমিনিরমের সহিত মুক্ত হটরা এক প্রকার ক্টিন বাড়ু স্টি করে। এই বর্ণসভর বাড়ু অর্ণবরান ও ব্যোমবান নির্মাণে ব্যবস্থাত হয়।

ভারতবর্ধে নেলোর জেলার, বিহার প্রদেশে এবং কাশীরে বেরিলের আক্তর আছে। অঞ্জরের মধ্যেও বেরিল পাওরা বার। মাজাল প্রদেশে কইবাটুর জেলার এবং মহীপুরেও এই রত্ন পাওরা বার। রাজপুতানার নিজ্ঞ ভরের বেরিল পাওরা বার। সিংহল-দ্বীপও এই রত্বের জন্মদান করে।

পোৰবাৰ:—এলিউমিনিরম্-ক্লু প্রসিলিকেট্ট পোৰবাজের উপালান। অন্ত রড়ের তুলনার ইহা কতকটা সহকলতা। বর্ণ হরিতাত। বর্ণ বৈচিত্রের কর্ত ইচা অনেক সমর হুপ্রাপ্য রড়—প্রেমীর পর্যারমূক্ত। অবছে পোৰবাজ রড় পর্যারে পড়েনা। নিকৃষ্ট পোৰবাজ অন্ত বাতুকে পালিশ ও চূর্ণ করার অন্ত বাবস্থাত হয়। এজনেশের তাতুর কেলাতে টনের সহিত পোৰবাজ পাওয়া বায়। সিংহল বীপেও পোৰবাজ উৎপন্ন হয়।

তামভি:—রছের মধ্যে সহক্ষতা, বাঞ্চারে আমদানীও বেশী এবং মৃল্যও অভ রছের তুলনার কম। ইহা এলা-মাভাইট জাতীর। উজ্জল গাঢ় লাল বং, একটু বেগুনী আভা-বিশিষ্ট। নিজ্ঞ্জ তামভি চূর্ণ করিরা উৎক্ষ্ট রছরাজিকে সম্প করা হর। বভিন্ন চক্ষবরস্ট্রতে ইহা ব্যবস্কৃত হর।

রত্থপসম্বিত তামতি বেশী পাওরা যার না—উহার নিত্ত শ্রেণীই সহজ্লতা। বিহার প্রবেশে, উভিয়া প্রবেশের বহানতীর বালুকারাশিতে তামতি পাওরা বার। হাজারিবাপে তামতির বড় বড় বঙ প্রাপ্ত হওরা যার, কিছ তাহাত্বিসকে রত্থ-পর্যারভুক্ত করা যার না। মান্রান্দে ক্রকানতীর তীরে বালুপ্রবাহে ইহারা সংগুপ্ত থাকে। সালেম, নীলসিরি ও বেলোর জ্লোর রক্তবর্ণ তামতি এবং ত্রিবাহুর জ্লোর বর্ণসম্পালনী তারভির স্থান পাওরা যার। রাজপুতানাতে উত্তরপুর ও ক্রপুর রাজ্যে, আরাবরীর সিরিশ্রেণীতে তামতির আকর হুই হর। আজ্মীর, জ্রপুর, ক্রিবণসড় ও শাহপুরে এক প্রকার তামতি পাওরা যার। ক্রিবণসড় ও শাহপুরে ভারতবর্ণের বাবতীর তামতির মধ্যে রত্তসম্পাদে প্রেট। ক্রিক্-ভারতে বাহা উৎপর হর তাহা অলভার প্রভাৱ কর্ত মান্রান্দে প্রেরিত হয়। অলিভিন ঃ—এই রম্ব ক্ষরীবের নিকট পেরিভট নামে পরিচিত। পেরিভটাইট আরের শিলার ইহার ক্ষা। সব্ত, শীত, পিলল ও রক্তবর্ণের বিচিত্র পরিবেশ ইহার ক্ষা। নাক্ষের হয়। চুনা-পাশরের মধ্যেও এই রম্ব দেখা যার। ত্রক্ষেরের ছির আকরে, চুনীর সন্দে একতে অলিভিন দৃষ্ট হয়। ভারত-বর্ষে এই রম্ব পাওরা হার না বলিলেই চলে। রম্ব প্রসম্বিত অলিভিন নিশরের উপকৃল হইতে দ্বে সেন্টক্ম বীপে এবং সিংহল, কুইজল্যাও, ত্রেকিল ও নিউ মেরিকোতে পাওরা হার।

ভেড বা পীলু:—নানাপ্রকারের বিচিত্র ভারকার্য এই রড়ের উপর করা যার। ভেড রড় নানাবর্ণের হয়, সাবারণতঃ কিকে সবৃদ। ভেডাইট্ এবং নেরুইট এই ছই প্রেণ্ড এই রড়কে বিভক্ত করা যার। ভেডাইট্ কিকে সবৃদ্ধ—নেরুইটের বর্ণ পত্র-সবৃদ্ধ। ভেডাইট বিভিন্ন অলাভরণে বচিত হইয়। সেগুলিকে অপূর্ব্ধ এইমভিত করে।

শেভরত্বের উপর চীনাদের অগাধ বিশাস। ভাষাদের মতে এই রত্ব বিশিষ্ট গুণসম্পন্ন, বারণ করিলে সর্কবিব বিপদ হইতে আগ পাওরা যার। রত্ববারণ সন্সার্কে ভারতীরদের সংকারও কম নহে—উপর্ক্ত রত্ব বারণ করিতে পারিলে কৃষ্টিন দ্র হইরা স্থানের উদর হইবে এদেশের অনেকেই ইহা বিশাস করেন।

উত্তর-রক্ষ হইতে কেড সরবরাহ করা হর। রেছুন হইতে লাহাছে চীনদেশের নানা বাজারে জেড চালান হয়। এই রত্নের কারুশিলে চীনারা যথেই ব্যাতি অর্জন করিয়াছে। চীনদেশের বাজার ওঠা-নামার উপর জেডের ব্যবসা বিভিন্ন অবহা প্রাপ্ত হয়।

त्नारमः -- (भारमरवत वाणि जवाण तरम् कृमा मरह। छेन्दला देश श्रीव दीवरण्य कृषांचाचि। नत्न, रुन्, रुन्, भिन्न, कमनारमवृत वढ् श्रीकृष्ठित जात मामा वर्णत त्रारमक् नाध्या यात्र। कमनारमवृत वर्णत त्रारमरवत जावत तन्नी। जातरमामवत्-निनिर्कृष्टे छेनानारम देशरम्ब जन। जात्न देश वर्णनी वद्य। वर्णताजात विक स्टेर्ड निरस्त छेरनेत श्रीवर्णनी त्रारमरक भाजात विक स्टेर्ड निरस्त छेरनेत श्रीकृष्टी त्रारमरक भाजाता श्रीवक वर्णा वस्त ।

পাণবের ছড়ির সকে বারিবাহিত ক্ষটকভরে এবং পললভূপে গোমেদ অবছান করে। সিংহল, ভান, ইলোচীন
গ্রাছতি বিভিন্ন দেশে গোমেদের কব। কেলাসিত শিলাতে
নেকিলিনের সকেও গোমেদ অবছান করে। এই প্রকারের গোমেদ কালারন্, কইবাটুর কেলা এবং বিবাহরে
কোবার। যাত্রাক প্রদেশের ব্রিচিনোপরীতে এবং বিহারে
বালারীবাস কোনার বোনটাচ নামক ছামে গোমেদ পাওয়া
বার। ব্রিবাহর যিনারাল কোন্পানী ব্রিবাহরের সর্বোপক্লে বানুকারাশির মধ্যে প্রচুর গোমেদ আবিভার ক্রিবাহে।

উপরোক্ত কোম্পানী থেট বিটেন, খার্থানী, র্ভরাই এবং আফ্রিকা প্রভৃতি বিভিন্ন দেশে গোমেদ রগানী করিতেতে। গোমেদ-ধারণে এহশাভি হয়, ভারতীয়দের মধ্যে এ বিশ্বাস বুব আছে।

ক্ষ্মক বা কো-অট্স: —উপরত্ন পর্যারভূক্ত। ইহা অহাত-রণের শোভা বৃদ্ধি করে। আরের শিলাগর্কে সাধারণতঃ ইহার ক্য-সিলিকন-অক্সাইত ইহার উপাধান।

কেলাসিত ক্ষ্টককে নিম্নলিখিত বিভিন্ন শ্রেণতৈ বিভক্ত করা যাইতে পারে :—বোলাপী ক্ষ্টক, বোরাটে ক্ষ্টক, ব্যাশ্রচক্ ও বিভালাক ক্ষটক। কেলাস প্রছের ক্ষটককে নিম্নলিখিত নাম বেওরা হয় :—ক্যাল্সিডনী, কারনেলিয়ান বা ক্ষরিরাধ্য রক্ষ বর্ণের। আ্যাসেট সালা, ধুসর, পিলল প্রভৃতি বর্ণের হয়। ওনিক্স বিভিন্ন বর্ণের তার বা রেধার্ক। ক্লিন্ট অক্ষ্য—প্রাচীনকালে আন্ত নির্বাণে ব্যবশ্বত হটত। ইহার বর্ণণে অন্তিও প্রশাস্ত করা হয়।

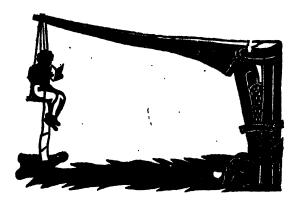
ভারতবর্ষের বিভিন্ন ছানে ক্ষটক পাওয়া যায়। গোলান্ী-ষ্কটক উভিয়ার সৰলপুরে মেলে। বোদাই প্রদেশের ভাষারাতে যে ক্ষটক পাওরা বায়, কাখে উপসাগর দিরা ভাষা विरम्पन ब्रह्मानी कहा एवं। यश्राधारमञ्जू किम्बर्धाबारक राज्ञपदावाद्यत वज्ञम्म (क्याद, याळाट्यत शामावती (क्याद রাজনদ্রীতে এবং তাঞারে 'ভেলাম হীরক' নামে এক-প্রকারের কটক পাওরা বার। দিল্লীতে 'দিল্লী কটক' নামে এক প্রকারের ক্ষ্রীক , খাছে। ইহা ছারা ত্রন্তর নেকলেন প্রছত করা হয়। ভাষীরা নামক ক্ষটক বিহারের সাঁওভাল भवननाव अवर वदावादादादा भाषवा वाव । काटक वाकाटक भारति ७ कांत्रनिवान कांकी एत । यश्**धान्य क्या**न-পুরে, মুক্তপ্রবেশের বান্দার এবং দাক্ষিণাত্যের বিভিন্ন স্থানে जार्तिक कार्षेत्र जनकारत वावशास्त्र कर श्राप्त करा एतः ইউরোপের বিভিন্ন বাজারে কামে হইতে জ্যাগেটের বুচরা চালান ধার। স্থলত রত্ন হিসাবে ক্ষটকের ব্যবসার কালীরের বাঞারে ধুব চালু।

ওপাল:—রড় হিসাবে,ওপাল খুব অনপ্রির না হইলেও ব্যবহারে ইহার অনপ্রিরতা দিন দিনই বাছিতেছে। অকেলা-গিত সিলিক। এবং তাহার সহিত কিছু অলের সংমিশ্রণে ইহার কর। ওপালে বিভিন্ন রং দুঠ হর। ইহার কঠোরতা কয়, প্রায় কাঁচের তুল্য। বোহাই, মব্য-প্রদেশ, হারদরাবাদ এবং মান্তাকে ওপাল পাওরা বার।

ভারকুন :—উজ্জ নীলবর্ণের। কাচানোনার পরিবেশে সংখাপিত হইলে ইহার ননোহারিছ বিশেষভাবে প্রকটিত হয়। ভারতবর্বে আঞ্চীচ পাহাতে এবং রামগতে ভারকুন বছু পাওরা যায়। পারস্থ ও মিশরেও ভারকুনের বহুল প্রচলন আছে। এই সকল পত্তে চিত্ৰের নামগৰ ছিল বা,
বাকিবার ক্বাও মর। এবেশের শিলীরা তবন
সবেষাত্র অপেকাকত সহল বাতৃ ও কাঠ বোরাই
শিলের আত্রর লইরাছেন। আবরা এই বাতৃ
ও কাঠ বোরাই চিত্রের প্রথম নিদর্শন পাই—
১৮১৬ প্রীর্টাকে গলাকিশোর ভট্টাচার্ব্য কর্তৃক
প্রকাশিত 'অরহামকলে'। ক্রমণঃ প্রকের গঙী
ছাভাইরা পত্ত-পত্রিকার চিত্র দেখা দিতে আরম্ভ
ক্রিল।

মাসিক-পত্তে সর্বপ্রথম চিত্রের দর্শন পাই— 'ভত্তবোধিনী পত্রিকা'র। ১৮৪৫ এটাফ (৩র ভাগ) ইইতে ইহাতে মাঝে মাঝে চিত্র প্রকাশিত ইইত। ইহার পাঁচ বংসর পরে, ১৮৫০ এটান্যের জ্লাই মাগে, পাদরি লং-সম্পাদিত 'সভ্যার্থব' পত্রের জ্লা। এই মাসিক-পত্রিকার

প্ৰথম বৰ্বের প্ৰভাৱক সংখ্যার একধানি করিব। কাঠ-খোদাই চিম্ন এবং বিভীর বৰ্ব ছইতে সকল সংখ্যার এক বা একাবিক চিত্ৰ সমিবিট ছইত।



তৈলের খানি

—'সতাপ্ৰদীপ,' ৪ আতুৱারি ১৮৫১

ক্ষিত্ব বাংলা "সচিত্র মাসিক পজিকা" বলিতে সচরাচর আমরা বাহা বৃত্তি, তাহা প্রকাশিত হর ১৮৫১ বিটাবের অটোবর মাসে। ইহার নাম—"বিবিধার্থ-সংগ্রেছ," সম্পাদক—বনামনত রাজ্জেলাল মিত্র, প্রকাশক—ভাগাকিউলার নিটারেচার কমিট বা বক্তাবাহ্বাহক সর্বাহ্ণ। ইহার আবর্শ হিল বিলাজের 'পেনি ম্যাথাজিন', "আবালয়ভবনিতা সকলের পাঠবোগ্য ভ্রণার্থে উক্ত পরা অতি কোমল ভাষার নিবিত হইবেক, এবং তক্ষত্য প্রভাবিত বন্ধ সকলের বিলের পরিজ্ঞানার্থে তাহাতে নানাবিব হবি বাজিবেক।" লৈশবে রবীজ্ঞাবকে ইহা বৃদ্ধ করিলাহিল; তিনি ভীবন-স্তিতৈ নিধিবাজেন: "রাজ্জ্ঞলাল মিত্র মহাশর "বিবিধার্থ-সংগ্রহ" বলিয়া একট ছবিওরালা মাসিক-পত্র বাহির ক্রিজেন। দেবার বার করিয়া নেই বইবানা পঢ়িবার বুলি



कात्यत्वत्र माजन जन्हे

—'বমৃত বাজার পত্রিকা,' ২ মে ১৮৭২

আৰও আমার মনে পড়ে। সেই বড় চৌকা বইটাকে বুকে
লইরা আমানের শোবার বরের তভাপোবের উপর চীং হইরা
পড়িরা নহাল তিমি মংজের বিবরণ, কাছির বিচারের
কৌত্তক্ষমক গল, কুফরুমারীর উপভাস পড়িতে কত চুটির
বিনের মব্যাক কাটরাছে। এই বরণের কাগছ একবানিও
এবন নাই কেন গ্ল

অনির্মিত ভাবে প্রচারিত হইরা ১৮৬১ ব্রীকে 'বিবিধার্থসংগ্রহ' সূপ্ত হর। ইহার অভাব প্রণার্থ ছই বংসর পরে
(কেক্টরারি ১৮৬৩) রাজেক্টলালের সম্পাদনার 'রুহ্স্যুসম্পত্ত' প্রকাশিত হইরাছিল; ইহাও একথানি প্রাদন্তর
সচিত্র মাসিক পত্রিকা। "চিত্রপটি বে মনের সংকারক ভাহা
নব্য তড়াত্মকারিরা ছির করিরাছেন; অভগ্রব সমরে
উভ্য চিত্রহারা চিত্তাত্মরঞ্জন করাও ইহার উদ্বেভ ; তথ্পে
এই পত্রের প্রবেচিক ব্লাত্মরাক্ত স্থান্তর আন্দেশে বহু
শত হবি বিলাত হইতে আনীত হইরাছে, ভাহার প্রকাশে
বোর হয় অনেকেই পরিত্ত হইবেল।"

সাঠাহিক-পত্তে আমরা প্রথম চিত্রের দর্শন পাই—
'সভ্যপ্রাদীপো'। ইহা জীয়ানপুর মিশন কর্তুক প্রকাশিত 
একবানি সাঠাহিক সংবাদপত্র , ১ম সংব্যার প্রকাশকাল—
৪ মে ১৮৫০। সম্পাদক প্রথম সংব্যার প্রতিজ্ঞা করেব বে,
"পদার্থ ভালা প্রভৃতি বিভা সম্পর্কীর মানারণ প্রভাব বিভাবি
মহাশরেরদের সভোবার্থে প্রতি স্তাহ্যে প্রকাশ করিব ভবব্যে
বে২ ক্ষা সহক্ষে বোৰগয়া নহে ব্যাব্যার্থে ভাহার প্রতিবিশ্ব
ক্ষান ক্ষান প্রকাশ হুইবেক।"

ইহার হর বংসর পরে, ১৮৫৬ বীটান্থের আগট নানে, সচিত্র পাকিক পঞ্জিকার আবিকার। উহা—'জরুনে) ক্লুনু সন্পাহক—বেঃ সাস্থিহারী দে। ''জরুবোহরে'র প্রার প্রভাক সংব্যার একবানা করিবা হবি বাকিক।





[ 'बरुज-नमर्क,' जाका ३०२॰ मर्पर



১৮৬০ বিটাদের নবেশর নাসে 'স্চিত্রে ভারত সংবার' নাবে আরও একথানি পাক্তিক পত্রের উদর হয়। "এই পত্রের প্রতি বতে হুইবানি করিয়া প্রতিস্থি বাকিবেক, ঐ প্রতিস্থি সকল বিব্যাত ইংলাক ও বালালি লিবোপ্রাকার এবং এবংপ্রতারবিদের বারা প্রকৃত করান হুইতেতে।"

অভংগর আমরা সামরিক-গত্তে চিত্রের বর্ণন পাই—শিশির-হুমার বোব-সম্পাদিত 'অমূত বাজার পাত্রিকা'র। ইহা প্রথবে সাধাহিক পত্ররপে রাংলা ভাষার প্রচারিত হর; ১ম



ব্ৰবাস্থ্ৰ ['ভড়বোধিনী পঞ্জিয়া' ১ পৌৰ ১৭৬৭ শক

লংখ্যার প্রকাশকাল—২০ কেজরারি ১৮৬৮। 'অর্ড বাজার প্রিকা'র বাবে বাবে ব্যক্তির হান পাইত। ১৮৭২ সন্মের ২৮৫ কেজরারি পরিকা-সম্পাদক লেখেন:—"এবারে আমরা সূত্র এক প্রকার বিবিধ পাঠকগণকে উপহার বিলাম। হবিট তত তাল হর নাই, কিছ এট প্রথম। এতকেশে বত তাল হইতে পারে তাহার চেঙার ফ্রাট করিব না। তবে প্রতি স্থাহে কি প্রতি বাসে কি আহবে আর হবি বিতে পারি না পারি তাহা সাধারণের উৎসাহের উপর নির্ভর করে। একট হবি শুঁহিতে ত্রেক ব্যর।"

১৮৭২ সন্দের হয়া মে তারিবের 'অয়ত বাজার পঞ্জিকা'র বে কার্চু নট প্রকাশিত হয়, তাহার বিষয়—হোট লাট ক্যাখেলের মডেল ডেপ্ট। এ সহছে রসরাজ অয়তলাল বয় তাহার স্বতিক্থার বলিরাছেন:—"লেফটেনান্ট গবর্ণর সার জন ক্যাখেলের মাধার চুক্লো যে শিক্ষিত বালানীর জন্ত এয়ন এফটা সার্ভিস তৈরি করতে হবে, যাতে এক-একজন এক-এফটা বিদ্যাক্ষক্রম হ'তে পারে। সাধারণ কেতাবি বিদ্যাত ত থাকবেই, তার ওপর একটু কেমিট্র, একটু বোট্যানি, সারভেয়িং, জিম্ভাটিক, সাতার ইত্যাদি ইত্যাদি। স্থানিক শিলিরবার ক্যাখেলি সম্বন্ধকে রহন্ত কোরে তার 'অয়ত বাজারে' একট কার্চু ন ছাপান, বিম্বাটিকের পোষাক-পরা, কোমরে একট পিছন-দিকে-বোলান শিক্লি আর কানে একট চিন্টে (চিন্টেটা হচ্ছে কম্পাস)।"

সচিত্র বাংলা পত্র-পত্রিকার কথা আপাততঃ এইবানেই পের করিলায়। প্রবচে বে-সকল পত্র-পত্রিকার উল্লেখ করিরাহি তাহার প্রায় সবগুলিই বলীর-সাহিত্য-পরিবদ্-প্রস্থানারে সংগৃহীত হইরাহে।

### চম্পক

### अवस्थिय माथ

বোলে চম্পক বণিকাকন সম
বিবাৰি গভীর নিবিক ছবির তন—
পাঙৰ গগনে বেবের নরমে কনক বিজ্ঞলী লিবা
আবা রজনীয় বন্দির-বরে হিরণ প্রদীস্পিবা।
বোলে চম্পক বোলে
আবাবভার কোলে
ভাষাকান্ত বচ্চের বাবের বৃক্তিয় বিংবাল
ব্যর্থনাথৰ ব্যবহু গহুকে সক্তিত বিধাল।

চশক থোলে বে
তম্পার কোলে বে—
ক্ষ্টপাগল বৈজ্ঞানিকের মহান্ আবিভার
ব্য বীশুর মহনের পাতে মুক্ত বর্গহার।
বোলে চশক হল
গবে বিচৰকা
বর্ণ ক্যোভিতে হবরা ক্যোভির্যর
ক্ষিত্র বহর আবিশা ক্ষিত্র হব।

### বিদ্যোহী

#### 🗃 রামপদ মুখোপাথাার

একমাত্র ছেলে প্রপতি বাপের সদে বনিবে চলতে পারলে

মা। হাড়ফুপন মহীপতির লন্ধীর উপর আচলা ভক্তি।
উাকে ভারেনি ভাবে বেঁবে রাধবার বত কিছু আরোজন তার
লেশমাত্র ক্রটি সে করেনি। লন্ধী বলি বা ছাবুছের লক্ষ্য প্রভাগ করলেন—ছেলে বেঁকে বসল। বললে, বে গাঁরে
বাস করছি তার ভাল-মন্দ দেশতে হবে না।

ৰ্জি দিলে মহীপতি, গাঁতো মাধ্য নয়—ভার আবার ভালমূল কি।

তৰ্ক ভূললে স্বৰণতি, মাত্ৰ নিবেই গাঁ, সেই মাত্ৰ না বাঁচলে গাঁৰের বইল কি । একটা হাসপাতাল দিন।

र:--जामात शादात तक-जन-कवा केका---

টাকা আপনার নর-প্রকাদের কাতে বাজনার দক্তন-প্রদের দক্ষন আধার করেন নি ?

বেশ করেছি। চড়ে উঠল মহীপতি। এ হ'ল উপাৰ্জন। কে উপাৰ্জন করে না ভনি ?

আমি এ রক্ষ উপার্জন করব না।

তা করবে কেন। সব ক'টা পাস বিইবে লেবাপকা নিবিছে মাছুব করলাম কিনা—পরের গোলামি মা করলে চলবে কেন। আইন নিবেছ বিষয়-সম্পদ্ধি বছার ছাব্বে বলে —কোটে মাজেল বৌছবার জভ সহ।

च्रवर्णि वजरम, अ चन्दर्यं । छेरान्यंन ।

ৰহীপতি চীংকার করে উঠল, বটে। চ্র-হ আবার সামনে বেকে।

শ্বরপতি চলে গেল সামনে থেকে। কিছুক্দণ পরে কানা গেল সে গৃহত্যাগ করেছে।

বেলে গৃহত্যাগ করলে—হেলেকে ত্যাগ করতে পারলে বা নহীগতি। তাবলে—লোরান বরসের হেলের। ও রক্ষ একতারে হরেই থাকে। গে-ও একলা বাগের বিরুদ্ধে মত প্রকাশ করেছিল। বাপ হিলেন উলার। দীরতাং ভূজাতাং পালপার্মাণ উপলক্ষে চলভই বাঙীতে। ললী চকলা হতেই মহীগতি করেছিল প্রতিবাদ। বৃদ্ধ ওর একওারেনি থেকে হঃবিত হরে বলেছিলেন, লার কেন—লামার ভানী পার্টিরে বে। এ বিন গলার কনিবে নীলকও হ্বার লাব্যি লামার নেই—লামার রেহাই বে।

বাপকে বৃক্তি বিবেছিল বহুীপতি। সন্দীর প্রতিঠার সক্ষঃপর ভারষণ নিশেও ক্ষুত্তভারে স্বয়েকো। দেই লখীকে বিসর্জন দেওরার বেদনা সুরপতি বুকবে কেন । বাক না চলে
—কিরে আসতেই হবে। সংসার বছ কঠিন স্থান। এর
আকাশে ভাবের কাহুস উভিয়ে চিরটা কাল নিরুদিরে কার্টে
না কারও। সুরপতি অবশ্রই কিরে আসবে।

ৰাপন মনে হাসলে মহীপতি।

সভাই স্থনপতি কিরে এল। কিরে এল এামে, বাপের প্রাসাদে উঠল না সে। সে প্রকাদের ভেকে বললে, কেন সন্থ কর ভোমরা এই প্রকাশ ? ভোমাদের সর্কাশ করে বে স্লো উঠেছে—সে ভোমাদের মললাম্পল দেখতে বাব্য। ইচ্ছের না দের ভোর করে আলার কর ভোমাদের পাওনা।

মহীপতি দেবলে, এ তো মন্দ নর। তার প্রদার আইন শিবে বিষয়সম্পত্তি বজার রাখা দূরে থাক—সন্ধীকে উংখাত করবার চেষ্টা করছে শ্বপতি। অকুডঞ্জ সন্তান।

মহীপতি কলী আঁটতে লাগল কি করে রেহাই পাবে এই সকট থেকে। চকুলকা বৰ্ণতঃ গোলা পথট বেছে নিতে পাবল না। বাহিক আচরণটাকে ব্যাসন্তব মোর্লারেম ও সংযত করল দে—আর সেই সকে অন্তরের অন্তরেল শীগন অন্তর্গ করল—বোণিতগত যোহের প্রজ্ঞর হুপই হোক কিংবা পিওগত হাবিই ভার পিহনে থাকুক। আদেশটা অন্তরোধের জ্বপ নিল।

স্থনপতি বদলে, আপোৰ নেই—দল্মীকে সূঠে বেবার কালে বাধা দেব আমনা—শীবনপণ।

মহীপভিও কটিন হরে উঠন—চক্লক। অভঃপর কেটে গেল।

় এক দিন সুরপতি আবের রলম্ভ থেকে সহসা অপস্ত হ'ল।

বছরধানেক বাদে মহীপতি দেখলে, ছবিদারির শাসনদও তার হাত থেকে থাসে পভছে—মনের সাহস বাছর শক্তির . সদে অন্তব্ধিত হচ্ছে। প্রাকৃতিক নিরবে বৌধনের পর জরা আসে—সম্পাদের উদর বিদর এই নিরবেরই জন। সন্ত্রী হয়ত চক্ষা হরেছেন মতুবা একমাত্র ছেলের মতিগতি এমন হবে কেব ?

বৃত্যাশব্যার হেলেকে অঞাভবান থেকে আনিত্তে বলনে, ভোনারই বন্ধ আনার এভকালের নকর। ইচ্ছে হর হাব, ইচ্ছে হর নই কর। আনি বাক্তব না—ছ্বিত বাক্তবে না— কিন্ত চৌনুরীবংশ বাক্তবে। ত্মপতি মুহমনে বললে, কিছুই থাকে না বাবা, নাছমের মত বংশের আর্ও সীমাবত।

মন্বীপতি বিক্ষারিত নরনে চেরে রইল প্ররপতির বিকে। ` চোবের কোণটা তার চক্ চক্ করে উঠল। বুক ঠেলে বেরিরে এল একটা দীর্ঘনিয়াস। মুহুম্বরে বললে, তারা—তারা।

ভারপর চোধ ব্রল- ভার চাইল না।

স্বপতি সন্দরে প্রতিষ্ঠিত হ'ল। বে আদর্শকে প্রবতার। করে সে বাপের বিরুদ্ধে ইাভিষেছিল—সেই আদর্শ স্থানতর হ'ল তার আচরণে। দাতব্য চিকিৎসালর হাণদ—পাঠাগার প্রতিষ্ঠা—বিভালরের উন্নতি সাধন—জলকট নিবারণ—বা সাব্যে ও করনার হিল—স্বরণতি ক্রুটি করলে না কিছুই। প্রজারা বত্ত বত্ত করলে। স্বাই বলে, রাম-রাজ্যের নমুনা আমরা গাঁরে বসেই পাছি—আমরা স্থা।

ত্মপতি আত্মপ্রাদ লাভ করল। তাবলে, যা আমার সাধ্যায়ত সবই করলান—এতে মালুয় সভ্ঠ হবে লা কেন।

কিছ এক দিন ভার ভূল ভাঙ্ল।

বেলা বব্যাক: আহার সেরে অক্সরের গলিপথ দিরে আগহিল সদরে। ভার প্রসদ কানে বেভেই থমকে ইাড়াল প্রকটু। উমাপতি ও অক্সমতী—ভারই ছেলেমেরে—ভর্ক করছে পাশের হরে। ভর্কটা চলছে গভকাল আর বর্তমান নিয়ে।

অক্লৰতী বলছে, যাই বল দালা---বাবা এসৰ বিষয়ে উদার।

উমাপতি উত্তর দিলে, না, উনি রক্ষণীল। ছ'কালের সকে মিলিরে পথ চলতে চান।

ভাতে কভিটা কি ? সক্লমভীয় কঠ।

ক্তি এই—আমরা বেবাবে আছি সেবাব বেকে পিছতে পারি না—সামনে আমাদের এগুতেই হবে। পাহাড় বেকে নেমে কল কবনও পাহাড়ে কিরে যার ?

माञ्च चन वद ।

মানুৰ সঞ্চীৰ—ভাই কালের গতিতে সে এগিয়ে চলৰে।
বাবা বন্ধণীল না হলে এই প্রানাধি এতবিদ গরীবদের ছেচ্ছে
দিতেন।

চনকে উঠল পুরপতি। এরা বলে কি ! প্রাসাহই বহি হাছব তো দেশের মধন করব কি বিজে। অর্থ বজে ক্ষতা —বার পুঠু প্ররোগ সমাককে পুছু রাব্যে—অপপ্ররোগ সমাককে বিযাক্ত করে।

েনই উভাই বিলে অক্লৰতী, বাবা তো ঠীকাকে আটকে বেবে ক্লান্সকে বিবিৰে ভূলছেন বা ?

ে কিছ ক্ষমতা ওঁকে পেৰে বলেছে। ক্ষমতার ওপরও ওঁর বোহ ক্ষেত্র—একে বিখাস করা কর্মিক। ১৮০১ চনত তা কি যে বল—সৰ হেকে ছুকে কৰিবী নিলেই বুধি সৰাক্ষেত্ৰ মফল কৰা বাব ?

না রে—ক্ষতা বৰন পেরে বলে—তর্থই ভাতে তর করি। বাবা হয়ত কারো অনিষ্ট করেন নি—কিছু উপরে বলে আবেশ করবার ইচ্ছা ওঁর বেডেই চলেছে।

পুরণতি সর পথটুকু অতিক্রম করে বৈঠকধানার এর্ন।

চিত্তার্ক—সন্দেহরলিন। এরাও তার আচরণকে সন্দেহের

চোবে দেবছে—তাকে মনে করছে ক্ষতাবির। এরা কি
ভানে না—তার বিরোহের ইতিহাস ?

উমাণতি ও অরন্ধতীকে ভেকে সুরপতি বললে, আই আর সভ্য কথা আমি ভালবাসি। সভ্য করে বল ত—আমার আচার-আচরণ সহথে ভোমাদের মধে কোমও সংশহ হরেছে ? আর কেমই বা হ'ল সংশহ।

**७ वा कार्रेटवाटन मृद्धै विनिधद कदान ।** 

অর্থতী ভাড়াভাড়ি বললে, দা বাবা, আপনার কাজের ভুল বরব---এষদ শর্কা---

না—লা—শর্কার কথা নর। ভূল সকলেরই হর। এক কালের কর্ত্তব্য—আর এক কালে কর্ত্তব্য থাকে না। হেলের পানে চেরে বললে, ভূমি কি বল উষা, থাকে ?

উষাপতি মুছ্ৰৱে বললে, স্বাই বলি তা বুৰত !

আনার বুবিরে দাও তোমরা—

অক্লমতী ইন্ধিতে নিষেধ করনে উষাপতিকে।

উমাণতি বললে, সে বোঝানো শক্ত। আপনারা বা জন-গত ভার ও সত্য বলে জেনে এসেছেন—

শোন উবা। প্রণতির বর বৃচ হ'ল—আপ্ররতারে। বললে, বা সত্য—তা চিরকালের সত্য। আর সেই অস্থারী বে কাল করা বার তা ভার।

উমাপতি বললে, এক বুগের বিবাদ অভ বুগে--- অচল।

বিধান কালের সকে থাপ থাইতে তৈরি—কিন্ত সভ্যকে অধীকার করবে না কোন মুগ। স্বপ্তির কঠবরে বরধানা গম গম করে উঠন।

উয়াপতি বলল, একটা কথা বলব—হাগ করবেন না ? এ কথাৰ বংগ পোৱা উলা—ভোৱাতের সে নিজা কিছে

এ কথার হুংগ পেলাম উনা—ভোষাদের সে শিক্ষা বিরেছি কি কোন বিন ?

উৰাপতি কব্দিত হয়ে বাধা নাবালে। বললে, ভাই আহাদের যথেষ্ট সাহল বেছেছে।

ছয়পতি তার জন্ধা হেবে মনে মনে প্রসর হ'ল। বলনে, বল কি বলনে। এন বলন বিভাগ কথা মুক্তমাধান মানুহলই কে এক বিংখানে

्र<sub>ः व</sub>नक्षम् इत्रदेश्यः क्षम् अन्यन्त्राचाः मान्त्रुदेशस्य ५८५ अकः विदेशास्य महत्त्रकृतकाः,वाक्यःमानि *वि*किन्त्रकाः व्यासकाः स्वरंतरकः विदेश ক্ষি-কিংবা বিষে সা ক্ষরেও কাউকে বেছে বিই স্বিনী ভিনাবে-সুইতে পান্তবেদ আপনি গ

অপ্রত্যাশিত প্রশ্ন—ছব্ভিত করে বিল প্রণতিকে। স্বাধ-গত এই প্রশ্নতি বে এবৰ ঘটন হবে—এ করণা সে করেবি ব্যাহার। কিছ বুহুর্তে ভার সে ভাব কেটে গেল। বললে, ভিন্ন ভাতের কথা বলহ কেন? ভার বনে হ'ল, ভার গলা বিদ্ধে আর কারও ধ্বনি বার হচ্ছে।

উমাপতি বললে, বছাতির সম্পে বিরে এক কালের বিধান সত্য আর ভারের উপর গড়া বিধান—কিছ বাবা, আছ যদি কেট বলে, মান্ত্রের আবার ছাতি কি—সে তো একই ভাতি—

বাধা দিলে সুৱপতি। এক ছাতি বললেই সম্ভাটা মিটল না ট্না। কৰ্মভেছে—ছাতিভেছে—এ বিধান বহু কালের আর সব কালের। কর্ম্বের ব্যাধ্যা নানাম রকম হতে পারে ক্যিন্ত বিভাগটা যে গুণগত। ভোমাদের সাম্যবাদী সোভিরেটও সেই বিধান মেনে নিরেছে।

সোভিরেটের কথা থাক, কিন্তু মান্ত্র জাতিভেদ নামবে কেন বইছোর? বিভাগ এলেই আসবে প্রভুত্তের ইছো। ও বীচূ—আমি উচু—এই অব্দার থেকেই—অকল্যাণের স্কট ববে।

পুরপতি বললে, ভেবে দেবি—দিনকতক পরে ভোষার এ প্রায়ের উভয় কেব।

উমা বললে, এটা আমাদের প্রশ্ন মর—জীবন-মরণের সমভা। এই সভ্যকে বভন্দণ খীড়ার ভরতে না পারব আমরা —তত্ত্বণ আমাদের কল্যাণ নাই।

আছা, ভেবে দেবি। অসহিমূ কঠে সুরপতি বদলে, বিভাগটা মাছুবের ইছোর স্কট হর নি—ওটা আসতে বাব্য।

ভাবতে লাগল স্বল্পতি। গভীর অভিনিবেশ সহকারে ব্রন্নটাকে ব্রিরে কিরিবে নানা বিক বিবে বিচার করলে ক্য কিছুতেই বৃষ্তে পারলে না—এক বিন বইছার বে গাজী-আহ্গড়া বীকার করেছিল অর্ণ্যচারী রাহ্ম, তা তেওে বেঁবার, ইছা কেল ভাগতে ভার মনে। বহু হংগ কট বিপদ অস্থবিনা সরেই নাহ্ম বেছে নিরেছিল এই ইখা। তার পর সভ্যভা সংস্কৃতির আলো জেলে নে বহু দ্ব প্রেমর হরেছে। স্থকর পৃথিবী আল পূর্ণজ্বের পরে। এরা গাঙ্তে চার এই সভ্যভাকে—নট করতে চার সংস্কৃতিকে। ছিবের আহি কারনার যা প্রভিতি—ভারই প্রারী হ'ল রা। এই বিদ খাবীবভার অর্থ হর, বিদ কল্যানের ভিতি র ভা হলে অক্ষার রুগের নাহ্মবা কি বোৰ ক্রেছিল।

নাৰাখিক এই বিপ্লবক্তে কিছুতেই বীকাল কলতে পালনে । বৰনাব্যবাৰ আৰতে ব্যক্তি। বৰনাব্যবাৰ আৰতে ব্যক্ত-পুলাতৰ সমাজ-

ভিডিতে আঘাত ক্যতেই হবে—এ বৃত্তি চুৰ্বল খলে বৰে হছে। বিভাগের বিধানটা আপনি পড়ে নি আকাশ থেকে—অননি গলাৰ নি নাট বেকে—ওট বহু পনীকা-নিমীকার কল—যতঃকুর্ত। নানা দিক প্রসায়ী প্রজাকে অধীকার করা চলে না। শ্রেইভেদ হবেই। উত্তিদ-কগতে এর দৃষ্টাত্ত আহে—প্রাণ্ট বা পকী কগতেও দৃষ্টাত্ত আহে। এই পরীকার প্রথম পর্ব্যারে রাশিরাও উত্তীর্ণ হতে পারে নি। ভার মহুরের আর বাত্তকারের আরের ভকাং আকাশ-পাভাল। সম-অধিকারবাদ মেনে নিরেও—সেবানে কেউ চড়তে মোটরে—কেউ ইটিছে পারে। আসল কথা, ওটা হ'ল বাহ্নিক অংল। কল্যাণ বা গড়ে—ভা অভ্যের প্রসারে—দরদে। সেবার ব্যাকুলভা না কালে খন-কল্যাণের প্রাণপ্রতিষ্ঠা করা সভ্য নম।

উৰাৱা ভূল বুৰেছে—ওলের বিজ্ঞোহের পিছনে ৰাই কোন স্থচিভিত প্রধালী—কিংবা লক্ষ্যে পৌছবার নাই কোন স্থনিষ্ঠি বিস্থু।

করেক দিন চিভার পর উমাপতিকে তেকে পাঠালে বৈঠকবানার। চাকর ব্যর নিবে এল—তিনি দেশে গেছেন। দেশ মানে পাড়াগাঁরে? কেন? কেন'র উভর একবানি সংক্ষিপ্ত পরে জানিবেহে উমাপতি। লিবেহে:

বাবা, পরীকা দিতে চললাব। আপনার উত্তর বাই হোক—আমাকেও নিজের কাজের হারা উত্তর পেতে হবে। সর্বপ্রথবনে ভাঙ্ব সামাজিক প্রথাকে। আপনারা হাকে হরিজন বলেন, তেমন বংশের কোন মেরেকে সলিনী করে কাজে নামব। বাবের কল্যান করব—ভাবের হুরে রেবে বানিকটা ভক্তি সম্রম আর মর্যাদা আদার করব না—এই হির করেছি। ওরা বে ওরা—আমরা বে আমর্রা এটা রুছে বেওরাই আমালের উদ্বেভ্ত। পারি কিংবা হারি—সে জ্বাব ভবিত্রতের বারুক।

ভতিত সুরপতির বাঙ নিশচি হ'ল না—এমন আবাড সে প্রত্যাশা করে নি।

সক্রমতীকে ভেকে চিটিশানি ভার হাতে দিয়ে বললে, পড়।

অক্লমতী চিট্ট পদতে লাগল, হুরপতি একদৃষ্টে তার বুখের ভাবান্তর লক্ষ্য করতে লাগল।

চিটি পদে সেধানা ভাল করে ক্সম্বতী নিমন্তরে বাপের হাতে কিরিয়ে বিলে, কোন মন্তব্য করলে না।

श्वगण्डिय विश्वय योजन । वनातन, पूरे य विश्वय यहानि नो अक १

আৰি । চৰ্কে উঠন দে। বুৰি সভোচ লক্ষার ভূৰবাৰি ওয় বৰং আৰক্ত বৰে উঠন। টক নাথা নাৰিলে বয়—ভূব किविदन वीदन वीदन केवन विदल, त्वन क, शांक शतीका कक्क मा ।

এ পরীক্ষার কোন যাবে হয়।
পরীক্ষার নাবে আর কি—ভা কলের উপরই নির্ভয় করে।
ওকে সমর্থন করম ভূমি। ক্ষোতে বিশ্বরে প্রথাতির
কর্মবন্ধ হ'ল।

আপনি তো আমাদের তালমক বেছে নেবার বংশই হুবোগ দিরেছেন বাবা। একটু থেমে বললে, দাদা প্রারই বলত—বে পৃথিবী সম্পূর্ণ হ'ল সে পৃথিবী আমাদের মর। কিছু করবার মা থাকলে বেঁচে থাকবার অর্থ কি ।

ভিতরের অবক্রম বাশ্য প্রবল প্রতিবাদে কেটে পড়তে চাইল—অতি কটে আত্মসহরণ করল স্থরণতি। দৃষ্টি কিরিয়ে বিল অক্সবাদীর বিক বেকে। নে বৃক্তীকে আওবের উভাগ কবন বালে রুগাড়রিত হরেরে—বৃক্তে গারে বি লে।

স্থপতি ভাষতে, এই বন্ধান পদীকান কৰা বাই হোক —
এটা নাস্বেদ কভাব। বিজ্ঞোকটা মান্তবেদ প্ৰচিণত একটা
বিনিদ—না মৃতি কিংবা বৃতিপ্ৰাম্বদ—নাম কেনু বৃত্তত
বাওৱা প্ৰথম মান।

হয়ত ঠিক কৰাই বলেছে উনা। কৰং ৰন্পূৰ্ণ ও পুৰুৱ হলে নাসুবের করণীর কিছু বাক্বে না বলেই—এই প্রবল য়ডি মাসুবের অভরে রয়েছে। তবু একে বেনে নেওয়া···

দৃঢ় সকলে সে বাড় নাড়লে, না, উদ্বাপতিরা ভুলই বুৰেছে—।

# পরম ক্ষণ

### এশৈলেন্দ্রক লাহা

এ-পার ও-পার, ছ্-জনে বে আজ ছ্-পারের অবিবাসী;
মব্যে উবলে অক্র-সাগরে লবণ-অব্রাদি।
ক্রিডলীন অসীরে কোথার অবলবন পাই,
ক্তির সেতৃ যে রচনা করিরা চলি চিরবিন তাই।
এক্ষরার তথু আসে নাহবের জীবনে পরর কণ,
ভার পর সারা-জীবন তরিরা তাহারি অবেরণ।
হ্রবর কেবলি হুবরে ভানার সকরণ আহ্বান,
মুখা এ মিন্তি, নিরতি সেখার নিরত বর্তমান।
নির্তুর পরিহাস,

এ জীবন চিন্ন-পনিচিতে বুঁজে না-পাওৱার ইভিহাস।

একলা সে কৰে আসিরাহিলাম তুনি আমি কাহাকাহি,
মনে হ'ল কোন্ হথের মাবে বেন আৰু আসিরাহি।
মনীন হর্ব্যে সোনার দীন্তি, চক্র কির্নে নারা,
চরণ-ছল্ক-দলিত পথে হবি এঁকে বার হারা।
বে গান ভনি নি অভর-তারে বালে তার বছার
পূল্পে পূল্পে বর্ণ-স্বমা, বাতাসে গছভার।
কিছু নাই আৰু অসম্পূর্ণ, সবি হ'ল স্ব্লর,
প্রভিবিবসের প্রস্থৃতিতে এ কি বটন অপাভর !
আসে দিন একবার,

খৰ্গে মৰ্ড্যে মিলে পিৰে পৰ কৰে বাৰ একাকার।

সে হব বিলার, সে আলো বিলার, করে বা জ্যোৎসারাশি,
বিশীক্ত বীণা কেনে খেনে বার, বাজে বা ব্যাকুল বাঁদী।
বন্দী করে গুমবিরা মরে, কোখা আনন্দমর
অকলাতের রহত-ভরা সে পরন বিদর।
সহসা বেবি বে ভূমি কাছে নাই, গুরে—বহুগুরে আনি,
বরদীর বুকে কুল্লটকার আবরণ আসে নামি।
ভূবন-ভরা সে বাব্রীর আর মেলে বা কো সরান,
হু-জনের মারে অপার সাগর, অলল্য ব্যবহান।
বিশ বহি কিরে আসে।

ৰবিত চিভ নিৰ্বাস উঠে, অনুষ্ঠ শুৰু হালে।

ভূষিও একাকী, আমিও একাকী, জানি জানি, তবু জানি, আছকারের বুকে কুঠে উঠে নব-আলোকের বাবী।
হয়ত জীবনে অপূর্ব থাকে নর্ডাজুমির আলা,
মিলন ক্ষিক, বনে বেবো তবু তুল নর ভালবাসা।
বুবা প্রতীক্ষা, হয়ত জীবনে কেরে না পরন কণ,
একেলা নানব কেঁলে কেঁলে কেরে, বিহন্দ চিন্নভন।
সেই নির্ভূয় হলে হয়ত অনুষ্ঠ জয়ী হয়,
ভালবাস্য তবু ভাগ্যের কাছে নানে না কো পরাক্ষয়।
ব্যক্ত এই বিবিলিশি।

**क्रिय-विवारको वस्ति-वर्गन (अब स्व क्रिकी**वी।

# মধ্যভারতের গৌড়রাজসভায় বাঙালী পণ্ডিত

# बीमीतमहस्य ভট्টाहार्या

বাদলার বাহিরে স্থল্ব আগ্রানগরীর নিকটে এক "গৌডরাজ্যে"র অভিছ যেমন আদ বিমৃতির অফকারে বিশ্পুত হইয়া
গিয়াছে, তেমনই অবিকতর আক্রহোর বিমর সেই গৌডরাজ্যণের প্রশুতিকার "গৌড়ীয়" অবাং বাঙালী মহাকবি এবং
হোগভিত ছই জনের কথাও বাললাদেশে আদ সমুচিত গৌরব
ও প্রচারলাভে বঞ্চিত হইয়া আছে। এ বিষয়ে প্রবঙাশ্বরে
রামরা যে স্টনা করিয়াছি (প্রবাসী, পৌষ ১৩৫৪, পৃ. ২৪৪-৫)
তাহারই বিশ্বতি বর্তমান প্রবঙ্গে প্রশুত হইল।

পৌড়ক্তির: রাক্পুতানার ইতিহাস পাঠে কানা যার "৩৬ রাজকুলে"র মধ্যে একট ছটল '(গাড়' (টডের রাজস্বান, ১ম ৰঙ ৃণ্ম অধ্যার)। এই ক্তিয়বংশের আদিখান ছিল দাৰুমীর এবং ইহা পাঁচ শাখায় বিভক্ত ছিল। চিতোর-বাৰু ৰোমানের রাজ্বকালে (৮১২-৩৬ ট্রঃ) ৰোরাসান-পতি ( আলমামুন ) চিতোর আক্রমণ করিলে বাঁহারা চিতোর-রাজের সাহায্যে অগ্রসর হইয়াছিলেন তাঁহাদের মব্যে "আৰমীবের গৌড়"দের উল্লেখ আছে (এ, মেবারকাহিনী, ৪ৰ্ব অধ্যায় )। টড সাহেব লিবিয়াছেন, পুৰ্ীয়াকের সময় একখন গৌড়নৱপতি মধ্যভাৱতে একটি কুন্দু রাজ্য প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। ১৮০> এটাজে শেষ গৌড়নরপতি "রাধিকা-দাস" সিভিয়ার হভে পরাঞ্জিত হন এবং গৌড়রাজ্যের রাজ্ধানী "পিওপুর" ( অধুনা গোয়ালিয়রের পশ্চিমপ্রান্তে অবস্থিত ) তাহায় অধিকারে চলিয়া যায়—তৎকালে ঐ গৌড়রাজ্যের রাজ্য হিলাপ্রায় ১২ লক মুগ্র। পরাজিত গৌড়রাক কাত্রবর্ষ পরিত্যাপ করিয়া পরম বৈষ্ণব হইয়া শান্তিলাভ করিয়াছিলেন। টড সাহেবের মতে বাংলার আদিরাকগণও এই গৌড়বংশীয় दिलम अवर छम्बूनादबरे वाम्लाब बाक्यांनी त्रीक चाया লাভ ক্রিয়াছিল।

ফুণারামের গৌডরাজ্য : এই জ্জাতপূর্ব্ব রাজা ও রাজ্যের বাম "রামপ্রকাশ" নামক স্থতিগ্রন্থের প্রারম্ভ সর্বপ্রথম বাবিছত হইরাছিল (Eggeling : Ind. Off. Cut. p. 50 ')। রামপ্রকাশের ছুইট মাত্র প্রতিনিপি লওনে রক্ষিত আছে, (ib, pp. 502 & 531) একট বলাজ্যর ও একট দাগরাজ্যর । তে ১৯৩৯ সনে নববীপের সাবার্ত্ব পাঠাগারে আমরা এই ক্ষেত্র একট স্পূর্ণ প্রতিনিপি আবিছার ক্ষিত্র এবং বৃল্যবান্ প্রস্থের একট স্পূর্ণ প্রতিনিপি আবিছার ক্ষিত্র নাজ্য পত্রসংখ্যা ৪৪৯ । প্রারম্ভের তৃতীর স্নোক্ষে প্রস্থাত্ত শিবভক্ত রাজা ফুপারামের বৃদ্ধির প্রশংসা ক্রিয়া নিবিভ হুইয়াছে :

্বৰুছিঃ সৰদ্বিৰেক্ষমিপুণা প্ৰাপেৰ কাঞ্চান্ত্ৰে। কাইগীৰ-মহীৰদেৱস্থিতি লৈভিয়ন সভ্তিরু। অর্থাৎ—তাঁথার শ্রেষ্ঠ বৃদ্ধিকোশল সমাট কাহাসীরও প্রশংসা কবিতেন। পঞ্চ সোকে তাঁহার পুত্র পোবর্দ্ধনের বীরম্ব কীর্ত্তিত হট্যাছে। ঘঠ সোকটি এই:----

> শ্রীমণ্ড্পসম্ধবন্দিত পদ-শ্রীসাধলাই।-ফুপা-পাতং যাদবরায়-বর্মতনরো মাণিকাচন্দ্রায়য়:। গৌড়ক্তঞ্লোড়বো ভূবি স্থপারামাভিবে। ভূমিপো

গ্ৰন্থং ধর্মকুতাং ক্ততে রচয়িত্ৎ তিমিন মনো যো দংখী।
আৰ্থাং—গৌড়ক্ষজির মাণিক্যচক্রের বংশধর যাদবরায়ের পূজ
রাজা কুপারাম সমাট সাহকাহাবের কুপাপার ছিলেন এবং
বর্মনিঠদের ক্ত এই গ্রন্থরচনায় মনোনিবেশ করেন।

গৌডরাজ্যের অবস্থান: কুপারামের গৌডরাক্য কোধায় অবস্থিত ছিল তাহা লগুনস্থ পৃথির বিবরণ হইতে জানা যায় না। নবৰীপের পৃথির শেষে যে পুলিকা আছে তাহাতে ৬ লোকে স্বরাজ গৌড-গোবর্জন, রাজা কুপারাম ও প্রস্তের প্রকৃত রচয়িতা "ভটাচার্ঘ্য লতাব্ধানে"র স্ততির পর গ্রন্থসমর্পণ ব্রণিত হইয়াছে এবং তংপর নিম্নলিখিত সমান্তি বাক্যে গ্রন্থ, গ্রন্থকারঃ রচনাকাল ও লিপিকারের পরিচয় লিপিবর আছে:—

ইতি গৌড-ক্ষত্রকাবতংগ-যাদবরারাপ্তর-মাণিকাচন্দ্রায়র-মহামতিক-পরমঞানি-বিরাজমানমানোয়ত-কীর্তিপ্রতাপোর্ক্ষিতনূপতি-শ্রীকপারামা ( + ক্নীত-শ্রীশতাবধানভটাচার্য + এই
অংশ পরে পার্যে সংযোজিত হইয়াছে) বিরচিতঃ কালভত্বার্থনসভরণোপায়সেতৃভূতভিখ্যাদিকালনির্ণায়কো রামপ্রকাশনামা
গ্রন্থ: সমাপ্ত ইতি সংবং ১৭০৪ বর্ষে কার্তিকমাসে শুরুপক্ষে
অইয়াং তিথো রবিবারাছিতায়াং বৃশ্চিকলয়ে শুভস্থানে
"ইত্রবী"-নামনগরে ॥

গ্রিকুপারামনামগৌড়রাজ্যে ওস্তাত্মৰ-শ্রীগোবর্জন-গৌড়রাজ্যে তভাত্মৰ-শ্রীপহারসিংহগৌড়রাজ্যে শুডং ॥

মাধ্যনিনীয়শাৰায়াং যজুর্বেদাধ্যায়ি-শ্রীমহাযাজ্ঞিক-বাদায়ি-হোত্রিণাং সীয়াত্মশুদ্রবিদ্যায়িহোত্রিণঃ পাঠাবং ভডং পুডক-মিদং লিবিতং। "অভর্বেদি"ছ-বিগহলী গ্রামীয়ভক্লাভিবায়িনা।

यामृत्रार भूखकर मृष्टेर जामृत्रार निविज्य सद्या ।

বদি ভর্মভন্ধ বা মম দোষো ন বিদ্যতে । ভঙং । সর্বাদেৰে বাদলা অভৱে শেষ স্বভাষিকারীয় নাম লিখিত আছে:—এআনন্দচক্র ভটাচার্যান্ত পুন্তক্ষিদং শাং গুপ্তপাড়া মিরডাঙা।

যে সকল তথ্য এছলে লিপিবছ হইরাছে তাহা সাম্বানে নির্ণন্ন করা আবস্তক। এই বিহাট এছ রাজা কুপারানের নামেই প্রচারিত হইরাছিল, কিন্তু প্রতিলিপিকার এ ছলে এবং এছবণ্যেও প্রত্যেক প্রকরণের শেবে (৫৮।১, ১৪।২,

৩৭৪৷২, ৩৯৫৷২ প্রভৃতি পত্রে) "কুপারাম-বিরচিভঃ" ছলে "কুপারামান্ত্রনীত-শ্রীশতাবধান-ভট্টাচার্যবিরচিত:" পাঠ যোজনা করিয়া প্রকৃত রচয়িতার সহতে সকল সন্দেহের নিরসন করিয়াছেন। দ্বিভীয়ভঃ সময়নির্দেশট ( ১৭০৪ সহং কার্ত্তিক **क्षक्राहेशी द्रविवाद व्यर्था९ ३८ व्यट्टोवद ১७८१ वृ: ♦ ) शह-**রচনারই বটে, প্রতিলিপির নহে। কারণ প্রতিলিপির অকর ও কাগৰ খঃ ১৮শ শতাকীর পূর্ববর্ত্তী নহে। তৃতীয়তঃ, "ইছবাৰী"-নগরে বসিয়া গ্রন্থকার শতাবধান ভটাচার্ব্য রচনা সমাপ্ত করেন। "গৌড়রাক্যে"র অন্তর্গত এই নগর গোয়ালিয়র ब्राट्याब पूर्वाशास अवनत विमामान शांकिया थे विश्वविन्ध রাজ্যের অবস্থান ছচিড ক্রিভেরে। চতুর্গতঃ, ১৬৪৭ সনে রাজা কুপারাম প্রাচীন হইয়াছিলেন, তাঁহার পৌত্র "পহার-जिर्ह"हे त्वाव इद्य जवन श्राश्चवद्यक । अक्टर्विवद लबक-मिनिज অগ্নিহোত্রির এই এছ কি ক্রিরা গুপ্তিপাড়ার আসিল তাহার রহত ছকের হইলেও অনুষের। প্রহমধ্যে এক ছলে ভান্ত মাসে जगत्कामत्त्रत नगा विवृष्ठ इहेशात् । जगत्कामस वर्शकात्मत **অবসান স্চন। করে। গ্রন্থকার এ বিষয়ে নিম্নলিখিত স্লাবান্** মছব্য করিয়াছেন :---

এবক "অর্গলারাং" মহারাজ-চক্রবর্তিনগরে বড়কুলপরিমিতা তল্ল মধ্যাক্ষে শকুছারা ৬ ভবতি। 
ক্রেরির্গান্ত ২০-ভ্যাংশালন্তরে নিশান্তে অর্গলাপুরে অগজ্যোদয়:। "লাহারির"-মধ্যেপি ভূপভি-ত্রপারামরাজ্বাভাং প্রারন্তবৈবেতি। (৪৩)-২ পত্রে) অর্গলা সমাট সাহজাহানের রাজধানী আপ্রানগরীর দেবভাষার রূপান্তর। বুঝা যার প্রস্থলার রাজা কুপারামের সহিত আপ্রার গমন করিয়া শহং মধ্যাক্র্যের শকুছারা নিপ্রপ করিয়াছিলেন। কুপারামের রাজ্বানী লাহারিরও আপ্রার দক্ষিণে গোরালিয়র রাজ্যের পূর্বপ্রান্তে উল্লিখিত ইত্রবীর দক্ষিণ-পূর্বে অবস্থিত। স্ক্রবাং রাজা কুপারামের "পৌড়রাজ্যে"র অবস্থান সম্বন্ধে অভংগর সকল সজ্যেই নির্ভ হয়। টড লিখিত শিবপুরের গৌড়রাজ্যের সহিত ইহার কোন সম্বন্ধ নাই।

শতাবধানের পূর্বপুরুষ:—রামপ্রকাশ এছে শতাবধান ভট্টাচার্ব্য বরং নিজের কিছুমাত্র পরিচর দেন নাই। তংপুত্র চিরঞ্জীব "বিধ্যোদভরদিন্ত্র" এছে শতাবধানের অপূর্ব্ব প্রভিত্তার পরিচর দিলেও তাঁথার পূর্বপুরুষের বিবরণ পরিভ্যাপ করিয়াছেন—কেবল রাচীয় কাঙ্গপগোত্র দক্ষের বংশে শতাবধানের পিতা "কাশীনাধ সায়ুক্তিকাচার্ব্যে"র নামোরেধ করিয়াই শেষ করিয়াছেন। এই সামাভ কুলপ্রিচয়ও অভত্ত

THE (cf. M. Chakravarti: J. A. S. B, 1915, p. 291) এবং চিরশ্বীৰ ভক্ষত ৰত্তবাদের পাত্র। ভাতার প্রদত্ত শীণ খত্ৰ বরিষা আমরা একাবিক রাচীর বুলগ্রছে কাশীনাৰ পৰ্যাত সমন্ত পূৰ্ব্যপুৰুষের নাম ও প্ৰচুৱ পারিবারিক পরিচয়াদি বিবরণ আবিফার করিতে সমর্থ হইরাছি-ভাবার সারসভলন निविज एरेन। চটোপাशांश-वर्ष्यंत्र आविकृतीन वहत्त्वश ( क्षरानटक्षत्र महावरनावनी, शृ. ১), जरभूव शाही ( के, शृ. ६ ). তংপুত্ৰ সৰ্বেশ্বর "ৰবসধী" ( পৃ. ১ ), ভংপুত্ৰ অচ্যুত ( পু. ১৬), তংপুত্র নীলাম্বর, তংপুত্র হরি, তংপুত্র চঙীমাস ( তৈরবী মেল ) তংপুত্ৰ শ্ৰীকর, তংপুত্ৰ বৈঞ্চৰ মল্লিক, তংপুত্ৰ পোপীনাৰ, ভংপুত্ৰ অনস্তাচাৰ্য ('অফুডী' অৰ্থাং কুলহানি ), তংগুত্ৰ কাৰীনাৰ "সামুদ্রাচার্য্য", তংপুত্র শতাবধান ভট্টাচার্য্য (আদিকুলীন হইতে ত্রোদশ পুরুষ-সাঞ্চাছার কুলপঞ্জী ২১৪ পত্র ও क्यछी पूर्व २ २ ७। २ भळ )। भेळा वर्गात्मद्र माजून वर्ग नवही त्यद्र একট প্রসিদ্ধ বিহুদ্রগোষ্ঠী--গয়বড়ী বিবাকর বিপ্রের স্থান কাশীনাপ ভটাচার্ব্যচক্তবর্তী নবদীপের প্রধান নৈরায়িক ছিলেন (প্রায় ১৫৫০ খ্রী:)। তাঁহার তিন স্থামাতা, প্রথম কাশীনার সামুদ্রিকাচার্যা, দ্বিতীয় ভবানন্দ মন্ত্রদারের পুরোহিত গাঙ্গুলী হাধব চক্রবর্তী ও তৃতীয় চট গোপীকান্ত ভাষালন্ধার---্রশধোক্ত ব্যক্তি শতাবধানের পরমগুরু কুঞ্চদাস সার্বভৌষের দৌছিত্র हिटलन ।

শভাবধানের প্রতিষ্ঠা:—চিরঞ্জীবের বর্ণনাঞ্সারে শভা-বধান বাল্যকালেই সমভ শাল্র অধ্যয়ন করিয়া ধিগ্বিক্ষী পণ্ডিত হইয়াছিলেন:—

বাল্যেং বীত্য সমন্ত্ৰশাস্ত্ৰমভিত: সিদ্ধান্তবাদীশত:

বাঈশপ্রতিষা বছর বিজয়ী বাদেয় বিভাবভাষ। (বির্ন্মোদতর্দিশ ১০০) উদ্বার উপাধির ব্যাব্যা অভত্ত প্রস্তীরা (ঐ, ১০১০-০, প্রবাসী, পৌষ ১০৫৪ পূ. ২৪৪)। এই "অন্তলাবারণ শক্তিশালী" পভিত প্রথমতঃ নবছীপেই অব্যাপনা আরম্ভ করিরাছিলেন বলিরা অহ্মান করা বার। কারণ চিরঞ্জীবের "বাল্যে" রচিত মাধ্বচন্দ্ প্রছের শেষে লিখিত আছে, চিরঞ্জীব নবছীপে জন্মগ্রহণ করেন এবং তংপর ব্যুক্তাল কাশীতে যাপন করেন:—

বাগ দেবীবদনাদনাদিরচনাবিভাসদীব্যন্তব-দ্বীপপ্রাপ্তক্ষের্যেক্ষিবসং বারাপসীবাসিনঃ।

(লোকটতে একটনাত্র পদে নবৰীপের অপূর্ব্ব ভতিবাদ আছে—যে নবৰীপ সাক্ষাং সরস্থতীর মুধনির্গত নিত্য বাদ্মরের রচনাবিভাসে শোভমান ছিল)। আনাদের অন্থান হর পতাব-বানের অবাপক ভবানক সিহান্তবানীশ বার্ত্বক্যে কাশীগনন কালে দিগ বিজ্ঞরী শিশুকে সঙ্গে লইবা গিরাছিলেন—ইহা প্রায় ১৬০০ প্রীপ্রাব্দের ঘটনা। কাশী হইতে বর্দ্বগরারণ রাজা কুপারামের আহ্রানে শতাববান পরে স্বন্ধুর সৌক্রাক্যে বাইরা প্রতিঠা

২৪ অক্টোবর ১৬৪৭ রবিবারই বটে কিন্ত শুক্রাইমী নহে
শুক্রাসগুমী। সন্তবতঃ লিপিকার সপ্তম্যাং ছলে ভূল করিরা অইন্যাং
লিখিরাছেন। লক্ষা করিতে হইবে, এই তারিখ সম্রাট সাহলাহানের
রাজ্যকাল মধ্যেই পড়ে।

লাভ করেন। চিরঞ্জীব তাঁহার প্রত্যেক প্রস্থের শেষে পরিচয় প্রদানকালে পিতার প্রতিষ্ঠার কথা লিবিরাছেন :---

বৈভাৱৈতমভাদিনিগমবিবিশোৰ ববুৰি: এতা

ভটাচাৰ্যাশভাবধান ইভি যো গৌড়োছবোহভুৎ কবি:।

( অবাং যিনি কবি হইরাও শান্ত্রীয় মতে ভেদ ও ঐক-মত্যাদি মীমাংসায় তীকু বৃদ্ধি দেখাইয়া যশবী হইয়াছিলেন )। রামপ্রকাশের শেষে শ্বরং এছকারও তাঁহার কুভিত্ প্রকাশ কবিয়াছেন :---

ভটাচাৰ্য্য-শতাব্ধানকভিনি ভাষাদিশান্তাৰ্থবিদ-বর্ষো বৈতমতে তদেকতরতো নির্ণায়কে ভূরিশ:।

( 4年 (計 年 )

( অর্থাৎ কৃতী গ্রন্থকার ভারাদিশারজ্ঞদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ছিলেন এবং মতভেদম্বলে একতরপক্ষে মীয়াংসা বছবার করিয়াছেন।)

রামপ্রকাশ রচনা :--এই বিরাট প্রস্থরচনায় বছকাল অতীত হইয়াছিল সন্দেহ নাই। তিনি রাজার নিকট প্রচর সম্পত্তিও লাভ করিয়াছিলেন। প্রারম্ভের ৭ম প্লোকে

ছায়াদিশান্তের কৃতশ্রমন্ত স্মতার্থদৃষ্টেরিতগৌভৃভূতে:।

প্ৰছেহত্ত নানামতনিৰ্ণয়াপ্ৰা শতাবধানক কৃতিযু দৈ কাং ॥ "ইতগোড়ভূতে:" পদে ( অর্থাং যিনি গৌড়রাজের নিকট সম্পদ প্রাপ্ত হটরাছেন ) তাহার স্পষ্ট স্থচনা আছে। সম্পত্তির লোভই তাঁহার দূরদেশে আগমনের অভতর কারণ ছিল সম্ভেছ নাই। আক্বর হইতে সাহ্লাহানের সময় পর্যন্ত মোগল স্থাটদের হিন্দুর শাপ্ত ও ধর্মের প্রতি প্রকট সহামুভূতি দেশীয় রাজগণকে এবং তাঁহাদের আদ্রিত পণ্ডিতগণকে রাজধানীর প্রতি আক্রই করিয়াছিল ভাছাতেও সন্দেহ নাই ৷ পভাবধানের এই গ্রন্থ বাদেরে রচিত হইলেও তিনি ক্রাভূমির মর্ব্যাদা কুর্ম করেন নাই---বাললার গ্রন্থসমূহ হইতে বচন উদ্ধুত করিয়া বিচার ক<sup>রি</sup>রাছেন। প্রার**ছের ১০ম শ্লোকে ভাঁ**হার উপজীব্য প্রমাণ-প্রছের উল্লেখ করিয়া লিখিয়াছেন :---

হেষান্তি-মাৰবাদীনাং গৌভানাং তত্তদৰ্শিনাং। সম্বতং সমডিজার এছোরং পরিনির্মিত:।

"ভত্ত্বদৰ্শী" গৌড়ীয় প্ৰস্কারদের মধ্যে আচাৰ্যাচ্ভামণি ( ४) था ), जबब्रद्यकांभकांत्र ( ४) १५ १ विभिष्ठे-প্রকাশকার নারায়নোপাব্যায় (৩৬১৷২), গৌড়ীয়কাল-কৌৰুদীকার (৩২৭।১) ও স্বার্তভট্টাচার্ব্যের (৪৩৫।১) নাম উল্লেখযোগ্য। অভ এছের মধ্যে শ্বভিদর্শন (৪৪৩।২) ও বেৰাভিৰিত্ৰ জ্যোভিৰিবৰ ( ৪০৪।১ ) অভিহন্ধত । ৱামপ্ৰকাশ এছ বাললালেশেও প্রচারিত হইরাছিল—গোখামী ভটাচার্ব্যের ৰ্ভির দিকার এবং কাশ্বনাধ ভর্কানভার রচিভ প্রারভিত্ত-वावष्टांगरबंदर ( २व गर पू. २८ ) चावता तांवधकारमंत फेटबर পেৰিয়াছি। এই উৎফুঠ এছ বুৱিত ব্ওৱা উচিত।

গৌডরাজ্যে বাঙ্গালী উপনিবেশ গ

শতাবধান একাকী হুদুর গৌড়রাজ্যে গিরাফিলেন মনে रत मा। छारात जल्म किया भूट्स वह वाक्षामी जियान निशा छेनित्वम शानन कतिशाहित्तन. এरेबन अस्मान करोत সঙ্গত কারণ আছে। বোৰ হয় রাজধানীর সায়িব্যে বাস করিয়া ব্যবসায় চালাইবার উদ্বেশ্ত কোন কোন বাঙালী বণিক্ষােণী সেখানে গিয়াছিলেন।

প্রভান্তবিভাবের J. D. Beglar সাহেব ১৮৭১-২ बोडोटन नाराबिव ( Jahar ) अवर देशवरी ( Indurakhi ) উভয় স্থানই প্রতৃতীতির অস্থুসভানে পরিদর্শন করিয়াছিলেন। লাহায়িরে মারহাটা আমলের কভিপয় তুর্গের ধ্বংসাবশেষ ছাড়া তিনি প্রাচীনতর কিছু দেবেন নাই। কিছু ইন্দুর্থীতে প্রাচীন বহু কীর্ত্তির মধ্যে তিনি কতিপয় ইটক-গৃহের বর্ণনা করিয়া লিখিয়াছেন:---

"At Indurakhi there are some *Chhatris* with curved eaves and ridges to the roofs, like the thatched houses and curve-ridged temples of Lower Bengal." (Arch. Survey. of India, vol. vii-Bundelkhand and Malwa-p. 38) অৰ্থাং বাদলার সুপ্রসিদ্ধ "কোড় বাদলা" বরণের মন্দিরের আদর্শে এগুলি নিশ্বিত হইবাছিল। লক্ষ্য ক্ষিতে হইবে শতাবধান ইন্দুর্বীতে বসিয়াই রামপ্রকাশ রচনা শেষ করিয়া-ছিলেন। তিনি রাজা কুপারামের চরিত্র যেরপ উচ্ছল ভাষার কীর্ত্তন করিয়াছেন তাছাতে মনে হয় ঐ রাজার জাচরণে আকৃষ্ট হইয়াই বছ লোক তাঁহার রাজ্যে আশ্রয় লইয়াছিল এবং তরবো বাঙালীও অনেক ছিল। আমুবিশ্বত অবস্থার কোন বাঙালীর বংশধর এখনও ঐ অঞ্চল থাকা অসম্ভব নত্ত-এ বিষয়ে যাহাদের সুযোগ আছে তাহারা অনুসন্ধান করিয়া তথ্য প্রকাশ করিলে বাদলার বাহিরে বাঙালীর কীর্ত্তি রকার উপায় হয়।

্রাকা কুপারামের ভিরোধান :---১৬৪৭ গ্রীষ্টাব্দে রামপ্রকাশ রচনার সমাপ্তিকালে রাজা কৃপারাম, তংপুত্র গোবর্জন ও তংপুত্র পহারসিংহ ভিন জনই জীবিত ছিলেন। কিছ ইহার অব্যবহিত পরেই পৌড়রাজেঁয় একটা বিপর্যয় ঘটরাহিল অভুমান হয়, ফুপারামের মৃত্যুতেই হউক অথবা শুক্রর আক্রমণেই হউক। রামপ্রকাশের উপলভামান ভিনষ্ট প্রতি-লিপিই কালবিষয়ক, কিন্তু এছমবো স্পষ্ট লিখিত ভাছে ৱাম-প্রকাশের অভাত বঙাও রচিত হওরার কবা ছিল :---

অব প্রাহ্বরূপং প্রাহ্রপ্রের: প্রাহত বিভাবৈমিত্তিকরামা-एकोषिकर **क "आंद्रकाट** ब्रामश्रकाटन" वकाटल (७৫৯) र श्रव)।

খলভৰে বিশেষভিবং চ "প্ৰাছাদিকাতে ৱামপ্ৰকাশে" অবধাতব্যম্ ( ৪৩০।২ )। কিন্তু রামপ্রকাশের প্রান্তাদিকাও এবনও আবিকৃত হয় নাই এবং বুব সম্ভবতঃ রচিতই হয় নাই। না হওৱার কারণ ফুপারামের স্বৃত্য এবং রাজ্যে বিশৃথকা হওৱাই সম্ভব। চিরঞ্জীবের একট প্লোক হউতে জানা বার শতাবধান কাশীতেই হুসী হুইয়াছিলেন:—

সোহৎং পুৱা সমৰিগত্য পিতৃ: প্ৰসাদং
অকৈতাং গতৰত: শিবৱাধৰাকাং।
যন্ত্ৰাদৰীতম্বাপি শাস্ত্ৰম্
অব্যাপৱামি নিভ্তং নিপুণং বিচাৰ্য্য ॥
(বিহুমোনতৱন্ধিন ১)২১)

তাঁহার স্বর্গপ্রান্তির সময় ১৬৫০ ঐটান্তের পরে নহে, চিন্নস্টীবের গ্রন্থাবলীর পৌঝাপর্যাদারা এইরূপ অফুমান হয়।

চিরঞ্জীবের গ্রছাবলী: (১) শুকারতটনী: যৌবনস্থলত শুকাররসে পরিপূর্ণ মনোহর ও কবিছপূর্ণ নামা ছঙ্গে ১২০ লোকে এই বঙ্কাব্য রচিত। ইহাই সন্তবত: ওাহার প্রথম রচনা। ইহাতে কোন পুঠপোষক রাজার নাম নাই। ইহা এবনও মুক্রিত হয় নাই।

- ২। ব্যৱস্থাবদী— চন্দের ক্ষুদ্র গ্রন্থ, রাকা যণবন্ধ সিংখ্যে কর্ম লিখিত। ১৭৫৫ শকে (১৮৩০ গ্রিষ্টাব্দে) শ্রীরামপুর ক্ষতে মুদ্রিত (১৫ পৃঠায় সম্পূর্ণ)।
- ৩। মাধৰচম্পৃ: ৫ উচ্ছাসে বিভক্ত এই চম্পৃকাষ্য একাৰিকবার মুক্তিভ হইয়াছে—ইহা কবির "বাজ্যে" রচিভ হইয়াছিল। ইহাভেও কোন পুঠপোষক রাজার নাম নাই।
- 8। বিষ্যোদতরদিনী: ৮ তরদে বিভক্ত এই স্প্রসিদ্ধ চন্দ্রকার্য বছরার মুদ্রিত হুইরাছে। ইছা কবির পরিণত বরসের রচনা, কারণ ভিনি একটি প্লোকে লি ধরাছেন নানা শালে বছতর এই রচনার পর ইছা রচিত হুইরাছিল। ভারাদিশালের মুমরা ফুডা যে কাব্যেমু যে বা রাচিরা: প্রবঙা:। ভবছি বিভাপ্র চ্যামু যায় যে যে ব্যাহারগোষকাতে ॥১।২২

চিন্নশীবকৃত ভারাদিশালের কোন গ্রন্থই এবন পর্যন্ত আবিদ্ধৃত হয় নাই। এই প্রন্থেও কোন পৃঠপোষকের নাম নাই।

- ৫। তাজিকরত্ব: জ্যোতিঃশাল্লের গ্রন্থ, কিন্তু ইহা
   আমরা এবনও পরীকা করিয়া দেখিতে পারি নাই।
- ৬। ছর্গেংসবশঙ্জি: গুপ্লিপাভানিবাসী এক জন্ত্র-লোকের নিকট ইলার প্রতিনিশি ছিল, কিছ ভাষা হারাইরা গিরাছে।
- ৭। কাব্যবিলাস: অলকার শান্তের উৎকৃষ্ট প্রস্কৃ, সম্প্রতি কাশীতে মুক্তিত ক্টরাছে। ইকাই ওাহার সর্কশেষ রচনা; কারণ ইকাতে শৃহারতটিনী, মাধবচন্দৃও বিষয়োলতরদিশীর শ্লোক উদ্ধুত ক্টরাছে এবং ওাহার রচিত অপর মুইটি অনাবিদ্ধুত রচনার উল্লেখ আছে—হালরকল্পতা ও শিবভোল। ইহা কোন রাজার পোষক্তার রচিত না হইলেও ইহাতে উদ্ধুত ক্বির স্বর্ভিত লোকাবলীর মধ্যে বহু রাজার প্রশৃত্তি

পাওরা যায়। এই প্রছের একট প্রতিলিপির তারিব ১৭৩২ সহং (অর্থাং ১৬৭৫ ব্রষ্টাক—[, 4125)। ত্বতরাং ১৬৭০ সনে চিরঞ্জীব বার্ছকো প্রছ রচনা শেষ করিরাছিলেন বরা যায়। তংপুর্বে বিছরোদতরদিন ও তাহারও পূর্বে বছতর প্রস্থ রচনা হইরা গিরাছে ও তাহার পিতারও মৃত্যু হইরাছে। আমাদের পরীক্ষিত চিরঞ্জীবের সমস্ত প্রছেরই মদলাচরণ ত্বপ্রসিক "ত্বোগণবিনাশিনী" প্লোক এবং শেষে "হৈতাছৈত" প্লোকের তত্ত্বগ্রহাক্রযায়ী পাঠ পরিবর্জন মাত্র।

রাকা যশবন্ধ সিংহ :--- রন্তরত্বাবলী প্রস্থের বহুতর উদাহরণ ল্লোকে এই রাখার সম্বোধন আছে---ভাহার পরিচর অভি ম্পষ্টাক্ষরেই গ্রন্থয়বো লিপিবছ পাওয়া বার। এগোবর্জনভূপ-नव्यन ( २व (भ्रोक ), कृशोदारियकवर वस्त्रक ( वर्ष (भ्रोक ) अवर (প্রতি পৃষ্ঠায় ) পুন: পুন: "গৌড়" শব্দের প্রয়োগ হইতে তাঁহাকে এক্ষণে জনায়াসে কান। যায়। তিনি পহার সিংহের কনিষ্ঠ ভাই কিম্বা নামান্তর। চিরঞ্জীব কাশীতেই অব্যাপনা করিতেন, কিছু সম্ভবতঃ কিছুকাল গৌড়রাছ্যে পিতার ছলে প্রতিষ্ঠিত ছিলেন এবং সেই সময়েই ব্যৱস্থাবলী রচিত হইয়া-ছিল-বচনাকাল প্রায় ১৬৬০ এটাক ছইবে। কাবাবিলাসেও যশবন্ধের স্থতি আহে (পু. ৪০, ৫০) এবং তদ্বির অভাত রাকাদেরও স্থতি আছে। তিনি ধারাবাহিক গৌড়রাক্যে অবিটিত ছিলেন না নিশ্চিত 📗 ৺হরপ্রসাদ শালী মহাশর এই যশবস্তুকে নবাৰ পুজাউদীনের (১৭২৭-৩৯ ব্র:) ঢাকাছিত নায়েব দেওয়ানের সহিত অভিন্ন ধরিয়া (Notices, III, No. ্রথ()) বিষম ভ্রমে পভিত ছইয়াছেন—চিরঞ্জীব ১৭০০ সনের বহু পূর্বেই দ্বর্গী হইয়াছিলেন। কর্ণগড়ের রাজা রামসিংহের পুত্র যশোমত্ত সিংহও (১৭১১-৪৮ খ্রী:) সম্পূর্ণ পূথক্ ব্যক্তি সন্দেহ নাই (সাহিত্য-পরিষং-পঞ্জিকা, ১৩৩৭, পৃ ১৩৫ ন্তঃইব্য )। বস্তুতঃ চিরঞ্জীৰ কাশী এবং উল্লিখিভ গৌড় রাজ্য ছাড়িয়া বৰদেশে ভাসিয়াছিলেন कि मा সন্দেহ।

রাজন্ত :—কাব্যবিলাসে নির্নাণিত রাজাদের ছভি
পাওরা যার:—বৃত রাজা মানসিংহ (পৃ. ৪৯), বৃত রাজা
বিজ্বসিংহ (পৃ ৩৯), বৃত রাজা ফুপারাম (পৃ ১৮), রাজা
জ্বসিংহ (পৃ. ৪৫), কীর্ন্তিসিংহ (পৃ. ৫০) এবং রাজা হৃদর
(পৃ. ১৬, ১৯, ৩৫, ৪৬)। ইংলের কাহারও সভার তিনি
সৌড় রাজ্যের বিপর্বায়কালে আশ্রুর লইবাছিলেন অসভব
নহে। বিশেষতঃ তল্রচিত (ব্রুর-) ক্রলতা গ্রন্থ হ্রুরর রাজার
সভার নিবিত বিলয় অনুমান হর। এই হৃদর (একছলে
ভিদরেল' আহে পৃ. ১৯) গড়মওলের রাজা হৃদরেশ্ব কি না
বিবেচ্য। জ্বসিংহকে শোলী মহালর বিতীর জ্বসিংহ বরিরাহেন, কিছু বর্ত্তনান প্রবন্ধের প্রমাণাবলী গৃঠে উাহাকে প্রসৌদ্ধ
মির্জা রাজা ক্রসিংহ হইতে অভিন বরাই মৃত্যুক্ত। তাহা
হুইলে কাব্যবিলাস প্রস্থ ১৬৬৬ ব্রীপ্তাকে ব্যক্তার স্বাভার স্কুল্যর

পূর্ব্বেরচিত হইরাছিল। শতাবধান ও তংপুত্র চিরঞ্জীব বেরপ জামান্ত প্রতিভাশালী ছিলেন তাহাতে আমানের ইহাও অসমান হর, কাশীতে উক্ত মির্জা রাজা জরসিংহ হারা রাজ্যুমারদের শিকার জন্ত প্রতিষ্ঠিত মহাবিদ্যালরের জন্তুত্র অব্যাপক ছিলেন চিরঞ্জীব এবং সেখানেই তিনি বিভিন্ন রাজ্যুত্রনের সংস্পর্ণে আসিয়াছিলেন। Tavernier সাহেব ১৬৬৫ সনের ভিসেম্বর মাসে পরিদর্শন করিয়া উক্ত বিদ্যালরের একটি উল্লেখযোগ্য বিবরণ দিয়াছেন। বেণীমানবের মন্দিরের পান্তিম ভাগে ইহা অবস্থিত ছিল বলিয়া জামা যায়। এই সময়ে চিরঞ্জীব যে কানীর একজন স্প্রতিষ্ঠিত অব্যাপক ছিলেন তাহা বিদ্যোগতরিদণীর পূর্ব্বোছত প্লোক হতে বুঝা যায়।

শতাবধানের বংশপুর :—শতাবধানের ব্ল বাড়ী হগলী জেলার অন্তর্গত পুপ্রসিদ্ধ গুপ্তপত্নী অর্থাং গুপ্তিপাড়া গ্রামে ছিল।
১৬৬৯ সনের আগপ্ত মাসে বর্ণাদ্ধ সন্ত্রাট্ট আওরছবেশ কালীর বিশ্বনাথ মন্দির ধ্বংস করিয়া হিন্দ্ধাত্রেরই মনে যে ভীতি উংপাদন করিয়াছিল তাহার ফলে বহু নোলা কালী ত্যাগ করিয়াছিল সন্দেহ নাই। এই সময়ে বহু বাহালীও পশ্চিমাঞ্চল হইতে দেশে কিরিয়া আসিয়া থাকিবে—সহয় অপেক। প্রামই তথন কতকটা নিরাপদ ছিল। চিরঞ্জীব কিলা তাহার প্রগণ এই সময়েই প্রার ৭০ বংসর কালী ও গৌডরাজ্যে বাস করার পর দেশে কিরিয়া আসিয়াছিলেন বলিয়া অন্থমান করা যার। গুপ্তিপাড়ার প্রসিদ্ধ সাধক ও কবি মধুরেশ বিদ্যালয়ার ১৫৯৪ শকাকে (১৬৭২ প্রীইাকে) "ক্রামাক্রলতিকা" রচনা করেন। গুপ্তিশাড়ার প্রচলিত প্রাচীন প্রবাদ অন্থসারে চিরঞ্জীব মধুরেশের পূর্ব্ববর্তী ছিলেন (ভারতবর্ব, জৈঠ ১৩২২, প্র. ১৪৮)। চিরঞ্জীবের অধন্তন বংশে দীর্থকাল পাভিত্য ও

বর্ষাস্থঠানের বারা অভ্যু হিল ; আমরা কতিপর নাম সংগ্রহ করিবাছি। ত্রক্ষেব ভর্কবারীশ শৃক্তমণি ক্ষমীদার মনোহর দন্ত ও গলাবর দভের নিকট ১১২৭ সনের ৫ ভাজ (১৭২০ 🎝:) প্ৰভূত নিষ্কর ভূমি দান পাইয়াছিলেন (বৰ্ষমানের ২৫৬৩ নং ভারদাদ এটব্য )। একদেব এবং ভাহার দায়াদ বিশ্বনাথ बन्नागती वर्षमानदाक विदर्शनदाउ मानकाकन हिर्मन । बक्-দেবের পৌত্র বাৰাবাম সিবাভ রাজা তিলকটাদের নিকট ভূমি पान शरिवादित्नन । ১২০> সবে এই বংশে উঞ্চ রাজারাম, রত্বক্ষন ভাষপঞ্চানন ও রতুবীর বিদ্যালয়ার প্রভৃতি জীবিত ছিলেন। ১৮৯৭-৮ এটাজে অনীতিপরবৃদ্ধ হেমচন্দ্র ভটাচার্ব্য নিঃসন্তান পরলোকগত হইলে এই ভারতবিং: ত মহাপভিতের বংশ বিলুপ্ত হটয়া যায়। ইংরেজ রাজ্জে ভারতে ধন্তন্ত্র-প্রতিঠার এ জাতীর সদ্য: কল খরে খরেই ফলিরাছে। কেবল চির্ম্বীব কেন, বাঁহাদের গ্রন্থরত্ব এক সময়ে ভারতের সর্বান্ধ সমুচিত সমাদরের পহিত অধীত হইত এইরূপ শত শত মহা-পৰিতের নাম ও বংশ মহাপ্রলয়ের আবর্তনে পড়িয়া বেষ নিশ্চিক কইয়া গিয়াছে।

বিগত শতাকীর মধাজাগ পর্যান্ত এই বংশের সংযোগ কাশী ও গৌড় রাজ্যের সহিত সম্পূর্ণ ছিল্ল হয় নাই। তজ্ঞ্ঞাই রাম-প্রকাশের পূর্ব্বোল্লিবিত পূথিটি গুরিপাড়ায় জাসিতে পারিয়া-ছিল। কালক্রমে এই পূথি কৃষ্ণনগর রাজবাটাতে স্থানপ্রাপ্ত হয়। কতিপয় বংসর পূর্ব্বে ইয়া ও অপরাপর বহু মূল্যবাম্ গ্রহু রাজবাটী হইতে গলাপ্রাপ্তি হওয়ার উপক্রম হইলে নব্বীপের একজন প্রস্থার্যসিক পভিতের চেষ্টায় পাঠাগারে লোক-লোচনের গোচর হইয়া জঞ্জাতপূর্ব্ব তথ্যাবিদ্ধারের সহারক হইয়াছে।

# এবার অবগুঠন খোলো

গ্রীঅপূর্বকৃষ্ণ ভট্টাচার্য্য

ভূলে বাওরা যোর কথাগুলি এলো শরণের উপক্লে ডভ শরতের প্রথম শুরের হিন্দোলে হলে হলে। ভামাবনানীর বসনপ্রান্তে জোনাকির পাবা অলে, নীল আকাশের অলম ভরি আলোকের বেলা চলে। ফশমিলনের আবেশে আবেগে শিহরিছে কলেবর, বাসর-মাত্রি এলেছে রচিতে বিনত্র অবসর। কত বর ছেড়ে কত বর পেতে জানা হোতে অকানার মনোহরণের গ্রেচ্ছির বেলা মছবিছাল বার।

ছুৰি বেন ছবি ক্ৰিভাৱ চাকা, ভাবের ভূনিতে আঁকা, আপনার বাবে ক্রেছ হুচনা আনক ক্ষণহাকা। মাধ্ব্য দিয়ে তন্ত্-লাবণ্য করেছ যে প্রসাধন, ভোষারে খেরিরা বন-লভিকার নির্কান নীরাজন। ভোমারে ছেরিয়া মনে হয় মোর সবি স্করতম, ভরাভান্তের ভটনীর সম এসেছ সমূবে মম।

জীবন-পথের আবেগ-আকুল বপনের সদীতে
কুটতেছে আশা কুলুমের সম ছাদরের নিভূতে।
বিনা পরিচয়ে মম অভরে চকল চেউ ভূলি
ভোমার কণ্ঠ হবে কি মুবর চমকিরা কণগুলি ?
কুল-উৎসব মছর হ'ল মর্শ্বর ধ্বনিরাছে,
এবার অবস্থঠন বোলোঃ এসো প্রমি মোর কাছে।



মালরে টিনের খনি

রাভার দৃষ্ঠ সর্ব্ববিধ এক —উভর পার্থে সেই সব্ক বাভ-ক্ষেত্র আবৃত্ত প্রার্থা। এই বান-ক্ষেত্র প্রাচ্ছির্য দেবে দেশটকে ভো অরপ্রার ভাঙার বলেই মনে হর। কিছু মালরীরা শুরু চাষের মালিক, প্রাণের মালিক ভারা নর। মাবে মাবে অবস্থার মালিক, প্রাণের মালিক ভারা নর। মাবে মাবে অবস্থার বারার-ক্ষেত্ত আছে। মাইল দশেক বাবার পর আমরা সিত্রা-ডেস্টিউট ক্যাম্পে এসে পৌহলাম। এবানে ইঙিয়াম ভাশবাল আম্মির ক্যাম্পে ছিল। এবানে আসবার সলে সঙ্গেই ভারতের ভাতীর বাহিনীর ক্রীন্তিকলাপ বরণ করে সর্ব্বে আমার ব্ক ভরে উঠল। এদিকটার ব্ব ম্যানেরিয়া। ভামদেশ বেকে বে সব ক্রী আনে ভাবের এবন এবানে বাক্তে দেওয়া হয়। ভারতীর ক্রীন্তের সংব্যাও এবানে নেহাভ কম নয়। এবান বেকে বানের-ক্ষেত্ত বড় একটা মন্তরে প্রে আম্মান বিশ্বা

কভকতলো মালরী পরী পার হরে আমরা চাংকুন পহরের দিকে এগিরে চললাম। এ দিকটার তব্ রবার-বম—দূরে এবানে সেবানে আরণ্য রক্ষে সমাজ্য পাহাভের সারি ইাভিবে। এবানে কেন্য রবার প্রামটেশন্ টেট আছে। এবানকার অবিভাংশ টেটই হর চীনারের না হর বিটিশনের হবলে। এ বিক্লার রাভাটা বেশ উচুনীচ্ একট্ দূরে চীনারের কবর। এবান বেকে চাংকুন শহর আরভ হ'ল।

श्राप्तव नीमाना अवान (बदक अवनक चार्ड मारेल स्ट्व। अकट्टे अभिरव भिरव एकि इ'बाद्य वीनवन चात्र बवाब-वन राम সমানে পারা দিরে চলেছে। আমরা কিছু পরে 'বুকিট কারু' रिष्ठीय' नावक आत्य अनाय। इ'शाटन शाहाट्यंत शाटन दवात-কেত। আমরা এগব ছাড়িরে চললাম। মাইল ছুই বাবার পর আমরা ভাষের সীমানার এসে পড়লাম। এখানে একটা সাইনবোর্ড রয়েছে, তাতে লেখা আছে 'দাদাও বাটভি -পোষ্ট', মিলিটারী অফিসার দেখে গেট বিনা আপন্থিতে খুলে দিলে। সামনেই রাভার মাঝবানে স্থাম ও মালরের সীমানা-নির্কেশক **এक छै । अ**क्टिक कौरन युव स्टाइ ८१८व । फ्रांनिएक कार्बा (य যুদ্ধ করবার বাতে 'পিলবন্ধ' তৈরি করেছিল তা বুবতে পারলাম না। আলোরতার বেকে ভাষের সীমানা পর্যন্ত দূরত ত্রিশ महिल। अपिक त्रकात पूर्णा। श्रीत प्रवर्शना भाका त्रामा-বর্ষণের ফলে ভেঙে গিয়েছিল। জাপানীরা সবই পুননির্দ্বাণ क्रांबर एक्नाम. ज्य शही क्रव व'रन मंत्र क्य ना-कादन সবই কাঠের তৈরি। খানিকদূর এগিয়ে আসবার পর আমরা ৰুটিং-ক্রান নামে একটা ছোট থামে গৌছলাম। প্রাথ-প্রাত্তর একটা ভাঙা পুল পেরিয়ে আমরা প্রামহাড়া রাঙা-মাটর পর্য ধরে জীপ চালিয়ে চললাম। এখান থেকে বেশ একট্থানি বৈচিত্র্যময় দুক্ত স্থুকু হ'ল। রক্তের মত রাঙা লাল याष्ट्रित भव च्यूटतव भारन देवां व स्टब घटन श्राह्य-निया প্রবহমাণ ছোট ছোট নদীসমূহের ৩৩ খলধারা রখভৱেবার মত দুখমান। মাৰে মাৰে ধানক্ষেত, নাহিকেল গাছ, খুপারি গাছ, আম গাছ ও ট্যাপিওকা গাছ ইভ্যাদির নিবিভ বন। রাভার ছু'পাশে কোণাও বা রাভার লাল আর বনের সর্জের এক অপূর্ব্য হুসখতি। এখানে সবচেয়ে বেশী নকরে পড়ল রবার-বন। রবার গাছের সারি যেন ছ'পাশে পদাভিক দৈভের মত গাড়িরে আছে। আমরা কিছুক্দণ বাদে 'সাদাও' শহরে अरम शक्नाम । मानाथ महत्व अक्की त्मके ब्रह्मद्व । अवीरमध খানাভরাসীর পরে বহিরারভদের শহরে চুকভে দের। चार्यात्मत अ गत्वत वालारे (मरे। शूनिमता महत्त हेर्न वित्रह, সবাই ভামদেশীর। শহরে নানা বেশবারী বিভিন্ন ভাতের लाक रचनेनाम । बाहेवानीया राबटल क्रिक मानबीरमय मलहे, নাকের ডগাটা যা একটু যোটা, ভা ছাড়া আর সব দিক দিবে বেশ সায়ত আছে। তুলৰ চেহারাওবালা র'চার জন লোকও নকরে পছল।

এদিক খেকে একটা রাজা গেছে পেডাং-বেসারের বিকে।
এট একট রেল টেশন, 'পালিন' রাজ্যের মধ্যে পঙ্গে। কডকগুলো হোট রাম পেছমে রেখে আমরা ব্রাউংমারী শহয়ে এনে
পৌর্লাম। এট একট বছ শহর। এবানে আমরা হুটো
রেল-লাইন পার হলাম। ভামবিকে রেল-লাইন, বাঁবিকে
পাহাছ। এই লাইনটা হাজাই শহরের বিকে চলেছে—এটা

# मानग्न मृश्वावंनी



হদ, কোৱালা লাম্ব্র



লেকোনার পবে শ্যাম উপলাগরের ভৃত







**इन्हालय** । व्यवादालयाय बन



সেকোরার পথে শ্রাম.উপদাপরের ধারে রেষ্ট্র হাউস

ভাষ ষ্টেটের রেলওরে। আরম্ভ হরেছে পাতাং বেসার বেকে।
এট মিটারগত্ব লাইম। আমরা 'ব্যাট্' নদী পার হরে সাহাবুংল্ড শহরে এসে পড়লাম। এখান থেকে সেলোরা ৪৬
মাইল।

'গুরাট্র' নামক একটি মদী অতিক্রম করে আমরা একটা রেল-লাইনের নিকট এনে পড়লাম। রেল লাইনটি 'কোটাবারু'র দিকে চলে গেছে। কোটাবারু ও সেলোরাডে ভাপানী সৈতেরা প্রথম অবতরণ করে মালরদেশ অবিকার করে। ভানবিককার রাভাটা বরে সোলা এগিরে চললাম। বানিকটা আসবার পর আমরা একটা জংশনে এসে গেলাম। এবান থেকে বাদিকের রাভা বরে বরাবর গিরে ছাজির ছলাম 'হালাই' শহরে। এখানে একট সিকিউরিট আপিস আছে। সেখানকার এক সার্জ্জেণ্টের কাছ থেকে মন্ত্র্মনার মশার ১০ ভলারের টকল (প্রামধেশীর মুক্রা) ভালিরে নিলেন। সাত টকল এক ভলারে পাওরা গেল, বালারে এক ভলারে ছর টকল হিসাবে নের। আমি ক্যান্টেন দভের কাছ থেকে ত্রিশ

রাভাট একেবারে বিধ্বত হরে গেছে। বড়জোর বন্টার ঘণ মাইল বেগে জিপ চালান বেতে পারে। রাভার আমরা হ-একত্ন পদাবী ভন্তলোককে দেবতে পেলাম। একত্বন ছোট একট ছেলের হাত বরে নিরে যাচ্ছেন—নেতাজীর কটো ছেলেটর বুকে আঁটা ররেছে। প্রথমেই জির হিল' বলে সভাবণ করা হ'ল। আমি জিলাসা করলাম, পদাবী ছাড়া ভারতের আর কোনও জাতের লোক এবানে আহেন কিনা? আমার প্ররের বে ক্যাব পেলাম ভাতে প্রধান আমার মন ভরে উঠল। ইনি বললেন, "এবানে গদাবী কি ভক্তরারী বলে কোন জাত নেই, আমরা সক্লেই ভারতবাসী।" ব্রলাম নেতাজীর আদর্শ এবানকার আকাশে-বাভানে বিপে ররেছে। ভাই ভো এবানকার ভারতীরেরা সভীবিতা পরিহার করে উন্না বৃত্তিভানী ভাত করিছে। স্থান বিভান করে উন্না বিভান বিভান বিশ্ব বিশ্ব করে উন্না বৃত্তিভানী ভাত করিছে বিশ্বের বুক্তিভানী ভারতভিন্তর বিশ্বের বুক্তিভানী ভারতভিন্তলৈ প্রের্থমেন বিশ্বির বিশ্বের বুক্তিভানী ভারতভিন্তলৈ প্রিক্তিল ভারতভিন বিশ্বের বুক্তিভানী ভারতভিন্তলৈ প্রের্থমেন বিশ্বির বিশ্ব বুক্তিভানিক বিশ্বের বুক্তিভানী ভারতভিন্তলৈ প্রিক্তিল করেছে বুক্তিভানী ভারতভিন্তলৈ বিশ্বের বুক্তিভানিক বিশ্বের বুক্তিভানিক বিশ্বের বুক্তিলাল করেছে বুক্তিভানিক বিশ্বের বুক্তিলাল বিশ্বির বিশ্বর বুক্তিভানিক বিশ্বের বুক্তিলাল বিশ্বির বিশ্বর বুক্তিলাল বিশ্বের বুক্তিলাল বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বিশ্বর বুক্তি বিশ্বর বিশ্

উঠে। আহ বাস ভারতবর্বে আহলা এর সম্পূর্ণ বিপরীত चांठवन करव हमदि, माध्यमंदिक्छ। चांच श्राट्मिक्छ। विरव পরস্পরের সদে হলে মেতে উঠেছি । আমরা বাজার বুরে হোটেলে বাওৱা-হাওৱা সায়তে গেলাম। বাওৱা-হাওৱার পালা চুকলে দাম দিতে দিৱে দেখি বুব সভা-চার ক্ষের বাওয়া-বর্চ পড়ল মাত্র হয় ভলার। বাবার বুব<sup>®</sup>সভা, ভাল মুরণ ছুই বেকে আড়াই ভলারে পাওরা বার। আর মালয়ে ছর থেকে সাভ ভলার---रम्पोरम पावश पाका प्रदे वादमारभक्त । कारक वक्षणम बिष्ठ (शत्म गाँठ क्रमादात करम किहूल्डर शांता यांत्र मा। টাকা হ'লে পাঁচ টাকা দিলেই ব্যস্। হাজাই শহরের পাশে (वन-र्ष्ट्रेमन--- utia (परक (वाल '(कांहीवाक' '% 'वाकिक' अष्टि वहविमकाद श्रृदात्ना भरत. श्रुता যাওয়া বায়। উভতে। পরিকার-পরিচ্ছর মোটেই নর, চীনা অবিবাসী अवीत्म वृत राषे । यक यक रामकामश्रामा अवह हीमाराह । मानदीयां नश्यादि अयोदन यूव क्य। अयोदन याद अक्ष ভাত আহে তারা চীনা ও ভাষভাতির বিশ্রণে সর্ংপয় বৰ্ণসঙ্গৰুতাত। বেখতে এরা বেশ। আমরা সাভে ভিন্তীর **म्बर्गादां व भर्य भाषि विकास** ।



লেকের ধারে 'না-খোলা' বাজার ও কাঠের বাড়ী। এথানে আমেরিকানর। বোমাবর্গণ করে অনেক বাড়ীকে ধ্বংসকূপে পরিণত করেছে

নোভের মাধার এসে বাঁরিকভার রাভা বরে সোজা এগিরে চললার। আকালে বেব করেছে। ক্রমে একটু একটু বৃষ্টপাত হুরু হ'ল। এবান বেকে আবার রাভার হ্বারের সর্ক্রণাভা চোব ভ্তিরে দিতে লাগল। মাইলের পর মাইল ভ্তেবরারর চলেছে বানক্ষেত। একটু দুরে গিরে আমরা রেল-লাইম পার হলার। এবার আকাশ তেওে বৃষ্টি নামল। প্রবল বারি-বর্বনে দুরের আভাশের নীলিনা আর হ'বারের বানক্ষেত্র ভাষল শোভা ভাগলা হরে এল। বারিবারাসিক্ত পরের উপর দিরে বিপ চলল ক্রভবেনে। হালাইরের বোল বেকে সেলোরা আঠার মাইল। পরে অনেক্সলো নহী পার হুতে হ'ল, অবার ইন্সার্কিক হুত্বগঠের পরিবর্তন হরেছে—নাবে



লেকে জেলেদের মাছ ধরবার পাগার

মাৰে ক্ষল, দূরে পাহাছের শ্রেমী সমূহত পিরে ইাছিরে।
প্রবল বারিপাতের ভেতর দিরে কিপ চালিরে আমরা বেশ
বানিকটা রাজা এগিরে এলান। বৃষ্টি এবন বেষে গেছে।
বাঁহিকে দূরে পাহাছের মাধার স্থানখেনের বৌহ প্যাগোভার
চূড়া দেবতে পাওরা গেল। কাছবর্বন আকাশের পটে
অক্সমেনী মন্দিরচূড়ার তব গাঙীর্ব্য হুবরে শ্রহার উল্লেক্
করলে। রাজার পাশে স্থামবাসীদের মু-এক্থানা বাড়ী।
ভানদিকে উর্ভ্য পাহাছশ্রেমী স্থার বিগছের পানে উবাও হরে
চলে গেছে। আমরা একটা বহু নদী পার হরে সেলোরার
চুকে পছলান।

া শৃহরের সর্বাত্র হোট হোট বাংলো ও আভণ-পাভার ছাওয়া বাড়ী। রাভার বাঁদিকে বৌচ মন্দির। মন্দির-চন্দ্ৰরে প্রভবসনপরিহিত বৌধ ভিক্লগণ বসে আছেন। আলেগানে দণ্ডায়মান মন্দিরের মত আক্রতিবিশিষ্ট কতক-খলে। যথ বিশেষভাবে আনার দৃষ্ট আকর্ষণ করন। কোন বৌদ পুরোহিতের মুদ্রা হ'লে পর ভার মুভবেহ দাহ করে ভদাৰশেৰ মাটতে পুঁতে এ বরণের স্বভিত্ত নিৰ্দাণ করা হয়। আমহা এগৰ দেখে ডান দিককার একটা রাভা বিয়ে সাম উপসাগরের অভিমূবে এগোতে লাগলাম। বাঁদিকের রাভা দিরে সোকা সেকোৱার লেকে বাওৱা বার। বাবার পথে এক\$ বড় রেট হাউস নখরে পড়ল। এবাবে বাত্রীয়ল এসে বাক্তে शाद्रि, अवश्र बंबह छाद्या निर्मायबरे विष्ठ एवं। बाखांब इ'वादा विचीर्न क्षांचन्न, अवादम त्यवादम द्यांके द्यांके वांश्रता। আমরা এসব ছাড়িরে একেবারে ভাষ উপসাধরের বারে এনে পৌহলাম। এবানে অনেক লোকের ভিড়। ভাষবেশীর चन-পরিবারের মেরেরা অবেকে এবানে বেড়াতে এলেছেন। গাঁতার কাটার যতলবে আমরা চারজবে নাগিরে প্রভার ভাষসাগরের স্থনীল কলে। সাধাতে তীরে উঠে আবরা একট ভাষবেশীর ছেলেকে গাইভ করে এসিরে চললাম। এবাবে একট হোট পাহাছের উপর একট প্রবন্ধ বাগান सकरतः भक्त--किम करवरे केमहत्र केर्क शाक्षातः। जावर्षः अकरी

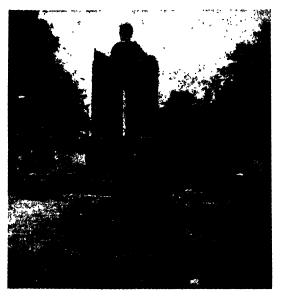
कामान बरबरक, जिल्ब किन्नरे स्वयंत्राच त्वरे। अगरव अक्की চাচারীর প্রশার বাংলো আছে। একক্স ভারবেশীর ভরলোক चांव केंद्र की वांश्लांव वरिःश्वांकरन (वकाव्यालन ) शाबीव करवक्ती छन्। जानवाब चरक कीरकत श्रेष्ठ क्रवलाव । किंद्र . তারা কেউ ইংরেকী ভানেন না—উত্তর দিতে পারলেন না। সেধাৰ থেকে দে**য়ে এলে গাইড ছোক**রাষ্ট্রকে নিত্রে জিপে চেপে বলে আমি নিজে জিপ চালাতে আরম্ভ করলাম। হেলেটর নাব নিশ্ব রতন কোট। ভার বাড়ী লেকের शाद-नाथ मा इक्टनरे (बैंटि चांदि। (ब्रांक वांक्टक পড়তে গিয়েছিল, কিছ যুদ্ধ বাৰতেই সেধান থেকে চলে খাসভে বাধ্য হয়। খামরা দূর থেকে প্যাগোড়া দেবলাম, भारमध् नार्ड हाडेन सरमञ्जूष भविष्ठ । अवारम मिज्यमीव সৈভেরা ভীষণ বোমাবর্ষণ করেছে। আমরা 'কেপে'র পাল पित्व विश ठांशित्व ववांवव त्वात्कव वात्व शित्व शक्तिव श्रामा । लक्षे रेवर्रा थांद ७० मारेन, बर्वात्म चरनक *ख*रनद वान। লেক থেকে মাহ ধরে এরা শীবিকা উপার্জন করে। এই বিরাট হ্রমটকে প্রাকৃতিক লৌকর্ব্যের দীলানিকেতন বললে অন্ত্যক্তি रव ना। इरण्टि शिक्टिंद चामदा छाद मांचा चवरताक्य করতে লাগলাম। ওপারে ধুসর পাহার উন্নতনিরে দ্বার্মান, नचूर्य भीम बाबिबानिब चन्छ अजाव, मुद्रै द्वन त्नरे भीनियांव অবগাহন ক'রে বত হর। পাহাছের কোলে কেলেবের ছোট ছোট বরগুলো বেন ছবির মত দুরুমান। প্রকৃতি এদিকটার লৌশর্ব্যের ভাঙার উত্তভ করে রেবেছেন বটে, কি**ভ** মানুহ এখানকার লোকালরের জীগলালনে বড়ই উলাসীন ৷ লেকের বারেই নোংরা পল্লী। এত ত্মন্তর লেক-প্রকৃতির রূপ এবাবে এভ নরনান্দকর, কিন্ত এধানকার অধিবাসীরা অধিকাংশই নোংৱা ও অপরিহার। বনে হয় এরা প্রায় সকলেই অভ্যন্ত प्रतिकः। भ्राम-भवर्गयके अ चकलात उप्रचि विवादम द्वम स्व ৰনোযোগী নন তা বুৰা ছফর। এর পালে 'নাবোনা' বাজার। अब मर्या पिरत अनिरत हननाम , मार्य मार्य लास्य पिरक বরবাচী বোষার আবাতে ধ্বংসভূপে পরিণত হরেছে। সেওলোকে এরা ভাষার মেরামত করতে ভারত করেছে। क्षांत्रवाजीत्मव त्ररवा। अवात्म वृत त्व , कावकीवत्मव त्ररवा। এমের অভুণাতে বুব কম। লেকের ধার বিরে চলেছি, বৈ रेष कदरह मारकद कन, हृदद कारना भाषारकद कारन नामा মেৰের সুকোচুরি বেলার আর অভ নেই। লেকের ফলে কেলে ভিভিতে করে কেলের। ভাল কেলে মাহ ধরছে। এরাও 'পাগার' করে বংক শিকারে ওভাব। লেকের বব্যে বড় বড় ক্ষ ( বড় বৌড়া ) ভাসহে। আসবার সমর ভাম উপদাপত্তর বাবে একটা কলবা কাহাক বেবলান। গাইত হোক্যাকে विकामा करव यांबरक शावमाव (व. थहा यांगांनी बाहाय---निरंपरपंपरे गरिराय गरम् आका त्यरं प्रत्य द्वारं । अक प्रम



ডোরিসান ফল হাতে একটি মালরী মেয়ে

হ্রদ এদেশে আর আছে কিনা সন্দেহ। এই হ্রদ সাগরের মত বিরাট, স্বুদ্রপ্রসারিত। এর বারিরাশি অভরীপের কাছে গিরে মিশেছে। ভাহাত অনারাগে এর মধ্যে চুক্তে शादा । बाखांत छानमिटक शिक्षित चाटर अक्षे दोव मनित । ভামদেশবাসীর। সকলেই বৌহবর্গাবলম্বী। মালরীদের মত এদের পরবেও সারং ও কুবায়া। কেনাকাটা করবার ভঙ্গে বাৰাৱে নামলাম। বাড়ীতে কবে কিৱব মেৱে ছট হয়ত ভাৱি প্রতীকা করে অধীর আগ্রহে দিন গ্রনছে। তাদের ভঙ্গে একট ভাষদেশীয় ছাভা, বেভের তৈরি ছোট বাহারে ব্যাগ ইভ্যাদি কিনলাম। ৰোকান থেকে কিন্নছি, বেৰি চক্ৰবৰ্তী-मनाव अक्टी काकात्म बाज वाज अवश्रकत त्याल केर्द्राहम । বাৰি তেতত্ত্বে চুক্লাৰ। বোকানহাত্ত ভত্ৰলোক পঞ্চাৰী ৰ্শলমান। 'কম ছিল' উচ্চারণ ক'রে আমার অভ্যৰ্থনা ক্রলেন। আমিও ভর চিক্ত বলে তাঁতে প্রভাতিবাদন শানালাম। নেভানীর হরেক রক্ষের কটো হোট বরটার প্ৰাৰ সৰ পাৰগাৰ। নেভাপী সম্বৰে অনেক কথা হ'ল তাঁর সংক। বেতাৰীর প্রতি তার প্রবা-তক্তির অন্ত নেই। এঁর প্রব বিশ্বাদ নেভাজী বারা বাব নি। বভ বিন না ভারত স্বাধীন वर एक जिन किनि वदाक क्यंनक शासन नां, किनि वनतनन বে বেতাজী এবাবে কোমনিন পদার্পণ করেন নি; কিছ তাঁকে বেববার হুচে হানীর সকল ভারতীরই ব্যাহকেই অন্প্রতিত এক সভার সিরেছিলেন। ক্ষুদ্র দোকানের সামাত লোকানদার, কিছ নেতাজীর আহর্নে তাঁর হুদরের সহীর্ণতা হুচে পেছে। বাত-বিকই তিনি বড় মনের অধিকারী হুংছেনে। এঁর সাহিব্যে সিরে নেতাজীর মাহান্তাকে যেন সূত্র করে উপলব্ধি করলাম—কিছুক্রণ পরে চলে আসবার সময় মনে হ'ল যেন নিতাজ আপনার ক্রমকে হেডে যাছি।

কেরবার পথে দেখি একটি মন্দির প্রতিষ্ঠা হচ্ছে। পথিপার্ধে লোকের পর লোক ভক্তিভরে গাঁভিরে আছে। তার
পাশেই একটা বৌদ্ধ মন্দির নকরে পড়ল—ভেতরেও বৌদ্ধ
মন্দির রখেছে। সেটা তৈরি হয়েছে—ধাই সাল ২৪৮৬ অবে
(বৌদ্ধ মুর্গের সাল)। আমরা যে পথে এসেছিলাম সেই পথেই
আবার পাভি জমালাম। বাঁদিক দিয়ে পাহাডের কোল থেঁছে
একটা পথ চলে গেছৈ—সেই পথে মাইল তিনেক যাবার পর
কাউসেং ভেকার' পাহাড দেখা যায়—এখানকার দৃষ্ঠ বড়ই
মনোরম।



মৃত্যুবৌদ্ধ ভিকুদের উদ্দেশে নির্শ্বিত শ্বতিশ্বস্ত

বীরে বীরে সন্থা ঘনিরে এল। অন্যানবশৃত রাভার থপর বিরে ভিপ চালিরে আমর্বা চলেই। বেশ ঘুট্রুটে অন্তার হরেছে। নির্কান বনপথে রাভচরা পাবীর কর্বশ কর্ঠ ভবে গা-টা হন্ হন্ করে থঠে। আমাদের জিপের আলো পড়ে নীঃহাভা পাবীদের চোবগুলো অলহে। পলীর পথে বনবিভাল আর শেরালের আমাপোনার অভ নেই। আমাদের ভর চীনা ভাভাতের কবা ভেবে। ভাবের পালার পভলে প্রাণ বাঁচানই হবে হার। চীনা মন্তারা চাঁইপিং-এর বনাকলৈ দিনের বেলারই টাকার লোভে লোককে গুলি করছে এবন কথা হামেশাই শোনা বার। এবের কাছে আনেক অল্লখন্ত আছে। ত্রিটশরা প্রথমে পরাক্তিত হরে এ-দেশ ত্যাগ করবার সময় এবের হাতে অনেক অল্ল দিরে বার —কাপানীবের সক্ষে করনে বরে। আবার কাপানীরা বর্ষন আত্মস্থাপি করলে তবন এবের প্রচুর অল্ল দিরে বার—ত্রিটশনের সন্দে সভাই চালাবে বলে।

ঘন্টার প্রভারিশ থেকে পঞ্চাশ মাইল বেগে জিপ চালিরে চলেছি। ভরের কারণ থাকা সভ্যেও আমরা যোটেই ভীভ হই নি। কেননা আমরা পাঁচ জন ছিলাম—আর তার ওপর 'ঠেনগান' বত্রিশটা, ভাতে গুলি পোরা আছে। বলি আশ্বার জোন কারণ ঘটে তা হলে ছির করলাম—বেমাল্ম গুলি চালাব। থানিকটা দূর গিরে এক পুলের কাছে গাড়ী থামালাম। চীনাদের মালবাহী ছ্-একথানা গাড়ী দেখতে

পাওরা গেল। জিপে তেল-জল বিরে আবার প্রার্ট বিলাব ।
রবার-ক্ষেতে পূরীভূত নিবিভ অঙ্কার—আকাশ বেবে
ঢাকা। এবার প্রক্র হ'ল বছুর পথ। সামনে নানা ভারগার পর্য রবেছে। পথ ধারাপ বলে এবন আতে আতে চালাতে
হচ্ছে। জিপের পর্জন হাপিরে নীচেকার প্রবহ্মান দলীর
কল-ধ্বনি কানে এসে প্রবেশ করছে। বাবে বাবে উচ্ছ চামচিকাগুলো গাভীর গারে এসে বাভ; থাছে। আকাশে
চল্ল-তারা বেবে আছের অবচ বজুমদার মশারের—"বে লগনে
কন্ম আমার আকাশে চান ছিল" আরম্ভ হ'ল। আবরা
রাত সাভে নচার 'আলোরপ্রারে' এসে পৌছলাম। পরের
দিন কুলিম হ'রে আম্বা টাইপিং-এ কিরব মনহ করলাম।

লেখকের "মহায়ুদ্ধের পর মালয়" নামক পৃত্তকের একটি
অব্যার।

# প্রবাদীর শরৎ

### ब्येटम्टब्स्ट मान

কভ, কভ দিব
হৈবেছি ভোষার স্বপ্ন বিরামবিদীন—
আদ্ধ ভূমি যবে
বাংলার জলে হলে আকাশে গৌরবে
শোভিবে—রব' না আমি বোগ দিতে ভোষার উংসবে।

আছিকে বৰ্ণন
শেকালী ক্ষলবলে প্ৰম লগন
বিকৃশি' উঠিবে হুবে, স্বৃতিপঠে আঁকি'
লব' তব ৰূপ বানি—তবু কিছু বাকী
ব্যৱে বাবে, আক্মিক বেবনার মাবি'।

পরাণ অসহ হবে, তারি মাঝে করিব সভান ভুরতি নিঃখাস তব বাইহীন গাম , আনন্দের উত্থাদনা লাগে, প্রোপনে ভাগে সে আখাস যারে ভূমি হড়াতেহ দূরে অস্থ্যাগে।

আমি ভাই হেখা
একাকী উদাস মনে মৌনে চাপি ব্যথা,
ভাবিব ষেধার আহি এক বঙ ধোর দূর দেশ,
অনন্ত অশেষ,
রয়েতে আমারে বিরে—চিম্নরের প্রির পরিবেশ।

চকিত নিৰেবে প্ৰবাসের বিরহীর ব্যবা যাবে ভেসে। দূর হ'তে কাছে আসা পূর্ণ পূর্ব হবে— গভীর নীরবে। তোমার শারদ শোভা মোর বিবে রাজিবে গৌরবে।

# সক্ষটত্ৰাপ

# 🛢 নলিনীকুমার ভত্ত

াভার উপর থেকে থেকো ক্কুরটাকে কোলে ভূলে নিলে হবিলাল। কাপড়ের খুঁট দিরে সেটার ক্তের পুঁক ব্হাতে বুহাতে বললে—এয়া: শালা, একদম পইচ্যা গেহছ। চল বাড়ীত চল, অধন দেবি ভোর বরাত আর ওভাদের কিরপা।"

পাটক্ষেতের পাশ দিরে সমীর্থ কর্মনাক্ত পিছিলে রাজা।
মান্ত্র-প্রমাণ উঁচু পাটগাছের সারি সমন্ত পৃথিবীটাকে দৃষ্টর
আড়াল করে রেবেছে। অতি সন্তর্গণে পাটপে টলে পথ
চলতে লাগল ছবিলাল। বামিক দ্ব বাবার পর বাঁ-থিকে
পড়ল একটা পচা বাল, সেটর পাড়ে ঘন গাছপালা আর
লতাথকার গভীর জনল। বালে জল এক-ইট্রের বেশী নর।
বহু জলে লভাপাতা পচে এমনি একটা উৎকট হুর্গদের স্প্রী
হরেছে যে সেবানে বানিকৃষ্ণ থাকলেই হুন্থ মান্ত্রের দম বহু
হরে আলে। লভাগুলের আড়াল থেকে সাথ-বোপ মারে
মারে বালের জলে লাকিয়ে পড়ে।

বালের বোলা ছলে গুটকতক ছুব দিরে নিলে ছবিলাল, সলে সলেই সারা দেহমন তার চালা হয়ে উঠল। লোকটা অভুত স্টেছাড়া বটে! বাইরের মুক্ত বাতাসে তার হাঁফ বরে সিয়েছিল, কিছ এবানকার দ্বিত আবহাওরা তার দেহ-মনে বেন সঞ্জীবনীশক্তি সকারিত করলে। সকল রক্ষ বীভংসতার মধ্যেই ওর উংকট উল্লাস।

বালের একবার দিরে একটা সুঁড়ি রাভা বরাবর একট টলার ওপরে উঠে গেছে। সেবানে চামারদের বভি। বাড়ীগুলো একেবারে গারে গারে লাগাও। পাররার বোলের মত বরগুলোতে ভানালাদির বালাই নেই—ভালো-বাডাসের প্রবেশপথ রুছ। কোন কোন বাড়ীর উঠানে পড়ে ররেছে মরা গরু। পচা চামড়ার হুর্গছে বভিটা ভরপুর। পৃথিবীর সমভ নোংবানি বেন চর্শকারদের এই ভুক্ত পদ্মীটতে পুরীভুত।

নিজের বাড়ীর উঠানে গিরে বাজবাঁই গলার হাঁক দিলে হবিলাল—"বদলী, বর বি আহছ্।" সদে সদে বে বিকটান্থতি প্রীলোকট আভিনার এসে গাড়াল প্রথম গৃষ্টতে তাকে প্রেত-লোকের অবিবাসিনী বলেই মনে হর। বলা-বাহল্য, মদলী নারী এই প্রীক্তাতীরা জীবট হবিলালের রী। একেবারে রাজবোটক তাতে সন্দেহ নেই। মদলী নাচীত্তর গাততলো বের করে হেসে বললে—"এইতারে আবার কই বেইড্যা লইরা আইলে।", গাওরার বসে হবিলাল বললে—"ইভা রাভাত 'বইড্যা প্রভাগ ক্লানি ভূইরা বিছিল। ' লইরা আইলার। ধেবি অবন ভক্র ভিরপ।"

্ হবিদান ৰাভিতে চাৰার হ'লেও ভাত-ব্যবদা করে না।

লোকটা গুৰী। গাহগাহড়া আর সভাপাতা দিরে কতচিকিৎসা করে সে জীবিকা অর্জন করে। এ বিবরে সারা মূল্কে
তার জুড়ি নেই। রোজগারও হর বেল, হানী-ত্রী হ'লনের
সংসার ইচ্ছলেই চলে বার। পথ থেকে কুড়িরে বা-ওরালা
জন্ততোলে বাড়ীতে এনে নিরামর করা গুর এক বাতিক—
কত সারানো গুর পেশাও বটে, আবার নেশাও বটে।

ছবিলালের বরস চল্লিশের কাছাকাছি। দৈত্যের মত বিরাট তার দেহ। মাধার বাঁকড়া বাঁকড়া রুক্ক চুলে কট পাকানো। লোকটা আবার গরাকাটা, কাটা ঠোটের কাঁকে বের হওরা লখা বারালো দাঁতগুলো দেখলে মুখবানাকে তার হিংস্ল করের মুখ বলেই মনে হয়। সব চেরে তীবণ তার ভাটার মত গোল, লাল লাল ছটো চোখ। লোকটা যথন রেগে বার তখন সেগুলো বেন হিংস্ল খাপদের চোখের মত অলতে থাকে।

হবিলালের ছীবনও বৈচিত্র্যার। সংসারে একমান্ত্র বছন ছিল তার মা। সেই মা মারা যাওরার পর হঠাং এক ছিন বাজী থেকে সে নিরুক্তেশ হরে যার। নানা জারগার ভবত্ত্বের মত কাটরে অবশেষে কামরূপ কামাধ্যার সিরে বছদিন এক সর্যাসীর চেলাগিরি করে। শুরু শিশুর উপর (সন্তবতঃ সঞ্জিকা প্রস্তুত এবং সেবনে দক্ষতা থেকে) ধুব ভূই হন এবং নানা গাহুগাহুজার শুণাগুণ এবং ক্ষত আরোগ্য করবার বিভাট তাকে ধুব ভাল করে শিবিরে দেন। হঠাং এক দিন শুরুক্তে না জানিরে সে দেশে রগুনা হর। প্রাবে এসে প্রথমে সে উলাসীনের মতই থাকত। সারাদিন সে শ্র্মানেন্ত্রানের প্রাক্তি, রাভটা কাটরে দিত এক ভাঙা শিব্দানিরে প্রাক্তির প্রাক্তির প্রতিষ্ঠে ক্ষা চারদিকে ছভিরে পড়ল এবং সব জারগারই তার বেশ থাতির হ'তে লাগল।

অবশেৰে এই ছন্নছাড়া জীবনের ওপর তার বিবক্তি ধরে গেল—গে সংসারী হ'ল। মেরেরা সবাই তাকে তর করত, তার সংস্পর্ব এড়িরে চলত। কিন্ত মদলী মেরেট কি সুমকরেই বে তাকে দেখলে। সে কেন্দার তার বর করতে রাধী হ'ল। তার পর এড় দিন তালের বিরে হরে গেল। মদলীকে নিরে ছবিলাল প্রোচ বর্ষের বর বীবলে।

ছবিলালের বাড়ী বে বালটন পাড়ে ভার অনভিদ্বে বাভলা নবীর তীরে ভাষচত্রপুরের ছবিবারের ভাষারি। ভাছারির বাংলোর বারাজা বেডে দেখা বার নবীর ভপারে বিগওঁ-রাবারিত বাবভেডে সন্মুক্তর বিপুল স্বারোত্ত—সরীবাড়ক বেশের সভানবের ব্যবহাকে আশার আনন্দে আন্যোগিত করে। বানগাহগুলো দিন দিন হতে বাকে পরিপুই, প্রবর্ত্তবান।

পদ্ধীর বছল জীবনবাজাকে বিপর্যন্ত করে হঠাং এল প্রকাশের মরভর—অর্থাচ্ব্যের দেশে ত্বরু হ'ল নিবারণ জয়াতাব। অধাহারে থেকে থেকে লোকেরা বীরে বীরে হবে উঠল নির্মান, গ্রামায়াহীন। মাহ্বের আছুরভার প্রয়ভির ভাষে তার ভ্রমের পুরুষারম্ভি ভুচ্ছ হবে পেল।

আশপাশের প্রারম্ভলোর কেউ কেউ উপায়ান্তরবিধীন ব্য়ে ডিটে হাড়তে বাধ্য হয়। নৌকা করে ভাহারিতে এসে নিক নিক হোট হোট হেলেমেরেফের সেধানে রেখে ভারা অকানার পথে পাড়ি ক্যায়।

কাছারির বেশীর ভাগ কর্মচারীই বিবেশাগত। সবাই মোটা টাকা রোজগার করেন, কলে ছুর্তিকের মরোও তাঁকের সক্ষম ক্ষমনাত্রা ব্যাহত হর না। প্রত্যেকেই সাব্যমত একটি ছুট পিতৃমাতৃপরিত্যক্ত হেলেমেরেকে আশ্রম দেন।

লোকষুৰে কথাটা মেংকীর হাওরের ওপারের রাধাপুর ঝানে সিরেও পৌহল।

একট কারত্ব-পরিবারের হামী-দ্রী নিজেকের ব্যাসর্কার বিক্রীকরে কোনমতে নৌকা-ভাড়াটা বোগাড় করে এক দিন ভাষচজ্রপুর কাহারিতে এসে উপস্থিত হ'ল। সকে তাদের পনর বোল বংসরের একট মেরে—হাথা বেকে পা পর্যান্ত সারা গায়ে তার ফগদগে ঘা—হ্থথানি বীতংস বিহৃত। বেকে তার বৌবন-সক্ষণের লেশ্যাত্র নাই—দেশলে মনে হর ব্যাস সাত আট বংসরের বেশী নয়।

বতদিন অল্লাভাব হিল না, ততদিন এই গলিত কতর্ক বিকটবর্ণন মেবেটই হিল বাপ-মারের নয়নের যদি—কিছ আৰু এই অনাবপ্তক বোৰার হাত থেকে নিছতি লাভের করে ছ'লনেই তারা মরিলা হবে উঠেছে। কেট আন্তর দের ভাল, নইলে মাতলা মনীতীরে মেবেটকে পরিভ্যাপ করে অক্লে ভারী ভাগাতেই ভালা বছপরিকল্প।

মেৰেটন চেহানা দেখেই কাছানির কর্মচানীনা সবাই নাক দি টকালেন—আশ্রন তার কোষাও মিলল মা।

বিক্সমনোরণ হরে খানী-মী-মেরেটকে নিরে নদীতীরে একটা গাহতলার এনে বসল। তর হিপ্রহর—রোদ বা বা করে, বাহুর গতি কর, নদীতে তরদ নেই। আকাশ থেকে বিজুমিত হছে একটা তীর খালা—বর রোরদাহে সমত প্রছতি বেন মুক্তাভুৱা।

ধানিক জিলিলৈ নিৰে বেকেটকে সংখাৰন কৰে বাপ বনলে—"লম্বী, ভূই এবানে বানিককণ থাক, আমন্ত্ৰা বাজান থেকে একটু ভূৱে আগতি !"

বেৰেট চিঁ চিঁ করে বললে—"বেশী বেরি করো বা, বারা। একলা আনার কয় করবে।" ুবাণ ভার রপু মাধার হাত বুলিরে বিরে বললে—
"আরে পাগলী, ভর কিলের—এই আমহা এলার বলে।"
নেরেটকে কেলে ভারা চলে গেল। ভ্রণথে নদীর ঘাটে
গিরে ভারা নৌকার উঠল। মাঝি নৌকা হেছে বিলে।

এদিকে বছকৰ কেটে গেলেও বাপ মা বৰ্ষ কিরে এল মা, মেরেটর তবন কেমন তর তর করতে লাগল। শেবে লে একেবারে ক্কিরে কালা ভূচে দিলে। শেবে অবসর হরে নির্কাব ক্ষ্ পদার্থের মত গাছতলার ভ্রের পড়ে কোঁপাতে লাগল।

ছবিলাল এবিক দিরে আসহিল ইত্তত দৃষ্টিনিক্ষ্পে করতে করতে—সভবত: রাভার কোবাও ছাওয়ালা কুকুর বা অভ জানোরার পড়ে আছে কিনা তার চক্ কৃটি তারই সহান কর-ছিল। হঠাং একটু দূরের থেকে গাছতলার শারিত নেরেটর পানে নক্ষর পড়তে তার মনে হ'ল, একটা যুতদেহকে শক্নির পাল বেন ঠুকরে খেরে গেছে। কুত্হলী হয়ে সে কাছে এগিরে এল। নেরেটর পানে তাকিরে বুবতে পারলে সে যুভ নর, বিহৃত বিশীর্ণ দেহের মধ্যে জীণ প্রাণটুকু ভার বুকুপুকু করছে।

বেয়ে। জানোয়ারের সজানে বেরিয়ে যে যা-ওয়ালা বালিকাটির সামনে এসে পড়ল ছবিলাল সে পথকুরুরদেরই সগোত্র—তেমনি গৃহ বেকে বিতাভিত এবং অসহায়। রাভায় পড়ে মরাই তারও অদৃষ্টলিপি—আর ছবিলালের কাছে কুরুরে আর মাহুষে কোনও প্রভেদ নেই, উভয়ের সহছে তার একই মনোভাব। লোকটা একেবারে দীতায় বণিড ছিতপ্রভের মত সর্বন্ধ সমদর্শী।

ছবিলাল যুক্তিবিচার করে কোনও কাল করে না, চলে বৌকের মাধার। হঠাৎ তার মাধার চাপল এক ধেরাল। থেয়েটকে কাঁবে ভূলে নিরে সে হন্ হন্ করে নিজ বাজীর পানে রওনা হ'ল।

বিশ-রাত ক্তের ব্রধার মেরেটার কাতরানির আর অভ নেই। তার উপর অপরিচিত অভিনব পরিবেশের মধ্যে এলে সে বেন হতবৃদ্ধি হরে গেছে। ছবিলাল শিররে এলে বসলেই সে কেমন বেন অসহারের মত ক্যাল ক্যাল করে তার পালে তাকিরে বাকে। ছবিলালের অবরে অকুনারবৃদ্ধির কোনও বালাই আছে এ অপবাদ তারু অভিবন্ধ শক্ষতেও দিজে পারবে না। প্রতরাং মেরেটার শোচনীর অবস্থা তার অধ্যরে দ্বা নারা বা করপার উল্লেক বোটেই করে না। কিছু তার রাধার কেমন বেন একটা নেশা চেপে বার বে, মেরেটকে তার নিরামর করে ভুলতেই হবে। অক্লর কুপার বে বিভাট লে আরভ করেছে তারই লাহান্যে মেরেটকে আরোগ্য করে নির্মের ক্ষরতাটা লে একবার পরব করে নিজে চার। লে ব্ৰতে পাবলে বেবেটর কত হ্বাবোগ্য, অটল—ক্তিভ ন্টল বলেই তার কেব আরও বেতে গেল । অসর নাম অরণ করে সে তার চিকিংলার রত হ'ল। নাওরা-বাওরা ভূলে গিরে গাঁবের বন-বাবাত বুরে কত রক্ষ লতা-পাতা আর গাখ-গাখ্যা যে বাতীতে এনে ক্ষেত্র ক্রতে লাগল তার আর অন্ত নেই।

মাস ছই চিকিৎসার পরে দেখা গেল অপ্রত্যাশিত ফল—
ফত বীরে বীরে শুকিরে উঠতে লাগল। ক্ষথে ক্ষমে মেরেট
লম্প্ সুত্ব হরে উঠল। ছবিলালের ওমুবের শুণে ক্ষতের হাগশুলোও বীরে বীরে মিলিরে বেতে লাগল।

ছবিলালের চিকিৎসার শিতারাতা কর্তৃক পধ-প্রান্তে কেলে যাওয়া এই মেরেটর যেন পুনর্কন হ'ল।

ভারপর বাঁশভাঙা বভার জল বেষদ হঠাং এক দিন অভাঁকতে বিপুল প্লাবনে এসে বাল বিল নদীবালা পুকরিণীকে পরিপূর্ণ করে ভালে ভেষনি বােবন আর বাছ্যের জােরার এলে এই কিলােরীর রােগলীর্ণ কেহকে অপরূপ লাবণাঞ্জীতে মভিত করে ভূলল। ভার বেন নব ক্লেবর প্রান্তি হ'ল। এই জীর্ণ আবরণের অভরালে কােবার স্ক্রিরে হিল এভবিন এই বিরূপম রূপরাশি বা কেবলে চমক লাগে, মনে জাগে প্রবল বাহে।

বংসের হাত খেকে বিবাতার একট নিপ্ন স্টকে রক্ষা করেছে ছবিলাল—তার আত্মপ্রাদের আর পরিসীমা রইল না। ছবিতে তুলিকার শেষ পরশ বুলিরে শিলী থেমন আত্মহারা হরে আপন স্ট নিরীক্ষণ করে তেমনি তাবে মুখ বিশ্বরে বারবার সে মেরেটর খাছ্যের দীপ্তিতে সমুক্ষল পরিপুট নিটোল থেছের পানে তাকার—তার সকল ইন্সির বেন চক্ষ্মর হরে মেরেটকে গিলতে থাকে।

চোৰে ওর নেশা লাগল कি ?

নেশাই বটে । ছবিলালের চোবে পৃথিবীর বং বদলে গেল, তার হাবরে জাগল স্থানের জ্বা। কিছ ছবিলালের জ্বা— লে তো যাহুষ্বের জ্বা নয়—লে যে ভারবের জ্বা। বে-বছর উপর তার প্রস্কু ভৃষ্টি পড়েছে তাকে পরিপূর্বভাবে প্রাস না করা পর্যান্ত তো সে বুভুজার উপশম হবে না।

হবিদাল ভাবে, বেরেটকে বে নিশ্চিত মৃত্যুর কবল বেকে হিনিবে নিরে এসেছে। ভার বাহ্য রূপ বৌবন সব কিছুই কিরে এসেছে ভার অক্লান্ত চেপ্লায়—স্মৃতরাং মেরেটর উপর সম্পূর্ণ অধিকার ভারই।

ছবিলাল ছিত্ত ক্ষরলে বেভেটকে সে বিজে করবে। সন্দর ক্ষাট লে এক্সিন খুলে বললে।

ভবে ছবিলালের স্ত্রী হয় ইবাহিত আর বেয়েট আভবে শিউরে উঠে। বিজের অনুষ্ঠের কথা সে ভাবে।

, वर्षेत्र कार्य द्वाले. परमव नाम, क्रिक क्षूबरे बटवा कार

জীবনটাকে নিত্রে বিবাভার বে নির্ভুর নীলা স্থক হতেবে তার অবসান হবে কবে? হোটবেলা থেকে বিদালোবে সকলের খুণা কৃতিরে কাটবিল তার দিন। হঠাং একবিন নৌকা করে বাপ বা তাকে ভাষচজ্রপুর কাহারির নিকটে মাতলা নদীতীরে পরিত্যাগ করে কোথার চলে গেল। কি তার অপরাব তাও রইল তার অবানা। বৈবচকে আগ্রর ক্টল এক চর্ম্বকারগৃহে যেবানকার ভকারজনক আবেইনে তার দ্ব বন্ধ হরে আসে। এই নরকেই কি তাকে থাকতে হবে চিরকান। বিবাভার অভিশাপ-স্রূপ বেন তার বেহে হঠাং এসেতে যাহ্য আর সৌলর্ব্যের প্রাচূর্ব্য। এই বেহুজরা রূপলাবণ্য নিরে কোথার গিরে আন্তর্গোপন করবে গে।

পূর্বজীবনের সলে পঞ্চেছে তার পূর্বচ্ছেদ। এবন সে আর বাপমারের আদরের লক্ষী নর, ছবিলালের দেওবা নিহানী নামে, তারই আল্লিভারূপে স্থামচক্রপুরের চর্ম্বকার-পদ্ধীতে আর আন্দেশালে তার পরিচর।

বে বরসে নেরের। খন্ন দেবে সেই যৌবনোনের কালে তাকে বিরে রইল ক্রচ নির্চুর ক্ওপিত বাছব পরিবেশ। বে লোকটার আশ্রেরে গে আছে তাকে বেবলেই তার গা-বিন বিন করে, তার চোবে সূব স্বাভূর দৃষ্টি বেবে তার অভ্যান্থা কেঁপে উঠে। ওর হাত বেকে কি আন্থরকা করতে পারবে সে! ছবিলালের তেতরকার যে পশুটা আন্ধ শেসে উঠেছে তার কবল বেকে নিক্নতি পাবার উপার কি ?…

ওদিকে ছবিলালের কাক্ষকর্ম সব গেছে চুলোর। ছ্প্রাণ্য গাছগাছড়ার সন্ধানে আর সে বন-বাদাকে বুরে বেড়ার না, চন্মিল ঘন্টা নিদানীকেই আগলে বসে থাকে। যেথানেই নিদানী বার সেথানেই ছারার মত সে তাকে অভুসবন করে। লোকটার চোথে সব সময় কেমন একটা ক্ষতি, আলাভরা ভীক্ষ দৃষ্টি। ওই চোথ ছ্টার পানে তাকালেই নিদানীর বুকের ভেতরটা পর্যাত শুকিরে কাঠ হয়ে উঠে।…

মাতলার তীবে একটা নিরালা ভারগার এসে চুপ করে বসে হিল নিবানী, হঠাং একটা উচ্চ হাস্যের শব্দে সে চনকে উঠল। তাকুরে দেবে সামনেই ইাছিয়ে সুর্তিনান হংবরের মত হবিলাল। আশ্চর্যা লোকটা কি তাকে হু'বতের হতেও লোরাভি দেবে লা।

বাৰবাঁই গলাকে সাধ্যমত বোলাবেম করবার চেটা করে হবিলাল ক্ষ্য অন্থ্যরের প্রের বললে—"নিহানী, তুই আমারে এমুন ক্ষরা। এচাইরা চলিস ক্ষের ? তুই এহানে আইরা বইরা রইছ আর তরে আমি সারাভা গা তুকাইরা বেডাইতাহি। ক নিহানী, আমারে তর তরভা কিরের ? আমি কি বাব না ভার্ক বে তরে গণ ক্ষরা। সিল্যা কালাইর। ক্যা হব, তুই আমারে বিরা কর, হেবে বললী-ভারে প্রেটিরা হিরা হুইক্বে প্রেধ বাকুম। নিব ঠাউরের

কিরপার ক্রকিবোক্ষ্যার আহার তার্রই হয়। আরে বাইতে পারলে হবিলালের প্রসা হারে কেতা।"

নিধানী নিক্ষেক অভ্যন্ত বিৱস্ত বোধ ক্ষতে লাগল, মনে মনে বললে—"ভূবি বাব ভার্কের চেরেও ভীবন। ভাাদর হাত বেকে বাঁচোরা আছে। কিছু ভোনার কবল বেকে নিভার নেই।" প্রকাঞ্চে ভূব্ বললে—"ভূমি আমার বাণের সমান।"

আঞ্চাশ কাটা অটহাত করে উঠল ছবিলাল। একটা বক বিকটেই মংতশিকারের আশার ব্যানছ হরে অপেকা করছিল, সেটা পর্যান্ত চমকে উঠে একটু দূরে সরে গেল। একটু চূপ করে থেকে ছবিলাল বললে—"ও, বুবছি ভাইল বারাকবারা গলব না। বা-প, আছা কেবন বাপ তা টের পাবি।"

বলে নিগানীর পাবে একটা ছলত দৃষ্টি নিক্ষেপ করে চলে গেল।

ইতিষ্বা ছবিলালের সংসারে দেখা দিবেছে দারুণ বিপর্বার। নিদানীর প্রতি ছবিলালের ক্রমবর্ত্তমান আগতি হেখে নিদারণ ইর্বার মদলীর নদট বিবিধে উঠল। সময় লম্মর ছবিলালের নারবোর সড়েও তার জীবনটা তো ভাটছিল বেল—সে মনের স্থেই ছিল, কিছ কোথা থেকে এই হততাগা নিমেরটা উচ্চে এসে পুড়ে বসে সবকিছ পাও করতে বসেছে। নিদানীর কাছে ছবিলালকে দেখলেই তার সমস্ত শরীরে বেন অসুনি বরে যার—কোনো না কোনে। অছিলার সে তাদের সামনে এসে হাছির হয়। তার এ অবাঞ্চিত উপছিতিতে ছবিলালের নারীর রাগে বি রি করতে থাকে। যথম ছবিলাল বাডীতে থাকে না তথন সে বেন বাধিনীর মত নিদানীর উপরে লাক্ষিরে পড়ে। টেনে হিঁচতে জাঁচতে কামড়ে সে তাকে একেবারে নাজেহাল করে ভোলে, গলা সপ্তমে চছিরে চেঁচাতে থাকে—''আবানী, আমার সক্ষমান্দ করতে আইছছ—মা আমার বাড়ী থনে অথনই বাইরইরা যা।"

নিদানীও তো এই মুহুর্তেই বেরিরে বেতে চার। কিছ কোণার বাবে সে। এ সংসারে তার আপ্রর কোণার।

বদলীর নিরম্বর সতর্ক প্রহ্রার ছবিলাল অতিঠ ছবে উঠল। মেলাকটা তার এমনিতেই চটে ছিল হঠাং মদলী তার কাছে এলে বেঁকিরে উঠল—"অই আপরভারে, নিদানীভারে বিদার কইরা দে। না অইলেও আমার সংসার আলাইরা বাইব।"

ক্ষাগ্ৰনো গুনে ছবিলাল বাগে একেবাৰে কাওজাৰ-পুত হয়ে উঠল। সন্ধোৰে বালা বেবে মললীকে সে মাইতে কেলে বিলে। ভারণয় সে কি বেবৰ প্রহার। মললীর হাজনোড় গুঁলো হবে বার বুঝি। বুব একচোট বার বিষে, ঝাক্সা বীক্সা চুলে ববে ভাকে বালের পাকে টেনে বিবৈ এনে প্ৰচণ্ড এক লাখি বেৱে খললে, "বা বাইরইরা বা, আয়ার বাকীতে আর আইছ বা।"

ৰদলী বীৰে বীৰে উঠে বসল, বিভ বিভ করে বললে, "চললাম ভিত্ত এর সাজা ভগমান তবে বিব।"

বাল পেরিরে, মেঠো রাখা ববে সে চলতে লাগল। পাট-ক্ষেতের আভালে মললীর অপ্রস্রিয়নাথ বৃত্তিবানির পানে ভাজিরে নিদানী ভাবছিল, অদৃষ্টের উপর নির্ভর করে ছবি-লালের আশ্রর ছেড়ে পথে বেরিরে পড়লে কেমন হয়।— হঠাং চোব ভূলে দেবে এক ভোড়া খলভ চোবের ক্ষ্বিত দৃষ্টি ভার ওপরে নিবছ।

মকলী চলে যাওয়ার পর নিদানীর নিজেকে অভ্যন্ত অসহার
মনে হতে লাগল। এভদিন তবু ভার এবং ছবিলালের মধ্যে
এমন একটা আভাল ছিল বেখানে নিজেকে সে কভকটা
নিরাপদ মনে করভ। কিছ এখন সে আভাল টুটে গেছে।
নিদানীর মনে হ'ল, সে যেন এক অভলন্দর্শ গল্পারের একেবারে
প্রান্তনীয়ার এসে ইাভিরেছে—অচিরেই সেই অভ্নার গল্পারে
পতন ভার অনিবার্য। এনন কোন অবলঘন নেই যা আঁছকে
বরে সে আভ্যন্তা করতে পারে।…

ক্তমে ক্ষমে ছবিলালের ভোগবাসনা হরে উঠল হর্ষমনীর।
এক মুহুর্তও সে নিলানীর কাছছাড়া হর না। বালের বারে,
নদীর তীরে, ভাঙা দেউলে পাশে যেবামেই নিরে বসে
নিলানী, সেবানেই বাওরা করে ছবিলাল। কোবার যাবে
নিলানী, পৃথিবীর শেষপ্রান্ত পর্বান্তর ক্রামনার
চক্ত্ হুট তাকে অভ্সরণ করে কিরবে—তার বিকৃত কামনার
হাত থেকে নিলানীর নিভার নেই।

ভোগাকাজ্বার ছবিলালের দেহের প্রতিট রক্তবিশু উন্থ্, কিন্তু সেক্তে তার ভাডাহড়া নেই। করারন্ত শিকার সহছে শিকারী বৈমন নিশিক্ত থাকে, নিদানী সমতে তার মনোভাবও অনেকটা তেমনি ধরণের।

তা হাড়া দীৰ্থকাল সন্থাসীর চেলাসিরি করে কাটাবোর কলে এটুক্ বৰ্মজ্ঞান তার আহে যে অবৈধ তাবে সে নিজের ভোগবাসনা চরিতার্থ করবে না, বিবাহদারা সম্পর্কটাকে বৈধ করে নেবে।

জোৱ-ক্ষরত্বতি করলে পাছে সব ক্ষেত্তে যার সেক্তে গে ভার প্রতি অভ্যন্ত বোলারের ব্যবহার স্থক করলে। নিধানীর ননোরঞ্জন করবার ক্ষতে ভার চেষ্টার আর অভ রইল না। নাধ্যাতিরিক্ত বরচ করে আরনা, চিক্টা, গ্রুতিক ইণ্ডাবি কৃত ভিনিবই না সে নিরে আসতে লাগল।

কিছ নিজের ভূল ব্রতে হবিলালের দেরী হ'ল না। সে মর্শে মর্শে উপলব্ধি করতে পারলে নিহানী ভার 'পরে ক্রনো প্রসহ হবে না।

र्जात जानोजन रहेना रिमा। सूननामा जानीरहेन जाकारमञ

মত গভীর বনববে। গত এক বংসরের মধ্যে ছবিলালের এমন বৃষ্টি নিয়ানী সেবে নাই। লে বেন সাংবাতিক একটা কিছু করতে বছপরিকর। তবে কি ভার সর্বানাশের চরম বৃষ্ট স্বানত।

সে দিনহাত একাছ মনে ভগবানের নিকট প্রার্থন। কয়তে লাগন—"হে ভগবান, এ পিশাচের হাত বেকে আমার বাঁচাও, এ নরকপুরী থেকে আমার উহার কর।"

ভগবান বোৰ কৈ বি অসহার নেয়েটন কাতর প্রার্থনার কর্ণপাত করলেন। মুশকিল আসানের একটা উপার অচিরেই হ'ল। কাছারির ডাক্টারের ছেলে স্থনীল নিরেছিল মুদ্ধের কন্ট্রাট। দেশতে দেশতে বরাত তার কিরে বার। সৈত্ত-বিভাগের কতে নারী সরবরাহ করে স্থনীল কর্তাদের নেক-মক্তরে পড়ে এবং এইটেই নাকি তার ভাগ্যপরিবর্ত্তনের বৃল্ ভারন। নারী-সংগ্রহে স্থনীলের বোগ্যতা অপথিলীন। কোশায় কোন্ সরবরাহযোগ্য এবং উপভোগ্য নারী আছে তাদের নামবার স্বকিছু ভার নথদর্পনে।

নিধানীর উপর পছল ভার নজর এবং ছুকুল থেকে এই দ্বীরম্বটকে উদ্বার করে সৈত্বিভাগের কর্তাদের উপচৌকন দেবার করে সে তংপর হয়ে উঠল। মেরেটাকে পেলে গুরা বে কি রক্ষ স্কে নেবে এবং কলে দে কি মোটা ইণ্ড মারবে ভাই সে ভাষতে লাগল।…

ছবিলাল বাড়ী নেই, একথা জেনে একদিন সন্থার পরে স্থনীল ভার বাড়ীতে গিরে হাজির হ'ল। ছবিলাল গিরেছিল রন্থনন্দন পাহাড়ের জনলে হুপ্রাণ্য গাছ-গাহড়ার সন্ধানে।

নিদানী ছিল খরের ভিতরে, স্থনীলের ডাকে বেরিয়ে এল।
স্থনীল শোধালে তাকে আশার বানী—এই নরক থেকে তাকে
সে উছার করতে চার। তাকে নিরে সে চলে বাবে শহরে।
সেবাবে ঘোটা মাইনেতে হবে তার বুছের চাকরি। ভত্রসমাজে সুবে হছেকে থেরে-পরে মাছবের মত সে বাঁচতে
পারবে।

ত্বনীলের কথার নিদানী বপ্ন বেবতে লাগল---এই নরকাগার বেকে সভিন্য কি হবে তার বৃক্তি, অভকারের ওপারে বাভবিকই কি তার করে অপেকা করছে আলোকোক্দল ভবিকং । এতকাল পরে এল কি তার বৃক্তিবাতা—হবিলালের বিক্ত কামনার হাত বেকে তাকে উদ্ধার করতে। এক বৃরুর্তে দে মলছির করে কেললে, আকই সে স্থলীলের সলে এবান বেকে চলে বাবে। একবার মনে হ'ল এ কারগা বেকে ক্ষত্র গিরে দে তো আহো হুর্গতির মধ্যে পড়তে পারে। কিছ আর ভাববার সময় নাই। একবা সে বৃহতে পেরেছে বে, হবিলালের কামনার লেলিহান পিবা বেকে আর সে নিবেকে বাঁচাতে পারবে বা। আক হবিলাল বাড়ীতে নেই, বহ্নছুরে পেছে—ক্রিক্তে রাভ হবে অবেক। এবন স্ববোগ আর

আসবে না। কাজেই তাকে এ ছান পরিভ্যাগ করতে হবে এই বৃহুর্জেই। স্থানের পারের তলার পকে নে ভুকরে কেঁলে বলে উঠল,—"আপনি আমার এক্নি এ নরক বেকে নিরে যান, আমার বাঁচান।"

স্থীল নিগানীকে সান্ধনা দিলে । ভারপর ভাকে নিরে ছবিলালের বাড়ীর পেছন বিককার জনহীন স্থাঙি পথ ধরে টিলার নীচে নেমে এল । খাল পেরিরে, পাট-ক্ষেতের ভেডর গা ঢাকা দিরে চলতে চলতে নদীর খাটে পৌছে নৌকার চড়ে বসল।' নিগানীর হ'ল মুক্তিসান—পেছনে পড়ে রইল পচা খাল, এক বংসরের ছঃখর্গতির স্থতিবিক্টিভ ছবিলালের কুঁড়েবর, চামারহাটির নোংবা খ্যবাড়ী, আর খালপাড়ের বন-বোপ। নৌকা চলল শহরের পানে।…

ওদিকে বাজি প্রথম প্রহর উতীর্ণ হলে পর ছবিলাল কিরে এল বরে। অভ্যাসমত ভাকলে—'নিদানী!' কেউ সাজা দিলে না। বরে চুকে তাকে না দেখে সে আক্ষর্য হ'ল। সারাটা বাজী পাতি পাতি করে খুঁকল, কিছ কোবাও ভার পাছা নেই। ছবিলালের মনটা দমে গেল, তবে কি পাবী শিকলি কেটেছে। বরের ভিতরটা ভালো করে প্র্যেকেশ করে বুবল তার সক্ষেহ অনুলক মর। নিদানীর সব কাপড়চোপড়, মার আরনা চির্লী পর্যান্ত কিছুই নেই।

হঠাং বেৰ ছবিলালের নিজেকে নিভান্ত অসহায়, অভ্যন্ত একা মনে হতে লাগল—সংসারটা বেন এক অপরিমের পূত-ভার ভরে উঠেছে। এভদিন পরে আৰু মদলীর কথা মনে পড়ে তার বুকের ভিভরটা কেনন করে উঠল। বোটা বাজ-বিকই তাকে ভালবাসত, কিছু একটা অসম্ভবের নেশার সে নির্মান্তাবে প্রহার করে ভাকে ভাভিয়ে দিলে।

সে ব্বল, মদলীর অভিশাপ এতদিনে ফলতে প্রু হরেছে। ভার সংসারের ধেলাখর এবার ভাঙল—এ ভাঙা খর আর কোড়া লাগবে বা।

হঠাং তার চোধ দিরে হ' কোঁটা খল গড়িরে পড়ল। এই তার জীবনে প্রথম হংগাকুভূতির উত্তর অঞ্চবিস্থ।

এদিকে সুনীলের নৌকা এতকণে মাতলা ছাছিরে ভিতাস নদীর বুকের ওপর দিরে চলেছে। রাত হরেছে গভীর, আকাশে প্রকাশ একধানি কাক্য-বালার মত চাঁদ উঠেছে। বিগশুপ্রনায়িত তিতাসের রূপালি কলবারার উপর দিরে বেদ জ্যোংস্থার বাদ ভেকেছে। মৌকার গারে চেউরের স্থানতে বৃদ্ধ মধ্য ছলাং ছলাং শক্ষ হচ্ছে।

নোকার ছইরের বাইরে সিবে বসল স্থাল, বড় মিট্ট করে ভাকলে--"মিলানী, সুমিরেছ না কেসে আছ ?"

ু "বুৰ আসহে বা আয়াৱ---কিন্ত নাম তো আয়ার নিবানী মূল, এটা হবিলালের কেওবা নাম !" "তবে কি নাম তোনার—তোনার জীবনের কবা একটু-আবটু জানি, কিছ সব ভোনার নিজের মূবে ভবতে বড় ইছে হচ্ছে।"

"বাপ বাবের বেওরা নাম আবার লগী। আবার জীবনের কথা জনে কি-ই বা লাভ। একটানা ছংবের জীবন আবার। কিন্তু কত বড় সর্জনাশের হাত থেকেই বা আপনি আবার বাঁচিরেছেন।"—ফুডজ্বভার গদগদ হরে উঠন ভার ফুর্মবর।

"লম্মী, একটু কাছে সরে এসো"—মুনীলের গলাচী যেন ইবং কেঁপে উঠল। খণকাল চূপ করে থেকে সে লম্মীর ছাত বরে বৃহতাবে আকর্ষণ করলে।

একটু অবাক হরে প্রনীলের মুখের পানে তাকালে লখী।

চোধ ছটোতে তার কেমন একটা অবাভাবিক দীরি। লখীর
বুক ছরু ছরু করে কেঁপে উঠন, তার মনে হ'ল এই চাউনির
লক্ষে হবিলালের লালসাত্র ছ'ট চক্তর প্রতীক্ষ দৃষ্টির আশ্বর্ধ।

হবিলালের সলে প্রনীলের শাভ ভত্র চেহারা,
ভার পোশাক-পরিক্ষে চলন-বলন সবক্ষিত্রই কভই না পার্বক্য,
অবচ মনের চেহারা বে ছ'কনেরই এক, ভারই প্রতিকলন সে
বেশলে প্রনীলের কামনাপ্রদীর ছই চকে।

নে তীর দৃষ্টির সন্থা থেকে মুখ কিরিবে নিলে ললী।
জ্যোৎসার প্লাবন তার মুখবানিকে অপরূপ শ্রীষ্ঠিত করে
ছুলেছে। কিছ জ্যোসাবোত আকাশের এককোণে পুঞ্জীভূত
কালো নেখের মত, তারও শুক্র স্থাননে খনিরে এসেছে
সুগতীর ছুক্তিভা আর অকানা আশ্বার কালো হায়।…

পুনীল আহো একটু বন হয়ে বসল। নিরীহ শিকারের উপর আফিরে পছবার আগে হিংমা পশুর মত অবছা তার।

লন্ধী একবার একাছ অসহারভাবে প্রনীলের মুবের পানে ভাকালে, পরক্ষণেই উর্বুবী হরে জ্যোংরাপ্লাবিত আকাশে দৃষ্টি নিবৰ করলে। সভোত্তির বৌধনে ভার কত জ্যোংস্লারকনী অঞ্জলে বার্থ হরে গেছে, আৰু প্রথম সুরু হরেছিল চল্লিকাস্লাভ নিশীবে ভার উন্ধল ভবিষ্ততের ধর্ম বেবার পালা—বাভবের রচ আবাতে সে-বর্ম ভেডে গেল।

কিছ, সন্ধীর বৃচ সরজ। প্রাণ 'পাকতে স্থানৈর পশুসভার কাছে আত্মসমর্থন লৈ করবে না। অবৃষ্ট ভার জীবনটাকে নিরে অনেক হিনিমিনি থেলেছে, কিছ প্রতিকৃত্য ভাগ্যের কাছে পরাজর খীকার লৈ করবে না। যদি উপায়াভর না থাকে ভা করে বিরুদ্ধোভা ভিভানের জনে বাঁপিরে পড়ে নে চরম সমষ্টের হাত থেকে বিছুভি লাভ করবে। •••

কিছ শেব পৰ্যাত ভার প্ররোজন হ'ল না। । । প্রবৃত্তির

ভালনার কাঞ্জানপুত হরে বিজের আবেরের লাভের আশা নাট করবে, ত্নীল ভেনন হেলেই নর। বর্ণন লে নিজের ভূল দুবতে পারলে তর্ণন হইবের ভেতরে নিজে নিজার আরোজন করলে। নৌকার বাইবে জেগে বলে রইল ললী। গকালবেলা ভিতাস নদীর বারিরাদিকে রাঙিরে হুর্ঘা উঠল পূর্বাকালে।

নদীতীরত্ব বনবোপের কাতে একটা নিরালা ভারদার
মার্কি শেবরাত্রে নেকা বেঁবে নিরা বিরেছিল—এববে।
ভারামে তুনোছে। ওদিকে ভইরের ভেতর স্থনীল গভীর
বিক্রার অচেতন।

নদ্মী তথনো বাইরে ঠার বসে আছে—চোবে ভার অতক্র রক্ষনী বাপনের স্থগতীর ক্লান্তি, এক রাত্রিতে বরস বেদ ভার দশ বংসর বেড়ে গেছে।…

ভোরের আলো নৌকার হইরের ভেতরে এসে পড়েছে।
সুনীলের সুবৃত্ত মুবের পানে ভাকিরে লল্পী নিউরে উঠন—
ভার নিঃখাসে বেন বিষ-বাল্যের ভর্না লল্পীর সমন্ত শরীর
আলা করতে লাগন—একেই সে ভেবেছিল ভার মুক্তিদাতা।
লোকটা ভরবেশী বর্মার, ছবিলালের চেরেও নীচ প্রকৃতির।
ওকে বিধাস করেই লল্পী সর্মান্যের সন্থান। এই মুহুর্ছে
ওর বিধাক্ত সংস্থান পরিহার করতে না পারলে ভার বেন
আর বাঁচোরা নাই।

ভঙ্গিবেগ নৌকা থেকে তাঁরে মেমে এল লখাঁ, ভার-পর বিধিকি আনপুত হয়ে বেত-কাঁটার অফল ডেঙে প্রাণ-পণে ছুইতে লাগল। কাঁটার ভার গারের চামড়া হতে বেতে লাগল। কিছ সেদিকে ভার ক্রম্পেণ নেই, লে যেন নিজের কাহ থেকে পালিরে বেতে চাইছে।

অদল পার হরে সে এক স্থ্রপ্রনারী প্রান্তরের বুকে এসে পড়ল। অনভবিতীর্ণ কাঁকা মাঠ—দিগভের শেষসীমা পর্যান্ত দৃষ্ট কোবাও প্রতিহত হর মা। চতু-পার্শে আকাশ নত হরে প্রান্তরের বুকে নেমে এসেছে—পৃথিবীর উপরে ধেন আকাশের শীলাকলের বেয়াটোপ দেওরা।•••

লন্দীর নিশি-কাগরণক্লান্ত বেহে আর তিলয়াত্র শক্তি নেই। গভীর প্রান্থিতে অবসর হরে সে একটা গাহতলার বলে পড়ল।

সূৰ্বে প্ৰান্তবের দাকবান দিবে পাবে চলার পথ। দাঠ পেরিবে, প্রানের পর প্রান হাছিবে, বাল, বিল, ফলা-ভোবা ভিডিবে লে পথ বেন কোন্ সূল্বের পানে উবাও হবে চলে গেছে।

গাহতলার বলে লখী সেই ভ্রবিস্পিত প্র-রেখার পানে উলাসনর্বে তাক্তিরে রইল---

# সেকালে বাঙালীর শক্তিচর্চা

### ঞ্জীশান্তি পাল

ভারতীর প্রাচীন সাহিত্যের বহু ছানে বাঙালী ভাতির বীরন্থের উদ্রেব দৃষ্ট হর। রাবারন ও মহাভারতে অল, বল, পৌজু, ফলিল প্রভৃতি দেশের বাঙালী রাভাদের কীর্তিকলাপ ও মুহ-বিপ্রহের অনেক ভাহিনী বর্ণিত রহিরাহে। 'রহং বলের' ভ্রিকার এক ছানে বলা হইরাহে—"বলীর মৃপতিগণ রণতরীতে আরোহণ পূর্বাক রগুর দিবিকরে বাবা হিরাহিলেন এবং সেই মুদ্ধ এরপ বোরতর হইরাহিল বে, মুদ্ধ কর করিয়া রছু গদামব্যহিত দ্বীপপুঞ্জে করন্তত্ত প্রোধিত করিরাহিলেন। তাহাকেও বদদেশ কর করিতে বিশেষ বেগ পাইতে হইয়া-হিল। তিনিও এই ছ্রহ কার্য্য সমাব। করিয়া সাগর-সদমে একটি শারক কয়ভভ্জ ভাপিত করিয়াহিলেন।"

প্রতীয় দশম ও একাদশ শতাকীতে রচিত বিভিন্ন কাব্যে গোড়ের পাল ও সেন রাজগণের শোর্য্য বীর্য্য ও শক্তিমন্তার নানা কাহিনী ইতন্তত: বিক্লিপ্ত রহিয়াছে। বর্ষমকল কাব্যের ভূমিকায় এক ছানে বলা ভ্ইয়াছে—"বকদেশ যখন বাধীন ছিল, পালবংশীয় রাজগণ যখন গোড়ের সিংহাসন অলম্বত করিতেন, যখন বাঙালী বীরের পদভরে বক্তুমি কাঁপিত—বক্তের সেই ভাভ সময়ে বর্ষমকলের উংপত্তি হয়। বর্ষমকলে ময়দিগের লভাই ও অধাদির চালনার সন্ধীব বর্ণনা দেখা যায়। অধে আরোহণ করিয়া কোমল অলে কঠিন বর্ষ্ম পরিয়া বাঙালী বীর রমশীয় বর্গুর্মাণ হল্ডে মুছে গমন—কোন্ কাব্যে এ নয়ম মনোহর দৃষ্ঠ আছে ?"

অতি প্রাচীন বুগের কথা ছাছিরা দিয়া এবার পরবর্তী কালের দিকে দৃষ্টিপাত করা বাক। চতুর্বল শতকে বাঙালীর ছেলেরা যে আবড়ার দিরা দেবাত্ত্তীলন, শত্রবিভা প্রভৃতি নানা প্রকার শক্তিচর্চা করিত, এ তথ্য আমরা অনাদিমকলেও পাইতেছি। তথমকার বুগে বাংলাদেশে রাজকুমারদের বিভাভ্যাসের সঙ্গে বাংল রীতিমত শক্তিচর্চা করিতে হইত। আমরা রাজা কর্ণসেনের উজ্জিট এ স্থলে উদ্ধৃত করিলাম:

"বিভা বিমে গতি নাই কানে সর্বাজনে, রাজপুত্র ক্ইলে চাই শিবাইতে রবে। ভাকরে আনিল রাজা করপতি নওলে, কোবা আহে বল্পবীর কহিবে ভংকালে। এবন বিভর বল আহে এইবানে, কর্তে কহিলে ভার নাম নাহি ভানে। রবভী শহরে আহে বল্প সারেও-বল, বাল্পবজ্ঞর হতে বল্প বাইশ হাতীর বল।" এই ক্রেক্ট পঙ্ ভিন্ন মধ্যে আমরা দেবিতে পাইতেছি বে, তংকালে রাজারা যেমন রাজপুঞ্জের ঘণোচিত বিজা-শিকার বাবছা করিতেন, তেমনই শারীরিক শক্তিচর্চা ও রথ-কৌশলাদি শিণাইতেও যত্বান হইতেন; মল্লবীরগণ রাজ্যের সাধারণ প্রকা হইলেও বলাবিপগণ তাঁহাদের যথেষ্ঠ সম্মান করিতেন; রাজা তাঁহার মঙলকে উৎকৃষ্ঠ মলের স্থান করিতে বলিতেহেন। মঙল রাজাকে সারেও বলের ক্থা বলিলেন।

> "আজা কৰি কোটালিয়া করিল গ্যন, মালের নিকটে গিয়া দিল দরশন। আধ্কাশালেতে খেলে মাল সারেও-খল, চারিদিকে পড়েছে পাষাণ জগছল। নিরবধি আধ্ভা সদাই ঠাট বাট, চারিদিকে প'তে আছে পাষাণ মাল কাঠ।"

এই ক্ষেক্ট পঙ্জির মধ্যে আমরা দেখিতে পাইতেছি যে, রাজার আজার কোটাল অবাং পুলিশ কর্মচারী মরের সন্ধানে বাহির হইল। এবানে আমরা তংকালীন আবভার একটি উত্তম বর্ণনা পাইতেছি। তাহাতে দেখা যায় সেই আবভা কোল অংশেই আধুনিক 'জিমভাসিরাম' অপেকা নিজ্ঞ ছিল না। পাষাণ, গদা, মাল কাঠ, ঠাট-বার্ট ইত্যাদি বিবিধ সরঞ্জাম এবং মল্লফীভার অভাত আত্মদিক অব্যথ্যনিও তথার রহিয়াছে। তারপরেঃ

> "বার দিয়া বসেছে ভূপতি কর্ণসেন, মলগুরু আসিরে সন্মূর্বে দেবা দেন। মাল সব আড়ালে দাঁড়াল সারি সারি, তাল কিয়া শাল গাছ ভূলনা দিতে নারি।"

রাজসভার ময়গুরু সাবেও-বলের আবির্ভাবের কথা এছলে তুরুভাবে বর্ণিত হইয়াছে। গুরু সাবেও-বল রাজ-স্মীপে
অঞ্জনর হইলেন। তাঁহার শিস্তের। সারি সারি অভ্যালে
ইাড়াইলেন। শেবের হুই পঙ্ক্তিতে তাঁহাদের উন্নত বলির্চ দেহের একটি নিপুণ চিত্র কুটরা উঠিয়াছে। এবানে-তাঁহাহিসক্তে তাল ও শাল গাছের সহিত তুলনা করা হইরাছে।
হুঠায় বাঙালী বল্লের দেহের তুলনা আর কিসের সহিত হইতে
পারে ?

অনাধিষদলে 'আধ ড়াপালা' ও 'মালবন' পালার মধ্যে আমরা বাঙালী বীরজননীর একট সুজর চিত্র পাই। তাহার ভ্রেকট হত্ত এ হলে উদ্ভুড বা ক্রিয়া পারিদাম না ;

"বেৰকালে বঞ্চাৰতী করে নিবেদন, नाष्ट्रिम कर्ण्ट्र निवारेट्व द्वव । সঁপিলাৰ বাহা হুট ভোষার ওই পার, সর্বাদানে শুনিরাছি শুরুর আছে দার। वक्षा परण वांचायन (यंना क्य हुव, মিলাবেছে মলগুরু খনাত ঠাকুর। 'এক মমে সেবা কর গুরুর চরণ শ্বক্রতক্তি বিভালাত করে সর্বাহন। কৃষ্টি বেলা পাশা বেলা অতি অলক্ষণ, भाषां (वंटन इ:व भारेन भावत भक्षत ।" হছুমান সরণ শিখান হাতে হাতে. চলন বুলন গভি উল্লফ্ন পাতে। এগোর পেছোর দোঁতে উরুতে চাপড়. ছট হাত বুকেতে গুরুর পারে গড়। চাকার ভাঙরি প্রার বুরে পার পার, আশি হাত লাক দিয়ে গড়াগড়ি যায়। বিজ্ঞমে বিবিধ পাঁচ শিখে হট ভাই। দভে চিবাইয়া ভাঙে লোহার কলাই। নিঙাভিয়া সরিষা মাধার মাধে তেল চাপড়ে ভাঙিল লোহার গাঁচ বেল। বছুক্বিভা অসিবিভা কলক লাঠারি. শিখাল অনেক বিভা কহিতে না পারি। পৰবাজিবিভা আর রবের চালনা. লাউসেন কপুর জোহার পুরিল বাসনা।"

এই উদ্বভাংশে আমরা তথনকার দিনের শুরুগুক্তি, কড়িপাশা প্রভৃতি ধেলার অপকারিতা, নানা প্রকার দৈহিক
ক্সরং ও সেগুলির পরীকা ইত্যাদির নিশুঁত বর্ণনা পাইতেছি ।
প্রথম করেকট পঙ্ক্তিতে দেখি জননী পুত্রকে গুরুর হস্তে
সঁপিরা দিবার কালে তাহাকে শুরুগুক্ত সহতে উপদেশ দিতেহেন। রামারণ মহাভারতে আমরা আন-শুরু ও অত্র-শুরুর বহু
রভাত পাইরাহি; এখানেও মরবিভা ও রণবিভা শিক্ষাদাতা
শুরুর কথা পাওরা পেল। আমরা দেখিলাম, শুরুর নিকট
লাউর্নেন ও কপুর মরবুর, বহুবিভা, অর্থ ও হন্তী চালনা,
র্থচালনা, অলি-ভর চালনা প্রভৃতি বিচিত্র শত্রবিভা শিক্ষা
করিতেহেন।

লাউনেন ও কপ্রনেনের শক্তিমভার কথা সেকালে বেশের নর্ক্রই হড়াইরা পঢ়িয়াছিল। এই হুই ডাইরের বীরত্ব-কাহিনীতে মঙ্গলকার্য পরিপূর্ব। সেকালে ভাটের। নগরে নগরে, পরীতে পরীতে বহুলকাব্যের পহুওলি ত্ব-লরে গান করিয়া বাঙালী যুবক্তরে শক্তিচ্চার উংলাহিত করিত। মুক্তরাম বিরচিত চতীম্বলেভ আনহা ভালকেভুর শক্তিমভার একট চনংভার বর্ণনা পাইতেহি। "সহিবা শতেক ঠেলা হার সদে করে বেলা ভার হর জীবন সংশর, বে কম আঁক্তি বরে আহাতে ধরবী পরে ভরে কেহ নিক্টে না রর।

ইছা হয় বেই দিনে বনে বার বাপ সনে আসে বার জিনিয়া পবনে, ভাজিয়া হরিণ বরে কি কাজ বঞ্ক শরে বিভা হেছু ব্যাব চিত্তে মনে।"

উপরোক্ত ক্ষেক্ট পঙ্কি হইতে আমরা দেখিতে পাইতেহি যে, চতীকাব্যের সময়েও নিয়্মিত শক্তি-চর্চ্চা হইত। পিতৃপিতামহের। বংশবরদের বীরত্ত্বস্কুতক কার্ব্যে কিন্ত্রপ উংসাহিত করিতেন কালকে চূর শীবনকথাই তাহার প্রমাণ। রাচ-বন্ধে বরেক্সভূমিতে যথন বাঙালীর বাহবলে মৃতন মৃতন ব্যাল্য প্রতিষ্ঠিত হয়, তথন হইতে বঙ্গসভানেরা ধনী-দরিদ্র নির্মিশেষে আথভার পিয়া শরীর-চর্চ্চা করিতেন, শল্পবিদ্যা শিক্ষা করিতেন। বাঙালীর বাহু তথন হর্মাল হয় নাই, তাহার হাতে অসি তথন খন বন করিয়া বাক্সিয়া উঠিত। তথনকার দিনে বাংলার ম্বরে ম্বরে বীর-সভানদের আবির্ভাব হুইত।

মনসামদলের একছলে বুদ্ধে লক্ষীক্ষর কি ভাবে প্রচণ্ডকে বন্দী করিয়াছিলেন ভাষা বর্ণিত আছে। বাংলার বণিক-সভানেরা যে রণবিদ্যার পারদর্শী হইতেন, লক্ষীক্ষরের কাহিমী হইতে আমরা ভাষা ভানিতে পারিতেছি। মনসা-ভাসানের কবি বলিতেহেন:

"লক্ষ্য বৃদ্ধ তবে দিল পাছে থাকি বাইরা চলিল বৃদ্ধে বতেক বাহুকী। ভূপতিকে ক্ষিলেক বন্দুক ভরিরা, প্রচণ্ডের সৈভ মব্যে চলিল বাইরা। হাতে অব্ধ করি গৈভ বাইল সম্বর, বোড়ার উপরে চড়ি হাতে বহুংশর। নামা অব্ধে প্রহারিল বৃদ্ধার বৃদ্ধার বাহুত সৈভ করিল কর্মার।

বাংলাদেশের বারভ্ইরাদের মব্যে বছ বীরের বাষ আমরা ইভিছালে পাই। মাহেল্ডেবে, লক্ষণানিকা, টাদ রার, প্রতাপ রার, রুক্ত রার, রামচল্ল রার, সীতারাম রার প্রার্থ ভূইরাদের শোর্য-বীর্ব্যের ক্যা ভূবিভিত। পর্কৃতি ও আরাকানবাসীরা বর্ধন বাংলাদেশে ভ্রাবক উংপাত করিভ তর্ধন ভারাদিনকৈ ব্যান করিবার বভ্রাংলার ভূইরাদের বিশেব বেগ শাইতে ক্ইরাহিল। নে, স্বর বহিঃ-শক্ষর আক্রমণ ক্ইতে কেশ্রকা করিবার বভ হিন্তু ও পাঠাবরা পাশাপাশি ইভিছিল। বহু কর্ভাই করিবাহিল। বাহালী সভনা সংগ্রামনৈপূণ্য বে-কোনও সাবীৰ জাভিত নৈতকের

চবে স্থান হিল না। ভাত্নীয়ার নাজা অভ্যনায়ারণ ও

চংপুল বৃত্তকারারণ পের শাহের পক লইবা বছবার বৃত্ত

চবেন। তাহালের বীরতে বৃত্ত হইবা শের শাহ্ রাজাকে

চচুর জারসীর সান করেন। বৃত্তকারারণের সৈভবাহিনীর

নাজানী সভ্যক্তরালা লাঠিয়াল ও তীরকাজরা হিল ওভাল

বোজা। এ সক্ষালীয়াল, সভ্যকিওয়ালা ও তীরজাজেরা

বনেক সন্বেই বন্দুক্বামীলিগকে প্রাভ ক্রিত।

ভূইরাদের রাজ্যকালে লাঠি বা তলোরানের জোরে রাঙালীরা ছ্র্লান্ড, দল্মানিগকে শারেন্ডা করিত। মেনারাম 
র ধনারামের অনেক বীরন্থের কাহিনী শুনিতে পাওরা 
যার। মেনারাম তংকালীন বাঙালীদের মধ্যে অধিতীর 
বীর ছিলেন। রাজা সীতারাম রার তাঁহাদের আদের করিরা 
'মেনাহাতী' ও 'হামলাবাদ' বলিরা ডাকিতেন। ছুর্গাদাস 
সেন মহাশর তদ্রচিত 'বাংলার সামান্দিক ইতিহাস' গ্রন্থের 
গ্রন্থ ক্র ছানে মেনারামের বীর্থপ্রসঙ্গে লিখিরাছেন:—

"ভূমরাই পরগণার মৃত্যুঞ্জর দৈত্র নামে এক কুলীন রাজ্ঞণ বাস করিতেন। মৈত্রপত্নীর সৌলব্যির প্রশংসা শুনিরা ছুর্গুভেরা তাঁহাকে হবণ করিতে যার। মৃত্যুঞ্জর তাহার সন্ধান পাইরা সীতারামের এলাকার পলারন করিলেন। ছুর্গুভেরা ভূমণার প্রবেশ করিরা মৈত্রপত্নীকে হরণ করিল। মৈত্র সিরা সীতারামের নিকট বরনা দিলেন। সীতারাম আহার করিতে বাইতেছিলেন, তিনি অমনি প্রতিজ্ঞা করিলেন বে, মৈত্রপত্নী উদ্ধার না হওয়া পর্যান্ত তিনি অরন্ধল প্রহণ করিবেন না। মেনা বনা অতি ত্রন্ত সৈত্ত লইরা সিরা পথিমধ্যেই অপহারক-গণকে বিনাশ করিল। নিহত পামরদিপের মুগুরারা মুগুমালা গাঁবিরা কেনারাম ও বনারাম গলার পরিল। রাত্রি ভূতীর প্রহরের সময় মৈত্রপত্নীকে লইরা মেনা-বনা মহল্মবনগরে প্রত্যাগ্রমন ভরিল। মেনা-বনা মৃত্রালা পরিরা সলৈত্বে বিলান বিলার নৃত্য করিতে লাগিল।"

মেনা-বনার অবীনে সে সময় পঁচিশ হাজার হিন্দু ও আট হাজার মুস্লমান সৈভ ছিল। ঐ সকল সৈভের মধ্যে বাঙালী রাজ্য, কারছ, চঙাল, জেলে, জোলা, মাহিয় ও মুস্লমান সম্প্রদারের পাঠান প্রভূতি প্রার সকল জাতির লোক ছিল। তাহাকের মধ্যে কোনম্বল সাম্প্রদারিক ভেদবৃদ্ধি ছিল না। সকলেই রাজা সীতারামের জন্ত প্রাণপণ করিয়া সভাই করিছা। বিরাজকোলা ও মীয়লাসিম, বে-সকল বাঙালী সৈভ লইয়া ইংরেজফিগের সহিত লড়াই করিয়াহিলেন, তাহাকের বীরস্কলাহিলী আজও ইতিহাসের পূঠার উজ্জল হইয়া আছে। ভাষাক্ষর, মোনাহাতী, মব্রার, মোহনলাল প্রভৃতি হাজালী সেনাপভিষিধের পৌর্যা-বীর্যার জন্ম বাঙালী কাজি কর্মাণভিষিধের পার্যার ইংরেজ

বিদের সৈচবাহিনীর মধ্যেও প্রথম প্রথম অনেক বাঙালী। বোডা ছিল।

বাঙালী লৈভেরা বৃহত্তে কিয়ণ অণরাজের হিল তাহার কিলিং নহ্না আমরা 'রহং বলে'র ত্মিকা হইতে এছলে উল্লুত করিরা দিলাম :—"ইতিরান ভারভালের চতুর্ব অব্যারে বিশণ হিবার লিবিরাছেন—বে বৃষ্টনের সৈত লইরা লও ক্লাইত এয়ণ আকর্ব্য সকলতা,লাভ করিরাহিলেন, তাহানের অবিকাংশই বাঙালী হিল—That little army with which Clive did such wonders was raived chiefly from Bengal·····" ১৮৭২ বীর্টাকে ঐতিহাসিক বন্টন লিবিরাছিলে—"বাঙালীরা বহু রণক্ষেত্রে প্রমাণ করিরাছে বে তাহারা সাহসিকতার মুরোশীর সৈত্ত্বের অপেকা কোন অংশে ব্যুম্মনহে।" ওরাল্টার হামিন্টন লিবিরাছেন—"আমানের ভারতীর মুহসবৃহ্বের ইতিহাসের আদিপর্ক্ষে আমানের বহু সেনাবাহিনী প্রবানতঃ বাঙালী সৈত্ত্বের লইরাই গঠিত হইরাছিল এবং বুছে তাহারা যথেই সাহস ও ক্লেড দেখাইরাছিল।"

তবনকার দিনে অর্বের ছারা সকল সময়ে অমিদারী কর করা যাইত না। নবাব-সরকার বা খাবীন ভূঁইয়াদের দরবারে চাকুরী কিখা ভাকাতি এই ছুইট উপায়ে সহকে কমিদারীর যালিক হওরা যাইত। বাংলার ভমিলারদিলের মধ্যে অনেভেট শেষোক্ত পছা অবলহন করিয়াছিলেন। ভাকাত-সর্বার বেশীমাৰৰ রায়ের অনেক বীরত্ব ও ছঃসাহসের কাছিনী শুনিতে পাওৱা যায়। সংছত ভাষার দখল বাভাষ সকলে বেণীয়াধবকে 'পণ্ডিত ডাকাভ' বলিয়া ডাকিভেন। ক্ৰিড আহে ভাঁহার খ্রীকে ছ্বুডেরা চুরি ক্রার ডিনি সংসারের উপর বিরূপ হইয়া উঠেন এবং শেষে ভাভাতি আরম্ভ করেন। তিনি উত্তরকে 'চলন বিল' নামক একট বিলের মধ্যে এক দীপে আশ্রর লইয়া একট ডাকাভের দল গঠন করেন। সেধানে তিনি একট কালীবৃত্তি ছাপন कतिशाहित्सन। विधिन्न शांन स्टेट्ड इव धरमन बतिशा আনিরা সেই কালীর সন্মধে বলি বিরা মুতদেহগুলিকে ভিনি চলনবিলের মধ্যে ফেলিয়া দিভেন। হিন্দুরা আবিও ঐ चानकेटक शिष्ट काकारण्य किर्टे अवर यूजनमारमया नेप्रणात्मय **चिटि वटन। दानीमानटाइ छटा हिन्न-ब्रमनमान नकटानरे** সম্ভ বাকিত। ভাষার ভাকাতদলকে দমন করিতে গিয়া वायमारी क्षेत्र एववान एरेवा পण्डिवादिल।

বেদী রারের আর একট বৈশিষ্ট্য হিল এই বে, তিনি পতিত হিন্দুদের আশ্রয় দিরা হথকে টানিরা আনিতেন। বাঁহারা বিপকে পড়িরা বর্ষান্তর এহন করিত, তাঁহাদের তিনি সাদরে এহন করিতেন। তাঁহার হলে বহু পতিত হিন্দু ও মুসলমান, আশ্রয় পাইরাহিল। সকল ধর্মের প্রতি তাঁহার শ্রমা হিল। ক্ষিত আহে বে, তব্দকার হিবে আসার প্রবেশে বর্ষান্তরিত- বের এক অভিনৰ উপারে পুনরার হিন্দুবর্ষে দীক্তি করা হইত। হুর্গাদাস নিবিতেহেন—"আসারে রাজন ও রাজবংশী ভির হিন্দুর অভ বিভাগ নাই। একত তথার ভিরবর্গীবিগকে হিন্দুবর্ষে দীক্তিত করিবার প্রধা বরাবর প্রচলিত আহে। এবানে ভিরবর্গীর লোক্ষিগকে হিন্দু করিবার রীতি এই বে, রাজন কিলা অধিকারীর উপদেশনত তক্ত করেকবার 'হরি-বোল' 'হরিবোল' বনিরা গোবর-কলে লান করে। তারগর নাটতে পড়িরা দেববিপ্রহ প্রণান করিবা নির্মাণ্য নাবার লইবা দেবতার প্রসাদ ও চরণায়ত সেবন করিলেই বিশুদ্ধ অবাং রাজবংশী হয়।" বলা বাজনা, বেণী রায়ও এই পছা অবলয়ন করিবা অনেক ববর্শন্যত হিন্দুকে উভার করিবা-ছিলেন।

বাঙালীর শারীরিক বল ও অন্তচালনার নৈপুণ্যের কথা বলিরাছি। এবার বাঙালীরা কামান দাগিতে ও জাহাজ চালাইতে কিরণ কক ছিল সেই সহছে ছই চারিট কথা বলিব। সেকালে প্রত্যেক বড় বড় ভূঁইরারই ছর্গমবো প্রচুর দেশী কামান রাখা হইত। জ্রীপুর, ঢাকা, মুশিলাবাদ, বিকুপুর প্রভৃতি স্থানে কামান নির্দ্ধাণের বিরাট কারখানা ছিল। সাগরবীপ, কাহাজবাটা, ধুমবাট, চহজী, হবলা, জ্রীপুর প্রভৃতি স্থানে কামান তৈরারী ও মেরামত হইত। সন্দীপে নৌশন্তির একট বড় আজ্ঞা ছিল। মোগলেরা দৌরারা পোষণের জড় কড়কগুলি বতর ভারনীর রাখিতেন। ঢাকা সমন্ত বাংলার মৌরারার প্রধান কেন্ত ছিল। ঢাকা ছালা সমন্ত বাংলার মৌরারার প্রধান কেন্ত ছিল। ঢাকা ছালা হগলী, বশোহর প্রভৃতি স্থানেও নৌনির্দ্ধাণ চলিত। সৌড, সর্ব্ব্রাম, চইব্রাম প্রভৃতি স্থানে বড় বড় বন্দরও ছিল। সেই সকল বন্দরে বহু বাঙালী নৌরারার নানা সেরেভার হক্তার সহিত কাল করিতেন।

ভূঁইরারা আবার নানা আকারের নোরারা রাধিতেন।
কার্জুন, কোশা, করা, রাব, পরিন্দা, বালান, কাতার প্রভৃতি
বন্ধ বন্ধ নোকা ও কাহাক সর্বদা প্রকৃত রাবিতেন। লক্ষণনাপিক্যের রাজহুকালে আরাকানের মধেরা প্রারই বলোপসাসরের বারে বারে সূঠতরাক করিতে আসিত। লক্ষণরাধিক্যকে তাহাবের সহিত বহুবার জলপথে লভাই করিতে
হইরাহিল। প্রতাপাধিত্যের প্রবেগ্য সেনাপতি শুলর চক্রবর্তী
এবং প্রাকৃত্তের বীরজের কাহিনীও প্রবিহত।

সেকালে বাংলাবেশে বিভাচর্চা অপেকা বৈহিক শক্তিচর্চার
বৃদ্য কম হিল না। কবিত আহে বে, সাঁভোডের নাবালক
রাজা রাজেজনারারণকে সকল রকম শক্তিচর্চার পারবর্শী
করিবার বভ বেওরান গোক্লচক্র প্রাণপন চেটা করিতেন।
ভিনি রাজপুরকে শ্রহকার হৃষক করিবার ভার সেনাপতি
ভাষভার বাঁর উপর অর্থন করেন। ভারভার রাজপুরক্রে অভিব্যরহের কবিত শিকা বিতে বাকেন। করে তিনি অভকার-

बरवारे कृष्टि, बह्ममाना रेखावित्व वित्वव शाहक्यी रहेश উঠেব। ভূইরাদের রাজদ্বের একশত দেড়শত বংসর পরেও वांक्रामीरमद बर्रा कृष्टिहर्का किञ्चन रहेल लाहाद अकृष्टे बहुना আমলা এবুক অভেজনাপু বন্যোপাধ্যার সম্বিত সংবাদপত্তে সেকালের কৰা' হইতে এ ছলে 'উছত করিরা দিলাম।---"১৯ অঞ্চারণ ১২৪৩, এইজ দর্শণ প্রকাশক মহাশর नबीरभद्र । विविक्ष विमन्न भूतः नत निर्वयन-निवर । जरविष শহর কলিকাভার সন্থিহিত তভাদীরশীর পশ্চিম ভীরবর্তী বালি নামক প্রাবে অভিনব ক্রৈক কুন্তিপীর মহেশচন্ত্র চটোপাধ্যায় নামক বাঁহার ভোজনের বভাভ ইহার পর্কে প্রাবণ মাসীয় চক্রিকা ও পূর্ণচক্রোদয় পত্র প্রভৃতিতে উত্তমন্ত্রণে প্রকটিত হইয়াছিল। তিনি যেল্প ঐ কুভিপীর বিভার নিপুণ হইয়াছেন তছিল্ডর বর্ণন বাহল্য যে ঠিক কিছ এভদ্রপ বলবান গুণজ ব্যক্তিকে সর্বসাধারণকে বিশেষ এ সকল বিভাতে স্থপতিত অনগণকে জাত করা অবস্ত কর্ত্তব্য। অস্থাদির বোৰ হয় যে এতং প্ৰৱেশহ খতি বিখ্যাত ৱাৰাগোয়ালা ও ভাছার পুত্রহয় এবং আর আর বিলক্ষণ বলবান ও বাঁছারা এমত কৃত্তিশীর কার্য্যে প্রকৃত দক্ষ এমত ব্যক্তিদিগকেও তিনি সম্পূৰ্ণব্ৰপে পৱান্তৰ কৱিৱা হুই তিন বংসৱ পৰ্যান্ত শিক্ষা দিতে পারেন এবং যেকল কর্ম বিবেয় তাহা তিনি প্রকারেশে অবগত আছেন। এইকণে যে কেছ উক্ত বিভা শিকা করিতে এথবা এত্রবিষয়ে কোন বিশেষ উপদেশ লইতে প্রার্থনা রাখেন তবে তিনি ঐ নবীন কৃতিপীর চটোপাধ্যার মহাশরের নিকট গমন ক্রিলে অথবা লিপি প্রেরণ ক্রিলে অবস্থ তাবছ ছাড়াব-পত হইতে পারিবেন। এবং এতমহানুগরত্ব ভাবদৈর্ঘর্যালী মহাশরদিগের অস্বাধির বিনয়পূর্বক নিবেদন এই যে কোন महानद्य चौद्यः विद्वारदय नवृत्वनिष्ठं ७ क्चिनैद वाकिमिनटक बात्रभारमञ्जू कार्र्स्य मिन्न वाश्विवारकन वक्ष्मि छाज्ञाविष्टभव বারা ঐ পূর্ব্বোক্ত নবীন কৃতিপর চটোপাব্যার মহাশরের পরীকা লইতে মনছ করেন তবে অপুগ্রহপূর্বক ঐ বালি প্রায়ের দক্ষিণ পরীয় চক্রবর্তী মহাপরের নিকট লিপি প্রেরণ করিলে আমরা অত্যন্ত বাবিত হইরা ঐ কৃতিদীর মহাবল পরাক্তয়কে তংক্ষণাং তরহাশয়ের স্থীপত করিব। অভএব হে সম্পাদক মহাশর আপনি অভুগ্রহপূর্বক এই বার্ছা দর্শনে অৰ্পণ কৰিবা বাৰিত কৰিবেন। ইতি-ক্ছচিং বালি নিবাসী विकायित्रवृष्ट त्रव्यन नगनार।"

নেকালে বাংলাদেশে বীরাদনার অভাব হিল না। এক সমর রাবী অবশক্ষরীর ভার মহীরদী মহিলা এই বাংলাদেশেই অবগ্রহণ করিরাহিলেন। অবশক্ষরী পুরুবদিশের ন্যার্ বীতিরত শক্তিচর্চা ও ব্রবিভার অক্সীলন করিতেন। তিনি অনি-ক্রীড়া করিভেন, তর ও তীর প্লুডিডেন এবং অহাজোহনে প্রক্ হিলেন। বাংলার এই বীরাক্ষা পাঠার নেকাপতি প্লন্মানের গৃহিত সন্ধার্তে বে বীরম একাশ করেন তাহাতে রাজা মানসিংহ ধুবী হইরা ভাহাকে নানা উপচৌকনাদি প্রকান করেন।

তথনকার দিনে বাংলাদেশে সাধারণ গৃহত্বের বেরেরাও বিভিন্নকা করিতেন। কাঁহারা বে আবজার সিরা লাট-বেলা অসিক্রীড়া ভর ও তীর নিক্ষেপ প্রভৃতি শিবিতেন তাহার ববেই নজির আছে। আনরা পাঠক-পাটজাদের কৌতৃহল নিবারণার্বে 'সংবাদপত্রে সেকালের কথা' হইতে করেক পংজি প্রহুতে উদ্ধৃত করিরা দিলান।—২৬ চৈত্র, ১২৩০। কৃতি লড়াই। সংপ্রতি নোং পাভরিরাঘাটা নিবাসী জীল জীবুক্ত দেওরান নজলাল ঠাকুরের বাটার সম্মুবে প্রত্যহ বৈকালে বালিকা প্রভৃতির মর্মুক্ত হইবা থাকে। তাহাতে ভত্রহ বালালির বালক প্রভৃতি হই ২ জন এক ২ বার মর্মুক্ত করিয়া থাকে। বিশেষতঃ বালিকাদিগের মুক্ত সন্ধানে কে না আক্রাদিত হন ? কিন্তু যত লোক সেধানে কৃত্তি করিতে আইনে তাহারা পরাজর হইলে গওগোল করিবার উভোগ করে; কিন্তু বেওরানজি নহাশরের শাসনেতে কেন্তু কোন বিবাহ করিতে পারে না।"

সেকালের বাংলার মেরেরা যে কিন্তুপ সাহসী ও প্রত্যুৎ-পরমতিষসম্পর হিলেন তাহার নিমর্শনহরূপ 'সংবাদ পত্রে সেকালের কথা' হইতে একট ঘটনা উরেধ করিতেহি—বী-

লোকের সাহস। কলিকাতা পূর্ব-দক্ষিণ বাধাবনের অভঃপাতী জন্তবস্থান নিকট চৌরম্ভন নামে এক ছান আছে সেধাৰে অধিক লোকের বসতি নাই, কেবল অভিশয় বন এবং ব্যাল-ভীতিও অভিনয়। এক গৃহছের মী নব প্রস্তা, ভারার বারী প্রাতকালে কর্মান্তরে গেলে ঐ স্ত্রী আপন গুড়ের পিড়াতে অরি कविता दांव मक्टबर्ट निवा वानक नरेवा बाकिन। अक প্রহরের সময় এক ব্যাস আসিরা ঐ গৃহ প্রবেশের উইভাগে গৃহের চতুর্হিকে°অমণ করিতে লাগিল। ঐ দ্বীলোক ব্যাহের ঐ সকল উভোগ দেবিয়া নানারণ ভাবিতে বিশেষতঃ এ সময় যদি আপন স্বামী আদে তবে তাহাকে এই ব্যায় ভক্ষৰ ক্রিবে এই রূপ নানা চিন্তা ক্রিতেছে ইত্যবসর্বে ব্যাত্র কোন मिर्ल बार मा शहिशा लक्ष मिश्रा शिकांत होटल छैडिहा होटलब **पण উद्यारिया यश्किमिश धात कतिया पूर्व मिन । किन्छ पूर्व ब्यटनम्** र्रेन ना। পরে পশ্চাতের ছুই পাও লাঙ্ল অঞে দিল এই সময় এ ত্রী জীবন আলা ত্যার করিরা আপন নিকটছ পিত নিবারক কাঁথার এক ভাগে অরি প্রথনিত করিবা অলে অলে ব্যাত্রের মার্গেডে ধরিল। তবন ব্যাদ্র ব্যক্ত হইরা পুনরুখার্নের চেষ্টা করিতে লাগিল কিছ দশ আমা শরীর নিরালছবে দোহল্যমান হওৱাতে উবানে সমর্থ হইল না। পরে প্রলয়-কালীন পৰ্কনতুল্য বার বার বৃহৎ শব্দ করিতে লাগিল ইহাতে প্ৰামন্থ লোকেৱা ভীত হইৱা হ'ব গুহের হার বন্ধ করিয়া গৃহ



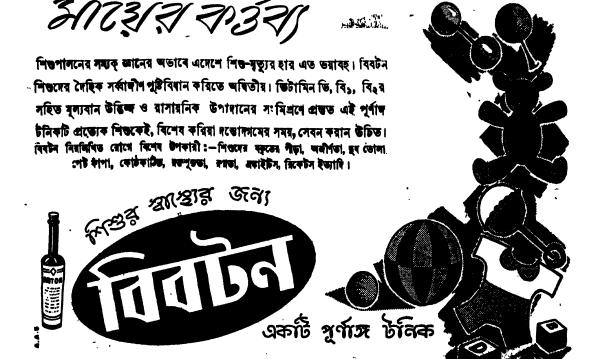
কল দি য়া গা ফো ফো ন কোং লিঃ কলিকাতা • বোদ্বাই • দিল্লী • নায়ের • করাটী মব্যে বাকিল। ঐ লী ক্লমে ক্লমে গৃহ বাহ না হয় কেবল ব্যান বৰ হয় এইলপ অনি আলাইতে লাগিল। কিছুকাল প্ৰে ব্যান নিঃশব্দ হইলা আগত্যাগ কৰিল হুই বকী প্ৰে নানহলোক গৃহ হইতে বাহিন্ন হইলা চতুৰ্কিকে অবলোকন কৰিলা গাঁচ সাত বল ক্লম একল হইলা ক্লমে ক্লমে ঐ হানে আগিলা বিশেষ দেখিল। সে সময় ঐ লীন বামীও আইল প্ৰে ব্যানকে চাল হইতে নামাইলা গ্ৰে নিক্লেপ কৰিল।" ল্যাচান দ্বৰ্ণ, ২না মাৰ্চ, ১৮২২।

শ্রীবোদেশচক্র বাগল সঙ্গলিত "ভারতবর্ধের স্বাধীনতা ও অভাভ প্রসদ" শীর্ধক পুতকে শতাধিক বংগর পূর্ব্বেকার বাঙালীদের সাহস ও বীরম্ব সম্বন্ধে এইরপ উল্লেখ পাই-ভেছি—

"পঞ্চাশ বংসর পূর্বের বাঙালীরা এত র্বেল হিল না, রক্তপাত দেবিলে তাহাদের বৃদ্ধা হইত না, শক্রর নাম তনিলে
আত্তর উপস্থিত হইত না, প্রামে প্রামে ব্যারাম-চর্চার
স্থান হিল, প্রামে প্রামে একজন বিব্যাত সর্থার হিল,
ভক্রলোকেরা পালোরান আব্যা প্রহণ ক্রিতে লক্ষিত হইত
লা। ক্যার ক্থার লাঠালাঠি হইত ও বাবা ভালাভালি প্রবং

হত্তপদ আৱাৰত বারা ক্ষত-বিক্ষত হওৱা লোকের বিক্ষ তত গুলুতর বিবর বলিরা বোব হইত লা। প্রতি রাবে অনু অত্য সকলে এক্সিড হইরা লাটি, তরবার, বরুষ প্রকৃতি বেলা শিবিত। হশ ক্ষম এক্সিড হইলে কেবল ঐ গল্প ঐ ক্যা হইত। সকলের গৃহে ছই চারবানি তরবার, দশ-বার-গাহা বরুষ থাকিত, বাজীর এক্ষম লা এক্ষম লাটি তলোরার বা বরুষ থেলিতে জানিতেন। ইংরেজদিগের কঠোর শাসনে এ দেশের সে- তাব অভ্যতিত হইরাতে কিছ তবন সবাকে বে জীবনী-শক্তি ছিল সেটা সেই সক্ষে সক্ষে গিরাতে— অন্ত বাজার প্রিকা, ৫ ডিসেলর ১৮৭২।

ইদানীং আমরা রাষ্ট্রীর আত্মকর্তৃত্ব লাভ করিবাছি। এ অধিকার রক্ষা করিতে হইলে বে সমন্ত বিষয়ে আমাদের বিশেষভাবে অবহিত হওরা প্রবোধন শক্তিচর্চা তাহাদের অভতম। দৈহিক ও মানসিক উভরবিধ শক্তিতে শক্তিমান না হইলে আমরা পৃথিবীর অভাভ পরাক্রমশালী ভাতিসমূহের সহিত প্রতিদ্যভাৱ পিছু হটরা বাইব। আমাদের সর্কাদাই মনে রাধিতে হইবে যে, বাবীপতা পাওরা যত ক্টিন, তাহা রক্ষা করা ততোধিক চরহ।



লিষ্টার এটিসেপটিকস্ • কলিকাতা

# চৈত্ত্যপূৰ্ব যুগের বৈষ্ণৰ কাব্য-কথা

# এরবীন চৌধুরী

(3)

সাহিত্যের ইতিহাস বারা পঞ্জেন, এটা ভাঁদের চোধে পড়বেই যে, প্রাচীন আমলে পৃথিবীর প্রায় সবক্ষট দেশেই ধর্ম ও সাহিত্য যমৰ ভাই-বোনের মত একই সলে বেড়ে উঠেছে। পেরিক্লীস যুগের ঞীক কাব্য-নাটক, প্রাচীন ভারতের বৈদিক সাহিত্য, প্ৰাকৃ-চতুৰ্দশ শতকের ইংরেদী কাব্য-কথা---কোপাও এর ব্যতিক্রম বটে নি। ভাপানী সাহিত্যও গড়ে উঠেছিল একদিন সিক্টো বর্দ্ধকে কেন্দ্র করে। পাল, সেন ও চৈতভপূর্ব্ব যুগের আমাদের প্রাচীন বাংলা-সাহিত্যের ভিত্তিও তৈরী হ'ল সংক্ষাৰ বৌষ, হিন্দু আর আর্থ্য, অনার্যা মিশ্রণে উদ্ভূত যত लोकिक प्रवरमवीएम्ब हेर्ड-कार्ड-भाषद पिरद । हवा ७ वोच-দোহাবলীতে সহক্ষান মতের ছাপ, অনার্য চরিত্রের মচল-कांवाशिमाण (महे हडी-मनना ठीकक्षणाव विवास विमश्वास, বৰ্ম-ঠাকুৱের মাহাত্মা--লৌকিক দেবতাদের কত কীৰ্ত্তি, কত কাহিনী লিপিবছ। ভার সমুত্রবং হিন্দুবর্শ্বকে নিয়ে যেসব হভা, গাখা, কাব্য, পুরাণ লেখা হয়েছে, তাদের সংখ্যা সমুদ্রের টেউন্নের মত বললেও অত্যক্তি হবে না।

न जून व हे

ই শেৰিৱাম চজৰভীৱ বি**চা**ঠিমিকৈ কেএমি বি

শিবরামবাবর অনেক গল, কবিতা, হাসির কবিতা
ও রসরচনা একত্র করে এইমাত্র বেরুলো। বাংলা
ভাষার এই ধরণের 'ওম্নিবাস' বই এই প্রথম।
বিচিত্রে রসের লেখা—বিখ্যাত শিল্পী শৈলবাব্র
কাটু নে বিচিত্রিভ—প্রচুর হাসি আর আনন্দের
পরিবেশ। লেখার সংখ্যা সবস্তম চুয়ান্তর—এর কোনো
লেখাই লেখকের আগের বইরের সংকলিত নয়—
গ্রহাকারে এই প্রথম প্রকাশ। অজ্প্র ছবি, (মোট
ভংগানা), শোভন সালসক্ষার বিপুল আয়তনের
বই—লাম মাত্র সাড়ে চার টাকা।

क ना त 👁 ए, महत वाय

বিশাল ঘট-মাথা বটগাছকে কেন্দ্র করে বীরে বীরে বেষন পাখীদের নীছের রচনা চলে, পুরাকালে বর্দ্ধকে অবলয়ন করে ভেমনি গুড়ে উঠেছিল সাহিত্য। বর্দ্ধের আলবাল বেকে রস আকর্ষণ করে আন্তম-সভ্কারের মত সে লাভ করেছিল শ্রামন্ত্রী। এর কারণটাও সোজা। সে মুগটা হিল বর্দ্ধের মুগ, সমাজের মুধ্য চেতনা ছিল বর্দ্ধ-চেতনা। স্তরাং সে আমলের কাব্য-কলা হ'ল বর্দ্ধন্থী।

একথা সকলেই মানেন বে, যা আমি তাবি, অহুতব করি, তারই রুণারণ আমার কাব্যে আমার সাহিত্যে। আবার আমার কথা হচ্ছে, আমার সময়ের কথা, আমার দেশের কথা—ছান ও কাল হতে আমি বিচ্ছির নই। স্বতরাং সাহিত্যের সঙ্গে সরাজের বোগ মারের সঙ্গে ছেলের যোগের মত, একেবারে নাডীতে নাডীতে। আর সেকালের সাহিত্যাবাসর তাই ভাঁকিরে বসেছে—বর্ষ।

ঠিক এই কারণে করদেবের বীত-গোবিক্ষের সময় কেনেও যদি কেউ মনে করেন যে, পঞ্চদশ শতক-পূর্ব্ব প্রাচীন বাংলার বৈক্ষব বর্ষ হিল না, তবে আমরা তার বৃদ্ধির প্রশংসা করতে

त्री छा र्म

नि

4

व क्य (ठ न) विषय गांश!

আহারে-বিহারেই বন্ধুর পরিচয়, বন্ধুছের পরাকার্চা কেউ কেউ বলেন। আবার কারো কারো মতে, হাড়ে হাড়েই নাকি চেনা যায় বন্ধুদের। মোটের উপর বন্ধুর পথ সর্বাছাই বন্ধুর—বেমন মলার তেমনিই মলানোর; শিবরামবাবু এই বইয়ে ইছুলের থেকে সাহিত্যকুলের—তার সব রক্মের বন্ধুর গল্লই বলেছেন—তার মধ্যে রাজা-মহারাজা, রাজহত্তী, মিজিমজুর, CALL-কারখানার কারিগর, বীমার দালাল, পক্টেমার কেউ বাদ নেই। ছোটদের অভে বইটি লেখা হলেও, হাসতে মানা না থাকলে বড়দের পড়তে কোনো বাধা নেই। দাম দেড় টাকা মাত্র।

लाय लाब, क लाका छ। —

পারব না। সাহিত্য বলি সমান-রক্তের অম্বত-কল হর, তবে চৈতকের আগে বৈক্ব সাহিত্যের রচনা হরে থাকলে, মানতেই হবে বাংলার সমান-মণীতে তথন বৈক্বতার প্রবাহ হিলই। আবকের মত লাথ লাথ মন্দির না উঠলেও, সেকালের সমান-চত্তরে শানবাধানো হু-চারটে ক্তুক-মন্দির দেখা বেতই।

আর আসলে হরেও হিল তাই। সেদিনের ধর্ণাশ্রমী সাহিত্যের বেশ মোটা একটা অংশ রাধাক্তকের লীলা-কীর্ত্তনে মুধরিত হরেছে। কৈন্ত ক্ষলীলা বাংলার যাটতে এল কি ভাবে, হুডাল দেশের নগরে পল্লীতে—দিগভচ্বিত প্রান্তরে, উঠল একে একে তার দেবারতন, এসব কথা না ভাননে ঐ শ্রেণীর সাহিত্য-রচনার হেছু বোঝা যাবে না। আপে আমরা তাই ক্ষলীলার একটা সংক্ষিপ্ত বিবরণ দিয়ে তার পর বৈক্ষব-লেখার হোট এক কিরিভি দেব।

( २ )

जकरनरे बादनन উত্তর-ভারতেই বৈষ্ণবদের তীৰ মধুরা, বুন্দাবন। রাধাত্বকের যত শীলা ওধানকারই যুমুনাতটে, ষমুনা-জলে, পর্বতের পাদদেশে, জরণ্যে। একথা জানেন বলেই তারা মনে করেন, বৈষ্ণব-ধর্মের উদ্ভবও বৃধি ঐ ভূখতে। কিছ উক্ত ধর্মের উৎস বোধ হয়,ওখানে নয়। পরপুরাণে নারদ-**ৰ্ষির কাছে বুবভী ভক্তি বলছেন যে, দ্রাবিভেই ভার কর**। মহারাষ্ট্র, শুর্কর প্রভৃতি দেশ বুরে তিনি দ্বীণা ও বভিভাদী र्षाहरतन, किन्द तृत्रांतरनत कृषि व्यर्गमांत किरत शासन আবার নববৌৰন। ভাগৰত লেবারও আবে দান্দিণাত্যে আলওয়ার সম্প্রদায় বৈষ্ণবদের মতই জ্ঞানমার্গ ছেড়ে প্রপতিমার্গ আশ্রর করেছিলেন। তারা নামগান করতেন, নায়িকাভাবে মধুর ভাবের উপাসনা করতেন আর উপাসনাকালে দেহে তাঁদের সান্তিক ভাবের উদ্বেষ হ'ত। তামিল ভাষায় যে সব **ক্**বিতা এ দৈর রয়েছে, বৈষ্ণব-কাব্যের ভারা নিকট-আত্মীর। ভাগৰতও বোৰ হয় ওবামেই লেবা হয়ে বাকৰে: দক্ষিণা-পৰের নদী-গিরি-বনের যে পাই ছবি ওতে রয়েছে, ভাতে একধাই মধে হয়। ভাগৰত সম্পর্কে কারকুহার সাহেবেরও

गकः घटन रामग्रा विनविधान पदन वरे विज्ञन

বে কোনও প্রকারের এবং বিভিন্ন প্রকাশকের নাটক, নভেল, ধর্মপ্রইছ, অবণকাহিনী, ব্যবদার বাণিজা, চিকিৎসা ও আইনের প্রকাদি, কুল-কলেকের ও উপাহারের কম্ম বে কোনও ভাবার বেশীও বিনাতী ভাল ভাল পুত্তক আনরা সুবাই কলিকাভার করে সন্থর সরবরাহ করিয়া থাকি। লিখিলে লাইরেরী ও উপাহারের ক্ষম্ম নামাবিব মৃতন সুত্তন পুত্তকের সভান বিনাবুলো নিই। অর্ডারের সফিড বুলোর অর্জাণে বিলেই সবত্ত পুত্তক ভিঃ পিঃতে পাঠান হর। পাাকিং, সরবরাহ ও ভাকবাতেল বতর। লিগুর ঃ

কুপু পাত্তিসিটি সোসাইটা অব ইণ্ডিয়া (পাত্তিকেশন এও বুক-সেনিং ডিগাটনেই) ১৪০নং আমলাই ট্লিট কনিকাডা--- এই মত। ( অধ্যাপক বলেক্সনাথ মিত্র প্রীকৃকবিজর প্রছের ভূমিকার ও বিষয়ে বিভারিত আলোচনা করেছেন)। মোট কথা, বেখানেই ঐ তক্তিবর্শের উত্তর হোক, বিব্যের দক্ষিণ-পারের পূর্বা-পশ্চিমঘাট পর্বাতমালার দেশেই হোক বা উভরের গলা-যমুনা-সরহতীর সমতলবতেই হোক, বাংলার তা এসেছে আর্বাবর্ভ বেকে। পকোপাসক আর্বোরা বেদিন পা দিলেন এদেশে—শৈব, শাক্ত, সৌর, গাণপত্য বর্ষমতের মত বৈক্ষবতাও এল বাংলার।

আর্হোরা কবে প্রথম আমাদের বাংলার পলিমাটতে এলেন হর বাঁৰভে, তা ঠিক বলা যার মা। অব্যাপক সুকুমার সেন লিখেছেন, "কোন সময় খেকে বাংলাদেশে আর্থাদের বসতি আরম্ভ হয়, তা ঠিক করে বলা শক্ত। তবে মৌর্ব্য সমাটদের শাসনকালে অর্থাং মিটপুর্ব্ধ তৃতীয়-চতুর্থ শতাব্দীতে যে অন্ততঃ উত্তরবঙ্গে আর্ব্যদের উপনিবেশ ছিল ভার নিশ্চিত প্রমাণ পাওয়া গেছে।" (প্রাচীন বাংলা ও বাঙালী)। এপ্রিয় চতুৰ শতকে যে বৈষ্ণব-ধৰ্ম বহুসমাজে প্ৰতিষ্ঠিত হিল, তা বোৰা যায় এ শতাৰীয় শিলালিপি বেকে। বাঁকুড়া জেলার ভঙ্মিরা পাহাড়ের লিপিতে দেখি, পুছরগড়-অধিপতি চক্রবর্ম। নিকেকে চক্রবামীর (বিষ্ণুর) দাসাত্দাস বলছেন। তার পর শুপ্ত আমলেও বৈক্ষবভার ক্ষমভ্যা বেকেছে। পর্ম-ভাগবত গুপ্ত সম্রাটরা বাংলার দেবারতনে অনেকগুলি বিষ্ণু-মন্দির যোগ করেছেন। কিছ এ আমল পর্যন্ত চলেছে যেন শিবহীন ্যজ্ঞ। যে কৃষ্ণকৈ কেন্দ্ৰ করে পরবর্ত্তী কালে বৈষ্ণৰ ধর্মের বিভার হ'ল আকাশের মত-ভার যে আকাশের নীল চক্রা-তপ যিরে অসংখ্য নক্ষত্তের মত কুটল অসংখ্য কবিতা, এটার পঞ্চ শতক পৰ্যাপ্ত সে ক্ৰফের পূকা হয় নি বৈকৰ দেউলে, চালোয়ার নীচে কথকতা চলে নি তার দীলা-কাহিনীর।

অনেকের হরত সংশব জাগতে পারে এই তেবে বে কৃষ্ণ ত বিক্রই নাবাছর। কিছ কৃষ্ণ আর বিক্রম মধ্যে বৈক্রেরা বিভিন্নতা দেবেন। তাঁলের মতে পূর্ণব্রহ্ম সনাতন কৃষ্ণের অংশমাত্র বিক্র্ তাঁর বহু অবতারের অভতন্য অবতার। অব্যাপক প্রবোধচন্দ্র বাগচীর মতে ( ঢাকা বিশ্ববিভালর প্রকাশিত History of Bengal-এর ১ন বতের ক্রেরাদশ্য অধ্যার ক্রইব্য) গুপ্ত আমলের বিক্—বৈদিক বিক্ ও পাক্ষরাব্রদের নারারণের সমন্বর, ভাগবতাক্ত কৃষ্ণের নতে তাঁর বিরাট পার্থক্য।

कृष्णांत प्रवाण एत्रण एतिहण ७६ मणानीत्ल, कांत्रण भागान्त्रत तांताकृत्कत त्य त्र्वाण् वांतिकण एत्तर णात्र ज्ञान नव्य मण्य । व्याणिक वांतिकण और वृष्ण । (History of Bengal-अ ७६ व्याप्त कहेता) ज्ञान प्रवासक्षय Fastifi and Movement और व्याणिक प्रवासक्षय व्याणिक प्रवासक्षय व्याप्त व

ভাগবভের ভক্তিবর্দ্ধ পুষ্টলাভ করে বাংলার, গুণ্ড-আমলে কৃষ্ণ-প্লার প্রচলন ছিল না। কৃষ্ণ-প্লার আরম্ভ-ভালটা পিছিরে গেলেও সুন্দিলাবুর অন্থানটা নিছক "প্রভুতান্তিক" মনে হর না, কিছ বারা বলেন এদেশে, কর্ণদেব ও কর্ণাটগণ ভক্তি-বর্শের প্রবর্জন করেন তাঁলের একবা বলবার কারণ কি, ঐক বুবা বার না।

সে যাই হোক, এই কৃষ্ণীলার পতিপথে বাধা স্ট্রী করে-পৌরাণিক ঐরাবতের মত আর দাঁড়াতে পারল মা কোন ৱাৰ-বংশ, কোন বাছবর্ম। সপ্তম শতকে হিউৱেন সাং যে ত্রাহ্মণ্যধর্মকে প্রবলতর দেখেছিলেন, বৌদ্ধ পাল ভামলেও ভারা ধারা ব্যাহত হ'ল মা ছটো কারণে। প্রথমত: পাল সমাট্রা বৌদ হ'লেও হিন্দুবর্দ্মের পুঠপোষকতা করতেন। গৌড়-বলের শেষ পাল সমাটু রাম্পালদেবও ভারুবীনীরে বিষ্ণুপদ ব্যান করতে করভেই দেহভ্যার করেছিলেন। আর विश्रीय कांत्रपंठी एटम्स--- वर्षाकलट्ट वक्टलट्टा किंद्रकाणीन খনাসক্তি। এই বাংলায় কোনকালে ধর্ম নিয়ে Crusade বা (জহাদ চলে নি। ভিজেট মিধ বলেছেন বটে যে, সপ্তম শতান্দীতে শৈব শশাঙ্ক বোৰিক্ৰম ধ্বংগ করেছিলেন এক मिन, किन अन्नकम पृष्ठीच तक त्वी (ठार्ट भएक ना। महेरण যে বৌদ্ধর্ম আইন শতকেই উত্তর-ভারত হতে প্রায় নিশ্চিক হয়ে গেল, ছিন্দু সেনৱাকাদের যুগ পার হয়ে বাংলার সমাক আঁকড়ে তা চৌহ শতক পৰ্যায় টকে থাকতে পাৱত না।

সাত শ পঞ্চাশ হতে বার শ পর্বান্ত বছদেশের ইতিহাস ত হিন্দুবর্দ্ধের জ্বোন্নতির ইতিহাস, জার হিন্দু-দেবগণের মধ্যে ফুন্ফের প্রাধান্তলাভের ইতিক্থা। এই সাড়ে চার শ বংসরের যে মৃষ্টিগুলি পাওরা গেছে, সেগুলি একথার পোষকভাই ক্রবে।

পাল আমলের পর বে সেন-বংশ ত্রুক্ত হ'ল, সে বংশের সমাট্গণের অনেকেই ছিলেন বৈক্ষবমতাপ্রারী। আর বর্ষণ রালারা ত প্রার সকলেই বৈক্ষব ছিলেন। অবস্তু সেম-বংশের প্রতিষ্ঠাতা বিজয় সেম এবং প্রসিদ্ধ লক্ষণ সেন ছিলেন শৈব। কিছ বিজয় সেমের কথা বাদ দিলে বলা যার যে লক্ষণ সেনের শৈবত্ব বাংলার সমাজে বৈক্ষবতার অপ্রগতির পক্ষে কিছুমান্ত্র শতিকর হর নি। বরং ক্লেকেবতা সদাশিবের পূজা করলেও তার পক্ষপাতিত্ব ছিল ক্লকেরই প্রতি। রাধাক্ষকের লীলাকাহিনী নিরে নিক্ষে তিনি একাবিক বৈক্ষব পদ রচনা করেছিলেন শার্ক্ নারিকীভিত ছলে, আর রাক্ষকবি ক্লম্বের মিশ্রেকে বিধ্যাহ্যকের বাংলার অমর কাব্য বিত্ত-গোবিক্ষ।

বাৰণ শতাৰীর একেবারে শেবে বে তুর্কী অভিবাৰ সুকু হ'ল, তারই আবাতে অপ্রিরনাণ বৌহবর্গকে আরও তাড়াড়াড়ি হাড়তে হ'ল বাংলার দেবছান। কিছু আন্তর্গ্য এই বে, এত দিন পর্যন্ত বদসনাজে আর্থ্য অভিযাত সন্তর্গার ও অনার্থ্য অন্যাব্যরণের বে বারা পালাপালি চলেছিল উদযান ও অন্তর্গানের বৃত্ত, এই প্রচ্নত সংবাতে ভার পরিণ্ডি হ'ল ফলে, হুর্জার বির্থী স্লোভবারা বিলল এক্বেম্বী নহীতে। আর সেই

বিলিত মহাজাতি আশীর্কাদী নির্দান্য মাধার নিতে হাড়াল যে মন্দির-প্রালণে, তার পাষাণ-চত্তর হতে এক শ' আট দেউলই উঠেছে এক শ' আট হিন্দুবিগ্রহ নিরে।

এই কারণে এতদিন 'চৈরের শীর্ণ নদীর যত বাউৰ্গ সিক্ত করে বিরিবিরি বরে চলেছিল যে বৈক্তব-বারা, বাদশ শতকের পর তারই বাতে এল কৈশোরের প্রাণ-চাঞ্লা।' ভারপর ১৪৮৫ এটাকে এববীপে জগরাথ মিশ্রের ঘরে একদিন চৈত্তের কর্মাংল। যে কুফলীলা-কাহিনীতে আগে এসেছিল কোরার, এবার তাতে দেবা দিল বছা। শুবুনদে নর, শান্তিপুর মন, সমগ্র বদদেশ তারপর ভেসে গেল নাম-কীর্তনে, দীলা-কাহিনীর কথকতার, রচনার।

বৈষ্ণবতার এই জোরার ছিল বলেই চৈতভের আবির্ভাবের পূর্বেই উন্তর-ভারতে সুরদাস লিবলেন পদাবলী, নানক লিবলেন, 'গোবিন্দ ভন্ধন বিনে র্থা সভ কায়।' প্রাচীন বাংলার রাজভাষা সংস্কৃতে লেবা হ'ল লক্ষণ সেনের একাবিক কবিতা লার্দ্ধ লবিক্রীভিত ছন্দে, কেশব সেনের পদ, জয়দেবের অমর কাব্য শত-গোবিন্দ আর যে মাগবী অপত্রংশ হতে ১৫০ ইটান্দের দিকে স্ক্রী হ'ল বাংলা ভাষার ( অধ্যাপক শ্রীযুক্ত স্নীতিকুমার চটোপাধ্যারের মতে), সেই অপত্রংশ সাহিত্যও মুধ্র হল দীলাগানে। প্রাকৃত-পৈদলে রয়েছে রাধাকৃকের নৌকা-লীলার পদ:

উপহারের সেরা বই
বিশিষ্ট বন্ধু ও সহক্ষী
কবি সাবিত্রীপ্রসন্ন চট্টোপাধ্যার প্রবীত

# সুভাষ্চক্র ও নেতাজী সুভাষচক্র

চার অধ্যায়ে সমাপ্ত ঘটনাবহুল "বিপ্লবী-জীবন"এর স্বৃহ্ং ইতিহাস। সর্বাত্ত প্রশংসিত। মূল্য ছয় টাকা।

শ্ৰীচক্ৰকান্ত দহু সরম্বতী প্রনীত

# কিশোরদের বিশ্বকবি

विश्वकृषि अवीत्स्रवारिक्त स्थाय स्थापन कथा। मूना क्र होका।

স্বভাবিণী কেবী ও উপেন্দ্রনাথ দাসপ্তপ্ত প্রণীত

কাটিং ও সূচি-শিষ্প শিক্ষা

(তৃতীয় সংস্করণ) মূল্য ত্ব' টাকা চার আনা আজনন্দা তেপ্রস ১৫৯-১৬০ কর্ণপ্রয়ালিস ট্রাট, কলিকাডা—৬ আরে রে বাহহি কাহু নাব ছোট দগমগ কুগতি ন দেহি। তই ইবি নইহি সভার দেই জো চাহহি সো লেহি।

বাংলা-ভাষার এই লীলা-কাছিনীর প্রথম কথক কে, বলা । ১১২৯-১১৩০ প্রীক্তান্তর মধ্যে মহারাট্রের ছিতীর চাল্ক্য-বংশের রাজা সোবেশ্বর ভূলোকমন্তের নির্দেশে রচিত মানলোলাল প্রছে বে পদটি ররেছে, 'ছাড়ু ছাড়ু মই জাইবো গোবিল সহ বেলন নারারণ জগহকের গোলাই'—এইটিই প্রাচীনতম নিদর্শন বলে জামার মনে হয়। Vaisnava Literature of Midiaeval Bengal প্রছের প্রথম অব্যারে দীনেশ্চম সেন কিন্তু সংস্কৃত চম্লুক্টরিতের লেকক বাঙালী উমাপতি বরকেই রাধাক্তক লীলার প্রথম কর্ণক বলে অন্থান করেছেন।

উমাণতি নামে এক মৈধিল কবি ছিলেন, বহু ও মিধিলার বাঁর অনেক বৈক্ষব পদ চলিত ররেছে। অব্যাপক Aufrecht সাহেব এর কাল নির্দারণ করেছেন একাদশ শতকের প্রথমার্চ্চে। দীনেশ বাবুর মতে এই উমাণতিই বাঙালী উমাণতি বর যথন বিশ্বর সেনের সভাকবি এবং সেক্ত তাঁর সময় যথন এগার শতক, তথন উত্তর কবি অভিন্ন এবং মৈধিল উমাণতি বর, চক্রচ্ছ-চরিতের লেখক।

ছই কৰির আবির্ভাবকাল একই সমরে হ'লে, তাঁদের অভিন্ন মনে করবার কারণ আছে, কিছ তা মর। উমাপতি বন বিজন সেনের সভাকবি হ'লেও, তাঁর সমর ছাদশ শতাখী হয়। History of Muslim Rule in India মানে ইঘরীপ্রসালের যে ইভিহাস রয়েছে তার ছিতীর অব্যার থেকে মনে হর বিজয় সেনের আমল ছাদশ শতক। তা ছালা উমাপতি বর আসলে ছিলেন লুক্মণসেনের সভাকবি এবং ইঘরীপ্রসালের মতে তাঁর সমর ১১৭০ থেকে ১১৯৯ প্রীপ্তান পর্যন্ত। 'প্রাচীন বাংলা ও বাঙালী' প্রছে অব্যাপক স্ক্রার সেন বলেছেন, "উমাপতি বর দীর্ঘলীবী ছিলেন। ইনি লক্ষণসেন দেবের পিতা বলালসেন দেবেরও বিলেন।" তা হ'লেও চক্রচ্কচরিতের কবিকে ছাদশ শতকেই কেলতে হবে কারণ বল্লালসেনেরও রাজ্যকালের আরম্ভ ১১৫৫ প্রীপ্তান থেকে।

চৈত্তপূর্ব বৈকৰ কাব্য-ভাঙার বাবের মণিমাণিক্যে পূর্ণ হরেছে, সে সব প্রাভঃশরনীয় কবির মধ্যে এবার প্রথমেই মাম করা বাচ্ছে বিভাগতি ও চঙীদাসের। সভ্য বটে, বিভাগতি মৈনিল কবি, কিছ তাঁকে বুবেছে ত বাঙালী। আর চঙীলাসের গাম ত আবা মানিমারাবেরও বুবে। কিছ প্রথমনীয় এই চঙীলাস কি প্রাচীন বাংলার ? চৈত্ত কি এঁ মই প্রাবলীর রুসাবাধ্য করেছিলেন ?

এ প্রান্তর উভর বেওরা সহক নর। তবে আবাবের বনে হয়, চৈতত্তবের এঁর প্রাবলী শোনের বি। 'সই, কেবা ভ্রাইল ভার বার' প্রভৃতি পরের ক্ষক এই চতীবাস তার প্রবর্তী সম্পূর্ণ নির্ভয়েষাসা। (তাঁর 'দীন-চতীদাস' প্রভের ১ম বতের ভূমিকা এইবা) চৈতভ বে চতীদাসের পদ ভবে বৃষ্
হতেন, তিনি বছু-চতীদাস এবং তাঁর রচনা ক্লফ-ভীর্ডনই মহাপ্রভু বরুপ ও রামানশসনে রাজিদিন ভনতেন—অব্যাপক মনীক্রমোহন বস্ত্র এই মত এবং আমাদেরও মনে হয় ক্লফ-ভীর্ডনের
রস আখাদন করা ভব্ মহাপ্রভুর পক্ষে নতু, বে কোন বিষশ্ধ
ক্রনেরও পক্ষে সম্পূর্ণ সন্তর। ক্লফ-ভীর্তন নিক্লই কাবা ত নরই,
বরং তার বংশী ও বিরহণতে আহে বছু-চতীদাসের কবিপ্রতিভার হীরক-দীপ্তি। সাহিত্য-পরিষদ থেকে টিকা-টিপ্লমী
সহ বসন্তবাব্র সম্পাদনার এর বে সংভ্রব প্রকাশিত হরেছে,
ভা পভ্রেদ সকলেরই একধা মনে হবে।

চঙীদাসের পর নাম করা যার মালাধর বহুর। এঁর উপাধি ছিল গুণরাক বাঁদ: এবং ১৪৮০ এইাকের কাছাকাছি ইনি লিবেছিলেন 'একক-বিজয়'। অব্যাপক বংকলনাথ বিজের সম্পাদনার এই প্রস্থের যে স্টাক সংগ্রণ প্রকাশিত হ্রেছে, ভাতে ররেছে মালাধর ও তাঁর কাব্যের বিভ্ত পরিচর।

রামানক কিংবা রূপ-রোকামীর মত চৈততের সমসামরিকদের নাম আমরা আর করব না। তবে জয়দেব, বিভাপতি ও চঙীদাসের আবির্ভাব সন্তেও রাবাক্ষকীলা নিরে সেদিনের বাংলার আর কেউ কাব্য লেখেন নি, এরপ বিবাস হর না। সেদিন রাবাক্ষের ভাবে অভ্পাণিত হরে যে অভ্সালেখা চলেছিল তার প্রথাণ কৃষ্ণিবাসী রামারণ।

# ना'-(गाँनारे ७ जादा गन्न

শ্ৰীহরেশচক্র মুখোপাধ্যার-সম্পাদিত বাংলা সাহিত্যে এমন সর্বাদহন্দর ছোট গল এ পর্যাভখনর হর নাই। মুদ্যা—ভিন টাকা

# মহামানব গ্রন্থমালা---> স

वैश्रवनम्य म्यानाशाय-अनेच

বারা নিজে বড় হরে জাতি ও বেশকে বড় করেছেন, তাঁহের সাহিত্য-রসপুট গৌররমর কাহিনী। বুল্য--বেড় টাকা

# মহারাষ্ট্র জীবন-প্রভাত

बैक्टबनब्द ब्रांगीगांव-मन्गाविक

বর্মীর রনেশচন্ত্র কন্ত মহাশরের "মহারাট্ট কীবন-প্রভাত"-এর সংক্রিপ্ত কিশোর সংকরণ । মূল্য-শাঁচ সিকা

# আজব-দেশের গুজব-কথা

শীহ্রেজনার গলোপায়ার-প্রশীভ

হোটনের সনজুনান এত হক্ষর গলের বই আলে আর বের হর রাই। হরেনবারুর দেখার সাথে নিরী ইন্দু অত্যের আঁকা ছবি বড় হক্ষর নাবিরেছে। সুন্য—এক টাকা

ক্যালকাতী বুক স্টোরস্ •৪৪ মেল গ্রাক্তিকা

# পুশুক - পার্চায়

আজিকার ভারত--- রমনা পাদ দত্ত। ভাপনান বুদ এমেলী নিবিটেড, কলেল কোৱাৰ, কলিকাতা; ২০০ পূঠা, ব্লা—ভিন চাকা

এট পুতৰণাৰি এছকারের নিখিত বৃহত্তর India Today নামক বইরের বাংলা সংকরণ। এছকার ত্রিটেনের বাবপদী চিন্তা-নারকবর্গের জন্তুত্ম বলিরা পরিচিত। তাঁহার পিতা ছিলেন বাঙালী ; কলিকাতার দ্ভ পরিবারের বংশধর; তিনি ইংলতে জীবনের শেবাংশ কাটাইরাছিলেন। প্রস্থকারের মা ছিলেন ফুইডেনবাসিনী। এই প্রন্থের উৎসর্গ-পত্তে লেখক ভাঁছার পিতার নিকট রাজনীতিক প্রথম পাঠের কছ বণ বীকার করিয়াছেন। চিরাচরিত চিন্তাধারা ও সমাজ-ব্যবহার বিরুদ্ধে বে সংগ্রাম রামযোহন রার আরম্ভ করিরাছিলেন তার পরিশতির সাক্ষীরূপে বাঙালী मध्यिक मच्छापादात अकळन वरभवत छनविश्म मठाचीत स्पवार्क विश्वमान ছিলেন তাহা ভারতব্যাপী ঐতিহাসিক বিপ্লবের ব্লক্ত একটা প্রমাণ মাত্র। উপেন্ত্ৰকৃষ্ণ বস্তু বাহা করিয়াছিলেন খনেশে বাদ করিলে ভাহার অধিক কিছু করিতেন কিনা সেই বিষয়ে সন্দেহ আছে। কারণ চিন্তাশীল ভারতবাসী এই বিপ্লবের ধারকরংপ ব্রিটিশ সামাজ্যবাদের অধিকার শিখিল করিয়া দিয়াছে। উপেক্রকুফ দন্ত সেই যুগের লোক।

ব্রিটিশ-শাসনের আমলে ভারতবর্ষের অর্থনৈতিক অবনতির ইতিহাস ও ভাৰ প্ৰমাণ এই বইখানিতে পৰিবেশিত হইয়াছে—এই ইভিহাস আমাদের অধানা ছিল না , ব্রিটিশ ও ভারতবর্ষীর ঐতিহাসিকবৃন্দ এক শত বংসর পূৰ্ব্য হইতে ভাহার প্ৰমাণ সংগ্ৰহ করিভেছিলেন। বৰ্জমান গ্ৰন্থের লেখক সমাজ-ভন্নবাদের প্রতিষ্ঠাতা ও ব্যাখ্যাতা কাল মার্কস ও নরম্যান এনগেল্স-এর দৃষ্টিভঙ্গী অবলম্বন করিয়া আমাদের দেশের ইতিহাস 

আলোচনা করিয়াছেন, ত্রিটান-শাসন ও শোবদের কলে বে অবীনৈডিক चरनिक प्रवना रत्न कात्र विभाग वर्गना और वहेरत चारह। और धारांग সংগ্ৰহ ক্রিয়া এবং একবানি বইরের মধ্যে ভাহা সরিবেশিত ক্রিয়া व्यानायन-नारवायिक ७ त्रांकनीकिवियत्त्र-छनकात्र नायन कतित्राट्य । ভারতবর্ণীরদের মধ্যে দাদাভাই নৌরজী, মহাদেব গোবিল রাণাড়ে, রমেল-চক্র দত্ত এই বিষয়ে পথপ্রদর্শক ছিলেন। উনবিংশ শতাক্ষীর শেবার্ছে বে অসন্তোব ভারতীর জাতীরভাবাদ রূপে সুটিরা উঠে, ভার অর্থনীতিক কারণ এই ইতিহাসের মধ্যে আছে। অর্থনীতিক অবনতির কলে সমাজ-ব্যবস্থার ম্বো বে বিদ্ৰব ও বিপ্ৰান্ন দেখা দেৱ, এই বইল্পে তাহাই মাত্ৰ প্ৰতিপাদিত হইরাছে। ভাবের রাজ্যে, চিন্তা জগতে বে আলোড়নের শৃষ্টি হইরাছিল, তৎসম্বন্ধে রজনী পাম দন্ত বিশেব কিছু বলেন নাই। ভার পরিচর দা ব্যনিলে "আব্বিকার ভারত"কে সম্যক্ ব্যানিভে পারা বার না।

আর একটা কথা। ভারতবর্ষের সমান্ত-ব্যবস্থার মধ্যে এমন কোন আচার-আচরণ হিল বাহা দেশের জীবনকে ছুর্বল করিয়া প্রদেশীর পদানত করিবার স্ববোগ করিরা রাখিরাছিল। ভারতবর্বের রাট্ট-শক্তি কেন এই ছত্ৰভঙ্গের নিবারণ করিতে পারিল না, তার কারণ না বলিতে পারিলে ভারত-ইতিহাসে একটা রহন্ত থাকিরা বার। শ্রেণীতে শ্রেণীতে জ্ঞে ও বিরোধ ভারতবর্বের একচেটিরা নয়। অক্তান্ত বেশেও তাহা হিল। কিন্ত তাহা পরদেশীর শাসন ও শোবণ ডাকিয়া আনিতে সক্ষম হয় নাই। ভারতবর্বের বেলার এই ব্যতিক্রম দেখা দিল কেন ? রঞ্জনী পাম দন্তের ঘইরে এই প্রবের কোন উত্তর নাই। স্বতরাং "বাজিকার ভারত" আযাদের জ্ঞান-রাজ্যের পরিধি বিস্তারে বিশেব সহারতা করিরাছে বলিরা.মনে হয় না।

व्ययुद्रमध्य (प्रव

# নেতাজীর অনুসরণে :—

বাংলার বিখ্যাত মূত ব্যবসায়ী শ্রীম্পেক্টেন্তে ব্লক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "🕮" মার্কা ম্বতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্রায়োজন। বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'ঐ' মতের ব্যবহার অভ্যাবস্তক হইরা পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল ম্বতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা ঁম্বত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অসুকরণীর।

ৰাঃ শ্ৰীত্বভাৰচন্দ্ৰ ৰত্ন

চিরস্তনী—গ্রহ্মনা সেনগুরে। এনাকী গ্রহ-মন্দির, ১৫৯ স্থাল-ভাউন রোড, ক্লিকাডা। মুলা—১।•

গল-সংগ্রহ সমালের বিভিন্ন তর ইইতে উপাদান সংগ্রহ করিরা লেখিকা পাঁচটি কাহিনী পরিবেশন করিরাছেন। দেশ ও আচার-ব্যবহারের পার্থক্য-সংগ্রেও বৈণ্য ও কমানরী নারীর অন্তরে বে চিরন্তনী বৃত্তি অন্তঃশীলা করুর মত প্রবাহিত ভারই বাধা-বেদনা প্রভিটি গরে মূর্ত হইরা উঠিরাছে । বিনিল্ল কাতি, গোটা ও সমালের বিভিন্ন তরের নারীর সংঘাই আছেন চিরকালের সীতা, সাধিত্রী, শবরী, অনক্ষতীরা। কমা, নিঠা, ত্যাগ ,ও অনুরাধের আলোকে ভারা বার বার উদ্ধান হইরা উঠেন।

রচনা ভাষামুখারী প্রাঞ্জল এবং মিষ্ট। সবচেন্নে প্রশংসার কথা অকপট দরদ দিরা কাহিনীগুলি রচিত এবং সেই কারণে প্রত্যক্ষ-দর্শনের অমুভূতি-রসে মন ভরিরা উঠে—চকুতে অঞ্চবাস্য ঘষার।

# মাতৃমন্দির

২৬-এ, কর্ণওরালিস ট্রাট, কলিকাজা গর্ভাবস্থায়, নিরাপদে থাকা, প্রসব এবং শিশু রক্ষার স্থ্যবস্থা করা হয়। মানদা দেবী, নেডা স্থপারিক্টেণ্ডেন্ট



পর্টিক্টানের পত্র--জ্বীহারমন্ত্রন বোবাল। দি দিদিদ্ধ প্রেন নিমিটেড। ৩৬, বেটিড ট্রট, কলিকাতা। নুব্য--২ঃ-

্ৰই আগষ্ট ১৯৪৭ সাল। বালোর বে বিতীপ আবাদী জবির উপরে ছ'কুট চওড়া একটি কাটা-নালার সীনারেধার বহু-আকাজ্পিত বাবীনতা স্বাক্ষণে প্রকাশিত হইল, একদিকে তার হারালপুর পূর্ব-পাকিছানী (পাকিছান নহে ) গ্রাম, অন্ত দিকে রাজপুর—ভারতবর্বের হক।

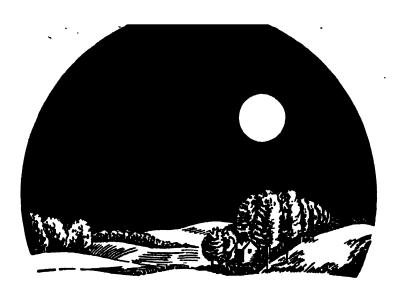
বাঁহারা মনে করিরাছিলেন—ছ'ভাগে বিভক্ত ভারতবর্ধে বাছার নিংবাস ফেলিরা ঘুমাইরা বাঁচিবেন—জাঁহাদের আশা বে নিত্য-দেখা হংবারে বিত্রাহীন রাঝিকে ফুণীর্বতর করিতেছে—তাহারই আভাস পাকিছানের পরে পাওরা বার । যতর রাষ্ট্রের ভিডিপান্তনের সলে সলে তার রাজনীতি, সমাজনীতি ও মমুগ্র-চরিত্রের কাঁকে কাঁকে বহু জিনিব—অমুসজানী দৃষ্টির নারা নেথক আবিদার করিরাছেন এবং রেব নিশাইরা ইনিতে ও পাই ভাবণে সেভালি বিরেবণ ও বাজ করিরাছেন । এই সব দোবজাট অবীকার করিবার উপার নাই । লেথকের ভাবার ধার আছে, ব্যক্রোজির তীক্ষতা সোজা মর্মন্থানে আঘাত করে—এবং বাতাব অমুভৃতিও লেখার রখ্যে পাওরা বার । কিন্তু বাত্তবের মধ্যে কলনার বর্ণেছ প্রসার ঘটাইরাছেন লেখক—বংগুলি উপান্তানের ক্ষেত্রে বাহলা বলিরা বোধ হর না । পত্রের বর্ণনাংশে বে ক্রেটি বিশেষ ভাবে চোধে পড়ে সেটি এই বে, বে সমস্ত ঘটনা মন্তার অগোচরে ঘটভেছে—প্রত্যক্ষদর্শনের হবছ বর্ণনাতে তাহা ভারাক্রান্ত । ইহা রসাভাসের ককণ ।

লেখক লালা মিঞা ও মালতীকে লইরা বর্মজাল ব্লিরছেন। স্থাজপুর ও রাজপুরের সীমারেখা-চিহ্নিত ছু'ফু'চ চওড়া থানটি এনের দেল-কালধর্ম অভিক্রান্ত প্রেমের বারা নিশ্চিন্ন হইরা বাইবে কিনা সে ভবিত্রবানী
আজিকার দিনে সন্তব নর। কিন্তু কল্পনার জগতে লালা মিঞার মত
নারকেরা আলা-আখাসহীন বর্ডমানকে বে থানিকটা উঠাসিত করে তাহা
অবীকার করিবার উপার নাই। না-পত্র না-উপাঞ্চাস লাভীর এই রচনার
মধ্যে বলিন্ন একটি ভলী আছে—ব্যক্তিনিরপেক হইলে বাহার প্রকাশ
অসাধারপ বলিরা বীকৃত হইত। বাজিনিরপেক বিচারের প্রধান
বাবা অবশ্র ব-সম্পর্কিত (ব্যক্তি, লাভি বা ধর্মগত) ক্ষমণ্ডির উল্লেখনা।
আক্রিক আঘাতে স্কুরার বৃত্তিগুলি আহত হইলে—চিন্তার কেল্ডহানটি
বিচলিত হইবেই এবং রঙের পোঁচ এ সব ক্ষেত্রে সাচ হইরাও থাকে।
রচনার বাত্তব দৃষ্টিভলী থাকিলেও—বাত্তব-নিন্না সর্বত্র রক্ষিত হর নাই।
লালা মিঞারা শরণচল্লের ভাবার কথা বলিলে, কিংবা মালভীরা রবীক্রনাথের নারিকাদের মত বিতর্ক তুলিলে পত্রের সন্ধীণ ক্ষেত্রে বেবানান
বোধ হয়। সহীপ উপভাসের ক্ষেত্রেও সেই কথা। অবশ্ব আলাবানের

বাহা হউক, পাকিহানের পর নাটকের রস-উপভোগকে বঞ্চিত করিবে না। শান্ত কথা—বলিট ভলীতে প্রকাশ করার কৃতিত্ব লেখকের আহে, এবং বাংলা সাহিত্য ভবিষতে ভাঁহার কাছে অনেক কিছু আশা করিতেছে। প্রক্রপট প্রশংসার্হ।

কালের যাত্রা—প্রীনতীনচক্র, দাস ৩৫। গুরিরেট বুক কোন্দানী ২ ভাষাচরণ দে ব্লীট, ভলিকাতা । দাব—দেও টাকা।

বৰ্গধানে একনাত্ৰি, নাৰ্চির নারা, ভবিতব্য, অসতী, কেবলের প্রেন্ধ্র, কালের পানা, হকসূত্র কিন্ধন্ নিনিটেড প্রভৃতি হলটি ধর এই সংগ্রহে আছে। করেকটি গরে বাতবের বাধা ও করনার নারাজাল বোনা হইরাহে এবং করেকটিতে লগু পরিহাসের চেটা আছে। বর্তনান কালের সলে থালা পাওলাইতে না পারিলে লীবন বে মুর্নাহ হইরা উঠে - কালের বানা বারে এই তথ্যটি পরিস্কৃট হইরাছে। বিবরবন্ত নির্বাচনে লেখকের কৃতিত্ব বেধা বার।





# হেমস্তের কুহেলি গুগনতলে

হেমস্ত ঋতু একদিকে নিয়ে আদে প্রাচুর্ব্যের পসরা, ক্ষেত্রকনীর দান শক্তসম্পদ, অন্তদিকে নিয়ে আসে বিক্ততার আহ্বান—আসর শীতের আভাস।

এই হঠাৎ ঋতু পরিবর্ত্তনের সঙ্গে মান্তবের শরীরকে থাপ থাওয়াবার জন্তে সবচেয়ে পরিপ্রম করতে হয় লিভারকে। তাই লিভার সম্পূর্ণ স্বস্থ ও শক্তিশালী না থাকলে এ সময়ে নানা রোগের আক্রমণ অনিবার্য।

কুত্রাভের শ উদরাময়, অন্তীর্ণ প্রভৃতি নিভার ও পেটের সকল পীড়া নিশ্চিতরপে আবোগ্য ত করেই—দেই সঙ্গে নিভারকে শক্তিশানী ক'রে অন্ত রোগের আক্রমণও প্রতিরোধ করে।



দি ধরিয়েণ্টাল রিসার্চ্চ এণ্ড কেমিক্যাল লেম্বরেটরী লি

সুভাৰচন্দ্ৰ ও নেতাজী সুভাৰচন্দ্ৰ নাৰিবীশ্ৰসর চটোগাধার। নালকা প্রেন, ১৫৯-৬- কণ্ডিরানিস ট্রাট, কনিকাভা। বুলা হর টাকা।

বইখানির উপবৃক্ত নামকরণই হইরাজে, কেননা মেশে বাঁহারা ফুভাব-চল্লের সহকলী হইবার এবং তাঁহাকে অভি নিকটে প্রভাক করিবার মুবোগলাভ করিরাছিলেন তাঁহারাও দেশ হইতে দুবাছরে পূর্বা-এশিরার অপূৰ্বকৰ্মী নেভালীর বিরাটছে অভিনৃত হইচা পড়েন। নিকটের এবং দূরের ফুভাবচন্দ্রের মধ্যে কোন পার্বক্য বে নাই গ্রন্থকার ইহাই দেধাইতে চেষ্টা করিরাছেন। দেশবন্থুর অনুগানীরূপে বে স্থভাবচন্দ্রের উদ্মেৰ হইরাছিল পূৰ্ণবিকশিত নেতাৰীরূপে পূৰ্ব্ব-এশিরার এবং পূর্ব্ব-ভারতের আসাম-এক সীমান্তে ভাঁহাকেই আমরা দেখিতে পাই। "এছকার ৰুলিকাতা বিভাপীঠের কন্মী হিসাবে এবং অক্তান্ত নানা হত্তে হুভাবচক্তের সাহচর্যালাভের সৌভাগ্য ভর্মান করিরাছিলেন। তিনি সুক্রি এবং ফুলেধক। তাঁহার তুলিকার দেশবনু, ফুভাবচন্দ্র এবং কোন কোন ঐতিহাসিক ঘটনা উচ্ছল বৰ্ণে কুটনা উঠিনাছে। এছেন এখন ভাগ অভিক্রতাপ্রস্তুত রচনা বলিয়া শেষার্ম অপেকা আয়াদের অধিক আকুট করে। শেবার্ছে আঞাদ হিন্দ্ কৌজ এবং নেতাজী সম্বন্ধে উন্দাটিত ভৰাসৰূহ সন্নিবেশিত হইরাছে। স্থভাবচন্ত্রের ছুইখানি পত্রের অসুলিপি, ভাঁহার লেখা 'তরুণের আহ্বান', 'দলাদলির হোক অবসান' এবং 'খাসী বিবেকানৰ' পরিশিষ্টে দেওয়া হইরাহে। নেতালীর কথা বতই ন্তনি ভতই গুনিতে আগ্ৰহ হয়। এই স্থলিখিত স্বৃহৎ গ্ৰন্থানি পঠিকেয় ष्पाकर्यात्र यस रहेर्द ।

চৌধুরীদের বৌ — এনীহারকুমার পালচৌধুরী। প্রকাশক
— ক্রীন্ত্রেককুমার মৃথোপাধ্যার, ১৩, জোড়াবাগান ফ্রীট, কলিকাতা।
মূল্য আট আনা।

ক্ৰালি দাটিকা। চৌধুনী-পৰিবাৰে জনীবাৰী নইবা ছই ভাইৰে নামলা বাৰিবাছে। মুখ দেখাদেখি নাই। বড় ভাইৰের বঙৰ এটাৰ্থ ভিনিই এ নামলার মুল । হোটন গক্ষ বড়-বোকে সাকী নানিবাছে। বড় বো মুণাল বিখ্যা বলিবে না। সাক্ষ্য না লিলেও বিশ্বন, কেন না ভাহাতে নামলার হার হোটন পক্ষেই বাইবে। হোট-বৌ নিনভি শিক্ষিতা বেরে। দেশের মন্ত্রির পুজে এবং জনীবারী ধ্বংস হইতে বসিরাছে। বিনভি কিরিয়া আসিরা বানী-সহ বাড়ী সিরা মেহসরী বড়-জা মুণালের কাছে বলিল, "ভূমে নাকি সাক্ষ্য বিভে ছাজী হরেছ দিনি?" মুণাল বলিল, "ভূমে সেলি হোট-বৌ, চৌধুনীবের বড়-বৌ সাক্ষ্য দের না।" নিনভি বলিল, "নামলা আনরা ভূলে নিরেছি দিছি। আমরা এ দেশ হেড়ে চলে বাজি।" ভার পর ছই ভাইরে নিলন ইইরা সেল। এইটুকু সলাংশ। এই বিবরবন্ধ লইরা লেখক চৌধুনীবের ছই বৌরের চরিত্র নাটকার চিত্তাক্ষ্পভাবে সুটাইরা ভূলিরাহেন।

বাংলার আধুনিক গল্প-এরবীজনাথ বোৰ সম্পাদিত।
ট্যাণার্ড বৃক কোম্পানী, ২১৬, কর্ণভয়ালিস ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য সাঞ্চে চার টাকা।

পুতকথানি সকলবএছ। তারাশকর বন্দ্যোপাধ্যার, শৈলকানন্দ মুখোপাধ্যার, বিভৃতিভূবন বন্দ্যোপাধ্যার, বিভৃতিভূবন মুখোপাধ্যার, প্রেনেক্ত বিলে, মুখেলক সেন, রামপদ মুখোপাধ্যার, সংরাককুমার রার চৌধুরী, অর্লাশকর রার, কার্যাশ ওও, ফুলাল কানা, সমুদ্দ, মাণিক বন্দ্যোপাধ্যার, মনোল বহু, নারারণ গলোপাধ্যার প্রমুখ আটাশ কন লেখকের আটাশটি ছোট গল ইহাতে আছে। লেখকদের মধ্যে অনেকেই খ্যাতনামা এবং অনেকগুলি গঙ্হী পুণাঠা। আলকাল ক্ষেক্ত্যানি গ্রমকলন বাহির হইরাছে। কোনটার অপেকা ইহা অন মনোরম নহে। বইথানি হইতে

# ध्वानिष हरेन ण्वानी पूर्वाभागारम्म णनिष प्रेमान रिकार प्रेमान रिकार प्रेमान रिकार प्रकर्म गर्मा वर्ष वर प्राप्त वर्ष वर प्राप्त वर निका

প্রসাদ ভট্টাচার্য্যের উপস্থাস रेशरे गछा আর্ডনাদ ব্দতার ইলিড রামণদ মুখোপাধ্যায়ের উপভাস विःगन ··· •110 বিমল মিজের গলগ্রহ फिटबर्न शत्र किंग নারায়ণ পন্মোপাধ্যান্তের সন্ধ্রগ্রহ ভাঙা বন্দর মাণিক ৰন্দ্যোপাখ্যাৱের গলগ্রহ হবুদ পোড়া শাসিহুর রহমানের পল্লগ্রন্থ পোইকার্ড আশালভা দেখীর উপক্রাস क्नाद्वत्र कृन

वस्टा १८०। कार् ফান্তনী মুখোপাধ্যায়ের উপস্থান कपम्र पिटम् कपि মধুরাতি ভাগর শৈলজানন্দ মুধোপাখ্যারের উপভাস ক্ৰোঞ্চ-মিপুন ... २१० (ध्व मरकत्र) এভাৰতী দেবী সম্বন্ধীৰ উপস্থাস রাতের **খণন** (জ সং) **২**৷০ খনমৰ মুখোপাখ্যারের হাসির গন্ধ 'লকলি গরল ভেল' 31 বাধাচৰণ চক্ৰবডীৰ উপভাস কো-এডুকেশন আশাপূৰ্ণা দেবীৰ উপভাগ তোৰ ও অন্নোজন (বাছ)

স্থাং ওকুমার গুপ্তের বিদেশ শ্রেচ গল-সংগ্রন সেরা লিখিয়েদের সেরা গল (১ম বও) ··· ১

# হেলেদের পড়বার

বিশু মুখোপাধ্যারের
সমুদ্রে বারা যুরে বেড়ার ১,
( Toilers of the Sea )
হুধাংতকুমার নাশভাষের
সাসার অভিমাপ ··· ৬৯/০
বুহুদেব বহুর
কাভিকুমারের পঞ্চনাগুদ্ধ/০
সবোজকুমার রায়চৌধুরীর
ভাকাভের সন্ধার ··· ৬৯/০
প্রেমেন্ত্র মিত্রের
আকাশ্বের আভক ··· ৬৯/০

नम्बर्

(थरबस निव्यप्त

মহালগৈর বিঠার সাধান। হই টাকা। ক্রোব থোকের পারশুরাতমার কুঠার বিভার সাধান। হই টাকা।

শুক্লান্ডিসার হুই টাকা চার পানা।

সঞ্জৰ ভটাচাৰ্ব্যেৰ

क्रम्ल

তীর সংকরণ। এক টাকা চার আনা ।

**=** 

वक ठीका माए इन चाना।

।তুন দিনের কাহিনী হৈ টাল।

নরেজনাথ মিতের

পতাকা

इरे डीका।

লোভিরিজ নশীর

হোলনা

দেড় চাকা।

নৈয়ৰ ওয়ানীউনাহের নাল্ডা

ान्। एक है।

<u>डिशंबा।न</u>

সঞ্জৰ ভট্টাচাৰ্ব্যেৰ

ৰদ টাকা এগানো আনা। অক্সামাতি তার সংক্ষণ। হুই টাকা চার আনা।

ক্তিনাস্ত বিভাগ সংবল। সাড়ে ভিন চাকা। ক্তিস্মক্তেনাস্থা বিভাগ সংবল। ভিন চাকা।

> ক্যাত্তি গাঁচ টাকা। ক্ষতেলাত্ত্ব গাঁচ টাকা। লৈদেন-বোলো

वर भेग।

ISIA

91

তিনটি হুদীর্ঘ কবিতা—এশিয়া, ভারতবর্ব, বাংলা। কবিতা তিনটি ইতিপূর্বেব বধন প্রকাশিত হরেছিলো, তখন বারা পড়েছিলেন, তারাই জানেন, বাংলা কাব্য-সাহিত্যের ইতিহাসে এ বেমন অভিনব তেমনি অনবদ্যও। কাব্য-রসিক্যাত্রেই সঞ্চয় ভট্টাচার্য্যের এই নবতম কাব্যগ্রহ সংগ্রহ করবেন। ভাষা ভেড টাকা।

19 JAN 7::

জুই কিলারের বিখাত এছ 'The Great Challenge'-এর বাংলা জুরুবার। বর্তমান নাইনীতির এর চেরে নিরপেক ও নির্মন আলোচনা এ-বুলে আর কেউ করেনি।
প্রথম পর্বন। ভাল চার চাকা

*বৌৰু* ধর্মা

এশিরার শ্রেষ্ঠ প্রাচীন সংস্কৃতির উৎপত্তি.
বিকৃতি ও বিবর্তন সম্পর্কে স্থারপ্রক্রান্ত শাল্লী মহাপরের রচনাগ্রলো এই প্রথম প্রস্থাকারে প্রকাশিত হলো।
ভাষ তিক টাকা

ধর্মবিজয়ী অশাক

আচীৰ ভাষতীয় ইতিহাসের বে গৌরবনর অব্যার ভাষ পর্যান্ত বালো ভাষার রচিত হরনি, একান্ত নিচার সলে প্রত্যোধ্যক্ত সেম সেই অব্যারকেই প্রকাশ করেছেন এই গ্রন্থে।

খান ভিন টাকা

গান্ধী-সাহিত্য

শীনরারারণ অপ্রবালের

গান্ধী পরিকল্পনা। ছং টাগ

कोकिन्त न

ছাত্ৰদের নমুলক কার্হ্যক্র যাত্রা খানা।

**শিক্ষান্ত নাহন** না খান।

जीवमी ७ मणवाष

সঞ্জ ভট্টাচাৰ্ব্যের

**ক্ষান্ত হাত্যে** বিভার সংবরণ।

কুৰোৰ হোবের

সিগ্মুগু ফ্রুস্কেড

অনিলভুমার বন্যোপাণ্যারের

নগেজনাথ সেনওথের ভানত্রেশা। প্রতি বঙ এক চাকা হুই খানা।

পূর্বাণা সিরিভ:

ভারতীর নারী ও সহাজ; ধর্ম ও নীভি; সমাজ ও সাহিত্য; সমাজ ও সংখ ভি; সমাজ ও বিজ্ঞান, সজীত ও সমাজ; অন্তর্মত কেল ও সাম্যবাদ। এডি গওগরশানা

शूर्वाभा लिप्तिएए

পি ১৩,গনেশ চন্দ্র এভেন্যু , কলিকাতা ১৩

।পলান হহর। বার। । চন্দ্রবাবুর বরস ববন চোক বসের ভবন ।ভান সম্পূর্ণ निःय व्यवहात्र शक्ति हम, क्रिन्ड हान्नम ब्रोक्टबत्र मध्याव किनि रकाम मो ইইয়া কুড়ি বংসর বয়সে সুচ আত্মপ্রভার ও ভরবাবে অটুট নির্ভরতা স্থল করিয়া একট সামাভ চাতুরী গইয়া রেজুন বলরে উপনীত হন এবং সেবানে ভাগ্যাবেশ্বন সমাজাগ্রভ থাকিয়া প্রবনে আধুলি যাত্র সম্বল অবহা হইতে ক্ৰমে বৰ্ণার লালা লাভজনক ব্যবসাদ-প্ৰতিষ্ঠানের সহিত অভিত হইয়া সেবে আড়াই লকাধিক টাকার সালিক হল এবং তথনও ভাহার কর্মক্ষতা অটুট থাকে। বাহারা ঘটনাবহন উপভান পড়িতে **जानवारमम वर्ष्यामि छोहारमब मरनाबक्षम कविरय ।** 

अविकासम्बद्धः नीन

চল চিট্র --- শ্রীবীরেন দাশ। ভারত বুক একেলী। ২০৬, কর্ণভরালিন মট, কলিকাতা। মূল্য তিন টাকা।

চলচ্চিত্ৰের টেক্ষিক অথবা কলা-কৌশল সম্বন্ধে সাধারণের বিশেষ কিছুই জামা নাই। এ সম্বন্ধে বাংলা ভাষায় পুৰ বেশী জালোচনাও হয় নাই। পৰ্দায় বে ছবি দেখিয়া দৰ্শকেয়া আনন্দলাভ করে ভাহার ভিতর-কার থবর জানিবার লক্ত ভাহাদের কৌতূহল হওরা যাভাবিক। বীরেন-ৰাবুর চলচ্চিত্র হইতে সেই কৌতুহল নিবৃত্ত হইবে এবং সিনেমার ছবি কি করিরা তৈরি হর সে সক্ষমে মোটাবৃটি একটা ধারণা কমিবে। প্তক-থানিতে লেখকের সৃদ্ধ পর্ব্যবেক্ষণশক্তি ও জটল বিবর্কে গুছাইরা বলিবার ক্ষমতা—এ ছরেরই পরিচর পাওরা বার। ইহাতে চলচ্চিত্র নির্দ্ধাণ-প্রণালী, ভকুমেণ্টারি বা শিক্ষামূলক চিত্র, ছোটদের উপবোদী চলচ্চিত্র ও প্রদর্শনী, চলচ্চিত্রের ইতিহাস, সোভিরেট চলচ্চিত্র, মন্দো চিত্র নাট্য ই ডিলো ইভাবি, চলচ্চিত্রের বিবিধ আভবা বিবর সৰকে পুথাসুপুথ ভালোচনা লিপিবন্ধ হইরাছে।

বালোভাষার সিনেমা সম্বন্ধে ছুই একথানা বই আছে বটে, কিন্তু উহার

ব্যবহারিক দিক কইরা এখন প্রভাক অভিক্রভার্তক আলোচনা অভ কেল भूखरक मारे। या अकन मूख्य भन्न-रमधक मिर्टनमात भन्न मिथिया व्यर्थ ख वार्षि वर्कन क्षिए होने केहाना और भूकरक वरनक डेनदान भारेरन ।

करत्रकृषि विरमन्त्री भद्रा-विलागान कोमिन। नवनजी वादेखडी । नि २४-२> कलब होडे वाटकेंड कनिः। युना २५० जाना ।

এবুক গোপাল ভৌষিক বর্তমান প্রভাক বোলট বিদেশী গলের বছবার ক্রিলা বাঙালী পাঠকপাটকানের রসপিণাসা পরিভূপ্ত করিবার প্ররাস गारैत्राह्म । देशत्र वित्मवष अरे त्र देशत्व रेणेत्रांग चाक्रिका अवर আমেরিকা এই তিনটি মহাদেশেরই কতকণ্ঠলি ভাল গন একত্র সরিবেশিভ হইরাছে। ইউরোপের বিভিন্ন দেশ ছাড়া ইহাতে পালেটাইনের একট ইহুদী গল, দৰিণ আফ্রিকার একটি গল এবং আফ্রেরিকার একাধিক গল আছে। দেবক অনুবাদকে মূলামুগত করিবার কম্ম সাধাষত প্ররাস পাইরাছেন। ডিনি পরগুলি:ক "ভাবান্তরিত করিরাছেন, রূপান্তরিত করেন নাই।" পুত্তকটিতে আলেকলাঙার কুপ্রিন, শেখত, টেইনব্যাক প্রভৃতি বিৰ্বিখ্যাত লেধকদের নাত্র চারিট গর ছান পাইয়াছে, বাকী লেখকেরা এদেশে ভত পরিচিত নহেন—কিন্ত তাঁহাদের রচনার প্রতিভার উব্বল ৰাক্ষর বহিয়াছে। যোগে স্মিল্যান্দির লেখা লতিকা নামক পঞ্চী তথু এই भन्नमध्यस्य नरह, विच-माहिर्लात अकृष्ठि मत्र। भन्न विन्ना भना हहेरव। ৰন্ধ ছু' একটি কৰায় ইহাতে বে বেগৰা-কৰণ চিত্ৰটি কুটিয়া উটিয়াছে, জাহা পাঠকের মনের পটে চিরভরে জাঁকা হইরা বার। দিপুণ রুহরীর মভ গোপালবাৰু বিৰ-সাহিত্যের কডকগুলি উল্লেল মণিরত্ন বু'লিয়া পাতিয়া বাহির ক্রিরা বাঙালী পাঠকবের উপহার দিরাহেন। একড তিনি গল ত্রসিক্সাজেরই বস্তবাদের পাত্র।

**बिननिनोक्**मात्र छङ

# দেশ-বিদেশের কথা

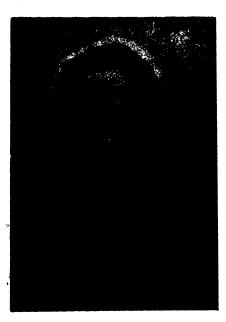
ছিলেন। এমনি ভাবে ভিনি সংধ্যিণী নামের সার্থকতা সম্পাদন

# ভক্তর মতিলাল দাশ

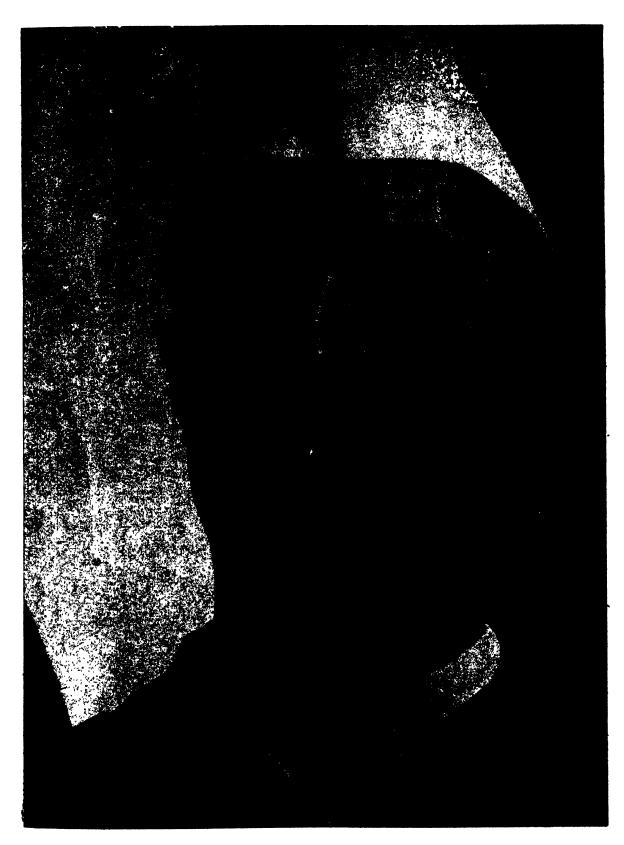
এবুড় বভিলাল বাপ সভাতি কলিকাতা বিশ্ববিভালবের পি এইচ ভি ভিত্ৰী লাভ ক্রিরাছেন। ভাঁহার পবেৰণার विवत दिल रिप्यू वावशात-मांच । छाः शंभ अव. अ भाग कृतिवा चिन वर्जव चन्तानकर्ण करवन, नरव ১৯२৯ नाल ब्रायक स्म । ১৯৩৬ সালে ভিনি ইউরোপের বিচার-প্রতি অন্নরীলন ও প্র্যুবেক্ষ্ণ করেন এবং বিভিন্ন সংস্থতি-কেন্দ্রে ভারতীর সভ্যভার মৰ্থবারা সহতে নানাবিব বক্তৃতা করেন। তাঃ চাপ এক্জৰ সাহিত্যিকও বটেন। বহু গ্ৰন্থ বচনা ক্ৰিয়া ভিনি পাঠক্ষকলে প্লপবিচিত ক্ষরাবেন।

# হেমন্তকুমারী দেবী

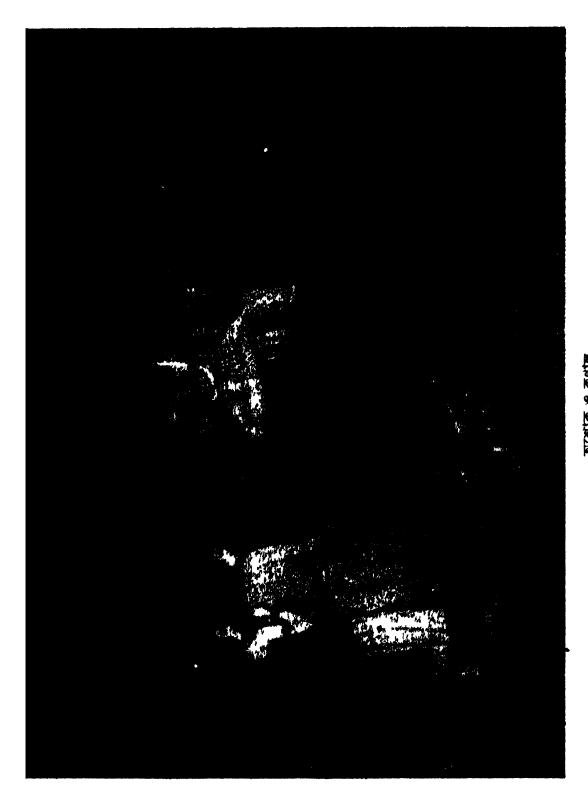
ব্দোত্র বাশুরার অন্ধ ওপডাসিক ও ব্দেশসেবক পর-লোক্ষণত বহুমাৰ ভটাচাৰ্বোর পদ্ধী এবং লাহিত্যিক এপুণ্টাশ ভটাচাৰ্ব্যের বাতা হেৰভত্বারী বেবী পত ১লা আখিন ছগলী টাপদানীতে ৮০ বংসর বয়লে লোকাছবিতা হইবাবেন। খবেশঞ্জীতি, বাৰণীনতা ও বর্থ-প্রাণভা প্রভৃতি সন্তবাবদীর কর তিনি বহু লোকের প্রহা দ্ধাক্ষণ ক্ষিয়াহিলেন। ১৯০৫-এর খনেশী আন্দোলনে তিনি বাহীর পালে ইাড়াইডা কাল করিবাহিলেন। বহুবহুপুরে করিবা নিবাহেন। উদ্ভার বংক্তরেয় बहर्केक श्रीकातांव वेश्वरंतक किनि बहनारंतव कर्यमुनिनी अवरंत क्षितांत स्थात कतिरंत 🔆 🔯 💱



হেৰভকুৰারী দেবী ৰাংলাৰ নাৰীদেৰ



পণ্ডিত জ্বাহ্রলাল নেহর





# 8**৮** ~ 영기 (

## অপ্রহারণ, ১০০০

২ব্য সংখ্যা

## বিবিধ প্রসঙ্গ

## রাষ্ট্র ও রাষ্ট্রনেতা

পত মাসে ছুই খন রাষ্ট্রনেতার জয়তী উৎসব হুইয়া গিরাছে, প্রধান সর্থার বল্লভাই প্যাটেলের ৭৪তম জ্যোৎসব, পরে পতিত নেহরত্ব ৬০তম জ্যদিন উপলক্ষে। এই ছুই খন এখন ভারত-রাষ্ট্রের সর্ব্যোচ্চ পদাধিকারী এবং আমাদের রাষ্ট্র-নারক। বর্তমানে ই হাদেরই বৃদ্ধিনতা ও পরিচালনার উপর ভারত-রাষ্ট্রের প্রগতি ও পুষ্ট নির্ভর করে। উভর উৎসবে সমস্ত দেশবাসী ই হাদের দীর্থনীবন, খুট খাছা ও শক্তি কামনা ক্রিরাছে এবং আমরাও ভাহাতে যোগদান করিতেছি।

এই ছুই জনই বাংলার বাহিরের লোক এবং ছুই জনট বাংলার সহিত বিশেষ পরিচর রাবেন নাই। পাওত জবাহর-লাল ভো ওাঁহার এক পৃত্তে বাংলা সম্পর্কে অজতা বীকারই কবিরা গিরাছেন। সম্প্রতি এক বক্তৃতার সর্বার বল্পভাইও বাংলার সম্পর্কে জানের বিশেষ অভাব দেবাইরাছেন। রাষ্ট্র-চালকের পক্ষে কোনও প্রদেশ সম্পর্কে অজতা বা ওলাসীও বিচক্ষণতার পরিচারক নহে। আমরা আশা করি, তাঁহারা ছুট লনেই অলুরভবিষাতে তাঁহাদের এই জানের অভাব লুর করিতে সমর্থ হুটবেন। বাংলাদেশের বর্ত্তমান পরিছিতি ভারত-রাব্রের পক্ষে বিশেষ অম্বলনারক এ ক্যা ওাঁহারা মা বুরিলে বাংলা ভবা ভারত-রাব্রের অবিষ্যাৎ বিশ্বসমূল হুটবে।

বাংলার বিক হইতে আমাদের বুবা প্ররোজন বে, আন্তর্যা কাহারও নিকট সাহার্য বা সহাত্ত্তিপ্রার্থী হইরা যত বিন বাকিব তত দিন আমাদের আশা-তরসা কিছুবাত্র বাকিবেনা। বহি আমরা নিজ শক্তিবলে আমাদের লাবি আলার করিতে পারি তবেই আমাদের মলল, নরুবা নহে। বাংলার ব্বক-শের তবিতং ক্রেই অভ্যানাক্রর হইরা আসিতেহে, তাহাদের বহি চেতনা এবনও না হর, বহি এবনও তাহাদের উভাম উদ্ধালতার গতি ক্রম্ব না হর, তবে তাহারা ইনাট্যেন ক্রেই পারা বিলা মনকে হয়ত ভূই করা বার, ক্রি বাসাক্রাক্র চলে না। একবা তাহাদের বুবিবার সমর ইয়াহে। তাহারা একবা না বুবিলে বাংলা চির্দিন অভ্যাক্র প্রবিশ্ব নিকট ভাজিল্যের ব্য হুইরা বাজিবে।

## ভাষার ভিত্তিতে প্রদেশ গঠন

ভারত-রাষ্ট্রের কর্ণবারবর্দের, বিশেষ করিয়া প্রিভ ভবাত্র-লাল নেহক ও সর্বার বছতভাই প্যাটেলের অবিবেচমার কলে ভাষার ভিভিতে প্রদেশ গঠনের প্রশ্নটাকে ভাভ একটা সমভার পরিণত করা হইরাছে। প্রভিত ভবাহরলাল নেহত ভাৰপ্ৰৰণ বলিয়া উাহার কথাবাৰ্ত্তার মাৰে মাৰে হে অসংযদের পরিচর পাওরা বার ভাষা আমাদের গা-সভা ভইরা গিরাছে। সর্বার বল্লভভাইরের এই ছব্বলভা আছে বলিরা আমরা শুনি নাই। কিছ তিনিও মুবের লাগাম বুলিয়া দিয়াহেন। নাগপুরের একট বক্তভার তিনি **প্রাদেশিক্তার** নিকা করিতে গিরা বাংলাদেশকে টানিরা আনিরাছেন-"বাংলাদেশে যাও, তথার দেবিবে বিহার-বাংলা, আসাম-বাংলার বগড়া।" সর্বারকী কেন তাঁহার বরের কাছের দুষ্টাভের দিকে দৃষ্টি দিতে পারিলেন না, তাহার কারণ আমরা कानि ना। जरमुक महाबाद्धे द्धारम प्रदेन कहेवा (य वाबाक्स-वारमञ्ज एक स्टेबारक, त्याचार नश्त्री मशबूक महाबारहेब অভত্ত হটবে কিনা এই বিষয়ে গুৰুৱাট-মারাঠীর মধ্যে ৰে বিভঙার উদর হইরাছে, তংপ্রতি দুষ্ট আকর্ষণ করিলে নাগ-পুরের শ্রোত্বর্গ ব্যাপারটা অধিক বুর্বিতে পারিভেন। সে वाराहे रहेक. बहे विशव खिकित्नावनान मनक्षत्राना "रवि-জন" পত্রিকার ৩১শে অক্টোবর ( ১৪ই কার্ত্তিক ) সংখ্যার যাছা লিবিয়াহেন, ভাষা হইতে প্রশ্নটাকে অকারণ ঘটন করা হইতেহে এই কৰাটাই লাই হইৱা উঠে। নিরে ভাষা ছুলিয়া शिनांव :

"মহারাইপ্রবেশ গঠনের বিষরে ও ভাহার সঞ্চেবোরাই শহরের কি সম্পর্ক হইবে সে বিষরে ভ মণে এবং ক্ষনিতে যথেই উভেলনা দেখা বাইতেছে। ইহা লইরা এত উভেলনা ও বাহাল্যাল হইতেছে কেন ভাহা আমি বুকিতে পারি না। শেব পর্বত বাহাই হোড় না কেন প্রবেশ ত আর পাকিহান বা সভার বত হতত্ত রাই হইরা ইাড়াইতেছে না, অধবা জোন বিশেব প্রবেশের অধিবাসী

না হইলেও বে কোন ভারতীয় সেই প্রবেশে বসবাস করার অবিকার হইতে বিচাত হইতেতে ন। কোন প্রাবেশিক গবর্ষে উ এইয়াত্র বলিতে পারে বে, বে সকল লোক সেধাৰে বসবাস করিতে চার বা ভাহার পৌর কাৰ্য্যকলাপে অংশ লইতে চাত্ৰ ভাষাদের অফিস-সংক্রাছ চিটিপত্ৰ বা কৰাবাৰ্তাৰ ঐ প্ৰদেশের ভাষা ব্যবহার क्तिरेख एरेरव। मुडाख-बच्चन वना यारेख नारव (व. বোখাই শহর যদি প্রভাবিত মহারাই প্রচেশের অভত্ ক্রই হয় ভাষা হটলেও বোৰাই-এ এখন যে সকল ভারভীয় বাস করিতেছে ভাহাদের সেধান হইতে ভাছানও ঘাইৰে मा किश्वा छाराटमत विटमन विमा भगा कता एरेटव मा। क्वम এই পर्वष मारी स्टेटि शाद व कामक्राय ভাহাদের মারাঠী ভাষা এহণ করিতে হইবে। বেমন शांबरकाबाफ ७ वरबामा. खुबांहे अवर चारमावारमब মহারাষ্ট্রীয়েরা গুৰুরাট এহণ করিয়াছে। তাহা কথা বুব च्छीय यह ।"

পণ্ডিত জ্বাহরলাল নেহর ও সর্বার বল্লভভাই প্যাটেল এই ভাবে এই ক্ৰাটাকে ব্ৰিতেছেন না কেন, ভাষা দেশের লোকের ভাষা প্ররোভষ। ভংপরিবর্ত্তে তাঁহারা চীংকার कृतिशास्त्र "नर्यनान रहेन: नालानाश्चिक्णांत कनाात्य বেষদ ভারত-বিভাগ হইরাছে, সেইরূপ ভাষাগত পার্থক্যে ( প্রাদেশিকভার ) ভারত-রাই ছিন্ন-ভিন্ন ব্টরা পড়িবে।" এই চীংকারের পিছনে কোন বৃক্তি আছে বলিরা আমরা মধে করি না। বঠাত-বর্ষ বিহার-বাংলার বিতথাটার উল্লেখ **क्विट्ड हार्डे । ১৯১२ সালে यथन विराद क्षाप्तम जरशर्वेत्वद** श्राद्यांचान करतको वन्यांचा-यांची यक्त वारता स्टेट বিচ্ছিত্ৰ ক্ষিত্ৰা লঙ্বা হয়, তখন বিহার প্রদেশের নেতৃবৰ্গ জানিতেন বে এই ব্যবস্থা বেদী দিন টকিতে পারে না। विशादात श्रीदांचन कृताहरल, ताकरवत श्रीदांचन कृताहरल, क्षेत्र चर्ननश्चनि वांश्मात काल किविता चात्रित्व। ১৯১६ সালের খালহারী মাসে বিহারের নেতরল এই প্রতার্পদের शाक्षिको चीकांव कविया नरेवावित्नन। ১৯৩১ नात्न वान् রাজেপ্রকাদ মানভূম জেলা মুদ্রেলন উপলক্ষে সভাপতিরূপে একট প্রভাব পেশ করেন , তাহার মধ্যে এই শীকৃতি ছিল বে মানভুষ জেলার বসভাব:-ভাবী লোক-সমষ্টর শতকরা ৮৯ জন। আজ বিহারের নেতৃবর্গ এই সব কথার देशव बाबा-ठाणा विराव देरबट्ड ध्रम ध्रम ध्रम ही हीरकाव छुनिवा-(दम त्व त्कळीड मानकड्म गर्वाच चक्कारेडा निवाद्यन : ৰাংলার ভাষা বাবি খীকার করিয়া লইতে সাহস পাইতেবেৰ ল। ভারণ ভাহারা বাবু হাজেলপ্রসাধকে বিরক্ত ভরিতে भारतम् मा ।

গাৰীখীর অভ্রেরণার কংবেদের বিবাবে ভাষার ভিডিতে

व्यवन गर्गर्ठसम्ब ग्रंग्य शां मा भारेबाहिन, त्रिरंक्टरे अण्यक्षित व्यवनिकः कर्रां करिय व्यक्ति व्यक्ति कर्रांत्रम् मानित्य त्रया विवाद । देरत्रक्त्रं जांगत् द व्यक्ति विकान देरत्राहिन, कर्रांत्रम् व्यक्ति व्यक्ति विकान देरत्राहिन, कर्रांत्रम् व्यक्ति व्

### वाटानी-ववाटानी

ৰভিত বাংলার বাঙালীর আত্মকার চেষ্টাকে বাংলার বাহিত্রে এক শ্রেণীর লোক অবাঙালী বিভাতন বলিয়া প্রচার क्रिडिएएन अवर वांश्मादित्व क्रिड क्रिड क्रिड वादिन-কতা মনে করিয়া লক্ষার অবোবদন হইতেছেন। বাঞিগত चार्य वेश्वादम्ब नर्स्तव केश्वादम्ब भटक देश नाटक, केश्वादम्ब भटक এই মনোভাব সম্বৰও বটে। ভারতবর্ষের বিশেষ একট প্রদেশ नकन धारत्व जान्यादायीय निकाय-क्ष्म स्टेश पाकित्य. ভাষাতে আপতি ক্রিলেই উহা হইবে বোরভর আভীয়তা-विद्वाबी काक-बहेंगेहे यन वारनाव निविध स्टेबा হাড়াইভেছে। দীৰ্ঘল পূৰ্বে আচাৰ্ব্য প্ৰভুৱচন্ত বাঙালীকে चारमधी रहेराव एक देवृद कविटल निवादितम, किन সকলকাৰ হুইভে পাৱেন নাই। আৰও বাঙালী কাপড়ের জভ মাজোরারীর, তেলের জভ মুক্তপ্রদেশের, ছবের জভ विश्वीत. विस्तर क्ष वांचारेस्तर, अवर कीवनवाळात क्यूबन ৰত্ব অবভাগৰোক্ষীর এব্যের ক্বড ভিন্ন প্রবেশের নুধাণেক্ষী। वानवाएरमञ्जूषा वाहांनी शाकावीरवद देशद निर्वदनीन । अरे নির্ভরশীনভার প্রথম কলবরণ বাঙালীকে প্রভাকট ভেলান ৰাভত্ৰৰা কিনিৱা ৰাখ্য নষ্ট করিতে ক্ইতেহে। বিৱের নামে দালদা, সরিষার ভেলের নামে বিষাক্ত ভারামিরা বীকের टिन, इर्वत बार्य किक शांडेणात, अवाक्ष्ठे अवर वत्रनाक्रानत বিক্তার ইত্যাবি সেবৰ ক্রিতে হইতেতে। এই উপারে অৰ্থোপাৰ্ক্তৰ করিয়া অবাঙালীয়া বাংলাবেশ হইতে কি পরিষাণ অর্থ বেশে পাঠাইতেতে পোটাপিলে কিছুক্দ रीकारेलारे जारा पूजा बारेटन। जाटन बाराबा यम निन ঠাকা মনি অৰ্ডাৱে পাঠাইত এখন ভাহাৱাই ভিন চার পাঁচ শত ঠাতা ইভিওছ ভৱিষা পাঠাছ। যাঙালী ঘাবলখন এবং

বাহারকার অভ ভেলাল বাভতব্যের কবল হইতে ছ্তিলাতের অভ এট টাকাটা দেশে রাধিবার চেটা করিলে প্রাদেশিকতা ভিতপে হয় ভাষা আমাদের বৃদ্ধির অগমা।

স্থার প্যাটেল মাগপুরের বস্তুতার বাঙালীর উপর কটাক ভবিষাৰেন এবং বলিয়াৰেন বে বাঙালীয়া শিব ট্যালিওয়ালা-ত্তর ভাভাটবার চেঠা করিভেছেশ কিছুদ্বিশ আগে পশ্চিমবন্ধ ভংগ্ৰেস কমিটর সভাপতি ডাঃ সুরেশ বন্দোপাধ্যারও ট্যান্সি-গুৱালালের এক সভার বক্তভা করিয়া যাতা বলিয়াছেন ভাছাতে ইহাই বুৰা যায় যেন পাঞ্চাৰী-বাঙালীতে একটা শক্ষণ গভিষা উঠিয়াছে এবং ভাষার মত বাঙালীই প্রধানতঃ দায়ী। গ্রীসভোন মুধার্কি মোটর ভেছিকেল আশিদ ছইভে অপসারিত হওয়ার পর কলিকাতার রাজপথে ট্যাল্লিও বাসচালকদের বাবহার কিন্তুপ দাঁহাইয়াছে সে সহজে বাঁহাদের অভিজ্ঞতা আহে তাঁহারা এই বিরোধের বুল কারণ বুঝিতে शांतिरवम । हेरारम्ब भरना (वन मन, किन क्षां काम मन লোকের সংস্পর্নে ইহাদিগকে আসিতে হয়। কাছেই এক ভন পাঞ্চাধীর ছুর্বাবহারে বহুসংখ্যক বাঙালী ক্রছ হয় এবং ইহা হটতেট একটা বিষাক্ত আবহাওৱার স্ঠি হয়। মিটারের উপর শতিরিক দাবী, আন দুর বাইতে না চাওৱা প্রভৃতি ট্যান্তি-চালকের দোষ। কিছ বাস-চালকদের দোষ খতি মারায়ক। ট্রামের সহিত ইহাদের বেন একটা মজাগত বিরোধ, কোন-না-কোন প্রকারে টায়ের গতিরোধ করিতে পারিলেই ইহাছের খানদ। ট্রাম খাইকাইরা বাস চালানো রীভিয়ত রেওরাক হইরা পভিরাছে। সম্প্রতি একট শোচনীয় ঘটনা আমরা প্রভাক করিরাছি। সাকুলার রোডে মির্কাপুরের যোড়ের একট আংগ উত্তরগামী একট ট্রামকে থামিতে বাধ্য করিবার ৰৰ উত্তরগামী একট বাস টামের ভান দিক বটতে রাভার বাম দিকে যাওয়ার হল ভীত্রগভিত উপত্র অকসাং বাম দিকে মোড় কিরে। বাসের দরকার একটি লোক বাহিরে बुनियांचिन । जरवर्ष अञ्चितांत्र अवर लांकहेटक वाँठाहेवांत ৰত ট্ৰাম তংক্ষণাং থামে কিছু তংসত্ত্বেও লোকট ট্ৰাৰের সহিত বাকা লাগিয়া পভিয়া বার এবং শুকুতরব্রণে আহত হয়। মীৰ বা ধাৰাইতে পাৱিলে লোকট চুৰ্ব হুইৱা বাইত। রাভার ভাষ্ট্রিক এবং সন্মুধ সন্মূর্ণ পরিষ্কার ছিল , নিছক চলতি ইাম পানিতে বাধা করা হাড়া বাসটার এই ফ্রন্ড বোড় কির'নোর कांग कांद्र दिन ना । वारमत नवत अक कन करमहेरन हेकियां नव अवर द्वारमत हरे कम बांबी जाका दरश्वात कुछ बास-विकामा (वन, किंद कांग कम एवं गाँर। अस क्रम वान-कांमक्रिय माद्य अवन अकड़े बड़ेना बड़ेन, किन द्वादात वांकी अवर चानीत বহু লোকের মন ইহাতে পাঞ্চাবীরের উপর বিষ্টিয়া রহিল। টাৰ ঘাটকাইবার কভ রাভার নারধানে বাদ ধানাইরা বাঞী লওবা,ঙ্বাবাৰো বাছবের পক্ষে বিপক্ষক্ষ জ্ঞানৰ

देशरे वितरण्टह । बाद्य बाद्य चार्क्टराचार नाम भर्गास অনেককণ বরিষা গাঁড় করাইয়া আরও বাত্রী আহ্বান এবং . তার পর বেপরোরা ছটতে গিরা ছবটনা বটানো আক্কাল वेद रचने चांद्रच एरेबाट्य । शहरमद निरंप विरंपवचारय और अक्षे वाशित नहेता श्रीत श्रीकाच वाटम वंत्रण वह अवर बाढानी बाबीदा देशांद एक हानक भावांवी जवानटक बानैसांव কৰে না ইবা নিকিত। পুলিসের তরক বইতে হোটর क्षित्वन अवर इच्छा कांबावार व हो किक विकान अहे सहाब বৰ করিতে পারে, কিছ চুইটভেই এত অযোগ্য লোক वर्गात्मा स्टेशांट त्व मानिन क्रिशिष क्मा क्म स्थ मा अवर ট্যান্তিও বাসওয়ালারা ইছা ব্রিয়া লইয়াছে ব্লিয়াই এত উদাম হইরা উঠিয়াছে। কলিকাতাছ পাঞ্চাবী সমাৰণতিয়া অপ্রসর হইরা এটা বন্ধ করিলে পাঞ্চাবী-বাঙালী বিরোধ অন্ধ पित्म एव एरेवा यारेत्व। वाक्षामी अरे क्लाउ पारमधी হওৱার চেঠা করিতেহে সভা, কিছু ক্ষেত্র এত বিভূত বে এবানে উভৱেরই ছান হওয়া কঠিন নয়। ভবে তাহার হুড সম্ভাব আবশ্বক। পঞ্চাবকে বাঙালী চিরদিন বছ মনে क्रिवारक, किन्न क्षणिमारन चरनक नमव वांका शहिबारक ভাহাকে ঠিক মিত্ৰতা বলা বার না।

## কলিকাতায় ছুৰ্গোৎসব

ঘূৰ্ণাপূলার ভাব ও ব্যঞ্জনার সহত্রে বৃদ্দিচজের কথা চড়াছ। কলিকাতা মহানগরীতে বারোরারী হুর্গাপুলার যে ব্যবস্থা জনপ্রির হট্যা উঠিয়াছে, ভাহার মধ্যে সেই ভাবের কোন পরিচয় পাওয়া যায় না। সেইছর "নব-সব্দ" গুডিকার ১৫ট ভার্মিকের সংখ্যার প্রবর্ত্তক সন্দের প্রতিষ্ঠাতা এমতিলাল बाब वर हः दं निविदारहम : "अठ वर नार्यक्रीम इर्तारमस्य কে কত প্ৰকাৰে প্ৰতিমাৰ সাৰস্কা কৰিল, কভৰানি चार्याप-श्रापं-त्केष्ठरकत यावष्टा कतिन, श्रपंनी कारात কৃত বড় হইল, তক্লণেরা ইহা বাতীত দেশের ও দশের কল্যাণ করিলেন কড়টকু ?" আমরা শুনিরাছি যে কলিকাতার বাগ-বাজার, সিমলা প্রকৃতি হুর্গাপুলার আয়োজনে প্রত্যেক্টতে शांत विन-नेतिन जाजात है। जा वात प्रदेशांत् । जानवा किस টাকার হিসাবের দিক দিয়া ব্যাপারটার বিচার করিতে চাই मा। य देवांक्मा श्रकांन चावता और गूना देशनरकं नका করিবাছি ভাষা আমাদের ভাষাইরা ভূলিরাছে। ভাতির জীবনে উৎসবের প্রয়োজন আছে: জাতির মানসিক বাহ্যের ভঙ্গতাত্তপতিক জীবনে পরিবর্তন জানিবার ভঙ্ হুর্গাপুলার मक केश्मत्यत वावश कृतिया हिन्यू-पाळकात्रन विवासित সিয়াহেন বে তাঁহারা নানব-মনের খাভাবিক বুতুকার প্রতি म्बिक्क दीवादा देश्मरवद देशव संचाराम हिर्मा। আব্যাবিক্তার ছাপ দিয়া ভাতিকে বাছিক উন্নাদনার বাক क्ट्रेंट कु वाचिवात (हरे) कविवाद्य ।

া আৰু আমন্ত্ৰা সে সৰ কৰা ভূলিনা গিনাছি: সামাজিক উৎসবের প্ররোজন ও উদ্বেপ্ত তাচ্ছিল্য করিয়া কলিকাতার হিন্দসমাৰ বাছিক আভবরে মত হইরা প্রিরাহেন। ইহাতে কিছুমাত্র সংবম নাই। ছুর্গাপুকার ভাব ও ব্যঞ্জনা সহছে কোন ৰাৱণা বাকিলে এল্লপট হইতে পাৱিত না। এর পরিবতি কোধার তংসহতে অবহিত হইবার ভচ আমরা সমাজপতি-গণের নিকট অনুহোধ কানাইতেছি। ভারত-রাষ্ট্রের শাসক সম্ভাগারেরও এই বিষয়ে কণ্ডব্য আছে। স্বাধীন ভারতে নৃতন য়পের মানুষ ভৈয়ার করিবার দায়িত তাঁহাদের। তাহার কর প্রবোধন মৃতন শিক্ষার ও মৃতন ব্যবহার। অনেক পুরাতন প্ৰবা বাতিল হইয়া গিয়াছে; অনেক পুৱাতন ব্যবস্থা নব কলেবর ধারণ করিয়াহে; অনেক পুরাতন তন্ত্রের মৃতন ব্যাধ্যা খীঞ্ত হটরাছে : পুরাতনের মধ্যে বহু চিরম্বন সভ্য ৰু কিয়া বাহির কর। হইয়াছে। চিন্তাৰগতে ও কৰ্মৰগতের মধ্যে যে আলোড়নের স্ট্র হুইয়াছে, তাহার মধ্যে পভিয়া সমাজ-মন বিভ্রান্ত হইয়াছে। এইরূপ অবস্থা হইতে মুক্ত করি-বার ছারিছ কাছার, এই প্রশ্নই আমরা ছেলের লোককে করিতেছি।

#### পশ্চিমবঙ্গে সামরিক শিক্ষা

वाक्षांनीय क्यांटन देश्यब-बांक य क्नाइय हाय---"অসামরিক ভাতি"—দাগিয়া দিয়াছিল তাহা মুছিয়া কেলিবার কোন চেষ্টা আমহা দেখিতেছি না বলিয়া প্ৰতি মানে কনমতকে ভাগ্রত করিবার চেষ্টা করিতেছি। কেন্দ্রীয় নেহর-সচিব-মঙলী বেমন দিনগত পাপক্ষ করিয়া ঘাইতেছেন পশ্চিমবৃদ্ধের রায়-মন্ত্রিমণ্ডলীও ভাহার অভুসরণ করিভেছেন। ইংরেজের राज रहेरज य कार्शायांकी त्नर्य-मित्रमक्ती भाहेशहिलन. তাহা নাড়াচাতা করিয়াই তাঁহারা আত্মপ্রদাদ লাভ করিতে-ছেন: কাশ্বীরের রক্ষার প্ররোজনে. "পাকিস্থান" বর্জরভার হাত হটতে কাশ্বীরকে রকা করিবার বন্ধ, ভারতের কনশক্তির সংগঠনে ভাঁহারা কোন উৎসাহের স্ট্র করিতে পারিতেহেন না; হারদরাবাদ রাব্যের "রাজাকর"-বিভীষিকা দূর ক্রিবার পর তাঁহারা যেন আরও নিক্তেই হইরা পঢ়িতেছেন। এই অবস্থার পশ্চিমবদের মন্ত্রিসভাঁ গভাহগতিক ভীবনের মধ্যে ডুবিরা থাকিলে বাংলার ভবিয়তের বিষয়ে বিশেষ নৈরাঞ্চের কারণ ক্সাইবেন।

সভাই চিভিত হইবার কারণ আছে। সর্থার বন্ধতভাই প্যাটেল নাগপুরে গর্জন করিয়া পূর্জ-পাকিছানের প্রতি বেরপভাবে উদ্যাভদও হইরাছেন, তার প্রতিক্রিয়া আমর্মা লক্ষ্য করিতেছি। পূর্জবদের প্রধান নত্রী মিঃ স্থানল আমিন ভ "বিনা মুছে নাহি দিব স্থান্ত বেদিনী" এই প্রতি-উত্তর করিয়াছেন, এবং আমরা ভাবিতেছি মুছের এই কন্ধনার মধ্যে ভাঃ বিধান- চল্ল বাবের মন্ত্রিসভার বিশেষ কর্তব্য আছে কি ? নিক্টেই হইরা শিব, গাড়োরালী, গুর্বা, মারাঠা সৈত্তের ভরসার নিক্রব্রেস নিল্লার কথা উাহারা কর্বনই ভাবিতে পারেন মা। খত সকল প্রবেশের মধ্যে নিক্র্য শিক্ষিত সৈত আছে, বাহারা সামরিক শিক্ষালাভের পর মুক্ট বা পেলন পাইরাছে। উপরস্ক আনেক প্রবেশে "প্রান্থিক রক্ষীদল" হিসাবেই হালার হালার ব্যক্ত সামরিক শিক্ষালাভ করিতেছে। আবাদের এই প্রদেশ সীমাভের উপর, অবচ এবানে না আছে সামরিক শিক্ষাপ্রাপ্ত রক্ষীদল।

সামরিক শিক্ষার উভোগ-আয়োকনের কর বে উৎসাহ বা সাহসের প্ররোজন ভাহার অভাব বাঙালীর মধ্যে আছে, তাহা আমরা বীকার করি না। চৌধুরী, রুদ্র, আকাশ-বুছে কৌশলী রুধার্জীর মত রুছপটু সেনাব্যক্ষ থাকিতে এই অকুহাত উঠিতেই পারে না। মাদ্রাজী সাংবাদিক কান্দ্রীর রণালনে বাঙালী সৈভাব্যক্ষের উপস্থিতি ও বাঙালী সৈভ-বাহিনীর অস্থপন্থিতি লক্ষ্য করিয়া আকর্ব্যবোধ করিয়াছেন। এই অসম উন্নতির কারব স্থবিদিত। তাহা দূর করিতে হইলে বাঙালী সৈভাব্যক্ষকে আনিয়া বাঙালী সৈভকে শিক্ষাদানের ব্যবহা করিতে হইবে। সেই পথে বাবা কোধার ডাঃ বিধানচন্দ্র রায়কে তাহা আমাদের জানাইতে হইবে। সাপ্রাহিক সাংবাদিক-বৈঠকে প্রয়োজর করিয়া এই বিষয়ে দেশের লোকের অল্পষ্ট বারণা সব লাই করিয়া এই বিষয়ে হইবে। লোকশিক্ষার ইহাও একটা অল।

এই ব্যবস্থা করিতে বিলম্ব হৃইবে কেন তাহা আমর। জানি
না, এবং বিলম্বের সন্তাবনা থাকিলে ততদিন আমাদের নিক্টেঃ
হইরা বসিরা থাকিতে দেওয়া হইবে কেন ? সামরিক শিক্ষার
পক্ষে লোক-সংগ্রহ প্রাথমিক কর্তব্য। এই উল্যোগ-পর্বের কন্তও
কি সংগঠকের অভাব ? বাংলাদেশের বৈপ্লবিক আন্দোলন
ও সপ্রাসনবাদের ইতিহাস বাহারা জানেন, তাঁহারা এই অপবাদ
অধীকার করিবেন। বে সংগঠনশক্তি ইংরেকের দাপটে
ভাতিরা পড়ে নাই, তাহার সহাবহার হইতেহে না কেন তাহা
আমরা ভানিতে চাই। সোভিরেট রাট্রের বাল্যাবহার ভাহার
সামরিক শক্তি সংগঠন করিয়াহিলেন এক বুছিলীবী বিপ্লবীলিয়ন্ট্রট্রী; তাঁহার সামরিক শাত্রে কোন জান হিল বলিরা
আমরা ভানি নাই। তথুও তিনি রাট্রের কর্ণবার লেনিনের
আপ্রেহে এই অনভ্যন্ত কর্তব্যের ভার সইরাহিলেন। জোসেক
ইালিনও এই পর্যারভুক্ত সামরিক শাত্রে অনভিক্ষ। কৃত্ব
এই ছই জনই সোভিরেট রাট্রের সামরিক সংগঠনের প্রটা।

পুৰোগ ও পুৰিবা পাইলে বাঙালী বুছিজীবী বিপ্লবীও অনুস্থা জসাব্যসাৰৰ করিতে পারেন। সেই পুৰোগ ও পুৰিবা উন্থাকে কেন বেওৱা হইতেছে না ডাঃ বিবানচল রারের নিকট হইতে আন্রা তাহার একটা সহন্তরের অপেকা করিতেছি। নাবে একবার শুনিরাহিলান বে পশ্চিমবদের

পর্ব বিভাগের মন্ত্রী জীভূপতি মভুমদার এই সংগঠন-কার্ব্যের লাভিত প্রচণ করিয়াছেন। মন্ত্রী মহাপরের যৌবনের উৎসাহ-<u>৯৯ীপনার কৰা আমাদের জানা থাকার আদা হিল বে</u> এবার ভার্ক সভ্য সভাই ক্রত অঞ্চনর ভইবে। ভিত্ত যেরূপে সমৰ কাৰ শিহাইয়া যাইতেহে ভাষাতে আমাদের সমস্ত ভৱসার বনিয়াদ শিশিল হইয়া সিয়াছে। অপচ এই বিষয়ে মধ বুঁজিয়া থাকিতেও পারিতেছি না। বাঙালীর কলম ৰোচনের বভ সামরিক বৃত্তির পুনরক্ষীবনের প্রয়োজন; ভারত-ৱাষ্ট্রের পূর্ব্ব-সীমান্ত বন্ধার ক্রম্ম বাংলাদেশে সামরিক বিদ্যা ব্যাপকভাবে প্রসারেরও আবন্তক। কলিকাভার পাভার পাড়ায় যে যুবলজ্ঞি কর্মাভাবে শ্লোগানৱতী হইয়া পড়িয়াছে, পশ্চিমবদের পদ্ধীতে পদ্ধীতে যে ক্ষাত্ত-বীৰ্য্য অনাদত শ্ৰেপীর মধ্যে ভন্নাচ্ছাদিত বহিংর মত বিকিৰিকি ছলিতেছে, তাহার সংগঠনের ক্ত স্থার দিল্লীর দিকে চাহিলা থাকিলে বাঙালী কোন মন্ত্রিষণ্ডলীকে ক্ষা করিবে না। আর একবার ভাঃ বিধানচন্দ্ৰ রায়কে এই কথাটাও মনে রাধিয়া চলিতে অভবোধ করিতে চাই যে, যে মন্ত্রীর উপর এই কাজের ভার ভিনি দিয়াছেন তাঁহার খন্ত ভার লাখন করিরা হউক বা যে প্রকারে **হউক এই সামরিক শিক্ষার দ্রুত প্রগতির দিকে তাঁহার একাস্ক** চেঠার পথ যেন মুক্ত রাখা হয়।

পশ্চিমবঙ্গের উন্নতিবিষয়ক পরিকল্পনা

পশ্চিমবদের উরতির জন্ত নানাবিধ পরিকল্পনা সরকারী দপ্তরথানার নানা বিভাগের আলমারীতে জমা রহিরাছে; উরতিকানী অনেকের পরিকল্পনা সেই হানে আসিয়া জমা হইতেছে। এক দাখোদর উপত্যকার উর্ন্তন পরিকল্পনা হালা আর কোনট হাতে লওরা হয় নাই, এবনও কাগজের আঁচড়ের অবহার ভাষা আছে। ইহার কারণ সহত্যে একট কথা মনে হয়। পশ্চিমবদের মরিমঙলীর মাথার বসিয়া আছেন এক জন বিচক্ষণ আজার; পশ্চিমবদের সর্ব্য-আলে ব্যথা দেখিরা কোথার ঔষধ দিবেন, ভাষা ভাবিরা ভিনিও কিংকর্তব্যবিস্চৃহইরাছেন। আর অনেকগুলি ন্যাপ্রারর "নোকরসাহীর" (hureaucracy) কেভাছ্রজ কাইলের উপর সংক্ষিপ্ত মন্তব্য লিখিয়া, সংক্ষিপ্ত নাম দত্তবত্ত করিয়া দিন কাটাইভেছেন। ভাষারা "নোকরসাহীর" চোধে দেখেন, ভাষাদের কানে ভবেন, নিজের কোন পরিকল্পনা আছে বা ভাষার পক্ষেত্রেন, নিজের কোন পরিকল্পনা আছে বা ভাষার নাই।

দৃষ্টাছ-বরণ ছই-একটা পরিকল্পনা সহছে কিছু বলিতে চাই।
১৯৪৪ সাল হইতে হরিণঘাটার বাংলাদেশের ছরের উংপাদন
বৃদ্ধির কচ প্রার ৬০ লক্ষ টাকা ব্যব করিব। একট "বাটাল"
প্রছতের কাক্ষ আরম্ভ হর ; এই চারি বংসরে সেই ছানে
একট গরুও বার নাই। বাদি প্রতিঠানের জীসতীশচক্র
বাশগুর বাদি এই বিবরে একটা কর্মপন্থার নির্দেশপন্ধ

সরকারী দপ্তরধানার পেশ করিয়াছিলেন; তাহা আলোচনার পর্যারের উর্ব্বে উঠিতে পারে নাই। অথচ বোহাই প্রেরেশের মরিমঙলী অন্থর্ম একটা পরিক্রনার রূপ দিতেহেন বোহাই নগরী হইতে ২০ নাইল দুরে আরে প্রারে। এই কান্দে ২ কোট টাকা ব্যর হইবে, এবং ভারপ্রাপ্ত মন্ত্রী বোষণা করিয়া-ছেন যে হই বংসরের মধ্যে উহিলা এই টাকা শোধ করিয়া দিবেন। পশ্চিমবন্দের ক্রি-মন্ত্রী প্রীযাদবেন্দ্র পাঁজা বর্তমান মুনের বিরাট কিরাট পরিক্রনার উপর প্রভাবান নহেন; ক্রিড সম্বন্ধে তাঁহার নিজের কোন পরিক্রনা আহে বলিয়া ভানি নাই, এবং সেই পরিক্রনাকে রূপ দিবার উৎসাহ আহে, ভাহার কোনও পরিচর পাই নাই। কলে তিনি নেতিবাচক নীতি অন্থ্যরণ করিয়া বাইতেছেন।

এখন শিক্ষা-মন্ত্ৰীর কথা বলা ঘাটক। রার জীহরেক চৌধুরীকে ডা: বিধানচন্দ্র রায় অনেক আশা করিয়া মন্ত্রিসভায় স্থান দিৱাছেন অনেক কলকাঠি নাড়িয়া। কিছু এভদিন চলিয়া গেল তবুও আমরা বৃধিতে পারিতেছি না যে বিশেষ ভাবে কোন বিষয়ে ভাঁহার কোন উৎসাহ-আবেগ আছে. বা কোন বিশেষ পরিকল্পনার কল তাঁছার বিশেষ চেষ্টা আছে। ত্তরাং শিক্ষার উন্নতির জন্ম নানা পরিকলনা জট পাকাইরা গিয়াছে। উচ্চশিক্ষার বন্ধ কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় আছে : ভাঁহারা চীংকার করিরা নিজের পাওনাগণ্ডা আদার করিরা লইবে। পণ-শিক্ষার ব্যবস্থার কর মন্ত্রিমণ্ডলীকে বিরভ করি-বার লোক দেবিতেছি না। স্বভরাং মন্ত্রীপ্রবর বুনিয়াদি শিকা ক্ষিট ও "বয়ন্ধ শিকা" পরিকল্পনা ক্ষিট এই চুইট ক্ষিট নিরোগ করিরা দিরা বিশ্রাম করিতেছেন। শিক্ষা বিভাগের ভিরেক্টর ডাঃ স্থেম্মর দম্ভ সব্যসাচী বলিয়া কোন পরিচর পাই নাই। ভাল লোক বলিয়া তিনি অভাতশক্ত হইতে পারেন; भिष्ठे कथाय नकलएक छुडे कविया वाचिवाव कोमल छोहाव दनम ভানা ভাছে। কিছু শিভার নানা পরিকল্পনার চাপে তিনি তলাইরা বাইতেছেন বলিরা মনে হয়। অখচ ভাঁছার বলিবার সাহস নাই যে নৃতন লোকের উপর এই কর্মভার দেওরা र्फेक । य পরিকল্পনাই ভাষার উপর চাপাইরা দেওরা হউক. তাহা তিনি অবোধ ও কুম্বলু বালকের মত মাৰা পাতিয়া লইভেছেন।

ৰত্ৰী বহাপরেরও জকেপ নাই বে এক্তন লোক এত কাল স্বৰ্থাবে করিতে পারে কিনা। "বয়ত্ব শিলার" কথাই বরা বাউক। এই সহত্বে কমিট একটা রিপোর্ট বিরাহেন তনিয়াছি। এই রিপোর্ট প্রস্তুতিতে মুসলমান সভ্যগণের কোন সাহায্য পাওরা বায় নাই, অবচ মি: রেকাউল করিমের মত ভাতীয়ভাবাদী রুসলমান এই কমিটির সভ্য আছেন। রিপোর্ট অহ্যারী "বয়ত্ব শিক্ষা"র হন্ত শিক্ষকরের একটা বিশেষ টেরিভের ব্যবহা করিবার ক্ষণা; ১৩ই নবেশ্বর হুইতে শিক্ষদের শিক্ষাকার্ব্য আরম্ভ হইবার কথা ছিল। তাহায় কোন হদিশ পাওরা বাইতেহে না, অবচ মহিলা প্রতিষ্ঠান-সন্থের শিক্ষার-গণ ছুট লইবা বিসরা আছেন ১৫ই নথেছর মূতন পাঠ আরছের কয়। এই গড়িমসির মানা কারণ সহছে একটার করানা করিছে পারি। "বর্হ্য শিক্ষা"র ব্যবহাটি কার্যাকরী করার দায়িত্ব শিক্ষা বিভাগে ডিরেক্টরের উপ্র পভরাছে; তার অবহা উপরে বর্ণনা করিরাছি। কমিট এই বিষয়ে অপর কোন প্রতিষ্ঠানের করানা করিছে। কমিট এই বিষয়ে অপর কোন প্রতিষ্ঠানের করানা করিছে। কমিট প্রভাব করিরাই বালাস, এবং অন্ত কোন কারের অভাবে ডাঃ স্লেহ্যর দভের কারে গিয়া জোয়ালটা পড়িয়াছে। "নোক্র্যাহীর" গদাই-লক্ষরী চালের কথা ক্যানিহা শুনিয়াও কমিট এতদপেকা কোন কার্যাক্ষী প্রভাব করিতে পারেন নাই। ফলে এই পরিক্ষানাটাও পিছাইয়া ঘাইতেছে।

ইহার কর জনমতের নিকট দায়ী শিকা-মন্ত্রী ঞী॰রেন্তর চৌবুরী। তিনি কিছ ডাঃ বিধানচক্র রাবের পক্ষহারার নীচে নিশ্চিত্ত মনে বসিরা আছেন। কৃষি-মন্ত্রী ও শিকা-মন্ত্রীই কেবল "নোকরসাহীর" হাত বরা নয়। তাঁহাদের সহযোগী-দের অবস্থাও এইরপ বা তভোবিক শোচনীর। সকলেই দিন গুনিতেহেন। অতীতের নিশ্চেইতার বেড়া ভালিবার শক্তি কাহারও নাই। যে বিপ্লব্রী ভাবের দাপটে ইংরেজ্ব, সরিরা গিরাছেন; সেই ভাব-সম্পদ ছ্-এক জন হাড়া কাহারও হোগার্জিত নয়।

পশ্চিমবদের মরিসভার সম্বন্ধে এরপ মন্তব্য করিতে আমরা কোন আনন্দ পাই না। তবুও কর্তব্যের দারে তাই করিতে হর। আমাদের ছুর্ভাগ্য তাঁহাদের অপেকা বেশী।

#### वाःलारमर्भ ममवाय जारनालन

বাংলাদেশে সমবার আন্দোলন সম্পর্কে আলোচনার বছ সাহাযা, পুনর্ফাত ও সমবায়গ চব শ্রীনিকুঞ্জবিহারী মাইতি সন্দ্রতি একটি সাংবাদিক সন্দ্রেলন আহ্বান করিয়াছিলেন। সন্দ্রেলনে এই অতি প্রয়োক্ষীয় বিষয়ট কইয়া দীর্ঘ আলোচনা হর, কিছু কোন অভিছিত ও অনিষ্ঠি পরিকল্পনার পরিচয় উহাতে পাওয়া গেল না। সাংবাদিক সন্দ্রেলন বলিতে আক্কাল সরকারী ঘোষণা বা মন্ত্রীমহাশরদের পরিকল্পনা প্রচারের বে বৈঠক বুবার, উক্ত সন্দ্রেলনও তাহাতেই পর্ববিদ্ধ হইয়াছে।

মাইতি মহাশয় বৃক্তপ্রদেশের স্মবার ব্যবহার প্রশংসা করিয় বলেন বে, তথার বীকাগারকে কেল করিয় 'মাল্ট-পারপাস' সমবার সমিতি গড়িরা উটিয়াছে, বীক সার এবং কৃষির মলাদি সমবার করা উহার কাক। এই সমিতি গঠনে

তথাকার ভবি বিভাগ ও ভংগ্রেস-কর্মীরা সাহাব্য ভবিহা-ছেন একবাও তিনি বলেন। ছংখের বিষয়, মাইভি মহাশয় তাঁহার নিবের প্রদেশের সমবার বিভাগের কোন ক্রতিছের वा बानश्त्राक्रमक कार्दात कवा वनिष्ठ भारतेन नाहै। সম্বেদনে বিভিন্ন প্ৰস্লোভৱে বুকা গিয়াছে বে. কৰি সম্বাহ जरद जबकारवब देखनरवांना काम मारे। बाइनी ব্যৱাতী সাহায্য, কৃষি-ৰণ দান এবং টেই বিলিক হাড়া আর किहरे करा रव नारे । खरीर अवराव अविशिक्षाता विश्वन অৰ্থ ঢালা এবং সেটা সাধারণতঃ চোরের উদরপূর্তী ও ভিত্তুক-পোষণেই বরচ হটরা গিয়াছে: কৃষি সমবার সমিতির প্রধান যে উচ্চেপ্ত ক্ষমককে স্থাবলম্বী করা এবং ভাষার উৎপাদন বুছিতে সাহায্য দান, সে দিকে বিশেষ কোন মন্ত্ৰর দেওৱা एव मारे। वदवाणी जाहाया, स्वि-वन मान अवर (हैहे विकिक প্রভৃতি কার্ব্যে সরকারী কর্মচারীর উৎসাহিত হওয়ার কারণ আছে : ইহাতে সুবিধা জনেক। প্রথমত: কাল দেশাইবার बक्षां वाहे, बत्र (प्रवाहेत्महे स्हेम : विजीयज:, हिनार्वय अक এদিক ওদিক করিয়া ছ' পয়সা ছাতে আনিবার বিলক্ষণ সুযোগ আছে , তৃতীয়ত:, কাঁচা টাকা দাতবা ক্রিবার ক্ষ্মতা হাতে बाकांत्र प्रम शाकांदेश (यासमी कृतियात स्थित। देशतश्वामाता যেবানে নিপ্ৰাময় সেবানে ইহাতে অসুবিধারও কোন কারণ নাই , তার উপর যদি ইহাতে উপরিস্থ প্রভূদের আধিক বা ৱাৰনৈতিক কোনৱপ বাৰ্থ বাকে ভবে ভো কৰাই নাই। সমবার সমিতির নামে যে অর্থ ব্যন্থিত হইয়াছে ভাহার গভ ক্ষেক্ বংসৱের প্রক্রত হিসাব খুঁজিয়া বাহির ক্ষরিবার চেটা क्तिल चत्क छवा श्रकाम शहरव। ३६६ मांत्रहेत পর এটা বন্ধ হওয়া উচিত ছিল, তাহা বয় নাই; সে চেটাও দেবা যায় না। যে টাকা ইহাতে অপচর হইয়াছে তাহা দিরা সার কিনিয়া প্রামের মাঠে মাঠে ছড়াইরা দিরা আগিলে অভতঃ একটা বড় কল পাওয়া যাইভ, বাংলার বাভাভাব ছুচিত।

মাইতি মহাশর ১১৪৮ সালের ৬ই নবেশর তারিবে কলিকাতা মহানগরীর সাংবাদিকরক্ষকে আহ্বান করিরা সমবার সমিতি গঠনের প্রয়োজনীয়তা ব্যাখ্যা করিরাছেন এবং বড় বড় পত্রিকা মারকত উহা প্রচারিত হইরাছে। ছইট ছানের অবিবাসীদের উভমের ছইট উলাহরণও তিনি দিয়াছেন—আমাদের বিশ্বাস এরপ উলাহরণ আরও পাওরা মাইবে এবং সন্ধান লইলে দেখা যাইবে বে, ইহারা প্রায়ই সরকারী সাহায্য হাড়া সম্পূর্ণ নিজেনের চেটার সাকল্য অর্জন করিরা-ছেন, সাকল্য লাভের পর সরকারী কর্তারা বাহাছ্রী লইতে অপ্রসর হইরাছেন এই মান । হগলীর ক্রেকট প্রামে এরপ উলামের ডথা আমরা ভানি। লেখানে ক্রেকট প্রামে সম্বার সমিতির চেটার ম্যালেরিরা বিভালন এবং প্রাম্ব পরিছার আরম্ভ হইরাছে। সরকারের নিজ্ট ইহারা কোন

লগ সাহাব্য চাহিতে বাইবেন না, এই সহল লাইবাই ইংবারা কার্য্যে অবভীর্গ হইরাছেন এবং অল সমরের মধ্যে অনেকগুলি প্রাম ইহাদের বেবাদেশি উৎসাহিত হইরা উটিতেছে। প্রাম-গুলিকে পরিভার, স্বাহ্যকর প্রবং স্বাবলয়ী করা ইহাদের উদ্ভেপ্ত; তাহার অত ইহারা সরল প্রবং অনাভ্যর প্রাম্য জীবনকে কিরাইয়া আনিবার চেপ্তা করিতেছেন। সকলের আগে স্বাহ্য, শিক্ষা প্রবং মন্থ্যক ; শহরের বিলাসিতা ও বৈতব জাতির পক্ষে মনলকর নহে, ক্ষতিকর—এই কবাটাই নিজেদের দৃষ্টাপ্ত দিরা ইহারা ব্রাইবার চেপ্তা করিতেছেন। সরকারের উচিত এই সব প্রচেটার স্বান লওরা প্রবং স্বতঃ-প্রধাদিত হইরা ইহালিগকে সাহাব্য করিয়া এই সব শুভ প্রচেটাকে সর্ব্যে অভাইয়া দেওরা।

সমবার সমিতির প্রবোজনীয়তার বক্তৃতা পঞ্চাপ বংসর আপে

হইবা গিরাছে; এবন আর তাহার প্রবোজন নাই। পৃথিবীর

সমভ সভা দেশ সমবার সমিতিকে জাতীর জীবনের, বিশেষতঃ

আর্থিক জীবনের একট অতি বভ অকরণে প্রহণ করিরাছে।

বিভিন্ন দেশের এবং বিভিন্ন প্রেম্বর লোকের প্রবোজনাল্নারে

সমবার সমিতির রূপ পরিবর্তিত হইরাছে, কিছ কোন দেশই

উহার বুল লক্ষ্য হইতে, বিচ্যুত হর নাই। সমবার সমিতি

মান্ন্রকে স্বাবলাধী করিবে, পরস্বরের বিপদে পারম্পরিক

সাহাব্যের ব্যবহা করিবে, সজ্বহর প্ররাসের ছারা বনী বিকিক

ও চোরাকারবারীর কবল হইতে সকলকে সুক্ত করিবে—

বররাতী সাহাব্যের নামে ভিক্ক পোষ্ণ কেকে পরিণত

হইবে না। এ দিক দিরা স্বাধীন বাংলার সমবার সমিতি গত

পনের মাসে এক পদ্বর অপ্রসর হুইরাছে বা হুইবার চেষ্টা

করিবাছে, মাইতি মহালয় তাহার কোন পরিচয় দিতে পারেন

নাই।

বাংলার সমবার সমিতির উন্নতি, সাধন করিতে হইলে
সর্কাপ্রে উহার গোড়ার গলদগুলিকে দূর করিতে হইবে।
প্রথমেই সমবার বিভাগটকে সাহায় ও পুনর্কসতি হইতে
পৃষক করিয়া একট শুভর দপ্তরে পরিণভ করিয়া আবৃনিক
সমবার আন্দোলন সহছে জান ও অভিজ্ঞতা সম্পন্ন এক কন
কর্মতি লোকের উপর উহার ভার দেওয়া ঘরকার। তারপর
বরকার সমবার সমিতির কোধার কি ভাবে হুনীতি প্রবেশ
করে ভাহার পুথায়পুথ অভ্নসভান এবং সর্ক্ষিধ হুনীতির ব্ল
উংপাটন। ইহা মা করিয়া আয়য়া কেবল 'ইউনি-পারপান'
বালট-পারপানে'র ভাষর ভাটতে থাকিব এবং বিশ্বভর
সকলে এই প্রে অপ্রসর হুইতে থাকিবে ইহা বাছনীর নহে।

## কলিকাতা পুলিস

ক্লিকাভার পুলিগ সহতে আমরা অনেক অপ্রির মন্তব্য ক্রিয়াছি , কেবা যাইভেত্তে কুর্তুপক্ষ ইরাজে বিচলিত বন নাই

এবং আমাদের আলভাই জ্বলঃ সভ্যে পরিণত হইতেছে। কলিকাতা প্রায় অর্থিত শহরে পরিণত বইতে চলিয়াছে। খাৰীৰভালাভের পর আমহা আশা করিয়াছিলাম বে কলিকাতা পুলিস লওন নেটোপলিটান পুলিস এবং নিউইর্ক পুলিসের সহিত তুলনীয় হইবে : আমাদের ডিটেকটভ ডিপার্ট-**्यके विमार**णत श्रीमक देशार्थ अरेश श्राटशिकात अक-वि-আইয়ের সমান ক্রতিত প্রদর্শন করিবে। কিছু প্রথম ক্টতেই नुनित्तव फेक्रज्य नमश्चनित्ज खरगाता अवर मिट्नव विक्रका-চরণের কুখ্যাতিসম্পন্ন লোক নিয়োগ এবং শহরের ও গ্রাহের পুলিস একাকার করিয়া এমন একটা অবস্থার স্ট্র করা ত্ইয়াছে যাতার কলে পুলিসের যেটুতু দক্ষতা ইংরেক আমলে ছিল তাহাও বসাতলে গিয়াছে। এখন একটা খুন বা ভাকাতির কিনারা হওয়া তো দুরের কথা, বাসার চাকরের চুরি প্রভৃতিও ধরা পড়ে না। পুলিসের এবন প্রধান কাব হুইয়াছে বাভায় হকার এবং গরু ভাড়ানৌ, কলার বোসা সরানো এবং মাসে মাসে সাংবাদিক সম্বেলন আহ্বান ক্ষরিয়া নিৰেদের গুণকীর্ত্তন। পত এক বংগরে কলিকাভার ক্ষটা বুন, ডাকাতি, চুরি এবং পকেটমার হইয়াছে এবং ক্ষটা অপরাধী ধরা পড়িয়া দণ্ডিত হইয়াছে তাহার একটা হিসাব ध्यकाण रुख्या प्रवकात, रहेरन वर्षमान शूनिरमत कृष्टिए वृदा यारेटव ।

পুলিসের বর্তমান কর্ত্তপক্ষের যোগ্যতা নাই কিন্তু ক্ষমতা-লোভ আছে এবং তাহার হুত দলাগলি অত্যন্ত বাভিয়াছে। পুলিসে দলাদলি দেশের পক্ষে মারাত্মক ক্তিকর। দল भाकाहेवात चार्ट शिक्षभाजरम्ब **डेक्टभर**म निर्माण अवर **डे**भक्क লোকদের ভাষা দাবি অধীকার করা হইতেছে এবং ইহাতে नुनिभ-राश्निव बर्गारन क्यिश निवाद । अत्यान-वार्थ গ্রিয়পাত্রেরা কাব্ব কানে না, শিবিয়া লইবার যোগ্যভাও हेरां राष्य:हेटल भारत नाहे : भूतांना एक लारकता चारा প্রাণ্য উন্নতিতে বঞ্চিত বলিয়;কর্ম্ববিমূধ। ফলডোগ করিতেছে দেশের লোক। সর্বরোগহর দাওয়াই কার্ডকট প্রয়োগ ক্ষিয়া মানুষকে ব্যৱে আটকাইয়া শান্তিরকা এক কৰা, স্থানীয় ভক্তৰ দলের সহবোগিতা অর্জন করিয়া পুলিস ও খানীর ভক্তৰ मालद नरायांत्रिणांद जानदार्व वद कदा नत्नूर्व जिद्य क्या। মহুরুষের শোভাষাত্রা লইয়া যাহা ঘটুরাছে গোয়েকা পুলিসের দক্ষতার লেশহাত্র থাকিলে অনেক আগে ভাহার সভান হিলিভ। মহরমের মিছিলে পোলযোগ ঘটলে তাহা রাজাবাজার হটতে वानिकजनात बत्वा या है हैना काना कथा। यह जनाकात সব্দৰত তরণ দলগুলির প্রতিনিবিদের ডাকিয়া পুলিস ক্ষিণমার যদি ভাতাৰের সাহায্য প্রার্থনা করিতেন ভাতা ত্টলে পোল-বোগ কিছতেই ৰটতে পাৱিত না। পুলিস এখন আমাদের পুতৰাং ভক্ষণ দলের ইহাতে আপত্তির স্বারণ বাক্তি লা। কিছ তাহার হত পুলিস কমিশনারের উপর বে প্রছা ও
আহা থাকা আবর্জক বর্তমান কমিশনারের উপর নানা কারণে
তাহা নাই এবং থাকিতে পারে না। তিনি নিজেও বোধ হর
ইহা আনেন এবং এইছাই তিনি লাটিবালী, গুলিচালনা
এবং কারকিট জারীর প্রথা অবলয়ন কয়িয়াহেন। ছানীর
পুলিস অবাক্ষ সত্যেন মুখার্লী বা অবনী গুণ্ডের হাতে ক্ষতা
থাকিলে তাহারা ইহা পারিতেন এবং কয়িতেন ইহাই
আমানের বিহাস। কিছ গত পুলিস কনকারেলে বর্তমান
কর্ত্বপক্রে আপ্রিতবাংসলা, আত্মীরপ্রীতি এবং সাধারণ
ছ্নীতিপরারণতার বিরুদ্ধে তীব্র ও প্রকাশ প্রতিবাদ করার
পর হইতে পুলিস এসোসিরেশনের প্রেসিডেন্ট সত্যেন মুখার্লি,
ভাইস-প্রেসিডেন্ট অবনী গুরু এবং সেকেটারী হিমাংও গুরু
কর্তানের চক্ষ্পুল হইরা রহিয়াহেন। কলে জনসাধারণ
কলিকাতা পুলিসের সর্বাপেকা দক্ষ এই তিন জন অফিসারের
আছরিক সেবা হইতে বঞ্চিত হইরা রহিয়াহে।

বর্ত্তমান পুলিস কর্ত্তপক্ষের অযোগ্যভার বুল কারণ ভিন্ট : (১) বেদল পুলিস হইতে প্রিরণাত্ত্বের আদিরা কলিকাতা পুলিসে ভটি করা, ভাহাদিগকে অভার ভাবে প্রযোশন দেওরা এবং ভজ্জনিত বিরোধ, (২) এই দলাদলিতে এংলো-ইভিয়ান-বের সাহায্য লাভের ২০ তাহাদিগক্ষে প্রাপ্যের অতিরিক্ত স্থবিৰা ৰাম এবং হুৰ্নীতিপৱাহণতা সত্ত্বেও উচ্চ ও দাৱিত্বপূৰ্ণ পৰে বিৰোপ, এবং (৩) পানাসক্তি। ততীয় ৰোষ্ট জ্ৰেই শুক্লতর হইরা উঠিতেছে। ইউরোপ এবং আমেরিকার বৈদেশিক দুভাবাসের ভোকসভার মত একট অপরিহার্ব্য অদ : ভারত-সরকার সুরাপান নিবারণী নীতি অভুসারে সমস্ত ভারতীয় দূভাবাসের ভোকসভা প্রস্কৃতিতে মন্তপান নিষিত করিয়াছেন। অবচ কলিকাতার লালবাকার বাঁটতে মছপান অবাবে চলিতেছে এবং জনসাধারণ তাহার জন্ত ক্তি-প্রভ হইতেছে। লালবাখারে ডেণ্ট কমিশনার এবং এংলো-ইতিয়ান সার্কেণ্ট প্রকৃতির বত একট নত-তাতার আহে: তিন ক্ৰম সাৰ্চ্ছেণ্ট সেধানে প্ৰতিদিন মদ বিক্ৰয়ে নিযুক্ত পাকে बादर बाहे कांच देशारमंत्र श्रुमिन-क्रिकेट चक्क् छ । यही ক্ষরিয়া গ্রাহের ছইট ভাড়ির দোকান বন্ধ করার আগে লাল-রাজারের 'বার' বন্ধ হওরা উচিত। পুলিস-মন্ত্রী কি ভাবে ইহা চলিতে বিতেহেন তাহা আমাদের বৃদ্ধির অগম্য।

ক্তে কোরাটার্সের ডেপ্ট কমিশনার এখনও বিশেষ বোন্যতা বেথাইতে পারেন নাই। ইাক্চিক কন্ট্রোলের ভার ভাষার উপর , তাহার আমলে রাভার হুবটনা কিছুমান করে নাই। আমরা ভমিরা বিভিত হুইলাম বে কলিকাতার কোন একট ক্লাবের ব্যানেকারির ভার কইবা সম্রতি তিনি বিলী গিরাছিলেন। কলিকাতার হিতীর পুলিস্ব্যান ক্লাবের ব্যানেকারির ভার কর্ত্তী পুলিস্ব্যান ক্লাবের ব্যানেকারির ভার কাইবা স্ক্রত সংবাহ বটে।

ক্ষমষ্টেৰল সংগ্ৰহের ভার ইবার উপর। গত করেক সন্তাব বাৰং हेनि बांधानी क्याहेरन निर्दात यह कृतिश रिक्षशानी कर्ष করিতে আরম্ভ করিবাতের এবং চারি শতাবিক নিরোগ ইতি-बारवारें रहेवां निवारत । अहै। कि कांबरन ७ कांबाद नवांबर्स তিনি করিরাছেন আমর। জানি না। বাঙালী কনটেবলের। যদি অযোগ্য হর ভবে যোগ্য লোক সংগ্রহ এবং কঠোর ভভাবৰানের ব্যবসা হওয়া উচিত ছিল। বিহারী নিয়োগের किन्दर चन्न अरे कवा बना स्टेशांट त्य वर्षमान सिन्द्रांभी कमाहिरनावद किंक किंक जानीत-स्कारक स्मार्क नश्या উচিত বলিরা এই ব্যবস্থা করা হইল। পুলিস-মন্ত্রী ইহা कारनम कि ना. कामिरण हेरा कल्लावारम कविदारहम कि मा. দা **ভানিলে কেন ভা**হাকে নিয়োগব্যাপারে এভ বড় একটা পরিবর্ত্তনের কথা ভাষামো হয় নাই ভাষা প্রকাশ হওয়া উচিত। পুলিস ট্রেনিং ছুল, ডাফাতি দমন বিভাগ এবং পোর্ট পুলিস সম্বন্ধ যে সব সংবাদ আহাদের নিক্ট আসি-তেৰে ভাষা বন্ধভঃই আপত্তিৰনক। বেলে চোৱাই চালান अक्ट्रे क्रिन स्टेबा फेंग्रेबाटर विजया (शाटि जरशबका वाकिया গিরাতে কি না সে সকৰে অভুসদান হওৱা দরকার।

কলিকাতা পুলিসকে লওন বা নিউইরর্ক পুলিসের তুল্য করির। গভিবার লোক নাই, আমাদের বেরণ ব্যবস্থা আছে তাহাই লইরা কোনরণ চলিতে হইবে এই ধারণা আমরা সমর্থন করি না। প্রীসত্যেন রুখার্জি প্রবুধ যে সকল কর্প্রচারী চরিত্রবল ও দক্ষতার পরিচর দিরা আসিরাছেন ঠাহাদের উপর পুলিস সংকার ও সংগঠনের দারিছ অর্পিত হইলে কলিকাতা পুলিসের চেহারা কিরিরা যাইবে এ কথা ওপু আমরা নহি, শহরস্ক লোক বিশাস করে। উপর্ক্ত সহক্রী ও সহকারীর অভাব তাহাদের হইবে না; প্ররোজনীর লোক তাহারাই বাছিরা লইতে পারিবেন।

## কলিকাতায় মহরম

কলিকাতার মহরম এবার শেষ পর্যান্ত মির্কিছে সম্পন্ন হইতে পারে নাই। দোরদিনে বিলম্প গোলবোর হইরাছে, পুলিস থলি চালাইরাছে এবং পাঁচ জন নিহত ও আশী জনের বেশী আহত হইরাছে। অবস্থা আরভের বাহিরে বার নাই এবং ক্রমে যাতাবিক অবস্থা কিরিরা আসিতেছে।

এবারকার এই গোলবোগ একেবারে অপ্রভাশিত হিল
না। কিছুদিন বাবং পূর্কবন্ধ হইতে পূতন করিবা লোক
আলা আরম্ভ হইরাছে। ইহা লইরা বে বাবাল্বার চলিতেতে
তাহাতে হিন্দের প্রতি পাকিছানীদের ননোভাব ভীর
সনালোচনার বিষর হইরা উঠিয়াছে। পাকিছান হইতে সমভ
হিন্দু বিভাজিত হইবে অবচ ভারভবর্বে বে শ্লেইর ব্নলমান
গভ সাবার্থ নির্মাচনে পাকিছানের পক্তে ভোট হিয়াছে এবং

পাকিয়াৰ অৰ্থনের জড় প্রত্যক্ষ সংগ্রার করিয়াছে ভাষায়া এবানে পঞ্চবাহিনী-বন্ধপ বসবাস করিতে বাঞ্চিবে এটা ভেষ্ট প্ৰশ ক্ষিতেহে মা। সংবাদপ্ৰসমূহ অভাভ গুকুতর ভাতীয় সমভায় ভার এই বিষয়টকেও এভাইয়া চলিতে शक्तिक देशदे वर्षभारम कनिकाला भरतात परत परत প্রধান আলোচনার বিবর। হিন্দ-মুসলমান সম্ভার সমাধান-কৰে ভারতবাসী ভারত-বিভাগে রাজী হইরাছিল কিছ তাহা धर्वन इट्टेंस ना. युगलयान निष्ट्य हाड्डे श्रेणिकी कृतिया नटेन. কিছ ভারতের মাইনবিট সম্ভা মিটল না, বরং বাস্তত্যাদী রূপ ভার এক প্রবল এবং শতন সমস্তা দেখা দিয়া ভারতবাসীর নাভাবিক ভীবনে বিপর্যায় স্ক্রী করিল—এটা কেন্ট প্রসর চিছে প্ৰচৰ ভৱিতে পাৱিতেছে মা। পাকিয়ান বৰ্থন পাকিয়ান-খণ্ডের হিন্দুদের সহিত সন্থাবহার করিবে না, হিন্দু বিভাগনেই यक्ति (म तक्ष्मिकत क्य. छवन भाकिशान अव्यव व्यवस्थानी ফলবরণ লোকবিনিমর পাকিসানকে মানিতেই হইবে। বৰ্জমানে যে একভাৱকা হিন্দু বিভাগন চলিভেছে ভাহা কিছুভেই চলিতে পারে না—এইটাই এখন স্থারণ লোকের মনোভাব <del>টাভাইয়াছে এবং স্থার প্যাটেলের সাল্পতিক বক্ততার</del> কতকটা এই মনোভাবই প্ৰতিক্লিত হইয়াছে। ভারতবৰ্ষ 'লেকুলার' বা বর্ম্ম-নিয়ণেক্ষ রাষ্ট্র হইবে--- এই মনোভাব ভাষার বিরোধীও নছে। ভাতীরতাবাদী এবং ভ্রিরং-উল-উলেমার ব্ৰসলমানেরা পাকিলান প্রতিষ্ঠার বিপক্ষে ভোট দিরাছিলেন তাঁছাদিগকে আমরা সাদরে ছাম দিব : পাকিছানে এই শ্রেপীর ৰুসলমানেরা চুড়াভ লাখনা ভোগ করিতেত্বেন, ভাঁহারাও ठांतज-४८७ हिन्दा चात्रित चायदा चछार्यमा कृतिहा नहेर. कि भाकिशास्त्र भाक रव नव बुननवान कांग्रे विदास अवर সভিত্নাহে ভাৰাদিগকে কিছতেই স্থান দিব না- এইটাই क्रमणः नगरावीताल श्रवन क्षेत्रा क्षेत्रिकत्व । अहे मामांचाव াংবাদপত্তে প্ৰকাশ হইতে দেওয়া হইতেছে না কিছ গৰুৰে কেঁৱ रेश चरका वा छाव्किना करा देठिछ एव गाँरे।

এই অবছার এবার মহরম আসিরাছে। গত বংসর ঢাকার রবার্টনীর বিহিল বাহির করিরাও বর করিতে হইরাছে, এবার টহার নাম করাও সভব হর নাই—এটাও লোকে পথে বাটে বিলিতেছে। গত বংসর মহরমের অল আগে কলিকাতার মহালা গাঙী অনপনে থাকার ক্রাইনীর মিহিলের স্বৃতি টাটকা থাকা সভ্তেও কোন গোলবোগ হর নাই। এবার মহালা গাঙী নাই। এই কারবে বিশেষ ভাবে গবরে কের অভ্যন্ত সতর্ক হওরা টিচত ছিল। ছই বংসর আগে লীগ আগলের শেষ মহরমে বিজ্ঞান কলেকের সন্থুই হুটতে স্থাকার বিটি পর্যান্ত লীগ-চন্ত্র এবং লীগ-প্লিসের বে ভাওব দৃত্য ঘটরাছিল ভাহাতে অভ্যন্ত স্থাবং ক্রাক্তে ছারে ছুটী থালক থলি বিছ হইরা নিহত হয় এবং নাবেকে আহত হয়। লে ছুডিও একেবারে ভক্টারা বার।

\_\_\_ **\** 

নাই। সে বিনাৰে এই এলাকাট্ডতে বুঁব কৰা পাহাৱা ৱাৰা উচিত ছিল। গোলখোগ টিক কেব বাবিৱাছিল এবং কাহার। বাৰাইয়াছিল গৰন্ধে উ ভাষা বলিভে পাৱেৰ নাই, আৰম্ভাও छारा कानि ना । किन्त वृद्धिमान व्यक्तिमात्वरे अहै। छैननिव ক্রিরাছেন যে সতর্কতার প্ররোজন এবার ধুব বেশী ছিল. ভার অনেক সম্ভ কারণও ছিল, কিন্ত কিছুই করা হর নাই। পুলিস পূৰ্ব্বাছে কোন সংবাদ লয় নাই এবং প্ৰয়োদ্ধনীয় সভৰ্বতা অবলঘন করে নাই--করিলে গোলখোগ ঘটত না এবং ইছার জ্ঞ প্রধানত: দারী গোরেন্দা-বিভাগ এবং পুলিস ক্ষিণনার---এই অভিযোগ বাহারা করিতেছেন তাহাদিগকে বুব বেৰী দোষ रमध्या यात्र ना । चळाछ-शतिहत इंडेरनारकत ("unknown miscreants") বাড়ে বোৰ চাপাইরা সাকাই গাওৱা পুলিসের কাৰ নয়, পুলিসের কর্ডব্য সময় থাকিতে ছাই লোকদের यणबट्डा अरबाम अरुवा अवर इक्टिया मिनातन करा । वर्षमान গোরেকা বিভাগ এবং পুলিস কমিশনার পুলিসের এই প্রাথমিক দায়িত্ব পালন করিতে পারেন নাই। এইক কিরণ্ডত রাজের এবিষয়ে বিবেচনা করা প্রয়োকন।

## কলিকাতা টেলিফোন-কেন্দ্রে অগ্নিকাগু

অন্ধদিন পূর্বে টানার অনকল অচল করিবার একটি বিশেব চেটা হয়। চেটা প্রার কলবতী হইরাছিল কেবলরাত্র বংগকারী দলের প্রধান চালকবর্গ উচ্চাদের অভ্যাসমভ একটু আগেই সরিয়া পড়ার উচ্চাদের চেলাচারুভেরা ক্রভ কাজ নিকাশ করিছে পারে নাই। কর্তৃপক্ষ টের পাইরা পূলিসের দল আনিরা ব্যংগকারীদিপের উভ্যম বাবা দেওরার এবং ব্যংগকারীদিপের মনে সাভ্যদারিক কলহের ভর হওরার ব্যাপারটা সমহমভ আটক পড়ে এবং কর্তৃপক্ষের অল্লাভ চেটার চকিলে বন্টার মব্যে রোটার্ট যেরামভি কাজ শেব হইরা বার। টালার যাহারা অল-সরবরাহ বন্ধ করার চেটা করিরাছিল ভাহাদের প্রবান চালক হই ক্ষম বাঙালী হিন্দু এবং রাইবিব্যংগে চেটিভ দলবিশেবের টাই। কর্মারা ছিল শভক্রা ১০ ক্ষম পাকিহান অবিবাসী অহিন্দু। বলা বাছল্য, গোরেক্ষা পূলিস আগে হইতে ব্যরও দের নাই এবং ঐ চালকব্যক্তে এবলও ব্যরিভেও পারে নাই।

ঐ বটবার পূর্কেই সমত শহরেই পথে বাটে ওজন ছিল থে কর্নিইয়া প্রথমে কলিকাভার কলকল, বিহাংকল, টেলিকোন ও বেভিও বিকল করিবে, ভারপর ৮ই-১ই নবেবর বা ভাহার কাহাকাছি কলিকাভার প্রচও বিক্ষোভের স্কট্ট ক্রিবে। পূলিস বিভাগে সে ব্বর পৌহাইরাছিল কি না কান্যি মা, কিছ ভাহার অর্থিন পরেই টেলিকোন বিভাগের কলিকাভা কেন্দ্রে বিবর অর্থিকা বটল, বাহার কলে প্রয়ের কান্য-ভারবার, শাসবহক্ষণ সকল কান্সেই বিবর বাবা পঢ়িল এবং হাটের প্রাহ ছর কোট টাকা লোকসান হইল। ঘটনা ঘটনও অতি অতুত তাবে। আগুন বরিল একেবারে চারিতলার। বে ববে আগুন লাগিল সেবানে ২৫ জনের একজনও রবার পোড়া গব পাইল না, হঠাং এক জন নার দেখিল হই হাত উঁচু আগুন হাউ হাউ করিয়া ছলিতেছে। সে আগুন অগ্নিনির্বাণক-বল্লে নিবিল না ইহাও আশুর্বা; অবক্ত পেট্রোল বোনা বা বারমিটতরা আগের বোনার আগুন উহাতে নিতে না। তাহার পর দমকল আসিতে অল দেরী হয় এবং তাহা চলিতে সানার দেরী হয়। অবচ সব পুড়িরা শেব হইল। ইহা কি দৈবছর্বিপাকের লক্ষণ ?

### বাংলায় ধর্ম্মঘট

কলিকাতার বিভিন্ন প্রতিষ্ঠানে কিছুদিন বাবং ধর্মটের হৈছিক চলিতেতে এবং ধর্মটের এবার প্রধানতঃ মধাবিত বাঙালী কর্মচারীদের মধ্যে সীমাবদ। ব্যাকে ধর্মটে ইবার মধ্যে বাগক আকার ধারণ করিতেতে। রেশনের বরাদ ক্রমেই ক্রিতেতে, কলে বাহির হুইতে ধাদ্য সংগ্রহের চেটা করিতে হুইতেতে, ধরচও বাভিতেতে। গত পাঁচ বংসরের হুর্মুলাভার বাজারে বাধা আরের মধ্যবিত কর্মচারীদের হুর্মণা অতি শোচনীর হুইবা হহিরাতে, তহুপরি আবার এক দকা মূল্যমুদ্ধিতে ইবারা প্রার বিশাহারা হুইবার উপক্রম হুইবারে।

এই অবস্থার প্রযোগ যাহারা লইবার ভাহারা পূর্বমান্তার লইতেতে এবং দিখিদিক জান্দীন বহু ম্বাবিভ পরিবার পভৰের ভার আগুনে বাঁপ দিয়া পঢ়িতেছে। উত্থানিদাভাদের ब्राबा क्यानिष्ठे अवर क्यानिष्ठेत्वत्र भाकीत्रांशान अधिक-विकास विशासन । देशास्त्र देशामित वर्षाके शरेरकार এবং কলে কৰ্মচাত্ৰীদেৱ আৰপেটা বাওৱার বে সংখ্যানটুকু ছিল ভাষাও নট হইভেছে। ব্যাহ কর্মচারীদের আর ক্ষ. দারিশ্ব ৰেশী, কালের সময়ও বেশী, প্রভরাং অসভোব তাহাদের মধ্যে বেশী হইবে ইহা খাভাবিক। অনেকগুলি ব্যাহ অন-विट्यंत मृद्या यक क्षत्रांत द्यकांत वाक कर्वातीत मर्था অবেক ৰাছিয়া গিয়াছে এবং ইহাতে ব্যাহ মালিক ও প্রিচালক্ষের প্রবিধা হইরাছে । লয়েড স্ব্যাহ পাঁচ শ' কৰ্চানী বরবাভ করিয়া পাঁচ হাকার পুতন কৰ্মপাৰ্থীয় क्रवर्गक भावेशात्वयः। वर्षप्रकृति भिक्राम अव-मवर्थय वा बार्टहेव সমৰ্থন কোনটাই নাই এবং ইহার কলে ধর্মবটের সাক্ল্যজনক ভাষা ভাবি ভাষায়ের চেষ্টা করা উচিত হিল, কিছ যাহারা বৰ্তমানে ভাতীয় গৰুৰে উক্তে ধ্বংস ক্ষিত্ৰা ভাৱতবৰ্তকে চীৰ জেৰে পৰিণত কৰিবাৰ চেঠাৰ আছে তাৰায়া উহা কৰিবে না. (यब-एकन-धाकारक वर्षकी वांबादेश विमुधना एक्टरे देशारक ভাষ্য ।

ব্যাস কৰ্মচাৰীয়া শিক্তি, কিছ দানা ছলিপাকে এমনই विज्ञांच प्रदेशांचन दा बहै। छांचांता वृक्तिक शांतिकांचन मा । নেউ লৈ ব্যাভ ধর্মঘটের পরিণাম অভি শোচনীর হইরাছে. কিছ তংসভেও বদীর প্রাদেশিক টেড ইউনিয়ন উহাকেই "নাফলাজনক" বর্ষষ্ট বলিয়া অভিহিত ক্রিয়া প্রভাব এছণ क्तिवार्षः। क्यानिक्षेत्रव त्यायमात्र वाक्षामी द्वेष देवेनियम নেতাট নিজের চাকুরি বাঁচাইরা মধ্যবিত বাঙালী কর্মচারীবের ঘৰ্মৰটে উদ্ৰেভিত কৰিয়াছেন এবং ভাষাৰাৰা বাধানী সমাব্দের যে অনিষ্ট করিয়াছেন এতদিনে তাহা সকলের বুরা উচিত হিল। অবাঙালী প্রতিঠানের চাকুরিতে বাঙালী নিরোগ জ্বমশঃ কমিরা ভাসিতেছে। ভাহার ভর প্রধানতঃ এই ব্যক্তির অনুরদর্শিতা ও অবিমুক্তকারিতা দারী। সম্রতি ইনি আর একট ব্তন সর্বভারতীয় টেড ইউনিয়ন গঠনে এতী रहेबारबन। अहे क्रिड़ा क्यानिहे त्यमामीए बाब अक्की कान কি না সে সহতে অভুসভান হওৱা উচিত। মান্তাৰ ট্ৰেড ইউনিয়ন কংগ্ৰেসে কয়ানিষ্টদল কৰ্ত্তক সভাপতিত্বে ইঁহার নিরোগ হইতে পুরু করিরা আৰু পর্যান্ত এই ব্যক্তির কার্য্য-क्लांश (क्ट्रमंत शक्क चनिहेक्द अवर क्यानिहेट्संद शक्क লাভৰণক হইরাছে। শুভন ট্রেড ইউনিরন গঠন চেষ্টা বোগ-সাক্ষ্যের ব্যাপার কি না সে সহতে লোকের মনে সন্দেহ কারা -ছাভাবিক।

প্ৰদেশ্টি ট্ৰাইবুনালের মার্কত তদত এবং এওয়ার্ড কাৰ্যাকরী করিবার চেঠা করিতেছেন। ইহা শ্রমিক এবং কর্ম-চারীদের প্রতি উছিদের শুভেছার পরিচর সন্দেহ নাই। ভারত-সরকারও এতদিনে আমদানী ত্রব্যের উপর কড়াকড়ি ছাস করিয়া বিনিষপত্তের ফ্রুত বৃল্য ছালে মনোযোগী र्देशाद्म । अम्लावशांत कर्युठातीया चात अकृ देवर्ग बातन क्वित्न जान क्विट्जन। नायज्ञ नारक्व कर्न्कावी अवर ম্যানেজার উভয় পজের বিবৃতি হইতে বে সব তথ্য উদ্বাচিত হুটুৱাছে ভাহাতে কর্মচারীকের অবৈর্ধ্য এবং অবিবেচনাই বেশী প্রকাশ পাইরাছে। এই উপলক্ষে সমস্ত ব্যাহ বর্ষহট করাইবার বে চেটা হইতেছে তাহা শুভ কলদারক হইবে না। ৱাই এবং ভনসাধারণ ঘেধানে ধর্মঘটের বিরোধী সেধানে ৰৰ্ম্মৰট বাৰ্থ হটতে বাৰ্য এবং এমণ করিতে পাকিলে বাঙালীর कर्यक्ति क्रमनः महिल्ल स्टेल्ल शिक्ति। बाह्रे-विद्रात বছৰৰ বেধাৰে সৰ্ব্যান্ত ও পৰেৱ ভিৰাৱী হইয়াছে সেধাৰে সম্মলতা দাবি করিতে পিরা আবপেটার সংহাদ নষ্ট করিরা विकास क्षेत्रा वृषिमात्मद कांक मत्र, अक्षा मत्म दावितन বৰ্ষমান কঠ সহনীয় হইতে পাৱে।

পূৰ্বববঙ্গের অবস্থা

"पविणान रिटेच्यी" निविद्यस्य :

"আজিভায় বছলাই ভবানীত্তন পূর্বে বাংলায় উলিৱে

আক্ষম বঙরাকা নাজিমনীন টাউনহলে বোষণা করিবা গৈলেন চাউলের দাম ৩৫, হইতে ২২০০ টাকার আনিবই—কিন্তু আৰু তাহা ৪২,—৪৫,। আজিকার উজিরে আক্ষম সুরল আমিন বলিরাছেন—পূর্ববেল ছুডিক্ষ হইবে না। আর বচকে তৈলসিক্ত মলিন ন্যাক্ডা-ক্ডান প্রেতর্তি বেবা যাইতেছে।

"আল্লার ওরাজে ছ্ইবানি পরসা দাও না—ছ্ই পরসার যুদ্ধিতে তো পেট ভরে না।"

বৃদ্ধ ত্রাত্মণ বর্থন কাহারও উপর দোরারোপ না করিরা লেখে—৫টির ১টি গিরাছে, চারিটি ভূঁরে গড়াগড়ি দের, আমার পথ আছহত্যা ব্যতীত আর কিছু নাই।

হাসপাতালে ও কৰলল হক রাভার কুটপাতে পছিরা বালকহর যধন আর্ত্তনাদ করিরা "ও আল্লা—এক মুট ভাত দাও" বলে।

গৃহত যথন তাহার পূর্বসঞ্চিত মুসুরি ডাইল ১৯০ আনার হলে ৮/০ আনার বিক্রী করিতে আসিরা বলে বাব আৰু পেটের দার হর বালি কবিতেহি।

রাজপথে ছিল্ল-বল্ল-পরিহিত জনবহর ঘর্ণন দৃষ্টি আহত করে---

ভছ্পরি পাকিস্থানের উক্তিরে আক্তম যথন বলেন ল্যাংটা থাক—আর ক্ষার মর, যুদ্দ-সন্তার সংএহ অব্যাহত চলিবে।

মৰ্শ্বে যথন মন্ত ক্লোভ সৰ্পসম কোঁসে—
'তথনও ভাল মান্ত্ৰ সেকে
বাঁথান হকা যতনে মেকে
মলিন ভাস সকোৱে ভেঁকে'
মুখে ভন্নভাৱ বাৰী বলিতে হুইবে ?"

এই বর্ণনার মব্য হইতে বে চিন্তা আমাদের চক্ষের উপর তাসিরা উঠে, তাহা তারত-রাষ্ট্রের পক্ষেও ভাবনার বিষর হইরা উঠিতেছে। কারণ প্রতিবেশীর বরে আখন লাগিলে আমাদেরও সাববান হইতে হর। পূর্ববঙ্গ হইতে দলে দলে হিশুরা চলিরা আসিতেছেন এই কথাটাই আমরা কলিকাতা শহরে থাকিরা ভনিতেছি। কিছু আমরা থবর রাখি না কত বুসলমান অভাবের তাড়নার উপার্ভনের উহেতে পশ্চিম বাংলার আসিরা পড়িতেছে; এখানে ইহারা আসামী কসলের অপেন্দার হই-তিন মাসের কর আসিতেছে, এই সমরটা এখানে তাটাইরা ইহারা কিরিরা বাইবে নিন্দু দেশে। বিদি তাহা সভব না হর, তবে এখানে একটা বুভি অবলম্বন করিরা ইহারা দেশে টাকা পাঠাইরা দিবে বেমন পাঠার ওড়িরা, বিহারী, পশ্চিমা। সেইজভ বেখিতে পাই কলিকাতার ধনকল বিভাগে, কলিকাতার জলের কলে নোৱাধালির বুসল্যানকে। কারণ পশ্চিম বাংলার হিন্দু-বুসল্যান এই সব বুভির সেবা ক্রিছে

পারিতেকে না। আৰু বধন পূর্ত্তবদ অভ রাট্রের, বিবোধী রাট্রের অভত্ ক বইরা পভিরাকে, তখন পূর্ব্তোক ব্যবহার পরি-বর্তম আবর্তক বইরা পভিবে। এই কথাটা এই চুই রাট্রের শাসকবর্ণের বনে করা উচিত।

## মেদিনীপুর কলেজ

यिषिनीशृत शिक्तवष धाराया मर्दाश्य मर्दाश्य জেলা। ভারতের বাধীনভা-আন্দোলনের ইভিহাসে মেদিনী-পুরের স্ত্রী-পুরুষের আত্মত্যাগ বর্ণাক্ষরে লিবিত বাকিবে। কিছ বর্তমান যুগোপযোগী শিক্ষা-ব্যবস্থায় এই কেলা অন্প্রসর-যদিও প্রায় এক শত বংসর পূর্ব্ব হইতে এই বিষয়ে গোড়াপত্তন হইয়াছিল। রাজনারারণ বসুর কর্মছল বেদিনী-পুরে, সেই শহরের ছুলের প্রধান শিক্ষকরণে তিনি বছ বংসর নিযুক্ত ছিলেন। সেই ভুলই কালে কলেভে পরিণত হয় এবং আৰও তাহা ট'কিয়া আছে ব্ৰিটণ আমলের বিমাতার মত ব্যবহার সঙ্কেও। এই ইতিহাসই মেদিনীপুর कलारबाद शास्त्रमें शासनश्चाद अवके विवयने शृक्षिका स्टेर्ड ভানিতে পারি। পুর্বের ভামলে বাংলাদেশের রাভনৈতিক আবহাওরার পরিবর্ডনের সঙ্গে সঙ্গে মেদিনীপুর কলেন্দের ভাগ্য নিয়ন্ত্রিভ হইভ। ১৯২০ সনে মেদিনীপুর মিউনিসিপালি**ট**র হাত হইতে এই কলেন্দের ভার গবর্ষে করং এহণ করেন, এবং অনেক সময় ভাঁহাদের পক্ষ হইতে বীকার করা হয় যে कामक निर्वाक भविष्ठामिछ। किन्न छश्माक निर्वाक ভাঁছাদের কর্ত্তব্য পালন করেন নাই। প্রদেশি-পরিচালিভ ছলে বা কলেন্দে শিক্ষার ব্যবস্থার বঙ্গ যেরপ ব্যর করা হর ভাহা অভাত মূল বা কলেক হইতে বেশী, শিক্ষক বা অধ্যাপক-বুল অধিক মাহিনা পান ও তাঁহাদের পেলনের ব্যবস্থা शंदक ।

কিছ সরকারী কলেজ রূপে খীকুত হইরাও বেদিনীপুর কলেজ এই সব পুবিবার বকিত ছিল। একটা দুটাভ দিলে এই অসম আচরণ লোকচকে স্পষ্ট প্রতিভাত হইবে। ১৯৪৩-৪৮ সনের মধ্যে মেদিনীপুর কলেজে ব্যর হইরাছে ৩ লক্ষ ২৪ হাজার ৯ শত টাকার কিকিদ্বিক। সেই স্মরের মধ্যে কুক্ষণর কলেজে ব্যর হইরাছে ৬,৭৮,০০১ টাকা, হগলী কলেজে ৭,১৩,১৭৩ টাকা। এর মধ্যে গবর্তের হান ছিল ক্রমান্তর—৭৪,৮১৮ টাকা, ৫,০০,২৬৭ টাকা, ৫,১৮,৭২৪,

আৰু সভীতের কথা নইরা তর্ক তুলিব না। বেদিনীপুর কলেকের প্রাক্তন হাত্র সন্দের দাবী বে পরিকার ভাবে পশ্চিম-বল সরকার বীকার করিরা লউন—এই কলেকের পরিচালনা ভাহাবের একটা হাত্র—এবং এই হাত্রিছ বীকার করিরা ভাহার উপস্কৃত ব্যবস্থা স্বরস্থার করেব। ১৯৪৭ সন্দের ১৫ই আগটের পর এই পবের বাসের বব্যে এই বার বীকৃত ক্ইল
না কেন তাকা আমরা বৃধিতে পারিতেরি না। পশ্চিমবদের
আইন-পরিবদে নেনিনীপ্রের সভাসংখ্যা প্রভাব-প্রতিপতিতেও
নগণ্য নর। মরিসভার উপর উল্লোহা কেন চাপ এত বিন
বিতে পারিলেন না, ভাকা আমরা আনি না। বিটপ
আমনের অক্রপ অব্দেলা ভাকারা আক সভ করেন
কেন ?

এই উপলক্ষে নেদিনীপুরের স্বাপ্তত ক্ষমতের নিকট আমরা একট নিবেদন স্থানাইতে চাই। রাস্থনীতি ক্ষেত্রে উহারা বে দৃচতা ও উৎসাহ দেখাইরাহেন তা শিক্ষাক্ষেত্রে ক্ষেত্রীভূত করিলে গবর্মেন্টের সাহায্য ব্যতিরেকে পাঁচ বংসরের মধ্যে মেদিনীপুর নবকলেবর বারণ করিবে। সেই শক্তি নেদিনীপুরের স্থাহে বলিরাই স্থামরা এই নিবেদন স্থানাইতে সাহস করিতেছি।

## লোক-সংখ্যা ও খাত্য-উৎপাদন

ভলিকাভার "নিউ বিভিট" নামক মালিক পত্রের নবেখর ( ১৯৪৮ ) সংব্যার লোক-সংব্যার উপর বাদ্য-উৎপাদনের প্ৰভাব সহয়ে একট প্ৰবন্ধ প্ৰকাশিত হইৱাছে। প্ৰবন্ধ-লেক মিঃ বর্ণ ভাতু বর্তমান সংখ্যা-শালীগণের ও মৃতত্ববিদ্বর্ণের অভিষত উদ্ভত কৰিবা বলিবাহেন যে ধাল্য-উৎপাদনের कुनवाद लाक-जरवा। वृद्धि भारतन विद्यावद चाविकाव स्व ; ৰূপে ৰূপে ৰেশে বেশে ভার প্রমাণ আছে। লোকে নিজের পিড়ছমি ও বান্ধ ভ্যাপ করে অনেক সময় পাল্যের অভাবে : ৰৰ্ষের নিৰ্বাভন এইরূপ স্থানভ্যাপে একটা গৌন স্থান অবিকার করে। ত্রিটেন হইতে আমেরিকার গিরা যে সব উপনিবেশ ছাশিত হইৱাছিল ভাহা উক্ত ছুইট অবছার ফল: অট্রেলিয়ার আদিম অধিবাসীদের ধ্বংস করিয়া খেতাক উপনিবেশ খাপন আমেরিকার ভাত্র-বর্ণ "ইভিয়ান"দের কংস-দীলার পুনরায়ন্তি মাত্র। আৰু চীন কাভির ও ভারতীয় ভাতির ক্রমবর্মমান জনসংখ্যা খেতার অধিকৃত বেশের বিকে রওয়ানা হইরাছে: বেভালেরা বাঁব বাঁবিয়া ভাষালের चानम्य चार्रकारेवाद (६३) .क्दिएएट (यम्य क्दिएएट আসামের লোকেরা বাঙালীর আসমন ঠেকাইরা রাখিতে। এসৰ চেঠা সাৰ্থক হইবে কিনা কানি না। কিন্তু ইভিহাস শাক্ষ্য দেৱ বে বন-বসতি অঞ্লেৱ লোকেরা বন্ধ-বস্**তি** অঞ্চের উপর চাপ দিবেই। সংখ্যা-শাল্লী ও দুভত্বিদ সুক্ৰিন্দি (Kuczynski) ইতিহাসের এই খবোৰ বিবানের मन्दर्भ चारम् ध्रमान मध्यम् कविद्यारसम्।

বিঃ বর্ষ ভাস্থ এই উপলক্ষে ভারভবর্ষের ক্ষমসংব্যা বৃদ্ধি সক্ষমে একটা ভবোর উল্লেখ করিবা ভাল করিবাছেন। অনেক ক্ষণীভিবিদ্ এই ক্ষাটা প্রচার করিবাছেন যে ভারভ- বর্ণের ক্ষমগংখ্যা অধাতাবিক্রপে বর্ণিত হইতেতে। তিনি
পঞ্চাপ বংসারের (১৮৮১-১৯০১) লোক-সংখ্যা র্থির
হিসাবের ক্ষমণা করিরা কেথাইরাতের বে অভাত কেলের
সক্রে ক্ষমণা করিলে একথা বিচারসহ সহে। এই সমরের
মধ্যে অট্রেলিয়ার লোকসংখ্যা র্থি পার শতক্রা ১৬৬ কন;
বিলাতের ৫০ কম; কাপাবের ৭২ কম; বিউ বিল্যাতের
১৭২ কম; আনেরিকার র্ক্তরাট্রের ১৮৬ কম; ও তারতবর্ণের (রক্ষাকের বাদে) মাত্র ৩৬ কম করিরা।

আর একটা বিসাব তিনি দিরাছেন বাহা ভানিরা রাবিলে তাল হর। ১৬০০ সনে বিটেনের জনসংখ্যা ছিল ৫০ লক্ষ্য ১৮০১ সালে তাহা বাভিরাছে পেখা যার ৮৮ লক্ষ্যে ১৮৮১ সনে ইহা তিন গুণ বাভিরাছে পেখা যার ৮৮ লক্ষ্যে ও৮৮১ সনে ইহা তিন গুণ বাভিরাছ ৭ কোট ৫৯ লক্ষে গালার ৩ কোট ১৯ লক্ষে; ১৯৪১ সনে ৪ কোট ১০ লক্ষে। প্রার সাজে তিন শত বংসরে বিলাতে আট গুণ লোক-সংখ্যা বাভিরাছে। এই সমরের মধ্যে ভারতবর্ধের হিসাবে দেখা বার চারি গুণ বৃদ্ধির মধ্যে তারতবর্ধের হিসাবে দেখা বার চারি গুণ বৃদ্ধিন ১৬০০ সনে ১০ কোট ; ১৮০১ সনে ১৮ কোট ৫০লক্ষ্যা ১৮৮১ সালে ২৫ কোট ৩৮ লক্ষ্য ১৮৩১ সালে ৩৫ কোট ২৮ লক্ষ্য ১৯৪১ সনে ৩৮ কোট ৮০ লক্ষ্য

আমাদের দেশে লোকসংখ্যা বৃদ্ধির সক্তে বাদ্য-উৎপাদন বৃদ্ধি পার নাই। ১৯৪৩ সনে ৭৭ কোট টাকা বৃল্যের বাদ্যশন্ত আমদানী করা হয়; ১৯৪৭ সনে তাহা বাছিরা বার প্রায় ১০০ কোট টাকার। এই সংখ্যার প্রমাণিত হয় প্রক্রেটের বাদ্যবৃদ্ধি-আন্দোলন ব্যর্থ হটরাছে। এক সমরে আমাদের দেশের লোকের ৭৮ কোট লোক আব-পেটা বাইরা বাক্তিত। লেবকের মতে তাহারা এবন ত হ্-বেলা বাইতেছে। তাই দেশের বাদ্য-উৎপাদনে কূলার না।

## পূর্বাচল প্রদেশ

গত সেপ্টেবর বাসে কংগ্রেসের ওয়ার্কিং কমিট "পৃথ্যিচল প্রাহেশ" নাবে একট নুতন কংগ্রেস প্রদেশের সংগঠন বোষণা করেন। হঠাং তংগৰতে সব কার্য্যকরী বাবহা বাতিল করিরা বেওরা হর এক সপ্তাহের বব্যে। গত ছই-ভিন (২৬-২৮ কার্তিক) দিনে কংগ্রেস ওয়ার্কিং কমিটর অভ একট অবিবেশন অবিটিত হর ; তাহাতে "পৃথ্যিচল প্রদেশের" প্রভাব প্রক্রেরারে বাতিক করিরা বেওরা হইরাতে। পৃথ্য ও পরের এই ছুইট কার্য্যের সদ্ধতি সহতে কোন কারণ দেখানো হর নাই। স্তরাং ক্রমা করিরা তর্ক করিতে হর। সে চেটা আমরা করিব না।

একটা কথা বলিতে চাই। অবহার দাস বাহব। ভারত-রাট্রের কর্ণবারগণ ভারাদের পূর্ব সীবাতে যে অবহার প্রট হততেতে তংগলতে সভাগ থাকিলে এই "পূর্বাচল প্রদেশের" প্রভাব এবন ক্ষিত্রা প্রভাব্যান ক্ষিতে তংপর হুইভেন া। এই অবহা শৃষ্ট হইতেহে পূর্ববদে। এই "পাকিহান" প্রনেশের ২৫।৩০ লক বিন্দু উহাবের পূর্ব-পূরবের বাসভূষি চাতিরা আলিতে বাব্য হইরাহেন। বেলিন ভারত-বিভাগ নীকার করিবা লইরাহিলেন সেলিন হইতে বেহর-প্যাটেল গ্রন্থতি কংগ্রেস নেত্বর্গ পূর্ববিদের হিন্দু সহরে একটা লারিছ চহল করিবাহেন। মনে-প্রাণে এই বীকৃতি না বাকিলে নাস্ক্রে সর্বার প্যাটেল এমন করিবা নিঃ ভ্রন্ত আমিনের বের্লে উক্তে পাসাইতেম না।

এই দার খীকার করিয়া ভারত-রাষ্ট্রের পরিবির মধ্যে 
ক্রিবনের হিন্দুর ভঙ্গ ভারগা করিয়া দিতে হইবে। ভাসামের
প্রিরওলী এই দারের ভংশ গ্রহণ করিতে ভারীকার করিয়াহন। তাঁহাদের ভঙ্হাত এই যে, ভাসামে এত ভ্রমি নাই।
রবচ কেন্দ্রীর ভাইন পরিষদের ভূতপূর্ব্ব কংগ্রেসী সদন্ত,
রাসাম পরিষদের কংগ্রেসী দলের ভূতপূর্ব্ব সহকারী সভাপতি
ইরভেন্সনারায়ণ চৌধুনী বলিতেহেন যে কেবল মাত্র ভ্রম্বত্র
লগতাকারই ভারও ১ কোট লোকের বসতি ছাপিত হইতে
গারে।

আসামী নেত্বর্ণের বাঙালী হিন্দুদের আমল না দিবার 
চারণ থাকিতে পারে। সেই বিষর লইরা এবানে তর্ক তুলিব
া। কিছু ভারত-রাষ্ট্রের কর্ণবারবর্গকে বিভাগা করিতে চাই
হাদের ছান করিবেন কোথার ? ছই এক লক হইলে কথা
ইল না। যে ২০।০০ লক হিন্দু নিজের উভোগে আসিয়া
ভিরাছেন তাঁহাদের মথ্যে অবিকাংশই পশ্চিমবলে চুকিরা
পভিরাছেন। পশ্চিমবলের পক্ষে এই চাপ সভ্ষ করা করিন।
৪ই ছান সংকুলানের উভেক্টেই "পূর্বাচল প্রদেশের" প্রভাব
ইইয়াছিল। কাছাড়, ত্রিপুরা ও মণিপুর রাজ্যে কত লোকের
হান সভুলান হইত তৎসম্বছে স্তিক হিসাব দেবি নাই।
১০০১৫ লক্ষ হইলেই মন্দ্র কি। এই ছ্যোগের সভাবনা
থমনভাবে নাই করা হইল কেন তাহা আমাদের ভানিতে
ইবে। কেন্দ্রীর আইন পরিষদে প্রশ্ন করিয়া এই মনোভাবের
বিচর পাইতে হইবে।

একটা কথা ভারত-রাট্রের কর্ণবারবর্গকে শ্বন করাইরা দতে চাই। এই সম্ভাকে বামাচাপা দিলে চলিবে না। চাহাতে বিভোভের স্কট্ট হইরা ভারত-রাট্র বিপন্ন হইবে। গাক্ভোমান্টা রোরেলাদের সমরের "না গ্রহণ না বর্জন" গীতির পরিণতি কি হইরাছে, ভাহা আছ সর্বজনবিদিত। 'গাকিছানীদের" কুসলাইরা কিছু আলার করিতে গেলে, এনন বুল্য দিতে হইবে যাহা ভারত-বিভাগ হইতে কম ইইবে না। ভারত-বিভাগের পূর্ব্বে নানা আলাসের সম্যক্র্যুর্ভার কথা বনে রাবিরা সক্লকে সাববান হইতে ইইবে।

## জগতে শান্তি প্রতিষ্ঠা

বিভীয় বিখ-বুৰের পর বে শান্তি ও প্রাচর্ব্যের আশা করিবা পুৰিবীর লোকে উংসাহী হটরাছিল ভাহা এই ভিন বংসবে বিলীন হট্য। যাইতেছে । পরাজিত ভার্পানীর রাজধানী বার্লিব নগরী লইরা বে ঠেলাঠেলি চলিতেতে ভাতাই ভাতার নানা ৰহিঃপ্ৰকাশের মধ্যে সৰ্ব্বভেঠ। এই ঠেলাঠেলি গত মাৰ্চ মানের ভূতীর সপ্তাহ হইতে চলিতেছে, তাহা পামাইবার কর মড়ো নগরীতে পাশ্চাট্ট্য শক্তিঅয়ের দুতগণ সোভিয়েট ইউনিয়নের সর্বাধিনারক প্রালিনের সকে দেবা করিয়া একটা ব্যবস্থা করিয়াছিলেন বলিয়া শুনিয়াছি। কিছু কল ভাষাতে কিছুই হর নাই। ছই পক্ষ এইৰ্ড পরস্পরকে দোষ দিতেছেন। গত সেপ্টেম্বর মাসের শেষ সপ্তাহ হুইতে ক্রান্সের রাজ্যানী প্যারিসে সন্মিলিত ভাতিপঞ্জ-প্রতিষ্ঠানের যে অবিবেশন চলিতেছে ভাহার সন্মুবে যুক্তরাষ্ট্র, ব্রিটেন ও ফ্রাল এই ত্রি-শক্তির পক হইতে নালিশ রুজু করা হইয়াছে যে সোভিয়েট কর্ত্তপক বাৰ্লিন অবরোধ করিয়া পৃথিবীর শান্তি বিপন্ন করিতেছে। এই অভিযোগের শুনানী উপলক্ষে আর এক দফা গালাগাল इरे १फ ररेए जायता अनिवादि : छाराव बर्गा ना भारेनाय কোন সংশোধনের উপার সম্বন্ধে নৃত্য আলো, না পাইলাম कान विभिन्ने निर्दर्भ ।

সন্মিলিত জাতিপুঞ্ব-প্রতিষ্ঠানের সমন্ত কর্ম্ব-প্রচেষ্ঠা এই বিরোধে অচল হইরা পড়িয়াছে। তাহার কারণ সহতে ভূতপূর্ম মার্কিন রাইপতি ক্রাঞ্চলিন ক্রমডেন্টের পত্নী শ্রীমতী ইলেনর ক্রমডেন্ট বাহা বলিয়াছেন, তাহা উল্লেখযোগ্য।

"কার্দ্রানীকে কেন্দ্র করিরা আৰু সুক্র হইরাছে একট আদর্শগত সংগ্রাম। এই সংগ্রামের মীমাংসা শান্তিপূর্ণ উপারেও হওরা সম্ভব যদি আমরা আমাদের গণভাষ্ত্রিক আদর্শনিষ্ঠা বজার রাখিতে সক্ষম হই।

"নিজেদের দেশে রাশিরা হত ইচ্ছা তাহার রাষ্ট্রক আদর্শ প্রসার করিতে পারে এবং প্রতিবেদী দেশগুলির সহিত বন্ধুত্ব করিতে পারে। কিছু তাই বলিরা সে বে এই সকল দেশের রাষ্ট্রকু আদর্শ এবং অবনৈতিক ও সামরিক ব্যবহা নিরন্ত্রণ করিবে ইহা কখনই হইতে পারে না। বলি সোভিরেট-মতবাদ কাহারও তাল লাগে তাহারা বেচ্ছার তাহাকে প্রহণ করিতে পারে—কিছু এই মতবাদকে কোর করিরা কাহারও বাড়ে চাপাইবার অবিকার নিশ্চরই কাহারও নাই।

"পণতান্ত্ৰিক প্ৰধা অনুসাৱে প্ৰত্যেক লোকই খাৰীন তাবে নিজের মত ব্যক্ত করিতে পারে। অধিকাংশের মত অনুসারে রাইব্যবস্থা চালনা করাই পণতথ্নের মূল কৰা এবং বলপ্রবাবে ভাষাকেও শাসন করা নীতিবিক্ত। সেইবতই আৰু কুগতে গণতর প্রতিঠার প্রয়োক্ত এত (4)

278

"বাৰ ৰাতিসনই বাৰ্ড্ৰাতিক সহযোগিতা প্ৰতিঠার একমাত মাৰাম ৷"

**बरे "मानारमय" कथा अकरतरे चीकांत करतन। किन्द** কাৰে কেহই তাহার ৰূপ দিতে রাজী মন। সোভিরেট সংবাদ-পত্ৰ পভিলে মনে হয় যে আহেরিকার ধনী সভাদায় আৰু পুৰিবী শোষণ করিবার অভিগ্রায়ে অভিযান, সুরু করিয়াছে। সোভিরেট প্রভাবের বহিতৃতি অঞ্লপ্তলি এই বিখ-শেষণের জীভনক; কেহ বুবিয়া—কেহ অঞ্চাতে। ভারতবর্ষ নাকি শেষোক্ত পর্যায়ে পভিরাহে। কিছ এই অভিবোগের মধ্যেও বৰ্ত্তমান সভট ছইতে উত্থাৱের প্ৰের কোন সভান भौरेनाय ना । भवन्भदाव भारत काना विकारित विवासित মীমাংসা হয় না।

এই ইপাটা বুৰিয়াও মাতৃষ কোন দিন সংঘত ব্যবহার क्विएक श्रीतम ना । जाक यथन विज्ञातनत कमारि विद्यंत जकन प्रत्येत मर्था पृत्रक जड़ीर्ग इटेट्ड जड़ीर्गड़त इटेट्डिस, ভৰন পরপার ঠোকাঠকির হুবোগ যেন আরও বাভিয়া চলি-**एटा** । जत कि विनाल स्टेस्त त्य मृतक निकर्ष कतिवात स উপায়গুলি আবিদ্ধুত ও ব্যবস্থাত হুইতেছে, তাহা ভালিয়া চুড়িয়া কেলা হউক। পুৰিবীর লোক সপ্তদশ শতাব্দীর অবহায় কিরিয়া यां छेक दर्वन अबुल-१व दिल थीर चर्तमा : चाकान-१व दिन কল্পনার অতীত। সে অবস্থার কিরিয়া গেলে যদি প্রিবীতে श्नोशंनित चरमत क्षित्रा यात ज्य चारापत इर्विटक ভাছাই चौकाद कदिया महत्त्व इहेरत । वर्डमान बूटनेद मासूच এই ব্যবস্থা শীকার করিয়া লইবে না, তাহাও জানি। প্রতরাং বিখ-বুৰের উভোগ-আরোজন চলিতে থাকুক: ভাবৰগতে চিত্বাহ্ণরতে ভর্কের স্রোভ বহিতে থাকুক। ইতিহাস বলিতে ৰাত্ৰক মাছৰ ঠেকিয়াও শিৰে না : শিক্ষা করিবার, সাবধান হইবার শক্তি ভাষার নাই : ভাষার স্ট্রকর্ডা এই গুণট ভাষার প্রকৃতির মধ্যে দেন নাই।

## জাপানী সামরিক নেতৃরন্দের বিচার

ভূরেনবুর্গ নগরীতে ভার্দ্ধানীর সাম্বিক নেড্রন্দের বিচার क्रेबाहिन: छाक्षेत्र मत्या ध्ययामगत्यत क्रेबाहिन कांति; বস্তুকের গুলীতে হত্যা করার সন্থানটা তাহাদের দেওয়া হয় - ৰাই। সে কথা লোকে প্ৰাব্ন স্থানিরা সিরাছিল। আৰু স্থাপানী भागातिक त्वजरायत विठात यामात्यत यत्व कताहेता विदार যে বিভাগী শক্তিপুত্ৰ ভাষাদের বিংসার্ভি ভূলিরা বাইতে চান ना : छारायब बाडे-दिशाय छारा मध्यानछ कविवा बारिएछ हान । 33 क्य विहासक नरेश अक मधनी प्रतिष्ठ रहेशांदिन : ভাষার মধ্যে ছিলেব একজন বাঙালী বিচার্জ, ভাষার নাম

**बै**वांबाबिट्बांक भाग। व्यविकारम विठावटकता बांब विवादक বে অভিযুক্ত ভাগানী সামরিক বেড়বুল বিখ-শান্তির বিরুদ্ধে চক्লांच क्विवांवित्नन , युव श्वितांनमात्र भर्गा (य विश्वांका অপরিহার্যার্থে বিভয়ান, ভাহার অভিরিক্ত নিঠুরতা শত্রুপ্রের धकाइएकत ७ वकी रेजनवादिमीत विकृत्व भविनामा कतिवात ছত প্ৰৱোচনা বিশ্বাছিলেন ও নানাক্ষেত্ৰে সেই নিষ্ঠুভাৱ সমৰ্থন कतिवादित्वत । এই अनवाद ७ अत्मव एवेबाट कांत्रिव ছতুৰ: ১৪ জনের হইয়াছে দ্বীপান্তরের আদেশ।

विচারক-মঙলীর সভাপতি অটেলিয়ার সার উইলিয়ম ওরেব রারে বলিয়াহেন যে প্রধান অপরাধী ভাপ সমাট হিরো-হিতোকে বিচারের জন্ম উপস্থিত করা প্রয়োজন ছিল: করাসী ৰুজ বেবনারও সেই অভিয়ত প্রকাশ করেন, কিন্তু খতর রাবে বলেন যে উপস্থিত অপৱাৰীয়া ভাগ বাইনীতির জীভনক মাত্র : স্থভরাং তাঁহাদের অব্যাহতি দেওরা উচিত। ডাচ বিচারণতি ডা: রোপিংও বতর রায় দেন, তাঁহার অভিযতের বর্ণনা সংবাদপত্তে দেওয়া হয় নাই। তিনি ৬ জনের প্রাণদব্বের আদেশ সমর্থন করিয়াছেন। ভারতবর্ষের ডা: রাধাবিনোদ পাল সকলকে নিৰ্দ্বোধ বলিয়া হায় দিয়াছেন। এই অভিযতের সমৰ্থনে ভিনি কি বলিয়াছেন ভাৰা টক টক বুৰা যাইভেছে না। বে সংক্ষিপ্ত বিবরণ আমরা পাইয়াছি ভাষা পড়িয়া মনে হয় বৰ্তমান আছকাতিক বিধানাস্থলায়ে একপ হিংসা-মীতি অপরিহার্বা বলিরা তিনি মনে করেন।

বে তিনট খতত্ৰ রার উপস্থিত করা হর তাহা আদালতে পাঠ না করিবার সিদ্ধান্ত এহণ করার আমরা আনিতে পারিব ৰা কোন কোন কাৰণ দৰ্শাইয়া ভিন খন বিচাৰণভি ভাঁথাদেৱ আট ভন সহযোগীর মতের বিক্রছে নিত্র নিত্র অভিমত প্রভাগ क्रिलिम। (न यांचारे एडेक, बरे कथा वृत्तियांत शक्क (कान অল্টেডার বাধা নাই যে বিজয়ী শক্তিপুঞ্চ যে নীতি অভুসরণ ক্রিরা চলেন, ভাপানী সাম্বিক নেড্রন্স ভাষা হইতে এমন ভাবে বিচাত হন নাই বে তাঁহাদের বিখের জনমতের সন্থে माबी माराष्ट्र करा बाहरल भारत । षाः ताबावित्याम भारतत বায় সাক্ষ্য দিতেছে যে, এশিবার ২৫।০০ কোট লোক টোকিবো নগরীর এই বিচারকে 'লোর যার মুদুক ভার' এই নীভির প্রয়োগ वनिश यदन करता । कार्यामी ७ कार्यान विकशी सहरत हेहनहेन চাচিল, हेलिन, क्यांदिल मानील, क्यांदिल चारेरलन-হাওৱার, জেনারেল ভুকত প্রভৃতি রাইনেতা ও সামরিক বেড়-इत्यव विवाद रहेल अवर काशायब निर्वाचिक विवादक्व करी পরাবিত নেডুরুকের প্রতি অন্তরণ দতাদেশ দিতেন। সাটন ভাষাত্র একটা কৰা আছে যাহার অর্থ এরপ হাড়ার---'বর্থন ৰুছের যামামা বাজিয়া উঠে, তথন আইন হইছ বার নীরব। বর্তমান সভাতার কর্ণবারগণ বে রাইনীতির পুরুষ ও বারক ভাহার কৰা মৰে কৰিয়া বীশুর কৰা বরণ করাইয়া বিজে

ইক্সা হয়—ভোষাদের মধ্যে যে নিলাপী ভাষারাই কেবল অপরানীর উপর লোইনিকেপ করিতে পার। গাড়ীজী হালা
এরণ কোন লোক-নেভার নাম ভ জামাদের মনে পড়ে না
যিনি মনেপ্রাণে অহিংসাত্রভী বলিরা নিজের পরিচর দিতে
পারেন। ছরেমবুরে ও টোকিরোর বিচার বার্থ হইরা ফিরিরা
আনিবে বিশ্ব-মানবের শুভ-বৃদ্ধির ছ্রার হইতে। ভাঃ রাবাবিমোদ পালের হুভল্ল রারের কল শেষ পর্যাভ হরত কিছুই
হুইবে না, কিছু ভ্রবাপি ভাষার স্বাধীন মত প্রকাশের জন্ত এবং
ভার বিচারের বুল নীতির অকপট অভিব্যক্তির জন্ত ভাষাকে
ভাররা অভিন্দিত করিতেছি:

## थुत्रतमम नित्रभान

বুরসেদ মরিয়ানের মৃত্যুতে দেশ এক কন লোক-নেতা ভারাইল। তিনি স্বাধীন ভারতে একট বিশিপ্ত স্থান অধিকার ভরিতে পারিতেন। দাদাভাই নৌরশী, কিরোক শাহ মেহতা, দিন্দাৰ ওয়াচা প্ৰভৃতি কংগ্ৰেস আন্দোলনের প্ৰবর্তকবর্গের উত্তরসাধকরূপেই বুরসেদ নরিম্যান স্বাভাবিকভাবে ভারতীয় बाबनीजिक कीवान चान कविया महेबाहित्मन । अपम कीवान তিনি গতাভুগতিকভাবে শিক্ষা-দীকা সম্পূর্ণ করেন। আইন ব্যবসারে প্রবেশ করিয়া কিছ তিনি এমন একটা অভারের क्षण्यादि रच्याचन कविद्यान यांचा वृत्यक्त नाम महम विम না। সমুদ্রবন্ধ হইতে ক্ষমি উদ্ধার করিবার ক্ষম বাঁব নির্দ্ধাণ করিয়া বোখাই নগরীর পরিধি বৃদ্ধি করা হইছেছিল। এই कार्दा को कि कि के कि वाद करें एक विन । बार्फ नायक अक জন খেতাজের উপর কার্ব্যের ভার ছিল। প্রসেদ নরিয়ান সংবাদ পান যে এই বিরাট কার্যোর মধ্যে বুষ প্রভৃতি নানা-বিধ অনাচার চলিতেতে। নিজের দারিছে লোকসমক্ষে তিনি धरे भरवात क्षकान करवन। करन चार्किक वांवा चरेवां কাঁহার বিরুদ্ধে মানহানির মোক্তমা আনিতে হয়। वाचारेखन भवाच के धर बाक्समान वान मिक्सि कदन. এবং বুৰক নৱিন্যান সভতার পক্ষে ক্রেন। বিচারে ভাষার অভিযোগ প্রমাণিত হর। এই বিভরে তিনি লোক-নেভার ভাগনে উন্নীভ হন। বিশেষ করিয়া বোখাইয়ের ব্বক শ্রেম্ব উহাাকে নেডছ পদে বরণ করে। এই উপলক্ষে তিনি বেশের রাজনীতিক অঞ্জামী দলের পরিচয়লাভ করেন. **4वर चिक महर्र्वे छोहोराब मर्दा श्रामिक कर्दाम।** এই সম্বেই প্রভাষ্চল বপ্লৱ স্কে ম্রিয়ানের সহযোগিতার युष्टमा स्व ।

বর্তমান শতাকীর জৃতীর হণকের প্রবমার্কে বোষাইরের বাক্ষনীতিক জীবনে মহিন্যানের প্রভাব অমচসাধারণ হিল।

সর্বার বয়তভাই প্যাটেলের জ্যেঠ আতা বিঠলভাই বর্বন বোষাই হাডিয়া আনের ভবন সকলেই আলা ক্রিভেহিল বে ব্যসেদ দরিদ্যান উপায় ছান অধিকার করিবে। কিছ নিয়তির বিধান অভরপ। সর্বার বল্পভাই প্যাটেলের সক্ষেতির বিধান অভরপ। সর্বার বল্পভাই প্যাটেলের সক্ষেতিনি সহবোগিতা বজার রাধিতে পারিলেন না। এই বিবরে লোব-ভণের বিচার করিয়া কল নাই। যে পলে প্রবানত পের (বোঘাইরের প্রধানমন্ত্রী) আরু অবিষ্ঠিত, সেই পদ ছিল ব্রসেদ দরিম্যানের প্রাণ্য। তিনি তাহা লাভ করিতে পারিলেন না, এবং রাজনীতি ক্ষেত্র হটতে সরিয়া পভিলেম। মৃত্যুক্ত হুই মাস পূর্বেতিনি বোঘাই নগরীর মিউনিসিপালিটতে কংগ্রেসী দলের নেতৃত্ব পদে বৃত্ত হন। এই সংবাদে আমরা আলা করিয়াছিলাম যে বাধীন ভারতনাত্রে ব্রসেদ দরিম্যান ভাহার বোগ্য পদ লাভ করিবার স্ববোধ পাইবেন। মৃত্যু দেশের লোকের সেই আলার বাদ সাধিল।

#### নরেন্দ্রনাথ শেঠ

৭১ বংসর বয়সে এই বাঙালী বিপ্লবী-প্রধান দেহত্যাপ করিবাছেন। ইংরেজ রাজছের অত্যাচার অবিচার উাহার পরিবারবর্গের উপর নির্বিচারে পড়িয়াছে, কিছ ইংরেজ শাসনের বিরুদ্ধে উাহার বিরোহী মন কোন দিন লক্ষ্যুপ্তই হর নাই। ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগটের পর প্রার চৌছ মাস তিনি বাঁচিয়াছিলেন। বে রাষ্ট্রিক স্বাধীনতা ও সংগঠনের স্ববোগ আমরা লাভ করিবাছি তংসম্বদ্ধে নরেজনাথের মনে কোন মোহ ছিল না। সেই মনোভাবের কারপট ব্রিতে পারিলে তাহার জীবনব্যাপী সাধনার একট অর্থ পাওয়া বাইবে।

বে পরিবারে নরেজনার ক্ষএহণ করেন তাঁহারা কলি-কাতার আদি বাসিলা। শেঠ-বসাক-লাছা-আঢ়া পরিবার ব্যবসা-বাণিক্যে আত্মনিয়োগ করিয়া কলিকাতা স্মাকে একট বিশিষ্ট ছান অধিকার করেন। সেইক্স ভারাদের খেতাল সঙদাগর শ্রেপীর তাবেদারী ক্রিতে হইয়াছিল: কারণ বলিতে গেলে কলিকাতার বন্ধর ভাঁহারেরই স্ট। हेश्टबटबंब महन त्य निका ७ मानमा जामाहबंब हाटन बाटबन করিরাহিল তংগদত্তে এই সব হিন্দু শ্রেণীর বিশেষ কোন वाद्याद यांत्र दिन नां द्यम एटेबा देवियादिन बाम्याहम-वर्ष्णन-कृष्णन-পतिन'रतत जरका नदबस्यादवन রাবেজনার ইংরেকী শিক্ষার বিতীয় রুগের হিলেন; চক্ৰমাৰৰ খোৰ, রবেশচক্ৰ মন্ত প্ৰভৃতি ভাৰাৰ সহপাঠ ছিলেন; ভাঁহার পুত্রেরা সকলেই বর্ত্তমান শিক্ষার শিক্তি হিলেন। কিছ এই শিকা ভাছাদের প্রাচীন সংখ্যারকে হর্মল করিতে পারে নাই; কোন কোন দিক ্হটতে এই শিক্ষা ভাষা দুচু করিয়াছিল , বক্ষণীলভার সভে খাবেশিকভার একটা বুডৰ বোগহর প্রতিষ্ঠা করিরাছিল। পান্ডাড্য শিক্ষার কল্যানে ইউবোপীর পণ্ডিতদের নিকট ভটতে আৰৱা বুড়ন কৰিবা ভবিডে পাই বে আমাবের সংগ্রন্তি প ষীতিনীতি একেবারে বাবে জিনিস নর; তাহারের মধ্যে সত্য বছ হিল ও আছে। পাশ্চাছ্য জগতের এই আবিকারে আনাদের মধ্যে আজ-বিশ্বাস কিরিরা আলে; ইংরেজ-নিরপেক হইরা চলিবার সাহস দেবা দের। বে মুরে নরেজনাধ কররহণ করেন, তাহা এই তাব-বভার মুগ। কুতরাং তিমি কোন দিনই সমাজ-সংভারপহী হইতে পারিলেন মা; "কেরল" তাব ও সংগুতির বাহক, বারক ও প্রচারক বিদেশী শাসন-ব্যবহার মূলজেদ মা করিতে পারিলে তারতে প্রকৃত "বরাক" আসিতে পারে না এই বিখাসের অমুপ্রেরণার নরেজনাধ হইরাছিলেন রাজনীতিক বিপ্লবী। এই বিখাসের মূর্জ বিপ্রহ ছিলেন পশ্চিম তারতে বলবত গলাবর টলক, পূর্ব্ব-ভারতে রজবাছর উপাব্যার এবং বাংলাদেশে তাহার বাদী-সৃত্তি ছিল "সহ্যা" পঞ্চিল।

**এই পত্রিকাকে অবলহন করিয়া বে আলোচনের পঞ্চী** चत्र जोवांत मत्त्र मत्त्रसमाय चांकडे वर्षेत्रा शिक्षमा। স্থভরাং "কালী মারীর বোমার" আহ্বানে সাড়া দিতে ভাছার মনে ভোন ছিবা দেবা দেৱ নাই। তাঁহার উদাহরণে কলি-ভাভার ভালি নাগরিকগণের মধ্যে ভনেকেই ভর্ণ ও সামর্থ্য দিলা সন্ত্ৰাসবাদকে সাহায্য করিবাছিলেন: উাহার অভু-শ্রেরণার কলিকাভার "গুঙা" শ্রেম পুলিশকে পিটাইতে সাহস পাইয়াছিল। সেইবছ তাঁহার সম্ভ পরিবার বিপত্ন হইয়া-दिन ; वनच गांगेर्किक रूलांब क्रिकेंड लारांब निविवादक ১० क्नांक अक्षित्न शांत्रावत शकार् निकारक करेर कर : জীহাকে কুতুৰদিয়ার চরে সাপ-কুমীরের মধ্যে নির্বাসিত ছইতে হয়। বৃদ্ধ পিতা বহিলেন এক। বাদীতে প্ৰায় ৫০।৬০ট महिला ७ मारांनटकृत चिकारकृत्तर, अन्नमानाहरण । इरे-छिम वरमद भट्ट मट्टक्सांच यदन कट्टक्सांन सांक महेदा কিবিয়া আসিলেন তথন দেশে নূতন রাজনীতিক চিড়া ও कर्वश्रवाद्यत वाम क्रांक्शिट : वांश्माद महामवांशीद्यत महा क्रक राजप्रशासन प्राप्त अरुपन काशिनाटक । क्रोडिय अरुपनी मन লইয়াই তাঁহারা গাঙী-আন্দোলনে যোগদান করেন। কিছ ভাঁহাছের "বেজ-ভাকে" ভাহার মধ্যে পাইলেন না। কারব चांचलकि कवित्रा, निर्विद नश्च-नश्काद कवित्रा पंकि वर्धन করিবার কর যে কর্মকেত্রে গানীকী আমাদের আহ্বান করিয়া-ছিলেন, ভাষা নৱেম্রনাধের সহজাত সংখারের বিরোধী ছিল। হুদের আন্দোলনের চিডা-নারক ও কর্মবীরগণ বাঁহারা গাড়ী-হুৰে বাঁচিয়া হিৱেন, ভাঁহাৱা কেন গাড়ীভন্ন অবলয়ন করিতে পারিকেন না ভাতার কারণ এই ভাব-সাতর্যার মধ্যে অনু-সভার করিলে অভার হইবে না। ব্যক্তিগত মতামত ইহাত্র ৰহিঃপ্ৰকাশ মাত্ৰ: ব্যক্তিগত ত্যাগ-মাহান্ম এই বিবোৰে ব্লান क्ट्रेश बाद , अक जनवीती देवांक्यांव अन-वय जानवांव अव कृतिया गरेवा गरकांद्रक्त गर छड़ी विक्रक कृतिया त्वत । बरबक्षवादयंत्र जीवम काशांत्र जांत्र अफ्डे बावान । अरे विधारवत्र

মধ্যেও ভাঁহার ত্যাপ আমরা ত্লিতে পান্নি না। সেই ত্যাগের দ্বতির প্রতি বেশের ধন অগরিশোননীর। সংরক্ষণাবের পরি-বারবর্গের সহিত বেশের লোকের মধ সমগ্রংনী। আমরাও সমতাবে এই ছঃবের তাগ সইতেহি।

## বেঞ্জামিন হর্নিম্যান

ভারভবাসী এক জন ইংবেজ-বন্ধ ছারাইল। মিসেস এনি -বেসাভ, চাৰ্লস এওকুভ ও উইলিৱম পিৱারসন ছাড়া এমন कांन हैश्टबरक्य मान बायवा कानि ना विनि वर्नियारिनव वर्क মনে প্রাণে ভারতবর্ষের স্বাধীনতা কামনা করিয়ালেন এবং তাহার হয় আহডোলা হট্যা আপনার সর্বার্থ বিসর্ভন করিরাছেন। ব্যথেশী যুগে ছনিয়ান কলিকাতার "টেটস্ম্যান" शिक्कांत महत्यांत्र मन्नापक विद्यान मन्नापक विद्यान बार्डेक्निक, जब मध्यबद कर धरे देश्यब-नविग्रानिक निक्न-ধানি ভারতবাসীর আশা-আকাক্ষার প্রতি সহাত্ততিসন্দর ষ্টরাছিল। ভারপর যথাপুর্বং ভথা পরম। ছয়-সাভ বংসর পর সর কিরোক শাহ যেহতার আহ্বানে হ্রিয়ান ভাঁছার দৈনিক পত্ৰিকা "বোৰে গুনিকলে"র সম্পাদক ছইয়া চলিয়া যাৰ এবং এই সুযোগে ভাঁছার সাংবাদিক ও রাজনীতিক জীবন নানাভাবে বিকৃষিত হয়। তিনি ক্ষেক্তন মুবক ভারত-বাসীকে এইরূপে গভিদ্বা ভলেন যে তাঁহাদের মধ্যে অনেকেই আৰু ভারতবর্ষের সাংবাদিক জীবনে প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়া বিভিন্ন সংবাদপত্তের কর্ণবার হইরা আছেন।

মিসেস এবি বেসাছ যথন "হোমকল নীগ' ( H. me-Rule I eague ) নামক রাজনীতিক প্রতিষ্ঠান ছাপন করিবা ১৯১৬-১৭ সালে ভারতব্যাপী আন্দোলনের স্কৃষ্ট করেন তথন পশ্চিম-ভারতে হর্নিম্যান এই আন্দোলনের নেতৃত্ব এবন করেন। রাউলাট বিল ও জালিরানওরালাবাগের হত্যাভাতের বিক্রছে তাঁহার বিশ্বংগর্ড লেখনীর আঘাতে ভারতবর্বের ইংয়েজ আমলাতর এরপ অতিষ্ঠ হইরা উঠে বে, আমানের মেশের বাহিরে ভারাকে নির্মাসনে পাঠানো হর। প্রায় সাত বংসর বিলাতে কাটাইরা হ্রিম্যান এই বেশে কিরিরা আসেন। এই কর বংসরে তিনি মনে প্রাণে আমানের "বমেশী" বনিরা গিরাছিলেন।

কিছ কিন্নিরা আসিরা তিনি পূর্বের সুবোগ লাভ করিতে পারেন নাই। অনেক পত্রিকা উহার সম্পাদকতার প্রকাশিত হর, অভার ও অবিচারের বিরুদ্ধে উহার নেখনী পূর্বের ভার শাণিত হিল। যতায়ত সহবে একটা কঠোর তাব হিল বলিয়া হর্নিয়ান লোকের সঙ্গে বিলিয়া-মিশিরা চলিতে জানিতেন না। এই বৈশিষ্টাই উহার চরিত্রের গোরব ও উহার সাংগারিক অসাক্ল্যের কারণ। আল উহার জীবনের নানা-কবা ব্যৱস্থা করিছা ভারত-বন্ধু এই ইংরেজের স্থতির উক্তেশে প্রভাগির অর্থি করিতেহি।

## জয়দেবের লবকাদি বসস্ত-পুষ্প

## **এ**যোগেশচন্দ্র রায়, বিদ্যানিধি

জয়দেব গীত-গোবিন্দের আরক্তে মঞ্চলাচরণ করিয়া রাধা-ক্রুফের বিহার বর্ণনা করিয়াছেন। কোথায় বিহার ? বুন্দাবন-বিপিনে। কখন বিহার ? বসস্তে!

বৃন্দাবন-বিশিন-প্রত্যক্ষ-যোগ্য। কিন্তু বসন্ত প্রত্যক্ষ্যোগ্য নয়। জ্যোতিষীরা বসন্তকালের চক্র দেখিয়া বলিয়াছেন, ফাল্কনী পূর্ণিমাতে বসন্ত ঋতৃর আরম্ভ। ফাল্কনী পূর্ণিমা হইতে চৈত্রী পূর্ণিমা, এবং চৈত্রী পূর্ণিমা হইতে কৈত্রী পূর্ণিমা, এবং চৈত্রী পূর্ণিমা হইতে বৈশাখী পূর্ণিমা, এই হই মাস বসন্ত। ফাল্কনী পূর্ণিমা ও দোল পূর্ণিমা একই। কিন্তু কবি পাঁজি দেখেন না। প্রকৃতির অবস্থা দেখিয়া ঋতু গণনা করেন। এই কারণে জয়দেব বসন্তের প্রাকৃতিক লক্ষণ বর্ণনা করিয়াছেন। সে সময় বৃক্ষের নবপল্লব উদ্গাত হয়, পূষ্প প্রস্তুত হয়, স্থম্পর্শ নলয় সমীর বহিতে থাকে, কোকিল কুহু কুহু রব করিতে থাকে, অলিকুল গুল্পন করিতে থাকে। আর প্রবাসী জনের চিত্ত চঞ্চল হয়। বসন্তে চারি জ্ঞানেক্রিয়ের পরিভৃপ্তি হয়, কেবল রসনার হয় না। যথন উক্ত লক্ষণ প্রকাশিত হয়, তথন বসন্ত। বসন্ত রাধাক্বফের বিহার-ক্রাল। তথন যে বসন্ত, কবি তাহার প্রমাণ দিতেছেন।

গীত-গোবিন্দে দাদশ সর্গ। তিনি দাদশ বসস্ত-পুষ্প বর্ণনা করিয়াছেন। প্রথমে

লিতি-লবন্ধ-লতা-পরিশীলন-কোমল-মলয়-সমীরে।
. মধুকর-নিকর-করম্বিত-কোকিল-কৃজিত-কুঞ্জ কুটিরে॥
সতীশচক্র রায় ক্বত পদ্যান্থবাদ—

ললিড়-লবন্ধ-লতা আলিন্ধিয়া, কোমলতা লয়ে বহে মলয় পবন;

ভ্রমর-ঝন্ধার সনে পিককুল কল-স্বনে নিনাদিত নিকুঞ্জ ভবন।\*

লবন্ধ-লতা কেমন গাছ ? পৃজারি গোস্বামী কিমা সতীশবাব্ কিছুই লেখেন নাই। এক পণ্ডিত মহাশার বিলিয়াছিলেন, লতা-বিশেষ। প্রচলিত সংস্কৃত কোশে নামটি নাই। শব্দকল্পদ্ধে আছে, লতা-বিশেষ। মধুকর স্থামর নয়, মধুমক্ষিকা; কৃটিরকে ভবন বলিতে পারা বায় কি ? কৃঞ্জ লতাগৃহ, কৃটির পর্ণশালা। ঠিকই হইয়াছে। চৌদ্দ পানর বংসর হইল, বড়ু চণ্ডীদাসের শ্রীকৃষ্ণ-

ক বীত-বোৰিক সংস্কৃত মূল, পূজারি গোৰামীর টাকা, প্ভালুবাদ ও বিস্কৃত ব্যাক্ষা সম্বালিত। সতীশচন্ত্র রার এম-এ সম্পাদিত। কলিকাতা ১৩১১। কীর্ত্তন" পড়িতেছিলাম। কবি তিন চারি স্থানে লবদের অর্থাৎ লবদপুম্পের নাম করিয়াছেন। এক স্থানে আছে— ফুটিল গুলাল মাহলী মালতী মাধবীলতা লবন্ধ দোলন্ধ নেআলী। শেবতী কনকমুখী স্থী কনক কেতকী পারলি হুলালী॥

বসস্তকালের বর্ণনা। এইরূপ উল্লেখ দেখিয়া লবক
ফুলের গাছ চিনিতে বত্ব করিয়াছিলাম। দেখি, কেবল
চণ্ডীদাসে নয়, পূর্ববেদের "পদ্মাপুরাণে", ভবানন্দের "হরিবংশে", উত্তর বক্দের "চণ্ডিকা বিজয়ে" লবক-পুম্পের উল্লেখ
আছে। - দক্ষিণরাঢ়ের জয়ানন্দ লিখিয়াছেন,—"নারেক
দোলক বিব লবকাস্তস্পুরে।" অতএব লবকলতা বহুজ্ঞাত
ফুলভ লতা, অন্তঃপুরেও রোপিত হইত। এমন গাছ
বিল্প্ত হইতে পারে না; এখনও আছে। কিন্তু অন্ত

সংস্কৃত কোণে ও বৈ**ত্তক কো**শে লবন্ধ স্থপরিচিত স্থান্ধি দ্রব্য। ইহার অপর নাম শ্রীপুষ্প, ইহা লবক্ষডকর . 😎 মুকুল। পূর্বে মালয়-দ্বীপ হইতে আসিত, একণে আফ্রিকার পূর্বদিগ্বতী জাঞ্জিবার নামক দ্বীপ হইতে আসিতেছে। মাদ্রাজে ও সিংহলে লবন্ধ-ভরুর উন্থান হইতেছে। লবদতক জামগাছের তুল্য মাঝারি তক। উক্ত কবিদের লবঙ্গলতা তরু হইতে পারে না। আমরা জানি একের সাদৃখ্যে অত্যের নাম হয়। লবদলতার কোন্ বিষয়ে হইতে পারে ? লবক্তরুর ফুলের আকারে ও গম্বে লবদলতার ফুলের সাদৃত্য থাকিবার কথা। বহুজাত এমন ফুল কি হইতে পারে ? যুথী ( ভুই ফুল ) ভিন্ন আর কোন ফুল মনে হইতেছে না। খেত যুখীর নাম লবক হইয়াছিল। কারণ দেখিতেছি উভয়ের **আকা**রে ও<sub>.</sub>গ**ছে** সাদৃশ্য আছে। আরও দেখিতেছি বেখানে শবদ নাম আছে সেধানে যুখী নাম নাই। যুখী ছই প্ৰকাৰ। যুখী (বেত বৃধী) ও হেমবৃথী। হেমবৃথীর পুশা পীতবর্ণ। ব্দমর কোশে নাম হেম পুশিকা। চণ্ডীদাসে ইহার নাম কনক যুখী। ১৩৪২ বন্ধান্দে বন্ধীয়-সাহিত্য-পরিষৎ পত্রিকার দিতীয় সংখ্যায় চণ্ডীদাসের উল্লেখিত বৃক্ষ-নির্ণয়ে লবন্ধ-পুষ্প চিস্তা করিয়াছি। সেধানে একটা ভূল করিয়াছি। লিখিয়াছি, রঘুনন্দনে যুথীর নাম লবক আছে। পরে (पश्चिम्रोहि द्रचुनम्पत्न नव, कोनिकार्श्वारा () ३८।८२ )

আছে,—"লবন্ধ-বন্ধী স্থ্যভিগদ্ধেনোধান্যমাক্তম্" (লবন্ধতা পূলা স্থাভি গদ্ধ ধারা পবনকে স্থানিত কবিয়া)। ইহা বসন্তকালের বর্ণনা। চণ্ডীদানও বসন্তে লবন্ধ্যুল ফুটিডে দেখিয়াছিলেন। ভূইফুল বর্ধাগমে ফুটে, কিন্তু জল পাইলে চৈত্র-বৈশাধেও ফুটিডে দেখিয়াছি।

বিদ্যাপতি বসম্বপুষ্প বর্ণনা করিয়াছেন, কিন্তু সে সব জংদেব হইতে লইয়াছেন। তিনি লিখিয়াছেন,— "কিংশুক লবদ্দতা এক সদ। হেরি শিশির শ্বতু আগে দিল ভদ্দ॥"

জয়দেবের ললিত লবললতা কি কুন্থমিত হইয়াছিল ? হইয়াছিল বলিতে শহা নাই। কারণ জয়দেব পরে পরে আবও তেরটা বৃক্ষের পূপা বর্ণনা করিয়াছেন। তিনি লবললতা প্রথমে ধরিয়াছেন। বসস্তের এক নাম পূপা-সময়। তিনি পূপাশ্ন্য কোন বৃক্ষের নাম করেন নাই। জয়দেবের টীকায় পূজারি গোস্বামীও লবললতাকে পুশিত মনে করিয়াছেন।

লবন্ধ, লতা-বিশেষ। যে গাছ সোজা দাড়াইতে পারে
না, বাঁকিয়া ফুইয়া পড়ে, অন্যের আশ্রয় গ্রহণ করে, সে
পাছ লতা (স' লা ধাতু গ্রহণে)। আর, যে লতা জড়াইয়া
জড়াইয়া উঠে তাহা বলা। (স' বলু ধাতু আবরণে)।
লবন্ধলতার তমু স্কুমার। বস্তাগমে ইহার নবোদগত
শাখা ও পল্লব চিক্কণ হরিংকান্তি হয় এবং পরস্পর জড়াইতে
জড়াইতে যুথে যুথে কুন্দ্র স্থান্ধ পুস্প প্রাস্থব করে। মলয়
সমীর গদ্ধবহ হইয়া থাকে।

কালিকা-পুরাণ কামরূপে প্রণীত হইয়াছিল। যে আংশৈ লবকবলীর উল্লেখ আছে, সে অংশ অন্তম গ্রীপ্ত শতাব্দে রচিত হইয়াছিল। সংস্কৃত কোশে লবকের এই দ্বিতীয় অর্থ গৃহীত হয় নাই। এরূপ দৃষ্টাস্ত আরও আছে। চণ্ডীদাসের মালতী দ্বার্থ হইয়াছে, (পরে পশ্রা)। তিন শত বংসর পূর্বেও বঙ্গীয় কবিকুল মুখী না বলিয়া লবক বলিতেন। কি কারণে লবক নাম পরিত্যক্ত হইল, বঙ্গীয় কাব্যামোদী চিস্তা করিবেন।

এখানে বড়ু চণ্ডীদাদের প্রথমোক্ত কয়েকটি বসন্তপুশের
পরিচয় করি। "ফুটিল গুলাল নাহলী মালতী মাধবীলতা,
লবক দোলক নেআলী"। গুলাল লাল গোলাপ মনে করি।
'গুল' ফার্সী শব্দ অর্থ ফুল। বিশেষার্থ গোলাপ ফুল।
গুল—'আব—গুলাব, ফুলের জল। গোলাপের সংস্কৃত্ত
নাম স্বেক্টী (লঁঅভি) চণ্ডীদাসে শেবতা। চণ্ডীদাসের
"শ্রীকৃষ্ণকীর্ডনে" গুলাল ব্যতীত আরপ্ত কয়েকটা আরবী
ফার্সী শব্দ আছে। মাহলী, উচ্চারণ মাল্হী। বাংলা
ভাষার ফলাযুক্ত হ থাকিলে প্রথমে ফলা, পরে হ উচ্চারিত

हम। आमता निधि आर्नान १ फि आन्हान। माह्नी, मानशे व्यर्थार मही (वा महिका)। मानजी विनतन বর্তমানে বন্ধীয় পাঠক বৃক্ষারোধী মালতী লভা বুঝিয়া থাকেন ৷ সাধারণ পাঠকের কথা দূরে থাক, বিচক্ষণ ভূয়োদশী আয়ুর্বেদবেতা কবিরাজ বিরজাচরণ গুপ্ত ভাষার "বনৌষ্ধি দর্পণে" মালতীকে বৃক্ষাবোহী মালতী লভা বৃঝিয়াছেন। তিনি বিভ্রান্ত হইয়া আয়ুর্বেদোক্ত মালতীর লক্ষণের সহিত মিলাইতে পারেন নাই। মালতী লতা বর্ষার শেষে পুষ্পিত হয়, তাহার গন্ধে সন্ধাকালে চারি দিক আমোদিত হয়। "ফুটিল মালতী ফুল সৌরভ ছুটিল, পরিমল লোভে অলি 🛭 আসিয়া জুটিল।" ইহা এই লতা মালতী। সংস্কৃত কোশে কিম্বা বৈগুক কোশে এই মালতীর উল্লেখ নাই। অমর কোশে "মালতী স্থমনাজাতিঃ" জাতির বাংলা নাম জাই अण्या नाम काहे, हिन्ती नाम ठारचनी, ठारमनी। काजि ও মালতী একই ফুল। একটা গানে আছে—"জ্বাভি যুখী বেলফুল ফুটিল মল্লিক। ফুল।" এই গীতরচয়িত। ঠিকই লিখিয়াছেন। জাতিকেও লতা বলিতে পারা যায়, কিছু এই গাছ প্রথমে দোজা উঠে, পরে দীর্ঘ হইয়া মুইয়া পড়ে। জাতি পাথুরে কাঁকুরে মাটিতে সহজে জন্মে ও প্রচুর ফুল ধরে। সচরাচর বর্ধার শেষে ও শরতে ফুল কিন্তু জ্বল পাইলে ফাব্তুন মাদেও ফুটিতে দেখিয়াছি। "শ্রীকৃষ্ণকীর্তনে" বৃক্ষাবোহী মালতী লভার নাম মধুমালতী। দেখানে আছে "মালতী মধুকর।" ওড়িয়াতেও মধুমানতী। কেহ কেহ না জানিয়া আর এক লতাকে মধুমালতী কেহ বা লবন্ধলতা বলেন। সে লতা তঙ্গ আশ্রয় করিয়া ঝুলিতে থাকে। তাহার স্থান্ধ থোবা থোবা ফুল হয়। প্রথমে সাদা, পরে গোলাপী, পরে রক্তবর্ণ হয়। এই কারণে ইহার নাম विका इंदेशारह। शाहरि विस्ति, मानग्रदीय इंदेरज আনীত। কিন্তু কোন মালতী ফুলের সহিত ইহার সাদৃশ্য নাই। গল্পে ও আকারে বরং জুই ফুলের সহিত সাদৃত্য আছে।

চণ্ডীদাদের অপর কয়েকটি কুল চিনিতেছি। মাধবী
লতা প্রসিদ্ধ বৃক্ষাশ্রমী লতা। দোলক, সংস্কৃত নাম
মাতৃলুক। কবিরাক্ষ বিরক্ষাচরণ গুপ্ত মাতৃলুকের বাংলা
নাম টাবা বলিয়াছেন। কিছু টাবা অন্য নের্। মাতৃলুকের এক প্রসিদ্ধ সংস্কৃত নাম বীজপ্রক, হিন্দীতে
বিজ্ঞোরা; উত্তর ভারতে আছে, আজিকালি বলদেশে এই
নের্ প্রায় দেখিতে পাওয়া বায় না। লোকে পাতি নামে
অতিশয় অয় নের্ চিনে। কিছু নামে ভূল করিতেহে।
পাতি শব্দের অর্থ সামানা। কলিকাতা অঞ্চলে গোল

নেবৃকে পাতি বলে। ইহার ছাল কাগজের মত পাতলা।
এই নেবৃর নামই কাগজী হওরা উচিত। ঢাকার তাহাই
আছে। কলিকাতা ও পশ্চিমবঙ্গে যে নেবৃকে কাগজী
বলে তাহার ছাল পুরু। ফল স্কুড্রাণ অগুকার। আয়ুর্বেদে
এই স্কুড্রাণ অগুকার নেবৃর নাম 'নিম্ব'। ঢাকার ইহারই
নাম 'লেব'। পশ্চিমবঙ্গে কাগজী এই ভুল নামের পরিবর্তে
'নিম্ব' রাখা উচিত। কিন্তু পূর্বকালে দোলক নেবু প্রসিদ্ধ
ছিল। ইহার সদৃশ এক জাতির নাম ছোলদ। ঢাকার
ছোলদ অত্যাপি প্রসিদ্ধ আছে, ছাল পুরু, ফুল সাদা, দলের
বহিঃপৃঠে লাল ছিটা আছে। কবিরাজ মহাশ্রেরা ঔষধে
প্রয়োগ করেন [পরে জয়দেবের করুণ পশ্চ]। ফল বড় ও
লম্বা। রস নাতি অম্ব।

নেআলী সংস্কৃত নাম নেপালী; অন্য প্রসিদ্ধ নাম নবমালিকা। জয়দেবও নব মালিকার নাম করিয়াছেন, পরে দেখা যাইবে।

জয়দেব অপর যে ৃসকল বসন্ত-পুষ্পের উল্লেখ করিয়াছেন, তিনি দে দক্ল উত্তমরূপে চিনিতেন। প্রত্যেকের দংক্ষিপ্ত লক্ষণ দিয়াছেন ।" একে একে দেখিতেছি। ২। বকুল অলিকুলসঙ্গল কুস্থমসমূহে শোভা পাইতেছে। এককালে বকুলের বহু পুষ্প প্রাফুটিত হয়। বকুল ফুলের গন্ধ মধুর নহে। বকুলের এক সংস্কৃত নাম মন্তগদ্ধ। ৩। তমাল। কবি লিখিয়াছেন তমালের নবদলের সহিত মুগমদসৌরভ পুষ্প উদ্ভূত হুইয়াছে। বসস্থের আরম্ভে নৃতন পত্র ও পুষ্প হয়। কিন্তু পুষ্পের গদ্ধ মৃগমদ তুল্য কিনা বলা কঠিন। মৃগনাভির গন্ধ অতিশয় মৃত্, তমাল পুষ্পের গন্ধও অতিশয় মৃহ। ৪। কিংশুক। পলাশ ফুল নারক বর্ণ ও নথতুলা বক্র। কবি ইহাকে মদনের যুবজন-হাদয়-বিদারণ নথ কল্পনা করিয়াছেন। ৫। নাগকেশরের কুস্কম কবির নিকট মদন মহীপতির ছত্তের হেমদণ্ড। নাগ পীতবর্ণ কেশর আছে বলিয়া নাগকেশর, বাংলায় নাগেশর। পুষ্প চতুর্দল, ছত্ত্রের বন্ধ, মধ্যছলে পীতবর্ণ কেশর, পুষ্প স্থগন্ধ। বন্দদেশে নাগেখরের গাছ স্থলভ নয়। ৬। পাটলি। পাটলি বন্দদ্রেশে হর্লভ। বড়ু চণ্ডীদাসের বৃন্দাবনে পারলি ( शांवेनि ) दुक्क हिला आक्टर्यंत विषय्, शांवेनि नारे কিছ কন্যার পারুল নাম বছ প্রচলিত। উত্তরবঙ্গে পারুল পাটলি হইতে নগরের নাম পাটলিপুত্র। পাটলির ফুল অগন্ধ গাঢ় নীল-রক্তবর্ণ, এক ইঞ্চি দেড় ইঞ্চি দীর্ঘ নল। কবি পাটলি পুষ্পকে মদনের তৃণ করনা क्रिशाह्म। भूष्णव मूर्थ र खिनकून, छाहा क्रिव हरक महत्तव वान। नावन नत्त्वव वर्ष (चल-वक्क। हेश হইতে কোন কোন বছীয় ও মচাবায়ীয় পণ্ডিত পাটলিকে

গোলাপ ফুল মনে করিয়াছেন। জয়দেব ভাইাদের ভ্রম দুর করিতে পারেন নাই। বিছাপতি পাটলি বর্ণনা জয়দেব হইতে লইয়াছেন। বন্ধদেশে পাটলি কেন অনাদৃত হইল ৷ ৭। করুণ। করুণ বিগত লব্জ হইয়া পুস্পচ্ছলে হাসিতেছে। শব্দ কল্পজ্ঞমে ইহার বাংলা নাম কক্ষণা লেবু এই নাম দৈবাং অন্য এক পুস্তকে লিখিত •আছে। পাইয়াছি। কিঞ্চিদধিক শত বৰ্ষ পূৰ্বে ডেনমাৰ্ক দেশীয় ভয়েট্ট. (Voigt) নামে এক ডাক্তার হাওড়া শিবপুরে প্রসিদ্ধ উত্থানে পালিত বৃক্ষনাম-মালা সঙ্কলন করিয়াছিলেন। তাহাতে কৰুণ নেবুর বাংলা নাম কোর্ণ নেবুলিধিত আছে। ইহা মাতৃলুপের এক জাতি। ইহাই ছোলস। স্থগদ্ধ। সতীশবাবু বাতাবি নেবু মনে করিয়াছেন। কিন্ত জয়দেবের কালে এদেশে বাতাবি ছিল না। Batavia নগরের নাম হইজে বাতাবি। বাতাবি ফুলের সৌরভ অন্তফুলে তুর্লভ। মাতুলুক অর্থাৎ দোলক ও ছোলক ফুলের সৌরভ মৃত। ছোলন্স নাম "চৈতক্সচরিতামৃতে" আছে। ৮। কেতকী। কবি দম্ভবিত বিশেষণ দিয়াছেন। কেতকীর মুথ কেমন ? কুস্তাক্বতি। কুস্ত কোঁচ—সুন্দাগ্র ক্ষেপণাস্ত্র। কবির চক্ষে বিরহীজনের চিত্ত ভেদ করিতেছে। সৌরভ দারা 'ললিত' হইয়াছে। ১০। नव मानिका। वाश्ना नाम त्मचानी। "मक्षना नव মালিকা" অমর কোশে। কিন্তু এই নাম হইতে 'নব মালিকা' চিনিতে পারা যায় না। কেহ কেহ নব মালিকা ও নব মল্লিকা এক মনে করিয়াছেন। কালিদাসের শকুস্কলা স্বামিগ্রহে যাইবার সময় লতাভগিনী সহকার বধু নব-মালিকার সহিত সম্ভাষণ করিয়াছিলেন। আমি ১৩৩৪ বলাব্দের পৌষ মাদের প্রবাসীতে নবমালিকা লইয়া আলোচনা করিয়াছিলাম। নবমালিকা বৃহৎ লতা, আশ্রয়-তরুর শাখা মাল্যের আকারে বেষ্টন করে। মলিকাও করে। মল্লিকা একপুট, বেলী দ্বিপুট। অমর কোলের কোন কোন টীকাকার লিখিয়াছেন নব মালিকা সপ্তদলা. এই হেতু সপ্তলা। বৈছক কোশে পাইতেছি নবমালিকা শিখরিণী ও স্থচিমলিকা, অর্থাৎ দলের অগ্রভাগ স্থচিতৃদ্য। নেপালী নাম হইতে পাইতেছি ইহা পাহাড়ো, বনভূমিতে জন্ম। কয়েক বৎসর পূর্বে আমি এখানে ( বাঁকুড়া নগরে) পশু চিকিৎসালয়ে উক্ত লক্ষণাক্রাম্ভ এক লভা দেখিয়া-ছিলাম। এখন সে গাছটি নাই। উন্থান-স্বামী এক পাহাড়ো স্থান হইতে আনিয়াছিলেন। ১১। চুত, আদ্র মুকুলিত। মাধবী লতা তাহার শাখা আলিখন করিয়া রহিয়াছে। ইহা কবিদিগের এক প্রিয় উপমা ছিল। (১২) দর-বিদলিত मजी-वजी केवर ।विकलिए मजी-वजी । এই मजी-वन मजिका, কারণ ইহাকে বলী বলা হইয়াছে, অর্থাৎ বৃক্ষারোহী লভা। বেলীও লভার আকার ধরে, কিন্তু বন্মল্লিকার তুল্য নয়। বন্মলিকারই এক নাম নব্মলিকা। ইহা স্বীকার করিলে জ্বয়দেবের মতে নব্মালিকা আর নব্মলিকা পৃথক গাছ। কবি লিথিয়াছেন মলীর পরাগঘারা ব্যরপ বস্ত্র স্থাসিত হয়, কাননও ব্লেইরূপ স্থবাসিত হইয়াছে। এথানে কবি একটু ভূল করিয়াছেন, মলীর পরাগ ঘারা নহে, দল হইতে বিকীর্ণ সৌরভ ঘারা স্থবাসিত হয়। এ বিষয়ে জ্বাতি পূপা শেষ্ঠ। চম্পক পূপা ঘারাও বস্ত্র বাসিত হইত।

কবি বসস্তের আর তৃইটি পুলার্কের নাম করিয়াছেন।
(১) আশোক। সকলের পরিচিত বৃক্ষ। বসস্তে ইহার
তাত্ত্বর্ণ নবপল্লব এবং প্রথমে নারক পরে রক্তবর্ণ পুলাগুচ্ছ
গাঢ় হরিং পত্ত্রের মধ্যে উদগত হইয়া সহক্ষে দৃষ্টি আকর্ষণ
করে। রাত্তিকালে পুলোর মৃত্ গদ্ধ পাওয়া যায়। (২) কদম্ব
নামে তৃই বৃক্ষ বৃঝায়। বাংলায় বলে কেলি কদম্ব,
কদম্ব। উভয়েরই পুলামঞ্জরী বৃত্তাকার। কেলি কদম্বের ছোট,
কদম্বের বড়; কেলি কদম্বের পুলা স্থগদ্ধ, বসস্তে ফুটে।
ইহার সংস্কৃত নাম নীপ ও ধূলি কদম্ব ও রাজকদম্ব।
ক্রি, ইহার সংস্কৃত নাম ধারা কদম্ব ও রাজকদম্ব।

কবি বর্ণিত এই চতুর্দশ পুষ্পের মধ্যে কিংগুক নির্গন্ধ। বাল্যকালে পড়িয়াছিলাম—

> "দেখিতে কিংওক পুষ্প অতি মনোহর। গন্ধ বিনা কেবা তার করে সমাদর ?"

পলাশ জান্তন বৃক্ষ। শুক্ষ ভূমিতে যত্র তরে জরে।
কেতকীও জান্তন, অযতে বছস্থান ব্যাপিয়া বাড়িতে থাকে।
তমানও বিনা যতে জরে। অপর একাদশ বৃক্ষ উন্থানপানিত। জয়দেব কাহার উদ্যানে নাগকেশর ও পাটনি
বৃক্ষ দেখিয়াছিলেন ?

ইদানীং পুশোভান দেখিতে পাই না। কদাচিং কোথাও কদম্ব, কনকটাপা জন্মিতেছে। কদাচিং কোথাও বত্তপূর্বকক চম্পক ও নাগকেশর পালিত হইতেছে। কিন্তু পুশোভান কোথায়, যেধানে নানাবিধ স্থান্ধ প্রসিদ্ধ পুশা

পাওয়া বার ? গ্রামে গ্রামে দেউল আছে, বিগ্রহের পূজা হইতেছে, কিন্তু পুষ্পোষ্ঠান কই ? কোথাও কোথাও করবী, জবা, কৃষ্ণচূড়া বিদেশাগত গোলঞ্চ ও কলিকা ফুল দেউলের সংলয় ভূমিতে আছে। কিন্তু নানাবিধ ফুলগাছ রোপিত হইতে দেখি না। শাদা ফুল ব্যতীত সরস্বতী পূজা হয় না। কোথাও কোথাও শাদা বকফ্লে পূজা হয়। অনেক স্থলে বিদেশী পীতবর্ণ গাঁদাফুলে পূজা হইতেছে। ঢাকায়, ফরিদপুরে, বরিশালে পলাশ ফুলে পূজা হইতেছে। শেতপুম্পের এমন অভাব। যেখানে নিকটে বন আছে সেখানে বন্য খেত পুশ্বারা সরস্বতী পূজা হইয়া থাকে। কুন্দ শ্বেতবর্ণ, ইহা মাঘ মাসে ফুটে, এই কারণে ইহার নাম মাঘা। গাছ হুদৃশ্য, ফুলের গন্ধ মনোহর। বর্ধাকালেও কুন্দের ফুল ফুটে। এইরপ সরস্বতী পূজার নিমিত্ত দ্রোণ পূষ্পও আছে। অতি শ্বেড গোলাপ, শীতকালে ফুটে। স্থামরা ভূলিয়া গিয়াছি, পরের উদ্যানের পুম্পে দেবদেবীর পূজা নিষিদ্ধ। উত্তম ব্যবস্থা ছিল। স্পষ্ট বুঝা থাইতেছে পুসকালে গ্রামে গ্রামে দেবালয়ের সন্নিকটে পুস্পোছান<sup>ী</sup> থাকিত।<sup>"</sup> কলিকাতা মহানগরী। সেধানে চক্ষু কর্ণ পরিতৃপ্তির বছবিধ আমোজন আছে। কিন্তু ভ্রাণেক্সিয়ের কিছুই নাই। 'পার্কৃ' নামে আরাম আছে, কিন্তু স্থগন্ধ পুপারুক দেখিতে পাওয়া যায় না। দেশবন্ধু পার্ক্ রহং, কিন্তু ফুলের গন্ধ কথনও পাই নাই। 'কর্জন গার্ডেন' ছেলেখেলার উদ্যান, 'ইডেন্ .গার্ডেনে' বসস্তে ও বর্ধাকালে গিয়াছি, কিন্ত ফুলের গন্ধ পাই নাই। কলেজ চত্ত্ব ( ऋशांत ) হুन्দব, ইহার সবােবর স্থন্দর, কিন্তু নিরাভরণ, কমল-কুম্দ নাই। চত্বরে বড় বড় গাছ আছে, কিন্তু স্থান্ধ পুষ্প কই ? বসন্তে বিবিধ বর্ণের পুষ্পের স্থমা, বিবিধ সৌবভ ও পক্ষীর কাকলি, কলিকাতার তুল্য ক্বত্রিম নগরীতে হর্লভ।

ভবানী তাহাঁর থেলাঘর বছবিধ আকারের, বর্ণের ও গদ্ধের পুস্পঘারা সাজাইয়া রাখিয়াছেন, তাহারা হতভাগ্য যাহারা দেখিতে পায় না, বলিয়া না দিলে গদ্ধ পায় না।

## লিপি

## শ্ৰীমৃণালকান্তি দাশ

হ্ব্যদেব, রশ্বিদীও তীক্ন তরবার, বেবলোকে বলসিত হোক এইবার। অবরোধ অবকারে তীক্ষধার হানো, উক্তর্গ আলোর বঙা আলো ভূমি আনো। হব্যদেব, বীশ্বরশ্বি বিদীর্ণ অনল। কালো বেব গলে হোক বব-ধারা-কল। কোঠে বেল মাঠে বান, প্রাণে করে গান, বৃত্যু, যাব্রী কুক্ছারা হোক অবসান। পথ হোক লক্ষ প্রপাতে ব্র্থরিত, অগণন জীবনের তরে অবারিত। বেধা বিক্ আবিগত আলোর আকাশ, রৌরবীত বাঁচিবার উজ্জন উলাস।

## স্বরাজ ... রেলে

## **এ**বিভৃতিভূষণ মুখোপাখ্যায়

<sup>\*</sup> কৃষ্ণবদ্ধ ি, এ, রেলওরের পার্বজীপুর ষ্টেশনে কাজ ক্রিতেছিলেন। চেষ্টা-চরিত্র ক্রিয়া বদলির ছত্মগুলা রদ করাইয়া সভের বংসর এক ভারগার কাটল; ছ-পরসা পাইতেন, শহরে ভারগাভ্ষি কিনিয়া বাড়ী-বাগান করিয়া বেশ গুছাইয়া লইয়াছিলেন, এমন সময় গোলমাল ভারত হুইল। কলিকাভা, ঢাকা, মোহাবালি; ভাহার পর পার্বভীপুরেও তু-একটা মাঝারি গোছের ধাকার সাকাৎ পরিচয় দিয়া গেল। ভাছার পর আসিল স্বাধীনভার সঙ্গে দেশ-বিভাগ এবং সেই সদে লোক-বিভাগও: কর্মচারীদের বলা হইল ভোমরা কে কোন্দিকে থাকিতে চাও বাছিয়া লও। আমলেই পাকিস্থানী বাধীনভার নমুনা পাওয়া গিয়াছিল, क्यूनवक् रिमुश्वात्वत जनाय नाम निवाहानन। পত্রাচারে কাটল, তাহার পর যখন এদিকেও অভিঠ করিয়া ভূলিয়াহে, ওদিকেও আশার কোন লক্ষণ নাই, এমন সময় মুক্তপ্রদেশের একটি বড় রেল আপিস হইতে ডাক পড়িল, পাৰ্বভীপুৱের সভের বংসরের বাস উঠাইয়া কুমুদবন্ধু সপরি-বারে গিলা উপস্থিত হুইলেন। নিভাস্ত কম নয়---নিজে, ল্লী, इरें क्या, ठांति शूब--वद्य म्राप्य मर्वा ; विववा अक मिनि, তাঁহার একট ছোট দৌহিত্র।

আসিয়াই একেবারে অকুলে পড়িলেন।

প্রথম সপ্তাক্টা প্লাটকর্ম্মে কাটাইতে হইল। তাহার পর ওরেটং-ক্রমের সামনের বারাক্ষার। দিদি মহামায়া খুব শক্ত মেরেমাক্স্ম, কিন্তু তিনিও এক সপ্তাহের অধিক অপ্রসর হইতে পারিলেন মা; তবে লড়াইরের ক্ষতু পা পুঁতিবার একটা কারগা পাইলেন এবং হুই দিন পরেই ওরেটং ক্রমের একটা কোন বীর পরিবারের ক্ষতু দ্বল ক্রিলেন।

কোন ব্যবস্থা নাই, অসংখ্য লোক পূর্ব্ব এবং পশ্চিম পাকিয়ান হইতে আসিয়া পঞ্চিয়াছে, প্রতিদিনই আরও আসিতেছে। কাহারা ডাকিতেছে, কি উদ্বেশ্ত, কিছুরই স্বান পাওরা ঘাইতেছে না। সকালবেলার উঠিয়া মহানারা ভোলা উনানে ওরেটং-ক্রমের মধ্যেই রায়ার ব্যবস্থাটা করিয়া ক্লেন, হইট কোনরক্রে নাকে মুবে উলিয়া ক্র্বব্রু সেই বে বাহির হল, ক্রেনে একেবারে সন্মার সমর। ইহার মধ্যে কত আপিস বোরেন, কত লোকের সঙ্গে সাক্ষাং করেন—কানো কলই হর না। বেলটার অব্যবস্থার কথা পূর্ব্বে শোনা হল, কিছু সেটা যে এ বরণের কিছু হুইতে পারে এমন জানা ইল না। মানধানেক ওরেটং-ক্রমে কাটল, পভিষের উত্ত

বেশ ভাল করিরা শাঁকিরা আসিতেহে, দিদির মেকাক অত্যন্ত বিগভাইরা যাইতেহে, প্রত্যাহই ওরেটং-ক্রমটার রারাবরের বোঁরা ক্ষমিরা উঠিলে টেশন মাঠার থেকে টেশনের যভ কর্ম্মচারী আসিরা দরকার বাহিরে ক্ষমা হর, ওদিকে মহামারাও আসিরা কাভান, গাহকোমর বাবা, হাতে খৃদ্ধি, মুবে তৃবভি চুটতে থাকে—"ভ্যাকরারা, অলপ্লেরেরা, ভেকে এনে না দেবে চাকরি, না দেবে থাকবার কারগা, প্র ক্লেক্ত কাপভ-চোপভ নিরে আমার রারাব্রের চৌকাঠের এদিকে পা দিলে একবার থেকে বেটারে বিষ বেজে দেব। আর না, হেশ্বং থাকে আর।"

এংলো-ইণ্ডিয়ান টেশন মান্তার একবার দারে থালাস হওয়া গোছের চেটা করিয়া পরিয়া পড়ে, বেচারাদের ছুদিন পড়িয়াছে, এখন সবই সম্ভব, দেশী কর্ম্মচারীরাও একে একে পুঠজদ দের, মহামায়াই রোল জেতেন, কিছ এ ভাবে আর চলে না। কুম্বক্ষর কতবার মনে হইয়াছে আবার পার্বতীপুরে গিয়াই যেমন করিতেছিলাম সেইয়প চাকরি করি, কিছ করেক-বারই সন্ধান লইয়া জানিয়াছেন ও-পথ বন্ধ হইয়া গিয়াছে; এদিকে এরা মুসলমানদের বন্ধ ছয়ার খুলিয়া রাখিলেও, ওদিকে ওয়া অর্গলিত করিবারও হালাম রাখে নাই, ছয়ারের ভায়গায় দেয়াল ছলিয়া দিয়াছে, আর কোন আলাই নাই।

শীত প্রচণ্ড হইরা আসিল, হাতের প্রসাও ফুরাইরা আসিরাছে, অবশেষে তিজ্ঞবিরক্ত হইরা কুমুদ্বকু চাকরির আশা ত্যাগ করিরা নিতান্তই অদৃষ্টের ওপর নিজেদের হাড়িয়া বাড়িতে কিরিয়া যাইবেন ছির করিয়াছেন, এমন সময় পার্ক্তীপুর আপিস ছ্রিয়া তাঁহার হাতে একথানি রড় খাম আসিয়া পড়িল। খুলিয়া দেখিলেন—তাঁহার চাকরি হইরাছে এই টেশনেই হিসাবের সেরেন্তার; বাসাও ঠিক হইরাছে, একথানি চার চাকার, অর্থাৎ সবচেরে যা হোট সেই রক্ম মাল-গাড়ি। কুমুদ্বজু ওটাকে লেখা-পড়া করাইয়া আট চাকার করাইয়া লইলেন, এর পিছনে এংলো-ইভিয়ান টেশন মান্টার ও অভাভ কর্মচারীদের যে অক্লাভ চেটা ছিল এটুকু না বলিলে অবর্ম্ব হয়, অবক্ত তাহার পিছনে ছিল মহানারার স্ক্রবার জিলা।

ওয়েটিং-ক্রম ছাড়িয়া সকলে নুভন সচল বাসায় গিয়া অবিটিত হইলেন।

· একেবারেই অভিনৰ বরণের পরী। বিষাট টেশন-প্রাঙ্গণের একবারে এমন প্রার দেড়ল'বানা মালগাড়ী, চার চাকার, ছয় চাকার, করেকধানা আট চাকারও, ঐ এক একধানা বাড়ি। অসহ কট, জারগা নাই, দিনের বেলার তাতিয়া উঠে, শীতের দিন বলিরা আরামের না হইলেও বুব বেশী কটও হর না, কিছ রাত্রে অসহ ; প্রায় সবই পূর্ববঙ্কের লোক, পশ্চিমের নিদারণ শীতে যেন কমিয়া ঘাইবার মত হয়। কয়লাও প্রচুর নয়, সয়ার একটু আরে প্রত্যেক বাসার সামনে সারি সারি তোলা উহ্লমে আগুন অলিতে থাকে, সমস্ত পাড়াটা ধুমে ধুরাকার হইয়া ওঠে; উহ্লম ধরিলেই সেগুলা গাড়ীর মধাে উঠিয়া যায়, তাহাতে রায়া, তাহাতেই যতটা সম্ভব তাপ সকয়। শেষ রাত্রে শীতে আর কাহারও মুম হয় না, সবাই গুটিমুট মারিয়া বসিয়া থাকে।

তবুও মান্থৰ পৰের ত্রবছা দেখিরা আখাস পার, শত শত লোক প্লাটকরমে পড়িয়া আছে, এ তবুও তো একটা আছাদন। দিনের বেলা এই হুংবের জীবন থেকে যতটা পারে রস নিংভাইরা লয় লোকেরা, ছেলেরা ছটোপুট করে, গৃহিন্টরা বৌ-বিরেরা এ বাসা সে-বাসা ঘুরিয়া আলাপ করিয়া বেভার, কোরাটাসের জভ কোথার কোথার ইট পড়িতেছে সেই সব আলোচনা লইরা আশার বুক বাবে। শেমান্থ্রের সবই সর, তা ভির এটা বিশেষ করিয়া সহিবারই মুগ, একটা কল্পনার ভবিশ্বৎ গড়িয়া লইরা মান্থ্য কল্পনাতীত এই বান্তব বর্ডবানকে ভূলিতেছে। পুঞ্চবভূর পরিবারও বীরে বীরে এই দলে মিশিরা মাইতেছে। পঞ্চাবে যা কাও ছইভেছে সে হিসাবে এ ত স্বর্গ, পার্ব্বভীপুরের কথা আর ভাবাও যার না।

কিছ এ খৰ্মও কপালে বেশী দিন টকিল না।

প্রথমটা বাদ সাধিল পরেউস্মান রামদিন, পাইলট ফুাইভার করিম শেবের সহযোগিতার। অবস্থ ভূল করিরাই, ভবে দে-ভূনেও এই রেলের নিজয় বৈশিষ্টোর হাপ আছে।

বাসাগুলি ট্রেশন-প্রাক্তনের নিভান্থ এক দিকে পড়িয়া আছে বটে তবে একেবারে যে স্থাপু এমন নর। লাইনের ওপর মাঝে মাঝে চলাকেরা করে। প্রভান্থ নুতন বাসা আসিতেতে, তাহাদের জায়গা দিতে হয়, রোজই স্থাককথানা করিয়া পুরানো বাসা স্থানান্থরিত হইতেতে, হয়ত কেহ অভ ট্রেশনে বললি হইল, হয়ত কোন বাসার অধিকারী পাকা কোরার্টার্স পাইল, তাহাদের পথ ছাড়িয়া বিতে হয়। ভিগার্টমেকে হয়্ম দেয়, পরেক্টস্ম্যানের নির্দেশে পাইলট ইয়িনে কাজটা সম্পর্ক করে। হেলেমেরেয়া, বধ্-সৃহিনীয়া মাঝানা বেকে থানিকটা গাড়ি চড়ার আনক্ষ উপভোগ করিয়া লয়। এয়নও হয় কর্তা আপিস থেকে আসিয়া দেখেন বাসা নাই, হয়ত লাইনের ভেতরের দিকৈর একট বাসা অভ ট্রেশনে বদলি হইয়াছে, ভাহার বাসাইকে পথ ছাড়িয়া অভ লাইনে একট্ট সরিয়া বাড়াইতে হইয়াছে। থানিককণ পরে পাইলট ইয়্রিম আবার ল্যাকে করিয়া আনিরা রাধিয়া গেল।

এই রকম কিছু একটা ব্যাপার কুর্ববন্ধুর বাসা সইরাও হইতেছিল সেধিন সন্ধাবেলার।—

পরেন্টস্ম্যান রামদিনের ভিউটর শেষ দিক এটা, এট্টুক্ শেষ করিরা নিজের বাসার যাইবে, এক লোটা ভাঙ তৈরার আছে সেবন করিরা দভির বাটিয়ার সা এলাইরা দিবে; এক্টু বান্ত আর অভ্যনক হইরা পভিরাহে। পাইলট করিম শেবের ভিউটির এই আরম্ভ, একটু বাঁধা–মাত্রার নেশা করিরা কাজেনামে, কাল করিতে করিতে সেটা কাটিরা যায়; ঠিক কাটার অবস্থাটা এখনও ইণ্ডার নাই।

ক্ষুদ্বদ্ধ আপিস থেকে কিরিয়া একটু জলযোগ করিয়া এই সমরটা ক্লাবে যান, সেধানেই গেছেন। শীত বেশ জমিয়া আসিয়াছে। লোহার উত্নটা বরিয়া গেছে, সেটাকে গাভির মধ্যে তুলিয়া ছ'দিককার বাঁপ বন্ধ করিয়া রায়ার আয়োজন হইতেছে, এমন সময় রামদিনের গলার 'হঁ সিয়ায় ! হঁ সিয়ায় ! শশ হইল এবং পাইলট আসিয়া আছে আছে গাভিটার সদে মুক্ত হইল। মহামায়া দরকার কাঁক দিয়া মুবটা বাড়াইয়া বলিল,—"কে, রামদিন ? আয়রা রায়া আরম্ভ করেছি, আছে নাড়াচাড়া করতে বলো ড্রাইডারকে।"

"ৰাপনি মৰেসে রত্নই করন মাইনি, বৃদ্ধ ভর নেই"— বলিরা রামদিন কাপলিংটা বসাইরা দিল, ইঞ্জিন বীরে বীরে বাসা লইরা চলিতে আরম্ভ করিল।

খানিকট। দূরে অন্ত একটা লাইনে গাড়িটাকে গাড় জরাইরা ইঞ্জিনটা আবার এই লাইনে প্রবেশ করিল, কুর্থবন্ধ্যর গাশের গাড়িটা ভূড়িয়া আবার সেই ভাবে বাহির করিয়া লইরা প্ল্যাটফর্বের কাছাকাছি একটা লাইনে রাধিরা আসিল। অন্ত হুই-তিনটা লাইনে প্রবেশ করিয়া আরও গোটাক্তক গাড়ি লইরা ঐ রক্ম টান্য-পোডেম করিল, ভতক্ষণে রাফ্রি হুইল, রামদিনের ভিউট শেষ হুইরা আসিল, পরের পরেক্স্-ম্যান্ রামচরিভরকে কোধার কোন্ গাড়ি বাইবে, কোন্ গাড়ি বাহির হুইবে সব বুঝাইরা দিয়া নিজের কোরাটাসে চলিয়া গেল।

রাত্রি প্রার সর্যার সমর এই মাস ছরেকের অভ্যাসরত ইরার্ডের বিছাতের আলো ভার টর্চের সাহাব্যে লাইন ভিঙাইরা ভিঙাইরা বধাহানে আসিরা কুর্দবস্থু সেক হেলের নাম বরিরা ভাকিলেন—"ঙবিদেশ।"

অবিবাশ লোবের কাছে কিছু জিনিসপত্র থাকিলে সরাইর।
লইবে ভাষার পর কুষুদবদু গাড়িতে উট্টবেন, এই ক্ইতেছে
প্রাভাহিক ব্যবহা, কিছ কোন উভর পাওরা গেল না।
লালন শীত, আপালবভক বৃদ্ধি বিরা হি-হি ক্রিতে ক্রিতে
ক্রুদবদু আবার ইাফিলেন—"ওবিনেশ, শুনহিন না জিনিসখলো সরিবে দে, উঠব…"

বৰ দ্বাদা গুলিয়া উঠিতে দাইবেন, ভিডর থেকে একট পশ্চিমা হেলে বলিল—"ই গাড়ি নেছি।"

"তবে।"—বলিরা কুমুদবলু তিন হাড় পিছাইরা আসিলেন। ঠাহর করিরা দেবিলেন এটা তাহার পালের গাড়িচা, পাশাপাশি তিনটা আট চাকার লখা গাড়ি হিল, তাই ভূল করিরা কেলিরাহেন দারণ শীতের এই ক্ষত্ত্বল অবহার। সলে সলেই কিছ শীত হাড়িরা গিরা কাল্যাম মুটল—ভাহা হইলে তাহারটা কোণার ?

সেই ছেলে**টকে** ভাকিষা প্রস্ন করিলেন—"আমারচা কোণার ভা হলে গ"

"শাকিংসে লে গিয়া।"

"কৰ্মন ?"

"সামকো।"---অর্থাৎ সন্ধ্যার সময়

"কোধায় ? কোন্ দিকে ? এখনও কেরেনি কেন ?"

ছেলেট ভিনট প্রশ্নের কোনটরই উত্তর দিতে পারিল না।

কিছুক্দ পর্যান্ত কুমুদবকুর মুখ দিয়া কোন প্রশ্ন সরিল না।
এরক্ম ব্যাপার এবানে করেক্বার হইরাছে, একবার তিনিও
ভূক্ততোদী, কিছ সে করেক মিনিটের কল, হছ আবদ্ধী;
আপিস হইতে আসিয়া দেবেন বাসা নাই, তাহার পর তবনই
আবার পাইলট ইঞ্জিন রাবিয়া গেল। এ যে সন্মা বেকে
উবাও, রাত ন'টাতেও দেখা নাই।

ড়তীয় গাড়িটা এক জন বাঙালীর, এক জাপিসেই কাজ করেন, কুযুদবন্ধ বাবু সামনে নিয়া ডাকিলেন—"গোপেশবাবু!"

গাভির দরজা খুলিয়া গোপেশবাবু মুখ বাহির করিলেন।

"আমার গাড়ি পাওয়; যাচ্ছে না মুশাই !"

"তার মানে ৷"

"আজে হাা, গুনলাম সংখ্যার সময় শান্টিঙে নিয়ে গিয়েছিল
—নিশ্চর মিশিরজীর গাড়িটা বের করবার জড়ে, গুার ত বদলি
হরে গেল 

শেলা বৈ কাত, কাকর ত নজর নেই এদিকে…"

"কাছাকাছি ইয়া**টটা** দেখেছেন ?"

"না, দেখি নি এখনও, এই শুনলাম সুরুত্ধসাদবাবুর হেলের ফাছে ?"

"देशिन, चात्रदि।"

ওভারকোঁট, ব্যাপার, কক্টারে আপাদমন্তক ঢাকিরা গোপেশবার্ নামিরা আলিলেন। হই কনে কাছাকাছি সমন্ত ইরার্ড বুঁজিলেন, তাহার পর দ্রেও; পরেন্টস্ব্যান, পাইলট ফাইভার হই কনকে প্রশ্ন করিলেন, গাভির কিছ কোন হবিস পাওরা গেল বা। প্রায় বন্টা হ্রেক হররান হইরা অবশেষে ইরার্ডের এক প্রান্তে কেবা গেল একট আট চাকার গাভি একক গাভাইরা আছে। আখার বুক্টা বভাস বভাস করিবা উঠিল, ভাহার পর হুই ক্রে আবাইরা বছরের উপর টর্চ কেলিরা দেশেন বিশিরজীর গাড়িটা। ডাকাডাকি করিয়া বিশিরজীকে তুলিলেন, খবর পাইলেন পার্শেল এজপ্রেসের পেছনে তাঁহার গাড়ীটা আৰু জুড়িয়া তাঁহার দুড়ন কর্মহানে পৌহাইবার কথা ছিল, কিছ জোড়ে নাই। কারণটা জিজাগা করার এই রেলওয়েটাকে একটা কুংসিড গালাগাল দিয়া বলিলেন—কারণ তিনি জানেন না, তথু এইটুক্ই আনেন এ রেলে সবই সম্ভব, যবে খুবী লইবা যাইবে, তিনি নিশ্চিত হইয়া ঘুয়াইতেছেন।

কি সর্কানাশ যে হইয়াছে বুঝা গেল ছুই কনে টেশনে ছুটলেন। টেশুন মাটারের সকে দেখা করিয়া জানাইলেন—
তাহার গাড়ীটা ভ্লক্রমে সাভটা বাইশের পার্শেল একপ্রেস
ফুক্ত হইয়া টেশন হাড়িয়া সিরাহে, স্বান লইয়া সেটাকে জাটকানো হরকার। সমস্ত ব্যাপারটা আভোপাত বলিয়া গেলেন।

এ ধরণের বা এর চেয়েও গুরুতর এত ব্যাপার নিত্য হুইতেছে এ রেলে যে, ষ্টেশন মাষ্টারের মুখে বিশেষ কোন ভাবান্তর দেখা গেল না। অলসভাবে টেলিকোনটা ভূলিয়া লইরা ডাকিলেন—"ছালো, কনটোল।…"

সাভা পাওয়া গেলে প্রস্ন করিলেন-

"সেভেন্ট-সিল্ল ডাউন পার্ণেল এখন কোথায় ?"

রাত্রি প্রায় সাজে এগারটা, গাণীটা সব ভারগায় ববে না, চার ঘন্টায় অনেকগুলি টেশনই পার হইয়া গিয়াছে, কনটোল একটু অনুসদান করিয়া সঠিক অবস্থানটা ভানাইল, রাভায় ভাছে আর মিনিট পাঁচেক পরেই একটা বড় টেশনে পৌহিবে।

টেশন মাটার ব্যাপারটা জানাইলেন—জমুক নহরের গাড়ী
জমুক টেশনে যাইবার কথা, তাহার হানে তুলক্রমে জমুক
নহরের গাড়ী চলিরা গিরাছে, তাহাকে গুলিরা লইরা পরবর্তী
এক্সপ্রেস বা কোন প্যাসেঞ্চারের সলে জ্ডিরা পাঠাইরা দিতে
হবৈ । নির্দেশটুকু দিরা কোন হাডিরা তিন জনে মুখোমুখি
হইরা বসিয়া রহিলেন । একটু যে গল হইল তাহাতে টেশন
মাটার জানাইলেন—"ও গাড়ী এখন বিশ্-বাঁও জলে।"

"(कन ?"

একটু হাসিয়া নিরুবেগ কঠে বলিলেন—"এই দেশুনই না, এটা কি রেল ভূলে যাচ্ছেন যে, এর নামই পড়েছে ওফ টারার্ড ···"

এমন সময় টেলিকোনটা বাজিয়া উঠিল, টেশন মাঠার ভূলিয়া লইয়া সাড়া বিলেন—"হালো—ইরেস—তাই নাকি ? —তা হ'লে ?—বেশ, পার্ট বসে আছেন ভতক্ষণ—বৌজ নিয়ে বলুন।"

টেলিকোনটা রাখিরা বিরা কতকটা বিজয়ের হালি হালিরাই বলিলেন—"ঐ নিন, সে গাড়ী পৌহোরই নি ও টেশনে। আপনাকে বললাম না ?"

"পৌছোর নি ! তা খলে ?"—কুর্দবদ্ একেবারে ব্যাক্ত বইরা উটিলেম। "বাষ্ণ বৌদ্ধ নিচ্ছে। এ টেশনে আবার গার্ডের বদলি হ'ল, আগেকার গার্ড রানিং-ক্লমে চলে গিরেছে, ভার কাছে লোক পাঠানে। হয়েছে।"

"কিছ সে তো সমন্ত চাৰ্জ বুৰিয়ে যাবে…"

"বোৰ হয় এটা ছেড়ে গিয়েছে···বেলটা বে কি ভূলে বাছেন যে আপনি—এর আগেকার নাম রেখেছিল—বদমাইস, নালায়েক···"

এমন সময় টেলিফোনে শব্দ ছইল—টেশ্নমাটার আবার ভূলিয়া লইলেন—

"হালো ?···আছা···বেশ···আছো···আছা···"

টেলিফোনটা রাখিয়া দিয়া সেই রকম নিরুছেগ কণ্ঠে আনাইলেন টেলিফোনে বলিভেছে—এ টেশন ছাড়িয়া পরের টেশনে পৌছাইতে গাড়ীর শেষের দিকের মালগাড়ী খেকে একটা কায়াকাট হউগোল ওঠে। টেশনের সবাই ভড়ো হইয়া টের পার—এক গাড়ীর বদলে অভ গাড়ী জুড়িয়া লইয়া চলিয়াছে পার্লেটা। গাড়ীটাকে কাটয়া টেশনের সাইডিঙে রাখিয়া দেওয়া হইয়াছে। এদিকে ওয়্থো আর গাড়ী নেই, একেবারে শেষ রাজির দিকে এম্প্রেস, তাহাতেই জুড়িয়া কেরত দেওয়া হইবে।

আর কিছুই ভাষা হইলে করিবার নাই। বেশী দূর নয়,
এলিক থেকে বরিলে হরটা টেশন পরেই, কিছ ভাউনেরও
কোন গাড়ী নাই বে, কুর্দবন্ধ গিরা পরিবারের সঙ্গে মিলিভ
হন। মালগাড়ী থাকিলেও চলিভ, কিছ খবর পাইলেন যে
ভাষাও আর নাই; একটা হিল, মিনিট দশ হইল হাড়িয়া
গিয়াহে।

টেশনমান্তার আর একটা খবর দিলেন। এই ধরণের ছুর্বটনার সম্প্রতি বাভাবাভি ছঙ্গার এর কভ আপিসে একটা বিভাগই খোলা ছইরাছে, সকাল ছরটা ছইতে বসে। এক্সপ্রেসে বলি মালগাভীটা আসিয়া না পড়ে, ক্র্দ্রবন্ধু যেন আপিসেই খবর নেন, কেননা সকাল খেকে টেশন কর্ম্বচারী-দের ছাতে কান্দের চাপ, ইচ্ছা থাকিলেও এই রক্ম টেলিকোন ধরিরা সাহায্য করিতে পারিবে না। আপিস্টার স্থানও দিরা দিলেন।

কুমুদ্বদ্ব একটু ভীত ভাবেই বলিলেন—"সকালের এন্ধ-প্রেসে নিশুঃ এসে পড়বে…"

ষ্টেশৰ ৰাষ্টার শুধু একটু মুচকি হাসিলেন, বলিলেন—"এলে পড়ে ভাগই, আপনাকে আর আপিলে দুৌছাতে হবে না।"

এল্লপ্রেসটা গৌহবার সময় গাঁচটা, সাড়ে সাডটার আনিল। মালগাড়ীটা নাই। কুর্দবন্ধ্ চারিটা থেকে আসিরা বসিরা আহেন, অবসম্ন দারীরে সূতন আপিসে সিরা উপছিত হুইলেন। একট হোট বর, বাৰখানে টেবিলের সামনে এক জন
অভ্যন্ত আৰ-বুড়ো-গোহের ভত্তলোক বসির। আহেন,
বাঙালীই। অভ একট টেবিলে মুখোমুখি হইয়া হুই জন
পশ্চিমা হোকরা কেরাদী, এক জন টাইপিং লইরা আর এক জন
কতকগুলি কাগৰণত লইরা অভ্যন্ত ব্যন্ত বহিরাছে। শীতের
সকাল, ভার বৃতন আপিস, এখনও অনেকে সন্ধানই জানে না,
তব্ও কাউন্টারে পাঁচ-সাত জন লোক ভিড় করিয়া রহিয়াছে।
ক্রম্পবদ্ধ দরভার কাছে ইাড়াইয়া বলিলেন—"আমি রেলেরই
লোক, এই ট্রেশনেই থাকি, ভিতরে আসতে পারি কি ?"

"আসু-ন"—ভদ্রলোক টানিয়া কথাটা বলিয়াই কাশিতে আরম্ভ করিলেন, সেই অবস্থাতেই ডান হাতটা সাধনের চেয়ারের দিকে বাড়াইরা বসিতে ইন্দিত করিলেন। গলায় একটা কফ্টারের ওপর ব্যাপার জড়ানো, কাশিটা থামিলে ছটাকেই আরও টানিয়া দিয়া প্রশ্ন করিলেন—"কি ব্যাপার ?"

"একটা এড বিপদে পড়া গেছে—ইয়ে, পাকিছান খেকে এসেছি, আছি মালগাড়ীতে, কাল সংখ্যায় সেটা পার্শেল একপ্রেস---"

"টেনে নিয়ে গেছে ?···প্রাতর্বাক্যে বলা ঠিক নয়, কিছ আর আশা নেই···

"बामा (नहे कि यमाहे।"

ভন্ধলোক টানিয়া টানিয়া কথা বলেন, এদিকে একটা ভন্ধান্দরভাব লাগিয়া আছে, ভূচি দিতে দিতে হাই ভূলিলেন, ভাহার মার্কথানেই কালি আসিয়া পঢ়িল, সব শেষ হইলে বলিলেন—"আংমারাম, লই ওয়াগন্স্কা কাইল সব উভারো ভো।"

কুমুদবদ্ লক্ষ্য করিলেন আপিস মুতন হইলেও কাইলের গাদা লাগিয়া গেছে এরই মধ্যে, এক কন কেরাই উঠিয়া কাঠের র্যাক্ থেকে এক থাক্ নামাইয়া আনিল। ভদ্রলোক লেই রক্ষ অলস কঠে বলিলেন—"ঐ দেখুন, বিখাস না হয়— গঁরত্তিশবানা মালগাদী সমন্ত লাইনে ছ্রে বেড়াচ্ছে, মা-বাণ নেই…ক্লাসিকিকেশন, আংমারাষ…?"

"টেন্ উইণ্ ক্যামিলি ছছুর, অলেজ্ন উইণ্ফেট্, কোরটন এম্প ট···"

"ঐ নিন—দশবানা আপনার ৰতন পরিবার নিরে, এগার-বানার নাল, বাকি বালি। ···প্যাকাল নাহের বতন পিছলে পিছলে বেডাছে সমন্ত লাইনে, বরবার উপার নেই, আদ বৌদ্ধ পেলেন এই পাশের ঠেশনে, বরবেন ব্যাক করে, কাল ববর এল এক শ' মাইল দূরে একটা সাইডিঙে পড়ে আছে···"

হাই তুলিয়া কাশিয়া কক্ষ্টার, র্যাপার টানিয়া দিয়া বলিলেন—"থেলে কচুপোড়া; বুড়ো বরসে বাড়ী থেকে টেনে নিরে এসে এক ইেড়া ভাতা হাতে দিরে—ভার পর আর কিছু পেরেছেন,ববর, না ঐ পর্বান্ত ?" কুমুদবদ্দর মূব একেবারে শুকাইরা গেছে, বলিলেন—"কাল রাভিত্তে ববর পাওরা গেল এবান বেকে গাঁচটা টেশন আগে একটা সাইভিত্তে পকে আছে—এদিককার নামগুলোও যনে বাকে না—পার্নেলের কাই ইপেক আর কি—টিক হিল সকালের এক্স্প্রেস কুকে নিরে আসবে, ভা আগে নি।"

ভদ্ৰলোক অলস ভাবে টেলিকোনটা ভূলিরা লইলেন, ভাকিলেন—"হালে। কন্ট্রোল ।···" সাড়া পাওরা যাইতে আগাগোড়া সমস্ত খবরটা দিয়া গেলেন। ভাহার পর টেলি-কোনটা রাখিরা দিয়া বলিলেন—"খোঁক নিছে।"

একটু যে সময় পাওৱা গেল ভাহাতে নিজের ছংবের কণা ছলিলেন—দাম অহুক্ল ভাছ্ডী—বিটারার করিরা বসিরা-ছিলেন—ছোট নেরেটর বিবাহ দিয়া এইবার ছ'লনে কাশীবাসী হইবেন, আবার ভাকিয়া: এই ক্যাসাদ—হাতে আছে পাত্র-টাত্র একটা ?—এই পেটে একটু বিজে থাকে—কিছু ক্ষমি-জ্ব্যা —নেহাত চাক্রির ওপরই না ভ্রসা…"

এমন সময় টেলিকোন বাবিষা উঠিল। ভূলিয়া বলিলেন —"হালো। আহ্লা…টক…"

রাখিরা দিরা একটু বিশ্বরের হাসি হাসিরাই বলিলেন—
"ঐ নিন্, যা বলেছিলায—সে গাড়ী ও ঔেশনে আর নেই…"

"बरलम कि । — (महे १ · · चामि (फरविलाम वृति कूरल · · · "

"নেই। - তার কারণ হরেছে, হাপ্রেড ্টোরেটি সিল ডাউন্ গুডস্রাভ আঞাটটের সময় শানিং করতে করতে তুল করে তুলে নিরে গেছে।"

"ভার পর।"

"কোন্ টেশনে ডুপ করলে খবর পেতে দেরি ছবে, এক এক করে কিল্যেক করবে তো ?"

বৰ দূৰে ছইটা টেশনের নাধ করিবা বলিলেন, মালগাড়ীটা এখন সেই ছইটার মাৰখানে ঘণ্টা ছয়েক ভার কোন ধবর নাই হয়তো ইঞ্জিন কেল করিবা মাৰ পথে ইভাইবা আহে।"

ভাষার পর একটু নিম্ন কঠে বলিলেম—"কেলই কি করে সব সময় মশাই ? মাৰপৰে কাড় করিবে এটা ঠুকতে ওটা ঠুকতে, ওলিকে ওয়াগন্কে ওয়াগন্ বালি করে মাল সরিবে নিচ্ছে—ট্ট্ কুস্যা—ভাষৱাই কিছু করতে পারলাম না।"

উপার নাই, একবার আপিসে বাহির হইবার সময় এজিক হইরা বাইতে বলিলেন—বত দূর সম্ভব বৌজ্ববর লইরা রাবিবেন। বেরের বিবাহের ক্বাটা মনে রাবিতে বলিলেন —"আমরা হলাম ভাছ্ডী—বারেক্স রাজ্ব—বাসচি, সাল্লাল —মানে ভাছ্ডী ছাড়া আর বা হর—হেলেটির বেন বাওরার-পরবার একটু সংহাল বাকে • "

এগার বিশ হইরা গেছে গাড়ীর কোন সভান নাই ; ট্রক বে সভান নাই এমন নর, পাওরা বাইতেহে ধবর, সব ব্যবহা ট্রক, আবার কি করিরা অদৃত হইরা বাইতেতে, আৰু এক আরগার, কাল হর তো দেড়দা' নাইল দূরে। বানতিবেক চিটিও পাইলেন, হতাদার ভরা, আর গালাগালি—রেলওরেকে আর এনন রেলওরেতে কাল করার কর অভ্যুক্তকেও।

অন্তব্যও একেবারে আশা হাড়িয়া বিরাহেন। বারহ্রেক সব টকঠাক করিয়া নিজে পর্যন্ত সিরাহিলেন, কিছ ভাছার আগেই গাড়ী উবাও হইরাহে, একেবার সামনের বিকেই, এক-বার এবিকে আসিয়া পাশের একটা কংশন টেশন হইয়া আঞ্চ লাইনে চুকিয়া পড়িয়াছে।

হতাশার হতাশার এমন অবহা হইরাছে বে একটা বিহাস দাঁড়াইরা গেছে আর ইংকলে পাওরা বাইবে না। দিনে তিন্দারবার করিরা আপিসে বান, বোঁল পাব অযুক প্রেশনে রহিরাছে, তাহার পর আবার নিরুছেণ; অভুকুলবারু নির্ক্রিকার করে মেরের কল পাত্রের কবা ভোলেন। সর্ব্বোচ্চ আকসার পর্বাছ চিট্ট নিবিরা নিবিরা হরবাব হইরা গেছেন, সবগুলা অভুকুলবাবুর আপিসে আসিরা হুলা হুল। একটা ফাইল বোলা হুলাছে, সেটা দিন দিন স্থীত হুইরা উটিভেছে। এদিকে কাইলের সংব্যাও প্রঞ্জিণ বেকে বিরাজিশে সিরা দাড়াইরাছে। ভাউন্টারে লোকদের ভিড, শুলতন গেছে বাভিরা।

মরিরা হইরা এক বোঁক গাড়ীর সন্ধান লইতে লইতে এক নাগাড়ে পাঁচ দিন সম্ভ লাইনটা এমুড়ে। ওমুড়ে। চবিহা কেলিলেন, ধরা গেল না। পশ্চিমের শীড়ে, অনিয়মে শরীর ভাঙিয়া গিয়াছে, আবার হেড কোয়াটারে কিরিয়া আসিলেন। ভালার পর ব্যাপার্টা চর্মে আসিরা ঠেকিল।

একদিন নিকের আণিসে চেয়ারে বসিরা চিতা করিতেত্বেন, পাশের সদী কেরানীরা ববন বাহার অবসর হইতেত্বে
সাল্লা দিতেত্বে—গাড়ী যবন লাইনের ওপরই আছে, ভর কি ?
—একদিন না একদিন পাওছা যাবেই এ ভো সমুদ্র নম,
কোবার বতে ভূবিল, কোবার পাহাড়ে ঠোকর লাগিল…এ
বতই কিছু হোক, বাবা লাইন ছাড়িয়া যাইতে পারিবে না…
ঐ তো পঞ্চাবে পরিবারকে পরিবার নাই হইরা গেল, এ তো
ভাহার চেরে ঢের ভাল—বরা যাক, যদি নাই আর দেব। হর,
বাঁচিরা ভো বাকিবেই সবাই…

এমন সময় অত্ত্লবাব্র পিয়ন আসিয়া ববর দিল বাবু সেলাম দিয়াতেন।

কালিতেছিলেন, সেই অবস্থাতেই দক্ষিণ হাতটা বাডাইয়া বলিতে ইন্দিত ক্ষিলেন। বেগট। থানিলে র্যাণার আর কক্ষটার ভাল ক্ষিয়া ক্ষাইয়া লইয়া বলিলেন—"নিন মুশাই, টেনে ভূলেছি, এ সব ব্যাপারে অভ হেছলে চলে ? এইবার গিনী এসে শৌস্থলে একটা ভোক দিবে দিন…" নিকের রসিকভার হাসিতে সিরা আবার একচোট কাশি আসিরা প্রিল ।

· कृत्रंपरम् राष्ट्र गाक्न चांबद्धः क्षत्रं कवित्नन—"बत्त त्राद्धः ?"

্ৰতে গেছেই বলতে পারেন; টু ডাউন একপ্রেন নেকট স্টাপেক থেকে ভূলে নিষে প্রাচ করেছে । মারে পাঁচটা টেশন।

ৰ্ডিটা দেৰিয়া বলিলেন—"্থার আৰ বন্ধার মধ্যে এসে প্তৰে…"

"ण इल डेंडे जावि..."

"আরে বহুন, আৰ ঘণ্টা বললাম বলে কি আৰ ঘণ্টাই ভেবেছেন নাকি ?" হয় তো শুনবেন কোথাও ইঞ্জিন কেল করে বলে আছে, কিছা কোন টেশনে লাইন ক্লিয়ারই পায় নি, ছিলেম বি. এ. আর,-এ, এসব কাও তো জামা নেই।…পেলেম পার্ত্তের বোঁজ ? মেয়েটকে তো আর রাখা বায় না; এই দেবুন মা, সিদ্ধি যা চিটি লিবেছেন ভাতে পভি-শুক্তর শুক্ত আর কিছু রাবেন নি। আমরা হলাম ভাত্তী—ঐটুকু মনে রাবতে হবে, বাগচি, সাঙাল…"

কোন ইক্ষে যুক্ত হইরা যথন টেশনে আসিরা গেছেন দেখেন গার্ডের গাড়ীর দিকে একটা ভূম্ল ফটলা, এক রক্ষ ছুটতে ছুটতে গিরাই উপস্থিত হইলেন।

ভিড ঠেলিরা ভিতরে গিরা দেবেন একটা থেলের সাঁওভালী ক্লীর প্রিবার, যেয়ে, যানী, আঙাবাচ্চা মিলাইরা আট দশ-জম; বলা মাই, কওরা নাই, তাহাদের নিজের টেশন বেকে টানিরা আনিবার ভ্রুগু একবার বেকে স্বাই মিলিরা অক্ষ্য ভাষার গালাগাল দিতেতে, একটা লোক ক্পিলিংটা বুলিরা গাড়ীটাকে ছাড়াইরা লইভেতে ।

আপিলে আসিয়া ধবর পাইলেন, সেই টেশনেই আপ্ পার্শেল একপ্রেসটা ইংভাইয়া ছিল, টু ভাউন পৌছিবামার কুরুদবদুর গাড়ীটা ভ্ডিয়া লইয়া উণ্টা দিকে চলিয়া সিয়াছে।

শরীর গেছে, মন বিন দিনই তার্নিরা পড়িতেছে; ওবিকে ভূড়ি বংসরের তিল তিল করিয়া সক্ষর করা সম্পত্তি নট হইল, ভাহার পর এই—একেবারে মূলে হাভাত। বৈরাগ্য অনেক বিন থেকেই প্রবেশ করিয়াহিল মনে, ক্রমে ক্রমে উএ হইরা উঠিল।

আৰু অভুকুল বাৰুর আপিলেও বান না, নিজের আপিলে সিলা টেৰিলের সাহনে বণিলা সাজুনা পোনেন, ছুট ক্টলে উটিয়া আলেন। ওয়েটাং-ক্ষের একটা কোনে পঢ়িয়া থাকেন, হোটেলে নেহাত আন বাঁচাইবার যত এক বুঠা বান।

বিশ আটেক পরের কথা। এক জনু সন্নাসীর সাকাৎ পাইরাহেন ক্র্বব্দু, তিনি তত্তান বিরাহেন সমত জীবনটাই এই রক্ষ বুধা অবেবণে বুরিরা বেচানো; টিক হইরাছে সব ত্যাগ করিবা এই বিক বিরাই সিরা হিমালরে উঠিবেন। কাকে ইক্ষা বিরা স্কাল সকালই আপিস হইতে বাহির হইরা গেটের কাহে আসিরাহেন, ডাক পিরন প্রবেশ ক্ষরিতেহিন, হাতে একটা চিঠি বিল, বামের ওপর অনেকগুলি মোহরের হাপ। ক্রুবব্দু তাড়াতাড়ি চিঠিটা বুলিরা পড়িলেন—

পা**ৰ্কভী**পুর সোৰবার

चानैसीए चानिया.

আমরা অনেক কঠে তিন দিন হইল এবানে আসিরা পৌহিরাহি। বাড়ীর চারবানা দরজা আর হুইটা আনালা বুলিরা লইরা গিরাছে; তাহার পরই পাড়ার পুলিস মোতারেন হর, আর কিছু করিতে পারে নাই। এবানে আর হালায়াও কিছু নাই; শোনা বাইতেছে এবানকার মুসলমানদের সক্ষেপিকনা নোহলাদের বনিতেছে না। কাল কলির্ছি আদিরা অনেক হুঃব করিল—বলিল—মা ঠাকরুণ, ববন এরেছেন আর বাবেন না, ওরা আপুনাদের তাড়িরে—আমাদেরও ভাড়াবে। কলির্ছির ছেলে তো কালেকে লেবাপড়া করিতেছে, সেই নাকি ভেতরের কবা টের পাইরা এই সব বলিরাছে।

আধার চিট্ট লিবিয়া দিল অধিকার ছেলে ললিত। উহারাও আসাম থেকে কিবিয়া আসিয়াছে। বলে ভাদের চেরে ঘরের মুসলমান চের ভাল। ভারা বাঙালীকে একে-বারে পছক্ষ করে না।

যাই হোক, ভূমি প্রপাঠই ইন্ডফা দিরা চলিরা আসিবে, আর ও স্থেব চাকরীতে কাল নাই—যা আছে ভাহাভেই চলিরা ঘাইবে। আমরা কি করিরা পরিত্রাণ পাইরা পলাইরা আসিরাছি এক ভগবানই আনেন, চিরদিনই বোধ হয় রেলে রেলে ঘুরিতে হইত।

আমরা শরীর গতিকে ভাল। কসল ভাল হইরাতে, ভলির্ছি, পাঁচু সেধ, জরমাল, সাতক্তি মঙল সবাই বলিভেতে আমারের অংশ আমরা পাইব।

ভূমি চলিয়া আসিতে বিলম্ ক্রিবা না। পুনরায় আশীর্কাদ কানিবা। ইতি আশীর্কাদিকা

विवि



## শিক্ষায় হস্তশিস্পের স্থান

**এট**বা বিশাস, এম-এ, বি-টি '

जाबाबनण: जाबबा जाबाद्यत मरमाजाय वास्क कवि-क्याब, চিত্রে অথবা অভ কোনও কারুনিরে। নেধক তার ভাবসমূহ कृष्टेर्स कुनएक ठान कांत्र त्रवनात यथा बिर्टर, विवक्रतात कांच स्थ शाह छात चाका हिनत मर्दा--जाइरतत जान-कन्नमात বিচিত্র অভিব্যক্তি দেশতে পাওয়া যার তাঁর গড়া বৃত্তিতে। এমনি ভাবে কভ বিচিত্র উপায়ে আমরা আমাদের মনের ভাব প্রকাশ করতে প্ররাস পাই। আমাদের মনে কভ চিন্তা, কভ ভাবেরই উদয় হয়। তার ধবর বাইরের জগতের কেউ জানতেই পারে না, যতক্ষণ না সেগুলি মূর্ড হরে ওঠে---ভাষার, চিত্রকলার অথবা কোনও কারুশিরে। মাহুষের **এই ভাবপ্রকাশের শক্তিটি বিবি-দত্ত**। এ ক্ষমতা সকলের সমান থাকে না। প্রকাশ-শক্তির অভাবে আমাদের কভ ভাৰই অব্যক্ত থেকে যাম--পরে মন থেকেও সেওলি আতে আতে নিশ্চিক করে বিদীন করে যায়। এক জন বিখ্যাত वनचढ्रिन् वरमर्दन—"No impression without exprestion"-- वर्षार वांबारमञ् बरमञ् कांन छावबाजनाई न्नाई छ হারী হতে পারে না যদি না আমরা সেটকে একট বাহিক রপ দিতে সক্ষ হই। বাভবিক্ই ক্ৰাষ্ট খুব ঠিক। "কুঁড়ির ভিতর কাঁদিছে গৰ অধ হয়ে"—শিশুর ক্ষৃটনোমুখ মনেও তেমনি কত তাবেরই উল্লেখ হয়। তার প্রকাশ করবার শক্তি বয়ক্ষদের চেয়ে ঢের বেশী সীমারত। সেইজন্তে चाच-धकारमंत्र मक्कित हैश्कर्य जायन कृतवात विरक् अवम (पंटकरे विटमय सका बांचा पतकांत । मरेटन जांत क्या ममहे **ग**ष्ट्र थ जक्य रदा यांचांत्र मखांवना । (कांमक र्शनम, क्रम रा খড়ি পেলেই শিশু ভাই দিয়ে "হিজিবিজি" কাটে—কিছু লিখতে ৰা ৰাঁকভে চেটা করে। জননীয়া অনেক সমৰেই ছোট निखत बाब-धकारमंत्र बहे मूख श्रदारमंत्र खत्रम क्रिक त्वर्र्ड शास्त्र मा-कांबा छाटक कर जमा करवन, वब मारबा कवरह , वो कांत्रक महे कतरह बरन । पूछदार चरनक जमरदारे निस्त আৰ্থকাশের প্রথম প্রয়াস অভুরেই বিনঃ হয়-সমূচিত উৎসাবের অভাবে। এইকভেই শিশুর শিক্ষার হওশিলের একট বিশিষ্ট হান আহে। হন্তশিল শিকা হারা শিশুকে শারপ্রকাশের সুবোর ও সুবিবা দিতে হবে--ভব্ ভাষাশিকার ৰানাই নয়। হতশিৰের সাধাব্যে শিশুর কৃতক্তলি সংকাত হভিকেও সুটরে ভোলা অনারালাবা হয়। এমনি করে সে লৈশৰ **থেকেই হভলিজে নৈপু**ধ্য লাভ করবার সুযোগ পাৰে—পরে ভবিত্তৎ জীবনেও কর্ম্মুশল হরে উঠতে শিববে।

ভাৰার সাহাব্যেই আৰহা প্ৰধানতঃ আমাদের মনো-ভাৰ ব্যক্ত করে থাকি। কথা-শিলী, তার বিচিত্র, কথা-

নৈপুণ্যের মধ্য দিরেই কুটরে তোলেন কাহিনীর অপরূপ ছবি-শুলি। কিন্তু আমাদের মনের তাবগুলি ভাইতর ও অধিকতর शांदी रद, यथबरे जायदा मध्येलाक अक्षे वाहिक, रेखिद-প্ৰাছ ৰূপ দিতে সক্ষ হই। ভাষার সাহায্যে যে ভাবটকে ফুটরে ভোলা বার ভা অনেক বেদী আই, ইলির-এাছ ও চিন্তাকৰ্ষক হয় বদি সেইটই চিত্ৰে, ভান্ধৰ্যা অথবা কোনও কারণিত্রে স্থপ পরিপ্রছ করে। এইবছট আধুনিক শিকা-পদ্বতিতে হন্তলিল্পকে শিক্ষাদানের একটি সুঠ উপায় বলে মেনে নেওয়া হয়েছে। পু'ৰিগত ভান আহরণ করাই বর্তমান निकाद अक्षाब উट्टिंड नह । वर्डमाटन निका नेक्के कांद्रश ব্যাপক অর্থে ব্যবহৃত হয়। শিক্ষার ধারা শিশুর দৈহিক ও মানসিক বৃদ্ধিপ্তলি স্থনিয়ন্ত্রিত করতে হবে-তার মধ্যে যে প্রছের শক্তি ও সভাবনা অস্কুট, সুপ্ত অবহার বিভয়ান আছে ভাকেই সমাক্ত্রণে বিকশিত করে তোলাই শিক্ষার প্রকৃত উদেও। এইকভেই আধুনিক শিকার ইল্রিরগুলির সম্যক্ অস্থ-नैज्ञानत (Sense-training) छैनत निकृत खरिशर निकात ভিভি প্রতিষ্ঠিত করবার চেটা করা হয়। বিভালরে শিশু শুরু खंबर ने लिए इंड ने का लिए के बार के किए के बार के किए के बार के ब শ্ৰোভা হলেই চলবে না। তাকে একাধিক ইন্সিরের অনুস্থান করে "হাতেকলবে" শিখতে হবে। 'সে যা ভনবে সেগুলি যদি সে চোৰে দেববার ও হাত দিয়ে স্পর্ণ করবারও সুযোগ शांब, जा रूल निक्तीय विषयश्रीन क्षप्रक्रम करा ७ मन् वांचा ভার পক্ষে কত বেশী সহক হবে। ভার ধারণাগুলিও छ∤ रता कछ गृहछत, এবং म्लंडेफ्त स्ट्व । **এ**ই त्रक्त कटत বিভালত্তে হন্তশিলের সাহায্যে শিশুকে একাধিক ইন্সিরের **हर्क) करत निष्यात ऋरवात्र (मध्या यात्र ) विकालस्वत शार्वत्रम्** भिश्व कार्य मिछा भीवन ७ वर्षीन वर्त वर्त वर्ष না বিষয়বন্ধর প্রতি তার মনে ওংক্রক্য এবং আএই স্বাগানো यात । 'निकक-निकृतिकीत ध्रांत मका व्यता प्रतकात निश्चत মনে পাঠ্য বিৰয়ের প্রতি অনুহাগ ক্বানো—ভার কৌতুব্দ উদীপিত করা। এই ভঙ বিভালরের দৈনভিন পাঠওলি ষ্ণাসন্তব মনোল ও ইজির-এার করতে চেঠা করতে হবে। তা হলে শিশুর মন মতঃই পাঠ্য বিষয়ের প্রতি আরুট হবে अवर निकटकत कांकथ जत्मक महक हरत वाटव।

আমরা ভানি শিশুরা হবি, বিশেষ করে রঙীন হবি ধুব ভালবাদে। তাই তালের মনকে পাঠ্য বিবরের প্রতি আরুষ্ট করতে হবে—সুরঞ্জিত চিত্রের সাহাব্যে। শিশুলান কালে শিশুকের মনে অনেক সূত্র জিনিষ সহতে এমন বারণা ক্যাতে হবে যা ভারা ক্বন্ত চোবে বেবে

নি। তাবের ক্রনা-শক্তিও পরিণতব্রক্তব্র চেরে অনেক বেশী সীমাৰত। একেত্ৰে প্ৰকৃত ক্ৰিমিষ দেখিয়ে পিছ-राव भिका विराध भावरंगरे जान एता। किंद्र वार्यक नगरंद छ। चार्र्म नचरनत रह मा। और तक्य इरन तिर विनिद-খলির 'বাহর্ণ' (model) বহি আবরা মাট অববা অভ কোনও नवार्य विदय त्राप्क त्यवारक नाति का रात निक्षेत्र विवयक्षित কতকটা ইলিরঞাছ ও সরস করে তুল্তে পার্না বাবে। 'আদর্শ' গতে বিষয়প্তলি বোঝানো সম্ভব না হলে সেগুলি ছবিতে এঁকে रम्बाटक भावरमध्य भावस्थान रहानास्य कार्यक সহক ও বোৰগন্য হয়। এহেতৃ আধ্নিক শিক্ষাতভ্বিদেরা वर्षामध्य हिंद, ठाउँ, जावर्ग हेण्डावि अवीगत्वद (illustration) সাহায্যে শিশুদের শিশা দেওরা সমীচীন মনে করেন। निख्या हक्त, कीकांनेत ७ कर्यक्षिय । किन्नू ना करत छन् ছিরভাবে বঙ্গে শিক্ষকের শীরস উপদেশ শুনে যাওয়া ভাদের প্ৰকেক বৃদ্ধ কৰি বুলি কৰি কৰি আদুৰ্ব ইত্যাদির সাহায্যে পাঠ্য বিষয়ের নীর্স তথ্যগুলি সরস, ও প্রত্যক্ত-গোচর করে ভূল্তে প্রয়াস পান ভা হলে তার পক্ষে শিশুদের মনোবোগ আকর্ষণ করাও অনেক সহজ হয়। ্পাঠদান কালে শিশুদের ব্যাসভ্ত কালে ব্যাপৃত রাবতে এবং তাদের কেতৃহল সভাগ রাবতে সর্ব্বচাই চেঠা করতে হরে, বাতে ভারা অমনোবোদী হবার প্রবোগ না পাক্র। ছবি. চার্ট, আঘর্শ ইত্যাদি শিশুদের শুরু দেবালেই रत मा-धन बाता निक्क बहेशन नवद जादक दोज़क উদীও করতে চেটা করবেন—ভাদের মুক্তি ও কল্পনা প্ররোপ করে উত্তর দেবার স্থবোপ বিবেন-ভালের চিভা করে উত্তর দিতে উৎসাহিত করবেন।

শিশুরা বৈচিত্রাপ্রিয়। অকট রক্ষ কাল ভারা বে**শু**কণ **क्वरक स्वार्टिंग कानवारत मा. विद्यक्त स्वार्ट करता । अक्वरक्**य ভাজ তাবের বেশ্বকণ করতে দেওরা সমীচীন নর। বিভালরে দিয়তব নেইওলিতে প্রভ্যেক পাঠের পরে শিশুদের কিছু হাতের কাল, বেলা, অভিনয়, অধবা ব্যায়াম কয়তে দিলে ভাল হয়। পরিশতবরত্ব ব্যক্তিদের যত শিশুরাও চার আত্মঞ্জাশ **ক্ষরতে—তাবের মনের ভাবগুলিকে একট বাছিক রূপ দিতে** —কোমও কিছু নিবতে, আঁকতে বা গছতে। ভাষের সে क्टिं। कार्याण: वर्ष्टर वार्य (शांक मा क्रम. त्विंग्टक छाएवड बाढिरे कर्मण वरे। छात्रत शांख वर्षि, श्रिमम वा কলম দিলে ভাৱা ভাই দিয়ে ধুৰীমভ কত কি আঁকতে বা লিখতে চার। মাট পেলে তা দিরে তারা ভত ভি গভতে চার। এতে করে ভাবের বাভাবিক আমু-প্রকাশের চেঠাই प्रक्रिक रत। और एक्स-जुरा कारबंद अक्षेत्र नर्क दक्षि। ভারা ভাবের অবভাভ, অণ্টু হাত বিবে হর ভো কিছুই ট্রক-ৰত আঁকতে বা গড়তে পাৱে বা। তবু এতেই ভাবের কত

আৰক ৷ এয়নি করেই ভাবের গুলন-পূহা, কর্ম-পূহা চরিভার্ব হয়। বিভালয়ে এমনিভাবে শ্রিভাগের নানা রক্ত ছাভেয় कांच कवांक विरव जारवन चन-चुवांक वानिरव क्रमांच एरब-- जारब बाब-श्रकारमञ्ज्ञ श्रुरवात ७ त्रविवा विरक्त एरव । णारमन **पेशायमी मक्किक विक्**षिण करन कुन्राच स्टव । 'अहे. হতশিলের মধ্য দিয়েই তাদের অভাত শক্তিগুলিকেও সুটয়ে তুলতে চেটা করতে হবে। হত্তশিল্প শিকাদান বারাই ভাদের मोमर्वादवायक बानित्व कुनटक स्टब-कालव विविध बट्डव জান, বৰ্ণসম্বন্ন, অঞ্পাত, গঠন-গৌঠৰ ইত্যাদি শিকা দিতে হবে। ভারা পরিকার-পরিছেরভাবে কাব্দ করতে শিধবে— বুৰবে পরিজয়তা সৌকর্ব্যেরই একট বিশিষ্ট অল। হত্তশিল শিকাঘারা শিশুদের পর্যবেক্ষণ, স্বতি ও কল্পনাশক্তিরও উৎকর্ষ সাবিত হবে। ভাদের আছুলের বড়ভা দুর হবে-ভারা হস্তশিলে নৈপুণালাভ করবে। তারা মনোনিবেশ সহকারে कांच कदाराज्य चलाच स्ट्रा विकासदा निखदा स्थानिदाद সাহায্যে অনেক বিষয় 'হাতেকলমে' শিৰবারও প্রযোগ পাবে। ज्ञासक निक्तभीय विषय अवद्य बांबबांबीदमय बांबमा न्यहेरुद रत, यथि म्यान जारमत भूनतात हिस्स व्यवन वामर्स क्षकान করতে দেওরা বার। এতে তারা হতি ও করনা উতর শক্তিই শিরোগ করতে পারবে। এই রকম করে হন্তশিলকে একট প্রকৃষ্ট শিক্ষাদান-প্রণালীতে পরিণত করা যায়। আমাদের विज्ञानवस्तिर्क नारावन्तः रस्तित अक्षे वित्तव निक्रिक বিষয় যাত্র বলে পরিগণিত হয়। কিছ বিভালয়ের বারতীয় निक्षेत्र विवत्रहे रुखनित्वत्र मार्शात्वा निका (पश्रता वात ।

वर्षमात्व जामात्वत विकासशक्ति जनतान्त (क दक्ष হত্তশিল শিক্ষা দেওৱা হয় তাতে আসল উদ্দেশ টিক্মত गोविक बर बटन मत्न बर मा। अवस्थ अमन बातक विद्यानिक আছে বেখানে হাতের কাক প্রায় শিখাবোই হয় না বললে চলে। শিক্ষক-শিক্ষরিতীরা হত্তশিল্প শিক্ষা হেবার কোষও প্রবোজনীয়তাই অভূতব করেন না। মনোবিভাষসম্বত কোনও বাহাবাহিক প্ৰতি অবলহনে হন্তশিল্প শিকা দেবার প্রৱাস ক্যাচিং পরিল্পিত হর। কোন বরসের শিশুর পক্ষে কিল্লপ হাতের কাল উপবোদী সে সবছেও শিক্ষক-শিক্ষবিত্রীকের কোনও পুলাই বারণা নেই। ঞারা গভান্থ-शिक्काद र्राटक काक निविद्य यान---निकारक देवहिक छ মামসিক জমবিকাশের ধারা অভ্যারী হতপির শিকা দেবার তোন চেপ্তাই করেন না। হতপির শিকা বেবার একট স্থচিভিত ও স্থনিবভ্ৰিত পৰ্যতি উত্থাবিত হওৱা বিশেষ ষৱকার। হত্তনিল্পকে একট বিশেষ শিক্ষাধান-প্রণালীতে পরিণত করতে হলে অবভ প্রত্যেক শিক্ত-শিক্ষিত্রীকেই কিছু কিছু হতশির শিখতে হবে। ভা সভেও প্রভ্যেক বিধ্যালয়েই অভত: এক কৰ বিশেষত থাকা ব্যক্তায়।

বিভ্যালয়ে শিশুদের চিন্তাভ্য শিক্ষা দেবার আবে তালের <sub>মালা বন্ধন</sub> জিনিব গড়তে বা তৈঁরি র্জরতে লেখাতে হবে। छाता बाँगे विस्त यन, क्ष्मनारनयू, क्ना, चाम, विनिधी-বেশ্বন ইভ্যাদি প্ৰপৰে গড়তে পিথবে। এই সময়ে ভাষের ভারত কেটে অববা ভাগত তাত করে নানা রক্ষ ভিনিব ভৈত্তি করভেও শিবাবো বার। পুৰুৱ পুৰুৱ বঙীৰ ছবি কাটতে দিলেও শেশুরা বুব আমোদ পার। ছবিশুলি পরে এক একট বাতার সেঁটে এলবাম প্রস্তুত করলে বেশ ভাল হয়। রঙীন কাগজের উপর শিক্ত-निकविश्वीतां पान पिटत (पट्यंन--निश्चता (मश्रमि मरेमा त्रक्य ফল, ফুল, পাভাও জীবৰম্ভর আকারে কাটবে। পরে এই शक्ति निर्व अङ्ग्लि-शक्ति, अङ्ग्लि-विकारमञ्जू हाई, नरबंद हाई ইভাদি তৈরি করা বেতে পারে: শিক্ষক-শিক্ষয়িত্রীরা ছবি এঁকেও শিশুদের দেখলি বেশ সুন্দর পরিকার করে কাটবার बिट्रबन बिट्ड शाद्वम । अहे ब्रिशिविह बाजाब अँटि अनवाम তৈরি করা যায় অথবা সেগুলি বড় কাগতে সেঁটে নানা রকষ চাৰ্টও প্ৰছত করা যায়। ছবি আঁকতে শেৰাবার আগে এই রকম করে ছবির প্রতি শিশুদের অন্তরাণ বৃদ্ধির চেঠা করলে ভাল হয়। শিক্ষক-শিক্ষয়িতীয়া রেখাচিতের উপর শিশুদের রঙ দিতে বলবেন। এই রেখাচিত্রগুলি জারা নিজেরা এঁকে দিতে পারেন। শিশুরা যেবানে যে রক্ম রঙ দেওৱা मबकांव (मर्पाटम (महे बक्य बढ (मट्ट) और बक्य क्टब ভাষের রঙের ভান দেওয়া হবে। ভারা রঙ চিনভে শিধবে এবং সভে সভে বর্ণ-সমন্তর করতেও শিখবে। এই সভে ভাষের পর্বাবেক্ষ্ণ-শক্তিরও অনুশীলন করা হবে। ভারা প্রকৃত বিদিষের রঙ দেখে ছবিতে রঙ দিতে চেটা করবে। রঙীন কাগৰ কেটে কেটে শিশুদের কৰ্মত ক্রমত তাই দিরে বাম. শিক্ল, পাৰা ইত্যাদি জিনিব তৈরি করতে দেওৱা যায়। কাগৰ বুব সক্ল সক্ল করে কেটে সেগুলি পাটীর মত করে व्यक्त विस्तृ विश्वता वृत चारवाव चक्चन करत । कात्रक ভাঁদ করে ভাবের মোকা, বোরাভ, এবং কাষরাকা ইভ্যাদি দানা বক্ষ কল তৈরি ক্রতে কেওৱা বেতে পারে। বালি रम्मनारेटबद बांख, निनाटबट्डेब बांख, भूबाटमा कांगक रेक्सांकि অবাৰ্ডক জিনিৰ দিৰে শিশুদের নামা ব্ৰক্ষ খেলনা তৈরি করতে শেবানো চলে। বেজুরপাভা কেটে ভাই বিরে পাবা, বাগি ইত্যাদি বোৰাও শেবানো বেতে পারে। হত্তশিল্প শিকা रम्बात नवरम निक्क-निक्तिकीता अर्हे तकम करत देविहरकात वित्क वित्नव नका बाबटवय---निकटक्त जब जबदा अकृहे बक्य ৰাভের কাক করতে দেবেন না। শিশুরা বেন সর্বাদা বুৰতে পারে ভারা যে কাক করছে ভার ছারা বিশেষ কোনও উত্তে**ত্ত** সাবিত হচ্ছে। , তাবের তৈরি জিনিবগুলি ৰবাসভৰ কাজে লাগালো হরকার। তাবের কাটা অববা

ভাবের রঙ-বেওরা হবি ইত্যাদি দিরে প্রকৃতি-পঞ্জিকা, এল-বাম, চার্ট ইত্যাদি প্রস্তুত করলে হাতের কান্ধ করতে ভাবের আরও উংগাহ হবে। যাবে মাঝে বিভালরে হন্দ্রশিল প্রদর্শনীর ব্যবহা করলে ভাল হয়। ভাতে শিশুদের তৈরি বিনিষ্ণ্যলি বেধানো হলে ভাবের উৎসাহ আরও বাভবে।

সাধারণত: হয় বা সাভ বছরের আবে শিশুদের ছাভের ও চোবের ক্ষত্রতর পেশীগুলির সামগ্রত সাধিত হয় মা। এই সময়ে ভালের কোনও উপকরণাদির (apparatus) সাহাব্য না নির্নে ইচ্ছামত বার সঞ্চালন করে আঁক্তে বিতে হয়---हेश्टबचीटल बाटक free arm drawing बदन। अहे बक्ब করে শিশুরা যাতে ভাদের ছাতের মাংসপেইওলিকে স্বৰ্শে খানতে পারে সে বিষয়ে সাহায্য করতে হবে, এতে তাহের চোৰের দৃষ্টিও ক্রমণ: নিরন্ত্রিত হয়ে আসবে। এই সমরে ভাদের 'মাস ডুরিং' শিক্ষা দিভে হয়। তারা কোনও একট विटमेंस जावर्न (मृद्र्य कांश्रदक ब्रह्म च्या व्यव क्रिक्स जाकारबंद किनिव रेणी करारा। अर्केट 'मान एडिश' वरन। अहे ৱক্ষ অহনে কোনও সীমা-রেখা (outline) থাকে না। হবির মার্থান থেকে আরম্ভ করে বাইরের দিকে হাত পুরিয়ে পুরিয়ে বিনিষ্টীর আকার গঠন করতে হয়। রঙীন विक वा (अभिनिष्ठ मांववार्त बद्धा क्र व्य अर्थ वा अर्थ मा बिनियनित चाक्रि क्रिक एव (महे भर्ताच तक प्रयास करन---ডান দিক খেকে বাঁ দিকে ছাত ছবিৱে ছবিৱে রঙ ছবে যেতে হবে। এই রকম করে শিশুদের রঙীন ৰভি বা পেজিল मिरत तह गरंग पाम, कमा, ममा, (गैंटन, विमिष्टी (वश्यन, ক্মলালের ইত্যাদি কল, নানা আকারের পাতা প্রভৃতি জিনিব আঁকতে দেওৱা বার। পেলিল বা তুলি ব্যবহার করতে দেবার আগে তাদের রঙীন ৰভি দিরে আঁকতে দিলেই ভাল হয়।

কোনও একট বিনিষের সমগ্র রূপটই প্রথমে আমাদের মনে বৃত্তিত হর—পরে তার পৃথক পৃথক অংশের স্কতর বৈশিষ্ট্যগুলি আমাদের সক্ষাপৃত্ত হর। তেমনি হোট শিশুর মনও কোনও একটা বিনিষের মোটার্ট আকার ও প্রঠনই আগে ধরতে পারে। চিগ্রাছন ও আদর্শগঠন (modelling) শিক্ষা দেখার সময় এই কথাট আমাদের বিশেষ ভাবে মনে রাণতে হবে। এই বরসের শিশুদের কাছ থেকে আমরা কোনও সক্ষ কাল আশা করতে পারি মা। ভারা যা আকবে বা গভবে তার খোটার্ট গঠন ও আকোরট ঠিক হরেছে কিনা তাই আমরা দেখন। "মাস ভুইং" শিক্ষা দেখার পরে ভাই শিশুদের রেখাচ্ত্র আঁকতে শেখাতে হবে। রেখাচিত্রাছন শিক্ষা দেখার সমর তাদের প্রথমে যে সাধারণ জিনিহ আঁকতে শেখাতে হবে। বাধারণ জিনিহ আঁকতে শেখাতে হবে। গ্রথাচিত্রাছন শিক্ষা দেখার সমর তাদের প্রথমে যে সাধারণ জিনিহ আঁকতে শেখাতে হবে। আই সবরে তাদের কতকগুলি ইংরেজী ও বাংলা অক্সর দিরে নামা রক্ষম সন্ধা আঁকতে শেখানো যার। এতে করে শিশুদের

চিত্রাহন ও হতনিপি হুইট বিষয়ই শিকা দেওৱা হবে। এই নজাতনিই পরে হুটীকর্ষে, বই, বাতা, এনবাম ইত্যাদির মলাটে এবং হুটাত তিনিবে ব্যবহার করা বার।

শিশুদের সর্ব্যাই আসল জিনিষ্ট দেবে আঁকতে ও গছতে ৰেওরা উচিত। তা হলে ভাষের পর্যবেক্ষণভাৱে উৎকর্ষ সাৰিত হবে। এই ব্ৰক্ষ করে জিনিষ দেখে আঁকবার বা গৰুবার কিছু অভ্যান হ'লে তাদের দ্বতি থেকেও কিছু কিছু আঁকতে বা গড়তে বলতে হবে। এই উপায়ে ভাষের স্বতিশক্তিরও কিঞিং অভুশীলন হবে। শিক্ত-শিক্ষরিতীর। ৰাবে মাৰে শিশুদৈর ক্ষনা থেকেও কিছু কিছু আঁকতে নিৰ্দেশ দেবেন। তাঁৱা কোনও একট পদ্ধ খলে কল্পনা থেকে বিশ্বদের একট ছবি আঁকতে বলতে পারেন। এই রকম করে শিশুরা করনা-শক্তিও প্রয়োগ করতে শিখবে। শিক্ষক-শিক্ষরিত্রীরা চিত্রান্তনে শিক্ষদের কোনও মৌলিকভা দেবলেই উৎসাহ দিতে ত্রুট করবেন না। প্রথম থেকেই তাঁরা ভার একট বিষয়ের প্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাখবেন, ছেলেমেয়েরা যেন **অভিৱিক্ত 'ৱবার' ব্যবহার না করে—এট** বড়ই ধারাপ অভ্যাস। পুন: পুন: অহনের হারাই শিশুদের হাত ও চোব 🗗 হওৱা বাছণীর। তথ্য তাদের 'রবার' বাব্যার করা দরকারই হবে না। শিক্ত-শিক্ষিতীরা যেন হাতের কার্ শিকা দেবার সময়ে সর্বাচাই কোর্নও একট বাঁধাবরা বিষয়-তালিকা (Syllabus) অহুসরণ না করেন। শিশুরা বত:-. প্রণোধিত হয়ে বৃত্তম কিছু আঁকলে বা পড়লেই তাদের উৎসাহ बिट्ड (ठडे) करा देविछ । (दल्लाबारा (श्लिम बिटा दार्था-চিনাছৰে কিছু অভান্ত হলে ভাগের ক্রমেই ক্টিনভর বিষয় বাঁকতে শেৰাতে হবে। ক্ৰমে তাদের অপেকাকত স্বন্ধতর কাৰও করতে দিভে হবে। সেই বকম আদর্শগঠনেও ভাষের বন্ধ-বিশেষের ক্ষরভার আকৃতি ও গঠন-বৈশিষ্ট্য শিশুদের প্রত্যক্ষ জানবিকাশের সক শেখাভে হবে। ললে তাদের মাংসপেশগুলি ক্রমশঃ বশে আনীত হয়: ভাই তাদের পদে তথন স্থল্ভর কাম করাও সহক হয়। ভারা অপেভারত কঠিন বিষয় অহনে কিছু অভ্যন্ত হলে ক্ষমণঃ তাবের আলো-হারার (light and shade) আৰ, দূরত্ব অনুবারী জিনিবের আরতনের তারতম্য ইত্যাতি সহত্বে ৰাত্ৰণা কৰাতে হবে। পৰে তাদের রঙ ও তুলি ব্যবহার করে ছবি আঁকতে শেবাতে হবে। 👵

বিভাগৰে শিকাৰূপক হতশিল হাড়াও হেলেমেরেদের বিশেষ বিশেষ করেকট প্রয়োজনীয় কালশিল শিকা কেওয়া বেতে পারে। সংসারের অনেক নিত্যপ্ররোজনীয় জিনিয়ও তাদের তৈরি করতে শেবানো যার—বেষন তাল বা বেজুর পাতার পাবা, হার্কেট বোনা, বেত বা বাল দিরে নানা রকম জিনিয় বোনা, তাতে গাহাহা তোরালে বাজন গালিচ। ইত্যাদি বোনা, চাহড়ার কাজ, মাটর কাজ, বাম তৈরী করা, বই বাবানো, নারজেলের হোবড়া বিরে ন্ড, পাপোর তৈরি করা ইত্যাদি। বিভাগরে কোনও একট বিশেষ কার-

নিল্প শিবে হেলেবেরেরা পরে ভবিছব শীবনেও এর সাহাঁরের কভকাবশে জীবিকা জাইন ক্রতে পারে। অবেক হারহারী হর তো পকাঞ্ডনার আবো রনোবাের নর, অথবা তারের বেবা বা স্থতিশক্তি এতই কম বে, তারা জানার্হ্যনে বেশীসুর অঞ্চনর হতে পারবে না। এই সব হেলেবেরেকে বিশ্বভালরের উচ্চশিক্ষা কেবার হবা চেঙা না করে কোমও হাতের কাল শেবালে অভিভাবকদের অহবা অর্থ নঙ হর না। অনেক সমরেই বেবা বার এই সব হেলেবেরেরা হাতের কালে বেশা পটু হর। এক্সেরে এবের বিশ্বভিলারের উচ্চশিক্ষা দেবার চেঙা করে কোমও লাভ মেই। শিক্ষক-শিক্ষারী, পিতা মাতা বা অন্ত অভিভাবকদের লক্ষ্য রাবা উচিত হেলে মেরেদের মনের স্বাভাবিক প্রতি বা প্রস্থিতি কোন্ বিক্রে। তাদের স্বাভাবিক ক্রচি ও প্রস্থিত্ব প্রতি লক্ষ্য রেবে ভানের ভবিত্রং শিক্ষা নিয়ন্ত্রিত করা বিশেষ দরকার।

আৰকের দিনে একাছ পুঁৰিগত বিভার কার্যকারিভা **जबाद बार्टिक्ट अभिकाम का बार्टिक्ट । निश्रास्त्र अपू** কভকগুলি "পুছকের কীট" করে গড়ে ভোলাভে বে বিশেষ (कांनक मार्वकका (नहे अकवा चरनरकहे चक्कव कडरहम। পুত্তকের মধ্যে যে অপেষ জানরাশি যুগরুগান্তর ধরে সঞ্চিত হয়ে আসহে তা থেকে বিভা আহরণ করবার পুহা বেষৰ শিশু-মনে জাগিয়ে ভুলতে হবে তেমনি ভাষের প্রস্তুত করতে হবে প্রাত্যহিক শীবনের কঠিন সমস্তাশুলির সন্থবীন হবার ব্যৱস্থ । শিশুর সামনে রারছে তার অনাগত অবিশিষ্ঠ ভবিত্রং – সেই ভবিত্রতের অবকার গর্ভে কি ভটন সমস্থা প্রভেত্র আছে তা কে ভানে। তাই ভীবনের প্রভাত থেকেই ভাকে গড়ে চুলতে হবে ভবিস্তং জীবনের ছাত্রির বহুলোপবোদী করে ---তাকে শৈশব থেকেই শিক্ষা দিতে হবে কর্মভংগরভা। লক্য বাৰ্থতে হবে বেন তার প্রাভাহিক ভীবনের কার্য্য-क्लारभव गरक विचानरवव निकाब वर्षामध्य माम्रक्क बारक। শিশুর কার্ব্যকরী শক্তিশুলি সমাক্রণে বিকশিত করে ভোলাও বিভালবের শিক্ষার একট বিশেষ উদ্বেপ্ত হওবা উচিত। সমুবা তার শিকা অসম্পূর্ণ থেকে যাবে। হঙ্গশিল্প শিকার দারা শিশুরা শ্রমের মর্ব্যাদা বুকতে শিশবে—ভারা বুকবে নিজের হাতের কাবে কোনও অপমান বা প্লানি ৰেই। ভারা কারিক প্রমকে হের জান করবে না। ভারা বুকবে ভারের নিত্যব্যবহার্য অত্যাবস্তক কিনিবগুলি অপরের কারিক পরিপ্রমেরই কল। আধুনিক বুনিরাদী শিক্ষার পরিকল্পনার হত্তশিলকে যে একট ব্লিশিষ্ট স্থান দেওবা হয়েছে ভা পুৰই পুৰের বিষয়। অদুয় ভবিভাতে এই অভিনৰ পরিকল্পনা অনুযায়ী বহু শিক্ষা-প্ৰতিষ্ঠান দেশে গড়ে উঠবে এবং বৰ্ডমান প্ৰাৰ্থিক শিকার বারাও বদলে যাবে। তাতে করে অভত: <u>ছেলেখেনে</u>-मित्र देवनियन भीवरनद गरक विश्वानासद विश्वास मन्त्रन विराह्य ঘটবার সভাবনা করে বাবেন। ভীবনের হল থেকেই শিশুরা শিববে অবের মর্যাদা, আছমিউরশীলভা ও কর্মভংগরভা।

## 'মেঘনাদ্বধ' কাব্যের রস

#### জ্রীগোপাললাল দে

মেঘনাদৰৰ কাব্যের প্রারম্ভে কবি মধ্যদন সরহতী দেবীকে আহ্বান করিরা বলিয়াছেন, 'গাইব মা বীররসে ভাসি, মহাদিত।' স্বতরাং পাঠছের মনে করা ঘাভাবিক যে কবি বীররসকেই কাব্যের প্রধান রসরূপে গ্রহণ করিরাছেন। 'সাহিত্যদর্শণ'-প্রণেতা কবিরাশ্ব বিশ্বনাথ চক্রবর্তী মহাকাব্যের লক্ষণ নির্দেশ করিতে গিরা বলিরাছেন, 'শৃঞ্চারবীরশান্তানামে-কোহলী রস ইয়তে।' 'আলী প্রধানঃ', অতঞ্রব কবিরাজের মতে মহাকাব্যের প্রধান রস হইবে শৃলার, বীর এবং শাভাদির মধ্যে একটি। অপর আটটি রস এবং অপরাপর স্থারীরস সেই অলীরসের পোষকতা করিবে। টিকাকার ভটাচার্য্য বলিতেছেন, 'শাভানামিতি বছবচনাং কর্মণোহণি গৃহতে। তেন করণ প্রয়ানস্ত রামারণত মহাকাব্যন্থ সিদিঃ।" অতঞ্রব করণরসঙ্গ ভাব্যের অলীরস হইতে পারে।

'বেষনাদৰবে'র প্রারম্ভে প্রথম চার পংক্তির মধ্যে কবি
'বীর' শব্দী তিন বার ব্যবহার করিয়াছেন, এমন ক্ষেত্রে মনে
হওয়া ছাঞ্চাবিক যে কবি ছীয় কাব্যথানিকে বীররসের
কাব্যরণে রচনা করিতে চাহিয়াছিলেন এবং তাহাই করিয়াছেন। এখন কাব্যটি আন্যোপাভ বিচার করিয়া দেখা যাক
কবির পোষিত আশা পূর্ণ হইয়াছে কি না।

প্রথম সর্গে দেখি বীরচ্ভামণি বীরবাছ সমূব সমরে পড়িয়া হত ছ্ইয়াছেন, লয়ার রাজসভার শত শত পাত্র-মিত্র নত-মভকে বসিরা আছেন এবং রাবণ পুত্রশোকে বাক্যহীন, ভাহার 'বর বর করে অবিয়ল অঞ্চবারা।' দূতের মূবে বীরবাহর মৃত্যুসংবাদে ভিনি 'হা পুত্র, হা বীরবাহ, বীর চুভারণি।' বলিরা বিলাপ করিরা বলিতেছেন,

> 'নিশার খপন সম তোর এ বারতা রে চ্ত ! অমরবৃদ্ধ বার ভূকবলে কাতর, নে বছর্করে রাখব তিবারী ববিল সমুধ্রণে ? সুলদল দিয়া কাটলা কি বিধাতা শাবালী তরুবরে ?'

স্তরাং পূত্রশোক্ষাতর পিতার করণ শোকণুঙে কাব্যের ববতারণা। তবনই তিনি বুবিরাহেন, 'একে একে ওকাইছে হল. এবে নিবিছে বেউটি।' প্রানাদশিবর হইতে রাবণ রণক্ষেত্রে ঘৃটিপাত করিতেহেন, তবনও তাহার বাক্য ও চেঙা করণরসেরই স্টি করিরাছে। করণরসের অভনিহিত ভাব 'শোক' এবং বীররসের ভাব 'উংসাহ'। সেতৃবর সমুক্রের বিক্তে হুটি পভার রাবণ প্রথমতঃ সমুক্রকে ববেঙ বিক্রণ করি-লেব এবং পরে ইংসাহিত ভবিবা বনিলেব। 'উঠ বলি, বীরবলে এ কালাল ভালি, দূর কর অপবাদ ; কুড়াও এ আলা।' 'এই কি সাজে ভোমারে অলক্যা, অক্ষের ভূমি ?' 'কেশকীর রাজপদ কার সাধ্য বাঁবে বীতংসে :'

কবি এইবানে কিছু বীররসের স্ঠ করিয়াছেন, কিছ ভাহাও বেন অসহায় রাবণের করুণ অভ্নরের ক্ররে ভরা।

ভাষার পরেই দেখিতে পাই এক বিচিত্র দৃষ্ঠ, 'প্রবেশিলা সভাতলে চিত্রাক্ষা দেবী।' সখী-সনাধা চিত্রাক্ষার বেশ-বাস, চেঙা এবং বাক্যাবলী একট চরম করুণ দৃষ্টের স্কট্ট করিরাছে। এই সর্গের মাবের দিকে দেখি লছার রাজ্পলী 'কিরায়ে বছল ইন্থ্রদনা ইন্দিরা বসেন বিষাদে দেবী।' ভিনি বনিভেছেন, লছার 'প্রভি গৃহে কাঁদে প্রহীনা মাভা, দৃভি পভিষীনা সভী।' প্রমোদ উভানে, শেষের দিকে দেখি, ইপ্রদিং ও প্রমীলাকে। কবি এই অংশে একট উপভোগ্য বীররসের স্কট্ট করিরাছেন.

'বামারক নবীন যৌবন মদে মন্ত কেরে সবে, মাতজিনী বধা মধুকালে।'

'ছিঁ ভিষা কুক্ষদাম রোবে মহাবলী মেহনাদ' লছার চলিয়া পেলেন। রাবণ সেধানে সুংযাগ্রার সাজিতেছেন 'বীরমদে মাতি'—এই বীররসের দুক্তে পিতাপুত্রের মিলমের কলে কণিকের করুণ দুক্তের পরেই বন্দীদের বন্দনার পাই, 'ভয়াকুল কাপুক শিবিরে রঘুপতি।' কুতরাং করুণরসে ভারভ হইয়া প্রথম সর্গ বীররসে শেষ হইল।

বিভীয় সর্গের আলোচনা করিলে দেবিতে পাই, সম্প্র সর্গট ভূড়িয়া লকা হইতে ইকালর, তথা হইতে কৈলাস, সর্প্তর মেষনাদকে বধ করিবার ভঙ দেবগণের বহুষত্ত, ভাষার মধ্যে বীররসের কিছুমাত্র অবকাশ নাই। বড়বত্তের হীনভার মধ্যে বীরসের অবসরই বা কোথার? সম্প্র সর্গে নিরভিত্র হুভেঁ জীচনকবর্ত্তপ্রতিকর মনকে বিয়াদব্যথার ক্লিউ করিবা ভূলে।

তৃতীর সর্গের প্রারম্ভে প্রমীলার বিরহ্ব্যকা মধুর ভাবজনিভ পুলাররসক্টে রূপ দিরাছে। অভঃপর, কাভরভা ভ্যাপ করিরা প্রমীলা স্থীপণের সলে স্বলে লভা-প্রবেশের সংক্ষ করিলেন।

> 'হানবৰন্দিনী আমি, য়কঃকুল বধু ; ৱাবৰ বভন্ন মম, বেৰনাৰ বানী ; আমি কি ডবাই, সবি, ভিৰামী ৱাবৰে ?

পশিব লকার আজি নিজ ভূজবলে,
দেখিব কেমনে বোরে নিবারে মৃষণি ?'
বীররসের একট উজ্ল চিত্র আমরা এইখানে পাইলাম।
'জমিশিবা তেজে, চলিলা প্রমীলা দেবী বানা দলবলে !'
মেবনাক্বৰ কাব্যে রাম-চমিত্রের মহন্থ বোৰ হর এই একট
ছানেই একবার প্রকৃতিত হইরাহে, কিছ ঐ একবারই। উজ্ল হুইরা উট্টরাই তাহা যেন চিরতরে রান হইরা গিরাহে; আর সে মহন্থের সন্ধান মিলে না। রাম প্রমীলাকে সল্মানে বিনা বাবার লক্ষা-প্রবেশের জন্মতি দিলেন। প্রমীলা চলিলেন,

> 'ভার পাছে প্লপানি, বীরাদনা মাঝে শ্রমীলা, ভারার দলে পশীকলা যথা !'

ৰীররসের এমদ অপূর্ক চিত্র মেঘনাদবৰ কাব্যে আর বিতীয়ট নাই।

ইজজিতের সহিত প্রমীলার মিলনে কবি আবার আদি রসের চিন্ত আঁকিরাছেন। এই মাত্র বে নারী 'র্ছং বেছি' বলিরা রামচজের সৈভবের সন্থ্যসমরে আহ্বান করিতেহিল দেই এবন প্রিরতমসমাগনে বিগলিতচিভ হুইরা বলিতেছে, 'ভববিভরিনী কাসী; কিন্তু মনববে না পারি কিনিতে'। পরিবর্তনটি ক্রুত হুইনেও অসকত হর নাই। মনোহারী মিলনকৃতে পাঠকের চিভ একটু রস্সিক্ত হুইরা উঠিবাছে এমন সমরে যে পরম শোচনীর ঘটনা অন্তিবিল্লেই ঘটবে পার্মতীর বুবে ভাহার, প্রাভাস পাইরা পাঠকের মন বিবাদে পূর্ব হুইরা বার। করুণ রসে সর্গটি শেব হুর।

চতুর্থ সর্বের প্রারম্ভে বুরোভমে ব্যন্থ লকার একট। উৎসবের যত তাব দেখা যার। এই অংশে কিরংপরিমাণ তরল
তাবের বীররসের সঞ্চার দেখা যার, তাহা ঘনীভূত হইরা
বৈশিষ্ট্য লাভ করে নাই। আবার এদিকে উক্ত সর্গ-মধ্যে
অপস্থতা, অশোক বনে লাছিতা, বিরহিনী সীতার হংখের অভ
নাই—'কাঁদেন রাখব-বাছা আবার কুটরে'। তাহার করণ
ক্রমন উপোন্যাতের বীররসকে মান করিয়া দিয়াছে। স্বীতা ও
সম্মার ক্রোপক্ষম ক্রমণ রসের নিক্রিণী। মধ্যুদ্দের
সম্মার ক্রোপক্ষম ক্রমণ রসিট ছান অধিকার করিয়া
আছে, এই কার্বেই কাব্যব্রিত ঘটনার পঞ্চে গুরুত: সম্পর্কপুত্র হুইলেও এই অংশ মেবনায়ব্রের অস্ক্রা সম্পদ।

পক্ষ সর্গে দেবকুলপ্রির লক্ষণ দেবতাদের আদেশে এবং 
তাঁহাদের হারা বক্ষিত হইরা শিবপুলার বসিলেন। রাষ
তাঁহাকে বিহার হিলেন অনেক হিবা-হন্দের পরে। তাঁহার
নাক্যে বা ভার্যকলাপে সমরোচিত উৎসাহ-উদীপনার
কিছুমার ভারত বেবা বার না। রাম বার বার চিতা করেন,
নিবেব ক্রিল, দেবতাদের আন্তার প্রার্থনা করেন, আল্লাভিতে
বা লক্ষণের পৌলবের উপর বির্ত্তর ক্রিবার মত মানসিক
মূচতা তাঁর নাই।

সন্মণ লকার উত্তর বাবে চতীয় বেউলে একাকী গেলেন, বহু প্রলোভন এবং ভয়ও জর ক্রিলেন, কিন্তু তিনি ভাবেন বে তিনি দেবকুলপ্রির ও দেবাপ্রিত এবং তাহাই তাহার সাহসের তিতি; তাই লেবনীবুৰে কবি লক্ষণের বহু বীরত্ব ও সাহসিক্তার বর্ণনা দিলেও এই সর্পের বীররসের চিত্র আসলে অবাত্তব অভিবরের মত হইরা সিরাছে। পাঠকের চিত্ত তহারা অভিত্ত হয় না। বরং উক্ত সর্পের হানে হানে রৌর-রন্নের যে চিত্র আছে তাহা পাঠকচিতকে প্রভাবিত করে।

বঠ সর্গে সক্ষণ বিভীবণের সহারতার দেব-যারাবদে নিকুজিলা বজাগারে অলক্ষ্যে প্রবেশ করিরা গুরুষাতকের মত ইন্দ্রখিংকে হত্যা করিলেন। লক্ষণ ও বিভীবণের চরিত্র বত্তন্তর মগীলপ্ত হওরা সন্তব, তাহা এইখানে হইরাছে। ওপ্ত খাতকের কর্মে বীররসের কোন অবসরই নাই। এই অংশে অতি অল্প পরিসরের মধ্যে ইন্দ্রজিতের বাক্যু ও কার্য্যকলাণ আকর্ষ্য মহিন্তরর মধ্যে ইন্দ্রজিতের বাক্যু ও কার্য্যকলাণ আকর্ষ্য মহিন্তর মধ্যে ইন্দ্রজিতের বাক্যু ও কার্য্যকলাণ আকর্ষ্য মহিন্তর মধ্যে ইন্দ্রজিতের তালিকার ছান লাভ করিরাহেন। কিন্তু তাহার সক্ল বীরহকে ছাপাইরা উঠিয়াছে অবস্থান্টিত একট প্রগতীর কার্মণ্য। দরদী কবির হাদরের অভয়ত্তর প্রদেশ হইতে তাহা বতঃ উৎসান্তিত। ওর্মাতকের হতে ইন্দ্রজিং নিহত হইলেন বৃটে, কিন্তু রস্বিচারের দিক দিয়া কা্যুটকে এক্ষেম্বারে অন্তবারার নিরিক্ত করিরা দিয়া গেলেন।

সপ্তম সর্গে পুত্রশোকার্ড রাবণের গুরুসজ্জার এবং দেব-গণের সহিত রূপে বীররস সভাই মূর্ড হুইরা উঠিরাছে।

> 'শ্বরি পুত্রে রক্ষঃকূলনিধি, সরোধে গক্ষিয়া রাজা কবিলা গভীবে; চালাও। হে হত, রথ বেণা বক্রপানি বাসব।"

রাবণের রখ চলিল, কার্তিকের বিনায়তে পথ ছাঞ্চিলেন, ইল্ল আহত ও শক্তিহীন হটরা পলাইলেন; রামকে তথনকার মত পাল কাটাইরা রাবণ লক্ষণের উত্তেক্তে ছুটলেন এবং তাঁহাকে অব্যর্থ শক্তিশেলে আহত করিলেন। কবি এই ছানে সার্থক মুদ্ধবর্ণনার হারা একট অপূর্ব বীররসপূর্ণ কাব্যাংশের স্ক্রী করিরাছেন। রাবণের বীরদ্বের চরম বিকাশ সপ্তম সর্গে।

আইম সর্গে শক্তিশেলাছত-লক্ষণকে লইয়া রাম ও বানরগণের বিলাপে অবিমিত্র করণ রসই উচ্ছল হইয়া উঠিয়াছে। রামের মরকদর্শনদূতে বীতংসরসের অবভারণা হইয়াছে, দশরবের সহিত রামচন্দ্রের মিলনে সঞ্চারীরসে বাংসল্যের স্টি হইয়াছে।

নবম সর্গে যুত ইন্সন্ধিতের শোক্ষাত্রার বে একট প্রহান্ শোক্গান্তীর্বাপুর্ব বর্ণনা আছে তাহা পাঠকের চিন্তকে রুগপং গান্তীর্ব্যে এবং কারুণ্যে পূর্ব করিয়া নের এবং মনে বেন চির বিনের কচ একটা হাপ রাবিয়া বায় । বয়বী পাঠক-চিত্তে অনবরত ধ্বনিত হইতে বাকে, কাব্যের সর্বশেষ হুইট হত্ত, 'বিসর্ক্তি' প্রতিমা বেন বিশ্বরা-হিবসে, সপ্ত হিবামিশি লহা কাহিলা বিহাদে।'

এবৰ সভৰ্ক বিচায় করিয়া বলিলে বলিভে হয়, সম্প্র কাৰ্য্যে প্রবাৰতঃ বীয় ও কল্পন্তম স্থান পাইয়াতে এবং ভাষা- বের গভীরতা, ব্যাপকতা এবং চিতরবকারী শক্তির বিচারে কাব্যষ্টকে অবভাই বীররসায়ক না বনিরা করণ-রসায়ক বনিতে হয়। যদিও কবি আদিতে বীররসের কাব্য নিবিবার আকাক্ষা প্রকাশ করিয়াহেন তথাপি কার্ব্যতঃ তিনি কাব্যষ্টকে করণ রসোধীপই করিয়াহেন।

হয়ত বা তাহার মনে এই ইচ্ছাই ছিল; কারণ কাব্যটীর ব্যন আরভ, তথন কবি বন্ধু রাজনারায়ণ বহুকে লিখিয়াছিলেন, "Do not be frightened, my dear fellow, I won't trouble my readers with 'Vira ras'. Lot me write a few epiclings and thus acquire a pucca fist."

বীররসাত্মকই হউক জার করুণরসাত্মকই হউক, কাবাট যে ট্রাজেভি তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। পাশ্চান্ত্য জালছারিক-গণ বলিরাহেন, 'গার্থক ট্র্যান্ডেভির জন্ত চাই নায়কের স্মহান্ বিরাট ব্যক্তিত্ব। নারক যত বলিঠ ব্যক্তিত্বসম্পন্ন হইবে—ট্র্যান্ডেভি হইবে তত গড়ীর।' হয়ত সেই কারণেই বীররসের অবতারণা ঘারা কবি তাহার করুণরসাত্মক ট্র্যান্ডেভির নারকের বলিঠ ব্যক্তিত্বকে ফুটাইরা তুলিরাহেন এবং তত্বারা ট্র্যান্ডেভির গভীরতা ও বিরাট্ডকে রূপদান করিতে সমর্থ হইরাহেন।

এদিকে, রামারণ-কণা চিরকরণ; এমনও হইতে পারে বে সেই কাহিনীকে বিষরবন্ধ রূপে গ্রহণ করার ফলেই গোড়ার ইচ্ছা থাকিলেও এবং বৃলতঃ 'পুটপাকো প্রতিকাশো রাম্ভ করণোরসঃ'কে ভ্যাগ করিলেও কবি সেই করণরসের ভারক প্রভাব কাটাইরা উঠিতে পারিলেন না।

ওদিকে বৰৰ্ণন্তই, সমাকচ্যত, আশ্বীরবৰন-পরিত্য**ত,** ভাগ্যবিভ্যতি কবির পক্ষে করণরসই তো **বাভাবিক** রস। ৰণুখনৰের বাধিরের সাংহ্বী পোৰাক ও চালচলবের আড়ালে তো স্কানো হিল বাঁট একট বাঙালী-চিত্ত। সে মুগে বিভাসাগর হিলেন বাঙালী পোবাকপরা সাহেব, আর মাইকেল
হিলেন সাহেবী পোবাকপরা বাঙালী। তাই বঠ লগ শেষ
করিবা কবি লিবিরাহিলেন—'It cost me many a tear
to kill him.'

আবার এমনও হইতে পারে যে লিখিতে আরম্ভ করিয়া কবির "মনে ছিল এক, হরে সেল আর'। কেননা কিছুবিন পরেই কবি আর একখানি পরে লিখিরাছেন— 'I never thought I was such a fellow for the pathetic.' কর্মণরস্কানর সার্থকতা বিষয়ে তাঁহার সন্দেহ ছিল। তবে কি কর্মণ রসস্কৃষ্টিই প্রারম্ভে উভিষ্ট ছিল ? অথবা দৈবক্রমে তাহা আসিয়া পঢ়িল এবং অবশেষে আর্ছ-অচেডন ভাবাভিত্ত কবি নিজ অপ্রয়াসলর সার্থকতার বিন্মিত হইয়া নিজেকেই জিজাসা করিতেছেন,'কিমিদং ব্যাহ্মতম্ ময়া ?'—এ আমি কি লিখিলাম ? এমন কর্মণ রসাল্পক কাব্য লিখিতে পারি তাহা ত জানিতাম না!

ক্ষেকট ক্ষ কাব্য লিখিয়া হাত পাকাইয়া একখানি মহাকাব্য লিখিবার আকাজ্ঞা কবির ছিল। 'মেঘনাদৰৰ' কাব্য হয়ত তাহাদেরই একখানি। তিনি লিখিয়াছিলেন, সুযোগ-সুবিধা, উপ্যুক্ত অবসর এবং যোগ্য বিষয়বন্ধ পাইলে 'I could have made a regular Iliad'। আমানের পরম হুর্তাগ্য যে কবি-ক্ষিত সেই মহাকাব্য অলিখিতই মহিরা গেল। রোগ শোক, দারিক্রা, অনবসর কবির সংক্ষকে সত্যে পরিণত হুইতে ছিল না।

#### ভূপ্ত পূর্ণত শ্রুস্থীস্তনারায়ণ নিয়োগী

ভাললাগা পাছে ভালবাসা হয়ে পঞ্চে ছিলাম সভয়ে প্রাণের ক্ষরাট এঁটে, মনের অলনে দিই নি আসন পেভে এলে যবে দূর ছর্গন্ন পথ ছেঁটে। মুক্ত অবরে তুবা প্রলেপের নিচে ভালি হলাহল সমূত্র উবলিছে, সারা সংসার মন্ধতে কোবাও

পানীর পাই না ব্ জি—
প্রাণের জপার পিপালা যাহাতে নেটে।
হর্গত প্রের হ্রারে বেলিন এলো
বর্গর করে কাঁপিরা উঠিল ব্ক,
বরিতে গেলার বাভারে ব্যাহ্ল পানি—
ব্ল্য তনিরা তরে ভ্রুকাইল র্ব।
সকল অভীত, সকল ভবিভং
কেলে বিতে হবে ভীর্ণ ব্লবং,
নিক্ষাহেশের পথে ব্যুক্ত হবে

বজানার হাত বৃদ্ধি, পাবের—ভাহারি "বোরালিনা" হানিটুক। ভিষিত্ৰ বাত্ৰে প্ৰকাশ কৰা এগে
বদস্ভিত্ৰে উভাৱে লইভে চায়,
পভ-শাৰা কোটপত্ৰে আন্দোলিয়া
প্ৰাণপণে ভক্ন প্ৰভিৱোধ করে ভাষ।
গে ভানে কেবল উদ্ধা হওৱা সার,
গভিত্ৰ আশাৰ হুৰ্গভি হবে ভার,
ধ্বংস-পাগল বটকা শোনে কি

পাছপের প্রতিবাধ ;—
ভার আনন্দ পরের হুর্দার।
আমার প্রতিষ্ট সার্তে জাগারে দিলে
প্রমন্ত বেগ প্রচাত বাইকার,
জানি কণপরে ভূমি উকে বাবে দ্রে,
উভারে নেবে বা এ পাবাব দেহভার।
তবু বে একদা বুকে দিরেহিলে দোলা,
জানি ভার স্থতি জীবনে বাবে বা ভোলা,
প্রিক প্রন কান্তে এলে কত্
ব্রাণারী বিচ্টীর

**७६१८९ ७**वबिटर राराकात ।



শেহালের সভা

"বন্ধুগণ! সকলেই বলে একা এবং চীংকার উন্নতির উপার। বন্ধুগণ! আমরা সমন্বরে চীংকার করিতে কথ্নই ক্রটি করি নাই। মান্ত্রৰ ত হইতে পারিলাম না: " ('পঞ্া-নন্দ,' ২র কাণ্ড, ওর সংখ্যা)

## (मकारनतं मामित्रक-भरख वाक्रिक

#### <u> প্রিকেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়</u>

১৮৭২ সনে শিশিরকুমার বোষ 'অমৃত বাজার পত্তিকা'য় সাম্বিক ঘটনা অবলবনে সর্বপ্রথম ব্যক্তিতের অবতারণা করেন। এরপ একথানি চিত্র—"ক্যাবেলের মডেল ডেপ্ট" আমরা গড বারে প্রকাশ করিরাছি।

ইহার ছই বংগর পরে বিলাতী Punch-এর অফ্করণে ব্যক্তিত্র-স্বলিত ছইবানি মাসিকপত্র প্রকাশিত হয়। ইহার প্রথমবানি 'হরুবোলা ভাড়', প্রথম সংব্যার প্রকাশকাল —আছ্রানি ১৮৭৪, পরিচালক—হর্গালাস বর। প্রতি সংব্যার পূর্ণভূচা চার-পাঁচবানি লিখো-চিত্র মুক্তিত হইত। 'গৌরচজ্জিয়া'র ভাড় বলিতেহেন:—

"কেব আমি আসরে নামলেন, উৎেও আমার কি, কার্যাই বা কি, সেই কথা এবন বলি। সমাজের ছবি কিছু কোর্বো, এক পূর্চে ছবি, এক পূর্চে ছর্পণ।—ছবি কেবে বাহারা ভূই হবেন, দর্শনে ভাহারা পবিত্র মুর্তির প্রতিবিশ্ব অবক্রই কেব্তে পাবেন। আর আমার ছবিতে বাহারা লই হবেন, ভাহারা আপনাবের প্রতিমৃতি দর্শনেই কেব্বেন।"

'হরবোলা ভাঁড' ২র সংব্যা হইতে বিভাবিক পরে— "A Monthly Anglo-Vernacular Illustrated Comic Journal"—এ পরিণত হর; নামকরণ হয়—"The Indian Punch- হরবোলা ভাঁড"।

"হরবোলা ভাঁড়ে"র করেক দিন পরেই—১৮৭৪ সনের ৩১এ স্বায়রারি 'বসস্তক' স্বাবিস্ত হয়। ইহা "প্রত্যেক ইংরেকী যাসের শেষ দিনে" প্রকাশিত হইত। প্রিকার কঠে এই প্লোকট শোভা পাইত:—

নবপরিণরযোগাং স্থীয়ু হাভাভিযুক্তং,
মদবিলসিত-নেত্রং চারচজার্ক-নোলিং।
বিগলিত-কণি-বন্ধং মুক্তবেশং শিবেশং,
প্রথমতি দিনহীনঃ কালকুটাভক্ঠং।

প্রিকা প্রচারের উদ্বেক্ত স্বব্ধে প্রিকার ১ব সংব্যার এইরপ লিবিত হুইরাছে:---

"লোকের এই রক্তর বভাব, বে, কেন্দ্র এক কব নিকটে আসিলে অত্তে ঐ আসম্ভক ব্যক্তির নাম বাব কবাবির বিবরণ কানিতে ইন্সা করেন।" স্থভরাং সত্য-



Bridging the Chasm between the two Races
"ইংরেল ও ভারতবাদীর মধ্যে মিলন-দেতু" ('হরবোলা ভ'াড়')

সমাজেরও মন: আমার সহতে অহুস্থিংসার বশবর্তী হয়েছে, সন্দেহ নাই। কিছু কি কার, আমি যাত্রাওয়ালার সঙ্গের দাদার মতন নই, যে, কড় কড় কোরে না কিজাসা কোছেই আত্মপরিচয় দিতে থাক্বো। আর, যারা জন্ত্র, তাঁরা কি আপনি পরিচয় দেন ? অপরের ঘারা পরিচয় দেওয়াই তাঁহাদের নিয়ম। অভএব আমি ভাটের মত আপনার কুলকী না পোড়ে এই-মাত্র বলিতেছি, যে, সভ্যগণ আমার বসন্ত-পক্ষীর পর উদয়েই নাম বুবিবেদ এবং এই কীর্তিতেই রভি কানিবেন।"

মচার যথালয় (৩৩৬ নং চিংপুর রোড) হইতে 'বসস্থক' প্রকাশিত হইত। 'হরবোলা ভাঁড়ে'র ছার ইহারও প্রত্যেক সংখ্যার চার-পাঁচখানি বড় লিখে।-চিত্র থাকিত। চিত্রগুলি নিমতলা-নিবাসী সিরীক্রক্ষার ঘড়ের অভিত বলিয়া মনে হয়। 'বসস্থক' সম্পাদন ক্রিতেন স্থচার যথালারের অধিকারী প্রাণনাথ ঘড়; তিনি এই সমরে নবপর্যার 'রহ্ড-সম্বর্ড'ও পরিচালন ক্রিতেন।

অতঃশর ১২৮৫ সালের ভাত্র মাসে (ইং ১৮৭৮) সুরসিক ইক্রনাৰ বন্দ্যোপাব্যার চূঁচুড়ার সাবারণী বন্ধ হুইতে 'পৃঞ্চা-লন্দ্য' নামে "রস-প্রধান পত্র ও সমালোচন" প্রকাশ করেন। পত্রিকা প্রচারের উদ্বেশ্ব সম্বদ্ধে প্রথম সংখ্যার এইরূপ লিখিত হুইরাছে:—

"এই ত তবের হাটে রসের পসরা মাধার উপহিত হওরা গেল ৷ এই ত তবসাগরে বুঁদিল পান্সী ভাসান গেল ৷ এই ত তবের বানিতে আলু-বোড়ন ভ্রা গেল ! এই ভ জবের আগরে নানা দেল !
এই ভ ভবনীলা আগরভ হইল !
এবন দেবা বাউক—ভোমারই এক
দিন, কি আমারই এক দিন!

পঞ্চা-নন্ধ বাহির হইল, লোকসমালে এই অলোক-সামাজিক—
অলোকসামালই বলিভাম, কিছ
তাহা হইলে জমুপ্রাস ভল হয়—
এই অলোক-সামাজিক বর্প্তিকা
এখন নয়নানন্দদায়িশী হইবে,
তহিবরে আমাদের সন্দেহ নাই।
কিছ লোকে জিজাসা করিতে
পারে, এ আলোক কভ দিন
জন্মর ভারত-উদ্দল করিবে?
হর্ষ্য প্রতিদিন উদিত হন, কিছ
হর্ষের আলোক ভতি তীত্র—
অহ্ব্যান্দ্ররপা। চল্ল ক্রমে ক্রমে
কলা প্রদর্শনপূর্বক মানে একবার মান্ত্র প্রথানার আল্বিকাশ



করেব; তদ্ভিন্ন, পুরাতন কাহিনী অথুসারে চন্দ্রের কলস্ক
আহে ! নিত্য নৈমিন্তিক গৃহত্বের প্রদীপ—
"ত্বর্ণ দেউট যথা ভূলসীর ব্লে"—
মিটু মিটু করিবা অলে, বাতাসে নিবিবা যায়, এবং ইকা

ৰৱাইবার সমরে বীশ হারা উপস্থিত ক্র। তবে এ আলোক কেবন ?



ি 'বসম্বক'

এ আলোক কেবন ? গভীর ভাবে এই শুরু প্রাপ্তের উত্তর দিতে আমরা বাবা। এ আলোক—বলিরাই কেলি—এ আলোক করাল কাদম্বিনীর অল্লবিদারিনী সেলামিনী সদৃশ; ভৈরবী শ্লামার সমর-রদ-কালীন হাসির মত। ইহাতে হুগং চকিত হুইবে, শুন্তিত হুইবে, মন বিকল্পিত হুইবে, নোহিত হুইবে। ভবে আমাদের হুইবে, অপচ আনন্দে অবীর হুইবে। ভবে আমাদের হুবে এ কথা শোভা পার না। নাই পাইল, লেপা ভ ক্রিরা সেল। যাহা হুইবে ভাহা হুইবে। অনুষ্ঠবাদ, কারপ্রাদ, বিবাদ, বিস্থাদ কিছুতেই ভাহার প্রতিবাদ হুইবে না।

অসবরে বে বছু, সেই বছু—"গ্রখানেচ বভিঠতি
স বাহুব:।"—পঞ্চা-নন্দ সেই অসমরের বছু, পঞ্চা-নন্দ
সেই গ্রখান বছু। বছু দূর্শনের লোপে ভারতে হাহাড়ার
পড়িরা সিরাহিল; ঔরস পুত্রের অভাবে আরও এড়ার্যশ প্রভার পুত্রের ব্যবহা মহুবংহিভার আহে; সেই জড় বছু দুর্শনের অভাব হুরীকরণ জড় বছ-দুর্শন, আর্থ্য-দুর্শন ভার-কেশোহুব ব্যক্ত আভার ভার ভিকিং অঞা পঞ্চাং বরাতলে অবতীৰ্ণ হইলেন। এবন তাঁহাবেরও অভিন হলা—হুব ব্যাহান করেন বটে, কিন্তু সে বাবি বাওরার হুড— আর কি নীরব বাকিবার সমর? অতএব উঠ বছুগণ উঠ। কাগ ভারতের হিতরত, কাগো!— পঞ্চা-নক্ষ বরং উপহিত। (এবানে বুবিতে হইবে)— অতএব উপহিত।

পঞ্চা-নক্ষ মুদ্রু দেহে জীবন সঞ্চার জরিবে, পৃথিবী
নিঃজন্তিরা করিবে, অর্থাং যাত্ারা পত্রিজার- প্রাহক হইরা
ন্ল্য না দের, ভাতাদিগকে পুর—পুর শক্ত—আরও শক্ত
—আলীর্কাদ করিবে। দীর্থার্কগু।

'বল-দৰ্শন' প্ৰভৃতি সামৱিক পত্ৰ ; সেই ভ্ৰু মাসে মাসে দেখা দিবার আখাস দিয়াছিল। পাৱে নাই, কারণ বালালী—খ্ৰী-কাতি। খ্ৰী-কাতির এখন প্ৰতিজ্ঞা থাকে না ; প্ৰথম প্ৰথম ছদিন দশ দিন ; তাহার পরে—ভগবান্কি হাত !

পঞ্চা-নন্দ হংসময়ের বৃদ্ধ, সেই বৃদ্ধ অসাম্ভিক, যুখন সুরসং, ভুখনি সাক্ষাং। পঞ্চা-নন্দ শ্রীলোক নতে।

পঞ্চা-নজ্মের দর্শনী—যে বার যেষন মর্জি। আধুনিক "দর্শন" সমূহের অপ্রিষ বার্থিক মূল্য কেছ কেছ দিয়া থাকেন; সে শ্রেণীর লোককে এইমাত্র বলা বাইত্তেছে যে ভাঁছারা যথন চকিন্দ মাসে বংসর গণনা করিছা পরিছুই,

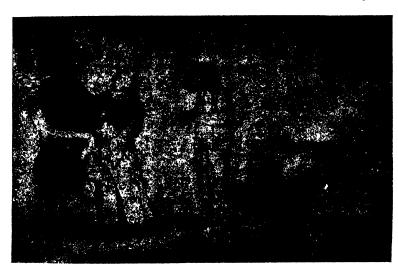


বাবে সাত্ সাত্ সাত্ সাত্ সাত্ বাক্ নেবো বাৰার, কোর্বো ব্যাপার, হবে সবে ভাক্ মোদের বেরিং বেঁচে পাক্। ('বসন্তব')

ভবন পঞ্চা-নক্ষতেও বাহা ইচ্ছা দিয়া রাখিতে পারেন, অঞ্জান্ত হাবে না! এবন আশীর্কার করি এই শুক্তির বৃক্তা, বেবতার ইল্ল, নন্দনের পারিকাত, স্নেদের পঞ্চা-নন্দ-জীর্বজীরী হইরা নিক্ষের আর্থনি এবং বশোর্ডি এবং অর্থন্তি এবং সর্কসম্বৃত্তির কামনা করিতে মুহন।—এবেন্।"

কিছ এগৰ সংবা) একাশের পর 'পকা-মক' ধ্যকেত্র বত সাহিত্যাকাশ হইতে সহসা অনুভ হব ।

১৮৭৯ সনে ইজনাথ ভবানীপুরে বাসা করেন। এই সময় ছানীয় মুবকয়ন্দ—কালীপ্রসম্ন কাব্যবিশারদ, ভ্ৰরচন্দ্র গলো-পাধ্যার প্রভৃতি 'পঞ্চা-নন্দ' পুনঃপ্রকাশের ভভ তাঁহাকে বরিয়া বসিলেন; তাঁহারাই কাগক চালাইবেন, ছাপাইবার সমন্ত ব্যবস্থা করিবেন, এইরূপ আখাস দেওবার ইজনাথ লিবিতে



জিংহ, নেকছে বাৰ ও মেষণাল (বিকু শর্মার হিতোপদেশ হইতে উছুত)

্র সিংহ । (একতম মেবের'পেট চিরিতেছেন, এমন.সমর নেক্ড়ে বাবের প্রবেশ) তুমি কে ? নেক্ডেব্র। হলুর আমি কুল্ল লমিদার। (মেবপালের প্রতি লক্ষ্য করিরা) এগুলি কি মহারাজের বাশের ি প্রকাপ

সিংহ। খ্রী, ইহারাই আমার মেদিনীপুরের প্রজা। তোমার প্ররোজন কি ? নেক্ড়ে। ধর্মাবতার ৷ আমি প্রজাপালন শিখিতে আসিরাহি। ('পঞ্চা-নন্দ', ২র কাণ্ড, ১ম সংখ্যা)

সম্বত হন। পুনৰ্জীবিত 'পঞ্চা-নন্দ' এবার দেড় বংসর এই ভাবে চলিয়াছিল :—

#### —)व कां**e** :

১ৰ সংখ্যা (পাক্ষিক) ভবানীপুর সুধাকর প্রেস ১৬ মাঘ ১২৮৬ (২৯-১-৮৬) ১১শ " (বাসিক) বর্জনান, বর্জমান প্রেস ১২৮৭ সাল (১৯-১-৮১) ১২শ " (৮-২-৮১)

#### -- Să 4/0:

sq " (0.-4-2)

'পশা-নদে' মাথে মাথে ব্যক্তির থাকিত, কিছ ইহা
নিয়নিতরপে প্রকাশিত হর নাই; ইহার শেব বুঝ-সংখ্যাটর
নলাটে আছে:—"বিবল বন্ধ-পঞ্চা-নন্দ অবাং বাহা পঞ্জিতে
বৃবিতে নারে মুর্থে লাগে বন্ধ। রস-প্রধান অসামরিক পত্র ও
সমালোচন।"

কালীপ্রসন্ধ কাব্যবিশারদের অনেক প্রাথমিক রচনা— বেষন, 'বলীর সমালোচক' প্রথমে 'পঞ্চা-নন্দে' ( ৭ম সংখ্যা, ১৬ বৈশাব ১২৮৭ ) ছান পাইরাছিল। 'বর্ণনতা'-রচরিতা ভারকনাব গর্ফোপাব্যারও ইছার লেবক ছিলেন। ৬ঠ সংখ্যার (১ বৈশাব ১২৮৭) প্রকাশিত বিজ্ঞাপনে প্রকাশ ঃ—"প্রকৃতি। বিজ্ঞান ও কবিভাষরী সমালোচনী মাসিক পঞ্জিকা। বর্গনাব

বৈদাৰ হাস হইতে প্ৰকাশিত হইভেছে। স্থাম বাবিক মূল্য দেড় টাকা।" 'প্রকৃতি'র সম্পাদক **ছिल्नि-कां**वाविभावमः। ७ 'शका-নক্ষে'র ৩য় সংখ্যায় (১৫ ফাছুন ১২৮৬) মুদ্রিত বিজ্ঞাপনে প্রকাশ : "কতিপয় বছুর অস্থরোধে আমরা 'ক্ল্বনা লভিকার' নাম 'ক্ল্ললভা' রাবিলাম এবং 'হর্ণলভা' প্রবেভা ইহার সম্পাদকের ভার এহণ করি-লেন। ঐভূধরচন্দ্র গলোপাধ্যার, কাৰ্য্যাধ্যক ।" তাৱকৰা**ৰ গলে**।-পাব্যার ৭ম সংখ্যা হইতে কল-লভা'র সম্পাদক হন জানা হাই-ভেছে; কারণ ২য় সংখ্যায় (১ কান্তন ১২৮৬) মুদ্রিত বিজ্ঞাপনে পাইতেছি: "কল্পলতার ৬ঠ সংখ্যা পৰ্যাত প্ৰকাশিত হইৱাছে।"

'পঞ্-নন্দ' সভ্য সভ্যই "জাৰ-গৰ্ভ উপদেশ, সৱস ব্যঙ্গ, ভীত্ৰ বিজ্ঞণ এবং পবিত্ৰ আমোদের বনি" ছিল। ইহার বছ রচনা

ইজনাবের 'পাঁচু ঠাকুর' এছের প্রথম ছই বতে পুনর্দ্বিত হইরাছে। কৌতৃহলী পাঠক গ্রন্থলির সরস রহত উপভোগ করিতে পারেন।

আমরা ব্যক্তিত্র-সম্বিত তিম্কী মাত্র সাম্বিক-প্রিকার সামাত পরিচর দিলাম। এই দাতীর আরও পত্র-প্রিকা সেকালে বাহির হইরা থাকিবে।

<sup>\*</sup> পক্ষ সংখ্যার (১২ চৈত্র ১২৮৬) 'প্রকৃতি'র বিজ্ঞাপনের সহিত ভবানীপুর হ্যাকর প্রেসে বৃত্তিত, নেহালটাদ-রচিত 'জেলানা জন্তরান' নামক "অভিনৰ সহত কাব্যে"র বিজ্ঞাপন আছে; ইহা, খুব সম্ভব হল্প নামে কাব্যবিশার্থের রচনা।

# প্ৰবাহ

## **এ**বিভূতিভূষণ গুপ্ত

পর দিন বেলা চারিটা নাগাদ স্থনির্বলের যোটর আসিরা হোষ্টেলের সমূবে ইাছাইল। ডাইভারকে সরাসরি কেরত পাঠাইতে পারিলেই সে বুলী হইত। কিছ ভার্যতঃ ভাহা সম্ভব হইল মা। তাহাকে যাইতে হইল। ডুটিভার মুম্মকে স্থিনির্বলদের বাড়ীর কম্পাউতে হাড়িরা দিরা অভ্যন প্রহান করিল। তাহাকে রীভিয়ত বাভ মনে হইল।

স্নির্মানকে সাকাং বাহির মহলেই পাওরা গেল। একমুব হাসিরা সে অপ্রসর হইরা আসিল, কহিল, এসেছ তা
হলে ?

মুগার ক্বাব দিল, কাল দেখা না করে ওভাবে একটা চিঠি রেখে এলে কেন ?

ত্মনির্দ্ধল হাসিয়া কহিল, কারণ তোমার সলে বসে তর্ক করবার সময় কাল আমার হাতে ছিল না।

বুমর মুখে এক প্রকার শব্দ করিয়া কহিল, ও···কিছ এই জন্মরী তলবের কারণ ক্রিজেস করতে পারি কি ?

ত্ৰিৰ্দ্মল কৃছিল, কিজেল তৃষি বৰাছানেই করো। আক্তের নিমন্ত্ৰণ আমার নয়, আমার বোন রুবীর। তার আক্তম্বাদিন।

মুখর ক্ষ কঠে কহিল, এ ভাবে আমার অপ্রন্ত করা ভোষার উচিত হয় নি খুনির্মল। তিনি আমার সম্পূর্ণ অপরিচিতা হলেও—এই সব সা্যাজিক ব্যাপারে—ছি ছি খুনির্মল, তোমার একটু কাওজান পর্যন্ত নেই।

স্নিৰ্দ্ধল কথাটা মানিয়া লইয়া কছিল, ও দিনিষ্টা আমার চিরদিনই একটু কম। কিন্তু আপাততঃ তৃমি ওপরে বাও, আমি কিছুক্দের কভে বাইরে যাছি।

মুম্ম বিশ্বিত কঠে কহিল, তুমি বেরিয়ে যাবে আর আমি···

স্নিৰ্দ্ৰণ কৰিল, তাতে কিছু অগ্নবিধা তোমার হবে না। 
ক্লবী ব্যেছে তার বন্ধু-বাদ্ধবীরা' ব্যৱহেন। ধেৰতে ধেৰতে
আমি এনে শহবো।

বাৰা দিৱা মুখ্য কহিল, তার চেরে আমি এবানেই ভোষার ভঙ্ক অপেকা করছি।

স্নিৰ্দ্মল কহিল, সেচী ভোষার ইচ্ছে অবস্থ ক্ষৰীর যদি কোন আগত্তি না থাকে ।

ক্লবী বেধা বিল । স্থানির্বল তাহাকে উচ্চেশ করিরা কহিল, ইনিই বুবর ভটাচার্ব্য ৷ তোষার অতিথি ৷ আর এই আয়ার বোন ক্লবী ৷ স্থানির্বল চোধের পলকে অবৃত হইরা সেল । ক্লবী ছুই ক্রভন এক্ত ক্রিরা নম্কার ক্রিরা বলিন, আপনার কথা দাদার মুখে আমি এত বেশী শুনেছি যে, আপনাকে আর অপরিচিত বলে ভাবতে পারছি না। বছ প্রশংসার সঙ্গে দাদ। আপনার গানের প্রশংসা ক্রভেঙ ভোলেন নি।

মুখার মুছ প্রতিবাদ করির। কহিল, প্রবির্দ্ধ একটা আন্ত পাগল।

···কে মৈজেরী···আর ভাই। ক্রন্থ আসেনি বুঝি। কি হ'ল আবার ভার। মুদ্দরের প্রতি দৃষ্টি কিরাইয়া বিতহার্ডে কহিল, বস্তুন। মুদ্ধর বসিল।

রুবী নৈত্রেরীকে বসাইরা নিজেও তার পাশে বসিরা অনর্গন বিকিরা চলিল, কি মেরে এই রুফ্—অমূব ওর লেগেই আছে। আৰু মাধাবরা, কাল ইন্সিল অপারেশন, পরভ অর অর তাব। অহিলার আর অভাব নেই। রেপু ত কোন করে বিরেই বালাস, বলে, মার শরীর বারাপ। মাদের আবার শরীর ভাল থাকে কবে। কার কবা বলছ লিলিধির—দাদা নিজেই গেছেম আনতে। এসে পছবে এবুনি। কিছু রুজু এলো না, গাইবে কে ?

নৈত্রীর প্রান্থ বৃদ্ধ কঠে কবী কহিল, দাদার বছু।

এ ভেরি শুড্ছলার। উহাদের কথা ভার বেশীদূর

অঞ্জন হইতে পারিল না। কবীর বাছবীর দল ভাসিতে

স্কুক করিরাছে। শেষ পর্যন্ত দেখা গেল কছু এবং রেণ্ড
ভাসিরাছে।

ক্ষবি কহিল, কি ভাগিা, আৰু বহালভবিরতে আছ ক্ষয়।
ক্ষয় কহিল, ভাল আর কোণার ক্ষী-দি, দার্ছ-ভাশি
লেগেই আছে। গলার কিছু নেই।

নীরা হেনার চোবের বিকে চাহিরা মুব টাপিরা একটু হাসিল। প্রকাজে কিছু কহিল না। কিছ রেণু আবার লাইবাবিনী, সে বামিল না, কহিল, কি ভাগ্যি গান শিবিনি, নইলে সন্ধি-কাশি কি আমানেরই হেন্ডে কবা কইত।

ছবি মুখে পিছু না বলিলেও প্রকারাভবে রেণুর ক্থারই সার বিল। ব্যর বলিরা যে একট পুরুষ মাজ্য এবানে উপছিত আছে ভাষা যেন উচারা ঝাছের মধ্যেই আনিল না। মুখ্য গ্রাফ্পথে বাহিরে দৃটি রাধিরা একের রক্ষারি ক্থাবার্ডা ভবিতেছিল, আর ত্রিবলৈর বিলবের জন মনে মনে অনুবোগ ভরিতেছিল।

এবের ক্থার কাঁকে ক্রবী একবার মুখরের নিকট ক্ইতে বুরিরা গেল। মুহ কঠে কবিল, আগনি বেন কিছু মনে ক্রবেন না মুখর বাবু। সামান্ত দোষক্রটে ওরা ক্ষমা করবে না। তাই···যাক ঐ যে দাদাও এসে পঞ্চের।

পুনির্দ্ধন এতক্ষণে কিরিল। সক্লের দৃষ্টি এক সলে তার প্রতি আরু ইইল। সাধারণ বাঙালী মেরের মত বাছাহীন সে নর। অটুট বাছা এবং বৌবন-লাবণ্য তাকে অপূর্ব্ব প্রীমণ্ডিত করিরা তুলিরাছে। মুন্মর বিশ্বিত মুন্ধ দৃষ্টিতে চাহিল। ততক্ষণে স্থনির্দ্ধন মুন্মরের কাছে আসিরা পড়িরাছে। মুন্মরের এই বিমুক্ক ভাবট স্থনির্দ্ধনের দৃষ্টি এড়াইল না। ঠোটের কোণে একটু বাকা হাসি মুন্থর্ত্বের কন্য দেখা দিরাই মিলাইরা পেল। লিলিকে কহিল, ইনি মুন্মর ভট্টার্চার্ঘ্য। আমার বিশিষ্ট বন্ধু। লিলি স্থিক হাসিরা মুন্মরকে নমখার ভানাইল।

লিলিকে দেখাইয়া পুনক্ত স্থনির্দ্ধল কছিল, জার ইনি হচ্ছেন লিলি সাভাল। এবারে বি-এ দেবেন।

লিলি মুন্নরের পাশে একথানি চেরার চাঁনিরা লইর। বসিল এবং বৃহ হাসিরা স্থনির্মাক্ত কহিল, আপনাকৈ ত অতিথি অভ্যাগতদের নিরে ব্যস্ত থাকতে হবে, আমি বরং মুন্নর বাবুর সক্ষেই ভতক্ষণ গল করছি।

বেরেদের মধ্যে বেশ একটা চাপা গুল্পন উঠিল। লিলি একবার চারি দিকে চ্টি বুলাইরা লইরাই ব্যাপারটা অনুষাম করিরা লইল। কিছ সব সমর ভূচ্ছে ব্যাপার লইরা মাধা ঘামান লিলি পছল করে না। লে অসজোচে মুম্বরের সহিত ঘনিটভাবে পরিচিত হুইতে বছপরিকর হুইল। মুহ্কুঠে ক্ষিল, আপনি চুপ করে আছেন বে ?

র্থর হাসিমূর্থে ক্ষিল, গল করার যত বিষয়বন্ধ না থাকলে বা হয় আমার তার থেকে কিছু বেশী হয় নি। আপনি নিকেই বনুন না আমি বিধ্যে বলেছি কিনা ?

লিলি সশব্দে হাসিরা উঠিল।

ক্লছ কহিল, লিলিদির সব কিছুভেই বাড়াবাড়ি।

मौदा करिन, निष्क वर्षात-

রক্ আরও বানিকটা বোগ করিরা দিল, তবু যদি বা আবরা হাঁড়ির ববর ভাগতান।

বেণুবাৰা দিলা কবিল, তা বলে লিলিবিকে একা সা করে বাকা বালু না।

দহ ছবিল, রেপুর বে বেকার চান কেবছি।

तार् वह ताप नक्कारत कविन, क्योंकी वित्या बरनानि कहा।

খালোচনাটা খার বেপিচ্ব খঞানর হইতে বা বেওবাই

মুক্তিসকত। রেপুকে ওরা তর করে। রেপুর মুখ বড় জালিগা। সত্য কথা সোজা করিবাই যদিতে দে ভালবাদে।

রেছ্ থারিতে পারিল না। বলিরা চলিল, অভারটা লিলিদির নর, এ হচ্ছে আমাদের ক্ষত ইবা। ভাকে ছুঁতে পারি না বলেই নিন্দে করা। আর এই অভার কাজে আমাদেরই আনক হয় সবচেরে বেনী।

ইহাদের আলোচনার ধরণে রুবী একটু চণ্ণ হইয়া উঠিল। বেণুকে বিষতি করিয়া কহিল, তুই ধাষ ত রেণু। অমন বড় বড় কথা আমরাও ছ্-চারটে জানি। রুবী তাহাকে বিরুত্ত হটতে ইদিত করিল।

রেণু নির্কিকার ভাবে বলিয়া চলিল, তথু জানা থাকলেই হর না কবী। সমর মত তা প্রকাশ করবার লাহল থাকাও দরকার। তেরেণু হয়তো জারও কিছু বলিত, কিছু সহসা সীতার জাবির্ভাবে সে থাবিল। কবী কহিল, এতক্ষণ কোথার ছিলে সীতা ?

नौषा करिन, अपिटकः। निभिप्ति ब्राउटिनव क्रिकोरिनकै। वक्र ठवरकोतः। अकठी नम्ना छूटन मिनामः।

সকলে একসংক হাসিরা উঠিল।

সীতা একটু অপ্রস্তত হইল, কহিল, ঐ তো তোনাদের দোব। বেট তোনাদের মনোনত হবে না সেধানেই করবে ঠাটা। বিশাস না হর দেবে এস ভিতাইনটা।

কিছ ভিনাইন দেখিতে বাইতে কেহই আগ্রহ প্রকাশ করিল না। আবহাওরাটা বেন অকলাং বিনাইরা পজিল। কিছ তা কপলালের কট। স্থান্ত্রল আসিরা পুনরার হৈ চৈ স্থান করিরা বিল—হোপালের। এতটা সমর তোমরা তথু গাল গরেই কাটরে বিলে। না বেবছি একটা হারনোনিয়ান, না সেতার, না এআছ। বালা! ওবিকেও বেবছি ওরা বেশ গল কেনে বিলেছ। হুটই বুক-ওরার্থ। বিলেছে তাল। বেনন মুনর তেমনি লিলি। এই বে ক্লছও এসেছ। তা বলে বেপুকেও আৰু হেকে দেওরা হবে না। কিছ তার আসে ব্যৱপাতিওলো আনাতে হর। স্থান্ত্রল অকারণে বিভন্ন হৈ চৈ করিল।

ক্ষুকেই সর্বাধিষ গাছিতে হইল। ওর গলা বেল নিষ্টি।
টানিরা টানিরা গানকে ক্রান্তিমগুর করিতে সে পাঞা।
বেবেরা ওর বিশেষ তক্ত। কাজেই পর পর ভাহাকেই
বহুত্ব গাছিতে হইল। তার পর আসিল রেগুর পালা।
বভাষত সে একটু গলা হাভিরা গার। অনাবর্তক নাত্রাগুলিকে
বীর্ষতর করিরা তোলে বা। গার ভাল। কিন্তু অক্টের
অভাব। কাজেই আর্ভেই ভাহাকে শেষ ক্রিতে হইল,
এবং ক্লুকেই পুনরার গাহিষার বত অক্রোব করা হইল। ক্লু
হয়ত গান করিবার বাত প্রভাত হইরাহিল ক্রিভ বারবাবে

ষ্বৰৰ এক গোলবোগের। প্ৰষ্ট ক্রিল। ক্ৰিল, উনি ড' বেশ গাইছিলেন। ওঁকেই আবার গাইতে বলা হোক না !

ক্ষম্ অবজ্ঞার দৃষ্টিতে এক বার ব্যবের প্রতি চাহিত্র।
দেখিল। রেণু অতটা লক্ষ্য না করিরাই পুনরার স্থক করিল।
কঠবর স্বের উপর স্ত্য করিরা চলিল। ব্যব একাঞ্রভাবে
ভনিতে লাগিল। অবশেষে রেগুকেও বাধিতে হইল। ক্রম্ম পুনরার অক্ষরত হইরাও আর গাহিল না।

স্থনিৰ্ম্মল কৰিল, ৱেণু এই অন্ধ কালের মধ্যে বেশ নিৰ্বেছ छ। আমি অবাক হয়ে শুমহিলাম।

রেণু লক্ষিত ভাবে মাধা নত করিল। রুদ্র চোধে কল
আসিরা পঢ়িল। তার কাহে শ্নির্নলের নতামতের একটা
বিশেষ মূল্য আহে। শ্নির্নল পুনরার বলিরা চলিল, সেই
বোবা রেণু, যে বর্ঞাম করতে পাঁচ বার ঢোক সিলেছে…
ভান মূল্য, এরই নাম প্রতিভা। মাহুষের মধ্যে যদি এ বস্ত্র
বাকে সামাত চর্চা করলেই তা প্রকাশ হরে পড়ে। রেণুর
মধ্যে সূকান হিল সেই প্রতিভা।

রেণু হাসিরা কেলিল। কহিল, এর পরে কিছ সভ্যিই লক্ষা পাব নির্মাল-লা।

স্নিৰ্দ্ৰণও হাসিল, কহিল, তা বলে ভোষার আর গাইতে বলা হবে না বেণু। এ বাবে গাইবেন লিলি। সকলেই একসংক্ত তাহাকে সমর্থন কবিল।

নিনি একটু হাসিরা কহিল, গান আমি ভাল জানি নে, কিছ তা বলে কুপণ নই। নিনির গানের পরে অনির্বাল আর এক কাও করিরা বসিল। মুখরের একবানা হাত ধরিরা কতকটা নাটকীর তলীতে কহিল, মুখর ভটাচার্যকে তোমরা ভ্রু এক জন ফুডী হাত্র হিসাবেই জান কিছ ভগবান বে ওকে বিতে কোন দিক বেকেই কার্পণ্য করেন নি, এবারে তা প্রমাণ হবে।

র্মর চাপা গলার কবিল, পাগলামি করো না ত্রনির্মাল।
ত্রনির্মাল পামিতে পারিল না। বলিরা চলিল, ইনি এক ধন
ভাল গারকও। ভোষরা অনুষতি দিলে ভোষাদের হরে
আমি ওকে অনুরোধ করতে পারি।

একটা বৃহ শুরুণ উঠিল, নিক্তর নিক্তর। রুপুর গলার আওয়াক সকলকে হাপাইয়া উঠিয়াতে।

ৰুমৰ সিত হাজে কৰিল, ত্থনিৰ্মলের বাছিরে বলা ফভাব। দইলে আপনারাই বনুন ত কলেজ হোঠেলে কি আর সনীত-চর্চা সম্ভব হয়। তা হাজা আপনাদের ঐ অরগ্যানে গাইবার ডেম্বৰ অভ্যাস আনার নেই।

পুনিৰ্দ্মল কি বলিতে বাইতেছিল। তাহাকে গামাইরা হিন্তা রুম্ব কবিল, আমরা কিছ কালোৱাতী ভবতে চাইছি বা।

ক্ষা ক্ষটৰ অভানিহিত খোঁচাট বুমাকে বি'বিল কিছ লে হাসিয়ুৰেই জ্বাব বিল, আগৰি আবাৰ এতি অবিচাৰ ভবৰে। এবাৰে বে বাঁরা ভবলা নিবে গানের ক্সরং চলহে না সে ভ আনি দেবতেই পাছি। তা হাড়া---ব্রর বৃহর্তের ভভ বানিরা বেন একটু হুচ কঠেই ক্রিল, ভার কাছে আনি গানের ক্সরং ক্রব। এ সাবায়ণ ভানটুকু আমায় আছে।

বে বোঁচা কন্ম ব্যৱকে বিয়াছিল ভায় চভূগুৰ্ব সে কিয়াইয়া বিয়াছে। কথাটা ব্ৰিয়াই কন্ম নীয়ব যবিল।

ষ্ণর তার এই কঠোর বাবহারে একটু লব্বিত হইল।
বুহুর্বেই সে সর পান্টাইরা বিনীত কঠে কৃহিল, গান-বাবনার
সতাই আমি অভ। আর সে কৃষা আমি আগেই আপনাদের
ভানিরেছি। তব্ও স্থনির্দারে কি ছেলেমান্থরি দেবুন দেবি।
মাবে থেকে কত কি বাব্দে বকে আমি মিব্দেই হলাম
অপ্রস্তা। সতাই এর কোন আবস্তুক ছিল না। কিছু সে
বাই হোক, অসৌক্ত যদি কোষাও বা প্রকাশ পেরে থাকে তা
আপনারা মনে রাধ্বেন না।

কোন কথার কি প্রসদ আসিরা পছিল। ত্মনির্দ্ধল কহিল, ভূমি অত্যন্ত প্রসদৃত হরে পড়েছ।

মুখ্য হাসিয়া এক সদে অৱগ্যানের গোটাকরেক রিড চাপিয়া বরিল। মুখ্য গাহিরা চলিল—একের পর এক। কাহারও অহুরোবের অপেকার রহিল না।

কছর মুখে কে বেন এক হোপ কালি মাধাইর। দিল।
রেণু উদ্ধৃসিত কঠে প্রশংসা করিল। আপনি বে কত চমংকার
গান করেন। লিলি কহিল, গানে আপনার সভ্যিকারের
প্রাণ আছে। ফ্রবী কহিল, দানা কিছ সভ্যি সভ্যিই মিধ্যাবাদী নর। রেণু বেন কিছুতেই থামিতে পারিতেহে না।
চাপা কঠে লিলিকে কহিল, ভগুই কি প্রাণ লিলি-দি। প্রাণের
মধ্যে আভন ধরিরে বের। কি স্ক্রেন্তা কঠবর।

দিলি বেণুর বাহৰুলে ইবং চাপ দিয়া কহিল, সৰ ক্ৰা সকল সময় বলা চলে না। বলা উচিতও নয়। এ ক্ৰাটা মুক্ৰার মত ব্যেস এবং বুদ্ধি তোমায় নিক্তর ক্ষেত্রে রেও।

বেণু একটু লব্দিত কঠে কহিল, আমি কিছু কিছু তেবে বলি নি লিলি-দি।

নিনি হাসিন, কহিল, তেবে এ কথা কেট প্রকাশ করে না তা আমি কানি। উতরে হাসিরা কেলিন।

क्रवी बांबारेन, बांहार्या श्रवण ।

ব্যর অক্সাং আবিকার করিল বে, এই ছই বকীর সে বৃট হলও পকে নাই। লিলি, রুছ, রুবি ও বীরার মাতে ধেন বানিকটা একার্রতা সে হারাইরা কেলিরাছে। ওপের পাড়ীর বলবলানি, ভাষার স্থতীর ব্যঞ্জা, চোবের ঘুট্টভে বিহাং-বিজ্ঞাব---এর লবকিছুই চোবের সমূবে একটা মারাকাল বিভার করে। স্থানির্দ্ধনের স্থান্ডিভ হল-হরের লারি নারি বৈগ্যতিক আলোর চোধ ৰলগানো ছাতির পাশে ওর। যেন এক একট বিহাং-ৰলক। মঞ্যার সহিত কোণাও এদের একতিল মিল নাই। মঞ্যার শাভ ভাম মুধ্তী, তার লাজ-নত্র চোধের অকপট দৃষ্টিভদী মুম্মরের বুকে কোন দিন বছ ভোলে নাই, কিছ একখা সে নিঃসভোচে বলিতে পারে যে, মঞ্যা তার প্রশাভ বুকের মাঝে নিঃশব্দে ভাসিয়া বেড়াই-তেছে। কোন আলোডন নাই, বঞা নাই; নিঃসভোচ, নিক্রপত্রব এবং নিঃশব্দ।

মন্ত্রে আৰু হঠাং নিৰেকে এ ভাবে যাচাই করিবার বাসনা ভাগিল কেন ? নিভের ভজাতেই উহাদের প্রতি হয়তো তাহার বানিকটা হুর্বলতা আসিয়া পড়িয়াছে। মুম্বর সচেতন হইয়া উঠিল। কিসের বস্ত এসব অনাবস্তক যুক্তি। এ ক্ষেন ভার মনের বিলাসিভা ! মুখ্য নিখেকে নিবে ভিজাসা करत. এদের নিৰুব বলিতে আছে कि ? এদের চালচলন, কণা वलात छनी-नविक्रत मर्यारे अवकी आंगरीन छे दिनिहा আছে। চমকপ্রদ-কিন্ত অগার। ওদের মনের ধবর গে রাখে না কিছু বাইরের যা, তা মনকে মাতাল করিতে পারিলেও একান্ত ভাবে কাছে টানিতে পারে না। ওরা কণপ্রভা, মুহুর্ভের আনন্দ। ওদের সন্দে লইয়া মোটরে হাওয়া বাইতে ষাওয়া চলে। পাশে বসাইয়া সিনেমা দেখা যাইতে পারে। টেনিসের পার্টনার করিলেও চমংকার মানানসই হয়, কিঙ পল্লীর নিভূত কোণে একট শান্ত ফুলর সংসার রচনা করা সম্ভব নয়। ওরা সব কড়ের মন্ত হাওয়া, গ্রাম্য পর্ণকৃটির I FF CO EVIS

সহসা মুখ্য আপন-মনেই হাসিয়া উঠিল। এ এক আছা পরিহাস বটে—যেন উহাদের কেহ তার সহিত সংসার রচনা করিতে উদ্যোগী হইয়াছে—যেন তার জীবনের সহিত জ্ঞাইয়া পঢ়িতে চাহিতেছে। মুখ্য ইংরেজী বইয়ের খানকরেক পাতা পর পর উন্টাইয়া গেল, কিছ তার চিছার বারা অপরিবর্তিত রহিল।

উহাদের মধ্যে লিলির গতিবিধি বেশ সংবত। কথাও কম বলে। ওর ধরণ-ধারণ জালাদা। এই উগ্র পরিবেশের ডিভর হইভেও সুমির্শ্বল নির্মাচনে মধেই ফুতিত্ব দেখাইরাছে।

অকশাৎ মুখর বই বন্ধ করিয়া রাখিল।

মঞ্যার বাবাও রীতিমত বনী। কিছ অর্থের উৎকট তীত্র
প্রকাশ কোবাও নাই। বিশ্বর স্ট্রির অবকাশ তারা দের
না। যেন সাধারণের এক জন। এক মুহুর্তে মুন্ধরের মনটা
প্রাণাড়ের একথানি স্থামল পরীর পবে বাবিত হইল।
ওবানকার সবই যেন তার চেনা—তার বড় আপন কন।
তার কীবনের প্রতিটি বাপে জড়াইরা আহে। ওবানে
তাকে সমূচিত হইতে হয় না। লারিছ্যের করু মুঠা বেবা
বের না। ওবানকার পাবীর গান, নদীর কলতান, কেলেবের

কাল কেলা, নক্ষণটিত জাকাশ, পরপারের বৃক্লেণীর স্থান হারারপ, হিন্ন নাপিতের কুঁডেমর, রাধু বোষ্টমের রামপ্রাদী স্থান, মঞ্বাদের তিন মহল বাড়ী—সব যেন গায়ে গায়ে গাড়াইয়া জাছে। একের সঙ্গে অপরের যেন নাড়ীর সম্বর বহিরাছে।

ষ্মর তার হইয়া গিয়াছে। প্রাথের অসংখ্য স্থৃতি তার মনকে বিরিয়া আছে। তাহার মনে হইল যেন সে নদীর তীরে তাম প্রাদলের উপর দেহ বিহাইয়া মঞ্যার কোলে মাধা রাখিয়া সাত সন্ত্র তের নদীর পারের গল্পে মাতিয়া উঠিয়াছে। চতুর্দিকের অগংসংসার যেন বিল্প্ত হইয়া গিয়াছে। মঞ্যায় একখানি কোমল হাত শিধিল ভাবে তার কপালে তাল, আর তার করেক গুলুছ চূর্ণ কুছল বাতাসে উভিয়া আসিয়া য়্মরের চোবে মুবে মুহু পরশ বুলাইয়া দিতেছে। বুকে তার কভ কথা—যা ভাষার অভ্যতায় গুঞ্জিয়া উঠিয়াছে। কে আছে তার সাক্ষী। উর্ল্পের উলার-গন্তীর নীলাকাশ আর নিয়ে পলায় বরম্রোত, যাহা অনাদিকাল বরিয়া কত সদীত স্কি করিয়া চলিবে। কত দিনের এমনি কত মধুর শ্বৃতি তার কাছে অমৃল্যা। তার মন-মঞ্বায় অক্সর সম্পদ।

স্নির্দ্ধনের গলার সাড়া পাওয়া গেল, মুখয় আছ ? খরে পা দিরা চিংকার করিয়া উঠিল, আঃ । ডেডকুল । এই বিকেল বেলাও বই নিমে বসে আছ ।

মুখ্য চোৰ তুলিয়া চাহিল। কোন কথা কহিল মা। অনিৰ্থাল পুনৱায় কহিল, মেয়েদের কল্পনাশক্তি দেবছি আমাদের চেয়ে ঢের বেশী।

विचिष्ठ कर्छ मुख्य विशेश, अर्थार...

প্রনির্দ্ধল সহাত্তে কহিল, লিলি ভোষার ঠিক চিনেছে। সে বলে, বাহিরমুখো প্রাণ্ট নাকি দেখলেই চেনা যার। অর্থাং ভোষার গ্রন্থকীটন্ত সম্বন্ধ কি সে একটা ধারণা করে নিয়েছে। স্থনির্দ্ধল হো হো করিয়া ধানিক হাসিল। কিছ ভাহাতে মুম্মরের বিশ্বর কিছুমাত্র হাস পাইল না। সে একটু বাকা উত্তর দিল, আমার সম্বন্ধে এই ধরণের আলোচনা ভ বাভাবিক এবং স্থাধ নর স্থনির্দ্ধণ। ভা ছাড়া আমার সম্বন্ধে তিনি কভটুকু ভাবেন। কৃতুক্ষণের পরিচয় আমার সম্বন্ধে ভার।

মুখবের উব্জির তীকুতার স্থনির্দ্ধল সূর পাণ্টাইল। কৃহিল, ভাবটা লিলির হলেও ভাষাটা আমার। কিন্তু তোৰার কৃট তর্ক গামাও। সভ্যি কথা বলভে কি মুখর, তোমার আইন পড়া উচিত ছিল। সে বাই হোক, এখন এসব বাজে কথা রেশে চলো বাই গানিক বেড়িরে আসবে।

ৰুমৰ হাসিলা কৃহিল, সে রক্ষ ত কোন কথা ছিল না তুনিৰ্ম্বল। সুনির্ম্বল কহিল, লিলি অবস্থ বলেছিল—বেড়াবার সময় হয়ভো ভোষার হবে যা। কিছু আমি যে ওদের কথা দিরে কেলেছি মিছু।

ষ্বর দীবং বিরক্তিপূর্ণ কঠে করিল, আমার সহকে লিলি বেবীর এই বরণের মতামত প্রকাশ করা বেমন নির্বক্ ভোমারও তেমনি কথা দেওরা অনাবস্তক । আর তা ছাড়া ওরাই বা কারা বাদের কাছে ভোমার কথা রাবতে না পারাচী একটা মন্তবভ অপরাধ বলে গণ্য হবে।

সুনির্দ্ধল রাগত কঠে কহিল, খামোকা তর্ক করে একটা লীব ক্রিবেট করে। না মুলর। রুছ, রেণ্, রুবি সব তোমার ক্রে মোটরে অপেকা করছে। এর পরে তারা এসে উপস্থিত হলেই কি ধুব ভাল হবে।

মুখর হাসিল। কৃহিল, তাঁরা যে এবানে আসবেন না বা আসতে পারেন না এ কথা তৃমিও কান, কিছু আমি ভাবছি ভূমি কি তেবে ওদের এই হোষ্টেল পর্বান্ত নিয়ে এসেছ। আক্র্যান-তোমার কি একট। সাধারণ মানসন্মান আনও নেই!

সুমিৰ্শ্বল উক কঠে কহিল, না নেট। কিছ ডুমি কি জনবে ভাট জানতে চাই।

হাসিমুৰে মুন্তর কহিল, সে কথা কি আমার বলে দিতে ছবে: আমার হয়ে তৃমিই বরং তাঁদের কাছে একবার ক্ষা।
চেয়া, কিন্তু তৃমি আর দেরি করো ন। তাঁরা সব অপেকা
করছেন।

সুনির্দান চলিরা যাইতেই ব্যরকে অভান্ত ব্যক্তাবে কাগকপত্র বাঁচাবাটি করিতে দেখা গেল। কিছুক্লণ পূর্ব্বে সে বঞ্চার একখানি ছোট কটো পাইরাছিল, উহা অপজত ক্ইরাছে। নিশ্চর ইহা সুনির্দ্ধলের ফাজ। টেবিলের পাশে ইাড়াইরাই সে কথা কহিতেছিল। বৃত্তর একটু চিন্তিত হইল। সুনির্দ্ধলের ঢাক পেটানো বভাব। অবপ্র ব্যর্বের ইহাতে কিছুই আসিরা যাইবে বা। কিছু বেচারী মঞ্চ্যা হরতো ওর জানিত বহুলে মুখে আলোচিত হইবে। উহাদের প্রগতিশীল সমাজের আবেইনী হরতো ভাহাকে অকারণে বাচ আযাত করিতেও কৃত্তিত হইবে না। ওলের এই অভি আব্নিকভার সহিত ভার বাপ বার না। তার নিক্স একটা নীতি ও মত আছে—বার ব্যতিক্রম সে পছক্ষ করে না।

মুখর - উটিরা পদিল। আর্ক এই বৃহুর্বে আর পুডকে মনোনিবেশ করা সভব হইবে না, বরং কিছুক্দণ বেডাইরা আসিবার প্রবোজন সে বোধ করিল। হোষ্টেলের এই দেয়াল-ধেরা অপরিসর বরধানি ভার নিকট বির্ভিকর ঠেকিভেডে।

মুখর রাজা বাহিরা চলিয়াছে। অগণিত ক্ষম্প্রেভ। একটা প্রাণহীন কাতির নিঃশব্দ পর্য-চলা। কারুর মুখে বলিঠ হাসি নাই। চলমান ক্ষনতার নিআগ মিচিল। মুখর চলিয়াছে। কোবার কোন ভিবারী দৃষ্ট আকর্ষণের ক্ষ সকলৰ আবেদন ভানাইতেছে, সিনেয়া বুকিং আপিসে কি পরিমাণ ভিড় জমিয়াছে, হেদোর জলে কে আ্লু জ্বাগত ছুই দিন বরিয়া একাদিজনে সাঁতার কাইতেছে—এসব ববর ভানিতে তার কিছুমান আগ্রহ নাই। তার চেরে পল্লীতে পল্লীতে এবার বানের ছড়াছডি…পল্লা এবার লাভ বুর্তি বারক করিয়াছে, প্রামের ছঃবছ্রজা নাই…তাদের মুবে চোবে প্রামের ভাল্লম দেবা দিয়াছে—এ ববর যদি কেছ তাহাকে দেয় মুবর তাকে বুলিমনে একপেট বাওয়াইয়া দিবে।

মুখ্য চমকাইরা উঠিল, কে--- অবিনাশ ? বচ্চ চমকে
উঠেছিলাম। ডাকলে কেন ? সাজেস্থান চাইছ ? হোষ্টেলে
যেও। সব কি আর মনে করে বসে আছি। কি বলম ?
রেকর্ড ব্রেক করেছে--- প্রস্কুল বোষ ? তাতে আরার কি ।
বলতে পার বেকার সমন্তার কোন সমাবানের পথ বেরিরেছে ।
হা হা অরচিন্তার সমাবান। কি বলছ ? বাঙালী ছেলেরা
তথ্ হপ্প দেখতে জানে, কাজ করতে জানে না ! মিথ্যে কথা ।
আর এই হীন মিথাাই বাঙালীকে তাদের সামাজিক এবং অধ্নৈতিক জীবনে দিন দিন হর্জন করে কেলছে। তাদের আছপ্রত্যন্তের ভিভিকে শিধিল করে দিছে । না-না অবিনাশ
ত্মি হেসো না । সভ্যিই আমি বাজে কথা বলছি না । কি
বল্লছ কাল যাবে ? যেও।

মুখ্য ফ্রুভ অপ্রসর হইয়া চলিল। কিছ পুনরার ভাহাকে থামিতে হইল কাঁবের উপর একথানা ভারী হাতের চাপে। সে কি । এবার বাভী যাবে না মিশা। পুজার আর কভোই বা বাজী। পুজার বাভার করতে বেরিয়েছ ? কালই বাছ তা হলে। কিছ আনার আবার চীনছ কেন। বউরের ছভে কাপড় কিনবে ?···আ হা হা কে বলছে ভোমার থালি হাতে রেভে। । কিছ আজকাল ? চাকরীর চেঙা । বাবার পরসার অমিদারী ···ধানকরেক বেশী করে নিয়ে বেও বছু!

রুমর ক্রুত অন্তসর হটরা চলিল। আঃ জোর বাঁচিরা গিরাছে। অক্সনম্ভ হটবার বাে আছে কি। বাজিক রুগ এটা। বজের নব নব আবিকার মান্তবের নিরুপত্রব জীবনে এক বিষম আত্রঃ। কবন কার বাতে আসিরা পভিবে। মোটর, বাস, লরি, ছলপথে চলমান হুর্গ, জলে তাসমান হুর্গ, উভচর হুর্গ, আরও কত কি। মুম্মর অভ্যমম্ভ তাবে অনেকটা পথ অতিক্রম করিরাছে। আর বানিক পরেট গড়ের মাঠ। ওবানে সিরা বানিক বিশ্রাম করিরা লইলে মক্ত হুর্মা। শহরের মিউনিসিগ্যালিটর এ অঞ্জের উপর বিশেষ বৃষ্টি আছে। আবর্জনা জমিতে দেয় না। মুম্মর মন্থ্রেন্টের তলার আসিরা বসিল। ক্তক্ত কি ছেলেমেরে আরার সলে বেডাইতেছে। বিবা সাহা। বেবিতে ভাল লাগে। কৃত্য সাহেব দেম বেডাইতেছে। প্রাব ভরিছা

হাসিতেছে। আনন্দের নির্কর বেন। মুবর ভাবে উৎাবের কি কোন অভাব নাই, অববা কোন হংব ! জীবনটাকে এরাই উপভোগ করিরা লইতেছে। এরা পরদেশে আসিরাও বাবীন, আমরা নিজের দেশেও পরাবীন। প্রাণ ভরিষা একটু হাসিতে পারি না, মন বুলিরা হইটা কথা বলিতে পারি না। আমরা নিজেনের ভূলিতে বসিরাছি। আমানের দাবি ভাই আজ আবুকলহের ইন্দ্রন বোগার। সত্য দাবি মিধ্যার কুঞ্জীকায় সমাজ্য্য। আলো নাই---ভবু অবকার---নীরক্ত অবকার।

মুধরকে আন্ধ কি ভূতে পাইরাছে ? সে নিকেকেই নিজে প্রশ্ন করে। আন্ধ এই সব এলোমেলো ভাবনা ভাহার মনকে নাড়া দিরাছে কিসের কড়। অক্যাং সে স্নির্মালকে এর কড় সর্বভোভাবে দারী, করিরা প্নরার হোঙেলের পথে পা বাড়াইল।

श्वक्षिम देवकान ।

আত্ত তুনির্বলের আবির্তাব বটয়াছে। মুন্নয়ের বাজ-পেটবার প্রতি দৃষ্টি পড়িতে সে অভিমাত্রার বিশ্বিত হইল। किनियश्य जब बाबादीमा एडेबा निवादः। बन्दा छाका (भरत আৰু রাত্রেই দেশে রঙনা হইবে। অপচ গতকালও ঠিক हिल शकां व वकां मही (म अवीत्वरे पाकित्व। श्वनिर्वल ভিতরে ভিতরে ভতাত ভখতি থোব করিল। বড় দেরি হইয়া যাটবে। তার এয়ন সাভান প্লানটা শেষ পর্যাত্ত না বিপর্যাত্ত হুইয়া যায়। তার জীবন-ইতিহাসের পুঠার অনেক চুছুতির কাহিনী অভিত হইয়া আছে, অৰ্থ এবং বিধ্যার গোলক-ৰাঁধায় পড়িয়া লক্সহার। ভাবে ছুরিয়া মরিতেছে। সুনির্ম্বল আৰিও ভগ্ৰ-সমাৰে দিব্যি নিরুপদ্রবে মাধা উঁচু করিয়া चारह। किन्न वर्षमात्न (म नित्वहे बोबाइ পण्डिशह निनित्क महेबा। जांद्र भीवटन निमि कृदाहेबा शिवाटक जाहे तम आप बुक्कि ठाइ। ज्युक त्रक्क १४ नारे। मिनि ठामाक (मरदा। আইনের খরে সে ভাছাকে 🕶 করির। বাঁধিয়া লইয়াছে। সহক পৰে মুক্তি নাই বলিয়াই মুদ্দ ভার অভয়দ। বছুদ্দের বছৰের মধ্যে সে ভার সুক্তির সন্ধান করিভেছে।

লিলিকে সে ভয় করে। ঐ নির্বাক গন্তীর বেরেট বে কথন কি ভাবে চলে ভালা বুলিবার উপায় নাই। ভাদের মধ্যের সম্বন্ধী ভাভি কৌশলে সে কিছুদিনের বভ চাপা দিভে সক্ষম হইরাছে। কিন্তু এই গোপনভার প্রছি যে-কোন মুন্তুর্ভেই শে বুলিয়া কেলিভে পারে। ভবন হয়ভো নিকেকে মুক্ত করিয়া লইতে কোন পথই আর ধোলা থাকিবে না। কিছ লিনির জীবন-পথে যদি মুম্মরকে আনিরা হাঁড় করান যায় তাহা হইলে তার মুক্তির আশা নিতাত হ্রাশা নর। নিজের হ্ছতির বোরা অতি সহজে মুম্মরের ক্ষরে চাপাইরা দিরা আইনকে কাঁকি দেওবা যার।

মুনর কিছুক্দ পুনির্বালের চিন্তিত মুবের প্রতি চাহিরা বাকিরা হাসিরা কহিল, অবাক হরে গেছ নাকি? হঠাং মনটা বেঁকে টাড়াল। এতদিনের অভ্যাস না গিরে আর করি কি। বামোকা বুড়ো মা বাবাকে হংব দিয়ে লাভ নেই।

স্থিত্তি ইতিমধ্যেই নিজেকে সামলাইরা লইরাছে। সে হাসিরা কহিল, সে ত নিশ্চর। কিন্তু তোমার মত লোকের পড়ান্তনোর ক্ষতি করে কতবানি যে প্রার আনক্ষ ভোগে আসবে সেই কথাই ভাবছি।

য়ন্ত্র হাসিরা কহিল, পড়াগুনো দেশেও বেশ চলতে পারে। কিন্তু বেশী দিন আমি এামে থাকব না। তী হাড়া লিলির ইংরেজী পড়ানোর ভার যথন দিয়েছ তথন বেশী দেরি করা চলতেই পারে না। এই কথাটাই ভাষতে চাইছ ত।

হ্মনিশ্বলের চোধ মুধ উল্ফল হইর। উঠিল।

যুগর কহিল, যদি শেষ পর্যন্ত কোন কারণে পিছিরে পঞ্চি তা হলেও তোমার ভাবনার কারণ নেই। লিলি তার পঞ্চা-শুমার ব্যাপারে যথেষ্ট সচেতন বলেই আমার বিশ্বাস।

স্নির্দান পুনরার গঙীর হইরা উঠিল, ভোষার ঐ ছ্রুবো কথাবার্ছা আমার ভাল মনে হর না। যা বলবে ভা পরিছার করে বলাই ভোষার উচিভ।

মুখার শাভ কঠে কহিল, যদি পরিষার করে বলাটাই তৃমি পহন্দ কর স্থনির্মাল, তা হলে আমি বলি এ অবমঙ্গে বেহাই দাও। তৃমি অর্থনালী, ইচ্ছে করলে অনারাসেই তৃমি এক জন অভিজ্ঞ প্রোকেসার তার জন্ত নির্ম্কু করতে পার। আমিও সময়ের অপব্যবহার থেকে রেহাই পাই।

স্নির্মান তীত্র কঠে কহিল, তৃষি পরসা চাও একণা গোলাগুলি বললেই হ'ত।

মুদ্ধ কতকটা বিশ্বিত কঠে কহিল, ভূমি আৰু সুস্থ নও । আৰু ভূমি বাও। আমি কিন্তে এলে এ সহছে আলোচনা করা বাবে। বলিরা, জোর ভ্রিরা মুদ্ধর প্রসন্ধা চাণা দিল। স্থনির্মল কিছুক্দণ নীর্মে বসিয়া থাকিয়া নীরে বীরে উটিয়া গাড়াইল।



## শ্রীবামনদাস মুখোপাধ্যায়

শিক্ষার মূল উৎকণ্ঠ
এক কথার প্রকাশ করিতে হইলে বলিতে হয় বে, শিক্ষার
মূল উৎকণ্ঠ "আনলাভ"—আনলাভের মুখ্য উৎকণ্ঠ পরা শাভি
লাভ।

कांमर मदा शतार नांचि मिट्टवर्गावशक्ति—शैका ।

জ্ঞান ভিবিধ-পরা ও অপরা

পরা ভাষ—পরা বিভা—ভ্যা ভারবোর। যে ভানের উলেষণ হঠলে সীমাবদ বভিত ভীবন অতিক্রম করিয়া জীব অবও জনত আনক্ষমন পরম তত্ত্ব বা পরমান্তার সাক্ষাংকার লাভ করে; ইহাই সত্যদর্শী পূভাপাদ ব্যিগণ কর্তৃক পরাজ্ঞান বা পরাবিভা নামে ক্রেষত হইয়াছে। এই ভানলাভই মানবভীবনের শ্রেষ্ঠ কাষ্য। মরণশীল মানব অমৃতত্ব প্রাপ্ত হয়। তবন সে ক্রম-মৃত্যুর কবল হইতে চিরমৃক্তি লাভ করিয়া বছ হয়। মানব-ভীবন সার্বক হয়।

অপরা ভান —অপরাবিভা—অনাত্মবোৰ

আন্ধ্রভান বা পরাবিভা বাতীত যাবতীর জ্ঞান, যথা— আর্বিভা, বস্থবিভা, অর্থকরী বিভা ইত্যাদি সমন্ত জ্ঞানই অপরা নামে অভিহিত হয়। "পরাজ্ঞান" হারা মানব মোকলাত করে এবং অপরা জ্ঞানলাতে মানব সর্কবিধ ভোগ ও তজ্ঞনিত বন্ধনপ্রাপ্ত হয়। মানব-জীবনের সার্থকতা ভোগে নর, ত্যাগে—প্রস্তুতি মার্গে নর, নির্ভি মার্গে—এই শিক্ষাই মানব-ভাতির প্রতি ভারতের শ্রেষ্ঠ অবদান।

মাত্র ভোগভৃত্তিই মানব-জীবনের একমাত্র অভীষ্ট নর।
আহার নিজা মৈধুনই কেবল মানব-জীবনের চরমকাম্য নহে।
পশুপকীরাও এই তিনটির আচরণ করে, মানব-দেহ বারণ
করিরা যাহার। কেবলমাত্র ভোগাকাক্রা ভৃত্তিতেই রত ভাহার।
পশুরই সমান।

আহার নিদ্রা তর হৈণ্বক।
সামাত বেতং পৃশুতিন রাণাম্।
বর্ষোহি তেষাম্ অধিক বিশেষো।
বর্ষাইনা পশুতিঃ সমানাঃ।—মহু সংহিতা।

দেশকাল পাত্র অন্থারে কর্মধারা নিরপণ করিবার জড় পূজাপাল ব্যিগণ পুনঃ পুনঃ নির্দেশ দিয়াছেন। আমাদের বর্তমান অবহার প্রতি লক্ষ্য করিলে দেখিতে পাই বে, আজ্ দেশের সর্ক্ষেই হাহাকার; বরে বরে অরাভাব, বরাভাব, অর্থাভাব, জামাভাব এবং শিকার অভাব; অভাব—অভাব— দুভাব—অভাবের অরিশিবা আজ্ প্রদীপ্ত হইরা চতু দিকে বু, বু অলিভেছে। এই অভাবের অভাব করে হইবে ভাহা কে জানে ? মানবকূল আৰু অবংশতনের চরম সীমার উপনীত। এ ছর্জণার মূল কারণ প্রকৃত শিক্ষার অভাব।

পরাধীনতার সৃথাল হইতে আৰু আমরা মুক্ত হইলেও
আমাদের মধ্যে এত আবিলতা, এত গলদ হে আন্ত তাহার
আমূল সংকারের প্ররোজন, নহিলে বাধীনতার প্রকৃত আবাদন
লাভ হইবে না, হইতে পারে না। বাহিক আবিলতা দূর কর:
সহল, কিন্ত অন্তেরর আবিলতা বিদ্রিত করা সহজ নয়:
অন্তরের আবিলতা তথনই বিদ্রিত হইবে যথন দেশের
প্রত্যেক শিক্ষক, প্রত্যেক শিক্ষার্থী, প্রত্যেক জননী ও প্রত্যেক
সন্তান প্রকৃত শিক্ষার শিক্ষিত হইয়া ভারতের আকাশ বাতার
গরিমার পূর্ণ করিবে। তথন ভারতারাতা ভাহার প্রদীপ্ত
প্রভার সমগ্র পৃথিবী আলোকিত করিয়া জগতে পুনরায়
প্রেচ্চ ছান অধিকার করিবেন; ভারতের সৃপ্ত পৌরব
পুন্প্রতিষ্ঠিত হইবে।

#### শিকার ভিভি

শ্বাট মাত্র্য" তৈরারী না হইলে, দেশের প্রকৃত কল্যাণ সাবিত হইবে না। আমাদের দেশ আব্যাদ্মিকতার দেশ : এ দেশের উন্নতিকল্পে যিনি যে দিক দিয়াই প্রচেটা করন যত রক্ষই দেশহিতকর পরিকল্পনা করন—এদেশেঃ মজাগত যে ভাববারা, যে কৃষ্টি, ভাষা ভগবংস্কৃক। আমর আব্যাদ্মিক শিক্ষাকে সমুজ্জন করিয়া ভূলিবার দিকে যদি দৃষ্টি না রাধি—ভগবদভিমুঝী সমাজ-বিজ্ঞানের দিককে যদি অবহেলা করি, ভবে দেশের প্রকৃত কল্যাণের আশ স্পূরশরাহত হইবে।

ভাবী ভাতি-গঠনের প্রধান দায়িত্ব মায়েদের। তাঁহাদের অঞ্কালীন আচরণ পর্ভাবস্থায় নিরমপালন ও প্রসবের পর সভান পালন—এই তিন্টির উপরেই সভানের ভবিষ্যৎ নির্ভ করে।

নারীকে এই সময়ে অবশ্বপাল্যনীয় নিম্নাদি যদি শিশ দেওয়া য়ায় তবে নারী সহক্ষেই সম্ভান-রড্নের 'না' হওয়া আশা করিতে পারেন।

ভবিষ্যতের মাতৃষ দেশকলাণকর কার্ব্যের প্রথম ও প্রধা সোণান। ইহার মূল ভিডি হইবে মারীর শিক্ষা, ঐ শিক্ষা ভিডি যতই সুদৃচ ও স্থাতিষ্ঠিত হইবে ভছ্পরি নির্মিত শিক্ষ সৌধও ভতই দীর্বদারী ও সুরব্য হইবে।

### নারীর শিকা

বত দিন দেশের নারীগণ আহর্শ রব**ীয়ণে** স<sup>রাহ</sup> ক্**রতিটি**তা না হন তত দিন গুসভান ক্রিবে না। ক্রসভান জ্মিলে—সুসন্তানে দেশ পরিপূর্ণ না হইলে দেশের কোন কল্যাণই সাধিত হইবে না। বহু রক্তদান ও বহু কারাবরণ বারা অক্তিত এই সাধীনতা রক্ষা পাইবে না। তাই নারীদের শিক্ষার এত প্রয়োজন।

বর্তমানে মূল কলেকে আমাদের বালিকাদিগকে যে শিকা দেওয়া হয় তাহা অনেকাংশেই অসম্পূর্ণ ও সঙ্কীর্ণ; নারীর মানসিক গড়ন ও চারিঞ্জিক বিশেষদের প্রতি দৃষ্টি রাধিরা প্রাপ্তবয়কা বালিকাগণকে সাধারণ জ্ঞান শিক্ষার সলে সলেই শারীর বিজ্ঞান ইত্যাদি সম্বন্ধে পালনীয় নিয়মগুলিও যত্তপূর্কক শিক্ষা দিবার ব্যবস্থা করিতে হইবে। এই সকল নিয়ম না কানায়, পালন না করার বহু প্রকার রোগের সৃষ্টি হয়।

চলিশ বংসরেরও অধিককাল স্ত্রীরোগ চিকিৎসার নিযুক্ত থাকিয়া এই অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছি যে, এদেশের মেয়েরা গ্রুকাল, গর্ভাবস্থা ও সন্থান প্রসবাদ্ধে পালনীয় নিয়মগুলি না জানায় এবং বহু ক্ষেত্রে জানিয়াও পালন না করায় অনেকে হুরারোগ্য রোগগ্রন্থ হন ও বহু আকাজ্ঞিত সুসন্থানলাভে বঞ্চিত হন। গুকুললে নারীদের যে সকল নিয়মপালন করা একান্ত কর্ত্তর্য তাহা না করায় বহু নারী সারাজীবন জীবন্ত অবহায় জীবন-যাপন করেন ইহা প্রতাক্ষ কর্ত্তিয়াছি।

আয়ুৰ্বেদ শান্তে বণিত আছে---

আর্ত্তবাবদিবসাদ হিংসা ব্রহ্মচারিটা
শরীত দর্ভশয়ারাং পঞ্চেদিপ পতিং ন চ
করে শরাবে পর্ণে বা হবিষাং ত্রাহমাহরেং
অঞ্পাতং নর্বচ্ছেদভ্যঞ্চম্ম লেপন্ম
নেক্রয়োরপুনং স্নানং দিবা স্বাপং প্রধাবসম্।
অভ্যুচ্চ শক্ষ প্রবর্ণং হুসনং বহুভাষণং
ভাষাতং ভূমিধননং প্রধাতঞ্চ বিবর্ক্তবাং ॥

অর্থাং রক্ষঃশলা স্ত্রী রক্ষঃ নিঃসরণ দিবস হইতে তিন দিন হিংসা করিবে না; এক্ষচর্য্য পালন করিবে, কুশাসনে শরন করিবে, পতিকে দর্শনও করিবে না, হবিষ্যায় ভোজন করিবে। অশ্রুপাত, নথছেদন, অভ্যক্ত অম্বুলেপন, নেত্রদ্বরে অক্সন, স্নান, দিবানিস্রা, প্রধাবন, হাস্ত, বহুভাষণ, পরিশ্রম, অত্যুচ্চ শস্ত প্রবাবন, ভূমিধনন ও প্রবাস বাত সেবন—এইগুলি বর্জন করিবে।

শ্রসবের পর, সন্ধান পালন কিভাবে করিতে হয় তাহা আমাদের দেশের কয়জন জননী জানেন ? গর্ডবারিণী হওয়া সহজ, কিন্তু যা হওয়া এত সহজ নর।

শিও পালন-শিওর প্রয়োকনীয়ডা

শিশুই কাতির ভবিষাং বল ও ভরসা। কিছু সেই শিশু বিদি ক্ষম্ম ও বুর্মল হয়, তাহার বারা । কাতির উন্নতি বা দেশরকা—কোল কালুই হয় না। যদি

শিশু চরিত্রবান ও বর্ষপ্রাণ না হইরা চরিত্রহীন ও অবার্শ্বিক হর, সে বংশের কলহ, জাতির কলহ, দেশের কলহ হইরা, দাঁভায়। সন্থান করা ও হুর্বল কিংবা চরিত্রহীন হওরা যে কি নিদারণ, সে হংব যে কি মর্শ্বভদ তাহা ভূক্তভোগী ছাভা অপরে বুবিবে না।

শিশু এরপ হয় কেন ? এ কথার উত্তর শিক্ষার দোষে।

যে সন্থান জীবনের প্রথম হইতে আহার-বিহার ইত্যাদি
সর্কবিষ্বরে সংশিক্ষা না পার সে কখনও সুহ, বলিঠ, চরিজ্ঞবান
ও বর্দ্মপাণ হইতে পারে না। সন্থানকে মাত্র আহার ও
পোশাক পরিচ্ছদ প্রদান করিলেই ভাহার প্রতি কর্ত্তরা শেষ
হয় না; সন্থানকে যথারীতি "পালন" করিতে হইলে ভাহার
আহাসঠনের সলে সলেই চরিজ্ঞসঠনের প্রতিও বিশেষ সন্ধ্যা রাখিতে হয়। পিভামাভা নিজেরা সং হইরা সন্ধ্যান্ত না দেবাইলে সন্থান সং হয় না—হইতে পারে না। পূর্বের বলিরাহি গর্ভবারিণী হওরা সহক কিছু মা হওরা সহক নয়।

বাল্যে মাত্জোড়ে শিশুর যে শিশা আরম্ভ হর সমভ জীবন ব্যাপিয়া তাহাই তাহার জন্মে প্রতিভাত হইতে দেখা যায়। বর্তমানে কুল কলেভে অধ্যয়ন করিয়া সন্তান অর্থকরী বিদ্যায় কৃতবিদ্য হইতে পারে, কিন্তু যদি জীবনের প্রথম হইতেই সর্ক্ষবিষয়ে শৃথলা ও নিয়মাছ্বর্দ্ভিতা পালন করিতে শিক্ষা না পায়, কালে সে উচ্ছ্ খল হইয়া উঠে। এই উচ্ছ খলতার জীবভ ছবি আৰু সর্ক্ষাই বর্তমান।

তাই যদি আমরা সুস্থ, বলিষ্ঠ, চরিত্রবান ও বর্গ্মপ্রাণ সম্ভান লাভ করিতে চাই, যদি আমাদের সম্ভানদের বংশের গৌরব, জাতির গৌরব, দেশের গৌরবস্বরূপ দেবিভে চাই, তো ভাহার জীবনের প্রথম দিন হইতেই তাহার আহার, নিজ্রা প্রভৃতি সর্ব্ব বিষয়েই সতর্ক হইতে হইবে। এই নির্দ্ধেশ ম্পাম্পভাবে পালন করিলে, দেশের প্রতিগৃহ স্থা, বলিষ্ঠ, চরিত্রবান ও ধর্মপ্রাণ, স্থসভানে পরিপূর্ণ হইবে।

ক্ষের প্রথম দিন হইতেই শিশুর শিক্ষা আরম্ভ ক্ষরিছে হয় এবং কীবনের শেষ দিন পর্যান্ত সেট শিক্ষা চলে। বাল্যের শিক্ষা যত সহক্ষে অভ্যাসে পরিণত হয় পরবর্তী কালের শিক্ষা তত সহক্ষে অভ্যাসে পরিণত হয় পরবর্তী কালের শিক্ষা তত সহক্ষে হয় না। বাল্যের শিক্ষা জীবনের সঙ্গে একোবারে এক্টীভূত হইয়া যায়, সে শিক্ষা সহক্ষে ভূলা যায় না, ইহাই প্রাক্ষতিক নিয়ম। ভূল কলেকে সামারণ জান ও অর্করী বিভালাভ হইতে পারে, কিছ অনুনা ভর্মায় মহ্মত্য লাভের শিক্ষা কেওয়া হয় না। ইহা অতীব কোভের বিষয়।

বাল্যকাল হইতে শিশুকে সংযম শিশা হিতে হইবে এবং ক্ষোৰ, লোভ, বিংসা প্রভৃতি অসং প্রায়ভিত্তনি ভাষার কোমল অদরে বাহাতে উদিত না হর সে বিবরে বিশেষ হৃষ্টি দিতে হইবে।

#### শিক্তর শিকা লাভের প্রকৃত্র স্থান ও কাল

পূৰ্বেই বলিৱাছি যে জীবনের প্রথম দিন হইতেই আমাদের শিকা আরম্ভ হয় এবং জীবনের খেষ দিন পর্যায় সেই শিষ্ণা চলে। পিড়মাড় সন্নিধান এবং পরিক্নবেঞ্চিত নিজ আলম্বই প্ৰকৃত শিক্ষালয়। শিশু যথন পাঠশালায় যাইতে আরম্ভ করে তথন ভাহার চরিত্র গঠনের দায়িত্ব "এক মহাশারে"র উপর বছলাংশে তত হয়। পাঠশালাতে শিশুর "शक्तकत्रव" जात्र एत । इः त्वत्र विषय, वर्धमात्म जामात्मत्र দেশে উপযুক্ত গুরুগুণবিহীন হটয়াও অনেকে গুরুপদ্বাচা হইয়া দাঁভান। মনে রাখা উচিত বাঁহার নিজের চরিত্র গঠিত হয় নাই, সেই গুরুষহাশয় জানবিহীন শিশুর চরিত্র গঠনের ভার লইবার সম্পূর্ণ অযোগ্য। বিনি নিজের কাম ক্রোবাদি तिन वस्त अक्स छिनि अनदाक विन वस्त विन वस्त विका विदन কিল্পপে ? কেবলমান মৌবিক উপদেশ দানে অপরের চরিত্র गर्ठन कवा योद्य ना। जनदात हिंदल गर्ठरनद टार्क हैनाव নিবের চরিত্র গঠিত করিয়া সেই দুঠান্ত অপরের সমূকে স্থাপন করা। পিতা মাতা ও শিক্ষগণের সর্বাদা শ্বরণ রাধিতে স্ইবে যে, তাঁহাদের শিক্ষাই দর্গণে প্রতিবিশ্ববং শিক্ততে প্ৰতিক্লিড হয় ৷

#### শিশুর নৈতিক শিকা

বছরছের পরিচর ভোগে নর, নির্ভিনার্গে। বছরুছের বারণ করিরা বাহারা কেবল মাত্র ভোগাকাজ্যা ভৃত্তিতে রভ ভাহার। পশুর সমান।

সভানকে চরিত্রবান ও ধর্মপ্রাণ করিতে হইলে বয়:-প্রাপ্তির সন্দে সন্দে ভাহাকে নিয়লিখিত বিষয়সমূহ বন্ধপূর্বক শিকা দিতে হইবে :—

সংসদ, সদাচার, সহ্বং, সত্যবাদিতা, সর্মতা, অহিংসা— পরশীড়া বৰ্জন, হয়া, ক্ষা, সহিষ্কৃতা, সংব্যা, দানশীলতা, প্রহাত্তি ও শুখনতা—মির্যাত্বর্তিতা।

উপসংহারে বঞ্চব্য এই যে, দেশের বর্তমান হরবছার অবসান তথনই সন্তব বর্থন স্থাকিত সুসংবত সচ্চরিত্র শিক্ষানিপুণ সন্তবর শিক্ষানিপুণ হারা দেশ পরিপূর্ণ হইবে, যথন বাছ্যবতী সন্তান পালনে স্থানিপুণা অননীগণ হারা প্রতিপৃহ গোরবাহিতা হইবে। দেশের প্রকৃত উন্নতি তথনই সন্তব যথন দেশের ব্যক্ষান স্থা, বলিঠ, চরিত্রবান, বর্ণপ্রাণ ও সুসংবত হইখা জীবনে স্প্রতিষ্ঠিত হইবে।

# নারী

## खीरीर अस्य के हत्य

বিশ্বর-বিষ্কৃ চিত্তে অকশাৎ ভোৱে হেরিলাম আবি। হেরিয়াছি বার বার দিবস রক্ষী, দব সাকে সাকি আবিভূত হইৱাহ নৱন-সন্ধে, মুদ্ধ হই আমি---যেন বপ্প-লোক হ'তে হে বপ্প-চারিণী আসিয়াছ নামি, विश्वविद्या मात्रा चार विर्विष्ठिया त्यार चूलाहेटल चित्र, विषेत्र-जनम निष्य हरिष्टि शिष्ट्रान रह दलवावती ! ভোষার হলনা-মুখ নয়নে আমার ভূমি ছিলে নারী; মোৰ-ভার মুক্ত হ'ডে হেরিলাম-ভাতে অয়তের বারি। পুতন প্রভাতে তাই আমি নমিলাম। আমার আকাশে প্রথম উষার আলো যবে সূচে ওঠে আভাগে আভাগে. হেরিছ সে আলো আমি বিপুল বিশ্বরে ভোর বুকে ওয়ে: অম্বতের যে আধাদ লভিয়াছি নামে ভোর বুকে ছুঁরে, ৰে গান গাহিয়া ওঠে আমার এ কণ্ঠ, আমি শুনিলাম শীবনের উবালোকে তোর কঠে সেই দীতি অবিরাম। ভুলে গেছি সে কাহিনী, ভুলে গেছি ওরে সে শীব্র-বারি, আমার প্রভাতে ভূমি এনেছিলে সাবে অমুভের বারি। শীবনের বেলাভূমে একা নহি আমি। মোর বেলা সাবে बुके-जबा क्षेत्रिज नित्व बृद्ध नित्व शांत्रि चांद्ध चांत्रिमाएंड সাৰী ৰোৱ দিবারাতি। বাদে বিসম্বাদে বদি ভূলে বাই, ভাগর বাঁধিতে ভার কুটে ওঠে ভাষা, ডাকে---আর ভাই।

দূরে যায় রেখে যায় তবু স্নেহগ্রীতি অকুষ্ঠিত প্রাণ অবাচিত সেধা-ভরা স্থৃতি-বেরা ভার অসীম কল্যাণ। শীবনে সরস করি' ছেত্রে পরশ সর্বত বিধারি' यक्न-कामना-पृष्ठ निरम् अर्म जार्य क्यांकत बादि । शिकवर् नित्र चारम मर्-माम, चारम एकिना भवन. নামে সবুৰের চেউ, নামে কুছুমিত বন-উপবন श्टर्गत मित्रा नाटम त्यांत इति हाटन, बूटक जाननाता, कायनात भावशानि भून कति' बारन इत्रक इतामा : (रमकारम कूछि अर्छ नवन-अनुर्व अक्वानि हवि. বুঁৰেছিছু বাবে আমি অভৱে বাহিবে, সে প্ৰিয়-বাৰবী ত্ৰীভাৱ আৰভ আৰি দাভাৱে একাকী খোৱ হাতে নারী বসন্ধের প্রস্কৃতি মাল্য-সম, হাতে অন্বতের বারি। अक्षे क्लिका (दांडे बूटक चारत (नत्य, यूर्व दांति-वांनि বর্ণের প্রধা-যাবা, প্রধা-চালা প্রাণ স্লেহেতে উত্তালি' বাছ দিয়া কঠ খেরি' ভোলে সে কল্লোল ভটনীর মত. হোত্ৰ-ভৱ বৰ্ষ-মাৰে আনে সৱসভা স্বিশ্বভা সভত, সেবার করিয়া রাবে কুক্র যে অঞ্চলি, করে কল-দীতি, बाज-मरह मीका छात्र, तक-कति बारम बाव्या ७ व्यक्ति. পুজার নিশ্বাল্য যেন, যাদলিক গান ভনি কর্ছে তারি, বাচ রক্ত কীবনের বেলাভূষে আবে অনুভের স্থারি।

# রবীন্দ্রনাথ ও আমাদের দায়িত

## अप्तरक्षनाथ हार्षेशीभाग्र

অনেকে আছও ভাবিয়া থাকেন, রবীজনাথ নোবেল পুরস্কার পাটয়া যথেষ্ঠ সন্থানিত হইয়াছেন। কিছ এ কথা আমার বার বার মনে হইয়াছে যে, মোবেল পুরস্কার রবীজনাবের ষ্থোপযুক্ত পুরস্কার নছে। কেননা কবিওর রবীজনাথের ভল্য সাহিত্য-শ্ৰষ্টা এ যুগে কোন দেশেই নাট। স্বামা-দের জান ধুবট সীমাবদ এবং স্বাদেশিকভার হয়ত বিচারবৃদ্ধি আমাদের অনু কিছ পাশ্চান্ত্য দেশেও রবীজনাথের যে সন্মান তাহাতে মনে হর, গোটের পর রবীক্রনাবের মত প্রতিভাশালী লাচিত্যিকের আবিষ্ঠাব ইউরোপে আর হয় নাই। শরং চন্ত্র বলিতেন ভিনি সাধারণের গুণভাসিক আর রবীন্দ্রনাথ তাঁহার यण श्रेन्डांभिक्तव **४ (नर्कत्वत्र श्रेन्डांभिक ध**वर (नर्क। क्षिण यमि नव नरवार्यस्थानिनी वृद्धि एव. जारा एटेस এই বিচ্যাংবলসিত নিতা নৃতন প্রতিভা যাহা অর্ক্সতান্দী বরিয়া সহস্ৰবিধ চব্ৰিভাৰ্থভায় আপনাকে ও **ভগংকে সাৰ্থক ক**রিয়াছে তাহার তুলনা কোথায় ? শরং চল্লের উক্তি মিথ্যা বিনরভাষণ নহে, রবীশ্রনাথ কবিশুরু, সাহিত্যগুরু। সাহিত্যের সকল বিভাগে আপনার সার্বক প্রতিভার ভাষর চিক্ত তিনি বারে বারে আঁকিয়া নিয়াছেন। ভাবে, ভদীতে, ভাষায়, প্রাইলে তাঁহার প্রাণপ্রাচর্ব্যের কর ছিল না। নিভ্য নৃতনরূপে ভাহার প্রতিভা বৈচিত্র্য আমরা **ভা**হার শেষ জীবনেও দেখিরাছি ৷ সমালোচক লিরোমনি ছাইডেন কবি চসারের স্ট-প্রাচ্র্য্য দেৰিয়া বলিয়াছিলেন-Here is God's plenty। ববীন্ত্ৰ-বা**ৰের সম্বন্ধেও এ কৰা প্রযোক্য**।

আমেরিকার দার্শনিক উইল্ ভুরাক রবীজনাথকে উপলক্ষা

ইরিরা বলিরাছিলেন, শুধু রবীজনাথের করুই ভারত খাধীন

ইইবার যোগা। জাতি খাধীন হইলে জাতির মন্থ্যত্ব ও স্ক্রীইত্তার যোগা। জাতি খাধীন হইলে জাতির মন্থ্যত্ব ও স্ক্রীইত্তার যোগা। জাতি খাধীন হইলে জাতির মন্থ্যত্ব ও স্ক্রীইত্তার সর্বাংশকা করিতে পাবে। ইহাই

াধীনতা লাভের সর্বাংশকা সারবান র্জি। স্ক্রীপজি

মান্ন্রের অমরভা লাভের উপারবর্ষণ। পরাধীন ভারতে

থেন স্ক্রী প্রতিভার পরাকার্ছা রবীজনাথে দেখিতে পাই,

শ্রের্ঠ যানবতা যথন গানীকীর জীবনে প্রতিভাত হর তথন

গারতের উজ্জ ভবিষ্যং সম্বদ্ধে সন্দেহ মনে খান পার না।

রোধীনতার মধ্যেও যে জাতির প্রাণের বারা এমনই জাইও

ার্থিক সে জাতি ক্রবণও মরিবে না। সামাজিক বা রাহীর

বিন-প্রতনের বছুর পত্না দিরা এক দিন ভারার আরা

যাপনাকে ব্লিভা পাইবেই।

রবীজনাথ কবি, কিছ ভাহার মহতর রূপ পরিকৃট ভাহার

ধবিষে। শৃত্য সভ্যভার অঞাদ্ত হিসাবে তিনি জগতের ইতিহাসের অলিখিত অব্যারে একটা বিরাট ছান অবিকার করিয়া থাকিবেন। তিনি প্রাচ্য ও পাশ্চান্তা সভ্যভার মর্দ্মন্ত্রে গিয়া উভরের দৃষ্টিভূদীর পার্থক্য ও তাহাদের ভাল-মন্দের বিচার করিয়াছেন। স্বদেশী সমাজের যে চিত্র তিনি দিয়াছেন, প্রাচ্য ও পাশ্চান্তা সভ্যভার যে বিশ্লেষণ তিনি করিয়াছেন তাহা তাহার মত কবি-মনীয়ার দৃষ্টিতেই সভব। সেই বভকে ভিন্তি করিয়াই হয়ত একদিন মাহ্যের আত্মিক মিলনের প্রয়োজনে শৃত্যন সভ্যভা বীরে বীরে গড়িয়া উঠিবে। প্রমনি করিয়া গাখীকীর জীবনাদর্শও হয়ত একদিন জগতের হাষ্ট্রীয় চিভাবারাকে প্রভাবিত করিবে।

কার্ল মার্কস সভ্যতার যে অভিনব ব্যাখা। করিরাছেন ও যান্ত্রিক সভ্যতার পরিণতি কোন্ দিকে তাহার সার্থক ইঞ্চিত তাহার লেখার মধ্য দিরা প্রকাশ করিরাছেন জগতের প্রমিক আন্দোলনের মর্ম্মন্লে তাহা প্রেরণা জোগাইরাছে। রাশিরার আন্দর্শ ক্যানিজম; রাশিরা ইহা প্রবল ভাবে প্রচার করার ভার লইরাছে ও সঙ্গে সঙ্গে ক্যানিষ্টরা তাহা অগতের সক্ষম্ম প্রচার করিভেছে। আনাদের দেশেও ক্লীয় মতবাদ প্রচারকের অভাব নাই। প্রচারের কলে যাহা আর্ক সভ্যবা মেকি তাহাও সচল হইতেছে অথচ জগতের সভ্যতাকে শৃত্য করিরা গভিতে পারে যে মহান্ আদর্শ তাহাকে জগতে প্রচার করার দায়িত্ব কেছ মানিরা লইতেছে না।

এইবানেই ভারতবাসী ও বছবাসী হিসাবে আমাদের
একটা বিরাট দায়িত্ব আহে। রবীক্র-সাহিত্য অপূর্বাস্থলর।
ভাহা অন্থরাগের সহিত পদ্ধিতে ও বৃথিতে হইবে; দেশের
জনসাবারণকে পড়াইতে ও বৃথাইতে হটবে। এজভ রবীক্রপাঠচক্রের প্ররোজন। আরম্ভিকারক, অভিনেতা, গারক ও
অব্যাপকদের মিলন ও সহযোগিতার হারাই রবীক্রনাথের
মর্শ্রবাই দেশের জনসাধারণে বৃদ্ধিতে শিবিবে। আমাছের
বহু সৌভাগা বে আমরা রবীক্রনাথের সমসামন্ত্রিক, উছাক্রে
দেখিয়াহি, উছার কথা শুনিরাহি, কেহু বা উছার সন্দে কথা
কহিরাহি। সহস্র বংসর পরে কভ বিদেশী ও বদেশী রবীক্রনাথের সাহিত্য অভি অভ্নরাগের সহিত আলোচনা করিবে
কিছু আমাদের সৌভাগ্যের কণামান্ত্রও প্রবল হওরা চাই। ভাঃ
প্রনীভিত্নার চটোপাধার এক বক্ততা প্রসলে বলিরাহিলেন,
—পারিতে যথন রবীক্রনাথ বেডাইতে গিয়াহেন এক করাসী

ৰোটৱগাড়ী-চালক ৱবীজনাথকে এক হোটেলে পৌছাইয়া দের। কবির সোম্যবৃত্তি দেখিরা তাঁছার পরিচর ভানিতে সে চার। যধন সে ভানিল হিন্দু কবি রবীক্রনাথ ঠাকুর ভাঁহার গাড়ীতে চাপিয়াছিলেন সে ভাড়া লইতে অধীকার করিল ও কানাইল--- রবীজনাথের কাব্য সে পভিয়াছে। কাতি কতথানি সভা হইলে তাহার গাড়োরানেও বিদেশী মনীষীর লেখা অমুরাপের সহিত পড়িতে খেবে। সকলেরই মনে আছে যে দিন পারি নগরী স্বার্থানদের হাতে তুলিয়া দেওয়া হয় সে দিন পারি রেডিওতে রবীক্রনাথের 'ডাক্খর' অভিনয় চলিয়াছিল। করাসী ভাতির হুটি যে এক দিক দিয়া অতুলনীয় ইহা ভাছারই পরিচয়। এতবানি শ্রদ্ধাও অনুস্থিংসা বাঙালী ও ভারতীয় পাঠকদের কবে হটবে ? না হটলে আমাদের স্বাধীনতা পুরাপুত্রি সার্থক হইয়া উটিবে না। রবীক্রনাথের বিরাট সৌন্দর্যবোধ ছাতির প্রাণে সঞ্চারিত করিতে পারিলে ভাতির জীবন সাধক হইবে। তাঁহার সাহিত্যে যে প্রাণদ মন্ত্র আহে ভাতির ভীবনীশক্তি ক্ষুরণে তাহার একাছ প্রয়োজন। সেই মন্ত্র কি ভাতির প্রাণে আমরা সঞ্চারিভ করিতে পারিয়াছি ?

অনেকে অভিযোগ করেন রবীস্ত্রনাথ ছর্কোধ্য। এ অভি-যোগ কিরং পরিমাণে সভ্য। যে বিরাট প্রভিডা ও মনবিতা অপূর্ব প্রাণশক্তি লইয়া কবির পঞ্চদশ বর্ষ হইতে অশাতি বৰ্ষ পৰ্যান্ত অক্লান্ডভাবে বিচিত্ৰ ধারায় আপনাকে সাৰ্থক ক্রিয়াছে তাহার গভীরতা, তাহার বিন্তার, প্রকাশভদীর অপর্ব্ব ব্যপ্তৰা আপৰা হইতেই ভাহার সাহিত্যস্ট্রকে অসাধারণ করিয়া ভূলিয়াছে। এ সাহিত্য বুবিতে, উপভোগ করিতে সাধনার আবশ্বক। মিন্টনের এক সমালোচক বলিরাছিলেন মকার সাহায্য ব্যতিরেকে মিণ্টনের কাব্য-রস আখাদন করিবার অধিকার পাতিত্যের শেষ পুরস্কার-last reward of mature scholarship। এ কৰা ৱবীক্ষৰাৰ সহক্ষেত ব্ৰয়োজ্য। বাহারা রবীক্রডক্ত ভাহাদিগকে ধ্ৰোচিত সাধনা, ৩ পরিপ্রস্ত হারা রবীম্র-সাহিত্যের রস আশ্বাদন করিতে क्ट्रेंट । विश्वविद्यालस्त्रत द्वाकात त्रवील-गाहिका मद्यत विलय করিয়া পঠন-পাঠনের বন্দোবত করা। সদীত বিদ্যালয়েও হরকার রবীশ্র-সদীতের বিশেষ চর্চা ও শিক্ষার বন্দোবত खडा । इबीक्यनाथ मादा कीवन बविदा यांचा निविद्याद्यन मादा ৰীবনের সাধনা দিরাই তাহা আমাদের বুবিতে হইবে। এই ৰভই মিলিডভাবে ভাতীয় মহাক্বির স্ট্র-প্রতিভার চর্চা ও উপভোগের বন্দোবন্ধ করিতে হইবে।

कवि है स्वेष्ठेम विनिवाहितनम बबौक्यनात्यव मान এक विन क्नी मक्द हांकी मांकि नकत्नहें नाहित। चाक्र ज हिन আদে নাই। দেশে কাগৰপত্ৰ, সভাসমিতি, রেডিও প্রভৃতি क्षा वाकित्मक कार्रात्व भव वर्ष के क्षेत्रक मह । वारमाव কবিওয়ালা, বৈষ্ণৰ কবি, হামপ্রসাদ প্রভৃতির গান অভি সহজেই বাঙালীর নিভত গ্রাম্য জীবনে গিয়াও ছান করিয়া লইয়াহিল, কিছু আৰও কাতের অভতম শ্রেষ্ঠ কবি ও সদীতশ্র্টার সুর অনসাধারণের সম্পত্তিতে পরিণত ছইতে পারে নাই। ফ্রাল ও জার্দ্ধানীতে মজুরও রবীন্ত্রনাথের অনুদিত কবিতার রস এহণ করে অবচ তাঁহার দেশবাসীরা আছও পে রসে বঞ্চিত। শিক্ষার অভাবই দৈভের হেতু এ ক্ঞা খীকার্য্য। কিন্তু শিক্ষার বন্দোবন্ত করার সলে সলেই আমাদের কৰ্ত্তব্য হইবে ববীল-সাহিত্য ব্যাপকভাবে প্ৰচাৱের বন্দোৰভ করা। শান্তিনিকেতন হইতে যে প্রতিষ্ঠানের খারফং লোক-শিকার ব্যবস্থা হইয়াছে সেই লোকশিকা-পরিষং যদি রবীন্দ্র-সাহিত্যে আদ্য মধ্য ও উপাধি পরীক্ষার বন্দোবন্ত করেন ও উপাৰির পর বাঁহারা রবীক্র-সাহিত্যে গবেষণ্ করিতে চান ভাঁছাদের স্থযোগ ও স্থবিধা করিয়া দেন ভাহা **रहेल वाडामी बाणि डांशामद निकृष्ट क्रड दहिता।** अहे পরিষ্ণ ছাত্রদের জন্ম রবীক্র-সাহিত্যের শ্রেণী বিভাগ করিয়া मिट्यन : मटक मटक भार्क व्यक्तिया विद्या ।

এই ধরণের কাজ হইলে জাতি রবীক্ষনাথকে বুবিবে।
বুবিবার সলে সলে তাগিদ আসিবে নানা জাতিকে রবীক্ষনাথের সাহিত্য ও বাবী বুবাইবার। দেশের বাহারা জানী
ও ওবী তাঁহাদের উপর এই ভার আশিবে। অপ্রাদ করিয়া,
বক্তৃতা দিয়া, নুতন আলোচনা পুতক লিবিয়া, গান গাহিয়া,
আলোকচিত্রাদির সাহায্য লইয়া রবীক্ষনাথের বাবীকে নানা
ভাতির মনের হারে পৌহাইয়া দিতে হইবে।

এই কার্য্য করিতে না পারিলে রবীক্রনাথের যথাযোগ্য সন্মান দেওরা হইবে না; কগতের সভ্যতার ভাণারে ভাহার যে অবদান, কগতের কল্যাপকামনার ভাঁহার যে সাধনা ও বিবনৈত্রীর বথে সকল শক্তি নিরোগ তাহা নিতাছই নির্থক হইবে। শক্তি ও ধন্দের হানাহানিতে কগং আক ক্লাভ। 'হিংসার উন্মভ পৃথ্বী'কে শাভি দিতে পারে বৃত্ব রবীক্রনাথ গানীক্রীর মত মহামানবগণ। ইউরোপ আভ ক্লাভ; ভাহার হিংসা লোভ ও সংশরের মধ্যে মানবাদ্ধা বৃ্চ্ছিত হইরা পড়িরাছে। ভাই কগতের স্বীমঙ্কী ভাকাইয়া আছেন ভারতের দিকে। রবীক্রনাথ ভারতের সেই বারীমৃষ্টি।





ক্ষনওয়েলৰ আন্ট্ৰস্ কৃষিশন টাসম্যানিষার আবেদন শুনিতেছেন। বাম ছইতে—উভ, রিচার্ডসন, কিট্জিরাল্ড, ক্লেনেলি, অসবোর্ণ, টাসম্যানিষার প্রধান মন্ত্রী ক্সপ্রোভ, বিন্স্, লেখক।

# বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ শ্বীবিনয়ন্ত্রণ দাসগুগু

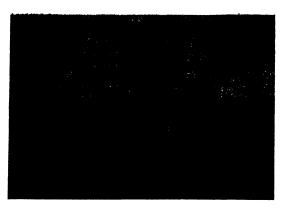
चट्डेनिश

১৯৪৭-এর ১২ই কেব্রুয়ারী ব্রবার সকাল সাজে ছ'টার সিভনি বিমানবাঁটতে নামিলাম।

ওয়াশিংটনত্ব ভারতীয় দুতাবাস হইতে আমার আগমন-সংবাদ ভাষাইয়া অষ্ট্রেলিয়াছ ভারতীয় ছাই ক্ষিণনারকে একট তার করা হটরাছিল। সেই তারের একট নকল আমি ভ্যানকুবারে পাইয়াছিলাম। ভারে লেখা ছিল যে, আমি এক্দিন সিভনিতে বিশ্রাম করিয়া পরদিন ক্যানবেরা যাইব। पृष्ठांवारमञ्ज कर्ष्मुभक मत्म कतियादित्वम त्व, এख वस नवा জমণের পর আমি একদিন বিশ্রাম করিতে চাহিব। তারে হাই क्षिमनारवर्व क्रैकाना (मध्या दिन जिएनि । क्रिक छिनि पार्कन कागित्वतात । यदन मदनक क्रेन, क्रिकानात धर्मन क्रून আহে তথ্য হাই ক্ষিণ্যার মহাণ্য সময়মত তারট নাও পাইতে পাৱেন। বিয়ানহাটতে নামিরা বৌভ লইরা ভানিলাম, আমাকে অভ্যৰ্থনা ক্রিবার জন্ত কেহ বাঁটতে আসে নাই অধবা আমার ভভ কোন সংবাদও নাই। আমার অহুরোধে বাঁটৰ কৰ্মচাৱিপণ টেলিকোৰ যোগে তাঁহাদের নগৰছিত कार्वाज्ञात्व चरव क्रिक्तमः। चरव चात्रिक त्रवादम् धार्माव ক্ত কোন সংবাদ বা কোন ভগ্ৰনোক উপস্থিত নাই। বাঁচীয় कर्यगतिश्व बनिद्यान, "मैबह क्यामद्वताशांवी अक्षे विवास সিভনি ভ্যাগ ক্রিবে। সে বিধানে আপনি ছান পাইতে भारतन ।" <del>चरक्नार क्र</del>ेकिड किनिया हाई क्रिनगांदरक जागांव

আগমনবার্ডা কানাইরা ভার করিরা দিলাম। এই সমস্ত বন্দোবন্ত ক্রিয়া মালের বোঁক লইতে লাউজে গেলার। ভতক্ৰ মাল ওছ বিভাগের হেকাকতে আসিয়াছে। সেধানে কয়েকজন সাংবাদিকের পান্ধার পঞ্চিলাম। জড়া**র** দেখ रहेट अयोनकांत्र भारवाषिकम् अधिकछत् 'আমার কিছু বলিবার নাই।'—একণা বলিলেই অভত সাংবাদিকগণ চলিয়া গিয়াছেন। করাচীতে বাইবার পূর্বে এক জন সাংবাধিককে আমি কথা বিশ্বাহিলাম বে, আমি খ্য কোন সাংবাদিককেও কিছু বলিব না। কিছ এখানে সাংবাদিকগণ আমাকে রীভিমভ ক্রো ক্রিভে च्छ कविरनम् अवर चामात हिन मा छुनिता हाफिरनम না। পরদিন যধারীতি 'সিডনি সান' পত্রিকার আয়ার ও আমার ছই খন সহযাত্রীর ছবি দেখিলাম। খণর ছই খনের मत्या अक करनव मांम "तिक्रभूम" अवर विकीत्वव मांम "क्य ক্ৰেলিন"। টেডপুল যোটর-দৌড়ে ব্যাতিয়ান। 'ক্ল ক্ৰেলিন' চৌম বংসরের বালক, ইউরোপে পর্বতঞ্জন কালে নিজের ভীবন বিশয় করিয়া ডাঞার আলেকজাতার বিন্কাটভির শীবন রকা করিরাছিল।

৮টার সিডনি বিবাৰবাঁট হইতে বিবাৰ উচিল। ব্যক্ত-বাবে বৃটি পড়িতেতে। নেৰ ও বৃটি তেল করিবা বিধান পরিকার আকালে উটিল। ১২০ নাইল পথ অভিক্রম করিবা বর্টার ক্যানবেরা বিবাৰবাঁটতে বাহিলাব। বাহিবার সরস্ক



च्क्त्ररवित नषीत (भान---निक्रमि

পাছাছে বেরা বিমানবাঁটটের দৃষ্ঠ বেশ ভাল লাগিতেছিল।
অপুরে মেবণাল স্বচ্ছলে ঘুরিরা বেড়াইতেছিল। বিমানবাঁট
হইতে সিবা হাই কমিশনারের আপিসে পৌছিলাম। বে
বাড়ীতে বিমানের নাগরিক কার্যালর ভাছারই দোতলার
হাই কমিশনারের আপিস।

শহরের এই জারগাটর নাম সিভিক সেণ্টার বা নগরকেল। এখানে ছইট সমাভ্যাল বাড়ীর লাইন। প্রভ্যেক লাইনে ছইট করিরা বোট চারিট বাড়ী। বাড়ীগুলি দোতলা। প্রায় লব মরেই দোকান। কোন কোন মরে নানা প্রকারের আপিস—জারগাট ছোট। দোকানগুলিও বুব ছোট ছোট। বাছ্রমণ্ড কর। ইহাই-ক্যানবেরা সহরের কেন্দ্রহা।

হাই কমিশনাবের আগিসে ঘাইতে তাঁহার সেক্টোরী

এইক দাম্লের সহিত সাক্ষাং হইল। তিনি মিনিট দশেক
পূর্বে আমার তার পাইরা হোটেল ক্যানবেরার আমার কর
হান সংগ্রহ করিরাছেন। দাম্লে মহাশর বলিলেন বে,
ওরাশিংটনের তার পাইরা তিনি আমার কর সিডনিতে এক
দিনের বত হোটেল ঠিক করিবার কর তাঁহাদের সিডনিহ
প্রতিনিধি প্রিত্ত সায়ালকে নির্দেশ দিয়াছিলেন। বলিতে
বলিতে টেলিকোন বাজিন। প্রিত্ত সায়াল সিডনি হইতে
ভাকিতেছেন। তিনি সিডনিতে বিমানের নগরহিত কার্যালরে
সিরা আমাকে না পাইরা কিরিরা আসিরাছেন। প্রিত্ত
কার্লের নিকট আমার সরাসরি ক্যানবেরা আগমনের সংবাদ
পাইরা হংপ প্রকাশ করিলেন। প্রিত্ত কাম্লে ট্যারি ডাকিরা
আরাকে হোটেল ক্যানবেরার পাঠাইরা দিলেন।

ক্যানবেরা হক্ষর শহর। ইহাকে শহর না বলিরা উভান বলিলেই ঠিক হর। বুঁএবানে বান চৌহ হাজার লোকের বাস। শহরে বান্ত্র অপেকা রক্ষের সংব্যা বেশী। বুক্তঞ্জী হুসন্দিত বিলাগা প্রকারের নরনবনোহারী বুক। তরবো ভিইপিং উইলোঁ বিশেষ উল্লেখবোগ্য। ইহার শাখাশ্রেণী হুইডে কোবল প্রবহন বীর্ব প্রশাবান্তলি নীচে সুটাইরা

পৰিবাহে। শহরের উভরে 'নিভিক্ নেন্টার'। দক্ষিণে भागीत्मके ज्यम ७ जरभार्यकी महकाही जाभिममदृर । সিভিক সেকীয় ও পার্লামেক ভবনের মধ্যে প্রার কেক মাইল ব্যবধান। একট জনবিরল প্রশার হান্তা সিভিক সেকীর ও পার্লামেন্ট-ভবনকে সংযুক্ত করিরাছে। প্রায় মধ্যপথে ভীণ-कांबा मलारला मनी। हेराहे महत्वब ध्यान खरम। हेराब আদে পালে মাৰে মাৰে সাজান বাঙীৰর। 'ছোটেল कानित्वा' भानात्मके जनत्मद काट्य। त्यादित निवा निर्मिष्ठे ষরে প্রবেশ করিলাম। একতলা বাড়ী। মধ্যমূলে বড় চড়কোৰ প্ৰাৰণ। হোটেলট প্ৰাৰণকে খিৱিয়া ৱহিয়াছে। पत्रश्नित नाम्रम पूर्वारना अभन्न वात्राम्म । वाद्रामात छैनरत চালির হাত। হোটেলের চারি দিকেও উন্থক প্রাদ্ধ। ভাহাতে সুসন্ধিত ভক্তেৰী। বহুদিন পরে এইরূপ এক্ডলা বাড়ীতে বাকিলাম। এতদিন দেবিরাছি পিঁপড়ার সারির মভ মাত্রম আর নদীর প্রোতের মত মোটরশ্রেণী। বাদী একটর বাড়ে ভার একট: পালা দিয়া ভাকাশ চুইতে উটিরাছে। এখানে কোন ভাডাহড়া নাই। মার্য, গাড়ী বা বাড়ী কেহই ভিড় করিরা ছটতেছে না। অনেককণ পধ **চलिल अक्**ष्ठि मानून वा अक्ष्ठि शांकी जनवा अक्ष्ठि वांकी स्वता যার। বাভী মাট ছাভিত্রা আকাশে উঠিতে চার না। মাটর কোলেই পান্ধিতে বিশ্রাম করিতেছে। কুপা বলোংলো নদীর গতিতে কোন ভাছাছভা নাই। নিৰ্মাণ আভাশের নীচে এ বেন প্রকৃতির মারাপুরী। প্রকৃতির কোলে বসিরাও ভাতার অপ্রমের রহজের কুলকিনারা না পাইয়া উইপিং উইলো আৰুলাৱিতকুত্বলা বিৱহিৰীর মত কাঁদিতেছে।

হোটেলে আসিরা মানাদি সারিরা পুনরার হাই কবিশনার আপিসে আসিলার। বাংলার ভূতপূর্ব লাট ত্রীর্ত কেসি সাহেবের চিট্ট আরার হুল এবানে অপেকা করিতেহিল। তিনি আনাকে তাঁহার বেলবোর্ণের বালীতে নিবরণ করিয়াছেন এবং এবানকার টেলারী তিপার্টমেন্টের সেকেটারী ত্রীর্ত ম্যাক্লার্লেন মহাশরের নিকর্ট আনাকে ঘবাসন্তব সাহার্য করিবার হুল অনুরোধ করিরা যে চিট্ট বিরাহেন তাহার একট নকল পাঠাইরাছেন। প্রার পনর বংসর পূর্বে বর্ধন কন-আর্ভেটিত পার্টীর হাতে এ বেশের বন্ধিত্ব হিল তবন কেসি মহাশর অর্থন্তী ছিলেন। হার্লে বহাশর টেলিকোনে আনার আগমন-বার্তা প্ররোধনীর আপিসগুলিতে জানাইরা বিলেন। ছির হুইল ট্যান্স বিতারের পি. এস. র্যাক্সতর্ণের সলে ঐ বিনই বেবা হুইবে এবং প্রবিদ্ন নারেরিভার ক্ষিণ্টের সঙ্গে লাকাং হুইবে।

পাৰ্লাৰেণ্ট ভৰবের হুইট হাতার হুইট বাড়ীর মধ্যে সম্ভানী বাল ব্যৱস্থালি ভ্ৰতিত। বাড়ী হুইট উভর রুক ও দ্বিশ মুক নামে পরিচিত। পার্লামেন্ট তবন একতলা। কিছ
দ্বার হুইটি দোতলা। পার্লামেন্ট তবনের পিছনে একট
টলা। এই টলার উপর তবিহাতে বড় করিয়া শৃতন
পার্লামেন্ট তবন নিম্মিত হুইবে। 'পি, এস, মাাকগতর্প
ও এল, টম্সন মহাশ্রববের সহিত নানাবিদ আলাপ
আলোচনা করিয়া এবং পড়িবার ছত করেকবানি পুতক সংগ্রহ
করিয়া হোটেলে কিরিলাম।

এধানে ৬টা হইতে .গ্টা পর্যন্ত নৈশ ভোজনের সময়।
গটার পর কর্মচারিগণের ছুট। খাভের ও পরিবেশনের
ব্যবস্থা ভালই। অভাবের কোন চিহ্ন নাই। একই টেবিলে
পরম্পর অপরিচিত লোকেরা খাইতেতে।

এবানে দেবিতেছি সকলেই বেশ আলাপী। বাবার টেবিলে বা বাবার পর লাউল্লে অনেকেই আলাপ করিতে আসেন। হোটেলে কয়েকজন সাংবাদিক আছেন। তাঁহার। প্রায়ই নানা বিষয়ে আলাপ করেন। অনেকেই "খেত অট্রেলিয়া" নীতি সম্বন্ধে আমার মতামত কানিতে চাহেন।

चाडेनियां विदार्व (समा। हेरांत चायलम २३, १८, ৫১৪ বৰ্গ মাইল অৰ্থাং ভারতবৰ্ষের প্রায় ভিন্তব। ইছার ক্ষমংখ্যা মাত্র ৭৫ লক্ষ অর্থাৎ বভূমানে কলিকাভা ও পার্ধবর্তী निवाक्तव क्रमभरका जाराका कि दानी। সমূদোপকৃলে সীমাবর। দেশের অভ্যন্তরে ক্ষবসভি নাই বলিলেই হয়। মাত্র চার-পাঁচটি শহরে দেশের প্রার অর্থেক लाटक इ वाम । त्रिष्टिविट ३३ लक् स्मार्टिवार्ट ३० लक् बिक्टबर्टन १ लक् अफिल्टिफ ७ लक् अवर भार्ट २ लक লোকের বাস। বাংলাদেশে চাষাপ্রতি ৩।৪ একর ভ্যা আমেরিকার চাধাপ্রতি ৩৷৪ শত একর ছমি ; জার এবানে চাষাপ্রতি ৩।৪ হাজার একর জমি। জুট্টেলিরার জলের বড় অভাব। জলাভাবে দেশের অভ্যন্তরে চাষের প্রসার সম্ভব रद नारे। काषां कन अठ वह र १७११नन जरर শ্ব। 'মেরিনো' ভাতীর মেষ ভাবিভারের কলে এদেশের বছ বন্ধল ছানে মেষপালন সম্ভব হুইয়াছে। এই কাডীয় स्विष्ठिम थात्र क्रम : एविट्ड क्रम । क्रिक्ड हेराएव लाग वन ७ मद्या । अम. कम अवर अभम चट्डेमियां व स्वाम अवर ।

১৩ই কেক্সারী বৃহন্দতিবার ১টার মারে-রিভার ক্ষিণনের আপিনে গেলান। টেটাল মহালর আমাকে সাদরে হাগত করি-লেন। তাঁহার নিক্ট 'মারে' নদীর বিশদ বিবরণ ওনিলান। নারে এ দেশের সুহত্তম নদী। ১৬০০ মাইল লহা। ভালিং, নক্ষমবিক ও ওলবার্থ ইহার প্রধান উপনদী। ইহাবের দৈর্ঘ্য বর্ণাক্রমে ১৭৬০ মাইল, ১০৫০ মাইল এবং ২৮০ মাইল। ভিটোরিরা রাজ্যের অভর্গত 'এেট ভিভাইড' পর্বভ্যমানা হইতে এই নদীওলি উত্তা। উৎপত্তিত্বল হুইতে দক্ষিণ আইেলিরার লীমানা পর্যন্ত হারে নদী নিউ সাউদ ওবেলনের সীমানা



বাটলাস গৰ্জের নিকট নিউক্লার্ক বাঁৰ গাঁবা হইতেছে

নির্দেশ করিতেছে। ভারপর সাউণ অষ্টেলিয়ার ভিভর দিয়া সমুদ্রে মিশিয়াছে। এই শ্বর্জন দেশে নদীর জন লইয়া রাষ্ট্রব্যের মধ্যে প্রথম হইতেই বিবাদ আরভ হইয়াছিল। ১৯০১ और एक शर्य बाह्रेश्वीन चानीन चाकाव विवासित মীষাংসা চত্ত্ৰহ ছিল। ১৯০১ সালে কেডাৱেশন প্ৰতিষ্ঠিত ছওয়ার বিবাদ-মীয়াংসার পণ সুগম হটল। ভিনটি রা**টের** মধ্যে জলের ঘণায়ণ বন্টন করিবার জন্তই রিভার মারে कथिनत्वत एक्टे। चलात श्रेवान व्यवस्त आहत चरा নদীটকে যোহানা হইতে এচকা পৰ্যন্ত নাব্য রাখাও কমিশনের কর্ত্তব্য। যাহাতে পুদত্ম কলের হার। এই নাব্যতা সম্পাদনের কার্য্য নির্জাহ হয় ভজ্জ বাঁব ও দরকা প্রভৃতি নির্মাণ कता इटेशांट्य । नमी द्यवादन एकिन ब्याडेनिशांत व्यादन कवि-बाट्ड (जवाटन किटक्वेदियां हम चरिष्ठ । पन्निन म्बद्धेनियांव বাবছারের জন্ত বংসরে জন্ধত: একবার এই ব্রুটকে জলে ভর্তি করিয়া দেওয়া কমিশনের কর্ত্তব্য। ভিক্টোরিয়া রাথ্রে অবস্থিত 'ছিউম' বাব মাত্রে নদীর সর্বাপেকা বড় বাব। সেধানে अस्थिक क्रम क्रियां विकार **के**रशांवरमञ्जू कथा व्रतिस्करहा। क्रियन निक्क (कान निर्माण-कार्य) कि करवन मा । क्रियन्तव जन्नद्यापम महेदा बाह्रेश्वनि च-व धनाकांत्र निर्माय-कार्या কবিয়া পাকেন।

টেটাক মহাপরের সক্তে আলাপ শেব করিবা ১১টার সেক্টেরিরেটে আসিরা টেকারী সৈক্টোরী ম্যাককার্লের সক্তে সাকাং করিলাম। ম্যাককার্লেন আমাকে সাকরে অভ্যর্থনা করিলেন। ঐবিদ সর্গর রাষ্ট্রের টেকারী সেক্টোরীগণ ক্যান্বরের উপস্থিত ছিলেন। সাকে এগারটার তাঁহাদের সন্দেলন হইবার কথা। ম্যাককার্লেন আমাকে ঐ সন্দেলনে লইরা গিরা সকলের সঙ্গে পরিচর ক্রাইরা দিলেন। কুইন্স্ল্যাও নিউ সাউব ওরেলস্, ভিটোরিরা, দক্ষিণ অষ্ট্রেলিরা, পক্ষিম অষ্ট্রেলিরা ও টাস্মানিরার ফ্রেকারী সেক্টোরীগণ প্রত্যেকেই আমার অভিজ্ঞতার কথা; বিশেষতঃ আবেরিকার কথা ভিনিবার

অভ ওৎস্কা প্রকাশ করিলেন এবং প্রত্যেক্টে আমাকে ব-বরাট্রে নিমন্ত্রণ করিলেন। অতি সংক্ষেপে আমার নার্কিন মুলুকের অভিজ্ঞতার কবা ইংাদের নিকট বিশ্বত করিলাম। আমি যে সমন্ত প্রতিষ্ঠান দেবিবার কয় এদেশে আসিরাছি 'কমন্ওবেলব প্রাক্তিস্ কমিলন' ভাহাদের মব্যে প্রবান। ভালিলাম 'কমন্ওবেলব প্রাক্তিস্ কমিলন' আসামী সপ্তাহে টাসম্যানিয়ার রাজ্যানী হোবাটে টাসম্যানিয়া সরকারের করবাভ ভানিবেন। টাসম্যানিয়া সরকারের ভিন কন প্রতিমিধি ক্যানবেরার এই সংল্লেনে উপছিত ছিলেন। ফ্রেলারী সেক্টোরী এইচ ভি রবিন্সন, ইক্নমিট্র কে. কে. বিন্স্ এবং বাবহারক আর, কি. অস্বোর্ণ। ক্মন্ওবেলব প্রাক্তিস্ কমিলনের কার্য্য দেবিবার আকর্ষণে ইহাদের নিমন্ত্রণ প্রকালাম।

ঐ দিন সন্থ্যার ভাষ্লেদের গুছে নিমন্ত্রণ রক্ষার্থ হোটেল হইতে বাহির হইলাম। এখানে রাভার বাহির হইলেই ট্যান্তি যিলে না। এক ভন ট্যান্তিব্যবসায়ী আছে। ভাছার দোকানে পূৰ্ব হইতে সংবাদ দিয়া বাৰিলে সময়মত যথাছানে ট্যান্তি পাওরা বাইতে পারে। বাসের হুত অপেকা ক্ষরিতেহি। রাজা ক্ষ্মার । বাস আসিতে দেরী হইতেছে। ব্দিক ভএলোক নিবের যোটরে ঘাইতেছিলেন। পাল দিয়া বাইবার সময় সহসা গাড়ী পামাইয়া আমাকে প্রস্ন করিলেন, "আপনাকে কোবাও পৌছাইয়া দিতে পারি কি 9°. আৰি গন্ধবাহানের ঠিকানা বলিলাম। তিনি আমাকে পাড়ীতে তুলিরা লইলেন। যাইতে যাইতে বলিলেন, "আমি আপনাকে দেখিৱাই বুৰিলাম বে. আপনি বাসের ভঙ অপেকা করিতেহেন। সহর হইতে দশ মাইল দূরে আমার বাড়ী। সেবানে আমার চাষ-বাদের ব্যবহা আছে। আমি অনেক শুকর পুষি। একবার এক কন ভন্তলোকের নিকট খনেক শুকরের মাংস বেচিয়াহিলাম। সে কারবারে আমার বেশ লাভ হইয়া-হিল।" আমি ভাবিতেছিলাম ভত্তলোকের ভত্তভার ভথা। ভত্তলোক আমাদিগকে ভাষ্লেদের গুছের অদূরে নামাইরা দিয়া ওভেচ্ছা ভাপন ক্রিরা চলিয়া গেলেন। ধনশৃত রাভায় বাড়ীর নম্বর দেখিতে দেখিতে গৃহট খুঁ জিরা বাহির করিলাম। বছদিন পর সূচি-ভরকারী ও ভাত বাইনাম। তামলে-গৃহিণ এদেশে श्रद्शांनीय प्रविश अञ्चित्र नचाय अत्मक क्या विनासना এবানে বি-চাকর পাওরা বার না। তিনি ভারতবর্ব হইতে একট লোক সদে আনিৱাছেন। সে-ই রালা করিবালে। বাভত্রব্য সব সাম্বনে সাক্ষাইয়া রাখা হইরাছে। নিজেরাই বাঁটবা বাইলাব। ৱেডিওতে দিল্লী কেন্দ্ৰের হিন্দী পান শুনিলাম। ভাষলে গৃহিণীর আভিবেরভার আপ্যারিভ হইর। रहारहेरन किविनांब ।

১৪ই কেবাৰী ওজ্যার আপিলে বলিয়া ভাৰ্লের

সাহাত্যে আহার অষ্টেলিয়ার প্রোপ্রায় ছিন্ন করিলাম। এবাবে দেখিতেছি ভোটেলে ছান পাওৱা কটিন ব্যাপার। সোনবার ছোবার্টে বাইতে ছইবে। সেধানকার হোম-সেক্টোরী আমার ভ্ৰম্ভ হোটেলে ছান সংগ্ৰহ করিতে না পারিয়া ছংগ করিয়া তার করিয়াছেন। শেষে কি হোটেলের অভাবে আমার প্রোগ্রাম ব্যাহত হইবে? পরাঞ্চপে মহাশরের মান্তাজী সেক্ষেটারী আয়েলারের এক বন্ধুর বাড়ী হোবার্টে। তাঁহার পরিবার হোবাটে থাকে। সেই ভন্তলোক তাঁহার বাডীতে ভার করিয়া আমার জচ হোটেল বুঁজিতে অহুবোৰ ভানাই-লেন। ছিত্ৰ হইল আমি হোবাটে ছান না পাইলে এভিলেড হাইব। এডিলেডে সানগ্ৰান্তির আশা পাওয়া গেল। সেবান হুইতে মেলবোর্ণ হুইয়া পুনরায় ক্যানবেরায় আসিব। ভারপর সিভনি হট্ডা কলিকাতা কিরিব। ভাষলে মহাশর সাভ দিনের ছট লইয়া সমুদ্র-ভীরে বেড়াইতে হাইভেছেন। शिष्टिन व रहार्टिस के बिनहे ति के कि कि विदा वांचा हरेंग। यमदार्थ (कार्टिन मिनिन ना । (प्रचारन कार्टिना का ক্যানবেরা টেকারী সেকেটারীকে অমুরোধ করিভে হইল। डीहाटक बुबाहेबा विलिमांग त्व, (शाटिस बाकाब वावश ভবিতে গিয়া টাকা বা অসুবিধার কথা তিনি বেন না ভাবেন।

আমাকে কাজ করিতেই হইবে। দানী হোটেলে কিংবা অসুবিধাজনক হোটেলে আমার আপতি নাই। বাহা পান ভাহাই বেন বিনা বিধায় তিনি আমার কচ দ্বির করেন।

১৫ই কেব্ৰুৱারী শনিবার মদের দোকান বজের সময়
সহতে সিডনিতে গণভোট গৃহীত হইবে। বর্ত্তমানে সন্থা
ছ টার দোকান বন্ধ হয়। এক দল রাজি পর্যন্ত দোকান
বোলা রাখিতে চান। কাগকে ইহা লইয়া থুব বাদবিততা ও
প্রচার চলিতেতে। খাঁহারা রাজি পর্যন্ত দোকান খোলা
রাখিতে চান ওাঁহারা বলিতেতেন যে এখন ছ টার দোকান
আখিতে চান ওাঁহারা বলিতেতেন যে এখন ছ টার দোকান
আসত্তব ভিড় হয়। পরে আর মন্দ পাওরা যাইবে না বলিরা
ঐ সমর লোকে মাত্রাতিরিক্ত রূপে মন্দ পান করে। কাগক
পড়িরা মনে হইতেতিল যেন প্রার সকলের মতেই রাজি পর্যন্ত
দোকান খোলা রাখা উচিত। কিন্তু গণভোটের ফল যখন
প্রকাশিত হইল তখন দেখা গেল ছ টার দোকান বন্ধ ক্ষরার
লল বহু ভোটে ভিতিরাতে। এদেশে মন্তপানের বহুর যেন
একটু বেন্ধী দেখিতেতি।

শনিবার হোটেলের লাউপ্লে বসিরা পশ্চিম অষ্ট্রেলিরার ট্রেজারী সেক্টোরীর সহিত নানা বিষরে আলাপ হইল। পার্বে বাইবার জন্ত ইনি বার বার আমাকে অন্থ্রোব করিলেন। ছঃবের সহিত আরাকে এ অন্থ্রোব প্রত্যাব্যান করিতে হইল। পশ্চিম অষ্ট্রেলিরার বহু বিষয়ে ইহার সহিত আলোচনা হইল। ইনি বলিলেন, "সিড্নির চেরে ভারতবর্ধ আমানের বেশী কাছে। রুভের সমর পার্ব হুইতে কলবো পর্যন্ত একট

বিমান চলিত। সিভনি শৌহিতে বভ সমন্ন লাগে ভার চেরে তম সময়ে তৰ্ম কলছো বাওয়া বাইত।" ভত্তলোক আরও বলিলেন, "এবেশে আন লোকের বাস। বহু দূরে দূরে হড়ান। লিডনি বা মেলবোর্ণের খার্থ পার্ণের খার্থ ছইতে ভিন্ন। সেই 🕶 ইহাদের ষষ্টভণীও বিভিন্ন। কেডারেশন হইতে পশ্চিম অষ্ট্রেলিয়াকে পুথক করিয়া দিবার জভ সেধানকার বছ লোক যুৰের পূৰ্বে বিলাতের হাউস অব লওসের নিকট দ্বৰান্ত কৰিয়াছিলেন। হাউদ অব লৰ্ডস এ বিষয়ে কিছ করিতে পারেন কিনা তাহা অবস্ত তাঁহারা ভাবিয়া দেখেন মাট।" কেসি সাংহবের কথা উঠিল। এক কন অপ্টেলিয়ান ভারতবর্বে কিল্পে লাটগিরি করিয়াছেন সেক্থা এদেশে আমাকে অনেকেই ভিজাসা করিয়াছেন। ভাঁছার শাসনকালে বহুদেশে চুডিন্দের ক্ষিত্রপ তীব্রতা ছিল এবং সেক্স তিনি क्छमूद मात्री, चरनरकरे जाबारक এ क्षत्र कृतिदारहन, ईंशारम्ब मत्वा 'त्किन' महानदाव विद्यांवी मत्नव लात्कव जरवााछ क्य नश् ।

শনিবার আরেকারের বছুর বাড়ী হইতে তার আসিল বে, হোবার্টে কোন হোটেলেই হান নাই। তবে আমার আপত্তি না থাকিলে 'হলিডিন' নামক 'গেই-হাউসে' তিনি আমার জড় ছান সংগ্রহ করিতে পারেন। আমার অবস্ত আপত্তির কারণ ছিল না। গেই-হাউস শুনিরা আমি মনে করিরাছিলাম বে, কাহারও বাড়ীতে গেই হিসাবে থাকিতে হইবে। পরে দেবিয়া-ছিলাম 'হলিডিন' হোটেলই। তবে এখানে মদ পরিবেশন করা হয় না। মদ বিক্ররের লাইসেল বিহীন হোটেল এখানে 'গেই-হাউল'ক্সপে পরিচিত।

১৭ই কেক্সামী সোমবার সকালে ট্রেন্সামীতে ম্যাক্সার্গন ও ভনীয় ভেপুট 'গুরাটের' সকে নানা বিষয়েক্সালোচনা করিলাম। বেলা ২টা ১৫ মিনিটে হোটেল ভ্যাস করিলাম। আমার বড় থলিটি হোটেলের দারোয়ানের হেফানতে রাখিরা গেলাম। গুডার-কোটটিও রাখিরা যাইব ছির করিয়া-ছিলাম। দারোয়ান বলিল, "টাসম্যানিরা পাহাড়ে দেশ। সেখানে এ সময়েও বেশ ঠাঙা পড়িতে পারে। ওভার-কোটটি সকে রাখাই ভাল।" ভাহার উপবেশমত ওভার-কোটটি সকে লইয়া বে ভালই করিয়াছিলাম ভাহা পরে বুঝিয়াছিলাম।

বেলা ৩টা ১০ মিনিটে বিমান উভিল। বনায়ত পর্বত-শ্রেমীর উপর দিরা উভিতেছি। বছুরগাত্র ভূমির রূপ কমনীর, বেল প্রকোমল ভেলভেটে মোলা। ৫টা ২০ মিনিটে মেলবোর্ণ বিমানগাঁটতে বিমান নামিল। এবান হুইতে দ্বিতীর বিমানে হোবার্টে বাইতে হুইবে। টাসম্যানিরা অঞ্জেলিয়ার দক্ষিণে অবহিত একট দ্বীপ। দ্বীপের অভ্যন্তরভাগ পর্বতসমূল। সেবানে জন-বসভি নাই বলিলেই হয়। উভর ও ক্ষিণ উপকূলে। ভিত্র জন-বসভি লাহে। হোবার্ট পর্বর হীণের ক্ষিণ উপকূলে।



ওয়াভামানা বৈহাতিক শঞ্জিগুছের একটি দৃষ্ট। খাড়া পাহাডের উপর দিয়া বড় বড় ফলের নল নামিয়া আসিয়াছে

ষেলবোর্ণের বিমানবাটিট বেশ বড়। প্রারই বিমান নামিতেছে ও উভিতেছে। হোবার্ট-পামী বিমানে গটার বিমান-খাঁট ভাগে কবিলায়। সুসচ্চিত শহরের উপর দিয়া উভিয়া ৭টা ২৫ মিনিটে অন্তরীপ ছাভিয়া সমুদ্রে পভিলাম। প্রবৰে ছ-একটা ছোট ছোট বালির চর। ভারপর দিগভব্যাপী নীল ছল। সন্ধ্যার পূর্বে দেখা গেল আকাশে অপরূপ মেঘের সজা। আকাশের রূপ কোধাও মেদিনীপুরের পাছাড়-প্রস্তরসক্তল প্রাপ্তরের মত, কোথাও যেন অযুত হন্তীর শোভাষাত্রা। দুরে ভারত মহাসাগরে সুর্বাদেব অভগমন করিতেছেন। ভারত-মাতা তৰনও জ্যোতিমতী। তাঁহার শিরোভ্যণের জ্যোতি ষেন তথনও পশ্চিম-দিগত ভেদ করিয়া ইমং দেখা বাইতেছে। ভাবিতেছি কলিকাভায় এবন বেলা প্রায় ৩টা। গুছিৰীগণ নিক নিক গ্রহে বিশ্রাম করিতেছেন। পুরুষেরা কর্মছলে। এবানে किছ क्रमणः "अक्कात निय जारंग होर्द. होर्दत পাতার মত।" অঙ্কারে সব একাকার হটয়া গিয়াছে। দু🕏 অভ্যুৰী হইরা পঞ্চিরাছে। চারদিক নিভন্ধ। কেবল বিধানের একটানা গৰ্জন শুনা যাইতেছে। সহসা অনম-অভ্যার মহা-সাগরে জ্যোতিক সমবায়ের মত হোবার্টের আলোক্ষালা নয়নপৰে পভিত হইল। রাজি ১টা ২৫ মিনিটে এরোডোবে নামিরা ১০টার হোটেলে পৌছিলাম। ভারওবেণ্ট মদীর সেভুর উপর দিয়া নগরে প্রবেশকালে পর্বত-বছর শহরের আলোক-সক্ষা পরম রমণীর দেবাইতেছিল।

১৮ই কেব্রুৱারী বৃহস্পতিবার রবিন্সন, অসবোর্গ ও বিন্সের সহিত ট্রেবারীতে মিলিত হইলাম। তাঁহারা ভাবিরা-ছিলেন যে 'হোটেলে ভারগা পাওরা বাইবে না' বলিরা যে তার সিরাছে তাহা পাইরা আমি আর আসিব না। আমার কচ হোটেলে হান সংগ্রহ করিতে না পারার তাঁহারা লক্ষিত ছিলেন। আমি আসিব না ভাবিরা হুঃবিতও হইরাছিলেন।

সহসা আমাকে দেবিরা বিশ্বিত ও আমন্দিত হইলেন। चामि 'रुनिष्टित' व्यादि एनिया विनन विनिष्टन, "रुनिष्टिन মন্দ কারণা নয়। তবে আমাদের আপিস হইতে আপনার कर गर्दाश्यक्षे रहार्कित्वरे श्राम (बीका हरेबाहिन, अबन এবানে ভ্রমণকারীদের বড় ভিড়। সে হোটেলে স্থান পাওয়া चनकर।" थे निनरे क्यमश्रत्मा थानेन् क्यिमानद स्मानी আরম্ভ হইবে। প্রধান মন্ত্রী কমিশনের সভ্যগণকে মধ্যাহ্র ভোজে আপ্যায়িত করিবেন। সেই ভোজে আমারও নিমন্ত্রণ **इटेल । भार्नादक्षे फरानद्र इन पाद এट (फाल्बर दावचा ।** সেধানে প্রধান মন্ত্রী রবার্ট কগুগ্রোভের সহিত আমার আলাপ হটল। তিনি যথারীতি কমিশনের সভাবন্দ ও উপন্থিত মন্ত্রী ও সরকারী কর্মচারিগণের সহিত আমার পরিচয় করাইয়া দিলেন। ভোকসভার জন পনর ভঞ্জোক উপস্থিত ছিলেন। প্রধান মন্ত্রী আমাকে বলিলেন, "গুনানী শেষ করিয়া কমিশন चार्यात्वव शहेर्ड्या-हैत्नकहुक मरकाब कावश्रीन प्रविवाद ৰ্চ্চ চাসম্যানিয়ার অভ্যন্তরে সকর করিবেন। আমরা ভারাদের সক্ষের সমন্ত ব্যবস্থা ক্রিয়াছি। আপনি যদি ভাঁছাদের সহিত যোগ দেন তবে বিলেষ আনন্দিত হইব।" কমিশনের স্থিত ভ্ৰমণের প্রস্তাবে আমি সানন্দে সন্মত হুইলাম। ভোক-সভার শিক্ষামন্ত্রী আমার পাশে বসিয়াছিলেন। ভাঁহার সহিত নামা বিষয়ে আলাপ হইতেছিল। তিনি বলিলেন, "অট্রেলিরার মধ্যে শিকা বিষয়ে চাস্থ্যানিরা সর্বাপেকা অএব। 'এরিয়া ছল'গুলি আমাদের বিশেষত্বপূর্ণ শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান। এই ছুলগুলির শিক্ষাপদ্ধতির বিশিষ্ঠতা সুধীগণের প্রশংসা পাইয়াছে। আপনার একট এরিয়া ছল দেখিবার সময় হটবে কি ?"

আমি বলিলাম, আগামী কাল ও পরত (বুৰ ও বৃহস্পতিবার) কমিশনের ভনানী চলিবে। শনিবার কমিশনের সহিত সফরে বাহির হইতে হইবে। ভক্রবারে আমি মুক্ত। যদি ঐ দিনে দেখা সভব হয় ভবে অবস্তই আমি সাএছে আপনাদের এরিয়া ছল দেখিতে বাইব।

ভোকনাতে কমিশনের ভনানী আরভ হইল। সর্বপ্রথম প্রধান মন্ত্রী কমিশনের নিকট তাঁহার বক্তব্য নিবেদন করি লেন। তার পর বিভাসীয় অধিক্রতাগণ স্থাব বিভাগ সহতে বলিলেন। ক্ষিশনারগণ তাঁহাদিগকে অনেক প্রশ্ন করিলেন। ১৯শে কেক্রারী ব্যবার ঘানীয় সংবাদপত্র 'যারকারী'তে এই ক্যানীয় বিশ্ব বিবরণ প্রকাশিত হইল। ব্য বছ অক্তরে এই বিবরণীয় এইরণ শিরোনানা ছাপা হইয়াছিল: "বাইলিয়ান অর্থ-নিয়ন্ত্রণ ব্যবহায় ভারতব্র্বের ওংস্ক্র্যা"। বিবরণীয় প্রথমেই বছ হরকে এই ভ্রামীতে বর্ত্তমান লেবকের উপহিতির ক্ষা বলা হইয়াছিল। ভ্রানীয় শেব বিবেক্স্রেণ্ডে মহাশ্র টাসম্যানিয়ার এক্যানি ভূচিত্রাবলী ক্ষি-

শনের সমক্ষে উথাপিত করিলেন। এক একট মানচিত্রে দেশের এক একট সম্পদ বা বৈশিষ্ট্য প্রবর্ণিত হইরাছে। এই মানচিত্রসমূহ রাষ্ট্রীর উন্নরন পরিকল্পনার বিশেষ সহারক। করিশন এগুলির ধ্ব তারিক করিলেন, বলিলেন, "বঙ্গ্রেলিরার কোন রাষ্ট্রে তাহারা এইলপ মানচিত্র দেশেন নাই।" কস্ত্রোভ মহাশর আমাকে করেকথানি মানচিত্র উপহার দিলেন। আমি একথানি এহণ করিয়া বলিলান, "বেশী দিতে হইলে কলিকাতা পাঠাইবার ভাঃ আপনাকেই লইতে হুইবে।"

আইলিয়ায় ছয়ট রাই। তথাব্যে কুইনস্ল্যাণ, নিউ সাউৎ ওয়েলস্ এবং ভিটোরিয়া সম্বিশালী। টাসম্যানিয়া, কব্দি আইলিয়া ও পশ্চিম আইলিয়া ক্ষবিয়ল এবং শিল্পস্পাদে পশ্চাংপদ। শেবোক্ত রাইন্ত্রর ক্ষেত্রীয় সরকারের অর্থসাহায় ব্যতীত অচল। ক্ষেত্রীয় সরকারের সাহায্য-বিতরণ ব্যবহু ভার-প্রতিঠ করিবার ক্ষাই ক্ষনওয়েলপ প্রাক্তিস্ ক্ষিশনের স্ক্রী।

কোন বাই কেন্দ্ৰীৰ সৰকাৰের নিকট সাহাব্যপ্ৰাৰ্থী হইতে কেন্দ্রীর সরকার দরধান্তট কমিশনের নিকট প্রেরণ করেন। ক্ষিশন যথোচিত অনুস্থান ক্ষিয়া ভাঁহাদের ভূপারিখ কেন্দ্ৰীয় সৱকারকৈ জানাইয়া দেন। কেন্দ্ৰীয় সৱকার তিম-শনের সুপারিশ অনুসারে প্রার্থী রাষ্ট্রকে সাহায্য প্রদান করেন। এ বিষয়ে কমিশন কভিপর স্থনিদিই নীতি অবলবন ক্রিরাছেন। ক্ষিশনের মতে যদি কোন রাই ভঙাত রাইের তুল্য করভার বহুন করিবার দায়িত্ব লয় তবে শিক্ষা, স্বাস্থ্য প্রভৃতি জনহিতকর কার্ব্যেও জভাভ রাষ্ট্রের ভারই ভাহার সমানাবিকার। রাষ্ট্র কিন্তুপ করতার বহন করিবে বা কিন্তুপ ক্ৰহিতক্ৰকাৰ্য্য ক্রিবে সে বিষয়ে তাহার সম্পূর্ণ স্বাধীনতা। সাহায্যের পরিমাণ নির্দারণেই ভবু ক্ষিশনের স্থ প্রয়োগ क्या रत। आर्थी बार्टिय क्यकांत क्य बाकिस्न नाराया क्य হয় এবং করভার বেশী থাকিলে সাহায্য বেশী হয়। সেইরণ জনহিতকর কার্ব্যের ব্যব্ধ অভাভ রাই অপেকা বেশী बाकित्न माराया जमक्षात्ज कम रह अवर कम बाकित्न সাহায্য তদহুপাতে বেশী হয়। রাঠ্রের কর্মনুশনতা অমুসাৱেও সাহায্য কম-বেশী করা হয়। ১৯৩৩ এটাৰ হইতে এই কমিশন এদেশে কাৰু করিতেছেন। এ পর্যন্ত ইঁহাদের প্ৰপাৰিশ কেন্দ্ৰীয় সরকার ও প্ৰাৰ্থী হাই নিৰ্বিবাহে এবং कविद्योदय ।

মদল, বৃধ ও বৃহস্তিবার ক্ষিপনের ওনানী চলিল। ছুই বেলা ওনানীতে উপস্থিত রহিতেতি আর বৈকাদে শহরে বেকাইতেতি।

হোবার্ট শহর ভারওরেন্ট নদীর তীরে; সর্ব হইতে ১৪ নাইল দুরে। অদুরে ৪১৬৬ সুট উচ্চ ওরেলিংটন পর্বাত

গালাকের গারে ও উপত্যকার সমত্রিতে সহরট অবহিত। वहीत छेण्य शार्य अवर नमकृषिहेक्त किन निर्कर शाराक। नव्यक्ति महीत शक्तिय शादा। मही दीकिया मादव मादव **লচরের ভিতরে চলিরা আসিরাছে—ছলভাগ বেন ছই বাছ** বাভাটরা নদীর মধ্যে চলিরা গিরাছে। উপকৃলভাগ করেক বলেই এইস্থপ শুক্লা বিভীয়ার টালের মত বক্র। হোবাট বন্ধর একট শ্রেষ্ঠ পোতাশ্রর। পৃথিবীর বৃহত্তম ভাহাক জনায়ানে এখানে আসিতে পারে। প্রকৃতির রম্পীয় নিকেতনে এই শহরট অবস্থিত। গাছপালা খনসবুদ। রক্ষারি **ফল। প্লাতিয়োলা কুল বড় কুন্দর। পাইন জাতীয় ছোট** ভোট গাছ নামা অপে ছাষ্ট্ৰা কেব বাড়ীর প্রাচীর তৈরি করিয়াছেন। কেছ নানাত্রণ তোরণ নির্দ্ধাণ করিয়াছেন। ভাতাশ পরিভার, বাতাস বিশুদ্ধ। আবহাওয়া সুধকর। পর্বত-ক্রোভে প্রশন্ত নদীতীরে প্রকৃতির দীলা-কুল্লে ছবির মত স্থন্সর খহর হোবার্ট, খহরের জনসংখ্যা ৭২০০০। বিকালে বেড়াইতে বেড়াইতে নদীর উপরকার পুলে যাইতাম। ইহা একট 'প্ৰুন' সেতৃ। সেতৃটি বেশ সুক্ষর। ইহার উপর হইতে महरदाद एक शदम दम्पेश । महरदाद चरमरक चामारक वनिष्ठ, "এত বড় 'পঠ ন' সেতু পৃথিবীতে আর নাই। আমি কলি-কাতার পুরাতন হাওড়ার পুলের কবা বলিরা সবিনরে প্রতি-বার ভাৰাইয়াভি।

এবানে বড় রাভার উপর সরকারের টুরিই ডিপার্টমেন্টের আপিন। অমণকারীদের সর্বপ্রকার সংবাদ সরবরাহ করা এবং তাহাদের বড় নানা দিকে যাভারাভের বন্দোবস্ত করা এই আপিসের কার্ব্য। প্রীম্মকালে মনোরম টাসম্যানিরার অমণকারীদের বড় ভিড়।

ব্ৰবার শিক্ষা বিভাগের ভিরেক্টরের নিকট হইতে চিট্টি
গাইয়া তাঁহার আশিসে গেলাম। তাঁহার সহকারী হিউসের
সদে আলাপ হইল। ট্রক হইল হিউস শুক্ষবার সকালে
আমাকে একট এরিরা ছুলে লইরা বাইবেন। সকাল ৮টার
রঙনা হইরা সভ্যার কিরিব। পরদিন প্রাণ্টস্ কমিশনের
সহকারী সেক্টোরী করেটার আমার সহ্যাত্রী হইবার ইছা
প্রকাশ করিলেন। করেটার পক্কেশ হইলেও বোঁবনোচিত
সন্দীবভার সর্বলা প্রকুল্প এবং সল্লালাশী।

২০শে কেন্দ্রারী বৃহস্পতিবার অসবোর্ণ আমাকে নৈশ ভোজনের নিমন্ত্রণ করিলেন, সভ্যার পূর্বেই উহার বাড়ীতে উপছিত হইলার। অসবোর্ণ-গৃহিনী সালরে আমাকে অভ্যর্থনা করিলেন, উহার রন্ধন তথনও শেষ হর নাই। মাবে মাবে রামাবরে বাইতেছিলেন। সন্ত্রীক এটর্ণী কেনারেল বা আইন ন্যী এবং প্রাক্তিস্ ক্ষিপানের সভ্যন্তর্মও এই ভোকে নিমন্ত্রিত ছিলেন। তাহারা আমার পরেই আসিলেন। অসবোর্ণর দ্র্যান্থার বংসারের এক পুত্র বাহিত্রে বেলিতেছিল। তেলেইর

ষ্যাখিকে বড় বৌক। আমি ভারতবর্ণের লোক ওমিরাই নাএতে প্রশ্ন করিল, "আপনি দড়ির বেলা ভানেন ?" তাহার মাতা হাসিলেন। বুবাইরা দিলেন বে, দড়ির বেলাট গল্পানা । তেলেটির কল্পার ভারতবর্ণ মানিকের দেশ। তাহার ভানা ছই-একট মানিক আমাকে দেখাইবার জন্ত সে বুব ব্যক্ত হইল। একট মানিক বেশ ভালই দেখাইল। একট রবারের নলের মধ্য দিয়া একট প্রভা চালাইয়া দিল। প্রভার তুই প্রাশ্ত নলের হই দিক দিয়া বুলিতে লাগিল। তেলেট তথন কাঁচি দিয়া নলট কাটয়া ছই টুকরা করিয়া ক্লেলল। কিছ প্রভাট অবওই রহিয়াছে। আমরা সকলেই ভাহার প্রশংসা করিলাম। তেলেট উৎসাহী ও বুরিমান্। ব্যাসময় ভোক্তন প্রক হইল। অসবোর্থ-পুহিণী পরিবেশনও করিভেছিলেন এবং আমাদের সক্লে আহার করিতেও বসিয়াছিলেন। তাহার কর্মণ্টুতা ও ব্রহ্ম-কুললতার প্রশংসা করিলাম।

রাত্রি প্রায় ১১টার অসবোর্গদের নিকট বিদার লইরা আমরা সকলে একত্রে বাসে কিরিলাম। এটর্ণী জেনারেল ও তাঁহার ত্রী আমাকে হোটেলে পৌহাইরা দিবার ভার লইলেন। এটর্ণী জেনারেল রুকে। প্রাণ্টস্ ক্ষিশনের সভ্য অব্যাপক উভ্ তাঁহার পূর্বপরিচিত। তিনি অব্যাপকের প্রপ্রের উত্তরে বলিলেন, "আইন ব্যবসা হাডিরা নুতন রাজনীতিতে আসিরাহি। আইম ব্যবসা ভালই চলিতেহিল। কিছ রাজনীতির বিচিত্র গতি এখনও বুবিতে পারিতেহি মা।" বাস হইতে নামিরা জন্তলোক ও তাঁহার ত্রী আমার সঙ্গে হোটেলের দরকা পর্যান্ত আসিলেন। দেখিলাম দরকা বধা। জন্তমহিলা হাসিরা বলিলেন, "তর নাই। বেরুপেই হোক আপনাকে বরে চুকাইরা যাইব। না হর জানালা বাহিরাই উঠিব।" অপ্স্থানে দেখা গেল একটা দরজা খোলা আছে। আমাকে "ভিতরে চুকাইরা' তাঁহারা বিদার প্রহণ করিলেন।

২১শে কেকারী শুক্রবার এরিয়া ছুল দেখিতে যাইব।
প্রাভরাশের পর পূর্ক্ষমিদিট ছানে হিউস্ ও করেটারের সঙ্গে
মিলিত হইলাম। হিউস্-পদ্দী আমাদের সঙ্গে যাইবেন।
আহাকে তাঁহার গৃহ হইতে গাড়ীতে ভূলিরা লওরা হইল।
হিউস্-পদ্দী ভারতবর্বের কথা ভূলিলেন। সোংসাহে
বলিলেন, "আমার ঠাকুর্জা ভারতবর্বে রেল-কর্ম্বচারী হিলেন।
পূর্ক্ষবন্ধের কোন এক শহরে ভাহার কর্ম্মহল ছিল। আমার
এক ভাই (সংহাদর নহে) এখনও ভারতবর্বে রেলের ফাঙ্গে
মির্জ আহেন। (সামীর দিকে অনুলি নির্কেশ করিয়া)
এই ব্যক্তিটীর করেই আমার ভারতবর্বে যাওরা-হর মাই।
পিতার সঙ্গে ভারতবর্বে বাইবার করে আমি প্রস্তুত এবন সমরে
ইনি আমাকে বিবাহ করিয়া কেলিলেন।"

করেটার বলিলেন, "আমার এক তদিনী গারো পাহাড়ে বিশ্বরী জীবদ যাপন করিতেহেন।" হিউদ্-পদ্মী আমার দ্বী ও প্রক্তার সহতে প্রশ্ন করিলের।
ভাহাদের কটো দেখিতে চাহিরা আমার নিকট ভাহাদের
কটো নাই ওনিরা নিরাশ হইলেন।

चामता अतिया पून (पविष्ठ चौर्यहोन आय यहिएहि। শীবটোন হোবার্ট ছইতে ৩৪ মাইল। ওয়েলিংটন পাছাডের গা বাহিরা উপরে উঠিতেছি। আঁকা-বাঁকা রাভা। দূরে ভারওয়েন্ট নদী দেবা যাইতেছে। আরও উপত্রে উঠিবার পর বছ দূরে সমুদ্র দেবা গেল। সমুদ্র পুন: পুন: চোবে পড়ি-তেৰে ও আড়ালে যাইতেছে। চারদিকে পাহাড়। পাহাড়ের গারে অকুরম্ভ ইউক্যালিপটাস বা গাম গাছের জনল। পাইন, ফার এবং ওক পাছও যথেষ্ট। মাবে মাৰে বিভীৰ্ণ ৰোপ। ভাহাতে ছোট হোট লাল ফল পাকিয়া আছে। কোখাও মেয়েরা সেই ফল পাভিয়া লইতেছে। সেগুলি ছারা দাকি কেলি প্রস্তুত করিবে। হয়দভিল নামক একট প্রাম পথে পঢ়িল। এই গ্রামে একট ভুল আছে, ছুলের বাড়ীট স্থান্দর তথনও ছল বসে নাই। হিউস সেধানে গাড়ী থামাইরা চারিদিক পুরাইরা দেখাইলেন। দূরে চারদিকেই পাছাড়। অদূরে হয়ৰ নদী-- বছতোয়া কুদ্ৰ শ্ৰোতবিনী। নদীর উপরকার সুন্দর একট সেতু অতিক্রম করিয়া ওপারে গেলাম। অনেক দুর . भर्वाच ननीत बाद्य बाद्य हिनामा । भरवद भारम बाद्य बांद्ये चार्थात्मत वांत्राम। वक वक चार्थात्मत वांत्रिहा-গুলি দেবিতে বড় মনোরম। আপেল পাকিবার সময় ছইরা বাসিয়াছে। এক একটা গাছ যেন বাপেলের ভাবে ভালিয়া পড়িতেছে। মাৰে মাৰে লাল টুক্টুকে কলগুলি দেবিতে বড়ই লোভনীয়। বেলা সংভে বারটায় শীবটোনে পৌছিলাম।

প্রধান শিক্ষ ছলের পাশেই সপরিবারে বাস করেন। ভিনি ও ভাঁছার পদ্মী আমাদিগকে সাদরে অভার্থনা করিলেন। ম্ব্যাক্ত-ভোজনের আরোজন হইরাছে। ভোজনে বসিলাম। ছলের মেরেরা রারা করিরাছে। তাদাদের মধ্যে ছই কন পরিবেশন করিল। সন্ত্রীক প্রধান শিক্ষক এবং করেকখন লিকক ও লিক্ষিত্রী আমাদের সঙ্গে আহার করিলেন। ভোৰনাৰে প্ৰধান শিক্ষক আমাদিগকে ক্লাসে দইয়া গেলেন। পর পর তিনট ক্লাস দেখিলাম। চৌছ-পনের বছরের ছেলে-মেৰেরা পড়া বিতেছিল। ছব-সাভ বছরের ছেলেমেরেরা কাগৰ কাটয়া বাকী বানাইতেহিল। বাকীগুলি আমাদিগকে দেবাইবার কর তাদের বিশেব উৎসাহ। আর্ট-নর বছরের ছেলেমেরেরা ভূমওলের ম্যাপ আঁকিভেছিল। প্রধান শিক্ষ আমাকে প্রভাক বেকের কাছে লইয়া গেলেন। আমি নিকটে ষাইতেই শিশুগৰ "এই ভারতবর্ব" বা "এই ক্লিকাডা" বলিয়া নিৰেদের অভিত মানচিত্তে সোৎসাহে আমাকে ভারতবর্থ বা কলিকাতার অবস্থান দে<del>থাইডেছিল। এতটুকু হেলেবেরের</del>। ভূমতলের মানচিত্র আঁকিবাহে বেবিরা চমংকৃত হইলার। অভন

ৰোটাৰ্ট ভালই হইয়াহে। পাৰার প্ররের ক্বাবে ভাহারা মানচিত্রের উপর অভাত ভারগাও দেখাইল। প্রধান শিক্ষ বলিলেন. "আমি কাল ইহানের বলিরাহিলাম যে কলিকাভ) হইতে এক কন ভদ্ৰলোক ভোষাৰের দেবিতে আসিতেহেন। ভোষৱা যদি ভাঁহাকে ভাঁহার দেশের কথা বলিতে না পার ভবে তিনি ভোষাদের উপর অগভঃ হটবেন। বাইরে কয়েক্ট **(इत्म क्लामान पिक्का (बनाव मार्ठ शविकाव कविक्लिक)**। কোণাও ছেলেরা ছুতার বিদ্রীর কাক করিতেছে, কোণাও লোহারের কাক চলিতেছে কোখাও বা চাহডার কাক চলি-ভেছে। বেরেরা সেলাই শিবিভেছে। ভাহাদের রাগ্রাপ্ত পরিবেশন তো পূর্বেই দেখিয়াছি। কাঠের কান্দের শিক্ষক সগর্বে বলিলেন তাঁছার একট ছাত্র করেকদিন পূর্বেই ছোবার্টে একট বড় দোকানে বেশ ভাল মাহিনায় কাঠের কাজে নিযুক্ত হইয়াছে। প্ৰধান শিক্ষকের সলে আলাপ-আলোচনা করি-लाम। फक्षरलारकत नाना दिशत (दन कानाकना चारह। বলিলেন,"আঘরা দেবিয়াছি যে অধিকাংশ ছেলেই ছুল ছাড়িয়া চাষবাস বা খণ্ড ব্যবসায়ে চলিয়া যায়। কলেকে পুব কথ ছেলেই যার। কাজেই স্থানীর শীবনযাত্রার সলে বনির্চ সম্পর্ক बाबिबार और अबिबा मूलब शबिकना कवा सरैबाटर। শহরের এরিয়া ছলে অগ্রান্ত বিষয় শেবান হয়। এবানে चामता शृक्तिचान निवार, करिकारीय काच निवार, चार्ट्डव काक निवारे। स्टारवा बाबा लाटन, लानारे लाटन। रेराबा পরিণত বয়সে যেত্রপ জীবন যাপন করিবে ভাষার জন্ত সম্পূর্ণ ব্ৰপে প্ৰন্তত করিয়া ভোলাই এবিয়া ছলের আদর্শ। স্থানীয় জীবনযাত্রার সভে সামগ্রত রোধিরাই ইহাদিগতে আমরা গভিষা ভূলিবার চেষ্টা করি।"

হিউস্ প্রধান শিক্ষককে বলিলেন, "আপনাদের বেশে আসিরা ইনি হহডে একট পাকা আপেল ভূলিতে পারিলেন না—ইহাই আমার আপশোষ।"

প্রধান শিক্ত—"এবার চুর্বংসর, কসল দেরীতে চ্ইরাছে। অভাত বার এতদিনে আপেল পাকিরা বার। কিছ এবার একটও পাকে নাই।"

স্প-প্রাদণে অনেকটা সমতল ভ্রি। ভ্রে চারবিকে
পাহাড়, বড় বড় ইউক্যালিপটাস গাহ। নানারপ কুল গাহ।
ফতকগুলি বাবলা গাছের মত গাহ দেবিলাম। নাম গুরাটাল।
দক্ষিণ আফ্রিকার সলে যথন ভারতবর্বের 'বাণিজ্য-র্ভ' স্থরু
হুইরাহিল তথন শুনিরাহিলান বে চামড়া ট্যান করিতে গুরাটাল
গাছের ফলের প্রয়োজন এবং দক্ষিণ আফ্রিকাই ভারতবর্বকে
এই ফল সরবরাত্ করিত। একেশের ধেলা-গুলা সম্বদ্ধে
আলোচনা হুইল। এখানে বাকি এক পক্ষে ১৮ ক্য লাইরা
কুটবল ধেলা হয়।

বৈভালে সকলে মিলিয়া চা-সান করিয়া ভটার বীবটোন ভ্যান করিয়া ভটায় কোনাটো গৌছিলান।

প্রদিন ২২শে কেব্রুৱারী শ্দিবার প্রাভরাশের পর (शांटिम्ब शांवना कृकारेना विना निना चाहि। जनकारी वाहरणा-वेरलकृष्ठे क कांद्रवामाश्वलि शतिवर्णनार्थ द्रश्या व्हेरण হাবে। রবিনসন প্রাণ্টস্ কমিশনের সভাগণকে লইরা ভাষাকে ट्यांटिन व्हेट्ड छुनिया नहेट्यम । क्टबक विनिट्डेय बटवाहे তাহারা উপরিত হটলেন। আমি গাড়ীতে গিরা উঠিলাম। ছুইট মোটর গাড়ীতে আমরা আট জন। ক্ষিপ্নের ভিন জন मछा, मिक्किने महकादी मिक्किने, दिवनमन, सार्ट्या-हेलकृष्ट्रेक क्षिनत्वद (ह्यावमान बदर चार्यि। ब. छद्नू. মাইট ছইড্রো-ইলেকট্রের সভাপতি। অভিযানের নেতা ও প্রপ্রদর্শক। ট্রেকারী সেকেটারী दविनमन मदकादित भक्त प्राप्त छत्त्रावशकः। ध. ध. কিট্রিরাচ্চ একিস ক্ষিশনের সভাপতি। ইনি এদেশের একাটক্যাক সভারও সভাপতি। অব্যাপক বি. এল উড ভিতীয় সভা। ইনি বেলবোর্ণ বিশ্ববিভালত্ত্তে ভ্যাস বিভাগের প্রধান অধ্যাপক। অপর সভ্যের নাম কে কে. কেনেলি। ইনি পার্বের অবিবাসী। ইঁহারা সকলেই প্রোচ-वस्त । क्षिणत्वद (अटक्रिकी अम् विठार्छन्न। हेनि शक-কেশ বৃদ্ধ। সহকারী সেক্রেটারী ফরেপ্রার পূর্বাদিন আমার সলে জীবটোন সিহাছিলেন। এ দেশের অভাতর-ভাগ পার্বভা মালভূমি। ৩০০ কুট উচ্চে একট বড় হুদ चाटा इसके २० महिन नवा ७ ४८ महिन ५७७। हेरांड ৰাম গ্ৰেষ্ট লেক। এত উচ্চে এত বচ ব্ৰু বিদ্যুৎ-শক্তির একট বিৱাট আধার-বিশেষ। এধান হটতে ৰুল নামাইয়া লটয়া পৰে বেৰানেই একটা ৰাভা পাছাভ পাওৱা যায় দেৰানেই

পর্বাতশীর্ষ হইতে স্বেগে নিশভিত জনলোতের সাহায্যে পর্বাতশ্বে টারবাইন চালাইরা বিহাৎ উৎপাদন করা সভব হইরা থাকে। টারবাইন গুরাইরা দিরা জলরাশিকে থাল দিরা বাহির করিরা দেওয়া হর। পরে ঐ জলের অ্বভরণ-পর্বে আবার বর্ধন একটি থালা পাহাল পলে তর্ধন সেথানে ঐ জলের হারাই আবার একটি বিহাৎ-উৎপাদন-ক্ষেপ্র চালান হর। এইরূপে এই হুদের জলের হারা ভানন্ ও ওরাভানালা নামক হুইটি হানে হুইটি বিহাৎ-উৎপাদন কেন্দ্র পরিচালিত হুইতেহে।

প্রেট লেক ভিন্ন লেক সেওঁ ক্লেয়ার নামে আর একট ব্রুদও
এই পাহাছের উপর অবধিত। তাহার অলের হারা
টেরেলিয়া কেন্দ্রে বিহাৎ উৎপর হইতেছে। বাটলার্স গর্জ
মামক হামে অপর একট কারধান। হাপিত হইতেছে। এই
ক্লেটও সেওঁ ক্লেয়ারের ফলে চলিবে।

এই সমন্ত কল-বিহাৎ উৎপাদনের কাক একটি কমিশনের হতে হত। নাইট এই কমিশনের সভাপতি। কমিশন প্রচুর বিহাৎ উৎপাদন করিতেকেন। ইংাদের বিহাৎ-উৎপাদন-প্রচেষ্টা অকুরত সন্তাবনার পরিপূর্ণ। ভবিহতে সমুক্রের তলা দিরা তার চালাইরা এখান হইতে ভিটোরিয়া রাষ্ট্রে বিহাৎ সরবরাহ করিবার কথাও কেহ কেহ চিতা করিতেকেন। টাসম্যানিয়ার উৎপন্ন বৈহাতিক শক্তি টাসম্যানিয়ার তথা অট্রেলিয়ার একট বক্ত সম্পদ।

আমর। শশিবার সেণ্ট ফ্লেরারের কেঞ্ছালি এবং রবিবার গ্রেট লেকের কেন্দ্রগুলি দেবিব। সোমবার হোবাট কিমিব এবং কিরিয়াই আমি মেলবোর্ণ অভিযুবে রওয়ানা ছইব।

# কামনা

# अधीरतस्यनाथ भूरथाभाषाग्र

এক সদে সিবেছিছ দ্ব লৈলপুরী,
বরা যেপা বর্ষার কেবে ক্যাপার,
বিদ্যালের রৌক্র-হারা করে দ্রোচ্রি—
রাজির দীপালি যেপা নগরী সাহায়।
বর্গে বর্ণে হেরে গেছে নীরস পায়াব,
টেকেছে ক্ষতা তার ভাষ আবরণে
শতেক নির্ভাৱ তারে ক্যাইছে ভাষ
মধু হাত আগাইছে তাহার আগতে।

নিচ্চল পাষাণ আজি এ বন্ধ পঞ্চয়,
আসিবে না ছুটি' বেখা সিন্নিন্তি বিশী ?
আসাবে না ভাষ লোভা আবন্ধি কহন,
বাজাবেনা মৌন ভাঙি শিশ্লন-কিভিনী ?
ব্যুৱ অন্বভা ভাঙি শীবন উল্লোস
উঠিবে না হৰ্ব ভৱে কন্ধি' অই হাস ?

# (थां कू जू ७ होत्तत्र आक्-मार्गिक यूग

## ঞ্জী অঞ্চিতরঞ্জন ভট্টাচার্য্য

চীন দেশের সভ্যতা অভিনর প্রাচীন। তাহার দার্শনিক, সামাজিক ও রাজনৈভিক চিভাবারার জ্ঞমবিকাশের মধ্যে, প্ৰথমতঃ ভারতীয় ও লেষের দিকে ঐপ্তায় ভাবধারার প্রভাব যদিও লক্ষিত হয়১ তথাপি তাহার মধ্যে যে নিক্স মৌলিকতা নিহিত আছে সেক্থা অধীকার করিবার উপার-নাই। চীন দেশের क्षयम উল্লেখযোগ্য मनश्री (बांश कृ सूर । ठांहांत शृद्धि चानक মনত্বী অন্তগ্ৰহণ করিয়াছিলেন : কিঙ তাঁহাদের সহত্তে কোন ঐতিহাসিক নিদর্শন না থাক র তাঁহারা বিশ্বতির অতলগর্ডে বিলীন হইয়া গিয়াছেন। বোং কুছুর মতবাদে কডটুকু योजिक्छ। चाद्य (म नवृद्ध यदाई म्हान्य विक्रमान : अवर देवा প্ৰাহ্ন নিশ্চিত যে তাঁহার সবটকু একেবারে নিশ্বস্থ নয়: তিনি भूकी भूकी वनविश्रापत निकृष्ठे चारमकाराम अमे । (बार कू. चूत সমসাময়িক লাউছু০। লাউছুর মতবাদও পূর্বা পূর্বা মনীবি-প্ৰের ভাবধারার দারা প্রভাবিত হইরাছে। অভতম वार्गिक म वृ'त (रजायेश धरे क्यारे धर्मका। चडाड चर्चनान मार्गनिकत्वत मञ्जाच—त्यमम का ७ मिर—ईंशांपत्रथ नकारण योगिक्छ। याहे रशियारे यत्न स्य ।

हीन (शरणत पोर्निक मछवारमत स्क्री एव (बार मू पूत সলে সংখ। তাঁহার পূর্বে কোন প্রসিদ্ধ দার্শনিকের অথবা কোন সুবিজ্ঞ মতবাদের স্থান পাওরা যার না . প্রকৃতপক্ষে পুৰিছন্ত ভাবে কোম মতবাক তথন পৰ্যন্ত বিভয়ান ছিলও না। এই প্রাকৃ-দার্শনিক যুগ সম্বন্ধে কোনস্কপ সন্ধান পাইতে ৰ্ইলে কতকণ্ডলি ইভিহাস ও সাহিত্য-প্ৰের উপরই মুধাত: নির্ভর করিতে হর। কারণ তদানীত্ব চিতাবারার সহিত পরিচিত হইতে হইলে এই গ্রহসমূহই এক্মাত্র সহার। ज्यात्या जि किर नामक अञ्चलनिएक कांख वरत्नव वाकाव व'क्यू-কালের প্রথমাংশে কি কি ঘটরাছিল ভারা লিপিবছ चारह। এই সি চিং গ্রন্থ ৩০৫ বানি গীতিকাব্যে পরিপূর্ণ। এই গীতিকাবাওলি পাঠ করিলে ভংকালীন চাও বংশের রাজতে প্রচলিভ ভাচাত্র-ব্যবহার ও রীভিনীভি সহতে কিঞিং জান লাভ করা যায়। সু চিং জার একবানি মুলাবাদ এছ: ইহা ঐতিহাসিক তব্যে পরিপূর্ণ এবং প্রবাদ প্ৰধান বাৰ্টনভিক ও সাধাৰিক চিতা ও ভাবৰাৱা অবলহনে লিবিত। সামাৰিক রীতিনীতির সলে বিশেষ ভাবে পরিচিভ ধর্মাঞ্চগণের পার্থনাসমূহ ইহাতে লিপিবছ ছই-রাহে। চুম চি উ নামক আর একখানি এছ আছে। ভাছাও ঐভিহাসিক ভব্যবহন। ইহাতে প্রতি বংসরের সামাজিক 😘 ব্লাক্ট্ৰৈভিক বট্ট্ৰাবলী কালাকুক্ৰ্ৰিকভাবে উত্লিখিত হুইৱাছে। ছো চুয়ান নামক প্রছবানি প্রেন্তিক চুন চি উ নামক প্রছেরই
দিকা-বরণ। এই প্রছবানিই চীন দেশের প্রামাণিক ও
তথাপূর্ব মূল্যবান্ প্রছ। প্রাক্ষণার্শনিক মূলের সর্বাশেষ প্রছ সভ্তবত: কো ইউ নামক প্রছবানি। ইহাতে বিভিন্ন বিষয়ে কর্ষোপক্ষনসমূহ সন্তিবেশিত আছে এবং ছো চুয়ানে যে যে বংসরের ঘটনার্গান্তর উল্লেখ করা হইয়াছে, সেই সেই বংসরের ঘটনারলী সংক্রান্ত ক্ষোপক্ষনই ইহাতে লিশিবছ করা হইয়াছে।৫ আনাম্বের মনে হয় এই প্রছ অথবা চুন চিউ নামক প্রছবানি অনেকটা কৈন মূলপ্রধানাচার্য্য গ্রহ্মারলী নামক প্রছের মত। কৈন গ্রহ্মারতিও এইয়প কোন্ গুরু কোন্ বংসরে কি করিলেন ভাহা লিশিবছ আছে।৬

মনীৰী ৰোং মূজু কে এবং তিনি কি করিতেন সেই সম্বৰে চীন ফেশের ঐভিহাসিক এছ সি চিতে অলবিভার আলোচনা অ'ছে। ৭ তিনি সাংট্থ প্রদেশের চু মু শহরের নিকট লু নামক ছানে অৰ্থছণ কয়েন। তাহার পূর্ম-পুরুষপণ ভং রাজার বংশবর। কিন্তু কালক্রমে তাঁছারা পিতৃভূমি ত্যাগ করিতে বাধ্য হন এবং এই সুনামক ছানে বসবাস করিতে আরম্ভ করেন। এই মৃতন ছানে আসিয়া পারিপার্বিক কারণবশতঃ অভ্যন্ত আবিক দূরবছার ওাঁহারা পভিত হন এবং খোং হু ছুকেও এই আধিক দূরবহার দক্ষন হুর্তোপ ভূমিতে হয়; তিনি অবিচলিত ভাবে বহু খাতপ্ৰতিখাত সন্থ করিয়া কোন প্ৰকারে রাজ্যরখারে প্রবেশ লাভ করেন। সেধানে খীয় অধাবসায় বলে রাজার প্রধান অধাত্যের পদ লাভ করেন ও অতিশর দক্ষতার সহিত শাসনকাৰ্যা পৰিচালনা কৱেন। কিছু বাজে আভাছরীণ গোল-বোৰ উপস্থিত হওৱাৰ ভিনি সেই পদ পরিত্যাগ করিতে বাব্য হম। তথ্য তিনি কয়েকজন অনুচরসহ এয়োদশ বংসর কাল माना चारम क्रमन करवन अवर वह इ:व-देगरकत ममुबीम इन। পরিশেবে ক্ষত্যিতে প্রত্যাবর্তন ক্ষিয়া তিন বংসর পর্যাত্ত প্রাচীন মনীবিগণের গ্রন্থক্ অতি মনোবোগের সহিত পাঠ ক্রিতে বাক্ষেদ ও সকে সকে অভ্চরবর্গকে ভরিবরে শিক্ষাদান করেন। এই অভচরবর্গই শেব পর্যন্ত তাঁহার শিবের चान व्यविकास करत ; बुक्तव नवस भवाष छोरास नियमः गी विन भर्षाविक । छिनि ८१३ बै: पृ: चर्च (पर्छाप कर्त्वन । চু সুৰাষক হাৰে ভাঁহাকে স্মাৰিছ করা হয়; এই ছালে এবনও তাঁহায় সমাধিমন্দির দেবিতে পাওয়া বার।

বোং সূ জু চাও বংশের রাজাবিগকে গুব এছা করিতেন। কারণ এই চাও বংগের রাজভবর্গের সময় কুইভেই চীন কেলের

সভ্যতা একট বিশিষ্ট ৰূপ পৰিএহ কৰে। চাও বংশীয় বাৰগণের शुर्व्य चांत्रक हरे वांचररामंत्र भठन रहा। अरे भठामत कांत्रव হুইতে চাওবংশীর রাজগণ অশেষ শিকালাভ করেন» এবং পতনের কারণ সধ্যে সম্যক্ অবহিত হইয়া অভি সভূপণে ৱাজাশাসন করিতে থাকেন। তব্দত রাজ্য ক্রনেই উরতির পৰে অৱসর হইতে থাকে ও শিকা-ধীকার উচ্চ ছান অবি-কার করে। বোং সু ছু-ও এই চাও বংশের রাজগণের খণে মুখ ছিলেন এবং ভাঁছাদের প্রশংসায় পঞ্মুব হইয়া বলিয়াছিলেন, "চাও বংশীয় রাজ্ভবর্ণের কি সাংস্কৃতিক গরিমা। এইক্ত আমি তাঁহাদিগকে সর্বাদা অকুকরণ করি।"১০ बहे अन्तर मत्न वाविष्ठ इहेर्द स्थ. त्यार कू कृहे नर्सक्षयम সাধারণ ভাবে শিকাদান-ব্যবস্থার প্রবর্ত্তন করেন। তিনি ক্রমান্তরে তিন বংসর প্রাচীন গ্রন্থগুলি পাঠ করেম এবং ভবিষয়ে শিকাদান করিবার এক একট সম্প্রদার স্ট্র करवन । ১১ এই वह धीम स्टब्स्य बार्मनिकनर्यव निक्र है जिनि নমভ ; কারণ খোং হু ছুই প্রিছিষ্ট ভাবে দার্গনিক আলো-চনার প্রথম পথপ্রদর্শক ছিলেন এবং তাঁহার সময় হইতেই প্রকৃত প্রস্তাবে দার্শনিক আলোচনার স্ক্রপাত হয়।

খোং সু জু নিজে কোন গ্রন্থ করেন নাই। প্রাচীন ছম্বানি বিনয়গ্ৰন্থ (লিউ, ই—six disciplines) তিনি অতি মনোযোগের সহিত অধ্যয়ন করেন এবং তাহা হইতে সার সম্বলন করিয়া বাণী প্রচার করিতে থাকেন। বাণীসমূহ সজ্বের অঞ্চরবর্গ লিপিবছ করিতেন। এই লিপি-বছ বাণীসমূহই পরবর্তীকালে এছাকারে লিপিবছ হয়, এবং ইহা শেষ পর্যান্ত খোং সুজুর দর্শনের মূল ও প্রামাণিক अद् विश्वा वौक्ष्ण स्य । . टिनिक विभय्न अंद्रममृत्रत लावक কাহারা সেই সম্বদ্ধে কিছু জানা যার নাই। অব্যা এই বিষয়ে মভভেদ আছে; নব্যসন্তাদার মনে করেন যে, এই ছয়ট বিনয়গ্রন্থ খোং ফু জু-র রচনা। কিছ ইহা কভদুর বিশাসযোগ্য তাহা চিন্তা করিবার বিষয় বটে। পূর্ব্বোক্ত का रेषे ७ इ हाद्यान मामक धार् करबक्कन विभिन्ने ७ ব্যাতিসম্পন্ন লোকের কৰোপক্ষন লিপিবছ করা হইয়াছে. ভাষাতে 'नि हिर', 'ब हिर', 'नि हि' 'ख 'ই हिर' नीर्वक विनय এছগৰ্বের নাম পুন: পুন: উল্লেখিত হইলাছে। ইহাই যথেই समान त्व, त्वार मू सू अहे विशव अञ्चल्दव व्यविका सम । > र শভত: বে আকারে এই এছসমূহ আমাধের নিক্ট আসিয়া পৌৰিয়াৰে ভাষাদের ভ মহেনই।

আর একট উরেধযোগ্য বিষয় এই বে, বিনয়গ্রহসমূহের প্রারণে জনসাবারণের অবিকার ছিল না। এই গ্রহসমূহ বিশেষ প্রেম্বরই অবিগম্য ছিল।১৩ জনসাবারণ তাহা অব্যরণের অবিকার কইতে বকিত ছিল। বোং সুজ্ও বিনয়গ্রহসমূহের দূরহতার করন তাহা স্ইতে সার স্কলন

করিরা সহক্ষেধ্য ভাষার প্রকাশ করেন। ১৪ পূর্বে এই
শিক্ষালাভ প্রেইবিশেষে গীমাবর ছিল। বাং কুজু সেই
বাধা দুরীভূত করিরা দেন এবং সর্মসাধারণকে শিক্ষাদান
করিতে থাকেন। ১৫ বিনরগ্রন্থসূত্র প্রকৃতপক্ষে সহক্ষ্যোধা
ছিল না, এইবভ সাধারণ বুদিসপার জনগণের পক্ষে
সেগুলি অধিগত করা একেবারে অসন্তব ছিল। জনসাধারণ
বাহাতে এই প্রস্তুহ্র বিষয়বন্ত সম্বদ্ধে একেবারে অজ্ঞনা
থাকেন ভাহার জভ ভিনি যথেই চেটা করেন। এইবভ চীন
দেশের ক্ষনসাধারণ আল পর্যন্তে কৃতজ্ঞভাসহ্লারে "মহান্
শিক্ষাগুরু" বলিয়া ভাহার প্রতি প্রস্তা নিবেদন করিয়া থাকে।
ভিনি যে এই সন্থানলাভের যথাবই বোগ্য ব্যক্তি ছিলেন সে
বিষয়ে বিজ্যাত্র সক্ষেহ্ নাই।

চীনবংশীয় রাজাদের রাজহুকালে ভিন্নমুখী মতবাদের দক্ষন চীনদেশ খোরতর বিপর্যায়ের সন্মুখীন হয়, তখন 'লি স্থ'১৬ ( बै: १: २४० वस ) क्षरान महोत्र शाम चित्रित्र । अहेचन অবস্থা অধিক দিন স্থায়ী হয়-ভিনি ইহার পঞ্পাতী ছিলেন না। ভিনি ভড়ি কৌশল সহকারে এক বিচিত্র ভাবেশ প্রদান করেন-ভাষাতে দার্শনিকবর্গের লিপিবছ মতবাদসহ बुलावीन् अद्योगि अधिनश्च कृता एस । अरे जारमरणत करन চীনদেশের সাংস্কৃতিক উন্নতির পথ বছলাংশে ব্যাহত হয়। যদিও এই চীনবংশীয় রাজ্পণ ৰঙ, ছিয় ও বিক্লিপ্ত মহান্চীন ভূখনকে সন্দৰ্যৰ ও এক্তিভ করেন এবং চীনের অভ্যুদরের পৰ প্ৰশন্ত করেন তথাপি উক্ত প্ৰধান অবাত্যের বোর-ভর অনিষ্টকারী আদেশ প্রদানের পর হইতে সমগ্র চীন-দেশের অনসাধারণের মধ্যে জ্ঞানের প্রসারে বাধা উপস্থিত হয়। খনগাৰারণের নিকট যে সমুদর এছ হিল তাহা একেবারে महे इहेबा याय। अहेबछ हीन (बटन श्राहीन निकारांका विन्ध হুইবার উপক্রম হয়। রাজ্কীর গ্রন্থানরে বে করেক্থানি পুত্তক ব্ৰক্ষিত ছিল তাহাই কেবল আগুনের হাত হইতে রকা পার এবং ভাষা হইতেই চীনের প্রাচীন সাংস্থতিক ৰাৱার পুনরভূগোন সভব হয়। ইহার পরই চীনবংশীর রাক্রবর্গের অবনভির স্ত্রপাত হয় ও অতি অয়কাল-ষ্বোই এই বংশের রাজ্যের অবসান ঘটে। ইহার পর श्नानवरभीत त्राक्तन त्रिरशांत्रदन कादान कदान। वैद्याद्यत উদার মতবাদের দক্ষন পূর্ববর্তী দার্শনিক মতবাদসমূহের চৰ্চা পুনৱার আরম্ভ হইতে থাকে। হোইনান দেশের त्राक्क्षात विभिष्ठे पार्निक्शनत्क काक्षान कतिता वर्-সাহায্য ক্ষিতে থাকেন।১৭ এই দার্শনিকগণ রাজ-কুষাবের মামে বিভিন্ন মতসমূহ সঙ্গলিত করেন। রাজকুমার আমাদের দেশের ভোকরাকের মত বিদ্যোৎপাহী ছিলেন , ভোৰৱাৰ পণ্ডিচবৰ্গকে অৰ্গাহাষ্য করিতে ক্ষিত হইতেন না।১৮ ভাহারই অবাস্কৃল্যে বোগছতের উপর

ভোকরন্তি নামক বৃত্তি রচিত হয়। এই বৃত্তির অপর নাম বাক-মার্তত ।১৯ হোইনান দেশের রাক্ত্যারের অর্থাকারেও তেমনি একবানি এই রচিত হয়; এই এইবানি এবনও হোইনান সু২০ ম'যে পরিচিত।

এই হানবংশীয় রাজগণের সময় হটতেই খোং মুজুর मार्गिक मणवादम्ब चण्डाचादम्ब च्ह्ना एव, अवर हाधवरनीय রাকাদের সহারভার এই মতবাদ উৎকর্ব লাভ করে। ইহার বুলে একট কারণ ছিল। তংকালীন দার্ননিক মতবাদ-সমূহের মধ্যে কোন যোগহত্ত ছিল না। এক দার্শনিক যাহা বলিতেন অন্ত দার্শনিক ভাহা সম্পূর্ণভাবে উপেকা করিভেন। বহু দাৰ্শনিক মতবাদ জাতীয় জানভাঙাৱের পরিবর্দ্ধক ও পরিপোষক বটে, ভবে ভাহাদের মধ্যে যোগভুত্র পাকা আবশ্বক, নতুবা ভাষা নিৱৰ্ক বাগবিভগাৱই পৰ্যবাসভ হয়। ভাষাতে জানের প্রসার ব্যাহত হইরা থাকে। ভারতেও যে জানের ক্ষেত্রে কোন এক ব্রুগে অনুরূপ অবস্থার সহান পাওয়া ষার তাহা মহাভাততে ও অভাত গ্রন্থে কিছু কিছু লিপিবছ আছে।২১ চীনদেশে বৰন এইরপ শোচনীয় অবস্থা তৰন हैर हर च मामक करेमक महानूबन এই जनाक्षित जनशाब অবসাম করিবার ভর দুচ্দত্তর হন এবং যাছাতে মাত্র একট ৰতবাৰ স্প্ৰতিষ্ঠিত হইতে পাৱে ভাৰাৱ বন্ধ চেই৷ কৰিতে পাকেন। এই উদ্বেক্ত তিনি রালার নিকট একবানি বৃক্তিপূর্ব লিপি প্ৰেরণ করেন। তখন ছানবংশীয় রাজা উ টির রাজযুকাল। ভাৰাৰ ওৱে হি ও উ আন নামে ছুই জন বিচক্ষণ জ্যাত্য ष्टिमन । केंग्हां हो हर पूर्व मिनिव जाववला छेनम्बि कविया খোং ফু ছুর দর্শন ব্যতীত অভ সব দর্শনের পঠন-পাঠন একেবারে বন্ধ করিয়া দেন। তাহ'তে খোং হু ছুর দুর্লনে পারদর্শী ও আছাবান জনগণই একমাত্র রাজপুরুষের পদলাভ করিবার অধিকারী হম। জনসাধারণও রাজসন্থান পাইবার আশার অথবা অধার্থের লোভে "বোং কু ভুর" দার্শনিক मज्यान जायन कवियाव (ठडी) कविट इ बाटकन । (बार कू जूब দর্শনও এই রাজকীয় সাহায্যলাভ করিয়া বছলভাবে প্রচারিভ `ষ্টবার সুযোগ পার।২২

বোং কুলুর পূর্বে চীনদেশের জনসাধারণ জলৌকিক ও বাছবিদ্যার বিহাসী ছিলেন।২৩ এই বিহাসপ্রবণতা বে কেবল চীনদেশেই সীনাবদ্ধ ছিল তাহা নহে, পৃথিবীর বহু সভ্যকাতির পূর্ববাবহা জহুসদান করিলে এইরূপ নিদর্শন জনেক পাওরা বার।২৪ ননে হয়, ভারতবর্বেও ইহার ব্যতি-ক্রম হয় নাই। বৈদিক প্রছে ভাহার জন্মবিভর সদান মিলে।২৫ বৈদিক প্রদিয়ের ভার চীনদেশের মহাপুরুষপণ্ড বোব হয় প্রক্র সমরে প্রকৃতির পূজারী হিলেন।২৬

বৈষিক্ষ ক্ষেত্ৰতাগৰ যেষম মাজুবের পুৰত্বংবের নির্ভা ছিলেন চীনদেশের ক্ষেত্রণাও অনেকাংশে সেইস্কাই ছিলেন্ডং ।

বাঁহারা সংপ্রে চলিতেন ভাঁহারা নেবভালের স্পালাভে সমর্থ व्हेर्डिय: वीवांबा चनश्यात हिन्द्र वा इक्ष क्रिटेड (है) করিতেন ভাঁহানের উপর হ:ব-বৈত ও বিপংপাত হইত।২৮ क्षि कानकरम धरे महग्रदकानमन्त्र (पनकारमद ध्रेभर মানুষের বিধাস বিধিল হইতে থাকে: এবং ভারার ছলে **এक चटनोकिक रेश्यमंकित कन्नशंत च्**डमा इतः। जिनिरे निष-नित्रणा, पूर्व-इ:(वंद विवाणा-- जि.निष्ट केवंद ( ह )। किन धरे ইশ্বর নিরাল্য অবহার কোণাও বাকিতে পারেন না , তাই তাহার সহে সম্ব ছামেরও ক্রনা করা হইতে থাকে এবং এই কল্পনা হইতেই স্বৰ্গের (খিরেন) স্থপ প্রতিভাত হইরা উঠে। ইশ্বর যেমন অসীয় শক্তিসম্পন্ন স্বর্গন্ত ভদকুরপ অসীয मक्कित (क्या विना) क्रिज इंटर्ड बाद्य । देश अभवत कि नव । চीनामानव चनमानावन निरंबन अवर "B" डेक्टवर्व কাৰেই কুপাপ্ৰাৰ্থী ছিলেন। এই উভয়কেই ভাঁছাৱা সমভ'বে खंडां ७ जब क्विर्जन । कांवन ब इहेरबंद मरना बक करनंद कार्ण निगणिज स्रेटन, "अधन कि बाबाजडे स्रेवांब अवृस् সম্ভাবনা ছিল।. একবার এই ইবরের ভয়ে সিরারাজ্যের অধিপতিকে শান্তি দিতে ৱাৰপুঞ্য টাংও সাহস করেন নাই। विषय को तांका वहविष खनात चाहत्व मिश्र विद्राम ... ভৰাপি ঈশবের কোপরতি হইবার ভবে দেই রাজাকে শাভি দিতে পাৱা যার নাই।"২১ যোট কবা, ইশবের স্থপাপ্রাপ্ত ছইলেই মাত্ৰ রাজ্পণ সিংহাসনে অধিষ্ঠিত থাকিতে পারিভেন। কৰনও কৰনও বৰ্ণের কুপাতেও ভাষা সম্ভব হুইছে পারিত।৩০

কিছ স্ম দার্শনিক চিছাবারার স্চনার একমাত্র এই কাতীর বুল ভাবনার পরিবেশেই দার্শনিকের মন আবদ্ধ থাকিতে পারে না। দার্শনিক মন এই বুল ভাবনার সহজগতিকে অভিক্রম করিরা চিছার কটল আবর্জে আপনা হটতেই নিম্মিক হবা পদে। তবন সংগরাক্স হইরা মন বিভিন্ন বুণী চিছাবারীর সমন্বরসাবন করিবার কভ চেটিত হর এবং স্বাবানের একট বৌলিক স্ব আবিছার করে। চীনদেশের ভাববারার বর্গ ও ইবরের ক্রনার বারা স্থলভাবে দার্শনিক চিছার উব্বেব হততে থাকে। কিছ ভাবাতেই মনের গতিকে সীমাবদ্ধ না করিয়া আরও স্ম ক্রমার সাহাব্যে এই বিধের বৈচিত্রের বুল অভ্নত্রান করিতে চৈনিক মনীবিগণ বন্ধনান হন। "এই বরিত্রী-সহস্র সহস্র প্রাণীর জীবন্ধান করিবাছে এবং ভাবাবের জীবন্ধারণের ভার প্রহণ করিবাছে। স্ম্মর ও অস্মুলর উভরেই ভাবার সাহাব্য হততে বন্ধিত হর নাই।…"

এইক্ড প্রত্যেককে এই চিরন্তন নীতির বিষয়ে সচেতন হৃইতে হৃইবে—"ইন" ও "ইরাং" রূপ যে বৈজনীতি বিষয়ে অন্তর্গালে নিহিত আহে তাহায়ের সহতে অবহিত হৃইতে হৃইবে। সভ্যারটা ধ্বিগণ এই সহতে স্বাধান্ত। তাহারা এই বৈজনীতিকে স্বাক্তাবে উপলব্ধি ক্রিয়া পরিপূর্ণতা প্রাপ্ত হব।"৩১

> 1 "During the period of Chin, Han, and Tang dynasties China came in contact with India and Chinese civilization and culture had been greatly influenced by Indian culture and civilization."-

क्यांशक होत, Ni to Inde n Journal vol. I, p it I, शृ: se; भू: ६२ त्नपून, Mythology of all races (Chinese & Japane e). अथम पिर्का करतक है पृष्टी राष्ट्रन ।

- ২। লাটন ভাষার রূপান্তরিত ক্রিয়া বলা হর Confucius.
- | W.bj \$3 Three Ways of Thought in China. गः २०।
- 81 "As to practice, they accept the orderly sequence of nature from Yin and Yang School, gather the good points of Confucius and Mohists and combine with these the important points of the Schools of Names and Law."-Porter, Aids to the Study of Chinese Philosophy, Peiping, 5308, 92 05 1
- | Sucred Books of the East \*\* , The Chinese Classics, श्लु ह ও ६ (मध्न ।
  - ৬। সিংঘী দিরিজ সংক্লিত গ্রন্থানি দেখুন।
- ৭। এই প্রন্থের ৪৭তম অধ্যার দেখুন। ইহাই চীনের প্রথম ঐতিহাসিক প্রস্থ। ইহা এক শত ত্রিশ অধ্যায়ে পরিপূর্ণ। হানবংশীর রাজা উ-টির ( ১৪০-৮৭ খ্রী: পু: অব্দ ) রাজস্থকাল অবধি ঐতিহাসিক ঘটনাসমূহ ইংগতে লিপিবন্ধ করা ছইয়াছে। শুষাটান নামক ঐতিহাসিক (১১০ খ্রী: পু: অব্দ ) এই এম্বখানি লিখিতে আরম্ভ করেন ও তাঁহার হুবোগ্য পুত্র হুমা চিয়েন দেখনি সমাপ্ত করেন চীনের ছরট দর্শন সম্বন্ধে এই গ্রন্থে (১৩০ অধ্যাতে) বহু মূল্যবান্ তথ্য বিশ্বমান আছে। মনে হয় ইহা জনেকটা আমাদের আইন-ই-আকবরীর[মৃত। আইন-ই-আকবরীতেও আমাদের দেশের ব্ডদর্শনের মূল তথ্য সম্বন্ধে আলোচনা আছে।
- "He read the i so assiduously that the thorgo which bound it wore out three times and said "give me a few more years like this and I will come to a perfect knowledge of the i."— "পুৰ ইট ৭ ১৬ ; দেখুৰ" History of Chinese Philosophy ( কু. কৃড ) পু: ৪৪।
- I "Chow had the advantage of surveying the two preceding dynasties." পুৰ ইউ. ৩, ১৪ ৷
- "How replete is its culture, I follow Chou" मून हें हैं. ७, ১৪।
- 3) I "It was only when the times were out of joint that the teachers and scholars set up their teachings and it was in so doing that our master (Confucius) was superior to Yao and Shun."
- > "Both Kuo Yu and Tso Chuan records numerous conversations between important personages in which the odes and History are frequently mentioned."-History of Chinese Philosophy, 9: 861
- "This indicates that an education of this sort was acquired by a portion, at least, of the nobility of that time. Confucius was the first man, however, to use the six Disciplines for teaching the common people."— History of Chinese Philosophy, 9: 86-89 |

শিক্তাণ কর্ত্তক সংকলিত। ইহা খোং কু জুর দর্শনের অক্তম আকর-এই। মুট হিল সাহেব ও লেগি সাহেব ইহার অনুবাদ করিয়াছেন। The Chinese Classics vol. I & The Analests of Confucius (Yckohama সংকরণ) দেখুন। উপরোক্ত Sx Dis iplines ছইতে পরবর্ত্তী অনেক দার্শনিক মতবাদ উত্তত হইরাছে The i Wen Chih Chapter of the Chien Hanshu says of the various Philosophic Schools that sprang from the heritage of the Six Dis it lines. History of Chinese Philosophy, 약: 81 1

- ) । क्रकु अस्त्र शृः 84-89 (मर्ने I
- ১৬। এই প্রস্থের পুঃ ১৫ দেধুন।
- 391 "The book . . . was written . . . by the guests attached to the Court of Liu An, Prince of Huai-nan . . . This book like Lu-Shih Chun Ch'in is a miscellaneous compilation of all schools of thought." এই প্রন্থের পু: ৩৯৫ দেশুন এবং ইয়েন থিয়েন লুন নামক গ্রন্থের ৮ জ্বধার পঃ ১ পখা।
- ১৮। মেরুতুক্ত কুত প্রবন্ধ চিন্তামণিতে ভোজরাক্ত বিক্রমাদিতা ও শিলাদিতোর প্রশন্তি জইবা।
  - ১৮। ভোজবৃত্তির পুশ্পিকা।
- ২০। আমরা বেমন গ্রন্থের পরিবর্ত্তে গ্রন্থকারের নাম উল্লেখ করি, বেমন বলিয়া থাকি শঙ্কর দেখুন, রামামুজ দেখুন, চীনদেশেও কোনো কোনো ক্ষেত্রে গ্রন্থের পরিবর্ত্তে প্রস্থকারের নামই উল্লেখিত হইরা পাকে। চীনের জুশব্দ অনেকটা আমাদের জী শব্দের অনুরূপ। এই প্রসঙ্গে স্-উরেন ছি জু নামক চীনদেশের প্রাচীনতম অভিধান পশ্র।
- ২১। ভারতীয় চিস্তাধারার মুখ্যতঃ চারিটি যুগ বিদামান। প্রথম বৈদিক যুগ, ৰিভীয়, ব্ৰাহ্মণ্যযুগ ( যদিও ব্ৰাহ্মণ্যবুগ আদলে বৈদিক যুগের মধ্যেই পড়ে তথাপি মন্ত্ৰগুটকেই এইখানে বৈদিক যুগ বলিয়া ধরা হইয়াছে, আর ব্রাহ্মণ ও উপনিষদের যুগকেই এইথানে ব্রাহ্মণ্য যুগ বলাই হইয়াছে) তৃতীয় বৌদ্ধ ও জৈন যুগ, চতুর্থ নবপরিবেশে গ্রাহ্মণাবুগ। 9: २७।
- The teachers of today have diverse standards (tao), men have diverse doctrines and each of the philosophic schools has its own particular position and differs in the ideas which it teaches. Hence it is that the rulers possess nothing whereby they may effect general unification, the Government Statues having often been charged, while the ruled know not what to cling to. I, your ignorant servitor, hold that all not within the field of Six Disciplines or the arts of Confucius, should be cut short; not allowed to progress further. Evil and licentious talk should be put a stop to. Only after this, can there be a general unification and can the laws be made distinct, so that people may know what they are to follow." ছিয়েন হান হ, অধ্যায় 66, 9: 20-231

#### २०। চू हें डे, २, ১।

Nagic and religion belonging to some department of human experience. Together they belong to the supernatural world, the X-region of experience, the region of mental twilight." Magic includes "all bad ways and religion all good ways of dealing with ১৪। বুন ইউ নামক প্রস্থানি বেপুন। এই পার খোং কু জুর; the supernatural—bad and good, of course, not as we

may happen to judge them, but as the society con- dwelling places of the spirits, their positions (at the cerned judge them." Marctt, Anthropology, Home sacrifices) and their order of precedence were affected. University Library, of 2.3-; ) |

२०। जनर्करका गन

Nythology of all races.

 In ancient times peoples and divine beings did not intermingle. Among the people there were those who were refined and without evils. They were moreover, capable of being equable, respectful, sincere and upright. Their knowledge both in upper and lower ranges was capable of conforming to 'righteousness. Their wisdom could illumine what was distant with its all pervading brilliance. Their perspicacity could illumine everything. When there were people of this sort the illustrious spirit would descend on them . . . It was through such persons that the regulation of the

It was through them that their sacrifices, sacrificial vessels and seasonal clothings were arranged." 5 35.232

₹৮ | "The spirits regardless who is the man, accept only virtue . . . Thus without virtue people will not be harmonious and the spirits will not accept the offerings." ছু চুরান, (নেগি সাহেবকৃত) Chinese Classics अहेता। "Heaven confers its decrees on the virtuous . . . Heaven punishes the guilty" সু চি: পু: ৫৫-৫৬

২৯। ফু চিং: টাং-এর অভিভাবণ পুঃ ৮৫

৩ · | সি. চিং. ৪-৩, গাখা ৩

७)। इन्डिय इन्डि, २, ১।

# বিজয়সিংহের সমুদ্রযাত্রা

## গ্রীসুনীলয়প্তন ঘোষ

**উ**र्ष (मरपद शंक्र श<del>र्</del>कन, চারিদিকে বঞার বছার। পদতলে ফেনময় উদ্মির উক্তপ উদ্বেগ শহার।

হঁসিয়ার, বাঞীরা হঁসিয়ার, हेममन देशज्जी हेममन. নাবিকেরা ক্সে টেনে ধর হাল ভগবান নেই, আছে বাহ্বল।

युड़ा (न किছू नय,--विश्राय, কে বলে সে জীবনের মহাভর ? ভারি লাসি নবতর জন্ম নব নব ৰগতের পরিচয়।

चाध्याम वीवएकः चाध्याम् বাজুক না ছুৰ্ব্যান তুৰ্ব্য। পেশীমর বক্ষের শক্তি আন্বেই প্রভাতের পূর্বা।

বৌৰৰ চিত্ৰজনী চিত্ৰকাল, রভের স্থিতে উদ্ঞীব। বিশ্বের বঙ্গে সে বিশ্বর ংসের পদে সে বে চির-শিব।

ভূমিয়ার বছরা, ভূমিয়ার, ভেঙে গেছে ছাল, যাক বর কের, মাতুষের বড় নর ভগবাম, मुक्ता (ज वर्ष मञ्ज कीवरनद ।

পক্ষাতে শতশির উদ্বি. চারিদিকে বঞ্চার শকা। বিভাঞ্চিত বছৱা ভোল মুধ, अवृत्यं--- अवाय--- मक्।।

.चा ध्याम यीवपन, चा ध्यान. মুছে কেল কপালের খেবজন, चन्न (मर्चा यात्र मृद्ध थे. বন্ধর সিম্বর শতদন।

(अथा अब डेटबर्ग चनजांम, चित्राव चरमद---चरित्रम. चाश्राम बीवरम, चाश्राम, ভাগুৱাৰ রাজির সেনাদল।

🛊 দেশ হইতে বিভাটিভ হইরা বিষয়সি হ সমূরবারা করিরাহিলেন। দ্বস্তব সমুদ্রের মধ্যে বড়ের রাত্রিতে ভাঁহার বন্ধুগণ হতাশার ভাঙিয়া পড়িলে ভিনি ভাহাদিগকে উৎসাহিত কৰিয়াছিলেন। ইহা কথনা কৰিয়া এই কবিভাটি ৰচিত ৰহৈল।

# আত্থাতী

# ঞ্জননীমাধব চৌধুরী

শেষরাত্রির দিকে পাড়ার করেকজন ছোকরা আসিরা ভাকাড়াকি করিরা ঘুন ভাঙিরা দিল। বনকাইরা উঠিলান— কি ব্যাপার হে ভোনাদের ? একটু বছলে ঘুমুভে দেবে না নাকি ? এই তো অভ রাভ অবধি বকাবকি করে ভবে উঠলে, এবনও কাক ভাকে নি—

হীক আসিয়া বিহানার বসিল। একটু চুপ করিয়া থাকিয়া বলিল—কাল রাতে রাবেন কাকা গলার দভি দিরে আত্মহত্যা করেছেন। তাহার কবা আটকাইরা যাইতেহিল।

ভৰিষা শুৰ হইয়া বহিলাম কিছুক্প। এই বক্ষটা বে হইতে পাবে, কাল সকালে একটু আশুক্লা হইয়াছিল। উচিত ছিল ভাষাকে ক্ষেক দিন চোৰে চোৰে বাৰা। কিছ ভাষাতে কি শেষবঞ্জা কয়া বাইত ? বাৰেন কালা যে সকলের বিপ্লছে বিচোহ বোষণা ক্ষিয়াছিলেন।

বিছালা হইতে উঠিয়া পড়িলার। ছেলেদের বলিলাম— চলো দেবি কোবার যেতে হবে।

কোণায় গলায় দক্তি দিয়াছেন কিঞ্চাসা করিলাম না। দেবি আমার অভুমান ঠিক হয় কিনা।

আবণের শেষ। রাভার কল-কাদা শুকাইবার সময় পার না। মেবলা থাকিলে দিনে তালপাকানো রৌজ, চুপুরে অসহ শুমোট। তবু দেবি আৰু শেষরাত্রির দিকে একটু ঠাঙার আমেক দিয়াছে। অনকার বানিকটা পাতলা হইরা আসিয়াছে। চুই-একটা পাবী গাছের ভালে বাসায় বসিরা পাবা বাপটাইরা আলভ ভাঙিতেহে, ক্ডানো সলার হঠাং এক-আৰ বার ভাকিরা উঠিতেহে।

হেলেদের পিছনে পিছনে প্রাবের সরু ইটোপণ ধরিরা চলিতেছিলাম। পথের ছই পালে আম-আম-উঠালের গাছ, আসমেওভার ঝোপ; বা দিকে গাছপালার উপর চোব পভিতে কিকে অহুভারে দেবিলার একটা গাছের ভাল হইতে দঙ্গিবা রাজেন ভালার হেবটা বুলিতেছে। আরাকে দেবিরা কেইটা যেন ইচ্ছা করিরাই বন্বন্ করিবা পাক বাইতে লাগিল। যনে মনে হাসিলাম। কাকা বরিরাও আমার সলে বসিকতা করিবার অভ্যাস ছাড়িতে পারেন নাই। চোবের ছুল। কিছু এরকম চোবের ছুলে বুবা বার ভালার আত্মহত্যার সংবাদ অভ্যাতসারে আমার মনের মধ্যে প্রবল্পতিক্রিয়ার ভাই করিবাছে।

নকলে ইটিতে ইটিতে বংশ-কর্তার বাড়ী ছাড়াইরা কনল-পূত্রের বাটে গৌছিলার। হীক পথ কেবাইরা আনিতে-হিল। কনল-পূত্রের বাট হইতে ছ্ল-বাড়ীর বাঠ বেবা বার। এতক্ষণে অবকার কাটিরা গিরা আলো কুটিরাছে।

টিক আলো নয়—আলোর আভাস। খদেশীতলার বক্ল
গাছ চারদিকে হলানো ভালপালা লইয়া একটা অপাট হারার

যত দেবাইতেত্বে ক্ষল-পুক্রের এপার হইতে। এ পর্যাত্ত
আসিয়া আর ব্রিতে বাকী বহিল না রাজেন কাকা আত্তহত্যা করিবার উপর্ক্ত বলিয়া কোন্ ছান্ট বাহিয়া লইয়া
হল। সংবাদ ভনিবার পর এই রক্ষটাই অভ্যান করিয়া
হিলাম।

বীরে বীরে কমল-পুত্রের দক্ষিণ পাড়ের রাজা বরিয়া বলেশীতলার দিকে চলিলার। ত্ল-বাজীর দিক হইতে কুক্রের ভাজের শব্দ আসিতেছে। বেউ-উ-উ করিয়া একটানা বিলাপের মত ভাক। ভোরবেলার কুক্রের কায়ার শব্দ অভ্ত লাগিল। ত্ল-বাজীর বোভিঙের অন করেক ছেলে বকুলগাছের তলার বেলীটার নীচে বসিয়া আছে। একটা লঠন তবনও মিট মিট করিয়া অলিতেছে। বুবিলাম ইহারা পাহারা দিতেছে।

বকুলতলার পৌছিলান। একটা লখা উঁচু ডাল গাছের ওঁজির চারণিকের বাঁথানো বড় চাতাল ছাডিরা অনেকটা সমুবে প্রসারিত। সেই ডালের সলে বাঁথা ছ'ড়তে রাজেন কাকার দেহটা বুলিতেছে। চাতালের প্রান্ত ভিন কুট উপরে পা, যাথাটা সমুবের দিকে ছেলিয়া পড়িয়াছে।

দভি কাট্যা দেহটা নামাইবার ব্যবস্থা হয় নাই। বোধ হয় ছেলেরা সাহস পার নাই। নামাইবার বন্দোবন্ত করিতে কিছু সময় পেল। ইভিমধ্যে প্রায়ের আরও লোক আসিরা কড় হইরাছে সেধানে।

মংশ-কর্তার ছোট ছেলে বোগেশ ছোঠা আসিরাছেন। তিনি র'বেন কাকার করেক বংসরের বছ, কিছ ছুই জনে এক সদে বেলাগুলা করিতেন। অবসরপ্রাপ্ত ভেপুট রার বাহার্র চক্রবর্তী আসিরাছেন। টেকো, দারোগা নিবারণ গাছুনী আসিরাছে। হেভমান্তার হরেন ভৌনিক আসিরাছেন। ছুরে বাছী হলেও থেবেন ভাভার, নিভাই ঘটক প্রভৃতি প্রামের মাতব্যর ব্যক্তিরা আসিরাছেন।

কি ক্রিরা ধবর পাইরা ক্রুল্র ফ্লালার নহের চৌকীলারকে সকে কইরা এরই মধ্যে আসিরা পঢ়িরাছে। ক্রুল্য ভিচ্ হইতে একটু লুরে দাঁলাইরা আছে—বেধানে পরভ্ বিনের সভার সবরে পতাকা উরোলনের জভ বাঁপ গোঁতা হইরাহিক সেই বাঁশের কাছে। ক্রোর লৃষ্টিতে গভীর ভাবে সে সন্থবের দিকে চাহিরা বহিরাহিক, দেশের প্রথবেটের একজন প্রতিমিধির উপযুক্ত কটিন, অটুট গাভীব্য তাহার সারা অল, মার মেহেদী-রাভানো দাভী বেটন করিয়া আহে।

দক্তি কাটিয়া দেই নামাইয়া চাতালের উপর খোরানো হইল। সলার দতি কাটিয়া বাড় সোজা করিয়া দেওরা হইল। সক্রবর্তী রার বাহাছর চাতালের উপর উঠিয়া আসিরা গারের চাদরধানা দিরা মুখ ও দেহ ঢাকিয়া দিলেন। হেলেরা একটু বিমিত দৃষ্টতে তাহার পানে চাহিয়া দেখিল। পরশু সভার রান্তেন ভাকা অমুপস্থিত থাকার চক্রবর্তী রার বাহাছর তাহার উদ্দেশ্যে বহু ভংসনা ও বিজ্ঞপবাদ বর্ষণ করিয়াছিলেন। বলিয়া ছিলেন ইহারাই পঞ্চম বাহিনীর স্কট্ট করে। 'ক্রিকাবাহ' ক্রনি দিয়া ভিনি মুতন রাষ্ট্রের প্রতি আত্থ্গত্যের শপধবাক্য উভারণ করিয়াছিলেন।

চাহিরা দেখি বোগেশ ক্যেঠা চাভালের নীচে খাসের উপর বিদিয়া। ভাঁহার-দৃষ্টি চাভালের গ'রে লেখার উপর আবদ্ধ। বন্দেযাভরম্, বন্দেযাভরম্, বন্দেযাভরম্, বন্দেযাভরম্, চাভালের চারপাশে একই লেখা— বন্দেযাভরম্, বন্দেযাভরম্।

বোগেশ জ্যেঠার পিতাঠাকুর মহেলকর্ডার কীর্তি।

মহেশকর্তা কবে স্বর্গত হইরাছেন। তাঁহার চেহারা
একটু একটু মনে পঞ্চে। নাতিলীর্থ একহারা মাহুর, সালা
বপরণে রং। হাতের তেলোর, পারের চেটোর পোলানী
আতা, গালে, কপালে গোলানী ছোপ, রক্ত যেন ফাটীরা
পভিবে। পালা চলে বা দিকে পরিপাট করিরা টেরী কাটা।
সালা, যোটা গোঁকের ছই প্রান্ত চুমরানো। কোঁচানো
সক্র কালোপাড় কাঁচি যুতি, গিলে করা আভির পাক্ষারী,
পারে বকলস লাগানো পেটেন্ট লেলারের পাম্প-স্থ। চোবে
পাঁসনে চশ্রা, চশ্যার সলে বাঁবা কালো নিক্ষের কিতা গলা
বেভিরা পাঞ্চাবীর উপর বুলিরা পভিয়াছে।

বাষ্টি বছরের সুল-বাবু মহেশকর্তা বক্তক আন্দোলনের বঞ্চাবর্ডের মধ্যে পভিলেন। সে কি প্রচণ্ড বড়। মুম্ছ বেশ সে বড়ের বাড়ার চমকিরা ভাগিরা উঠিল। মরা গাঙে বান ভাকিল।

বা হাতে কোঁচার বুঁট ধরিষা বালি পারে গান করিতে করিতে মহেশকর্জা ভারনী নদীতে চলিয়াহেন রাধীবছনের দিন সকালে—'মারের দেওবা ঘোটা কাশক মাবার ভূলে নে বে ভাই, (ওরে) দীনহংবিনী মা যে তোকের ভার বেশী আর সাবা নাই।' মহেশকর্জার পিছনে চলিয়াহে থামের হেলেহোকরা, প্রোচ, বৃহ, এমব কি হোট খেইবা পর্যান্ত হাভভালি দিয়া সম্বর্জে গাহিতে গাহিতে—'মারের কেওবা বোটা কাশক মাবার ভূলে নে রে ভাই।'

विनाकी कांशक পোकारना करेन, करवन कांकात नाम विता रहना कांगरकत रहाकान रवाना करेन, क्वि, नाग्निर्यना निविधात कांबका देखताती करेन। হুবেজ বাঁড বাে, বিশিন পাল, আছবিজ বােষ, ভাষহুজ্য চক্রবর্তী, লিয়াকং হােসেন, অবিনী লভের নাব প্রায়ের ছী পুরুষ সকলের ব্রহ হইরা সেল। সুলার সাহেবের ন'মে ও লাল পাগভী লইরা হভা বাবা হইল। নৌকার মাঝি, গলুং রাবাল, গলু-মহিবের গাভীর গাভোরান, মুদীর ভােকানের ছোকরা, সুল, পাঠশালার ছেলেরা এই সব হভা গাহির বেভাইতে লাগিল।

ভার পর আসিল বলেষাভরষ্, সভাা, যুগাওরের দিন মনঃকরপুরে বোষা কাটবার সংবাদে দেশে বিভাং ভরক বৃত্তি পেল।

টেকো দাবোগা নিবারণ গাজুলীর পিতা মহেন গাজুলী ছিল পুলিবের ইন্স্পেটর। গাজুলী প্রায়ে আসিরা একবাং ঘুরিয়া গেল। তার পর মহেশকগ্রার বন্ধ ছেলে ছরিশ এব আরও করেক্সন র্বক্কে কোমরে দলি বাবিয়া সদরে চালাং দেওরা হইল। সকলে মিলিয়া বন্দেমাতরম্ থানি দিতে দিং কেলে চ্কিল। মহেন গাজুলী তেপুটি স্থারিকেতেক ছইছ পেল।

এবার আসিল মংশেকর্তার মেন্দ ছেলে সতীশের পালা কোষার কাহার হাধার বুলি সুটা করিরা দিরা প্রানে আসিহ জেলেপাড়ার প্রকাইরাছিল। গোপনে ববর পাইরা মহেন গাঙ্গী নিক্নে আসিল বরিতে। জাল কাঁবে বিনোদ মাঝিরুর্ণ সতীশের গাঙ্গীর হাতে বরা পঞ্চী গছক্ষ হলল।। বৈঠা ঘারে গাঙ্গীর হাবা ফাটাইরা দিরা ভারলী নদীতে কাঁপাইঃ পড়িল। তার পর হইতে ভাহার আর কোম বোঁক নাই কেহ বলে আসামে পলাইরা গিরা বর্ত্তার পারি দিরাহে আবার কেহ বলে কালাঘরে মরিরাছে। সকলেরই পোন

এবার কেলার সম্বানিত কমিলার, ছেষ্ট বছরের কুলবা মংশেকর্তা বাঁ হ'তেকোঁচার বুঁট বরিয়া 'মারের বেওরা মোর্ট কাপড় মাধার ভূলে নে রে ভাই', পাহিতে গাহিতে কেন্দ্রে চুকিলেন। চারদিকে হলমুল পড়িরা পেল।

ছই মান পরে মহেশকর্তা কিন্নিলেন। কিনিরা একে মেলো টেরী ও বুলিরা-পড়া গোঁকের প্রাক্তন জী কিরাই। আনিতে মন বিলেন। কেনে বসিয়া করেকটা স্তন হং বাবিরাছিলেন, সেগুলি প্রচায় ক্রিতে লাগিলেন।

১৯০৫ হইতে ১৯১২। ভাঙা বাংলা ভোড়া বিবার প্ করিরা বাঙালী এই কর বংসরে নিবের ঘরে, সমভ দে আঞ্জন আলাইরা বিল। কত ঘর, কত জীবন যে সে আভা পুঞ্জিল জন হইলা বেপ ভাছার ইরভা নাই। ভাঙা বাংয ভোড়া বিবার লকাইকে ক্ষেত্র করিরা আরম্ভ হইল বারীনতা সংগ্রার। মহারাই ও পঞ্জাব বাংলার সঙ্গে কাঁব মিলাইল। ১৯১২ ইটাজের শেব বাস আসিল। বিবের বু বু পিলি



জাতিপুঞ্চ পরিষ্টের সাধারণ সভার ১৪৬তম পূর্ণ অ'ধ্বেশ্যে বক্তৃতারত ভারতীর প্রতিনিধি 🕮 বি. নরসিংহ রাও





ারাষ্ট্রের বরাষ্ট্রসচিব মিঃ ভব্দ সি, মালাল কাভিপুঞ্চ পরিষ্যের সংবারণ সভায় বস্তুত। করিতেত্ত্বন



মিঃ কঠ সি, মার্লাল ( বামে ) ও শ্রীযুক্তা বিকরলক্ষী পণ্ডিত

'সেটেন্ড কাষ্টিকে আন্দেটেন্ড' করিরা ইংরেক আবার ভাঙা বাংলা কোড়া দিল।

দিল্লীর দয়বার হইতে যেদিন ভাঙা বাংলা ভোঙা লাগিবার কবা বোহণা করা হইল সেদিন মহেশকর্তা হুলবাড়ীর নাঠে সভা করিলেন। সভার শেবে ঐ দিনটকে অর্থীর করিবার ভঙ তিনি মাঠের এক পাশে উচু করিবা বেদী গাঁধিরা দিবার সম্বল্প বোহণা ক্রিলেন। প্রশান্ত চাতাল গাঁধা হইল। যোগেশ ভোঠা তবন ছোট। তিনি, রাজেন কাকা ও আরও অনেকে মিলিরা চাতাল গাঁধিবার ইট অরকী বহিবাছিলেন, চাতালের মার্থানে মহেশ-কর্তা নিজের হ'তে একটা বকুলের চারা পুঁতিলেন। চাতালের পাশে লেখা হইল বংদশী আন্দোলনের বীজ্যন্ত বন্দোত্রম্, গুণিয়া ১০৮ বার।

**এ**ই চাতালের নাম দেওরা **ए**डेल चरम्पीजना ।

খদেশীতলার চাতালের উপরে শোরানো চাদরে ঢাকা রাজ্যে কাকার মৃতদেহ, নীচে ঘাসের উপর বসিরা মহেশ-কর্তার উত্তরাধিকারী যোগেশ ক্যেঠা এক মনে চাতালের গাম্বের লেখা পভিতেছিলেন।

১৯১২ ছইতে ১৯২০। মহেশকর্তা বর্গে গেলেন ১৯১৪ সনে—বড় ছেলে ছরিশ ছইলেন বাড়ীর কর্তা। ভারলী নদীভীরের শ্বশান ছইতে পিভার অধিবঙ সক্ষম করিরা হলেই চলার বকুল গাছের গোড়ার ভাষার ঘটে পুঁভিলেন। প্রাচ্ড শেব করিরা ছোট ভাই বোগেশকে বলিলেন—ভূই লন্ধীনারাম বিপ্রহের সেবা করতে লেগে যা। লহা চুল রেবে কৃষ্টি বারণ করে বোইম হরে যা, আর কিছুতে মন দিস মা। কৃষ্টিবারী গদগদ চালের বোইম দেবলে শক্ররা চোখ দেবে মা। সভে গেছে, আমারও থাক্রবার উপার দেবছি না। বাবার লভ একটা বছর আবছ হরেছিলাম। এত বড় পরিবারটা ভলিরে যাবে ভূই বৈক্রব না হলে।

বদেশীতলার একট বর তুলিরা হরিশকর্তা নাম দিলেন হরিমন্দির। কীর্ডন, কবকতা চলিতে লাগিল। বাড়ী ছাড়িরা সেইবানে আসিরা আজ্ঞা গাড়িলেন। বোগেশ কোঠাকে হরিমন্দিরের তড়াববানে বসংইরা দিরা হরিশকর্তা একদিন ভূব মারিলেন। ভাঙা বাংলা কবেই জোড়া লাগিরাহে, কিছু বে আন্তন ভাঙা বংলা আলাইরাহিল তাহা প্রজনিত হইতে বাকিল সহল্র শিবার। ১৯২০ সনে হরিশকর্তা পুড়িলেন সেই আন্তন।

হরিশকর্তার হু হার পরে সব দার-দাবি লইরা বলেশতলার উত্তরাধিকার বর্তাইল রাজেন কাকার উপর। হরিশকর্তার শিন্ত তিনি। বহারাটের কোন অরণাসমূল পার্কাত্য
অঞ্চল হইতে গুরুর মুত্যসংবাদ ও চিতাভার বহন করিরা
আমে ফিরিলেন। সেই চিতাভার বলেশীভলার মহেশকর্তার অহিবভের পাশে সমাহিত করা হইল।

আৰু গৰেশীতলার রাজেন কাকার চিতাভন্ন সমাহিত ভরিবার দিন আসিরাছে। কিন্তু সে সন্মান কি মহেশকর্তার উত্তরাবিকারী বোগেশ জোঠা তাঁহাকে দিতে রাজী হইবেন ? রাজেন কাকা গলার দভি দিরা আত্মহত্যা করিরাছেন। এ কি হরিশকর্তার শিরের উপযুক্ত রুতা।

প্রামের লোক ভাবে সম্প্রতি রাজেন কাজার মাধা ধারাপ হইরাছিল। যে কট, যে উংপীলন তিনি সারা জীবন সভ্ করিরাছেন তাহার কলে অনেক আগেই তাহার মভিছবিস্কৃতি ঘটনে কেহ আশুর্বা হইত না। কিছ ঘণন সকল কট, সকল সাধনা সার্থক হইল, জাতির বপ্প ঘণন বাছবে পরিণত হইল, দেশের আকাশে বহু ইপিত বাধীনভার তরুণ হুবা দেখা দিল সেই মুহুর্ত্তে তাঁহার মাধা গেল বিগড়াইরা। আশুর্বোর ক্ষা।

মান্দিক ও চারিত্রিক এই ক্লৈবোর পরিচর দিবার পর আমের লোক তাঁহাকে সে উচ্চ সন্মান বিভে রাজী হইবে কেন ?

হরিশকর্তার শিশু রাজেন কাকার দেহে ছিল অন্তরের শক্তি। হঃসাহদের, কটসহিক্তার সীমা ছিল না। প্রশক্ত ললাট ও আবক্ষ দান্তি র মধ্যে অবস্থিত নাকটি একটু ছোট মনে হইত। চোবের দৃষ্টি অভূত রক্ষের শাল্প ও নিরীহ, মুবের হাসিটুক্ ভারি অমারিক। কে বলিবে এই শক্তেওক লইরা সৌমাবর্শন, পরম অমারিক লোকটি অত্যক্ত পরিহালপট্ট, কে বৃত্তিরে এই শাল্প, নিরীহ বোলসটার ভিতরকার মাত্রটি উভাপিতে গরা ? অনেকেই এই নিরীহ দৃষ্টি ও অমারিক হাসিতে প্রভারিত হইত।

একবার বরা পভিয়া সেলেন কেনে। ভোকপুরী বুলিভে কবা বলিরা, রামচ্ছিত মানস হইতে দৌহা আর্ভি ভ্রিরা, সমরে অসমরে গীতারাম ভরসা করিরা করিরা রাজেন ভাকা পভিত্তী ও সাধুবাবা বনিরা সেলেন। করেগী ও ওরার্ডার দলের মধ্যে তাঁহার বহু শিশু ভূটিরা সেল। পসার জনিরা সেলে হঠাৎ একদিন তিনি শিশুনভলীকে অকুলে ভাসাইরা গরাদ ভাঙিরা অন্তর্জান কবিলেন।

বাবেন কাকা একবার প্রেমে পজিরাহিলেন। সেও এক হাসির বাগার। পুলিসের তাজার পলাইরা বেজাইবার সমরে ছত্রিশগড়ে মাজালা জেলার এক বাসেরিয়ার গৃহে আশ্রর লইতে হইরাহিল। বুজা বাসেরিয়ার বরে ছিল ছুইট লী। কাকার নিরীহ হৃটিও জ্যারিক হাসিতে বাসেরিয়ার জ্যাবরসী হিতীর পক্ষের পরিবারটি গলিয়া পেল। ছুইবানি বেশী বাজ্যার রুটি, একটু বেশী ক্রিয়া জ্ঞাহরের তাল ও জামের চাট্নীর লোভে কাকাও একাছ বিগলিত ভাব দেবাইতে লাসিলেন। ছুই চারিদিনের মধ্যে বাসেরিয়া-পত্নীর আকর্ষণ এমন উপ্র হইরা উটিল বে কাকাকে পলার্মের চেটা বেশিতে হুইল। এদিকে বুজা বাসেরিয়া প্রথম

পক্ষের রিপোর্ট পাইরা বিভীর পক্ষকে ধরকাইতে রিরা তাহার হাতে হই-এক বা ধাইল, বুড়ী চুরাইলের ভালানিতে বিশ্বাস করিবার ভঙ্গ। স্বামীদেবতাকে এইভাবে সম্বান দিরা বিতীয় পক্ষ পা হড়াইয়া কাঁদিতে ও বুড়ী চরাইলের উদ্বেশ্ব অপ্রাব্য গালিগালাক বর্ষণ করিতে লাগিল। কি মনে হইতে হঠাং কাছা থামাইরা রাজেন কাকার কাছে গিরা তাঁখাকে ব্যকাইতে লাগিল। বলিল যে বুড়াবুড়ীর কোন ক্বার यातकारेया भनारेवाद ८०%। कतितन खाँचात्र वृक्षात चान ছইবে। কাকা মাধা নাঞ্চিরা প্রতিবাদ করিয়া বলিলেন যে ওরকম বেইমানী ভিনি করিভেই পারেন না। সে দিনটা পরের দিন কাকা অত্যন্ত বিনীতভাবে দ্বিতীয় পক্ষকে ভাৰাইলেন যে ভিনি ভাষীর লোক ছিলেন একভালে যদিও রামনীর ইচ্ছায় এখন দেওয়ানা হইয়াছেন। তবে (मध्यानां क्कित **इंटेन्ड मान्या**न बक्तान रह बातान किनिन। ঘুতপুত বাজরার রুটি ধাইয়া ধাইয়া তাঁছার আমিরী পেটে দারুণ দর্দ হইয়াছে। ইহার পর লোটা লইয়া বার সাতেক ময়দানে গেলেন, বাটিয়ার উপর লেট হইয়া ঘণ্টা হুই ছটুকট করিলেন। শেষতক দ্বাধানার ঘাইবার অভ্নতি আদার করিয়া প্রাম ছাড়িয়া পলাইলেন।

১৯২১ হইতে ১৯৪১। হঠাং এক দিন প্রামে কিরিয়া রাজ্যে কালা খদেশীতলায় আলা হরিমন্দির মেরামত করাইয়া সেধানে কিছুদিন কাঁকিরা বসিলেন। দাড়ীতে কটাকুটে চেহারা বাহা হইয়াছে ধুনি আলিয়া বসিলে প্রামেই হয়ত প্রায় হইয়া বাইত।

হয়ত বলিবার কারণ প্রতিহন্দিতার আসরে নামিত হইত।
প্রামের হেলেরা ইহুল কলেক ছাড়িরা অনেকে প্রার সাধ্বাবা
হইরা উঠিরাছিল। সে কি দীন ভাব, মৃহ বচন, সদা উল্পতপ্রার অঞ্চর ছারাপার্তে মেহুর দৃষ্টি! চরকা-বজ, স্করজ,
ভাতী অভিবানের নহড়া, গাঁজার-দোকানে গিক্টেই, থানার
ও সদরে নোষ্টশ পাঠাইরা বে-আইনী বক্তৃতা, শোভাযাত্রা—
নানা শাবার বিভক্ত হইরা বৃতন বাতে জাতীর আন্দোলনের
প্রোত বহিতে লাগিল।

রাজেন কাকা কিছুদিন কিংকর্তব্যবিষ্ট হইবা এই সব দেখিতে লাসিলেন। এই সব কার্যকলাপের নিগৃচ মর্ম অসম্ভব্য করিবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন বাহাতে কাজে লাগিরা বাইবার একটা হল পান।

আভার বৃত্যুর পরে বোগেশ ভোঠা বৈকর বর্ণের চর্চা করিভেছিলেন। বৃতন আব্দোলনের কৃতক্টা নিরাপদ রচনাত্মক কার্যুগছতির বারা লক্ষ্য করিবা আসরে নামিরা আসিলেন। কাকাকে বুকাইরা অ্কাইরা বোগেশ ভোঠা জাহার হাতে একটা কিছু কাক্ষ্ গহাইরা দিবার চেটা করিভেছিলেন, এমন সময় বেরের বিবাহ বিবার ক্ষ্য মহেন গাকুলীর পুর টেকো নিবাৰণ দাবোগা থাবে আসিল। নিবাৰণ গাসুলী মেৰিনীপুরে বদলী হইবা নিরাছিল এবং ইভিমধ্যেই সেখানে লাঠি চার্ক্সে ধুরুদ্ধর বলিরা হুখ্যাভ হইবা উঠিরাছিল। গাসুলীয় নেবের বিবাহ আর যোগেশ জোঠা থ্রামের প্রধান ও সমাজ-পতি। কাজেই ছুই বিপরীভর্কী গারাকে কণিকের জ্ঞানিলিতে হইল।

উভরের সাক্ষাভের সমরে কাকা সেধানে উপছিত ছিলেন। বধারীতি সেই সাক্ষাভের রিপোর্ট দিতে সিরা বলিলেন—সে একটা অনির্বাচনীর দৃষ্ঠ হে ছোকরা।

একদিকে মহাছাজীর আদেশ, অন্ত দিকে পেটের হার, এই দোটানার কলে গান্থনী দারোগা হন্তর সাগরে পড়িরাছেন, নিবেদন করিলেন। সভ্যাপ্রহাদের উপর কত যে সৃশংস অভ্যাচার ইংরেজবেটারা করিভেছে দেখিরা কতবার মনে হইরাছে দিই ছাড়িয়া গোলামী, বেটাদের লাঠির তলার মাণা পাতিরা দিই, দেখি কত মারিতে পারে। চোঝে দেখা কর্তা, নিজের চোঝে দেখা। মেরেলোকের মাণার, সাক্ষাং লগজননী মারেদের মাণার লাঠি মারিতে গো-খোর, শোর-খোর ক্লেছ বেটাদের হাত কাঁপে না। সভ্যাপ্রহের তেজ কত ? ভইরা বসিরা লাঠি খাইভেছে, হাত পা মাণা ভালিরা রক্তের নদী, তবু উঠিরা দাঁভাইবে না, দৌভাইরা পলাইবার চেটা করিবে না। বচক্ষে এ সব দেখিরা জীবনে বিভার জ্বিরাছে আর মহাছাজীর উদ্বেক্ত শতকোট প্রণাম জানাইরাহি মনে মনে। গলুলী দারোগার চোঝ হুইতে জনের ধারা বহিল।

কাকা নিবারণ গাতুলীর অনুকরণ করিয়া সাক্ষাতের রিশোর্ট দিলেন, তারপর হাসিয়া আক্ল। হাসি থানাইয়া বলিলেন—এই সব ডক্ত বিটকেলের দলে সারা দেশটা ছেয়ে কেলবে দেখো।

আছ কিছুদিন গেলে কাকা অসহযোগীদের কুপার পাত্র হইরা গাঁডাইতেন, কিছ হঠাৎ একদিন প্রায় হইতে অপ্তর্গান করিলেন। কোন ধবর নাই। বছদিন পরে ১৯৩১-এর মুখে তেমনি অকঝাং আসিরা উপস্থিত হইলেন। চেহারা দেবিরা অবাক হইলায়। সেই কোরান পরীর শুকাইরা, কালি নারিরা পোড়া কাঠের মত হইরাছে। বলিলেন— কেপ পর্যাটন করে এলাম হে। আগের দিনে গুলীরা হেঁটে তীর্ধ ক্রতেন, সাধুরা কেদারবদরী হতে ক্যান্থ্যারিকা, ছার্কা হতে কারাব্যা, পরশুরার হও পর্যান্ত পর্যান্তর্গান হার্কা হতে কারাব্যা, পরশুরার হও পর্যান্ত পর্যান্তর্গান রুবির আহান্ত্রনর কার্বার কার্কার হে।

ভারপর বলিলেম—সিরেছিলের আসাবে বেড়াতে। ইছা ছিলু পূর্বসীবাডের পাতকোই 'পাস' হরে উভর-বর্বা পর্যন্ত ছুরে আসব। এই পথে শাদ-বাই ভাতভলো ও আসাব- বিশ্বরী বর্মী সৈভেরা এসেছিল। কিন্তু শেষ পর্ব্যন্ত আমার বাধরা হরে উঠল না। আহোম রাজাদের সাবেক রাজবানী চরকেও, গড়গাঁও বুরতে বুরতে অর আর আমাশরে বরল। আর একটু বাড়াবাড়ি হলে ওবানেই হরে বেড, মীরজ্মলার মত গুঁকতে গুঁকতে কেরবার শক্তিও বাক্ত না।

জিলাসা করিলাম--কেন, মীরজুমলাকে গুঁকতে হ'ল কেন ? কাকা বলিলেন-সে এক মন্ধার কাহিনী। মহারাষ্ট্রের অৱণ্য ও পর্বতে পর্বিত যোগল বাঁহিনীর এমন লাজনা ঘটে নি। পাছভাষাৰ অনুত্ব, তেলেছের মধ্যে সিংহাসন নিয়ে লভাই বেৰে গেল। প্ৰযোগ বুবে কোচবিহারের রাজা প্রাণ-নারারণ কামরুপ ও হাজোর ফৌক্লারকে ভাড়া লাগালেন। কৌৰদার পালালেন গৌহাটতে। গৌহাট এর আগে মোগলরা নিরেছিল। সেধানেও ঠাই হ'ল না। আছোম রাজা জয়ধক গোহাটির দিকে আসছেন ক্ষমে ফোল্মার গোহাট ছেডে वाश्नाय शानित्य अत्नन। चार्शम रेमक्ष्म अवन्य शिवरय ঢাকা পর্যান্ত এসে দুঠপাট করে চলে পেল। তখন মীরভুমলা এওলেন পঞ্চাল হাজার গৈড় খার চারশ' রণভরী নিয়ে। এক একখানা আৰু বা রণভরীতে সভর আৰী দ্বন নৌ-সৈত্ত, তের-চৌষ্টা করে কাষান। তিন চার ধানা কোলা নৌকা হাড বেরে একবানা ভারী গ্রাবকে টেনে নিয়ে যায়। রণভরীগুলোর ভার সব ইউরোপীয় অকিসারদের উপর--পর্তৃপীক আর ওলকাক অকিসার। ইংরেছ তথ্যও ঘাট গেভে বসতে পারে নাই।

चार्चाम रेमड ७ चार्चाम तो-वाहिमीत चाछि हिन। কিছ তারা পেরে উঠল না। সিমলাগড় ও সাঞ্চাবার মূছে रहरत चारहाय तांका भानारमन नायस्थ ; भीतस्थमा हुकरमय बाचवानी शक्ष्मां अद्या । हां ब बाहेल खन्छ, यस दीनवरनद প্রাকারে বেরা ভাহোম রাজ্বানী গড়গাঁওয়ে কাঠ ও বড়ের তৈয়ারী রাজ্ঞাসাদে গিয়ে তিনি উঠলেন। তারপর ভারঞ হ'ল আগল তামাশা। অবিরাম ব্লক্ট---আহোমদের পোডামাট নীতির কলে রসদের অভাব আর দিনরাভ ভাদের চোরা আক্রমণ। ঘাঁট ছেতে এক পা বাইরে বেকুবার উপায় মেই চোরা ভলির দাপটে। একবার নৈশ আক্রমণে রাভবানীর অর্কে তারা দখল করে বসল। খাডাভাব, রক্ত আমাশয় খার চোরা খাক্রমণের কলে মারভুমলার সৈতদের মধ্যে বোর অসভোষ দেবা দিলে। আহোম রাজ্যানীতে প্রায় বন্দী অবহা থেকে কোন রক্ষে পালাতে পারলে মীরভুষলা বাঁচেন. वाकाक्य ज्वेम मानाय छैठिए । मानवका शीएवर अकृते निक करत करत बाह्य (तहँ न क्षत्रहाद छिनि हाका दशना हरनम. কিছ ঢাকার আর পৌছতে পারলেন না, পবেই মারা গেলেন। সৈত্বলের অর্ছেকের উপর সাক হরে গিছেছিল বাডাডাবে पांत राजित्य। अहे निकानात्कत शत विद्योत वावपारं पांत কোন সেৰাপভিতে আসাহ আক্ৰহৰ ভয়তে পাঠাৰ নাই।"

বাভবিক কাকার শরীর তাদিরা পঢ়িরাহে। বিজ্ঞাস। করিলাম, এত কেশ বাকতে ঐ বন্ধতে কেন গিরেছিলেন মরতে ?

কাকা হাসিলেন। বলিলেন, জনল বলে কি নিজের দেশে বেভাব না ? তা হাড়া একটা কোতৃহল ছিল বরাবর। উত্তর-পূর্ব্ব পবে বারা বাইরে থেকে এদেশে এসেছে তাদের আমরা হত্ম করে নিয়েছি, আর উত্তর-পশ্চিমের পথে বারা এসেছে তারা কিছু উন্টে আমাদের হত্ম করতে চাইছে। তাই এক বার পূর্ব দিকটা দেশতে সিয়েছিলাম।

একট হাসিয়া বলিলেন, একটা গল বলি শোন। রুজ্ঞ সিং, যাঁর আহোম নাম পুরংকা, রাজা হলেন বাপ গদাবর সিংদের মৃত্যুর পরে। বৃদ্ধ বয়সে নদীয়া জেলার শান্তিপুরের কাছে মালিপোভার ভাগ্রিক পণ্ডিভ ক্রফরাম ভটাচার্ব্যের নিকট দীকা নিয়েছিলেন। রাজার ধেয়াল হ'ল কাঠ ভার বড়ের প্রাসাদ ভেলে পাকা রাজপ্রাসাদ গড়েন। দেশে ইটের কাজ काना मित्री (नरे: कां विश्वांत (बंदक वनकांस नाटस वाकांनी ত্বপতি এলেন। করেক বংসর আসায়ে থেকে ঘনস্তাম অনেকগুলি পাকা মন্দির আর প্রাসাদ তৈয়ারী করে দিলেন। রাজার কাছে প্রচুর পুরস্কার পেয়ে ঘনস্ঠাম দেশে কেরবার জন্ত তৈরী হলেন, হঠাং তার কাছে পাওয়া গেল কতক-গুলো লেব। কাগক। তাতে রয়েছে আসাম ও আসামের লোকেদের সম্বন্ধে নানা বিবরণ। আহোম রাজা অনুমান करत निरमन, योशमापत शांख स्वात कर धर विवतन সঙ্গিত হয়েছে। খন্তামকে সরাসরি মৃত্যুদ্ও দেওয়া र'ल । शलामित बृद्धत प्रतिम-विश्वातिम वहत चार्शकांत पर्वमा । এ থেকে বোৰ আছোমরা কি করে আকগান ও যোগলদের হাত থেকে নিৰেদের স্বাধীনতা রক্ষা করেছিল।

আসাম অভিযানের ধকল সামলাইতে বেশ কিছুদিন সময় লাগিল। কেবল ঘুরিয়া ঘুরিয়া অর হয়। ভারপর শরীর একটু ভাল করিয়া সারিতে না সারিতে আবার জেলে প্রবাসের পালা আরম্ভ হইল। শেষ বার যধন জেল হইতে কিরিলেন শরীর আবার ভাকিয়া পড়িয়াছে।

ইতিমধ্যে দিতীর মহার্ছ আরম্ভ হইরা সিয়াছে। অপুছ
শরীরেও বাহিবে রাখা নিরাপীদ নর মনে করিয়া কর্ডারা
আবার তাঁহাকে বাঁচায় পুরিলেন। প্রার রুত্যুশয্যায়
উপহিত হইরা ভাতারী পুণারিশে ছাড়া পাইলেন। চিকিৎসা
চলিন। বোনেশ জ্যেঠা উপদেশ দিলেন এবার ভাল হইয়া
সংসারী হও, পুলিশ হয়ত আর বরিবে না। কাকা হাসিয়া
বলিলেন, গৌক ওঠবার আগে বেকে জেলে বাভায়াত পুরু
করেছি। এবন গৌকে সবে পাড় বরেছে। এবনই কি
হরেছে দালা ?

ট্রক কথা। কাকার প্রাণ বেন কছপের প্রাণ। শব্দ

(व'नाठें। २७ त्नद बाह्म कान्या बानोमा क्रिया मितन कब्दन कायणांदेवांत क्षत्र नेना वाकादेवा (पत्र । काकात ই'টুতে বল নাই, ছাতে জোৱ নাই। ১৯৪২-এর জুলাই শেষ इटें एक बाकाम बाबाद (या बाहेदा (क नम । काका विवास बाजिया हेक हेक कदिया बाहिएल यूक कविरमम् ८ हार्य मूर्य **উ**रमार्ट्य चारमा (एवा मिम : ३३ चानरहेत शरत वर्ष উঠিল। काका बाबाद हुर मिरमा योबनीनुब, वानुबवाहे, বিহার,—কোণায় কখন কোন কাৰে হাত লাগাইলেন ভাহার जम्भून विवयन समावश्रक महन क'त्रश्रो काका सामाहेक्त काहह त्रव श्रुलिश वरमन नाहे। चार्ल्गमन हिन्द शका कारम चायदा चरद शाहेमाय विश्वाद शाख (दल-माहेन छेपछाहेराद চেষ্টার রত এই অধুহাতে ভাহাকে ধরা হয়। বাভবিক ভিনি निवाहित्सम भागावागावी देमक्राप्त चन्न मवाहेबात क्रिकेट বাংলায় ভো রাণাখাটের কাছে রেল লাইনের কার্য্যে বাস্ত मस्वाम अभव वांवधारे काशक क्रेटिंग (विमनशास्त्र श्वांन क्रीनशांदन अने चक्राटन (य जाता लाहेन छेपमाहेबात (कर्डी करिएएक । विठारवर वर्णकार एक राजभाजात बाकियार সময়ে কাকা কি করিয়া অনুষ্ঠ হুইয়া যান এ ব্রুটাও আমরা शहियादि लाग ।

আতে আতে দেবত থামিয়া আসিল। কয়েক বংসর পরে হঠাং এক দিন বোঁড়াইতে বোঁড়াইতে কাকা গ্রামে দেবা দিলেন। এবার আগষ্ট বিপ্লবের একবন নেতা বলিয়া लाटक डाहाटक मधानटा धहन कविन।

এত দিন কোৰায় ছিলেন, কি ক্রিতেছিলেন ইত্যাদি প্ৰভেৱ উদ্ভৱে আমাদের বলিলেন উভিয়ার ও জগদে সাধু সাৰিবা আন্তগোপন করিবা ছিলেন। চক্ৰবরপুৰ ছইতে চাইবাসার মধা দিয়া কেওঞ্চগড়, সেধান **रहेट्ड भाग माहादा। भवद, (बाँफ, बालद, (बांदा,** জুয়াংদের মধ্যে ওপ্রন সাক্ষিয়া ছুরিয়া বেড়াইভেন। ধেন-कानात्मव भूट्य क्वन्छ अध्यव हन नारे । भूक्टिय हिंब्यम्ब প্ৰায় যাইতেন। চিষ্টে বোলা কপনী আর ঘটা সবল ক্রিয়া বছর ছই ফাহুক মনে পাছাড়ে ক্ষলে ছুরিয়া বেড়াইয়া-(हम । त्रश्रमंत्र मर्था अक्यामा कथम चार्च अक्यामा वाय-हाम । মধ্যে মধ্যে বহির্কগতের ববর লইবার ভঙ্গ বামরা পর্যাত্ত যাইছেন।

হাসিতে হাসিতে বলিলেন,--ব্যাটারা ঠ্যাংটা ভেলে ষেওয়াতে বড় অপুবিৰে হচ্ছিল। মধ্যে মধ্যে ভাবতাম, ছুৱ হাই, সারা জীবনটা ভ গেল খেলে আর জহলে, এবার **नव्यक्षक अकड़े। मनत, ब्लाव कि क्**तार क्रांत क्रांत नरमात-वर्ष क्रम्नास्य (मार्ग वाहे। अवं मर्था क्रमार (बरमधरनारक कांग - मरक्षकर्षा। क्रिके क्रिके स्ट्रिंग वनन-कार्कन जारक्षिय বলতে হবে, কোল বিন সাড়ী গহনার খত খালাতন করত मा छाडा। कि कृदद कामनाम अक्षा (करन कराक रूस

ভোৰৱা। জানাটা সহৰ। সাখী-টাড়ী প'ৱে অলসোটৰ हाक्रवाद एक्टम (दश्राक माहे किमा श्वरूपत मरना। चाद গহনার যথো ছ'চারটে কভি, পু'ভি, বিশ্বক কোনমভে (वाशंक करत पित्नहे स्'न। जाककानत्कत प्रत्य अस्थिति করতে হলে এর চেরে প্রপাঞ্জ কোবার পাবে বল ?

মনের এই সাধ বাক করিরা কাকা হা হা করিরা হাসিতে হাসিতে গড়াইয়া পভিলেন।

र्कार मधीय एरेश विनाम-अकवाद वामदा भित्र বাংলার ছতিক্ষের খবর পেলাম। কোনও হতে আসাম-প্রাত্তে যুদ্ধের যে বরর পেলাম ভাতে উচিয়ার ক্রমল বেকে আগাবের ৰদলে পা'ড় ধেবার ৰঙ মন অন্তির হরে উঠন। কিছু পাড়ি पिटल भारताय ना । कारमाधना (क्षेत्राय भाषो हरक वरमहि कि करत मु'नम मधान (भरत दोका बादरमोद्यान (हेमरन बतन। जाबनब क्रमक, कठेक, वारमबब (क्रम कार्डन এक कान।--

১৯৪৬ সলে দেশের উপর দারুণ ছর্বোর খনাইরা আসিল। কলিকাতা, ৰোৱাধালি, ত্রিপুতা, বিহার, পঞ্জাব, সীমাত প্রদেশ। খনেশীভলার ভালা ছরি-মন্দিরে গুরু হইয়া বসিরা রাক্ষে কাক। আকাশপাতাল ভাবেন। কোন চক্রীর চক্রে এই উৰত্তা সাইযুষ বাতাার মত দেশের উপরে নামিয়া चात्रिम ? এडमिरनद जायना, चौरनरভाद चक्या माष्ट्रना, উংপীড়ন, ছঃৰক্ট কিসের আশায় হাসিমূৰে সহিয়াছেন 🤊

১৯৪৭ আসিল দেশ বিভাগের আলাপ আলোচনা नरेशाः बाद्यन काका विवन शांति शांतिशा विनानन-७ এই ভেভে বঢ়ি গেলাবার অভ এত কাও তোমাদের ? এট ব্য কুশেরার ও আনসার দলের মিলিত অভিযান ?

১৫ই আগষ্ট বাৰীনতা উৎসব হইল ছই দেশে। ১৬ই আগষ্ট ভোর হইতে হইতে রাজেন কাকা আয়াদের বাড়ী আসিরা উপহিত। আমার বরে বসিয়া বুব হাসিতে আরম্ভ করিলেন। ভারণর হত্য করিলেন-এট ছোকরা, চা লাও, সম্পেশ লাও কল ধী কলদীলে। হাসি বন্ধ করিয়া কি বেন ভাবিতে লাগিলেন। একটু বাদে বলিলেন--এই ছোকরা, ভোর ব্য়েস কভ হ'ল ? মহেশকর্তার ভোল বেছেলি মনে আহে ? আরে তথন বে গুই মধাস নি। ভবে শোন। পাঁচটা ধাসী কাটা হ'ল। এক মণ চালের পোলাও হ'ল। পাঁচ মণ সন্দেশ এল। খদেশীতলার মাঠে ছেলেবুড়ো মিলে রারা করলে। গাঁরের সব লোক খেল। ভারলী মধীর ওপার থেকে বুসল্যান চাষীরা দলে ঘলে এলে কলার পাত (शरक विरेक, पर, जरम्म (शर्वेचरव (बन । चांडा वांश्ना ब्यांचा मानवात्र छेश्मरव स्मिष्य बहे विवाहे ब्यांच विस्तर माप ।

আবার বলিলেন—মহেশকর্ডার সে ললভি <sup>নেই ৷</sup>

ৰোগেশদার অবহা ভাল নৱ। ধর্মকর্ম্ম নিয়ে আছেন, বাইরে বেলতে চান না। আৰু ছোকরা ভূই বাওরাবি আর বাব আমি একা। কর্ডারা গোটা দেশটাকে বঁটতে পেঁচিরে পেঁচিরে বন্ধ, ভালা, মুলো ঠাই ঠাই করেছেন, আরামদে বে বার ভাগ বাবেন বলে। আনন্দের আৰু আর সীমা নেই। বাবা, আৰু ধাওরাবে না ভ বাওরাবে আর ক্ষে ? বাও বাও জদদী কর, যান।

আগের মত আবার তিনি হাসিতে লাগিলেন। চা বাইতে বাইতে বলিলেন,—তুমি কোন ভাগ নেবে হোকরা? একটা কবা বলে রাবি শোন। বঁটতে কাটতে গিয়ে কর্ডারা পিডটা গেলে কেলেছেন, সব তেতো মেরে যাবে, কেউ ক্রিকরে বেতে পারবেন না। কবাটা বলে রাবছি, মনে রেবা।

আমার পিঠে এক ধাবভা\_মারিয়া বলিলেন—আমার ভাগে কি পড়েছে জানিস ? নাড়ীভূঁভিগুলো। এই বলিয়া হা হা করিয়া হাসিতে লাগিলেন।

হাসিতে হাসিতে বাইবার কর উঠিলেন। হঠাং হাসি বন্ধ করিয়া যাভাবিক ভাবে, বুব নিয়ন্তরে বলিলেন—কাল সকালে একবার স্থানাদের ওলিকে যাস। কথা স্থাতে।

ভারপর চলিয়া গেলেন।

রাজেন কাকার অবহা দেখিরা ছুল্ডিছা হইল। নুত্র অবহার সলে তিনি কি ভাবে আপনাকে খাপ খণ্ডরাইবেন চিছা করিরা কোনমতে হির করিতে পারিলাম না। কে তথন আনিত আমার চিন্তা করা বাহল্য, তাঁহার ব্যবহা তিনি হির করিয়া কেলিয়াছেন ?

কৰপুর দকাদার আগাইয়া আসিয়া বলিল—লাস সদরে চালান যাবে। গাড়ী আনভি চৌকীদার যাভিছে।

যোগেশ শ্যেঠ। মুখ তুলিরা আমার দিকে চাছিলেন।
আমি রার বাহাত্র চক্রবর্তীর দিকে চাছিলেম। রার বাহাত্র
দারোগা নিবারণ গালুলীর দিকে চাছিলেম। নিবারণ গালুলী
ক্রপুর রহমানের দিকে চাছিল। ক্রপুর রহমান বর্মধান
দেশের সরকারের প্রতিনিধি, প্রোচিত গান্তীর্য লইরা সে

কাহারও দিকে চোর্থ কিরাইল না, বদেশীতলার বহুলগাহের বাধার উপর দিরা অগীন ব্যোমের দিকে চাহিরা বহিল।

ব্যাপার বৃত্তিরা ছেলেদের মধ্যে একটা উদ্বেশ্যর ভাব ধেবা দিল। সালা চালরে চাকা রাজেন কাকার বৃত্তেহ কাঁবে ভূলিরা ভারলী নদীর তীরে শ্বশানঘাটে বাইবার জভ তাহারা প্রস্তুত হইল। দকালার চোব লাল করিরা উদ্বেশিত ভাবে প্রবাধ করিরা দাঁড়াইল। প্রাথের জ্মিদার বারেশ জাঠা, রারবাহান্ত্র চক্রবর্তী, হেডমান্তার হরেন ভৌমিক, টেকো দারোগা নিবারণ গাঙ্গুলী সকলেই হতভন্ব। গাঙ্গুলী তাহাকে ব্রাইবার জভ কাছে যাইতে দকালার করুলুর রহমান এক বাজা দিরা তাহাকে সরাইরা দিল। কর্বশ করে বলিল— সরকারী কাষে কভা কইলে গেরেপভার করমু রুশাই। মামাও লাস। ক্রেক্থন ছেলে আসিরা ভাহাকে বিরিল্লা দাঁড়াইল, বলিল—চল তুই আমাদের সঙ্গে, ভোর সামনে লাস পোড়াব। সদ্বের চিটি দিব তুই হাঁভিরে লাস প্রিরেছিল। ভাহারা দকাদারকে টানিরা লইরা চলিল।

ভারলী নদীর বাবেশ প্রামের শ্বশানে রাজেন কাকার সংকার শেষ করিয়া সকলে নিলিয়া জল ঢালিয়া চিতা নিবাইয়া দিলাম। এক টুকরা অন্থি ও কিছু ভন্ম লইয়া বাড়ী কিরিলাম। মনের ইচ্ছা সকলে মত করিলে মহেশকর্ডা ও ছরিশকর্তার ভন্মের মত রাজেন কাকার ভন্মও স্বদেশীতলায় সমাহিত করিব।

তাহার আর প্রয়েজন হইল না। পরের দিন সকালে ধবর পাইলাম বদেশীতলার বেদী নিশ্চিক হইরাছে, একবানি ইটও সেবানে পঢ়িয়া নাই। এক রাতের মধ্যে এই কাও হইরা গিরাছে।

ভাবিলাম এ তালই হইল। মাট, নদী, আকাশ সবই
ভাগ হইয়াহে, তথু স্বৃতিটুকু আঁকড়াইয়া থাকিয়া কি ফল ?
সব নিশ্চিক, স্থ হইয়া যাউক। ভাবিলাম ভারলী নদীতেও
ভার বিজ্ঞাহী দেশকর্মীর চিতাভন্ম বিসৰ্জন ক্ষিব না। কিছ
কোধায় লইয়া যাই এই পবিজ্ঞ চিক্টুকু ?



## কেশবচন্দ্রের জাতিগঠনের পরিকম্পনা

## **ब्री**नित्रधन निरम्गी

১१৫१ बैडीत्स ननामित शूर्व कांत्राक देश्टाक कविकारतत मूह-ভিত্তি ছাপিত হইল। ইহার অর্দ্ধ শতানীর মধ্যেই আরম্ভ হইল বাংলাদেশের তথা ভারতবর্ধের নব-ভাগরণ। 'ভামেরিকার খাৰীনতার ৰুদ্ধ' এবং 'করাসী বিপ্লব' সমস্ত ইউরোপে খাধীনভার যে নৃতন আদর্শ উপস্থাপিত করিয়া জনমনে যে नरीम जाना এবং जाकाका जानिया प्रियादिन, जाना देशदब-**ভাতির সংস্পর্শের মধ্য দিয়া ভারতবর্ষকেও** সেই মন্ত্রে দীক্ষিত কবিল। বাংলাদেশ সর্বাপ্রথম সেই মন্ত্র প্রছণ করে এবং এই প্রদেশেই সমগ্র ভারতের জাতীয়তাবোবের প্রথম বিকাশ আমরা দেখিতে পাই। মোটামুট হিসাবে ইহাকেই ভাতীয়ভার জনবিকাশের প্রথম যুগ বরা যাইতে পারে-১৮১০ ছইতে ১৮৩৫ গ্রীষ্টাব্দ পর্যান্ত এই পঁচিল বংসর। এই মুগকে রাজা রাম-মোহনের যুগও বলা যায়। ১৮১৪ ঞ্জীপ্তাব্দে তিনি কলিকাভায় আসিয়া দেশকে নৰচেভনা দানের গ্রন্থ গ্রহণ করেন; ১৮৩৩ बैडोस्य তাঁহার মৃত্যু হয়। তাহার পর আসিল মহবি **म्मान्य क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स** এঁটাক অবৰি পঁচিশ বংসর। এই যুগের প্রথম ভাগে ১৮৩১ সনে তত্তবোধিনী সভা প্রতিষ্ঠিত হয়। এই সময়ে ক্রয়ে ক্রয়ে সমগ্র ভারতবর্ষে নৃতন জীবনের সাড়া পাওয়া ঘাইতেছিল. ইংরেকের শাসনব্যবস্থার এদেশবাসীর মধ্যে একভাবোধ ব্যবিতেছিল এবং ক্রমে ক্রমে তাহাদের মনে স্বাধীনভালাভের আকাক্ষা কাগিয়া উঠিতেছিল। ভারতের কাগরণের তৃতীয় ষুগ ১৮৬০ হইতে ১৮৮৫ খ্রীষ্টাব্দ পর্যান্ত। এই মুগের ইভিহাসের সহিত কেশবচন্দ্রের জীবন অবিচ্ছেত্ত ভাবে বিভ্রুতিত। এই সময়ই আমরা দেবিতে পাই কেশবচন্দ্রের ভাতিগঠনের পরি-ক্ষমা এবং সেই অনুযায়ী বিবিধ কৰ্মপ্রচেষ্টা। এই তৃতীয় মুপেই বাংগাদেশের নেতৃত্বে ভারতীয় স্বাধীনতা-সংগ্রামের এক মৃতন পর্বা আরম্ভ হয়। এট পঁচিশ বংসরে ভারতের ভাতীয়তবোৰ ও ঐক্যবোৰ কতদূর দানা বাঁৰিয়াছিল, ১৮৮৫ মীঠান্দে ভারতীয় ভাতীয় মহাসমিভির (Indian National Congress) क्षयम जनिद्रन्यत्वरे छाङ्। श्रमञ्जूम कृता यात्र। विधित्र मिक् स्टेष्ड वित्नव छात्व विठांत कतितम त्मना यात বে, এই বুগের শেষ ভাগে ভারতের ভাতীয়ভাবোৰ সুস্ঞাই আকার বারণ করে এবং অভাত বহু সামাজিক ও রাজনৈতিক বিষয়ে দেশবাসী সচ্চেত্ৰ হইতে থাকে।

কেশবচজের কর্মজীবনকে সাধারণ ভাবে হই ভাগে
- বিভক্ত করা যার; ১৮৬০ হইভে ১৮৭০ বীঠাক অবনি বিলাভ-গৰনের পূর্বে প্রথম পর্বা; ১৮৭০ হইভে ১৮৮৪ বীঠাক অবনি বিলাত হইতে প্রত্যাবর্তনের পর দিতীর পর্বা। প্রকৃতপঞ্ ১৮৬০ সবের পূর্বেই ভাষার কর্মনীবন আরও ইইয়াছিল, তবে ঐ বংসর হইতে তাহার কর্মপ্রচেষ্টার প্রকার পরিচয় পাওয়া যায়। এই সনেই মাত্র বাইশ বংগর বয়সে ভিনি "Young Bangal, This is for you" बारब Tracts for the Times সিরিভ বাহির করিতে ভারম্ভ করেন। এই সিরিকে প্রকাশিত ভেরোধানি পৃত্তিকা হইতে স্পষ্টই প্রতীয়মান হয় যে, তাঁহার মতে চারিত্রিক উৎকর্ষপাধন এবং শীবস্থ ধর্ম্মে প্রতিষ্ঠিত হওয়াই ছাতিগঠনের প্রধান উপায় : কোনও দেশ বা ভাতি তথা সমগ্ৰ মানবভাতি বৰ্ম ও চরিত্রকে অবলম্বন ना क्तिल देवल क्रेटल शादा ना । भीवत्नद म्ब शर्वाष जिमि এই मूल विश्वाम पृष्ठ्छारत आंक्फारेश विश्वशिष्टिलन-कान्य विषय कान्य नगर और जान्न इरेट अक्जियः বিচ্যুত হন নাই। ১৮৬০ সনেই কেশবচন্দ্ৰ ভাঁহার অভবদ সহযোগীদের লইয়া "সক্ত সভা" নামে একট সমিতি প্রতিঠা করেন এবং ইছার আলোচমাদির ভিতর দিয়া তাঁহারা এই ক্থাই ব্যক্ত ক্রিতে প্রয়াস পান যে, প্রভ্যেক ব্যক্তিকে সভ্যে, প্রেমে এবং পবিত্রভায় প্রভিষ্ঠিত হুইতে হুইবে, ভাহা হুইলেই সমষ্ট্রগত ভাবে সমগ্র জাতির মধ্যে এই সকল গুণ জনিবে।

কেশবচন্দ্রের জাতিগঠনের প্রধান উপাদান ধর্ম ও চরিত। ভাতিগঠনের দ্বিতীয় সোপান ভাতির ঐকাবোধ। জামাদের अक्रुडाट्याद्वत अवान जन्नतात्र काजिएडम । देशात विकास প্রকান্ত সংগ্রাম সর্বাধ্যমে কেশবচন্ত আরম্ভ করেন। ১৮৬২ সনে প্রথম এবং ১৮৬৪ সনে দ্বিতীয় অসবর্ণ এই অনুষ্ঠানে কেশবচন্দ্ৰ এক-বিবাছ অনুষ্ঠিত হয়। যোগে, বালবিধবাদের প্রতি অবিচারের এবং আতিভেদের विकास विक्रांक (बांबन) कृतिहम्म । यनि छात्रज्वर्यक अक क्तिएक एव जरन धन्या वाका-मृत्वत एकारेनवा पृत ক্রিভে ছইবে। এই বিষয়েই মহবি দেবেজনাবের সঙ্গে ভাৰার অনৈক্য উপস্থিত হয়। মহ্যিদেব উপাসনালয়ে বেদীতে বসিবার অধিকার কেবলমাত্র উপবীতবারী ত্রাত্মণকে দিলেন. बाबार्गण्य वर्गरक मिरमन ना । स्मावन्य देशव अणिवाम ক্রিলেন এবং সকল বর্ণেরই উপাসনার বেদীতে বসিবার অধিকার আছে, এই দাবী প্রান্ত না হওয়াতে ভাঁহাকে সদলে মহবিদেবের সহিত সম্পর্কচ্ছেদ করিতে হইল 🗀 উপাসনালরে भृत्वद छेभाजमा कविवाब अविकाब महेबा ब्रांव जल्द वरजव পূর্বে বে সংখ্রাম কেশবচন্দ্র ত্বর করিরাহিলেন ভাহাই ব্যাপকভর স্থপ পরিএই করিয়াছে—বর্তমানে সম্প্র ভারভব্যাপী জল্প্ডদের মন্দিরপ্রবেশ ও পূজার অধিকার লাভ সম্পর্কিত আন্দোলনে।

ইদানীং অপ্রভার উপর অভিরিক্ত ভোর দিয়া বিশু-সমাধকে এক করিবার চেষ্টা করা হইরাছে। বুজি এই বে, বর্ণাশ্রমে দোব নাই. কেবল অম্পঞ্চতা দুর হইলেই হইল। এইরূপ ভোড়াভালি দিয়া সমাত্তকে এক করিবার চেঙা পও হইতে বাবা। উচ্চনীচ ভেদ বহিল, সকল মানুষকে সমান হইতে দেওয়া হইল না-ইহাতে সাম্য আসিতে পারে মা। কেশবচন্ত্ৰ ভোভাতালির পথে যান নাই, কারণ তিনি ভানিতেন যে ইহাতে ভাতিগঠনকার্ব্য সুঠুভাবে সম্পন্ন হইতে পারে না। এই জাতিভেদরণ পাপ সমাজ হইতে দুর করিবার ভঙ ভিনি অসবর্ণ বিবাহ তো সমর্থন করিরাছিলেনই, উপরত্ত আত্তর্জাতিক (Inter-racial) বিবাহেও তাঁহার পূর্ণ भक्षि हिल। याहाटा **এই भक्**ल विवाह चारेनमण हत्त. ভাষার জন্ম ভিনি গবর্ণমেন্টকে দিয়া ১৮৭২ সনে মুভন বিবাছবিবি প্রবর্ত্তন করাইয়া গিয়াছেন। এই বিবাছবিবিতে कां जिटकरमंत्र नांश्यक नांहे, जकल (मर्लंद जकल वर्राद बी-পুরুষ এই বিবাহবিধির সাহায্যে পরিণয়ন্ত্রে আবদ হইতে পারে। সকল ভাতি বর্ণকে এক করিয়া এক মহাভাতি-গঠনের যে বিরাট একট পরিকলনা কেশবচজের মনে হিল তাহা ইহাতে স্পষ্ট বুঝা যায়। বর্তমানে হিস্পুস্মাজে ষে সকল অসবৰ্ণ বিবাহ হইতেছে তাহার প্রায় সবগুলিই কেশবচন্দ্রের চেষ্টার প্রবর্ত্তিত এই বিবাহবিধি অনুসারে সম্পন্ন হইতেছে।

অশ্রভাদের স্পর্শণেষ দ্ব করিয়া হিন্দু সপ্রদায়ে রাখিবার একটি উপায় বাহির করা হটরাছে—তাহাদের 'হরিজন' আখা। দেওয়া। ইহাতে কি লাভ হটরাছে তাহা ব্রা কটিন। কারণ জাতিভেদ-বর্জন মনোভাব পরিবর্তনের উপরেই বৃলতঃ নির্ভর করে, যদি সে পরিবর্তন মনে না আসে তো কেবল নামে কিছু আসে যার না। যত দিন জাতিভেদ সবুলে উংপাটিত না হইবে তত দিন পর্যান্ত ভারতবাসী এক ভাতি হইতে পারিবে না, তাহাদের সমাতে 'কাটল' সব সমরেই থাকিবে।

ভারতের মহাকাতি পঠনে সকল প্রদেশের যোগাযোগ, ঘনির্চ সম্পর্ক এবং পরস্পরের মধ্যে সন্তাব দ্বাপন করিয়া একভাবোধ আনিয়া দিবার হুচনা দেখিতে পাই কেশবচল্লের বর্ষপ্রচারের উল্লায়ে। ১৮৬৪ সনে, যাত্র ছাকিশ বংসর বরসে, যাত্রাক ও বোছাই প্রদেশে বিভিন্ন ছানে পিয়া তিনি বর্মা, নীভি, দেশের কল্যাণ, সহাক্ষ-সংখার প্রভৃতি নানা বিষয়ে বক্তাও উপদেশাদি প্রদানপূর্কক ঐ সকল আকলের অবিবাসীরোক্ষা ভাবের মন প্রেরণার সকার করেন। যাত্রাক্ষাসীরা ভাহাকে "The Thunderbolt of Bengal' নামে আভিহত ভরিয়াছিল। ভাতীয় ভীবনকে বর্ম ও নীভির উপর

প্রতিষ্ঠিত এবং বৃত্ধ আদর্শের হত্তে প্রবিভ ক্রিয়া ভাতিগত জ্বা প্রতিষ্ঠার ভাত তিনি বার বার এই প্রকার 'প্রচার-যামার বাহির হইয়া পূর্ববাদ, বিহার, যুক্তপ্রবাদ, পঞ্চাব, মবা-প্রবাদ এবং বোভাই পরিজমণ করেন। ইহাতে বাংলার সদে ঐ সকল প্রবাদশের একটি ঘনিষ্ঠ ঘোগ সংখাপিত হয় এবং আভঃপ্রাদেশিক সন্তাব ও প্রীতির বন্ধন দৃদীভূত হয়; সমন্ত ভারতে একভাবোধ ভাগ্রত হইতে থাকে।

এই সকল কর্মপ্রচেপ্রার সলে সঙ্গে ভারতবর্ষের বিভিন্ন বর্দ্রসমাজের মধ্যে ঐক্যপ্রতিষ্ঠার আদর্শ কেশবচন্দ্রের মনে ভাগত্রক থাকিয়া ভিতরে ভিতরে কাভ করিতেছিল। ৰৰ্দ্ধে বিরোধ যে দেশকে খণ্ডিত এবং ছবলৈ করে ভাছা তিনি ভানিতেন। তাই তাঁহার কর্মনীবনের ভারত হইতেই বর্দ্মসমন্ত্রের আদর্শ ভাঁছার চরিত্রে দেখিতে পাই। ভিন্ন ভিন্ন ধর্মণাল্লের সারমর্ম ও ধর্মামুভূতি গ্রহণ করিবার মনোর্ভি ज्यन स्टेर्फ्ट कांस्र दिन। ১৮৬৪ সনে नर्क्यत बार्ज তিনি দেবেন্দ্রনাথের আঞ্রন্ধ ত্যাগ করেন। ১৮৬৫ সনে "ৱাহ্মবন্ধু সভার" একটি বিশেষ অধিবেশনে হিন্দু, মুসলমান ও এটান এই তিন সম্প্রদায়ের ধর্মণান্ত্র করু হয় এবং উপস্থিত ইংৱেৰ পুরুষ ও মহিলাগণ পোপের 'দার্বজনীন श्रार्थना' (Universal Praver) त्रान करवन। देश अकड़ অভিনব অসুঠান, কারণ সকল ধর্মকে সমান মধ্যাদা দান করিয়া বর্ষসমন্ত্রের ক্ষেত্র এবং পূর্বা পশ্চিমের মিলনভূমি সর্বাধ্যম কেশবচন্ত্ৰই এই ভাবে প্ৰস্তুত করেন। মাত্ৰ কিছুকাল ভাগে महाजा शाबी आर्थनामणात हिन्दू, मूननमान ७ विडाम अहे जिम সম্প্রদায়ের ধর্মশান্ত্র হুইতে নির্বাচিত অংশ পাঠ করিবার প্রধা প্রবর্ত্তন করিয়াছিলেন—আচার্য্য কেশবচন্দ্র ইহা আরম্ভ করেন প্রায় ৭৫ বংসর পূর্বে। ১৮৬৬ সনে কেশবচন্দ্র বিভিন্ন বর্ষ-শাস্ত্র হইতে পাঠ সম্বলন করিয়া 'শ্লোকসংগ্রহ' প্রকাশিত करतन ; करम रतोष, नियं, देहनी, षत्रशृक्षीत धवर टिनिक वर्च-শারের নির্বাচিত অংশসমূহ এই প্রছের অভতু 🖝 হয়। ইহার ভিতরে ছিল ভারতীয় জাতিসংগঠনের এবং সমগ্র মানবৰাতিকে আবাাদ্বিক অমুভূতির উচ্চ ভরে উন্নীত করিবার মহান আদর্শ। কেলবচন্দ্রের ধর্মসমন্বরের বাদী এই সময় হইতে চতুৰিকে থোষিত হইতে থাকে এবং ক্রমণ: অভিনৱ ও গভীরতর তাংপর্বো ৰভিত হইয়া উঠে।

সকল প্রদেশের সঙ্গে আদর্শে এবং ভাবে বৃক্ত হইরা তিনি বতঃই দেশের নেতৃহানীর হইরা উঠিলেন এবং বিভিন্ন বর্ণ-মঙলী ও শাস্ত্রকে প্রহণ ও বীকার করার হিন্দু মুসলমান বৌদ্ধ প্রটান প্রভৃতি সকল বর্ণসম্প্রদারের পক্ষে কথা বলিবার নৈতিক অবিকার তাঁহার ক্ষিল: এই অবিকারের প্রক্ত পরিচয় পাই ভাষার ১৮৬৬ সনের "Jesus Christ: Europe & Asia" নামক বিধ্যাত বক্তৃতাতে। ২৮ বংসরের ব্রক ক্ষেপ্রচল্প

এশিরাবাসীর প্রতি ইউরোপের স্থা, খবিচার এবং খতাাচারের কথা খালামরী ভাষার ব্যক্ত করিলেন এবং স্থকঠে প্রাচ্যের সৌরব খোষণা করিলেন। কেশবচন্দ্রের পূর্ব্ধে খার কেহ এমন ভাবে এশিরা এবং ভারতকে খাধুনিক খগতে সৌরবৈর খালনে প্রতিষ্ঠিত ক্তিবার প্রয়াস পান নাই।

এট সংক্রিপ্ত বিবরণে, বিলাত গমনের পূর্ব্বে কেশবচন্তের আভিসঠন-প্রচেষ্টার কিছু পরিচর পাওরা বাইবে। তিনি ১৮৭০ সনের কেন্দ্রারী যাসে বিলাতবাক্তা করেন এবং আষ্টোবর যাসে প্রত্যাগমন করেন। সমগ্র ভারতের বাবতীর বর্ষসন্তালায়ের তথা সমগ্র এশিরার আধাাত্মিকভার সারবার্তা বহন করিরা তিনিই প্রথম পাশ্চান্তা দেশে গমন করেন এবং বিলাতে বে বাই তিনি প্রচার করেন তাহা সমগ্র প্রাচ্যের সকল ধর্মসন্তালায়ের রশ্বনাই।

দেশে প্রত্যাগমনের পর কেশবচন্দ্রের জাতিগঠন-পরিক্ষন। আরও ব্যাপক আকার ধারণ করে। ১৮৭০ সনে, ২রা বভেষর, উহার উভাগে Indian Reform Association নামক সমিতি প্রতিষ্ঠিত হয়। ইহার উদ্দেশ্য হিলার প্রবং নৈতিক উন্নরন।' এই ক্রেক্ট বিভাগে ইহার ভারি আরম্ভ হয় ঃ

১। নারীদের উন্নতি; ২। সাধারণ এবং কারিগরী শিকা (Technical Education); ৩। দরিজদিগের শুভ সুলভ সাহিত্য-প্রচার; ৪। মাদকতা নিবারণ; ৫। বিশ্বদের সাহায়।

এই বিভাগগুলি হুইভে বুবিতে পারা যায় কেশবচন্দ্রের ভাতিগঠনের পরিকল্পনা তবন কিবল বহুমুখী হইরা উটারা-हिन। हेशंद मत्या वित्यम कविदा नका कदिवाद विवद निध-শ্রেণীর লোকেদের ও দরিভাদিগের অবস্থার উন্নয়নের কর কেশবচন্দ্রের আন্তরিক ব্যাকুলতা । এই পরিকল্পার বল্লতম শ্ৰেষ্ঠ কল এক প্ৰসা বুলোর সান্তাহিক 'সুলভ-সমাচার'। ১৮१० ज्ञान मार्क्यत मार्क्य देशांत अकाम चात्रक एत । जर्ब ভাষায়, সাধারণ লোকের উপবোদী, ভাতি-গঠনের পরিকল্পনা-বুলক নানা প্রবৰে পরিপূর্ণ 'ফুলড সমাচারে'র প্রকাশ क्चित्रतात अवधि चत्रवेद कार्या। 'क्चित्रतात वाहेरावे' नृष्टिकाद महनिष्ठ **ध**रदश्चनि भाठ कदिल रेश न्नडेष्टरे ছদর্গম করা হার। দরিদ্র এবং সমাকের অবনত ও লাভিডলের উৰ্ব ক্রিভে যে চেষ্টা 'বলত স্থাচার' সে-বুপে ভবিষ্ঠান্তিল ভাষা বাত্তবিক্ট বিশ্বরের বিষয়। বর্ণে বর্ণে বিভেদ विवय कालिएक अक स्टेटल विव मा. बबी-महिएकह क्यरेववमाध ভেষমই দেশবাসীকে পরস্বরের নিকট হইতে বিচ্ছিত্ত করিয়া রাবে। সেই বিভেদ দূর করিবার স্থলাই এবং কার্যাকরী ইদিত আৰু হুইতে ৭৭ বংগর পূর্বে 'প্রলভ সমাচারে'র, ১৮৭১

সমের ২৯শে আগটের সংখ্যার, "বহুলোক" নামক প্রবদ্ধে আমরা দেবিতে পাই। প্র-মানসকে উর্ভ করিবার চেঠা বোৰ হয় ইভিপূৰ্বে এমন ভাবে আৱ হয় নাই। আবার "ভারতবাসীদের মধ্যে একতালাভের উপায় কি 🥍 প্রবছে কেশবচন্দ্র বলিভেছেন, হিন্দী ভাষাকে ভারতের সর্বাহন গ্রাহ ভাষা করিতে—উদ্ভেশ্ন ভারতবর্ষের একতাসাধন। জাহার পূৰ্বে আর কেং হিন্দীকে রাইভাষা কবিবার কবা বলেন ৰাই। বাৰুবাৱায়ণ বসু ও ভূদেব মূৰোপাণ্যার মহাশ্রগ্র ইহার পরে এই মত প্রকাশ করেন কিছ কেশবচন্তই জাতিগঠন পরিক্রনায় ইহাকে সর্বপ্রথমে প্রান দেন। য়ৰ্থন স্থামী দ্বানন্দ সৱস্থতী কলিকাভায় আন্সেন ভৰ্ম কেশবচল্ল ভাঁহাকে এই পরামর্শ কেন, তিনি বেন ভারভ-বর্ষের সকলের বোধগম্য করিবার শ্বন্ত সংস্কৃতে ধর্ম-প্রচার না করিরা হিন্দীতে করেন। স্বামী দ্বানন্দ এ পরামর্শ গ্ৰহণ করেন এবং তখন হুইতে ছিলীতে আহাসমাজের আদর্শ ও বানী প্রচার করিতে আরম্ভ করেন। কেশবচন্দ্র নিকেও বাংলার বাহিরে কখনও কখনও হিন্দীতে বক্তভা করিভেন।

এই গণচেতনার উলোধনের বধ্যেও দরিস্রদের পক্ষে উন্নত হবৈর আকাজনার সংবত প্রচেপ্তা এবং চরিত্রের বিশুবতা রক্ষা করা বে একাভ প্ররোজন কেশবচন্দ্র সেকথা বলিতে তুলেন নাই। অসংবত, হানিকর উল্পুলভার প্রোতে গা ভাসাইতে তিনি নিবের করিয়াছেন এবং বাহাতে তুরাপানে আসক্ত হইরা দরিদ্র লোকেরা নিজেদের সর্বানাকক না ভাকিরা আনে ভাহার জন্ত মাদকতা নিবারর আন্দোলনের মেতা হইরা সারাজীবন গবর্গনেকের সহিত মাদকন্তর্ব্য বিজ্ঞরের আর লইরা তুর্ল বাদান্ত্রাক করেন। বিলাতে অবস্থান কালে এই বিবরে সেধানকার কর্ত্বপক্ষের আচরণের বে ক্ঠোর সমালোচনা ভিনি করিরাছিলেন, ভাষা অভ্যন্ত যুক্তিপূর্ণ হইরাছিল।

প্রেই বলা হইরাছে বে বর্ষ ও চরিত্র—এই হুটাকৈ ভিত্তি করিরা কেশবচক্র জাতিগঠনের পরিকল্পনা করিরা-ছিলেন। সাবারণতঃ বর্ষ ও চরিত্রকে রাজনীতির বহিত্তি এবং গঠনবুলক কর্ষের সহিত সম্পর্কশৃত বালরা আমরা মনে করিরা বা'ক, কিছ দেশের বর্ত্তরান পরিছিতিতে চরিত্রগঠনের বুলা কতবানি তাহা আমাদের ভাবিরা দেবা উচিত। এই বে আমাদের বর্ত্তরান হর্ত্তশা—অর নাই, বল্ল নাই, নিত্যপ্রয়োজনীর বন্ধ অরিবৃল্য—এ সকলের প্রবান কারণ 'চোরা কারবার', এবং 'মুবের কারবার', কিছ এই চোরা কারবারী ও মুববোর কারবার পান বা ব্যাব করিবে কে প্রবারার প্রবার কোরার প্রতিকার কোরার প্রতিকার কোরার প্রতিকার কারবার প্রতিকার কারবার প্রতিকার কোরার প্রতিকার কারবার প্রতার কারবার প্রতার কারবার প্রতার কারবার কারবার প্রতার কারবার কারবার কারবার প্রতার কারবার কারবার প্রতার কারবার কা

না কেন, ইহারা আছবকা করিবার বাত স্তন সূতন উপার উদ্ভাবন করিবে। প্রতরাং দেশকে উন্নত করিবার প্রকৃত পহা দেশবাসীর চরিত্রগঠনে এবং লোককে সং ও নিঃবার্থ করিছে শিক্ষা কেওরার মধ্যে। এই উচ্চেপ্তে প্রধােষিত ক্টরাই কেশবচন্দ্র দীর্থ পঁচিশ বংসর বাবং স্বাতীর চরিত্রের আযুল সংভাবে প্রকৃত্তি বিজেন।

वर्षनगरदार जावर्ग (र क्लावन्स्राट वित्तवणाद जन्-প্রাণিত করিবাছিল ভাষা আমরা পুর্বেই বলিয়াছি। জ্বেৰ ভবে গভীরভর আবাদ্বিক অভূতৃতি লাভ করিয়া ভিনি দেবিলেন (य जकन वर्षरे जला। ७१ वरमञ्ज शृद्धि, ১৮৮১ नाम २०१४ मरण्डरवद 'Sunday Mirror' পঞ্জিका विकि निर्वितन, Not that there are truths in every reliciou but all religions are true," sere, "acore ৰৰ্ষেই যে কিছু কিছু সভা আছে, ভাহা নহে; সকল ৰশ্বহি সভা।" বৰ্ণকে ভারতবাসীদের ও জগভের নানা ভাতির প্রগতির বৃদ ভিত্তি করিবার সহল কেশবচজের बरन दिन ? छिनि वृजिद्यादिरानम त्य, जानाजिक अवर নৈতিক আদর্শে পুৰিবীয় সম্ভাঙলিয় সমাবাদ করিতে ना शाबित क्रवंत हांदी मीमारता स्टेटर मा। क्रवन ভারতবর্বকে কেন, সমগ্র মানবভাতিকে একতাব্দ করিবার देशरे अक्साब यह-"One World" वा चर्यक्यंतर अहे ৰাৱণাৱ ইহাই এক মাত্ৰ ভিডি। বৰ্তমানের প্ৰভোক চিভানীৰ ব্যক্তিই এবন এই কথাই খীকার করিতেছেন বে, বর্ডমান ভাগতের অণাভি এবং হৃগতির কারণ অংবাভিক বিকার। ভাগার। তেবিতেছের বে, আবাভিক এবং নৈতিক উৎকর্ম ভিত্র আববিক কোরকের হন্ত হক্ষা পাইবার আর আন্ত কোনো উপার নাই। গামীকীও বলিরা নিরামেন, "All religions are equally true," অর্থাং "নকল বর্মই সমান তাবে সভাগ"

প্রায় ৭৫ বংসর পূর্বে কেশবচন্দ্র ভাতিগঠনের বে পরি-কলনা করিবা নিরাহেন ভাষা এবনও পরিপূর্বভাবে কার্যকরী হর নাই। তাঁহার পরিকল্পনা কিছু ভবন বেমন ছিল আছঙ তেমনি সভা। ভাঁছার মধ্যে ছাভি-বিবেষ ছিল না। গভার-গতিক বাৰনৈতিক আন্দোলনের পৰে না বিবা কেশবচল একেবারে মূল ভিত্তি হুইতে ছাভিগঠনের প্রহাস পাইরা-विद्यान । काशांव निर्दिष्ठ भट्ट चार्यमद स्टेबा विष चायवा জাতীর চরিত্র পঠনের দিকে মনোবোগ দিভাম, ভাকা ক্টলে শীবনের সকল ক্ষেত্রে বে চুর্নীভির প্রসার আৰু দেবিভেছি, ভাৰা সমৰ হইত না। অপিচ কেশৰচজ্ৰের বর্ষসমন্ত্রের আহর্শ এহণ করিয়া যদি হিন্দু ও মুসলমান পরস্থারের ধর্মের विकि व्यक्तांतान करेल, जाका करेल और कृषे मध्यकांत जान রাখনীতির কেত্রে হিংল্র, রক্তখরী প্রতিদ্বভার খবতীর্ণ না হইরা পরস্বরের সহযোগী হইত, ভারতবর্ধ এই ভাবে বিৰ্ণাতত হইত না, সহল সহল হিন্দু ও মুসলবাৰ নিহত হইত ना. नक नक नदमादी माहिक, जनवानिक जनर नावकानि সর্বাহার। হইরা ভাত পরে ভারিরা ইাডাইড মা ।

# ভারত ও পাকিস্থান

## ° ঞ্জীকালীচরণ ঘোষ

বাহার। বনে করিরাহিলেন বতর গাঁর হিসাবে পাকিছান জাঁরতের সাহায্য ব্যতিরেকে এক বংসরও চলিতে পারে না, ভাহাদের সহিত আবার মত নিলে নাই। পৃথিবীতে এবন অনেক হাবীন দেশ আছে বেগুলি পাকিছান অপেক। আরতনে ক্স্তু, ক্ষমসংখ্যার লখিও এবং প্রাকৃতিক সম্পন্ধের লাকারে এবং ক্ষমসংখ্যার পাকিছান পৃথিবীর রাইসমূহের বব্যে পক্ষ এবং মুসলিম রাষ্ট্রের মধ্যে প্রথম ছানের অধিকারী। প্রকৃতপক্ষে ২,৩০,১০০ বর্গনাইল আরতন বিলিও এবং ৬ কোট ৫৬ লক লোকের বাসকৃত্বি বে একট অচল রাষ্ট্রে পরিণত হইতে বাকিবে দেকা ক্ষা ক্ষাব বিল্লা সাহেবের মক বিচক্ষণ লোক বৃথিতে পারের নাই, ভারা সভ্য মহে ৮

পাকিছানের নানারপ স্থাবিধা ছবিরাছে, ভাষার কথা ভাবিয়া কোন কর্বার। খাবীন রাট্রের লোকসংখ্যা, প্রাকৃতিক সম্পদ ছাড়া সকুত্রের সহিত বোগাবোগ রাধিবার কর্ম উপর্ক্ত বন্দরের প্ররোজন। এই সর্ত্রের ভাষাক্ষাকি চলাচলের বিকে পথ পাইবার ক্ষম ভার্মানী কি চেঠা, কি অর্থার করিরাছে, কত অনর্থ ঘটাইরাছে ভাষা স্থাবিকিত। পাকিছানের প্রধান বন্দর করাচী। ইহাকে সকুত করিয়াছিল সিনী অনুসলমান ব্যবসাধীর হল। ভারত বিভাগের পূর্বের বোঘাই বন্দর থাকা সভ্যেও করাচী বন্দরে প্রার-চল্লিশ কোটি টাকার বাল ওঠা-নাবা করিত। প্রাকৃতিক স্থাবার-ছবিধার করাচীকে ক্ষরতের একট প্রেট বন্দর বনিরা বরা বাইতে পারে। পাক্ষির পাক্ষিয়ানের সম্ভ বঙানীবোর্য কাঁচা-

7.066

बान-वित्मवन्तः कृता, भगव, ठावका, एतक वा किंद्र वाक्मक, नवन बक्कि विकिन्न भनावया बक्काबीय वित्यय स्ट्रांग अवात्मी एरेटन । রহিরাছে। পূর্বাণাকিছানের প্রধান সন্দর্গ পাই। ভারভবর্বে ৰত পাঠ বৃহত ভাতার শতকরা ৭৩ ভাগ পঢ়িবাতে পাকিহানে অৰ্থাং পূৰ্ব্বৰলৈ। পাকিছানের পক্ষে ভুলা ও পাই পাওয়ার चारबब अक्षे श्रवान नव चाविक्रण रहेबारह । नार्व चाराब ভারতবর্বের সাবাভ অংশে হয়, সর্ব্বর হয় না। পাকিছানে छेरनाविक नार्कित व्यविकारम दिन, क्रैमात वा मोकारवारन কলিকাতার বিক্ররের বত পাঠাইতে হর। ১৯৪৭-৪৮ সালে ৪৯,১৫,০০০ বাইট পাট এই ভাবে আসিরাছে। বাকী পাট লইরা ভাষাদের বিত্রভ হইবার কথা। কিছু পূর্বপাকিছাবে চট্টপ্রাম বন্দর রহিলা গিয়াছে। চট্টপ্রাম বন্দর এবনও ধুব উন্নত নর, কিছ তাহা সল্পেও যথন মনে করা যায় যে ৭,৬৪,০০০ গাঁইট পাট রপ্তানীর পক্ষে ভাষা এখনই উপযোগী ভৰন ভাষাকে নিভাছ উপেছা করা চলে না। ভাষার উপর চট্টবামে একট প্রবৃহৎ বন্দর স্থাপনের ব্রুচ এবং ভাষার विनिम्द विना वाशांत्र भाष्टे भारेवात जामात्र हेश्टबन-আমেরিকান ধনিকের। ধুব উৎসাহ দেবাইভেছেন। কাঁচা পাঠ পাওৱার স্থবিধা ছাড়া তাঁছাদের নিয়োভিত বুলবনের উপর বন্ধরের বাতে মোটা লভ্যাংশ পাইবার আশাও ৰৰ্ভমান ৷

পাটের পরই তুলার কথা। এখানেও পাকিছানের সুবর্ণ প্রযোগ উপবিভ হইরাছে। বিদেশে ভূলা রপ্তানী করিয়া ভারতের যোটা ভার ছিল, এবন পাকিহান ভাহার শভ-क्बा 80 जांग शांदेबाट्य। ১৯৪৮-৪৯ সালে जानुसानिक >,00,000 गैरिके छुन्। छेरशन स्टेटर विनान सामा कता वात । পশমের - ক্ষেত্রেও পাকিস্থানের স্থবিধা, কারণ পঞ্চনদ ও ভাহার উত্তর পশ্চিমত্ব অঞ্ল পাওরার ভাতার বিশেষ পুৰিবা হইয়া গিয়াছে। বাজ্বত বিষয়ে ভারত অপেকা পাকিছানের সুযোগ-সুবিধা বেশী, কারণ সিদ্ধ ও পঞ্চনদের লেচৰীবছাৰুক্ত সমন্ত কৰি পাকিছাৰে পঢ়িৱাছে। পশু-চর্ম্ম ভারতের রপ্তানী-বাণিজ্যে একট প্রধান স্থান অধিকার कृतिबाहिन। बूद-शृद्धि ১৯৩৯-৪० সালে हेरात वना हिन कोई २৮ नक ठीका। देशांत अविकाश्यदे आंख পাকিছানের সম্পত্তি। ভারতের সহিত পাকিছানের বে লেমবেৰ চক্তি ব্টৱাহে ভাষাতে পাকিয়ান ব্টতে অভত: ৪০ লক্ষ ৰও চাৰ্যা না লইলে ভারতের বিশেষ ঘডাব থাকিয়া बाद । शांकिश्वान रहेएल चडल: विश्व नक वन नवन वा পাইলে ভারভের অভাব বিচীতে পারে বা।

পাকিছানের অভাব আহে অনেক এবং করেকট অভি প্রয়োজনীয় বিষয়ে গুলুভর পরনির্ভরতা বর্তমান। কাপড়, কুরুলা, লোখা, নিবেট, চিনি প্রকৃতি ক্রয়ানি পাকিছানকে হর ভারত, বা হর অপর বেশের নিকট কিবিরা দইতে হইবে। শিল-প্রতিষ্ঠানে পাকিছান অভ্যন্ত শিহাইর। আহে।

ভারভবর্ণের আদ বে অবহা ভাহাতে বারান্তক হইতেহে
বাংয়াভাব ; ভাহার পর পাট। অভাভ বিবরে পাকিহান
অপেকা ভারতের অবহা অনেক ভাল। পেটোল ও কেরোসিনের কর ভারত এবং পাকিহান উভরেই পরমুবাপেকী।
ভারভবর্ণের এইবানে বিবন অনুবিধা। বাহালের বাভ
কিনিতে বংসরে ১২০ কোট টাকা, পেটোল কিনিতে
৪০ কোট টাকা অপরকে বিতে হয়, ভাহার পকে
নিকের প্ররোক্ষীর অপরাপর বহ প্রব্য রপ্তানী করিতে
না পারিলে চলে না। কাভির পকে ইহা বহা অকল্যাপের
অবহা।

শৃতন শিল সংহানে ভারত ও পাকিহানের একই অবহা , कनक्या ७ रक लाक वा वित्तव कात्वव वह मन्त्र्रीवर्ग পরের উপর নির্ভর করিতে হইতেছে। তৃতীয় মহাসমরের যে चारताबन चात्रच रहेतारह, छारारछ चारमतिका, हेरन७ नमक লোহা, ভাষা প্রভৃতি দিয়া বুদ-সরঞ্চাম প্রস্তুত করিতে ভারত পাকিছানকে বে সাহায্য করিভেছে বা করিবার আখাস पिटलट, छाना नार्व नम्ब माटल भर्तानिल स्टेटन । छाना হইলেও পার্চ এবং কভক পরিমাণে তুলা, পশ্ম ও কাঁচা চাষ্টার ভঙ পাকিছানের উপর নির্ভর করিতে হইলেও. ভারত কাঁচা মালের ক্ষেত্রে পাকিস্থান অপেকা অনেক বেনী সুবোগ-সুবিধা ভোগ করিতেছে। পাট ও ভূলার কলন বৃদ্ধি করা কতকাংশে সম্ভব, পাকিছানের যে অভাব ভাছা পুরণ করা সহজ্যাব্য মহে। পুতরাং যদি বাহির হইতে যন্ত্ৰপাতি পাওৱা যায় অৰ্বা ঘ্ৰাস্ত্ৰৰ এৰানে তৈয়াৱী ভৱিছা লইবার ব্যবস্থা করা যায়, ভাষা ঘটলে পাকিরান অপেকা ভারতের পুৰোগ অনেক বেশী ছইবে।

এক ভৌগোলিক সীমার মধ্যে এতকাল বাকিরা হঠাং ভারত বিভাগ হওরার, মনের দিক দিরা বাহাই হোক, সামাজিক ও অর্থনৈতিক যে পরিছিতির উত্তব হইরাহে ভাহাতে হই পক্ষই বিশেষ বিরুত ও চিভিত। বাংলা বিভাগ অত্যন্ত অরাভাবিক ব্যাপার, কারণ হই ভোষিনির্মে এক 'সংসারে'র লোক বিভক্ত হইরা পড়িরাহে এবং হয়ত রাষ্ট্রপতিবের আবেশে ভাইরের বিপক্ষে ভাইকে বাঁড়াইতে হটতে পারে।

পশ্চিম-শঞ্চনতে হিন্দু বা শিব এবং পূর্বা পঞ্চনতে মুসলমান নাই বলিরা শোনা বাইতেতে। উভয়-পশ্চিম সীমাভ প্রবেশ হিন্দুবৃত হইলেও, সিমুতে এবনও ছই লড়ের উপর অমুনলমান মহিরাতে। বে হিলাবে পূর্বাপাতিছানের অবস্থা সন্পূৰ্ণ ভিন্ন। এবানে অৱপরিসর ছাবের বাব্যে সোরা এক কোট বিস্কু রহিরাছে। আর সবর্গ ভারতে রহিরাছে প্রার নোরা চার কোট বুসলমান।

বর্ষের ভিন্তিতে জনাব জিলা সাহের ভারত বিভাগ
ভরিলা ভাঁহার সংশাঁদের বেশী উপকার ভরিলেন কিনা
এবনও বৃবিতে পালা বার না। লোক বিনিমরের ভ্রা
প্রথমে বৃব জোর গলার বলিবার পর শেবে ব-সভালারের
লোকেদের হর্বনা দেখিরা সেই মত শেবে ভাঁহাকে পরিবর্জন করিতে হইরাহিল। বর্জমান অবহার আমরা বিদি
দেছ ভোট অনুসলনানকে হান দিতে রাজী হই, ভাহা হইলে
পাকিহানকে সোলা চার ভোট মুসলনানকে আশ্রম দিতে হয়।

এ অবস্থা মুললমানেরা মর্শ্বে মর্শ্বে বৃত্তিরাছে, সুভরাং ভার "লোক বিনিমর" বুলি আওভার না। এখন চার কি ভাবে হিন্দু বিভাভন ভ্রিরা ভাহাদের ধনসম্পত্তি, ভ্রমিন্সেরাং মনের সুৰে ভোগ-দৰ্বল করিতে পারে। তাই আৰু প্রকাপ্ত দাঙ্গা-হালামার বহর অনেক কমিয়াছে, এখন হাতে না মারিয়া ভাতে ৰাবিবার ব্যবস্থা হইতেছে। লোকেরা সদাসর্বনা অভ্যাচারের ভর দেবাইরা রাবে, ভত্যাচার করে না: খ্রীলোকদের ভণ-হরণ করা অপেকা বিবাহের প্রভাব পাঠাইরা আতহপ্রভ রাবেঃ পবে ঘাটে ছিন্দু খ্রীলোক দেখিলে গায়ে ছাত দেয় ना, मुर्चकती, अवकती करत, अन्नीत शांव करत, नाना अकात শভন্ত ইঞ্চিত করে। ক্রমি-পুরুর দর্বল করে না, গরু চুরি করে না, কসল, মাহ ইত্যাদি প্রকার ভাবেই লর: উঠান হইতে ছধ দোহন করিয়া লইয়া চলিয়া যায়। মানী লোকেদের ইচ্ছা করিয়া অসন্থান করে, যরে দালানে বসিয়া আত্মীরপ্রদের সহিত আলাগ আলোচনা করিবার সময় সংখ্যাগরিষ্ঠ সম্প্রদারের লোক হঠাং আসিরা নিকটে বসিরা আত্মীয়তা প্ৰকাশ করে, সন্তান্ত স্থালৈক ভয়ে উঠিয়া পালায়, পুরুষরা বিত্রত হুইয়া স্থান ভ্যাগ করে। ইহাতে কোনও দোষ मारे विनेता "क्षा" क वृत्रारेष्ठ (ठडी करव । अञ्चल छेपाइयानव অভাব মাট।

ভিন্না সাহেবের হরত লক্ষ্য ছিল, বর সামলাইরা উঠিতে পারিলে তিনি একবার মুসলমান সমাচদের রাজধানী বিল্লী-ভাঞার দিকে মুখ কিরাইবেন। প্রত্যক্ষতাবে তিনি উত্তর-পশ্চিম সীমাভ প্রবেশ হইতে ভারভ করিবা সরাসরি পশ্চিমাতির্বে যাত্রা করিবা আক্সানিহান, ইরাণ, ইরাণ, ভারব, সিরিরা, ভূকাঁ, নিশর প্রভৃতি বাবতীর মুসলমান রাইকে একছত্তে ভারভ করিবার ইছা পোষণ করিতেন। পাকিহান পাইলে এই স্ববোগ বটবে বলিরা তিনি ভারত বিভাগে উভোগী হল এবং শেব পর্যন্ত ইংরেকের সহারভার সকলভার হল।

ভারভবর্তকে শান্তি বিবার কবা ভারার বনে হইলে তিনি

বিশেষ অপাতি ভোগ করিতেন। ভারতবর্বকে বিরত রাবিতে পারিলে পাকিছানের কি ক্ষবিবা হইবে, ভাহা তিনিই আনিতেন। আর কিছু না হইলেও ভারত বর সামলাইতে ব্যক্ত থাকিলে তিনি বিভিন্ন আতির সহিত সব্য হাপনপূর্বকে পাকিছানের মর্ব্যাহা ব্লব্ধি করিবা ভারতীর রাজ্যবর্গের নব্যে কাহাকে কাহাকেও পাকিছানের ক্ষিপত করিতে পারিবেন, ইহাই হরত হিল তাঁহার মনোগত আশা। তিনি এ বিবরে কথকিং চেঠা ক্রিভেও ফ্রান্ট করেন নাই। আফ্রিমী, ওরাজিরি, নাক্রন, নোহ্মল লুঠেরা ছাভিয়া দিরা ভারতের সহিত বৃত্ত কালীর রাজ্যকে আক্রমণ করিবার প্রোগ লেওরা হইরাছে। প্রথমে গোপনে, পরে প্রকাকে পাকিছানী সৈত ও রণসভার দিরা আক্রমণকারীদের সাহাব্য করা হয়।

তাবার বৃত্যকাল পর্যন্ত অবস্থা এইরপ ছিল। পাকিস্থানী-দের মতিসতি বেরপই ব্টক, ভারতের পক্ষেএই বিভাগ অভ্যন্ত বেধবাদারক হইলেও গৃহীত চুক্তি অস্থারী পাকিস্থানকে বভর রাই হিসাবে গণ্য করির। বন্ধু প্রতিবেদী হিসাবে ভাষার সহিত সন্থাবহার করিবার ইচ্ছা ভারতের ছিল এবং এখনও বহিরাছে।

পণ্ডিত জ্বাহরলাল সভ্যই বনিরাহেন, পাকিছান এখন বিনিতে চাহিলেও তিনি তাহাকে গ্রহণ করিতে সম্মত নন। ভারতবাসী সকলেরই এই এক মত। যত দিন না পাকিছান নিজ উগ্র হাতপ্রা ত্যাগ করিয়া একঞ্জীভূত হইতে চার, তত দিন তাহাকে গ্রহণ করিয়া লাত নাই। কিছ কম্মতাবে থাকিবার প্রভাব বে অত্যন্ত সমীচীন তাহা অহীকার করিবার উপার নাই। জিয়া সাহেবের মৃত্যুর পর এই কথা একবার ভাবিয়া লেখিবার সমর আসিয়াহে।

প্রবাহনীয় জুরা বিষয়ে ভারত ও পাকিছান পরস্থারের নির্ভরতার কথা প্রবছের পূর্কাংশে উল্লেখ করা হইরাছে। এক বংসরের অধিক বর্ধন চলিয়াছে, তর্ধন ভবিস্ততে ব্ব অস্থাবিশা হইলেও হয়ত কোনও রক্ষে চলিয়া ঘাইবে। কিছু বেধানে একই পরিবারের লোক ভিন্ন ভিন্ন অংশে পভিয়াছে, বেধানে কৈনন্দিন ব্যাপারে পরস্পরের বোগাযোগ, বেধানে একই ভাবা, একই ভাব, কীবন বারণের রীভিনীতি, পোযাক-পরিচ্ছের এক, সেধানে ব্যবধান স্ক্রী করিলে অনেক অস্থাবিশাই কন্যাবারণকে ভোগ করিতে হয়। সেইকছই হুই রাষ্ট্রে সম্প্রীতি থাকা উচিত। তাহা হুইলে রাষ্ট্র পরিচালনা ব্যাপারে বাতন্ত্র রক্ষা করিয়া ভারত বিভাগের পূর্বের বেনন ছিল সেইরপ উভর রাষ্ট্রের বব্যে বাভারাত ব্যবহা, বানবাহন ও, মাল চলাচল, মুলার বান এক রাধিয়া চলিলে সকল বিক্

প্রথম সকলের তেন্তে বক প্রায় হইতেনে, পাকিছার কালে ভারত হবল করিবার বাসনা বনে বনে পোবণ করে কি যা। এই প্রয়ের ইন্তর কি হইতে পারে তাহা বিবেচনা করা যাক। বহি ভাষত আঞ্জনগের বাসনা থাকে, ভাষা হইলে পাকিছানের অবিবাসীকের মধ্যে ভারতের বিরুদ্ধে বিবেষ স্ট করির। রাখিতেই ক্টবে। সেই বিবেষকে জীরাইরা রাখিতে হইলে বুসলনাম বর্ষের উপর অভ্যাচার হর, বুসলনাম বার্ষের হাবি করা হর, ভারতের বুসলনামদের প্রতি অবিচার, অভ্যাচার হর, ভারত পাকিছান দবল করিতে চার, এই সকল ভাব পাকিছানের বুসলনামদের মনে জাগরক রাখিতে হইবে। ইহারই অভ্রাপ কথা জগতের অপর বুসলনাম আভিদের মধ্যেও প্রচার করা প্ররোজন । পাকিছানের ভাব-গতিক দেখিরা মনে হর ভাহারা ভারতের সহিত সংগ্রাম চার। ভাহা মা হইলে এভদিন ভারত বে সং ব্যবহার পাকিছানের প্রতি করিতেহে, ভাহাতে উহার মতি-গতির পরিবর্জন হওবা উচিত ছিল, কিছু হর নাই।

এবনও বোৰ হয় সময় আছে, বছভাবে খডার রাই হিসাবে বাজিয়া ভাল চালাইবার উপায় এবনও আবিভার করার সম্ভাবনা রভিয়াছে। যে সম্ভল ব্যাপারে ভারত ও পাকিছান সমান খাৰে ছড়িভ--বেমন আত্মকা, বিদেশে ভারতীয়ের খার্থকা, আত্তর্ভাতিক বাণিক্য-নীতি প্রভৃতি ব্যাপারে একবোরে ভাল করিয়া পার্কিছানের লাট, পাকি-ছানের নোট পাকিছানের বেতার ও বিরতি প্রভৃতির विरम्बन वकार रावा हिलाए शारत। वान विकास वाकिरन এ সকল বিষয়ের মীমাংলাও অভি সম্বর হটতে পারে। খপর দিক দেবিতে গেলে খোরতর চিছার উত্তেক হর। ভারতের হুর্বশা আছে সভা, কিছু পাকিছানও বুব সুবে আছে বলিরা মনে করা বার না: প্রথমে জুমাগড় রাজ্য লটরা পাকিছান বেলা ত্রক্ত করিল। ভারতীর কৃটনীভির নিক্ট পাকিছানকে পরাজ্ব বীকার করিতে হইরাছে। কাশ্রীর সংগ্রামের কলে পাকিছান বিত্রত হইরাছে। বলা বাহলা, ওয়াজিরি, মাত্রদ প্রভৃতি এবং পাঞ্চিয়ানের পাড়াড়িয়া সৈত-বের বিভাতিত করিতে ভারতকে বেগ পাইতে হইতেছে। ভিঙ্ক শভকরা ৮৩ জন বুসলমানের দেশ বলিরা বে কান্দ্রীর পাক্তি-शास तोन निरंद अवदा भाकियान महाहे यक करिरामहे কাৰীনী বুসন্ধান কাশ্বীনকে কংসভূপে পরিণত করিবা, পাকিছাৰে ৰোগদান ক্ষিত্ৰ তাঁহাত্ৰ লেশবাত্ৰ সভাবনা দেবা यात नारे।, जात किरवाक की कुम वर किन्न की का नाकित পাৰের মত ভারতে বছার মত বাপাইরা পড়িবার ভর रंगिरेशांदिरम्, कारा व गर्गक मध्य एत मारे।

ভারত বিভাগের সমর বিহা সাহেব ভাবিরাহিলেব ভারতের তিম কোনে ভিনট বুঁট পুঁতিরা রাবিলেন, তর্ব্যে কব্দিনে বে হারবরাবাদ রহিল ভাহা এক্ষিন সমত মঞ্জিন ভারত কর কবিরা উত্তর-পশ্চিম এবং উত্তর-পূর্বা পাকিছান হইতে আগত নৈত্বাহিনীর কবিত মধ্যভারত, মধ্যুরাবেশ ও উড়িন্তার সীমানার বিলিত হইবে। বাহারা ভাবিরাহিলেন
কাশ্রীরের শভকর: ৮০ কন অধিবাসী ব্দলনান বলিরা কাশ্রীর
পাকিহানে বোগ দিবে ভাহারা একবাটা ভাবেন নাই বে,
হারদরাবাবে শভকরা ৮৭ কন হিন্দু অধিবাসী ভারভীর
ভোনিনিরনে বোগ দিভে পারে। বাহা হউক, হারদরাবাদ
সমভার সমাবান হইরাহে বলিরা মনে হর, অভতঃ পাকিহানের
প্রবাগ-প্রবিধা বে বাড়ে নাই, ভাহা খীকার করিভেই হইবে।

জনাব বিদ্যা সাহেবেরও এই সময় এতেকাল হটরাছে; পাকিহান এবন ভারভের সৃহিত শব্দ বা বিত্র ভাবে ব্যবহার করিবার চরমক্ষণে উপস্থিত হটরাছে।

পাকিছান ভারতের বিহুছে আছও কেন শক্ষতা পোরণ করিতেছে, তাহা ভাবিরা পাওরা বার না। গোটা পাকিছান হুইতে অনুসলনান অপসারণের যে চেপ্তা চলিতেছে তাহার দক্ষন এবং কান্দ্রীর হুইতে পাকিছানী সৈভের এবনও প্রতা-বর্ডনের কোনও লক্ষণ না দেখা বাওরাতে পাকিছান বে বিন্ধী আগ্রা চার, উভর-ভারতে প্রভুত্ব ছাপন করিরা পূর্ক-পাক্ষি-ছানের সহিত বৃক্ত হুইরা বিহার উভিন্না দুখল করিতে চার, সেক্ষণা ভার অবিশ্বাস করা বার না।

এই ছুৱাকাক্ষা পরিত্যাগ করিছা পাকিছান যদি আপনার অধিকারে সন্তঃ বাকিছা রাজ্যশাসন, প্রকার সুধ, শান্তি ও সন্তুড়ি লাভের চেঙার মন দের, তাহা হউলে ভারতের সাহাচর্য পাইরা কগতে একটি বিশিষ্ট ছান অধিকার ভ্রিতে পারে।

ভারতের সহিত বুদ্ধে পাকিছানের ক্তবুর হবিব। হইবে তাহা সময়-বিশেষজ্ঞার বিচার্ব্য বন্ধ। কিছু একবা বোধ হয় মনে করা ভূল নব, প্রতিধিনই প্রতিপক্ষের সহিত যুদ্ধের ব্যাপারে,ভারতের শক্তিসকর হইতেহে। আরু কুত্র হুইট ভূবও বাল বিলে আসমুদ্র হিবাচল ভারত একট বিবাট রাট্রে পরিবত হইরাহে। বেশীর রাজ্ডবর্গ ইংরেজের সহারতার এতিবন ক্ষতির ভারণ হিল, বর্তমানে ভাহার। ভারতের বন্ধু, সহার। হারলরাবাদ-বুদ্ধে বরোলার প্রতিক, বিবাহুরের অধারোহী ভারতের সৈনিকের পাশে পাশে হিল। প্রকৃত পঞ্চে এ বিবর ক্ষতা প্রাবা ক্ষিবার ব্যেষ্ট ভারণ বিভ্যান।

ভারতের লোকসংখ্যা এবং আরতন পাকিহানের অন্তঃ
হয় থব। তাহার প্রাক্তিক ও নিয়-সম্পদ পাকিহান অংস্কা
বিশ্বন বেনী। তাহার উপর পাকিহান অনুস্কানব্যর
বিভাগিত করিব। ভারতের জনসংখ্যা হৃতি করিছেছে। বাধভ্যানীরা বে ভিক্তথা করিব। বাদী বহু, সহার সম্পদ হাজিরা
আসিতেতে, বনি বুর বাবে ভাহা হইলে ভাহারা সেই অমুপাতে
ভীত্রতা সইহা পাজিহানের সহিত্র বুর করিবে। ভাহার
উপর পাজিহানের সহিত্র বুর করিবে। ভাহার
উপর পাজিহানের নিহতের বে পথ অবলব্ন করিছে হইত,
আল সমত অনুস্কান্ন পাজিহান ভ্যান করিলে, সে চিন্তার
কাহাব বাক্তে বা।

অপর পঞ্চে ভারতের সীমার মব্যে সোরা চার কোটি
বুসলবানের বাস। জিলা সাহেবের উপর্ক্ত চেলা সার
ভাকররা বাঁ ভারথের বলিলেন, বুসলবান-বার্থের কোনও
ক্রতি হউলে হারলরাবাদ দবল ত চুক্ত ক্বা, ভারতের
সোরা চার কোটি বুসলবান একবোগে, (like one man)
ভালতকে তির্ভিন্ন, লঙ্ভও করিয়া দিবে। হারলমাবাদে
আরিপরীকা হইরা সিরাহে। সার ভাকরেয়া বেবিরাহেন বে, বুসলিম সীগের উভেজনার কিপ্তপ্রার এবং ইংরেজ্রের
কুটব্ভিতে যোহপ্রভ বুসলমান, আর ভারতে সর্ব্ববার্ধসংরক্তিত নির্ভরে বাসকারী বুসলমান একই প্রেক্তির
মার হারলরাবাদ দবল হওয়া পর্বাভ সারা ভারতে সোরা
চার কোটি বুসলমানের একজনও বিরোহ করে মাই।
ইহাতেও কি পাকিরানের ভানচক্ উরীলিত হইবে মা?

শেৰ কৰা, পাকিছান কি একবার পূৰ্ববদের কৰা ভাবে না ? যদি উভরের মব্যে সংঘৰ্ষ বাবে ভাহা হইলে ভারতের সহিত পূর্ববদের বোগ অচিরকাল মধ্যেই ছাপিড হইতে পারে। তথ্য সারা ভারত কেবল উত্তর-পশ্চিবে বুর্থ কিরাইরা শাঁভাইলে ভাহার বুড করা চলিতে পারে। পাকিছান বে মধাপ্রাচ্যের বুসলমান রাইসমূহের সহারভা পাইবে ভাহাও ত বনে হর না।

ভারত-পাকিছানে সংবর্ধ বাধিলে জন-পরাজন বাহারই হউক, উভর রাষ্ট্রেই দবলত বাবীনতা বিপন্ন হটবে, বাহারা বৃহ চাহে না সেই নিন্নীহ লোকেবের কটের সীনা থাকিবে না। বধন সন্থাবৈ থাকিবার উপার বর্ডনান, তখন পাকিছানের পক্ষে সর্বারা রাজাইরা চলা বে কেবল ভারত ও পাকিছানের অন্দলস্থচক নর,সারা বিশ্বের পক্ষেই অকল্যাণকর তাহা মনে রাথা উচিত। পাকিছান আছপথ পরিভাগে করিয়া সব্যের পথ, নৈত্রীর পথ অবল্যন করিতে পারে। এখন পাকিছান বাবীন, ইহার মধ্যে বে-কোনট এহন করিবার হাবীনতা তাহার আছে।

## সাম্প্রতিক কবিতা

## **के तिवू गत्नाभाषाय**

রবীজনাথ আমাদের সাহিত্যকে সর্কবিষয়ে নিয়ন্তিত করিরাছেন। আমাদের ভাব, চিভা, আদর্শ সব কিছুর মধ্যেই রবীজনাবের প্রভাব বর্ত্তমান। তিনি আমাহিপকে শৃত্ত বৃষ্টিতদী দিয়া দেখিতে ও সুভনভাবে চিম্বা করিতে শিকা বিরাহেন। তাঁহার লোকোন্তর প্রতিভার অভুকরণ করিরা শভিমান ভাৰৱাও ভাৰাৱই প্ৰবৰ্ষত ৰাৱাৱ অভ্ৰবৰ্তন ক্ষিয়াছেন, স্বকীয়ভার পরিচয় দিভে পারেন নাই। স্ববিকাংশ ক্ষেত্ৰেই এই আৰু অভুকরণ ব্যৰ্থতার পৰ্য্যবসিত হইরাছে। এই অভুকরণ বেশ কিছু দিন চলিরাহিল। কিছ ভাহার পর প্রতিক্রিয়া বেখা দিল-এক দল তরণ সাহিত্যিক এই পঞ্চলিকাপ্রবাহে গা ভাগাইরা হিতে ভাত হইলেন। মৃতন পর্ব খুঁৰিবার জভ প্ৰ-সভানীয়া ব্যন্ত হইয়া পড়িলেন। ভাঁহায়া বেধিলেন, লীলা-স্লিমীর ক্রণ-ব্রার ভাষাবের বনে ভেষ্ আবেপ-স্কার ভরিতে পারে না। আকাশ হাতে বরণী পৰ্যাত বে সৌন্ধৰোৱ ৰালা প্ৰবাহিত ভাহানত উৎসমুৰ কে বেদ আগলাইরা বসিরা আছে। বারুবের আর্ডনার এবন रेनिवर्टिव चरव क्विक रहेवा डिक्रिक्टर-Give us light -light-light । चाक चन्न बाहे, आव बाहे, कुक वानू बाहे, चार चल्रजन चन्नात । जारे श्रेक्टि-नर्वन विचटिन्ना वरना स्थापीक लोक्समजी, ब द्वानस कारनात है रेशीना

ব্ইতে পারে মা। এবন সাহিত্যের শিলা-চম্বর সুটতে চার বিস্কুর, বঞ্চিত জনগণের অন্তর্বেদনা। সাত্ততিক কবি সব্বেদে বলেন,

> 'ষ্ঠা কেবল, যুড়াই ধ্রুব সবা বেহুলা ভবুই, বেহুলা ছচির সাধী।'

কালের দিক হইতে প্রথম মহার্ছের পরবর্তী এবং ভাবের দিক হইতে রবীল-প্রভাব-রুজি-প্ররাসী কাব্যসর্হকেই অভিআবৃনিক কাব্য বনিরা গণ্য করা হইরা থাকে। আবৃনিক বাংলা কবিতা বে আবৃনিক ইংরেজী কবিতা হারা বিশেষ প্রভাবাহিত তাহা কাব্য-রসিকেরা কানের। অবস্ত মণুস্বলও বিদেশী তাবেই অভ্নাণিত হইরা কাব্য রচনার প্রয়ন্ত হইরাহিলেন এবং সাগরপার হইতে প্রচুর উপক্ররণও সংগ্রহ করিরা হিলেন। তব্ও ওাহার চতুর্বশপনী কবিতাবলীতে এবং বিশেষ ভারে রক্ষাক্রা কাব্যে বাঙালী জীবনের বর্ত্তক্রণ ও বাংলার ইতিকাব্যের সূত্র কানিত হইরা উটারাহে। রবীলনাবের কাব্যও পাক্ষান্ত প্রভাবরুক্ত নহে কিন্তু সেবানেও ওপানিবর আব্যাহিকতা এবং বৈক্রণ ক্ষিতার প্রেক্তার বাংলার বাইনুক্তিই প্রকাশনার।

পাশাভা দাহিত্যের অর অহুকরণ হবীজ-সাহিত্যে নাই,

পাশ্চান্ত্যের ভাবধারাকে আত্মনাৎ করিরাই ভিনি ভাঁহার নাহিত্য-স্কটকে পরিপ্রই করিরাহিলেন।

কিছ সাম্প্ৰতিক কবিদের দুষ্টভদী ভিন্নৰণ। ইউরোপীর কাব্যের উৎকট ভাবধারা আয়াদের সাম্রতিক কবিভার অনেকথানি ভূড়িয়া বসিয়া আছে। সাম্প্রতিক কবিরা ইলিরট, এজরা পাউও, ইকেন লেঙার প্রভৃতির নিকট অরুঠ ভাবে ধণ এহণ করিয়াছেন এবং করিতেছেম। ইহার সূলে রহিরাহে তাঁহাদের বৃত্তন হাইড়ছী ও বৃত্তন রচনা-শৈলীর প্রতি অহরার। প্রচলিভ ভাব, ভারা, প্রকাশভদী, ছলোবভ পদ, বিষয়বন্ধ, চল্ল-জোংলা-মলয়-মাক্ত--এক কৰায় বাহা কিছু পুরাতন ভাহার প্রভাব হইতে মুক্ত হইরা তাঁহারা অভিনব ভাব ও ভাষার কাব্য স্পষ্ট করিতে চান। এই বৃতনছের 'মোহে ভাঁহারা নিজেদের সংখৃতি, ঐতিহ্ব এবং ক্রপত ও সামাজিক পরিবেশের প্রতি উপেকাপরায়ণ হটরা অপরিচিত অধবা স্বল্পরিচিত সমাল-জীবন হুইতে উপজীব্য গ্রহণ করিতে উৰুধ হটরা উঠিরাছেন। কলে, তাঁহাদের রচনা অনেক ছলেট সুস্ট বা ৰতঃভূষ্ঠ হয় নাই। সেগুলিতে অনাভ্যরত্বের ভড়ং আছে, কিছু আছুরিকতা নাই, ছুব্রুই শব্ধব্যোগে বহু ছলেই ভাঁহাদের রচনা ছর্বোবা হইরা উঠিয়াছে।

হুপে রুপে রুচির পরিবর্জন অবক্সভাবী। পোপের রুপের এবং ওরার্চসঙরার্বের বুপের রুচি এক নর। ভারতচক্র এবং রবীক্রনাবের রুপের রুচি বিভিন্ন। কিছ ভচিভা, সংবম, শালীনভা প্রভৃতি পরিহার করিয়া সাহিত্য-রুচনার উন্নার্গামী হওয়া হে-কোন রুপের কবিদের পক্ষে অপবর্ধ-বরুপ। সাচ্চাতিক কবিরা অনেকে রিয়ালিজমের নামে কামার্তির বান্ধর রূপ কৃষ্টিইরা রুসোল্লাস পঞ্চ করিবার যে প্রয়াস পাইরা থাকেন, ভাহা প্রশংসনীর নহে। যৌন আকর্ষণ অবাভাবিক নহে; ইহা সাহিত্যের বিষরবন্ধও হুইতে পারে। তবে ইহার একটা সীনারেবা থাকা প্রয়োজন। মাহুয সমর সমর পঞ্চ হর। ভাই বলিরা ভাহার ঐ পশুবের জয়চাক বাঞ্চানোভেই সাহিত্যিকের শক্তির অপব্যবহার হওরাটা কোন কাজের কথা বর। পরিপূর্ণ রহুরজের আদর্শই সাহিত্যের পটকুমিকার পরিপূর্ণ সৌরবের কৃষ্টারা উঠা উচিত। মাহুযের একটা বিশেষ

ৰভিন্ন বিহাৎকুরণই কাব্যের একনাত্র উপজীব্য নর। সভ্য শিব ও কুক্তের দীলাক্ষে নানবজীবনের অবও বহিনাই বসম্রার নিশুব ভুলিকার রূপায়িত হওরা সমীচীন।

সাম্প্রতিক কাব্য হইতে রোমান্টিক ভাববারা ক্রমেই লোপ-পাইবার পরে চলিয়াছে। ত্রবের বিষয়, বুছবের বপু মার্থে बाद्य व्यव्यक्त कविका ब्रह्मा बाबा क्रेमविश्म मक्रदक्त वामाक्रिक ভাবৰাৱাকে কিয়ংপরিষাণে রক্ষা করিয়া চলিয়াছেন। বিষ্ণু দে'এবং তাঁহার অন্ত্রগামী কোনো কোনো কবি কিছ পভন হাঁচা প্রেমে আর কিছু দেখিতেই পান না। প্রেমের মিত্র বৃটে-মকুরের কবি। সুধীশ্রনাধের মধ্যে ভাবুকভা আছে যথেই. কিছ তাঁহার কল্পনা আত্মকেঞ্জিক এবং নেতিবাচক। 'ক্লাইনী' কবিতা তাঁহার প্রতিভার উক্তল নিদর্শন। কিছ এ বরণের কবিতা তাঁহার কাব্যে বড় বেশী নাই। সমর সেন ও স্থভার ৰুৰোপাণ্যাৱের প্রকাশভলী কেমন যেন উভট ও বাপছাভা বরণের। কলে ভাঁহালের অবিকাংশ ক্বিভাই ছর্ম্বোরা এবং ঐতালি হটতে রস আহরণের চেষ্টা করিতে গিয়া পাঠককে নিরাশ হইতে হয়। সাম্প্রভিক কবিতা সহত্তে চরম কণা বলিবার দিন এখনও স্থারবর্তী। মান্ব-সভ্যতা আৰু অপ্রকৃতিস্থ। হরত এই অপ্রকৃতিস্থ সভ্যতার ধূলি-ধুসরিভ পটভূমিকাভেই ভাবীকালে কুটরা উট্টবে দুভন সমাজের জরুণ-রেখা। সে সমাব্দের সাহিত্য তখন কোন অভিনৱ ত্রপপরিঞ্জ করিবে, সাম্রতিক কবি তথম কোনু প্রেরণার অন্মরাণিত হট্যা কাব্যরচনা করিবেন ভাহা বলিবার সময় এখনও আসে নাই।

নাঅতিক কৰিবের মধ্যে অনেকেই বিশেষ শক্তিয়ান্।
আন পরিসরের মধ্যে তাঁহাদের বাচনভলীর সুঠু প্রকাশ বিশ্বরকর সন্দেহ নাই। ভাব-খন, গাচ-সংবছ, অনাভয়র, ইলিতম্ব
এবং কোন কোন ক্ষেত্রে মননশীল তাঁহাদের রচনা। তাঁহাদের কেহ কেহ দেশ-বিদেশের কাব্য-সাহিত্যের সহিত বিশেষ
ভাবে পরিচিত। উনার্গগামী না হইলে এবং উপর্ক্ত সাধনা
খাকিলে ইহারা বাংলা কাব্যের মরা গাঙে বান ভাকাইতে
পারেন। রবীক্রনাধের ভাষর প্রতিভার রুগেও বে সাঅভিক
কবিগোলী বসিক-সমাজের সৃষ্টি আকর্ষণ করিরাছেন, ইহা
তাঁহাদের পক্ষে কর গৌরবের কথা নহে।



# वोक यूर्ग गासात्र

## अञ्चलमञ्च ननी

নাদার অতি প্রাচীন ক্ষনপছ। তারতীর আর্থ্য সভ্যতার
বুগ হইতে এই ক্ষেপ্টি তারতবর্ধের অবও অংশরণে বিরাজিত।
তারতীর প্রাচীন সাহিত্যে এই ক্ষমপছ ও তাহার অবিবাসীগণের বিবরণ লিখিত আহে। বৈদিক ও পৌরাধিক
সাহিত্যের মত বৌদ্ধ সাহিত্যেও বৌদ্ধ-তারতের তৌগোলিক
বিবরণ, অবহান, নদ্ধ-নদী, ক্ষমপদ ও তাহার অবিবাসীগণের
বিবরণও তদ্রপ লিখিত আহে। আকু আমরা এই প্রবদ্ধে
পালি ও বৌদ্ধ সংস্কৃত-সাহিত্যে গাদার ক্ষমপদের উল্লেখের
ক্ষা লিপিবদ্ধ করিলায়।

### পালি সাহিত্য: অভূতর নিকার

বৌদ শাল বিনয়, ছল ও অভিবৰ্ম এই তিন পিটকের বিভক্ত। সমবারে ইহাদের নাম ত্রিপিটক। ত্রিপিটকের অন্তর্গত ছ্রেপিটক পাঁচ ভাগে বিভক্ত। মধাক্রমে ইহাদের নাম—(১) দীর্ঘ নিকার (২) মধ্যম নিকার (৩) সংযুক্ত নিকার (৪) অনুভর নিকার (৫) ভূদক নিকার। বৌদ ধর্ম্মান্তিত্যের মধ্যে নিকার গ্রহ্মানা স্প্রাচীন এবং প্রামাণ্য। নিকার গ্রহ্মানার চতুর্থ গ্রহ অনুভরে বোলট মহা—ফনপদের নাম ও উহাদের ভৌগোলিক অবস্থানের উল্লেখ আছে।

বৌৰ মূগে ভারতবর্ষ মধ্য ও উত্তর হুই অংশে বিভক্ত ছিল।
মধ্য চৌৰ্চ্চ এবং উত্তর অংশ হুইটা জনপতে ভাগ করা ছিল।

অমুন্তরে উরিখিত বোলটি মহা-জনপদের নাম ও সেগুলির ভৌগোলিক সংখান এইরপ—(১) কানী (২) কোনল (৩) অফ (৪) নগন (৫) ডার্জি (৬) মর (৭) চেদী (৮) বংস (১) কুরু (১০) পাকাল (১১) মংস (১২) পুরসেন (১৬) অবজ (১৪) অবজি (১৫) গানার (১৬) ক্লোজ।১ এই বোলটি মহা-জনপদের মধ্যে চৌন্ডটি মন্যাদেশে এবং অবশিষ্ট ছুইট গানার ও ক্লোজ উল্লৱ-দেশে অবজিত।

#### ম্বাব্

নহাবত প্রস্থেত বোলট মহা-জনপদের উল্লেখ আছে বটে, কিছ উহাদের নাম উল্লিখিত নাই । বৃদ্ধের বে যে কেশে পর্যাটন করিরাছিলেন, এই প্রস্থেত সেই দেশের নামের উল্লেখ আছে। এই সকল দেশের সহিত অনুভরে উল্লিখিত মহা-জনপদসমূহের সম্পূর্ণ না হইলেও কিনিং সামৃত্ত আছে। অবাং মহাবত্ত প্রস্থেত পালার ও কথোক জনপদের পরিবর্তে পিরি ও চলাব্য জনপদের উল্লেখ আছে।

- )। जन्म विकास वार्यम वर्ष २०० १ ; हर्ज्य वर्ष २०२ १:
- ₹ | A Study of Mahavastu, p. 9. B. C. Law.
- o | Geograprical Essaye, p. 26, B. C. Law.

#### शीनवरम ७ महावरम

जिरस्कारमञ्जू श्रीन रेखिसान सीमवरम अवर मसावरम । উভয় এছই বৃহদেবের সময় প্রামাণ্য এছরূপে প্রসিছিলাভ कृतिवादिन । ८ वहां वर्ष वैद्या ४ व प्रता विक एत । बहाबावन बहे क्षांत्रीन केखिरांत्रिक बहुवानि बातीन निरहनी গতে এবং পতে ৰচনা করেন।৫ এই উভৰ এতে বৌচ ভারতের উত্তর, উত্তর-পশ্চিম, পশ্চিম, মধ্য এবং পূর্বা, দক্ষিদ जरम, शक्तिराज्य ७ जिरस्टाव वस स्वरायत केटबर सारह। वीनवरत्न निर्विष्ठ चाट्ड त्व. त्वता वदाविक त्वीदवर्ष প্রচারের করু পাছার ও কান্দীরে প্রেরিড হইরাছিলেন।৬ বৌধয়ুদে গাধার ও কাদ্মীর সংযুক্তরাক্য ছিল। এই যুগে গাছার বলিলে গাছার ও কাদ্মীর রুক্তরাল্য এবং ভক্ষীলা রাধ্যকেও বুরাইত।৭ স্বাতক গ্রন্থে ইহার সমর্থনচ্ছাগ্য বিবরণ আছে। উদাহরণ-স্ক্রণ আমরা গাড়ার ভার্তীকের নামোল্লের করিতে পারি। সে বাহা হউক, উতর এছ-সীপ-वरम ७ महावरतम गांदांत क्रमशत्यत केत्वर चाटह अवर केहा উত্তর-পশ্চিম ভারতে অবস্থিত বলিয়া উত্তিবিভ।

#### भागन वर्ष

শামন বংশ গ্রহেও মহা-জনপদ গানারের উল্লেখ দেখিতে পাওরা বার। দীপবংশ এবং মহাবংশের মত শামন-বংশেও লিখিত আছে—ধেরা মন্তাত্তিক বৌহবর্ষ প্রচারের জ্ঞ গানার গমন করিয়াছিলেন।৮

#### शीवाविषाम

দীব্যাবদান এছে লিখিত আছে, বৃশকার্চ মহাপদ্ধ কর্তৃক গলাগর্ভে নিম্মিত হইলে চারিজন মূপতি কর্তৃক উহা ধৃত ও রক্তি হয়। গাদাবরাজ ইলপত্র চারিজন মূপতির অভতন।>

#### विनिन्द १६ दर्श

মিলিক্ষ পঙ্হো—প্রাচীন প্রামাণ্য বৌদ্ধ প্রস্থা ভিক্তুহল্প নামেও পরিচিত। এই গ্রহণানি কোন অভাতনানা প্রস্থান কর্ত্তক ১০০ ঐটাকে রচিত।১০ প্রহণানির লচনান

- 8 | History of Pali Literature, p. 517, B. C. Law.
- e | History of Pali Literature, p. 522, B. C. Lew.
- 1 Dipvamsa, Oldenberg p. 53.
- 9 | Political History of Ancient India p. 93 H. C. Roy Chaudhury.
- v | P. T. S. edition p. 12.
- > Cowee and Nail p. 60-61.
- Do | History of Medieval School of Indian Logicp. 61. M. M. S. C. Vidyabhusan,

ভাল সহতে যততেকে অভাব বাই। বিস তেভিস এই এছের উপক্ষমনিভার বিশবভাবে ইহার আলোচনা ভরিরাছেন।১১ এই এছবানি উভর-ভারতীর সংস্ত কিংবা উভর-ভারতীর আকৃত ভাবার রচিত হর। বুল এছের অভিস লোপ পাইরাছে। এখনে ইহা সিংহলদেশে (পানী ভাবার অস্থানিত হবা ক্রম ও ভান কেশে) এচারিত হর।১২ চীনা ভাবাতেও অস্থানিভ হবা "বানাগনেন ভিস্ক্র" নামে পরিচিত হব।১০

প্রছোক্ত নিলিক্ষ ব্যাক্ট্রনার প্রীক রাকা নাবে উরিবিত।
উল্লার লাক্যের সীরা পঞ্চার পর্যান্ত বিভ্নত হিল। তিনি
অলসকা (আলেক্ষেপ্রিরা) নগরে কলনল নামক প্রমেশে
অলপ্রহণ করেন। ইনি ভিন্ন নাগলেন কর্তুক বৌর বর্ষে
বীক্ষিত হন। এই প্রহের অলাতনানা প্রস্কার বে উত্তর
পক্ষির ভারতের অনিবালী হিলেন, ইহা উল্লার প্রস্কৃ হইতে
অক্সিত হর। কারণ এই প্রহে পঞ্চাবের বহু নদনদী ও
ছানের মান উপর্গানির উরিবিত আছে। তবু তাহাই নহে,
উল্লান্ধী নিক্টবর্জী বছু দেশ, বন্ধর, ছ্রাট, ভিন্নকছ্ম প্রভৃতি
লেশের নামেরও উরেব আছে।১৪

বিলিক্ষ্য পড় হো এছে সাভাষ্ট দেশ ও রাজ্যের নামের উল্লেখ আছে। বথা—(১) ববন (২) ভিত্রকক্ষ্র (৩) চীন (৪) গাভার (৫) কলিক্ষ্র (৬) কলনা (৭) বুঞ্জনগোলা (৮) কার্মীর (১) কোলল (১০) কালা পভন (১১) বগব (১২) বপুরা (১৩) নিত্র্যর (১৪) সগল (১৫) শক্তের (১৬) শক্ত দেশ (১৭) সৌভির (১৮) করোছ (১৯) বারাণনী (২০) ক্রমর বীপ (২১) পাটলীপুর (২২) উনিক্ষ্র (২৬) বক্ষ্য (২৪) ভিলাভ (২৫) একোলা (২৬) উক্ষরিনী (২৭) এনি । এই এত্রেও প্রাভার প্রাচীন ক্ষমপ্রস্করণে বর্ণিত।

#### ভাতক সাহিত্য

ভাতক গ্রহ্মালা ভতি প্রাচীন। বৌদ্ধ সাহিত্যে ইহা
নীর্মান ভবিদার করিরা রহিরাছে। ভাতক সাহিত্য
ভারতীর ইতিহাসের এক ভচ্ছেত ভংশ। ইহা হইতে প্রাচীন
বৌদ্ধ ভারতের সমাধ-জীবন, ভাচার-ব্যবহার প্রভৃতি ভাত
হওরা বার। তব্ ভাহাই রহে, ইহা হইতে ঐতিহাসিক
ভৌগোলিক তব্যেরও বহু সদান পাওরা বার। এই ভারবে
ঐতিহাসিকের ঘৃষ্টিতে ভাতক প্রহ্মালা মহান্ল্যবান।
ভাতকের গর্মভলি নহাতগ্প, কুর্ভগ্প, বহাতহলন, মহাবেব

হত ও অবহাৰ-এত্বে গলাকারে হাব লাভ করিব। পালি বৌধ নাহিত্যকে সমুদ্ধ করিবাতে।

অববোৰ রচিত প্রনালভার এবং সেবেজ রচিত অববাৰকলতা প্রত্থে ভাতকের গলগুলি ভাব লাভ করিরাছে।
ভাতক-নাহিত্য বহাবান ও হীনবান এই উত্তর সঞ্চাবের মধ্যে
বেষন অপের প্রভাব বিভার করিরা কনপ্রিরতা, লাভ করিরাছে, উত্তর সঞ্চাবের সাধারণ সম্পত্তি রূপেও ভক্তপ প্রভার
আসন অবিকার করিরাছে। ভাতক কথাসবৃহ্বের অনপ্রিরতা বৌহভাহর্ব্য এবং চেত্রকলার মধ্যেও আরপ্রকাশ
করিরাছে।

ভাতক-সাহিত্যের বহু গলে গানার জনপথের উল্লেখ আছে। বাহন্য বোবে সেগুলি বর্ণনা না করিরা কেবলমার উলাহ্রণ-বর্ধণ আমরা করেকটর নামোল্লেখ করিলাম। যথা—গানার ভাতক, ব্রকার ভাতক, বসন্তর ভাতক, চুডিপালই ভাতক, বিবেহ ভাতক প্রভৃতি। এই ভাতক গল্পনি পাঠ করিলে বুঝা বার যে, বৌদ্ধ ভারতে গানার অতি প্রসিদ্ধ ক্ষণণ হিল।

পালি ভাষার রচিত উপরি-লিখিত গ্রন্থস্থ বং ভিত্তুর বান্থে গান্ধার ক্ষমণ ও উহার অবস্থানের ক্ষম বেরপ লিশিবত আছে ভাষা বলা হইল। কোন কোন গ্রন্থে মডে গান্ধার ক্ষমণ বৌত্ত ভারতবর্ষের উত্তর প্রবং উত্তর-শক্ষিমাংশে অবস্থিত বলিরা উল্লিখিত।

#### নংছত বৌদ্ধ সাহিত্য

এইবার আমরা সংক্ত ভাষার রচিত বৌহবর্ষ এছ ছটতে গাঁহার রাজ্যের কথা বলিতেহি। বৌহ বর্ষ-সাহিত্যের ইতিহাস আলোচনা করিলে বেথা যার, প্রাচীন বুনে বৃহদেবের সময় বৌহ বর্ষপ্রহালি পালি ভাষার রচিত এবং প্রচারিত হয়। বৃহদেবের রত্যুর পর তিনট বর্ষসভার অবিবেশন হয়। এই বর্ষসভার অন্যোধনক্রমে বৃহদেবের উপদেশাবলী এবং বৌহ বর্ষপ্রহ্মমূহ তংকাল প্রচলিত, পালি ভাষার রচিত হয়।১৫

গাধাররাক কনিকের রাজন্ব-সময়ে জলভরে এক বর্ষ
সভার অবিবেশন হয়। এই সভা উাহারই পৃঠপোষকভার
পার্য এবং বস্থবিত্রের ভত্তাবধানে অভ্যতিত হয়। এই সভার
পার্য সভাপতি হন এবং বস্থবিত্র ও অথবোর সহসভাপতির
করেন।১৬ পাঁচপত ভিন্তু পালি বিপটকের স্ট্রকারর
সংহত ভাষার রচনা করিরা এই সভার পাঠ করেন। এই
সময় হইতে পালি ভাষার পরিবর্তে সংহত ভাষার বৌহ বর্ষ-

Milindapanho S. B. E. series, Vol. XXXV.

<sup>381</sup> History of Pali Literature p. 353 B.C. Law.

No. 1358 Bunyen Nanjio.

<sup>38 |</sup> Sylvain Levy., I. H. Q. 1936. Vol. XII, p. 121, 126, 133.

S. C. Vidyabhusan.

<sup>34 |</sup> Encyco Religion and Ethics, Vol. VII p. 652.

প্রহুস্থ প্রণালীবছ ভাবে রচনার প্রপাত হয় ।১৭ কনিছরুগের পূর্ব্ধে কোন বৌছ ধর্মপ্রিছ যে সংস্কৃত ভাষার রচিত হয়
নাই তাহা নহে। কনিক রুগের ধর্ম-সভার অবিবেশনের
পূর্ব্বে করেকবানি শাস্ত্রপ্রভূত ভাষার রচিত হইরা
প্রচারিত, হইরাহিল। সংস্কৃত ভাষা বৌছবগভের শিক্ষা
ও মনোভাব প্রকাশের অন্তর্কুল হইবে মনে করিয়া মহারাজ
কনিক এই কার্যা অন্তর্ভাদন করেন।

ইহার একমান কারণ, সংস্কৃত ভাষা দেবভাষারণে তংকালীন জনসাধারণের মধ্যে শ্রন্ধা অর্জন করিয়াছিল এবং
এই মুগে গান্ধার ও উদরনে সংস্কৃত ভাষাই শিক্ষার প্রধান
বাহন হয় ৷১৮ আরও দেখা যায় য়ে, মহাযান ধর্মগ্রন্থালিও
সংস্কৃত ভাষার রচিত এবং প্রচারিত হইয়া মধ্যএশিরা,
গান্ধার, উদরন, কাকাগড় এবং বাহ্লিক দেশে যথেষ্ট প্রভাব
বিভার করিয়াছিল ৷১১

- 59 | History of Medieval Indian Logic, p. 63.S. C. Vidyabhusan.
- Indian Pandits in the Land of Snow p. 18.
  S. C. Das.
- 33 | Ibid p. 28.

#### অভিবৰ্দ্ধ বিভাষণান্ত্ৰ

এই ব্যন্থ গান্ধার-রাজ্যের উল্লেখ আছে।২০ এই ব্যন্থ-খানি কনিক বুলে ক্লন্ডরে অনুষ্ঠিত ধর্ম্মগভার পঠিত হয়।২১ এই সময় হইতে বৌদ্ধ ভিক্তরা বিশেষ যত্ত্বে সহিত অভিধর্ম

গ্ৰন্থ অধ্যয়ন ও আলোচনা আরম্ভ করেন ৷ এই সময় হুইতেই এই গ্ৰন্থের দ্বীকারচনার স্ত্রপাত হয় ৷২২

#### স্ত্রসংগ্রহ

এই গ্রন্থে পাঝার-রাজ্যের উরেধ আছে। ইহাতে লিখিত আছে, ভিক্সংখনকক বৌদ্ধসংতের বহুদেশ এখণ ও বৌদ্ধ ধর্ম প্রচার করিতে করিতে অবশেষে গানার-রাজ্যে উপনীত হন এবং গানার রাজ্ঞায়র পদে অবিষ্ঠিত হন।২৩

উপরোক্ত গ্রন্থ ছটি আলোচনা করিলে দেখা যার, বৌদ্ধ যুগেও গান্ধারের প্রাচীনত সুস্পই।

- Nanjio, Chinese catalogue p. 277, No. 1263.
- ?> | Chinese bundle of Tripitaka, Vol. 7, p. 16.
- २२ | Encyco Religion and Ethics. Vol. 7.
- Roll Chinese Bundle p. 94, Nanjio p. 302, No. 1252.

## মহাতীর্থঙ্কর মহাবীর

## শ্রীস্গ্রপ্রসর বাজপেয়ী চৌধুরী

ভারতবর্বে বছ বর্দ্মপ্রভাগায়ের উত্তব হয়েছে। বৌদ-গ্রন্থাদিতে দেবা বার যে গৌতম বৃদ্ধের সময় প্রায় ২৩টি সপ্রদায় আদ্ধান-বর্দ্ধের বিষ্ণুছে প্রচারকার্য্য করেছিলেন এবং কৈন বর্দ্ধ-প্রাদিতেও দেবা বার যে, তবন তদপেকাও অবিক্সংব্যক বর্দ্ধ-সংখ্যা বিভ্যান ছিল। করেকটি ধর্মপ্রভাগায় বৌদ-সম্ভাগার বেশিল ছিল।

কৈনসন্দ্রদারের প্রধান তীর্ণকর মহাবীর, বেদ হল্প ও আক্ষণা-বর্ণের শ্রেইভা ধণ্ডন করে নিব্দের প্রচারিত বর্ণ ও সন্দ্রদারের শ্রেইন্থের কথা ঘোষণা করেছিলেন। কিছ আক্ষর্নের বিষয় এই বে গৌতম ব্রের ছার তিনিও ভিক্কদের জীবনাদর্শ আক্ষণ্য-বর্ণ ধেকেই গ্রহণ করেছিলেন এবং খাতি ও বর্ণ্থ-শালোক্ত চারি আশ্রম—হথা, ব্রন্ধচর্ব্য, গার্হহ্যা, বানপ্রস্থ ও প্রব্রক্ষা তিনি ভার সন্দ্রদারের মধ্যে প্রচলিত করেছিলেন, অবক্ত কিছু অন্নবন্ধন করে।

আগে অনেক পণ্ডিত ব্যক্তির বারণা হিল যে, কৈন বর্ষ, বৌদ বর্ষের একটি শাবা মাত্র। লেশন, ওরেবার ও উইলসন প্রভৃতি ইউরোপীর পণ্ডিতসন এই মত প্রভিন্নিত করতে পুরুই ষত্বনি হয়েছিলেন, কিন্তু ডাক্তার বৃহর ও ডাক্তার মোকাবী নামক ছই জন প্রধ্যাত জান্দান পণ্ডিত, তাঁদের অপূর্ব মুক্তি-হারা এই মত বঙ্গ করতে সক্ষম হন।

বৌদ্ধ ও কৈন ধর্ম প্রায় সমসময়ে প্রবৃত্তিত হয়েছিল এবং কয়েক শতান্দ্রী ধরে উত্তয় ধর্ম ভারতবর্ষে প্রসার লাভ করতে থাকে। কিছু কালক্রমে বৌদ্ধ ধর্ম ভারতবর্ষ থেকে প্রায় বিস্থ হয়ে যায়, কিছু কৈন ধর্মের প্রভাব এখনও লোগ পারনি। তার প্রমাণ ভারতে এখনও কৈন ধর্মাবলমীর সংখ্যা নগণ্য নর।

মহাবীরকেই জৈন বর্ণের প্রবর্ত্তক বলা হয়, কিছ' কৈনগন তাদের বর্ণের প্রাচীনত্ব প্রতিপাদন করবার করে আরও ২৩ জন তীর্ণভরের উল্লেখ করে থাকেন, হারা নির্ম্বান লাভের সম্পদেশ প্রচার করে দেশবাসীর অসীন কল্যান সাধনে সক্ষম হয়েছিলেন। এই সব জৈনদের মতে প্রথম তীর্ণভরের নাম গ্রহুদেব, কিছু তার আবির্তাবকাল এখনও অঞাত।

যাবিংশ তীৰ্বছয় পাৰ্থনাৰ এক শত বংসর বেঁচেছিলেন এবং মহাবীরের অভ্যানরের আভাই শত বংসর পুর্বে তিনি নাকি পরকোকে প্রাণ করেছিলেন। মহাবীরের বিচিত্র জীবন-কথা একটি জ্ঞা প্রবাহ ব্যক্ত করা সত্তব নর। কৈন-কল্পতক প্রছে তার জীবনকাহিনী বিশদভাবে বর্ণিত হয়েছে, কিন্তু তাতে বহুয়ানে অভিশয়োক্তি আছে এবং এমন সব অলৌকিক ঘটনা সন্নিবিষ্ট করা হয়েছে বে নির্কিচারে সেগুলো বিশ্বাস করা কঠিন। এই প্রছ রচনা করেছেন ভদ্রবাহ এবং তাতে অক্তম ভাতব্য বিশ্বর আছে। ঐতিহাসিক তথ্যেও এই প্রছ অতি সমৃধ। এ ছাড়া অন্ত অনেক জৈন বর্ণ্মগ্রহ থেকে মহাবীরের কীবনীর উপাদান সংগ্রহ করা বেতে পারে।

चात्रक दोड वर्षश्रह्छ यहांवीदात्र कीवन-क्षात्र चाश्निक केटल्ल त्रास्त्रह, मिश्रमिश चूर मृतावान।

প্রাচীন বিদেহ রাজ্যের রাজ্যানী ছিল বৈশালী নগরী।

বিটের জ্বের পাঁচ শত বংসর পূর্বের বৈশালী অতিবিধ্যাত
মহাসমূহিশালী নগরী ছিল। এই বৈশালী নগরীতে তথন
এক প্রকাতান্ত্রিক রাজ্য প্রতিষ্ঠিত ছিল। এই প্রকাতান্ত্রিক
রাজ্যের কর্ণবার ছিল লিছেবী বংশীয়ের।। এই রাজ্যের
প্রধানকে রাজা নামেই অভিহিত করা হ'ত।

বৈশালীর নিকটবর্তী অঞ্চল কুরগ্রাম নামে ছিল একট প্রাম, যার বস্তমান নাম বস্ত্র । মঞ্চালরপুর কেলার অস্ত্রগত ব্যাচ ও বহীরা নামক গ্রামন্ত্র এখনও বৈশালীর স্থৃতিচিহন ব্যান করছে।

এই বস্তুও প্রামে গিয়ার্থ নামে এক অভিনাতবংশীয় পরম বনাচ্য ক্ষতির বাস করতেন: তিনি জ্যাত্রিক বংশীয় ক্ষতির-দের প্রধান ছিলেন। তার সহধ্যিণীর নাম ছিল রাগী তিশলা। রাশী তিশলা বৈশালীর রাজা চেটকের সংহাদরা ভগী ছিলেন। চেটকের ক্ঞার বিবাছ মগ্রের স্ফ্রাট বিভিসারের সহিত সম্পন্ন হয়েছিল। এতে স্পাইট প্রতীয়্মান হয় যে, সিভার্থ বহু মানাম্পদ ব্যক্তি ছিলেন।

সিধাৰ্থের এক কলা ও ছুই পুত্ৰসন্তান ক্ষালাভ করে ভন্ধব্য ক্লিষ্ঠ পুত্ৰের নাম বর্জমান। এই বর্জমানই মধাকালে কঠোর সাধনায় সিজিলাভ করে সাধারণ্যে মহাবীর নামে প্রিচিভ এবং অশেষ ব্যাভির অধিকারী হন।

কৈল-কল্পত্তে উলিখিত আছে, মহাবীর ধর্গবিত পুশোল্যর নামক ছান থেকে "মউবামে জনগ্রহণ করতে মনস্থ করে অবজ্ঞান্ত নামক এক আল্পনের শ্রী দেবানন্দার গর্ডে আশ্রয় প্রহণ করেন। এই আল্পন আল্পনী উক্ত বস্তুক্ত গ্রামেরই বাসিলা ছিলেন। কিছু দেবতারা দেবলেন যে, ইতিপূর্বে কোন আল্পনংশে কোন মহাপুরুষ বর্দ্মংস্থাপনার্থ জনগ্রহণ করেন নি। তবন দেবরাক ইন্দ্র তাকে দেবানন্দার গর্ড থেকে লপসারিত করে রাশী জিল্লার গর্ডে রেবে কেন। জিল্লার ক্ষিষ্ঠ পুত্র বর্ষনান কালক্রমে মহাবীর নামে স্থারিচিত হন। কৈনদের মধ্যে আবার শ্রেম-বিভাগ রয়েছে। তার মধ্যে ছটি সম্প্রদারই প্রধান-—বেতাছর ও দিগছর। মহাবীরের উপরোক্ত জন-রভাভ বেতাছর কৈনগণ সম্পূর্ণরূপে বিধাস করেন, কিন্ত দিগছর সম্প্রদারের কৈনগণ তা পুরোপুরি জনীক করনা বলে মনে করেন।

वना वाहना, इंडे मध्येषारस्य मर्था रथ नव विवस निरम् मण्डलम तरसंहर, अठि जांत मर्था क्षेत्रां निरम्

আবার পূর্বের কথার ফিরে আসা যাক্—রাজা সিছার তাঁহার কনিষ্ঠ পুত্র বর্জমানের জাতকর্ম্বোপলক্ষ্যে বিশেষ উৎসবের আহোজন করেন। শৈশবেই রাজা তাঁর বিভা-শিক্ষার মথোচিত আরোজন করেন। অসাবারণ মেধা ও বীশক্তি বলে কৈশোরেই তিনি নানা শাস্ত্রে ও কলাবিভার পারদর্শী হরে উঠেন।

বিভাশিকা সমাপন করবার পর বর্জমানকে যশোদা নামী এক রাক্ত্মারীর সহিত পরিণয়স্ত্রে আবদ্ধ করা হয়। জ্বে তাঁদের এক কঞাসপ্তান ক্ষত্রহণ করে। সেই মেস্টেট বয়ঃ-প্রাপ্ত হলে রাকা তাকে কামালি নামক এক বিধান ও সুন্দর পাত্রের হাতে সমর্থা করবেন।

মহাবীর যধন সাধন-পথে অগ্রসর হয়ে 'কিন্' বা 'আইং' অভিধা লাভ করেন, তখন কামালী তার খণ্ডরের প্রধানতম শিয় বলে পরিগণিত হন। কিন্তু কামাতার এই শিয়াধ্প্রহণ মহাবীরের অনেক কৈন ভড়ের মনঃপুত হয় নি এবং তা নিয়ে বিশেষ মতান্তর ও মনাক্রের অচনা হয়।

ভিশ বংসর বছসে পিতৃ-মাতৃবিয়োগের পরে বর্জমান কোঠ ভ্রাতা নন্দীবর্জনের অন্মতি গ্রহণ করে গৃহত্যাগ করেন এবং ভিক্র শীবন যাপন করতে বাকেন।

তিনি এমন কঠোর সাধনায় ত্রতী হলেন যে প্রায় এক বংসর তিনি গাত্রবাস পরিবর্তন করেন নি । তার দেহাবরণের তাঁকে তাঁকে বহু পোক:—মাকড আপ্রর নিয়ে ছামী ভাবে বাসা বেঁবছিল। এর কিছুকাল পরে তিনি পরনের যাবতীয় দ্বীন বয় ত্যাগ করে সম্পূর্ণ নয় দেহে সাধনায় ত্রতী হলেন। এইর পত্রে তারে আগ্রহ লোপ পেল। এইরপ কৃষ্ণু—সাধন করে তিনি সমুদয় ইল্রিয়্র্যামকে সম্পূর্ণ বমে আনয়ন করেন। এমনি ভাবে কিতেক্রিয় হবার পর তিনি নিবিভ বনে বিচরণ করতে বাকেন। এই সময় তিনি উনুক আকাশতলে শয়ন করতেন। দিগধর অবস্থায় এই প্রক্রেমাকালে তাঁকে বহু অত্যাচার সম্থ করতে হয়। তাতে ক্রিছ এই সর্ব্বতাক্রিয় মহাপুরুষ ত্রত্যান্ত হুন মি।

তিনি কাউকেও ছুণা বা দ্বেষ করতেন না, ভোগ, ত্কা আকাক্ষা ও বাসনা বৰ্জনপূঞ্জ সাধনপথে অঞাসর হয়ে অবশেষে তিনি এমন এক উচ্চতত্তে উন্নীত হন যে পাৰিব বস্তুতে তীয় আয় কোন প্রয়োজন মইল মা। ক্ষিত আছে যে, রাজগৃহের শিকটবর্তী নালকার তিনি কিছুকাল অতিবাহিত করেন। সেবানে গোলাল মংসলিপুত্র নামক এক তিকু তার সহিত সাক্ষাং করেন। ক্রমে উতরের মবো গভীর বনুত্ব ছাপিত হয়। এই বনুত্ব প্রার সাত বংসর ছারী হরেছিল এবং এই সময় উতরে কঠোর সা্ধনার ব্রতী ছিলেন।

হঠাং কি কারণে গোলাল মংসলি-পুত্রের সহিত মহাবীরের মতান্তর ঘটে এবং পরে তা মনান্তরে পরিণত হয়। পরিণামে এই ছই সাবক-বছুর মবো চিরবিছেন স্পষ্ট হয়। কলে গোলালি মংসলিপুত্র নিজেই একটি সম্প্রদায় গঠন করেন এবং প্রচার করেন হে, তিনিই 'বাহং' বা 'তীর্বহর'। মহাবীরের 'ব্বহং' বা 'তীর্বহর' হওয়ার ছই বংসর পুর্বেই গোলাল মংসলিপুত্র নিজকে তীবহর বলে ঘোষণা করেন এবং নৃত্য সম্প্রদায় গড়ে তোলেন। এই সম্প্রদায়ের নাম 'আশীবিক' সম্প্রদায়।

গোলালের মতবাদের উল্লেখ জৈন ও বৌধ গ্রন্থসমূহে বহল পরিমাণে দৃষ্ট হয়। কিন্তু গোলাল মংসলিপুত্র অথবা তাঁর লিখ্যপণ এই শৃতন মতবাদ ও 'আজীবিক' সম্প্রদায়ের তথ্য-সহলিত কোন গ্রন্থ রচনা করে নি।

কৈন গ্রহাদিতে দেখা যায়, গোশাল মংসলিপুথকে দান্তিক, ধুর্য, প্রবঞ্চক, শঠ, ভঙ ইত্যাদি বলে উল্লেখ করা হয়েছে। এতে প্রতীয়মান হয় যে, কৈনদের ও আলীকিদের মধ্যে গভীর বিদ্যান হয় যে কলহ বিদ্যান ছিল। বলা বাহুলা, এই চুই সম্প্রদায়ের কলহ ও বিসমাদ মহাবীরের প্রথম বর্শ্বপ্রচার-প্রচেষ্টাকে মধ্যেই বাহিত করিতেছিল এবং এই বিপত্তি কাটিয়ে উঠতে ভাঁকে অভান্ধ বেগ পেতে হয়েছিল।

গোলালের প্রচার-কেন্দ্র ছিল প্রাবন্ধী নগরীর এক কুম্ব-কারের দোকানগৃহে। এই দোকানটির মালিক ছিল হালহলা নামে এক কুম্বকার-পত্নী। জ্ঞামে গোলাল প্রাবন্ধীতে নিক্কে স্থাতিষ্ঠিত করেন।

মহাবীর হাদশ বংসর কঠোর সাধনা করে সিঙি লাভ করেন এবং কৈবল্য অবস্থা প্রাপ্ত হন। এমনিভাবে সূথ-ছংবের অতীত হরে তিনি নিরবছির আনন্দের অবিকারী হন। এই সমর থেকেই ভিনি 'ক্লিন্' বা 'অর্ছং' নামে অনসাধারণের মধ্যে প্রতিষ্ঠা লাভ করেন। এই সমর মহাবীরের বরঃক্রম ৪২ বংসর।

সিছিলাভ করার পর তিনি প্রথম 'নিগ্রছ' সম্প্রদারের প্রতিষ্ঠা করেম। নিগ্রছ কথার মানে হ'ল বছন-রহিত। নিগ্রছ সম্প্রদারের ছলে এবন জৈন সম্প্রদার বলে উল্লেখ করা হরে থাকে। জিনের শিশ্র জৈন হতে টাভিরেছে।

মহাবীর নিজে 'নিপ্র'র' ভিজ্ এবং 'ভাড়'বংশ সভ্ত হিলেন ভার বিরোধী বোহগণ ভাকে নিপ্র'র ভাড়পুর বলে উপহাস করতেন। মহাবীর জিশ বংসরের অবিক কাল দীর বর্ণ-মত, ভারত-বর্বের প্রতি প্রদেশে ও অনপদে সিরে প্রচার করেন ও বছ ভিন্নবর্ত্তাবলেশি নিক বর্গ্রে দীন্দিত করেন। মগর ও অল দেশে, অর্থাং বর্তমান বিহার প্রদেশের উভর ও দন্দিণ অংশে তিনি শীর মতবাদ প্রচারে বিপুল সাকল্য লাভ করেন। তিনি সবচেরে বেশী সম্বর্ধিত হরেছিলেন ও সন্মান লাভ করেছিলেন চন্দা, মিবিলা, প্রাবৃত্তী বৈলাকী ও রাজ-স্থানে। এই সব ছানে প্রার সমুদর গণ্যমান্ত ব্যক্তি তার শিশ্বত শীকার করে।

ক্ষিত আহে যে, সমাট বিধিসার এবং অকাতশক্রও তাঁর নিকট দীক্ষা গ্রহণ করেছিলেন এবং যথাযোগা ভাবে তাঁর সম্বৰ্জনা করেছিলেন। কিন্তু বৌদ্ধগ্রহাদিতে দেখা যায় বে, উক্ত নুপতিহয় বৌদ্ধ ছিলেন। সম্ভবতঃ এট উভয় সমাটই কৈন ও বৌদ্ধ এই উভয় বর্গকে সমান শ্রহা করতেন।

মাত্র ৭২ বংসর বয়সে মহাবীর দেহত্যাগ করে পরমান্ত্রার বিদীন হন। তাঁর জীবনাবসান হয়েছিল পাটনা জ্বোর জ্বর্গত পাওয়া নামক জনপদে, রাজা হতিপালের জনৈক কর্মচারীর পুছে। পাওয়া প্রাম এখনও জৈনদের মহাতীর্বরূপে পরিগণিত।

কৈন গ্রন্থাদিতে উল্লিখিত আছে যে ইশার ক্ষণের ৫২৭ বংসর পূর্বে মহাবীর নির্বাণপদ প্রাপ্ত হন। মহাবীরের তিরোভাবের তিথি ও তারিধ নিয়ে অনেক মতভেদ দেখা যার: এ বিষয়ে নানা মুনির নানা মত।

বৌদ্ধদের ভার কৈনদের মধ্যেও এক ভিকুসন্তাদার আছে— বৌদ্ধদের ভার কৈনরাও কীবহিংসা করে না। অহিংসার দিক দিয়ে তারা বৌদ্ধদের চেয়েও এক বাপ উঁচুতে। কৈনরা শুরু বে মাহ্মর পশু ও রক্ষে এক বিরাট প্রাণ-সভার অভিত্ব বীকার করে তা নর, তারা বলে যে অগ্নি, কল, বারু এবং ক্ষে ক্ষে পরমাণুতেও প্রাণ-শব্দন বিভ্যান এবং এ সবের পক্ষে হানিকর কার্যা করা মহাপাতক।

বৌদদের ভার জৈনগণও বেদকে প্রামাণ্য গ্রন্থ বলে দীকার করে না। বৈদিক কর্মকাতেও তাদের আহা নাই। ভারা তথু বেদোক্ত কর্মবাদ ও নির্মাণের সিদ্ধান্তভিলকে মাত করেন এবং ক্যান্তরে বিশ্বাস করেন।

জৈনগণ চিকিশ জন তীৰ্থকৱের অভিদ্য দীকার করে। জৈনদের শ্রেষ্ঠতম গ্রন্থ 'আগম' সাত ভাগুে বিভক্ত। এই সাত বতের মধ্যে 'সঙ্গ' বঙ সর্বপ্রধান ও বিরাট গ্রন্থ। আবার এই 'সঙ্গ' বঙু একাদশ ভাগে বিভক্ত। তার মধ্যে 'আচারজ দ্বন্ধ' ও 'উপাসক দশা দ্বন্ধ' হ'ল সর্বপ্রধান।

আচারদ খুত্রে জৈন ভিক্ল্দের আচার-ব্যবহার সক্তরে উপদেশ দেওরা হরৈছে এবং উপাসক দশাখুত্রে উপাসক মওলীর কার্যাক্রম নির্দেশ করা হরেছে।

জৈন ধর্মপ্রতে পাওরা যার যে নহাবীরের মহাপ্ররাণের হুই

শত বংসর পরে মগবে ভীষণ ছতিক ও মহামারী দেশা দের। সে সময় চল্লগুণ্ড মৌহা মগবের সম্রাট ছিলেন।

কৈন-কর হতের রচয়িতা ক্রণবাহ তথন মগবহ কোন এক বিরাট সম্প্রদায়ের মুখপাত্র ছিলেন। তিনি এই সময় তাঁর বদলতুক্ত বহু ক্রৈমকে সলে নিয়ে দাক্রিণাতোর কর্ণাটকে চলে বান। তথন মগবে আরও একট বিরাট ক্রৈমন্ত্রদায় ছিল। এই দলের মেডা ছিলেন সুলভ্যা

মগবের মহামারীর কথা পুর্বেই বলা হয়েছে। কিছু দিন
পরে এই মহামারী ও ছভিক্ষ প্রশমিত হ'ল এবং ' যে সব কৈন
কর্ণাটকে চলে গিয়েছিল, তারাও মগবে কিরে এল। তখন
দেখা পেল যে, যারা কর্ণাটকে গিয়েছিল তাদের চাল-চলনে
ও বেশ-ভ্যার এক বিষম পরিবতন ঘটেছে, ফলে তারা আর
মগবের কৈনদের সঙ্গে কিছুতেই মিশতে পারলে না। মগবের
কৈনগণ খেতবন্ধ পরিধান করত, কিরু দেখা পেল কর্ণাটক
ক্রেড কৈনগণ নগ্ন অবস্থায় থাকায় অভ্যন্ত হয়ে পড়েছে।
এমনি ভাবে হুট সপ্রধায় স্বাষ্ট হ'ল—ধ্রতাশ্বি ও দিগ্রহি।

আর এক.ব্যাপারে উভঃ সম্প্রদায়ের বাবধান দ্রতিক্রম্য হয়ে দাঁড়িয়েছিল। কণাটকগামী জৈনদের অঞ্পয়িতিতে মগধের লৈনগৰ এখন কভকগুলি বৰ্ণপ্ৰছ বচনা কৰে বাব লাৱ-ভত্ব ও ব্যাব্যানাদি কৰ্ণাটককেৱত কৈনগৰ কিছুভেই সমৰ্থন করলে না। তাদের সিদ্ধান্তসমূহ কৰ্ণাটক-কেৱত কৈনদের অন্থ্যোদন লাভ করলে না। এই মভবিরোধ ক্রমেই বেকে চলল। পরে ৪৫৩ ঐটাকে গুৰুৱাতের বল্পতী সম্প্রদারের লোকেরা বর্ত্তমান কৈন ধর্ম-সিদ্ধান্তসমূহ প্রথমন করে এবং সেগুলি সর্ব্যাতিক্রমে গৃহীত হওয়ার এই বিরোধের স্থামাংসা হয়। মধুরার শিলালেধসমূহে এই খীকৃতি দৃঃ হয়। এই সব শিলালেধ স্থাট কনিকের সমর নিশ্বিত হয়েছিল।

এর পর বৈদন ধর্শের স্রোত মৃত্ব গতিতে বরে চলেছিল। উল্লিখিত শিলালিপিগুলিতে অনেক কৈন ভিক্স্ ও ভিক্সীর নাম উৎকীর্ণ রয়েছে বাদের অবদানে এই ধর্শের শাল্প-ভাঙার সমুগ্ধ হয়ে আছে।

আনেকের বারণা কৈনগণ রক্ষণশীল বলেই তাদের ধর্ম আৰুও ভারতবর্ষে বর্তমান আছে এবং বৌদ্ধশের ভার তার বিশ্বস্থি ঘটে নি।

এই প্ৰবন্ধ লিখতে Cambridge History of India
 Ancient India খেকে সাহায্য নেওৱা হয়েছে ৷—লেখক

# নেতাজীর অনুসরণে

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "শ্রী" মার্কা মৃতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' মৃতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পঞ্চিয়াছে, বাজারে ভেজাল মৃতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীষ্ক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জ্জন করিয়াছে, তাহা মৃত ব্যবসায়ী মাজেরই অনুকরণীয়।

খাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বস্থ

## জানপদ সেনা

## প্রীপ্রফুল্কুমার সরকার, এম-এ

वह जाकांक्रिक बांबीनका जवरनाय मच ब्हेबार : अवन श्रव रहेट्डि. উरा कि कविवा बका कविट शांवा याव। चामारमव -নবজাত গণতন্ত্রের শত্রু জনেক, ভিতরে ও বাহিরে। প্রত্যেক পণতজ্ঞের রক্ষকট হটল তাহার তরুণের দল। এরিইটলীয় পণতন্ত্রে তরুণেরাই রাজ্যের সীমানা পাহারা দিত ৷ পণ্ডন্ত প্রবর্ত্তনের সভে সভে ভানপদসেমা সংগঠনেরও প্রয়োজন। কারণ গণতন্ত্র, বাধ্যতাবৃলক প্রাথমিক শিকা ও কানপদ সেনা स्मिनिং এই ভিনটিই একগলে । एट इहें बाजूरिकद ব্দভাবে গণভন্ত কাৰ্যাভ: ব্দুচল হইয়া পড়ে। সুভৱাং দেবা ষাইভেছে, কিশোর ও যুবকদের সামরিক শিক্ষালাভের अकाष धारांचन । फेक रेश्टांच विश्वालय ७ कटलक्शिक क्कि कविश्वा धरे निकानात्मव वावश्च कवा घारेए भारत। বেখানে ছাত্রের সংখ্যা কম সেখানে ছুই বা তভোধিক ছুলকেও এক-একট কেন্দ্রের অভতু ক্র করা যাইতে পারে। মকৰলে একাৰিক গ্ৰামকে একই হাই ছুলের অভুত্ ক্ষরিরা শিক্ষাকেন্দ্র স্থাপন করা চলে। এ প্রসঙ্গে অনেকে হয়তো বলিবেন, বিভিন্ন ছানের কংগ্রেস কমিটগুলিও ভো সামরিক শিষ্টাকেন্দ্র ছাপন করিবার ভার দইতে পারেন। কিছ আমাদের মনে হয় সামরিক শিক্ষার পরিচালনা রাজ-নৈতিক দলগত না হওয়াই উচিত। পল্লী-ইউনিয়নগুলিকেও আমরা যে এক একটি কেন্দ্র বরিব তাহারও ভুবিধা নাই। কারণ প্রত্যেক ইউনিয়নে উচ্চ ইংরেকী বিভালয় নাও থাজিতে गादा। अक्रज: शक्क विदेशक (बक्कारेजनिक नहेशा अक्रक्क কেন্দ্র স্থাপিত হইতে পারে। ইহাতে মনে হয় পাঁচটি হইতে আটট পৰ্যান্ত ইউনিয়ন লইয়া একট কেন্দ্ৰ প্ৰতিষ্ঠিত ক্রা विहेट शास । अवान वना जान य. विकारिमनिक क्रेवांब भक्त भवरहास चुविशाक्तक वस्त्र इहेरलांच रहीक वरमत। সার ট্রেনিডের সময় হটল চারি বংসর, অধাং চৌচ হইতে ্রাঠার বংসর পর্যান্ত। এইরূপ ৪১ জন ছেলে লইরা এক দল বা কাম্পানী ৰেছাসৈনিক গঠিত হুইভে পারে, ভিন কোম্পানীতে रद अक वाहि। निवन, चांव जिम वाहि। निवर (७७३ वटन) अक बेरেগড এবং ভিন বিগেডে এক ডিট্লিট্ট। ভিন ডিট্লিটে এক ারিয়া, ভিদ এরিয়াতে এক কম্যাত, আর ভিন কম্যাতে এক <sup>বাহি</sup>। এই ভাবে বিভিন্ন কেলগুলি এক আদি কন্যাণের म्यीन स्टेटन ।

শহরের মধ্যে প্রতি ছলে কেন্দ্র ছাপন করিয়া ট্রেনিঙের প্রথম চুই বংসরের কান্দ চালান যাইতে পারে: আর শেষের ছুই বংসর বিভিন্ন কেন্দ্র হুইতে মনোনীত ছাত্র লইয়া একট সাধারণ কেন্দ্রে ভাতাদের শিক্ষার ব্যবস্থা হইতে পারে। ১৫ ও ১৬ বংসর বয়সে নকল বন্দুক্যারা শিকা দেওয়া চলিবে. ভবে এ সময়ে আসল বস্থুকের অংশগুলির সমেও পরিচয় করান চলে। এই সময়টাই শিক্ষার পক্ষে প্রশন্ত : ১৭ ও ১৮ বংসর বয়সে শিকাৰীকে প্ৰকৃত বন্দক চালানো শিকা দেওৱা যায়। গ্রীয় ও বর্ষার প্রকোপ সম্ভ করাইবার উদ্দেশ্যে জুন-জুলাইকে মাৰে ধরিয়া প্রায় তিন মাস কাল শিকা-শিবিরের জভ রাধা ঘাইতে পারে। তবে পরীক্ষা-শিবির শীতকালে চলিবার ব্যবদা করা উচিত। ১৪ হটতে ১৮ এই চারি বংসরের প্রতি বংসরে তিন মাস করিয়া ক্যাম্পিং বরিলে (बार्टित छेशत अक वरभत काम क्रिनिएडत क्रम वाशिष्ठ एत । এই ট্রেনিভের বিশেষ উদ্দেশ্তের মধ্যে রহিবে কটসহিষ্ণুতা. পথ-ৰাট চেনা, সোজা-পথ বাহিত্ৰ করা, মৃতন পথ বা বাঁধ जियां वी करा, क्ष्म-कांग्रे, शहराह राजन छ सकारक मिका ইভ্যাদি। ক্লট-মার্চ, প্যারেড, মোর্টর-বাইক অভিযান প্রভৃতিও भिविद्वत कार्वा-छानिकात मत्वा पाकित्व : पान-विम वा নদীতে সাঁতার ও নৌ-চালনার অভ্যাসও করাম হইবে। দিক-নির্ণয় শিবাইবার জভ অর্থা তারা, ও ছপুরে বড়ির কাঁটার হারাপাত প্রভৃতি পর্ব্যবেদণ সমীচীন। ক্যান্দিভের সময় ভাত বাওয়ার পরিমাণ কমাইতে হইবে; কটি, ভিম, মাছ, চা, পাঁওঁরুট প্রভৃতিই বেশী চলিবে। জল-ধাবার পরিমাণ-यल स्टेर्ट । क्यांन्शिर्द्धत चंत्रह व्यवक्र तांद्वेट वस्त कृतिर्द তবে দেশের বর্তমান অবস্থায় সাধারণেরও দায়িত বভ কম নহে ; কারণ দেশরক্ষার সম্ভাই আপাততঃ প্রবল হুইরা উট্র-রাবে। আমাদের রাষ্ট্রের হর্মলতম অংশ কোন কোন দেশীর রাজ্য ও অরক্তিত সীমাত্ত-প্রামাকলের উপর দৃষ্ট দিলেই এ विषय वशार्व समयम् म्हेर्व ।

দেশব্যাপী ভানপদ সেনা গঠন রাইদেহে অভ্তপ্র বল-সকার করিবে এবং রাই তাহার অদম্য অভ্যন্ত শক্তি-উংসের কতকটা সভান এই পথেই পাইরা বিষম বিপংপাতকেও কাটাইরা উঠিবে; কোন রাইই হাঁভার বলশালী হইলেও শুবু বৈতনিক সৈভবাহিনীর উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করিতে পারে না।

# পৃথিবীর খান্তসমস্তা ও ভারতবর্ষ

## শ্রীমোহিনীমোহন বিশ্বাস, এম-এস্সি

বিগত মহাসমল্লের পর সমগ্র পৃথিবী ব্যাপিয়া এক দারুণ ৰাতাভাব দেবা দিহাছে: সমগ্ৰ পুৰিবীতে উৎপন্ন যাবতীয় ৰাত্ৰত যদি সাথোৱ ভিড়তে সৰ্বভাতির মরনাধীর মধ্যে विভংগ करा मक्षव इंडेल लाइ। इंडेल इसल এই बारायक অবস্থার কিঞিং উন্নতি হইতে পারিত। অবস্ত অ'ব্নিক বাস্ত-বিজ্ঞান অনুসারে যদি খাজের পরিমাণ হিসাব করা যায় ত তাহাতেও প্ৰয়েক্ষীয় পুঠ সম্পাদন করা সন্তব হইত না। উउत्र च'रम्बिका, चार्ट्किनिना, चरहेलिया अञ्चि (परमद छे९भन ৰাজনমের প্রিয়াণ প্রোভনাতিরিক হওয়ায় টক দেশ-সমূহের উদ্ভাবাদ্য অনেক সহয় তুর্তিক কবলিত অঞ্চলসমূহে রপ্তানি করা সম্ভব হয়। পদান্তরে এশিথা আফ্রিকা মধ্য-चार्यदिक। এবং प्रक्रिय-श्राध्यदिकांत किश्रप्रश्मत स्मारकता আৰপেটা বাইয়া আছে। ভাৱতবৰ্ষ কৃষিপ্ৰবান দেশ হওয়া সত্ত্বেও প্রয়োজনীয় সার, কৃষিকার্য্যোপযোগী যন্ত্রপাতি প্রভৃতির অভাবে নিজ্ঞ বাচস্মতা মিটাইতে সক্ষম হয় নাই। বহিৰ্জ্ঞাং হইতে বাদাশত ক্রম করিবার উপযুক্ত ক্রমতা না বাকায় ভারতবর্ষ, চীন, ইন্লোনেশিয়া প্রভৃতি দেশ পুৰিবীর উদ্বস্ত বাদ্যশস্ত আশামূরণ সংগ্রহ করিতে অক্ষ। হিদাবে পাওয়া বাব যে, গোভিষেট ইউনিয়ন বাবে সমগ্র ইউরেপপের লোক-সংখ্যা এশিয়া মহাদেশের লোকদংখ্যার মাত্র এক-ভতীয়াংশ: অবচ ইউরোপবাসীরা এশিয়াবাসীদের ভলনায় অধিক পরিমাণ চাউল, গম এবং ছয় গুণ অধিক মাংস ধাইতে পায়।

ভারতবর্হের বর্ত্তমান বাদ্যপরিস্থিতি অত্যন্ত শোচনীয় ।
আৰু সমগ্র দেশের প্রয়োজনের তুলনায় উৎপন্ন বাদ্যশন্তের
পরিমাণ নিতার সামার । বিদেশ হুটতে বাদ্যবন্ত আমদানী
করিয়া মাবে মাবে বাদ্যাভাবের কিঞিং উপশম করা হয় মাত্র
—কিন্তু আমাহারের বিভীবিকা এদেশের কোটি কোট নরনারীয় মন হুটতে আদে দুয়ীভূত হয় না । বিগত ১৯৪৩
সালে বাংলাদেশের হুভিক্তে প্রার ত্রিশ লক্ষ নরমায়ীয় প্রাণবিয়োগ হয় ।

১৯৪৬ সালে আবার বাংলাদেশে ছুর্ভিক্ষের লক্ষণ দেখা সেল। তথন দক্ষিণ-ভারতেও নিদারণ বাদ্যসভান ও অরাভাব পরিনৃষ্ট হটল। কেন্দ্রীর সরকারের একাগ্র চেষ্টার কলে বিদেশ হটতে চাউল, গম প্রভৃতি বাদ্যশন্ত আমদানী করা সভব হওরাতে অতি কঠে দেশবাসীর প্রাণ রক্ষা হটল। বাংলাদেশের অনৃষ্ট নিভাক্ট শোচনীর প্রবং প্রবানে প্রার প্রভি বংসরই চাউলের অভাব নৃষ্ট হর। স্থলনা স্থকনা বাংলাদেশের এই হুর্ভান্য বে কোন্ বিন কাটবে ভাহা বলা যার না। তহুপরি

বাংলা বিভাগ যে খাদ্য বিষয়ে আরও মৃতন মৃতন সমস্তার স্থা করিয়াছে ভাষাতে সন্দেহ নাই। পৃথ্যবদ হটতে আৰু লক লব আশ্ররপ্রার্থী পশ্চিম বঙ্গের ছয়ারে আসিয়া দাড়াইরাছে । তাঁহার যবাসৰ্বাৰ ছাভিয়া আসিতে বাব্য হটৱাছে, ভিন্দার আন্ন কিংব কষ্টাৰ্ক্তিত বন্ধাহার ভাহাদিগকে নিৰ্কীৰ কবিয়া কেলিভেছে সরকারও নিত্য শৃতন সমস্তার সন্মুখীন হটতেছেন। পূর্ববঙ্গে উৰ্ব্যৱা ভূমি কদলশুদ্ধ কেলিয়া দেখানকার অধিবাদীদের দেশ-ভ্যাগ করিতে হট্যাছে। পশ্চিম্বতের উৎপর ফ্সলের পরি-মাণ নিভান্তই সীমাবত। বাহির হইতে আমদানী ছাজ স্বাভাবিক পৃষ্টিমানের ভিত্তিতে বাদ্য-রেশন সরবরাছ কর সরকারের পক্ষে অসম্ভব। আশ্রয়প্রার্থীর সংবাদ ক্রমণ: वाष्ट्रिया हिनातं कर ममना चारल कहन एरेबा छेविर मान মাই। অবশ্র পশ্চিম বাংলার পতিত ভ্রমি-সংকার ও অকুর<sup>া</sup> পরিকল্পনাসমূহ কার্যাকরী করিতে পারিলে সমস্তার কিয়া পরিমাণ মীমাংসা হটবে সন্দেহ নাই: উন্নত বরণের জল সেচন পছতি অবলখন ও সারপ্ররোগছারা ক্রবির উন্নরি হটতে পারে, কিন্তু তাহা সময়সাপেক এবং অনশন গ অর্নাশনপ্রভিত গ্রামবাসী আশাসুরূপ পরিশ্রমণ্ড করিয়ে পারিবে না। সুভরাং কৃষিকাত বাদাশস্তের উন্নতিসাধন স্থা अञ्चय विलया शत्म इस भा । वाकी त्रिश्म विरमम इहेट बाम्स শশু আমদানী করিয়া সমন্তার সমাধান করা। সমগ্র ভারত বর্ষে বিদেশ হইতে আমদানী চাউল, পম প্রভৃতি খাদাশয়ে वाधिक मृत्रा श्रांत ১२৫ (कांति केंगा। धरे विनुत्र वर्ष विटम्स না গিয়া কৃষিকার্যোর উন্নতিকলে বারিত হইলে দেশের ক কলাৰ হটত গ কিছ ভাৱত বিভাগের ফলে বাংলা গ পঞ্চাবের জঞ্চ খাদাবস্ত ক্রয়ের বায়ভার ক্রমশ: বুদ্ধিই পাইট বলিয়া মনে হয়। স্বাবার স্বাস্থ্রকাতিক পরিশ্বিতির কলে য কোন দিন যুদ্ধ বাৰিয়া উঠে ত ভারতবর্ষ বিদেশের বাল সরবরাহ হইতে হঠাং বঞ্চিত হইতে পারে। তবনকা चदश्रं किश्वां क्या प्रवकात ।

বাদ্য-সমস্রার আন্ত সমাবাদের কোনো সন্তাবনা দে যাইতেছে মা । সমগ্র পৃথিবী আন্ধ এইকড রেশনিং বৃথি কল্পনা লইরা ব্যন্ত । রেশনিঙের উদ্দেশ্ত সকিত বার্ত্ত কুঠু বক্টন এবং ভাষাও হওরা উচিত বাদ্য-বিজ্ঞাই ভিভিতে । যেবানে গমের পরিমান যথেষ্ঠ নম্ন সেবা গমের ভুলা অভাভ শস্তাবি যন্ত্র পরিমানে মিশানো যা বোহাইরে বালাম হইতে তেল নিদ্যালন ভরিমা জ ঐ বীক্ত চুর্গ করিরা মমলা বা আটার সহিত নিশা



এবন কি আনেরিকাতেও - ভুকল পাওৱা গিৱাছে। এইৰূপ মহদার সহিত বাদায়ের বীজ-চুর্ণ মিশ্রণ কার্ব্য অছু-মোদিত হইরাছে। চাউল ও গমের পরিমাণ যখন বিদেশ হইতে আমদানী না করিয়া বাড়ানো সম্ভব নহে তথন বাদ্য-বিজ্ঞানের ভিত্তিতে পুষ্টিমানের প্রতি দুষ্ট রাখিয়া যদি চাউল ও গমের সহিত বেশী পরিষাণ গোল আলু, লাল আলু, যব প্রভৃতি ব্যবহার করা যায় ভ সমস্থার কিঞ্চিৎ সমাধান হইতে পারে। দেশের আসল সমস্তা চাউল ও গমের বাটতি। ত্মভৱাং দেশবাসীর উচিত অভাত বাদা হুইতে এই বাটুড়ি পুরণ করা: প্রয়োজনীয় প্রোটন ও খেতসারের কিরং পরিমাণ যদি চাউল ও গম ছাড়া অভাত বাদ্য হইতে সংগ্ৰহ করা যায় এবং ভাছাতে যদি লোক ৰাইয়া বাঁচে ভ অবিলয়ে সে বিষয়ে মনোযোগী ছওয়া সৰ্বাসাৱাৰের ্কর্ষকা। প্রয়োজনীয় প্রোটন, ভিটামিন প্রভৃতির জভাব পুরণ করিতে কচি শাকসব্জির মৃদ্য ধুব বেশী। আধুনিক খাভ-विकाल देशांक अक मूजन चारिकात वना घारेरा भारत। বৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণের কলে দেখা গিয়াছে যে কচি-শাকপাভার ভাজা প্রোটন, ভিটামিন, ফলিক এসিড প্রভৃতি দুই হয়।

চাউল সহত্তে একটি মূলবায়ন তথ্যের কৰা আলোচনা করা বাক। ভারতবর্ষের বচ ছানে আতপ চাউলের আহর বেনী। সেবামকার অধিবাসীদের নিকট সিদ্ধ চাউল অপেকা আতপ চাউল অধিকতর মুধরোচক। আধুনিক বৈজ্ঞানিক বিপ্লেষণ ছারা প্রমাণিত হয়েছে যে সমপরিমাণ আতপ ও সিছ চাউলের मर्था (नर्याक्रकेत मुक्रेन्मा ज्यानक दानी अवर निर्विष्ठे भविमान ৰাম হইতে আতপ অপেকা সিদ্ধ চাউলের উৎপাদনও হয় বেৰী। ভতরাং বেশী পরিমাণে সিদ্ধ চাউল আহারের রেওরা<del>ক হ</del>ইলে উৎপন্ন চাউলের পরিমাণ বভাবত:ই বেশী হইত। অবস্ত কিন্তুৎ পরিমাণ জাতপ চাউল বর্শকার্য্যের জন্ত (দেবতার পূজা প্রভৃতি) পুৰুক করিয়া রাখিতেই ছইবে। এইল্লপে ব্যাপকভাবে সিদ্ধ চাউলের বাবহার আইন ক্রিয়াই হউক, আর প্রচার-কার্য্যের ছারাই হউক প্রচলন করা অবস্তকর্তব্য। হিসাবে দেখা যার যে, আতপের বদলে কেবলমাত্র সিদ্ধ-চাউল আহারের অভ্যাস হইলে শুধু ইহা দাবাই ভারতবর্বের উৎপন্ন চাউলের পরিমাণ প্রতি বংসর ৪০,০০৫ টন বাছিয়া যাইবে।

পুটকর বাদ্যসমূহের মধ্যে ছব, মাংস, ভিম ও মাছ উল্লেখযোগ্য। ভীব-দেহের পক্ষে এই সকল বাদ্য অবঙ্ক- প্রবোজনীর এবং উহাবিগকে শরীর রক্ষাকারী পাদ্য (protective food) বলে। সাবারণের পক্ষে এই সকল বাদ্য সংগ্রহ করা কঠিন। এই সকল বাদ্য রেশনিঙের আওতার আসে নাট। কিন্ত হব যেমন প্রত্যেক শিশুর পক্ষে আওতার আসে নাট। কিন্ত হব যেমন প্রত্যেক শিশুর পক্ষে মাহ, বিংস, তিম প্রকৃতির হয়বিভর প্ররোজন অবীকার করা যার না। মুভরাং ঐ সমন্ত বাদ্যম্রেরেও মুঠু বন্টন হওয়া নিশ্চরই প্ররোজন। দেশের বনীগণ হরত ঐসব পৃষ্টকর বাদ্য বেশী বাইয়া নিজেদের তাগের চাল, গম প্রভৃতির কিরদংশ দরিপ্রদের ছাভিয়া দিতে পারে। যাহারা মানসিক পরিপ্রম বেশী করে তাহারা প্রোটিনের (মাছ, মাংস) পরিমাণ বেশী বাইয়া বাহারা শারীরিক পরিপ্রম বেশী করে তাহাদিগকে নিজেদের ভাগের খেতসার (চাউল, আটা) ছাভিয়া দিতে পারে। ইহাতে সমস্তার আংশিক সমাবান হয়।

ভারতবর্বের লোকসংখ্যা ক্রমশ: বাভিন্ন চলিরাছে। ১৯৪৭ সালে জনসংখ্যা ৪৫ কোটি ছিল। বাংসরিক ছিসাব ধরিঙে জন্মান করা যায় যে ১০ বংসর পরে জ্বাং ১৯৫৭ সালে ভারতবর্বের জনসংখ্যা বাভিন্না ৫০ কোটিভে দাভাইবে। স্থভরাং এই জ্বভিন্নিজ্ঞ দশ কোটি লোকের খাদ্য-সরবরাছ এক মূতন সমস্তা ছইলা দাভাইবে। দেখা যাইতেছে যে উৎপাদন ও সরবরাছ অপেন্দা বারের মালা ক্রমশ: বাভিন্না যাইতেছে। কাজেই এখন খাদ্য শস্তাদির উৎপাদনমুদ্ধিতে মনোয়ে মৃহত্তরা দেশবাসীর একান্ত কর্তব্য।

## **ৰাবভীয় স্থ**'ব্যাধির



অব্যৰ্থ মহেশ্য-

উবণটি বিশুদ্ধ আলোক, এলেট্রস, অবগদ্ধা, ভিক্রেনী, এরোমানগোন্ত, ভালেরিয়ান রোমাইড প্রভৃতি স্তারোগের বিলেব বিশেষ উবধ্বারা বৈজ্ঞানিক্ষতে স্বত্বে প্রস্তুত। স্বর্জ্ঞারী রাজ্যান্তিবেল চিকিৎসংগ্র্ণ বারা ব্যবস্থাকৃত ও অতি সন্ধ্য ক্লপ্রস্থা বড় বড় উবধ্যালয়ে প্রায়ের আখনা সন্ধ্য পাইবার লক্ত সরাসরি প্রধান প্রিবেশকের নিক্ট ভিপ্নের ক্রম্পান প্রবিশকের নিক্ট ভিপ্নের ক্রম্পান কর্মান বিশ্বার বিশ্বার স্বায়ান্ত ও প্যাকিং ১০ বংলা । সূত্য ২০০, ভাক্ষান্তল ও প্যাকিং ১০ বংলা।

कू व्यू किंपिकाल ३ शक्ति म्

প্রধান পরিবেশক -বেভিকো সাপ্লাইং কর্পোরেশন ১৪৬নং আবহার বিটি, পি. বি. ১৩৬ কলিকাচা ১



## नभाज-मःकादन विथवा-विवाह

#### क्षेत्रनिंद माञ्चान

হিল্পমান্তের অর্থানিত অব্যাহত রাধার প্রচেষ্টার প্রবেশে বর্ধনাই কোনও সামান্তিক আন্দোলন বা আইন প্রবর্ধন বা সংভারের চেষ্টা হয়েছে, তথনই দেশের রক্ষণশীল সন্ধানার লে অপ্রগতির প্রবল বিক্লবাচরণ করবার প্রবাস পেরেছেন। রবীপ্রবাধের ভাষার—'প্রবের অইহতুক শক্ষতা বাংলাদেশের অভ্যুথানের সকল চেষ্টাকে কেবলি ধূলিসাং করেছে'। সমাক্ষ-সংভারে অপ্রশী করবাচল বিভাসাধার মহাশবের বিধবা-বিবাহ আন্দোলন প্রশ্ন আক্ষা সাক্ষ্য দেয়।

১৮२> बेट्टोट्स मजीवार (व बारेबी र'न वर्ट, किंद छदनछ সমাব্দের ছিভিশ্বলতার কোনও পরিবর্তন দেখা দেল না। সে সময় সমস্ত দেশের বা সমান্তের ভাবকৈ নিজেদের ব্যক্তিগত খাৰ্থের উপরে চিন্তা করবার চেঠাও হর বি। এই *আদর্শ দেখালেন* বিভাসাগর মহাশর। শামাজিক প্রধার বিরুদ্ধে ইশ্বরচন্তের প্রচেটা সেকালের সামাজিক জীবডের মধ্যে যে প্রাণস্কার করেছিল আভকের দিনে তা বিশেষ ভাবে শ্বরণীর। হিন্দুসমাজ তথন নির্বীর্ব্যভার চরষ দীমার পৌছেছিল বললে অন্তাক্তি করা হর না। বিভাসাগর মহাশর স্থতি ও পরাশর সংহিতার ব্যাধ্যার সাহাবোই গণচিভের যোড় ছবিবে দিতে সমর্থ হরেছিলেন। <u>ট্রবকালে তার প্রচেষ্ট্র ভারতের ইতিহাসে শর্মীর হরে রইল</u> वेबना विनार चारेन (Hinda Widows' Re-marriage Act. 1856) विशिवन स्टा: (म मनद और अधनिक्रिक বান্দোলনের বিরুদ্ধে শিক্ষিত জনসাধারণ কি পরিয়াণ বৈপক্ষতা করেছিল তা এই আইনের প্রণেতা অনারেবল বার খে, পি. প্রাক্টের বিযুক্তি খেকে ছানা বার। তিনি ालन, और चारेटनव विकास कार्काव नमान्नांकना करव াঞ্চাল হাজাবের উপর দম্ভবতমুক্ত প্রায় চল্লিটে স্মারকলিপি র্প্তপক্ষকে পাঠানো হয়েছিল।

এই আইনে যে করেকট বারা আছে তার মধ্যে প্রধান লৈ বিধবার বিবাহ এবং বিধবা-বিবাহের কলে আত সভান-ভিতিহের বৈধতার (legality) আইনের সমর্থন দেওরা। বিশ্লিক কিরণংশ উল্লেখ করা বেতে পারে—

"No marriage contracted between Hindus hall be invalid and the issue of no such marriage hall be illegitimate by reason of the woman aving been previously married or betrothed to nother person who was dead at the time of such arriage, any custom and any interpretation? Hindu Law to the contrary notwithstanding."

At aim cace weath ea, the field ca weath faction is related to the contrary notwithstanding."

The contract cace weath and faction are related to the contract of t

खेंद्वर्थामा नावात नना एरवाय य, नृतिनार्यत नक्षणं विन्तायत नृर्दिकां विनार छेज्ञानिकावयुद्ध भाषता नन्मिष्ठ या क्रिक्त निनार छेज्ञानिकावयुद्ध भाषता नन्मिष्ठ या क्रिक्त ना । विन्ना-विनार चारेन्त्र एरव पार्ट्य व्यक्त वर्षा नाव्य व्यक्त वर्षा वर्षा

১৯৩১ ৰীষ্টাব্দের লোকগণনা অনুসারে কেবলমান কৃষ্টি त्यत्क मैहिम वरमद वदामद विषयात्मद भरपा। विक ५.8७.३१३ बर विश्वाद्य यांहै जरबा विम ১৬,৮১,७१३। बहे छबा ভারতের সমাজ-সংস্কারের ইভিহাসে ভাষাবের কুসংস্কারের-চয়াত নিত্ৰৰ হবে থাকবে। মহাত্মা গান্ধী একাৰিক বিশ্বতি ও প্রবহে বালবৈধব্যকে সমাধের ছবপ্রের কলর বলে খীকার করেহেন, যদিও তার মতে নৈভিক ভাদর্শে অভুপ্ৰাণিত বিধবারা হিন্দু সমাব্যের সম্পংয়রূপ। কিন্তু হত্ত ক্ষেত্ৰে ক্ষোর করে চাপিয়ে দেওয়া বৈধব্য মুর্নীতিকে নানা ভাবে প্ৰশ্ৰৰ দিবেছে। গাৰীশীৰ মতে—"Widowhood imposed by religion or custom is an unbearable yoke and defiles the home by secret vice and degrades religion ( Conquest of Self. পু. ২৩)। অভ্নন্ত্ৰীৰ ভাৱা প্ৰমাণিত হৰেছে, আমাদের দেশে আৰিক অভাব বা প্ৰবৃত্তির বেরণার পভিভারত্তি গ্রহণ করতে বাধ্য হরেছে এমন মেরেছের बर्द्या वाल-विद्यांत जर्द्या निष्ठांच चन्न नत ।

এদেশে অসহার বিষবাদের সাহাব্যকারী প্রতিষ্ঠানের সংখ্যা থ্ব কয়। তথারে একট প্রতিষ্ঠানের কথা এখানে উল্লেখ করব। সেট হচ্ছে লাহোরের সার গলারার ট্রাই পরিচালিত বিষবা-বিবাহ সহায়ক সভা। উক্ত প্রতিষ্ঠানের একট লাখা কার্যালর ১৬২ বহুবালার ট্রাইট ১৯২৫ ব্রীটানের একট হুরে বিষবা-বিবাহের প্রসারের ক্ষম উল্লেখবাগ্য কার্ম করে আসহে। এই প্রতিষ্ঠানটর উক্তেম্ব হিন্দে বিমা পারিপ্রবিক্তে বিষবা-বিবাহের ব্যথহা ও উক্ত প্রচেষ্টার সহযোগিতা করা, এবং ক্ষমগাধারণের মধ্যে বিষবা-বিবাহ প্রচারের ক্ষম বাবতীর বিষ উপার অবল্যক করা। স্বাধীন ভারতে এই প্রেমীর প্রতিষ্ঠান-ভলির উপরুক্ত পরিচালনার ব্যবহা করার বিশেষ সারিম্ব ভাতীর প্রবন্ধক্তর আহে।

. বিধবা-বিবাহকে সামাজিক ভাবে এহণ ও সমর্থন করতে হলে এচার ও আন্দোলন হাসাও বে বিধবাদের অভিভাবস্থার নৈতিক গুরু হারিছ রয়েছে:একবা বীকার না করে উপার নেই।

## নভেম্বরের নৃতন রেকর্ড — হৈমন্ত্রী স্থরের প্রস্থান

#### সভ্যবোপাল দেব

**GE** 7391

ভোষাং গান শোলাতে প্রিয় আমারে গাব গোলাতে প্রিয়

—অংধুনিক

'দিজে-প্লী ভি' নামক পু'ত্তপার বাঙাই করা বাবী দিজের পান ওলি প্রকাশিশ হতেছে। ভালারের কাছে বিনা-মূলো পাবের।

## অমল দেব বৰ্মণ

GE 7392 { দুরে সংশ্রথাকি

১৮ নিয়ে একি থেকা

—আধ্ৰিক

## কুষারী সবিভা সিংহ

**GE 7393** 

ভোমার আঁগেধর পারে মালার বদলে নিয়েছিল বাঁণা —আধ্দিক

> পরেখ দেব ও পুরবী দেবী

GE 7394 মোর খপনের নীলপরী প্রেমের নদীতে আছে

—হৈত সমীত

### বরদা শুহ

GE 7395
আর পারিনে ধর্ণা দিভে
মামা হোলো দেশের নেভা
—কোতুক নক্সা

কর চিত্র যদিবের
'ওরে বাজী'
নাইন প্রোভিউনা দরি
'মানেরর ভাক'
নিউ থিয়েনদেরি
'অঞ্চলগড়ে'
বাদী চিত্রের গান
কলহিয়ার ওছন।

নিউ থিয়েটার্স লিমিটেডের নৃতন চিত্র

# "অञ्जलभूं"

क्रूमात्री मक्ता मूटवाशाधात्र

VE 2555 মোর গান গুন গুন (কেন পরাণ হল বাঁধন হারা) "ভাগ্যচক্র"—

সন্ধ্যা, হেমস্ত, ভারতী, পুরবী VE 2556 { 'রামধ্ন' (২ ভাগ)

VE 2557 তহমন্ত মুখোপাখ্যার নাই নাই ভয় —(রবীদ্র-সদীড) তহমন্ত মুখোপাখ্যার ও উৎপলা সেন সর্ব ধর্বভারে দহে —(রবীদ্র-সদীড)





# कल श्रिशा

গ্রাফোফোন কোষ্পানী লিমিটেড কানকাতা - রোঘাই - দিরী - নাহোর - করাচী

# পুশুক - পারচয়

দেবী-যুদ্ধা— ৺শনচেত্ৰ চৌধুনী, বি, এ; প্ৰাপ্তিস্থান—শ্ৰীকৃষ্ণ লাইবেন্ত্ৰী, মিউনিসিপাল মাৰ্কেট, শ্ৰীহট। ২৬৪ পূঠা। মূল, ৫১ টাকা।

বাঙালী আন্ধবিশ্বত জাতি বলিরা হরপ্রসাদ শারী মহাশর কোভ প্রকাশ করিরাছিলেন।এই দোব সমগ্র হিন্দু সমাজের।তাহা না হইলে বেদ, উপনিবদ, রামারণ-মহাভারত, অইাদশ পুরাণ প্রভৃতিতে বর্ণিত উপাথাানাদি মন্থন করিয়া বর্ডমান বুলে ইতিহাস বলিতে বাহা বুঝার. তাহা শুক্তিরা পাওরা হুখর হইত না। অনেক সমরই দেখা বার, হিন্দুর এই সব প্রাচীন কথার আধান্দ্রিক ব্যাখা। করিয়া লৌকিক জীবনের ফুখ-ছুঃখ মান-অপ্যানকে অনিতা বলিরা উড়াইহা দেওরা হইরাছে।

উনবিংশ শতাকীর মধান্তার হইতে ইংরেজ শাসনের কলাাণে আমাদের আখাত্ত্বিকার মোহ একটু আখটু টুটরাছিল বলিরা মনে হয়। সেইজন্ত দেখিতে পাই, আমাদের রামারণ-মহান্তারত ও পুরাণের উপাখান অবলম্বন করিরা হিন্দুর সহস্র বংসরের ইতিহাসের লৌকিক বাাখার চেটা করা হইরাছে। মাইকেল মধুসুদন, বহিমচন্ত্র, হেমচন্ত্র, নবীনচন্ত্র কর্মান কীবনের হীনভার আলোকে হয় ও অহ্বের বিবাদের বর্ণনা করিরা, অতীতকে আমাদের সামনে জীবন্ত করিরা ধরিরাছেন।

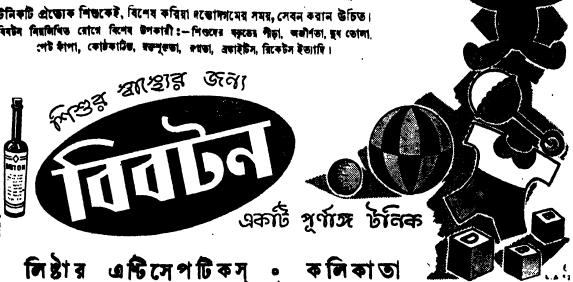
শরচন্দ্রের "দেবী-যুদ্ধ" নামক কাব্য সেই পর্যায়ভুক্ত। এই সাধক ব্রাহ্মণ প্রীহট্ট জেলায় জন্মগ্রহণ করেন , পুঁটিরার রাণী ৺শরৎ-ফুন্সরীর আমুকুলো শিক্ষালাভ করেন, এবং বারেক্রভূমে, উহরবঙ্গে, শিক্ষাত্রতীরূপে লীবনের অধিকাংশ কাল অতিবাহিত করেন। এই কার্যো তিনি লোকের প্লু প্রদ্ধান করেন। উত্তরবঙ্গের শিক্ষিতসম্প্রদারের নেতৃত্বানীয় অনেকেই তার ছাক ছিলেন। বুগধর্মের অস্থপ্রেরণার তাঁহার সাহিত্যিক জীবনের সর্বব্রের প্রকাশ এই "দেবী-বৃদ্ধ" কাব্যে পাওরা বাঁর। বিংল লভানীর প্রথম বংসরে এই কাবা প্রকাশিত হর। সেই যুগের চিন্তানায়কগণ সেই কাবাকে কি ভাবে অভাগনা করিয়াছিলেন, তাহা প্রখ্যাত ঐতিহাসিক অক্ষরকুমার মৈত্রের মহালরের সমালোচনার পরিক্ট দেখা বার। 'প্রদীপ' পত্রিকার ১৩০৮ বজালের মাব ফাস্কন সংখার এই সমালোচনা প্রকাশিত হর। "দেবী-বৃদ্ধের" কবি সেই পৌরাপিক কাহিনীকে (মার্কণ্ডের পুরাশের চন্ত্রী উপাধানকে) লৌকিক পরিক্টদে সমাবৃত করিয়া কাবা রচনা করার মনে হইডেলে—এ বুবি মানব-সমাজের কথা, এ বুবি প্রতিদিনের প্রভাষীকৃত ঘটনাবলীর অক্ট্ চিত্রপট। এই গুণে "দেবী-বৃদ্ধ" পাঠকচিন্তকে বিমৃদ্ধ করে। • শনক হর বুবি ইহার দেবাসুর সেকালের দেবাসুর নহে।"

খদেশীবৃগে এই কাব্য ইংরেজ-শাসকেব চকে রাজজোহস্চক বলিরা বিবেচিত হয়। প্রায় চ'ল্লাশ বংসর ইহা নিষিদ্ধ পৃথকের তালিকার ছানলাভ করে। ১৯৪৭ সালের ১০ই আগান্টের পরে যে নববুগের আগন্ত হইরাছে. সেই সমরে ইহা প্রকাশ করিরা জীগিরিজাশন্তর ভট্টাচার্য্য খদেশী বুগের শ্বৃতি উদ্দীপ্ত করিতে সাহাবা করিরাছেন। কাবাধানি ছুম্মাপ্য ছিল বিলিয়া ভাঁহার চেটা আরও প্রশাসার বোগা। বর্ত্তমান সুগের পাঠকবর্গ এই দেশের নানা জাতির ও নানা সংস্কৃতির মধ্যে সংঘর্বের একটা পরিচর এই কাব্যের মধ্যে পাইবেন, এই কাব্যের সাহাব্যে নিজের দেশের ইতিহাস বুরিতে পারিবেন। প্রকাশকের প্রম ও অর্থব্যর তথন সার্থক হইবে।

গ্রীসুরেশচন্দ্র দেব

# आरश्रास सर्वेश

শিশুপালনের সম্মৃত্ জানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন্
শিশুদের দৈছিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ভি, বি১, বি২ব
সহিত মৃত্যুবান উদ্ভিক্ষ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাদ্ধ
টনিকটি প্রজ্যেক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দভোলগ্যের সময়, সেবন করান উচিত।
বিবটন নিম্নাধিত রোগে বিশেষ উপভারী:—শিশুদের ক্ষতের শীড়া, অলীপতা, মুধ ভোলা
শেট কাপা, কোঠকাটিত, মুক্তুতা, ক্রয়ভা, বুকাইটিস, রিকেটস ইত্যাদি।



সীতার বনবাস--জনমচন্দ্র বিভাগাগর। শ্রীরজেন্দ্রনাধ বজ্যোপাধ্যার ও শ্রীসজনীকান্ত দাস সম্পাদিত। বলীর-সাহিত্য-পরিবদ, ২৪৩।১ জাপার সারকুলার রোড, কলিকান্ডা। মুল্য এক টাকা।

"সীতার বনবাদ" বিভাগাগরের একধানি শ্রেষ্ঠ এছ। ইহার এখন ছুইট পরিচ্ছেদ ভবভূতি প্রণীত উদ্ভরচরিত নাটকের প্রথম অব্ধ হইতে পরিগৃহীত, অবশিষ্টাংশ রামায়ণের উদ্ভরকাও অবলম্বনে সন্থলিত। বাংলা গন্ধ-সাহিত্যে বিভাগাগরের দান কভধানি ভানিতে হইলে "শকুন্তলা" ও "গীতার বনবাস" পাঠ করিতে হয়। সম্পাদকদম ভূমিকার লিখিতেছেন, 'ঈশবচন্দ্র ভাঁহার দেশবাসীর জম্ম এই ছুইটি মহৎ কাব্যের পল্লাংশকে স্থললিত বাংলা পতে রূপান্তরিত করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন। বন্ধত: উনবিংশ শতাব্দীর শেবার্ছে এবং বিংশ শভানীর প্রারম্ভে বিদ্যাসাগর মহালয়ের 'শকুন্তলা'ও 'দীতার বনবাদ' সমগ্র বাঙালী জাতিকে দাহিত্যরদে উষ্ 🕏 ও দঞ্জীবিত করিরাছে।··· সীভার বনবাস আজ আর সহজলভা নর।" "সীভার বনবাসে"র প্রথম প্রকাশ-কাল ১৮৩০ খ্রীষ্টাব্দ। বিভাসাগর মহাশরের মৃত্যুত্র ঠিক এক বংসর পূর্বে অর্থ(২ ১৮৯০ খ্রীষ্টাব্দে পঞ্চবিংশাত সংস্করণ প্রকাশিত হয়। তিনি রচনাকে সহজ ও মুললিত করিবার জম্ম প্রত্যেক সংস্করণেই ভাষার কিছু না কিছু পরিবর্ত্তন সাধন করিয়াছেন: বর্ত্তমান সংক্ষরণে সম্পাদকেরা ভাঁছার জীবদশায় প্রকাশিত শেব সংগ্রণের পাঠ গ্রহণ করিয়াছেন। বিভাসাগরের ফুলর এবং সাবলীল বাংলা আধুনিক পাঠককে আনন্দ দান করিবে।

শ্রীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

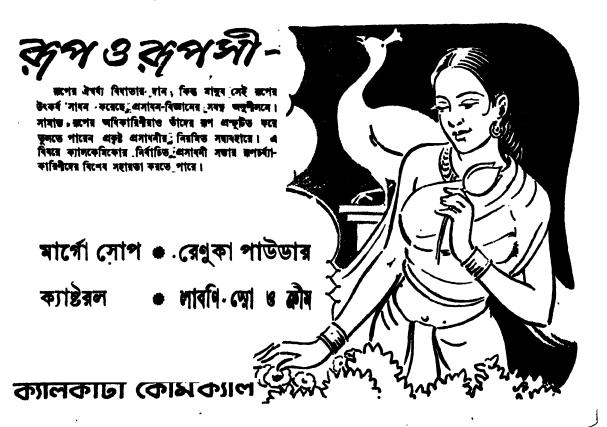
টাকার বাজার --- জীবতুল হর। বিবভারতী আহালর, ৽, বহিম চাটুলোট্রাট, কলিকাড়া। পুঠা ৭৩ মুল্য ।•।

বিখবিদ্যাসংগ্ৰহ প্ৰশ্বমালার এই পুত্তকে দশটি অধ্যায়ে টাকার বাঞ্লারের

বরূপ ও সংগঠন, রিজার্ভ ব্যাক্ত অব ইঙিয়া, বিনিময়ের বাজার, দেশী বিদের वाकात, 'छनवी' ও वस्त्रप्राणी क्षात्र वाकात, वसकी वाकात, गांक क्रियांत्रिः, শেরার বাজার, মূলধনের বাজার ইত্যাদি বিবর আলোচিত হইরাছে। নিছক টাকার বাজার সক্ষম বাংলা ভাষার পুত্তক কেন্ত লেখেন নাই, সুতরাং বর্ত্তমান গ্রন্থের লেখককে অভিনশিত করিতেছি। বিষয়টি জটিল হইলেও লেখক বতদুর সম্ভব সহল সরল ভাষার বাঙালী পাঠকের নিকট উপস্থাপিত করিরাছেন। সাধারণ লোকের নিকট, এমন কি বাহারা ব্যবসা-বাণিক্যের সহিত সম্পর্কিত ভাছাদেরও অনেকের নিকট ক্লাইভ ট্রাটের কাল-কারবার রহস্তমর। লেখক এই রহস্তের কতকটা উদ্বাচিত করিয়া সাধারণের নিকট ধরিয়াছেন। বাধীনভালাভের পর ব্যবসা সম্পর্কে এদেশবাসীর দায়িত্ব জনেক বাড়িরাছে। ব্যবসা-বাণিজ্যে আমাদের নিজ্ঞ স্থান আজ গ্রহণ করিতে হইবে। আধুনিক জগতের অার্থিক কাঠামোর সম্বন্ধে পরিধার জ্ঞান না থাকিলে একালের ব্বসা-ক্ষেত্রে অংশর মত হাতড়াইতে হয়। এই ধরণের পুস্তক বতই দেশে প্রচারিত হইবে তত্ই প্রতিযোগিতামূলক ব্যবসাক্ষেত্রের আসল চিত্র বাঙালীর নিকট পরিস্ট হইবে ও তাহাকে এদিকে আকর্ষণ করিয়া আনিবে। বিশ্বছিলয়ের বাণিজঃ বিভাগের ছাত্রগণও এই পুত্তক পাঠে বিশেষ উপকৃত হইবেন। আমরা এই পুশুকের বছল প্রচার কামনা করি।

অর্থনীতি সমাজ-রাষ্ট্র--- প্রশান্ধশেষর বারচী এবং শ্রীহ্রধাংগুত্বৰ মুখোপাধার। মডার্প বৃক একেলী, ১০নং বছিম চাটাব্দী ট্রাট, কলিকান্তা। পুঠা ২০০, মুলা ৩, ।

প্ৰবন্ধের বই । ইহাতে মোট সাইজিশটি প্ৰবন্ধ আছে। পাঁচটি প্ৰবন্ধ রাষ্ট্রনীতি সম্পাদীর , অন্তান্ত প্ৰবন্ধ অর্থনীতি, সমাজনীতি, বাহা, ব্যাক্তি, মুদ্রাফীতি, বানবাহন, খাদ্যসমস্তা, পশুপালন, শিল্প, দামোদর



পরিক্ষনা প্রভৃতি বিবিশ্ব প্রয়োজনীয় ও জাতবা বিবয়ের আলোচনা করা হইরাছে। কমার্স ক্লানের ছাত্র বাতীত সাধারণ পাঠকগণও এরপ পুতৃক পাঠ করিরা দেশের আধুনিক সমস্তা সম্বন্ধে প্রচুর জ্ঞানলাভ করিতে পারিবেন। প্রতাকটি প্রবন্ধ ভারতীয় পরিস্থিতির প্রতি দৃটি রাখিয়া এবং লাতীয়তার দৃষ্টিভলি লইরা লেখা বলিয়া মনোজ্ঞ হইরাছে। ছাত্র-দের মধ্যে এরপ প্রশ্নের বহুল প্রচার হইবে বলিরা আমাদের বিখাস।

ট্রাঅনাথবন্ধ দত্ত

উপজ্ঞাসের নামকরণ হইতে মনে হয় এথানি কোন বিদেশী এন্থের জমুবাদ। মৌলিক বাংলা রচনার এরূপ নামকরণ আদৌ সুঠু নতে।

বর্ত্তমান সমাজের করেকটি সমস্তাকে লেখক বে দৃষ্টিভলী লইরা বিলেবণ কৰিয়াছেন তাহা সমালোচনার **অতীত নহে । উপভা**সের নারক একদা সন্মাসাত্রমে ছিল, কিন্তু সে আত্রম-প্রবেশের কোন ঘাতসহ বৃক্তি তার ছিল না, বেমন আগ্রম-ভাগের পর তার বাত্তবমুখী চিত্তের দুঢ়তা লক্ষ্য করা বার। অন্তমুখান বে রস-পিপাসা মামুবকে সংসারবিম্ধ করিয়া অমৃতলোকের পথে লইয়া যায়, সে সম্পদ সঞ্চার তপস্তা তার ছিল না। তাই সন্নাস গ্ৰহণ ও বৰ্জন অনায়াসেই ঘটিয়াছে। ধর্ম বে কতকগুলি আচার-অমুষ্ঠানের সমষ্টিমাত্র নহে-এ সভ্য প্রার সর্বজন-শীকৃত। ধর্মের ব্যাখ্যা যে ভাবেই দেওয়া যাক—বান্তবভূমিতে দাঁড় করাইয়া লেখক নীতিবিমুধ জগতের একটি চিত্র আঁকিতে চেষ্টা করিয়া-ছেন। তাঁথার নায়ক চিস্তাশীল, অধ্যয়নশীল, প্রচলিত সংস্থারের বিরোধী--তবুও মনে হয় ব্লক্তসাংসে গড়া সজীব প্রার্থ নহে। উপস্তাসিক নন বলিয়াই লেখক গল-রচনার বহু মাল-মশলা বলপরিসরের মধ্যে অবছেলার ছড়াইয়া দিরাছেন। বহু নরনারাকে টানিয়া আনিরাছেন, ভাহাদের পরিচয়ও কিছু কিছু দিয়াছেন ; কিন্তু জীবনের হৃণ-ছু:খ, আশা-নিরাশা, দশ-বেদনাকে রূপ দিবার প্রহাস মাত্র করেন নাই। কতক গুলি সমস্তা ও প্রচলিত মতবাদ খণ্ডনের উদ্দেশ্য লইয়া কতকগুলি চরিত্র-পরিচিতির সার্থকতা উপস্থাসের ক্ষেত্রে নাই। সমস্তার দলে কাহিনীকে অঙ্গান্তি-ভাবে গাঁথিয়া রসস্ষ্ট করিতে না পারিগে এ ই সঙ্গে দর্শন ও অনুভূতির রাজ্যে সাড়া জাগানো কটিন।

প্রুক্তর ফ্রেট ছাড়াও বানানে অনবধানতা আছে। 'র'ও 'ড়' কারের অপ্রায়োগ এবং চক্রবিন্দু বর্জন তাহার মধ্যে প্রধানতম।

অগ্নিমন্থন---- এভূপেক্সনাথ চৌধুরী। কারবারী হিন্দ লিমিটেড। ১১, গৌরমোহন মুধার্ক্সী ট্রাট, কলিকাতা। দাম--তিন টাকা।

উপন্তান নিধিবার প্ররাস আজকাল বাড়িয়াই চলিয়াছে, কিন্তু ভাষালক্ষ্মীর প্রতি প্রদ্ধা ও নিঠার পরিচর বহক্ষেত্রে পাওয়া বার না। গর ভনিতে কে না ভালবাসে, এবং সেই কারণেই গল পোনাইবার আগ্রহ মান্নবের বাভাবিক। কিন্তু বাহন গোড়া হইলে গলটি গতিহীন ও ভারগ্রন্থ হইতে বাবা। 'অগ্নিমন্থন' উপন্তাসটি এই কারণেই সার্থক সৃষ্টি হর নাই।

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

স্বাধীনতার অপ্রলি—সংলক্ষিতা ও প্রকাশক: আন্ততোব লাইবেরী, ১, কলেজ কোরার, কলিকাতা ৷ পৃ: ১৬০ ; মূল্য—ছুই টাকা

বালো'সাহিত্যে কিলোর-কিলোরীনের উপবোগী করিয়া লেখা দেশের মৃত্তি-সংগ্রানের পূর্ণাল ইতিহাসের বিলেব অভাব রহিরাছে। শ্রীবৃক্ত বোগেশ-চল্ল বাগল প্রশীত জাতীর মৃত্তি আন্দোলনের, বিশেব করিয়া কংগ্রেসের ধারাবাহিক কাহিনী 'মৃত্তির সন্থানে ভারত' এই অভাব ব্যুলায়েশ পূরণ করিরাছে। আলোচা পৃত্তকথানিতে ভারতের রাজনৈতিক আনোলনের বিভিন্ন পর্বান্ধ, ধারা ও কাহিনী কিলোরদের উপবোদী করিয়া বর্ণিত ইইনরাছে। বাধীনতা-সংখ্যা 'নিত-সাধী'তে ইহার অনেকগুলি প্রবন্ধ বাহির হইরাছিল। এই পৃত্তক পড়িয়া কিলোর পাঠক-পাঠিকা লাতীর আন্দোলনের গোড়ার কথা, বিয়বী বাংলার তরুপদের আত্মণানের কাহিনী, নেতালী ও আভাদ হিন্দ কোলের বিবরণ প্রভৃতি অবগত হইরা অমুপ্রাণিত হইবে সন্দেহ নাই '

বহ মূল্য দিরা বাধীনতা অর্জন করিতে হর; ইহা রক্ষার প্রস্তুও দীও দেশপ্রেম, কাত্রবীয় ও আত্মত্যাগের প্রয়োজন। দেশের কিশোরদিরকে বাধীনতা-সংগ্রামের কাহিনী নিষ্ঠার সঙ্গে পাঠ করিতে হইবে। ইহার কলে দেশের জন্ম উৎস্থিতিপ্রাণ বীরবৃন্দের প্রতি তাহারা বেমন প্রকাবান্ হইরা উঠিবে, তেমনি নিজেদের জীবন গঠনের উপাদানও সংগ্রহ করিতে পারিবে।

'ঞাতীর পতাকা' নীর্বক প্রবন্ধে মাতদিনী হাজরা সম্বন্ধে একটু ভূপা ধবর আছে, মেদিনীপুরে থানা দখল করিতে গিরা তিনি প্রাণ দেন নাই। ঘটনাটি ঘটে তমলুকে; ১৯৪২ সনের ২৯শে সেপ্টেম্বর স্থানীর আদালত-প্রাঙ্গণ অভিমুখী দলের পুরোভাগে থাকিরা পুলিসের স্থানীতে তিনি নিহত হন i

করেকটি বদেশী গান ও করেক জ্বন দেশ-নেতার ছবি পুস্তকের নোষ্ঠব বৃদ্ধি করিয়াছে। বাঁধাই ও প্রচ্ছদপট উত্তম।

শ্রীনারায়ণচন্দ্র চন্দ

ত্ত্রের আলো—প্রমহেক্রনাথ সরকার। প্রবর্ত্তক পাব-লিশাস, ৬১, বহুবাজার ট্রাট, কলিকাতা—১২। দান – চার টাকা।

তাত্রিক উপাসনা সমগ্র ভারতে সর্বাপেক্ষা ব্যাপক ও বহুলঞ্চারিত।
অবশু ইহার নামমাত্র প্রবণে অনেকে নাসিকা কুকিত করেন—ইহার
কোন কোন অমুচান শিষ্ট সমাজে আপাতদৃষ্টিতে গর্হিত বলিয়া বিবেচিত
হইরা থাকে; অথচ ইহার তাৎপর্য অমুসদ্ধান অনেকেই করেন না—
ইহার পৃঢ় মর্ম্ম বুঝিবার আগ্রহ ও চেষ্টারও বিশেব পরিচর পাওয়া বার না।
কলে তত্রসাধনা ও তত্র সাহিত্যের ছুর্জের রহস্ত অতি অল্পসংখ্যক গোকের
নিকটই ফুল্টে বা পরিচিত। অপেকাকৃত স্ববোধ্য প্রাণদ্ধতি ও বিবিধ
অমুচানের।বিধিনিবেধও বে অনেকেই জানেন এমন কথাও বলা বার না।
এরপ অবহার তত্রের দার্শনিক তত্ববিলেবনের বে প্ররাস আলোচা প্রছে
দেখা বার তাহা বিশেব প্রশংসার বিবর সন্দেহ নাই। ফুণন্তিত প্রস্থকার
মহালর তন্ত্রোন্ত শিবতন্ব, শক্তিতন্ব, সদ্বিদ্যা, সন্তুতি, জীব ও উবর প্রভৃতি
বিবর আলোচনা করিরাহেন—হানে হানে বক্তব্য বিবর পরিক্ষুট করিবার
জন্য আকর-প্রস্থের উল্লেখ বা তাহা হইতে অংশবিশেব উক্তত করা হই-

# गक्रश्राल विषया किलकाणांत पद्म वहे किञ्चन

বে কোনও প্রকারের এবং বিভিন্ন প্রকাশকের নাটক, নভেল, ধর্মপ্রছ, ক্রমণকাহিনী, চিকিৎসা ও আইনের পৃত্তকাদি, ফুল-কলেজের ও উপহারের কন্ত বে কোনও ভাষার দেখা ও বিলাজী ভাল ভাল পৃত্তক আনুরা
সবত্বে কলিকাভার করে সম্বর সম্বরাহ করি। /১৫ ভালটিকিট পাঠাইলে
লাইরেরী ও উপহারের অন্ত নানাবিধ বৃত্তন পুত্তকের ভালিকা
পাঠান হয়। অর্ভারের সহিত বুলোর অর্জাংশ ছিলেই সমন্ত পৃত্তক ভিঃ
পিঃতে পাঠান হয়। পাাকিং, ভাকমান্তস ও বিক্রমকর মৃত্তর। বিশ্বিত ও
বিরাপক আরের অন্ত আমানের ছালা আমানতে চাকা আগুর।
অন্তল ৫০, চাকাও ক্রমা রাখা হয়। প্রতি ও সাস অন্তর ব্রম্ব বেওরা হয়।

কুণ্ডু পাব্লিসিটি সোসাইটা অব ইণ্ডিরা (গারিকেশন এও বুক-নেলিং ভিগাটনেই) ১৪০নং আবহাই ব্লিট, কলিকাভা—> রাছে। অবশ্ব অক্রানাক্ষারে আদ্বর তরের গৃচ রহন্ত ইহাতে কতটা আলোকিত হইবে বলা কটিল। প্রহের অনেক স্থলই বে অস্প্ট ও হুর্বোধ্য তাহা অবীকার করিবার উপায় নাই। ভাষাও স্বর্জন নির্দোষ নহে। প্রধান প্রধান তন্ত্রপ্রয়েহ—বিশেষ করিবা বে সমস্ত মূলপ্রয় অবল্যক করেরা বর্জনান প্রস্থান প্রস্থান প্রস্থান প্রস্থান প্রস্থান প্রস্থান প্রস্থান প্রস্থানর আহই আমাণিক নহে, তাই অবলম্বিত প্রস্থের প্রামাণি নিরুপণও আবস্থান দার্শনিক হত্তের প্রত্যক্ষ উপানর বাবস্থা তারিক পূলাও অনুষ্ঠানের মধ্যেই রহিরাছে এ কথা তারিক সমাজে স্থিদিত।

জীচিন্তাহরণ চক্রবর্ধী

ক্রিবাহিম—এনিদিকান্ত বহু। নব্যবাদলা সাহিত্য সঙ্ব, বালমবালার। মূল্য এক টাকা।

হালকা ধরণে লেখা বিজ্ঞপান্ধক নক্লা—আমাদের অন্থির চিন্তের, নিটাহীন মনের ছবি। চারি ধর্মের সমন্বয়—সংক্ষেপে 'ক্রিবাহিম'। আমরা সবই মানি অবচ কিছুই মানি না, ইহাই লেখক দেখাইতে চাহিরাছেন।

মায়াপুরী—- একুকলাস আচাল্য চৌধুরী। মন্নমনসিং বিশ্টোস বিষিটেড। মূলা ১।•।

ভরত, বংকুশিরো, কালিদাস, টুমান, প্রগতি গাসুলী, কাঞ্নমালা, রাক্ষমী এই কয়টি চরিত্র অবলম্বনে রচিত ভাবমূলক নাটকা। কথার ও গাবে আধুনিক নরনারীর হালচাল বর্ণিত হইছাছে।

সাঁজনা— ১ন ২ও। জীমরখনার বন্দ্যোগাধ্যার। পাট্লি, বলাগড় (হরলী)। মূল্য ১।•।

করেকটি গান। প্রাচীন ও নৃতন ছন্দ ও ভাষা-ভঙ্গীর উপর লেখকের অনায়াস অধিকার আছে।

শিল্পকথা—— এনলিনীকান্ত গুপ্ত। দি কালচার পাবলিশাস i ৬৩, কলেক ট্রাট, কলিকাতা।

লেখক পান্তিত্য এবং সমালোচন-নৈপুণোর জন্ম বিখ্যাত ) ভাঁছার লেখার একটি বাধীন চিন্তাশীল রসপিপাত্ম মনের সাক্ষাৎ পাই। কেবল বালো নহে, সংস্কৃত, ইংরেজী এবং করাসী ভাবা ও সাহিত্যেও ভাঁছার অনায়াস প্রবেশাধিকার। বিভিন্ন দেশের মনীবিগণের ভাবরসে ভাঁছার চিন্ত পরিপুট। বর্ত্তমান প্রস্কে 'শিলক্ষা', 'শিল্প ও জীবন', 'কবি ও বোগী', 'অনিরাদ্ধা কাব্যন্ত', 'মালামে', 'উপনিবদের স্থন্দর', 'কবিছের ব্রূপ', 'আধুনিক কবিছ', 'কাব্যের মহন্ত', 'কাব্য ও ছন্দ', 'ছন্দের অ-আ',

## জ্যোতির্বেদ সংরক্ষণোপায়

বহাভারত-ববি নির্দেশ প্রহণ করিরা, নির্দারিত বীবনগণের প্রার্কিত বাধা অপ্রাহ্ করন। ইতি— উৎদারাকালা দেবক; বহুকালের প্রদিদ্ধ "বীলকও সার্কিডোর চতু আরী" পরিচানক, "বিশুদ্ধ দিছাত পরিচানক, "বিশুদ্ধ দিছাত পরিচানক, "বিশুদ্ধ দিছাত বিশ্বত নির্দান বিশ্বত নির্

জ্যোতিবায়ুর্বেদ মতে সহজে ব্যাবিমূক্ত হউন।
চক্সুরোর্ড—বলবিদ বর্ণ বিবাত বাছিদ প্রদেশ "পভারতেকার লেপনী'—> কৌটা, তাক বক্ষসং এক টাকা বার। 'কৰিছের একট সূত্র', 'লোকোন্তর চেতনার কৰিতা', 'কাব্য ও নত্র', 'বব্য কাবা', 'ইংবাজী ও করাসী', 'বাংলা লিপি-সংকাব'—এই স্তেরট প্রবন্ধ আছে। সবগুলিই সামরিক পত্রিকার প্রকাশিত হইরাছিল। প্রাচীন ও নবীন উভর সাহিত্যেই লেখক জীবন-রহস্ত-রসের স্কান করিরাছেন। নব্য সাহিত্যের মুক্তনতা স্বন্ধে ভিনি সচেতন। 'লিপি-সংকাব' বিবরে ভিনি উৎসাহী নহেন, কারণ ভিনি অমুভব করেন "লিপি ভাবার জড় কাঠাযো বা সঙ্কেত মাত্র নত্ত। লিপিরও আছে একটা প্রাণ, প্রকাশ ক্ষমতা, সৌক্র্যা। ০০০ কাশকা হর, সারলোর গোহাই দিয়ে আমরা শ্রীহীনভার মধ্যে সিরে না পত্তি।"

শ্রীধীরেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়

উদ্দাম যৌবনৈ—উপস্থাস। একিতীশচক্র বন্দ্যোপাধার। প্রাপ্তিয়ান—পো: গড়িরা, ২৪ পরগণা, লেখকের নিকট। মূলা ৭

আলোচা পুতকথানি ভূপবাটক কিতীশবাবুর প্রথম উপস্থান। কিছ প্রথম উদাম হিদাবেও উৎসাহ দিতে পারিলাম না। কোন চরিত্রই কুটিরা উঠে নাই, অথচ অবাত্তব এবং অবাস্থনীর ঘটনার ভিড়ে উপস্থাস-থানি ভারাক্রান্ত। লেখক ভূমিকার তাঁর পুত্তক-সমালোচনা নিজেই করিরা নুতনত্ব দেখাইরাছেন।

সেরা মামুষ গান্ধীজী— শ্রীবিজররতন বদাক ও শ্রীপিরিধারী রার চৌধুরী। দি, দি, বদাক এও দল। ১২৭, মদজিদবাড়ী দ্রীট, কলিকাতা। মূলা—উপহার সংগ্রেশ ৮/০, স্থলভ সংগ্রেশ ৪/০।

মহান্তা গান্ধীর কর্ত্মমর জীবনের কাহিনীগুলি ছোটদের উপবোধী করিরা লিখিত হইরাছে। গান্ধীজীর সতানিষ্ঠার এবং মহৎ আদর্শের জীবন্ত দৃষ্টাপ্তগুলি ছোটদের জীবন গঠনে বথেষ্ট সহায়ক হইবে বলিরাই আমাদের বিবাস।

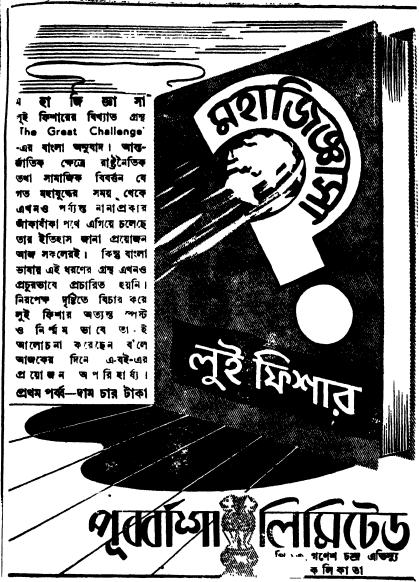
বাংলার দামাল ছেলে— প্রপ্রভাতকুষার গোগামী। অভিযান গ্রহমালার দিতীয় বই। পরিবেশক: সেনগুপ্ত এও কোং, ২।১ নবীন কুও লেন ও এ, কে পালিত এও কোং, ৮নং স্থামাচরণ দে দ্বীট, কলিকাতা। বুলা ১।•।

বিগত মহাবৃদ্ধের সময় বাংলার তথা ভারতের গৌরব স্থভাবচন্দ্রের অন্তর্জানের চমকপ্রদ কাহিনী হোটদের বৃথিবার মত সহজ করিয়া লিখিত হইয়াছে। পড়িতে পড়িতে বভাবতটে মনের মধ্যে বিশ্বর উত্তেজনা এবং বেদনার স্টে হয়। ইতিপুর্বেই প্রভাতবাবু "বাঘ সিংহের লড়াই" লিখিরা বিবর-নির্বাচনের জন্ত ধন্তবাদার্হ হইয়াছেন। বর্ত্তমান পুত্তকথানিরও আমরা প্রশংসা করিতেছি।

ঞ্জীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

অন্তর লৈ—প্রকানাইলাল বোৰ। উবা পাবলিশিং হাউস। ৩৪নং মহিম হালদার ট্রাট, কালিঘাট, কলিকাতা। মূলা হুই টাকা।

আমাদের সভ্য সমালে লোকচকুর অন্তরালে কত বে পাপ বাভিচার ও প্রশহতাা চলিতেহে, স্থুর্বের তুলে ছুরারোগা বাাবিতে আদ্রান্থ হইরা কত ব্রী-পূক্র বে নিজের লীবনে চরম ছুর্তাগ্যকে ভাকিরা আনিতেহে তাহার আর বন্ধ নাই। লেখক বর্জনান উপভাবে সমাজের নেই অন্ধনারাক্তর দিকেরই হবি কুটাইরা তুলিবার প্রদাস পাইরাছেন, কিন্তু ক্ষরতার অভাবে তাহার পুত্তকথানি রুস্পুট হিসাবে বার্থ হইরাছে। ইহাতে মা আহে প্রটের বাঁথুনি, না আহে ভাবার গাঁথুনি কিবো সার্থক চরিত্রপুট। 'কিবেল ভিজিল শোপালিই' ভাজার চৌধুরীর 'চেখারে' গভীর'রাত্রে প্রকের পার এক ব্যাভিচারী এবং ব্যাধিপ্রস্ত নরনারীয়া আসিরা নিজেবের অভীত ছুর্মেরর কথা বীলার করিতেছে। সেই নীর্থ ও ভারারানক ক্রিনা এতই বিরক্তিকর বে বৈব্য ধরিরা শেব প্রবান্ত পড়িরা উঠা সভবপর হর না। লেখকের অপুর্বা ভাবাজানের কডকভালি উৎকট সুটাভ নিরে বিভেটিই :



গাৰী-সাহিত্য

বীন্যারারণ অর্থানের পালী পরিক্রমা ২ গালীজির রাট পরিক্রমা ২ হাত্রদের গঠমসুলক কার্যাক্রম ৮০ শিক্ষার বাহ্ম ॥/০

ভাৰনা ও সভবাদ
নগেলনাথ সেন্ডৱের
ক্লেনা ১৮০
সঞ্জন ভটাচার্বের
কার্ল আরু ১৮০
অনিপ্রুমার বলোগাথ্যারের
ভাক্তির ১৮০
ব্রোধ বোবের
নির্কুম্ভ ক্লেম্ভ ১৮০

#### উপজ্ঞাস

সঞ্জয় ভটাচাবোর

হন্ত ১॥১০

সরামাটি (২র সং) ৩।০

কিনান্ত (২র সং) ৩।০
কলৈ দেবার (২র সং) ৩,
রাজি ৫,
কলোল ৫,
মোটাক (ব্যহ)
বৈনেন খোবের

ভিনরও ২,

হরপ্রসাদ শারীর বোদ্ধধর্ম : ৩১

(चरवन्त्र वरत्वत वक्षवंत्र (२३ गः ) 🧸 . কুৰোধ খোৰের পরশুরামের কুঠার(২র সং) ধ্ শ্ৰক্ষণ ভগাৰ ২া EIFSTOTZO FRE 平9**9** ( < 3 水 ) 510 #4 31/3. মতুম দিনের কাহিনী 🥄 मदब्दमाथ विद्वा পভাকা ১১ লোভিবিক নদীর (चनमा आ সৈয়ত ওয়ালীউল্লাহের • মর্মচারা ১॥০ ক্ৰিডা

শীবনানন্দ দাশের
মহাপৃথিবী ১॥।
অব্য প্টাচার্য্যের
সৈনিক ও অন্যান্য কবিডা ১।
অনিত বড্রের
পুনর্থবা ১॥।
সঞ্জন ভটাচার্য্যের
সম্ভানিতা (২র সং) ২,
বৌরনোজর ॥।
বুলুন দিন ॥।
ব্য প্র লিন ॥।
বিনেশ দাসের
কবিডা (১৩৪৩-৪৮) ১৮
গোগাল ভৌমিকের
ভাকর ১,

রাজনীতি ও অর্থনীতি প্রবোধচন নেনের
ধর্মবিজয়ী অবেশক ৩,
হনার্ন কবিরের
মোললেন রাজনীতি ৬০
টাটা বিভূলা প্রভৃতির
বোজে পরিকল্পনা (রুই ৭৩)
প্রতি ৭৩ ১১

বিহু বংগানির
মূতনভূষ্টিতে সমাজভন্নবাদ দ মাদ্যু ৮০ ডাঃ গোৰনাখন সম্পাদিত মুজোভর অর্থনীতি ৮০

পূর্ব্বাশা সিরিজ ভারতীয় নারী ও সমাজ।
ধর্ম ও নাতি ।
নমাজ ও সাহিত্য ।
নমাজ ও সংস্থৃতি ।
নমাজ ও বিজ্ঞান ।
নমাজ ও সমাজ ।
অন্ত্রীত ও সমাজ ।
অন্ত্রীত ও সমাজ ।
অন্তর্যুক্ত দেশ ও সাম্যুবার

উদ্বাসিত, মুহূর্তের দোহারে, লোকসজ্জার দোহারে, সার্থের দোহারে

— (এই দোহারের সানে কি দোহন করিরা), কোটরাগত চলু, গুর্ণাকরে ।
করণীয় কর্তব্য (অকরণীয় কর্তব্য কিছু আছে কি ?)। উপহাতে হেনে
উঠেছিলান। পিতার পৌরণছ (বীর্য) আছে। ইংরেজী জ্ঞানের একট্
মন্না: মিট ট্ ভেব। সিজিলেটিক প্রজন (চার-পাঁচবার আছে) এটা
কি রক্ম 'প্রজন' ?

আর দৃষ্টান্ত দেওরা নিতারোজন।

ছবি ছড়ার জহরলাল— এরিরিধারী রারচৌধুরী। রছাকর পাবলিনিং হাউন। ১৬৬-এ, রাসবিহারী এভিনিউ, কলিকাতা—২>। মূল, ৪০।

এই পুতকে ছবি ও ছড়ার পণ্ডিত জবাহরলাল নেহ্রের জীবন-কথা বশিত হইরাছে। ইহার এক পৃষ্ঠার ছবি এবং অক্ত পৃষ্ঠার রইটি করিরা ছড়া আছে। লেখক লেখার জবাহরলালের জীবনের যে ঘটনাগুলি বর্ণনা করিরা-ছেন, রেখার ভাহা বেন চোধের সামনে সৃষ্টিসন্ত হইরা কুটরা উঠিরাছে।

গ্রীনলিনীকুমার ভত্ত

১। কলিকাতা ২। পূর্বব ও পশ্চিম বঙ্গ ত। পূরী ৪। বারাণসী। ৫। দ। জিলিড ৬। দিল্লী—সি এ পার্বাই প্রান্ত ইংরেলী পুত্তক হইতে জীলনিত বোৰ কড় ক অনুষ্ঠিত। মাাক্মিলান এও কোং লিমিটেড, ১৯৪, বহৰালার ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য বধাক্রমে ৮০, ৪০, ১০, ১০, ১০১, ১০১, ৪০০।

পৃত্তিকাঙাল অন্তব্যক হেলেবেয়েনের মাত লিখিত হইবাছে। সংক ও বাক্ত ভারার বর্ত্তবান ভারতবর্তের বিখ্যাত নগরীঙালির প্রধান প্রায়গালনমূহের সংক্ষিপ্ত পরিচর দিরা লেখক ছেলেবেয়েনের মনে ভারতবর্তের মাহান্ত্য সবদে কৌতুহল উত্তেক করিতে চেটা করিবাছেন। উৎকৃষ্ট কাসকে হাপা, প্রায় প্রত্যেক পৃঠার নরনবঞ্জন হা-আভিত বিইঙালি ছেলেনের মনোরঞ্জন করিবে।

১। গীতাবীথি ২। ধারা—এবিজ্ঞাপাল। প্রান্তিহান, ---উবোধন কার্যালয়, বাগবাজায়, কলিকাতা। প্রত্যেকের মূল্য ২,।

প্রথম পৃত্তকথানি রাষকৃক-বিবেকানন্দের উদ্দেশে রচিত দীতাবলীর সকলন। গানগুলি ভাষা ও দল্ম এমন ক্ষ্মিষ্ট এবং মর্কাপানী বে, পাড়িয়া মুক্ষ হইতে হয়।

ষিতীর প্তকের ভাবধারা মৃততঃ এই বে, মানবের খনত পিশাদা খনত প্রেমমর ভগবানে খার্মমর্গণেই চরিতার্থতা লাভ করে। মহাদির্
হইতে কমলাভ করিয়া বারিবিন্দুসমূহ বেমন পাহাড়ের খার্মনার ভাহতেনে
স্থিত হইরা পুনরার সাগরের ভাকে পাবান্দারা জ্যে করিয়া কত বন-উপবন, প্রান্তর-লোকালর, মর্ম-কান্তার পার হইরা খাবনেরে মহাদির্
স্থিত মিলিত হইরা লান্তিলাভ করে, মানবের জীবনধারাও জেমনই খানত প্রেমমরের বাশীর ভাকে খাবীর হইরা শৈশব ও বৌধনের হানি-কারা ও মুবতুংধের শ্বতিবিজড়িত দিনের শেবে জীবনসারাকে ভগবানের খানে জ্ঞানে তম্মর হইরা খাস্ত্রহ হয়। লান্দিক মহেজাবাধ সরকার ভূমিকার ইহার একটি চমংকার ব্যাখ্যা করিরাছেন। সাহিত্যে দ্বাস্থ্য কবির ভাবের গভীরতা ও ভাবার লালিত্য প্রশংসনীর।

**बीविकस्य कुक नी**न

## (मम-विरम्दमंत्र कथा

বাঙালী বৈজ্ঞানিকের কৃতিত্ব

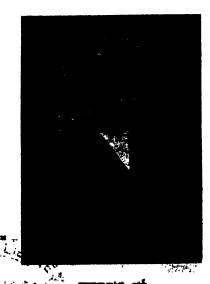
আমেরিকা, কানাডা এবং ইংলও হইতে উচ্চশিক্ষালাভ ও বৈজ্ঞানিক গবেৰণা সমাপ্ত করিবা প্রীযুক্ত হরেক্রক্ষার আচার্বা, পি-এইচডি (লগুন) ডি-এসসি (কলিকাতা) সম্প্রতি দেশে প্রত্যাবর্তন করিবাহেন। ডক্টর আচার্ব্য ১৯৪২ লালে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালর হইতে ডি-এসসি উপাধি লাভ করেব। ১৯৪৪ লালে তিনি সার তারকনাথ পালিত বৈদেশিক কেলোশিপ স্থতি লাভ করিবা আমেরিকা বাত্রা করেন। টানভোর্ড বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক কে. ডব্লু ন্যাক্বেন, এক-আর এস, কানাডার টরন্টো বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক পরলোক্সত ই. এক, বার্টন এবং লগুনের ইন্দিরিবাস কলেক্রে অব্যাপক জি. আই. কিনচ, এক-আর-এস প্রস্থুব বিশ্ববিধ্যাত বৈজ্ঞানিক্ষের সহিত তিনি গ্রেব্বণা-কার্যের বত ছিলেন।

প্রাকৃতিক রসারন ( Physical Chemistry ) বাতীত তাঃ আচার্ব্য ইলেকট্রন অপটক্স নাবে এক আগুনিক্তর বৈজ্ঞানিক গবেষণার বিশেষ কৃতির প্রদর্শন করিরাছেন। ইলেকট্রন রাইক্লোকোপ ও ইলেকট্রন তাইক্ল্যাকশন এই বিষয়ের অভ্যুক্ত। তাঃ আচার্ব্য কলিকাতা বিশ্ববিভালরের স্থান্বিদারী বোষ বৃত্তি এবং নাগার্জ্য প্রকারও লাভ করিবলি তার প্রচার্ব্য সংস্কৃত লাহিত্যেও বিশেষ পার্ব্যশী ।

প্রারকীবনে প্রবিদ্ধার করম পার্টশালার টোলে প্রকৃত প্রবাহন করিয়া ভিন্তি বিভাবিবোর ও ব্যাক্ষণতীর উপারি ১ কর লাভ করেন। বিপুরার সানবীর নবেশচন ভটাচার্ব্যের

অর্থাপুকুলো তিনি কানী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়ে কলিভ ও গ**িত** ক্যোতিষ এবং সাংব্য-বেলাভ প্রভৃতি দর্শনশাল অব্যাহন করেন।

ভটর আচার্ব্য ত্রেপুরা কেলার বাষধারা প্রামের অবিবাসী। ভাঁহার পিতা পরলোকগত ক্লফুমার আচার্ব্য এককম বিশিই পঞ্জিত ছিলেন।



्राचिम् २२५४ । इत् : २५८म चार्षिम, २०<sup>१४ ।</sup> ( विविध संगटन सहेवा )

্বলালেশ্যর তান শিশ্যিপ্রশাদ হর







"সত্যম্ শিবম্ স্থলবম্ নায়মাস্থা বলহীনেন লভ্যঃ"

8৮**씨 회**의 23 학명

# भित्र, 50PP

৩ক্স সংখ্যা

## বিবিধ প্রসঙ্গ

কংগ্ৰেস অধিবেশন

হাৰীন ভারতে কংপ্রেসের প্রথম অধিবেশন আরম্ভ হইভেছে। কংগ্রেসের চালক-পরিষদ ভাষার পূর্বে দিলীতে बिनिष्ठ स्टेश नानाश्रकात सन्नमा-कन्नमा कविशास्त्रन । जाना-রণের সন্থুৰে ভাহার কিছু বিবরণ প্রকাশিত হইয়াছে, কিছু चरम त्वाव एव अवस्थ हाना चारए, करत्यामत चवित्वमानद মধ্যে ভাহার পরিচয় পাওয়া যাইতেও পারে। দিলীর अवाकित्रांन महत्नत कथात तूबा यात त्य, ठानक-शतियर क्कीय ७ श्राटमिक मित्रभानीय छेनय बारमन-छेनरम দানের অধিকার পাইতে ইচ্ছুক। মন্ত্রিমঙলীর বাহিরে যে সকল কংগ্রেসের হোড়ল নিবিল-ভারত কংগ্রেস ক্ষিটির পরিচালকরণে বিরাক করিতেছেন, তাঁহাদের বক্তব্য এই যে क्कीय ७ शारमिक मित्रमण्मी छन कर्धारमय-वर्गर তাঁহাছের—আঞাবাহী হওয়া উচিত, নতুবা দেশশাসনে ও **ग**तिकामस्य करत्यस्यत्र चापर्य तका मस्य स्टेस्य मा । अस्थ ৰাবি সভ্য সভাই ব্ইয়াহে কি না ভাৰা সঠিক না ভানায় আমরা ভাহার বিচার মূলতুবী রাবিলাম।

কংগ্রেস-চালক-পরিষদ অধিবেশনের পূর্কারে ব্যরের কারতে বে সকল প্রভাবাবলী প্রকাশ করিরাহেন ভাষা হুটে মনে হর বে প্রস্তুপ কোনও একটা ওও অভিযান সভ্য সভাই চলিভেছে। নহিলে বাবীন ভারতের প্রথম কংগ্রেস অধিবেশনে প্রস্তুপ অবাত্তব কারা আওরাক ও সার্ উভেউপূর্ণ ভূষা কথার ছিনিমিনি বেলা হুইত না। দেশের সাধারণের হুঃবক্ট বা অভানতা নোচনে দেশের চালক্ষিণের প্রতি কোন নির্বেশ ইহাতে নাই, কংগ্রেসের আদর্শ বর্জা হুইরা কো কিরণে অনাচার্যার হুইভেছে ভাহারও কোন আলোচনা প্রস্তু ইহাতে নাই।

স্থাত্তে বহাদা গানীর সম্পর্কে বে প্রভাবনা ভবিষা পরিবদ দ্বভিতর্গণ ও কর্ত্তন্য পালবের পর্বা পের ভবিষাহেন ভাষার নারাংশ নিয়ে দেওবা হইল:

শ্ৰীৰ বাৰীনভা-লংগ্ৰানে কংগ্ৰেসকে কৰবও জেপ, কৰবও সাৰ্বভ্ৰা, কৰবও বিজয়, কৰবও প্ৰাত্ত্ব বৰণ ক্ষিতে হইরাবে। কিন্ত কাভির কনকের প্রহান নৈতৃত্বে এই ক্লেপ কনসাধারণকে অধিভয় করিয়াবে, পরাক্তর কাভীর প্রচেষ্টার বিশুব উৎসাক্তর স্কার ক্ষিয়া বিশ্বের প্রচনা করিয়াবে।

"হই বংগর পূর্ব্বে এক সকটকালে মীরাট শহরে কংপ্রেসের অবিবেশন হর, এই সক্টের মধ্যেও মহাদ্যা গাড়ীর নেতৃত্বই লাভিকে পরিচালিত করিরাছে। এই হই বংগরের মধ্যে আমাদের কতক পরিমাণ সার্থকতা আসিরাছে, দীর্থদিনব্যাপী বাধীনতা-সংগ্রাম সাকল্যমভিত হইরাছে। কিছ একত আমাদের যে মূল্য দেওরা হইরাছে, তাহা বুবই বেশী। ক্ষম্পুরিকে বিপতিত করা হইরাছে। এই অবাহিত দেশ বিভাগে অনসাবারণের মধ্যে উন্নতা কেবা দের। মনে হর বে, কংগ্রেসের আদর্শ তাহারা ভূলিরা গিরাছে। গাড়ীলীর উহাছ বাধী সেই অভকারের মধ্যেও আলোকরন্ধি বিকীর্ণ করে, শোকাভিত্ত অসংখ্য মরমারী সেই বাধী হইডে শক্তি ও সান্থনা সংগ্রহ করিরাছিল।

"ইহার পর আবাদের প্রতি চরম আবাত আসে। প্রেম এবং শাভির প্রতীক যিনি, ভারতের অপরাজের অভরাদ্বার প্রতীক যিনি, সেই মহাদ্বা গানীকে হত্যা করা হইল।

"ইহার কলে কংবেসের দীর্ব সংগ্রাম সাফল্যমণ্ডিত হইলেও ইহা মুক্তির আনক না আমিরা হংব এবং বিভাতই আমিরা বিল।

"বাৰীৰতা অৰ্কনের বোল মাস পরে এবং কংগ্রেসকে বিনি গঠন করিরাছেন, ইহাকে সন্ধীবিত করিরাছেন উাহার বৃত্যুর প্রার এগার মাস পরে কংগ্রেস নেই মহান আলা এবং উাহার বানীর প্রতি প্রয়ান্ত্রনি অর্পন করিতেছে এবং প্রতিক্রা করিতেছে বে, নেই সন্ধীবনী বানী অন্তুসরণ করিরাই কংগ্রেস ভারত ও বিশ্ব-মানবের সেব! করিরা বাইবে।

"ভারত খাৰীনতা পাইরাহে, কিন্ত ইহার কলভোগের কর আনাদের হারিছ এবং কর্তব্য পালন করিতে হুইবে। কংকোন-লেরীদের নবে রাখিতে হুইবে জনসেবার ভার এহণ করিবার ভরকারিছ ভাহাদের রহিরাহে এবং বাহারা এই হারিছ এবং কর্তব্য ভূলির। ছাত্রী এবং ক্ষরতার কর লালারিত হর, ভাহারা হেশের অহিতলাধন করিতেহে। "ভারতীর অ্যসাধারণের বব্যে ঐচ্যের এবং বিলনের ভাব ইতি করিতে হইবে, ত্রেই-বিভেল চুর করিতে হইবে এবং লাভিপূর্ব উপারে প্রেইহীন গণতান্ত্রিক সমাক গভিরা ভূলিতে হইবে, ইহাই বিল গাড়ীকীর উপদেশ। তিনি বলিরাহেন, নৈতিক আদর্শের প্রতি অবিচলিত বাকিতে হইবে, ইহাই ভীবনকে অবপূর্ব করিবে।"

এই তৰ্ণবৃহত্ত প্ৰভাবটিতে বিশেষ প্ৰট্ৰয় এইমান বে, বেশণিতার আক্ষিক মহাপ্ৰৱাণের অব্যবহিত পূৰ্ব্বে ও পরে কংগ্রেসের তবিস্তং অঞ্জগতি ও আবর্ণ সম্পর্কে উহার বলিবিত বে সকল নির্দেশ "হরিজনে" ও সামরিক পত্রে প্রকাশিত হইরা-হিল সে সম্পর্কে কংগ্রেস-চালক-পরিষদ একেবারে নীরবতা অবলম্ব ক্রিয়াহেন।

## मक्तांत्र भारिक ७ श्रुनिम

সর্ধার বন্ধতভাই প্যাটেল ভারতীর কংগ্রেস-শাস্থবরের সম্ম দক্ষিণ বাছ বন্ধপ এবং তিনি বাছবেও বিধাসী। ওাঁহার ভীবনের সন্মা উপহিত, এবন ওাঁহার খোলা কথা বলিবার সময় হইবাছে। দিল্লীর পুলিসবাহিনীকে তিনি বলিবাছেন:—
"আপনারা ক্ষমেবার মনোভাব লইবা কাল ক্ষিবেন এবং ক্ষন্সাধারণের আছাভাক্ষম হইবেন।" "ক্ষন্সাধারণ প্রব্রেক্ত সম্পর্কে কি মনোভাব পোষণ ক্ষিবে তাহা প্রধানতঃ আপনাদের কালের উপরই নির্ভর করে।"

"ভারত খাৰীৰ হইবার পূর্ব্বে পূলিসের কাজের কলে জন-সাবারণের সহিত ভাষাদের প্রায়ই বিরোধ উপস্থিত হইত। পূলিস তথন জনসাবারণের নিকট অপ্রিয় ছিল। সম্প্র দেশ-ব্যাপী পূলিসবাহিনীর এই কুখ্যাতি রহিরাছে। এই কুখ্যাতি আজও সম্পূর্ণ দূর হয় নাই। এত হীর্ষাদন ব্যাহার অভিছ ছিল ভাষা দূর হইতে সময় লাগিবে।"

"কিছ বর্তমানে ইয়ার পরিবর্তন প্রয়েশন। ভারত
যাবীন হইবাছে এবং ছাতীর গবছে তি প্রতিষ্ঠিত হইবাছে।
পূলিস এবং জনসাবারণের মনোভাবেরও পরিবর্তন হওরা
প্রয়েজন। দক্ষ এবং জনপ্রির পূলিসবাদ্নী বাতীত গবছে তি
পরিচালনা সভবপর নহে। আভ্যন্তরিক শান্তিরকা করা
পূলিসের কার্য্য এবং সক্ষত্তে শান্তি রক্ষিত লা হইলে নাগরিক
ভীবন বাপন অসভব হইরা পর্তে। স্নভরাং পূলিসের কার্য্য
ভক্ষপূর্ণ এবং সরকারের জনপ্রির্ভা তাহাবের কার্য্যের উপরই
নির্ভির করে।"

"পূলিদ্বাহিনী এমৰ শক্তিশালী হওৱা প্ৰৱোজন বেৰ আত্তম্ভৱিক শাভিত্ৰকাৰ জন্ত কৰ্মত সৈত্যাহিনীয় প্ৰৱোজন না হয়। সৈত্যাহিনী বেশের সীবাভ ফল ক্ষিমে, আতাভৱিক শাভি বকার জন্ত সৈত্যাহিনীয় সহায়তা প্ৰৱোজন হইলে উহা প্ৰথ্যেকেই সক্ষতার প্রিচারক নহে।"

শ্ৰাণনারা অনুসাধারণের স্বধ্যাসিতা ভাতের চেটা ভারিবেদ এবং ভারাধের আত্মভার্যন হইবেন। ইয়া বুর ভটিন ভাজ নহে। পুলিন বহি আভবিকভার সহিত জন-সাবারণের নেবা ভরে, জনসাবারণের সহবোগিতা বা পাইবার ভোল ভারণ নাই। পুলিনবাহিনীর সকলেই শাভিভারী জনসাবারণের সেবড়। বাহারা আইনভদ ভরে তাহাবের প্রতিও ভঠোর ব্যবহার করা উচিত নর। ইহাবিগকে শাভিপ্রির নাগরিক ভরিরা ভোলাই পুলিসের ভাজ।"

ইহা বুব আলাপ্রত বাঁটি ভাষণ। কংগ্রেস-নেত্বর্গকে এই জাতীর কিছু উদ্দেশ দিলে বেশের উপকার হয় বলিয়া আয়াদের বিধাস।

শাসনকার্য্যে কংগ্রেস-কন্মীদের হস্তক্ষেপ

শাসনকার্ব্যে, বিশেষতঃ কৌক্লারী বানলার বিচারে, কংগ্রেস ক্মিটসর্ক্রে সভাপতি ও সম্পাদকদের হতকেপ প্রার নিতানৈমিভিক ব্যাপার হইরা ইাড়াইতেতে এবং ইহার কলে বিচারবিঞাট প্রারশঃই হটতেতে। ভার বিচারের পরিপদ্ধী এই বর্গের কার্ব্যে সাধারণ লোকের যেনন অহবিবা হটতেতে, তেমনই লোকে কংগ্রেসের উপর বিরক্ত হইরা উটতেতে। কংগ্রেসের অন্তর্কুক্ত করেকলন লোকের এই ফার্ব্যের কলে সাধারণ লোকে সমগ্র কংগ্রেস-প্রতিষ্ঠানের উপর দোবারোপ করিতে আরক্ত করিরাতে। কংগ্রেসের স্থানের পক্ষে ইহা অত্যক্ত হানিকর।

সম্ভাত পাটনা হাইকোটের প্রধান বিচারপতি একট মামলার বিচারকালে কংগ্রেস-কন্মীদের এই ধরণের কার্যা-কলাপ সম্বৰে ভীৱে মন্থব্য প্ৰকাশ করিয়াছেন এবং বলিয়াছেন বে, আৰালতে মাধলা চলিতে থাকাকালে কোন কংগ্ৰেদ-কৰ্মী পক বিশেষের হটয়া কোন বিপোট বাধিল কবিলে ভাষা আদালত অবহাননার সামিল বলিয়া পণা করিতে ছইবে। কারণ উলা আলালতের বিচারকে প্রভাবাহিত করে। পাটনা হাইকোটের প্রধান বিচারণতি তাহার রারে তীত্র मध्या क्रिया वर्णन (व क्लोक्शाबी मामनाव विज्ञाबकारन करत्वन-क्योरियत स्थापने वक त्वी बहाराज्य, देश वब स्थ्या হরকার। এই বরবের হতকেপ হওরামাত্র ভাহাদিগকে আখালত অব্যান্নায় অভিযুক্ত ক্রিবার বত প্রবাদ বিচারপতি नित्र चानामछनपुर्दक निर्द्य निवाद्य अवर वनिवाद्य (व, হয় উহারা নিকেরা উহা করিবেন নতুবা হাইকোট কে क्षानाहरूतमः, शहरकाहि धाशास्त्र मारम क्षानाक क्षतमामान चिंदिन चानित्वम । विद्याद्यत्त अवके मर्द्रमा कर्धान ভ্ৰিট্ৰ সভাপতি এক ভবি বৰ্ণনের বাবলার হতকেণ ভ্রিবা बाजिटडेटडेव विकडे विट्लार्ड बाबिन कविवाविटनम अवर উহাতে যামলার বোড় ছবিয়া বাব। ব্যাপার হাইকোট পর্যন্ত পভাইলে প্রধান বিচারপতি উপরোক্তমণ তীব্র মন্তব্য করেন।

বাংলাবেশেও এই জেবীর হতকেশ বুব বেশী রক্তন আরভ হইরাতে। এবালে এই অভার আর বেশী চুর অঞ্চলর হইবার পুর্মেই বত্ত হওরা বয়ঞ্চার।

## ব্যক্তিস্বাধীনতা

ভারভবর্বের শৃতদ রাষ্ট্রবিবিতে ব্যক্তিবাবীনতা সম্পর্কিত বারাট সামাত সংশোধনের পর গৃহীত হইরাছে। রাষ্ট্রবিবির ১৩ বারার ব্যক্তিবাবীনতার বর্ণনা দেওরা হইরাছে এবং > বারার বলা হইরাছে বে, ব্যক্তিবাবীনতা সভোচ করিরা কোন আইন ভারতবর্বের কোন আইনসভা পাশ করিতে পারিবে না। প্রচলিত আইনসবৃহের মধ্যে যেগুলি ব্যক্তিবাবীনতা বারার পরিপত্নী সেগুলিও বাতিল হইরা যাইবে। মাহুবে মাহুবে বৈষ্ণাবূলক কোন ব্যবহা অবস্থ ব্যক্তিবাবীনতা—রূপে গণ্য হটবে না এবং তাহা দূর করিবার হুত আইন প্রণয়নে কোন বাবা থাকিবে না।

ছাইবিশির ১৩ ধারার রাষ্ট্রের প্রত্যেক নাগরিককে নির-লিখিত অধিকারসমূহ দেওয়া হইরাছে:

- ( ১ ) বক্ষুতা ও রচনার হাবীনতা।
- (২) নিরম্ভ ভাছিপুর্ব সমাবেশের স্বাধীনতা।
- (৩.) সত্ত ও ইউনিয়ন গঠনের স্বাধীনতা।
- ( 8 ) ভারতের সর্বান্ত অবাধে চলাকেরার বাধীনভা।
- ( e ) ভারতের যে কোন স্থানে স্থারী ও অস্থারী বস-বাসের কারীনতা।
  - (৬) সম্পত্তি অর্কন, ভোগ ও বিরুবের স্বাধীনতা।
- ( ৭ ) ব্যবসা বাণিক্য প্রস্তৃতি দ্বারা কীবিকার্জনের স্বাধীনতা।

প্রত্যেকট স্বাধীনভার উল্লেখের সলে সলে কিছ আবার ঐ-শুলি সভোচ করিবার অধিকার রাষ্ট্রকে দেওয়া হইয়াছে। ইহাই ভারতীয় রাষ্ট্রবিধির ব্যক্তিশাবীনতা সম্পর্কিত ধারাটর বিশেষৰ। যথা বঞ্জাও বচনার বাধীনতা ১৩ (১) (क) बाताब बीकात कतिया ১७ (२) बाताब वना इटेसाट्ट (य मान-হানি, সিভিশন অথবা ছুৰ্নীভিত্নক কাৰ্য্যকলাপ অথবা ৱাষ্ট্ৰের क्मण वा विवश्य सारमाती काद्यकां समृष्ठि निवादावद ঘত বক্তভা ও রচনার খাবীনতা সভোচ করিয়া খাইন প্রণয়ন **फ्रिंटन छोड़ा ১७ (১) (क) बाबाब পরিপন্থী इटेटन ना।** অভাত বিষয়প্তলি সম্বন্ধেও এই ভাবে স্বাধীনতা দানের সঙ্গে সলে স্বাধীনতা সন্ধোচের অধিকারও দেওরা হইয়াছে। গণ-পরিষদে বিতর্কের সময় কথা উঠে বে আমেরিকান রাইবিবিতে वाकियांवीमणात श्रमिष्ठि मरका एक्सा स्टेशांट अवर काम সমবেই উহাতে হন্তকেণের কোন ক্ষতা দাসন বিভাগ বা चार्वित्यातकारम्ब (विश्वता एव मारे। (भीरम प्ररे मेक वरमद বাবং এই ব্যবস্থা চলিত্রা আসিতেতে। ভারতীয় রাইবিবিতেও वाकियांबीवणांत मरका निर्द्यम और णादवर दश्वता छेठिछ । अरे প্ৰভাব গৃহীত হর নাই। রাইবিধির বসভার বারাওলি বেভাবে ৰ্ণিভ ব্টৱাহে দেই ভাবে গৃহীত ব্টৱাহে। ব্যক্তিবাধানতার ৰজোচ বে কি ভাবে হইভে পাৱে ভাহা বৰ্জনাৰ **এচনি**ভ

निकिडिकि चारेत्व त्वया निवादकः। चारेनके क्यानिके वयत्यव बूबा फेरकड़े महेबा अनेक एव किस भटन छेहा तकारन अबूक হইতেহে ভাহাতে স্থানিচিত ক্রামিট বিরোধী ক্র্মীও উহার ক্ৰল হইতে ৱেহাই পাৱ নাই। সম্ৰতি আইনট সংশোৰৰ ক্রিরা এমন করা হইরাছে যে উহার প্রয়োগ ব্যাপারে হাইকোর্টেরও হতকেপ করিবার কোন ক্ষমতা নাই। অবীং ব্যক্তিশাৰীনতা সম্বোচনুলক ত্ৰন্ধান্তইর প্রয়োগ এবন শাসকদের ছাতে নিৱত্বশ ভাবে বর্তিয়াছে। ভবিত্রতেও এই ভাবে রাষ্ট্রে ক্ষতা ও বনিয়াদ ধ্বংসকারী কার্যাকলাপ নিবারণের নাৰে ব্যক্তিবাৰীনতা সভোচৰূলক আইন প্ৰণৱন করিয়া উহা विशक पत्नत वा वाकित क्षेत्र क्षेत्र करेरव धरे जानका चार्रा चन्नक नटर । ১७ बादाव चढ्छ: बव्हेट् छेटबर থাকা উচিত হিল যে ব্যক্তিহাৰীনতা সংহাচমূলক কোন আইন প্রণয়নের সমরে আদালতের ক্ষতার হন্তকেপ করা চলিবে না। আলালত সম্পর্কিত পরিচ্ছেদ আলোচনা কালেও এই ব্যবস্থা করা বাইতে পারে।

ব্যক্তিবাৰীনতার সর্বপ্রথম বিষয় বিনা বিচারে শ্রেপ্তার না হওয়ার বাৰীনতা বীক্তত হয় নাই।

**এই প্রসঙ্গে ভার একট বিষয় বিশেষভাবে উল্লেখ**যোগ্য। ব্যক্তিবাৰীনতা সম্পর্কিত বারা আলোচনার দিন পণ্ডিত জন্ম-নাৰ কুঞ্জুল ভাইন-প্রেসিডেন্টের দৃষ্টি ভাকর্ষণ করিয়া বলেন বে গণ-পরিষদে কোরাম নাই। তখন কোরামের খণ্টা বাজানো হয় এবং করেককন সদস্ত উহা শুনিরা পরিষদগৃহে প্রবেশ कृत्वन । कांबाबा श्रविषय-गृह्य चार्मशात्मरे विस्तान किन्द আলোচনার যোগদানের ব্রভ উপস্থিত থাকিবার প্ররোক্ষ বোৰ করেন নাই। ইঁহারা আসিবার পরও উপস্থিত সদস্য-সংখ্যা নিভান্ত কম মনে করিয়া ভাইগ-প্রেসিডেউ ১৫ মিনিটের क्क शतिवासत काक मूनजूरी बार्यन। ताक्षेतियि अगत्रम, বিশেষভাবে ব্যক্তিয়াৰীনভাবুলক পরিচ্ছেদ আলোচনার বর্ত্তমান কংবেদ সদস্যক্তির উৎসাহ ও দারিয়বোৰ কতবানি এই ৰটনা ভাহার সামার পরিচর মাত্র। ইঁহারা বে কার্ব্যে প্রেরিত হুইরাছেন ভাহার জত বিল্লী বাওয়া-আসার প্রথম-শ্ৰেণীর গাড়ী-ভাড়া ব্যতীভ সেধানে অবহানের ভড় বোৰ হয় দৈনিক ৪৫ টাকা করিরা ভাতাও পাইভেছেন।

ভারতরাষ্ট্রের ও পাকিস্থানের সীমানা

গত ২২শে অঞ্চারণ হইতে এই চুই রাট্রের প্রধানগণ বৃত্ন দিলীতে বিলিত হইরাছেন। সংবাদ পাইলাম যে এই সন্মেলনের প্রথম দিনে ১ট ক্ষিট গঠিত হইরাছে। তাহার মধ্যে চতুর্বট হইতেছে ভারতরাট্রের পূর্ব ও উভর-পশ্চির নীয়াছের নানা "পাকিহানী" গওগোল লইরা। সংবাদপত্রে এই বর্ণনা প্রকাশিত হইরাছে—পূর্ববিদ-পশ্চিমবন্দ, পূর্ববিদ-ভাসার এবং পূর্ব-পঞ্চাব-পশ্চিম-পঞ্চাবের ুনীবানা-বিরোধ

**ভ্ৰিটি পূৰ্ব্বৰ ও পশ্চিম্বৰ্গের, পূৰ্ব্বৰ ও আ**সামের এবং **পूर्वतक ७ जिन्**वाब जीमामा विटवान ७ घडेमांवजीव अवर পূৰ্ব-পশ্চিম পঞ্জাৰ সীমান্তের ঘটনাবলীর আলোচনা এবং (১) বিরোধসমূহের মিপান্তি ও (২) এইরূপ ঘটনাবলী বন করার উপর্ক্ত ব্যবস্থা সম্পর্কে প্রভাব করা। আমরা পূর্ব-পঞ্চাবের পশ্চিম সীমান্তে পোলাগুলি বর্ববের কথা ভানিরাছি: সন্মেলনের অবিবেশন সময়ে পর্যন্ত তাহা চলিতেহে; উভয় बाद्धेव पूनिय-वाहिमी पर्वास हेशांट निर्छ। , मश्वामपट्सव বিৰৱণ পাঠ ভৱিষা এই ব্যাপাৱে দোষী-নিৰ্দোষী নিৰ্দেশ করা সহক নর এবং কলিকাভার বসিয়া ভাষা করিতেও চাহি না। ভারভরাট্রের পূর্বে সীমান্তের উত্তর হইতে দক্ষিণে ৰে বিভাগরেখা ব্যাভক্লিক সাহেব টানিয়া বিয়াহেন আসাম হটতে বলোপদাপর পর্যন্ত, তংগছত্তে আমাণের প্রত্যক অন্ধ-বিভার অভিন্নতা আছে। তাহার কলে আমরা বলিতে চাই-পর্ববদের "পাকিছানীদের" লোভ সংবত না হইলে, इरे ब्रांक्षेत्र मत्या भाषितका कता कठिम रुटेरव । बुनियानाम ध **ভাছাড় ভ্ৰুনে যে চোরাগুরি ভাক্তমণ, প্রতি-ভাক্তমণ** চলিতেছে, ইহার উল্লেখ না করিরাও আশহার কারণ আছে।

मिन्नीत जत्यमत्म बहे जन कथा छेठित। किन्छ ४म१ ক্ষিট্র নির্দেশনামার মধ্যে একটা বিষয়ের অসুরেধ দেখিয়া আমরা আকর্যাবিত হইয়াছি। র্যাডক্লিক বাঁটোরারা-নামার সংশোধনের কথার উল্লেখ কেন করা হয় নাই, ভার কারণ আমরা বুঁজিয়া পাই নাই। "আনক্ষবাজার-পত্তিকার" সন্পাদক ঞীচপলাকাভ ভটাচার্য্য এই বিষয়ে বার-তেরট প্রবন্ধ লিবিয়া শ্ৰমাণ করিয়াছেন যে এই বাঁটোয়ারা-নামার সংশোধন অপরিহার্য। এতংসম্বন্ধে তিনি পূর্ব্যবন্ধ ও পশ্চিমবন্দের তদানীত্বৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী কৰাৰ খাজা নাজিমুদ্দিন ও ডা: প্ৰসুদ্ধচল বোষের ১৯৪৭ সালের ১৯শে আগষ্টের বিবৃতির একাংশ উদ্ধুত করিয়া আপনার দাবীর যুক্তি প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন: "বর্তমান বাঁটোয়ারার সামগ্রন্ত বিবানের ভর ভারত ও পাকিছানের নেতারা ভবিষতে পরন্দর আপোষ বন্দোবন্ত ক্ষিবেন: ইহার প্রতিবন্ধক কিছু নাই।" উক্ত বাঁটোরারার বিরুদ্ধে ছুই পঞ্চেরই "আপন্তির হেতু আছে," এই খীকৃতির **शब (कम बहे विशव जात्मावन) जांबल रह गाँहे, छारा** चानिए रेक्टा रह।

## পাকিস্থান ও ত্রিপুরা রাজ্য

ত্তিপুরা রাজ্যের উপর প্রার ছই মাস যাবং পাকিছানীবের আক্রমণ চলিতেছে। রাজ্যটির অবনৈতিক অবরোব বসানো হইরাছে বলিলে অভ্যুক্তি হর না। রাজ্যের কর্মচারীবের সীমাজের নিকটে পাইলেই পাকিছানীরা তাহাহিনকে ভোর ক্রিরা ব্রিরা দাইরা বাইতেছে; অনৈক করেই অফিসারকে

অভিনয় দৃশংসভাবে হত্যা করাও হইরাছে। রাজ্যের মব্যে হানা
দিরা সূঠ করা, বরে আগুন দেওরা প্রভৃতি জ্বনেই বাছিতেহে এ
বিপুরা রাজ্যের মুসলমান প্রকাবের উপর অভ্যাচারের
কালনিক কাহিনী প্রচার করিরা পাকিহানীবের উত্তেজিত
করা ইইতেহে এবংএই কার্ব্যে নোরাধালীর জনৈক সুধ্যাভ
লীগনেতা সকলের অপ্রদী বলিরা সংবাদ পাগুরা গিরাছে।
এই সমভ কার্বই কলিকাতা আভাভোনিনির চুক্তির পরিপহী,
বছবার পূর্বেবল সরকারকে এই সমভ অভার কার্ব্যের বিবরণ
ভানাইরাও কোন কল হয় নাই।

আটোবর মাসের শেষের দিকে নোরাধালী এবং বিপুরা ক্লোর এই মর্শ্বে এক ছাপানো ইস্তাহার বিলি করা হইরাছে বে, বিপুরারাজ্যের ভারত ভোমিনিরনে বোগদান নিক্ষনীর কার্ব্য হইরাছে এবং বিপুরা রাজ্যের প্রাকৃতিক সম্পদের প্রকৃত অবিকারী পাকিছানীরা; কোন পাবিব শক্তি পাকিছানীদের এই অবিকার হইতে বঞ্চিত করিতে পারিবে না।

এই ব্যাপারে পূর্ববন্ধ সরকারের ম্যানিট্রেট ও পূলিস প্রভৃতির নিজিবতা ও উদাসীনতা বিশেষভাবে সক্ষর। "আজাদ" পত্রে পূর্ববন্ধের জনৈক মন্ত্রীর যে সব উচ্চি প্রকাশনত হুইরাছে তাহাতে ঐ গবর্ষে তের কর্ণবারণণের বিপুরা সম্বন্ধে মনোভাব কি তাহা বুকিতে কিছুবাত্র কট হর না।

## পশ্চিমবঙ্গে ক্ষাত্রবৃত্তি

পশ্চিমবঙ্গে সামরিক সংগঠন সম্বৰে একটি প্রবন্ধ আছে প্রকাশিত হইল। ১৯৪৭ সালের আগষ্ট মাসের পর হইতে প্রতি মাসে 'প্রবাসী' পঞ্জিবায় যে সব সম্পাদকীয় মন্তব্য এই विषय अक् निज इरेशार, अवल-लियक जारा अमान-अर्बारन সমর্থন করিয়াছেন। শ্রীমনবাহাছর সিং ছাতিতে গোর্থা হইলেও আহর্ত ও মনন্দ্রলভায় ভাঁহাকে বাঙালী হইতে পুৰক করিয়া দেবিবার উপায় তিনি রাবেন নাই। এই প্রবন্ধই ভাষার শ্রেষ্ঠ নিদর্শন। একজন অবাঙালী এমন বরকরে বাংলা লিখিতে ও विनिर्दे शादान, जाना अन्दन विचान क्या क्षीन । किस निर वहांनेत (म चनांवा मांवन कृतिशांदिन। छांहांत अन्दक्त मर्ताहे পরিচয় পাওয়া যায় বে. প্রায় চলিপ বংসর হইতে তিনি वांकांनी कीवरमञ्जलक मिला शिजांदिम । अवस विवेश्रदेश সময় 'বাঙালী পণ্টনে' যোগদান হইতে আৰু পৰ্যাত তিনি বাঙালীর মধ্যে ভাতর্ভি পুনরপানের ছয়ত কার্য্যে আছ-निर्दात कृतिबारकन विनाम जनात स्टेर्ट मा । अटे विवरत ভাহার বাতৰ ভান কভ গভীর বর্ডমান প্রবদ্ধে ভাহার পরিচর পাওরা বার।

পশ্চিমবদে সামরিক বৃদ্ধি প্রবর্তন করা সহক হইবে না।
এই বিষয়ে আমরা প্রতি সংখ্যার আমাদের নেতৃবর্ণের মনোবোগ আকর্ষণ করিবার চেঙা করিবাছি। এই প্রদেশের মুইটি
মন্ত্রিমঙল—ডাঃ প্রাকুল্লি খোর ও ডাঃ বিধানচক্র মারের

নেতবে গটিত। ইহাবের প্রভ্যেকের নিকট আমরা মাসের পর বাস এই সহতে আবাদের নিবেদন আনাইতেতি। ডাঃ বোষের নিকট হইতে কোন উভর পাই নাই: গাড়ীবাদী বলিয়া বোৰ হয় সাম্বিক বৃত্তির প্রতি ভাঁহার বিভকা হিল। ডাঃ রার এই বিষয়ে সভাগ বলিরা মনে হর। কিছ ভিনিও बाबा वांबानित्वर ७ चनिक्कांत्र कार्ल भएन भएन कार्रकारेश বাইতেছেন। কেন্দ্রীর গবর্ন্ধের সামরিক নিরমকারুন এই সৰ বাৰার স্ট্র করিরাতে ৷ ইংরেন্ডের পরিত্যক্ত ঠাট বজার রাবিরাই তাঁহারা দিনগত পাপক্ষর করিয়া ঘাইতেহেন। কান্দ্রীর অভিযানও সূতন করিয়া কোন কিছু ক্রিবার অবকাশ দিতেহে মা। কিছু ডাঃ রায়ের আসল প্রতিবন্ধক ভাঁহার প্রদেশের লোকের নিচ্চেইতা , সামরিক বৃত্তি সহতে অন্থপান। তীমন বাহারর সিং ১৯১৮-১৯ সালের বাঙালী <u>শেডবর্গের সম্বন্ধে যে কথা বলিয়াছেন, আন্ধন্ধ ভাষা</u> चरनकाश्य क्षरमञ्जा निन, गार्श्वामी, (गार्न्। बास्यूज, मावाछि, माळाची देश्टबक चामरल वांश्लारमप्तव बक्तनारक्क ক্রিয়াছে এবং আৰও তাহা ক্রিবে এই ভরসায় আমরা দিন कांगिरेट कि । धरे मत्नाकात्वत शतिवर्शन मा एरेटन 'वाव' ভা'ত বাঙালীর হাতে অল্পন্ত দিরা কোন কল হইবে না। এমন বাহাছর সিং বাঙালী মবাবিত শ্রেণী সম্বন্ধে বাহা বলিয়া-হেন তাহা অকাট্য সত্য, এবং তাহা আমাদের আত্মতিমানে আৰাত দিতে পাৱে। এছপ আৰাতের প্ৰয়োকন আছে र्यानदारे जायदा अरे श्रवद श्रकाम कृतिहासि।

ভা: বিধানচজ রারের নিকট ইছাই ছইল বভ সমভা--বাঙালীর মনকে নৃতন করিয়া গঢ়িতে হটবে। অনুরূপ কাৰ হগে হবে ভাতির সংগঠক-প্রধানদের করিতে হর। অপরিচিত, মৃতন মৃতন শ্রেণী হুইতে 'ক্ষাির' সংগ্রহ করার বুড়াছ এই দেশের ইতিহাসে আছে। 'অগ্নিকুল' ক্তিয়ের স্**টি** রাজপুতানার ইতিহাসে প্রসিত্ত মহারাষ্ট্রের 'চিং-পাবন' ৱাহ্মৰ বেৰী সহতে এইরূপ একটা কিহনতী আছে। 'ভগ্নি' जश्कारतत कन्गारि किन्यू हिन्यू हरेटल शारत, जनाद्या जाद्या रहेए शादा, मियंनी दृष्टित मार्कित जित्रिष्ट जनम्यानत পৰ সুগম ছইতে পাৱে, এই কৰা জামাদের দেশের *লো*কের মনে ভাগরক থাকিলে ভাভ বাঙালী-প্রধানদের ভর্কারে চারিদিকে হাভড়াইতে হইত না। 'বাঙালী আন্ধবিশ্বত ভাতি' -- धरे क्या विनया एवटाना माञ्जी इ: व कविशाहित्सन। আৰও সে কলত আমাদের মোচন হয় নাই। গুরুসদয় দত্ত 'রারবেশে' দুভ্যের ইভিক্ৰা আমাদের ভনাইরাছেন , ভাহা ছিল সামরিক 'জাতি' ও 'শ্রেৰী'র উমাদনায় পূর্ণ। আমরা 'বাৰবেশে'ৰ দুভোৰ প্ৰদৰ্শনী দেখি, কিছ ভাহাৰ ইভিহাস चानि मा रनिया छाराव भूक भीवटनव मटन वर्षमान वाडानी খীৰদেৱ খোন সম্পৰ্ক আছে বা বাজিতে পাৱে বলিৱা মনে করিতে পারি না। বাঙালী সৈভাব্যক্ষ পাওরা বাইলেও বাঙালী পদাতিক পাওরা বার না, তাহার রহস্যও এই আছ-বিশ্বতির মধ্যে আছে। আদ বাঙালীকে 'সামরিক' ভাতিতে পরিণত করিতে হইলে পূর্ব্ব ইতিহাসের দের টানিরা নূত্রন সংছারের স্কট্ট করিতে হইবে। এইরূপ স্ট্টকার্ব্যের ক্ষেত্র— বাঙালী জীবনের জমিনের এক মুহদংশ চাবের জভাবে পতিত রহিরাছে। আবাদ করিলে সোনা কলিবে। কে হইবেদ এই আবাদকারী গুডাঃ বিধানচক্র রারের সন্মুধে, গুছার মান্ত্রমণীর সন্মুধে এই কর্ত্বব্যপথ বিভ্ত হইয়া পড়িয়া আছে।

কেন্দ্রীয় গবর্ষে ক্রিয় পুরাতন আইন-কাছনের বাবা আছ মনে হয় আছে আছে সরিয়া যাইতেছে। প্রায় পনর দিন পূর্বেষ্ কলিকাতার দৈনিক পত্রিকায় একট সংবাদ প্রকাশিত হুইয়াছিল; তাহার মধ্যে এইরূপ তরসার একটা ইলিড দেখিতেছি। ইউনাইটেড প্রেস অব ইভিয়া নামক সংবাদ-বিতরণী প্রতিষ্ঠান এই সংবাদ দিয়াছিলেন।

"The Government of West Bengal have promulgated the West Bengal National Volunteer Force Ordinance, 1948, which empowers the Government of West Bengal to raise and maintain a Volunteer Force to be called the West Bengal National Volunteer Force."

এই সংবাদের মর্দ্রার্থ আমরা এইভাবে বুবিয়াছি। কেন্দ্রীর গবরেক কর্ম্বক নামা শ্রেণীর সৈচবাহিনী Regular Army, Territorial Force, Cadet Corps—রীতিমত সৈচবাহিনী, আঞ্চলিক সৈচবাহিনী বাহারা রীতিমত সৈচবাহিনীর পুঠরকা করিবে—বিশ্ববিভালরের অধীনত্ব শিক্ষা-প্রতিঠানের আরুক্ত সামরিক বিভার প্রথম ভাগ, বিতীয় ভাগে পণ্ডিত, এই শেষোক্ত দল গঠন করিবেন। পশ্চিমবঙ্গে এই শিক্ষাভানের, এরূপ সামরিক বাহিনী সংগঠনের ব্যবহা সর্বভারতীয় ব্যবহার অক্সরেপ বর্ত্তমান আছে। কিন্তু এই ক্ষেট্রেনিক-বাহিনী West Bengal National Volunteer Force—এই ব্যবহার অতিরক্ত। এই বিষয়ে আমাদের ব্যাব্যা সঙ্গত কিনা ভাহা মন্ত্রিক। ভাই বিষয়ে আমাদের ব্যাব্যা সঙ্গত কিনা ভাহা মন্ত্রিক। লান মুখপাত্র বলিরা দিলে ভাল হয়।

ভা: বিধানচক্র রায়ের মন্ত্রিমন্তলীকে বাঙালীর মধ্যে প্তন ক্রিরের স্টিকার্ব্যে রতী হইতে হইবে। তাহার জন্য সমস্ত বাঙালী জাতিকে অগ্নিসংকারের মধ্য দিয়া লইরা যাইতে হইবে। আমাদের জাতীর চরিত্রে যে হর্মালতা, বে ক্স্ত্রতা, যে পল্লবঞাহিতা, শরীর মনে যে জালক্ত শিক্ত বাঁধিয়াহে, তাহা এই আশুনে পুড়িয়া ঘাইবে। অগ্নিশুরে হইয়া মুভন বাঙালী ভাবের সক্রে ধর্মের, চিন্তার সক্রে পরিপ্রমের, আদর্শের সক্রে বান্তব্যর সমন্বর-সাধন ক্রিবে। এই আশাম্বই আম্রা বাঁচিয়া আহি, এই বলিঠ জীবন ক্লপায়িত দেখিবার জন্য নিজের ক্স্ত্র চেটা ও শক্তি নিরোজিত করিবাহি।

## পূৰ্বাচল প্ৰদেশ

অব্যবস্থিতচিত্ত লোকের প্রসাদ, দান, ভরতর হইতে পারে, এই পুৱাতন সাবধানবাৰ মৃতন ক্রিয়া বৃক্তিভেছি আম্রা কংবেসের মৃতন নেভূত্বের কল্যাণে। গত সেপ্টেবর বাসে কংগ্রেসের সর্ব্বোচ্চ পরিচালক্ষওলী একট প্রভাব এহণ করেন বে কংগ্রেসী বিধানে একট মূতন প্রদেশের নাম যোগ করিলে मण रह मा। এই সংবাদে मूखन काबाप किना, बिनुदा রাজ্য ও মণিপুর রাজ্যের লোক উৎসাহিত হইরা উঠে। এই প্রভাবকে রূপ দিতে পারিলে আসাম প্রদেশের বর্তমান শাসক-সন্তাদায়ের অনাচার ও অভ্যাচারের হাত হটতে মুক্তিলাতের একটা সভাবনা দেখা দিবে এই ভরুসার। প্রার ২৫ লক অসমীয়া-ভাষাভাষী ষেত্ৰপ করিয়া ৪৫ লক অ-অসমীয়া-ভাষাভাষীর উপর নবাবী চালাইতেছে, তাহা ভার বেশী প্রশ্রম পাইলে ভারতরাষ্ট্রের পূর্ব্ব সীমাত্ত ভণাত হটয়া উঠিবে। चात्रात्यव गॅठिम नक वाढामीव, चार्ठ-मव नक मनिनृती, गाँठ-হয় লক্ষ মিকো-লুসাই, ট্টপ রা প্রভৃতি পার্বতা ভাতি বর্তমান বড়দলৈ মন্ত্ৰিসভার ব্যবহারে অতিঠ হটরা উঠিতেছে, এবং কংগ্ৰেস পরিচালকমঙলার প্রভাবে আমরা বুবিরাছিলাম বে কেন্দ্রীর গবরে উ এই সমভার গুরুত্ব বৃত্তিতে পারিয়াছেন।

কিছ নবেষর মাসে সেই মঙলীই মত বদলাইরাছেন। তাহার কোন কারণ প্রদর্শন করিবার লারিছ তাহার। বীকার করেন নাই। দেশের লোকের বুরিরছির উপর এই অবিশাসের কল কি গাড়াইতে পারে, সেই সন্তাবনার কথা মনে করিবা আমরা পণ্ডিত নেহরু, সর্কার প্যাটেল, বাবু রাজেল্প্রসাদ, ডাঃ প্রস্তি সীতারামিয়াকে সাবধান করিবা দিতে চাই।

## আন্দামানে বাঙালা উপনিবেশ

প্রধাবনি আমরা এই প্রভাবের সমর্থন করিয়াছি।
পূর্ববদের লক লক হিন্দু আন্দামানে নৃতন ভীবন গভিরা
তুলিতে পারিবে, এই ভরসা করিয়া নর। আন্দ তাহাদের
ভীবনে বে হতাশার ও ব্যর্বতার ভাব দেবা দিয়াছে, তাহার
ভাচ চাই একটা প্রতিবেশক। সেই প্রতিবেশক আসিবে গঠননূলক কর্মনেচেটার, তাহা বেশানেট হউক। "বরর্বো"
বাঙালী ভাতির কলত মোচন হউক। আন্দামান দ্বীপ একটা
নিবিভ্রমান।

সেইক্স পশ্চিমবন্ধ কাঁতে শ্ৰীনিক্সবিক্ষী মাইতির নেড্ছে বে অক্সবামমঙলী বলোপসাগরে অবস্থিত এই বীপপুঞ্জ গমন করে ভাকার সার্থকতা আমরা কামনা করিয়াছি। ভাকাদের সলে একই জাকাজে পূর্ব্ব-পঞ্জাব কাঁতেও করেক্সন সরকারী ও বেসরকারী অনুস্বামকারী গিয়াছিলেন। ভাঁকাদের পরিচর ক্লিকাজার কোন সংবাদপত্র কেন নাই। বাংলার মন্ত্রীর পক্ষেই প্রচারকার্য্য চলিয়াছে। বিষ্ণিত থাঁহার বজন্য বলিবার কল আবরণ পাইবা বিরীনির্দাহন ভনিবাহি। তংপুর্কে তিনি সংবাদপরের বারকতে
লানাইরাহেন বে আলামান বীপে উপনিবেশ হাপনের ভবি
আহে; পূতন তাবে অবনৈতিক ত সামাজিক জীবন গঠন
করিবা ছলিবার অবসর আহে। কত লোকের সংকুলান
হুইতে পারে, তংসকরে তিনি কোন কথা বলেন নাই।
ভাসাভাসা ভাবে অনেক আলার কথা ভনাইরা তিনি সিরাহেন। তাঁহার দলের ২।৪ কনকে রাখিরা আসিরাহেন আরও
ব্যাপক অকুসরান করিবার কল। তাঁহার সলে বাঁহারা সিরাহিলেন তাঁহালের মধ্যে পূর্কবিদীর হিন্দুর নেতৃত্বানীর বা
প্রতিনিধি পর্বাহের কে বা কাহারা হিলেন, তাহা আবরা
লানি না। পূর্কবিদের হিন্দুকে বুবাইরা, "কালাপানির" ভর
ভালাইতে পারে, এরপ কেছ হিলেন কিনা তাহাও আনাদের
ক্রিভাত।

কারণ আমরা মনে করি বে বাঙালী সমাজের প্রবঙঃবের মারা কাটাইয়া ঘাইবার প্রচেষ্টার বাহারা উৎসাহ দিতে বাই-বেন, তাঁহাদের "আপনি আচরি বর্ম" তাহা শিবাইতে হইবে। নিজের দ্রী-পূত্র-পরিবার লইয়া বাঁহারা এই অনিক্রধতার মবো বাঁগাইয়া পভিতে পারিবেন, তাঁহারাই হইবেন বাংলার বাহিরে "রহং বলের" প্রতিষ্ঠাতা। তাঁহাদের বাঁহারা অগুগামী হইবেন তাঁহাদের ক্লোন প্রমক্তে তর কারলে চলিবে না।

এত ব্যাপক প্রচারের মধ্যে যাহা আরও করা হইরাছে তংগবছে আর একটা কথা আমরা ওলাইরা রাখিতে চাই। ক্রেনীর গবর্ত্বেটের নিকট হইতে কোনরূপ পাই প্রতিশ্রুতি না পাইরা থাকিলে পশ্চিমবন্দের মন্ত্রিমওলীর এই বিষয়ে কোন ভরসার কথা উচ্চারণ করা সদত হইবে না। বদি পূর্ববন্দের হিন্দু প্রধানদের কেই নিকে উভোগী হইরা নিকের ব্যয়ে এইরপ একটা অভিযান লইরা যাইতে পারিতেন ভবে ভাঁহাদের দাবি অপ্রগণ্য হইত, ভাঁহাদের সহকর্ত্তীদের শক্তির পরিচর পাওরা বাইত। প্রীনিক্রপবিহারী বাইতির নেড্ছে আন্ধ বাহা করা হইরাছে ভাহার মধ্যে বাঙালীর শক্তির কোন প্রমাণ নাই; উপনিবেশ হাপন করিবার বভ সংগঠন-শক্তির পরিচর নাই। ক্রেনীর গবরে কের ধেরাল অহুসারে ভাঁহাদের চলিতে হইবে। সেই ধেরালের প্রকৃতি আমরা "পূর্ব্বাচল" প্রকেশের প্রভাবে দেখিবাহি।

## রেল-ছুর্ঘটনা

আমানের দেশে অসভর্কভার অভ কভ লোক প্রাণ হারাই-ভেছে অথবা জীবনের বত পড় হুইরা রহিতেছে। ইঠ ইভিরান ও বেলল নাগপুর রেলের গভ পাঁচ বালের বভিরাক হুইতে ভাহা বুখা বার। ১৯৪৮ নালের ৩১শে আগঠ পর্যন্ত পাঁচ বালে ইঠ ইভিরান রেলে ৮৪৭ জন লোক অসভর্কভার জভ নিহত প আহত হইবাহে। ইহার বব্যে গাড়ীতে হানালাবে পাদানিতে জ্বন করিতে গিরা পিহলাইরা পভিরা ২৬৪ জন,
সিগনাল-পোটে বাডা লাগিরা ১৯ জন এবং চলতি গাড়ীতে
উঠিবার জন্ত ঠেলাঠেলি করিতে গিরা প্লাটকর্ম ও রেলের নাবাবানে পভিরা ১২ জন হুবঁটনার সন্মুখান হইবাহে। এ তো গেল
ভীড় ও হানাভাবজনিত হুবঁটনা। গবচেরে মারাম্মক ব্যাপার
এই বে, নিহুক অসতর্কভার জন্ত গাড়ীচাপা পভিরাহে ৩৮৮জন।
শান্টং-এর সমরে হুইট চলত মালগাড়ীর মাববান দিয়া
ভাড়াভাছি লাইন পার হুইতে সিরা তিন ব্যক্তি উহার মাবে
পভিরা বিরাহে অধনা ওরুতর ভাবে আহত হুইবাহে। চলতি
গাড়ী হুইতে লাকাইরা পভিরা ৪৩ জন হুভাহত হুইবাহে।
লাইবের উপর গাড়ী চাপা পভিরা ১৩০ জনকে যুত বা অভ্রত
অবহার হুড়াইরা পাওরা গিরাহে।

বেদল নাগপুর রেলের হিসাবে দেখা যার বে ১৭২ জন ভাড়াভাড়ি চলতি টেনের সন্মুখ দিরা লাইন পার হইতে গিরা ভাটা পড়িরাছে, ইহার মধ্যে ১২৭ জনই বারা গিরাছে। পাঢ়ানিতে হাড়ানো লোকদের মধ্যে ৩৫ জন আহত ও জন নিহত হারাছে। চলতি টেনে উঠিতে বা নামিতে গিরা ৪৮ জন হভাহত হারাছে।

শিক্ষার অভাবে একটা ফেশের লোক নিকের হিতাহিত বিষয়ে পর্যন্ত কত দূর কাওজানবিবার্জিত হইতে পারে এই তথ্যগুলি তাহারই নিধর্শন নাম।

## মাদ্রাজে 'স্পেশাল পে' বাতিল

মারাক সরকার উচ্চ বেতনভোগী সরকারী কর্বচারীদের 'লেশাল পে' তুলিয়া দেওরার সিঙাক করিয়াছেন। কোন কোন রেশীর অফিসারের। ইংরেক আমলে নিক বেতনের উপরে একটা অতিরিক্ত 'লেশাল পে' পাইতেন; বর্তমানে উবা বকার রাবিবার কোন প্রয়োকন নাই ইবাই মারাক্ত সরকারের অভ্যত। সেকেটারী, বিভাগীর ক্রমিশার প্রভৃতি এবং বিভাগীর কর্মকর্তারা এবন হইতে আর কোন 'লেশাল পে' পাইবেন না। ভাহাদের মানবাহন ভাতা বকার বাজিবে তবে উহা সাবারণতঃ বেতনের এক-দশমাংশ পর্যাক্ত ইইবে কিন্ত ক্রম্বর এবন পাইতেছেন সেটা ঠিক থাকিবে। পাতিষ্যক এবন পরিব্র প্রবেশ। এবানেও এই বরণের ব্যর্ক্তাচে আরক্ত হওরা উচিত।

## বিশ্ববিদ্যালয় তদন্ত কমিশন

ষাৰীৰ ভারতের বিশ্ববিভালরসমূহের শিকা-ব্যবহা কিরুপ হথবা উচিত নে সধ্যে ভক্ত করিবার ক্ষ ভারত-সরকার কর্তুত একট বিশ্ববিভালর ক্ষিণ্য নিযুক্ত হইরাতে। বিশ্ববিভালরক্ষ্য পঠনতর ও কার্যাবলী উভর সমভা সম্বেই ক্ষিণ্য ভক্ত ভারিবের। বিশ্ববিভালরসমূহের বর্তবার সঠন প্রণালী, অব্যাপনা ও পরীকা ব্যবহার মধ্যে প্রচুর গণদ রহিরাহে এবং উহার আবৃল সংশোধন ও পরিবর্তন আবতক এ বিবরে সন্দেহের লেশনার নাই। ভারতীর, বিটেশ ও আনেরিকান বিশিষ্ট শিকারতীদের লইবা এই ক্ষিণন গঠিত হইরাহে। ক্ষিণন শীমই কলিকাতা আসিবেন। তাঁহালের সমক্ষে উপস্থিত হইরা শিকাসম্ভার আলোচনার কর এবন হইতেই প্রস্তুত হওৱা আবর্তক।

ভাতনার ক্মিশনের রিপোর্টের পর (১৯১৭) ভারতীর বিশ্ববিভালরের কার্যাবলী ভালভাবে এযাবং পর্যবেকণ করা হর নাই। ভজ্জভ সরকার এ ক্মিশনের হাতে ব্যাপক ক্ষতাধানের সিভাভ ক্রিয়াছেন, যাহাতে ক্মিশন দেশের সম্ঞ্জ শিকা-ব্যবহা পর্যালোচন। ক্রিতে পারেন।

বিশ্ববিভালরের বর্তমান গঠনতার, কার্য্যাবলী ও ক্ষরতার কি কি পরিবর্ত্তন হওরা উচিত, কেলীর সরকার বা প্রাদেশিক সরকারের সহিত ইহাদের সম্পর্ক কিরপ হইবে, ক্ষিণন এই সক্ষল ব্যাপারে ভাহাদের অভিয়ত ভাগন ক্রিবেন।

ভারতীয় বুৰক্ষের গণতত্ত্বের সমস্যাবলীর সহিত পরিচিত করা শিকা-ব্যবস্থার শুরু থারিছ। মানবভা ও বিজ্ঞানের মধ্যে ভারসাম্য রক্ষা করাও কমিশনের অভতম আলোচা বিষয়। অভাত বিষয়ের মধ্যে বিশ্ববিভালয় ও তংসংগ্রিট करमञ्जूर के इवरवद निका, श्रीकाव व्यवहा, निक्करबद যোগ্যতা ও বেতন, ছাত্রদের বাসস্থান, বিশ্ববিদ্যালয়ের আরের পণ, আহালক ও অভাত ভিভিতে নৃতন বিশ্ববিভালয় স্থাপন, কাৰী হিন্দু-বিশ্ববিভালর ও আলিগড় মুপ্লিং-বিশ্ববিভালর পরিছিতি, শিকার মাধ্যম, গবেষণা-কার্ব্যে শিক্ষদের উৎসাহ দান, ভারতীয় সংস্থৃতি, ইতিহাস ও চাকুকলা শিক্ষার ব্যবস্থা প্রভৃতি উল্লেখবোগ্য। বিশ্ববিভালরের শিক্ষার ও গবেষণা-কার্য্যের ব্যবস্থা এবং উন্নতি সম্পর্কে স্ব স্ব অভিনত জ্ঞাপন क्षिवात कर क्षिमास्य जनगरमय कार्य अक श्रेत्रावनी पार्विन করা হইরাছে। দিল্লী অবিবেশন সমাপ্ত হওয়ার পর ক্ষিণন विधिन्न विश्वविधानन ७ मिकारकस शतिवर्गतन अक कर्नाकी এহণ করিবেন। এখনতঃ উাহার। উত্তর ভারত সকর কারবেন। ক্ষিশন প্রভ্যেক কেন্দ্রে ৪ হইতে ৬ দিন খবছান ক্ষিবেন। আশা ক্যা বার বে, ক্ষিশন আগামী আছুয়ারী মাসের বিতীয় সপ্তাহে কলিকাভায় পৌছিবেন।

ক্ষিণৰ আগামী বংসর জুন মাসে ভাঁহাদের কার্যাবলী সমাপ্ত ক্ষিবেন বসিরা মনে হয়।

## <u> পান্দামান</u>

সক্ষতি আন্দানান দ্বীপপুঞ্জের প্রতি সকলের দৃষ্টি পঢ়িয়াছে। বাংলা হইতে একজন নত্রীর নেতৃত্বে করেকজন সেধানজার অবহা পর্যবেজণ করিতে সিয়াহিলেন। ইঁহারা নির্নিতিভ অভিয়ত প্রকাশ করিয়াহেন ঃ আন্দামানে এবনই বাহাতে বুতন লোক গিয়া বসবাগ ক্ষিতে পারে ভাহার বভ বুলন কাটা দরকার এবং এই টাকা কেন্দ্রীর গরকারের দেওয়া উচিত।

থাছারা সেধানে ঘাইবে তাহাদের গৃহাদি নির্দ্বাণ এবং অভাভ আত্মধিক ব্যৱের ভঙ টাকার ব্যবহা করিতে হইবে।

পোর্টরেয়ার হইতে কলিকাতার মধ্যে একট সাপ্তাহিক ষ্টামার সাভিস এবং ডাক ও ববরের কাগন্ধ এবং সন্তব হইলে কিছু যাত্রীবহনের জন্ত একট দৈনিক এরোপ্লেন সাভিস খোলা হরকার। এই কার্য্য কেন্দ্রীর সরকারের করা উচিত।

আন্দামানের তিন ভাগে যাতারাতের স্বিধার হত রাভা তৈরি করা দরকার এবং এই কার্যাও কেন্দ্রীর সরকারের হাতে লওয়া উচিত।

সংবাদপত্তে প্রকাশ এই সব প্রভাব পশ্চিমবদ সরকারের পক্ষ হুইতে কেন্দ্রীয় সরকারের মিকট উপস্থাপিত করা হুইবে।

এই প্রভাবগুলির সদে প্রথমেই একখা বলিলে ভাল ছইত যে, আকামান দ্বীপপুঞ্জর শাসনভার পশ্চিমবন্ধ সরকারের হাতে অর্পন করা হউক। এইরূপ ব্যবস্থা হইলে অবশিষ্ট কাল অনেক সহত হইত। বর্তমানে আকামানের জনল পরিভার, ভ্রমি দ্বল, পোর্টরেরার ও কলিকাভার মধ্যে অন্তঃ একট সাপ্তাহিক প্রমার সাভিস এবং আকামানে পথঘাট নির্দ্ধাণ প্রভৃতি কার্যা আরম্ভ হইলেই সেধানে লোকজন যাওয়া স্থ্যে ছইতে পারে।

### আসামে বাঙালী বিতাডন আরম্ভ

আসাবে তেকপুর উচ্চ বালিকাবিদ্যালয়ের ম্যানেকিং কৃষিট্ট ছির করিরাছেন যে, সেধানে বাংলার মাধ্যমে শিক্ষাদান বন্ধ করিরা দেওয়া হইবে। ১৯৩২ সালে এই বিভালয়ট প্রতিষ্ঠিত হয় এবং তদববি সেধানে বাংলা এবং আসামী উভয় ভাষার মাধ্যমে শিক্ষাদান কার্ব্য চলিতেছে। বিভালয়ের শতকরা ৪০টি ছাত্রী বাঙালী। আসামের বিভালয়নসমূহে বাংলার প্রচলন বন্ধ করিবার এই প্রধন চেষ্টা।

#### দামোদর কর্পোরেশনের বাজেট

আগামী ছই বংসরের ছত দামোদর কর্পোরেশনের বাজেট প্রস্তুত হইরাছে। ১৯৪৮-৪৯ সালে ২ কোট ২২ লক্ষ্ টাকা ব্যৱ হইবে এবং ১৯৪৯-৫০ সালে ব্যর হইবে ৭ কোট ৫৩ লক্ষ টাকা।

निव्यक्तिष्ठ होत्त क्योव भवत्य के, शक्तिवदक भवत्य के अवर विहास भवत्य के अहे होका वित्यम :

১৯৪৮-৪৯ সাল: কেন্দ্রীর গবর্ষে গুরার ৭০ লক্ষ্যু পশ্চিমবন্ধ গবরে উ প্রায় ১১ লক্ষ্য এবং বিহার গ্রুৱে উপ্রায় ১১ লক্ষ্য

3>8>-eo गांग : (क्वीब अवस्य के २ (कांक्रे ৮) नक ;

পশ্চিমবদ গৰ্বাবে ও কোট ৪০ লক এবং বিহার গৰ্বাব কি
১ কোট ১৫ লক।

দানোৰৰ পৰিকল্পনা সাকল্যমণ্ডিত ক্ষিবার হুত বে চাকা খরচ হইবে পশ্চিমবদের খাড়ে ভাষার সবচেরে বড় অংশ আসিরা পড়িভেছে এবং বিহারকে দিতে হইভেছে সবচেয়ে কম। অবচ এই পরিকল্পনার সবচেত্রে বেশী লাভবান হইবে বিহার। দামোদর পরিকল্পনার কলে মানভূম ভারতবর্বের पनिक-मिरकत मरामनि एटेरन अवश मिरमत साहि पनिक-मिरकत শতকরা প্রায় ৪০ ভাগ এখানে কেন্দ্রীভূত হইবে। মানভূম যদি বিহারেই থাকিয়া যায় ভবে বিহার ভারতবর্বের মধ্যে अर्व्वार्थका जग्रह ध्वर क्रमणांनाजी क्षरप्रत्म शविष्ठ स्ट्रेटर . কারণ দেশের লোহা তামা, করলা, অত্র ও অভাভ বছবিব ভতি প্ৰৱোদনীয় ধনি<del>দ ত্ৰ</del>ব্য ও ধনি<del>দ ত্ৰ</del>ব্যদাত শিল वांकित्व विरादित राजि। क्राविके क्लांब गार्विक वन এবং কিছু বিহাৎ ডিল্ল প্ৰভিমবদের আৰু কভটা লাভ হইবে সেটা একবার বভাইয়া দেবিলে ভাল হইত। মেট্রন এওয়ার্ড, মিমেরার এওয়ার্ড প্রভৃতিতে আবিক ব্যাপারে वारलाद क्षिष्ठ य वदरवद चविठाद कदा एरेबाहिल, चाबीनण লাভের পর নিষেরার এওয়ার্ড পরিবর্তন করিয়া মৃতন ইনকাম ট্যান্স এওয়ার্ডেও সেই মনোভাবই দেবা গিয়াছে। দামোদর পরিকল্পার ব্যব্ধ বছন বিষয়েও বাংলার উপর দিয়া অপরের হৃবিধা করিয়া লওয়া হয় একুপ ব্যাপার ঘটতে না দেওয়াই ভাল।

### পশ্চিমবঙ্গের শাসন ও শোষণ

ভারতরাট্রের পরিবির মধ্যে পশ্চিম্বদ ও পূর্ব-পঞ্চাব প্রদেশ হুইট ভারতবর্বের বিভাগের পর অবপ্রহণ করিরাছে। এই কর সহক ভাবে হয় নাই। ইংরেক ভাক্তারের নির্দেশ অনুসারে মুরি চালাইরা এই চুইট প্রদেশকে বাছির করা হুইরাছে। রক্তক্ষরের ক্ষ ভাহারা চুর্বেল , বৈদ্যসহটের ক্ষ্যু, চিকিৎসামগুলীর মধ্যে মতভেদের ক্ষ্যু, চিকিৎসা টক টক চলিতেছে না।

পশ্চিমবদের সরবরাছ-মন্ত্রী প্রীপ্রকৃত্ত সেনের দানা বিবৃতিতে ইহা স্পষ্ট হইরা উঠিরাছে যে, এই প্রদেশে ভঙ্গুল-বন্ধ-তৈল প্রভৃতি মানব-জীবনের দৈনন্দিন প্ররোজন মিটাইবার চেটা শীম সকল হইবার সভাবনা নাই। তিনি যে বিভাগের মাধার বসিরা আছেন তাহার কর্ত্তব্য উৎপাদন করা নয়, বায় করা। স্বতরাং উৎপাদনের জন্ত ভালান মন্ত্রী ও অভাভ বিভাগের উপর নির্ভর করিতে হইতেহে। এই সব মন্ত্রিপ্রবরের বিভাগ জিভাবে কর্ত্তব্য পালন ক্রিতেহে, ভাহার পরিচর আমরা প্রতি মালে দিবার চেটা করি। "নোক্রসাহী" (bureaucracy)—লোক্যাভ তিল্কের ব্যবহুত এই করা—পরার্থ-বিভাবের অভিক্রত্) মন্ত্রীধিধের বাড়িতে পারে লা। স্ক্ররাং

ঙাহারা নোকরসাহীর অভ্যন্ত গড়িমসি চালের নিকট হার মানিরা বান। গভ মাসে আমরা দেখাইরাছি কি করিরা কৃষি ও শিক্ষার উহতি এই "লাল কিডা"-ওরালাদের হাতে পড়িয়া কিন্তুত্তকিমাকার মৃতি ধারণ করিতেহে।

এবার অভ ছই বিভাগের কথা আলোচনা করিব। সেচ-বিভাগ, স্ববিবিভাগ ও ষংস্তবিভাগের মধ্যে নিগুঢ় সম্বন্ধ ভাছে। **श**िक्ववारलात बाल-दिल मिक्ता शिक्षा कृषित व्यवस्थि स्ट-बाट्ट, यरमाव छेरेशालम कमिशाट्ट। सारमास्त शक्तिकाना পুঠুতাবে ৰূপারিত হইতে এখনও অভত: দশ বংসর नागित्व। शन्धिवत्यद्व शन्धियांक्न अहे शतिकवनांत कनाात्व शृत्कित कात बनबाटक कतिया छिठित्वः अहे चामाध चत्नकहे দিন গুণিতেছেন। কিছু পশ্চিমবদের পূর্বাঞ্চের অবস্থাও ভ ৰছী মহাশয়কে ভাবিতে হইবে। দামোদর পরিকল্পনার মভ विवाध कि कविवाद महावनात का धर कारानत लाटक ভ চোৰ বুৰিয়া হাত গুটাইয়া বসিয়া থাকিতে পাৰে না। অবস্ত গদার উপর বিরাট বাঁব দিয়া বলের প্রবাহ ভাগরখীর ভিতর চালাইবার পরিকল্পনা গৃহীত হটরাছে ভনিরাছি। কিছ উহা বাস্তবে পরিণত হইতে সময় ও অৰ ছই-ই বহু পরি-মাণে লাগিবে সুভৱাং উহার কল সম্প্রতি পাইবার আশা নাই এবং ভাভ কলপ্রদ পরিকল্পনা ও প্রচেষ্টার নিভাভ প্রয়োজন রহিরাছে। এই পূর্বাকলের প্রতি বিলার কুত্র কুত্র মানা পালবিল উন্নত করিয়া, কুন্ত কুত্র ক্ষম কলমোত বহুতা করিয়া पिटन এই चक्न विदार शिवक्रमा स्टेटल अविक नाज्याम ছটবে। এই সব কাজের জন্ত দিল্লীর নিকট ছটতে সাহায্য পাওয়ার কৰা নয়। স্থতরাং পশ্চিমবঙ্গের সেচ-মন্ত্রীকে নিব্দের रेजल निक्त बार काबिए रहेता। जारा रहेल बरध-বিভাগের মন্ত্রী শ্রীহেমচন্ত্র নন্ধরেরও নিদ্রার ব্যাখাত কমিবে এবং আমরাও সংস্কৃত খালবিলে মংস্যা উৎপাদন বৃদ্ধির আশার এপ্রস্কৃতক্র সেন কর্তুক পরিবেশিত চালের মধ্যেও খাড়-প্ৰাণ পাটব।

পশ্চিমবদের স্বাতন থাল-বিলের স্থান লইবার জন্ধ বৃহৎ
কোন ব্যরের প্রয়েজন হইবার কথা নর। রাজ্ব-বিভাগে
ভাহার হিদাব আছে। ভদতিরিক্ত প্রতি জিলার বেদব সংবাদপত্র আছে ভাহার মব্যেও উহার স্থান পাওয়া বাইতেছে।
আমরা বারাসভ-বসিরহাট-বন্দী মহকুমার মুবপত্র "সংগঠনী"
পত্রিকার ১৬ই অপ্রহারণের সংখ্যার প্রদন্ত এইরূপ একটা
হিসাবের প্রতি সেচ-মন্ত্রীর দৃষ্ট আকর্ষণ করিতেছি। প্রবহলেবক বলিভেছেন ভিনি চক্ষিণ পরগণার থাল-বিল
পরিদর্শন করিয়া "বংসর" কাটাইয়াছিলেন। এবং এই
পরিদর্শনের কলে ভিনি করেক্ট "বাওক" ও বিলের বর্জমান
হরবছার বিবরণ দিয়াছেন। ভাহা পাঠ করিয়া দেখা যার বিক্ত লাবার্ছ সংভার করিলে বান ও মাহ উৎপাহন বৃদ্ধির

সহারতা হইতে পারে। দৃ**ঠাভবরণ মাত্র হইট "বাওডে**র" উল্লেখ করিতেছি।

"ভেঁছুলবেভিয়া—( বাউডালা ) বাঁওড় । এটকে কচুমী-পানা ভূলিয়া ইচ্ছামতীয় সলে বালবায়া মুক্ত কয়িলে ( हे মাঃ মাত্র ) ইহাতে প্রচুর মাছ ক্ষাইতে পারে।

বাদবপুরের (গাইবাটা বানা) বিল। বর্না হইজে
নির্গত গোরালক্তীর বালের সলে বিলকে যাত্র ৭০০
হাত বোগ করিয়া দিলে প্রচ্র মংস্ত উৎপাদন এবং চার
আবাদের ক্ষবিশ্য করা হইতে পারে।"

"সংগঠনীর" এই সংখ্যারই যমুনা ও পদা এই ছই শাখানদী সম্বন্ধে একটি উল্লেখবোগ্য প্রবন্ধ প্রকাশিত হইরাছে।
এক শত বংসরের মধ্যে ইহাদের অবনতি ও ফ্রছ-প্রোতের
কাহিনী বর্ণনা করিয়া লেখক বলিয়াহেন,—

"২৪ পরগণার চাষবোগ্য জমির পরিষাণ ৮৫০ বর্গমাইল। তাহার মব্যে ২৫০ বর্গনাইল জমির অধিকাংশই
নির্ভর করে যমুনা নদী সংস্থারের উপর। ইহার সঙ্গে
পদ্মা সংস্কৃত হইলে ও সংলগ্ধ বিল ও বাঁওজগুলির সুষ্ঠ্ ব্যবহা হইলে প্রার ৪৫০ বর্গনাইল জমির উৎপাদন তিন ওপ বৃদ্ধি পাইবে এবং ২৪ প্রপ্রণা বরংসম্পূর্ণ হইলা হয়ত উদ্বিভ অঞ্চলে পরিণত হইবে।"

এই সৰ ভব্য মূভন না হইভে পাৱে। এরপ খনেক তথা হয়ত সরকারী কর্তরধানায় ধুলাবালি চাপা পছিয়া প্রবহ-লেধক ভাহা আবার লোকের দুট্টপথে আনিয়া ভাহাদের বছবাদভাকন হইয়াছেন। ভাহার সব খালা হয়ত বিচারগ্রাহ্ম হইবে মা। "गरमर्वभी" शक्षिका **এইরুণ ভবাপূর্ণ প্রবন্ধ প্রকাশ করিয়া মকঃবলের সংবীদপত্ত** সৰুহের সম্পাদক-মঙলীর সম্বুৰে বুতন দুঠাত ভূলিয়া ধরিয়াছেন। এইরূপ তথ্যের সাহায্যে সেচ-বিভাগ, কৃষি-বিভাগ, মংস্ত-বিভাগ ও জনবাহা-বিভাগ একবোগে অনেক সংখারে হাত দিতে পারেন ৷ এই সব সংখারকার্বোর খন পভিত ক্বাহ্রলাল নেহকর মন্ত্রিমঙলীর বেয়ালের উপর নির্ভর করিতে হইবে না। পশ্চিমবঙ্গের আয়জের মধ্যে যে সদতি আহে ভাহাই যথেষ্ট। সকল কাজের জন্ম ভিজার वृति महेश विजीत बातर एउशा - जाराका शक्तियदाकत विद्यात সামাত वंन ও अमनकित छेनत निर्वत कतिवात (हर्ड)-छेडम्बर्क আমরা প্লাখনীর বলিষা মনে করি। পশ্চিমবঙ্গের মন্ত্রি-ৰঙলীকে বিশ্লীতে বৌভাবেছি করিয়া বেরপ ভাবে পরিপ্রান্ত হইতে হইতেহে, ভাহা নামা দিক দিয়া বাপ্লনীয় নয়। সুক্ত <del>দুত্র ক্ষেত্রে আত্মশক্তির পরিচর বিভে</del> পারিলে ধর ও বাহির উভৱের বিশ্বাস ও সম্বাদলাভ কর। বার।

দিল্লীর উপর নির্ভরশীলতা বেলপ অপনান্তনক, সেইল্লপ কলিকাতার লালহীবির হিকে দুষ্ট নিবছ রাধিবার অভ্যালভ নিক্ষীর। উহা বে আমাদের মধ্যে বাছিরা চলিরাহে, তাহার প্রমাণ সংগ্রহের জন্ম বিশেষ পরিপ্রম করিতে হর না। "সংগঠনী" পঞ্জিলার প্রবহের মধ্যেও তাহা চোবে পলে। অনেক প্রবহে কচুরীপানার উপপ্রবের কথা উল্লেখ করা হইরাহে এমন তাবে ও তাহার যেন কেবলমাত্র কলিকাতাই এই উপপ্রবের হাত হতৈ বৃক্তি দিতে পারে। পঞ্চাশ বংসর, পঁটিশ বংসর পূর্বেও বদদেশের পদ্ধীবাসী এরপভাবে কলিকাতার র্থাপেকী হিল না। এইরূপ পর্যাপ্তরভার উপর তর্মা ক্রিয়া চলিলে আমাদের "ব্যাক" পর্যাক্ত হতে বিলম্ব হইতে বিলম্ব হুইতে বিলম্ব হুইতে বিলম্ব হুইতে বিলম্ব হুইতে বিলম্ব হুইতে বিশ্বর হুইতে বুইটার বুটার বু

#### ভারতবর্ষে অশিক্ষা

আমাদের রাইচালকেরা ও তাঁহানের পরামর্শনাতাগণ বাবীন রাট্রের উপযোগী শিক্ষাব্যবহার কথা আমাদের নানা তাবে ওনাইতেহেন। কিন্তু কথা ও কার্বেয়র মধ্যে যে পুরস্থ ইংরেক আমলে চালু হিল, আজও তাহা করে নাই। উলাহরণ-রূপে বরন্ধ লোক শিক্ষার আরোজন ও ব্যবহা সহতে প্রশ্ন করা বাইতে পারে যে, বাহা ভিরেংনামের মত ক্ষুর দেশের পক্ষে সম্ভব হইরাহে, তাহা পশ্চিমবদের পক্ষে অসম্ভব হইরা উঠিল কেন? অবেক বিষয়ে ভিরেংনামের অবহা পশ্চিমবদের অবহা অপেকা সলীন। ভিরেংনাম আক ভিন বংসর হুইতে, ১৯৪৫ সালের সেপ্টেম্বর মাস হুইতে, করাসী সামাজ্য-বালীদের সলে মুন্ধ চালাইরা আসিতেহে। পশ্চিমবদের সেই সৌভাগ্য হুইলে হর ত শিক্ষা বিষয়ে বর্ত্তমান নিক্ষেত্রতা ও কাইল লাইরা দিনগত পাপক্ষর করিবার প্রবৃত্তির প্রশ্রের পাইত লা।

সেই হংগ চাপা দিয়া এবন ভিরেৎনাথের কথা বলি।
একবানি মার্কিন সংবাদপত্তে— World-Over Press এই
বিবরণটি প্রকাশিত হইরাছে। কু-বো (Phu-tho) নাবে
কোন প্রদেশে ৪,১৫৮ জন শিক্ষক ৩৬৫৩টি ফ্লাসে ৭০,০০০
লিবন-পঠনে জল লোকের শিক্ষার ছর মাস কাল ব্যর
ক্রিয়া স্থকল পাওরা সিরাছে; হিসাব করিরা বেবা
সিরাছে বে, এই প্রদেশে মাত্র ২০,০০০ লোক জশিক্ষিত
আছে।

করাসী আমলের ১৯৪০ সালের একটা হিসাবে বেধা বার বে, ৩,৭৪৫ জনের কচ বার একট হুল ছিল; ১,৬৮২ কনের কচ ছিল বার একজন শিক্ষক।

ভিরেৎনার রাঠে শিকার বে উপার অবলয়ন করা হইরাছে ভারা গভার্থভিক নবে; নির্ব (tough)। এই বিবরণতে মুইট উপারের উত্তের্থ দেকিলান, ভাহার কথা আমরা ভাবিভেও পারিভেতি না। ভিরেৎনার রাঠ করানিই আন্তর্শে বিধানী।

কোন বাৰাজে প্ৰবেশ করিতে ব্যক্তে প্ৰত্যেকের নার ব্যবহাত করিয়া বিতে হয় । ভাষা না পারিলে সিবিয়া ঘাইতে হর; নান বভৰত করিবার কৌশল আরভ করিতে পারিলে বাজারে প্রবেশ করিতে পারে।

বিবাহ করিবার জন্ত সরকারের অনুষ্ঠি লইতে হয়।
লিখন-পঠনে মূর্ব লোককে বিবাহের অনুষ্ঠি দেওর। হয় না।
লেখাপঢ়া শিবিবার জন্ত এরপ অমোহ বিধান সহজে আবিকার
করা বার না।

মন্ত্রীরণে বা কর্মচারীরণে পশ্চিমবদের রাইব্যবহা বাহারা পরিচালনা করেন উল্লেখ্য মধ্যে ব্ছিমান লোকের অভাব আছে ভালা আমরা বিশ্বাস করি না। বিপ্লবী উপারে ক্ষতা হাতে আসিলে উল্লেখ্য অভ বৃত্তি দেবিভাব। সে সোভাগ্য আমাদের হয় নাই; ভাহার কলে আমরা ইংরেজ আমলের 'নোক্রসাহী'টা পাইরাছি। ভালা আমাদের গলায় পাধ্রের ঘন্টার মত বুলিভেহে। আর কত দিন এই বোকা বহিলা আমাদের চলিভে হইবে ভাহাই বিবেচা।

### "দেনদীঘি" মৎস্থের চাষ

কলিকাভার দশ নাইল দক্ষিণে বোড়াল প্রাম অবহিত।
আমাদের নবকাভীরভার এককন প্রবর্তকের কমহান বলিরা
এই প্রাম উনবিংশ শভাকীর ইভিহাসে ছানলাভ করিরাছে।
প্রাচীন কালেও দেখা যার এই প্রামের একটা প্রসিদ্ধি হিল—
সেনরাক বংশের নামের সহিত ভাহা ক্ষিত। "সেনদীদি"
নামে একট ক্লাশের ভাহার সাক্ষ্য দিতেছে বলিরা ছানীর
লোকের বারণা। এই দীবির পাড়ে একট মন্দির "প্রিপুরাস্করী"র উদ্বেক্তে উৎসর্গীকৃত। মন্দির আক্ ক্লীর্ণ, ভর ; দীবিও
সেই অবহা প্রার্থ হইরাছে।

ইংরেক আমতে যে সামাজিক অরাজকতা লোক-চকুর বৃষ্টি আকর্ষণ করিত মা, তাহার অবদরে "বিপুরা-হক্ষরী"র বেবাছরে হাত দিবার লোকের অভাব হয় নাই। সুতরাং দেবিতে পাই ১৯৩১ সালের করিপে এই দীবির সংলগ্ধ অনেক ভালা করি হানীর করিদারদের মধ্যে অনেকের নামে সরকারী কাগকে উল্লেখ করা হইরাছে।

এর পরে বোড়াল প্রানে রাজনারারণ বহুর আরম্ভ কর্ম সম্পূর্ণ করিবার কর একটা সূতন জাগরণ আসিরাছে। "বিপুরা- হুজরী" সেবা সমিতি নাবে একট প্রতিষ্ঠান "বিপুরা- হুজরী" সেবা সমিতি নাবে একট প্রতিষ্ঠান "বিপুরা- হুজরী" বিজ্ঞার সংখ্যার ও "সেননীথির" সংখ্যার কার্ব্যে রতী হইরা-ছেন। বিরাট দীখির সংখ্যারকার্য্য ব্যর-বহুল ব্যাপার; প্রার বিশ হাজার টাকা তাহাতে ব্যর হইবে। "সেনদীথি" সংখ্যার ক্রিতে পারিলে কেবল বে হানীর জলাতাব হুর হইবার একটা উপার বাহির হইবে, তাহা নয়। এই জলাতার হংতের "চাব" ক্রিতে পারিলে একটা আরের ব্যবহা হয়। স্বিভিন্ন চেটার এই দীখির গর্ভ হুট্ডে উপিত ক্ষর্ম উপর "বিপুরা-ছুজরী"র

ৰত্ব-বানিত্ব কিবিয়া পাওৱা গিরাহে; বে ক্ষিতারদের হাতে ভাহা চলিরা গিরাহিল উাহার। ভাহা হাইচিতে কিবাইরা দিরাহেন।

মানলা-যোক্ষার আশ্চা হইতে র্জিলাভ করিবা
"জিপুরা-স্থারী" সেবা সমিতি পক্ষিবক্ষের লরকারী বংজ
বিভাগের নিকট একট আবেদন লইরা উপস্থিত হইরাছিলেন।
মংভবিভাগ হালামার হাত হইতে রুজি লাভের ভঙ ৭০০১
টাকা এককালীন দান করিবার প্রভাব পাঠাইরাছেন। আদ্ধ
পক্ষিবক্ষের মন্ত্রীমঙলীর মূবে মুবে "মাল্ট-পারপাস্
কো-অপারেটভ সোসাইট" নাম প্রচার হইভেছে। নানা
রক্ষের উভেক্ত সাবনের ভক্ত একটমাল সমবায় সমিতি
গঠন—ইহাই মনে হয় এই মূতন "রোগানের" অর্ব।
বোড়ালের "সেনদীঘির" মতন জলাশরের সংভার এক্সপ
সমিতির আগ্রভার আসে কিনা, মংভবিভাগ ভাহার ভক্ত
কোন চিডা ভ্রিয়াছেন কি ?

#### শিক্ষকের ধর্মঘট

কিছুদিন পূর্ব্বে মাধ্যমিক বিভালয়সমূহের শিক্ষকেরা একদিনের জন্ত ধর্মনট করেন। বেতদর্থি প্রভৃতি কতকভালি
দাবির প্রতি দেশবাসী এবং গবর্ষেক্ট উভরের দৃষ্টি আকর্ষণ
করা হিল এই বর্মনটের উক্তেই। দেশের লোকের সহামৃত্তি
শিক্ষকদের প্রতি আকৃষ্ট হইরাহিল সন্দেহ নাই, কিছ
গবর্ষেক্টের ভরক হইতে কোন ক্ষল হইরাহে বলিরা আমরা
ভনি নাই। বর্মনটের সমর্থক আমরা মহি; এই বরণের
প্রতিবাদমূলক বর্মনটেও বে কোন কল হর মা ভাহাও এক্ষেত্রে
দেখা গেল। কার্তিক সংখ্যার "শিক্ষক" পত্রে অব্যাপক ভাঃ
রোহিনীমোহন ভটাচার্য্য লিখিত "শিক্ষকের বর্মনটি" শীর্ষক যে
প্রবৃদ্ধি প্রভালিত হইরাহে এই প্রস্কে ভাহা উল্লেখবাস্য।
ভাঃ ভটাচার্য্য কলিকাভা বিশ্ববিভালরের ইংরেক্টী সাহিত্যের
প্রধান অব্যাপক এবং "শিক্ষক" পত্রিভাট "নিধিল বাংলার
শিক্ষক সমাক্ষের মুখপত্র" রূপে পরিভিত।

ভাঃ ভটাচার্ব্য লিখিতেহেন, "দাবি দীকার করিবে নেবার বে পহা অবলয়িত হরেহে তার সঙ্গে সহাস্তৃতি না থাকলেও শিক্ষবের হ্রবহার এবং হুর্গতিতে তাবের প্রতি সহাস্তৃতি সভব। বর্ষবেটের উপর কটাক্ষ করে শিক্ষবের হাবি অধীকার করা চলে না। জীবনবাঝার নান এবং ক্রব্যব্দ্য বে পরিবাণ বেডে সিরেহে তাতে বর্জনান আরে আর বেঁচে থাকাই অসভব।" ইহার পর লেখক শিক্ষবের নিশনরীর সহিত চূলনা করিরা বলিতেহেন, "অভেরা পার্বিব সন্দাহের দিকে বতটা নজর বেন, শিক্ষকের পক্ষে কি ততটা সনীচীন ? আর-র্যতিটা অভেয় বতটা লক্ষ্য, আর্থিসর্জন কি শিক্ষকের পক্ষে ততটাই শোভন ও বোগ্য নর ? অভে বেখাবে মুখর, শিক্ষক কি নেখাবে বেনি হবেন না ? শবিল্নবারীরা পের্থন বা প্রতিভেক্ট কণ্ডের কর তাগিদ দেন না।" বর্তমান আরে বাঁচিবা পাকা বে প্রেমীর শিক্ষকদের পক্ষে অসম্ভব, লেবক তাঁহাদিগকে মিশনরীর দৃষ্টান্ত অন্থসরণ করিয়া আত্মবিসর্জনের উপবেশ দিরাহেন কিরণে তাহা আমরা বৃত্তিসাম না। শিক্ষকেরও পরিবার পালম করিতে হয়, ভক্রহতা রকা করিতে হয়।

ভা: ভটাচাৰ্ব্য লিখিতেছেন, "গামরিক বিভাগ এবং यिनमञ्जीतमञ्ज मत्या चर्कायत्वाय ७ चनत्वाय त्वरे. कांद्रव यारे পাক লা কেন। কিছ দেখা যাছে যে শিক্ষকেরা অভাবএছ बन्दर जमबुडे। ... (वस्त्र किहू युवि स्टारे स्व बहे जर्मात जन्छ হবে সে কথা মনে করারও কারণ নেই। --- জীবনের মান वा वाजना ना क्याल जलाव अक श्रकांत चनचव।... পুৰিবীর বেশীর ভাগ লোকই অর্থের সম্বানে অনবরতই খুরছে এবং উপার্জনের কিকির খুঁজতেই ভাবের মন ব্যস্ত থাকে। কিছ শিক্ষকেরাও যে অবিরাম এই ভাবে বৰ্ণ-মুগের পিছনে পিছনে ছুটবেন এটা কেবল অংশাভন নয়, সম্পূৰ্ণ অস্থীচীন।" সামরিক বিভাগে এবং মিশনগী-দেৱ মধ্যে অভাববোধ বা অসভোষ নাই লেখক কোৰ তখ্যের উপর ভিত্তি করিয়া একশা বলিয়াছেন আমরা ভাছা জানি না, ভবে সামরিক বিভাগের এক জন সৈনিক অধবা এক কম মিশমরী যে বেভম ও ভাভা পাইরা থাকেম. মাৰ্যমিক ছুলের শিক্কদের বেতন অপেকা তাহা অনেক विन. बहै। काना कथा। चाकरकत पिरम हिला है।का विकरसत শিক্ষ বিশ্বণ বেভন দাবি করিলেও ভাহাকে শ্র-যুগের শিছনে হোটা বলিয়া অভিহিত ক্রিবার মত অকরণ লোক (क्रां (वने चार्ड वनिता मान इत ना ।

প্রবছের পেষে ভাঃ ভট্টাচার্য্য শিক্ষকদের বেতন বৃদ্ধির উপারবরণ বিভালরের সংখ্যা অর্জেক ক্যাইরা বেওরার বে প্রভাব করিরাছেন ভালা আনরা কোনরপেই সভোবজনক ধনে করিতে পারি না। ইংরেজ সরকার একেশে শিক্ষাবিভারে প্রবাজনীর অর্থ বরাজে গবর্জেন্ট বরাবরই বর্ধাসন্তব আপতি করিরাছে। ভাঃ ভট্টাচার্য্য শিক্ষার বর্ত্তমান ক্রান্ট কিছু কিছু আলোচনা করিরা মন্তব্য করিভেছেন, "ক্রান্ট সংশোধন না করে শিক্ষাবিভারের চেটা আর সমীচীন হবে না; বেবানে চারিট বিভালর আছে সেবানে বন্ধি হুইট বাক্তো ভা হলে শিক্ষকদের বেতন অন্ততঃ কিছুটা হ'ত। সরকার বে টাকা বিতে ইক্ষুক ভার বেলী ভারাভানি না হলে শিক্ষকদের আলতে গারে।"

এবানে ইংলভের নিজের শিক্ষাবিত্তারের বৃঠাত উল্লেখ

করা অপ্রাসদিক হইবে না। ১৮৭০ সালে বিলাভের

একুকেশন আটি পাস হর। ইংলও এবং ওরেলসের ভবন
বোট ক্ষমংব্যা হিল আড়াই কোট। শিক্ষার যান উম্লেড

পর শিক্ষাবিভার হইবে এই আপার বসিরা না থাকিরা ত্রিটপ গবর্ষেক শিক্ষাবিভারে এমন ভাবে মন দেন বে ১২ বংসরের নধ্যে নিয়নিবিভ অবস্থা ইভার :

প্ৰাথমিক বিভালয়	ছাত্ৰ-সংখ্যা
3649···	34,94,000
7555	, ,
বার বংসত্তে বৃদ্ধি···	84,01,000
	<b>₹%</b> 0,000
निक्करमञ्ज भरका।	e
>>10···	<b>&gt;</b> 2,8 <b>4</b> 9
7FF5	<i>৩</i> ৩,৫ <b>৬</b> ২
শিক্ষার ব্যর	
>> 90···	১,২৮,৬৪,০০০ টাকা
?FF5	8,03,77,000 "

বাংলা-সরকার এই সময়ে শিক্ষার জন্ত ব্যব্ন করিতেন ৪,৮৭,০০০ টাকা।

দেশে এখন প্রাপ্তবয়কের ভোটাবিকার প্রবর্তিত হুইতে চলিরাছে। এই অবহার শিকার ক্রুত প্রসার একাছ প্ররোজন। শিকার ব্যাপকতা এবং গভীরতা উত্তরটির প্রতিই একসকে সমান দৃষ্টি রাখিরা কার্যাক্ষেত্রে নামিতে হুইবে, করে শিকার মান উন্নত হুইবে তার পর শিকাবিভার করিব এই আশার বসিরা থাকিলে চলিবে না।

#### আদালত ও পঞ্চায়েৎ-রাজ

পশ্চিমবদের গবর্ণর ভা: কাটজু এলাছাবাদ বিশ্ববিভালরের আইন-সমিতিতে সম্প্রতি একটি বক্তৃতা দিরা আসিরাছেন। আইন পাস করিয়া ছাত্রদের আইন ব্যবসার পরিত্যাগ করিয়া অভ কান্দে যাওরা উচিত নর, আদালতে যোগদান করাই কর্ত্বব্য, এই অভিমত প্রকাশ করিয়া তিনি বলিয়াছেন বে আইম ব্যবসার একটি মহান্, খাবীন এবং উদার ব্যবসা। উকীলদের পক্ষে ভালিয়াতি প্রভৃতি অসং কার্ম্বোর সহায়তা করা অভিশর নিক্ষনীর, প্রত্যেক উকীলের সততা রক্ষা করিয়া চলা উচিত ভাঃ কাটজুর এই অভিমত সকলেই সমর্থন করিবেন। ভাঃ কাটজুর এই অভিমত সকলেই সমর্থন করিবেন। ভাঃ কাটজু ইহাও বলিয়াছেন যে, উকিলদের পক্ষে মন্তেলদের অভ্রোবে কোনরূপ অসাধ্তার আপ্রর লওয়া অভিশর নিক্ষনীর, ইহাতে সম্প্র আইন ব্যবসায়ের ক্ষতি হয়। উকিল সমাজ এয়প ভার্যকলাপ সন্থ করিবেন না মন্তেলরা ইহা ব্রিতে পারিলে আর এই প্রকার অভার সভব হইবে না।

বর্তনানে আইন ব্যবসারের বে অবহা দাঁভাইরাছে ভালাভে ভাঃ কাটকুর এই সতর্কবাদীর একাভ প্রবাধন হিল। গত বুবের কর বংসরে আর সব ব্যবসারের ভার আইন ব্যবসারের অবেক অববৃতি ক্ইরাছে। আসে লোকে আরপক সমর্বনের ক্ষতই উক্তিরের হারস্থ ক্ইত এবং এবন উক্তির অনেক হিলেন বাহার মজেল কোনরূপ বৈভিক্ষ বা হুর্নীতিপ্রারণভার অপ্রাধে

প্রকৃতই অপরাধী ইহা বুঝিতে পারিলে ভাহার পক্ষ সমর্থন করিয়া প্রকারান্তরে অভারের প্রশ্রর দানে সম্বত হইতেন-मा । १७ वृद्ध वित्मध्याद्य अहे चवत्रात शतिवर्तन स्टेबाट्ट । বুরের করেক বংসরে ব্যবসা বাণিজ্য, সম্পত্তি ভোগদ্ধন প্রভৃতির সংঘাচমূলক এত বিভিন্ন প্রকারের আইন পাস ' হটরাছে যে সাধারণ লোককে বিপন্ন হটরা বেষণ আদালতে উপস্থিত হুইতে হুইরাছে, তেম্বনি অসাধু লোক-দেৱও অৰ্থাগ্ৰের অক্স উপার বুলিরা গিরাছে। আইনের কাঁকে নিজের স্বার্থসিদ্বির চেষ্টায় শেষোক্ত শ্রেণীর লোকেরা ভবুবে আদালত হইতে মুক্তি লাভের জড় উকিলের শরণাপন্ন হইয়াছে তাহা নহে, অপরাধ অভ্ঠানের আগেও উকীলের পরামর্শ লাভ করিয়াছে এরপ অভিযোগ অবেক হ্টয়াছে। ডাঃ কাটভুর উভি তাহারই প্রতিধানি মার। যুদ্ধের সময় বহু গরীবের সম্পত্তি সরকার দবল করিয়াছেন। সরকারী ভতিপুরণের টাকা ভুলিবার ভর গরীব এবং নিরভর লোককে উকীলের শরণাপন্ন হইতে হইয়াছে এবং তাহার ফলে কোন কোন কেত্ৰে ভাষাদিগকে প্ৰবৃষ্ঠিতও হইতে হইয়াছে। ছ্নীতির বশীভূত হটয়া সরকারী উকীলের চেটার নামলার প্রধান আসামীদের মুক্ত করিয়া দেওয়ার দৃষ্টান্তও পাওয়া গিরাছে। কোন কোন উকীলের কার্যকলাপ আইন-ব্যবসারের মৰ্ব্যাদার হানিকর হইতেছে ইহাতে সন্দেহমাত্র নাই, কিছ সবচেয়ে বড় ছঃবের কথা এই যে সমগ্রভাবে উকীল সমাজ তাহার কোন সঞ্জির প্রতিবাদ করেন না। এছত সরকারী হন্তকেপের অপেকার বসিয়া না থাকিয়া উকীলেরা নিকেদের সংগঠনগুলির মারকত জনায়াসে এই সব পাপের প্রতিবিধান করিতে পারেন।

ডা: কাটছু বলিয়াহেন যে বিলাডী বিচার-পছতি এলেশের উপযুক্ত নতে। আমাদের দেশে পঞ্চায়েং-রাজ প্রবৃত্তিত হওয়া উচিত। পঞ্চারেতের হাতে বিচার কার্ব্যের ছাহিছ অপিত क्टेटन विठात लाख नक्क अवर चन्नवादनांश क्टेटन । जायता এই অভিমত সমর্থন করিতে পারিলাম না। আমাদের দেশে কোন কালেও পঞ্চাৱেতের উপর সর্ববিধ অপরাধের বিচারের ভার ছিল না , সম্পত্তিবটিত বিরোধ গ্রামের স্বার্ড পভিতের পাঁতি লইয়া পঞ্চায়েং বিটাইয়া দিতেৰ এবং হোটবাট প্রামা जनवाद्यव विठावमात्र छारावा कविट्यम । वाक्टेमिक्, जर्-মৈতিক এবং বড় রক্ষের ব্যক্তিগত অপরাধ প্রভৃতির ক্ষ আইনবেভাদের লইরা গটিত আদালত ছিল। আদালতের কাল রীভিনত ভাবে যদি চলে, উকীল এবং সলিসিটরেরা যদি মতেলকে জীৱাইরা রাখিরা কী আলারের বস্ত অনর্থক ভারিব আলার না করেন, হাকিষেরা বলি ক্রন্ত বিচার শেষ করি-বার কর প্রভাপীতি করেন ভাষা হইলে প্রবিচার লাভ অনেক সহত ও বছবাৰসাৰ্য হইতে পাৱে। বৰ্তমাৰে মিচাৰ বিভাগ

সর্বাসাধারণের মিকট ভীতি ও ব্যরবাহন্যের বছ হইরা বাক্ষির প্রধান কারণ উহার পরিচালনার ফ্রান্ট; আদালভ বিলাভী হাঁচে গঠিত ইহাই উহার প্রধান দোব নহে। অশোক-চক্র এবং অশোক-ভত্তর মোহর আমরা ভাতীর পভাকার এবং ভাতীর শীল মোহরক্রপে প্রহণ করিরাহি; বিচার-বিভাগ সংখারের হারা উহার দক্ষতা স্থতির ছত অশোক বাহা করিরাহিলেন আমরা সেই দৃষ্টান্ত অভুসরণ করিলে অফ্কারে পথের সহান মিলিবে। উকিল, ব্যারিষ্টার ও এটণী এই তিনের অবিকার ও আরতে আসিয়া পশ্চিমবাংলার বিচারপ্রাইদের সর্বাভ হইতে হর। অচিরে ইহার ব্যবহা হওয়া প্রয়োজন।

### ভারতরাষ্ট্রের আন্তর্জ্জাতিক নীতির মধ্যে অসঙ্গতি

গ্রীক্রকাল গ্রীধরণী আমেরিকার মুক্তরাট্টে ভারতবর্ষের বিষয়ে একজন বিশেষক বলিরা খ্যাতিলাভ করিরাছেন। ভারতবর্ষের সভ্যতা-সাধনার" মদ্মিনার" বলিয়া তাঁহার একট বিশেষ পরিচয় আছে। দেভ বংসর পূর্ব্বে তিনি তাঁছার মাড-ভূমিতে কিরিয়া আসিয়াছেন, এবং যুক্তরাষ্ট্রের ও ভারতবর্বের অনেক সংবাদপত্তে এই দেশের ভীবন সম্বতে নানা প্রবন্ধ ও সংবাদ পাঠাইতেছেন। সম্ভতি তিনি সন্মিলিত ভাতিসভের भावित विदिवनात्व वर्षेमावनीय वार्षा कविटलाहम् अवर ভারভবর্ষের আত্তর্জাতিক নীভির মধ্যে যে মানা অসম্ভি আছে ভাষার প্রতি ভারতবর্ষের দ্বষ্ট আকর্ষণ করিয়াছেন। আছ-ৰ্জাতিক নামা সমস্ভাৱ সহয়ে ভারতরাষ্ট্রের প্রতিনিবিষ্ণকী এমন একটা নীতি অহুসরণ করিতৈছেন বাহা বাছবভার উপর প্রতিষ্ঠিত নয় ৷ ভাবুক শ্বাহরলাল নেহরুর হোঁরাচ তাঁহাদের चारकरकर चंत्रविचत टाणांविण कतिर्लाह । अक्षे पृहीच দিয়া ঐবরণ ব্যাপারট ব্যাখ্যা করিয়াছেন। দক্ষিণ-আফ্রিকার খেতাৰ প্ৰভূষবিদাসী গৰ্মে ষ্টের বিক্লছে ভারভবর্ষের অভি-বোগ এবনও সন্ধিলিত ভাতিসন্দের দরবারে অমীয়াংসিত আছে। এই গবৰে ঠি আবার দক্ষিণ-পশ্চিম আফ্রিকার অছি। এই অঞ্চ ভার্ত্বানীর উপনিবেশ ছিল। প্রথম বিখরুছের প্রাক্তরের পর ইহা কার্বানীর নিক্ট হইতে কাভিয়া লইয়া √वाण्डिनत्वद (League of Nations) चनीत्व चारत। এই সব্দ ভাষাকে অভিন্নপে পরিচালনা করিয়া স্বায়ন্তশাসনের উপবোদী করিরা গঠন করিবার ভয় ভারার শাসনভার দক্ষিণ ব্যক্তিকার হাতে হাড়িরা দেন। প্রভ ২৭।২৮ বংসর এইরপ শাসনের কলে দেশের অধিবাসী কুফার অনগণের কভটা উয়তি হইয়াছে ভংগছছে বধেষ্ট সন্দেহ আছে। গভ বংসর र्शिय-चाक्रिकांत शंदाव के क्षेत्रांच तथा । कार्या व विक्र পশ্চিৰ অফিকাকে ভাঁহাৰের রাষ্ট্রের অংশরূপে একানীভূত করার জহুষভি বেওরা হউক। ভারভরাট্রের প্রতিনিধি

এমতী বিষয়লন্দী পণ্ডিত ইহার বিরোধিত। করেন, এবং সন্মিলিত থাতিসন্দ এই আপদ্ধি এহণ করিরা দক্ষিণ আফ্রিকার প্রবর্গেটর প্রভাব অঞ্জান্ত করেন, এবং ঐ প্রবর্গেটকে মুতন অছিনামা পেশ করিবার অসুরোধ জানাম।

এই অনুরোধ অঞাভ করিয়া ঐ গবর্ষেণ্ট এই বংসরও জাঁহাদের দাবি পেশ করিয়াহেন। এমতী বিকরনদ্মী পণ্ডিত এ বংসরও ভাষার বিরোধিতার নেডড এছণ করিরাছেন। কিছ এবার মধ্যপ্রাচ্যের ভারব রাইগুলি ও পাকিছান ভাঁছার প্রস্তাবের বিক্রতে ভোট দিয়াছে। এই কবার উল্লেখ করিয়া শ্ৰীৰরণী বলিয়াছেন বে ভারতরাই যদি বাত্তবভার অভুসরণ ক্রিত ভবে মুসলমান রাইগুলি এরপভাবে একটা শ্বেতাক রাষ্ট্রের অক্লায়ের সপক্ষে যাইতে সাহস পাইত না। ভারত-ৱাষ্ট্ৰের প্ৰতিনিধিবৰ্গ যদি বুৰাইয়া দিতেন যে প্যালেষ্টাইন বিভাগের বিরুদ্ধে আমাদের সাহায্য পাইতে হইলে আরবরাঞ্জ-গুলিকে কোন কোন বিষয়ে আমাদের সাহায্য করিতে হইবে, দানপ্রতিদানের নীতি মানিয়া চলিতে হইবে তাহা হইলে আরব রাইগুলি এরপ ভাবে খেতাল প্রাবাভের সপক্ষে ভোট দিতে পারিত না। ভারতরাই প্যালেষ্টাইন বিভাগের বিরুদ্ধে মত দিরা প্রভাব করিয়াছে যে তংগরিবর্ত্তে একটা বৃক্ত-बारहेब श्राकृष्ठी कवा रुपेक, भारमहीरेश प्रदेष भगर्याण-সাপর রাখ্য এই বুক্তরাই (Federation) প্রতিষ্ঠা করক। ইছদীরা ইহার বিরোধী, আরবরাও তাহাদের নিরম্বুশ অধিকার চার সংখ্যাগরির্ভতার ভোরে। ইছার কলে ভারত ইছদীদের সাহায্য হারাইয়াহে, আরবদের সাহায্যও লাভ ক্রিতে পারে নাই। এইছৰ আন্তৰ্জাতিক কেন্তে অনেক বিষয়ে ভারতরাই ৰাৰাভাবে বিপন্ন হইতেছে।

### পূর্ব্ব এশিয়ায় যুগ-পরিবর্ত্তন

প্রার তের বংসর জাপানের সলে বৃদ্ধ করিরা চীনের চিরাং কাটলেক গবর্থেন্ট মর্ব্যাদার সহিত ইকিরা হিল। অবস্থ তাহার পিছন হইতে শক্তি বোগাইতেছিল আমেরিকার বৃত্ত-রাই। নাঞ্রিরার বিবাদ আরম্ভ হর ১৯৩১ সালে; জাপানের দাপটে ঐ দেশ হইতে চীনকে হটরা আসিতে হর। আবার শক্তি পরীকা আরম্ভ হর ১৯৩৭ সালের জ্লাই নাসে। পিশিং নগরীর নার্কো পোলো প্রের ঘটনার অভ্যাতে জাপান চীন দেশের উপর বাগাইরা পড়ে। চারি বংসর চীন প্রার একাকী বৃদ্ধ চালাইরা গেল; পৃথিবীর সহাত্ত্তি তাহার মনের বল ও উংসাহ অটুট রাবিতে সাহাব্য করে। আরভবর্ষ হইতেও এই প্রীতি অভ্যাত্ত ভাবের গলোঞী। কংপ্রেসের সভাপতি রূপে প্রভাবন্তর বস্থু চীনে একট চিকিংসক দল প্রেরণ করেন। ১৯৩১ সালে পভিত জবাহ্রলাল দেহক কংপ্রেসের প্রতিবিধি-

রূপে চীন দেশের তথানীন্তন রাজবানী চুংকিং গমন করেন।
চিরাং কাইশেক তথন চীনের কর্ববার। তিনি এই প্রীতির
প্রতিদানে সমীক ১৯৪২ সালে ভারতবর্বে আসেন; গাড়ীজীর
সলে সান্ধাং করির। ভারতবর্বের খাণীনতা-সংগ্রামের প্রতি
অনুষ্ঠ প্রভা নিবেদন করেন; ত্রিটিশ গবর্ষে উকে প্রকাপ্তে
অনুরোধ করেন ভাঁহার। যেন ভারতবর্বের ভাতীরভাবাদী
মঙ্গলের সহিত সন্মানজনক আপোব করিরা কেলেন।

এই সম্বন্ধে অনূর অভীতের কথা শরণ করিয়া আমরা চিরাং কাইশেক পরিচালিত রাষ্ট্রের মৃতন বিপর্বারে চিছাৰিত হইয়া পঢ়িতেছি। জাপানের পরাক্ষের ভিন ৰংসৱের মধ্যে চীৰা ক্ষানিষ্টদের আক্রমণে চিরাংকাইশেক প্ৰদেশ দাঞ্বিয়াও উত্তর চীন হইতে হটবা আসিতেছে। চীনের রাজধানী নানকিনের উপর আক্রমণ আসর। এই বিপৰ্যাৱের কারণ সম্বন্ধে যে তর্ক উঠিয়াছে তাহাতে যোগদান করিতে গেলে চীনের অবসা সম্বদ্ধে আরও খনিষ্ঠ পরিচয়ের প্রভোকন। এই কারণ যথেষ্ট নর যে সোভিরেট ইউনিয়ন চীনা क्यानिहेरमत (भवत्म पाकिया नर्स क्षकारत नाश्या क्रिक्टिंस : প্রভি-উন্থরে বলা হইভেছে যে চীনের পিছনেও ভ আমেরিকার যক্তরাষ্ট্রের বিশেষ সাহায্য আছে। এই ভাবে কাটাকাট ক্রিয়া অবস্থা এমন দাঁড়ায় যে চিয়াং কাইশেক গবর্ষে ক চীন দেশের জনগণের একটা বিরাট জংশের প্রীতি হারাইয়াছেন বলিয়াই বিপন্ন হইয়াছেন। এই সিদ্ধান্ত সহছে কোন ভৰ্কের অবকাশ নাই। যে সব শক্তি ভগতের শক্তিভাভারের চাবি-কাঠি হাতে লইৱা বসিয়া আছেন, তাঁহার;—আমেরিকার যুক্ত ৱাই ও ইউরোপ-এশিয়ার সোভিয়েট ইউনিয়ন-একমত হটতে পারিলে পূর্ব্ব এশিয়ার হুগ পরিবর্তনে আশার আলোক দেবা দিতে পারে। ভাষা মা হইলে এই অঞ্লের পণ্যাগরণের নেতত্ব ক্যানিইদের হাতে চলিরা বাইবার সভাবনা আছে। একটা কথা গুলা যায় যে আমেরিকার বুক্তরাই নিজের স্বার্থ বন্ধার ভর্ট এই অগ্রগতিকে বাধা দিবে। উত্তরে এট প্রশ্ন विकाना करा रह-- छट्ट अछिन (क्य क्यानिश्रेष्ट्र अनाद्व बाबा (बन्न बारे? अरे अट्मंब कांव महत्व अना यात्र बारे. এবং ক্ষম। করিরাও কিছু বলিতে চাই না।

পনর-বোল বংসর পূর্ব্বে একবানি বই পছিরাছিলার।
আপট্র লোক তাহার লেক। বইবানির নাম—এলিরার
বিজ্ঞাহ—Revolt of Asia। লেক তবিভবাই করিয়াহিলেন বে বিভেন পাকান্তা সভ্যভার নেতৃত্বপদ হারাইবে;
আবেরিকার রুক্তরাই সেই পদে বসিবে এবং পাকান্তা সভ্যভার বারক্তরপে নব-ভাএত এলিরার সমূবীন হইবে। তবন
একটা ভীষণ সংঘর্ব দেবা দিবে—সংভৃতির সংঘর্ব; ভাতি
(race) ও বর্ণের (colour) সংঘর্ব; অর্থনৈটিক ভার্নের
বব। পৃথিবীর হুই-ভৃতীরাংশ লোক এক পক্ষে, পৃথিবীর

প্রাকৃতিক সম্পদের যুহ্দংশ এক বিকে। এই লোক-বল ও
সম্পদ নির্ম্তিত হইবে শক্তি-মবের বারা—সোভিরেট ইউনিরব,
চীনারাই ও কাপান; এই জি-শক্তির মব্যে কাপানের ছান
হইবে তৃতীর এবং সাত্রাজ্যবাদের হইট শেষ বারকের বিরুদ্ধে
এই জিশক্তি আত্মবার্থ রকার কত মুদ্ধ করিতেও পরায়ুব্ধ হইবে
না। এই বই পাঠ করিয়া মনে মনে প্রশ্ন করিয়াহিলাম—
ভারত তবু কই ?

ভাগচন ক্লোভের ভবিত্তধাণী অকরে অকরে ফলে নাই। এক বিশ্বহুদ্ধে পরাজিত ভ্টরা জাপানের শক্তি ধর্ম ভ্টরাছে; ভাছার ব্যবসা-বাণিজ্য নট ছইয়াছে এবং দেশ মুক্তরাট্রের সামরিক শাসনে আছে। কিন্তু এই পরাক্ষরের প্লানি মুছিরা যাইতে এবং আর্থিক ক্ষতি পুরণ করিতে বেশী দিন লাগিবে মা। ভাপানের সৈভাব্যক্ষের বিচারে একজন ভারতবাসী विচারক, धाः बांशवित्याव शाम, मित्रुक स्टेबांबितम । जिनि তাঁছাদের নিৰ্দোষ বলিয়াছেন, এবং দেশে কিবিয়া যাতা বলিতেছেন তাহার মধ্যে আমাদের উক্তির সমর্থন পাই।. যে সংযদের সহিত ভাপানী ভাতি পরাভরের নিষ্ঠুর বিধান খীকার করিরা লইরাছে, বে নিয়দ-নিঠার সহিভ ভাহারা পুনুর্বঠনের কান্ধে আন্ধনিয়োগ করিয়াতে: বুরোভর বুর্বের নামা অভাব যেরপভাবে নীরবে বিনা প্রভিবাদে প্রহণ ক্রিয়াছে, এক্লপ কাতির পুনরুখান অবস্থাবী। স্থতরাং পরাজিত জাপান ও বিধ্বস্ত চীন সোভিরেট ইউনিরনের নেতত্বে সংগঠিত হটয়া উঠিবার অবসর পাইলে পুৰিবীয় চেহারা কিরিয়া ঘাইবে।

আপটন ক্লোক বলিয়াহিলেন এই ভিন বেশের মুক্ত প্রবাসে সোভিরেট হইবে ভাবের শুরু, চীন দেশ হইবে ভাহার পরিচালক (manager), এবং জাপান বোগাইবে ভাহার সৈত-শ্রেমী। এই পরিণতির মধ্যে ত্রিটিশ সামাজ্যের অভায়রে ইংরেজ, ছচ ও আইরিশ জাতির সহবোগিতার অভুরূপ অবহা প্ট হইবে। ইংরেজ করিরাতে সাত্রাজ্য পাসন, ছচেরা করিরাতে সাত্রাজ্যের ব্যবসায়-বাণিজ্যে লাভ এবং আইরিশরা করিরাহে সারাভ্য রক্ষার *ভত মুহক্ষেরে প্রাণ*পাত। সোভিবেট ইউনিবন, চীন ও জাপানের মধ্যে কর্তব্যর ভাগ-বাঁঠোরারা এই ভাবেই হইতে পারে। এই সঞ্জাবনার মধ্যে ৰে বুগ পরিবর্জনের স্কলা কেবা বার সেই পটভূষিতে ভারত-বাট্টের হান কোধার ভংসক্তে আনাদের সকাপ হওৱা উচিত। কাৰণ কোন প্ৰাচীৰ ভূলিয়া এই পৱিবৰ্ত্তৰের উচ্ছাসকে আমাৰের দেশ হইতে ঠেকাইয়া রাধা বাইবে না. বেষন পারে ৰাই চীন বেশ। ভাবের গভিপ্ত কোন বস্ত নিশ্বাণ করে না। लांक्य वत्न नवाय-योगत्यम् माना गुरुष्टा नवत्य त नव ভিজানার উদর হইরাহে, তাহাই বিপ্লবের বাহক। এই ক্ৰাটা শৱৰ ক্ৰিয়া চলিতে পাৰিলে আৰক্ষৰ প্ৰ-ভৱ ও

সমাকতরের মধ্যে সেন্ত্ নির্মাণ করিতে পারে। সেই সৌতাগ্যের যোগ্য হইবার গুণ আমাদের দর্বা কুটাইরা ভূলিতে হইবে! আমাদের চিন্তা ও কর্মের মধ্যে তার বীজ দুকারিত রহিরাতে।

#### ইন্দোনেশিয়ার অবস্থা

ইন্দোনেশিয়ার সাধারণভল্লের রাইগতি ডাঃ সোকর্ণ ভারতরাট্রের প্রধান মন্ত্রী পভিত জবাহরলাল নেহরুর আমন্ত্রণে আমাদের দেশে আসিতেছেন। ইতিপূর্ব্বে ১৯৪৭ সালের শীভকালে দিল্লী নগরীতে যে "নিধিল-এশিয়া" কমকারেল বসিয়াহিল ভত্নপলকে এই সাধারণভল্লের প্রধান মন্ত্রী ডাঃ শারিয়ার আমাদের দেশে পদার্গণ করেন। ডাঃ সোকর্ণের আগমন উপলক্ষে ইন্দোনেশিয়ার বর্ত্তমান অবহা সম্বন্ধ আলোচনা অপ্রাসন্থিক হইবে না।

ভাপানী আক্রমণের সময় ভাচ সাত্রাক্যবাদীরা পলাইরা সিরাছিল প্রশান্ত মহালাগরে অবছিত এই সব দ্বীপপুরু হইতে যেনন ইংরেজরা সিরাছিল বর্জা ও মালর হুইতে; ইংরেজের প্রধান বাঁটি সিলাপুরের যেনন পতন হুইরাছিল, সেইরপ মার্রা, ব্যাটাভিয়া প্রভৃতি ভাচ সামরিক ক্রেজও ভাপানীদের হাতে চলিয়া যার। ভাপানের পরাভরের পর ভাচরা পূর্বের শাসনব্যবহা কিরাইরা ভানিতে চার। কিছ গণতন্ত্রী ইন্দোনেশিরানরা একটা ভানীন সাবারণ-তন্ত্র প্রতিন্তিত করিয়া এই প্রত্যাবর্ত্তনে সভার বাবা দের। ১৯৪৭ সালের ভাগই মালে এই সাবারণ-তন্ত্র (Republic) খোষণা করা হয়, এবং ভার অভিন্থ নানা ভাবে সন্ধিলিত ভাতিসক্র কর্ত্তক শীক্ত হুইরাছে।

ভাচদের ইহা মনঃপুত ভ্ইবার কথা নয়, এবং পত তিব বংসর হটতে ইন্সোনেশিয়ার সাধারণতন্ত্রের বিরুদ্ধে তাহারা क्क ठामारेया यारेटल्ट । 'अकवा मर्श्यकनविविक व काठ मूं चि-পতিদের মুকুন্দি বিষ্টাণ ও মার্কিনী পুঁলিপতিরা, এবং শেষোক্ত-দের সাহায্য না পাইলে ভাহাদের সামাক্য রক্ষা করিতে পারিবে मा. धवर चनीमच (नमनमृत्यत नवकाश्रक काजीवकावादीरस्व সদে বৃদ্ধ করিরা সকলকার হইতে পারিবে না। আক তিন বংসর বরিয়া সে চেপ্তাই ভাহারা করিয়া আসিভেছে এবং পূৰ্ব্ব-এশিরার জাগৃতি ও সংহতির পৰে বছ বাবা ছাপন ক্ষরিভেবে। এই চে**ঠার ভাহারা ইন্দোনেশিরার নানা দ্বী**পের পুঁ দ্বিপভিষের নিকটে নানা ভাবে সাহায্য পাইতেহে। সেই-ব্রুত লিকরভাতি নগরীর সন্ধিসর্ভ ( ১৯৪৬ ) নানা ভাবে পদ-্ৰলিভ করিভেছে। ভাষাদের তাবেনারীভে অনেকগুলি বাই গৰাইয়া উটয়াহে ় প্ৰায় প্ৰতি খীপে একট ক্ষিয়া বাই ভাচৰের অনুধ্রহে পঠিত হইরাহে। ইলোনেশিরা সাধারণ-ভাষে পৰিবি ও ক্ষতা এই ভাবে সমূচিত হইভেহে বেষণ ক্ষিয়া "পাকিছান" প্ৰতিষ্ঠান ভাৰতবৰ্ষে পৰিবি ও

ক্ষতা সহুচিত হইবাছে। আমাদের অভিনতার আলোকে ইলোনেশিরার অবহার কারণ ও কল বুবিতে চেটা করিলে, সংবাহপত্রে প্রকাশিত নামা সংবাদে বিভ্রাম্ব হুইতে হুইবে মা।

গত এক যাগের মধ্যে ওলকাকদের দেশ হইতে একট "নজিনিশন" আসিরাছিল ইন্ফোনেশিরার—সাবারণতত্ত্তর নেতৃস্থলের সদ্দে আপোর করিবার কট। রাষ্ট্রপতি ডাঃ সোকর্ণ
ও প্রবান মন্ত্রী ডাঃ হাতা ওলকাক প্রবানগণের সর্প্তে আপোর
করিতে বীকৃত হইতে পারেন নাই। সর্ভওলি কি তাহা শুট্ট
করিয়া কানা বার নাই। কিন্তু নানা বিবরণ হইতে বৃথিতে
পার। যার বে ইন্ফোনেশিরার সাবারণতত্ত্রকে ওলকাক
তাবেদার রাষ্ট্রগুলির সমপর্ব্যারে কেলিবার চেটা করা হইরাছিল। আর একটা সর্ভ্ত ছিল ওলকাক রাজবংশের সদে
ইন্ফোনেশিরার সাবারণতত্ত্বের সম্বন্ধ ছাপন। এই সম্বন্ধের
মধ্যে ওলকাক প্রাবাদের ব্যবস্থা বা ইলিত ছিল বলিরাই
বর্তমান আলোচনা কালিরা সিরাছে।

এই প্রসদে একট বিবরে দৃষ্ট আকর্ষণ করিতে চাই।
মার্কিনী সাহায্য ব্যতিরেকে ওললাক-সাঞ্চাল্যের ঠাট
বলার থাকিতে পারে না। মার্কিন দেশ গণতন্ত্রের আবর্শ
অন্থারে প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল; এই তত্ত্রের মহিনা প্রচারের
ক্ষত্ত বর্জনান বিজ্ঞানের কল্যাণে যত সব উপার উত্তাবিত
হইরাছে তাহার ব্যবহারে চল্ড্ বাটিয়া মরে, কর্ণ শীভিত হর।
কিছ মার্কিন দেশের ব্যবহারে তাহার প্রমাণ পাওর। কৃটিন;
মন ও মুখে বে ঐক্য পাকা প্ররোজন তাহার অভাবের প্রস্কৃত্ত
উলাহ্বন মার্কিনী শাসক সম্প্রধারের আহরে লালিত-পালিত
ওলন্দাক সাঞ্জাবের পাহরে লাহরে লালিত-পালিত
ওলন্দাক সাঞ্জাবের পিছনে থাকিয়া তাহাদের সাঞ্জাত্তনিপাকে প্রশ্রের হিবে তত দিন ইন্দোনেশিয়ার লাভি কিরিয়া
আসিবে না। সন্মিলিত ভাতিসন্তের "স্বিফ্রা মিশ্ন" ব্যর্গ
হইরা কিরিয়া গিয়াছে; এখন নিক্ষেত্ত হইরা বসিয়া আছে।

### লোকসমষ্টি ও তাহার সংস্কৃতির ধ্বংস

সম্বিলিত জাতিসজ্যের আইনে একট নৃত্য বিধান ভূড়িয়া দেওৱা হইল। কোন রাট্ট শান্তির সমরে বা বুড়ে ব্যাপৃত থাকাকালে যদি কোন লোকসমৃত্তি নিঃশেষ করে বা তাহারের সংস্কৃতি ধ্বংস করে তবে তাহা আন্তর্জাতিক আইন অহুসারে হওনীর হইবে—বেমন হইরাহিল পরাজ্যিক আর্থানীর নেতৃত্বজ্প এবং বেমন হইতে হাইতেত্বে আপানের নেতৃত্বজ্প এবং বেমন হইতে হাইতেত্বে আপানের নেতৃত্বজ্প। লোকসমৃত্তিকে নিঃশেষ করা যার বৃহ ঘোষণা না করিরাও, তাহারের সংস্কৃতির বিলোপ সাধন করা বার আন্তির সমরেও। আনানের দেশেও স্ক্রাতি ইহার প্রমাণ পাওবা বিরাহে। ১৯৪৬ সালের ১৬ই আগঠের পর ক্লিকাডা, নোরাবালি, ত্রিপুরা, বিহার, উত্তর-পশ্চিম

নীবাৰ প্ৰদেশ, দিলী, পঞ্চাৰ ও সিছু দেশে বাহা ঘটনাৰে তাহা এই ৰুতন আইনের আওতার আসে, তংগদদে কোন সন্দেহ নাই।

অতীত বুগের ইতিহাসে আট্টলা, চেলিস বাঁ, হালাকু প্রভৃতি লোকের নামের সলে এইরপ অভার ইভিহাসে ছাম-লাভ করিরাছে। সেই সমরের মতি-সতি এইরপ মিঠুরতাকে পুব মিক্সনীর মনে করে নাই। ঐভিহাসিক বুগে—পত চুই হাজার বংসরের মব্যে—প্রীয়র বর্ষ ও ইসলামের মব্যে মর্যাজরিত করার কার্যকে সাব্-তনোচিত আধ্যার অভিনন্দিত করা হইতেহে বলিরা দেখিতে পাই। যদিও এই ছুই বর্ষের প্রবর্জ ছুই জনই বর্ষপ্রচারে গারের জোরের হাম নাই বলিরা বিশেষ নির্দেশ দিরাছিলেন, তবুও ভাহাদের শিশ্ত-প্রশিষ্টেরা এই অক্সা লক্ষন করিরাই বর্ষের প্রতি আমুগতোর বিশেষ বিশেষ প্রমাণ রাবিরা গিরাছে। প্রীইপ্র্য বুগের কোন বর্ষাই ইউরোপ-আমেরিকার বাকিতে দেওরা হর নাই, হজরং মহন্দ্রদ-পূর্ব্ব ইরাণের বর্ষ আৰু ইতিহাসের পৃঠার মাত্র দেখা বায় ; মব্য-এশিরার বর্ষাও সংস্কৃতি ইসলামের দাপটে নিক্ষিক্ত ভ্রমাছে। ইতিহাস ইহার সাক্য দিতেছে।

ভারতবর্ষের ইতিহাসে ভার্য-ভনার্ব্যের ধর্ম্বের বিরোধ রক্ত-বঞ্জিত কিনা তংসম্বাদ্ধে তর্ক চলিতেছে; হিন্দু ও বৌদ ধর্মের বিরোধে ভরবারির সাহায্য এহণ করা হইয়াহিল কিনা, ভাহা অসুসন্ধানসাপেক। গভ ছই হাজার বংসরের ইভিছাসে গায়ের জোরে ধর্মপ্রচারের নিদর্শন ভারতবর্বে পাওয়া যায় না। ইসলাম আসিয়া তাহার ব্যতিক্রম ঘটাইয়া-हिन। क्वांबान वा जबवादि---रेशंब इरेकिव मर्ता अकिरक ৰাছিলা লইতে হইবে, এরপ কিম্বন্তী বিশ্বাস হয় ত করিতাম मा। किंद्र ১৯৪७ जात्मद ১०१ पर्कावद मादायानी-দ্বিপুরায় যে তাওবের স্ট্র করিয়া ৫০,০০০ হাজার হিসুকে पूरे-अक मधार्द्य मर्या मूमनयान वांगारेया (कना प्रेन, जारा দেবিয়া কিম্বদন্তী ঐতিহাসিক সত্য ঘটনার উপর প্রতিষ্ঠিত विनया मन्त्र कदिए दिशा स्य मा। সন্মিলিত ছাতিগলের দরবারে পাকিস্থানের প্রতিনিধি মিসেস ইক্রাম-উল্লা বাঁরের ওকালতী শুনিয়া একটু আকর্ব্যাহিত হইরাছি। ভত্রমহিলাট সংস্থৃতি ধ্বংসের চেটাকে আন্তর্জাতিক আইন অভুসারে দঙ্গীয় করিবার পক্ষে অনেক রুক্তি দিয়াছেন। ঙাহার বঞ্চার সারাংশের উপর নির্ভর করিয়া মভামত প্রকাশ क्या रहेएकरह ।

লোকসমট ধাংস (Genocide) দ্তন নয়। ইতিহালের পূঠা এই নির্বাচার পূর্ব; অনেক সমরই এরপ ধাংসলীলাকে পূর্ব্য কার্য্য বলিয়া অভিনন্ধিত করা হইরাছে। বিংশ শতাকীয় বানব-মন এই প্রশংসায় সায় স্থিতে পারিতেহে না বলিয়া, স্থিতিত আভিসলে বটা করিয়া বক্তা বেওয়া হইতেহে।

লোকসমষ্টির প্রাণ ও সংস্কৃতির ধ্বংস বন্দুক-ভরবারির সাহাব্যে এক দিনে বা হাই দিনে করিলে বর্তমান বুরের লোকের চোবে পতে। কিছ কোন রাই বা সংখ্যাগরিষ্ঠ সম্প্রদার বদি নীরবে বহু দিন ধরিরা ধ্বংসলীলার নানা প্রক্রিরা চালাইরা বার, ভাহার বিচার কে করিবে? কোন লোকসমষ্টির পক্ষে ভাহার প্রমাণ সংগ্রহ করা কি সহক বা সন্তব ? মিন্ত্রশক্তিরা ধ্বরলাভ না করিলে হিটলার বা ভোজার নির্ভূরভার কোন প্রমাণ কি পাওরা বাটভ ? ইহুদী ভাভির মত সুসংবহু ভাভি হিটলারের নির্ভূর নাভির কথা বহু পুর্বেই আমানের গুনাইরাহিল। কেহু কি ভাহাভে কর্ণপাভ করিরাহিল ?

**म्हिक्ट विराम हेक्द्राय-छेबा बीट्यं "शाक्रिशाटन" यादा** ষ্টতেহে তাহা Genocide—লোকসম্প্রীর ধ্বংস ও তাহাদের সংস্কৃতির ধ্বংস—সে বিষয়ে আমাদের মনে কোন সন্দেহ নাই। অগ্রহায়ণ মাসের প্রথম হইতে নোয়াবালী কেলায় হিন্দুর পাকা ধান ক্ষেত হইতে যে ভাবে, নিয়মিত সম্পবন্ধ ভাবে, কাটিয়া লওয়া হইতেহে, তাহা Genocid -এর অঙ্গ বলিয়া নালিশ রুজু করিতে আমাদের মনে কোন দ্বিৰা নাই। এইরূপ বান কাটাকে চুরি বলে না। তাছা সুপরিক্ত্রিত কর্মপন্থার অংশবিশেষ। হিন্দুকে হাতে মারিব মা, ভাতে মারিয়া তাহার সংস্কৃতির ভিভি শিশিল করিয়া দিব : হয় ভাহাকে ভিটামাটির মারায় প্রতিবেশীর ধর্ম ও সংখৃতি এহণ করিতে হইবে, না হয় ভিটামাটির মায়া সংস্থৃতির পায়ে বলি দিয়া ভাষাকে দেশ ভ্যাগ করিতে ইইবে ষেমন করিতে হইয়াহে ভার্মানীর ইহুদীকে। এক হাভার বংসর পূর্বা হইতে ভার্দ্রানী এই ইহুদীদের ভরভূমি হিল; ভার্মানীর শাসক-সম্প্রধায়ের অনেকেই ভার্মানীর সংল এত প্রাচীন সম্বন্ধের দাবি প্রতিষ্ঠা করিতে পারিবেন না।

নোয়াবালী-বিপুরার "পাকিছানের" প্রকৃতির পূতন পরিচর
পাইরাছিলাম বলিরা আব্ধ 'Genocide' সম্বন্ধে আমাদের জ্ঞান
লাই ক্ইরা পজিরাকে। আমাদের কেশের অভিজ্ঞতার সাহায্যে
পৃথিবীর মানা দেশে যাহা ঘটতেকে তাহা অকুষাম করা সভব।
পূর্ব্ধে বিলাত-আমেরিকার ইতিহাস পঞ্চিরা আমাদের নিজের
কেশের ঘটনাবলী বুবিতে চেটা করিতার, সেইজ্ঞ সে জ্ঞান
ছিল ক্রনার প্রভঙ্গ, বাভবতাপুত। আব্দ আমাদের কাতীর
জীবনের ঘটনাবলীর সাহায্যে আমাদের দেশের সম্বন্ধে সভ্য
জ্ঞানের প্রতিষ্ঠা হইতেকে; বিদেশের সম্বন্ধে জান সভ্য
অভিজ্ঞতার আলোকে আলোকিত হইতেকে। আমাদের
এই জ্ঞান অর্জন করিতে অনেক অঞ্জ্ঞানে তাহা পরিকৃত
করিতে হইতেকে। তবুও বলিব এই অঞ্জ্ঞান সার্ব্ধ হইবে,
বিধি আম্রা সভ্যের সমুবীন হইবার সাহস ভাহা হইতে
সংগ্রহ করিতে পারি, বিধি বিশ্বাস করি বে সভ্যরতীর অঞ্জ্ঞান
এই বিশ্ববিশ্বাবে ব্যর্থ হ্র মা।

# আমার জীবনের তন্ত্র

### গ্রীযত্তনাথ সরকার

আদ্ধ যে কথা বলতে হবে তার বিষয় হচ্ছে আমার জীবনের দর্শন, অর্থাৎ কোন্ আদর্শ সামনে ধরে, কোন্ মন্ত্র ধান করে আমি এত বছর কাব্ধ করে এসেছি। আত্মজীবনী ব্যাখ্যান করতে গেলে নিজকেই সব কাব্ধের কেব্রু বলে ধরে নিয়ে চলতে হয়। রামায়ণ লিখতে গেলে রামকে বাদ দেওয়া যায় না। আমার জীবনে মেনে নেওয়া আদর্শটি দেখাতে গেলে আমি কোন্ পথে চলেছি, এবং কেন সে পথে চলেছি, তা না ব'লে উপায় নেই। যদি কেউ একে আয়ুভুরিতা বলেন তবে অবিচার করা হবে।

আমরা সকলেই নিজ জীবনের আদর্শ বেছে নিই চোথের সামনে বাদের দেখেছি তাঁদের কাজগুলির ভিতর-কার মৃগমন্ত্র বুঝে, অথবা বই পড়ে অতীতের মহাপুরুষদের জীবনী ও বাণী ভেবে ভেবে। কারণ তরুণ মান্ত্র বে বড় মান্ত্রের মত হতে চাইবে এটা স্বভাবের নিয়ম।

ধাকে দেখে আমি নিজ জীবনের ধ্রুব লক্ষ্য স্থির করতে পেরেছি, তিনি আমার পিতা, স্বর্গীয় রাজকুমার সরকার; আজ ৩৪ বংসর হ'ল তিনি`পরলোকগমন করেছেন; মৃত্যু-कारण ठाँव वयुन इराय्क्रिण १८ वरनव। धनी स्मिमाव-সম্ভান এবং ইংরেজী শিক্ষিত হলেও তিনি কথনও ভোগ-স্থুখ বা আড়ম্বর চান নাই; চিরদিন সরল সংঘত জীবন ষাপন করেছিলেন। তাঁর জীবনের ব্রত ছিল, আমাদের রাজশাহী জেলার দ্ব রক্ম লোক্হিতক্র কাজে নিজকে নিয়োজিত করা। বাংলার প্রথম যুগের ইংরেজী শিক্ষার সমন্ত স্থফলই তিনি পেয়েছিলেন। অথচ তাঁর চিত্ত শাস্তি পেত, বল পেত, বৈষ্ণব ধর্মের এক সরল উদার রূপ হৃদয়ে মেনে নিয়ে—এতে কোন বাইরের ভঙ্গী বা বন্ধ কুসংস্থার ছিল না, এন্ধন্য তিনি মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরকে গুরুর মত শ্রদ্ধা করতেন, কলিকাতায় এলেই তাঁকে দর্শন করতেন। মুর্শিদাবাদ জেলার মরিচা-দিয়াড়ে তার এক কাঠা कृष्णिखि हिन ना, अथह मिथानकात मूमनमान প्रकारमत নীলকুঠিওয়ালা সাহেবদের অত্যাচার থেকে উদ্ধার করবার জন্ত তিনি অনেক বংগর ধরে নিজের খরচে লড়াই করেন, দ্রেলা আদালত ও হাইকোর্টে মোকদ্দমা ক'রে গবর্ণমেণ্টের কাছে দরখান্ত পাঠিয়ে, হিন্দু পেট্রিয়ট কাগজে আন্দোলন क'रत, अमन कि अ विषय मः कान्य मिनन' अ नदकाती বিপোর্ট ছাপিয়ে তা পার্লামেণ্টের উদারনৈতিক সদক্তদের বন্ধ বিলাতে পাঠিয়ে।

ইতিহাস ছিল তার প্রিয় পাঠ্য। তিনি আমার বালক চিত্তে ইতিহাসের নেশা জাগিয়ে দেন। আমাকে প্রথমে প্র্টার্কের লেখা প্রাচীন গ্রীক ও রোমান মহাপুরুষদের জীবনী পড়ান। সেই থেকে এবং পরে ইউরোপীয় ইতিহাস পড়ে আমার যেন চোখ খুলে গেল; আমার তরুশ হাদমে অন্ধিত হ'ল কি করলে কোনো জাতি বড় হয়, কি করলে ব্যক্তিগত জীবনকে সত্য সত্যই সার্থক করা বায়। স্বদেশী বস্থ ও শিল্পস্র্য ব্যবহার করা যে আমাদের নৈতিক কর্তব্য তা তিনি পুরাতন পার্টিশন আন্দোলনের যুগে নিজ্ব বয়সে পর্যন্ত প্রকাশ্য সভায় উপস্থিত হয়ে নির্ভয়ে বলেছিলেন।

এইরপে যে জীবনমন্ত্রটি আমি পেয়েছি, তা বলবার আগে সাবধান করে দিই কেউ যেন না ভাবেন যে এই বোগসাধনায় আমি সিদ্ধিতে পৌছতে পেরেছি। আমার মৃত্যুর পরই জগৎ বলতে পারবে এর কডটা সার্থক হয়েছে, আর কডটা "বিফল বাসনারাশি" মাত্র। আমার জীবনমন্ত্রটি এই—জগতে কোনো খাঁট জিনিষ, কোনো সাধু প্রচেষ্টা, কোনো সত্য জ্ঞান, নষ্ট হয় না। ফল পাবার আকাজ্ঞা না করে নি:স্বার্থভাবে কান্ধ করে যাও, ভগবান সেটাকে বাঁচিয়ে রাথবেন। হে কম্মী। অনেক সময়েই তুমি নিজে তার ফল পাবে না। ধন খ্যাতি স্থপ বা প্রতি-পত্তি কিছুই তোমার লাভ হবেনা। কিছু তোমার কালট ষদি থাটি জিনিষ হয় তবে তা বিশ্বমানবের সম্পত্তি হয়ে থাকবে, তা তোমার দেশকে ঐ এক দিকে ধনী করবে: আর কথন কথন বাইরের জগংও তাকে চিন্বে, আদর করবে, তার অহুসরণ করবে। শদ্যের হুস্থ বীঞ্চ পাথরের গর্তে পড়লেও অনেক বছর পরে স্থবিধান্দনক জলবায়ু পেয়ে অঙ্র গজায়, গাছ হয়, সহস্রগুণ ফল প্রস্ব করে। সভ্য কাব্দের, সত্য কথার, থাঁটি জিনিষের মধ্যে এই অক্ষেয় প্রাণ-শক্তি আছে, এই চিরম্বনী সঞ্চীবতা আছে। হে সতাব্রত সাধক! তোমার সাধনা বর্ত্তমানে কেউ আদর করলে না বটে, কিন্তু বিশ্বরাঞ্জের এই বিধি তোমার হৃদয়ে সান্ধনা ও দুঢ়তার কারণ হবে।

এ পথে বে পথিক হবে ভার শুধু মনের বল নয়, অসীম ধৈর্যাও চাই। ভাকে অল্পে সম্ভষ্ট হলে চলবে না, সহজে কান্ধ সারব, এই ফন্দি করলে ভার চেটা শেবে পশু হবে। বে ছাত্র পাঠ্য পুত্তক না প'ড়ে, শুধু সংক্ষিপ্ত নোট পড়ে বা

বাছা বাছা প্রশ্নগুলির উত্তর মূধস্থ করে, দে পরীকা পাদ क्त्राज भारत, कथन कथन এই প্রদেশে ফার্ট ডিভিশনেও স্থান পায়, কিন্তু তার প্রকৃত বিদ্যা হয় নি. সে শিক্ষক হতে পাবে না, আর হলেও ঠিক নিজের মত ছাত্রই তৈরি করবে। বে কাজ খাঁটি, যার ফল স্থায়ী হবে, তাকে সম্পূর্ণ করতে বেশী সময় লাগে, ভার জন্য অনেক দিন ধরে অনেক রকম উপকরণ জোগাড় করতে হয়, এবং অনেক নৃতন বিষয় পড়ে নিজকে সেই কাজের উপযুক্ত কারিগর করে তুলতে হয়। नर्वत्वं निद्योत्पत हित्रत्वत हिरू हत्व्ह এर देवर्ग, এर स्पृत পরিকল্পনা, এইমভ সন্তা মেকী জিনিষের প্রতি বিমুখতা। নিজের অভিজ্ঞতার কথা বলি, কোনো একজন দিল্লীর বাদশা অথবা মারাঠা রাজার ইতিহাস লিথতে গিয়ে আমাকে প্রথমে দশ বছর ধরে তার উপকরণ সংগ্রহ করতে হয়েছে; সেগুলি সাজিয়ে, সংশোধন ক'রে, আলোচনা ক'রে, মনের মধ্যে হক্তম ক'রে, দশ বৎসর পরে ঐ পুশুকের লেখা আরম্ভ করি, তার আগে নয়। পাণ্ডিতাপূর্ণ চূম্পাপ্য পুন্তক কিনতে ও ফার্সী হন্তলিশির নকল নিতে বোধ হয় আমার উষ্ত আয়ের অর্দ্ধেক ধরচ হয়েছে; মারাঠা দেশে ত্রিশ-বৃত্তিশ বার এবং আঞা, দিল্লী, মালয়, রাজপুতানা, প্রভৃতি ঐতিহাসিক প্রদেশে বাবো-তেবো বাব বেড়িয়েছি। এছাড়া ঐ উপকরণসমূহ বীতিমত বুঝবার জন্য আমাকে ফার্সী, মারাঠী ও পোতু গীব্দ প্রভৃতি নৃতন ভাষা শিপতে হয়। এই দশ বংসর বাইরের জগতের কাছে আমার কাজ সম্বদ্ধে নীরব থাকতে হ'ত। কেন অসময়ে ঘোষণা করে, লোককে আশা দিয়ে পরে নিজ্ঞকে হাস্তাম্পন করব ? কিন্তু এই দশবর্ষ-व्यात्री উল্ভোগপর্বাই আম্মদের থৈর্বের শেষ পরীকা নয়। আমাদের গবেষণার ফলটি প্রকাশিত হবামাত্র চারদিক থেকে তার মূল্য সম্বন্ধে অবিশাস, ঈর্ব্যার কুৎসিত অপবাদ আমাদের ঘিরে ফেলে। কিন্তু বাই বিলাভের কোনো বিখ্যাত পত্রিকায় কোনো সাহেব স্নামাদের গবেষণার श्रमा कदालन, समिन सामारमय समाजीय निस्काश একেবারে চুপ হয়ে গেল।

থাটি কাজের পুরস্কার অনেক সময় এ জীবনেই পাওয়া
বায়। কত অপরিচিত বিদেশী আমার প্রাথমিক লেখা
পাড়ে আমাকে ফার্সী, পোড়া গীল্ল হন্তলিপি পাঠিয়ে, বা
ফার্নীয় থবর দিয়ে সাহায্য করেছেন। পরে শিশ্রগণ
এসে আমার চারদিকে জুটেছে। আজ সমন্ত সভ্যজ্ঞগং
এক দেশ হয়ে দাঁড়িয়েছে। ইউরোপ, আমেরিকা, এশিয়া
বেখানেই কোন থাটি জিনিষ বা ন্তন সত্য বাহির হয়,
অমনি সমন্ত সভ্যজ্ঞগং তা জেনে নেয়, নিজের কারে প্রাণহীন শু
ক্রেল, এ রক্ম দৃষ্টান্ত আমার জীবনকালেই দেখা গেছে। বেশী দিন চলে না।

পরাধীন ভারতে তু-জন ভারতবাসাঁ বিশ্বপৃদ্ধা হয়েছেন, নোবেল প্রাইজ পেরেছেন। বেদব যুবক নীরবে থাঁটি কাল করবার জন্ম বুক বেঁধেছে, আমি নিজ দীর্ঘ জীবনের অভিজ্ঞতা থেকে তাদের এই আশাস দিচ্ছি—তোমরা ঠিক পথ বেছে নিয়েছ, তোমরা সফল হবেই হবে, "জীবনে না হয়, মরণে।"

আমাদের শিকিত লোকদের হর্বল চরিত্র ও নীচ মন দেখে দেখে ঈশবচন্দ্র বিভাসাগর শেষ বয়সে misanthrope হয়ে পড়েন, অথাং মানবজাতিকে অবিশ্বাস ও ঘুণা করতেন। কিন্তু দেখ, দেশসেবায় ভার যে জীবন উৎসর্গ হয়েছিল, তা নিক্ষল হয় নি; যদি তিনি আজ জীবিত পাকতেন তবে এদেশে নান। বকম সমাজ-সংস্থাব কার্যো এবং নানা ক্ষেত্রে, বাঙালীর যা কখনও ভাব। যায় নি, এমন সব প্রতিভা ও কৃতিত্ব দেখে তিনি আনন্দিত হতেন। **দেইমত আমি নিজে দেখেছি. বিখ্যাত ডাক্তার মহেন্দ্রলা**ল সরকার দেশবাসীর স্বার্থপরতায় চটে গিয়ে চেঁচাচ্ছেন--"এই গু-থেকো জাতের কিছু হবে না।" হায়! তাজ ষদি তিনি বেঁচে থাকতেন ত দেখতে পেতেন যে ভারই প্রতিষ্ঠিত ইণ্ডিয়ান এদোদিয়েশন ফর সায়েন্স-এর দেই বৌবাজারের পুরানো বাড়ীতে গবেষণা ক'রে একজন ভারতবাসী জগম্বরেণ্য হলেন, মৌলিক আবিদ্ধারের জন্ত রমন বিজ্ঞানে নোবেল প্রাইজ পেলেন। মহেন্দ্রলালের জীবন ব্যর্থ হয় নি।

বে যুবক-সাধক এই মহা আদর্শ বরণ করবে, তাকে প্রথমে চারদিক থেকে দৈন্ত হিংসা ছুর্নাম এবং বহু বাধা বিপত্তি নীরবে সহ্থ করতে হবে। এক্ষন্ত তার পক্ষে চাই একটি অন্তর্জান, অর্থাৎ মনের মধ্যে একটা ছুর্গ স্পষ্ট ক্রা,—যেখানে বসে তার চিত্ত প্রিক্ষামী মনীষিগণের রচিত পারে। সেই জগংটা হচ্ছে পূর্ব্বগামী মনীষিগণের রচিত সাহিত্য। আমার জীবনের সর্ব্বপ্রেট লাভ হয়েছে এই গ্রন্থের সাহচর্যা। উপনিষ্থ ও সংস্কৃত কাব্য, ইউরোপীয় কাব্য, ইতিহাস ও জীবনী, বাংলার ত কথাই নাই,—এগুলি আমাকে এক নৃত্রন রাজ্য দিয়েছে বেখানে কোনো শক্র প্রবেশ করতে পারে না, সেখানে গিয়ে আমি নৃত্রন প্রাণশক্তি পাই। এটিও আমার পিতার কাছ থেকে পিথেছি।

সাহিত্য বা কলার সাধনা ঠিক বোগসাধনার মত।
এতে কঠিন জিনিস দেখে ভয় পেলে চলবে না। বে লোক
ভাবে বৈ সন্তায় কাজ হাসিল করবে, সে কথন কথন
বশ বা ধন পেতে পারে বটে, কিছ ভার জীবনের ফল একটি
অসার প্রাণহীন ভক শক্তের খোসা মাত্র। মেকী জিনিষ
বেশী দিন চলে না।

বোগদাধনে রত তপস্থীর মতই আমাদের গবেষককে
সরল শ্রমসহিষ্ণু জীবন যাপন করতে হবে, দীর্ঘকাল কঠোর
দারিন্দ্র সহ্থ করে তারপর সিদ্ধি আদবে। এইজগ্র আচার্য্য প্রফুল্লচন্দ্র রায়কে আমরা বিজ্ঞান-তপস্থী বলি। তিনি জীবনে Chemistry এবং দেশী লোকের যৌধ ব্যবসা— এই তুটিই ধ্যান করেছিলেন, স্থপ নহে।

বর্তমান যুগে এইরপ সাধনা আগের চেয়ে বড় কঠিন হয়ে পড়েছে। আমরা বলে গাকি এটা জনভদ্রের যুগ, age of democracy, কিন্তু বেখানে জনগণ অশিক্ষিত, অ-সংঘবদ্ধ, সেথানে রাজনৈতিক জুয়াচোরের প্রাধান্ত হবেই হবে। সে ফন্দিবাজ লোক ব্যবসা বা বিষয়কর্মে লাভবান হবার সম্ভাবনা নাই দেখলে, সে দল পাকিয়ে নেতা হয়ে নিজের আত্মীয় ও অফ্চরদের দেশের টাকায় ধনী করলে। চারদিকে এইরপ অবিচার ও অসাধুতার প্রাধান্ত দেখে চিস্তাশীল স্বদেশভক্ত যুবক হতাশাস হতে পারে, সে ভাবতে পারে, "দ্র ছাই! ভাল থাটি কাজ করা এদেশে অসম্ভব। চারদিকে চোরের রাজত্ব, ঘুয়ের জয়। আমি একক, তৃণমাত্র, এই বন্যার স্রোতের বিক্ষমে দাঁড়িয়ে ভেসে যাব।"

আমি তাকে বলব—"হতাশ হয়ে। না। সত্যের জয় হবেই হবে, হয়ত তোমার মৃত্যুর পর। কিন্তু দেশের সকল স্বসন্তানই যদি হতাশ হয়ে দেশের জন্য থাটি কাজ করার ব্রত মাথায় তুলে নিতে পিছুপা হয়, তবে দেশের কোন ভবিষ্যৎ থাকবে না, অসাধ্তার বিরোধী সৈন্যদল গঠন করা কারও পক্ষে কথনও সম্ভব হবে না। সমন্ত জাতিটা লোপ পাবে। অবোগ্য প্রাণী, জুয়াচোর জাতি ধ্বংস হবে, প্রকৃতির এই কঠোর নিয়ম অনিবার্য।"

থাটি কাজের, জ্ঞানসাধনার, দেশসেবার কঠোর ব্রভ কথন কথন সাধককে জীবিত কালেই পুরস্কার দেয়; আমি নিজে তা পেয়েছি। তাই, যে যুবক কর্মী এই পথে চলে আমার চেয়ে কুম ভাগ্যবান্ হবে, তাকে বলি—কোন বাধা, বাইরের কোন চক্রান্ত, সভ্যসন্ধানী দেশসেবককে একটি সান্থনা হতে বঞ্চিত করতে পারবে না—সে সান্থনা এই, ভোমাকে মৃত্যুশব্যায় বলতে হবে না—

জন্মেদং বন্ধ্যতাম্ নীতং ভব-ভোগোপলিপায়া, কাচমূল্যেন বিক্রীতো হস্ত চিস্তামণির্ময়া।

অর্থাৎ হায়! আমি কি ঠকাই ঠকেছি! সারা জীবনটা মাটি করলাম, টাকা স্থুপ বল এই সব ভোগের সামগ্রী খুঁজে খুঁজে। আমি একটা দৈব শক্তিসম্পন্ন মণি পেরেছিলাম, বেটা আমাকে যা চাই তাই এনে দিতে পারত। অথচ আমি সেই চিস্তামণি ফেলে দিয়ে এক টুকরা চক্চকে অসার কাঁচ নিলাম।"\*

ঋণ্-ইণ্ডিয়া রেডিওর সৌজল্পে প্রকাশিত। প্রবন্ধটি ১২ই ঋষ্টোবর
 ১৯৪৮ কলিকাতা বেতার-কেল্পে পঠিত হয়।

## জিজ্ঞাসা

### **জ্রীকমলরাণী** মিত্র

চিহ্নিত করিরা রাখো শোণিত অকরে সেই দিনগুলি, হে কালের ইতিহাস, নারীর সন্থান ববে আত কঠবরে পূর্ণ করি ভারতের আকাশ-বাভাস, ভারতের গৌরুবেরে করিল আহান চরম লাহ্ননা হ'তে লভিতে উরার! সেদিন আসে নি সালা; প্রলর-বিবাণ গরছি উঠে নি বাছি হানিরা সংহার ধর্মবাভী কারাচারী পাণিঠের বুকে। লাহ্নিতের ভগবাম ভূমিও সেহিন অনত-শরানে হিলে—ভোমার সন্থানে সভীবের পুণ্যব্রত হ'ল গুলিলীন!

মিণ্যা ভোকবাক্যভালে কত ব্যের দার কোনজ্বমে সারা হ'ল সান্থনার হলে; রাইনীতি মহয়ত্বে করিল বিদার, হরাচার স্বীতকার প্রশ্নেরে কোলে।

বেষিৰ চিহ্নিত থাকু, কৃষ্টিতে বিকার
অপনার্থ পৌরুবের নির্মিকার মূবে;
সেধিন চিহ্নিত থাকু, নিতে অলীকার
তিলে তিলে প্রতিশোব হানিতে কোডুকে!
সেধিন চিহ্নিত থাকু হানিতে জিজাসা
হার্থহীন শাই হান্দ্র বেষরক্রভাবা;
গ্রহ্নের হারীনজা কোন্ ব্ল্যে আজ
কিনিয়াহ বলো জনগৰ-অবিরাজ!"

## জয়দেবের তুকুল

### ब्यारागमञ्च त्राय, विणानिधि

জয়দেবের কৃষ্ণ ছুক্ল পরিধান করিয়া গোপাজনাদের সহিত বিহার করিতেন। অবশ্র একখানি ছুক্ল নয়, ছুইখানি। একখানি অস্করীয়, অপরখানি উত্তরীয়। উত্তরীয় প্রাবরণ, উড়ানী। তদ্ধারা উর্ধ্বাল আরত থাকিত। এই বল্পয়্যার নাম উদ্গমনীয়। এই কারণে কাহাকেও বল্প দিতে হইলে ধৃতি উড়ানী দিতে হয়। উড়ানী আবরণী, নারীর ওড়না। বহু প্রাচীনকাল হইতে বল্প-ধারণের এই রীতি চলিয়া আদিতেছে। কেহ কোথাও একবল্পে যায় না। মলিন কিয়া ছিয় বল্পেও যায় না। কোন ভদ্রলোক গৃহে আদিলে যুয়্মবল্পে তাহার সহিত সাক্ষাৎ করিবার রীতি ভারতের সর্বত্র অদ্যাপি প্রচলিত আছে। ইহার অস্তথা হইলে অসভ্যতা হয়। উদ্গমনীয় ধৌত বল্পের হইত। ধৌত শব্দ হইতে ধৌতি। ধৌতি হইতে ধোতি, ধৃতি আদিয়াছে।

জয়দেব লিখিয়াছেন, "বিচকর্য করেণ তুকুলে।" রুষ্ণ কুঞ্জগত হইলে কৌতুক করিতে কোন গোপালনা করদারা তুকুলদ্বয় আকর্ষণ করিল।

কি বর্ণের ত্রুল ? গৌর ত্রুল। পূজারি-গোসামী জয়দেবের টীকাতে গৌর অর্থে পীত করিয়াছেন। গৌর পীত বটে, কিছু আ পীত। তুকুল পীত অর্থাৎ হরিদ্রাবর্ণ रुटे जा। क्रक नव नौत्रमवर्ग हिलान ना, हिलान **आ**कान वर्ग वा जाउमीकू एम वर्ग, तम वर्ग जा-मीम वा जा-कृष्छ। আ-কৃষ্ণ অব্দে আ-পীত বসন বর্ণের বৈপরীত্যগুণে একের শোভা অন্যে বৃদ্ধি করে। বৈজ্ঞানিক ভাষায় রক্ত ও ছবিৎ, পীত ওঁনীল পরস্পর পবিপুরক বর্ণ। রাধিকা গৌরী ছিলেন, তাহাঁর অবে নীলাম্বরী শোভা পাইত। कि अप नी न गांव नी न नहा शाकीन वकी है कवि स्म-ভম্বর শাড়ীর উল্লেখ করিয়াছেন। ভম্বর সংস্কৃত শব্দ, व्यर् मन्न। त्यच-७ इत, त्याचत जूना नीन। तनीय नाती মেঘ-ডম্বর শাড়ী পরিতে ভালবাসিতেন। অতএব তিনি গৌরী ছিলেন, कृष्ण ছিলেন না। कृष्ण्य পরিহিত তুকুল ব্দবশ্য ধৌত। ছকুলের বর্ণ প্রকালনে নষ্ট হয় নাই। বোধ হয় তুকুলের স্বাভাবিক বর্ণ পাণ্ডুর ছিল।

আমরা তৃক্ল দেখিতে পাই না। তৃক্ল কি বন্ধ, জিজাসা করিতে হয়। অমরকোশে তৃক্ল শব্দ আছে। কৌম ইহার পর্যায় শব্দ। অমরকোশের টীকাকার মহারাষ্ট্রীয় ভাহাজি দীক্ষিত এই তৃই বন্ধকে পট্টবন্ধ বলিয়াছেন। ইহা এক মহা ভ্রম, পরে বুঝিতে পারা যাইবে। ইহা কুমাঞ্চাত, ইংরেজীতে Linen.

বংদেশে খাদশ খ্রীষ্ট শতাবদ্ সর্বানন্দ অমরকোশের এক টীকা করিয়াছিলেন। তিনি ক্ষোম ও চুকুলের অর্থ করিয়া লিখিয়াছেন, মল্ল নামে খ্যাত। আপ্টে-ক্লত সংস্কৃত-ইংরেজী অভিধানে বিশেষণ মল্ল শব্দের অর্ণ উৎকৃষ্ট। অতএব মল্ল বলিলে উৎকৃষ্ট বস্ত্র বুঝাইত। আর সেই বস্ত্র চুকুল। মল্ল শব্দ হইতে বাংলায় ও হিন্দীতে মল্মল্ শব্দ আসিয়াছে। ইংরেজ বণিকের নিকট ইহার নাম মল্ (Mull)। কেহ কেহ ঢাকার স্ক্র বস্ত্রকে ঢাকাই মল্মল্। ইহা কার্পান নির্মিত, ক্র্মা নির্মিত নয়, কিন্তু এত স্ক্র বেদেশে-বিদেশে প্রানিজ্য মল্ল দেখিয়াছিলেন, আর ক্ষের অর্পে সেই স্ক্র বর্পা করিয়াছিলেন।

ত্তৃল পট্টবন্থ নহে, ক্ষৌমবস্ত্র। কুমা-জাত ক্ষৌম। অমরকোশে 'অভসী স্যাৎ উমা ক্ষুমা', এক গাছের ভিন নাম। অত্সীর বাংলা নাম তিসী। ইহার বীজ মসিনা, সংস্কৃত মহুণা। মসিনায় তৈল আছে। সে ভৈলের নিমিত্ত বৰে ও বিহাবে তিসীর বিশুর চাষ হইতেছে। তিদীর হুই ডিন জাত আছে। কোনটার ফুল প্রায় শেত, কোনটার আ-নীল, কোনটার অরুণাভ আ-নীল। হুফ অতসীকুস্থম খ্রাম ছিলেন। মৎস্য পুরাণ পাঠে জানা যায় হিমালয়-কন্তা পাৰ্বতী ক্লফা ছিলেন। তিনি তপস্যা ক্রিয়া গৌরী হইয়াছিলেন। বোধ হয় সেই কারণে অভসীর এক নাম উমা হইয়াছিল। আমরা ভূলিয়া গিয়াছি অতসীর বন্ধলে কোমল স্নিগ্ধ অংশু আছে। সেই অংশুর সূত্র ও বন্ধ নিমিত হইত। সেই বন্ধের নাম ক্ষোম। হক্ষ ক্ষোমের নাম তুকুল ছিল। রামায়ণে, কালিদাসে, ভটিতে ক্ষোম বম্বের বছ উল্লেখ আছে। তুকুল এত স্ক্র হইত रा राष्ट्रमध जनकाद উহার মধ্য দিয়া দেখিতে পাওয়া যাইত।

এখানে এদেশের বত্মের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস লিখিতেছি। উপরে দেখাইয়াছি, বাদশ এটি শতাব্দে বব্দের তুকুল বহুজ্ঞাত মল্ল নামে খ্যাত ছিল। কিছ এক শত বংস্বের মধ্যে তুকুল ও ক্ষোমের তুর্গতি হইয়াছিল। বন্দদেশে এয়োদশ এটি শতাব্দের বিতীয়ার্মে মেদিনীকোশ সঙ্কলিত হইয়াছিল।

এই কোশে তুক্ল শব্দে শ্লন্ম বন্ত ও কৌম আছে। শ্লন্ম বন্ত কোমল নিশ্ব হন্ত্ম বন্ত । অর্থাৎ তৎকালে কুমানাত তুক্ল তুআপ্য হইয়াছিল। তৎপরিবর্জে লোকে শ্লন্মবন্ত্রকে তুক্ল বলিতে আরম্ভ করিয়াছিল। পটু এইরপ বন্ত্ম হইতে পারে, এই বিবেচনায় সেই সময় হইতে ভ্রমের আরম্ভ হইয়াছিল। তৎকালে কৌমবন্ত্রও তুআপ্য হইয়া আসিতেছিল। ইহার প্রমাণ মেদিনীকোশে পাওয়া যায়। ইহাতে কৌম শব্দের অর্থ অট্ট, তুক্ল এবং বন্ধলজাংশুক, শণজ ও অতসীজ বন্ত্র। প্রথম তুই অর্থ অমরকোশ হইতে গৃহীত, অন্য অর্থ কালক্রমে আসিয়াছিল। কৌম অতসীজ বৃঝি, শণজ নৃত্রন, আর বন্ধলজ্ব আরম্ভ নৃত্রন। শণজ বন্ত্মের নাম শাণ। এই শণ বর্ত মানে জ্ঞাত পীত পুষ্প শণ নহে। শণ শন্ত দ্বার্থ হইয়া গিয়াছে। প্রাচীন শণ ভঙ্গা বা সিদ্ধি গাছের নামান্তর। এই শণ গাছের বন্ধলে অংশু আছে। সে সাদৃশ্যে পীত পুষ্প শণের নাম হইয়াছে। ভক্লার ফুল নগণ্য।

ভঙ্গা হইতে পুথক করিতে পীত পুষ্প শণের নাম ফুলশণ আছে। সংস্কৃত কোশেও আয়ুর্বেদে শণ ভকা। অন্য অর্থ নাই। ভদা শণের অংশুতে বন্ধু হইত। সে বন্দ্র শাণ (Canvas)। এই শণের বীজে তৈল আছে। লোকে দে তৈল গাইত। অতদীর যেমন অংভ ও তৈল, ভঙ্গা শণেরও তেমন অংশু ও তৈলের নিমিত্ত বিস্তর চাষ হইত। সমগ্র উত্তর-ভারতে, মধ্য ভারতেও এই শণের চাষ ছিল। গ্রামে চতুর্দশ ধান্যের চাষ হইত। তল্পধ্যে শণ একটি ধান্য (ধান্য অর্থে ধান, কলাই, তিল ইত্যাদি খাদ্যবীজ)। মহুসংহিতায় উপনয়ন কালে বান্ধণ বন্ধচারীকে শাণবন্ধ, ক্ষত্রিয় ব্রন্ধচারীকে ক্ষৌমবস্ত্র এবং বৈশ্ব ব্রহ্মচারীকে মেষলোমজ্ববস্ত্র পরিতে বলা হইয়াছে। বঙ্গদেশে শাণবন্ত্র ও কৌমবন্ত্র অজ্ঞাত হইয়াছে। ব্রাহ্মণ ব্রহ্মচারী শাণবন্তের অভাবে পট্টবন্ত পরিধান করিতেছেন। ওড়িয়ায় কেন্সটরা বড় জালের নিমিত্ত বেমন ফুলশণের সক্ষ স্থতলি করে তেমন ইংডলি দিয়া ব্রাহ্মণ বালকের উপনয়নের জন্য প্রায় জালের মত পাতলা ছোট কাপড় বুনে। হাত হুই লম্বা, পোয়া তিনেক চওড়া। বাঁকুড়ায় উৎকল শ্রেণীর অনেক ব্রাহ্মণের বাস আছে, কিছ উৎকলের কেন্দট নাই। পুরোহিত ত্রাহ্মণ-বালকের উপনয়ন কালে বালকের কটিতে ফুল শণের অংশু বিছাইয়া মেধলা ছারা বন্ধ করেন। বল্পদেশে ভলার চাষ ছিল না। বোধ হয় উত্তর-পশ্চিম অঞ্চল হইতে শাণবন্ত্র শাসিত। শাণবন্ধ স্থুন। ইহার চাদুর হইত। আমরা কেছিশের থলিয়া, জুডা দেখিডেছি। কেছিল এই শাণবন্ধ।

মেদিনীর কালে যাবতীয় বন্ধলজাত বল্লের নাম ক্ষৌম হইয়াছিল। বস্ত্র কেবল পরিধেয় বস্ত্র নয়; চাদর, তংকালে ফুলশণের চাষ অধিক ছিল না। তৎপরিবর্তে পাটশণ সমধিক প্রচলিত ছিল। ইংরেজ বণিক গাছ পাটের ( অর্থাৎ নালিতা পাটের ) চাষ বিপুল আকারে বাড়াইয়াছে। পূর্বে অংশুর জন্য এই পাটের চাষ ছিল কিনা সন্দেহ। পাটশণের গাছ জ্বাগাছের তুল্য। ফুলের আকার জবাফুলের আকার; কিন্তু পীত-এই পাঁট উচ্চভূমিতে কিন্তু নালিতা পাট নিম্ন ভূমিতে জন্মে। বাঁকুড়া ও মানভূমে এই পাটের চাষ এখনও চলিয়াছে। পূর্বে ইহারই নাম পাটশণ ছিল। কবিকশ্বণ চণ্ডীতে সিংহলে বাণিজ্যে "পাটশণ বদলে ধবল চামর।" অর্থাৎ পাটশণ ধবল চামরের তুল্য উজ্জ্বল, এই কারণে বণিকেরা পাটশণের দারা ক্টত্রিম চামর করিত। मृना भूताए। ইहातरे नाम व्यतान-भाष, व्यर्शर व्यतान-লোমের তুল্য উজ্জ্বল পাট। বেরাল পাট নাম অভাপি বাঁকুড়ায় প্রচলিত আছে। অন্যত্র ইহার নাম মেষ্টা পাট, व्यर्थाः भाष-त्मारमञ्जू जूना छब्बन भाषे। भाष्मभारक কোথাও কোথাও কেবল পাট বলিত। চৈতন্যদেবের সময়ে নবদ্বীপে শ্রীধর নামে এক পাট-ব্যাপারী ছিল। এই কারণে তাহার নাম পাটুয়া শ্রীধর হইয়াছিল। কবিক্ষণ চণ্ডীতে খুল্পনাকে খুঞা পরিতে হইয়াছিল। যেমন ভূমি শব্দ হইতে ভূমি+ইয়া=ভূমিয়া, ভূঞা; তেমন ক্ষৌম অপল্রংশে থোম; থোম+ইয়া-থোমিয়া, থুমিয়া, থুঞা। এই থুঞা নিশ্চয় অভিশয় স্থূল বস্ত্র। বোধ হয় পাটশণের চট। থুক্রা বুনিবার পৃথক ভাঁতী ছিল। ভারতচন্দ্র পুক্রা জাতীর উল্লেখ করিয়াছেন। অতএব শণ শব্দে বৈদিক কাল হইতে অর্থ ভঙ্গা, পরে ফুলশণ ও পাটশণ আসিয়াছে। পট্ট শব্দেরও সেই হৃদশা হইয়াছে। পট্ট অর্থাৎ গ্রদ ক্বমিজ; তাহার সাদৃষ্টে বেরাল পাট নাম এবং ইহার সাদৃশ্যে গাছ পাট বা জুট।

কি কারণে ক্ষোমের এই অধোগতি হইল তাহা ঐতিহাদিকের চিন্ধনীয়। বোধু হয় জয়দেবের পূর্ব হইতেই ছক্ল-বয়ন-কলার য়াদ ও অবনতি হইতেছিল। তত্পরি মনে হয়, দেশে অশান্তিও চলিতেছিল। উদ্বেগের সময়ে কলার অবনতি অবশুদ্ধাবী। লোকে ভালমন্দ বিচার করে না, বাহা পায় তদ্ধারা কাজ চালায়। বর্তমানে আমাদের সেই দশা হইয়াছে। তথন বোধ হয় কার্পাদ চাষ অধিক চলিতে লাগিল এবং ক্ষ্মা ক্রমশঃ অপরিচিত হইয়া পড়িল। লোকে মনে করিতে লাগিল বঙ্কলভাত বস্তু মাত্রই ক্ষৌম। টীকাকারেরা ক্ষৌম ও ত্ক্ল না পাইয়া ইছার অর্থ কৌষেয় (তসর) ও পট্টবস্তু ব্রিতে লাগিলেন।

শকুন্তলা পতিগৃহে যাইবেন, তাঁহার পরিধানের নিমিত্ত কথ ঋষির তপঃপ্রভাবে বুক্ষ হইতে আ-পাণ্ডুর কৌম আদিল। টীকাকার ব্ঝিলেন, কৌষেয়। 🗪 বণ তসর কোষ বৃক্ষে উৎপন্ন হয়। শকুন্তলা ঋষির জ্ঞান্ধমে বঙ্কল পরিধান করিয়া থাকিতেন। সকল বৃক্ষ চটতে বন্ধল পাওয়া যায় না। ইহা দীর্ঘও হয় না, কারণ এক হাত ব্যাদের অধিক স্থুল বুক্ষ কাটিয়া ভাহার ব্যাল উন্মোচন করা সোজা কাজ হয় না। বুক্ষের কাণ্ডের ব্যাদ এক হাত হইলে বছল তিন হাত পাওয়া ফাইবে। গুড়ির ছই হাত আড়াই হাত ছেদ করিয়া মুগুর দিয়া গাত্র পিটিতে থাকিলে বঙ্কল শিথিল হয় এবং খোলের নাম পৃথক করিতে পারা যায়। তথন লম্বা-লম্বি চিরিয়াজনে ভিজাইয়া মুগুর দিয়া পিটিতে থাকিলে বন্ধলের রেল ও শুদ্ধ অংশ দ্রীভূত হয় এবং ভিতরের অংশু-জাল থাকে। ইহাই পরিধেয় বন্ধল। ৃশকুন্তলাকে তুইখানি বঙ্কল পরিতে হুইত। কটি বেষ্টন করিয়া মেপলা-বদ্ধ থাকিত, বোধ হয় আঁঠু প্যান্ত লপিত হইত। অপের একথানি ছোট, উদ্ধাক আবরণ করিত। স্কন্ধদেশে ডোরের শ্রম্থি দেওয়া হইত। বঙ্কৰ অভাপি অদুশ্য হয় নাই। ওড়িয়ায় কুন্তীপটিয়া নামে এক সম্প্রদায় আছে। তাহাদের এক জ্বনকে বন্ধন পরিয়া সন্ধ্যাকালে পশ্চিমদিকে মুখ করিয়া হব প্রণাম করিতে দেখিয়াছি। কটিতে ভোর বাবা, আঁঠু পর্যন্ত লম্বিত, খদির বর্ণ, কোমল। ওড়িষ্যায় ও অন্যত্র জম্বুকাদি বর্গের কুন্তী নামে এক বৃক্ষ আছে। তাহার ফল কুম্ভাকার, এই হেতু ্রুক্ষের নাম কুঞী। কুন্তী ও পট সংস্কৃত শব্দ। কুন্তীর বঙ্ক পট (বন্ধ) হইয়াছে যাহার, কুন্তীপট+ইয়া-কুন্তীপটিয়া। কুন্তীর বৈজ্ঞানিক নাম Careya arborea. প্রাচীনকালে মৃগচর্ম পরিধেয় হইত। চর্ম কেমন করিয়া স্থায়ী ও কোঁমল করিতে হয়, তাতা জানা চিল। কিছ বৰ্মল ও চৰ্ম বন্ধ-গণ্য হইত না।

অমরকোশে বস্ত্রের চত্বিধ উৎপত্তি লিখিত হইয়াছে;
বঙ্কলজাত, বেমন ক্ষ্মা ভঞ্গা; ফলজাত বেমন কার্পাস,
লোমজাত বেমন উর্ণা; কোষকীট-জাত, বেমন তদর ও
পট্ট। আমার অন্থমানে অমরকোশের বর্তমান সংস্করণ
তৃতীয় প্রীষ্ট শতাব্দে হইয়াছিল। ইহাই কিছু মূল অমরকোশ নহে। সর্বানন্দ বৃদ্ধ অমরকোশ পাইয়াছিলে।
তাহা অস্ততঃ তৃই-তিন শত বৎসবের পূর্ববর্তী হইবে।
তাহাতে বস্ত্রের চতুর্বিধ উৎপত্তি ধাকিবার কথা।

কিন্ত এই সময়ের পূর্ব হইতেই বন্ধদেশ কৌম ও চ্কুলের নিমিত্ত প্রসিদ্ধ হইয়াছিল। ইহার চারি শত বংসর পূর্বে কৌটল্য বন্ধের তুকুলের প্রশংসা করিয়াছিলেন। ইভিহাস-

পাঠক জানেন, চাণক্য পণ্ডিভের বুদ্ধিকৌশলে চম্রগুপ্ত নন্দবংশ ধ্বংস করিয়া মগধের সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইয়া-ছিলেন। ইনি মুরা জাতীয়া কন্তার পুত্র ছিলেন। এই হেতু ইনি মৌর্য চন্দ্রগুপ্ত নামে খ্যাত হইয়াছিলেন। চাণক্য শ্লোকে চাণক্যের নীতি বালকদিগেরও পরিচিত হইয়াছে। তিনি কুটিল নীতি **ছাবা চন্দ্রগুপ্তের শত্রুদ**মন করিয়াছিলেন। এই হেতু তিনি কৌটিল্য নামেও খ্যাত হইয়াছেন। তিনি वाका পविচाननाव निभिन्द "अर्थनाञ्च" नाटम এक अमृना গ্রন্থ বচিয়াছিলেন। সংস্কৃত ভাষায় এমন নীতি ও তথ্যপূর্ণ গ্রন্থ আর একটি নাই। শুক্র-নীতি, বুহম্পতি-নীতি, কামন্দক-নীতি, বিহুর-নীতি পভতি গ্রন্থে বাহ। নাই, কৌটলোর অর্থনীতি গ্রন্থে তাহা স্মাছে। মহীম্মর রাজ্যের রুদ্রপটণ শামশান্ত্রী মহারাজার গ্রন্থপাল ছিলেন। তিনি কৌটিল্যের অর্থশাস্ত্র আবিষ্কার ও প্রকাশ করেন, পরে ইংরেজীতে অমুবাদও করিয়াছিলেন। অমুবাদে দ্রব্যনির্ণয়ে অসংখ্য ভুলও করিয়াছিলেন। ইহাতে আশ্চর্ষের কথা নাই। কারণ কেবল ভাষাজ্ঞান কিম্বা কেবল বিষয়জ্ঞান কিম্বা দ্রব্যজ্ঞান দারা এইরপ গ্রন্থ বুরিতে পারা যায় না। এই ভিনের সংযোগ স্বহুল ভ। ভতুপরি অর্থশান্তের ভাষা অতিশয় সংক্ষিপ্ত ও হুরহ। তথাপি শামশাস্ত্রী-কৃত ইংবেজী অমুবাদ দারা পাঠকের প্রভৃত দিগ দর্শন হইয়াছে। তাহাঁর অগাধ পাণ্ডিত্য ও বেদবিত্যায় অধিকার সর্বদা হলভ নয়। অর্থশান্ত্রের এক অধ্যায়ে রাজকোষে রক্ষার উপযুক্ত রত্ন ও আবশ্রক বম্বের সংক্ষিপ্ত বর্ণনাদহ তালিকা আছে। সেখানে মাত্র তিনটি স্থানের তৃক্লের উল্লেখ আছে। বন্ধ, পুণু ও স্বর্ণকুডা। বঞ্চাগীরথা ও পদ্মার মধ্যবন্তী দেশ, পুণ্ডু পদ্মার উত্তরদেশ, স্থবর্ণকৃত্য কামরূপ। কৌটিল্য লিবিয়াছেন—"বঙ্গদেশ-জাত তৃক্ল শ্বেতবৰ্ণ সিগ্ধ, পুণ্ডুদেশ-জাত খামবর্ণ মণিতুল্য স্নিগ্ধ এবং স্থবর্ণকুড্য-জাত স্থবর্ণ মণিতৃল্য স্নিগ্ধ। এই সকল চুকুলের কোনটা এক-স্বংশু, কোনটা অধ-অংশু অথবা হুই-তিন-চারি অংশু দারা নিমিত ।"

কৌটিল্য ভারতবর্ষের মধ্যে উক্ত তিন দেশেরই ছুক্ল এবং কালী ও পুণ্ডুদেশের কৌম শ্রেষ্ঠ বিবেচনা করিয়া রাজকোষে রাখিতে বলিয়াছেন। একটি অংশুর অধাংশের ছুক্ল না জানি কত স্থল হইত! কৌম স্বভাবতঃ শ্রেড বা আ-পাণ্ডর। স্থামবর্ণ ও স্থাবর্ণ নিশ্চয়ই রঞ্জিত বস্তা। কৌমে পাকা রং করা কঠিন। রঞ্জন-কলার কত উর্লিড হইয়াছিল, তাহার প্রমাণ পাইতেছি। বদের ঐতিহাসি-কেরা এই উল্লেখের শুক্রম্ব সম্যক্ উপলব্ধি করিয়াছেন কি না সন্দেহ। ই-পুচ্তুর্থ শতাব্দে বে কলার এত উৎকর্ষ হইয়াছিল, কভ শত বৎসর পূর্ব হইতে ইহার অফুশীলন চলিতেছিল ? এই ছুকুল ও ক্ষোম কে পরিত ?
কাহারা নির্মাণ করিত ? নিশ্য বন্ধীরেরা। তৎকালে
কুমার চাষও নৃতন ছিল না। যজুর্বেদে ক্ষোমের উল্লেখ
আছে। সে বেদ এ-পৃ ২৫০০ অব্দে রচিত হইয়াছিল।
ইহারও কত শত বৎসর পূর্ব হইতে কুমার চাষ চলিয়া
আাসিতেছিল তাহা অফুমান করিয়া লইতে হইবে। শণ
(ভলা)ও বহু প্রাচীনকাল হইতে বস্তের প্রধান উপাদান

হইয়া আছে। আমরা দেশের ইতিহাস জানি না। হিমালয়ের দক্ষিণাংশে পশ্চিম হইতে পূর্বপ্রাস্ত পর্যস্ত প্রতিবংসর ভঙ্গার জন্দল হইয়া থাকে। মজ্ঞান্ধরপুরে ও বিহারের উত্তরাংশে, মালদহে এমন কি বীরভ্মের নদীকৃলে ভঙ্গা জ্মিতেছে এবং র্থা নষ্ট হইতেছে। অতাপি শুনি নাই, কেহ সে ভঙ্গার অংশু দারা হার ও বস্ত্র নির্মাণ করিতেছে।

জয়দেবের তুক্ল চিস্তা করিতে করিতে বহু দূরে গিয়া পড়িয়াছি। এখন নির্ভ হই।

### প্ৰবাহ

### শ্ৰীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত

পরদিন যথাসময়ে য়ৢয়য় দেশের মাটতে পা দিল। রাত
তথন ন'টা। অক্কার রাত্রি। আকাশে টাদ নাই। তথু এথানেওথানে ছট-একট তারকা দেখা যায় মাত্র। আশেশাশের
বড় বড় গাছগুলি অক্কারে থানিকটা বর্ণতেদের স্বষ্ট করিরাছে। বীরে বীরে য়ৢয়য় অগ্রসর হইয়া চঁলিয়াছে। পশ্চাতে
নৌকার মাবি জিনিষপত্র লইয়া তাহাকে অস্প্ররণ করিতেছে।
রাত বেশী হয় নাই, কিছ এরই মবো গ্রাম যেন গুমে আছয়য়।
তবু থাকিয়া থাকিয়া হই-একটা বাছড় থাভাবেষণে উডিয়া
যাইতেছে। এইয়প আবহাওয়ার মব্যেই য়ৢয়য় মায়ৢয় হইয়াছে।
রাতের এই সুয়য় প্রাণময় জগতের সহিত তাহার বনিঠ
আত্মীয়তা। এই মাটতে পা দিতেই মন তাহার বিপুল আনম্মে
দৃত্য করিয়া উঠিয়াছে।

আরও থানিক অঞ্জর হুইভেই একসলে বছ লোকের ুখর মুখরের কানে আজিল। সে ক্পকালের ক্রন্ত থানিল। প্রতিষার সাক্ষ-পোশাক লইরা আলোচনা চলিতেছিল। কর্ম্ব-কারদের প্রতিষার রং দেওরা হুইভেছে।

যুগর পুনরার চলিতে হক করিল। সপুথেই ক্ষিদার
হী। বাভীষর একটা চাকলোর আভাস যেন। হিতলের
হল-বরে একসন্দে অনেকগুলি মান্থবের হারামূর্তি হোরা
ারা করিতেহে। যুগরের কেমন সন্দেহ হইল। মঞ্যার

হার অস্মুহতার সংবাদ সে আনিত। হাররজীকে জিঞাসা

রা সন্দেহের মীমাংসা করিল। উহারা সভলে ভালই

হ।

আর একট বাঁকের শেষেই মুবরদের বাড়ী। কিছ বাড়ীর বার আসিরা কাহারও সাড়ালত পাইল না, কেননা ত্রে সে কোন ব্যর দের নাই। তাহার আসিবার নিক্ষণ ছিল না বলিয়াই 'দেওয়া সম্ভব হয় নাই। থানের আক্ষাল কি হয়বহাই না হইয়াছে। পূজা আসর অবচ কোবাও এতচুকু চাঞ্চল্য নাই। যুদ্মরের নিজের ছেলেবেলার কবা মনে পঢ়িল। পূজা-অর্চনায় সেকালের মত উৎসাহ বর্তমানে বড় একটা দেবা যায় না। কি মুবা, কি বৃদ্ধ সকলের মব্যেই তবন সাড়া পড়িয়া যাইত। প্রতিমার গড়ন, তার মুবঞ্জী, আত্মবিদক সাজ্যজা লইয়া রীতিয়ত প্রতিযোগিতা চলিত। গেদিনের উৎসাহীর দল আক্ষ চড়ুক্তিকে ছড়াইয়া পড়িয়াছে। দেশের প্রতি কাহারও তেমন মহতা নাই।

ছেলেকে অপ্রত্যাশিত ভাবে আসিয়া উপস্থিত হইতে দেখিরা মা অতাভ ধুশা হইয়া উঠিলেন। একমুখ হাসিয়া কহিলেন, তবে যে উনি বলছিলেন ভূই আসবি নে—এবং খবর না দিয়া আসিবার জন্ত তিরস্কার করিতেও ভূলিলেন না।

মুন্মর হাসির। কহিল, ভোমার মোটেই ভারতে হবে না মা। স্তীমারে আমি পেট ভরে ধেরে এসেছি।

মা কছিলেন, ভোর যেমন কথা। পথে-খাটে আবার বাওয়া হয় নাকি। বরের ডাল-ভাতও ভাল।

মুখর পুনরার কি বলিতে যাইতেই মা বাবা দিয়া কৃহিলেন, তোকে আর বাজে বকতে হবে না। যা বলি তাই শোন। হাত-মুখ ধুয়ে আমার কাছে বসবি আর।

বভ্য পারে প্রভূপও আসিরা উপস্থিত হইয়াছেন। তিনি কহিলেন, তোর চেহারাটা ত তেমন তাল ঠেকছে না মিগু। কলকাতার ক্ষনায়ু বুঝি সন্থ হচ্ছে না ?

মা কহিলেন, পথ-খাটের কঠটাই কিছু কম মনে করছ ভূমি? মুখনকে সক্ষ্য করিয়া ভিনি বস্থার দিরা উঠিলেন, ভূই হাঁ করে হাঁভিয়ে আহিস কেন। মুখ, হাভ-পা গুরে নে। পুকুরে যেতে হবে না, ভোলা কল আছে। আর বাগু ঐ রাভা-বার্টের কাপড়চোপড়গুলো বাইরেই ছেড়ে রাবিস। বার কাতের হোঁরাছুঁরি। ভোলের ত আর আনগমিয় কিছু নেই। কথা বলতে গেলেই তর্ক করবি, বলবি আত মানি না। জাত না মানিস অন্ধ্ব-বিস্থুধ তো মানতে হয়।

ষ্বৰ ষ্থ ষ্থ হাসিতে লাগিল। কোন জ্বাব দিল না।
না পুৰৱাৰ আপন মনেই বলিৱা চলিলেন, বোকা ছেলের
কাণ্ডবানা দেব তো! একটা ব্বর দিয়েও কি আগতে নেই।
স্কালবেলার অমন মাহটা কিছু তুই এবনও গাঁড়িয়ে আছিল
কেন। তুই কিরে আগতে-আগতেই আনি সব শুছিয়ে নেব।
ব্রে ভিন আছে—কৈ মাহ আছে।

ন্ধনৰ চলিতে চলিতে শুনিতেছিল, যা বাবাকে বলিতেছেন, চেহারাটা ওর সন্তিটে বড় বারাপ হরে গেছে। কলকাতার বাড়ীতে কি কিছু বাওয়া কোটে! গোনাগুণতি সব কিছু—তাও আবার ঠাকুর-চাকরের হাতে প্রাণ। আর তেমনি হরেছে বিছু। ছুটি-ছাটা পেলেই যদি ছুটে আসে, হুটো বাইয়ে ভাইরে একটু বাহুব করে পাঠাতে পারি।

প্রতুল একটু হাসিরা কহিলেন, ছুটছাটা বছরে দশ বার পাওরা যায় না।

মা কৰিলেন, তা নাই বা পেলে লখা ছুট । ছুটকো-ছাটকা তো প্ৰায়ই পায়। এই তো মৃঞ্ বলছিল, মাসধানেক আগেও নাকি কি একটা পাৰ্ব্বন উপলক্ষ্যে সাত দিনের ছুট ছিল। পথের কট তো একট দিন মাত্র। তা ছেলেও হয়েছে তেমনি।

প্রত্ন প্রস্থান করিলেন এবং করেক মিনিটের মধ্যেই ক্ষেত্র হাটোটাকরেক বেগুন লইয়া কিরিয়া আসিলেন, কহিলেন, থিমুকে ভেকে দিও। বেশী আর হাদামা এই রাভ ছপুরে করো শা। যা হোক একটা ব্যবস্থা করে বিলেই চলবে।

প্রত্য চলিয়া গেলেন। কিন্তু গাঁহাকে যাবোক-একটা ব্যবহার বিধি দিয়া তিনি প্রহান করিলেন তাঁহার এত সহকে মন উঠিল না।

মুন্তর কিরিয়া আসিয়া চীংকার জ্ডিয়া দিল, তোমার বত কাও মা। বললাম আমার বিদে নেই । ভরপেট স্টামারে— মা বমক দিলেন, ওবানে একটা আসন পেতে চুপ করে বঙ্গে বাকু।

মুদ্দম হাসিয়া কহিল, শরীরচাও তেমন ভাল ঠেকছে না। হুটো ভাতে ভাত হলেই ভাল হ'ত।

বা কহিলেন, খালাসনে নিহ । সেই ব্যবস্থাই হয়েছে।
মুখন সহসা প্রসন্থাননে উপস্থিত হইল, খাসবার পথে
ক্ষিদার-বাড়ীর বোডলার অনেক লোকক্ষ খার খালো
খলতে হৈবে এলাব বা । মঞ্বার বা ভাল খাহেব ভো ?

वा करिरमम, मञ्जू जाक वनहिन वर्ष्ट छवा कान राज्या

বদল ক্ষতে বেরিরে প্রতে । ওর বার ভাঙা পরীরটা কিছুভেই আর জোড়া লাগতে না।

ষ্বৰ কহিল, সামনে প্ৰো কেলে এমন অসমতে বে…
মা কহিলেন, প্ৰাণের চেত্তে ভো আর বছ কিছু নেই বাবা
—ভা বলে মঞ্ব বাবা এখুনি বাজেন মা। তিনি বাবেন সেই
কালীপুজোর পরে। সরকারমশাই আর ঠাকুর-চাকর সহ
মঞ্ ভার মাকে নিরে বাজে। ভালোর ভালোর আরোগ্য হরে
কিরে আসেন ভবে ভো হয়।

মুদ্ধর কথা কহিল না। তাহার গ্রামে জাসিবার জাগ্রহের ত্বর কোধার যেন কাটিয়া গেল।

মা পুনরায় কছিলেন, ভাবতেও কট হর। নইলে এমন মাটির মাহ্ব—কোন দিক দিয়ে কোন অভাব তার নেই, অবচ তাঁর মনে শান্তি নেই। ছেলে যদি অশান্তির কারণ হয় তা সব মা বাপের পক্ষেই মর্শ্বান্তিক। কাল সকালে উঠেই একবার দেখা করে আসিস মিন্তু। মরণ-বাঁচনের কথা বলা যায় না।

মুদ্দম ভণাপি নীরব।

মা প্নশ্চ কহিলেন, তুই আসবি নে শুনে মঞ্ব মা হংব-করছিলেন। নিবের পেটের ছেলে পর হরে গেল—তাই পরকে নিরেও তার সোরাভি নেই। বলেন, নাড়ির বাঁবন যবন ছেলেকে আটকাতে পারে নি তবন কথার দাম আর কত্টুক্।

युवय मत्न भत्न शामिन ।

या यन जानन मस्मरे विनिद्या ठिनिस्नन, स्वन मूर्यंत क्यांत स्कान मात्र स्वरे ।

মাতা-পুত্রের আলোচনাটা নিতান্ত একতরকা হওয়ায় এক সময় আপনিই তাহা বাহিয়া গেল।

পরবিদ অতি প্রত্যুখেই মুম্মরের মুম তাদিল। সকাল-বেলার মুক্ত বার্ তার দেহমনকে সনীব করিরা ভূলিরাছে। সে উটিরা পঢ়িল। নদীর পাড়ে কিছুক্দ বেড়াইরা আসিতে হুইবে এবং ফিরিবার পথে মঞ্যাদের বাড়ী হুইরা আসিবে। ক্ষিদার-বাড়ীতে ভোর হর আট্টার, সুতরাং তাদের ওবানে এখন যাওয়া চলে না।

রাভার পা দিতেই ভূদেবের সহিত দেখা। নাছুর হোট ভাই ভূদেব। এই সামাত করেক মাসের ব্যবধানেই সে যেন কিছু লখা আর রোগা হইরা গিরাছে। বৃদ্ধর কৃহিল, ভাল আছ ভূদেব ?

ভূষেব - হাসিরা কহিল, ভালই আহি বিশ্ব-দা। কিছ আপনি ভনহিলাম এবার আসবেন না। কাল বাত্তে পৌছুলেন বুবি।

ব্যর হাসিরা কবিল, কথাটা এরই বব্যে রাই হরে পেছে বেবছি। কিছ নদ বে বাধা নানে না তাই। উতরে একসদে হাসিরা উঠিল। বেন নছ বছ একটা হাসির কথা হইরাছে। ভূদেৰ কৰিল, বৌৰি কালও বলছিলেন, দেখে নিলু কুছ, মিছু ঠাতুর-পো সময়মত নিক্তমই আগবে। ধৰমটা তাকে দিতে হবে।

হ্বর অভ প্রসংক আসিল, প্রাথের আজকাল হাল-চাল কি ভূষেব । সূতন ধবর কিছু আছে নাকি ?

ভূদেৰ কহিল, না মৃতন ধবর আর থাকবে কোখেকে।

মুন্তর একটু নিরাশ কটল, কহিল, ধবর সব সময়ই থাকে
ভূদেব। শুধু খুঁজে পেভে নিতে হয়। সে যাকগে, যাবে

নাকি আমার সকে নদীর পাড়ে বেড়াতে ?

**कृत्मव कृष्ट्रम. এইমাত্র আমি বেছিয়েই কির্ছি।** 

যুদ্ধর আর কথা বাড়াইল না। একলাই পথ চলিল। রাভার পাশ হইতে এঁঠেল গাছের এক টুকরা ভাল ভালিয়া লইল। পথ চলিতে চলিতে গাঁতন করা ঘাইতে। নদীর তীর বরিরা আরও থানিকদ্র অগ্রসর হইরা যাইতেই একটা বাঁকের মুবে রাবু বোটমের সহিত মুবোমুবি দেখা। মুম্মর কহিল, কে, বোটমদা না ?

হালিমুবে রাধু বোষ্টম কহিল, চিনতে কট হচ্ছে বুরি। উভারের গতি মছর হইল।

মুদ্দর ক্ছিল, না চেনার ক্থা নয় বোষ্ট্রমদা কিছ ভোমার চোৰ হুটো অমন লাল কেন ?

রাধু সশব্দে হাসিরা উঠিল, বোঁকা লোকগুলো কি কোন কালে হিসেব করে চলতে জানে দাঠাকুর। চেরে আছ কি, এইমাত্র শ্বশান থেকে কিরেছি। বাগ-গুড়ো, পাড়া-পড়নী মরমগুলো সব বোভল বোভল গিলে এসেছেন। গভি করবার বেলা এই রাধু বোঁঠন, কি করি বোঁটা এসে কেঁদে পড়েছে।

ম্বৰর বিশার বোধ করিল। কহিল, ভূমি কি সব উণ্টা-পাণ্টা বক্ছ রাধুদা ? কার আবার গতি করে এলে ?

রাধু কৃষ্ণি, চতে বাদীর হ'বছরের ছেলেটার। ঐ একটা নাজ ছেলে। না পদল এক কোঁটা ওমুন, না পেলে একটু সেবাভক্ষা। বোটা সকালে বেরলে গোঁসাইপাড়ার বান ভানতে।
ছেলেকে রেখে গেল মর আগলাতে। কিরে এসে ছেখে
ছেলেটা মাটতে পড়ে গড়াগড়ি যাছে। একেবারে আগল
ফলেরা। সংখ্য মাগাদ সব ঠাঙা। পাড়া-পড়নীরা সন্থার পর
ফারবানা থেকে এলেন মন্ত অবহার। ভাল পেরেছে হ্থার
মাইনে। ভবন ওলের সামলাতেই লোকের স্বরকার। চঙ্কের
বোটা এসে কেঁকে পড়ল। কি ক্রিবল।

ৰ্মৰ বিশ্বৰে হতবুছি হইবা গেল। বাধু পুনৰাৰ বলিবা চলিল, চতের নেশা ছুটে গেলেও আর কারুর নাড়া পাওৱা গেল না। জি অলভূবে কার্থানাই হ'ল, প্রামকে শেব না করে আর ও কাভ হবে না। রাধু একটু থানিবা পুনরার বলিতে লাগিল, নিরে দেখি চতে ভার মরা ছেলেটাকে বুকে নিরে বাটতে গড়াগতি বাছে। ৰুদ্ৰ তথাপি নীয়ব।

নাৰু পুনরার কবিল, কারধানা করেছিল বেশ করেছিল, কিন্তু তার মধ্যে মধ্যের লোকান কেন।

র্মর বেদনাপূর্ণ কঠে কহিল, ওটা দরিত্রকে দনিরে রাধবার পাকা বুনিয়াল বোটমদা। দেওল' বংসর বিদেশী রাজক্তের করণার দান।

রাধু বোষ্টম বারকরেক মাধা নাজিয়া কহিল, কথাটা ঐক বুবলাম না লালাঠাকুর। লোখটা সভ্যি কালের। রাজার জাতের না আমালের নিজেলের। এ করণার লান ভোমরা মাধার ভূলে নিরেছ কেন। বেন্ডে কেলবার শক্তি এবং সাহস যধন ভোমালের নেই তথন মিধ্যা লোষ দেওয়া আর আর-প্রবঞ্চনা করা একই কথা। রাধু বোষ্টম শামিল। ভাহাকে বেন একটু উত্তেজিত মনে হইল।

মুখারের বিশার সীমা ছাড়াইল। তার পরিচিত রাধু বোটমাকে যেন খুঁজিরা পাইতেছে না। ক্লেপাটে আছ-ভোল। অর্জনিক্ষিত রাধু বোটমের এ যেন আর এক রূপ। মুখ্য বিশারের প্রথম বাজা কাটাইয়া উঠিতে না উঠিতে রাধু বোটম পুনরার কহিল, ছোট মুখে বজ্ঞ বড় কথা হরে গেল। কিছু কথাটা আমার নয়। বার করা দাদাঠাকুর।

ষ্বার ষ্তু কঠে কহিল, তা হোক। কিছ বড় বাঁট কথা বলেছ তুমি বোটমলা। সাহস এবং সজবদ শক্তির জভাবই আমাদের প্রতিপদে জভলে তলিরে নিবে যাছে। আর ষ্টামের জনকরেক হার্থাবেধী তারই সুযোগ নিরে নিজেদের কারেমী হার্থের পাকা ইমারত গড়ে চুলেছে।

মুখ্য একটু থামিয়া পুনরার উডেজিত কঠে বলিল, তাদের সাবধান করে দিতে হবে যে, যাদের অছি-পঞ্চর দিয়ে তোমাদের ইমারতের গাঁপুনি তৈরি করেছ তারা একদিন মুতন প্রাণশক্তি নিরে বেঁচে উঠবে, যার প্রচণ্ড আলোক্তরে কপুরের মত উবে যাবে ভোমাদের ঐ নির্গক্ত উৎপীক্তমের উপায়গুলো।

রাধু রোষ্ট্রম সহসা হাসিয়া উঠিল। কহিল, এ বেন স্তে হাত-পা হুড়ে বীরম্ব দেখানো দাদাঠাতুর।

মুদ্ধ অভ্যন্ত সক্ষা পাইল। রাধু সহসা অভ কথা পাড়িল, আহ তো দিনকরেক দাদাঠাকুর ? সময় করে একবার বেরো। গোটাকরেক কথা আহে। রাধু আর উভরের অপেকার দ্বাড়াইল না। মাঠের পথে ফ্রভ প্রস্থান করিল।

বোদ উটিবাছে। বাধু বোষ্টমের ক্ষম ব্যৱের অনেকটা বিলম্ব ঘটল। আক আর বেড়াল হইবে না। কিছ তার ক্ষম একটুও হঃবিত সে নর। রাধুকে সে বরাবরই ভিন্ন চোবে বেবে। কিছ আক ওর সক্ষে তার মনে একটা কোতৃহল কালিল। ব্যৱ অভ্যান্য তাবে পথ চলিতেহিল। তেওৱানীর কর্তব্য তার কালে বাইতেই তাহাকে থাকিতে হইল। কোন প্ৰকার ভূমিকা না করিয়াই তেওরারী আনাইল বে, মঞ্বা ভাহাকে ভাকির। পাঠাইরাছে।

ৰুম্বৰ কৃষ্ণিৰ ভোষাদেৱ ওবানেই বাচ্ছিলাৰ ভেওৱালী। চলো। একটু বামিয়া হুম্ম তেওয়ারীকে প্রশ্ন করিল, আমি এসেছি এ ববর ভোমাদের মঞ্চিদি পেলে কেমন করে ?

**७७३१६ी (गाँकित जाज़ान वृद्ध राजिन। अकाट्ड क**रिन সে ভাহা ভাবে य।

युषय जकावर्ण बानिकत्री बूचि स्टेल ।

वार्डिय-महरनरे मञ्जूषा चर्णका कविराज्यिम । कुन्नद्ररक সহাত্তে অভ্যৰ্থনা করিল, তু-প্রভাত মিছুদা। ভৌহার বেছানো হ'ল।

বুৰিৱা সরিৱা পভিয়াছে। উভৱের ভবিত্তৎ সম্বৰ্টা এ বাড়ীর সকলেরই জানা।

মঞুষা কৰিল, আবার হাসহ কোন্ মুখে। সেই ভোর ছ'টার এই পথ দিয়ে গেছ আর কিরলে প্রায় সাড়ে আটটার। ভাও আমাকে ডেকে পাঠাতে হ'ল। নইলে এ বেলা হয়তো এখানে আগবার সময়ই হ'ত না ভোষার।

চমংকার অভিবোগ। কিছ প্রতিবাদ করা বুধা। তথাপি शांत्रियूर्वरे युष्य क्वांव निम, नकांमरवनांत मिष्ठे स्तानहेक्त মোহ আহার কম নর মহু।

ষঞ্ কহিল, এ যোগ আবার কবে থেকে ?

মুদ্দম কহিল, বলি বলি আৰু বেকে এবং তা ভোষায় আহ্বান পৌছুবার আগে পর্যন্ত তা হলে কি ভূমি তা বিশ্বাস क्दरव १

মঞ্বা হুষ্টুমির হাসি হাসিয়া কহিল, যার কথা এবং কাজে কোন মিল নেই ভাকে কেমন করে বিশ্বাস করা বার বল মঞ্যা কণকালের বত থামিরা পুনরায় কহিল, ভোষার চিঠি পেয়ে আয়ার যা রাগ হয়েছিল। কিছ কিছুদিন ৰৱেই আমার মন বলছিল ভূমি আসবে। কিন্তু এবানেই ষাঁড়িরে বাকবে নাকি ? ভেতরে চলো।

ৰুম্ম কৰিল, ভোষার ষা কেম্ম আছেম ?

মধুষা কৰিল, মাৰে বুড্ড বাভাবাভি গেছে, ইয়ানীং বানিকটা ভালই আহেন। ভাই হাওৱা বছলের ব্যবস্থা হয়েছে। আকই যাবার কথা হিল কিছ ভোরবেলা উঠে ৰাৰা মন্ত বছলালেন। পুৰোচী সামনে ৱেৰে যাওয়া হতে পারে না। অবচ এ এর আগেও উঠেছিল, কিছ বাবা কারুর কৰার কান দেন নি।

बुबब क्रिन, विरम्पन वावाब करण कृति वृत्रि श्व गुक

ৰপুৰা ক্ৰিল, বরং ভার উপ্টো। ক্সিড আমার ক্সেন ভূৱ করে। বাবা হয়তো যার বৃদ্ধা আপদা করবেব।

ৰ্থৰ কিছু বলিবাৰ কটে হ্ৰতো ব্ৰ ভূলিয়াছিল, সহসা জীবাণজের গলার সাভা পাইরা ছির ছইরা ছাভাইল। জীবা-ৰক প্ৰশ্ন কৰিলেন, কে নিছু এসেছ নাকি !

মুখর নত হইরা প্রণাম করিল। জীবানজ ভার মাধার হাত রাখিলেন। কহিলেন, প্রভুল বলহিল পঢ়াগুনার ক্তি হবে বলে এবার পূজোর সময় ভূমি আসবে না। পড়াওনোর অবহেলা করতে বলছিনে, তা বলে পূজো-পার্ক্ষদের সময় মা বাপের কাছে কিরে আসতে হয় বৈকি। ভাবের দিকটাও একবার ভেবে দেশা দরকার। দীবানদর কণ্ঠবর কেমন একটু ভারি ঠেকিল। তিনি পুনরার কহিলেন, তা হাড়া দেশ-গাঁৱে আসা-যাওয়াটা একবার বন্ধ হয়ে গেলে শেষ পর্যান্ত বুষর হাসিল, কোন উত্তর করিল না। তেওয়ারী সমর্য এটেই অভ্যাসে দীড়িয়ে যার। নইলে এামের আৰু এ ছুরবছা হবে কেন। ভিনি পামিলেন।

> মুশ্বর নভমুবে ছাড়াইরা রহিল। কিন্তু পিতার অলক্ষ্যে মঞ্বা একটু হাসিল। মূলরের এই বিত্রত ভাবটিতে সে বেশ মভা পাইতেহিল। এতকাল শহরে থাকিরাও তার মিছুদা ঠিক ভেৰনি লাজুক ৱহিৱা গিয়াছে।

> জীবানক পুনক্ত কৃছিলেন, ছুট-ছাটা পেলেই মা-বাপের কাছে আসতে হয়। এগুলি বছন। তিনি প্রস্থান করিলেন। মুলার এডক্ষণে কৃথা কহিল, ভারি কাজিল হরে পভেছ 神智!

> 🧫 মঞ্যার ছ'চোৰে আনন্দ উপহাইরা পঞ্চিতেহে। সে হাসিয়া কহিল, অবশ্ব ভোষার মত লাভুক হয়ে পভিনি। আছে! কি হলে আমার ধুব মানাত মিছদা ? সজার মুধ লাল करत हुटि शामिरत (शरम, ना चाकाम (बरक मुकिरत मुकिरत ভোষার দিকে চেরে থাকলে ? মঞ্ঘা আর এক দকা হাসিরা **पे**डिन ।

> ৰুম্ম প্ৰসঙ্গান্তৰে বাইতে চার। কবিল, এবানেই হাঁভিয়ে পাকবে, না ভোষার মারের কাছে নিম্নে বাবে।

> মঞ্ পথ চলিতে চলিতে পুনৱায় প্ৰশ্ন করিল, আৰ ডক্স চিটি দিরেছি, আর একটা চিটিরও উত্তর দেওরা ভূষি দরকার बत्न कृत नि विकृत।।

মুশ্বর কৃষ্ণি, ভোমার চিটি পাইনি বলেই হরতো।

মঞ্যা হাসিয়া কৃহিল, উপস্থিত দায় একাবায় এর চেয়ে সহক পহা আর কিছু নেই মিছকা !

হ্বন্ন কহিল, তা হলে ভূমি বলতে চাও যে, আমি ভো**না**র विर्पा गमि ?

মঞ্বা কৃহিল, নিখ্যে বলতে আমারও বন্ধে গেছে।

মুখর হাসিরা কহিল, কি লিখেছিলে অভগ্রনো চিঠিতে ?

ষঞ্যা প্রভাগতে হাসিষ্ধে কহিল, চমংকার প্রশ্ন ভোষার। नव क्या कानि त्वन बत्न करत बर्ग वाहि। वयन वा बरन बरगरंद जोरे निर्वि ।

इवर क्लान क्या करिन मां।

মধুবা থামিতে পারিল না। ক্ছিল, আছা সে ক্থা ভবে ভোষার কি লাভ হবে মিছুদা।

ন্ত্ৰন্ত ক্ষিল, লে কথা জেনেই বা ভোমান্ত কি হবে মঞ্। মঞ্বা হঠাং একটু গভীন হইনা ক্ষিল, পুমি বুকি নাগ ক্ষেত্ৰ ?

মুমরও গভীর কঠে উত্তর দিল, রাগ করিনি, কিছ হংব পেরেছি ভোমার স্থতিশক্তির অপহন বটতে দেবে।

মঞ্বা হাসিরা কেলিল। ব্যক্ত দিরা কহিল, আবার বাজে কবা।

মুখর হাসিল। মুহ্ কঠে কহিল, অনেকটা এগিরে গেছ দেখছি। শাসন করতেও দিব্যি শিবেছ।

মঞ্যা হঠাং যেন একটু লক্ষা পাইরাছে এমনি ভাবে কৰিল, আমি যেন ভাই বলেছি। না না, ভূমি ভারি অসভ্য হরেছে । ইংকা অক্ষাং অভ্যা প্রহান করিল। মুবর মঞ্যার মারের মরে প্রবেশ করিল।

মুখনকে দরে প্রবেশ করিতে দেখিরা মঞ্যার মারের ছটি চোৰ উদ্ধান হইরা উটিল। তিনি মুহুকঠে ভাহাকে কাছে ভাকিরা পাশে বসাইলেন। কহিলেন, আমি জানি মিছু আমার তেমন ছেলে নর। প্রো-আর্চার দিনে সে নিশ্চর মারের কোলে কিরে আসবে। মঞ্যার মা থামিলেন। অর্থাকতে জার কঠ কছ হইরা সেল। চোবের কোলে দেখা দিল অপ্রশ্বরেখা। মুখার অভারণে অপরাধীর মত ভাব দেখাইরা বসিরা রহিল। বলিবার মত কোন কথাই ভার মুবে যোগাইল না। মঞ্যার মা প্ররায় কহিলেন, মঞ্বলছিল এটা ভোষার পরীক্ষার বছর। পড়াশুনোর কতি হবে বলে আসবে না। বোকা মেরেটা ভর্ পড়াশুনোর কথাটাই ভেবেছে, সেই সক্ষে মা-বাপের কথাটা ভেবে দেখে নি। মা-বাপকে অস্থীরেশে কেউ কোন দিন বড় হতে পারে না।

দরভার পাশে মঞ্যা দেখা দিল। মা ভাকিলেন, ভোর বিহুদা এসেতে মঞ্চু, ওর ভঙ একটু ধাবার দিরে বেতে বল মা।

ৰঞ্বা নাৱের পালে আসিরা গাড়াইল, আমি জানি মা। খাবার এখুনি বামুন-মা দিরে বাছে।

মঞ্বার মা কহিলেন, আমি তথনই তোকে বলেছিলাম না, মিছ আমার তেমন ছেলে নয়। ও নিক্তর পুকোর দিনে আসবে।

ইহার পরে বে কোন্ কথা আসিবে এ থবর মঞ্যার ফানা। সে ব্যক্ত ভাবে অভ কথা পাছিল। ঐ দেব মা ফ্যার কথার কভ বছ ভূল হরে গেছে। ন'টা বেলে গেল, ভোষার ওম্ব কেওরা হর নি এবনও। কেইর মাকে দিরে যহি একটা ভাষা কোন বিল হয়। ৰা হাসিরা কহিলেন, কেটর যা ত কোনোদিন আবার ওয়ুব দের না মঞ্ছ।

মঞ্ছা কহিল, দেৱ এ কথা আমি বলছি নে যা। দিলেও তো পারে এক আম দিন। জান মিছুলা, এ বাছীর চাকর-বাকরগুলো হরেছে এক-একট বুলে বাদশা। এই বে বার্ন-মাকে এক ঘটা হ'ল খাবার দিরে যেতে বলেছি, এল এখনও। কাঁকি দেবার সুযোগ পেলে এতটুকুও লে ছাড়ে মা।

বায়্ন-মার জাবির্ভাবে প্রসদটা জাপাতত চাপা পঢ়িলেও মঞ্মার জতিযোগের জের এইবানেই শেষ হইল না। পুনরার জড় পবে প্রকাশ পাইল। মঞ্যা মাকে পুনক্ষ কহিল, এই যে সরকার মণাই—যাকে নিরে জামরা বিদেশে বাবার জায়োল্যু করেছিলাম তার উপরও জামার একটুকু জাহা নেই। কাল তেকৈ জিজেস করলাম, জামার করমাসমত সব জিনিস পর ঠিক করে রাবা হ্রেছে ত ?

মাধা চুলকে জানালেন, প্রায় সবই ঠিক জাহে। তবে… এই তবের হিসেব নিতে গিয়ে দেখা গেল প্রায় সব কিছুই তথনও ঠিক হয় নি। কি ভাগ্যি এখন আমাদের যাওয়া হ'ল না।

ইহার পরে মঞ্যা আর এক কাও করিয়া বসিল। মাকে ঔষধ বাওরাইয়া তার সাঁ বেঁবিরা বসিয়া মহ কঠে কহিল, একটা কাৰ করলে হর নামা।

মঞ্যার মা এবং মুদ্রর একসকে তার মুবের পানে চাহিলেন। মঞ্যা তেমনি মুহুকঠে কহিল, মিছুদাকে আমাকের সকে নিরে গেলে হয় না মা। ওর তো প্রার কেড মালের ছট।

মারের মূবে হাসি দেবা গেল। মুবরের চোবে বিসর।
মাকহিলেন, গেলে তো ভালই হ'ত, কিছু ভা কেষন
ব সময়ৰ মতে যা এছ দিও পতে ছিলু ছাব মাবাৰ বাবে

করে সম্ভব হবে মা, এত দিন পরে মিহু তার মা বাবার কাছে। এসেছে।

মঞ্যা কৰিল, কিছ আমরা তো আর ছ-চার দিনের মণ্যেই যাচিছ লে। মিল্লা তার মা-বাবার কাছে পাক্ষবার স্বোগ তো পাচেছনই।

ষা একটু ইতততঃ করিয়া কহিলেন, মিছর স্থবিং-অস্থবিংবর কথাটাও একবার ভাবা ধরকার মঞ্ ।

মুখর হরত কিছু বলিবার কর মুধ তুলিরাহিল, কিছ তাহাকে মুধ বুলিবার অবকাশমাত্র না হিলা মঞ্বা পুনরার কহিল, মিহুগার ছবিবে-অছবিবের কথা তোমার তাবতে হবে না না, জাঠাইমাকে ভেকে ভূমি বললেই সব টিক হবে বাবে।

মারের রূবে রুহুর্তের ক্ষত একটুখানি হাসির রেখা দেখা দিল। কি ভাবিলেন ভিনিই কানেন, প্রকাতে ক্রিলেন, ক্ষাটা মঞ্ মেহাত মন্দ্ৰ বলে বি মিহ । আমাধ্যে সদে দিন ক্ষেত্তের ক্ষ বুরে আসবে চল। তোমার মারের অভ্যতি আমি চেয়ে নেব।

ষ্যর কণা বলিবে কি। সে এই নির্মান্ত থেরেটর কাও-কারধানা দেখিরা হতবৃদ্ধি হইরা গিরাছে। সে না পারিল মুখ ভূলিরা চাহিতে, না পারিল একটা সহক প্রতিবাদ করিতে এবং আরও কিছুক্দণ নিঃশব্দে বসিরা থাকিরা উঠিরা দাঁড়াইল। আনেকক্ষণ হইল সে আসিরাছে। এখন ফিরিতে হইবে। বেলা তর্ম দশটার ক্ম নহে।

٥۷

দিনক্ষেক পরে। যুগার মঞ্বাকে কহিল, তুমি যে এমন ছেলেমাত্মি করতে পার এ আমি কোনদিন ভাবতে পুরারি নি। আমি অবাক হরে সেদিন তোমায় দেশ্ছিলাম। তুমি কি পাগল মঞ্।

মঞ্যা প্রতিবাদ করিল, কহিল, এর মধ্যে আবার পাগলামি তুমি কোথার দেবলৈ। বাবা আপাততঃ সদে বাবেম না। সরকারের সদে যেতে আমার তাল লাগে না।

যুদ্ধ বাৰা দিয়া কহিল, কিন্তু আমার তো আসবার ক্ৰা ছিল না মঞ্ছ।

মঞ্যা কহিল, ভূমি না এলে একথা আমারও বলতে হ'ত না। যথন এসেছ তথন আমাদের সঙ্গে যেতে ভোমার আগতি কেন ? ভোমার সভ্যি বলছি মিহুদা কভকগুলো বাবে অভ্যাত দেখিরে আমার দিরে একটা কেলেছারী করিয়ো না।

বুদর শান্ত কঠে কহিল, এ তোমার অভার কথা। তা হাড়া এর মধ্যে কেলেরারীর কি থাকতে পারে আমি বুবে পাই না মঞ্। একটু থামিরা মুদ্মর পুনরার কহিল, সব কথা বাদ দিলেও আর সামান্ত ক'টা মাসের ব্যবধানে আমার পরীকা এ কথা ভূললে ত চলবে না। যত গুরুতর অভিযোগই তোমার থাক ভার সঙ্গে আমার বাওরা-না-যাওরার কি সম্পর্ক।

ৰঞ্বা কিছুক্প চূপ ক্রিরা রহিল। ক্র কঠে ক্রিল, হরত তোমার ক্থাই ঠিক, কিন্ত এ ক্থাও আমি ব্রি মে বে হ্-বহরের অভ্যাস হ্-সন্তাহের অমভ্যাসে কৃতবামি কৃতি-এন্ড কৃতে পারে।

ৰ্মর কবিল, ছুমি ওপু ছ-সপ্তাব্যে অনভ্যাসচীর ক্ৰাই ভাৰত। মনের দিকটা দেবত না।

মঞ্বা মূৰবকে কেবন করিবা বুবাইবে তার মনের এক আক্ষর্য অস্তৃতির কথা। তার জীবনে বুবরের প্রবাদন বত বত হইবা উঠিতেহে কোণা হইতে হইবানা অনুশ্য বাছ বেন তাকে সবলে চুরে সরাইরা লইবা বাইতে চার। মধ্যা বিশিত হয়, চমকিত হয়। ব্যৱকে ভাছে পাইয়া লৈ চৰুল হইয়া উঠে। তাহাকে সাধ্যমত নিজের ভাহে বরিয়া হাবিতে চায়। মনকে লে বমক দের, বলে এ তার তাববিলান। কিন্তু মনের এই কামনিক তীতি তাহাতে দূর হয় না।

মধুৰার চিভিত মুখের প্রতি ক্ষিক চাহিরা থাকিয়া বৃদ্ধ পুনরার কহিল, চুপ করে আছ বে।

মঞ্যা মুহকঠে কহিল, মনের দিকটা বে চোবে দেবা বাম না বিহুলা, না হলে এ অহুযোগ ভূমিও আমার দিতে না ঃ ছঃব পেতে। কিছু এসৰ আলোচনা এবন থাক, আমি বছ ক্লাছ। মঞ্যা ব্লানমূৰে প্রছানোভত হইতেই মুন্তর ভাহাকে বাবা দিয়া কহিল, আর একটু বসবে না—

মঞ্যা উত্তর দিতে গিরা থামিল। পিওন আসিরাছে।
চিঠি আছে। স্বাধের চিঠি—লিখিয়াছে নাছু। নিরোনামার
হতাকর দেখিরাই স্বার আন্দাক করিয়াছে। মঞ্যা স্বাধের
পালে বন হইরা বসিল।

নাছুর চিটি:---

তোমাদের নাত্র পুনৰ্জন্ম হরেছে। আদ্ধু বে তোমাকে
চিটি লিবতে বসেছে সে তোমার পূর্বপরিচিত মাতু নর।
এক সূতন মাত্ম সূত্র চেতনা নিরে তোমাদের শ্বন স্বরুছে।
তাকে বিশ্বাস ক'রো ভাই। পাহাডের সেই কাহিনীট বোধ
হর আদ্ধু ভূলে যাও নি। মাহুষের হৃত্বত্বি ছাপ এত
সহজে মন বেকে মুছে যেতে পারে না। কবাটা আমি আমি।
ভাই বলহিলাম যে ভোমাদের সে নাত্র মৃত্যু ঘটেছে। কিছ
এই নবজনে যে জীবন আমার আর্ভে এসেছে ভা অমূল্য।
সেই কবাই বলব।

গানে আমার দখল ছিল এ কথা ভূমি আন। নদীর তীরে বসে কত দিন যে আমরা গলা মিলিরে গান করেছি মঞ্জেশ্রোভা করে গে কথা কি ভূলেছি যনে কর। যদিও অতীত আমার কাছে মৃত, কিছু আমি বেন বাভিন্মর হরে পুনর্জন লাভ করেছি।

পাহাত থেকে পালিরে পেলাম কলকাভার। সহারহীন, সম্পদ্ধীন আমি। কে আমার ভানে, কে আমার চেনে। আমার বিভার গৌত ভোষার অঞানা নর। পাহাতের অবাঙালীর মধ্যে নিজেকে কোন রক্ষে চালিরে নিভে পারনেও আমার ভাতভাইবের কাছে আমার কোন ব্লাই নেই। গৈনিক ভিন চার ঘণ্টা পরিশ্রমের পরিবর্জে কেউ হম্মী টাকা বিভে প্রস্তুত নর। আমার মধার্থ বৃল্য এরা চোবের পলকে বুবে নিরেছে—এধানে কাঁকি চলবে না।

আবার বেরিরে পঢ়লাব। বদি বা বেতে পেরে রাভার ভঞ্জিরে মরতে হয় তবে অপরিচিত হালে গিরে মরাই ভাল। তবু বিজেকে শেব পর্যান্ত লান্তুবা বিজে পারব। তেওঁ আহুল দেবিরে বলবে বা, হতভাগাটা না বেতে পেরে রাভার পক্তে মরেহে।

বেল-কোন্দানীকে কোন বক্ষে কাঁকি দিকে লক্ষ্ণে গিৰে পৌছলান। বেঁচে থাকবার মত একটা আশ্রর পেলান ব্যারিষ্টার নিঃ সেব্রের বাজীতে। আমার ভিক্কের বেশ সেই দিনই ত্যাগ করতে হ'ল। আপত্তি করি নি, এর প্ররোজন হয়তো আমার শেব হরেছে। কিছু নই করি নি, আজও ফুটকেশে তা সবত্বে রেখে দিরেছি।

আন্ধ কিছুদিনেই থানিকটা প্ৰবিধা করে নিয়েছি। মিঃ সেন কেন কানি না খুব খুৰী হতে পারেন নি। যদিও পিঠ চাপড়ে বলেছেন, নিকের পারে দাঁভাবার এই চেঠাকে আনি সাধুবাদ দিছি কিছ বিপদ-আপদ মাস্থ্যাত্তেরই আছে। প্ররোজনের দিনে শর্ম করো। ভদ্রলোক সভাই সক্ষন।

এধানকার সদীত-কলেকে ভর্তি হলাম। জীবনে কোন কিছুই করি মি। নিকেকে মিরে ভূবে থাকবার মত একটা অবলহন ত আমার চাই।

এবানে অন্তেই বেশ একটু নাম হয়েছে। বন্ধু-বাৰ্ব এবং তভের সংখ্যাও নিভান্থ মন্দ নয়। হোট-বাট পার্ট থেকেও প্রাথই ডাক আসহে। এক কথার বেশ আছি। অক্সাং মনে পঞ্চল ভোমাকে। ছঃবের দিনে আত্মরানিতে যধন আমি একেবারে বোবা হয়ে বেঁচে ছিলাম সে দিনেও ভোমাদের ভক্ত মন আমার কেঁদে উঠত। আত্মও ভার এতটুকু ব্যতিক্রম বটে নি।

আৰু কিছুদিন ধরেই অতীতের দিনগুলি নিরে নাড়াচাড়া করছি। কি ছিলাম—কোথার এসেছি, অনুষ্ঠ আবার কোন্পণে ভাসিরে নিরে বাবে। এ আমার উদ্ধাস নর অথবা জীবন-বর্শন নিরে বক্তৃতাও দিছি না। বর্ত্তমানের সলে অতীতের ভূলনা করতে গিরেই একথাটি আমার বারবার মনে পড়ছে। মান্থবের চাওরার যেমন শেষ নেই, স্থযোগেরও তেমনি অভ্নেই। তথু চিনে নেবার অপেড়া—আঁক্ডে ধরবার ইছ্লাভিছ।

এখানে এক বিদেশ ভাই এবং বোনকে পেরেছি । তাদের বাঙালী বললেও তুল বলা হর না যদিও তারা তা নর। আনাদের সম্পর্কটা কেউ বিধাস করে, কেউ করেও না। কিছ আনার আর তাতে তর নাই। নিজের সহছে আক্রাল আমি অত্যন্ত সচেতন। নন আর মূর্বের মব্যে একটা সমান-জনক ব্যবধান বেবে কথা বলি, তাতে আর যাই হোক কোন গোলযোগের স্কট্ট হর না। আনার উপর ওবের অগাব বিধাস, নির্তর্গার অন্ত নেই। লোকমূর্বে শোনা বার দাদ। নাকি তার বোনটর তার আনার উপর দিয়ে করেক মাসের জন্ধ আমে-রিকার পাছি দেবেন। এটা শুলুব, কিছ এই শুলুব যদি সত্যি হর তবে আনাকে আরও সংবত হতে হবে। মানুবের বিশাসের হৃত্য আন্তলাল ক্ষকটা বিভে শিবেছি। ভা বাছা

ভোষাকে বলতে আমার লক্ষা নেই—দোষও কেবি বে।
একটা কথা কি কাম? রক্তের যেবানে সবদ্ধ নেই সেবানে ভাই
বোন সবদ্ধটা মধুর হলেও নিরাপদ নর। সেবানে ভর আছে
এবং বিচিত্র সভাবনার অবকাশ ররেছে। কিছু এসব আলোচনা
অপ্রাসনিক কারণ ভার দানা সভ্যিসভিয়ই এবুনি বাচ্ছেন না।
ওলের সবদ্ধে অনেক কথা জানাবার আছে। বারাছরে
লিখব। ভগু মেরেটের নামটা ভোমার কানিরে রাবছি।
ওকে লীলা রাও বলেই মনে রেখো। বড় ভাল মেরে। ভাল
কথা—আমাদের মধুর খবর কি? এত দিনে বোব হয়
অনেকটা বড় হরেছে। ওকে আমার সেহ দিও। এখানে
নামা জনের ভিড়ের মাঝেও ওকে সব সমর মনে পড়ে। কভ
বাক্ষে চিছা এসে মনকে নাড়া দের। অসভব কর্মনা—ভাই
নিজেকে শাসন করি। চিঠির উত্তর পেলে বুলী হব।

নাছ

মঞ্বা কহিল, নাছদা কিছ বিনিয়ে বিনিয়ে বেশ লিখতে পারে। কবি-মান্ধ !

ষ্থায় কহিল, নাছ বেশ আছে। এক কথায় বাকে বলে আম্মান জীবন। আৰু এখানে, কাল ওখানে। গতি ওর কোথাও ক্লছ হয় না। ওকে আমি একতিল বিশাস করি না। কালই হয়তো আর এক চিঠিতে লিখনে, চলিলাম বন্ধু লক্ষ্ণে ছেচে পেশোয়ার। এমনি হয়ছাভা ওর সভাব। ওর জীবনের এইটেই হ'ল বাভাবিক পরিণতি।

মঞ্যা কহিল, তুমি যতই বল, নাহুদা এবারে বদলেছে।
মুম্মর একটু হাসিরা কহিল, এটা ওর পরিবর্তন ময়—এর
নাম সাময়িক অবসাদ।

ষঞ্ধা কহিল, মিহুদা ভূলে যাছে বে নার্দাও যাছ্য। ভারও মন বলে একটা পদার্থ আছে।

মুদর তেমনি হাসিবৃধে উত্তর দিল, এরা আর এক স্নাতের মাসুষ। এদের মনের তুর অভ পরদার বাঁধা। দৃ**ইভিনী** ওদের আলাদা।

মঞ্বা অকসাং নিতাত গাপছাড়া ভাবে মুন্মকে প্রশ্ন করিল, এই যদি নাছদার সত্যিকার শীবনের বারা হয় তো ভার নাম কি বেশ থাকা ? এর মধ্যে আনন্দ বা পরিভৃত্তি কোবার ? অবচ একেই ভূমি ভালে। বলে একতরকা রায় দিয়েছ।

মুখন বিশ্বিত কঠে কহিল, হঠাং এ প্রশ্ন কেন মঞ্ ? এ বে নিভান্ত অপ্রাসন্দিক।

মঞ্যা কহিল, ভূমি চাপা দেবার চেঙা করো না মিছুলা।
যুগার ভেমনি বিশ্বিত কঠে কহিল, এর মধ্যে চাপা দেবার
কি থাকতে পারে আমি ত ভেবেই পাই না। একটু থামিরা
সে পুনরার কহিল, সব কথার মধ্যে নিজেদের টেনে আন
কেন, এতে সহক কথাটাও বে আর সোকা ভাষার বলা
চলে না, অবচ মন নির্বেক সম্ভূতিত হলে উঠে।

**39tt** 

বৃষ্ণরের কথা বানিবা লইবা বঞ্বা কবিল, কথাটা ভূমি
টিকই বলেছ। কিছু আমার কথা ভোষার টিক বোঝাতে পারব
না। একটা অবৃত অভূজ্তি বেন আমার কোথার টেনে নিরে
বার। আমার চোথের সামনে একটা বিশ্বল তবিভং
ভীবনকে বৈগতে পাই। আমার সাধারণ বৃত্তিও কেমন
আছর হরে বার।

মুদ্ধ হাসিত্রা উঠিল।

মধ্যা পুনরার কবিল, বেলে উভিরে দিতে চাও—দাও, কিন্ত কোহাই মিশ্রদা এর মধ্যে ভোমার স্ক্তি-ভর্ক টেনে এনো না। আমি মেনে নিচ্ছি ভোমার স্ক্তির কাছে দাভাবার মভ কোন পুঁকি আমার নেই।

ম্বার তাহার হাসি থানাইরা কহিল, না মঞ্, হাসি বা মুক্তি
দিরে তোমাকে আমি বিত্রত করতে চাই না, কিছ একটা কথা
আমি কিছুতেই বুবি না, হঠাং এই বরণের চিছা তোমার
মাধার হান পেল কেন ? আমার বতদূর বিশ্বাস আমার তরক
ধেকে এমন কোন ব্যবহার ভূমি পাও-নি---

মুম্মকে ভার কথার মাকবানে থামাইয়া দিয়া মঞ্যা ক্ষিল, কোন কারণ নেই বলেই ত যুক্তিতর্কের প্রস্ন ভূলেছি। কিছা---জাঠিইয়া আসহেন, চুপ্।---

মুখরের মারের কঠবর শোনা গেল। কহিলেন, মঞ্ কভক্প এসের মাণু এইমাত্র ভোমাদের ওপান থেকেই আসহি। ভোমার মা ডেকে পাঠালেন, কিছু আমি এক সমস্তার পড়েরি মিহু। অপচ না বলভেও পারলাম না। অনেক করে বললেন।

মঞ্ছা অঁপতি বোধ করিতেছিল। মুখর মারের মুবের পানে একদৃষ্টে চাহিয়া রহিল।

ষা আপন মনে বলিয়া চলিলেন, তা ছাড়া ভেবে দেবলায় বে, তোর শরীরটাও ডাল বাছে না। এক কাৰে ছ'কাৰই হরে যাকু।

ৰুমৰ বাধা দিয়া কহিল, কি বাজে বক্ছ মা। আমার শরীর আবার ভূমি ধারাণ দেখলে কোধার? আর এক কালে হ'কাল কাকে বলহ ভূমি?

মা ব্যক্ত দিরা কহিলেন, কথার উপর কথা বলিস নে মিছু। আমার এক কোড়া চোধ আছে। বলুক না মঞু, আমি মিশ্যে বলেছি কি সভিয় বলেছি।

মুম্মর কৃষ্টিল, ভূমি বলতে চাও কি মা ?

মা বলিলেন, এটা ভোর পরীকার বছর ভাও আমি ভেবে বেখেছি। কিন্তু সলে থানকরেক বই নিয়ে গেলেই ত চুকে বার। মঞ্বের সলে ভোকে কক্স বাধার যেতে হবে—সেই কথাই হজিল ওর মার সলে।

র্ববের ইছা হুইভেছিল চীংকার করিয়া বলে, ছাই চুক্তিরা বার। মা যদি কিছু বোকেন। কিছু লে নীরব বহিল। ৰা পুৰক্ত কৰিলেৰ, বস্তু ওৱা লক্ষীপুলোৱন পৱেই বাবে। ওৱ মাৱ ইচ্ছে ভূই সলে গিৱে পৌছে বিৱে আসিন।

মুখ্য কহিল, আর ভূমিও অমনি চট করে কথা বিষে এলে, কিছু আমি ভাবহি ভোষার কথা থাকে কিনা। আমাকেও এক সপ্তাহের মধ্যে কলকাভা কিরতে হবে মা।

মা ক্ষ কঠে কহিলেন, আমরা ত আর লেবাপড়া-ছানা-মা নই যে হিসেব করে কথা দেব। তিনি চলিয়া সেলেন।

মঞ্যা এতকণ একট কথাও কৰে নাই, কিছু মুখ্যের বা প্রহান করিভেই সে কহিল, কথাটা একটু পরে বললেও পারতে মিহুল। উনি কি ভাবলেন বলতো ?

মুখ্য কহিল, যা আমাকে বগতেই হবে তা এখন বলা আর হু'মিনিট পরে বলা একই কথা। কিছ তুমি কি বলছিলে ত ?…বে কথা বলিতে গিয়া মঞ্যাকে মাৰপথে থামিতে হুইয়াছে মুখ্য সেই. সহছে একটা খোলাধুলি আলোচনা ক্রিতে চায়।

মঞ্বা কহিল, আমার যা বলবার সে ত বলা হয়ে গেছে মিহদা।

মুগম কিছুক্দণ নীরব পাকিমা কহিল, অবস্থ তোমার আগতি পাকলে আমার বলবার কিছু নেই। কোর করতেও চাই না।

মঞ্যা বৃছ কঠে কহিল, তোষার সহকে আমার বড় ভর হয় মিহুলা। মঞ্যার কঠবর ইযং ভারী ঠেকিল। মৃহুডের ভঙ গামিরা প্নরায় ক'হল, আমি ভোষার কেমন করে বোঝাই বল তো যা নিভেই আমি ভাল করে বুবে উঠতে পারি না।

মুখ্য মৃদ্ কঠে কৰিল, অৰচ এই নিয়েই ভোষার ছুল্ডিছার অন্ত নেই। আষার সভ্যিকার মনের কথা তুমি কি জান না মঞ্ছ ?

মঞ্বা কহিল, সেই একই কথার আমরা আবার কিরে এসেছি মিছ্লা। আমি সব বুবি। যা বুবি না তা নিতাছই ব্যক্তিগত।

বুৰর কৃষ্ণি, তা হলে কি এই ক্ৰাই আমি বুক্ব বে, আমার তোমালের সঙ্গে না বেতে চাওরা নিবেই তোমার মনে বটকা বেবেছে ?

मञ्जानीयय् बरिन।

मुबर भूमदाय करिन, हुन करत (बर्का ना मसू।

মঞ্যা উটিয়া হাভাইল, কহিল, এক কথা বার বার বলে কোন লাভ নেই। কিছু আর নর এবারে আদি বাই।

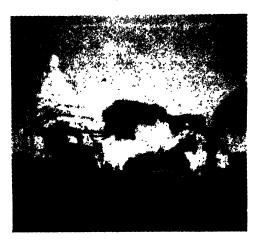
মুখার ক্র কঠে কহিল, তুমি রাগ করেছ, এ সব রাগের কথা মঞ্চ।

মঞ্বা কহিল, রাগ। না রাগ করতে যাব কেন। সে আর ইাড়াইল না। চোবের পলকে অনুভ হইরা গেল। মুলর ডাকিল, আমার কথা আহে—ইাড়াও মঞ্—কথাটা মঞ্যা শুনিরাও শুনিল না। ক্ষমণঃ

# উত্তর-ব্রক্ষের কর্ণা

### অধ্যাপক ঐসুধাংশুবিমল মুখোপাধ্যায়

ব্রহ্মণেশে আসিয়াছি। কর্ত্ত্রোপলক্ষে খাবীন ব্রহ্মের শেষ রাজধানী মালালরে আছি। ব্রহ্মরাজ মিণ্ডন (১৮৫৩-৭৮)
১৮৫৭ সালে মালালর নগর ছাপন করিয়া অমরপুর (ছানীর ভাষার অমরাপুরা) হইতে এই ছানে রাজধানী ছানাজরিত করেন। মালালরের প্রাচীন নাম রতন্বন। মিণ্ডনের পুর্বাধিব (১৮৭৮-৮৫) ব্রহ্মের শেষ খাবীন নরপতি। ১৮৮৫ সালে তিনি ইংরেজ-সরকার কর্ত্ত্ক সিংহাসনচ্যত হইয়া বল্পী অবছার বোছাই প্রেসিডেলির অন্তর্গত রত্ত্বসিরিতে প্রেরিভ হন। ১৯১৬ সালে এবানেই তাহার ক্রেব্রাপান হয়। তাহার রভ্যর পর তাহার মহিনী স্থানালা বেশে ক্রিরা আসেন। করেক বংসর পর তিনি পরলোকগমন করেন। রাজা বিবর এক কলা এবন ভারতবর্বে তাহারই এক ভ্তপুর্ব্বে পাচকের গৃহিনী। ইহাকেই বলে অনুট্রের পরিহাস।



অসরপুরের একটি প্রাচীন প্যাগোডা

বছদেশে, বিশেষ করিয়া উভর-ব্রজে, ঐতিহাসিক শ্বতি-বিছণিত বহু ধর্ণনীর হাম আছে। কিছু আঞ্চলাল উক্ত অঞ্চলে অন্ধ মোটেই নিরাপদ নহে। দেশে আভ্যন্তরীন বিপ্লব চলিতেছে। লোকে বলে ইহা সাম্যবাদী বিপ্লব। এই বিপ্লবের কলে বহু হাবে বাভারাত-ব্যবহা বিপর্যাত হইরা পড়িরাছে এবং চোর ভাকাতের উপশ্রব বাভিয়া সিরাছে। সরকারী শাসনবল্লের কার্য্যকারিভাও বেন অবেক্টা ক্ষিরা সিরাছে।

রক্ষণে বরাবরই প্রার গোটা কটোবর মাস কলেক ও বিববিভালর বন্ধ থাকে। কোজাগরী পৃথিমার বৌদ-শ্রমণ-বিদের চাতুর্বাস্য রক্ত উদ্বাশিত হয়। সেই দিন রক্ষণেশর বেওরালী উৎসব। ৩০শে সেপ্টেবর তিন সপ্তাহের ক্ত কলেক ছুট হইল। যে কয়ক্ষ বাঙালী অধ্যাপক একসকে হাজাবাদে আহি, ভাহার মধ্যে একক্ষন ছুট হুইবার দিনই



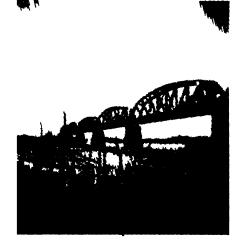
স্ভাস উইভিং ইন্টটেউট, অমরপুর

কলিকাতা চলিরা গিরাছেন। আর একজন রেছুনে বাওরার কথা বলিতেছেন। আমার পক্ষে কলিকাতা বাওরা সভ্য নহে। হিসাব করিরা দেবিরাছি যে, যাওরার মঙ্রী পোষার না। হাতে কোন কাজ নাই। একেবারে নিক্সা বসিরা থাকাও বার না।

সময় কাটাইবার একটা সুযোগ ষ্ট্রা গেল। ছাত্র কো ধান সিন রাজা মিওন মিনের পরিত্যক্ত রাজবানী অমরপুর এবং ইরাবতীর পশ্চিম তীরে অবছিত সাগাইং লট্যা যাওরার প্রভাব করিল। বলা বাছল্য, সানন্দে সম্ভ হুইলার।

তরা অক্টোবর প্রাতরাশের পর আমরা মোটরে বাজা করিলাব। কো পান সিনের নিজের গাড়ী এবং সে নিজেই চালক। বাজী চার জন –বিশ্ববিভালর কলেজের ইতিহাসের সহকারী অব্যাপক উ মং মং জি, হাজ পান সিন ও কো মিরা সিন এবং লেপক।

পথে প্রথমেই পজিল অমরপুর। মালালর হুইতে ইহার চূর্য ৭।৮ নাইল। ছানীর ভাষার ইহাকে টাউংমিরো অর্থাং চ্ছিল নগর এবং মালালয়কে মিরোওমিরো অর্থাং উত্তর বলে। পিচ-চালা প্রশন্ত রাজপথে যোটর চলিতে লাগিল। শহর হাভাইতেই রাভার হুই বারে বিভীর্ণ প্রাভরে সর্ক্ষের প্রাচুর্ব্য চন্দ্ কুডাইরা দিল। বত চূর চুট্ট চলে ক্ষেবল বান-ক্ষেত। মধ্যে বব্যে প্রাব। কুঞ্চি চাটং অর্থাং সন্দারার ক্ষরেশের প্রাহের একট অপরিবার্য অদ। ছোট, বড়, যাবারি প্রত্যেক প্রান্থ অভতঃ একট চাটং অবস্তই থাকিবে। মধ্যে মধ্যে প্যাপোচা বা বৌহমন্দির। জনে অমরপুরে আসিরা পঢ়িলার।



ৰাভা বিষ

বজরাক আলুন্দারার (১৭৫২-৬০) পুত্র বোজণারার (১৭৮২-১৮১৯) সিংহাসনারোহণের এক বংসর পর ভ্যানীন্তন রাজধানী আভা হইতে ৬ মাইল দূরবর্তী অধরপুরে রাজধানী ছানান্তরিত হয়। বোজণারার ক্যোতিবীপণ তাহাকে বলিরাছিলেন যে আভার সৌভাগ্যের দিন শেব হইয়া সিরাছে। তাহার পুত্র বাজিড (১৮১৯-৩৭) পুনরার আভাতে রাজধানী ছানান্তরিত করেন। ১৮০৭ সালে বাজিডর মৃত্যুর পর তাহার কনিষ্ঠ আভা ধারাওয়াডি মিন (১৮০৭-৪৬) রাজা হইয়া পুনরার অধরপুরে রাজধানী ছাপন করেম। সেই হইতে ১৮৫৭ সালে রাজা মিওনের সিংহাসনারোহণ পর্যান্ত অমরপুর ব্যক্ষণেশী ছিল।

বর্তমান অমরপুর মালালর কেলার একট চৌক। প্রাচীন সৌরবের কোন নিদর্শনই এবানে বিদ্যমান নাই। রাজ-প্রালাদের বা ছর্পের চিক্ষাত্রও নাই। প্রাচীন রাজপ্রালাদের ক্রিনিশ্বিত ছিল বলিরা ক্রম্পেশের কোবাও কোন রাজ-প্রালাদের অভিন্ন নাই। বিতীর বিষয়ক পর্যন্ত একমাত্র মাজালর রাজপ্রালাদ বিদ্যমান ছিল। কিছু ইল-মার্কিন-বিমান-ম্প্রের প্রচ্ছ আক্রমনে আক্র তাহার তিভিয়াত্র অবলিট ছহিছাত্ত।

ইতভত: বিভিপ্ত অনেকগুলি প্রাচীন হোট-বড় প্যাগোড়া নৃষ্ট আকর্বন করিল। এক দিন অনংখ্য উপাসক-উপাসিকার সনাগনে এইগুলি কোলাহলর্থরিত থাকিত। কালচক্রের আবর্তনে লেখিন শেব হইরা সিরাহে। আফ এইগুলির অবিভাগেই পরিভাজ, ক্রহীন, পুগাল, কুরুর, সূপ ইভ্যাবির

भाराम-इम । भमन्त्रवा मधार्म वन्न-विश्वासन विद्याख । সরকারী কর্মুখাবীনে পরিচালিত এই বিভালরে রেশর এবং স্থতার কাপড় বুনিতে শিকা দেওয়া হয়। অধ্যক - উ কো কো বি-র সহিত আলাপ হইল। বেশ অমারিক, মিটভাৰী, ভক্তৰ ব্ৰক। জাপান ছইতে ব্যুন্বিভাৱ বিশেষত হটরা আসিরাছেন। এই বিভালরে শিক্ষাকাল ছট বংসর। **छेछी**र्न साळ-साळीनिशत्क जिल्लामा (मध्या स्व। विकालत्व প্ৰত্যেক শ্ৰেপতে ত্ৰিপ কৰ করিয়া যোট খাট কৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীর শিক্ষার ব্যবস্থা আছে। ইহারা প্রত্যেকেই মাসিক ৩০ টাকা কবিরা সরকারী বৃদ্ধি ভোগ করে। ত্রন্ধাদেশে রেশমের চাব হয় না। ইংরেক আমলে মান্দালয়ের মহতুষা মেমিওতে পরীকা-ৰূলক বেশমের চাষ আরম্ভ করিয়া সম্ভোষকনক কল পাওয়া পিয়াছিল। কিন্তু যুদ্ধবিগ্ৰহাদির দক্ষন আৰু পৰ্যান্ত ব্যাপক-ভাবে রেশ্যের চাষ করা সম্ভব হর নাই। চীন হইতে ভাষোর পৰে বেশমের স্বতা আনিয়া তাহা ছারা সৃদ্ধি ( স্থানীর ভাষার সুঞ্জি) ইত্যাদি তাঁতে বোনা হয়। সাধারণ স্থতার জন্তও बन्धरम्म भवपूर्वारभञ्जी । विजीव विश्वपूर्व भवास स्रामान अवर ভারতবর্ষই প্রধানত: ভাষার স্থভার চাহিলা মিটাইত।

অনৱপুরে বাজার, হোটেল, দোকানপাট, চারের দোকান ইত্যাদি সমন্তই আছে। এনন কি ছইট ছবিদরও আছে। পূর্বেই বলিরাছি যে এজদেশের অভতম প্রাচীন রাজধানী আতা এখান ছইতে মাত্র ৬ মাইল। বর্তমানে উহা একট গঙ-থাম। বর্বাকাল বলিরা রাজা ধুব খারাপ। স্তরাং ইচ্ছা থাকিলেও এ যাত্রা আতা যাওরা ছইল না।

चमत्रभूद्रव निक्रिंहे बच्चरम्राम्ब चम्रुम श्रमान नमी ইরাবভী। প্রসদক্ষমে উল্লেখ করা বাইতে পারে যে, চিন্দুইন এবং जिलार बन्दाराया चनव इरेडे ध्यान नहीं। चनवनूत्वव নিকট ইরাবতীর উপর বিব্যাত রেলওয়ে-সেড়--জাভা ত্রিক। এইবানে ইরাবতীর বিভার এক মাইল বা তাহার কিছু বেণী হইবে। সেতুর উপর এক্দিকে পারে চলার এবং অপর দিকে योगवोष्ट्रनोषि हमाहरावत भवः। यश्वाप्रता द्वान-द्वोष्ट्यः। ১৯৩৪ সালে ব্রহ্মদেশের প্রদেশপাল সার হিউ ল্যাল্ডাউন 🕏 কেলন আত্ঠানিক ভাবে এই সেতৃর উদ্বোধনকার্য্য সম্পন্ন করেন। वर्षमात्म अहे त्मक्र चवावहार्या । ১৯৪२ मात्म बच्चत्म हहेत्य পলারনকালে ইংরেজগণ এই সেতুর কির্থংশ ভিনামাইটের সাহাব্যে উড়াইয়া বিয়াছিল। এখনও বেরামত হর নাই। খানীৰ লোকেয়া খালানি লগে ব্যবহার করিবার ভর ভারগার ভারগার বেল-লাইন হইতে কাঠের লিপার এলি কাটরা লইবা গিরাছে। এবানে-সেবানে কমিড লিপারের ক্ষুদ্র কুর পভিষা বহিবাহে।

্ সেতৃৰূপ হইতে একটু চুৱে পুৰ্ববিকে একট প্ৰাচীৰ ইয়ায়তেয় ভয়াৰশেষ কেবা বায়। ইহা একট ছৰ্বেগ ভারবেশন। অভ্যতেশীরগণ ইহাতে পাশিরে ভার বলে।

রাজা মিতনের রাজহাতালে করাসীগণ রাজ-মরবারে বিশেষ
প্রতিগতিশালী হইরা উঠিয়াছিল। জলপথে আক্রমণকারী
পক্ষর উপর লক্ষ্য রাধিবার ক্ষম ভাহারাই এই হুর্গ নির্দ্রাণ
করিয়াছিল। এই সমর মালালর দরবারে করাসীগণের প্রভাব
এত বাডিয়া গিরাছিল বে, অনেকেই মনে করেন, ১৮৮৬
লালে ইংরেশ্বরণ অভ্যতেশ অধিকার না করিলে অবিলভে ইহা
করাসী-কবলিত হইরা পভিত। ১৮৮৫ সালে অভ্যতাশের
সহিত করাসীদের একটি স্থিপত হাক্ষরত হয়। এই স্থির
সর্ভাত্নসারে করাসীরা টাকু হইতে মালালর পর্যন্ত রেলপথ
নির্দ্রাণের অধিকার লাভ করিল। কথা বহিল বে, ৭৫ বংসরে
পর ইহা অভ্যান্তের সম্পতি হইবে। করাসী এবং অভ্যান্তির

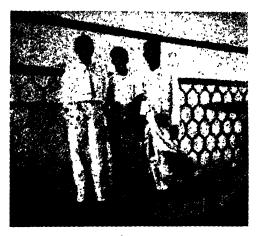


আভা ব্রিজের নিকট প্রাচীন ফরাসী দুর্গের ভগ্নাবশেব

বুলধনে পরিচালিত একটি ব্যাক ছাপনের ব্যবস্থা হইল। এই
ব্যাক রাজা বিবক্তে শতকরা ১২ টাকা এবং অভাতদের শতকরা
১৮ অনে টাকা বার দিবে। পরিক্তিত ব্যাক্তে ব্রজনেশে
বুলা তৈরি করিবার একচেটিয়া অবিকার দেওরা হইল। এই
সময় করাসীগন ইয়াবতী নদীতে স্তীমার লাইন বুলিবার সভ্তমও
করিরাহিল। প্রতরাং নিজ হার্বের বাতিরে ইংরেজ কর্ত্তুক
উত্তর-ব্রজ্ঞ কর রাজনীতির দিক হইতে স্মর্থনবোগ্য হুইলেও
বিভঙ্ক নীতির দিক হুইতে ইহাকে কোনজনেই সম্বন্ধ করা
চলে না।

আতা ত্রিত্ব পার হইলেই ইরাবতীর পশ্চিন কুলে সাগাইং।
ইয়ার প্রাচীন নাম জরপুর ( ত্রজ্বদেশীর তাবার জরপুরা)। ইয়া
উত্তর-ত্রজের সাগাইং বিভাগের প্রধান শহর। বিগত বুডের
সমর এই শহর বিমান আক্রবণের স্থাপ্ত চিক্ত এইনও বিভাগন।
উত্তরের সর্বাত্র বিমান আক্রবণের স্থাপ্ত চিক্ত এইনও বিভাগন।
১০১৫ সালে আবিব ধারা বারক্ত দার সারক্ত পানিবা পাব-

বাবের অধীনতা অধীকার করিরা নাগাইতে রাজধানী স্থাপন করেন। তংগ্রতিষ্ঠিত রাজবংশ ৪৯ বংসর কাল হারী হুইরা-



আভা ব্রিজের উপর ত্রমণসঙ্গীবন্ন সহ তেওক

ছিল। তাঁহার পৌত্র থাডোমিন পারা পরবর্তী কালে, ১০৬৪ নালে অক্ষণেশের রাজবানী আভা নগর হাপন করেন। ১৫৩৪ সাল পর্যন্ত সাগাইং বাধীন লান-রাজগণের রাজবানী ছিল। ১৭৬০ সালে অক্ষের শেব রাজবংশের প্রতিষ্ঠাতা আলুশারার পুত্র নংঘজির (১৭৬০-৬৩) রাজহ্বকালে সোরেবো হইতে পুনরার সাগাইঙে রাজবানী হানাছরিত হয়। তাঁহার বৃত্যর পর সাগাইং পরিতাঞ্জ হয়।

আমরা আভা ব্রিকে মোটর রাখিরা শান্দানে ইরাবতী পার ইইলাম। নৌকার মাবিমারা সবাই চট্টপ্রামের মুসলমান। যাত্রী, মাল এবং গাড়ী পারাপার করিবার কল লকের ব্যবস্থাও আহে। ভাড়া যাত্রী প্রতি ০ এবং প্রতি মোটরের কল ৫১!

সাগাইতে বিশ্ববিভাগর কলেকের হাত্র কো বা সি-র বাড়ী সেলান। এইবানে প্রথম কল্পেন্টর আতিবেরতার পরিচর পাইলাম। কো বা সি-র পিতা জীবিত লাই। আমরা কলেকের শিক্ষক এবং হাত্র এই কবা বলিবামাত্র কো বা সি-র নাতা সালর অভ্যবনা জানাইরা আমাজিগকে বসিবার বরে লইরা পেলেন। আসন প্রহণ করিবার সক্ষে সঙ্গেন্ট প্রযুক্ত পাত্রে শীতল জল আনিরা কেওরা হইল। তাহার পর একে একে পান চুক্রই এবং পাবা আসিল। কোন প্রকার আতিশব্য নাই। সকলেরই সহজ্ব হাত্তক ভাব। আপ্যারনের আতিশব্য অতিবিক্তে বিক্রত হুইরা পঢ়িতে হয় না।

কো বা সি-র মাতা তাঁহার হুই ক্রার সহারতার একট চুকটের ভারধানা পরিচালনা করেন। তাঁহার চারিট হেলের মধ্যে একট পুলিন বিভাগে চাত্রি করে, আর একট বর্ধ-ভারের ব্যবসায় করে, আর হুইট পকে। তাঁহার ভারধানার কাক করিবা আর ৫০ কন প্রবিক বীবিকা বিকাশে করে। স্বাই মারী-শ্রমিক। ইহারা ১০০ চুকট প্রস্তুত করিবার ক্ষত । এ০ জানা করিবা মতুরি পরে। এককন শ্রমিক গৈনিক ৩০০। ৪০০ চুফট প্রস্তুত করিতে পারে। ইহারা প্রাত্তরাশের পর কাকে আসে এবং একেবারে দিনের শেবে গৃহে কিরে। মুধ্যে কাকের কাকে একবার কিছু বাইয়া লয়।

বসিবার ঘরে আমহা কথাবার্তা বলিতেহিলাম। কো বা সি-র মাণা আমি রক্ষদেশীর ভাষা কানি না ওনিরা রহত করিয়া বলিলেন যে কয়েক দিন থাহার চুক্লুটের কারধানার যাতাহাত করিলে আমি নিশ্চরই ওাহাদের ভাষা আহত করিতে পারিব। আরও কিছুক্ষণ কথাবার্তা বলিয়া এবং কলি, বিষ্ট, কলা, বাতাবিলের এবং নারিকেল ইণ্যাদি বিবিধ বাভঞ্জব্যের সংযুবহার করিয়া আমরা এবান হটতে বাহিব



মাতা, ছগ্নী এবং ভ্ৰাতা সহ কো বা সি

হুইয়া সাগাইডের বিধ্যাত পঞ্চল প্যাগোডা, ঙা-টা-জি (Nga-tut-gyi) দেখিতে চলিলাম। বিদাহকালে গৃহস্বামিনীর জোঠা-কুচা একট ফুলের তোড়া উপহার দিল।

ভা-টা-ছি বা পঞ্চল প্যাগোড়া সাগাইং শহরের একপ্রান্তে অবহিত। ইহার এই নামকরণ কেন হুইরাতে বৃথিতে
পারিলাম না। একরাজ থালনের (১৬২৯-৪৮) পুত্র বিবে
নক্ষমিট কর্তুক ১৬৪৮ সালে এই প্যাগোড়া নির্দ্ধিত হুইরাছিল।
কুতা বুলিরা মলিরে প্রবেশ করিলাম, ইহাই নিরম। ভিতরে
প্রকাণ বুরবৃত্তি। একদেশে আসিরা বুরদেব চেহারার বাঁটি
মকোণীর বনিয়া সিরাহেম। অলবিন হুইল একদেশে আসিরাহি। বুব বেশী এমণ করিবার স্থোগ এবনও হর নাই; বত
বুরবৃত্তি বেশিরাহি তরব্যে মান্দালরের নিক্টছ মহার্কি
প্যাগোড়াতে হাপিত, আরাকান হুইতে আনীত বুরবৃত্তি বাতীত
কুক্র বৃত্তি একটিও চোবে পড়ে নাই। এই বৃত্তি বহার্কি
মানে পরিচিত। অপ্রক্ষের বৃত্তি। হুব্ত চাহিরা বাকিতে
ইছা হর। আনরা বে বিন ডা-টা-ছি প্যাগোড়ার বেলান

ভাষার ভিদ-চার বিদ পরেই একট উংসব আরম্ভ হওরার কবা বিদ। উংসব উপদক্ষ্যে বুরবৃত্তি দালাইবার ব্যবস্থা



প্ৰকল পাগোড়া, সাগাইং

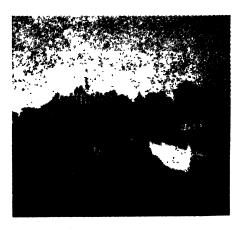
হইতেছিল। দোকানপাট ইত্যাদিও আসিতে আরম্ভ হইয়ছিল।

সাগাইং শহর হইতে আঞার্ক আড়াই নাইল দুরে সাগাইং পাহাড়। এবানে অনেক বৌদ মন্দির, সন্ধারাম ইত্যাদি আছে। ভিন্তু এবং ভিন্তুবীদের বভ পূথকু পূথকু সন্ধারাদের ব্যবহা আছে। শেষজীবন সাগাইং পাহাড়ে ভাটাইবার আকাজা অনেক ধর্মপান রক্ষণেশীর বৌদ নরনারীর প্রবল। ইহা যেন এখানভার বৌদদের বারাণসী-ব্রশ। সমর অল বলিরা সাগাইং পাহাড়ে বাওরা হটল না।

আবার শাল্পানে করিরা ইরাবতী পার হইলার। বেরাঘাটে একট দশ-বার বংসরের বালিকা দেখিরা মনে হইল
ভারতীর। কিজাসা করিরা ভানিলার বে সত্যই সে ভারতীর।
পিতার নার বলিল রহিনভুরা। ভারতীর মুসলমানগণ
বিষয়কর্ম উপলক্ষা ত্রমনেশে আসিরা অনেকেই বর্মীত্রীলোকের পাণিগ্রহণ ভরিরা এখানভার ছারী বাসিলা বনিরা
সিরাহে। আচার-ব্যবহারে এবং কথাবার্ডার ইহারা পুরাপুরি
ত্রমনেশীর। কিছ ইহারা ঘর্মমি এবং গোভারি কোনটাই
ভাগে করে নাই। কিনের পর দিন ইহানের সংখ্যা বাছিরাই
চলিরাহে। কিছু কিনের মধ্যেই ত্রমনেশে একট মুড্র ইসলান
রাই ছাপনের আলোলন আরম্ভ হওরা অসম্ভব নহে। ত্রম্মনারর এখন হইতেই এ সহম্বে অবহিত ইওরা প্রয়োকন।

ৰালালয়ে বৰ্ণৰ কিন্তিয়া আসিলাৰ, তৰ্ণৰ বেলা হুপুৰ প্ৰভাইয়া সিয়াছে। পান সিন্দের বাড়ীতে মধ্যাক্তোজনের বিনয়ণ হিল। তাহায় পিঙা উ-লা-ৰ নহাপৱের সহিত আলাপ হুইল। ইনি বাকালয়ের একক্ষন সম্পন্ন ব্যবসায়ী। ইংলি ণিভাষ্য চীৰের ইউবাদ প্রবেশ হইতে প্রথম অভারেশে আসেব।

বাবার টেবিলে গিরা বেবি সম্ভ আহার্যাই ভারতীর প্রবালীতে প্রভাত। বাম সিন্ বলিল বে, ভাষার ক্ষাই বিশেষ ভারতা এই বাবার করা হইরাছে। ভাল, ভালা, মাছ, মাংস, লালাল, সরাবিন সির এবং পৃথিনার চাটনি ছিল। প্রায় আছাই মাস পূর্বে দেশ হাহিরাছি। সেই হইতে আছাপর্যান্ত কোম দিন এত ভৃত্তির সহিত আহার করি মাই। বাওরা শেষ করিয়া হাত মুব বৃইটা মাসিবার পর কিছু আভা এবং কলা আনিয়া দেওরা গইল। বেন-বা-সিদের গৃহের ১ত এবানেও দেবিলাম যে, অতিবিদের প্রব-রাছন্দেরর প্রতি লকলেরই দৃষ্টি রহিরাছে। কিছু কোন প্রকার আতিশব্যের বালাই নাই। গৃহবামী এবং গৃহক্ষমীর সহিত সামান্ত কিছু ক্ষাবার্যার পর আমরা মান্যালয় শহরের এক প্রান্তে মান্যালয়



দুর হইতে মান্দালর পাহাড়ের দৃষ্ঠ

পাহান দেখিতে বাহির হইলাম। এই পাহাল প্রায় ১,০০০ কুট উচ্চ। চূড়ার উঠবার কথ ভিন্ন কিন্তু দিকে চারিট সোপান-পথ রহিরাছে। পাহাড়ের গা কাটরা সিভিগুলি তৈরি করা হইরাছে। সিভিন্ত উপর আগাগোড়া ইনের চালা। মংগ্য নবো পাহাড়ের গারে সমতল ছান। কোবাও বৃহদেশের সৃষ্ঠি, কোবাও বা আবার রজদেশের প্রাচীন ইভিহাসের চিত্রাবলী অভিত রহিরাছে। আমরা সমতলবাগী। পাহাড়ে উঠা-নামা করিবার অভ্যাস নাই। কিছুদ্র উটতেই পায়ে বাবা ব্রিয়া গেল। মংবা মংগ্য বিশ্রাম করিরা উঠতে লাগিলাম। অবশেবে চূড়ার গৌছিলাম। চারিদিকে চাহিরা চকু কুড়াইরা গেল। ছবে বরস্রোভা, বক্রগতি ইরাবভীকে এক বঙ্গ ছুল রোগ্যহ্রের মত বেবাইতেছে। চারিদিকে মাইলের পর মাইল কুড়িরা চলিরাছে হরিভের যেলা। কোবাও ছেব নাই। মনে হর যেল মুইলার বিরাট একবানা সর্ভ গালিচা পাতা। মনে প্রভিল



প্যাগোদ্রালেভিত মান্দালর পাহাড়ের একাংশের দুখ্য

ৰাঙালী কৰিব গান,—"এমন বানের উপর টেট বৈলে বার বাতাস কাহার দেশে"। দেখিতেছি ত্রক্ষদেশ সহত্তেও এ কথা সমভাবেই প্রযোজ্য। মান্দালর পাহাড়ের চূড়া হইতে ইরাবতীর পশ্চিমক্লে সিঙ্গুল প্যাগোড়া দেখা য'য়। এইখানে সর্ব্যবৃহৎ অক্ষত ঘণ্টা রক্ষিত আছে। ত্রক্ষরাজ বাজিত এই প্যাগোড়া নির্মাণ করিতে জারস্ত করেন। কিছু ইহা অসমান্ত বহিয়া সিয়াছে।

বিগত মুহের সময় মান্দালর পাছাতে ইংরেজ ও গুর্বা এবং জাপ সৈলের মধ্যে তীত্র সক্তর্থের পর গুর্বা সৈচদলৰ এই পাছাড় অবিকার করে। বার্কশায়ার বেক্তিমেট ও গুর্বা সৈচদলের বীরত্ব-কাহিনী প্রজ্ঞরফলকে লিপিবদ করিয়া রাধা ছট্যাছে। প্যাগোডা, সিডির চালা, মৃত্তি ইত্যাদিতে মুদ্ধের ধ্বংসলীলার চিহ্ন এখনও বর্তমান।



मान्नानव भाराष्ट्र रहेट निरम्ब पृष्ठ

ভিক্ উ-বাজির নাম অক্ষণেশের সর্বাত্র স্থারিচিত।
মন্দালর পাহাড়ের পাাগোড়। ইত্যাদি সমন্তই তাহার চেষ্টার
নিশ্বিত হইরাছে। বাহারা হাহারা এই কার্যো অংসাহার্য
ভ্রিয়াছেন তাহাড়ের মান পাহাড়ের বিভিন্ন হানে ব্যাদিত

ভবিষা রাখা, ত্ইরাতে। ইঁহাবিগের মধ্যে বৌদ, তিত্ত,
দুসলমান ইত্যাদি সর্ব্ব সম্প্রদায়ের লোড়ই আছেন।

পাহাছের পাদদেশে বুবোড প্যাগোডাতে ৭২১বানি প্রস্তর্কলকে সম্প্র ত্রিপিটক উৎকীর্ণ করিয়া রাবা ক্টরাছে। ইহা প্রস্তরাক নিগদের কীডি। সমস্ভ থুমিরা থুমিরা কেবিতে সভ্যার অভ্নার গাচ করে।
আসিল। মান্দালর পাহাকে ভাকাতের উপত্রব আহে।
আম্রা পা চালাটরা দিলাম। ব্রথম মোটরে উঠিলার তর্বন
ব্যান্ত্রীয় আমনের উপর তিমির-ব্যমিকা মানিরা আসিরাছে।
ব্যান্তর্বার ব্যান্ত্রীপ অলিরা উঠিয়াছে।

# প্রাচীন বাংলাদেশ

## জ্রীগিরিধারী রায় চৌধুরী

এ পর্যাত্ম যা-কিছু প্রমাণ ও নিদর্শন আমাদের হত্তগত হয়েছে ভা ৰেকে আমরা এই চবুৰতে সমৰ্ব্রেছি যে, আইকে ৰাতি এ দেশে নদীমাতক সভ্যভার প্রচলনকারী। সিদ্ধ সভাভার ৰুলেও রারেছে এই অট্রিক কাভির দান। অভত: প্রথম অৱের সভাতা, যা নিঃসন্দেহে জাবিচ উপনিবেশের পূর্বাযুগের ৰ্যাপার-তা যে কতকটা অষ্টিক স্বাতীয় উপনিবেশহাপন-জাৱীদের ছাতে গভা—দে বিষয়ে কোন সন্দেহই থাকতে পারে সিছ ও পঞ্জাৰ প্ৰদেশে যাৱ। এই বৰুষ প্ৰানৈতিহাসিক ভষগাছর যুগে এলে বাসস্থাপন করেছিল এবং এনামীণ-সভ্যতার প্রচলন সুক্র করেছিল তাদেরই কৃতক্তলি সংখ্যাগরিষ্ঠ মল বা উপকাতি১ শতধাবিচ্ছিল, নৃতন পলিখাটির মেশ বাংলার এনে ভার প্রধান নদীং গলার ভীরে সিন্ধ-সভাভার প্রথম ন্তবের কিছুকাল পরে বসবাস কংতে সুরু করে। ভাই ভাষাভা'ত্ব পভিডের৷ "গল্য" শক্তে অন্তিক শক্ষ বলেই बरत निरश्चिम । काएमत मएक अहे भएमत मूल वर्ष कृत्य मधी। তবে পৃক্ষণ পদা 'ছল না, इश्रेष "गाउ" वा "श्रेषा" ছিল। আৰও দক্ষিণ বাংলায় নদীপৰে গাঙ শব্দ বুব বেশী প্রচলিত। যদিও "ভাং" শব্দের অবই আলাদা, তবু শুনতে অনেকটা গাঙ্( গাং )-এরই মত। জাং শকের পুরুতন রূপ হরত "কাঙ্" বা ,"কঙা" ছিল। এর থেকে সংস্কৃত "এক।" শক্তের উংপ'ত হয়ে বাকতে পারে। আমাদের পুরাণ বলে, অফ্রুনির কজা দিয়ে গদা বেরিছেল, ভাই ভার चक्रण्य नाम "कारूवी"। পুরাণের এই কাহিনী মনে হয় কোন चक्कि छेनाबादनद छेनद नट्ए উঠिছिन। चक्क्नान क्दरन

প্রাগৈতিহাসিক মুগের বিভিন্ন পর্ম্বে ভারতে বিভিন্ন অন্ত্রিক উপলাতির সম'গম হয়েছিল। অন্তঃভ ভারতীয় প্রদেশগুলির ভূলনার বাংলায় ভাগের অধিকসংখ্যক উপনিবেশ গড়ে উঠেছিল। পরবর্ত্তী ক'লে হয়ত বাংলা থেকে ভারা কিছু কিছু সরে ছোটনাগপুরে ও আসামে গিরেছিল। এখানে কিছু ভাগের প্রথম আগমন কবে ঘটেছিল ভা ঠিক করে বলা যেতে পারে হর-আহর (সুর্যা পুত্র) বা প্রথম মেনেসেরত রাজভলালের পরে। অভিনিকে বাংলায় ভাগের প্রভাব প্রায় ইউপুর্য ৮০০ অব্ধ পর্যান্ত অব্যাহত ছিল বলেই বৈদিক সা'ছত্য ও মহাভারত প্রভৃতি প্রন্থ সাক্ষা দেয়। এই একমাত্র অন্ত্রিক প্রভাবাধীন মুগে বাংলাদেশ কয়ট ভাগে বিভক্ক ছিল ভা পুর্বেই বলা হয়েছে, ভাই এখানে এর পুল্যজেব নিভারোকন।

এর মিল পাওয়া বার আফ্রিকার নীল নলে বভার আবির্ভাব ও বেতনীলের উৎপত্তি সথদে পুরাকালে বে সব উপক্ষার প্রচলন ছিল ভার সলে। গাঙ্ও কাং ছাড়া, ভূমিবাচক "মাল", বৰনবাচক "আল", "নল, কল, ছিট, জয়াল, যোগ, কটাল, ডিঙি, ডেঙা, ছিপ, ঠ্যাং, বাসি (বিশেষণ), কোপ, বাড়, কানি, কোয়ার, ভাটা, গণ, কুলি, খুঁট, ডাক, ভাল (বিশেষা), সিম, বাঁশ, বাটাং, টোকা, চেলা, ভেভ, ডালা, ওং আঠা" প্রভৃতি শক্ষ অট্টক।

১। ১৩০৪-মাবের প্রবাসীতে প্রকাশিত "প্রাগৈতিহাসিক বাংলাদেশ"
প্রবদ্ধে উপলাতিগ্রালয় উরেব কয়। হয়েছে।

৪। ভারতের অল্প চম মধান নদী সির্ব্ধ তীরবর্তী ভূবতে জাবিড় ও অল্পান্ত কাভির উপনিবেশ রাপনের প্রেই অট্রিক উপলাতীয়দের সমাগম হয়েছিল। এমন কি মিশরের নীলনদের তীরেও প্রথমে বে সভ্যভার বিকাশ হল ভা অট্রিক উপলাতীয়দেরই।

০। ইনি মিশরে রাজবংশের পান্তনকারী এবং প্রথম রাজা। ইনি নিজেকে প্রাপুত্র বলে ঘোষণা করেন। এর জামল খেকে বাজাই দেবতা। এ ধরণের চিন্তার স্বংপাত হয়। সমাজ ও মামুবের জীবনবাপন-পছতি সন্থকে এর প্রচারিত বহু বিধান প্রাচীন মিশরীররা পালন করতে স্থক করেছিল। সংস্কৃত "মমু" শব্দ এই 'মেনেস" শব্দ খেকেই উচ্চুত, জাবার "মন্বন্তর" নামে রাজশাসনাজ্যর একই কারণে উচ্চুত। জাবাদের "আঠাজিক্সব্রেক্সাণাং থা গাভানিমি:তা নৃপা" এবং এই জাতীর জভাত উক্তি সেই মেনেসের কথাই শ্রমণ করিরে দেয়।

১৩০৪ সাব সংখ্যার প্রবাসীতে প্রকাশিত "প্রারৈতিহাসিক
বাংলাদেশ" প্রবন্ধ।

এর পর তাবিত প্রতাবের বুগ। তাই রাজ্যের নার হিসাবে পাই "হরিকেল", "পট্টকেন" শব্দ। প্রামের নার হিসাবে পাই "আউহ গজি, বিজ্ঞালালালা, অল্ব চাচেরল, বারাহিটা, ব্লেনাটকা" ইত্যাধি শব্দ। তারাতাত্তিকরের মতে তথাক্ষিত বর-পঞ্চানের অহ্মিত প্রকৃত-রূপ বেরম-জোলের জোল অংশ, জোড়াসাকোর পূর্ববর্তী অংশ "জোড়া" বা জোল হওরাই সভব, "নরান জোলির জোল অংশ বৃল্তঃ প্রাবিভূপব। এ হাড়া "জলপাইওড়ি, শিলিগুড়ি, মরনাওড়ি—"র শুড়ি অংশ যা হয়ত আসলে নগরাবক "ফুর্" শব্দ হিল, নিঃসজেহে তা প্রাবিভীর।

অট্রক প্রভাব বাংলাদেশে বরাবরই বেশী থাকার দ্রাবিচ্ প্রভাব কোনদিন প্রবলতর আকার বারণ করে নি বলেই মনে হর। অন্ত দিকে অট্রক সভাভা দ্রাবিচ্চীর বৈশিষ্ট্য ও লক্ষণগুলি অন্তকালের মধ্যেই এবং সহকেই আগ্রন্থ করে কেলেছিল— এমন কথা বলা খার।

দ্রাবিভ-সভ্যতার হুই রূপ ছিল-এরামীণ ও নাগরিক। পট্রক জাতি এদেশে অনেকটা তাদেরই অসুসরণে নাগরিক সভাতার পত্ৰ ক্ৰেছিল। ভাই জলপাইগুড়ি, শিলিগু'ড়, মরনাগুড়ির প্ৰাপাশি আমরা পৌচ, সমতট, পৌত বৰ্ষন প্ৰভৃতি ৰাইক নগরার সন্ধান পাই। তবু অট্রিক সভ্যতার অনেক কিছু, বেমন---রাকা, রাবপ্রাসাদ, পূকা, শিল, সক্ষা প্রভৃতি ব্যাপার बिः भट्टि साविक्षक पान । वर्षपाटमत रिक्र्यक्त सर् ভোত্রেশ কোট দেব-দেবীর পুৰার পূর্বেষ যা ছিল, তা राष्ट्र चड्डिकाम्ब निम्पूना, প্রেডপুনা, বৃদ্ধুনা, প্রভরপুনা ইত্যাদি। আৰও আমৱা ভাই মনসাপুৰা করতে মনসা নামক কাটা পাছের ভাল বাবহার করি, ষষ্ঠপুৰা করতে বটের ডাল ব্যবহার করি, পিতুলোককে আকাশ-প্রদীপ দিয়ে আলো দেবাই বা শিব বলতে পাণর পূজা করি। কিন্ত बल्बादा काँका, बाल्यमा सब्दा, कृत पिरा थूना कदा-अरुनि क्टक क्षाविक्रमत कान-या अद्विक तीजि-भीजित मरना विनीन क्रत (श्राह्म । निव नक्षक्ष क्षांत्रकीत - बूलक: छेर्। क्रिल "निवन्", चाव "मच्ड" मक्कि विम "(जब्दवा"। चित्र चर्च वाडा७ वड् হয়। ভাই পরবর্তীকালে আর্যাভাষার শিবন শব্দের সহিত "बुव्" [मिक्टि-मोसंद्य जर्द] बुंक रख गए धर्ठ "निवनवृत्र" भक्षा के भिवन्यूव (यटक क्राप्त वर्षमात्व "मिक्व" भक्षा नक्रक शक्त आदि भूका, मातात्रश्य अ मधीवन् भूका पूर ज्ञवरुः क्वाविक्रमत योग ।

বাংলার ত্রাবিভবের আগবন হরেছিল সম্ভবভঃ বৈধিত বুগের গোড়ার দিকে অবীং এইপুর্ব ১৬০০-১৫০০ অক নাগায়।

ক্রাবিভূদের আগমনের অব্যবহিত পরবর্তী ভাল হচ্ছে আর্থাবিক্তরেও আর্থাপ্রভাবের হুগ। মহাভারতের বিষয়বন্ত, कृत्रक्य-बृद्धत काम निव्निण स्ट्र बाटक बेहेनूर्स ১०००-अप ভাছাভাছি কোন সময়ে, অৰ্থাং দৌহযুগের বিতীর পর্বে। মহাভারতের ভাবি, সভা, বন ও জোণ পর্কে ভামরা পাই বাংলার অঞ্লবিশেষের, বহু উপকাতির ও বহু উপভাষার উল্লেখ। সেই সংক এমন অনেক রাকার নাম পাই যা আৰাভাৰাপত্ৰ বা সংস্কৃত হয়ে উঠেছে, বেমন—পৌণু বাহুদেৰ, **छ्याप्तन, प्रमूप्तान, नदक अङ्डि। प्रमूप्तन चक्राना** हिल्म ममुष्टरमा। वृत्रा वाह्ना, चार्यमञ्ज्यक इसका वन वा সোদর বন শব্দের স্ঠি হয়েছে এই সমুদ্রবন থেকে। ধেষন---সমুদ্রবন>স্টদরবন>সোদরবন, আবার, সমুদ্রবন>সমুদ্র-वन> प्रमुक्तवन> पुन्नवन । जारांत এই भव दोका (कामक কোৰও আৰ্থ্য বাৰ্চ ক্ৰৱৰ্তীৰ অধীনতা বীকাৰ কৰত এবং কৰ প্রদানও করত। তারা ব্রাভ্য খোনের দারা শুদ্ধ দ্বে আর্থ্যের সন্মান বা ৰাৰ্যাৱলাত কবত। জনাৰ্য বাজাতের এই বক্ষ আর্যা হরে ওঠার উদাহরণ অবত বছ পরবর্তী কালীন। এর কিছু কিছু পরিচয় পাওৱা যায় ১৩৫৩ সালের মাৰ সংবা জয়তা পত্রিকায় প্রকাশিত অধ্যাপক ভট্টর সুনীতিকুমার চট্টো-পাৰ্যায়ের "পূৰ্ব্যক্ষ ও আসামে জাতীয় সংস্কৃতির কৰা" এবং हिसूद्दांन शक्तिकात ১०৫० शृकामरनात श्रकानिक "बह्य ताक খৰ্গদেব রুঞ্চিংহ" নামক প্ৰবন্ধ ছটতে। আসাম, মণিপুত্র, শ্ৰীহট প্ৰভৃতি অঞ্লের জনাৰ্য্য রাজারা নিজেদের অনার্য্য নামের পাশাপালি আর্থা বা সংস্কৃত নাম এছন করে ক্রমণঃ হিন্দু সমাৰের অদীভূত হয়ে যাঞিলেন ভারই নিৰুভ ও নির্ভগ্রোপ্য বিবরণ পাই আমরা উক্ত ছট প্রবন্ধ।

কুরুক্তে-মুদ্ধের কিছুকাল আগে থেকে কি পরবর্তী মুগের মধ্যেই তীরভূক্তি, সমুদ্রধন, সমতট, পৌ গুবর্জন প্রভৃতি সংস্কৃত নাম কিরংকাল ক'লত হঠে থাকতে পারে।

এর পরই হচ্ছে কৈন-প্রভাবের যুগ। আরাররদম্ভ, করম্বভ, ভগবতীম্বত প্রভৃতি প্রস্থ বেকে কৈনবর্দ প্রচারকদের রাচে ও মন্দে১০ আগমনের কবা কানতে পারা যার। "নাধ" ও "নেওটা" শব্দ বাঙালার জীবনে কৈন-প্রভাবের চিক্ত। সংস্কৃত "আত্কপুত্র" শব্দ প্রাকৃতে "ঞ্-ঞাতপুত্র" রূপ পার।

e। ভঃ স্নীতিক্ষার চটোপাধ্যারের "বাংলা ভাষাতব্যর ভূমিকা" ও Origin and Derelopment of the Benyali Language, vol. 1 (2nd Edn. 1926) এ নামগুলি গাঁওরা বার।

<sup>• 1</sup> Origin and Development of the Bengali Language. vol. 1. [ अपन चिक् ] :

१। नमञ्ज-नाचिन >७०० "सानि शास्त्र शानित सम्म" धानको वरेषाः

৮। "ক্রন্নী" দম খেকেই বর্তমানের "লন্না" দম এনে থাকতে পারে। একথা অন্তর বলেছি।

শাসলে ঐতিহাসিক প্ৰিশিকনাথ রার মহাশর ফুলরবনকে
সমূহবনের সঙ্গে অভিন বলে প্রভাব আনেন। উার "মুর্শিদাবাদের
ইতিহাস"-এর প্রথম থও জেইবা।

<sup>&</sup>gt;• 1 "Jainism in Benga."—Promode Lal Pal, Indian Culture—pp. 524-25—[Miscellaneous]

ঞ-ঞাতণুত পরবর্তীকালে "বাধপুত্ত" হরে বীড়ার। প্রস্কীর **म्यवर्धी भूष परम बंदम भिरव वांकी बादक "बाब" परमहेकू।** পরে আবার এই নাথ শব্দ সংস্কৃতে ক্ষিত্রে গিয়ে স্বাধী অর্থে বিশ্প্রভু অর্থে ব্যবস্থাত হতে থাকে আর উপাধিবাচক আব্যায় পরিণত হয়। टेक्बटमद अकि चानाः हिन "निश्र इ"। এর অর্থ एक বছন্দীন। প্রাক্তে এর ভ্রপ হীড়ার "নিগ গঠ।" অপএংশ পর্বে ভার পরিণতি হয় "নিঅঅঠ'-তে। আবার বাংলার ভাই হয়ে গাড়ার "নেঙ্ট"---"নেষ্টা"। "বৰ্জমানপুর"ও "রাচা পুরী" নামের সঙ্গেও ৰৈনপ্ৰতি কৃষ্টিয়ে আছে। "বৰ্জমান" ছিল মহাবীৱের অৱতম माम। जान्छ छन्ट পाछता याद--- वाश्लात (कान कान औरमञ मार्थित मरक मुख्य करम चारक "नाव" मक । वारनाज योत्रिमच्छमारवत मर्था "नाव" छेभावि वहकाल बरत हरल আসতে। নাধৰৰ আমাদের অঞ্ভার কলে বৃলতঃ বৌহৰৰ্থ ৰলে প্ৰচাৱিত হয়ে আসছে। এর একমাত্র কারণ গোড়ার पिटक मधिक श्रकारमण्य । श्रीकरशमे (योदवर्ष चटनक ভাষগাতেই ভৈনধৰ্শ্বের উপরে ভাপতিত হয়ে তাকে কোণঠাসা করে দিয়েছিল। প্রকৃত তথাসংগ্রহ ও অনুসর্বানের ফলেই খানা খেতে পারে যে, যেগর খারগায় দৈনবর্দ্ধ আগে এসে আবিপত্য বিভার করেছিল সেই ছানে পরবর্তী কালে বৌদ-ৰৰ্ম্ম এসে কৈন-প্ৰভাৰকে বিনষ্ট কৰে বিশ্বয় প্ৰাকা উজ্জীন করেছিল। প্রচারের দিক খেকে প্রতিযোগিতার ভাব ৰাকায় বৌধৰৰ্ষকে এক দিন হিন্দুৰৰ্শ্বের কাছে এখন আখাত পেতে হয়েছিল যে ভারত থেকে তাকে চির বিদার প্রহণ করতে হয়। বাংলায় কৈনধর্ণের অভিয়ের প্রমাণ পাওয়া গিয়েছে মাটির তলা থেকে উদ্ধৃত বহু লৈন-বৃত্তিতে১১। তার ওপর নির্ভৱ ক'রে আৰু আমরা অসুমান ক্রতে সাহস পাই যে, বাংলার বৌদ্ধনাগ্র্যী সভ্যভার বারা এনে প্রবেশ করবার আগেই রাচ্১২, গৌরু, কুল্ম প্রভৃতি **ৰৈন্ধৰ্ম, সংস্কৃতি ও ভার বাহন হি**সাবে वर्ष-माननी काश अरम (शीरहिन। छाटे वारना काशाब

প্রাচীন তরে বুঁকে পাওরা বাচ্ছে অর্ড-বাগবীর সান-"হ১৩-শ্রুতি", "ব-শ্রুতি"কে ।

বাঙালীর জীবনে কৈন-প্রভাব বুব গুরুতর হবে না উঠনেও বা গীর্থকালহারী না হলেও তার বেরাদ আপ্রমানিক এইপূর্জ চতুর্ব শতক থেকে বিতীর শতক পর্যার। আর তার পরে তার অভিছ চলে আসছে বৌরমিপ্রিত কৈনবর্দ্ধ ও হিন্দু-বিমিপ্র বৌঙবর্দ্ধ বলে। দর্শনের দিক থেকে বৌঙবর্দ্ধের সঙ্গে কৈনবর্দ্ধের অমিল থাকলেও আচার-অপুঠানগত মিল হিল বলেই বৌহবর্দ্ধের পক্ষে কৈন-স্বাকে প্রাস্ক্র কেলা সহস্ব ও সম্ভব হয়েছিল। তা না হলে নাথ উপাধিবারী যোদী সম্প্রদারকে হিন্দুখাব্যিপ্রিত বৌর বলে মনে করার কোন কারণ দেখি না।

বাংলার বৌহবর্শের আবির্তাব বৈদ্যবর্শের অন্সরণের ফলেই ঘটে থাকতে পারে। প্রথম সমাগম অপোকের রাজত্বলালের কাছাকাছি কোন সমরেই হয়ত হয়েছিল। বৃহদেবের পৌতুরর্জনে উপস্থিতির কথা বিখাস্থাগ্য নহে। মহাহানগছের ভয় নিলালিশি থেকে প্রমাণ পাওয়া যার যে বাংলাজের বৌহ রাজাদের আগনাধীন হয়েছে। এই নিলাগিশির ভাষা অপোকের অনুশাসনের ভাষার প্রায় অনুরণ। ঐতিহাসিকেরা অনুমান করেন যে, এই নিলালিশি অপোকের মুগের না হলেও, ভারই কোন নিক্ট-বংশবরের রাজত্বলালে উংকীর্ণ হতে থাকবে। লিশিবানির পাঠেছার করেন ভক্টর দেবদন্ত রাম্কৃক ভাষার্কর। ভার প্রধন্ত পাঠ্য ৪ এই রক্ষ :—

এর যথায়থ আক্ষরিক সংস্কৃত অসুবাদ করতে চেই। ক্রেছেন অধ্যাপক ডইর সুকুষার সেন, তার বাংলা সাহিত্যের ইতিহাসের প্রথম বভে১৫। এবানে তার উল্লেখ করছি :—

"----- जात्वस अरवरशीयां वार शमक् नम्

— মহামাত্র স্বন্ধাতঃ পুঞ্ নগরতঃ এতং নির্বাহরিছতি।
সংবংগীয়াক দত্তং তথা থাকং। নির্বাহরিছত ক্রদারাত্যারিকং
দৈবারাত্যারিকে। স্ব-ত্যারিকেহিশ গওকৈঃ থাওকৈঃ
এব কোষাগারে কোষং ভরনীরং।"

১)। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালন্তের আন্ততোব নিউন্নিয়নে সংরক্ষিত আদিনাখের মূর্ত্তি, চারগুন নাপ বোগীর মূর্ত্তিও লেখকের প্রতার নিকট রক্ষিত পার্থনাথের মূর্ত্তি প্রত্তি। শেবোক্ত মূর্ত্তিটি জেলা ২৪ প্রগণার অন্তর্গত বোদরা প্রানে কোন একটি পুগ্রিণী খননকালে আবিষ্ণত হলেছিল। মূর্ণিদাবাদের কোনও স্থানে মাটির তলা খেকে উদ্ভূত একটি লৈন তুপ রাজেক্স সিং সিংখী মহাশরের বালিগল্পের বাড়ীতে সংরক্ষিত আছে।

১২। র:চা প্রা নিয়ে কিন্তু মতবৈধ আছে। প্রবোধচক্র সেন মহাশর উহার অভিব বীকার করেন না। ডাইবা: বিগভারতী গাঁহকা—বৈশাধ-লাবাচ ১০২০। আবার "সংহতি" পত্রিকার একটি প্রথমে প্রভাসন্ধ্র পাল রাচা পুরীর অভিত্ব প্রমাণের চেটা করিরাহেন।

১৩। জইবা :---"চর্যাপদ" জীনশীর্ত্রবাহন বহু সম্পানিত ও. বলীর সাহিত্য-পরিবদ পত্রিকা হর বঞ্জ ১৩২০-৮০-১১৪ পুরার সর্বানন্দ বন ঘটার দেওরা প্রচৌন বাংলা শন্ধাবলী [ ২ দলায় ] ।

<sup>:8;</sup> Epigruphia bulica-Vol. XXI, Part 11.

১৫। বাংলা সাহিচ্ছার ইতিহাস – এবন বঙ, পুট ১৪।

बनम बरे इंडे भांठ जांच गांगा (बटक बटन एव---গ্লহ্মস বা গ্লহ্মস কোন মহামাত্রেরই নাম। অভতঃ ভটর ভাৰাত্মকত্ম এটাই সাধ্যক্ষ করতে চেবেছিলেন। বিপরীতে ৰামৱা দেৰতে পাই যে, (প্ৰাফুড) গলখনদ ৰা (সংছড) গলর্থনস প্রকৃতপক্ষে (সংস্কৃত) "কর্দানত" বা "কর্মানত"-अब जमाम। "कव" मक "शम" एरव यां बबा चूर बां जां विक, কিছ গলহনদ নাম হওয়াটা অবাভাবিক। কর-আদাহকারী বা কর আখারের কাবে নিযুক্ত মহামাত্র—অর্থ করা অসলত रव मा। अब शव प्रकृषांबवांवृत व्यक्ति स्टब्ट "इमिन" **अक्टिक वार रिया या अवाय। जामा एव मरन एव [ श्राः ]** इमिन भक [ जर.] "(व्यवष्ठ" वा "वर्षप्ठ" भरवद ज्यान। কলে দেব। যায় বে, ঐ দেবদত ব। বর্ষদত হচ্ছে মহামাঞ্চির মাম। পুতস্কা লিপিতে হুমদিন-এর প্রায় সমান শব্দ "দেবছিনে" আছে। ভাষাতাত্বিকেরা [প্রা:] দেবদিনেকে [সং] ছৈৰণভেৱ সমান বলে ধরে নিষ্কেছন। এর পর আলোচন। ্করতে হয় "হলবিতে" শব্দীকে নিয়ে। সুকুমার বাবুর অম্বাদ মতে "রুলম্বীতঃ" না হয়ে শক্ষট "প্রক্তি" হতেও পারে। "প্রক্ষিত-পুঞ্নগরত:" একট সমাসবদ্ধদ, এবং তার সহত অর্থত হয়। "তথা" শব্দ এথানে "তত্র" অর্থাৎ— সেবানে অৰ্থ করে। তা হলে সমগ্ৰ লিপিবানির অৰ্থ হাড়ার बरे दक्ष :---

এতভ্গরা সংবংগীয়দের কর-আদারের কান্দে নিযুক্ত (বা কর-আদারকারী) বর্ত্তনত (বা-দেবদন্ত) মহামাত্র প্রক্তিত (বা মুল শ্বীসম্পন্ন) পুণ্ডু নগর হইতে ইহা নির্কাহ করিবেন। সংবংগীরগণ সেধানে (বা সেইরূপ) ধান্ত প্রদত্ত হইল। দৈব বিপংকালে আর্থিক অভাব কাটিয়া যাইবে। স্মুদিনে ধান্ত ও গভার হারা এই কোষাগারের কোষ বেন ভরিয়া দেওয়া হয়।

পরবর্তীকালে মন্ত্রমান, কালচজ্ঞ্যান, বল্লমান, সহক্রমান প্রভৃতি মতবাদের উত্তব ও প্রচলন হর। আসল বর্ত্রমতের এই রক্ম বিকৃতি ঘটার কলেই বোব হর হিন্দুরা বৌহদের ঘূণা করতে থাকে এবং বাংলার কণটার্থক "৩ও" শব্দের ১৬ উংপত্তি হর। আবার ব্যর্থতাবোবক "গও" শব্দের উত্তব হর ঐ শব্দ থেকে। "বৃহ" শব্দ থেকে বাংলার বৃত্ত চ্>বৃত্তা, বৃত্তো শব্দেরও অপঅংশভ্রমান্তি ঘটে। বৃহত্তে কোন-কোন আরগার দিব বলে ঘরে নেওরা হরেছে এবং দেই সর আরগার বৃত্ত থেকে উংপর "বৃত্তো" হরে বাভিরেছে ১৭ শিবের বিলেবন। তব্ এক্যা আমাদের বীকার করতেই হবে বে, বাংলার বৌহনর্যার ও প্রভাবশালী হরে উঠেছিল। আব্দের বিলেব বহু বৈক্ষ ছিলেন বৃক্তঃ সহক্ষানপহী, বছু শাক্ত ছিলেন বৃক্তঃ সহক্ষানপহী, বছু শাক্ত ছিলেন বৃক্তান ও কালচজ্ঞ্যান পহী। বৌহক্তানী

মোর্ব্য সত্রাটদের নিযুক্ত উপরিক বা মহামাত্রদের অবীনে কিছুকাল থাকার পর বাংলাদেশ আবার আগেকার মত১৮ বিভিন্ন ভাগে বিভক্ত হয়ে ভিন্ন ভিন্ন রাজবংশহারা শাসিত হতে থাকে। এই সব রাজবংশের অবিকাংশই ছিল আয়ীরুত অনার্ব্য এবং এরা শ্ব, বর্ণ্ব, সিংহ, ঘোষ প্রভৃতি উপাধি বারণ করত। কিছ কোন বংশ কতকাল রাজহ করেছিল এবং কোন্ অঞ্চল শাসন করত ভার সঠিক প্রমাণ আকও পাওয়া যার বি।

প্রায় পাঁচ শত বংসর বাাপী এক অবকার-মুগের পর অর্থ, পাল, সেন, শূর প্রভৃতি বংশের রাজস্বলালের কথা মুন্তা, লিপি, কাব্য, ইতিহাস ও বিদেশী পর্যটকদের বিবরণ থেকে প্রমাণিত হয়। এই সময়টা প্রীষ্টায় চতুর্ব থেকে ধাদশ শতক পর্যান্ত এবং ইতিহাসে এই মুগের পরিচয় হিন্দু-বৌদ্ধ মুগ বলে।

শুরবংশের শাসনকালে বাংলাদেশ আবার অবওছ লাভ করে। তার কলে সমগ্র প্রদেশট চারিট পুক্তিতে বিভক্ত হরে যার। প্রত্যেক পুক্তি কভকগুলি বিষয়ে এবং প্রত্যেক বিষয়ে কভকগুলি বীথি বা মওলে, আবার প্রত্যেকটি বীথি করেকটি চভূরকে বিভক্ত হরে শাসিত হতে থাকে। এ ছায়। শুভব আরগু হ্-রক্ষের বিভাগের খবর পাওরা যার, যেমন পট বা পাটক আর আর্থি। যাবতীয় বিভাগের সর্কানির শুর হিল প্রাম। মনে হয় বে পুক্তি অনেকটা এখনকার বিভাগের মঙ্গ, বিষয় অনেকটা কোর মত, মঙল বা বীথি মহকুমার এবং চভূরক প্রায় চৌকি বা থানার মতই ছিল।

ভূক্তির প্রধান রাজকর্মচারীর পাদের নাম ছিল উপরিক, প্রতিরাজ। কুমারামাত্য, মহারাজ, মহাসামন্তও তাঁকে বলা হ'ত। তাঁর সজে যোগাযোগ থাকত সামন্ত বা বিষয়পতিকের। সামন্তবের সংযোগ থাকত মাওলিকদের সলে।

ব্দনগৰারণের নির্ব্বাচিত 'প্রতিনিধিমণ্ডলীর সাহাব্যে উপরিক ভূক্তির শাসনকার্য্য নির্ব্বাহ করতেন। এই প্রতিনিধি-

দীপত্তর প্রকাশ বা অতীপ, আচার্ব্য দীলতর, পাতিবেব, বিভূতিচক্র প্রভৃতি বাঙালী মনীবিগণের হাবে একহা বৌদ্ধ ধর্মকাং উজ্জা হরে উঠেছিল। বাঙালী ভাছিক বৌদ্ধ অভিনৰগুপ্ত এক দিন পত্তরাচার্ব্যের মত মহাপুরুষের সক্ষেপক্রতাচরণ করেছিলেন। বৌদ্ধর্শবিল্যী বুদ্র সিংহল,১৭(ক) চীন ও তিকতের সক্ষে প্রাচীন বাংলার সংযোগ বহুকাল বরে অক্ট্র ছিল।

১৭। (क) বক্ষ — ১৩৫৩ অগ্রহারণ সংখ্যার লেখকের "প্রাচীন বাংলা শিশু সাহিত্য" নামক প্রবন্ধে প্রমাণ করা হরেছে বে, "সিংহলীর" খেকে হিম্হলি হরে বাংলা "হেঁরালি" শব্দের শৃষ্টি হরেছে।

১৮। পৌরাণিক বুগে বাংলার্ফেন কুজ কুল থতে বিভক্ত ছিল, তার প্রমাণ পাওরা বার মহাভারত থেকে। মৌব্যরাঞ্জানের আমলে বাংলারেন বে অথওছ লাভ করে তার প্রমাণ পাওরা বার মহান্থানগড়ের নিলালিপির "সংবংরীরানং" শব্ধ থেকে। কিন্তু পারবর্তীকালে আবার বে বাংলালেশ বিভক্ত হরে পড়ে, তার প্রমাণ্ড পাওরা বার সমুক্তভের ভত্তনিশি বেকে।

३०। व्यक् व्यक्षे व्यक्त ३०। द्वान, बूद्धा-निववना।

ৰঙলী বা শাসদ-পতিমৰের বাব ছিল "অধিষ্ঠাবাবিক্রণ"। অবিঠানাবিকরণের সভ্যসংখ্যা ছিল চার। প্রথম নগরশ্রেষী किमा Banker, विजीव धाषम मार्थवार, वार्थार वर्षिक-স্থান্তের প্রতিনিধি (President of the Chamber of Commerce) , कृष्टीय क्षय कृतिक चर्नार छेरभावक-मिन्नी-বেৰ প্ৰতিনিধি (Representative of the Industrialists) बावर क्रजून दायम काराष्ट्र वा (कार्ड काराय, मनीर ताड्रे-मस्टाय Chief Secretry। গুৱহুগের শেবদিকের ভারণইলিপিভে चिर्विताविकवर्षय मण्डलय मार्थय हेटबर्च त्यह । ভারণ উপরিক তথন স্বাধীন শাসক হতে হাভিরেছিল। খনসাধারণের প্রতিনিধিদের মতামতের মূল্য খনেক কমে সিষেছিল। ভাত্রপটলিপিওলি থেকে এটটুকু জালা বার বে. **ভারও বেবভার উভেশে বা ত্রাত্মণকে দান করবার ভ**র জমি জয় করবার ইচ্ছা হলে সেকবা তাকে সর্বাঞ্জে জানাতে হ'ভ এবৰ পুখপালকে ( Chief Record-keeper )। এবন পুত্রপাল দেবে ভনে ভয়ি ভরীপ করে সংবাদ দিলে পর উপরিক ও অধিঠানাবিকরণ সেই দান বা ক্রের মঞ্র করে স্থানীর যাতকার ব্যক্তিদের উদ্দেশে ভাত্রশাসন দান বা ভাত্রপট্র-লিপি টংকীৰ্ণ করাতেম ।১১

এই সময়ে আরও কতকগুলি নৃতন পদ-পদবীর স্টি হয়েছিল—বেষন, মহারুলাবিকৃত, মহাস্কাবিকৃত, মহাব্যাবাজ,
হটপতি, মহাপিলু পতি, মহাগণস্থ এবং মহাব্যহপতি ।২০
বর্তমান উপাবি "রার চৌধুরী" বাকে আমরা রাজচতুর্বারিক বা রাজ-চতুর ারী বেকে উংপর বলে মনে করি ভার
উংপত্তি এই রুগেই কিনা ভার কোন প্রমাণ আজও পাওরা
বার বি।

কেন্দ্রীর শাগন-পরিষদে প্রধান অমাত্য বা মহাসাধি-বিঞ্জিক, রাক্রানীর, অকরক, বঠাবিত্ত, চৌরোছরণিক, শৌকিক, যাশাপরাবিক, তরিক, মহাকপটলিক, ক্ষেপ, প্রবাড়, মহাবওনারক বা বর্ত্তাবিকার, মহাপ্রতীহার, হাঙিক, ছাওপাশিক, ঘওশক্তি, মহাসেনাপতি, কোটপাল, প্রাত্তপাল প্রভৃতি কর্মচারীর পদ হিল।

ভবন রাজ্যকে বলা হ'ড়—ভাগ, ভোগ, কর, উপরিকর ও হিরণ্য।

ভাষণটালিপি থেকে বে সব মহতবং১ বা ব্বা ব্যক্তির নাম পাওয়া যায় ভা এই রক্ষ :—গ্রভিপাল, রিভু (বভু) পাল, বছু-বিষ্ণ, বহুবিত্র, ছাবু বড়, বর্ষড, বর্ষেক, প্রকৃত্রে, কুড্রাস, ওছ বাংলার পাল আমলের সমসাম্বিক আর একট রাজবং সম্ভবতঃ বরাবর দক্ষিণাংশ বা "অরণ্য প্রদেশ" শাসন কর্ত (महे रुक्त मृदवरम । अहे दर्दमद क्षम द्रांका चाहिमृद्रदः অভিত্ব সহতে ঐতিহাসিকেরা যথেষ্ঠ সংক্ষেত্র রাখেন, কেনন তার নামের কোন মুদ্রা, কি শীলযোহর বা অপর কোন বিখাস যোগা নিদৰ্শন ঐতিহাসিকদের চোবে পড়ে নি। একমায কুলৰী গ্ৰন্থলিতে তাঁর উল্লেখ দেখতে পাওৱা যায়। কুলৰী উক্তি অনুযায়ী আদিশুর গৌড়ের রাজা ছিলেন এবং বাঙালীঃ ভাতিভেদ ও সমাজব্যবস্থা যা ঠিক মনুসংহিতা অনুযায়ী নয়, ব আধ্যিক বিভাবের অভ্রমণ নয়, তা ভারই কীর্ত্তি। এই শুর বংশের অভাভ রাজা— কিভিপুর, বরাশুর, রণশুর ও লক্ষীশুর অস্থাসনের লিপিতে রণশূর ও লক্ষীশূরের উল্লেখ আছে রাজেল চোল বৰন বাংলাদেশ আঞ্জন্ত করেন তবন বর্ষপার গোবিক্ষাল ও রণশুর যথাক্তমে সভত্তি, দক্ষিণ রাচু ও বলাং দেশ শাসন করভেন২৩। অরণ্যপ্রদেশ 😉 অপর মন্দারের (ছগর্চ অঞ্লের) রাজা লক্ষীশূর কৈবর্ত্তরাজ ভীষের সহিত রামপালে: ৰুছে শেষোঞ্চকে সাহায্য করেছিলেন। এবন এই অনুশাসন লিপি এঠার একারণ শতকের ব'লে দ্বিরীক্ত হয়েছে। স্থতরা এই লিপি-বৰ্ণিত বণশুৱের পূর্ব্বপুরুষ আদিশুরের ভারিব পদে नश्य-प्रदेव भाजकरे। धरे नवरवत गरक कुनकी किववकी ভাৱিৰের ধুব বেশী ভকাং নেই।

ভব সাত্রাজ্যের হারিহকাল এইর চতুর্ব বেকে প্রকর শত্র

<sup>&</sup>gt;>। এইবা—বিবভারতীর লোকশিকা সিরিজের অন্তর্ভু "প্রাচীন বাংলা ও বাঙালী"—ভট্টর কুকুমার সেন।

२०। बहेबा—छडेत त्रत्यमध्य वसूबनादात "बांश्नादादात देखिहान" # History of Bengal—Dacca University Studies.

<sup>-</sup> ২১। এড়টি আত্মবাদিক মীটার পক্ষ শতকের হাজিলের নার।

২২। বাগচী শব্দের উত্তব হয় এইভাবে, বেসন, বলজী (—বলজিয়)> বন্ধজিজ> বাগলী, বাগচী। পাকড়ানী-র, বেমন-পাক্র + বাসী> পাক্ড়ানী> পাকড়ানী। লাহিড়ীও ভার্ড়া-র উৎপত্তি কথা বলেছি প্রাক্তিহাসিক বাংলাদেশ প্রবন্ধে। এইব্য-প্রবাসী ম্যা

২০। বংগ্রহণাথ বস্থ সম্পাদিত পুত পুরাণের ভূষিকা ও ভটন <sup>রহে</sup> চল্ল মন্ত্রণালের বাংলাদেশের ইতিহাস এটবা।

भर्ग्छ। छात्र शत्र वाषीय-यम बार्ष्यात अधिकांछ। (मांशवरत्यत्र छात्रियं १२१ व्यः। अत्र शत्र वर्षाधिछा छ ममावात्रत्यत्य छात्रियं १९१ व्यः। छात्र्यं भंगांक वा महत्रत्र छहत्व भागमणान ७००—७७०। भागांद्यत्र शत्र यंद्रा वरणात्र ७६०—१००; भानवरत्यत्र १९०—১७७०; वर्ष्यरत्यत्र ५०१८—১७१० छ तमवरत्यत्र वाष्ट्रकान ५०३६—५२१०। ইवात्रत्र शत्र त्रव-वष्ट्रमात्र व्यत्र व्यत्रकान (महत्वत्र ५२००—५२२४ छ तमववरत्यत्र भागमकान ५२२६—५७०० शर्माछ।

এই क्रमीर्व क्यि-त्रीय वृत्र मन्ध वक्रतम विकिन्न नम-नमी ৰাৱা বিৰভিত ৰাকার দক্ষণ ৰোটাযুট করেকট ৰীপে২৪ विषक रुद्धहिल, विषय,---निरुर्वीभ, छालीवीभ, प्रशाहीभ, यह-ৰীপ, নবৰীপ, অঞ্চীপ, সুন্ধচীপ, নলচীপ প্ৰভৃতি, বেগুলি (बरक পরবর্তীকালে সিংদিয়া, মাবদিয়া, নদীয়া, তাল্দী, श्रुनिया, नन्दी श्रेष्ठि शांत्रिय मास्यय श्रीकान स्य । छात्रिय আছুত্রপ্যে অথবা "-দিয়া" অংশকে প্রভারত্তপে বরে আরও পরবর্তীকালে বহু প্রায়ের নাম রাখা হয়, বেমন-কুতুবলিয়া ইভ্যাদি। এমন কি মোগল সরকারের ভিহ্নি বিভাগের "ভিহ্নি" मक्रक चून करत (क्षे क्षे क्षे क्षे '-विद्या' क्श्मित बून मक বলে মনে করেন, এরপ দেখা গিয়েছে। আর নারিকেল পাটক, ভালী পাটক, সঙ্গ পাটক, (আ)লাবু পাটক প্রভৃতি "शांडेक" विकाश दिन, या त्यत्क शत्रवर्की कारन-नात्रत्कन বেছে, ভাল বেছে, সাভ বেছে, লাউ বেছে প্রভৃতি প্রাম-নামের फेश्शिक स्टाइट । "शांकेक" ७ "शहे" श्राह नवार्यक मना এর অর্থ হ'ত পাছা। বন্দর বা নৌকাষাট বোরাতে ব্যবহুত "প্তন' দিয়ে ছানের নাম রাধা হ'ত, বেমন---শমুক প্রতন, চাল্ট পছন, মনসা পছন ইভ্যাদি। এই নামগুলি পরবর্তী কালে—শামুক পোভা, চিংকি পোভা, মনসা পোভায় সিয়ে 👹 । বিশ্ব শব্দ দিরেও স্থানের নামকরণ হ'ত, বেষন—কেন্দু বিভ্. মনসা বিভ্. অক্ৰৱ বিভ. চাতক বিভ হিভ্যাদি। সেইগুলি বেকে বর্তমানের কেঁচুলি, মনসার বিল, প্ৰকৃত্যের বিল, চটুকীর বিল এসেছে। গ্রাম ও পাড়া বাৰাতে "পট্ট, পট্টক" শব্দ প্ৰায়ই ব্যবহাত হ'ত, বেষন---চন্দ-क्रिक, क्षक गरे, बढ गरे, त्रक्षनि (बदक वर्षमात्म हानाहि, **বৈবির আট, মাদার আট হরেছে। আবার "পাটক" বেকে** ভ কাৰণাৰ "পাড়া" শব্দ এনে গেছে, বেষন-নৰ পাটক ক্ষিণ পাটক, বুৰ পাটক থেকে ন' পাছা, ছবিন পাছা, বুছা াভা ইত্যাদি। "পাৰ্থ"ও "সান্ত্ৰ" দিৱে এাদের নামকরণ 'ত, মহেশ্ব পার্থ, সিদ্ধি পার্থ, শব্দারর,২৫ চল্প সারর

ইত্যাদি। এদের থেকে পরববর্তীকালে মহেশ্বরপাশা, সিদ্ধি-পাদা, দাঁক স'র, চন্দদ স'র প্রছতি শব্দের উৎপত্তি হরেছে। "পুর" ও "গ্রাম" দিয়ে ছানের নামকরণ সবচেরে বেনী হ'ত। তার প্রমাণ-নিভ্যানন্দপুর, হরিক্তমপুর, রামপুর, শান্তিপুর, वनश्राम, नवश्राम, वानुश्राम देखानि। "ननद" निर्देश किह কিছু নামকরণ হ'ত, বেমন--রামনগর, দেবলগর, কারছ নগর>কোরগর, ককনগর ইত্যাদি। এগুলি ছাড়া সংস্কৃত (बक्क वारमा अञ्चवान कवा आध्यत मामक भावता वाब. (यमम--- यमन वृक्तिक) -- कांश्वन शीह ; शूलवृक्तिक) -- कून (वर्ष हेलाबि। अ बाका वहन-वा वा वर्ष-वह क-छा> वब्रमण्>वामगणः वस्कृषिका. या (पटक वव्यश्विवा) वक्त पूँ क्ति।> विकात व्याक: युरिमान> वितिमान> विति-শাল , শ্ৰোভ কৃষি>লোটকোষি>মুটবেক , কোলানাৰ> कानांगः>(बाननाः बननाः वन बृधिका> वन बृधिका> वाधा-মাটী: কৰ্ণপুৰৰ্ণ্>কাৰুপুৰু>কানসোধা ইত্যাধি ছানের নাম ক্রমবিকাশ লাভ করে। জনপদবুলক যে বিভাগ ছিল ভার পরিচর পাওরা যায়--- ভূমি"-বুক্ত ছানের নাবে, বেরন, वीतक्तकृषि> वीतकृषि> वीतकृष ; मळकृषि> मळकृषि> मळ-ভূমি> नामजूम, मानजूम, जूकजूमि> जूम्रजूमि> जिररजूमि> निरकृत , पायनकृति> गांवनकृति> गणनकृत> वनकृत रेकांवि। (ज ६८० वष-वषीत नाम स्टाहिन-विदयी, यम्ना," कानिकी. কুৰভোৱা, মহুৱাকী, বাহ্মৰী, সহুৰভী ইত্যাদি।

আর্ব্যদের সমাজ-ব্যবস্থার অনুসরণে বাংলার ঠিক চতুর্বর্ণ বিভাগ হর নি। এতীর প্রুম বেকে স্থম শতাবী অববি অভত: ধুব বেশী ৰেচ্ছাচাৱিতা বিভবান ছিল। তথন ছিল বুভিৰুলক উপনাম। কলে আক্ষণের খোব-উপনাম হ'ত, কৈবৰ্তত ক্ষমি হ'ত। বিবাহ বিষয়ে কোন নিৰ্দিষ্ট বিৰি অনুস্ত হ'ত না। কিখনতী অসুবারী গোড়াবিপতি আহিশুর পশ্চিম ভারতীয় ভাবের অন্থসরণ করবার জন্ত কাভকুত বেকে পঞ ত্রাহ্মণ ও পঞ্চ কার্যন্ত আনিরে এদেশে কুলপ্রধার প্রবর্তন করেন। তার আমলে কৈবর্তরাও সন্থানের আসন পেরেছিল, বৈভরাও फेकरर्न राम नेगा र'छ। अकामम मछाक बन्नानामन बांधानी हिन्दू नवारकत नुवर्गत्वा कितर नित्रवार कराना । करान কৈবৰ্ডরা নীচে নেমে গেল। ভারা হুই শ্রেইভে বিভঞ্জ হ'ল— शांनिक ७ जांनिक । कांत्रष्ट्र र'न जिन तकस्थत, स्वतन-कांत्रह করণ ও বদক। তার মধ্যে আবার কুলীন ও বোলিক বিভাগ হ'ল। বৈভাষের পরিচর ধুব গোলবেলে হরে দীড়াল। কারভাষের মব্যে করণরা ছিল মুসীজীবী, জার জভ শ্রেপীর কারভেরা ছিল

২৪'। 'বশোহর-পুলনার ইতিহাস, প্রথম বঙ-শ্রীসতীশচক্র বিত্ত

২৫ । বাংলা ব্যাকরণ, প্রথম খঙ—বোংসশচন্দ্র রার বিয়ানিথি শিক্ত।

<sup>.</sup> २७। জাবার এমনও হতে পাত্রে—মহেধরাবাস> মহেধরা পাশ> মহেধরপানা এবং সিম্বাবাস> সিম্বাপান> সিম্বপানা> সিদ্ধি পানা।

২৭। বাঙালী হিন্দুর বর্ণজ্ঞেন—ত: নীহাররঞ্জন রার ও জঃ কুকুমার সেনের—'প্রাচীন বাংলা ও বাঙালা' পঞ্চ। সংস্কৃত স্থাপ "কারস্থ"। এবন কার বিনে অবস্থ করণ ও কারেব মিলে এক ব্যান সিরেছে। অভ্যান শ্রেই ছিল বৃই রক্ষের— এক ব্যানরবীর ও অভট ক্যানাচরবীর। এবনও অনেকটা সেই রক্ষই আছে। নাশিত, উভি, সেক্রা, কুমার, কামার প্রভৃতির স্থান হিল কারস্কুলের নীচেই।

#### কলম্ব

### 🛢 কুম'রলাল দাশগুপ্ত

করবা গাঁরের লালসিং পুরা> গৃহছ: ঘশ বিধা ধানক্ষত, বাভিষর, ভিনধানা লালল, গাই, মোষ তো আহেই, ভা হাড়া আরো আহে কিছু নগদ টাকা। লালসিং-এর সাঁবিলং নেরের নাম ক্রকিরা. বয়স হইবে তের কি চৌছ, পাতলা গড়ম, কাঁধ পর্যান্ত কোঁকড়া চূল, চোর হট হাসি হাসি, গারের রং তিল শাঁওর,৩ দেবিতে ভারি স্কর । মনোমত পাল পাওরা ঘাইতেহে না বলিরা ক্রকিরার এই বরসেও বিরে হর নাই। লালসিং-এর মত লোক বাহার ভাহার ঘরে তো আর বেরে দিন্টে পারে না, ভাই বোঁজারুঁ ভি চলিতেহে।

অবশেবে তিন কোশ দুরে কোনীগাঁরের ভাতুসিং-এর ছেলে
রূপনাকে প্রক্ষ ইইল। ভাতুসিং-এর অবহা লালসিং-এর নত
অত ভাল না হইলেও বরে ধাবার আছে, দশ-বিশচা গাইগরু
আছে তা হাড়া ছেলেট তারি কাবিলঃ। বরেস আঠার-উনিশ্,
বলিঠ লছা কেছ, কালো কুচকুচে রং, গাঁতগুলি বক্বকে সাদা,
ঠোঁট ছুট মানানসই পুরু, কানে সোনা। ছেলের ভুগু বে রুপ
আছে তা নর, গুণও আছে। ঘর-গৃংহালির কান্দে পাকা,
আবার বানী ও মাদল বাজাইতে ওভাদ। অতএব মহাদেওরের
বিহারং পরে কাওনের এক গুলুলরে রূপনার সহিত রুক্রার
বিবাহ হটয়া গেল।

খণ্ডরবাড়ী আসিরা ক্রকিরার দিন আনক্ষেই কাটে। একে তো বড়লোক্রে ব্রুপ্ত ক্রপান কর্তা, তার উপর খণ্ডরের আর্বে পুরবণু—ক্রকিরাকে সংসারের কাভ বিশেষ কিছু করিতে হয় না। পাণ্ডণী-ননদেরাই সব কাজকর্ম করে, হাসিরা খেলিরাই ভাহার বেদী সমর কাটে।

হামী রসিক, সুন্দরী নীর মর্ব্যাদা রাবিতে জানে, জাবর করিবা, গান গা'হবা, মানল বাজাইবা সব সমরেই বৃদ্ধী করিতে চেঠা করে। জার ক্রকিরা বৃদ্ধীও হইরীছে বৃব , এমন বামী পাইরা জোন বেরের না জানন হর। এক মন কাঠের বোকা জনল হুইছে সে জনারাসে রাধার করিবা বাফী লইবা জানে, বিবাড় ই ক্ষম এক বেলার চাব দিয়া কেলে, আবার জ্যোৎসা রাজে আলিনাতে বসিরা বধন নাবল বাজাইরা গান ক্ষম করে তথন মনের মব্যেটা কেমন করিরা ওঠে—ইচ্ছা করে তার কালো মিটি মুখবানার দিকে একদুটো চাহিয়া পাকে।

**এই ভাবে दिन कार्टि**।

अक्षिन ज्ञानात्वा भवरमदा य घारांत्र कार्य निवास. নদ্দী সিয়াহে গোবর কুড়াইতে, শাওড়ী রায়া লইবা ব্যস্ত: হঠাৎ ডাকিয়া কহিল, 'ক্নিয়াও গে, জল নেই, এক বইলা। জল নিয়ে আর'। ক্রকিয়া আতে আসিয়া বালি ঘটলাটা ভূলিয়া লইল, তারপরে ঘরের বাহিরে আসিয়া সে**ট** নামাইরা রাখিরা চুপ করির। ছাড়াইরা রহিল। থানিক পরে শাশুড়ী ভাকিল 'ক্ৰিয়া ক্ৰিয়া সে', ক্লকিয়া সাড়া দিল না। भाक्षणे जाराव जाकिन, क्रिक क्रक्रिया मीवन ; अहराव भाक्षणे ব্যস্ত হইরা বাহিরে আসিল, এক ভেগদ দূরে পান্ধের বাদীতে बूबा, धरे जबदर वर्ण परेमा कम चामा यात चर्ठ वर्षकी क्रय কি ? শাভণী বাহিত্রে আসিরা দেখিল বালি ঘটলার পাশে বট হাড়াইরা আছে। শহিত হইরা শাশুড়ী কহিল, 'বল আনতে বাসনি বে, শরীর কি খারাপ হরেছে, না কেউ কিছু বলেছে ।' ক্লকিয়া বাভ ৰাভিয়া ভাৰাইল, কেং কিছু বলে ৰাই। কি হইল ভাহাৱ---খল আনিতে গেল না কেন, শাওচীয় কোন প্রশ্নের উত্তরই সে ছিল না--বইলার পাশে বেনন পাড়াইরাছিল ভেষণি পাড়াইরাই রহিল। ইতিমধ্যে নন্দী আসিরা উপস্থিত হইল, পাওলী তাহাকে কহিল, 'তোর ভৌজিকে> পুহ কি ক্য়ছে ওয়, এক বইলা কল আৰ্ডে বল্লাম তা কলও আনে না--কৰাবও দেৱ না।'

ভার পরে ঘইলা ভূলিরা লইরা নিজেই জল আনিভে চলিরা গেল। নন্ধী ক্লিবার আঁচল টানিরা কহিল, 'কি হরেছে বল না ভৌজি, ভোকে ভূভে পেরেছে নাকি ?' ইহার

<sup>(</sup>১) সুন্দার, (২) সেজো, (৩) স্থামল, (৪) উপযুক্ত (৫) শিবরাত্তি,

<sup>(</sup>७) वड, (१) कनगी, (४) भा (३) त्योपि,

উভবে ক্ৰছিবা বাহা কহিল ভাহা গুনিবা নন্দী চোৰ ছট বিশ্বৰে বছ বছ ক্ৰিবা ভাহার বুবের দিকে ভাকাইবা রহিল। শাওদী কল লইবা ক্রিভেই নন্দী টেচাইবা উটিল—

শাওটা জল লইবা কিরিতেই নদ্দী চেঁচাইবা উটিল—
'গুনেছ নাইবা, ভৌজি বলে কি ? বলে পরের বাড়ীর কুরোতে
লে কোন দিন জল আনতে বার নাই, কোন দিন বাবেও না ।'
শাওটা জলের ঘইলা লইবা ঘরে চুকিতেহিল, গুনিরা ঘোরগোড়ার ঘ' হইবা হাঁডাইবা গেল । রাগে, অপবানে তার
বুধবানা কালো ঘইরা গেল, হাঁতে হাঁত চালিবা কহিল,
'গরের বাড়ী । পরের বাড়ী । গোতিরার ১০ বাড়ী জল আনতে
বেতে অপবান । কেন আবরা বাই কেনন করে, আবাদের
বুধি ইক্ষত নাই ?' উন্থনের উপরে বে ভাল চাপানো সে
কথা একেবারে ভূলিরা সিরা শাওড়ী বাবালো কঠে বলিতে
লাগিল, 'বড়লোকের বেট্ট, লাধপতির বেট্ট, রাজার বেট্ট,
গোতিরার বাড়ী থেকে জল আনতে অপবান বোব হব ।
আবল তোর বন্ধর, আত্মক তোর ভাতার, তারাই এ কথার
জবাব দেবে।' বকিতে বকিতে শাগুড়ী যরে চুকিল।

अमिरक (बांडे स्टेरन कि स्व, मनमीडिव मर्वामारवाय धूरहे ট্ৰট্ৰে—ভৌজির ক্ৰার গোপন ইলিভটা যে কি ভাসে ৰ্বিভে পারিয়াহে-ভৌজির বাপ যে বছলোক ভার ভার ৰাপ যে গৱীৰ ভৌজি সে কথাই বলিতে চাৱ। বাপের বাড়ীর প্ৰৱৰ লইৱা বাপেৱ ৰাখীতেই তো সে থাকিতে পাৱিত— এবানে আসিল কেন ? কুকিয়া এ কুণার উত্তর না দিরা ৰাকিতে পারিল না, কহিল, 'আমার বাপ গোরপড়কে১১ ভোষের বাড়ী আমাকে রেখে বার মি।' আর যার কোবার, কলবের কুষোগ পাইরা নদ্দী আদিনারর নাচিয়া বেড়াইডে লাগিল, এ বিষয়ে সে যথেষ্ট শ্রিকা পাইয়াছে, অনেক বুড়ীকে পৰ্যাত্ত লে বাবেল করিবা কেব, ভৌজির মত একটা ছুঁড়িকে কাভ করিতে কভক্ষ। বাহা বাহা অন্ত্রীল, বাক্যবাণ নিক্ষেপ ভ্রিতে লাগিল, ভৌভিত্র বাপ যা হইতে স্থক্ন করিয়া তার वेद्छम इकुर्वन शुक्रम शर्मा कारात्कथ त्वरारे पिन मा । वाक्-বুৰে ক্ৰিয়াও অপচুঁ নহে, কিছ ইতিবব্যে বস্তৱ আসিয়া পড়ার সে চুপ করিবা রহিল, ভিডরচা তাহার অলিবা পুড়িরা যাইতে লাগিল। ব্যাপার শুনিরা বশুরও ধরণ তাহাকে আক্রমণ করিল তথম আর সে সহু করিতে পারিল না---निरम्ब परव कृषिया त्यरचय शकिया त्य कैंपिएल मानिम, इःरच मटर्--- वाटन ।

অনেক বেলার হারী বাড়ী আসিল, অবিলবে ভাহার ভাছে ইডর, শান্ডলী এবং নন্ধী একবোনে নালিশ রক্ করিল। রুক্রি উৎকর্ণ হইরা রহিল, হারী কি বলে, সকলের গলার আঙ্হান্ডই পাইল, পাইল বা হারীর। বাইতে ভাষার ইছাও নাই, ভাষাকে কেউ ভাকিলও
না। আহারাভে যানী বৰন ববে চুকিল তবনও সে ভূমিশব্যার তইরা ছিল। যানী কাছে বসিরা গারে হাত দিতে
কোঁস করিরা উঠিরা বসিল, কিছ ভাষার প্রশান্ত মুবের পালে
চাহিরা ভিতরের উভাপ অনেক্বানি কমিয়া আসিল। যানী
বিজ্ঞাসা করিল, 'সভিয় বল, কি হরেছে ?' ক্ষকিরা অবাব
দিতে বাইতেছিল এবন সময় নন্দী আসিরা উকি মারিল,
ভাষাকের ক্যাবার্তা তবনকার মত আর হইল না।

ইহার পরে দিন কাটতে লাগিল বটে, কিছ ভেনন পুৰে হছলে নহে। নহুন বোরের আদরের মাত্রা একেবারেই কমিরা গেল, শুঁটনাটতে ফ্রন্টর অভ ফ্রন্টিরা কড়া কথা ভনিতে লাগিল। কোন কোন দিন সেও ক্বাব দিত, কিছ তাহাতে বিপরীত কল কলিত, কড়া কথা গালাগালিতে পরিণত হুইত।

বিষয়টা ক্লিয়ায় বাপ লালসিং-এর কানে পৌছিল। মাধায় মন্ত বড় মুডেঠা১২ বাঁৰিয়া সে সমন্তিকে শিক্ষা বিভে ক্লিয়ায় খন্তবন্তী চলিল। সন্ত্রনা ধ্ব স্থারোক্টে হইল, লালসিং মুডেঠা লইয়া কিরিল বটে, কিছু যান লইয়া ক্রিডে পারিল না।

ইহার পরে ক্রিরা যধন-তথন লাছিত হইতে লাগিল, হামী তাহাকে লাছনার হাত হইতে রকা ক্রিতে পারিল না। এই অবহার হানীর প্রধাহসারে সকল বউ যাহা করে ক্রিয়াও তাহাই ক্রিল—এক দিন স্থবাগ ব্রিরা পলাইরা বাপের বাড়ী চলিয়া গেল।

ইহার কলে মুই পক্ষই ভীষণ ক্লবিরা পেল। ভাতুসিং কৃষিল, এমন বউকে সে আর বরে আনিবে না, লাগসিং ক্লবাৰ বিল যদি ভাল চার ভবে ভাতুসিং যেন কারকাভি১৩ দিয়া কের, ভাহার মভ চামারের বাজী সে মেরে পাঠাইবে না।

বৰ্বা আসিত্ৰা পড়ে, কিছুবিনেত্ৰ মত ভূজিকুবিনাত ছসিত বাৰিবা মেবেপুক্তৰে কেত-বামাবেত্ৰ কালে ক্লামিবা বাব । বাব্য বোপণেত্ৰ গানে মাঠ-বাট মুখ্য ক্ষয়া উঠে ।

বৰ্ণান্তে আসে শরং—সবুক ধানক্ষেত রোকে বলষক করিতে থাকে, বাতাসে শাবসিহর ১৪ কুলের গন্ধ ভাসিছা আসে। লোকের এখন অখণ্ড অবসর, একটার পর একটা পরব আসিতে থাকে—কর্মা, জিভিয়া, দশহরা। এামের দশ ক্ষম মেরের মৃত ক্রকিয়াণ্ড হাসিয়া খেলিয়া বেডায়, উৎসবে বোগ দেয়, মাচে, গান গায়। দিন ক্ষাষ্টয়া যায়।

এক্ৰিন নদীর বাটে ক্ষির বা আর বুলীবট একটা কথা লইরা হাসাহাসি ক্ষিতেছিল, বোহনের বা লেইবান বিবা ক্ষলে বাইতেছিল, কৃহিল, 'ক্থাটা কি, এত হাসি কেন ?' বুলীবট ক্ষাব বিল 'হাসির কথা বলিয়াই এত হাসি।' ক্ষলে বাওৱাটা হসিত হাবিয়া বোহনের বা আরও কাহে আুলিরা

১২ পাছতি ১৩ বিবাহ-বিচ্ছেদের পত্র ১৪ পিউলি

কহিল 'বল্ মা ভাই, ভবে আমরাও একটু হেসে নিই।' মুনীবউ কমির মাকে কহিল 'ভূই বল্।' কমির মা গলা বাটো করিয়া কহিল 'ভমিস্ নি বৃধি ঐ লালসিং-এর মেরে ক্লিয়ার কথা,?' মোহনের মা কহিল, 'ভমেছি বইকি, মেরেটাকে আর বভরবাদী পাঠাবে মা।' কমির মা হাসিরা কহিল, 'কি দরকার ওর বভরবাদী।' মোহমের মা গালে হাত দিরা কহিল, 'কেন, কি করেছে ?' বৃদীবউ বলিল, 'কি আর করেছে — পিরীত করেছে।'

বেবা পেল কৰাটা অনেক স্থানেই আলোটিত হইতেছে।
সন্থাবেলা কুষার বাবে জল লইতে আসিরা ঘইলা কাত
করিরা পাছার বউ ও বেরেরা ঐ কবাই বলাবলি করিতেছে।
একট বউ কহিল, 'ওর চং দেখেই আমি ব্রুতে পেরেছিলাম,
সব সময় অত ঠাট-বাট কেন।' ক্রকিয়ার এক প্রতিবেশিনী
কহিল, 'সত্যি বলছি সেদিন নিজের চোঝে দেখেছি।' নিজের
চোঝে কি দেখিয়াছে তাহা বলিবার জভ চারিদিক হইতে
একই সভে অন্থরোধ আসিল। সে বলিল, 'মরদ মদ খেরে
এসে রাতে আমার সজে বগড়া সুক্র করল, আমি রাগ করে
বরের বাইরে এসে বসে বাকলাম, প্রহর্গানেক রাত হরেছে
এমন সময় দেখি ছুঁভি চুলি চুলি ঘর খেকে বেরিরে তাড়াতাভি বক মহরা গাছটার দিকে চলে গেল।' একট ব্রুতী
কৃষিল, 'ও বাবা, ঐ মহরা গাছটার যে ভূত আছে গো।'
আর একজন কৃষ্কি, 'আছে বৈকি, বভ রসিক ভূত।' উচ্চ
হাসির রোল পড়িয়া গেল।

বাহা বটে ভাহা বটে। কে একজন প্রারই অনেক রাজে কৃতিরাদের বাড়ীর পিছনে আসিরা ইড়ার, দরজা বুলিরা কৃতিরা বাইরে আসে, ছটতে মিলিরা অভকারে অনুষ্ঠ হইরা বার। আবার হাটরার হিন হপুরবেলা গাঁরের মেরেপুরুষ বর্ধন হাট ক্রিভে বার ভবন কৃতিরা একটা বুড়ি যাধার লইরা নদীর ওপারে আলবমটার সক্র পব বরিরা চলিভে থাকে, হঠাং কে আসিরা ভার চোব হুট পিছন হইভে চাপিরা বরে, কৃতিরা হাড়াইবার চেটা ক্রে না, হাসিরা ওঠে, ভার পরে ছুট্ট ক্রমে হাভ বরাবরি ক্রিরা গভীর বনে প্রবেশ করে।

हेहां वर्गास्त्र लांक्य अक सक्य गा-गरा परेया नियायिन,

কিছ দশহরার মেলার বিন রুক্ষির যে বছৰ বাছাবাছি করিল ভাহাতে প্রবীণারা তো বটেই, মবীনারা পর্যন্ত হি ছি করিতে লাসিল। লাল টুক্টুকে বুলা১৫ ও হাপাশাছি পরিরা কানে ভারপাত, গলার হাঁলুলী আর বাবিরা, হাতে বাঁক এবং কাংনা পরিরা সে এামের দশ খন মেরের সকে মেলার গেল, কিছ বানিক পরে দল হাছিরা বে কোবার অন্তর্গনি হইরা গেল ভাহা কেছ বলিতে পারিল বা। আচ্চর্ব্যের বিষয়, সন্থাবেলা হরে কিরিবার সময় সে আসিয়া আবার হলে ভিছিল।

কথাটা লালসিং-এর কানেও গেল; সেরাগে গর্জিরা উঠিল, মান-ইক্ষত আর থাকিল না। মেরেকে উদ্দেশ করিবা কহিল, ভবিত্ততে সে বলি এবন কাল আর করে ভাষা হইলে মেরে বলিরা ভাষাকে ক্ষমা করিবে না, ছোঁভাটা বেই হউক ভাষাকে তো কাটবেই, মেরেকেও কাটরা হই টুকরা করিবে।

লন্দীপুৰিষার রাত, ষাঠঘাট জ্যোন্ধার ভাসিরা যাইতেছে। প্রামধানি বুমত, রাভ অনেক, এমন সময় রুকিয়া বর হইতে বাহির হইয়া আসিল, গায়ে ভার লাল বুলা, পরনে ছাপা-. শাভি, সর্বাদে গহনা। সে নিঃশব্দে বড় মহরা-গাহটার নীচে গিয়া হাঁভাইল। সেধানটা আবহায়া অধ্কার সেই অৱকার হইতে কে এক জন ক্রকিয়ার পাশে আসিয়া শ্লাভাইল, চুপি চুপি কহিল, 'ইস্ বচ্ছ যে সেক্ষেণ্ডকে এসেছিস্।' ক্লকিয়া হাসিতে লাগিল, ভার পরে হঠাং গভীর হইয়া কৃহিল, 'একটা কৰা বলৰ ভোকে।' মুবক কহিল, 'কি বলুবি বলু।' ফুকিয়া करिन, 'वाशा'>७ वर्ज शैंकाशिक करवरह, वर्राहर क्रिक (क्लार्ट ।' पूरक **ऐविश र**हेश कृष्टिन, 'छोटे नांकि ।' क्रकिश যুবকের বুকের কাছে বেঁবিয়া কহিল, 'আমি বলি, ছু'জনে কোৰাও চলে যাই, কোন পরবেশ।' মুবক একটু ভাবিল ভার পরে কৃহিল, 'ভবে ভাই চলু, কোথাও গিরে ছু-ভিন মাস নোকরি করব, ভার পরে আবার বরে কিরে আসব, ভরন ৰেখবি সৰ ঠাতা হলে গেছে।' হুই জনে মহরাভলা হুইতে জ্যোংশাপ্লাবিত পৰে আসিয়া হাঁভাইল, আলো আসিয়া পঢ়িল ৰ্বকের কালো ৰুচ ৰুচে স্ত্ৰার মুধে, কাষের লোনা ভাহার ৰক্ষক্ করিবা উটিল। ছ'ক্ষে পথ ধরিবা চলিবা গেল।

১০ মেরেদের গারের কুর্তা ১৬ বাপ

### মুনি একালীকিয়ৰ এ

ঞ্জীকালীকিষর সেগুনপ্ত

খহার গোপনে ব্নি চকু বৃদি করে ব্যানবোগ
সহকে সকলে বলে বেঁচে বাকা ভার কর্মভোগ !
কি কাজে লাগে সে নিব্যা চৌড পোরা নরবেহ বরে ?
ভীবতে স্বাবি বার সে কেন স্বাবি-চিডা করে ?
ভী কানে, জানে ভানী ভীহার চিডার লোভ হতে
কল্যান-ভাহনী-বারা করে বেল গোর্বীর পরে ;

বেভারের হ্ন-বারা সহল বোজনে বেন পশে ব্যানের প্রবাহ ভার হুজরের বজাভিদী রসে, উবরে উর্জর করে বেকে বনে খাহ্য করে বান, বরার বরার খরে, বিবিধের করে সে কল্যাণ।

## আমার দাদামশায়—রাজনারায়ণ বস্থ

#### প্ৰীবাসস্থী চক্ৰবৰ্তী

নাদামশার রাজনারারণ বসুর বাড়ী কলিকাতার নিকটে প্রাথে। দাদামশারের বাবার নাম নক্ষকিশোর বসু। জা রামবোছন রারের শিশু ছিলেন। তিনি দেখিতে দীর্থকার, স্পুরুষ ছিলেন। উপর্ক্ত বরুসে তার কিছে। স্ক্রী কভাকে দেখে তার আত্মীর-বন্ধনেরা রেন। কভার রূপের প্রশংসা তিনিও ভনেছিলেন। মধ্যে বর গিয়ে বস্তান বিবাহ-বাসরে।

पृष्ठित সময় বর আঞাদের সজে যধন কভার মূঁথের নাকালেন তথন চমুকে উঠলেন—"একি ! এ বে ৄরূপা কভা। কার জারগার কে এলেন ! তিনি তথনি 'এ মেরেকে আমি বিরে করব না।' এমন করে । ঠকিরেকেন।" তিনি বিবাহ-বাসর থেকে উঠে

ার বাবা বললেন—হাঁ, খভার হরেছে, আমার মেরে ;সক্ত কেট পছক করে মা—কি করি । আমার শেষে গারণা করতে হরেছে, আমাকে ক্মা কর—এখন ন বকা কর ।

র মন তপুন এ রক্ষ অভার আচরণের শুভ আকোশে
নি কিছুতেই আর বিবাহের বাকি অস্ঠানাদি করবেন
।খন কভার পিতা রাজা রামমোহন রারের কাছে
। সেধান থেকে কিরে এসে বরকে বললেন—ভোমাকে
মমোহন রার এধনি ভেকেছেন।

ী রামবোহন রার তাঁর শুরু । শুরু শিব্যকে তেকেছেন,
তিনি আর না নিরে পারলেন না । তিনি সেই
র হংশে হংবী মহাপ্রাণ তগবদ্তক্তের কাছে গেলেন ।
বে তাঁর প্রির শিক্তের মাধার স্বেহতরে হাত রেখে
দ করে বললেন—"দেখ, দেখতে ধারাণ হলে
বিহের সৌক্রি ক'দিন থাকে । মেরেট শুনেহি
া হলেই হ'ল।"

ব তিনি রামবোহনের উপবেশ তভিতরে গ্রহণ কর
াং অবশেবে সেই কালো মেরেকেই দরে আনলেন।

বা গেল, রাজা রামমোহন রারের আশীর্কাদ কলেছে—

শিব্যের জ্যের্চ পুত্র রাজনারারণ বস্তু বার্দ্মিক, বিহান ও

ত হওরাতে সকলের প্রভাততি আকর্ষণ করেছিলেন।

ল বংসর বরলে হালামশারের বিহ্যালরের লেখা-পছা

। তিনি ঐ বরলে লাইত্রেরী (এখনকার শি,আর.এস.)

উত্তীর্ণ ও ৪০, টাকা বৃদ্ধি পান। বখন তিনি

ব হাল হিলেন তখনই তার লেখা ইংরেজী প্রবদ্ধ

ব কালের গেজেট প্রভাবিত হ'ত।

কলেক থেকে বার হবে তিনি শিক্ষতা-কর্ম এইণ করেন। নেনিনীপুর ছিল তাঁর কর্মহল। তিনি সেবানকার হাই ছুলের প্রবান শিক্ষক ছিলেন। তিনি তবন তবাকার অবিবাসীদের ও ছাত্রদের সর্কবিষয়ক উন্নতি ও নৈতিক চরিত্র গঠনের ক্ষণ্ড প্রাণপণ চেষ্টা করতেন। তিনি সেক্ষ কতক-ওলি সভা প্রতিষ্ঠিত করেছিলেন— যেমন আছোন্নতি সভা, সুরাপান-নিবারকী সভা ইত্যাদি। শেষে তথাকার লোকেরা বলতেন—এবারে একটা সভা-নিবারকী সভা করতে হবে।

ভার বিভা-বুদি, কর্মতংগরতা ও সততা দেবে সেধানকার ম্যালিট্রেট সাহেব তাঁকে ভেপুট ম্যালিট্রেটের পদ দিতে চেয়েছিলেন। সেই প্রভাব শুবে তার মূব চিন্তারিট ও গভীর হরে গেল। আমার দিদিনা দিজাসা করলেন—ভোনার মূব শুকিরে গেছে কেন। কি এমন ভাবছ ? কোন হ্বটনা ঘটেছে কি ?

দাদামশার বললেন—হাঁ, মদটা থারাণ হবেছে, ম্যাজিট্রেট সাহেব আমার ভেপ্টর পদ দিতে চান। কিছু আমি ছুলের কাজই স্বচেরে ভালবাসি।—শেষ পর্যন্ত তিনি ভেপ্টর পদ প্রত্যাধ্যান করলেন। এ কথা ভনে ম্যাজিট্রেট সাহেব বললেন—"Rajnarain is a mad chap—he neither wants promotion nor position" "ৱাজনাৱাৰণ দেবছি পাগল—সে উন্নতি লাভ করতেও চার না, বড় পদও চার না।

মেদিনীপুরে তার বাহ্য তর হওরাতে তিনি দেওবরে বসবাসের আরোজন শুরু করলেন। সেবানে তাক বাংলার পাশে প্রচুর কমি কিনে শুন্দর বাকী করলেন। আয়ৃত্যু সেবানেই ছিলেন। এখন সে বাকী অভ লোকে কিনে নিরেছে।

দেওবরে কভ লোক তাঁকে দেবতে আসভেন। কেউ কেউ বলভেন, "বৈছনাথে ছই বহাদেব আছেন—একজন পাবরের, আর একজন সঞীব।"

বিজেলনাথ ঠাকুর, রবীজনাথ ঠাকুর, কিভীজনাথ ঠাকুর, প্রিরনাথ শালী, বর্ষনসিংকের মহারাজা হুর্যাজাভ আচার্য্য, বিজ্ঞানাচার্য্য প্রকৃত্তকে রার, পভিত শিবনাথ শালী, অধ্যাপক ক্রেক্চজ বৈশ্ব, কবি নবীনচজ্ঞ নেন প্রভৃতি বহু জানী ওবি ব্যক্তি তাঁকে দেখতে আসতেম এবং তার বাড়ীতে আতিব্য প্রব্য করতেন। অভিবিধের সুখবাজ্ঞক্যের প্রতি তাঁর কি প্রধ্য দৃষ্টি হিল তা সচক্ষে দেখেছি।

প্রভের বিজ্ঞেনাথ ঠাত্র নশার বধন বেওবরে অভিধি হতেন তথন বাজীবানি সর্বাধা হাতর্থরিত হরে থাকত। হুই বন্ধত এবন প্রাণবোলা হালি হালতেন বা হুর্লভ।

বিজেপ্রনাপ ঠাকুর যশার কত যকা করে অভ্ত অতুত ছবি এ কৈ চিটি লিপতেন, তা পড়ে আমরা তো কেনেই আকুল। ভার ও নহর্ষি দেবেজনাপ ঠাকুর মশারের কত চিটি আমার মা বছু করে একটা বাজে রেখেছিলেন।

মহর্ষি তাঁকে অভ্যন্ত স্নেহ্ করভেন। তাঁর পারিবারিক ত্ব-ছংবের সব সংবাদ রাবভেন। মহর্ষির একবানি চিটি আমার কাছে আছে, সেট এবানে তুলে দেওয়া হ'ল—-

> ওঁ কাত্য। ৬ মাৰ ৫১

বীভিপুর্বক নম্ভার,

আমার প্রতি ভোষার কেমন অন্থাগ, তোমার প্রতিও
আমার তেমনি অন্থাগ। তৃষিও আমার guide, philosopher
and friend—তৃষিই আমার এক নিরত বন্ধ। Essay on
Theism বিলাতে প্রকাশিত হইলে কোরাণ হইতে ইপার
বিষয়ক বাক্য সকল সংগ্রহ করিরা তাহা মুসলমান সমাজে
প্রচার করিতে ইচ্ছা প্রকাশ করিরাছ। হিন্দু, প্রীটান,
মুসলমান তিন সমাজে প্রাথবর্শ্ব প্রচার করা তোমার চিরকালের লক্য—ইহা তোমার মনোগত স্পৃহা। ইহা সিদ্ধ হইলে
মহালা রামমোহন রায়েরও জীবনের উচ্ছের সকল হয়।
বর্শ্ব সহত্বে বন্ধানের অবস্থা বে অতীব শোচনীর তাহাও
চিরকাল থাকিবে না। পুরু বালীও এক্থিন পুলোভান হইবে,
অতএব শোক করিও না।

ত্রাক্ষরর্থ প্রচারে ভোষার বে প্রকার বৈর্ব্য ইহাতে কর্ম ভোষার কর হইবে। হাকেক বলিয়াছেন বে বৈর্ব্য ও কর পরস্পার পুরাতন বন্ধু, বৈর্ব্যের সংসর্গে করের অভ্যানর ইয়।

আমার গদে একট আমার ছালোগ্য ব্রহ্মচারী, আছেন।
তিবি এবন তত্ববোধিনী পত্রিকাতে ছালোগ্য উপনিষ্ অহ্বাদ
করিয়া বিতেতেন, তাঁহার নাম প্রির্নাণ শালী। তাঁহারই
লিবিত এই পারসী অকরের সহিত ভোমার নিকট তাঁহার
পরিচর বিতেছি। ইনি আমার অতি বোগ্য শিক্ত।

ভূমি বেমন হিন্দু, গুটান, মুসলমান সমাজে আন্ধরণ প্রচার করিতে উভোগী হইরাছ, মহোদর ভরসী ( Voysy )-ও সেই-রূপ আবার ইছনী সমাজে ভাষা প্রচার করিতে বছবান। আন্ধরণেরিই এই রূপ। "সর্ব্বে অন্ধ বিদ্যন্তি সংপ্রাপ্তে ভূ কর্নো বুলে।" পুরাণের এই ভবিভারাণী অকাট্য। ভূমি রেভরেও ভরসীকে এই মেলে লিবিবে যে উমিশ ক্ষমের মধ্যে আফি আন্দ্রনাক্ষত ২০ প্রকাশ পৌত Theistic Church নির্বাণের করু সাহায্য দিতে প্রস্তুত আহেম।

**बिरमरमञ्जाम मर्चनः** 

বৰ্ণন আৰম্ভা ছুল-কলেকে পড়ভাৰ ভৰ্ণন প্ৰতি বংসর পূঞ্চায় সৰৰ কেঞ্চৰৰে বেভাৰ। সেধাৰে কণ্ড আৰক্ষে আৰাকের দিন কাটত। দেওবরের নির্মান, বাছ্যপ্রক বার্সেবন ও সেবানকার-টাট্কা তরিতরকারী ও ভেলালপুত হব, বি ইত্যাদি আহার করে নব বল ও বাহ্য নিরে আবার কলিকাতার কিরতান।

দেওবরের বাড়ীর সন্মূবে অনেকটা বালি অমি ও পূর্ব-পশ্চিমে সুলের বাগান এবং দক্ষিণে ভরিভরকারী, কলের বাগান ও মন্ত কুয়া ছিল। আমরা বাগানে বেভিয়ে, সুল ভূলে, মালা গেঁথে কভ আনন্দ পেভাম।

প্রতি বংসর কোজাগরী লক্ষীপূর্ণিমা তিবিতে রামে দেওবরের বাড়ীতে উপাসনা হ'ত। বছ লোককে নিমন্ত্রণ করা হ'ত। উপাসনার পর বাড়ীর সন্মূবে চারদিকে গোলাপ গাছে বেষ্টিত চত্বত্বে ইাড়িয়ে কীর্ডন হ'ত—পরে বাগানে গিয়ে গান হ'ত। আনার দিদি কুমুদিনী বন্ধ ও আমি গান করতাম—

— কৃটিভ ক্লেরি মাঝে কেখরে মারের হাসি
কিবা রহমক ত্থাগড় বারে তাতে রাশি রাশি।
"(আমার) মা হাসেন ক্লের ভিজরে তাই কুল এত ভালবাসি।"

 — গানট তাঁর অতি প্রের হিল। আর একট গান প্রতি বংসর

 ঐ দিনে গাইতাম—

ভোমারি মধ্র রূপে ভরেছে ভূবন মুক্ত নর্ম মন পুলক্তিত মোহিত মন

জ্যোৎসাপ্লাবিত বর্ণীর সৌন্ধর্যে মুখ হরে দাদামশার সকল সৌন্ধর্যের স্ক্রীকর্তার ব্যানে মগ্ন হরে বেতেন। ভক্তের মুব্বানি ভগবং প্রেমে কি উদ্ধান হরে উঠত। তিনি বলে উঠতেন—"এমন রাতে গুম আসে না—ভাষাম রাত ভগবানের নাম হোক।"

ভিনি প্রতিদিন সন্ধার ধর্মসদীত শুনতে ভালবাসতেন আর হদেশপ্রেমে উদীও সদীত শুনে উত্তেশিত হবে উঠতেন। হদেশপ্রেমের স্রোত তাঁর শিরার শিরার প্রবাহিত হিল। আমরা যধন গাইতাম—

কত কাল পরে বল ভারত রে ছবসাগর সাঁভারি পার হবে— ভবন হঃবে তাঁর জ্বনর ভেঙে পড়ত—আর ববন ঐ চরণট গাইভার—

ভূষি বে ভিষিয়ে, ভূষি সে ভিষিয়ে— ভবন বলে উঠভেষ—ও গান গাস নে, ও গান গাস নে, সহ হয় না—আয় সহ হয় না।

"এক ছবে বাধিরাহি সহস্রেট প্রাণ এক কার্ব্যে সঁপিরাহি সহস্র পরাণ।" এ গানট উার অতি শ্রের হিন। এত উত্তেজিত হবে উঠতেন বে, পক্ষাবাত রোগে পত্ন বেহকে সোজা করে বিহানার উপর উঠে বসতেন ও ভরকর্তে ব্যক্তেতিত উৎসাহের সহিত্ আনাবের সলে গাইতেন। ব্যব্যরূপেও উার পরীর রোনাকিত হ'ত—বাধার চুল বাড়া হবে উঠত। ভার নাধার কাছে একট ছোট টেবিলের উপর সব বর্ষ-রহ থাকভ—দীতা, উপনিষদ, বাইবেল, রাম্বর্শপ্রহ ইত্যাদি। গেকেন্দের কাব্যও এগুলির একসন্দে হান পেত। এগুলি হিল ভার নিভাসনী, প্রাণের প্রাণ। হাকেন্দের গক্ষগুলি ভিনি নার্যন্তি করতে প্রবাধান্যতেন।

শেব বরসে দেওবরে পঞ্চাবাত রোসে আক্রান্ত হরে করেক রাস তিনি শব্যাশারী হিলেন। তাঁর কাছে গেলে তুলার তে নরম হাতবানি আমার সারা মূবে কত স্নেহের সম্প বুলাতেন—কত আদর করতেন তা শেষ্ট মনে আছে।

বৰ্ণ আৱপ্ত হোট ছিলাম তাঁৱ বাটের কাছে বসে তাঁৱ গান ছেঁচে দিভান—তিনি তবন বলতেন, 'ভোমার বেরে কেলি ?' যা বলতেন, 'একবা শুনে আমি তাঁর দিকে চোব ক্যে বড় করে চেরে বাকভান, তবন তিনি কাছে ভেকে কভ নামর করতেন।'

দেশতাম তার মাধার কাছে একটা ছোট কাঠের বাজ বাকত। আমরা, ছোটরা সে বাজ বাঁটাবাঁট করতে ব্ব চালবাসতাম। দেশতাম যে বাজে দিয়াললাই, মোমবাতি, বালা আকারের পেরেক, দভি, চিঠির কাগল, বাম, পোইকার্ড, ঢাক টিকিট ইত্যাদি কত টুকিটাকি ভিনিষ যা আমাদের চক্ষে অপ্রয়োজনীয় ঠেকত। আমরা বলতাম—আছো দভি রাবেন

ভারপরে দেবি কি, এক দিন এমন হরেছে বাড়ীতে একটিও দিয়াশলাই নাই—বালার তো দেড মাইল দূরে, কাছেও কোন দোকানপাট নেই, বাড়ীতে বিশিষ্ট অভিবি এসেছেন—কলবাবার তৈরি করতে হবে, উন্থনে আগুন দিতে হবে। তবন ভার বান্ধে হাত পড়ত—মশারির দভির বরকার, কোবাও বুঁকে পাওরা বাচ্ছে না তবন ভার শরণাপন্ন হতে হ'ত।

সংসারে সামাভ সামাভ বিনিবের বভ কত মুশকিলে বে পড়তে হয়। লোকে সে সব বিনিব ভুচ্ছ মনে করে, কিছু অনেক প্রয়োজনীয় কাল সেগুলির অভাবে হয় না।

একবার একজন কুঠরোদী তাঁকে দেখতে আসে। দাদানশারকে কি প্রভা-ভক্তি সে করত। দাদানশার তাকে
স্নেহের সঙ্গে আলিকন করেছিলেন—উপস্থিত সকলে সে দৃষ্ট দেশে অবাক।

আমার সেক মাসিমা বিববা হবার পর তাঁর পুত্রক্তা সহ বালামশারের কাছেই থাকতেন। আমার সেই
বাসভূতো বালা অবিনাশ বরাবরই কর ছিলেন। তাঁর ভাত
সহ হ'ত বা—সাঞ্চ তরকারি ইত্যাবি বিনের বেলা বেতেন।
বেওবর ভূলে তিনি পভতেন। শিক্ষকেরা তাঁকে বুব তালবাসতেন। তিনি বৃদ্ধিমান্ ও সচ্চরিত্র ছিলেন—ক্লাসে সর্বাবাই
প্রথম হতেন। আঠারো বংসর বরসে তাঁর মৃত্যু হর।

আনন্দ্ৰর, হাতে উদ্ধান কেববের বাড়ীতে র্ছার হারা পড়াতে সকলেই শোকে আছের, বাঙাঁট কিছ নীরব নিজ্য— শোকের ক্রন্দনোজ্যাস নেই। দারামশার যে পঞ্চাযাত রোসে শব্যাশারী, এ অবছার তাঁকে কি করে তাঁর প্রিয় নাতির র্ভা-সংবাদ দেওরা যার। সে তাঁর কত সেবা করত, সে বে লালামশারের দন্দিশ হস্ত হিল। এ শোক বে তাঁর বৃক্তে শেলসম বিববে! আর তা বদি সন্থ করতে না পারেম, সকলে সেক্ত সে গভীর শোক বৃক্তের মধ্যে চেপে রেবে নীরবে অঞ্চলন ক্রেক্ত।

দাদামশার অবিনাশের অসুবের সংবাদ শুনেছিলেন। তিনি কেবল বলতেন অবিনাশের বাটটা বরে আমার কাছে নিয়ে এস। তবন আমার বড়বামা বললেন—সে আর নেই।

তৰন দাদানশার বললেন—একৰা আমাকে জানাও নাই কেন ? এ তো আনন্দের কৰা। এবন তার সব ভার স্বরং ভগবান নিয়েছেন। আর তার জঙ্গ কোন ভাবনা নেই।"

এই গভীর শোকের সমর তার অসীম বৈর্ব্য ও ইপরবিধাস দেবে সকলে ভভিত। উপনিষদের সেই প্লোকট মনে পঢ়ল—বিনি ইপরপ্রেমিক তিনি হুবে ছঃবে বিচলিত হন মা।

ভিনি ১৩০৫ সমে ৩০শে ভাত্র পরলোকগমন করেন।

তাঁর হাত্রজীবনের কথা ও ভবনকার দেশের হালচাল ও রীতিনীতির কথা কি হক্ষরভাবে তাঁর 'আগ্রচরিতে' এবং 'স্কোল ও একালে' লিপিবছ হরেছে।

আমার দিদিকে তিনি অত্যন্ত স্বেদ্ করতেন, তাঁর নাম কুমারীরত্ব রেখেছিলেন। দিদিকে তাঁর আত্মচরিত প্রঞাশিত করবার সব তার দিরেছিলেন।

তার আত্মচরিত পড়ে রবীক্রনাথ দিদিকে এই চিট্টিট লিবেছিলেন—

् कनाविशयू—

মাতঃ । তোমার শ্রেরিত রাজনারারণ বাবুর আছুচরিত পাইরা পরম প্রীত হইলাম । সেই সরল সহাক্ত সরসছাদর সাব্তক্তের জীবনী বল-সাহিত্যে বিশেষ সমাধরের
সামগ্রী হইরাছে সন্দেহ নাই । বাল্যকাল হইতে একবিকে
তাহাকে শুকর ভার তক্তি করিরাছি আর একবিকে তাহার
বভাবসির উৎসাহ আলা আনন্দের প্রাচুর্ব্যে তাহাকে
আমাদের নিকটবরসী অনন্তরোবন স্কুদের মত ভান করিরাছি । অর বরসে বর্ধন সকলের চেরে বড় ক্থাকে
প্রহণ করিবার শক্তি হিল না তর্ধন সেই চিরপ্রস্কুর রুদ্ধের নিত্য
উৎসারিত রসপ্রবাহ হইতে আমরা সাহিত্যের প্রতি অছ্রাপ
ও বদেশের প্রতি প্রেমে অভিবেক লাভ করিরাছি । আজ্বালের পরিবারের মধ্যে বে ছংগ্রেইন্টনের প্রেরব্যক্ত

তথন আমার শিভুদের কৃষ্কুমার নিত্র নির্কাননে ছিলেন।

অবতীৰ্ণ হইৱাহে তাহার মধ্যে ভোষার মাতাবহের সেই শুত্র হাত সমুদ্দল পৰিত্র আশীর্কাদ বিকীৰ্ণ দেখিতে পাইতেহি। ইতি ১৭ই মাধ ১৩১৫

राष्ट्र अरह बाव अध्यः खर्जाञ्चलांबी खेदवीळनांच ठीकुद्र ।

দাদাদশারের বৃষ্ণাতিবিতে এই গানট আমরা প্রার্থনার সমর গেরে থাকি আর ভাবি এ গানট বে ভারই দীবনের ছবি---কোন্ আলোতে প্রাণের প্রদীপ

জানিরে ভূমি করার জাস সাধক ওসো, প্রেমিক ওসো, পাগল ওগো ধরার জাস। এই জকুল সংসারে, হংব জাবাত ভোষার প্রানে বীণা কয়ারে; বোর বিশদ মাবে কোন্ জননীর মুবের হাসি দেখিরা হাস ?

হৰন দাদামশার শেষ বোগশব্যার শায়িত তৰ্ণ হিজেজনাথ ঠাকুর মশার আমার বড় মামা বোগজনাথ বছুর নিকট
এই চিঠি লেখেন—
কলিকাতা

ৰোড়াসাঁকো ( No more Park Street )

ब्बराब Probably

বিদ্ধ বোদীন, ২০শে জৈচি
ক্রান্ধনারাম্ববার সেই তথনকার আনন্দের হাসিতে

ভরা—ভার এবান্দার ভিনি প্রতিধিন অন্ধ অন্ধ করিবা অভাচলাভির্বে—আনাদের নিকট অভাচলাভির্বে কিছ বেবগণের নিকট উবরাচলাভির্বে—বৃষ্টি হতে করিল চলিতেহেন। আমি ভোষাদের ওবানে বাই ইবা আনার আভরিক প্রাণগত ইচ্ছা কিছ আমি বেরণ নানা চক্ষাত্রুটকের মধ্যে পভিরা আহি ভাষা এক প্রকার প্রাণববকারী রাক্তসার জাল—ভাষা কাটাইরা মুক্ত বার্তে উবান করা স্ক্রেটন।

I am the 'dot' in the middle of the vortex, বাহাই হউক বা—আবার Love, affection regards, admiration towards রাজনারাধণবাৰ—The same as always and will remain so for ever—হংগ কেবল এই যে চাক্য মিলন কবন ঘটনে টিক বলিতে পারিলান না। তাঁহাকে আমি গতবারে যেকণ কেবিয়াছিলান তাহার ছুলনার একণে তিনি কিরণ আহেন আবাকে আর একটু বুলিয়া লিখিবে। তাঁহাকে ভক্তিপূর্ণ নমভার এবং ভোষাধিগকে প্রাণভ্রা আনীর্কাদ—ভোমনা নির্কিন্দে স্থবসাহ্লের বর্ত্তান পাক—এবং কুশনে পাক—সাংসারিক সম্পদ, বিপদ যেন ভোষাধিগকে জন্ম করিতে না পারে।

বভাকাজী

এবিভেম্বাণ পর্বণ:

# ়"নিষ্ঠুর ধরার বুকে"

শ্রীমীরা ভট্টাচার্য্য

নিছুর বরার বৃক্তে সংসারের রিক্ত পাত্র ভরি বে প্রেম এনেছ ভূমি মন্সারের মধুপই হতে, ভাহারে কটিন হাতে নিরে বাব আহরণ করি ভাবিতে বেদনা পাই, নিরে বাব বেদনার পথে। আমার ক্ষমতা ক্ষমে ভোমার সে প্রেমের সম্মান হংবের বরার মাঝে পারিবে না রাবিতে অক্ষত ; অম্যাবভীর হেম বরণীরে কেবা দিল দান, মানবের প্রাণে ভাই বাসা নিল ব্যথিত ছুর্গত।

মাহ্য যে চিরদিন মরপেরে তর করে মরে,
প্রেমের অর্ত-হাদ মাহুষের জনর-ব্যথার—
পাবার বাসনা কাঁদে নিশিদিন হারাবার তরে
হবের কালিমা-লেখা আঁকা তাই জীবন-খাতার।
তাই তো নোদের বুকে কাঁদে নিত্য অমর্ত্যের প্রেম
"তুলিরা সরবী-রেখা কোখা হতে কোধার এলেন।"

# মো-পিপড়ের মধুর জালা

ঞ্জীতেকেশচন্দ্র সেন.

व्यायको महन्नाहत व्यायादम्य पद्म छ वाहेद्य य-मय निनद्ध त्वरंख शाहे (बो-निगए जात्मत (बरक जानामा । अता क्रिक আমাদের দেশের পিঁপড়েও নয়, অস্ততঃ এখনও পর্যন্ত আমাদের म्मि अरम्ब (बीक भावता यात्र मि । शब्म अरम्ब व्यक्तिकात्र क्रांचन ७: माक क्क नात्त्व बार्यितकांत क्रांकारतार्डा প্রদেশে। এখন মেলিকো এবং অষ্ট্রেলিয়ারও কোন কোন স্থানে ওদের বৌদ পাওয়া গেছে। ওদের আবিষ্কার করতে ম্যাক কুক পাছেবকে বেল বেগ পেতে হয়েছিল। পাণরের ভলার গভীর কুড়লের ভিতরে ছিল ওদের বাসা। মুবের ছ'পাশের ছোট ছট দাভা দিয়ে পাশর কেটে পিপভের পাল সে-সৰ কুডৰ খুঁড়েছিল কডদিনে তা কানা নেই। কুড়ল-বাগার একট মাত্র মুধ—ভিতরে অনকার। উপর থেকে ভিতরে কোৰায় কি আছে ভা জানবার কোন উপায় নেই। স্থভরাং ম্যাক কৃত্ব সাহেবকে বাসা ভাঙতে হ'ল। কিছ সে কাত্ৰ তেমন সহক ছিল না-হাতৃড়ী, বাটালি, ছেনি, করাত প্রভৃতি লোহযন্ত্র দিয়ে দিনের পর দিন একটু একটু করে ভতি সাবধানে পাধর কেটে তাকে বাসার ভিতরের রহত উদ্বাটন করতে হয়েছিল। আৰু ওদের সম্বন্ধে যে-সব তথ্য বাবিষ্ণুত হ্যেছে তা ম্যাক কুক সাহেবেরই চেটার ফল।

শ্নে-শিপড়ে মধ্তক। সবলাতীর শিপড়েই আরাধিক পরিমাণে মধ্বা মিষ্ট ক্রব্য থেতে ভালবাসে। কিছু মৌ-শিপড়েরা একাছই মধ্শিরাসী—মৌমাছির মত মধ্ ভির আরু কোন বাতে ওলের কচি নেই। মৌমাছির মত ওলের শিঠে ভালা নেই, ওলের গতিও ব্র ক্রত নর। স্তরাং মধ্র জর ক্রের ওপর ওলের মির্ভর করা চলে না—কুল বেকে মধ্ সংগ্রেছর জয় মৌমাছির সঙ্গে প্রতিযোগিতা না ক'রে ওরা আবিষ্কার করল এক প্তন উপার। কি করে ওরা এক দিন ভানতে পারল, গল-পোকার গা থেকে যে রস নিঃস্ত হর তা মধ্রই মত মিষ্টি, তেমনি সুকাছ।

দিনের বেলার ওদের বাসা কোথার তা গুঁকে বের করা
শক্তা পরম বেলাও মক্রবাসী হলেও অত্যধিক সুর্ব্যের
তাপ ওরা সন্থ করতে পারে না। তাই দিনের বেলার
বাসা থেকে বের না হরে নিরু অক্কারবেষ্ট্রত থোপওলির
ভিতরেই ওরা দিন যাপন করে। কিন্তু সুমিরে বা কুঁডেমি
করেও মর। আহারের সন্ধানে ওদের স্থান্দ থেকে উঠে
বাইরে আসতে হয়। ভিতরে ওদের অনেক কান্দ। গর্ভের
ভিতরে স্থান্দ বা বােট বােট কুঠরি একট চুট নর। গর্ভের
ভিতরে স্থান্দ বা বােট বােট কুঠরি একট চুট নর। গর্ভের
ভিতরে বা্বন্দ একট প্রকাও হুর্গ।, তার ভেতরে স্থান্দর পর

পুৰুত্ব, কুঠবিদ্ধ পৰা কুঠবি, ছোট বঞ্চ নানা আকাৰেছ পৰ্য নানা দিকে চলে গেছে। পুৰুত্বতি সোলা নেমে গেছে গভীব



গাছের ডালে একাইড বা পিপড়ের "ছন্ধবতী গাভী"

ভলদেশ—ছ্'থারের দেরাল ছর্গপ্রাকারের মত থাড়া, জারগার জারগার থারে থারে ছোট ছোট কুঠরি। ভার কোনটডে মবজাত বাচ্চা, কোনটডে অপেকারুত বড় বাচ্চা, কোনটডে ডিম। এদেরই একটর মধ্যে থাকে রাবী। রাবীর কুঠরিটি অপেকারুত নিম হানে ও সর্বাপেকা কুরন্দিত। বাচ্চাওলিকে ভার দিনে বার বার ক'রে থাওরাতে হর। ওদের সা পরিভার করে দিতে হর। কোথাও একটু বেশা ঠাতা বা গরম থোব হলে বাচ্চাওলিকে অভন্র সরাতে হর, নিরে যেতে হয় অভ কুঠরিতে। কুঠরিওলির কোথাও একটু মরলা বা গুলোবালি ক্যতে পারে বা। বাসার বংশর্ডির সন্দে বাক্ বাক্ বার্ত্ত কর্ন সূত্রন কুঠরি করবারও প্ররোজন হর। তথন সূত্রন কুঠরি তিরি করতে হর, সূত্রন স্কেল বৃত্তত হয়—বাসার ভিতরে দিনের বেলার সর্বাক্তিবের বা হতে বের বা হলেও বরে বনে ওলের বিশ্লার বালা হতে বের বা হলেও বরে বনে বনে ওলের বিশ্লার বা কুক্রির ক্রবার সময় কোওবার হ

লকাণেকা আক্র্যা ওলের মধুসকরের ব্যবস্থা। বৌমাহি
মধুসকর করে ওলের চাকে, ছোট ছোট বোপের মধ্যে।



আত আলার মূখ থেকে মধুপানরত কয়েকটি কুধার্ত্ত পিঁপড়ে

সে চাক ও খোপওলি ওরা মোম দিয়ে তৈরি করে। এই ৰোৰ ওদের গারেরই নি:সভ রস। মৌ-পিণড়ের মধু স্করের করু যোম ধিরে বোপ তৈরি করবার শক্তি নেই। ক্ষেমা যৌমাহির মভ ওদের গায়ে মোম ক্ষে না; অবচ ৰৌষাহির মত ওদেরও মধু সক্ষ করা প্রবোক্ষ। বাসায় ষধুসকলের ব্যবস্থানা বাকলে, ছ্ডিনে অভাবের সময় ওরা कि (बरा वीहरत ? वीका धनि मन् जित्र वर्ष बारात मूर्व (मरव मा, वाने मधु (चर्छ मा (भरत क्रिम भाका वस करत सिंद। আর কর্মাগুলি ? ওদেরও তো খাদ্য এক মধুই। সুলের ভার গল-পোকা যেবানে সেবানে বা ঘর্বন ভর্বন পাওয়াও বায় না। গল-পোকার মধ্যেও একমাত্র ওক্ পাৰের গলের গা হতে নিঃহত রসই ওবের খাদ্য। স্বভরাং ওকু বনের শিকারভূমিতে গলের প্রাচুর্ব্য যথনই ঘটে তথন ৰাসার সকল কর্মীরা মিলে যডটা পারে বাসায় সঞ্চরের জ্ঞ গল-পোকার গায়ের রস সংগ্রহ করে নিয়ে আসে। বাসার এনে বভ বভ ছালাতে সঞ্চর করে।

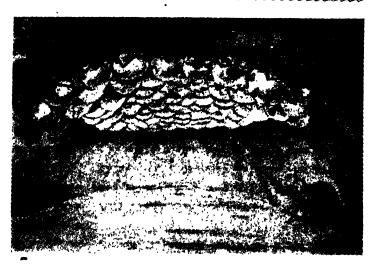
জালার কথা বলতেই আমাদের কুমোরের চাকে তৈরি পেটমোটা বাটির বড় বড় জালার কথা মনে পড়ে। কিছ মো-পিঁপড়ের মধুর জালা সেরপ নর, তাদের সে জালা মিজের হাতে তৈরিও করতে হর না। বাসার ভিতরে বে সব কুঠরিতে জালাওলি রক্তিত হর সেবানে ওওলির ফিকে ভাকিরে দেবলে অবাক হতে হয়। সারি সারি জালাওলি কুঠরির হাছ বেকে বুলহে, মনে হর হাড়ের গার বেন সারি লারি কতক্তলি বাতির ভূম বুলে আহে। ভূমের ভিতরের বাজির ভার জালার ভিতরে মধুর রঙও তেমনি উজ্ল, তেমনি বক্তক্তে। কিছু এ জালা নাট, ইট, কাঠ, পাবরে তৈরি নয়, এওলি সবই এক একট জীবছ পিঁপড়ে। বাসার আচাত পিশতের তার ওবেরও আহে হাত, পা, র্ব, যাবা, পেট। ত্যাত করেকট পা দিরে আঁক্তে বরে আহে তাদের কুঠরির হাত। বাসার অভাত কুঠরির হাত বেমন মহন এ কুঠরির হাত্তির তেমন মহন নর। হালের কেওরাল বসবসে। মহন হাতে পা দিরে আঁকতে বরে বুলে থাকা লক্ত হ'ত।

य निनए शिन बारम ब्रांस बारब अरमबर केमरब केम क मन् निक्छ एत । তাर्यस প্রত্যেক্টিরই উদর এক এক্ট মধুর चाना--- चाडि काना। মবুর ভারে উদরট বিভৃত হতে হোট (चटलटशरसटणत (चलात (चल्टानत चाकात वात्र कटतटच। शांका हेमहेरम चांक दबत बरमद शांत छेमदबत मध्द छेच्छम ৰাভাবেন চামভা কেটে বের হরে আগছে। প্রুৰাক্তি ছাদের গা ওরা পা किয়ে আঁকড়ে ধরে আছে--গায়ে গায়ে (पैशारवि रुद्ध। मारव मारव शा कांका मिरुक, मांवा नाकरक, कैं। व अपिक अपिटक नक्ष्य, किन्द्र भारतत व्यवस्थन किन्नु एउई ৰসছে না। একবার পা ভালগা হয়ে নীচে পড়ে গেলে ভার উপরে ওঠবার উপায় নেই। যে ছানে পড়ে সেই ছানেই চিং হরে ব্যাকুল ভাবে হাত, পা, মাধা নাছতে থাকে। খনেক সমর উপর খেকে পড়ে গিয়ে অভদের চলার পখও বন্ধ করে দেৱ। সে পথ দিয়ে চলতে গিয়ে পথে বাধা পেঁৱে বাসার **অভাভ পিপড়েরা পাশ কাটিরে চলে** যায়। কেউ এসে ওকে উপরে ছাদের গারে ভোলবার চেষ্টা বা কোন রক্ম সাহায্যও করে না। এক যাস, ছ-যাস এখন কি তিন যাস কালও ওরা সেই একই স্থানে একই ভাবে পড়ে থাকে। অভাত পিপড়েরা পাশ দিয়ে যাবার সময় বিব দিয়ে চুষে চুষে গা পরিস্কার করে দের, গারে ভঁড় বুলিয়ে বুলিয়ে আদরও জানার। হয় ত দীৰ্ঘকাল দিনৱাত্তি ক্ষমাগত বুলে থাকার পর এই মৃতন অবস্থায় ওরা একটু আরামও বোধ করে। আরামই বোধ করুক অৰবা আলা-বন্ত্ৰণাই হোক, শেষ পৰ্যন্ত মৃত্যুতেই স্ব্কিছুৱ खरमान रहा।

ক্ৰান ক্ৰান ছাল বেকে পড়ে গিয়ে জালাট বে কেটেও না
যার তাও নর। তবন মধ্ ছড়িয়ে পড়ে চারলিকে। এত দিনের
সয়ত্বে রক্ষিত মধ্র শেষ পরিণাম এরপ হবে, বেচারা জ্যাভ
জালাট হব তো ক্ৰানো তাবে নি। কিন্তু ওর আর কিছুই
ক্রবার নেই। জালা কাটবার শক হর তো বাগার অভাভ
পিশচের কানে সিরে পৌছর, হর তো বা গরে আরুট হবে
একট হট করে সেলিকে আসতে থাকে। নাক তুলে এলিকে
ভবিকে ভব্তে থাকে। অচিরেই ব্রুতে পারে বাসার বছ
দিনের সঞ্চিত গলাল বাটতে গলাগভি যাছে। সেই সন্দর্গ চেটে চুবে বাবার জন্ন তব্ব তাদের সে কি ব্যব্তা। একট্ট একট্ট করে নিঃপেরে সবটুকুই ওরা পান করে নের। কিন্তু
এ তবু পান ক্রবারই আনন্ধ—এর একট্ট্ বাল, একট্ট্ গরেই
ওরা সভট। নিজেবের বাভারণে এর অভি সাবাভই ওরা উদরে এবণ করে। বাচসংগ্রহের কর থদের উদরে হট করে বলে বাকে। একট বলেতে বর্গ-গোলার চায় বাসায় সকলের কর মধু সংগ্রহ করা হয়। লে মধু ওক গাছের গল-পোকার মধুই হোক, কিছা ওদেরই পূর্ণে সংগৃহীত জালার পেট বেকে ববে-পভা মধুই হোক। বর্গ-গোলাট মধুতে ভরে গেলেই পেটের জালাগুলি যে ঘরে আছে সে ঘরে ওরা সোলা চলে আসে। তার পর একে একে ছাদে উঠে উদরের বর্গ-গোলায় সংগৃহীত সবটুকু মধুই জীবস্ত জালার উদরে চলে দেয়।

পূর্বেই বলেছি দিনের বেলার মৌপিপড়ে বাসার নানা কাকে ব্যাপ্ত থাকে। সংগ্রাহলেই ওরা একে একে বের হয় মধু আহরণের ভ্রাঃ। মধু

সংগ্রহের বন্ধ ওদের বেশী দূরে বেভে হয় না---বাসণ্ট নিক্টেই ওদের মধু-ক্ষেত্র ওকের বন। ছোট ছোট বোপগুলি কচি পাতার ভরে গেছে। তারই পাতার পাতার ভালে ভালে গল-পোকার বাসা। সন্ধ্যা হতে না হতেই ওরা বাসা বেকে বের হতে বাকে। দেবতে দেবতে বাসার মুব ও তার চারধার পিঁপভের পালে ছেয়ে যায়। একটু পরেই म्बर्स भाषक्ष यात्र मात्र (वैद्य मक्म हत्माइ अक् व्याप দিকে। এ পথ ওদের অপরিচিত নর, আগে মধু নিবে अ भरप वह वांत्र अता चानारमाना करतरह । अक वहं रेमड-বাহিনীর মত নিৰ্দিষ্ট গতিতে পথ অতিক্রম করে একে একে नकरल अरम अरकत वरन क्षार्टक करता। मधु कार्त्तरभन्न कन्न তখন তাদের সে কি আনন্দ, সে কি উল্লাস ৷ ওদের সন্ধানী ষ্ট্র ওক্ বোপের প্রতি ভালে, প্রতি পাতার খুঁছে বেডার গল্-পোকার বাসা। উদরের ধর্ম-গোলাট ক্রমশঃ মধুতে ভরে উঠতে থাকে। রাভ ১২টা ১টা অবৰি এই ভাবে মধ্র সভান তার পরেই খুরু হর বাসায় ক্রিরবার পাল।। কিরবার পথে সৈচবাহিনীর নিয়বাচবটিতা রক্ষিত হতে পারে না। মধ্র ভারে অনেকের গতি বীরমন্থর, সংযত হরে ভাসে। वारमञ्ज छेमञ्ज कामका, याजा मशुरक ११६ कर्नि कन्नरक नमर्ग क्य ভারা ভাগে ভাগে চুটে চলে ভাগে। বাসার দিকে যভই ছুটে চলে আত্মক না, বাসায় ঢোকবার পূর্ব্বে কিন্তু একবার পর্জের বুবের ভাছে তাকের সকলকেই দীভাতেই হয়। সেখানে যারপাল ইাভিয়ে আছে। ভিতরে ঢোকবার ভঙ ৰাৱপানকে প্ৰভ্যেকেরই হাৰণত বেখাতে হবে। ৰাৱপান ৰূবের হ'বারের ছট ভঁড় প্রভ্যেকের গারে বুলিরে পরীকা কৰে গাৰের গৰ শেৰে। গাৰের গৰ শিৰে ওরা বুকতে



পিশড়ের বাসার ছানে লম্বিত জান্তে জালার দারি

পারে কে শত্রু, কে মিত্র। প্রতি বাসার পিপ**ভের গারে থাকে** একট বিশেষ গন্ধ। গায়ের সেই গন্ধটিই ওদের ছাভূপত্র।

এর মব্যে ভিতরে সাড়া পড়ে যায় মব্-আহরণকারীর।
সব কিরে এসেছে। পিপড়ের লল ঠেলাঠেলি করে ভিড় করে
এসে দাড়ার গবের ম্বের কাছেটি চ। সকলেই ভালের
ভারমুক্ত করতে ব্যন্ত। মুবের কাছে মুব এনে হাঁ করে
দাড়াতেই আহরণকারীর। এক এক কোঁটা মবু ভালের মুবের
ভিভরে টেলে দেয়। সেই মবু সবই সকিত হয় ভাাভ
ভালার মব্যে হ:সম্বের কছু। যারা নিতাভ সুবার্ত ভারা সকে
সক্ষে হু-এক কোঁটা পান্ত করে।

ওদের মবো দেখতে পাওয়া যায় কতকগুলোর ক্যা যেন আর কিছুতেই মিটছে না।কোঁটার পর কোঁটা মধু সলাবঃকরণ করেই যাছে। উদরতি মধুর ভারে বেশ কুলে উঠেছে, তবু যেন ওদের তপ্তি নেই। মধুর আশায় কেবলই ওরা হাঁ। করেই আছে—আহরণকারীরাও কোঁটার পর কেঁটা ওদের মুখে তেলেই দিছে। ওরা জানে এ মধু ভাষতে ওদেরই কাকে লাগবে, ভবিয়তে এরাই হবে মধুর এক একট জ্যাছ জালা—কারও আদেশে নয়, কারও পাড়নেও ময়, নিকেদেরই ইছোর। মধুর জালা হরে ছালে লাগ্রের নেবার পুকে নিকেদের উদরগুলিকে ওরা একবার উভ্যান্তেশের ভারত করে নেয়, তারপর বেমন মধু কর হর তেমনি সেই কয় পুরণ হতে থাকে বাসার ক্র্মা-শিপড়েদের ছারা।

পরবর্তী সার। শীবনই ছাবে সহমান হরে ওরা বংসরের পর বংসর একই অফকার কুঠরিতে একই অবস্থার বুলে পাকে। বধুর ভারে উদরের বিভৃতি প্রায় আট দশ ৩৭ বতে বায়। এই বৃহৎ ভারট নিবে ছাদ খেকে বুলে পাক্ষার এক্ষার অবলয়ন পারের অভি হয় হয় করেকট বাবা বা নব। কবন কবন কারোর উদরট সৃত হলে সে নীচে নামবার হুবোর পার। কিন্তু এরপ সৌভাগ্য বুব অরট বটে।

বংসরের পর বংসর কেটে যার, ঝ এর পর ঝ এ আসে, বাসার কর্মীদের রূবে মধুর প্রাচ্বী থেকে ওরা বুবতে পারে বাইরে এবার ওকের ভালে পাতার নৃতন নৃতন সল-পোকার বাসা করেছে, এবার উদরে মধু সক্ষর হবে। আবার শীত আসে; গলের বাসা ভকিরে বার মধুর প্রাচ্বীও করে আসে। এবার উদরের মধু কর হবে, এবার ওদের মধুবিতরণের পালা। প্রতি বাসায় আট-দলট করে কুঠরি থাকে মধুব আাভ কালাগুলির অবস্থানের কর আর প্রতি কুঠরিতে থাকে ৬০টি বা তভোবিক কালা।

আকৃষ্মিক ঘটনার না হলেও করা-বাাধির আক্রমণে এদেরও একদিন মুড়া ঘটে। প্রাণ কাথিতেও ওরা ছাদেই বুলে থাকে। পিশভেরা ঘরন মধুনিতে এসে দেখতে পায় কালাট প্রাণহীন, তর্বন তাকে ছাদ খেকে নামানো হয়। প্রথমে উল্তেব্য অংশটি কেটে নীচে নামানো হয়—বহুণ ভার, কার্ব দিতে হয় অনেককে। একবার নীচে নামানো হলে গভিয়ে গমাবিকেও নিয়ে যাওখা হয়। প্রতি বাসাতেই একট করে স্মাধিকেও বাকে। কালাটি তেথনি মধুতে ভবা, মধুর হাল এবং গছও পুর্বং। ক্ত শিশু, কত ক্লী, কত গানীর

বাভ তার মধ্যে বোবাই হয়ে আছে। কিছু কেউ তাতে হাত দেবে না—মধ্র লোভে স্বতদেহকে বঙিত করে ক্থনও তাকে ওরা অপবিত্র করে না। এ যেন সমাবিক্ষেত্রে উৎসসীকৃত দেবভোগ। এর উপর এখন ওদের আর কোন দাবি নেই। সমাবিক্ষেত্রে পাশাপাশি এরপ অনেক কালা দেবতে পাওরা যার। সেগুলি যেমন উজ্জল তেমনি সোনালী মধুতে ভরা।

গল-পোকার গায়ের রসের ছায় একাইড বা জাব-পোকার গায়ের রসও পিশভের একট অতি প্রিয় খাছ। একাংডকে পিশভেরে হ্রবতী গাভীও বলা হয়। গাইয়ের বাটের হ্রের ছায় পিশভেরা একাইডের পিঠ থেকে রস লোকন ক'রে পান করে। লোকন করবার য়য় ওদের য়্রের ভঁড হটে। সেই ভ ছ দিয়ে একাইডের পিঠে মুডমুড দিলেই রস নির্গত হয়। মৌ-পিশভে সেই রসধারা বা হয় পেট ভরে পান ক'রে বাসায় নিয়ে এসে ওদের জাভ জালায় জয়ায়। বনে ব্নো পোলাপ ফুটলে ভার মবো এক জাভীয় জালায় জয়ায়। বনে ব্নো পোলাপ ফুটলে ভার মবো এক জাভীয় জালায় লাকে না গিয়ে একাইডের রস লোকন ক'রে য়য় সংগ্রহ করতে গোলাপের বনে আসে। একাইডের গাবে এরা বদ পায় প্রচ্ব —এক একট একাইডের গাবেত ওরা দিনে প্রায় তিল কোটা ক'রে রস লোহন করতে পারে। এই একাইড বা এদের হয়বতী গাভীয়্বলকে এরা সংস্থে পালন করে।

## কেন্দ্রায় রাজধনীতি ও পশ্চিম বঙ্গের দাবি

শীমনকুমার সেন

কেন্দ্রের সহিত প্রদেশসমূহের আধিক সহছ নিরূপণ করা মুক্তরাষ্ট্রের শাগনতত্ত্বের অধ্তর প্রধান সমসা। ১৯০৫ সালের শাসনতত্ত্বে এই সম্বন্ধের কোন মুন্সাই সংকা না থাকার কেন্দ্রের সহিত প্রদেশগুলির আর্থিক সন্দর্ক লাইরা বহু বার বহু ভাবে ভিক্ততা ও অসভোষের স্কৃষ্টি ইইয়াছে। বছত: কেন্দ্রীয় রাজধনীতির এই ক্রেটিও পলত প্রকারাছরে প্রদেশগুলিকে আলারীকৃত রাজধ্বের হায়া অংশ হুইতে যক্তিত করিবা আসিতেহে এবং কেন্দ্রীর সরকারের কুপানৃষ্টি ও স্থবিবেচনার উপর প্রদেশগুলির অর্থ নৈভিক বিভাসকে নির্ভরণীক করিবা আবিয়াছে। বলা বাহুলা, এইরূপ অবৌক্তিক ও অসকত ঘ্রুল-বাবুছা ভাতীর বার্থের প্রাক্তক্তা। ওবু প্রদেশগুলরই মধ্যে, পরোক্তে ক্রেটির পরকারের শাক্তর এই ক্রেটিপুর নাভির ক্রেটির প্রান্ত প্রান্ত বিভাগর প্রকার ক্রিটির আরক্তরের জাবেলার বিশেশবারীর ভারতের ক্রেটার প্রবাহনত শাসন ও শোহবের

উদ্দেশ্য সিভির কলট প্রদেশগুলিকে ঘর্ষাসন্তব কেল্পের মুখাপেক্ষী করিয়া রাবিরাছিলেন। তাল্যর কলে যে প্রদেশে
কেল্পের বতটুক্ কুপাবর্বন হটরাছে সেই প্রদেশ তত্তুক্ আর্থিক
সঙ্গতিলাভ করিয়াছে, পর্যাপ্ত পাওনার অধিকারী হওৱা সভ্পেও
কার্যাক্ষেরে তালা না পাওরার কোন প্রদেশট বাবীনভাবে
নিজ নিক উ১রনমূলক আর্থিক পরিকল্পনা লটরা অপ্রসর হটতে
সক্ষম হর নাই। ভারতের সূত্রন শাসনতত্ত্বে এই ফ্রাটির
সংশোধন ও রাজ্য সম্পর্কে প্রদেশগুলির পাওনার স্থুলাই
নির্দেশ একটি অত্যাবস্তক বিষয়। গত ১৭ই সেপ্টেশর
পাক্ষিয়ক পরিষ্যাক অর্থানিত বিষয়। গত ১৭ই সেপ্টেশর
পাক্ষিয়ক পরিষ্যাক অর্থানিত বিষয়। গত ১৭ই সেপ্টেশর
পাক্ষিয়ক পরিষ্যাক অর্থানিত বিষয়। গত ১৭ই সেপ্টেশর
প্রথা এই বিষয়কীয় শুক্রের প্রতি পরিষ্যাক বৃদ্ধী আর্ক্রিন করেন
এবং ও:হার আন্যত একট প্রভাব সন্ধস্মাতক্রের পার্থক
প্রবিশ্ব করেন। প্রভাবতির মুখ্য এই ই ভারতের প্রস্থা
শাসনভন্ন প্রথমবাদ্যে সংশোধিত মুখ্যা আর্ভক যাংগ্রে

প্রবেশগুলিকে রাজ্যের ব্যাপারে ভারতীর পার্লাবেকের ভোটাভূটির অনিক্রতার উপর নির্ভর করিবা না বাকিতে হর, এবং প্রতি বংগর কেন্দ্রের সম্বৃতি ও অহুযোগন সাপেক না বাবিরা প্রবেশগুলির প্রাণ্য আরক্র সম্পর্তেও শাসনতত্ত্ব । বুনির্বিষ্ট বিধান বাকে।" প্রভাবট সর্ববেশ গুরুহপূর্ণ, বিশেষভাবে পক্ষিমবাদের বাবি ইয়ার সহিত অভিত।

১৯৩৫ সালের শাসনতন্ত্র ভারতের ভর যুক্তরাদ্রীয় আদর্শ নির্দ্ধারিত ছওয়ার পর প্রদেশদমূহের পক ছটতে রাজ্ব बाबहात नुमक्केत्वत कन्न कावी कानात्म क्या। ১৯৩१ সালে श्रीरमिक श्रीवड्मात्रत्वद्व छिखिए हे श्रीरमश्रीम् एक यश्रीमस् পঠিত হুটলে এই দাবি প্রবলতর হয়। হুমিরাক্ষ বাতাত মন্ত্রীসভা চালু হুটবার পর প্রাঠ সকল প্রদেশেট বিরুয়কর, শিক'কর, কৃষি-মায়কর প্রঞ্জি নুতন নুতন কর প্রবর্তিত হুট্ডে. बाटकः भकाष्ट्रद खायकद् खायमानी-ब्रश्नानी एकः यानवाहन, ভাকবিভাগ প্রভৃতি সম্প্রধারণশীন আয়ের উংসণ্ডলি কেন্দীয় সরকারের অধিকার গুরু বলিয়া খির ক'রয়াও কেবলমাত্র (मन्दका ७ वेटमनिक वानिकात दक्तर (नक्त वाजी र नका. বানা প্রভৃতি যাবতায় কতিগঠনমূলক কর্মের দায়িত্ব প্রনেশ-र्शं नद ऋ द्व भाषात्मा इस । अहे मा सूह भानत्मद क्रम (कस **इन्टर बार्थिक সাहाद्याद वावहा करा हथ वट**े. किंह बाहे जि প্রদেশরূপে পরিগণিভ হট্যা কেন্দ্রীয় সরকারের সাহায়ের প্রত্যানী হইয়া থাকিতে কোন কোন প্রদেশ অসমত হয়। चिक्च वारला ७ (वांचारे श्राहम करेक्न चांगित हेवानन करत (य. चात्रकत श्रवामणः धरे क्रेडि श्राप्तम क्रेटि जामात्र করা হটলেও কেন্দ্রীর সরকার ভাষা প্রাপা হটতে ভারাদিগকে বঞ্চিত করিতেছেন। অভার প্রদেশগুলিও এক বা একাধিক যুক্তি দেবাইয়া ভাষাদের আপতি জ্ঞাপন করে। এই সমুভ দাবের ভারতায় বাবা ছইয়া কেন্দ্রীয় সরকার এই সম্পর্কে **अक्रमहाद्या मिश्रांक करवन अवर मांब क्रांके।** निर्मेशाद्वेत সভাপতিৰে একট ভদৰ কমিলন গঠিত হয়৷ এই ক্ৰি-শনের স্থপারিশঞ্চি উত্তরকালে 'নিষেয়ার সিদ্ধার্থ'রণে প্রদিদ্ধি লাভ করে। কমিশন 'তুগা ও পাট রপ্তানী-কর' अवर 'बाबकव' मन्नदर्क शविवर्श्वत्वव कूर्णाविम कृद्विम । अहेक्र विश्वाव कर्ता एवं (व, छक इहें शिलात तथानीकांदी वस्त-व व धाराम चविष्ठ महे महे धारम देशाएक वशानी-**७६-जब बांबरबब अकड़े बर्म शहरव। अहे वावबाद करत** ৰাংলা ও বোখাই কিঞিং প্ৰবিধার অধিকারী হয়। আয়কর সহতে কমিশন সিভাত করেন বে, আয়কর যে প্রদেশ হটতে আদারীকৃত হইবে, আদায়ের পরিমাণ ও লোকসংবাার খাছণা ভক্ত বিচার করিবা সেই প্রদেশকে খার্যার-লব वांकरवत अकड़े करन क्षतान कता व्हेरव। अहे निवास

অনুবারী আরক্রের একট নির্দিট অংশ কেন্দ্রের ভত সংরক্তিত রাবিরা অবলিট অংশ প্রদেশগুলির মধ্যে নিরোক্ত হারে বক্তম করা হয়:—

<b>श्र</b> प	শতকরা হার	
বোম্বাই	10	
বাংলা	২০	
মাঞাৰ	26	
<b>मू</b> ७ श्रदम	76	
বিহার•	70	
পঞ্চাৰ	<b>b</b>	
भवा <i>शरम</i> म	ŧ	
অংগ্ৰ	•	
<b>পি</b> ৰু	2	
<b>উ</b> ° ৬ স্বা	2	
উত্তর-প'ক্ষম সীমাপ্ত প্রদেশ	>	

উল্লিখত 'হুদাৰ দৃষ্টে বুৰা ঘাইৰে, দাবি নিৰ্দাৱশের নীভিত্র বিচাবে প্রশেষ লর জন যে হার নির্দিই ছইমাছে তাহা ষু'ঞাদহ কম নাই। ভাষা ছাগ্রে সকল ঘট্ভ প্রদেশ भूक्ष इहेट • हे कि श्रीय बार्व श्रेक नाशात्याय बनिकाती विस्ता ধির হৃগ্য'ছে, পুনব'য় ভাহাদেব বাজপ পুনব্টিনের অপ্পর্কু क्या अभ्य व्यामा । अपु हेश है नह्यू जनाने सन वाश्मात कनभाषा। (वाकार्रात्व साम्र जिन सन बाका मरत्व दाक्टबर्ड ব্যাপারে উভয় প্রদেশকে সমুপ্রেণীরুক করা হটয়াছে। রাজগ-নীতির গলদ প্রকৃতপক্ষে পুরুষংট রহিয়া গেল। স্বংধীন ভারতের বগড়া শাসনভম্ন রচনাকাবী কমিট এই বিষয়ে অন্বভিত ভিলেন না সভা কিছু জাহারা দেশের বস্ত্যান অ'ন' শতত অবস্থার অজুহাতে পৃথিবাবধাই আবও পাঁচ বংসর-কাল বলবং রাখার সিদ্ধান্ত গ্রহণ করেন। ক্ষিটর এই সিদ্ধান্তের কল এই দাড়াইবে যে, কেন্দের রাজ্য আদায়েব প্রশস্ত भया विक्रमान पाकित्व ९ अत्मन्धि वित्व भर्गाश्वत **स्ट** प्र स्थाद প্রতিপদে এটল সমস্তার সন্থান হটয়া আর্থিক সাহাযের জ্বত কেন্দের ছারম্ব ছটতে হটবে। নিজেদের প্রাণ্য সম্বন্ধে নিশ্চিত ख नि: अश्मेश क्षेट्र ना भारतहम खालम्खानत भाष्म काम युर्९ উद्दरम्बक भारतकश्वनात यूकि मध्या मध्य नर्स, मण्डल नरहा आयत्। विरम्धकरण পन्धियराज्यं कथाह বলিছেছি। ভারত-বিভাগ ও ভাছার অনিবার্থা পরিণতিবরণ বস-বিভাগের ফলে পশ্চিমবঙ্গ একট অভি স্কুদ্রারতন প্রদেশে পরিণত হটয়াছে --বাভ বন্ত্র শিক্ষা দ্বাদ্যা ও সর্ব্বোপরি আশ্রহ-প্ৰাৰ্থী সমস্তার এই প্ৰদেশ বংপরোনাতি বিব্ৰত। বছ টালবাহানার পর কেন্দ্রীর সরকার পূর্ববন্ধ হটভে আগত উদান্তদের পুনক্তসভিত্র দান্ত্রিত্ব স্বীকার ক'বরা সইবাছেন সভা, ক্তিত্ব সাকাং সম্পর্কে ভাষাদের ভাষিত্ব পশ্চিমবভের উপরই वक्षादेशास्त्र । এই अवज्ञाद शन्त्रियवक भवन्यकेरक दक्षि

কেবলই কেন্দ্রের কুণাপ্রার্থী হইরা থাকিতে হয় এবং কেন্দ্রের আবারীকৃত রাজ্যে তাঁহারের পাওনা সম্পর্কে কোন নিক্ষরতা না থাকে তাহা হটলে প্রকারান্তরে পশ্চিমবদের জন-সাধারণকেই তাহার ফল ভোগ করিতে হটবে। তবু ইহাই নহে, কেন্দ্রে যে প্রবেশের যতটুকু প্রভাব বিভারের ক্ষমতা আহে তবস্থারীই সেই প্রবেশের প্রতি আবুক্ল্য প্রবর্শন করা হইবে না এমন ক্ষাও জাের করিয়া বলা যায় না। ইতিমবােই নানা কারণে প্রদেশগুলির পরস্পরের মধাে ইভার আভাব ঘটিয়াহে, তত্বরি কেন্দ্রের রাজ্যবন্টনে উক্তরণ অবাহ্যনীর বৈষ্যা আরও তিক্ততার স্কটি করিবে সন্দেহ নাই। অবচ শাসনতল্পে রাজ্যবন্টন সম্পর্কে নির্দিষ্ট বিধান থাকিলে, তদস্থারী প্রত্যেক প্রবেশ পৃথক পৃথক তাবে আবায়ীকৃত রাজ্বের অংশ লাভ করিবে, কাহারও কোন অভিযোগের কারণ থাকিবে না।

এই সকল সমস্থা সম্পর্কে পরামর্শগানের ছব ভারতীয় গণ-পরিষদের সভাপতি ভক্টর রাজেক্রপ্রসাদ একট অর্থ নৈতিক বিশেষক্র সমিতি নিরোগ করিয়াছিলেন। অভিক্র ও দ্বদৃষ্টিসম্পন্ন ব্যক্তিদের লইয়া গঠিত এই সমিতি রাজ্যবক্টন বিষয়ে
লাসনতন্ত্রের ক্রম্পষ্ট নির্দেশ থাকাই সহত এরপ ক্রপারিশ করিয়াছেন বলিয়া আমরা অবগত হইয়াছি। বিশ্বরের বিষর, সমিতির ক্রপারিশসমূহ ঘোটামূট ভাবে গ্রহণ করিয়াও ক্রেমীর সরকার রাজ্যের নির্দিষ্ট হার এমুনভাবে পরিবর্তন করিয়াছেন বছারা পশ্চিমবছকে মারাগ্রক ক্ষতির সন্মুখীন করা হইয়াছে।
মৃতন ব্যবহা এইরূপ :—

<b>લ</b> દ૧ <b>મ</b>	শতকরা হার	
<u>বোখাই</u>	٤٥	
পশ্চিমবঙ্গ	25	
যা <b>ৱাৰ</b>	7.	
যুক্ত <b>গ্র</b> দেশ	7>	
বিভার	30	

<b>मश</b> ाश <b>ाम</b>	•
পূৰ্ব্য-পঞ্চাৰ	* •
আসাম	•
<b>ট</b> ভিকা	•

অৰ্থাৎ বাংলার প্রাপাকে প্রায় শতকরা ৪৫ ভাগ ব্লাস করিষা তত্বারা অভাভ কতিপয় প্রদেশের উদরপৃত্তির ব্যবস্থা করা হটয়াছে। পশ্চিমবল প্রায়েল আয়তনে অবিভক্ত বলের এক-ড্তীয়াংশে পরিণত হটয়াছে, সম্ভবতঃ এট একমাত্র সুল-দৃষ্টিকোণ হইতেই পরিবর্ত্তনের সিদ্ধান্ত করা হয়। অবচ বর্ত্ত-मार्ग शिक्तमराक्षेत्र क्ष्मभारती। श्रृद्धारभक्षा करम्रक श्रम व्यविक এবং বাংলা इटेंड या ताबन बालांच करा इटेंड, तारे বাৎসরিক আয়করের প্রায় সমস্তটাই বর্তমানে পশ্চিমবঙ্গ হুইতে আদায় করা হইতেছে। কাঁচা পাটের প্রধান অঞ্চলগুলি পশ্চিম্-বদ-বহিভূতি এলাকায় পভিলেও চটকলগুলি সম্পূৰ্বপে এই প্রদেশে অব্যাত । ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের পাট-কমির ভাবি-काश्मेह शन्त्रियराकृत अमाकात स्वीम । (य ८८ मक है।का शृक्-বদ হইতে আদায় হইত তাহা পশ্চিমবদের ৬ কোট টাকার ভুলনার এতই নগণ্য যে ভজ্জ পশ্চিষ্বজ্গের প্রাপ্য রাজ্য শতকরা ২০ ভাগ হইতে ১২ ভাগে ব্রাস করিবার পশ্চাতে কোন যুক্তি নাই। পশ্চিমবঙ্গের লোকসংখ্যা বর্ত্তমানে বোছাই অপেকা অনেক বেশী। অধিকত্ব ভারতীয় ইউনিয়নের সীমাত্তে অবস্থিত হওয়ায় এই প্রদেশের কতকগুলি নিৰুধ সমস্তাও র্লিয়াছে যাহার সমাধানের উপর ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের সামগ্রিক কল্যাণ নির্ভর করে। এ অবস্থায় পশ্চিমবঙ্গের প্রাপ্য হ্রাস করা অসমত ও অনমীচীন এবং রহতর রাষ্ট্রীর স্বার্থের প্রতিকুল। অবস্থার গুরুত্ব উপলব্ধি করিয়া কেঞ্জীয় সরকার পশ্চিমবলের প্রাপ্য রাজ্যের হার পূর্বাপেকাও বর্দ্ধিত ক্রিয়া, পরিষদের গৃহীত প্রভাবে প্র'ডফলিত পশ্চিম-বলবাসীর খাষ্য দাবি সামগ্রিকভাবে স্বাকার করিয়া লইবেন ইহাই আমন্ত্রা আশা করি।

#### অচেনা

#### श्रिभाञ्जीन দাশ

হে অচেনা, তোমায় আমি চিন্বো কেমন করে,
আস্বে কিগো, অরুণ বরণ উক্ল রখের 'পরে,
আস্বে কিগো, মদার বুকে সোনার তরী বেরে,
আস্বে কিগো রূপের আভার সারা আকাশ হেরে,
আস্বে কিগো লুডা-পাগল কাল-বোশেণীর সনে,
আস্বে কিগো শাওন-বেবে অবোর বরিষণে,
আস্বে কিগো শিউলি-বরা শিশির-ভেলা প্রাতে,
আস্বে কিগো হবিন বারে কুলবালাদের সাবে,

আস্বে কিগো ভোরের আলোর পাবীর গাবে গাবে,
আস্বে কিগো সাঁবের বেলা নদীর কলভাবে,
আস্বে কিগো গুরের মাবে নীরব নির্ম রাতে,
নাম-না-কানা বপমপুরীর রাজকভার সাবে।
বে অচেনা, ভোষার আবি চিন্বো কেনন করে,
কানি না হার, আস্বে কবন, কোন ব্রতি বরে।

## সংস্থার

### ঞ্জীহেমেন্দ্র মল্লিক

वाकि इरेटी वानिश शिवाद ।

মিলিটারী ক্যান্টিনের পাশের বরে চূপচাপ বসিরা আছি বাত্তি সাড়ে দশটা হইতে। বাহিরে চতুর্দিক প্রগাদ অবকারে সমাছর থাকিলেও চট্টগ্রাবের এই পার্কত্য সেনানিবাস্টর প্রতি অংশেই স্থানিরন্তিত কর্ম্মব্যতার চাপা আভাস কর্পেন কর্শেই পরিকৃট হইতেছিল।

বিশ্রামাগারের বড় টেবিলখানার একদিকে আমি বসির।
নাছি। সমূধে সিগারেটের টন এবং থালি কফির পেরালা।
মাধার উপরে কালো কাপড়ে ঢাকা বিছাতের আলো।
টেবিলের আলেপালে ছই-এক হাত পরিমিত ছানটুকু ভূডিয়া
মাত্র সে আলোকের রাজন্ব। বিমান আঞ্চমণ ও আয়রকার
সামরিক বিবান অভ্যায়ী কক্ষের বাহিরে আলো প্রতিকলিত
হওয়া তো দ্রের কথা, বাহির হইতে আলালা বা ছারপথে সে
নালো দৃষ্টিগোচর হওয়াও গুরুতর অপরাধ।

আৰ-আলো ও আৰ-অৰকার এই বরধানিতে একই 
চাবে বসিয়া আছি প্রায় তিন-চার ঘণ্টা। আরও কডকণ
এই ভাবে থাকিতে হইবে কানি না তবে আরম্ভ কার্য্য অর্ধপথে
গ্রাগ করা এবং মানসিক দুচ্তাকে বিসর্জন দিয়া পরাক্ষ
শীকার করা আমার প্রস্কৃতিবিরুদ্ধ।

ষেক্ব ছঞ্জির অমাত্মিক গান্তীর্যোর প্রাচীর আমি ভালিবই।

য়ক্ব ছঞ্জি লাভিতে নেপালী—বর্ত্মবিধাসে প্রষ্টান। ভাহার

য়রস আলাক ত্রিশ-বক্রিশ। বলিঠ ও অসমসাহসী যেক্ব ছিলি

নামানের সেনানিবাসের একট রকু। বিমান-মারা কামানের

গালা ছুভিতেই যে ভাহার একমাত্র দক্ষভা ভাহা মর,

ররোক্ষন অন্থারী অরণ্য-সংঘর্ব, সঙ্গীনের সংঘাত ইভ্যাদিতে

কৃতিত্বদর্শন এবং বোমার আগুন নিভানোভেও ভাহার

য়ত ক্রিপ্রতি সক্রমী সৈনিক আমাদের ছাউনীতে

বিরল। অভ্যাব, যেক্ব ছ্রি সকলেরই প্রছা ও ভালবাসার

গাল। ভাহার বর্ত্মান চ্র্টিনা ও বিপর্যায়ে সকলেই ব্যথিত,

শোক্রাভ ও উৎক্রিত।

বেকৰ ছবির জন্তই আমাকে এইভাবে বসিরা বসিরা রামি

বাপন করিতে হইভেছে। ভাহাকে এই সমরে বিশেষরূপে

চোবে চোবে রাখিতে না পারিলে ভাহার সমূহ ভঙি হইবার

কাবনা আছে। উদ্ধাসপ্রবন পার্মান্ত্য আদিন জাতির মানুষ

স। শিক্ষা, সভ্যতা ও মিশনরী প্রভাবের হারা ববেই ভন্ত,

রাজিত ও নিরম্ভিতভাব হইলেও এতবড় শোকের আহাতকে

রুম্প্রিপে সানলাইরা উঠা ভাহার পক্ষে কিছুভেই সভব নর।

রভিক্তেই আঁকড়াইরা থাকা ভাহার এই অহাভাবিক

গাঙীৰ্ব্যের বাঁধ যে-কোন মুহুর্তেই ভাদিয়া জ্বসিয়া যাইছে পারে এবং সেই উন্নাদ অসংযমের সভিক্ষণে তাহার হারা সবকিছুই সম্ভব হইরা উষ্টিতে পারে। আগ্রহত্যা করা অথবা নিজের বন্ধুফ লইরা অফিসার ও সাধারণ কর্ম্মচারী নিব্বিদেবে যাহাক্ষেত্রভাবেক হত্যা করা—কিছুই তাহার পক্ষে অসম্ভব হইবে না।

হাত্বভিতে সময় দেবিলাম— চুইটা বারো। আর একটি সিগারেটে অগ্নিসংযোগ করিতেছি এমন সময়ে কক্ষের মধাবর্জী ছারপবে একটা অলাঙ্ক পদধ্যনি শোনা গেল। একটু পরেই নাস ইবেল সম্বর্গনে কক্ষমধ্যে আসিয়া কহিল, আর কক্ষিলাগবে, রেভারেও ?

क्लिनाम ना, पठाचारनक् भरत इरलहे हन्दर ।

নাস ইংশেল সাবধানে যেকবের দিকে ইলিভ করিয়া নিম্ন-খবে প্রার করিল, কথা বলেছে একটাও ?

না, ভবে সাজা দিয়ে মাধা নেভেছে কয়েকবার। একটা দিগারেট দিয়ে দেখুন না ?

সে সমগুই হয়ে গেছে নার্দ। চিশ্বা ক'রো না, সমস্ত রাভই আমি কেনে বলে বাক্রো ওর বছ ।

ş

ছুই সপ্তাহের ছুটতে কলিকাতার গিয়াছিলাম। যে-দিন কিরিয়া আসিলাম সেই দিনই ঘটল যেকব ছঞ্জির এই ছুর্ঘটনা। (वठावा कुछ अक्षे अधवर्षी वाहिनी नहेशा ठड़िन भारेन एटड এক পাহাডের ৰুদলে গিয়াছিল শত্রুপক্ষের গুপ্ত ঘাঁট ৰাক্তমণ ও ধ্বংস করিতে। একটার ভারগায় ছই-ভিনট ছোট ও বড় বাঁট বিধ্বত করিয়া এবং কয়েকট বনী লইয়া নিৰের হাউনীতে প্রত্যাবর্তন করিয়া সে সংবাদ পার যে, ষাট মাটল উন্তরে পাহাড়ের বারে অবস্থিত নেপালী গ্রামবানি শক্তর বিমান আক্রমণে ধ্বংস ও নিশ্চিক হটয়া গিয়াছে। যেকৰ ছত্তি विश्वाम कविवाद का किह्नाम नमस् नहे ना कविश्वार हुईन (नर প্রামের উদ্দেশে। বেচারা তথনও আশা করিতেছিল যে, নব-পরিবীতা তরুৰী বধু, বুছা মাভা ও নাবালক আভা--ভার শীবনের এই ভিনট শ্রেষ্ঠ অবলবন, পরৰ আন্মীরকে সে হয়ভো তৰনও ছটবা বিৱা প্ৰাৰে বাঁচাইতে সক্ষম হইবে। কিছ প্রাণে বাঁচানো দূরে থাক, ভাষাদের ঘরথানির চিক্ষারও সে जावादिन वृक्षित वाहित कृतिए**छ शादत नाहै। निक**ष्ठेवर्छी ্ৰদলে, পাহাড় ও প্ৰান্তরে— বুঁজিতে কোণাও সে বাকী রাবে नारे. किन्द्र जन्मर्ग रूजान एरेबारे जारात्क किविए एरेन।

**চটश्रीय वक्षाद्व चवळद० क्रदाद्व जटक जटकरे अ जरवाय** 

পাইবাহিলাম। হাউনীতে আসিরা আরও শুনিলার বে, ডাভার, নার্স ও অভাত অনেকেই নানাভাবে প্রবোধ দিরা প্রাণপণে চেটা করিরাতে বেকব ছবির এই অসাধারণ ও অবাভাবিক গাভীব্যকে ভাকিরা দিরা ভাহাকে বাভাবিক ও সহক অবহার কিরাইরা আনিতে, কিন্তু নিদারণ লোকাহত যেকব ছবি অকিসারের সিগারেট, ক্যাপ্টেনের হইকী অধবা তরুণী নার্সকর সহাত্ত নিমন্ত্রণ—কিছুতেই যেন আফুট হইবার মত কিছু বুঁজিরা পার নাই।

ছাউনীর সর্বাঞ্জ সংবাদটা ছড়াইরা পর্টিবার সঙ্গে সঙ্গেই যেন একটা শোকের ছারা নামিরা আসিন। সাহস ও শক্তি এই চ্টির ক্ত সেনানিবাসে যেকব ছত্রির বরু ও গুণমুর্দ্ধের অভাব ছিল না। বিমান আক্রমণের চরম সঙ্গুট-মুসুর্র্তে—যথন উচ্চ ও নিয়পদত্ব সমন্ত অকিসার ও কর্মচারীই অলবিন্তর জীত ও উত্তেজিত হইরা অপেক্ষা করিতেন, সে সমরে বিনান-যারা কামানের পিচনে দাড়াইরা সমন্ত ছাউনীকে একাবিক বার রক্ষা করিয়াছে যেকব ছত্রি একাই। একই রাজে ছই বার আক্রমণের সময়ে শক্রপক্ষের হইখানি বিমান ভূ-পাতিত করার পর হইতেই যেকব ছত্রিকে আপনার করিয়া লইরাছে ছাউনীর সকলেই, হাসপাতালের সাত-আট ক্রমার তাহার একাছ অনুগত হইরা উঠিয়াছিল। কে কানে, ভাহাদের বিচারে যেকব ছত্রিই সম্ভবত একমার বীর-পুরুষ।…

সকল চেপ্তাই যথন ব্যর্থ ছটয়াছে তথনই আমি আসিয়া পঢ়িলাম। বয়সে প্রবীণ না ছইলেও ছাউনীর প্রীণ্ডান কর্মচারী ও অফিসারদের সমন্ত ধর্মকুত্যে পৌরোহিত্য করার দায়িত্ব হিল আমার উপর। অতএব প্রীণ্ডবার্মবারদারী যেকব ছত্তিকে সাভাবিক অবহার ফিরাইরা আমিবার ভারও পঢ়িল আমারই উপরে। কেননা সকলের মতে যেকবের অস্থভাটা মানসিক এবং সে চিকিৎসার আমিই নাকি একমাত্র ভরসা।

প্রথমে আমার নিকের জীপে করিয়া তাছাকে লইয়া এমণে বাছির ছইলাম। ভাবিলাম মুক্ত বার্তে মনোরম প্রাকৃতিক পরিবেশের মধ্যে কিছুক্তন পাকিলে বেচারার মামসিক উর্বেগ কিকিং ব্লাস পাইবে। তারপরে একে একে যিলিটারী ক্যান্টিন, ষ্টেশমারী ষ্টোরস্,ভালিং হল এবং কিমনান্টিক প্রাউও—সর্ব্বেই তাছাকে লইয়া ঘুরিতে আরম্ভ করিলাম। অদৃষ্টের নিঠুর ক্যাথাতে মুখ্যান বেকবকে তাছার অবাভাবিক গান্তীর্য ও নিজ্বতার আবর্ব ছইতে যে-কোন উপারে একবার মুক্ত করিতে পারিলেই বে কটল সমভার অনেকটা সরল হইয়া বাইবে—ইহা নিশ্চিত বুকিয়াই নিকের বিপ্রাম ও পাক্ষেত্রকে বিসর্ক্তম দিয়া তাছাকে লইয়া সারাটা সন্থা এবানে-ওবানে ঘুরিয়া বেছাইতে লাগিলাম। কিছ বন্টার পর বন্টা কার্টিয়া গেলেও বেক্তর ছবির মুবনগুলে কোন প্রকার সন্থীব

ভাবের সক্ষন কেবা গেল না । সন্মোহিত ব্যক্তির বত নিক্ষল

হইরাই লে আমার পালে বনিরা বহিল । ভাহাকে নিগারেট

দিরাহি মাধা নাভিরা লে আনাইরাছে—বার না । সিগারেট

লা বাইলেও মাধা নাভার সাভা পাইরা উৎসাহিত ভাবে
পরবর্তী বাপ হিসাবে নিজে পাত্রী হইরাও ভাহাকে সহাজে

হইকী অভার করিলাম । তৃতীর বার বলার পরে বেন পাযাধ
বৃত্তিতে প্রাণের সাভা আগিল । হোট হোট হুইট চন্তু লে

আমার পানে নিবর করিয়া আর একভাবে পুনরার মাধা

মাভিরা আনাইল যে, এবন ইহাতে ভাহার প্রবৃত্তি মাই ।
পুনরার কীপে চভিরা কিজাসা করিলাম, আর বেভাতে চাও,

যেকব ?

**পু**नदात्र याचा याणिया ८७ कानारेल---मा ।

ভাছার পর ছইতেই আমরা ক্যান্টিনের পালের এই ঘরে বসিয়া আছি। নরম গদীওয়ালা লোকায় ভাছাকে বসিতে অফ্রোব করিয়া নিকৈ একখানা বেভের চেয়ারে বসিলাম এবং ছই পেয়ালা কৃষ্ণির আদেশ দিলাম।

বলা বাহুলা, এবারেও কোন প্রকার সাড়া প্রথমে সে দের
নাই। তবে বিগত করেক ঘণ্টার সাহচর্ব্য ও ঘনির্ভভার
আমার প্রতি বেচারার কিঞ্চিং সব্যভাবের স্ক্রী হইরাছিল
বলিরাই হয়তো আর এক বার অহুরোধ করিতেই সে প্রবোধ
বালকের ভার পেয়ালা ভূলিরা করেক চুষ্ক পান করিল।

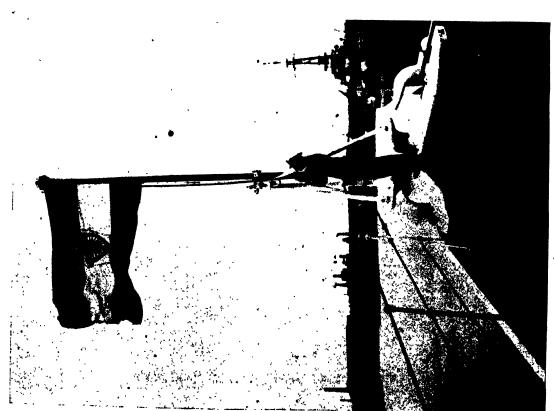
কিছ তাহার পর হইতেই জাবার যেন সে স্থীর্ণ ব্যানে মর হইরাছে, মনে হইল গত হই-তিন বন্ধার সমস্ত প্ররাগ ও উভ্তম আমার যেন সম্পূর্ণ বার্থ হইরা গেল। বেকব ছত্তির বক্ষরত জমটি অঞ্চলিলাকে বৃধি কিছুতেই গলাইতে পারিলাম না।

আর এক বার হাতবভিতে সময় দেবিলাম—প্রায় তিনটা। ছই দিনের প্রথম ও ক্লাভিতে সমত শরীরটা ভালিয়া পভিতে চাহিলেও সর্বাভঃকরণে মৃচ প্রতিজ্ঞা ক্ষিলাম, যেকব ছত্তির নিভরতার পাষান-প্রাচীরকে ভক্ করিবই, মচেৎ বিপ্রাম দূরের ক্ষা, পুরোহিতের ত্রতই আমি পরিত্যার করিব।

শেষ উপায় হিসাবে একবার সর্বাশক্তিমান অগনীখরকে ব্যৱণ করিলান। কহিলান, হে মদলমর সর্বান্তঃ, আমার চেটা ও আমার আভরিকভার মধ্যে নিশ্চরই ফ্রট আছে। আমার অভানা হলেও ভোমার কাছে ভা অভানা ময়। বেকব ছিনিকে সুহ করা বদি ভোমার অভিনান হর, ভা হলে ভাঙ্গে ভূমি সুহ করে, যাভাষিক করে ভোল। আমার উভয়কে সকল করতে ভোমার অমত শক্তির সাহায্য প্রেরণ কর।

ইহার পরে কেন কানি না সংশয় ও সন্দেহ-ভারাঞান্ত অন্তর বেন কেনৰ হালকা ও প্রকুর হইরা উঠিল। ননে হইতে





१०७० हेम स्ट-काराक क्षित्रीरङ जाहरूख काजीत नजाका ऐरकानन



নিউ দিল্লীতে বেলজিয়ান টেড ডেলিগেশন প্রদন্ত প্রতিভোজে পভিত জ্বাহরলাল নেহর



हीत्वत आहीत बाक् बाक्यरत्वत बाक्यांनी बूक्टब्टन बाक्कीय नमायि-मक्तिय

লাগিল, বেকৰ ছত্তির আরোগ্যের পথে আর কোন বাবা, কোন সভটই নাই। ভাহার চিকিংসা-বাবছার ভার বেন সর্বাবাধি-বিনাশক ভগবান নিজের হুডেই ভূলিয়া লইরাছেন।

চন্দ্ৰশীলন করিয়া দেখি যেকব যেন সামাত একটু নড়িয়া চড়িয়া সোজা হইয়া বসিয়াছে। ক্ষণকাল তীক্ষুপ্টতে চাহিয়া পাকিয়া মনে হইল, সে যেন একার উৎকর্শতাবে দ্বাগত কোন কীন শব্দ ভনিবার চেষ্টা করিতেছে।

সচকিত হইবা উট্টলাব। শত্রুবিবাদ নহে তো ?
আমাদের এই অরবর্ধ বাঁটতে সব সমরে সভেত-জ্ঞাপক
'সাইরেন' বাবে না। অনেক প্রকার অপুবিবার কচই তাহা
সক্তবপর হয় না। শত্রুবিমানের আগমন-ধ্রনিই আমাদের
বিক্টে সতর্কতার সক্তে বহুন করিবা আনে। চাক্ল্য
দমন করিবা আমিও নিক্রে কর্ণেপ্রিয়কে স্কাপ করিবা
ভূলিলাম।

মিনিটখানেক পরে ভাহাকে প্রশ্ন করিলাম, কি ওনছ বেকব—এনিমি প্লেন ?

বেকৰ নিৰ্বাক, নিশ্চল । সহসামনে হইল, সংসাৱের সহিত বাহ্নিক সম্পর্ক রহিত হইয়া সে যে এত শীগ্র শত্রু-বিষানের আগধন-ধ্বনি শুনিবার শ্বন্থ ব্যক্ত ইবে তাহা কিছুতেই সম্ভব নহে।

কক্ষবারে আর এক বার মুত্ন পদধ্বনি ভনিতে পাওরা গেল। নাগ্রথেল গরম ক্ষির পাত্র লইরা নিকটে আসিরা চুপি চুপি কহিল, কি খবর ?

ভাৰার প্রশ্ন এড়াইয়া কৰিলাম—আছা, নাস ইংখল, ভূমি কোন শব্দ ভনতে পাছে? ধেকবকে দেখেছ? কিছুক্দন খেকেই ঐ ভাবে বসে আছে বেচারা!

এক বার মাত্র যেকবের দিকে চাহিরাই নাস ইংগল কি বেন আবিকার করার মত কহিয়া উঠিল, বুবতে পেরেছি। নাইট-ওয়াচারর। প্রামোকোন বাধাছে। আপনি কি গান ভনতে খুব ভালবাসেন, মিঃ ছত্তি ? আছো, আপনি বান, আমি গান শোনাছি একটা।

নাস ইংৰল স্কণ্ঠী—নাস ইংৰল বাছোজ্বল তরুণী এবং সর্পোপরি সে যেকব ছত্তির বর্তমান ভাগ্যবিপর্যায়ে সম্পূর্ণ বরণী। প্রাণ ঢালিয়া সে নতুন শেখা একবানি চবংকার গান গাহিতে লাগিল।

এবিকে বেক্ৰ ছবির যুবাবরবেও একটা অপূর্ব পরিবর্তনের সাজা বেল বীরে বীরে পরিস্টু হইতে লাগিল। বেৰ আবাচের মেবারত দিনে আক্ষিক হোৱাভাগ। মনে হইল বেক্ৰ ছবির প্রতি এতক্ষণে বিবাতা সদর হইলেন। দাস ইবেলের স্থলনিত সদীতের মধ্য দিরাই যেন উহার্য মচল-ইক্ষা আমুগ্রকাশের পধ বুঁজিয়া লইতেছে। কিন্তু এ কি ? কৰিব পেরালা টেবিলে রাখিরা দিবার সংক্রেন্ডেই যেকবের মুখের ঔজ্ল্য যেন দ্বান ভ্টরা আসিতে লাগিল। পূর্ব্ববং গণ্ডার ভাবে আর একবার সে বাভারদ-পরে বাহিরের দিকে দৃষ্টি নিবছ করিল…

চিন্তিত হইলাম। বেক্ব গান ভালবালে, অবচ ইবেলের ফুললিত প্রেমসঙ্গীতে সে আরুই হইল না কেন ? কি গান সে চার গ ভালার প্রির বিধাগবিধুর শোকসম্বর অবন কোন্ সঙ্গীতের কর্ম শিশাসার্থ ?

लाचन छेडन मत्मन मत्ना न्नाडे स्त्रेना छेडीनान गूर्व्सरे स्थामान कर्श स्टेट अस्म नास्ति स्टेना भिजन---

"Lead kind y light

Amid the encircling gloom

The night is dark

And I am far from home" !

"হে দরামর, অরকারে ভোমার আলো দেখাও। রাজি অরকার—বর থেকে অনেক দূরে চলে এগেছি আমি।"

চক্ষের সন্মুবেই আভ্রহা কাও ঘটল ৷ সোকার সোকা হুট্রা বসিরা যেক্র একাভ আভুরিকভার সহিত পানে যোগদান করিল। মনে হইল এই সরল বিশ্বাসী অঞ্চর-ধানি যেন বিবাতার ভাছে প্রার্থনা প্রেরণ করিবার জন্মই **८. छक्त्र विक्रम कार्यात (योग) इरेश दिल। नार्म हैर्यम** আরম্ভ হটতেই এই অভিপরিচিত গানে ভাছার মধুর ও দর্বভর। কঠবর থিশাইরা দিয়াছিল। বেবিতে দেবিতে चामारम्ब इरे बरनव नगरवल कर्शवदक सामारेशः (यक्रवत বজাবকৃষ্ণ অধ্য আভৱিকভাপুৰ্ণ কণ্ঠধানিতে কক্ষ মুধ্বিভ হয়। উঠিল। তাহার বাবিত অধ্যের গাঞ্চীর-প্রাচীর ভাঙির। এডকণে ভাষার মৃক জনর যেন আরপ্রকাশের আবেদে উচ্ছ্ডিভ হইরা উটিল। যেন এই একথানি মাত্র পানের ভিতর দিয়াই সে তাহার প্রিয়তমা পদ্মী, বুদা ভ্রমনী ও ক্নিষ্ঠ ভাতার অভিম বাত্রাপথের নিরাপভার অন্ত স্ট্রকর্তা ইপুরের निकार निवास मकन अक्कामना अ धार्यनादक स्वन विद्र मिन्।

আক্রমাথিত চক্ষে সমগ্র ক্যান্টিন মুখরিত করিয়া, শেষ রাজের আকাশ-যাতাসে প্রতিধানি তুলিয়া মুক্তরে সে গাহিতে লাগিল:----

"When other helpers fail
And comforts flee
Help of the helpless
O! Abide with me"!

"বৰ্ণন অভ লহারকরা ব্যৰ্থ, সব সাজ্যা ঘৰ্ণন দুৱে চলে যার, ওগো অসহাথের সহার--ভূমি আমার সলে বেকে|---"

## শ্রীশচন্দ্র গুহ

#### জ্রীনিরুপমা দত্ত

গত ২৪শে জুলাই মালয়প্রবাসী ভারতীয় সন্তাদারের একট অপুরবীয় ক্ষতি ক্ষয়াছে। সেধানকার ভারতীয়দের নেতা একচক্র গুরু উত্ত দিবসে অক্সাং পর্বোক্সমন করিয়াছেন।

ভারতবর্বে ঐশচল শুবু এককন প্রবাত আইনত বলিয়া পরিচিত ছিলেন, কিন্তু সূদ্র মালরে তাঁহীর বিভিন্নবুধী প্রতিভার বিকাশ তাঁহাকে সকলের নিকট প্রভাভাজন করিয়া ভূলিয়াছিল। তাঁহার নিক্স্য চরিত্র, দানশীলতা প্রভৃতির কথা মনে হইলে এযাস্নের উক্তি মনে শক্তে—

"His heart was as great as the world but there was no room in it to hold the memory of a wrong!"

এই অমর উঞ্জি এশচন্দ্রের জীবনে অক্ষরে অক্ষরে ফলিরা-ছিল।

১৮৯১ সালে ১৫ই অটোবর কলিকাতার একট সম্ভ্রান্থ কারত্ব-পরিবারে শ্রীশচন্ত কর্মান্থ করেন। তাঁহার পিতামহ প্রীক্ষিকাচরণ গুলের ভেছবিতা ও দানশীলতার কাহিনী কলিকাতার স্থবিদিত ছিল। বালককাল হইতে শ্রীশচন্তের তীক্ষ শীশক্তির পরিচর পাইয়া পিতা তাঁহাকে ছাত্রাবহারই বিলাতে পাঠান। সেবানে যবাসময়ে বি-এ পাশ করিয়া এবং পরে আইন পরীক্ষার সাকল্যলাভ করিয়া শ্রীশচন্ত্র হদেশে প্রভাবর্ত্তন করেন। কলিকাতা হাইকোর্টে কয়েক বংসর ওকালতী করিবার পর ১৯১৯ সালে তিনি মালরে আগমন করেন।

মালাকা শহরে কিছুদিন ওকালতী করির। তিনি সিলাপুরে আইন ব্যবসায় আরম্ভ করেন। এই সময় করেকট কৃট-চক্রাভবুলক কটিল মোকছমায় ক্ষলাভ করাভেই প্রীশচক্র এ-দেশে একজন প্রেঠ আইনজ বলিয়া ত্পরিচিত হন এবং ব্যবহারকীবী-মহলের ব্যাহ্ম নামে অভিহিত হন।

মাসমগ্রবাসী ভারতীয়দের বিবিধ সমস্তা ক্রমণ: ঞ্রীলচন্দ্রের

দৃষ্টি আকর্ষণ করে। ভারত ইইতে আগত হাজার হাজার

শ্রমিকের ক্রীতদাসের ভার শোচনীর অবহা দেবিয়া তিনি
বিচলিত হইরা পড়েন। সংবাদপত্র ও সভা মারকত তিনি
মালর-সরকারের আর্জ্জাতিক আইনবিরুদ্ধ শাসননীতির
ভীর সমালোচনা করিতে আরর্জ করেন। ক্রমে তিনি
মালরের ইভিয়ান এগোসিরেশনের সভাপতি নির্মাচিত

শ্ব। ঞ্রশচন্দ্রের প্রেরণার ভারতবাসীয়া তবন ভারতীর
শ্রমিকদের জীবনবাত্রার মান উয়য়ন সম্পর্কে দেশব্যাপী
আন্দোলন চালাইতে বাকে। কলে ভারত-সরকার এ বিবরে

তদত করিবার অভ একজন নিরপেক প্রতিনিধিকে মালরে থেরণ করেন। মালর-কর্তৃপক্ষের অভার আচরণ সহকেই বরা পড়ে। উক্ত প্রতিনিধির রিপোট নরাদিরীতে পৌহাইতেই তারত-সরকার মালর কর্তৃপক্ষের নিকট এই মর্শ্বে একবানি পত্র দেন বে, মালরের বিবিধ শিল্প-প্রতিষ্ঠান ও কারবানাধিতে নিরোজিত ও নির্বাতিত ভারতীর প্রমিকদের বেন অবিলব্দে বদেশে পাঠাইরা দেওবা হর।

যথনকার কথা বলিতেছি তথন ভারতীর প্রমিক ছাড়া মালরের থনি ও রবার-শিল্প পরিচালনা করা একরপ অসপ্তবই ছিল। অবক্স চীনা প্রমিকের তথন অভাব ছিল না , কিছু ভারতীর প্রমিকদের ভার ন্যুনতম বেতনে তাহারা কথনই সন্তই হইত না ত্বতরাং উক্ত পত্র পাইরা মালর-সরকার চোঝে সরিষার কল দেখিলেন। প্রমিকদের শতকরা ৫০ টাকা হারে বেতন বৃদ্ধি করিবার এবং তাহাদের স্বাস্থ্য পরীক্ষার নিমিন্ত উপ-র্ক্ত ঔষণাদিসহ কয়েকলন বিশিপ্ত ভাক্তারকে প্রেরণ করার ক্ষ অবিলয়ে রবার এইটের মালিকদের উপর হুকুম জারী হইল। মালর-সরকারের প্রবর্তিত নীতিতে ভারত-সরকার সংই হন। তথন হুইতে ভারতবাসীদের স্বার্থ-সংরক্ষণের নিমিন্ত একজন করিরা ভারতীয় প্রতিনিধি মালরে প্রেরণ করা হয়। অসহার প্রবাসী ভারতবাসীদের ক্রপতিমোচনের এই পরিক্রনাট ভব্ প্রশাসকরের অক্সান্ত চেটার বাছবে ক্রপায়িত হয়।

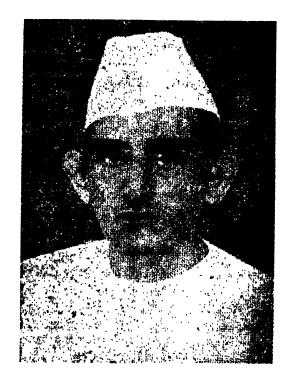
১৯৩৯ সালে এবানে 'ইভিয়ান ইর্ব লীগ' নামে একটি বভার ভারতীর সংখ প্রতিষ্ঠিত হয়। প্রশাসক তাহার হায়ী সভাপতি নির্বাচিত হন। হুর্গত প্রবাদী ভারতবাসীদের আবিক অবহার উন্নয়ন ও তাহাদের মধ্যে শিক্ষা-বিভারের ব্যবহা করা এই সংখ্যে মুব্য উদ্দেশ্ত হয়। হানীর ভারতীর প্রতিনিবির কার্য্যেও ইহার সদৃভেরা বিশেষ সহারতা করিয়া বাকেন।

১>৪১ সালে মালরে বুছ আরম্ভ হালে ঞীপচন্দ্র হাজার বিরাশ্রর নরমারীর জীবন রক্ষা করিবা বেরূপ মহাত্বতবতা ও মানবহিতৈবশার পরিচর বিরাহিলেন তাহার তুলনা
বিরল। উত্তর-মালরে অবতরণ করিরা জাপবাহিনী যধন
বভার জলের মত হ ছ করিবা দক্ষিণ বিকে অঞ্জসর হইতে
বাকে তবন ঐ সকল স্থান হইতে সহস্র সহস্রহারা নরমারী
সিলাপুরে পলাইরা আসে। বোমা-বিধ্বত সিলাপুরের অবহাও
তবন অতীব শোচনীর। এই সমন্ত শরণাপতকে আশ্রম বেওরা
ও তাহাদের আহার্য্য সরবরাহ করা কর্তুপক্ষের পক্ষে অসভব
হুইরা উঠে। এধানকার চীনা অবিবাসীরা ক্ষেক্ষাত্র চীনা

আগ্রহাণীবের থাত ও আশ্রহদানের ব্যবস্থা করে। কলে
অভাত আতীর লোকেদের স্থাতির আর পরিসীমা রহিল না।
আগ্রহীনদের এই স্থাতি দেখিরা শ্রীশচন্দ্রের ছদর বিচলিত
হইরাছিল। তিনি করেকজন সদাশর ব্যক্তির সহযোগিতার
একট বিরাট রেকিউজি ক্যাম্প বা আগ্রহ-শিবির প্রতিষ্ঠা
করিলেন। উক্ত ক্যাম্পটির বৈশিষ্ট্য ছিল এই যে, ইহাতে গুণু
ভারতীর নর, বিভিন্ন জাতি ও সম্প্রদারের ২৫০০০ নরনারী—
ভন্নব্যে শিশু এবং ব্রহ-ব্রহার সংখ্যাও কম নর—আশ্রর ও
আহার লাভ করে। রেকিউজি কতের অর্থ নিঃশেষিত হইলে
শ্রশগ্রন্থ নিজেই সেই বিরাট লোকহিতকর কর্ম্বের ব্যরভার
বহন করেন।

ब्र जातक रहेटलहे अरम्टलंड राजात राजात नवनावी ভারতবর্ষ কিয়া অঠেলিয়ার পলায়ন করিতে উছত হয়। তথ্য প্ৰায় প্ৰতিদিনই ভাৰ্মান ইউ-বোট ছাৱা ব্ৰিটপের বহু ভাছাত क्लमध क्या क्रेटिक: खर्या क्रेडिक विक्र विक्र बूटबर উপকরণ সরবরাছ-কার্বো। স্বভরাং উপরোক্ত নিরাপদ ছানসমূহে গমনেচ্ছু নরনারীদের পাঠাইবার ব্যবস্থা করা অসম্ভব হট্যা উঠে। গোড়ার দিকে যে ভাষাক কয়ধানি পাওয়া গিয়াছিল, সরকারের নির্দেশে সেগুলিতে তথু খেতাল নাত্রী ও শিশুদের পাঠানো হয়। 'কালা আদমি'দের অপেকা করিতে বলা হয়: ধনী ব্যক্তিরা অবঙ জাহাত কোম্পানীর অভুগ্রছের প্রজাশা না করিরা চতুগুলি ভাড়া দিরা বিমানযোগে ছানাছরে চলিয়া যান, কিছ শতকরা নকাই জনের পক্ষেই থালা ঘট-वाके विक्रम कविमाल উড়ে।-काशाद्य अकवानि माज क्रिके ক্ৰয় করা সাধাতীত। কাৰেই প্ৰচণ্ড বোমাবৰ্ষণ সন্তেও ৰাহাৰ কোম্পানীর ৰাপিনে প্রত্যহ মত মত নরনারী রুণা ৰৱণা দিতে থাকে। এই দুষ্ঠ দেৰিয়া শ্ৰীশচন্ত্ৰ ছিৱ থাকিতে পারিলেন না। প্রথ্যেন্টের সামরিক আইন কব্সন ক্রিয়া তিনি তংকালীন লাটবাহাছরকে তীত্র ভাষার একবানি পত্র ल्याचन । अपू बनायस्य न्यातिक्षात्र विनया नयः ज्यापाठत्वत्र न्नहेरामिना, निर्कीकना ও मानविद्दिन्यनात क्रम नाहेराहाहुत তাঁহাকে আছবিক শ্রহা করিতেন। সুতরাং তিনি কিছুমাত্র चूच या रहेशां, वदर इ:व श्रकांच कतियां शरकांखरव कानांव বে, প্রধান সেণাপতির হভেই লোকাপসারণ-কার্ব্যের ভার; चल्यव औनहत्वरक छोहांत शांतप हरेरव। औनहत्व बहे সহট্যনক অবহার প্রধান সেমাপতির অভ্রহনাডের আশার রণা বসিরা না পাকিরা অবিলয়ে ভারতের বড়লাট, কংগ্রেস राहेक्यां ७ वराचाकीटक छिन्दानि टिनिजाम शांठीहेलन । त्रीकांत्राक्रदव कीरांत सार्वना वक्षत **एरेल । इ**हे नक्षार्यत वर्षा ভারত-সরকার আশ্ররপ্রাবীদের নিমিত করেকবানি ভাতাত শ্বেরণ ক্রিলেব। এই সম্ভ জাহারবোগে ভাহারা নিরাপদে ভারতবর্বে বিরা গৌহে। অবিক্লেইভুক্ত এরণ, ভবেক

ভারতীর হিল বাহাদের ভাহাজ-ভাড়া দিবার ক্ষতা হিল বা, এশচন্দ্র তাহাদের টিকিট কিনিয়া দেব।



শ্ৰীশচন্ত্ৰ শ্বহ

মালর হইতে অনেক ভারতীর চলিয়া গেলেও অর্জেক্সের বেশী এখানেই থাকিতে বাধ্য হইলেন। মালরপ্রবাসী ভারতীরদের নেড্ছানীর অনেকেট আসন্ন বিপদের সভাবনা দেখিয়া ইতিপুর্বেই ভারতে চলিয়া যান। কিছু ভিন লক্ষাবিক্ ভারতবাসীকে এই বিপদের মুখে কেলিয়া নিরাপদ ছানে চলিয়া বাইতে শ্রীশচল্লের মন স্থিল না। মিজের শীবন বিপদ্ন করিয়াও ভিনি সিদাপুরে রহিয়া গেলেন।

সিলাপুরের উপর বিমান-হানা জ্বল: বৃদ্ধি পাওরার সলে সলে হানীর সরকারের শাসনব্যবহাও শিবিল হইরা পঢ়িল। শ্রীশচক্ত তথন ভারতবাসীদের একটি সভা আহ্বাম ক্রিলেন, এবং অবিলবে তিন হাজার ভারতীর বৃবক লইরা 'ইভিয়ান প্যাসিভ ভিক্তে কোর' নামে একটি সভা স্প্রীত হইল। বৃহত্তর শেব বৃহুর্ত পর্বাভ শ্রীশচক্তের নেতৃত্বে এই বেচ্ছাসেবক হলটি বে কি ভাবে বোমাবিহন্তে সিলাপুর শহরের শান্তিরকা কার্ব্যে সাহাব্য ক্রিরাছিল ভাহা বর্ণনাতীত।

শীপচলের নিঃরার্থ সেবার মুখ হইরা তৎকালীন গবর্ণর নার সেউন ট্রাস তাঁহাকে 'ভারত-সরকারের মালরত একেউ-জেনারেল' নির্ক্ত করেন। সিলাপুরের পতনের পুঞ্জিন সন্থ্যার নার সেউন ট্রাস বেভারবোধে নরা-ছিল্লীতে এই TIP CETT TOTAL THE STATE OF THE

সিম্পাপুরের পভন হইলে পর জার একটি বিরাট দায়িত্ব ঐীপচন্দ্র নিভীক চিত্তে এহণ করিলেন। তাহা হইল পরাখিত ত্রিটশ সৈভবাহিনীর অভ্যন্ত ৬৪০০০ অসহায় ভারতীর সৈছের ভভাবধানের ভার। ভাপানীরা শহর দধল করিরা বিটশ লৈছদের আধে বন্দী করে। কিছ ভারতীয় সৈতদের বন্ধী করার দিকে ভাহাদের বিশেষ আগ্রহ দেখা পেল না। ওদিকে চৌষ্টি হাকার সৈত বাভাভাবে পহরের চন্তৰিকে বু'ৱয়া বেড়াইতে থাকে এবং নানা অগ্ৰীভিকর ঘটনা ঘটতে থাকে। ভাপানী সামরিক কণ্ডারা তথন শহরের राजांत राजांत होना शतिवात्रक अरकवादत अनुस्त উচ্ছেए-কার্বো মহা ব্যম্ভ। ভারতীরদের উপরও অপুরূপ অভ্যাচার আরম্ভ হটতে পারে ভাবিহা শ্রীশচল্ল স্বয়ং ভাছাদের নিরাপভার হত ব্যাকুল হইরা উট্টলেন। এতগুলি সৈতকে আপ্রার দেওরা, বিশেষতঃ দৈনিক ছই বার আহার্যা সরবরাহ कदा (बार्टिंग नर्भ वाश्रीव नयु. बनी वाकिएनव निक्र नाश्रीया প্রার্থনা করিয়া বিষুধ চ্টয়া অবশেষে গ্রীশচন্ত নিজের সঞ্চিত অর্থ দিয়া ভারভীয় সৈদদের ধোরাক যোগাইতে লাগিলেন। বৰ্ম স্কিত অৰ্থ নি:শেষিত হুইল তৰ্ম তিনি খ্ৰীৱ বুলাবান অলভারাদি বিক্রম্ব করিয়া টাকা যোগাভ করিলেন। এক সপ্তাহের মধ্যে ভাহাও কুরাইয়া গেল। এবার ভিনি নিজের প্ৰাসাদত্ব্য গৃহ ও অভাভ ভূ-সন্পত্তি বছক ব্ৰাধিবা অৰ্থ সংগ্ৰহ করিলেন। এই সময় প্রধান সেনাপতি ইয়ামাশিতার चारपरम फेक चावजीव देत्ररक्षवा बद्धवनी विनवा भग स्टेन।

ইহার পর ভারতীয় সন্তাগারের প্রধান নেতা ও প্রতিনিধি
য়ণে শ্রীশচল ভাপানী ভাগলাটের সহিত সাক্ষাং করিলেন।
ভাগানী উচ্চার পরিচর পাইরা অভ্যন্ত বুলী হইলেন।
ভাপানী সরকারের সহিত পরামর্শ করিরা শ্রীশচল ইতিরান
ইউব লীগকে ইতিরান ইভিপেতেল লীগে রপান্তরিত করেন।
তিনিই ইহার সভাপতি পদে রুভ হন। এই সমরে ভাগানী
প্রধানমন্ত্রী হিলেকী ভোজাের আহ্বানে তিনি অভাত ভারতীর
সরকাণ সমভিবাাহারে টোক্ষিও বান এবং সেধানে গিরা
ভাষিতে পারেন যে বর্দ্ধা বিক্ষিত হইলে পর ভাগান ভারত
ভালিতে পারেন যে বর্দ্ধা বিক্ষিত হইলে পর ভাগান ভারত
ভালিত করিবে। কিন্ত ভাহালের উচ্চের ভারতে সামান্তাবিভার নহে, তাহালের অভিপ্রার এই বে ভারতবর্ধ কর
ক্রিরা ভারতবাসীর হতেই তাহারা দেশের শাসনকার্ব্যের
ভার অপণ করিবে। ভাগ-কর্ত্যক কিন্তু ভারতীর ক্লেছা-

সেবক ও সৈভের সাহায্য চান। মালরে প্রভ্যাবর্ত্তন করিয়া শ্ৰীশচন্ত্ৰ সোংসাহে হুই হাজার বেছাসেবক ও বন্ধী-কৃত সাভ শত ভারতীর সৈত লইরা একট ভারতীর বুভি-কৌৰ গঠন করিলেন। ভাহার কিছদিন পরেই নির্বাসিভ প্রবীণ নেতা শ্রীরাসবিহারী বস্থ টোকিও হইতে মালরে আগমন করিলেন। এক দিন ছাপানের ভাবী ভারত-ছাক্রমণ সম্পর্কে রাসবিহারীর সহিত এশচজের পুথাত্বপুথ আলোচনা হয়। রাসবিহারী বলেন যে, ভারতবর্ষ হইতে ব্রিটাশ শক্তিকে বিভান্থিত করিয়া জাপান ভারতবাসীর হস্তেই বেশের শাসন-ভার অর্পণ করিবে। তবে এতকাল পরাধীন পাকার ভারত-বাসী নাকি এবনও দেশৱকা করিতে শিবে নাই: সেইবছ ভারত-করের পর জাপানী সৈভের করেকট দবলদার বাহিনী (occupation army) ভারতে পাঁচণ বংসর অবস্থান क्रिरित । काहात (मर्याक क्षाक्षण कृष्टे-बाहेनल अन्तरक्षत मनः পूछ रहेन ना। छिनि श्रीष्ठिवां कविदा विनातन, मा ভাষা কিছুভেই হইভে পারে না; উহারা পঁচিশ বংসর কাল ভারতে পাকিলে ভারত দিতীর মাঞ্রিয়াতে পরিণত হইবে, আমি এই চুক্তিতে কৰনই রাজী হইতে পারি না। এই ব্যাপার লইয়া রাস্বিহারীর সহিত শ্রীশচন্ত্রের মনোমালিভ ৰটে এবং তিনি ভয়ত্তদয়ে লীগের সভাপতির আসন ভ্যাপ करतन। এই कातरन नवनिष्ठ मुक्ति-कोरमध विमुधनात স্ট্রী হওরার তাহা ভাঙিরা গেল। অকিসারদের বন্দী করা ছটল। জাপানীরা ত্রীপচন্দ্রকে নজরবন্দী করিয়া রাখিল।

করেক মাস পরে নেতাঞী সুভাষচক্র মালরে আসেন। ইহার করেক দিনের মধ্যেই শ্রীশচক্র বৃক্তি পাইলেন। কিন্তু মধ্য-রাত্রে আপানী গেইাপো তাঁহার গৃহে আসিরা গোপনে তাঁহাকে শাসাইয়া যার বে, ভবিত্রভে রাজনীতিক্ষেত্রে তিনি বেন পুনঃ-প্রবেশ না করেন; করিলে জাপ-সরকার তাঁহাকে প্রাণদভে দভিত করিবেন। গেইাপো অকিসারট তাঁহাকে আরও বলে বে, এই সমত পতগোলের কথা তিনি বেন নেতাজীর ভাছে ঘূণাক্ষরেও প্রকাশ না করেন; এবং নেতাজী বহি তাঁহাকে কোন দারিজ বা পদ প্রহণ করিতে অনুরোধ করেন তাহা ঘ্রীদার করেন।

মানরে আছার বিন্দু সরকার প্রতিষ্ঠিত হটলে নেতাজী শ্রীণচন্দ্রকে কোন একট বিশেষ বারিষপূর্ণ পদ প্রহণ করিতে আহ্বান করেন। এবার শ্রীণচন্দ্রের উভয়স্কট। দ্লান হাসি হাসিরা তিনি বলিলেন, "আপানী ভাক্তার আবিভার করেছে আমার নাতি হাটের অনুধ আছে, কালেই রাজনীতিক্ষেরে করের মত আমার প্রবেশ নিষেধ---।"

নেভালী পৃক্ষেই কনৈক অফিসারের নিকট ইবার আংশিক ববর পাইরাহিলেন, এবার সমত ব্যাপারটা বৃথিতে ভারার বিলম্ব হবন ধা। ছঃবের সহিত বলিলেন, "বাহা, এবন ্'দিন বিশ্লাম নিন তবে তারত খানীন হলে আপনিই হবেন তার প্রথম আইমসচিব···৷" "ই্যা, ভাপানী চিকিৎসক বদি নম্মতি দেন তা হলে নিশ্চমই আপনার ক্যার রাজী হবো"—— শ্রীশচক সহাতে বলিয়া উটিলেন।

তাঁহার অগ্রন্ধ শ্রীশরংচক্র বহুর সহপাঠী এবং বছু বলিরা তথু নয়, শ্রীশচক্রকে একজন আদর্শ দেশপ্রথিক বলিরাও নেতালী বিশেষ প্রশ্ন করিতেন। বছ বার নিজের বাংলাের শ্রীশচক্রকে আমন্ত্রণ করিয়া নেতালী তাঁহার সহিত অনেক বিষয়ে প্রামর্শ করিয়াছেন।

ভাপানী কর্ত্পক্ষের আদেশ অনুসারে ঞ্রীশচন্দ্র রাজনীতিতে
যোগ না দিরা আইন-ব্যবসারে আবার বিশেষ মনোবোগ
দেন। এই সময় তিনি জানিতে পারেন, যে সমন্ত ভারতীয় সৈছ
ভারতীয় জাতীয় বাহিনীতে যোগদান করে নাই, তাহাদের
নাভি হর্জণার পরিসীমা নাই। এ সংবাদ অবগত হইবার পর
গ্রীশচন্দ্র সর্বান্ধ জাপানী পেটাপোর অজাতে সেই হুর্গত সৈত্তদের আধিক সাহায্য করিতে লাগিলেন। জাপানীরা জানিতে
পারিলে যে উাহার প্রাণদ্ধ হইত তাহাতে সন্দেহ নাই।
খোপার্জিত অর্থে কুলাইত না বলিয়া তিনি কয়েক লক্ষ্
ভলায় কর্জ করিয়া সেই সকল বন্ধীকে পাঠাইয়াছিলেন।

যুছবিরতি হইলে বিটিশ সরকার মালরে পুন:প্রবেশ করেন। বিটিশ সামরিক কর্তৃপক্ষ মনে করেন বে, শ্রীশচক্র কাপানীদের সহযোগিতা করিয়াছিলেন; এই অপরাধে তাঁহাকে কারাক্রছ করা হয়। নিক্রের জীবন বিপন্ন করিয়া যে-সব বন্দী সৈভের জীবন তিনি রক্ষা করিয়াছিলেন, নয়া-দিল্লীতে প্রত্যাবর্তন করিয়া তাহারা তদানীদ্ধন তারত-সরকারের নিকট শ্রীশচক্রের মহাস্ত্রতার কাহিনী বর্ণনা করে। তারত গবর্থে বছবাদপূর্ণ একবানি অভিনক্ষমণত্ত্র মারকত শ্রীশচক্রের নিকট প্রেরণ করেন। উক্ত পত্র দেখিরা হানীর সরকার অত্যক্ত বিশ্বিত

रम अवर चिनार जैनहत्र मृक्ति (१७३) एत । तिरे সময়ে দিল্লী হইতে মালয়ের ভূতপূর্ব্ব বুহুবন্দী মেলর কেনারেল চৌধুৱী (বৰ্ত্তমান হাৰপ্ৰাবাদের সাম্বিক শাসনকৰ্ত্তা) শ্ৰীশচলকে বে অপূর্ব্ব পঞ্চী লেবেন তাহার অংশবিশেষ এবানে উছত र्देन :---- You were the first Indian in Singapore who came forward to help us at the risk of your own life. You saved many precious lives and for this our gratitude can never be wanting...," "সিফাপুরে আপানই প্রথম ভারতীয় যিনি নিৰের জীবন বিশীল করিলা আমাদিগকে সাহায্য করিতে অঞ্জর হুইয়াছিলেন। আপনি অনেক মূল্যবান জীবন রক্ষা করিয়াছিলেন এবং সেক্ত আপনার প্রতি আমাছের ক্লতজ্ঞতার জ্বভাব ক্বনো হইবে না।" এ বংসরের গোড়ার षिटक ७ (पटनत अथम वावश्र-भित्रवाहत अप्रक्र निर्याहनकाटन গ্রীশচল্ল একজন সমস্ত নির্বাচিত হন। শ্রীশচন্ত্র এই অভিপ্ৰায় প্ৰকাশ করেন যে, এইবার তিনি ভারতীয় শ্ৰমিক-দের প্রতি ত্রিট্রশ কর্তুপক্ষের অফুটিত ক্রটগুলির সুলোচ্ছেদ ক্রিতে তংপর হইবেন।

গত করেক মাস হইতে তিনি হুংপিণ্ডের অনুধে বিশেষ কট পাইতেছিলেন। চিকিৎসকেরা তাঁছাকে সম্পূর্ণ বিপ্রাম লইতে অনুরোধ করেন। কিছু তাঁছাদের কথা না শুনিরা তিনি ভার বাছোই বিরাট কর্তবার বোঝা বছন করিয়া চলিতে থাকেন। কিছু অত্যধিক পরিপ্রমে তাঁছার হুর্মান শরীর একেবারেই ভাঙিরা পড়ে। গত ১২ই জুলাই বাধ্য হইয়া হুর সপ্তাহের বিপ্রাম লইবার উচ্চেপ্তে তিনি বিমানবারে কলিছাতার যান।

কিছ সেই বিশ্রামই জাঁহার কর্ম্মর জীবনের চিরবিশ্রাম হইল। জকমাৎ একদিন তাঁহার জীবন-প্রদীপ নির্বাপিত হইল। সেই দীপশিধা মালয়-প্রবাসী ভারতীরদের প্রথনির্বেশ করিবার জন্ম বার প্রথলিত হইবে না।

# রুণাই প্রহরী আর

শ্ৰীরঘুনাথ ঘোষ

বাৰষান কালো বৌরা খুপাকার কালো অবকার পৃথিবীর বৃক্তে নামে ক্ষকপক অইবীর রাত, উপবাসী আছা নোর অবিরাম বেরে চলে পথ পিপাসিত মরুভূমি কালে রখা: তাকে হিম হাত। আকাশের বৃক্ত বেকে বরে গেছে ভক্তারা সব ধ্রুবতারা বৃহত্ত গেছে চূপে অভাতে ক্রম, বিগত্তই অভ্যারে সীমাধীন কালো পারাবারে তেনে গেছে বিশে গেছে কত হার সোনার হপন।

তবু গতি, তবু চলা, কুলুকুলু কালিন্দীর জল ;
নিবা বে দেবার পব : কুল কংস বুঁলিছে কাহারে ?
নেবকীর হাহাকার, বপুনেব আঁবি হলহল,
রবাই প্রহরা আর মধুরার কারার হয়ারে ।
চক্ত অবীর প্রাব, অপেকার নাহি অবসর ;
কোট কঠ আর্ডবরে অবিরাম মাগে প্রতীকার,
এসেছে লগন আৰু কালপূর্ব হ'ল এত বিনে
বক্তবাধা নিবার্ট তাই বোবে তাকে অনিবার ।

# স্থায়ী বাঙালী পণ্টন

শ্রীমন বাহাত্র সিংহ (মুবেদার, ১>শ`বেদলী রেভিমেন্ট)

প্রায় হই শত বংসর পরাধীনভার পর সম্রতি ভারভবাসীরা ইংরেকের কবল থেকে মুক্ত হয়েছে। স্বাধীন ভারভের ইচ্ছাত্বযায়ী সৈচবাহিনী গঠন আৰু আমাদের হাতে। ইংরেজ 🖁 আমলের ভারতের সৈত্রাহিনীতে রংকট-নীতি ও সামরিক শিক্ষার বাধাবিদ্বসমূহ আৰু আর নেই। রাষ্ট্রের ভিতরে শৃথলা वकांत्र बार्चवांत्र अवर वाहेरत्व मञ्च-बाक्रमन (बटक मिनटक तका করবার হল সৈত্রবাহিনী দরকার । ইংরেজ আমলে ভারতবর্ষে माज करवकि अम्प्रत्येत मार्याहे रिम्मवाहिनी मर्छन जीमांवह ছিল। ইংৱেশ বাঙাদী শাভিকে "অসাম্ত্রিক শাভি" বলে বছ বংসর কোণঠাসা করে রেখেছিল। কারণ ইংরেক ভাল করেই বুৰভে পেৰেছিল যে, এই বাঙালী জাতির মধ্যে মন্তিছ ও বাছ এ ছটো শক্তি মিলিত হলে তালের আর ভারতবর্বে বেশী দিন वाक्य कराज वाव मा। हेश्यक वाक्यक्त लाजा (श्रक যদি বাঙালীয় ছত সামরিক শিক্ষার পথ উন্মুক্ত থাকত তা হলে ভারতবর্ষের ইতিহাসের ত্রপ বহুদিন আগেই বদলে যেত।

১৯১৪ সালের মহাছুছে বাংলাদেশের নেতাদের অনেক শীড়াপীভিতে ইংরেশ এক দল বাঙালী পণ্টন গঠন করতে অন্থমতি দিরেছিল। সাত হালার বাঙালী ছেলেদের নিয়ে বাঙালী পণ্টন গঠন করা হয়েছিল। তারা সামরিক শিক্ষা পেরেছিল, তাদের মুছে পাঠানো হরেছিল—কিছ মুছের শেবে পণ্টন ভেঙে দেওবা হ'ল, বাঙালীরা ভারতের রেগুলার আশ্বিতে কোন ছান পেল না—এই হ'ল কল। ইংরেশ বাঙালীদের সৈত্বাহিনীর রংরুট-নীতির আসল পথ ইছে করেই দেখিরে দের নি এবং বাঙালী নেতারাও এই রংরুট-নীতির সহছে ইংরেছের কূটনীতি সে সমর বুবতে পাবেন নি। এই রংরুট-নীতির ভূসের শুন্ত বিগত প্রথম ও বিতীর মহারুছে বাঙালী পণ্টন সক্লতা লাভ করতে পাবে নি।

আৰু বাংলাদেশে ইংরেক আমলের রংক্ট-নীতির সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তনসাধন করতে হবে। কে বলে বাংলাদেশে সৈচ-বাহিনী পাওরা বাবে না ? বাংলাদেশে হর্ছর সৈচবাহিনী গড়ে উঠবে, বদি আমলা নিবেদের মধ্যে কলাদলি, তর্কবিতর্ক ইতাাদিতে অযথা সমর নই বা করে একবোরে ছারী বাঙালী বাটেলিরন গড়ার কাকে মন দিরে ভবিত্তং বাঙালীর সামরিক শিক্ষার পথ উন্তুক্ত করি।

শতাব্দীর এক পাদের মধ্যে পৃথিবীতে পর পর ছটে। ভীষণ
বুদ্ধ এসেছে—যুদ্ধকালে সাংলাদেশে যুষ্টিনের সাঙালীবের

শিষে এক একট পণ্টন গড়ে উঠছে—বৃদ্ধ চলে গেলে, বাঙালী পণ্টনও ভেঙে দেওৱা হ্যেছে। কলে বাংলার বাঙালীদের হারী সৈল্পল গঠন আর হচ্ছে না। এর কারণ কি ভেবে দেখা দরকার। আমি এক সময় আমাদের কমাভিং অকিগারকে বিজ্ঞাসা করেছিলাম বাঙালীকে রেগুলার আমিতে রাখা হবে কিনা। তিনি সে প্রারের উল্লেখ্য বলেছিলেন, নিশ্চর রাখা হবে বলি ভারা চার। কিছু বাঙালী ভখন চার নি—এর কলে নেভাদের উদাসীমভা অনেকখানি দারী। ক্রেক্তমন বাঙালী অকিসার এ বিষয়ে নেভাদের কাছে দরবারও করেছিলেন, কিছু ভারা বলেছিলেন—বৃদ্ধ যথন থেমে গিরেছে ভখন পণ্টনের আর দরকার নেই।

বাংলাদেশের নেভাদের ও বাঙালী পণ্টনের দোষ দেখিয়ে নিকা করা আমার উদ্বেশ্ব লয় । পত রুকের রংফট-নীতি এবং বাঙালী পণ্টনের কার্যাকলাপের দিকে লক্ষ্য করে ভবিয়তে বাঙালী নেভারা সাবধান হয়ে বাংলার হায়ী সৈঞ্চল পঠনের দিকে যাতে মনোনিবেশ করেন সেইকভেই আরু বাঙালী পণ্টনের মন্দের দিকটার সব কবা আই করে খুলে বলতে প্রবৃত্ত হচ্ছি—মনে হয় এর দরন বাংলার সৈভ সংগ্রহের কার্ক ভকটা প্রভূচাবে পরিচালিত হবে। আরু বাঙালীকে পোশাকী সৈনিক হলে চলবে না; আরু ভার মনে প্রাণে সৈনিকের বর্প্রে দীক্ষিত সৈনিক-বাঙালী হওয়া চাই।

১৯১৪ এবং ১৯০৯ সালের যুৱে বাংলায় আৰু রংকট-নীতির দক্ষনই বাঙালীরা সৈধবাছিনী হিসাবে সঞ্চলতা লাভ করতে পারে নি , তার কতকগুলি কারণ নিয়ে দেওয়া হ'ল।

- (১) ৪৯তম বেলনী রেজিমেন্ট এবং বেদল কোঠান ডিকেজ ব্যাটারিতে শতকরা প্রায় নকাই ভাগের বেশী উচ্চবংশ-জাত, শিক্ষিত মধ্যবিভ বাঙালী মুবক ভণ্ডি হয়েছিল।
- (২) পণ্টনের ছেলেদের মধ্যে যারা একটু শিক্ষিত, ভারা অনেকেই এই বারণা নিরে পণ্টনে যোগ নিরেছিল বে ভবিন্ততে গবর্ণনেন্টের অবীনে লাভবনক উচ্চ অসামরিক পদ ভারা পাবে। দেখা গেছে মুছক্ষেত্রে বাকাকালীন অনেকেই ভারভ গবর্ণনেন্টে বহু পদের ক্ষম্মরাভ করেছিল।
- (৩) এখের ষধ্যে অনেকেই নৃতন কিছু করার উবাবনা থেকেই দৈনিকরণে পণ্টনে বোগ দিরেছিল। দেখা গেছে, পরে বর্থন ভালের স্থপ্ন ভেঙে গেল তথ্য বহু ছেলে নানা রক্ষ ছভো করে পণ্টন ছেকে চলে এসেছিল।
- (৪) এবের মধ্যে অনেকেই সংসারের নানা রক্তর বঞ্চী সন্থ করতে না গেবে না, বাবা এবং অভাত আগ্রীরবন্ধনের

সঙ্গে বগলা করে, ছুল-কলেক পালিরে সৈত্বাহিনীতে বোগদান করেছিল। অনেকে মামলা-যোক্ষমা বেকে বেছাই পাবার অভ, আবার অনেকে বহু আপিসে চাক্রির সহান করে পরে হুডাল হরে পণ্টনে ভর্তি হরেছিল। পুলিলের হাত এলাবার অভ সম্মাসবাদী দলের করেককন ব্বক্ও পণ্টনে গিয়েছিল। তাদের অনেকের মা, বাবা, স্ত্রী এবং বহু আরীর্থকন উত্তর-পশ্চিম সাধান্ত প্রদেশের নৌলেরা ও করাচী বাারাক এবং অ্লুর মেসোপটেমিয়ার মুক্তেতে, তাদের হেলেদের ও সামীদের পণ্টন বেকে কিরিয়ে আনবার উদ্দেশ্তে পণ্টনের ক্মানিং অকিগারকে অল্বোব করে আবেদন-নিবেদনপ্র পারিছেছেলন।

- (৫) যাবা দেশভক্ত, তারা এই সুবোগে সামরিক শিক্ষা লাভের কন্য পণ্টনে ভট্টি হরেছিল।
- ৬। বুছ শেষ হলেই তারা ববে ফিরে আস্তে পারবে এই বারণা নিয়ে অনেকেই 'ভলাঠিয়ার' হিসাবে পণ্টনে ভর্তি হয়েছিল।
- ৭। সাধারণতঃ বাঙালী ভাবপ্রবণ কাতি। ভাবাদর্শে অনুপ্রাণিত হরে যে এনের অধিকাংশই বুদ্ধে গিরেছিল সে বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই। সৈনিক জীবনে 'Stamina' এবং 'Tenacity' বলে যে ছুট গুণ বাক্ষবার কথা, এই সব শিক্ষিত বাঙালী বুবকের মধ্যে ভার বিশেষ অভাব ছিল।
- ৮। বাঙালী ছেলেরা ভারতীয় পদ ও বেতন (Indian Rank Pay) সহতে মোটেই সভঃ ছিল না। কারপ ভারতীয় ও ব্রিটপ অভিসার এবং সাধারণ সৈনিকের বেতনে আকাশ-পাতাল প্রভেদ। বাঙালী সৈনিকেরা প্রথম দিকে মাসিক এগার টাকা বেতন পেত। এই এগার টাকার খাওয়ার বরচ চালাতে হ'ত। পরে অবস্থ বাই-বরচা সরকার বেকে পাওয়া যেত। আজীরদের মধ্যে অনেকে মনিম্বর্ভার যোগে ব্যারাকে ছেলেদের টাকা পাঠাতেন।
- ১। একট পণ্টনে সাধারণ সিপাহী হিসাবে ভঙি হলে,
  সেই পণ্টনের প্রত্যেক সিপাহী যে অকিসার পদে উরীত হবে
  এমন হতে পারে না। রংকট থেকে সিপাহী পদ লাভ করতে
  হলে প্রার ছ-বংসর সামরিক শিকার প্ররোজন। সিপাহী
  থেকে লাভিনারক, নামক, হাবিলদার, হাবিলদার-মেকর,
  অমাধার, স্বেদার এবং স্বেদার-মেকর পদলাভ করতে হলে
  লামরিক বিভার বিশেষ দক্ষতার প্রয়োজন এবং তা সমরসাপেক। গভ ছই মহারুহে শিক্ষিত বাঙালী মুবকেরা সাধারণ
  সৈনিক হিসাবে পণ্টনে ভঙ্তি হ্বার দক্ষন কল এই ইাছিয়েছিল
  বে, একজন বি-এ, একজন আই-এ, এক জন ম্যানী হুলেট, এক
  সন স্বলে চতুর্ব প্রেমী পর্যান্ত পঢ়া, এক জন সামান্য বাংলা
  লোখা-পঢ়া ভানা, আর এক জন আকাট বুর্ব একই সলে ভঙ্তি
  বিরে একই ব্রবের নামরিক শিকা লাভ করল। সামরিক

निका चटक नदीकात ममत्र तिना (त, त्व इंकन माज বাংলা লিবতে পছতে পাৱে ও চতুর শ্রেণী পর্যায় পছেছে ভারা পাস করে বেরিয়ে এল। সৈষ্টদলে বাক্তে হলে বে श्वनश्रीन बाका निकास प्रवकात, यबा---(पर्वत प्रवेन, पक्नि, ছৰুষ মানা ও দেওৱা, খলিছোড়া এবং প্রিচালনা করবার क्या . (मध्मि अरम्ब दिन वरमरे अ ध्र'ननरक फेक-পদে উহাত করা হ'ল। আর তিন ধন পাস করা নিভাত 'ভাল মাতুষ' পিছনে পড়ে রইল, ভারা সাধারণ সিপাহী स्टाइ बहेल। अहेबाटमहे भन्देश्य मत्या अकृता सम्माध्यव ভাব দেবা দিল। পাস করা শিক্ষিত ব্যক্তি উচ্চপদ পেল না, পেল কিনা ঐ ছ'কন মুর্ব ? শিক্ষিত মুবকদের মধ্যে বিরাট্ अक्डी युष्यञ्च हलन। युश्यक्ट युष्क, श्रीन, त्रिष्ठनशत्र, মেসিন-গানের অভাব নেই। এই সব অরশগ্র সকল সময় रेनिकरप्रव निकटिश पाक्छ। अपूर्व स्थरभागटिमिश्रात सूत्र-(करा अक्षेत्र आर्थायक क्यारान अक विन अकार शाद्य अक वन উচ্চৰংশীয় শিক্ষিত মুবক তিন জন মুখ্য বাঙাগী আফ্সাএকে গুলি করে--কলে এক ধন আফদার তংক্ষাৎ মারা যান, আর ছ'লন ভীষণ ভাবে আহত হন। সাম্বিক বিচারে হত্যা-काबीटबर बरवा क्र'बरभन्न जाबावन करवजीत श्राव कालि स्टब्स-ছিল, আর এক জনকে পন্টন বেকে বিভাগিত কর; হয়। এইবান বেকেই বাঙালী পণ্টনের অবন্তি আরম্ভ হয়। हेरदबन्ध अहे ब्रक्म किष्टू अकहे। हिट्सिम्म । वाडामी भन्देसब बरे कनएका कारिनी बर्चन्छ त्वाव एवं भिन्नी बदर नहरून जमब-ষ্ট্রের ন্থিপত্রে দেবতে পাওয়া যাবে। তর দক্ষন ভরনকার বাংলাদেশের নেভাদের এবং বেসরকারী সৈভসংগ্রহ প্রভিটান-খলির কশ্বকর্তাদের মাধা কতবানি নিচু হয়েছিল তা ভাষার बकाम कथा यात्र ना। अक मिन मक मक नवनावी सारका (हेम्त वाढाली (क्रालाव विशाय-वाजनमन यूर्व भाक्रियंवित्मन। यूर्वत (मास वाटानी रेमनिरकदा वारमाश्व मेनदवल किरव अम । वाक्षामी रेमनिरकता त्रापन বাংলার রাভায় রাভায় অবের সভালে ছবে বেছিয়েছ। वारमात (नणाता ज्यन अक्वावश्र णादमत मिटक निद्व णाकान नि ।

(১০) ১৯১৪ সালের বুরে বাঙালী অভিসার হাড়া সাধারণ সৈনিকেরা যা বেতন পেত তাতে পণ্টনে কাঞ্চ ক'রে শিক্ষত সম্প্রদারের সাধারণ সৈনিকের পক্ষে সংসার চাগান অসম্ভব হিল। সাধারণ সৈনিক থেকে অতি অন্ধ দিনের মধ্যে অভিসার পদে উরীত হবে তারও ভরসা হিল ক্ষ। ভারতীর অভাত পণ্টনের মধ্যে দেখা গেছে যে, সাধারণ সৈনিকেরা সৈতদলে কাঞ্চ করে নিজেদের সংসার বেশ ভাল ভাবে চালিরে বাচ্ছে। চাহুরি শেবে যথে বদে বানুসনও ভোগ করছে। এবনও দেখা গেছে পণ্টনে কাঞ্চ করে সারাটা

জীবন কাটৰে দিৰেছে, কিন্ত যুঙ্কের মুখ কোন দিন দেখতে পার নি।

বাঙালী হেলেদের মধ্যে অনেকের এই বারণা হয়েছিল ্ যে তাদেরও বৃথি এই ভাবে পণ্টনে জীবন কার্টাতে হবে । এটাও একটা কারণ বার জভে পণ্টনে ছেলেরা ভাল করে ভাল করে নি ।

(১১) সৈত্বাহিনীতে আঞ্চাহ্বর্মিতা নিতান্ত দরকার। সৈনিকদের সর্বক্ষেত্রে নিজেদের বিচারবৃদ্ধি প্ররোগ করলে চলে না। বাঙালী পণ্টনের ছেলেদের মধ্যে আঞ্চাহ্বর্মিতার অভাব অভ্যন্ত বেশা ছিল।

এক সময় পুর্বিস্থানে ভীষণ বিজ্ঞোত্ দেবা দেয়। পুর্বিদেয় দমন করবার জভ মেসোপটেমিয়া বেকে বুর্ভিছানে একট বুর্ছি 'এলপিডিপনারি কোস<sup>্প</sup> পাঠানে। হর। ব্রিট্টশ, ভর্বা, পঞ্চাবী ब्बर वांक्षांमी रेमक्रमम निरम बहे वाहिनी मठिए स्टब्सिम। बारे पमश्राम प्राप्त वृद्धिशानाक छेखत, प्रक्रिय, श्राप्त शास्त्र চারদিক থেকে খিরে কেলে বিলোখীদের দমন করার প্রবস্ত হরেছিল। এই অবস্থার এক সমর বুর্ছিয়ানে কোন একট ভারগার সমন্ত পণ্টনের সৈনিক দল একসভে মিলিত হর। বাঙালী সৈন্যদল শেষের দিকে ঐ দলগুলির সলে যোগ দের। সেখানে পৌছেই ভারা দেখল গুর্বা সৈনিকেরা পাশের একট বৃদ্ধি প্রামের উপর মেসিন-গান চালিরে প্রামটকে পুড়িরে দিরেছে! প্রামের ব্বক-ব্বভীরা বোড়ায় চড়ে আরে বেকেই পাহাছে পালিয়ে গেছে। ভন্মীভূত গ্রামের অবশিষ্ট ৰুভোৰুড়ী ও ছোট ছোট ছেলেমেরেরা হাঁটু গেড়ে বসে ছ'হাতে বুক চাপড়াচেছ ও কাদছে। বাঙালী সৈনিকেরা দল্ধ এামের শোচনীয় অবস্থা এবং বুড়োবুড়ী ও বাচ্চাদের কালা দেখে গুৰ্বা সৈনিকদের গুপর ভীষণ চটে গিয়ে বলতে লাগল কি অন্যায় ৷ পরীবদের গ্রাম পুড়িয়ে নিরীহ বুড়োৰুড়ী ও হোটদের উপর এ কি রকম অত্যাচার ? বাঙালী ছেলেখের মধ্যে বেশ একটা উডেখনা ও বিশ্রোহের ভাব দেবা পেল। গুৰা সৈনিকদের এই অমাকৃষিক কাৰ্ব্যের প্রতিবাদ জানাতে মধ্য করে কয়েক জন বাঙালী সৈনিক কমাঙিং অফিসারের নিকট অগ্রসত্র হ'ল। অবস্থ শেষ পর্যান্ত কয়েক ক্ষম বাঙালী অফিসার এদের অনেক কটে শান্ত করলেন।

সৈচবাহিনীতে এই রক্ষ আচরণ সৈনিকের ধর্ম নর। সৈনিকের এক্ষাত্র ধর্ম হচ্ছে—"বহুষ মানা, তোপ্যাগানা, বাত না বোল্না"—আদেশ পালন কর, গুলি হোঁতো, ক্বা বলো না। সৈচবাহিনীতে ভার-অভার বিচারের ভার সৈচ-দলের প্রধান সেনাপতির উপর।

(১৭) সৈচবাহিনীতে উচ্চবংশ-নীচবংশ, শিক্ষিত-অশিক্ষিত, ধনী-দরিত্র ইত্যাদির কোন প্রভেদ নেই, নান-অভিনানের পালা বেই। একসকে উঠে-বলে কাক করতে হয়। বাঙালী পঠনে বেশা গেছে উচ্চবংশীয়, ৰনী, শিক্ষিত সাবারণ সৈদিকেরা নির সম্মানায়ের এবং বৃষ্ঠ দরিজ সাবারণ সৈদিক্ষের সঙ্গে বেলা-বেশা করতে দ্বণা বোৰ করত।

- (১৩) মধ্যবিভ পরিবারের শিক্ষিত বাঙালী ছেলের। সাধারণ সৈনিক হিসাবে রেগুলার আমির পক্ষে মোটেই উপরুক্ত নর। এর। অবঙ বুব চালাক-চতুর এবং অল্পনের মধ্যেই সামরিক শিক্ষা আয়তে আনতে পারে। শাভি ও রুরের সমর শহর এবং শহরতলীতে 'Garrison duty', 'Ceremonial parade' প্রভৃতি অহারী কাজ ধুব প্রশংসার সহিত করতে পারে। উত্তেজনার বশে হাসিমুখে প্রাণও দিতে পারে। দেশে হারী বা অহারী পণ্টন গঠনের সমর হাজার হাজার ছেলে তর্তি হতেও পারে, কিছ এরা অল্পনিনর মধ্যেই পণ্টন বেকে সরে যাবে।
- (১৪) এই সব শিক্ষিত যুবককে স্থায়ীতাবে পণ্টনে রাধলে অনেক সময় নেতাদের মধ্যে দলাদলি ও রাক্টনতিক মতবাদ ইত্যাদির চাপে দেশের মধ্যে বিজ্ঞোক ক্বায় স্থাবনা দেখা দেবে এবং রাষ্ট্রের পক্ষে বিপক্ষনক অবস্থার স্থাই ক্রবে। রাক্টনতিক বিষয় নিরে সৈনিকের মাধা–বামানো মোটেই উচিত ময়।
- (১৫) শিক্ষিত ব্ৰক্ষের মধ্য থেকে উপবৃক্ত লোক বেছে
  নিয়ে কমিশন্ত অকিসার পদে নিযুক্ত করা যেতে পারে। তা
  হাড়া মেকানাইক্ত আর্মির অভ যথেইসংখ্যক শিক্ষিত
  ব্ৰক্ষের প্ররোজন। পদ ও বেতনের দিক থেকেও অসম্ভব্নীর
  কোন কারণ থাকবে না। শিক্ষিত অর্থনিক্তিত সকল শ্রেনীর
  লোকেদের টেরিটোরিয়াল কোসে নিযুক্ত করে সামরিক
  শিক্ষা দিয়ে তবিষ্ণং ব্রের কন্য প্রস্তুত রাথা দরকার।
- (ফ্) বাংলা গবর্ণমেন্ট এবং ছোট-বছ ব্যবসায়-প্রতিষ্ঠানের কর্মচারী, ২০-৪৫ বংসরের শিক্ষিত ভদ্রলোকদের বাংলা টেরিটোরিয়াল কোসে নির্ভু করা বাছনীয়। চাকুরীই যাদের সংসার প্রতিপালনের একমাত্র সহল তারাই হবে টেরিটোরিয়াল কোসের উপর্কু সৈনিক। কারণ এক দিকে সংসারের চান, অপর দিকে চাকুরির মায়া—এই ছই দিকের টানে বাইরের কোন ব্যাপার সহকে এদের বিভান্থ করতে পারবে না।

কংগ্রেস, ক্যুনিই পার্ট, করওরার্ড রক, সোস্যালিই পার্ট, প্রভৃতি বিভিন্ন রাজনৈতিক দলের ফ্রীড়াক্ষেত্র এই বাংলাদেশ। তা হাড়া এই সব দলের সভ্যদের মধ্যে নামা যুনির নামা মড, শভকরা আমি কম নেতা কৃত্তি কম কর্মী—ভাওতে ওভাল— গড়তে ভাকিক। এই সব মানা প্রতিকৃলভার ভিতর বিরে বাংলাদেশে সৈন্যদল গঠন করা বড় সোজা কথা মহ। এই সব কারবে বাংলাদেশে টেরিটোরিরাল কোর্স গঠন করতে হলে প্রথমেই গ্রপ্রেউক্টে শভিশালী করা প্রয়োজন। গ্রপ্ বেউকে শক্তিশালী করতে হলে দেশের ব্যবসার প্রতিঠান সন্থের উচিত প্রথমেন্টের সহবোগিতা করা—ব্যবসার-প্রতি-ঠানকে রক্ষা করতে হলে দেশে চাই ববেও সামরিক শিক্ষার শিক্ষিত সৈনিক, আর সামরিক শিক্ষার শিক্ষিত সৈনিক গতে ভূলতে হলে উপরোক্ত পরিক্ষানা গ্রহণ করা আবশ্যক।

- (খ) প্ৰণ্মেণ্ট এবং বাংলাদেশের প্রত্যেক ব্যবসারপ্রতিষ্ঠানের কর্ম্বচারীদের মধ্যে বাছাই করে সামরিক শিক্ষার
  ক্ষা মাসে ছদিন অবাং বংসরে চকিশ দিন বেভনসহ
  ছুটীর ব্যবহা করতে হবে। এই কোর্সের মেরাদ হওরা
  উচিত পাচ বংসর।
- (গ) আপিসের বভবাবু, ছোটবাবু এবং সাধারণ কেরানী একসকে সামরিক শিক্ষা লাভ করবে। দেশের কাবে এবানে মান-অপথান সব ভূলে যেতে হবে। এই সব ভন্ন-लाटकब निकाब क्या द्वश्यांत कार्यित क्यिनम्ड अवर नन-क्षिणम्ख अकिशांबद्यव यदा ८९८क Instructor বা শিক্ষক নিযুক্ত থাকবেন। বিলিভি পণ্টনের অবসরপ্রাপ্ত बूटना कर्पन, समझ, क्रांक्षिन अवर महकाती (वमहकाती আপিদের বছকর্তারা রেগুলার আমির সাধারণ এক জন সার্ভেক ইন্ট্রাকটারের অধীনে সামরিক শিক্ষালাভ করতে मका त्वांव करत्व ना । यांचे वरमदात अक कन कर्नम প্যাবেতের সময় 'এটেনশ্যন' অবস্থার ছাতের আঙল একট म्बार्स करन करने जारक के जीरकांत करने के केन-- "Sir, ato) moving your b'oody finger"। कर्नन जरकनीर তীর খাদেশ পালন করলেন। এই রক্ষ খাদেশ খনলে আমাদের দেশের আপিসের বড়বাবুর রক্ত হয়ত মাধার চড়ে केंद्रव ।
- (খ) এই অভিরিক্ত দৈন্যবলের সামরিক শিক্ষার ব্যয়ভার ঘহন করবার জন্য এলেশের ছোট-বড় ব্যবসার-প্রতিঠান-সমূহের বাংসরিক লভ্যাংশের উপর শভকরা এক টাকা ছারে কর ধার্যা করে "ভারতীর জাতীর সমরশিক্ষা ভাঙার" প্রতিঠা করা কর্তব্য।
- (১৬) ১৯১৮ সালে মেসোপটেমিয়ার "কুট-এল্-আমারা" নামক ছামে বিটেশ এবং ভারতীর জ-বাঙালী জফিসার হারা একট বিরাট সামরিক যেভিক্যাল বোর্ড গঠন করে ৪৯তম বেললী রেজিমেন্টের সিপাহীদের physical examination যা হাছ্য পরীক্ষা করবার ব্যবহা হরেছিল। এই পরীক্ষা নির্দ্দিশিত ভাবে হয়েছিল:—
- (क) প্রত্যেক সৈনিককে পুরো ইউনিকর্শ্বে এবং সৈনিকের 'কিট' বথা—থাকি খাপ্গাক, কোট, ছাট, নোলা, বুট, শট, বন্দুক, সদীন, থনিকর্তি ব্যাভোলিয়ায়, ক্লক্তি ওয়াটায় ব্টল, নালা ভিনিবে ভর্তি ছাভায়সাক, ছোট একটা কোলাল খবং শিঠে একটা বোটা ক্ষল ব্যব্ধ ক্ষতে হবে।

(4) क्य कि अनव बारेन क्रिक बरन अक्टर ना, कें हुनीह काशना विदय क्षेत्रक वा शांका निदय शांक क्यांक स्टब्सिन। হাভার মধ্যে মার্ক করবার সময় কল পান করবার ভরুম ছিল লা। বেকিবেক্টের এ বি সি ভি এই চারট কোম্পানীকেই (কোন্দানীর সিপাধী থেকে হুবেদার মেকরকে পর্যায়) পরীকার বোগ দিতে হয়েছিল। বিটল অকিনাররা व्यवक्र (बाज़ांत्र ठएक शबीका विद्यविद्यान । यांदा व्यवह অথবা ক্যাম্পে ডিউটতে থিল তাদের পরীকার যোগদান করতে হয়নি। মেভিক্যাল বোর্ডের প্রধান কর্গা বঞ্চি एएए मार्क क्वराव हरूम शिलन। अरक अरक्ट मार्क স্থক হ'ল। সকালের দিকে এই পরীকা হয়েছিল। চারট কে। পানী পর পর মার্চ করে চলেছে। মাধার উপর প্রচৰ রোদ। ঘণ্টার পর ঘণ্টা মার্চ্চ করে ক্যাম্পের দিকে ফিরে আসবার সময় দেখা গেল রাভার মব্যে ছেলেদের 'fall out' আরভ হয়েছে। সে.একটা বিত্রী ব্যাপার। টপাটপ লাইন (बटक दिवरम् अटम ह्मला दोखांत म्'नात्म खरम नम्हा ভারতীয় ও ব্রিট্টশ অফিসাররা ছেলেদের উৎসাহ দেবার অভ **ठी**९काइ कदाइन। এक माठेन (बाक बन माठेटन भोशामिक क्रद्राह्म, किन्नु क्रिक क्रोब क्या भारत- अर्थक रहरमब ब्र्य मिरब क्या (वक्राव्ह. (क्षेत्रां क्या बाह्यः चाराव्हे वसूक **ह**ँए কেলে দিয়েছে, পিঠ বেকে ক্ষল সরিয়ে কেলেছে---আবার কেউ কেউ বা নিজেদের বুক ও পেট চেপে বরে রাভার বলে পড়ছে আর বলছে "সার আর পারছি না"। ष्ट्र'बाटब मरम परम रहाला नव खटब. वरम शांभारक। ক্যান্তে এসে বৰ্ণ আমাদের মাৰ্চ শেষ হ'ল, তথ্য प्रची त्रेम भेकेंदिन व श्री व वर्षक मर्श्वा (ब्राम 'fall out' করেছে। ছঃখে, রাগে ও অপমানে সমস্ত শরীরে আমার ভালা ৰৱে গিয়েছিল এটক বেশ মনে পড়ে। যারা ক্যাম্পে এসে পৌছাতে পেরেছিল ডাঞার সাহেবেরা ভাদের পুমরার মাঞ্চী-পরীকা করেছিলেন।

এই মেডিকাল বোর্ডের রিপোর্ট লওনে ও ভারতে কি ভাবে গিরেছিল তা ভানা বার নি, তবে বাঙালী পণ্টনের অফিসার ক্যাভিডের একধানা চিট্ট পড়লেই ক্তক্টা অস্থান করা বেতে পারে। পঞ্জানির কির্দংশ এই—

"When it comes, however, to furthering appeals for the formation of further Bengalee Regiments, I consider that the Association is going beyond its province, and I certainly would not allow my name to be associated in any way with such a movement.

Moreover you and all the old soldiers of The 49th Bengalis must be well aware that the Battalion was not a success in Mesopotamia, and that I personally expressed my opinion quite clearly that the Bengali was not good material for front line soldiering.

Those of you, and you yourself are possibly one of them, who were present at the physical examination of the Battalion by a Board of Officers assembled for the purpose at Kut in 1918, must know quite well how adverse the report of that Board was, and how lamentably the Battalion failed to pass the very easy test provided."

- (গ) ইংরেজের এই মেডিকাল বোর্ড বসামোর একমাত্র উচ্ছে ছিল বাঙালীদের সৈঙবাহিনী থেকে স্থিয়ে নেওয়া। —কাল কুরালে পালী।
- (খ) বাঙালী শিক্ষিত সৈনিকেরাও দেশে ভিরে আসবার এই একটা মন্তবড় সুযোগ পেরেছিল। আমি জানি বছ ছেলে ইচ্ছে করে এই পরীকার 'fall out' হরেছিল। কেমন করে 'fall out'-এর অভিনয় করেছিল তাই ব'লে অনেক ছেলেকে বাছাছরি নিতে দেখা গেছে। শিক্ষিত বাঙালী সৈনিকেরা বুৰতে পারলে না, বাংলাদেশকে তারা সেই সময় ছনিয়ার লোকের চক্ষে কতটা হের করে তুলেছিল। বাঙালী নেতারা এই সব শিক্ষিত মধাবিভ পরিবারের বাঙালী ছেলেকে যুদ্ধে পাঠিয়েছিলেন যুদ্ধ শেষ হলে ইংরেক ভারতবার্যারের বাছলাগন থেবে এই ভরসায়।
- (১৭) বাংলাদেশের নেতারা, বেদরকারী প্রতিষ্ঠানগুলির কর্মকভারা, কলিকাতা এবং বাংলার কেলা-শহরগুলিতে গণ্ডা করে এবং ববরের কাগকে প্রচার করে বনীদ্বিজ্ঞ, শিক্ষিত অর্জশিক্ষিত, মূর্ব, রাহ্মণ, কায়য়, বৈগ্ল, বৈগ্ল,
  শ্রু, বোপা, নাগিত, মূসলমান, এইান, মূল-কলেক্সের ছাঞ্জ,
  বিয়েটারওয়ালা, যাত্রাওয়ালা, মুদি, কেরানী, উক্লি, কমিদার
  এবং ক্সমক ইত্যাদি সকল প্রেমীর প্রাথীকেই সৈন্দদে ভর্তি
  করতে আরম্ভ করলেন। দলে দলে ছেলেরা কলিকাতায় এসে
  রংক্ষট আপিসে ভর্তি হতে লাগল। উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশে
  নোশেরা এবং করাচী ব্যারাকে সামরিক শিকালাভ করে
  রুজ্ঞে গেল। বাংলার নেতারা বাঙালী মূরকদের সেই সময়
  নানা রক্ষ প্রলোভন দেখিরে পন্টনে ভর্তি করেছিলেন, কিছ
  বাঙালী পন্টন ভেলে দেখার পর বহু বাঙালী শিক্ষিত মূরকের
  ভবিশ্লং জীবন নই হয়ে গিরেছিল।
- (১৮) লোকের কাছে বাহবা পাবার আশার অথবা বুছের সমর একটা উত্তেশনার বলে এই তাবে সৈত সংগ্রহপূর্কাক একট সৈত্তল গঠন ক'রে—পরে তেভে দেওরা হবে এ বরণের পরিকলনা বর্তমান লেখকের নয়। বাংলাদেশে যাতে হারী সৈত সংগ্রহ, সৈত্তলল গঠন, সামরিক শিক্ষা প্রবর্তন এবং সৈনিক বংশ প্রতিষ্ঠার ব্যবস্থা হয়—এই আমার এক্ষান্ত উত্তেশ্ন

- ১৯। খারী বাঙালী ন্যাটেলিয়ন গঠন করতে হলে
  নিয়লিখিত ব্রণের বংফট-নীতি অবল্যন করা একাত প্রবাদন :---
- (क) "বাস-বিচালির" দেশেই আমানের বেতে হবে।
  নমঃশ্রু, রাজ্বংকী, বাগ্দী, সাঁওতাল, মাহিন্ত, মুসলমান প্রভৃতি
  চাষীসম্প্রদায় থেকে সৈত সংগ্রহ করতে হবে। এই সব
  সম্প্রদারের লোকেদের মধ্যে সৈনিক হবার গুণ যথেষ্ঠ আছে।
  দেহে শক্তি আছে, রোদ, জল, বড় সহ করে কাল করবার
  ক্ষতাও এরা রাখে। এরাই হবে প্রকৃত আলাহ্রবর্তী। এরা
  সাবারণতঃ গরীব ও মূর্ব। এরা উত্তেলনাপ্রবন নয়। ভারতীর
  পণ্টনের সৈনিকের বেতনেই এরা সন্তই বাক্তবে। জীবিকার
  উপায় হিসাবে সহল সৈনিক-জীবন গ্রহণ করতে এরাই
  সম্পূর্ণ উপযুক্ত। ভারতের অভান্ত প্রদেশের সৈনিক বংশের
  ভার ভবিষ্যতে বাংলাদেশে এই সব সম্প্রদায় গৈনিক বংশে
- (খ) "বেদল হাইল্যাঙাদ" বলে হর্দান্ত সৈচদল গঠন করতে আমাদের বেশী দূর যেতে হবে না। বাংলার অধীনে পার্বাতা-অঞ্চলের অধিবাসী—গুর্থা, কোচ, কোল, ভীল প্রস্তৃত সম্প্রদায়ের মধ্য থেকে সৈত্ত সংগ্রহ করা যেতে পারে।
- (গ) আর একট সম্প্রদার থেকে সৈন্তদল গঠন করা যেতে পারে। বাংলার ও বাংলার বাইরে বছ আশ্রম আছে— সেবানে বিভিন্ন কারণে সমারু পরিত্যক্ত বছ বাঙালী শিষ্ত-সভান প্রতিপালিত হয়। এই সব শিশুসভানকে মানুষ করে, সৈন্তদলে ভতি করে রাষ্ট্রের এবং সমারের উরতিসাধন করা দরকার। এদের কন্ত বাংলাদেশে একট আলাদা 'কলোনি' বা আবাসভূমি স্থাপন করে শিশুদানের ব্যবদ্বা করলে ভবিষ্যতে এদেরই বংশ সৈনিক—বংশ বলে গণ্য হতে পারবে। বাংলার বাঙালীর আশ্রম ছাণ্য অভান্ত আতির বহু অনাথাশ্রম আছে। এই সব প্রতিষ্ঠানের শিশু-সভানদের সৈঞ্চলে ভভিকরে এদের ক্রীবনের মান উর্গত ক্রতে হবে।
- (২০) ইতিয়ান ভোষিনিয়নের সমর-দপ্তরের নির্দেশ অন্থসারে পশ্চিম বাংলার পর্বনেউকেই বাঙালী পন্টনের সৈচ্চসংগ্রহের ভার গ্রহণ করতে হবে। বাংলাদেশে প্রত্যেক কেলায় কেলায় য়ালিট্রেট, ছানীর কয়েকলন অমিলার, বনী ব্যবসামী এবং (তিন অথবা চারটি মিলত কেলার অত) এক অন সামরিক কমিশন্ত অকিসারকে নিয়ে ভিট্লিট রিজ্টিং কমিটি গঠন করা আবন্ধক। এই ক্ষিটির নির্দেশ অত্পারে কেলার ভৌগোলিক অবস্থান এবং প্রামের লোকসংখ্যা অন্থসারে বেটারেটি প্রাম একজিত করে, প্রামের মোটলদের নিয়ে এক একটি "Village Recruiting Committee" বা প্রাম রং-কট ক্ষিট গঠন করতে হবে। প্রত্যেক প্রামেই এক অন করে লোকল বা বাভকরে-বাকে, বার করা লাবার্যন

চাৰীরা বেশে চলে। এই সব মোড়লই হবে এটা বংরট ক্ষিটির দক্ষিণ হক্ত-সরুপ।

খাৰীন দেশের সৈচবাহিনীতে চানী-সৈনিকের ছান কোথার, এবং চানীর জীবিকা অর্জনের পক্ষে সহস্ক সৈনিক-রীবন কিরূপ সহারক—প্রামের মোচলদের সে সম্বন্ধ আপে শিক্ষাদান করা নিভান্ত দরকার। প্রামের মোচলরাই কৃষকদের বৃধিয়ে পুরিষ্কে সৈচ্ছলে তণ্ডি করবে।

বাংলাদেশে সৈলসংগ্রহের এই ব্যবস্থা ততদিন চাপ্
বিতে হবে, যতদিন না বাংলার একটি "সামত্রিক শিক্ষার
টিনি" স্থাপন, সৈপসংগ্রহ, স্থায়ী একটি বাাটেলিয়ন গঠন
সৈনিকদের শিক্ষা সম্পূর্ণ হয় এবং চাধী-সম্প্রদায় জীবিকা
কিন হিদাবে সহজ দৈনিক-জীবন গ্রহণের তাংপর্যা হ্রদর্তম
বতে পারে।

(২১) প্রামে কোন পরিবারে ছ'লন যুবক থাকলে তাদের থা এক জনকে সৈভদলে ভর্তি করে আর এক জনকে রাথতে বৈ ক্ষেত্রের কাল করবার কছ। চার জন থাকলে ছ'লনকে ভীতে রেথে ছ'লনকে সৈভদলে নিতে ছবে। এমন ভাবে থীদের ভিতর থেকে সৈভ সংগ্রহ করতে হবে যাতে দেশের ফক'র্ষোর কোনরূপ ক্ষতি না হয়। এই সব কাল ধীরে ধীরে । দরকার। হঠাং যদি বভাচ্ছা পড়ে এক দল সৈনিক দটোল বাজিরে প্রামের মধ্যে উপস্থিত হয় এবং সৈভ-গ্রহের জন্ধ বক্তৃতা দিতে আরম্ভ করে ভো ফল উন্টো ত পারে।

গৈছদলে ভর্ত্তি হলে মাসিক বেতন, প্রত্যেক মাসে ীতে টাকা পাঠাবার ব্যবস্থা, বাংসরিক চুট, কার্যা-ষ পেন্সনপ্রাপ্তি, সরকারী ব্যয়ে খাওয়া-থাকা, পোশাক-চ্ছদ, বাসস্থান, ভাক্তার, ঔষ্ধপত্র, ধোপা, নাপিত, ভে যাভারাভের বরচ প্রভৃতি প্রয়োজনীয় বিষয় কৃষক-म्महे छाटव वृबाटक एटव। धहे दरकृष्टिव छेरमाह-করবার ভত ভাষামাণ সিনেমা বা চলচ্চিত্রের ব্যবস্থা করা ার। প্রাম রংকট ক্ষিটির মোভল-সভাদের মাসিক টাকা দেবার বাবস্থা করাও উচিত। প্রামের যে যোড়ল তাল কাম করতে পারবে তাকে একটা লাভল, এক া বলদ দিয়ে পুরস্কৃত করা উচিত। এর কলে প্রত্যেক व औरम मिएनएम्ब मर्या विस्मय छेश्मांच एवं। यादः। কান একট কেলা থেকে ছ'ল ক্লয়ক সৈভদলে ভৰ্তি হবার अम, चन्नि अटक्स निरम क्षिटन क्षेत्रांद्य क्रिक्ट देव के क्रिक्ट া কলিকাতা, ব্যারাকপুর অথবা বাংলার বাইত্রে কোন হরে সামরিক শিক্ষার বন্ধ পাঠানো মোটেই যুক্তিসকত

 ক) এরা আম প্রেকে ফলিফাতা পৌছবার পর ডাঞারী ার বেবা সেল মাল ১০০ শত ফল উপর্ঞ বিবেচিত ই।

কারণ :---

- (ব) বে ১০০ শত জন 'unfit' বা জবোগ্য বিবেচিত হ'ল, তাদের প্রায়ে কিয়ে যাবার বন্দোবত করতে হবে, এতে গবর্থ-মেন্টের যথেই আধিক ক্তি এবং সময় নই হবে।
- (গ) যারা পণ্টমে রইল তাদের মানসিক অবস্থা অত্যন্ত খারাপ হয়ে উঠবে যখন দেখবে যে সলীরা প্রামে ফিরে যাছে।
- (খ) এই সৰ রংফুট সৈত শহরে রাখলে ছুট লোকেরা এদের ক'নে নানা রক্ষ কুমন্ত্রণা দিয়ে সৈওদল থেকে স'রয়ে নেবার চেটা করবুর।
- (৪) প্রাযের রংকট ক্ষিটির আপিসে এই সকল রংভ ফুটের হেডিকালে এগভামিনেশনের বাবস্থা ছওয়া দলকার।
- (ছ) বাংলাদেশের মবো শহর বেকে দূরে প্রাথমর নিকটে একটা 'Traning camp' বা শিক্ষাকেন্দ্র ছাপন করে এই সব রংকটের শিক্ষার ব্যবস্থা করা উচিত।
- (২২) এই সব রংকটের বাদ ছ'বেলা ভাত, ডাল এবং ভর-কারী—মাধে মাধে কটি, মাছমাংস, এবং চিঁছে শুভ ইত্যাদি কলশাবারের ব্যবস্থা করতে হবে। ছ'বেলা চাধীরা যাতে পেট ভরে খেতে পারে ভার দিকে বিশেষ দৃষ্টি রাণা দরকার।

টিনের ছব, কল, চা, চিনি, পাঁউকটি, বিষ্ট, মাধন, বাধ-গোণ, সিগাবেট, গখলেল, বাবুমোকা, চট, টুবণেই, পাউভার, টাওয়েল প্রস্তুতি এই সব রংকটকে যেন দেওয়া না হয়।

যদি কোন প্রতিষ্ঠান এই পণ্টনের সৈনিকদের কিছু দিতে চায় তা হলে নিম্নলিখিত কিনিষগুলি দিতে পারে :— নোটা ধুতি, যোটা গেঞ্জি, গামছা, কাণ্ড কাচা সাবান, গারে ও মাধার মাধবার সরিষার তেল, বিভি, দেশলাই ইত্যাদি। নানা রক্ম দেশী শাক্সজীর বীক এবং চারা কলম ইত্যাদি দিলে আরও ভাল হয়। এই সব কিনিষ তাদের গ্রামে পার্টিরে তারা চাষের উভতি করতে পারে। এতে একটা ধুব ভাল কল পাওয়া যাবে — সমন্ত চাষীর মব্যেই সৈঞ্চলকে ভারি হ্বার বিশেষ উৎসাহ দেখা যাবে।

(২৩) পশ্চিম বাংলার প্রভ্যেক জেলা থেকে নিম্নলিখিত সংখ্যক লোক সংগ্রহ করে একটি বাঙালী পশ্চন গঠন করা বেভে পারে।

	<b>ভেলা</b>	• दर-क्षि जरबा
<b>5</b> 1	মেদিনীপুর	200
۹ ۱	বাক্সা	60
9	*হাওড়া	<b>60</b>
8	<b>च</b> ननी	<b>to</b>
¢	<b>बीदक्</b> य	to
• 1	বৰ্জমান	700
11	যুশিদাবাদ	700 <u> </u>
1	নদীয়া	. , , , , o o
<b>≥</b> I	২৪ পরগণা	200

30 1	যালহহ		ŧ0
22.1	<b>দিবাকপুর</b>		¢0
186	<b>দল</b> পাই <b>গু</b> ড়ি		>00
701	<b>मार्क्सि</b> न १		700
		<b>যো</b> ট	2000

প্রভ্যেক কেলা বেকে নিদিষ্টদংখ্যক লোক সংগ্রহ করবার উদ্দেশ্য—

- (ক) সৈচবাহিনীতে প্রত্যেক কেলার অধিবাসীদের সমান অধিকার।
- (4) একট জেলা বেকে অধিকসংখ্যক লোক সংগ্ৰহ করলে উক্ত জেলায় চাষের ক্ষতি হতে পারে।
- ্প) কেলার মধ্যে গৈ#সংগ্রহের ব্যাপারে একটা কল্যাণকর প্রতিযোগিতার ভাব ভানরন করা।
- (খ) খেলা রংফুট ক্ষিট্টর সম্পর্গলির কাব্দ সহক্ষসাধ্য করে ভোলা।
- (६৪) क्षेत्र चरशांत्र अहे चन्नगरनाक तरक्रके गरक्षक कटत একট বাঙালী ব্যাটেলিয়ন গঠন করতে হবে। ইভিয়ান ভোমিনিরনের অভাভ প্রদেশের ছায়ী গৈভদলের ভায় এই ব্যাটেলিয়ানও রেগুলার আর্মিতে ছান গ্রহণ করবে। বেওলার আমির এই প্রথম বাঙালী পণ্টনকে গড়ে ভোলবার সময় পুৰ সাৰধানভাৱ প্ৰয়োজন হবে। রংশ্টলের বাইরের लाटकंत भरन्नम (बंटक पूट्य बांबाई वाश्नीय। এই भव রংকট বাতে সকল রকম স্থ-স্বিধা পায় সেদিকে বিশেষ দুটি রাখা উচিত। কারণ এই এক হাজার বাঙালী রংকটই হবে ভবিত্তং বাংলার রেগুলার আমির পণপ্রদর্শক। এই পণ্টেনর সৈনিকদের পুরো ছ'বংগর সামরিক শিকালাভের পর প্রথমে বাংলার ভিন্ন ভিন্ন ক্লোম, পরে ভারতের অভাভ वारण 'garrison duty' धरः जरक जरक जायविक শিক্ষার ব্রন্থ বিষ্কু পাকবে। এই সমরের মধ্যে বিভীয় বাঙালী-লৈভদল (রংফট–সংখ্যা বাভিয়ে ২০০০ করা উচিত) গ**টি**ত হয়ে সামরিক শিকা লাভ করবে। এই দ্বিতীর দলের চাতুরীর स्वाप एटन यांच अक नश्यत । अहे परमद रिमिटकदा दिश्मांद আৰির প্রথম দলের দৈনিক্দের মত সব স্থাোগ-সুবিধাই পাবে, কিন্তু পেন্সন পাবে না। এতে দেশে শিক্ষিত সৈনিকের मर्या (वर्ष्ण यांत्व अवर भवर्गस्वरकेत (भन्मत्वत होकां (वरह বাবে। এই দ্বিতীয় দলের কার্য্যকাল পূর্ব হলে তারা গুনরার প্রামে ক্রিরে বাবে---চাষবাসের কাক করবে। এমনি ভাবে এক এক বংগর অভর এক একট ঘল সামরিক শিক্ষা লাভ . করে প্রামে কিরে বাবে ।

এই ভাবে বাংলাদেশে সমন্ত প্রাহের ক্সম্বন্ধর সামরিক শিকার শিকিত করতে হবে এবং আর এক দিকে দেশের নাটর সম্পদকেও বাঁচিরে রাখতে হবে। তা হলে দেশে বত বড় বুছবিগ্ৰহই আহুড় না ডেন, বাংলার বাঙালী নৈছ-বাহিনীর অভাব হবে না।

বাংলাদেশের কৃষকেরা বংশগরন্পরায় যে আবহাওরার মধ্যে জীবন বাগন করে আসহে তাতেই তাদের আনক্ষ ও শান্তি। চাবের জমি ও প্রায় এবের স্থবহুংবের লীলানিক্তেন। জন্ম থেকে মৃত্যু পর্যান্ত প্রায়ে বাস করেই এরা জীবনটা কাটরে দিচ্ছে—বাইরের চানে এদের মন বড় টলে না।

चाक यकि क्ठीर अरमद आय (बरक वाहरत हिरम चाना रव छ। राम रिकामन अर्थरन अञ्चलिक्ष राज । योक्रिय योजा ছেছে আগা বাঙালী কৃষকদের পক্ষে বড় কৃষ্টিন। এইবড বাংলাদেশের মধ্যেই শহর ধেকে অনেক দূরে পদ্মী অঞ্চল স্বাস্থ্যকর স্থানে সাম্বিক শিক্ষাক্তের স্থাপন করা উচিভ—যাতে এই সব বংকট মাবে মাবে মুট নিয়ে প্রামে গিয়ে আশ্বীর-বন্ধনের মূব দেবে আসতে পারে। আশ্বীর-খলনেরাও এখানে এসে এদের সলে দেখাসাকাং করতে शादा। जा एल बाबीश्वविद्यालयभिज मनःकडे अरमन बरमक ক্মবে। চাষীর ক্রগত অভ্যাসকে বকায় রাধবার অভ শিক্ষাকেক্সের সন্নিকটে বেশ কিছু ক্ষমি রেখে চাষের কাষও এদের ছারা করানো যাবে। এদের মধ্যে ছারী বাঙালী ব্যাটেলিয়ন গড়ে ভুলতে পাবলে পুকল হবে এই বে, এদের পক্ষে পুরাতন ভাবহাওয়া বেকে ক্রমেই মৃতন আবহাওয়ার মধ্যে এগে পঞ্চায় ---প্রাম থেকে কেলা-শহরে---শহর থেকে রাধধানী কলিকাতা, দিল্লী এবং যুদক্ষেত্র যাওয়া সম্ভব হয়ে উঠবে।

সামরিক শিক্ষালাভের পর বোগ্যতা অন্থসারে ল্যাল-নারক বেকে অ্বেদার মেন্দর প্রভৃতি পদ এই সম্প্রদারের সৈত-দলের মধ্যে বেকে হওরা উচিত।

(২৫) ইংরেক আমলে সবচেরে বেশী ক্ষতি হরেছে বাংলাদেশের প্রামের। ইংরেক প্রামের দিকে একবারও তাকিরে
দেশে বি, বা সেগুলোর কোন রক্ষ উন্নতিসাধনের চেষ্টাও করে
নি, প্রামগুলোকে তারা শ্মণানে পরিণত করে চলে গেছে;
ক্ষণ এই প্রামই হচ্ছে বাঙালী কাতির মেরুদ্ধ। শক্তিশালী
সৈচ্চবাহিনী গঠন করতে হলে প্রথমেই প্রামের উন্নরন নিতাভ
দরকার। বাঙালী নেতাহের নির্নিধিত বিষয়গুলি সহলে
চলবে না। বাঙালী নেতাহের নির্নিধিত বিষয়গুলি সহলে
বিশেষ করে চিন্তা করে তদহরণ ব্যবস্থা করা একাভ
কর্ষব্য,—

- (**ক) পতিত ভ্**ষি **উ**হার।
- (ব) চাবের ক্ষির ক্ত যথেষ্ট পরিমাণে সার বোগানো।
- (१) भूक्त, बाल, विल ७ वरीत छन्नि जावन कना।
- (प) बाखापार्टिबरे ख्वावदा।
- (e) গৃহণালিজ পৃত্র ছাছ্যের উন্নতি সাধন করা।

- (ह) बारनविश छेटच्य करा।
- (स) 'Mobile Hospital' বা চলম্ব হাসপাতালের (মোটর বাস এবং নোকা সহযোগে) ব্যবস্থা।
  - (क) खाटब शार्रभामात मरका वाकाटना ।
- (২৬) আর একটা বিষয় সব সময় বাংলাদেশে নেতাদের
  মনে রাধা উচিত—সেটা হচ্ছে সৈভবাহিনীর বাদ্য-সঞ্চরব্যবস্থা। সৈভদলের বাভ এখন ভাবে সঞ্চয় করে রাধতে হবে
  বাতে অনিদিউকাল বুছ চললেও হালার হালার সৈনিকের
  বাভাতাব না বটে।
- (২৭) বাঙালী পণ্টনের সামরিক শিক্ষার ব্যবস্থা ও দারিত্ব ভারত ডেমিনিরনের হাতে থাকলেও বাংলার বাঙালীদের এরপ পুতন সৈচদল গঠনের কাকে এই সমর পশ্চিম বাংলার গবর্ণমেন্ট এবং নেতাদের সহযোগিতা মিতাভ দরকার। রেগুলার আর্মির কমিশন্ড এবং নন্কমিশন্ড (Instructor) অকিসারদের উপর এই প্রথম বাঙালী সৈত্ত-দলের শিক্ষার ভার দেওয়া উচিত। ভাষা ব্রিবের দেবার ভঙ্গ বাঙালী অকিসার দরকার হবে।
- (২৮) ছুচ্ছ রাজনৈতিক কারণে সৈচবাহিনীতে যাতে কোন বিল্লোহ না হয় তার হুচ্চ এক হাতির পণ্টনে হুচ্চ হাতির কমিশন্ড হুচ্চিসার রাধবার ব্যবহা করা উচিত। দেখা গেছে ভারতের বড় বড় হাউনিতে ভিন্ন ভিন্ন হাতের পণ্টন একসঙ্গে রাধবার ব্যবহা হাছে। ভার কারণ রাজপুত পণ্টন যদি বিল্লোহী হয়—ভর্মা পণ্টনকে দিরে দমন করা যার। শুর্মা পণ্টন বিল্লোহী হলে মারাঠা পণ্টন দিরে দমন করা যোৱা। শুর্মা পণ্টন বিল্লোহী হলে মারাঠা পণ্টন দিরে দমন করা যোৱা।
- (২৯) বাঙালী পণ্টন গঠনের সলে সলে "সামরিক মেডিক্যাল কোর"-ও গঠন কর। কর্ডব্য। ১৯ (গ)-বর্ণিভ অমাধাশ্রবের মেরেরা নাসের কালে উপযুক্ত হবে।
- (৩০) বাঙালী পণ্টনের সৈনিকদের শিক্ষার শেষে ভারভের জভাভ প্রদেশে ভিন্ন ভিন্ন পণ্টনের মধ্যে এক সঙ্গে রেধে

'garrison duty' বেওরার ব্যবস্থা করা উচিত। সব সবর নৈষিক্তরের এক হানে রাবা উচিত নর। নানা বেশে পাঠালে বিভিন্ন বিষয়ে শিক্ষালাভ করতে পারে, তা হাড়া নৈমিক্তরের রক্ত তাজা রাববার কর্ত ইংরেক একটা চমংকার উপার বের করেছিল। ভারতের উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশে সব সমর বৃত্ব লেকেই থাকত। আফিদিরা এক এক জন নেভার অধীনে পরিচ'লিত হ'ত এবং মাবে বাবে নিজেদের মধ্যে লড়াই করত, আর সুবাৈগ পেলেই এরা ইংরেক সৈভ্যনের বন্দুক বা বাল্যমান্ত্রী সূঠতরাক করে আল্বসাং করত। বিশ্রুক নৈভাদের এই সব প্রদেশে কিছুকালের জন্ত রাববার ব্যবহা করা হরেছিল—উদ্বেক্ত আফিদি লমন এবং বৃত্ব-শিক্ষা— এক সক্তে হ'কাক্ট চলত।

যদিও সৈভদলের সকল দারিদ ভারত-গবর্ণনেক্টের, তাই বলে বাংলাকে নিক্টেই হুরে বলে পাক্লে চলবে না। বিশ্ব-বিভালরের শিক্ষার ভার সামরিক শিক্ষাও বহর্ষী। বহু বাঙালী বনী বিশ্ববিভালরকে অক্স টাকা দান করে অর্থীর হুরে আছেন। তেমনি বাঙালীদের সামরিক শিক্ষার ভভ অর্থ দান করে বিভ্রশালী বাঙালীরা কীর্ত্তিমান হুরে পাক্তে পারেম। বাংলার দ্বারী সৈভদল গঠনের কাক্ষে বাঙালী লেপক্লেরও লেপনী পরিচালনা করে দেশবাসীকে উৎসাহ দেওয়া উচিত।

প্রার ছই শত বংসর পরাধীনতার জন্ত বাঙালী জাতির মধ্যে যে জড়তা পুঞ্জীভূত হয়ে জাছে তা দূর করতে বছ চিছা, নামা পথের সন্ধান, বহু অর্থায়, পরিশ্রম এবং সমনের প্রয়োজন। শিব, পঞ্চাবী, গুর্বা, মারাঠি এবং রাজপুত সৈজেরা ইংরেজ রাজদ্বের গোড়া থেকেই এ পথে এসিয়ে চলেছে—আজ্বাঙালী জাতিকেও ইংরেজ রাজদ্বের অবসানে সামরিক সংগঠনের দিক দিরে শুতন পথে যাত্রা ক্লুক করতে হবে। অদূর ভবিষাতে বাঙালী জাতির মন্তিজ ও বাছর মিলিত শক্তিতে পৃথিবীর মধ্যে একট বিরাট এবং শ্রেষ্ঠ সৈত্রবাহিনী গড়ে উঠবে—এ আশা অসকত নর।

# বিমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

### **এ**বিনয়ভূষণ দাসগুপ্ত

শনিবার প্রাভঃকালে হোবার্ট ত্যার করিবা ছই রাজী বোঝাই ইবা চলিরাছি। এক গাড়ীতে রবিনসন, উড, করেটার ও আমি। আমার সহবালীরা সকলেই সদালাপী। পাহাড় ও কলনের মধ্য বিবা ভার ওরেন্ট নদীর তীর বরিবা চলিরাছি। মুক্তর বিব। মুক্তর দুঙ্গ। ছই-এক ছালে ধুসর এবং কুক হংস-শ্রেণী দেবিলাব। রবিনসন ভারতবর্ণের ক্যা ভূলিলেন। উড বলিলেন, "আহকের কার্যক দেবিরাহেন কি ৪ নির্মীণ প্রথনেক

ওরাতেলের ছলে মাউউব্যাটেনকে ভারতবর্ধের বছলাট নির্জ্ করিয়াছেন এবং ১৯৪৮এর ১৫ই জুনের মধ্যে ভারতবর্ধ ত্যাগ করিবেন বলিয়া বোষণা করিয়াছেন।"

আমি—"যত দ্ব দানি থরাতেলের উপর তারতবর্বের কংপ্রেস-নেতালের বেশ আহা হিল। তবে তারতবর্বে এবন ফ্রুড অবস্থার পরিবর্ত্তন হইতেতে।"

त्रविवजन काराव वानाकारनव कवा कृतिरनन । वनिरमन,

"আমার শিতা আকগান-রুদ্ধে সেনাপতি লওঁ নবাটসের এক জন সহকর্মী হিলেন। আমার জন হর টাসমানিরার। কিছ জীবনের প্রথম চার বংলর আমি ভারতবর্ধে অতিবাহিত করি। কালাহার, রাওয়ালশিভি, লাহোর প্রভৃতি শব্দ তব্ন আমাদের পরিবারে সর্বাচাট শুনিতে পাইতাম।"

একটু ভাবিষা বলিলেন, "এখনও বোৰ হয় ছ-চারিট হিন্দু-ছানী কথা অৱণ করিভে পারি। সহস্। বাবুর্চি। বিদ্যদ্-কার। ঠিক বলিভেছি ভ ?"

একটু থামিয়া সলজ্ঞ ভাবে হাসিয়া বলিলেন, "আর যে ছ-একটা কথা মনে পভিতেছে সেগুলি বোৰ হয় গালাগালি। যেমন, শ্যারকা বাচা। একবার ভারতবর্ষে ঘাইয়া আমার বাল্যস্তি-বিজ্ঞিত খানগুলি দেখিয়া আসিবার ইচ্ছা আছে।"

হোবার্ট হুইতে প্রায় দশ মাইল আসিয়া পড়িয়াছি। অনুৱে চকোলেট, কোনো প্রভৃতি প্রস্তুতকারক ক্যাডবেরী কোম্পানীর কারণানা। কারণানাটির চতুপার্থের প্রাকৃতিক দৃষ্ঠ বড় স্কর; নিকটে ক্লিয়ার মন্ট শহর। পাশ দিরা আড়াই কুট গেকের রেলগাড়ী চলিয়াছে। পরে বেরা শহর। সেধানে অট্রেলয়ান নিউব প্রিন্ট মিল অবস্থিত। এবানে প্রচুর ব্যরের কাগক প্রস্তুত হয়। কাছেই নিউ মরকোক শহর। পরে প্রেটনা গ্রীন ও স্থামলটন নামক ছুইট প্রাম অভিক্রম ক্রিলাম। এ সব স্থানের দৃষ্ঠ ও আবহাওয়া নাকি স্কটল্যাতের মত। মাবে মাবে হুপ্ সু বুক্সের কুল্প ও বড় বড় আপেল-ক্ষেত। একটি গৃহত্বের বাড়ী স্থাবি পপ্লার বৃদ্ধ্রেণী হারা বেরা। বৃদ্ধ্রেণী বেন বৃহ্বত্ব হুইয়া উন্নত শিরে প্রন্থেক ক্রিক্রান করিতেছে। শীর্ণ 'উক' নদী পার হুইয়া একটি চটিতে চা পান করিলাম।

পরে 'নাইড' নদী পার হইলাম। তারপর রাভার ছ'বারে বিন্তীর্ণ বিরাটকার ইউক্যালিপটাস বা গাম গাছের चरन আরও হইল। পাহাতওলিও এখন বড়। জ্ঞানঃ ব্দলর চেহার। বদলাইল। এখন ওয়াট্যাল, সাসাক্ষাস ও কার্ণ গাছই বেশী। মধ্যাকে টেরেলিয়া শ্যালেটে উপস্থিত रहेनाम । न्यादन है . चटनक है। चार्यादन व छाक-वार्दना वा সার্কিট-হাউপের মভ। এখানে 'ইওলো সাইপ্রাস্' বা पर्य-मर्जात तका वक्ष मत्नातम नामिक। हित्तनिया नामिक একট ৰাড়া পাহাড়ের মাধার অবস্থিত। পাহাড়ের নীচে বিছাং-উংপাদনের কেন্দ্র—উপর হইতে কুদ্র কুটবের মত ৰেখার। মধ্যাজ-ভোকনের পর বাহির হইরা পভিলাম। সরিষা কুলের মত একপ্রকার হলুদ কুলে জ্বল ভটি। জ্বল: বাইলাস গর্কে উপস্থিত হইলাম। অগুৱে লেক, সেণ্ট ক্লেৱার। शर्कत किञ्च निश्र कल भरवरत्र नामिरक्टरः। त्यवारम अकृष्ठे বাঁৰ তৈরি হইতেছে। অদুরে পুাহাত হইতে পাণর কাটিয়া সেগুলিকে ক্ষেনে কৰিয়া ইেনের মধ্যে ঢালিয়া রেলপথে এক্ট

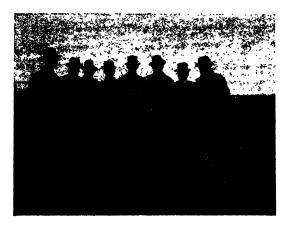
ষিপ্রপঞ্চারী যজের মধ্যে ঢালা হইভেছে। সেধারে কংক্রিট প্রস্তুত হইরা বন্ধসাহায্যে বাবের উপর পভিভ হইভেছে।



ওয়াডামানা শক্তিগৃহের সন্মুধে ;

**এरेक्टन क्रक्टिंड वैविधे नीविडा ट्याना क्रेट्यह** । वीविद्य নাম নিউ ক্লাৰ্ক বাঁৰ। অনেকক্ষণ ছুরিয়া ছুরিয়া এই সমস্ত দেখি-লাম। পরে আবার টেরেলিয়ার কিরিলাম। সেণ্ট ক্লেয়ার इम रहेर डि डाइ अरब के नमीब डिश्मिस । वाहेमान श्रास्त्र ৰ্টনিকট হইতে ভার ওয়েন্টের বল টেরেলিয়া পর্যায় আনা হটতেছে। কাৰেই ডার ওয়েণ্ট এখানে কীণকায়া। কলের त्रक्मोति राहन। क्रथनश्व क्रिक्टिंग्न थान्, क्रथनश्व लाहात চোঙ, কৰনও এক্ইডাক্ট এবং যেবানে খল উপরে উঠাইতে হইভেছে সেধানে ইনভার্টেড সাইকন। এইক্সপে জল টেরেলিয়ার জানিয়া তঞ্জ্য বাড়া পাহাড়ের গা দিয়া ৮৫৫ কুট নীচেকার শক্তিগৃছে প্রেরণ করা হইভেছে। টেরেলিয়ার কিরিয়া রাত্তে নীচে নামিয়া শক্তিগৃহ দেখিতে (भनाम। भगारमरहेत छेळ ७। ১৯৫৫ कृष्टे। राष्ट्रारम मक्टि-গ্ৰহ অবস্থিত তাহার উচ্চতা ১১০০ কুট। জল পাহাড়ের মাৰা হইতে ৮৫৫ কুট নীচে পছিতেছে। শক্তিগ্ৰে পাঁচট টারবাইন। তিনট চলিতেছে। টারবাইন গুরাইরা দিয়া জল নামিরা যাইতেছে। 'নাইড' নদীর ভিতর দিরা এই ব্দলরাশি আবার ভার ওয়েণ্টকে কিরাইরা দেওরা হইভেছে। बाट्य भारतिहरे चूमारेलाम। अवीरन राम नेछ। चर्व विद्युर-উভাপক चानारेबा बाबिए रहेन। के विम बाहे ३६ মাইল পৰ চলিয়াছি। 'ৰোবাৰ্ট হুইতে 'উক' ৫৫ মাইল। উক হইতে টেরেলিয়া ২৫ মাইল। টেরেলিয়া হইতে বাটলাস नर्भ > व बारेम । वाहेमार्ग नर्भ स्रेट्ड हिटबनिया किविट्ड এই ১৫ মাটল পথ দিতীর বার অতিক্রম করিবারি।

পর্যাদন রবিবার প্রাতরাশের পর বাহির হইরা পঞ্চিলার। জলপুন্য বছুর 'নাইজ' উপত্যকার ভিতর দিরা চলিরাহি। দূর হইতে একট শিশু দুট্টগোচর হইল। নিশ্চরই রাভার কোন চৌকিবার নিকটে বর বাঁবিরা আছে। এ তাহারই নিও। বে-রাঝা বিরা চলিরাহি, তাহার নাম 'মিসিংলিক' বা হারানো



টাস্থ্যানিরা মাল্ছ্মিতে স্থীগণ্সহ লেবক

বোগছত। রাভাট নাকি উত্তর ও পশ্চিম উপকুলগামী রাভা-হুরকে সংযুক্ত করিরাছে। একট সমতল ভূমিতে আসিরা প্রিলাম । ইহার নাম 'ওয়াইল্ড ডগ প্রেন্স' বা পাগলা কুকুরের সমভূমি। চারিদিকে পাহার ও জনল। জনলের মার্থান मिया हिनाहि। क्षेप्र एका है एका भारत गांक, भरत वर्ष বভ ইউক্যালিপটাদ বা গাম গাছের অঞ্জ। এই অংশল কতক্ত'ল মেষ চরিতেছে। ইউক্যালিপটাস ব্দশলের খেন শেষ নাই। ঠিক হেন ঝাড়গ্রামের শালবনের লখা লখা গাছ সোৰা উঠিয়া গিয়াছে; বুব মোটা ও মুগোল। দেখিতে বড় ভাল লাগে। গাছগুলিকে স্বলায়াসে মাথিয়া কেলিবার জন্য তাহাদের গোড়ায় আংট কাটিয়া রাখা হটয়াছে। শিকভগুলি মাট হটতে যে রস টানিতেছে তাহা ভার এই ভাংটর উপরে উঠিতে পারিতেছে না। ফলে গাছগুলি শুকাইয়া মরিতেছে। নগ্ন আনাহার-ক্লিষ্ট গাছগুলি পঞ্চাশের মৰ্ভবে লক্ষরধানার সামনে ভূর্জিক-ক্লিই বাঙালীর মত হাত বাড়াইয়া শ্রেপীবন্ধ ভাবে বাড়াইয়া चारह। এবানে ভূমি नीवन। मां । नमख वनहेक्हे यहि नीय नाइछनि होनिया नय छटर पान प्रवास ना। कटन स्वय-क्षिन बाहरू भाव ना । वास्त्रद दक्षित करूरे शाम शाहरानित्क এভাবে মারিয়া কেলা হইতেছে। গাছগুলিকে এত উপর হইতে শীচে লোকালরে লইরা পেলে খরচ পোধার না। ভাই ৰ্ভ ৰুড় প্ৰচুত্ত পাছগুলিকে ধ্বংস করিবার এই বল্পবায়সাৰ্য উপার অবলম্ব করা হয়। আলানি কাঠ করিবে সেরপ: লোকও এবাবে নাই।

আনবা বেট লেকের পার বরিয়া ভানন শক্তিগৃহে-পৌহিলাব। এবানে একট শক্তিগৃহে ভিনট কল। শক্তি-বৃহট, বাভা পাহাকের গোড়ার। পাহাকের রাধা হুইডে নলের সাহাব্যে শক্তিগৃহে হল নামানো হইভেছে। চাড়া বুরাইরা দিরা হল বাল দিয়া বাহির হইয়া বাইভেছে। করেক বংসর পূর্বে নাড়ি একট নববিবাহিতা বুবতী হানীর সহিত 'মণুচক্র' নাপনার্থ এবানে আসিয়া এই বালে পভিয়া সিয়া সলিল-সনাধি লাভ করেন। লোকে এখনও সেক্ষা শর্ম করে। এবানকার হল বাল দিয়া ওয়াডামালায় নীভ হইতেছে। এবান হইতে আমরাও ওয়াডামালায় পৌছিলাম। তবন মধ্যাছকাল।

ভরাভাষালা শক্তিগৃহট একট ক্র সমতল উপত্যকার অব-ছিত। উপত্যকাটর চারিদিকই পাহাডে থেরা। সব্দ বৃদ্ধন্দ্রী পাহাডগুলির সাকুদেশকে যেন ভেলভেটে মুড্রা রাধিরাছে। এবানে ছইট শক্তিগৃহ। একটতে নম্মট টারবাইন, অপরটতে তিনটা। এবানে আমাদের মধ্যাক-ভোলনের ব্যবহা ছিল। উপত্যকাট বছ মনোরম। ভোলনের পর উপত্যকা-ভূমিতে অনেকক্ষণ পায়চারি করিলাম। সহসা দেবি একট পাহাডের গারে একট রামবহু লাসিরা রহিয়াছে। মনে হইল আগাইয়া গেলে রামবহুটকে হাত দিয়া ব্রিভে পারিব।



বাটলাস পর্কের নিকট পাহাড় হইতে পাধর কাটনা ক্রেপের সাহাযো রেলগাড়ীতে তোলা হইতেছে। দঙার্মান ( বামদিক হইতে )—ব্লিচার্ডগন, রবিনসন, নাইট কেনেলি, নেধক—দূরে আলাপরত কিটলিয়াক ও উড

ভরাভাষালা ত্যাগ করিয়া আমরা অপরাত্নে তেট লেকের ভীরে 'মিমেনা' বোটেলে পৌছিলাম। বোটেলট একতলা পনর-যোলট বর। বারাশার নীচেই দিগভবিছত হ্রদ। হুদের মধ্যে একট হোট পাংলি। হুদের দক্ষিণ প্রান্তে একট বছ বার। তাহার উপর বুরিয়া বেড়াইলাম। বারটি ১৯৮০ কুট দীর্ঘ। বাবে চলিশ কুট চওড়া সাভাশট বিলান এবং পার্বব্রহার এক শত কুট গার্থনি আছে। এই বাবের ভিতর জিয়া হুদের অল ভানন শক্তিগৃহে নীত হইতেছে। এই হানে বহুলোক বঁড়লি দিয়া মাহ বরিতে আনে। এই ব্রেটেলট অনপবিলাগীদের একট বড় আজা। গাঁবের ওপানে বাছের পোনা পালন করিবার ক্ষেক্ট অগভীর পুরুর। দেধান



হক্সবেরি নদীর পুলের উপর দণ্ডারমান নাচান মহাশর ও লেবক

হইতে এদেশে পোনা সরবরাহ করা হর। পুরিরা পুরিরা ছোট ছোট পোনাগুলির সভরণলীলা দেখিলাম। হোটেলের বারাকা হইতে এফ. পাহাড় ও বাঁবের দুলা পুরুম মনোজ।

আমাদের জলবিহাতের কাকগুলি দেখা শেব হইরাছে।
করেক দিন যাবং লগীদের সদে একএ ছ্রিয়াছি, একএ
বাইরাছি, একই গৃহে শরন করিরাছি। রবিনসন, উড এবং
করেটার বড় রসিক। ইঁছারা পথে নানা গলগাছা করিরা
আজ্ঞা বেশ জ্মাইরা রাধিরাছেন। মাবে মাবে সমধ্রে
চীংকার করিরা গানও বরিয়াছেন। একবার মুছক্তের সৈচদের
গান ভ্ডিয়া দিলেন। একবার আমার নামে গান রচনা করিরা
গাহিলেন। একবার একট গান ধরিলেন, ভাহার ভাবার্থ—

ৰে এত ৰূপ লইৱা <del>ছবিল</del> কেন ?

সে আছো কৰিল কেন ?

এই লব বিৰয়ে উভই অৱৰী। ভাষার উৎসাহ অভুরভ।

রবিবার রাজে ভোকনের পর হোটেলের লাউঞ্চে ভোর
আক্ষা চলিল। উড দিবাভাবে একট রস-রচনা লিবিরাহেন।
তিনি এই বৌলিক রচনাট পাঠ করিলেন। আমানিগের
প্রভ্যেককেই ভারার সমালোচনা করিছে হইল। দেখিলাম
বন্ধ কিইছিরালভ এবং কেনেলিও কর বসিক নন। কেবল বন্ধ
সেকেটারী রিচার্ডসন বরাবর ভারার বরসোচিত রাজীর্ব্য
বন্ধার রাবিরা চলিরাহেন আর নাইট সসম্ভবে কুরস্থ রক্ষা
ক্রিরা চলিরাহেন।

পরবিদ স্কালে প্রাভয়াশের পর হোটেল ত্যাগ করিয়া হোবার্ট অভিমূবে রঙনা হইলার। পাহাড ও জললের মধ্য বিরা ট্রইরামি। পথে একট হোট শহরের মত প্রাম। দার ব্যথমেল। এবানে ক্যাস্ল হোটেলে লছু জলবোগের ব্যবহা হিল। বিপ্রহরে নিউ নরকোক শহরে পৌহিলার। সেবানে মধ্যাক-ভোজন করিলার। করেটারের সঙ্গে ক্যানের। হিল। তিনি মাবে মাবে আমাদের ছবি লইতেছিলেন। আমাকে চারিটার মধ্যে হোবার্ট পৌহিতে হইবে। আমাদের গাড়ী মধ্যায়-ভোজনের পরই হাছিবে। ক্মিশনের সভ্যপণ ঐ দিন নিউ নরকোকে বাকিয়া যাইবেন। মধ্যাক-ভোজনের পর রবিনসন ও আমি সকলের নিকট বিদার গ্রহণ করিয়া নিউ নরকোক হইতে রঙনা হইলাম।

হোবার্টে পৌছিরা প্রথমেই রবিনসনের সঙ্গে ট্রেকারীতে গেলাম। সেধানে বিনুস ও অস্বোর্ণের সহিত সাকাং হইল। कांबाणां वर्-विचारंतर कार्या प्रविष्ठ विन्त्र, जांत्रामी वर्त्रद অটোরা যাইতে সম্বন্ধ করিয়াছেন। তাঁহাকে অটোরার আপিদগুলির বিবরণ দিলাম, তত্ত্ত্য কর্মচারিগণের নাম ও ठिकाना विमाम । भटत रेशविभटक जाजतिक बळवाव जानार-লাম এবং প্রধান মন্ত্রী ক্স গ্রোভকে আমার বিলেষ বছবাল भागन क्विए चक्रदाय क्विया विवासन नगत्रहिल चागिरन পৌছিলাম। বেলা চারটার ছোবার্ট হইতে বিমানগাঁটর দিকে রওনা হইলাম। বিষানে টাসম্যানিয়ার দক্ষিণ প্রাছ হইতে উত্তর প্রান্ত পর্যান্ত উভিয়া সমূদ্রে পঞ্চিতে হইবে। বিমান হইতে টাসম্যানিরার অভ্যন্তরন্থ পর্যতসমূল মালভূমি ও তত্ত্ব-পরি এেট লেক দেবিয়া মুগ্ধ হইলাম। সমুদ্রের মধ্যে পুর্ব্যান্তের অপরণ দৃষ্ঠ দেবিলাম। পশ্চিম আকাশ পরিছার। দিগছের अक्ट्रे॰ छे भरत रकां नारन स्थापन अक्षा । रकां नारन स्थापन स्थापन যেন মণিমূঞা-ৰচিভ সোনার ঝালর। পুর্ব্য বীরে বীরে সমূত্রগর্ভে অবভরণ করিলেন। শীচে নামিয়াও যেন আকাশের মেৰমালার পানে তাকাইরা আছেন। মেৰমালা ভখনও জাঁহারই অন্তরাগের রঙে রঞ্জিত। বীরে বীরে মেখের नीटक्वांत जरम शाह नान रहेन । तक्तियांचा क्रममः कृतिएड লাগিল। অবশেষে মেখ ক্লকবৰ্ণ বাবৰ কবিল। যেন ভাভাৱ উপর কেহ কালি লেপিয়া দিয়াছে।

বিমানে বসিরা সংবাদপত্তে দেখিলার, কেসি মহাশর বিটিশ সরকারের ১৯৪৮-এর ১৫ই জুবের পূর্বে ভারতভ্যানের সম্বল-বোষণার প্রশংসা করিবাছেন। রাজি আটটার বেল-বোর্বের হোটেলে পৌছিলার। ক্যান্বেরার ইেজারী ভিণাট-মেন্ট আবার ক্ষত এই হোটেল টিক করিরা সেক্ষা আবাকেটাসন্যানিয়ার টিকানার জানাইরা বিরাছিলেন। হোটেলটির নার 'হোটেল সিলিল'; শহরের ক্ষেক্সহলে অবস্থিত।

বোটেলে কেনি বাবেৰের চিট আবার বভ অপেকা

ক্রিতেহিল। স্বহশতিবার সকালে উহোর আশিলে বাইবার ভল্ল আমাকে লিবিয়াহেন।

২০শে কেকারী মদলবার সকালে প্রান্তরাশের পর সহর বেবিতে বাহির হইলাম। শহরট কুলর। কেকারলে বাহিণ প্রবাহ সমান ও সমান্তরাল সারি সারি রাজপর। বালীগুলি লাধারণতঃ পাঁচ হয় তলা। ঘূরিতে ঘুরিতে চিড়িয়াধানার উপরিত হইলাম। পানীর মরট বুব তাল লাসিগ; চকল পানী-গুলির গায়ে রক্মারি রঙের বাহার। অনেক প্রকাবের কাশার বেধিলাম। হইট কানোয়ার বিশেষ উল্লেখযোগা। একট মাটাপুল, অপরট এচেওন। প্রাটাপুল, জীবন্ধাতের বাতিক্রম। ইহা অওক অবচ ভঙ্গায়ী। অওক কীব বে ভঙ্গায়ী হইতে পারে তাহা ইউরোপ ও আমেরিকার বৈজ্ঞানিক্সপ পূর্বের বিশাস করিতেন লা। অইলিয়ান প্রাটাপুল একদিন বৈজ্ঞানিক-কগতে বিশ্বয় উৎপাদন করিয়াছিল। এচেওন ছোট সকার্যর মত। গায়ে কাঁটা ভর্তি। আ্রতনে বিভালের মত। ইহা পৃথিবীর প্রাচীনত্ম জানোয়ারসমূহের অভত্য। সহ্যার সম্ব্রু-তীবে বেড়াইতে গেলাম।

তথন প্রা ডুবিয়া গিয়াছে; কিছ দিনের আংলো ইয়ং কিছু এহিয়াছে। বেলাগুরি প্র-পশ্চিমে প্রগারিত। নগর-কর্তৃপক্ষ এবানে সানের স্বক্ষোরপ্ত করিয়াছেন। বেলাগুরি প্রায় কনপ্ত। সমুদ্রে অল অল টেউ। ছু-এক জন স্ত্রী-পুরুষ সমুদ্রে সান করিতেহে। পূর্বেও পশ্চিমে শহরের ছুইট হাতা সমুদের মনো বঙ্গুর পর্যন্ত চলিয়া গিয়াছে। সহসা শহরের আলো মলিয়া উঠিল। মনে হুইল যেন বস্তুর্য কাক্ষনাভরণ বচিত হাত ছুইট ক্ষনী সিত্রর পানে বাজাইয়া দিল। ক্ষনী পাটিপিয়া পিছাইয়া য়াইতেছেন। কিছু আনন্দে তাহার তরক্ষর বক্ষ কাপিতেছে। উপরে পক্ষমীর টাদ মিট মিট হালিতেছে।

২৬লে কেজবারী ব্যবার ক্ষম্ওয়েলথ প্রাণ্টস্ ক্ষিণন আমার স্বিবার্থে একটি বিশেষ অধিবেশনের আরোজন করিয়াছিলেন। ঐ দিন সকালে ও বিকালে ওাহাদের আপিসেই কাটাইলাম। ক্ষিণন পূর্ব্বদিন টাসমাানিয়া ছইতে কিরিয়াছেন। বিশেষ বন্ধসহকারে ওাহার। আমার সক্রপ্রান্তর উত্তর দিলেন। ২৭লে ক্ষেম্বারী মৃহশানিবার সকলে করি । তিনি বাংলাদেশের ববর পূথাপুপৃথবণে কিজাসা করিতে লাগিলেন। ইংরেকের ভারত-ভাাসের সকর-খোষণাকে প্রশংসা করিলেন। আলাপাত্তে বলিলেন, "আমরা প্রান্তে থাকি। শহরে আমানের একট ছোট বালা আহে। আমার স্থা আর্ক সেবারে গিয়াছেন। আপিন যদি বৈকালে আমানের শহরের বালাতে বাইতে পারেন ভবে আমার স্থা বিশেষ সম্বন্ধ ইইবেন।" আরি গুলার বাতীর ক্রিকানা লইরা হোটেলে

किविनाम । मनाक-त्नाकमारक समहवान विश्वविकालरव निश्व অব্যাপক উত্তের সহিত বিলিত হইনাম। তিনি ভাছার সহ-क्षिश्ति महिल बाबादक बालाश कराहेका विद्यात । श्रद अक्षे वक वहेदबब क्लाकादन नहेबा शिक्षा चरहेनिया नन्नदर्क क्रायक्रे जान वर्रायत जानिका मिर्लन। देवकारन दक्ती मार्ट्यं वाकार छेम'हे इस्माम । (क्री-पृथ्यि ७ (क्री মহালয় আমাকে সাগরে অভার্থনা করিলেন। कीशादनव वन-अवाभकादनव दभदक्रजाबी थिन् भावि कारविष् फेनश्चि शिट्सन। (क्नी-नृहित्ते वारमार्परमद **म**रनकश्चन नायो-अधिकारनद कथा बूँकिया बूँकिया विकामा कदिलन । বলিলেন, তিনি এখনও ভাছাদের কোন উপকারে আসিতে भवित्म क्रजार्व एहेंद्रवन । खाबाद ह भानीस श्रवान क ब्रेटनन । আমি মদমিত্রিত কোন পানীয় গ্রহণ করিব না ওনিয়া তিনি यन इज्जूबि इहेब। श्रिजन। क्नी म रहत चर्डा काशारमब कथा मान कबारेश मिरन जिन्न रचन देव भारेरनन । আমি অরেঞ্জ কোয়াস পান করিলান। কেসী সাহেবের সঙ্গে वारमारम्भ नवत् मानुः विषय कथा एरेम। स्मी भर्दकर्ष स्टेट अक्षे युक्त (तमरात समाज वा'स्त क्रिया विल्लान. "বাংলার একট জেলার এগুলি তৈরি । এগুলি আমার বড়ই প্ৰদা। আপনি যদি এরপ ছ'ডকন ক্ষমাল তৈরি করাইরা আমাকে পাঠাইতে পারেন তবে-আমি বিশেষ উপক্রত বোৰ করিব।" আমি বীকার করিলে নমুনা-বর্মণ একট क्रमान जामादक निर्मा । शाबी, त्महत ও विश्वात क्या **छेंडेल। (क्यो-पृथ्यि वलिल्बन, "ला**डेक्टरन जामारमञ् শ' তিৰেক ভতা ছিল। যথনই গাধী লাট-ছবৰে আসিয়া-ছেন তথনই হিন্দু মুসলমান নিবিশেষে তিন শত ভূতা তাহার পদধলি লইয়াছে। কিঙ নেহেক বা বিল্লা যধন লাট-তবৰে আগিয়াছেন তখন কাছারও এরপ আগ্রহ দেখি নাই। ভবে কি নেহেক বা বিল্লা সেম্প ক্ষমপ্ৰির **4**4 ?"

আমি—"নেহের বা কিয়ার চেয়ে বেশী কনপ্রিয় দেতা ভারতবর্বে নাই। তবে গাড়ার কথা খতর। গাড়ী ওবু কন্তির নেতা নন, তিনি তদপেকা আরও বেশী কিছু।"

কেসী—"ই।, পাৰী সাধারণের চক্ষে দেবতা।'

পাট জাবেট আধার নিকট একটি বিংতি চাহিলেন। ইংল০, আবেরিক। ও কানাড়া এমণের অভিজ্ঞতার আনোকে ভারতের,অষ্ট্রেলিয়ার এবং ভারত-অষ্ট্রেলিয়ার ভবিবাং সম্পর্কের কোন্ রূপ আধার চক্ষে প্রতিচাত হইতেকে তাহা আমার নিকট কানিতে চাহিলেন। আমি বভাবতঃই প্রচার-পরাছ্ব। কিব কেনী সাহেবের আগ্রহাতিপ্যার্ক ইহার অন্ধরোর এচাইতে পারিলাম না। হির হইল পরনিন সকাল ৮টার প্যাট জাবেট বিবৃতি ভনিবার কর্ম আমার হোটেলে বাইবেন।

সেদিন বেলবোর্থে বেল গরম পাছিল। ভাপ ৯৫' **चित्री भवाब एक्टिशांचिन । यथांच- जाबरनंत अगद र्वाटिल** भार्यंत्र करेनक कमलारकत जाक बालाम व्हेन। छिनि বলিলেন, "এবানে বায়ুর আঞ্জি। বড় বেৰী। কাৰেট জন্ম नवरम (यन कडे एस : यामध (यन एस । कामारमय नार्व यवन ভাপ ১১০' ডিগ্ৰী পৰ্বান্ধ উঠে তখনও এত কঃ হয় না। বরং ত্ৰীমে আধরা বেশ কৃতিতে থাকি।" এদেশে এখন গ্রীমকাল চলিভেছে। টাসখানিয়ায় **এীত্মকালে ভাপ ৮০ ডি**এীর উপরে উঠে না। মেলবোর্ণে তাপ সাধারণতঃ ৭০৮০ ডিগ্রীর মৰো পাকে, কখন কখন ১০০' ডিঞী পৰ্যাত উঠে। ক্যানবেরারও ভাপ সাধারণত: ৮০' ডিগ্রীর নীচে খাকে। পশ্চিম অট্টেলিয়ায় মাৰে মাৰে ত'প ১০০ ডিগ্ৰী ছাড়াইয়া যায়। কুইনসলগতের অবস্থাও তদ্রেপ। এখন পিচ ও পিয়ার কল পাকিয়াছে। এগুলি টনে ভবিষা সেধানকার (म'दक्ता ठामान (पद । हिनिद कावधानाव हे।हेक हिन्दि । (अक्ष क्ष Bea প्रिवाद कार्यामाश्वी किन भारेट एक मा। হাৰ্ভার হাৰার টন কল হয়তো ইহার দলন নট হইরা वाहेटव ।

ঐদিন বাজিতে বাইবার সময় এক জন্তলোক ও তাঁহার স্ত্রীর সহিত আলাপ হইল। জন্তলোক লিবাবেল পার্টর প্রচার-সচিব। কেনী সাহেব লিবাবেল পার্টর এক জন নেড্রংনীয় সভা। উপরোক্ত জন্তলোক কেনী সাহেব ও বাংলাদেশের সহতে জনেক কবা বিজ্ঞাসা করিলেন। জন্তলোক গৃহাভাবে সপারবারে হোটেলে বাস করিতেহেন। বলিলেন, "এদেশে গৃহ-সমন্তা বভ কটিন। সরকার কিছুই করিতে পারিতেহেন না। ইহুলীগণ শহরে আসিরা বহু বার্ডা কিনিরা কেলিতেহে, এবং সেলারী প্রভৃতি লইয়া লোকের উপর জুগ্র করিতেহে।" জন্তলোকের স্ত্রীর জ্যোতিষী বা ভবিষাত্তলার উপর বুব আহা। ভারতবরীর জ্যোতিষীগণের স্থনাম উচ্চার কানে পৌহিরাহে। উচ্চালের কবা কিজ্ঞাসা করিলেন।

আমি বলিলান, "ভারতবর্ষে অনেক ভাল ক্যোতিষী আছেন। আবার অনেক ভও ক্যোতিষ-বাবদারীও আছে। ভবে ক্যোতিষীর কথার উপর আহা হাপন ক্রিতে আমি আপনাকে পরামর্শ দিব না, উাহাদের মিকট ভবিষাং আনিয়া লইবার আঞ্জনকও আমি প্রশংসা ক'র না। অভভার ভীবনপথে চলিবার কর ভগবান যান্ত্রকে একট প্রকর প্রদীপ দিয়'ছেন। সেট ভাহার বুছি। এই ভগবভর প্রদীপের সাহাবো পর চলাই প্রেয়ঃ। এই প্রদীপটি নির্বাণ হইলে বা ইহার উপর আহা চ'লরা গেলেই বিপদ।"

ভোজনাতে এট দশতির সজে অনেক বিষয় আলাপ হটল। সামা-প্রী ছ'লনে আমাকে নিজেদের বরে লটঃ। দিয়া টহাদের আট ও দশ বংসর বরণের করা ছটটর সজে আমার আলাপ করাটয়া দিলেন। করার্য কলিকাভার কবা ভনিরাছে। কলিকাভার মাহুষ দেবিয়া পুশি হটল।

পর'দন ২৮শে ফেব্রুয়ারী শুক্রবার প্রাণ্ডরাশের পর পাটি জারেট জাসিয়া উপ'ছত। ক্ষেক মিনিটের মধ্যে উ'ছার মানাবিধ প্রশ্নের জ্বাব - দিয়া ছোটেল ভ্যাগ করিয়া এবোড়োমে পৌছলার। ক্যানবেরায় গিয়া মধ্যাহ্য-ভার্কর সম্পন্ন করিলাম।

ঐ দিন বৈকালে "হোটেল ক্যানবেরার" ওয়াণ্টার ছট নামক এক ভন্তলেকের সঙ্গে আলোপ হল। ই'ন এদেশের এক জন বিবাতে কস্ট-একাউন্টেট । ভারতবর্ষ প্রিটশ সামাজে থাকিবে কিনা এই প্রসঙ্গে নানা আলাপ-আলোচনা হল। ছট ব ললেন, "নামাদের দেশে সর্বসাবারণের মনে ইংরেজের প্রতি একট। প্রীতির ভাব আছে। অভ সব বিষয়ে আমাদের মতভেদ থাকিতে পারে; কিছু ইংরেজদের জল সকলেরই মনে বানিকটা স্বেছ বিভ্যান।"

আমি — "আমরাও ইংবেক্কাতির প্রতি প্রচাশীস। সেক্স-পীয়র বা নিউটনের নামে সক্স ভারতবাস'ই ম'থ। দোধায়। শুধু ভাগক-ইংবেকের প্রতিই ভারত বাঁতপ্রচ হুইরাছে। ভারতের শাসন-ব্যাপারে হুডক্ষেপে বিরত হুইলে ইংবেকের প্রতি ভারতবাদীর বিরূপ মনোর্ক্তির কোন কারণ থাকিবে না "

কট--- অবক্ত আপনার। যা ভাল বোবেন তাহাই করিবেন। তবে বামার মনে হয় আপনারা ত্রিটন সংস্থাকে বা কলেই ভাল হইত।



# সারিপুত্র ও মোগ্গলান

#### শ্রীসুধাময়ী সেনগুপু, এম-এ

কিছুদিন পূর্বে সংবাদপত্তে প্রকাশিত একট সংবাদ হয়ত অনেকেরট দৃষ্ট আক্ষণ করিয়াছে। সংবাদট এট বে ভগবান বুদের প্রধান শিশ্বদ্বর সা'রপুত্র ও যোগ গরানের অভিপাত্র বটশ গবর্ণনেউ কয়ক ভারত গবর্ণনেউকে উপরত হটয়াছে। শীঘ্রট উক্ত অভি ভারতে আন্যান করা হটবে এবং সাঁচী ভূপের নিকটবর্তী কোন এক ভানে ম'ন্দর নির্দ্ধাণ করিয়া তাহাতে উক্ত অভিপাত্র রক্ষিত হটবে।

এই সারিপুত্র ও মোগ্গলান সম্বন্ধেই ধংকিঞ্ছিৎ বিবরণ এই প্রবৃদ্ধি লিপিবছ করা হইতেছে।

সারিপুত বুদ্ধের প্রধান শিশু ছিলেন এবং যোগ গলানের
স্থান জাহার পরেই ছিল। অবস্থ বানন্দ, উপালী, মহাকক্সপ
প্রকৃতি বুদ্ধের আরও কয়েককন প্রধান শিশু ছিলেন, কিন্তু এই
ছই কনের স্থান ছিল সর্বোচ্চে।

সারিপুত্র ও মোগ্ণলান উভয়েট বুদদেব অপেকা ব্যোকোট ছিলেন। সারিপুত্র রাজপুছের নিকটবলী নাগক-আম নামক ভানে ক্ষপ্তহণ করেন। গুলার পিতার নাম ছিল বঙ্গপ্ত ত্রাগ্রণ এবং মাতার নাম ছিল রূপপার। এই ক্ষণসারির পুত্র ব লখাই তিনি সারিপুত্র (পালে সারিপুত্র) নামে পরিচিত হন। ক্ষনেকের মতে গুলার আসল নাম ছিল উপ্তিত্য। সারিপুত্রের চুন্দ, উপসেন ও রেবত (পরে ব দর-ঘ্নিয় নামে বাতে) আরও তিন আতা এবং চালা, উপচালা ও শিকপচালা নামী তিন ভ্যা ছিলেন। তাহারা সক্লেই পরে বৌধ সঙ্গে যোগদান করেন।

খোগ সল্লান (মোদ্পলায়েন) রাজগৃহের নিকটবর্তী
কোড লথানে এক বিন্তু পরিবারে জন্ম হল। তাহার পিতা
এই একই দিনেই সারিপুতেরও জন্ম হল। তাহার পিতা
এই একই দিনেই সারিপুতেরও জন্ম হল। তাহার পিতা
এই একই দিনেই সারিপুতেরও জন্ম হল। তাহার নাম
হিল যোগ গলী (মৌদ্পলী)। এই ছই পরিবারের মধ্যে
লাত পুরুষ ব্যালা প্রীতি ও বছুদ্দের সম্পর্ক হিল। উভয়
পরিবারের বালক্ষরও শৈশব হইতেই পরস্বারের বিশেষ
ভাষক ইইনা উঠেন। একলা ছই বন্ধু এক অভিনয় দেবিতে
নান এবং সেই অভিনয়ণুতে সংসারের অভিনয় টেপলছি
করিনা উভরে গৃহভাগে করিতে মনস্থ করেন। তাহারা
প্রথমে সঞ্লয় নামে এক আচার্যের শিক্তম প্রথম করেন।
তংপরে তাহারা সন্তক্ষলাভের আশার সম্প্র জন্মুণীপ পরিজ্ঞান
ভাষর সন্তব্য আলী ব্যক্তির সহিতই বর্বালোচনা করিলেন,
ভিত্ত কিন্তুতেই ভ্রেলাভ করিতে পারিলেন না। তথন
ভাষারা হিল্প করিলেন নে, উভরে পুরুক ভাবে পরম্ব তর্তের

जबान कतित्वन अवर विनिष्ठे श्रेष्ट्राय केन्द्राय बाका किन्छ यस्य जन्नान जांड क्रिट्रिन, जिनिहे चलद्रक जर्बान प्रिट्रिन । अहे-क्षण श्वित कदिशा छात्रांता इहे बद्ध हुई शिद्ध याका कतित्वय । किष्ट्रिय भारत प्रातिन्य बाबन्द्र विक्रित्यी खण्टल देख्या জ্ঞান করিতে করিতে অসদশী নামে বুদ্ধের এক শিয়ের সাক্ষাৎ লাভ ক'রলেন। তাঁহার মুখে উচ্চা'রত এক চ স্লোক শুনিরাই সারিপুরের ধারণা ক্রিল যে, তিনি এতদিন ধরিয়া যে বছর অধেষণ করিছেছিলেন, ইঁহার নিকট ভাছা লাভ করিবেন। তিনি তংক্ষণাং বৌদ্ধৰৰে দীক্ষিত হইলেন এবং 'স্ৰোতাপন্ন' হইলেন। (বৌদ ধর্মানাবনার চারিট ভর, যথা—স্রোভাপর, সকুদাগামী, অনাগামী এবং অঠ্ছ। প্রোভাপঃ-- অবাং বে निकान-, टाट बान्ड बर्गर निकानमार्डे ध्वार यक्तान। अक्रमाशायी-वर्षार घाष्ट्रांट्य निर्द्धांग लाख क्रितवात वर वात्रक একবার অ'সিতে অর্থাং জন্মগ্রহণ করিতে হটবে। অনাগার্থী---चरार याहात्क भूनदाय स्वत्रहर कवित्व हरेत्व ना, अह वाहात (मध क्य এবং এই क्ष्या है य वर्ष नांक क्रित्य-अहे **५ १ व ( यह ७ ३३ व ६ ३० १ ७) । ७० भदा छिनि ( यात्र तहान एक** খুঁজিয়া বাহির করিলেন এবং অস্স্লীর প্রমুধাং একত লোকট তাহার সমূৰে আগতি করিলেন্ ওনিয়া যোগগরানও স্ৰোতাপর হইলেন। তৰ্ন তাহার৷ ভাহাদের প্রভাক সম্ভয়ের নিকট পিয়া উণ্ছাকেও বৌধৰ'ৰ দীক্ষাগ্ৰহণ করিতে অপ্রোধ করিলেন্ কিন্তু সঞ্জয় রাজী ছটলেন না। সভবের পাঁচ শত শিশু ভাৰাদের ৰত্নগমন করিতে বীকৃত হুটলেন এবং .छाहात। जपलवरम धनवान वृह्दक पर्नन क्रिएछ (वम्ब्स् উপস্থিত হইলেন। ভগবান বুছ তাঁহাদের ধর্ম্বোপদেশ প্রদান ক'রলেন এবং প্রত্রক্যা ও উপসম্পদা দান করিয়া তাঁহাদিগকে जन्मकुक क्रिया नहेलन। ज्ञान अर्थायन प्रशासकान मर्स (याग्नद्वान ७ नक्कान यत्या जातिनुत अर्द्वनाष्ट क'त्रलन।

সারিপুর ও মোগ্রয়ানের সৃত্ত-প্রবেশর দিনেই বৃহদেব বোষণা করিলেন বে, এই ছুই কনকে. উাহার প্রধান শিশুগদে দ্বনিঞ্জ করা হইল। নবাগত ভিত্রবের প্রতি এইরপ প্রেট স্থান প্রধাণিত হওয়ায় অভাভ পুরাতন ভিত্রা বিশেব ভূষ হুইলেন। কিন্তু বৃহদেব উাহাদের বুবাইয়া দিলেন বে, ক্ষে ক্ষে সহল্ল সহল্ল বংসর ব্রিয়া এই নবীন ভিত্রয় উাহার নিক্ট এই বঙ্খাকাভিক্ত প্রধাস ক্ষিবার ক্ষ ক্ত হুঃসহ্ কঠোর ক্লেই বা সৃষ্ট্ ক্ষিবাছেন।

বুড সারিপুর ও মোগ পরামকে আবর্ণ শিক্তরণে গণ্য ক্রিতেন এবং অপরাপর ভিক্লিগকে ভালাদের আবর্ণ অনু- লক্ষণ করিতে উপলেশ দিতেন। তিনি সারিপুত্রকে সন্তের শিক্ষাদাত্রী জননী ও যোগ্পরানকে বাত্রীর সহিত পুলবা করিতেন। এই ছই শিক্ত উচ্চার পরম বিশাসের পাত্র হিলেন এবং সন্তের তত্বাববানের ও পবিত্রতা অক্তর রাধার তার তিনি ইহালের হক্ষেই অর্পন করিয়াছিলেন। উচ্চারাও উচ্চালের উপর ভক্ত দায়িত্বের মর্য্যাদা রক্ষা করিতে যথাসাব্য চেটা করিতেন। বত্মপদ অটুঠ কথার বর্ণিত আছে যে, দেবদত যথন সন্ত-মব্যে বিভেদ স্কট করিয়া পাঁচ শত ভিকু সকে লইয়া গরাশীর্ব পর্বাতে চলিয়া যান তথন তাঁহাদের কিরাইয়া আনিবার ক্ষম বৃদ্ধ এই ছই কনকেই প্রেরণ করিয়াছিলেন এবং ইহারা সকলকামও ছইয়াছিলেন। অক্তর নিকারে একট ছয়ত্ত ভিকুকে সন্তর্গ হইতে বহিদ্ধত করিয়া দিরা হার রন্ধ করিয়া ভিরাহিলেন।

সারিপুত্র বিশেষ জানী হিলেন, বিশেষতঃ অভিবৰ্ষে তাঁছার বিশেষ বুংপত্তি ছিল। স্বয়ং বুদ্দেব সাথিপুত্রকেট শ্রেষ্ঠ জানী ৰলিৱা মনে ক্রিতেন। বৌধবর্শের মূলমুত্র চত্রার্থা সত্য ( ছঃখ--- অবাং জড়কগতের সব কিছুই ং:খময় এই জান : जब्बद-- वर्षार करे इः त्यंत्र कांत्रण ७ छेर शिवधन, करे इः व নিরোধ এবং নিরোধগামী অঠাজিক মার্গ) তিনি অতাত সরল ও সুব্দরন্ধণে বুঝাইয়া দিতে পারিতেন। ভিক্লগণ কোনরপ সহটে পভিলে তাঁছার পরামর্শ লইতেন। ভিক-পণ তাহার উপদেশ প্রদানের বিষয় বহু ভানে উল্লেখ कतिबाद्यन । সংঘ্र निकाद्यत्र मैकात এक प्रतन चाट्य. বুদ্ধ বৰ্ণ ভাৰতিংশ স্থাপ বৰ্ণপ্ৰচাৰ কাৰ্যা সভাশ্য নামক স্থানে অবভরণ করেন, সেই সমরেই সারিপুত্তর জ্ঞানের চরম পরীকা হয়। বছদেব সমবেত ভক্তমওলীর নিকট একট প্রশ্ন উবাপন করেন এবং একমাত্র সারিপত্র বাতীত কেংই জাঁছার প্ররের উত্তর দিতে সমর্থ হন নাই। সজের বিধিনিখের-সমূহের খুঁ দ্বীনাটি তিনি বিশেষ প্রযন্তের সহিত পালন করিতেন। সম্বের একট নিরম ছিল এই যে, কোন সন্ত্রাসী একাৰিক সামন বা विकाबीटक উপসম্পরা দান কারতে পারিবেন মা। স্তরাং যে প'রবার ছারা তিনি াবশেষভাবে উপকৃত स्टेबाबिटनम अटेबन अक्षे निवर्गात्वत अक बालक छास्त्र নিকট উপসম্পদাপ্ৰাৰী হট্যা আাসলেও তিনি তাহার পিতা-माणाव अञ्दाव बका कःव्रांख श्रीकृष्ठ रून नारे। अवत्मदय बुक्टबर এই मित्रम निवित्त कतात जिनि वालक्ष्मीटक छैपन्ना षाम करतम्। जनत् अक्षे (कर्व (पर्व) यात्र, मात्रिशुक अक्वात উদরের যন্ত্রণার বিশেষ কাতর হইরা পঞ্চিরাছিলেন। মোগ গুলান ভাঁহাকে ঔষ্বন্ধপে বন্ধন বাইতে অনুবোধ করেন। ভিনি নিৰেও জানিতেন যে, রন্তন ভক্ষণ করিলে আরোগ্যলাভ কৰিবেদ। কিছ ভিকুব বস্তুন সেবন নিখিত ছিল বালৱা

তিনি কিছতেই রঙন আহার করিতে রাকী হন নাই। অব-শেৰে বুগৰেৰ স্বয়ং ভাঁহাকে অভুমতি প্ৰদান করাতে তিৰি রঙ্গন দেবন করিলেন। দরিক্রের প্রতি তাঁহার গভীর করুণা ও ভাষাদের ছ:ব্যোচন করিবার ঐকান্তিক প্রচেষ্টা -'ভবদাবিক' 'পুণ্য ও তাহার পদ্নী', 'কুঙক পুছি'ন ধব', 'কাতক ও 'লোক-সভিস্ব' প্রভৃতি গর হইতে প্রমাণিত হয়। কাহারও সামাভতম উপকারও তিনি বিশ্বত হইতেন না। মহাবদে একট কাহিনীতে উল্লিখিত আহে বে. এক সময় এক ব্ৰাহ্মণ সহ্যাস-গ্ৰহণাভিলাষী হইয়া সজে অংগমন করেন ৷ কিঙ দেখা গেল কোন ভিক্ষ ভাষাকে উপসম্পদা দান করিতে ইচ্ছক নছেন। ত্রাহ্মণ দেইৰঙ মনকটে ত্রিয়মাণ ছইয়া পছেন, এবং দিন দিন শীৰ্ণ ছইতে থাকেন। একদা বুছের দৃষ্ট ভাছার উপর পতিত হওয়ায় তিনি ভিকুদিগকে ইহার কারণ বিকাসা করেন। ভিক্লণ কারণ বিবৃত করিলে বৃদ্ধ স্কল ভিক্কে আহ্বান করিয়া বিজ্ঞাপা করেন যে, কেহ এই ব্রাক্সকৃত কোন উপকার শ্বরণ করিতে পারিতেছেন কিনা। সারিপুত্র তছন্তরে বলেন, একদা ধৰন তিনি নিতাত কুৰাৰ্ড হুইয়া ডিকাৰে আহে **अट्रम क्ट्रम जर्म क्रे बाधन डाइट्स क्र हायह फ्रमन** ক'রয়াছিলেন-( থদিও ভাহাতে তাহার ক্রিরাভ ন। হট্মা क्य'न(ल देखनरे अपछ स्टेश्न'हम )। यात्रे (हाक् अर्थन दूर्हत चारमरन भारतभूद रभवे खाक्षगरक छेशमणमा मान करतन। সব্যের নিয়মালুবর্ত্তি হা ও পরিচছরভার দিকেও ভাঁহার বিশেষ দৃষ্ট ছিল। ৰশ্বপদ টীকায় বণিত আছে, যে সন্ধারামে তিনি বাস করিতেন তথাকার অভাত ভিকুগণ ভিকার বহিগত হইলে ভিনি সমন্ত সজাৱাম বুরিরা দেবিয়া বেড়াইভেন। কোন স্থান অপ্রিছত থাকিলে স্বয়ং ভাছা সন্ধাৰ্কনী বারা মাজিত করিতেন, আসবাবপত্র যথাস্থানে ঠিক করিয়া রাখিতেন এবং পানীয় ও भवशकामत्तव कमायावप्रवृष्ट् कमभून कविया वार्षिर्णन, भारक किवनवीयमधी एक मान्य जानिया वरन रव रवन. গৌতম বুৰের শিশুগণের আবাসস্থান দেব। এবানে কি অপ্রিচ্ছরতা, কি অব্যবস্থা।

আচার্যাদের প্রতি সারিপুত্রের বিশেষ ভক্ত-শ্রছা ও
অত্বাগ ছিল। বৌদস্তে প্রবেশ করিরাই তিনি তাঁহার
পূর্বাগুরু সঞ্চরকে বুছের অন্তর্মধী বাই শ্রবণ করিতে ও সজে
বোগলান করিতে অপুরোধ করিরাহিলেন, সঞ্চর অবক্ত ঠাহার
সে অপুরোধ রক্ষা করেন নাই। তাঁহাকে বৌদবর্শের শরণ
লইবার পরামর্শ যিনি দেন তাঁহার আবায়ান্তিক জীবনের সেই
প্রপ্রদর্শক করু অস্সজীর প্রতিও তাঁহার বিশেষ ভক্তি-শ্রছা
ছিল। কৃষিত আছে, তিনি অস্সজী যে দিকে আছেন বলিরা
ভানিতেন, প্রতি রাজে শরনের পূর্বে সেই দিকে তাঁহার
উদ্বেশে প্রণাম করিতেন ও সেই দিকে মুক্তর রক্ষা করিরা
শরন করিতেন। সারিপুত্র বিশ্বক কর্ষণ করিতে বিশেষ

ভালবাসিতেন, কিছ পিটক তক্ষে লোভের প্রশ্রৱ দেওৱা হর বলিরা তিনি উহা ত্যাগ করিরাহিলেন। সলস্থ ভিক্সপের মধ্যে কাহাকেও বুহ বচন অসুসর্থে অনস্থামী দেখিলে তাহার প্রতি তাহার মনোভাব বেরণ কঠোর হইবা উঠিত, কাহারও বর্ষ ব্যৱে অভীট সিদ্ধি হইলে তিনি সেইরপই আনন্দিত হইতেন। যোগ্গ্রান ব্যক্তিতে বৈশিট্য অর্জন করিলে তিনি বিশেষ আন্দ্র প্রকাশ করিরাহিলেন।

মোগ গল্পানের পৃত্তিশক্তি অভ্যম্ভ প্রবল হিল। তিনি ৰ্যান ইন্ডাদি বিশেষ আৰাাত্মিক প্ৰক্ৰিয়া ব্যতীত কেবলমাত্ৰ চর্শ্বচক্ষেই প্রেতযোগি ও অঞ্চান্ত অপরীরী আত্মাদের দেবিতে পাটতেন এবং বিভিন্ন লোকে গমন করিয়া তথাকার সংবালাদি বৃহকে আনিয়া দিতেন। বিমান বৰ নামক এছে ভাঁহার এইরপ বিভিন্ন লোকপরিভ্রমণের বহু উল্লেখ পাওয়া হার এবং ক্ষিত হয় যে, তিনি দেবলোকের বিশেষ প্রিয়পাত্র ছিলেন। সংযুত্ত ও মঞ্জিম নিকায় এবং সুত্ত নিপাতে ভাঁহার গুরিশক্তির বহু উদাহরণ পাওয়া যায়। একবার 'যিগার মাতৃ পাদাদে' বুছদেৰ অবস্থান করিতেছিলেন। তিনি ছিলেন উপ'রখিত প্রকোঠে--ভাষা সত্তেও, নিমন্থ লকোঠে ভিক্ৰণ প্ৰশ্লভ ভাবে কৰোপক্ষন করিতে ছলেন। ख्येन तूरक्त समूरवार्य (मान्त्रज्ञान क्षिक् प्रनरक ख्य (प्रवाहेवात **ভঙ্গ ভাগার বিপুল পদভারে সেই গৃহ প্রকম্পিত ও ঘর্ষরধ্বনি** উবিত করিয়াছিলেন। অপর এক সময় শক্তের (ইন্দ্র ) অহতার **हुन क**ित्रवात अवर छाङ्ग्टक खर (मनाव्यात क्रम छाङ्ग्त देवसम् পুরীও তিনি কাঁপাইয়া তুলিয়াছিলেন। তাঁহার পদিশঞ্জির উংকর্ষের সর্বাদ্রেষ্ঠ প্রমাণ পাওয়া যায় নন্দোপনন্দ নামক নাগের দমনে। অপর কোন ভিক্র পক্ষে এট কঠিন পরীকায় উত্তীর্ণ হওয়া সম্ভবপর হইত না; কারণ অপর কেছ মোগ গলানের ভার এত শীম বাানের চতুর্ব ভারে উন্নীত হইতে পারিতেন না; এবং সেইজ্বছট বুদ্ধদেব অপর কোন ভিকুকে ্ঞ নাগদমনের অসুষ্ঠি প্রদান করেন নাই।

কিছ ধবিশক্তি যোগ্ণল্লানের প্রধান বৈশিষ্ট্য হইলেও জানের দিক - বিষাও তিনি হীন ছিলেন না। এ বিষয়ে সারিপুত্রের পরেই ছিল উাহার ছান। হতঃপ্রবৃত্ত হইরা সারিপুত্র ও যোগ্ণলানের ভিজ্বিগকে নানা বিষয়ে উপদেশ প্রধানের বহু উল্লেখ বৈছি প্রস্থাদতে পাওরা যার। তগবান্ বৃহ এক সময় কণিলাবন্ততে শাক্যগণের নবনিশ্বিত বিতর্ক গৃহে উপদেশ প্রধানাতে ক্লাভ হইরা পড়েন এবং মোগ্ণলানকে ভিজ্বিগের নিক্ট কারনা ও ভাহা হইতে মুক্তিনাতের উপার স্বদ্ধে বৃত্ত গ্রহানের ইপার স্বদ্ধে বৃত্ত গ্রহানের উপার স্বদ্ধে বৃত্ত গ্রহান উপদেশ প্রধান-ক্ষতার ক্রমী প্রশংসা করেন। অপর এক হলেও ব্যান ও বৃত্তিলাকের উপারসমূহ সহরেন উল্লের

উপদেশ দানের উল্লেখ পাওয়া যাত্র। সারিপুত্ত ও যোগ্নলান এই ছুই অবের পরস্পরের প্রতি গভীর প্রীতি ও প্রগাচ প্রছা ছিল। ইছারা ছই কনে প্রস্পরের গুণাবলীর যে কিছপ প্রখংসা করিতেন বহু প্লোকে তাহার প্রমাণ পাওয়া যায়। ভগৰান বুৰের প্রতি উভধের অগীয় শ্রছা ও ভালবাগা এই ছুই বন্ধুকে দৃচতর অচ্ছেদ্য বন্ধনে আবন্ধ করিমনিল। বুবের निक्षे रहेटल पृद्ध बाकाकारम काशाहा विवा पृष्ट व विवा अधि দার। কোন ভঞ্জ বুদের সহিত কিবল তথালোচনা করি-তেন, তাহা অৰণত হইয়া কেবলমাত এই বিষয় লটয়াই আলাপ-আলোচনা করিতেন। বুষের অনুগত সকল ভিক্র প্রতিই সারিপুত্র বছুভাবাপঃ হইলেও, যোগ গল্পান ও আনন্দের প্রতি তিনি সবিশেষ আফু**ট ছিলেন। বুরপুত্র রাহলের প্রতি**ও তাহার অভাত স্বেহ ছিল। এক সময় সারিপুত্তের হার হটলে যোগগল্পান মঞ্চাকিনী-সরোবর হটতে প্রমুণাল আনিয়া कैं। हाटक (ताश्रमुक करतन । शृष्षश्रापत मरवा चनावितिक সারিণুত্রের বিশেষ এডার পাত্র হিলেন এবং ভাঁহার, অহছ অবস্থায় ভিনি যে তাঁহাকে ছেবিবার ছম্ভ একাৰিকবার ভাৰাৰ পূৰে গমন ক্ৰিয়াছিলেন ৰৌধ গ্ৰন্থাদিভে সেক্ৰা উল্লিখিত আছে।

বুদ্ধের মহাপরিনির্কাণের কয়েক মাস পূর্বে সারিপুত্র পরলোকগমম করেন। সংযুত্ত নিকামে দেখা যায়, ভাঁছার জম্মধান নালক প্রামেই জাহার মুগু হয় এবং জাহার মৃত্যুতে বুছ ভাষার টকেশে এক প্রশন্তিবার উচ্চারণ করেন। টাকাঞ্ছে তাঁহার মুগুর বিশদ বিবরণ পাওয়া যায়। তাহ'তে আছে, বুছ বেলুর প্রামে শেষ বধা যাপন করিয়া প্রাবন্ধীতে প্রত্যাবর্ত্তন ক্রিলে, সারিপুত্র সপ্তদিবস মধ্যে নিক্রে মৃত্যু নিশ্চিত জানিয়া তাহার অবেষণ করিয়া তথায় উপস্থিত হইলেন এবং ভাষার निक्र विकास श्रद्ध क देश या शादक पूर्वन कविवास चित्रशास পাঁচ শত ভিকুদহ পৈতৃক বাদীতে গমন করিতে মনম্ করিলেন। কারণ তাহার মাতার সাতট সন্থান অর্হত্ব লাভ করিলেও তিনি খবং সভে আহাশীল। হিলেন না। সপ্তম দিনে দারি-পুত্র নালক প্রামে উপস্থিত হইলেন এবং তাঁহার জাতুম্পুত্র উপবেৰতের মার্ট্ড মাতাকে জাঁছার আগমন-সংবাদ প্রেরণ করিলেন। পুত্র পুনরায় গৃহস্থাশ্রমে প্রভ্যাবর্ত্তন করিয়াছে মনে ক্রিয়া মাতা আনকে উংকুল হুইলেন এবং ভাছার সঙ্গীদের অভ্যৰ্থনার আহোধন ক্রিভে লাগিলেন। সারিপুত্র বাটাতে আসিয়া সেই গৃহে আগ্ৰয় লইলেন—বেধানে ভূষিট হইয়া প্রথম তিনি পুথিবীর আলো-বাভাসের স্পর্ণনাত করিয়াছিলেন। এখানে তিনি আহালয় হোগে আক্রান্ত হুইলেন। পুত্র পূৰ্ম্বৰং সন্ত্ৰাসীই আছে দেবিয়া মাতা বিষয় অভৱে নিজ পুৰেই আৰম্ভ ৰাকিভেন, সেইৰত এ বিষয়ে কিছু ভানিতে পাহিলেন মা। শব্দ মহাত্রত্ব প্রভৃতি দেবতারা এবং সাহি-

পুৰেৰ আতা চুন্দ ভাঁহাৰ পৰিচৰ্বা। কৰিতে লাগিলেন। ভাঁহার মাতা ঐ সকল দেবভাকে দেবিয়া পুঞের গৃহে প্রবেশ ক্ষিত্ৰা গাঁহাকে ৰিজ্ঞাসা ক্ষিলেন যে, তিনি যবাৰ্ট ঐ সকল দেবতা অপেকা শ্রেষ্ঠ কিনা। সারিপুত্র খীকার করিলে মাতা পুত্রের মহত উপলব্ধি করিলেন এবং তাহার অভর আনত্তে পরিপুর্ণ হইরা উঠিল। এই অবসরে সারিপুত্র ভাছার নিক্ট ৰৰ্মব্যাখ্যা ক্রিলেন এবং কলে তিনিও শ্রোভাপন্ন হুইলেন। তৰ্ণ সাৱিপুত্ৰ যাত্ৰণ পরিলোধ করা হইয়াছে ইছা উপলব্ধি করিবা সন্ত্যাসীদের ডাকিবা পাঠাইলেন। তাঁহার। আসিলে ভাঁহাদিগকে ৰিজাসা করিলেন যে, ভাঁহার সরাাসীকাঁবনের স্থাবি চুষাল্লিশ বংগৱের মধ্যে তিনি তাঁহাদিগের নিকট কোন অপরাধ করিয়াছেন কি না ? তাঁহারা তাঁহাকে সম্পূর্ণ নিরপরাধ বলিলে তিনি শয়ন করিলেন। প্রভাষের সঙ্গে সঙ্গে নশ্বর দেহ পরিত্যাগ করিয়া তিনি অয়তলোকে প্রয়াণ করিলেন। তাঁহার মাতা তাঁহার অভ্যেষ্টক্রিয়ার বাবতীয় বন্ধোৰত করেন। বিশ্বকর্মা তংকালে তথায় উপস্থিত ছিলেন। সারিপুডের দেহ ভত্মীভূত হইবার পর তাঁহার প্রিয় শিশু অঞ্রদ্ধ স্থাৰি বারিসেচনে চিতা নির্বাপিত করেন। চুন্দ ভাঁহার অধি, ভিকাপাত্র ও বহিবাস প্রাবন্ধীতে আনয়ন করিলেন।

কান্তিকী পূলিমার দিন সারিপুত্তের দেহাবসান ঘটে। ইহার এক পক্ষকাল পরে, অমাবস্থা ভিষিতে মোগ্ গল্লান দেহ-রক্ষা করেন। টীকাকারদের মতে মোগ্ গলানের মৃত্যু ঘটে নিএছি ( কৈন ) সম্প্রদারের এক চক্রান্তের কলে। মোগ্ গল্লান বিবিধ লোকে যাভাল্লাভ করিতেন এবং আসিয়া সংবাদ দিতেন त्य, बृत्यव शशायमधीवा चृत्य वर्गवात्र कवित्कत्वयः, किय বিপরীত বর্ষাবলহীগণ পুনর্জন লাভ করিয়া, অপের চংব-ভোগ করিতেছে। এই সকল সংবাদে অভাভ সঞ্চলবের व्यक्ष्मार्योद्यान परचा। विम विम द्वांत्र नाहेटल लाशिन। প্রতিখনী ধর্মসম্প্রদায়ের চাইরা ভারাকে হত্যা ক্রিবার বার লোক নিযুক্ত ক্রিল। কালশিলার এক ভহার যোগ্গলানের অবস্থানকালে ঐ স্কল লোক উক্ত খহা খিবিয়া কেলিল, কিছ তিনি তাহাদের উভেঞ বুৰিতে পারিয়া এক কুল ছিল্লপৰ দিয়া বাহির হটয়া আত্মরকা করিলেন। উপযুর্ণরি ছয় দিন এইভাবে বিকল-মনোরৰ ছইবার পর সপ্তৰ দিবদে শত্রুরা তাঁছাকে ধরিয়া কেলিতে সমৰ্ব হটল এবং প্ৰচণ্ড প্ৰহাৱে যুত্তভা অবস্থায় তাঁহাকে কেলিয়া চলিয়া গেল। আনলাভ ক'বয়া ভিনি বছ কঙে প্রস্তুর্থের নিকট উপস্থিত হইয়া চিরবিদায় প্রাথনা ক্রিলেন এবং সেই শ্বানেই প্রাণত্যাগ ক্রিলেন। ভাঁহার এই শোচনীয় মৃত্যু নাকি তাহারই এক পূর্বেক্মঞ্ভ পাপের কল্। খীর প্রবোচনায় তিনি তাঁহার অব 'পড়ামাতাকে বনের মব্যে লইয়া যান এবং তাঁহারা তম্বর কঞ্চক আক্রাঞ্চইয়াছেন, এই-ক্রপ ভান করিয়া প্রহারপূর্বকে তাঁহাদের মৃত্যু ঘটান। এই পাপের ফলে তাঁহাকে বহু দিন নরক্যন্ত্রণা ভোগ করিতে হয় এবং শেষ কলে এইরপ প্রসারের কলে তিনি মৃত্যুর্বে পতিত इस । त्यान्त्रज्ञात्यत्र वर्ग किल भीत्लार्थल भववा नवीन चल-बरवद काश्व क्रामन । भिश्हन (परन क्षर्मनज क्षराप क्षरे ख, ৰহদিন নরকে বাস করার খত তাহার বর্ণ ঐরপ হইরাহিল।

# রাখী বন্ধন

বাবের কাছে,
বাবের কাছে,
বেরি পরিচিত পাছ সেধার
বাঁড়ারে আছে !
কতো বেরুনার হারা ঘনাল আমার মনে,
কতো অতীতের মারা ভাগাল নীরব কনে,
কেন অকারণ নেচে ওঠে ব্জ,—
কলাকী নাচে ?
কাহারে যাচে !
বল্লু এখন ছু বোনা আমার
দীড়াও স'রে,
রাতের নেশার প্রাণের পেরালা
বরেছে ভ'রে !

কেন কলবৰ এতো যদিব নয়ন হানি ?
কেন হাসা-কাদা এতো বুকের কাছেতে টানি ?
কেন চেরে থাকে৷ ছল-ছল দিটি, 
যুবের 'পরে ?
হাবের ভাবের ভালোর
ভাকিবে পাবা,
ভবন ভানার দেউলে পশিও
স্থাতি যাবি !
বতো কথা ভাছে বোলো বিরলে বসিয়া একা,
যতো গান ভাছে গেরো পুরানো দিনের শেবা,
ভগন ভাবি,
হপন ভাবি,
বিধিও রাবী !

### আরব রাসায়নিক প্রক্রিয়া

এম. আকবর আলী, এম-এস্সি

এট প্ৰক্ৰিয়ায়/দিৱ অধিকাংশেরই সন্ধান পাওয়া যায় প্ৰথম আরব রাসায় মক ভাবিবের প্রত্ন। তবে লাই বর্ণনা ও উলা-स्त्र मित्र श्रक्तिशाश्वनि अर्वृतात्व वृत्तिस मध्यात्र वााशात्त कांत्र भववर्ती देवलानिक वाको बन्नभग। कार्रिद्वत भवद्ध माना मान्य । वामानवादम्य चवकाम बाकामध्य दानी । दानीद গ্রন্থাবলীর প্রামাণিকতা সরজে প্রাচ্য হত্তবিদদের ঐকমতা আছে। (महेब के है जिल्हां क किया शिक्ष चावन वामाविक एवं है चार्विष्ठे अवर भववसी कालिय क्षेत्रिय मत त्र प्रमूख निःगटक् एक्श ben । शक्तिशाधिन (पटक बाविष्ठण माना बाभावनिक क्षवा (मार्च मान क्यू, ज्यावत वाभावनिकामत्र हाए ज अ विकासित चारता देविक स्था देविक विका किन হতীগা এমে তা হয় নাই। পরবর্তী রাসায়নিক্তদের অধৈষ্ঠা ও विश्विति हो है एक अब कारण। वज्र है बादित्व अवर वाबीद खबर्खि छ देवकानिक बाबाटक यनि डाटन्ब भववर्शे देवकानिकन्न धार्यि राष्प्रदे, प्रमुख्य । प्रतिवृद्धि । जादि चल्नाद्व कद्राजन ভা হলে আরব রসায়ন-বিজ্ঞানের অএপতি ২ঠাং এভাবে ব্যাহত एक मा। मेक नकाम वरमदाब महा बनावन-विकादनव व षेशिक स्टार्ट कार अकि नका करान बनारात वना करन বে এমনি উন্নতি আরব রসারনেও নবম দশম শতাকাতেই रहण जनवर र'क वा । दाकीय शद्य वाता वनायन-ठर्फ। क्रायन कारमञ्जू आरमरक विकारमञ्जू मिरक मही मा मिरम विरम्भ करन भवम-भाषत थ अवत्रकारणत जावनारकहे केंक्रिक वरश्रहन्। बरेक्टरे कांवा भूटक्काव देवलानिक्टरत काट्यत ताता

অনুসরণ না করে তাঁদের হেঁরাসীপূর্ব ভাষার প্রকৃত বাাবা।
বের করতে লেগে গেছেন। আর ভারই করে কৃট ভর্কভালের আশ্রর নিরেছেন। ছই-এক কন সাধানা একটু
বৈজ্ঞানিক-বৃদ্ধির আশ্রের নিলেও সহায়ভূতির অভাবে তাঁদের
অনেকেরই কাক এগুতে পারে নি। Staphelon এবং  $\Lambda_{ZO}$  আরব রসায়ন সহছে আলোচনা করতে গিয়ে মন্তব্য
করেছেন—

"If Ar-Razi had been followed by men as keen as himself an experimental work in chemistry might have come into being several hundreds of years before it actually was born. As it was, subsequent writers on Alchemy were content either to copy or in many cases to pervert with results that are only evident when we follow up any particular experiment given by Jabir or Ar-Razi."

ভাবিরের ও রাজীর পরবর্তী কালের আরব রগায়ন সহতে Stapleton এবং Az -এর উক্তিয়ে অনেকটা সভা, আরব রগায়ন আলোচনা করলে ভা সভঃই জনমুসম হবে।

আৱৰ রাসায়নিকের রসায়ন-শান্ত আলোচনায় যে সময়ত প্রক্রিয়ার সাহাধ্য নিতেন এখানে তার কিছু বর্ণনা দেওয়া পেল।

#### विक्षक कदावद श्रवामी

১। ভাকভির-"কার" ( encurbit ) এবং আমবিক (alembic) ব্যবহার করে বিন্দু বিন্দু (কাতরা) পতিত निर्वााभरक अकछ आक्टकड [काविनाड (Receiver)] भारता बढ़ा। अक्रिक वर्त्रभारमद Distillation व्यक्तिया वना যেতে পারে। সাধারণতঃ পাতন-পদা ছিলাবেট এট ব্যবজ্ঞ হ'ত। ভবে সৰ সময়েই তাক্তির বলতে এই পদ্বাই অভুসরণ क्रदा रहार ब नमा हाम मा। चानक मध्य प्रष्टे किविययत মিকচার বা মিপ্রণ খেকে সাধারণভাবে জল অপসারণ বা चंड किनिय मिलिए एवन भगर्यक विचार्ड मिर्स है भवकाव তরল পদার্থ আশ্রাবন বা এমনি কাগত কিলা কাপডের माराया किमहाद कदाद श्रवादक "जाकजित" मारम चिक्छि कहा स्टार्ट । चर्नार वर्तवादवद Filtration क Decentition পছাকেও ভাকতির প্রক্রিয়ার অভত করা হরেছে। এক কথার ভাক্তির প্রধানতঃ Distillation পরা स्टान अवत अवत Filtration & Decantation विजादनक बावश्र स्टब्स्ट ।

१। ইসভিনদাল-- जूनात छैशत चष्ट अकड़े সঞ্জিত जूना (तूरु नात कुष्ट)---Descensory) वानरात कृत्व विशिव- আলাকে বিভঙ করা। বে বিনিষ্টাকে শোবন করতে হবে সেটকে তলার ছিন্তবিশিষ্ট বৃতিতে য়েবে গরর করা হয়। গরম করলে বিনিষ্ট গলে ছিন্ত বিবে নাঁচের বৃতিতে করা হয়। মরলা, অপরিকার গাদ ইত্যাদি সব উপরের বৃতিতে করা হয়। মরলা, অপরিকার গাদ ইত্যাদি সব উপরের বৃতিতেই বরা বাকে। রাজার নাদবাল ও কিতাবুল আসরার এত্রের মরশাভির বর্ণনার মধ্যে এ পছতি সহছে বিভারিত ভাবে বলা হরেছে। সাধারণতঃ লোহা গলানোর ব্যাপারেই এপছতির বেশী বাবহার দেখা যায়। লোহাকে অবনীর আরসিলো সালকাইতে পরিণত করে ইণতিনজাল করে গলানো হ'ত। ইসভিনজাল অর্থ নীচে নামানো (miking descend)। মুখা ছটি কালা দিরে জোড়া লাগানো হ'ত।

তাৰুসিদ-প্ৰক্ৰিয়া হিসাবে একে ইসভেনৰালেরই অন্ততম প্রক্রিয়া বলা চলে। তবে এ একট ভিন্ন প্রকৃতির। ভাকসিদের ৰাড়গত অৰ্থ হ'ল যে জিনিষ্ট নিয়ে কাক করা হচ্ছে ভার মধ্যে একট বিশ্ববীকৃত উপাদান (জাগাদ) বসিত্তে দেওয়া---বাত ও ভংকালীন বৈজ্ঞানিকগণ কর্ত্তক প্রস্তর নামে অভিহিত নানা ৰাভব পদাৰ্থের উপর এই প্রবা প্রয়োগ করা হ'ভ। ভবে ৰাতু-শুলির মধ্যে লোহাই একমাত্র বাতু যার উপর এই পদ্ধতি সাধা-ब्रन्तः श्रव्यक्त र'छ । अब काबन्छ (वाद एवं क्रिको । এবিষ্টটলের মতে অন্ত পাঁচ বা চর চেরে এতে মুত্তকার অংশ ৰেই ৷ (Meteorologica—Webster's translation.) ৰাতু ছাভা প্রভার নামে অভি'হত হরট পদার্বের উপর এই পছতি প্রয়োগ করা থেতে পারে। এই ছয়ট বিনিষ হ'ল মারকাসীসা ( Pyrites ), মাপনিশিয়া ( earthly minerals ), খাউস (Iron oxide), কাচ, ভাল্ক (mics and asbestos) ও জিবসিন (Gypsum)—অবস্ত লৌহের উপর প্রযুক্ত পছতি ও ইস্পিন্দাল প্ৰথা একই। বাজীয় বারণামতে লোহার সঙ্গে यक् छेत्रक्षत (त्रीत्रा) अवर अक्ट्रे नाका अनिविध विभारत। यात का रत्नहे त्नाहा विकद दोर्गा नदिनक रूरत।

ত। ভাশবিষাত্—এর ইংরেকী অনুবাদ ইাড়াবে Assation বা Koa-ting। বে কিনিষ্টতে ভাশবিষাত্ প্রধান বালার বিশ্বনাত প্রকাশ কর্মান ক্রিক্রা চালাতে হবে সেটকে প্রধান একটি "সালাইয়াত্"র উপর রেবে কল দিরে ভিলিরে নেওয়া তৃত। ভারপর ভিলা কিনিবকে, চারদিকে ভাল করে লেপা একটি বোভল বা বাটতে রাবা তৃত। অন্ত একটি পাত্র আগে বেকেই চুন্নীর উপর রেবে দেওয়া তৃত। ঘণন আগুনের উভাপে অভিরক্ত কল উবে দিরেছে বলে মনে হ'ত ভবন বোভলটির মুব বর করে দেওয়া হ'ত। ভারপর যতক্ষণ না প্রক্রিষাট সম্পূর্ণ হয় তভক্ষণ ভাপ দেওয়া চলতে থাকত। প্রক্রিষাট বউষানের airbath-এর অন্তর্মণ। একেও airbath বলা চলে। এ প্রক্রিয়াটির একটি বিশেষত্ব হ'ল এই বে, এতে প্রিবিভ ভাপ পাওরা বার। এ বেকে স্পুর্টই অভীয়নান হয়

বে তংকালীৰ বৈজ্ঞানিকগণৰ পৰিমিত তাপের সধৰে অবহিত বিলেন এবং তারই অতে তারা Airbith পদা উত্তাবন করেন। সে বিলেনে এ প্রক্রিয়াট বেশ কৌতুহলোভীপক।

- 8। তাবৰ—এ তালবিরাহরই অঞ্চল প্রবালী। ইংরেজী অভ্বাবে একে Coction বা digestion বলা বার। বিশ্ববঞ্চ বলি বুব বেশী আর্ক্র হ'ত তা হলেই এ প্রবালী প্রযুক্ত হ'ত।
- €। ভালतिय—चानतीय -- Amalgam stion---वाष्ट्रव मह्म भावत्मत्र मश्मिलन-अवाष्ट्र जाननिम नाह्य भवितिछ। শক্টির বাতুগত অর্থ হ'ল বন্দী করা। সাধারণতঃ উর্থাতন (sublimation) ও ভখীকরবের (calcination) প্র-ব্যবস্থা হিসাবে এ প্রণালীট প্রযুক্ত হ'ত। যে জিনিয় বা ৰাঠুকে উদ্বাতন বা ভন্মকরণ কথতে হবে সেটকে প্ৰথমে পারদের সঙ্গে মিশিয়ে নিয়ে এসর প্রস্তুত করে নেওয়া ছ'ত। এই এলম-প্রস্ত তপ্রাকেই তাল্পিম বলে। যে ভাবে এই अनव शक्ष करा र'ज जात श्रीं कम्मा (त्रावर ताव एत अहम ভালগিম বা বন্ধাকরণ নাম দেওয়া হয়। এই প্রশাট দশন শতাকা পৰ্যাৰ একই ভাবে প্ৰচলিত থাকে। প্ৰসঞ্জ বলে রাবা খেতে পারে যে এই ভালসিম শব্দ শেকেই বর্তমান हेरदेशी amalgam नक्षक्र डेड्ड स्टब्र्ट । ভाলগাৰ नक्षक्रि past participle ए'ल "यूलगाम"--- वर्षाए, "याटक अहे अवास উব্দীবিত করা হয়েছে।" রাশীর কিতাবুল আগবারে বণিত একট উণাহরণ এবানে উদ্বভ করা পেল। তার থেকে এ প্রধার্ট সহধে কিছু আভাস পাওয়া যাবে। "তুই ৰও সীদা একগঙ্গে একট লোহার চামচে (মিগরাফা) গলিয়ে া-যে ঠাতা হওয়ার करक अक काश्चनाय (ब्राय पांछ । यदन अश्वाना आश्च कर व আসতে বাক্তে ভবন বলের একট মুঘল নিয়ে চামচের উপর विभिष्ठश्राताल हान पिल्ड बाक, जनर बाल्ड बाल्ड जह চামচের খবো পারদ চেলে দিতে থাক। যতক্ষণ না পারদ এ-গুলির সলে মিলে শব্দ পাগরে পরিণত হয় ততকণ পর্যায় अमिनवात्र। हालाटि एटव । अहे शात्रम्यक किस शूर्व्स व्यक्ति বিশুদ্ধ করে নেওরা দরকার। মিএপপ্রক্রিয়ার পূর্বে বিশুদ্ধ পারদকে ভলপাটয়ের তেলে সিক্ত পদারী কাপড়ের মধ্যে दार्च पिरक्ष भावप **काल कार्य निरम्** मिर्ड स्ट्य ।

ভাগিৰ--উৰ্বাভন (sublimation) প্ৰধা বৰ্তমানের
নাসায়নিক প্ৰক্ৰিয়ায় বে ভাবে ব্যবস্ত হয় ভাষৰ-মসায়নে

क्रांत्रव श्रवां व व्यवक्री (महे कार्त्रहे विभाव ए'क । "वेदारम" (Aludel) এ প্ৰভিন্ন কাক সমাধান হ'ত। অবত সময় সময় ভাসির ও ভাক্তির একই অর্থে ব্যবহৃত হরেছে। আল-কেনীবিদ্যাপ এই উহালকে একট অতি প্ৰবোধনীয় বন্ধ বলে ছবে ক্ষতেন। উহাল কি ভাবে তৈত্তি ক্যতে হয় "বাদবাল" बावर "किछावून जामदादि" (म मदद विनम वर्गमा (मध्या হরেছে। এ সহত্রে যন্ত্রপাতি বিভাগে বিভারিত আলোচনা করা যাবে। ভাসিদের কাত কি ভাবে চলত, পারদ উর্ক্ পাতনের বর্ণনা থেকে তার কিছু আভাস পাওরা যায়। ভাবিরের Book of Seventy-র ৬১তম অব্যারে পারদ উর্থ্ব-পাতনের বর্ণনা আছে। রাজী তার কিতাবুল আসরার अरम् ७ क्रिक अकरे छारवत वर्गना आरम् । ताकी रव माविरवत পছারই অনুসরণ করেছেন ছুইটি বর্ণনার সামগ্রন্থ থেকেই তা ৰেশ বোৰা যায়। ভবে এট কাবিরের নিকথ উদ্ভাবনা, না পুর্বেকার গ্রীক বৈজ্ঞানিকদের গ্রন্থ পেকে নেওয়া সে বিষয়ে মততেল দেখা যায়। Stapleton ও Azoর মতে জাবির পুর সম্ভব এট এীক বৈজ্ঞানিক-এছ খেকে পেয়েছেন। রাজীয় পারত উর্দ্বপাত্ত্রের পদ্বাচীর এবানে উল্লেখ করা গেল।

"পারদ উর্দ্বণাতনের ছুইট পদ্ম আছে। একট লাল পারদের জভ, অভট সাদা পারদের নিমিত। এই উর্বাতনের মধ্যে হুট বিশেষ প্রক্রিয়া আছে। এক হ'ল একে আন্ত্রতাবিমুক্ত করা, আর অপরট হ'ল একে শুষ্ক করা যেন এট বিশোষক হতে পারে। আন্তর্ভা ছই ভাবে বিদুরিত করা যেতে পারে। প্রথমে, যে জিনিষ্টর সঙ্গে উর্জপাতন করতে হবে ভার সঙ্গে अप्रेटक छान करत (मर्प नाथ। अरे छार्व माना निनिम्हीरक अकृष्ठे। निनित्र (कांक्षता) मरवा शूरत निरम्न सृष्ट् चाश्वरनत चारन ভাগ দিতে থাক। শিশিটার চার দিক আগে থেকেই কাদা ৰিয়ে ভাল করে লেপে নিতে হবে। ধানিককণ তাপ দেওয়ার পর আবার মেড়ে নাও। আবার ভাগ দাও। এই রক্ষ সাত বার কর যতক্ষ মা পারদ সম্পূর্ণ ভাবে 'মরে' যায়। ভার পর একে আবার যে ভিনিষের সঙ্গে ইচ্ছা উর্দ্বপাতন কর। अब भव चार्वाव यह जारभ भवम करव अनुषारम द्वार माछ। পাৰদে বে আত্ৰতা আছে সেটুকু সৰ নিঃশেষে পাভিভ করবার বভে এলুডালের উপর অলপরিসর নলবিশিষ্ট কাঁচ व्यवना नव्य प्रवंद शांक द्वाद मिटल एटन । महमद बीहरू একট পাত্র (সুকুরক্রভাছ) রেবে দিতে হবে।

এলেমবিকের কারগার এপ্ডালের মাধার উপর একটা টাকনা (মিকাববাছ) ভাল করে বসিরে নিরে ব্যবহার করা বেতে পারে। ভবে এর উপরে যেন একটা ছিজ থাকে। ছিক্রটা এনন হবে বে বড় একট হচের মাধা এর মধাে, মনারাসে চুক্তে পারে। এই ছিজের মধাে প্রবীপের একটি প্রামী সলিভা রেধে বিতে হবে। সলিভার এঞ্চিক্ পা্তের

উপর বৃলে বাকবে যেব পারবের সব্যে বত আর্ত্র'ডা আছে সবই ভাতে পাতিত হতে পারে।

এর পর এই এলেখবিক বা চাকবাটা সরিবে কেলে অভ একটা চাকবা দিরে এল্ডালের মুখট বন্ধ করতে হবে। চাকবা বেন এমন হর যে এল্ডালের মুখের উপর প্রকর তাবে বসাবো বেতে পারে। চাকবাট বসিরে দিরে কোডের কারগার উত্তরভাগে কালা দিরে এঁটে দিতে হবে।

এলেমবিক ব্যবহারের চেরে অধিকতর উপযোগী হর, যদি এলডালের উপর একট সচ্ছিত্র ঢাকনা ব্যবহার করা বার। ছিন্তট কমিঠ অঙ্গুলি প্রবেশ করতে পারে এমনি বভ হওরা হরকার। এমনি ভাবে এল্ডালে কাল্ল করতে বভন্দণ না জিনিষটকে সাদা বা কালো ধূলির মত উপরে উঠতে দেখা যার ততন্দণ ছিন্তটি খোলাই রাখতে হবে। সাদা বা কালো রঙের ধূলির মত জিনিষ উপরে উঠতে দেখলেই বোঝা যাবে যে পারদের আছাতা বিদ্বিত্ত হবে গেছে। এর পর ভাবির ইবনে হাইরানের নির্দেশ অভ্নসারে মত্ব একট কারির রাখার ভাক্তা ক্তিরে ছিন্তটি বক্ষ করে দিতে হবে।

সাধারণত: নিয়োক জিনিষগুলির সলে পারদ উর্জ্পাতন তরা যেতে পারে—কটকিরি, তুতিরা, লবণ, গরুক, চূণ, ওঁছা ইট, কাঁচ, লাক্ষার (gall nu!) ছাই, ওকের ছাই, মারকাসীদা—শেবং তরল পদার্থের মধ্যে তিনেগার, তুতিরার জল, সাল এমোনিয়াকের জল, কটকিবির জল "লাদ আর রাগওয়া" নামক সেই পারদ ও গছকের জল।

#### "সাদা"র ভঙ্গ পারদ উর্দ্রপাত্র

এক 'রতল' পরিমাণ ক্ষমানো পারদ মাও এবং সালা ক্টকিরি লবণ ও ছাই প্রত্যেকট সম-পরিমাণ নিয়ে একসঞ উভ্যরণে ভূড়া করে যিশাও। चंचाधामात्व अवहे। ছালাইয়ার উপর বিছিরে নিরে ভিনেপার ছিটরে দাও। ভারণর সকাল, ছুপুর ও সন্ধার এক पर्छ। করে অর্থাং সারাদিনে ভিন বন্ধী করে ধুব ভাল করে শুঁড়া নিশাও। ভারণর কালা দিয়ে আরত একটা বোডলের মধ্যে রেখে দাও। এইবার বোভলটার মুখ বন্ধ করে যে উন্থনে এই মাত্র রুটি গেঁকা হয়েছে তার গরব ছাইরের উপর রেবে দাও। এই ভাবেই এক রাভ থাকতে হাও। সকালবেঁলা জিনিষটাকে ওঁড়া করে এলুডালের পাত্তের মধ্যে রাখ। কিছু গুড়া লবণ এলুডালের ভলার রেবে যাও। এইবার পূর্বের মত এল্ডালের উপর এলেমবিক ভালমপে ছাপন কর। ভারপর এই ভাবে ভাপ पिट्ड विनियमित चार छ। विवृत्ति कत । अत शत अतमविक ভূলে নিয়ে তার ভারগায় খন্ত একট ঢাকনা রাধ এবং জোড়ের ভাষণা কালা দিবে লেপে লাও। কিন্তু বতকণ না এই আগুৰের বুরু ভাপে আদ্র ভা বিগুরিত হরে যার ভতক্ষণ এর পীচে অন্ন আগুৰ খেলে হাব। চাকৰা বেশ ভাল কৰে কাসিয়ে

নিবে এল্ডালটকে ঘটাবানেক বরে বছ তাপ নিতে থাক।
তারপর আগুনের ছোর একটু বাছিরে অধিকতর তাপ উৎপাহন
কর। প্রত্যেক রতল জিনিবের জভ ১২ ঘটা বরে এমনি তাবে
তাপ নিতে হবে। বধনই চাকনার পালটা বেশী উভও হরে
উঠবে তথনই আগুন কমিরে নিও—তা না হলে চাকনার
নীচে তাকে বে জিনিব জনা হবে তা আগুনে পুড়ে বেতে
পারে এবং নাইও হতে পারে। এই ভাবেই চলতে থাক্যে
বতক্রণ না সমন্ত জিনিব উর্ধাতন হয়। যা হোক এই
উৎক্রেপকে আরার অবলিষ্টাংশের সকে মিশিরে শুঁড়া করে
নিরে পুনর্কার উৎক্রিও করতে হবে। তিন বার এই রক্ষ
করতে হবে।

চ্নী ( আভানিন ) বেকে পোড়া হাড় নিয়ে বুব ভাল করে 📽 জা কর। উৎক্ষেপের সঙ্গে সম্পরিমাণ গুঁজা-করা পোড়া হাড় এক ঘণ্টা ধরে উভ্তমরূপে বিচুর্ণ কর। প্রত্যেক বার শুভন শুভন হাড়ের গুঁড়া দিভে হবে। ড়ভীয় বারে সাদা ষরা বিশোষক জিনিষ বেরিয়ে আসবে। ঢাকনার এক পাশে अक्टी विक्र दांचा पदकात । विक्रिके अमन स्ट्र (यन अक्टी यह স্থচ ভার মধ্য দিয়ে প্রবেশ করভে পারে। মাধায় তুলা ব্দভানো একটা কাঠি এর মধ্যে চুকিরে রাব। এই কাঠিট ৰ্কীর ৰ্কীর বের করে দেবতে হবে। এর সঙ্গে যে উৎক্ষেপ লেগে থাক্তবে তা একটি তাকের ওপর রেথে দাও। এই कार्य क्लांब क्लांब नदारक्रातकालय भव यक्त क्रिका बार्य है. আর কোন উৎক্ষেপ বেরিয়ে আগছে না তথন আগুন নিবিয়ে দেবে। এবার যন্ত্রটকে আতে আতে ঠাতা হতে দাও। ভারণর ক্রোড়ট আছে আছে তেঙে দিরে শেলফের উপর যে ভিনিৰপ্ৰলো ভাষা হয়েছে সেপ্সলোকে সংগ্ৰহ কর। এই লংগৃহীত জিনিষ্পলো রেড়ীর তেল (বিরওয়া ) দিরে ভিজিয়ে मदम करत अकड़ कामा किरव रमना निनित मर्या वार्य। चिनिक्रिक अक्की शहिल्या शास्त्रव छेशव व्यवस्थ कार्कव क्रेक्श पित्र वद करत पाछ । कारेत्रत शावकेत मीत्र जास्म বালিষে দাও বাতে আন্ত্রতা বিদ্বিত হয়। তারপর শিশিটব মুখ খুব ভাল ভাবে সীল করে দিয়ে উপরে ছাইচাপা ছাও। এই ছাইবের গালার উপর ছোট ছোট ক্রলা রেখে चाधम चानित्त नाथ। धमनि चारन मिनित मरनाकांत्र বিশিষ্পলো ক্ষে বাবে। চীনা আন্ধনা ভৈন্নি করতে যে বাড়া बाबबाज एवं अहै। एवंटाज जांबरे मज स्टब । अहै। स्टब (शर्म এর এক দিরহাম বিশ দিরহাম ভাষার উপর চেলে দাও। क्षिमिनकी जांत्र मत्ना श्रादम करत तम कांक कत्रत ।

ভাৰনিক—ভারবিন । ভাৰনিক (Constriction) বা ভারবিন (Incubation) ভাসিবেরই একট সহল পরা। এতে ক্লাড (কারানি) ব্যবস্থত হয়।- কিনিবট ক্লাডের মধ্যে রেবে আতে ভাতে ভাপ বিতে হবে। তবে যবি ক্লিনিটর সারাংশ বের করতে হয় তা হলে তেলের সলে মিলিরে নিরে ক্লাকে রাবতে হবে। তাপ বিতে বিতে কল বা তৈলাক বিনিবটি ববন উবে যাবে তবন বোতলের মুব বছ করে তাপের নাত্রা বাছিরে দিতে হবে। যতকণ না সমস্ত বিনিবট উৎক্রিক্ত হরে ক্লাকের গলার কাছে ক্লা হয় ততকণ এম!ম তাপ বিতে হবে।

৮। তাক লিস—এর আর্থ ভত্মীকরণ। বর্তমানের calcination নামে প্রচলিত পদাটির অফুরপ। এর প্রক্রিরা আনেকটা তাশবিষার অফুরপ। এতে কাদা লেপা পাঞ্জীকে প্রত্যক্ষভাবেই আগুনের তাপে কেওয়া হয় এবং বতক্ষপ পর্যন্ত না ক্রিনিষ্টি ওঁজো হয়ে যার ততক্ষপ পর্যন্ত এমনি তাপ কেওয়া চলতে থাকে।

রাশী কি ভাবে এই প্রক্রিয়ার কাল করতেন "কিতাবুল আসবার" থেকে ভার একট উদাহরণ উদ্ভুত করা গেল। এ বেকে অভি সহকেই প্রভীয়মান হবে যে, Phlogiston Theory বর্তমান রসায়নের ইতিহাসে যে সময় বেকে প্রবম উদ্বাবিত হয় বলে বণিভ্তার প্রায় সাঞ্চে সাত শ' বংসর আরে (परकरे देवलानिकरणत गरन है कियु कि मात्रहिल। "जानशाण (দেহ অবাং বাড়), পাণৱ, লবণ পণার্থ, গাদ, ভিষের বোসা এবং আসদাক (ভঞ্জিও শামুকের বোলস) ইত্যদির উপর তাকলিস-প্ৰথা প্ৰয়োগ করা হয়। এদের আসল কাৰ হ'ল ভাদের দৈহিক উপাদান নষ্ট করা। ভাদের মধ্যে যে ভেল ও গৰক জাতীয় জিনিষ রয়েছে সেগুলো পু'ড়ৱে দেওয়া এবং এই ভাবে তাদের সাদা চুনে পরিণত করা। এর পর অবস্থ আর অধিক ভাগ কর। যেতে পারে না। দ্রবণীয় পদার্বের বেলাগ্ধ নিয়োক্ত ভিন ভাবে প্রয়োগ করা যেতে প'রে। প্রথম পুড়িয়ে, ছিতীয় তাশ'দয়াহ অবাং মরিচাযুক্ত করে। এবং ডৃতীয় প্রধা হচ্ছে এমালগাম করে। তাশনিয়ার হ'ল বছ রাসায়নিক क्षरा पिट्य द्राभावनिक श्रवाय काक करा।

প্রথম প্রথার পূ'ড়য়ে রৌপ্যের তদ্মীকরণ— "দল দেরহাম রৌপ্য লও এবং এর সলে আব দেরহাম ওক্ষরে গলান হলদে গঙ্ক মিলিরে দাও। এগুলিকে সালাইরাহর উপর রেবে ব্ব ভালভাবে মেড়ে এতে লবণ-ফল দাও ( আরবী—একে লবণ-ফল বেতে দাও)। যতক্ষণ না পদাবটি একেবারে ভাকিরে যার ততক্ষণ পর্যান্ত এমনি করে মাড়তে থাক। এইভাবে মাড়া হলে পর একে একটি কাদালেপা পাত্রে (কুঁলো) ভূলে মিরে উন্থনের উপর রেবে দাও। বানিক পরে পাত্রটি সরিরে নাও। বেশ ঠাঙা হরে গেলে ভিতরকার ফিনিব বের করে নাও। এগুলো আবার মেড়ে মিরে ধূরে মাও। এমনি ভাবে বার বার মাড়তে থাক—বতক্ষণ না ফিনিবটি এমন সাদা গুঁড়োতে পরিণত্ত হর বে একে আর বেশী ভাগ করা বাবে মা।

তাশদিরাহ—তাক্সিসের অভতর প্রথা হ'ল তাশদিরাহ। কিতাবুল আসরারের নিয়োদ্ধত অংশ বেকে তাশদিরাহ প্রধার রাসারনিক প্রক্রিয়া সহতে কিছু আভাস পাওয়া বাবে।

- ক) তাশনিবাহ প্রধার সোনা ভদীকরণ—ইচ্ছারত কিছু সোনার টুকরা লও এবং একট সালাইবাহর উপর লরপরিমাণ পরিক্রত হুরা সিকা (Wine-Vinegar )মিশানো লাল এমোনিরাক দিয়ে মাড়তে থাক যতক্ষণ না সোনা ধূলার মত ওঁড়োতে পরিণত হয়। দরকার হলে জিশবার পর্যন্ত (জিশ দিন) এমনি মাড়তে হবে।
- (খ) তাশদিরাহ প্রধার বৌপ্য ভশীকরণ—ইচ্ছামত কিছু
  রৌপোর টুকরা ও সমপরিমাণ সালএমোনিরাক লও।
  এগুলোকে একত্রে জল দিয়ে ভিজাও। এর পর এগুলোকে
  তিন বার জল দিয়ে খুব ভাল করে নাড়া দাও। যবন জল
  তকিবে যাবে তবন আবার জল দিয়ে ভাল করে বাঁকুনি
  দিতে থাক। এমনি ভাবে যতক্ষণ না রৌপ্য সাণা ধূলিবং—
  "জানজারে" পরিণত হয় ততক্ষণ জল দিয়ে নাড়াতে হবে।
  (জালভারের বাঁঠুগত অর্থ হ'ল যার কোন অংশ নেই।)
  তার পর পদার্থটিকে ধুরে নিয়ে জল ও লবণ দিয়ে এমজনাক কর
  এবং যতক্ষণ না সাদা চুনে (গুরাহ) পরিণত হয় ততক্ষণ
  পর্যান্ত এমজনাক করতে থাক।
- (গ) তাশ'দয়াছ প্রথার তামা ভদীকরণ—তামাকে জানকারে পারণত করার কর এ প্রথা প্রয়োগ করা হয়। একটা তামার পাত নিয়ে গাঢ় (গালিক) সির্কাতে চুবিয়ে লাও। (লিপকিপের পাঙুলিপিতে সির্কার স্থানে "টাটকা ছব" শব্দ বাবগুত হয়েছে। খুব সপ্তব এ ভিনেগারেরই তংকালীন রাসায়নিক পারতামা মাঞা।) তারপর তামার পাতটকে বাশের চাটাইয়ের উপর রেখে, চাটাইয়েকে ভিনেগার তরা অন্ত একটি পাত্রের (বাতিয়াহ) উপর স্থাপিত কর; এতে তামা জানকারে পরিণত হবে। পাতের উপরকার কিয়পংশ জালকার বা গুঁড়ো হয়ে গেলে সেট টেচে নাও এবং আবার প্রপ্রথামত কাক চালাও। এতে আতে আতে গোটা তামার পাত জানকারে পরিণত হবে।

অভ একট উৎকৃষ্ট পছা—তামার টুকরো এক রুল এবং লালএমোনিয়াক একসন্দে এক আউল নিয়ে পুরা ভিনেগারে চুবিয়ে দাও। দিনের মধ্যে এগুলোকে কয়েকবার বাঁকিয়ে দিতে হবে। বধন ভিনেগার শুকিয়ে যাবে তথনট আবার ভিনেগার দিয়ে বাঁকাবে। এভাবে এই মিশ্রণকাত পদার্থ পুরোপুরি জানকারে পরিণত হবে।

শ্বত একট উংফ্টেডর পছা—এক রতল পরিমাণ সুন্দর কুসাবতাক (পোচা তামা অবাং তাত্রাক্ল—Copper oxide) নিবে ভালতাবে বেচে ভার সকে এক আউল পরিমাণ সাল-এবোনিয়াক মিশাও। এবন চুই রতল পরিমাণ ভাল সুরা ভিনেপার নাও এবং তার সকে এক আউল সাল-এনোনিরাক নিশ্রিত কর। এক রাত এননি বাকতে লাও। তার পর কিন্টার কর। এবার সালাইরাহর উপর মাড়া রুসাবতাক মিশিরে রেবে লাও। দিনের বেলার এমনি মেড়ে নিতে হবে, এবং রাজে আরও ভিনেগার দিরে রেবে দিতে হবে। যবনই শুকিরে যাবে তথনই ভিনেগার মিশাবে—হতকণ না সবচুকু জানজারে পরিণত হর।

আবস্ত এই তিনট প্রক্রিয়ারই copper acetate তৈরি হবে। তৃতীয়° প্রক্রিয়াট বিশেষভাবেই লক্ষ্মীয়। এতে রাসায়নিকের অসাধারণ বুদ্দিখভারই পরিচয় পাওয়া যায়। রাসায়নিক বুবতে পেরেছিলেন যে, শেষ ফল আর্থাং copper acetate, ভষীভূত ভাষা থেকে যেমন ভৈরি করা যেতে পারে ভেষনি সাধারণ ভাষা থেকেও প্রভাক্ষ ভাবেই ভৈরি করা যেতে পারে ।

(খ) লোহ ভত্মীক্রণ—লোহের বেলায় অবস্থ এই ভত্মী-করণ প্রধা অভি সহজ। ভশীকরণ অর্থ লোহে মরিচা ৰৱানো। মুৱিচা-ধুৱা লোহা বৰ্ডমান ৱসায়নে Iron oxide মামে পরিচিত। আরব-রসায়নে এর মাম হ'ল "ভাকরাম"। সাধারণ কলের সলে বাভাসের সাহাযো অধবা লবণ ও ভিনেগার মিশানো কলের সকে বাভাসের সাহায্যে লোহাকে কাকরানে পরিণভ করা হ'ভ। একট প্রক্রিয়া এখানে বর্ণনা করা গেল । "ভাল লোহার কভকগুলো টুকরা লও। এগুলোকে কয়েকবার चन ও লবণ দেয়ে বোও যেন এর সমস্ত ময়লা বিদূরিত হয়। এই পরিস্কৃত লোহার টুকরো-ছলোকে একটা কাঁচের বোভলে রেখে, বোভলের ভিভরে তুরা ভিনেগার চেলে দাও। এইবার মিশ্রিত পদার্থকে দিনের মৰো কয়েকবার ভাল করে বাঁকিয়ে দেবে। যথনই শুকিয়ে যাবে তথনই আবার ভিনেগার দিয়ে বাকাবে-যতক্ষ না সমস্ত লোহার টুকরে। জাফরানে পরিণত হয়।" লৌহ ভশীকরণের ব্রন্থ একট পদ্ধতিও বেশ কৌতৃহলোদীপক। এ পছায় আর্সে নিক সালফাইড ব্যবহার করা হয়েছে। লোহার টুকরা প্রথমে আর্সেনিক সালফাইডের সঙ্গে পরম করলে যে Iron Arseno Sulphide তৈরি হর ডাকে ভূডিরা (কাৰ) মিশনো ডিনেগার দিয়ে বিহোজন করা হ'ত। ভারপর যতক্ষণ না লাল গুঁড়োতে পরিণত হয় ততক্ষণ এই বিয়োকিত কিনিষকে তাপ দেওয়া হ'ত।

ভাসবিল—বিশুদ্ধিকরণের অন্য একট উল্লেখবোগ্য পছা হ'ল ভাসবিল। মাকাভিছল ওলমেব তৃতীর বঙে এ পছাটর উল্লেখ দেখা যার। ইংরেজীতে Lixivation বলতে যা বুখার এ শক্ষটর বুল অর্থও অনেকটা ভাই। এর উচ্চেট ছিল কিনিষ্টাকে এমন হল দানাতে পরিণত করা বেন সেগুলি হলের উপর ভাসতে থাকে। প্রক্রিয়াটতে অব্রু ভন্নীকরণ-প্রথাও নিহিত রয়েছে।

#### বিভবিকরণের বিভীয় ভয়

তাশমি—এর ইংরেজী আর্থ টাড়াবে Ceration, পদার্থ-শুলির অতিরিক্ত সমন্ত মরলা উপরোক্ত এক বা ততোবিক পদ্মার পরিকার করে নিবে সেগুলির উপর তাশমি পদ্ধতি প্রারোগ করা হয়।

ভাবিরের 'Book of Seventy'র অভতম গ্রন্থে তাশমি প্রধা সহতে আলোচনা দেবতে পাওরা যার। তাঁর মতে তাশমি হ'ল যে সমভ ভিনিষ থেকে ক্লছ ও নাক্ষ্য পুথক করা হরেছে সেই সমভ ভিনিষে ক্লছ ও নাক্ষ্য কিরিয়ে আনা। কিতাবুল আসরারে রাজী সংমিশ্রণের তৃতীয় বা সর্বাদ্ধক্ষর প্রতি সহতে যে বর্ণনা দিয়েছেন তার বৃলও বোর হয় ভাবিরের এই বিওরী।

রাজীর বর্ণনা নিয়ন্ত্রপ—নাকস আবে পূথক ভাবে তাপনি করে এব কর, তারপর ক্রছও পূথক ভাবে তাপনি করে গালিরে নাও। তারপর 'দেহ' (আক্লাদ) পূথক ভাবে তাপনি করে আবি করে এই তিনটি ক্রবণ সমণরিমাণে একরে মিশিরে চন্দ্রিশ দিন মাটির নীচে পুঁতে রাখ—যতক্ষণ পর্ব্যন্ত না তারা বিশুরীকৃত হয় এবং একটি আনাটির সক্ষে অনিক্ষেদ্যান্তাবে মিশে যার তত্তকা এমনিভাবে রাখতে হবে।

এই ভাশনি প্রজিলা চার শ্রেণীর প্লার্থর উপর প্রহোগ করা বার বলে রাজী জাঁর কিভাবুল আসরার প্রস্থে লিপিবর করেবেন। এই চার শ্রেণীর পলার্থ হ'ল নাকসীর (আছিক বছ), আকসার (বৈহিক বছ), লবণ পলার্থ এবং প্রস্থর-বছ। ভাশনি করা হর চার প্রকার বিকারক (Reagent) হারা। এই চার প্রকার বিকারক হ'ল আছিক বস্ত, লবণ-পলার্থ, ভৈল-পদার্থ ও সোহারা জাতীয় (Borax) পদার্থ।

আদ্বিক বস্তথনোকে লবণ পদাৰ্ তৈল পদাৰ্ এবং সোহাগা জাতীর পদাৰ দিয়ে, দৈহিক বস্তথলোকে আদ্বিক বস্ত, লবণ পদাৰ্থ এবং সোহাগা জাতীর পদাৰ্থ দিয়ে প্রস্তর বস্তু, লবণ-পদার্থ সোহাগা জাতীর স্তব্য এবং লবণ-পদার্থপ্রনোকে তব্ তৈল পদার্থ দিয়ে তাশমি করা যেতে পারে। তাশমি করে যে জিনিম পাওয়া যাবে সেটা যদি কোন তপ্ত রোপ্য বা তামার পাতের উপর কেলা যার তা হলে গলে যাবে এবং বাতুর মবোও প্রবেশ করবে। এই সমন্ত তাশমি করা বস্তু বাতুওলোকে কিছু রঙীনও করে তুলতে পারে।

এই তাশমি প্রক্রিয়ার উত্ত জিনিষগুলো কি তা ছির নিশ্চর করে জানা যার না। তবে খুব সন্তব এগুলো কভিপর প্রবর্ণীয় বন্ধর একত্র সমাবেশ। এবানে রাজীর প্রস্থে ব্রিত সোনা তাশমি করার ছুইট পছার উল্লেখ করা গেল। এর প্রথমট প্রীক প্রতির অন্তর্জপ। এই প্রতিতে গ্রীক জালকেনী-বিভূগণ রাসারনিক পরীকা চালানোর জন্য নানা রাসারনিক পদার্থ তৈরি করতেন। বিভীরট খেকে মনে হয় বৈজ্ঞানিক খুব লক্ষৰ অৰণীয় Double chloride of gold তৈটি কয়তে সক্ষ হয়েছিলেন।

১। আছিক বন্ধ দিয়ে সোনা তাপমি করা—"বতটা ইছা লাল সোনা লও এবং তা থেকে পাতলা পাত তৈরি কর। একটা কাদালেপা পাত্র লও এবং এতে বালীভূত গ্রহক— বাতে কাল রঙের কোন চিহুই নেই, তরে তরে সালাও। এতে পাতলা সোনার পাতগুলোও তরে তরে সালিয়ে দাও। এবন পাত্রট ভিট্র ওল (জাক) দিয়ে পূর্ণ কর। এই— বার একটা ঢাকনা দিয়ে মুব বন্ধ করে কোড়ার ভাষগাটা ভাল করে এঁটে দাও। এবন পাত্রটিকে মাঝারি রক্ম উভাপের চুলীর (ভায়ুর) উপর রাব। মাঝারি উভাপ বলতে খুঁটের আলের মত আল বুঝার। ভারপর ঠাকা হয়ে গেলে তুলে মাও। এমনি ভাবে করতে থাক বত্কেশ না গলে বরে বার।

প্ৰক্ৰিয়াটন বৰ্ণনা ৰেকে মনে হয় ভিট্ৰপত Copper sulphide এবং Iron sulphide-এ পৰিণত হবে। এবই সদে সোনা ও গৰকে সংখিত্ৰিত যে Gold sulphide তৈথী হবে, তার সকে হয়ত Copper sulphide ৰা Iron sulphide হত হয়ে double sult তৈথি হতে পাৰে।

লবণ দিবে সোনা ভাশমি কয়— ওঁড়া সোনার ডম্ম মাও এবং একে সালএমোণিয়াক সলিউসনে ডাল করে ভিজাও যাতে সমন্ত অংশই উভমন্ত্রণে একত হতে পারে। যতক্ষণ না ভব্দ হর, একে মাডতে বাক। ভারপর পিছনে ডালা থিরে একট লেপা বালায় ( স্কুর রক্ষা ) অনাক্ষাহিত করলার আওনের উপর রেবে দাও। যথন দেবা যাবে এই মিশ্রিত পদাবগুলি উপরে উপরে খামছে তখন উপরের ডালাটা ভূলে নিয়ে ঠাঙা হওয়ার কর অলএ ভূলে রাখ। ঠাঙা হয়ে পেলে আবার ডালা বর কর। এমনি ভাবে দশ বার কর। ভারপর সালএমোনিয়াক সলিউসন দিয়ে ভাল করে ভিজিরে মাডতে বাক। এভাবে দশ বার কর— যতক্ষণ না জিনিষওলো ক্ষমাহী (deliquescent) লবণে পরিণত হয়।

হল-ভাহলিল—Solution—শশ্টির বাভূগত অর্থ হ'ল পদার্থের ক্ষু ক্ষু ক্ষা কণাসমূহকে পূথক করে দেওরা। এতে ভাশমি প্রথায় যতটুকু পরিবর্তন হয়েছে তার চেয়ে আরও অবিক পরিবর্তন বুবায়। বর্তমান রসায়ন-শালে solution বলতে যে প্রক্রিয়া বুবায় আরব-রসায়নেও ভাহলিল টিক সেই অর্থেই ব্যবস্থাত হ'ত।

রাজী তাঁর তৃতীয় গ্রহের চচুর্ব পরিচ্চেদে 'হল' প্রক্রিয়া সহত্বে যে করেকট উদাহয়ণ দিয়েছেন, এবানে তথ্যে করেকট উদ্ধৃত করা গেল। এ থেকেই প্রক্রিয়াটতে কি প্রধা অনুস্ত হ'ত তার আভাস পাওরা যাবে।

(ক) আল্যিরাই আল্যাকার—'তীল্ল' বল বিরে কতক-

### হেমন্ত শিশিতের মেশা নতুন সানের নেশা !



বিন্দ স্থান ভট্টাচার্য

GE 7409

(না ধরা দেবার ছলে

একটি সেতৃর বাঁধন

—আধুনিক

গারীন চক্রাবর্তী

ক্ষারী নীভা বর্ধ ন

ক্ষারী নীভা বর্ধ ন

ক্ষারী নীভা বর্ধ ন

ক্ষারী নাভা বর্ধ ন

ক্ষার্ধ ক্ষার্ধ —আধুনিক

শ্ৰীমতী প্ৰতিমা দাশগুৱা

(JE 7410 { অঞ্চনদীর স্থাবর পারে মুধপানে চেয়ে দেখি

### বহুখ্যাত বাণী চিত্ৰের গান

### ইতিয়া ইউনাইটেড পিকচাল লিঃ-এর

নারীর রূপ

हिट्या भाग GE 7437, GE 7438, GE 7439 সাইন প্রোটিউদার্স-এর

মায়ের ডাক

हिटाब भाव GE 7390

নিউ থিয়েটাস লিঃ-এর

অঞ্জনগড

চিত্তের গান

—( বাংলার )—

VE 2555, VE 2556

VE 2557

—( হিন্সিতে )—

VE 2556, VE 2558

ঈষ্টর্ণ টকি**জ লিঃ-এর** 'নন্দরাণীর সংসার'

> हिट्यंत्र शन GE 7405

কন্ধ চিত্র মন্দিরের ওরে যাত্রী

हित्यत्र भीन GE 7387, GE 7388 GE 7389

কলম্বিয়া গ্রাফোফোন কোম্পানী লিঃ

কলিকাভা — বোম্বাই — দিল্লী লাহোর — করাচী শুলি বিনিবের একট বিচিত্র সংগ্রহ বলা বেতে পারে।

মূত্র এবং অন্তান্ত অকৈব পদার্থ থেকে প্রাপ্ত নানাবির তরল
পদার্থ এবং ভিনেগারও এই 'তীক্ষু' জল নামে ব্যবহৃত
হরেছে। এ ছাড়াও সালএযোনিয়াক মিশানো কট্টিক সোডা,
গাচ এমোনির সলিউসন, জ্যালসিয়াম সালকাইড (জাদখার
রাগওয়াছ) এবং সালএযোনিয়াকে পারদের সলিউসনও
ব্যবহৃত হ'ত। সালএমোনিয়াকে পারদ সলিউসন অবস্থ
বিশেষ করে ভ্রমীকৃত জিনিষগুলোকে ক্রব করবার জ্লই
ব্যবহৃত হ'ত। (গাচ এমোনিয়া সলিউসন সাধারণতঃ সালএমোনিয়াক ও ভারার একত্রে পাতন করে, সালএমোনিয়া
ও তেতি সাচা চ্যাচ মিশিরে নিয়ে এই পাতিত জিনিষ্ট
তৈরি হ'ত।)

খনিজ আন পদার্থের (mineral acid) আবিষ্ণারের मिक भिर्व दाकीत अहे भन्न वित्मवर्धात्वे छ्रावस्यांगा। এ পদাহট রাজী হাইডোকোরিক এসিড তৈরি করতে সক্ষ হন। রাজীর প্রস্থের এই অধারে নিয়োদ্ধত প্রকিয়াট ৰেকেই বুৰা যায় যে, তিনি সতা সতাই হাইড্ৰোক্লোৱিক এসিড তৈরি করতে পেরেছিলেন। সেহিসেবে এটকে ছাইডে'ক্রোরিক এদিড প্রস্তুতের অঞ্জম প্রাথমিক প্রণালী वल। हर्ष । खरके धरीरमध यण्डम खर्षा (वक्शान ও অভান্ত প্রাচাতত্ত্বপ্রদুদের মতে রাজী সভা সভাই যাবভীয় ধনিৰ অন্ন (mineral acids) আবিষ্কার করতে পেরেছিলেন, কিছ ষ্টেপলটন ও তার সহকলীরা এ বিধয়ে বেক্যান প্রভৃতির স্থে একমত নন। তাঁদের মতে বেক্যান ও তার সহক্ষারা ধুব সম্ভব Liber Bubacaris প্রস্থে প্রক্রিক করেকটি পরিচেছদের উপর নির্ভর করেই এই সিদ্ধান্তে উপনীত হয়েছেন। ষ্টেপলটন ও তার সহকলীরা তাঁদের মতের সমর্থনেও কোন উল্লেখযোগ্য প্রমাণাদি উপস্থাপিত ক্তরেন নাই।

#### সাভট লবণের সলিউসৰ

সম-পরিমাণ শ্মিষ্ট লবণ, তিক্ত লবণ, তাবারক্ষাদ লবণ, আনদারাদী লবণ, ভারতীয় লবণ, আলকিলি লবণ লও। এর সক্ষে সম ওজনের দানাদার কেলাসিত সালএমো-নিয়াক মিশিয়ে নিয়ে সামান্ত জল দিয়ে দ্রব কর। এইবার সংমিশ্রণটিকে পাতন কর। কলে 'তীক্ষু' জল পরিক্ষত হয়ে বেরিয়ে আসবে এবং পাধরকে (সাধর) মুহূর্তের মধ্যে গলিয়ে কেলবে। (লিপজিপের পাড়লিপিডে "সাধর" শক্ষের পরিবর্তে "তালক্" শক্ষ ব্যবহৃত হয়েছে।)

্ষ্টেপ্লটন ও তার সহক্ষারা, এসিডের সিক্লে রাজীর পরিচর ছিল কিনা সে বিষয়ে সন্দিহান। তাঁলের মডে, রাজীর সময়ে নাইটর (Nitre) অভাভ লবণ-পদার্থ থেকে পৃথক করা হয় নাই। একথা মেনে নিলে এই সময় নাট্রক এসিড সম্পূর্ণ পৃথকভাবে তৈরি হরেছিল বলে বলে হব বা। বহিও
রাজী ভিট্রিওল শুক্ষণাভন করেছিলেন ভবুও ভিনি সালকিউরিক এসিড তৈরি করেন নাই বলেই মনে হয়।
পূর্ব্বোক্ত পঞ্চিতদের বারণা, রাজী শুবু রুহ ও নক্স
পূথকীকরণের চেপ্টারই এমনিবারা পরীক্ষণ করেছিলেন এবং
সেইক্পই পাতিত করে প্রাপ্ত বিনিষ্ককে আবার আলেমবিকে
অবশিশ্রাংশের মধ্যে মিশিয়ে দেন। এই পাতিত করে প্রাপ্ত
কিনিষ্ক বে একটি বিশেষ শক্তিসম্পন্ন স্রাবক সেটা হয়ত ভার
মন্তবে পড়ে নাই।

ষ্টেপলটন অবস্থ এ মতের সমর্থনে কোন প্রমাণ উপস্থাপিত করেন নাই। তিনি ও তার সহকলীরা লাউকার প্রমুখ প্রভিগণের মত খণ্ডন করে নাইটর যে আরবদের ত্ৰপৱি'চত ছিল সে বিষয়ে প্ৰমাণ দিয়েছেন। লাউকাৱের মডে আরবগণ ত্রেধেদশ শতাখীতে Salepetre-এর সঙ্গে পরিচিত ছন। এই সণ্টপিটার চীন বেকে প্রাপ্ত বলেই এর নাম प्तन "हानक जान निन"-- हीरनद अवाद । (Sino Iranica.  $\mathbf{P}_{\bullet}$  55  $\circ$ ) ষ্টেপলটন ও তার সহকলীরা লাউকারের এ মত সমর্থন করতে পারেন নাই। প্রথমত: ইবনে বাইডারের মতে সল্ট পটার এবং স্থানিয়ুদ একই কি'নষ। আদিয়ুদ अर्थ Stone of Assos धिनदकादाङिकिम अर्थ गादिनद्व গ্ৰন্থে এই আ'সমুদের উল্লেখ দেখা যায়। ইবনে বাই-ভারের মতে এ জি নষ্ট মর্জোতে "বারুদ" নামে পরি-চিত ছিল ৷ ইবনে বাইতার ১২২০ খ্রীপ্রাব্দে মরকো পরিদর্শন করেন। ইবনে বাইতারের এই প্রমাণ ছাড়া স্বয়ং জাবিরের গ্রন্থেট এই জিনিষ্টির সন্ধান পাওয়া যায়। ভার "ক্তাবুল মিকান" গ্ৰন্থ বেকে মনে হয় ভিনি এই বিনিষ্টির সঙ্গে পরিচিত ছিলেন।

(Rook of Balance:—Berthelot & Hondas, La Chimic III, p. 155.)

(ব) গোগরে সণিউগন—এতে জিনিষট সমচত্কোণ পাত্রে পুরে পাত্রটিকে গোগরের মব্যে পুঁতে কেলা হ'ত। রাজীর কিতার্ল আসরার এছে এ প্রক্রিয়াট সম্বন্ধে বিভারিত বর্ণনা দেওরা হরেছে। নিয়ে প্রতিট বর্ণিত হ'ল।

বার্শ্ন্য ছানে ছট খাল খনন কর। খালগুলি ছই ছাত (জিরা) গভীর ও এক ছাত চওজা ছওরা চাই। ওলকপির রস দিয়ে মিশানো পোষা পাররার মল দিয়ে গর্ভ ছটি ভাল করে লেপে নাও।

এইবার খোভার তাজা পুরীষ এবং সমপরিমাণ পাররার মল একসকে মিলিয়ে এই মিশ্রিত জিনিষগুলোর মধ্যে ওল-কৃপির রস দিয়ে বেশ করে মাথ যেন খন কাঁটরের মত হয়। বোভার পুরীষ টাটকা হওরা চাই সেইজ্ভ সেদিন্দার পুরীষ মিতে হবে। এই কাঁই দিরে একটা গর্ভের এক হাত পরিমাণ



### উত্তর বায় জানায় শাসন—

শীতের হাওয়ায় রুশ্ম শাসন শুধু বনর গাছেই লাগে না মান্ত্যের দেহেও লাগে।

বিভিন্ন ঋতুব সঙ্গে দেহকে থাপ খাওয়াবাব ক্ষন্ত সবচেয়ে পরিশ্রম্ কংতে হয় লিভারকে। লিভার তার বক্তকণিকাগঠন, পিন্তনি:দারণ বোগ প্রতিরোধ প্রভৃতি ক্রিয়ার দ্বারা প্রতিনিয়ত্ট ধ্হকে রক্ষা করছে।

তাই ক্রমাট্রেশা অঞ্চীন উদরাময়, অ্যামিবাঘটিত আমাণয়, শিশু যক্ত, স্থাতক। প্রভৃতি লিভার ও পেটের সকল পীড়া নিশ্চিতরূপে নিবাময় ত করেই তা ছাড়ও নিভারকে শক্তিশালা ক'বে অস্ত রোগের আক্রমণও প্রতিরোধ করে।



पि ध्रिताकोल विमार्क अध कियिकाल लिवतिवेदी लिड नामकिसा अ काक्का

ভারগা ভাঁভ কর। বে জিনিষ্টকে ত্রব করতে হবে সেটকে একট চওড়া তলায়ক্ত সমচভূহোণ বোতলে (কারুরা) রাব। এই বোতুলটর সমান আকারের একটা ইাচও ( কালিব ) সলে রাবভে হবে। এববার এই ইাচট কাইয়ের মধ্যে ঠেলে বসিরে দাও। একটু মাঞ্চাচাড়া করে এমন ভাবে বসাতে হবে যে হাঁচটি যেন এর মধ্যে ভালগা ভালগা ভাবে লেগে থাকতে পারে। এর পর হাঁচট ভূলে নিবে ভার ৰ্দায়গায় বোতলট বসিয়ে দাও। বোতলটয় মুৰ ভাগে <del>থেকেই প্লাস্টার (সাক্ষক) দিয়ে ভাল করে এঁটে দিভে</del> ছবে। এইবার বোতলের উপর একট ভিন্ধা বৃভি (সালাহ) ব্দক্তির দাও এবং ভত্পরি গোবর দিয়ে চাপা দাও। **এইবার সমন্ত বিনিষ্টা একটা বড় কুঁলো (ইজনাছ) দিয়ে** ঢাকা দাও এবং কোড়ের ভারগাটি বন করে দাও। প্রভ্যেক দিন কুঁলোটা ভূলে নিয়ে গোববের উপর গরম জল ছিটৱে एएट अवर अश्वीरम् अक्वांत्र कदत्र (भावत्रश्व चमरम रमटन। **শতঃপর শভ গর্ভটির অর্জেকটা পাররার মল দিয়ে পূর্ব** কর, তারপর আরও গোবর এর মধ্যে দিয়ে ছাঁচটকে বসাও এবং এক রাত্রির ভঙ কুঁছো দিয়ে ঢেকে রাখ, ভবে ভোড়বৰ করোনা। সকাল বেলা গোবরে ডুবিরে রাধা বোভলট তুলে নাও এবং দ্বিতীয় গর্ডে বসানে ছাঁচট তুলে নিয়ে সেই ছাঁচের ভারগায় বোতলট বসিয়ে দাও। এইবার বোতলটন উপন্ন একট বৃড়ি বসিমে দিয়ে বৃড়িটাকে গোবন ৰিয়ে ঢেকে দাও। এখন সবগুলোকে কুঁৰো দিয়ে ঢেকে

নিবে কোন্টের কারগা বন্ধ করে দাও। বতক্ষণ না কিনিবট সম্পূর্ণভাবে ত্রব হরে বার ততক্ষণ এবনিবার। করতে থাক। এই প্রক্রিরাতেই বাহা সহকে গলে না, তেবন কিনিবত কব করা বাবে।

- পো

  ভিজা বাতাসে সলিউসন—এতে জিনিবসমেত
  পাএটকে ভিজা বালির মধ্যে রেখে দেওরা হর। জিনিবট
  বাতাসের বাওরা থেকেই জাতে জাতে রুব হরে যার।
- (प) "पारित" गणिष्ठेगन—दाकी पारित य वर्गना पिरत्राह्म তাতে দেখা যার, এ হ'ল চওড়ামুখো ৩০ দাওরাক ভরল জিনিব ৰৱবার মত পাত্র। আইমুস সানাহ এছ অমুবায়ী এক দাউরাক অলের ওজন হ'ল ১০৪০ দেরহাম। ১২৮ দেরহাম এক পাউণ্ডের সমান এবং ১০ পাউও এক গ্যালনের সমান बद्ध निल्न এक पारनद बादकफ क्रव २८ ग्रामन। व्यक्तिश्राष्टित বেলার দেখা যার, এঘনি একটি পাত্তের ছুট-ভূতীরাংশ সিকা দিয়ে ভব্তি করা হ'ত। যে বিনিষ্ট দ্রব করতে হবে সেট আলগা ভাবে একটা নেক্ডায় বেঁৰে একটা হাতলে রেখে পাজের মধ্যে বুলিয়ে দেওয়া হ'ত। নেকড়ার পুঁটুলির চার चांडुन मीटा अक्षे। अमीश चांनिय दार्य छारे पिया चिनिय-গুলোকে গরম করা হ'ত। "দানের" মুধটি শব্দ করে বন্ধ করে দেওয়া হ'ত। দানের বহিতাগ, পাররা ও পশুর মল পাঁকরের রসের সঙ্গে মিশিয়ে নিয়ে খুব ভালভাবে লেপে দেওয়া হ'ত। প্ৰদীপটা ভিডৱে যে ভাবে ৱাৰা হ'ত ভাভে মনে 🖼 ভার আরু ধুব দীর্ণ হ'ত না। এটা ধুব শীষ্ট নিবে

## নেতাজীর অনুসরণে .-

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসায়ী শ্রীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহালয় ও তাঁহার "শ্রী" মার্কা মৃতের নৃতন পরিচর বাঙ্গলাদেশে নিস্প্রয়োজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'শ্রী' মৃতের ব্যবহার অত্যাবশুক হইয়া পঞ্চিরাছে, বাজারে ভেজাল মৃতের ব্যরপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে শ্রীষ্ক্ত অশোকবারুর বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা মৃত ব্যবসায়ী মাজেরই অনুকরণীর।

খাঃ শ্রীস্থভাষচন্দ্র বস্থ

বেভ, তাপের পরিমাণও বুব বেশী হ'ত না। বা হোক প্রত্যেক বিন হুই বার করে ঢাকনার উপর বিরে গরম কল ঢেলে বেওরা হ'ত। এমনিভাবেই কাক চলত বতকণ না সমস্ত বিনিম ক্রম হয়ে বেভ। বৈজ্ঞানিকলের মতে এই পছাট কৃঠিন ভনীকৃত বিনিমগুলোকে ক্রম করবার পক্ষে বুবই প্রবিধানক।

- (৩) ক্ষাইতে (মিরশাল) সলিউসন কড়াইট লল, ত্য বা হোট হোট করে কাটা ভেড়ার লোম, এবং পাররার মল দিয়ে পূর্ণ করা হ'ত। জিনিধ সমেত পাঞ্চি এই তুধ, জল ও মলপূর্ণ কড়ায়ের মধ্যে রেখে কড়াইটতে আল দেওয়া হ'ত। যতক্ষণ না জিনিষট রব হরে যেত ততক্ষণ পর্যান্ত এমনি আল দেওয়া হ'ত।
- (চ) 'তীক্ষ' ৰূল দিয়ে কারও আলেমবিকে সলিউসন— বে নিনিষট ক্রব করতে হবে সেটকে বাভের মধ্যে এবং তীক্ষ ৰূল কারে রেখে দিয়ে আলেমবিক দিয়ে মুখ বন্ধ করে দেওরা হয়। এর পর সমস্ত পাত্রট একটি অলের পাত্র বা ছাইরের উপর বসিরে দেওবা হয়।
- (ছ) সিরদাবে কারাক্স নিয়ে সলিউসন—সিরদাব বা সাবদান কি বরণের বয় সে সবছে সঠিক কিছু অবগত হওরা বার না। "সিরদাব" বর্ণ হল "ঠাও। বয়" বা বরকের বাছা। পূর্ববর্ণিত প্রধামত এতে জিনিষট কারকাসের সলে মিশিরে একট পাত্রে রাখা হ'ত। পাঞ্জি এফট হাতপের বেকে যছের মব্যে বুলিয়ে দেওয়া হ'ত। যয়টির চাকনা ভাল করে বেঁবে দিরে বাইশ (স্তী কাপড়) দিরে জড়িয়ে দেওয়া হ'ত। বাইশের উপর মব্যে মব্যে জল ছিটায়ে দেওয়া হ'ত। এমনি বারা চলত যভক্ষণ না জিনিষট ফর হয়ে যেত।

(খ) ভাকতির বারা সনিউসন—বিশেষভাবে সবণ ও ভিট্র ওলের ঘতই এ পহা প্রয়ক্ত হত। বিনিষ্ট প্রথমতঃ আম আম ভিকিনে রাজে বোলা বাভানে রেবে দেওরা হ'ত। পার্তনর পর আবশিষ্ট অংশ ছুই বার করে মলে ভিকিনে আবার ভাকিরে নেওরা হ'ত। ভার পর পাতিত ক্রবাও এর সলে যোগ করে দেওরা হ'ত। যভক্ষণ পাতিত ক্রবাও এর সলে যোগ করে দেওরা হ'ত। যভক্ষণ পাতিত ক্রবাও এবেন বাড়তে বাক্ত ভভক্ষণ পর্যান্ত এমনিবারা বার বার পাত্তন, ক্লে ভিকানো এবং ভকানো চলত। যথন ওকনে ক্রতে বাক্ত ভবনই এই প্রক্রিরার সমাপ্তি ছু'ত।

৪। তাম জিব বা মিলাক—একে ইংরেকীতে বলা চলে combination। এই তাম জিব করতে তিনটি প্রক্রিরার সাহায্য নেওরা যেতে পারে বলে রালী তার প্রস্থে উরেব করেছেন। এই তিনটির মধ্যে জবন্ত তৃতীর পহাটিই (সলিউসন করে এক সলে মিশানো) সর্ব্বাণেকা ভাল বলে মত প্রকাশ করেছেন। প্রধা ভিনটি হ'ল (১) প্রথমে মেড়ে নিরে প্রস্থানা করা। (২) মেড়ে নিরে পরে ceration করা (৩) সলিউসন করে এক্রে মিশানো।

ধ। আক্স-ইংরেজীতে একে বলা চলে coagulation প্রধা। অবস্থা Fixation-ও বলা বেতে পারে। আলইক্সির তৈরি করতে এইটিই হ'ল চরম প্রক্রিয়া। এটিও মানা ভাবে করা ঘেতে পারে। (ক) assation করে (ব) ফ্লাক্ষ এবং পাত্র করে (গ) দাকন বা গোবরে পুঁতে (ব) আলেমবিকে উত্তপ্ত করে।

## सुभ उस्भभी-

স্কণের ঐবর্ধ্য বিধাতার বান; কিন্তু মাদুব'ুনেই ক্লপের উৎকর্ব সাধন করেছে প্রসাধন-বিজ্ঞানের সবস্থ অনুস্থীলনে। সাবাভ স্কণের অধিকারিকীরাও তাঁদের স্কণ প্রক্ষান্তিত করে তুলতে পারেন প্রকৃষ্ট প্রসাধনীর নির্মিত সন্থাবহারে। এ বিবরে ক্যালকেমিকোর নির্বাচিত প্রসাধনী সভার স্লপচর্যা-কারিকীদের বিশেব সহায়তা করতে পারে।

মার্গো সোপ • রেণুকা পাউডার ক্যান্টরল • শার্গি আে ও ক্লীয





## পুশুক - পার্চয়

কলিকাতা সংস্কৃত কলেজের ইতিহাস, প্রধন্ বঙ : ১৮২৪—১৮৫৮। গ্রীত্রবেজনাধ বন্দ্যোপাধ্যার। পশ্চিম-বঙ্গ সরকার কর্তৃক প্রকাশিত। কলিকাতা ১৩৫৫। পৃ: ১০। বুল্য হই টাকা।

সংস্কৃত কলেৰের প্রতিষ্ঠা হুইরাছিল ১৮২৪ ঐটান্সের ১লা আছ্মারি; আলোচা গ্রন্থট কলেকের ১২৫ বংগর পরিপূর্ত্তির উপলক্ষ্যে কলেকের বর্তমান অব্যক্তির উৎসাধ্যে রচিত। যোগ্য ব্যক্তির উপরই গ্রন্থভনার ভার দেওয়া হুইরাছিল; কারণ এই মূপের শিক্ষা ও সাহিত্যের ইতিহাসের বৃষ্টিনাটী সম্বন্ধে ঐয়ুক্ত রক্তেরনাথের বত বিশেষক্র নাই বলিলেও চলে। উহার কভাবসিদ্ধ বৈর্থ্য, অব্যবসার ও তথ্যনিষ্ঠার সহিত তিনি উক্ত কলেকের নবিশত্র ও সরকারী দপ্তরের দলিলদভাবেক হুইতে ইহার প্রথম মুগের, অর্থাৎ ১৮২৪ সনে প্রারম্ভ হুইতে ১৮৫৮ সনে বিভাসাগর মহাশরের অব্যক্তা কাল পর্বান্ধ, একটী নির্ভরযোগ্য ধারাবাহিক বিবরণ ধিরাছেন। ভবু তাহাই নহে, এই শিক্ষারতনের বাহারা প্রাণহরণ ছিলেন, সেই সকল শিক্ষক ও কৃতী ছাত্রদের বৃত্তান্থ ঘণাসম্ভব সংগ্রহ করিয়া ধিরাছেন।

কিছ এছবানি শুবু একট কলেকের ইতিরছ নছে।
ভাষাদের বর্তমান রুগের সংস্কৃতির ও গত রুগের শিক্ষাবিভারের বৃলে যে হুইট সুপ্রসিদ্ধ শিক্ষা-প্রতিঠান হিল, তাহার
একট হুইতেহে হিন্দু কলেক (পরে প্রেসিডেলি কলেক) ও
ভাট কলিকাতা সংস্কৃত কলেজ। হিন্দু কলেকের ইতিহাস
ভাছে, কিছ বাংলাদেশের অভতর প্রাচীন বিভালরের
ইতিহাস হিল না। হিন্দু কলেক ও সংস্কৃত কলেকের
ইতিহাস প্রস্কৃতপক্ষে বাংলাদেশেরই শিক্ষা ও সংস্কৃতির
ইতিহাস প্রস্কৃতপক্ষে বাংলাদেশের ভবিষৎ ঐতিহাসিকের
ভাছে এই গ্রন্থ হৈহার বহু সুল্যবান্ উপক্রণের ভঞ্জ অপরিহার্ষ্য ও আনর্শীর হুইবে তাহাতে সন্দেহ নাই। গ্রন্থটি তিন
বতে প্রকাশ করিবার সংক্ষ আছে; আশা করি ব্রক্ষেনাশের
মৃত্যুক্তর ও বহুজ গ্রেবকের সাহাব্যে এ সংক্ষ ভিনের
সিদ্ধিলাত করিবে।

গ্রীস্থশীলকুমার দে

মহা-বিপ্লবী রাসবিহারী — এর্থারকুষার দিও। হরিহর লাইরেরী, ২> কর্ণারালিল ব্লাট, কলিকাতা। ২০৬ পৃষ্ঠা। মূল্য তিন টাকা মাও।

এই পৃত্তকে ভারতবর্বের বাবীনতা-সংগ্রামের একটা অধ্যারের ইতিহাস পাওরা বার। বিশে শতাকীর প্রথম হইতে দেশে বে আসরপের উত্তব হর, তাহার কর্ম-নারকদের সধ্যে রাসবিহারী বহু বিশিষ্ট ছান অধিকার করিয়া আছেন। তাঁহার জীবন-কথা বলিবার সমর আজ আসিরাছে; এতদিন ইংরেজের আইনের প্রতিকূলতার বাহা প্রকাশ করিবার উপার হিল না, সেই বাধা আজ দূর হইরাছে। স্থতরাং লাসবিহারী কল্পর সর্বাজস্থশন জীবন-করিত এপন আমরা প্রত্যাশা করিতে পারি। আন পর্যন্ত বাহা প্রকাশিত হইরাছে তাহা সম্পূর্ণ নর বলিরা একটা ক্ষোভ থাকিরা যায়। বর্ত্তমান গ্রন্থথানিও সে অভাব মিটাইতে পারে নাই। কারণ ১৯১৫-১৯৪৫ সাল—রাসবিহারীর এই ত্রিশ বংসরের কার্যাকলাপ সম্বাদ্ধ বিস্তৃত বিবরণ ইহার মধ্যেও নাই।

এই অভাব পূর্ণ হইবে না, বছ দিন না জাপান-প্রবাসী কোন ভারতবাসী এ বিষয়ে উছোগী হইবেন। তাঁহার আবার রাসবিহারী বসুর সহক্ষাী হপ্তরা চাই। দেইরূপ লোকের সংখ্যা খুব কম। শ্রীযুক্তা উর্দ্মিলা দেবীর (দেশবন্ধুর ভিনিনী) জামাতা শ্রীজানক্ষমাহন সহারের নাম এই সম্পর্কে মনে পড়ে, আর মনে পড়ে রাসবিহারী বসুর পুত্র রঞ্জী বসুর ও ক্ষা ভারতী বসুর নাম। তাঁহাদের এই বিষয়ে একটা কর্ত্তব্য আছে। তাঁহারা তাঁহাদের পিতৃদেবের ক্ষেশদেবার কাহিনী আমাদের গুনাইতে পারেন। কোন বাঙালী প্রতিষ্ঠান অর্থায়ী হইরা এই উদ্যোগ করিতে পারেন।

হয় ত এই বিষয়ে আমাদের কৌতুহগ অপূর্ণ থাকিরা বাইবে। বিপ্লবীর জীবন বিপদের মধ্যে কাটিরা যার , এই বিপদের মধ্যে ইতিহাস লিখিরা যাইবার সময় ও ফ্ৰোগ পাওয়া ছফর । বিপ্লব সার্থক হইবার পর বদি বিপ্লবী বাঁচিরা থাকেন, তবে ভাঁহার জীবন-কথা জানিবার সভাবনা থাকে। বর্জমান বুগে এইরূপ ভাগাবানদের মধ্যে লেনিন, মাজেরিক, বেনেস্ প্রভৃতি রাষ্ট্রনায়কদের নাম উপ্লেখবোগা। ছুর্লাগা যে, রাসবিহারী বহু, নেতালী ফুভাব প্রভৃতি বিল্লবী-প্রধানগণ ভাঁহাদের জীবনব্যাপী সাধনার পরিণতি দেখিয়া যাইতে পারিলেন না। দেইজ্ঞ ভাঁহাদের জীবন-কথার অসম্পূর্ণ বিবরণ শুনিরাই আমাদের সম্ভন্ট থাকিতে ইইবে।

अ ५८४म हम्म (पर

ব্যাকের কথা--- এ মনাধবদুদত্ত। জেনারেল ফ্রিন্টান এও পারিশান নিমিটেড, কলিকাতা। ৮/০+১০৭ পৃষ্ঠা। দাম তিন টাকা।

এই বইখানি বাস্তবিকই ফ্লাঠা। সহজ ভাষার বাছে সম্বান্ধ সর্বান্ধ বার্বান্ধ সাধারণের প্রয়োজনীয় ও জাতবা সকল কপাই লেখক বে ভাবে প্রকাশ করিয়াছেন, সেলনা তি.নি ধন্যবাদার্হ। সাধারণ বাহালী পাঠক, ব্যাবদায়ী ও চা ১, সকলেএই এই বইখানি উপকারে আসিবে। অর্থনীতি বিবরে এই বিশেষজ্ঞ লেখক পরিভাষা সম্বান্ধ অংথক চর অবহিত হইলে বাংলা ভাষার সম্পান বৃদ্ধি হইবে। সাধারণ ক্লেতার পক্ষে ম্লা একটুবেশী মনে হয়।

শ্রীপ্রফুল্লচন্দ্র ঘোষ

বোরখা, ইনসাফ ্ ১ন ও ২র খও (উপছান)। দাদীর আসমান (গল-সংগ্রহ) – নেশাদ বাণু। দি দিনির প্রেস নিমিটেড, ১৬, বেপির ট্রাট ও সেট্রাল বুক এলেলী, ১৪, বর্ধিন চাটালি ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য – বণাজ্যে – ২১, ২০ (প্রতিখণ্ড) ও ২০ সিকা।

জন্ন সমন্তের মধ্যে করেকথানি উপক্তাস ও গর রচনা করিয়া নেশাদ বাশু পাঠকসাধারণের দৃষ্টি জাকর্বণ করিরাছেন। নিজ অভিজ্ঞতার ক্ষেত্রে—
মুস্লমান-সমাজের পারিপার্থিক গড়িরা তুলিবার প্রয়াস ভার রচনার মধ্যে
পাওরা বার। তার দৃষ্টিকসীতে খাতত্রা আছে এবং চিন্তার ঐর্থাও
বিরল নহে। জন্ন কথার গভীর ভাবপ্রকাশ, ছই-একটি ছত্রে ফুল্ব-প্রসারী ইন্দিত এবং ভাবাটি স্থমিষ্ট ও সাবলীল হইলেও প্রকাশক্ষী অন্যাদার প্রতিষ্ঠিত নহে। বিশিষ্ট সাহিত্যিকের বাক্ ও প্রকাশক্ষীর ছারা রচনার বহু ছানে লক্ষ্য করা বার। বহুছানে বাত্তবকে লক্ষ্যক্ষিয়া অভিলাটকীর ঘটনার চনকস্কীর প্ররাস আছে। ভারণ কোতুক-

স্ত্ৰৰ ভট্টাচাৰ্ব্যেৰ ক্ষেক্টি উপস্থাস



>লা জাহুয়ারী প্রকাশিত হবে।

**এ**ক টাকা এগারো আনা।

## মরামাটি

বিভীয় সংশ্বৰণ তুই টাকা চাব আনা॥

### पिनाञ्च

দ্বিশীয় সংপ্ৰবণ সাড়ে তিন টাকা।

## क्स्य(म्वारा

দ্বিশীয় সংস্করণ তিন টাকা।





শৈলেন ঘোষের উপন্তাস



I

### সহাপগর

সকল গ্রহ্মনার প্রেমেক্স মিত্র বছনিনের প্রতিষ্ঠিত লেখক। বে ক' জন লেখকের সাধনার সধ্যে দিয়ে আধুনিক বাংলাদাহিত্যের পথ-পরিক্রমা প্রক্ ছরেছিলো প্রেমেক্স মিত্র উাদের অভ্যতম। কবিভার, গলে, লবু প্রবন্ধে শিশুরঞ্জন সাহিত্যে ও অভ্যতিধ বিচিত্র ভাবের লেখার প্রথম থেকেই বে কারণে প্রেমেক্স মিত্র সকলের ভৃষ্টি আকর্ষণ করেছিলেন তা ভাষার তীক্ষণ্ডা নয়, প্রকাশভঙ্কীর উপ্রতা নয়, ভাবের বৈপ্লবিক্তানয়, তা আটপোরে ভাষার মধ্যে দিয়ে গুঢ়ার্থ প্রকাশের ক্ষরতা, পরিমিত কারোর প্রয়োগে অপরিষতি রহক্তের উল্লোচনকুশলতা। সব অভিয়ে তিনি তার গলের (এবং কবিতার) বে ভারত পরিকৃত্তি করে তোলেন তা এমনি অনির্কাচনীর রসে পরিপূর্ণ বে আপনি বদি রসের অভিসারী হন এবং লীবনের দার্শনিক ভাৎপর্বা উপরত্তি করবার দিকে বনি আপনার মনের সহজ্ঞ প্রবন্তা থাকে, সোলা কথার আপনার বিদি তাবনবাধ থাকে, তা হলে ভাতে আপনি অভিত্ত হবেনই হবেন। হু' টাকা।।

### (शक्ता

ণিনের উদ্**ভাস্ত অনিশ্চর**ভার ঠুন্কো খেলনার মডোই দেখার আছল্র মধাবি ছেব महेलहे कीवरम इवि । জ্যোতিরিজ্ঞ মন্দী সাম্প্রতিক গর-माहित्या এ कड़ है विलिष्ट त्य कीव नावक-নারিকার চরিত্রে নিশেষ ভাবে কুটে উঠেছে क्ष्युव (भवागरहे कक्ष्य श्राप्तिमा वर्ष योगान्य मोर्च्यात्र, मेलाडिशायत करून **म**रिविक्, क्षांविकालिहे ক্ষারী-হাগরর বে'বাকারা, জার সাম্প্রক্ষীন ভাষন-বাতার চাক্তকর অভিনয়---সব্ বেন অভিবিদিত হয়েছে তাঁর গলে। দেড টাকা।।

#### পভাকা

সাহিতাকেতে নেমে পুথ অঞ্চলনের মধোর বাঁরা পাঠকসাধারণের কাভ থেকে অকুঠ অভিনক্ষন লাভ করতে সমর্থ কন, উাধের সংখ্যা সাক্ষাভিক বাংলাসাহিতে। খুব বেশী নর, কিন্তু অন্তর্জকাথে মিত্রে সেই অঞ্চলখ্যক লেখকদের অজ্ঞতম। ভোটো ভোটো ঘটনার মধ্য দিরে মানবমনের যে অংবর্জন, ভা-ই নির্ভুভাবে ধরা পড়েছে নংস্কেনাথ যিত্তের রচনার। 'পতাকা' জার সর্বাধ্যক গল্প এছ। বাংলা গল্পসাহিত্যের ধারা আজ্ঞান পথ দিরে ববে চলেছে, ফান্তে হলল 'পতাকা' সংগ্রহ করা প্রোক্তন। ছু' টাকা।।

## भवद्यायव क्या • स्वािज्यात

নিক বাংলা ভোটগল সৃষ্টিত যে নতুন দৃষ্টিকভার পরিচর পাওরা বাংলা, ভার আনেকগানিই এনে দিরেছিলেন স্মুক্তোপ্ত ঘোষা। আন্তর্যা এক রূপ ও বাসের আমদানী করে দিনি যেন বা লানাছিলের পলিকেই মোড় কিরিয়ে নতুনত্ব পণের দিকে এলিয়ে নিয়ে গেছেন। বিষয়বন্ধার সজে সামপ্রক্ত বেথে উ'ব ভাষাও এক অপূর্ব্য সৌকর্মের মিন্ডিত করে উঠেছে। স্থাবাধ ছোবের গাল্পের আলোচনা-প্রসাল চড়ংল বলেছিলেন: 'রবীক্রনাণের পার কি বিষয়বন্ধানে কি রচনাশৈলীভে বাংলা ছোটগল্পের মোড়কে ভিনিই দিরেছেন নৃত্তনের যাত্রাপথের ইন্সিত। স্থাবাধ্যাব্র গল ছুংখবিলাদের কারা নয়, মৃত্তির বানীর আলমা প্রেরণাতেই সেগুলি গঢ়িবান, কলে শিল্পচাতুরোর অপূর্ব্য নিদর্শন।' দাম বধাক্রমে ছু' ট্রকা, ছু' টাকা চার আলা।।

পূর্ব্বাশা-প্রকাশিত অস্তাম্য বই-এর সম্পূর্ণ ভালিকা সংগ্রহ করে রাখুন



পি ১৩, গণেশচন্দ্র এভেন্যু, কলিকাডা

রসের অবতারণার গজের মূল রস কিকা হইরা নিরাছে-এমন দৃষ্টাভ 'দাদীর আসমানে'র করেকটি গজে বিরল নছে ৷ 'দাদীর আসমান' গলটিই একটি উৎকৃষ্ট গ্ল বলিয়া গণা হইত, বদি চৌন্দ বংসরের ছেলে তমিজুদ্দিন ও মাষ্টার সাহেবের কথোপকখনে কাজলামির চূড়ান্ত নিদর্শন রাখিরা লঘু-গুরুত্বের সীমালজ্বন নাকরা হইত। অখচ 'মাটির মসনদ' প্রকাশ-সংঘ্যের দক্ষন একটি চমৎকার গল হইরাছে।

'বোরধা' ও 'ইনসাক' উপভাসে মুসলমান সমাজের পারিপার্ধিক কডকটা ফুটিরাছে, কিন্তু ভাহার চেয়ে বেশী ফুটিরাছে – রোশেন সেলিমার রোমান্টিক মনের প্রতিচ্ছবি। গল্পের মধ্যে ঘটনা-বিশ্বতির অবকাশ অল বলিরা হরত বোরধার রোমাল তেমন উপ্র হর নাই। এই নাটকীয় ঘটনার বহু সমাবেশে চমকস্টির প্রহাস ইনসাফ উপক্রাসে লক্ষণীয় | ইনসাক্ষের আরম্ভটি ভাল। ঝরঝরে লেখার ভঙ্গীতে—হুষ্ঠু বর্ণনার ডক্টর জসীম উদ্দিন, সেলিনা, জনমুল, আত্মা, খানবাহাত্ত্ব প্রভৃতি স্পষ্ট হইরা উঠিতেছিলেন, কিন্তু শেবাংশে নির্কাচনের গোলকধাধার ও রোমান্স-সৃষ্টির ধোঁয়ার ভাঁহারা ৰান্তবের বেলাভূমি হইতে বছদুরে সরিয়া পিয়াছেন। উপস্তাদের শেষ অংশে ঘটনাও সংলাপ স্ষ্টিতে নাটকীয় ভাবটা রসবোধকে বড় বেশী পীড়িত করে। রোমান্সের কল্পনাজাল বুনিবার অথবা গল্পের পতি বাড়াইবার ভাগিদে স্ট চরিত্রগুলিকে ভাড়াভাড়ি একটা পরিণভিতে পৌছাইয়া দিবার চেষ্টা করা হইরাছে। ইহাতে চরিত্র মর্যাদা কুল হইয়াছে, বাহিরের ঘটনার দঙ্গে অন্তর্ঘ ন্দের সক্ষতি রক্ষা হর নাই। ভক্টর জসীন উদ্দিনের চাঁদ দেখার প্রসঙ্গে সেকেন্দার দালালকে পরবীণ-শ্বভিতে উদ্বুদ্ধ করিলা রোমানের চমক দিবার কোন আবশুকই ছিল না।

বাহা হউক, আলোচা উপস্থাস ও পর সংগ্রহগুলির মধ্যে একটি জিনিস অবীকার করা বার না - সেটি নেশাদ বাগুর প্রকৃতিদন্ত ক্ষমতা। অনুভৃতি-শীল মন, পৰ্যাবেক্ষণশক্তি ও ভাষার উপর দখল—ভাঁছার গেখার বৈশিষ্ট্য ৷

মৃত্তিকা-শৃত্থাল-সম্পাদক শ্রীশিপিরকুমার মিত্র। "লেখনী" >বি, ৰলেজ কোৱার, কলিকাতা। সূলা ছুই টাকা।

মৃত্তিকা-শৃত্বল একথানি ছোট গলসংগ্ৰহের বই। মোট বার্ট গল ইহাতে আছে। এই বায়টি গঞ্জের কোন কোন লেধককে মাসিক পত্রিকার পুঠার কথনও হয়ত দেখিয়া থাকিব ; তাঁহারা সাহিত্যক্ষেত্রে নবাগত বলিরা পরিচয়ের ক্ষেত্রে স্পষ্ট হইয়া উঠেন নাই। কিন্তু গঞ্জগঞ্জেহ-পুত্তকথানি পড়িরা উাহাদের প্রত্যেককে বিশেব করিরা চেনা বার, ভাঁহাদের লেখনীকে সাধুবাদ না দিয়া পারা যায় না। পৎগুলি আকারে ছোট তো



অব্যৰ্থ মহৌষধ

উৰ্ণট বিশুদ্ধ অশোক, এলেট্ৰস, অখনদা, ভিক্ৰৰী, এৱোমাজগোড়া, ভালেরিরান রোঘাইড প্রভৃতি,স্বীরোপের বিশেব বিশেব ঔষধ্বারা বৈজ্ঞানিক্ষতে সৰপ্নে প্ৰস্তুত। ইহা সৰ্বাপ্ৰকার জ্রীরোগের প্রতিবেধক হিসাবে দ্রীরোগ-বিশেষক চিকিৎসকরণ থারা ব্যবহাকৃত ও অতি সম্বর ফলপ্রহ। রোগবিষরণ জানাইরা /১০ ডাক্যাণ্ডল পাঠাইলে আয়াছের বিশেষক ভারারের পরাষ্ঠ্যত ব্যবহাপত্র কেওরা হর। সহর পাইবার ৰভ সরাসরি প্রধান পরিবেশকের নিকট ভি:পি:র বভ অভই প্র निर्म । वृना ८,, छोकवांखन ७ न्यांकिर ३४० पटडा ।

টেমিটালৈ ওঠাটিম মেডিকো নামাইং কর্পোরেশন ਨ ਜ਼ਿੰਨ। ਹ

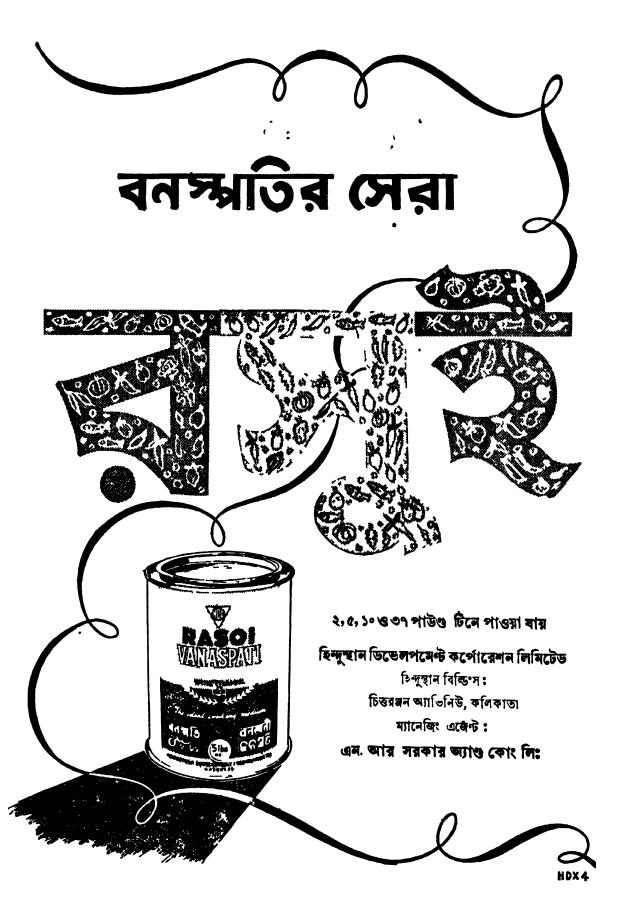
প্রধান পরিবেশক--->८७वर चावशहें केहे. **পि. वि. ১৩७ क्लिकान्छ। ১** 

वटिहे - हारिश्रम लिथान कना-कोनन क्रिक्स विश्व वासिकी जानक ক্রিয়াছেন। ক্লনান্ন, বাস্তবে এবং সর্কোপরি লেখনীর সংব্যে প্রায় স্বগুলি গল্পই জমিহাছে ভাল। এতগুলি নৃতন লেখকের সাধনার রূপটকে পাঠকদের গোচরে আনিবার এ ধরণের সাধু প্রদাস বাংলা সাহিত্যে বিরল। একত অকাপক বছৰাদাৰ্হ।

#### ঞীরামপদ মুখোপাধ্যায়

ভারতবর্ষীয় সভাতা ও সাম্প্রদায়িক সমস্তা— শ্ৰীদিলীপকুমার বিশ্বাস। সর্বতী লাইব্রেরী। সি ১৮।১৯, কলেল ট্রীট মার্কেট, কলিকাতা। পৃষ্ঠা ১৫, মূল্য ১৪০।

এই স্বৰপরিদর পুস্তকে গ্রন্থকার পাঁচটি অধ্যারে ভারতীয় সভাতার পটভূমিকা, হিন্দু-মুসলমান সভ্যভার বিকাশ, ভারতে মুসলিম শাসন যুগ, সংস্কৃতি, মিলন প্রভৃতি বিষয়ের আলোচনা করিয়া প্রমাণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেন বে, ছিন্দু মুসলমান বলিয়া চুইট সম্পূর্ণ পৃথক জাতি ত নাই ই, এমন কি হিন্দু সভাতা ও ম্বলিম সভাতা বলিয়া ছুইটি পুৱাপুরি পুণক সভাতা বা সংস্কৃতিও নাই। বহু লেখক ও চিন্তাশীল বাক্তির লেখা হইতে গ্রন্থকার ভার্যের বক্তবোর সপক্ষে নজীর সংগ্রহ করিয়াছেন এবং স্ফুট্ ভাবে শ্রমাণ করিয়াছেন যে বর্ত্তমান ভারতে যে সাম্মদায়িক কলছ চলিয়াছে ঐতিহাসিক, সাংস্কৃতিক কিম্বা ধর্ম ও নেতৃত্বের দিক দিয়া এই ঘল্মের কোন ভিত্তি নাই। কিন্তু ভিত্তি না থাকিলেও ছক্ত রহিরাছে এবং বাড়িতেছে। ইহারও অবশ্র কারণ আছে। মিলনের পক্ষে বেরপ দৃক্তি আছে, বংগড়া বাধাইবার জন্ত সেরপ যুক্তি না পাকিলে ছন্মকারীদের বন্ধব্য অবশ্যই আছে। বর্ত্তমান জগতে স্থারবৃত্তি শ্বিধাবাদীর ক্টেক্ত ভেদ করিতে পারে নাই। আর সক্ষসাধারণ অনেক সগয়েই হজুগে মাতিয়া কাজ করে, যুক্তির ধার ধারে না। ইহার উপর আবার শক্তিশালী পররাষ্ট্র ও শক্তপক্ষের কারচুপি আছে। এইজফুই কোন সুযুক্তিতে ফল হয় নাই, ভারত ছুই ভাগে বিভক্ত হইয়াছে –পাকিস্থান মুদলিম রাষ্ট্রে পরিণত হইয়াছে। অপর অংশ ভারত নামে পরিচিত হইলেও তাহাকে ভেদবুদ্দিসম্পর মুসলমানগণ হিন্দুহান বা হিন্দু রাষ্ট্র বলিয়া প্রচার করেন। কিন্ত তাহাতে কিছু আসিয়া যায় না, কারণ হিন্দু বৈচিত্রা বীকার করে, ব্দপরের ধর্ম ও সভাতাকে শ্রন্ধার চোথে দেখে। এমন্ত হিন্দুর তথাকবিত 'রিলিজিয়ন' নাই, আছে 'ধর্ম'-যাহা তাঁহার জীবনের প্রত্যেক দিককে নিয়ন্ত্রিত করে. কিন্তু ভাঁহার চিস্তার স্বাধীনতা ক্ষুত্র করে না। ইহাই ভারতের বৈশিষ্টা, এই বৈশিষ্টোর ছিটেফোঁট। ইসলাম 'রিলিজিরনে'ও সংক্রামিত হইয়াছিল, তাই এদেশে হিন্দু মুদলমানে মিলন সম্ভব হইয়াছিল, তাই বেদান্তের পাশাপাশি স্ফৌমত আমরা দেখিতে পাই। কিন্তু ভারতের ইতিহাসে দারাপ্তকো বেমন ঐতিহাসিক ব্যক্তি, বাদুশা উরঙ্গঞ্জেবও তেমনি গোড়া মুদলমান হতরাং একই ছব্দে ভারতবর্ধের ইতিহাদকে গাঁথা চলে না। তাই মিলনের সঙ্গে জাতৃৰিরোধ ভারতের ভাগ্যলিপি। ভারতের মুসলমান বুদি আপুনাকে অ-ভারতীর মনে করে তবে তাহাকে বুক্তিৰারা বুঝাইতে পারে এইরূপ শক্তির অভাব দেখা গিয়াছে। ব্দবশু ভারতীয় কোন মুদলমান বদি নিম্নেকে এদেশের মনে করে তাহা **হইলে তাহাকে** উণ্টা বুঝাইতে পারে এরূপ শক্তিও বে নাই তাহাও সত্য। কিছ সাম্প্রতিক ইতিহাস প্রমাণ করিয়াছে বে, ভারতীর সুসলমান নিজেদের হিন্দু ও অক্তাক্ত ধর্মাবগৰী হইতে 'পৃথক জাতি' মনে করে এবং এইজন্তই পাকিস্থান সৃষ্টি হইরাছে। ভারতীয় মুসলমানদের ইন্ছা না থাকিলে পাকিছান কায়েম্ করে এ ক্ষমতা ইংরেজের ছিল না, এবং আজও মুসলমানদের অনিচ্ছার পাকিস্থান এক দিনও টিকিতে পারে না। স্তরাং এছকারের যুক্তির মূল্য বাহাই হটক, পালিউল্লে তাহা ব্দাপাততঃ বচন বলিরাই মনে হইতেছে। তবে এরপ সর্পন্থের প্রচার



সমাজের পক্ষে মজলকর। মুসলমান পাঠকগণের মধ্যে এরূপ গ্রন্থের প্রচার খুবই বাঞ্চনীয়।

#### **बि**ष्यनाथरकु पर

সাহিত্য-সাধক-চরিতমালা—নং ৬৯, ৭১ বীরনেরনাধ বন্দ্যোপাধ্যার, ২৪৩১ আপার সারকুলার রোড, কলিকাতা। মূল্য—প্রত্যেকথানি এক টাকা।

প্রথমখানিতে ছিজেল্রলাল রার, জলধর সেন ও কীরোদপ্রসাদ বিভাবিনোদের জীবনচরিত আছে। তিন জনই সমসামরিক। ছিজেল্রলাল
১৮৬৩ গ্রীষ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করিয়া মাত্র পঞ্চাল বংসর ব্রুসে ১৯১৩ গ্রীষ্টাব্দে
মহাপ্রয়াণ করেন। ছিজেল্রলাল একজন শ্রেষ্ঠ কবি ও নাটাকার।
রঙ্গনকে তাঁহার চন্দ্রগুপ্ত ও সাজাহান আলও পূর্বের ভার জনপ্রির।
তাঁহার হুদেনী সঙ্গীতগুলি অপূর্বে। তাঁহার প্রবক্ষপ্রলিতেও বংশষ্ট
চিন্তানীলভার পরিচর পাওরা বার। 'আর্যাগাখা', 'আলেখা' ও 'মল্র'
এই তিনখানি গাঁহার কাব্যগ্রন্থ। 'ভিবেনী' খঙ্কবার। 'আবাঢ়ে' বাক্রকাব্য। সীতা' নাটা-কাব্য। নাটক, প্রহুসন, প্রবন্ধ ও কাব্য লইরা
ছিজেল্রলাল ব্রিশ্রখানি গ্রন্থ রচনা করিরাছেন।

'প্রবাদ চিত্র' 'পথিক' হিমালর' 'হিমাচল-বক্ষে' প্রভৃতি অমণ-কাহিনী লিখিয়া জলধর দেন (১৮১০-১৯৩৯) খাতির উচ্চ শিখরে আর্চ্ ইইচাছিলেন। উাহার লিখিত ছোট গল্প একদা বালালী পাঠককে মুদ্ধ করিচাছিল। 'বিশুনাদা' 'তিন পুরুষ' প্রভৃতি উাহার উপস্থাদ। তাহার রচিত পুস্তকের সংখ্যা প্রায় অর্দ্ধ শত। স্চনা ইইতে স্থাধিকাল অতীব যোগাতার সহিত তিনি "ভারতবর্ধ" মাসিকপত্র সম্পাদন করেন।

ক্ষীরোদ প্রসাদ বিভাবিনোদ (১৮৬৩-১৯২৭) খ্যাতনামা নাটাকার। ওঁাহার 'হঘুব'র' 'আলমগীর' 'নর নারায়ণ' প্রভৃতি নাটক বাঙ্গালী দর্শকের মনে প্রচুর আনন্দ বিভরণ করিয়াছে। তাঁহার রচিত রক্ষনাট্য 'আদিবাবা' অমর হইরা থাকিবে। তাঁহার 'নারারক্ন' উপভাস-সাহিত্যে নূতনছ আনরন করিয়াছিল। তিনি অর্ছুশতাধিক প্রস্কের রচরিতা।

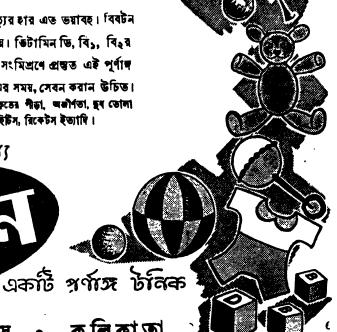
একসপ্ততি-সংখ্যক 'চরিতমালা'র রামদাস সেন, রম্বনীকান্ত ভব্ত, ৰিখিলনাথ রার, অতুলকুফ মিত্র ও গণেক্রনাথ ঠাকুরের জীবনী আছে। উনবিংশ শতাব্দীর পুরাতত্ববিদ্ হিসাবে রাজেল্রলাল মিজের পরই রামদাস সেনের নাম করিতে হর। মাতৃভাষার এই বিবরে গ্রন্থরচনার রামদাস সেনই (১৮৪৫-১৮৮৭) অপ্ৰণী: তাঁহাৰ তিন ভাগ 'ঐতিহাসিক রহস্ত' বিবিধ-বিষয়ক প্রাচীন ইতিহাস সম্পর্কিত জ্ঞানের ভাগ্ডার। বঙ্কিসচক্রের প্রেরণার তিনি "বঙ্গদর্শনে" অনেকগুলি পুরাতাত্ত্বিক প্রবন্ধ রচনা করেন। রজনীকান্ত গুপ্ত (১৮৪৯-১৯০০) প্রসিদ্ধ "সিপাহি যুদ্ধের ইতিহাসে"র রচরিতা। তিনি বঙ্গীর-সাহিত্য-পরিবদের অক্ততম প্রতিষ্ঠাতা এবং প্রথম পত্রিকা-সম্পাদক। ঐতিহাসিক সাহিত্য-রচনার তিনি একঙ্গন পথপ্রদর্শক। দেশ ও জাতির প্রতি আন্তরিক অনুরাগই তাঁহার সাহিত্য-সাধনার উৎস। ইতিহাস, জীবনচরিত ও অক্যাক্ত বিষয়ে তিনি একুশথানি এছ রচনা করেন। নিখিলনাথ রায় (১৮৮৫-১৯৩২) অক্ষরকুমার মৈত্রের সমসাময়িক। মৰ্শিদাবাদের ইতিহাস, ম্শিদাবাদ কাহিনী, ইতিক্থা প্রভৃতি এম রচনা করিয়া তিনি ষশ্বী হন। ভাঁছার ঐতিহাসিক প্রবন্ধ একদা বিখাত সামন্ত্রিক প্রসমূহ অনত্ত্বত করিত। অতুলকৃঞ্ মিত্র (১৮৫৭-১৯১২) গীতিনাট্য প্রণয়ন করিছা নাট্যস্তগতে স্বকীয় স্থান অধিকার করেন। ভাঁহার पृष्ठकावा 'नम्पविषाव' এकर्षा वित्नव थांठि नास कविवाधिन। **छै।**शव শিরী-ফরহাদ, লুলিরা তুফানি প্রভৃতি বছদিন মুখ্যাভির সহিত বক্ষমঞ্চে অভিনীত হইরাছিল গণেক্রনাথ ঠাকুর ( ১৮৪১-১৮৬৯ ) মহবি দেবেক্স নাখের ভ্রাতা গিরীন্ত্রনাথ ঠাকরের পুর। 'গাও হে গাহার নাম রচিত যাঁর বিষধাম' এই বিখাত ব্রহ্মসঙ্গীতটি উঁ।হারই রচনা।

## 31173/3/7032/5

শিশুপালনের সন্মাক্ আনের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এড ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ভি, বি১, বি১র স্থিত মৃল্যবান উদ্ভিক্ষ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাল টিনিকটি প্রভ্যেক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দস্তোদ্যমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিয়লিখিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুদের ব্যুক্তের শীড়া, অলীপতা, হুব ভোলা পেট কালা, কোঠকাটিয়, মুক্তপুত্তা, কয়ভা, বহাইটস, রিকেটস ইত্যাদি।



লিষ্টার এণিসেপটিকস্ • কলিকাতা



বদেশপ্রেমিক। কংগ্রেসের অপ্রকৃত চৈত্রমেলা বাঁ হিন্দুবেলার প্রতিষ্ঠা-সম্পর্কে ছাঁহার উৎসাহ এবং প্রেমণা সরশীর।

#### **এীশৈলেন্দ্রক লা**হা

দেশবিদেশের ছেলেমেয়ে— শ্রীমাধনলাল রারচৌধুরী ও শ্রীরঞ্জিং (?) সিংহ। দেশবন্ধু বুক ডিপো। ৮৪এ, বিবেকানন্দ রোড কলিকাতা ৩। দাম ১৪০।

দেশে দেশে নব জাগরণের টেউ উঠিরাছে। ভারতবর্ষেও রাষ্ট্রে, সমাজে ক্রত পরিবর্ত্তন ঘটিতেছে। এই জাগৃতির দিনে বঙ্গ-সন্তানদের পক্ষে অস্তাম্ভ দেশের ছেলেমেরেদের উন্নতি-প্রচেষ্টার কথা জানা দরকার। সে বিবরে বইথানি সাহায্য করিবে।

গীতিমপ্তরী—শ্রীকানাই সামস্ত। সাহিত্যিকা। ১২৩, আমহাই ক্লীট, কলিকাতা। এক টাকা।

হৃদ্দর সরস এই গীতিগুলি শেফালির মত শ্লিগ্ধ ও হ্রভি। রবীক্র-প্রতিভার কিরণে ইংারা পাপড়ি মেলিয়াছে, কিন্তু বকীর লাবণ্য লইরাই শেখা দিরাছে।

বিন্দ না----- শ্রীসাধিত্রীপ্রসর চটোপাধ্যার সন্থলিত। উবা পাবলিশিং হাউস্। ৩৪, মহিম হালদার ফ্লীট, কালীঘাট, কলিকাতা। মূল্য ৫১।

পুরাতন ও নৃতন খদেশী গানের সংগ্রহ। কবির নির্বাচন ওঁাহার থাাতির উপযুক্ত হইরাছে। ভূমিকার তিনি 'জাতীর সঙ্গীতের ধারা' সখজে আলোচনা করিরাছেন। যে সকল গান লগু হইতে চলিরাছিল অধচ জাতির মৃক্তি-সংগ্রামে এক কালে প্রেরণার সঞ্চার করিরাছে, সেঞ্জলিকে রক্ষা করার এই প্ররাস সর্বভোভাবে প্রশংসনীর। ভারতের খাধীনতালাভের পরে রচিত করেকটি গান শেবের দিকে সব্লিবিষ্ট হইরাছে।

রাত্তে যারা ভয় দেখায়— শ্রীহেমেক্সার রার। এন্. এমু রায় চৌধুরী কোং নিঃ, কলিকাতা। মৃল্য ১১।

বালকবালিকাদের জন্ত কৌতুহলোদীপক উপস্থাস রচনার হেমেন্দ্র-বাবুর কৃতিত্ব অসাধারণ। এ এত্থের করেকটি গল মৌলিক, অন্যগুলি বিদেশী কাহিনীর অনুসরণ। সব কর্মট গলই চিন্তাকর্যক।

#### শ্রীধীরেজনাথ মুখোপাধ্যায়

্হিন্দুধর্ম পরিচয় (দ্বিভীয় সংস্করণ) — বামী শ্রীমৎ শ্রহানন্দ। কলিকাতা—২এ, স্থামাচরণ দে দ্রীটছ 'সডেল পাবলিশিং হাউস' কর্ত্ক প্রকাশিত। ১ম-২র ভাগ একত্রে ৪৪ পৃঃ মূল্য। ৮০ এবং ৩য়-৪র্থ ভাগ একত্রে ৭৬ পৃঃ মূল্য। ৮০।

আলোচ্য পৃত্তিকাদ্বরে বধোচিত সরল ভাবার হিন্দুধর্মের পরিচর বর্ণনা করা হইরাছে। সাম্প্রদারিক ভাববন্দিত হিন্দু ধর্মের মূল রহস্ত বুঝিবার এবং দৈনন্দিন জীবনে আচরণ করিবার বহু উপকরণ গুরে পরিবেশিত হইরাছে। হিন্দু ধর্মের সার এত সংক্ষেপে ও সরল ভাবে বর্ণনার জন্ত গ্রন্থকার প্রশংসাই।

#### ঞ্জীউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

শত শি শী শীরমেনচন্দ্র সেন। প্রবী পাবলিশার্স। ১৩, শিবনারারণ দাস জেল, কলিকাভা। মূল্য সাড়ে চার টাকা।

সাঅতিক বাংলা সাহিত্যে বে করণানি সার্থক উপস্থাস প্রকাশিত হইরাছে জ্বীরমেশন্ত সেনের শতাবী তাহাদের অক্ততম। এই পুত্তকের একটি প্রধান আকর্ষণ ইহার ভাষা। এই নিরলম্বত অধন রসসম্পৃত্ত ভাষার এমনি একটা বাছু আছে বে, ইহা পাঠকের মনকে কাহিনীর মধ্যে একেবারে ভাষার করিয়া রাখে।

কাহিনীট পড়িরা উটিয়াছে পূর্ববিলের বিলান অঞ্চলর পনীগ্রাম মপ্লবীকে কেন্দ্র করিয়া। লেখক খ্যানবোগে নদীমান্তক পূর্ববলের জন্তর-সন্তার একুত পরিচয় লাভ করিয়াছেন। বাংলার মাটি, জল, মাঠ, ঘাট, নদী, ডোবা, খাল, বিলের সঙ্গে পলীর নরনারীর যে কি গভীর নাডীর যোগ ভাহা তিনি মর্শ্বে মর্শ্বে উপলব্ধি করিছা যেন জনয়ের সবটুকু দরদ ঢালিয়া দিয়া লিখিয়াছেন। বাংলার যে চাধী-সম্প্রদায় এদেশের মাটিতে সোনা ফলায়, তাহাদেরই একজন, নমঃশুদ্র সম্প্র দায়ের রাজেশর এই উপন্যাদের নারক। সে ছিল সহায় সম্বলহীন দ্রিদের সম্ভান, কিন্তু মাটির দৌলতে হইল অফুরও ঐথযোর মালিক। ভাহার অধামলে শহর ও গাঁরের মধ্যে ঘলৈ মিতালি, মহায়য়া গায়নীর **অসহবোগ আন্দোলনের** স্রোভ মঞ্লরীতে প্রবেশ করিয়া সেই স্কুদ্র পদীটিতে বিপুল আলোডনের সৃষ্টি করিল। রাজেখরের জীবনে আসিতেছে পর পর আবাত ব্যর্থতা মৃত্যুশোক আদর্শসজ্বাত; কিন্তু স্বকিছুতে অবিচলিত থাকিয়া সে বে অনমনীয় দুঢ়তার পরিচয় দিতেছে, ভাহা বিশারকর। মাটির প্রতি তাহার গভীর টান আর তাহার অপরাজের পৌৰুষ ফুটহামমুনের Growth of the Soil উপন্যাসের নায়ক চাৰী আইকাকের কথা মনে করাইয়। দের এবং আইকাকের মত---He is the man, the leader,—এই কৰাত্তলি ভাহারও প্রতি সমভাবে প্রবোজ্য বলিরা মনে হয়। চুম্বক যেমন লৌহকে আকর্ষণ করে ভেষনি এই চরিত্রটি অন্য সব করটি চরিত্রকে এক অনুশু আকর্ষণে নিজের ব্যক্তিসভার পার্বে টানিয়া রাখিয়াছে, এবং সেই বিরাট ব্যক্তিছের আওতার প্রত্যেকটি চরিত্রই স্ব-স্ব বৈশিষ্ট্যে ফুটয়া উঠিয়াছে।

বৰ্তমান শতাকীতে পনী ও শহরের ব্যবধান ক্রমবিলীরমান। পনীর প্রকাল মহানগরীর ভাষগঙ্গার বিপুল প্লাবনে উদ্ধৃতি, বাংলার পনী আল নব্যুগের নৃতন প্রেরণায় উধুদ্ধ। "শতাকী"তে একদিকে বেমন আছে সেই যুগচেতনার প্রতিফলন, অন্য দিকে তেমনি আছে "দেশে আগত এক নৃতন অতিথির" প্রতি ধাগত-সম্ভাষণ। এই নবাগতের নাম কম্নিজম, রাজেখনের মত বাটি গান্ধীবাদী অসহযোগী প্যান্ত অবশেষে হাহার ক্রমবর্দ্ধমান শক্তিকে মানিরা লইতে বাধ্য ইইয়াছিল।

এই বাজারে অল্পকালের মধ্যে উপন্যাসথানির বিতীয় সংস্করণ হওয়ার বাঙালী পাঠকের সাহিত্যপ্রীতির প্রতি শ্রদ্ধা জন্মে।

শ্রীনলিনীকুমার ভত্ত

### मक्ष्यल विषया कलिकाठाव परव वरे किञ्च

বিভিন্ন প্রকাশকের নাটক, নভেল, ধর্মগ্র, জনণকাহিনী, ব্যবসারবাণিকা, চিকিৎসা ও আইনের পৃত্তকাদি, মুল-কলেকের ও উপহারের কল্প
ভাল ভাল পৃত্তক আমরা কলিকাতার দরে সহর সরবরাহ করি। /১৫
ভাকটিকিট পাঠাইলে লাইরেরী ও উপহারের কল্প নান্থিধ নৃতন নৃতন
পৃত্তকের সন্ধানসহ সর্বাহিনীন পৃত্তক-ভালিকা পাঠান হর। আর্ডারের
সহিত স্লোর অর্থাংশ দিলেই সমন্ত পৃত্তক ভি: পিঃতে পাঠান হর।
পাাকিং, ভাকমান্তল ও বিক্রয়কর বত্র। নিশ্চিত ও নিরাপদ আরের কল্প
আমানের হারী নামানতে টাকা কমা রাধুন। স্থানের হার ও বৎসরের
কল্প শতকরা ৭, ও ৫ বংসরের কল্প ১০, হিসাবে দেওরা হর। অনুন
৫০, টাকাও কমা বাধা হর। প্রতি ৩ মান ক্রম্বর বেদ দেওরা হর।

কুপু পাব্লিসিটি সোসাইটা অব ইণ্ডিয়া (পাব্লিকেশন এও বুক-নেলিং ভিপার্টবেট) ১০০নং আবহাই ব্লিট, কলিকাতা—১ ভার**্তর মৃ্তিস্কানী—** শ্রীবোগেন্চর বাগল। ভারতী । বৃক্টল, রমানাথ মঞ্মদার ট্লীট, কলিকাতা। মূলা ২।•

'মৃক্তির সন্ধানে ভারত' প্রশেতা শ্রীবোগেণ বাগল মহাণর প্রচুর গবেবণা ও তথ্যানুসন্ধানাদি হারা উনিংশে শতাকীর কৃতী ও দেশ-বরেণা মনীবিগণের জীবনী আলোচনা করিয়া থ্যাতি অর্জন করিরাছল, এই প্রহুথানি তাঁহার সেই থাতিকে বর্দ্ধিত করিবে। এই প্রহুথ হারকানাণ ঠাকুর, রামলোচন ঘোব, মনোমোহন সোব, নব-গোপাল মিত্র, রাজনারামণ বহু, রামগোপাল ঘোব, শিশিরকুমার ঘোব, হরিশুক্র মুখোপাধ্যায় ও প্রবেক্তনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় এই কয় জন বরনীর ব্যক্তির জীবনী ও কৃতির কথা আলোচিত হইরাছে। দেশের স্ক্রিকীণ উরতি ও শ্রীবৃদ্ধি সাধনে ইহাদের সক্রেই অবদান অতুলনীর।

শিক্ষাবিতারে, মাতৃভাষা ও সাহিত্যের শ্রীবৃদ্ধি সাধ্যে, দেশের সংস্কৃতি,
শিক্ষাণিজ্যের প্রসারে, বলেশের উরতি-পরিপদ্ধী ঝাইলের বিরুদ্ধে গবর্গমেন্টের সহিত সংঘর্ষে, সকল দিকেই ইহাদের সর্ব্বতোমুখী প্রচেষ্টা ও উভব
প্রত্যেক দেশবাসীর সারগীর ও অমুখাবনবোগ্য। ইহাদের বিশ্বতপ্রার
কীর্ত্তিকাহিনী তথ্যপ্রমাণাদিখোগে সাধারণের সমকে উপস্থাপিত করিরা
প্রক্ষার দেশবাসীর ঘলবাদার্হ ইইরাছেন। ভবিছাং সংস্করণে প্রস্কৃতকার ভবলিউ সি ব্যানার্ভিজ, রমেশতক্র দত্ত প্রমুখ আরও করেকজ্বন
মুক্তিসন্ধানী সাধ্যকের জীবনী এই পৃত্তকে সন্নিবেশিত করিলে সাধারণ
পাঠকের পক্ষে ইহা অধিকতর উপধােগী হইবে। করেকখানি ফটো
প্রত্যেকর সৌন্ধ্যা বৃদ্ধি করিরাছে।

बीविकारमञ्जूक भीन

#### (मम-विस्मात कथा

#### সুধীরকুমার চট্টোপাধ্যায়

বিপত ১৬ই পৌষ ( ২রা ডিসেম্বর ), বৃহস্পতিবার, উভয় কলিকাভার বিশিষ্ট জন-সেবক এবং কংগ্রেস-কর্মী, কলিকাভা কর্পোরেশনের প্রাঞ্জন কৌজিলর সুধীরকুষার চট্টোপাধ্যার মাত্র সাভচল্লিশ বংসর বয়সে বছ পিতামাভা এবং আত্মীয় ও বদ্ধবৰ্গকে শোকসাগৱে ভাসাইয়া আক্ষিকভাবে প্রলোক-প্ৰমন করেন। বাল্যকাল হইতেই ভিনি স্বাধীনতা আন্দোলনের সহিত বিৰ্ভিত ছিলেন। বাৰ্নীতির প্রতি আকর্ষণ তাঁহার বিভাতুরাগকে কুর করে নাই। খেলাবুলার প্রতি অহুরাগও তাঁহার আন ছিল না। বি-এ এবং বি-এল পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া কলিকাভার ছোট আদালতে ভিনি ওকালভি ব্যবসায় আরঙ ভাষার পরই ১৯০০ এটাবে গাঘীনী-প্রবিত্তি আইন-অমাত আন্দোলন তুর হয়। কংগ্রেসকর্মী রূপে তিনি সেই বিরাট আন্দোলনে বাপাইয়া পড়েন। বয়োকোঠ সময়গণ একে একে কারাগমন করিলে উত্তর কলিকাতা কংব্রেস কমিটর পরিচালন-ভার এই ভরুণ কর্মীর উপর পঞ্চে। অভ্যন্ত যোগ্যভাৱ সহিত সম্পাদক-পদের গুরু দায়িত্ব পালন कदिश श्रदीवक्षांव कातांवदन कद्वन।

১৯৩১ সনে ছবের পদ্ধী হইতে তিনি কলিকাতা কর্পোরেশনের কৌজিলর নির্মাচিত হন। একাজিক সাধ্তা, সচ্চরিত্রতা এবং কর্মদক্ষতার গুলে তিনি এতই জনপ্রিয় হইয়াছিলেন যে পৌরসভার ত্রৈবাংসরিক নির্মাচনে তিনি পর পর তিন বার জয়লাভ করেন। এই সম্মানের জাসনকে তিনি কর্মন্ত পদমর্ব্যাদা হিসাবে প্রহণ করেন নাই। জনসংগর নিঃ হার্থ সেবাই তাঁহার ব্রত ছিল। পৌরসভার ভাষলাভ করিরা এই ব্রত উদ্যাপনে সুধীরক্ষার তাঁহার সমস্ভ শক্তি নিরোগ করেন।

১৯৪২ ব্রীষ্টাব্দে তিনি ইযঞ্জনেও ট্রাটের এসেগর
নির্ক্ত হন। সর্বান্তর এগার বংসর তিনি পৌরসভার
ছিলেন। ইহার পর বিশেষভাবে অহনের হুইরাও সুধীরকুমার
ভার নির্বাচনপ্রার্থী হন নাই। তাঁহার কার্য্যকালে তিনি
সর্বাপেকা বয়ঃকনির্চ, সুযোগ্য ও সভ্যনির্চ্চ কৌলিলররপে
প্রিচিভ ছিলেন। অনুসাধারপকে আপনার কন মনে ক্রিভেন

বলিয়া তিনি সকলের পরম প্রির ছিলেন। তাঁহার সাহিত্যাস্থ-রাগ প্রবল ছিল। তিনি বছ দিন বঙ্গীর সাহিত্য-পরিষদের সদক্ত এবং শেষ পর্যান্ত 'রবিবাসরে'র উংসাহী সত্য ছিলেন।



#### হুৰীৰকুমাৰ চটোপাধ্যাদ

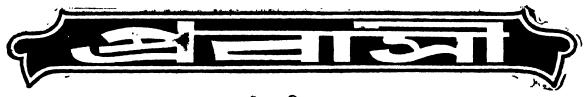
প্রচারণাহীন পরোপকার এবং নিংবার থান তাঁহার পক্ষে একাছ বাতাবিক ছিল। তাঁহার নিকট উচ্চনীচ-তেদ ছিল না, স্মিট্ট ব্যবহারের বছ ধনী-দ্বিত্র শিক্ষিত-অশিক্ষিত নির্কিশেবে সকলেই তাঁহার প্রতি আরুট্ট হইত। আছরিকতা, সাধৃতা এবং কর্মনিটা খবে স্বীরহুমার নেতাজীর স্নেহক্ষেরন হইরাহিলেন। তিনি বিবাহ করেন নাই। এই আলীবন কৌমার্ব্যপ্রতারী, পরহিত্রতী, নিরহ্লার, অমারিক, প্রিরদর্শন, প্রির্ভাষী, চরিত্রবান, খন-সেবকের অকাল তিরোধানে দেশ এক্লন একনিট কর্মী এবং নির্ভাক স্বদেশপ্রেমিককে হারাইল। ভগবান তাঁহার শোকসম্বন্ধ পরিবারবর্গকে সাধুনা প্রদান করেন।



গুণাচার্য্যের প্রতিমূর্ত্তির সম্মুখে একলব্য শ্রীচিত্রনিভা চৌধুরী



এলাছ'বাদে বিকাশ-কংগ্রেসের ৩৮তম এবিবেশনে উচেঃ'ধন বক্ত ত' প্রাক্ত কর্ছিরদাল নুদ্ধ



"সভাস্ শিবম্ স্বন্দরম্ নায়মাস্থা বলহীনেন লভাঃ"

৪৮শ ভাগ ) ২মুখণ্ড



} ৪র্থ সংখ্যা

পশ্চিম বাংলা

পশ্চিমবল পরিচালনে বছ বাধাবিপত্তি ও সমস্তা প্রতি-পদে চালকদিগকে বিব্ৰুত করিতেছে। এ অবস্থার ক্রমাগত শাসন-পালনের ছোয়ক্তট নির্দেশ করিয়া সমালোচনা করা সমালোচক ও প্রদেশচালক ছুই পক্ষেত্রই নিকট অপ্রিয় ব্যাপার হইরা উঠিতেছে। অবচ বাংলার বর্তমান ভূর্বপাঞ্জ অবস্থা--্যাহা ছুই যুগ ব্যাপী কুশাগন ও খনননীতি অফুগরণ এবং কংবেদ কর্তৃক অবদ্যোর ফল—ইছার সংশোধন ভিন্ন এদেশের আলা-ভরসা নাই। পূর্বেদেশের শাসিত ও শাসনের মধ্যে य राज्यान दिन विकेश भागत्कत ज्ञान रिनत गरम गरम रा ব্যবধানের কারণ দুরীভূত হইরা যায়। কিছ ছ:বের বিষয় ব্রিটিশ শাসকের ভূত্য ও অনুচরবর্গ এবং তাহাদের পছতি ও শাসন-প্রকরণ পূর্ব্ববং রহিয়া গিয়াছে। উপরম্ভ ব্রিটিশ শোষক-वर्रात উত্তরাধিকারীর দল, যাছারা প্রথমে ব্রিটিশ শাসকবর্ণের क्षांव वारनांत मुर्शन छ भाषन कार्दा नकनकांव स्टेबारस. ভাহারা আৰু অভিপ্রবল। এই ছুই বীৰাণুর আক্রমণে সমন্ত **ৰাতির দীবন-শ্রোভ আৰু রোগাক্রান্ত এবং বাংলাদেশে ঐ** রোগের প্রকোপ এবন ব্যাপক মহামারীতে পরিণত। ইহার কলে সেই মামূলী ব্যবধান আৰু পুন:হাপিত হইতে চলিয়াছে। উহা যদি আবার পূর্ব্বরূপ বারণ করে তবে দেশে অরাজকতা, ব্দবিকোত ও ভাতির অবোগতি অনিবার্য।

শহতের ঘনন ও শিতের পালন" যেমন চিরাচরিত সুণাসনের নীতি, তেমনই সংকার্য্যে উৎসাহদান ও ছ্রুর্নের প্রচ্চ প্রতিরোধও দেশ-চালনার প্রধান কর্ত্তরা। দেশের জন-সাধারণের জভাব-জভিযোগ এক দিনে দূর করিবার নর পৃথিবীতে কেন্ত ক্ষরত বুঁজিরা পার নাই। কিন্ত দেশের জাসক ও চালকবর্গ সভ্য সভ্যই দেশের জনসাধারণের অবহা উর্বনের কর চেটিত ও ব্যন্ত একথা যদি পাইই বুখা বার তবে দেশের আশার বার্ বহিতে জারন্ত করে, বাহাতে বীরে বীরে সম্বিক্ষোত শাভ হয় এবং শাসক ও চালকবন সাধারণের বাহাত্য ও বিধাস লাভ করিরা জ্বমেই দেশকে উন্নতির প্রের্থিতে সক্ষর হাইতে সক্ষর বাইতে সক্ষর হাইতে পারের। এইরপ অবহার ভ্রতি স্থিতে হাইতে সর্ক্রেশ্বের প্রবোহন চালক ও শাসকবর্গ

এবং দেশের সাধারণের মধ্যে সহাতৃত্তি ও বিখাসের হত্তযোক্ষা।

দেশের শাসকবর্গের প্ররোজন প্রতিপদে লক্ষ্য রাখিতে হইবে যে, তাঁহাদের নিরোজিত কর্মচারীদিগের কার্যাপভতিতে দেশের গোকের জীবনযাপন জ্ঞানে স্বাভাবিক হইতেছে কিনা এবং দেশের লোক বুরিতেছে কিনা যে ঐ কর্মচারীবর্গ ভাহাদেরই সেবার নির্ক্ত। বিটিশ জামলে দেশের লোক, বিশেষতঃ বাংলা-দেশের লোক, পুলিস বলিতে যোটায়ুট বুরিত একদল মুরবোর, মন্তপ ও ক্রন্থরি উৎপীড়ক, যাহারা বিদেশ অবিকারীবর্গের বিশেষ অপ্রগত ও আজাবাহী ভূত্য এবং দেশের জনসাবারণের বিষম শক্র। সাবারণে জানিত বে, পুলিসের অভ্যাচারের বিরুদ্ধে প্রতিকার নাই, কেননা কোনও পুলিস কর্মচারীর বিরুদ্ধে উৎপীড়ন বা হুর্নীতির অভিযোগ করিলেই ভাহার প্রোছে ইইত, উপরক্ত অভিযোগকারী নিজের মাধার পুলিসের জ্ঞোব ভানিয়া আনিয়া হুর্জনাঞ্রন্ড হইত। আরু বাংলাদেশের চালক্ষ-বর্গের একান্ত অবহিত ছওয়া প্ররোজন যে, বর্ডমানে পুলিস ও জনসাবারণের মধ্যে বিধাস ও সহাস্তৃতি কৃত্টা আগিরাছে।

বিটিশ আমলে "গিভিল সাধীই" বলিতে লোকে বুবিত ছ্নীতিপরায়ণ রাজকর্মচারী ও অর্থপিশাচ চোরাকারবারীর সপ্তন বর্গ। সেবানে আসল কথাই ছিল কাহাকেও কোন ব্যাপারে অবধা অধিকার দিরা, এবং জনসংবারণকে নিশেবণ করিবা, কভটা "রস" ভাহার কুক্ষিগত হর এবং কভটা অধিকারীবর্গের আরভে আসে। আজ দেশচালকর্গকে দেখিতে হইবে সেই অবহার কভটা পরিবর্ত্তন ঘটরাছে। বিটিশ আমলে "লীগ"দলের খার্থের প্রগই ছিল উচ্চতম অধিকারীবর্গের একমাত্র আদর্শ। দেশের লোকের উন্নতি বা স্থব ছিল নিভাছই গৌণ ব্যাপার। আজ আমাদের দেখিবার সময় আসিরাহে বে, দলগত স্বার্থের জভ জনসাবারণের বার্থ কভটা সম্ভুচিত ক্ষরিছে।

সাধারণের দিক হুইতে এবন নিয়ন-স্থলার দিকে প্রথম দৃষ্টি রাধিবার সময় আসিয়াছে। বাচাল, কর্মবিষ্ণ, ছবিধাবাদীর ক্যার ভূলিয়া নিজের ও দেশের সর্ম্মাশ আমর। মধ্যেই ক্রিয়াছি, এবন দেশপ্রেমের উন্নত ব্যব্দের মান্তও ছাপ্রেম্ব সময় আসিয়াছে।

#### দেশব্যাপী অসম্ভোষ

গভ কাৰ্ত্তিক মাসে কান্দ্ৰ নগরীতে এক বফুতা উপলক্ষে সৰ্বার বল্লভটাই প্যাটেল বলিয়াছিলেন:

"কংগ্রেস তাহার ভারন-চাত হটয়াছে; মহাত্মা গাঞ্জীর নির্ভিষ্ট পথ হইতে দূরে সরিয়া গিয়াছে। -- কংগ্রেসের লোকেরা পরস্পর বগড়া-বাটি করিতেছে; ক্ষমতা লাড়ের জন্ম কাড়াকাড়ি করিতেছে।"

জরপুর কংগ্রেসের জল-স্বরূপ "সর্কোদয়", প্রদর্শনীর ছার-উন্মোচন উপলক্ষে গত ১লা পৌষ আচার্য্য বিনোবা ভাবে বলেন:

"আধিকার কংগ্রেসসেবীরা তাঁহাদের বিগত আন্ধ্রত্যাগকে বিক্রয় করিয়া ফেলিতেছেন। তাঁহাদের মধ্যে
নবতর আন্নত্যাগের আর কোনও প্রেরণা নাই। বর্ত্তমানে
কংগ্রেস প্রতিষ্ঠানের মধ্যে সত্যের যেন আর স্থান নাই।
ক্ষমতা লাভের করু অভব্য কাড়াকাড়ি এবং ইবা ও অস্থা
ক্ষমিদের মধ্যে প্রতিনিয়ত দেখা ঘাইতেছে। আনিকার
কংগ্রেস অভীতে যে মূলবন সক্ষয় করিয়াছিল, সেই মূলবন
ভাঙাইয়া চলিতেছে। সভ্য ও অহিংসার যে মহামতবাদ
গাখীলী এতকাল ধরিয়া প্রচার ও প্রসার করিয়া গেলেন
বর্ত্তমান কংগ্রেস সে মতবাদ হইতে ক্রমে দূরে সরিয়া
যাইতেছে।"

গত ৮ই পৌষ মান্ত্ৰাক নগরীতে এক জন-সভায় বস্তৃতা উপলক্ষে আচাৰ্য্য সৰ্বাপন্ধী রাধাক্ষণ বলিয়াছেন:

শদ্মতার নেশা আমাদের উন্নত্ত করিয়াছে। যদি আমরা ছাতীর বৈশিষ্ট্যগুলিকে প্রনিষ্ঠতিও উন্নত করিতে ইচ্ছা করি তবে আমাদের যথেষ্ট উদার ও সন্তুদর হুইতে হুইবে।

"মহারাজী আমাদের মুক্তির হারদেশে পৌহাইরা দিরা আমাদের মধ্য হইতে বিদার এহণ করিরাছেন। উাহার দেওয়া শিকাকে যদি আমরা কার্য্যে রূপাভরিত করিতে না পারি, তবে নবলর বাধীনতা জোনাকির ক্ষাকে আলোকের মত অর্থহীন হইরা বাইবে।

"ক্ষনাধারণের প্রতি,ব্যবহারের মান সংক্রান্থ প্রভাব ক্ষরপুর সন্দেলনে যে বিপুল সমর্থন লাভ করিরাছে ভাহা হুইতে মাহুবের ক্রমবর্জমান অসন্ভোবের ইলিভ পরিকৃট হুইরাছে। আমাদের শাসক সম্প্রদার সে অসভোষের ক্ষরা আনেন; এই ঘটনার মধ্যে তাহাদের সতর্ক করিবার ইলিভ নিহিভ রহিরাছে। আব্দ সে অসভোষ অচল অবহার হিরভির হুইরা থাকিলেও এক্দিন ভাহা সক্রির হুইরা উট্টবেই।…

"যদি আমরা অর্থনীতিক ব্যবস্থার কোনরূপ পরিবর্ত্তন লাধন করিতে না পারি ও কেবলযাত্র অর্থনীন চীংকার এবং শ্রমিকদের রক্তশোষক বনিকদের সদে বোরাপঞ্। করিতে অসমর্থ হই ভবে এই অসাম্য দেশব্যাদী অসভোষের আশুম আলাইতে বাধ্য।

"এখনও আমাদের সাবধান হওয়া কর্ডব্য, যেন বিদেশী-দের ধারণা না হর আমাদের সরকার ধনিকদের হার-রকায় ব্যস্ত ও ধনিকদের ঘারা পরিচালিত। যদি আমলা তাহা না করিতে পারি তবে এ দেশ সত্যকার সমাকৃতক্ষ বা গণতত্ত্বের স্ঠিকরিতে পারিবে না।"

এই তিনটি উক্তি আমাদের দেশের যে তিন ক্ষন প্রধান ব্যক্তি করিয়াছেন, তাহাদের মধ্যে প্রথম জন ভারতরাষ্ট্রের মন্ত্রী---সহকারী প্রধান মন্ত্রী। অপর ছুই জন দেশের চিভানায়ক। তিন জনই যে রোগের নিদান নির্দেশ করিয়াছেন, ভাছার আরোগ্যের উপায় কি, ভংসম্বদ্ধে এখনও কোন স্থনিভিত পদ্ম ৰত্নিখা আমরা চলিতে পারিতেছি না। এই বিষয়ে দায়িছ কাহার তংগছরে কাহারও মনে কোন সন্দেহের অবকাশ মাই। ভারতরাঞ্জের প্রকাপুঞ্জের একটি ক্ষমতালালী সংশের নৈতিক অবনতি হইয়াছে। এই বিষয়ে কোন মতভেদ নাই। এই শ্রেমকৈ সংযত ও পবিশুদ্ধ করিবার দায়িত রাষ্ট্রের। এই বিষয়ে রাষ্ট্রকে শিক্ষক ষ্টতে ছইবে : পান্ধীনীতি ও তং-প্ৰদৰ্শিত কৰ্ম্মপছতি এই সংশোধনকাৰ্য্যে কোন সাহায্য করিতে পারে কিনা তাহা খির করিবার দায়িত্ব রাষ্ট্রনায়কগণের। এই সম্বন্ধে পণ্ডিত জবাহরলাল নেধ্য়ে ও সর্ধার বলভভাই প্যাটেলের ছির সিদ্ধান্ত দেশের লোককে খানাইয়া দেওয়া উচিত। দকাওয়ারিভাবে কংগ্রেসকন্মী বা ৰনিকদের প্রতি षक्षि भिर्दिम क्रिएन हिन्दि न। वाकिएक स्वीहेश বলিতে হইবে- "ভূমি, ভূমি পাণ্ডী, কালাবাৰাৱী, মুনাকালোভী, সমাজের অনিষ্টকারী।" এইভাবে অস্থলি নির্দেশ করিবার সাহস মা থাকিলে ভারতরাষ্ট্রের কর্ণবারবর্গের কর্ন্তব্যচ্যুতি হটবে এখনও হটভেছে। প্রশ্রম পাইরা অভার এমন ভাবে দানা বাৰিয়া উঠিভেছে যে দেশের লোকের মধে একটা निदाना ७ निक्र नाइ अवन इरेशा छे विशास । अरे मत्नाकार इटेट एडि इत ताटित कार्याकलाटम **चर्ट्सा, च-मत्रम**। সেইজভ আমরা বলিতেছি "কাভারী। হশিয়ার।"

ভারতরাষ্ট্রের সহিত ব্রিটেনের সম্বন্ধ

কংগ্রেসের করপুর অবিবেশনের বিষর-নির্কাচনী সভার কংগ্রেসের সর্বভেষ্ঠ নেতারপে ভারভরাষ্ট্রের প্রবাদ মরী পভিত অবাহরলাল নেহের একট বক্তৃতা প্রদান করিরা ভারতরাষ্ট্রের পররাষ্ট্র-দীতির ব্যাখ্যা করেন। এতং-সম্পর্কে সহক্ষেই ভারতরাষ্ট্রের সহিত ব্রিটেনের সম্বন্ধের কথাটা আসিরা পড়ে এবং পভিতজীর কথা হইতে বুঝা বার বে, বিদিও গণ-পরিষদের উপর এই বিষয়ে চূড়ান্ত সিহান্থের ভার কেরা ইইরাহে, তবুও এই কথা বলিলে অভার হইবে মা বে

করিবেন বা করিষাছেন। কারণ তাঁছারাই গণ-পরিষদেরও নেড্-ছানীর ব্যক্তি, এবং তাঁছাদের মতাথতের বিরুদ্ধে গণ-পরিষদের পক্ষে কোন সিদ্ধান্তই প্রহণ করা সন্তব নর। স্তরাং কবিয়তে গণ-পরিষদ কি সিদ্ধান্ত প্রহণ করিবে তং-সধ্ধে একটা বারণা করিবার লভ কংপ্রেসের বিষয়-নির্ম্বাচনী সভার পভিত ক্ষবাহরলাল নেহরু যাহা বলিয়াছেন তংপ্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে চাই:

"আমরা ভাতি হিসাবে ভাষীন। মধ্যবর্তী সময়ের <del>খন্ত</del> আমাদের ব্রিটিশ কমনওয়েলবের মধ্যে থাকিতে হইলেও আমাদের আভ্যন্তরীণ বা বৈদেশিক নীভি গ্রহণে সম্পূৰ্ণ স্বাধীনতা আছে। আমাদের উপর কেহই সর্ধারী করিতে পারিবে না। আমাদের বর্তমান নীতির পরি-বর্ত্তনের ছক্ত পুধিবীর কোন ছাতিই চাপ দিতে পারিবে না। স্বাধীনতা কথাটর পূর্ণ অর্থ ব্রিয়াই আমরা স্বাধীন হুটয়াছি। নিজেদের ভবিষ্যুৎ সংগঠন করিবার সম্পূর্ণ দারিত আমরা নিজেরাই লইয়াছি। --- কিছ তথাপি আমাদের দেখিতে ছইবে, স্ত্যিকারের স্বাধীনতা বলিতে কিছু পৃথিবীতে আছে কিনা। পৃথিবীতে কোন দেশ সম্পূৰ্ণ ৰাধীন ? ৰাধীনতা বলিলে যদি কাহারও অধীনতা না মানার কথা বুঝাইতে চান, তাহা হইলে দেখিবেন পুৰিবীতে কোনো দেশই স্বাধীন নয়,-- এমন কি আমেরি-কার যুক্তরাইও নয়, সোভিয়েট ক্রশিয়াও নয়। অঞান্ত দেশের ভো কথাই নাই ৷…"

এই কথার মধ্যে ভাষের খেলা যাহা ভাছে, তাহা উল্লেখ করিরা ভাষরা মূল বক্তব্য বিষয়ের ভালোচনা করিব। পভিতলী প্রান্ন করিরাছেন "পৃথিবীতে কোন্ দেশ সম্পূর্ণ থাবীন ?" কিছ এইখানেই তিনি থামিলেন কেন তাহা ব্ৰিলাম না। মামুম্ব কি স্বাধীন ? পৃষ্টি কি অটুট বিধানে ভাবছ নর ? "সত্যিকারের স্বাধীনতা বলিতে কিছু ভাছে কিনা"—এই প্রান্নের মধ্যেই পভিতলীর চিছাবারা স্ট্রা উঠিয়াছে। এক অবোধ্য শাসন-ব্যবহার অধীনে তাহাকে বাস করিতে হইতেছে অবাদি অনম্ভ কাল হইতে ইহাই যদি মানবের অবস্থা হয়, তাহা হইলে সম্পূর্ণ স্বাধীনতা অপ্রাণ্য এবং তাহার কল্পনা মানব-মনের ভাববিলাস মান্ন। কিছ তব্ও স্থা-রুগাছ বরিরা তাহার ভাক্তি বছম-মুক্তির জন্ত এবং সমাজেও রাথ্রে প্রকৃত বছন-মুক্তির কল্পার ও তাহার সাধনার ভানজ্য পেনা অক্ত অক্ত অক্ত বছন-মুক্তির কল্পার ও তাহার সাধনার ভানজ্য পার।

কিছ ইহা দ্বল তত্ব-কথা। ব্যবহারিক কগতে মানব-বন একটা গোঁজামিল দিয়া বাত্তব-জীবনের কাল চালাইরা নাইতেকে, এবং এই গোঁজামিলের দিক চ্টতেই ভারত-বাইের সন্দে রিটেনের সহছের কথা আলোচিত হওরা ব্যোকন। বদিও আমানের নেতৃত্বক বলিতেকেন নে, ভারত- রাই সম্পূর্ণকাবে নিরপেক্ষ থাকিতে চার, তব্ও এই কথা ভূলিলে চলিবে না যে, ব্যবহারিক কগতে 'নিরপেক্ষ' বলিরা কোন বাবস্থা থাকিতে পারে না। সক্তানেই হউক অক্তানেই হউক, রাষ্ট্রীর ব্যাপারে আমাদের কোন-না-কোন পক্ষ অবলয়ন করিরা চলিতে হইবে। ভিতীর বিশ্বস্থারের পর মিত্রশক্তিরক্ষ হই দলে বিভক্ত হইরা পভিয়াতে।

धरे भरवर्षत जामकात मुवियी स्रेश পঢ়িরাছে সম্ভ अवर यमिश्व (कर्टे अटे जरदार्व क्यांटेबा श्वांट कांब मा. তবুও কাহারও নিমপেক থাকিবার উপায় নাই। এই অবস্থার ভারতরাষ্ট্রের পক্ষে নিরপেক বাকিবার কল্পনা করিয়া নিভার পাওয়া ঘাইবে না। একটা অবস্থার কলনা করা যাইতে পারে যাহার ফলে নিরপেক্ষতা বন্ধায় রাধা যায়। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধে ভরম্ব, সুইডেন ও সুইজারল্যাও যে অবস্থার কল্যানে নিরপেক থাকিতে পারিয়াছিল, তাহা সম্বর কিনা ভাবিবার বিষয়। যুক্তরাষ্ট্র প্র সোভিয়েট রাষ্ট্র পরপার বিরোধী শক্তি: পুথিবী জুড়িয়া ভাহার। ভাহাদের খাঁট প্রস্তুত করিভেছে। ভারতবাট্ট দক্ষিণ-এশিয়ার কেন্দ্রন্তলে বসিয়া আছে। ত্রিটেন যুক্তরাষ্ট্রের হাত-ধরা এবং ব্রিটেনের সহিত আমাদের সম্বন্ধ থাকিলে যুক্তরাষ্ট্রের পক্ষে ভারতরাষ্ট্রের উপর চাপ দেওরা সহক। এই চাপ সোভিয়েট রাষ্ট্র সহু করিবে না। ভৃতীয় ম্ণায়ুছের সমর-নীভিতে ভারতরাষ্ট্রে ছান কোৰার, তং-সম্বৰে যুক্তরাষ্ট্র ও সোভিয়েট রাষ্ট্র মাধা ধানাইতেছে আমাদের অপেকা বেশী।

ভারতরাষ্ট্রে কেন্দ্রীয় গ্রুমের্ক নানা পত্তিকা প্রকাশ করেন। তথ্যধ্যে দেবিয়াছি একখানি পররাষ্ট্র-নীতির বিষয় লইয়া আলোচনা করে। কিন্তু ভাহার প্রবর্তনীর মধ্যে এমৰ কোন ইছিত পাইলাম না যাহা হইতে ভারত-রাষ্ট্রের সম্ম-নীতি সম্বন্ধে আমরা কোন চিছার খোরাক পাইতে পারি। ভারতরাষ্ট্র ছনিয়ার অভিনয়-ক্ষেত্রে কোন বেলা বেলিভে পারিবে--ভূগোল ও ইতিহাস তাহা নিশ্বিষ্ট করিয়া দিয়াছে। বর্ডমান জগতে- বর্ডমান শতাস্বীর মধাডাগে-কোন বেলা चामदा ८४मिव दा ८४मिट । भादिव, ७९मध्द चामारमद दाह्र-নায়কর্ত্তের একটা দায়িত্ব আছে। ত্রিটেনের সঙ্গে বিশেষ কোন সম্বন্ধ রাখিলে খেলিতে হউবে এক খেলা; নিরপেক পাকিতে পারিলে বেলিতে পারিব আর এক খেলা: গোডিয়েট হাষ্ট্রের সঙ্গে কোনত্রপ সম্বন্ধ রাখিলে ভাষা হইবে অভরপ। এই তিনট সভাবনা সহতে আমাদের দেশের জন-मर्छ जन्महे : कांत्रण अहे विशव कांन नाहे विनालक एत । अहे জ্ঞানদান ভারভরাটের কর্ণবারবর্গের একটা দার। সেই জ্ঞান शांन ना कविद्या. एमएक चल्लात्न वार्विद्या, विटिएत्व अरक বিশেষ কোন সহদ্ধ স্থাপন করিলে অভায় হইবে।

ভারতরাষ্ট্রে শিক্ষা-বিস্তার কেন্দ্রীর শিক্ষা-বিষয়ক উপদেশ্বা ক্ষিটর পঞ্চদ বাবিক অবিবেশেনের সভার কেঞ্জীর শিক্ষামন্ত্রীর অভিভাষণ নৈরাঙ্চপূর্ণ। "আমরা অভি উৎসাহী হইরা যথাসঙ্গর ক্রন্ত শিক্ষাবিভার সংক্রোন্ত পরিক্রনা অন্থায়ী কান্ধ করিতে চাহিয়াহিলাম; আমার ইচ্ছা না থাকিলেও আমি শিক্ষা উন্নয়নের
কার্ব্যের পভিবেপ মন্তীভূত করিতে সন্থত হইরাহি; মুদ্রান্দীতির
আশকা ও ক্রব্যসূত্য বৃদ্ধির বেগ এমনই প্রবল হর বে
মন্ত্রীসভা---ব্যর-সংহাচের ক্রন্ত একটি কমিটি নিরোগ করিতে
বাব্য হন। সেই ক্রিটি সকল দপ্তরে ব্যর-সংহাচের প্রভাব
ক্রেম এবং বলেন বে সকল প্রকার উন্নয়ন পরিক্রনা বন্ধ
ক্রিতে অথবা ইহার কার্য্যের গভি মন্দীভূত করিতে হইবে।"

মৌলানা আবুল কালাম আহাদের বক্তৃতার এই সকল নম্বর হইতে এই বারণা পরিফার হইরা বার বে, গত চার-গাঁচ নাস হইতে শিক্ষা বিভারের করু বে সব কমিট নিযুক্ত হইরা-হিল এবং নামাপ্রকার পরিকল্পনা প্রভাতের করু সরকার পক্ষ হইতে যে সব ভাগিদ আসিভেছিল ভাহা শেষ পর্যান্ত আলেয়ার ক্ষপ বারণ করিবে।

যৌলানা আবুল কালায় আঞাদ কেন্দ্ৰীয় শিক্ষা-বিষয়ক উপৰেষ্টা ক্ষিটির সভায় বলিয়াছেন ইংরেক আমলের শেব বংসরে কেন্দ্রীয় গবর্ষোন্ট শিক্ষা কার্ব্যে ছই কোট টাকার किकिং-উর্জ পরিমাণ ব্যয় করিতেন। বর্তমান বংসরে তাহার বিশ্ববের বেশী ব্যবস্থা করিতে পারা যার নাই। অবচ বয়ক্ত-বের শিক্ষার ব্যৱের ভর কেন্দ্রীয় গবদে জ শতকরা ৫০ টাকার প্রতিশ্রুতি দিয়াছেন। তাঁহার এলাহাবাদের বক্তভার কে*লী*র প্ৰদেহিত্ব ভাঙাৱের ধ্বর পাওরা পিরাছে। ভুভরাং ক্ষেত্ৰীৰ পৰবেৰ্ণ্ট হইতে বয়ন্ত শিক্ষার হুল যে সাহায্য পাইবার আশা করিয়া নানা প্রদেশে নানা বিরাট পরিকলনা প্রক্রত क्रेबार्ड वा क्रेट्ज्र जाका वामहाम क्रेबा घारेट्व। अर्ड বিষয়ে বাঁহারা আগ্রহায়িত তাঁহাদের আন্দ্রনির্ভরশীল হইতে रहेरव, अवर श्रामिक भवत्व केमब्र निरमद बाए अह বোৰা না ছলিয়া বে-সরকারী কোন প্রতিষ্ঠানের ছাতে এই কার্যাভার সমর্পণ করিয়া দিলে কলপ্রস্থ হইবে। প্রাদেশিক ভাঙার হইতে করেক লক টাকা এইরপ প্রতিঠানের হাতে দিলে সরকারী ব্যরবহুরের ও গড়িমসির হাত হইতে মিন্তার পাওরা বাইবে। পশ্চিমবর্গে এইরূপ কুর কুরু প্রতিঠান আছে বেওলি সরকারের অতি সামার সাহায্য পাইরা নিজের চেষ্টার বরষ্টবের শিক্ষা কার্ব্যে আছনিয়োগ করিবাছে।

রাট্রের পক্ষ হইতে প্রথম চেটার করু যে সাহায্য পাওরা বাইবে তাহা অপ্রচুর হইতে পারে। কিছু দেশের লোকের আপ্রহু বাছিলে এই সামার সাহায্য সইরাই অনেক দূর আগাইরা বাইতে পারে, বেমন পারিরাহে কলিকাতা বিখ-বিভালর বা রামক্ষক মিশন প্রভৃতি লোক-সেবা সক্ষ। অভাত বেশেও এইরূপ উদাহরণ আছে। আমেরিকার মুক্তরাট্রের অভিক্রতার একটা বর্ণনা নিমে ভূলিরা বিলাব:

"গভ বুদ্ধের সমর মুক্তরাষ্ট্রের সামরিক বিভাগ বে আন্যামান বিদ্যালয়ের (School on Wheels) প্রবর্তন করেন এখনও ভাছা চালু আছে। এইবার ছিভীর বারের ক্ষত এই আন্যামান বিদ্যালয়ট সম্প্র মুক্তরাষ্ট্র পরিক্ষমার বাহির হইরাছে এবং আনামী ভিলেছর মান পর্যন্ত ইহার ভেরট ঠেট খোরা সম্পূর্ণ হইবে। হাসপাভাল, সামরিক, নৌ এবং বিমান বাঁটগুলিই এই আ্যামান বিদ্যালয়ের গশুবাছল।

বুবিরা বুবিরা সৈভদলের নানারক্ষের শিক্ষা এবং উপদেশ বান করাই এই বিদ্যালয়ের প্রবান কাছ। নাবারণ শিক্ষাক্তেন্তে সৈতর। বে শিক্ষালাভ করে তাহার পুরক হিসাবেই এই অতিরিক্ত শিক্ষালানের ব্যবস্থা করা হইরাছে। প্রথম পরিক্রমার বাহির হইরা এই চলমান মুল দক্ষিণ-পূর্বা রাইগুলির আঠার হালারেরও বেশী সৈনিক্তে বছ প্রয়োজনীয় সংবাদ এবং উপদেশ বিশ্বা-ছিল।

ষার্কিণ সামরিক বিভাগরগুলিতে বর্তমানে প্রায় ছুই
লক্ষ্ সৈনিকের নাম আছে। তাহাদিগকে ভাষা, সমাজবিভান, গণিত, ব্যবসা ইত্যাদি নানা বিষয়ে শিক্ষা দেওয়া
হয়। এই শিক্ষাদান ব্যাপারে আমেরিকার ৫৪ট বিশবিদ্যালয় সামরিক বিভাগের সহিত সহযোগিতা করিয়
পাকেন।"

স্ত্রী-শিক্ষায় শিল্প-শিক্ষার স্থান

करत्रक मिन शृद्ध वृद्धश्रामात्र अक्षानि रेमनिक देश्रतकी সংবাদপত্তে দেবিয়াছিলাম যে ঐ প্রদেশের গবর্ষে উ শিল্প-निकार क्य अवहै विदार शिवकाना अवन करिशाहन : अरे পরিকল্পনা অনুবাহী প্রদেশের শ্রী-শিক্ষার পাঠ্যের মধ্যে শিল্প-শিক্ষার স্থান করিবার হল লক্ষ্ লক্ষ্ ঠাকা ব্যৱিত হইবে। পঞ্চাৰ হইতে বাছত্যাৰ দ্ৰীলোকদেৱ অবলম্বন কবিয়াই এই দুত্ৰ শিক্ষার প্রবর্তন হটবে। এই পরিকল্পনার বারের মধ্যে ৰেখিৱাছিলাৰ বে প্ৰতি খ্ৰী-শিকাধিনীকে মাদিক প্ৰৱিশ চাকা ভবিষা বৃদ্ধি দেওৱা হইবে। এই কার্য্যে হস্তক্ষেপ করিবার शुर्व्स श्रारम्भिक भवरव के न्याभारवद श्रव्यकी छेननिक ক্রিবার জভ চেষ্টা ক্রিয়াছেন, এই ক্বাটা খীকার ক্রিয়া লইতে হইবে। কেবল চার-পাঁচ লব্দ বাৰভাগি খ্রীলোকের निब-निकात वावका कवितार कर्वत्वात त्येव वहेत्व ना। ৰুভবদেশের প্রায় সাভ কোট লোকের মধ্যে অর্ছেক হুইবেন দ্রীলোক; ভার অর্থেকের অর্থেক শিল-শিকা এছণের উপযোগী মনে করিলে প্রায় আপি-নকাই লক ছীলোকের শির্ল-শিকার ব্যবস্থা করিতে হর। প্রার বিশ বংসর পূর্বে ভাশতে একট বিববাধ্রম দেবিবার হুযোগ प्रदेशिक : ७९नृद्धि खम्ब छेनलाक कानेत्र जीवकरेष स्रोध-সমুহ ও "এজ-মওলের" প্রাম্পর্বের জীবনবাতা বেশিরা

ছিলার। সেই অভিজ্ঞতার ফলে বলিতে পারি যে, ব্রুপ্রদেশের গবর্থে ঠ এক বিরাট কর্ম্মে হতকেপ করিতেহেন।

ৰাংলাদেশের অভিজ্ঞতা হইতে এই বিষয়ে আমরা আরও নিশ্চিতভাবে মতামত প্রকাশ করিতে পারি। ত্রিশ বংসর পূর্ব্বে আচাৰ্ব্য ভগদীপচন্ত্ৰ বস্থু মহাপ্ৰেৱ পদ্ধী ত্ৰীমুক্তা অবলা বস্থ "ৰাহী-শিক্ষা-সমিতি" প্ৰতিষ্ঠা করেন: এই কার্য্যে তাঁহার দ্বকিব-ছন্ত-ছন্ত্ৰপ ছিলেন ৵কুঞ্প্ৰসাদ বসাক । সাৰাৱণ লিখন ও পঠন লটয়া এট শিক্ষার সত্রপাত হয়। সমিতির বিভালয়ে শিক্ষতিটীর অভাব মিটাইবার অভ "বিদ্যাসাগর বামী-ভবনে"র প্রতিষ্ঠা হয়। ছই-তিন বংগর যাইতে না যাইতেই দেখা যার ষে, যে শ্রেমী হইতে শিক্ষিত্রী-শিক্ষার্থনীরা আসিতেছেন উাহাদের অবস্থা এমন বাপে নামিরাছে যে শিক্ষার সঙ্গে সঙ্গে ভাঁহাদের ২৬ কোন উপার্কনের ব্যবস্থানা করিতে পারিলে সব চেপ্লা ব্যৰ্থ হুইয়া যাইবে। সেইজ্ল প্ৰতিষ্ঠা ক্**রিতে** ছইল "মহিলা শিল্ল-ভবন" নামে শিল্ল-বিদ্যালয়। আৰু প্ৰায় বাইশ বংগত্র এই বিদ্যালয় শীরবে কর্ম্ম করিয়া যাইতেছে। এই বিদ্যালয়ে শিকা অবৈতনিক ছিল: এখনও শিল্প मिकांत अवाहि विनाबुद्धा निकार्थीएक (१७३) एत । এই विशानस्वत वास्त्रत वन श्राप्तिक नवत्व के ७ कमिकाला क्रिंदिक्रात्व मार्ग्य छेश्व बृश्युष्ठः निर्वेद क्विष्ठ इश्व। ষুধের পূর্বে যে দান ছিল, ভাহার পরিমাণ বাড়ে নাই। श्रूणदार এই विमानत निका-विश्वात कतिए भातिएए ना : ছাত্রীসংখ্যা বাডাইতে এক প্রকার অপারগ।

"নারী-শিক্ষা-সমিতি" কর্ত্বক পরিচালিত বিদ্যালয়টর এই অভিজ্ঞতা হইতে আমরা বুবিতে পারিয়াছি যে, কলিকাতা মগরীতে শিল্প-স্রব্যের উৎপাদন কঠিন নয়। কিন্তু এই শিক্ষা-বিন্তার প্রদেশব্যাপী করিতে হইলে যে বিরাট আহো-ক্ষের প্রবাহন তৎসম্বন্ধ প্রাদেশিক গব্যেক্টি সন্ধান নহেন।

ভারতরাষ্ট্র, কাশ্মীর ও "পাকিস্থান"

কান্ধীরের রণাকনে "বুদ্ধ-বিরতির" নির্দেশ প্রতিপালিত হইতেছে। এই বিষয়ে আনন্দ প্রকাশ করিতে পারিতার বিদ্ধি "পাকিছান" নিজের অভার বুবিরা "যুদ্ধ-বিরতি" করিতে পারিত। ১৯৪৮ নী: আফুরারী মাস হইতে ভারতরাষ্ট্র যে নীতি অবলম্বন করিরা চলিতেছে, "পাকিছান" সে নীতি রানিরা লইলে বার মাস এই ছই রাষ্ট্র এক্সপভাবে বনে-প্রাণে ইউ হইত না। কান্ধীরের অনগণের ভোটের উপর সব ঘারিছ টাজিরা লিতে চাহিরাছিল ভারতরাষ্ট্র; "পাকিছান" গারের আরে কান্ধীরে আগুন আলাইরা, বন-সম্পত্তি পূঠন করিরা, রহত্যা করিরা, ত্রীলোকের অসন্ধান করিরা, কান্ধীর দর্বল নির্হাত চাহিরাছিল বলিরাই চৌদ মাস দশ দিন মুদ্ধ নিরাছে। ১৯৪৭ নী: অক্টোবর মাসের শেষ সপ্তাহে বাহা ইতে পারিত, ১৯৪৯ নী: এলা আক্রারী ভাহা বীকার করিরা শাক্ষিন" সন্ধিনিত আতি-সন্ধের নির্দেশ পালন করিয়াছে; নিম্মের অভ-বুছির অনুদ্ধা পালন করে নাই।

এই বিষয়ে আমাদের রাইপাল চক্রবর্তী রাজাগোপালাচারী বে ভাবে আনম্ব প্রকাশ করিতেছেন, তাহা ভারতরাষ্ট্রের পরিচালকবর্দের ভাবালুভার পরিচয় প্রদান করে: সেইরপ ভাবাদভার অনুপ্রেরণায়ই তদামীত্ব রাষ্ট্রপাল লর্ড মাউউ ব্যাটেনের উৎসাদে পণ্ডিত ক্বাহরলাল নেহরু কাশ্বীরের ব্রহ-বিগ্রহতে সন্মিলিত ভাতিসজের দরবারে লইয়া গিয়াছিলেন। অনেকে বলিয়া থাকেন বে, কাশ্মীরের গণভোট ছির করিবে---"দ্বি-জাতি" তত্ত্ব সত্য, ভার ও সহস্র বংসরের অভিজ্ঞতার উপর প্ৰতিষ্ঠিত কিনা। "বৰ্ত্তমান ৰূগতে এই "ছি-স্বাতি" তম্ব স্কচল ও অনিষ্ঠকর এই বিশ্বাসের বলেই আমাদের রাষ্ট্রপাল খোষণা করিয়াছেন কাশ্মীরে 'বুদ্ধ বিরতি'র অর্থ শুবু ইতাই নয় যে, কাশ্মীরের ভূ-ভাগে অন্ত্র-সম্বরণ হইয়াছে : ছইট প্রতিবেশী 'ডোমিনিয়ন', ভারত ও পাকিস্থান পরস্পরের প্রতি যে ঘুণা ও অবিবাসের ভাব পোষণ করিভেছিল, ভাষারও অবসাম হইয়াছে। আমাদের প্রতিবেশী পাকিস্থানের রাষ্ট্রপাল বাজা नाकियुक्ति किंद এड जामाराष्ट्री वा छाराष्ट्र नरस्य। "হ্রছ-বিরতির" অব্যবহিত পরে তিনি বলিয়াছিলেন—ভারভ ও পাকিস্থানের মধ্যে শান্তি ও শ্রীতি কেবল কাশ্রীরে "হছ-বিরতির" উপরই নির্ভর করে না: আরও অনেক ব্যাপার আছে যাভার মীমাংসা না ভটলে, এই ছই প্রভিবেশী রাষ্ট্রের মধ্যে প্রত্ত পাত্তি প্রতিষ্ঠিত হটবার আশা কম। এই ছইট উচ্চের মৰো ভবিষ্যতের চাবিকাটি বঁৰিয়া বাহির করিতে হইবে।

বুছ-বিরভি ত হইল। ততঃ কিম। সন্মিলিত ভাতি-সন্দের পর্যবেক্ষকগণ ভাছার সর্ত্রপালনের উপর সতর্ক ছ ৱাৰিবেন। শেধ আবছলার অধীনে যে গবলে ট দেশের শাসনব্যবস্থা চালাইতেছে গণ-ভোটের সময়ে জাভার ক্ষতা কতদুর অব্যাহত থাকিবে, তাহা আমরা বলিতে পারি না। স্মিলিত কাতিস্থের পক্ষ হইতে যে স্ব বিবৃতি প্রকাশিত হইয়াছে, তাহার মধ্যে অনেক প্রতাব আছে যাহার অর্থ অনিশ্চিত। দৃষ্টাৰখন্নপ একটা কৰার প্রতি দৃষ্ট আকর্ষণ করিতে চাই। "Local ()fficials" (স্থানীয় শাসকরন্দ) বলিতে काशास्त्र निर्द्धन करत, छाश त्वा याहेट एट मा। शाकि-স্থানীরা ও আকাদ কাশ্মীর গবর্ধেন্ট বলিয়া পরিচিড প্রতিষ্ঠান কাশ্মীরের অনেক এলাকা অধিকার করিয়া আছে : সেই সৰ ছাৰে শাসৰ-কাৰ্য্য চালাইবার ভত কৰ্মচারী নিয়োগ করিয়াছে। "Local Officials" বলিতে এই সব লোকদের বুৰাইবে, না শেৰ আবহুলা কৰ্মক নিযুক্ত বা পাকিয়ান কর্তৃক কাশ্মীর আক্রমণের পূর্ব্বে যে সরকারী কর্শ্বচারীরা সেবানে दिन ভাহাদের বুবাইবে, এই কথা এবনও অনি-চিভ রহিয়া গিয়াছে। বদি পাকিছানী কর্মচারীদের অধিকৃত অঞ্চল থাকিতে দেওয়া হয় তবে গণ-ভোট পাকিছানের मिटक दर्शिया शक्रित, धरे विषया कान मत्मर नारे।

আর একটা কথা। সমগ্র কারীর-ক্ষুর তাগ্য গণ-ভোটের

ষারা নির্ম্লিত হুইবে, না বঙ বঙ অঞ্চল লইরা গণ-ভোট চলিবে, এই বিষয়ে নানারণ কর্মা জ্বনার কথা ভনিতেছি। বর্তমানে পাকিছান ছইতে এই কথাটাই বুব জোরের সহিত প্রচারিত ছইতেছে যে, সম্প্র কাল্লীর গণ-ভোটের আওতার আসিবে; পাকিছান চার না বঙিত কাল্লীর বা অলু যেমন চাহিরাছিল বঙিত ভারতবর্ব। হঠাং এই বুরি গলাইল কেন ভাহা বুবিতে কঠ হর না। পাকিছানীরা মনে করে মহারাজ হরি সিং-এর রাজ্য যধন মুসলীম সংখ্যাগরিঠ, ভবন ভাহা সম্প্রমণে পাকিছানে আসিতে পারে। কাল্লীরের প্রধান মন্ত্রী শেব মোহাল্লদ আবহুলা মনে করেন যে, কাল্লীরের সংখ্যাগরিঠ মুসলমান সম্ভানর "বি-ছাতি" তত্ত্বে নোহে আপনাদের নাক কাটিরা ভারতরাষ্ট্রের যাত্রা ভল করিবে না। এইরূপ আলা পোষণ করিবার কোন কারণ আছে কিনা, ভাহা আম্বা জানি না। এবং না ভানিলে কাল্লীর-জন্ম ভবিত্তং সহত্বে কোন মভায়ত প্রকাশ করা সম্ভব নহে।

কিছ এই সৰ আলোচনা অনেকটা অবাছর বলিয়া মনে করিবার কারণ আছে। কোন্ অবস্থার চাপে পড়িয়া বা কাহার পরামর্শে পাকিয়ান কাশ্মীর-রণালনে "হছ-বিরভির" নিৰ্দেশ মানিৱা লইল ভাহা আমাদেৱ এখনও জানিভে দেওৱা इत मारे। अक्षा माम क्रिल जनात रहेर ना एए. सक्न পক্ষে 'বিটিশ নাটের খরু'র অঙ্গুলী হেলনে পাকিছানের শাসকরন্দ চলিতেছেন। যে উদ্দেশ্ত শইয়া ব্রিটণ গবর্ষেণ্ট পাকিছান অর্জনে সাহায্য করিয়াছিল, সেই উদ্ভেপ্ত এখনও নিৰ্ম্পাৰ হইৱা যাৱ নাই। এই উভেক্স সম্বন্ধে আনেবিকার बुक्क तांडे ७ विक्रेम "(णांचिनियरनव" चक्र एवं भवांचर्न अवन कवां হইরাছিল, ভাহা কলনা করিলেও অভার হয় না বর্তমানে সেই উদ্বেশ্ব বলবং আছে। ভারতরাই ও পাকি-স্থানের সম্বন্ধ এই ব্রিটিশ নীতির দারা প্রভাবান্থিত হইতেছে। এবং যত দিন তাহা হইবে, তত দিন এই হুই প্রতিবেশী রাষ্ট্রের ষ্বাে কোন স্বার্থের বর্ত্তন দচ হইতে পারিবে না। ইংরেন্ডের ইচ্ছানতে যে এই ছই রাষ্ট্র এক নীতির বছনে আবদ হইয়া मिक्कमानी एटेबा छेठ्रेक । देश्तबक नित्कत बार्ट्सत श्रासायम বুসনীৰ ৱাইৰঙদীকে ভোৱাৰ করিতেছে। পাকিছান এই কৰা বুৰে বলিৱাই সে ইংৱেৰের সাহায্যে নিজের ঘর গুছাইতে ব্যন্ত। ইংৱেজকে চটাইবার তার সাব্য মাই।

#### ভারতশাসন আইন সংশোধন

গণ-পরিষদ কর্তৃক ১৯৩৫ সালের ভারতশাসন আইবের ক্ষেক্টি বিধান সংশোধন করা হইরাছে। সর্বার প্যাটেল বিলটি উথাপন করেন এবং বলেন যে, উহা আনিবার হুইট প্রধান কারণ আছে। উহার প্রথম উদ্দেশ্য, গভ এক বংসরে ভারতবর্ষের দেশীর রাজ্যসমূহের যে পরিবর্তম ঘটরাছে ভাহার

नामक्षण विवास। देखियांत २०हे. यदावादारामंत ३०हे. মাদ্রাব্দের ৩ট, বোখাইরের ৪১ট ও পূর্ব-পঞ্চাবের ৩ট রাজ্যের শাসনভার ঐ সব রাজ্যের মূপভিবর্গ ভারত-সরকারের হত্তে সমর্পণ করিয়াছেন এবং ভারত-সরকার উহাদের শাসন-ভার পার্যবর্তী প্রদেশসমূহের হাতে ছাভিয়া দিরাহেন। ইহা হাড়া ভারত-সরকার করেকট রাজ্যের শাসনভার বহুতে এহণ করিয়াছেন; এগুলি চীক ক্ষিণনার ও লেকটেনাও গবর্ণরের প্রদেশের ভার শাসিত হুইতেছে। পৃর্ব-পঞ্চাবের পাৰ্ব্বত্য দেশীয় ৱাজ্যগুলিকে সন্দৰ্যৰ করিয়া চীক কমিশনার-শাসিত প্রদেশের ছায় চালানো হইতেহে। কচ্ছ রাজ্যট পাকিস্থানের সীমান্তবর্তী বলিয়া উহাকে কেন্দ্রীয় সরকারের শাসনাধীনে রাখা বাঞ্দীয় বলিয়া বিবেচিত হইয়াছে। ভারত-সরকার কচ্ছে একটি প্রথম শ্রেণীর বন্দর এবং ছইটি রেল পর্ণ (একট ব্রড গেব্দ, অপরট নিটার গেব্দ) নির্দাণের ব্দন্ত বহু টাকা মঞ্চুর ক্রিয়াছেন। নৃপতিদের সহিত ভারত-সরকারের যে সব চুক্তি ভ্ইয়াছে বর্ত্তমানে ভদমুসারে কাজ চলিতেছে। কিছু ইহাতে অপুবিধা আছে। কেন্দ্রীয় অধবা প্রাদেশিক সরকারের কোন আইন দেশীয় রাজ্যে প্রয়ক্ত ছইতে পারে না . ইহার জ্ঞ ভারতশাসন আইনের সংশোধন ভাবছক। এই সংশোধনের পর এখন দেশীয় রাজ্যের প্রভালেরও রাজনৈতিক অধিকার বাড়িবে, তাঁহারা এবন সংশ্লিষ্ট প্রদেশের ব্যবস্থা-পরিষদে প্রতিনিধি প্রেরণ করিতে পারিবেন।

বিলটন ছিতীর উৎছে, শ্রমিক বিরোধ আইন কার্যক্রের প্রার্থিক বিরোধ মাধ্যকের বাবা দেখা দিয়াছে তাহা দ্রীকরণ। শ্রমিক বিরোধ মাধ্যকাকরে প্রদেশসমূহ নিক নিক এলাকার ট্রাইবুনাল গঠন করিয়াছেন। বিভিন্ন প্রদেশের এই সকল ট্রাইবুনালের কার্ব্যেও সিভাছে কোনরুপ সামগ্রন্থ নাই এবং একচ মৃতন মৃতন কটলতার স্বষ্ট হুইতেছে। প্রাদেশিক ট্রাইবুনালসমূহের সিভাছের বিরুদ্ধে আপাল শুনিবার এবং উহাদের মধ্যে সামগ্রন্থ বিবানের উদ্ধেশ্তে বিলে একট কেন্দ্রীর ট্রাইবুনাল ও আপাল আদালত গঠনের ব্যবস্থা করা হুইয়াছে।

ভূতীয়তঃ, কিবা সেখর করিবার বাভ একট কেন্দ্রীর বোর্ড গঠনের কথা বিলে বলা হইরাছে। কিবা সেখার সম্বন্ধে বর্ডমানে বিশুখলা চলিভেছে। একই ছবি প্রবর্গন কোন প্রদেশে নিষিদ্ধ হয়, কোপাও বা উহার অমুমতি দেওরা হর্ব। ইহা দর্শক এবং কিবের ব্যবসা উভরের পক্ষেই ক্ষতিকর। এরপ একট কেন্দ্রীর বোর্ড গঠনের প্রবোক্ষ্মীরতা সম্বন্ধে সকলেই এক্ষত। কেন্দ্রীর বোর্ড এই ক্ষতা প্রহণ করিলে কিবা সেখার কার্ব্যে সামঞ্জত দেখা দিবে।

ভারতবর্ব এই প্রথম ভারতশাসন আইনের সংশোধন নিজ্পার্লানেকে করিল। -ইছা হারা ভারতরাষ্ট্রের পূর্ণ সার্থা-ভৌমত্ব প্রতিপর হইরাছে।

#### ভারতীয় রাষ্ট্রবিধিতে সংখ্যালঘুদের আদন সংরক্ষণ

ভারতীয় আইন-সভাসবৃত্তে সংখ্যালগুদের বভ আসন ज्ञश्तक्रत्येत विश्वान ज्ञलार्क शूनत्रोत काटमाठनात वावश करा इटेट्ड । जरवामच् चिवकात क्रिके शूर्व क्रमश्चात ভিভিতে সংখ্যালঘুদের জন্ত আসন সংগ্রক্ষণের এবং সাধারণ আসনে প্রতিখন্দিতা করিবার অধিকার দানের স্থপারিশ ক্ষরিয়াছিলেন। দেশ বিভাগ ও স্বাধীনতা লাভ এবং ভারত-বর্ষকে ধর্মনিরপেক রাষ্ট্র ঘোষণার পর আইন-সভার আসন সংরক্ষণের আর কোন প্রয়োক্ষনীভা নাই বলিয়া গণ-পরিষদের বহু সম্বন্ধ হত প্ৰকাশ করার উক্ত ক্ষিট ভাঁহাদের সিদ্ধান্ধ পুনর্বিবেচনা করিতেছেন। ভারতীয় গ্রীষ্টান ও পার্শীরা প্রথম ছইতেই খোষণা করিয়াছেন তাঁহারা কোনরূপ সংবক্ষণ-ব্যবস্থা চাহেন না। শিব সম্প্রদায়ের অন্ততঃ এক প্রগতিশীল দল অভাভ বিষয়ে কিছু কিছু অভিৱিষ্ণ দাবি কানাইলেও আসন সংরক্ষণের কোন কথা বলেন নাই। তবে এ বিষয়ে শিব প্রতিনিবিদের সকলের মতামত এখন পর্যন্ত পাওয়া যার নাই।

একমাত্র তপশীলীরাই তাঁহাদের আসন সংরক্ষণ-ব্যবহা সম্পর্কে তাঁহাদের দাবি প্রত্যাহারের জন্ত কোন কিছু করেন নাই। হিন্দুদের মধ্যে বংহিন্দু ও তপশীলী এই হুইটা সম্পূর্ণ জনাভাবিক ভাগ ইংরেজ সরকার নিজেদের স্যথাক্যবাদী প্রয়োধনে করিয়া গিয়াছিল। তপশীলভুক্তিটা করা হইয়াছিল অস্পৃষ্ঠতা এবং জল অচলের ভিত্তিতে। সম্প্রতি গণ-পরিষদে মস্পৃষ্ঠতাকে অপরাধরণে ঘোষণা করিয়া প্রভাব পাস হইয়াছে। ইহার পর অস্পৃষ্ঠতার ভিত্তিতে হিন্দু সমাজে হুইটা ভাগ আর বাকিতে পারে না। অনগ্রসরতা 'মাইনরিটছের' মাণকাটি ইইতে পারে না; বংহিন্দুর মধ্যেও এমন বহু লোক আছেন বাহারা তপশীলীদের চেম্বেও অনগ্রসর।

#### মুদ্রাস্ফীতি সম্বন্ধে ডাঃ সিংহের মন্তব্য

ভারতীর অর্থনৈভিক সম্মেলনের হায়দরাবাদ অবিবেশনের বভাগতি অব্যাপক কে. সি. সিংহ উহার অভিভাষণে ভারতের বর্থনৈভিক কার্যক্রম সহকে যে আলোচনা করিয়াহেন গহাতে দেশের বৃদ্ধ সময়ভাগুলির প্রতি তাঁহার গভীর অবস্ত্রির কাশ পাইরাহে। তিনি বলিয়াহেন বে, মুক্রের সমর অপ্রেলিয়া তালাভ বিষ্টিশ ভোষিনিয়নকে শিল্লোয়ভির যে সব মুয়োগারিরা দেওরা হইরাহিল ভারতবর্বকে তাহা বেওরা হর নাই। গারতে মুক্লালীন ব্যবসা-বাণিক্যের কলাকল আলোচনা গরিয়া তিনি বলেন, টাকার দিক হইতে আর অত্যন্ত বৃদ্ধিশাইরাহে, এবং আরের বিভিন্ন প্রেণ্টির মধ্যে বিপুল পার্বক্যের কিইয়াহে। এই অর্থের এক স্বহুৎ অংশই বিভ্রমালীদের ক্রেটিক বহিরাহে। কর ব্যব্ধ ব্যবির স্বিয়া অভাভ বেশের

ভার উহা উল্লেখযোগ্য ভাবে ক্যানো সভব হর নাই, কারণ এ দেশে অভ্যন্থ ব্যাপকভাবে কর কাঁকি দেওর। হুট্রাছে। ক্থাটা বাঁটি সভ্য। এই সব সন্ধিত অর্থ কোণায় গিরাছে ভাহা আলোচনা ক্রিয়া ভাঃ সিংহ বলেন যে, আহ্মানিক ৩৫০ কোটি টাকা চোরাকারবারের জন্মমূত রহিরাছে।

বিটেনের অবস্থার সহিত ভারতের অবস্থার ভূলনা করিবা তিনি বলেন, ব্রিটেন কেবলমাত্র মূল্য নিয়ন্ত্রণ ও রেশনিঙের কার্য্যকরী পস্থাই অবলম্বন করে নাই, উধ্ত প্রালিঙের স্থবিধা প্রহণ করিয়া নিক্ষ অবনৈতিক সম্প্রাকে ভারতের খাঙ্গে চাপাইয়া দিয়াছে।

মুদ্রাক্ষীভির ব্যাপকভা আলোচনা করিরা অধ্যাপক সিংছ বলেন, যুদ্ধকাল অপেকাও ১১৪৭-৪৮ ও ১১৪৮-৪১ সালে পণাৰুল্য অধিকতর বৃদ্ধি পাইয়াছে। বাজেটে ঘাটভি वांकिलारे मुखाकी कि बंधित, अमन कांन कवा नारे। जामारमद সমভাব আসল কৰা এই যে, বাড়তি ক্ৰয়-ক্ষতা দূৱ কৱা হয় নাই। বরং এই অর্থের এক অংশ চোরাবালারে মাল মতুদ রাধার জন্ত "নিয়োগ" করা ভইয়াতে। কলে প্রকাপ বাজারে क जकन बारनद चर्छार रक्ष्मा पिशारक करर रहादाकादवादीरक्द ছাতে সঞ্চিত অর্থের পরিমাণ রুদ্ধি পাইরা চলিয়াছে। কর-ভার হাস করিয়া উৎপাদন বৃদ্ধির কার্যো উৎসাদ দেওয়া যায় किना (म मन्पर्क चांट्लांहना कविद्या खशां पक निश्व बटना গবলেণ্ট যদি এখন উচ্চতর আয়ের উপর কর-ভার হাস ক্রিতে চাহেন, তবে জনসাধারণের বাছতি ক্রয়-ক্ষমতা আরও বৃদ্ধি পাইবে এবং বর্তমান মুদ্রাক্ষীতি আরও ব্যাপক আকার ৰাৱণ ক্ৰিবে। মুদ্ধকালে যে সকল কলকাৱৰানা ও যন্ত্ৰপাতি অব্যবহার্য হইয়া পড়িয়াছে, পেগুলির ছলে মুতন কল-কারধানা না বসাইয়া উৎপাদন বৃদ্ধির চে**ইা করিলে বার** বে**ল इटेटर अदर छेर्पापन कम इटेटर । कद हांग कदिया छैर्पापन** द्रधि क्या मध्यभव स्टेटर ना । नियाक अन्नविश्वकि वृद कदारे श्रदाकन :

(ক) বানবাহনের অভাব; (ব) যন্ত্রপাতি ও কল-কারবানার হুপ্রাণ্যতা; (গ) শিলক্ষেত্র প্রবাহনীর ত্রব্যাদি আফদানীর ভঙ বৈদেশিক মুত্রার অভাব; (ব) ভারিগরী বিভার পারদর্শী লোকের অভাব; (৪) প্রমিক ও মালিকের মধ্যে অসভোষকনক সম্পর্ক।

বিভিন্ন প্রদেশে ও কেন্দ্রে উচ্ভ বাজেটের সভাবনা আলোচনা করিয়া তিনি বলেন, বাহাদের আর বেশী তাহাদের উপর আরও করের বোঝা চাপাইতে গেলে কর কাঁকি দিবার প্রবৃত্তিই বৃদ্ধি পাইবে। একথাও ঠিক বাহাদের আর ক্ষর, তাহাদের উপর নুভন কর চাপাইতে গেলে ভাহারা আরও বিপন্ন হইবে। কেননা বিভহীন বৃদ্ধিনী থেশী বর্ত্তমান শিল্প শ্রমিকদের অপেকাও বেশী কঠ সহু করিতেছে। ব্যাকীতি চুরীকরণের উদ্দেশ্য পরোক্ষ কর নির্দ্ধিশ্যও অসক্ত চুইবে।

কেনশা উহার ফলে বূল্য বৃদ্ধির সন্তাননাই দেখা দের। কিছ বিলাসক্রের উপর কর নির্দারণের প্রভাব সক্তই হইরাছে।

চোরাকারবার দমন করিবার কাবে সাহায্য লাভ করিবার পর অব্যব্দ্য প্রাণ করিবার নীতি এহণ করিতে হইবে এবং যে হারে উৎপাদন হইবে, সেই হারেই অব্যব্দা ক্রাস করিতে হইবে। পৃথিবীর অভাভ হানের সহিত মুদ্রানীতির সামঞ্জ সাবনের কভ ভারতের এবন হইতেই প্রস্তুত হওয়া অবভ কর্তব্য।

উপসংখারে ডা: সিংহ বলেন, এমন অর্বস্থার স্ট্র করিতে হইবে বাহাতে প্রত্যেকে তাহার যথাসাথ্য করিবার জন্ত দৃঢ়-প্রতিক্ত হয়। কিছু জনসংখ্যার এক বিরাট জংশের মনে যদি সামাজিক জ্ঞায়বোধ জাগ্রত থাকে তবে ইছা সন্তবপর নয়।

#### বাঙালী সম্মেলন

সম্রতি কলিকাতা ইউনিভার্সিট ইপ্রটিউটে বাঙালী সম্বের উভোগে অমুষ্ঠিত এক বিৱাট খনসভার শ্রীশচীস্রযোহন ভটাচার্যা वाक्षानीत इस्तिन्छ। ও छाराज वर्षमान इस्माज काजन अपर्मन করিয়া সংসাহসের পরিচর দিয়াছেন। আজিকার বাঙালীকে ভবু ভাৰার শতীভ গৌরৰ কাহিনী শুনাইলেই চলিবে না ভাৰার দোষ জটি ও বুর্বলতাগুলিও ভাৰাকে চোৰে আৰুল দিৱা নিৰ্শ্বমভাবে দেখাইয়া দিতে হইবে। বাঙালীকে ভাছার পূর্ব্ব গৌরবে বাঁহারা প্রতিষ্ঠিত দেখিতে চাহেন তাঁহাদের পক্ষে ইহা অবস্ত কর্ত্তর। শঙীক্রবাবু নেতার প্রয়োজনীয়তার উপর বিশেষভাবে জোর দিয়াছেন। কথাটা ঠিক, কিছ গেই নেভার আবির্ভাব কবে হইবে তাহার আশার বসিয়া থাকিলে চলিবে ৰা। বৃদ্ধিনান ও বদেশপ্ৰাণ বাঙালীকে আৰু এক নেতার অভাবে সজ্মনায়কত্ব প্রতিষ্ঠা করিয়া কার্যো অগ্রসর হইতে ছইবে। বাঙালীর স্বাধীনতা-প্রিয়তা এবং বিপ্লববাদের প্রতি ভাষার অভবের টানের পরিচয় লাভের পর হইতে ইংরেজ वाधानीटक हुर्व कतिवात कड तहेशत त्कान वहाँ करत नाहे। বদ-ভদ রদ করিতে ইংরেজ বাধ্য হইয়াছিল বটে, কিছ ধ্বংস করিয়াছিল বাঙালীর ব্যবসাকে। স্বদেশী আন্দোলনের পরেই व्यवस्य भारतेत वावजारम, भरत बीक ७ वरम्य वावजारम मारवा-রাজীর ভাবিতাব হয় ইংরেভের চেপ্তার, এবং ইংরেভের আশ্ররে ও প্রশ্রের পূষ্ট হইরা কলিকাভার ব্যবসাক্ষেত্র হইতে বাঙালীকে ইহারা বিভাভিভ করিতে সক্ষম হয়। বাঙালী ব্যবসায়ী ষ্টিয়া সিরা আশ্রের লয় চাকার। খাত ব্যবসাক্ষেত্রে হারোরাড়ীর আবির্ভাব বাঙালীর বাজ্যের উপর যে প্রতিক্রিয়া আনিয়াছে कारा करणक्षेत्र महा । अकरे सवा नित्वत बांधवात कर अवर বিক্ররের বভ আলাদা করিয়া রাধার পছতি ইহারাই এদেশে আম্বানী ক্রিরাছে।

শচীক্রবাব্র বঞ্তার কতকাংশ নীচে উদ্বত হইল:
বাঙালীকে, বাঙালীর ভাষাকে অনাদর করিবার একটা
প্রস্তুতি হাবে হাবে বেশ পরিস্কৃতি হইরা উটিয়াহে। ভারত-

বর্বের পক্ষে বড়ই ছুদ্ধিনের ক্ষণা ক্টবে, যদি সভ্য সভাই বাঙালী এবং বাঙালীর ভাষা অবহেলার অবভাভ হয়।

কিছ ভিন্ন অঞ্চলবাসীদের সহছে এই বিষয়ে ক্ষোভ আনাইবার পূর্ব্বে আনাদের নিজেদের ভারতীয়দের মধ্যে যে নানবগোঞ্চী বাঙালী বলিরা পরিচিত, তাহাদেরও এই সহছে অনেক কিছু করিবার আছে। অবহেলা এবং অবজ্ঞা তাহাকেই করা চলে যাহার ব্যক্তিত্ব নাই—যাহার চরিত্রবল অটুট নহে, যে হীন কর্ম্ম করিয়া বেড়ার এবং যে নিজেকে হীন মনে করে। ব্যক্তির পক্ষে এই কথাগুলি যেমন বাঁটি, সমন্তর পক্ষেও ঠিক তাই। বাংলাদেশে যদি বাঙালীর রাজনীতিতে এবং দেশ শাসনে অফুদারতা না থাকে, দলগত নীচতা যদি প্রক্রম না পার, বাঙালীর অর্থনীতি এবং বনব্যবস্থা ও বিনিয়োপের ক্ষেত্রে যদি নীচ লোভ এবং চৌর্য না থাকে, বাঙালী যদি নিজেকে নিক্ষে সন্মান দের, তবে সাধ্য নাই যে অভ কোন অ-বাঙালী বাঙালীকে অবহেলা ও অবজা করিতে পারে। সকল অ-বাঙালী একত্রিত হইয়া বড়যন্ত্র করিয়াও পারে না।

প্রশ্ন হয়—"সবই তো ঠিক—কিছ আমি একা সাধারণ বাঙালী কি করিতে পারি ? আমাদের নেতাদের মধ্যে যদি অসাধুতা প্রশ্রম পায়—আমাদের ব্যাক্ষারদের মধ্যে যদি অভার মনোরভি দেবা দের —আমাদের ম্বক্দের মধ্যে যদি উচ্ছ্ খল-তাই আদরণীয় হইয়া উঠে তবে আমি একা কি করিতে পারি ?"

আমার জবাব হইল আপুনি সবই করিতে পারেন। আপনি একাই সব কিছুর প্রতিকার করিতে পারেন, যদি আপনি তেমন ভাবে সাধনা করিতে প্রস্তুত থাকেন—এবং করেন। গণতন্ত্রের যুগে যদিও সমষ্টির ক্ষমতা এবং অধিকার সম্বৰে একটা মোহ সমন্ত দেশকৈ আছের করিয়া ফেলিয়াছে. তবু ইছা সত্য এবং ঐতিহাসিক সত্য যে, ব্যক্তির ক্ষমতা সমষ্টির অক্ষমভার চেয়ে অনেক বেশী শক্তিমান্, যদি ব্যক্তিটর পিছনে बादक जावनात मक्ति। बायम वर्ष वटन बन्दल चूतिया, कर्रिन সাধনার শক্তি অর্জন করিয়া গুরুগোবিন্দ সিংছ যে পঞ্চাবের मृति स्मिन्द अवर चोष्ठ लोदालद अम्ब्रेड अम्ब्र चक्रवणांद গ্লানি মুছিয়া কেলিয়া ঐ লোকসমষ্টকে মহাশক্তিমান শিৰ ভাতির অন্তর্গত করিরাছিলেন ইহা মিশ্যা নহে। একা বিবাদী বে পাহাভিয়া নারাঠীদের সমস্ত সম**ট**গত অক্ষতা ও ছৰ্বলভাৱ বিনাশসাৰৰ ক্ষিয়া এক বিৱাট মান্ত্ৰী ভাভি ও সাত্রাকা গভিয়া ভূলিয়াহিলেন, তাহাও ঐতিহাসিক সভ্য। আর একা মহাত্রা গানী আমাদের সকলের সমষ্টগত অক্ষতা ক্তবানি দুর ক্রিতে সক্ষ হইয়াছেন, তাহা একবার ভাবিয়া त्मविद्योद्यम कि १

বাঁহারা কথার কথার বিপ্লবের যুলি যঞ্জন্ধ বিভরণ করেন, ভাঁহাদিগকে পঞ্চাশ সালের কথা দ্বরণ করিতে অন্থ্রোণ করি। চরন হ্রবহারও বিপ্লব আন্যন্ম করিতে পারে নাই।

कांत्र कि १ कांत्र एटेन बहे या. विश्व करत मंख्यिमारमताहै। **ৰঞ্জিতীমেলা চরম ভববছায় পভিলেও বিপ্লব কবিতে পারে** না। সহস্ৰ সহস্ৰ শক্তিহীন একত্ৰিত হইলেই শক্তির বিকাশ য়ে না। লক্ষ লক্ষ উপবাসী নরনারী কলিকাতার পথে ঘাটে একত্রিত হইয়াছিল কিছ কলিকাভার কোবায়ও কোনও ণক্তির বিকাশ দেখা যায় নাই। "একডাই বল" কথাট সর্বা– (क्राइ श्रीयोक्त नाइ। भवालद अक्छोध वल कानदन कर्द. কিছ বছ সহস্ৰ চুৰ্বল এক্ডিড হইলেও শক্তির ফুরণ হয় না। यक्ति खक्का अरु कुर्रुलात উপর অবিচার হটলে আপনা চটতেট ভাষ বিচার হটত তবে ছভিক্ষণীভিত মাবণদীল প্ৰকাতীয় নৱনাৱীর মুখের দিকে না তাকাইয়া যাহারা বিদেশীয় মুখোদামকে সাহায্য করিবার বিনিম্বে নিকেছের ঘুণা ৰাচ্ছন্য বৃদ্ধি করিরাছে ভাহাদের বিচারের বছও আৰ 60 किक इनेटल खनमा नादि छेविल इनेल। याशास्त्र किसा ৰাঙালীর গৌরব--ভারতবর্ষের গৌরব সমগ্র মানব ভাতির গৌরব--- সুভাষ্চক্রকে পর্যান্তও "কুইসলিং" বলিতে কুঠিত হয় নাই সেই সমন্ত পামরদেরও গড়ের মাঠে সর্বসমক্ষে বিচার ছইত এবং ঐ সমন্ত পাপজিহবা চিরতরে অসাড় ছইয়া যাইত।

বাঙালীর অসম্বানের অবধি নাই। বাঙালীর বাসস্থান বাংলাদেশ দ্বিপতিত হটয়াছে। স্কলা, স্ফলা বাংলা মারের বুকের উপর পাকিছান বাসা বাঁধিয়াছে। রবীজনাথের "হে পদ্মা আমার" আর আৰু আমার পদ্ধা নয়। প্রায় চারি কোট বাঙালী সভান আৰু আর বাঙালী নয়—পাকিছানী। কেন আমাদের এই হুর্দশা হুইল ? আমাদেরই দোবে।

#### সামরিক শিক্ষা

কাঁচড়াপাড়ার বলীর জাতীর রক্ষীদলের শিক্ষাকেরে রক্ষীদের উদ্বেশ্ত বক্তৃতা প্রসঙ্গে সর্জার বলদেব সিং বলেন যে, ক্রমসেবা এবং দেশগেবার ক্ষেত্রে সামরিক শিক্ষা পবিত্র সারিত্বরূপ। ১১৮৬ জন রক্ষী এই অষ্ট্রানে উপস্থিত ছিলেন। শিক্ষাকেরে মাত্র ছই সগুছে অবস্থান করিরাই সার্জ্যশিতালাভ করার দেশরক্ষা-সচিব তাঁহাদিগকে অভিনন্ধন ক্রাণন করেন। তিনি আরও বলেন যে, শুধু তাঁহাদের ক্ষেত্রা এবং প্রদেশ নহে, প্রকৃতপক্ষে সমগ্র ভারতবর্ষকে ক্ষা করিবার জন্ম শিক্ষা দেওরা হইলেও সামরিক শিক্ষা বহুপের হারা তাঁহারা স্থদেশসেবা ও জনসেবারূপ জীবনের বর্ষাক্ষ আন্দর্শে দীক্ষিত হুইতেহেন। সন্ধার বন্ধদেব সিং নারও বলেন ঃ

"শত শত বংসর হইল দেশ নানাবিব গোলবোগ ও বসুবিবাসবৃহের সপুৰীৰ হইরাছে; তলবো অধিবাসীদের বছবিবোৰই প্রধান অপুবিবার স্কৃষ্টি করিরাছে। কলে দেশ বিশেষ শক্তির পদানত ছিল। এইকট বাহারা আনাদের হিত একতে বাকিতে অসহত হয় তাহাদের নিবিত দেশ বিভক্ত করিয়া কুত্র একট অংশ হাভিয়া ধিবার সিহাত

গৃহীত হয়। সহত্র ব'সর পরে ভারতবর্ধ পুনরার খানীন হইরাছে। এই কটাব্জিত বানীনতা রক্ষার্থ আনানিগকে প্রস্তুত হইবে। দেশবক্ষা ব্যবহার পুলিস ও সৈওদলের নির্দিষ্ট হাম আছে। কিন্তু অনিবাসীরা নিক্ষেরা যদি দেশবক্ষার্থ অঞ্জনর না হয় তাহা হইলে কোন দেশবক্ষা-ব্যবহাই কার্যাক্ষরী হইতে পারে না। ভারতের স্বহুৎ পুলিসবাহিনী, সৈওদল ও জনসাবারণ সম্বেতভাবে দেশসেবা করিতে এবং দেশকে শক্তিশালী ও পুপ্রতিষ্ঠিত করিতে উদ্যোগ্য না হইরাছিল তত দিন পর্বান্ধ তাহাদের পক্ষে দেশের শক্তিও ও গৌরব রন্ধি করা সম্বৰ হয় নাই।

প'ল্টমবদের মুবকদের সামরিক শিক্ষা ও অন্তর্গানের ক্ষণ্ড
আমরা বহু দিন ধরিয়া আন্দোলন করিতেছি; সামরিক
শিক্ষাগ্রহণ ও অন্তর্গালনার দক্ষতা অর্জন পল্টিমবদের
প্রত্যেক বরক ব্যক্তির পক্ষে অপরিহার্য। মেখেদেরও
এই শিক্ষা দেওয়ার প্রয়োজনীয়তা রহিয়াছে; যাদবপুর
ইঞ্জিনিয়ারিং কলেকের সমাবর্ত্তনে ডাঃ বিধানচন্দ্র রায় এ বিষয়ে
যাহা বলিয়াছেন ভাহা ঠিক কথা। ডাঃ রায় বলিয়াছেন ঃ

"অতাঁতে বাংলার যুবকেরা সক্ষর ত্যাগ করিয়াছে এবং দেশের কল কাঁসিমকে আত্মাছতি দিয়াছে। এদেশের কল-বার্র প্রভাবে শারীরিক গঠনে তাহাদিগকে ছুর্ফল বলিয়া মনে হইলেও, মনোবল তাহাদের অটুট। লোকে যাহা মনে করে তাহা নহে, আমাদের মুবকগণ কঠিনভর উপাদানে গঠিত। ইহাদিগকে আপনি সামরিক শিক্ষা দিন, থেন ইহারা বাংলা ও ভারতের গর্কের বস্তু হইতে পারে।"

#### বাণ্ডালী ও সামরিক রত্তি

গত পৌষ মানে বড়দিনের সমর কেঞ্জীর গবছে ভির সমর-সচিব সর্জার বলদেব সিং যাদবপুর ইঞ্জিনীয়ারিং বিভালয়ের বাংসরিক সমাবর্জন উংসব উপলক্ষে একট শুরুত্বপূর্বকৃতা पियाद्य । अरे विकामद्यव अधिकाव नमद्यव क्या विनवात लाटकर मरना क्रमनः क्रिया यारेटल्ट । यटनी चाटनानम ७ বন-তদ বিরোধী আন্দোলনে নৃত্য শিক্ষা-ব্যবস্থার প্রয়োজনের कल जामता এই বিভালরটকে পাইরাছি। প্রথম জবদার এই বিভালরের যে শিক্ষা-পছতি ছিলঁ তাহার আবুল পরিবর্তন হটরাছে। আৰু এই বিভালর ব্যবহারিক শিক্ষার কেন্দ্র হটরা উঠিরাছে; সেইৰভ ভাহার নামও বদুলাইরাছে। রাসবিহারী বোৰ, ভারকনাৰ পালিভ, খুবোৰচন্দ্ৰ মন্ত্ৰিক, খুৰ্ব্যকান্ত আচাৰ্ব্য, ও - বীরবেক্সকিশোর রাম চৌধুরীর দানে ইবার ভিত্তি ছাপিত হয়। সরকারী সাহাযা-প্রাপ্তি তথন কল্পনাতীত হিল : কারণ "ৰাতীয় শিকা-পরিষং" ছিল বিপ্লবী বাঙালীর বং-রুট ক্ষেত্র। আৰু যাদবপুর ইঞ্জিনীয়ারিং বিভালয় ভারতহাথের সাহায্য-পুঠ। বিভালৱের পরিচালক সবিভিত্ত সভাপতি ভাঃ বিবানচক্র বার ভাষার অভিভাষণে বলিয়াছেন বে. কেন্দ্রীর গবর্থে ভৌর হাব ৪২ লক্ষ্ টাকার অভিরিক্ত ৫০ লক্ষ্ টাকার প্রয়োজন। বিভালরের ভবিত্তং পরিক্লনার সাভট্ট প্তন বিষয়ে শিকার ব্যবস্থা হুইতেহে; বধা—অসামরিক পূর্ত-বিভা, ভূ-ভাত্তিক পূর্ত-বিভা, বমন পূর্ত-বিভা, ক্ষরি পূর্ত-বিভা, নির্মাণ পূর্ত-বিভা, সামরিক পূর্ত-বিভা ও বৈমানিক বিভা। এই প্রত্যেকটি বিভাগের অভ তিন লক্ষ্ টাকা ও পরিচালনার ক্ষ্য ত্রিশ হালার টাকা ক্রিয়া লাগিবে।

ভাঃ রার, সর্ভার বলদেব সিং, ঐর্জা সরোজিনী নাইছু বাভাকের অভিভাষণে বর্ত্তমান মুগসভিত্র সমরে এই সকল বিভার অকুশীলনের উপর বিশেষভাবে জোর দেওরা হর, কেবল গভার্থাতিক শিক্ষার কম নর। ভাঃ রারের ভাষার বলিতে হয়—"দেশরকা কেবল অম্ব-শন্ত্র ও সরঞ্জাম মাত্র নহে। উহাদের প্ররোগ জানা চাই। মুব-সমাকে অপুখল আচরণ ও বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিভঙ্গি প্রভৃতি সামরিক মনোভাবের অকুশীলন করিলেই প্রকৃত দেশরকার ব্যবস্থা হইবে।"

সর্ধার বলদেব সিং বলিয়াছেন, --- অতীতে যাহাই হউক না কেন, মৌলিক ও অপরিহার্যা শিলসভার আহরণে খাবীন ভারত বিদেশের মুখাপেক্ষী থাকিতে পারে না। শিল ক্ষেত্র খাবীনতা অর্জন না করিতে পারিলে আমাদের বাবীনতা-সংগ্রামকে অর্জনমান্ত বলাই সমীচীন হইবে।

কাতীর ও দেশরকা ব্যাপারে আব্ আমরা বলিতে গেলে সর্ব্বতোভাবেই বিবেশী প্রভিভার মুবাপেন্দী, ভগবান না করুন, মুদ্ধের ব্যাপার যদি কথনও উপস্থিত হয়, তবে ইহাকে আমরা দেশের লোক হাড়া আর কাহারও উপর ভঙ করিতে পারি না। স্বতরাং পরিণামে তাহাদিগকে দেশার লোকের প্রতিভার উপরই নির্ভর করিতে হইবে। অতথ্রব রাদনৈতিক বাদীনতা ব্যেন শিব্রের বাধীনতা ব্যতীত অসম্পূর্ণ, তেমনি দেশার লোকের পরিচালনা হাড়া শিল্পার্য়ন নির্বক।"

যাদবপুর বিদ্যালয়ে যে শিক্ষার ব্যবহা আছে বা হইতেছে তাহ। বেশের আর্থিক উন্নতির পক্ষে অপরিহার্য। সকল সাকল্যের মেরুবতবন্ধপ এই শিক্ষা—এই কথাটা অরণ করাইরা দিরাছেন শ্রীর্ক্তা সরোজিনী নাইছু। "পূর্থ দক্ষতা ও বিভিন্ন বিশেষত পূর্থবিদ্পণের সহযোগিতার উপরই আন্ধ যে হান বরুকুরি বলিয়া প্রতীরমান হইরাছে সেধানে সহস্র সহস্র গোলাপ-বাসিচার স্ট্রী নির্ভর্গ করিভেছে।"

যাদবপুর বিদ্যালরে শিক্ষার্থীর সংখ্যা বাঙালী সমাদ হইতেই অবিক সংখ্যার আসিবে। এই শিক্ষার শিক্ষিত বাঁহারা ভাঁহারা দেশের নানা উন্নতি-প্রচেটার সংগঠক হইবেন এই ভরসা আননা করিতে পারি। ভাঁহাদের মধ্য হইতে দেশের নানা বিভাগের মেতা বাহির হইবেন। সামরিক পূর্তবিদ্যা ও বৈমানিক বিদ্যা বাঙালী জীবনের পক্ষে বিশেষ ভাবে প্রয়োজন। পূর্ব পঞ্চাব ও পক্ষিরবন্ধ ভারতরাট্রের পক্ষির ও পূর্ব সীমান্তে অবহিত বলিরাই তং-প্রদেশবাসীর দেশরকার ব্যাপারে দায়িত্ব বাছিয়াছে। ইংরেছের আমতে পঞ্চাবের লোকসমন্ত্র সামরিক শিকা ব্যাহত হর নাই। কিছ বাঙালীর অবহা তাহার উপটা। বাঙালী কলন পিবিরা ইংরেছের সেবা করিতে বীকার করিয়া প্রকৃতপক্ষে লাভবান হর নাই। এই কথাটা আদ্ধ আমরা হাতে হাতে বুরিতেছি। সেইছেই দেশরকাকার্ব্যে বাঙালী র্বক্লিগকে হুবোগ দিবার হুড দেশরকাকার্ব্যে বাঙালী র্বক্লিগকে হুবোগ দিবার প্রধান মন্ত্রী দাবি করিয়াছেন—"অতীতে বাংলার র্বকেরা সর্ব্যাহ এবং দেশের ছঙ্গ কাঁসিমঞ্চে আদাহুতি দিয়াছে। এদেশের হুলবার্ব্য প্রভাবে শারীরিক গঠনে তাহা-দিগকে হুর্বাল বলিয়া মনে হুইলেও মনোবল তাহাদের অটুট। লোকে যাহা মনে করে তাহা নহে; আমাদের র্বক্লণ কঠিনতাই উপাদানে গঠিত। ইহাদিগকে আপনি সামরিক শিকা দিন, বেন ইহারা বাংলা ও ভারতের গর্বের বছ হুইতে পারে।"

এই কথাগুলির মধ্যে বাঙালীর মর্শ্ববাদী ধ্বনিত হইরাছে।
কিছ ইহাও তুলিতে চাই না বে, সামরিক জীবনে বাঙালীর
নিজের পথ নিজে কাটরা তৈয়ার না করিলে কেন্দ্রীর গবজেন্ট
কিছু করিতে পারেন না। যাদবপুর কলেজের শিক্ষার কোন
কোন বিষয়ে সামরিক যুভি জবলন্থনের স্থিবা হইবে। কিছ
স্থার বলদেব সিং-এর কথার বলিতে চাই:

দেশেরকা-ব্যবস্থার পুলিস ও সৈতদলের নির্দিষ্ট স্থান আছে। কিন্ত অধিবাসীরা নিকেরা যদি দেশরকার্ব অগ্রসর না হয় ভাহা হইলে কোন দেশরকা-ব্যবস্থাই কার্বকরী হইভে পারে না।

এই কথার অর্থ বুবিতে পারিয়াই আমরা বাঙালীর মধ্যে কাত্রবৃত্তি পুনক্ষীরিত করিবার ক্ষণ্ণ প্রতি মাসেই তংসধৃদ্ধে আলোচনা করিয়াছি। বাঙালী ক্নসাধারণের মধ্যে এই বিষয়ে উংসাহ ও আগ্রহের স্ক্রী করিতে না পারিলে যাধ্বপুরের শিক্ষা ব্যব্ হবৈ, যেমন হইরাছে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষা।

পশ্চিমবদে সামরিক শিক্ষাবিবরে দারিষ্টা কাহার এই বিষয়ে একটা শাই ঘোষণার প্রয়োজন। গত মাসের একটা সংবাদের উপর আমরা মন্তব্য করিয়াছিলাম যে, প্রাদেশিক গবছে ক্টের দারিষ্ক বোধ হয় একটু বাভিয়াছে; কর্তব্যপথ কেন্দ্রীর গবছে ক্টের নির্দেশে পূর্বের ভার কউকিত নহে। গতাহুগতিকের বাধা ভূক্ত করিয়াই আমাদের চলিতে হইবে। "বলীর ছাতীর রক্ষীদল" সম্পর্কে ১১৮৬ কম লোককে শিক্ষা দিলেই আমরা সন্তঃ থাকিব না, এবং হই সপ্তাহের শিক্ষার পারদর্শিতা লাভ করিবার কথার সর্বার বলদেব গিং-এর মৃত্ব প্রশংসাও করিতে পারিব না।

#### মাধ্যমিক শিক্ষাবিল

পশ্চিমবদের শিক্ষামন্ত্রী রার হরেজনাথ চৌবুরী ২০শে ডিলেম্বর সাংবাধিকগণের এক বৈঠকে বলেন বে, কার্য্য পরিচালনা ও নাব্যবিক শিক্ষার উন্নতিবিধানের কচ উক্ত বোর্চের প্রভূত ক্ষতা থাকিবে। তবে তত্বাবধান, বিশেষতঃ উন্নয়ন বিবরে গবলে তিন হতেও ক্তকগুলি ক্ষতা নক্ষান ব্যবস্থা করা হইরাছে। বাহাতে বিদ্যালয়ে শিক্ষা পাইবার উপযোগী শিক্ষার্থীদের প্রয়োজন, প্রবণতা ও সামর্ন্যের ক্ষম্প্রশাবিব শিক্ষার্থীয়ের প্রয়োজন, প্রবণতা ও সামর্ন্যের ক্ষম্প্রশাবিব শিক্ষার বিষয় সমন্ত্রিত হয় তত্ত্তেই গবলে উবহুতে উপরোক্ত ক্ষতা রাধিয়াছেন। এতংসম্পর্কে পশ্চিমবদ্ মান্যমিক শিক্ষা বিল নামে যে বিল রচিত হইরাছে, পশ্চিমবদ্ পরিষদের আগামী ক্ষম্প্রান্ত্রী মাসের ক্ষাবিবেশনে উহা উপাণিত হইবে এবং বিলটি পরিষদে পাস হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে যাহাতে বিলের ধারাসমূহ কার্য্যকরী হয় তংসম্বন্ধে ব্যবস্থা ক্ষমপ্রকরা হয় তংসম্বন্ধ ব্যবস্থা

এক প্রশ্নের উভরে শিক্ষাসচিব বলেন যে, সাধারণ শিক্ষা হাছাও কৃষি, প্রমশির ও বাণিক্য প্রভৃতি বিষয়ক শিক্ষাওবার্তের নামলে আসিবে। কলিকাভা বিশ্ববিভালয় ম্যাট্ট্রকুলেশন সরীক্ষা প্রহণে বিরত হইলে ভাঁহাদের যে আর্থিক ক্ষতি হইবে তাহার ক্ষতিপুরণ সম্পর্কেও বিলটতে ব্যবস্থা করা হইরাছে।

ভত্বাবৰান সম্পর্কিত সরকারী ক্ষমতা সহতে এক প্রশ্নের ইন্তরে শ্রীর্ক রায় চৌধুরী বলেন যে, বিলে এইন্ত্রপ ব্যবহা করা হইয়াছে যে, বোর্ডের রচিত বিধানাবলী পবতে কেঁর নহমোদন সাপেক হইবে। বোর্ডের বাংসরিক বাজেটেও বির্থেকির অহ্যোদন আবশ্রক। বোর্ডের কার্ব্যে বিশেষ বিশ্বকা দেখা দিলে সেরুপ ক্ষেত্রে পবর্ষে কি বোর্ডকে বাতিল 3 উহাকে পুনর্গন্তিত করিতে পারিবেন।

৪০ জন সম্ভ লইয়া বোর্ড পঠিভ হইবে এবং ইঁহারা बांबर्थ २ वस मादी मम्छ क्ला-वर्ण कविदन: वर्षार প্রসিডেন্টসহ ৪২ জন সদত লইয়া বোর্ড গঠিত হইবে এবং প্রসিডেন্ট গবর্ষেন্ট কর্ত্তক নিযুক্ত হইবেন। উক্ত ৪২ কনের াব্যে শিক্ষা, প্রমণিয়া, কৃষি ও জনস্বাস্থ্য বিভাগের ভিরেইরগণ वयर काजिनजी विका. नाजीनिका ७ मानामिक कुननम्हर : **मर्**भडेन्डन--- (यांडे ৮ कन -- भगाविकांत वर्ण वार्टित मण्ड ্টবেন। কলিকাড়া বিশ্ববিভালয়ের ৩ জন সদস্য পদাবিকার লে এবং ৭ জন নির্বাচিত হইয়া বোর্ডের অভতু 🖝 হইবেন। লেসবৃহের ১ খন নির্মাচিত প্রতিনিধি থাকিবেন : ইঁহাছের विष्य बहेब्रभ:-- 8 कन ध्यान निकक, २ कन ध्यान नेक्षिबी ও ম্যানেজিং কৃষিষ্টসমূহের ৩ জন সদস্য। বোর্ডে াইৰসভাৱ ভিন ভন প্ৰভিনিধি থাকিবেন। ভিয়ান প্রাদেশিক এডুকেশন বোর্ড, ঠেকনিক্যাল এডুকেশন বার্ড এবং বিশ্বভারতীর পক্ষ হইতে বোর্ডে ১ কন করিয়া किनिवि वाकित्वम । कृषि, श्रमनिष्ठ, वानिष्ठा, र्श्वव श्रम् छ विदय ७ चन वित्नवक्राक नवत्व के व्यक्ति जनजा मत्नामील বিবেন। বোর্ডের অভাভ সহস্য ২ কন নারী সহস্যকে क्-चके कविरवय ।

এক প্রভার উভরে জীযুত বার চৌধুরী বলেন বে, বাহাই হউক না কেন, বোর্ডে সরকারী কর্মচারীদের সংখ্যা কোন-क्रायर जम्लामरवादि अक-म्प्रवीरानद अविक एरेटर ना। প্রেসিডেউ সহ ১৬ জন সদস্য লইয়া বোর্ডের কার্যানির্ব্বাহক পরিষদ গঠিত হইবে। শিকা বিভাগ ও খাছ্য বিভাগের **डिटाईस अवर कार्तिनही निका, नारीनिका ७ यानायिक** ছুলসমূহের ইজপেট্ররগণ মোট ৫ জন পদাবিকার বলে উজ পরিষদের সদৃস্য হইবেন। কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের অভত: ৪ ব্যক্তি পরিষদের অভতুক্ত হটবেন। এতহাতীত नाडीभिका, काविनदी भिका धवर कूलंद भिकामान मश्रद বিশেষত ৫ তুন থিৰ্বাচিত সদস্য থাকিবেন। বালিকাকের শিকা বিষয়ে পরাহর্শদানের ভঙ একট বিশেষ কমিট গটিভ क्टेर्टर । नांदी जनमा लहेशांटे बाटे कथिए मर्टम कहा क्टेर्टर । শিকা সহতে যে সকল শ্রেণী পশ্চাংপদ ভাষাদের শিকার প্রসারের ছন্তও একট বিশেষ কমিট গঠনের বাবছা করা হইয়াছে: এতথাতীত (ক) রিকগ নিশন ও প্রাণ্টস কমিট. (খ) পরীকা ক্ষিট, (গ) কারিগরী শিক্ষা ক্ষিট, (খ) শরীর-চর্চ্চা শিক্ষা কমিট এবং (%) বিশেষজ্ঞগণের কাইছাল কমিটঙ গঠিত হটবে: উন্নয়ন পরিকল্পনা বচনাও বোর্ছের একট নিৰ্দিষ্ট কাৰ্যা: এ সকল পরিকল্পনা অনুযোগিত হইলে গৰ্বৰেণ্ট উক্ত পৱিকল্পনা সম্পৰ্কে যে সকল ব্যক্তি সংশ্লিষ্ট হইতে পারেন তাঁহাদের মতামত বিবেচনা করিবেন। ভংপরে সাম্প্রতিক ইংলিশ এক্টের ভার এড়কেশন অর্চারের বারা 🛦 সকল পরিকল্পনাকে কার্ব্যে পরিণত করা হইবে।

মাব্যমিক শিক্ষা পরিচালনা ও উহার উন্নতিসাধনের ক্ষ
একটি পৃথক কর্তৃপক্ষ সঠন করার প্রয়োজনীয়তা বহু দিন
বীকৃত হুইরাছে। কলিকাতা বিশ্ববিভালর কমিশন ৩০
বংসর পূর্বে এইস্কাপ বোর্ড সঠনের অ্পারিশ করেন। মন্টেপ্তচেমসকার্ড শাসম-সংখারের আমলে এইস্কাপ বোর্ড সঠনের
ক্ষভ্য কোন চেষ্টা করা হয় নাই। ১৯৩৫ সালের ভারতশাসন
আইন পাস হওয়ার পরে এইস্কাপ বোর্ড সঠনের ক্ষভ সর্ববিধ
প্রচেষ্টা বিলসমূহে সাম্প্রভাৱিক আসন-সংবক্ষণ প্রভৃতি মূলক
কৃতক্ত্রলি ধারার ক্ষভ বার্থ হুইরা যায়। ঐ সকল বিশ্বর
ক্ষমসাধারণের প্রহণবোগ্য ছিল মা।

আছাত দেশে আবুনিক শিকা সংক্রান্থ ব্যাপারের প্রবণতা এট বে, বাব্যমিক শিকার পূর্ণ নিরন্ত্রণ ও পরিচালনার ভার গবদ্রেন্টেরই প্রহণ করা উচিত। কিন্তু যত দিন পর্যন্ত সমপ্র ভাতির কর সর্বান্ধনীন প্রাথমিক শিকার সন্তোহক্ষমক ব্যবহা করা না বার তত দিন পশ্চিমবলে মাধ্যমিক শিকার সম্পূর্ণ ভারিত্রভার প্রহণ করা গবদ্রেন্টের পক্ষে সভ্যপর নহে।

বোর্ভে সরকারী সাহাব্যদান প্রসকে শিকাসচিব বলেন যে, বর্তমান সবদেও আর্থিক অসুবিধা সম্বেও ৩০ লক্ষ টাকা সরকারী সাহাব্য দিয়া বোর্ড আর্থ্য করিতে মনত্ব করিবাছেন। প্রবাদনক্ষের বার্ডের বাংদ্রিক বাকেট বিবেডনা করিয়া উক্ত সাধান্য যদি করা হইবে। ১৯৪৪ সালে মুসলিম লীগ প্রথমিত শেষ যে বিলটি উবাপিত করেন ভাষাতে সমগ্র বাংলার ক্ষা ২৫ লক্ষ টাকা প্রাথমিক সাহা্যা দিয়া বার্ডি সুরু করার প্রভাব করা হয়। পুর্বেকার আয়তনের ভূলনার পক্রিমবদ্ প্রায় এক-ভূতীয়াংশ; সুভরাং ৩০ লক্ষ টাকা প্রাথমিক ব্যবস্থা একেবারে অসুপর্ক্ত বলিরা বিবেডিত হইবে না, ইহাই ভাষার বারণা।

বিশ্ববিভালয়ের শিক্ষা-ব্যবদার সম্পূর্ণ অসুগানী নছে অথচ বন্ধংসম্পূর্ণ মাব্যমিক শিক্ষার অভ এইরপ একটি শিক্ষা প্রগালীর উহর্তনই বোর্ডের মুখ্য লক্ষ্য হটবে। ছাত্রগানকে এরপ শিক্ষা লেওরাই লক্ষ্য হটবে যাহা সংবাল-সম্পূর্ণ, অথচ যাহারা বিবিধ বিষয়ে আরও উচ্চ শিক্ষালাভ করিতে চাহে ভাহাদিগকেও উহা সাহায্য করিবে।

মাধামিক শিক্ষা বিলাটীর উপরোক্ত বিবরণ পাঠ করিয়া প্রথমেই এই প্রশ্ন উঠে বে, এই বোর্ডের এবনই আবস্তক হইল কেন ? একমাত্র মুক্তপ্রদেশ ভিন্ন ভারতের আর কোন প্রদেশ মাধামিক শিক্ষাবোর্ড গঠিত হুইয়াছে বলিয়া আমরা অবগত নহি। মুক্তপ্রদেশে ইহার প্রয়োজন আছে এইকড যে সেধানে শাঁচটি বিশ্ববিভালয়, কাকেই মাধ্যমিক শিক্ষার সামপ্রশ্ন বিধানের কর একটা বোর্ড দরকার।

পশ্চিম বাংলার কথা একেবারে আলাল। পশ্চিমবদ্ একট কুন্ত প্রদেশ এবং আসামের লার পাহাড় জনলে ছড়ানো নর, খনবসভিপূর্ব একট ঠাসা প্রদেশ। এবানে প্রাথমিক শিক্ষার জন্ত মাব্যমিক শিক্ষার জন্ত মাব্যমিক শিক্ষার জন্ত মাব্যমিক শিক্ষার জন্ত মাব্যমিক শিক্ষার জন্ত হিন্দি পূথক এবং খ-দ প্রধান প্রতিষ্ঠান রাখিবার প্রয়োজনীয়তা কি ? এই তিনট আলালা আপিস বজার রাখিবার ব্যরবাধন্যেরই বা আবঞ্চকতা কি ? আমাদের বিখবিদ্যালয়ন্টকে মৃতন ইন্টেচ গড়িয়া লইলে তাহার ধারা একার্য্য চলিতে পারে না কি ?

#### পশ্চিমবঙ্গের উন্নতির পরিকল্পনা

শ্রীদেবেজনাথ যিত্র সংযুক্ত বলের কৃষি বিভাগের উন্নতিযুক্ত কার করিবার চেষ্টা করিয়াছিলেন। তথন পরদেশী
খাসন-ব্যবহার দাপটে অনেকের স্থিছাই কার্যাকরী হইবার
প্রযোগ পার নাই। মিত্র মহাশরের অভাত নানা কর্ত্তনাও
সেইরপ তাঁহার রুদ্রেই লরপ্রাপ্ত হইরাছিল। আরু হাথীন
রাষ্ট্রের অধীনে সেই প্রযোগ পাওরা যাইবে বলিরা অনেকেই
আলাবিত হইরাছিলেন। "বাত-উংপাদন" প্রিকার ১৬ই
পৌষ সংখ্যার মিত্র মহাশর হংব করিবা লিবিরাছেন যে,
পশ্চিমবদের উন্নতির কর্ত্ত কোন "কার্যকরী পরিকর্ত্তনা প্রস্তত
হ'ল না।" তাহার কারণ সহত্তে একটা নির্দেশ এই
প্রিকার একট মহব্যের মধ্যে পাই। "এক্ত্রন আই, সি, এস্

একবার বলিহাছিলেন—'Our wits do not go beyond our nose.' অবাং গতাহুগতিক কাল ক্রিতেই আমরা অভ্যন্ত।" নাকের ভগার বাহিরে তাহাদের দৃষ্টি যার না। এইরূপ খীরুতির কথা এবনও শুনিতে পাওয়া যার, কব্তর্বানার তত্তাববারকরক্ষ এবনও বলেন—ন্তন কিছু করা আমাদের কর্ম্ম নর। কিছু এইরূপ কর্ম্মের স্থাস করিয়া বিবার ইছোও তাহাদের নাই বলিয়া সমস্ত পরিক্রনা কাগকপদ্রের মধ্যেই থাকিয়া বাইতেছে। এই রোগের চিকিৎসা কি গ

#### পশ্চিমবঙ্গের "নোকরদাহি"

"সংগঠনী" পত্রিকা চবিবশ পরগণার পূর্বাঞ্চলের মুখপত্র। তাহার পাঠক অধিকাংশই পদ্ধীপ্রামের লোক। নিম্নলিবিভ হিসাব ও মন্তব্য এই পত্রিকার ১৬ই পৌষ তারিবের সংখ্যার প্রকাশিত হইরাছে। তাহা পাঠ করিয়া পদ্ধীপ্রামের লোকে কি ভাবিতেছেও কি বলতে পারে, তংসম্বন্ধে পশ্চিমবঙ্কের প্রধান মপ্রীমহাশরের অবহিত হওয়া প্ররোজন। গতিশীল, ক্রিয়াশীল শাসমকার্থা (dynamic administration) সম্বন্ধে তাঃ বিধানচক্র রায় যে প্রতিক্রুতি দিয়াহিলেন তংসম্বন্ধে লালগীবির দপ্তরের নোকরসাহী (bureaucracy) হইতে কভটুকু সাহায্য পাওয়া গিয়াছে, তাহার একটা হিসাব লইবার সমস্ব আগিরাছে। মাহিনা সম্বন্ধ পদ্ধীপ্রামের মুখপাত্রের মন্থব্য এইরূপ:

লালদীখির দপ্তরে খাবীন ভারত ভোমিনিয়নের পতাকা উভিল। কিছু মাহিনা কমিল না। যে কর্মচারী ১৫ই আগষ্ট পর্যান্ত ২,৫৫০, বেতন পাইতেন ওাছার মাহিনা হইল ৩,৭৫০,; জেলাকোটের জন্ম পাইতেন ২,২৫০, খাবীন হইবার পর তাঁহার আরও ৫০০, ভাতা বৃদ্ধি হইল। যে পুলিশ কর্মচারী পাইতেন ১,২৯০, তিমি ২,৩৯০, পাইরা লালগদীতে ভাঁকিরা বসিরা, এবার খাবীন ভারত ভোমিনিয়নকে আশীর্কাদ করিলেন।

অর্থ-ধররের ১,০৫০ টাকার কর্মচারী ১৪ই আগই-এর পর দেখিলেন মাসের শেষে তিনি ২,৭৫০ টাকার বনীলোক। ১,২০০ মাস মাহিনার পুলিস মাসিক ১,৯৫০ টাকার মালিক হইলেন, আর যে ব্যক্তি ১,৫৫০ টাকার কর্মচারী হইরাও দিলীর দপ্তরে অযোগ্য বিবেচিত হটলেন তিনি আশ্রর পাইলেন, লালদীবির দপ্তরে ২,৭৫০ টাকা মাহিনার।

শিক্ষা বিভাগকে 'বিশেষ' শক্তিশালী করিবার উদেক্তে একজন অবসরপ্রাপ্ত বৃদকে ২,৭৫০ র চেরারে বসান হইল এবং সরবরাহ বিভাগের একজন কর্মীকে (]) ২,৫৫০ ছানে ৩,০০০, পুরা করিয়া দেওরা হইল।

অবিভক্ত বাংলার ( ৭৭,০০০ বর্গ মাইল) এক অন ইজপেটার জেনার্ল অব পুলিস হিলেন আর হিলেন সাত কন ভাঁহার সহকারী। বাংলা এবন এক-ভূতীরাংশ কীণ হইরা গিরাছে (পশ্চিম বাংলা ২৮,৪৩৩ বর্গ মাইল) কিছ সহকারীর সংখ্যা ৬ কনের নীচে মামে মাই।

অবিভক্ত বাংলার এক একট বিভাগে এক একট 'সেকেটারী' যথেই ছিল। দেশ খাবীন হটবার পর এবন সে নিরম নাই। পশ্চিম বাংলার এমন কোন বিভাগ আৰু মাই বেবানে এডিশনাল, এর্ট্রা-এডিশনাল, জয়েন্ট এবং জরেন্ট-এডিশনালর জভাব আছে। আৰক্ষাল আর একটা মোটা মাহিনার মুভন পদ হটরাছে, ভাহার গালভরা নাম ভিরেক্টর জেনারল অব ট্রালপোর্ট। তাহার মাহিনা ৩,৫০০, টাকা। ৫০ খানি বাঘমার্কা বাসের বাভাবিক চলাচলের দায়িত্ব তাহার বাড়ে। শীপ্রই আবার একজন মাননীয় বৃদ্ধ ৩,০০০, মাহিনার আসিতেছেন—তাহার পদ একট্রা-এডিশনাল ইক্সিনিয়ার। তিনি পশ্চিম বাংলার রাভাঘাট দেবিবেন। ১,২০০, টাকার আরও এক জন "টাইগার" ট্রালপোর্টে নিয়ক্ত আছেন।

#### পশ্চিমবঙ্গে চাষের অবস্থা

কেশীর গবলে ন্টের বাজ-সচিব প্রীক্ষরামদাস দেশিতরাম দেশবাণীকে শুনাইরাছেন যে, এবার আমাদের প্রয়োজনে বাজ-শন্ত বিদেশ হইতে আরও বেশী করিয়া আমদানি করিতে হইবে। গত বংসর এরপ আমদানির মৃল্য ছিল প্রায় ৭৫ কোটি টাকা। এবার নাকি তাহা বাজিয়া উঠিবে ১০০ কোটি টাকার উপর। এই ছরবছার কারণ লইয়া নানা তর্কের অবসর বাকিতে পারে; কিছ কলে আমরা পাইতেছি যে, ভারতরাট্রের ক্ষমকপ্রেশী দেশের পরিমিত বাজ উংপাদন করিতে পারিতেছে না। বাংলাদেশ বার মাধ্যের মধ্যে একটা ছর্তিক্ষের কল্যানে ২৫।৩০ লক্ষ লোক হারাইয়াছে। তব্ও বাংলাকে তাহার লোককে পেট ভরিয়া বাইতে দিবার জ্বভ ভারতরাট্রের অপর প্রদেশের প্রতি বা বিদেশের প্রতি হাত বাজাইতে হয়। লোকসংখ্যা বাভিয়াছে গভ্য; কিছ ক্ষমক ও প্রমিক্র সংখ্যাও ত বাভিয়াছে। তব্ও দেশের বাভাতাব হ্র হয় না কেন ?

এই বিষয়ে পশ্চিমবন্ধের রাজ্যমন্ত্রী জীবিমলচল সিংছের একট প্রবন্ধ পদিলাম। তাহার মধ্যে এই প্রান্তের একট উড়র আছে বলিরা মনে হয়। কিছু দিন পূর্বের বাংলালেশের জমির সহছে বে সমন্ত তথ্য সংগ্রহ করিরা (Agricultural Statistics by plot to plot Enumeration in Bengal) প্রকাশ করিরাছিলেন, তাহার মধ্যে কতক্তলৈ বিশেষ তাংপর্যাপূর্ণ হিসাব পাওয়া যায়। তাহারা ৭৭ট প্রাম্ম সহছে কতক্তলৈ বিশেষ অহুসহান করিবাছিলেন। তাহা হইতে দেখা যার যে, এই প্রামণ্ডলিতে বে সমন্ত পরিবার ছিল তাহাদের মোটাযুট পাঁচ আগে ভাগ

করা যাইতে পারে, যথা—(ক) কমিনীন পরিবার অথবা যে সমত পরিবারের বাস্তৃতিটা ছাড়া অন্ত কোন থাস কমি নাই। (ব) যে সমত পরিবারের বাস্তৃতিটা ছাড়া ঘোট এক একরের (তিন বিবা) বেশী কমি নাই। (গ) যে সমত পরিবারের বাস্তৃতিটা ছাড়া মোট তিন একরের বেশী কমি নাই। (ঘ) যে সমত পরিবারের বাস্তৃতিটা ছাড়া গাঁচ একরের বেশী কমি নাই। (৬) যে সমত পরিবারের বাস্তৃতিটা ছাড়া গাঁচ একরের বেশী কমি নাই। (৬) যে সমত পরিবারের বাস্তৃতিটা ছাড়া গাঁচ একরের বেশী কমি আছে।

ভূমিহীন বা, যে সব পরিবারের বাস্ত ছাড়া অভ জমি নাই তাহাদের (ক) শ্রেণীভূঞা করা হইপ্লাছে এবং তাহারা জন-সংখ্যার শতকরা ৩৬'৪ অংশ, এবং তাহাদের দ্ধ্নীকৃত জ্যির পরিমাণ নোট জ্যির শতকরা ১'৮ অংশ।

এক একরের কম ভ্যিওয়ালাদের (খ) শ্রেণীভূক্ত করা হুইরাছে, এবং ভাছাদের শতকরা হার ১৭.৭ এবং ভাছাদের মোট ভ্যির পরিমাণের হার সর্ব্যোট ভ্যির শভক্রা ৪.২।

- (গ) শ্রেণী সূক্তদের শতকরা সংখা ২২°০ এবং ইহাদের সকলেরই তিন একরের কাছাকাছি দ্বমি দ্বাছে। ইহাদের মোট ক্মির পারিমাণ শতকরা ১৬°১।
- ্থা শেণী ভূজাদের শতকরা পরিমাণ ৯'৬ এবং শতকরা ১৪'৭ জ্বি ইহাদের দ্বলৈ আছে। ইহাদের প্রত্যেকর জ্বির পরিমাণ ৩ হইতে ৫ একর।

ষে সব পরিবারে ৫ একরের বেশী কমি আছে তাহাদিগকে (৬) শ্রেণীভূক্ত করা হইয়াছে। ইহাদের মোট কনসংব্যা শতকরা ১৪'৩ এবং ইহাদের সকলের মিলিয়া প্রায় শতকরা ৬২'৪ একর কমি আছে।

বাংলাদেশে যে মোট কমি আছে জনসংখ্যার সভিভ তাহার তুলনা করিলে দেখা যায় যে মাখা পিছু ক্ষি ২'৪৯ একরের বেশী নয়। কিন্তু মনে রাবিতে হটবে এট **ক্**মিণ্ড সমভাবে বক্টিত নছে। যাছার। চাষ করে বা বর্গাদার ভাহাদের মাধা পিছ ক্ষমি অভান্ত কম এবং চাষ করে না অর্থাৎ মালিক যাহার। ভাহাদের হাতে ভমির পরিষাণ বেৰী। ঐ রিপোর্ট হইতে ভারও দেখা যায় যে, বর্তমানে বাংলা-দেশে বহু কমি পতিত আছে। এইরপ ভাবে কমি পতিত থাকার নানাবিধ কারণ আছে। কোথাও খল-সেচের অভাব, কোৰাও অল-নিকাণের অভাব, কোৰাও রাভার অভাব, কোণাও বা খাছোর অভাব। ষেধানে যেধানে একসছে এক শত একর বা তভোৰিক ভষি পতিত তাহার মোট হিসাব লওরা হইরাছিল। দেবা যার যে, কেবল মাত্র এইরূপ ক্ষির মোট পরিমাণ পশ্চিম বাংলার ২.৪৬.৪৬২ একর। এই বিরাট পরিমাণ পতিত শ্বমি পতিত থাকিতে দিলে চলিবে না। সেৰত পশ্চিমবল প্ৰাদেশিক সরকার এই সমস্ত কমি যে কারণে পতিত হটরা আছে সেই কারণগুলি সহতে অনুসভান করিতেতেন। অনুসভানে হৈ বে কারণ কানা যাইবে সেই সেই কারণ দুরীভুত ক্রিড়া এই ভমি উন্নত করা হইবে।

বদিও বাল ৭৭ট থানে অভ্সনাদের কলাকলের উপর
বির্তির করিরা এই হিলাব করা হইরাছে, তবুও ইছা সারা
পশ্চিমবনের অবস্থার বর্ণনারপে গ্রহণ করা বাদ এবং মন্ত্রী
শ্রীবিষলচন্দ্র সিংহ মহালরের দপ্তরেও এইরপ নানা হিসাব
আছে, এই কথা বলিলে অভ্যক্তি হইবে না। তবুঙ পুত্র
করিরা আর একটা "অভ্সন্তান" করিবার ব্যবহা হইরাছে।
বিদি তাহা নিতাশ্বই প্রয়োজন হয় তবে তাহাও হউক। কিছ
প্ররপে কেবল তথ্য সংগ্রহে দিনগত পাপকর করিলে তো
আর চলে না।

#### "ভূমি-সহদ-সঙ্ঘ"

কৃষির উন্নতি না হুইলে কোন জাতির প্রকৃত সম্পদ বৃদ্ধি হয় না। এই সত্য উপলন্ধি করিয়াই আমেরিকার যুক্তরাষ্ট্রের প্রধান ব্যক্তিগণ আপনাদের জীবন নিয়ন্ত্রণ করেন বলিলে অভ্যক্তি হইবে না। "বিজ্ঞলী" নামক বাংলা মাসিক পত্রিকা হুইতে তার পরিচয় তুলিয়া দিলাম।

"--প্রার নর বংসর পূর্ব্বে আমেরিকার কতকণ্ডলি ক্যক, ব্যবসারী, শিল্পত্তী এবং সরকারী কর্মচারী সন্দিলিতভাবে একটি সংগঠন প্রভিত্তিত করেন। এই প্রতিঠানের নাম দেওবা হয় ভূমি-স্থাদ-সঙ্গ।

এই সন্দের কার্যাক্ষেত্র ক্রমাগত বাড়িরাই চলিরাছে এবং এবন গুহিও টেটের অন্তর্গত কলাহাস শহরে ইহার কার্যালর হাণিত হইরাছে। বুক্তরাট্ট হৃষি বিভাগের অন্তর্গত ভূমিসংরক্ষণ বিভাগের প্রধান কর্ম্মকণ্ডা ভাক্তার হিউ হামঞ্চ বেটেনের মত লোকেরাও এই প্রতিষ্ঠানের সহিত সংগ্রিষ্ট আছেন। এই প্রতিষ্ঠানটির সহিত রাজনীতির কোন সহত্ব নাই।

ভূমি সংবঞ্চণ, চাবের কাজে জনের ব্যবহার এবং সেচ
সহকে সমভ তথ্য প্রচার করা এবং এ সহকে প্রবান কর্মপ্রীর
ব্যবহা অবলঘন করা এই সলের প্রবান কর্মপ্রীর
অভচুকি। কোন প্রকারের আর্থিক লাভ ব্যভিরেকেই ইহা
কাজ করিরা বাকে। জাতীর ক্রমিসন্দ বাডানই ইহার
এক্ষার লক্ষ্য। চাবীদের অবগতির জন্ত জমির উংগাদনশক্তির কর বন্ধ করিবার সমভ সভাব্য উপার সহকে তথ্য
প্রকাশ করা, অতিরিক্ত বীজ্বপন বন্ধ করা এবং বনসন্দাল
সংরক্ষণ করার জন্ত সমভ প্রবোজনীর ব্যবহা সহকে
উপদেশপূর্ব প্রবন্ধ প্রকাশ করা ইহার অভত্য কাজ।"

#### দক্ষিণ আফ্রিকায় ভারতীয়দের প্রতি তুর্ব্যবহার বৃদ্ধি

দক্ষিণ আক্রিকা হইতে প্রকাশিত "ইতিরান ওপিনিরন" পরের সম্পাদক জীবণিলাল গাবী স্মাতি দেশে আসিরাহেন এবং নরানিরীতে ইউনাইটেড প্রেসের নিকট এক বিবৃতি প্রসদে তথাকার ভারতীরদের উপর দক্ষিণ আফ্রিকা প্রব্যাক্তির হুর্ব্যবহার বৃদ্ধির বিবরণ দিয়াহেন। তিনি বলিয়াহেন, "জাতীর দল কর্ত্ত্ব প্রব্যাক্তির পর গাঁৱত সদীন হইছা আফ্রিকা প্রবাসী ভারতীরদের অবহা আরও সদীন হইছা

ইাভাইরাছে। এশিরা ভূমিবত্ব আইনের প্ররোগ কঠোরতর করা হইরাছে। গবর্থে ক উাহাদের বর্তমান নীতি পরিবর্তনের কোন ইচ্ছা প্রকাশ তো করেনই নাই, বরং স্পষ্ট ভাষার জানাইরা বিরাহেন যে ভারতীরগণকে বদেশে পাঠাইরা দেওরাই ভারতীর সমভার একমাত্র সমাবান।" তিনি আরও বলেন.

"ভারতীরদিগকে বদেশে কিভাবে প্রেরণ করা ব্টবে, তাহা আর একট সমলা। কারণ বিদ্যুণ আজিকার অবহিত বা দক্ষিণ আজিকার দাত শতকরা ৮০ ভাগ ভারতীরেরই দক্ষিণ আজিকার দাত শতকরা ৮০ ভাগ ভারতীরেরই দক্ষিণ আজিকা ব্যতীত আর কোখাও বাড়ী-বর নাই। কিছ নির্বাসনযোগ্য অপরাবের কর নির্বাসন দওদাবের বে আইম রহিরাহে ভাহার পুরাপুরি ক্ষোগ লইতে গবর্দেও বছপরিকর বিলয়া প্রতীয়নান হয়। এভাবে গবছেও কৃতিপর ভারতীরকে নির্বাসিত করিরাহে। অবচ অবিকতর অকতর অপরাবে অপরাবী ইউরোপীরাদদিগকে পরিপূর্ণ বাবীনভা ভোগ করিতে দেওয়া হইতেছে। অবিক্ছ, কোন আছমর্যাদাভানসম্পর ভারতবাসীর পক্ষে দক্ষিণ আজিকার বসবাস বত দূর সভব হঃসাব্য করিয়া ভূলিবার জল কেপটাউন প্রারবন রেলেভারতীরণের কর পৃথক আসনের ব্যবহা এবং আরও নানা নিষেবাদ্বক ব্যবহা প্রতিত হইতেছে।

সভ্যাগ্রহ আন্দোলন সম্পর্কে একটি প্রশ্নের উন্তরে জীমনি-লাল গাড়ী বলেন বে, ভ্রিম্বত্ব আইনের বিরুদ্ধে বে সভ্যাগ্রহ আন্দোলন আরম্ভ হয়, ভাষা বিশ্ববাসীর সক্রিয় সহায়ুভ্তি আকর্ষণ করিভে সমর্থ হয়। নাটাল ও ট্রালভাল ভারতীয় কংগ্রেস সামরিকভাবে আন্দোলন স্থপিত রাধিরাছেন এবং আন্দোলন কবে প্নরায় আরম্ভ হইবে ভাষা ভিনি বলিভে পারেন না।

তিনি আরও বলেন, দক্ষিণ আফ্রিকার ভারতীরদের প্রতি ছব্যবহারের প্রতিবাদে ভারত-সরকার দক্ষিণ আফ্রিকার ৰিক্লছে যে বাণিজ্যিক বিৰিনিষেৰ আৱোপ কৱিয়াছিলেন. তাহা আশানুত্রণ সকল হয় নাই। চটের খলে দক্ষিণ আফ্রিকার একট বিশেষ আবস্তক ত্রব্য। বিবেশজা একটিয়া এই স্রব্যট দক্ষিণ আজিকার আমদানী করা হইতেছে। এইত গাৰী হ:খের সহিত বলেন বে. দক্ষিণ আফ্রিকাছ ভারত-বাসীরাই দক্ষিণ আফ্রিকার বিরুদ্ধে বাণিক্যিক বিবি-নিষেধ ভাৱী করিতে অভুরোধ করিয়াছিলেন, অধচ সেই ভারত-বাসীরাই নিবেৰাজা লব্দনের অপরাবে অপরাবী। কারণ নিবেৰাজা এড়াইয়া ভাষাৱাও দক্ষিণ আফ্রিকার প্রচুর পণ্যক্রব্য আমলানী করিরা বাকে। স্বভরাং বে উদ্বেক্ত নিবেবাজা ভাৱী হইৱাছিল ভাষা এইভাবে ব্যৰ্থ ভৱিৱা বেওৱা, হইভেছে এবং নিৰেৰাজা নিৱৰ্ণক বলিৱাই প্ৰতীৱহান হয়। ভারভ বর্তমানে নিজেই বছবিধ সমভার বিব্রভ। এই অবছার দক্ষিণ আফ্রিকাছিত ভারতবাসীদিগকে নিজেবের বৃক্তির ক্র নিজেবের শক্তির উপরই বে নির্ভন্ন করিতে হইবে, ভাহা ক্রমেই পাই হইরা উঠিভেছে। বভক্ষণ পর্যন্ত বৃচ্চেতা নেতার অভাব হুর না হইবে এবং সম্ভিসন্সর ভারতীরদের মধ্যে ত্যাগের মনোয়ভি দেশা না দিবে, ততক্ষণ এই উচ্চের্ড নিছ হইবে না।

#### ইন্দোনেশিয়ার উপর ডাচ আক্রমণ

সন্ধিলিত জাতিসজ্ঞের কার্য্যনির্ব্বাহক কমিট (Security Council) ইন্সোনেশিরার উপর তাচ সামাল্যবাদের আক্রমণ উপলক্ষে যে কেলেডারির স্কৃট্ট করিল তারপর কোন জাতি বা রাই আত্মস্থান রকার জত এই সজ্ঞের উপর নির্ভ্তর করিতে তরসা পাইবে না। বিংশ শতান্ধীর প্রথম মহার্ছের পর যে জাতিসজ্ঞ (League of Nations) প্রতিষ্ঠিত হব তাহার দশা প্রাপ্ত হতে এই সন্ধিলিত জাতিসজ্ঞের আর বেশী দিন বিলম্ব হইবে না। তাহার জত্ত হা-হতাশ করিরা লাভ নাই। বর্ত্তমান পাশ্চাত্য সমাজ এবনও ক্ষমতার সন্থাবহার করিতে শিবে নাই। ওভবুদ্ধির প্রেরণার বিশ্ব-মৈত্রার কলনা প্রচার হইরাছিল ভারতবর্ষ হইতে। তিন-চার হাজার বংসর পরে মানব সমাজ জান-বিজ্ঞানে বলীয়ান হইরাও ভদাহ্যারী আচরণ করিতে শিবিল না। বুক্তিতে হইবে আমাদের কপালে আরও হঃব আছে।

পত ৩।৪ঠা পৌষ ভাচ সৈত্ৰ-াছিনী ইন্দোনেশিয়ার সাবারণ ভথ্তের উপর পুনরার আক্রমণ চালায় ১৬৷১৭ মাস সন্ধি-শাভির ১৯৪৫ এটাব্দের ১৭ই আগই এই সাধারণ-তন্ত্রের প্রতিষ্ঠা হয়: জাপানীরা নিজের ক্ষমতা সাধারণ-তন্তের হাতে সমর্পণ করে। "বিজয়ী সৈতবাছিনী যথন এই গ্রীপপুঞ্জ আগমন করে, তথন তাহারা এই ক্ষতা হস্তান্তরের ব্যবস্থা শীকার করিয়া লয়: তাহারা সাধারণ-তন্ত্রের মন্ত্রিমঞ্জী, তাহার শাসন-প্রতিষ্ঠানসমূহ ও কর্মচারিয়ন্দের সহিত সম্পর্ক বজায় রাধিয়া **চলে: ভাণাদের সহিত অকুঠ সহযোগিতা ক্রিয়া চলে।**" এই বীক্তটি সন্ধিলিত জাতিসজের (Good Offices Committee) ইন্দোনেশিয়ার সাধারণ-ভন্ত ও ডাচ প্রন্তেতির মব্যে সদিক্ষা স্থাপনের উক্তেঞ্চ প্রতিষ্ঠিত কমিটর গত ১৮ই নভেম্বরে লিখিত বিবরণ হইতে উদ্ধুত করা হইল। এই বিবরণের অভাভ অংশ পভিয়া এই কথা বুৱা যায় যে, ডাচ সাৰাজ্যবাদীরা ইন্দোনেশিয়ার উপর তাহাদের শাসন পুন:-প্রতিষ্ঠা করিতে চার। এই উদ্বেশ্ত তাহারা মাছুরা, পূর্ব স্থাৰা ও পশ্চিম ভাডায় কতক্ত্ৰলি তাঁবেদার শাসন-তন্ত্র প্রতিষ্ঠা করিরাছে এবং ডাচদের রাণী ছুলিয়ানা অভর্কর্তী-কালীন শাসনব্যবস্থা সম্বন্ধে যে খোষণা করিয়াছেন ভাহার मर्द्या रेट्यानियांत्र जायांत्र-छट्यत कान द्वान नारे : वर्षमान আক্রমণের উদ্ভেশ্ত ভাহাই। এই কথাটা উপরোক্ত কমিটর বিবরণের <sup>9</sup>মধ্যেও পাওরা যার।

স্থিলিত ছাতিসংশ্ব কার্য্যকরী স্থিতি টালবাহানা ক্রিয়া তাচ আক্রমণকারীর প্রথা করিয়া বিতেছে; সাধারণ-তরের সীমানার মধ্যে চুকিয়া তাহারা সাধারণ তরের শাসন-ব্যবহাকে পছু ক্রিয়া বিতেছে। স্থিলিত ছাতিসংশ্বর নেতৃ-রন্থের ইছা বাক্তিল হুই-এক হিনের মধ্যে এরণ অভার,আক্রমণ ব্য হুইতে পারে। এই ক্রা ছানে ব্লিয়া এশিরার শত পোট লোক স্থিলিত ছাতিসংশ্বের উপর বিধাস হারাইবা

কেলিতেছে। ভারতরাট্রের প্রধানমন্ত্রী এশিরার রাইসবৃদ্ধর
সন্মেলন আহ্বান করিরা তাহার প্রতিকার চেটার অপ্রবী
হইরাছেন। খেত-ভাতির রাইসবৃদ্ধের কোন কোন সংবাদপত্র
এই ধ্রা তুলিরাহে যে, এই সন্মেলনের ফলে খেত ও অখেত
ভাতির মধ্যে বিরোধ ও বিত্ঞা বাডিরা বাইবে। এই
অভুগতের বৃল্য দিলে খেত-ভাতির শাসন ও শোষ্ণ ক্রমন্ত
বন্ধ হইবে না।

আবেরিকার মুক্তরাই ও বিটেন এই বিষয়ে বেশ একটা শেলা পেলিতেছে। কারণ উভরেই খেত-জাতির প্রাথাত ছাপনে বা পুন:প্রতিষ্ঠায় আগ্রহণীল। করাসী জাতি প্রায় চারি বংসর হুইতে ভিমেটনাম সাবারণ-তল্পের উপর আক্রমণ চালাইয়া করাসীর প্রাণ ও অর্থ নাই করি-তেছে। আবার এদিকে মুক্তরাই উছিলের টাকা যোগাইতেছে বিগত মহামুদ্ধনিত হংগের ক্ষতি পরিপুরণ করিতে। ভাছ্মারী মাসের "মভার্ণ রিভিত্ব" পত্রিকায় একথানি মার্কিণ পত্রিকা হুইতে এই সহছে একট সংবাদ প্রকাশিত হুইয়াছে। পত্রিকা থানির নান "ইউনাইটেড টেটস্ নিউক" (United States News)। মুক্তরাষ্ট্রের সাহায্যের গুণগানে আমরা অনেক ক্ষা শুনিতে পাই। মুক্তর ক্ষাটাও শুনিরা রাখিলে ভাল হুইবে।

"যুক্তরাষ্ট্রের সাহাব্য হুইতে প্রার সাড়ে এগার কোটি
টাকার স্তব্যসন্থার ইন্সোচীনের প্ররোজনে হানান্থরিত
করিবার অন্থাতি পাওয়। গিরাছে। করানী সামাজ্যবাদীরা আবার ইন্সোচীন জয় করিবার চেটা করিতেছে।"
"সেইরূপে, ডাচ গবর্ষে প্রায় আঠার কোটি টাকার
স্তব্যসন্থার ইন্সোনেশিরার সেই সেই অঞ্চল পাঠাইতে
যুক্তরাষ্ট্রের অন্থাতি পাইরাছে, যে বে অঞ্চল ভাহারা
পুনর্ষকার করিতে সক্ষম হুইয়াছে।"

এই সংবাদ ছুইটির মধ্যেই ইংরেক ও মার্কিণ দেশবাসীর শাসক-সম্প্রদায়ের মনোডাব স্পষ্ট করিয়া দেখিতে পাওরা যার। সন্ধিনিত কাতিসক্ষ এখনও তাহাদের হাত-ধরা।

#### বৌদ্ধযুগের স্মৃতি

১৩।১৪ কাছ্যারী ভারতরাষ্ট্রের প্রধান মন্ত্রীর নেতৃত্বে বে উৎসব অক্টিত হুইবে তাহা আমাদের মনকে ২,৫০০ বংসরের পূর্ক-ইতিহাগের দিকে লইয়া যায়। বৃদ্ধ-শরীরে যে বিশ্বশিক্ত দিকে আবিত্বতি হুইয়াইলেন, কণিলাবজ্ব নগরীর রাজপ্রাসাদে ক্রপ্রকণ করিয়াহিলেন, প্ররা পাহাড়ে যিনি বিশ্ব সভ্যের সন্থান পাইয়াহিলেন, স্বর্ধ-হুংবের রহজ্যের মধ্যে মুক্তির উপার বরিতে পারিয়াহিলেন, ভারতবর্ধের সেই পূতস্থতি মনোলগতে উজ্জল হুইয়া উঠিবে। বৃদ্ধদেবের ছুই ক্রন শিক্তের অহি সিংহল ক্রেণ হুইতে কলিকাভার বন্ধরে আসিরা পৌহিয়াহে। তুপাল রাজ্যের সাফিত্ব প হুইতে ইহা বিলাতে নীত হুইয়াহিল। আবা তাহা বৌহবর্শের উৎপঞ্জিয়ানে ক্রিরা আসিরাহে এবং পতিত ক্রাহ্রলাল নেহর ভারতবর্ধের পক্ষ হুইতে ভাহা বহুব করিবন। আবাদের পৌরব যে, আবাদের দেশ এই সৌভাগ্য ও সন্থানের অবিকারী হুইরাহে। ভারতবর্ধ হুইতে ভাগার পর্যান্ত বিরাচী ভূবত বৌহ ক্রিছের বন্ধনে আবা।

আছ সেই সহছের মাহাত্ম সূত্র করিয়া আমাংগর মনে কাপ্রত হইবে।

বুছদেবের এই ছই প্রধান শিশু শারিপুর ও মোগ্রালান ; এ বিষয়ে গভ পৌষ সংখ্যার প্রবাসীতে একটি প্রবন্ধ প্রকাশিত হইরাছে।

### "নেতাজী"

ভাগামী ২৩শে জাত্মারী ১০ই মাঘ নেতালী প্রভাষচন্ত্রের তিপ্লান কথ-দিবস উপলক্ষে দেশবাসী নানা আহোজন করিতে-ছেন: তিপ্লার বংগর পূর্বে ঐ দিবসে যে মানব-শিশু এক বাঙালী ম্বাবিন্ত পরিবারে জ্যাগ্রহণ করিয়াছিলেন, তাঁহার কীন্তি-কথার পৃথিবীব্যাপী খাবীনতাকামী নরনারী মুগে মুগে জ্প্রাণিত হইবে; নিজের ও জাতির আয়ুসম্মান রক্ষা করিবার সংগ্রামে উৎসাহিত হইবে।

ইংরেজ আমলে বাঙালী নানা বিষয়ে জাপনার শক্তির পরিচর দিরাছে। কিছ সুভাষচল্রের মধ্যে বাঙালীর যে মৃষ্টি প্রকট হইরাছে ভাহা অভ্তপূর্ম। তাঁহার পূর্ব্মে বাঙালী বিপ্লবী দেশের থাবীনভার জভ প্রাণ দিয়াছে; কানন-কাল্বার অভিক্রম করিরা অনিক্রমভার মধ্যে বাঁপাইয়া পভিরাছে। কিছ বিদেশী আসক-সম্প্রদারের হাভ হইতে দেশের থাবীনভা উভার করিবার জভ কেহই রপক্ষেত্রে সৈত-পরিচালনা করেন নাই। সুভাষচল্রের কর্মনীবন বাঙালী ও ভারভবাসীর জীবনে অমর আন্তর্শের প্রতিঠা করিয়াছে। এই আদর্শের পরিপ্রেক্ষিতে ভারভরাক্রের সমস্ভ কার্য্যকলাপের বিচার হইবে। সর্ব্বন্ধিনের কর্মনার বিভার হাইবে। সর্ব্বন্ধিনের কর্মনার বিভার হাইবে। সর্ব্বন্ধিনের ক্ষাবনাদর্শ, জাহার সংগঠন শক্তি অম্ব্রুত্রীয় হইরা থাকিবে।

এরপ মহান্ কীর্ত্ত কোটি লোকের মধ্যে এক জন যাত্র হাপন করিতে পারেন। চল্লিশ কোটি ভারতবাসীর মধ্যে এক জন লোকই "নেতাজী" হটয়াছেন, যেমন এক জন ভারতবাসী মাত্র "মহাত্মা"-রূপে শত শত কোটি লোকের, দেশী, বিদেশীর, শ্রহা পাইতেছেন। এই কথা অরণ করিয়া আমরা আগামী ২৩শে কাছ্যারীর উৎসবে যোগদান করিব।

### সৈয়দ আবতুল্লা ব্ৰেলভি

ষাট বংসর পূর্ণ না হইডেই ভারতবর্বের এক জম সাংবাদিকপ্রধান দেহত্যাগ করিলেন। বে সাধ্রবাদিক জীবন আরম্ভ
হুইরাছিল পরলোকগত বেঞ্চামিন হনিম্যানের শিষারূপে
"বোহে জ্রনিক্লের" সেবার, ভার পরিণতি লাভ হুইরাছিল
"বোহে জ্রনিক্লের" সম্পাদক রূপে। ১৯১৫-১৯৪৯ বাঃ এই
চৌত্রিশ বংসর সাংবাদিক জীবনের মবো আবহুরা ব্রেলভি
ভাতি-বর্ণ-বর্শ্ব-বিনিক্লেবে দশের সেবা করিবাছেন; মুসলিম
লীরের স্থি-ভাতি" ভত্তের বিরোধিতা করিতে গিয়া তিনি
ব্যানাক্রের হতে অনেক অপনান সন্থ করিবাছিলেন। কিছ
বিশ্বানে আইল গাভিয়া তিনি এই সব নির্বাতন নীরবে সন্থ
ভাতিবাছের ও তানিবাছি ভারতবাটের তাক কমিশনের সভাপতি

ত্রীগগদবিহারী মেহ টার পিভার পরিবারের আবেইনের মধ্যে তিনি লালিত-পালিত হইয়াছিলেন; সেই পরিবারের পুত্রের মতই তিনি শিক্ষা-দীক্ষা লাভ করিরাছিলেন। সেই পরিবারে আবহুরা রেলভির ধর্মণতের প্রতি প্রদা ছিল বলিয়াই ইহা সন্তব হইয়াছিল। ভারত-ইভিহাসের এই মহান্ ঐতিহ্বের কথা ভূলিয়াই ভারতবর্ষের মুসলমান সমান্ধ বিল্লান্থ হইয়াছিল; আবও সে সমীর্ণ মনোভাব আহে বলিয়াই ভারতবর্ষের বিদেশী ও খদেশী শত্রুমওলী ভারতরাইের অনিষ্ট সাধনার রভ আছে। আবহুলা রেলভি জীবিত থাকিলে এই শত্রুবর্গের নানা চক্রান্থ যাথা তুলিভে পারিত না। "বোবে ক্রনিক্লের" সম্পাদক্ষের সদান্ধান্তত মন ভাহার বিরুদ্ধে সংগ্রাম করিত। ভাহার অবর্ত্তমানে সেই অভাব বৃত্তন করিয়া অমুভব করিভেছি। ভাহার আত্মান্ত আছিত লোক প্রাপ্ত হউক।

### জাহিদ শোহরাওয়ার্দ্দি

অবিভক্ত বৃদ্ধেশের প্রধানমন্ত্রী ছলেন শহীদ শোহরাওয়াহিব
পিতা জাহিদ শোহরাওয়াহি পরিণত ব্যবে দেহত্যার
করিয়াহেন। তাঁহার মুড়াতে বাঙালী সমাক মুসলিম ঐতিহের
এক জন গণামাত প্রতিনিধিকে হারাইল। যে সমহরচেষ্টা তাঁহার জীবনে কুটরা উঠিয়াহিল, তাহা আরু ধূলার
সূটাইতেহে; এই দৃষ্ঠ তাঁহার প্রীতিপদ ছিল না। কিছ
তাহাও তাঁহাকে দেখিয়া যাইতে হইয়াছে। সমাকরত জীবনে
যেমন তাহা মর্লাভিক ছঃও দিতেহে, ব্যক্তিরত জীবনেও তাহা
সেইয়প কই দিয়াছে। ডক্তের মন দিয়া আহিদ শোহরাওয়াহি
এই অভিজ্ঞতার নির্ভূরতা সন্থ করিয়াহেন। আমরা তাঁহার
স্থাতির উল্লেশ প্রহান্ত্রিল অর্পণ করিতেছি।

### প্রমথনাথ রায় চৌধুরী

মরমনসিংহের অন্তর্গত টালাইলের অনিলার প্রমণনাথ রার চৌধুনীর দেহত্যাগে বল-বাদীর একনিঠ সাধক এক জন আমাদের মধ্য হইতে চলিরা গেলেন। এই নীরব বাদী-পুলার চিহ্ন আজ বাঙালীর চোঝে পড়ে মা। কিন্তু ৪০ বংসর পুর্ব্বে বিজেলাল প্রমুখ সাহিত্যসেবীর সলে প্রমণনাথ রার চৌধুনীর নাম করা হইত। "পলা", "গৌরাল", "চিভোর-উভার" প্রভৃতি কাবা ও নাইকে, "রূপসী পলীবাসিনী" প্রভৃতি গানে, প্রমণনাথের ভাব-রাজ্যের পরিচর পাওরা হাইত। রদেশী ও বল-ভল আন্দোলমের রুগে "নম-বল্লুমি প্রামাদিনী, মূগে রুগে জননী লোক-পালিনী"—"ওজ্বিন প্রমাদিনী, মূগে রুগে জননী লোক-পালিনী"—"ওজ্বেন ক্রম"—এরপ রান কর্টি লিখিরা প্রমণনাথ স্বহুৎ লোকসমাজে প্রথম পরিচিত হইরাভিলেন। কিন্তু তাঁহার প্রকৃতি ভিল নীরবতা-পিরাসী; লোকের নিলা প্রশংসার বাহিরে থাকিয়া ভিনি সাহিত্য-সাধ্যা করিয়া গিরাহেন।

প্রমধনাথ রার চৌধুৰী আছ-সমাহিত জীবন জাটাইরা পরিণত বরসে লোকাছর গমন করিরাছেন। তাঁহার পরিবার-বর্গের প্রতি আমরা সম্বেহনা আপন করিতেই।

### বেত্স-লতা

### জীযোগেশচন্দ্র রায়, বিন্তানিতি

কানিদান, ভবভূতি ও জয়দেব বেতস-লতার উল্লেখ করিয়া- াা বেত্ত বালন ই ক্ল এইয়াছিল ছেন। বেত্তসলতা কেমন লতা পু

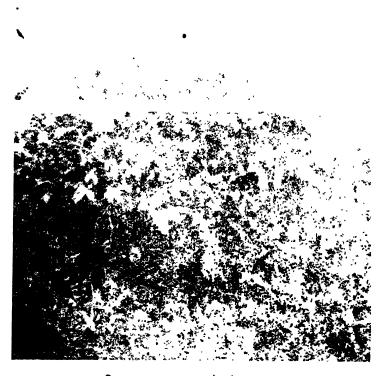
কালিদাসের শকুওলা-নাটকে (তৃঙীয় অঙ্কে) 'বেতসপরিশিধ্যে লতামণ্ডপে'---বেত্রসম্বারা পরিবেটিত ক্তামগুপ শকুন্তলা ও রাজা চুম্মন্ত খালাপ করিয়াছিলেন। রাজা তুমত 'বেত্নগৃহ'<sup>°</sup> হইতে নিক্ৰান্ত হইয়াছিলেন। বুগুবংশে (১৩,৩৫) রামচন্দ্র লক্ষা জয় করিয়া অযোধ্যা প্রভাগবর্তনকালে সীভাকে বলিতেছেন, "আমার স্মরণ হইতেছে ঐ গোদাবরীতীরে পঞ্চবটী বনে মুগ্রায় পরিপ্রান্ত হইয়া 'বানীর গুহে' তোমার কোড়ে মন্তক রাখিয়া নিদা যাইতাম।" 'বানীর গৃহেষু স্বপ্রঃ'। (বানীর বেতসের **এक नाम )।** जहारमद्वत्र शी ज्यानितम কৃষ্ণ গোপাপনাদের সহিত 'মঞ্ল-বঞ্লকুঞে' (১ম দর্গ) বিহার করিতেন-হৃদর বেত্দকুঞ্চে। (বঞ্জুল বেতদের এক নাম)। অন্ত স্থানে 'কোকিল-কৃজিত-কুল-কুটারে', দে কুল কুটারতুল্য।

এই কমেণটি উল্লেখ হইতে জানি-তেছি বেতদ এক প্ৰকার স্থূল লতা। এই লভা বিস্তৃত হইয়া স্বভাবতঃ গৃহ

সদৃশ হইত। সে গৃহে লোকে স্বচ্ছনে প্রবেশ করিতে ও তথা হইতে বাহিরে আসিতে পারিত। সে গৃহে কেহ বসিলে বাহির ইইতে তাহাকে দেখিতে পাওয়া যাইত না। সে গৃহ এত বড় হইত যে তাহাতে অস্ততঃ পাচ-ছয় জন স্বচ্ছনে দাঁড়াইতে ও শুইতে পারিত। এই গৃহই লতাকুঞ্জ।

খনবকোশে লতা হুই প্রকার,— >। বন্ধী তু ব্রত্তী-লতা, বে লতা খাঞারতক বেষ্টন করিয়া উঠে, বেমন খণবাজিতা। ২। লতা প্রতানিনী, বে লতা প্রতান-খারা আশ্রয়তককে ধরিয়া উঠে, বেমন কুমাও। আর এক প্রকার লতা আছে, বে লতা ভূমি আশ্রয় করিয়া বিস্তৃত ইয়, বেমন দুর্বা। এই লতা ভূপদী, ইংরেজীতে ইহাই creeper; খার, বন্ধী ও প্রতানিনী ইংরেজীতে climber.

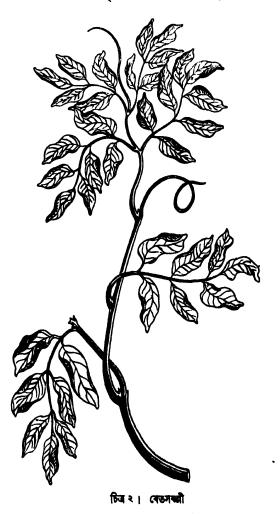
ক্ষ ঋষির আশ্রম-সন্ধিধানে মালিনী নদীর তীরে বেতস-শতা-গৃহ ছিল। সেধানে কোন কর্মকার গৃহ নির্মাণ করে



চিত্র ১। বেতসকুঞ্জ। (ফোটো হইতে)

গৃহ ও যন্নাকলে কঞ্জ-কুনির সভাবতঃ উংপন্ন হইনা ছিল।
অতএব বেতংলতা প্রতানিনী নয়, বলা। অনরকোণে
"নিকুঞ্জ কুঞাে বা ক্লীবে লতা দিপিছিতোদের"—কুঞ্জ বা
নিকুঞ্জ লতাদি ছারা আচ্চাদিত উদর। উদর শূল্যপান,
গৃহ। জালদের কুটার বলিয়াতেন। কুটার পর্ণশালা, কুঞ্জ জতাপাতাছারা নিনিত, অতএব কুটার বটে। লতা বাতীত
লতাতুলা লখিত শাখাধারাও কুঞ্জ ইইতে পারে। নেঘলতে
জার্ক্ আছে। এই জন্ম আনাদের পরিচিত জান্ধ লাম
হইতে পারে না। ইহা ভূমিজন্ব। ইহার বৈজ্ঞানিক নাম
Ardisia humals, বাংলায় বনজান বা কাদাজান।
ভূমিজন্ম ছোট গাছ। আর্ল ভূমিতে এক জ জন্ম। নেঘদ্তেও জার্ক্ নদীকুলে ছিল। দীর্ঘপত্র-যুক্ত শাখা ঝুলিয়া
পড়ে। ভূমিজন্ম ছারা কুঞ্জ হয় বটে, কিছু মন্তন্ম থাকিলে
বাহির হইতে দেখিতে পাওয়া যায়। মন্তপ্, অমরকোশে
অর্থ জনাশ্রম, বেখানে অনেক লোকে বিশ্রাম করিতে

পারে। ইহাতে শুম্বের উপরে চাল থাকে, চারিদিকে ভিত্তি থাকে না, যেমন জাটচালা। মগুপে ভিত্তি না থাকাতে চারিদিক হইতেই প্রবেশ করিতে পারা যায়। দীর্ঘ-শাখা-প্রসারী বটরক্ষকে বটমগুপ বলা যাইতে পারে।



বটের শাধা বাঁকিয়া ভূমিতল পর্যন্ত আদিলে কুঞ্জ হইতে পারিত। কালিদাসের ল্ডামগুণ বেডস-পরিবেটিত ছিল, সেই হেতু সে মগুণ কুঞ্জ হইয়াছিল।

বেতনে মুখ্য তুই প্রকাবে হইতে পারে। বেতনের নিকট ব্রস্থ তক্ষ থাকিছেল লভা ভাহাতে উঠিয়া শাখা-প্রশাধা বিতাব করিয়া ও পরক্ষাধার জড়াইয়া লভার চালা হইয়া শাখা বাঁকিয়া ভূমি পর্বস্থ বুলিতে থাকিলে কুঞ্চ হইবে। অথবা, বেতন কিছু উচ্চ হইক্ষা দাড়াইতে পারে এবং ইহার শাখা-প্রশাধা পরক্ষার অর্থ গাইয়া চাল করিয়া ঝুলিতে পারে। কাব্যপ্রকাশে এক প্রানি ক্ষাক্ষাক্ষে "রেবা রোধনি বেতনী-ভক্তলে চেডঃ সমুহক্ষী তে."—রেবা, নর্মদা নদীর ভটে

বেডস ডক্লডলে—এথানে বেডসকে ডক্ল বলা হই অতএব বেডস নিজে নিজেই দাঁড়াইডে পারে, কিছ উচ্চ হইডে পারে না।

় বেতস নদীক্লে জন্মে, জলসন্নিধানেও জন্মে। দ নাটকে বিদ্যকের দৃষ্টাস্তে পাইতেছি, বেতসের লখিত নদীজলে পড়িয়া নদীবেগে কুজভাব ধারণ করে। নদীক্ল হইতে দ্বে বনেও জন্মে। মেঘদ্তে আভ 'সরম' নিচুল ছিল। (নিচুল বেতসের এক নাম)। গ্রীয়া, তথাপি বেতস সরস ছিল।

এই কয়েকটি প্রয়োগ হইতে জানিতেছি, বেতদ উৎপত্তির পর কিয়দংশ দৃঢ় ও স্থল হইয়া তক্তর গ ধরে। পরে শাখা পরস্পর জড়াইয়া চালের মত হং সেখান হইতে চারিদিকে ঝুলিতে থাকে। এইরূপে কুঞ্জ হয়। কুঞ্জ ইংরেজীতে grove নয়, arbour।

আশ্চর্বের বিষয়, এমন কৃঞ্জ-লতাকে পণ্ডিতের মনে করিয়াছেন। বেত বলী বটে কিছু কদাপি কৃঞ্জ দেখা যায় না। বেত কণ্টকী, ঝোপের মত হয়। কেছ তাহার কাঁটায় বিদ্ধ হইতে চায় না। বেত গ্রুমের গাছ। ইহার অনেক জাতি আছে। কিছু জাতিই কণ্টকী। অন্ত লক্ষণ না দেখিয়াও ছু বলিতে পারা যায়, বেতস কদাপি বেত অর্পাৎ বেত্র পারে না। বেত্রের বৈজ্ঞানিক গণ-নাম Calamus

আমি আমার বালালা শব্দকোশে সেই ভূল করিবানে লিখিয়াছি, বাংলা বেড, সংস্কৃত বেডস, দ্বাক্ষ্ণত বেডা। কিন্তু বেজ অর্বাচীন সংস্কৃত নয়। কে অর্থশাম্মে বলীর উলাহরণে বেজ নাম আছে। রাধ্নামক বৈছক কোশে (পঞ্চলশ আটি শতাব্দ) বেবেজের নামান্তর হইয়াছে। কিন্তু বেজ ও বেডার বর্ণিত হইয়াছে। বৃহদ্-ধর্ম পুরাণে (৭।৪২) একই বেজ ও বেডারের উল্লেখ আছে,—"বেজকীচকান্বিতান্যান্য ইত্যাদি। এই পুরাণ বর্ধমান জেলার পূর্বাংশে গলার নিক্টবর্তী কোন স্থানে চতুর্দশ আটি প্রবীত হইয়াছিল। অভএব বেডার ও বেজ এক গা

অমরকোশের টীকার বন্ধদেশীয় ভরতমন্ত্রিক :
ব্রীষ্ট শতাব্দ) বেতসের ভাষা নাম 'বরসা' নিষি
শব্দ-কর্ম-ক্রমে এই নাম উদ্ধৃত হইয়াছে। তির্গি
করেন নাই। শতাধিক বর্ব পূর্বে কোলক্রক সাহেই
অমরকোশে বেতসের ভাষা নাম 'বরস' ও 'বেঁড'
ছিলেন। অতএব এই সময় হইতে বন্ধদেশে প্র
বেতসকে বেত ভাবিতে আরম্ভ করিয়াছেন
মহারাষ্ট্র দেশীয় ভাছতি বীক্ষিত (সপ্রদশ্ বীট

অমর-চীকার বেতসের ভাষানাম 'বেত' লিখিয়াছেন। পাশ্চান্তা বিশ্বানেরাও এই ভূল করিয়াছেন। একণে ভারতের সর্বত্র সংস্কৃত-পণ্ডিতেরা বেতসকে বেত মনে করিতেছেন। কাহারও কাহারও এই অম বন্ধুল হইয়াছে, ভাইারা বেত্র ছাড়িতে পারেন না। একটা উদাহরণ দিই। আয়ুর্বেদে বেতস এক ঔষধ। চরক, স্কৃত্রত, ভাবপ্রকাশ প্রভৃতি বৈশ্বক গ্রন্থে ইহার উল্লেখ আছে। কবিরাজ বির্জাচরণ শুগু তাহার 'বনৌষধি দর্পণে' লিখিয়াছেন, বেতস বেত্র নহে, বেতস হিজ্জালের ভূল্য বৃক্ষ। তথাপি তিনি বেতস ও বেত্র একসন্থে লিখিয়া বৈজ্ঞানিক নামে বেত্র করিয়া ফেলিয়াছেন। একবার সংস্কার জন্মিলে ভাহা অজ্ঞাতসারে চলিয়া আসে। কিছ্ক ভাইার 'বনৌষধি দর্পণ' পড়িয়াই বেতস বে বেত্র নয়, ভাহা বৃরিয়াছিলাম।

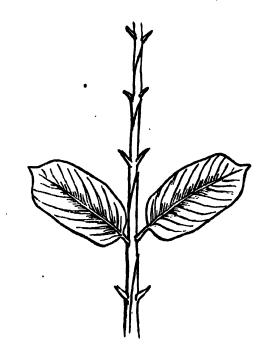
বাঁকু দায় একটা লভা পাইয়াছি। ভাষা বেভদ মনে করি। ছুই বংসরের অধিক হুইল, এক দিন এক যুবকের সহিত কথায়-কথায় বলিয়াছিলাম,—"বাঁকুড়ায় বেতগাছ নাই।" দে আন্তর্গ হইয়া বলিয়াছিল,—"আমাদের গ্রামের পাশ দিয়া শিলাই নদী বহিতেছে, নদীতীরে অসংখ্য বেতের ঝোপ আছে। বত দ্ব দৃষ্টি চলে তত দ্ব দেবিতে পাওয়া যায়। আমরা বেত কাটিয়া জালন করি; গোড়া হইতে আবার গজায়। অপর পারের লোকেরা শিকডও উপড়াইয়া জালন করিত। সে পারে একটিও বেত গাছ নাই। শীতকালে বেতের ফুল হয়, আমরা সে ফুলে সরস্বতী পূজা कति। शाइखनि भाग कूल खुन्दद प्रथाय। दर्शकाल নদীব্দলে নীচের খানিকটা ভূবিয়া যায়, তখন মনে হয় জলে জন্মিয়াছে। নদীকুল হইতে দূরে জললেও অগণ্য বেত গাছ আছে। ডোম আর সাঁওতালেরা বেতের ঝুড়ি বুনে।" আমি শুনিয়া অবাক। ইহা কি রকম বেড। লোকে জালন করে, গাছে কাঁটা নাই, শীতকালে ফুল হয়, ফুল শাদা !

**"কে এই গাছকে বেত বলে ?"** 

"আমরা [ রান্ধণেরা ] বেত বলি। বাপ-পিতামহের মুখে মুখে ভনিয়া আসিতেছি, বাহারা ঝুড়ি বুনে তাহারাও বেতের ঝুড়ি বলে।"

সেই অঞ্চলের আর এঁক যুবক অল্প-স্থল চিত্র নিথিতে পারিত। সে এই বেতগাছের চিত্র নিথিয়া দিয়ছিল। দেখিতে একটা বৃহৎ ছত্র। চারিদিকে ঝালর ঝুলিতেছে। মনে হইল একটি বৃক্ষখণ্ডপ। আর, সঙ্গে সলে মনে আদিল 'বেতসলতা মণ্ডপ'। চিত্রটি এত স্থঠাম বে স্বাভাবিক কোন গাছের মনে হইল না। পরে শুনিলাম, অন্ত লোকে এই গাছকে 'আট'াড়ী' বলে।

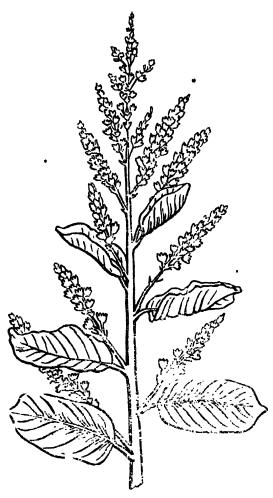
তথন গ্রীমকাল। আমি বাকুড়া ডিট্রিক্টের ইঞ্জিনীয়র সদা-উৎসাহী শ্রীতারাপ্রসন্ন বন্দ্যোপাধ্যায়কে এই আটাড়ী সম্বন্ধে অনুসন্ধান করিতে অন্থরোধ করি। তিনি পূর্বে কথনও আটাড়ী গাছ দেখেন নাই। শুনিলেন, এক জন্মলে



চিত্র ৩। বেতসপত্র

আছে। নিকটস্থ এক গ্রামবাসীকে লইয়া তিনি দেখিতে श्रालन । अन्न निक्रिवर्जी इहेरल जिनि वनिरनन, "क्हे আট'াড়ী ?" লোকটি বলিল, "এ বে ছলছে।" তিনি আশ্চর্য হইয়া দেখিলেন সাপের মত লভা ঝুলিতেছে, বাতাস ৰাই তব চলিতেছে। আব এক স্থানে একটা বড় ঝোপ দেখিলেন। সাপের মত লতা উপর হইতে নীচে নামিয়া মাটির উপর দিয়া অনেক দূর পর্যস্ত চলিয়া গিয়াছে। তিনি ভিতরে ঢ়কিলেন। তথন গ্রীমকাল। তিনি দেখিলেন ঝোপের ভিতর শুন্য স্থান, শীতল। আট'ণভীর অসংখ্য শাখা-প্রশাখা প্রস্পর বড়াইয়া উপরে চাল হইয়াছে এবং কতক শাখা দীর্ঘ হইয়া মাটিতে ঠেকি-ষাছে। আর এক স্থানে দেখিলেন, একটা আটাড়ী ছোট গাছে উঠিয়া ভাহাকে আবৃত কবিয়া একটি স্থন্দর কুটীর করিয়াছে। দেখানে পাঁচ-সাত জন লোক দাঁড়াইতে ও ভইতে পারে। ক্রমে শীতকাল আসিয়া পড়িল। আটাডীর দুল ও ছুই-এক মাদ পরে ফলও পাইলাম।

এই লতা বৃহৎ দারুময় চিরপত্রক বল্লী। জ্বলের নিকটে ও ভক উচ্চ ভূমিতেও বহুশ: জ্বনে ইহার তরুণ শাধার অক্ পিঙ্গলবর্ণ। সহজে উন্মোচিত হয়। অন্ত:পর্ব নহ-দশ ইঞ্চি দীর্ঘ, শবের তুল্য। মজ্জা কোমল, আরক্তবর্ণ। শাধা চারিদিকে ঝুলিতে ও তুলিতে থাকে। পাতা অভি-মুশী, হুস্বরুম্ব। উপর পিঠ গাঢ় হরিদ্বর্গ, চার-পাঁচ ইঞ্চি



চিত্ৰ ৪। বেতসমঞ্চরী

দীর্ঘ, সমবিস্থার। পাতার অগ্র ক্ষুদ্র বাণের ফলার তুলা স্চ্যাকার। মঞ্জরীতে ছোট ছোট পাংশুবণ ঘন-সন্নিবিষ্ট স্থান্দ ফুল হয়। ফুলের মাঝে মাঝে হরিতাভ প্রায় এক ইঞ্চি দীর্ঘ পাতা হয়, দূর হইতে স্পষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়। ফুল পঞ্চদল, পুং-কেশর দলের গায়ে উপরে নীচে তুই সারিতে পাঁচ-পাঁচ দশ। গর্ভকোশ দলের নিয়ন্থ। ফল এক-বীজ, নীরস, পঞ্চপক্ষ, কামরাশার মত সমস্থল, এক ইঞ্চি দীর্ঘ। বাতাসে এই পক্ষ সাহায্যে ফল বছদ্বে বিক্ষিপ্ত হয়।

এই লভা ভারতের সকল প্রাদেশে নাই। আবার, যে যে প্রাদেশে আছে দে দে প্রাদেশের সর্বত্র নাই। পঞ্জাব, রাজপুতানা, মধ্যভারত, সিদ্ধু, সৌরাষ্ট্র, পশ্চিম ভারত ও গোদাবরীর দক্ষিণ ভাবতে নাই। আসাম গৌহাটিতে অপর্যাপ্ত আছে। আসামী নাম 'লতাচালি' বা 'শালি', অর্থাং লতার চালা বা শালা, কুটার। উত্তর বলে কালী-লতা রা কালীলহরা; বিহারে কোল ভাষায় নাম ফলাপ্ত, সাওতালী নাম আটেনা, গয়া জেলায় প্রচুর; উত্তর ভারতে, বেমন দেরাত্বনে, হিন্দী নাম রোহেলা। পশ্চিম বলের পশ্চিমাংশে (বাঁকুড়ায়) স্থানে স্থানে অপর্যাপ্ত, সাঁওতালী নাম আটেন, বাংলা আটাং, আটাঁড়ৌ, আঁতুড়ী। উড়িন্তায় ওড়িয়া নাম আতৃগু। মধ্য-প্রদেশে হিন্দী নাম গোবেলা, মরাঠা নাম পিবার বেল। এই লতার বৈজ্ঞানিক নাম Combretum decandrum, Roxb, আমি ইহাকেই বেতস মনে করি। বেতসের লক্ষণের সহিত মিলাইলেই দেগা যাইবে, বেতসের সংস্কৃত নামে সে সে লক্ষণ আছে।

অমরকোশে বেতদের সাতটি নাম আছে। আর,
অম্বেতসের চারিটি নাম আছে। অতাতা গ্রন্থে আরও
অনেক নাম আছে। ক্ষীরস্বামী কৃত অমরকোশের টীকা
পুরাতন (মধ্যপ্রদেশ, একাদশ খ্রীষ্টশতাক্ষ)। তাহার
টীকা পড়িলে মনে হয়, তিনি অম্বেতস দেখিয়াছিলেন।
মহারাষ্ট্রদেশীয় ভাফুজি দীক্ষিতের টীকা পড়িলে মনে হয়
তিনি বেতস দেখেন নাই। এই কারণে বেতসকে বেত
বিনিছেন। উপরিবর্গিত গাছটি না দেখিলে বেতুদের
সমুদয় নামের অর্থ বুবিতে পারা যাইত না। আমি এই
গাছের লক্ষণের সহিত মিলাইয়া নামের ধার্থ লিখিতেছি।
কোন একগানি টীকাতে এইরপ অর্থ পাওয়া যাইবে না।

- (১) বেত্স, -- সংস্কৃত বে ধাতু বয়নে। যে লতা পরস্পর জড়াইয়া দাড়ায় ও বাড়ে।
- (২) রথ,—বেতস দেখিতে রথের তুলা। একালের টোঙ্গা সেই রথ। টোঙ্গার উপরিভাগ কুর্ম-পৃষ্ঠ। চাল ইইতে চারিদিকে ঝালর ঝুলিতে থাকে। বেতস সেইরূপ।
- (৩) অভ্রপুষ্প,—অভ্র অভিশয় উচ্চ পাংশুবর্ণ মেছ। বেতদপুষ্প দেই বর্ণের।
  - (৪) বিহুল,—যে লতা সর্বদা ছলিতে থাকে।
- (৫) শীত,—বে লতা-ক্পের অভ্যন্তর শীতল। এই । কারণে শক্ষলার গাত্তের সন্তাপ উপশমের নিমিত্ত তাহাঁকে আশ্রমে না রাখিয়া বেতসকুল্পে আনা হইয়াছিল। তথন শ্রীম্বলা আরম্ভ হইয়াছে।
- (৬) বানীর,—বন্ধাত্র অনেক অর্থ আছে। এখানে কোন্ অর্থ গ্রাহ্ম তাহার নির্ণয় কঠিন। ক্ষীরস্বামীর মতে বন্ধাতু ভজনা; যে জল ভজনা করে, চায়। কিছা কারে

প্রয়োগ দেখিলে বানীর শব্দে স্থলবেতস ও জলবেতস ত্ই-ই বুঝায়। বোধ হয় বন্ধাতু সেবা। যে কুঞ্জারা মাত্র ও পশুর সেবা করে, আশ্রম-গৃহ রচনা করে।

(१) বঞ্ল,—বঞ্ল আর এক ত্রহ শক্ষ। এখানেও কীরস্থামী জল আনিয়াছেন। কিন্তু বঞ্ল শক্ষে অশোক ও তিনিশ (অক্স নাম ক্রন্দন) বৃক্ষও ব্রায়। তিন বৃক্ষের মধ্যে নিশ্চয় কোন বিষয়ে সাদৃষ্ঠ আছে। বোধ হয় বঞ্চ ধাতু বক্রগতি। ইহা হইতে বঞ্ল, যাহা বক্র! এই তিন বৃক্ষের কাণ্ড ঋজু হয় না, বক্র হয়।

এই সাত নাম স্থাবেতস ও জলবেতস, ছুই বেতসেই প্রযোজ্য। অমরকোশে আর চারিটি নাম কেবল জল-বেতসে প্রযোজ্য।

- (৮) অম্বেতন,—বে বেতন জলের নিকটে জয়ে। ইংগর অর্থ জলজাত নতে। হিজ্জলের এক নাম অম্বুল, বিশ্ব হিজ্জল গাছ ভলে জানু না, ক্ষাের নিকটে জয়ে।
- (৯) পরিব্যাধ,—পরি-ব্যধ্ধাতু ভাড়নে। যে **জল** দ্বাধা ভাড়িত হয়।

বিত্ল,—যাহার শাখা নদী-বেগে একবার সোজা হয়, একবার কুক্ত হয়।

ে । নাদেয়ী, — নদীকুলজাত। নাদেয়ী নদীজলজাত, এই অর্থ নয়। নাদেয়ী পজে ভূমিজস্থ ব্যায়। কিন্তু ভূমিজস্কাপি জলে জলোনা, আর্ডিয়ানে জলো।

অমরকোশে (১১) 'বেজস্বং' শব্দ আছে, বেস্থানে বছ বেতসলতা আছে; অর্থাণু বেতস্লতা বেখানে জ্বান সেখানে বছ স্থানে।

ক্ষীরহ্মমী চক্সকোশ হইতে বেতদের নাম তুলিয়াছেন। নূতন নামগুলি দেখিতেছি।

- (১২) নিচুল—নিচুল শব্দে হিজ্জলও ব্রায়। হিজল গাছের শাখা ঝুলিয়া পড়ে বেতসেরও পড়ে। মেঘদ্তে নিচুল শুক্জমিতেও 'দর্দ' দেখাইতোছল। টীকাকার এই নিচুল শব্দে স্থলবেতদ ব্রিয়াছেন, ঠিকই ব্রিয়াছেন।
- (১৩) নম,—যে লন্তা লন্থিত। রঘ্বংশে (৪।৩৫) ত্র্বল লাজ্বাণ প্রবল রাজার নিকট 'বৈত্সী বৃত্তি,' নমভাব অবলম্বন করিলেন।
  - (১৪) দীর্ঘ পত্রব—গাহার পত্র দীর্ঘ, অর্থাৎ সমবি**ন্তার**।
  - (>e) গন্ধপত্র—বোধহয় গন্ধপুষ্পক হইবে (পরে পশ্<u>র</u>)।
  - ( ७) ঘনপুষ্পক,—যাহার মঞ্জরী বহুপুষ্প।
- (১৭) সংবৃত,—লতার পল্লব দারা সম্পূর্ণ আচ্ছাদিত।
  কৌরস্বামীর টাকায় সভ্ত, সর্বানন্দের টাকায় সংবৃত
  আছে। এই পাঠই শুদ্ধ মনে হয়)। জলোকা, নদীক্লপ্রিয়, জলজাত, তোয়-কাম,—অর্থ স্পষ্ট।

ধন্বস্তুরীয় নিঘণ্ট নামে সংস্কৃত বৈশ্বক কোশে বেতদের নৃতন নাম---

(১৮) কলম,—বেতদের তরুণ নালের অন্তঃপর্ব দীর্ঘ ও শরের তুল্য। কাটিয়া কলম করিতে পারা যায়, বিদ্ধ ফাটিয়া যায়।



**डिव १। (बङ्ग क्ल** 

- (১৯) স্থাবেণ গ
- (২০) গদ্ধপুষ্ণক—বেতদের পুষ্ণ স্থবাদ। মালতী-মাধবে (৯) 'বানীর প্রসবৈঃ' ইত্যাদি, কুঞ্জের নিকটস্থ নদীর কল বেতসপুষ্ণ দারা স্থবাস হইয়াছে।
  - (২১) নিকু**শ্বক—-বেতদের কুঞ্চ প্র**সিদ্ধ।
- (২২) বাগভটে শল্য চিকিৎসায় এক শক্ষের নাম বৈত্তসপত্র' আছে। ইহা দেহের মাংস বিদ্ধ করিবার নিমিত্ত ব্যবহৃত হইত। অতএব বাণের তুল্য। বেতস-পত্রের অগ্রভাগ এইরূপ। এই সাদৃশ্যে শক্ষের নাম।
- (২৩) কোন্ ঋতুতে বেতদ পুলিত হয় ? বরাহমিছিরের বৃহং-দংহিতায় (৩°) বেতদ-পুলের প্রাচুর্য বা
  অপ্রাচুর্য দেখিয়া অতদীর (ভিদির) ফলন জানিবার উপদেশ
  আছে। ভিদি ফাস্কন মাদে পাকে। বেতদের ফুল
  নিশ্চয় ভাহার পূর্বে পৌষ মাঘ মাদে হয়। বামন পুরাণে
  (৬) বদস্ককালে নদীকূল বেতদকুহ্বম বাবা আচ্ছন্ন হইয়াছে।
  মালতীমাধ্বে আব্রন্ত পরে ফুটিয়াছে। দেখা বাইতেছে
  কলবায়ুর গুণে কোধান্ত শীত, কোধান্ত বদস্তে ও গ্রীমের
  আরস্তে বেতদের ফুল ফুটে।

বেতস কোন্ কোন্ প্রাদেশে ছিল, তাহা সংস্কৃত গ্রন্থে কিছু কিছু পাওয়া যায়। (১) পূর্বে দেখিয়াছি বৃহদ্-ধর্মপুরাণে বেতসের নাম আছে। এই পুরাণ বর্ধ মান জেলার উত্তর-পূর্বাংশে প্রণীত হইরাছিল। সেখানে বেতস থাকিবার কথা। কিছু কি নামে আছে তাহা জানিতে না পারিলে পুরাণোক্তির হারা কিছু পাইতেছি না। অমরকোশের বগীয় টীকাকার ভরতমন্ত্রিক (সপ্তদশ প্রীষ্টশতান্ধ) বেতসের ভাষা-নাম 'বয়সা' লিখিয়াছেন। বর্তনানে বয়সা থাকিকে বৃহদ্ধর্ম-পুরাণের নির্দেশিত স্থানে থাকিতে পারে, এই সন্তাবনার আমি স্কভাব-কবি প্রীকুস্বরন্ধন মন্তিককে লিখিয়া-

ছিলাম। তিনি লিখিলেন, তাহাঁদের অঞ্চলে ( মজলকোট) বয়সা আছে। সেটা লভা, লোকে চিনে। ছঃখের বিষয় সে 'বয়সা' বেভস নয়, অন্ত লভা। পরে আমি আটাডীর পাতা পাঠাইয়াছিলাম। সেখানকার একটি লোক দেখিয়া বয়দা বলিয়াছিল। আর তুই জন বয়দা বলাতে স্বীকার কবিয়াছিল। কি ঘটিয়াছে বুঝিতে পারা বাইতেছে। বয়সা নিমূল হইয়াছে, কিন্তু নামটি আছে। ভিনি লিখিয়া-ছिলেন, ज्याप नगीत जीदा वसमा हिन, वीत्रकृरम् जाहि। সেখানে নিৰ্ল হইলেও আরও দক্ষিণে আঁটাড়ী আছে। আর্টাড়ীর ছুইটি শত্রু, মাতুষ ও গ্রাদি পশু। গ্রামের নিকটে পুরাতন আটাড়ী পাওয়া বায় না। (২) কাম-রূপের রাজা রত্বণালের এক শাসনে নদীকৃলে বেডসের উল্লেখ আছে। (পণ্ডিত পদ্মনাথ ভট্টাচাৰ্য কৃত কামরূপ শাসনাবলী )। সেখানে লতাচালি অর্থাৎ আটাডী অপর্যাপ্ত আছে। (৩) জব্দলপুরের ছয় মাইল দূরে নর্মদা নদীর তটে বেত ও আটাড়ী আছে। কাব্য-প্রকাশের উল্লেখ মিথ্যা নয়। (৪) মার্কণ্ডেয় পুরাণে (৬) 'বঞ্জ' উল্লেখ আছে। এই পুরাণের শেষের দিকেও গুই-তিন স্থানে বেতসের উল্লেখ আছে। এই পুরাণ মধ্যপ্রদেশে নাগপুর ও জবলপুরের মধ্যে কোথাও প্রণীত হইয়াছিল। আমি প্ৰবন্ধান্তবে দেখাইয়াছি। (१) कानिमारमञ বন্ধুবংশে (:৩০৫) গোদাবরী তীরে 'বানীর গৃহ' আছে। (৬) বামনপুরাণে বেডসের উল্লেখ পাইয়াছি। এই পুরাণ উত্তর ভারতে প্রণীত মনে হয়।

দেখা বাইতেছে, এখনও সে স্থানে আট ড়ি আছে। ছুই-এক স্থানে মাহবের উপদ্রবে লুপ্ত হইয়া থাকিতে পারে।

বে লভা দারা বেতসের বাইশটা নামের অর্থ ব্রিতে পারা ঘাইতেছে, সে লভা বেতস ব্যতীত অপর কিছু হইতে পারে না। বিহল, নম, নিচুল লভা থাকিতে পারে, কিছ সংস্কৃত সাহিত্যে এই একটি লভায় কুঞ্জুটীর ও গৃহ নাম প্রযুক্ত হইয়াছে। সংশ্বত কাব্যে, পুরাণে, মহাভারতে, আয়ুর্বেদে বেতদের উল্লেখ আছে। বছকাল পূর্বের ঋগুরেদে (৪।৫৮।৫) অরিকে 'হিরগমর বেতস' বলা হইয়াছে। অরিশিখা কাঁপিতে কাঁপিতে উঠে, বেতস-লভাও লখিত হইয়া কাঁপিতে থাকে। অরি হিরগম, পীতবর্ণ, বেতস অবশ্বত তাহা নহে। এই কারণে 'হিরগম' এই বিশেষণ বোগ করিতে হইয়াছে। ঋগুরেদে (২০।৯৫।৫) 'বৈতস' শব্দও আছে। বেতস বহুজাত না হইলে এই নাম আসিত না। নিঘণ্ট তে 'বৈতস' শব্দের অর্থ পুং চিহ্ন। উভয়ই দোহল্যানান, এই সাদৃশ্বে নাম হইয়াছে। বজুর্বেদ ও অথর্ব বেদে বেতদের নাম 'অব্দুক্ত' অর্থাৎ অম্বুজ্ব। সেখানেও আটাভীর সহিত একা পাওয়া ষাইবে।

শঞ্চাবে ও পঞ্চাবের দক্ষিণে বেতস নাই। পূর্বদিকে উত্তর ভারতে আছে। অতএব, বোধ হইতেছে বেতস-সম্বলিত মন্ত্র রচনার সময়ে কতক আর্থ উত্তর ভারতে বাস করিতেছিলেন। কালিদাস বেতস উত্তমরূপে চিনিতেন। কিছু উক্জয়িনী কিছা নিকটবর্তী স্থানে বেতস নাই। কালিদাসের নিবাস মালব অন্তমান করা চলে না। বরাহ-মিহির বৃহৎ-সংহিতায় তিন স্থানে বেতসের উল্লেখ করিয়াছেন। তাহাঁকেও উক্জয়িনী-নিবাসী বলিতে পারা যায় না।

বেতসলতা চিনিতে ইচ্ছুক হইলে ভাবপ্রকাশ হইতে উদ্ধৃত এই স্নোকে বেতশের আটটি নামের অর্থ চিস্তা করিবেন।

> "বেতসো নম্রকঃ প্রোক্তো বানীরো বঞ্গন্তথা। অল্পুষ্পান্চ বিহুলো রথ শীতক্ত কাঁতিতঃ ॥"÷

\* এই প্রথম সমাতিতে জ্বীতারাপ্রসন্ন বন্দ্যোপাখ্যারের উদ্যক্ত সাহায্য সম্মন্থ করিতেছি। তাহাঁকে সহায় না পাইলে গবেবণার আরক্ত হইড না। তিনিই বেতসের কটো তোলাইরা দিরাছেন। সেই কটো হইডে বেতসকুপ্রের চিত্র প্রথমিত হইল। অপর চারিটি চিত্র প্রথমিকার কলেজের ছাত্র কল্যানীয় জ্বীধননীকুমার ভটাচার্থ নিধিরাছে।



## জীবন-ছন্দ

#### ঞ্জিকগন্ধাথ সরকার

ভোৱের আলোর সোনালী পরশ ভবনও আমবানির বুকে আসিরা পৌহার নাই। ছই-একটা পার্বর নিঃসদ কণ্ঠ শোনা বার বাত্র— ঐকভানের পূর্ব্ব বুরুর্ত্তে ভাহার। বেন নিজেদের পুরভন্নীকে একটু বাচাই করিয়া দয়। ভাহার পর পুরু হয় প্রভাতী বন্ধনা। ভাহাতে যোগ দের দোয়েল-পাশিরা-বুবু এবং আরও অনেক পাবী। শব্দতরদের দিক দিয়া তাহা হয়ত ধুৰ জোৱালো নয়, কিন্তু ঐটুজু শব্দেই বিনোদিনীয় ঘূম ভাঙিয়া পেল। পাশে খাৰী সনাভন এখনও অবোৱে ঘুমাইভেছে। স্মাত্য চাৰী—ভাভেই সাৱাদিন ধরিয়া বেষ্য ভূতের মত ৰাষ্ট্ৰভে ভাষে ভেষনি মড়ায় মত মুমাইভেও পারে। বিৰোদিনী অবাক হইয়া বায়—এত ঘুনাইভেও পাৱে ৰাছৰটা। বিছামা হইতে উঠিয়া ওপাশের ছোট জামালাট ৰুলিরা দিল। এক বলক ভোরের আলো আসিরা বরের ভিতর হছাইরা পড়িল। পরনের শাড়ীবানা আর একটু আঁট-সাঁট করিবা পরিবা সে ছটল গোরালঘরের দিকে। সেধানে কভ কাব। চাৰীর বরের বেবে সে-চাৰীর বধু; কাবের ভাহার অভ নাই। গোরালবরে আসিরা সে হাঁক হিল, ও কালি ও কালিলী, ও পো্চারমুখী, এ কি করেছিস বল্ ভো। বোঁটাটার সলে ঘড়িটা খত করে খড়িরে মরে-হিস কেন ? ভোকে নিৱে আর পারি নে বাপু! বুড়ী হডে **চললি—এবনও ভোর ভাকেন হ'ল না ?** 

कानिकी बाद्य विद्याविभीत जावदवत कारना शहे । जब्-বোগের প্রতিবাদ সম্প্রণ সে তবু তাহার পলাটা বিমোদিনীর पिए अक्ट्रे वांक्रिश पिन बाब । वित्यापिनी जावांत बंकांत দিয়া উঠিল, আহা, পোড়ারমুখীর রক্তর দেখে আর বাঁচিনে। আমার আর ভাল নেই—বলে বলে ভোর গলা চুলকে ৰিলেই দিন কাটবে। বলিৱাই সে কালিন্দীর গলার দচিটা টিক ক্রিয়া দিল। ভার পর ভাহার গলাটা জ্লাইরা ব্রিয়া হুড়হুড়ি বিভে লাগিল। নিঃসভোচ আৱাৰে কালিনী ভাহার কোলের উপর একেবারে এলাইয়া পছিল। চোবে-রুবে ভাষার আরাবের সুন্দাই ছাপ। হয় ভ ভোর হইতে এই শবোলা পশুষ্ট এই আৰৱটুকুৱই প্ৰতীকা ক্ষিতেছিল। প্রতিদিশই সে ইহাতে অভ্যন্ত। অধীর আগ্রহে সে গদার ৰ্ঘটটা একটু বেশা ক্লাইয়া কেনিৱাহিল। কিছ ভগু **पानिकीएक नहेबा वाकिलाई एका विस्ताविमीत हमिरद मा ।** শাৰো হই খোড়া বলৰ আছে--হাট হইতে কেবা বছুৰ বকুৰা বাছুৰট আছে। ভার বান বুৰী। বুৰবারের হাট বইতে কেবা—ভাই এই বাব। - ভাহাবের বেবিভে হইবে,

বিচালি দিতে হইবে, গোবর পরিছার করিতে হইবে। কালিশীকে হাছিরা সে বেই উঠিতে বাইবে অমনি কালিশী ভাহার কোলের উপর আরও বুঁকিরা পঢ়িল। কিছ এবারে বিনোদিনীকে উঠিতেই হইল। আরো কর্মষ্ট প্রাণ্ট বে ভাহার দিকেই আইল আগ্রহে চাহিরা আছে। সকলেই ভাহার আহর-সোহার চার। সে বাহিরে আসিয়া বিচালির গালা হইতে এক বোকা বিচালি লইয়া প্রভাকট প্রাণ্টর সামনের চাছাতে ভার করিয়া দিতে লাগিল—ভাহারা ভাহা উদরম্ব করিতে ব্যক্ত হইরা পঢ়িল। এই অবসরে বিনোদিনী গোরালের গোবর সাক্ত করিল, গোরালম্বর্মীট দিল, ভারপর হাতমুব বৃইয়া বরে আসিয়া হেবে সনাতন ভবনও অবারে গুরাইতেছে। ভব্ গুরানো ময়—মাক্ত দিয়া বিচিত্র স্বর্গহরী বত্বত হইভেছে। বিনোদিনীর ভারি কৌ তৃক বোব হইল। কাহারও মাক ভাকিলে ভাহার বেছার ছারি পার।

বিনোধিনী বাইশ ছাড়াইরা সবে ভেইশে পা বিরাছে।
মনপ্রাণ ভারণ্য আর চাকল্য ভরপুর। বাল্যকাল হইভেই সে বড় আর্দে, কৌড়কপ্রির। বাল্যের সে চাকল্য
এবনও বার নাই। বীরে বীরে সে বিছানার কাইটভে
সরিরা আসিল। আঁচলের কোণটা বুব সরু করিরা পাড়াইরা
স্নাভনের নাকের ভিতর স্কুস্ডি দিতে লাসিল। সনাভন এক্বোরে হুভচ্চিত হইরা উটিয়া বসিল—ভারণর ইাচিয় পর
ইাচি। একটু বাত্ত হুইলে চাহিয়া বেবে আনালা বিরা
আলো আসিয়া বর ভরিয়া সিয়াহে, এক কোবে বিনোহিনী
মুবে আঁচল চাপা বিয়া উচ্ছল হাসির ঠনকে কাপিয়া কাপিয়া
উটভেছে। এ ভাহা হইলে ভাহারই কাজ। সনাভন কপট
জোবের স্বরে বলিল—এই বিনী, এ সব কি হুছে বলু ভো ?
মুরুতে বিবি বে নাকি ?

বিৰোদিনী হাসির বেগটা একটু সামলাইরা লইরা মাণাটা ক্ষমং কোলাইরা উভর কিল, বেশ হরেছে—পুন হরেছে। আর মুমোবে বেলা মুপুর পর্যান্ত ?

— হপুর ? ওবো তাই তো, অনেক বেলা হয়ে গেছে বেবছি। তুই শীগনির আনার উলপানগুলো গুছিরে দে। আক বে পোড়াভালার চকে চাব বেবার দিব।

সনাতন উটিয়া হাত বুধ গুইয়া তৈয়ি হইয়া নইন।
কোনৱের গাবছাবানি বেশ করিয়া বাঁটিয়া বাঁবিন। বিনোধিনী '
ততক্ৰে অসপান টিক করিয়া বিয়াছে। এক ঘট বাবার
অস—ভার উপরে একট বাট চাকা বেওয়া। একটা পুঁটুনিতে

কিছু বৃতি আৰ এক দলা গুড গাৰহা দিয়া বেশ সুপুথল ভাবে বাঁৰা। জলবাবাৰের বহর দেবিরা স্বাভ্য হাসিরা কেলিল, বলিল, আমি কি রাজোস না কি রে? এভ বৃতি কি হবে?

- · —কেন, বাবে গ
- —বাব ভো অত কি হবে গ
- नाहेरन, छा अक्ट्रे रनमी मा रनरन निरम वारन रनन ?
- বিদে আমার—কতথানি থেলে বিদে বাবে দেটা কি ভূই বলে দিনি ?

—ভবে কে বদৰে ? বনগাঁৱের বিষ্কী বলে বেৰে নাজি ?

বিশোদিনীর বুবে কৌভূকের হাসি। কবে সেই সমাতমের বাবার আমলে সমাতমের সদে বনগাঁরের বিমলা মামে একট যেরের বিবাহের কথাবার্ডা হইরাছিল। আলাপটা অঞ্জর হইরাছিল অনেকদুর। অবশেবে সনাতম যথন আনাইল বে, সে এই প্রাহেরই বিশিন মঙলের যেরে বিনো-দিনীকে বিবাহ করিতে চার তথন সে সম্বাচী ভাতিরা গেল। ক্রিছ কথাটা বিনোদিনীর কানে যায়। বিরের পর হইতে সে এ প্রস্কু কইরা কৌভূক করিবার সুযোগ ছাকে না।

ভৰিৱা সৰাতৰও ছাজিল না। কপালে করাখাত করিরা বলিল, হারে আমার পোড়াকপাল। বিম্লী আসবে এই চাষাভূষোর বরে। তার বিরে হয়েছে ভাল বরে। সোয়ামী তার ভছর মোক, লেখাপড়া জানে। মাজিরগঞ্চে খা বার্দের সোলার খাতা লেখে। সেই বিম্লী আসবে কি না আমাদের বছে।

অভবাদি বন্দ কপাল সমাতনের নর। কথাটার মধ্যে সহক্ষ্যেক হাড়া হয়ত আর কিছু হিল না। কিছ বিনোধিনী বেন একটু আবাত পাইল। কিবং অভযনক হইরা পড়িল। বানিক পরে চাহিলা দেবিল সমাতন গোরাল হইতে বাল হইট ছাড়িরা বিরাছে। বেড়ার বার হইতে লাললট তুলিরা লইরা লে বার্তের দিকে রওনা হইল। সমন্ত হপুর মাঠে কাটাইরা সন্থার প্রাকালে সে কিবিরা আসিবে। পোড়াভাঙার চক প্রাম হইতে একটু দূরে। একপাশে পোড়াভাঙার বিল। প্রাম্বভাবে শুক্তনা বাকে—এই সমন্ত চাবীরা চাব-আবাহ করে। কিছ বর্ষার স্তুল কল আসিলে সমন্ত নাঠ ভূবিরা সর্বের বন্ত হইরা বার।

সনাত্ৰ পাৱে পাৱে অনেকটা দূর আগাইরা বার।
আঁকাৰীকা আলপৰ বরিরা সে চলিতে বাকে। বিনোধিনী
পোৱালঘরের বোঁটাটা ধরিরা সেনিক-পানে একণ্টতে
চাহিরা রহিল। সোনালী রোকে সনাত্রের সবল প্রপৃষ্ট কেছ
বিনোধিনীর নকরে পালে। নিক্ষকালো বীর্ষ সুঠান কেছ।
বেল পাবরে কোঁৱা একট বুজি। এানের ভিতর এমন আর

একটও কেবিতে পাওৱা বার বা। যতক্ষণ সনাতদকে দেশা বার বিনোদিনী তেমনি একই ভাবে চাহিছা থাকে। ভারপর বীরে বীরে প্রপাভার বাঁশবনের আভালে সে আগৃশ্য হইরা বার। বিনোদিনী কিরিরা আসিরা প্রাভ্যহিক ভাকে মন দেয়। ••

আৰধানির নাম কুমীরপোভা। নামের একটি কুল ইভিহান পাছে। প্রামন্তবের বলে, একবার নাকি বর্ষার বানের জলের সঙ্গে গাঁরের ভিতরে কুমীর আসিরাছিল ৷ পোড়াড'ঙার বিল তথন ছিল আরও বড়--কি এীম, কি বর্বা সব সময় ছলে পরিপূর্ণ থাকিত। মারবানে প্রকাণ্ড বিল-চারপাশে ছিল ছোট ছোট প্রামের সারি। বিলের এক পারের গ্রাম **চটতে অভ পাবের গ্রামঞ্জিতে দেবা যাইত বোষার রেধার** মত জন্মই। বিলের একপাশে এখন বানভাসি বলিয়া যে মহা খালট বহিবাহে ভাহার হার। বিলেব যোগ ছিল বভ গাঙের সলে। সেই খাল দিয়াই বঢ় গাঙ হইতে ক্ষীর আসিয়াছিল। কুমীরট আসিরাই বিভীষিকার সৃষ্ট করিল। আৰু এ গাঁরের বাছরকে টানিল-কাল দে গাঁৱের মালুয়কে মারিল। বিলের আলপালের বিল-পাঁচলটা গাঁরের মাতকরেরা মিলিয়া ভবি-ভাবের কাহারিতে ধরণা দিয়া পদিন। কাহারিতে বন্দুক चारक, कारकर वावश् कविट एरेरव । चमिनाववावृत विन শিকারের বাতিক। তিনি ধবর পাইয়া বন্দুক টোটা, বরকন্দাক ও বৰুৱা লইয়া ছুটীয়া আপিলেন। সমস্ত বিলটা ভছনছ कतित्व--कदरकवार कत्वर देशव जामगान कात्ना कार्द्धर ভ ড়িকে ভলি করিলেন, তারপর গোটাকয়েক চবাচৰী यांत्रियां विषाद एरेलन । जनत्यत्य क्यीवर्षे मादा १ फिल अरे প্রামেরই করেক ক্ষ্মের ছাতে। সন্থ্যার অধকারে সেটা নাকি পোছারদের গোয়ালখরের কাছে চুপ করিয়া পভিয়া ছিল। খবর পাইয়া প্রামের পুরুষেরা লাঠিসোটা বর্ষ লইয়া ভাছাকে চারিদিক হইতে বিরিয়া মারিল, ভারণর আমের মাৰামাৰি একট মাঠের মধ্যে সাঞ্চরে পুঁতিরা কেলে। আনেপালে দশ-বিশটা গ্রামের মধ্যে বর বর পভিয়া গেল। সেই হইতে এই গ্ৰামের নাম হইরাছে ক্ষীরপোতা। পোভাভাতার বিলের দেই ভয়াবত রূপ ভার নাই---দেই বাৰভাসির বাল এখন ধানক্ষেতে পরিণত হইয়াছে। ভবে ভারগাট বুব নীচু। বর্ষার সধ্য বড় গাঙ্হইতে বাবের ভল **এই পথেই বিলে প্রবেশ করে**।

প্রামের বেশীর ভাগ লোকই চাষী। বামুন-কারেত হুই
এক বর আহে—ঠাতি-কৃত্ও আহে। নাগরিক সভ্যভার
কোলাবল হুইতে বহুদ্রে প্রামধানি অবস্থিত। হুই-এক কন
হাজা সকলেই বিরক্তর, সহক সরল একের শীবনবাঞা।
অনেকেই শীবনে রেলগাড়ী দেবে নাই—দেখিবার প্রয়োক্তর
হুর না। গাঁরে বাশবাভ বেনাবন ক্ষক আর প্রাভোবার

হভাহতি। দলাদলি, সঙ্গীর্ত্তন সব কিছুই আছে—আৰার মালেরিয়াও আছে। সনাতনরা যে পাড়ায় থাকে ভাহার নাম দাসপাড়া, ভাহার পালাপালি আছে পোছারপাড়া, মঙলপাড়া, কায়েতপাড়া ও বিষাসপাড়া।

বিলোদিনী এই গ্রামেরই মওলপাভার মেয়ে। বাপমায়ের এক্ষাত্র আহরে মেয়ে সে। ক্রের ক্ষেক্ বণ্সরের ভিতরেই দে ভাছার মাকে হারাইল। ভাহার বাবা বিশিন মঙ্গ ছিল আত্মভোলা বামবেরালী বরণের মাত্ময । চাষ-আবাদের চেয়ে কবির দল গড়িয়া মূলে মূখে ছড়া গাহিয়া বেড়ানোই সে বেশী পছক্ষ করিত। রামায়ণের কাহিনী ও রুফলীলা বর্ণনা-চ্চলে সে অনুৰ্গল ভূড়া বলিয়া যাইতে পারিত। I আশপাশের প্রায় হটতে প্রায়ই ভাহার কবির দলের আহ্বান আসিত। প্রকার সময় ভ্যিদার-বাঞ্চীতেও তাছার ডাক পঞ্জিত। ছই-তিনটা খেডেলও সে পাইয়াছিল। 'দাহাই সগর্বে বুকে দোলাইয়া সে আসরে নামিত। বিনোদিনী তথ্য আট-নয় বংসবের বালিকা। পুত্রের শান-বাবানো খাটে গামছা দিয়া চুনো যাধ ধরিয়া আর হুটোপুট করিয়া তাবার দিন কাটিতে-ছিল। এমন সময় অক্সাং পরপার হটতে বিপিনের ডাক পঢ়িল। ভাইপো গিরীনকে ডাকিয়া তাহার হাতে বিনোদিনীর সমস্ত ভার সঁপিয়া দিয়া সে চোখ বুঁজিল। গিরীন সংসারী মাত্রস--জনেক দেখিয়া শুনিয়া সে শেষে এই গ্রামেরই সনাতং দাসের সঙ্গে বিনোদিনীর বিবাহের ব্যবস্থা করিল। স্নাত্তন অবস্থাপর চাষী--জমিজায়গা আছে, গরুবাছুর আছে-তা ছাড়া আছে অটুট স্বাস্থ্য। বিনোদিনীকে দরে আনিবার ইচ্ছা সনাতনের বরাবরই ছিল। গিরীন কথাটা তুলিভেই সনাতনের বদ্ধ পিতাও এক কথায়ই রাজী হট্রা গেল। তারপর তেরো वश्मत वस्ता वस्तान विद्यामिनी आभिया धाराम कतिम ध বাড়ীতে। প্রাধের মেয়ে সে, কান্ডেই অনাবক্সক সঙ্গোচের জড়তা কোৰাও নাই। বৃদ্ধ খণ্ডবের সামনেই হাসিয়া বেলিয়া, তাহার আদর্যত্ব করিয়া কৃষ্ণ সংসারটকে শান্তির নীড় করিয়া তুলিল। বৃদ্ধ পরম তৃপ্তিতে মাবে মাবে ভাবিত--হবে না, কত বছ গুণী লোকের মেয়ে ও।

কিন্তু এত তুখ বুড়ার কপালে বেশী দিন সহিল না।
পুত্রবধূকে ঘরে আনিবার কিছু দিন পরেই সে পরপারের
দিকে রঙনা হইল। তার পর এই পরিবারে রহিল কেবল
বিনোদিনী আর সনাতন। প্রচুর ছমি—গাইগরু—কিছুরই
ছড়াব নাই। তার উপর আছে উভয়েরই স্বাস্থ্য আর অমলিন
তারুণ্য। সেই তের বছরের থেয়ে বিনোদিনী এখন তেইশে
শা দিয়াছে। সনাতনের বয়স প্রায় বঞ্জিলের কাছাকাছি।
প্রামের সকলে বলাবলি করিত এমন ছ্ডি দেখা যায় না—
বেন ত্বের পায়রা এক কোড়া। সংসারের দৈনন্দিন কাজেকর্মে ছালিগছে দীর্ঘ দেটি বংসর যে কি করিয়া কাটিয়া গেল

স্থাতন ভাহা ভাবিয়া পায় না—বিনোদিনীও কিছু ব্বিতে পারে না। ভবু সময় সময় কিসের যেন একটা অভাব, একটা শৃঞ্ভাবোধ উভয়ের মনেই জাগিয়া উঠে— ছ'জনেই ভাবিয়া পায় না কেন এমন হয়।

কৈটের মাঝামাঝি সময়টা হইতেছে চাষী-সম্প্রদায়ের অবসর-কাল্। তথন ধান বোনা শেষ হইয়া যায়--ধুসর ক্ষেতগুলি ভবিষা উঠে কচি কচি সবুৰ বানের চারায়। পোড়াডাঙার সারাটা মাঠ কে যেন সবুক মধমলে মুড়িয়া দেও। দিগন্তের স্বচ্ছ নীলিমার মাঠের সবুক রং মিলিয়া যায়। এই সময়ট। সনাতনের বড় আনন্দে কাটে। অন্ত সব চাষীরা এই অবস্থে কেছ বা আগামী ব্রায় মাছ ধরিবার জভ জাল বোনে- কেছ বাঁশ চিরিয়া খড়ের ধরগুলো মেরামত করিতে লাগিয়া যায় । কিছ সনাতন চুটিয়া থায় মাঠের বুকে। সবুজ বানের চারাগুলো ভাহাকে যেন অনুষ্ঠ আকর্ষনে টানিভে ধাকে: নিজের হাতে বোনা ক্লেডের ভিতরে ঘুরিয়া বেড়াইতে তাহার বড় ভালো লাগে, দমকা হাওয়ায় চারা গাছগুলি ছলিতে খাকে-্যেন সেগুলির প্রাণ আছে--নাচিয়া নাচিয়া তাহার। সনাতনকে যেন অভিনন্দন জানায়। উহাদের সঙ্গে স্নাতনের যেন প্রাণের যোগ। তাহার মনে হয়, উহাদের সবুৰু রঙের সঞ্চে তাহার দেহের প্রতি অবু-পর্মাণু যেন কি করিয়া মিশিয়া একাকার হুইয়া গিয়াছে। পড়িয়া ছিল ধু ধু মাঠ শুক্ষ নিশ্ব-স্থাতণ নিজের হাতে বীক বুলিয়া জাগাইয়াছে সেই মাঠের বুকে প্রাণের চাঞ্চা। যাহা ছিল না, তাহারই স্ট্র করিয়াছে সে। এই স্কনের আনক্ষে সনাতন বিভোৱ হইয়া যায়---তাহার সমস্ত আশা আকাজ্যা খেন তাহার এই আনন্দের স্ট্র বানের চারাগুলিতে মুৰ্ভ হুইয়া উঠে। উহাদের দৈনন্দিন জ্ঞমিক রঙি দেখিয়া সে অপার আনন্দ উপভোগ করে। অবচ সে সমন্ত মনটা তন্ত্র তন্ত্র করিয়াও খুজিয়া পায় না কেন এমন হয়। কিসের এ আনন্দ ---ক্সের এই আবেগ।

প্রামের একান্তে কায়েতপাড়ায় সারা প্রামের একটিমার পুত্র। রোজ বিকালে বিনোদিনী কলসী কাঁবে সেবানে গাঁ বৃইতে যায়। সমবয়সী বব্রা একই সময়ে বাটে আসিয়া জড়ো হয়। তাহাদের এই বৈকালিক আসয়ে বিনোদিনীকে চাই-ই—কারণ তাহার মত হাসিতে এবং হাসাইতে বৃব কয় য়েয়ই পারে। শান-বাবানো বাটের উপর বসিয়া পা হবানি জলে ভ্বাইয়া পল করিতে তাহার বেশ লাগে। সেদিন এমনি এক বৈকালিক আসয়ে কি করিয়া যেন কথাটা উঠিয়া পভিল। ও-পাড়ার রাঙা-বৌ বলিল, কিছ যাই বলো বিনোদিদি, তোমাকে আর যেন মানায় নাঁ। তমু কলসী কাঁবে করেই দিন কাটাবে ?

বিনোদিনী বৃথিতে পারে না, বলে—ভবে কি আবার কাঁথে করবো লো ?

—ও আমার পোড়াকপাল, তা বুৰি আবার বেরে-হেলেকে বলে দিতে হয় !

व्यवस्थल शामित दान छेप्रैन। दान्न-(यो वित्नामिनीत थीव नमनवनी। त्म निर्माणिनीत नेना च्छाटेश बतिया कार्यक कारक किन किन कदिया कि विनाम। विरामिनी বিবৰ্ণমূৰে চাহিয়া দেৰিল সকলেই ভাহার পানে ভাকাইয়া মুখ টীপিয়া হাসিতেছে। এত সহজ ধ্ধাটা সে যে মেরেমান্ত্র হইরাও এতকণ বুখিতে পারে নাই সেই লক্ষার সে মরমে মরিয়া গেল। কিছ লক্ষা তাহার যত হইল ভাষার চেয়ে শত গুণ বেশী করিয়া দেখা দিল ভাষার জীবনের অপরিমের শৃতভা। কেমন যেন মন-মরা হইরা পেল সে। কোন রকমে গা বৃইয়া, জলের কলগীটা কাঁবে লইয়া সে রওনা হইয়া পভিল ৷...পড়ত বেলার সোনালী রোদ বীশ-বাগানের মাধার উপর আসন পাতিয়াছে। সুন্দর অধচ বিদার-ব্যথার যেন একটু দ্রিয়মাণ। ওবারের বেভসকুঞ্চের ভিতর হইতে বুযুর একটানা করণ ডাক শোনা হায়। বিনোদিনীর সমস্ত মনটা উদাস হইরা গেল। সভ্যিই ভো, তাহার ভীবনে যে এতবড় কাঁক রহিয়া গিয়াহে ভাহা এতদিন সে খুণাক্ষরেও তো ঠের পার নাই। এতধানি বয়লে জীবন ভরিৱা যাহা সে পাইয়াছে ভাহাই যে চরম পাওয়া নয়-এই ক্বাটা যতই তাহার মনে হইতে লাগিল, ততই এই নিৰ্ক্ষণ সায়াকে তাহার বিকৃষ ক্ষমরখানি ব্যথার ভারে একেবারে গুমরিয়া গুমরিয়া উঠিতে লাগিল। অহনে পা দিভেই সনাভনের পুলককম্পিত কণ্ঠ শোনা গেল---বিন্দী, এই দেখু তোর কালিন্দীর কি স্থলর একটা বাছুর FLECE 1

বিনোদিনী চাহিয়া দেখিল গোয়ালের ওধারটার মার্টর ওপরে একটা নবজাত বাছুর জার তাহারই পালে গাড়াইয়া কালিন্দী অক্সজিম আনন্দে বাছুরটির গা চাটরা দিতেছে। অভ সমর হইলে বিনোদিনীর কত আফ্লাদ হইত। কিছু আজ্ব সে জীবনে সবচেরে বড় আখাত পাইরাছে—তাই এ ঘটনাটকে সে বিধাতার এক নির্দ্ধম পরিহাস হাড়া আর কিছুই ভাবিতে পারিল না। কোন কথা না বলিয়া সে বিরস বদনে রাল্লাঘরের দিকে চলিয়া গেল। সনাতম একটু অবাক হইল। কোন দিন তো সে এমন করে না। এর আগে বছবার বিনোদিনীকে সিক্ত বসনে দেখিলে সনাতন অবাক হইরা চাহিরা দেখিত।

ীবিলোদিনী তাহা লক্ষ্য করিবা সকৌত্তক বলিত, অমন হা করে চেরে আহ কেন? মেরেমাছ্য দেশনি কোন দিন? সনাতন সরল হাজে উত্তর দিত, চের দেখেছি, কিছ তোর নত একটও দেখি নি।

वित्यांत्रियों जनक कड़ीरक वनिष्ठ, बांध बांध, बांड बय-बांधी कथी वनर्ष्ठ इरव मां। द्वाद स्टब्ट्डा

কিছ আৰু বেন ভাষার কি হইরাছে। সনাতন অবাক হইরা ভাবিল, এমন হইল কেন ?···

গভীর রাজে বিনোদিনীর ঘুন ভাঙিয়া গেল। বন্ধর্ শব্দে বাহিরে বৃষ্টি পড়িতেছিল। বরের পিছনের বাঁপগাছের বোণে টুপটাপ করিয়া শব্দ হইতেছে, পালের ভোবাটার ভেকতুলের আনন্দ-কলরোল শোমা যায়। পালে সনাতন অবোরে ঘুমাটুতেছে। বিনোদিনীর মনটা আবার বেন কিসের অজানা ব্যধার ভরিয়া উঠে। এপাশ ওপাশ করিয়া কিছুতেই সে ঘুমাইতে পারে না। নিগুতি রাতে গভীর বেদনার ভাহার মনে হয় যেন ভাহার জীবন বড়ই শৃ্ভ—ব্যর্থ। ভাহার সবকিছই আছে—অবচ আগলে যেন কিছুই নাই।

ইহার করেক দিন পর এক সন্ধার মাবগাঁরের হাট হইতে কিরিয়া সনাতন বলিল, আৰু হাটে যোগেনের সদে দেখা হ'ল। পিসিমা পরশু আমাদের এবানে আসবে। কিছুদিন বাকবে এবানে।

বোগেন সনাতনের পিসভূতো ভাই। থাকে মার্বগাঁরে। ছেলে, বৌ, নাতি-নাতনী লইয়া পিসীমার দিনগুলি কার্টে ভাল। মাবে মাবে হঠাং ভাইপোর সংসারে আসিয়া উদয় হয়। কিছুদিন থাকিয়া আবার চলিয়া যায়।

যথাকালে কান্তমণি অর্থাং সমাতনের পিলীমা আসিরা হাজির হইল। বুড়া ঠিক নর, আবার প্রোচাও বলা চলে না। মাথার আর্থাকা চুলওলো ছোট করিরা ছাঁটা—
ভামাকপোড়ার ওঁড়াতে মাচী আর অবশিষ্ট দাঁওওলি
নিক্ষকালো। আসিরাই কান্তমণি প্রথমে পা ছড়াইয়া
বসিরা মুভ ভাইরের কর থানিকটা কাঁমিল, ভারণর নিক্রের
সংসারের কথা ভূলিয়া থানিককণ আবোল ভাবোল বকিল,
অবশেষে পাড়া বেড়াইতে বাহির হইল। এই প্রামেরই
মেরে সে—সকলেই ভাহাকে চেনে। ছুই এক দিনের মধ্যেই
সে প্রামবাসীদের অনেককেই চোঝে আঙুল দিয়া দেখাইয়া
দিল যে, ভাহার ভাইরের বংশের উর্ভ্ভন চভূর্ত্বশ পুরুষ
যে নরক্গামী হইতে যাইতেছে, প্রামবাসীরা ভাহার কি প্রতিবিদান করিভেছে। ভাহারা চুপ করিয়া থাকিতে পারে,
কিছ লে আপ্র-ক্ষে হুইয়া তো নিক্টেও থাকিতে পারে লা।

বিনোদিনীর মনে হর শিসীমা আসিবার পর হইতে স্বাতন বেন ক্ষেম্ব একরক্ম হইরা গিরাছে। স্বাই ক্ষেম্ব একটা চিছাকুল ভাব ভার। সে হাসি-কৌছুক্ব নাই, লে ক্রোংলাহ নাই। যাবে বাবে সে নির্কাক ছির মুষ্টভে বিনোদিনীর হিকে চাহিরা পাকে—কভ কি বেন ভাবে। বিনোবিদী সে দৃষ্টিকে মোটেই সহিতে পারে না— একেবারে সন্থটিত হইরা পঞ্চে। ইহার আর্থ যে সে বৃবিতে পারে না এবদ নর। কিন্তু এই বোঝাটাতেই তাহার ব্যথার বোঝা আরও হর্মান্ত হর্মান ওঠে।

সমর সমর পিসীমা আইপোতে মিলিরা চূপি চূপি জি সব যেন কথাবার্তা হয়—হঠাং বিনোদিনী সেধানে আসিরা পঞ্চিলে উভরেই হতচকিত হইয়া পঞ্চে। তার পর অভ কথা পাতে।

করেক দিন ভাইপোর সংসারে থাকিরা কাছমণি বিদার লইল। কিছু সেই হুইতে সনাতনের যেন একটা বিরাট পরিবর্ত্তন আসিরা গেল। ছটু বলিতে পিসীয়ার প্রামে সিরা বুরিরা আসিতে লাসিল। ভিজ্ঞাসা করিলেও ঠিক সহত্তর পাওরা যার না। কি যেন অজানা আশহার বিনোদিনীর মন ভরিরা উঠিল।

কিছ কথাটা এক দিন অপ্রত্যাশিত ভাবে প্রকাশ হইয়া পছিল। ওপাড়ার উাতিবোরের বাপের বাড়ী মাবসারে। বাটে উাতিবোরের সদে দেবা হইতেই সে বিনোদিনীকে কানাইল যে, কাছ-পিসীমা মাবসারেরই একটি মেরের সদে সনাতনের মৃতন সম্বন্ধ ঠিক করিয়াছে। মেরেট বেশ ভাগর। আগামী যাবেই বিবাহ। সনাতনপ্ত ভাহাতে মত দিয়াছে। শুনিয়া বিনোদিনী একেবারে শুক্ হইয়া পেল।

সন্ধার সময় ইহা লইয়া সনাতনের সলে তাহার তুমুল বস্তা হইয়া গেল। বিনোদিনী কলহপ্রিয়া নয়—কিছ আছ যেন তাহার কি হইল। যাহা মুখে আসে তাহাই বলিল। তারপর কাঁদিয়া কাট্টরা মাথা কুটরা শাপাভ করিয়া অবশেষে সেই সন্ধারই ওপাড়ার তেঠতুতো ভাইরের বাড়ীতে আসিয়া কাঁদিয়া পড়িল। সিয়ীন সমন্ত শুনিরা গন্তীর হইয়া বলিল, তা আমার যদি হুটো ভাত ভোটে, ভোরও ভুটবে।

श्रीयत जात्नक (मरावे नहां कृष्ठि (प्रवादेन। जाकारत्-रेक्टि जामादेन वित्यापिनीत क्यान शृष्ठितार । वित्यापिनीश्च श्रीविन त्व, जाहां तक्यान मजा मजादे शृष्ठितार । विद्यान श्रम हरेत्व (क्या।

চোবের জলে জার বুককাট। দীর্থধাসের ভিতরে ভাইরের শ্লারে বিনোদিনীর দিন কাটতে লাগিল। করেক দিন লির সকালের দিকে সনাভনের রাখাল ছোকুরাট একেবারে ভবত ক্ইরা জাসিরা হাজির। বিনোদিনীকে সাধনে পাইরা নিরা বসিল, ধুড়ীরা গো, সনাকাকার তিন দিন থেকে বানক জর। গা বেন জাগুন। ভোষারে বেতে বলেছে।

বিনোধিনী বছার দিরা উঠিল, বেভে বলেছে ? কেন ?
। ভোর নতুন ধ্কীনাকে নিরে আরগে নাবগা বেকে।
নিক্তি কেন ? লক্ষা করে না বলতে। বেরো বল্ছি
ভক্ষাভা। নইলে বৈটারে বিদার করবো।

বেগতিক দেখিয়া ছেলেট সরিরা পছিল। কিছ সারা সকালটা কুভিরা বিনোদিনীর মনটা ব্যথার একেবারে গুমরিরা মরিতে লাসিল। তাহার অমন স্বামী—তাহার সোনার সংসার, তাহার কালিন্দী আর অভাভ অবোলা গৃহপালিত দীব—সমস্তই তাহার, কিছ সকল অধিকার হইতেই সেবকিত হইরা পভিরাহে। কিছ কেন ?

ছপুরে লে পুকুরবাটে গেল স্নান করিতে। সেই পুরাভন শান-বাঁৰানো ঘাটে স্নান করিতে করিতে একবানি বাধাক্রিই প্রীষ্টিত মুখ কেবলই তাহার মনে পঞ্চিতে লাগিল। ফিরিবার বেলার দাস-পাভার পথের পানে এক বার চাছিল। সেই স্থপরিচিত আঁকাবাঁকা পথ। সে পথ যেন ছনিবার ভাবে তাহার মনকে টানিতে লাগিল। ভাহার অবাধ্য পা ছবানি সেদিক পানেই ভাহাকে লইয়া চলিল। এক পা ছুই পা করিয়া সে গিয়া হাজির হইল তাহার সেই স্থপরিচিত আঙিনাতে। করেক দিনের মধ্যে উঠানে বাঁট পড়ে নাই। এবানে সেবানে রাজ্যের জ্ঞাল ভ্ষিয়াছে। গোয়ালখর গোবরে ভর্ত্তি। সমস্ত দাওয়াটায় পোভা তামাকের শুঁভার হভাহভি। এ কি হাল হইয়াহে ভাহার সংসারের। রাল্লাখরে চকিয়া দেখিল, উত্থনের উপর মাটির হাঁড়িটা চড়ানো-ভাহাভে এক মুঠো আৰ পোড়া আৰ সেছ চাল। বোৰ হয় ছৱে শ্যা-পত হইবার পূর্বে সনাতন রালা করিবার 🕶 ব্যর্প চেটা করিয়াছিল। সেই দিকে চাছিয়া সে ছ ভ করিয়া কাঁদিয়া क्लिन। अक्ट्रे शांच्य रहेशा अ पदा चांत्रिश प्रिंग नगांचन উপুড় হইয়া শুইয়া অৱের খোরে গুঁকিতেছে। বিনোদিনী কাছে আসিয়া পরম স্লেছে স্বামীর মাধার উপর হাতবানি রাবিল। সনাভন ৰভয়ভ করিয়া চাছিয়া দেখিয়া একেবারে অবাক ছইয়া গেল। রাঙা চোধ ছটি মেলিয়া সে বিনোদিনীর মুধের পানে এক দৃষ্টিভে তাকাইয়া বহিল – যেন কত যুগযুগাৰ ভাহাকে দেৰে নাই। ভার পর ভাহার হাতথানি নিজের **উভ**ও বুকের উপর টামিয়া লইয়া বলিল-আমার মাপ কর বিন্দী। এ সংসারে ভার কাউকে ভাষি ভাষতে পারব না, কিছতেই না। আমি পিলীমাকে খবর পাঠিরে দিরেছি এ বিয়ে হবে ना--- क्थम अ मद्य । कृष्टे घटन यांवि तन रन् ?

বিনোদিনী কিছুই বলিল মাঁ। শুধু উক অঞ্চৰারায় ভাতার গও ভিজিরা উঠিল। খানিকৃষ্ণ এমনি ভাবে থাকিরা সে বামীকে ভাল করিরা শোরাইল। গারের চাহরটা আর একটু টানিরা দিল। ভারপর পূর্কেকার মত সংসারের কাষ্ণে লাগিরা গেল।…

ইহার করেক দিন পর সনাতন হছ হইরা উঠিরা সকালের দিকে হাওরাতে বসিরা এক মনে হঁকা টানিতেহিল। বিনোদিনী রাধাল হোকরাটকে ভাকিরা বলিল, বা ভো বাবা রভন, এক বার পিনীবাদের গাঁরে। ভাকে বলবি বিনোদিনী বুৰিতে পাৱে না, বলে—ভবে কি আবার কাঁখে করবো লো ?

—ও আমার পোড়াকপাল, ত। বুবি আবার বেছে-বেলেকে বলে দিতে হয়।

(यद्ययहरण शांभित (दान छेंडिन। ताका-तो विरनाणिभीत ब्यांच भगवस्त्री। (भ वित्यांक्रियोद नका क्रकांच्या विदया कारमञ्जू कारक किम किम कविश्वा कि विश्वम । विरमिश्रमी বিবৰ্ণমূৰে চাছিয়া দেখিল সকলেই ভাছার পানে ভাকাইয়া মুখ টিপিরা হাসিতেছে। এত সহক ফ্লাটা সে যে মেরেমাত্র্য হটয়াও এতক্ষণ বুকিতে পারে নাট সেট লক্ষায় সে মরমে মরিয়া গেল। কিন্তু লব্দা তাহার যত হইল ভাষার চেয়ে শত গুণ বেশী করিয়া দেখা দিল ভাষার জীবনের অপরিমের শৃঞ্জা। কেমন যেন মন-মরা হইয়া পেল (भ। द्यान बक्त्य भा पृष्ठेश, क्लाब क्लामीकी कार्य लहेश সে রওনা ছটয়া পভিল ৷ তপভ্ৰ বেলার সোনালী রোদ বাল-বাগানের মাধার উপর আসন পাতিয়াছে। ক্রমর অবচ বিদায়-বাশায় যেন একটু ত্রিয়মাণ। ওবারের বেভসকুঞ্জের ভিতর হইতে বুধুর একটানা করণ ডাক শোনা হায়। বিনোদিনীর সমস্ত মনটা উদাস হটয়া পেল। সভািই ভাে তাহার ভীবনে যে এতবড় কাঁক রহিয়া সিয়াছে ভাহা এতদিন সে মুণাক্ষয়েও তো টের পায় নাই। এতধানি বয়ুদে জীবন ভরিয়া যাহা সে পাইয়াছে ভাহাই যে চরম পাওয়া নয়-এই কথাটা যতই তাহার মনে হ**ই**তে লাগিল, ততই এই নিৰ্ক্ষণ সায়াকে তাহার বিক্ষা গ্রদয়খানি বাশার ভারে একেবারে গুমরিয়া গুমরিয়া উট্টতে লাগিল। অহনে পা দিতেই সমাতনের পুলককম্পিত কণ্ঠ শোনা গেল---বিন্দী, এই দেখু ভোৱ কালিন্দীর কি স্থলর একটা বাছুর FLECE I

বিশোদিনী চাহিয়া দেখিল গোৱালের ওবারটার মাটির ওপরে একটা নবকাত বাছুর আর তাহারই পাশে গাড়াইরা কালিনী অক্সমিম আনন্দে বাছুরটির গা চাটিরা দিতেছে। অভ সমর হইলে বিনোদিনীর কত আফ্রাদ হইত। কিছু আরু সে জীবনে সবচেরে বড় আখাত পাইরাছে—তাই এ ঘটনাটকে সে বিবাতার এক নির্ত্তম পরিহাস ছাড়া আর কিছুই ভাবিতে পারিল না। কোন কবা না বলিয়া সে বিরস বদনে রাল্লাঘরের দিকে চলিয়া গেল। সনাতন একটু অবাক হইল। কোন দিন তো সে এমন করে না। এর আগে বছবার বিনোদিনীকে সিক্ত বসনে দেখিলে সনাতন অবাক হইরা চাহিয়া দেখিত।

বিনোধিনী ভাষা লক্ষ্য করিয়া সকৌভূকে বলিত, অযন হাঁ করে চেয়ে আহ কেন ? যেরেয়াগুর দেবনি কোন ধিন ? সনাতন সরল হাজে উত্তর দিত, চের বেবেছি, কিছ তোর মত একটাও দেখি নি।

বিনোমিনী সলক কটাকে বলিত, যাও যাও, আর মন-রাধা কথা বলতে হবে না। চের হয়েছে।

কিছ আৰু যেন ভাৰার কি হইয়াছে। সনাভন অবাক হইয়া ভাবিল, এমন হইল কেন ?···

গভীর রাত্রে বিনোদিনীর ঘুম ভাঙিরা গেল। বায্বার্ শব্দে বাহিরে বৃষ্টি পভিতেছিল। ঘরের পিছনের বাঁশগাছের বোপে টুপটাপ করিয়া শব্দ হুইতেছে, পাশের ভোবাটার ভেকত্রের আনন্দ-কলরোল শোনা যায়। পাশে সনাতন অখারে ঘুমাইতেছে। বিনোদিনীর মনটা আবার বেন কিসের অধানা বাধার ভরিয়া উঠে। এপাশ ওপাশ করিয়া কিছুতেই সে ঘুমাইতে পারে না। নিওতি রাতে গভীর বেদনার ভাহার মনে হয় যেন ভাহার জীবন বড়ই শৃষ্ট—ব্যর্থ। ভাহার সবকিছুই আছে—অধচ আগলে যেন কিছুই নাই।

ইহার করেক দিন পর এক সন্ধার মাবগাঁরের হাট হইতে কিরিয়া সনাতন বলিল, আৰু হাটে যোগেনের সলে দেবা হ'ল। পিসিমা পরশু আমাদের এবানে আসবে। কিছুদিন বাকবে এবানে।

যোগেন সনাতনের পিসভূতো ভাই। পাকে মার্বগাঁয়ে। ছেলে, বৌ, নাভি-নাতনী সইয়া পিসীমার দিনগুলি কাটে ভাল। মাঝে মাঝে হঠাং ভাইপোর সংসারে আসিয়া উদ্ধ হয়। কিছদিন থাকিয়া আবার চলিয়া যায়।

যথাকালে কান্তমণি অর্থাৎ সমাতনের পিসীমা আসিরা ছাজির ছইল। বহা টিক নয়, আবার প্রেচাও বলা চলে না। মাথার আর্থাকা। চুলওলো ছোট করিয়া ছাঁটা—তামাকপোণার ওঁড়াতে মাচী আর অবশিষ্ট গাঁতগুলি নিক্ষকালো। আসিয়াই কান্তমণি প্রথমে পা ছড়াইয়া বসিয়া য়ত তাইয়ের কল থানিকটা কাঁগিল, তারপর নিকের সংসারের কথা ভূলিয়া খানিককণ আবোল তাবোল বজিল, অবশেষে পাড়া বেড়াইতে বাহির ছইল। এই প্রামেরই মেয়ে সে—সকলেই তাহাকে চেনে। ছই এক গিনের মধ্যেই সে প্রামবাসীদের অনেককেই চোঝে আঙুল গিয়া দেখাইয়া দিল যে, তাহার ভাইয়ের বংশের উর্ভ্তন চ্পূর্জন প্রেম্ব বিবান করিতেছে। তাহারা চুপ করিয়া থাজিতে পারে, কিছ সে আগন-কন হয়া তো নিক্টেই থাজিতে পারে য়া।

বিনোধিনীর মনে হয় পিসীমা আসিবার পর হইতে সনাতন বেন কেমন একরকম হইরা সিরাছে। সভাই কেমন একটা চিছাত্রল ভাব ভার। সে হাসি-কৌছুক নাই, লে কর্বোংসাহ নাই। বাবে বাবে সে নির্বাক ছির চুট্টভে বিনোধিনীর বিকে চাছিয়া থাকে—কভ কি বেন ভাবে। বিনোদিনী সে দৃষ্টিকে মোটেই সহিতে পারে না— একেবারে সন্থটিত হইরা পঞ্চে । ইহার অর্থ যে সে বৃথিতে পারে না এখন নর । কিন্তু এই বোঝাটাভেই ভাহার বাধার বোরা আরও হর্কাহ হইরা ওঠে ।

সময় সময় শিসীমা ভাইপোতে মিলিয়া চূপি চূপি কি সব যেন কৰাবাৰ্তা হয়—হঠাং বিনোদিনী সেখানে আসিয়া পড়িলে উভৱেই হতচকিত হইয়া পড়ে। তার পর অভ কথা পাড়ে।

করেক দিন ভাইপোর সংসারে থাকিরা ভাতমণি বিদার
লইল। কিন্তু সেই হুইতে সনাতনের যেন একটা বিরাট
পরিবর্ত্তন আসিরা গেল। ছুটু বলিতে পিসীমার বাদে গিরা
গুরিরা আসিতে লাসিল। ভিজ্ঞাসা করিলেও ঠিক সহন্তর
পাওরা যার না। কি যেন অজানা আশহার বিনোদিনীর
মন ভরিষা উঠিল।

কিছ কথাটা এক দিন অপ্রত্যাশিত ভাবে প্রকাশ হইয়া পভিল। ওপাভার উাতিবোয়ের বাপের বাড়ী মাঝগাঁরে। ঘাটে উাতিবোয়ের সঞ্চে দেবা হুইতেই সে বিনোদিনীকে কানাইল যে, ভাছ-শিসীমা মাঝগাঁরেরই একটি মেয়ের সঙ্গে সনাতনের মৃতন সম্বন্ধ ঠিক করিয়াছে। মেয়েট বেশ ভাগর। আগামী মাষেই বিবাহ। সনাতনও ভাহাতে মত দিয়াছে। তনিয়া বিনোদিনী একেবারে অন্ধ হুইয়া গেল।

সন্ধার সময় ইহা লইয়া সমাতনের সলে তাহার ভূমুল বস্তা হইয়া গেল। বিনোদিনী কলহপ্রিয়া নয়—কিছ আদ্বন্ধে ভাহার কি হইল। যাহা মুখে আসে তাহাই বলিল। তারপর কাঁদিরা কাটিয়া মাথা কুটরা শাণান্ধ করিয়া অবশেষে সেই সন্ধায়ই ওপাড়ার ক্রেইভূতো ভাইয়ের বাড়ীতে আসিরা কাঁদিয়া পভিল। সিরীন সমন্ভ শুনিরা গন্তীর হইয়া বলিল, ভা আমার যদি হটো ভাত কোটে, ভোরও জুটবে।

প্রামের অনেক মেয়েই সহাত্ত্তি দেখাইল। আকারে-ইন্ধিতে আনাইল বিনোদিনীর কপাল পুডিয়াছে। বিনোদিনীও আনিল বে, ভাহার কপাল সভ্য সভাই পুডিয়াছে। নহিলে এমন হইবে কেন।

চোৰের জলে জার বুককাট। দীর্থবাসের ভিতরে ভাইরের সংসারে বিনোদিনীর দিন কাটতে লাগিল। করেক দিন পরে সকালের দিকে সনাতনের রাবাল ছোক্রাট একেবারে হত্তত হইরা আসিরা হাজির। বিনোদিনীকে সাধনে পাইরা বলিরা বসিল, বুড়ীবা গো, সনাকাকার তিল দিন বেকে ভরাক জর। গাবেন আজন। ভোষারে বেতে বলেছে।

বিনোদিনী বছার দিরা উঠিল, বেভে বলেছে ? কেন ?

বা ভোর বছুন বুড়ীনাকে নিরে আরগে মাবার্গা বেকে।
আবাকে কেন ? লক্ষা করে না বলভে। বেরো বল্ছি
বভাছাতা। নইলে বেটারে বিহার করবো।

বেগতিক দেখিয়া ছেলেট পরিয়া পছিল। কিছ সার্থ সকালটা ছুটিয়া বিনোদিনীর মনটা বাধায় একেবারে গুমরিয়া মরিতে লাগিল। তাহার অমন হামী—তাহার সোনার সংসার, তাহার কালিনী আর অঞাল অবোলা গৃহপালিত ভীব—সমন্তই তাহার, কিছ সকল অধিকার হইতেই সে বঞ্চিত হইয়া পভিয়াহে। কিছ কেন ?

ছপরে সে পুরুরবাটে গেল স্থান করিতে। সেই পুরাতন শান-বাঁৰানো খাটে স্নান করিতে করিতে একবানি বাধালিই প্রীভিত মুখ কেবলই তাহার মনে পঞ্জি লাগিল। কিরিবার বেলায় দাস-পাড়ার পথের পানে এক বার চাছিল। সেই ভুপরিচিত আঁকাবাকা পথ। সে পথ যেন ছমিবার ভাবে তাহার মনকে টানিতে লাগিল। ভাহার অবাধ্য পা ছবানি পেদিক পানেই তাহাকে महेश চলিল। এক পা हुই পা করিয়া সে গিয়া হাজির হইল ভাহার সেই স্থপরিচিড चाहिमाएक । करशक मित्नत ग्रह्मा फेर्राटन वैकि शएक नाहे । এখানে সেখানে রাজ্যের জ্ঞাল ভ্ষিয়াছে। গোয়ালখর গোবরে ভর্ম্ভি। সমন্ত দাওয়াটায় পোড়া ভাষাকের শুঁড়ার ছভাছভি। এ কি হাল হটয়াছে ভাহার সংসারের। রারাখ্যে চকিয়া দেখিল, উহুনের উপর মাটির হাঁড়িটা চড়ামো-ভাহাতে এক মুঠো আৰু পোড়া আৰু সেছ চাল ৷ বোৰ হয় ছৱে শ্ৰ্যা-গত হইবার পূর্বে সনাতন রালা করিবার ভ্রম ব্যর্থ চেটা कविशासित । (अहे सिटक शिक्श (अ ह क कविश कैसिया কেলিল। একট বাভত্ব হট্যা এ ব্যুর আসিয়া দেবিল স্নাভ্য উপুত হইয়া শুইয়া শুৱের খোরে গুঁকিতেছে। বিনোদিনী কাছে আসিয়া পরম জেন্তে স্বামীর মাধার উপর হাতধানি রাধিল। সনাতন ৰভয়ত করিয়া চাছিয়া দেখিয়া একেবারে অবাক হইরা त्रम । वाक्ष काच कृष्ट विमान त्य विद्यामिनीय सूर्वय शास এক দট্টতে তাকাটয়া বহিল যেন কত বুগবুগান্ত ভাহাকে দেৰে নাই। ভার পর ভাছার ছাত্থানি নিজের **উভও** বুকের উপর টামিয়া লইয়া বলিল--- আমায় মাপ কর্ বিন্দী। এ সংসারে ভার কাউকে ভাষি ভানতে পারব না, কিছতেই না। আমি পিসীমাকে খবর পাটিয়ে দিরেছি এ বিরে হবে ना-- क्यम ७ नद्य। कृष्टे हत्न यावि (न वन् ?

বিনোধিনী কিছুই বলিল না। গুৰু উক অঞ্চৰারায় ভাতার গও ভিজিরা উঠিল। খানিককণ এমনি ভাবে থাকিব। সে বানীকে ভাল ক্রিয়া শোরাইল। গারের চাহরটা আর একটু টানিরা দিল। ভারপর পুর্কেকার মৃত সংসারের কাকে লাগিবা গেল।…

ইহার করেক দিন পর সমাতন সুস্থ হইরা উঠিরা সকালের দিকে বাওরাতে বসিরা এক মনে হঁকা টানিতেছিল। বিশোদিনী রাধাল হোকরাটকে ভাকিরা বলিল, বা ভো বাবা রজন, এক বার শিসীবাদের গাঁরে। ভাকে বসবি বিনো-বৃড়ীমা পাঠিরে দিরেছে—জোর সমাকাকার বিয়ে এট মাব মাসেই হবে। তাকে বলিগ সব ব্যবগা যেন করেন।

সনাত্ৰ একেবাবে অবাক হট্যা গেল । কি যেন বলিতে গেল, কিছ বিনোদিনী ভাহার আগেই বলিয়া উঠল—না, কোন কৰা নয়। এতে অমত করলে আমি যাব। কুটে যরব। আমাকে আর বাঁটিয়ো না।

রতন রওনা হইয়া পড়িল। কিছুদুর যাততেই সনাতন পিছন হইতে ডাক দিল, ভনে যা রওন। যাস নে।

্ কিছা সে তখন অনেকট। দুর অঞ্সর হট্টাচে, তনিতে পাটল না। সনাতন বিনোদিনীকে উদ্দেশ করিয়া বলিল, এ কি করশি বিন্দী ? এ যে নিজের সর্বনাশ নিজেই ডেকে আমনলি। বিনোদিনী কলসী কাঁথে করিয়া পুকুরের দিকে রওনা হুইভেছিল। শুনিভে পাইয়া বলিয়া উঠিল, সর্বনাশ কোধার গো? এতো আমার সোভাগা। নইলে আমার বেঁচে থাকবার কি যানে হয় বল তো? আমি মরে গেছি, তাই বলে তোমাকে ত আমি মরতে দিতে পারি নে। এ ভালই হ'ল, েগাধার ভেতর দিয়েই আমি বেঁচে থাকতে পারবো।

সনাভন কিছুই বুংকতে পারিল না। বিনোদিনী এমন হেঁয়ালীও ভানে। হয়ত খণী বাপের ধারা সে পাইয়াছে। শুধু কেন যেন একটা বুকভরা দীর্ঘাস সনাতনের মর্ম্মন্থল ম্বিত ক্রিয়া বাহ্র হুইয়া আসিল।

### লিপি-বিভাটে অনর্থপাত

অব্যাপন নতীৰত ব চৌধুরী

শ্রম্থের প্রীযুক্ত থোগেশচন্দ রাষ বিভানিধি মহাশয়ের 'বাংলা নব লিপি' নামক প্রবন্ধটি সম্মোগ্রেশিই ইইয়াভে। দেবনাগর বর্ণমালার 'র' এবং অহুপার গ্রহণ করিয়া ভিনি বাংলা ও দেবনাগরের মিলনপথ স্থাম করিয়াছেন। এ-ফারকে বর্ণের পরে বসাইয়া ও বহু যুক্তাক্ষর বাদ দিয়া ফ্রুল্ড লেখার এবং টাইপ-যন্তে লেখার স্থবিধা করিয়াছেন। কিন্তু আৰু বাংলার দৃষ্টির পরিসর বাড়াইতে হইবে। আমাদের দৃষ্টিশভিকে কেবলমাত্র বাংলার চতুঃসীমাহ আবদ্ধ রাধিলে চলিবে না।

বাংলার বহিম ভারতকে 'বন্দেমাতরম্' মন্ত্রে উদবৃদ্ধ করিয়াছেন। বাংলার, তথা পৃথিবীর রবি ভারতকে 'কনগণমনের'
সামা-সাবনার মন্ত্রে দীক্ষিত করিয়াছেন। এই কুই মন্ত্রের শক্তি
সন্ত্রেও ভারতের অকচ্ছেদের উপক্রম দেখিয়া বাংলার স্ভাষ
খাবীন ভারত পঞ্চিকলে কয় হিক্দ্ ধ্বকা উণ্ডোলন করিয়াছেন।
বাংলার সন্ত্রাসী, সাবক ব্যবহারজীব চিকিৎসক ও অব্যাপক
ভারতের দ্রন্থিত শহর ও প্রামে চড়াইয়া পঢ়িয়া দেশসেবার
পরিচয় দিয়াছেন। আজ সেই সমস্ত অকলে খানীয়
লোকেরাই এই সকল রম্বিতে দক্ষতা লাভ করিয়াছেন। কিছ
ভাই বলিয়া ভারতের বিরাট সংস্কৃতির ক্ষেত্রে বাংলার কাক
কুরাইয়া যায় নাই। বাংলা নিক্রের সাহিত্যকে পৃথিবীর
শ্রেট সাহিত্যের সমান আসনে বসাইয়াছে। এইবার ভারতের
সকল শাবা ও উপশাবা-ভাষার মিলন ঘটাইয়া ভারত-ভাষাকে
ভাহার বছানে প্রতিষ্ঠিত ক্রিতে হইবে।

ভাষার প্রথম বাপ হইবে ভারভের ভির ভিন্ন বর্ণমালার বেয়ালের স্ট খবাছর খংশগুলিকে নিয়ন্ত্রণ করিয়া ভারভে একই লিশি প্রচলন করা। খালাষ ও উছিয়ার সহিভ এক্যোগে কাজ করিয়া, বাংলা ভাষার বর্ণমালা কথকিং সংশোধিত করিয়া, প্রয়োজনমত সংশোধিত দেবনাগর বর্ণনালার সহিত ঐকাবিধান করুক। অচিরেই দেখা যাইবে যে, ভারতের অপর প্রদেশগুলিও এই মহৎ আদর্শ সানন্দে গ্রহণ করিবে।

ভারতের প্রাদেশিক শাখ্য ও উপশাগ্য-ভাষাগুলি যদি অংবজ্ঞানিক পথে চ'লয়া নিক নিজ ভাষাকে খণ্ডপ্ৰভাবে বভ করিবার ১৮ষ্টায় রাজ থাকে, তাবে জমে দেখা যাইবে যে, ভাষা ে বড় হইবেই না, স্থপিচ ভারতভূমিতে ভাষা-বৈরিতার রহং প্রাচীর উঠিয়া অহত ভারতকে ভাষা-কচকচির 'টাওয়ার भव वाट्यटल' भारत्ये कांद्रद्य । विद्यानी विभक्त-भागकाल অনবরতই এই চেষ্টা কবিয়াছে। কিন্তু ভারত-ভাষার সুদৃচ ঐপিহাসিক ভিত্তি পদে পদে তাহাদিগকে প্রতিহত করিয়াছে। প্রতীচ্যের ভাষাবিদর্গণ ভারতে ভাষাকে সর্বন্দের্গ্র ভাষা বলিয়া খীকার করিয়াছেন। ১৬১৭ খ্রীষ্টাব্দেলা জোক (i.a ('roze) তাঁহার অভুসভানের ফলস্কপ সংস্কৃত-ভাষার মাহাত্য প্রচার ক্রিয়াছেন। ১৭৪৮ খ্রী**প্রাক্তের ভো**ছান ফ্রিডিক (Johan Friedrieh) ভারতের বর্ণমালার প্রশংসা ক্রিয়া যুরোপকে চমংক্রভ করিয়াছেন ৷ কাগিয়ানো বেলিগন্তি (Cassiano Beligatti) —দেবনাগর লিপির বৈজ্ঞানিক ভিত্তির প্রশংসা করিয়া-ছেন। আমাছতিয়াস (Amitina)—ভারতের কাৰী বিশ্ববিভাপীঠের ভাষা বুলির বর্ণনার বারা প্রতীচ্যের ভাষা-रेरकाबिकमिरगद ठक् थुनिया नियाएन। ভाষাবিकानी ভর ভক এীরারসম বলেন যে এই বিশাল ভারতের ভবি-বাসিগণ ভারত ভাষার নাম কেবল 'ভাষা' বলিরাই ভাবে।

কিছ বিদেশী শাসক ভারতের ভাষাকে বঙ বঙ করিবার প্ররোজন বোব করিল। ভাহাদের প্রথম আন্ত হইল দান্দিণাত্য ও আর্থাবর্ডকে ভাষার বিরোধিতার হারা পরস্পরের মধ্যে পরদেশী এই বোব জ্বাইনা দেওরা। ১৮২৮ প্রীপ্রাকে বি এইচ. হজ্পন মহাশর 'I)ravidian' বা জাবিছ নামক এক মুতন শব্দের আবিছার করিয়া বসিলেন, কিছ বৈজ্ঞানিক ভাষাবিদ্ বলিতেছেন: "ভাহার পূর্বের ভামিল, তেলেন্ড, কানাড়ী ও মাল্যালম উপ-ভাষাগুলিকে সংস্কৃত ভাষার অক্ল বলিয়া গীকার করা হইত।"

বিশপ কালডোয়েল আবার ব্লিয়াছেন, "এপ্রিড-ভাষা-সমূহ তুর্কী, ফিনলাভি ও হালেরী দেশ হইতে ভারতে আসি-যাছে।" আর এক জন কুটনীতিজ বলিতেছেন যে, দাক্ষিণাভ্য ভারতের অঞ্চ নহে; ইহা অধুনাল্প্ত লীমুরীয়াঁ (Lemurian) মহাদেশের এক বিভিন্ন অংশ।

ভাষা-বিজ্ঞান কিছ স্পষ্ট করিষা দেশাইতেছে যে, প্রাচীন রাক্ষী-লিপি ও তামিল-লিপি একই অভিন্ন লিপি। ভাষা-বিজ্ঞান বলিতেছে, তামিল আর্থ্যাবর্তের ভাষা, এবং কৈন-লেখকদের ছারা পুট। তামিল-ভাষা সংস্কৃত শব্দে সমুদ্ধ। কানাণী বর্ণমালাও রাঝা হইতে উদ্ধৃত। তেলেও ভাষা অফ্রের ভাষা। ইছাও সংস্কৃত-শব্দপূর্ণ।

১৮৫৩ খ্রীষ্টাব্দে ভাষাবিদ্ জে প্রীভেনসন দেখাইয়াছেন যে, ভারতীয় আর্যাভাষায় বহু দ্রাবিদ্ধ শব্দ প্রচলিত। আর্যাভাষায় বিশ্বতি সম্বন্ধে অব্যাপক হিলব্রান্ট (Hille Brant) বলিতভেনে যে, কান্দাহার, অর্থাৎ গাহারের পূর্বনাম ছিল আর্যায়শ (Trachosia), এবং কতিপয় বৈদিক মন্ত্র তথায় রচিত হইয়াছিল।

বিদেশী বণিক-শাসকদের ভারত-ভাষা বলিদানের ভার এক মশান ভাসাম, প্রাচীন প্রাগ ভ্রোতিষপুর।

বাংগা ভাষা ও অসমীয়া ভাষার লিপি প্রায় অভিন্ন।
কিন্তু ভারতের বরভাগানে। বিদেশী, "আমেরিকান মিশনরী প্রেস এই অসমীয়া ভাষাকে বাংলা ভাষার সংস্রব হুইভে বিচ্ছিন্ন ব্যাবিবার ক্ষণ্ণ বিভার চেপ্রা করিয়াছে।" (প্রিয়ারসন্মের Linguistic Servey of India, vol. ix)

বদেশীরের প্রতি এই ভাবে বিরাগ জ্যাইরা বন্ধুর ছলবেশে সরলপ্রাণ আসামবাসীদের মন ভাহাদেরই একান্ত আপন উন্নত ভারতীর ভাষা ও সভা্তার প্রতি বিরূপ করিয়া কৌশলে বোমান বর্ণমালা চালাইবার অশেষ চেটা হটরাছে। ধাসিরা উপভাষা ইতিমধ্যেই এই ভূক করিয়া বসিয়া আছে।

ভারতের ভাষাবিদ্গণ এই বর্ণমালা বিমাশের প্রতিকারের বৃদ্ধ চেঙা করেন নাই। অবচ তিন শত বংসর পূর্ব্যে, ১৬৬৩ ঐঙাব্দে ভাষা-বৈজ্ঞানিক পিরেজো দেপ্লা ভাল্লে ( Pietro I)ella Valle) দেবদাগর বর্ণমালার সহিত ইউরোপকে

পরিচিত করাম ! ইউরোপকে তিনি কানান যে, ভারতের কাতীর ভাষা, Lingua Indien সংস্কৃত। কিন্তু প্রর আবেলষ্টেন বেন্স্—ভারতীয়দের সংস্কৃত-প্রীতি দেবিয়া ভয় পাইয়া গেলেন। ("He looked askance at this fondness for Sanskrit of the average Indian")। ইতিমধ্যে ইহার প্রতিকারও আরম্ভ হইয়ছিল। ১৭৮৭ প্রিষ্টান্দে গিলক্রাইট একটি নুতন ভাষার নামকরণ করিলেন। তাহার নাম দিলেন হিন্দোভানী, এই ভাষার প্রাচীন্ত্র প্রমাণ করিতে গিয়া ইউল মহাশয় বলিলেন যে, এই হিন্দোভানী শক্ষটি প্রথম ব্যবজত হইয়ছিল ১৬১৬ প্রটান্দে। তথ্য অবক্ত ইহার নাম ছিল ইন্দোভানী।

ভাষা-বৈজ্ঞানিক কিন্তু বলেন, অপ্তাদশ শতাকীতেও হিলোভানী ভাষার নাম ছিল 'মোরর' (the Moor's language)। তার পরে ইহার নাম হইল ওদু'। বিশাত মুসলমান সাহিত্যিক মীর আস্মন ওদু'ভাষার উৎপত্তি সম্বদ্ধে বলেন যে, কতক্তিলি যুদ্ধ-বাৰসাধী ও সুঠেরা ছোট ছোট উপজ'তির ক্যা ভাষার সংমিশ্রতে এই স্প্র-ভাষার ক্যা

"It is a mongrel mixture of the languages of the tribes who flocked to the Delhi bazar."

প্রীয়ারসন্ধর মতে তুকী-ভাতার-মুখল রজে শান্ত
মুখল নামে পরিচিত স্রাটদের দিল্লীর প্রাসাদসংলয়, ভাতারতুকী-ইরাণী সিপাহীদের হারা প্রভাবাধিত বাজারের
ভাষা রূপে এই ওচ্ ভাষার জন ওচ্ শক্ষি ওচ্ -এ-মুমালা,
অবাং স্রাটের সামরিক বাজার, এই কণা হইতে উদ্ভা
ভাহার মতে জন্তালশ শতাসীতে ইংরেজের প্রভাবের ফলেই
ওচ্ গতের স্টা।

"Urdu prose came into existence in the eighteenth century due to English influence."

উত্তর-ভারতের শক্তিশালী সমান্ধনেভাগণ সনাতন ভারতীয় ধর্ম্মের রক্ষক। উছারার ধর্ম্মবিপ্লবের আশকায় ধর্মের
বাবহারিক দিকটাতে এত বেশী ক্র্কিয়াছিলেন যে, ধর্মতিছের
মূল বাঁধন যে কোথায় কি ভাবে ছি ভিয়া গেল সেদিকে লক্ষ্য
করিবার অবসর পান নাই। তাহার কলে ভারতবর্ধের কেন্দ্রমূল বারাণসী আৰু তাহার নিক্রৈর নাম হারাইয়া বসিয়া
আছে। আৰু আমাদের দেশের গৌরব কাশী বিশ্ববিভাগীঠের
নাম সম্পূর্ণ বিদেশী ভাষায়, বেনারস হিন্দু ইউনিভাসিট নামে
প্রচলিত।

কাশীর উত্তর ও দক্ষিৰ প্রাত্তে প্রবাহিত বরুণ। ও অসী নদী হইতে বারাণসী নামের উত্তব ।

ভারতের সার্কাজনীন ভাষা লটয়া যে বিতঞা চলিতেছে, তাহা অমূলক। ভারতের ভাষা সম্পূর্ণ জীবভ থাকিয়া ভারতকে এক অচ্ছেচ বীধনে বীধিয়া রাধিয়াছে। ভাষার রাষারণ-গান ভারতের ঘরে ঘরে নিত্য দীত হইতেছে।
গোলামী ভূলদীদাস প্রভুর 'রাষচরিত্যানস'ও ভজনাবলী,
স্মদাস প্রভুর 'প্র সাগর' এবং মীরাবাদীরের ভজনের
ভাষা ভারতের অধিকাংশ অঞ্চলের লোকেট সহজে বুরে।
ইহার কোনটিতেট 'হিন্দু' বা 'হিন্দী' শব্দের উল্লেখও
পাওরা যায় না। ইহাদের ভাষা, রজভাষা, অযোধ্যার
ভাষা বা রাজ্যানী ভাষা। এই সকল বুলতঃ একই ভাষা
এবং সংস্কৃত হটতে জাত। ভারতের মূল সংস্কৃত ভাষা হটতে
জাত প্রাক্ত ভাষা ক্রমে শৌরসেনী ও মাগরী রূপ ও নাম
লইল। মাগরী আবার তিনটি রূপ ধারণ ক্রিল—ওড় বা
ওছিরা, গৌড় বা বাংলা এবং আগামী বা অসমীয়া।

শোরসেনী ভারতের কেন্দ্রস্থার ভাষা। তাহা কেবল ভাষা নাম লটয়াই সভঃ। তাহাই গোসামী তুলসীলাসের ভাষা, নাম অভর্কেদী।

প্রাক্ততের ভার এক রূপ হইল—বৈদর্ভ। বৈদর্ভের ছুই রূপ, মহারাই ও গুলরাতী। তাহার ফলে এই অবস্থা দাঁভাইল
—ভারতের পশ্চিম প্রান্থের ভাষা বৈদর্ভ, পূর্বে প্রান্থের ভাষা মাগরী এবং ইহারা পরন্দার সংযুক্ত হইভেছে কেন্দ্রীয় ভাষা, "ভাষার" হারা।

ভারত-ভাষার বৈজ্ঞানিক বিল্লেমণ পৃত্তকে ভাষাবিদ্ গ্রীয়ারসন লিখিতেছেন্—

"ভারতের উত্তর-পূর্বে সীমাছছিল ডিব্রগড় হইতে প্রামের পর প্রাম অতিক্রম করিয়া পদত্রকে চলিতে থাক ; ক্রমে বোছাই পার হইরা উত্তর-পশ্চিম প্রাছমিত দরদীছাম দর্শন কর। কোথাও দেখিবে না যে, এক প্রামের ভাষা পাশের প্রামের ভাষা হইতে পৃথক, এই ছুই হাজার আটি শভ মাইল দীর্থ পথ এক পরস্পর-বোধ্য ভাষার ছত্রে প্রবিত।

"অবচ ইউরোপের সুইজারল্যান্ডের ছুইট সংলগ্ন প্রাম, লা কেরিয়ের এবং লে বোজা (La Ferrier and Les Bois) একই সমতলন্থিত এবং কেবল একট ঘন্টার পব ; অবচ তাহারা পরস্পরের ভাষা বুবিতে সম্পূর্ণ জক্ষ। একট প্রামের অবিবাসীরা শিল্পবাবসারী ও প্রটেপ্তান্টার্থী। অপর্টার অবিবাসীরা চাষী ও পশুণালক এবং ক্যাবলিকবর্ষী।"

ইউবোপের ভাষার এই অক্ষমতার ভূলনার ভারতের সার্ব্বকানীন ভাষা যুগ যুগ বরিয়া অতি সুঠু ভাবে নিজের কাজ করিয়া বাইতেছে।

বন্দের স্ষ্টি হইতেহে এই ভাষার নাম লইরা। এক শ্রেণীর
মত, ইহার নাম হোক 'হিন্দী'। এই হিন্দী নামের জনক
হইল 'হিন্দুহান' শব্দটি। আবার ভাহার জনক হইতেহে
'হিন্দু' শব্দ। পারশাকগণ সিদ্ধু শব্দ উভারণ করিতে
অক্ষম বা অনিজুক। ভারতবাসীরা ভো অক্ষম নহে।
ভবে ভাহারা সিদ্ধু না বলিরা হিন্দু বলিতে বাধ্য

হইবেদ কেন ? এবনও ভারতের চৌভ খানা ছান, হিন্দু-ছান নামে যে খাকল পরিচিত, তাহার সীমার বাইরে। খালান, বাংলা, ওড়িয়া, মাল্লাক, পৌরাষ্ট্র, মহাকোশল, এসব খাকল হিন্দুছানী বলিতে বোকে বিহার, খাঞা, খাবোবা ও পঞ্চাবের লোকেদের। রাজপুতানা রাজছান; হিন্দুছান নর।

কাৰীর অভতম শ্রেষ্ঠ পণ্ডিত রামদাস গৌড মহাশবের "হিন্দ্র" নামক গ্রহ্বানি ভারতবর্দ্ম সম্বনীয় ভানের একট বিহকোববিশেষ। মহাপণ্ডিত শ্রীমান্য বিফু পহাভকর বলিতেহেন, "হিন্দ্রশ্ব সম্বন্ধে এমন কোনও বিষয় নাই বাহা এই পুডকে যথাছানে লিখিত না হইয়াহে।"

পৃত্তকথানিতে রামদাস শৌভনী লিখিতেছেন, "সংক্ষত তাষার কোনও অতিবানে হিন্দু বলিরা কোনও শব্দ নাই। কারসী-ভাষার অভিবানে হিন্দু শব্দ, এবং এই শব্দ হইতে উত্তত অনেক শব্দই পাওয়া যায়। যথা, হিন্দুসা, হিন্দুসা, হিন্দুসা, হিন্দুরার, হারসার, হারসার, হারসার, হারসার, হারসার, কারসার, কার্যাক্র ও পাহারদার।"

লী লায়াল ভাঁহার 'হিন্দুখানী ভাষার ব্যক্তাহিনী'—
Sketch 'f the Hindostan Language—পুখকে
লিখিভেছেন যে, হিন্দো শক্টর পূর্বের রূপ হিল হিলাও।
ইহার প্রাচীন পারশাক রূপ, হেন্দর। হেন্দর শব্দের ব্যব্ হপ্তহিন্দু দেশবাসী। (এই সপ্তসিদ্ধ দেশই সর্বভী ও দুশ্বভী
হারাইরা এখন পঞ্চাব নাম লইয়াছে)।

ওদ্ভাষা সম্বন্ধে ভাষাবিদ্গণের সিদাম্ভ ভারভব্দিগণের মন:প্ত হইবে না, তাঁহারা বলিতেহেন,—

"উচ্চল্লেমীর ওদ্তে ব্যাকরণাংশ ব্যতীত আর কিছুই ভারতীর দয়। অথচ এই ওদ্ বিজ্ঞো-শাসকদের হারা ছোর করিরা ভারভবাসীদের হুছে চাপানো হর নাই। হিন্দু-জাতির প্রকৃতিগত বস্তু হুভাবের দরুন ভাহারা বিদেশী শাসকের ভাষা ও চালচলন আপনার করিরা লয়। ইহার লেবকগণও পারশীক বা পারশীক ভাবাপর ভূকীরা দয়। ভাহারা শভাবীর পর শভাবী বরিরা নিজেদের ভাষাতেই সাহিত্য-চর্চা করিরা নিরাহে। এই ওদ্ভাবার প্রহ্লার হিলেদ ভারতী ভাবাভিক্ত কারহ ও ক্ষিত্রগণ।"

এই ওদুরি দোসর বিশী-ভাষার ভাই রূপও পর্যান্ত হির হর নাই।

ভারত-সরকারের ভাষা-মীতি সমিতির ১৯৪৭ **এটাবের** ১লা মার্চের সিরাতে বোষণা করা ক্টরাতে,— 'ভারতের জনগণের হারা অন্থ্রেদিত শক্তালিক। তৈরারী করিতে আর এক্লবার চেষ্টানা করিয়া হিন্দুভানী ভাষাকে ভারতের সার্ব্যক্ষনীন ভাষারণে প্রবর্ত্তিত করিবার চেষ্টা পরিত্যাপ করা উচিত নহে। এই উদ্বেক্তে বিশ্বভানী ভাষার শক্তালিকা তৈরারী করিবার কর একট সমিতি গঠন করা হইল।"

ইন্দোর নগরীতে ১৯৪৬ সনের ১২ই ডিসেশ্বর শ্রীর্ক্ত রাজাগোপালাচারী বলিরাছেন, "দান্দিণাত্যবাসিগণ বিজ্ঞাসা করেন বে, যথন উত্তর-ভারতের অধিবাসীরাই এ প্রান্ত ঠিক করিতে পারিতেছেন না যে, হিন্দুভানী ভাষার শস্বভালিকার কোন্ কোন্ শস্ব ছানপাইবে, তথন আর আমাদের হিন্দুভানী শিধিবার অভ চেষ্টা করিবার প্রয়োজন কি ?"

ভারতের ভাষা "ভাষা"কে হিন্দী নামে চালাইবার চেষ্টাভেই এই সকল অমর্থের স্বষ্ট হুইভেছে, এই ভাষা-সম্ভার সমাধান হুইভে পারে হুই উপারে।

প্রথম উপার, হিন্দী নামের হুচ অভারভাবে হিন্দ না করা। বিতীয় উপায়, ভাষার ভিত্তি বর্ণমালার বঞ্চাট মিটাইয়া কেলা।

সংস্কৃত ভাষার বাহন দেবনাগর অক্ষর ভারতের সর্ব্বত্র পুক্রা ও প্রিয়।

তাহার কারণ ভারতের বর্দ্ধ, শাল্প ও প্রাণাদি এবনও এই দেবনাগর অকরেই লিখিত ও পঞ্চিত হয়। এই দেবনাগর অকরেই লিখিত ও পঞ্চিত হয়। এই দেবনাগর অকর সামাভ পরিবর্ত্তিত হইয়া ভারতের উত্তর-পশ্চিম কোণের দর্দিক (বা শিশা৮) শাধার কাকীর, দরদ, কাদ্মীরী, কোহিভানী ও মার্মা উপশাধার ব্যবহার হয়। কিছু দক্ষিণে আসিয়া ইহা সভা, শাপুর, তাকরী, শারদা, গুরুমুখী, ভাঠকী, পঞ্চাবী, আংলী, মুলভানী, সিমী ও মারাঠিতে ব্যবহার হয়। ভার পরে গুজরাতী, কাঞ্চিবারী, বান্দেশী, রাজহানী, ভীলী, হবিশ্বদ্ধী, মালয়ালম, কানাভী, ভেলেগু, ভামিল, ওভিয়া, অসমীয়া, বাংলা, ছবোধীয়, বাব্দেলী, ওবী, লাভিয়া, কনোভী, গাভোৱালী ও ব্রজ্ঞাবার ইহা ব্যবহৃত হয়।

একই জননীর সন্থান, এই সকল ভাষার লিপিমালাকে স্বসংস্কৃত করিয়া একয়পে পরিণত করা ভারতের হৃষ্টি, ঐক্য ও সংস্কৃতি রক্ষার একমান্ত উপার।

অন্ত্ৰস্থিত ছুইবানি পুত্তক উক্ত ঐক্যসাৰন-পৰের স্থান পাইবেন। পুত্তক ছুইবানি 'জীবন-শিক্ষা-পাঠ' বা 'Life Education Service' ছুইতে প্রকাশিত এবং দীবন-শিক্ষা-পাঠের সভ্যস্থকে বিনার্ল্যে দেওয়া ছুইয়া য়াকে। ইহাদের নাম,—(১) বাত্তব ভাষার বিজয় অভিযান ব হুছতর ভারতের ক্ষুক্ত সমন্তার স্থাবান ( বাংলায়) এবং ২) ভারত-ভাষার বন্ধণ প্রকাশ বা Lingua Indica Revealed.

ভারত আৰু বিনারুছে স্বাধীনতা লাভ করিয়া পুৰিবীর

ইভিহাসে আশ্বিক বলের অপূর্ব্ধ পরিচয় দিরাছে। ভাহার এই আশ্বিক বলের অন্তম হেড়ু ভাহার দেবভাষার শক্তি। এই দেবভাষার দেবনাগর অক্ষরের সহিত ভারতের উপভাষাসমূহের আশ্বর্যা ঐক্যের পরিচর নিয়ের ভালিকা হইতে পাওরা হাইবে:

গুরুমূখী ভাষা শিবধর্ষের পরম আদরের ভাষা। তাহার গ, ট. ঠ প্রভৃতি দশট অক্ষর দেবনাগর ও বাংলা অক্ষরের মত।

কাশ্বীরের উত্তর ও পশ্চিমাংশের লন্দ ভাষার ছ, ড ও ছ,—তাক্ত্রী ভাষার চ, ছ, ভ, ল— এবং শারদা ভাষার খ, ছ, দ, ল প্রভৃতি ঠিক বাংলার অভ্যাপ। ইহাদের অভ আটটি অক্ষর দেবনাগরের অভ্যাপ।

দান্দিণাত্যের তামিল ভাষার মোট অক্সর-সংখ্যা পঁচিশ, বারট বাঞ্জন ও তেরট হব। ব্যঞ্জনের ক্-বর্গের চারিট অক্সর একট অক্সরের হারা বোঝানো হয়। ইহার অ, ও, ৮ প্রভৃতি আটট অক্সর।

ভেলেও ভাষায় ই, ও, ক, গ প্রভৃতি বারট অকর।

কানান্তীর ত, ন, ০০ প্রস্তৃতি নর্ষ্ট অক্ষর এবং মালয়া-লমের কৃ.০০, ৭ প্রস্তৃতি নয়ট অক্ষর বাংলা অক্ষরের অক্ষণ।

গুৰুৱাতী অক্ প্ৰায় দেবনাগর অক্রেরই প্রতিরূপ। পার্বক্য এই যে, ইছার অক্রের কোনও মাত্রা নাই। এই ভাষারও ৬, ঠ, ভ প্রভৃতি আটট অক্র দেবনাগরের অপেকা বাংলারই অধিকতর অক্সরপ।

মারাঠী বর্ণমালা দেবনাগরের সহিত অভিন্ন। বরং একেজে দেবনাগরই সুবিধার বন্ধ তাহার ব্রটিল অ-কার ত্যাগ করিয়া মারাঠীর সরল অ-কার লইয়াছে।

অসমীয়া বর্ণমালা প্রায় বাংলার অক্সরের সহিত অভিয়। ওড়িয়া ভাষার এ, দ, ল প্রভৃতি আটট অক্সর বাংলার সহিত অভিয় এবং ক, স, ব প্রভৃতি দেবনাগরের সহিত এক।

বর্ণমালার ঐক্যের জন্ধ ইংরেজ বালক অলায়ালে ইংরেজীর হইতে সম্পূর্ণ পূথক করাসী ভাষা আয়ন্ত করিয়া কেলে। সমত্র ইউরোপের ভাষাগুলি সম্পূর্ণ বিভিন্ন প্রকৃতির। ব্যাকরণও ভাহাদের ভিন্ন। করাসী ও ইটালীয়ানে ক্লীবলিদ নাই। ইংরেজী, সার্দ্ধান, রুষ, লাভিন, গ্রীকে আছে; অবচ বর্ণমালা এক হওয়াতে ভাহাদের ভাষা-শিক্ষার প্রধান বাবা অপসারিভ।

আর, ভারতের এক রামারণ, এক মহাভারত, এক মতা ববে ববে পঠিত হইলেও বর্ণমালার বিভিন্নভার প্রাচীর ভূলিরা ভারতবাসী তাহার দেশের জাতা-ভগিনীকে পরদেশতে পরিণত করিয়াছে। থেদির এই সকল প্রাদেশিক ভাষার লিপি এক হইবে, সেইদিন হইতেই সকলের কাছে সকল প্রদেশের ভাষা সরল হইরা ঘাইবে। তবন এক প্রদেশ অভ প্রদেশের ভাষার ভবের পরিচয় পাইয়া ভাহার প্রতি আতৃই হইবে। এইয়পে এই লিপির প্রক্যের হারা অতি সম্বরই ভাষারও প্রক্য সাবিভ হইরা ভারতের প্রাহেশিকভা লোপ পাইবার পর্ব প্রথম হইবে।

## াবমানে ভূ-প্রদক্ষিণ

### ই বিনয়ভূষণ দাশগুপ্ত

পরদিন ১লা মার্চ শনিবার, মহাহি-ভোজনের সময় কয়েক-জন অষ্ট্রেলিয়ান ভদ্রলোকের সহিত আলোপ হইল। ইহারা সাংবাদিক। ইহারাও ভারতবর্ধের প্রসঙ্গ উত্থাপন করিলেন। ভারতবর্ধ সম্পন্ধে ইহালের অঞ্চতা সীমান্ট্রীন। ভারতবর্ধের জনসংখ্যা ইহালের ভীতিমিশ্র বিশ্বয়ের উদ্রেক করে। ভারতবর্ধের জনসংখ্যা ইহালের ভীতিমিশ্র বিশ্বয়ের উদ্রেক করে। ভারতবর্ধের উদ্রেক করে। ভারতবর্ধের টাটা কোম্পানীর মত বিরাট ইম্পাতের কারখানা আছে, আর্ক ভজনের উপর এফ,জার এস আছেন, সাহিত্যে ও বিজ্ঞানে নোবেল পুরস্কারপ্রাপ্ত মনীধীরা আছেন। আমার প্রমুখাৎ এই সমস্ত সংবাদ ভনিয়া ইহারা বিশ্বয় বোধ করিতেজিলেন। একে ভ্রমলোক রবীজনাধের গীতাঞ্জলির নাম লিখিয়া লইলেন। একে ভ্রমলোক রবীজনাধের গীতাঞ্জলির নাম লিখিয়া লইলেন। একে ভ্রমলাক রবীজনাধের প্রাপ্ত ব্রদর্গ আহেন কর্ম। ইংরেকের ক্ষণা উঠিল। ইহারা ইরেকের প্রতি ব্রদর্গ প্রকাশ করিতেলাগিলেন। ভারতবর্বে ইংরেকের প্রতি এক্সপ দর্য নাই ক্ষেন ভার কারণ জানিতে আগ্রহ প্রকাশ করিলেন।

আমি পূৰ্ব্যদিন স্কটকে যাহ: বলিয়াছিলাম তাহাই ইহাদের বিশদভাবে বুৱাইয়া বুলিলাম । কিন্তু তথাপি যেন ইঁহারা সন্তঃ ছইতে পারিভেছেন না। আমি একট বিরক্তি বোধ করিতে-ছিলাম। তথন এদেশের বড়লাট নিয়োগ লট্মা সংবাদপত্তে খুব আলোচনা চলিতেছিল। বস্তমান বড়লাট রাজার খুল্লতাত। ভাছার ছলে কুটনস্ল্যাভের প্রধান মন্ত্রীকে বড়লাট মনোনীত कर्ता इन्द्राट्छ । भूट्र्स अकवार बार्क अट्राट्स अक्स चट्डेनियान वस्रमारे विश्वक क्षेत्राकित्मन । लिनि कित्मन कार्रेटकार्टिन 🗪 । তাঁহার নিয়োগে সবাই বুলি হইয়াছিলেন। এবার-ভার মনোন্যন নইয়া বড়ই বিভৰ্ক উপস্থিত। স্কলেই অব্ভ অষ্ট্রেসিয়ান বড়লাট চাছেন। তবে দলগত ভিছিতে এক জন স্ক্রিয় রাজনৈতিককে বড়লাট নির্বাচন করায় অনেকেই ভাপত্তি করিতেছেন। এই ঘটনার প্রতি ইঞ্চিত করিয়া আমি বলিলাম,"আচ্ছা, আপনারা তে। ইংরেজের বড় ভক্ত। এক জন মাত্র ইংরেক ভন্তলোক আপনাদের দেশে আছেন। তিনি রাজার বুল্লতাত, নিবিরোধী এবং শাসন-ব্যাপারে বিস্মান্ত হস্তক্ষেপ করেন না। তথাপি আপনারা এই ভন্নধোককে বরদান্ত করিতে পারিতেছেন না কেন বলিবেন কি ?"

তৰন ইংগার বলিয়া উঠিলেন, "এটা অবক্ত আপনি আমাদিগকে ঠিকই ভ্নাইয়াছেন।"

সাত্রাব্যের প্রতি ইংদের মনোভাব বেন ধানিকটা ভাবাবেগর্লক। নিউলিল্যানেও নাকি এইরপ। কানাভার কিছু এ বিষয়ে অনেক বেলী বিচারশীল মনোভাব লক্য

করিয়াছি। কানাড়া স্বতন্ত্র সিটকেনশিশ বা নাগরিক। অধিকার প্রতিষ্ঠা করিয়াছে, প্রিভি কাউন্সিলে আপীন উঠাইয়া দিয়াছে ৷ ইহাতে নিউক্লিল্যাতের একট সংবাদপত্র আপশোস ক্রিয়া লিখিয়াছিল, "আশা করা গিয়াছিল প্রাচীনতম ও বর্দ্ধিফুতম ডোমিনিয়নটি সাম্রাজ্য-বন্ধন দৃচতর করিতে তাহার প্রভাব বিভার করিবে। আমাদের এ আশা আৰু শুৱ হইল।" ইহার ক্বাবে আটোয়ার 'মণিং কার্ণাল' ( ১৯৪৭ ब्रिष्टोर्सित ১७३ कांग्रुशांती ) लिबिल, "आयारिका অকলাতের সহযোগীর রসবোধ কম বলিয়া মনে হইতেছে। আমরা সভা করিয়া আইন পাস করিয়া গলীর ভাবে প্রচার ক্রিয়াছি যে, যে বাজ্ঞি কানাডায় জনগ্রহণ ক্রিয়াছে এবং যাহার পিতা এবং পিতামহ এদেশে পশ্বিয়াছে সে নিকেকে কানাডীয় বলিতে পারিবে। আর আমাদের অক্ল্যাপ্তের সহযোগ বলিতেছেন যে, ইহাতে সাত্রাজ্যের মূল ছিঁলিয়া হাহার তিন পুরুষ কানাডায় জ্ঞািয়াছে সে নিজেকে কানাডীয় ভিন্ন আর কি বলিতে পারে ? আর প্রিভি কাউনিলের আপীল উঠাইয়া দেওয়ায় প্রিভি কাউলিল নিজে কোন আপতি করিলেন না, করিলেন অক্ল্যাভের ছেৱাব্য।"

ভারতবর্ষে কন্ষ্টিটায়েন্ট এসেমব্লি বা বিধান পরিষৎ যধন ভারতবর্বে স্বাধীন সার্ব্যভৌম প্রকাতান্ত্রিক রাষ্ট্র-প্রতিষ্ঠার সম্বন্ধ ধোষণা করিল তখন আমি কানাডায়। ভারতবর্ষের এই সিভান্তকে কানাডীয়গণ সমাজ্যের বাহিরে যাইবার সিভান্ত বলিয়াই প্রথমত: মনে করিয়াছিল। কিছ তথাপি কানাডীয়-প্ৰণ এই সিদ্ধান্তকে বেশ সহজ ভাবেই এহণ করিয়াছিল। লওনের কোন কোন কাগৰ লিবিয়াছিল যে. এই সিদ্বান্ত আইনে অগ্রাহ্ন। ইহাতে মন্টি,ষেলের 'ডেলি টার' (২০শে জানুয়ারী, ১৯৪৭) লিখিল, "প্রত্যেক জাতির স্বাধীনতা-সংগ্রামের ইতিহাসে এমন একটি মুহুর্ত আসে ঘর্বন আইনের বিচারের মাপকাঠিতে তাহার ফলাফল নির্দারণ ভার সম্ভব হয় না। ভারতবর্ষে আৰু সেই মুহুর্ত্ত উপস্থিত।" মন্টিরেলের গেৰেট লিখিল, "আৰু হইতে ভাৱতবৰ্ষ প্ৰাচ্যের অখেতকায় ভাভিগণের স্বাধীনতা-সংগ্রামের নেতা হইল। এই ছাগরণ বলপুর্বাক দমন করা সম্ভব নয়। কিছ যদি দেশীয় নেভাগণ দ্যানতম দায়িত্বজ্ঞান বন্ধায় রাখিতে পারেন তবে ই্ছাদিগকে ডিমোজেসির পরে পরিচালিত করা এবনও সভাব ৷"

আট্রেলিয়ার সাত্রাক্যের প্রতি যে ভাবাবেপপূর্ণ মনোর্ছি

পরিলভিত হর তাহার বিশেষ কারণ আছে। অবেডকার कांकि कर्कक व्यापित त्यमनबूद्दत मर्दा वरदेनिया विकाप-সভাভার অবভিস্কল বাঁট। বাপানের ক্রভ উন্নতি ইহারা সভবে বেৰিয়াতে। ভাপানের পতনে ইহারা যভির নিংখাস কেলিয়াতে : কিছ প্রাচ্য জাতির ফ্রুড উন্নতির উদাহরণরূপে काशास्त्र चि अवनर्ष हेरायत एटस्त कात्रण। हेरायत জনসংখ্যা মাত্র ৭৫০০০, অবচ বেতাদ-সভ্যতার বিশিষ্টতা বন্ধার রাখিতে ইহার। বছপরিকর। তাহাদের ধারণা অবেতকার ভাতির লোকেদের দেশে অবাব প্রবেশাবিকার बिल नैखरे छोटालय मरनाविका एरेश शक्ति अवर क्रमनः খেতাল-সভ্যতা দেশ হইতে লোপ পাইবে। দক্ষিণ আফ্রিকা আৰু সংবাধিক অৱেডকায় ভাতিদের দইয়া বিত্রত। ভাহাদিগকে দাবাইয়া ৱাৰিতে দক্ষিণ আফ্ৰিকাকে কত वावजारे ना जवनयन कतिए स्टेटल्ट् । धरे ममस्य दाकादाने দক্ষিণ আফ্রিকার। ৩রা মার্চের মেলবোর্ণ ছেরাক্তে অঙ্টে-লিয়ান এসোলিয়েটেড প্রেলের একট সংবাদের মধ্যে পড়িলাম, "বৰন দরিত্র অধেতকার কাতির স্থল মাটার বাণ্ট্রস্মীত পরিচালনা করে, তখন রাশী অবভা সহজ মধুর হাসিধারাই ভাহাকে পুরুত্বত করেন। কিছু ভিনি কি জানেন যে, ভাহার এইরপ ফটো প্রকাশ করা আইনে নিষিত্ব ?"

আৰু অট্রেলিয়ার উভয়গন্ধট। সে অখেতকায় ভাতিকে चवांव श्राद्यभाविकांत्र विद्या नित्कत वार्वहानि कतित्व ? ना. বৰ্ণবিষেষ নীভি দুচতার সহিত অভুসরণ করিয়া অখেতকায় জাতির শক্তত। উল্লেক করিবে ? অষ্টেলিয়া অবস্থ ধিতীর পছারই চলিভেছে. কিন্তু ইহাতে ভাহার নিৰের মনে এখনও ৰটকা আছে। ভাই ভাৱতবাসী দেবিলেই ইছারা 'সাদা আট্রেলিয়া' নীতির দোহাই দেয়, 'সাদা সভ্যতার' বাঁট विशा निरम्पत मा ভাবিশ্ব। পারে না। এক দিকে পশ্চিম-ইউরোপ হইতে অষ্টেলিয়ায় স্বায়ী বাসিন্দা আমদানী করিবার **জভ ইহারা প্রাণণণ চেঙা করিতেছে, অণর দিকে মরুবছল** আঠেলিয়ার অধিক লোকবসতির উপায় নাই বলিয়া ঘোষণা कविट्टा । এই कांद्र(नरे चट्डिनियांत कबनाय मार्ट्याटनात কেলে একট স্ক্রির শাসনবাবরা প্রয়োজনীয়। কিছ কাৰাভা সাত্ৰাভ্যকে সম-বাৰ্যভ্ৰণেই দেবিতে চায়। চীন ও ভারতবর্ষের প্রতি অট্রেলিয়ার দৃষ্টি বিশেষ সন্ধাগ। এই সময় একট কাগতে লিখিল, "ভারতবর্ষের স্বাধীনতা সাত্রাজ্যের প্রশ্ন। অতএব অট্রেলিরা ও অভাত ডোমিনিরনের সলে পরামর্শ করিরা ইহার মীমাংসা কর। উচিত। ত্রিটেন একা এ বিষয়ে जिकां अर्व कविता चलां व स्टेट्व।" और जमन अक विन पूर्व-গোলার্ছের মান্টিয়ে ভারতবর্ষের ভৌগোলিক সংস্থান দেবিলায়। দেবিয়াই ভারতবর্বের প্রতি অষ্ট্রেলিয়া ও দক্ষিব আফ্রিকার মনোভাবের ব্যাব্যা বেব পরিকার হইরা গেল।

বেশমাভূজার এবন লগ ত পূর্বে কথনও বেবি নাই। ভারত-মাতার "ভারত মহাসাগরের অধীবরী" মুর্ভ বেন অভিশব সহজ ও স্বাভাবিক বলিয়া মনে হইগ।

এই সময় দিলী হইতে এক সংবাদ প্রচায়িত হইল বে,
ভারত-সরকার ভারতীরগণের অক্টেলিয়ার প্রবেশাবিকার
সহকে অক্টেলিয়া-সরকারের সহিত আলোচনা করিতে চান।
ইহাতে 'সাদা অক্টেলিয়া' নীতি লইয়া এখানকার সংবাদপত্রে
কিছু কিছু আলোচনা হইল। ১লা মার্চের ডেলি টেলিগ্রাক্ষের
ম্যাগাবিন সেকুসনে এই সহকে একটি বিভ্বত প্রবন্ধ বাহির
হইল। লেখক তাঁহার প্রবন্ধ এই রূপে আরম্ভ করিয়াছেন—

"সেদিন কনৈক মার্কিন পর্যাটক এশিয়ার বিরুদ্ধে প্রাচীর ত্লিবার কল আমাদিগকে নিন্দা করিয়া বলিয়াছেন যে, 'সাদা অঠেলিয়া নীতি' শান্তির অভরার। ইহার উন্তরে আমরা বলিয়াছিলাম যে, ভদ্রগোকটি যে দেশের অধিবাসী লে দেশকে আমাদের মত এশিয়ার অনসংখ্যার চাপ অভ্তব করিতে হয় না। কিছু বর্তমান শতানীর শেষে যখন এশিয়ার অমসংখ্যা হই শত কোটতে দাভাইবে এবং বিজ্ঞানের সাহায্যে তাহার স্থা শক্তি ভাগত হইবে তখন মার্কিন ভদ্রগোকেরাও কিন্ধিং ভীত হইয়া পড়িতে পারেন। অবক্ত তভ দিন যদি ধর্ণ-সাহর্বোর ভ্রকে তাহারা ছয় করিয়া ফেলিতে পারেন ভবে সেকখা হতয়।"

তার পর লেখক বলিয়াছেন, এ কথা মানিতেই হুইবে যে, 'সাদা অট্টেলিয়া নীতি' একটি বর্ণগত বাধা। আমরা অবস্ত বুৰাইতে চেষ্টা ক্ত্ৰি যে, সাদা অষ্ট্ৰেলিয়া নীতির বুলে কোন বর্ণগত প্রর নাই এবং ইহার কারণ অর্থনৈতিক। এশিয়ার কুলী আসিয়া অৱ মাহিনায় কাৰ করিতে পুরু করিলে আমাদের শীবনযাতার মান নামিয়া যাইবে, ভগু এই ভয়েই আমরা সাদা অট্টেলিয়ানীতি অবলম্বন করিয়াছি। ক্লিছ আমরাতোকলীও ধনীর মধ্যে প্রভেদ করি না। এশিহার জীবনযাত্রার মান যদি আৰু উচুও ২ইড তবু আমরা সাধা অট্রেলিয়া নীতি পরিত্যাগ করিতে পারিতাম না। ইছার-কারণ সহক। অট্রেলিয়ানগণ ভাষাদের ইউরোপীয় রক্ত ও ক্লষ্ট বিশুদ্ধ রাবিতে চার। অভাভ বেত ভাতি অপেকা चार्डेनिश्चानरमद अहे एव राम् शक्ते कादन चार्डेनिश्चाद कोरगानिक चवशान खांड अनिशांतरे मरना अन् चरहेनिका हैके-রোপীয় ভাতির পৃথিবীব্যাপী শক্তিবৃহত্বে চুর্কালতম ভংশ। সম্প্রসারণকামী এশিয়া নিজের খর গুছাইতে পারিলেই এই इर्यम पश्टम श्राटम कविएण (घट्टी कविटर) अकार है है-রোপীরগণ আয়াদের এই কথা শুনিরা হাসিয়া থাকেন। কিছ প্রাচ্য জাতিগণ যে কত ক্রত উন্নতি করিয়া বর গুড়াইয়া শক্তি-সম্প্রসারণের চেষ্টা করিতে পারে ভাপান তাহার প্রস্তুর উলা-হরণ। এক দিন এই বিপদ সাধা ভাতির অভান্য অংশও

কামিতে পারিবে। তবন তাহারা বুরিবে যে, সাদা আট্রেলিয়া মীজি ভবু ৭৫ লক্ষ্ লোকের বামবেয়ালপ্রত নয়, ইহা পৃথিবীতে জমবর্দ্ধমান অন্যেতকার কাতির পার্যে পাকাণ্ডা ভাতির অর্থিত অবস্থার প্রতীক্ষাত। অটেলিয়ার 'বর্ণনীতি'তেই এক দিন প্রাচ্য ও প্রতীচোর শক্তিপরীকা क्टेर्त । अब वर्ग देवसमाम्लक वालशात क्रमाठ एव अर्डेलिया এশিখার সভের সীমা অভিক্রম করিবে ভাষা নয়; অঞ্জে-লিয়াকে বাঁট করিয়াই বিটেশ ও মার্কিন শক্তিচক ভ্রম্থল পরি-জ্ঞান করিবার প্রযোগ পাইষার্ভে এবং এশিষার ক্রভান্তরে যদ চালাইবার সামর্থাও লাভ করিয়াছে। কিন্তু পাল্ডারা কাতি যে, এই স্থয়েগ ও স্থবিধা পূৰ্ণমান্ত্ৰায় এছণ কহিবেট ভাছার কোন নিশ্চয়তা নাই। ইংরেজ ভাষার প্রাচ্যের সাথাকা ভাগে ক্রিতে অরু ক্রিয়াছে। চীনকে পর্কের চাড়িয়াছে : শীএই ভারত-তাাগ করিবে। মালয় বর্গ ই+েচীন ও কাপান ক্রমশঃ পরিত্যার করা হটবে। এটরণে একপিন খেত ভাতিকে হয়ত অট্টেলিয়া এবং নিউলিলাাডৰ তাগ করিতে ছটবে। টছা পরম অপ্যান্কর পরিণাম। কিন্তু অল্ল লক্তি সট্যা এশিয়াকে দাবাইয়া রাখা এখন অসম্ভব। ইহা বুকিতে পারি-ভেছে না বলিয়াই আৰু পাকাতা শক্তিসমূহ অঠেলিয়া ও নিউকিলাভের সাহায়ে ভ্রম্ভলব্যাপী শক্তিয়াহ প্রতিষ্ঠিত করিভেছে না।

ইহার পর প্রবন্ধকার বলিতেছেন, হয় তে একদিন মানুষের মনোভাব পরিবভিত হটবে। কনৈক গার্শনিক বলিয়াছেন যে. পুৰিবীতে এ প্ৰয়ম্ভ একুশট সভাতার উংপত্তি হইয়াছে. ভন্মৰো চৌষ্ট কাল প্ৰভাবে বিশ্বপ্ত। সভাতার উৎপত্তি ও বিলোপের হার যদি অপরিবর্তিত থাকে তবে পৃথিবী ধ্বংস क्षेत्रंत्र शुर्व्य व्यात्रस्य ১৫ लक्ष्म भक्षालात केष्ट्रत क्षेत्र क्षेत्र माज बरमा भरत हरलंक, जारमतिका, बरदेलिया छ निडेकिनगर्छ रय ক্ষাতিসমূহ বাস করিবে ভাহার। হয়ত আর খেতকার ৰাকিবে না, হয়ত তাহাদের বৰ্ণ-সাহর্বের ভাতিও থাকিবে না . কিছু আম্বা বিংশ শতাকীর মনোভাব লইয়াই চিতা করিতে পারি। বর্তমানে সাদা শাতির বর্ণসাম্বর্যা-জীতি,এশিয়া-ভীতি শ্বকীয় সভাতাপ্রীতি প্রবল। অপর পক্ষে এশিয়াও সাদা জাতিকে ভয় করে: কিছ 'গে জম্ম": অধিকতর শক্তিশালী হুইয়া সাদা ভাতির এলাকায় নিভের প্রভাব সম্প্রসারিত ক্রিতে ইঞ্ক হট্যা উট্টতেছে। সাদা ভাতি যদি হট্যা ষার ভবে অখেতকার জাতির সম্প্রদারণ বাড়িয়াই চলিবে। পরে ইছা সাদা ভাতির অসম হইবে। ফলে যুদ্ধও অনিবার্য্য रहेश देवित्व ।

সাধা কাভি এই সম্প্রসারণে বাবা বিতে চাহিলে ভণু বারার উপর বেদী দিন বাবাপ্রদান চলিবে না। প্রংস্কারী হিংসার হাত হুইতে বেভকায় কাভির বীচিবার একবাত্র উপার পূর্বাদ্রেই শক্তিবৃহ্ রচনা করিয়া প্রমণ্ড করিয়া থাকা। তবু প্রমণ্ড বাকিতে পারিলেই অপর পক্ষ সালা জাতিকে বাঁটাইতে সাহস করিবে না। বৃদ্ধ দূরে সরিয়া পঢ়িবে এবং পাতিপুর্ব উপারে মাধ্যের মনোভাব পরিবর্তনের সময় পাওয়া যাইবে। সালা আট্রেলিয়া নীতি এই প্রকার মনোভাবেরই প্রতীক। এই নীতির গায়িত্ব তবু আট্রেলিয়ার নর—সমস্ত সালা জাতির।

প্রথম বার যথন ক্যানবেরার ছিলাম তথন আমার ছাডাটি হারাইয়া থায়। হোবাটে গিরা ছাডাটির কথা মনে পছিল। মনে হইল ক্যানবেরার জেনারেল পোষ্ট আপিসের মন্ত ছানে ছাডাফেলিয়া আসিয়াছি। কৈনারেল পোষ্ট আপিসের মন্ত ছানে ছাডাফেলিয়া আসিয়াছি। কৈনারেল পোষ্ট আপিসের মন্ত ছানে ছাডাফেলিয়া আসিয়াছি। কৈনারেল পোষ্ট আপিসের মন্ত ছানে ছাডাফেলিয়া আসিকেও পারি নাই। এবার আসিয়া সেখানে গিয়া ছাডার কথা জিলাসা করিতে জনৈক কর্মাচারী ছাডাটি আমাকে দিয়া বলিলেন, "গাচ দিন ছাডাটি ঐ ছানে পড়িয়া ছিল। পরে আমরা ভিতরে আনিয়া রাখিয়াছি।" ছাডাটি পাইয়া যতটুকু আনন্দিত ছইলাম, ডার চেয়ে ধনেক বেশী বিশ্বিত ছইয়াছিলাম।

এবার কানিবেরার পরাপ্তণো মহালয়ের করা শহুত্বলা ও চার-গাঁচ বছরের নাতনীর সহিত আলাপ হইল। পরাপ্তণো মহালয়ের বাস সেকেটারী ডাব্রুলার সোরে, তদীর গৃহিদী ও পুত্র; প্রচারসচিব ডাম্লো ও তাহার গৃহিদী—ইঁহারা সকলেই এবার ক্যানবেরার উপস্থিত ছিলেন। সপত্নীক ডাম্লেও ছুটার পর ক্যানবেরার কিরিয়াছেন। ইঁহালের মড্রেও আতিবেরতার দিনগুলি বেশ কাটিল। টেকারীতে আমার কাকও ফত অপ্রসর হইতেছিল।

একদিন পরাশ্বশ্যের গৃহে আইরিশ ক্রি টেটের রাইণুভ কিয়ার্গনের পত্নীর সহিত আলাপ হইল। দেবিলাম আইরিশেও ভারতবাসীতে ক্রিটশ-শাসনের কুফল সম্বন্ধ বেশ সহক ভাবেই আলাপ করা চলে। ক্রিটশের ট্যাক্স কাঁকি দিবার ক্ষণ্ড আইরিশ যুবক চল্লালোকে মদ চোলাই ক্রিতে ক্রিতে যে গান্ট গাহিত ভাষা পরাশ্বশ্যের নাতনী স্থলর শিবিরাছে। গান্ট সরল। ইয়ার ব্রাট এইরপ:—"বামি কুষার্থ হুইলে খাই, ভৃষার্ভ হুইলে পান করি। হে টামের আলো, ভূমি যদি আমাকে বধ না করো, তবে আমি মুগু পর্যন্থ বাঁচিব।"

কিরার্ণন-পরিবার ও আমি একই হোটেলে আছি। পরন্ধিন হোটেলে মধ্যাহ্-ভোজনের সময় কিরার্থন-পত্নী ভাঁছার স্থামী, কলা ও জামাভার সহিত আমার আলাপ করাইরা দিলেন।

এক দিন পরাশ্বণ্যের গৃহ্দে বড় একট পার্ট হইল। ছানীর
মন্ত্রী ও বিশিষ্ট ব্যক্তিগণ এবং সমন্ত দেশের রাইচ্তগণ এই
পার্টতে নিমন্ত্রিত হিলেন। দক্ষিণ ক্ষেট্রলিরার হাই ক্ষরিশনারের নিমন্ত্রণ হর নাই। কারণ, লে দেশের সহিত
ভারতবর্ষের রাইগত সম্পর্ক ক্ষিত্রদিন যাবং বিচ্ছির হইরা
গিরাহে। এই পার্টতে ক্ষরেকর সহিত আলাণ-পরিচর্ষ

হইল। কল দুতাবাসের কনৈক ব্বকের সহিত আলাপ করিলাল, বলিলাল "আপনার দেশের বাঁট ববর পাওয়া বছই কটিন। আমরা যে সমস্ত বই পাট তাহার অবিকাংশই প্রচারাত্মক।" ভন্তলোক নীরব। ক্যাট বুব পহন্দ করিলেন কিনা সন্দেহ হটল। তখন বলিলাম, "আপনাদের দেশের কিছু বাঁট ববর পাই সর্বপ্রম আমাদের কবি রবীক্রনাবের রাশিয়ার চিটিতে। তিনিই প্রথম আমাদের কবি রবীক্রনাবের রাশিয়ার চিটিতে। তিনিই প্রথম আপনাদের সাকলোর চিত্র আমাদের সাম্বন উপন্থিত করেন"—ভন্তলোক উৎকুল্ল হইলেন। বলিলেন, "হাঁ, রবীক্রনাথের কথা আমি জানি। তিনি যথন রাশিয়ার যান তথন অধি বালক। আমাদের ভাষায় তাহার সমস্ত বইরের অনুবাদ হইরাতে।"

এক দিন পরাঞ্চপ্যের গৃহ্ছ রাত্রিতে আহার করিলাম।
আমি ভিন্ন অপর চারি জন অতিথি ছিলেন—, ক্রিলের
জ্যোতিষশারের অধ্যাপক সার হারহু জোন্দ, এবানকার
সরকারী জ্যোতিষ-বিজ্ঞাগের মার্টন ও উলি এবং সংখ্যাতত্ব
বিভাগের উইলসন। জোন্স ভারতবর্ষে বিজ্ঞান-কংহেসে
উপস্থিত ছিলেন। সেবান হইতে এদেশে নিম্প্রত হইথা
আসিয়াছেন। ভারতীয় বিজ্ঞান-কংগ্রেসের কথা বলিলেন।
পরাঞ্জপ্যে তাঁহার আমলের কেন্ত্রিজের কথা বলিলেন, এবং
জোন্সের নিকট কেন্তি জের বর্তমান অবস্থার কথা আগ্রহের
সহিত ভনিলেন।

এক দিন গোরের বাড়ী এবং এক দিন ডাম্লের বাড়ী
নিমন্ত্রণ রক্ষা করিলাম। ডাম্লের বাড়ীতে এবারও এক দিন
নিমন্ত্রণ হল। ডোক্রের পর রেডিওতে দিল্লীর গান শুনিলাম। তার পর সবাই মিলিয়া এদেশের পার্লামেন্টে গেলাম।
তবন পার্লামেন্টের অবিবেশন চলিতেছিল। ছোট হল।
সভাসংখ্যা বেশী নর। অনেকেট অমুপধিত। বিরোধীদল
বক্তৃতা ক্রিভেছেন। সরকার-পক্ষের নিভিত্ত ভাব। প্রধানমন্ত্রী চিক্লীকে দেখিলাম। সভার কোন বাগুতা বা সম্বীবতা
লক্ষ্য করিলাম না। খানিকক্ষণ বসিয়া থাকিয়া হোটেলে
করিলাম। ডাম্লে, শক্তুলা, ডাম্লে-পত্নী স্ব পুর্ব্ধ প্রস্থান
করিলেন।

এক দিন ভাক্তার গোরের সহিত তাঁহাদের সামরিক বিভালর ভাণ্টরন গেলাম। শহরের অনুরে স্থলর হারগার কলেকট অবহিত। হোট হোট করেকট বাড়ী। প্রায় কনপুত। গোরে তাঁহার পুত্রকে এখানে ভর্তি করিবার চেটা করিভেবেন। ইঁহারা রাজী আছেন, ভবে ভারত-সরকারকে বলিতে হইবে যে, শিকার পর ইহাকে ভারতীর সৈত্রবিভাগে গ্রহণ করা হইবে। এদেশের সৈত্রবিভাগে ইহাকে লওরা সভব নর। যদি ভারত-সরকারও ইহার ব্যবস্থা না করেন ভবে ইহার শিকা ব্যব্ধ হইবে। সেইজভই ইঁহানের এই সর্ভা দিউজিল্যাতের সামরিক শিকাও এই কলেকে হয়।

৮ই মার্চ শনিবার সকালে ক্যানবেরা ত্যাস করিয়া
সিজনিতে 'হোটেল অট্রেলিয়ায়' আসিয়া মধ্যাহ্য-ভাকন
করিলাম। ১১ই মার্চ মঙ্গলবার সিজনি ত্যাস করিয়া
খনেশাভিমুবে থাএা করিব। এবানে বিমানের ইকিট ও
ভাচ্ 'ভিসঃ' সংগ্রহ করা ভিন্ন অভ কোন কাল নাই। বিধান
ওপদাল অধিকৃত খানের উপর দিয়া থাইবে বলিয়া তাহাদের
'ভিসা' প্রয়োজন। যে ছ'দিন এবানে ছিলাম সার্যাল ও
সার্যাল-পত্নীর আতিবেয়তা এবং যতে মুক্ক হইয়াছি।

সংস্থান মধালয় এবংনে ভারতীয় নাবিকদের ভতাবৰায়ক এবং কাম 😋 ভারতীয় হাই কমিশনারের সিড্লিম্ব এতিনিবি-প্রা । উছি'র পত্নী স্বচ , সামীকে ও সামীর দেশকে ম্বার্থ ই ভালবাদেন: সামাল-গৃহিণী আমাকে ক্যানবেরায় প্রধারা ८७'करनव १९ विरक्षकीत मनेदनत नियस्त्रण कदिशा जाविशाक्रिका । শনিবার বৈকালে সাদ্রাল-দম্পতি আমার ছোটেলে উপস্থিত হুইলেন। তাহারা শহরের উপকণ্ঠে তুরা মূরা নামক ভালে একট হোটেলে প'কেন। স্থানটি আমার হোটেল হইতে ১০ ১২ মাইল। তাহাদের সহিত পুরা মুরা গিয়া ভোজনাঞ্চে প্রবায় শহরে আসিয়া বিষ্ণেটার বেবিলাম। বিষ্ণেটারটির নাম মিনার্ড! থিমেটার। যে নাটকট অভিনীত হইতেছিল তাহার নাম "মুত কাইটোফার বিন্দ্"। মিদ মেদ কেছিন্দ্ নামক লওনের জনৈক বিবাতি অভিনেত্রী প্রবান ভূমিকার নামিয়াছেন। এখানে বিয়েটারের প্রেকাগৃতে কেছ ধুমপান करत मा। आहेहै। स्टेटल त्यामा प्याही प्रशास विस्तरहोत हिनन । खामहे मानिम । आशाम-एन्पणि बाधाटक *(शादिस पी*हाहेश দিয়া বিদায় নিলেন। ভিত্ত ভটল পর দিন তাঁভারা আসিয়া थाबाटक नगद्धां भक्त खे खबनार्य करेशा योहेटबन ।

সিডনি শহরট প্রশাস্ত মহাসাগরের তটভূমিতে অবস্থিত। चारमभारम चरनकर्शन भाराज । चरडेनिया वर क्षांठीन रमम . কাঞেই এখানে খব খাড়া পাহাড় নাই। নগৱোপকতে পাহাড় ও সমুদ্রের পুকোচুরি খেলা পরম চিভাকর্ষক। গাছপালা যথেষ্ট। দুর ছইতে গাছ ও পাহাভগুলি যেন নীলবর্ণ বলিয়া মনে হয়। আমার হোটেলট শহরের কেন্দ্রহলে অবস্থিত। अक्रिके महरवद भव (हरब वर्ष स्वादिन। छेश्वरद चहरब 'সাকু লার কোমে' বা বুড়াকার সমুদ্রতীয়। সমুদ্রতীরে অনেক গুলি 'হেড' আছে। পাহাড়গুলি মাৰে মাৰে সমুদ্ৰের মধ্যে বঙ্দুর পর্যান্ত চলিয়া সিয়াছে। এই পাহাড়গুলির সমুদ্রগর্ডর অএভাগকে 'হেড' বা 'মাণা' বলা হয়। বন্দরের নাম পোর্ট कांक्शन। हेर् चूर रक रक्षता अमृत्यत अकि 'हेन्ट्लिंटे' বা ধাভির উপর অবস্থিত। 'সাকু সার কোরে' এই বাভির পাছে অব্দিত। ওপারে উত্তর-সিভ্নি: বাড়ির উপর অবস্থিত একট বৃহৎ সেঠু উত্তর ও দক্ষিণ সিচনিকে সংস্কুত ক্রিয়াছে। পোলট পুদুর। ছক্ষিণ সিড্নির দক্ষিণে বটানী উপসাগর। পশ্চিমে প্রশাস্ত মহাসাগর।

৯ই মার্চ রবিবার। বেশ পরম পড়িয়াছে। পশমী বন্ধ পরি-- ৰানই চলিভেছে। ভবে একটু কণ্ঠ বোৰ হুইভেছে। ১১।টার সায়ালবের সলে বাহির হইরা পড়িলাম। 'হারবারু' সেড় পার হটরা উত্তর-সিভনিতে রোক্তিলে ধেরা স্থানের ঘাটে चमजमारिक पंक्ष कतिया, '(अर्कज् कर्वडे' नामक चन्रामा মৰা দিৱা ছুইট পাহাড় ও তথ্যবহাঁ ছুইট উপত্যকা অতিক্ৰম कतिया पृद्ध 'गान्नि विष्ठ' नामक त्यला कृषि प्रविद्या अदक्याद्य প্রশাস্ত মহাসাগরের তীরে আসিরা পভিলাম। সার্থক-নামা মহাসাগর পার্টীর মত পভিয়া আছে। কোর্থাও এক একটা পাহাত তল-মধ্যে বহুদুর পর্যন্ত আগাইয়া গিয়া বাড়া ভাবে সমুদ্রে নামিয়া বিয়াছে। ভাহার উপর সবুরু বৃক্ষশ্রেণী। কোৰাও বা মাছযের বাস। কোপ্রস স্থানের বার্চে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ভরণচুখিত সুন্ধর সৈকত। এই স্থান হইতে পাহাড়ের মধ্য দিয়া একটি 'ইন্লেট' বা ৰাখির পাড় ব্রিয়া চলিলাম। হুই ৰাৱে ঘনসবুৰ বনানীসমারত ৰাজা পাহাজ। মারবানে 'हेनलिंहे' वा चीकि । शाहात्कृत शामिश द्वाका । शाहाक्कि ক্ৰমণ্ড ভৱসায়িত, ক্ৰমণ্ড বা পাহাড়ের পার্যে গড়ীর **উপভাকা। बाम्छ क्व**नंश चार्णाम याहेटलट्ड, क्वनंश प्रद्रमा নৱনপথে পতিত হইতেছে। বেলা ১টার 'বেভিট্র' নামক বেষ্ট রেক্টে চা পান করিলাম। রেষ্ট রেকটি উপসাগরের ভীরে। ছ'বারে বনানীসমাঞ্চল পাহাড, মারবানে উপদাগর। রেই রেক্টে विभवा পाराण इरें के व किया नक्टब পण्ल. छे अनाशदव বহু হোট-বভ নৌকা ভাসমান। রেইরেন্ট ভ্যাগ করিয়া হত্সবেরি নদীর সেগুর উপর আসিলাম। চারিদিকে পাহাত। নদীতে একট ছোট প্রমার চলিতেছে। দূরে রেলের পোল। মনোরৰ মুখ। তখন বেলা লায় ৪টা। মাবে মাবে সাদ্যাল ও সাল্লাল-পত্নী হাত-ক্যামেরায় ছবি তুলিতেছেন। এখান रहेट 'इविन् रहरफ' भौहिलाय। भिर्वादन लाटकत वर्छ फिछ। কেই খান করিতেছে, কেই নৌকা বাহিতেছে, কেই বন-ভোক্ষরত, কেহ নৌকায় বসিয়া ছিপে মার ধরিভেছে। রবিবারে সর্বত্তই লোকের ভিড। এবানে গাছের মধ্যে গামট (वन । वष्ट वष्ट थक थ किहू (मर्था याद्म । मृत्र मत्नादम -- छत्व বৈচিত্ত্য ক্ষ। গাছগুলি সুন্ধর, কিছু পর্যাপ্ত পুস্পসমুদ্ধ নছে। পাৰীগুলি অনুষ্ঠ, কিন্তু তাদের কঠে গান বেশী শুনিলাম ৰা। কুমারসভবের শ্লোক মনে পঢ়িল, 'প্রায়েন সামগ্রা विदर्श श्रुगांबार श्रवासूत्री विषयकः अवृत्तिः।" कू-तिर श्राष्ट

পার্কের মধ্য বিরা 'ভূরাপুরা' পৌছিলাম। কিরিবার সময় আলোকিত সিডনি সহরের পরম মনোরম মৃষ্ঠ চোবে পাছিল। ভোজনের পূর্বে হোটেলে কিরিলাম। বাভারাতে ১০০ মাইলের উপর মুরিরাছি। আমাকে হোটেলে গৌছাইরা সার্যাল-দম্পতি পূহে কিরিলেন।

১০ই মার্চ্চ রবিধার সহরে কিরিরা ভারতীর থেঁও কবিশনারের সঙ্গে সাঞ্চাৎ করিলাম। ভত্রলোকের নাম শকসেনা।
তিনি আমাকে মধ্যাত্ন-ভোজন আপ্যায়িত করিলেন। শহরট
বড়, পরিচ্ছয় ও কর্মবাত্ত, এখানে লটারীর রেওয়াজ একট্ট্
বেশী দেবিভেছি। লোকেরা রাভার বসিয়া লটারীর টকিট
বিক্রর করিভেছে। পর্যদিন যে মহিলা কর্ম্মচারীট আমার
হোটেলের পাওয়ানা ব্রিয়া লইতেছিলেন, আমি কলিকাতার
অবিবাসী শুনিরাই বলিয়া উঠিলেন, 'আঃ। কলিকাতার
ক্ষর একটারেস কোস আছে।"

এখানে অনেক ভারতীয় নাবিক দেখিতেছি। সকলেই খালাসী । বাড়ী পূর্ববেক। সাহ্যাল মহাশয় ইহাদেরই তড়াবধায়ক।

**১১३ बार्ड बळलवांद्र जान्नाटलद्र खाशिटन दर्गलांब । ट्रंगलीटन** অনেক ভারতীয়ের সঙ্গে দেখা হইল। কেহ হাত্র, কেহ কিবি হটতে ভারতে যাটবার ভর ভাহাতে স্থানসংগ্রহের যোগাড়যন্ত্র করিতে আসিয়াছে। সাদ্যাল আমার টকিট ও ভিসা নিবেই সংগ্ৰহ ক্রিয়া দিলেন। দিবাভাগেই আমার মাল বিমান-আপিলে ক্ষা দিয়া আসিলাম। ব্যাহ হইতে কিছু ভারতীয় होका किनिमाय : ভারপর সাল্লাল-দশভির সঙ্গে চিভিয়াবামা দেবিলাম। এবামকার চিভিয়াখানাট বেশ বড়। বাভির তীরে অবস্থানট বেশ নয়নানন্দকর। সাল্লাল-দম্পতি সন্থায় আমার হোটেলে ভাসিলেন। এতত ভোতৰ সমাপ্ৰ করিলাম। ভোকনামে সারাল-দর্শতি শহরের অনেক ছাবে খুৱাইয়া দেখাইলেন। যে বিমানে আমি ঘাইব ইছা ক্লাইং বোট। ৰূলে নামে এবং ৰূল হইতে উড়ে। 'রোক্ষবে' নাছক উপসাগর হটতে উভিবে , সার্যাল-দম্পতি আমাকে 'বোজবে' পৰ্যান্ত পৌছাইয়া দিয়া বিদায় নিলেন। সান্ত্যাল-পদ্মী বাংলা শিবিতেছেন। বিদায়কালে ভাষাকে বলিলাম, "কলিকাতার যধন আপনার সহিত দেখা হইবে, তথন কিছ ভাষরা বাংলায় ভালাপ করিব।"

রাত্রি ১১॥ টার বিষান উভিল। আলোকমালাবচিত সিভনীর নৈশস্ত্রণ আকাল হইতে অপরণ মনে হইল।



# মুক-শিকা

### ব্রীনূপেক্রমোহন মজুমদার

উপৰুক্ত শিক্ষা বারা মৃক্-বৰির বালক-বালিকাদিগকে যে মাধ্য ৪০ট শিক্ষারন্তন আছে তরবো ১০৷১২ট ব্যতীত অভাভশুলি করিরা তোলা বার, লে বিবরে আমাদের দেশের অধিকাংশ কেবলমার নামেই শিক্ষা-প্রতিঠান; কারণ ঐ সমস্ত

লোকই অবহিত নন। এমন কি শিক্ষিতসম্প্রদায়ও একখা সহকে বিখাস করিতে
চান না যে, বৃক-ববিরেরা উপযুক্ত শিকা
পাইলে আর দশ কনের মত কথা বলিতে
ও অভের কথা ব্রিয়া যথায়থ ভাবে উত্তর
কিতে পারে। গবর্ণমেন্ট ও জনসাধারণের
ওঁদাসীটই আমাদের দেশে বৃক-ববিরশিকার আশাসূত্রণ উন্নতি না হইবার
কারণ। সরকারী শিকা-বিতাগও এই
হতভাগ্যদের শিকা সহকে বিশেষ
সচেতন বলিয়া ববে হয় না।

৬০ বংসরের চেঙার আব্দ সার।
ভারতে বিভিন্ন ছানে নাত্র ৪০ট বৃক্তববির বিভালর ছাপিত হইরাছে। কিছ
ছাবের বিষয়ু, ঐ সমন্ত বিভালরে ছাত্রসংব্যা অভ্যন্ত ক্ম—যাত্র ১২০০ ক্ষ।
ভারতে বৃক্ত-ববিরের সংব্যা, ১৯০১

এটান্দের আদমসুমারি অভ্যায়ী ২৩,০০,০০০। উপছিত বে



কলিকাডা বুক-বৰির বিভালরে ছুই লম ছাত্রসহ পশ্চিমবজের প্রৱেশপাল



কলিকাতা যুক-বধির বিদ্যালয়ের শিশু-বিভাগ

বিভালর উপযুক্ত শিক্ষকের অভাব ও আর্থিক অন্টনের বছ বিশেষ উয়তি লাভ করে নাই। বৃক-ব্যির বালক-বালিকাদের শিকা দিবার নির্ভিষ্ট ও বিভান-সম্বত পছতি আহে, স্বতরাং শিক্ষকবের এই দিকে উপযুক্ত শিকালাভ



ৰুক-ৰধিবদের শিক্ষা-পছতি পৰ্যাবেক্ষণ-রত পশ্চিমবজের প্রদেশপাল ডাঃ কাটজ

ও ৰক্তা অৰ্জন করা আবর্ডক। বে সকল শিক্ত এই বিশেষ শিক্ষাক্ষেত্র কক মড়েব উচ্চারা এই কাজের বোগ্য নন। বিভাষসমূত প্রণালীতে শিকা দিবার উপার আরম্ভ করা শিক্তদের একান্ত প্রয়োক্ষ। অন্তিঞ্জ শিক্ষকের হারা সুক্ষের



মুক-ছবির বিভালরের একটি ছাত্র মাননীর শীপুক্ত গাঞ্চাগোপালাচারীর এক প্রথের উন্তর বোড়ে লিখিয়া দিতেছে

পরিবর্ণে কুফলই বেশী হট্যা, থাকে। এই বিভালরগুলির আাবুল সংখার করারগু বিশেষ প্রয়োজনীয়তা রহিষাহে। গবর্গমেন্ট ও জন-সাধারণের দৃষ্টি এই বিষয়ে আফুট না হটলে উন্নতির আশা করা যায় না।

ৰুক-বৰিবেরা কেবল ভাষার অভাবেই সাধারণের ভুলনায় অভি শোচনীয় ভাবে জীবন কটোয়, কিছ তাহাকে কথা বলিতে ও ভাষা শিক্ষা দিতে পারিলে সে ঐ অসহায় অবহা হুইভে নিজেকে অনেকটা উন্নত করিতে পারে। শিক্ষিত বুক-ব্রিরেরা সর্ক বিষয়ে ভার দশ জনের সম্বক্ষ না হুইলেও



বধির দৰ্জি শ্রীধীরেজনাথ গুণ্ডের তত্তাবধানে পরিচালিত দক্ষির দোকান

বদি শিক্ষা পার তাহা হইলে তাহারা আর সংসার ও সমাজের গলগ্রহ হইরা থাকে না। প্রবোগ পাইলে ইহারাও সমাজের অনেক কল্যানকর কার্য্য সুসম্পন্ন করিতে পারে। এছলে উল্লেখযোগ্য যে, বছদেশে চটুগ্রাব, রাঞ্চাহী, লিউছী এবং ক্লিকাতা, ভাষবালার বৃক্-ব্যবির বিভালর এবং ক্টকের্ ও কাশীবাবের বৃক্-ব্যবির বিদ্যালয় স্থাপন করেন ক্তিপর শিক্ষিত বৃক-ব্যবির । যাত্র করেকশ্য শিক্ষিত বৃক-ব্যবির নিজেবের বার্গভাগের, উভয় ও পরিপ্রমের বারা ভাষা সভব করিয়াছেন। ভাষাদের প্রভিত্তিত শিক্ষায়তনগুলিতে অধুনা বহু অসহায় বৃক্-ব্যবির বালক-বালিকা মাছ্য হইবার সুযোগ লাভ করিতেছে।

এতদ্ব্যতীত শিক্ষিত মৃক-ব্যৱস্থ নানাছানে বাবীনভাবে বাবসায় পরিচালনা ক্রিতেছেন ও যোগ্যতার সহিত নানা প্রকার দায়িত্বপূর্ণ কাল সুচাঞ্জনে সম্পন্ন ক্রিতেছেন।

শ্রুতিশক্তিসম্পন্ন বালক-বালিকাগণ বিভালয়ের শিক্ষা না পাইদেও অমৃত্ল পারিপাধিক অবস্থার পাভাবিক ভাবে নানা বিষয়ে জানলাভ ক্রিভে পারে; কিছু যাহার কোন প্রকার



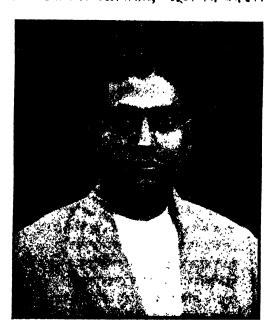
১৯৪৫ সনে কাশীতে মুক-বধির শিক্ষা বিস্তারের প্রাথমিক উদ্যোক্তাপণ

ভাষাজ্ঞান নাই এমন একজন বৃক্-বৰির শিক্ষা না পাইলে কেবল সমাজ ও সংগারের গলগুহুই হুইবে না, ভবিয়তে নিজের ছোটবাটো অভাবপ্রণের জন্ত চুরি প্রভৃতি নিজনীয় কার্বে। লিও হুইবে। প্রভরাৎ বৃক্-ব্যিরদিপের শিক্ষার প্রভি রাষ্ট্র-পরিচালকদের মনোযোগী হওয়া একার কর্মবা।

পাকান্ত্য দেশে মৃক-বৰিরদিগের শিকা বাধ্যতাবৃদক করা হটরাছে এবং ইহাদের শিকার কচ বন্ধ শিকারতম প্রতিষ্ঠিত হটরাছে। পাকান্ত্যের বিভিন্ন দেশের গবর্ণমেন্ট ও জনসাবারণ ইহাদের শিকার কচ প্রচুর অর্থবার ক্রিয়া থাকেন।

সেণ্ট্রাল এভুকেশনাল এভ্ভাইসরী বোর্ভের পরিকল্পিভ সার্জেণ্ট রিপোর্টে বৃক-ব্যবিদের সহতে সামাল উল্লেখনার ব্যবিতে পাওরা বার। ভাহাতে মন্তব্য করা হুইরাছে বে, বৃক-ব্যবিক্রের সহতে উপযুক্ত ভণ্যাদি না পাওরার এ সহতে বিশেষ কিছু লেখা হর নাই। সার্জেণ্ট ক্ষিটি ইহাকের সহতে উপযুক্ত ভণ্যসংগ্রহ-করিবার কি প্রকার চেষ্টা করিরাছিলেন ভাহা বর্তমান লেখকের কানা নাই। তবে আবার মৃচ বিখাস, বহি বাত্তবিক পক্ষে ঐ কমিট আত্তরিকভার সহিত ভণাান্তসভাম করিতেন ভবে প্রয়োজনীর অনেক সংবাদই ওাঁহার। পাইতে পারিতেন। সার্ক্ষেক্ট রিপোর্টের উত্তরে নিবিল-ভারত বৃক্ত-ববির শিক্ষক সম্মেলনের ভরক হইতে ভারভবর্ষের মৃক-ববির বিভালরের বিশিপ্ত অব্যাক্ষ ও অব্যাশক্ষণ এক পরিকল্পনা ক্রেম এবং ক্ষেত্রীর স্বর্গমেন্ট ও প্রাদেশিক স্বর্গমেন্টগুলির সলে আলোচনা করিবার অভিপ্রারও জানান, কিছু বড়ই ছু:বের বিষয় এসম্বন্ধে কোনই সহত্তর পাওয়া যায় নাই।

উক্ত সংখ্যলনের পক্ষ হটতে বাংলা গবর্ণহানুষ্টর শিক্ষামপ্তরে আর একটি পরিকল্পনা দাবিল করা হটয়াছিল এবং
তদানীস্তন শিক্ষা বিভাগের ভিরেক্টর শ্রীমুক্ত অপুর্বক্ষার চক্ষ
মহাশর সংখ্যলনের কেন্দ্রীয় সম্পাদক শ্রীনৃপেক্সমোহন মজ্মদার, (বর্তমান প্রবন্ধ লেখক) কলিকাতা মৃক-ববির বিভালয়ের
অব্যক্ষ শ্রীঅটলটাদ চটোপাবায়, শ্রীমুক্তা বি. এম, সেন ও



চটগ্রাম ও রাজসাহী মুক-বধির বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা স্বৰ্গীয় ভোলানাখ ঘটক

শীব্দলেশচুক্ত সেন প্রভৃতির সহিত বৃক্ত-ব্যির শিক্ষা সম্বন্ধে আলোচনাও করিয়াছিলেন, কিন্তু হুংবের বিষয় আৰু পর্যাত্ত বদীর প্রপ্রেক্তির পক্ষ হুইতে বৃক্ত-ব্যিরদের শিক্ষা সম্বন্ধে কোন অনিষ্ঠি পরিক্রনা প্রভৃত করা হয় নাই। বর্তমান ব্যাত্ত এবন পর্যাত্ত এ বিষয়ে তাহাদের কোন নিশ্চিত নিহাত প্রভাশ করেন নাই।

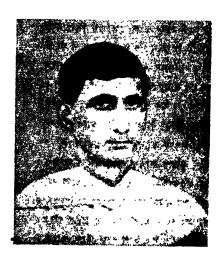
দেশ খাৰীন ছইরাছে; এখন খাৰীন বেশেল নাগরিক স্ট্র ইরিবার উপর্ক শিক্ষা-ব্যবহা চাই। এই সমরে দুর্ক-ব্যবহারে শিক্ষা-ব্যাপালে বে সক্তা শিক্ষাবিদ্ সংগ্রিট আছেন ভাঁথাকের সকে পরার্য করির। একট শিক্ষা-পরিকল্পনা প্রভাত করা উচিত। যে মুষ্টিমের কর্মীদল এই প্রতিঠানগুলিকে



কটক মুক-বধির বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাতা, মুক-বধির শিল্পী গ্রীবিপিলবিহারা চৌধুরী, এ-আর-সি-এ (লঙ্ক)

বাঁচাইয়া রাধিয়াছেন তাঁহার। গ্রথমেন্টের সহিত সর্জ্যাই সহযোগিতা করিতে প্রশ্বত।

ত্বের বিষয়, মুক্তপ্রদেশের গবর্ণমেন্ট সম্প্রতি বৃক্ত-ব্রির্থদিগের শিক্ষার উর্ভিক্তের, মিবিল-ভারত সৃক্ত-ব্রির শিক্ষ্যকসম্মেলনের সাধারণ সম্পাদক জীলৈনের লগাদক শ্রীবৃক্তা
এম্-এ এবং লক্ষ্যে স্ক্ত-ব্রির বিভালয়ের সম্পাদক শ্রীবৃক্তা
নির্মিলচন্দ্র চতুর্বেণীর সহযোগিতার এক পরিক্রমা এহণ
করিয়াহেন। উক্ত প্রদেশের অধুনাপ্রতিষ্ঠিত এলাছাবাদ মুক্তব্রির বিদ্যালয় ও লক্ষ্যে বৃক্ত-ব্রির বিদ্যালয় কুইট বিশিষ্ট মুক্ত-



বীরত্য মুক-বধির বিভাগরের অভ্তঃম ঐতিঠাতা জ্ঞানবেজনাথ ভৌষিক



ভাষবালার মৃক-বধির বিভালরের প্রতিহাতা প্রীমাধনলাল মলুমদার

ব্ৰির শিকা-প্রতিষ্ঠান। এতদ্বাতীত আরও পাঁচ-হরট বৃক-विश्व विद्यालय द्यालम कविवाय वावद्य द्रेशाद्य । के शबि-क्रमा मध्यकार कार्यक्री क्रियांच क्रेस्ट मर्गरंब महर्क विश्वविद्यानस्य नद्रविश्विष "Training College for the Teachers of the Deaf" नांदन अक्षे करनक नांकी শহরে প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। ইতিমধ্যেই বিশ্ববিদ্যালয় হইতে এক খন খব্যাপককে বৃক-বৰিৱদের শিক্ষাপ্রণালী সম্বন্ধ আন ব্দদন করিবার বভ মাকেটারে পাঠানো হইরাছে। ইনি বিদেশ হইতে ঐ বিষয়ে বৃংপতি লাভ করিয়া লক্ষে শহরত্ব বৃক-ববির কলেকের অধ্যক্ষ নির্ক্ত হইবেন। মৃতন পরিকল্পনার কার্য্য যাহাতে উপযুক্ত লোকাভাবে বন্ধ না হইলা যার ভজ্জ যুক্ত-প্রদেশের প্রথমেন্ট কলিকাতা বৃক-ব্যির বিদ্যালয়ের অভতম শিক্ষ এবং নিবিল-ভারত মৃক-ববির শিক্ষক সম্বেলনের সাধারণ সম্পাদক জীবক শৈলেজনাথ বন্যোপাধ্যার মহাশয়কে সামরিক ভাবে অধ্যক্ষ নিযুক্ত করিয়া লইয়া গিয়াছেন। ভালবারী বাস হইতে এই কলেভের কার্যা ভারভ হইরাছে। খাশা করি, ভারতবর্ষের খডাভ প্রদেশগুলিও খস্থার সুক-বৰিবদের শিক্ষার সম্বন্ধে সচেত্রন হইবেন।

### গ্রামের মেলা

### ঞ্জিকুমুদরঞ্জন মল্লিক

ছোট একট প্রাম, ছোট নদীর ভীর, সেধার বসে মেলা লক্ষ লোকের ভিক। ক্রিসের লাগি মেলা ? কার লাগি উৎসব ? কোন্ সে মহান্তার প্রাণ্য এ গৌরব ? র্ভ ক্লেক ক্র, শুরুন মহাপর, সামাভ এক লোক, রাজা উজীর নর। लाकडे दिन जान, लाकडे दिन बाडे, একাই ছিলেন ভিনি উত্তল করে গাঁ'টি। निका पिरमन गरव--- विश्ना कवा गान. বৰ বে যার। প্রাৰী আমবে অভিশাপ। গ্রামে যে সব পাবী ভাছে এবং ভাসে, কুলার যারা বাবে বাড়ীর চারি পালে. রকা স্বাই করো, রকা করা চাই, তীর্থ করার অধিক পুণ্য ভাতে ভাই। এাবের সকল লোকে তবন বেকে আর মারভো নাক' পাৰী, ভাৰতো আপনার। এানের প্রতি দরে, প্রামের প্রতি গাছে আনন্দেতে সবাই কুলার বেঁবে আছে। प्रदे वानक्वां बादाव माक हिन कारन भाषीय रम, जब करव मा जिम।

**হেণার ভারা 'জাছে, যেন মান্নের কোলে** ওই বে তেঁতুল গাছে ছাজার বাহুত দোলে। ঢাকুলে দীবির জল বুনো হাঁসের বাঁক, পাড়ার পাড়ার শুভুন শত পাধীর ভাক । অৰুভ কাকের ভেৱা প্রামের বেণু বনে, নোয়ায় বাঁলের ডগা পুকুর কলের সমে। বহুল গাছে দেখুন উপনিবেশ বকের, বটে' হরিয়ালের শিবির দেখুন সবের, ভালের প্রভি শাধায় বাবুই বোনে বাসা, ৰাকে কুলের গাছে টুন্টুনিরা বাসা। দীয়ান বাবু ধানিক, দেখতে পাবেৰ প্ৰামে কোছ-মাণিকের দল কোড়ার কোড়ার নামে। প্ৰবে গ্ৰামেই থাকি, হয় না কোণাও বেভে বছর বছর কগল প্রচুর কলে কেভে। এই বে গ্রামের শোভা, শান্তি শ্রীতি মবু আমরা ভালি বেওরা একট লোকের ওবু। हिल्म नारकः वनी, हिल्म नारका बीव, পরাক্তমে তার হয় নি কেট ছয়িয়। মনকো মুনি ধবি কিছ ভিনি সব. ষমভাষর প্রাণ কুর এক মানব। **उर्रिकारक रमार्क मका करत नारे.** পুৰুৰে আৰি স্থতি লক্ষ লোকে ভাই।

# ठांत्रि यूगं

### 🖻 বিমলাচরণ দেব

বর্তমান সময়ে পৃথিবীতে দ্বাপরের শেষ ও কলির প্রারম্ভ।
দ্বাপর যাই যাই করিতেছে, কলি সবেমাত্র প্রবেশ আরম্ভ
করিয়াছে।

আমার এই কথাটা আমাদের পুরাণসগত ও সাধারণ্যে প্রচলিত বিশাসের বিরোধী। এই প্রচলিত বিশাস বলে যে আমরা এখন খোর কলির মধ্যে আছিঁ। শীক্লফের দেহত্যাগের কিছু পূর্বেই ছাপর শেষ হইয়া কলিযুগ আরম্ভ হইয়া গিয়াছিল; কিন্তু যত দিন শীক্লফ জীবিত ছিলেন, তত দিন কলিযুগ পৃথিবীতে প্রবেশ করিতে পারে নাই। শীক্লফ দেহত্যাগ করিলে তবে প্রবেশ করিয়াছিল।

এই সর্বজ্বনবিদিত বিশ্বাদের বিরুদ্ধে আমার উক্ত বক্তব্যের কারণ বলি।

যুগ চারিটি সকলে জানে—সত্য, ত্রেভা, দ্বাপর, কলি।
সত্যযুগে ছিল চার পোয়া ধর্ম। ত্রেভায় এক পোয়া অধর্ম
চুকিল। ঐ অধর্ম ছই পোয়া হইয়া দাঁড়াইল দ্বাপরে।
কলিতে ঐ অধর্ম হইয়া দাঁড়াইল ভিন পোয়া। তাই
কলিতে মোটে এক পোয়া ধর্ম।

সত্য যুগে চার পোয়া ধর্ম ছিল বলিয়া সমস্তই পুণাময়, সমস্তই শান্তি ছিল। পাপ, বিরোধ, ঝগড়া, অসত্য, এ সব কিছুই ছিল না। অধর্ম প্রবেশ করিতেই এই সমস্ত ধারাপ জিনিস আবিভূতি হইল এবং অধর্ম বাড়ার সঙ্গে বাড়িয়াই চলিল।

এখন, স্বতঃই মনে হয়, অধর্ষ আসিয়া চুকিল কেন ? এ পর্যস্ত এই প্রশ্নের জ্বাব ঠিক কোথাও পাই নাই।

শাক্ষাংকৃতধর্মা ঋষি কেউ নাই ( অস্ততঃ দেখিতে পাই নাই ), যিনি এই প্রশ্নের ন্যায়দকত প্রতিবচন দিয়া সংশয় নিরদন করিতে পারেন। তাহা হইলে, কি করিয়া সংশয় নিরদন হয় ? নিরুক্ততে পাই যে, ঋষিরা যথন স্বর্গে চলিয়া গেলেন তথন মাত্ম্য দেবতাদের কাছে এই আবেদন জানাইল, "এখন আমাদের ঋষি হবেন কে ?" অর্থাং কোনও বিষয় সংশয় হইলে তার নিরাকরণ করিবে কে ? তথন দেবতারা মাত্মকে তর্কশক্তি দিলেন ও বলিলেন যে, এই তর্কশক্তিই তোমাদের ঋষির কাজ করিবে। অর্থাং তোমাদের সংশয়িত বিষয় তোমরা তর্ক্ষারা নির্ধারণ করিবে এবং এই নির্ধারণ ঋষিকৃত নির্ধারণের সমান হইবে। বলা বাছল্য, এই তর্কশক্তি জনাবিল হওয়া চাই। অর্থাং রাগ-বেবাদি বারা কল্যিত না হয়। এই রক্ষম জনাবিল তর্কশক্তি

বাহার আছে, তিনিই "বাগ্মী" হইতে পারেন। "বাগ্মী" কে ? বিনি জিজাসিত হইলে গ্রায়সকত ঠিক ঠিক উত্তর দিতে পারেন ও সেই উত্তরের খারা সংশয় ছেদ ক্ষরিতে পারেন। এই রকম "বাগ্মী"র অপেক্ষায় আছি।

এর মধ্যে (১ অর্থাৎ কোনও "বাগ্মী"র সঙ্গে সাক্ষাতের পূবেই ) নিশ্চেষ্ট ইইয়া বসিয়া না থাকিয়া, একটু না হয় নিজেই ভাবিয়া দেখি। ভাগবত বলিয়াছেন, "যে নিজেকে পুরুষ বলে অভিমান করে, সে তার নিজের গুরু। কারণ সে তার নিজের প্রত্যক্ষ ও অনুমান সাহাষ্ট্যেই প্রেয়: লাভ করে।"

এই প্রত্যক্ষ ও অনুমানের দাহায্য লইয়া মানবেতিহাদ প্যালোচনা করিলে দেখা যায় যে, সভ্য সভ্যই চারিটি যুগ আছে। ভবে ভাহাদের নাম সভ্য, ত্রেভা, ছাপর, কলি নয়। ভাহাদের নাম যথাক্রমে—ক্ষত্রিয় যুগ, ব্রাহ্মণ যুগ, বৈশ্র যুগ ও শুদ্র যুগ। এই চার যুগের কথা স্বদেশেই প্রেম্বাদ্ধা, ভুগু আমাদের দেশে নয়।

প্রত্যক্ষ দেখিতে পাই, মানবসমাজ ভিন্ন ভিন্ন দেশে ভিন্ন ভিন্ন ভার থেরে অবস্থিত। সেই প্রত্যক্ষ সম্বন্ধে গবেষণা করিলে এবং প্রাচীন লোকগাণা, ইতিকথা, ইতিহাস, লেখনাদি বিবেচনা করিলে সন্দেহ থাকে না বে, মানবসমাজের প্রথমাবস্থা "জ্যোর বার মূল্ল্ক তার", "বার লাঠি, তার মাটি"র অবস্থা। যে ব্যক্তি ও যে সমাজ প্রচিষ্ঠ ও বলিষ্ঠ, অর্থাৎ শারীরিক বল ও মানসিক দার্টের সমন্বয়ে উচ্চ কোটিতে অবস্থিত, সেই ব্যক্তি ও সেই সমাজই প্রতিদ্বন্ধী অপর সমস্ত ব্যক্তি ও সমাজকে পরাজ্যুত করিয়া নিজের প্রাধান্য স্থাপন করিতে পারে।

এই শারীরিক বল ও মানসিক দার্ট্যের সমন্বয়ই ক্ষতিয়ের বিশেষ লক্ষণ। এই সমন্বয়ের ফলেই ক্ষতিয়ের প্রশাসন সর্বলোকে। এক দিকে যেমন "ব্রন্ধবিদ্যা" আদিতঃ ও প্রকৃত ভাবে ক্ষতিয় বিদ্যা এবং ব্রান্ধণ ক্ষতিয়ের নিকট ব্রন্ধবিদ্যা সম্বন্ধে উপদেশপ্রার্থী, অপর দিকে রাজ্যশাসনে একমাত্র ক্ষতিয়েরই অধিকার। এ যেন সেই আদর্শ সময় বে সময়ে "Kings were philosophers and philosophers were kings." জান ও কর্মের অপূর্ব সমন্বয়।

এই সময়ে সমন্ত রাজ্যের জনগণ হই ভাগে বিভক্ত— উপরে ক্ষত্রিয় ও নিয়ে বিশ্ অর্থাৎ সমন্ত প্রকা। আমাদের প্রাচীন প্রকাদিতে বাহা পাই, তাহা হইতে অহমান হয়

যে, এই ভাবে কিছুকাল চলিবার পর কালক্রমে ( অর্থাৎ সমাজ কিছু পরিণত হইবার পর ), জনগণের অভিজ্ঞতার ফলস্বরূপ, সমাজবক্ষার নীতিগুলি মোটামূটি নির্ধারিত হটল। সমাজকে তথা ব্যক্তিকে ধারণ করে বলিয়া ইহা হটল "ধৰ্ম"। তাহা ছাড়া আবিভাব হইল "মৃতি"র, অर्थार পূর্বতন সময়ে कि অবস্থায়, कि উপায় অবলম্বনে বা কি যুক্তি খারা, কোন প্রকারের প্রশ্ন বা মতহৈধের মীমাংসা হটয়াছিল, তাহাই "শ্বরণ" করিয়া রাখা। তাহা ছাড়া, গডিয়া উঠিল---কালক্রমে আরও একটি জিনিস "দেশাচার"। এই অবস্থায় যথেষ্ট মতভেদের আবির্ভাব হটল। কিন্তু ব্যবস্থা হইল যে, কোনও প্রশ্ন উঠিলে তাতার মীমাংসা করার চেষ্টা হইবে প্রথমত: "ধর্ম" ছারা. তাহাতে সম্ভব না হইলে বা তাহার সহিত "শ্বতি"র বিরোধ হইলে, "শ্বভি"ই বলবস্তর বিবেচিত হইয়া, "শ্বভি" ঘারা। "শুতি" ও দেশাচার পরস্পর্বিক্ষ হইলে "দেশাচার"ই বলবত্তর ও নিয়ামক হইবে। কিন্তু সর্বোপরি "গ্রাজ-শাসন"। "রাজশাসন" যাহা নির্দেশ দিবে, তাহাই কাৰ্যকর, সে-ই "শেষ কথা"। মতভেদ হইলে কোন্মত निशामक दैहेर्द, এहे-हे छादाद क्रमनिर्मण। প्रमण्-দহিষ্ণুতা ও বিচারধারা মতসকলের ক্রমনির্ধারণ এই যুগের বিশেষত্ব। এই কাৰ্য্যে, অৰ্থাথ কোনও বিবাদ উপস্থিত হটলে ভাহার মীমাংসায়, একমাত্র রাজার অধিকার। ব্রাহ্মণ বা আর কাহারও কোনও অধিকার নাই। এইরূপে দেখিতেছি বে. এহিক ও পারতিক সর্ববিষয়ে জাতির একাধারে একমাত্র ও চরম অবিসমাদী নেতা ক্তিয়। ঠাংার কথাই "শেষ কথা"।

এইজনাই মহাভারত বলিয়াছেন যে, "কাঅধর্মই লোকজার্মী" অর্থাৎ স্কটিতে প্রথম ধর্ম কাঅধর্ম। অপর সমস্ত ধর্ম এই কাঅধর্ম হইতে প্রস্ত। এইজনাই আমা-দের প্রাচীন গ্রন্থাদিতে পাই বে, আন্ধাণ ক্ষত্রিয়ের নীচে থাকিয়া ভাহার উপাসনা করে। আন্ধাণ ক্ষত্রিয়ের রথ হাকায় ও ক্ষত্রিয়কে চামর ব্যক্তন করে, ইহাও পাই। ক্ষত্রিয় ও আন্ধাণের এই পারস্পরিক সম্বন্ধ লক্ষ্য করিয়াই বলা হইয়াছিল—"যদা বৈ ক্ষত্রিয়ায় পাপং ভবতি, আন্ধান-কল্লোহস্ত প্রক্ষায়াম্ আজায়তে", অর্থাৎ যদি ক্ষত্রিয়ে পাপ প্রবেশ করে, ভাহা হইলে ভাহার বংশে আন্ধান্যভাবের দস্কান ক্ষমগ্রহণ করে।

এই ক্ষত্রিয়-বৃগই যে মানবসমাক্ষের সর্বোজ্জন যুগ, সভাযুগ, সন্দেহ নাই। ইহা অবিস্থাদী সভা যে, ব্যক্তিরই হউক, আর সমাজেরই হউক, বত দিন শারীরিক বল ও মানসিক দার্চ্য এবং উভয়ের সমন্বয় অটুট থাকিবে, তভ

দিনই ব্যক্তির ও ভাতির সর্বপ্রকার স্থপান্তি, সন্তার স্বাদীণ ফুর্ম্ভি। এই অবস্থাতে সত্য সত্যই, আপাতদৃষ্টিতে পরস্পরবিরোধী হটি বস্তু, অর্থাৎ ভূক্তি (বা ভোগ) ও মৃক্তি (বা মোক্ষ), যুগপং তাহার আয়ত। সত্তার সর্বাধীণ কুর্ত্তির জন্য সে বেমন "আণিষ্ঠ", অর্থাৎ কর্মে ক্ষিপ্র ও সর্বপ্রকার ভোগে প্রকৃষ্টভাবে সক্ষম, তেমনই সর্বপ্রকার ভয়ভ'তি, বন্ধন, বাহিরের শত্রুপ্রভাব এবং নিজ অন্তরের নীচ বা হীন ভাব হইতে সম্পূর্ণ মুক্ত। তারই প্রাণের কথা "অদীনাঃ স্থাম শরদ: শতম্"। "আমি মৃক্ত", "আমি দীন হীন নহি", এই বুভিদারা অমুপ্রাণিত হইয়া সে দুঢ়ভাবে বলে "যাহা নিচ্ছে প্রত্যক্ষ জ্বানিব, তাহাই লইব। পরেব মুখে ঝাল খাইব না।" এই সময়কার শতপথবান্ধণে এই ভাবের কথা বেশ জোরের সহিত বলা আছে—তুই জনের মধ্যে যদি এক জন বলে "অহমদর্শম", আমি দেখিয়াছি, এবং অপর জন বলে "অহমশ্রোষম্", আমি শুনিয়াছি, প্রথম ব্যক্তিকে, অর্থাৎ যে "অহমদর্শম" বলে, তাহাক্রেই বিশ্বাস করিব।

আমার মনে ২য়, জনক রাজা এই অবস্থারই "ব্যক্তিরূপ"-এ মৃত বা চিত্রিত। "এদিক ওদিক ছ' দিক রেখে থেয়েছিল ছুধের বাটী"। এই অবস্থা একমাত্র পূর্ণ ক্ষত্রিয়েরই সম্ভব। আর, এই অবস্থার ব্যক্তি বা জাতির সংস্পর্শে যে-ই আদিবে, প্রাক্তিক নিয়মে তাহার কল্যাণ অবশ্রস্তাবী।

দেখিতেছি এই যুগের বিশেষত্ব মতভেদ ও পরমত-সহিষ্ণুতা। মামুষ থাকিলেই মতভেদ থাকিবে। কিছু ক্ষত্রিয় এই মতভেদকে মতবিরোধে পরিণত হইতে দেয় নাই। ধীরভাবে বিচার করিয়া এই সমস্ত মতের পার-স্পরিক বলের ক্রমনির্দেশ করিয়া দিয়াছিল এবং সর্বোপরি রাজশাসন দৃঢ়মৃষ্টিতে সমস্ত ধরিয়া ছিল বলিয়া সমাজ্য এলাইয়া বাইতে পারে নাই।

ক্ষত্রিয়হন্তথ্যত "দণ্ড" কঠোরভাবে দণ্ডায়মান। রাজ-শাসননিদিষ্ট পথ ভিন্ন অন্য কোনও পথে কাহারও যাওয়া অসম্ভব।

এই যুগের অধিদৈবত ক্ষত্রিয় এবং প্রতীক খাপখোলা তলোয়ার।

এমন সোনার সভাযুগ, "ক্ষত্তিমুখ্গ" গেল কেন ? স্বভ:ই প্রশ্ন মনে আসে।

আমি যেটুকু জানি তাহাতে একমাত্র চরক সংহিতাতে সভাযুগ চলিয়া গিয়া ত্রেতাযুগ আসার কারণ নির্দেশের চেষ্টা পাই। চরকেও মোটে ত্রেতা পর্যস্ত আছে। বাপর বা কলির কথা নাই। বাহা হউক, সভাযুগ চলিয়া বাইবার কারণ বলা হইয়াছে বে, সভাযুগের শেষাশেষি, ভাল রকম থাওয়া-লাওয়ার দক্ষন, কাহারও কাহারও "শরীরগৌরব" হইল, অর্থাৎ শরীর ভারী হইয়া পড়িল। তাহা হইতে শ্রম, শ্রম হইতে আলস্ত, আলস্ত হইতে সঞ্চয়, সঞ্চয় হইতে পরি-গ্রহ ও পরিগ্রহ হইতে লোভ আবিভূতি হইল। তার পর ত্রেভা যুগ আসিয়া পৌছিলে, লোভ হইতে অভিজোহ, অভিজোহ হইতে অমৃভবচন, অমৃভবচন হইতে কাম, ক্রোধ, মান, বেষ, পাক্ষয়, অভিধাত, ভয়, তাপ, শোক, চিত্তোহেগ প্রভৃতি সব আসিল।

এ কেমন মনে লাগে না। কেছ কেছ ভাল রকম থাওয়া-দাওয়া করিল, কাহারও কাহারও শ্বারগোরব হইল। বাকি সকলের হইল নাকেন? সত্যযুগে বখন সকলে সমান ধার্মিক, তখন "কেছ কেছ", এ রকম পার্বক্য হয় কেন?

কাছেই এই ক্ষত্তিয়যুগ ভ্রংশের কারণ নিধারণ জন্য 
অতন্ত্রভাবে মানবেভিহাসের বিবেচনে আসিতে হয়। আদিম 
মানবের মনোবৃত্তি অপরাপর জন্তব মনোবৃত্তি হইতে অল্পমাত্র উপরে ছিল, এ কথা বোধ হয় অস্বীকার করা যায় না। 
এই কথাই শতপথত্রাহ্মণ উদ্দেশ করিয়া বলিয়াছেন বলিয়া 
মনে হইল যথন ভাহাতে পাইলাম যে, প্রথমস্পষ্ট জীব ভাহার 
প্রথম শব্দ উচ্চারণ করিল (অর্থাং প্রথম শ্রোত্রগ্রাই বাক্ 
উচ্চারণ করিল) ভয়ে "ভ্রা" করিয়া। এইরূপে দেখিভেছি, 
শ্রুভিগোচর বাক্-এর উৎপত্তি ভয় হইতে।

এই ভাবেই, ধর্মেরও উৎপত্তি তয় হইতে। প্রাক্তিক
শক্তিসমূহের উদ্ধাম বেগ ও তৎকৃত বিপর্বয়ে মান্ন্র্য বিজ্ঞাল
ও ভীত হইয়া পড়ে। ইহা হইতেই ভয়নিবারণ জন্ম সেই
সমন্ত শক্তির উদ্দেশে ন্তবন্ধতি। সভ্যতার উন্নতি ও প্রসারের
সঙ্গে সঙ্গে এই ন্তবন্ধতি ফলাও হইয়া ক্রমে পূজা বাগরূপে বজ্ঞাদি পরিণত হয়। তারপর মান্ন্র্যের চিস্তাশক্তির
পরিণতির ফলস্বরূপ ক্রমে এক সর্বব্যাপী শক্তির অন্ত্রহব।
এই সমন্তের মূলে আদিম ভয়।

এইরপে যাহা পাই ভাহাতে দেখি বে, এখানে ক্ষত্রিয় হইতে আরম্ভ করিয়া সকলেই শুবন্ধতি, যজন, যাগযজাদি নিজেরাই করিভেন। কালক্রমে ব্যক্তিবিশেষ কোনও সময়ে নিজের যজনের সহিত পরের যাজন করিলেন। এইরপে নিজের কাজের সহিত পরের কাজ করা ক্রমে ব্যাপক ভাবে হইয়াছিল এবং ভাহার ফলে যাজন অর্থাৎ পরের জন্ত যাগযক্রাদি করিবার জন্য একটা শ্রেণীর আবির্ভাব হইল। এই শ্রেণীই ক্রমে বিশ্ হইতে পৃথক্ হইয়া, পরবর্তী সময়ের "ব্রাক্ষণ"-এর মূল রূপ।

चामाव मत्न इब, এই ध्यंपीत छेचात्नहे मानवनमात्क

প্রথম শ্রেণী-স্বার্থ ও ঝঞ্চাটের স্পৃষ্টি এবং কালক্রমে এই শ্রেণীর অভ্যুত্থানে সেই ঝঞ্চাটের পরিণতি ও চরম ফল,— ক্ষত্রিয় ও তৎসহ সমগ্র জাতির অবনতি। এই উত্থান ও অভ্যুত্থান এবং তাহার চরম ফল যে সম্পূর্ণ স্বাভাবিক, তাহা কেহই অস্থীকার করিতে পারে না। ক্রমে বলিতেছি।

যখন এই শ্রেণীর উত্থান হইল, সেই শ্রেণীভূক্ত লোকেরা স্বাভাবিক নিয়মেই নিক্ৰ শ্ৰেণীর স্বার্থ সম্বন্ধে বিশেষ অবহিত হইল। এই অবহিত হওয়ার ছটি প্রধান ফলের কথা বলি। প্রথমটি--এই নিয়ম হইল যে, ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্র নিজের নিজের যজন করিতে পারিবে। কিন্তু ক্ষত্রিয়, বৈশ্র কাহার ষাজন করিতে পারিবে না। অপরের যাজন করার অধিকার একচেটে ব্রাশ্বণের। দ্বিতীয় ফল হইল, ষজমান লইয়া ষাজকদের মধ্যে কাড়াকাড়ি। যজমান নামী যা**জকে**র দারা যজ্ঞাদি করাইতে উৎস্থক বটে. কিন্ধু যাক্তকদের মধ্যে বেষাবেষি নামী ( অর্থাৎ দাতা ) যাজককে দইয়া ভীষণ। এর প্রকৃষ্ট উদাহরণ পাই মহাভারতে, দেববাঞ্চক বুহস্পতি ও তাঁহার ভ্রাতা সম্বর্তের ব্যাপার রাজা মক্তকে লইয়া। প্রথমে মক্তর বুহস্পতিকে অমুরোধ করিলেন যাজন করিতে। কিন্তু বুহস্পতি প্রত্যাখ্যান করিলেন এই বলিয়া বৈ, ডিনি দেবরাজ ইন্দ্রের যাজক, মরণধর্মী মাহুষের যাজন করিবেন না। তাই **ভা**র ভাতা মঞ্জ গেলেন স্**মর্ডের কাছে**। সম্বৰ্ত মক্ৰত্তের যা**জ**ক হইতে রাজী হই**লে**ন। **ভার পরই** বুহস্পতি শুনিলেন, মক্কত্ত এক বিরাট যক্তের আয়োজন ক্রিয়াছেন, সে ব্যাপার "অভিমান্থ্য", ভাহাতে সমস্ত ভাগু সোনার। ইহা ভনিয়া বুহস্পতি বিবর্ণ ও কুশ হইয়া পিয়া ইন্দ্ৰকে মুক্ৰবিৰ ধরিলেন, যাহাতে তিনি বুহস্পতিকে যাজক করিতে মক্তবেক রাজী করান। ইন্দ্র প্রথমে সন্থিকে ও ভার পর গন্ধর্বরাজ ধুভরাষ্ট্রকে পাঠাইলেন মক্তকে রাজী क्वाहेवाव खना। वला वाहना, भव भव घुटे खनहे नियन হইয়া ফিরিয়া আসিয়াছিলেন।

বজমানের জন্য যাজকের এই আকুলি-বিকুলির কথা বেশ একটু শ্লেষের সহিত পাই ঋষেদে যেখানে বলা হইয়াছে —"সকলেই নিজের নিজের ধান্দায় ঘুরে বেড়ায়। ছুতার খুঁজে বেড়ায় কার কাঠের জিনিস ভেঙেছে, মেরামডের কাজ পাব; বৈভ খুঁজে বেড়ায়, কোথায় রোগী পাই; আর ব্রহ্মা (যাজক) খুঁজে বেড়ায়, কে যজ্ঞ করবে।" মনে হয় বে, মহাসংহিতায় যেখানে "ভাই ভাই ঠাই ঠাই কে শাস্ত্রসমত বলা হইয়াছে, ভারও ব্ল উদ্দেশ্ত যজমানসংখ্যা বাড়ানো। কারণ সেখানে বলা হইয়াছে "পৃথগ্ বিবর্ধতৈ ধর্ম:", অর্থাৎ ভাইরেরা সকলে একসলে থাকিলে সকলে মিলিয়া মোটে একপ্রস্থ ধর্মাছ্টান হইবে, কিছ ভাহারা আলাদা হইয়া যাইলে ধর্ম বাড়িবে, অর্থাৎ প্রত্যেক ভাইয়ের একপ্রস্থ করিয়া ধর্ম হইবে, অর্থাৎ যতগুলি ভাই, তত গুণ ধর্মাম্ম্রান। "The more the merrier." এই সঙ্গে বাগ-যক্তাদির আড়ম্বর্জি ও আছুষ্কিক দক্ষিণা প্রভৃতিতে ব্যয় বৃদ্ধি অবশ্রভাবী রূপে হইল।

এইটি হইল এই শ্রেণীর স্বার্থপ্রণোদিত সক্রিয়তার বা**ছ রপ।** এই বাছ রপ জাতির পক্ষে অপেকাকৃত কম ক্ষতিকর। কারণ ইহার ফল যত্ত্মানের কিছু ধন হস্তান্তর মাত্র।

কিন্তু এই অর্থ হন্তাস্থরের ফলে যাজকের যে অবস্থা হইল, তাহা তাহার পক্ষে মোটেই সম্মানজনক নহে। ইহা সর্বতোভাবে স্বীকৃত হইল যে, যাজক যজমান ঘারা "ক্রীত" বা "পরিক্রীত", সাদা বাংলায় "ভাড়াটে"। ক্রমে যাজকের এই হীন অবস্থা যথন ভাল রক্ম উপলব্ধি হইল, তথন পাই যে, দেবীর পূজার জন্য পুরোহিত নিযুক্ত করিলে দেবী কাষ্টা হন ও যজমানের সর্বার্থহানি হয়।

যাহা হউক, যাজকের এই সক্রিয়ত। যদি বাছ রপেই ( অর্থাৎ যুজমানের কিঞ্চিৎ ধন যাজকের হতে যাওয়া ) থাকিয়া বাইত ত ছঃখ ছিল না। কিন্তু এই সক্রিয়তার একটা আভ্যন্তরিক কার্য ছিল এবং তাহাই দেশের ও জাতির সর্বনাশ করিয়াছে। এই আভ্যন্তরিক কার্যের উদ্দেশ্য ছিল কি না, বা কি ছিল, তাহা অন্থনানসাপেক। কিন্তু নিশ্চিত ফল হইয়াছিল ক্ষত্রিয় ও তৎসহ সমস্ত জাতিকে দৈববাদী ও তাহা হইতে, প্রচুর যাগযজ্ঞাদি খারা, দৈবতোষক করিয়া ভোলা। বলা বাহলা, দৈববাদী ও দৈবতোষককর সংখ্যা যত বাড়িবে ততই যাজকের শ্রীবৃদ্ধি।

মনে হয়, কোনও কোনও আক্ষিক ঘটনা যাজকের এই সক্রিয়তা আরম্ভের স্বযোগ দিয়াছিল। যেমন, ছই দলে যুদ্ধ আসন্ন, এমন সময় হঠাং একটা ঝড় বা বুষ্টি আদিয়া একটা দলকে অস্থবিধায় ফেলায় অপর দল সহজে জ্বয়ী হইল। যাজক জ্বয়ীকে বলিল, "আমি অমুক দেবতাকে তোমার কল্যাণার্থে পূজা করায় তিনি তোমার সাপক্ষেএই আক্ষিক ঘটনা ঘটাইয়াছেন ও জাহার ক্পপতেই তোমার জ্বয়লাভ হইয়াছে।" এই ভাবের আক্ষিক ঘটনা গোটাকতক ঘটিলেই দেববাদ ও দৈবভোষণ প্রচার কার্য জ্বোরে চলিল। মানবদমাজে স্বার্থসিদ্ধির সহায়করূপে ভাওতার আবির্ভাব বোধ হয় এই প্রথম।

এই দৈববাদ ও দৈবভোষণ নীতির ফলস্বরূপ ক্ষত্তিরমূগের বীষব্যঞ্জক "অহমদর্শম্' লোপ পাইল ও তাহার স্থলে
আদিল ঠিক উন্টা, অন্ধকার ধ্মময় "অ-দৃষ্ট'। "অহমদর্শম্" ও "অ-দৃষ্ট" পরস্পর একান্ধবিরোধী। মৃতক্ষণ

"অহমদর্শম্" থাকিবে, ততক্ষণ "অ-দৃষ্ট", দৈববাদ দুরে থাকিবে। একবার "অহমদর্শম্"কে তাড়াইয়া তাহার স্থলে "অ-দৃষ্ট"কে স্থাপিত করিতে পারিলে দৈববাদ ও তাহার সহিত দৈবতোষণ জাকিয়া বসিবে। তাহাই হইল।

প্রত্যক্ষকে দ্ব করিয়া "অ-দৃষ্ট" লইয়া খেলা আরম্ভ হইল। প্রত্যক্ষকে ধরিয়া কষ্টিপাথরে পরীক্ষা করা যায়। "অ-দৃষ্ট" দে পরীক্ষার একেবারে বাহিরে। এই নির্ভাবনার সাহদে "অ-দৃষ্ট" সম্বন্ধে নিরন্ধশ ভাবে নানাপ্রকারে নানা আকারে জল্পনা-কল্পনা, গল্পরচনা ( অল্পবিস্তব আধাঢ়ে ) হইতে লাগিল। এই সমস্ত জ্বলা-কল্পনা গল্লাদি ভিন্ন ভিন্ন প্রতকে ভিন্ন ভিন্ন আকারে হওয়ায় তাহাদের পৌর্বাপর্ব বা সত্যাসত্য অমুসন্ধান বা নির্ধারণ অসম্ভব। কালে ইহাও দাঁড়াইল যে, এই সবের সম্বন্ধে জিজ্ঞাসাও পাপ। নির্বিচারে বিশাস কর।

নিরস্তর এই প্রচারকার্বের ফলে ক্ষত্রিয় যে কেবলমাত্র সম্পূর্ণ স্ববিরোধী কর্মে স্বধর্মচাত হইল, তাহা নহে। প্ররোচিত হইল। ক্ষত্রিয়ের ধর্মে দৈববাদ ও ভিক্ষা একাস্ক নিষিদ্ধ, এবং ক্ষত্রিয় স্বাবস্থায় অভী, মহ্যুমান্, অমর্থ-পরায়ণ। মহাভারতে আছে যে, যদি কোনও ক্ষত্রিয়ের সর্বনাশ করিতে চাও, তাহা হইলে ভাহার কাছে নিরম্ভর দৈবের মাহান্ম্য কীর্তন কর। তাহা হইলে দে জ্বেম দৈব, দেবতার উপর নির্ভর করিয়া নিরুৎসাহ, নির্বিরোধী, নিষ্ক্রিয় হইয়া পড়িবে। কডক স্থানে আছে যে, ক্ষঞ্জিয় নিজ অস্তবন্ধ বন্ধুর নিকট পর্যন্ত প্রতিগ্রহ করে না, কাহারও নিকট প্রার্থনা বা ভিক্ষা করা ত দূরের কথা। কাহারও নিকট কিছু চাহে না। যদি নেহাত বলে "দেহি", ত এক-माज "युक्तः (मिर्ट", ज्यात किছू नरह। रव जानी नरह, रव নির্মন্থ্য নছে, যে ভিক্ষা করে, সে ক্ষত্রিয়ই নছে। অমর্থ ক্ষত্রিয়ের আর একটি বিশেষ লক্ষণ। কাহারও দ্বারা অপক্রত হইলে কথনও সে কথা বিশ্বত হয় না।

এ হেন ক্ষত্রিয় দৈবরাদী হইয়া পড়িল। "ক্রতু" শব্দের আসল অর্থ ভূলিল এবং তাহার যাজকস্বার্থান্ত্রকৃল অর্থ অবশ ভাবে গ্রহণ করিয়া নানারপ যাগযজ্ঞাদি করিতে তাহার সমস্ত প্রাণমন, সমস্ত শক্তি নিয়োজিত করিল। যাহার ভিক্ষা করা একান্ত নিষিদ্ধ, দে দেবতার নিকট "দেহি, দেহি" করিয়া আকাশ ফাটাইতে লাগিল। দৈববাদের অবশ্রস্তাবী ফলস্বরূপ আসিল ভিক্ষাবৃত্তি।

এই "দেহি, দেহি" ফলে হইল এই যে, মান্ত্র যে ওধু নিজেকে অত্যন্ত হীন করিয়া ফেলিল তাহা নহে। এ পর্যন্ত দেবতারা বরাবর মান্ত্রের সঙ্গে একত্রে মর্ত্যে বাস করি-তেন, কিন্তু মান্ত্রের এই "দেহি দেহি"র উৎপাতে ভাঁহারা "আহি আহি" ববে মৰ্ত্য ছাড়িয়া স্বৰ্গে আশ্ৰয় লইলেন। এ কাহিনী আছে শভপথআন্ধণে। কাজেই এই ভিকাবৃত্তি ৰাবা কাহাবই কল্যাণ হয় নাই।

ভিক্ষার্ত্তি সমন্ত অমঙ্গলের মূল। এই বৃত্তি বাহাকে পায়, সে পরম্থাপেকী হইয়া পড়ে। পরের কাছে বত না হোক, নিজের কাছে সে অত্যন্ত হীন হইয়া পড়ে। আত্মসম্মান, আত্মসন্তাবিতভাব তাহাকে ত্যাগ করে। কোধাও বা প্রত্যাখ্যান, কোধাও বা ভিক্ষালাভ, ইহাতে সে আবও দৈববাদী হইয়া পড়ে। ভয় আসিয়া প্রবেশ করে তাহার মনে। মহ্যু বা অমর্ব সেই ব্যক্তির কি করিয়া হইবে ?

এইরপে যাজকের স্বার্থপ্রণোদিত সক্রিয়তার ফলে ক্রিয়ের অকথা অবনতি হইল। ক্ষরিয় তাহার নিজস্ব বলিষ্ঠ দুড়িষ্ঠ ভাব বিসর্জন দিয়া হীন হইতে হীনতর হইতে চলিল। এবং যাজক ? "তলের মামৃদ উপরে উঠিল"। সমাজে ব্রাহ্মণ দিতীয় হইতে প্রথম শ্রেণীতে উন্নীত হইল এবং ক্ষরিয় প্রথম হইতে দিতীয় শ্রেণীতে অবনীত হইয়া ব্রাহ্মণের নিকট হাত জ্যোড় করিল।

এই-ই দ্বিতীয় বা "ব্ৰাহ্মণ যুগ" বা "ত্ৰেতাযুগ"।

এই ত্রাহ্মণযুগ শ্রেণীপ্রাধান্য প্রতিষ্ঠার জন্য পুরাতন পুন্তকাদির পরিবর্তন, পরিবর্জন, প্রশ্নেপাদি বারা "সংস্করণ" ও নৃতন নৃতন অল্পবিশুর আষাঢ়ে গল্প রচনার যুগ, ইহা কেহই ক্রায়সকত ভাবে অস্বীকার করিতে পারিবে না। ক্রিয়ের ক্রমবর্ধমান হীনভাবের হ্যোগ লইয়া "সংস্করণ" ও রচনা বারা ত্রাহ্মণ নিজেকে বিশ্ হইতে পৃথক করিয়া লইল এবং নিজেকে অদণ্ডা ও অকর করিয়া লইল। এইরূপ কর্ম যে এই অবস্থায় স্বাভাবিক, তাহাও কেহ অস্বীকার করিতে পারে না।

অবস্থাটা এই—ক্ষত্রিয় রাজ্যশাসনই বোঝে ও তাহাতেই ব্যস্ত। লিপিকরণ ও পুস্তক-রচনা ব্রাহ্মণের হাতে এবং তাহার সহিত ক্ষত্রিয়ের কোনও সম্পর্ক নাই। রাজ্যশাসন ব্যতীত অপর সমস্ত কার্যে ক্ষত্রিয়ের শুধু উদাসীনতা নহে, অবর্ণনীয় অবজ্ঞা। এইরপ অবজ্ঞাপ্রস্তুত্বমনোবৃত্তি সম্বন্ধে একটি সত্য ঘটনা শুনিয়াছি। পুরুষায়ুক্রমে যুদ্ধব্যবসায়ী অভিজ্ঞাতবংশীয় একটি ভদ্রলোক একবার আদালতে সাক্ষ্য দিবার সময় জিজ্ঞাসিত হন, "এই সহি কি আপনার ?" তাহাতে তিনি তিক্ত শ্লেষের সহিত উত্তর দেন, "উও মূন্শীকা কাম হ্যায়"।

ক্ষত্রিয়যুগে আন্ধণের রূপ ও আন্ধণযুগে আন্ধণের রূপ পাশাপাশি নাথিলে একটা দেখিবার জিনিস বটে। অনব-ধানভাবশতঃ বা বে কোন কারণে হউক, "সংক্ষরণ" কোনও কোনও কথা একেবাবে লোপ করিতে পারে নাই। এই জন্ম ক্ষত্রিয়যুগে ত্রান্ধণের রূপ সম্বন্ধ আমরা কিছু কিছু তথ্য পাই। এই রূপের কিছু উল্লেখ উপরে করিয়াছি এবং ইহাও দেখাইয়াছি ক্ষত্রিয় কি চক্ষে ত্রান্ধণকে দেখিত।

ইহা ছাড়া অথর্ববেদে যাহা পাই তাহা হইতে বেশ ব্রা যায় যে, ক্ষত্রিয় মধ্যে মধ্যে ব্রাহ্মনের গরু লইয়া গিয়া থাইয়া ফেলিত এবং ব্রাহ্মনের স্ত্রীকে লইয়া গিয়া নিজ অবরোধ ভুক্ত করিত। এই সমন্ত ব্যাপারে ব্রাহ্মণ যাহা করিত, তাহাকে "নাকে কালা" ছাড়া আর কিছু বলা যায় না। তথনও বোধ হয় "এক চাহনিতে ভুম্ম করা" বা "শাপ দিয়া বিকট একটা কিছু" করার গল্প গজাইয়া উঠেনাই।

এইবারে ব্রাহ্মণযুগে ব্রাহ্মণের রুপচিত্রণ দেখি। এই রুপচিত্রণের দৌড় এক নৃগরাজ্ঞার গল্পেই পরিস্টুট। এক ব্রাহ্মণের গরু নৃগরাজ্ঞার গরুর পালে চুকিয়া পড়িয়াছিল। রাজ্ঞা তাহা না জানিয়া ঐ গরু অপর এক ব্রাহ্মণকে দান করিলেন। পরে সেই গরুর মালিক প্রতিগ্রহকারী ব্রাহ্মণের ঘরে সেই গরুকে দেখিয়া নুগের কাছে নিজ গরু দাবি করিল। নৃগ এক সহত্র গরুবিনিময়ে প্রতিগ্রহকারীর নিকট ঐ গরুটি চাহিলেন। সে ব্রাহ্মণ দিতে রাজী হইল না। তখন গরুর মালিককে নৃগ এক সহত্র গরু আরও কত কিছু দিতে চাহিলেন। সে প্রাহ্মণ সহত্র গরু আরও কত কিছু দিতে চাহিলেন। সে প্রত্যাখ্যান করিয়া চলিয়া গেল, তাহার সেই গরুটি চাই। নৃগ গিরগিটি ইইয়া গেলেন। কোন্ অপরাধে বুঝা যায় না। তবে মোদ। কথা লেখা আছে "গবরদার, ব্রাহ্মণের জিনিস অন্ধান্তেও ছুইও না। গিরগিটিত্ব প্রাপ্ত হইবে।" উপরে লিখিত অথববেদের বর্ণনা হইতে কত দূর!

এই জাতীয় আর একটি সৃষ্টি এই রান্ধণ-যুগের—পরশুরামের আযাঢ়ে গল্প। তিনি নাকি একুশবার পৃথিবী নিঃক্ষত্রিয় ক রিয়াছিলেন। এক বার নয়। একুশ বার। কাল যে রান্ধণকে ক্ষত্রিয়ের সামনে হাতজ্ঞাড় করিয়া দাঁড়াইয়া থাকিতে দেখিয়াছি, আজ সেই রান্ধণ নাকি সেই ক্ষত্রিয়কে একুশ বার নির্বংশ করিতেছে। ক্ষত্রিয়পুগে ক্ষত্রিয়ের নিকট হীনভাবে থাকার প্রতিক্রিয়ায় এই গল্প রচিত এ বিষয়ে কোন ও সন্দেহ নাই।

তবে, পরশুরাম সদক্ষে যাহা কিছু পাওয়া যায় আলোচনা করিলে একটা কথা উদ্ধার হয়। পরশুরাম বলিয়া এক ব্রাহ্মণের সহিত ক্ষত্রিয়ের ঠোকাঠুকি হইয়াছিল এবং উপরে লিখিত "সংস্করণ"-এর হাত হইতে বে তুইটি ঘটনা বাঁচিয়া গিরাছে, তাহা হইতে বুঝা বায় বে, পরশুরাম শস্তভঃ তুই বার বেশ ক্ষম হইয়াছিলেন। এক বার, দশর্থ-

পুত্র কিশোর রামের কাছে। দে বার পরশুরামের পরশুরামের পরশুরাজারও স্থবিধা হয় নাই। অপর বার জীয়ের কাছে। দে বার একচোট যুদ্ধের পর পরশুরামের পিতৃগণ আসিয়া পরশুরামকে বাঁচান। তাঁহারা বাহা বলিয়াছিলেন তাহা বেশ প্রণিধানযোগ্য। পরশুরামকে বলিলেন, "ভীম্মকে যুদ্ধে হারানো ভোমার পক্ষে 'শক্য' নয়"। অর্থাৎ তোমার ক্ষমভায় কুলোবে না।" অপর পক্ষে, ভীম্মকে বলিলেন, "পরশুরামকে যুদ্ধে হারানো তোমার পক্ষে 'ভাব্য' হবে না।"

এই হীনবৃত্তি ( অর্থাং সংস্করণ করিয়া নিজের শ্রেণীর প্রাথান্ত স্থাপন ও অপর কোনও শ্রেণীকে হেয় করার চেষ্টা ) বেশ স্বায়ী হইয়াছিল। অপেক্ষাকৃত আধুনিক একটা উদাহংণ দিই। "প্রভূ" অর্থাং মরাঠা কায়স্থরা রাজ্যশাসন ও মুদ্ধে অসাধারণ দক্ষতা দেখানোতে রাক্ষণেরা বড় মনোব্যথা পাইলেন। অভএব কায়স্থদের হেয় করার উদ্দেশ্তে কতকগুলি শ্লোক রচনা করিয়া স্থাতিখণ্ডে জুড়িয়া দিলেন। তখন সে দেশ বিজ্ঞাপুরের নবাবের অধীন। কায়স্থরা নবাবের কাছে অভিযোগ করিতে নবাব বলিলেন যে তিনি মুস্লমান, কাজেই কাশী হইতে এ বিষয়ে সিদ্ধান্ত না আনিলে তিনি কিছু করিতে পারেন না। উভয় পক্ষ গেলেন কাশীতে। সেখানে পরীক্ষকেরা বলিতে বাধ্য হইলেন যে, সহাজিখণ্ডের ঐ অংশ নিছক জ্ঞালিয়াতি।

আবার উন্টা দিকে, কাহাকেও খুশি করিতে হইেলেবেমন, মণিপুরের মহারাজা। মহাভারতে আছে মণলুর। নাম দেবিয়াই বেশ বোঝা যায় যে, দ্রাবিড় দেশের নাম। মহাভারতে মণলুরের যে অবস্থান বর্ণনা, তাতে স্পষ্ট বুঝা বায় যে, স্থানটি কলিঙ্গ ও মহেন্দ্রপর্বতের দক্ষিণে এবং সমুদ্রের নিকটে। মণিপুরের মহারাজাকে খুশি করিবার জন্ম "মণলুর"কে "মণিপুর" বানানো হইল এবং তাহাকে চালান দেওয়া হইল দ্রাবিড় দেশ হইতে আসাম-ব্রক্ষের সন্ধিন্ধলে ও সমুদ্র হইতে বহু দূরে।

এই যুগের এই রকম ক্বভিত্বের আরও উদাহরণ দেওয়া বায়। কতক পাওয়া বাইবে "প্রবাসী" ৩৩শ ভাগ, (১৩৪০), ২য় বও, পৃ, ৬৯০। অথচ এই ব্রাহ্মণযুগেরই অমর কীর্ত্তি, জ্ঞান ও ক্ষষ্টির সর্বদিকে অসাধারণ অগ্রগতি এবং অসংখ্য উৎকৃষ্ট গ্রন্থ-রচনা।

এ যুগের বিশেষত্ব অবাধ চিস্কান্থাধীনতা, মত-অমত অর্থাৎ প্রায় প্রত্যেক বিধয়ে একাধিক ও কমবেশী পরস্পার-বিরোধী মত। ক্ষত্রিয়ধুগের পরমতসহিষ্ণৃতা এখনও চলিতেছে। এই পরমতসহিষ্ণৃতা না থাকিলে দড়িছেড়া চার্বাক্মত এবং বেদবহিষ্ণৃতি অনাত্ম বৌদ্ধ ও জৈনমত, এ সমত্ত শহিষ্দুর্শন মধ্যে পরিগণিত হইত না। মতভেদ

থাকিলেও মত লইয়া পরস্পর কাটাকাটি বা মতবিবোধীকে ধরিয়া বাঁধিয়া পোড়ানো ( বাহা পাশ্চান্ত্যে ধুব হইয়াছিল ) সেইটি এদেশে হয় নাই।

তবে এই অবাধ চিন্তাস্বাধীনতার ঘুইটি বিষম কুফল ফলিয়াছিল। প্রথম কুফল—মতভেদের প্রাচুর্ব্য ও "অরাজকতা"। বে বাহা ভাবে, নিজ "মত" বলিয়া প্রচার করে ও নিজ প্রাধান্তস্থাপন জন্ত আবশ্রক মত কুতর্ক দিয়া তাহা সমর্থন করে। ক্ষত্রিয়াক্ত হীনবল, মতগুলির পারস্পরিক বলের ক্রমনির্দেশ করিয়া দেয়, এমন শক্তি দেশে নাই। কাজেই মতগুলি স্ব স্থ প্রধান। প্রত্যেকের একটি করিয়া দল। কেহই কাহারো অপেকা কম নহে। মতের "অরাজকতা"।

এইরপে মতসকলের মাতামাতি ও একজাবস্থানে ভাবসাম্ব্য ও ক্রমে তাহা হইতে সকলপ্রকার সাম্ব্য আবিভূতি হইয়া সমান্তকে দৃষিত করিয়াছিল।

দিভীয় কুফল-এই সমস্ত মতের সমর্থনচেষ্টায় পূর্বপক্ষ, উত্তরপক্ষ, পক্ষে এই, বিপক্ষে এই, এই সমস্ত বলা কওয়া, ওজন করা, এই সবের বাডাবাডি হইয়া পৌছিয়াছিল অব-শেষে নবান্তায়ে, যাকে শ্লেষ করিয়া কেউ কেউ "গবান্তায়" বলে, অর্থাৎ নিছক জাবর-কাটা, "পাত্রাধার তৈল, তৈলাগার পাত্র" 😎 ঘানি ঘুরিয়া ঘুরিয়া যাইতেছে চোথবাঁগা বলদ। আশেপাশে কি আছে বা হইতেছে, বা অবস্থা বৃঝিয়া কি করা উচিত, দেখিবার বা ভাবিবার ইচ্ছা বা শক্তি নাই। খাটিয়াই মরিতেছে। কিন্তু সমস্তই ভাবরাক্সে। বাস্তবের সঙ্গে সম্পৰ্ক না থাকাবই মধ্যে। কাজেই উৎপন্ন হইতেছে খালি "ক্যাচ" আর "কোঁচ"। তর্ক করিতে করিতে, যুক্তি কাটাকাটি ও ওজন করিতে করিতে, সঙ্গ কাটিতে কাটিতে জীবন কাটিয়া গেল। কাজ করিবার সময় আর হইল না। ভর্কেই সব শক্তি খরচ হইয়া গেল। কাজ করিবার জন্ম বাকি কিছু রহিল না। এই বিষটা ব্যাপকভাবে সারা জাতিটাকে পাইয়া বদিল। বাহার ফলে জাতটা অ-দৃষ্ট আর তর্কে মাতিয়া ভৃত, বর্তমান, ভবিশ্বং সব ভূলিয়া গেল। আর, বিদেশী এই স্থবোগে আসিয়া ঘাড়ে চাপিল প্রায় নির্বিবাদে।

এই পর্যান্ত লিখিয়া মনে পড়িয়া গেল 'as others see us.' অনেক দিন পূর্বে পড়া এক জন জার্মান লেখকের এক-খানি বইয়ের ইংরেজী অনুবাদে পজিয়াছিলাম। তাহাতে এক জায়গায় আছে,—

We can very well imagine how to the subtle mind of the Greek of the period of decadence any decided course of action became difficult, if not impossible. The fault with him was not that he was not able to grasp the political questions with which he was confronted, but that he grasped them so well that he was able to conceive endless solutions to them. Ways out of his difficulties he could find in numbers; but he lacked the will-power and determination to carry out any one of them with consistency. He could see not only one side of a question, but infinite sides. His misfortune was to see not only the pros of a course of action, but the cons too; and by the time the balancing of this advantage against that drawback was complete, the moment for action was gone by. He had to pay the penalty for his over-subtlety, which could not only split a hair, but split again into five or six the hair which had already been split countless times before. It was thus that the Greek, after the Roman conquest, became the little Graeculus of his victor, who was found useful as a tutor or an office-clerk, to be treated with a certain sort of mild contempt. We can quite understand the double current of feeling which we see running through Roman minds, an admiration of Hellenic culture at its best, the culture on which all Roman intellectual progress was based, and a contemptuous disdain for its latter-day representatives. The Greek under the later Roman Republic and the beginning of the Empire stood very much on the same footing as the Babu of contemporary India, another very typical example of the effects of over-intellectuality."

—Emil Reich, Success Among Nations, pp. 102-103. অপবের চক্ষে আমাদিগকে কিরূপ দেখায়, উপরি-উদ্ধৃত অংশে তাহা পরিকৃট।

এই হইল ত্রেভায্গ। এ যুগের অধিদৈবত যাক্সক ও প্রভীক কচকচিমিল্লিত ঘণ্টাধ্বনি। দেশে ভর করিয়াছে "অ-দৃষ্ট", "বায়্ভূতো নিরাশ্রয়ঃ", একেবারে শাকা ও ফাঁকি, বাস্তবের সহিত কীণ্ডম সম্পর্ক।

ষাহা হউক, এই বকম "দীয়তাং ভূজাতাং" সভাসবগ্ৰম-করা কচকচি, দক্ষিণা, প্রণামী প্রভৃতি লইয়া বেশ দিনকতক চলিল। কিন্তু এইবারে বৈশু মাথা নাড়া দিল। বৈশু দেখিল বে, ক্লয়ি, পাশুপাল্য, কুসীদাদি দ্বারা সে ধন উৎপাদন করিতেছে। ব্রাহ্মণের যতই টাকা থাকুক, সে অ-কর। কাজেই প্রধানতঃ বৈশ্রের কাছেই কর আদায় প্রভৃতি দ্বারা একদিকে রাজার রাজ্যশাসন এবং অপরদিকে রাজা ও ব্রাহ্মণের সদক্ষিণ সাড়ম্বর ব্যাদি সমস্তই চলিতেছে। সে বলিল, তাহারই টাকায় যথন সব চলিতেছে, তথন তাহারই প্রাধান্ত হওয়া উচিত।

এই আরম্ভ হইল তৃতীয়, বাপর বা বৈশ্রযুগ। বর্তমানে বৈশ্য (পূর্ণ ও ভ্রাংশ)বারাই পৃথিবীর অধিকাংশের ভাগ্য নিয়ন্তিত হইডেছে। এই যুগের লক্ষণ দেখি বে, কর্তা নিক বৃত্তিনির্দ্ধারিত লক্ষ্যে ঠিক পৌছেন, কিন্তু কখনও সোজা বাতায় নয়। ভাহিনে পাশ কাটাইয়া, বামে পাশ কাটাইয়া, পিছু হাঁটিয়া, তলা দিয়া, সর্বপ্রকারে, কেবল সোজা রান্তায় নয়। এরই ঠিক বিপরীত ভাব মনে পড়িয়াছিল যথন আল্হার গীত পড়ি 1 এই গীত যুক্তপ্রান্তে প্রচলিত। তখন রাজপুরকে তাহার প্রেমপাত্রী রাজকুমারী বলিলেন, "অমুক রাজার নিকট নওলাখা হার আছে; আনিয়া আমাকে দাও।" কুমার তাহার বয়স্তকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "ভাই ত, কি করিয়া সংগ্রহ করি?" বয়স্ত জবাব দিলেন, "কি করিয়া? তুমি ক্ষত্রিয় হইয়া জিজ্ঞাসা করিতেছ? ক্ষত্রেয় হইয়া কিছু চাহিতে পার না। যুদ্ধ করিয়া মারিয়া লইয়া আসিবে।" রণজিৎ সিংহের কথা ক্রেহিনুর কা কীমৎ? পাঁচ জুতি"! যত বড়ই হউক, পূর্ণই হউক আর ভগ্নাংশই হউক, বৈশ্রের পক্ষে এ মনোর্ভি সম্ভব নয়। তার সমস্ভ সন্তা চেষ্টা করিলেও এ ভার উপলব্ধি করিতে পারিবে না। এইভাবে অনুপ্রাণিত হইয়া কাজ করা ত দ্রের কথা।

এই বৈশ্রয়গের অবদান—রাষ্ট্রে "অর্থকরী রাজনীতি" অর্থাৎ রাজনীতিতে আসার আসল উদ্দেশ্য ভাঁওতা দিয়া বেশ কিছু অর্থোপার্জন। বৈশ্রের একমাত্র কাম্য অর্থ। উপায় সম্বন্ধে চিম্ভিত বা লক্ষিত হইবার আবশ্রকতা নাই।

कृष्टे-ठाविष्ठा छेमाञ्चल मिटे। Black-birding पर्वार আফ্রিকা হইতে নিগ্রোদের ধরিয়া আনিয়া গরু-বাছরের মত বিক্রয় ব্যবসা আরম্ভ ক্রার ক্রতিত ইংরেছের এবং তাহার ভাওতা--"নিষ্মা অসভ্য লোকগুলা বুখা জীবন-वाशन करत। তাহাদের দিয়া দ্রব্য উৎপাদন করাইলে তাহাদের উন্নতি ও মানব জাতির শ্রীবৃদ্ধি যুগপং হইবে": "এই ব্যবসা অতি পবিত্র উদ্দেশ্তে করা হইতেছে, এই ভাওতায় খ্রীষ্টায় পাদরী কতুকি 'blessing of slaveship ·' ;" "অবাধ বাণিজ্যে বাধ। দিয়া চীন অর্থশাস্ত্র মতে পরম অধর্মকরিতেছে",এই ভাওতায় চীনের সহিত ইংরেক্সের "অहिएकन युष्त", याशांत "लूठे" इट्टेन द्रःकः : अमुखादक मुखा করিবার ভাওতায় একে একে 3 G's প্রেরণ অর্থাৎ প্রথমে তাহাদের নিকট Gospel প্রেরণ, তাহার পিছনে পিছনেই Gin ও তাহার পিছনে পিছনেই Gunboat। গত তুই শতাৰী ধরিয়া ইউরোপীয় বাষ্ট্রগুলি কর্তৃক আরম্ভ প্রভাক যুদ্ধ-- আগলে নিজ নিজ ব্যবসা বাড়াইবার উদ্দেশ্রে, কিছ একটা না একটা নৈতিক ভাঁওভায়।

এ দেশেও ব্যাপার ঠিক এই। তবে দেশকালপাত্র ভেদ থাকায় বাধ্য হইয়া ভাঁওতার রকমফের একটু আলাদা। সর্বত্রই এদেশে ও বাহিরে কর্মক্রম এক। অর্থই আমার একমাত্র উদ্দেশ্য; বদি ঐ অর্থের জন্য জনর্থ ঘটাইতে হয় ঘটাইব, সঙ্কোচ করিলে চলিবে না; পরক্ষার- বিরোধী বছপ্রকার ভেক ও বুলি জাড়ালে মন্তুত রাধিব এবং দরকারমত লইব ও ছাড়িব।

এই যুগের নীতি—"ইহকাল, পরকাল, সত্য, কৃতজ্ঞতা, নিজ দেশ, জাতি, সব কথার কথা; এ সব কিছুই ভাবিও না। যাহা অর্থ নহে বা অর্থোপার্জনের স্থবিধা করে না, তাহাই অনর্থ, তাহাই হেয় ও বর্জ্য। যে-ই তোমার অর্থোপার্জনের পরিপন্ধী হইবে, সে-ই তোমার পরম শক্র।"

এই নীতির অবশ্বস্থাবী ফলস্বরূপ সমাজে একটি ত্র্লক্ষণের প্রথম আবির্ভাব। এই ত্র্লক্ষণটি পরমতা-সহিষ্ণুতা। ইহাই এই বৈশুর্গের নিজস্ব লক্ষণ। ইহা অশেষ অন্তভের আকর। কিন্তু ইহা অনিষ্ট, অপ্রিয় ও অপ্রার্থনীয় হইলেও, স্প্রতি অন্ত অন্ত সকল বস্তু ও ভাবের মন্ত ইহারও উৎপত্তি সম্পূর্ণ স্বাভাবিক নিয়মে। ইহার উৎপত্তির ক্রম বলিতেছি।

পূর্বেই দেখিয়াছি, ক্ষত্রিয়যুগে সমাজনিয়ামক স্বরূপে বথাক্রমে ছিল ধর্ম, স্বতি ও দেশাচার বটে; কিছু ইহাদের সকলের উপরে ছিল রাজ্ঞশাসন। তাহার উপর কোনও কিছু ছিল না, কাজেই শেগ পর্যন্ত কোনও গোলমাল ছিল না।

তৎপরবর্তী আন্ধণযুগে বহু মত হইয়াছিল। কিন্তু মতভেদ থাকিলেও, পরমতসহিষ্ণুতা থাকায়, মতবিরোধ চিলুনা।

কিন্ধ তংপরবর্তী বৈশ্রমুগে অর্থসগন্ধে স্বার্থসভার্য উপস্থিত হইল। এই স্বার্থসভার্য ততটা ক্ষত্রিয়ের বা ব্রাহ্মণের সহিত নহে, বতটা শৃত্তের সহিত। ক্ষত্রিয় ও ব্রাহ্মণের মধ্যে বাহারা শৃত্তবৃত্তি অবশ্বন করিয়াছে তাহারাও শৃত্ত পর্যায়স্থক, বলা বাহলা।

এই স্বার্থসভ্যবের বৃলে বৈশ্র ও শৃত্রের মধ্যে মতভেদ অর্থের উৎপাদন ও বিভাগ লইয়া। শৃদ্র বলিল, "আমি নিজ শ্রমদারা দ্রব্য উৎপাদন করি। তাহার ন্যায়সঙ্গত ভাগ ভূমি আমাকে দাও না এবং প্রার্থনা করি বে ন্যায়সভাত ভাগ আমাকে দাও। সভাতিবিক নির্মে এই মতভেদ মতবিরোধে পরিণত হইল। এই মতবিরোধ এতই তীর হইল বে উভয় পক্ষই মারমুখো। এক জন বলিল—Strike, অপর জন বলিল—Lock-out.

এই তীব্র বিশ্বন্ধভাবের ফলে সক্রবন্ধ ও উচ্চতর শুরে অবস্থিত ও শক্তিসম্পন্ন বৈশ্র নিমতন শুরে অবস্থিত ও সক্রশক্তিহীন শুলের মতের প্রকাশ বন্ধ করিবার, এমন কি দমন করিবার চেষ্টা আরম্ভ করিল। এই উদ্দেশ্যে বাজশক্তিকে আয়ন্ত করিয়া বাজশক্তির নামব্যবহারে দমনের নানাপ্রকার উপায় উদ্ভাবনা করিল।

এই হইল তৃতীয় বা দাপর বা বৈশ্বযুগ। এই যুগের অধিদৈবত আয়াবঞ্চক, আয়াবিক্রয়ী বৈশ্ব এবং প্রতীক ভাওতামণ্ডিত টাকা।

এইবারে শুদ্র মাধা নাড়া দিল। সে ক্ষীণভাবে বে
মত ব্যক্ত করিয়াছিল প্রার্থনার আকারে, ক্রমে সভ্যবদ্ধ
হইয়াসে সেই মত ব্যক্ত করিল দাবির আকারে। বৈশ্র তাহার একান্তবশংবদ সহকারী ক্ষত্রিয় ও ব্রাহ্মণ সাহচর্বে, এই দাবি অস্বীকার করিল। ফলে আত্যন্তিক সংঘর্ষে ক্ষত্রিয়-ব্রাহ্মণ-সহায় বৈশ্রশক্তিকে পরাভূত করিয়া শূদ্রশক্তির স্থাপন। বৈশ্রমুগের নাভিশাস উপস্থিত।

এই স্থানে মনে পড়ে এ বিষয়ে ক্বভিছ ইংরেজের।
প্রতীচ্যের সমস্ত দেশের মধ্যে প্রথমে ইংলণ্ডেই শুদ্র রাজসভাসদের আবির্ভাব। মনে আছে ১৯০৪-১৯০৫ ঞ্জীষ্টান্দে
ইংলণ্ডের পার্লামেন্টে একটি মাত্র Labour Member
ছিলেন, তাঁহার নাম Joseph Arch, আর এখন ? এখন
সারা পৃথিবীতে সর্বত্রই সোভিয়েট হাত বাড়াইভেছে।
কি হইবে অমুমানসাপেক। শুদ্রমুগ প্রবেশ করিতেছে।

তাই বলিতেছিলাম, ঘাপর বাই বাই করিতেছে, কলি সবেমাত্র প্রবেশ আরম্ভ করিতেছে।







দিশিভভূবিশাৱদ কেম্স প্ৰিদ্সেশ < শৰ্ম-মূৰ্ষ্টি ছট্ডে শ্ৰীশায়মল গোগামী কৰুঁক সৃহীত ফোটো। ফুলীয় রয়াল এশিয়াটিক সোসাইটিয় মৌজন্তে )



ক্যান্তন শহরের উপকর্তে নদীতে শাম্পানের উপর ভাসমান পদ্রী



বৰ্ডমান কাাউনের রাভার প্রাচীন আমলে ভৈত্তি পাই লাউস বা কারকার্ব্যবচিভ ভোরণ

## প্ৰবাহ

### শ্ৰীবিভূতিভূষণ গুপ্ত

মধুৰা চলিয়া গেল বটে, কিছ সারাটা পথ ভবু বুদরের আহ্বান ভার কানের কাছে ধ্বনিরা উঠিতে লাগিল। "আমার কৰা আহে—নতু হাঁড়াও" কিন্ত হাঁড়াইরা থাকিরা লাভ কি। अकरे क्यांत नुमतावृष्टि देव छ नतः। देवी बादक ना। दन অনবরত শুবু শুতি করিবে আর মুখর বারংবার বৃক্তি দেখাইবে -- रेरा ठर्करण वृत्रावाय स्टेलिश मध्या चार्छ स्त्र। मा स्त त्र जुनरे कविबाद, किन्न जाव चन्नुरवादिव कान बृनारे कि नारे ? मक्ष्या जादन, मुबब एक्ज रेक्ज कृतिबारे जारादक नामा দিতেছে। মহিলে এই সাধারণ ব্যাপার লইয়া এত কথার एक रहे छ मा। किस मिक वृक्षारेया नित्त त्व, मकूषा अमन আহি করে না। অবচ সকে সকে অঞাহ করিবার যত কলনাই ৰঞ্বা কক্ষক না কেন গভীৱ বাত্তে একলা ৰৱে এই কৰা ৰুডৰ করিয়া ভাবিতে বসিয়া ভাহার ছ-চোৰ খালা ক্রিরা কল আসিরা পড়িল। যুদ্ধর ভাষার সাদর আহ্বান প্রত্যাধ্যান করিয়াছে। তার অভরের নির্দেশ প্রত্যেক বারেই মুখ্যের বৃক্তিভর্কের জালে জ্ঞাইরা পঞ্জিরা জচল হইরা গিরাছে। কৃত্ব মনের আবেদন এত হিসাব করিরা চলে না। অবিকারের দাবি আসিয়া মাথা ভূলিয়া দাঁড়ায়, গণিত-শাত্রের চুলচেরা হিসাব সেধানে নিছক অর্থনীন।

ৰঞ্ষা ৰুতন করিয়া ভাবিতে বসে। মুখ্য কি কেবল যুক্তি-ভৰ্কই দেখাইয়াছে ? না যুক্তি তার আবেদনের ল্লপ লইয়াই चांचर्यकानं कविवादि । त्र निद्धां कि क्र वार्यश्व नव. নহিলে মুন্তবের দিকটা একবারও ভাবিষা দেবিভেছে না কেন। হর ত এই সময় এক সপ্তাহের ক্ষতি মুশ্রের কাছে নিভাভ অবহেলার নর অবচ ভাহাথের সহিত না বাওয়ার কোন ক্তির্থিই হইবে না। তা ছাড়া এই সাধারণ ব্যাপারটা লইয়া মঞ্বা বেন কভকটা বাভাবাভি ক্রিভেছে। মুবর হর ভ **बरे क्यांडीरे बूबारेबा किवारेबा विमा**ण চাट्ट। कि**स मक्**या তার একও রেমির জন্য এই সহজ সভাচী উপলব্ধি করিতে চাহে মা। কৰাটা বন্ধ নিভান্ধ মিৰ্যা বলে নাই। অৱধা দশ ৰদকে বাবে কৰা ভষ্টৰ ভবোগ দিৱা লাভ কি। ভাৰ নিৰেৱ মা কি ভাবিরাহেন কে ভানে ? হর ত বেরের এই প্রকার্ডভার লকা ঢাকিতে গিরাই ভাষাকে বিঃশব্দে মানিরা লইরা একটা সহত্ব পরিছিতির উত্তব করিতে প্রয়াস পাইয়াতেন। অকলাং মধুবা বেদ নিজের কাছেই অভ্যন্ত লক্ষিত হইরা পঢ়িল। ভবে সাত্ত্বা এই বে, ভার হেলেমাছবির সাক্ষী আছে ভবু মুখর এবং তার বা--্যারের তাতে তার লভা ভাগনিই ঢাকা

পঢ়িয়া বাইৰে। ভৰ্ও এই একলা বরে মঞ্বা নিজেকেই বারংবার বিকার বিল। কালই সে মুবরের নিকট ক্ষা চাহিয়া আসিবে।···বিবা···সরোচ···

এ এক মকা বটে । মধুবা জানে এবানে তার বিবা অথবা সকোচের কোন প্রয়োজন নাই । তবুও বাবা আসিরা প্রতি পদে পতিরোধ করিয়া ইাড়ার । এই অনাবর্ডক বিবা এবং সকোচ যে ব্যক্তিগত জীবনে কত বড় পরিবর্ডনের স্ট্রই করে একথা সকলেই অঞ্ভব করে, কিছু অভ্যানের জের কাটাইয়া উঠা সহক নর । তাই পরিবর্ডন, তাই ভূল বোঝা, অভায় সন্দেহ করা—অবিচার করা । মধুবা বসিরা বসিরা এমনি কত কথাই ভাবিতেছিল ।

বরের মধ্যে অমার্চ অভকার--ভবু চুবকামের সাদা পোচ-श्रीन क्रांटि शर्छ। यश्रूषा क्रांनाना पिता वास्टितत शाटन চাरिया वरिम । काषा असमामत्वव मान्। सन् वाकिया থাকিয়া অস্টু একট গানের সুর ভার কানে ভাসিরা আসিতে-विन । कि कानि कांत्र कर्श्वय - इत छ तांतू (वांडेरमत । अमनि রাভ-বিরেভে ভারন্বরে গান করিবার ভার অভ্যাস আছে। মিছুদাবলে, রাবু বোটম রোজই গভীর রাভ পর্যন্ত গান পার। ক্বাটা হর ত সভ্যা। কিছ মঞ্যার আৰু কি হইরাহে, এমন সামান্ত কারণে এতটা বিচলিত কোনদিন সে হর নাই। মন্ত্ৰকে সন্দেহ করিবার কোন সদত কারণ নাই। কিছ क्रि हिन स्रेटिंग्डे क्यम अक्षे अवस्थिकत क्रिका छोत्र मनक् আছের করিয়া আছে। ইহাকে না পারা বার বাছিয়া কেলিতে, না পারা ঘার মনের মধ্যে পোষণ করিভে--- অপচ नामा होर्च होरिया विधित अब कान यथार्य कांबन बुँकिया পাওয়া যার না। তবুও মনের চাঞ্চ্য দূর হয় না। অসভর্ক बृहुर्छ क्षकांन रहेश शए । बङ्गा निक्छ रह । श्रीष्ट र्यावालय (मरबंडे) छ (मिर्गल मूर्यब छैनबंडे विनेश विजन, विस्तव चार्तन পরিচয় না বাক্লেও, আমরাও ভালবাসতে জানি, তা বলে এমন পাগল হতেও দেখি নি। ভোনাদের বছলোকদের সবই णारे चानाया ।

নপ্ৰা উঠিয়া আসিয়া আনালার সপুৰে হাড়াইল। দেউভিতে তৰন চোৰে বন্দুক হাতে হাঁড়াইয়া পাহার। দিতেহে।

য়াত অনেক হইয়াহে। বঞ্চার চোবে আত বুন নাই। এই সব আবেবাকে চিন্তা করিতে তার তাল লাগে না। তাল স্কালে উঠিয়াই সব কবা সে ব্যয়কে বোলাবুলি বলিয়া আসিবে। কিন্তু কি বলিবে সে, বলিবার আহেই বা কি ৷ ২তটুকু বলিবার তাহা ত সে পুর্বেই প্রকাশ করিরাছে। স্তদ করিরা
একই কথার পুনরার্ত্তি করিরা লাভ নাই। তা হাজা তালও
লাগে না বঞ্যার। তার বাথার মধ্যে রাশি রাশি এলোমেলো
চিন্তার আনাগোনা চলিরাছে, যাহা নিরন্ত্রণ করিবার ক্ষয়তাটুক্
পর্যান্ত তার লোপ পাইরাছে। শেষ পর্যান্ত দেখা পেল মঞ্বা
নিঃশক্ষে আপন শব্যার অ্বাইতেছে। কিন্তু বনের উপর ক্লাভির
বোধা এবং অবসাদ লইরা পরদিন ব্যাসম্যে তাহার অ্ম
ভাঞ্জিল।

ৰা বলেন, ভোৱ খনীর ধারাণ নাকি মঞ্ ?

বাৰা ব্যস্ত হইয়া বলেন, এ সব ভ ভাল কৰা নয় যা। অসুৰ হলে ভাৱ ব্যবস্থা করা দরকার।

মঞ্বা পিতার কাছ বেঁথিয়া দাঁড়াইয়া হাসির্বে প্রতিবাদ আমাইল। কহিল, কিছু হলে তবে ত আনাব বাবা। রাজে তাল ঘুম হয় নি তাই।—কিছু আয়নায় সহসা নিজের প্রতিবিধের প্রতি দৃষ্টি পড়িতে সে নিজেও কম বিশ্বিত হইল না এবং বিশ্বরের প্রথম বাকা কাটাইয়া উঠিয়াই নীরবে প্রহান করিল।

ঘন্টাথানেক পরে পুষরার মায়ের যরে প্রবেশ করিতে সিরা মুম্মরের সলার সাভা পাইরা অনিচ্ছাসম্বেশ্ব মঞ্যা বাহিরে অপেকা করিতে লাগিল।

হনর বলিতেছিল, নার কাছে আগনার প্রভাব শুনলান, কিছু আমার মনে দিবা এসেছে। আমার পরীকার আর মোটেই পেরি শেই। এ সমর একট মুরুর্তও আনার কাছে কম মর। তা ছাড়া সাকল্য এবং অসাকল্য বলেও ছটো কথা আছে। যদি অভ কোন কারণেও আমি অফুতকার্ব্য হই, তা হলে আমার অনিছা সত্তেও হর ত আগনাদের উপর দোবারোপ করবার ইছ্ছে আমার হতে পারে। আনাকে একথা ভাববার অবকাশ আগনি দেবেন না। আমি না এলেও ত আগনাদের বাওয়া আটকাত না।

মঞ্বার বা কবিলেন, ভূমি অত কিছ করছ কেন নিছ! ভোষার পঢ়ান্তনোর কতি বোক এ কেউই চার না। চাওরা উচিতও নর বাবা।

র্থয় হাসিরা কহিল, আমি থানি আপনি সহকেই আমার কথা ব্রবেন। র্থর আর বেশীকণ অপেকা না করির। বীরে বীরে প্রহান করিল। দরকার পাশে মঞ্যার সহিত ভাহার দেখা হইলেও সে একটা কথাও কহিল না। ইচ্ছা করিয়াই পাশ কটিইরা চলিরা পেল।

মধুৰা বিশিত এবং ক্ৰ হইলেও ব্ৰ ক্টা তাহাকে তাকিল না। কতকটা অভযনক তাবে বাবের শব্যাপার্বে আসিরা দাঁভাইল। মেবের ব্বের পানে তাভাইরা না কি ব্বিলেন তিনিই ভানেন, কিছ প্রকাতে কতকটা বেন কৈছিবত দিবার তলীতে কহিলেন, পভাতবোর কতির কথা

বৰ্ণন বলহে ভৰ্ণন আৱ কোৱ করে ওকে সলে নেওয়া বার কেষল করে।

মঞ্যার মনের বত উমা এবং বিয়ক্তি গিরা পভিল মারের উপর। সে উক কঠে কহিল, কৈ ভোমাকে ভোর করতে বলহে তনি বে আমাকে কথা শোমাক্ত।

মা হাসিমুখে কহিলেন, বলবে আবার কে মঞ্। সব কথা কি বলতে হয় মা। কিছু অত রাগ করহিস কেন ?

মারের এই শাভ অভ্যোগে এবং নিজের অকারণ উফতার মৃথ্যা অত্যন্ত লক্ষিত হইল। স্বৃত্ন কহিল, রাগ ত করি নি মা। রাগ করতে বাব কিলের জভে। বার ধূদী বাবে, বার ধূদী বাবে না, তাতে আমার রাগ করবার কি

মা পুনরার হাসিলেন। কিন্তু মঞ্চা খেন আর ভাঁহার ৰুখের পানে চোৰ ভূলিয়া চাহিতে পারিতেছিল না। সে বীরে ৰীরে সরিয়া পঞ্জি এবং মিজের বরে আসিয়া চুপচাপ বসিয়া রহিল। তার রাগও বেমন হইল, অভিযানও তার চেয়ে কম रहेम मा; यून पृतिश अकरांत हारिम ना, प्राकिश अकरी। কৰাও কৰিল না। মিনুদা দিন দিন সভ্য সভ্যই বললাইয়া ষাইতেছে। মঞ্মা আৰু ভাহাকে বিজ্ঞাসা করিবে, ভার এইরণ আচরণের ভাংপর্য কি ? সে আজ নিশ্চয় ঝগড়া করিবে। মঞ্যা মূলয়দের বাড়ী ঘাইবার ভঙ অকুসাং অভিযাতায় ব্যস্ত হইয়া উটিল, কিছ বৃহ তেওয়ারী **অভন্ন কাৰে চলিয়া যাওয়ায় এবং হৌজের প্রবর্তা বৃদ্ধি** পাওরার শেষ পর্যান্ত সে নিরভ হইল। কিন্তু বৈকালে রোক্র পড়িতেই সে তেওৱারীকে লইরা মুব্রদের বাড়ীতে আসিয়া উপস্থিত হইল। স্বন্ধর উচ্ছুসিত হইয়া উঠিলেও মঞ্ছা গভীর হট্যা বহিল, অৰচ আৰু সকালেও সে বগড়া-বাঁট ক্রিয়া ম্বায়ের সহিত একটা মীমাংসা ক্রিয়া লইতে মনছ कविश्वादिन ।

নশ্বা একটু নিলিও কঠেই কহিল, থাক অভটা সহ হবে না। তবন ত কই চিনতেও পার নি। মা কি ভেবেছেন বল ত ?

যুদ্ধ বিশিত কঠে কহিল, তিনি আবার কি ভাবতে বাবেন নতু? তুনি দেবছি শেব পর্যান্ত আমার পাগল করে ভূলবে। একটু বানিরা হুদ্ধর পুনন্দ কহিল, তুনি তেবো না নতু, তিনি কিছু ভাববেন না। সোধা কথাকে তিনি সহজ্ব এবং সরল ভাবেই নিয়েছেন। যুক্তিতর্কের বার দিয়েও বান নি।

মধ্যা কৃষিল, মৃতিতর্কের বার আমিও বারি না। আনা-বের মেরেজাতের কারে মৃতিতর্কের চেরে মনের ইনিতের মৃল্য চের বেশী। ববি কোনদিন ঠকতেও হর একেবারে বেউলে হতে হবে না, অভতঃ ভাবতে পারবে—কিছু ত পেরেছে। বঞ্বা ব্রবের অভাতে একট নিংখাস চাপিরা গেল এবং নিংখবে নতর্বে বসিরা রহিল। সকালবেলা বঞ্বাদের বাড়ী হইতে কিরিরা আসা অবধি ব্রবর বারবার করিরা ভাবিতেহিল বে, একবার সেলে হইত। ভর্কের বাতিরে যত কথাই সে বলুক না কেন বঞ্বার অভ্রোব ভার কাছে বোটেই উপেক্ষর নর। এই অভিবঙ্গ সভাটা কি বঞ্ উপলব্ধি করে না ? ব্যবর নিক্ষেকে নিক্ষে বছ বার এই প্রার করিয়াছে।

য়ন্ত্ৰ সহসা মঞ্যার একথানি হাত ধরিয়া য়ুহ কঠে কহিল, ভোমার মনে কি অবিধাস দেখা দিয়েছে ? আমার বলো ত মঞ্চু।

মঞ্যার হই চোধ সভল হইয়া উটিল, কহিল, না---

যুদ্ধ আবেগপূর্ব কঠে কহিল, অবিশাস করো না মঞ্ । তুমি কি আমার জানো না ? মা মনে করো অতীভকে আমি তুলে গেছি। আমি বুৰতে পারহি, কেন ভোষার এ ভাবান্তর দেখা দিয়েছে। ভোষাকের সকে যেতে না চাওরার আর যাই থাক ভোষাকে অবহেলা করা মর। অবচ ভূমি ভাই ভেবে নিজেও কট পাছ, আমাকেও হংব দিছে।

একটু থামিরা পুনরার কহিল, যে কথা ভোমার মাকে জানিয়েছি ভোমাকেও সেকথা আমি গোপন করি নি। ভূমি যদি সব কথাই উপ্টো করে বোক ভবে কোথার ইাড়াই বল ত। অবচ ভোমার কাছ বেকেই আমি সকলের চেয়ে বেনী উৎসাহ পাবার আন্। করেছিলান।

মঞ্বা এতক্ষে বুৰ তুলিয়৷ চাহিল, কহিল, তুমি আমার মাপ করো মিছল। আমি হয়ত আগাগোড়াই তুল করেছি, কিছ তুমিও আমার তুল বুকেছ। তোমার অবিধাস আমি করি না, কিছ তোমার সম্বদ্ধে আমার কেমন তর হয়। অবচ এ তাবটা কিছুদিন আগেও আমার হিল না মিছল। নইলে আমি কি সত্যিই বুবি না যে, তোমার আমাকের সঙ্গে নিয়ে বাবার এ আএই আমার কোনো হিল বিরেই হাতাবিক নয়। কিছ এ প্রসদ্ধ আরানর। এ নিয়ে আমি অনেক ক্ট পেরেছি। তার চেলে চলো যাই হ'লনে বানিক বেভিরে আসি।

. বৃষয় প্রায় ক্রিল, কোষায় বেতে চাও। বঞ্যা কহিল, নদীর পাড়ে অথবা রাধু বোটনদের পাড়ার। বৃষয় কহিল, পুণ্য সক্ষ করতে নাকি ?

মধুৰা বিজ্ঞাপ দৃষ্টিতে ব্যৱের বুৰ্ণের প্রতি চাহিরা কহিল, সে আবার কি ?

ৰূষৰ হাসিরা কহিল, ভোষার গোপন হানের ব্যৱ আমার কাবে এলেছে মঞ্ছ।

মধুৰা বৰং গভীর কঠে কবিল, ঠাটা করহ বটে, কিছ গৰ কথা ভাৰলে ভূমিও বুদী হতে। ও-ভরকের বছবাব্র শাকা বাধা এ ভরকের নিরীহ অশিকিত সরল লোকভলোকে একেবারে উল্লেখ না করে হাছবে না। কেভ, ধারার, লাকল হেকে সৰ বিলের প্রবিক হরেছে। পরসাও নাকি ভালই পার কিছ প্রয়োজনের বিনে কারুর বর বেকে পাঁচট টাকা একসকে বেরোর না।

বাৰা বিৱা বন্ধৰ হাসিমূৰে কহিল, তাই বুৰি ভূমি রাধ্ ৰোইনের হাত বিৱে তাহের সাহায্য পাঠাও ?

মধুবা কবিল, কথাটা তোষার কানেও গিরে গৌছেছে তা হলে। আৰু বড়তরকের কারধানা প্রতিষ্ঠার বে ব্যাপারটা এই নিরালা পরীর বাহুবগুলোর চোবে পড়েছে, তাকে নিছক একটা হুবঁটনা বলে উভিরে দিলে মন্ত বড় তুল করা হবে নিছক। মহানগরীর হাওয়াই শুরু আৰু বইতে হুরু করেছে। কিছু আরুছেই যদি এর গতিকে ভিন্ন পরে পরি-চালিত করা যায় তবেই প্রামের লোকগুলো হরতো আরও কিছুদিন মাহুবের মত বেঁচে থাকতে পারবে।

ৰুষৰ প্ৰশ্ন ক্ষিল, ভূমি বলতে চাইছ কি মঞ্ছু ?

মঞ্বা কহিল, দেশের দারিক্রের স্থােগ নিয়ে বৃষ্টবের বাবারের এ অভিযানকে আমাদের বামিরে দেওরা আদ্ধর্কান্ত প্রয়েশন হয়ে পছেছে বিছ্লা। নইলে সবাইকে নিঃলেষে লোপ পেতে হবে। সমতার ভিন্তিতে আমাদের মৃত্যকরে গড়ে তুলতে হবে গমান্তকে। তোমার আশেপাশে একবার চেরে বেব ত নিছ্লা। কোবার এসে আদ্ধ আমরা বিভিন্তে কেন নিজেদের এমন অসহার বলে আমাদের বনে হচ্ছে।

ষ্মায় বৃদ্ধ কঠি কহিল, তোনার মনে আৰু এ ভাব দেবা দিয়েছে কেন তা বুৰেছি, কিছ তোনান্ন দান-ব্যৱহাতের তাংপর্ব্য আমি টিক বুবে উঠতে পারি নি মঞ্। তা ছাড়া এই ছুয়ের মধ্যে সম্বছই বা কোণায় ?

মঞ্ কবিল, বনির্চ সম্বাই ব্যর্থে বিশ্বদা। ছটো বিটি
কবা কিংবা কোরালো বক্তৃতার মান্তবের মনে চাঞ্চল্য বেবা
দিলেও তাতে তার পেট জরে না। তাদের স্থ-ছংখ, অভাবঅভিবোগ সম্বাহ একটা নৈতিক দারিছ থেকে বার। আর
দে দারিছ বুগ বুগ বরে পালন করা হর নি বলেই আছা ছোটবড়, উচ্-নীচুর প্রশ্নটা এত কটল এবং মারাম্মক হরে সমাজজীবনকে ভ্রাবহরণে পড়ু করে তুলছে। বে ছুট ব্যাবি আছা
আম্মঞ্জাশ করেছে, আমাদের চঙী হিন্দু রামু ভোলার বেহে
এবং মনে, সময় বাক্তে বাক্তে তাতে অল্লোপচার প্ররোজন
হরে পড়েছে। হ্রতো এবনও সময় আছে।

ৰ্মৰ ক্ৰিন, তুৰি পাগন হয়েছ মঞ্। যে ব্যাৰিতে কেশের স্কাদ হেরে গেছে ভা ভোষার হু-হশ চাঁকা দান-ধররাতে। নিরামর হয়ে উঠবে এ হ্রুড়ি ভোষার কে বিরেহে মঞ্ ?

ৰঞ্বা কবিল, তুৰি বাবে বাবেই তথু দান-বর্ত্তাত কথা নিবে আবার খোঁচা কিছ বিজ্পা, কিছ এ দান-বর্ত্তাত নর। আনি বেমন করেই কোড় বড় তরকের অভল গ্রায় পেকে এদের উভার করব। এরই মধ্যে আনি জনকরেককে হাত করেছি। ওরা নরম মাট মিছ্দা, এ বিরে বেমন দামব ফ্রট করা বার তেমনি দেবতাও গড়ে ভোলা যার। ওলের নিফাদীকা নেই বটে, কিছু প্রবল অন্তত্তি আহে। সেগনে ইাকির ছান নেই। ভাই ভ আজ রক্ত এবং অক্তর বভার আমরা হাবুছুব বাছি। বাবা বলেন, এ হতেই হবে মইলে ভগবানের বিধান উল্টে যাবে যে।

মঞ্যাকে থামাইরা দিরা মুগর কবিল, আমাদের সমাক্ষের সবচেরে বড় প্রশ্ন নিরেই তুমি নাড়া দিরেছ। জানি না এ থেয়াল তোমার মাথার কে ঢোকালে। কিন্তু শেষরকা করতে পারবে ত মঞ্ছ ?

মঞ্ছা কৰিল, কিছু না হোক একটা গভীৱ হাপও বদি আমাদের সমাদের বুকে একৈ দিতে পারি তা হলেও নিজেকে সার্থক মনে করব। বাবা আমার সবচেয়ে বড় সহায় হরেছেন বিহুলা।

একটু থামিরা মুছ হাসিরা মঞ্যা পুনরায় কহিল, আমার মাথার অনেক মতলব আছে মিছুদা, যদি সময় এবং সুযোগ পাই তবে দেখবে। কিন্তু আৰু এ সব আলোচনা থাক; কোথার বেছাতে যাবে বলছিলে না ?·····

উভবে বাহির হইরা পঞ্চিল। তেওরারী নিঃশব্দে তাহাদের অভ্সরণ করিল। গাভূলীদের পুকুরের পাড়ে আসিরা বৃদ্ধর সহসা বামিল, কহিল, আর একদিন তোযাকে চেনবার একটা সুযোগ এই পুকুর পাড়েই আমার হরেছিল। জলপন্ন ভূলবার কবা আমি আজও ভূলি নি। সেদিনও তোমার দেবেছিলাম আজও দেবছি। আর মনে হচ্ছে ভগবাদের বিচিত্র স্ক্রী তোমরা।

মঞ্যা মূলযের কথার বরণে হাসিরা কেলিল। মূলর কহিল, এগোই চলো।

উভরে প্নবার পথ চলিতে ত্বল করিল—কভকটা বেন অভ্যনত তাবে। সত্সা রাধু বোইমের আহ্বান তালের কানে পৌছিল। রাধু বলিল, ভোমার ওথানেই যাচ্ছিলাম দিদিমণি। কিছু টাকার দরকার পড়ে গেছে। ওদিক্কার কাভ অনেক ভাছরে এনেছি। নবদীপ থেকে কিরে এসেই সব টিক করে কেলব।

ৰঞ্বা কবিল, আমহাও ভোমার ওবানেই বাহিলায বোটম-সা। কিছ হঠাং নবছীপ কেন ?

রাধু এ প্ররের ক্ষাব না দিয়া সলক্ষতাবে একটু হাসিল। মঞ্বাও আর বিতীর প্রর করিল না। কিছু মুম্মর থামিতে পারিল না, কহিল, মঞ্জ কথার ক্ষাব দিলে না ত বোঠন-লা।

রাধু হাসিবার চেটা করিয়া বলিল, কথাটা বধন নিক্ষেই সভিয় বলে কানি না ভখন আর তনে করবে কি। একটা উকো ধবর পেরেছি বৈ ভানর।

ৰুম্ম পুনৱার কি বলিতে উভত হওয়ার নপু ভাহাকে

ইদিতে থিবেৰ ক্ষিল। বৃদ্ধ থাবিল, কিছু ৱাৰু কাছ হইল না। কহিল, যাৱ বৰ কতে একবাৰ উভিৱে নিৰে গেছে, বৃদ্ধ বাভাগ দেখলেই সে চমকে ওঠে দাদাঠাকুর। হংব বদি পাই একলাই পাব। হঠাং থামিলা রাধু কেমন একপ্রকার হাসিতে লাগিল, এবং আর দ্বিতীর কথা না কহিলা প্রহানোভত হইতেই মঞ্যা ভাহাকে প্রদিন সকালে দেখা ক্ষিতে লামাইল। বাধু ভভক্ষে অনেক্সুর অপ্রদর হইবা সিরাহে।

मक्ष्या करिन, अब किছ अक्षा पर्टिष्ट मिल्ला।

মূলর কহিল, সে তো দেখতেই পেলাম, কিছ হঠাং নবধীপ কেন? সাদি করতে যন গেছে মাকি?

মঞ্যা হাসিয়া ফেলিল।

ম্বায় কহিল, অবস্ত কঠিবদলও হতে পারে।

মঞ্থা কৰিল, ভা পারে--কিন্ত আর কভটা পথ বাবে মিহুলা ?

मुखन राजिन। करिन, नांच (राक ... होन छेर्ट्रक ...

मक्षा करिन, चूर करिय राष्ट्र (य...

র্থর মুখে একপ্রকার শব্দ করিয়া কৃথিল, মুখ্য আৰু কাকে সংক্ করে পথে বেরিয়েছে ?

মঞ্যা কহিল, সদে করে মূতন বেরিরেছে নাকি ? থালি বাকে কথা।

যুগর ডাকিল, মঞ্---

वश्या गणा जिल--कि।...

মুখর কহিল, আমাদের হেলেবেলার কথা ভোমার মনে পড়ে ?

মঞ্যা কবিল, পড়ে। ঐ বুড়ো বটগাছতলার ভূমি চূপ করে বসে মাছ বরা বেবছিলে আর মঞ্ নামে একটা ছুঠু মেছে এসে তোমার চোধ টপে বরেছিল।

মুখ্য কৰিল, লেদিনের সেই ছুঙু মেরেটা এখন কিছ বেশ লখী আর শাভ হরেহে, কিছ সেদিনের সেই ভাল হেলেট এখন আর ভেমন ভাল নেই। কথা ভনতে চার না। কথার কথার বগঢ়া করে। ভা বলে সেই নেরেটকে কিছ হেলেট রীভিমত ভর করে।

মঞ্বা হাসিভেছিল, ক্হিল, ছাই ক্রে।

মূলর কহিল, আলবং করে। সেকতেই সে বেরেটকে বারের বর থেকে পালাবার পরে দেবেও দেবতে পার বি।

यश्या करिन, अर्थ मात्र बृत्ति कर करा ?

वृत्रव करिन, छट्ट कि ? जानवाजा ... ?

मश्या करिन, जानि मा।

किष्ट्रक्ष पेक्टस हुनहोत्र । इसस क्रिक, सङ् । ...

मक्षा करांव किन, कि ।...

বুৰৰ ক্ষিন, এবাৰে ক্লকাভা বেকে এনে ভণ্ খনচাই ক্ৰেছি— মধুষা কৰিল, আর ভালরুবে একটা কথাও বলনি।…
মধুষা হালিরুবে কবিল, ভোরার কাবে এসব কথা কে ভনতে
চেরেছে নিছ্দান। এরপর সভ্যি সভ্যিই কিছু রাগ করব।

ভেওৰাৰী কানাইল, তাহাৱা বছদুৰে আসিৰা পছিৱাহে। মুনৰ বলিল, ভূমি কিন্তে বেভে পান ভেওৰানী। আমৱা আবো বামিক ধুৱে বেড়াব।

মঞ্যা হাসিল। কৰাটা যে নিভাছ ঠাটা ইহা ভেওৱারীর ব্ৰিভে দেরি হইল না। কিছ সে নীরব রহিল। ভাদের কৰা এবনও হরভো অনেক বাকি আছে।

ব্ৰহ্ম কৃষ্ণি, বসৰে বানিক ঐ বুড়ো বটগাছভুলার ?

উভৱে গাছতলার বসিল। মুদ্দর বাসের উপর ভইরা পভিবার উপক্রম করিল। মঞ্যা বাধা দিরা কহিল, এই ধুলোবালির মধ্যে—

মুখর কহিল, ধুলোবালি আবার কোথার দেবলৈ ? সে সচীন শুইরা পঞ্চিল।

মঞ্বা কহিল, তার পর---

মুখর বলিল, তারপর এমতী মঞ্যার হাতের আঙ্গওলো এম্ভ মুখমের মাধার চুলের মধ্যে আমাগোনা করক।

মঞ্যা হাসিরা কহিল, এ তো পুরোনো কাব্য আবা কিছু ?

ব্যর কহিল, টাদের আলো তো এখনও দেখা দের নি।

মঞ্যা কহিল, পচা কাব্য—ততোধিক জীর্ণ। এ কথনও
বাঁচতে পারে না। আর কিছু ? আক্তি তোমার কি হরেছে
বলতো আৰু ? পাগল হরেছ—তেওয়ারী যে ওখানে বসে
আহে—তাও কি ভূলেছ ?

युषय करिन, जूनर (कन ?

তেওৱানী পুৰৱায় ভার উপছিভি জানাইয়া দিল !

মঞ্যা কহিল, তৃতীর ব্যক্তিকে বিশ্বাস করা চলে না। সব সমর এরা গোলবোগের স্টি করে থাকে। আৰু এবন ওঠা যাকু।

ভেওরারীর কান হয়তো এই দিকেই ছিল। পুনরার সে জানাইল বে, রাভ অনেক হইরাছে। আর দেরি করা উচিভ হইবে না।

উভরে অর্থপূর্ব হাসি হাসির। উট্টল।

ষশ্বা চলিতে চলিতে কহিল, আজকের দিবটা কিছ সভ্যিই আমার ভাল কেটেছে মিছ্-দা।

য়ুবর কহিল, হঠাং একবা কেন মঞ্ ?

मश्या चराव शिन, छ। चामि ना ।

ব্যর তার বাহবুলে একটু চাপ বিরা কহিল, ভূমি পাগল তাই মিথ্যে কই পাও। মঞ্বা প্রতিবাদ করিল না। মিঃশব্দে হাসিতে লাগিল।

38

ব্ৰৰ কলিকাভার চলিরা আসিরাতে। মঞ্চের সংক

त्म वाव नाहे। वक्षां छाहारक घाहेवां वक्ष चाव चक्रताव करव नाहे। अवादम चामिया मर्दाअवस्ति छात्र मस्म भिक्न विनित्क, यस्म भिक्न प्रनिर्मालक। किन्न प्रनिर्मालक। किन्न प्रनिर्मालक। किन्न प्रनिर्मालक। स्वाप्त चामिया राम विचाय अस्म वात्र काम वात्र वात्र विचाय प्रति वा किन्न मन माना मस्मित्क सामा चाहिए मामिन। स्वाप्त याहा वर्ष वात्र वाहा मरहे स्वाप्त चाम। च वर्ष, किन्न वान्त वाहा मामित वा करवा किन्न साम वात्र काम वात्र साम वात्र

মুখর ভাহাকে বাবা দিরা কহিল, কিছ এ যে বড় অভুভ কথা বলহেন আপনি। কাউকে কিছু না বলে চলে পেছে বলেই সে অভায় করতে যাবে কেন।

ক্ষৰি কহিল, কিছু বিলেত খেতে কেউ ত তাকে কোন দিন বাধা দেৱ নি যে, এমন চোরের মত পালিরে যেতে হবে। মুল্মর কহিল, হয়তো আপনাদের তরক থেকে কোন রক্ষ বাধা পাবার আপতা তার ছিল।

ক্লবি অক্সাং মুম্মকে প্ৰশ্ন ক্ষিমা বসিল, দাদার বিলেত যাবার কথা আপনার কাছে সে কোন দিন প্রকাশ করেছে কি ?

মুন্মর কহিল, না।

ক্লবি কৃছিল, আপনার ক্থার জ্বাব আমি পরে দিছি, কিন্তু দরা করে একটু বস্থন আমি এবুনি আসহি।

কিছুক্পণের মধ্যে কিরিষা আসিয়া রুবি পুনরার পুরু করিল, আপনার তরক থেকে বাধা আসবার ত কোন কারণই ছিল না, অথচ আপনাকেও সে একথা আনার নি। একটু থানিয়া পুনরার কহিল, মা সেই থেকে কারাকাটি পুরু করে দিরেছেন।—কবির চোধছটাও বেন সজল হইরা উঠিয়াছে। অভতঃ বৃত্তরের সেইরূপই মনে হটল। কিছু সে কোন কথা কহিল না। রুবি কিছুক্ষণ নিঃশব্দে বসিরা থাকিরা বলিল, কারাকাটির হয়তো সম্বত কারণ নেই, কিছু আমাকে বন্ধু নিরাশ হতে হয়েছে। লিলিধির মৃত মেরেকেও শেষ পর্যান্ধ হার যানতে হয়েছে।

বুদর সহসা এক প্রশ্ন করিরা বসিল, আমি এর অপর দিকটাও তো ভাবতে পারি কবি দেবী।

ক্ষবি কহিল, অসম্ভব মুখ্যবাবু। আমি বে ওলের ভাল করেই স্থানি।

রবর ক্ষিল, হরতো সেইবানেই আপনার ভুল হরেছে। কিছু আপনাদের লিলিফি বলেন কি ?

কৰি কহিল, ওর কণা হেন্ডে দিন। তার মতে আমার ভাইরের ববর আমরাই সবার চেরে বেশী রাখি। অভ্যন্ত শীচাণীতি করার বললে, বিলেতে একটা তার করে হাও, হয়ত কোন ববর পেয়ে যাবে। কি ছালা বল্ন ত। ববরাববর পাবার রাভাই যদি সে বোলা রেবে যাবে তবে ভোমার কাছে যাব কিসের ছভ ? অবচ আমার মন বলে—ক্বাটা সমাপ্ত না করিরাই সে প্রসদান্তরে উপস্থিত হইল। ও বরে চল্ন মুক্ষরবাব, আমাদের চা দিয়েছে।

যুগর উঠিল। চলিতে চলিতে কবি কহিল, আপনি এবান থেকে চলে বাবার দিন করেক পরেই দাদা নিক্রছেশ হয়েছে। একটা চিঠিতে তার গছবা হানের নির্দেশ রেখে পেছে, কিছু কারণ জানায় নি। বাাছে ববর নিয়ে জানা গেল হাজার পনর তুলে নিয়ে গেছে। টাকার জন্তে কিছুই নয়, কিছু তার চলে যাওয়ার বরণটা আগাগোড়াই যেন কেমন বাপছাড়া। এর আদি-জন্ত খুঁকে পাওয়া যায় না।

মুখার পুনরায় কহিল, আমার মনের খটকা কিছ এখনও যার নি। লিলিদেবীর তরক থেকে কোন রকম আশাভদের কারণ ঘটে নি ত ? আপনার দাদার সলে তার একটা পাকা ব্যবস্থা হয়েছে বলেই ত স্বাই কানত! আমি বলি তাঁকেই আর একট্টাপ দিয়ে দেবুন না ?

ক্ষবি কহিল, লিলিদি অতল সমুদ্র। তার মনের তলায় প্রবেশ করা আমার সাধ্য নয়। এতটুকু পরিবর্ত্তন তার কোণাও খটে নি। কোন দিক দিয়ে যে এক তিল ক্ষতি হয়েছে এমন মনেও হয় না। ঠিক তেমনি সহক, তেমনি সরল। অথচ দাদার সম্বন্ধে ওর মনের কথা আমি কানি। সেধানে কোন কাকি নেই।

মুন্তর কৃথিল, তা হলে কি আপনি বলতে চান—

ভাষাকে বাধা দিয়া কবি কহিল, হাঁ। মুখ্যবাৰ্, এ আমার নিশ্চিত বিখাস থে আমার দাদাই বদলালেন না। পরশ পাধরকেও তার কাছে হার মানতে হয়েছে।

উভয়ে পাশাপাশি চারের টেবিলে বসিল। মুম্মরের দিকে চারের বাটটা ঠেলিয়া দিয়া কবি পুনরার বলিয়া উঠিল, আমাদের এবন ভারি বিপদ মুক্মবাব্। টাকা আছে মানি, কিছ বেঁচে থাকতে ছলে ভুবু চাকা থাকলেই চলে না।

মুমার একটু হাসিবার চেষ্টা করিয়া কহিল, আপনি বলতে চাইছেন কি ? জ্ঞমশঃ যে ছুর্বোধ্য হয়ে পক্ছেন আপনি।

ক্লবিকে কিছুক্দণ যেন চিভার্ক্ত মনে হইল। একটু নারী-ত্মলত লক্ষাও যেন তার চোবে-মুবে বেলা করিয়া ক্লিতে লাগিল।

মুখর কৃষ্ণি, আমার মাণ করবেন। আণনি লক্ষা পাবেন কামলে আমি কোন কথাই বলভাম না।

ক্ষবি ৰূপ তুলিছা চাহিল, ৰুছ কঠে কৃষ্ণি, আগনার কৃষ্টিত হথার কোন কারণ দেই ব্যৱবাৰু। আগনার সাহায্য পেতে হবে বলেই আয়ার সব কথা আগমাকে ধোলাধুলি বলা হয়কার। একটা সন্দেহ আয়ার হবে কেগেছে। ভগবান करून अ मत्यह त्यम वित्या हत, वहेता अछ वह प्रजात छिनि क्यमहे क्या क्रत्रिय मा।

হ্মর বিশ্বিত কঠে প্রশ্ন করিল, কিসের অভার---কিসের ক্ষা কবি দেবী ?

ক্ৰবি কহিল, আৰু থাক মুখন বাবু। আমাকে ঘটনাটা আগে বুৰতে দিন।

মুখার শীরে ধীরে উঠিয়া দাভাইল, কহিল, আৰু তা হলে আমি উঠছি।

রুবিও সদে সদে উঠিয়া দাঁড়াইল এবং কহিল, আর একটা অনুরোধ আগনাকে আমি করব। লিলিদি হর তো পরীক্ষা দেবে। এটা ভার পরীক্ষার বছর। আগনি মাকি ভাকে সাহায্য করবেন প্রভিক্রতি দিয়েছেন। সে আগনার কথা জিজেস করছিল। যদি সম্ভব হয়—

কৰাগুলি মুখ্য ভনিল, কিছ কোন উত্তর দিল না। সে
নিঃশব্দে বাহির হইয়া যাইবার উপক্রম করিতেই কবি পুনরায়`
তাহাকে ভাকিল, মুন্মবাধু-

ৰুমৰ কিবিয়া ষ্টাড়াইল।

গ্রুবি কহিল, আপনি কি আর কিছুক্তবের জ্ঞুত বসতে পারেম না গ

মুখ্য মুছ্ ছাসিয়া কৃহিল, সে ক্থা ত আপনি এক্বারও, বলেন নি! সে পুনরায় কিরিয়া সিয়া বসিল।

রুবি কহিল, আপনার উপর হয়তো কতকটা **বুব্র কর।** হচ্ছে কিছ বিশাস করুন এ হাজা আমাদের আর **অভ কো**ন উপায় নেই।

মুগায় কহিল, সে কথা ত আমি কৰনও বলি নি। ভবে এ কথাও টক যে, আপনার দাদার বছুছের দাবি নিয়ে এসব কথার মধ্যে আমার না থাকাই ভাল।

রুবি কহিপ, এই যুক্তি ধেবিরে যদি আপনি দূরে সরে যেতে চান সে আমাদের ছুর্তাগ্য। দাদার বহু বছুবাছবের সক্ষেই আমার আদাপ আছে। আপনারও হয়তো আছে এবং আমি যে নির্কাচনে ভুল করি নি একথা আপনাকেও বীকার করতে হবে।

মুখ্য কহিল, এ আপনার ঔদার্ব্য।

ক্ষবি কহিল, আমি বলি খার্থপরতা। কিছ এসব ক্থা এবন থাক। দলা করে একটু বৌজ্ববর রাববেন এ আমার একাছ অন্তরোব।

রণর ক্ষিল, হরতো কোন প্ররোজনেই আনাকে আসতে হবে না। কিছ তা হলেও স্তিটে যদি আনার হারা কোন সাহায্য হবে মনে করেন তবে একটা ধ্বর কেবেন। আনার ব্যাসাধ্য আনি করব।

ক্ষবি কহিল, এর চেরে বছ প্রতিশ্রুতির আমার প্ররোজন নেই। ভিত্ত আপনি ভি কলেজ হোঠেলেই উঠেছেন ? ব্ৰহ বৃহ হাসিয়া কহিল, এ হাজা আৰু গতি কি ? কলকাতা শহরে আপনাদের যত হারী আভাষা ত আর আমাদের নেই।…একটু ধামিরা প্ৰক্ষ কহিল, আজ ভা হলে চললাব।

বৃদ্ধৰ অঞ্চলৰ ক্ষল। সেই দিকে চাছিয়া চাছিয়া ক্ষৰিয় চোৰে বৃদ্ধে এক বিচিত্ৰ কাসি কুটীয়া উঠিল। সে বীয়ে বীয়ে অক্ষেত্ৰ পৰে আগাট্যা চলিল।

বৃহত্ত ভজ্জনে রাজা বরিয়া চলিভেছে। কবির কথাগুলি ভবনও ভার কানে বাজিভেছিল। কিছু আক্র্যা হইয়া সে ভাবিভেছিল বে, স্থনির্দ্ধলের এই চলিয়া বাওয়ার,মধ্যে উহারা বিপাদের আশহা করিভেছে কিলের জন্ত। ভা ছাড়া স্থনির্দ্ধল বিলাভ বাক আর জাহায়ামেই যাক ভাহাতে মুখ্রের কি আসিয়া বার। ইহা লইয়া ভাহার মাধা বামাইবার কি কারণ থাকিতে পারে। কিছু মনে মনে সে বভই যুক্তিভর্কের অবভারণা করক না কেন উহাদের খবরাখবর মুশ্বরকে লইতে হয়। স্থনির্দ্ধল সহছে ভারও যে কোন কৌতুহল নাই ভা নর।

विनक्रवक शरव श्नवात रत्र राजा जिन।

ক্লবি বলে, আপনাকে যথেষ্ট কৃষ্ট দিছি। পড়াগুনোরও নিশুর ক্ষতি হছে।

মূৰৰ ক্ৰিব ক্ৰাৰ সাম দিল। ক্ৰিল, এক্ৰা সভ্য—
ক্ৰি এক্টু মূৰ্ডাইয়া পজিল। প্ৰমূহুৰ্ডে নিজেকে
সামলাইয়া লইয়া ক্ৰিল, ভা বলে বিকেল বেলা বেড়াতে
বেরোন নিজ্য।

মুদ্ম স্মিভহাস্যে কহিল, তা বেক্লই বটেঁ।

রুবি কৃছিল, সেই সময়টুকুই না হয় আমাদের কচ বার হ'ল---

ৰুমৰ তেখনি হাসিৰুৰেই কহিল, সেত হচ্ছেই। কিছ আৰু মাসবানেক আমি আসব না। বড় কৃতি হচ্ছে আমার। পরীকাঠা শেষ হতে দিন, তার পর যত ধুৰী বিরক্ত করন, আমি কিছু মনে করব না।

क्षि करिन, अध्य द्वि करवन ?

রুমর হাসির্বেই কহিল, করি দে বললে মিথ্যে বলা হবে। ভবে তা আপনাধের উপর নর, নিজের উপর। নইলে সভা সভাই আমার কোন কভি করবার সাবা আপনাধের নেই।

ক্ষবি কহিল, আৰু মাসক্ষেক ধরে যে ভাবে আপদাকে
নিয়ে চানাটানি চলেছে এতে সহক অবস্থায়ও মাপ্ষের মন
তিক্ত হবে ওঠে। আপনার ত তবু যথেই কারণ রয়েছে।
কিছ একটা অহুরোব—ভূল করে যেন অবিচার করবেন না।
একটা মানুষকে হঠাৎ এতথানি বিশাস করে তার উপর
নির্ভন করার অনেকথানি অসঞ্চতি থাকলেও তা সব সময়।
মিথো হয় না। মানুষের সহক অনুভূতি বহু কঠিন সমস্যার
সমাধান করে দ্বেয়।

युवा निर्मिश्व कर्छ करिन, जा स्थाजा (स्था)

কবি কহিল, হয়তো কেন মুখ্যমবাবু। এর মধ্যে ছিবার ছান কোথার? অভবের নির্দেশকে আমি বিখাস করি এবং তা মেনে চলি।

মুন্দর কহিল, কিন্ত আমি চলি না। বরং মন যা চায় ভার উপ্টোপধেই চলে থাকি।

क्रवि नीवव।

ষ্বার প্ৰরায় কহিল, না জেনে ভনে কোন যাত্র্য সহছে একটা সিভাভ করাকে আমি ভাল মনে করি না। আপনারা কি বে করতে চাম ভা আজও আমি ঠিক বুরলাম না। কিছ সে বাই হোক প্রনির্মানের কোন ব্যর পেলে আমার জানাবেন। আজু আমি উঠি।

ফবিকে ভার হিতীয় কথা কহিবার অবকাশ না দিয়া বুগার প্রস্থান করিল। ক্রমশঃ

## वृक्तावरन वांडानी ममन्या

#### **अ**र्गात्रां शीमां वावाकी

বৃদ্ধাবনে পঞ্চাবী শরণাবাঁর ভিড় অসম্ভব বক্ষ বেড়ে গেছে এবং দিন দিন বেড়েই চলেছে। ছারী বাসিন্দাগণের অপ-ব্যান নাবন-ভক্ষ পূজা-আর্চা নিরে পান্তিতে বাস করবার দিন আর দেই; চারদিকেই হাটবাজারের ক্লরব, অপান্তি, সংক্রামক ব্যাধির প্রক্রোপ, মহার্কতা। এক ক্থার সে প্র্থমর বুলাবন আর নেই বার বর্ণনা করভে গিরে মরোন্তম ঠাকুর গেরে-ছিলেন—

এ তব সংসার ত্যজি, প্রম আনন্দে যথি
আর কবে এজভূমে বাব । · · ·
স্থানর মুখাবন কবে হবে দরশন,
সে ঘূলি মাথিব গায় । · · ·
সব হংগ পরিহরি এজপূরে বাস করি—
যাগুল্মী মাগিরা গাইব ।
কিছ কালের সুষ্টল গতি রোধ করে এমন সাধ্য কার ।

পঞ্চাবী শরণার্থীর ভিচ্ন মা হয় আৰু হয়েছে, কিছ আমরা দেশছি গত বছ বংসর ধরে দলে দলে বছ বাঙালী এসেও বৃন্ধাবনের লোকসংখ্যা স্থৃদ্ধি করেছেন—উাদের সকলেরই উক্তেও যে একাভ্যমনে বৃন্ধাবনচন্দ্রের শরণাগতি এবং রাধা-গোবিন্দ প্রেমভক্তির যক্ষ্ম-যাক্ষ্ম তা ত নর।

প্রার ৪৫০ বংসর প্র্রেকার কথা, যাহ্ব গৌড়ীর সম্প্রারভ্ত বীমঘহাপ্রভু বীগৌরালদেবের অন্তর্ম পার্বদ করেকজন গোষামী প্রথমে আসেন প্রক্ত করেন। তথন বাংলামী প্রথমে আসেন প্রক্রমঞ্জের তীর্বরাজি প্রকৃত্তি করেন। তথন থেকেই নিয়মিত ভাবে বৈক্রবভাবাপর বাঙালী ভক্ত গৃহস্থ ও উদাসীন বৈক্রবেরা আসতে থাকেন। কেউ কেউ বা সংসার থেকে অবসর নিরে শেষজীবনটা পূণ্যতীর্বে কাটাবার উদ্বেক্ত আসতেন; অবশ্র নিজেদের ভরণ-শোমণের ব্যবস্থা তারা নিজেরাই করতেন। আর বারা ভক্তম-পিপাস্থ হয়ে আসতেন তারা এখানে পৌছে কোন প্রাচীন ভক্ত বৈক্রের অন্থগত হয়ে কিছুকাল শিক্ষাহণ করার পর বেশ পরিবর্জন করে ভেক্ বা সন্থাসবর্দ্ধ প্রহণ-পূর্বাক ভক্তম করতেন, তারা প্রজ্বাসীদের ঘরে দিনাজে এক বার নাধ্করী (রুক্তির টুকরা) ভিকা করে কোনরকমে জীবন রক্ষা করতেন।

क्षि इ:८वंत विवय हेमानीर त्मवा यात्र, वारमात्मत्म यात्रा কোন বক্ষ পরিভাষ করে না বা করতে চায় না নিজেদের কর্মদোষে বা সামাজিক অব্যবস্থার যাদের জীবিকার সংস্থান হয় না. যারা করকুঁড়ে কর্মকুঠ অবচ কর্মক্ম ও বলিঠ— এমন সৰ ধুৰক-ধুৰতী দলে দলে বৃন্ধাৰন এসে কেউ-বা নামমাত্ৰ ্ভেক নিয়ে, কেউ-বা ভেক না নিয়েই নকল সাধু সেকে; কেউ বা অভটা কণটভা না করে সহক সাধারণ বেশে মুট্টভিকা ্ এক মুষ্ট আটা ) বা মাধুকরী (তৈরি রুটি বা রুটির টুকরো ) ্ডিকা করে দিন যাপন করে। এদের মধ্যে শতকরা ১৫ ·ক্ষেরই উদর ভরণের ক্য সাধুর বেশ গ্রহণ বা বৃষ্ণাবনে আসা— প্রকৃত ভবন-পিপাত্ম শতকর। পাঁচ ছন মেলা কটিন। স্থনেকে ্ভো সমন্ত দিন ভিকাই করে: কেউ কেউ ভিকালৰ আঠা 'বিজ্ঞাপুৰ্বাক অৰ্থ সক্ষা করে দেশে পাঠায়। তা ছাড়া বিভিন্ন 'ছানের রাকা মহারাকা ধনী শেঠ সাউকার বেনিরা এসে বংসরের নানা সমরে কাপড় ভামা চাদর কমল ইভ্যাদি 'যথন তথন দান করেন, তা গ্রহণ করবারও যথেষ্ঠ সুযোগ 'আছে , দাতারা অবর্চ সাধুর বেশ দেবে সাধু জামেই দেন , িবৈক্ষববেশধারীরা অনেক সময় প্রয়োজনেরও অভিরিক্ত ভাগভ চাদর সংগ্রহ করে এবং সেগুলো বিক্রয় করে চাকা-' কড়ি জয়াতে থাকে ও দেশে পাঠার।

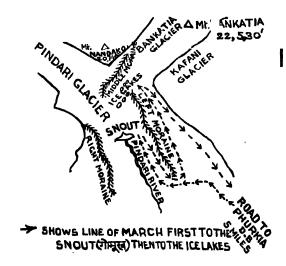
পূর্ব্বে ব্রজবাসীরা মহাপ্রভুৱ সম্ভবারভুক্ত বৈক্ব বাবাদী-দের বুবই ঐতি ও প্রধার চোবে বেবতেন। নিবেরা না বেৱেও বৈক্ববের বেভে বিভেন। কিন্তু বেকী কভ দিন চলে। আৰু ভাৱা সাধুবেশী বৈষ্ণৰ বাঙালীদেৱ আচরণ দেখে ক্ৰমেই প্ৰছা হারাচ্ছেন, সন্দিশ্ব হচ্ছেন, বাঙালীবের ছুণার চল্পে দেবছেন এবং উল্লিখিত কপটতা ও প্ৰবঞ্চনার প্রতিকারার্থ আন্দোলনও সুরু হরেছে। আক্টাল বিহার, উভিছা, আসামে যেরপ বাঙালী-বিভারণ আন্দোলন হচ্ছে, ভাতে মনে হয় বাঙালী ভাবুক, নেভা, দেশসবক কৰ্মীয়া এবং বৈক্ব-সম্প্রদায়ের বিভিন্ন মঙলেখর মোহভেরা সময় পাকতে সাবধান না হলে, ধর্ম ও আচারের বিকৃতি রোধ না করলে, এবং অতুপযুক্ত বালক বা খুবাদের ভেক সন্থ্যাস দেওয়া বন্ধ না করলে বুন্দাবনধাষেও বাঙালীরা দিন দিন নিশিত ও ঘুণিত হয়ে উঠবেন, অসাধু ও সাধু সমভাবেই নিগৃহীত হবে **এবং बक्वांनी ও वांकानीय मर्ट्या कनर-विराध प्रक्रि** পাবে।

এই তো পেল योज वृष्णांवरन वांक्षांनीरनव व्यवश्वा, व्यावाव আর এক শ্রেণীর বৈষ্ণব বাবাজী আছেন, বারা সাধারণত: উচ্চশিক্ষিত বা ভদ্ৰবংশকাত নন। তাঁৱা বুন্ধাৰন থেকে वारमा वा উष्णियात शांत्न शांत्न शिरत पूर्व अकिकन ভব্দনানন্দী সাধুর ভান করেন। বীরে বীরে প্রভিপত্তি জ্যান, শেষ পৰ্যাত শুক্লর ভিরোভাব-উৎসব, নয় ভো মন্দিরপ্রতিষ্ঠা, আশ্রম সংকার, আশ্রম, মঠ বা বিভালয় ছাপন, নয় তো নাম্মজ সম্পাদন-একটা না একটা অহিলায় অৰ্থ ডিকা করতে থাকেন। সব কাক কর। অভিপ্রার নর। অথবা যদিই করেন সে নামমাত্র, অল্পন্ন ধরচ করে যা উদ্ভ হয় তা "বাবাজীর" পুঁকি হিসাবে ক্মতে থাকে। নীভিম্ভ ব্যবসা বনলেও অস্ত্রান্তি হয় না। এঁদের মধ্যে বার একটু লেবাপড়া ভানা আছে, তিনি হয় তো একটা বিজ্ঞাপন ছাপিয়ে বসলেন বা ক্ষেক্ত্ৰন মিলে নিজেদের মনগড়া সভার রেজিটারী দলিল দেখিয়ে সরলপ্রাণ দাভাদের চক্ষে ধুলি দিলেন। উদ্লিখিত इनगढ़बीपूर्व वायशास व्यवीभाक्तमब कड़ी নিন্দনীর। বড়ই ছঃবের বিষয় যে, অঞ্পট ভক্তির প্রে এই সৰ কণটভা এসে গোপনে বাসা বাঁৰছে এবং মহা-প্রভূ-প্রবৃত্তিত নির্ম্বল পবিত্র বর্মকে ক্সুবিত ক্সুতে **छ्डो क्दर । अ विवस्त वाढानी बास्त्रदरे, विस्थ क्र**द বর্ষপরারণ শিক্ষিত ব্যক্তিদের, ভক্ত পৃহত্ব সাধুদের অবহিত হরে বর্ণাযোগ্য প্রতিবিধানের উপার চিন্তা করবার ও সব্দবন্ধভাবে ভা কাৰ্যকরী করার সময় উপস্থিত হরেছে।

# रियानम- काए निवानी भिनमान नमन

**এ**বিনয়ভূষণ দত্ত

পিথারী রেগিয়ার (বরকের নদী) আলমোকা জেলার অভঃপাতী আলমোকা শহর হইতে ৭৫ নাইল উভরে গাঢ়োরাল জেলার এক প্রান্তে অবহিত। এই রেগিয়ার কেবিতে হইলে ৭৫ মাইল পথ অভিক্রম করিতে হয়। গাঢ়োয়াল জেলায়

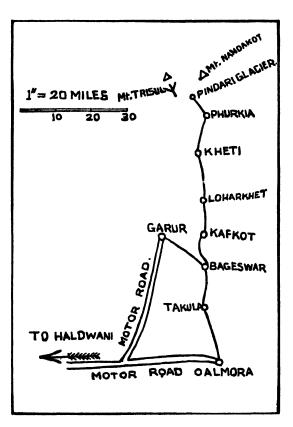


THE PINDARI GLACIER & ITS SURROUNDINGS

ক্ষেচ নং ১ (ক)। পিণ্ডারী মেসিয়ার ও তাহার পার্ববর্ত্তা অঞ্চল গলোঞী, যমুনোঞী প্রভৃতি অনেকগুলি মেসিয়ার আছে কিছ এই সকল শ্লেসিয়ার ছ্রবিগ্যা। ভারতবর্ষে পিণ্ডারী শ্লেসিয়ারে বাভায়াতই বোৰ হয় সর্বাপেকা সহক্ষাব্য।

হিশ্ছান ছাউট এলোসিরসনের এীম্মকালের ছাউটং শিক্ষাক্রেম্ন আলমোড়া জেলাছিত শীতলাক্ষেত হইতে আমরা শিঙারী
শ্লেলিয়ারের উদ্দেশে যাঞা করি। নিয়োক্ত সাডটি ছানে
আমারিগকে এক এক রাত্রির জত বিপ্রাম করিতে হইরাছিল—
(১) আলমোড়া গবর্গনেউ মর্ন্থান ছুল (১ মাইল চুরে
অবছিত), (২) তাঙ্কা ভাকবাংলা (১৬ মাইল চুরে),
(৬) বাগের ভাকবাংলা (১১ মাইল চুরে), (৪) কাক্কোর্ট ভাকবাংলা (১৪ মাইল চুরে), (৫) লোহারক্ষেত
ভাকবাংলা (১০ মাইল চুরে), (৬) বাঙ্গী ভাকবাংলা (১১
মাইল চুরে), (৭) হুডকিরা ভাকবাংলা (১০ মাইল চুরে)।
এই হুডকিরা ভাকবাংলাই উক্ত গ্লেসিরারের পর্বে শেব ভাকযাংলা এবং এই ছান হুইতে পাঁচ মাইল চুরে সিরা গ্লেসিরার
ফর্মন করিতে হয়। আলমোড়া হুইতে গ্লেসিরার পর্ব্যন্ত একট
য়াড়া গিরাহে এবং লেই য়াড়া ৭ংবং মাইল টোনে শেব

ষ্ট্রাছে। শীতলাক্ষেত হাতে জালমোড়া পর্যন্ত ৯ হাইল
আমরা অতিরিক্ত ইটিরাছি। মেনিরার যাইবার অপেকাঞ্জ
তাল রার্ডা ও. ট. রেলওরের শেষ সীমার ভুইট প্রেশন
পূর্বে—ছাল্ঘোরানী প্রেশন ছইতে ৬০০ ডাড়া দিয়া মোটরবাসে গরুড নামক ছানে যাইতে হয়, সে স্থান হইতে ইটিরা
বাগেশর (১০ মহিল দূরে) যাওয়া যায়। বাগেশর হইতে
পূর্বেটিরিভিত পথে গছবা ছলে পৌরিতে হয়। শাতলাক্ষেত
(৬০০০ কৃট উচ্চ) হইতে আলমোড়া (৫২০০ কৃট উচ্চ) পর্যান্ত
১ মাইল রাজা বড়ই ছুর্গম। কোশা মদী পার ছইবার পর
চড়াই এত বাড়া যে, কোন কোন ছান অতিক্রম করিতে
আমাদিগকে অত্যন্ত বেগ পাইতে হইয়াছে। আলমোড়া



(के नः > (व)। निकाती प्रिमित्राखन शर्थ निर्फर्य

হইতে ভাকুল। (৩২০০ কুট উক্ত) পৰ্যন্ত ১৬ মাইল রাভা ক্রমেকভাবে উঠিয়া অবশেবে হই মাইল বাড়া নীচে নামিয়া আসিয়াছে। অভিক্রম কালে অভ্যন্ত প্রান্তি বোব হয় এবং অংগিতের পালন ক্রভন্তর হইতে বাকে। ভাকুলা হইতে বালেরর (৩২০০ কুট উক্ত) পর্যন্ত ১১ মাইল রাভার ছুইট চড়াই এবং ছুইট উংরাই আছে। অনেকটা রাতা, সরষ্ মদীর বারে বারে সমতল ভূমির উপর দিয়া ঘাইতে হয়। ইছা অবোব্যা-প্রবাহিনী সরষ্ নহে। ইহা একট পার্কত্য নদী, শারদা নদীতে পড়িয়াছে। নিম উপত্যকার অবহিত



২ ৰং চিত্ৰ

ছওয়ায় পৰের এই অংশে এীআহিক্য অনুভূত ধ্য । বাগেখর ভাকবাংলার চতুপার্শ্বর প্রাঞ্তিক দৃষ্ট অতি মনোহব। সন্মৰে ছোট-বড় প্ৰস্তৱৰঙসমূহের প্ৰতিবন্ধক অভিক্রম করিয়া সরমু নদী প্রবণমুগ্ধকারী শব্দ করিতে করিতে বহিয়া গিয়াছে। ডাকবাংলার সমূবে ও পশ্চাতে অতি নিকটেই নীল ও নল মামে সমান উচ্চ হুইটি পাছাত অবস্থিত। বাগেশব হুইতে कांक (कांडे (७४०० कृटे छेक ) (होक माहेल -- भर सूत्रम, অনায়াসে অভিক্রেম করা যায়। কান্ধ কোট হটতে লোহারকেড (আজুমানিক cooc ফুট উচ্চ) দশ মাইল। রাভার শেষ ছুই মাইলের মধ্যে খুব উচু চঙাই আছে। লোহাংক্তেত ষ্টতে ১১ মাইল দূরে "বাটি" ( ৭২৫০ ফুট) নামক স্থানে পৌছিতে হইলে বাহ্মী (১৩০০ ফুট) অতিক্রম করিয়া অঞ্জনর হটতে হয়। ধাহুরী পর্যাত্ত সাড়ে হয় মাটল রাভা অভিশয় হুৰ্গম। প্ৰথম পাঁচ মাইল চড়াই এত ৰাড়া যে. পর্বত আরোহণকারীর একেবারে প্রাণাত্ত পরিছেদ হইবার উপক্রম হয়। शाक्ती मृत्य ( ১৩०० कृष्ठे ) আরোহণ করিলে ভিন-চারিট শুলসম্বিভ ভূষারাবৃত হিমালয়ের একটা বিরাট অংশ হঠাৎ গিরি-অভিযানকারীর বিশ্বিত বিমুগ্ধ দৃষ্টির সমক্ষে উদ্বাচিত হয়। থাকুরী ব্যতীত অন্ত কোন স্থান হইতে নাকি वदाक गांका रिमानदात अल्बामि विदाष्ट्रे जरम अक्नाम मुक्के-গোচর হর না। এই ছান হইতে রেসিরার প্রার ২০ মাইল पूरत । बार् की प्रेटिंग पृष्ठे वर्षायत मूक अविकास क्यान स्थान

সন্থ্ৰের পানে হাতছানি দিয়া ভাকিতে থাকে। থাকুরী পৌছিলেই বুফ হব সুগম রাভা; অনেকটা পথ বেশ আরামেই অভিক্রম করা যায়। থাকুরীর পর ছুই মাইল থাভা উংরাই আছে। থাটি হইতে সুভকিরা (১০,৩০০ সুট) দশ মাইল, পথে ছুই মাইল বেশ থাভাই আছে। সুভকিরা হুইতে শ্লেসিরার (১৩,০০০ সুট উচ্চ) পর্যন্ত পাঁচ মাইল আবার ছুর্গম বন্ধুর পার্কভা পথ।

কৃত্বিয় পৌতিবার পূর্বেই পিথারী নদীকে বরক্ষ-ক্ষমা ( ire-zen ) অবহায় দেশিতে পাওয়া যায়। কিছু দূরে দূরে বরকের আবরণ ফাটিলা গিয়াতে এবং সেই ভয় ফাটল গিয়া উৎসারিত নদার কল প্রচ্ছ বেশের সাক্ষনে বহিয়া থাইতেছে। দক্ষিণে এবং বানে অনেকজলৈ বরকের নালা সর্পিল গতিতে উচ্চ পর্বেতের গাত্র বাহিয়া নামিয় আসিয়'ছে, এবং বরক-ক্ষমা গিজারী নদীতে আসিয় হইয়'ছে। কৃত্বিয়া ভাকবাংলা যেবানে স্বব্ধিত সোবান হইতে আয়য় হইয়াছে নয়নমনম্মকারী কুকর দৃষ্ঠ। নীচে বরক-ক্ষমা পিছারী নদী, চৃত্র্কিকে পাছালের উপর বরক সঞ্চিত; এক্স আবহাওয়া আর্ম্ব, বাতাস ব্রুব শীতেল। প্রাকৃতিক সৌকর্ষো ক্ষমগটিকে যেন স্বপ্রবী বলিয়া মনে হয়। কৃত্বিয়া হইতে য়েসিয়ার পর্যান্ত অভতঃ



৩ নং চিত্ৰ

পঁচিশ-ত্রিশট বরক-জমা নালা এবং ছোট নদী পার হইতে হয়। বাধুরী হইতে উচ্চ পাহান্তের গায়ে কতকগুলি প্রশন্ত রক্ত-রেবা দৃষ্ট হইয়াছিল। কুঞ্জিয়া ছাড়াইয়া যবন আমরা বরককমা নালা এবং ছোট নদী পার হইতে লাগিলাম, তবন এগুলি আগলে কি তাহা বুবিতে পারিলাম। এগুলি পর্বাত্তপুত্র হইতে নিঃস্ত জলবারা। এগুলিই নীচে নামিয়া অসংব্য বরকের নদীনালার স্ট্র করিয়াছে। ১০টার পর হইতেই ত্যারায়ত শিবরসমূহ মেদে চাকিতে আরগ্ধ হয়। যাহাতে মেবোলরের পুর্বেই শ্লেসিয়ার দেবা যাইতে পারে সেক্ত ভার এটার সময়ই কুক্রিয়া ভাক্বাংলা হুইতে

রওমা হইয়া পঢ়িলাম। প্লেসিয়ার ছুইটি উচ্চ খাড়া পাড়ের moraine-এর মধ্যে অবস্থিত। বাঁ পিককার moraine-এর শিল্প ভাগ দিয়া পি**া**রী নদীর বরক-জনা গৈকতে নাহিলা আসিতে হয় এবং কিয়ংদূর অঞ্জয় হইয়া Snout-এ পৌছিতে रत। धरे Snout-रकरे वना एव श्रीयूर्व। धरे श्रीय হটতেই মেদিয়ারের বরক প্রথম বিগলিত হইয়া প্রবাহিত হইতে আরম্ভ হয়। ইহাই নদীর আদি উৎপ্রিস্তান। পো-মুখের উপরের দিকে শুবু বরফ ছাড়া আর কিছুট নাই। **इंग्लिस के अर्थ कर्म कि कि अर्थ करिया कि अर्थ कर्म कि अर्थ करिया कि अर्थ करिया कि अर्थ करिया क** বরফের আন্থরণে আরিত। গোমুখ হইতেই এফ <sup>ক</sup>্ষীণ কল-ৰারা বাহির হট্যাছে। এট জলবারা ভারগাতর সংখ সকে বরফ হইতে উৎপল্ল ছোট ছোট নদা এবং খরণার · **কলরাশি** ধারা পু**ট হ**টভেছে। পিভারী নদী নদকোট পর্বত (২০,৭৪০ ফুট) হইতে উদ্ভূত পিঞারী গ্লেসিয়ার হুইতে প্রবাহিত হুইয়াছে। এই নদী গাড়োয়াল কেলায় জলকা-নন্দা নদীতে পড়িয়াছে। মুন্দাকিনী, ভাগীর্থী এবং পিঞারী মদীত জলধারায় পুষ্ট ছইয়া, ৰুত্দুর প্রসারিত গার্হত্য প্রদেশ জতিক্ষ করিয়া অলকানন্দ। ধ্রিখারের নিকটে সমূতল ভূমিতে माधिषां खार खरान इहेटल भन्ना नाम अदिविध इहेशा অংগাবতের ভিতর দিয়া বহিয়া গিয়াছে: হিয়ালয় পর্বতে ष्ट्रश्वीद्वाच चक्रन आञ्च क्षा का हरे देवकारमंत्र निर्देश क्षा क्ष धरः (क्षंष्ठे (क्षांष्ठे निमायक्केश स्थ । क्ष्मिक्श काकदारमाथ वस् কাল যাবং 'লগ-বুক' সবত্বে ব্ৰহ্মিত হইয়া আসিতেছে। তাহাতে দৰ্শকেরা নিজ নিজ প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার বিবরণ লিপি-বছ করিয়া যান। এরপ চারি খণ্ড লগ-বুক আছে এবং ঐতলিতে লিপিবত তথ্যসমূহ বুবই 'চভাকর্ষক। বৈকালের बिटक ब्र**ड** १७४। मध्टब कानिश्शंभ माट्य जन-दूटक एर भवता লিৰিৱা গিয়াছেন ভাষা এবানে উল্লেখ করিতেচি :--- অর্থোর রশ্বি হিমালখের বরকের উপর পড়িয়া প্রতিহত হায়া কৈরিয়া আসে। সেত্ত তাহা হইতে বাপা স্ট্র করিতে সমূর হয় না **ফলে বরক হউতে বাষ্পীভবন (evap**oration) হয় না। কিছ চতুর্ছিকে বরকের জভ হিষালয়ের অভ্যুক্ত অংশ সর্বাদা আন্ত তাম (moisture) পূর্ণ থাকে এবং স্থাের কিবণ এই আন্ত তাকে বালে পরিণত করে। এই বান্স হইতে মেধের প্**ট হয়। প্রতিদিন মধ্যা**ক্তর পর এই মেধ হইতে বৃষ্টপাত ₹**₹** |

হিষালয় পর্কতে, বিশেষতঃ শ্লেসিয়ারের নিকটে বরণার প্রাচ্ব্য দেবিরা আক্র্যায়িত হইতে হয়। এলাহাবাদ বিষ-বিভালরের ভ্লোলের প্রথান অব্যাপক ডাঃ হুবের সহিত তথার সাক্ষাং হয়। ভাহাকে ইহার কারণ কিজাসা ক্রার তিনি বাহা বলেন তাহা নিমে লিবিতেছি। পাহাডের উপর প্রচুর র্ট্টপাত এবং পাহাডের পুরে পুরীভূত বরক হইতেই এই সকল বরণার স্ট্রইরাছে। কতকগুলি পাণরের ভিতর দিয়া জল চ্যাইরা যাইতে পারে এবং কতকগুলি পাণরের (যণা মেট পাণরের) ভিতর দিয়া ভাষা সভবপর



৪ নং চিত্ৰ

হয় না। এই পাধরগুলিকে ভেদা (pervious) এবং অভেদা (impervious) পাধর বলে। ভেদা পাধরের ভিতর দিরা বৃদ্ধি ও বরকের জল চুহাইয়া নীচে যায়, কিছু অভেদা পাধরের নিকট পৌছিলা জল আর অবোগনন করিতে পারে না। কলে অভেল পাধরের উপরিভাগে নৈস্থিক জলাবার স্থাই হইলা থাকে। জল পাহাড়ের ভিতর দিয়া ভরদারিভ ভাবে বহিলা যাইতেছে। হানে হানে এই জল পাহাড়ের গাত্র ভেদ করিলা বাহির হইভেছে এবং বরণার স্থাই করিভেলে। পর্বভ্রমীর ভিতর দিয়া চেউরের মত প্রবহ্ন নাণ এই জলবারার কলই চিরতুষারায়ত শৃদ হইভে জনেক দ্বে অবস্থিত পাহাড় ইইভেও আমরা বরণা নির্গত হইভে দেবি।

হিষালয় পর্বতে ২০০০।৭০০০ হাকার ফুট পর্যান্ত উচ্চে "দেওদার" (pine) গাছ দেবিতে পাওয়া যায়। ইছার উর্দ্ধে কয়েক প্রকার ওক এবং চেস্নাট দৃষ্ট হয়। ১৬,০০০। ১৪,০০০ ফুটের উর্দ্ধে কোন রক্ষাধি দেবা যায়না। গ্লেসিয়ারের নিকটে তব্ তৃণভূমি—অতি উংকৃষ্ট চারণ-ভূমি গ্লেসিয়ারের নিকটে দৃষ্ট হয়। আমি রাধালদিগকে হাকার হাকার ভেড়া এবং হাগ গ্লেসিয়ারের নিকটে চারণ-ভূমিতে চরাইতে দেবিয়াছি। পশ্যের ভ্রুট এই ভেড়া ও ছাগলগুলির বিশেষ আদর। স্ক্টকারল্যাতেও রাধালেরা এীম্মের সময় তাহাদের ভেড়াগুলিকে চরাইতে আল্লস্ পর্বতের ভূণময় চারণ-ভূমিতে লইয়া যায়।

যে সকল বরক-ক্ষা নদী ও নালা আমরা পার হুইরা আসিরাহি, ভূনের শেবাশেবি সেওলি গলিরা বাইবে। প্রতিবংসর শিবরদেশে বে সব বরক পুরীভূত হয় ভাষাও বিগলিত হইবে, কিন্তু ভাষার নিরে বে চিরন্তন ভূষার রহিরাছে ভাষা গলিবে না।

শ্লেমিয়ার দর্শনের অভ ছুইট সময় বিশ্বিষ্ট আছে— যে মাসের প্রথম ভাগে এবং অটোবর মাসের প্রথম ভাগে। অটোবর মাসই প্রশাসভার সময়। লগ-বুকে দেখা বার, পদত্ব অবেক লোকই অটোবর মাসে শ্লেমিরার দেখিতে যান। আমরা শীতলাক্ষেত হুইতে ১৭শে মে রওনা হুইয়াছিলাম এবং ১২ই ভূম কিরিরা আসি।

শিঙারী রেসিয়ার দর্শন বাবদে আমার মান্ত ১০০, টাকা বরচ ক্টয়াছে। আউট-দলের সদে যাওয়াতেই বরচটা অপেকাঞ্ড কম হটয়াছে। গাঁহারা বেলী বরচ করিতে পারেন, ভাঁহারা ঘোড়া ( pony ) ব্যবহার করিতে পারেন। বোড়ার ভাঙা প্রতিদিন ৬, টাকা করিয়া। পাহাড়ের



ৎ নং চিত্ৰ

রাভার বোড়া ব্র হঁসিয়ার এবং ইহার পদক্ষেপ ব্র নিশ্চিত। বোধা বহন করিবার শ্বন্ত একজন কুণীকে রোজ ২।০ টাকা বিতে হয়। এখানকার একজন কুলী হুই জনের মাল বহন করিতে পারে। বরক্ষের উপর চলিবার শ্বন্ত লোহার পেরেক বনানো চাৰড়াৰ জুড়া লওৱা ধৰ্ডাৱ। আৰি ব্যক্তের উপর চলিতে বাটা কোম্পানীর রবার-সোল-দেওরা ক্যাব-ভালের টেনিস হু ব্যবহার করিবাছি।

পাহাছের জলবার্র মধ্যে একটা অপূর্ক বৈশিষ্ট্য আছে। কোন কোন বিন ক্লাভিতে আবহা নিজীবপ্রার হইবা পভিরাহি, ভিত্ত পাহাছের জলবার্র এবনই ৩৭ বে ভিত্তুক্প বিপ্রামের পর দেহে যেন আবার সঞ্জীবনী-শক্তি সঞ্চারিত হইবাছে।

ন্থভা ইউবোশীর মহিলারাও প্লেসিয়ার দর্শন করিতে এই ছর্গন হাবে আসিরা থাকেন। বোহাই প্রদেশের এক নবদশতি বিবাহের এক সপ্তাহ পরে মধ্চপ্রিমা বাপনের ৰভ পিঙারী প্লেসিয়ারের উদ্দেশ্য বাহির হইয়াছিলেন। রাভার ভাহাতের সঙ্গে আমাদের সাক্ষাং হয়। এলাহাবাদের আর একট আরবয়্রমা মহিলাও ভাহার ভাইয়ের সহিত বোভার চিছয়া ক্লেসিয়ার দেবিতে সিয়াছিলেন।

গ্লেসিয়ার হইতে দেড় মাইল দূরে একট গুহা আছে। এই শ্বহাতে পাঁচ হয়-শ্বন লোক বাকিতে পারে। এই श्रशक्ति अकृति विरमय पर्मनीय श्रान । पर्मद्रकता पूर्वापन देवकारल छहार त्रिक्ष दाकिवान कविरल शर्वापन अहत चानच-লাভ করিতে পারিবেন। গুহার চঞ্পার্বের ছানগুলির মনোরম पृष्ठ (प्रविश्व) ख्यानकादीत अकल शति अय **गार्क वित्र। या**न रहेरव । बार्ख चानाहेवाब वन पूर्वाट्यहे किंद्र कार्ड क्नीव মারকত আনাইয়া রাবা উচিত। যে সকল দর্শক অতি প্রভাবে कुष्विया जाकवारमा स्टेटच वथना स्न. शांठ माटेन ठ्यारे অতিক্রম করিতেই তাঁহারা এত ক্লাভ হইরা পরেন বে, গ্লেসিয়ারের আনেপালের ছানগুলি পুথারূপুথরূপে দেবিবার উৎসাহ ভাহাদের থাকে না, বিশেষতঃ দশটার আগে বৃষ্টপাভ कुक ब्हेबात शृद्धिह जबकिह बहेबा किनिय मा दिवाल जाता-षिन बार्यद कथ किहरे प्रथिवाद छेशाद बादक ना। जायुद গুহার রাত্রিবাস করিলে, উক্ত ছানগুলি অভি পুলরবূপে দেখিতে পাওৱা বার। (৫ নং চিত্র)

## ঝঞ্চা

### **জ্রীঅমর্ন্ত্যকুষার সেন**

উঠিছে বাতিরা প্রদার কথা উর্দ্ধি উঠিছে উচ্ছলি,
বন কালো বেব তরেছে আকাশ সাগর নাচিছে করোলি।
বেকে বেকে কেরো বিহাৎ অলে বেব-তবর-পর্কনে,
ওই শোনো বন বন্ধ হানিছে সাগরে কঠিন তর্জনে।
বিকে বিকে বেন কিতের বল উঠিছে সবেনে হছারি,
হুর্ব্য, চন্দ্র নিতে গেছে সব—অপনি উঠিছে করারি।
চারিকিক বোর তর্মনাবর্ণ সর্ব না হর কর্মনও
আকাশ হুইতে ব্যম্বারেতে হুইতেছে বন ব্রিহন।

ভাহার বাবেতে উদা বেগেতে চুটছে নহীন ভরই বে,
টেউরের আবাতে আকালে উঠিছে নিরে কেনিরা বরইরে।
প্রবন বেগেতে উদ্নি-আবাতে ভরই হবে বে নিরর,
কোবা কাভারী, এ বিপদ ভারী, আসে নি আজিকে হুলর
ভর নাই কিছু, ভর নাই ভাই, ভারত-নাভাই কাভারী,
প্রভারনুত্যে নাচুক নাগর, বাকুক হাবাবা বভারি।
ভারতভাগ্য-ভরই চুটবে আবার ভেরিরা করোনি,
উহিবে হুর্ব্য, বাজিবে ভুর্ব্য-নাগর উঠিবে উন্সানি।

## তাঁৰু

### গ্রীরবীক্রকুমার বস্থ

একটা প্ৰবন বড় উঠে ভাৰ্টাকে অভিযানাৰ কাঁপিৰে দিতে লাগল।

ভৰ্বত দয়। শিলায়**টিও স্কু হয়েতে। অগ্ৰ**ত্যাশিত ছৰ্বোগ।

জীৰ ভাবু। মজবুত নর। ছানে ছানে অসংখ্য ছিল্ল। ওদিকে ভাবার মাধার উপর একটা ফাটস দেখা যাছে।

লোকটা কাঁগারি · · বালা-কাঁগারি। বালাইবের কাজ করে। ছট সী ওর। একট নর · · · ছট। এই ছট স্বীকে নিরে সে তাঁবুর মধ্যে ভূপীকৃত বভের গাদার উপরে উপবিষ্ট। তাঁবুর প্রবেশপথের কাঁক দিরে ওরা তিন জনেই পুষ্বের জলাশরের পানে একদৃষ্টে চেয়ে আছে।

কাৰুর মূবে কোনো কথা নেই . তারা যেন মৃকস্তবিত।
সভা নেয়ে এসেছে। এক প্রাম থেকে অভ প্রায়ে
বাচ্ছিল ভারা। আকাশের অবহা দেবে আর অপ্রসর হতে
পারলে না। এবুনি আসবে বস্বার্তী। তাই আককের মুর্ব্যোগরাত কাটারে দিতে ওরা পর্বাতের একটা কল্পরাবৃত থাতে ভারু
বাটালে। না বাটারে উপার কি ।

ওবের সদে একটা গাড়ী। সেটা দেখতে অনেকটা ঠেলাগাড়ীর মত। বেশ বড়। একদিকে একটা গাবা দক্তি দিয়ে বাবা। বেশ মৰৱ, গাবা।

এক সমরে কাঁসারি ভারুর উপরদিকে বছক্ষণ অপলক চক্ষে চেরে রইল। ভারপর পার্বোপবিটা ছট জীকে মৃহ ঠেলা বিলে। মুহূর্তকাল পরে অকুলি নির্দেশে ভারুর উপর দিকে কাঁটলটার ওকের দৃষ্টি আকর্ষণ করলে।

ভাৱা উভৱেই চোৰ ভূলে গেৰিকে চাইলে।

কিছ কেউ কোনো কৰাই বললে না। তথৰ কাঁসাৱি ভৰ্ নিংশকে বলে বলে নিগাৱেট টানে, আৱ বুৰ উঁচু কৱে বোঁষা হাছে।

এবনি কিছুক্দ কেটে গেল।

সহসা কাঁসারির বক্ষরল বেকে একটা দীর্থবাস বাইরে বেরিরে আসে। সকে সকে ও নাটতে নেমে কাঁড়ার। বাঁড়ার নিধে হরে।

বললে: তাঁবুটার যাধার ওপর হুচারটে বভা ছুঁডে ক্লেভে হবে বেবহি ।···হাা, বিক্ষাই ছুঁডে ক্লেভে হবে। বইলে, এই বর্ষণে আমাধের··· क्यांकी क्रमांखरे बदद दनन ।

কাঁসারি সভ্য সভাই নির্মাক্যে **গুটকরেক থালি চটের** বন্ধা তাঁৰুটার উপরিভাগে নিব্দেশ করতে লাগল।

ভাবুর প্রবেশিধে সামার একটু দক্ষিণ পাশ খেঁলে অসহে একটা দয়িত্ত ।

কাঁসারি তার্ব বহির্দেশে গাঁকিরে। গাঁবাটা একটা সধা দভিব সাহায্যে গাড়ীর সদে বাঁব।। হঠাং পদাঘাত প্রক বেচারার পিঠে। এই আক্ষিক আঘাতের বন্ধ আদৌ প্রস্তুত ছিল মা সে।

তা না থাকলেও ধীরে ধীরে ও এসিরে এল আগুনের কাছে। তারি শীত করছে হয়ত। অগ্নিকৃতে অলহে কাঠের আগুন। আগুনের লিখা উঠছে—উর্থানে —আকাশের দিকে।

**ठिफ-बद्या** डीव् ।

ৰড় ভূচ্ছ করে, বৃষ্ট যাথার করে ক্ষিত্রভূচ্ছে সেলাই করল, বাল-কাগারি নিজে তাবুর উপরে উঠে। লোকটা সেলাই করতেও কানে।

**७१ जाना नव---जान करवरे जारन।** 

তাবুর উপর থেকে লাক দিরে নীচে নেবে পছবার উপক্ষম করতেই কাঁসারির নকরে পছল—আব বাইলটাক দূর থেকে একটা লোক বেন এদিক পানেই এসিরে আসহে। কাঁসারি হ'চকু বিভারিত করে দেবে, লোকটা নিজের বাধাটা নীচু করে কিপ্রপদে তাবুর দিকেই আসহে।

কাঁসারির অর্গল কুকিত হবে উঠল। অঞ্চাতসারেই ওর কাঁব হুট বড়ে উঠল সজোরে।

আগতকের দেহের গড়ন অভিশয় মধনুত। বহু দীর্ব শরীর। হ'কুটেরও বেশি লখা। ব্রুটা লখাটে বরণের। শব্দ হট চোরাল। বিবাহমার। বড় বড় চোর। সম্মা ব্রাবহনে এমন একট কাটিনা ও ক্লকভার হাপ লেপে র্যেহে বে, প্রভীতি হয়, লোকট সৈনিক।

रेनिक १ स्टब्ध वा।

বুক টান করে ও এনে ইাছার—ইাছার বরাবর কাঁনারির স্বর্বে। লোকটার ভরতর নেই। নির্ভাক। ওর বেশভুষার নার্কিভ ফুচির পরিচর।

राष्ट्रि-लीटकव नामारे त्वरे बूद्ध । नवद्ध क्लीव-

কাৰ্য্য করা। দক্ষণ-হণ্ডের উপেটা পিঠটা সৰ্ক উদিতে বিচিত্রিত।

বিষয় বছ বছ চোপ ছুট যেলে আগন্তক কাঁসারির মূর্বের পানে চেয়ে থাকে কিছুক্দ।

কিছুক্দ কেউ কোন কথা বলতে পারে না। নির্বাক্তাবে পরতার পরতারকে নিরীক্ষণ করে। প্রথমে আগছকই সেই নিত্তবভা ভাল করে। ও বললে, নয়ভার।

কাঁসারি খাল নাজে। প্রতি-ন্যক্ষার স্থানায়। কথা বলে না একটার। একটা শ্বিত ভাব ওর চোপেয়্রে। আগরকের আপাদমন্তক বারংবার তীক্ষ্মস্ক্রীতে পর্যবেশণ করে। ওর প্রতীতি জবে -স্থাগন্ধক সৈনিক, কিম্ব প্রিসের হোমরা-চোমরা কেউ।

শেষে কাঁসারির মনে সাংসের সকার হয়। ভাগপ্তককে সক্ষা করে বললে—ভ্রমণে বেরিসেছেন ?

হাঁা, অমণেই বেরিয়েছি বটে ৷ খুরে ঘুরে দেবছি— কোথাও অশ্বতঃ আৰকের রাতটার হুছে একটু আঞ্চল পাই কিনা ৷

কাৰ্টার চার্বাহকে ও দৃষ্টি খুরিয়ে দেবতে লাগল। কাসারি কিলাসা করে--কড দুর হাবেন দু

व्यक्ति। सम्बन्ध एक मा चानचरकत । विवक्ति पूर्व परत पलरल, चामि (म !

কণকাল মৌন থেকে হঠাং চীংকার করে ওঠে। ঠিক বেন উবাদের চীংকার—কানি নে, কানি নে। কতদূর যাব, কোণার যাব আমি —কানি নে কিছুই। যাবার আমার কারণা নেই। আমি আশ্রমহীন। ভবদূরে।

সমবেধনায় কাঁসারি বলে উঠল—আছা আহ্ন। ভেতরে আহ্ন আপনি।

ভাবুর ভিতরে এল আগন্ধক। আগে কাঁসারি, পিছনে সে। সতর্ক পদক্ষেপে কাঁসারিকে অনুসরণ করে তার গ্রী-ছটর সন্মূবে এসে ধাড়াল আগন্ধক। মাধার টুপি হাতে নিয়ে সে ওয়ের অভিবাদন করল।

আগভাকের দিকে চোধ পঞ্চতই কিক্ করে ছ'কনেই হাসলে। আগভাক দৃষ্টি কিনিয়ে এক বার সতর্কগৃষ্টিতে ভাকালে কাঁগারির মুখের পানে।

অৱিকৃতের পার্যন্তিত একটা কাঠের বাজের উপর উপবেশন করল আগন্তক। ঠাঙার তার হাত হুট অগাড় হয়ে আগছে। বিনা বাক্যব্যয়ে ও আগুন পোয়াতে লাগল।

আগন্তক শুৰু ইধং খাড় নেড়ে সন্মতি জানার। কোন ক্ষাবলে না। হাডটা এক সধ্যে বাছিতে দেয়। সিগারেট বরার আগন্ধক। খন খন টান দের। ভারি খোর টান। মুখভর্তি বোঁরা ছাড়ে—উর্দ্বণানে। স্পিলাকারে বোঁরা বার আভে আভে তাবুর বাইরে।

কাঁসারির ছট খৃহিনী ছ'রক্ম আফুতি প্রকৃতির। একটির বিপরীত আর একটি। বড়-সিরীর মাধার চুল কুচকুচে কালো, স্বভিড। চোর্ব ছটিও গভীর কালো, কটা মর। মুর্বের চেহারা রুক্ষ। লালিত্যের অভাব। কেমন যেন প্রুষালি ভাব। অতিমানার আল্পচেতন এবং সাব্ধানী। চেহারা মোটাসোটা।

চোট-পিনীকে সুদ্রী বলতে বিবা হয় না আদো।
পোশাক-পরিছদ অভান্ত সাবারণ! চুলের রঙ কালে। নর,
সোনালী। মাধাট ছোট। চোব ছট ভাগাভাগা—শীল
আকাশের মতই থছে। পাতলা ঠোট। শাদা ববৰবে দাতের
সারি। ইত্রের মত, ছোট ছোট দাত। উন্নত গ্রীবা।
দেহ রোগাও নয়, মোটাও নয়। দোহারা চেহারা।
সামগ্রগুপূর্ণ অপুর্বে দেহ্নী।

>

স্থাতিবিসংকারের আধোকন করতে হবে। বড়-গিচী কিটী
ভাষীর আদেশ পেয়ে উঠে গাঁডাল। একটা কালো রঙের
ভল-ভরা পার আগুনের উপর বসিয়ে দিলে। রাহা হরু হ'ল।

আগন্তক কৃণকাস কিটির কর্ম্মণান্ত হাতের দিকে চেরে বেকে হঠাং বলে উঠল—চমংকার!

কাঁগারি ওর ঐ কথায় ফিরে তাকালে। বললে— চমংকার ? কি চমংকার ?

ভাগৰক এ প্রশ্নের ক্ষাব দের না। মৃত্যুত্ হাসে। হাসতে হাসতেই কামার বুকের পকেট থেকে হুইস্কির একটা বোতল বের করে সকলের চোবের উপর ভূলে বরে। বলে: এই আমার একমাত্র সফল। শুধু এটি সলে করেই আমি চলে এচেছি। এ ছাড়া বিতীয় সমল আমার নেই।

মদের বোতল দেবে কাঁদারির চোব **২ট নিমে**ষের মবোই অসম্ভব বিক্ষারিভ হয়ে উঠল। ভয়ে ময়, একটা চাপা বুশিতে ?

ওদিকে হোট-বিন্নী তথ্যও একপাশে উপবিষ্ট। ওরও বোতলটির উপর লোপুণ দৃষ্টি পড়ে।

র্ওংপ্রকাব্যাক্স নেত্রে আগন্তকের মুবপানে বাকে চেরে ও। তথু চেরেই বাকে না, জিবটা গালের ভিতর দিয়ে বারকরেক বুলিয়ে নের।

নেশার লোভ কেগেছে হয় তো।

কিটও কিবে তাকার। চোবে তারও প্রস্কুর দৃষ্টি।
ওদের মনের অভিলাব আগন্তকের নকবে বরা পড়ে বার।
বলে—এলো না, সকলে নিলে একটু একটু ভার নি।•••

আঃ, কি মুশকিল ৷ বিশিষ্টা বে গোলা যাছে না হাই ! ভোমাদের কারুর কাহে একটা কর্ক-ছু আছে ? কর্ব-ছু ?

কাঁসারি কান থাড়া করে শোনে গুর কথা। পরেট থেকে<sup>(</sup>একটা পেলিল-কাটা ছুরি যার করে। ছুরিটার এক যারে একটা কর্ব-ছু।

টক্ করে ছিপি বোলার শব্দ ছ'ল। আগছকের ছাত বেকে বোতলটা কাঁসারি চিলের মতই টো মেরে নিয়ে সজোরে বুকে আঁকড়ে ধরে। ভারি খুশী হয়ে উঠিছে মন। বেশ লাগছে ওর।

কিটর পাশে এসে দাভাল কাঁদারি। কান্দের কাছে মুখ নিয়ে বিয়ে কিন্ কিন্ করে বলগে—খাবে ?

কিকৃ করে হেসে কেললে কিট। কোন কথা কংলে না। তবু হাতের পাশ থেকে একটা পাত্র ভূলে নিয়ে খানীর হাতে দিলে।

۵

আগত্তক বলে—কি মহার বাপোর । মাধ্য যথন কিবের আলার ছট্কট্ করতে থাকে, তথন খেতে পার মা সে। কাছে পার—এক বোতল মদ। খাডের চেম্বে মদ পাওরা ভার পক্ষে সোহা। ক্রডেঃ

এক মুহুর্ত নীরব বেকে প্নশ্চ বলে—আৰু সকাল বেলায় ভাব লিন শহরে এক ভক্তলোকের সলে পথে হঠাং দেখা। সে কানে, আমি একেবারে ফ্রুর। নেই কিছুই। এক বেলা আহারের পর্যন্ত কোন সংস্থান নেই আমার। এ কথা জেনেও সে আমাকে বাবার করে অহুরোব করলে না। টাফাও দিলে না, দিলে—এটে, ঐ হুইস্কির বোডলটা। সারাটা দিন ওটাকে স্বত্মে পকেটে নিয়ে গুরেছি রাভায় রাভায়। কোবাও বুলি নি। চেইাও করি নি।

কাঁসারি সেকধার উত্তরে কিছুবললে না। ছঠাং অন্ত কথা পেড়ে বসল। কিন্তেস করলে, আপনি কি এই মহল্লায় বাকেন ?

আগতক অপ্রসন্ন হয়ে উঠল।

এই মহলার থাকি মানে ? সুঃ । জীবনে এবানে আমি এর পূর্বে আর পদার্থন করি নি। এই প্রথম এবং হয় ভো এই শেষ।

কিছকণের কর্ত যৌন হরে বাকে আগতক।

আবার বলে—গতকাল ভাব্লিনের একটা কারবানার একটা কাল ক্টরেছিলাম। কিন্ত মুর্ভাগ্য আমার । কর্ত্পক্ষ লহর হলেন না। আমাকে দিলেন তাভিরে। বাক—আবার পভবতঃ লৌভাগ্যের মুব দেবব। সেই সৌভাগ্য ভোনার এই আন্তর্হীকেই অবলবন করে হয় তো গড়ে উঠবে। ভগবানকে বছবাছ, আসংখ্য বছবাছ। 30

আগন্ধক এক সময়ে বললে—আমার নাম—কার্বে।
কেউ জিজাসা করে নি ওর নাম, ও বললে বভঃপ্রযুদ্ধ
হয়েই।

- ভাষি বাৰ্ণে, ভো বাৰ্ণে। কাঁসার বালাইয়ের কাজ ভাষার।—বদলে কাঁসারি।
  - —७:, त्का वार्त ? कांनाति—कांनादिव कांक करता ?
  - -- **≹**ri ı
  - --- wir |

কার্ণে মৌন হয়ে থাকে। একটু পরে বলে—শোন। ছ'মাগ আগেও আধি গৈছবিভাবে সার্কেট-মে্বর ছিলাম। এবন ? এবন আমি ভবতুরে। কোন আগ্রয় নেই, কাককর্মনেই। আৰু আমি নিরাশ্রয়, অকেলো, নিঃখ় । পথে পথে তুরে বেড়াই। যদি একে কাক বল, তবে এই আমার সেরা কাক।

একটা দীৰ্ঘখাস ওর বুক্থানা মধিত করে বাইরে বেবিয়ে আসে।

77

রাত্রি তথন ক'টা কে জানে ! বড়-খল-শিলার্ট্ট বেমেছে। জো বার্ণে একটা সিগারেটে অধিসংযোগ করলে।

ওপাশে বড়ের গাদার ওপর কিট একখানা চাদর বিছিরে ভয়ে। বাড়টা ঈষং উপরদিকে ভূলে স্বামীকেই উদ্দেশ করে বললে: আয়াকে একটা দাও ত !

কো বার্ণে নিঃশেষিত সিগারেট-কেসট। শুঞে ছুলে ধরে। ছুর্ভাগ্য। সিগারেট একটিও নেই।

कार्त् (प्रचटि श्राप्त ।

বলে: শেই ? তাতে কি ? আমার কাছে আছে। কৃত চাই ?

পকেট থেকে ও সিগারেট বার করে। একটা ছুঁছে দেয় কিটর দিকে।

25

ছইস্কির বোভলটা কার্ণের হাভেই ধরা।

সবাই নিলে হুৱাপান করেছে ভাগাভাগি করে। ছো বার্ণে, কিট এবং ভার সভীন। কেউ বাদ যার নি। স্থার্ণেও পান করেছে।

কিছ আরও চাই। আকাক্ষা মেটে নি । কার্বে বাকীটুকু গলার ভেতরে চেলে দিলে। বিরক্ত ক্ষে বললে: ছুডোর । গলাই ভিক্ল না। ক্ঠাং বার্বে হিমিরে শের বোতলটা।

মাণাটা থাড়ের বিকে কাত করে হাঁ করে। বোগুলটা ভূলে বমে বুৰ-গকারে। ই হ'চার কোঁটা গুরল-গহার ছিটকে আনে। বিব বিবে চাউতে চাউতে বললেঃ চুব হাই। বোতন একেবারে টাচা-শৌহা।

কোৰের আভিশব্যে শৃত বোতলটা বাইরে নিক্ষেপ করে।

20

ভি ভানি ভেন, জো বার্ণে ভার ভিট ভারুর বাইরে বার। বার্ণের ছোট গিন্নী হঠাং উঠে এল ভার্ণের কাছে। নি:সভোচে বলে প্রচলে ভার পালে।

কাৰ্বে এবই প্ৰতীকাৰ ছিল হয়ত।

বার্ণের বে ভিজেস করে :--

- —খাণনার ভাল লাগে খানাকে ?
- —ভারি ভাল লাগে।
- —ৰেং, মিধ্যে কৰা ! হেসে গছিৱে পছল লাবণ্যমন্ত্ৰী। ভাৰ্ণের সংযমের বাঁৰ বুকি ধ্বলে যায়।

ৰন্ধিৰ কটাকে কাৰ্ণের মুখের পানে চার মেখেট। মুখে তার হাসির রেশা।

ভার্বেও নিঃশবে হাসে।

ৰীরে বীরে একটু একটু করে এগিরে আসে গে। তারা ছ'লনে ঘনীভূত হরে বলে।

18

- --- चाक्य अर्थन विष वार्ष अरम शरफ ? कार्य रमरम ।
- ---वार्त्यक का क्रांक क्रांक १ स्थानी वनाम ।
- ---ভর ? না, ভর আমি করিনে। কাউকেই না। ভগৰানকেও না। কলিভ কঠে কার্ণে বললে।

34

সহসা তাঁবুর প্রবেশ-পথ থেকে একটা কিস্কিস্ শব্দ আসে। ছ'কন যেন কানে কানে কি বলছে।

জ্যা-বৃক্ত বহুকের মত সিবে হবে দাঁঢ়ার কার্বে।

সর্কাশ । দোরগোডার বার্ণে আর কিট ইাড়িয়ে। ক্রম এল ওরা, কে জানে।

का वार्त **अटकवादा जामना-जामनि कैक्टिय** ।

কিছ কিটকে দেখা যায় ওর পিছনে। দেহটা তার অদৃত থেকে যার, তবু ওর মুখবানাই তাদের নকরে পড়ে। খানীর জাঁবের ওপর দিকে বাধাট। বাভিরে দিলে কিট। ও হালে। পশ-হীন রহতবর হালি।

36

—শোন একিকে। বাইরে এগ বেরিরে। কো বার্ণে বললে বঞ্চগন্তীর করে।

ৰক্ৰক্তৰে খলছে বেন ওৱ গোলাকার চোৰ ছট।
বুৰিবা এবুনি, এই যুহুৰ্তে বলকে বলকে আখন টিকরে
আসবে। পুড়িরে ছাই করে দেবে তাকে। বিধাসঘাতক
আগদ্ধ---কাৰ্যে

ভাবুর বাইরে আগতেই লাক ধিরে পড়ে জো বার্ণে কার্ণের বাকের উপর। সিংহ বেধন করে শিকার বরে, তেমনি।

আমন দীর্থ সবল দেহ। তবু কার্বে তার সকে এটি উঠতে পারে না। আর্ত্তনাদ করে উঠে: ছেন্টে দাও···ছেন্টে দাও···মরে গেলুম রে বাবা···গুব হরেছে···আরমা—শারও গোটাকরেক ছ্বি যেরে জো বার্বে কান্ত হ'ল।

উভরেই কোঁস কোঁস করে শিঃখাস ছাড়ে, ইাপার। ইাপাতে ইাপাতে জো বার্ণে সিরে ইাড়াল ওদিকটার।

কিছ তথনও কার্থে ওঠে নি। পারে না উঠতে। কিট ওকে সাহাব্য করতে এগিরে এল—হ'হাত দিরে কোর করে ওকে চুলে গাঁড় করার কিট। রক্ত---রক্ত। বর্ বর্ করে টাটকা রক্ত করে পড়তে কার্ণের কপাল বেরে।

कि इंदिय दार निरमद शर्दानद श्रीमीक पिरद।

কো বার্ণের মনে কেশমাত্রও করণা কাগে না। মুখবানা অভি বিক্রী করে গালাগাল দিভে থাকে।

কার্থে জক্ষেপ করে না। কান দের না সে কথার। টলতে টলতে সে তার্টাকে পিছনে কেলে একটু একটু করে এগিরে থেতে থাকে। ভান হাতথানা মাথার উপর ভূজে অক্টে বলে: ভগবান ভোমাদের মদদ করন।

वर्ष-युष्टै-निर्मादर्ग चावाद चूक र'न ।

• আইরিশ লেবক লিয়ান ওক্রেহার্টর গল অবলঘনে।

## সমবায়

👼 कीरबाष्ठल मार्रेष्ठि, धम-ध

সন্ত্ৰিকৰ্ম ও সমবাৰ

এক বর্ণের পর অভ বর্ণের সন্নিকর্থকে ব্যাকরণকারগণ সংহিতা বলিরাছেন। [পরঃ সন্নিকর্ণঃ সংহিতা, পা ১।৪।১০৯। ] ভার-শারনতে লৌকিক ও অলৌকিক তেবে সন্নিকর্ণ হুই প্রকার। উভয় সন্নিকর্ণে ব্যাকরণের বর্ণসন্নিকর্ণ বাবে কোনও বিভাগ নাই, তবে লোকিক সমিকর্বের হয় বিভাগের মধ্যে 'প্রকণ্ঠ সমবারতঃ' অর্থাং শব্দ-সমবার বীকৃত ভ্রমতে।

সমবার বৈরারিক সংজ্ঞা , ব্যাক্রণে ইহার বিশেব প্রচার বাই, তবে বহাজাবাকার পতঞ্জি উহার পশ্পান্তিকে বলিয়াহেন, 'রভি সমবারাবে'৷ বর্ণনার্পকেনঃ ৷' রভি শব্দে শক্তি ও সক্ষণার অভতর সহয়—হৃতিক্ত শক্তি সক্ষণাভতর সহয়: (তাবা পরিছেছে ৮১ কারিকার সিহান্ত রুক্তাবলী) এবং শক্তি বলিতে পদ ও পদার্থের সহয় (শক্তিক্ত পদেন সহ পদার্থত সহয়: , তাবা পরিছেদ—এ) বুবার। উপদেশ বুবিতে যে প্রাচীন কারিকা প্রচলিত আছে—বাতৃত্তর গণোনাদি বাক্যলিভাল্লাসনম্। আগন প্রভারাদেশা উপদেশাঃ প্রকীতিতাঃ। তাহার মধ্যে আগম ও আদেশ এই উভয় প্রকার উপদেশ সংহিতার দীক্তত হয়। এই ছুই প্রকার উপদেশই হৃতি সম্বান্তের কারণ, অতএব মহাভাষ্যকার মতে পদ, পদার্থ ও লক্ষণার সহয়—সম্বান্ত জ্বাগম বা আদেশের আব্রুক্তা।

ভারমতে নিত্যসম্বছই সমবারম্ব অর্থাং যাহা নিত্য ও সম্বন্ধ বন্ধণ তাহাই সমবার। উহাপ্রাচ্য ও পাকান্তা ভারনতে প্ৰত্যক সিদ্ধ হইলেও পাকাত্য ভাষমতে আবার উপমান (analogy) সিদ্ধ। দীবিভিকার পদার্বভন্ত নিরূপনে সমবায়কে (य मान) श्रांच विषयां विषयां क्रियां विषयां विष পরস্থ নানৈব পদার্বজন্ধ নিরূপণম্ ; ৭৬ পু: ] ভাছা প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্য উভয় ভায়মতের সামগ্রন্থসাধক। প্রভাকর মতে এই সমবায় নিভা ও অনিভা ভেদে বিবিধ। নিভা অযুতসিদ পদাৰ্শ্বয়ের সমবায় অনিভ্য। নিভ্যানিভ্য বা অনিভ্য অযুভসিদ্ধ পদাৰ্থদ্বের সমবার অনিতা। যাহা হইতে কার্ব উৎপন্ন হয় ভাহা হইতেই এই জনিভ্য সম্বান্ধের উংগর হুইয়া থাকে---ইহাই প্রভাকর সম্প্রদায়ের সিদ্ধার্থ। কিছ অনিতা ভাব পদাৰ্থমাত্ৰই সমবায়ী কারণ, অসমবায়ী কারণ ও নিষিত্ত कांत्रण इटेटल छिरभन्न इत् हेश कांत्र दिस्मितिक जिल्लांक अवर প্রভাকবেরও খীকুত। উভয়প্রকার সমবায়কে একত্রে বিবেচনা করিলে বুরা যার যে, সরিকর্বের অভতম বিভাগ শব্দ-সম্বায় সংহিতার কারণ বলিয়া অনিত্য সমবায় এবং আগম ও আদেশের নিষিত কারণ বৃত্তি-সমবায় নিত্য সমবায়ের শ্ৰেণীকক ।

বাংলা সভি বা সংহিতা অনিত্য হুইলেও সংস্কৃত ভাষায় সংহিতা নিতা। বর সভিতে করেকটি বিষয়ে প্রগৃহা নির্দেশ ভারা ব্যতিক্রম বিবি গাকিলেও সংস্কৃতে একাবিক বরের সমাবেশ অসম্ভব। বাংলাভাষার পাঁচটি বরেরও একটি সমাবেশ হুইতে পারে। ব্যক্তনাভির যে সকল নিরম সংস্কৃত ভাষা মানিরা চলে তাহাতে ব্যতিক্রমন্ত্রই নাই, কিছ বাংলাভাষা এ বিরয়েও নিক্সপন্থী। বাংলার স্থ বিভক্তি লা গাকিলেও স্মাট, বিক প্রভৃতি পদ এবং দিগকে, কে প্রভৃতি বিভক্তিযোগে কলাই জনোহছে; পা ৮৷২৷৩৯ এবং কলাই জন্মদি; পা ৮৷৪৷৫৩ হুর অমাত করিয়া বিন্তাটকে, সমাট-দিগকে ব্যত্তিকে, বিরাটকৈ বিন্তাটি প্রভৃতি পদ সিহু হুর।

বাংলা ব্যাকরণে বহুকারণে ১মার একবচনে স্থ বিভক্তিকে বীকার করার আবস্তকতা আহে কিছু এরণ বীকৃতি বারা "বলাং অশোহতে, পা ৮।২।৩১" এবং "বলাং অপ বলি
পা ৮।৪।৫৩" স্কল্লের অনিবার্থতার প্রতিরোধ করা বার না।
স্থাবিভক্তির ধর্ম বাংলা ভাষার আরোগ কর উংপত্র অভিদেশের সহিত উক্ত হই নিমম স্ত্রের বাংলার আরোপে বিরোধ
নাই বরং ইহাদের সমবারেই বাংলা ব্যাকরণের সন্ধি অধ্যার
গঠিত হর। ভারশারেও নিরম এই বে, স্বরূপ সম্বর্ধ বিশেব
এব—তথা প্রতীতি নিমিভমিতি চেল্ল সমবারোক্ষের প্রস্লাং—
পদার্থতার মিরপণ্য, পৃঃ ৭৭। অতএব এই হুই স্ক্রনির্মে—
অত্যিপুগ্র বিজ্ঞান্তর, স্ক্রাভন্তিরকে প্রভৃতি পদ সিদ্ধ হওরা
উচিত।

किंद्ध वाश्मात कुळा नि अ श्रेकांत ने स्त्र न श्रेष्ठ का । ভাষণাত্র মতে---সভবভ পরিছের সংজয়া সলিনাসহ। প্রতাক্রা-দেব সাধ্যভাত্ৰমান কলং বিছঃ--কুমুমাঞ্চল ।৩।১০। অতএব কোন উপনান প্রয়োগে প্রচলিত রূপ খীকার করা যার ? সিহাত কৌমুদীকার ভটোজি দিক্ষিত একট প্রহারা সংসর্গ বা সময় বিশেষের অতুভত্ব নিরাপিত করিয়াছেন, অধ বিভক্তাৰা: অব্যায়ে ১ম ছত্ৰ অৰ্থাৎ পাৰিমি ২।৩।৪৬ ছত্ৰের ব্যাৰ্যা প্ৰসৰে তিনি বলিতেছেন-প্ৰত্যন্নাৰ্থে পরিমাণে প্রক্রত্যবোহডেকে সংসর্গের বিশেষণম অর্থাৎ পরিমাণ প্রভৃতি-স্ফুচক প্রত্যন্ত প্রকৃতির সহিত অভেদ সংসর্গ বা সম্বন্ধ স্কৃষ্টি করিলে প্রভারের বিশেষণ সংজ্ঞা হয়। "বিজ্ঞাটটি" দব্দে "টি" প্রভার धांता "विकार्षे" मास्यत महिल चालप्रमारम् स्ट्री कंतात "है" শব্দ বিশেষণ অর্থাৎ প্রত্যন্ত নছে পদ এবং সেই কারণে ইহাকে নিৰ্দেশক বা article বলা যায় এবং বাংলায় সমাসভিন্ন অভ্য विटमय ও विटमयन भटन चर्नार चराव्यक्षक अवटक अवि व्य না বলিয়া "বিজাটট" পদে স্থি (ট-বৰ্ণ বৰ্গীয় ৩য় বৰ্ণ নছে বলিয়া পাণিনি ছাড়া খন্য সংস্থত ব্যাকরণমতেও সন্ধি নিবেৰ) আবঙ্গ নাই। বিভক্তিমাত্রই প্রভায় এই মহাসংজ্ঞার অভভূতি হওরার "এর (এ সর্বনামের বিভক্তিরুক্তরূপ ), ওলি, গণ, দিগকে" প্রভৃতি বিভক্তিও "ৰখিক, বিরাট, সম্রাট, বিজাট क्षकृष्ठि भएनत महिल B-निर्दार्भ स्कृत न्यात्र सरका भरमा एडि করিয়াছে এবং অভেদসংসর্গকেই উপমানত্মণে সন্ধি নিরম-ভদের বা বৈশিষ্ট্য সিদ্ধির কারণ ধরা যাইতে পারে। কাৰেই "ৰত্বিকাণ, বিভাটের, সন্তাটদিগকে" প্ৰভৃতি ব্যাকরণ-বৈশিষ্ট্য পদ ন্যায়শাল (Inductive System>Induct= সমুপদ্বিত বা সমাধীত -- সমবেত -- উদোধিত অৰ্থাৎ Inductive >ystem = नवराव अकदन ) चन्ननारव निष्।

শতএর সন্নিকর্ব, পৃথকতত্ব, উপমান, প্রত্যক্ষ প্রস্থৃতির সমবারেই বাংলার শক্ষবৈচিঞ্চ বীকার্ব হুইতেছে। পদার্থতত্ব নিরূপণেও তার্কিক শিরোমণি রম্মাণ বলিয়াছেন— বৈশিষ্ট্যমণি পদার্থদ্বর্ম অর্থাৎ এই সকলের সমবারই ন্যার-শারের অন্যতন বিভাগ।

#### नवरादिव एक्न

ভার ও বৈশেষিক মতে—

শ্রব্যং গুণগুণা কর্ব সামাজং সবিশেষকম্
সমবারগুণাহ্ভাবঃ পদার্বাঃ সপ্তত্মীতিতাঃ।

(ভাষাপরিচ্ছেদ—২র কারিকা)

এই সপ্ত পরার্থের মধ্যে অভাব এবং শুপের অভতম বিভাগ অধৃষ্ঠকে প্রভিবোদীয়ণে উপছাপিত করির। সমবারের বরূপ আলোচনা করা বাইতেছে।

পাণিনি বলিভেছেন—চো: হু: (৮।২।৩০) এবং অক্ষরস্থ থক রক্ষ বাজ আক ছলাং ষ: (৮।২।৩৬)। প্রথমটির অর্থ এই বে, বলুসংজক অর্থাং বর্গের পঞ্চম বর্গ এবং ব, র, ল, ব, হু ভিন্ন ব্যঞ্জন বর্ণাদি প্রভাৱের পূর্ববর্তী চ-বর্গ ক-বর্গ হর এবং ছিতীরটির অর্থ এই বে, অহুমণ প্রভাৱের পূর্ববর্তী অক্ষ-প্রভৃতি সাভটি বাজুর চ ও ক-কার এবং ছ ও ল-কারার বাজুর ছ ও ল-কার ব-কারে পরিণভ হয়। পাণিনি প্রহীত নাহেশর স্থোক্সারে স-বর্ণ বলুসংজক বর্ণ এবং সেক্ত স-বিভক্তি পরে বাকিলে প্রথম স্থোক্সারে স্থাক, বিরাজ, বিভাল্ প্রভৃতি ভালের ক-কার ম-বর্ণে পরিণভ হয়। ইহা ছাড়া "হামেহন্তরভমঃ; পা ১।১।৫০" এবং "পটুরমান্ড্যাম্ মূর্ণাঃ" এই শিক্ষা স্থাম্পারে ছিতীর স্থাকলে আদিট য-কার ট-বর্ণে পরিণভ হয়।

হল্ডারভোগীবাং স্তিভণ্ডং হল্; পা ৬।১।৬৮
স্তাহ্সারে হলভ বর্ণের পরবর্তী স্থ বিভজির লোপ হর।
এবন বিবেচা এই বে ব-কারের এই ট-বর্গ প্রাপ্তি পাণিনি
অহুসারে স্থ বিভজির লোপের পূর্বে না পরে। স্থ বিভজির
লোপের পর এই প্রাপ্তি বটলে "বলাং ক্লোইছে; পা ৮।২।৩১"
স্তাত্ত্বাপির শনিবার্থ হইরা পড়ে এবং কলে পাণিনি ১।১।৫০
স্তাহ্সারে "বনিগ্, বছিগ্, সত্রাভ, বিরাভ, বিআভ্," প্রভৃতি
বোর বর্ণাছ পদ সিছ হর। কিছু বাংলার কেবলমাত্ত এবং
সংহতে বিক্তে "বণিক, বছিক, সত্রাট, বিরাট, বিআট,"
প্রভৃতি অবোর বর্ণাছ পদই বীহৃত। অভএব শবস্থানির
অন্তাবর্ণ হানে অবোর বর্ণ প্রাপ্তি স্থ বিভক্তি লোপের পূর্বেই
বটে, ইহা বীকার না করিষা গভাত্তর নাই।

এখন বিবেচ্য এই বে, "নিগকে, গুলি, এর" প্রভৃতি বিভক্তি বা গণ (এর-কে "এ" সর্বনামের বিভক্তিয়ক্ত রূপ বরিলে তাহাও এই প্রেইভুক্ত হয় ) প্রভৃতি পদ বা বিভক্তি হোগে শক্তানির ক্ষিত্রপ অবহা হইবে। প্রথমেই মনে রাধা প্ররোজন এই বে "এর" এই স্বরাদ্য শক্তি হাড়া অভগুলির যোগে উক্ত শক্তালি স্থ বিভক্তির অপেকা না রাবিরাই "বলাং ক্ষণ্ বৃশি; পা ৮।৪।৫৩" নির্বে এবং এর প্রভৃতি স্বরাদ্য শক্ষানে উক্ত রূপেই কলাংকশোহকে;, পা ৮।২।৩১ নির্বে শেব বর্ণের পরিবর্তে বর্গ ভৃতীর বর্ণ প্রান্তি হয়। স্থ বিভক্তির ক্রিরাও লোগের পর ইহাবের স্থিক্তিব্রেও অভ্যুক্ত ক্রিরা স্থানিভিত।

ক্তিত্ব বাংলার এই তৃতীর বর্ণান্ত লগ একেবারে অবীকৃত।
কাতেই বীকার করিতে হয় বে তু বিভক্তির বোগা হয় এবং
বর্গ প্রান্তিকে আপ্রর করিরাই অভ বিভক্তির বোগা হয় এবং
সেই আপ্রর নাশ না করিরাই বিভক্তিগুলির ব্যবিকরণ হয়;
নচেং প্রচলিত রূপ আন্ররা বেখিতে পাই না। বাংলার ত্ববিভক্তি বোগের পর অভ বিভক্তি বোগা বীকার করিলে ভারলার মতে অভ বিভক্তির আপ্রর তু বিভক্তির নাশ অসিত হর,
কারণ নৈরারিক বিশ্বনাথ ভাষা পরিজ্ঞেল ১১৬নং কারিকার
সিভাত্ত রুজাবলীতে বলিরাছেন—পূথক্ প্রভার সাবারণ
কারণম্ প্রকৃত্ব । তেলাপ্ররনাশারগতি। কাতেই তু বিভক্তির
অন্থই অবহা লক্ষিত হইলেও বাংলার লোপাবহা বীকৃত
হিবে না।

কিছ ত্ম বিভক্তির এই অভ্ত লক্ষণের হরণ কি। ভারশাষ্মতে সংসর্গাভাব ও অভাভাভাব বা ভেদ এই ছুই প্রকার
অভাব এবং সংসর্গাভাব আবার প্রাপ্তভাব, হ্বংসাভাব ও
অভ্যভাভাব এই ভিন ভাগে বিভক্ত। কিছ ত্ম বিভক্তির
লক্ষণে ইহাদের কাহারও সহিত মিল নাই, তবে নৈয়ারিক
শিরোমণি ভাঁহার সিভাভ লক্ষণ দীবিতি প্রছে বলিয়াছেন—
ন চ সংসর্গাভাব বিশেবোহত্যভাভাব:, সংসর্গাভাবত্বক সংসর্গারোপ ক্ষম প্রতীতি বিষয়াভাবত্বরূপং, ক্ষতা ঘটক নিয়ম
ঘটতমিতিবাচ্যম্, ১১৫।৬ পৃঠা। কাক্ষেই ত্ম বিভক্তির এই
লক্ষণকে ক্ষতা ঘটক নিয়ম ঘটত অতিরিক্ত সংসর্গাভাব বলা
চলে। আচার্য উদয়নও বলিয়াছেন—সংক্রমান প্রতিযোগিনিরপ্যাহভাব: সংসর্গাভাব:—কিরপাবলী (৩২৯ পৃ)।

সুপরিচিত প্রাচীন ক্লারিকামতে—
শক্তিপ্রহং ব্যাকরণোপমান
কোশাগুবাক্যন্ত্যবহারতক্ষ।
বাক্যস্য শেষাং বিশ্বতের্বদন্তি
সারিব্যতঃ সিদ্ধ পদস্য বুদাঃ ।

এবং এই প্রবাবে ব্যবহার ও শক্তিপ্রাহক। কিছু তাহাতেও প্রশ্ন ভাগে এই বে উদ্লিখিত গদগুলিতে বর্গীর তৃতীর বর্ণাছ পদ ব্যবহার করিলেও কি তাহা দীকুত হইবে। ইহার উত্তর এই বে সু বিভক্তির অভাব লক্ষণে সংস্ক্রমান বা ঘটকাবছা আছে এবং এই সংস্ক্রমান অবহার কলে লক্ষণা না থাকিলেও উরোবক শক্তিয়ারা তাংপর্ব প্রাহক হয়। বহাবহোপার্যার গদাবর ভটাচার্ব তাহার শক্তিয়ার প্রত্বাব প্রহ্মেবলাত্তর। তিরোবকাভরোপছিতেহপি সংসর্গে তাংপর্ব প্রহ্মন্তবাভ্য বৃদ্ধিজ্ঞানতানপ্রতিতহিপ সংসর্গে তাংপর্ব প্রহ্মন্তবাভ্য বৃদ্ধিজ্ঞানতানপ্রতিতহিপ সংসর্গে তাংপর্ব প্রহ্মন্তবাভ্য বৃদ্ধিজ্ঞানতানপ্রতিতহিপ সংসর্গে তাংপর্ব প্রহ্মন্তবাভ্য বৃদ্ধিজ্ঞানতানপ্রতিত্বপ্রতিত্ব

ভারশার বতে ব্যবিকরণ ও স্বানাবিকরণ পৃথক বস্ত।
দীবিভিকার রমুবনির অবচ্ছেদকত নিজ্ঞতি মতে—অভাবত প্রভিবোসিব্যবিকরণো বোব্যঃ। কাজেই অভাব ও প্রতি-বোসির সক্ষা বেধাবে আহে নেধানে ব্যবিকরণ বীকার করিতে হয়। বাংসার এই যে সু বিভক্তির বোগকে আন্তর করিবাই
আন্ত বিভক্তির বোগ হর ভাহাদের ব্যবিকরণ বলিতে হর,
সমানাবিকরণ বলা যার না , কারণ মহামহোপান্যার গলাবর
ভটাচার্ব সামান্ত নিক্ষত্তি প্রকরণে বলিরাহেন—আন্তরাসিছিক্ত
তং সামানাবিকরণ্যেন ভলবজেদেন বা বিশেষ গুণবছ্ম, পৃ:
২৩৬। প্রতিযোগীর সক্ষণ সহত্তে প্রকটা কথা মনে রাধা
দরকার এই যে সংস্গাভাবের প্রভাক্তে প্রতিযোগীর যোগ্যভা
আপেন্দিভ-সংস্গাভাব প্রভাক্তে প্রতিযোগীনো যোগ্যভা
২পেন্দিভা (ভাষাপরিছেদ—৬২ কারিকার সিভাত্ত

কৌওভট ভাঁহার পদার্থদীপিকার বলিতেছেন—"অর্ত-সিবানাং সম্বরঃ সমবারঃ" এবং বিনাশক্ষণ পর্যন্তং ব্যারোঞ্জারা-প্রায়িভাবন্তাবযুত সিবে। কাক্ষেই বাংলায় ১মা ১বচন বিভক্তি-যোগ ছলে যে সম্বর তাহা সমবায়।

#### সমবায়ের সক্ষণ

প্রাচার্থাপন বলিয়াছেন—ভারনরে সমবায়: প্রত্যক্ষিত্র: অর্থাৎ
ভায় মতে সমবায় প্রত্যক্ষমিত ব্যাপার। পৃথক্ পৃথক্ কতকগুলি
দৃষ্টাভ লক্ষ্য করিয়া প্রকৃত ব্যাপারবোধক নিধিলসাধ্য
নির্বাঞ্জিতে (universal proposition) উপছিতিকেই সমবায়ী
সাব্যাভাব (inductive inference) বলে। সাব্যাভাব
ব্যাপকীভূত অভাবের প্রতিযোদী—সাব্যাভাব ব্যাপকীভূতভিতার প্রতিযোদিভ্বমিত্যর্থ: [ভাষা পরিচ্ছেদ—১৪২ কারিকার সিয়াভ মুভাবলী ] এবং তাহা পৃথিবীভাবভেদে অর্থাৎ
সমস্ত পৃথিবীতে (সাব্য) সিত্ত বদভি [ঐ]। কাজেই
সাব্যাভাব বা সমবায়ী অববারণ প্রত্যক্ষ এবং প্রাকৃতিক সমস্ত
(uniformity of nature) সিত্ত একট বিশ্বব্যাপক প্রকৃত
নির্বাঞ্জি মাত্র। ইহার লক্ষণ ব্রিবার ভঙ্গ ব্রিবিধ বিবরে লক্ষ্য
করা কর্তব্য:—

১। সমবারের বারা যে নির্বাভি সিভ হয় তাহা সাধারণ সংকার (notion) হইতে পৃথক। সংকার সাধারণতঃ কোন এক তাবনা (idea) বা গুণ (quality) বিশেষ নাম কিছ সমবারী নির্বাভি (inductive proposition) হইট সামাত সংকারের সকর বুঝার। তাবনা বা গুণের বছর লভ সংকারের কটলতা হইতে পাবে বটে, কিছ এরপ হলে সংকারসমূহে তাবনা বা গুণসমূহের সংস্পাসহজেই বরা পাছে। এরপ ফটল সংকার কিছ সমবার হইতে পৃথক। ফটল সংকারের সংস্পাটুকু জন্নারাসেই নির্ভাতিত হয় কিছ সমবারাভর্গত সংস্পাপরীকা ও প্রবাণ সিছ।

२। नामराज्ञिक निर्मम, छेपमद चरपका चिक्क राजिक।

ক্ষেক্ট বাৰ ব্যাপার লক্য ক্ষাতেই এই সাধ্যাতাব, সাধ্শ ব্যাপার বাজেই প্রাক্ত হয়। এই সাধ্যাতাবের প্রতিবাদিনাক বাই, কেননা ইবা কেবলাবরী অভ্যান বাল এবং বিপক্ষ পূরু। ব্যতিরেকে ব্যাপ্তিজ্ঞান এই সাধ্যাতাবের কারণ বলিয়া সমবারে "কতক" হইতে "সমৃকে" উপস্থিত হওয়াই প্রকাশ করে। সমবার বারা দৃষ্টমান ঘটনা হইতে অভৃষ্টমান ঘটনা পরক্ষার উপস্থিত হয়, এক সকে অতীত, বর্তমান ও তবিস্তং এই লিকানে বিষয়ক সিরান্ত গৃহীত হয়, নিকট ও দ্বের ব্যবধান অপসারিত হয় এবং পরিচিত ও অপরিচিতের পার্কর্টাকে না। সাধ্যাতাবে কালের বিভেদ স্বীকৃত না হওয়ার অতিরিক্ত কালপ্রান্ত হয় না, কেননা অতিরিক্ত কাল ক্ষমা অসমবারী কারণ সংযোগাল্লরে ঘটে। সিরান্ত মুক্তাবলীও বলিতেছেন—পরস্থা পরস্বরোরসম্বারী কারণ সংযোগাল্লরে গাট্ডবিক্ত কাল এব কয়্যত।

ত। আদেই বলা হইরাছে ভারমতে সমবার প্রত্যক্ষসিদ্ধ ব্যাপার, ব্যবহারিক সভ্য নির্ণর বা ব্যবহারিক সামঞ্জ
বিবান, অসুমানের অভিম লক্ষ্য কিছু বান্তব সভ্য নির্ণর বা
বান্তব সামঞ্জ বিবানই সমবারের একমাত্র উদ্দেশ্ত । বান্তব
বিরোধী যে কোনও অসুসম অভিনিক্ত সিভাভ বলিয়া
পরিগণিত হইরা সমবারে পরিভ্যক্ত হয় । দৃইাভবরণ বেশের
পুরুষসক্তে উল্লিখিত রক্ষার মুখ হইতে রাক্ষণের উপেছি
সেকল উন্থমবর্ণ প্রাপ্তিও প্রেইল্ এবং হিন্দু সমাক্ষের ভাতিভেদ
এই অসুমান সিভাভ পরীকা করা যাউক । প্রভ্যক প্রমানে
কোনও প্রাণীর প্রকৃতি ভিন্ন মুখ হইতে উংপত্তি হয় না, অভ্যব
প্রাণীয়ানেরই প্রকৃতিসন্তবভা শীকার করিয়া উক্ত পুরুষসক্তের
অসুমান অধীকার করিতে হয় । কলে রাক্ষণের উত্তম বর্ণদ্ব
বা হিন্দু সমাক্ষের ভাতিভেদ ভাবনার নিবের হয় । সরোক্ষ
বলের "লোহা কোর" প্রন্থের জিকার অবর বল্পও বলিরাহেন—

ভত্ৰ প্ৰথমতো ছাভিভেদ:। তেষাং বাক্যং বভক্ৰ্প্ৰণ্নাম্ভনো আন্ধবৰ্ণ: তদ্বিধিয়তে। প্ৰমাণাগৰত্যাং বৃক্ষ্যা চ।
তাঁহ যদি তাবং ছাত্যা আন্ধব:। আন্ধণাম্থমাসীদিভি
বচনাং। তদা ভন্নিবেৰকালে আন্ধব উচাভে। নোহত্যাং
তংক্ৰং। ইইা প্ৰত্যক প্ৰমাণাং বোনি সন্ধাৰাচ্চেভি। পূৰ্ব্বাভাব
তথ্যাং। প্ৰভাভাবে অনেক পৰ্ব্যালোচিতং বন্ধ ন ভাং।
তেষামণি বংমুৰ আসীদিভি মুবেৰ বচনং পুত্ৰিচনাদিভি।

ৰূপ হইতে নহে, প্ৰকৃতি হইতে জ্বাভাব ৰাজ্বণে দা পাকার জ্বাং প্ৰকৃতি হইতে জ্ব এই জ্বভাভাবের কলে জাতিতের জ্বার। বর্ণ বা জাতি তের সংকার বিশেষ হইলেও বিধিনসাব্য নিধিনসাবী নির্কৃতি নহে, জ্বভাব সমবার সক্ষণ বহিছুতি।

## পলী-গাথায় উপমা ও বর্ণনায় স্থসঙ্গতি

ঞ্জীকামিনীকুমার রায়

যৌবনের শ্বরণান কে না করে? কে না সে গান শুনিতে ভালবাসে? যৌবন-ছতিতে মানুষের চিন্ত, মানুষের সাহিত্য, ভালার চিত্রকলা, ভাত্বর্গ—সব ভরপুর। পরীক্বি নয়ন লাস একট বালিকার যৌবনের পদার্শন উপলক্ষে এই যৌবনের স্বরণট কত অল্প ক্রায় কত মনোজ করিয়া আমাদের সমূবে ব্যিবাছেন:

"বার মা বছরের কথা তেরতে পঢ়িল।
আপনে দেবিয়া আপনে চিন্তিত হটল।
বেশের নাহি আদর যতন কেশের বন্ধনী।
কোধা হইতে আটল পাগল জোরারের পানি।
একেবরী হইরা লীলা খাকরে বিন্ধনে।
সুটরা বনের সুল খাকে যেমন বনে।
সোনার যৌবনকাল কংগ নরান দাসে।
সাবিলে না খাকে যৌবন যতে নাহি আইসে।"

যৌবন কোয়ারের জলের মত পাগল: উহা যে হঠাং কৰন আশিষা মালুষের সর্বাদ প্লাবিভ করিয়া দেয়, মালুষ ভাহা নিৰেই বুৰিভে পাৱে না। সে নিজেৱ পানে চাহিয়া বিশ্বিত হইয়া যায়, ভাবে, ভাহার এই পরিবর্তন কি করিয়া भवन रहेन ? नत्मत कुन रामन नत्न चारक कूटि. नालिका লীলাও তেমনি গর্গের কৃটিরে অয়ত্বে বর্দ্ধিত ভ্টয়াছিল: সে (तम ह्या करवं बारे, (कम वाद बारे, छव छाहात स्वरह स्वीवन-লাবণ্য আসিত্রা দেখা দিল। যৌবনের অভ্যর্থনার ছভ কোন **উट्डांश-चारबाक्टनव क्षरबाक्य एवं मां, जबब एटेटन रज** অযাচিতভাবে আপনিই আসিৱা উপস্থিত হয়, কোন আয়ন্ত্ৰণের बाजामा करत मा. बमीत बाजारमध रचमन जारम, पतिरक्षत পর্ণকুটিরেও ভেষ্টি ভাষার আগমন হয়, কিছ সময় না হটলে শভ সাৰাসাধনাভেও ভাহাকে আনা যায় না। আবার আসিহা সে দীর্বদিন থাকেও না, কখন অভর্কিভে আপনিই চলিয়া বার, কোনরপ ভব-ছতি তাহাকে ধরিয়া ৱাৰিতে পাৱে না, কোনৱপ বাধানিখেৰ সে মানে না।

যৌবনসমাগরে মাজুযের দেহ অপুর্বাস্থ্যর হইরা উঠে।
এই দৈহিক সৌক্ষর্যের বর্ণনার পৃথিবীর সকল দেশের সাহিত্য
পারপুর্ব। বাংলার পরী-কবিরা অবিকাংশ হলেই সংস্কৃতক্র
উচ্চশ্রেপীর অভিকৃতি বা তাঁহাদের নাসিকার্কনের দিকে বা
চাহিয়া প্রকৃতি-রাজ্যের সহজ্যুক্ত পরিচিত বন্ধ বা দুর্ভের
ইনিতে রপের চিন্তি ক্টাইরা ভূলিরাহেন। পরীর অবার্জিত
ভাষার অতি সাধারণ দুর্ভের উর্রেখে একট পরী-মারিকার
যৌবন-এ কত মনোজ ও পাঠ হইরা এখাবে কুটিরা উটিরাহে:

শাউনিরা১ নদী বেমন কূলে কূলে পানি।
আদে নাহি বরে রূপে চম্পক্রবী।
ভাত্রমাসের চারিং বেমন দেখার গালের তলা।
বৃক্তনে গেলে কড়া বৃক্তল আলা।

প্রাবণ মাসে নদী-নালা কানায় কানায় পূর্ণ হইরা উঠে, নদীর বৃক্তে পণ্যভরা ভরনী ভাসিরা চলে—ছই ভীরে বন, বোপ বাড়, মব্যে মব্যে লোকালয়, মঠ-মন্দির—মাস্থ্যের মনে একটা অপূর্য সৌন্দর্যাস্থভূতি জাগাইয়া ভোলে। বৌবনও কিশোরীর জীবনে হঠাং প্লাবনের মত জাসে—যবম আসে তাহার বেহ পরিপুষ্ট ও ক্ষমর হইয়া উঠে, ভাহার চলন-বলন বসন-ভূষণ জাবেইনী সবকিছুতে মিলিয়া সৌন্দর্যের একটা পূর্ণাল মৃত্তির স্ফেই হয়, সে মৃত্তি দেবিয়া দর্শক আরুই হয়, আনন্দ পায়। ভব্ কি তাই ? ক্ষমরী নিজেই নিজেকে দেবিয়া জবাক্ হইয়া যায়। কবি সেই কবাটিই একট নারিকাকে উপলক্ষ্য করিয়া বলিতেকের :

"নদীর কিনারে কছা গো কলসী রাধিরা।
চাহিল নদীর জলে আঁথি কিরাইরা॥
হেরি সে স্থন্দর রূপ চমকে স্থন্দরী।
শীমগতি যরে কিরে লইরা গাগরী।

বৌবনে বালিকাপুলত চাঞ্চল্য থাকে না, কেমন বেন একটা লক্ষার ভাব আসিরা ভাহার হছেন্দ গতি-পথে বাবা থেব, চালচলনে সে অনেকটা বীর ছির ও গভীর হইরা উঠে। পল্লী-কবি প্রশার একটি উপমার বৌবনের এই চাঞ্চ্যাহীন বৃষ্ঠিট আঁকিয়াছেনঃ

> ভরা কলসী বেমন নাহি বলকে পানি। সেইমত লীলার চাইল চলনী।

এই লীলা একট পরী-দীতিকার নারিকা। বৌবন-প্লাবন তাহার সর্বাদে হাপাইরা উঠিরাছে। দেশে বখন রেল-প্লানা হিল না, তখন প্রম্য 'পান্সী' নৌকাতেই অপেকাফ্বত অবহা-পত্ন লোকেরা বাতারাত করিত, বিহার করিত। ব্রার তরা নদীতে মুহমক্ষ তরকে ধোলারিত রঙীন 'পানসী' তখন দর্শক্ষের মানস-পটে সৌকর্ব্যের একট মধ্র চিত্র আঁকিয়া বিত। অনেক কবিই উহার সদে নারিকার বৌবন-প্রীর তুলনা করিয়াহেন:

"আবাচ মালে দীবলা পান্সীরে নরা জলে তালে।
সেহি মত সোমাইর বৌবন বেলার বাতালে।"
'সোমাই' আর একট কাব্যের মারিকা। অবিবাহিতা
ম্বতীকে লক্ষ্য করিয়া কবি আবার বলিরাহেন,—"এমন
সোমার পান্সী ভাহাতে যাবি বাই।"

ভার একৰণ কবি কত ভল কথার একট বালিকার ভণরণ বৌবন-শ্রীর বর্ণনা করিয়াছেন:

> "আষাইচা ভোষারের কল বৌৰন দেবিলে। পুরুষ দূরের কথা নারী বার ভূলে।"

মনভত্ববিদের। বলিরা থাকেন, পুরুষ নারী হুইরের মধ্যে পার্বক্যই নাকি প্রতির প্রফুত গোপান। পুরুষ যে নারীক্ষে ভালবাসে, আবার নারী যে পুরুষের প্রতি আফুট হর, তাহার বুলগত কারণই হুইতেহে, একে অপরের মধ্যে এমন একটা বত্তর সদান পার, বাহার অভাব সে নিজের মধ্যে অমন একটা বত্তর সদান পার, বাহার অভাব সে নিজের মধ্যে অমুভব করে এবং সেই অভাব মিটাইবার ক্ষম্ অপরের প্রতি জাত্তই হয়। বাহতঃ পুরুষ নারীর এবং নারী পুরুষের ক্ষপ দেবিরা ভূলে, হয়তো একে অভকে প্রেঠতর মনে করে। কিছ যে নারীর যৌবন-জী দেবিয়া পুরুষের ত ক্যাই নাই, মারীরাই আছবিস্ফুত হুইরা পঞ্চে, সেই নারীর ক্লপের যে ভূলনা নাই তাহা বলাই বাহলা।

নায়ক-নায়িকার যৌবন-প্রীর এইরপ বর্ণনার পল্লীপ্রতিকাশুলি ভরপুর। প্রকৃতিরাক্যে যাহা কিছু সুক্ষর এবং সহজ্ঞান্ধ-টাদ, ভারা, পল্ল, মল্লিকা, মেল, রামধন্দ, ভেলাকুচা কল, আযাদের জোয়ারের জল, ভাল্লের উরা-নদী—সমন্তই উপমার বন্ধরণে পৃথীত হইরাছে। এখানে আরও করেকট দৃষ্টাভ দিতেছি:

> "সভা কইব্যা বইণ্ডা আছে ঠাকুর নভার চান আস্মানে ভারার মধ্যে পূর্বাদীর চান।"

আস্মানের চাল বেষন জমিনে পড়িরা নিজা যার নদীয়ার চাম অচৈডভ হইরা। একট নারিকার সহত্বে বলা হইভেত্ত :

জলের না পরস্থা ভক্ষার সুঠে রইরা আস্মানের ভারা সুঠে মঞ্চেত ভরিরা।

ভবু অবও বৌবদ-এর চিত্রই নহে, নারজ-নারিকার বিবিধ অলপ্রতালের বর্ণনাগুলিও কত ক্ষমর এবং হামরপ্রাহী হইরাছে। পরী-কবিরা এইগুলিতে অনেক ছলেই একটি অভিনব কৌশল অবলম্বন করিরাছেন। উপমার রূপবর্ণনার ক্ষেত্রে উপমান এবং উপনের ছইট বছরই পাশাপাশি উল্লেখ করিবার রীতি ক্সপ্রচলিত। কিছ পরীগাধা-রচরিতারা হলবিশেষে উপমানের সহিত উপনেরকে ওতপ্রোত তাবে বিশাইরা ধেবিরাছেন এবং বুধ্য বছটের উল্লেখনাত্র না করিরা ভবু উপনানের হারা ইলির্ভ করিয়াছেন। তাহাতে রূপের চিত্রটি আরও মনোজ ও রসম্বিত হইরা মূট্রা উটিয়াছে।

আবার ক্থনও বা উপনের বা উপনান কোনটরই উল্লেখ বা করিরাও উদিঠ বছর রূপের চিম্কট বলের মধ্যে অভিনয় ইকিতে বরিয়া বিয়াহেল: "ৰেধিল পুন্দর কড়া খল লইবা বার মেনের বরণ কড়ার পারেভে দুটার।"

এবানে মারিকার আনুলায়িত, সুবীর্ণ, ক্লক কেলের বর্ণনা করা হঠতেতে, অবচ কেলের উল্লেখ নাই; ইনিতেই কেনন তাহা লাই হইরা উঠিয়াতে:

> "প্রথম বৌবন কভা সদা হাসি ধুশি হাসিলে বদনে কুটে মলিকার রাশি।

হীরামন্তি জলে কছা যধন নাকি হাসে।"

ৰ্দ্ধিকার ও হীরাম্ভির শুক্রভার সদে হাঁতের শুক্রভার ভূলনা করা হইতেহে, কিন্তু হাঁতের নামগন্তও নাই, অবচ কাহারও বুবিতে অসুবিধা হর না।

> "চাঁচর চিকণ কেশ সীলার বাভাসেতে উচ্চে বর্বাভিয়া চান্দে বেমন ক্ষণে আবে বিরে !

উপরে ভোড় ভুক নীচে মরন ভারা।

মধু লোভে পুলো বেমন বৈসাহে অমরা।"

কভ আন ক্বার, কভ সহজে নারিকার অনিদ্যাস্থ্যর মুধ্বানি
কবি আমাদিগকে দেখাইলেন।

প্রত্যেক শ্রেষ্ঠ লেখকের লেখারই একটা অনির্বাচনীরতার ইলিত রসজ পাঠককে মুক্ক করে, লেখকও অভিবর্ণনার দার হুইতে রক্ষা পান। যাহা আমরা অভরে অভরে উপলব্ধি করি, অভ্যুত্তর করিরা আনক্ষ পাই, তাহা সব সমর ভাষার প্রকাশ করিরা অপরকে বুকাইতে পারি না; সেরপ ছলে আভাসেইলিতেই বক্তব্য মনোজ হুইরা উঠে। পল্লীকবিকের লেখার আনক ভুলেই প্রচলিত বাক্যাংশের একটা সুচার্ব, একটা মির্কাব্রর অভ্যুত্ত। আমালিগকে পুলক্তিত করে।

এক নারকের উদেশে নারিকা বলিভেছে:

"উইড়া উইড়া আইলে ভষর রে কিরা) কিরা৷ বার । কোন বা কুলের মধুর আশার রে ছুরিয়া বেড়ার ।"

কুলের মধু কি তাহা আমরা বুঝি, আমি , কিছ বৌরনের
মধু যে কি তাহার সংজ্ঞা সহজে দেওরা চলে না। এবানে
জালাইতাই আমাদিগকে আমক দের।

নারিকার প্রারোগর একট চিত্র:—অলের বাটে, কেরা বনের বারে, প্রস্কৃতিত ক্ষরতানে সহলা এক সভার হুইট ব্যক্ষ্রতীর প্রথম দৃষ্টি বিনিমর হইল। ব্রতী গৃহে কিরিয়া মনের ভিতরে চাহিরা বেবে কোল্ অলক্ষ্যে সেই ব্যক্ষ আহার মনো-রাজ্যের একছের অধীধর হইয়া বসিরা আছে। সে আনমনা হইয়া পেল, নিজের বেহের আহর-বত্ব ভূলিল, কর্তব্যে তাহার অমনোবোগ আসিল। এক বিনেই তাহার বেহ-মনের কিবেন একটা পরিবর্তন ব্টরা সিরাছে। এ বিষয়ে সে সমাক্ অবহিত বা হইলেও ব্যক্ষিয়া নিরাছে। এ বিষয়ে গোপন রহিল

না, তাহাদের নিকট এ পরিবর্ত্তন বলা পঢ়িল এবং ঠাটা করিয়া তাহারা ক্রিজাসা করিল:

> "আউলা বাউলা অদের বসন মাধার কেল বোলা। আজি কেন জলের বাটে গিরাছিলা একলা। আবা কলসী ভরা দেবি আবা কলসী বালি। আইজ বে দেবি কোটা কুল কাইল দেব্যাছি কলি। কি হইরাছে জলের বাটে সভ্য করি বল। না ভাফাইও নমদিনী না করিও ছল।"

অন্তরাগের প্রথম অবস্থায় নায়িকার কের্বনাই ইচ্ছা হয়, সেই
মনের মাঞ্যকে আর একট বার দেখিতে। সে কৌশলে
তাহাকে দেখিবার প্রোগ করিয়া লয়: জলের ঘাট তাহাকে
সে প্রযোগ দেয়। পল্লীবালার সেই ঘাটে না গিয়া উপায়
নাই, কত বার কত কাজেই না তাহাকে সেই ঘাটে যাইতে
হয়! সেই যাতায়াতে সে পায় বছন-মুক্তির অবকাশ,
প্রশিল্লনের প্রযোগ। কবি একট নায়িকার প্র্রিরাগ
সঞ্চারের পরের এই অবস্থাটিই বর্ণনা করিতেকেন:

"মেখ আরা আখাচের রইদ গারে বড় আলা। ছান করিতে জলের খাটে যাধ যে একেলা। কিসের ছান কিসের পানি কিসের জল ভরা ছইরের প্রাণে টান পইড়াছে এমন প্রেমের ধারা।"

ছুইট হাদর ধৰ্ম পরস্পরের প্রতি আকৃষ্ট হয়, তথ্য তাহার। একের প্রতি অভের অহ্বাগের তীব্রতা বৃথাইতে কত কি ন! বলে! নায়ক বলে:

"বাগবাগিচা ক্লের শোভা চক্ষে নাহি লাগে।
পাগল হইয়াছে কভা ভোষার অভ্যাগে॥
ভূষি আষার চক্ষেত্র ভূষি নরন-ভার।
ভূষি আষার ষণি-যুক্তা ভূষি গলার হার॥
এইবানে শেষ ময়। ভূষি বদি উপেক্ষাও কর, আমি
অভিযানে দূরে সরিয়া যাইব না।

"তৃষি যদি হাত কতা আমি না হাতিব। পারের গুঞ্জরীঃ হইয়া পারেতে থাকিব।" নামিকা উত্তর দের, হি হি । তৃমি ও সব কথা কি বল ? "তৃষী হও তরু রে বন্ধু আমি হই লভা। বেইডা রাধব মুগল চরণ হাইডা বাইব কোবা।"

কিছ নারক-নারিকার এত কথা,—এত আদ্ধ-নিবেদন অনেক সময়ই সংসার-সমাকের বিরুদ্ধতার ব্যর্থ হুইরা বার। তাহাদের হুদর বিচ্ছেদ-বেদনার ভরিরা উঠে। চারিদিকের মুক্ত বাধীন প্রকৃতিরাক্ষ্যের দিকে চাহিরা নারিকা বলিরা উঠে:

কুল হটরা সুটিভাষ বন্ধু রে যদি কেওয়া বনে নিভি নিভি হটভ বন্ধু বেবা ভোষার সনে। ভূষি বদি হটভেৱে বন্ধু আস্থানের চাম রাজ নিশা চাইরা বাক্তার বুলির। বরাব। ভূমি যদি হইভেত্তে বন্ধু ঐ সে মদীর পাশি ভোষাত্তে চাহিয়া দিভাষ ভাশিভ পরাণি।

এই বিচ্ছেদ-বেদনার চিত্র পদ্ধীকবি শুধু মান্থবের সমাজ হৈতেই অভিত করেন নাই, প্রস্কৃতি-রাজ্যেও বে একটা বিরহ-বাধার করুণ রাগিষ বাহত হইয়া উঠে, তাহা কবির মৃষ্ট একায় নাই। বর্বার জলে পৃথিবী পরিপূর্ণ, যে দিকে চোধ যার—শুধু জল আর জল, কিন্ত চাতকের তো তাহাতে তৃকা মিটে না, গে জলে তো তাহার অবিকাম নাই। বৃষ্টির জীণ বারা পান করিয়া ভাহাকে থাকিতে হয়। অবিরাম জল বরিতেছে, বাজ পভিতেছে, কিন্তু সে সব হুর্ব্যোগ উপেকা করিয়া আর একটা পাধীও যে 'বউ কথা কও', 'বউ কথা কও' বিলরা তাহার প্রিয়ার সন্ধানে ক্রিতেছে! কবি তাহারই চিত্র আঁকিয়াহেন:

"বৈয়া বৈয়া চাতক ভাকে বৰ্বে জনবর।
না মিটে আকুল ভ্ষা পিয়াসে কাতর।
কোন্ না বিরহী নারী হার অভাগিনী
অভেদ নাহিক জানে দিবস বজনী।
লাউনিয়া বারা শিরে বজ্ল বরি মাধে।
বউ কথা কও বলি কাছিল কিরে পথে।"

নায়ক-নায়িকার মিলনানন্দের একট চিত্রও দেখুন। দীর্ঘ বিরহের পর প্রিয়সন্মিলনের যে জানদ্দ ভাহার শেষ কথা কেছ কি বলিতে পারিয়াছেন? বিভাপতি পারেন নাই, চঙীদাস পারেন নাই, জামাদের পদ্দী-ক্বিরাও পারেন নাই। পৃথিবীর যে-কোনও মিষ্ট সাম্প্রী অপেকা ইহার মিষ্টম্ব জ্বিক; এই মিষ্টম্বের ভূলনা হয় না, ভাই কবি অনেক মিষ্ট ফ্রব্যের উল্লেখ করিয়াও শেষে হার মানিয়া গেলেন:

> নেওরা মিশ্রি সকল মিঠা মিঠা গলাকল তার থাক্যা মিঠা দেখ শীতল ভাবের কল তার থাক্যা মিঠা দেখ হংখের পরে ক্থ তার থাক্যা মিঠা যখন ভরে থালি বুক তার থাক্যা মিঠা যদি পার হারানো বদ সকল থাক্যা অধিক মিঠা বিরহে মিলম 1

পলীকবিরা অনেক ছলে এমন সব উপমা বিরা এমন সব ভাব প্রকাশ করিয়াহেন, যে ভাবসমূহ অভ কোনও উপমা প্রহোগে ভত স্পষ্ট ও শ্বদরগ্রাহী করিয়া প্রকাশ করা বাইত কি না সন্দেহ।

"এফ খোৰের বাঁপ রাই নহিবেতে লেখা। তেউ হয় হুলের সাজি কেহ হাতির বাঁচী।"

আমরা সচরাচর কি কেবিতে পাই ? একই মাতাপিতার কিংবা একই পরিবারের এক ছেলে বিভার বৃদ্ধিতে সংসারে সুপ্রতিষ্ঠিত; আর এক ছেলে অশিকার অবাধরে সকলের মুণা কুডাইরা কিন কাটাইতেতে । সাধারণ লোক ইহাকেই বলে অনুষ্ঠ। পরীক্ষি কৃত সংক্ষেপে, কৃত সুক্ষর এবং মর্ম্ব- লাৰ্নী কথাৰ একট উপৰা বিৱা এই কথাট ব্যক্ত কৰিবাৰেন।
একই বাচ হইতে বান কাটবা কেহ হুলের নালি তৈরার
করিতেহে, আবার কেহ বা করিতেহে হাচির বাঁটা। উতরেই
বান, উতরেই হুল এক বাড়ে—এক বংশে। অবচ হুইরের
পরিবতিতে কত পার্বক্য।

একটা প্রচলিভ কথা আছে---'যার মনে লাগে বারে।' এই মনে 'লাগা'র কেত্রে সৌন্দর্ব্যের কোনও মাপকাঠি নাই। একজন যাহাকে প্ৰদান বলিয়া বরণ করিয়া লইয়াছে, জপরে হয়ত তাহাকে দেখিয়া মাসিকা কৃষ্ণিত ক্রিতেছে। আবার একজন বাহার দিকে কিরিয়াও ভাকায় না জপরে হয়ত ভাছারই অভ সর্বাহ হারাইয়া পাগল হইয়া ছুরিয়া বেড়াই-ভেছে। মহয় পালাগানে দেখি, মহরা নদের চাঁদের অনু-রাগিণী হইরাছে , ভাহার পালক-পিভা কভার ভবিষ্যং চিভা কবিয়া ভাষাদের মিলনে বাধা দিভেছেন এবং ক্লম্ম নামে ঘদাতীয় এক হুদ্দর বুৰকের সদে ভাষার বিবাহ দিতে চেঙা করিভেছেন। পিতা কভাকে বুঝাইলেন, "ভূমি যদি প্রাণে বাঁচিতে চাও নৰের চাদকে হত্যা কবিয়া সুজনকে বিবাহ কর। পুজন পুলর মূবক এবং আমাদের মজাতি।" মহরা ব্লান হালিয়া উভৱ দিল, "পিভা, ভূমি ভ ভোষার চোৰ দিয়া নদের টাদের সৌন্দর্ব্যের বিচার করিভেছ, ভাই তাহাকে খুদ্দের তুলনার ভোমার অসুদ্দর মনে হইতেছে। কিছ আমার সুন্দরকে যদি তমি আমার চোধ দিরা দেখিতে ভাহা হইলে বুৰিভে পাৱিভে সে কভ ফুলর ৷ আমার বঁণু সোমার তর-কাঁচা সোনা, চল্ল-ছ্ব্য যা কিছু বল, সব:

আমার বন্ধু চান্দ প্রকল, কান্দা সোনা অলে।
তাহার কাছে প্রকান বাভাও জোনিও বেমন অলে।
সোনার তরুষা বন্ধু একবার পেব।
আমার চন্ধু নিরা ভূমি নরান ভইরা দেব।
পল্লীক্বি সাবাভ করেকট ক্রার একটা চির্ভন সভ্যকে
কি প্রক্র ভাবেই না ব্যক্ত করিরাছেন।

ভধু মর-মারীর বাহিক রূপ এবং বাদসিক অবস্থার বর্ণনাই নহে, প্রাকৃতিক সৌন্দর্ব্যের বর্ণনায়ও এই পরীক্ষিপ্রধানারণ কবিদ্ধ-শক্তির পরিচর দিরাছেন। পরী-কবি রহুব্যস্মান্ত হুইতে উপমান সংগ্রহ করিরা ভাহার ইন্তিতে প্রকৃতির সৌন্দর্ব্য বেন আরও বাড়াইরা ভূলিরাছেন। সে সৌন্দর্ব্য আনরা বাহ্বী বৃত্তিতে প্রভাক করিরা বিশারে অভিকৃত হুইরা পড়ি, ঘেরন বর্ষার একটি চিত্র:

"হাতেতে সোমার বারি বর্বা মানি আলে
নবীন বরবা জলে বসুযাতা তানে।"
আকাশ-তরা বেবের বেলা, অবিপ্রান্ত জল বরিতেহে, মুহরু হি
বিহাং চমকাইতেহে; প্রবাট মাঠ, নবী পুরুর জলে একাকার।
কবি কল্পনার হবি আঁকিলেন বেন সোমার বারি হাতে বর্বা
মাহ্বী সুষ্ঠিতে নামিরা আসিতেহে। চিঞ্জী প্রয় উপভোগ্য।

আর একট বর্ণনার আছে, প্রাবণ যেন জলের পসরা নাধার ক্ষিত্রা বর্ত্তো নাবিরা আসিরাতে, এবং সর্ব্বজ্ঞ কস হচাইরা চলিরাতে, লে ক্লবারার কি চুর্বার শক্তি চু শ্ৰ্মাৰণ আসিল মাৰে জলের পসরা।
পাণর ভাসাইরা বহে শাওমিরা ধারা।"
পদ্ধী-ক্ষিয়ের অমাভ্যর ভাষার নিয়ের কর্মী হতে বর্ণার

পদ্ধী-ক্ষিদের অমাভ্যর ভাষার নিয়ের করট হতে বর্ষার ক্ষেম একট স্থলর চিত্র স্ট্রা উঠিয়াছে: কুড়ার ভাকে যম খন আযাচ মাস আসে

কুটার ভাকে খন খন আবাচ মাস আসে
অমীনে পঞ্চিল হারা মেথ আস্মানে ভাত্তে
অফ অফ দেওরার ভাকে কিছিণ ঠাডাচ পড়ে
অভাগী কমনী দেও খবে পৃইছা মবে।

ক
আস্মানে পাকিরা দেওরা ভাকহ তৃষি কারে

ঐ মা আবাচের পানি বইছে শত বারে
গাং ভাসে নদী ভাসে ভকনার না বরে পানি
এমন রাতে কোধার পেল কিছুই না ভানি।

বর্ষার ছে কুলা পাইর ভাকে পদ্ধীর মাঠ, বিল-বিল, বোপ-বাল মুধরিত হইরা উঠে, আকাশে কাল মেব ভাগিরা ভেলার, মার্টতে তাহার হারা পড়ে, মেবের শুরু শুরু শব্দে চারিধিক প্রকশিত হইতে থাকে, বিহাৎ চর্কার, বাক পজে, বঙ্কী করে। দেখিতে দেখিতে শত দিকে শত বারার আখাচের কল গঢ়াইরা চলে, পথ-প্রান্তর মদী-নালা প্লাবিত হইরা যার। পদ্ধীবাসীর এই চিরপরিচিত দৃশ্বটি পদ্ধী-কবির বর্ণনার মেন আবার মৃতন রূপ বারণ করিরাহে। কিন্তু এই বর্ষার দিম মান্ত্রের চিতে যে প্রির-বিরহ্-বাণা আগাইরা ভোলে, ক্রি ভাহাও উল্লেখ করিতে ভূলিরা বান নাই।

বদ-পরীর ভার একট অভিপরিচিত করণ দৃষ্টের উল্লেখ করিতেহি। একট পরী-মুবকের বিদেশবাদ্ধা উপলক্ষ্য করিয়া কবি বলিতেছেন:

> "বৈদেশেতে যায় যাত্ব হছুর দেখা যায়। পিছন থাক্যা চাইয়া দেখে অভানিনী যায়। বাঁশের ঝাড় বন-কদলে পুতের পিঠে-পড়ে আঁথির পানি মুদ্যা যায় কিব্যা আইল বরে।

পুত্র বিবেশে চলিয়াছে, জননীর জ্বন্ন জারাক্রান্ত। তিনি তাহার পক্ষাং পক্ষাং আসিরা পথের বুবে ইাড়াইলেন, বতচুর দেবা বার পুত্রের দিকে চাহিরা রহিলেন। প্রামের পথ জ্বান্ত, হই দিকে গভীর জ্বল ; মব্যে মব্যে বাদের বাড়, নানা গাছ সে পথের উপর একেবারে হেলিরা পঢ়িয়াছে, পুত্রের সম্প্র ক্ষেপ্রানি আর দেবা যাইতেছে না, ক্রনে সে বননিবিভ পত্নীপথের বাঁকে জ্বন্ত হইরা পেল। যা আঁচল দিরা বুব ব্ছিতে র্ছিতে গৃহে কিরিয়া আসিলেন।

এইৰণ বিচিত্ৰ বৰ্ণনাত্ৰ পদ্ধী-দীতিকাসমূহ ভৱপুত্ৰ। আমত্ৰা আৰু অধিক দৃষ্টাভ এখানে উদ্ধুত কৃত্ৰিব না।

শকাৰ্থ : ১ আৰণের। ২ জোংগ্লা। ৩ বৰ্বাকালে। ৪ জনকার বিশেব। ৫ বেদে। ৬ জোনাকি। ৭ বিছাং। ৮ বাজ।

<sup>\*</sup> বর্তমান প্রবাদের উদ্ধৃতাংশশুলি চন্দ্রকুমার দে সফলিত, দীনেশচন্দ্র সেন সম্পাদিত এবং ফলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে প্রকাশিত মৈমন্সিংহ-দীতিকার 'কল্প লীলা,' 'দেওলান ভাবনা,' 'মহুরা,' 'মলুরা,' 'ক্মলা' প্রভৃতি বিবিধ পালাগান হইতে প্রহণ করা হইরাহে।

## লিপিভত্ববিৎ কমলাকান্ত বিভালস্কার

#### শ্ৰীব্ৰজেন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাখ্যায়

কলিকাতার বর্তমানে আমর। যে এশিরাটক সোসাইট দেবিতেছি, তাহার হুচনা হয় ভারতে ব্রিটন রাক্ষরে গোড়া-পদ্ধনের অন্ধ দিন পরে—১৭৮৪ বীষ্টাকে। সুধ্বীম কোর্টের বিচারপতি সারু উইলিয়ম জোল ক্তিপর ইউরোপীয় পশ্চিতের



সার উইলিরম জোল

সহারতার ইহার প্রতিঠা করেন। ক্রোন্সের লক্ষ্য ছিল প্রতিঠানটকে প্রাচ্য জান বিজ্ঞান চর্চার কেন্দ্রহলরণে গভিয়া তোলা। এ বিষয়ে তাঁহার বাদী উদ্ধারযোগ্য:—

"It will flourish, if naturalists, chemists, antiquaries, philologers, and men of science, in different parts of Asia, will commit their observations to writing, and send them to the Asiatic Society at Calcutta; it will languish, if such communications shall be long intermitted; and will die away, if they shall entirely cease."

উচ্চপদ্ম রাক্সবঁচারীরা নানা তাবে সাহাব্যদান করির।
প্রতিঠাতার উত্তেও বছল পরিবাবে সকল করিরা তুলিরাছিলেন। প্রবাবভাগ-সম্পর্কীর উপকরণে দিন দিন সমূহ
হইরা উঠিতেছিল। প্রক্রব্যের মধ্যে বিভিন্ন হান হইতে
প্রাপ্ত বছ তারশাসন ও শিলালেখের প্রতিলিশি ছিল। কিছ
প্রাচীন লিশি-ভানের অভাবে সেওলির পাঠোছার করির।

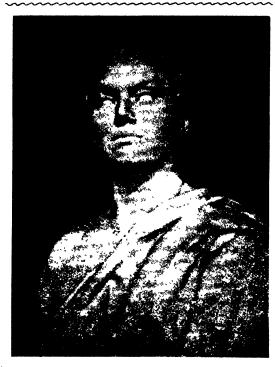
ঐতিহাসিক বৃল্য বাচাই করিবার উপায় ছিল না। ১৮০৭ সনে লেগুলির পাঠোভারের বিশেষ চেটা হয়। এই ছব্বহ কার্ব্যে অপ্রশ্নী হন—কেন্স প্রিন্সেপ, সোসাইটির ভবানীভ্রম সেক্ষেটরী ও প্রশিরাটক সোসাইটির ভর্ণালের সম্পাদক। তিনি লিখিরাছেন:—

"Our own attention has been principally taken up this last year with Inscriptions. Without the knowledge necessary to read and criticise them thoroughly, we have nevertheless made a fortunate acquisition in paleography which has served as the key to a large series of ancient writings hitherto concealed from our knowledge . . . 1st January 1838." (J. A. S. B., 1837) Preface.)

প্রকৃতপক্ষে একা প্রিন্সেপের চেষ্টার ১৮৩৭-৩৮ সনে বহ উৎকীণ প্রাচীন লিপির—বিশেষ করিয়া অশোকের অহ-শাসনের পাঠোভার হইয়াছিল। তিনিই প্রথমে ব্রাজ্মী-লিপির পাঠোভার করিয়া ভারতেতিহাসের একট রুদ্ধ কক্ষের হার উন্মোচিত করিয়া দিয়াছিলেন। কিন্তু লিপিতভ্বিশারদ হিসাবে প্রিন্সেপের ব্যাতির বুলে যিনি ছিলেন, তিনিও আফ বিশেষভাবে শ্বরীয়। পরিতাপের বিষর, "আছবিশ্বত" বাঙালী ভাহার কথা একেবারে তুলিয়া সিয়াছে; তিনি এ-দেশেরই বহনিন্দিত প্রাচীন প্রিত-সমান্দের এক্ষন, নাম-ক্ষলাকাছ বিদ্যালছার।

ক্ষলাকান্তের বংশ-পরিচর বা আর্রি নিবাসের কোন সংবাদ আনরা সংগ্রহ করিতে পারি নাই। কলিকাতার আক্ত্রনিতে উাহার চতুলার্মী হিল। ১৮২৪ সনের আহ্বরারি মাসে কলিকাতার পবর্বেন্ট সংস্কৃত কলেক প্রতিষ্ঠিত হইলে তিনি ৬০১ বেতনে ইহার আল্বার-প্রেইর আ্বাপক নির্বাচিত হন। ১৮২৭ সনের যে মাস পর্যান্ত আ্বাপনা করিবা তিনি বেদিনীপুর আ্বালতের ক্ষ্ক-পভিতের পদ লাভ করিবাহিলেন। ইহার পর আমরা তাঁহাকে ১৮৩৭ সনে ক্ষেম্ব প্রিন্দেশের পভিতরণে কোনা তাহাকে ১৮৩৭ সনে ক্ষেম্ব প্রিন্দেশের পভিতরণে কোনা কাল্বারা হিলেন। প্রফুতপক্ষে ১৮৩৭-৪১ সনের মধ্যে এশিরাইক সোসাইটর অর্ণানে প্রকাশিত বহু লিপির পাঠোছার ক্ষলাকাতেরই সাহাব্যে হইরাহিল। ক্ষলাকাতের সাহাব্যের ক্ষা প্রিন্দেশ একাবিক ক্ষেম্ব মুক্তর্বে বীকার করিবা সিরাহেন। হ্-একট হুটার উদ্বত ক্রিতেহি:—

"Lt. Kittoe also presented facsimiles of a copper grant in three plates dug up in the Gumsur country of which the Secretary with the aid of Kamala Kan



জেম্স প্রিন্সেপ [ এশিরাটিক সোসাইটিতে রক্ষিত মর্শ্বর-মূর্ত্তি হইতে শ্রীপরিমল গোসামী কর্ত্তক গৃহীত ফোটো। বঙ্গীয় ররাল এশিরাটিক সোসাইটির সৌক্রপ্তে ]

Pandit supplied a translation." (J.A.S.B., Vol. VI, May 1837, p. 402.)

with Kamalakanta." (J.A.S.B., June 1838, p. 557.)

🔹 সংস্কৃত কলেকের প্রান্তন ছাত্র সারদাপ্রসাদ চক্রবর্তীও প্রিন্সেপের cation, Sanskrit College.) অন্যতর সাহায্যকারী ছিলেন: তাঁহার সম্বন্ধে প্রিনসেপ এক স্থলে লিখিয়াছেন: —

"For the translation, instead of adopting Wilkins" words, I present if anything a more literal rendering by Sarodaprasad Chakravarti, a boy of the Sanskrit College, who had studied in the English class lately abolished. I do this to shew how useful the combination of Sanskrit and English grammatically studied by these young men might have been made both to Europeans and to their own country. . . . The same boy assisted Captain Troyer in the translation of many Sanskrit class books. (J.A.S.B., Aug. 1837, p. 673.)

১৮৩৮ এটাব্যের মবেম্বর মাসে পীড়িত হইরা প্রিন্সেপ এদেশ ভ্যাপ করিলে ডা: ওদাপুনেসী সোদাইটর অহারী সম্পাদক হন। তাহার আমলে, ১৮৩১ সনের আগষ্ট মাসে, ক্ষলাকার এশিরাটক সোসাইটর প্রতিতর পদ লাভ করেন। এশিরাটক সোসাইটর অর্ণালে ( viii 527 ) প্রকাশ :---

"The Secretary brought to the notice of the Meeting that the present Pundit, Ramgovind Gossamee, has been found incompetent to decypher the Inscriptions to which the Society are most desirous to give publicity, either in their monthly publication, or in their Transactions, he therefore proposed that the celebrated Kamalakantha Vidyalankar be appointed for that office, and also as the Librarian for the Oriental Books. The proposition was unanimously carried." (Proceedings 7 Aug. 1839.)

এশিয়াটক সোগাইটির কল্যাণে দেশে পুরাতত্ত্বে চর্চা ক্রমেই প্রসারলাভ করিভেছিল। সরকারী শিক্ষা-সংসদ সংস্কৃত কলেকের একদল ছাত্রকে পুরাতত্ব শিক্ষা দিবার প্রয়োজনীয়তা অভুতৰ করিতেছিলেন। ভাঁহায়া সংস্কৃত কলেজ হইতে খডর বেদাছ-শ্রেণী লোপ করিয়া ভাষার ছলে "Ancient History and History of the Hindoos" শিবাইবার জভ ১৮৪২ সনের অক্টোবর মালে "পুরাযুভ" নামে একট শ্রেণীর স্ট্রী করেন। এই শ্রেণীর অব্যাপক নির্বাচিত হৰ-ক্ৰলাকাভ বিভালভাৱ। তাঁহার নিয়োগণতথানি এইরপ :---

"I have the honour to inform you that the Section "Although, as will be seen, the slab [Brahmeswara- of the Council of Education for the Sanskrit College Inscription, Cuttack! was in a state of considerable has been pleased to appoint you Professor of Ancient mutilation, yet from the inscription being in verse, Literature and History of the Hindoos at the Sanskrit my pandit, Kamalakanta Vidyalankara, has been able College on a salary of Eighty Company's Rupees per by study of the context to fill up all the gaps, with, month. You are immediately to set about preparing as he says, hardly a possibility of error, and indeed a syllabus of your proposed lectures and report prowhere the outline of the letters is preserved I have gress to me weekly specifying what has been done and found his restoration quite conformable. The transla- what is to be done in the following week to be tion has been effected by Sarodaprasad\* under his submitted to the Section monthly. In addition to this explanation, but I have not leisure to read it over you are to teach Vedant to as many students as may wish to learn that Science. (Letter dated 1st Jany, 1842) from Russomoy Dutt, Secy., Section Council of Edu-

> ক্ষলাকান্তের বরুস হইরাছিল। তিনি ১৮৪৩ সনের আগষ্ট যাস পৰ্ব্যন্ত অব্যাপনা করিবা শ্যাপ্রহণ করেন : পরবর্তী ৮ই অক্টোবর তাঁহার মৃত্যু হয়; সলে সংকৃত কলেছ হইতে পুৱায়ত্ত-শ্ৰেণীটও লোপ পাইরাছিল। ভাঁছার মৃত্যুতে এশিরাট্টক সোসাইটর সহকারী সভাপতি ও সেক্রেটরী বেশ্রি টরেল (Torrens) বে প্রশৃতি করেন তাহা উদ্ভূত ক্রিয়া বর্ত্তনান প্রসলের উপসংহার ক্রিভেহি:---

"I have, with much regret, to report the death of the aged, and highly respected Pundit Kamalakanta



হেন্রি টরেন্স

Vidhyalankar, the friend and fellow labourer of James Prinsep. With him has expired the accurate knowledge of the ancient Pali and Sanskrit forms of writing; for although we now possess a key to these ancient characters, no Pundit has exercised himself in the a of decyphering to the extent to which has Kamal kanta. Like all learned persons of his class, he careful avoided the communication of his peculiar knowled . . . the Society owes a debt of gratitude to Kamal kanta, and of respect to him as the Collaborator James Prinsep." (Proceedings 13 Nov. 1843: J.A.S.I 1843, pp. 1013-14.)

(বলাহ্বাদ)— অত্যন্ত হংবের সহিত জেন্স বিন্সেণ্য স্থাৎ ও সহক্ষী, বহুনানাল্যন বৰীরান্ পভিত ক্ষলাকাছ বিদ্যালহারের মৃত্যু-সংবাদ আপন করিতেছি। ওাঁহার সহে সক্ষেই প্রাচীন পালি ও প্রাচীন-সংক্ত-লিপিগছতির ধর্যাই আনের বিলুপ্তি বট্টল; কেন না, ইলানীং এই সমন্ত প্রাচীন লিপি পাঠের মৃলস্ত্রেট আনাদের অবিগত হইরাছে বটে কিছ আর কোন পভিতই প্রাচীন লিপির পাঠোহারে ক্ষলাকাছের ভার কৃতিত্ব দেবাইতে পারেন নাই। ওাঁহার সমস্ত্রেশীর পভিতদের মত তিনিও তাঁহার এই বিলিট বিদ্যাপ্রকাশের স্থােগ পরিহার ক্রিয়া চলিতেন। ক্রেম্ব্রুট বিন্তির ক্রিন্সেণের সহক্ষী হিসাবে সোসাইটি ভাঁহার নিক্ট কৃতজ্বতা-বানে আবঙ্ক এবং সেক্স্তুতিনি উহার প্রভাৱ পালে। ক্

\* কমলাকান্ত কলিকাঙার ধর্মসভার সহিত সংশ্লিষ্ট ছিলেন ( 'সংবাদপত্রে সেকালের কথা' ২র খণ্ড, পৃ. ১২৫ )। স্বদেশবাত্রার প্রাকালে এলিলাটিক সোনাইটির সভাপতি রেঃ ভবলিউ এইচ মিল-কে বিদারঅভিনন্দন দিবার জনা বে সভার অমুষ্ঠান হয়, তাহাতে প্রিন্সোপ্টের নির্দেশে মিলের সংস্কৃতে বাংপত্তি সম্বন্ধে কমলাকান্ত যে প্রশন্তি করিরাছিলেন তাহা ইংরেজী অমুবাদসহ এলিলাটিক সোনাইটির জর্গালে মুজিত
ইয়াছে ( J. A. S. B , 1387, Aug. pp. 707, 710-11.
২২ এপ্রিল ১৮৪ তারিপে, ৪১ বংসর বয়সে, বিলাতে জেম্স প্রিন্সোপার মৃত্যু হইলে পারবর্ত্তী ৩০শে জুলাই তাহার অপ্রাহী ব্যুবর্গ কর্জ্ক কলিকাতার টাউন-হলে যে স্বৃতিসভার অমুষ্ঠান হয় তাহাতে কমলাকান্ত, বাংলাদেশের পণ্ডিতবর্গের প্রতিনিধিস্বরূপ, সংস্কৃতে প্রশন্তি কবিতা পাঠকরিয়াছিলেন ( Asiatic Journal, Nov. 1840 : "Asiatic Intelligence," pp 190-91.)



## বাংলা বিজ্ঞান-সাহিত্যের সমস্থা

### 🗬শাস্তিদাশঙ্কর দাশগুপ্ত, এম-এস্সি

বিগত দেড় শভ বংসৱে বিজ্ঞান বহু দুৱে: অপ্রসর হইরা আসি-রাছে। এই অঞ্রগতির ইতিহাস বিদেশী ভাষার লিপিবছ হটয়াছে এবং তাহাই আমরা পভিয়া আসিয়াছি। এক अक्डे मूख्य क्या एडे स्टेबाट्ट, चाव व्यामान स्वत्क म्या সমভ বিদেশ ভাষা পরিবর্ত্তিত বা অপরিবর্ত্তিত ব্রূপে ভাষা अर्गपूर्वक निषय कविशास । जाक जामता अरे पूल्वश्रमाती বিজ্ঞানকে বাংলায় প্রকাশ করিতে নানা ছিবা ও মুশকিলে পঞ্চিরাছি। বিজ্ঞানের গতির সহিত ভাষা এতকাল ভাল वार्षिया চলে नारे, अकृष्टे अकृष्टे कविया अस हयन वा अस शर्मन হর নাই। আৰু তাই সমন্ত বিজ্ঞানকে একসলে মাতভাষায় প্রকাশ করিতে গিয়া কত সমস্থারই না স্ট্র হুইতেছে। এত কাল এবিষয়ে যে চেঠা চলিয়াছে, ভাৰা ভেমন উল্লেখযোগ্য নর। কলিকাতা বিশ্ববিশ্বালয় পরিভাষার তালিকা মাত্র দিয়া-ছেন-ভাছাও সম্পূৰ্ণ নছে। কিছু শুৰু অভিবান লইয়া যেমন সাহিত্য স্ট্র করা চলে না, তেমনি শুরু পরিভাষার তালিকা नहेश वारनार एक विकादनर अकान हरत मा।

चांबाटमञ क्षेत्रांन विश्वम विद्यान-एकटळ कांबाटक लहेश লেৰকদের বেচ্ছাচারিভা। ইংরেশীভে এই রকম নজির বিরল। কোন ইংরেক লেখক "positive electr:city"কে "ves-electricity" বলিয়া বর্ণনা করিবেন না। কিছ বাংলা ভাষার হাঁ-ধর্মী ও না-ধর্মী বিহাৎ উচ্চাঞ্চের যাসিক পঞ্জিকার পুঠার দেবিয়াছি। ধণাত্মক, ধনাত্মক, পর, অপর, পরা, অপরা, পজিটভ, নিগেটভ—এসব ভো আছেই। বৈজ্ঞানিক পরিভাষা সম্পর্কে ভাষাদের খ্ৰীয়ন্দ সন্মিলিভভাবে যে তালিকা প্ৰস্তুত কৱিয়া দিয়াছেন বা ভবিত্ততে দিতে পারেন সকলেরই তাহা বানিরা চলা উচিত। এইরপ তালিকা কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের উদ্যোগে প্ৰস্তুত হৈলেও বহু ক্ষেত্ৰে দেখা যায়, লেখকেরা প্ৰবন্ধ লিখিবার সময় উক্ত তালিকায় নিৰ্দিষ্ট পরিভাষা ব্যবহার मा कविद्या छोरा स्टेस्ड निक्क वा इस्सीना शविकाया ব্যবহার করিরা থাকেন। কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের পরি-ভাষা সম্ভলন যে সর্জালমুক্তর হইরাছে তাহা নহে, কিলা ইছা বে সম্ভ বৈজ্ঞানিক কিখা পারিভাষিক শস্থাবলীর প্রতি স্বিশেষ মনোবোগী হইৱাহে ভাহাও নহে, ভবুও যভ দিন ইহা হইতে ভাল কিছু না পাওৱা বার, তভদিন বাংলা ভাবার বৈজ্ঞানিক পুত্ৰক ও সাময়িক পত্ৰিকার প্ৰবন্ধ-লেৰকদের সর্বভোভাবে ইহা মানিরা চলা উচিত।

Atomic energy क्यांडे निकास शास्त्र । नकनारकरे

ইহার বাংলা অপুবাদ করিছে দেবি 'আণবিক শক্তি'। কি रिजाद द धरे चन्न्यां कवा रहेन, वृतिष्ठ शांवा शंन मा। atom-अब वारमा भवमान, जाब molecule-अब वारमा जन् ; স্ত্তরাং শক্তি যুখন atom ভাঙিয়া পাওয়া যায়, molecule ভাঙিয়া नर्ट, ७ दम atomic energy-त वारना (य পরমাণ-विक मिक्क ना रहेशा जानविक मिक्क (कन रहेन छारा वृदा क्रिन। श्रीकांत क्रिटिंश एस (य. श्रतमानिक क्यांक अवस्य ভারী। কিছ ওজন ক্মাইবার বাভিত্রে ঘর্ব উন্টাইবার व्यविकात काशांत्रश्र नाहे। यपि श्रवन क्यांहरण एत. atomic energy-র বাংলা ছইতে পারে কণা-শক্তি। ইলেকট্ৰন, পশ্চিট্ৰন, প্ৰোটন প্ৰভৃতি প্ৰত্যেষ্টকই 'কণা'-দলীর। সুভরাং "ক্ণা-শক্তি" এই অসুবাদ "আণবিক শক্তি" হটতে অনেক ভাল বলিয়াই মনে হয়। এটম কথার অর্থ এবন वक्लाहेबा शिवाद्य। वस्त्र हत्रम सवद्या (य शतमान महरू. ভাহা হইভেও চরমভর অবস্থা আহে ভাহা আমরা যাত্র এই শতাকীর প্রারম্ভে ভানিতে পারিয়াছি। এটা ক্**বাটিভে** সমাস নাই বলিয়া ভাৰার পরিবর্তনের প্রয়োজন হর নাই। তাহা হাড়া পরমাণু হইতেই যেসব স্থল বস্তকণার জাবিদার হইয়াছে-ইলেকট্ন, প্রোটন ইত্যাদি সেওলিকে তো বিদেশী নাষেই আমাদের ভাষার স্থান দিতে হইয়াছে। এত নামের **ভিতর এটন ভার মলিকুলকেও যদি ইংরেজী নামে বাংলার** চালাইয়া দেওয়া যায় তাহা হইলে atomic energy-কে এটম-শক্তি বলিলেই সমন্ত প্রগোল মিটরা যার। এ প্রভাব भर्मार्**विम्छा ७ दशायन-भाष्ट्रद** भृष्ठ**क-ल्यक्र**मद विरम्ब विद्वानात वाशा।

বর্তমানের রসায়ন-শাপ্তকে বাংলার ক্রপ বিতে ইইলে সমন্ত মৌলিক পদার্থের, এমন কি লৌহ, সোমা, রূপার পর্যান্ত ইংরেজী লামকরণ প্রহণ করিতে ইইবে। Oxygen, carbon, hydrogen, gold, iron প্রভৃতির বাংলা প্রতিপক্ষ আছে বটে, কিন্তু xenon, neon, krypton, germenium, radium ইত্যাদি অবিকাংশ মৌলিক পদার্থের কোন বাংলা বা সংকৃত মাম নাই। স্কুত্তাং বাংলা রসায়ন-বিভার পুতকে কার্থনকে অলার না বলিরা কার্থন বলাই তাল। রসায়নের পুতকে Zincকে দতা না বলিরা কিন্তই বলিতে ইইবে, Sulphuric Acidকে গন্ধভার না বলিরা নোজা সালক্ষিরিক প্রসিতই বলা সক্ষত। সালক্ষিরিক প্রসিতকে গন্ধভার বলিরা চালাইলেও, Sulphurous Acidকে কিবলির ? প্রীকার্কিরাস প্রসিতই বলিতে ইইবে।

ইহার পরের কথা রাসায়নিক সংঘটনসমূহের (chemical reaction) সাংকেতিক প্রকাশ। একার, আকার, ওকার ইভ্যাদির দর্শন বাংলা হ্রকে সংঘটন-সঙ্কেত প্রকাশ করা প্রায় অসম্ভব ব্যপার। সালকিউরিক প্রসিদ্ধের ভিতর দন্তার টুকরা কেলিয়া দিলে হাইড্রোকেন গ্যাস তৈয়ার হইতে থাকে। রাসায়নিক জিয়া বা সংঘটনকে বাংলা হরকে লিখিতে গেলে এইয়প দাভার:—

জि+ हा, मा अ<sub>व</sub> = कि मा अ<sub>व</sub> + हा,

ইছা একেখারেই প্রথার হইল না। সালকার প্রমাণুর সঙ্গেত ইংরেছীতে '৪' হইলেও বাংলায় 'সা' একেখারেই মানাইতেছে না। কালি সিয়'মের ইংরেছী সঙ্গেত লে, আর ক্যাডমিয়াথের লো.। বাংলায় সাংকেতিক লিখিতে হইলে ছই ক্ষেত্রেই 'ক্যা' লিখিতে হয়, অথবা প্রথম ক্ষেত্রে 'ক্যাল' এবং খিতীয় ক্ষেত্রে 'ক্যাড'। করমূলার দিক হইতে এ সবই আচল। স্থতরাং সাংকেতিক লিখনে রোমান হরকের আশ্রয় না লইয়া উপায় নাই। উপরের সংঘটন রোমান হরকে এই রক্ম দাভায় :~~

 $Z_n + H_2 S_{04} = Z_n S_{04} + H_2$ 

ইহার পরে বৈব রসায়নের (organic chemistry) কথা। সে এক বিশাল জগং। ভাছার পরিবি এডিংটনের সম্প্রসারণদীল বিধের ভার ক্রমাগত বাড়িয়া চলিয়াছে। এ ক্ষেও নামের বেলায় পুরাপুরি ইংরেজীর আশ্রয় লইতে হটবে ৷ "Patty acid"কে চৰ্ব্বি-অন্ন না বলিয়া বোৰ হয় ক্যাটি এসিড রাকাই ভাগ। তবে এলকোহলের স্থন্ধর বাংলা ক্রিয়াছেন কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়, 'এল' কাট্যা ওবু কোহল রাধিয়া। কোহলকে পুরাপুরি মানিতে কোন ভাপতি নাই, তবে মুশকিল হইতে পারে কোহল-রাসায়নিক-পরি-বারের অঞ্চলতাং লইয়া। Paraffin কে আংশিক অভিজেনছ কৰিয়া alcohol, alcoholকে আবার আংশিক ভাবে অন্তিৰেনের সহিত যোগ ঘটাইয়া aldehyde বা ketone পাওয়া যার, এবং সর্কাশেষে পুরামাত্রায় এই যোগ ঘটাইয়া aldetyde বা ketone হইতে ঐ পৰ্যাৱের লৈব এসিড পাওয়া বার। ইহার সাংক্তেক প্রকাশ এইরূপ হুইভে शादा:

পাারাকিন 👆 (এল) কোহল 👆 এলভিহাইভ বা কিটোন 🚣 এসিড।

এলভিহাইভের যদি 'এল' না কাটা হর তবে এল-কোহলের, 'এল' কাটিবার বিশেষ সাধকতা নাই। এ বিষয়ে কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের দৃষ্টি আকর্ষণ করি।

কলিকাতা বিশ্ববিভালরের পরিভাষা-তালিকার (চল-ভিকা"র পরিশিটে ইহা প্রকাশ করা হইরাছে) acid-এর পরিভাষা দেওয়া হইরাছে "অর", বা "এলিড"। "অর"কে একেবারে বাদ দেওৱাই তাল। Acid is sour, ইহার বাংলা অব্লের হাদ টক বা অব্লের হাদ অব্ল এইরপ লেবা হাজকর। ইহার চেরে লেবা তাল এসিড টক বা এসিডের লাদ টক। বাংলার নাম লিবিবার বেলার উচ্চারণের সম্বতি রাবিরা য কলা ইত্যাদি বত বাদ দেওরা যার ততই তাল। এল-কোহল, (যদি 'কোহলে'র পরিবর্তন করিতে হয়), তবে এল-কোহল, এলভিহাইড, এসিড লিবাই তাল। ইহাতে লিবিবার ও হাপাইবার বঞ্লাট অনেক ক্যিবে, বিশেষতঃ যথন এই সম্বর্ণ যে-কোন জৈব রসারনের পুত্তকে বছ বার লিবিতে হয়। "কলিকাতা বিশ্ববিভালর" acid-এর বানান (চলছিকার যাহা আহে) আাসিড লিবিরাছেন বলিরা ইহার উল্লেখ ক্যিতে হল। তাই বলিরা ক্যালসিরাম ও ক্যাভ্রিয়ামকে কেল-সিরাম ও ক্তেমিয়াম লিবিলে চলিবে না।

চলভিকার যে পরিভাষার তালিকা দেওরা হইরাছে তাহা কোন কোন কেনে হর্বল। হই-একট বিশেষ প্রয়োজনীর কথার কোন পরিভাষা আবার দেওরাই হর নাই। পদার্ধ-বিদ্যার তালিকার "condenser" এর বাংলা দেওরা হর নাই। অপচ এই কথাটর প্রয়োগ বিহুং ও রেভিওর পুতকে হাজার হাজার বার দরকার হর। "condensation যখন "খনীভবন" condenser-এর বাংলা করা যাইতে পারে "ঘনকার" অথবা ঘনী যস্ত্র। "Balance"-এর বাংলা দেওরা হইরাছে "তুলা"। যদি বাংলা করিতে হর—The cotton used in this experiment was weighed on a sensitive balance, তাহা হইলে কি লিখিব যে, 'এই পরীক্ষাতে যে ভূলা ব্যবহার করা হইয়াছিল তাহা একট বিশেষ অমুভূতিশীল ভূলার ওজন করা হইয়াছিল গ'— বর্ডমান লেখকের মতে balance-এর বাংলা বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে ব্যালাল রাধাই ভাল, বিক্ষেতঃ কথাট বর্ষন সকলের এভ বেশী পরিচিত।

বেলগাণীর বাংলা বছকেনে বাল্ণীর শক্ট দেবিরাহি, কিছ এবন হইতে ইহাকে বাল্ণীর শক্টের পরিবর্তে 
টান শক্ট বলিতে হইবে। Gas, Steam, ও Vapour এই 
তিনটি কবা ভাবিরা দেবিবার মভ। Gas ও Vapour-এর 
ভিতর ওরুতর বৈজ্ঞানিক প্রভেদ বালার ছল বিববিভালর Gas-এর বাংলা গ্যাসই রাবিরাহেন। Steam আর 
Water Vapour-এর ভিতরেও ওরুত্বপূর্ণ পার্বক্য, সেইকল 
Steam-এর বাংলা টানই রাবা হইরাহে। এই পর্যান্ত বেশ 
ব্বিতে পারা গেল। কিছ Vapour-এর বাংলা বে কেন 
বাংলা হইবে ক্লোরিব বালা, Water Vapour-এর কল-বালা। 
ভাবার বিক হইতে ঠিক হরে বাজিভেহে না। বাংলা ভাবার 
কলের সহিত বালোর সংকারের বোগ রহিরাহে, ববিও লে 
বোগ বৈজ্ঞানিক নয়। বাংলা উপভালের বারিকা অঞ্জ-বালোর

ভিতর দিরা শ্রিরত্বের র্থছবি দেখিরা থাকে, বাংলাদেশে বালীর শক্ট দেশ হইতে দেশান্তরে পান্তি দের। স্তরাং Gas আর Steam বর্থন গ্যাস ও স্তীম রহিল, তর্থন Vapour-ও ভেপার থাকিলেই ভাল ছিল। এইরূপে বিশ্ববিভালরের ভালিকার কিছু কিছু সমালোচনার অবকাশ রহিরাহে, স্তরাং এই ভালিকাকে চূড়াভ না বরিরা পুনরার ইহার আলোচনা, সংশোধন ও পরিবর্তনের প্ররোভন।

ইছার পরে গবেষণার কথা। কোন ভাষায় আমরা আমাদের গবেষণার ফলাফল লিপিবছ করিব ? গবেষণা ব্যাপক ব্যাপার। আমাদের গবেষণা এখন্ত এমন ভরে আসিরা পৌছার নাই যে, বিদেশীরা ইহার জভ বাংলা, হিন্দী বা বছ কোন ভারতীয় ভাষা নিবিবে। রামন-একেই-এর মত গবেষণাবলক কার্যা দৈনন্দিন ব্যাপার নছে। বর্তমান প্রতিযোগিতার দিনে বিশেষ বিশেষ গুরুত্বপূর্ণ গবেষণার ক্ষেত্রে নিৰের মৌলিক দাবি প্রতিষ্ঠিত করার প্রবোদনে যত শাত্র সম্ভব গবেষণার কলাকল বিদেশী ভাষার বিশ্বের দরবারে উপস্থাপিত করা প্রয়োজন। অনেক সময় একই সমস্তা লইয়া দেশে দেশে যুগপং কাজ হইরা থাকে, সকলের আগে যিনি সমাবান দাবিল করিবেন ক্রতিত্ব তাহারই। রামণ-একেট্র প্রকাশ করিতে দেরি করিলে হয়ত পদার্শবিদ্যার নোবেল পুরস্কার এবন পর্যায় ভারতবর্বে আসিত না। ফুতরাং গবেষণার ফলাফল আমাদের ইংরেজী ভাষাতেই সাধারণতঃ প্রকাশ করিতে হইবে। তাহা ছাড়া গবেষণা করিতে হইলে পুথিবীর কোথার কি বৈজ্ঞানিক গবেষণা-কার্য্য হইভেছে ভাষা জানা দরকার। সেইজ্ঞ ইংরেজী ও ছই-একট ইউ-রোপীর ভাষা, বিশেষ করিরা কার্মাণ ভাষা কানা দরকার। এ স্ববছার ভাপানী পবেষক-বিদ্যার্ণীদের মত ভাষাদের ছাত্রদেরও, বিশেষ করিয়া বাঁহারা পবেষণা করার আকাজা রাবেন তাঁহাদের ইংবেজী ভাষা আরম্ভ করিবার জন্ত বিশেষ ষত্ৰপৱাহৰ হুইতে হুইবে।

বাংলা ভাষার বিজ্ঞান-পাঠ আমাদের পক্ষে একাছ নৃতন।

ছণ্ডা ভাঙিতে সমর লাগিবে। এই ছণ্ডা দূর করিবার
পক্ষে একট বিশেষ মাসিক বা পান্দিক বৈজ্ঞানিক বাংলা পত্রিকার একাছ প্রয়োজন। বিভিন্ন লেবকের বিভিন্ন বিষয়ে এই
পত্রিকার ভব্ বৈজ্ঞানিক প্রবন্ধ ও পুত্তক বারাবাহিক ভাবে
প্রকাশিত হববে। ইহাতে বিশেষ আলোচনা বিভাগ পাকাও

ছর্কার। ইহাতে নানা লেবকের প্রকাশভঙ্গী হইতে নৃতন
নৃতন শব্দ চরন ও বৈজ্ঞানিক ইভিরমের স্কট হইবে। এইরূপ
একট পত্রিকা অভতঃ প্রথম বিক দিরা যে লাভজনক
হববে না, ভাহাতে সন্দেহের অবকাশ নাই। কোন
ব্যবসার-প্রভিত্ঞানের পক্ষে এইরূপ একট পত্রিকা-প্রকাশের
প্ররাস বে লাক্য্যবিভিত্ত হুইবে না ভাহাও বানি। কিছ

বাংলা ভাষার বৈজ্ঞানিক শিক্ষা-প্রসারের দিক হইন্ডে এইরপ একটি পত্রিকার প্ররোজন এত বেশী বে, কলিকাতা বিশ্ববিভালরের ইহার প্রকাশ ও পরিচালনার হারিত্ব প্রহণ করা উচিত এবং সরকারের কর্তব্য ইহার সমস্ত বারভার বহন করা। লক্ষ লক্ষ চালা ক্ষালা প্রকাশ একটি পত্রিকা করেক বংলর চালাইলে যে ক্ষল পাওরা যাইবে তাহার তুলনার বরচের অহ অকিন্ধিংকর। যে-সব বাঙালী বৈজ্ঞানিকের মাতৃভাষার লিখিবার ক্ষাতা আছে তাহার। বিজ্ঞানিকের মাতৃভাষার লিখিবার ক্ষাতা আছে তাহার। বিজ্ঞানিকের মাতৃভাষার লিখিবার ক্ষাতা আছে তাহার। বিজ্ঞানের সহক ও হরহ আলোচনা উত্তরই প্রবিদ্ধানরে বা পুত্তকাকারে এই পত্রিকার প্রকাশ করিবেন। এই পত্রিকা সর্ক্ষসাধারণের জন্ম হবৈনা, ইহা তবু বিজ্ঞানের ছাত্রহাত্রী ও শিক্ষকদের চাহিলা মিটাইবে।

সর্বাসাবারণের জন্ত ইংরেজীতে যাহাকে বলে lay public, সাময়িক পত্রিকার সহক ও সরল ভাষার বৈজ্ঞানিক প্রবাদ আবদ্ধ আবদ্ধ আবদ্ধ বেশী পরিমাণে প্রকাশিত হওয়া উচিত। বে বে পত্রিকার কর্ত্তপক্ষ বৈজ্ঞানিক প্রবন্ধ প্রকাশ করিতে ইছুক, উহাদের উপস্কুক বিভাগীর সম্পাদনার ব্যবহা রাখা প্ররোজন। ইহা না থাকিলে লেখার যথেচ্ছাচারের প্রাকৃত্তিব দেখা যার। কোন ভাজ্ঞার-লেখক একটি বিশিষ্ট বাংলা মাসিক পত্রিকার ক্ষেক বংসর আব্দে ক্যালোরির সংজ্ঞা দিতে গিয়া লিখিরাছিলেন যে এক সের জলের তাপমাত্রা এক ভিত্রী বাড়াইতে যতটা উদ্ভাশের প্রয়োজন ভাহাই এক ক্যালোরি। ক্যালোরি ক্যাটা যখন সর্ব্বত্র ব্যবহৃত, তথন এক সের এক ক্যিলোপ্রামের বতই কাছাকাছি হউক না কেন, সংজ্ঞার সেরের পরিবর্ত্তে কিলোপ্রামই লেখা উচিত ছিল।

আর একজন লেখক কোন নাম-করা বাংলা দৈনিকের রবিবারের আসরে "পিরজেতে আগবিক শক্তির প্রয়োগ" বুৰাইতে গিয়া লিবিয়াহিলেন,—"…এক কিলোওয়াট ঘটায় বৈছ্যতিক শক্তিতে চারটা কারধানা চলে—আণবিক শক্তি ব্যবহার করিলে বিশেষ কেত্রে ৮টা থেকে ১২টা পর্যন্ত কার-ধানাও চলিতে পারে।" কি বরণের কারধানা, ভাহার মোট বোৰার (total load) পরিমাণ কি ভাছার উল্লেখ নাই, ভবুঙ लावक अक किलां ध्वां कि को को बां बां ना है हो ना है दिन अवर (व পরমাণবিক শক্তি বর্তমান সভ্যতাকে নিশ্চিম্ করিয়া কেলিভে পারে, ভাষার ছারা মাজ ৮ট ছইতে ১২ট পর্যন্ত কার্থানা চালু রাবিবেন। এইরপ বৈজ্ঞানিক লেখা প্রকাশ করা সমীচীন নতে। উক্ত লেখক ঐ প্রবছেই পদ্মনাণবিক পক্তি বে ব্যক্তিগত ব্যবহারের জন্ম শীত্রই বটকাকারে পাওরা যাইবে এমন ভরসাও বিহাহিলেন। ভালা না পাওরাতে ক্বিরাজী ও ণেটেউ ঔষবের কারবার বাঁহারা করেন ভাঁহারা হয়ত হতাল হইবেন, কিন্তু আমরা হতাশ হইতেহি বাংলা বৈভানিক

সাহিত্যের ভবিত্তৎ মনে করিয়া। এ বিষরে বাংলা সাময়িক পত্রিকাণ্ডলির দায়িত্ব গুরুতর। একদা রামেক্সক্ষর ত্রিবেদী সহক সরল প্রাঞ্জল বাংলায় বৈজ্ঞানিক প্রবন্ধ দিবিয়া বাঙালী পাঠকদের বিশ্বিত করিয়াছিলেন। ত্রিবেদী মহাশয়ের মত দিক্পাল সাহিত্যিকের দেবা সচরাচর সাহিত্য-ক্ষরতে মিলিবে না। কিছু দিক্পাল না হটলেও যে-সকল বৈজ্ঞানিক সাহিত্য-ক্ষেত্রে আছেন, দেশের প্রতি তাঁহাদের

শুক্রতর কর্ত্তব্য রহিরাছে। তাঁহারা বতটা সম্ভব প্রব ও বহু-সহকারে তাঁহাদের বৈজ্ঞানিক প্রবদ সকল রচনা করিবেন এবং যে সম্পাদকেরা তাহা হাপাইবেন তাঁহারা হেবিবেন বে কোন ভূল তথ্য যেন সর্বাসাধারণের নিকট পরিবেশন করা না হয়। এক কথার, যে বৈজ্ঞানিক সাহিত্য বাংলা ভাষার অব-হেলার ভিতর দিয়া গভিষা উঠিতেছে তাহার প্রতি আনাদের বথেই পরিমাণে বছশীল হওবা উচিত।

## ওয়ার্দ্ধা শিক্ষা-পদ্ধতি

### শ্রীমোহিতকুমার সেনগুপ্ত

ওয়াৰ্ছা শিক্ষা-পদ্ধতি একেবারে খুচনা হইতেই বছক্ষেত্রে বিরূপ সমালোচনার বিষয়ীভূত হইয়াছে। পুরাতন ও চলিত শিক্ষা-পছতির সহিত এই মৃতন পছতির পার্বক্য এতই বেশী যে, निकासगढ रेश अनम बादमाण्यनत रुष्ठे कतिहार । ताब-बीजि अवर निकाद अध्यातक ब्राह्म कर मान्य रहे করিয়া পাকিবে। মহাত্ম গাড়ী এই শিক্ষা-পরিকল্পনাট প্ৰথম প্ৰকাশ করেন বলিয়া কংগ্ৰেস বিরোধীদল ইছাতে কংশ্ৰেপী নীতির গদ্ধ আবিষ্কার করিয়া ইছার বিরুদ্ধ সমালোচনা করিতে থাকেন। লীগপদ্বী মুসলমানগণ ওয়ার্ছা পরিকল্পনায় ইসলামবিরোধী আদর্শের ছারা দেবিরা ইহার কাছই বেঁষিলেন না। বিশু-মহাগভা, সোপ্তালিই ও ক্ষুনিই নেভাৱা নিৰ নিৰ রাবনৈতিক আদর্শ লইয়া এতই ব্যস্ত যে, এই মূতন শিকা-প্ৰতিট ভালত্বপে পত্নীকা কবিয়া দেখিবার প্রয়োকনও ভাঁহার। বোৰ করিলেন না। বিভিন্ন রাজনৈতিক ঘলের ভেদবৃদ্ধি-बार्यामिक नमारमाहमा वाम मिरमक बातक मिद्रार्थक निकारिक ওয়ার্ছা-পছতির বিরুদ্ধে যে সকল অভিমত প্রকাশ করিয়াছেন সেগুলির যৌক্তিকভা পরীক্ষা করিয়া দেখা উচিত।

ওয়ার্ছা-পরিকলনার হাবলহনের দিকটা সমালোচকছের

গৃষ্টি সবচেয়ে বেশী আকর্ষণ করিয়াছে। মহালা গাছী বলিয়া
ছেন যে, বুনিয়াছী বিভালয়ের ছেলেয়া যাহা উংপন্ন করিবে,

তাহার বিজ্ঞালর অর্থে শিক্ষকের মাহিনা এবং বিভালয়ের

অভাভ বরচ চলিবে। বুনিয়াছী বিভালয় সম্পূর্ণ হাবলছী হইতে
পারে কিনা এবং ইহার বিরুদ্ধে বলিবার কি কি আছে তংসমুদ্ধর আলোচনা করিবার পূর্ক্ষে আমাদের ভাবিয়া দেবা

উচিত, মহালা গাছী হাবলহনের উপর এতটা জাের দিয়াছিলেন

কেন ? ১৯৩৭ সালে গাছীকী বুনিয়াছী শিক্ষার পরিকলনা

বেশবাসীর নিকট উপছাপিত করেন। তবন ভারতবর্ষের

ভবেলট প্রাহণে ভংগ্রেসীলন রন্ধিম প্রকণ করিলেও কেন

পরাধীন ছিল। বিদেশী শাসকসপ্রধার শিক্ষাবিভারের বাদ ভভ ব্যঞ্জ ছিল না, তাই শিক্ষাবিভারের বাদ উপর্ক্ত অর্থাভাবের অনুষ্ঠি সকল সময়েই দেখানো হইত। দেড় শত বংসর ইংরেক্ষণাসনে এদেশে শিক্ষিতের সংখ্যা দাঙাইরাছে শতকরা মাত্র দল কন। দেশে শিক্ষাবিভারের বাদ বিবেশী সরকারের উপর ধোল আনা নির্ভর করিলে দেশের নিরক্ষরতা সম্পূর্বভাবে দূর হইবার আশা স্থ্রপরাহত বলিরাই মহাত্রা গাঙ্গী বুনিরাদী বিদ্যালয়কে স্বাবলম্বী করিতে চাহিরাছিলেন।

वनिशामी निकास विकासवामीया वालन-विमानशक স্বাবলম্বী করিতে হইলে শিশুকে কঠোর পরিশ্রম করিতে হইবে; ভাহাতে শিশুর স্বাস্থ্য ভাঙিয়া যাইবে এবং ভাহার লেবাপড়ার দিকে শৈধিল্য আসিবে। কর্মকেন্সিক শিকা-প্ৰতিতে কৰ্মের সাম পৌণ, শিক্ষার স্থানই প্রধান-কর্ম ছইবে শিক্ষার বাহন। বিদ্যালয়কে স্বাবলম্বী করিতে হইলে বাহনকে আরোহীর চেয়ে বেশী মর্ব্যাদা দিতে হয়। শিশু চার নিজের হাতে জিনিষপত্র নাজিরা চাজিরা দেখিতে, ভাঙিতে এবং গভিতে। বন্ধ ধরের মধ্যে বসিম্বা মুক্তিত পুস্তকের উপর মনোনিবেশ করিবার চেষ্টা করিতে করিতে শিশুর চঞ্চ চিত্র অন্থির হইরা উঠে। বিভালত্তে শিশুকে বিভিন্ন প্রকার হাতের কান্ধ করিতে দিবার উদ্বেপ্ত এই যে, ইহাতে এক দিকে বেষন শিশুর ভাঙাগড়ার প্রবৃত্তি পরিভূপ্ত হুইবে, অন্ত দিকে ভেষ্টি जाराक निकाशन कदां अरक्तांना **रहे**त्व । कि**ड बना**त्व আমাদের মনে রাখিতে হইবে বে, কর্মবােদী মহান্তালী বিভিন্ন ন্ত্ৰীভদী বারা শিক্ষাকে বেবিয়াহেন। তাঁহার মতে ক্পতে কর্ম্বেরট প্রাধান-কর্মকে প্রবিধার কটেই জানের আবর্ডকতা। গাৰীকীর মতে বিদ্যালয়গুলি কর্মকেঞ্জিক হইবার উচ্চেত্র। निश्च विद्यानतः शाकिवात जनत्वरे कांच कतिए निवितन তৰ্শ্বভীৰনে ভাষাকে বাভা পাইতে ঘইৰে না।

উক্ত শিক্ষাপ্রভিন্ন একবল সমালোচক বলেন-শিশুর একট নিজয় লগং আছে। সেই কলনার লগতে তাহার একছৰ আধিপতা। শিশু কোন এবা পাইলে ভাহাকে ভাঙিয়া চুরিয়া বুতন করিয়া গভিষা ভোলে-প্রয়োজনের তাগিদে নর, ভাষার করনার ধেরণার। যদি বুনিরাদী বিদ্যালয়কে স্বাবলয়ী হইতে হয় ভাষা হইলে শিলকে এমন জিনিয় তৈরি করা শিকা - দিতে হইবে বাজারে যাহার বিশেষ চাহিদা আছে। কিন্ত ইহাতে শিশুর স্বাধীনতা কর হয়, সে আপন করনার ভাগিদে যাহা ইচ্ছা তৈরি করিতে পারিবে না--পূর্ণবরস্বদের পছন্দ অপছল ভাষার কাজের উৎকর্ষাপকর্বের মাপকাটি হটবে। এই প্রয়াসের কলে শিশুকে ভাহার শিশুর হুইতে বঞ্চিত क्रिवा पूर्ववश्रदक्त कुछ गरक्षत्रत्व भतिन्छ क्रवा रहेत्व।-- धहे শ্রেণীর সমালোচকরা ভূলিয়া যান যে, শিশুর ছগং পূর্বক হটলেও তাহা পূৰ্ণবয়কদের অন্থকরণে গঠিত। শিশু আপন-মনে যে কান্ধ করে তাহাতে সে পূর্ণবয়ন্তদের অঞ্করণ করে। অভএব যদি শিশুকে সামাল একট নির্দেশ ও শিকা দিলেই সে বাস্তব জীবনের প্রৱোজনীয় দ্রব্যাদি তৈয়ারি করিতে পারে তাহাতে দোষের কি আছে ? তাহা হাড়া শিশু যধন দেৰে বে, তার হাতের তৈরারি জিনিব তার বাপ, মা, ভাই-বোন বাবহার করিভেছে, তখন ভাহার যে আনক হয় ভাহার তুলনা কোধার ?

কেছ কেছ বলেন, খেলাই শিশুর শ্রেষ্ঠ কাষ্য। খেলিভে পাইলে শিশু যে আনন্দ পায় আর কিছুভেট ভাছা সম্ভব নয়। হাতের কান্ধের মাধ্যমে শিক্ষা দিবার সময় শিশু-চরিত্তের **এই फिक्टोंड श्रांक जाशास्त्र सका दाविएक एटेटा। जला**. ভকলী, চরধা, কাঠ এবং ছভারের যন্ত্রপাতি, উদ্যান-রচনার বন্ত্রপাতি শিশুর হাতে দিতে হইবে। শিশু এই যন্ত্রপাতি লইরা' নিজের ইচ্ছামত নাডাচাড়া করিরা খেলা করিবে। ভিত্ত ম্রব্যাদি উংপদ্ন করিবার দিকে অতিরিক্ত নত্তর দিলে পিক-মনের স্বাভাবিক আনন্দ নষ্ট হুইবে একং ভারার উপর বাহির হইতে জোর করিয়া কালের বোকা চাপানো হইবে। এবানে সমালোচকেরা একটা কথা ভূলিরা যান-শিশুরা ছেচ্ছার ও মনের আনন্দে যে কাভ করিতেতে সে কাভের ফলাফলের দিকে লক্ষ্য ৱাৰিলে ভাষার যানসিক আনন্দ লোপ পাইবে। শিশু বে জিনিস তৈরি করিবে ভাষার প্ররোজনীয়ভা এবং উৎকর্বের দিকে লক্ষ্য না বাকিলে শিশু-চরিত্রে নিয়নামুবর্ত্তিভার অভাব এবং কাজে শিবিলতা পরিলক্ষিত হইবে। ইহার ফলে শিশুর পক্ষে ভবিষ্যং শীবনে একাঞ্চিত্তে এবং একনিঠ ভাবে কর্ম সন্দাদন ভরা কটিন হইবে। এই প্রসলে আর একটা কথা মনে ভাবিতে হইবে। আমেরিকা ও ইংলওের মত সম্বিদালী বেশে বিভিন্ন প্রকারের বৃল্যবান উপকরণ লইয়া শিশুদের ধেলা করিতে কেওয়া যাইতে পারে, কিছ ভারতবর্ষের মত গরীৰ দেশে আমরা সামাত কিনিবও বুণা নই হুইতে দিতে পারি না। মনে হর এই বিষয় বিবেচনা করিরাই গানীত্রী প্রয়োজনীয় জিনিবের উংপালনের উপর জোর দিরাছেন। অবস্ত একথা খীকার করিতে হুইবে যে, উপর্ক্ত নিক্ষকের সাহাযা ও শিক্ষান ব্যতিরেকে ব্নিয়ানী শিক্ষার সফলতা লাভ করা কৃষ্টিন। অভূপর্ক্ত শিক্ষক হরতো প্রবাদি উংপাদনের উপর অতিরিক্ত জোর দিবেন—তাহাতে শিশুর মনের আনক্ষ নই হুইরা বাইবে; কিয়া হুরতো তিনি উংপাদনের দিকে একেবারেই নজর রাধিবেন না, যাহার দক্ষন শিশু-চরিত্রে শিক্ষকতে এই হুইট বি দ সম্বন্ধে সম্ভাবে সত্তর্ক থাকিতে হুইবে।

অনেক শিক্ষাবিদের মতে ওয়ার্জা পরিকল্পনার প্রধান দোষ **ছইভেছে এই যে. ইছাভে ৭ বংসর হইভে ১৪ বংসর বরঃক্রম** পর্যাত্ত শিশুর শিক্ষা-ব্যবস্থা একই রূপ করা হইরাছে। মনো-विकारन बना एरेशारक, ১১ वा ১२ वश्मद वश्मि निश्व कीवरन একটা সন্ধিক্ষণ। এই বয়:সধিকালে প্ৰথম সে শৈশৰ ছইতে কৈলোৱে পা দেয়, তাহার শারীরিক ও মানসিক আকর্ষ্য পরি-বৰ্ত্তন দেখা যায়। জন হইতে মৃত্যু পৰ্যন্ত মানুষের শরীর ও মনের ফ্রমবিকাশের যে বিভিন্ন ভর আছে তরবো ১১ হইতে ১২ বংসর বয়সের যে ভর তাহা বিশেষ ভারুত্বপূর্ব। ১০ वरमत वसम भवास निस्त निका-वावसा त्य जात्व हत्म, ১১।১२ বংসর বয়সে তাছার পরিবর্তন প্রয়োজন। কিছ ওয়ার্ছা-পরিকল্পনায় ৭ হইতে ১৪ বংসর বয়স পর্যন্ত বালক-বালিকাদের अकरे छाट्य निकामारमञ्ज गुरुश चारह । यदम देश अञ्चादी-পরিকলনার এটা সভ্যকার একটা ত্রুট এবং পরিকলনা-खनबमकाबीदा के निरक स्मार्टिंग पृष्टिगां करवन नारे। ১১ এবং তদুর্ক বংগর-বয়ন্ধ শিশুর শিক্ষা তল্লিয় বয়সের শিশুদের অপেকা ভিত্র ধরণের হওয়া দরকার। ১১ বংসর বয়সে একটা সাৰাৱণ পরীকা লইয়া শিশুদের যোগ্যতা এবং ক্রচি অনুসারে বিভিন্ন রক্ষের শিকা-ব্যবস্থা করা উচিত।

কাহারও কাহারও অভিবাস এই যে, বুনিরালী শিক্ষাপ্রছতিতে একই হাতের কাজের মাধ্যমে সকল শিশুকে শিক্ষা
দিবার ব্যবহা করা হইরাছে। কিছ পাএতেদে শিশুদের ফ্রচি
আলাদা আলাদা। বিভিন্ন ফ্রচিসম্পার শিশুদের একই বরণের
কাজ ভাল লাগিতে পারে না। সকল শিশুকে একই হাতের
কাজের মাধ্যমে শিক্ষা দিবার চেটা মনোবিজ্ঞান-বিক্রছ। এই
অভিবোস বাহারা করেন, তাহাদের একটা কথা মনে রাবিতে
হইবে যে, একই কাজের নানা তর আছে—বিভিন্ন প্রস্তৃতির
শিশু কাজের ভিন্ন ভিন্ন ভরে মনঃসংযোগ করিতে পারিবে
বলিরা আশা করা বার। ওয়ার্ছা-পরিক্রনার হুতা কাটাকে
আবারিক (basic শিল্প বলিরা প্রহণ করা হুইরাছে। কার্পালের

বীক্ষ বপন হইতে হতা কাটা পর্যন্ত এই শিলের এতঙাল তর আহে বে, প্রত্যেক শিশুরই ইহার কোন না কোন তর তাল লাগিবার কথা। বাহারা একই বিভালরে বিভিন্ন প্রকারের শিলের মাধ্যমে শিক্ষা দিবার প্রভাব করেন উহারা ভূলিয়া যান যে, বিভিন্ন প্রকার শিল্প শিক্ষা দিবার যোগ্য শিক্ষক পাঙরা কটিন এবং আহাদের মত দরিদ্র দেশে বিভিন্ন প্রকার শিল্প শিক্ষা দিবার বরচ প্রত্যেকট ব্নিয়ালী বিভালয়ের পক্ষেবহন করাও কটিন। তাহা ঘাড়া ভার এক কথা, একই শিলের মাধ্যমে শিক্ষাপ্রদান করিলে তাহার বিভিন্ন ভরের মধ্যে কি শিক্ষণীয় বিষয় আছে তৎসবত্বে বিশ্বন্দ পরীক্ষা চলিতে পারে।

অনেকে প্রশ্ন করিয়াখেন যে, সকল বুনিয়াদী বিভালয়ে স্থতা-ভাষাতে আধারিক শিল্প হিসাবে লওয়া হইবে জেন ? সকল বিভালয়ে স্থতা কাটাকেই আধারিক শিল্প হিসাবে লইতে क्टेंद्र अपन कथा बारे--- वद्रश कांकित (हारमन विर्शार्ट वना ভটয়াছে যে অঞ্চলে কোনও বিশেষ শিল্প সম্বিক প্রচলিত আছে ভাছাকেই আধারিক হাডের কাজ হিসাবে বুনিয়াদী বিভালয়ে ঞাহণ করা উচিত। তবে কার্যাতঃ সকল বুনিয়াদী বিভালয়েই স্থভা কাটাকে আৰাবিক শিল্প হিসাবে গ্ৰহণ করা হইরাছে। ভাছার কারণ, যাছাতে শিক্ষার্থী স্বাবলম্বী হইতে পারে সেই উদ্বেশ্রেই পার্থীকী বুনিয়াদী শিক্ষা প্রবর্তন করিতে চাহিয়া-हिल्म। चाक्काम (परिट्ड भारे, भाषामार्थित हिल्म अक्ट्रे কারণ বিভালয়ে সে হাতে-কলমে এমন কিছু শিবে নাই যাহাতে প্রামে থাকিয়াই সে নিজের জীবিকার সংখান করিতে পারে। এইক্সই পাধীৰী শিকাৰ্থীদেৱ ধাবলধী করিয়া তুলিতে চাহিয়া-हिल्म। वायमधी इटेट इटेल कीयनशातलय श्रापिक ধ্যোত্রতলি পুরণ করিবার উপযোগী শিকাগানের বাবস্থা সর্ব্বাথে করা উচিত। অধ ও বগ্রই মাসুধের জীবনের প্রাথমিক প্রয়োজন। এইজ্জই দেখি প্রত্যেক বুনিয়াদী বিভালয়ে স্থতা काठीरक काश्रादिक भिन्न अन्य कृषिकादीरक महायक काक ছিলাবে গ্রহণ করা হইরাছে। গাছীজার মতে, শিশুদের হাতের टेक्साती प्रवाशित विक्रयन्ता धाता विकालस्त्रत चत्रक विलाद । ইয়াতে অনেকেই বলিয়াছেন যে, শিশুদের হন্তনিশ্বিত किनित्यत চारिए। वाकारत एटेटर ना. कातन पूर्ववश्वकरणव रेंख्यां विभित्यत कुनमात्र काश मिका मिक्टे (अपेत स्टेर्प। অতএব বুনিয়াণী বিভালয়ে এমন জিনিষ ভৈয়ারি করিতে क्टेंटर बाकार हाक्सि बाकिटरहे। बाबाटबर एटम बर थ ৰলের অভাব অভাবিক-কাৰেই এই ছুইট জিনিবের চাহিদাও সবচেয়ে বেৰী। বরা যাক, কোন ছানে ছবি, কাঁচি ভাল टेख्यांति एतः। कारकरे त्नरे चारनत वृनिवारी विकासरत हति काठि निर्मानक चाराविक नित्र दिनाद अरन कवा घरेन।

হেলেরা বে ছবি কাঁচি ভৈরারী কবিল ভালা উন্নভ বরণের না হওয়াবই সভাবনা। ছবি কাঁচি নিভ্য প্রবোদনীর জিনিব নছে। কাছেই কোন পরিবারের লোক বৰন একধানি ছবি কিনিবে তথ্য দেখিৱা শুনিৱা কিছু বেশী দাম দিৱা ভাল किनिवरे क्य कविद्य। অপেকাঞ্ড ক্য হাম হইলেও শিশুদের ভৈরারি ছবি কাঁচি লোকে সাধারণভ: কিনিভে চাহিবে মা। কা**লেই মনে হয় প্রত্যেক অঞ্চলের বুনি**রাদী বিভালয়ে খতাকাটা বা ক্ষিকাৰ্যকে আৰাব্ৰিক ছাতের কাৰ হিসাবে এহণ কৱিয়া খানীয় কোন না কোন বিশিই শিলকে সহায়ক শিল হিসাবে এহণ করা উচিত। ইহার মধ্যে আরও একটা কথা আছে। অভাত শিলের তুলনার খুতাকাটা ও কৃষিকার্য্যের বিভিন্ন ভরের মাধ্যমে শিকা-দানের স্থােগ অনেক বেশী, কাজেই স্তাকাটা ও কৃষি-কাৰ্য্যকে আধারিক হাতের কাৰ হিসাবে গ্রহণ করা একাছ আবৈষ্ঠক।

বুনিরাদী বিভালয়ে কোন পাঠ্য পুস্তকের স্থান নাই। निक निकानाक कतिरव कारकत मागुरम । अरमक निकारिक বলেন, কাব্দের মাব্যথেই শিকা আরম্ভ করা উচিত কিছ क्विम कार्या भाषाया अक्रम विषय मिका प्रश्वा अक्रम নছে। ধেশের বিখ্যাত সাহিত্যিক ও কবিছের রচনার সঙিত পরিচিত হইতে হইলে ভাহাদের রচিত পুত্তকাদি নিয়মিত পাঠ কথা উচিত। ইতিহাস সম্বন্ধে একৰা বলা যাইতে পাৱে एक काटकब मांगाय अ विषय श्रिवर्ग अवर क्रमरवंक कांग দান করা সম্ভব নহে। অবস্ত স্থতা কাটার সময় শিশুদের নিকট বিভিন্ন যুগে ভারতের এবং অভাত দেশের পোশাক-পরিচ্ছদ ইত্যাদির কিন্তুপ পরিবর্ত্তন হুইরাছে তৎসম্বন্ধে আলোচনা করা যাইতে পারে—ভারতের ব্রব্যবসায়ের ইতিহাস আলোচনা করাও সত্তব। কিন্তু এ বরণের কান্দের মাধ্যমে ইভিহাসের बादावाहिक छानमान कदा भवत विवश यत्न एव मा । कात्कद মাব্যমে শিশুর মনে ভূগোল সহত্তে মোটামুট একটা বারণা क्वारेश (मध्या गारेएक शास्त्र, किन्न अकारन कारकवर्ग अनर পুৰিবীর ভূগোল সহতে সম্যক্ শিকাদান করা সত্তব নহে। वृतिवारी निकाद अवर्रकदा वरनन, खबू वर जानाविक निरम्न मात्रक्रा निका (क्थवा स्ट्रेट छान्। नर्स, निश्वत कीवनवाळाव প্ৰত্যেক ক্ষেত্ৰেই ঘৰনই সুযোগ ও সুবিধা হুইবে এবং প্ৰৱোধন **एका पिट्य जनने कालाटकं छैशबुक्त निका एकश्वा स्टेटन । अटे** প্রকারে ভাতব্য প্রায় সকল বিষয়ই অধিগত করা বিভৱ পক্ষে সম্ভব হইবে। ভগ্পৱি ইঁহারা বলেন যে, শিশুর অভিজ্ঞভার বাহিবে যে শিক্ষা প্রদান করা হর ভাহাতে ভাহার কোন প্রবোজন নাই। যধন প্রবোজন বোধ করিবে শিশু ভবন ৰত:এইড বইয়াই আতব্য বিষয় ভানিয়া লইবার চেটা ভয়িবে। ভাহাদের মতে ভারতবর্বের ইভিহাসের বারাবাহিক বটনাওনি

ভোৱ করিবা শিশুদের গলাবঃকরণ করাইবার চেঠার দরকার
নাই। অশোকের কত শতাবী পরে আকবর রাজত করিবাত্বেন, যোগল সাত্রাজ্যের পতনের কারণ কি এ সমত তর তর
করিরা না কানিলে শিশুর কোন কতি হইবে না। কিছু আমার
মনে হয়, কালের মাধ্যমে শিশুর বিভিন্ন বিষয়ে আগ্রহ কানাইরা
ভোলা বাইতে পারে বটে, কিছু সকল বিষয়ে সুসংবছ জান
মান করা কর্তব্য এবং তাহা করিতে হইলে স্থলিবিত পাঠ্য
পুতকের সাহায্য লওবা উচিত।

প্রচলিত শিক্ষা-পছতিতে পরীক্ষার আসন খুব উচ্চে।
ইহাতে শিশুর সারা বংসরের পরিপ্রমের কোন বুলাই দেওয়া
হর না যদি না সে পরীক্ষার নিজের ক্রতির দেবাইতে পারে।
লারা বংসর বিভালরের যাবতীর কার্য্যে অবহেলা করিয়া,
পরীক্ষার পূর্বের করেক দিন রাজি ক্ষাসিয়া পাঠ মৃবয় করিয়া
পরীক্ষার বেশী নম্বর পাইলেই তাহাকে ভাল ছেলে বলিরা
আভিহিত করা হয়। পরীক্ষার হই-তিন ঘটা সময়ের শিশুর
কার্যের উপর গুরুত্ব আরোপ করার ফলে ভার শ্বতিশক্তির
উৎকর্ষ সাবন হয় বটে, কিন্তু ভার অঞ্চাত্ত মানসিক বৃত্তির
বিকাশের দিকে ততটা লক্ষ্য রাধা হয় না। তাহা আছা
পরীক্ষার হারা প্রতিহ্বন্দিতাবৃলক মনোর্যন্তিকে উৎসাহ দেওয়া
হয়। প্রায় সকল শিক্ষাবিদ্ খীক্ষার করেন যে, চলিত
শিক্ষাপ্রতিতে প্রকৃত শিক্ষালাভ না হওয়ার কারণ পরীক্ষার
উপর এক্ষণ গুরুত্ব আরোপ করা। বুনিয়ালী শিক্ষার পরীক্ষার

शाम मारे। नश्मरत पूरे यांत अपनी यत अवर निकटकता निकारक कारका अकते। रहका दार्थम । अहे अवर्गमी अवर निक्कारव बांचा दिक्छ भवीकांव द्यांन व्यक्त कविवादि। পাক্ষাত্য দেশে আৰকাল বুৰিবৃত্তি পৰিমাণের পছতি (intelligence test) ध्वर्वांडण व्हेशारमः। वृतिशामी निकास वृद्धि बन्दर निर्मात-मक्तित क्षेत्रत निरम्प क्षत्रक चार्त्वाभ क्या एय नारे। अध्यक्ष विश्वण अभारमाध्यक्षा वरमन, वृश्यिमी শিকায় হাতের কাকের দিকেই কেবল লকা রাখা হইয়াছে. কিছ মানসিক ক্ষিওলির উৎকর্ষ-সাধনের প্রয়োজনীয়তাকে অবচেল। করা হটয়াছে। পরীক্ষার ছারা শিশুর উপস্থিতবৃদ্ধি শ্বতিশক্তি ও বিচারশক্তির বিকাশ হয়। বুদ্ধির্তি পরি-মাপের ছারা প্রমাণ হয় শিশু কি পরিমাণ বুছি ও বিচারশক্তি লইয়া ক্যিয়াছে। শিকার প্রকৃত উক্তের শিশুর দেহমনের স্কাদীৰ উৎকৰ্ষদাৰৰ কবিয়া তাহাকে স্থন্ন ও দায়িত্ব-আনসম্পন্ন নাগরিকে পরিণত করা। এই উদ্বেশ্ব সকল ক্রিতে হইলে শ্রীর ও মনের শক্তিনিচরের বিকাশের मिटक मन्नार्यात्रे एख्या डिडिड.। शूटक तना एरेबाए. বুমিয়াদী শিক্ষার পরিপোধকেরা মনে করেন বে পরীক্ষার ছারা প্রতিযোগিতাবদক মনোভাবের প্রশ্রম দেওরা হয়। ব্যক্তিগত প্ৰতিযোগিতা যতটা দোষের সমষ্ট্ৰণত প্ৰতিযোগিতা ভভটা দোষের নহে। কাবেই পরীকার কলাকল দেবিয়া ছাত্রদের প্রথম দিতীর ইত্যাদি ভাবে ভাগ না করিবা মোটাযুট করেকট শ্রেণতে ভাগ করা যাইতে পারে।

## মহাকাব্যের দিনগুলি এলো

গ্রীস্থবলসখা বন্দ্যোপাধ্যায়

দেশেছি দেদিল বাভায়ন-পাশে গুমভাঙা মাৰ্বাভে—
তারার দেশেতে প্রদীপের মালা আলোর জোরারে মাতে।
প্রান্ন কেনেছে হাদরের কোবে—এ দেশে থাকে ভারা ?
উত্তর তার পাইনিকো খুঁলে, বিন্মিত আঁথিতারা।
রাতের আকাশে ভবারেছি আমি, ভবারেছি কত বার—
কত ব্যববান তারার মাইতে ? উত্তর নাছি তার।
অমরারা বুলি মাতে উৎসবে সাজারে বরণভালা ?
মব্-মামিনীতে তাই-বে দেখেছি লক্ষ প্রদীপ-আলা।
কান্তনে সেধা আওন অনে কি ক্ল লোল-জাগা বনে ?
ব্যবার অঞ্চ ভবনও কি বারে উৎসব-ভতকবে ?
স্থবের বপন ভাঙিলে কি কানে জেপে ওঠে অভানিভা ?
ভূলো মা বছু, চির-বনতে লে বেশা অনিভিডা।

यत्तत प्रिट बद्धता नाद यत्न भित्त भीन भाषा— भीवन पृथिनी ; छेई-चाकात्म चाकान-जन्न नाका । छरेबात्म चाट राजात्मत कवि रुठार छ।विद्या भारे , चात चाट याता चयत चयत चरेबात्म याता नारे । ध्यय हन्न-वर्गत्व चानि पृथि त्य सत्तर्थीन, छायात्रिण तत्न राज्य भाग्न चाट्या राजात्व कि भन-नित्र १ त्कोक-विश्व चान्छ कि काशित्व राजात्व हि भन-नित्र १ स्व क्विणात माना कि र्जात्य ए भन्नात्व राज्य भाग्त १ माइत्यत नृत्क रुपा महायूर्य माइत्यत निणा चाना — विन्न चित्रत्य प्रत्य वाल नव क्विणात चाट्यायम, एक्रैस हीम-माइत्य नरेबा वह रुगि वामायन।

## নৈপালচক্র রায়

#### **बि**र्विष्य व्याभाषात्र

আঞাৰ, সাহচৰ্যা, সান্তিব্য—এই ভিনট মানবচনিত্ৰের পরিচর-লাভের প্রকৃত্তী উপার মনে হয়। বর্গত নেপালচক্র রার মহাশরের লহিত আনার বাহা কিছু পরিচর হইরাহিল, তাহা এই ভিনের মনো সান্তিব্য জহুই; এক পলীভেই আমাদের উভরের বাস হিল; এই নিক্ট-বস্তি হেতৃই উভরের সময় সময় দেখা-শুনা, কথাবার্ত্তা, আলাপ-সালাপ চলিত; তাই এই পরিচয় সান্তিব্যক্ষমাই কল। ঐরপ হত্তে তাহার বিষরে মাহা কিছু কানিতে পারিয়াহি, তাহাই এই প্রবদ্ধের বিষয়বস্তা।

অব্যাপনা: - কবির আদেশে শান্তিনিকেতনের আশ্রমে অব্যাপনার কার্বো আমার যোগ দেওয়ার কয়েক বংসর পরে বেপালচজ রার মহালর (আমার মেপাল-দা) আলমে অব্যাপক নিযুক্ত হন। তখন অক্ষচগ্যাত্রম-বিশ্বভারতীর श्राद्वक्रमान--रेमनवावद्या । देशांत शूर्व्य अनाशांवारम 'अश्राना বেললী' বিভালত্ত্বে তিনি প্রধান শিক্ষক ছিলেন। অধ্যাপনাত্ত বিশেষ পারদ্বিভার ভর জাভার বেল ব্যাভিও ছিল। বল-বিজ্ঞান কর আন্দোলনের সময়ে তিনি কলিকাভার আন্সেন क्षवर भरत कवित्र चोक्षांस्य चाल्यस्य चवाभिक-भम खब्ब করেন। প্রথমে তাঁহার বাসগৃহ শান্তিনিকেতনের পূর্বপ্রান্তে मुख्य वाष्ट्रीत शिक्तम मिर्क दिल, शरत वर्खमान 'विक्रीकवरन'त সন্মৰে 'নেপাল-রোডে'র উত্তরপার্থস্থ একট গৃহে কিছুকাল বাস করিয়া শেষে গুরুপদ্লীতে আমার বাসার নিকটে একট श्रुट्ट व्यवशान करतन। हेराहे छारात (व्यव राजशान। अहे সময়ে তাঁহার ও তাঁহার পরিবারবর্গের সহিত আমাদের ক্রমে বিশেষ পরিচয় ও আথীয়তা হয়।

আখীরতা:—মাত্র সহকেই সামাজিক; তাই সে একাকী কবনও কোবাও থাকিতে ভালবাসে না; বেবানেই থাকুক না কেন, সমাজবহু হইয়া থাকা তাহার ঘাতাবিক; এই সমাজবহুনই আখীরতার স্লহ্জঃ। সরলতা নেপালদার হুতাবগত একট লক্ষীর ওব ছিল; ইহা আখীরতার পরিপৃষ্টি-লাবক; ইহাই তাহাকে অনেকেরই আখীর করিয়াহিল। আমার কোন কোন বিষরে তাহার এই অমায়িক আখীরতার পরিচর পাইরাছিলাম। তিনি আমার নেপালদা, তাই আমার ছেলেনেরেরের সহিত তাহার সম্পর্ক ছিল 'জ্যেঠা-মুশার'। তিনি কেবল সম্পর্কেই জ্যেঠারহাশর ছিলেন না, তাহানের প্রতি তাহার তরহুলপ আভরিক স্লেহ্মেররের বিতি তাহার তরহুলপ আভরিক স্লেহ্মেররের নামনীরা বৌদিরও) তাহাবের প্রতি অপত্য-বির্দ্ধিবেরে ব্যেক্তব্যক্ত বিশেষ পরিচর পাইরাছিলার।

ভাবার বাসার বর্ধন যাবা কিছু আসিত, তারাতেই আমানের কিছু না কিছু অংশ নির্দিষ্টই থাকিত। নেপাল-বারও ইবা বিশেষ আনন্দের বিষয় ছিল। তাই বলি, কেবল কথার নর, কার্ব্যেও তারাদের আত্মীরতা ও বাংসল্য সপ্রমাণ হইত। অনাত্মীরতে এইরপ সর্বপ্রকার আত্মীরতার চকুতে দেখা বভাবের ক্ষত্রতাই প্রতিপন্ন করে।

আমার ছোট মেরে মারা (কমলিনী) জোঠামশারের ও জোঠীমার বিশেষ স্নেহপাত্রী ছিল। মারার অভের মন আফুট করিরা স্নেহভাজন হওয়ার শক্তি মায়ার একট অনভলাবারণ রাভাবিক গুল। মায়ার এই মায়ায় পভিয়াই মেপাল-দা জোঠামশারের স্নেহে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। বৌদির স্নেহও সেই একই আকর্ষী শক্তির ফল। তাঁহাদের কলা এবং আমাভাও মায়ার এই মায়া-কাদ হুইভে নিছুভি পান নাই।

আথীরতার শ্রপাত:—একবার বিভালরের অবকাশের পবে শান্তিনিকে তনে আসার সমরে হাওড়া টেশনে আমার স্রীকে গাণীতে উঠাইরা বিয়া দেখিলাম, বৌদি সেই গাণীতে বসিরা শ'ছেন। তথন প্রীকে বৌদির নিকটে সিরা বসিতে বসিরা শ'ছেন। তথন প্রীকে বৌদির নিকটে সিরা বসিতে বসিরা শ'ছেন। তথন প্রীকে বৌদির নিকটে সিরা বসিতে বসিরা ও স্বাগম বন্ধতই উভন্পণেই হইরাছিল; রার-পরিবারের সহিত আমাদের যে সম্বন্ধ পরে ছাপিত হইরাছিল, এই মিলনই তাহার বীকর্মপ। আচার-ব্যবহারে, কাল-কর্ম্মে, সাংসারিক কথা-বার্তার উভয়ের এই সম্বন্ধ ক্রমে ঘনির্চ হইরা উঠিরাছিল। এই প্রেই নেপাল-দাও আমার পরিবারবর্সের প্রতি স্নেহাসক্ত হইরা পভিরাছিলেন। তিনি যথনই শান্তিনিকেতনে আসিতেন, তথনই আমাদের সঙ্গে দেখা করিয়া একে একে সকলের কুশল-প্রশ্ন করিতেন। রার-দম্পতির এই সরল স্মিন্ধ ব্যাব আমরণ আমাদের শ্বতির বিষয় হইরা থাকিবে।

কৌলীত :—নেপাল-দার পরিবার একারবর্তী; কৌলীত বা আভিকাত্য একারবর্তীতার একট প্রধান কারব। জাহার পরিবার ভাই-পো ভাই-বি প্র পৌর দৌহির প্রভৃতি আমীর-ফরনে অভি হৃহং। ব্লম্বরের এই রারবংশ বেষন আভিকাত্য-সম্পর, তেমনই ক্লোচিত ক্রিরাক্লাপে ক্রমির। বিশিষ্ট বৈভবংশের সহিত এই বংশীরবিগের বৈবাহিক ও সামাজিক সমর ইহার অভতম প্রবাণ। এই বংশের অনেক বালক্ষালিকা শৈশব হৃইতে আমার হার-হারী ছিল; ভাহারের বভাবগত আচরবে ব্যবহারে শাভশিষ্টতার আভিকাত্যের বিশেষ পরিচর পাইরাহিলান। বৌধ পরিবারের একট বিশেষ কল এই বে, স্বিলিভ বাল হেছু সকলেরই সক্ষে স্বাহা বেলা-

বেশার অভরণতা বহিত ও গৃচ হয় এবং সামাজিক ক্রিয়াকাওে পালি-পার্বানে অববা আপদ-বিপদে সকলের সমবেত চেটার আনারাসেই কার্ব্য সমাবান হয়। রারবংশের এই সব বিবরে সকলের সহকারিতা কবন কবন জানিতে পারিয়াছি। একার-বর্তী পরিবারের সন্মিলিত চেটার কলের উপমার প্রচলিত প্রবচন—"জাড়ির বাঁশ বড়ে পড়ে না, অবাং পরশার-ক্ষিত বংশগুদ্ধ প্রবল বড়েও উন্থলিত হয় না। বৌধ পরিবারের গুণসরিমা এইয়পই মহান্। এইয়প পরিবার বেমন স্থকর, তেমনই পরম সৌভাগোর পরিচারক। নেশাল-দা এইয়প পরিবারের ভাগাবান কর্ডা ছিলেন।

মণিকাকন সংযোগের ভায় মাননীয়া বৌদি নেপাল-দার অভ্রপা সহধ্যি ইইয়াছিলেন। ভাগোই এই স্থাসমূদ্ধ ও সন্মেলন বটরা ছিল। আমার খ্রীর সহিত বৌদির প্রবয়-স্তেই ভাঁহার বভাবের নানা বিশেষভ্রের পরিচয় পাইয়া-ছিলাম। আভিকাত্য এইরপই স্থকলপ্রস্থ।

সময়নিঠা :— নেপাল-দার মন একটু ভোলা-ভোলা রকম
হিল। এই হেতৃ তাঁহার কার্হো সময়নিঠার খভাব কনা ফ্রাট
লাক্তি হইত। এই দোষ তাঁহার ইচ্ছাকৃত নহে, বাভাবিক;
বিশেষ চেঠা করিয়াও ইহার সংশোধন করিতে পারিতেন না।
খবাপনাকালে এই সময়নিঠার খভাবের কবা হাওদের
নিকটে ভনিয়াছি। পাঠনার সময়স্চী প্রায়ই উ হ'র মনে
বাক্তি না, হঠাং মনে হইলে ব্যন্ত হইয়া নির্দিষ্ট সময়ের প্রায়
খেষে আসিয়া পড়াইতে খারস্ত করিতেন, সময়ের পারমাণের
কবা মনে বাক্তি না, পড়াইয়াই যাইতেন। খভ খব্যাপক
আসিয়া অপেকা করিতেহেন, খানিতে পারিলেই, খপ্রস্তত
হইয়া উটীয়া যাইতেন। সভা-সমিভিতেও উপস্থিতির সময়ে
কবন কবন এইয়প ফ্রাট বটিত।

তিনি বৰ্ষন এলাহাবাদে শিক্ষতা ক্রিতেন, তর্মও তাঁহার এইরপ স্বরের বাতিক্রন হইত শুনিরাছি। একবার ক্লিকাতার বাইবার স্মরে আমি তাঁহার স্মী হইরাছিলান। তাঁহার বভাবসত দীর্ঘ্যতা কানিতাম, তাই স্মরে প্রভুত হইবার বভ আগেই তাঁহাকে তাসিহও দিরাছিলান, কিছ চেটা ক্রিয়াও সেই দ্রতার বভাবের হাত হইতে তিনি নিছুতি পান নাই।

এই সময়বেদিতার অভাব বেড়ু মহামহোপাব্যার এর্ড বিগুলেগর দালী মহাদার ভাঁহাকে 'রজন্' বলিরা সংবাধন করিতেন, অর্থাং ভাঁহার দিন, রজার দিন, অভিজ্ঞীর্থ ভাল, লৌকিক সৌর দিন নহে।

সর্কাণ্যকতা :— আঞ্রের সর্কাণ্যকের পরে তিনি কিছু কাল অধিটিত হিলেন। সেই সময়ে তাঁহার মানা কার্ব্যের মধ্যে একটি প্রশাস্ত রাজা-নির্দ্ধাণের কথা বিশেষ উল্লেখ বোল্য, মধ্যে হয়। তথ্য আঞ্রেষে পথের কোন কুম্যবস্থা ও পারিপাট্য ছিল না। বোলপুর টেশন হইতে শান্তিনিকেতন পর্যান্ত বে বড় রাজা আছে, তাহার সহিত মিলিত করিরা তিনি একটি বড় রাজা-নির্দ্ধাণের উল্যোগ করেন। উহার ইছা ছিল, আশ্রনের বালকেরাই বহুতে নাট কটিয়া এই রাজা বাঁবিবে; তিনি আপনিও এই কর্মে বালকদিগের সহকর্মী হইরাছিলেন। রাজা-বাঁবা কিছুদ্র অপ্রসর হইলে, বালকগণের পক্ষে এই কার্য্য অসক্তব বুবিতে পারিরা আশ্রনের বারে মজুর দিয়া অবলিও অংশ বাঁবাইবার ব্যবহা করিরাছিলেন। এই রাজার এবনও কোন বিশেষ নামকরণ হর নাই, সাবারণভাবে ইহা নেপাল রোড' নামে অভিহিত।

খদেশসেবা ঃ—খদেশের সেবাকার্ব্যে একাছ অছরার্গ উচ্চার স্বভাবের একট সর্ব্যবিলক্ষণ গুণ ছিল। সময়-স্বিশা পাইলেই তিনি স্বদেশের কার্য্যে উদ্যোগীও অঞ্চসর ছইতেন, সমিতিতেও তহিষয়ে বক্তৃতাও করিতেন। স্বর্গনত প্রবাগী-সম্পাদক প্রকৃতি স্বদেশহিতেথী মনীধিগণের সহিত ওাঁছার বিশেষ সৌহার্দ্ম ছিল। দেশের উন্নয়নকলে তিনি উৎসাহী ও অঞ্চীগণের অভতম ছিলেন। বিশ্বভারতীর প্রামসংখার-বিভাগের অধ্যক্ষ স্থায়ি কালীমোহন বোষ মহাশয়ের সংখার-কার্ব্যে তিনি কোন কোন সমরে সহ্যোগী হইতেন এবং গ্রামের জনসভার বক্তৃতাও ক্রিতেন।

মৃত্যুর করেক বংসর পূর্ব্বে কলিকাভার টাউন হলের সভার বিরোবীদলের সহিত সংঘর্বে লাঠির আবাতে আহত হইরা তিনি কিছুকাল শ্যাগত ছিলেন। ইহাতে প্রতিপন্ন হর, বার্চক্যেও জীবনের প্রধান উদ্ভেগ্ন বংদশসেবারত পালন করিতে তিনি বিরত হন নাই। জনসেবার আহ্বানে শারীরিক অস্ম্ভাও তাঁহাকে বোগদানে পশ্চাংপদ করিতে পারে নাই। বঙ্গ সেই ব্যোদাসবংকর ব্যোগদারাগ।

আমোদপ্রিরভা :---হাস্তকেভিক বিষয়ের রসভভা ভাঁহার স্বভাবের অন্তত্ম বিশেষ গুণ ছিল। তাঁছার বাসপলীর সকল বালকবালিকার সহিত সম্পর্কে তিনি ছিলেন 'দাদা-মুশার', তাই নাতি-নাতনীর দল লইরা তাঁহার হাত-পরিহাস বহু-ভাষাপা বেশ অবাবেই চলিত। বাৰ্ছকোও বালক সাভিয়া তিনি বাল্যসূলত ক্ৰাবাৰ্ডায় ভাহাদেয় সংক একেবাবেই বিশিল্প বাইভেন। প্রভাতে উঠিল্প পাড়ার বাড়ী বাড়ী ব্রিয়া তিনি ছেলেখেরেদের নাম ধরিয়া ডাকিতেন, উভৱ না পাইলে 'অলস' 'অকর্মণা' বলিয়া বিভার দিয়া উপহাস করিতেন। নাতি-নাত্নীরা এই তরেই সকালে সকালে উঠিরা তাঁহার অপেকা করিয়া থাকিত: পকাভরে তাঁহার উঠিতে একটু বিলম্ হালে, তাহারাও "আত্ আপনার হার' বলিরা হাসিরা ভাঁহাকে উপহাস করিতে হাড়িত না। এইছণে তিনি তাহাদিগকে লইহা প্রহুসন-বাট্যের অভিনয় বালকবং বেশ উপভোগ করিভেগ। ভিনি ক্যেঠায়শার

হ**ইলেও, তাঁহার এ**ই মাটোর ভূমিকায় মারার অভিনয় বাদ পঞ্চিত না।

ক্ৰিবৰ একবাৰ লিবিৰাছিলেন, "youth is still living in me (?) আৰ্থাং হৌবন আমাৰ মধ্যে এবনও (বাৰ্ছক্যেও) জীবিত আছে। লিওৰ সদে লিও সাজিয়া ভাঁহাৰ শৈশবের অভিনয়ও দেবিয়াছি। নেপাল-দাৰও বাৰ্ছক্যে বালাযৌবনস্থাত কাৰ্যা প্ৰত্যক্ষ কৰিবাছি। তিনি বৰ্ষৰ যে দলে বোগ দিতেন, তৰ্মই সেই দলের মত সাজিৱা আমোদ-সামোদে বেশ মশ্বন চইতেন।

অব্যাপকগণের ও ছাত্রছাত্রীদের বনভোজনের নিমন্ত্রণ তিনি সহ্যাত্রী হটতেন। বার্দ্ধক্যে এট সহযোগ বিশেষ ক্লেশকর এবং অনিয়মিত স্নানাহার পাঁড়াজনক ব্বিয়াও, এই নিমন্ত্রণ প্রত্যাধ্যান করিতে পারিতেম না। তাঁহার স্থাব এমনই আযোদপ্রিয় ছিল। বর্ষনত:—বর্ষবিষয়ে কোনপ্রকার সাজ্ঞধারিক ষ্টানত তাঁহার মুখে কখনও শুনি নাই। বত দূর জানি, তিনি এ বিষয়ে মৌনীই ছিলেন। প্রবাসী সম্পাদক রামানক্ষ চটোপাধ্যার মহালয় এ বিষয়ে নিবিয়াছেন,—"দেবতাকে তিনি একটা কোন হানে বা সভীর্ণ গলীতে আবদ্ধ করেন নাই; বিশ্বমানবের প্রভাকে তিনি প্রেষ্ঠ পূজা বনিরা বিশ্বাস করিতেন এবং এই সুদুচ বিশ্বাস হুইতে কণনও বিচলিত হন নাই।" তাঁহার বাবজীবন হুদেশসেবাত্রত সম্পাদক মহাল্যের এই উক্তি বিশেষ সমর্থন করে।

প্রয়াণ—নেপালচক পরলোকগত, মৃতিমাত্তে পর্যাবসিত।
আমাদের সহিত তাঁহার আত্মীর-সম্বদ্ধ মরণ করিরা কৃতক্ষ
হাদরে তাঁহার বসীর আত্মার তৃপ্তার্থ আত্মরিক প্রহার্মনি
নিবেদন করি ও শোকশাভির নিমিত কবির ক্থার বলি,—
"তোমারই ইচ্ছা হউক পূর্ণ কর্মণামর স্বামী !"

## দরিজ বাঙালী

গ্রীউপেন্দ্রনাথ সেন

১৯২১-২২ সনের বাংলার বিভ্ত শাসন-বিবরণীতে বারালীর জীবিকার উপায় সম্বন্ধ অনেক পত্রিচয় পাগুয়া যায়। তথন মুক্তবন্ধের লোকসংখ্যা ছিল পৌনে পাঁচ কোটি। ১৯৩১-এর পাণনার লোকসংখ্যা ছয় ৫ কোটি ১ লক। ১৯৪১-এ লোকসংখ্যা ইছিলাই ৬ কোটি ৩ ল্ক-অর্থাং ১৯২১-এর লোকসংখ্যা হুছিলাই ৬ কোটি তালিক কালিক কালিক

বে যে উপার বা হতি অবলগন করিয়া বাঙালী অর্থ উপার্ক্তন করিত ভাহার একট পরিচয় আহে উক্ত শাসন-বিবরণীর ১৩৫-৩৬ পৃঠায়। নিয়ে সেইট উদ্ধৃত করিভেছি— ব্যক্তি লোকসংখ্যা

( হালারের উর্দ্রগণ্যা বব্দিত)

Exploitation of animals and vegetation—

অর্থাৎ স্থায় বেগা-পালন এবং ভূমির উপর নির্ভরশীল— ৩ কোট ৭৪ লক্ষ ২৯ হাজার Exploitation of minerals—

শনির কার্ব্যে নিযুক্ত >৭ হাজার
Industry—শিল্প ৩৬ লক ২১ হাজার
Transport—বানবাহ্মাদি

ভাৰ্ব্যে বিৰুক্ত ৭ লক্ত ৬৯ হাজার

Trade—বাণিকা
Police force – পুলিস বাহিনী
Public administration—

সরকারী কার্ব্যে নির্ভ > লক্ষ ৪৪ হার্বার Profession or Liberal arts—

**बाहेब, हिकि**९मा देखारि

ব্যবসায়ে নিযুক্ত ৭ লক ৮৩ হাজার

Persons living on their own income—

ষ ম সঞ্চিত উপাৰ্জনের উপর নির্ভরশীল ৩৭ হাজার Insufficiently described occupation—

জলাই ব্যক্ত পেশা > সক্ষ ৮০ হাৰার
Unproductive occupation—

হন উংপাদমহীন পেশা ৪ লক ৫২ হাজার

ঐ পুথকে ইহাও বলা হারাছে, লোকসংব্যার ৄ অংশ খ্রির উপর নির্ভরশীল। ছোটবড় খ্যাবিকারী এবং ভাহাদের কর্মচারীগণ উক্ত সংব্যাভুক্ত। কৃষকের সংব্যা লোকসংব্যার ভ অংশ।

এই কর বংসরে লোকসংখ্যা দ্বনি পাইরাছে, কিছ ভূষির পরিমাণ বাড়ে মাই। উক্ত পুত্তকের ১১ পৃঠার বেশিতে পাওরা বার বে, ১৯২১-২২-এ রাংলাবেন্ত্রণ বে বাব্য উংপ হইত তাহাতে নিৰেদের প্রয়োজন নিটাইরাও উৰ্ভ থাকিত। সেই উৰ্ভ থাক বিহারে ও বৃত্ঞানেশে এবং কলিকাতা, চইপ্রার বন্ধর হইরা বিদেশে রপ্তানী হইত। ১৯২৯-৩০-এর শাসন-বিবরণতেও এই কথা সম্বিত হুইরাছে। অর্থাং, ১৯৩০ সাল পর্যন্ত বাংলার থাক বাঙালীর প্রয়োজন মিটাইরাও উৰ্ভ থাকিত।

ইহার পর ১৮ বংসর অতীত হইরাছে, লোকসংখাও এক কোটি বৃদ্ধিরাও হইরাছে। অধির পরিমাণ কিছ একই বহিরাছে, স্তরাং কিছু অন্টন হওয়া আশ্রুর্বা নহে। বাজের উংপাদন ব্রাসপ্রাপ্ত হইবার আরও কারণ রহিয়াছে। বাংলার মদী, নালা, থাল ইত্যাদি কলল ও কচুরি পানার আক্রমণে বৃদ্ধিয়া যাইতেছে। ছানে ছানে ক্র্রণযোগ্য ভূমিও কচুরিপানার কললে অব্যবহার্য হইরা পভিরাছে। অপর দিকে ক্ষির উর্করাশক্তিও ক্রমণ: ক্রীণ হইয়া আদিতেছে। যে ক্ষমি কর্বণ ক্রিয়া একটি কৃষক-পরিবার বংসরের খাল সংগ্রহ করিতে পারিত ভাহা উত্তরাধিকারস্থত্তে একাবিক বঙ্গে বিভক্ত হওয়ায় এক একটি কৃষকের ক্ষমির আয়তন ক্ষিয়া গিয়াছে। কলে কেবলমাত্ত ক্ষমিকার্যের উপর নির্ভর ক্রিয়া কৃষ্যক-প্রসায় জীবন ধারণ ক্রিতে পরিভেছে না।

ভাবার যে সকল তাঁতি, ষ্গী বন্ধবন্ধন করিছা জীবিকা
নির্কাহ করিত, দেশী ও বিদেশী কলের তৈরি বন্ধের আমদানী
হওয়ায় জাহাদের ক্রজি-রোজগার বন্ধ হুইয়া গিয়াছে। তাহারা
এবং তাহাদের মত ভারও জনেকে প্রাতন রন্তি পরিত্যাগ
করিয়া ক্রম্বিকার্থো নিযুক্ত হুইতেতে, ক্রতরাং ভ্রমির উপর
ভাবিক লোক নির্ভরশীল হুইয়া পড়িংহছে ৯৭৮ কৃষিকার্যা
হারা এই সকল লোকের জন্ত্রসংস্থান সম্ভবপর হুইতেতে না।
ইহার ভ্রম্বভাবী পরিণাম ক্রমকের দারিক্রা। তুর্ দারিক্রা
নহে; দারিক্রোর নিপ্রেশণে উপায়াভ্রবিহুলীন ক্রমক ঋণপ্রভ
হুইয়া পভার তাহাদের হ্রবস্থা চরনে পৌছিয়াছে।

এই ত গেল কৃষকদের কথা। বাংলার শ্রমিক কোধার কত জুন আছে বুলিয়া পাওয়া কঠিন। যে সকল বাঙালী শ্রমিক ধানতে বা কলকারধানার কাল করিত তাহারা অবাঙালী শ্রমিকদের সলে প্রতিযোগিতার হটরা যাইতেছে। এবন দেবা বার বনি ও কলকারধানার অবাঙালী শ্রমিকের সংখ্যাই বেশী।

বাঙালী হিন্দু শ্রমিক ও কৃষক বেশী পরিশ্রম করিতে পারে
না। তাহারা নানা কারনে অলস এবং আরামপ্রিয় হইরা
পভিরাছে। পূর্ববিদের নমঃপৃত্ত সপ্রধানের লোকেরা অপেকাকৃত পরিশ্রমী এবং নিরজস। মুসলমান শ্রমিক কৃষক তাহাদের অপেকাও অহিক পরিশ্রমী, সাহসী এবং উভমনীল। সেই
ক্রম্ব পূর্ববিদে মুসলমান-কৃষকের সংখ্যাই বেশী এবং কর্বনযোগ্য ক্রমির বারো আনা আন্দাক অংশ মুসলমান কৃষ্কের
ক্রমনে চলিরা গিয়াছে।

এতক্ষ বৃত্তবাদের কথাই বলা হইবাছে। ১৯৪৭-এ বদ বিভাগের কলে পশ্চিম বলে সমগ্র বাংলার যে এক-তৃতীরাংশ তৃমি পাওয়া গিয়াছে ভাহার অবহাও তেমন আলাপ্রাদ নছে। পশ্চিম বলের কৃষক ম্যালেরিয়ার আক্রমণে কয়। ইছা থাকিলেও বেশী পরিপ্রামের কাক করিতে সমর্থ হয় মা। এই কৃষ্ণ প্রাদেশে যে পরিমাণ শস্ত এখন উংপন্ন হয় ভাহা এই অর্ক-মৃত কৃষক-সম্প্রদারের স্থানতম পরিপ্রামের কল। কৃষকের দেশ নীরোগ না হইলে কৃষির উন্নতির আশা কয়া যায় না।

ঠিক অন্তরণ "অবস্থা পশ্চিম বচের বাঙালী শ্রমিকদের। বাহাদের আমরা "বুনো" কাতি বলিয়া অবজা করি, তাহারা পদ্ধী অঞ্চলে আমাদের অনেক কাঞ্চ করিয়া দের, কিছ তাহাদের সংখ্যাও পরিমিত।

হিন্দু শ্রমিকেরাও মালেরিরাগ্রন্থ, কর ও উভমহীন।
ইহাদের মধ্যে অনেকে শ্রমবিমূব এবং হয়ত শ্রমসাব্য কর্মকেও হেয় আন করে। ভৃত্যাদিরও অভাব দেখা যাইতেছে। মেদিনীপুর অঞ্চলের কিছু কিছু লোক ছাড়া অভ কেলার কোনও লোক ভৃত্যের কার্য্য করিতে আসে না।

আগে পলী আকলে যে সব কামার, কুমার, নাপিত, বোপা ছিল ভাহারাও নিজ নিজ বাবসায় পরিভাগে করিবা অল্প করিবার চেষ্টায় আছে। সে উপার্জনের ক্ষেত্রও ভাহাদের জন্ত মুক্ত এবং প্রভিযোগিভাপ্ত মহে। দেবিরা শুনিরা আশুর্বা বোব হয় যে, কলিকাভার নিমন্ত্রণাদিতে অথবা মিঠাইয়ের দোকানে যে ধুরি, প্লাস, ভাঁড় ইত্যাদি মাটার প্রব্যাদির বাবহার হয় পূর্বের বাঙালী কারিগররাই ভাহা প্রশ্বত করিত, এবন ভাহা হিন্দুখানীরা করিভেছে। এবানেও প্রভিযোগিভার বাঙালীরা হটরা ঘাইভেছে।

উপার্ক্তনের একটি প্রধান ক্ষেত্র কলিকাতা শহর। কিছ কলিকাতার অনেক রাভার বাহির হইলে মনে হর বা বে, ইহা বাঙালীর শহর। প্রার সমন্ত প্রমসাব্য কাকে অবাঙালী নিয়ক। রেলের টেশনে একটি বাঙালী কূলী বুঁজিরা পাওরা যার মা। করপোরেশনের প্রমসাব্য কর্মে বাঙালী নাই বলিলেই হয়। বাজারে গিরা দেখা যার মাছ, তরকারি, কল বিক্রর করিতেছে অবাঙালী। চাল, ভাল, মিঠাইরের সাধারণ দোকানও সংখ্যায় তাহাদেরই বেশী। রিক্সা, ট্যাজি চালায় অবাঙালীরা। বাঙালী ধোপা বছ দেখা বাছ বা। বাঙালী নাপিত জ্বমশঃ অন্থর্জনি ক্রিতেছে। চূলকাটা দোকান চালায় মুলল্যন অথবা হিন্দুস্থানী লোকেরা।

১৯৪৭-এর বন্ধ-বিভাগে অনেকে আনন্দিত হটরাছিলেন। ইহাদের সাল্না ও উৎসাহের বিষয় ছিল এই বে, কলিকাতা শহর ভাহাদের কর্তৃহাধীনে থাকিয়া গেল। কিছু কলিকাতা শহরে বাঙালীয় আর্থিক প্রতিপদ্ধি কোথায় ? সমুই বে বাবোরাতী ও অভ প্রবেশবাসীরা আসিরা তবল করিবা বসিরা আহে। এই বাবোরাতীদের সংবা কি রক্ষ বৃদ্ধি পাইতেছে তাহা অনেকের বারণা নাই। ১৯০১-এ ভাহাদের সংখ্যা ছিল ১৭৯৭ জন যাত্র। ১৯১১ সনে ইড়াইল ৫৫২৪—ইহারা তবন জলিকাতা শহর এবং উত্তর বলে, বিশেষ করিবা রংপুরে এবং এবিকে বৃশ্বিনাবাদ অঞ্চলে হড়াইরা পঢ়িল। কিছ পূর্ববিদ্ধে তাহারা প্রবেশ করিতে পারে নাই (প্রবন্ধের প্রারম্ভে উন্নি বিভ পুর্ববিদ্ধে সংখ্যা কত গুল বৃদ্ধি পাইরাছে। ইহাদের সংখ্যার্দ্ধি বাঙালীদের প্রথমার মাপকাটি-বর্মণ। মারোরাড়ী ছাড়া অভ প্রমেশ-বাসী বাহার। বাংলার উপার্ক্ষনের লোতে আসিরাছিল তাহাদের সংখ্যা ১৯২১-এ ছিল ১৮ লক্ষ ৩৯ হালার। এখন ভনিতে পাই ইহাদের সংখ্যা ৩০ লক্ষের ক্ষ হটবে না।

যুক্তবংশর অন্তর্গাণিকা এক সময় পূর্ববংশর সাহাসম্রাদারের একচেটিয়া ছিল। তাহার নিদর্শন এবনও হাটবোলা, উন্টাডিভি, বেলেবাটা অঞ্জে পাওয়া যায়। ইহারা
পরিরামী, ব্যবসারবুদ্দিশশার এবং সংপ্রস্কৃতির লোক। মারোরাজীদের আক্রমণ হইতে ইহার। পূর্ববংশর বাণিক্যক্ষের
ক্ষা করিয়াহিল। বর্তমানে বন্ধ বিভক্ত হওয়ায় সম্প্র বাংলায়
ইহাদের বোগস্থ ছিল হইয়া গিয়াছে।

অবাঙালী, বিশেষ করিরা যারোরাড়ীদের অর্থন এবং ব্যবসারের কৃট-কৌশনের কাছে বাঙালীরা পরাস্তৃত হইতেছে। এই অবাঙালীরা অর্থ উপার্জন করিরা সর্বিত হইরা উঠিরাছে। তাহারা বাঙালীর মুর্বস্বতা বুবিরা লইরাছে। রেলের কুলীরা পর্বান্ত বাঙালীর উপর স্থ্য করিয়া বেশী পারিশ্রমিক আদার করে। তাহাদিগকে কিছু বলিবার উপার নাই।

মধাবিত্ব সন্তাদারের মধ্যে চাত্রীজীবীই বেশী। বাঁছারা আইবের বাবসার করেন উাহাদেরও তবিত্বৎ অভকারময়। অমিলারী-প্রধা বিল্পু হইলে ইঁহাদের উপার্জনও কমিরা ঘাইবে। চিকিৎসা বাবসারে কলিকাতা শহরেই করেকজন চিকিৎসকর বেশ পরসা হয়। মকবলে চিকিৎসকরণ অধিকাংশই বিনা পরসার বাতিরের বোদী পাইরা থাকেন। বরচ করিয়া ভাজার দেখানো অনেক বাঙালীর সামর্থ্যে কুলারও না। ভার পর মধ্যবিত্ব ভত্রবোকদের আর হইতে ব্যর বেশী। ভাহাদের ঠাট বজার রাবিরা চলিতে হয়। প্রক্রমা ভাজার নিংশ হইরা পরিভেছেন। স্থতরাং পৃষ্টকর বাদ্য ইঁহাদের পরিবারের ছেলেসেরেদের তেমন জোটে না। বিশ্ববিদ্যালরের রিপোট পাঠে জানা বার, বাঙালী ছাত্রদের ঘাড়ের কতরুর অববতি বটবাছে।

সংপৰে থাজিয়া নিজের বৃত্তি, কৌপল এবং পরিঞ্জন হালা অৰ্থ উপাক্ষানের পদ্ধা আবিকার বাঙালীবের মধ্যে বিরুল ।

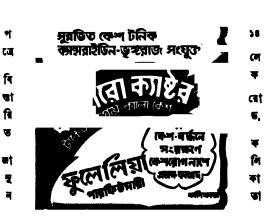
যদি বা কেছ এইরপ ব্যবসায় অথবা শিরপ্রতিষ্ঠান গড়িয়া ভূলেন পূঁজির অভাবে ভাছা অবশেষে বারোরাছীর নিকট বিজ্ঞ করিতে হয়। অনেক ব্যাক বাংলাদেশে প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল, অনভিজ্ঞ ক্চক্রী লোকের হাতে পঢ়িয়া দেইরপ্রশাসক প্রতিষ্ঠান উঠিরা গিরাছে। কলে বাঙালীর ছাপিত বৌধ প্রতিষ্ঠানের উপর বাঙালী জনসাবারণ আহা হারাইতে বসিরাছেন।

এই সকল চিত্ৰ দেখিতে ভাল লাগে না, ভনিলেও ছাবর নিরাশার অভিভূত হইবা পড়ে।

আচার্য্য প্রস্কুচক্ত পুনঃ পুনঃ বাঙালীকে এই সব বিষয় শরণ করাইরা সতর্ক করিরা দিয়া সিরাহেন। তথন আমরা তাঁহার কথার কর্ণপাত করি নাই। আৰু তাঁহার সেই সতর্ক-বারী মৃতন করিরা আমাদের শ্বন করিবার সময় আসিয়াছে।

এদিকে বাহাদের হাতে বাংলার শাসনভার অপিত তাহারা প্রায়শ: দলাদলি করিতেই ব্যন্ত। তাহাদের মুখে অনেক গালভরা পরিকল্পনার কথা ভনিতেহি, কিছু তাহা কার্য্যে পরিণত হইতে কত বংসর লাগিবে এবং আলে কিছু হইবে কিনা কে বলিতে পারে ?

এই যে লক্ষ লক অবাঙালী আসিরা আমাদের উপার্কন-ক্ষেত্র একাবিপত্য ছাপন করিতে চলিয়াছে, তাহাতে বাঙালীর প্রবেশপথ পুগম করিবার উপার কি, কঙুপক্ষ নির্দারণ করিবা দিতে পারেন? কেপ্রীয় সরকারের দারিগুলীল কর্মে বাঙালীর ছান অভিনয় সঙ্গীণ। রাইনীতি ক্ষেত্রে বাঙালীর নেতৃত্ব আর নাই। আইন-সভার বাঙালী সদভ্যেরা নীরব হুইরাই থাকেন। এই অবহার নিক্ষেত্রর প্রবেশন বাধালীকৈ ভিকাপাত্র হাতে করিরা হুরারে ছুরারে ছুরিয়া বেড়াইতে হুইবে।



## ভগবদ্ গীতা#

### এউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্ব্য

ইহা প্ৰিণিত বৈ, দীতার উপর সংশ্বতে বছ দীকা ও ভাষ রহিরাছে। তাহা ছাড়া ভারতীর ও অভারতীর ভাষার দীতার উপর এবং দীতা সম্বাদ্ধে বহু প্রস্থা লিখিত হুইরাছে। হঠাং কেহু সেঞ্চলির ভালিকা চাহিলে ভাষার অর্থ্যেকরও নাম আমরা ক্রিতে পারিব কিনা সন্দেহ। বাংলা এবং অভাভ হুরকে দীতার সংক্রণও বে কত হুইরাছে ভাষা বলা ক্রিন।

হাৰার বছরের উপর এই গ্রহ পঠিত, পাঠিত,এবং চিন্তিত হইরা আসিরাছে। শহর হইতে আরম্ভ করিরা অরবিক্ষ পর্যান্ত ভারতের কোন্ মনীবী দীতা সহছে বলেন নাই ? এই প্রকার একখানা বই সহছে একেবারে দূতন কথা বলা সহক নর। তথাপি গিরীক্ষবাব্র এই বই পঢ়িরা আমরা দূতনত্বের আখাদ পাইরাহি। প্রথমেই আমাদের মনে রাখা উচিত যে, লেখক প্রধানতঃ এক কন প্রখ্যাত বিজ্ঞানবিদ। আলোচ্য গ্রহের বৈশিষ্ট্য এই যে, বিজ্ঞানী লেখক ইহার আলোচ্নার বিজ্ঞানের দৃষ্টিতদী কোথারও পরিত্যাগ করেম নাই। একদিকে কর বিখাস বা অতি বিখাস এবং অভ দিকে অবিখাস—এই উভরের মব্যপহাই বিচারবৃদ্ধক সমালোচ্নার দৃষ্টিপণ; এই মব্যপহাই বিজ্ঞানেরও পণ। অবিকাশে ক্ষেই দীতার আলোচ্যা বাছারা করেন ভাষারা ইহাকে

বিজ্ঞানেরও উপরে স্থান দিয়াছেন। আধুনিক বিজ্ঞানের জানেরও সীমা আছে সত্য, কিছ প্রাচীনদের কাছেই কি হল-লহল সমস্ত তল্পের হার উদ্বাটিত হইরা সিয়াছিল? আব্যান্থিক প্রত্ম তল্পের জ্ঞান আধুনিক পাশ্চান্ত্য দর্শন বিজ্ঞান দিতে অসমর্থ, সে জ্ঞান ভারতের প্রাচীন মনীবিগণই শুর্ আরম্ভ করিয়াছিলেন, ইত্যাদি ধরণের উক্তি আমরা প্রারই শুন। কিছ আধুনিক বিজ্ঞানের কাছে আমরা এত রক্ষে ধনী ও এত রক্ষে ইহার অধীন, এবং বিজ্ঞানের মৃত্য নৃত্য আবিজ্ঞার এত রক্ষে প্রকৃতির উপর মাহুষের প্রত্মুত্ব আরম্ভ করিয়েও বর্তমানে বিজ্ঞানক করিতেছে যে ইহা জ্ঞানিয়াও এবং এই পরিবেশের মধ্যে বাস করিয়াও বর্তমানে বিজ্ঞানক আবহলা করা বৃদ্ধিবিজ্ঞানে জ্ঞান'মাই, কোন স্থ্য তল্পের সন্থান বিজ্ঞান রাথেনা, বিজ্ঞানের সহত্র কৃতিছের মধ্যে বাস করিয়া এইরূপ উক্তিকরা অর্থাচীনের অসংযুক্ত বাক্য মাত্র।

প্রাচীনকালের সিদ্ধান্ত বিনা বিচারে বাঁছারা সভ্য বলিয়া এছণ করেন ভাঁছাদের কবা খতর। কিন্তু এই সর

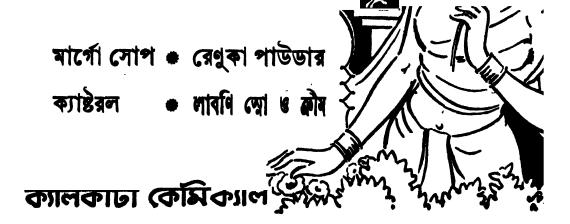
শ্রীগিরীস্রশেধর বহু প্রনীত। কলিকাতা ১৪, পারদীবাদান লেন

ইইতে গ্রন্থকার কর্ত্ব প্রকাশিত। ৫৭১ পূর্চা, মৃলা সাড়ে নয় টাকা।

# ব্ৰপণ্ড ব্ৰপদী-

ক্লপের ঐথব্য বিধাতার হাব , কিন্তু মাসুব সেই ক্লপের উৎকর্ম সাধন করেছে প্রসাধন-বিজ্ঞানের সবস্থ অসুশীলনে। সামাভ ক্লপের অধিকারিশীরাও তাঁকের ক্লপ প্রস্কৃতিত করে ভুলতে পারেন প্রকৃত্ত প্রসাধনীর নিয়মিত সন্মাবহারে। এ বিবরে ক্যালকেমিকোর নির্বাচিত প্রসাধনী সভার ক্লপচর্যা-কারিশীবের বিশেব সহায়তা করতে পারে।





দিছাত সত্য বঁলিয়া বাহার। প্রধাণ করিতে চেটা করেন তাহারা বিভানকে অবহেলা করিতে পারেন না। গিরীজবার্থ তাহা করেন নাই। টক এইবানেই টাহার বৈশিট্য। প্রাচীনদের উক্তি এবং তাহাদের সত্যনিষ্ঠার প্রতি তাহার অগাব প্রহা আছে। বিজ্ঞানের প্রতিও তাহার প্রহা কম নয়। এই উত্তেরে সংস্পর্লে তিনি উবাপিত প্রশ্ন-সকলের বিচার করিয়া সিহাতে উপনীত হইতে চেটা করিয়াছেন। দৃষ্টাত্ত-বরুপ প্রথের পরিশিষ্টে পুনর্জন, স্ট্রতিত্ব, প্রানেজিয় প্রস্তৃতি কয়েকট প্রয়ের আলোচনা উল্লেখ করা যাইতে পারে। এই সব আলোচনার পাল্যান্তা দর্শনের কথাও সহক্রেই উঠিতে পারিত এবং ভাহা হইলে বোর হয় আলোচনা আরও পুণার হইত। কিছ ইহা না হওয়াটাকে আমরা একটা বদ রক্ষের ক্রটি বা দোধ মনে করিতেছি না।

এই সৰ বিষয়ে লেখকের সমস্ত সিদ্ধান্তই আমর। গ্রহণ করিতে পারিয়াছি এমন নহে। কিন্তু সেটা বড় কথা নয়। আলোচনার ধারাট উপভোগা এবং প্রহার উপযুক্ত। তিনি দীতার বর্ণিত বিভিন্ন মার্গের উল্লেখ করিয়াহেম। সেই তালিকাট আমানের কাছে কিন্ধিং দোষস্পৃষ্ট মনে হুইরাছে। উহাদের প্রত্যেকট পৃথক মার্গ, না একট আর একটর আদ, সেই সম্বন্ধ অন্তত হুই-এক জারগার প্রশ্ন উঠিতে

পাৰে। যথা:--প্ৰাণায়ামকে আসম, মুক্ৰা ইভ্যাদির ভার বোগাণের অভত্তি বলিধাই সকলে ভাবিয়াছেন, পৃথক মাৰ্গ মত্ত। তেম্বি ইক্সিল্লেংয্য, উপবাস, দান ইত্যাদিকে পুৰক মাৰ অথবা 'বাদ' অববা বৰ্ষবিশ্বাদ (পৃ: ৩৪৭) मरम क्तिरम **এট সব শ**स्मिद । अर्थ चन<sup>†</sup>। क्रिकबार क्रीं क क्रा **एकः। এই সমভের অবিকাংশট কর্মের অরভুক্ত। উপবাদ** বা দান স্বতন্ত্ৰ সাধন-মাৰ্প৯৫৭ কে'বায়ও বণিত ছই-রাছে বলিয়া খানা যায় নাঃ 'লগুকালে বেক্ষমরণ'ও भारत-मार्गद्रार्थ वावश्व हरेटल भारत न। हेशांक कि अक्ष পুৰক ৰশ্ববিদ্বাসই বলা ঘাইতে পাৱে ? কারণ 'অস্তকাল' মাহুষের কাবনে একবারই সম্ভব হয়। কটাবারণ কিছা কৌশীন পরিধান যেমন কোন কোন সম্প্রদায়ের স্বাচারের অভ্ৰুক্ত, পুৰক সাধনমাৰ্গ নছে, তেমনি ওঁকার ধ্যান, অছো-রাত্রবিষ্ঠা প্রভৃতিকেও স্বতম্ব সাধনপঞ্জি কিংবা ধর্মবিশাস মনে করা উচিত নছে। ইহাদের প্রায় সমন্তকেই কর্মা, ভক্তি ও জান এই প্রসিদ্ধার্গন্তয়ের অভতু জি করা যায় এবং এত কাল তাহাই হইয়া আসিয়াছে। আর বৌদ, জৈন অথবা ইসলামের মত ধর্মবিধাসও এওলি নয়। দেবযান ও পিতৃ-যান সধৰে প্ৰস্কার বেদান্ত স্থানের সিদ্ধান্তের কোন উল্লেখ করেন নাই। সেবানে এই প্রশ্নের যে ভাবে এবং যে মীমাংসা

# নেতাজীৱ অনুসৱণে .-

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসায়ী জীঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও তাঁহার "জী" মার্কা মতের নৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্প্রােজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'জী' মৃতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল মৃতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে জীযুক্ত অশোকবাবুর বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা মৃত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

ষাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বসু

ধ্ইৱাহে তাহা দীতার সভেতিক সিহাজের ঠিক অভ্রণ নহে।

এই সমত ক্র-রহং, উরেখ-অহরেখ সভেও আমর। এই বইখানিকে দীতার একট পরিপূর্ণ আলোচনা বলিরাই বনে করিরাহি। বাঁহারা তথু অর্থনোধ সহকারে দীতা পাঠ করিতে চান তাঁহারা ইহার একাংশে গাঁতার প্লোকগুলি এবং পাশাপাশি সরল বভাছবাল পাইবেন। বাঁহারা তথু পাঠ করিবাই কাম হুইতে চান না, দীতার উথাশিত বিবিধ প্রস্নের আলোচনা এবং বৈজ্ঞাধিক বিচার চাহেন, তাঁহারা এই বইরেই অভ্যান তাহাও পাইবেন। এইজ্ঞা দীতার এই

সংজ্ঞাপট আমাদের কাছে পূর্ণাক মনে হইবাছে। বিশেষ করিবা আবৃনিক মনোবিতা বে বীতার অর্থবানে সহারতা করিতে পারে ইহা একট বৃল্যবাম করা। বিজ্ঞান, তক্তি ও প্রগান্ন বিশ্বাসের সমন্বর ঘটাইরা বে বীতা পাঠ চলিতে পারে তাহা এই বইবামিতে আমরা দেখিতে পাই।

গিরীজবাবুর বইখানা যে বছ পাঠত কর্তৃত অধীত ছাইবে এ বিখাস আমাদের আছে এবং এ আশা আময়া পোষৰ করি। আর এই এছ আছে পাঠ করিলে যে পাঠক নানা ভাবেই উপকৃত ভূইবেন, সে ক্যাও আময়া নিঃসংখাচে বলিতে পারি।

#### ভ্ৰম-সংলোধন

প্রবাসী, পৌষ ১৩৫৫, ২৯২ পৃঠা ''দেশ-বিদেশের কথা''র 'প্রবীরক্ষার চটোপাধ্যায়' নিবছে প্রথম পংক্তিতে, '১৬ই পৌষ' ছলে '১৬ই অগ্রহারণ' পড়িতে হইবে।

প্ৰকাশিত হইল— —-রচনা-পারিপাট্যে, অন্তুদোষ্ঠবে প্রত্যেকটি বই অভুলনীয় ভবানী ফান্ধনী মুখোপাধ্যায়ের উপস্থাস হুধাংশুকুমার শুপ্তের প্রসাদ ভট্টাচার্য্যের উপক্রাস **मूट्याशायाट्यत** विस्नी ध्यष्टं भग्न-मक्त्रन ইহাই সভ্য জদয় দিয়ে জদি সেরা লিখিয়েদের সেরা ভনপ্রিয় উপন্যাস আর্ত্তনাদ ... ३॥• মধুরাতি জাগর গ**ল** (১ম বণ্ড) ··· ১১ ব্দনতার ইলিভ रिनवजानम प्रथाभाशास्त्र उभग्राम বামপদ মুখোপাধ্যায়ের উপক্রাস পঢ়বার **क्टल** (भव **बिः** जब ক্রোঞ্চ-মিথুন ... 9||• (ध्य मःकद्रव) বিমল মিত্রের গ্রহ্মগ্রহ বিশু মুপোপাধ্যায়ের প্রভাবতী দেবী সরস্বভীর উপস্থাস **फिटमंत्र श्रंत्र फिन** ··· **ર**્ সমুজে যারা ঘুরে বেড়ায় ১ রাতের **অপন** (৩য় সং) **২৷**• ( Toilers of the Sea ) নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের গল্পগ্র ফধাংওকুমার দাশগুপ্তের ভাঙা বন্দর অসমঞ্জ মুখোপাধ্যায়ের হাসির গল লাসার অভিশাপ \cdots দে/• মাণিক বন্দ্যোপাধ্যায়ের গলগ্রহ 'সকলি গরল ভেল' ٤, वृष्टापव वञ्चव ( বিভীন সংকরণ ) रमुप পোড़ा রাধাচরণ চক্রবন্তীর উপন্সাস কান্তিকুমারের পঞ্চকান্তদ্ভ/• আমিছর রহমানের গলগ্রহ মনতক্ষুলক দ্লোজকুমার বায়চৌধুরীর কো-এডুকেশন ... 71. + देवहर अंच + পোষ্টকার্ড ٤, ভাকাতের সন্ধার ··· ৮৯/০ वर्ग्स अव्हरगढे আশাপুর্ণা দেবীর উপস্থাস আশালতা দেবীর উপস্থাস প্রেমেন্দ্র মিত্তের কলঙ্কের ফুল बुका व' जिका 310 ব্রেয়াজন (ব্রন্থ) আকাশের আতত্ব ··· ৮৯/০

### কমলা পাবলিশিং হাউদ • ৮/১এ.হরি পাল লেন পো:বিডন ট্রাট্:

# পুশুক - পার্চায়

প্রাচীন প্রাচী— শ্রীসঞ্জ ভটাচার্য। পূর্বাশা নিমিটেড। ১৩, গণেশ এভিনিউ, কনিকাতা। মুগ্য দেড় টাকা।

এখানি কাব্যক্রছ। এশিরা, ভারতবর্গ ও বাংলা—এই তিনটি নাতিদীর্থ কবিতার বইথানি সম্পূর্ব। কবিতাগুলি পড়িরা আনন্দ হইল। প্রচলিত কাব্য হইতে ইহা একাস্ত বিভিন্ন। কাব্যে হোক, নাটকে হোক অথবা কথা-সাহিত্যে হোক, প্রাচীন অতীতের পূন্দিটনে ঐতিহাদিক জ্ঞানের প্রয়োজন। সেই জ্ঞানের প্রিচয় ইহাতে বাছে, কিন্তু মানা-ভিরিক্ত পাঞ্জিতাপ্রকাশের অসংঘ্য নাই।

ভাইগ্রিসের তীরে গ্রার মৃৎপুরীর নালা
চক্রপুরীর আকাশ সেধানে বন্দী!
উরের মন্দিরচন্তরে অরণাদেবতার লিপিরচনা—
বাবিলনের প্রাচীরগাত্তে পাহাড়ের অরভেদী স্বপ্ন—
আ্বানশ আর পৃথিবীকে আলিঙ্গনে কড়ালো মামুবের প্রথম সৃষ্টি!
এশিরার ইতিহাস-দেবতা চোধ মেগে ভাকালেন।

প্রাচীন ইতিহাস হইতে উপাদান আংবণ করিয়া সঞ্জয় ভট্টাচার্য্য কাবোর বিষয়বস্তার পরিধি বিস্তার করিয়াছেন। এই প্রকৃতির রচনা থানিকটা মনন্দীল হইতে বাধা এবং ইহা ব্যক্তিগত অনুভূতির প্রকাশও নয়, কিন্তু বেথানে বিশায় ও বৈচিত্র্য সেধানে কাব্য স্বতই রোমাণ্টিক হইলা উঠে।

> পীতহরিতের অংলিম্পানে এবার ডোমার সপ্তবর্ণ— এবার ডোমার ইঞ্রধত্ব, এশিরা ! ••

তবু কি শেব ভোষার মহাক্বিতা রচনা—
মহাকবি এশিরা ?
তিনির হরণের গান বুবি সমাপদ হরনি—
অবিরাম বিচরণ করেছে তোমার চারণমন।

ইতিহাস ও প্রম্নতন্ত, স্বপ্ন ও স্মৃতি, জানন্দ ও বেদনা, জতীতের প্রেরণা এবং ভবিষ্যতের আশা কাব্যকে বৈচিত্র্যদান করিয়াছে ৷ বাংলার সম্বন্ধে কবি বলিতেছেন,

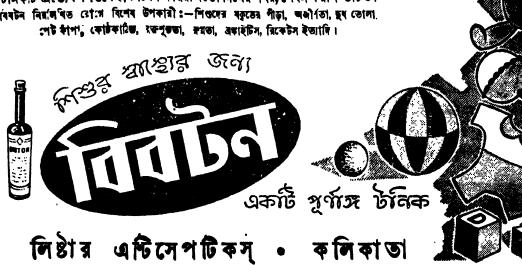
প্রাণের অর্চনার ধরিত্রীর সঙ্গিনী হ'ল গঙ্গাভূমি। ••
থাহিতাগ্নির মাটির বেদনা খেকে যার—
বিশ্বত হয়েও মাটির আগুন রেখে বার অগ্নিবীজ--আগুনের স্পর্নমিণি। ••
দে মশাল জললো বাংলার আকাশে
পূরবইরা আগুনের ফিন্কি স্পর্ন করল দিল্লীর শেষ মস্নদ—
পেশোয়ার শেষ রক্ত।
কোন্ অগ্নিদেবতার ঢালতে হবে হবি--জানে নি ভারত্বর্ব।
জানে তা বাংলা --জেনেছে অগ্নিগর্ভ শ্রামভূমি।

"প্রাচীন প্রান্তী পড়িয়া কাব্যামোদী পাঠক পরিভৃগ্নিলাভ করিবেন।

শ্ৰীশৈলেন্দ্ৰকৃষ্ণ লাহা

# 31173/3/ 2032/

শিশুপালনের সন্ত্যক্ জানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈছিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ডি, বি১, বি২ব সহিত মূল্যবান উদ্ভিক্ষ ও রাসায়নিক উপাদানের সংমিপ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাক্ষ টিনিকটি প্রভাক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দন্তোদ্যমের সময়, সেবন করান উচিত। বিষটন নির্দেশিত গোলা বিশেষ উপকারী:—শিশুদের ব্রুতের পীড়া, অনীতা, হুধ ভোলা পেট কালা, কোটকাটিভ, ফেল্ডভা, ক্যুভা, বহুটেস, রিকেটস ইত্যাদি।



স্ত্র ভট্টাচার্ব্যের করেকটি উপস্থাস



**এক টাকা এগাবো আনা।** 

মরামাটি দিতীর সংধরণ ছই টাকা চার আনা।

দিতীয় শংশ্বন পাড়ে ভিন টাকা।

ক্ষেদ্বায় ৰিডীৰ সংস্করণ তিন টাকা।



नाह होका

শৈলেন ঘোষের উপভাস



## সহালগর

সকল গল্পচনার প্রেট্ডেক্স শিল্প বছনিনের প্রতিন্তিত লেখক। বে ক' জন লেখকের সাধনার মধ্যে দিরে আধুনিক বাংলাসাহিত্যের পথ-পরিক্রমা ক্রক হরেছিলো প্রেক্সের বিল্ল উাবের অক্সতম। কবিতার, গলে, সত্ প্রবদ্ধে শিশুবঞ্জন সাহিত্যে ও অক্সবিধ বিচিত্র ভাবের লেখার প্রথম খেকেই বে-কারণে প্রেমেক্স নিল্ল সকলের চৃষ্টি আকর্ষণ করেছিলেন তা ভাবার তীক্ষতা নর, প্রকাশভলীর উপ্রতা নর, ভাবের বৈশ্লবিক্তানর, তা আটপৌরে ভাবার মধ্যে দিরে পূঢ়ার্ব প্রকাশের ক্ষরতা, পরিবিত্ত কারের প্ররোগে অপরিবিত রহজের উল্লাটনকুশ্লতা। সব লড়িলে তিনি তার গলে (এবং কবিতার) বে ভাবট প্রিকৃট করে ভোলেন তা এমনি অনির্কাচনীর রসে পরিপূর্ণ যে আপনি যদি রসের অভিনারী হন এবং জীবনের দার্শনিক ভাংপর্যা উপালয়ি করবার দিকে বণি আপনার মনের সহজ্ব প্রবণ্তা থাকে, সোলা কথার আপনার বদি জীবনবোধ থাকে, তা হলে ভাতে আপনি অভিকৃত হবেনই হবেন। হু' টাকা।।

## (SIU4)

আকক্ষে ণিনের উদ্ভান্ত অনিকরতার ঠুনকো খেলনার মডোই দেখার অজস্র মধ্যবিজের महेजहे कोवरमम 'हवि। জ্যোতিরিজ্ঞ মন্দী সাম্রতিক প্রন সাহিত্যে এ-অশ্বই বিশিষ্ট বে তার নারক-নায়িকার চরিত্রে বিশেষ ভাবে কুটে উঠেছে ভসুর ধেলনারই করুণ প্রতিভাস। বার্ব বৌৰনের দীর্ঘদাস, উচ্চাভিলাবের করুণ পরিণভি. দারিক্রাপিষ্ট কুমারী-ছবরের বোবাকারা, আর সাবপ্লস্তহীন জীবন-বাত্রার হাক্সকর অভিনয়-নব অভিবিশ্বিত হয়েছে তাঁর গলে। দেড় টাকা।।

## পতাকা

সাহিত্যকেতে বেদে পুর অল্লাদেরর সংঘাই বাঁরা পাঠকসাধারণের কাছ থেকে অনুষ্ঠ অভিনন্দন লাভ করতে সমর্থ হন, ভাঁলের সংখ্যা সাক্ষাভিক বাংলাসাহিত্যে খুব বেশী নর, কিন্তু লাভকদের অক্তম। ছোটো ছোটো ঘটনার মধ্যে দিরে মানবমনের বে আবর্তন, তা-ই নিগু'বভাবে ধরা পড়েছে নরেক্রনাথ মিত্রের রচনার। 'পতাকা' ভাঁর সর্বাধুনিক গল্পন্থ। বাংলা গল্পনাহিত্যের ধারা আব্দ কোন্ পথ দিরে বরে চলেছে, জান্তে হলে 'পতাকা' সংগ্রহ করা প্রয়োজন। ছু' টাকা।।

# भव उतायव कुठाव • एका छित्राह

আধুনিক বাংলা ভোটগল স্টিডে বে নসুন দৃটিভলীর পরিচর পাওরা বাচ্ছে, ভার আনেকগানিই এনে দিরেছিলেন স্কুত্রোধ স্থোষ। আন্তর্গ এক রূপ ও রসের আমদানী করে তিনি বেন বাংলাসাহিত্যের গতিকেই নোড় কিরিরে নসুনতর পথের দিকে এদিরে নিরে গেছেন। বিষয়বন্ধর সঙ্গে সামগ্রন্থ রেপে ভার ভাষাও এক অপূর্ক সৌকর্ব্যে মভিত হরে উঠেছে। স্ববোধ ঘোষের গরের আলোচনা-প্রসঙ্গে চতুরক্ষ বলেছিলেন: 'রবীজ্ঞনাথের পর কি বিষয়বন্ধতে কি রচনালৈনীতে বাংলা ছোটগলের মোড়কে তিনিই দিরেছেন নৃতনের বাত্রাপথের ইন্দিত। স্ববোধবাব্র গল ছংথবিলানের কারা নয়, বৃত্তির বাবীর অধ্যা প্রেরণাডেই সেঙলি গতিবান, কলে শিলচাতুর্ব্যের অপূর্ক নিয়ন্দি।' দাম ব্যাক্রমে ছু' টাকা, ছু' টাকা চার আনা।।

পূর্বাশা-প্রকাশিত অস্তাম্ম বই-এর সম্পূর্ণ ভালিকা সংগ্রহ করে রাধুন



পি ১৩, গণেশচন্দ্র এভেকু্যু, কলিকাডা

বি-কেলাস- প্ৰীন্ত শ্ৰিলাৰ বহু। ভি. এম. লাইব্ৰেরী, ৪২, ৰূপপ্যালিস খ্লীট, কলিকাতা। মূল ৩. টাকা।

প্রথম দর্শনে এবং প্রকাশকের সংক্ষিপ্ত ভাষণে 'বি-কেলাস' ছোট গজের সংকলন বলিরা বোধ হয়। এক চোগে বস্তু ও জল্প চোগে যথ এই দর্শনের মধ্যে নিরব্ধি কালের দীলার জীবন-তরক্ষের স্পষ্ট। ছোট গজের মধ্যে এই স্কাইকে প্রভাক্ষ করা বার হয়ত। কিন্তু প্রভারমান হয়। করেকটি পাপড়ির সংযোগে বৃস্তলয় প্রশার মত স্বর্পপ্ত প্রভারমান হয়। 'বি-কেলাসে'র মধ্যে এই রূপটি স্পষ্টতর।

১৯৪০-এর আগাষ্ট হইন্ডে ১৯৪৬-এর মে প্যান্ত কারাপ্রাচীরের **অভ্যালে পরাধীন জা**তির প্রার **তুই** শত বংসবের নিপীড়ন-ইণ্ডিহাস **'ৰি কেলানে' প্ৰান্ত হইলা** উঠিলাছে। প্ৰতীকুত ইতিহানের পৃষ্ঠায় তাহারাই উজ্জ হইয়াছে বাহাদের সামাঞ্জিক ২লা সম্বন্ধে জনসাধারণ সচেতন **নহেন। এরা অবহেলিত চাধী, মজুর, গুঙা, পুনী, করণিক, নিয়**মধাবিত্ত ভেনীর বিভিন্ন ভরের মাতুষ। অপরাধ ইহাদের মূত্র নংই —মূহুর্ত্তির মনো-বিকৃতির ফলঃ কিন্তু কারাগৃংস্ট কলুখিত আবহাণ্যায় ইহাদের অবশিষ্ট **মনুমুক্টুকুকে নিঃশেবে বিলুপ্ত করিয়া দিবার বাবস্থায় এতট্**কু ক্রাটি নাই। **ৰমুখ্যদের জ্বমাবলুব্তির** উ\**ভ্জনার আ**দে মেরুদ্ওহীন জেলি মাছের মত **সমুজ্তরকে ইথারা নৃত্যরত বটে। সে নৃত্য নিত্য আনন্দ-উত্ত জীবনের** ৰলিষ্ঠ ভঙ্গি নছে—সে নৃত্য ক্ষীয়ুখাণ ভীবনের কামনাবিলাস মাত্র। এক ট **जा**ण्डित कीवननीश निक्तालंत श्रुठाक वर्ष्य है होत्र भरत । त्त्रथंक वन्नो-**নিবানের সঙ্গীর্ণ পরিধিতে বসিয়া এই অলক্ষ্য মৃত্যুর লীলা প্রত্যক্ষ করিয়া-ছেন। বুদ্ধিনীবী মনের** প্রতিক্ষার কাব্যর্গিক মনের স্থালো পড়ি-রাছে। মন্তিক ও ক্লয়কে যুক্ত করিয়া খোলা চোপে একটির পর ১কটি **ৰাক্তৰ চিত্র জাঁকিয়াছেন। পট**ভূমিকা, পঞ্জিপ্রেক্টিড, বিচার, রঞ্, রেখা ও কঃনাবোধ কোনটিই শিল্পদীমা অতিক্রম করে নাই। সরু মোটা ভুলির টান পরিমিত এবং ক্ষিপ্র করাসুলির লীলা সমানই বিস্ময়কর। ছবি-

গুলি উজ্জ্বল, স্পষ্ট ও জীবস্ত। ঘটনা-বিশ্লেবণের দক্ষতা, দার্শনিক দৃষ্টিভলি, বৈদধা প্রভৃতি রুসস্টার অমুকূল প্রভিবেশে একটি অনাহত হ্বর
শেব পর্যান্ত বহিয়া উপজ্ঞানের ক্ষেত্রটির পরিসর বৃদ্ধি করিরাছে। বন্ধনিঠা
ও সৌন্দর্যা-পিপাসা কোধাও পরস্কারকে আঘাত করে নাই —বলিঠ প্রকাশভলিকে বাহন করিয়া তাহাদের গতি হইয়াছে অবাধ। এই পরিবেশপ্রস্ত চরিত্র, সমাজ, তথাকথিত ধর্ম, রীতিনীতি, মানবমনের আদি-ও পরম
কামনা সবকিছু লইয়া প্রকাশিত হইয়াছে সভাতা-কৌলীক্ষে প্রভিত্তিও একটি
প্রাচীন জাতি। তাহার পত্ন অভ্যান্ত চিহ্নিত প্রকাশীক্ষ প্রতিতিও একটি
প্রাচীন জাতি। তাহার পত্ন অভ্যান্ত চিহ্নিত প্রকাশীক নাই। এ ক্ষা
নিঃসংশরে বলা চলে বি-কেলাস্কুর্যন্ত অংশের প্রকাশে কতকগুলি পরস্কার
বিভিন্ন গল্প নহে— তথোর গুরুপাকে গুকু প্রবন্ধসমন্তিও নহে, পরশাসনপর্যুদ্র একটি স্ব্রাচীন জাতির জীবনধাবার সন্ধান ইহার মধ্যেপাওরা বার।

জৌবনের বসস্ত — এ জনগচন্দ্র গুছ। সর্বতী লাইবেরী, সি ১৮-১৯ কলেক খ্রীট মার্কেট, কলিকাতা। মূলা ২০০।

সাধারণত: ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা গল-রচনার অল্পুত্রম উপাদান। এই অভিজ্ঞতা কবনও বপ্রনিষ্ঠায় আরম্মকাশ করে, কবনও বা কলনা-পিরাসী চিন্তের রসভূমিউতাকে প্রমাণ করে। জালোচা গলের নেথক রাজনৈতিক কথা, তাঁহার কাছে রাজনীতির তত্ব আশা করা বাভাবিক, কিছ আশ্বেয়ের বিষয়, এগুলি রাজনীতি ছাড়া সম্পূর্ণ এক ভিন্ন জগতের বার্ত্ত্বী বহন করিয়া আনিয়াছে। সে জগতে গভীর অমূভূতির সঙ্গে কলোও চিন্তার প্রসার লেখকের কবি-মানসকেই প্রাথান্ত দিয়াছে। বে গলহওলিতে আদর্শবাদ ও কল্পনা ঐশ্বা আছে সেইগুলিই ভালভাবে উৎরাইয়াছে। 'রাত্রের অবসান', শিল্পন্ত, 'বাখার বানী,' দৌক্ষা' প্রভৃতি গল্পগুলি দৈনন্দিন ঘটনা হুইতে ভিন্ন প্রস্কৃতির। শুধু অনুভূতির স্থার, ভাবকরনার স্থারা এগুলির মন্থানত রসকে উপলক্ষ কবিতে পারা যায়।

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

# স্থতন বাণী চিত্ৰের গান



এস্-ডি-প্রোডাক্সক্রের 'বাকা ক্রেখা' চিত্রের গান জীমতী কামন দেবীর স্থানতি কঠে

 $VE\,2559\, \left\{ egin{array}{ll} M vec & M vec$ 

VE 2560 { ভাষাই আমার ভাগারাতের নীল পাহাড়ের ওপারে

শচান গুপ্ত ধনপ্রস্ন ভট্টাচার্য

GE 7440 } চল মুগাফির চল্ কেন জোলা দিয়ে যায়

রক্তরী কথাচিত্ত্রের পাত্রা—প্রমন্তা-লদা?র শ্রীষভা রাধারাণী কুমার প্রভোৎনারাহণ, ধনভ

क्यात व्यक्तारनातावन, धनकत, मठीन, नमःतम, दश्य

GE 7441 { স্বায়রে গোপাল স্বায় উঠিতে বসিপ্ত শয়নে স্বপনে UE 7449 { কইলকান্তাতে না বাইও পদ্মা মোদের মা-চননী

কলম্বিয়া প্রাফোফোন কোম্পানী লিঃ

কলিকাভা — বোম্বাই — দিল্লী লাহোর — করাচী नयां-वंकलां — श्रीश्वीतक्षात वित्र । व्यवक नाहेर्द्रवी, २०६, कर्नख्यानिन प्रेष्ठे, कनिकांछा । शृष्ठी ১৯৮+10 बृजा—०

এই প্রন্থে এগারট অধ্যারে লেখক বাংলাদেশ সম্বন্ধে প্রাচীন, মধাবুদীর, ইংরেজ আমলের এবং সাম্রাতিক বহু তথ্য পাঠককে উপহার দিয়াছেন। বাংলাদেশের ইতিহাস বৈচিত্রাপূর্ব এবং বাঙালী হিন্দুর এই ছর্দিনে প্রত্যেকেরই তাহা জানিরা রাখা উচিত। কেন হিন্দু মুসলমানে মিলন হর মা তাহার বহু কারণ রহিয়াছে। কেবল 'মিলন মিলন' বলিলেই মিলন হর ना, हेिड्रांत ब्रुं किया मृत्रशंक कांत्रण वाहित क्यांत्र अवः नितानत वांशानमूह ত্বৰ করার একান্ত প্রয়োজন। সুধীরবাবু বহু রচনাদি হইতে বিশিষ্ট লেখকদের রচনা উদ্ধৃত করিয়া যে চিত্র আঁকিয়াছেন ভাহাতে মনে হর বদি না বাঙালী হিন্দু সময় থাকিতে অতীতের ক্রটি বিচ্যুতি এড়াইরা নুতন করিরা এই জাতিকে গডিরা ভোলে ভাহা হইলে ভাহার ভবিয়ং পুব উব্বল হুইবে না। ৰঞ্জিত ভারতে তাই হিন্দুদের সহববদ্ধ হইয়া প্রগতির পৰে অগ্রসর হইতে হইবে। বাংলাদেশ আজ বহুভাবে খণ্ডিত, বাঙালী জাতি আৰু বহু মতবাদে বিভ্ৰান্ত, বাংলার আর্থিক অবস্থা আজ অত্যন্ত হীন—এই সমতের প্রতিকার না হইলে বাধালীর ভবিষৎ যে তমসাচ্চন্ন হইবে তাছাতে সম্পেহ নাই, ফুতরাং বাংলাকে এখন নূতন করিয়া বাঁচিবার প্রয়াস করিতেই হইবে। সুধীরবাবুর গ্রন্থ এই প্ররাসে বাঙালীকে উৎসাহ দিবে।

ঞ্জীঅনাথবন্ধু দত্ত

সন্দ্রীপের চর — এবিকুলে। দি বুকমান। ৮৭, চৌরলী রোড, কলিকাতা। দাম ছুই টাকা।

লেখৰ খাতিনামা। কবিত্ব এবং বিছা ছই-ই তাঁহার আছে। কিন্তু ছাবেখর বিষয় প্রায়ই তিনি ভুলিয়া যান বে, কবিতা কসরৎ নহে। এককালে কোন কোন কবিওয়ালা সহজ আবেগের পরিবতে শব্দপ্রযোগ কৌশলকে

ৰড় করিরা তুলিতেন, জনসভার বাহবা পাইলেও রসিকচিডের সমর্থন উচ্চারা পান নাই। এ যুগেও কৌশল, মতবাদ এবং গালাগালির হাতিরার লইরা বাঁহারা কাব্যক্ষেত্র দখল করিতে উদ্যোগী, তাঁহারা হানাদার নাত্র। তাঁহাদের জর এবং অধিকার-প্রতিষ্ঠা আজিও সন্দেহের বিবর।

> "আকাশের পেশী নাই, সে খদেশী পেশীতে চাপড় দেরনা লড়াই নেই, বড়াই-এর মঞ্চ নেই, দের নাকো রড় জারজ আশুরে কেউ সেলুকাস পালে"—

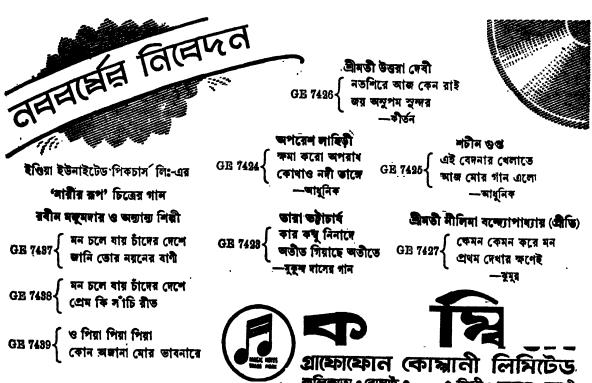
বৃৰ্জোয়া বা প্ৰলিটারিয়েট কোন শ্রেণীর কবিতা বলিয়াই মনে হইতেছে না।

#### ঞীধীরেন্দ্রনাথ মুখোপ'ধ্যায়

অভিজ্ঞান— একানাইলাল খোব। প্রাপ্তিস্থান—২০৮, কর্প-প্রাণিদ ব্লীট। কলিকাতা। সুলা ৩ ।

দেশসেবার অপরাধে বীপাগুরিত পিভার একমাত্র পুত্র অসীয় পিভার জীবনাদর্শে অমুপ্রাণিত ও মাতার সহারভার উৎসাহিত হইরা দেশের মুক্তি-সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইল। কলে ভাহার জীবন এক বিচিত্র পথ ধরিরা অপ্রসর হইরা চলিল এবং এই চলার পথে ভাহার সাক্ষাং মিলিল সীমা, আগুবাবু, নির্দ্ধলা, হেড মাষ্টার, বিপ্রদান ও অক্সরের সক্ষে। অসীম মুক্তি-সংগ্রামের অক্লান্ত সৈনিক। ভার এই ব্যুত্র পথবাত্রাকে কেন্দ্র করিয়া উপস্তাস্থানি রচিত। লেখার আগুরিকতা আছে, কিন্তু মাত্রাজ্ঞানের অভাবে রসস্কি ব্যাহত হইরাছে। উপস্তাসের গতিও অভ্যন্ত মুখ। উপস্তাস্থানি বক্তভাগন্ধী। এই সব ক্রটি পরিহার করিতে পারিলে লেখক একথানি ভাল উপস্তাস স্কি করিতে পারিতেন। তার বলবার ভঙ্গীটি ভাল এবং বিবর-নির্বাচন প্রশাসার বোলা।

ঞীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত



রত্মধীপ ( নাটক )— শ্রীবেদাধ ভটাচার। 'সার্যত লাইবেরী, ২০৬, কর্ণওরালিন ষ্ট্রাট, কলিকাতা। বুল্য - এক টাকা।

'রছবীপ' ত্রী-ভূমিকাবজ্জিত কিশোর-নাটক। ভারতের সাক্ষতিক বাবীনতা আন্দোলন, বত্রীমিশনের প্রস্থাব, মুসলিম লীগের ভেদনীতি, প্রত্যক্ষ সংগ্রামের কলে ভরাবহ সাক্ষাদারিক হালামা এবং গরবর্ত্তী অধ্যারে দেশবিভাগের ভিত্তিতে ক্ষমতা হস্তান্তর প্রভৃতি প্রধান রাজনৈতিক ঘটনা-ভলি একটি রূপকের সাহাব্যে নাটকাকারে প্রবিত হইরাছে। কিন্তু ঘটনার বিবরণ সংলাপের আকারে লিখিলেই তাহা নাটক হর না। নাটকের একটি বড় লক্ষণ—'সিচ্যুরেশন' স্টে। রম্মবীপে কোষাও তাহা করা হর নাই। ভাষাও বজ্জতাধর্মী—নাটকের উপবোগী নর।

**এ**মমথকুমার চৌধুরী

মধুগী তি — প্রীজবলাকান্ত মজুমদার। ডি এম লাইত্রেরী, কলি-কাতা। ৩৮ পৃষ্ঠা, মূল্য ১১।

মাইকেল মধুস্দন স্থৃতিদিবস উপলক্ষে মধুক্বি, রবীক্রানাথ, বছিম, স্বভাব, রামকৃষ্ণ, রুমাভূমি প্রভৃতির উদ্দেশে রচিত গানগুলি মধুর লাগিল।

মহাত্মার মহাপ্রয়াপে--- এইবরচক্র প্রামাণিক। দাশগ্রাম উচ্চ ইংরেজা বিভালয়, মেদিনীপুর। মূলা । ১০।

মহামানবের তিরোভাবে তাহার প্রতি দেশের ও বিধের মনীধিগণের প্রজাঞ্জলি ও মহান্ধার জীবনের প্রধান ঘটনাবলী ও বাণীসমূহ সংক্ষেপে লিপিবন্ধ হইরাছে।

> † আবৈলি তাবেলে ২। হয়বর ল ৩।
পাগলা দাও ৪। ঝালাপালা— এইকুমার রার। দিগনেট প্রেম, ১০৷২, এলগিন রোড, কলিকাতা। মূল্য বধার্মে ২০০, ২১,
২০০ ৪২.।

বাংলা শিশুসাহিত্যে স্কুমার রারের দান অতুলনীর। মাত্র ছঞিশ বংসর বরসে তিনি মারা থান। কিন্তু যে প্রতিভা ও মননশীলতা লইজ্ব তিনি করিয়াছিলেন, তাহা বে-কোন সাহিত্যে বিশ্বর-ফরপ। সন্দেশ পাত্রকার তাহার বহু রচনা ও চিত্র এখনও ছড়াইরা আছে, তাহার সকলগুলি সংগৃহীত হইলে পাঠক বহু অনাথাদিত রসের আখাদ পাইয়া শক্ত হইবেন। একাধারে তিনি সাহিত্যিক, কবি, শিলী, চিত্রকর, সলীতজ্ঞ ও বৈজ্ঞানিক ছিলেন। কিন্তু তাহার রচনা ও চিত্রের বৈশিষ্ট্য অনবদ্য হাস্তরস ক্ষন-ক্ষতার। কবিতাগু, চিত্রে ও সংলাপে ভাহার

मक्रक्रल विभिन्ना किल्काना पद्म वरे किन्नून

বিভিন্ন প্রকাশকের নাটক, নভেল, ধর্মগ্রহ, অধণকাহিনী, ব্যবসার-বাশিকা, চিকিৎসা ও আইনের পুশুকাদি, বুল-কলেজের ও উপহারের অভ ভাল ভাল পুশুক আমরা কলিকাতার দরে সন্থর সরবরাহ করি। /১৫ ভাকটিকিট পাঠাইলে লাইবেরী ও উপহারের অভ নালাবিধ মুভ্ন মুখ্যক পুশুকের সর্ব্যালীন পুশুক-ভালিকা পাঠার হয়। অর্ভারের সহিত বুলোর অর্ভাগে দিলেই সম্বত পুশুক ভিঃ গিঃতে পাঠান হয়। গ্যাকিং, ভাকমান্তন ও বিক্রমকর সভ্য । নিশ্চিত ও নিরাগার আরের অভ আমানের হারী আমানতে টাকা করা রাধুন। স্ববের হার ও বংসরের অভ শভকরা ৭, ও ৫ বংসরের অভ ১০, হিসাবে বেওরা হয়। অনুন্ন ৫০,টাকাও করা বাধা হয়। প্রতি ও বাস অভর বুল বেওরা হয়।

কুপু পাব্লিসিটি সোসাইটা অব ইণ্ডিরা ( গারিকেশন এও:বুক-সেলিং ডিগার্টরেট ) ১০০নং আনহাট ক্লিট, কলিকাভা—১ হাজ্যনের কুলকি ত্বড়ীবাকীর মত অক্সথারে কুটরা উরিয়াছে। সাতরচা রামধনুর মত অনাধিল দিলদরিরা হাসিধুশির অক্সথারা উহার সমস্ত রচনার পরিবাধা । 'আবোল ডাবোলে'র কবিভাগুলি হাসির বারুদে ঠাসা, 'হ ব ব র ল'র কৌতুকক্ষমক বয়কাহিনী অভুত ও অপূর্ব্ব, 'পাগলা দাও'র গলগুলি মকার কথার ভরা, 'ঝাগাপালা'র ছেলেদের নাটকগুলি হাজ কৌতুকের ভাগোর। প্রায় প্রত্যেক রচনাই ভাহার অ-অভিত চিত্রে সমুক্ষন। রবীক্রনাথের কথার, 'মুকুমারের রচনা সম্বন্ধে বলা বার, এমব আর কোখাও নেই।'

वीविषयासक्य भीन

পট ও ভূমিকা — এফ্ভো ঠাকুর। দি বৃক এমণোরিয়াম লিমিটেড। ২২-১, কর্ণভয়ালিন ষ্টাট, কলিকাতা--৩। মূল্য ১১ টাকা।

চিত্রশিলী হিসাবে শ্রীফ্রজা ঠাকুরের প্রতিষ্ঠা আছে, কিন্তু লেখনী চালনারও ডিনি কম ওতাদ নহেন। তাঁহার মনের পটে গান্ধী মহারাজ, वरीज्यनांच, ब्राह्मारशांभानांचांब्रिया, स्मोमाना चाकांप, নেতাকী, অৰুণা আসফ আলী, পি সি. বোণী এই কয়জনের বে ছবি অঙ্কিত হুইয়া বহিরাছে তাহাকে তিনি ভাষার রূপায়িত করিবার চেষ্টা করিরাছেন। ইঁহাদের মধ্যে জহরলাল এবং নেতাঙ্গীর সংস্পর্ণে বাইবার সৌভাগ্য লেখকের হয় নাই, দুর হইতে ছু'এক ঝলক ভাঁহাদের তিনি দেখিরাছেন মাত্র। অস্তান্তদের সালিখ্য তিনি লাভ করিলাছেন বটে, কিন্তু কাহারও সহিত তাঁহার খনিষ্ঠতা হর নাই। সেইঞ্জ গভামুগতিক চরিত্র-চিত্রণের প্রবাস বা ঘটনার পু'টিনাটি বর্ণনা বর্ত্তমান পুস্তকে নাই; আছে পিঞ্জী-মনের পট-ভূমিকার চকিতে ভাসিরা ওঠা এক একটি ছবির টুকরা—দেশের শ্রেষ্ঠ মনীবা ও নেতৃবুন্দের ব্যক্তিসন্তার বিশিষ্ট এক একটি রূপকে ফুটাইরা তুলিখার সার্থক প্ররাস। লেখক 'আপন মনের মাধুরী মিশাইরা' যে নিপুণ আলেখা রচনা করিয়াছেন, এতীক চিত্রের সহিত তাহা তুলনীয়। একটি মাত্র দৃষ্টান্ত দিতেছি। অরুণা আসফ আলিকে তিনি দেখিরাছিলেন আগষ্ট আন্দোলনের দিনে বধন সেই বিপ্লবী ষহিলা আল্পগোপনের বস্তু আগ্রর নইয়াছিলেন কলিকাভার এক অখ্যাত অজ্ঞাত পদ্মীতে। ভখনকার দিনের অকুণাকে তিনি বর্ণন। করিরাছেন "বিপ্লব আর বিষয়তার ৰাণীমূৰ্ত্তি" বলিয়া। বাকাট গুঢ়াৰ্থযুক্ত ও বাঞ্চনাময়। এমনি ভাবে প্ৰত্যেকট চরিত্রেরই এক একটা বিশিষ্ট দিক অভিনব আলোকসম্পাতে উজ্জ্বল ইহরা কুটিরাছে।

লেখক শুধু চিত্রশিল্পী নহেন, ভাষা-শিল্পীও বটেন। কিন্তু একটি বিষয়ে তাঁহার শিল্পীজনোচিত মাঞাবোধের পরিচর পাইলাম না। এই পুস্তকে অকারণ আত্মকথা শুনাইরা তিনি পাঠকদের থৈর্ব্যের উপর অভ্যাচার করিরাছেন—আত্মহারের উৎকট প্রয়াস বে অশোভন, একজন আদর্শবাদী শিল্পী হওরা সম্বেও এ বোধ তাঁহার নাই কেন ?

পনেরোই আগন্ত — শ্রীসত্যেন সেন। দি সিট বুক কোশানী। ১৫, বঙ্কিস চাটার্জি ট্রাট, কলিকাতা। দুল্য তিন টাকা।

শ্রীসত্যেন সেন সাহিত্যক্ষেত্রে স্পরিচিত না হইলেও রাজনৈতিক বিবরে আলোচনার বোগ্যতা বে তাঁহার আছে সমালোচ্য প্রছের প্রত্যেক্টি নথারে তাহার অকটা প্রমাণ পাওরা বার । ১৯৪৭ সনের ১৫ই আগষ্ট তারিখটি তারতবর্ধের বাবীনতা-সংগ্রামের ইতিহাসে অবিস্থানীর । উক্ত নিবসেই বিটিশ গবর্ণমেন্ট কর্ত্তক আফুটানিক ভাবে রাষ্ট্রীর ক্ষমতার হতান্তর-পর্ব্দ সম্পার হর এবং ভারতবাসী দেশ-শাসনের অধিকার লাভ করে । নীর্ধ-কালবাাপী সংগ্রামের কলে বাবীনতা অব্দিত হইল বটে, কিন্তু দেশ ছুই তাগে বিভক্ত হওরার ঐক্যবন্ধ, মুক্ত ও গণতান্ত্রিক অবও ভারত-রাষ্ট্র হাগনের বে মহান্ আদর্শে উব্দু হইরা ভারতের লাতীর কংগ্রেস বীর্ঘকাল বাব্দ সংগ্রাম করিরা আনিরাহিল ভাহা বুলিসাং হইরা রেল। একটা





়ে হিন্দুস্থান ডিভেলপয়েণ্ট কর্পোরেশন লিমিটেড, কলিকাত। ়া মানাজ জানাই এন আর সরকার আছে কোং লি ৰাতিৰ ইতিহাসে ইহা অপেকা শোচনীয় প্ৰচীনা আৰু কি হইডে পারে, কিন্ত এই মুর্যটনার বৃক্ত কারণসমূহ কি তাহা আৰু মোহমূল: ৰণ্ড দৃটি লইয়া বিচার করা প্রয়োজন, শুধু জিল্লা এবং মুসলিগ লীগের উপর দোব চাপাইরা লাভ নাই। এ কথা সত্য বে, দেশের বাধীলতা লব্ধ হইয়াছে মুখ্যতঃ কংগ্ৰেসেৱই প্ৰচেষ্টার, কিন্তু কংগ্ৰেস আছির স্বতীত নহে। তাহার নীতির কোনও ফাঁকে শনি প্রবেশ করিরা ভাছাকে সময়বিশেৰে জ্ৰান্ত পৰে পরিচালিত করিয়াছে কিনা ভাহাও লাজ বিশেষ ভাবে বিচার্য্য ।

পুত্তকথানি চারিট অধ্যায়ে বিভক্ত। প্রথম অধ্যায়ে লেখক ১৯৩৭-৪৭ এই দশ বংসরের ব্লাজনৈতিক ঘটনাসমূহ বর্ণনা করিরাছেন এবং বিশেষ নৈপুণ্যের সহিত ভারতের রামনৈতিক আন্দোলনের গতিপ্রকৃতির বিপ্লেবণ করিরাছেন। বাধীনতা আসিলেও দেশের মূঢ় মূচ অগণিত জনসমষ্টির ছু: ব-ছুৰ্গতি কেন ঘূচিতেছে না, 'কংগ্ৰেস কোন্ পথে' নামক অধাায়ে ভাছার কারণ নির্দেশ করা হইরাছে। লেখক বলিভেছেন—"বে স্বাধীনতা আন্দোলন জাতীয়ভাবাদী ধনিকখেণীর সহায়ভায় সার্থকভা লাভ করে ভাহা স্ভাৰত:ই উগ্ৰধন্মী ও গণতম্ববিরোধী হইতে বাধ্য।"

লেখক বামপত্নী রাজনৈতিক মতাবলম্বী। ভাঁহার সিদ্ধান্তসমহের এতি অনেকের সমর্থন না থাকিতে পারে, কিন্তু তাঁহার চিন্তার অভ্তা এবং মতের দৃচ্তাকে প্রশংসা না করিয়া পারা যায় না। লেখক কংগ্রেসের অনেক লোব ক্রটি দেখাইরাছেন, কিন্তু ভাহাতে অনাবশ্রক ব'াজ নাই, অঞ্জার অশোভন প্রকাশ নাই। লেথকের ভাষা ও প্রকাশস্ত্রী চমংকার। নীরদ রাজনৈতিক তত্ত ও তথাকে সাধারণ পাঠকের উপবোগী ক্ষিয়া পরিবেশন ক্ষিবার কৌশলটি তিনি বেশ আরম্ভ ক্ষিয়াছেন :

হে সৈনিক ভোল নিশান — এবীরেন দাশ। ভারত বুক একেনি । ২০৬ কর্ণভন্নালিস দ্রীট, কলিকাতা।

সাম্রতিক বাংলাদাহিত্যে বাংলার বিপ্লব আন্দোলনকে কেন্দ্র করিরা বে কম্নথানি উপজাস রচিত হইয়াছে তথাে জীবীরেন দাশের 'হে সৈনিক তোল নিশান' উপ্লেখযোগ্য। লেখক স্থক্ত করিয়াছেন বঙ্গভঙ্গের সময়কার খদেশী-আন্দোলনের যুগ হইতে, আর কাহিনীর জের টানিরাছেন--আইন-অমান্ত আন্দোলন-কালে ২৬লে আমুরারীর বাধীনতা উৎসৰ পৰ্যান্ত। সদেশী-বুগ হইতে চট্টগ্ৰাম অস্তানার পুঠন পৰ্যান্ত বাংলার (व महामवाकी कात्कालन लाकककृत कछताल शृष्टे इटेना भारत भारत বৈপ্লবিক কাৰ্য্যে আত্মপ্ৰকাশপূৰ্ব্যক তদানীন্তন বিদেশী শাসকলাতিকে ভীত ও সম্ভত্ত করিয়া তুলিয়াছে ভাহাকেই পটভূমিকা করিয়া লেখক কলনার ৰাজ্বৰে ষেশানো বে কাহিনীটি রচনা করিয়াছেন তাহা একেবারে বেন

ৰীবত হইয়া উটিলাৰ্ছে। ভাষল, উৰ্জ্বলা, লেকানি, স্থলী এই কয়ট চয়িত্ৰই ভাল মুটিয়াছে। সূত্ৰাসবাদী দলের নেতা ভাষল অবশেবে মহান্দ্রা গানীর অহিংসার বাণীতে অনুপ্রাণিত হইরা উঠিল, ভাহার ব্রী উজ্জা কিন্তু শেষ পৰ্যান্ত বৈপ্লবিক আদৰ্শেই অন্মুৰক্ত বৃহিল, দেশজোহী পাঁচুকে হত্যা কৰিয়া নে সাধীনতার বেদীমূলে আত্মাহতি দিল। উল্ফলা ও ভামল এই ছুইটি চরিত্রের বাতপ্রতিবাতের ভিতর দিয়া অহিংস আন্দোলন আর সন্ত্রাসবাদী আন্দোলনের আদর্শগত বিরোধটিকে লেখক স্থনর ভাবে কুটাইর। তুলিরা-ছেন। গঙ্গা-বমুনা ধারার মত এই পুস্তকে বৈপ্লবিক আন্দোলন ও মহাস্থা গানীর অহিংস আন্দোলনের ধারা একই লক্ষ্যাভিম্বী হইরা পাশাপাশি চলিরাছে। ভারতের স্বাধীনতা অর্জনে কোনটিই বে কম কার্যাকরী হয় मारे. এই क्लांटि काहिनोत मधा श्रञ्ज तहिगाए।

পাঠকের মনকে সব চেয়ে বেশী অভিভূত করে পার্কে ভূলুঞ্চিত পভাকার মর্যাদারকা করিতে গিয়া খুণ বালিকা শেকালির মৃত্যুবরণের দুশু। শেকালিকে লেখক অভ্যন্ত দরদ দিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন। উপস্থাদের উপ-সংহারটি বড় করুণ। পড়িতে পড়িতে পার্কে পতাকাহত্তে শেকালির প্রাণহীন দেহের ছবি বেন চোধের সামনে ভাসিতে থাকে তাহাকে মন হইতে মুছিল্না ফেলা যার না—চরিত্রস্তীর সার্থকতা এইখানেই।

লেখকের ভাষাটি বেশ ঝর্ঝরে—ছু'একটি কথান্ন প্রাম্য প্রকৃতির বর্ণনার তিনি মাঝে মাঝে মিঠা হাতের পরিচর দিরাছেন। পার্থ-চরিত্রের মধ্যে কুঞ্জ দাছু, এমন কি ভূতা বৈকুঠও পাঠকের মনে ছাপ রাখে। লেখক বে সমবেদনা দিয়া চরিত্রগুলি সৃষ্টি করিরাছেন পাঠকের মনে তাহা সঞ্চারিত হয় এবং কাহিনী লেব হইলে তাহার জনরের ভন্তীতে বেন বেদনার করণ রাগিণী ধ্বনিত হইতে থাকে।

গ্রীনলিনী কুমার ভক্ত সতাদৰ্শন -- শ্ৰীমং কালিকানন্দ খামী প্ৰবীত এবং ১০০নং সদানৰ বাজার, বেনারস হইতে গ্রীগোপালচক্র বেদান্তশাত্রী কর্তৃক

প্রকাশিত। ৬১৬ পৃঃ, মূল্য পাঁচ টাকা।

বর্তমান স্থণীর্থ প্রন্থে স্থপতিত ও জ্ঞানী স্বামীলী একচলিশটি বিভিন্ন বিষয়ের স্থাচিস্তিত আলোচনা করিয়াছেন সত্যাৰেখী নংনারী 'সত্তা-দৰ্শনের' প্রত্যেকটি বিষয় পাঠ করিয়া উপকৃত হইবেন। করিয়া 'আমি ও আমার', 'আত্মা বা আমি কে গু', 'মনগুরু', 'মনতে ধরিবার কৌশল', 'কালীর মূর্ন্তি', 'আস্মজ্ঞান বিনা মৃক্তি নাই,' 'দেহ ও মনের উপাদনা', 'বোগ', 'শান্তি কোখার ?' ইত্যাদি বিষরগুলির জালোচনা পাঠে সভাগপনের নৃতন আলো পাইকো ৷ ত্রি উমেশাইন্স চক্রবর্ত্তী

দেশ-বিদেশের কথা 🍄

### হেমনলিনী রায়

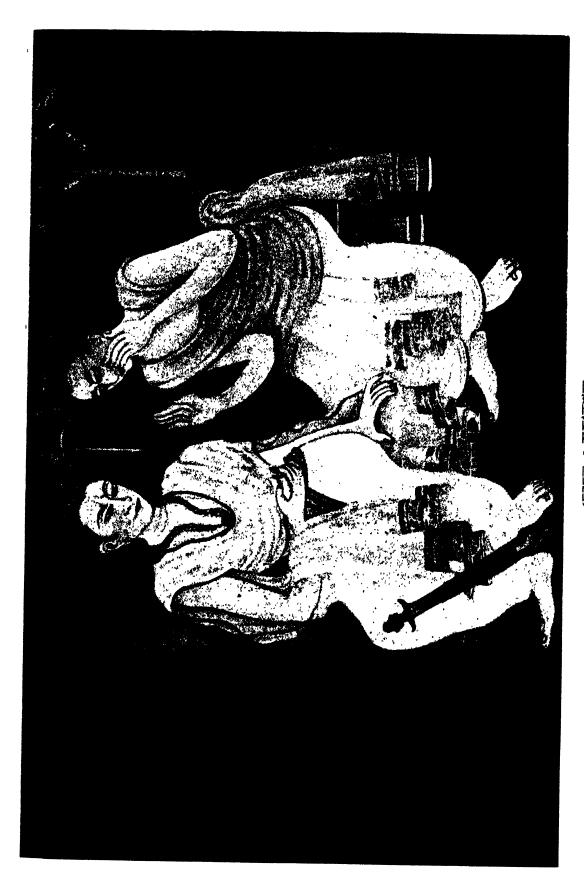
জয়পুর রাজ্যের শিক্ষাবিভাগের ভৃতপূর্ব্ব অধ্যক্ষ, পরলোকগত রার সাহেৰ মৰকুক বার মহাপরের সহধর্ষিণী হেমনলিনী বার গভ ১লা ক্ষরহারণ বঙড়ার ভাহার আমাতা ত্রীবৃক্ত হরেজনাথ বহু মহাপরের বাসভবনে লোকান্তরগম্ম করিরাছেন। মৃত্যুকালে উছিব বর্ম ৭২ বংসর হইরা-ছিল। তিনি ধর্মাপুরানিশী ও অতিথিসংকার-পরারণা ছিলেন।

### ভূপেন্দ্ৰনাথ নন্দী

- বিগত ১৮৯১ এটাকে হগলী জেলার অন্তর্গত কৃষ্ণপুর এাষে कुर्शक्षमांच मनी क्याबर्ग कर्दम। ১৯০৯ नारम अन्तिक भवीकांव देवीर्व एरेवा विमयिकाल निकामित्र विमादि কৰ্মজীবন হুকু কৰেন। তিনি সিনিয়ৰ খেতের প্রথম ভারতীয় 😦 ৰাঙালী ক্যাৱেজ-বিভাৱ কোৱব্যাৰ চিলেন। ভাঁহার সুধীর্থ

न्द्रभाष्ट्र कथा (विकास क्षेत्र क् ৰাহিত করেন। শেষ ঈ-ৰুংস্ট্ৰ পুৰুত্ৰ-লক্ষ্ণীতে থাকিব। তাহার কৰ্মের পূৰ্ণচ্ছেদ পড়ে। ভূপেক্রমীর্থ সারাদিব কারবানার অক্লান্ত পরিশ্রম করিবা ছুটর পর বেলওরে ইতিরাশ ইন্স্টটিট্টের সেক্ষেটারীর কান্ধ করিভেন। তাহার কর্মদন্দভার নিদর্শন-বন্ধপ ইন্স্টটউটের প্রেকাগৃষ্ট এবনও বিষ্যমান আছে। ইন্স্টটিউটের এছাগারটর পরিচালনা ব্যাপারেও ভিনি বিশেষ পারদর্শিতা দেখান।

कृत्यसमाय निविज-वन अद्योगीय गमिलिय अक कम फेरगांदी সভ্য হিলেন। ভিনি কলিকাভার বেভার-কেল্লে 'গর-দাহুর আসরে' গর-বাছর ভূষিকার বিশেব ফুভিছপ্রধর্ণন ভরেন। ভিনি এক জন সাহিত্য-ব্ৰসিকও ছিলেন। সভ ১২ই ভিনেক্স হুগলী ভাৰত্বিছ বাসভবৰে তিনি হেহত্যাগ করেব।





নেভাদী সুভাষচল্ল



"সত্যম্ শিবম্ স্বন্দরম্ নায়মাস্থা বলহীনেন লভা:"

8**৮**쪽 당기 ( 독종 왕왕

काखन, ५०००

্ম সংখ্যা

যুবশক্তি ও গণ-আন্দোলন

বিগত মাসে আমৱা হই জন জণকথা পুরুষকে খারন করিয়াছি। প্রথমে নেতাকী পুভাষচক্রের জনোংসব অস্টিত হয়, পরে দেশের ও জাতির পিতা মহান্দ্রা গানীর মহাপ্রয়াণের খারক কৃত্যাদি হয়। বলা বাহুলা, হইট বাাপারেই বাহিক আরোজন সমারোহ কোন কিছুরই ফ্রাট হয় নাই। কিছু করজনের অস্তরে এই ছই জনের পুরুষকারের প্রকৃত চিত্র সমাক্ ও ছারীতাবে মুক্রিত হইরাছে ?

নেতাকী সুভাষ্টল্ল বাংলার যুগ্যুগব্যাপী স্বাধীনতা-বজ্ঞের শেষ হোতা। তিনি জীবিত না মৃত সে সহছে প্ৰশ্ন আছে. কিছ তাঁহার অভাবে আৰু বাংলা 'গত গৌৱৰ হত আগন নত মন্তক লাকে', সকলের ছারে ভিবারীর অবজা ও অবহেলার পাত্র এ বিষয়ে কাহার সন্দেহ আছে? কে আছে আৰু ভাঁছার মত জীবন-মরণ পণ কবিষা, বাংলার তথা সমগ্র ভারতের ২৮ শোণিত-ভর্ণণে এই পুণ্যভূমিকে সিঞ্চিত করিয়া দেশের অতীত গৌরবকে ভাগ্রত করিতে প্রস্তুত ? কাছার আহে সেই ভয়-বিবাধীৰ মুচ সিদ্ধান্তযুক্ত চিত্ত, কোৰায় আছে সেই হির সংকল, অদম্য উৎসাহপূর্ণ হলয়, কে আছে পুরুষসিংছ, যাহার কঠনিঃসভ বাদী বল্লনির্ঘার ভার সমস্ত দেশের লোকের মদ আলোড়িত করিতে পারে? দেশের আজ চরম ছবিন ; অভাব-অভিযোগ চতুর্ভিকে, এবং বাংলার আৰু সৰ্বাপেকা নিদায়ণ অভাব নেতৃত্বের। কংগ্রেসের ধল আৰু দলগত ও ব্যক্তিগত খাৰ্ণের চিন্তায় বিআছ ও আদর্শচ্যত এবং সেই অবকাশে বেশে বিক্ষোত পট্ট করিতেতে রাষ্ট্র-ধ্বংসকারী বিদেশীর চরবুন্দ।

নেতাজীর জয়কানি "কর বিশ্" শুনা বার চতুর্বিকে,
শতকঠে লোকে গাহে "কলম কলম বঢ়ারে বাও"। কিছ
উহার কঠোর সংঘম, সন্দূর্ণ আরোংসর্গের উলাহরণকৈ
আলপ্রণে এহণ ক্রিবার লোক তো কোবারও বেবা বার
মা। নেতাজী সূভাব হিলেন বাংলার মুবশভির জাএত
প্রতীক। কিরণে উহার মধ্যে খাবীনভার অলভ পাবক বৃর্ড
ইবা "আলার বিশ্" কোক"কে অহ্পাণিত করে নেকবা

👫 🕞 ক্লেমিক কৰিবাৰে। কিছ কি সাধনা, কভ ভপভাৱ কলে তাৰা সম্ভব হইয়াছিল সেক্ধা কেহই একবারও চিন্তা করে না। যে যুবশক্তি বাংলার ভবিশ্বতের আলাভরদা তাহা আক ভুল পৰে চালিভ ও বাৰ চেঠার লক্ষ্যত্রট হুইরা নিরুদ্ধেশ যাত্রা করিবার আহোকন করিতেতে। আৰু বাংলাদেশে কেহ নাই তাহাদের বুরাইতে যে, বিনা সংঘ্য-পৃথ্যার উদায গতিতে চলিলে তাহাদের বর্ত্তমান ও ভবিশ্বং হুইই অভ্যকার। সম্প্ৰতি কলিকাভার নেভাৰী-দিবদের অব্যবহিত পূৰ্বে. ছাত্ৰবিক্ষোভের ফলে যে নিদারণ বিপর্বার দেখা পেল ভাছা विषय देनदोक्कमक । औ चहैनांवली अवलयन कृतियां अक्षांच वार्या नाटकत मरूक छेशात--महीमक्ती ७ व्यक्तितीवर्गटक गांनि प्रथमा ७ चिंदरांश-चक्र्रांतम भनेन्छि हीरकादम চচুৰ্ছিক কম্পিত করা। কিছু দেশের মদস ও ছাতির প্রগতি-कामी वाक्किमादबरे छेशाट जायंच वा प्रदर्ध स्रेट शादबस मा। চিছাৰীল লোকমাত্ৰেই ইহাভে দেখিবেল শক্তির জপচয় ও ভাতির অবোগতি। কেননা এতগুলি ভীবন নষ্ট হুইল, এতটা শক্তি ও সম্পত্তির নাশ হইল অয়ধা ও বিকলে। সভাসভাই ঐ যুবশক্তির উহাম ও বিশুখন অপপ্ররোগে হদি বিশেষ লাভ কাৰারও হইরা বাবে ভবে ভাষা হইরাছে দেশের গ্ল জাভির শত্রুপক্ষের। আমরা উহাকে অপপ্রহোগ বলিতে বাব্য, কেননা के मंकि यथायथ चारव, मश्यम ७ मुखनात महिल, श्रवूक व्हेरन উহা সহস্র খণ কার্য্যকরী হইতে পারিত।

#### সর্বোদয় দিবস

গাৰীদীর মহাপ্রছাদের প্রথম বার্ষিকী উপলক্ষে কংগ্রেসের সর্ব্ধ-ভারতীর কার্যনির্ব্ধাহক সমিতি নিয়নিবিত সরন্ধ-বাক্য ও কর্তবানির্বেশ করিরাছিলেন। তাঁহার নিবারণ হত্যাকাণ ঘটে এক শুক্রবারে, মাধ মাসের ১৬ তারিবে; এ বংসর ভার বার্ষিকী পকে রবিবারে, ১৭ই মাবে। বেশের লোক অনেক্টা গভাহগতিকভাবে এই নিবস গানী-প্রশ্বিতে ফাটাইরাছেন; চিন্তানিল লোকে বৃত্য করিরা গানীধীর ভাব ও ক্রের মাহাদ্য উপলবি করিবার চেটা করিরাছেন। বিগত ভিন্ন শভ প্রবাদ্ধী দিনে জীববেও জাচার-জহুঠানে ক্রক্তম তাহা কার্ব্যে জহুটিত করিবার চেটা করিবাছেন তাহার হিসাব ব্যক্তিগভ ব্যাপার। কারণ গাণীকী বৃদতঃ ব্যক্তির সভতার ও হজ্তার উপর নিজের সংভার-প্রচেটার ভিন্তি ছাপন করিবাছিলেন। সেইকত কংঝেস ক্রিটর সংক্তম-বাক্য জাতির উদ্বেশ বোষিত হইলেও তাহার সাক্ষ্যা নির্ভির করে একাছভাবে ব্যক্তির উপর। এই ক্যাটা ক্ষরক্রম করিবার প্রয়োজনে, তাহা ব্যক্তির ও জাতির সমূবে তুলিরা ব্রিকাম:

"ভারতের সুণীর্থ মুক্তিসংগ্রান, বে সংগ্রান পুরুষ পরন্দারার পূর্ববর্তীদিপের জীবন হটতে পরবর্তীদিপের জীবনে সঞ্চারিত হটরাছে, ভাছার ইভিহাসে ভারত ছঃখ ও সাফল্য উভয়েরই অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছে। যেমন বহুক্তেরে পরাভ্য ভেমনই বহুক্তেরে অয়লাভও করিয়াছে। কিছ জাভির পিভার সর্বাতোগ্রের নেতৃত্বের ওবে ছঃখ জনসাধারণের জীবনকে সং ও ওব করিয়াছে, প্রত্যেক পরাজ্য জনসাধারণের প্রয়াসকে হিওব উৎসাহে উর্বোবিত করিয়াছে এবং জয়লাভের ভূমিকা রচনা করিয়াছে।

"সাক্ষতিক কালের করেকট বংসর পরীকা ও বিপত্তির কালরণে দেখা দিরাছিল। কিন্তু এই সময়েও গাঙীলীর বাদী পুনরার জাতিকে প্রেরণা দান করে। এই করেকট বংসরের প্রয়াস কিছু পরিমাণে সাকল্যও লাভ করে এবং যে বাদীনভার জন্ত পুরুষ পরম্পরার আমাদের জাতি সংগ্রাম করিভেছে ও হুঃব সন্থ করিয়াছে, সেই ঘাদীনভাও আমরা লাভ করিয়াছি।

"কিছ একট বড় ছাত বীজার করিয়া আমাদিগকে এই বাবীনতা লাভ করিতে হইরাছে, কারণ মাঙ্গুরি বিবভিত হইরাছে। দেশ বঙ্গের এই শোচনীয় ঘটনার পরে জনসাবারণের মধ্যে যে উলাদের মত ক্রিয়াকলাপের মছতা দেবা দের, তাহাতে যনে হইরাছিল যে, সেই প্রত্যেকট মহুং আদর্শ যাহার ছফ গামীলী সাবনা করিয়া আসিরাছিলেন তাহা সকলই যেন সেই সমহের যত অনুষ্ঠ হইরা সিরাছিল। কিছু জহুকার্যয় অবহাও পুনরায় গামীলীর আশামন্ত্র বাদীর আলোকে উদীর্য হইরা উঠে এবং বেদনাপ্রভিত অসংব্য হুদ্র সেই বাদী হইতে সারুনাও পঞ্চি লাভ করে।

"ভাষার পর আসে সবচেরে দারণ আঘাত। বিনি ভারতের অপরাজের আদিক শক্তির এবং প্রের ও ক্ষুণার বৃষ্ঠ প্রকাশ, উাহাকেই হভ্যা করা হইল। এই কারণে বে প্রান্তির হভ ভারত প্রবাস পাইরা আসিতেরিল এবং স্থাবি সংগ্রামের পরিপতিরপে বাহা লাভ করা হইল, সেই হাবীবভার সহিত হাবীবভার উদীপনা আসিল দা— আসিল হংব ও ভরবিজ্ঞানতা। "গানীখীর স্থতির প্রতি সপ্তাহ মবোভাব রক্ষা করিব।
এবং ভাষার প্রথভ শিকার প্রতি নিঠা রাবিরা বেশ এই
সকল ভরতর সভটের প্রতিবিধান করিতে প্রতত হইল।
সকল সভটের মধ্যে সবচেরে ভীবণ হইরাহিল আত্মার
সভট, বাহার কলে ভারতের চিত্ত মলিনভার আত্মর হইরাহিল এবং সেই লোকগুল বে মহং শিকা বিরাহিলেন
ভাষা বেশ কিছুকালের মত বিশ্বত হইরাহিল।

"যিনি ভাতিকে খানীনতা ও নবজীবন থান করিছা গিরাছেন ভাঁহার তিরোভাবের পর পূর্ণ একট বংসর পার হইরা গিরাছে। ভাঁহার ভিরোভাবের প্রথম বার্ষিক থিবসে আমরা ভাঁহার মহান্ আছার ও মহং বানীর প্রতি আমাদিগের প্রভা নিবেদন করিতেছি। জীবনসকারিনী সেই বানী হইতে শিক্ষার আলোক প্রহণ করিয়া আমরা ভারতের জনসাধারণ ও নিধিল মানবের সেবা করিতে থাকিব, আজ এই সকল আমরা প্রহণ করিতেছি।

"গাঙীজীর নেতৃত্বে অহিংসার পথে সমগ্র জাতির কচ রাষ্ট্রক বাবীনতা অর্কিত হারীনেতার কচ চেঙা করিতে হারীনতার কচ চেঙা করিতে হইবে। আমাধিগকে অবস্তই অরণে রাবিতে হইবে যে, কমসাবারণের সেবা করিবার কাককেই সবচেরে বছ ত্রোগ ও এতরপে আমরা গ্রহণ করিবাহিলান, ভবিয়তে এই কনসেবার কাককেই এতরণে আমাধিগের পালন করা উচিত এবং পালন করিতে হইবে। বাঁহারা এই নারিছ ভূলিরা বিরা সরকারী পথ ও ক্ষতার কচ প্রস্কু হুইতেহেন ভাহার। দেশেরই ক্ষতি করিতেহেন।

"গাদ্বীন্দীর নিকট হইতে বিশেষভাবে আমরা এই
নিক্ষা লাভ করিবাহি বে, শাদ্বিপূর্ণ পদ্ধার শ্রেণীবৈষ্মানীন
সমাক্ষরবদ্ধা প্রতিষ্ঠার কর, গোর্জ ও বর্ম অনুসারে মানুবের
মর্ব্যাদা বিচারের প্রভেদবৃদক প্রথা ঘুচাইরা দিতে হইবে,
ভারতের সর্ব্যসমাকের মধ্যে পারস্পরিক প্রীতি ও ঐক্যা
প্রতিষ্ঠা করিতে হইবে এবং সেই লক্ষ্যের দিকেই সকল
সেবাবৃদক প্রচেপ্তা বেশী করিবা নিয়োজিভ করিতে হইবে।
স্বার উপর তিনি এই শিক্ষা দিরা গিরাহেন বে, সর্ব্য অবস্থার সকল প্রকার ত্যাগ বীকার করিবাও নৈতিক সভতার প্রতি নিঠা রাধিতে হইবে, কারণ শীব্রের ভাংপর্বাই এই নৈতিক সভতার হারা নিম্নণিভ হইবা
বাকে।

"বাধীনভার সহিত ভারতের নৈতিক বর্ণালা বেব উভরোভর প্রসারিত ক্টভে পারে এবং গারীলী বে সকল নবং লন্দোর প্রতি ভারার সাধনা নিরোজিত করিয়া-ছিলেন ভারা অর্জন করা সভব ক্টভে পারে, ভারারই বাবীর নির্দেশ অভ্যারৰ করিয়া ভাতীর ও সর্জ-ভাতীর সঙ্কট এবং বিপণ্ডির প্রতিবিধান করিবার ক্বভ আনরা সক্ষস আগ্রহ কইয়া প্রয়াস ক্রিব।"

#### मर्क्वामग्र कर्खवा-निर्फ्रम

গানীলীর "সর্কোদ্বের" আদর্শ কোন বিশেষ জাতি, ধর্ম ও বেশের মধ্যে আবদ ছিল না। প্রাচীন ভারতের "বস্থেব কুটুবক্ষ্" এই আদর্শ গানীলীর জীবনে ও কর্মের রূপ পরিপ্রহ করিবাছিল। জগতের কোট কোট লোক ওাঁহার জীবনের আলোকে এই আদর্শের মর্ম্ম কথা আরু নৃতন করিরা উপলব্ধি করিতেছে। তিনি কেবল আর্দ্ম প্রচার করিরা সন্তই ছিলেন না; আলীবন ভাহার নির্দেশ নিজের জীবনে স্কাচরণ করিরা, এই আর্দ্মকি আমানের পক্ষে করিরা দিয়া গিরাছেন। এই সাধনার উত্তর-সাবক তিনি রাখিয়া গিরাছেন। আচার্ব্য বিনোবা ভাবে ওাঁহালের মধ্যে এককন। তিনি এই "সর্কোদ্য" দিবস উপলক্ষে, এই সহক্ষ কর্মবাগুলি আ্যান্তের শ্রবণ করাইরা দিরাছেন:

- ১। প্রভাক কর্মী নিরমিত হতা কাটবেন।
- ২। তিনি বাদি পরিবান করিবেন—এই বাদি নিজ হাতের স্থতার তৈরারি হইবে জববা সজের তৈরী প্রমাণিত হইবে।
- ৩। তিনি যথাসম্ভব প্রামে প্রস্তুত জিনিরপত্র ব্যবহার করিবেন।
- ৪। নিজের খরে থাজিলে যাছাতে গরুর ছব পান
   সেই চেষ্টা করিবেন।
- । মালে অভত: একদিন তিনি নিজে পারধানা সাক্ষ বা ঝানের খাত্মবিধান সম্পর্কীর কোন কাল করিবেন।
- ৫। বে ছানে বুনিরাদী শিক্ষালর আছে সেধানে ধাকিলে নিক্ষের ছেলেদের ঐ শিক্ষালরে পাঠাইবেন।
- १। তিনি দেবনাগরী, উদুর্বিবং দক্ষিণ ভারতের বে
   কোন একট নিশি শিবিবেন।

গানী পাঠের ইহাই "অ, আ, ক, ব"। এই পাঠ অভিক্রম করিরা "গভীরে" গেলেই সর্কোদর বিভার পভিত হওরা বার এবং গানীলীর আদর্শকে রূপদান করিনার পভি অর্জন করা বার।

#### কলিকাতায় জনতার বিক্ষোভ

গভ নাব নাসের ৩-৪-৫ তারিবে কলিকাতার বুকের উপর বিরা বে বছ বহিরা গেল, তর্গলকে শিক্তিত জনতার কার্যক্রাপের যে পরিচর আনরা লাভ করিরাহি তাহাতে বাঙালীর তবিভং সহরে আনাবের চিভাবিত করিরা চূলিরাছে। এই উরাদনার ননভত্ব সহরে কোন আলোচনা করা সবর সাপেক। কিছু এই উপলপ্পে পশ্চিমবন্দের বরী-বঙলী ও অবিভারীবর্গ বে বিবেচনার অভাবের ও কংগ্রেস করিট বে অকর্ষব্যভার পরিচর বিরাহেন তংগ্রতি বৃষ্টি আকর্ষব

ৰা ক্ষিলে কৰ্ত্ত্য-চ্যুতি হইবে। বেশের মধ্যে সমাজ-বিরোধী লোকের তংপরতা বাছিরাছে, এই তথ্য প্রতিষ্ঠা ক্ষিতে পারিলেও, কোন সাল্বনা লাভ করা বার না , বর্ত্তনান অসভোবে ইন্ধন বোগাইবার লোকের অতাব নাই বলিরা পুলিসের শুলি চালাইরা সে সমস্যার সমাধান হটবে না। কোনও বেশে কোনও কালে তাহা হর নাই। ইংরেজ আমলের অভিজ্ঞতার পর এইরূপ চেষ্টার ব্যর্থতা সহত্তে কোন সন্দেহ থাকিতে পারে না।

পূর্ববন্ধ হইতে আগত বাছত্যানীর অভাব-অভিযোগ লইরা দ্ববার করিবার অভ শিরালদহ টেশনে এক বিরাট জনতা জ্যাবেত হর। এই উদ্দেশ্তগাধনের অভ আয়োজন-উভোগ হইরাছিল নিশ্চয়ই। বিনা চেটার সহত্র সহত্র লী-পুরুষ এক ছানে মিলিভ হইতে পারে না। এই চেটার সংবাদ কর্তৃপক্ষের মিকট কি পৌছে নাই ? পশ্চিমবন্ধের প্রধানমন্ত্রী ডাঃ বিবানচন্দ্র রারের বিবরশীতে এই সম্বন্ধ কোন উল্লেখ দেখিলাম না। আশ্রয়ার্থী শিবিরগুলির সঙ্গে প্রবর্ধে জান-বালতার পরিচর পাইতাম না।

ভারণর ভনিতে পাই, নিরালদহ টেশনে সমবেত জনমঙলীর নিকট পুলিসের একজন ভেণুট কনিশনার উপছিত
হইরা প্রভাব করেন বে, তাহাদের মধ্যে চার-পাঁচ জন
প্রতিনিবিছানীর ব্যক্তি পণ্ডিত জবাহরলাল নেহরের সহিত দেখা
করিতে পারেন; সেইরূপ ব্যবহা করা হইবে। এই কথার
আবাদের সন্দেহ প্রবাণিত হর বে, কর্ত্তৃপক্ষ সরর্বত জনবিক্রোভের সংবাদ পান নাই বা ভাহার উপর গুরুত্ব আরোপ
করেন নাই। নিরালদহ টেশনে বখন জনতা সমবেত হইরা
সিরাহে, তখন হাতের পানা কসকাইরা দূরে চলিরা সিরাহে
বলিলে জভার হইবে বা। ভাহার পর "ট্রার গ্যাস" ও
"লাটি চার্ক্ত", অভ কোন অগ্নত প্রিল্ডের ভানা নাই।

শিরালদহের ব্যাপারের প্রতিবাদে কলিকাতার বিশ্ববিদ্যালরের ছাত্রবুল বিকুল ও চঞ্চল হইরা উঠিল, বিশ্ববিভালরের আদিনার সভা করিল এবং লালদীবির পারের শাসকসম্রেলারকে প্রতিবাদ আনাইবার ছভ রওরানা হইল। ইন্দোনেশিরার উপর ভাচ সাম্রাজ্যবাদের আক্রমণের বিরুদ্ধে
বিক্ষোভও লাকি এই সকে জভাইরা পঢ়িরাছিল। পূলিস
ছাড়া আর কাহাকেও পাওরা পেল না বাহারা এই শিক্তিত
জনভাকে সংবত ও নির্ম্নিত করিতে পারেন। সেইরূপ চেটা
করিরাও লাকি বিশ্ববিভালরের কর্তৃপক্ষ বিকল মনোরথ
হইরাছিলেন। কংগ্রেসের নামে বাহারা দেশের লোকের
প্রতিনিধি সাজিরা চরিরা কেরেন ভাঁহাকের দেখাও পাওরা
পেল না স্করাং পূলিস ও ছাত্রেরা সর্ম্বীন হইরা এবন এক
বিপর্যারের স্ক্রী ভ্রিল বার কলে কলিকাতার ইামগাড়ী, বাস

গাড়ী পুঞ্জি, করেকজন বাঙালী সভান পুলিসের ভলিতে প্রাণ হারাইল।

धर परेमात करन भवत्व किंद विक्राप अकरे। विक्रमात প্র হটরাছে। দেশের লোকের মন বদি এমন করিরা দেশের শাসনব্যবস্থা হইতে বুধ কিরাইয়া লয় তবে ভবিষাতের ভরসা কোধার, এই প্রান্নের উত্তর আমাদের भक्ताक चुँकिए इटेरव। देशदाकत चांभाम चरनक দোষাদোষীর কারবার করা হটয়াছে। আৰু সেই পথ ও পছা অচল। যাহাদের হাতে ভারতরাষ্ট্রেও তাহার অভত্ত প্রদেশসমূহের শাসনভার আসিয়া পড়িয়াছে পুত্র মন লইয়া বর্তমানের সমস্থাসমূহের সন্মুখীন হইতে যদি ভাঁহার। না পারেন, তবে কোন সম্ভার সমাধান হইবে না। এই মৃতন মন পাইতে হইলে ফাইলের উপর মুধ গুলিয়া থাকিলে চলিবে না, জনভার সলে থিশিতে হইবে, জনভার নাড়ী টীপিয়া বদিয়া থাকিতে হটবে, জনতার জন্তাব-জভিযোগের মধ্যে নিৰেকে সংশ্লিষ্ট করিতে হইবে, নিৰের তথাক্ষিত শিক্ষিত মনের নানা সংস্থার জ্যাগ করিতে হটবে, এবং যে সংবেদন-শীলভার দৌলতে গাখীলী ভারতীয় জনভার মনে স্থান পাইয়া विलान, जाशांत अञ्चीनन कृतिए एटेर्ट । मूजन बूर्गत बहे मूजन जाबमा महनशारन अहन ना कृतिहरू भातिरम, चामारमंत्र जन रहे। বাৰ হৈবে, বাৰনৈতিক স্বাধীনতা বন্ধ জ্লাশয়ে পরিণত হইবে।

জনসভার অনেক পরিকল্পনার কথা ভনিতে পাওরা যার, সেই পরিকল্পনা জীবনে ও কার্বো পরিণত করিবার চেষ্টা আরগুও হর নাই। লোকেরা অবৈর্গ্য হইবার যথেষ্ট কারণ আছে। অসতভা ও লোভ দেশের বনিক শ্রেণীর একাংশের মনে বেয়পভাবে দানা বাঁবিয়াছে, ভাষা ভাদিতে না পারিলে, গণমনের অবৈর্গা রক্তক্ষরী অস্তবিক্রোহে পরিণত হইবে। ক্লিকাভার গত মাসের শিক্ষা এই আশ্বাই আশুনের অক্তরে লিবিরা দিবাছে।

#### নৃতন বিক্রয়-কর

বদীর ব্যবছা-পরিষদে এক দিনের মধ্যে বিজ্ঞার-কর সংশোধন বিলট পাস করাইরা লওরা হইরাছে; উহার তাংপর্বা কি জনসাবারণ তাহা বৃত্তিবার একটুও সুযোগ পার নাই। মৃতন আইনাস্থসারে দিয়াশলাই, করলা, সরিষার তৈল, আলামি কাঠ, মূল, সংবাদপত্র ও সামরিকপত্র প্রভৃতির উপর টাকার তিন পরসা হারে বিজ্ঞার কর বসিবে; অর্থাৎ উত্তম বরানো হাতে সুক্র করিরা, স্বানে, আহারের প্রতিপ্রাসে, এমন কি রুত্তার পর চিতারোহণে পর্বাভ সকল বাঙালীকে বিজ্ঞার কর দিয়া যাইতে হইবে। মিউ ইয়র্কের ভার বনস্থবেরের দেশেও সংবাদপত্র ও সামরিকপত্রকে বিজ্ঞার-কর হইতে আব্যাহতি বেওরা হইরাছে; পাকিস্থানের ভার শিশু রাইও বিজ্ঞার-কর হইতে পাঠ্যপুত্রক বাদ বিরাহে। প্রতাহিক

খাৰীন দেশের পক্ষে গণ-শিক্ষার উপর কৌনন্ত্রপ কর বার্ব্য করাই অভার; শিকা বত ব্যাপক হর তংগ্রতি লক্ষ্য রাধাই কর্তব্য। ব্যবস্থা-পরিষদের সভ্যগণ সভ্যতার এই ব্লনীতির প্রতিপ্ত লক্ষ্য রাধেন নাই এমনই জাহাদের বৃদ্ধি বিবেচনা।

আখিন মাসে আমরা বিক্রয়-কর লইয়া কিছু মুখবা করিয়াছিলাম। আমরা লিবিয়াছিলাম যে, এমন করেকট বাছাই করা অব্যের উপর বিজয়-কর বসানো যায় যাহাতে क्ममाबाद्रावद काम कट्टविया एवं मा. व्यवह मदकाद्वद शहुद আর হয়। এই সম্পর্কে আমরা চট ও প্রিরা, শেরার মার্কেট এবং ডিসপোভালের মালের উপর বিক্রম-কর বসাইবার পরামর্শ দিয়াছিলাম। পত বংসর কলিকাতা হইতে ১২৭ कांक के कांका करें अ पनिया विषय तथानी प्रयाद ; ইহার উপর বিক্রয়-কর থাকিলে তিন প্রসা হারে প্রায় হয় কোট টাকা আদায় হইও। বাংলার Б**Б**-करमद माल्डित थात्र जिन-ठलुपीरमहे यात्र बिटिंग : भारे বেচাকেনার লাভ যার ভয়পুর, মারোরাড় ও বোখাইয়ে : কাঁচা পাটের দানের তিন-চতুর্বাংশ যায় পাকিছানে এবং শ্রমিকের মজুরী যার বিহারে। চটকলে যে পরিমাণ লাভ হয় তাহাতে টাকার তিন পরসা ট্যাক্স দেওরা তাহাদের পক্ষে কিছট নয়। পৰবে কি বলিয়া পাকেন যে, রপ্তানী ক্রব্যের উপর বিক্রয়-কর বসাইলে বান্ধার ধারাপ হইবে। কথাটা সভ্য নহে। যান্তাজ্যে প্রধান রপ্তানী ক্রব্য চাম্চা: ভাছার উপর দীর্ঘকাল যাবং বিজ্ঞাৱ-কর আছে, ভাহাতে মাল্রাজের এই রপ্তানী ব্যবদার ক্ষতি হইয়াহে বা বাজার খারাপ হইয়াহে বলিয়া আমরা শুনি নাই।

ক্রান্থেও বাংলার ভার প্রথমটা এলোপাণারি সকল ক্রব্যের উপর বিক্রন্তর বসান হইমাছিল। কার্য্যকালে দেখা গেল বছসংখ্যক গরীবের উপর এই কর চাপাইতে গেলে আলার কম হয়, লোকের ট্যান্স কাঁকি দেওরার প্রবৃত্তি দুচতর হয় এবং অসভোষ বাড়ে। অতঃপর করাসী গবর্ষেক্ত অলসংখ্যক বাছাই করা লামী জিনিবের উপর বিক্রম্বন্তর বসাইরা নিত্য ব্যবহার্য্য ক্রয়গুলি বাদ দিরা দেন, তাহাতে লোকেও সভাই হয়, সকলের আরও বাড়ে। শেরার মার্কেটকে তাহারা বিক্রেয়ন্ডবের আওতার আবেন। ক্লিকাতার শেরার মার্কেটকেও বিক্রয় করের আমনেন না আনিবার কোন কারণ নাই; ইছারও লাভের অবিকাংশই ক্রপুর, নারোরাড় প্রভৃতি প্রদেশে যার, খানিকটা না হয় বাংলার খাকুক।

কলিকাভার প্রতি বংসর বহু কোট টাকার ভিসপোজালের বাল বিজর হইতেছে, ইহার উপরও বিজর-কর নাই। থাকিলে বার্ষিক কোট টাকার উপর সরকারের আর বাছিবার কথার। ইহার বিরুদ্ধে সরকারী মুক্তি এই বে, সবর্ষে উক্তে ট্যাল্ল করা বার না। কথাটা ঠিক নর। বাংলা-সরকার তাহাবের পৃত্তকাধি বাহা কিছু বিক্তর করেন ভাহার উপর বিক্তর-কর আহার হয়; হুভরাং ভারত-সরকারের দারা বিক্রীত ক্রব্যে বিকর-কর আদার করা বাইবে না কেন ? ভাকা দাকা করটা দিবে ক্রেভা।

বিক্রব-করের পরিষাণও বাংলাদেশে অভ্যবিক। নিউ ইর্ক প্রভৃতি আমেরিকার অধিকাংশ ষ্টেটেই বিক্রব-করের পরিষাণ শতকরা হই টাকা মাত্র, কালিকোনিয়ার আভাই টাকা। ভারতবর্বেও মাত্রাকে টাকার এক পরসা, বোঘাই বিহার মুক্তপ্রদেশ প্রভৃতিতে টাকার হই পরসা, একমাত্র বাংলাতেই বিক্রব কর টাকার তিন পরসা অর্থাং শতকরা ৪॥৩০ আনা। পঞ্চালের মুব্রভরের এবং ভারত-বিভাগে বিহন্ত বর্তমান বাংলায় এত উচ্চহারে কর বস্তত:ই প্রভাগান্তুক, ভাহার উপর মাত্র ৫০ কক টাকা আর বাড়াইবার কর জাবম্যাত্রার সকল প্রব্যের উপর ঐ কর সম্প্রসারণ ত রীভিমত অভ্যাচার।

আখিন মালে আমরা আর একট কথা লিখিয়াছিলাম যে, विकाद-कृत चार्शाय-वावष्टा छाल ना सहरल चननाबादन ট্যান্ত দিয়া মত্রে কিছ উহার অধিকাংশই সরকারী কোষাগারে পৌছার না, যায় অসাধু ব্যবসায়ী ও ছ্নীতিপরায়ণ সরকারী কর্মচারীদের কবলে। বিক্রম-করের পরিসর বৃদ্ধির আপে গবৰেণ্ট এ বিষয়েও কিছু অনুসধান করিয়াছেন বলিয়া আমরা শুনি নাই, বরং কার্যাভ: উহার বিপরীভই দেবা যাইতেছে। বর্ত্তথান বিক্রয়-কর ক্ষিপনার এই বিভাগ পরি-চালনায় দক্ষতা দেবাইতে পারেন নাই। শোনা যার একজন এসিদটাত ক্ষিপনারের বিরুদ্ধে করেক মাস আগে হুর্নীতি मधन विভাগের অনুসন্ধান আরম্ভ एटेलে তিনি ছট লইয়। বিলাভ চলিয়া গিয়াছিলেন : সম্প্রতি তিনি কিরিয়া আগিয়া কাৰে যোগ দিয়াছেন ইহা কি সভা ? ভাঁহার সহদে ঐ ভবস্থ শেষ হইয়াছে কি ? ইনি কি পূৰ্বে আৱকর বিভাগে কাৰ ক্রিতেন, সেধান হইতে ভিনি ছাড়িয়া আসিলেন কেন--সে বিষয়েও কোন সন্ধান লওয়া হইয়াছে কি? সেউ ল সেন্ধৰে ভারপ্রাপ্ত এপিস্টাণ্ট ক্ষিশনারের এলাকা সমগ্র বদদেশ কিছ তাঁহার হাতে ছোটবাট বাঙালী ব্যবসায়ী ভিন্ন বভ বড় ব্যবসায়ীর উপর ট্যাক্স বার্ব্য হয় না কেন গ একজন এসিসটাণ্ট কমিশনার বহুসংখ্যক কাইল জ্যাইয়া পদত্যাগ করিয়াছেন এবং এবন ঐ আপিসেই ওকালতি করিতেছেন। এ কবা কি ঠিক এবং সভা হইলে ইহার প্ৰশ্ৰৱ কে দিল ? কোন কোন ট্যান্ত অকিনাৱ বড় বছ ব্যবসায়ীদের উপর কর বার্যা করিলে উছা ক্যাটবার বা হাভিয়া দেওৱার ভ্রুত উপর হইতে চাপ আসে, এমন কৰা প্ৰাৱই শোনা বার। প্ৰৱেণ্ট ইহা ছানেন কি ? প্ৰভাৱিক শাসন্ধ্ৰণালীতে শাসিত দেশে শোনা ক্থা—hearsay allegations-वर्षन थरन स्टेश फेर्ट जर्म जासारक উপেকা করিতে নাই—বিলাভের লিন্কী 🗦 বিউদালের এই শিক্ষা আমাদেরও এহণ করা উচিত। আমাদের যুচ বিখাস

হাইকোর্টের কল লইরা বিজয়-কর আপিলের কার্যকলাপ ও আবার প্রভৃতি সহছে একট অনুসহান কবিটি অবিলয়ে গঠন করা একাছ আবর্ডক। দরিত্র ও মধ্যবিভ বাঙালীকে সম্পূর্ণ রূপে অব্যাহতি দিরাও বিজয়-কর হইতে বাংলা-সরকারের বহু কোটি টাকা আর হইতে পারে এবং বিজয়-কর বিভাগ সং ও দক্ষ কর্মচারীদের হারা পরিচালিত হইলে অসাধু ব্যবসায়ীদের উপত্রব অনেক ক্যিতে পারে ইহাই আনাদের বিশাস।

### পাবলিক প্রসিকিউটারের যোগ্যতা

चालिशृदात शांविक श्रीनिक्षेष्ठे। दात चाठत मण्यदर् अक्ष তদভের বিষয় আমরা কিছুদিন পূর্বে উল্লেখ করিয়াছিলাম এবং বলিয়াখিলাম যে, ভদ্ভটি মাৰপথে পামাইয়া না রাখিয়া উহা শেষ করা উচিত ছিল। একটি মামলা সম্পর্কে ভদ্মটের উত্তব। মামলায় যাহাদের প্রধান আসামী হওরার ক্বা. সেই সৰ ব্যক্তি বাৰুদাকী হয় অথবা অভাত উপায়ে উপযুক্ত শাভি अछारेश यास अवर यायना भतिकानकरमत रमारव रेश क्रेशांकिन किना--रेशरे दिन जनत्वत विषयवत् । चार्कक जनत्व नाना-প্রকার তথ্য প্রকাশ পায়, ভাতার পরই পাবলিক প্রসিকিউটার কাৰ্যাকাল শেষ হওয়ার তিন সপ্তাহ আগে পদত্যাগ করিভে বাধ্য হন। আমাদের মন্তব্য প্রকাশিত হওয়ার পর ইহা ঘটে। **এই সম্বন্ধে আর একট বিষয়ের প্রতি গবদ্বে ও মনোযোগ** দেম নাই বলিয়া বোৰ হইতেছে। মামলা যথন আরম্ভ হয় তথন খালিপুরে এক্ষন পাবলিক প্রসিকিউটার, এক্ষন এভিদনাল भारतिक वित्रिकिष्ठीत अर्थ अक्षम अभिन्निष्ठी अतिकिष्ठीत ছিলেন। তদতকারী পুলিস অকিসার মামলার অভিযত লওয়ার বত নিয়মাসুদারে প্রথমে তংকালীন পাবলিক প্রসি-কিউটারের কাছে যান কিছু ভাঁছার কার্যকাল ভবন প্রায় শেষ হইয়া আসিয়াছে বলিয়া তিনি এডিপনাল প্রসিকিউটারের কাছে অকিসারটকে যাইতে বলেন। তিনি ভংপরিবর্তে প্ৰৰমে যাৰ এসিসটাঔের কাছে। ইনি বে ছভিনত দেন তাহার ফলে একজন আসামীর বিশেষ স্থবিধা হয়, সে বুল আসামী না হইৱা ৱাৰসাকী হইতে পাৱে এবং ভাছার বাড়ী তহাসীতে প্ৰাপ্ত পাতাপৰ ও বুল সাৰ্চলিষ্ট আহালতে উপস্থিত হর না। অভঃপর পুলিশ ভারেরীর পরিবর্ত্তন ইত্যাদি লইয়া গোলবোগ হয়। প্রথম পাবলিক প্রসিকিউটারের এবং এসিস-টাও প্রসিকিউটারের অভিযত প্রভৃতি প্রথমে হারাইরা যায়, পরে ভদতকারী পূলিস অকিসারের নিকট হইতে উদার হয়। ইভিষ্যে তংকালীন এডিলনাল প্রসিকিউটার পাবলিক প্রসি-किউটার निर्क रम । देशह मामलात ध्रवान विषय अवर छेन-রোক্ত এসিসটান্ট পাবলিক প্রসিকিউটারের আচরণও ভরতের বিষয়ের মধ্যে। কিছ উপরোক্ত দুতন প্রসিকিউটার প্রভাার করার ইনিই সম্রতি পাবলিক প্রসিকিউটার নিযুক্ত হুইয়াছেন। একই বানলার তিন জনের আচরণ তরভের বিবর বিল; তববের একজন পদত্যাগ ভবিতে বাব্য হইলেন, একজনের পদোরতি হইল এবং তৃতীর জন হপদে বহাল রহিলেন। তদভ সম্পূর্ণ হইবার পূর্বেই এরপ অমৃত ব্যাপার বটবাহে, তদভ সম্পূর্ণ হইবার পরে হইলে কিছু বলিবাব হিল না।

পাবলিক প্রসিকিউটার বাঁহার। হইবেন, তাঁহাদের আচরণ সম্পর্কে অনসাধারণের মনে কোনরপ প্রশ্ন বাহাতে জানিতে মা পারে তংপ্রতি সরকারের বিশেষ মনোবোগ থাকা উচিত। হুনীতির বিরুদ্ধে অনসাধারণের পক্ষ হইরা লভিবার অভ বাঁহার। বিরুদ্ধে হুইবেন, তাঁহারা কোন কারণে, আসামী পক্ষকে আইনের হাত এভাইবার অভ গোপন পরামর্শ বা সাহায্য করিতে পারেন, লোকের মনে এরপ ধারণা করিতে দেওরা রাষ্ট্রের পক্ষে সমৃহ অনিষ্টকর। পাবলিক প্রসিকিউটারদের সততা Cresar's wife-এর ভার সকল সক্ষেহ্রে অতীত হওবা প্রয়োজন।

#### চান্দিনা প্রজাম্বত্ব বিল

কলিকাতা ও সহরতলী এবং হাওড়া মিউনিসিপ্যাল এলাকার বহিত্তি পশ্চিমবদ প্রদেশের অভাভ স্থানের চান্দিনা প্রকাদের বার্থ ও অধিকার রকার জন্ত ১১ বারা সহলিত চালিনা প্রকারত বিলট ব্যবহা পরিষদে গুলীত হটরাছে। বিলে চালিনা প্ৰভাগণকে প্ৰভা ও ভাৰীন প্ৰভা এই ছই ভাগে ভাগ করা হইরাছে। এই সকল প্রভা বাসস্থানের বা ব্যবসার ছত অথবা অভ কোন উদ্ভেক্তে ভবি বন্দোবন্ত লইতে পারেন। दश्विकारात कान जन्मात्री धरे नकन श्रकारक श्रवानणः তিনট ভাগে ভাগ করা হইরাছে। যদি কোন চালিনা প্রকা সম্পত্তি হতাত্তর আইন বলবং হইবার পূর্ব্দে হটতে প্রজাবদ্বের অবিকারী হটরা থাকেন অথবা তাঁহার স্বন্ধ প্রহণের সময় বৰি অঞ্চাত থাকে অথবা তাঁহার স্বতাধিকার কাল যদি ১২ বংসরের কম না হয়, তবে সেই চান্দিনা প্রকা হছে তিনি ছারী, হভাতরবোগ্য এবং উত্তরাধিকারভুৱে ভোগদর্বলের অধিকার পাইবেদ এবং ঐ ভ্যমিতে ভিদি পাকা বা অভ কোন গৃহনিৰ্দ্বাণ, পুছৱিৰ খনন, বুজাদি রোপণ ও ফল ভোগ করিবার অধিকারী হটবেন। বে সব চালিনা প্রভা ১২ বংসরের কম সমরের অভাবিকারী, ভাঁহারা উপরোভ ষেৰীর প্রভাগণ অপেকা কিছু কর অধিকার পাইবেন।

এই বিলের বিবাদ অন্থারী চালিদা প্রকার বাজনা শতকরা ১২।০ টাকার অবিক বৃদ্ধি করা বাইবে দা এবং একবার বৃদ্ধি করিবার পর বাজনা আর ১৫ বংসরের মধ্যে বাজানো বাইবে না। আদালত ইচ্ছা করিলে বাজনা ব্রাস করিতে পারিবেন। যে সব অবীন প্রকা চালিনা প্রকাদের অবীনে অনি দবল করিরা বাজিবেন, উাল্লিসকেও চালিনা প্রকাদের অবিকারের অন্তর্জণ অবিকার বেওরা হইরাতে। অবীন প্রকাদের বাজনা প্রকরা ৪০১ টাকার

বেশী ৰাভানো বাইবে না। চানিনা ববৈর কমি হভাতর, বাজনা-বিরোবের নিলাভি, বাজনা দাবিলের প্রতি, বে-আইনী আর্থ আদারের কচ দওলান এবং কৃষি কমির বস্থ চানিনা বব্দে পরিণত করিবার বিধানও বিলের অভত্তি হইরাছে।

ষকঃবলের চালিনা প্রকা ও শহরের ঠিকা প্রকা দটরা দীর্থকাল যাবং আন্দোলন চলিতেছে। চালিনা প্রকাদের বার্থরকার কর একট বিল বদ বিভাগের পূর্বে বলীর ব্যবহা-পরিবদের শেষ অবিবেশনে গৃহীত হয়, কিন্তু বদবিভাগের কলে উহা আর ব্যবহাপক সভার উপহাপিত করা বার নাই বলিরা বিলট আইনে পরিবত হয় নাই। বর্তমান বিলট গৃহীত হওরার এই অসুবিধা দূর হইল।

#### ঠিকা প্রজা বিল

কলিকাভা টিকা প্রকা বিলে কলিকাভার শহরভলী ও হাওড়ার ঠিকা প্রভা ও যালিকদের অধিকার ও কর্ত্তব্য নির্দেশ कतिया (मध्या स्टेमाट्स । अटे विटन मस्टबन मस्वछनीय ध হাওভার চান্দিন। প্রভাবের স্বার্থরকার ব্যবস্থা ইইরাছে। বিলট উৰাপন করিয়া রাজ্য বিভাগের ভারপ্রাপ্ত সচিব বলেন যে, যত শীঘ্ৰ সম্ভব কলিকাতা ও হাওড়ার বভিগুলি তুলিয়া দিয়া ঐওলির পরিবর্তে উপযুক্ত খাছ্যকর বাসগৃহ নির্দ্বাণ করা যার ভড়ুট মদল এবং গবৰেণ্ট ইহার বন্ধ বিশেষ আগ্রহাহিতও বটে। ঐসব দুভন বাসগৃহ এমন পরিকল্পনার নির্দাণ করা উচিত যাহাতে বিভিন্ন বাড়ী বিভিন্ন আরের লোকের বাসের উপরক্ত হয়। কিছ ঐরপ বৃহৎ পরিকল্পনা বত দিন না কার্যাকরী হইতেহে এবং যত দিন বন্ধি পাকিতেহে তত দিন ষালিকের ইচ্ছাত্রসারে বন্ধি প্রকার অবধা উংধাত বন্ধ থাকা উচিত। রাজ্য সচিব আরও বলেন যে, বভিবাসীদের প্রকৃত অবহা ভানিবার ভঙ সম্রতি প্রবর্ষে তাহারের ভীবনবাঞা প্রণালী সম্বরে একট তথ্য করেন। কলিকাতার শতকরা ১০ট বন্তিতে একণ ভবৰ করা হয় এবং ভাষার অর্ভেকের কল ভানা গিয়াছে। কলিকাতা কৰ্পোৱেশনের নধি অনুসারে শহরে এবন ৪৩१১**ট** বন্ধি আছে। এই সব বন্ধিতে সাধারণত: ছই শ্ৰেণীর লোক বাস করে। এক শ্রেণী হইভেছে ঠিকা প্রভা : খণর শ্রেণী ভাষাদের ভাষাটয়া। ঐলপ একট ভাভাটিরা ভাহার ঠিকা প্রভাকে বে ভাভা বের ভাহা মাসে পড়পড়তা ৭, চাকারও উপর। ভাড়াটরাদের মধ্যে শতকরা ৪২ খনের অধিক লোকের আর নাসে ৫০১ টাকা বা ভাহারও ক্স। শভক্তা বভ ভোৱ ৩৯ট বছির কামরাভে ছালো-বাভাস চলাচল ভাল বলা বার। বভিত্তলিতে জল সরবরাহ ব্যবহা অভ্যন্ত শোচনীর। এই ভদতে পাই জানা সিরাতে, বভি-প্রভারা বে অবস্থার বাদ করে ভাষার উন্নতি অবিলয়ে হওয়া মরকার, বিশেষতঃ জলের উন্নতি এবনই হওয়া উচিত। বভিত্র অবস্থা ভাল হইলে শহরের রোগ ক্ষিত্রা সাধারণতঃ বাহ্যের প্রভূত উর্ভি হইবে।

#### পতিত জমির উদ্ধার

পতিত ছবির উবার করিরা ভারতবারের বাদ্যশন্ত হবির উপার নির্বাবশক্ষে গত এই নাম দিল্লী নগরীতে এক সন্মেলন আহুত হর। কেন্দ্রীর বাদ্যমন্ত্রী প্রীক্ষরবান্দান কৌলংরাম এই সন্মেলনে সভাপতিত্ব করেন। এই সন্মেলনে কেন্দ্রীর রাজ্যবন্ত্রী ডাঃ জন নাধাইও উপস্থিত হিলেন, আর হিলেন বোধাই, রুক্তপ্রবেশ, বিহার, মধ্যপ্রবেশ, পূর্ব্ব পঞ্চার, উন্থিয়া, মধ্যভারত, বিদ্যা প্রভৃতি প্রবেশের, পাতিরালা, জয়পুর ও ভূপাল রাজ্যের খাভ্যমন্ত্রী বা এ বিভাগের উচ্চ কর্ম্মনারীবর্গ। পল্টিমবন্ধের পক্ষ হইতে কেন্থ উপস্থিত হিলেন, এই সংবাদ কার্ম্যবিবরশ্বতে পাইলাম না। পল্টিমবন্ধে এরপ চেষ্টার প্রয়োজন নাই, বোর হয়।

এই সন্দেশনে একট বিরাট পরিকল্পনাকে অপহান করিবার ব্যবহা প্রহণ করা হইরাছে। ভাহার ব্যব নির্দারিভ হইরাছে ২৭১ কোট টাকা। এই বারের মধ্যে ১৪৬ কোট টাকা ভারভরাট্রের মুদ্রার ও বাকী ১২৫ কোট টাকা ভলার ও পাউতে ব্যর হইবে। অর্থাং, ১২৫ কোট টাকা বুল্যের প্রবাদি মুক্তরাই ও বিলাভ হইতে আনাইতে হইবে, এবং ভক্ত আভক্তাভিক ব্যাকের নিকট এই পরিষাণ অর্থের ক্ষত্ত ব্যাকের আবেষন করিতে হইবে।

এই পরিকল্পনার একট কার্যাস্থানীর হিসাব দেখিরাছি।
১০ লক্ষ্ একর, প্রায় ২ কোট বিবা চাবের উপবোদী ক্ষি
৭ বংসরের মধ্যে কৃষির উপযোদী ক্ষিতে হইবে। ৪,৫০০টি
গভীর কুয়া কাটাইতে হইবে প্রায় ১০০ লক্ষ একর অর্থাং প্রায়
১ কোট বিঘা ক্ষমিতে ক্ষলেন করিবার ক্ষ্য। কৃষ্টিম সার
উৎপাদন ক্ষরিতে হইবে। এই কার্যাস্থানীর মধ্যে নাছের
চাবেরও একটা বিশিষ্ট স্থান আছে দেখিলাম। দেশের
প্রায় ৫,০০০ বর্গ মাইল সমুঘতীরে পাঁচট সামুদ্রিক মংভক্ষে
স্থাপন ক্রিয়া গভীর সমুদ্রে মংভ বরার ব্যবস্থা ক্রিতে হইবে।

বে ৬০ লক্ষ একর অবাং প্রার ১৮০ লক্ষ বিধা ক্ষির উচার
নাধন করিবার পরিক্রনা গ্রহণ করা হইরাছে, তাহা নিরলিখিত প্রক্রে ও রাক্ষের মধ্যে তাগ করিরা কেওবা হইরাছে—
পূর্বপঞ্চাবে ১৫ লক্ষ বিধা, পূর্বপঞ্চাবের দেশীর রাক্ষ্যে ১২ লক্ষ্
বিধা, উভিন্যার ১৫ লক্ষ বিধা, মধ্যপ্রদেশে ও বেরারে
চলক্ষ বিধা, মুক্তপ্রদেশে চলক্ষ বিধা। বিহারের প্রবোজন
এখনও জানা বার নাই। এই ১৮০ লক্ষ বিধার মধ্যে প্রার
১৬ লক্ষ বিধা জনি হইবে মৃত্ন, প্রার ১২০ লক্ষ বিধা হইবে
নাশ প্রভৃতি বালে আর্ড জনি।

এই আঁরোজন ও অর্থ্যর সার্থক হইলে প্রার ৫ কোট 30 সক্ষ ন বাজণত উংপাদিত হইবে বলিরা আশা করা হার। বর্তমানে প্রার ১১০ কোট নণ বাজণত বিবেশ হইতে বাবহানী করা হইতেহে, তাহার কত প্রার ১৩০ কোট টাকা নগদ অনিহা বিতে হইতেছে। বে ৭ বংসরে পরিক্রমা সম্পূর্ণ করিবার চেটা হইবে, সেই সনরের নথ্যে আমাদের দেশে প্রার ২ কোট লোকের সংখ্যা বৃদ্ধি হইবে। এই সভাবনার কথা মনে করিবা অনেকে বলিতেছেন যে, ভারভরাট্রে জন্মের হার ক্যাইতে বা নির্বন্ধিত করিতে না পারিলে থাত-ক্যালের বৃদ্ধিতে ভার থাতসমভা বিট্নের না। ৭ বংসর পরে হয়ত দেখিব বে, আরও ১৮০ লক্ষ বিধা ক্ষাতে ক্যাল উৎপাদন করিবা আমাদের অবস্থা যথাপূর্বন্ আছে। ভনিতেছি, সমন্ত পুথিবীব্যাপী থাত্যাভাব আরও ৫।৬ বংসর থাকিবে। ক্ষমংখ্যাও এই সম্বের বাভিবে। এই সমভার বিজ্ঞানের উত্তর কি ? ক্ষমিবোধ না ক্ষমির উর্ব্যরতা বৃদ্ধি ?

### পশ্চিমবঙ্গের কৃষি বিভাগ

শ্রীযাদবেল পাঁলা পশ্চিমবনের কৃষি-মন্ত্রী। তাঁহার শক্তির উপর পশ্চিমবনের বাতপত উৎপাদনের উরতি নির্ভর করে। এই কার্ব্যে তিনি প্রার বার নাসের মধ্যে কিন্তুপ সার্বকতা লাভ করিরাছেন তাহা আনাদের জানিতে হইবে। কৃষির সজে গো-লাতির উরতি অলালি তাবে ক্ষিত। পাঁলা মহাশর এই বিভাগের কৃতত্ব দারী। ইংরেক আমলে এই বিভাগের কৃতিত্ব সম্বন্ধ অনেক ক্ষাই শুনিরাছি, অনেক অপদার্বতার পরিচর পাইরাছি। পাঁলা মহাশরের আনলেও সেইরূপ ক্ষা শুনিতে হইতেছে বলিরা আমরা হঃবিত। বাংলাদেশের কৃষি বিভাগের প্রতন কর্ম্মারী শ্রীদেবেলনার নিম্ন নিয়ালির বিবরণট প্রকাশিত শ্রীরাছে। পশ্চিমবন্ধের আইন-পরিষদের কোন সভ্য প্রার্থ করিয়া এই বিষ্যের সভ্যাসভ্য নির্মার ক্ষাক্র ক্ষাক্র বাছায়া ক্রিলে কৃত্তে বাকিব:

#### গোলাভির উন্নতি বিবানে সরকারী প্রচেষ্টা

গত বংসর ২৪ পরগণা কেলার উন্নত শ্রেণীর কতকগুলি
বাঁড় বিভরণ করা হইরাহিল। পঞ্চাব প্রবেশ হইতে
এই সকল বাঁড় আনা হইরাহিল। ২৪ পরগণার বাঁড়
বিভরণ করিবার পর লোকে দেখিতে পাইল বে,
কতকগুলি বাঁড় "নিম আক্তা" অবাং বলম এবং কৃতক্তগুলি এত অন্নবন্ধ বে, বে উদ্বেক্ত ভালাদের আনা
হইরাহিল এবং বিভরণ করা হইরাহিল সে উদ্বেক্ত সাধনে
ভালারা একেবারে অক্ষম। আমরা অতি বিশ্বস্থারে
ভালারি বে, লাঙল বা গাড়ী টানার কত "নিম আক্তা"
বাঁড়গুলিকে চুঁচুড়া কৃষিক্তেরে পাঠাইরা কেওবা হইরাহে
এবং অন্নবন্ধ বাঁড়গুলিকে বাওরাইরা-লাওরাইরা বড় করা
হইতেহে। বে সকল কর্ম্বারী পঞ্চাবে সিরা এই সকল
বাঁড় নির্মাচন করিরা ক্ষর ক্রিরাহিলেন এবং পঞ্চাব
হুইতে ২৪ পরগণা কেলার পাঠাইরাহিলেন ভালার এবন
কোবাড়ার ক্রিক্তের কি কাকে নিয়ক্ত হুইরাহেন, ভা

আমরা ভানিতে পারি নাই! পিঁকরাপোলে ইহাদের সংবাদ লওয়া উচিত নয় কি ?

#### বিহারে বাংলা ভাষা

পুঞ্লিরার "সংগঠন" পঞ্জিকার প্রকাশিত নিয়লিখিত বছব্য হইতে বাবু রাজেলপ্রসাদের প্রদেশের শাসকবর্গের মতিগতির একটা পরিচর পাওরা বার:

ন্তাং এই ছুলটতে (পুরুলিরা জিলা ছুল) বাংলা ভাষার মাধ্যমে শিক্ষা দেওৱার ব্যবস্থা বন্ধ করিরা বর্তমান ইংরেকী সাল হইতে কর্ত্মপক্ষ কেবল মাত্র হিন্দীর মাধ্যমে শিক্ষাদানের নীতি গ্রহণ করিরাছেন। এই ছুলটর ছাত্র-দের মধ্যে শভকরা ৬০ জনেরও বেলী ছাত্র বাংলা-ভাষাভাষী। ১৯৪৮ সালের শেষভাগ পর্যন্ত প্রবেশীকা বর্বের পুর্ববর্ত্তী শ্রেণীতে যে সব ছাত্র বিভিন্ন বিষয় ভাছাদের মাতৃভাষা বাংলাতে শিক্ষা করিয়াছে, ভাছারা বর্তমান প্রবেশিকা বর্বে (Matric Class) উত্তীর্ণ হইয়া হঠাৎ সব বিষয় হিন্দীতে কিয়পে ব্রিতে পারিবে ভাছা যে কোন সাবারণ মাছ্যের বুদ্ধির জগোচর।

গত ৫ই ও ১২ই মাধ্যে যুক্ত-সংখ্যার এই মন্তব্য প্রকাশিত হইরাছে। তার পর সংবাদপত্তে দেখিতে পাই যে, এই ব্যবস্থার বিরুদ্ধে পৃরুলিয়ার উদীল-সভা একট প্রভাব গ্রহণ করিরাছেন, এবং এই খোষণাও কর্ত্বপক্ষকে কানাইরা দিরাছেন যে, বিহার গবরেও কর্ত্বক এই ব্যবহা ২৮শে কাল্যরারীর মধ্যে বাভিল না হইলে তাঁহাদের পোষ্য ছাত্র-ছাত্রীয়ুল্পকে বিভালয় হইতে ছাড়াইয়া লইবেন। তাহার পর সংবাদ আসিরাছে, পুরুলিয়া ক্লিয়া সমন্ত ছুলের বাঙালী ছাত্র-ছাত্রীয়ুল্প বর্ষ্যট করিয়াছে, এবং এই অভার অবিচারের বিরুদ্ধে কেন্দ্রীয় গবর্দ্ধে তির বিকৃদ্ধি তাঁহাদের অভিতাবকেরা প্রতিবাদ কানাইরাছেন।

পঞ্জি অবাহরলাল নেহের যধন-তথন প্রাদেশিকতার বিরুদ্ধে উদ্ধুসিত হটরা উঠেন; সরদার প্যাটেলও এই তানে ধেরাল মত বোগদান করেন। বিহারে যাহা ঘটতেছে, তংসম্বন্ধে তাঁহাদের মতামত জানিলে তাল হয়। এবং এই উপলক্ষে বিহার প্রদেশের পূর্ব-দক্ষিণ অঞ্চলে বাঙালীর সমস্যার কথা ভাহাদের আবার জানাইরা রাখিতে চাই। প্রায় হর-সাত শত বংসর হইতে এই অঞ্চলে বাঙালীরা বাস করিতেহেন; ১৯১২ থ্রঃ পর্যন্ত তাহা বাংলাদেশের শাসন-ব্যবহার অভ্যূক্ত হিল। এই ইতিহাস মনে রাখিলে বাঙালী হাত্রব্যের শিক্ষার কত হিন্দী চাপাইরা দেওরার কোন ব্রক্তিসম্বত কারণ নাই। বিহারের কংগ্রেস গবর্ষে তাই কাক্ষ করিবার চেটা করিতেহেন। কলে বাঙালী মানেরের মনে প্রবান বিক্লোতের ক্ষি হইরাছে।

এইৰপ অভ্যাচারের বুল উংপাটন করিবার উদেক্তেই আঞ্চ বঁচিশ বংসর হুইভে বাঙালী সবাক দাবী করিতেহেন বে, বিহারের বদভাবাভাবী অবল বিহার হুইতে বিরুক্ত করিরা পশ্চিমবন্দের সলে ভূড়িরা দেওয়া হুউক। পূর্বকালে বিহারী নেতৃরক্ষ এই প্রভাবে আপত্তি করেন নাই। বারু রাজ্যেপ্রসাদও প্রকাতে এই বিভাগের সমর্থন করিরাহিলেন। আক ভাহার মনে হিন্দী ভাষা প্রসারের লোভ জ্বিরাছে। এই মনোভাব বিহারের অভাভ নেতৃরক্ষের মনে সংক্রামিত হুইরাছে। পুরুলিয়ার বিলা-ছুলের মূতন ব্যবহার ভাহার প্রমাণ পাইভেছি। বারু রাজ্যেপ্রসাদকে বলিতেহি, "আপনি মন্দিলি, ভাই। লকা মনাইলি"—এই হুঃও ক্রিবার সময় হুরত এক্দিন আসিবে।

আসামে বাঙালী বিছালয়ে অসমীয়া প্রবর্ত্তন

আসামের তেৰপুর বাঙালী বালিকা বিভালরে অসমীয়া ভাষাকে শিক্ষার মাধ্যম করিবার কভ যে চেটা হইভেছে ভাহার পূর্ব রভাভ এবং অভিভাবকদের প্রভিবাদের বিবরণ নিম্নে প্রকাশিত হইল। সংবাদটি ২২শে মাবের আনন্দরান্ধার পত্রিকার প্রকাশিত হইয়াছে:

( নিজ্প সংবাদদাভার ভার )

ভেৰপুর, ৬ই কেব্রুয়ারী:—এই বংসর হইতে অসমীয়া ভাষার মাধামে শিক্ষা প্রদানের বাবছা করার তেৰপুর বাঙালী বালিকা উচ্চবিভালয়ের ছাত্রীদের যে অপ্রবিধার পঞ্জী হইরাছে ভাহার আলোচনার অভ অভিভাবকগণ অভ সন্মায় সমবেত হন। ডাঃ হেনচক্র দাস সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। শ্রীক্রেক্র্যার বন্ধ, শ্রীক্যোভিক্তর ভটাচার্য্য, শ্রীভূপেক্রনাথ দে প্রমুখ ব্যক্তিগণ সভার বক্তৃতা-প্রসঙ্গে এই বিভালয়ের ইভিছাসের উদ্লেখ করেন। বিদ্যালয়েট প্রধানতঃ বাঙালীদের দারা প্রভিটিত। বিদ্যালয়ের পরিচালক কমিটর এই অভ্নত সিছাছের সকলেই প্রভিবাদ করেন।

সভার করেকট প্রভাব গৃহীত হর। একট প্রভাবে বলা হইরাছে বে, গবর্নেন্টের বিনা নির্দেশ ও অভিভাবকগণের অন্থাতি না লইরা বিদ্যালর পরিচালন কমিট অসমীরা ভাষাকে একমাত্র শিক্ষার মাব্যম করিরাছেন বলিরা এই কার্ব্য বিধিবভিত্ত। আর একট প্রভাবে বলা হইরাছে বে, পাঠ্য প্রকের তালিকা অসমীরা ভাষার দেওরা হইরাছে; স্তভরাং ইহাতে প্রতীর্মান হর বে, পরিচালন কমিট কোর করিরা বাঙালীদের ইছার বিরুদ্ধে কাল করিতে বছপরিকর। ইহাতের সিরাছই স্পারিশ বলিরা গণ্য হইবে। প্রভরাং এই প্রভাব করা বাইতেহে বে, এইরূপ ক্ষেছাচারবৃলক কার্ব্য ক্ষনই বরণাভ করা ঘাইবে না। পরিচালন কমিটকে এই সিরাজ নাক্চ করিতে হইবে, তাহা না হইলে এই সভা সম্ভর্গণের ও সম্পাদকের পদত্যাপ-হাবী জানাইবে; কারণ এই কার্ব্যের ভর্ম ইহারাই হারী।

रण विद्मव मृद्या विद्यालय कर्कुशक्रक कार्रास्त्र अवाय

প্রত্যাহার করিতে বলিয়া একট চরষপত্র বেওরা হইরাছে।
সভার আরও বলা হইরাছে বে, বিদ্যালরের ঘাত্রীসংখ্যার
শভকরা ৪০ জন বাঙালী এবং বিদ্যালরে বাঙালীর হানই
বেনী, স্বভরাং পরিচালন ক্ষিটকে উাহাদের সিয়াভ বাতিল
ক্ষিতে হইবে; সিয়াভ বাতিল না হইলে অভিযোগ দূর করার
জ্ঞ প্ররোজনীর ব্যবহা অবল্যন ক্ষিতে হইবে। একট
প্রতিনিবিদল আসামের শিক্ষামন্ত্রী এবং গৌহাটতে বিশ্ববিদ্যালর
ক্ষিশনের সহিত সাক্ষাং ক্ষিয়া সমভ অবহা জানাইবেন।
পরিচালন ক্ষিটর সিয়াস্তের প্রতিবাদক্ষের অভিভাবকগণ এই
অভিনত জানান বে, এই দশ দিন তাঁহাদের ক্যাক্ষা বিদ্যালয়ে
বাইবে না। প্রভাবের প্রতিলিশি ভারত গবর্ষে উের শিক্ষামন্ত্রী,
আসাম গবর্ষে তের শিক্ষামন্ত্রী, আসাম গবর্ষে তের বিদ্যালরসরুহের পরিদ্যালয়ৰ নিকট পাঠ'নো হইরাছে।

#### ভারতের গৃহসমস্যা

বিশের বিভিন্ন দেশের গৃহসমস্যা সম্পর্কে ইউনাইটেড
মেশ্যল কর্ত্ত্বক সংগৃহীত তথ্য-সংক্রান্ত বিবরশ্বতে ভারতবর্বর
গুরুসমস্যা এবং দীর্ষ মেরাদী গৃহ-নির্দ্ধাণ পত্মিকজনার
উপর কোর দেওয়া হইরাছে। ইউনাইটেড মেশ্যলের সমাক্ষ কল্যাণ বিভাগ এ বিষয়ে একটি রিপোর্ট প্রন্থত করিরাছেন।
এই রিপোর্টে জনসংখ্যা বৃত্তি এবং আর্থিক ছ্রবহার কলে
ভারতবর্ব এখন যে শোচনীর গৃহসমস্যার সন্মুখীন হইরাছে
তাহার বিভ্ত বিবরণ দেওয়া হইরাছে। এই সমস্যা
সমাধানের জ্ঞ একটি প্রতিষ্ঠান গঠনের প্রস্তাব করা হইরাছে।

আমাদের মতে এইরূপ প্রতিঠান গঠন বা রিপোর্ট প্রথমন ভারতীর গৃহসমস্যা সমাবানের উপার নহে। এই সমস্যা সমাবানের উপার নহে। এই সমস্যা সমাবানের সংক উপার আমাদের হাতে আছে। গৃহসমস্যা সহহে ভাবিতে গেলেই আমরা আগে চিন্তা করি সিমেন্টের কথা— অর্থাং পাকা ইবারং বাড়ীই যেন আমাদের একমাত্র বাসন্থান বা কর্ম্মান। সোভিষেট রাশিরার গৃহসমস্যা আমাদের চেয়ে শত গুণ বেনী, কারণ মুর্ভে ভাহার গৃহাদির যে ক্তি হইরাহে সেরূপ কম দেশেই হইরাহে। অথচ রাশিরা বাড়ী বলিতে আগে ব্বে কাঠ এবং কাঠের বাড়ী তৈরি করিরা ভাহারা গৃহসমস্যা প্রার সমাবান করিরা আনিরাহে। আমরা যদি সিমেন্টের পরিবর্জে বাড়ী ভৈরীর সরঞ্জাম বলিতে যাহা সহছে পাওরা হার ভাহা দিরাই ডাজ চালাইবার চেটা করিভার, ভবে আক বাসগৃহের এ ছর্জণা হইত লা।

#### বাঙালী ব্যাঙ্ক পতনের ফল

গভ ভিন-চারি বংসবের মধ্যে প্রায় ১৫।১৬ট বাঙালী ব্যাহের পভন হইরাহে; ভাহার কলে বাঙালী সবান্ধ প্রায় ৫০ কোট'টাকা ক্তিএভ হইরাহে। এই পতনের মুব্য কারণ সহতে আছা কোন সন্দেহের অবকাশ নাই। পরিচালক-বর্গের অসাবৃতা তাহার মধ্যে প্রধান ও প্রথম। এই সহতে দেশের মন কিরপ বিজ্ঞানী হইরাছে, তাহা "বরিশাল হিতৈষীর" নিমলিপিত মন্তব্যে শাই বুবা বার। এই পঞ্জিলার সম্পাদক শীহুর্গামোহন সেন অবিধীকুমারের মন্ত্র-শিষ্ক; তিনি আজীবন ত্যাগের পথে চলিরাছেন; ন্যার ও সততার পক্ষ লইরা সংগ্রাম করিরাছেন; অনর্থক কাহারও উপর বিষেষ পোষণ করেন নাই। এহেন ব্যক্তির মনে যথন কঠোর ব্যবহা অবলম্বনের কথা ভাগিয়া উঠে, তথন বুবিতে হইবে অসাবৃ ব্যাস্ক্রণালকর্ম কি করিরা অগণিত লোকের অভিনাপের ভাগিইতিত্তে । "বরিশাল-হিতৈষী" পূর্ববদের গবত্বে কের নিকট যে অপ্রোধ করিয়াছেন, তাহা মুক্তিসহত। ভারতরাট্রের এই বিষয়ে কোন কর্ত্বব্য নাই কি ? "বরিশাল-হিতৈষী" বলিতেছেন যে পূর্ববদ্ধ হইতে এই ভাবে টাকার রপ্তানি বন্ধ হইলে "গৃহ-ত্যাগাঁও বন্ধ হইবে।

"ব্রিশাল সহরে এবনও ক্রেক্ট ব্যাছের অবশেষ দাঁভাইরা আছে। তাহারা এখনও চাঁকা আহার করে ও ভাহাদের হেড অকিসে কলিকাভার পাঠার। অবচ এই টাকাণ্ডলি ভিন্ন ভোমিনিয়নে চালান বন্ধ হইলে পাকি-ভানের অধিবাসিরক্ষের পাওনা টাকাগুলি অনারাসে আদার হইয়া পাকিপ্রানের আর্থিক অবস্থা ভাল করিতে পারিত। पृष्ठी खद्दान वना यात्र, (नावानानी देखेनियन वाह्य क्या। যত দুৱ সংবাদ পাওৱা যাইতেছে তাহাতে এই ব্যাঙ্কের প্রায় ২০৷২৫ লক টাকা ব্রিশালেই আছে—লোকের পাওনার পরিমাণ ইহা অপেকা কম। অবচ এই ব্যারের পাওনাদার হিন্দু-মুসলমান সম্প্রদারের পরীব লোক। ইহারা পাকিছান গবরে ঠের প্রকা। পাকিছান গবছে 🕏 কি দেখিবেন না—ভাছারা নিরপরাধ নিরক্তর গরীব (ধনী হইলেই বা কি) প্রস্তার টাকাগুলি ভাহাদের সন্থ হইতে অভেৱা লইয়া কলিকাভাৱ মহোংসৰ না করে? তেম্বি কৰা ব্যাহ্ব অব ক্যাল-কাটার। ভাহারা বধন ধণদান সমিতি নেয় তধন এক সর্ভ ছিল ভানীয় পাওনালারদের প্রাপ্য শোর না করিয়া ভাষারা এবানকার টাকা অভন লইরা যাইতে পারিবে ষা। তবু কেন কলিকাভার কর্ত্তপক এখনও নগৰ চাকা এবান হইতে চাহিবে ?"

"ইউনিয়ন ক্রেডিট ব্যাস—বেশ লক লক টাকা মারিয়া কলিকাতা পগার পার হইরাছে। অবচ তাহাদের সব ব্যবসারে লাভ ক্ষকালভাবে চলিতেছে। তাহাদেরও বাহা asset (সন্ধতি) আহে তাহা হারা পাওনাদারদের দেনা লোব হইতে পারে—বদি কলিকাতা হইতে টাকা শোবন লা করে, ইত্যাদি ইত্যাদি—People's Bank.

Speci Bank अञ्चित अधिक कर्द्धात नावद्यायमध्य क्या छेडिक।"

#### শিক্ষার সংস্কার

মাত্পর্ত হৈতে মানব-শিশু বহির্গত হইয়া আলো-বাতালের এক বৃত্য পরিবেশের মধ্যে পড়ে; তাহার পরীর মনের একটা শিক্ষাদীকা আরম্ভ হয়। সহজাত শক্তিও সংকার এই বৃত্য পরিবেশের মধ্যে কি ভাবে রূপাছরিত হয়, ভাহার কার্যাক্ষার এবনও পরিকার ভাবে বৃথা যায় নাই। উভরাবিকার হত্তে প্রাপ্ত হব কিনা, এই বৃল সমন্তা লইরা নৃতত্ত্ব-বৈজ্ঞানিক-দের মধ্যে এবনও তর্ক চলিতেছে এবং সে রূপান্তর উভর-পুরুষে সংক্রোমিত হয় কিনা, তংসবছে সোভিরেট বৈজ্ঞানিক ও অ-সোভিরেট বৈজ্ঞানিক ও অ-সোভিরেট বৈজ্ঞানিক একটা বিরাট বিভ্ঞায় ব্যাপৃত আছেন।

আমাদের দেশের প্রাচীন স্থাক-সংগঠকগণ এই বিষয়ে অনেক চিন্তা করিরাহিলেন; তাঁহাদের গিভান্ত সহকে নানা তাবে বিক্ষিপ্ত নানা ইলিত আমরা পাই; এই গিভাব্তের পিছনে ধে অকুসভান ও পরীকা চলিরাহিল, তাহার কোন ইতিহাস পাওরা বার না বলিলেই চলে। স্তরাং আমাদের দেশে ক্তন করিরা এই বিষয়ে অসুসভান ও পরীকা করিতে হইবে। আমাদের স্থাক-সংগঠকগণ মানব জীবনকে—ক্রছচর্যা, গাইরা, বভি ও সন্নাস এই চারি আশ্রমে দাগ করিরা মানবিক্ষার বে বারা প্রবর্তন করিরাহিলেন, তাহার মধ্যে প্রথম আশ্রমট বর্তনান কুল কলেকের শিক্ষার পর্যায়ে পড়ে, এবং যদিও প্রাচীন আদর্শ ও উপার আমরা প্রহণ বা অকুসরণ করি না, তব্ত দেশব্যাপী আলোচনার মধ্যে মাধ্যে মাধ্যে তাহার প্রতিক্ষমি ভণিতে পাওয়া যায়।

চল্লিল বংসর পূর্ব্বে "বদেশী" রূপে আমাদের দেশের চিন্তানারকগণ এই বিষয়ে একবার মনোবোগ দিয়াছিলেন। বিটিশ
আমলের শিক্ষা-দীকা আমাদের মাত্র্য করিতে পারে নাই, ঐ
বিষাসের প্রেরণার ভংকালীন আলোচনা চলিয়াছিল; বাধীন
দেশের উপযোগী সে শিক্ষা ছিল না; এবং রাক্ষনীতিক
আধীনতা অর্জন করিবার গুণাবলীও সেই শিক্ষার কল্যাদের
প্রেরপণ করিবার গুণাবলীও সেই শিক্ষার কল্যাদের
প্র্বেরপণ করিবাছিলেন। বােবের তাক্ষনাইই তব্ন আমাদের
প্র্বেরপণ করিবাছিলেন। সেই রুগের চিন্তা রাক্টনতিক
প্রেরোজনে উষ্ক হইবাছিল। ইংরেজী শিক্ষিত সমাক্ষের
প্রধানগণই সেই আক্ষোলনে অগ্রণী হইবাছিলেন।

প্রায় সেই সমরেই বিসেদ আানি বেশার প্রাচীন বিশু সংখারের ভিত্তির উপর দুতন বুগের উপবোদী শিকার পরিক্রনা প্রতিষ্ঠা করিতে চেষ্টা করেন। কাদী নগরীতে ক্রেনীর বিশু ক্লেক (Central Hindu College) ছাশিত হয়। তাহার কলনার পরিপূর্ণ বৃতি বেবিতে পাওয়া বার কানী হিন্দু বিববিভালরের বব্যে। তাহার প্রায় ১০ বংসর পূর্বে, বোলপুরের কাভারে প্রাচীন ক্রছার্য পরিতি অবলবন করিলা রবীজনাব "লাভিনিকেতন" হাপন করেন । রাক্রণক্রির নাহার ব্যতিরেকে সেই চেগ্রা সর্বাহ্মনার হংরেলী শিক্ষার দেশের মতিগতি এমন তাবে বদলাইরা গিরাছিল বে, শিক্ষিত সন্তাহার ঐ পুরাতন আদর্শ ও রীতি অবলবন করিতে সাহস পাইতেছিলেন না। এই বিষয়ে মহর্ষি দরানন্দ সরবতী প্রবৃত্তিত আর্হ্য সমান্দের একটি "লাবা" নাত্র অবিকতর সাহসের পরিচর দিরাছে।

এই ইতিহাসের পালাপালি রাজ্পক্তি সমর্বিত লিকাদীকা অব্যাহত গতিতে চলিয়াছে। সেই লিকার মধ্যে সংকারের চেটা যে হর নাই, তাহা নর। ইংরেজী লিকা প্রবর্তনের প্রার্থ পঞ্চাল বংসর পরে বড়লাট রিপণের আমলে একট লিকা ক্রমণন বসে; বড়লাট কার্জনের আমলে বিশ্ববিদ্যালরে প্রবন্ত লিকার উন্নতিকল্পে আর একট ক্রমণন বসে; প্রার্থ ১২ বংসর পরে কলিকাত। বিশ্ব-বিভালরের লিকা-প্রতির উন্নতিকল্পে অপর একট ক্রমণন বসে। এ তিনট ক্রিণনের সিহাভাবলী ও সংকারোহেকে প্রভাবাবলী আমালের দেশে লিকা-সরস্তার সমাধান করিতে পারে নাই। তাই মৃতন করিরা অপ্রস্থানের প্রয়োকন অত্ত হইরাছে, এবং ভারতরাট্রের ক্রেম্বীর লিকা-মন্ত্রী মৌলানা আবুল কালাম আকাদ একট শিকা ক্রমণন নিয়োগ করিয়াছেন। আচার্য্য সর্ক্রণালী রাধাক্তরণ তাহার সভাপতি।

প্রায় সম্ভর বংসরের মধ্যে চারিট শিক্ষা-কমিশনের নিয়োগ হইরাছে। দেশের চিতা-নায়কগণ শিক্ষা সধতে ভাঁহাদের স্রচ-ভিত মতামত প্রকাশ করিয়াছেন। সেই সব মতামত অহ্যারী भरकात-(bड़े। एक नारे, अक्षां करना यात मा। **छन्छ छाहा** वार्व रहेन (कन वा जारा जानाइक्श क्रमतान करत नाहे (कम. তাহার একট বা ততোবিক কারণ আছে। সেই কারণ বাহির ক্রিতে না পারিলে, বর্তমান অমুসন্ধানের পর পুরাতন ব্যর্বতা আবার আমাদের বিরত ও নিরুংনার করিতে পারে। এই क्या विलाल वायहे बहेरव ना त्य. बहे जिनके क्रियन विराय সরকার কর্তৃক নিযুক্ত ব্টরাছিল: ভার রাধাকৃঞ্গ-কৃষিণর निष्क कविशासन चाबीन "छात्रछताड्डे"। देश्टबक कवनक বলে ৰাই বে, তাহার আমলের শিক্ষা ভারতবর্বের লোক্কে "बराष्ट्र कविवा बार्क : देश्टबर्ने निकाब धार्वक स्वकृत गार्ट्यद बाना दिल-जावजवांत्री हेश्दबी निकाब निकिन्न रहेश वर्डमान समरण्य जामनीव्याती जान-विज्ञास भावपनी क्ट्रेबा केंग्रिट्य ।

নেকলের আহর্শ ও সেই আহর্ণের সাকল্যের মধ্যে একটা বিরাট ব্যবধান রহিরাতে, এই কথা অধীকার না করিরাও কি বলা বার বে, ইংরেজী শিক্ষা সম্পূর্ণ বার্থ হইরাছে ? বর্তমান ভারতবর্বের একজন চিভানারক আচার্ব্য বহুনাথ সরকার কেজরারী মাসের (১৯৪৯ ই:) "মভার্ণ বিভিউ" নাসিক পত্রিকার বে প্রবন্ধ লিখিরাছেন, ভাষা পড়িয়া মনে হর না যে ভারতরাট্রের শিক্ষা-সংকারে বিগত এক শত পটিশ বংসরের ইতিহাসের শিক্ষা ও পছতি অবান্ধর করিরা কেলিতে হইবে, এইরূপ মনোভাব প্রহুমীর ও মকলপ্রদ। স্ভরাং রামনোহন বারের রূপে প্রাচীন ভারতের আন্বর্ণের ও বর্তমান রূপের আন্বর্ণের উপযোগিতা সহদ্ধে যে বিতর্ক ও আলোচনা চলিরাছিল, আরও ভাষার অবসর আছে। আমাদের নিজের লোকের হাতে রাষ্ট্রীর ক্ষমতা আসিরাছে বলিরা দেশের ক্ষন্মত এই বিষরে, এই আলোচনা সম্বন্ধে, অনেকটা নিক্ষের সোকের আমনে বিতর্ক ও আলোচনা প্রবন্ধ হইরাছিল; কারণ, ভবন রাষ্ট্রের ক্ষমতা শিক্ষার সাহাব্যে আমাদের "অমান্থ্য" করিতেছে এইরূপ একটা বিখাস আমাদের মনে বহুল ছিল।

পাদীভীর আমলে এ বিশ্বাস উপ্ত ছইয়া উঠে। সেই **च्छ** छिमि हेश्टबची निकाब जटन जनहरवारभव विवास पिडा-ছিলেন। তার পর বর্ত্তমান শিক্ষার গোড়ার গলখের দিকে দ্রা নিবদ্ধ করিরা তিনি শিক্ষা সংস্থারের আবৃদ্ধ পরিবর্তনের নির্দেশ बाबिबा शिवाट्य ; जावरे नाम "वृतिबाबी निका।" रेश्टवकी শিকা ছিল শহর-বেষা: তাহা দেশের শিকিত সম্প্রদারকে জাতীয় জীবনের শক্তি-মুখ হটতে বিচ্ছিত্র করিয়াছিল। সেই ব্যবধান দূর করিতে হইলে শুতন শিক্ষার প্রয়োধন : ছই তিন কোট শিক্ষিত সম্প্রদার নয়, ত্রিশ-পর্বত্রিশ কোট লোক-সমষ্ট্রর শিক্ষার ব্যবস্থা না করিতে পারিলে দেশে "মাতুষ" স্ঠি হইতে পাৱে না। এই বিশ্বাস বা মনোভাবের নির্দেশে ভারত-ৱাষ্ট্ৰের শিক্ষা-সংস্থারের চেষ্টা নিয়ন্ত্রিত হইবে কিনা এই ভর্কের মীমাংসা বত দিন হইবে না, তত দিন শিক্ষার ব্যাপারে আমাদের "ৰন-মুৰ" এক হওৱা সম্ভব নয় : চিম্বা ও কৰ্ম্বের মধ্যে ব্যবধান वांकिया याहेत्व । अकाश्र वन लहेश निका-जश्कात्व कांक नित्क পাৱিব বা।

## ভারতরাথ্রে নৈরাশ্য ও তিক্ততা

বে নিরাণা ও ভিজ্ঞতা ভারতরাট্রের গণ-মনে গুরারিত হইতেহে, তাহার ভার্যভারণ সকরে তর্কের আর কোন অবকাশ নাই। ভারতরাট্রের নেতৃবর্গ তাহা জানিরা ভনিরাও এই মেঘ দূর করিতে পারিতেহেন না এবং উাহারের কথাবার্তা ভনিরা মনে হর বে ভাঁহারাও গভাস্বতিকভার গা ভাসাইরা দিরাহেন। বিবেশী পর্যবেক্ষরগণও ইহা লক্ষ্য করিরাহেন। এই অবহার অনেকেই বে তুই হইরাহেন, এই বিবরে আমাদের মনে কোন সক্ষেহ নাই। ছই-এক কম বন্ধুভাবে আমাদের সান্ধ্যা দিতে চেটা করিতেহেন, বৈর্য্য না হারাইবার কথা বলিতেহেন।

World-Over Press (গুরার্গত অভার প্রেস) নামক নার্কিনী সাংবাদিক প্রতিষ্ঠানের কর্ম্মন্তা উইলিরন এলেন গুরানের মধ্যে এককন। সম্রতি তিনি World in Brief News Service—এই নামের আর একট সাংবাদিক প্রতিষ্ঠানের কর্ম্মন্তা হইরাছেন। ভারতরাষ্ট্রের "বাবীনভা দিবসে"—১৯৪৮ ব্রঃ ১৫ই আগষ্ট ভারিবে তিনি আনাদের দেশের নানা বার্থতার ও নিরাশার প্রতিষ্কেক রূপে মুক্তরাষ্ট্রের খাবীনভা লাভের প্রথম দশ বার বংসরের অভিজ্ঞতা বর্ণনা করিরাছেন। উদ্বেশ্ব, এই অভিজ্ঞতার আলোকে ভারতরাষ্ট্রের কার্যাকলাপের বিচার। আকিকার পরাক্রমশালী (fantastically mighty U. S. A.) মার্কিনী মুক্তরাষ্ট্রকে অম্প্রপানরাশা ও ব্যর্থতার সহিত্ত সংগ্রাম করিতে হইরাছিল এবং এই ঘরোরা সংগ্রামে ক্রলাক করিবার বৈর্ঘ্য ছিল বলিরাই আক্রমনার্ট্র জানে বিজ্ঞানে, অর্থে সামর্থ্যে পৃথিবীর চোবে বাবা লাগাইরা দিয়াছে।

বৰ্জমান নিবাশা ও বাৰ্থতা সম্বন্ধে আম্বনা এতটা স্পৰ্শকাতঃ করিয়া ভনাইয়াছেন যে, মানবলিভর জীবনে বেমন সেইরূপ ভাতির ভীবনেও প্রথম করেক বংসর নানা রোগ-শোকের. নানা চৰ্ব্ৰলভাৱ বিৰুদ্ধে সংগ্ৰাম কৰিবা যাইতে হয়। নেডবুলের ফ্রটবিচ্যুতির কঠোর সমালোচনা করিতে হইবে; কিছ নিরাশ क्वेटल हिल्दि ना, निवानाव अध्यव क्टिल हिल्दि ना। क्वांनी बाहेविश्रात्व मधाव बाहित छविक् मवाब विवास विकास (despair) দওনীর বলিয়া পরিগণিত হইয়াছিল। আমাদেরও আৰু সেই কথা শ্ববে আনিতে হইবে। সেই क्ष देहेलिया अल्लास्य अहे क्षर्य क्षित्रांग्राश अल्ला তাঁহার প্রবন্ধের তথ্যগুলি সংগ্রহ করিয়াছেন ম্যাসাচুসেটস শিল-বিজ্ঞান পৰিষদের (Massachussets Institute of Technology) খ্ৰাক ভাৱ ভাৱাকাৰের The Making of a Nation ( একট বাষ্ট্ৰের ও জাতির সংগঠন ) নামক পুডক হইতে: উভর আমেরিকার আটুলাটিক মহাসমুক্রের উপ-क्रमचिक ३७वे प्रेमिटवम चर्च धवामिरवेटमब म्यापट वेरदारमब শাসনপাশ হুইতে মুক্তি লাভ করিরাহিল। ১৭৭৬ বীঃ বিজ্ঞোত্ (यायना कवा एव : ১৭৮১ बै: बरे विद्वार गार्क एव । ১৭৮৭ ঐ: রাইডর সম্বলিত হইয়া দেশের লোকের সম্বতিলাভের ভয় ভোটে দেওয়া হয়। মুমুট প্রদেশের (State) সম্বতি লাভ করিলে এই রাইভন্ন সর্বাদ্ধনাত্ত বলিয়া খীকৃত হইবে ছিল্ল হর। क्रमें ब्राटिन (योशनान क्रिया, ज्याना (नज़र्गात माना चानका दिन । इस्रेनज्द ७ चाकाद्य क्य अरमच्छीन अवस्य ब्राहेण्ड अर्ग करवा मर्काटार्ड अरम्म कार्किनिया कुछ रव अरे ব্যবস্থার বে, উচ্চতর আইন সভার (Senate) ভাবার মর্যালা ও क्रमण क्रमण्य वारात्मंत्र नवान, नवन वार्यमहे हुहे क्रम कृतिहा

প্রতিনিধি (Senator) নির্মাচনের স্থিকারী হইবে। স্থাপিটেনকে বলিতে শুনা সিরাছিল: "প্রদেশগুলি (States) যদি এই শাসনতন্ত্র প্রহণ না করে, তবে পরবর্তী রাইতন্ত্র রক্তের স্থাপ্তরে নিধিত হইবে।" ১৭৯০ প্রীঠান্থে শেষ প্রবেশটি যোগদান করে।

পূর্বের গবর্ষে কৈ বে ধণ করিয়াছিল তাহা এই মুক্তরাষ্ট্রের লায়িছের মধ্যে পড়ে; মুছের ব্যয় মুক্ত হইয়া একটা বিরাট ধণের বোকা এই মুক্তরাষ্ট্রের ঘাড়ে আসিয়া পড়ে। এই ধণ খীকার করিয়া গবর্ষে কৈ যে "কোন্সানীর কাগক" বিরাছিল তাহার লাম আসন মুলোর আট তাগের এক তাগে নামিয়া বায়। বিলেশের নিকট ঝণ পরিশোব সম্বন্ধে কোন মতবিরোব ছিল না; কিছ রাষ্ট্রের নাগরিকবর্গের নিকট ঝণ পরিশোব সম্পর্কে প্রবন্ধ মতবিরোব দেখা দেয়; ওয়ানিংটনের উত্তরাধিকারী টমাস ক্ষের্যরার দেখা দেয়; ওয়ানিংটনের উত্তরাধিকারী টমাস ক্ষের্যরার প্রমুব নেত্বর্গ আসল মূলো এই ঝণ পরিশাবের প্রবল বিরোধী ছিলেন; প্রতিপক্ষের নেতা ছিলেন আনেক্ষাতার হামিলটন। তাহার মতই ক্ষেক্ত বংসর পরে গৃহীত হয় এবং রাষ্ট্রের অর্থনৈতিক স্থনাম স্প্রতিষ্ঠিত হয়। ক্ষিত্র বিরুদ্ধে একটা মনোভাবের স্পর্ট হয় ।

আন্তর্গতিক রাজনীতি ক্ষেত্রেও এই নৃতন রাষ্ট্রের প্রভাবপ্রতিপত্তি সহকে উচ্চ বারণা পোষল করা সহক হিল না;
বিদেশে এই বিশ্বাস ক্ষরিতে লাগিল যে, "আত্মপক্তির ক্ষেত্রে
নর, ক্লাকের সাহাব্যের ক্ষোরে যুক্তরাষ্ট্র হাবীনতা অর্জন
ক্ষরিতে সমর্থ হইরাকে"—(The Americans owed
their independence more to their ally, France,
than to their own streagth)। হল্যাও ও ক্রাজ
আমেরিকার রাষ্ট্র বিপ্লবের সময় চাঁকা বার দিয়াহিল; এই বন
পরিশোব সহকে বছদিন মনক্ষাক্ষি লাগিরাই রহিল। যুক্তরাষ্ট্রের ক্ষরের অব্যবহিত পর করাসী বিপ্লবের আবির্ভাব হর;
এই বিপ্লবের এই নৃতন রাষ্ট্র একেবারে নিরপেক থাকিতে
পারে নাই। তার কলে, করাসী বিপ্লবের বাগ্বিতথার কলে,
প্রার বিশ বংসর এই নৃতন রাষ্ট্রের মন মানাভাবে বিক্রিপ্র
ইইরা ছিল; এই নৃতন "নেশন" নিক্ষের মানা সম্বভার দিকে
হুষ্ট্রণাত ক্রিতে পারে মাই।

এই অভিজ্ঞতা বৰ্ণনা করিব। উইলিরম এলেন বলিতে
চান বে, ভারতরাষ্ট্রের নাগরিকরন্দের নৈরাপ্তরন্ধ ভ্ইবার
কোন কারণ নাই। খানীন রাষ্ট্রীর সভার শক্তি এইরপ নানা
সমস্তার ঘারাই পরীক্ষিত হব। নেতৃবর্গের আত্মবিধাস থাকিলে
বেশের লোকের অভাব অভিযোগ, অসন্তোব দূর করা ক্টিন
নর। সকল কালে, সকল দেশে এইরপ সম্ভা নানা
আকারে হয়ত দেশা বিয়াহে; ভাষার স্বাধান করিবাই

দেশসমূহ আত্মক্তির পরিচয় লাভ করিবাবে, আত্মতির্চ হইরাছে; ত্বরংসিত হইরাছে। এই ভরসারই সকলে কর্ম করিবাবে। ভারভরাষ্ট্রের জঙ্গ কোন ন্ববিধান হইতে পারে না।

আন্তঃপ্রাদেশিক প্রচারস্চিব সম্মেলন

ভারতের বিভিন্ন প্রদেশ ও দেশীর রাজ্যের প্রচারসচিবদের একট সম্বেদন নয়া দিল্লীতে হটয়া গিয়াছে। ভারত-সরকারের প্রচারস্চিব শ্রীযুক্ত দিবাকর সম্মেলনের সভাপতিত্ব করেন এবং সম্মেলন উদ্বোধন করেন পণ্ডিত নেহর:। পশ্চিমবঙ্গের প্রতিনিবিত্ব করেন জ্রীনীহারেন্দু দত্ত মন্ত্রদার। প্রাদেশিক গৰ্মে উদযুহ কাৰু ককক বা না ককক, নৱা-দিল্লীতে কো-অভিনেশন সম্মেলন বেশ খনখন ছইতেছে এবং তাহার ছত ৱাহা ধরচও মন্দ হইতেহে না। সন্মেলনে ঐদিবাকর বলিয়া-ছেন, "প্রত্যেক লোকায়ত পরবে ক্টেরই তাঁহাদের প্রস্তু জন-সাৰারণের সহিত যোগাযোগ রক্ষা করা এবং গবর্ষেণ্ট ভাঁহাদের খন কি করিতেছেন তাহা বর্ণনা করা অবস কর্তব্য।" দিবাকর মহাশয় এই কার্যাট সরকারী প্রচার বিভাগ মারকত বৈজ্ঞানিক উপায়ে করিতে বলিয়াহেন। কিছু সাধারণ বৃদ্ধিতে আমাদের মনে হয় যে, সরকারী কর্মচারীরা যদি প্রভাকে कर्खराभवावन एम. भाकिटडेंहे अवर भूमिटमव वक्रकडांवा भूटव्यव शाह यक्ति यथानि विष्टे नयदा जानितम जानिहा क्षकाट वटमन ও সাৰারণের বঞ্চব্য কিছু সময় গুনিয়া অভিযোগের ক্রভ প্রতিকারের ব্যবস্থা করেন তাদা ২ইলে সরকারের উপর জন-সাধারণের আহা অটুট রাবিবার খন্ত প্রচারকার্ব্যের প্রয়োজন क्य रुद्ध । देशदाक व्यादाला एक प्रिम अहे निद्यम প্রচলিত ছিল তত দিন প্রচারবিভাগের ব্যয়বার্ত্য হয় নাই: বিপ্লবীদের ভরে ম্যাজিট্রেট ও পুলিস সাহেবরা ষেদিন হইতে প্রকার আপিদ ছাড়িয়া খাদকামরার প্রবেশ করিলেন দেদিন হইতেই জনসাধারণের সহিত সরকারের বিচ্ছেদ সম্পূর্ণ ছইয়াছে এবং প্রচারবিভাগের প্রয়োজন বাড়িয়াছে। এখন তো ভার সে ভয় নাই। এখন প্রত্যেক কেলায় ভিন-চার খন করিয়া ষ্যাজিট্রেট হইয়াছেন, তাহার উপর মহতুষা হাজিম ডেপ্রট পুলিদের তো হড়াছড়ি. भाषित्द्वेष्ठे अञ्चि चार्यन । তুপারিকেডেন, অভিরিক্ত তুপারিকেডেন, তেপুট ক্ষিপ্দার প্ৰভৃতিরও অভ নাই। ইহারা বলি সমর মত আপিলে আলেন এবং জনসাৰাৱণকে অভিবোগ ভাৰাইবার প্রযোগ দেন ভাষা रहेल वर्षमान नवकांव व लाकांवच नववार्क, लाटक छारा বুৰিবার প্রযোগ পার।

ক্ৰেন্যাত্ৰ প্ৰচার বিভাগের ধরচ বাড়াইরা বে গবছে কৈর প্রতি লোকের প্রছা বাড়ানো যার না, বাংলাদেশ ভাহার প্রমাণ। এবানে লীগ গবছে ক্টের আমলে প্রচার বিভাগে ব্যর অসম্ভব বাড়ানো হইরাছে, ভাহার পর বর্ডনান বদদেশ এক-ভৃতীরাংশ হওরার পর ঐ বিভাগর বরচ দেও শুণ বাড়িরাছে, কিছু সরকারের প্রতি সাবারণ লোকের মনে বে বিরূপ বারণা ক্রমশঃ জনিতেছে তাছা তবস্পাতে কি ক্মিরাছে, না বাড়িরাছে ? বরচের নমুনা আমরা বাজেট হুইতে উল্লেড ক্রিলাম :

#### সরকারী প্রচার বিভাগের ব্যব—

	>>8¢-8¢	7982-89
গেদেটেড অফিগার	••• ८०,०४० केकि	¹ ৭০,০০০ <sub>২</sub> টাক
কেৱাৰী	99,400	۶۶,۰۰۰ر
চাপৱাসী	٫۰۰ کرچرد	3,500
অহারী কর্মচারী	5,00,600	২,৩০,০০০১
বাড়ীভাড়া ও অন্তাস হ	গভা ৪৬,১৩২	>>,000/
মাগ্গি ভাতা	••• ঀৢ৽ৢ৽৽৽৽ৢ	¥4,000\
রেশনের পরিবর্তে নগ	प টाका नाह	8,000
শ্ৰহণ ভাতা	••• ৰাই	12,000
क्रिट्थिन	8,369	٧,800
আপিদ ধরচ ও বিবিধ	···>,~¢,¢80\	2,60,000
বই ও সাময়িক পত্ৰ	⊶ নাই	>,000
	6,23,634	٢,30,300

এটা বরাষ্ট্র বিভাগের অন্তর্গত প্রচার বিভাগ। ভাহা হাড়া সিভিল লাপ্লাইয়ের মধ্যে আর একটা প্রচার বিভাগ আছে এবং ভাহার বরচও উপেক্ষীয় নয়। এইর নমুনা নিয়োক্ত রূপ:

সিভিল সাপ্লাইয়ের পাবলিসিট প্রোডাকশন আপিস—

১৯৪৮-৪৭
১৯৪৮-৪৯
অকিসারদের বেতন 
১৭,৭০০ টাকা ১৩,২০০ টাকা
কেরাশীদের বেতন 
১১,৩০০ ১০,৭০০
ডাতা 
৭,৮০০ ৭,৬০০
ক্টিশ্রেজি 
৪,৫৩,৪০০ ২,০০,০০০

8,20,200

2,05,600,

জনসাধারণ এখন রেশন সম্পর্কে অত্যন্ত হুইরাছে। এখন বেশনের বিভাপন মুসাবিদা জ্বিবার জভ এত বড় বিভাগ বজার রাধিবার কোন প্ররোজন আছে কি ? "আপনার রেশন কার্ডের নেরাদ বাড়ান" অথবা "আপনার রেশন কার্ডের নেরাদ বাড়ান" অথবা "আপনার রেশন কার্ডের নেরাদ বাড়ানে না হরে থাকলে রেশন কার্ডথানা বাতিল হরে গেছে"—এই বিভাগন হাজার হাজার টাকা ব্যরে ঠেটসম্যান, অর্ভ বাজার, হিন্দুরান প্রভার্ত, আনক্ষবাজার প্রভৃতি পঞ্জিলার দেওরার কোন সার্থক্তা নাই, কারণ ঐ সব কারজ বাহারা প্রেন রেশন কার্ডের নেরাদ বাড়ানো সম্বন্ধ উহারা সজার বাজিবেন ইহাই আশা করা উচিত। এ বিষয়ে একট সরকারী প্রেসনোট ভাছাদের পক্ষে বরেষ্ট। অলিক্ষিত সাধারণ

লোকের বছ রেশনের গোকানে বছ করির। বিজ্ঞাপন দিলেই
কাক চলিতে পারে। যে সব রেশন কার্ড হোল্ডারের নববে
এর এক্টও পভিবে না, ব্বিতে হইবে ভাহাবের রেশন
কার্ডের গরক নাই।

#### এশিয়ার প্রশ্ন জিজ্ঞাসা

সন্ধিলিত ভাতি-সন্দ টালবাহানা করিয়া ইন্সোনেশিরার সাধারণতত্ত্বর উপর ভাচ সাঝাক্যবাদের আক্রমণে প্রক্রম দিতেছে। আমরা বছবার বলিয়াছি যে, ব্রিটেন ও মার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের সাহাক্ষ না পাইলে হল্যাতের প্রভুছ ছ-দিনের বেশী ইন্সোনেশিরার উকিতে পারে না। একটা হিলাবে দেবিরাছি যে, ইন্সোনেশিরার ভাচ মুলবনের পরিমাণ প্রায় ৪০০।৫০০ কোট টাকা; ব্রিটশের মূলবন প্রায় ২০০ কোট টাকা; এবং মুক্তরাষ্ট্রের নাগরিকবর্গের মূলবন প্রায় ৭৫ কোট টাকা। এই অরীর মূলবন রন্ধার ভক্ত ব্রিটশ ও মার্কিনী পুলিপতিরা ভাচ সাঝাক্রাবাদকে বিরাইয়া রাখিবার চেটা করিতেছে। ইহাই হুইল ইন্সোনেশিয়ার সাধারণতত্ত্বের উপর আক্রমণের গোড়ার কথা।

১৯৪৫ এ: ভাপাৰের পরাভ্রের পর বিটেশ সৈত্বাহিনীর পিছনে পিছনে ডাচ সৈত্বাহিনী ইন্দোনেশিরার চুকিরা পতে। সেই সময় দেখিতে পাওয়া বার যে, ভাপানী ভাসনকর্তৃপক্ষ সাবারণতন্ত্রকে বীকার করিয়া লইয়াছে। বিটেশ ও ডাচ সৈতাবাক্ষেরাও এই বাবহা মানিয়া লইয়াছিল। এই বীকৃতিয় বলেই ইন্দোনেশিয়ার সাবারণতন্ত্র আন্তর্জাতিক রাজনীতি ক্ষেত্র প্রার বাবীন দেশের মর্যালা লাভ করিয়াছে। ডাচ প্রবর্গেটর অসম্বতি ও আপত্তি সল্পেও সন্মিলিভ ভাতি-সল্পের অধীমন্থ নানা প্রতিষ্ঠানে এই সাবারণতন্ত্রে পৃথক ছান আছে। এই মর্যালা ও বীকৃতি কৃছিয়া কেলিবার উপার নাই।

এই থীকুতির কথা মনে রাখিয়াই ত্রিটিশ ও আবেরিকার
সাংবাদিকগণ ডাচ আক্রমণের নিন্দা করিয়াছেন। এই
উপলক্ষে তাঁছাদের অনেক মন্তব্য পাঠ করিবার ক্রেগ আমরা
পাইয়াছি। কিন্তু এই ডং সমা ও তাঁছাদের গবরে প্টের কার্য্যকলাপের মধ্যে কোন সক্তি দেখিতে পাইলাম না।
"ক্রিশ্চিয়ান সারেজ মনিটার" নামে যুক্তরাষ্ট্রের একথানি প্রান্তি
ও চিন্তাশীল পত্রিকা আছে। ইন্সোনেশিয়ার ব্যাপার লইয়া
পণ্ডিত লবাহয়লাল নেহর যে সন্তোমন আহ্রান করিয়াছিলেন,
তত্বপলক্ষে পত্রিকাথানি পাশ্চান্ত্য ক্রপ্তেক এই বলিয়া সাবধার
করিয়াছে বে, ক্র্যানিক্রের ক্র্র তর বেথাইয়া এশিয়ার পথতত্র ও স্বাধীনভার সংগ্রামকে ঠেকাইয়া রাখিবার চেষ্টা
করিলে পাশ্চান্ত্য ক্রিলের হাতে নিক্রের মৃত্যবাধ
প্রস্তুত করিবে। অনুর অতীতে সে চেষ্টা হইয়াছে এবং ব্যর্পও
হইয়াছে।

ध्वान्ष्ठीव निश्वाम अक्षम विद्याच नारवाहिक । छाहाव

अकरे ध्रवच बुक्रवाद्वेद ध्रवान मश्यावनअमृद्र अक विदय क्षकानिक रहा। अक्षी रिनाटन दिवशिक एक अरे जन नश्वीप-পঞ্জের পাঠক প্রার চার-পাঁচ কোষ্ট। তিনিও পাশ্চান্ত্য স্বগংকে সাৰবাদ করিবাছেন এই বলিরা বে, জাপাদ বিভীর বিশ্বরুছে भवाविष्ठ **रहेर्ड भारत : किन्द्र त्म अकृष्टे** कांच कविवारह : দে পাভান্ত্য সাত্ৰাক্যবাদ ও প্ৰাবাহের ভারিভূত্তি ভালিয়া বিরাছে। বটনার ক্রভ পরিবর্তনে বিতীর বিবরুছের বিত্র-শভিবৰ আৰু প্ৰায় ছুইট বিক্লম শভিপুত্তে বিভক্ত এবং অবস্থার ভাতনার ইউরোপ বতের করেকট দেশ আছরকার বভ আপনাদের শক্তি ও সামর্থ্য একম করিতেতে। ইহাদের মধ্যে ত্রিটেন, ক্রাল ও হলাও পূর্ব-এশিরায় সাত্রাকাবাদী বলিরা পরিচিত। সোভিরেট ইউনিরনের ভরে ইহার। এক্ষিত হুইভেছে। কিছ এই বিশ্বাস এশিরাবাসীর মনে দৃঢ় হইভেছে যে, ইউরোপের এই ছাভি-সঙ্গ এশিরার সম্রয় ও খাৰীনতা হয়ৰ করিবার খত এক-কাটা হইতেছে, ক্ষিফু नाबाकावाक बक्तांब क्रम क्रम वीविष्टर्द (a syndicate for the preservation of decadent empires ) | ( ) আমেরিকার বুকুরাট্ট ভাষার কার্যকলাপ ঘারা এই বিখাস মষ্ট করিতে পারে। কিছু সে ভরসা কোধার ? বুকুরাষ্ট্র ভাচ সাত্রাছবাদকে কি সংযত করিতে পারিয়াছে গ

#### স্বাধীন ত্রন্মের সমস্যা

আমাদের প্রতিবেশী রক্ষদেশের উপর শনির দৃষ্টি পঢ়িরাছে বিলিয়া মনে হয়। সাত আট বংসরের মব্যে কাপানী অভিবানের কল্যানে তাহার কীবন বনেপ্রাণে বিধ্বত্ব হইরাছে। ১৯৪৭ বিটাকে এক দিনে এক সমরে হয় কন নেতা নিহত হইলেন, উহারাই ছিলেন নবরক্ষের রচিছিতা, এই সম্পর্কে ইউ আউল সানের নাম ইতিহাস-প্রসিদ্ধ হইয়া থাকিবে। উহার হত্যাকারীয়া উহার সহক্ষী হিল কাপানী রুদ্ধের সময়, আউল সান সহ হয় কন মন্ত্রীকে হত্যা করিয়া ভাহারা প্রমান করিল যে, ভাতি-শত্রুর মত নিঠুর শক্ষ আর কেহ নাই।

ভারণর ইংবেকের পাসন-ক্ষতা প্রভ্যান্ত হইরাছে;
বাইবার সময় ইংবেক প্রক্ষেণকে প্রিষ্টপ রাষ্ট্রসংবের অভর্ত্ত
বাকিবার ক্ষ অভ্যোধ করে নাই; করিরা বাকিলেও প্রক্ষেপ্ত
কালিবার ক্ষ অভ্যোধ করে নাই; করিরা বাকিলেও প্রক্ষেপ্ত
ক্ষেপ্ত প্রধান মন্ত্রী বাকিল ছ ও ভারার সহক্ষিত্রক প্রশ্রণ
অভ্যোধ রক্ষা ক্ষিতে পারেন নাই। বিষ্টপ সামাজ্যবাধিগণ এই
ব্যবহা মনেপ্রাণে প্রভ্ করিতে পারেন নাই। সেইক্ষ
ভারারা প্রক্ষেপ্তেশ অভবিরোধী নামা কলের শক্রভার ইন্দ
বোগাইতেকেন। আউল সান, বাকিন দ্ প্রভৃতি প্রক্ষাপেশর
নেত্বর্গের ক্লনা গণতন্ত্র ও সমাক্ষতন্ত্রের মধ্যে সম্বর্গ সাধন
করা। উপ্রপন্থী ক্যানিষ্ট দল এই চেপ্তার বিরোধী, ভারাদের
নেত্তে প্রক্ষানেশ্য প্রকাশে বাকিন পু-র গবর্গেক্টের বিক্ষরে
বভ্যন্ত করিরা বিক্সান্যারণ হইরাছিল বলিরা মনে হয়।

কিছ জাহার গবর্বে ক্টের প্রধান শত্রু ইংরাছে ফাবের জাতি। ইহাদের অনেকেই এইবর্ত্তাবলয়ী, সেইকত বিতীর বিশ্বব্রের সমর ইহারা মনেপ্রাণে ইংরেকের হইরা লভিরাহিল, এই অবসরে সামরিক নানা কৌপল ভাহারা আরভ করে। ইহাদের শিক্তিত সম্প্রহার অনেকটা "পাকিহানী" মনোভাবাপর; রক্তে ও বর্বে ব্রহ্মদেশের জনসমন্ত হইতে পৃষক বলিরা ইহারা নিজেদের জত পৃষক একটি রাব্রের দাবী করিভেছে। থাকিন মুন্র গবর্মেন্ট এই দাবী স্বীভার করিরাছেন। তব্ও কারের বিল্লোহীরা জর সংবর্ষক করে নাই। ব্রহ্মদেশের প্রধান কৈছাব্যক্ষ এককন কারের; এই ব্যবহার মনে হর বে, থাকিন মুন্র গবর্মেন্ট কোন জাতিবের ছারা পরিচালিত হইভেছে না এবং আমাদের ভরসা আছে যে, তিনি এই বিল্লোহ্ সমন করিরা কারের-প্রধানগণের সদ্দে একটা সন্ধানজনক মীমাংসা করিভে পারিবেন।

ব্রহ্ণদের উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত অঞ্চল চট্টপ্রাধের মূলন্মানেরা ছ্ই-ভিন শত বংসর ছইতে বসবাস করিতেছে। ভারতীর মূলন্মানদের দেখাদেবি তাহারা "পাকিয়ানী" স্বপ্ন দেবিতে আরম্ভ করিরাছে, তাহারা সেই স্বপ্ন সার্থক করিবার মূল সুযোগ স্থাবিধার অপেকার আছে। পূর্ব্ধ পাকিয়ানের শাসকসপ্রধার এই বিষয়ে নিরপেক থাকিবার কথা ঘোষণা করিরাছেন। জানি না, থাকিন সূত্র গবর্ষেক এই প্রতি-শ্রুতির উপর ভরসা করিবা বর্মী "পাকিয়ানী"দের অবছেলা করিতে পারিবেন কিনা।

আর একটা সমস্তা ভারতহাষ্ট্রের নাগরিকবর্গ সম্পর্কে ৰেখা দিয়াছে। তামিল দেশের চেট্রসম্প্রদায় কমি বৰক রাধিরা ব্রন্ধদেশের চাধী সম্প্রদায়কে প্রায় ১০০ কোট টাকা ৰার দিয়াছিল। এই খণ চেটিসম্প্রদারের গলার কাঁটার মত বিধিয়া আছে। গুৰুৱাট ও অভাত ভারতীয় নাগরিক এক-দেশের যামা ব্যবসায়ে মেডুড় করিতেছিল, ভাহাদের নিহোভিত অর্থের পরিয়াণ ভঙ্গ ভাষি না। প্রায় ভরেভ সহত্র ভারতীর নাগরিক ইংরেজ আমলে সরভারী চাত্রী **क्विट्लिंग्लन : कैश्लिन (नशर्म क्वांव २,००० ल्लांट्रिक** निकृष्ठे नर्गी ननरव के लाईन निवादन तन, जन्द कनिवारक ভাষাদের চাত্ররী বাভিল হইরা বাইবে। অবস্থা দেবিরা মবে হয়, এই ২,৫০০ ভারতবাসী ব্রন্ধদেশের নাগরিক হইতে স্বীকার क्तिए शासन मारे विनदार और मिर्हत विशाम क्षेत्रिक হইরাছে। এই বিষয়ে কোন মীমাংসা হইতে পারে কিনা ভাহার ৰঙ চেঠা করা ভারত গবদক্তির কর্ত্তব্য। ৰভাভ ভারত-ত্রস্থ সম্প্রতা আলোচনা করিবার জন্ম কংগ্রেসের সভাপতি ডা: পটভি সীভাৱামিরা রেছুনে যাইবার আরোজন সম্পূৰ্ণ করিবাহিলেন। কারেণ বিজ্ঞাত সেই আরোজন

পিৰাইয়। বিবাহে। অবহা দেবিরা মনে হয় বে, ব্ৰেছ রাট্টবিপ্লবে ভারতীয় নাগরিকবর্গকে ক্ষতি বীকার করিয়া কেশে কিরিয়া আসিতে হইবে—ব্রুছের মাগরিক হইবার ইছা বর্ণন ভারাকের নাই।

মার্কিনে ভারতীয় পুস্তক ও সংবাদপত্র

मार्कित बुक्क बाद्ध जांक श्रेषिवीत "भ्रेष्ठ खत्र" (मणा। সেইবর পুথিবীর লোকের নিকট আত্ম-পরিচর বিবার কর একটা বিরাট আহোজন পভিয়া তোলা হইরাছে। বুক্সরাটের वाक्नी छिक कार्वाक्ना (भरे क्विन क्वाविक स्त्र ना : "भाकिन वार्का" भार्र कविद्या (मर्टनंद अवध कीवरनंद्र, क्रवि.+ वानिका. শিল, বিজ্ঞান, সাহিত্য, চিকিংসা বিষয়ক নানা তথ্যের সংখ পরিচয় লাভ করা যায়। পৃথিবীর অপরাপর দেশ সম্বন্ধেও তাঁহাদের কৌভূহলের অভ নাই , এবং তাহাদের সম্বন্ধ জ্ঞান অর্জন করিবার আঞ্রহ অকুরম্ভ। ইহার দুটার পাই মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের কংগ্রেসের উচ্চতম পরিষদের লাইরেরীর পক্ হইতে একট বোষণার মধ্যে—ভারতবর্ষ এবং পাকিস্থানের সকল প্ৰধান ভাষায় লিখিত পুডক্ই কংগ্ৰেসের লাইত্রেরিতে স্থান পাইবে। এখন উদু এবং হিন্দী ভাষায় রচিত প্রায় পাঁচ-ছয় হাজার বই এই লাইব্রেরিতে আছে। এইওলি হাড়াও বাংলা, পাঞ্জাবী, দিৰি এবং ওল্বাটী প্ৰভৃতি ভারতীয় ভাষায় (मर्थ) वह अथाय दाया एहरव । अह मूख्य পরিকল্পার মুখ্য উদ্ভেষ্ট ষ্টতেছে, ভারত-"পাকিস্থান" এবং মাকিন যুক্তরাট্রের মধ্যে সৌহার্দের বছন দুচ্ভর করা। এইক্টই এবন कर्ट्यानव नारंद्ववीए धरे इरेडि एम रहेए वहनश्याक সংবাদপত্ৰ এবং সামন্ত্ৰিক পত্ৰাদি আনা হইতেছে। লাইত্ৰেৱীর প্রধান পাঠককে এইখলি রাধা হয়, যাহাতে সহজেই ইহারা পাঠকদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে পারে।

ভারতীর সংস্থৃতি ও জীবন-যাত্রা প্রণালী সহতে জান অর্জনে এই প্রচেটা আমানের অন্তরণ কর্তব্যে উর্ছু করুক। বিভিন্ন প্রদেশের মধ্যে পরম্পর সহতে জানবৃদ্ধির বিশেষ প্রয়োজন রহিয়াতে। স্তরাং ভারতরাট্রের পক্ষ ইইতে ব্যাপক্তর আরোজন করার সময় আসিয়াতে।

#### বাঙালা মুসলমানের সংস্কৃতি

ভটন নোহম্মদ শহীহুরাহের সভাপতিত্ব পূর্বা পাকিছান লাহিত্য সম্মেলনের প্রথম অনিবেশন সম্মাতি ঢাক। নগরীতে অন্তুটিত হইরাহে। তিনি সাহিত্য-শবার সভাপতিও ছিলেন। এই শাবার বক্ততা উপলক্ষে তিনি এনন কতক্তলি কবা উচ্চারণ করিরাহিলেন যাহার কর তিনি "আকাদ" প্রভৃতি উপ্র "হি-কাতি"-তত্বে বিশ্বাসীদের নিশাভাকন হইরাহেন। হিন্দু বর্ম ও ইসলাম ছুইট পূবক বর্ম ; নানা আচার-অন্তুটানে এই পার্বক্য স্টুটরা উঠিরাহে। এই পার্বক্যের উপর ভিতি করিরা রুসলমান সনাক্ষের বহুলনের বনে এই ভাব প্রকৃষ্ট হুইরা উঠিরাহে বে, হিন্দু এক কাতি (নেশন), রুসলিম আর এক কাতি (নেশন)।

ण्डेन मरीह्वाट्न रक्षणांत अवानिक व्हेनाट्य (व. वांशांनी

বুগলবাৰ সমাজের অনেক চিভাশীৰ ব্যক্তি এই "বি-বাতি"-তত্তে বিধান ছাপৰ করিতে পারেব নাই। আমহা "পাকিছাবের" অভাভ প্রবেশের কথা বলিতে পারি না। কিছ ভটর শহী-ছ্লাব্যে বক্তুভার বে ভাব বৃষ্ঠ হইরা উঠিয়াহে ভাবার প্রক্তি আমরা প্রহা বিবেশন করিতে পারি।

"আমরা হিন্দু বা মুগলবাৰ বেষন সত্য, তার চেরে বেনী
সত্য আমরা বাঙালী। এট কোনও আদর্শের কথা নর;
এট একট বাত্তব কথা। মা প্রকৃতি নিজের হাতে
আমাদের চেহারার ও ভাষার বাঙালীজের এমন হাপ
মেরে দিরেহেন বে, তা মালা-ভিলক-টিকিতে কিংবা টুর্লিলুদি-ছাড়িতে চাকবার জো-ট নেই। মৃতাত্ত্বিক গবেষণার
অগ্রাক্ষণমন্ত চোবে ধরে হয়ত আবিভার করতে পারেম,
কার শরীরে হ' চার কোঁটা বেনী বা কম আর্য্য, আরব,
পাঠান বা বোগল রক্ত আহে। কিছ ববি-ক্ষির কথাই
টিক—

্ৰেৰার আৰ্ব্য, হেৰা অনাৰ্ব্য হেৰার ক্লাবিছ, চীন— শক্ত-ছুন-দল পাঠান যোগল একলেহে হোলো দীন।"

প্রায় ১২ বংসর পূর্বে "আভাদ" পত্রিকার সম্পাদক যৌলাদা আকরম্ বাঁ বদীর মুসলিন সাহিত্য সম্মেলনের সভাপতিরপে প্রমাণ করিতে চেঙা করিবাছিলেন যে, পাঁচ শত বংসর মুসলিন আবিপত্য বাংলাদেশে প্রভিত্তিত থাকিলেও বাঙালী হিন্দু মুসলিবের জীবনে ইসলামের ছাপ নিরেট হইরা বসে নাই; চিভার, কবিভার, গানে বাঙালী মুসলিম হিন্দুর ঐভিত্য যানিরা লইরাছিল অনেক ক্ষেত্রে। ইহা উাহার মতে ইসলামের কলম; বাঙালী মুসলিমের মুর্বেগভার পরিচারক। সেইজ্ঞ মৌলানা সাহেব সেই মুগকে বাঙালী মুসলমানের পক্ষেত্র বাঙালী মুসলমানের পক্ষেত্র বুগ" (dark age) বলিরা নিশা করিতে ছিবা-বোৰ ক্রেন নাই।

এমপ প্রচারণের ফলেই "পাকিহানী" মনোভাবের স্ট্র হইতে পারিয়াহিল, এবং আৰু বাঙালী মুসলমানকে ভাহার মাড়-ভাষার গৌরব প্রভিষ্ঠা করিবার খন্ত আবোলন করিছে হয় "নিক বাসভূনে"।

কিছ হই শত বংসর পূর্বেও, ছাটাদশ শতাকীতে, বাঙালী বুসলমান ছঙ ভাবের ভাবুক হিলেন। ভট্টর শহীহুলাহ নোমা-বালির সন্থীপ-নিবাসী আবহুল হাকিমের, "নুরনামার" লেবকের, একট কবিতা উদ্ধৃত করিয়া তার পরিচর দিরাছেন। বাঙালী বুসলমান সেই পরিচর তুলিতে চার।

> "ৰে সৰে বংলতে কৰি হিংলে বলবাৰী। সে সৰাৱ কিবা নীতি নিৰ্ণন্ন লা কানি। নাতা শিতামহ ক্ৰমে বংলতে বলতি। ধেৰী তাবা উপংহণ মনে হিত অতি। বেৰী তাবা বিতা মনে না ক্ৰাৰ— নিক্ৰ বেশ তেৱালি কেন বিবেশে না বান ॥"

আচার্য্য যতুনাথ সরকারের জন্মোৎসব

আচার্য এবছনার সরকার মহাপরের আই-সপ্ততিভয় বর্ব পরিপৃষ্টি উপলক্ষে বলীর সাহিত্য-পরিষদ একট ববোজ অনুষ্ঠানের আরোজন করেন। বিগত ২৪শে মাঘ তারিবে পরিষদ-ভবনে পশ্চিমবন্দের শিক্ষামন্ত্রী এছরেররাশ চৌধরী মহাশয়ের সভাপতিছে এই উৎসব অনুষ্ঠিত হয়। যে মানপত্র পাঠ করা হর তাহার প্রথম ও লেম পংক্তি করেকটতে আচার্য্য-एएटवर कीवरनव चानरर्भव श्रीत्रव शाख्या यात्र। "श्रदाबीन ভারতবর্বের কলম্বিত ইতিহাস মহন করিয়া---জন্মের হুর্গ ডি ও নৈরাক্ষের মধ্যে মহিমনম অতীতকে স্মরণ করাইমা আশা ও উভয়ে আমাদের ভীবন সঞাবিত" করিয়াছিলেন তিনি। ইংরেক ঐতিহাসিক বর্ণিত আমাদের অনৈক্য ও অপদার্থতার পরিচয় পরীকা করিবার প্রবৃত্তি কারিয়াটিল ৰলিৱা আচাৰ্য্য যতুনাথের "ইতিহাস-অতুশীলন কাৰ্য্যকে" আমরা এল্পভাবে মন-প্রাণ দিয়া গ্রহণ করিয়াখিলাম। তাঁহার প্রকলপণের মধ্যে পশ্চিম-ভারতের মহাদেও গোবিন্দ রাণাড়ে ও রামক্রক ভাঙারকারের নাম করা যায়, বাংলাদেশে বভিষ্ঠনত ও হরপ্রসাদ শান্তীর নাম শ্বরণীয়। ভাঁহার অনু-লেৱণার ও শিক্ষার যে "লাখা" বা লিৱস্বলী গড়িয়া উঠিয়াছে, ভাৰা আমাদের পূর্ব-ইভিহাসের উপর আলোকপাত করিতে পারিবে, এই ভর্মা আমরা করিতে পারি। কুশলী গুরুর ভূশলী শিশু তাঁহারা।

বাংলাবেশের বাছিরে কর্ম-দীবন কাটাইরাও আচার্য্য মন্থ্রনাথ বদবাদীর সেবার অনুষ্ঠ ছিলেন; আজিও বার্দ্ধক্যকালে "মনের ভারুণ্য সভেদ" আছে। সেই সেবার পরিচয়
দিবার বোগ্য অধিকারী বদীর সাহিত্য-পরিষদ। প্রাণের
আবেগে সেই দীকৃতি করিয়াছেন পরিষদ,—

সুবে ছ:বে, বিপদে আপদে ভূমি বদীর-সাহিত্যপরিষদের সেবা করিয়াহ, নিকের ঐকাছিক নিঠা ও
শীতর হারা ভোষার উত্তরসাবকদের ভূমি পর্যাদর্শক
হইয়াহ। ভোষার নিরলস কর্ম্মাননা আজিও সফটকালে
বার বার পরিষদকে রক্ষা করিতেহে, রমেশচক্র জগনীশচক্র প্রস্কুলক হরপ্রসাদ রামেক্রস্কর হীরেজনাবের বারা
ভূমিই বহু ক্লেশে অব্যাহত রাধিয়াহ, ভোমাকে আমরঃ
কিছুতেই অবসর দিতে পারিতেহি না, অসহায়ভাবে
বার বার ভোষাকে আশ্রম করিতে চাহিতেহি,…"

এই উৎসব উপলক্ষে আচার্ব্যদেবের সংক্ষিপ্ত জীবনী ও
রচনাপঞ্জী সহলিত একবানি পুরিকা প্রচারিত হইয়াছিল।

শুরক্ষেলার বন্দ্যোপাব্যার তাহা সহলম করিয়াছেন। ইহার
সাহাব্যে আচার্ব্যদেবের জানসাবকোচিত জীবনের নানা
প্রচেষ্টার পরিচর পাওয়া বায়; ঐতিহাসিক অহুসহিংহ
ইহার মব্যে নিজের যাঞ্জাপরে জনেক অহুলিনির্দেশ দেবিতে
পাইবেন। কত সংবাদপত্রের আনাচে-কানাচে তাহা পড়িরা
আছে; ছই বিন পরে তাহার সন্ধান পাওয়া বাইত না। এই
পুভিকাবানিতে তার একট সংগ্রহ মুক্তিত হুইল; ভুর কালের
ভব্ধ ছারিস্থলাত করিল।

ডাঃ স্থন্দরীমোহন দাদের ত্রিনবতিতম জন্মদিবস

ডাঃ সুন্দরীবোহন দাসের ত্রিনবভিত্য ক্রনিবস উদ্যাপনের আরোকন হইতেছে ইহা সুবের বিষয়। বাংলার বে সব সন্থান বুকের রক্ত চিরিরা বংদের মত্রে হাক্তর করিরাছেন এবং আজীবন ব'ব ক্ষেত্রে পরম নিঠার সহিত বংদেশের সেবার আপনার সকল শক্তি নিরোজিত রাধিরাছেন, ডাঃ সুন্দরীযোহন দাস তাঁহাদেরই একজন। এ বিষরে নিয়লিখিত বিয়তি প্রকাশিত হইয়াছে:

टार्डिय छो: प्रस्तरीयोहन होत्र यहान्यत्र व्याप्त वर्डमार्टन ২০ (१)। বজার বাঙালী সমাজে এরপ দীর্ঘলীবন লাভই পরম পৌরব। ভত্পরি বিশেষ স্মরণযোগ্য এই যে, ভাঁছার এই দীর্ঘনীবন দেশ ও দশের কল্যানে পূর্ব্বাপর নিয়োজিত। এই ছাত্মভোলা, বর্ষীয়ান লোকসেবীকে সন্মান প্রদর্শন প্ৰকৃতপক্ষে তাঁহার জীবনে প্ৰত্যক্ষ ৰূপাৱিত আদৰ্শে আছা জাপন মাত্র। অভকার দিনে ইহার উপযোগিতা, এবং প্রয়োজন অবিসংবাদিত, তাই ত্রীহট সন্মিলনী যবোচিত উপচারে তাঁহার ত্রিনবভিত্র (१) জন্মবর্ষ উদ্যাপনের যে প্রস্তাব করিয়াছেন, তাহা আহরা সানলে এবং সর্বাচ্চকরণে সমর্বন করিতেছি। ডাঃ স্বন্ধরীমোছনের গুণমুগ্ধ লোকের বভাব নাই। তাঁহাদের সকলকেই এই অনুষ্ঠানে সর্বাদীণ সাহায্য দানের সনির্বাহ অভবোৰ ভানাইডেছি। যোগাযোগ ভাপনের क्ति : वनवानी कलन-मश्मध चाहां शितीनहत्त हाळावाम. ৩৫ ছট লেন, কলিকাতা—১। কাৰ্যালৱের ভারপ্রাপ্ত সম্পাদিকা এমভী মাধুরী ভট্টাচার্যা।

#### তেজ বাহাত্রর সাঞ

ভারতবর্বের ভার একজন মনধী-প্রধান দেহত্যাগ করিলেন। প্রার ৭০ বংসর বর্মে এলাহাবাদের তেজ বাহাছর সাপ্রুর ভিরোবানে ভারতরাষ্ট্রের জপুরনীর ক্ষতি হইল। সভ্যজগংমর ভাইনজ্ঞ বিগার ভাঁহার ব্যাতি ছিল। দেশের রাজনীতিক জীবনে আপোষরফা করিবার পথার বিধাসী। যে উপ্র জাতীরভাবাদ ১৯০৫ সনে বাংলাছেশের হাদর হইতে কুটরা বাহির হইরাছিল তিনি তাহার বিরোবী ছিলেন। সেইজভ তিনি গাঙীজী-প্রবর্ষিত জহিংস সংগ্রামেও যোগদান করিতে পারেম নাই। কিছ যখনই ভারতীয় ভাতীয়ভাবাদ ও ব্রিটিশ সামাজ্য-বাদ রণ-ফ্লাভ হইরাছে, তথনই তেজ বাহাছর সাপ্রুইম সাজি ভাহার এইরূপ চেষ্টার সাক্ষল্যের প্রমাণ।

যুক্তপ্রদেশের সামাজিক জীবনে তেজ বাহাছর সাঞার প্রভাব শিক্ষিত সমাজের মধ্যেই নিবছ ছিল। এই সমাজের এক ভবে মুগলীন সংস্কৃতির অসুশীলন হইত এবং এই প্রচেটার কলে হিন্দু-মুগলীন সংস্কৃতির সমন্বর সাধিত হইবাছিল। কিছ অদৃটের এবনি পরিহাস যে, এই প্রদেশের মুগলমান প্রধানগণই "ছি-ভাতি" তত্ত্বে বেদীবুলে নিজের হার্ব ও কেশের হার্ব বলি হিরাহেন। তেজ বাহাছর এই সমন্বর-প্রচেটার প্রধান তন্ত্র-বার্ক্তবের মধ্যে এক্জন ছিলেন।

# সিন্ধুধমে জ্রীদেবতার উপাসরা

### विननीगांधव छोधूती

নিকুবর্মে জ্বীদেবতার উপাদনা সম্বন্ধে পূর্ব প্রবন্ধে দিকুবর্মের কোন পরিচর দেওয়া হয় নাই। উহাতে মোহেঞােদারা, হবাঞ্চা ও বেল্ড়ী হানের ভাষ্যুগের তুপ হইতে প্রাপ পাড়া মাটির জীম্ভিওলি জীদেবত। অথবা দেবীর বিভিন্ন রূপের প্রতিমা, ভার জন মার্লাগের এই মতবাদের বিভারিত সমালােচনা মাত্র কর। হইবাহে। ভার জন মার্লালের মতবাদ সমকে প্রথম প্রবন্ধে বাহা বলা হইয়াছে তাহার পর প্রশ্ন উঠে, এইরপ তুর্বল ভিত্তির উপর যে মতবাদ প্রতিষ্ঠিত তাহা কি কারণে প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছে।

শুর জন মার্শালের প্রচারিত এই মতবাদ বিশ্লেষণ করিলে দেখা যায় যে ইহার তৃইটি দিক আছে। দিদ্ধু উপত্যকাও বেনুচী ছানে প্রাপ্ত স্থা মূর্তি এলি যে জীদেবতার মূর্তি, ইহা একটি দিক। এই মূ্তিগুলিকে স্থা দেবতার মূর্তি বলিয়া স্থাকার করিলে প্রমাণ হইল যে দিদ্ধুজাতি জীদেবতার উপাদক ছিল। তারপরে বলা ইইয়াছে, এই জীম্তিগুলি মহাদেবী বা ধরিত্রীদেবীর বিভিন্ন রূপের প্রতিগা। মার্শালের কথায়—"repre-entatives of the local forms of the Great Mother or Great Mother-goddess." এখানে local forms কথাটি মার্শাল হিন্দু ধর্মণাজ্যের অবতারবাদ স্থাবণ করিয়া ব্যবহার করিয়াছেন মনে হয়।

এবং ভগবতী দেবী সা নিত্যাপি পুন: পুন:।
সন্ত্য কুকতে ভূপ জগত: পরিপালনম্॥
(চণ্ডী ১২।৩৩)

দেবী নিতা। ইইয়াও পুনংপুনং আবিভূতি ইইয়া জগতের পরিপালন করিয়া থাকেন। দেবী পুনংপুনং আবিভূতি হন বিভিন্নরূপে, বিদ্ধাবাসিনী, শাকস্ভবী, শতাকী, তুর্গা, ভীমা দেবী, লামরী তাঁহার বিভিন্ন রূপ। বিভিন্ন নামে, রূপে ও উদ্দেশ্যে দেবীর পূজা হিলুদিগের মধ্যে অতি পরিচিত ব্যাপার। তুর্গা কখন জগরাত্রী, কখন অরপুর্গা, কখন মহিষমন্দিনীরূপে পূজিতা। ইহা ছাড়াও দেখা বায় বিভিন্ন অঞ্চলে পূজিতা জীদেবতাকে দেবীর অংশ বা একটি রূপ বলিয়া গ্রহণ করা হয়। কনক তুর্গা, জয় তুর্গা, বন তুর্গা, আর্ম তুর্গা, শাস্তা তুর্গা, পাদ তুর্গা, নব তুর্গা, বিজয়া তুর্গা, অধ তুর্গা, আল তুর্গা, কাব্য তুর্গা,—ইহাদের প্রকৃত কুললাল অনেকাংশে অঞ্জাত হইলেও সকলেই তুর্গার অংশ রূপে পূজিতা। ইহারাই local forms of the Devi। সে বাহা

হউক, যখন দিল্প উপত্যকা ও বেল্টী স্থানের স্ত্রীষ্ঠিগুলিকে দেবীর এই প্রকার অংশ রূপে প্রিক্তা দেবী বা মাতাগণের প্রতিমা বলা হইতেছে তথন শীকার করিয়া লওয়া হইতেছে যে দিল্প ধর্মে এই সকল দেবী বাহার local forms সেইরূপ এক জন মহাদেকী ও প্রিক্তা হইতেন। মার্শালের মতবাদের ইহাই ধিতীয় দিক।

স্মালোচনা করিবার সময় মার্শালের মত্রাদের এই ছুইটি দিকের পুণক ভাবে সমালোচনা করা প্রয়োগন। পূর্বের প্রবন্ধে প্রধানতঃ প্রথমদিকটির সনালোচনা করা ইইয়াছে। এই সমালোচনা প্রদক্ষে হুইটি যুক্তি ব্যবহার করা হইয়াছে। একটি যুক্তি এই যে, এই সকল স্ত্রীমৃতির মধ্যে এমন কোন চিহ্ন নাই যাহা ধর্মার্থ বা দেবত্ব বোধক। সিদ্ধু জাতির ধর্মের পরিচয় দেয় এরপ বহু দীল আবিষ্কৃত হইয়াছে। এই সকল সীলে খোনিত মৃতির ও ধর্ম অফুষ্ঠানের (cult practices, rito: ) দুখের ভাংপর্যা সম্পদ্ধে গুরুতর সন্দেহ উঠে না। ক্ষেক্টি সীলে জীমুডিও দেখা যায়। ইহার মধ্যে প্রসিদ্ধ হরাপ্লা সীলিঙের উল্লেখ করা হইয়াছে। বুক্ষ উপাদনার পরিচয় দেয় এরূপ একটি দীলিঙে স্ত্রী-মূতি দেখা যায়। এই সকল জীৰ্তিক সহিত উল্লিখিত স্ত্রী-মৃতিগুলির বিন্দুমাত্র সাদৃগু নাই। চক্র, স্বন্তিকা, ত্রিশূল, শৃন্ধ, নভজামু হইয়া ও হাত উঠাইয়া ভক্তি নিবেদন কবিবার ভদ্নী, পশুবাহন—দিন্ধু ধর্মের ধর্মার্থবোধক এই এই সকল চিহ্ন পরিচিত। উল্লিখিত মৃতিগুলিতে এমন कान हिरू वा वित्नवद नार याश रहेरा এগুनिक लियी-মৃতি বলা সমীচীন মনে হইতে পারে। পণ্ডিভগণ কতৃ 奪 পণ্ডিভোচিত গান্তীর্থের সঙ্গে বলা হইলেও কতকগুলি মূর্তির কদাকার, বিক্বত নাদিকা ও পক্ষীচঞুর মত মুগ এই সকল মৃতির দেবতের প্রমাণ, এই কথা ভূনিয়া লোকে কৌতুক বোধ করিবে।

সমালোচনায় যে বিভীয় যুক্তি ব্যবহার করা হইয়াছে তাহা parallel finds-এর যুক্তি। আলোচনা প্রসঙ্গে মেসোপটেমিয়া, সিরিয়া, প্যালেষ্টাইন, মিশর, উজ্জিয়ান অঞ্চল ও আনাভোলিয়ায় প্রাচীনযুগে পৃক্তিত বিভিন্ন দেবীকে শিল্পে যে রূপ দেওয়া হইয়াছে তাহার উল্লেখ করা হইয়াছে। দিংহ্বাহিনী, আয়ুধ্ধারিণী বণদেবী, শস্তগুদ্ধ হত্তে শক্তাধিষ্ঠাত্রী দেবীর সঙ্গে অথবা vulture hood, শৃত্ত, মশাল, পদ্ম, সূপ ইত্যাদি ধ্র্মার্থবোধক পরিচিত চিছের

ষারা যাহাদের দেবীত প্রকাশ করা হইয়াছে সেই সকল
মৃতির সঙ্গে দিল্লু উপত্যকা ও বেলুটাস্থানের ত্রী মৃতিগুলির
কোন সাদৃত্য দেখা যায় না। মার্শাল যখন parallel findsএর যুক্তি ব্যবহার করিয়াছেন তথন এই সাদৃত্য বাস্তবিক
কতটা দেখা যায় পরীকা করিয়া দেখেন নাই এইরূপ অভ্যান
না করিয়াও বলা যায় যে উপরে উল্লিখিত দেশগুলির বে
দকল দেবীমৃতির সঙ্গে কোন সাদৃত্য দেখা যায় না সেই সকলমৃতির সঙ্গে সোদ্দেত্যর প্রমাণে দিল্লু উপত্যকা ও বেল্টীস্থানের মৃতিগুলিকে দেবীমৃতি বলিয়া বর্ণনা করিবার সময়
নার্শাল পূর্বসঠিত মত বা সংস্কারের ঘারা চালিত হইয়াছিলেন। এই পূর্বসঠিত মত কি পরে বলা ইইতেছে।

মার্শালের মতবাদের দিতীয় দিকটি সপ্নদ্ধে পূর্বের প্রবন্ধে বিস্তারিত আলোচনা ধরা হয় নাই। এথানে এ সম্বন্ধে সংক্ষেপে কিছু বলা হইতেছে।

সিদ্ধু উপত্যকা ও বেলুটী ছানের স্ত্রীমূর্তিগুলি দেবীমূর্তি ধলিয়া স্বীকার না করিলে এই দিতীয় দিকটির স্বর্থাৎ এই দ্রীমৃতিগুলি মহাদেবীর বিভিন্ন রূপের প্রতিমা, এ কথা উঠেনা। কিন্তু এগুলিকে দেবীমূতি বলিয়া স্বীকার করিলেও অক্তত্ত মহাদেবীর বা ধরিতীদেবীর উপাসনা যে প্রকার decumentary evidence বা প্রাচীন লেখনের প্রমাণ এবং আহুয়ন্ত্ৰিক প্ৰমাণ হিসাবে নানাবিধ পুৱাতাত্ত্বিক আবিদ্ধারের দ্বারা সমর্থিত হইয়।ছে দিক্ক উপত্যকা বা বেল্চীস্থানে এই চুইটি প্রমাণের কোনটির দ্বারা মহাদেবীর উপাসনার অন্তিম প্রতিষ্ঠিত করা সম্ভব হয় নাই। এ অবস্থায় যে দকল স্ত্ৰীমূৰ্তি দেবীমূৰ্তি বলিয়া গৃহীত হইতে পারে না দেই দক্ত স্ত্রীমৃতির প্রমাণে দিকু উপত্যকা ও বেলুচীস্থানে মহাদেবীর উপাসনা প্রচলিত ছিল-এই মত গ্রহণ করা বিপজ্জনক এবং এইরূপ মত প্রচার করা ততোধিক বিপক্ষনক। শুর জন মার্শালের মত সাববানী ও সত্যাত্ন-দদ্ধিংম পণ্ডিত যে সকলপ্রকার সাক্ষাং ও আমুয়ঞ্চিক প্রমাণের অভাব সত্ত্বেও এইরূপ মতবাদ প্রচার করিতে দ্বিধা বোধ করেন নাই ইহার মূলে রহিয়াছে পূর্বগঠিত মতবাদের প্রভাব। এই পূর্বগঠিত মতবাদের প্রভাবে তাঁহার প্রচারিত মতবাদের অসক্ষতি ও দৌর্বল্য মার্শালের নব্দর এড়াইয়া গিয়াছে।

এই পূর্বগঠিত মতবাদ कि দেখা যাউক।

প্রাচীন যুগে মেসোপটেমিয়া, সিরিয়া, মিশর, ঈজিয়ান অঞ্চল, এশিয়া মাইনর প্রভৃতি দেশে জীদেবতার উপাসনার বহুল প্রচার ছিল। তথু বে নানা প্রকাবের ও প্রমাণের গাহাব্যে এই তথা স্থপ্রভিতিত হইয়াছে তাহা নহে, নানা দেশীর পণ্ডিতগণের দীর্বকালবাাণী গবেবণার ফলে এই

উপাদনা সকল অন্ন সহছে বথাসম্ভব বিস্তারিত জানলাভ করা সম্ভব হইয়াছে। তারপর বিভিন্ন জীদেবতা বাঁহার অংশরূপে প্রকাশ এইরূপ একজন প্রধানা দেবী বা মহাদেবীর উপাসনা সম্বন্ধেও বিন্তারিত জানলাভ করা সম্ভব হই-য়াছে। এখন মেসোপটেমিয়া ও ইরাণ হইতে ভূমধ্যসাগর পর্যম্ভ বিস্তৃত অঞ্চল বছ খ্রীদেবতা ও একজন প্রণানা দেবীর যে উপাসনা অনুমান খ্রী: পু: ২য় সহত্রক হইতে প্রচলিত ছিল দেখা যায় ভাহা যে মেদোপটেমিয়া ও ইরাণের নিকটবভী বেলুচীস্থান ও সিদ্ধু উপত্যকায় প্রসারিত হইয়া-ছিল এরপ কল্পনা করিতে কোন বাধা দেখা যায় না. বরং মনে হয় ইহা খুব সম্ভব ও স্বাভাবিক। সামাক্ত কোন বাধা থাকিলেও মেদোপটেমিয়া ও দিন্ধু উপত্যকার সহিত বাণিজ্যিক যোগাবোগের যে প্রমাণ পাওয়া বায় ভাহার পর এই বাধা টিকিতে পারে না। দিন্ধ সভ্যতার প্রাচীন নিদর্শনসমূহ আবিষ্ণার হইবার বৃহুর্ত হইতে পশ্চিম এশিয়ায় এই সভ্যতার উৎপত্তির মূল অমুসন্ধানের প্রয়াসের স্ক্রপাত হইয়াছিল। স্বীমৃতিগুলি আবিষ্কার হইবার সময় হইতেই এই মত গঠিত হইয়া গিয়াছিল যে এগুলি পশ্চিম এশিয়ায় প্রাচীনযুগে পৃঞ্জিত দেবীমূতির সিদ্ধু-সংস্করণ মাত্র। ইহার পরে যথন দেখা যায় বেলুচীস্থানের একশ্রেণীর বলাকার স্বীমৃতিকে proto-type of Kalı ব্যাখ্যা করা হইয়াছে তথন আর বিশ্বয়ের অবকাশ পাকে না। সিন্ধু ধর্মের নানা অঙ্গ সম্বন্ধে তাঁহাদের ব্যাখ্যার যাহাতে সমর্থন পাওয়া বায় বিশাল হিন্দু পুরাণ সাহিত্য হইতে সেই প্রকারের টুকিটাকি উদ্ধার করিতে পণ্ডিতগণ বিশ্বয়কর নৈপুণ্য দেখাইয়াছেন। দৃষ্টাম্ভ দেওয়া যাইতেছে। সিন্ধু উপত্যকার দীলে ( No. 279 ) দেখা যায় একটি মহিষের নাকের উপর পা উঠাইয়া একটি মহয় মুতি এক হাতে উহার একটি শৃঙ্ক ধরিয়াছে এবং অপর হাতে একটি বর্ণার (a spear with a barbed point) দারা মহিষের পূর্চে আঘাত করিতে উভত। মহিষ, বিশেষ গঠনের বর্ণা ও মহুক্ত মূতির সমা-বেশ। একজন বিশিষ্ট পণ্ডিত এই দুশ্রের ব্যাখ্যা করিলেন শিব ও অক্যান্ত দেবতা মিলিয়া মহিধাস্থরকে আক্রমণ করিতেছেন। এই ব্যাখ্যা সমর্থন করিয়া অপর একজন পণ্ডিত স্বন্পুরাণ হইতে একটি কাহিনী উদ্ধার করিলেন শিবের অহুচরগণ ও দেবতারা মহিষাস্থরকে হত্যা করিতেছেন। ইহা যথেষ্ট বিবেচিত না হওয়াতে চঞী হইতে শ্লোক উদ্বুত করা হইয়াছে দেবী মহাস্থরকে পাদপীড়ন করিয়া শূল ঘারা তাহাকে তাড়না করিলেন। তং মহাস্তবং পালেনাক্রম্য কঠে চ শূলেনৈনমভাঙ্গ্রৎ। কোধার এট জন্মের

তিন হাজার বংগর পূর্বের সিদ্ধু উপত্যকার সীলে মহিষ শিকারের দৃষ্ঠ আর কোধার চণ্ডী কভূ ক মহিষাহ্রর বধের পৌরাণিক কাহিনী!

মেসোপটেমিয়া, সিবিয়া, মিশর, ঈজিয়ান অঞ্চল, এশিয়া মাইনরে দেখা বায় একজন প্রধানা দেবী পৃক্তিতা হইতেন। বিভিন্ন দেশে পৃক্তিত এই সকল প্রধানা দেবীর কতকগুলি সাধারণ বৈশিষ্ট্য ছিল। ডি, জি, হগার্থের রচনা হইতে একটি বচন উদ্বুত করিয়া মার্শাল এই সাধারণ বৈশিষ্ট্যগুলি কি ছিল ব্যাইতে চাহিয়াছেন:

"In Punic Africa she is Tanit and her son; in Egypt Isis with Horus; in Phoenicia Astoreth with Tammuz (Adonis); in Asia Minor Kybele with Attis (Saberuz); in Greece Rhea with Young Zeus. Everywhere she is unwed, but made the mother, first of her companion by immaculate conception, and then of the gods and all life by the embrace of her son. In memory of these original facts her cult . . is marked by various practices and observance symbolic of the negation of true marriage and obliterations of sex. A part of her male votaries were castrated and her female votaries must ignore their married state, when in personal service, and after practise ceremonial promiscuity."

উপরের তালিকার সঙ্গে ইরাণের আনাহিতা ও মিথ মেসোপটেমিয়ার ইরিনী-ইন্তার ও তাস্থুল, কাপাডোসিয়ার আরিয়ার দেবী ও মাহ্ এবং সিরিয়ার আতরগাতিস ও ভাহাদের সন্ধী কিশোর দেব বোগ করা যাইতে পারে।ইহা ছাড়া আরও দেখা যায়, বিশেষ ভাবে স্থমেরো-বাবিলোনীয় ধর্মে, প্রধানা দেবী, বিনি দেবগণের মাতা ও সকল বস্তুর মাতা (Mother of the gods, Mother of all things) তিনি আবার অংশরূপে প্রকাশ পাইয়াছেন।কথন তিনি শস্তের অধিগাত্তী, কথন নদী বা উৎসের দেবী, কথন যুদ্ধের দেবী, কথন প্রস্বের অধিগাত্তী দেবী,

সিদ্ধু উপত্যকা ও বেলুচীস্থানের স্ত্রীমৃতিগুলিকে দেবী
মূর্তি বলিয়া ব্যাখ্যা করিবার পরে বিনা বিধার বলা হইরাছে
এই মৃতিগুলি represent the Great Mother cr
Nature Goddess. এই মহাদেবীর উপাসনার উৎপত্তি
হইরাছিল মেসোপটেমিয়ায় বা আনাতোলিয়ায়। বে সকল
তথ্যের সাহাব্যে পশ্চিম এশিয়ায় এই উপাসনার অন্তিত্ব
প্রমাণিত হইয়াছে উপরে এই উপাসনার বে সকল বৈশিষ্ট্যের
কথা বলা হইল, নিদ্ধু উপত্যকা ও বেলুচীস্থানে সেই সকল
তথ্যের সম্পূর্ণ অভাব, সেই সকল বৈশিষ্ট্যের পরিচায়ক কোন
নূপ্ত নিদর্শনের উদ্ধার হয় নাই; কিন্তু এই সহজ, ম্পাই স্ত্যু
পথিতগণকে সংঘত করিতে পারে নাই।

স্থতবাং দিদ্ধ ধর্মের বিভিন্ন বৈশিষ্ট্যের ব্যাখ্যা সম্বন্ধ আলোচনার সময়ে মনে রাখিতে হইবে বে, এই ব্যাখ্যা পূর্বগঠিত মতবাদের দারা প্রভাবিত, এই ব্যাখ্যা দিদ্ধ উপত্যকার প্রাপ্ত ও উপযুক্তরূপে পরীক্ষিত প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত নহে। দিদ্ধ লেখনের পাঠোদ্ধারের কলে নৃতন লিখিত প্রমাণ আবিষ্কৃত না হওয়া পর্যন্ত মোহেজোদারো, হরাপ্লা ও বেলুচীস্থানের স্ত্রীমূতিগুলি যে দেবী মূতি এবং মহাদেবীর বিভিন্ন রূপের প্রতিমা—এই মতবাদ অগ্রাহ্ম করিতে হইবে।

এ পর্যন্ত যে সকল স্ত্রীমৃতির সম্বন্ধে আলোচনা করা হইয়াছে তাহা ব্যতীত আর কোন স্ত্রীমৃতি যাহা দেবীমৃতি বলিয়া মনে হইতে পারে, দিক্ধু উপত্যকায় পাওয়া গিয়াছে কিনা দেখা প্রয়োজন।

দিল্প উপত্যকা ও বেল্চীস্থানের পোড়ামাটির স্ত্রীমৃর্তিগুলি বাদ দিলে মাত্র কয়েকটি সীলিঙে স্ত্রীমৃর্তির সাক্ষাৎ
পাওয়া যায়। পুরুষ-মৃতির তুলনায় স্ত্রীমৃতির সংখ্যা খুব
অল্পই বলিতে হয়। সীলিঙে যে স্ত্রীমৃতিগুলি দেখিতে
পাওয়া যায় সেগুলি বে দেবীমৃতি বলিয়া মনে করা হইত
তাহার প্রমাণ রহিয়াছে। এখানে হইটি সীলিঙের উল্লেখ
করা হইতেছে। এই হুইটি সীলিঙের নারীমৃতি বৌদ্ধ
আমলের বিলিজিয়াস আট স্থবণ করাইয়া দেয়। এই হুইটি
সীলিং হইতে যতটা জানিতে পারা যায় তাহা হইতে
মোহেঞাদাবো ও হরায়ায় স্ত্রীদেবতার উপাসনার বছল
প্রচার ছিল একথা বলা সম্ভব হয় না।

প্রথমে হরাপ্পার একটি প্রসিদ্ধ সীলিঙের (M.I.C. PLXII 12) উল্লেপ করা হইতেছে।

হরাপ্লা দীলিঙের প্রদক্ষে মার্শাল বলিতেছেন,—

"The cult of the Mother Earth is evidenced by a remarkable scaling from Harappa on which a nude female figure is depicted upside down with legs apart and a plant issuing from her womb."

মার্শাল হরাপ্পা দীলিঙের স্ত্রীষ্তিকে ধরিত্রীদেবীর প্রতিমৃতি বলিতেছেন এবং এই প্রকারের মৃতির সাদৃষ্ঠ পাইয়াছেন পশ্চিম এশিরায় নহে, ভারতবর্ষের গুপ্ত আমলের একটি টেরাকোটা রিলিফের সহিত (A.S.R. 1911-12 PL XIII, 40)। কিন্তু এই রিলিফের স্ত্রীমৃতির অবস্থান ভিন্ন এবং মৃতির স্কন্ধদেশ হইতে একটি পদ্ম বাহির হইয়াছে।

সীলিঙের অপর দিকে একটি পুরুষ ও স্তীযুর্তি। পুরুষ মুর্তিটি দাঁড়াইয়া আছে, ডান হাতে কাত্তের মত একটি অস্ত্র। স্তীমুর্তিটি উপবিষ্ট, প্রার্থনার ভদীতে তাহার হুই হাত উপরে তুলিয়া আছে। মার্শালের ব্যাখ্যা এই যে পুরুষটি স্ত্রীলোকটিকে হত্যা করিতে উন্নতঃ

"And it is reasonable to suppose that the scene is intended to portray a human sacrifice connected with the earth-goddess depicted on the other side."

অর্থাং ধরি এটাদেবীর তৃপ্তির জন্য নরবলি দিবার প্রথার পরিচয় এই দৃশ্যে পাওয়া যাইতেছে। সীলিঙের যে পৃষ্ঠে ধরিজীদেবীর মৃতি আছে দেই পৃষ্ঠের বাম দিকে দেখা যায় ছইটি ব্যাঘ্র পরস্পরের দিকে চাহিয়া আছে। মার্শালের ব্যাখ্যা মতে এই ব্যাঘ্র ছইটি দেবীর animal ministrants, বাহন নহে, পুরোহিত বা পাণ্ডা।

ইহা সৌভাগ্যের বিষয় যে, হরাপ্লা সীলিঙের চিত্র হইতে শিল্পীর বক্তব্য অর্থাৎ কাহিনীটি বুঝিতে পারা যায়। **धरे रिमार्य मीलिए इमाका बनावान छ विरम्ब छार्थर-**গোদিত দৃষ্ঠ যে ধর্মার্থবোধক তাহাতে সন্দেহ নাই। যে স্তীমৃতির উদর হইতে বৃক্ষ নির্গত হইতেছে ভাহা যে বৃক্ষ বা উদ্ভিদের প্রস্বিনী বা অধিষ্ঠাত্রী দেবীরূপে (Vegetation goddess) কল্লিত তাহা সহজে অনুমান করা যায়। এই দেবীর অফুচর বা বাহন রূপে তুইটি ব্যাছও मिथा यात्र। भी निरक्षत ज्ञान शुर्फेत मण्डी क उ हिए पत्र বৃদ্ধি কামনায় নরবলির অফুগানের দুখ্য বলিয়া গ্রহণ করিতে আপত্তি হয় না। কারণ পৃথিবীর উৎপাদিকা শক্তি বুদ্ধি করিবার জন্ম নরবলির প্রথা অতি প্রাচীন ও পরিচিত প্রথা। দির্ধর্মে উদ্ভিদ প্রস্বিত্রী ধবিত্রী দেবীর উপাসনা প্রচলিত ছিল—এই দিদ্ধান্ত করিবার পক্ষে একটি মাত্র বাধা দেখা যায়। সে বাধা এই যে, মোহেঞােদাবো, হরাপ্পা ও বেলুচিম্বানে যে শত শত তাম্মুগের নিদর্শন আবিষ্কার ইইমাছে তাহার মধ্যে হ্রাপ্তা সীলিডের অফুরূপ সীলিং আব একটিও পাওয়া গিয়াছে বলিয়া জানা যায় না। क्ल এरेक्न मत्नर रहेरड भारत এर मौनिः विराम হইতে আনীত কিনা।

কিশ এবং মধ্য ও উত্তর স্থমেরের লাগাস হইতে আক্ষক (Akshak) পর্যন্ত অঞ্চলে প্রচলিত ধরিত্রী মাতার উপাসনা ও উহার বৈশিষ্ট্রের যে পরিচয় পাওয়া গায় এবং ধরিত্রী মাতার যে সকল প্রতিমা পাওয়া গিয়ছে তাহার সহিত হরায়া সীলিঙের তুলনা করিলে তুইটি বিষম্ব দৃষ্টি আকর্ষণ করে। প্রথমতঃ, নিয়্রে ধরিত্রীমাতার উপাসনা যে উন্নত স্তরে উঠিয়ছিল সেই স্তরে উঠিয়ার পূর্বে বিভিন্ন রূপে ধরিত্রী দেবীর উপাসনা প্রচলিত ছিল। গেই ন ছিল দ্রাক্ষর অধিষ্ঠাত্রী। নিক্রা শক্ষের অধিষ্ঠাত্রী। উন্মা পক্ষ শক্ষের অধিষ্ঠাত্রী, বাউগুলা শক্ষের ও প্রস্বের

অধিষ্ঠাত্রী। ধবিত্রী দেবীকে এই বিভিন্ন রূপে ও বৃতিতে উপাদনাকে departmentalised worship of the Rarth-Mother বলা যায়। ধরিত্রী মাতার এই সকল বিভিন্ন রূপ বাঁহার মধ্যে মিলিত হইয়াছে নিপ্পুরে সেই ধরিত্রী দেবীর উপাদনা হইত। এই হিদাবে হরাপ্পার সীলিঙে যে ধরিত্রী দেবী দেখা যায় তাহাকে departmental-goddess of vegetation বলা যায়। পুজনীয়া মাতা মহী, স্থাবর জন্ম সকল প্রজার মাতা পৃথিবী, ভূবনের রাজ্ঞী পৃথিবী (ঋষেদ)—ধরিত্রী মাতার এই সর্বব্যাপক রূপের কল্পনার আভাস এই উদ্ভিদের অধিষ্ঠাত্রী দেবীর কল্পনার মধ্যে নাই। দ্বিতীয় লক্ষ্য ক্রিবার বিষয় এই যে স্থদা ও মেদোপটেমিয়ায় ধরিত্রী দেবীর বিভিন্ন রূপের সঙ্গে সর্পের উপস্থিতি দেখা যায়। সর্পের সঙ্গে জীবনীশক্তির বা উৎপাদিকা শক্তির সম্পর্ক বছ ধমে দেখা যায়। দিক্ক উপত্যকার নিদর্শনসমূহের মধ্যে কয়েকটি শীলে সর্পের সাক্ষাৎ পাওয়া যায় কিন্তু উদ্ভিদের অধিষ্ঠাত্রীদেবীর উপাদনার সঙ্গে **সর্পের** नारे।

দে যাহা হউক, হ্রাপ্পা সীলিঙে উদ্ভিদের উৎপাদিকা শক্তিরপে ধরিত্রীর যে রূপ দেখা যায় তাহার সঙ্গে মেসোপ-টেমিয়ার ধরিত্রী দেবীর বিভিন্ন রূপেন কোন সাদৃশ্য দেখা যায় না। হতরাং হরাপ্পা সীলিং বৈদেশিক আমদানী না হওয়াই সম্ভব।

এখন মোহেঞ্চোদারোর একটি সীলের উল্লেখ করা যাইতে পারে। এই দীলে (M.I.C. Vol. 1, ptc. XII—18) দেগা যায় একটি দীৰ্ঘকেশা নগ্ন স্ত্ৰীষ্তি একটি বুক্ষের ছুইটি শাধার মধ্যে দাঁড়াইয়া আছে। বুকটির পাতা দেখিয়া উহাকে অশ্বথ বৃক্ষ বলিয়া মনে হয়। মৃতির মাথার চুই পার্ম ইইতে তুইট শুর উঠিয়াছে, শুক্রের মধ্যে পাতাসমেত ছোট একট ভাল। এই স্ত্রীমৃতির সম্মুখে একটি মহুব্য মৃতি ভক্তি নিবেদন কবিবাব ভন্নীতে (half-kneeling) অবস্থিত, সম্ভবতঃ উপাদক। তাহার মাথায় লম্বা চুল, তুইটি শুক্ত ও শুক্ষের মধ্যে পাতাদমেত ছোট ভাল। তাহার পশ্চাতে একটি মাতুষের মুগযুক্ত ছাগল দণ্ডায়মান। ইহার নীচে এক সারিতে সাতটি পুরুষ মৃতি, পরনে হাঁটু অবধি ঝুলের ঘাগরা (short kilts), লম্বা বিস্নী (long pigtails) মাথার চুলে পাতা বা পালক। অখথ বুকের নীচে একটি চতুকোৰ পাত্ৰ (square partitioned receptacle) ! নভদাত্ম ভক্তের সম্মধে অবস্থিত দীর্ঘকেশ, নগ্ন স্ত্রীমৃতি যে উপাশ্ত দেবীৰ্তি ভাহাতে সন্দেহ নাই। মহুবামুধ ছাগলকে মাৰ্শাৰ protecting local divinity of a minor

type বলিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছেন। নীচের সাতটি পুরুষ বৃতিকে ভক্ত বলিয়া ব্যাখ্যা করা হইয়াছে।

মোহেঞাদারোর এই সীলটিকে সিন্ধুধর্ম বৃক্ষ উপাসনার একটি দৃষ্টান্ত বলা হইয়াছে। কতকগুলি সীলে বৃক্ষ, তাহার স্বাভাবিক অবস্থায় উপাস্থা। এই সীলটিতে tree spirit বা বৃক্ষসন্থা স্ত্রীব্রুপে কল্লিভ ও ব্রুপায়িত হইয়াছে। Tree spirit পুরুষরূপে কল্লিভ হইয়াছে এরপ
দৃষ্টান্ত মোহেঞােদারো ও হরাপ্লার ক্ষেকটি সীলে পাওয়া
গিয়াছে। স্ক্তরাং বৃক্ষসন্থার স্ত্রীক্রপে কল্লিভ ইইবার একটি দৃষ্টান্তের উপর বেশী গুরুষ আরোপ করা অনাবশুক।

মোহেঞ্জোদারোর এই সীলে খোদিত স্থী-দেবতার মৃতি ও অতাত মৃতি সহদ্ধে লক্ষ্য করিবার বিষয় ভাকত ও সাঁচীর কতকগুলি দুশ্লের সঙ্গে এই সীলে খোদিত দুশ্লের সাদৃশ্য। এই সাদৃশ্য এত নিকট যে চমকিত হইতে হয়। ওধু বৃক্ষণাখার অন্তরালে অবস্থিত স্থীমৃতি নহে, খাট ঘাগরা ও লম্বা বিহুনীসমেত পুক্ষ মৃতি ভাকত, সাঁচী ও অমরাবতীতে পাভ্যা যায়। মার্শাল এই সাদৃশ্রের উল্লেখ করিয়া বলিয়াহেন গে, সিন্ধু উপত্যকার বৃক্ষপৃঞ্জার নিদর্শন এবং পরবর্তী কালের (ভাকত ও সাঁচীর) নিদর্শনের মধ্যে পার্থক্য এই যে, পরবর্তীকালের নিদর্শনগুলি ট্রি-ম্পিরিট যক্ষিনী বা যোগিনী রূপে কল্লিত আর সিন্ধু উপত্যকার নিদর্শনে দেবীরূপে কল্লিত। ইহার পর মানাল মত প্রকাশ করিয়াছেন :

"Tree-worship was essentially a characteristic of he pre-Aryan, not of the Aryan population."

এই ধরণের মত প্রকাশ করিবার সার্থকতা বা প্রাসন্ধিকতা কি, বুঝা কঠিন। সিন্ধুধর্মে বৃক্ষ উপাসনার নিদশনগুলিতে দেখা বায় বে, সাধারণতঃ এক জাতীয় বৃক্ষ প্রাধান্য পাইয়াছে এবং এ বৃক্ষ অবথ। বৃক্ষ উপাসনার কেন্দ্রন্ধণে এই এক জাতীয় বৃক্ষ কেন সিন্ধুদ্রণ, বৈদিক্যুণে, বৌদ্ধুণে ও পৌরানিক যুগে প্রাধান্য লাভ করিল (লেখকের A Pre-historic Tree Cult—Indian Historical Quarterly, V.I. XIX, 1943 দ্রষ্টব্য) এবং ইহার কি তাৎপর্য হইতে পারে ভাহা অন্থসন্ধান না করিয়া বৃক্ষ উপাসনার উৎপত্তি সঙ্গদ্ধে গবেষণা এখানে পশুশ্রম মাত্র এবং নির্থক। ভার পর বৌদ্ধ শিল্পের সঙ্গে সাদ্ভোর ভাৎপর্য মার্শাল একপ্রকার উপেক্ষা করিয়াছেন, যদিও ইহা উপেক্ষা করিবার মত গুরুত্বীন বিষয় নহে।

দে যাহা হউক, সিদ্ধুধর্মে স্ত্রীদেবতার উপাসনার পরিচায়ক বিশেষ আর কোন নিদর্শনের উল্লেখ করা হয় নাই। এখানে হয়েকটি বিষয়ের প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করা যাইতে পারে। পুরুষ ও খ্রীদেবতা একসঙ্গে দেখা যায় এরপ কোন সীল বা আর কোন নিদর্শনের উল্লেখ পাওয়া যায় না। ইহা বিশেষভাবে লক্ষ্য করিবার বিষয়। সিদ্ধুধর্মে পুরুষ দেবতার সংখ্যা প্রবল স্ত্রীদেবতার সংখ্যা নগণ্য। নানাপ্রকার অন্তর্গানের সঙ্গে (cult scenes) পুরুষ দেবতাদিগকে সংশ্লিষ্ট দেখা যায়। স্ত্রীদেবতাকে মাত্র হুইটি অন্তর্গানের দৃশ্রে দেখা যায়। এই হুইটির বিস্তারিত বর্ণনা দেওয়া হুইয়াছে। অন্থ-গ্রানের দৃশ্যগুলিতে ভক্ত বা উপাসকদিগের মধ্যেও স্ত্রী-জাতিকে বিশেষ দেখা যায় না।

মন্থ্যম্ভিতে কল্পিত স্ত্রীদেবতার উপাদনার প্রসক্ষ ছাড়িয়া এখন অন্ত এক শ্রেণীর নিদর্শনের উল্লেখ করা হই-তেছে। এইগুলিকে স্ত্রীদেবতার উপাদনার পরিচায়ক বলিয়া ব্যাখ্যা করা হইয়াছে।

মোহেঞ্জোদারো ও হ্রাপ্পায় কতকগুলি নানা আকারের বিং টোন (ring stone) বা আংট বা চাকর মত জিনিস পাওয়া গিয়াছে। এইগুলি চার ফুট হইতে চার ইঞ্চি পরিধিবিশিষ্ট। বড় চাকাগুলি পাথরের, ছোটগুলি শাথের, পোরদিলিনের, নকল কানে লিয়ানের এবং পাথরের। (M.I.C. Vol I. 1% XIII-9-1%, XIV. 6-8)। মার্লালের ব্যাপ্যা অহুসারে এগুলি যোনির প্রতিষ্ঠি। তিনি মনে করেন সিম্বুদর্মে লিম্ন ও যোনি উপাসনা প্রচলিত ছিল। তাঁহার এই ব্যাপ্যার সমর্থনে তিনি মালাবার পয়েন্টের শ্রীগুণ্ডি প্রস্তর, তক্ষশীলায় প্রাপ্ত মৌর্য আমলের কতকগুলি আংট বা চাকা প্রভৃতির উল্লেখ করিয়াছেন। তাঁহার মতে বৌধণিয়ে এইগুলির অহুকরণ করা হইয়াছিল। শাক্তত্ত্বের শ্রীচক্রের সঙ্গে তিনি মোহেগ্রোদারো ও হরাপ্পার আংটগুলির তুলনা করিয়াছেন। তাঁহার সিদ্ধান্ত,

"We are justified in supposing that the ringstones found at Mohenjo Daro may have the same cultural, fetish or magical significance that the ring stones of a later date had."

কিন্ত cultural, fetish or magical significance বলিয়া চাকাগুলির তাৎপর্যের লখা ফিরিন্তি দিলেও এই গোল-বোগ থাকিয়া বায় যে, পরবর্তীকালের নিদর্শনগুলির তাৎপর্য কি ছিল তাহাই পরিদার নহে। বলা বাছল্য, সিদ্ধুধর্মে স্ত্রীদেবতার উপাসনা সম্বন্ধে মানাল বে মত পোষণ করেন এই আংটিগুলির তাৎপর্য সম্বন্ধে তাহার ব্যাখ্যা সেই মতের পরিপোষক। অপর একজন পণ্ডিত মানালের ব্যাখ্যার সমর্থনে এই যুক্তি ব্যবহার করিয়াছেন যে, মোহেঞ্জোদারো ও হরাপ্লায় বছ লিক মুর্তি (Phalli) পাওয়া সিয়াছে, স্কৃতরাং এই চাকাগুলির তাৎপর্য সম্বন্ধ মানাল যে ব্যাখ্যা

দিয়াছেন ভাহাই সম্ভবতঃ ঠিক। এই নিম্মৃতিগুনি সম্বন্ধে পরে আলোচনা হইবে।

তক্ষণীলার মৌর্য আমলের চাকাগুলির উল্লেখ করিয়া মার্শাল বলিয়াছেন,—

"In these ring stones nude figures of a goddess of fertility are engraved inside the central hole, thus indicating in a manner that can be hardly mistaken the connection between them and the female principle."

তক্ষীলার এই চাকাগুলির উপরে নানাপ্রকার কারনিক দৃশ্য পোদিত দেখা যায়। এই সকল দৃশ্য হইতে চাকাগুলি কি কাজে ব্যবস্থাত হইত তাহা বুঝা যায় না। ভীর অপুপ হামিলায় প্রাপ্ত চাকাগুলি যে নির্ম্কু উপত্যকায় প্রাপ্ত চাকাগুলি হইতে ভিন্ন তাহা মার্শালের নিজের বর্ণনা হইতে বুঝা যায় (A. S. I. 1927—28 p 66)। তার পর ক্রীমৃর্জি নগ্ন হইলেই তাহাকে goddess of fertil.ty বিলিয়া ব্যাখ্যা করিবার প্রবৃত্তি ভারতবর্ষীয় ধর্মসমূহের ইউরোপীয় ব্যাখ্যাতাদিগের মধ্যে অসম্বরণীয় দেখা যায়। অপচ বৌদ্ধ আমল হইতে ভার্ম্ব শিল্পের নিদর্শনগুলিতে স্থীক্ষুতি মাত্র নগ্ন বা অর্জনগ্ন।

সে বাহা হউক, পরীকা করিলে দেখা যায় বে, তক্ষীলা, বাৰঘাট, কোশামের প্রস্তরের চাকাগুলি (discs) সিদ্ধ উপত্যকায় উল্লিখিড বিং ষ্টোন হইতে ভিন্ন ধরণের এবং ভাঁহার ব্যাখ্যার সমর্থনের জন্য মার্শাল এইগুলি অপেকা সাধারণে প্রচলিত কতকগুলি সংস্কার যেমন শ্রীগুণ্ডির প্রস্কর সম্পর্কে, এবং তান্ত্রিক চক্র, যন্ত্র, মণ্ডল প্রভৃতি সম্বন্ধে সাধারণে পরিচিত তাৎপর্বের উপর অধিক নির্ভর করিয়া-ছেন। তান্ত্রিক, চক্র, যন্ত্র প্রভৃতির তাৎপর্য সম্বন্ধে আলোচনা এখানে অবাস্তর, কিছ ইহা উল্লেখযোগ্য যে শাক্ত ভন্নমতে ছিম্মুক্ত চক্র যোনির প্রতীক নহে, ত্রিকোণ বোনির প্রতীক। সাধারণে প্রচলিত সংস্থারের উপর মার্শাল অকারণে বেশী জোর দিয়াছেন, শাল্পে এই ধরণের সংস্থাবের স্থান নাই। শীগুণ্ডি বা শত্রুগ্ধয়ের ছিন্তুযুক্ত বুহুৎ পাথবের চাকাকে যোনি বলিয়া বিশাস এবং অশোকের ছাপিত শুস্তকে শিবলিগ বিশাসে পূজা, এই ছুইটি সংস্থারের মধ্যে কোন পার্থক্য নাই এবং এই ছুইটি সংস্থারের প্রকৃত কোন ভিত্তি নাই।

এই চাকাগুলির তাৎপর্বের অন্যপ্রকার ব্যাখ্যাও করা ইইয়াছে।

জোহির (সিন্ধু দেশ) টাণ্ডো রহিম থা তৃপের মধ্যে একট ছিজযুক্ত গোল পাথবের চাকা পাওয়া গিয়াছে। ইহা

মোহেঞাদারোর চাকাগুলির অহুরূপ। আবিষ্ঠা ব্যাখ্যা ক্ৰিয়াছেন যে ইছা door socket। দ্যাৱাম সাহনী হুরাপ্লায় কভকগুলি অসমান পাথৱের চাকা বা আংটি পাইয়াছেন। তিনি এগুলির কোন ধর্মশক্রাম্ভ তাৎপর্য আছে মনে করেন না। অম্বত্র প্রাপ্ত এরপ আরও কডকগুলি চাকা সম্বন্ধ তিনি বলিতেছেন, "what purpose they served remains a mystery (A.R. of A.S.I. 19 3-21, p. 53)। হ্রাপ্লার (main trench) চতুর্থ স্থবে এক-স্থানে প্রচুর পরিমাণে এইরূপ নিদর্শন পাওয়া গিয়াছে। এইগুলির কোন ধর্মসংক্রান্ত তাৎপর্য আছে বলা হয় নাই। চক্রধরপুরের (ছোটনাগপুর) নিকটে একটি প্রাগৈতিহাসিক সভ্যতার কেন্দ্রে (pre-hi-toric site ) এইরূপ পাধরের চাকার অংশ পাওয়া গিয়াছে। বলা হইথাছে, "it was used for weighing a digging stick," অর্থাৎ এই চাকা মাটি খু'ড়িবার যন্ত্রের মাথায় পরাইয়া দেওয়া হইত। মি: ক্রুসফুট দক্ষিণ-ভারতের কয়েকটি প্রাগৈতিহাসিক যুগের বদতি স্থান হইতে অফুরুপ ছিদ্রযুক্ত পাথবের চাকা উদ্ধার কবিয়াছেন। এঞ্চলি ডিস বা প্লেটের কাজে ব্যবহার করা হইত বলা হইয়াছে।

শাৰ, পোসিলেন ও পাথরের ছোট আংটগুলি মূল্রা হিসাবে ব্যবহার করা হইত কেহ কেহ ইহা বলিয়াছেন। আপেক্ষাক্বত বড়গুলি ভাঁত ব্ননীর লাটাই (spinning whorl) রূপে ব্যবহৃত হইত বলা হইয়াছে। ছিন্তুমুক্ত বড় পাথরের চাকাগুলি সম্ভবতঃ স্থাপত্য কার্যে ব্যবহার করা হইত বলা হইয়াছে।

মার্শাল বে সকল যুক্তি ব্যবহার করিয়াছেন অন্য প্রমাণাভাবে শুধু সেই সকল যুক্তির বলে, মোহেঞ্জোদারো ও হরাপ্পায় পোর্দিলেন, শাখ ও পাণরের আংটি বা চাকা-গুলিকে যোনির প্রতীক বলিয়া গ্রহণ করিবার প্রয়োজন দেখা বায় না। সিন্ধুখর্মে স্ত্রীদেবতার উপাসনা সম্বদ্ধে অতিরঞ্জিত ধারণা মার্শালের ব্যাধ্যাকে প্রভাবিত করিয়াছে সন্দেহ নাই। এই ব্যাধ্যার বৃলে রহিয়াছে বে পূর্বগঠিত মতবাদের উল্লেখ করা হইয়াছে তাহার প্রভাব।

সিদ্ধর্থে স্ত্রীদেবতার উপাসনা সহছে পূর্বের ও বর্তমান প্রবন্ধে যে বিভারিত আলোচনা করা হইরাছে তাহা হইতে এই তথ্যে উপনীত হয় যে সিদ্ধুধর্মের একাংশ সহছে এমন একটি ধারণা সাধারণ্যে প্রচারিত হইরাছে সতর্ক ভাবে অফু-সদ্ধান করিলে বাহার কোন যুক্তিসক্ত বৈজ্ঞানিক ভিডি পাওয়া বায় না। হিন্দুধর্মে বখন ও বে প্রকারের স্ত্রী-দেবভার উপাসনা রহিয়াছে তায়মুগের সিদ্ধুধ্যে তাহা সেই প্রকারে বিদ্যমান ছিল কেহ ইহা বলিলে বেশ আত্মপ্রাদের ভাব মনে পারে, মনে হয় সকলে তাত্মক হিন্দুধর্ম কত প্রাচীন। কিন্তু সিন্ধুধর্মর ব্যাখ্যাকারণণ চিনির প্রলেপ দিয়া অতি তিব্ধু বটিকা গলাখকরণ করাইয়া দিয়াছেন। তাহাদের মতাত্মসারে দাড়ায় হিন্দুধর্ম প্রচলিত জীদেবতার উপাসনার উৎপত্তি ভূমধ্যসাগরের তীরে এবং প্রাচীন সেমিটিক ধর্ম হইতে। কি প্রণালীতে এই গলাখকরণপ্রক্রিয়া দেখান হইয়াছে ত্ইটি প্রবন্ধে তাহাই বিল্লেংশ করিয়া দেখান হইয়াছে। ব্যাখ্যাকারণণ সিন্ধুর্ম হইতে একেবারে পৌরাণিক হিন্দুধর্মে নামিয়া আসিয়াছেন বৈদিক যুগকে ডিভাইয়া। বৈদিক ধর্মকে তাহারা গণনার মধ্যে আনেন নাই; কারণ তাহাদের মতে বৈদিক ধর্ম বিদেশ হইতে আগত আর্যদিগের প্রচারিত ধর্ম। প্রাক্তমর্য যুগের সিন্ধুর্মের জীদেবতার উপাসনা এবং এই প্রাক্তম্বাধ্বরে ধারা বাহিয়া আদিয়াছে হিন্দুধর্মের বে

ত্রীদেবভার উপাদনা, ভাহার দহিত আর্থনিগের কোন দম্পর্ক নাই। ত্রীদেবভার উপাদনা করা যেন আর্থনিগের পক্ষে নাই। ত্রীদেবভার উপাদনা করা যেন আর্থনিগের পক্ষে মানহানিকর ব্যাপার! কিন্তু দেখা যায় যে আর্থভাতির প্রাচীনতম দলিল ঝরেদে Great Mother বা
Supreme Mother-এর উপাদনা অতি উচ্চ স্থান অধিকার করিয়া আছে। এই Great Mother বিনি পরবর্তীকালে হুর্গা বা দেবী নামে প্রদিদ্ধ তাহার উপাদনার ক্রমবিকাশের ধারা ঋথেদ হইতে পরবর্তী বৈদিক সাহিত্যের মধ্য দিয়া মহাকাব্যের যুগ পর্যন্ত অন্ত্র্সরন করা যায়। সিদ্ধুধর্ম ত্রীদেবতার উপাদনা দম্বন্ধ মার্শালের প্রচারিত মত অগ্রাহ্ম করিলে দেখা যায় সিদ্ধুধর্মর সাদৃশ্র পৌরাণিক হিন্দুধর্ম অপেকা বৌদ্ধর্মের সঙ্গে অনেক বেশী। বৈদিক ধর্মের সদ্বেও সাদৃশ্রের অভাব নাই।

এ সম্বন্ধে আলোচনার পূর্বে সিদ্ধুধর্মে পুরুষ দেবতার উপাসনা সম্বন্ধে প্রচারিত মতবাদ পরীক্ষা করা প্রয়োজন।

# **अ**त्र हिन्स

#### ঐশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

अकरे जांकारण बनि ७ हारमब छमब स्मर्थण करे. যে আলো লাগিয়া উবল মনের সাগরে উঠিল চেউ. বে আলো জাগায়, যে আলো আবার নৃতন দপ্র আনে ? এমনি লগ্ন একবার আসে বুগাছ-ব্যবহানে। শীল নিৰ্ম্বল নভে যে দেখেছি শবংচক্ৰোদয়. আমরা কেনেছি ত্র্য-শবীর আলোক ভিন্ন ময়। **(र क्यां का विष. (क करव अमन ट्यां रिव प्रवार पिता** এঁকেছে মাছখে, সে ৰূপে হুদর উঠেছে উচ্ছুসিরা ! কি সহাত্ত্তি, যানব-মমতা, কি ঞ্ৰীভি অপরিমের, বর হরেছি, নিকটে এসেছি, পেরেছি ভোমার স্বেহ। মনোদৰ্শক হে কবি ভোষার সাৰ্থক কল্পনা. প্ৰেমের আগুনে পুভিয়া মাতুৰ হয়ে বার বাঁট সোনা। সাহিত্য নৱ শিল্প শুবুই, জীবন দিৱা সে গড়া, ব্যধা, অহুভূতি, ভীত্র ভ্যার, প্রাণপ্রাচূর্ব্যে ভরা। क् वा अक्षूब, क्लक्श्रीन ? बानव-बर्गद कारह পাপ ও পুণ্য, ষধু আর বিষ মেশামিশি হরে আছে। কি না সে সহিতে পারে, ভার কড সে ভালবাসিতে পারে, বিশ্বশ্ৰত্তী বিশ্বিভ চোৰে বুৰি চেয়ে থেখে ভাৱে। সে ৩৭ মাছৰ, সে নহে দানৰ, দেৰতাও সে ত নৱ. ভূমি যে গাহিলে বিচিত্র গেই যানবিকভার জয়। नवाच-भानन, भारतव विवि-निरयद वांच अर, ষম বে মুক্ত, বৰ্ষে ভাৱে বাঁৰিতে পাৱে মি কেছ। রাক্তর আর লোকনিকা বে করে নি ভোষারে ভীত, ভোষার বাৰীর ভড়িংশর্শে ভারা হ'ল সচ্চিত। यभीकीवाम क्रमान त्य क्रिका क्रमानी ষাৰীৰ কঠে ঘোষিলে বে সেই চলাৰ পৰেৰ দাবী।

কভ বিশ্বর, কত মাধুর্ব্য স্কট-প্রেরণা মাঝে, বৰু, ভোষার বাদীর বীণার শীবন-বেখনা বাবে। জীবৰের কবি, সে কি অপূর্ব্য মহাশ্রশানের ছবি, নরমূতের গেখুরা থেলে বেখা মহাভৈরবী। ধুসর বাসুর প্রান্তর ভেদি বহিছে শীর্ণ নদী, আলেপাণে কেলে দীৰ্ঘাস কারা যেন নিরব্ধি : শকুন-শিশুর কারা থামে না। ভূমি সেথা একা বসি অমারাত্রির কি রূপ আঁকিলে মনের গোপনে পশি। नाबादन बादन जनाबाद्यत्य नाकार त्नात प्रवि. ভাই ভ ভোষারে অংক বরিয়া বছ বরভূমি। মাত্ৰ কৰনো পভিত হয় না —পভিতপাৰন জাৰে, সে চিরসভ্যে প্রভিষ্টিলে কি অপন্ধপ ন্ধপ-ছামে। চলিতে মাত্র পভিতে সে পারে, পভিনা আবার ওঠে. ৰবার ধূলি ভ মলিন করে না; পঙ্গে পদ্ধ কোঠে। স্বেহে আর প্রেমে মারা-মমভার নিবিদ্যচিত্তভারী. अम्दान भूदन विकानी, जारे हिन-विकासिनी मानी। देवैठीत माना छेशहात जिल्ला त्व ह'न मानम-वहु. ভার সেই প্রেম অমর করিতে লেধনীতে করে মধু। व्यव चनना, इ:व-वारत क्वता क्रत वा चन्न, শ্ৰেষের নিঠা নামী ও নরের শ্রেষ্ঠ সে পরিচর। ভোষার আলোর প্লাবনে জীবনে করিল কি রম্পীয় ভালবাসিয়াহ সকলেরে, ভাই ছুবি সকলের প্রির ৷ মানবৰ্গেমিক ভোমার শ্বরণে চিভ উঠিছে ভবি ব্যবস্থানির স্থতির তীর্ণে তোরারে প্রণান করি।e

দেবানন্দপুরে অনুষ্ঠিত শরংচল্লের একাদশ স্থৃতি-বার্বিকী সভার
 পঠিত।

# প্ৰবাহ

### ঞ্জীবিভৃতিভূবণ গুপ্ত

30

এক যাসের উপর গত হইরাছে। মুগম সেই বে আসিয়াছে আর যার নাই। কভকটা পঢ়ার চাপে এবং কভকটা নিপ্রয়োজন বোবে। সভ্যকার দায়িছ ভার কভটুকু।

মুখারের পরীক্ষা প্রায় শেষ হইরা আসিবাছে। আর ছই দিন বাকী। সহসা ক্রবির জন্মরী আহ্বান আসিল। মুখর আনাইরা দিল যে, ছই দিনের আগে তার দেখা করিবার সুযোগ হইবে না। কিছ ছইটা দিনের ব্যবধান আর কতটুকু! দেখিতে দেখিতে কাটিরা গেল।

ইহার পরে মুদ্মকে দেখা গেল কবিদের বাহিরের ঘরে চিছিত মুবে বসিরা থাকিতে এবং কবিকে পাওয়া গেল তার পাশে নিঃশব্দে নতমুবে উপবিষ্ট অবছার। কবিই প্রথমে কথা কহিল, দাদার যে এত বড় অবঃপতন হতে পারে এ কথা কেমন করে তারা যায় বলুন ত ? তার উপর সাফাই গাইবার কি নির্শক্ষ চেটা দেখুন। কবি সুনির্শ্বনের দেখা একখানা চিট্ট মুদ্মরের দিকে আগাইয়া দিল কহিল, পড়ে দেখুন—

युवर कृष्टिन, जाशनिर शक्न---

ক্ষবি সহসা হাত কয়েক পিছাইয়া গিয়া কহিল, ঐ অনুহোষট আমায় করবেন না। চিঠি রইল। ইচ্ছে হয় পড়ে দেখুন, নইলে ছিঁছে কেলে দিন।

হ্বর একটু হাসিবার চেটা করিরা কহিল, আপনাকে চলে বেতে হবে না করি দেবী। বহুন, আমিই না হর পছছি। চিটিবানা করিকেই লেখা হইখাছে।

শ্বামার চলে আগা নিরে তোমরা ব্যক্ত হরো না। এখানে আমি কতকটা লাভিতেই আহি। জীবনে আমি বড় আবাত পেরেছি—যার হুচে তৈরি ছিলাম না। আমার মন্ত বড় ছুঃখ বে, বেখানে আমার সবচেরে বড় বিখাস ছিল সেখান থেকেই চরম লাভি পেরেছি। আমি লিলির কথা বলছি। তার রূপ আহে, শিক্ষা আহে এবং হয়তো আরও অনেক গুণ থাকতে পারে, কিছ তাকে আমি আর বিখাস করতে পারছি না। পতন বে তার কোন্ পথ বরে এসেছে তার প্রমাণ সে মিক্ষেই দেবে। যতই তার শিক্ষা-মীক্ষা থাক লিলি বাঙালীর মেরে। মিক্রের আসল সভাকে সে ক্থমই উপেক্ষা করতে পারে নি। ভাইভো আমাকে বুক্তির পথ বেছে নিতে হরেছে। ভরসা করি লিলি তার নিক্রের হুচেই আমাকে বেছাই দেবে।

ত্ৰবিৰ্শ্বল"

निरम्ब मकारक ब्यादव वृथ विवा नारिव एरेन, फाछेन्-

ছেল। তারপরেই গভীর নিজকতা। এমনি আরও অনেককণ কাটল। হয়তো আরও কিছুক্দণ অতিবাহিত হইত—সহসা একট গভীর দীর্থনিঃখাসের শব্দে মুখ তুলিয়া চাহিয়া মুখ্য শুক্দ নীরল কণ্ঠে কহিল, যেখানে এসে আমরা ইাভিয়েছি সেখানে লক্ষা সকোচ ইত্যাদি স্বাভাবিক বৃত্তিগুলোকে আমাদের উপেকা করে চলবারই হয়তো প্রয়োজন হবে। একটু থামিয়া পুনরায় কহিল, এ ছ্বটনার ক্ত আপনার দাদাই যোল আনা দায়ী—এই কি আপনার অভিযত ?

রুবি কহিল, এ মতাধতের কৰা নয় মুখ্য বাবু, এ আমার দৃচ্ বিহাস। আমি আমার দাদাকেও ভানি, আর লিলিদিকেও চিনি।

ষ্বায় অভ্যানক হটয়। পড়িল, দেশে যাইবার পুর্ব্বেকার
ঘটনাগুলি তার একে একে মনে পড়িতে লাগিল। যাহা অভি
সামাভ বলিয়া তখন নকরে শড়ে নাই আক সেই সব অভি
তুচ্ছ ঘটনা শুতন রূপ বরিয়া য়্বরের মনে এক কুট চক্রাণ্ডের
আভাগ দিয়া গেল। প্রনির্দ্ধানের চরিত্রের যে দিক্টা
আক আত্মপ্রকাশ করিয়াতে, তাহাতে একখা ভাবিলেও বোধ
হয় অভায় হইবে না যে, য়ৢয়য়কে শেষ পর্যান্ত আলে ক্যাইবার
ক্রেই হরতো সে চতুর্দিক দিয়া আয়োকন করিয়া রাখিতেছিল।
কিন্তু সে চেঙা তার বার্থ হইয়াতে বলিয়াই আক তার পলাইয়া
যাইবার প্রযোক্তন হইয়াতে।

ক্ষবি কহিল, কত বড় অভায় বলুন দেবি। নিতাভ নেয়ে-হেলে বলেই কি এ অভায় লিলিদিকে মুখ বুক্তে সইতে হবে ?

যুগায় মনে মনে বাছাই ভাবুক না কেন প্রকাঞ্চে ভাছার আভাসমাত্রও দিল না। বরং একই প্রশ্নের পুনরাবৃত্তি করিরা চলিল, আপনি কি আপনার দাধার সঘতে নিঃসন্দেহে এ অস্থােগ দিছেন ? লিলির সন্দে ইভিষ্যে আপনার দেবা হয়েছে কি ?

রুবি উত্তেখিত হইরা উঠিল। তীত্র কঠে কৃছিল, এর পরেও তাকে কথনও মুধ দেখানো বার মুমরবারু। ক্ষণকাল ধামিরা তেমনি উত্তেজিত কঠে রুবি বলিরা চলিল, আমি লিলিদিকে বাঁচাতে চেটা করব। তার সম্ভ্রমকে কিছুতেই ধুলোর সূচাতে দেব না, দাধার নামে আমি কেস করাব। ধোক সে আমার ভাই। তাকে আমি বাধ্য করাব লিলিদিকে প্রহণ করতে। এ হেলেবেলা মর।

মুখর বৃহ হাসিরা কহিল, আপনার মন অভ্যন্ত উত্তেজিত হরেতে বলেই একখা বলতে পারতেন। আমার বিশ্বাস লিলি আপনার কথার রাজী হবেন না। তিনি বলি বুছিরতী হন, সন্মত হতেও পারেন না। কারণ বে ঘটনাটা চেটা করলে একটা সুনির্বিষ্ট গভীর নধ্যে সীনাবদ রাধা বেতে পারে তা ছড়িরে পড়বে সর্বান্ধ, আলোচিত হবে চারের ফোড়ানে, ফামা-অফানা লোকের মুধে মুধে •••

क्रिव करिन, जाशनि वनए हान कि १

ষ্বৰ কহিল, বলতে আমি কিছুই চাই না । তবে আমার বিশাস লিলি তাঁর নিজের বাবহা নিজেই করবেন। অভতঃ আমাদের চেরে তিনি তাঁর ব্যক্তিগত ব্যাপার চের বেশী বোবেন। আমি বলি আপনি একবার লিলির সদেই বরং দেখা করন। খাবোকা হৈ-চৈ করবেন না। তাতে লিলির ভাল করতে গিরে হয়তে। মুক্ত করে বসবেন।

ক্ষবি পুনরার ক্ষবিরা উঠিল। কৃষ্ণি, আপনি কি বলতে চাম বে, এক জনের খামধেরালকে প্রশ্রর দিতে সিরে আর একক্ষম আভার এবং অসম্মানের বোকা নিক্ষের মাধার ভূলে নেবে!

মুদ্ধর শাস্ত কঠে ক্ৰিল, ভাই যদি হর ভা হলেই বা করবার আহে কি । সামাজিক জীব যধন আমরা।

কবি কহিল, যে সমাৰ মাহ্যকে মাহ্যকে মত বেঁচে পাকতে সহায়তা করে না তারট দোরগোড়ার মাট আঁকড়ে পড়ে পাকবার কিসের প্রয়োধন !

মুখ্য কহিল, দেবুন এসৰ তৰ্কবিতৰ্ক এবন না তোলাই ভালো। বৰ্ত্তমানে আমাদের প্রশ্ন সমাক নিয়ে নয়, তার চেয়ে দেবুন স্তিয় স্তাই আপনি কিছু করতে পারেন কিনা।

ক্ষবি কহিল, তর্ক করবার প্রবৃত্তি আমারও নেই। কথাটা আপনি তুলেহেন বলেই বললাম। একটু বামিয়া পুনক্ষ কহিল, সমাকের কথা হেন্ডে দিরে ভার অভারের কথাটাই বহি বরা যার তা হলেও কি এর প্রতিকার করাটা আপনি অভার মনে করেন?

বৃদ্ধ কহিল, আমার মতামত এবানে অপ্রাস্থিক। ভার অভার, তালমক নিরেও আমি কিছু বলতে চাই না। মোটের উপর আপনার বক্তব্য এবং কর্তব্য কি সেই কর্মাই বলুন।

ক্ষবি ক্ছিল, সেই ক্থাই আমি বলতে চাইছিলাম ক্ছি আপনিই সব পোলমাল করে দিছেন। অবস্ত এই বিষয় নিয়ে আলোচনা করতে আমার লক্ষা থাকলেও কৃষ্টিত হওর। বা বিধা করা উচিত নর, নইলে আৰু দাদার অভার আচরণে আমার মাটর তলার মুখ লুকোতে হ'ত। দাদার চিটিখানা আৰু সপ্তাহের উপর হ'ল পেরেছি। মাকে আমাই নি—আমারও না। অথচ একেবারে চুপ করে থাকাও চলে না। বিধিও আমি আনি বত বড় কৃতিই দাদা লিলিদির ক্রক্ নাক্ষে, সে ক্থবও বুধ বুলবে না।—ক্রবি থামিল। মুল্ল ক্থা কৃষ্টিল না। নীরবে নতরুবে বলিয়া বহিল।

क्षरि भूगवात रनिएक नाशिन, किन्द्र तम अधियोग क्षत्रत

ৰা বলেই কি সৰাই চুপ কৰে পাকৰে। বিধ্যাটাকেই সকলে কাৰবে—সভা চিত্ৰদিনই গোপন থেকে বাবে।

ব্যর একটু হাসিল, কহিল, আমি ত এই কথাটাই এতকণ বরে বলছি, কিছু আপমি বে কিছুতেই বুৰতে চাইছেন মা। মিথাটোকে মিরে এত হৈ-চৈ করে শেবে সত্যকেই বে আর বুঁকে পাবেম মা।

ফুৰি কহিল, আমার প্রগল্ভতা আপনি মাপ করবেন।
ক্রমাগত একই কথা ভেবে ভেবে ট্রিক বুবে উঠতে পারছি মা
কোন্ পথে আমার চলতে হবে।

র্বয় শাভ কঁঠে কহিল, আমি কিছ আবার বলছি আপনাকে নিলির সভে পরামর্শ করতে। ব্যাপারটাকে বভ শুরুতর আপনি মনে করছেন আসলে হয়তো ততটা নর। আর বদি আপনি নিশ্চিত আনেন বে, অভারটা আপনার বাদার, তা হলে তাঁকেও কথাটা লোবের সকে আনিমে দিন।

প্ৰবিক্ষিল, তাতে সভিয়কার কোন কাৰ হবে না স্বন্ধন বাব্। এন্টুকু মন্থাৰ যদি তার থাকন্ত তবে দিলিদিকে টেনে এনে কনভার হাটে কাঁড় করাত না। আৰু আমার গভীর কজা যে প্রনির্থাল আমার বড় ভাই। কিন্তু যাক এসব কথা। আমি আপনার কথানতই কাল করব। নিনিধির কাছে কালই যাব। কিন্তু আমার সঙ্গে থেতে আপনার আপন্ধি আছে কি ?

মুদ্ধ কহিল, আছে বৈকি। কারণ এর মধ্যে মাধা গলানো আমার পক্ষে যেমন অশোভন তেমনি কচি-বিক্তর। আপনি এত বোবেন আর এই সোজা কথাটা বুবলেন না। আপনাদের কর্ত্তব্য আপনারাই ঠিক করবেন। আমার সাহাব্যের যদি প্রয়োজন হয় তো দুরের ধেকেই ভা করব।

রুবি কহিল, কিছ ভূলে যাবেন না যে, আপনার উপর একট মেরের ভবিয়ং জীবন, ভার মান-সন্তম সব কিছু নির্ভয় করছে।

মুদ্দর কহিল, আগনি সহক কথাকে কটল করে ছুলছেন কিন্ত। আমার উপর কারুর তবিত্তং অথবা সন্ত্রন নির্ভর করে না। ঘটনাচক্তে আপনাদের মধ্যে এসে পঞ্চেছি বলেই আমার কোন দারিছ থাক্তে হবে এ একটা কথাই নয়।

বৃদ্ধ একটু থামিরা কৃতকটা নির্নিপ্ত কঠে কৃহিল, এ আপনাদের রাভারাতি অভি আবৃনিক হরে উঠবার কুফল, তাই ক্লভোগেরও প্ররোজন আছে। নইলে এ বরণের ব্যাপার অভাবিতও মর, আক্রিক্ও নর। কিছু আরু বা, আবরা অনেক সুরে এগিরে গেছি।

ব্যর একটু লব্দিত হইরাহে এবং এই লক্ষার হাত হইতে নিছতি পাইবার জ্ঞাই অক্ষাং চলিয়া বেল। ফুরি একটা ফ্রণা পর্যান্ত কহিবার অবকাশ পাইল না।

ক্ৰবিদেৱ ওবাৰ হইছে বাহির হইছা আসিয়া বুৰত্ব স্বাস্ত্ৰি

হোষ্টেলে গেল না। এত দিনের প্রায়-ক্লান্ত মনটা কোণার
আৰু লবু আমন্দে তাসিরা বেডাইবে, না কোণা হইতে এক
অনাবক্তক চিন্তা আসিরা তাহার মাণার চুকিরাহে। ইচ্ছা
করিলেও এ দার লে এডাইতে পারে না। যত হুর্জনতা তার
এইবানে। অবচ এমনি মন্ধা যে নিকের এই হুর্জনতার ক্বা
তার অঞ্চাত নয়। কিন্তু গায়ে পড়িয়া দায় বাড়ে লওয়ার এক
প্রকার আনন্দ আহে—নেশার আক্রবির মত। বুল্লেরও
ক্তক্তী তাই।

78

মুখর ট্রামে চলিরাছে। কথার কথার রুবিদের ওখানেই ভার অভ্যন্ত দেরি হটরা গিরাছে। হোষ্টেলের একটা নিরম-কান্তুন আছে, যানিয়া চলিতে হয়।

হোষ্টেলে ফিরিরা মুখর মাত্র একথানা চিট্ট পাইল।
স্বেদিকে মন দিবার মত অবহা তথন তার নয়। ওদিকে থাবার
বঠা দিয়াছে। মুখর করেক মুহুর্ভেই প্রস্তুত হইরা নীচে
নামিরা আসিল। কিছ থাইতে বসিরাও সে অভ্যনত তাবে
স্থানির্দ্রের কথা ভাবিভেছিল, তর্কের থাতিরে যাহাই সে
ক্রবিকে বলুক মা কেন। ক্রবির অভ্যানই তারও সত্য বলিয়া
মনে হইয়াছে। ক্রবি স্থানির্দের বোন। ভাবিভেও ক্রেমন
লাগে।

দেবল মুখারের এই অভমনক্ষতা লক্ষ্য করিয়া একটু ছুরাইয়া প্রশ্ন করিল, আজকের পরীকা কেমন হ'ল মুখায়বাবু ?

মুখ্য এই আকৃত্রিক প্রত্রে চমকিত হইল, বৃহুর্তে আছছ হইয়া কহিল, কেন তালই ? পরে ঈষং হাসিয়া কহিল, আনম্মা ছিলান, তাই হঠাং চমকে উঠলাম।

দেবলও হাসিরা কহিল, বাজীর কথা ভাবছিলেন বৃধি ? এতদিন ত আপনার ভাববার অবকাশও হিল না। আকর্ষ্য একাঞ্ডা আপনার।

যুবর কোন অবাব দিল না। নিঃল'লে বাওরা শেষ করিরা উঠিরা পভিল। নাতুর চিট্টবানা ঘরে টেবিলের উপর পভিরা আছে। আল সকালবেলা মন্ত্রও একবানা চিট্ট সে পাইরাছে। কল্পবানার হইতে লিবিয়াছে। আগা-গোড়াই মার্লি কবার পূর্ব। ববাঃ—নারের বাছার কোন উন্নতি হর নাই। তাহারা হয়তো আর বেশী দিন ওবানে বাজিবে না। ইতিমবো তার পরীকা শেষ হইরা বাকিলে একবার কল্পবানার আসিলে মা বছ বুলী হইবেন। সে নিজে একটুও না—এমনি আয়ও কত কবা। মন্তু বড় সহক। ওকে বুবিতে বিক্ষাত্র কট হর না। কিন্তু মানু তো চিটি লেবে মা—বেন গল্প কালিরা বসে।

মুদ্দর চিঠিখানা খুলিয়া পড়িতে লাগিল :---

"বছৰিৰ পরে জাবার তোকে চিঠি লিখতে বদেছি। জাবার বেহনা এবং জানত্ব এ ছবের কোন কিছু বেকেই তোকে বঞ্চিত করতে চাই না। আৰু ঘণাৰ্থই আনার বছ আনতার দিন। আনার ইডভডঃ বিদিপ্ত হনটা হঠাং বাতাবিক হরে উঠবার প্রবাগ পেরেছে। তোকে এর আগের চিঠিতেই জানিরেছি বে, এগানে আমি একট তাই এবং একট বোল পেরেছি। বোনটর সকল দারিছ আক আনার উপর। দাদা গেছেন আবেরিকার। আনরা এসেছি ওয়ালটেরারে। আর শ্রীমতী দীদা রাও হরেছেন মিসেস্ চক্রবর্তী। তুই হাসিস নে, এ ছাদা আমাদের আর অভ কোন উপার ছিল না। বাত্তবিক্ট না। আনাদের প্রকৃত সম্বছ নিয়ে লোকে অলোভন আলোচনা করবে এ আমরা চাই না। অবচ এই মিগার আশ্রম মিয়ে আমরা ত্র্যু বেছই করি নি, তাদের কাছ থেকে রীতিমত সন্থান আদার করে নিছি। কিন্তু মনে আমাদের কোন গলা বেই। একবা প্রের চেয়ে জোর গলার আমি বলতে পারছি।

ক্ষিরোক ম্যানসনে বাস। বেঁথেছি। সমুক্তের ঠিক পাশেই। দিবারাত্র সমুদ্ধ-বারির উত্তর গর্জন শুনে শুনে কেমন বেন বিরক্তি বরে গেছে। সমুক্তের অবস্থা এবন বড় অশাস্ত্র।

আমর। একই খবে আলাদ। রাত কাটাই। লীলার নির্ভরতার কাঁকি নেই। গভীর রাত্রে খুম ভেঙে গেলে ওর সুপ্ত মুখের পানে চেয়ে চেয়ে ভাবি পরিপূর্ব বিশ্বাসের মর্যাদা দিয়ে লীলা কেমন করে আমার মত একটা উচ্ছুখল মাহুধকে আগাগোড়া বদলে দিয়েছে। নিজের উপর আমার বিশ্বাস এসে গেছে।

লীলা বড় চঞ্চল । হরিণীর মত চঞ্চল, অবচ তেজবিদী।
ওকে নিষে মাবে মাবে আমার বড় বিরত হয়ে পড়তে হয়।
পাশের ক্লাটের মি: আয়েলার প্রায়ই আমাদের চারের টেবিলে
নিমন্ত্রিত হন। লীলা ইচ্ছা করেই ডেকে পাঠার। আরেলার
এগে হাজির হন। যিসেস চক্রবর্তীকে নিরে কভ রহজের
স্কট্ট করেন। লীলা হেসে গড়িয়ে পড়ে। আরেলার অপ্রভঙ্গ হরে চলে যান কিছু আবার আসেন।

আমি বলি, এ সব কেন দীলা।

নীলা বলে, লোকটা বড় ছাংলা, ভূমি কিছু জান না নাছু ! আমি বলি, জেনে আমার সরকারও নেই। কিছু মিধ্যা ও লোকটাকে জেলিয়ে লাভ কি!

লীলা বলে, এ এক বরণের আদন্দ বাছু। ভূষি এসব বুৰবে মা।

খানি না কেন দীলা আরেদারকে নিরে এনন করে
নাচাছে। দীলাকে বলি, এলো এবান বেকে কোবাও চলে
যাই। দীলার ভাতেও কোন আগতি নেই। বলে, ভূবি
ববন সলে আহ যেবানে বুলী চল। পাগল আর কাকে বলে।
কিন্তু বুক আনার ভরে ওঠে। বিদেশে আনীরবন্ধবিহীন
অবহার দীলা আনার চারদিক বেকে প্রমানীরার মন্ত বিরে

রেবেছে। আমার জীবনের মরা গালে আবার জোরার এসেছে। কিছ তাতে বোলা জলের আবর্ত নেই—বছ, তুনির্ম্মন।

আৰু আমার কি মনে হর জানিস্। তোরের মত শাখশিষ্ট তাল ছেলে না হরে জীবনে আমি ঠকি নি। বিচিত্র
অভিত্যতা অর্জনের সুবোগ পেরেছি। কোথাও টকে বেতে
পারি নি বটে, কিন্ত অনির্ভিত্তর মধ্যে নিজের জীবন সহতে
বে উপলব্ধি আমার হরেছে তার বৃল্য চলার পথে বড় ক্য
নর। সে যাই হোক—এসব কথা আৰু থাক। এর পরে
ছ্-চারটে মার্লি ব্বরাধ্বরের পর আছকের মত বিদার নেব।

ভোর চিট্ট আমি বধাসমরে পেরেছি। উত্তর দিতেঁইছে করেই দেরি করেছি। লিখবার মত কিছু সংগ্রহ করা চাই তো !

লিখেছিল, মঞ্ আমার চিঠিটা হত্তম করেছে। করলেই বা ক্তি কি । ওরা কর্ত্তবাতার থেকে কিরে এসেছে কি ? আশা করি, মঞ্র মারের শরীর এখন ভালই আছে। চিঠির করাব দিস্। ইতিমধ্যে অন্ত কোথাও গেলে ভোকে কানিরে বাব।
——বাহু"

ষ্ণর চিটিখানা হাতে করিরাই বসিরা বসিরা ভাবিতেছিল। বে বিশ্বাস নাছুকে মাহুব হইরা উঠিতে সহারতা করিরাছে সেই বিশ্বাসই আর একজনকে শুবুমার ধেরালের খোরাকই বোগাইরাছে। বুকে জাগাইরা ভূলিরাছে লোলুপতা, পাশবিক আদিম ক্ষা। খাসা নাম—স্থনির্শ্বল। নাম ভার সার্বক হইরাছে।

চাইমপিসচা টক টক করিরা অবিরাম বাজিরা চলিরাছে।
চতুর্দিকে গভীর ভরতা। পাশের বিহানার রুমমেট অকাতরে
ঘুমাইতেছে। সমুবে ধানা-প্রাদণের দেবদার গাছে বাহুছের
বাক। তাদের পাধার শব্দ, এবং নাবে নাবে ক্রতগামী
মোটবের আওরাক ভব প্রকৃতির বুকে যেন জীবনের শাকন
ভাগাইরা তোলে। মুলরের কোন দিকে হঁস নাই। তার
মাধার মধ্যে তথন অক্স প্রস্লের নীরব আনাগোনা চলিরাছে।

ঠিক কথা—সহক এবং অতি সাধারণ কথা। ঘটনা এক হইলেও ৰাছ্যের মনের উপর তাহা নানা ভাবে প্রভাব বিভার করে। বহিলে নাছুর জীবনের বারা আক ভিরুষ্ট হইত। কিন্ত লিলি বেরেটই বা কেমন? ভাহাকে পেবিলে ত সাধারণ মেরে বলিরা মনে হর না, বরং প্রভারই উল্লেক হর। সে কেন এবন এক কটল পরিছিতির মধ্যে নিজেকে চানিরা আনিল। ভার শিক্ষা, ভার সংক্ষার শেব পর্যান্ত একটা ধেরালের পারে বাধা বুঁড়িরা আত্মহত্যা করিল। এই নিরভিনান বেরেট সহত্তে কি উপার বনো-ভাবই না ভার ছিল। ৰুমৰ ভাবিতেহিল, মাজুবের মনের আদিন প্রবৃত্তিটাই কি এত বড় হইরা উঠিল বার কাবে শিক্ষা, সংকার, স্থীলতা সব কিছু সাম হইরা গেল। সংব্য শুবুই কি একটা ক্বার ক্বা।

রাত অনেক হইরাছে। যুগর সহসা আছছ হইল।
আকারণে সে এসব কি ভাবিতেছে। কালই সে টাকট
কাটিবে। কবি অসম্ভই হইবে? ভাহাতে যুগরের কিছুই
আসিরা যাইবে না। উহাদের ভালন্দর বোঝা সে কেম
বহন করিতে যাইবে।

মুদ্মর শুইরা পঞ্জিলা চোধ বুবিল এবং এক সময় সুমাইর। পভিল।

কিছ পরনিদ বাভবিক্ট সে টিকিট কাটিতে পারিল না।
বরং বিকাল হুইতেই কবির নিকট আসিরা উপস্থিত হুইল।
বাহিরের বরেই তার সাক্ষাং মিলিল, সে কিছ একলা নর,
লিলিও সেবানে ছিল। যদিও সে লিলির উপস্থিতি আশা
করে নাই তবাপি বিশ্বিত হুইল না। মুন্ম মুবে কিছু না
বলিরা একবানি চেরার টানিরা লইয়া উপবেশন করিল।
নিলির পূর্বের চেহারা আর নাই। অভ্যন্ত ও ক্লিট্ট
তার মুবতাব। কিছু লক্ষার এতটুকু আভাগ ভার কোবাও
বুলিয়া পাওয়া গেল না।

মুদ্দর রীভিমত বিশ্বিত হইল।

ক্ৰবিই প্ৰথমে কৰা কৰিল, আপনি আমাদের সাহায্য করবেন শুনে লিলিদি অভ্যন্ত খুশী হয়েছেন মুন্মবাবু। ভার পর সহসা উঠিবা দাভাইবা কহিল, আপনারা বন্ধন, আমি ছু' মিনিটেই আসহি। কবি চলিবা বেল।

মুখর কেমন অবস্থি বোৰ করিতেছিল। কিছ লিলির কোন তাবপরিবর্তন দেখা গেল না। বরং দে-ই প্রথমে কথা কহিল, রুবির কাছে হরতো আপনি অনেক কিছু ডনেহেন। কিছু তা নিরে আমার বলবার কিছু নেই। লোকে যত নিকেই করক, আমি আনি আলার আমি কিছুই করিনি। অবস্থ আমার এ কৈনিরং আমারকা। তবে এটুকু আমি বুবেছি বে, আমার নিজের তার আমাকেই বইতে হবে, গেবানে আর কারুর সাহায্য চাইতে আমি পারব না। কিছু আপনি অনাত্মীর হয়েও আমার ছর্ভিনে সহারতা করতে এগিরে এসেছেন এ আমার পরব সৌতাগ্য। অবচ করতে এগিরে এসেছেন এ আমার পরব সোলাহের উপছিত হবল। বুছু কঠে সে কহিল, আমার নিজের পথ আমি টিক করে নিরেছি। আপনি বোটার্ট কিছু সাহায্য করলেই ববেট হবে। আমি বিজেশে চাকরি নিরেছি। আপনি শুরু আমার গোঁছে ছবে আমার বিজেশে চাকরি নিরেছি। আপনি শুরু আমার গোঁছে ছবে আমার বিজেশে চাকরি নিরেছি।

লিলি পুনরার থামিল, একটু চিছা করিয়া কবিল, আপনার উপর হয়তো জোর করে অভ্যাচার করা হচ্ছে, কিছ বিখাস করণ এর চেরে শ্রেষ্ঠ কোন উপার আমি খুঁলে পাই নি।

মুখৰ থীবে থীবে মুখ তুলিল, মুদ্দ লঠে কহিল, আমি এখনও ঠিক বুকে উঠতে পাছছি না—সভিচ্নাৱের ঘটনাট। কি? বুকে আমার দরকারও নেই, কিছ তবুও আমার মন বলে, কোখার যেন একটা প্রকাণ কাঁকি রবে গেছে, ইছে কয়লেই যার প্রতিবিধান হতে পারে।

লিলির মুখে ইবং দ্লাম হাসি দেখা দিল। সে শান্ত সংযত কঠে কহিল, তা হয়তো পারে। কিন্ত যেখানে মনের কাঁক বুলল না সেখানে কাঁকি ধরে লাভ কি মুখয়বাবু।

ক্লবি কিরিয়া আদিখাছে। লিলি উঠিল, কহিল, আৰু আমি যাই মুন্নবাবু। পরও আমি রওনা হব ঠিক করেছি। নিরোগপত্রও ইতিমধ্যে পেরেছি। দার্কিলিং মেল বরতে হবে। ক্লবির প্রতি দৃষ্টি ক্লিরাইখা তেমনি শাভ কঠে সে কহিল, ভোমাকে বরুবাদটা আর দিলাম না। তবে ভোমার কবা আমার চিরকাল মনে বাকবে। ভোমার ভোড়া সভাই থেলে না।

ক্রবির মনোভাব মুহুর্তের অভ বদলাইরা গেল। কিছ চোবের পলকে আগ্নসংবরণ করিয়া মুহু কঠে কহিল, এবুনি বাবে লিলিদি। আমি যে ভোষার চা দিতে বলে এলাম।

লিলির চোবে মুবে এক বিচিত্র ভাবের অভিবাজি দেখা বিল। সে একটু হাসিবার চেটা করিয়া কহিল, ভোমরা অনুরোধ করেছ বলেই ভ আমি তা গ্রহণ করতে পারি মা ক্রবি। অধিকার বলেও একটা কথা আছে, মন বলেও একটা পথার্ব আছে, যাকে কোম অবস্থায় অধীকার করা চলে মা।

लिनि चार गिष्ठाहेन ना।

म्थम अक्षे कर्श करिन, अंड्रुट स्थरम--

ক্ষবি কৰিল, ভার চেরেও বিশ্বরকর লিলিদির মনের জোর। এভ বড় যে একটা ঘটনা ঘটন অবচ ভা যেন ওকে কিছুমান্ত শোরাভে পারে নি।

মুদার একটু অভ্যনস্কভাবে কহিল, হরতো তার মত হ্বার মত কোন কারণও নেই।

ক্ষবি চমকিত হইল, কিন্তু প্রকণেই বীর কঠে কহিল, আমি ত আপনাকে বরাবরট বলে আসহি যে লিলিফি অভল সমূল, ওকে বুকতে যাওৱা বিভয়না মাত্র।

যুগর একটু হাসিরা কহিল, এ ব্যাপারে কেউই আপনার।
"ক্ষম বান না। অবক্ত আপনাদের কাউকে বুঁইরে বুখবার
প্ররোধনও আমার নেই। বইনাচকে আপনাদের মধ্যে এসে
পড়েছি। বাবা হরে বানিক সাহাব্য করবার প্রতিশ্রুতিও
থিরেছি, কিছ প্রযোকনের অভিনিক্ত একট দিনের ক্ষতও
আপনাদের মধ্যে আমার পাবেন না। সে বাই হোক আক্ষ
আধি বাই।

রূবি খিতহাতে কহিল, এসেই আপনি উঠি উঠি করেন কেন বলুন ত। আমাদের বৃধি সম্ব করতে পারেন না।

মুখর কৃষিল, ক্থাটা একেবারে মিথ্যে বলেন নি আপনি।
পালাগারের লোক কিনা—হঠাৎ আপনাদের মধ্যে একে
দিলেহারা হয়ে পড়েছি। আপনাদের সমন্তরের হলে হয়তো
উঠতেই চাইভাম না। জোর করে ভালাতে হ'ত।

ক্ষবি হাসিয়া কেলিল, আপনি আমাদের কি মনে করেন বলুন ভ ়

মুৰে কৰি যাহাই বসুক না কেন, অহুৱে অহুৱে সে বৃদী
হটৱা উঠিল এই ভাবিৱা যে, ভাদের আলোচনাটা একটা সহজ্ব
পরিহাসের পথে কিরিয়া আসিয়াছে। লিলি সহছে মুন্ম আজ্ব যে ভাবে কথাবার্ডা প্রক্ল করিয়াছে তাহাতে ক্লবি কেমন একটা অর্থতি বোধ করিভেছিল। কি জামি কোন কথার কি কথা আসিয়া পভিবে। লিলির সহিত দেখা হইবার পর হইতেই মুন্ময়ের কথার ভঙ্গী কেমন যেন বাঁকা পথ বরিষা চলিয়াছে।

মুখ্য সহসা ক্ষবিকে প্রশ্ন করিল, আপনাকে যেন একটু চিন্তিত মনে হচ্ছে।

এই আক্ষিক প্রশ্নে কবি চমকাইয়া উঠিল, কিছ পরক্ষেই
সহক কঠে কহিল, আমার চিন্তিত হওয়া কি খুবই অবাতাবিক
মুখ্যবাবু? আৰু ক'মাস বরে ক্রমাগত শুধু তাবহি। তেবে
তেবে কুল পাই নি। অবচ যাকে নিয়ে এত মুর্ভাবমা সে
কত অমারাসেই না একটা মীমাংসার এসে পৌছেছে।
আমরাও যে প্রশোধন হলে কত শঞ্চ হতে পারি তার প্রমাণ
একটু আগেই পেলাম। তাইতো ভাবছিলাম কি ভাগ্যি বে
আপনাকে পেরেছি, নইলে এই নিয়ে আমি হয়তো
ব্যাপারটাকে অট্টলতর করে তুলতাম।

মুখ্য হাসিমুখে কবির মুখের পানে চাহিয়া রহিল। কোন কবাব দিল না।

ক্লবি কহিল, আপনি হাসছেন, কিছ আমি একবিছু মিধ্যে বলি নি।

র্থর তেমনি হাসিম্বেই কহিল, না আপনি ধুব সভ্যবাদী।
ক্রবির ছই চোবে বিশ্বর । মুখর বলিভে চার কি । ভার
এত উভাগ-আবোকন সবই কি এই লোকটি ব্যর্থ করিরা
দিবে । মুখরের আজিকার ইনিভগুলি ক্রেন বেন অর্থপূর্ব।
শেব পর্বান্ত আসিরা কি ভরাভূবি হইবে ?

ভরা কিছ ডুবিল মা। মুম্মর ভার প্রভিঞ্জতি পালম করিবে।

34

বাজার পূর্বে কাজটা যত জটল বলিয়া স্থায়ের মনে ।

হইরাহিল আসলে তাহার কিছুই হইল মা। স্বন্ধ হালা—

লিলি তার ছোট বোম, বিববা। লভ হামী হারাইরাছে।

মিখ্যা---হোক বিখ্যা—এখন কত মিখ্যাই ত সত্য হইরা ক্গতে ইকিয়া আছে। কে ভাষার বোঁক বের।

অধাবভার অঙ্কার তেদ করিরা গাড়ীধানা বক্ষরবেপ মুটরা চলিরাছে। লিলি অভসভ হইরা ভইরা আছে। নিজিত কিংবা আগ্রত তাহা বুকিবার কোন উপার নাই। বুলার একাগ্র চৃষ্টিতে তার মুখের পানে চাহিরা আছে। মারা হর। কত বভ ছল্ডিখা লইরা ঐ মেরেট দিনের পর দিন রাভের পর রাত কাটাইরা দিরাছে। আন যদিই-বা একটা ক্লের অভিমুখে অগ্রসর হইরা চলিরাছে, কিছ কে বলিতে পারে সেধানেও ছিভিলাভ ক'রতে পারিবে কিলা। অমন নির্মাল নির্ম মুধ্বানিতে ছল্ডিখার কালো ছাপ পুপরিক্ট। তথাপি ওর সহত্ব সৌক্ষর্য এবং ছন্ধ গান্ধীর্য এভটুকু ব্যাহত হইরাছে মনে হয় না।

লিলির পরনে একধানি সরুপান্ত ধৃতি। হাতে ছই গাছা করিরা সোনার চূড়ি। এ ছালা আর অন্ত কোন সোলা পথ তাদের চোথে পড়ে নাই। যুখর যুহু আপত্তি ভূলিরাছিল। লিলি বাধা দিয়া বলিয়াছে আমার উপযুক্ত বেশভ্যাই হরেছে যুখরবাবু।

রক্ষা এই যে লিলি অবাধানীর মধ্যে চলিয়াছে। নইলে কোন্ পথে যে বিপদ খনাইরা আসিত ভার সহান পাওয়া কটিন হইত। মুন্দর নিক্ষেও বঢ় কম বিশ্বিত হইল না ভার নিক্ষের এই মানসিক চাঞ্জা। লিলি ভার কে? ভার সহছে এত ছল্ডিডাই বা কেন? মুন্দরের মন বলে, এগুলি মান্থ্যের সহক বৃত্তির স্বাভাবিক প্রকাশ।

যুগর জানালা দিয়া বাহিবে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিল। ট্রেনের
মধ্যে তার দুম হর না। এঞ্জিনের বাঁদী তীর রবে বাজিরা
উঠিল। হরতো কাছাকাছিই কোন ট্রেনন। ট্রেনের গতিও
রাস পাইরাছে, লোকালরের আভাস পাওরা যাইতেছে বেন।
হ'একথানি কুঁডেঘর ও নিট্নিটে আলোর রেখা ক্ষণে ক্ষণে
নক্ষরে পভিতেছে। গাড়ী কিছ দাভাইল না। পুনরার তার
গতি ক্রন্ত হইরা উঠিল। যুগর অভ্যন্ত ভাবে বসিয়া আছে।
ওদিকে লিলি বে বহুক্প হইল উঠিরাছে তাহা সে টের পার
নাই। সহসা সেইদিকে দৃষ্টি পভিতেই বলিয়া উঠিল, আপনি
কতক্ষণ উঠেছেন ?

নিলি কহিল, অনেককণ। খাৱে থাকতে ভাল লাগে না। কিন্তু আপনি বুঝি দেই থেকেই বলে আছেন।

মুলর ক্থিল, ঠেনে আমার মুম হর না। আপনার বানিকটা হয়েছে ত গ

বুন ! লিলি একট্ৰানি হাসিল, বৃহ কঠে কহিল, হয়েছে বৈকি। লিলি বানিল, কিছুক্দ যৌনভাবে কি চিছা করিয়া পুনরার কহিল, আপনাকে আমার গোটাকরেক কবা বলবার ছিল। আর হয়তো পুযোর পাব না। আপনার এবন সময় হবে কি ?

হ্বর ক্বিল, বিলক্ষণ। সময় কাটাবার ভাবনার হাত থেকে ভা হলে বেঁচে বাই যে।

লিলি কহিল, আমি ফ্রবির কথা আপনাকে বলতে চাই।
আমি আমি আমার সহতে লে সভিামিথো আনেক কিছু
আপনাকে বলেতে। আনেক তেবেই আমি প্রতিবাদ করি
নি। নিজের বডটা কভি হবার তা তো হরেতেই তার উপর
আর শুভন করে কথা কাটাকাট করবার ইচ্ছে আমার
মোটেই হিল না। তা ছাড়া একজন পুরুষমাস্থের সাহায্যের
প্রয়েজন আমার ছিল। বছ খবরের মধ্যে স্নির্গালের সকে
আমার বিয়ের খবঁরটা কবি নিক্রয় আপনাকে দেয় নি।

যুবর প্রার লাকাইরা উঠিল। কহিল, আপনি কি বলছেন।

লিলি কহিল, সভিচ কথাই বলেছি। আপনি চমকে উঠছেন কেন। আইন আমার কথার সাক্ষা দেবে।

মুখ্যরে বিশ্বর উভবোদ্ধর বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। লে কিছুক্দ বিহলে দৃষ্টিতে লিলির মুপ্রের পানে চাহিয়া থাকিয়া কৃষিল, অপচ আপনি বিনা প্রতিবাদে এত বড় একটা মিণ্যা কুলায় মাণায় ভূলে নিলেন।

লিলি শাভ অবচ বৃচ কঠে কহিল, মাবা পেতে না নিরে আর কি করতে পারি আপনিই বন্ন । মানলা-মোকমনা করব ? কিছ তাতে লাভ হবে কি । বামোকা মিবোটাকেই আরও কীইরে রাবা হবে । তা হাড়া যে লোক এত বড় প্রতারণা করতে পারে সে বে এত সহকে আমাকে মুক্তি দিরেছে এর অভ আমি তার কাছে কুড্জা। আজীবন আমাকে এক মিব্যাচারী প্রবশ্বককে নিরে দিন কাটাতে হবে না। সহক তাবে অভতঃ নিঃবাস কেলতে পারব।

লিলি কণকাল বামিষা পুনৱার কৰিল, আপনাকে মিব্যে বলব না মুদ্রর বাবু। গোপনতার দিন আনার চলে গেছে। আপনি কি মনে করেন স্থনির্দাকে বাঁটাতে গেলে সে করচাক পিটরে আমার স্থাম প্রচার করবে। সে বরং আরও নানা হীন বভ্যন্ত আনার বিরুদ্ধে চালাবে। এক দিনের মাত্র করেক মৃত্তর্ভের চিভার আনি আক একবা বলছি না। দিনের পর দিন ক্রমাগত তেবে তেবেই আনি এই সিভাতে পৌছেছি। স্থনির্দ্ধি আমান্ত্র্য বলেই সব নিব্যার বোকা আমার মাবার ভ্লে নিতে হরেছে। আনি কি কিছুই বুরি না মুদ্রবারু।

ৰুমৰ ৰূপ ভূলিয়া চাহিল। শীণ প্ৰতিবাদের কঠে কহিল, কিছ···

লিলি বাবা বিরা কবিল, বিধ্যা বৃক্তি বেবাবেন না বৃদ্ধ বাবু। বে বিধান একবার হারিবে কেলেছি তা ভো আর কিরে পাব না। তা বলে আপনি বনে করবেন না বেন আপনাকেও আবি তুল বুরেছি, বরং আকু আবার মন্ত বৃদ্ধ ভৱসা এই বে, আপনাকে আৰি বন্ধুর ৰত, ভাইবের ৰত, আমার চরম সহচেঁর দিনে কাছে পেরেছি।

হ্বর নীরবে কিছুক্লণ কি চিছা করিয়া হছ কঠে কহিল, আমি আর কিছু ভাবছি না, কিছ রুবি আমার সঙ্গে এ ছলমা করলে কেন। কভটুকু লাভ ভার এতে হয়েছে ? আপনাকে মিশ্যে বলব না লিলি দেবী—ক্ষবির সহজে আমার বুব ভাল বারণাই ছিল। অছতঃ এসব নোংরাহির মধ্যে ভার হাত মেই বলেই বিশাস করেছিলাম।

লিলি কবিল, এর থেকেই ফবিকে অভটা ছোট ভাবছেন কেন? আমারও ভূল হতে পারে ত। তা ছাড়া পারিবারিক খার্থের অভ হয়ত তাকে মিথোর আশ্রয় মিতে হয়েছে। এমনও ত হতে পারে যে, সে তার নিজের ইচ্ছায় চলে মি। কাউকেই আমি আর দোষ দিতে চাই না মুম্মরবার্। অপরাধ বা তা আমারই একলার, মইলে আক আমায় আন্থীয় বন্ধু-বাছর সকলকে ত্যাগ করে এমন করে আন্থাগোপন করতে হবে কেন?

ব্যর অক্সাৎ উত্তেজিত কঠে কহিল, না এ কিছুতেই হতে পারে না। এমনি ক'রে পালিরে গিয়ে সবাইকে ভব্ মিবোটাই জানতে দেবে, আর সভ্যিকারের অপরাবী যার। ভাদের গারে এভটুক আঁচ লাগবে না এ আমি কিছুতেই হ'তে দেব না। ভোমাকে আদালভের সাহায্য নিতে হবে। যা সভ্য ভা আর দশক্ষকে জানতে দিতে হবে।

মুখনকে বাধা দিয়া লিলি কৰিল, আদালতের ভিত্তির কোরে নিকের নির্দোষিতা প্রমাণিত করতে হবে মুখনবার বু লিলি বারক্ষেক থীরে থীরে মাধা নাভিয়া পুনরার বলিতে লাগিল, এ হতেই পারে না। আমি তা পারব মা। আমাকে ক্যা করুম আপনি।

র্থার কবিল, আমার কবামত কাল করলে হরত আরও বহু হুর্ভাগা মেরেকে আপনি ঐ শরতানের হাত থেকে বাঁচাতে পারতেন। আমার কবটা একটু ভাল করে ভেবে দেবে না হয় পরে এর জবাব দেবেন। কিছু আমি ভাবহি একবা আমার কলকাভার জাবালেন না কেন ?

নিনি বৃহকঠে কৰিল, তাতেই বা কি লাভ হ'ত।
কতগুলি বাবে কৰা কাটাকাট ছাড়া কোম উপকারই আমার
হ'ত মা। তা ছাড়া তৰম হয়ত আমার কৰা আপনিও
বিশাস করতেন মা।

বৃহর শাভকঠে কবিল, আমার বিখাস-অবিখাসে আপনার কিছুই এসে বেড না। বিশেষ করে আপনার বিদ্ধের অভ বড় প্রমাণ মধন রয়েছে।

লিলি কহিল, আমি হয়ত অবস্থাটা ঠিক বুবে উঠতে পারি নি, কিছ বেবানে প্রকৃত ভালবাসা নেই দেবানে এ নিব্যের বেসাভি করে কোন, লাভই,হ'ত না। মন বলে বে খুনির্মলের কোন বছাই নেই, এ আনে জানলে এত বছ শোচনীয় ছব্টনা কৰ্মই ঘটত না।

নিলি কণকালের কর চুপ করিরা থাকিরা প্রবার বলিতে লাগিল, হরত আপনার কথাই ঠিক। কিছ অনির্যালের চিঠি-থানা কি আপনি পকেন নি ? বে নিজের একটা থেরাল চরিতার্থ করবার কর এত বড় কলকের বোকা বিনা বিধার আনার কাঁবে চাপিরে দিরেছে লে প্ররোজনমত যে আরও নীচতার আশ্রয় নেবে না এমন তরগা কি আপনি দিতে পারেন ? আপনি কি কানেন অনির্যাল বিলেত যার নি—কাছাকাছি থেকেই অবস্থাটা লক্ষ্য করে চলেছে ?

মুখার একটু চঞ্চল হইরা উঠিলেও নীরব রহিল। ভার চোবের সম্বাধে বেন ছারাচিত্রের অভিনয় চলিরাছে।

লিলি পুনক্ত কৃহিল, আমার মনে হয় আপনি আমার অবস্থাটা এবনও ঠিক বুবতে পারেন নি তাই একথা বলছেন। আমি বিপদকে বরণ করে নিয়েছি—আত্মরকা করবার উদ্দেক্ত। আমি বাঁচতে চাই দ্বারবাবু।

লিলির কঠবর ইবং কানা উঠিল। চোপ ছুইটাও
অঞ্চারে টল টল করিভেছিল। উভরেই নীরব। তথু
চলত টেনের অবিপ্রাম একবেরে শব্দ হাড়া আর কিছুই
ক্রুভিগোচর হর না। যুগর প্নরার বাহিরে দৃষ্টি কিরাইল।
নীরক্ষ অঞ্চার। সীমাহীন অভ্কারের মহাসম্জ যেন।
সহসালিলির পানে চাহিরা যুগর কহিল, কিছ ছঃসাহসিকা
আপনি।

লিলি কোন অবাব দিল না। যুত্তরও আর কথা বাড়াইল না। উহাদের লইয়া সে তার অনেক বুল্যবাদ সমরের অপচর করিয়াছে, কিছু আর নয়। তা ছাড়া কথাটা লিলি নিতান্ত মিধ্যা বলে নাই। তাহাকে হরত আরও গভীর বড়বজ্রের জালে কেলিয়া লাহ্নার চূড়ান্ত করিয়া ছাড়িত। হয়ত ইড়ান্টবার মত কোন অবলমন লিলি আর বুঁজিরা পাইত না। এ বরং কতকটা সে ভালই করিয়াছে। কিছু কি অপদার্থ এই স্থনির্থল। বেরেদের জীবন লইয়া এমন ছিলিমিনি ধেলা ধেলিতে তার বিবেকে বিস্থাত্র বাবিল না। নিজের স্টেকে সে বিবাহীন চিন্তে অবীকার করিয়া বিলি। মহুড়োচিত কোন হাভাবিক চেতনা কি তার মধ্যে নাই। ধেরালটাই কি তার জীবনে এত বড় হইল, বার কাছে বিবেক-বুছি পর্যন্ত তলাইয়া গেল।

স্নির্দানের কাছে লিলি সুরাইরা গিরাছে। ভার সম্বদ্ধে বভটুকু ওংপুক্য ভাষা শেব হইবার সলে সঙ্গেই স্থনির্দ্ধিল ভাষাকে বাভিল করিয়াছে। বোদা বেরে নিজেকে এভ বেশী সভা করিতে গিরেছিলে কেন ?

शाफी कि अकडी (क्षेत्रस्य चानिया पानिन।

(**주**제막:)

# ভারতের জনসম্পদ

#### क्षेक्खब्रहाँ ए लाल ख्यानी

অনসম্পাদের বিক থেকে বিচার করলে ভারতকে একট দেশ
না বলে মহাদেশ বলাই বোৰ হয় অবিক্তর সক্ষত হবে।
অনসম্পাদের প্রাচুর্ব্য ও বৈচিত্র্যে এদেশ বহু শতান্ধী থেকে
নহাদেশ নামের যোগ্য বলেই বিবেচিত হরে আসহে। ভারভের বিভিন্ন অঞ্চলে আহে বিভিন্ন রঙের বিভিন্ন আফুতির
বিভিন্ন ভাতি ও বর্শ্বের ভাষাভাষী লোক। গুর্বা, পাঠান,
শিখ, রাজপুত থেকে আরম্ভ করে এদেশে আহে আর্থ্য অনার্থ্য,
প্রাবিদ্ধ, মোলল ভাতীর লোক। এদের কারও সদে সাদৃষ্ঠ
আহে প্রাচীন আর্থাদের, কারও সদে নালর, স্থনাত্রা ও
নালাগাড়ারের লোকেদের, কারও বা সেমিটক, মোলল
প্রভৃতি বংশের লোকেদের। দেশী-বিদেশী, নবীন-প্রাচীন
রক্তের সংমিশ্রণে বহু শতান্ধী বরে গড়ে উঠেছে ভারতীর
অনসম্পাদ।

#### ১। রক্তগত বিভিন্নতা

সারা ভারতে যত লোক আছে তাদের আমরা সাধারণতঃ वाहानी, जानामी, विरादी, छेरकनवानी, जाहिया, माद्याबाही, ষারাঠা, মান্তাজী, এই সব নাবেই জানি। কিছু এ ভ রক্তের षिक (थटक विভिश्नण नश्न. **अ ए'ल अक्**रे अर्पराम वह पिन वटत এकरे पूर्वदृः (वत फिल्द वांत्र कदांत कत । फूर्का-रेताने तक बाहरे, दन्हि ७ जाकनामानत निवाद अवास्छ ; अरमव বসবাস উত্তর-পশ্চিম সীমাত্ত প্রদেশে। এরা দৈর্ঘ্যে মারারি আকৃতির চেয়ে কিছু বড়, গৌরবর্ণ, চোধের মণি কালো, মাধায় वैक्षिण हम, बाबा दिन हथ्या, नाजिका छेबछ। श्रश्नांत, রাবপুতানা ও কাশ্বীরের ক্ষ্মী, রাবপুত ও বাঠেদের শ্রীরে चार्व चार्वातकः। कृट्का-हेत्रानिस्तत जल अस्तत भार्यका ৰুবই সুম্পষ্ট। যে সৰ আৰ্ব্য ভারতে বসবাস ছাপন করেন এরা ভাষেত্রই বংশধর। পরবর্ত্তী কালে এদের শরীরে যে **খত** রক্তের সংমিশ্রণ হয় নি তা নয়: তবে মোটাষ্টভাবে আহিচের বৈশিষ্ট্য আৰও এদের মধ্যে বেশ দেখা যায়। এরা দীৰ্বাকৃতি, গৌৱবৰ্ণ; এদের চোৰের মণি কালো, মাধার প্রচুর চুল আছে, নাসিকা উন্নত হলেও বেলুচিছান বা সীয়াত প্রদেশের অধিবাসীদের মাকের মন্ত লক্ষা নর। गरिया-साविष तक भाषता यात्र यातांत्री बाच्चन ७ कुनविनात्वत मर्या अवर कूर्नव चिवनाभीत्मव मर्या । अत्मव मर्या नाहेबीव ७ क्रांविक अहे हुई जरकत निर्मं स्राह्म । क्रांविक त्राकत সংবিধাৰে এবের আকৃতি অপেকাকৃত কুত্র, মাধা লখা এবং শাসিকা তেমন উন্নত নৱ। এবের মধ্যে যারা অভিভাতবংশীর

ভাদের শরীরে ত্রাবিভ রক্ত কম: অভাভদের শরীরে ত্রাবিভ রক্তের আধিক্য। এ হাড়া ভারতে আহে আর্থা-দ্রাবিড় রভের লোক। এরা সাধারণতঃ হিন্দুহানী নামে পরিচিত। এদের বসবাস যুক্তপ্রদেশে, বিহার ও রাজপুতানার কোন কোন चकरम । अरमत मरना रिन्दूशांनी खांचन त्यत्क चांत्रच करत চামার পর্যন্ত সকল শ্রেণীর লোকই আছে। যোলল-ফ্রাবিভ বংশের লোক বাংলা ও উভিয়ার অধিবাসী। ছিটেকোঁটা আৰ্থ্যৱক্ত যে এদের শরীরে নেই তা নয়। এদের মধ্যে ব্ৰাহ্মণ, কায়ন্থ বেকে আৱম্ভ করে পূর্কাবদের মুসলমান পর্যাত্ত नवारे चारह । वर्ष्वत विक रवरक विकिन्न स्टान अरे अर्थापान विष्युम्ममानदाव यद्या वक्तराख्य भावका चूवरे क्या । अ (बदक একথা বেশ বোঝা যায় যে, এই প্রচেশের কিছু হিন্দু অধিবাসী বর্ত্তাভর প্রহণ করেছিল। অভিভাতবংশীরদের মধ্যে সামাল আর্বারক্টের মিশ্রণ হরেছে। বাঁটি যোলন রক্টের লোক পাওৱা যার হিমালয়-প্রান্তে, নেপাল ও আসামে, এবং দার্জিলিং ও দিকিমে। এদের মাধা চওড়া, রং শীভাভ शीत, बदा वंक्कांत, यूव किली, नाक व्यवका। खाविक-वरनीय लाटकटलय वांत्र र'न नकांचीटन, माखाटक, रायखांबाटन ও মধ্যপ্রদেশে, মধ্যভারতের প্রায় সর্ব্বর এবং ছোটমাগ-পুরে। ভারভের ফ্রাবিড-সভ্যভা অতি প্রাচীন। ভার বহু নিদর্শন আত্ত পাওরা যায় : পরবর্তী কালে ডাবিড-রভের সঙ্গে আর্থা, সাইধীর, ও মোলল রক্তের সংমিশ্রণ হয়েছে। अत् वर्ककात, शास्त्रत दर (बात काला, भाषात वैक्रिक्) वैकिका क्लिकारना हुन चारह, बाबा नवा, बाक छउड़ा ও চেপ্টা। এই যে বিভিন্ন ভাভিত্র লোকের কথা বলা হ'ল এরা এমণভাবে আৰু দেশের সর্বাত্ত ছড়িয়ে আছে এবং এছে অপরের সঙ্গে মিশে গেছে যে, এদের বাসস্থান নিরে চুলচেরা বিচার করা কটিন: ভবে ভারতের এক প্রাপ্ত বেকে বছি অপর প্রান্থে যাওয়া যায় তা হলে এদের পার্বকা অনেকবানি স্থাত হয়ে ওঠে এবং আগনা থেকেই অভি সাধারণ মাপ্ৰয়ণ্ড এই পাৰ্থক্য ধরে কেলতে পারে।

#### ২। ভারতের জনসংখ্যা

১৯৪১ সালে ভারতে পুনরার লোকগণনা হর। এই গণনা অহুসারে ভারতের জনসংখ্যা হ'ল ৩৯০০ লক। তবে এই সংখ্যা বে কডখানি নিতুলি সে সহছে সন্দেহের অবকাশ আছে। ১৯৩১ সালে বধন লোকগণনা হর ভবৰ কংশ্রেস ভাতে বোগদান করে বি। কলে কংগ্রেসের

সৰ্বকেরা এই গণনা থেকে বাহ পড়ে বার। এতে প্রতিক্রিরা-শীল ঘলগুলির সুবিধা হ'ল। ১৯৩১ সালের পর থেকে ধেশের রাজনীভি-ক্ষেত্র আবৃদ্ধ পরিবর্ত্তন বেখা বিল। সাপ্তালারিক বাঁটোরারার কলে রাজনীতির ভিতর দিবে আমাদের সমাজ-ब्हार व विव हक्त, ब्हारियांक चोद्रवर्गामस्यव करन छ। সকল অবস্থার সকল ব্যুসের লোকের ভিতর সর্বাত্র ভড়িয়ে প্তল। ভাই ১৯৪১ সালে যে লোকপ্ৰনা হয় ভা প্ৰহস্বে পর্যাবসিত হ'ল। সকল সম্প্রদায়ের লোকই নিজ নিজ সম্প্র-দারের লোকসংখ্যা অধিক করে দেখাবার বন্ধ তংপর হতে উঠল। পাশ্চান্ত্য দেশগুলিতে আদমনুষারির ব্যবস্থা ভাল। বিশ্বার বা খারওশাসনব্লক প্রতিঠানসমূহে শবর্ভার বে ভালিকা থাকে ভা থেকে সহকেই লোকসংখ্যা দ্বির করে কেলা চলে। এদেশেও জন-মৃত্যুর হিসাব রাবা হয় সায়ওশাসনমূলক প্রতিষ্ঠানসমূহে। কিছ ভা সম্বেও এদের সাহায্য না নিয়ে কেন যে আদমশুমারির ভঙ এত অর্থ বার করে এক বিরাট প্রহদনের অবভারণা করা হর তা বোকা কঠিন। সে বাই হোক, অভ কোন সংখ্যা যথন হাতের কাছে নেই তথন জন-जन्मदान विद्यायन-व्याभारत जामादात महकादी मरन्यात छेशहरे মির্ভর করতে হবে। এই হিসাব অনুসারে ব্রিট্টশ ভারতের क्ष्मभरका ए'म २३४৮०৮००० ७ पिनेत त्राकामबुट्द क्षमभरका ১৬১৯০০০০, মোট ৩৮৮৯৯৮০০০। ১৮৯১ সালে থেকে গভ eo বংসরে সেই লোকসংখ্যা বেড়েছে শতকরা ৩১.১। ১৯৩১ সালের পর থেকে ১০ বংসরে বিভিন্ন প্রবেশ ও দেশীর রাজ্যে লোকসংখ্যার শতকরা বৃদ্ধি হয়েছে মোটের উপর ১৫ ভাগেরও বেশী। ১৯৩১ সালে এদেশের জনসংখ্যা ছিল---बिक्रेष-कांबरक १६४१६७०००, (एनेब बांट्का १३८६०००, ষোষ্ঠ ৩৩৮২১৯০০০। লোকসংখ্যা বৃদ্ধির এই অনুপাত बीह्र त्रवाद्या र'न :---

श्राप	শতকরা বৃদ্ধি	দেশীর রাজ্য	শতক্ষা বৃদ্ধি
	(18-604)		(28-664)
ৰাজাব্দ	77.4	বরোদা	20.0
বোষাই	74.>	কাশ্বীর	20.0
বাংলা	Ø'0\$	হায়দ্রাবাদ	20.6
<b>ৰ্ভ</b> প্ৰদেশ	70.4	<b>মহীপুর</b>	<b>77</b> 2
পাঞ্চাব	40'6	কোচীৰ	2F.7
বিহার	75.0	ইন্দোর	>8∙€
<b>य</b> श् <i>व</i> (षण	>1	<b>মণিপুর</b>	78.>
আসাম	<b>34.</b> 6	গোৱালিবৰ	20°1
ইভিয়া	<b>৮</b> ७ वर्ग	<del>দ</del> ণাভ্যের রাজ্য	সম্চ্চী ১৩'৩
গীয়ান্ত প্ৰবেশ	<b>२८'२ ए</b> षि	ভার রাজ্যসম	38.4
সিছু	১৬'৭ বাৰ	পুভাৰাৰ বাৰ	সৰ্চ্চ ১৮'১
বেলুচিভান	F.5	•	

#### ৩। জনসংখ্যার চাপ

ক্ষমংখ্যার চাপ বলতে আহরা বুবি প্রতি বর্গমাইলে গভেকত লোক বাস করে বা গড়ে কত লোক তাহার छेशव निर्छत करत । अष्ठै। निर्छत करत व्यत्मक्कि विवरतव উপর বেমন ভৌগোলিক অবহিতি, ভীবন ও বনের निदाशका. भीवनशाबाद मान, चर्दनिक्ति जन्मन, चर्दनिक् বিকাশ প্রভৃতি। দেশ যদি সমুদ্দিশালী হয়, সম্পদের যদি প্ৰাচুৰ্য থাকে, অৰ নৈভিক উন্নয়নের যদি সুযোগ সুবিধা পাকে তা হলে সে দেশে ক্ষসংখ্যার যতই বৃদ্ধি হোক না কেন তাতে ভীবনযাত্রার মানের উপর কোন প্রতিক্রিয়া रहें पार मा। अवके अक्षा मान तांचा करते (य. लाक-সংখ্যার বৃদ্ধি নিষ্ঠি সীথারেখা কোন কালেই ছাভিয়ে যায় না। প্রত্যেকট বিনিষেরই বাছতির মাত্রা আছে: লোক-সংখ্যার বেলারও এর ব্যতিক্রম হর মা। ক্রিছ এই সীমা-द्विचात मह्या वर्षम चार्षिक बिक्टक चार्थित ७८५ क्रम्भरका। বুদ্ধির হার, আমরা ভবনই বলি যে, জনসংখ্যার চাপ বেশী হরেছে। প্রতি বর্গমাইল ক্ষমির উপর নির্ভর করে পাঁচ ক্ৰই থাক, আৱ পাঁচ স' ক্ৰই থাক ভাতে কিছু বাৱ আলে না: আর্থিক সমৃদ্ধিই হ'ল আসল মাপকাঠি। যে দেশ সম্বদ্ধিশালী, যার সম্বতি আছে, তার প্রতি বর্গমাইলে পাঁচ খ' লোকের ভরণপোষণের ব্যবহা হওরাও কিছু ক্টিন নর। আর যে দেশ হয়ে পড়েছে নিঃব, সর্বহারা, ভার পক্ষে नीं क्रम लाटकत कत्रनाश्रास्त वात्रश करीन। हैरलक ७ अरबनटम श्रिक वर्गमाहेटन क्रमभ्योत हान ए'न ৬৮৫: অবচ ভারা বেশ আছে। আর আমাদের দেশেঁ ক্ষমংব্যার চাপ মাত্র ২৪৬ : অবচ এতেই আমরা ম্যালবাসের বিশ্বরী আওভাতে বাকি। পির-বাণিকোর অবস্থা উত্তত হওরার ইংলভে এত বেদী লোকের চাপও কিছুই নর। আমাৰের আৰিক উন্নতি বছাই হয়েছে; তাই সামাত ক্ৰ-সমষ্ট্রকে প্রথে-হাছন্ডে রাধার সামর্থ্যও আমাদের নেই वनानर हान। चार अक्षे मच्छा करवार विवर र'न अरे त. 'निष्कविद्रादवत' जात्र शृविवीत सात जव व्यव्यक्त जनगरनात চাপ ছিল বুবই কম। কিছ শিল্পবিপ্লবের পর খেকে দকল বেশেই ক্ষমংখ্যা ফ্রভগভিতে বেড়ে চলেছে। বিশেষজেরা बलम (व. वछ विम इविहे (कामध विटमंद लाटकंद कीविकांद প্ৰধান অবলয়ন থাকে তত দিন সে বেশে কৃষিত্ৰ চতুত্ৰ উৎকর্বের অবছার প্রতি বর্গমাইলে ২৫০ ছবের বেশী লোকের ৰসতি স্থীচীন নৱ , কাৱণ তাতে জীবনবাঞার নান ও প্রথ-বাছলোর বাজা নেবে বাবার আপড়া ধুব বেশী থাকে। এ र'न छेई उम जरवा। वाखिक शक्त, श्रीवरीय चरमक वालाहे कृषित हत्व छैरकर्व एव वि ; आमारित विश्व क मानाकात चांबरमद चर्चा चांच्छ थांब हरमरह । अ चर्चात २४० कर

লোক যদি প্ৰতি বৰ্গমাইলে থাকে তা হলে এলেশে দানিক্যেয় আধিক্য হবে না ত কি ? বিভিন্ন দেশের জনসংখ্যার চাপের জনবার্লক হিসাব নীচে কেওয়া হ'ল:

দেশ	প্ৰতিবৰ্গ মাইলে	দেশ	প্ৰতি বৰ্গমাইলে
	ক্ষসংখ্যার চাপ		ক্ষসংখ্যার চাপ
ইংলও ও ওরেলগ	Pre (2502)	ভাগাৰ	854 (7906)
<i>ক্ৰা</i> প	५ <b>०</b> ०६) १६८	<b>শিশর</b>	84 (2580)
<b>ৰাৰ্থা</b> মী	(۵۵۵) د د (۵۶۵)	খার্দেকা	हेम ১७ (১৯৪৫)
বেলবিষয	10> (288)	ৱেশিল	<i>75.₽</i> (7 <b>&gt;</b> 80)
ক্ল <b>ি</b> য়া	(404C) 4.02	মুক্তরাই	80. 1 (2580)
চীৰ	<b>१</b> ०२ (१ <b>२</b> ०५)	কানাড	
ভারতবর্ষ	२8৫ (১৯৪১)	<b>শেক্সকো</b>	<b>₹€ (7</b> ≥80)

উপরে করেকট দেশের নাম করা হরেছে। এদের মধ্যে বেওলি শিল্পথনান সেওলির জনসংখ্যা খুব বেশী বটে; কিছ সেই জনসংখ্যাকে জরণপোষণ করাবার সামর্থ্য তাদের আছে। কৃষিপ্রধান দেশগুলির মধ্যে কিছ ভারতবর্ধেই জনসংখ্যার চাপ সব চেরে বেশী। এদেশের জম্পাতে জভাভ কৃষিপ্রধান দেশে জনসংখ্যার চাপ নগণ্য বলা চলে। ভাই সে সকল দেশের কৃষিও উন্নত, জনসাধারণও প্রগতিশীল। এদেশে লোক-সংখ্যার চাপেই কৃষিব্যবদ্ধা ভেডে পড়ছে।

#### ৪। বিভিন্ন প্রা:দশে জনসংখ্যার বৃদ্ধি

এই প্রসঙ্গে আর একটি কথা বলা দরকার। বাংলাদেশে জনসংখ্যার চাপ যত বেলী, সিছু বা রাজপুতানার
সে জহুপাতে জনেক কয়। আবার পূর্ববদের ছুলনার
পশ্চিমবদে জনসংখ্যার চাপ জনেক কয়। এ ক্তেওেও
উপরোক্ত কারণগুলি কাল করছে। ভৌগোলিক, আর্থনৈতিক প্রভৃতি কারণে পূর্ববদের লোকসংখ্যা এত বৃদ্ধি
পেরেছে। পূর্ববদের উর্জরা জনিতে জন্ধ আরাসেই সোনা
কলে। অপর পক্ষে, সিছু, রাজপুতানা প্রভৃতির জন্ধর্বর
জনিতে লোকে নির্ভর করবে কিসের উপর ? তাই
বৃহ্দিন থেকেই এই সব অঞ্চলের লোক জীবিকা উপার্জনের
জন্ত ভারতবর্বের সর্বাত্র ছঙ্গিরে পড়েছে। তবে বিভিন্ন অঞ্চলের

অবলৈতিক অবহা যতই উন্নত হতে বাক্তবে, ক্ষমবর্জনান অনসংব্যাকে তরপপোষণ করাবার নামর্ব্য যতই ভাবের বাক্তবে, ততই এই সব অঞ্চলও অনসংব্যা বৃদ্ধি পাবে। তাই তারতের বে সব অঞ্চল পিছিরে ছিল, যাদের আর্থিক উন্নতি আরপ্ত হরেছে বর্জনান শতাকীর গোড়ার দিকে তাদের অনসংব্যা গত ৫০ বংসর বরে চলেছে বাছতির পবে, আর যে সব প্রদেশের আর্থিক অবহা মোটামুট একই রক্ষম রয়েছে তাদের অনসংব্যা বাড়লেও আহ্পাতিক তাবে বৃদ্ধির পরিমাণ ক্ষম হয়েছে। পৃঠার সর্কনিরে প্রমণ ছিলাব ব্যকে বিষয়ট বেশ বোবা যার।

#### ে। ধর্মামুক্রমিক জনসংখ্যা

অনসংখ্যার বর্ষাক্ত্রমিক হিসাব রাধার বিপদ আছে ববেষ্ট। ১৯৪১ সালের আদমস্মারিতে এর কলে যে তিঞ্চতার স্টি হরেছিল এবং যার কলে আদমস্মারি প্রহুসনে পরিপত হর সে কথা ইতিপ্রেই বলেছি। কারণ এতে সাম্প্রমারিতে শ্বর্মারে উঠল। ১৯৪১ সালের আদমস্মারিতে শ্বর্মারে উঠল। ১৯৪১ সালের আদমস্মারিতে শ্বর্মারে বাদ দিরে লোকস্পনা হর "সম্প্রদার" হিসাবে—হিন্দু, মুসলমান, শিণ, বৌচ, ইটান, উপজাতীর, এইতাবে নর; হিন্দু (তপনীলী ও অভ), মুসলমান, উপজাতীর, শিণ, ইটান সম্প্রদারের লোক এই তাবে। ১৯০১ সালে হিন্দুদের সংখ্যা ছিল শতকরা ৬৮ ২৪, মুসলমানদের ২২ ১৬, বৌহদের ৩ ৬৫, উপজাতীরদের ২ ০১, ইটানদের ১ ৭৯ ও অভাভ ১ ৭৭। ১৯৪১ সালে বিভিন্ন সম্প্রদারের লোকের সংখ্যা ছিল নির্দিধিত প্রকার: (হিসাব— '০০০,০০০)

সম্প্ৰদায়	বিটিশ ভারত	দেশীয় রাজ্য
रिण् ∫ खर्ग	ৰী ৩১'১	٠٠>
े <b>े</b> े च	>60,5	¢¢.5
<b>মুসলমা</b> ন	95:8	>4:0
উপৰাতীয়	74.4	<b>৮•</b> ٩
<b>ৰি</b>	8*3	>.4
बीक्षेप	ত'৫	٦٠٣
TOTO	7.5	7.0

দক্ষিণ ও মধ্যভারত এবং মান্তাক প্রদেশে হিন্দুরা সংখ্যার

वराम .	7447-97	<b>3297-7907</b>	2507-77	7977-67	1347-07	7907-87
বাংলা	+ 9'5	+ 1'>	+ 1.9	+ 3.3	+ 9'0	+ 20.0
বিহার-উভিভা	+ 4.7	+ 7.7	+ 6ጉ	- 7.8	+ 70.2	4 > 2 .0
						{ bb
বোখাই	+ 28.8	-7.F	+ *'0	- 7.F	+ 20.0	+ 26,9
मनावारमम ७ (ना	# <b>†#</b> + <b>₽</b> *•	- <b>+</b> '0	+ 20.5	- 0.0	+ >>.4	+ >'1
<b>ৰাঞ্জ</b>	+ >6,0	+ 9'0	+ 2.0	+ 2.5	+ 70,8	+ > > . •
গীৰাত প্ৰদেশ	+ > >.€	+ >,>	+ 1'6	+ 5.6	+ 1'1	+ 46.5
পঞ্চাৰ	+ 20.2	+ %'>	- 3'r	+ 4'1	+ 28.0	+ 60.6
र्ज्यस्य	+ 6.4	+ >.4	- 2.2	-4.7	+ •'9	+ >0.4

অনেক বেশী—শতকরা প্রার ৮৭ জন। বিহার, উড়িব্যা,
রুক্তরদেশ, রাজপুতানা ও বোষাই প্রবেশে হিলুরা সংবার
অনেক বেশী। সীরাভ প্রবেশ, বেস্চভান ও কালীরে
প্রার সবাই মুসলমান , পাক্ষম পঞ্চাব, পূর্ববদ ও সিলুতে
মুসলমানেরা সংবার বেশী। আসামে মুসলমানদের সংবা
শতকরা প্রার ৩৪ জন, মুক্তপ্রদেশে ১৫ জন। শিবদের প্রার
সবাই থাকে পঞ্চাবে এবং কৈনেরা বাস করে রাজপুতানা,
আলমীর-মারোরাভ ও পার্ববর্তী অঞ্চলমুহে। উপলাতীর
লোকেদের মব্যে অনেকেই থাকে বিহার, উছিমাা, মব্যপ্রদেশ
ও আসামে এবং কিছু কিছু বাংলা, মান্রাক, রাজপুতানা ও
মব্যভারতে। প্রীয়ানদের মব্যে অর্থক্রের বেশী লোকই
থাকে দক্ষিণ ভারত ও হারদ্রাবাদ রাজ্যে। অবশিষ্ট প্রীয়ানেরা
ছড়িরে আছে সারা ভারতে। পাশী এবং ইছদীরা প্রধানতঃ
বোষাই প্রদেশের অবিবাসী।

#### ৬। বাড়তি ও ক্ষয়ের পথে বিভিন্ন সম্প্রদায়

ৰৰ্ম্ম বা সম্প্ৰদায়ের দিক থেকে জনসংখ্যার কথা বলভে গিছে আরও ছ-একট বিষয় বলা দরকার। ভারতের জন-সংখ্যা যে ভাবে ও যে হারে বাছছে ভার অর্থনৈতিক বিচার পরে করা যাবে। তবে ধর্ম বা সম্প্রদায়ের দিক থেকে বিচার করলে দেখা যার যে, বিভিন্ন সম্প্রদারের লোকসংখ্যা সমান कारत युद्धि भारक मा । ১৯২১ সাল (बंदक ১৯৩১ সালের মধ্যে হিন্দুদের সংখ্যা বেছেছে শতকরা ১০'৪, মুসলমানদের ১৩'০. শিৰদের ৩৩'৯ এবং গুষ্টানদের ৩২'৫ ও উপকাতীয় সংখ্যা ক্ষেছে শতকরা ১৫'৩। এ বেকে বেশ বোৰা যাছে উপ-আতীর লোকেরা চলেছে করের পরে। হিন্দুদের সংখ্যা কিছ বাছতে বটে; কিন্তু বৃদ্ধির হার ধুবই কম। যে অভুপাতে হিন্দুদের সংখ্যা বাড়ছে মুড়ার অসুপাত তার চেয়ে অনেক বেৰী। তাই যোটের উপর হিন্দুরাও চলেছে ক্ষরের পরে। এর প্রতিকারের অভে চাই বৈজ্ঞানিক প্রকান-পদ্ধতি ও সম্ভব হলে সূতন রক্তের সকে সম্পর্ক ছাপন। মুসলমানদের সংখ্যা এখন ৰাভতির পৰে চলেছে। শীববিদ্যাবিষয়ক সিদ্ধান্ত (লেধকের 'অৰ্থান্তের ক্রণরেবা' এছে এ সহত্তে বিভূত আলোচনা পাওৱা यादन ) अञ्चलादत अहे दृषि छलदन किছू पिन बदत । अत সহায়ক হবে বর্ডমান অব্নৈতিক ও পরিছিতি। বাভতি যথৰ তার চরম দীমার পৌছাবে তথম আসবে একটা ভুছির ভাব—লোকসংখ্যার বৃদ্ধি বন্ধ হরে বাবে। তার পরই ভাতি চলবে করের পরে। এই উবানপতন, ছাসবৃদ্ধি ভিতৰ দিয়ে এগিৰে মত্ব্য-সম্প্রদার। এদেশের শিব ও এটানেরা অপেকারভ আধুনিক সম্ভাগায়: ভাই এরা চলেছে ফ্রুত বাড়ভিড় नद्द ।

### ৭। ধর্মামুক্রমিক জনসংখ্যার উপর দেশবিভাগের প্রভাব

দেশবিভাগের পর ভারভের জনসংখ্যা হাড়িরেছে शक्तिवात्मत क्रमगरका ७७३२२०००। উভয় রাষ্ট্রে প্রতি বর্গমাইলে জনসংখ্যার চাপ ভ'ল যথাক্রমে ২৫৫ ও ২০০। তার পর থেকে ছেলে বছ পরিবর্ত্তন হয়েছে। ভিল্লা সাহেব যথন লোকবিনিময়ের वृक्ति (एविदाहित्मन त्म भगव चरनत्करे (मरे धर्षावत्क **छे**च्या विश्वविद्यान : ও অবান্তব ৰ লে কিছ এই প্রভাবের সারবভা অচিরেই প্রমাণিত হ'ল। ভবে বাস্তভ্যাদী সমপ্রবাহ হ'ল প্রায় একতরকা। হিন্দু-चारनत गुजनगरनता श्रीत जवारे विभूचारनरे (धरक शन , बर्दा (बर्क वांच्छान क्रव्रां रंग शांकिचार्नव रिम्स्सव। এর ফলে প্রক্রিম-পাকিন্তান অর্থাং সিন্ধু, বেলুচিন্ধান, সীমান্ত-প্রবেশ ও পশ্চিম-পঞ্চাব আৰু প্রায় হিন্দুশূন্য। পূর্বাবদ থেকে হিন্দুৱা দলে দলে চলে আগছে প্ৰোক অৰ্থনৈতিক অবরোবের কলে। ভারত-সরকারের দার এতে বেড়েছে— खबु मूजनमानत्तव जदनत्नामत्तव वावश्च कदाव अपरे सम् ভবিত্তং चणांचित्र कांट्रल এই সব यूजनमान कि बत्रद्रव মনোভাব অবলম্বন করবে সেদিক থেকেও। যেখানে ধৰ্ম্মণত ঐক্যবোৰ এত বেদী সেধানে বাছনৈতিক ক্ষেত্ৰে সামন্ত্রিক আফুগভ্যের উপর নির্ভন্ন করে পাকলে দেশের ভবিশ্বং নিরাপভা কুর হবার আলহা থাকাই বাভাবিক। অবচ যবাসময়ে একটু কম উদার হয়ে যদি বাভববুদ্ধি অমুসারে ভারতবিভাগের প্রপ্লের মত লোকবিনিময়-ব্যবস্থা মেনে নেওয়া বেত এবং বিজ্ঞানসম্ভত ভাবে যদি এই বিনিময় হ'ত তা হলে काम अञ्चित्रविद्या एक विश्व वि

#### ৮। যৌন ও বর্ষানুক্রমিক জনসংখ্যা

এবারে যৌন ও বর্ষাক্ষক্রমিক জনসংখ্যার বিচার করব।
অবনৈতিক ও সামাজিক দৃষ্টতে এর বিশেষ উপযোগিতা আছে।
১৯৪১-এর আদমপুমারি অনুসারে সারা ভারতে পুরুষের
সংখ্যা হ'ল ২০১০২৬০০০ ও দ্রীলোকের সংখ্যা হ'ল ২০৫ জন।
১৯০১ সালে এই সংখ্যা ছিল ১৪০ জন। এদিক থেকে
অবন্ধ চিন্তিত হবার কিছু মেই। কিছু সমাজের বিভিন্ন ভরের
কথা যদি ধরা যার তা হলে দেখা বাবে বে, মধ্যবিভ খরে
মেরেদের সংখ্যাই বেল। আবার সমাজের মীচের ভরে
আনেক ছলেই মেরেদের সংখ্যা কম। এর সঞ্জিক হিসাব
দেওরা ক্রিন। তবে এই বৈষ্যা ধরা পড়ে কতক্ত্রিল
সামাজিক প্রথার ভিতর। মধ্যবিভ সন্তর্ভাবের লোকেদের
মধ্যে ভারতের প্রায় সর্ব্জিক ক্ষরেশী পণপ্রধা বিভারাশ

আছে। মধাবিভ সম্প্রদারে মেরেদের সংখ্যা বেশী বলে क्षत (व विववा-विवास क्षत्रिक स्ट भावास मा का नक्ष त्रहे সলে বৌতৃকপ্রদান প্রভৃতি কুপ্রধাও সমাকের ওপর চেপে বলে আছে। অপরপক্ষে, সমাজের মিয়তন ভারে বারা আছে তাদের মধ্যে পুরুষের সংখ্যাই বেশী। ভাই ভাষের মধ্যে विश्वा-विवादश्य विभ श्रीतम् चार्य-अत वर्ष का विश्व-ভর্কের প্রয়োজন হয় নি। খ্রীলোকদের সংখ্যা সহছে আর अक्षे वक्ष्या अहे त्य, अरमान वानिकारमत मरना चक रमान कूननात्र (वन क्रमान वाद्यवद्यकारम्ब त्राच्या वन स्टाम्ब कुननात्र क्म। अब अवान कांबन अहे या, (मरबबा वानाविश्वात वर्न-रेनिक बदर चक्रविय कांत्रत्व हैशबूक यक्न शाय ना : अ हांशा প্রায়ই তাদের বিবাদ হয় অল বয়সে। অল বয়সে সভান হওয়ায় এবং পর পর অনেকগুলি সম্ভানের জননী হওয়ায় ভাদের भीवनी-मक्ति भीव रूप्ड बाद्यः। পর্দাপ্রধাও দ্রীলোকদের খাহ্যতকের অভতম কারণ—বিশেষ করে বড় বড় শহরে যেবানে জনসংখ্যার জতিরিক্ত চাপে একটু বোলা হাওরা পাওয়াও ভাদের অনেকের পক্ষেই কঠিন। কিছ बाद्यवर्षात्व चकामयुष्टात बनान कातनहे र'म चन-वद्यत्म विवाह । चामारम्ब रम्पाहे रव नव चम्पान विवारम्ब বরদ কিছু বাভিয়ে দেওয়া হয়েছে দে সব আহলে কিছু ব্যতিক্রমও দেখতে পাওরা যার। বরোদা ও ত্রিবাছুর

রাজ্যে বিবাহের বয়স সামাত একটু বাড়িয়ে দেওয়ার ফলে শিশুৰুতা বেষদ ক্ষেছে তেমনি মেয়েদের ভীৰনীশক্তিও কিছু (बरक्टर । विववारमञ्ज अरवाधि आमारमञ्जासम् मिणांच कव নহ। এবানে শতক্রা প্রায় ১৬ খন ছীলোক খন্ত বরসে विववा एव ; পूर्ववक्षा विववाता और विजादित वारेटत। देश्मा चन्नवन्त्रका विश्ववान मर्था मञ्चन । अस्य वस्य चार्याक्षेत्र पूर्विवार करत । किन्न चार्यास्य अस्मर्थन चण-করা ১৬ কন খ্রীলোকই মাড়বের অধিকার থেকে বঞ্চিত হর সামাজিক অব্যবহার ফলে। विश्वाटमञ जरकादिकात वृत्मक तसार **यह** वस्ता विवाद। चवक शक ८० वरशदा विववादम्ब भरवा किह करमत्व। ১৯০১ সালে সারা ভারতে প্রতি হাবারকরা ১৫ (बटक 80 वरमद्भवस्का विश्ववादम्य भरना हिन ১৩१। ১৯৩১ সালে এই সংখ্যা দীভায় ১১২তে। তথ্যৰ্যে আবার वारमारमरण विववासित मरथा मर्वेटात वना। वारमा-১৯০১ औरम ১৫ (बरक ८० वरमञ CVCH বিৰবাদের সংখ্যা ছিল প্রতি হালারে ২৪০; ১৯৩১ সালে **এই সংখ্যা ए'ल ১৫৫। পঞ্চাবে বিধ্বাদের সংখ্যা সব চেরে** क्य--क्कारत माळ ७१ क्म। ভाরতবর্বে বিভিন্ন বরসে व्यविवारिका भौलाक ७ विश्वारमय मःशा भौति दम्बन ( ১৯৩১ शास्त्रद हिशांव ) र्'न :--- .

বয়স	যোট স্ত্ৰীলোক	<b>অ</b> বিবা <b>হিতা</b>	বিশ্বা	মোট দ্বীলোকের অন্থপাতে অবিবাহিতা ও বিধবা দ্বীলোক ( শতকরা )
34-20	34539438	२७४०३৮8	602162	>>-€
₹0-₹€	74074034	302219	896606	<b>&gt;&gt;</b> 8
<b>16-50</b>	>89 <b>2866</b>	968F1F	3640300	20°5
vo-ve	25F708F#	१८४७८	1999640	24.4
ve-80	200F8FFF	386902	2 × 8 × 0 8 ×	₹>.₽

এবারে বয়সের দিক দিয়ে ক্ষমগংখ্যার বিচার করা যাক। এদিক খেকে গত ৬০ বংসরে ভারতীয় ক্ষমগংখ্যার হিসাব নিয়লিখিত প্রকার :---

( প্ৰতি হাছাৱে )

	71	·>>	25	ر.	>>	2,2	) <b>&gt;</b> :	2.5	<b>5</b> > <b>7</b>	<b>5</b>
বয়স	বং	<b>a</b> )	વુર	बी	বুং	बी	পুং	बी	পুং	
0-70	~	432'0	4.8.F	494'5	412'0	827.0	261'0	<b>8</b> 12,0	210,5	<b>₹***</b>
<b>30-80</b>	<b>3&gt;1</b> '8	396'2	670.0	7 > 7.1	२०५७	724.0	२०৮ १	729.0	601.P	२०७'२
20-00	3697	720.7	200.0	294.4	395'4	749,9	7#8,0	714.4	2962	724.0
<b>90-80</b>	784.4	780.7	786,4	280x	784.7	7.69.7	784.7	709,4	780,7	7.06,7
80-40	<b>200,8</b>	>8.>	707.>	<b>&gt;&gt;.</b> ?	707.8	>4.9	202.0	<b>&gt;6.1</b>	<b>&gt;</b> 6.₽	12.7
£0-60	69,0	49.4	<b>₽</b> 7.8	#5,7	40'>	4019	£7.9	40°	64.7	€8,€
<b>60-10</b>					<b>6,86</b>	0×.0	৩৪'৭	<b>99'1</b>	₹ <b>6.</b> 9	₹F.?
1০ প তদ্€	84,5	¢1'0	86.4	44.4	78,4	71.4	74.0	72.0	22.4	76.€

এদেশে শিশুদের কর সংখ্যা হ'ল সব চেরে বেশী।
কিন্তু কর্মারের ভার এদেশে শিশুমুহার হারও অভাবিক।
পাল্চান্ডোর অনেক দেশেই শিশুদের সংখ্যা ক্য।
এটা কিন্তু শিশুমুহার ক্ষেত্র নর; এ হ'ল ক্ষের হার ক্য
বলে। বিষয়ট শীচের হিসাব থেকে বোধা যাবে:—

ব্ৰস	ভাপান	ইটালী	ভাৰ্বাণী
0-70	248	220	262
20-50	475	405	₹0¢
<b>00-0</b>	262	7#7	2 × 8
vò-80	250	245	785
80-¢0	204	2016	252
40-40	98	<b>৮</b> ٩	36
৫০ ও তেম্≰	99	705	\$2

উপরের হিসাবে দেখা যাচ্ছে যে, ভাপান ও মার্কিন যুক্তরাই ছাড়া অভ সব দেশেই শিশুদের সংখ্যা কম। ভারতীয় কম-সংবাহি সভে অভ দেশের জনসংবাহি পার্বকা হ'ল এই যে. अरहर विकिन्न वहराज्य लाएक अरवाति भावका बूद रवन ; অভবেশে এই পাৰ্থক্য বুব কম। আমাদের দেশে উর্জ্জতম সংখ্যা इ'न २৮৮'> अवर निव्रष्टम जरवा। ১১'४। अ कृत्यव वाववान কত বেশী। বয়ত লোকেদের সংখ্যা এদেশে গত ৬০ বংসর बर्र क्रफ करम हरनहरू। ১৮৯১ मोरन १० वो छोत्र रहरद অবিক বংসর বরত্ব লোকের সংখ্যা ছিল প্রতি হালারে ৪৬'২; ১৯৩১ সালে এই সংখ্যা দীড়াল মাত ১১'৫-এ। अपह क्यांज. हेहाँ नी शक्ति (सत्म युद्धापत नश्या) श्रीत निश्वापत नवान। ইংলঙ, कार्यामी প্রভৃতি দেশেও বৃহদের সংখ্যা নেহাত কম महा। (वि) ह ( 80 (परक eo वरमह) (माकरमह मरना ७ বেশ কমেছে: অবচ অভাত দেশে প্রেচ্চদের মুচাধার সবচেয়ে কম: আর বেশের সকল ক্ষেত্রেই নেডছও করে अवारे । जामारमय रमरन नकारमय छैनरत राजिर नदकारमय চিন্তা এলে পড়ে, মাহুৰ অবসর এহণ করতে চার। ভাই अस्पत्म कर्मकम लाटकद वदम र'न ১৫ (बटक 80 : रेफेटवाटन ১৫ (बर्क ७० वा ७६ वरमञ् । AT THE ACTOR **কৰ্ম্ম লোকের সংখ্যা হ'ল শতকরা ৪০ : জ্ঞান্সে শতকরা** ৫৩: ইংলতে ৬০। এদিক থেকেও আমানের জন-সম্পদের বৈজের কথা খীকার করতে হবে। কারণ পাঞ্চাল্ল रम्प्रकार प्रमाव धरराम क्षेक्ष लाक्त जरवा শতকরা প্রার ২০ কন কন। কর্মনন লোকের সংখ্যা ৰাভাৰত আমাৰের অৰ্থৈতিক পরিক্রনার লক্ষ্য হওৱা উচিত। ভারণ এরাই দেশকে এমভিত ভরতে পারবে। এর বত এক বিকে বেষৰ ক্ষরাছোর উন্নয় আব্তক্ত, অভ ৰিকে তেমনি আবার লোকের জীবনীশক্তি বাড়াবার জড উপযুক্ত ব্যবস্থা অবলম্বন করা দরকার। ১৯২০ সালের পর

বেকে অবস্থ মৃত্যুর হার অবেকবানি করেছে; কিছ অস বেশের ভূলনার আমরা বে আবগু অবেক পিছিরে আহি তাতে বিস্থান সন্দেহ নাই।

৯। যৌন ও বর্ষামুক্রমিক জনসংখ্যায় হ্রাসবৃদ্ধি বৌন ও বর্ষাহুজনিক জনসংখ্যার রাসবৃদ্ধি তিন্ট ব্ল

हेरनक ७ चटरानम	ৰুক বা 🛊	ক্রাপ
7+7	939	200
>>0	250	311
242	398	260
>84	260	780
५७२	224	202
>6	9>	778
>8	94	780

কারণ আহে। প্রথমট হ'ল দ্বহারের ভারত্য্য; বিভীয়ট মুক্তাহারের ভারতম্য : এবং ড়ভীর, ব্যাবির প্রকোপ। ভারতের মত কৃষিপ্ৰবাদ দেশে কম ও মৃত্যুহার নির্ভর করে কসলের উপর। क्रमल यक्ति काल क्य का क्रम क्याकात वाकरनं, युश्कात क्षाद । क्रिक डेलार्डा कन कनाद करन बाबान करन । बााबिब প্রকোপের সবেও জনসংখ্যা ছাসবৃদ্ধির সম্পর্ক আছে। আবার ব্যাধিরও প্রকারতের আছে। সব রক্ষের ব্যাধি সকল वसरमञ्जलांक्य एवं मा। (यमन देनक्र प्रका), अदे वादि वृष्ट्रस्य वर्ष अकृष्टे। स्य ना, निश्वता ७ वृवटकवारे अरे द्वारत আক্রান্ত হয়। যে দেশে এই ব্যাধির প্রকোপ বেশা হবে সে দেশে প্ৰথমনশভিও আপনা থেকেই কৰে আসে। পাচ্চাছ্য দেশ থেকে আৰু এই ব্যাৰি প্ৰায় নিৰ্মাসিত হয়েছে। কিছ अरम्प अब बरकां न पूर राणी। यांत्मविशांत अकांर हैक अकर बद्दरादा। एटव अद चाद अक्री विरम्बन र'न अरे व. क्षांत्मविश्वांत क्षेणांव (यन (मरदरम्ब छेशब्रहे (यभी। अस्मरभव মেরেরা প্রায়ই নিকের খাতা সখদে উপযুক্ত যদ্ধ নের মা: পুরুষেরাও এ বিষয়ে প্রার উদাসীন। এ অবস্থার বেরেকের শরীরে যে ব্যালেরিয়ার বীশ প্রবেশনাত করে তা যেন ছারী-ভাবে আছচা গেড়ে বলে। এতে মেয়েদের পর্ভবারণ-ক্ষতা প্ৰায় দ্ৰাস পায়। স্যালেরিয়া রোগাঞ্চান্ত দ্বীলোকের সন্তামও খভাৰতই ছৰ্মল, বোগ প্ৰভিৱোৰ ক্ষভাবিহীন হয়ে থাকে। উপবি-উক্ত ভিনট কাবৰ ছাড়া ক্ষ্মহার নির্ভৱ করে আর একট বিষয়ের উপর। সেট হ'ল ছাবাছর-গ্রন। ক্রবিপ্রধান হেশে জনসমষ্ট্রকে নির্ভৱ করতে হর অনিশ্চিত নৈস্গিক কারণের উপর। অভি বৃষ্টি, অনাবৃষ্টি বা অভ কোন কারণে যদি কসল নষ্ট হবে বার তা হলে প্রার থেকে বছ লোক চলে আসে সহরে রোজগারের আশার। এবের অবিকাংশই বুবক। ফলে थोगोर्गल लोकगरवा। क्यांक वीटक । क्यांन विश्व काल व्य তা হলে ভাবের শহরে আসার কোন প্রয়োজনই হয় না।

# বীরভূমের জাতি-প্রসঙ্গ

#### ঞ্জিগোরীহর মিত্র

বীরভূবে যে সমস্থ বিভিন্ন জাতি বাস করে ভন্নব্যে কভক্গুলির আচার-ব্যবহার বীতিনীতি ইভ্যাদি সম্বন্ধে বর্তমান প্রবন্ধে আলোচনা করা বাইভেতে।

एक का - वीव स्टाय ना स्टान, (वर्षना, कामर्थाका, महना, कारामाचान, वानपूत, डीलकुनट्या, क्रेट्ट (क्षित्रा), रविश्व, কুৰ্টয়া, বালয়ভলী, মলিকপুর, ভাছলিয়া প্রভৃতি প্রায়ে সংশ্ৰাৰিক ঢেকাক ভাতির লোকের বাস। এই <sup>\*</sup>ভাতির ভাতি নিবাস কিছ বীয়ভূম মতে। মহম্মদবাকার, ভেছচা, ভামরা, গণপুর প্রভৃতি থ্রাবে লোহ-নিফাশন জন্ত ইহারা জ্ঞাদশ শতাকীর মৰ্ভাগে পশ্চিম দেশ হটতে আনীত হয়। লৌহ-নিভাশন ইহালের জাতীর ব্যবসার এবং লোহশিরের জন্মতাতা বলিয়া हेरांमिश्रदक "क्यकांद" वा "कर्षकांद" वना एव। जावाद অভিরিক্ত মদাপান হের ইহারা ঢিকার ( ঢক ঢক করিয়া মছ-পান করা ) ভাতি বলিরা ভতিহিত হর। তংকালে করেক বংসর এ জেলার উপরি-উক্ত বিভিন্ন ছানসমূহে লৌহ নিভাশিত रहेवाद शत कांद्रशासांश्रीन वक रहेदा (शतन हेटांदा श्रीशृक्षाय দস্যারন্তির ধারা শীবিকা শর্জনের চেঠার রভ হয় এবং জন্ধ-कान मर्थारे रेराएं जारावा विस्तिय क्क रहेवा छैठि । किंद সরকার বাহাছরের অক্লান্ত চেষ্টার ইহারা এই নিন্দনীর বৃদ্ধি পরিত্যাপ করিয়াছে। বর্তমানে ইহারা লোহার ভিমিষ এবং মিশ্রিভ পিভলের মাপা সের, পাই, পোরা ইভ্যাদি ভৈরি ক্রিয়া পাকে।

ইহারা দেখিতে বলিঠকার এবং মাল বাদ্দীদের অপেক।
ইহাদের আকৃতি সুন্দর। ইহাদের গারের রঙ মরলা।
ইহাদের মেরেদের দেহের গঠনও সুঠান এবং মক্ত্বত। ইহারা
এ কেলার আসিরা বাংলা শিধিরাছে, তবে ইহারা নিকেদের
মধ্যে তাঙা ধোঁটাই তাষার মত এক প্রকার তাষার কথা বলে।

ইহাদের টটেন বা সগোন্ত যেব। এই হেচু ইহারা মেব
ভক্ষণ করে না, ভবে পুকর ও গোনাংসে ইহাদের আগতি
লাই। চিচিলা এবং বেবে ক্ষড়া ইহাদের অভড়া ও
অপ্যতা। কারণ তাহাদের বতে প্রথমটি মেষের পুল এবং
বিতীয়টী মেষের উদর। ইহাদের গোন্ত এবং উংপতি সহছে
প্রবাদ এই যে, এক কানার ভোকে মেব-নাংস পরিবেশন
করিবার অভিলাব করিরা একটি মেব বলি দিলে ঐ বিবভিত
মেব তংকণাং আকাশে উচিরা সিরা তিম বার মুর্গাক বাইরা
একেবারে অনুত হইরা বার। সেই অববি ইহাদের বারণা
বে বেব তাহাদের আদি পূক্ষ। আর কানার মের্য-বাতক্র
বলিরা স্বাক্ষ-পরিত্যক্ত হর ও অপর দল ব্তর কাভিতে পুরিগণিত হর।

ইহাদের থেরের। বরের বাহিরে অপরের কোন কালকর্ম করে না। চেকার জাতির মধ্যে "সাদা" বিবাহ প্রচলিত গাড়িলেও তাহা নিতাভই বিরল। কেবলমান্ত বালিকা-বিবরাদের সাদা দিবার ব্যবহা দেখা যার।

অতি অৱ বরসেই ইহাদের বিবাহ হয়। বিবাহে বর-পক্ষকে ক্ডাপক্ষেক হতে অবস্থাবিশেষে চারি চাঁকা হইতে যাই টাকা পর্যন্ত পন বাবদ দিতে হয়। বরপক ।নতাভ দরিক্র হইলে ক্ডাপণের হাত হইতে রেহাই পার। পাছে লাত্যন্তর এহন করে এই আশস্তার তাহাকে উক্ত দাবি হইতে নিফ্লতি দেওরা হয়।

ঠাকুর, গুরু বা সমাকের প্রধান ব্যক্তির ছারা বিবাহের দিন चित्र कृता एव । निर्देश मिटन वटतत मिन एटचत अवर क्यांत বাম হতের ক্লিঠ অনুদির নধ ব্যতীত অপর সম্ভ অনুদির নৰপ্ৰলি কাট্টয়া কেলা হয়। এই অতুঠানের পরে বর কভার বাভী বিবাহ করিতে যায়। বিবাহনতে পাঁচট আঞ্চলন পূর্ব হইতেই বদানো থাকে। বর আসিবামাত্রই উক্ত ক্লসঙ্লির মধ্য হইভে, "হামানি" ক্লসের ক্ল ভাহার ৰভকে হিটাইয়া দিয়া বসিবার আসন দেওৱা হয় এবং কলাকে বারের নিকট আনা হয়। পরে বর-কলাকে কাপড বা চাধর আয়ুত করিয়া পরামাণিক বরের দক্ষিণ হতের এবং কভার বাৰ হভের ক্নিষ্ঠ অকুলির অঞ্চাপ লখালখি ভাবে कांक्रेबा इरे-अक विन्यू बच्च वांच्य कविवा (नव अवर इरे-চারিট আতপ ঐ রক্ত হারা সিক্ত করিবা লর। এই রক্ত সিক্ত আত্ৰণ লইয়া কভার পিতা বা তাহার অমুপহিতিতে অভ কোন অভিভাবক ব্য়কভাকে আশার্কাদ করে এবং পরে কিছু কাঁসা, পিতলের বাসন, সামাত চাউল ও ছই-একট চাঁকা বরকে দের। বর এইগুলি এহণ করিয়া কভার কপোলদেশ নিশ্বরঞ্জিত ক্রিয়া ভাহার মাধার খোমটা দিরা দের। এই তাবে বিবাহ-অহুঠান সম্পন্ন হয়। বিষের ভোজে মধ নাহইলে চলে না। বেষন ক্রিয়াই হোক মদ বোগাড় করিতে হয়।

ইহারা বৃত্তেহ দাহ করে এবং দশ বিদ আশৌচ পালব করিরা থাকে। অশৌচাতে পশ্চিম হইতে থোৱা নাপিত আসিরা কৌরকর্ম করিরা যার। থোৱা নরত্বর না হইলে ইহাদের অশৌচ চ্র হর না। অন্য সময় এরপ কঢ়াক্ডি বিধান দেখা যার না। অশৌচাতে গুলু এবং নাপিতকে বংসামাত অর্থানের ব্যবস্থা আছে।

চেকাররা অনেকেই গলার নালা ও বভকে শিবা বারণ করিলেও, ইহারা কিন্তু নিরামিধাকী নতে। ব্যরণালা বানার ভাছলিয়া আমের বৈক্ব বাবার্জীরা ইহাদের গুরুসিরি করিয়া কিছু উপর্জিন করে।

মনসা ইহাদের উপাত দেবতা। মাদ মাসে অংগবৃদে ইহারা বেদী নির্দ্ধাণ করিয়া, তাহার উপর আলিপনা আঁকিরা নিরাকার মনসার পূলা করে—বেদীর উপর মনসার কোন বৃষ্ঠি ছাপন করা হয় না। পূলায় বলি দিবার প্রধা নাই। মালবান্দীরা কিন্ত এই পূলায় ছাগ ও মেষ বলি দিয়া থাকে।

শবী বা স্থী—হেতমপুর, ইলাখবাকার প্রভৃতি অঞ্চ স্থী আতির প্রায় তিন শতাধিক লোক বাস করে। ইহাদের আদি নিবাস পশ্চিম অঞ্লের কোন প্রদেশ। সম্ভবতঃ গালার কারবার উপলক্ষ্যে বীরভূষে ইহাদের আগমন হয়।

পাটনা এবং উত্তর-পশ্চিম অঞ্চল যাহার। গালার কান্ধ করে তাহাদিগকে লাহেরী বলে। অহুমান এই লাহেরী শস্টই প্রথমে লোৱী, লাৱী এবং এতমে নৱী বা হুৱীরূপে পরিবর্তিত হুইয়া থাকিবে।

ইহারা গওবণিক বলিয়া নিকেদের পরিচয় দেয়। ইহাদের ভিতর গৈঁতালী ( গুঁই ), ভদ্র, দেন, দাস, লাহা এবং মহলক এই হয় প্রকার উপাধি দেখা যায়।

গৈঁতালি বা ভাঁইদের গোম বিষ্ণু, ভদ্রদের বিষ্ণু ও বশিষ্ট, সেনদের কুভ, দাসদের বশিষ্ঠ এবং মহলন্দদের মহেল বা মাহেল।

তত্ববার কাতির ভার সুরী কাতির স্ত্রী-পুরুষ উভরেই কর্ম-বিভাগ পূর্বক পরিশ্রম করিরা জীবিকা অর্জন করে। নদীরা কৃষ্ণনগরের মুং-শিল্পের প্রতিযোগিতার গালার কারবার হটরা যাওয়ার সুরীকাতির কেছ কেছ এখন চাববাসে রভ হুইরাছে।

ইহাদের আচার-ব্যবহার নবশাধ জাতির জহুরপ।
নবশাধদের ভার ইহারাও জল বরসেই ছেলেমেয়েদের বিবাহ
দিরা থাকে। সালা বা বিধবাবিবাহের প্রচলন ইহাদের
মধ্যে নাই। বীরভূমের লোকেরা ইহাদের ছোঁয়া জল ধার
নাঃ কিছ জভত ইহারা জলাচরশীর।

ইহাদের ত্রাহ্মণ-শুরু ছাছে। বর্ত্তমান কেলার ত্রাহ্মণেরা ইহাদের ক্রিয়াকাতে পৌরহিত্য করিয়া বাকেন।

বগৰ, বাগতীত বা বাদ্দী—ইহারা বীরভ্ষের অতি প্রাচীন থাতি। ইহাদের উংপত্তি সহতে নিয়লিবিত গলট ভানা বার । একবার পার্বাতী নাকি শিবের চরিত্রবল পরীকার খচ খেলেনীর বেশ বারণ করিরা শিবকে দেশা দেন। শিব খেলেনীর রূপে মুর্ব হইয়া উাহার সদ লাভ করেন। পরে, পার্বাতী আত্মপরিচর দিলে শিব জোবাহিত হইরা উাহাকে অভিশাপ দেন যে উাহার গর্ভহ সভান বাদ্দীরূপে পরিচিত হইবে এবং মংস্য বরিরা শীবিকা অর্জন করিবে।

এই খাভির ভেঁতুলে, নোড়া বা ছলে বা ডুলে (বাহারা

पृति वस्य कृत्व ), कृत्रायाती वा कृषां अव अवर क्या वा व्यक्ति वा मारास्त्रा अरे ठातिके स्थित चारक। छत्रासा एकेश्वनिवारे শ্ৰেষ্ঠ। ভূলেরা নিম্নশ্ৰেশী বলিমা গণ্য। ভূলে ব্যতীত অপর তিন শ্ৰেণীর ভিতর বিবাহের খাদান-প্রদান খাছে। অয়োদশা मायक चार्रा अक्षे (अपेर क्या चना यार । अस्य अरेक्श শ্ৰেণীবিভাগ সহছে মন্তার গম প্রচলিত আছে :--পিবের নাকি কতকণ্ডলি উপপত্নী ছিল। পাৰ্বভী ইব্যাহিতা হইয়া এই উপপত্নীদের অনিষ্ট্রসাধন করিতে আরম্ভ করিলে শিব ভাঁছাকে প্রতিনির্ভ হইবার 🕶 অফুরোধ করিয়া বলেন যে, ভাঁহার शर्फ चित्रिक्ट अक्षे काल ७ अक्षे भारत चन्नाध्यक क्रिया। ফলে পাৰ্বভীৱ যমৰ সন্ধান ৰাভ হয়। এই যমৰ ভ্ৰাভা-ভগিনী भरत विवाहनदान चानद एम। हेराएन मिलतन करन বিষ্ণুপুরের রাজা হাথীবের জন্ম হয়। হাখীবের চারি কভার নাম শাৰ, নেতু, মাৰ ও কেতু। এই চারি জন হইতেই উপরি-উক্ত চারি শ্রেণীর শৃষ্টি হয়। ইহাদের চার শ্রেণীকেই এক ভ কায় ভাষাক ধাইতে দেখা যায়।

ইছারা মাছ বরে, চৌকিদারের কর্ম্ম করে, পাকী বছম করে, চাষবাস করে, চূণ তৈয়ারি করে এবং মনুর খাটে। মংস্য বরাই ইছাদের প্রবান উপনীবিকা নয়। শীবিকা আর্জনের জন্ম নানাপ্রকার কর্ম্মে ইছারা লিগু হয়। ইছাদের মেয়েরা খালি লইয়া পুকুরে ছোট ছোট মাছ বরিষা যংসামান রোজগার ক্রিয়া থাকে।

ইহারা অভি অল বয়সেই ছেলেমেয়েদের বিবাহ দেয়। বিবাহের দিন সকালবেলা প্রথমে মহরা গাছের সলে বরের বিবাহের অভিনয় হয়। বর ঐ গাছকে আলিছন করে, ভার পর উহার গাম্বে সিন্দুর লেপিয়া দেয় এবং নিব্দের ভান হাতের কন্ধীতে হতা বাঁৰে। বুঞ্চালিদ্যান্তে হতা দিয়া মহয়া-পত্ৰ বাঁৰে। সন্ধাৰ সময় মিছিল কবিয়া বৰ কভাৱ ৰাড়ীভে গিয়া উপস্থিত হয়। শোভাযাত্রা বাড়ীর উঠানে উপস্থিত হইলে ক্ঞাপক্ষীয়ের। তাহার গতিরোধ করে। তথন উভয় পক্ষে কুত্রিম যুদ্ধ হয়। সকল কেত্রে বরপক্ট ক্ষুলাভ করে---ইহাই বীতি। শালপন্নবৰ্ষতিত কুঞ্জের চারি দিকে তেল হলুছ প্ৰভৃতি রাখিরা দেওয়া হয়। এই সমর কিছু মাহু দেখাইরা स्यादा वदरक नामरद ज्ञानिन करता। धरेवन ज्ञानिक 'ছেছভি' বলে। ইাথ্যাতলার একট হোট চৌকা গর্ভ ব্যয় कवा रह। करन शहरशक रूख विवारहरन छैशहिल रहेना के ছান শত বার প্রদক্ষিণ করে এবং পরে গর্মটকে ম্ব্যছলে वार्षियां वरवय मूर्याम्बि वरन । शृरवारिक मञ्ज शक्ति वयक्रम উভৱের এবং কনের কোন ব্যোক্যেষ্ঠা আত্মীয়ার ভান হাত একসলে বাবিয়া কভাসভালানপূর্বাক বর-ক্ষেক্তে আশীর্বাক করেন। বর সিমূরের কৌটা বাম হতে লইবা কনের কপালে ও সিঁথিতে ভিদ বার সিদ্র লেপিরা দিরা ভাহার মাধার

বোনটা টানিরা কের। পরে পরক্ষর পরক্ষরকে ক্লের নালা উপহার দিরা থাকে। পরদিন বর বধুকে লইবা নিক্ বাড়ীতে প্রভাবর্তন করে। বিবাহের পর চার দিন পর্যাত্ত বর-ক্ষের বাটছড়া বাবা থাকে।

তেনুলে বান্দী বাতীত অপর সকল শ্রেণীর ভিতর বিববাবিবাহ প্রচলিত আছে। বিববাবিবাহে পুরোহিতের প্ররোজন
হর না। বর-কনে সামনাসাম্নি হইরা মান্তরের উপর বসে
এবং একে অপরের কপালে হলুদ ও জল ঠেকাইরা দের।
পরে চাদর দিয়া বর-কনেকে আচ্ছাদিত করা হুইলে বর কনের
বাম হত্তে "নোরা" (লোহ-বলর) পরাইরা দ্বের। কোন
কোন ক্ষেত্রে বিধবা ইচ্ছা করিলে তাহার দেবরকেও সালা
করিতে পারে।

উপর্ক্ত কারণ ঘটলে খামী-স্ত্রীর মধ্যে বিবাহ-বিচ্ছেদ্দ হইতে পারে। সাধারণতঃ স্ত্রী বদ্ধা, অসতী, অবাধা বা সামাজিক বিচারে দোষী সাবাত হইলে খামী তাহার হত হইতে 'নোয়া' পুলিয়া লইয়া একট কাঠপত ঘারা ভালিয়া কেলে। স্ত্রী হয় মাস পর্যন্ত পোরপোষের দাবি করিতে পারে এবং সে ইচ্ছা করিলে পুনরায় বিবাহও ক্রিতে পারে।

কেহ কোমত্রণ অভায় আচরণ করিলে সমাজের মাতকার-পণ তাহার অপরাধের বিচার করে, তাহাদের বিধান অধ্যায়ী লোষীকে শ্বিমানা দিতে হয়। অভ্যায় সে সমাজ-চ্যুত হয়।

সাধারণত: ইছারা শবদেহ নদীগর্ভে বিসর্জন দের বা মাটর নীচে পুঁতিয়া কেলে, অনেকেই আবার শব দাহ করিয়া অহি বা ভত্মাবশেষ গদায় নিক্ষেপ করে। তেঁতুলে ও কুশমেটোদের ৩১ দিনে, এরোদশাদের ১৩ দিনে, দোড়া বা ছলেদের ১১ দিনে অশোচাত হয়।

ইহার। প্রাবণ মাসের সংক্রান্তিতে বেলগাছের তলায় বেদী
নির্মাণ করিয়া উপদেবতার পূকা করে এবং তহুপলক্ষ্যে হাগ,
নেব প্রভৃতি বলি দেয়। তাহাদের নিক সম্প্রদারেরই এককন
পূকা করে। পূকাকালে তাহার উপর দেবতার তর হয়। এই
সময় পূকাহাদে বহু খ্লী-পুরুষকে সমবেত হইতে দেবা যায়।

এতহাতীত ইহারা হুগা, কালী, অরপূর্ণা, বজ ঠাকরণ, জগভাত্তী, কার্ত্তিক, মনসা প্রভৃতি বিভিন্ন দেবদেবীর ও বর্ত্তরাবের পূজা করিয়া থাকে। বৈচ্চ, আযাচ, প্রাবণ, ভাত্ত, আধিন, মাধ ও চৈত্র মাসের শুক্লা বজী ভিধিতে বাট পূলা এবং ভাত্ত, অঞ্চারণ ও চৈত্র মাসে লক্ষ্মীপূলা করিয়া থাকে।

ইহাদের ভিতর শাক্ত ও বৈক্য উভর সম্প্রহারের লোকই আহে। তবে বৈক্যক্ষাহায়ভূক্ত অনেকেও মধপান করে। ইহাদের মধ্যে কেহ'কেহ মাধার শিধা রাথে এবং গলার মাল। পরে। আবার কেহ কেহ ব্যাক্ষমন্তির বলিরা আত্মপরিচর প্রধান করে।

মাল—মাল বাদীঝেশীর কাতিবিশেষ। ইহাদের মধ্যে (১) রাক্ষরবারী বা ছত্রবারী, (২) রাক্ষরশী, (৬) মালকংশী, (৬) মালকংশী আছে। এই সকল বিভিন্ন শ্রেণীর মধ্যে বিবাহের আদানপ্রদান নিবিছ এবং এক শ্রেণীর লোক অপর শ্রেণীর লোক অক হঁকার ব্যুমণান পর্যান্ত করে না।

ইহারা সংশ্বলিকার, চাষবাস, অনথাটা, চৌকীদারী-কার্য্য ইত্যাদি বিভিন্ন উপারে জীবিকা নির্মাহ কবে। রাম্ব্রুবারীরা মালীর কাল করিয়া বাকে। ইহাদের প্রায় প্রত্যেকের বাড়ীতে গরু, ছাগল, যেষ প্রভৃতি নানা গৃহণালিত জীবনন্ত বাকে।

উপরি-উক্ত শ্রেণীসমূহের মধ্যে মাল্লকরাই শ্রেষ্ঠ বলিয়া পরিচিত। প্রত্যেক শ্রেণীর মধ্যেই বিশ্ববাবিবাহের রেওয়াক্ষ আছে। তবে সাধারণতঃ বিপত্নীকেরাই বিশ্ববাকে 'সাল্ল' করিয়া থাকে। ইহাদেরও রাহ্মণ-পুরোহিত আছে। ইহারা কালী, হুর্গা, মনসা প্রভৃতি দেবীর পূলা করিয়া থাকে। উপদেশতার উপাসনাও ইহাদের মধ্যে প্রচলিত। ইহারা প্রেত-পূলার মুরগী বলি দেয় বটে, কিছ ইহারা হিন্দুধর্মতে নিষিদ্ধ পাত্রবাদি আহার করে না। ইহাদের অনেকের গলার মালা আছে।

ইংবা শব দাহ না করিয়া রুত্তিকাভাছরে প্রোধিত করে।
কেবট বা কৈবর্ত- নহুদংহিতার দেখা যার যে, নিষাদ
ভাতীর এক পুরুষ রুত-বন্ধ-পরিহিতা কদ্যার-ভঙ্গণকারিই
জীর গর্তে নৌকর্মধীবী দাস বা মার্গব নামক পুত্র উৎপাদন
করে। আহ্যাবর্তনিবাসী মানবরণ তাহাকে কৈবর্ত্ত ভাতীর
বলে। পরভ্যাম সংহিতায় লিবিত আহে, বর্ণকার পুরুষ
ও ক্বেরিই মারীর মিলনের কলে ভাত সন্তান কৈবর্ত্ত ভাতীয়
নামে পরিচিত। রুহুভর্মপুরাণে আহে যে, গোপ পুরুষ এবং শুত্র
জীলোকের মিলনে বীবর অর্থাৎ কৈবর্ত্ত এবং ভাতির উৎপত্তি হয়। আবার ক্রন্ধবৈর্ত্তপুরাণে আহে যে, ক্ষেত্রর
পুরুষ হারা বৈশ্ব মারীর গর্ডে কৈবর্ত্তের ভ্যাহ হয়।

এই ছাতি বীরভ্যের বহু পুরাতন অবিবাসী হইলেও ইহাদের আদি দিবাস কিন্তু উত্তর-পশ্চিম অঞ্চা। ইহাদের মব্যে কেহু চামী কৈবর্ত্ত, কেহু জেলে কৈবর্ত্ত—কেহু বা আবার চাষবাস এবং মংগুশিকার এই উচর বৃত্তি ছারাই ছীবিকা অর্জন করিরা বাকে। ইহাদের প্রবান বৃত্তিই হুইল বানা-ভোবা বিল পুরুর ও নদী হুইতে বিভিন্ন উপারে মংগুশিকার করা।

ইহারা ভবু কৈবর্ত দামেই অভিহিত হয় না। ইহাদের পরিচয়জাপক নিরোক্ত আটট নাম পাওরা যায়। (১) বৈবর বা বীবর ( যাহারা সরোবরের ছুই বিকে জাল বাঁবিরা মাছ বরে ), (২) হাস ( বঁড়াই বিরা যাহারা মাছ বরে ), (৩) বৈক ( वक्त महत्व विक्रिक्ट करन विक्रमान दिवा वादावा मरणविकाद करत ), (३) শৌকন ( खड़न वैक्षी वादा माद बड़ा
वाहारक कीविका वर्कारमा छैगांत ), (३) केवर्ष (वक्र कारमत
नाहारमा वाहाता माद बरत ), (७) वार्गात (हेरावां कान विता
माद बरत ), (१) कांक ( वार्ट 'नाह्र' वैविता वाहाता माद
बरत ) ও (৮) পর্ণক ( विवाक भाजा करनत छैगत किनता
वाहाता माद बरत )। किन्छ आमारमा अवारन मात कैवर्ष,
वांम, मानीत अकृष्ठि करतक है (अवे स्वित्क भाषता मात।

এই ছাতির খ্রী-পুরুষ উভয়কেই মংস্য বিক্রম করিছে দেবা যার। বছ বছ কাতলা মাহ পাইলে ইহারা তাহার মুবের ভিতর হাত পুরিয়া তাল্র তৈলযুক্ত খংশ বাহির করিয়া লইয়া কাঁচাই সিলিয়া কেলে।

এই কাভির কেলেমেরেবের অভি শৈশবেই বিবাদ ক্টরা থাকে। ইতাদের মধ্যে সাধার প্রচলন নাই।

ইহার। প্রভাহ সন্ধার নির্মিতভাবে পচ্ই মদ বার। এই জাতির প্রার সকলেই নির্মন, তবে আক্কান কেহ কেহু মান্ত নিজের মান সহি ক্রিতে পারে।

সংকাশ—এই ছাতির প্রাচীন নাম গোপ। ইহারা সংশ্ব বলিরা পরিচিত। পরাশরহত্তে লিখিত আছে বে, ফ্রিবের গুরুকে স্কেগণ বলিরা ছানিবে। ইহাকের আদি নিবাস বর্জনান জেলার গোপত্ব পরগণ।

অতি প্রাচীনকালে ইহারা বীরভূমে আসিরা বসতি ছাপন করে। এই আতি নবশাব বা নবশারক নামে গণ্য। প্রাথপ, বৈত, ভারছ ইহালের হাতে তল বার এবং ইহালের বাজীতে নিমন্ত্রকাল করে। ত্বকার্যাই ইহালের জীবিকার প্রবাদ অবলমন। ইহালের মধ্যে বিত্তশালী ব্যক্তি ভাষিবারের অভাব নাই। এই জাতির উপাধি মওল, বোন, রার, রারচৌধুরী প্রভৃতি। ইহালের নব্যে অনেকেই লেবাপড়া শিবিরা নিজেদের অবছার উন্নতি করিরাছে। বোৰ উপাধিবারী সজোপগণ নীলপুরের বোৰ বলিরা ব্যাত। এ সম্বারু একট হড়াও প্রচলিত আছে। ভাহা এই:—

বভ বভ বৰ্ডমান,
চাব চণী বিবাজমান,
উভৱে কমকা নদী,
মৰ্য্যে গলা ভাগবৰী,
কেই প্ৰস্কু সনাতন
অনেকে ক্রিয়া বণ
মণ করি নীলপুরে যার,
নীলপুরে সিয়া কেই চামারের স্থান,
এক হিকে বসিলেন বভ মুনিগণ
অপর হিকে বসিলেন বোণের মুজন।

ষ্ঠিকা বুঁটিয়া দেব নাবি কোন বোৰ, সেইকত বলি বোহা নীলপুৱের বোৰ।

ইহাবের ভিতর লালা বা বিশ্ববাধিবাহের প্রচলন নাই।
ভর-লাভপুর ও নোডেশ্রর থানার অন্তর্গত বিভিন্ন
অঞ্চল প্রধানতঃ এই জাতির বাস। পূর্ব্বে এমেশে সেন
প্রভৃতি বিভিন্ন উপাধিশারী যে সমন্ত সামন্ত রাজা রাজন্ত
করিতেন, ইহারা ভাষাদেরে অধীনে সৈনিকের কর্ম করিত।
ইহারা তর লইরা বৃহ করিত বলিরা তর বা তরা আতি নামে
পরিচিত হয়। ইহাদের বর্তমান আরুতি-প্রকৃতি কেবিয়াও
ইহাদিগকে বীর ও সাহসী বলিরাই মনে হয়। বান্দী-জাতির
সহিত নানা দিক দিরা ইহাদের সায়ত আহে। বান্দী-মেল
সহিত এক হঁকার ভাষাক থাইলেও ইহারা নিজেদের বান্দী
অপেকা প্রেঠ জাতি বলিরা মনে করে।

বাদ্দী-কাতির মত ইহারা মংস্যাশিকার বা পাকীবাহকের কার্য্য করে না। ইহারা জন বাট্টরা, চাষবাস করিরা জীবিকার সংস্থান করে। ইহালের মধ্যে অনেকেই চৌকীদারী ও স্থাবরের কর্ম করিরা বাকে। ইহালের জীবিকা অর্জনের জঙতম উপার হইতেকে ক্সার্ভি। ইহালের মধ্যে অনেক ওভাদ নাঠিবাল আছে।

বাঙ্গীকাতির ভার ইহারাও মভপাবে বিশেষ আসভা ।
লেট—তীবর পূরুষ ও তৈলকার মীর মিলনে দল্লা
লেটভাতির উংপতি। ইহারা মালবাঙ্গীর সমভবের জাতি।
রামপুরহাট মহকুমা অঞ্চলে প্রধানতঃ ইহালের বাস। ইহালের
মধ্যে লিভু বা নেভু, ক্লেন্তু, শাভ এবং মভ—এই চারিট শ্রেষী
বা থাকু আছে। তবে-এক শ্রেষীর সহিত অপর শ্রেষীর বিবাহ
সম্বন্ধীর সম্পর্কের আদান-প্রদান হর না। এমন কি সমশ্রেষী
ব্যতীত অপর শ্রেষীর বারা পর্যাভ ইহারা থার না। ইহারা
ভাকাতি, দিনবভ্রি, ভালবোনা, মাহ ধরা প্রভৃতির হারা
ভাবিকার সংহান করে। মালবাঙ্গীর সমস্বাতি হইলেও
ইহারা ভাহালের সহিত একসঙ্গে বসিরা আহার ভবে না।
বাঙ্গীরা বলে বে, ভাহালেরই একশ্রেষী হইভে লেট ভাতির
উংপতি; কিছ লেট ভাতির লোকেরা এ ভ্রণা খীকার
করে না।

ন্ধী বদ্যা হইলে বা ভাহার ধোরপোবের ব্যবহা করিতে না পারিলে বানী ন্ধীকে ভ্যাগ করিতে পারে। মনসা এবং বর্ষরান্দের প্রতি ইহাদের বিশেব ভক্তি। ইহারা সমারোহের সহিত উক্ত বেবভাহরের পূকা করিয়া বাকে।

সাঁওতাল ফাডি—এই ফাভির সকৰে বহু প্রবন্ধ বাংলা মাসিক পঞ্জিকাবিতে বাহির হুইয়াহে।

বাৰভ—এই ভাতির লোকবের বীরভূবের বহু ছানেই বেবা বার। ইহাবের আহি নিবাস পশ্চিম অঞ্চ। বাৰভ ভাতির বৃদি কোডা, হুরি কোডা, বাৰভ ও সাওতাল



मरम्मान कश

এই চারিট শ্রেণী বা বাক্ আছে। এক শ্রেণীর সহিত অপর শ্রেণীর বিবাক্ হর না। কবিত আছে বে, ইকারা পূর্বেল দীবি, কলাশর প্রভৃতি বনন করিত। এইক্ড ইকাণের কোড়া (বোঁড়া বা বনন ক্ষতে) প্রকী ক্ষরাছে। সাওতাল জাতির ভার ইকারা সক্ষে কাকারও উচ্ছিট্ট স্পর্শ করে না। তবে বিবাহাদি উপলক্ষে ইকারা বে পক্ষের পাকী বহন করে সেই পক্ষের বাড়ীতে ভোজন করে।

ইঁছর বাদ্যু ভাতির প্রিয় বাড। ইহারা মুখ্যানে বিশেব আসক্ত, সারাদিন বজুর বাটয়া দিনাতে ইহারা প্রচুর পরিয়াণে वर बाद अवर श्वमित्मत एक किह नक्त कृतिया बाट्य। नकारन छेडीबार देश शहस कहिया शनाव:कहन करत। ভাতের সংশ ইহারা ব্যাঙ বা ইছরপোড়া অভ্যন্ত ভৃত্তির সহিত ধাইরা ধাকে। ইহারা হুর্গা, কালী, শিব, মনসা প্রভৃতি एक्टएकीय भूका कट्य । देशांस्य विवाद वयश्यक द्वाध्याक चांद्य। कृत्यव वदन क्यशंदक ১०।১२ वरनव अवर वटवव বরস ২০।২২ বংসর হওরা উচিত। বিবাহে কভাপকের ভৱক হইতে হেলের বাপকে প্রবন্ধপ ৭০০ টাকা দিতে रता। थे ११ पिए मा शांतिक विवाद एत मा। विवाद বরপক্ষকে রূপার ও পিতলের গহনা দিতে হর। ছী-পুরুষ সকলেই বরবাত্রী বার। বিবাহে কর্তা নিকেই পুরো-হিতের কর্ম করে। ইহাবের খতর পুরোহিত নাই। কোন কোন ক্ষেত্ৰে বিবাহের সময় বর গাছের উপর চভিয়া বসিয়া বাকে: আর কবে নীচে হইতে বরকে ভাকিরা বলে---

> গাছে থেকে নাম ভূষি মাট কেটে বাওয়াব আমি।

বিবাহের সমর নাদলের বাজনা ও নীত হর। মেরেরা নীতাহলে বরণককে উপলক্য করিরা ঠাটা-ভাষাদা করিরা বাকে। কোন পরিবারে সভানের জব হইলে ইহারা অপৌচ পালন করে। সাধারণতঃ বার কিবা বাসের লামে ইংারের



গাওভাল খ্ৰী-পুক্ৰ

হেলেমেরেদের নামকরণ হয়। ইংাদের মধ্যে বিবাহ-বিজ্ঞেশ-প্রধা নাই। ভবে বিববাধিবাহ বা সালা আছে। পুরুষ যভ বার ইঞা,ভত বার বিবাহ করিতে পারে।

ইহারা শবদাহ করে, ক্ষেত্রবিশেবে গোরও দের। ইহারা হল দিন অশৌচ পালন করিরা আঙ্কিরাদি সম্পন্ন করে। এই সমর ভাতি-কুট্বদিগকে ভাত আর বদ বাওরাইতে হয়।

ইহারা ত্রীপুরুষ উভরে প্রধানতঃ নাট কাট্যা জীবিকা আর্ক্রন করে। চাষবাসের কাকও ইহারা করিয়া বাকে। বাক্ত বেরেরা অভ্যন্ত পরিপ্রমী। ইহারা এক মুহুর্তও আলভে অভিবাহিত করে না। অবসর সমরে ইহারা বেজুর পাভার মাহর বুনিরা বাভতি বেশ হ'পরসা উপার করিয়া বাকে। মাঠে বান ভূলিবার সমর উহরভি হারাও ইহারা বাভসংগ্রহ করে। সাঁওভাল আভির মেরেদের ভার এই আভির মেরেরাও গাছে চভিতে অভ্যন্ত। ইহারা অর্পের সাহাব্যে বান-চাউলের ধূলাবালি পৃথক করিতে ওভার। বাক্ত ত্রীলোকেরা শিশু-সভানগুলিকে কাপড় দিরা পিঠে বাঁবিরা লইয়া কাক্তর্ম করিতে বাহির হয়। ইহারা ব্য কর্ম্মটা সাঁওভাল আভির ভার ইহারা কর্মন কর্মন প্রধান বাংস ভক্ষণ করিবা বাকে।

ইহাদের নিজৰ ভাষা থাকিলেও বাঙালীর সারিব্যে বাস করার ইহারা বাংলা বুবিতে ও বলিতে পারে। সাঁওভালদের ভার ইহারা ২০-র বেশী গুনিতে পারে বা। ২০-র বেশী গুনিতে হইলে 'একতুড়ি এক' 'একতুড়ি হুই' এই ভাবে গণিরা থাকে।

ভোম—কেট জাতীর পুরুষের ওরতে চঙাল-কভার গর্ভে হাজি ও ভোম এই ছই সভাবের জব হয়।

> সদ্যক্ষাদাকভারাং দেইবীর্ব্যেণ শৌনক। বস্তুবসূত্রে হো পুরো হুটো হক্তি ভোনো তথা।।

ৰক্ষবৈৰ্গ পুৱাণ ইহাৱা বিচৰ্গেৰ উৎপত্তি ও আদি বাসহানের বিষয় কিছুই:



সাঁওভালদের মাবি ধান

বলিতে পারে ন।। ইহাদের মবো 'বিশ ডেলে' 'আকুডে,
'লাজুনে' ও 'বাজুনে' এই চারিট থাক দেবা যার। লাজুনেরা
বুজি, টোজা, পেরি, ভালি, পাথা, বাঁচা, লাটাই, চিক, জাকরি
প্রভৃতি বুনিরা থাকে। বাজুনেরা নহবং, ঢোল, কাঁসর,
সানাই ইত্যাদি বাদাযন্ত বাধন করে। ইহাদের সগোত্র
বিবাহ নিবিছ। ত্রীর মৃত্যুর পর ইছা করিলে ইহারা শালীকে
বিবাহ করিতে পারে। ইহাদের নিম্ন্রেণীর ত্রাত্থাংপুরোহিত আছে। পুরোহিত-ঠাকুরকে ইহারা "বর্ষ পভিত"
বলে। থিবাহে পুরোহিত মন্ত উচ্চারণ করিয়া থাকে।

ভোৰভাতির মধ্যে শাক্ত ও বৈক্ষৰ উত্তর সম্প্রদায়ের লোকই আছে। ইহারা কালী, সরহতী, মনসা এবং বিহক্ষার পূজা করে। বিহক্ষাকে ইহারা "বিহ্নুক্ষ্ক্র" বলে। ইহারা যে ছোট ভাটারি দিরা বাঁপ কাটে এবং বাঁপের শিল্পপ্রবাদি ভৈরারি করে সেট ভাল্প মাসের পেষ দিনে বিশ্বক্ষার পূজার নিবেদন করে। ইহাদের মধ্যে সম্বভিশন্ত লোকেরা স্বভদেহ দাহ করিয়া ভাহার ভঙ্গ বা অস্থি লইয়া প্রদার দিরা আসে। সাধারণ পরীব লোকেরা শব নদীপর্ক্তে বিসর্জন দের। ইহারা গাভীকে "যা লজী" বলে এবং গোভাতিকে বিশেষ সন্মান করে।

চোল, কাঁসর, সাধাই, রম্মতোকী, নহবং প্রস্থৃতি বাদ্যবন্ধ বাদন এবং বাঁলের নামাবিধ শিল্পতা নির্মাণ ইহাদের জাতীর ব্যবসার।

হাছি—মরলা পরিভার করা হাছিদের জাত-ব্যবসা, কিছ বীরভূষের হাজিরা সকলেই বেধবের কর্ম করে না। এবানে (১) ভূইরালী, (২) লাই বা মূল হাছি, (৩) কাহার এবং (৪) বেধর এই চারি শ্রেণীর হাছি আহে। শেবোক্ত শ্রেণীর হাতিরাই মেণ্রের কর্ম্ম করিরা থাকে।
নেপর-হাতিরা আবার তিন লেপতে
নিজ্ঞ। বথা—বাঙালী<sub>র</sub> মধরা ও
বালওরারী। কাহার-হাতিরা হুরুবরের
কর্ম করে। কাহারও লাই-হাতির লাজনপুরোহিত আছে। ইহাদের মধ্যে কালীভক্ষের সংব্যাই বেদী ৮, ইহারা জীপুরুষ
সকলেই একসকে বসিরা সভ্যার সমর
হাঁতি হাঁতি পচুই মদ ধার। ইহারা সমর
বিশেষে গো-মাংস ও ইছ্রপোড়া বাইরা
বাকে।

শৈশবেই ইহারা হেলেমেরের বিবাহ-ব্যাপার সম্পন্ন করিরা কেলে। বিবাহ উপলক্ষ্যে স্ত্রী-পুরুষে মদ গাইরা মাদল-বাদ্যের সহিত একসলে নৃত্য-ঈত করে। অবহা-বিপর্বারে এই জাতির অনেকেই মুসলমাম-বর্গ্ম গ্রহণ করিরাছে।

বাউরি—বীরভ্ষে প্রার প্রতিশ হাজার বাউরির বাস:
টহাদের বোলো, ধোলে, গোব্রে ও কাহারে—এই চারিট
"বাক্" বা শ্রেণী আছে। প্রবাদ আছে যে, ইহাদের
পূর্বপ্রথেরা মুনিধ্যিদের আলানি কাঠ সংগ্রহের কর্ম
করিত। হিন্দুবর্ষাবলয়ী হইলেও ইহারা অনেকেই ব্যাঙ,



মাৰিয়া নাগড়া ও মাদল বাজাইতেছে

পুকর ও গো-মাংস জকণ করে। ইহারা মুসলমানবের রারা বার। ইহাদের মধ্যেও অনেকেই মুসলমান-বর্ম অবলয়ন করিরাছে।

বিবাহের সময় কভার কোন পিতৃবন্ধু বরকে কোলে করিরা হাদ্যাতলার লইরা আলে এবং এইরপভাবে কভাকেও তথার আনা হর। তংপরে মালা ববল হইলে বর-কভাবরের ভিতর বার। পরবিদ কভার নির্বিতে নিকুর ও রাড়ে



কর্মবভা বাউরি রমণী

'নোৱা' পরানো হয়। ইহাবের সমাজে হোট মেয়েও কোলে চাপিরা খন্ডরবাড়ীতে খামীর খর করিতে হার।

ইহাদের সমাকে প্রাছাদি অমুঠান প্রচলিত আছে।
পিতা-মাতার মৃত্যুর ৩৬ ঘন্টা পরে পুত্র নিমপাতা মুধে দিয়া
ভাতির সহিত ভোজন করে এবং পরে আবার নিমপাতা
মুধে দের। ইহার পর স্থান করিয়া নিকটবর্তী ছানে এক
ভক্ষ বেনাব্ল প্রোধিত করে এবং দশ দিন প্রত্যহ স্থান করিয়া
ভিকা কাপড়েই বেনাব্লে চাউল, ভিজা হোলার দানা ও জল
নিবেদন করিয়া পুনরার স্থানাতে বাড়ী কিরে।

ইছারা চৈত্র-সংক্রান্তি এবং মহালয়ার দিন পিড়পুরুষের আহু করিয়া পাকে।

ষ্চী—ভিবর-পিভার ঔরসে এবং চঙাল-যাভার গর্ভে এই ষ্চী বা চর্মকার জাভির উংপদ্ভি। 'ভিবরেলৈঃ চঙালাং চর্মকারো বভূব' (এক্ষবৈবর্জ পুরাণ)। ইহারা রুইদাস এবং ষ্চীরাম দাস নামক হুই সাধু ব্যক্তির বংশধর বলিরা আমপ্রিচর দের।

ইহাদের বংগ্য (১) রুইদাস, (২) শুক্তে, (৩) ধোলটা, (৪) শিগুরে, (৫) শাদি বা রাটী ও (৬) কোনাই—এই হর্মনী শাহে।

ইহারা কালী এবং হগার পূজা করে, কিছ গো-মাংস বার।

क्रेरांन क्रीत्वत ननांव बाना चाट्य । छाष्ट्रांत्रा नांवावनचः । छात्र वाटनत चला अलावनैत दिन और शृक्षा एत ।

উাতের কাক করে। অভাত শ্রেণীর বুচীরা মূতা তৈরারি, ঢাক বাবন প্রকৃতি বারা দীবিকা অর্জন করে।

(১৫) ভশ্ববার—ইহারা তন্ত্রবাপ, ভন্তবার, ভন্তী বা উাভি
নামে আব্যাত। এই জাতির লী-পুরুষ রেশম, তসর ও স্থতার
বান, শাকী, গৃতি, চাহর, গামহা প্রস্তৃতি বরব করিরা জীবিকা
অর্জন করে।

ইহারা উভর, মন্যম, বারেজ ও প্র্রক্ল—এই চারি শ্রেণিতে বিভক্ত এবং এই সকল থাকের মধ্যে বিবাহের আলান-প্রদান হইরা থাকে। ইহালের উপাধি লাস, বভ, চল, কুনার, কুনলাই, পুরো প্রভৃতি। পুর্বোক্ত চারিটি থাক্ ব্যতীত ইহালের শোনা, তক্তে, বরবটে, মুস্বরে, হাত-বেডে প্রভৃতি আরও বাইশটি থাক্ বা শ্রেণী আছে। ইহালের স্বাক্তে সপোন্ধ বিবাহের প্রচলন নাই।

বন্ধবৈৰ্ধ প্রাণের দশম অব্যাহে লিখিত আহে বে, বুডাচী বিশ্বকর্থার কোনও আদেশ অমাত করিলে তিনি তাঁহাকে এই অভিশাপ দেন বে, তাহাকে মর্ত্তলোকে অন্তর্গ্রহণ করিতে হইবে। বুডাচীও বিশ্বকর্থাকে অন্তর্গ অভিশাপ দেন। কলে, বিশ্বকর্মা পৃথিবীতে বান্ধণ-বংশে এবং বুডাচী গোণ-বংশে কর্মহণ করেন। বুডাচী ইপ্রত্তিপরাহণা হিলেন। এক্সিন



একট ভোম পরিবার

বৰন তিনি গদাতীরে ব্যানহা তথন আন্ধরশী বিশ্বকর্মী ভাঁহার সমীপে উপস্থিত হুইলেন। উভরে উভরকে চিনিতে পারিলেন এবং অবশেষে তাঁহারা পরস্পরের প্রণয়াসক্ত হুইরা বিবাহ-বছনে আবদ হুইলেন। কলে ভাঁহাদের মালাকার, কর্মকার, কুম্বকার, বংসকার, শখকার, তম্ববার, স্কর্মর, বর্ণকার ও চিত্রকর—এই নর পুত্রের অ্যলাভ হয়।

ত্রাহ্মণ শিতার ঔরসে এবং গোপমাতার গর্ভে তত্ত্বারদের কম বলিরা ইহারা বিশ্বকর্ত্বাকে কুলনবেতা বলিরা পূলা করে। তার বাসের অক্লা একারশীর দিব এই পূলা হয়।



यान शामी-श्री

এই ছাতি নৰশায়ক সন্তাদায় মধ্যে গণ্য—
"গোপোমানী তথা তৈলী ভন্নী মোদক বারুদ্ধী—
কুৰাল কুৰ্ব্ছায়ক্ত মাণিতো নৰশায়কাঃ।" (প্রাণয় সংহিতা)

এই ছাতির মধ্যে বিবৰাবিবাহ-প্রথা নাই। ইহাদের মধ্যে কেহ কেহ পাক্ত বর্ত্তাবলঘী হইলেও অধিকাংশই বৈকব।

ভাৰ্নী—ভাৰ্নীদের স্বাভীর ব্যবসার পান বিজয়। ইহারা ভার্নী, ভার্নিক, ভার্নী বা ভারি নামে পরিচিত।

ইহাদের 'পাড়া গেঁরে', 'বিরাল্লিশ গেঁরে', 'চৌড গেঁরে' ও 'গরলা পেড়ে'---এই চারিট থাক্ বা শ্রেমী আহে। এই সকল থাকের মধ্যে বিবাহাদির আদান-প্রদান হয়। তামূলী-দের কাঙ্গ, লাভিল্য, বাংড, ভর্মান্ধ, মৌহল্যা প্রভৃতি গোল আহে। ইহাদের সগোল বিবাহ নিষিত।

রহরপুরাণে (৩৯, ১ম অব্যার উত্তরবন্ধ) নিবিত আছে বে, বৈক শিতার প্রবেস এবং শ্রা মাতার গর্ভে ইহাদের উংপ্রতি।

"বৈভাতু শ্তকভায়াং ভাতভাতুলিকভবা"।

ক্ষিত আছে বে, ইছাদের আদি নিবাস বর্ত্তরান জেলা।
তেলেকা বুকুলদেবের রাজ্যকালে তথার সংজ্ঞানক ব্যাবির
প্রকোপ দেখা দিলে ইছারা প্রাণভরে দেশত্যাদী হয়। ইছারা
বছ দেশদেবীর পূজা করিরা থাকে। ইছারা বিশেষ ঘটা
করিরা বৈশাবী পূর্ণিনার গড়েখরী দেবীর পূলা অর্চনা করে।
এই পূজার সময় ইছারা নিজেদের ব্যবহৃত কাঁতিগুলোকে
দেবীর সৃষ্ঠির নিকটে রাখে। ইছাদের রাজ্য-পুরোহিত আছে।

কৰ্মকার—এই কাতির লোকেবের মব্যে ক্ষরিকাংশই কামায়ের কাক এবং কেছ কেছ বর্ণকারের কর্ম করে। ইবাদের মব্যে 'মানুক পুরে', 'উল ভুলে', 'বন পেলে', এবং 'কামালে'—এই চারিট বাক্ বা শ্রেমী আছে। প্রাথবের ক্ষরতার বর্তে ইবাদের আহিপুরুবের ক্ষর।

ক্ষিত আছে, এই ছাতির আদি নিবাস বর্জনান জেলা।
এক সময় বর্জনানাধিপতির পুষর্শ-ভরবারি হঠাং ভাঙিয়া সেলে
উহা কিরপে নেরামত হইবে এই চিস্তার রাজা উষির হন।
এই সময় এক কর্মকারের এক চঙাল-ভৃত্য ছিল। লে
কর্মকারের ভাজ বেশ ভালরপেই ছাবিত। চঙাল-ভৃত্য
তর তরবারিখানি এরপ নিপুন ভাবে মেরামত করিরা দের বে,
তাহা দেবিরা রাজা পরম সন্তোব লাভ করেন। কর্মকার
তাহার চঙাল-ভৃত্যের কর্মকন্দভার পরিচর দিলে রাজা
ভাহাকে তাঁহার নিকট আনরম করিতে আবেশ দেন।
চঙাল-ভৃত্য রাজার নিকট আনীত হইলে রাজা ভাহাকে
পুরজার দিতে চাহিলেন। সে পুরজারের পরিবর্ধে কর্মকারশ্রেক্ত হইতে চার। ইহাতে রাজা সম্বতি দিলে কর্মকারণ
অবিদ্যে বর্জনান পরিত্যাগপুর্মক বিভিন্ন ছানে গিরা বসতি
হাপন করে।

ইহাদের মধ্যে বিষবাবিবাহ নাই। দ্রী শুরুতর আভার করিলে বা ব্যভিচারে লিপ্ত হুইলে হানী ভাহাকে ত্যাগ করিতে পারে। পরিভ্যক্তা দ্রী অপর হানী প্রহণ করিতে পারে না। দ্রী কোন অবহারই হানীকে ত্যাগ করিতে পারে না। ইহাদের কেহ শাক্ত, কেহ বৈকব, আবার কেহ শৈব।



একট বাদ্য পরিবার

বহুপভিনা—ইহা একট সভরকাতি। বুনলবাৰ কজিবের ওরানে ও বিশ্ নারীর গর্তে এই সভরকাতির উংপভি।
ইহানের আঞ্চি হিন্দুর বত। ইহারা অনেকেই হিন্দুবের আচার-ব্যবহার, রীতিনীতি ইত্যাধি অভ্নরণ করিরা বাকে।
ইহারা হিন্দুবের ভার নাম রাবে—কালী, বনসা প্রভৃতি বেব-বেবীর পূজা করে এবং ইহানের রাজ্ব-পুরোহিতও আহে।
ইহানের বেরেরা হিন্দু ললনাগণের বত সিবিতে সিন্দুর পরে।

কিছ ইহাবের মধ্যে আবার কাহারও আরা বা বোদার উপর বিবাস। ভাহারা হাজি রাবে, মস্কিবে বার, পশু জবাই করে, রোজা রাবে, বৃতবেহ পোর দের এবং গোমাংস ভক্ষণ করে।



সপুত্ৰ যেকেন

বিবাহের সময় ইহার। কাঞ্চীকে ডাকিয়া আনে। ইহাদের মধ্যে বিববাহিবাহ প্রচলিভ আহে। ইহার। সুসলমানের রালা বার; কিন্ত ব্সলমানের। ইহাদের রারা বার মা বা ইহাদের টোরা জল পর্ল করে না। ব্সলমান এবং বহ-পতিয়াদের মধ্যে বিবাহ হর না।

রামপুরহাট মহকুমার কোন কোন আকলে ইহাবের বান। ইহারা কাঁসার ঘট, বাট, আলহার, কাঁসর, ঘটা, লোহার ঘাটবারা প্রভৃতি প্রব্য তৈরারি করিয়া জীবিদা অর্জন করে।

উপরি-উক্ত জাতিগুলি ব্যতীত বীরক্ষে স্থানা ( জনসংখ্যা প্রার হাজার ), সুনরি (সাকে চৌক হাজার), বেহনা, যাকব বা বালোয়ালো, বাক্কি, পূলা বা বধু মাণিত ( প্রবাদ আহে বে প্রীটেডেড মহাপ্রত্মর বভক মুখন করিবার পর হইতে ইহারা অপর কাহারও কৌরকর্ম করিবা হক অভব করিতে প্রবৃদ্ধ হয় নাই), রাজবংশী, সুকোল, বররা, বেলো, বাইতি, কোনাই, দোবাদ, গাবেরি, কালোয়ার, বাভিক্, লোহার, মুগা, ওর্মাও, ভূরি প্রভৃতি আরও প্রার সভর প্রকারের ভাতি আহে ।০

এই এবংর বাবরত করেকট আলোকচিত্র প্রীমনলেশু নিত্র
 কর্ত্তক গৃহীত। '

# মৃত্যুঙ্গয়ের অগ্রদৃত

ঞ্জীশোরীন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য্য

চারদিকেতে অভ্যাচার, হাত যেলেহে নগ্নতুত, অন্তবিহীন অভকার— চলুৱে ভোৱা অঞ্জুত। व्यक्तारा व्यक्तांत के नर्द्ध क्षता निवृत्तन, मक करत यक वीर्या मुकामूर्य काक्ना। আককে যোগের অয়িপণ, বিশ্ব দলো ভয়ীভাই, করতে হবেই মৃত্যুক্তর সর্বাহুবের মৃক্তি চাই। সমাজতরা হুনীতির গর্জিছে ঐ বুণীবড়, नक्ष्यात्मव क्षरज्ञान पूर्व चाक्षि हुर्व कहू। द्यभारभव पविषास समस्याका कि निरक्तावन. শুখনতার পহিন এ বে খাবীন নামের খানিপান। नर्सरावाद वाविदिया दःबद्दन चल्टत. সর্বাদার মৃত্যুগরল পান করে৷ নীলকণ্ঠ রে ৷ অৱিহাহৰ পৰীকান্ত ঐ সমূৰে দিন ভক্তবীর, শীবৰ তের সুষপুরীতে বর্গেরি আবু ভাঙ প্রাচীর। वज्रत नवारे भर्क वरना विवय-राज्य वर्ष वह, ष्ट्रारं कीयन-पाका-वांशम कांदीय माटवर वर्ष वह i मिन्नी कवि धर्व धारी बहेन वविष्टे पद्मशीन. वांबीय रथवांब कृत बूट्कब मृत्रा कि और मान बढीन् १ क्रवि चाण्डित फेक मनाहै, क्रवट्ड स्टव चतिनव, খাৰীৰ হওয়ার বৃদ্য সেধার শাভি যেখার চিয়ভন। चार्डकरम कदवि बान चाक इमीछिटा स्वरम कद्. সৰ্বাপাপের মন্ত্য মুছে--আনবি ভোরাই মুরাশ্বর। দত্মবনিক মিলগুলো ঐ ছঃছুশোষণ পিৰুৱাপোল, বৰিকদের ঐ অভ্যাচারের ভিংগুলো আৰু উপ্তে' ভোলু। অৱবসৰ খডি ও পূৰ কৰ্মীদেৱ আৰু বটি' দে. ছঃছবের আৰু কুছ করে' আনন্দে মন মণ্ডি' দে। সর্বাপাণের ধ্বংসে আজি বঞ্চা উঠুক বোর ঘটার, पूर्वकेरीय रक्तमात्म क्षात्र कांचक निरक्कीय । বৈৰ্ব্যে চলো শৌৰ্য ছলাল শহাতে ভাই ৰাং টলো, ষ্পরাধ্যে ভয়া বাছাও হিন্দতে আৰু পথ চলো। इःर्वित वर पर्नव बस्तारवता नर्क्स चात्र, রাধবি ভাতির মানইজং সভ্যিকারের মুক্তি চাই। সদী ভোষের ত্রন্থবল পিণাক বাজার ক্রকাল, হুৰ্মৰ আদি চল্বে চল্ বাট্ৰে ছতুম ভালবেভাল। সদী ভোষের বন্ধ বড় উভীপনার কি বিহাং. ৰুত্যমৰ্থন যন্ত্ৰ পড়ে বৃত্যকৰের অঞ্চত ৷



পদ্মীপ্রান্তে ( তেল বং )—শিলী জীনীলরভন চটোপাধ্যার

# সমালোচকের দৃষ্টিতে শিশ্পী ও শিশ্পকলা

<u> এ</u>অগুল্যগোপাল সেন

আক্কান বেশের শিল্পাছরার কনসাধারণের মন শিল্পকা সহত্তে অধিকভর সচেতন হওয়ার দক্ষনই काट्यत नवाटनां क्यां व्याप्त व्याप्त (श्राप्त । नवाटनां कट एव ভরুক বেকে এই শিল্পী-সমান্দের বিরুদ্ধে বহু প্রকারের অভিযোগ উথাপিত হচ্ছে। যেবন—শিলীরা श्रष्टेव मरना नृजनरक्व धावर्षन क्वरण शावरक्य ना, अमारक्व বর্ত্তমান ভাববারার সদে তাল রেখে চলতে পারছেন না, অনসাধারণের চিভাধারার সংক তাদের দুষ্ট চিভা-ৰাৱার বিল নেই, ইত্যাদি। এ বরণের সমালোচনার ছাত বেকে শিল্পশিশাৰী হাত্ৰ-ছাত্ৰীরাও নিছতি পার না। এ সম্বন্ধে চিন্তা করে আমার মনে হয়েছে, প্রতিষ্ঠাবান শিলীদের কাৰের যে-কোন বক্ষ সমালোচনা চলতে পারে, কিছ শিল-কলাশিকাৰী ছাত্ৰ-ছাত্ৰীদের কাব্দের শুধু টেক্নিকৃ বা আদিক নিৱেই সমালোচনা হওৱা বাঞ্নীয়। কারণ শিল-খকৰা ভো খাৱ শিলী ভৈরি করতে পারেন না; আক্লাছ সাধনা করে তবে কলালন্দীর প্রসাদ লাভ করতে হয়। শুরু শুৰু পথ দেখিৰে থিছে পাৱেন। কেমন করে ভূলির টানে बनरही कवा याव, बाहानिव कि बक्य या वितन शांवत्व **এা**ণের শালন স্কটার ভোলা যার—এ সব শালর কাছে বলে



हैरवत शंद ( एक पर )--- श्रेमांद मह्मवात



**७**क्ष्मी ( क्ल दर )— ब्रीटनायनाच ८ राष्ट्र

লিখতে হয়—এর বছ নিঠা এবং কঠোর পরিশ্রম দরকার। এক কথার পরিশ্রম করে কারিগরী জিনিষটা গুরুর কার থেকে লিখে নিতে হয়, ভারপর হাত পাকা হলে, নিজের পথ চিবে নিতে পারলে প্রতিভাবান লিল্পী নিজের মনের সকল অছ্-ভ্তিকেই বীর নিল্লস্কীর ভেতর দিরে প্রকাশ করতে পারেন। কোন সমালোচক বদি একজন শিক্ষার্থীর কাহেও অভিনব বিরাট কিছু একটা প্রত্যাশা করেন ভবে তাঁকে হভাশ হতে হবে বৈ কি ? শিক্ষার্থীর প্রথম এবং প্রধান কর্তব্য বেমন করেই হোক শিল্পের প্রচলিত প্রভিত্তনার সঙ্গে সন্দে নানা প্রচলিত এবং অপ্রচলিত মাধ্যমে পরীকার্লক কাক করা। নরত 'স র গ ব' না শিবে গানে মৃতন ক্র ছিতে যাওবার মত, শিল্পরীতি আরম্ভ না করে মৃতন কিছু স্ক্রীর প্ররাস ব্যর্থ হব্যে বার্য।

এক সময় দেখেছি, কলিকাতা শিল-বিভালয়ের ছাত্রহাত্রীদিগকে, বিশেষতঃ প্রাচ্যকলা বিভাগে, পুরানো ভাল
ভাল ছবি নকল করতে দেওরা হ'ত। এই সব ছবি নকল
করতে সিরে শিকাবা বৃবতে পারত ছবিতে কোবার কোন্
রং কি ভাবে ব্যবহার করা বার, কোন্ রেবাটা কোবার কি
সাবে কভাবি টাবলে ছবি কুলর হয় —এববি নানা বুঁটবাটি

বিষয়। তবু তাই দর—সংক সংক শিকাবীকে প্রকৃতি পর্যাবৈক্ষণ করে বানা বিষয়বন্ধর কেচ্ করে আনবার কচ উৎসাহিত
করা হ'ত। এতে শিল্পশিকাবীর একটা বিশেষ লাভ হ'ল।
আক্রার সময় প্রকৃতির যে সর ব্টিনাট অবচ প্রয়োজনীর
জিনিয় তার দৃষ্টি এড়িরে বেড, তাল ছবি নকল করতে
গিরে ক্রমণঃ সেওলো তার চোবে বরা পড়তে লাগল। এইনি
করেই শিল্পী লাভ করলে প্রকৃতিকে দেববার এক নৃতন দৃষ্টি—
তক্ষী। তারপর তার নিজয় কল্পনা বেকে ছবি আঁক্রার
কাল অনেক পরিষাণে সহক হলে আগত। তব্ এইক্ছও
ভাল ছবি নকল ক্রার যথেই বুল্য আহে।

বর্তমান সমরে এক শ্রেণীর সমালোচক আছেন বারা পাশ্চান্ত্যের অভিআধ্নিক করেকখন শিলীর শিল্পদার অন্থানী, এলেশের শিলীরা ভালের চঙের (style) মকল করক এটাই ভারা পছল করেন। এই অধ্করণবৃত্তক কাকতে অভিনব শিল্পন্ত বলে ভারা বাহবাও দিরে থাকেন। নকল করব, অবচ নিজয় বলে প্রচার করে লোকের ভাক্ লাগিরে দেব, এ মনোর্ভি শিলী এবং শিল্পশিশার্থী উভরের পক্ষেই কভিকর। বারা প্রভিতা নিরে জ্বেছেন এবং ব্রোপ্-



वदनवर्ण ( कन वर )----विकीत्वश्रक्षांत (जन

বুক্ত সাধনার বাঁথের সেই প্রতিকার বিকাশ হরেছে—ভাল বিনিব, নৃত্য কট আদের হাত দিরে বেরিরে দেশের সংস্কৃতি-ভাতারকে একদিন নিশ্চয়ই সমূহ করবে—হ'দিন আগেই হোক্ বা হ'দিন পরেই হোক্, তার আচ তাভাহকো করার কোন প্রবোজনই নেই। পাক্ষাত্য শিল্পভালয়ভলোকে



ভেল হঙে আঁকা একট চিত্র—শ্রীনীলয়তন চরোপাব্যার
অবিকাংশ শিক্ষই শিকাবীর কাকের মধ্যে বৃত্তমন্থ ততটা
প্রত্যাশা করেন না—শিকাবী ঐকাভিক নিঠা এবং কঠোর
পরিজ্ঞান সংকারে সাধনা করে শিক্ষের প্রচলিত প্রভিত্তলো
আয়ন্ত করার চেঠা করছে কিনা, সেই হিকেই থাকে সেধানকার শিল্লশিককের সন্ধাস হৃষ্টি। শিল্পকার ইতিহাসে
সন্ধবতঃ এনন এককনও লব্দ্রশিতিই শিল্পীর সভান পাওরা বাবে
না, বিনি ছাত্রশীবনে শিক্ষের প্রচলিত প্রভিত্তলো আয়ন্ত
করেন নাই। অপ্রগতি সকলেই চার, শিল্পীরাও চার; কিছ
চলার অভ্যাস তো আগে করতে হবে, ভারণর হবে অপ্রগতি।

আগেই বলেছি, বাঁৱা শিকানবিশীর পালা শেব করে
শিল্পীহিলাবে প্রতিষ্ঠালাত করেছেন উাধের স্কট্টর বে-কোন
রক্ষ সমালোচনা চলতে পারে; প্রতরাং উাদের কথা হেছে
বিরে বেবা বাক, প্রচলিত সমালোচনার বর্তনান সমরে শিল্পশিকার্থীবের কড্টুকু লাভ এবং কতি ব্রেছে। কলিকাতা
সরকারী শিল্পবিদ্যালরের এবারকার বাংসরিক প্রদর্শনীর ছবিভলো নিরেই বিচার করা বাক। প্রায় আভাই শতাবিক
বিভিন্ন বিভাগের ছাল্লছালীর কাজের নমুনা এই প্রকর্শনীতে
বেবতে পাওরা বার। বিভিন্ন নাব্যবে ছাল্লছালীকের পরীকাব্লক কাজ এই প্রকর্শনীর সর্বাণেকা প্রশংসনীর এবং আশাপ্রক্ষ করিব বলে আমার বনে হরেছে। বুব বেশী বিন আগেকার করা বরু-এবন বার ছিল বর্ষর এক বিভাগের ছাল্ল

অভ বিভাগের ছেলেবের কাল বেবতে পর্যন্ত পরাত্ব ছিল।
তারা মনে করত বে তাতে শিল্পী বিসাবে তারা ববর্গুচ্ছ
হবে। প্রাচ্য নির্নিভাগের হাজেরা মনে করত, তৈল-রঙের
হবি বেবলে তাবের শিল্প-ফুচি বারাণ হরে বাবে; আবার
বারা পাশ্চান্ত্য বরণে তৈল-রঙের হবি আঁকত তাবের বারণা
হিল, প্রাচ্যকলা বিভাগে আসল বস্ত কিছু নেই, তা
একেবারে সম্পূর্ণ কাঁকির উপর প্রতিষ্ঠিত; ওবানকার
সনে বোগাবোগ রক্ষা করলে সর্ক্ষাশ হরে বাবে।
এই প্রসক্রে একটা কথা মনে পড়ে গেল। এ দেশীর একজন
নামকরা তৈলচিত্র-শিল্পী একবার কথার কথার আমাকে
বলেহিলেন—"ওরে বাবা। হাতেল সাহেব কি ক্ষম শরতাম।
এ বেশের ছেলেরা পাছে হবি আঁকা শিবে কেলে তাই
তারতীর শিল্প নাম দিরে কাঁকির কল পেতে রেবেছে।" প্রাচ্য
চিত্রকলার প্রের্ঠ সমর্বনার ও রসক্র হাতেল সহত্রে বিনি এই
বারণা পোষণ করতেন তিনি আলু পরলোকগত। কিছু ভাবি



প্ৰভিত্নতি ( তেল হং )—এলাবিত্ৰী লেন্ডৰ

এই আছ বারণা (আছ হলেও সরল) কেমন করে বছরুল হ'ল একজন শিলীর মনে ? গোঁচামিই এর মূল কারণ নর কি ? কিছ এর কড বেশী ক্তিএভ হলেন কে ? হাতেল-বিবেবী ভত্রলোকট একজন প্রতিভাষান শিলী হওবা সভ্তেও হলেশের বলিট শিলৈহর্বোর বাহান্তা অবর্থন করতে পার্যালয় বা। এ ধরণের গোঁড়ামি শিক্ষার্থী এবং শিল্পী উভরের পক্ষেই ক্তিকর ও মারাল্পক।

প্রদর্শনীর প্রাক্তিক আর্টের কক্ষ্ট বুব চিন্তাব্যক্ত হয়েছে, যদিও ঐ কক্ষ্টিতে আরও আলোর ব্যবহা করলে অধিকতর নরনানক্ষর হতে পারত। প্রাক্তিক আর্টে বিভিন্ন বিভাগের হাত্র-হাত্রীরা পরীক্ষাবৃদক ভাবে বে সকল চিত্রকর্ম্ম করছে সেগুলো খুবই প্রশংসনীর। তরংব্য চারুশিল্ল বিভাগের হাত্রী শ্রীমতী করণা সাহার লিখো প্রেসের হবিধানাতে (ছুই রঙ লিখোগ্রাক) উন্নত কচির পরিচর পাওরা যার। তা হাড়া ভাষালেন্দ্ বিকাশের ছাই পরেক্ট এচিং এবং সোমনাথ হোড়ের কার্টবোদাই চিত্র খুবই উপভোগ্য হয়েছে। বিভিন্ন বিভাগের হাত্রহাত্রী বিভিন্ন কার্যার এবং বিভিন্ন কৃত্রিক যোজ পারে, একই মাব্যম অবলহনে চিত্রকর্ম্ম করে যেতে পারে, একট্ ভাল করে প্রাক্তিক আর্টের কাক্ষ্যলো দেখলে তা বোকা যার।

প্রাচ্য শিল্পবিভাগেও অনেক পরীকার্লক কাজের নিদর্শন ৰেখা যায়। ভারতীয় প্রধায় অভিত যে ছটো প্রতিকৃতি ( portrait ) চিত্ৰ প্ৰদৰ্শনীতে টাঙানো হয়েছে ভা শিলীর ছঃসাহসিক পরীকাষ্দক কাকের নযুনা। কারণ আমরা এতকাল ভারতীয় পদ্ভিভে অন্বিত প্রতিক্রতি-চিত্র যা দেৰে আসহি তার সবগুলোই মুখল পছতিতে অহিত কুন্ত ছবি (miniature painting)—রাজপুরুষ বা রাজকভা বা অভুরণ কাহারো প্রতিকৃতি। সবগুলোরই পোশাক-পরিছদ বলমলে। এবারকার প্রদর্শনীতে দেবলাম-প্রতি-ক্লতি ছ্ৰানিই বেশ বড় করে আঁকা হয়েছে, খুব সাদা-সিলে কাপড়-চোপড়-পরা অবচ বুব vivid বা সুস্পই। এত আৰু ব্ৰভে এবং আৰু ব্ৰেধায় এত ভাল প্ৰতিকৃতি-চিত্ৰ ছতে পারে ধারণা ছিল না। এ বিভাগে ছাত্রছাত্রীদের অনেকের ছবিতে উপযুক্ত বৰ্ণপ্ৰহোগ-বৈপুণ্যের অভাব লক্ষ্য করা যায়। ন্যানারিক্স সব শিলীর মধ্যে কিছু না কিছু থাকে। তবু একবেরেমি নষ্ট করার চেষ্টা করা উচিত। শিলীকে এক হিসাবে অভিনেতার পর্ব্যারে ফেলা বার: তাকে রূপরসবর্ণসন্ধবিশিষ্ট প্রকৃতির অভ্য-সভার মধ্যে প্রবেশ করে ভাপন অভ্যের রসের সঞ্চে ভার যোগসাধন করিয়ে ভবে স্বভীয় রসস্টাকে বাইরে জনভার হাটে পরিবেশন করতে হয়: নয়ত ভোরের যে রঙ সন্ধারও তাই, ছপুরেরও একট বর্ণ--উৎসবের ছবিতে বে বর্ণসমাবেশ, বিরহের ছবিভেও ভাই--এভে রসের ছানি হয়। मामातिकम् अकट्टे-चार्के पाकरमध विवयवस्य यनि चस्रवय মধ্যে বৰ্ণাবৰভাবে অভুতৰ করা বার তা হলে রসের হানি হর मा । मानाविकत्यव श्रेष्ठां वृद त्वन वृत यहि मत्म मत्म प्रष्ठ কোৰ শিলীয় বৰ্ণাযোগ বা বেখাবিভাগ বা অভ্যৱণ কিছ মকল क्वांव देखां पांटक । अ नवटच निवसक मक्तांत अक्वांव

আমাকে বলেছিলেন—"বাজপুত ছবি দেব, বুবল ছবি বেব, পারত দেবীর ছবি দেব—ছবির রস প্রহণ করার চেটা কর, কিছু সাববান—আঁকবার সময় ওসব সারনে বেকে একেবারে দুরে সরিরে রাধবে, এমন কি ওসব ছবির চিছা পর্বান্ত করবে না।" শুনেছি কোন এককন ছাত্র নাকি একবার ছবছ নক্ষবাবুর কারদার একবানা পেলিল কেচ করে জাকে দেবাতে নিরে সিরেছিল। ছবিবানি দেবে তিনি নাকি সেই ছাত্রকে প্রথমে ধুব তির্হার করেছিলেন, পরে সম্প্রেহ বলেছিলেন—"ভয় কি! কারদা আপনা বেকেই আসবে। কাল কর বব কিছুকারও নকল করতে চেটা করো না।"

প্রদর্শনীর প্রার প্রত্যেক বিভাগেই কোন কোন চিত্রকর্মনের আনার মনে হরেছে, ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে ক্ষকরেক আর আরাসে নাম করার ইছোতেই হোক, বা অভ কারণেই হোক এদেশের এবং বিদেশের নামকরা শিলীর আঁকা ছবিকে মনের মধ্যে রেখে, হরত বা নিজেদের অভ্যাতসারে উাদের মকল করে যাছে। নকল যতক্ষণ ইছোক্সত এবং তা তথ্ শিক্ষার উল্লেক্ত করা হয় ততক্ষণ তাল; কিছু নিজেকে এবং পারকে কাঁকি দিয়ে সভার বাজিমাং করে নাম করার উল্লেক্ত নকল করতে যাওয়া মারাশ্বক।

তৈলরঙের চিত্রের ককেও করেকশানা ছবিতে উন্নত কচি এবং বর্ণস্থাবেশ-নৈপুণ্যের পরিচর পাওরা যার। উদাহরণ-হরূপ এই ছবি কর্মধানার নাম করা বেতে পারে—নীলরতন চাইচ্ছ্যের "চানাচুরওরালা" (তৈল রঙ চিত্র), শাস্থ মক্ষদারের "টবের কুল" (তৈলরঙ চিত্র), সাবিত্রী সেমগুর্ডার জাঁকা একধানা তৈল রঙের প্রতিক্ষতি-চিত্র (৫০ নং), জীবেজকুমার সেনের জল রঙের প্রাথাবের ছবি ইত্যাহি। শাস্থ মক্ষদারের "টবের কুল" ছবিধানি যদিও উংরে গেছে, কিছ তার ছবিগুলো ভাল করে পর্বাবেকণ করে দেখলে স্পষ্টই বুখা যার বিলাতের কোন প্রগতিপদী বিশিষ্ট শিলীর প্রভাব তার চিত্রে যথেই। ছবিতে শৃত্রম্ব আম্বানী কর্মবার হোছে সেই বিদেশী শিলীর চিত্ররচনার আম্বর্ণকে মনের মধ্যে রেখে তিনি নিজের জ্জাতসারে তাকে জ্বুসরণ করে

ক্যাশিরাল আটের চাহিদা দিন দিন বেরুণ বেছে চলেছে, এবং ক্রমণারবের ফ্রচিরও বেরুণ ফ্রন্ত পরিবর্তন হচ্ছে তার কর্ড উক্ত বিভাগের ছাত্রবের কাক্ আরও উন্নত বরণের হওরা উচিত এবং কাক্রের পরিমাণ হৃত্তি পাওরা বাহনীর। যদিও 'লেটারিং' ক্যাশিরাল আর্টের স্ববানি নত্ত, এবং লেটারিং বাদ দিরে ক্যাশিরাল আর্ট একেবারে অসন্তব একবাও সভ্য নর, তবু এটা ক্যাশিরাল আর্টের একটা প্রবান কর। উক্ত বিভাগে লেটারিং আরও বেশী হলেই ভাল হ'ত।

ক্লে-মতেলিং বিভাগট প্রার 'গুরান ন্যান শো' অর্থাং এক ব্যক্তির প্রবর্গনী হরে সিরেছে। বে কাজটই বেবতে নাই না কেন, বেবি তাতে একই ব্যক্তির নাম লেবা। সতীল চফ্রবর্তীর পোরেটের হাত তাল, কিছ ভিলাইনের হাত নিপুণ নর। সতীলবাবুর ভিলাইনের কচি অনেক উন্নত হতে পারে বহি তিনি কলিকাতা বাছ্বরে রক্ষিত প্রাচীন তারতের উংক্ট বৃত্তি-ভলো বিশেব মনোবােগ বিল্লে পর্যবেকণ করেন। তারতের বহুর্ভন বাছ্বর এবং তারতীয় লিল্লের সেরা গ্যালারী কলিকাতা সরকারী শিল্প-বিভালরের পালেই রয়েছে। অতিআধুনিক ও প্রগতিপদ্ধী হওরার আব্যে উক্ত গ্যালারীর লাতীর চিত্রাবলী এবং বৃত্তিওলি তাল করে বেবলে তাতে বিশেষ লাতবান হবারই সভাবনা।

সর্ববেশ্যে টিচারশিপ বিভাগের একধানা ছবির সমা-लांग्ना करत चार्यात वक्षवा (मध्य कत्रव । अवस्य वर्ण दावि **ট**চারশিপ ফ্লাসের ছাত্রেরা ছাত্রও বটে আবার শিকাপ্রাপ্ত শিলীও বটে ; প্রভরাং ভাদের কান্দের পুথাস্থপুথ সমালোচনা হওয়া উচিভ বলে যমে করি। উপরোক্ত হবিধানির বিষয়বন্ত বে কি তা আমি বহু চেঠা করেও বুৰতে পারি মি। ভবে এটুকু দেবলাম একটা পাৰ্ক, ভাতে সাহেব-দশভি বসে আছেৰ হয়ত বা সান্ধাবায়ু সেবন করছেন, সামনে আইস্ক্রিম-ওৱালা, ছেলে, বুড়ো, হেঁড়া কাপড় খারও কড কি ? কোন ভাব বে শিলীর মনে দেশা দিয়েছে, বিষয়বস্তর কোন্ ভারগাটার ওপর যে ভিনি বিশেষ ইঞ্চিভ করছেন ভা ভো বোঝা গেল না। বৰ্ণীৰ্ম্জাচন, ছুলির টান এবং অখন-পছতি দেখে প্রতীতি হয় কোন্ধাসভিপদ্ধী আধুনিক শিলীর প্রভাব রয়েছে এই শিলীর ববের গহবে। সমালোচকের ভীত্র সমালোচনা "শিলীর স্ট্রর সম্বে ক্রসাধারণের জীবনের দৈন্দিন ঘটনার যোগ নেই"—একথা তার প্রাণে লেগেছে, সেইজ্ভ চিত্রে বাত্তব ঘটনাসমাবেশের এই অগাবিচ্ভি। এ বিষয়ে আমার বঞ্চব্য এবং বিজ্ঞাস্য হচ্ছে—"ওবু ঘটনার ছবি কুটৰে ভূললে কি সাৰ্থক চিত্ৰ হয় ?" ওবু আবোল-ভাবোল ঘটনার বর্ণনা করে গেলে বেমন ভা সাহিভ্য হয় না. উচ্চরবে আর্ডনাদ করলে যেমন তাকে কেট গান বলে না. ভেষনি ভবু বুব বেশী করে ঘটনার ছবি এঁকে গেলে ভা প্ৰস্থ চিত্ৰপদ্ৰাচ্য হয় না। যা দেখলান, যা অভুতৰ করলার, যা ভাবলায় ভাকে ভালভাবে গুছিরে সুন্দর্য্ত্রণ

পরিবেশন করার ক্ষতা বাকা চাই। তার ক্ত সংবর দরকার—রঙের সংবম, রেখার সংবম, রসের সংবম, তাবের সংবম, বর্ণমার সংবম, বর্ণমার সংবম। নীলরতন বাবুর ছবিবানা দেবে আনার বার বার মনে হরেছে—ছবিবানা সংবমের অতাবে স্ট হিসাবে ব্যব হরেছে। আগুনিক সমালোচকেরা চিত্রে মৃত্যম আমলামী করবার অতে বৈ তাবে উপলেশ বর্ণৰ স্ক্রেক্রেন, চিত্রকর সভবতঃ তারই হারা প্রভাবিত হরে এই চিত্রবানি রচনা করেছেন।

শিল্পী, রাজনৈতিক এবং সমাজসংভারকের কাজ এক নর।
শিল্পীর কারবার প্রধানতঃ রসের সঙ্গে, সুক্ষরের সঙ্গে—ভবে
বদি কোন রাজনৈতিক বা সামাজিক ঘটনা শিল্পীর মনকে
গভীরভাবে নাড়া দের (এবং তা দেবেই) তা হলে আপনা
খেকে ভূলির আঁচড়ে যা বেরিরে আসবে তাই হবে সার্বক
স্কি।

निब-निकारीया जाककान जातरक वरन बारकन--- "व्वित বিষয়বন্ধ খুঁজে পাছি না।" এই বিষয়বন্ধ খুঁজে না পাওয়ার ভভেও, মনে হয়, ঐ একই মনোভাব দায়ী। माहरकत देशराम शास मित्रीता कारहम, "मुख्य अकही কিছু করভে হবে, চিত্রে আমদানী করতে হবে হয় রাজ্মীতি, নর ত সহাজ্সেবার আদর্শ।" আহার তো মনে হয় অভনের বিষয়বস্তু সর্বাত্র হড়ানো রয়েছে। একটা ফুল, ছ-চারটে পাতা, একটা পাৰী এই দিয়ে খাপানী শিলীরা সার্থক শিল্পষ্ট করে নি কি ? প্রকৃতি তো প্রতি মুছুর্ছে নানা রঙে রসে আমাদের চোবের সামনে নব নব ক্রপে বৃত্তিমন্ত হয়ে উঠছে। আমাদের চেতনার তাঁকে ধরতে পারলে চিত্ররচনা বতঃকুর্ত্ত হবে। ভার বত ভো বিশুর বই পঢ়ার দরকার নেই, সমাকসংকারক বা রাক্টনভিক নেভার हिना स्वाबंध श्रादासम त्यरे। निक्रांगिश स्वनीस्वार्धव अक्ही चूर बृत्रावाम क्या और धनत्व बत्न शरक यात-"त्वाव খুলেই রাখতে হয়, প্রাণকে ভাগ্রত রাখতে হয়, মনকে পিশ্ববোলা পাৰীর মত মুক্তি দিতে হয়, কল্লমালোকে ও বান্তব ভগতে পুৰে বিচরণ করতে হয়। প্রভ্যেক শিল্পীকে বপুৰৱার ভাল নিজের মত করে বুমে নিভে হয় প্রথমে, ভারপর বসে ধাকা--বিধের চলাচলের পর্যের ৰাৱে নিজেৱ আসন নিজে বিভিন্নে, চুণ ট কৱে নম্ব— সভাগ হরে।"



#### শ্রীহিরগায় ছোষাল

দাছর টেবিলে যেলা ব্বরের কাপ্রধানার ওপর ज्यानकृष्य बद्ध (बाना भएक जांद्र हमनाबाना। अक शिक्द ভাঁটতে হতো বাঁৰা, কানে কড়িরে বাঁৰবার কট। কাচের ভেতর দিয়ে লেখাওলোকে খাড়া খাড়া লখা লখা দেখায়, যেন চিভিয়াবানার দাভিয়ে আছে সেই সারি সারি সারস পাবী বেওলো এক পারে দাভিয়ে পিঠে মুব ওঁকে ছুমোর সারাদিন। कांठ इंबाबात अनतिमारक जावात जब तक्य इंबाबा कांठ বলানো, টাদের মত। সেগুলো দিয়ে কিছ লেখাগুলো দেখা ষায় আলপালের সব লেখার মতই। দাছ কাগৰ পড়তে পড়তে अक अकरांत के अभरतत क' केकरता कारात मरना मिरन চোৰ ছটো বার করে খাড় নাঁচু করে কৰা বলবেন ভোষার সলে। রণজিতের ভারি হাসি পার তাঁর ঐ ভলিটুকু দেখলে। ওদের বাড়ীতে গাড়ের ওপর কাকাতুরাটাও ঠিক এ রকম করেই খাড় নীচু করে তাকাবে ভোমার দিকে। রণজিতের क्मिन (वन এक्ट्रे छन्न-छन्न% करत, अता यनि अत निर्क लाकात चमनि क'रत । ভার মনে হয়, ভার মনের সব দকোনো কথা, (वैद्योग चार मण्यवस्थाना (यन छारा भव (प्रारं (क्लाम)

चवठ ठनमावाना (ठारव मा मिल्ल माइएक अक्ट्रेश कर करत না। গাল-ভোডা গৌকভোডাটা থাকা সভেও। খালি চোৰে হাসিভৱে যথন তিনি তাকান রণজিতের দিকে তথন ভাঁকে তার ভারি ভাল লাগে। পলা ভভিত্তে বরতে ইছে করে। অভটা করতে আবার সাহস হর না। আগে কৰ্বনো দেৰেনি ভাঁকে। এই ভো মাত্ৰ ভিন্ন মানের ভালাপ। তা হাড়া পিপ লু আর বাব্দুদের বাড়ী এটা। দাছ পিপ দু আর বাব দুকে এক এক সময়ে নিকেই টেবিলের ওপর বসিরে দিয়ে रूरन रूरन यांचा वांका पिरा क्या वर्णन छाराव गर्छ। 'ৰোলাতে ইচ্ছে করে]। "সে কাছে গেলেই কিন্তু দাছু ঐ চশমা-ধানার ওপরের কাচের ভেতর দিয়ে চোধ বের করে কেম্বন অভুতভাবে ভাকান ভার দিকে। বকেনও না, বনকানও না, ভবু এরকম কৈরে তাকান। পিপুলু ভার বাবলুকে এক একবার ব্যক্তিরে ওঠেন। রণজিতেরও ইচ্ছে করে দাছ তাকে ধৰকে ওঠেন, ঠিক ওদের মত করে। ছাত্ তাকে বনকানও না, আদরও করেন না। তবু ভাকান ভার দিকে व्यवाद्वे (७७३ विद्य | विक् अक्टांड व्यव व्यवादां वि তার দিকে চেরে বাঁজ-পড়া চোব দিরে হালেন।

বাৰ সূৱ আৰু পিপ সূৱ ছ-জবেৱই নিজেৱ নিজেৱ बाक्यांकीत अक्यांना करत नाकी ह्यांटर। 'श्रवनानाकी।

রণভিতের ভারী আন্তর্য লাগে। হাওয়া-গাড়ী আহার কারো নিজের থাকে নাকি? ও ভো ভবু ভালা পাওয়া যার। এই তো সেদিন আসবার সমূহে ভালা করা হাওৱা-গাড়ী করে সে কভ বুরেছে আন্থাকী আর আকাকীর সঙ্গে ডিল্লীতে। তাই তো সে সেদিন পিপ সু যখন বললে, "জানিস্ बिंग जामात वावात शाली ?" जबन तनकिर किरक्रम करवित. "ভূমার আকাৰী টেজিওয়ালা আচে ?" সে ব্ৰভে পারে মি. কথাটা বিজেস করে সে কি অপরাধ করেছিল বে. ভার বঙ ভার কানটা কস্কসে করে মলে দিয়ে এক চাচালী শাসিয়ে গেলেন—"ওর কভী এসী বাং নছী বোলনা, রণ বিং।" এ বাণীতে শুৰু ঐ চাচালীই কৰা কইতে পাৱেন ভন্তলোকের मछ। चात अता जब त्य कि वर्ता, त्रनंकिर छ। बूबर्डिंगारत না ; "হামি ভাত বেষেছে", "তুমি বেড়াতে যাবি ?" "হামার কিদে পেরেছে।" এই রক্ম সব ওবের কথা। তা হাড়া अदा "बाएरक" वनरव "शाह", "सम् "रक वनरव "छिविन", "भाषा"एक वनरव "भाषा," "वाष्टि"एक वनरव "बारना." "स्वर्" (क वनत्व "जकान (वना"। वर्गाक् (भारम जावा मिन जांद्र शंटन बटन बटन।

ছুপুরে বাওয়ার পর দাছু ঘুনোতে যান। তার এক ছাত ৰৱে পিপ লু আর এক হাত ধরে বাব্লু। পিপ লু আর বাব্লু খাটে গিয়ে শোর দাছর ছ'পালে। রণজিং একবার ভাদের ৰিকে ভাকিৰে ৰেখে চোৰ কিরিয়ে নের। ভারও ইচ্ছে করে ওদের যত করে দাহর সঙ্গে ৬তে। কিছ দাহর হাত বে যাত্ৰ হুবাৰা আৰু বাষ্ট্ৰের ওপর হাছর পাশও যাত্ৰ इर्छ।। कारता जिन्हें शंख्य तक, जिन्हें भाग्य तके। তা হাড়া পিপুৰু আৱ বাব্ৰু ওৱা ভাৱ চেৱে অনেক অনেক রণজিতেরও ওবের মত ঠেবিলে উঠে তাদের পাশে বসে পা । হোট। পিপ সূর বরেস মাত্র তিন আর বাব্সুর বরেস হে ভিনও নর, আড়াই। ছোঃ। আর রণক্তির ব্যেস পুরো লাভে ভিন। সে ভালের চেরে মাধার অনেক বড়। ওবের मर्द्या के शिश जुड़े। क्षांत रहारतत क्लांत मनाम । जात त्रशंकर थाव विन भवाष शिर्व भौदन वरन ।

> ছমিরে উঠে পিপুলু আর বাব্লুলাছর হাতে ছব বার (भनारन करत विष्कृष्ठे निरव । तथिक्र कर एक्ट नवरत जानाकी অভ বরে নিবে যার। চুপি চুপি বুবিরে বলে, ভার ভঙে ভার আকাৰীও বিছুট কিনে আনবে'বন এক দিন। বাচ্চারা ধাৰার সময়ে ওদের বিকে অমন করে ভাকাতে নেই।--আত্মাজী এসৰ কৰা আৰে ভাৰতই না। কি বোকা হিল, मिछा । ७ अक विन वैक्टिब दिन ७८वर गांवांव नवस्त । छन्न

ওদের ঐ ঠান্ ওদের কথার কি বললে আনাজীকে ভেকে।
সেই থেকে রণজিংকে আনাজীর কাছে ওকথা প্রারই ভনতে
হয়। ও অবঞ্চ কোনো প্রতিবাদ করে না। আনাজীচী
সভিটে ভারি বোকা। একেবারেই বুরতে পারে না বে, সে
বিষ্ট থেতে একেবারেই চার না। পিওীতে থাকবার সমরে
ঐ আনাজীই তো ওকে বিষ্ট থাওয়াবার করে কত সাধাসাধি
করত। সে সব কথা আনাজী এর মধ্যেই ভূলে সেল
কি করে ?

ৱণজিং বিছুট বেভে চায়ই না। সেবে দিলেও নেবে ना । किन्द्र पांड अर्पत इव बांखशांतांत जगरम रक्यन जन मकांत মনার গল বলেন। আগে সে ভার কিছুই বুৰভে পারভ না। এবন গলখলো প্রায় মোটাবৃষ্ট ব্রুতে পারে। প্রায় সবগুলোই 'শেরে'র গল্প--- যাকে ওরা বলে "বাখ"। সবচেরে মন্দার হচ্ছে সেই শেরটার কথা যেটা দক্তি নিয়ে হাঁচতে হাঁচতে অছির হরে ছটে বেড়াছে। এক একবার সে দোরের বাইরে থেকে কান পেতে শোৰে। ভারপর ওদের খাওয়া হয়ে গেলে আবার ওদের কাছে পিছে দীড়ায়। সব কথার মানে বুক্তে পারে না। এই ধরে। নাকেন, "বেড়াল" মানে কি? ও কৰাটা জানা নেই বলে সে সমস্ত গল্লটাই বুৰতে পারে ना रव। जारे किटकन करद: "(वदान' मान कि चारक. দাছ।" দাছ কিন্তু গল বামাবেন না কিছুতেই। পাবার যদি ও বিজেস করে, বেরাল মানে কি, ভো দাছ চশমার ওপরকার কাচ হ্ৰানার ভেতর দিরে চোৰ হুটো বের করে শুবু তার बिटक छोकोरवन, अक्षेष्ठ कथा मा वरन। कि वि**धी** खे ज्यवाडी )

সভ্যবেলা দাছ বেড়াতে যান, হয় পিপ্লুর না হয় বাব ল্য আবলালীর হাওয়া-গাড়ী করে। সদে যার পিপ্লু আর বাব্ল্। রণজিতের অবপ্র হাওয়া-গাড়ী করে বেড়াতে ব্বই ভাল লাগে। কিন্তু সে ঐ সময়টায় ওদের সলে একেবারেই যেতে চার না। গাড়ীতেও দাছর এক পাশে বসে পিপ্লু আর এক পাশে বাব্ল্। রণজিং একেবারে সামনে চাচাজীর পাশেও বসতে চার না তবন, যদিও সামনে বসলে স্বিবে এই যে, হু'পাশের হুপ্রভালাকে সে দেখতে পার আগে, পিপ্লু আর বাব্লু দেখতে পাবার আগেই। তব্ও সে একবার চাচাজীর কাছে দরবার করেছিল, পিপ্লু এসে বস্কু না সামনের জারগাটার। পিপ্লুর বিশেষ আপত্তিও ছিল না। কিন্তু দাছর ঐ চলমাটা। রণজিতের দিকে ফটমট করে চেরে চকচক করে উঠল, বেল চোধ রাভিরে।

বরে কেউ নেই। ধনরের কাগজের ওপর রাধা চশমাটা একবার মেডেচেড়ে ধেবলে রণজিং। বিঞী ঠাঙা ভার শিহল তার গা—কোঁকের গারের বত। ক্লাকার "বিলৌনা" লাহুর। অধচ ওটাকে এক হও কাহুহাড়া করতে দেশে নি। ওটা আইপ্র দাছর নাকে। এক একবার দাছ ওটাকে টেনে নামিরে দেন নাকের ভগার কিছুক্দণের শ্বন্থ। ভবন অন্তত: চোব হুটো একটু ছুট পার। ভার পর আবার কাচ হুবানা চোব হুটোকে গিরে চাপা দিরে কেলবে। সব জিনিয় ঐ রক্ম বাপসা আর বাভা বাভা, লঘা লঘা দেবে দাছর যে কি লাভ হর ভা লে বুবভেই পারে না। এর চেরে ঐ রভিন কাচের ছবিওরালা দুরবীনগুলি চোবে দিরে বাকা চের চের ভাল। একটু বাকানি দিলেই একেবারে নভুন একবানা ছবি।

রণজিং চলমাধানাকে একবার নিজের চোধে লাগিয়ে দেবলে। এক পালের ভাটটা মাধার পিছন দিক পর্যন্ত চলে গেল। অপর দিকের ছভোটাও কানের চারি পাশে क्षिद्ध पित्न । नाः, अत्कवाद्ध किक्कू त्रना याद्य मा । अमन कि নিজেকে কেমন দেখাছে তাও আয়নায় মালুন হয় না। সব ৰাপসা। সেই বছকাল আবে একবার বুব অর হ্বার সময়ে রণজিতের যে রকম মনে হ'ত চার দিকের জিনিষগুলোকে --- এই চশমাৰানা চোৰে দিলেও সেই ব্ৰুমই মনে হয়। ওটা চোৰে দিয়ে ৰাকভে নিক্ষই দাছুৱ ভীৰণ কঠ হয়। এটেই বোৰ হয় দাহুর নাকের ওপর বসে রণজিতের দিকে এ রক্ষ क्रेबिं कृद्ध जाकाय । माइद्र अहे "बिलोनांहा" त्म मुक्दि কেলবে নাকি ? দাছর চোধ ছটা ভা হলে রণজিংকে খুব ভালবাসবে। প্রায় ছাসবে ভার দিকে চেয়ে। পর বলবার সময়ে এইবার নিশ্চরই দাছ গল থামিরে এ বিদ্যুটে কথা-গুলোর মানে বলে দেবেন ওঁর ঐ চমংকার উর্ফায়ার। वर्गाकर व्यवक्रीतिक कांच (यरक मामित्व नित्व यव (यरक विदिश्व (भेग ।

দালান ছাড়িয়ে, বারাক্ষা পেরিয়ে সেই ওবিক্কার জিনিয়ণত্র রাধবার ধরটার কাছে ইড়িয়ে ভাবতে লাগল, ঠিড় কোন্ ভারগাটার রাধলে হাছ ঐ বদ্নেজাজী কাচ ছ্বানার একেবারেই কোন হবিস পাবেন না। মনে মনে কি ভেবে সে চ্কল জিনিয়ণত্র ভর্তি বর্টর ভেতরে। মেবের ওপর থাকে থাকে সারি সারি বাল্প-পেটরা, বেরালের গারে টাঙানো বামা, চাল্নী, লোহার থাবার-ঢাকা, লেল্পো- ওলোর ওপর বড় বড় কাচের বোতল, জার, নিনি, ইডি, সরাচাপা, ম্ব-ঢাকা। কোথাও এভটুকু থালি জারগা পড়ে বেই…

বর থেকে বেরিরে এসে রণজিং কোর বছ করে থিকে আন্তে আন্তে। চোবে-রুবে তার বিজরের হাসি উপ্চে পদহে। থিকিকার বারালাটা থেকে বাগান দেখা যায়। আকৃটা বাগান্যর কতক্তলো কাককে তাড়া করে হিনসিন থেরে বাজে। কাক্থলো কিছুতে বাগান হেডে যাবে না। কেবল এ-গাহ থেকে ৩-গাতে গিরে বনহে। রণজিং ভল-বর

ধেকে একটা মধে করে জল তরে নিয়ে এলে কাকগুলোকে লক্য করে ছতে দিভে লাগল। তারা পরোরাই করে না। কিছক্ত পরে বিরক্ত হয়ে রণজিং দালানে চলে গেল। মেকের ওপর একটা ছতোর কাটন পড়ে বরেছে। সে হতো বুলে চলল বেপরোয়া ভাবে। কি মলা, কেউ দেবতেই পাছে না কিছু। স্বাই ঘুমোছে চুপুরে। ভারও ঘুমোবার কবা, কিছ ৰাশ্বাৰী ভাকে বৃষ পাড়াতে পাড়াতে নিৰেই বুমিয়ে পড়েছে আগেই। পুতরাং রণজিভের ছুমোবার দরকারটাই বা কি ? সে ইচ্ছে করলে এখন একেবারে খালি পায়ে রাভার বেরিরে. পাশের মাঠটার যে একটা বাড়ী তৈরি হচ্ছে সেধানে ষ্টিউবকলটা থেকে প্রচুর পরিমাণে ত্বল ভূলে কলভলাটা ভিজিয়ে কেলতে পারে। কিছা ওদিককার মাঠটার যে কভকগুলো লোক হেইলোস্সা, হেইলোস্সা বলে গান গাইভে গাইভে মোটা মোটা বৃষ্টি পুঁতছে, দেখানে দাঁভিয়ে দাঁভিয়ে দেখতে পারে কি করে বুঁটগুলো কাদার ভেতরে বসে যাছে এক এক বারে। যতক্ষ খুৰী—কেউ কিছু বলবে মা। কিছু আবার কি **ज्या दर्शकर अकर्ण (श्राम पिरा अक्री वहराद शाला ब्राम** হিৰিবিকি কাটতে লাগল।

ভার পর সে বিকেলে রুটি দিরে চা খেরে বেড়াতে গেছে মাঠে। সেখানে পাড়ার ছেলেদের সন্দে ছুটাছুটি করেছে হরদম। ভারা ভাকে কি বলতে বলতে পিছু পিছু ভাড়া করেছে অনেকক্ষণ। ভাতে ভার ভারি মন্ধা লেগেছে। খামে ক্ষামা ভিন্নিরে হাঁপাতে হাঁপাতে ও ঘধন বাড়ী কিরল ভবন প্রার অন্ধলার হয়ে এসেছে। বাড়ী কিরেই ছুটে গেছে আন্মানীর কাছে। চাই এক গেলাস ক্ষন। শিগ্নীর, শিগ্নীর। ভীবণ পিরাস লেগেছে আন্ধান্ত ভগর বাকে—"রণজিং, আও উপর আতী।"

আকানী কিরেছে এর মধ্যেই। কি মনা। হরত সেই
আনেক দিন থৈকে চাওরা মার্কেল হুটোর কথা ভোলে নি।
বিদ্ধীর চোখের মত ভুললভলে কাচের মার্কেল। আকানী
ভাকে কোলে করে নিয়ে নিশ্চরই একবার ছুড়ে দেবে এ
পাথাটার কাছাকাছি, ভার পর সুকে নেবে। রপনিং ছুটো
করে বাপ লাকিরে লাকিরে ওপরে ছুটে চলে। আকানী।

কিছ এ কি ? আকাজীর মুখ অমন গভীর কেন ? তার বিকে চেরে একট্ও না হেসে জিজেস করে : "দান্তর চপমা কোধার ?" ও হরি, সেই [চশমাটা ! দান্ন কিছুতেই ওটার কথা ভূলতে পারে না ৷ - কি ভরতর হেলেমাত্রয় ! ইাা, সেই ১ চশমাটা ৷ কিছ কোথার বে নিরে গেল, কিছু মনে পড়ছে না তার ৷ সেই কাকগুলো, ত্বতার কাটিমটা সব মনে পড়ছে ৷ কিছ চশমাটা বে কোথার অভকারে ভরে ভরে চক্চক্ করে চোখ রাঙাছে তা কিছুতেই মনে পড়ছে না আকাজী আবার জিজেল করে : "বলু, চশমাটা কোথার রেবেচিস।" রণজিং

চুপ। কেবল ভাৰতে চেষ্টা করে, কোথার রাখলে সেটাকে। "চপৰা ভূই নিৰেছিল ?" রণজিং খাড় নেড়ে জানার, "ইা।"। "তা হলে দে এনে একুনি।" আকানীর ব্যক্তির আদেশ। त्रनिक्षः चारात हुन । त्रारं चार्त्साची यत्-यत् करत कैं। नरह । দাহর বুবের দিকে ভাকিয়ে রণজিং দেবে ভার চোব ছটো ঠিক সেই চলমার মত হরে উঠেছে। চলমা না পরেও ভার চোৰ ছটো যে কি করে ঐ রক্ষ হয়ে যায়, ভা সে ভেবেই পায় মা। ঠোঁট কামড়াতে কামড়াতে সে কেবলই মনে করতে চেষ্টা করে, কোৰায় রেখেছে চশমাটাকে। দাছ আবাদীকে কি বললেন টেচিয়ে। একটা কথার বানে ভানে সেঃ "বোলোমী", উর্দ্ধতে "হ্যমণী"। অভ কথাওলোর একটাও সে বুৰভে পারে না। ভবু দেবে দাছ ভীষণ চটে উঠে আব্বাকীকে কি সব বলছেন। ভারপর হঠাং হাভ **ছড়ে** চিংকার করে উঠদেন. "প্রহার"! কে ভানে আবার ঐ কথাটার মানে কি ? কথাটা শোনার সদে সদে আকাষীর চোৰে যেন বিছাৎ খেলে গেল। লাফিয়ে উঠে রণজিতের গালে পিঠে, মাধার যেখানে পারে মারে চড়। তারপর চলে লা**ই**, नांशीत शत नांशी। जाकांकी हिश्कांत करत बार्ख बार्खः "ভূমর্যা। আভী মর্যা। ভূকেঁসালেডকেকী মুকে কুছজী खूत र नहीं। यह या छू।" हमश्रामा किंत्न विंक स्वत स्वत ।...

মার শেষ হয়, রণজিং মরে না কিছ। ওদের সেই পিউতি সে থেয়েছে প্রচুর ভিঁস কা ছব, আনার, সেব, আঙার। ওপু ঠোটটা কেটে গেছে, আর সর্জাদে তার মারের দাগ। বাক, "প্রহার" কথাটার মানে শিবে নিয়েছে সে। এক দিন পে পিপ স্টাকে এায়সা "প্রহার" লাগাবে। আকাকী এক দিনও তার গারে হাত তোলে নি। আক অমন করে মারলে কেন? বিহানার ওরে কোঁপাতে কোঁপাতে ভেবে সে ক্লকিমারা পায় না। তার আকাকী যে দাছর অভ্যতি না নিয়ে পিউতি বিয়ে করেছিল আলাকীকে, সে যে বাংলা শেবে নি, তার উপর আক তিন মাস হ'ল আকাকীর চাকরি গেছে, আর তারা যে তিন কনে পিপ লু আর বাব্লুদের বাড়ীতে বসে বসে থাছে—এ সবের কোন ব্রুই রাবে না সেন্ডারি পিয়াস লেগেছে তার…

কিছুদিন পরে এক দিন আকাজী আর আলাজী আবার বান্ধ-পেটরা গুছিরে ওকে নিরে চলে গেল। আবার হাওৱা-গাড়ী, রেলগাড়ী, থানিকটা আবার প্রমারে করে বেতে হ'ল। পুতন জারগাটার নাম গুনলে হাসি পার: ভিক্তগড়! চলে বাবার সমরে রণজিং তার বহু দিনের চেপে-রাথা আকাজাটা নিটরে গেছে। পিপ্রু আর বাব্সুর চোথের সামনে দাছর গলা ভভিরে ববে তাঁর গালে একটা চুমু থেরে গেছে। দাছর চোথে সুতন চপ্যা। সেটাও তাকার কটমট করে।…

ভারপর কেঠেছে অনেক দিন। একদিন বিহানার বলে

বলেন গছর কিছুভেই ছপুর কাইছে চার না। ঠানুকে তেকে
বলেন: "আছা, সেই যে আবসত্বগুলো করেছিলে এ বছর,
সেগুলো কি আযার সকে দেবে চিতের ?" সন্তিট, অনন মিট্ট
বোষাই আযের আবসত্বগুলোর কবা কারো মনেও নেই !
সমন্ত বর্বাটা গেছে তার ওপর দিয়ে। নিক্তরই হাতা পড়ে,
পোকা বরে সব নই হরে গেছে। ঠানু ছোটেন তাড়াতাড়ি
আবসত্ব আনতে। প্রকাণ্ড তোলো ইাভিতরা আবসত্ব।
তাড়াতাড়ি যালপত্ত-রাধা বর থেকে ইাভিটা নিয়ে আসেম
দাহর কাছে। সরার ওপর ঢাকা দেওরা কাপড়টা বুলেছিল
কে, কে ভানে ?

সরাধানা সরিরে দেখেন আনসম্বাদ্ধনো ভক্ষো বট্বট করছে, একটুও ছাতা পঢ়ে নি। উপরের ধানার ধানিকটা ছিঁছে দিতে হবে হাছকে। হাছর আর তর সর না। ক'দিন অরে তুলে ভারি ভাল-মক্ষ খেতে ইছে করে ভার। আনসম্বধানা ভূলে নেন নিজের হাতে।

धमा, के व जिरे हमेंशांचीमा !

এক টুকরো আমসন্থ মুখে পুরে পাকলে পাকলে তাকে কামদা করতে চেঠা করেন দায়। চোধছটো ভার চক্চক্ করে। চশমার ফুট চক্চকানির মত মোটেই নয়।

# অনিৰ্বাণ

# শ্ৰীঅমলেন্দু দত্ত

(7)

আহকারে আগুনের মত চোব ছলে উহাদের সমুত্র-পর্জনসম ভেসে আসে প্রতিবাদ-ত্মর— কিন্তু সে তো মিশে যায় নিমেষেতে বুকে বাতাসের চেতনা জাগে না মনে মদোগত বর্ষর প্রভূর !

( )

এইবানে প্রভাতের পাবী এসে গাহিত যে গান ভক্নো বভের চালে পড়িত যে কাঁচা-সোনা-রোদ, চাবীরা আসিত লয়ে বুলীয়নে মুঠো মুঠো বান— লোভীর চক্রায়জালে ভাহাদের আজি গভিরোব 1

(0)

আৰু ভাৱা বহু শিৱে ভাৱে ভাৱে কান্তার কসল বজাক ক্লোক-বাঁপ বীবনের বন্ধুর সভকে মুন্ধুরা খাস কেলে,— বার্থ হ'ল বভ অঞ্জল ! মহামারী চুভিক্ষের হাভ ভরে অক্ষম মড়কে।

(8)

হল্দী কসলভরা হেয়ছের একবানি কেত
খরে বাঁবা হট গর--একবানি তীক্রবার হাল,
কগলের কাগে রবে প্রনিচ্চিত বৌস্মী সংকেত,
মুক্ত হবে অভ্যাচার-শোষণের শত বেড়াভাল---

( 0 )

সুক্ঠিন এ কি বুব ? অভ্যাচারী মাছ্যের দল
ক্ষমতার মধে মাতি আর কত কাটাইবে কাল ?
নুত্রম যুগের স্থা তিলে তিলে হতেতে বিকল,
নেহারি বর্বার-লীলা অইহাসি হাসে মহাকাল।

( )

কল্পনার খাবীনতা আৰু মাকি বাস্তবে আসীন—
ওৱা চার লভিবারে ভাই ভার অক্সমিম খাদ;
নাহি চার ক্ষয় পেভে, হরে বেভে দীন হতে দীন—
অগ্রনিভ কঠে ভাই ভানার যে ভার প্রতিবাদ!

(9)

চোধে অলে ভাহাদের আশাদীপ্ত উকার অনল--বিজয়-বর্তিকা হয়ে চিরদিন র'বে অনির্বাণ,
দাসত্ত্-কছর-পথ সুমস্থ করি' অবিরল
ওরা গেয়ে যাবে সেই জীবনের চিরজয় গাম।

# ব্রদ্দদেশের অধিবাসী

# व्यशालक अञ्चलाद्भावम्य मृत्यालीशाय

ব্ৰহ্ণদেৱৰ নাৰের উৎপত্তি সহতে বৃত্তেদ আছে। কাহারও কাহারও মতে সংস্কৃত ব্ৰহ্ম শব্দ হইতে এই দেশের নাম ব্রহ্ম-দেশ হইরাছে। পঞ্চান্তরে কেন্দু কেন্দু বলেন বে, চৈনিক শব্দ 'নিন' ( Mein ) হইতে এই নাৰের উংপত্তি হইরাছে: ব্রহ্মণে বিরাট ইন্দোচীনের একট অংশ। ইন্দোচীন নামটির নার্যকৃতা অবশ্য দীকার্যা। ইহার অধিবানীরক্ষ সকলেই প্রার্হ্মনালর ( Proto-Malay ) এবং মনোলরেড ( Mongoloid ) ছাতির অন্তর্ভুক্ত হইলেও ইন্থানের সভ্যতা এবং সংস্কৃতি নুলতঃ ভারতীয়।

রম্বদেশের অধিবাসীগণ মনোলরেড জাতীর। ১৯৪১ সালের আহমপ্রারি অস্থারী এই দেশের লোকসংখ্যা হিল ১৬,৮২৩,৭৯৩। চৈনিক, কোরীর, আপ, তিব্বতীর,মালর, পূর্ব্ব-এশিরার বিভিন্ন অকলের অধিবাসী এবং রহ্মদেশীরগণ মানব-আতির একই গোরীর অভর্ত্ত। এই গোরীর যে অংশ রহ্মদেশে বাস করে তাহাকে তিনটি প্রধান শাখার তাগ করা বাইতে পারে— (১) তিব্বত-রহ্ম, (২) মন-ব্যের এবং (৩) তাই-চীন। রহ্ম এবং প্রায়-রহ্ম আতি, চীন কোচিন ভাতি এবং লোলো ভাতি তিব্বত-রহ্ম শাখার তিনটি প্রধান উপশাখা। ইহাদিগের অভর্গত ৩২টি উপভাতি আছে। মন-ব্যের শাখা মন বা তালাইং, ওরা, লা প্রভৃতি ১২টি এবং তাই-চীন শাখা শান, কারেণ, শ্রাম প্রভৃতি ১১টি উপশাখার বিভক্ত।

তিক্ষত-ত্রন্ধ শাধার লোকেরা তিনটি প্রধান দলে উত্তর দিক

হইতে ত্রন্ধদেশে আগবন করে। কিংবদন্তী অনুসারে এই

তিনটি দলের নাম পিরু, কামরান এবং থেটা। থেট লাতির
বংশবরগণই সভবতঃ বর্তমানে চিন নামে পরিচিত। পিরুগণের এবন কোন বতর সন্থা নাই। তাহারা বোব হয়

বন্ধলাতির সহিত মিশিয়া গিয়াছে। কানরান লাতির অবভন
পুরুবই বোব হর আধুনিক আরাকানী লাতি। লাতিতভ্বিং
পভিতগণ মনে করেম বে, তিক্ষত-ব্রন্ধলাতি ব্রন্ধদেশে আসিবার
পথে তিক্ষতের পর্কতে ইরাবতী নদীর উংপত্তি স্থান অতিক্রম
করিরাহিল। এই স্থানেই চিনদের পূর্ক-পুরুব প্রধান
অভিযাত্রীদল হইতে বিবৃক্ত হইরা বার। বন্ধ এবং প্রারবন্ধ লাতি কন্দিন বিকে অপ্রসর হইতে বাকে। লীব পথ
অতিক্রমণকালে এই জাতির হোট হোট বল পির্দ্ধে পভিয়া
বাকে। তাহারই ফলে পরবর্জী কালে ব্রন্ধেশের উত্তর অঞ্চলে
তিক্ষত-বন্ধ গোলীর অন্ধর্গত বিভিন্ন উপলাতির স্কর্ট হইরাছে।

লোলোগণ সম্ভবতঃ বেকং নদীর উপত্যকা-পথে দক্ষিণ

নিকৈ অগ্রসর হইরাহিল। এই জাতির করেকট ভোট ছোট দল ব্রহ্মদেশের পূর্বাপ্রান্তে বর বীবিয়াছে।

মন-খ্যের শাখা সন্তবতঃ মেকং নদী বরিরা দক্ষিণ দিক্ষে অপ্রসর হইতে হইতে ইন্দো-চীন উপত্যকার টু প্রবেশ করিরাহিল। মন-খ্যেরগণই প্রাচীন কাখেডিয়া রাজ্যের প্রতিষ্ঠাতা। ইহাদিগের একট বল মেকং নদীর পশ্চিমে শান অবিত্যকা এবং দক্ষিণ ব্যম্মে হচাইরা পদিরাহিল। মন-খ্যেরগণই ইন্দো-চীনের প্রথম বহিরাগত জাতি। তবে ক্ষমেশে এই দলের প্রধান শাখা মনগণ হরত বক্ষজাতির পর ব্যক্ষদেশে প্রবেশ করিরাহিল।

ভিন্তভ-ত্রত্ম এবং মন-খ্যের ছাভিছরের পর ভাই-চীনগণ ক্রত্মদেশে আগমন করিয়াছিল। ক্রত্মদেশে প্রবেশ করিবার পূর্ব্দে সপ্তম শতাব্দীতে ইহারা চীনদেশের অন্তর্গত ইউনাম প্রদেশে নামচাও নামে একট রাজ্য স্থাপন করিয়াছিল। সেবান হইতে পরে ইহারা দক্ষিণে শ্রাম এবং পশ্চিমে আসাম ও উদ্ভর-ত্রত্মে প্রবেশ করিয়াছিল।

বন্ধকাতি নবম শতাকীতে মধ্য-ব্ৰন্ধের রক্ষ ও অনুর্বার আঞ্চল ( Dry Zone ) বসবাস করিতে আরম্ভ করে। এই ভাতীর রাভাদের সকল রাভ্যানীই-পাগান, ভাভা, ভ্ররাপুরা এবং মালালয়-এই সমন্ত 'রুক অঞ্চলে' অর্ছিত। একমাত্র পেও ইহার ব্যতিক্রম। ব্রহ্মকাতীয় টাসু বংশীয় রাজ্পণ ১৫৩১ হইতে ১৬৩৫ সাল পর্যায় পেগুতে রাজত্ব করিয়া-ছিলেন। রাকা ভালুনের ১৬২১-৪৮ রাক্ত্রকালে আভার রাজ-বানী ভানাভরিত করা হয়। একাদশ শতাকীর মধ্যভাগে এল-রাক অনরভ (১০৪৪-১৭) উত্তর-রন্মের কুত্র কুত্র রাইওলির স্বাধীনতা হরণ করিয়া একট বহুদায়তন বাজ্যের গোডাপভ্রম করেন। তাঁহার রাজ্বানী ছিল পাগান। ইরাবভীর ব-ছীপ অঞ্চ, হক্ষিণ-ব্ৰহ্মের ভাটন কেলা এবং সিভাং উপভ্যকার পূর্বাদ্বিকে অবস্থিত পার্বাভ্য অঞ্চল অনরতের অবিকারভূক্ত হইরাহিল। একাদশ শতাখীর মধ্যভাগে মধ্যত্রন্ধে বিক্রত মহাযান বৌষমত প্রচলিত হিল। রাজা অনরতের উৎসাহ এবং পুঠপোষকভার ইহার পরিবর্তে হীনবান মত প্রচলিত হয়। এই দীনযান বৌহবৰ্ণাই ভাৰবৰি ভাষাদেশের ভাতীয় বৰ্ণা। ১২৮৭ সালে যোলোলীয়গৰ অনৱত-প্ৰতিপ্ৰিত বাৰুবংশের উচ্চেদ-সাৰম कविदा भागान चनिकार करत । अहे नमर उच्चरमन चाराव কভক্তলি ভুৱ ভুৱ বাঠে বিভক্ত হইবা পঢ়িল। ইহারা সকলেই চীন-সরাঠের আহুগত্য খীকার করিত। যোড়শ শতাৰীতে ৰাজা টাবিনসোৱেট (১৫৩১-৫০) এবং ৰাজা

वार-र-बार ( ১৫৫০-৮১ ) नुमताब नम्ब अन्यादमादक अक्षांत्र করেন। মোটার্ট ভাবে বলিতে গেলে অঠানশ শতাবীর প্রথম ভাগ পৰ্বান্ত এই ঐক্য ভাৱী ভইৱাছিল। এই সময় ইরাবতী व-बीश्यद मन-कांछि क्षेत्रन स्हेदा शांदीमण (बादना करत। তাহারা এত শক্তিশালী হইয়া উঠিয়াহিল যে, উত্তর-ত্রন্মের ব্যবেক স্থানও ভাহাদের কর্ম্ম প্রভিত্তিত হয়। মনদিগের এই আবিপত্য কিন্তু দীৰ্ঘকালস্থায়ী হয় নাই। অপ্তাদশ শতাব্দীর মৰাভাবেই শোৱেবোর ব্ৰহ্মৰাতীয় নায়ক আলুপায়া ( ১৭৫২-৫৮) সমগ্ৰ বন্ধকাতিকে সুসংহত করিয়া দেশে একতা ছাপন করেন। তংপ্রতিষ্ঠিত রাজবংশ ১৮৮৫ সাল পর্যন্ত রাকত্ব করিয়াছিল। আলুপ্রায়াবংশীয় রাজগণ এক সময় সমত্র অন্তেশ, মণিপুর এবং প্রায় সম্র আসামের উপর শাসনদ● পরিচালনা করিতেন। ইহার পূর্বে বা পরে কোন মুগেই ব্রশ্বরাধ্রণবের আধিপত্য এতদুর বিস্তারলাভ করে নাই। ১৮৮৫ जारक जानून्यादा-वरनैश (नव ताका विव मिनटक (১৮৭৮-৮৫) जिश्सांजनहार कविशा देश्टवस्त्रंग बद्धारम्भ प्रवेश कटव ।

ব্ৰহ্মনতি আৰু পৰ্ব্যন্ত প্ৰধানতঃ মন্য-ব্ৰহ্মের ক্ৰফ অনুৰ্ব্বর অঞ্চলেই বাস করিতেছে। ১৯৩১ সালের আদমন্থমারি অন্থযায়ী ব্ৰহ্মদেশ ইহাদের সংখ্যা ছিল কিঞ্চিদিক ৮,৫০০,০০০। তথ্যে স্থানাধিক ৪,৫০০,০০০ উত্তর-ব্ৰহ্মের মাগোরে, মান্দালয় এবং সাগাইং বিভাগের অবিবাসী। ইহারা প্রধানতঃ বৌছ-বর্ম্মারলাই হইলেও ইহাদিগের মব্যে কেহু কেহু প্রীপ্রশ্বিও প্রহণ ক্ষিয়াছে। তবে ব্রহ্মশাতীয়দের মধ্যে কেহু কেহু প্রীপ্রশ্বিও প্রহণ ক্ষিয়াছে। তবে ব্রহ্মশাতীয়দের মধ্যে কেহু কেহু প্রীপ্রশ্বিও প্রহণ ক্ষিয়াছে। তবে ব্রহ্মশাতীয়দের মধ্যে কেহু কেহু প্রীপ্রশ্বির বাদেশির বৌছদিগের ভার ব্রহ্মদেশীর বৌছদণও ক্ষাভ্রন্বাদে বিশ্বাসী এবং তাহায়। আলা বা তগবানের অভিত্ব খীকার করে না। ইহাদিগের মধ্যে কোন প্রকার পূকা বা উপাসনা প্রচলিত নাই। প্যাগোচা অববা মন্দিরে ছাপিত বৃদ্ধ এবং অভাত মৃর্ত্তির পূকা ইহারা করে না। ইহারা দেব–যোনির (nat) অভিন্থে আছোবান এবং উপদেবতার তরও ইহাদিগের মধ্যেই পরিমাণেই আছে।

মঙ্গান এবং ছীব-হিংসা বৌদ্ধর্বাস্থসারে নিষিদ্ধ হইলেও ব্রহ্মভাতীয়গণ অনেকেই মঙ্গায়ী এবং প্রায় সকলেই মাংসাদী। একথা ব্রহ্মদেশের সকল অধিবাসী সহছেই প্রযোজ্য। পরী অঞ্চল প্রচ্নর পরিমাণে ভান্তি এবং পচ্ই প্রস্তভ হয়। শহরের অধিবাসীরা সামর্থ্যে কুলাইলে বিদেশের আমদানি মঙ্টই পান করিয়া থাকেন। অর ব্রহ্মদেশের লোকেদের প্রধান থান্ত। ভান্তি (নাপ্রি—সবণের সাহায্যে রক্ষিত গলিত মংস্যা), হুরুট, শৃক্তর এবং ভেড়ার মাংস ইহানিগের প্রিয় থাত। ইহারা গো-মাংসও ভক্ষণ করিয়া থাকে। কিছু পূর্বের গো-মাংস ভক্ষণ শুক্তর অপরাধ বলিয়া গণ্য হুইত। ভাত্রকুট সেবনে ইহানিগের অভ্যাসক্তি আছে। শুক্তমদের সন্থে খুম্পান করা ইহানের সমাক্ষে দোবাবহু মহে। পার্কভ্য অঞ্চল ম্যালেরিয়ার প্রভিব্যক্ত হিসাবে অহিক্ষেদ

সেবন প্রচলিত থাকিলেও ত্রন্থলাতীরগণ ইহার বোরতর বিরোধী।

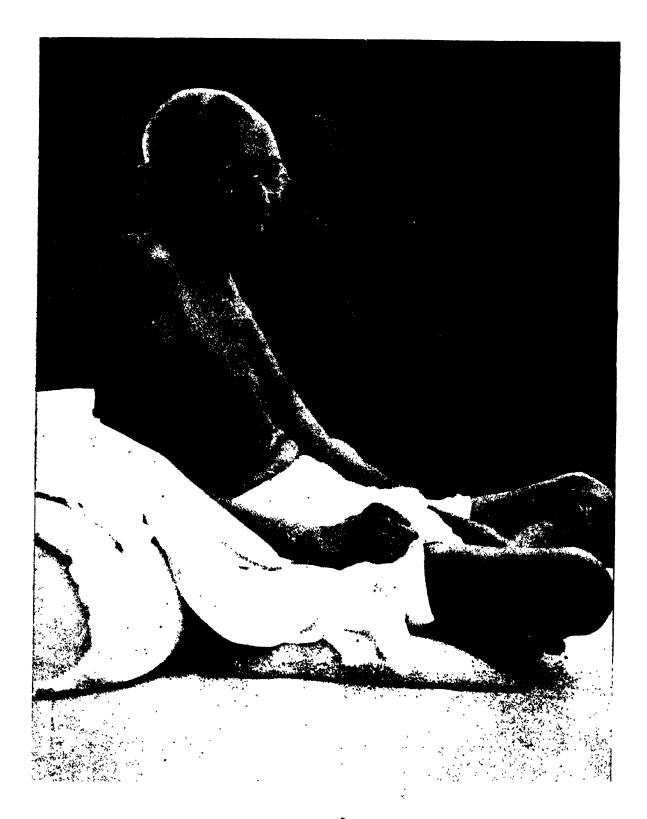
মী-পুরুষ নির্কিশেষে এমভাতি এবং এমধেশের মতাত অবিবাসীরা বর্ষের বহিরকের প্রতি অভিশব মনোবোদী। रेमामीर रेरालिय नवाटक कृति वा व्योच नवानी-नच्छमाद्वय সমাদর বহুলাংশে ছাস পাইয়াছে। ইহার ছইট প্রধান কারণ বিভয়ান। প্রথমত: কুদিদের মধ্যে অনেকেই উচ্ছুপ্ল। অনেক অযোগ্য এবং অনবিকারী ব্যক্তিও এখন মন্তক মূওন ক্রিহা প্রভবাস বারণপূর্বক কুদি সাজিয়া থাকে। কোন কোন 'চাউল' বা সন্ধারামত হুত্বতকারিগণের রীভিমত আশ্রয়-ত্বল হইরা উঠিরাছে। অনেক কুলি আবার রাজনীতিতেও সক্রিয় অংশ এবণ করিতে আরম্ভ করিয়াহেন। এই ছাতীয় 'রাখনৈতিক সন্ন্যাসী'দিগকে অবস্ত রেকুন, মান্দালয় প্রভৃতি वक वक नहरतरे (मर्थ) यात्र। कृतिविरंगत नमापत द्वारमत দিতীয় কারণ যুগবর্শাভুষায়ী প্রগতিশীল ভাববারার প্রসার। কুলিদিপের মধ্যে অনেকেই শীতবাস ধারণে অন্ধিকারী হইলেও ইহাদের মধ্যে ধর্মপরারণ, আধ্যাত্মিক জগতে উন্নত এবং প্রছাভাত্তন ব্যক্তিও আছেন।

ব্ৰহ্মকাতি এবং ব্ৰহ্মের অধিবাসী অভাভ কাতিসমূহের মধ্যে কাতিতেদ এবং অবরোধ-প্রশা একেবারেই অঞাত। প্রাচীনমূপে প্যাপোডার রক্ষণাবেক্ষণ-কার্য্যে নিমূক্ত ক্রীত-দাসদিগকে অপাংক্তের বলিয়া গণ্য করা হইত। মংস্যক্রীবী-দিগকে এখনও প্রাণীহত্যাকারী বলিয়া লোকে অবজ্ঞার দৃষ্টিতে দেখিয়া পাকে।

ব্ৰহ্মণতি হতাবতঃ আনোদপ্ৰিয়, উদায়ন্ত্ৰয় এবং ভাব-প্ৰবণ। আপাতদৃষ্টিতে ইহাদিগকে অলস বলিয়া মনে হই-লেও প্ৰয়োজন উপস্থিত হইলে ইহায়া অপরিসীম পরিপ্রম করিতে পারে। যাছবিভার ইহাদের অগান বিখাস। ইহারা বিখাস করে যে, যাছর সাহায্যে মাহ্ম সর্কপ্রকার অস্ত্রের অভেভ হইয়া উঠিতে পারে। পূর্কে ইহাদের পুরুষগণ ইাটু হইতে কোমর পর্যান্ত উদ্কিচিত্রিত করিত। এই প্রধা অধুনা পরিত্যক্ত হইয়াছে।

সৃষ্টি (সৃদি) এবং এঞ্জি (ভাষা) ইহাদিসের ভাতীর পরিছদ। মী এবং পুরুষের সৃদ্ধি পরিধান করিবার ভদী এক প্রকার নহে। মেরেদের এঞ্জি পুরুষের এঞ্জি আপেছা ভাবিক জাঁটসাট। গাঁওগাঁও (ভানেকটা পাগছির মত) পুরুষদিসের ভাতীর শিররাণ। ভাজকাল কেহ কেহ কোট, প্যান্ট ইত্যাদিও পরিয়া গাকে। সৃদ্ধি, এঞ্জি এবং গাঁওগাঁও প্রত্থা এবং রেশনী ছই প্রকারেরই হয়। রাজ্ঞভাতীর পুরুষেরাও পূর্ব্বে লখা চূল রাখিত। এই প্রথা এখন প্রার লোপ পাইরাহে।

ব্ৰহ্মদেশীর গৃহ সাধারণতঃ বীশ বা কাঠের মাচার উপর নিশ্বিত হয়। বভা এবং বভক্তর আক্রমণ হইতে নিয়াপদ



মহাত্মা গাখী



হারধরাবাদ টেট কংগ্রেসের সভাপতি হামী রামানক তীর্ণ (বামে) ও গুড়াড় কর্মকর্ত্তাসহ পণ্ডিত ক্রাহরলাল নেহুক্



ক্যাওনের বাকার ২ইতে প্রভাবিওনের পথে ছইট গল্পত হাস্যমন্ত্রী চীনা তরুণী

প্রাধিবার করু পূর্বল বৃত্তিকা ক্ষতে অবেকটা উচ্চে রাধা হয়।
বর্ষের সীক্রেকার কাকা ভারগাই জালার বা নোরালবর মূলে
ব্যবহার করা হয়। পুরুষ আস্বাবশ্যের বাহুল্য নাই।

আনিজ্বিশীপৰ অভ্যতিৰ বৰিঠ জাতি হইলেও ইয়াবতী উপত্যভাৱ ভাষা এবং আৱাক'নের ভাষার বব্যে কিছু পাৰ্বভা আছে। আধুনিক বারাকানীকের ব্যনীতে বালালী বভের প্রচুর বিপ্রশ হইরাছে। ইহারা বৌদ বর্দ্ধাবলধী। ১৯০১ সালে ইহালিগের সংখ্যা ছিল ২০৮,২৫১। আরাকানের পর্কতিপ্রেই চিন, বো, টোংখা, কারি প্রভৃতি উপলাতির আবাসহল। ইহালিগের অবিকাংশই তিক্ষত-ভুজ্পোতীর আবত্তি। টেডর এবং মাগুইরের অবিবাসিরক মূলতঃ প্রথমাতীর হইলেও ইহালিগের রক্তের সহিত কিছু পরিমাণ ভামদেশীর রক্তের সংমিপ্রণ ঘটনাছে। টেনাসেরিবের ক্তিপে গ্রন্থসংখ্যক মালর এবং ভাহাদের জাতি সালোন অবাং সামুক্তিক বেদে বাদ করে।

নন বা তালাগংগণ রন্ধদেশে ভাগমনকারী মন-খ্যের ভাতির প্রবাদ শাবা। ইহারা প্রথমতঃ ইরাবতীর ব-ছাপ অঞ্চলে এবং নিয়-প্রজ্ঞের ভাটন ও আমহার্ক্ত কোর উপনিবেশ ছাপন করিবাছিল। প্রজ্ঞলাতির আক্রমণের বিপ্লছে শতান্ধীর পর শতান্ধী আন্তর্মাণ করিবা অবশেবে অপ্রাদশ শতান্ধীর পর শতান্ধী আন্তর্মাণ করিবা অবশেবে অপ্রাদশ শতান্ধীর ভাবে পরান্ধিত হছা। ১৮২৪-২৫ সালে টেনাসেরিম ইংরেকের অবিকারত্ত হটবার পর মনজাতীর বহু লোক ইংরেক অবিকারে আশ্রম প্রহণ করে। ফলে ইরাবতীর ব-ছীপ অঞ্চল প্রান্ধ জনশৃত হইরা পাছরাছিল। মনগণ বৌহনবার্ধিনালী। রেজ্নের বিধ্যাত শোরেচাগন প্যাগোড়া ইল্ডিগেরই ক্রান্তি। ইহারা বর্তমানে প্রান্ধ সম্পূর্তাবে ব্রহ্মভাতির সহিত মিলিরা গিরাছে এবং ইহাছিগের কোন ক্রম সভা নাই বলিলেও চলে।

ইরাবতী এবং সিভাং উপভাকার পূর্বে, উত্তর-রন্ধের জাবা কোর কিলে এবং কারের রাইসবৃহের উত্তরে শান অবিভাগ অবহিত। শানজাতি প্রবানতঃ এই অঞ্চলে বাস করিলেও ইহারা বিজ্ঞিলেরে সমর উত্তর-প্রব্দে এবং কিছু অবিক সংখ্যার দক্ষিণ-প্রবেশ্বর নৌনাসেরির বিভাবে হছাইরা আহে। শানজাতি প্রবেশেশ শভাকীতে প্রস্কলেশে আগমন করে। ইহারা ভাই-আভিরই একট শাবা। সেইকট ইহারা ভাই বিলয় কিলেনের পরিচর কিলা বাকে। প্রস্কলেশে আগমনের পর ইহারা ভালজ্বে সমর্প্র উত্তর-প্রস্কা এবং আসাবে হছাইয়া পরে। ইহারাই ১২২০ সালে আসাবে অহোর রাজ্য হাপন করিয়ালিল। ইহারাই ১২২০ সালে আসাবে অহোর রাজ্য হাপন করিয়ালিল। ইহারাই প্রথম বিবেশেও বিলেশের অবিভাবে আমর্থন করে। প্রস্কলাতি প্রবং, শানবাভি উত্তরেই প্রধানতঃ করিবীর, পরীবালী এবং বৌহর্ণবিল্লী। শান পুরুষ্ধের প্রোভ্রাবিল্লী, পরি (ভাষা).

নাওঁবাওঁ (পাগতী) এবং বালের টুপি। শান বেরেরা:
ব্যান্তরা ব্যান্তর চার স্থি (স্থি) এবং এফি পরিবাদ
করিরা বাকে। শানগন সাবারণতঃ অভিধিবংসল এবং
সহাপর। ইহারা নিশুন শিকারী। কুরাবেলার ইহারের প্রবলআনক্তি আছে। ক্রাবেশের বিভিন্ন আতি সহত্যে অভিজ্ঞ
ব্যক্তিগন বলের বে, "ব্রহ্মকৃতিসন্দার" ("most pleasant
of the races of Burma to deal with")। ১৯৩১
সালে আচ্চর্মারী অন্থ্যারী ব্যাহেশের শান অবিবাসীর সংখ্যা
বিল ২০০,২০৪।" শান অবিভ্যকার শান বাতীত সাভাউং,
পালাউং, ওরা, টাউংবা প্রকৃতি বিভিন্ন আতি বাস করে।
শান অবিভ্যকার উত্তর-প্রবাংশে কোকং অঞ্চল প্রার সম্পূর্ণভাবে চীনাদের বারা অধ্যান্তি।

कारवननन जार-जीम नाबाद चन्नकृतः। देशका (ना अवर नान এই इन्हें दावान नावात विकल्प। (भा कारतननन व्यवामणः क्रियात्मद्भिष्य व्यविवागी। हेशाचा व्यक्ताराच्या मन ভাতির সহিত বিশিষা গিয়'ছে। সাগ কাষেণ্যৰ প্ৰধানতঃ कारवर्षे बाह्रेमबृद्ध अवर देवावछोद व-बीम सकत्म यांत्र कृद्ध । कारवनी बाडेनप्रस् रव नमस कारवन वान करव छाशांविनरक नान कारबन्ध यन। एव। कारबन्धां 24(1(44 विटमबकादव केरब्रवरवाना जरबाालव जन्मनात । देश्टबक माजन-कारन बरवा घरवा कारतब-जन्म विरदारवत कवा रमाना बाहेक। ত্রন্ধান বাবীনতা লাভ ক্রিবার পর কারেণদিলের আছু-নিরম্বণবিকার এবং স্বাধীন কারেণ-রাই স্থাপনের আন্মোলন व्यवन रहेवा छेप्रेवाट्य। अहे कारवन-नव्या बन्धावरणव স্কাণেকা ভরতর আভাছরীণ সংভাসরুহের অভতঃ **नर्स्न ज्यामे कारदेवन व स्थानक: स**र्काणानक। सम्बन्धनोतीः कारतगरमब मरवा व्यविकारमहे त्योदवर्षायम्बी इहेरमक हेना-पिर्वत घरवा किह बेडोमध प्रतिद्वारत। भाग पविकालांत बाद ক:বেনী এবং ভাহার পার্ববর্ত্তী অঞ্চল বিভিন্ন কাভিন্ত याज ह्या । देशाया शाय जकरमदे मन-र्याय शायेत अवकृष्ट । এই সম্ভ আভিন্ন মধ্যে বাণিমুক আভিন্ন কৰা বিশেষ উল্লেখ-वाता। धरे काकित बौ-पुक्क मक्टनरे विवादकत वातकत: विद्यानी। स्था देशांचद मरना कमनाहे हाम नादेखाए। ক্ষেক বংগর পূর্বে বাণিয়ক কাভিয় হয়ট মাত্র পরিবারের: অভিৰ হিল। আৰু হয়ত ভাৰাও নাই।

'কাচিন' (চীনা ইয়েজিস হইতে) ক্ৰাটন প্ৰকৃত আৰ্থ আনগাচানী মানৰ। প্ৰআৰাতি কৃষ্টক এই নাম প্ৰকৃত হইবাছে। পূৰ্বে কাচিনগৰ 'জিংপ' বা ননখানক এই নামে অভিহিত হইত। 'বিংপ' ক্ৰাট বৃষ্ঠঃ তিবাতীয়। এই নাম হইতে, পনিকাৰ বুৱা বাম যে, কাচিন আতি প্ৰকৃষ্ঠ ননমাংসং অক্ষণ কৰিত। আতীন কিংব্ৰতী অনুনাৰে ভাচিন্পৰ প্ৰাভ ১২০০ বংসর পূর্ব্ধে মধ্য-ভিন্মতের মালভূমি হটতে 'ন-মাই' এবং মালি উপত্যকার পথে বিরভূমিতে অবভরণ করিরা অগ্রসর হইরাছিল। শাল অবিত্যকার কেংটুং রাজ্যে কিছু কাচিন থাকিলেও ভামো, মিচিনা ও কাথা জেলার এবং শাল অবিত্যকার উত্তরাংশেই ইহালিগকে অবিক সংখ্যার দেখা যার। অল্লসংখ্যক কাচিন প্রীইবর্দ্ধ গ্রহণ করিলেও ইহালিগের মধ্যে প্রেভোপাসকের সংখ্যাই বেশী। কাচিনগণ উৎকৃষ্ট যোছা। বিতীয় বিশ্বর্থের সমর ইহারা যথেষ্ট সাহসিকভার পরিচর দিরাছে।

কাচিদ বা 'জিংপ' ভাষা ভ্রাণীর ভাষা-গোজীর অন্তর্গত। পূর্ব্বে ইহাদিগের কোন লেখ্য ভাষা ছিল না। বিগত ৫০ বংসরের মধ্যে সরকারী কর্মচারী এবং এইবর্মপ্রচারক-গণের চেষ্টায় এই অভাব দূর হইয়াছে।

সামত বা মাতকারদের সহায়তার কাচিন-অধ্যুষিত
অঞ্চলর শাসনকার্ব্য নির্কাহিত হইরা থাকে।

ব্রহ্মদেশের উত্তর-পূর্ব্ধ অঞ্চলে হকং উপত্যকার চতুলার্থে এবং চিন্দুইন নদীর পশ্চিমতীরে নাগাদের বাস। ইহারা চিন এবং কাচিন আতির আতি। ব্রহ্মদেশের এই নাগাআধ্যুষিত অঞ্চল দূরবিগম্য। ইহার অবিকাংশই ১৯৪০ সালে
ইংরেছ শাসনাবীনে আসিরাহিল। নাগালাতির কোন কোন
শাখার মধ্যে এখনও নরমুখ-সংগ্রহ (Head-hunting) প্রখা
প্রচলিত আছে। নাগা-অধ্যুষিত অঞ্চলে বে বার উংগর হর,
প্রায়োজনের ভূলনার ভাহা সামার। ধান ব্যতীত কিছু ভূটা
এবং সজীও এই অঞ্চলে উংগর হয়। গৃহপালিত পশ্চ-পশীর
সংখ্যা অভ্যন্ত ক্ষ। গরু এবং মহিব ত প্রার দেখাই বার না।

বত্ত-পশু এবং শক্ষরা সহসা আক্রমণ করিরা বাহাতে সহতে কোন কতি করিতে না পারে সেইবস্ত নাগারা উচ্ছানে গৃহনির্দ্ধাণ করিরা থাকে। ইহানের প্রামন্তনি পাহাকের চুড়ার অবহিত। অনেক দূর হইতে ইহাদিগকে প্ররোজনীর জল সংগ্রহ করিতে হয়। প্রত্যেক নাগা প্রামেই অবিবাহিত তক্ষণ-তক্ষণীদের বিলনের জন্ত একট ঘর থাকে। অবৈধ বিলনের জনে কোন তক্ষণী অন্তর্মণী হইলে যে তক্ষণ ইহার জন্ত হারী, সে ঐ তক্ষণীকে বিবাহ করিতে বাব্য হয়। প্রামের মাতকরেরা বাহাতে একর সমবেত হইরা পরস্পরের সহিত পরাম্পাদি করিতে পারে সেজত প্রত্যেক প্রামেই একট ঘর আছে। কোন বহিরাগতের পক্ষে ক্ষার-কুমারীদের বিলনাগারে অথবা বরোর্ছদের 'সভাগৃহত্ব' প্রবেশ করা ভক্তর অপরাধ বলির। বিব্রুচিত হয়।

নাগাছা থেতোপাসক। বলি ইহাদিগের ধর্মান্ত্র্যানের একট প্রধান অক। কবি-বছুর ছচনার ও ভাত্র-ছাবিন মাসে ধর্বন কসল পাকিতে ভারত করে তর্বন, এবং শশুক্তনকালে পশু ও কোন কোন কেলে দরবলি কেলো ক্ইরা থাকে। ইহা ব্যতীত অভাভ সময়েও ব্যাধির আক্রমণ হইতে অব্যাহতি পাইবার আশার পত এবং বরবলি দেওরা হয় । বলির সমর জোন বহিরাগত দর্শকের উপছিতি অবাহনীর । বধন কোন নাগাগ্রামে পত বা নরবলি অহুটিত হয়, তধন প্রামের প্রবেশ-হারে একট হক্ষ-শাধা পূঁতিয়া রাধা হয় । এই হক্ষ-শাধা দেখিলে বৃথিতে হইবে যে, প্রামে পত বা নরবলি হইতেছে । বহুক এবং বিষমাধানো তীর নাগাধিগের প্রধান অয় । শক্রম আগমনপথে বিঘ উৎপাদন করিবার কল নাগারা হ-হ প্রামের চারিদিকে 'পঞ্জি' ভ্রোধিত করিয়া রাবে । এই 'পঞ্জি' আগুনে পাকানো হক্ষাপ্র বংশকও । ইহা এত বারালো বে, ইহাতে বৃটের তলা পর্যন্ত কুটা হইয়া বায় । পঞ্জিওলিতে অমেক ক্রেমই বিম মাধানো থাকে । আক্রমণকারী শক্রকে বামা দিবার কল প্রামে প্রবেশ করিবার সমীর্গ পথগুলির উভয় পার্শে বিভিন্ন ছানে রক্ষিত প্রভর্বওসমূহ ভাহার উপর ব্যবত হয় ।

বিভিন্ন নাগাঞানের মধ্যে বিরোধ এবং সংঘর্ব লাগিরাই আছে। গোলাক-পরিচ্ছদে কোন কোন নাগা শানদের অন্থকরণ করিলেও ইহারা অধিকাংশই ক্ষলসর্বব।

চিন্দাতি বহু শাখার বিভক্ত। ইচ্ছিম অঞ্চলর অধিবাসী ইহাদের অঞ্চলর থাড়ো শাখা আগামে কুকি নাবে পরিচিত। ব্রহ্মদেশ অপেন্য আগামেই ইহাদিগকে অধিক সংখ্যার দেখা যার। চিনগণের সিইন শাখা অভাত শাখার তুলনার প্রগতিন্দ্রন। চিনদিগের মধ্যে অনেকগুলি ভাষা প্রচলিত আহে। এক প্রামে প্রচলিত ভাষা অনেক সমর অল্প করেক মাইল দ্রবর্তী প্রাবের লোকের নিকট ছ্র্মোগ্য। চিন ভাতির বিভিন্ন শাখা খন্য প্রথমকর্ত্ত্বক সরকারী ভত্তাবধানে শাসিত হয়। ইহাদিগের প্রামণ্ডলি বেশ বড়। ভোন কোন চিন্দ্রামে পাঁচ শতেরও কাছাকাছি গুরুহু বাস করে।

বন্ধদেশের অভতম অবিবাসী চিনবকগণ চিনবিগের জাতি।
ইহারা নেডু, যেন, নের্ন এবং রা এই চারিট শাবার বিভক্ত।
চিনবক স্বর্ধীগণ উদ্ধি বারা মুব্যওল চিত্রিত করে। ইহাবিগের আমগুলি স্থারতন। কোন আমেই ১৫।২০ সরের
বেশী গৃহস্থ বাস করে না।

ওরা ছাতি প্রধানতঃ শান ছবিত্যকা এবং ইউনানের মধ্যবর্তী ব্রন্ধ-সীমান্তে বাস করে। এই অঞ্চল ওরারাজ্য নাবে
পরিচিত। শাল্ইন নদী এবং মংলুন নামক শানরাজ্য পর্বতবহুল ওরারাজ্যের পশ্চিম সীমা নির্বেশ করিতেছে। মন-ব্যের
গোটার অন্তর্ভুক্ত ওরাগন ব্রন্ধনেশের সর্ব্ধাপেকা অনপ্রসমছাতি। ইহাদিনের চাবের সবর অন্তর্ভিত ভূমির উংপাদিকা
শক্তিবর্কক বর্ত্বাস্থ্রীবের একটি অপরিহার্ত্য 'অন্ধ' হইতেহে
পরস্থুত্যংগ্রহণ বিভিন্ন ওরা প্রামের বাদ্বিস্থান নিত্যনৈনিভিক্
ঘটনা। ওরাগন ক্তাব্তঃই সন্ধিপ্রপ্রতি ব্লিয়া অপরিচিত

ব্যক্তির প্রতি বিশ্বপ মনোভাব পোষণ করে। ওরা রাজ্যের কোন কোন অবলৈ প্রতি পাঁচ দিন পর নালার বলে। ইহারা নিজ নিজ প্রানাল্যর কাবার বলে। ইহারা নিজ নিজ প্রানাল্যের কাবার বুলি সালাইরা রাবে। ওরারাজ্যের ক্ষরিবাসী লোইলাগণও সভবতঃ মন-বেলুর পোন্ধী হইতেই উদ্ভা ইহালিগের মধ্যে কেহ কেহ বৌহবর্দ্ধ প্রহণ করিলেও অবিকাশেই এবনও প্রেভোপাসক। পূর্ব্বে ইহালিগের মধ্যেও নরবলি-প্রথা প্রচলিভ ছিল। বর্ত্তমানে এই প্রবা লোপ পাইরাছে, নরবলির পরিবর্ধে ইহারা এবন পশুবলি দিয়া বাকে। ওরাদিগের মধ্যেও কেহ কেহ মরম্ভ সংপ্রহ কার্যা পরিভাগে ক্ষরিবাছে। ১৯০৫ সালে জাভিস্ক প্রেরিভ ইসেলিন ক্ষিণ্ণন কর্ত্বক চীন-ক্রক্ষ সীমান্থ নির্দিষ্ট হওয়ার পর ওয়ারাক্য ক্রক্ষণেশের অভত্তিক হয়।

ব্ৰহ্মদেশের অপরাপর অধিবাসীর মধ্যে জেরবাদী, আরা-কানী মুসলবান, আরাকানী কাষান এবং মারেডুগণের ক্ষাও উল্লেখবোগ্য। ভারতীয় মুসলবাদদিপের ব্রহ্ণবেশীরা পাছীর গর্ভদাত সভান-সভতি ক্ষেরবাদীগণ প্রার্থন সক্তেই মুসলবাদ ধর্মাবলধী। আরাকানী মুসলবাদগণ প্রধানতঃ আকিরাব ক্ষেলার অবিবাসী। ইহারা চইপ্রায়ের মুসলবাদ-দিপের আরাকানী পদ্দীর গর্ভদাত সভান। ইহারা সাবারণতঃ 'ইরাথাইং কালা' (ইরাথাইং — আরাকান, কালা — ভারত-বাসী। ইংরেক অবিকারের পূর্বের সমস্ত বিকেশীরই 'কালা' আব্যার অভিহিত হইত, ) নাবে পরিচিত। কামানগণ বলে যে, তাছারা শাহ-মুকার অভ্চরবর্গের বংশবর। মারেভূগণ উত্তর-ব্রক্ষের শোহেরের ক্ষেলার অভর্গত বারেভূতে বাস করে। ইহারিপের ভারতীয় পূর্বেপুরুষণণ বিভিন্ন সমরে ব্রক্ষরাজ্ঞগণ কর্ত্ক বলী হইরা ব্রন্ধবেশে আনীত হইরাছিল। কামান এবং মারেভূগণ সকলেই মুসলমান। আরাকানের অবিবাসী মগগণ আরাকানী-শিতা এবং বৃদ্ধেশীর (চইাগ্রাম ক্ষেলার) মাতার সভান। ইহারা সকলেই বৌহ্বর্শ্ববিল্পী।

#### বসস্থের বিদায়

#### **बिकालिमान** त्राय

चांबि वनच चांनिनांब चांद्रत, कहे तनहे छे९नांह १ কোৰা পুল্পিত ভাষার সভাষণ ? বংসর পরে অভিধি এসাম, উদাস চোধে যে চাহ ! अरोद करे छ मिला ना चलिएन। **७**ष् 'अत्र' विन कामारल चात्रक, त्रना ट्रक्न काद-काद ? কই ও কঠে কাকিসিমুর গান ? প্ৰিয়া কি ভোমার মানে বসিয়াছে ক্লছ করিয়া ছার গ অথবা ভোষারি হইরাছে অভিযান ? অধবা ভূষি কি প্রিয়ার বিরহে যাপিছ কাওন মাস 🤊 চোবের দীপ্তি পাইরার্টি কেন কর 🤊 প্রের্গীর কর্ণা ভূলিয়া ভোমার করিবারে পরিহাস, আব্দি বে আমার জাগিছে কুঠাডর। আমার পাধার বায়ু কেন উঠে তাতিয়া তোমার কাছে ? হুঁৱে তোৰার বৃক্ত কেন পিক ভক্ত ? কেন খলি খার প্রকাপতি তার পাবা গুটাইরা খাতে ? কিংখক কেন বাহির করে না বুধ ? তৰ অহের বীণা আজি কেন অহতনে আছে পতি গ नीया नारे माना, गृत्य बारे (कान नाय !

শব্দ ভোমার পঞ্চশহনে যাইভেছে গড়াগড়ি ? লেখনী হয়েছে কৰ্ণভূষণ আৰু। চিনিতে ভোষারে নারিভাষ, দেহে ফিরিয়া গিয়াছে ভোল কুঞ্চ চিনি, ভাই ভোঁমা চিনিলাম, कृषात वर्ग नित्त कृष्ण, हर्ष स्टब्स् लाग, একি ছেরি কবি-জীবনের পরিণাম ? উৎসৰ ছাড়া আমাত্ৰ বন্ধু কিছু নাই আত্ৰ আমা, নাই এবে তব উৎসবোচিত মন, নিরানন্দের মন্দিরে যোর প্রবেশ করিতে মানা. जरमक कुरक्ष बरवरक निमञ्जन । क्षणि वरमद मकरमद चारम (र्या भारे चारांचन, হুই যে রঙীন রাগে অনুরাগে কাগে. এবার আসর ভবিবে না হেখা, নাই কোন আরোভন, বিভণ সবি. এ অতিপির ছাল লাগে ? উভৱে ভূৰি হক্ষিণ ৰও, হাসিতেহ ব্লান হাসি ! ভালবাসি ভোষা ভাই হয় বড় ভয়, विशास वच्च. विशास वच्च. এবাবের মত चानि, কিরিয়া আসিলে যেন পুন দেখা হয়!

#### সঙ্কম্প ও সিদ্ধি

#### ঞ্জীবিজয়কৈতৃ বস্

चर्ष्यक देशराय विष्ठ तिश जिल्ल वेजाश विवादिय (व, '**অর্জ্**বের পঞ্চে "কর্মবোগে"র পণ অবুসরণ করা উচিত। ইহাতে অবাং কৰ্বযোগের পৰে বে বুভি প্রযুক্ত হয় ভাছা বাৰসায়াদ্বিকা। বাৰসায়াদ্বিকা বৃদ্ধি মাণুষকে এক স্থানিতিই भर्ष भविष्ठामिछ कर्त्व । अवावनात्रीत्मत व्'व वर्षमांवाविष्टे ७ जनकमश्याक । यावनावाशिका वृद्धित छेर्गत सहेटन ज्यार कार्याकार्याव विनादक मान्त्रिक वृत्ति अक रहेरल कर्वरा मध्य काम विश बाक मा। चवावमाश्री वृश्विविधि लाटकता कानश निष्ठि विषय कुछम्बत स्टेट चक्य। काशास्त्र वस विवय स्टेट्ड विषयास्त्र स्रोमामान । वांकानीत बाह्यस भीवत्य हुर्यनात अष्ठण्य कात्रण छारात अरे अवायमात्री-च्लक बह्मावाविनिक्षे वृद्धि। वाहानी छाहात बाहेनीवरम যৰণই বাৰসাৱাত্মিকা বুতির পরিচর দিরাছে ভবনই লে ভাহার উভেডসিভির পরে অএসর হইয়াছে। বলভগ-অ'বোলন এবং বদ-ভারত সংবোপ-রকার चार्भामन-इरेडिरे छारात अनुहै देशास्त्र । अवस्थान चार्ञानमध्य ध्यक्षम भाक्ष्माय भवर (क्य वाढांनी वादीय भीवत्य इर्थमात्रध रहेल क्षुरुलाव 'नक्षे छात्राव रह् ३ वित्यव चक्रमकान्द्रात्रा । (मह्याक चाह्यामहानद्य भाष्ट्रमाद क्यस्य'न মিলাইতে মা মিলাইডেই অনিশ্চিত ভবিস্তং আবার বাঙালীর চিতে উবেদের স্ক্রী করিতেছে। এই উভয় ঘটনাই একলাতীয় ভারণ ২ইতে সঞ্চাত। যতক্ষণ বাঙাগীর সমূধে একটা প্রনিভিট্ট मका दिन-- छार। वश्यक्ति श्री छवानर दिन व व व । छात्र छ-বাট্টের অন্তর্গত সভল্ল বদ গঠনের দাবিই হোক ভভক্ত বাঙালীর বাইৰীবনও উরতির পবে আগাইরা চালয়াছে। ययभरे वाढाजीय मत्या मिषिडे मत्कात चलाव त्यवा विवाद छर्यस् वृष्टिकार्यय करन चानछ, चरनाव ७ चष्टःकनर् ভাৰাৰ ৰাভীৰ ৰীবনে এমাদ বানিয়াছে।

বাভিগত শীবনেও দেবা বাহ, একটা নিভিট লক্য বাভিলে চেটার চূচতা আপনিই আলে, যেনন—পরীক্ষার অবাবহিত পূর্ব্বে ছাএদের পরীক্ষার উতীর্ণ হওয়ার লক্ষ্য তাহাদের অক্লান্ত পাঠাভ্যাদে অনেক্রানি লাহায় করে। নাছবের শীবনের লক্ষ্য, ভারতের বর্ত্বান্ত্পাসিত স্বাক্ষ্যবিভার বর্ণনান্ত্সারে চার শ্রেইতে বিভক্ত ঘণা—বর্ত্ব অর্থ কার ও বাক্ষ। এই চারটির নানই পুরুষার্থ এবং এক্ষের তাহারা চতুর্ব্বের্গ নাবে অভিহিত। পুরুষার্থ নানে পুরুষ বাহা পাইবার ক্ষত চেটা করে। এ ক্ষেত্রে পুরুষ ব্লিতে চী-পুরুষ হুই-ই বুরাইতেহে। মোক্ষাক্ষ বলা হয় আতাত্তিক

नुक्यार्थ खरीर याहा भाहेरात भव नुक्रायत कांवा खांव कि पारक ना अवर छाहात अर्थावय १:रवत व्यवमान स्था। (स'क्षित महिल द्वाद्वित क्षण्यक मन्नक क्ष, (क्थमा बाह्रे केरिक कामना-वामनायुक लाकावत महेबारे प्रक्रिक अवर সংগার) লোকের সংধনীয় বিষয় ভিবগ অধাৎ বর্ষ-অর্থ-काम बहे जिनके नृक्ष्यार्थ। ब शतम वर्ष कथाके हैंग्टबकी Religion-এর প্রতিশব্দ হয়। ভারতীয় সধাকবিভার বর্ণের थानक बाक्रविद रेक्षमं क्रम जारजादिक चाठदेव। (व चाठदेव मान्यम बनगड सङ्ख्य । जामानिक संভित्तानम मर्गा সামগ্রন্থ বৰার রাবিতে সক্ষম এবং পরিণাবে মোক্ষরাকের সহারক ভাহাই ভাহার পঞ্চে ধর্ম। যে আচরণ প্রকৃতি বা जवाब ब इरवद (व-कान बक्डिद श्विश्वी छाश्र व्यव । ৰাভ্য জ্বাবৰি ভূংশিপাদাদি ক্তক্প'ল সংকাত প্ৰবৃতির ভাড়না অভুতৰ করে: এইওলি যে পর্য্য না আরতে আগে एएक मानुरावत भएक का विवास महनामित्वम कडा ६०ए एस । य वस माश्रवद धरे लायिक लादाक्त विहेरिक अक्त जाहात्रहे नाम 'खर्च। यानुराय मन (क्वन कार्याचन विकेशनहे नाच एव ना. श्रदाबनाणितिक विषयि चांत्रम प्रवादना मामृद्यत बकादवत अक्षे देविनहा । अहे श्राद्यासमाणि तक বিষয়ের প্রতি বে আদক্তি তাহার নাম 'কাম'। কামশাস্ত্র-কারগণ কাষের যে সংজ্ঞা নির্দেশ ক'রয়া দেন ভাচা অপেন্দা-ক্লত সঙীৰ্ব। সহকাত প্ৰবৃত্তিসভাত বিবিধ প্ৰয়োকনের মৰো বৌন প্ৰৱোধন এক বিশিষ্ট ছান অধিকায় করিয়া चारह । अहे बारहाबन ना धिकेरन कौरवद वर्ण बच्चाहे एवं ना ভাই জাহাত্ম ইহার খতন্ত্র বিচার ক্রিয়াছেন। ধর্ম লাভে মানুষ শাভি পায়, অৰ্থ লাভে মাৰুষ বৃত্তি পায়, কাৰ লাভে ষাত্ৰ হৰ পার।

ব্যক্তিগত জীবনে নিভিত্ত লক্ষ্য থাকিলে যেমন চেত্তার দুচ্তা বাড়ে, রাট্টজীবনেও তেমনি একটা লক্ষ্য প্রনিভিত্ত থাকিলে রাট্ট প্রসংগঠিত হয়। রাট্ট নিজে ব্যক্তি নর বটে, কিন্তু ভাহার একটা ব্যক্তিত্ব আছে—ভাই ভাহার লক্ষ্যেও একটা প্রবাহন আছে। রাট্টের ব্যক্তিত্ব আছে বলিয়া সমাক্ষরিদ্যার যে সম্বত্ত প্রত্র ব্যক্তিগত ক্ষেত্রে প্রযোজ্য হয়। সমাজে রাট্টগত ক্ষেত্রেও সেই সমত্ত প্রত্রই সমভাবে প্রযোজ্য হয়। সমাজে বাস ক্ষরিতে গেলে ব্যক্তিগত ক্ষেত্রে ব্যমন মাহ্রমতে নিজের হার্ব এবং প্রের হার্ব এই হল্মের মধ্যে সাম্বর্জ রাখিতে হয়, য়াট্টগত ক্ষেত্রেও ভেমনি নিজ-রাট্টের ম্বন্স ও পর-রাট্টের প্রবিভার এই হ্রিছের মধ্যে সাম্বর্জ হার্বিতে হয়। রাট্টার

লক্ষার বাত্তব ত্রপ নির্তর করে হাটের পরিচালক বাজিবিশেষ বা ফলবিশেষ বে লক্ষেত্ৰ বপবৰ্ডী ভাহার क्षेत्रतः। हार्द्रेत व्यविकाश्य कांक वर्षम अहे वाकिविर्णावद वा वन वि:वंदव अवृत्रां में इद अवन दारहेद आकासतीन जरहाँ पृष्ठ एव अवर वाहेकीवटम ए**डाम। पृ**व एव। वाहीव नका (करन बाक्रिकेड नाक्षात (योगकन बांख नर, अकड़े मध्यम् वित्यवः। चरण्यः (वानकण (ययम अक्के चित मध्याः, ब्राष्ट्रीय कका (महेबन काइकन वह यह। विकित श्राकृतिय पाछ-প্রতিখতে ভুত রাষ্ট্রীর লক্ষা স্প্রধান বস্তু। ইতার বাস্তব স্থপ क्वन मरबारिशोदरवर छेभद निर्श्व करत ना । बाहेबादकरणव মধ্যে কোৰ প্ৰকৃতিৰ লোক আপাততঃ স্ব্ৰাপেকা প্ৰভাবদীন ভাৰার উপরেও নির্ভর করে। ভারতীয় সমাক্ষরিভার বিভিন্ন चकाव अध्वादी म'सूब जिनहे मुदा (अवेटड विकक्त बना बाहेटड পারে, যথ। (১) সান্ধিক, (২) রাজসিক এবং (৩) ভাষসিক। রাব্দিক প্রকৃতি আবার হুই কাতীর হুইতে পারে —হৈব এবং चायत । এই द्विनेतिकांत्रकत्त्व मत्त्वा मत्त्वातिका अत्र শারীবরত্তের একট সুপরিচিত স্থাের ইঞ্চিত পাওরা বার। ভাগা শীবের শরীর বা মন যে-কোন ক্রিয়ার দিক হইতেই ভিনট অংশে বিশ্লেষণ করা চলে, বেখন (১) অর্ত্রুর ভার (Afrerent aspect), (२) दक्कांत्र (Central aspect) अवर **খতঃ গকৃতি সম্বন্ধে সচেতন করে, বহিমু'ব ভাগ তাহাকে বহিঃ-**প্রকৃতি সহছে সঞ্জির করে। কেন্তুভাগ এই উভর অংশের मृद्या (म १४वर्ष । अक्बन एकार क्ल भाग करिल, अ (क्रा ভৃষ্ণার অভুভূতি ভাষার অভুমুখি ভাগের ক্রিয়া এবং কল পানের ८ हो छाराव वर्ष्य चाराव किया। क्रम भारनव र्याना कि দা ইত্যাদি বিচার ক্ষেত্রভাগের ক্রিয়া। অবযুৰি ভাগ যধৰ ক্রিয়াশ'ল হয় ভবন যাসুষের খভাব সাদ্বিক ভাবাপয় হয় এবং বহিমুৰ ভাগ বৰন সজ্জয় হয় তৰ্ম তাহা বাজসিক ভাবাপন্ন হয়। ঘৰন কোন বাধার কলে অভযুৰি বা ৰহিমুৰি ভাগে ব্দভা আদে তৰন মানুষের বভাব তামসিক ভাবাপর হয়। मक्षरनव मक्न श्रकाम, बर्द्याक्षरनव मक्कन (हर्ड), क्रेंबर बिटकरे त्व अन वावा एक्के कृद्ध छाहा है छम: । मासूद्ध ८० है। समात्वद মদলের বছও হইতে পারে আবার অনিটের বছও হইতে পারে, ভাই উব্ভেডেদে রাজসিক প্রকৃতিকে পুনরার ছুইট **উপরেশ্বতে পুৰক করা एইবাছে—বৈষ এবং আহর।** 

রাইপরিচালনার যে প্রভাব কার্যাকর ভাষাকে প্রধানতঃ হই প্রেণীতে ভাগ করা যার, (১) ব্যক্তিগত, (২) সন্তাধারগত। এই হই জাতীর প্রভাবকেই জাবার (ক) প্রাপ্ত এবং (ব) অভিচ এই হইট উপত্রেণীতে পূবক করা সভব। ব্যক্তিগত প্রভাবের উবাহরণ স্বরূপ বর্তবান মুগে মহাছা গাবী, সাইনঙাইন, বার্ণাভ শ প্রভৃতির নান উল্লেখ করা যাইতে

भारत। अक्षति मम्बहे चक्षित स्वान वर्गाः देशावा निक्य क्रिकेश विश्वन अकारवर चिवकारी व्हेशायम । देशव विभवील देवारवनस्वभ स्वयन्तानात्मव निकाम अपूर तम्मीय ब्रोटकाब मुनक्तिर्गतंत्र हैरहर करा वाहेटल नाटव । धनाटम बार्यामानी वास्त्रिय काराया अवाव देखवादिकावणस्य 'প্রার' ভটভাতেন। সক্তভাষণত কেতে 'প্রার' প্রভাবের উলা-स्वन-प्रतम स्विवादाअमेत कथा देखन कता चाहेरा भारत । পুরুষাত্বকার করিয়ারপ্রেই প্রভাব বিস্তার করিয়া আসিতেছে। এই প্ৰভাৰ ভাৰাৱা অৰ্জন করে নাই, পূৰ্বাপুরুষ হটতে 'প্রাপ্ত' হইরাছে মাত্র। সম্প্রদারণত ভাবে অভিত প্রভাবের छैनाइतमध्वम वना चाहेटल भाटत खिमक चाटकानटनद क्या। রাষ্ট্রীর ব্যাণারে অধিকরেই উপস্থিত যতটা প্রভাব বিভার क्विट्डिट छार्। छारापद भूक्व्यूक्टव्द भिक्छे परेट खाद वञ्च सञ्च, निरम्पपद रहशेष निरमप्पद भीवरनरे चान्छ । अरे-খানে আমর। যদি ইভিহাসের গভির দিকে দৃষ্টপাত করি ভাষা হইলে দেখিতে পাই, কালক্ৰৰে 'ৰব্ধিত প্ৰভাৰ' 'প্ৰাপ্ত প্ৰভাৰে' পরিণত হর এবং সম্প্রদারগত উত্তরাবিকার ব্যক্তিগত উত্তরাবি-কারে পর্বাবসিত হয়। প্রভাব যে ভাবেই আয়তে আত্মক না क्न. बाद्धेव मननामनन निर्धंद कृद्ध (महे क्षणादव वावशाव-वानानीव क्षेत्र । वाजाव एक के (०८७ वार्क स्ट्रांस कार्य चानाइक्य भक्त इंड्रा वा ना एउदा कि विर्वत कर्दा चर्नकरी व्यवान-(क)मानव देशव । (य (नंड) य(वाहिड समा विकाहत्व ষক এবং সেই লক্ষের প্রচারে নিপুণ তিনিট লোকপ্রিচালনার भग्र हन। छेएइएअइ (खर्ड इ चाकर्य-नक्षि खर्द शहान-कौनला निन्त्रा-- এই किविय श्वत्वहे अभ्यत व्यावस्त्र । এতক্ৰ রাষ্ট্রীয় লক্ষ্য বিরীকরণে রাষ্ট্রের বিভিন্ন আভাতর बिकादित कथारे चाटमाहमा कता एरेम । बाटहेत मका निर्वादत्य चाणाबर श्रवाद वित्यस चक्किमानी शहेरत वाक श्रवादार अक्ष व द्यादि है के दिल्ली व नरहा अहे विषय अखिति । बाद्वेभवृत् अवर देवलिक अकावनानौ बाद्वभवृत् छेक्टबरे विटनव **फाटव मात्रो एहेता बाटक** ।

বাক্তিই রাষ্ট্রের বৃল উপাদান এবং পরিণামে ভাছার কর্মপ্রচেটার উপরেই রাষ্ট্রের সমৃত্তি নির্ভর করে। অভএব রাষ্ট্রীয়
লক্ষ্য বে ব্যক্তির কর্ম্মগ্রেটা বৃত্তি করিবে ভাছাই বাহ্যনীর—
এইট একট হয়। বাক্তি রাষ্ট্রের বৃল উপাদান হইলেও ব্যক্তি
হইভে সরাসরি রাষ্ট্রপঠন হয় না। বাক্তি হইভে পরিবার,
পরিবার হইভে গোন্ধী ও নানাবিব সমাজ-শ্রেমীর সমবারে রাষ্ট্র
পরিভ হয়। প্রভরাং যে রাষ্ট্রীয় লক্ষ্য পরিবার নির্দ্ধাণে এবং
পরিবার সোধী ভবা সমাজ প্রভিগালনে সহায়ভা
করিবে ভাছাই রাষ্ট্রের আভ্যন্তর-প্রস্থিস্কর। পর-রাষ্ট্রের
ভাগর প্রভাব বাক্ষা-না-বাকার উপরেও রাষ্ট্রীয় সমৃত্তি

আনেকাংশে নির্ভৱ করে। এছলে প্রভাব ও প্রভূষ এই ছুইট বিষয়ের প্রভেদ সর্ব্ধলা মনে রাধা প্রয়োজন, কেননা প্রভূষ করিতে গেলে প্রায়ই প্রভাব ক্র হয়। প্রভূষ না করিয়াও প্রভাব বিভারের ঘটনা ইতিহাসে বিরল নহে। আশোকের সময় ভারতের বাহিরে ভারতীর প্রভাব অধবা আধুনিক মুগে ভারতের বাহিরে বিবেকানক এবং রবীক্রমাধের প্রভাবের কথা ভাহার প্রকৃত্ত উদাহরণ। যে রাহ্রীয় লক্ষ্য পর-রাষ্ট্রের উপর প্রভাব বিভার করিবে অধ্য প্রভূষ করিবে মা ভাহাই কাম্য—এইট রাহ্রীয় লক্ষ্য নির্বাচনের ভৃতীয় স্ব্রা।

बाह्रेकीयत्न मञ्जूषिनाच यप्ति वाक्षानीव नश्क्रम स्व च्य

ভাহাকে সিহিলাভের বভ উপযোগী লক্ষ্য হির করিব। কর্মপ্রচেটা বাড়াইভে হইবে। এই লক্ষ্য নির্মাচনে চিত্তানারকদের
সাহায্য প্ররোজন, লক্ষ্যে শৌহিতে হইলে কর্মনারকদের
প্ররোজন। বাংলার ভাহার কোনটারই অভাব না হওরাই
বাঞ্চনীর। বদি সম্প্রদার ও প্রকৃতিনির্মিশেরে সকল বাঙালীকে
কালকরী ভারতীর সভ্যভার ইতিহাস শিক্ষা বেওরা বার এবং
ভাহার ভাংপর্য ব্রানো বার, যদি চিরবিকাশনান ভারতীর
সভ্যভারচনার বাংলার দান বাঙালী বুবে ভবে সংক্রমসিহির বছ যে রাষ্ট্রীর লক্ষ্যের প্রয়োজন ভাহার নির্মারণ
ক্ষমাব্য হইবে না।

### ত্থাম ও শান্তি

#### এনির্মাল্য দাশগুপ্ত

আমাদের বাধীনতার সংগ্রাম শেষ হইবার পর বংসর রাকনৈতিক স্বাধীনতা স্বাধরা স্ক্র चुतिया चात्रिम । ক্রিয়াছি, কিছু আমাদের সমূবে কঠোরতর সংগ্রাম—সে সংগ্রাম শান্তি ও সমৃত্তির সংগ্রাম। বিদেশী শাসনের আমলে माक्षि ও সমুদ্ধির অভাবের জর আমরা বিদেশী দাসনকেই দায়ী ক্রিয়াছি। আৰু সে শাসন অপথত। আৰু দেশের শান্তি ও সমুদ্ধির দায়িত্ব তাঁহাদেরই বাহার। রাষ্ট্রের কর্ণবার। দীৰ্ঘকাল নিৱৰচিছন্ন সংগ্ৰাম কৱিয়া যে কংগ্ৰেস দেশের ছয়ারে স্বাধীনভাকে পৌছাইয়া দিয়াছে আৰু ভাৰাৱই হাতে দেশ-পরিচালনার ভার। সংগ্রাম ও ত্যাগ ছারা ভন-মনে কংরেস যে বিশুল প্রতিষ্ঠা অর্জন করিয়াছে তাহাতে কংগ্রেসী আমলে জনসাধারণের অবস্থার উন্নতি হইবে এই আশায় সকলেই উৎকুল্ল হ'ইয়া উঠিয়াছিল। তাহারা আশা করিয়াছিল যে এইবার দেশে সুৰ শান্তি ফিরিয়া আসিবে, অভাব দূর হইবে এবং ছায় ও সভ্যের প্রতিষ্ঠা হইবে। কিন্তু এক বংগরের অভিন্নতায় অনগণের অটুট বিশ্বাসের ভিত্তিমূলে আবাত লাগিয়াছে। কংপ্রেসী নেভাদের রাষ্ট্র-পরিচালন ক্ষতায় ভাৰাদের মনে সংশয় ভাগিয়াছে।

এই সংশ্যেরই উভর পাই লক্ষ্ণেরে পিণ্ডত নেহকর বক্তৃতায়। তিনি জনসভায় সমাগতদের উচ্ছেক্ত করিবা বলিরাছিলেন, 'Remove the Congress and you will see India fall apart'। কংগ্রেসের প্রতি জম্বাগ দেশের এখনও যায় নাই; কংগ্রেসের ভালিরা দিবার কথা দেশবাসী এখনও মনে আনে নাই। কিছু কংগ্রেস যে পথে চলিরাছে সেই পথেই চলিতে আকিলে এক্-দিন আগনা হুইতেই সে দেউলিয়া হুইরা পভিবে। শিশু-বাইকে অনেক

বাবা-বিবের ভিতর দিয়া চলিতে হটতেছে বলিয়া, বর্তমানে ইহার কঠোর সমালোচনা না করিয়া ভবিত্তৎ পরিণতির ছত প্রতীক্ষা করিবার যে নির্দেশ আমাদের দেওয়া হটতেছে তাহা অসমত নয়—কিছ যে নিশুর মব্যে শৈশবেই করের লক্ষণ দেবা দের, বা যে নিশুর কোনও অস্থ বিষাক্ত হয় সে অষ্ঠ্ পরিণতি লাভ করিবে কেমন করিয়া ? শৈশবে যাহার মব্যে পরিণত কালে কি হইবে বুবা যায়। শৈশবে যাহার মব্যে বুছির দীপ্তি প্রকাশ পায়, মহান্ প্রেরণার আভাস দেবা যায়—তাহার ভবিত্তৎ সম্বর্কেই আমরা আশাধিত হই। জড়তা দেবিলে নৈরাশ্য বোৰ করি।

শিশু-বাষ্ট্রের পরিচালনার ভার কংগ্রেসের হাতে। কংগ্রেসী কর্তৃপক্ষই আরু দেশের ভাগ্যনিয়ভা। তাঁহাদেরই নির্দেশ ও ইছা অহ্যায়ী রাষ্ট্রের নানা বিভাগে লোক নিয়্ক হুইভেছে। এই সব নিয়োগে কংগ্রেসের সহিত কাহার কত কালের যোগাযোগ আছে, কে কত বংসর কেলে থাকিয়াছে তাহাই বেন যোগাতার একমাত্র মাণকাঠি হুইয়া গাঁভাইয়াছে। সংগ্রামের সময় যে সৈনিক নির্ভাক ভাবে অল্লের আ্বাত সহু করিয়াছে, শান্তির সময় সেই যে দেশ-পরিচালনার কাছ নিতুলি ভাবে করিবে এমন কোম কথা ভাই। সৈনিকের কাছ মূছ করা; মস্বদে বসা মর। অধিকাংশ কংগ্রেসীই বিগত ২০৷২৫ বংসর বরিয়াগ্রিটিশ শালনের অবসানের চিভা ও চেটা করিয়াছেন। বিদেশী শাসনকে ধ্বংস করিবার প্রয়াসে তাঁহাছের জীবনের প্রেট সময় কাটয়া রিয়াছে। ধ্বংসের কাজে-তাঁহায়া ছক্ষতার পরিচর দিয়াছেন, কিছু সেইক্র গ্রাজার-ফ্রাকেও তাঁহায়া প্রকৃত্ব হবন এমন কথা নিঃসংশবে বলা যার না।

শান্তি ও সম্বৃত্তির কোন্ আভাস আৰু আমরা বেৰিকে

পাই ? স্বাধীনতালাডের পর এক বংসর অভিবাহিত হইরা পিয়াতে। কিছ একটার পর একটা ছটলতা চলিয়াতেই। कांचीत ७ वांद्रपदांचार क्षेत्रे केंच्य समीव दांद्रवाद अध्यादे গুকুতর আকার বারণ করিয়াছিল। হারদরাদ সমস্যার একমণ মীমাংসা হইরাছে। কাশ্মীর সমস্যার সমাধান এখনও স্মৃত্র পরাহত বলিয়া মনে হইতেছে। কথার কথার ভাতিপুঞ্চ-সংসদের (IJ.N ().) ছারস্ত হওরাতে আমাদের মর্ব্যাদা বৃদ্ধি হয় না। দেশের আভ্যন্তরীণ নামা সমস্তার কোনটারই সমাধান হয় নাই। সমাধানের কথা ছাজিয়া দেওয়া যাকু কোৰাও তো चारलांव (वर्षा ६ एको यात्र ना । चार-नम्छा, वन-नम्छा, উল্লেখ্য সম্ভা--ছোট-বড মানা সম্ভা লইয়া আমরা বিত্রত। সমস্তার মীমাংসা হওয়া দুরের কথা, সকলক্ষেত্র অবন্তির লক্ষণই দেখা যাইতেছে। দেশকোড়া এই অবন্তির ষলে —দেশবাসীর নৈতিক অবোগতি। যেমন তেমন করিয়া নিজের পুঁজি বাড়াইবার দিকেই লোকের প্রধান ও একমাত্র लका। এই जकत पूँकिवाभीदा भीछि मारन ना, मानवजात ৰার বারে না, ভাইনকেও কাঁকি দের। ভাতারই কলে দেশে অনাচার অভাব অভিযোগের অভ নাই। এ সমন্ত निर्देश एए प्रमन कवियात वावदा नारे। कल जननिव মাত্রা উত্তরোজর বাভিয়াই চলিয়াছে। জনসাবারণ সবিশ্বরে প্রশ্ন করে, কংগ্রেসী আমলেও স্বাধীন দেশে কেম্ম করিয়া ইহা সভব হটল ? ইহার উপর আর এক গুরুতর সমস্তা चानिया केषारेयारह--वारमनिक्छा। वारमरन वारमरन धर যে অভঃক্লছ ইহার ভঙ্ক দেশে আমাদের নিজেদের ক্তি তো হইতেহেই, বিদেশেও লব্ধার সীমা নাই। সমস্ত ভারতের প্রতিনিধি যে কংগ্রেস তাহারই হাতে দেশের শাসনভার, ভৰু কেন এই প্ৰাদেশিকতা মাৰা তুলিয়া দাভাইল ?

ভারত-শাসনের বসড়া-বিবিতে আমরা অনেক বড় বড় কৰা পাই---সামা, মৈত্ৰী, বাৰীনতা। কৰাণ্ডলি মহান আদর্শের ভোভক, কিন্তু কার্য্যতঃ কি ইাড়াইয়াছে ? এই সব বড় বড় আহর্দের নামেই ছনিয়ার যত অনাচার সংঘটত হইয়া बाक्-- वेलिवान वेवावे नाका मिटव।

#### ৰসভা-বিৰিভে দেখিতে পাই----

- (1) There shall be equality of opportunity for all citizens in matters of employment under the State.
- (2) No citizen shall on grounds only of religion, race, caste, sex, descent, place of birth or any of them be ineligible for any office under the State.

বাৰবন্দেৱে ইহা কি অনুস্ত হইয়াছে ? ভবে ভোমি-ভারতের এক প্রদেশের লোক অভ প্রদেশে বিষেশ বলিয়া नेना रहेटल्ट्--रेशरे कि चामना दिविटिश मा १

munity or language, shall be discriminated against in regard to the admission of any person belonging to such minority into any educational institution maintained by the State.

The State shall not in granting aid to educational institution discriminate against any educational institution on the ground that it is under the management of a minority whether based on religion, community or language.

কিছ কাৰ্যাত: দেবি, বিহারের সংখ্যাপনু বাঙালী সম্প্রদার সব রক্ম পুবিধা হইতে বঞ্চিত হয়। ডোমিগাইল সার্ট-कित्क है ना शांकित इन-कलाब छि १ छ। इक्स, कनावनिश পাওয়া অসম্ভব। সার্টিকিকেট থাকিলেও ব্যবহারে ভারতম্য করা হয়। যোগাভা থাকিলেও চারুরীতে প্রযোশন বদলী ইত্যাদি বিষয়ে বাঙালীদের দাবী এ।২০ হয় না। বিহারে वोडामीएक श्रांबंदका विवरत विहाददद कामक मावावाया नाहे। মানভূম, সিংভূম বাহাতে বাংলাদেশের অৱভূক না হটতে পারে সে বিষয়ে বিহার সর্বাপ্রকার চেষ্টা করিতেছে। এই সব অঞ্চল বাংলা ভাষার পরিবর্ত্তে হিন্দী প্রচারের ব্যবস্থা ছইয়াছে। বহু বহু শিল্প-প্ৰতিষ্ঠানে নিৰ্দেশ দেওয়া ভইয়াছে যেন সেগুলিতে বিশীভাষী বিহারীদেরই অধিক সংখ্যার নিযুক্ত করা হর। এই সমস্ত সন্তেও কি করিয়া বলা যার বে খাৰীৰ ভাৱতহাটে সংখ্যালয়দেৱ সমান দাবি খীকত ছইবে, এবং ভাষার ভঙ কোন ভারতন্য করা হইবে না ?

আগামের অবছাও একই প্রকার। সেধানে বাঙালী বিভাগনের ব্যবহা দিন দিন প্রবল হইয়া উঠিবে। সুঠন, পুছে অগ্নিসংযোগও ঘটনাছে। এই ভো সেদিন নওগাঁ ও গৌহাটতে কত কা**ও হ**ইহা গেল। এ সমস্ত কি সংখ্যালন্ত্ৰের মৰে অনাহার স্টি করে না ? উড়িয়াতেও বাঙালীদের লাহনার কণা প্ৰায়ই শুনিভে পাওয়া যায়। ভারতের এক প্রদেশের অবিবাসীদের যদি অভ প্রদেশে এইরূপ চরতি ভোগ করিতে হয়, তবে কংগ্ৰেসের বহু বিখোষিত সাম্য ও মৈত্ৰী ইভালি নীতির উপর বনসাধারণের আত্বা ধাকে কি করিয়া 🤊

কংরেসের নীতি ছিল ভাষা ও সংস্কৃতির ভিভিতে প্রদেশ-সমূহের পুনর্গঠন। বহু বংগর ধরিয়া কংগ্রেস এই নীভিট (पांचन) कतिवा चानिवारक । किन्न वारमारेतन निरकृत, यानकृत ভারসম্ভ ভাবে মাবি করিরাও পাইভেছে না, বরং এই দাবি উবাপনের বভ বাঙালীরা নিব্দিত হইতেছে। প্রিভ (मरुक्त, वांचांची रेखांकि वांद्वेधवानगंव वितास्त्रक्त, '(कांक् वासाल (कान् चक्न बहिन हेश नहेश (कानाइन ७ कन्ह করা উচিত নর-ত্যে প্রদেশেই থাক ভারতেই তো হহিল। কিছ বিহার, আসাম ও উভিয়ার বাঙালীদের হরবভার কোন প্ৰতিকাৰের চেষ্টাও তো তাঁহার। করিতেছেন না। আরও একট কৰা। আছু, কৰ্ণাটক, কেৱল ও মহাৱাট্টের হুডার প্রচেপ No minority whether based on religion, com- হওৱা সভব কিনা নে বিষয় বিচার অভসভাবাদির বছ ক্ষিণ্য

নিমুক্ত হুইয়াছে, অবচ বাংলাভাষী আঁকল লইবা দাবি সম্বত্তে কোন আলোচনা করিছেও কর্তুপক অনিজুক। এই বৈষ্যাস্থলক আচম্বণে কংগ্রেসের পক্ষে ভাষার মুর্বাদা অনেকাংশে হারাইবার সভাবনা।

কোমও দিক দিয়া কংগ্রেসের প্রতিশ্রুতি রক্ষার পরিচর পাওয়া যাইতেছে কি ? সামানিক, আধিক ও রান্ধনৈতিক ভারবিচারের কথা বলা হইয়াছে, কিছ চোরাকারবার এবনও পুরাদমে চলিতেছে। সমাবের এক ভবে লোকে ক্রমশঃই উচ্চংারে বনসম্পদ স্বৃদ্ধি কৃত্রিতেছে, আর এক দিকে লোকে অনাহারে অর্থাহারে ভীবনীশক্তি হারাইতেছে।

অনসাধারণের ছ:বংশশা মোচনের আখাস ক্যুনিই দলের
শক্তির বৃলে। তাহ'দের বড় বড় কথা দুর্গত প্রথমীব'দের
প্রভাব বিভাবের কারণ। কংগ্রেস যদি চাষী মকুরের
অভাব দূর করিতে আছরিক চেটা করিত, তাহা হইলেই
ক্যুনিই পার্টির প্রতিপত্তির বৃলে কুঠারাঘাত করা হইত।
জ্যোর করিয়া তাহাদের মুখবর করিতে হইত না। যাহারা
যথার্থ অপরাধী বিচারালয়ে তাহাদের শান্তির ব্যবহা
ক্রা কি যাইত না ? সেই তো ব্রিটিশ আমলের বছনিশিত
অভিমালেরই পুনবারত্তি হইল কংগ্রেসী আমলে। দেশের
এই হ:বংশশা ও অভাবের দিনে ক্মিউনিই দল যে বিশুখলা
স্ক্রীর চেটা ক্রিয়াহল তাহা দেশের পক্ষে অহিতক্র অবঙই,

কিছ সমত লোমফট সন্থেও ক্য়ানিট বল একটা কাল করিছেবিল—কংগ্রেমের বিজনে কিছু অপ্রির সত্য ভাষণের শক্তি
ভাষার হিল। ইহা বও ক্রা কংগ্রেমের পক্ষে সমীচীন হইয়াছে
কি ? বেশ-পরিচালনার ভার যাহালের হাতে, বিরুত্ব পক্ষের
মতামত বিবেচনা ক্রাও ভাষানের প্রধানন, ভাষা হইলে
নিজেশের গলন বুবিরা ভাষারা সংশোধনের চেটা করিছে
পারিভেন।

কংশ্রেস গাঁথীকীর নেতৃত্ব বীকার করিবাছিল। কংশ্রেস এবং সমগ্র দেশই আকও সর্ক্ষবিব রাষ্ট্রীর ব্যাপারে গাঁথীথীর নামই উরেব করে। কিন্তু বিশেষ পরিভাপের বিষয় এই বে, গাঁথীকীর রাক্টনিভিক অর অবিংসার সাহাব্যে আমরা হাবীনভালাভ করিলার, কিন্তু গাঁথীথী রুহুতে বে সভ্যের অহুসরণ করিরা গিরাছেন, সেই সভাকে আমরা নিয়ভ নানাভাবে অবমাননা করিরা আনসভেছি। আমরা সভাকে বিসর্জন হিরা অপভার প্রতিষ্ঠা করিতে ভংপর হুইরা উটিধাছি।

বাৰীমভালাভ করিরা যদি আমরা প্রবেও পাছিতে না বাভিতে পারিলাম ভাষা হইলে এই বাবীনভার মূল্য কি ? সাবারণ লোকে চাহে প্রবে বছলে কাল কাটাইতে। দিলীর রাইপাল-প্রাসাদশীর্বে ইউনিয়ন আচক উচ্চিল, কি চক্রচিক গোভিত ত্রিবর্ণ প্রাকৃ উচ্চিল ভাষাতে ভাষার কি আসে বার ?

# আধুনিক ব্যবহারে প্রাচীন সংজ্ঞার উপযোগ

অধ্যাপক ঞ্জিতুর্গামোহন ভট্টাচ:র্য

#### देव'नन ( Evacuation )

ইংবেদী evacuation শব্দের অর্থ 'হান থালি করিয়া লেওরা'। ঠিক এই অর্থে প্রাচীন এছে উৎ পূর্বক বস্ বাজু হুইডে উৎপন্ন নানা রূপ প্রেল প্রান্ধানা বার।

বৈদিক এছে সোম যাগ প্রকাশে প্রবর্গাছাসন নামে একট অনুষ্ঠানের বিবরণ আছে। উত্তার অর্থ প্রবর্গাসভাবের অপসারণ। এক ছান বালি করিরা সভারগুলি অপর ছানে সরাইরা লইতে ব্য-ইবাই 'উরাসন'। কৌটল্যের অর্থদাল্লেও (৩০১৪) এই প্রকৃত্রি উল্লেখ আছে।

ভৈডিনীর ব্রাহ্মণে (১২।৬।৭) এক শ্রেমর ছাই লোকের বিশেষণ আছে 'উবাসীকারিণঃ'। ইহাদের উৎপাদনে অবিবাসীরা উবাসী হইত অবাং বাসরান হাছিরা চলিরা বাইত। এই উবাসীকারী পদের ব্যাব্যার সারণাচার্য লিবিরা-ছেন—'ভেশব্ এতব্ উবাসং নিবাসপ্রাং কুর্যভি'—ইহারা বেশকে 'উবাস' অবাং নিবাসপ্ত করিরা কেলে। পঞ্চল শতকে সংকলিত 'লেব-পছতি' নামক এছে বেবা বাম—কোন চাবী ক্ষিত্ৰ কসল সম্পৰ্কে অভাৱ আচহৰ ক্ষিলে ভাষাকে প্ৰাম হইতে বাহিত্ৰ ক্ষিত্ৰা বেওৱা হইত। এই বহি-ক্ষাণের নাম ছিল উলাসন (প্ৰামাণ উলাসনীয়ঃ—১৯ পৃঃ)। কোন এক ব্যক্তি ভাষার পূর্ববাস ভ্যাগ ক্ষিত্রা স্তন স্থানে আসিলে ভাষাকে বলা হইত 'উল্লম' (উল্লম-কুইন্ফিলানাম্— ১০ পৃঃ)। লেব-পছতিতে উল্লম শক্ষে অর্থ বাস্ত্রভাগী। কিন্তু কল্মণের রাক্তর্কিশীতে (৫ ৩৭৮) অন্থাবিত শৃত স্থানকে 'উল্লম' বলা হইব'তে (নিভ্যোত্তমের্ নির্বের্ নিগাক্ষরেরঃ)।

উলিখিত উহাসন, উহাস, উহাসনীর এবং উহস শক্রের প্রহোগ হইতে জানা যার—উং পূর্বক বসু বাভূর আর্থ to evacuate। এই বাভূ হইতে জার একট পদ হয় 'উহাজ'।

বাংলার সাহিত্যিকগণের রচমার ভিটা-ছাড়া অর্থে উথাত্ত পরের ব্যবহার আছে। সময়ে সময়ে সংবাদপত্তে বাত্তভাত্তি-বিগজে উথাত্ত লাবে উর্জেশ করা হয়। 'পরিভাষা সংসহ'ও evacucees ৰত উবাস্থ নাম প্রভাব করিরাছেন। শব্দী অভিবেত অর্থে প্রকাশক ভারাতে সন্দেহ নাই। 'উং' উপসর্গের এক অর্থ বিয়োজন, পুৰক্করণ। স্নভরাং বাস্থ্যি ইতে বিয়োজিত ব্যক্তি প্রকৃত উবাস্থা।

ইংহারা পাকিহানের বাস ত্যাগ করিয়া এদেশে আশ্রম্ন লইতেছেন তাঁহাদিগকে সরকারী থাতাপত্তে refugeo বলা হয়। ইহারা আশ্রমের সধানে ফিরিচ্ছেছেন। সেদিক ধিয়া দেখিলে refugee, আশ্রমপ্রার্থী বা শরণাথী নাম অসংগত ময়। আবার আর এক ধিক বিবেচনা করিয়া দেখিলে এরপ সংজ্যা অস্পর্ক বলিয়া মনে হইবে। অয়পুর কংগ্রেসের, সভাপতি ডাঃ পইতি সীতারামিয়া তাঁহার অভিভাষণে এ সম্বন্ধে যে মন্তব্য করিয়াছেন তাহার মর্ম্ব এই.—

বাইনায়কগণের অস্থোদনক্তমে দেশবিভাগ হইরাছে।
তাহার কলে বহু লোক পৈতৃক বসতি হাভিরা আসিতে
বাব্য হইতেছেন। এ সকল ব্যক্তি শংলাবারিশে ভারতবর্ষের অপুকশার ভিবারী হইতেছেন মনে করিলে অবিচার
করা হইবে। ইহারা রাইকে অবিকার-বলেই এদেশে
স্থান পাইবার যোগ্য। ইহাদিগকে ইংরেকীতে evacuee
বলা সংগত। আমাদের ভাষার ইহাদের নাম হওরা
উচিত 'পরবাসী' কিছা 'নির্বাসী'।

ডা: পট্টভি 'বিবাসী' নামট উংক্রপ্ত মনে করেন। রাইপভির

মন্তব্যের কলে সংবাদণত্তে নির্বাসী পদের ব্যবহার আরভ
হইরা সিরাছে। কিন্ত নির্বাসী শদের অপর এক অর্থ প্রপ্রসিত।
তাহা হালা, এ ছলে 'নির্' অপেকা 'উং' উপদর্গই বে
সমবিক অর্থভোতক হইবে ভাষা উপরে প্রদর্শিন্ত প্রয়োগগুলির
আলোচনার পাই হইরাছে। প্রভরাব evacues এবং তংশসম্পর্কিত ইংরেকী শদের কর নিম্নলিবিত রূপ প্রতিশব্দ প্রহ্ণযোগ্য হইবে বলিরা মনে করি,—

evacuee = উৰাসী, উৰাস্ব evacuated = উৰাসিত evacuation = উৰাসৰ ইত্যাদি।

বিভিন্ন প্রকারের অর্থপ্রকাশের ক্ষম এক বস্থাত হইতে আরও অনেক প্ররোধনীর পদ পাওরা যার। এ বিষয়ে বাতৃটির যোগাতা অগামার, করেকট উলাহরণ দিলেই তাহা আই হইবে।—

emigration—প্ৰবসন বা উপ্ৰেবসন
rehabilitation—পুনৰ্বসন বা পুনৱাবাসন
repatriation—প্ৰভাবাসন
immigration—প্ৰভিবসন বা প্ৰভাবসন
domicile—নিবসন (কিয়া), নিবাস (হান), নিবাসী
(ব্যক্তি)

transportation—ৰিবাসৰ

### রাষ্ট্রভাষা ও সঙ্কীর্ণভা

অধ্যাপক 🗐 যাদবেন্দ্রনাথ রায়

বে ভাষার সাহায়ে রাষ্ট্রের কার্বাপরিচালনা সহক্ষাব্য হর রাইভাষার হান অবিচার ক্রিবার বোদাত। তাহারই সবচেরে বেশ্ব। ইংবেক-শাসিত ভারতে ইংবেক্টাই ছিল রাইভাষা, তাই এত দিন ভারতের রাইভাষা লইরা কোন বিতর্ক উপস্থিত হর নাই। আন্ধ সাবান ভারতের রাইভাষা লইরা বহু মতবিরোর উপস্থিত। এমন একট ভারতীর ভাষা রাইভাষা হওরা উচিত যাহার গতি হছেল, শলগালন প্রচুর এবং যাহা শিলা করিবার অভ কোন প্রকেশসার মাহালার অবিবাসীদের হারহু না হাতে হর। নাত্র এই ক্রেক্টি বিষরের প্রতি চুটি রাবিরা নিরপেকভাবে হারীন ভারতের রাইভাষা নির্মান করিতে গেলে প্রথমতঃ ক্রেক্টার ভারতের বাহা কিছু বৈশিষ্টা, যত কিছু স্মৃতি, ভারতের কাছে অবজ্ঞের বাহা কিছু বিশেষ্ট্র সম্বাভিত্ব ভাষার ভাতারে ক্রেক্টার প্রত্ব বাহা কিছু বিশেষ্ট্র সম্বাভিত্ব ভাষার ভাতারে ক্রেক্টার। ক্রিভার আ্রাই আর বিশ্ব সভাসভাই ভারতকে ভাষার

মহিংঘাক্ষণ রত্নসিংহাসনে পুনঃপ্রতিষ্ঠিত করিবার ইক্ষা নেতৃরক্ষের মনে কাসিরা বাকে, সভ্যসভাই আৰু যদি জাহারা পাশুরা ভাব ও প্রভাবমুক্ত হইরা দেশমাতৃকার অর্কনার ঘোগ্য করিবারী বলিবা নিকেদের মনে করিবা বাকেন ভাহা হইলে বিচিত্র ক্ষমগুরা-সমূর—হক্ষ্যক পভিশাল প্রাদেশক্তাগর্ধক্ষিত সংস্কৃত ভাষাকে নিবিল-ভারতের রাইভাষা বলিরা ঘে'বা। করা জাহাবের প্রথম ও প্রবাম কর্ত্রবা কেননা যভই দিন যাইভেছে ভাষার ভিত্তিতে প্রমেশ বিভাগের ভার বাইভাষা নিবর লইরা বিরোধের ভিক্ততা ভভই বার্করা চলিভেছে।

বিশ্বানী (উৰ্ছ ও বিশী- বিপ্রিত), বিশী, বাংলা, ইংরেনী ও সংকৃত এই কর্ট তাবা লট্যা রাইতাবা নির্মাচনের বিভৰ্ক উপস্থিত হইয়াছে। প্রত্যেক্টর বাবির বৌভিক্তা বিচার করিলে দেখা যাইবে—

ক্ষ্মংক্ত লোক লোটার্ট বিপ্রাণী ভাষা পুরিতে

পারিলেও এবং সেই ভাষার কোষও প্রভারে ক্থাবার্ডা বলিতে সক্ষ হটলেও শবসভাৱে একাছ দ্বিত্র, সাধারণের क्या जावाबर्य बाठमिल, निक्य चक्रतम्मारीय बार जाया ब्राह्रेणांचा रहेवांव चार्वि कृतिएक शास्त्र मा । अञ्चल अक्षांश्व শ্বনীর যে, বাঁহাতা হিন্দুখানীকে সূত্ররূপে গঠন ক্রিরা রাইভাষা করিবার পক্ষণাতী ভাষারা কিছ উর্প থেবনাগর এই হুই ৰাভীর অক্সরকেই ভাহার বাহন করিভে চান। ভাহার কলে এই ছুই ছাতীর অকরই প্রভ্যেকের শিক্ষীর रहेश भएए। अध्यात यूजनयांनध्यांन अक्टलव बांक्कर्य-চারীদের কাগৰপত্র বিন্দুপ্রধান অঞ্চার রাধ্কীয় কর্মচারিগর बार विम् बाक्कीय कर्वाडीत्मय कांत्रक्षम यूनम्यान बाक्क्य-চারিগণ ও তাহাদের সহিত সংশ্লিষ্ট ব্যক্তিগণ কোন প্রকারেই পছিতে পারিবেন না। ইহাতে কিন্তুপ অপুবিধার উত্তব रहेट शादा छारा जवकर अधिवानद्यांगा। देश हाणा আভিকাতাপূৰ্ সুসংস্কৃত ও সুসমূহ ভাষার প্রতি ভাঁহাদের বে খাডাবিক অভুৱাৰ আছে ভাহা পৱিহার ক্রিয়া নিভান্ত भारावन अकृष्टी ভाষাকে ब्रांडेश्रामाब्राल महामि। मान कविट्यन छोड़ा बटन इस ना ।

- (খ) হিন্দী রাষ্ট্রতাবা হইলে অভাত প্রাদেশিক ভাষা তুর্মল হইবে এবং এই ভাষাশিকার কত বহু প্রদেশের অবিবাসীদের হিন্দী ভাষাবিদ্ পভিতদের শরণাপর হইতে হইবে—অবচ পরিভাষা প্রভাবে কত সংস্কৃত ভাষার দারত্ব হইতেও হইবে। ভারতের প্রাদেশিক সাহিত্যগুলির মধ্যে হিন্দী-সাহিত্য এত সম্বভিলাভ করিতে পারে নাই বে, ভাষা প্রেটদের আসন হাবি করিতে পারে। হিন্দীর রাষ্ট্রভাষা হওরার দাবির অভ্-ক্লে বহু মুক্তি পাকিলেও প্রতিক্ল মুক্তিগুলিও অকিকিংকর নহে।
- (গ) বাংলা রাইভাষা হইলে হিন্দীর ভার প্রান্থেশিকতার বোৰগুলি অবস্থাই থাকিবে। ভারতের প্রচলিত ভাষাগুলির মধ্যে বাংলাভাষা প্রেষ্ঠ হইলেও, বভিষ্ঠক রবীক্ষাথ প্রমুখ সাহিত্যরখীদের রচনা অবস্থপাঠ্য হইলেও, এবং রাই-ভাষাত্রণে উপহিত হওরার আপেন্দিক বোগ্যতা তাহার থাকিলেও এমন সব ভারণ বিভ্যান আহে বাহাতে বাংলা সর্বভারতের রাইভাষা হইতে পারিবে না।
- (ব) ইংরেকী বৈদেশিক ভাষা। কোন বৈদেশিক ভাষা কোন বাধীন দেশের রাষ্ট্রভাষা হইবে ভাষা সমীচীন নহে।

এবেশে নাম বাকর বাত্র করিতে সক্ষ ব্যক্তিকেও শিক্তির পর্ব্যাহে কেলিয়া যদি শিক্তিতর সংব্যা হণ-বার কন বাত্র হর তবে তাহার মধ্যে কর কন ইংরেকীশিক্তি আহেন ভাহা সহকেই অনুষের। যদি এই অত্যন্ত ইংরেকীশিক্তিত

লইরা হুই শত বংসর রাজকার্য পরিচালনা করা বিদেশীর পক্তে সভব হুইরা থাকে তবে তরপেকা অবিকসংব্যক সংস্কৃত ভাষাকুশন ব্যক্তি লইরা বর্জমানে রাষ্ট্রীর কার্য্যপরিচালনা অসম্ভব হুইতে পারে না।

ভারতীবের রক্তমাংসরজার সহিত সংস্কৃত ভাষা অবিজ্ঞেতভাবে বিকলিত। সকালে "রক্ষা ব্রারিঃ", "অহল্যা-মৌপরী"
প্রভৃতি হইতে জারত করিয়া "নরং পঞ্চমাগত্তর্" পর্যন্ত বলি
জামরা সক্রানে বা অর্থ না ব্রিয়া সংস্কৃত ভাষা ব্যবহার করিতে
অত্যন্ত হইরা থাকি, ভবে এক্তেরে সংস্কৃত ভাষাকে উপেন্দা
করার সপক্ষে কোন বৃক্তি থাকিতে পারে না। আমাদিগকে
পালাভ্য ভাষার নোহপাশে বাঁবিয়া যাহারা আচ্ছর করিয়া
রাধিয়াছিল ভাহারাই আবার সেই স্থেয়াগে সংস্কৃত ভাষার
রত্নরাকি আহ্রন করিয়া কীর্ত্তি অর্জন করিয়াছে। প্রাণপন
পরিশ্রম হারা হাত্র-জীবনের অর্জেকেরও অবিক সমর ব্যর
করিয়া যদি আমরা ইংরেজী শিবিতে পালাহন সভার সহিত্ত
বিক্তিত সংস্কৃত ভাষা শিবিতে পারিব না কেন ?

ভারতের প্রত্যেক ভাষার সহিত সংস্থত ভাষার অভঃ-সলিলা কৰব ভাব একটা যোগতৰ পাকাৰ, ভাবতের প্রত্যেক श्राप्तान्ते माइलक पश्चिष्ठ बाकाव धरा मर्वकर वहारिकर সংস্কৃত ভাষার আলোচনা বাকার সর্বভারতীয় ভাষা হিসাবে এক্ষাত্র সংস্কৃত ভাষাকেই রাইভাষা করা চলে--সঙীর্ণভা পরিহার করিলে এক্ষেত্রে বিভর্কের বা সংশরের কোন হের পাকিতে পারে না। পৃথিবীর অনেক সভ্যকাতির মধ্যে সংস্কৃতে বিশেষত্ৰ পঞ্জিত আছেন। বৰ্তমান মুগে দেবেক্সাৰ, বিবেকানৰ প্ৰমুখ মহাপুক্ষগণ সংস্কৃতে নিবৰ উপনিষ্টের বাই প্রচার করিয়া গিরাছেন। অবিংসার মূর্ত প্রতীক যে মহাদ্রা ভারভের বৈশিষ্টাকে ভগংসমুক্তে উপস্থাপিত করিয়া সম্বঞ্জ বিশ্বকে চমকিত করিয়া সিরাছেন সেই গানীকীর সাধনালৰ অবৃদ্য রত্নসমূহ মুখ্যতঃ সংস্কৃত ভাষার লিখিত বিভা रहेर्टि नरवरीय। नरक्य यात् नमाक् वस्त्रीतिय रहेरत মাত্র পাঁচ বংগর পরেই বেখা যাইবে সংস্কৃত শিক্ষিতের সংখ্যা বৰ্তমান ইংৱেকী শিক্ষিতের সংখ্যাকে বছগুৰে অতিক্রম করিয়া বিয়াছে। আৰু অক্বিজান "কত অর সময়ে কত অৱ ব্যৱে, কত অধিকসংখ্যক প্ৰাণীর প্ৰাণ নাশ করা খাৰ" এ বিবৰে চুড়াত আবিভাৱ করিবাতে। কিন্তু বর্তমানে এই অশান্ত কাং কি উপায়ে শান্তিলাত করিতে পারে তাহার উপাৰ ভাৰত ব্যতীত ভোৰ দেশই বিশ্বাৰৰ ভবিতে সভয় ভৱ ৰাই। ভারতকে আৰু হিংসা-বেষকজ্ঞতিত অপান্ত ভগংকে সংক্রত ভাষার লিপিবত আব্যাত্তিকভার বাই প্রচার তারা छैनमांच क्रिएंच स्टेरन-चार हारे मरक्र चारांच महाक् অহুণীনন। যে ভাষা এড ছুসম্বন্ধ ভাষার সম্যক্ত চর্চা হুইলে ভাহার গতি বে হুর্জার হুইতে পারিবে এবং ভাহাই বে এ বেশের শ্রেষ্ঠ রাইভাবারণে পরিণত হুইতে পারিবে ভাহাতে সন্দেহের অবকাশ নাই।

আভ:প্রাদেশিক ভাষা হিসাবে সংয়ত ভাষাই ভারতের সর্বাদ্র পাইবার অবিকারী। প্রভ্যেক অভিকাত खाबाब इरेडे सन बाटक--छारांब जरबटांवा सन नरेवा बाडे-পরিচালনার কোনও অপুবিধা হইবে এরণ হলে হর না। ইংবেছদের আগমনের পর্কে ভারগীতাবা বছল প্রচলিত বাকি-লেও সংস্কৃত ভাষার বৰেষ্ট প্রভাব ছিল। "অন্ত বিক্রম্ব কবলা-**পত্र विषर कार्यार" "अ**व्यत्पत्र" "अनामपूर्यक निर्देशनविषय" ইত্যাদি তাহার প্রমাণ। সংস্কৃত যদি রাইভাষা হয় তাহাতে ভারতের যাবতীয় প্রাদেশিক ভাষা সমূহ হইবার স্থযোগ পাইবে। ব্যাকরণহারা ভূনিরন্তিত সংস্থত ভাষার ব্যবহারে কোন কোন ছানে খণ্ডছি বা আছি যে ছইবে না এরণ কথা বলা যাইতে পারে না, কিছু আভিকার দিনেও আমরা যে ইংরেকা বা যে প্রাদেশিক ভাষা সাধারণত: বাৰহার করিয়া থাকি ভাহাতেও কি সর্বক্ষেত্রে ব্যাকরণের নিরম মানিরা চলি ? ভুতরাং সংস্কৃত ভাষা ব্যবহার করিতে গিরা যদি কোন বাাকরণভা পদ বা বাকা বাবলভ হয় তাহাতে অৰ্ববোৰের বা ভাবপ্রকাশের विटम्ब क्छि स्रेट्य मा । शकास्ट्र बीट्र बीट्र वह इन्छि भक्तक अरङ्ग कार्यात मत्या जान विश्वता अवत वहेता। সম্ভতি প্ৰত্যেক প্ৰদেশ খ-খ মাতভাষাকে শিকার বাহন ক্ষিতে গিয়া এই সংস্কৃত ভাষা হইতেই বিবিধ পত্নি-ভাষা গ্ৰপ্ত করিতেছেন-অবিলয়ে সংস্কৃত ভাষা রাইভাষা-

ন্ধণে গৃহীত হইলে সারা ভারতের পভিতমঙলী দাদা-বিষয়ক পরিভাষা ও স্থাবোধ্য শব্দসমূহ গঠন ভ্রিয়া সম্প্র ভারতের ভ্ল্যাণসাধনে সমর্থ হটবেন।

ইংরেছের দহিত এতকালের যোগাযোগ সহসা হিছ করা অনতব—বিশেষতঃ আত্তর্জাতিকভার প্রভাবও পরিহার করা সভব নর বলিরা বহুকনকে অবস্ত ইংরেজী প্রভৃতি বৈদেশিক ভাষা অবস্তই শিক্ষা করিতে হইবে। প্রাদেশিক ভাষা সেই সেই প্রবেশের অবিবাসীবের অবস্ত শিক্ষর। হিন্দুসমাজের বাবতীর দৈব ও শৈক্রাফি কার্য্য সংস্কৃত ভাষার নির্মাহ্ হইরা থাকে বলিরা বিশেষ করিয়া সংস্কৃত ভাষা প্রভ্যেক হিন্দুর অবস্তশিক্ষর।

কিছ যদি কোন প্রদেশ-বিশেষের ভাষা রাইভাষা হয় তাহা

হইলে রাইায় কার্ব্যে প্রাদেশিকতা বৃদ্ধি পাইবে, সহীর্ণতা প্রপ্রম
পাইবে। তাই হঠকারিভার বলবর্তী না হইয়া, বীরভাবে

চিছা করিয়া উদারভার সহিত সমস্যাগুলি সমাবাদের জ্ঞা

বেড্রন্মের সমক্ষে সবিনরে একটি প্রভাব উপছাপিত করিভেছি। অবিলবে নিবিল-ভারত সংস্কৃত বিশ্ববিভালয় স্থাপন
করিয়া শিক্ষার প্রকৃত সংভার সাবিত হোক।

শিকার উংকর্বলাভের বন্ধ আমাদের যাদ বিবিধ বৈদেশিক ভাষাশিকার প্রবৃদ্ধি কাগিতে পারে তাহা হইলে আমাদের সংস্কৃত সাহিত্যে কিছু শিক্ষীর থাকিলে তাহা প্রহণের বন্ধ সারা পৃথিবীর লোকেদের সংস্কৃত ভাষাশিকার আকালা আগিবে না কেন ? কাকেই সংস্কৃত ভাষার প্রতি বে একটা অবজ্ঞার ভাব নিতান্ত অসম্ভূতাবে স্কৃত্তী হইরা রহিরাত্তে তাহা দূর করিতে হইবে।

### চন্দ্ৰকান্ত দত্ত খাঁ

#### ঐবিজয়গোপাল বস্থ

শ্রীর পঞ্চণ শতাকীতে দিলীখন মহন্দদ তোগলকের রাজ্যাকে বেবতাবত পীর বানজাহান আলি সাহেব পুবা বাংলার সর্ব্রোপক্লবর্তী ছব্রিশাট বহুলে গঠিত সরকার বলিফাতা-বাবের অধীখন হইরা এফেশে আগমন করেন। সে সমর এফেশে অতিমানার মগলাভির প্রাবাভ ছিল। মগেরা মানা ছাবে দহারভি করিত। মিরীহ প্রকার্ত্তের উপর ভাহাদের পালবিক অভ্যাচারের সীমা ছিল বা। ভাহাদিগকে দমন করিবার উদ্দেশ্তই স্বাট্ট তোগলক বানজাহানকে প্রেরণ করেব।

বিলী পরিত্যাগকালে খানজাহান বে সমস্ত সহকুর্মী সক্তে লইবা আনেন তথব্যে মুসলমানত বেষন ছিলেন, হিন্দুও তেমনি হিলেন। সকলেই অভিজাতবংশীর, যক্ষ এবং রাজনীতিকুপল। "বান" উপাধি মর্ব্যাদাস্চক। জাতিবর্ত্ত-নির্মিশেষে ভবী ব্যক্তিমাত্রই এই অভিবার বিশেষিত হইতেন। চন্দ্রকাত বন্ধ এই পদবীর অধিকারী হইরাহিলেন।

বৰেশ্বর আধিশ্বের পুত্রেট্ট বজাহুঠানকালে বে পাঁচ জব জারত্ব কারত্বত্ব হুইতে এ বেশে সমাগত হন তরবো পুরুষোত্তর দত অভতর। চক্রকান্ত তাহার অবজন সপ্তর পুরুষ। তিনি বিশ্লীতে তৌক্রিনবীশের কার্ব্য করিতেন। বানজাহানের সনীক্রপে তিনি বঙ্গদেশে আগননের হুযোগ প্রাপ্ত হন।

প্ৰকল্প শতাৰী বাংলার ইতিহাসে একট শ্বরীর কাল। সেই গৌরবনর মুদ্রে এটিচভছনেবের আবির্ভাব ঘটে। নবছীপে তিনি বে প্রেমের তরক প্রবাহিত করেন, তাহাতে ভ্রু বে শাভিপুর নদীরাই তাসিরা সিরাহিল তাহা নহে, সমর বল্লেশ সে তরলাভিয়াতে আবিল্ডাশ্র হইরাহিল। বাংলার বাহিরেও ইহার প্রভাব সম্প্রদারিত হর।

চল্লকান্ত হাবেলি বলিকাতাবাদ শহরের পূর্ব দিকের বে অংশে থাকিয়া জাহার উপরে ভক্ত বাকসরকারের কার্বা নির্জ্ঞাহ করিতেন তাহাই আন্দিকার চাদেরকোলা পরী নামে অভিহিত। চাদ শব্দ চল্লেরই অপত্রংশ। কোলা, ছাম-বোহক। গৌরাদদেব-প্রবৃত্তিত বর্ষে দীক্ষিত হইরা চল্লকান্ত ভ্যানের পথে অগ্রসর হুইডেছিলেন। তিনি জীবসেবাকে জীবনের সার রুত করিয়া লইয়াছিলেন। কর্ত্রাপালনে তিনি দুচ্চিত্র ছিলেন, কিন্তু নিঠুর ছিলেন না। বাক্ষর প্রহানে অসমর্থ প্রজাদিনের দেয় কর্তার নিক্ষেই বহন ক্রিডেন।

বিদেশ বিলাসিতার শ্রোত তবন এদেশে অব্রাবিট হয়
নাই। গৃহে প্রস্তুত ত্রে নির্নিত বল্লেও উত্তরীয়ে বনীদরিশ্রনির্কিশেষে সকলের অন্ধ্র শোভিত হইত। ইহাদের ভিতর
পার্থক্য ছিল জীবসেবার। সম্পন্ন ব্যক্তি সাধারণতঃ শিবিকাষানে
পভারাত করিতেন। ভাহণতে করেকলন বাহক সপরিবারে
প্রতিপালিত হইত। পদত্রেলে গ্রমকালে বে ভূত্য ভাহার
মন্তক্ত ত্র বারণ করিত ভাহারও পরিকনবর্গের প্রাসাঞ্চাদন
এই কাথ্যে স্ট্রভাবে নির্কাহিত হইত। প্রভাৱের অভিনিপ্রেবা,
আজীবর্ত্তন-পোলন, শোপ্রত্রন-পালন, দৈব ও পিতৃপুরুষের
স্কুতাদির অসুষ্ঠান আবিক সন্ধতিরই পরিচাহক ছিল।

চাদেরকোলা প্রায় চক্ষণান্তের সেবকগণে পূর্ণ ছিল। বাছু দার, চর্পাকার, বাছকার, কুছকার, নরপ্রকার প্রভৃতি ছাতির তবার অসন্তাব ছিল না। এতাছির প্রাক্ষণ, বৈদ্যেরও বাস হিল। অব্দিত অব তিনি ক্বণও পেটকাবছ রাবি-তেন না। "উপার্জিতানাং বিভানাং ত্যাগ এব সংরক্ষণ্য" এই নীতির অস্থসংগে তিনি বার মাসে তের পার্মাণ উদ্যাপন ক্রিতেন। তিনি পিতামাতার সাহংগরিক প্রাহ্ম করিতেন। এতাহুপলক্ষে প্রাক্ষণাতিতালিগকে সাবাাস্থারে বিভালি লানে পরিভৃত্ত করিতেন, অনাধ-আত্রগণকে ভূরি-তোলনে আপ্যারিত করিতেন। তাহার বাসতে নিত্য হরি-সহীর্ডন হটত। তাহাতেও প্রসাদ্বিতরণের ব্যবহা ছিল।

ক্ৰিড আছে, চন্দ্ৰকাণ্ডের হাতে টাকা বাসি হইভ ৰা। তিনি ব্লিডেন---

"বতকণ থাকে বন তোমার আগারে।
নিকে থাও থেতে যাও সাব্য অসুসারে।"
গো-পথাদিকে আহার্যানেও বর্গনাত হয়।
বাসমূচিং পরাং গবে সাহং ঘডাত বো মরঃ।
অফ্যা ব্যমাহারং স গজেং তিশিইক্য্।
তিনি গোলাতিকে ব্যবভাজানে পূচা ক্রিতেন, পূলাচকবে

শোভিত করিতেন, পৃষ্টকর বাভ প্রদান করিতেন। কাকবলি, শিবাবলি ইত্যাদি শারসম্বত কার্য জাহার বৈনন্দিন কর্ম-ভালিকাভুক্ত হিল। ক্টেপভাষের মৃত তিনি স্থানে স্থানে নিষ্ট ফ্রবানি রাখিলা দিভেন।

সে বুগে বৃক্ষ প্রতিষ্ঠা, ক্লাশর ধনন, রাভা নির্মাণ এবং ক্ষমণ কর্মণ ক্রমণ ক্রমণ ক্রমণ কর্মনার উপবিষ্ট ক্রমা ক্লাভি ক্রমেনানন করিছে পাবেন, বৃক্ষাতার উপবিষ্ট ক্রমা ক্লাভি ক্রমেনানন করিছে পাবেন, বৃক্ষাতা করে ক্রমেনানার শাভি করিছে পাবেন সে করে ভ্রমিনে বাগবজের সহিত বৃক্ষ রোপন করা ক্রত। ক্লাশর ধননও ক্ষমণ ভাবে ক্রমিত করিবার বীতি ছিল। কার্মসমাধির পর উৎস্পক্রিয়াও একটি ব্লবিশেষ। ক্রমানারণের স্ক্রম্প প্রনাগ্রমের নিমিত্ত বহু অব্বারে রাভা নির্মিত ক্রত। এই সম্ভেই সেবাব্রের নামান্তর।

চালেরকেল। অঞ্চল হইতে রাজবানী হাবেলি বলিকাতা-বাল পর্যান্ত চক্রকান্ত একটি স্থলনত রাজ। নির্মাণ করান। হঙী, অর, নিবিক। প্রভৃতি যানবাহনে ধনাতা বাজিগণ এই প্রে গভারাত ক্রিভেন। রাভার উভর পার্যে ক্লপ্রস্থান্ত হেম্পন্ত রোপিত হিল। মুধার্ত এবং পথপ্রান্থ পথিক স্থান্ত করিতেন। ক্রিভেন এবং তঞ্চলোরাতলে বিপ্রামন্থ উপজ্ঞোক করিতেন। ভৃষ্ণা নিবারণের কল স্থানে হানে কলাশয়ও খনিত হইত।

খানকাহান আলি স'হেবের ভিরোধানের পর জাহার সহক্ষিগণ এদেশ ত্যাগ করেন। চন্দ্রকান্তও চিরতরে টাদের-কোলা হইতে বিদার লইলেন। ইহার পরই ঐ পদ্লীট শ্রীহীন হুইতে বাকে।

> ৰ্ষিক শ্ৰোভিৱে হাজা নদী বৈভচ্চ পঞ্ম। পঞ্চ যত্ৰ ন বিভৱ্তে তত্ৰ বাসং ন কাবছেং।

অভাভ অবিবাসীরা যোগ্য নায়কের অভাবে উক্ত পাঞ্জনীতি অসুগরণ করিয়া একে একে ছানান্তরে গমন করেন। এইবংগ এই ঐতিহাসিক অনপদট অনপুত হয়। চাঁদেরকোলার অবিকাংশ ভূমিই এবন পার্শ্বর্ডী সাদ্দিরা ও বিছটু নামক এাম-হরের অনীভূত। এবন মাত্র তিন-চারিট পরিবারের বসভিতে এই পল্লীর অভিত্ত রক্ষিত ইইভেছে। তথাব্যে এক বর হিন্দু অপর করেক বর মুসলমান ধর্মাবলম্বী। চারি-পাঁচ শত বংসর প্রেকার রাক্ষি অনক-চুলা ভাাই গৃহী চক্রকান্তের কীর্তি-মৃতি দক্ত বার রাজ্যি অনক বিহামান। কিছু এই রাভা এবন সম্পূর্ণ পরিতাক্ত এবং সম্বতন ভূমির সহিত প্রায় একীভূত। বহু ছামে কৃষকগণ লাদলের সাহায্যে চাম দিয়া ইহাকে মিন্ডিক করিয়া কেলিয়াতে। বে ছলে একটু চিক্ত আছে ভাহাও কৃষ্টকলভায়ত এবং খাপদ্ধুলের অবাধ বিচরণক্ষেত্র।

আৰিও দত্ত বাঁর রাভার ধ্বংদাবশেষ চন্দ্রকান্তের পুণ্যবৃতি বহুষ করিতেহে। জাহার পুণ্যকর্ষের ক্ষেত্র সম্বীণ হইলেও ভাহা ক্ষীণ আলোকবর্তিকার ভার আবিও হীবি বিকিরণ করিতেহে।

धीरात चनतानत न्रा-क्छा अवम कारमत क्षित्रछ।

## চট্টগ্রাম বিপ্লব-কাহিনী

#### **बिज्ञि**महत्त्व त्रायरहोधूतो

চটগান বিপ্ৰব কাহিনীৰ অনেক কথাই অনসাধাৰণ অবগত এ বিষয়ে আত্ৰকাগ অনেক প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ ব্দাছেন। ছই ছেছে। লেগকের এ বিষয়ে বিশেষ জ্ঞান লাভ করিবার श्रुरवात ও সৌভাগ্য इहेबाहिन। चानिशूरवद नदकादी উকিল স্থৰ্গীয় নগেলনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় চট্টগ্ৰানের জ্জাগার नुश्रान्य मामनाश्रान नवकाव भरक भविधानना • करवन। তাহার সহকারীক্রপে লেখককে ঐ মামলা পরিচালনার যোগ-मान कदिएक इडेयाहिन। ये नक्न मामनाय ১৯২৮ थ्डांस इहेट ১৯৩० थुंशेटबंद या मान नर्गछ विभावद বিভিন্ন ঘটনার প্রমাণ উপস্থানিত করা হয়। ১৯২৮ খৃঃ হইতে বিপ্লবী নেতা হুৰ্য্য সেন বিপ্লবীদল গঠন আরম্ভ করেন। ১৯৩০ থঃ ১৮ই এপ্রিল তারিধ রাত্রে বিপ্রবীরা দলবন্ধ ভাবে চট্টগ্রামের বিভিন্ন অন্ত্রাগার আক্রমণ করিয়া প্রচুর আগ্নেয়াল্র সংগ্রহ করিয়া চট্টগ্রামের নিকটবতী প্রা:ড ও জগনে আশ্রা গ্রহণ করেন। তাহার পর হইতে দীৰ্ঘদিন প্ৰ্যান্ত পুলিদ ও দৈক বাহিনীৰ সহিত विश्ववीरनव मार्थ मार्थ मञ्चर्य इय। देखिमस्या विश्ववीरनव ष्यत्तरक भूनिम घावा ग्रुक इन अनः कांशास्त्र विकरक ১৯৩০ সালের ১৬ই কেব্রুরারী মানলা আবম্ভ হয়। চট্টগ্রামের গইরিলা গ্রামে সূর্য্য সেন পুলিস ও সৈক্তবাহিনীর স্হিত সঙ্ঘবের পর ধৃত হন। অবশেষে ১৯৩৩ সালের ১৯শে মে চট্ট গ্রামের গহিরা গ্রামে সরকার বাহিনীর সহিত শেষ সংগ্রামের পর তারকেশ্বর দন্তিদার ও করনা দত্ত ধুত হন।

বিপ্লবীদলের অনেক চিটিপত্র রচনা, সাঙ্কেতিক বার্ত্তা প্রভৃতি পুলিদের হস্তগত হয়। সে সকল প্রমাণ স্বরূপ বিভিন্ন মামলায় দাখিল করা হইয়াছিল। তাহা সাধারনের নিকট প্রকাশ করা হয় নাই। ঐ সকল কাগজপত্র মামলায় নথিছুক্ত ছিল, বর্ত্তমানে তাহার অভিছ আছে কিনা জানি না। কিছু মামলা পরিচালনার জন্ত অনেক কাগজের অবিকল নকল ছিল। তাহা হইতে বর্ত্তমান প্রবন্ধ, প্রীতিলতা ওয়াদাশারের একখানি পত্র এবং স্থ্য সেনের ঘুইটি রচনা প্রকাশ করা যাইতেছে।

ক্ষ্য সেনের পরিচয় বন্ধসমাজে দিবার আবশ্রক নাই। তাঁহার সহকারীদের মধ্যে ছুই জন নারী বিপ্লবী ছিলেন, প্রীতিশতা ওয়াদাদার ও কল্পনা দত্ত। প্রীতিশত। চট্টগ্রাম নিবাসী অগবন্ধু ওয়াদাদাবের কন্যা। তাঁহার ভাকনাম

রাণী। ১৯২৮ খঃ প্রীতিলতা চটুগ্রাম খাতাগীর বালিকা-বিভালয় হইতে কুতিত্বের সৃহিত প্রবেশিকা পরীকা পাস ক্রিয়া আই-এ পড়িবার জন্য ঢাকার যান এবং ১৯৩০ খ্রঃ প্রথম বিভাগে আই-এ পাদ করেন। তিনি বালিকাদিগের মধ্যে প্রথম স্থান ও সাধারণ প্রতিযোগিতায় পঞ্চম স্থান অধিকার করেন। ১৯৩০ খুঠান্দে ১৯শে এপ্রিল তাহিখে পরীকা অস্তে ঢাকা হুইতে চটুগ্রাম ফিরিবার পথে প্রীতিনতা পূর্ববাত্তে অহুষ্ঠিত অস্ত্রাগার লুগ্ঠনের ঘটনার বিষয়ে অবগত হন এবং বিপ্লবাদের সাহদ ও বীরত্বের কাহিনী ভূনিয়া মুগ্ধ হন। বিপ্লবীনেতা মাটারদার সহিত সাক্ষাতের জন্য ভাহার মনে প্রবল আকাজ্যা জাগে। কিছুদিন চটুগ্রামে থাকিয়া কি এ পড়িবার অন্য প্রীতিলত। কলিকাতায় আদেন। কলিকাভার থাকাকালীন ১৯৩১ পুটান্দের জ্লাই মাদে তিনি এক জন বিপ্লবী বন্ধুব নির্দেশে আলিপুর জেল অবক্র প্রাণদণ্ড-প্রাপ্ত বিপ্লবী রামকৃষ্ণ বিশ্বাদের সহিত ভগ্নী পরিচয় দিয়া সাক্ষাং করেন। এ সময় হইতে রামক্ল विचारमव कांभीव निन भगान्छ ( ১৯৩১ খুडात्मव हो न्यागहे ) তিনি বছবার রামক্লঞ বিখাসের সহিত দেখা করিয়া-ছিলেন। ভাঁহার সহিত পরিচয়ের পর প্রীতিলতার মনে সাক্ষাংভাবে বিপ্লবে যোগদান করিবার জন্য প্রবন্ধ আকাজক। জন্মে। কিন্তু বি-এ পরীকা দিবার জন্য প্রীতি-লতাকে ১৯৩২ সালের এপ্রিল মাদ পর্যন্ত কলিকাতার তিনি Distinction-এ বি-এ পাদ থাকিতে হয়। কবেন।

বি-এ পরীকা অস্তে মান্টারদার সহিত সাকাং করিবার জন্য প্রবল আকাজ্ঞা লইয়া প্রীতিলতা চট্টগ্রামে নিরিয়া যান। ঐ সমরে চট্টগ্রাম অগ্নাগার লুঠনের প্রথম মানলা স্পোণাল ট্রাইবুনালের নিকট শুনানী হইতেছিল, তাহাতে গনেশ ঘোষ, অনম্ভ সিং, লোকনাথ বল প্রভৃতি অনেকেই আসামী ছিলেন। সুধ্য সেন, নির্দ্ধল সেন প্রভৃতি বিপ্লবী দলের ক্ষেক্তন ধ্রা পড়েন নাই।

স্ব্য সেনের নেতৃত্বে ঐ বিপ্লবীদল তথনও নৃতন সভ্য সংগ্রহ করিয়া বিপ্লবী প্রচেষ্টা চালাইতেছিলেন। কর্মনা দত্ত বিপ্লবীদলভূক্ত ছিলেন। তিনি স্ব্য সেনের আবাসস্থল জানিতেন এবং জেলের ভিতরের ও বাহিরের বিপ্লবীদলের সঙ্কিত বোগাবোগ চালাইতেন। ক্রমনা দত্তের সাহায্যে প্রীতিলতা ১৯৩২ সালের যে মাসে বিপ্লবী নির্মাণ সেনের

সহিত এবং করেকদিন পরে ছব্য সেন ও নির্মাণ সেন উভয়ের সহিত দেখা করেন। তাহারা ঐ সময়ে ধলঘাটে এক বিধবার গৃহে অবস্থান করিতেন। প্রীতিলতা ঐ স্থানে করেকবার তাহাদের সহিত সাক্ষাৎ করেন।

১৯৩২ সালের ১৩ই জুন তারিখ রাত্রে পুলিস ও সৈন্যবাহিনী ক্যাপ্টেন ক্যামেরণের নেতৃত্বে ধলঘাটে হুর্ঘ্য সেনের আবাসফল ঘেরাও করে। ঐ সময় সেখানে
হুর্ঘ্য সেন, নির্মাল সেন, প্রীতিলতা এবং অপূর্ব্ব সেন
(ভোলা) ছিলেন। উভয় পক্ষে যুদ্ধ হয়। নির্মাল সেনের
গুলিতে ক্যামেরণ নিহত হন এবং পরে সৈন্যদের
গুলিতে নির্মাল সেনে ও অপূর্ব্ব নিহত হন। হুর্ঘ্য সেন ও
প্রীতিলতা ঐ স্থান ত্যাগ করেন।

ধলঘাট সংগ্রামের পর প্রীতিলতা পুনরার ভাহার পিতার গৃহে ফিরিয়া আদেন ও পরে ১ই জুলাই তারিখে শেববারের মত পিতৃগৃহ ত্যাগ করিয়া স্থ্য সেনের সহিত বোগদান করেন। প্রীতিগতার একান্ত আগ্রহে স্থ্য সেন ভাহাকে পাহাড়তলী ইউরোপীয়ান ক্লাব আক্রমণের নেতৃত্ব অর্পণ করেন। ১৯৩২ সালের ২৪৫৭ সেপ্টেম্বর রাত্রে প্রীতিলতা পুক্ষবেশে ঐ অভিযানের পরিচালনা করেন। বিপ্লবীদল আক্রমণের পর ঐ স্থান পরিচালনা করেন। বিপ্লবীদল আক্রমণের পর ঐ স্থান পরিচালনা করেন। কিন্তু প্রীতিগতা পটাসিয়াম সায়ানাইড থাইয়া প্রাণত্যাগ করেন। পরদিন ভাহার মৃতদেহ পাহাড়তলী ইউরোপীয়ান ক্লাবের সন্নিকটে পাওয়া যায়। গামে দে আমা ছিল ভাহাতে তাঁহার বক্ষন্থলে একথানি ছোট শ্রীকৃষ্ণের ছবি সংলগ্ন ছিল।

হুৰ্ঘ্য দেন প্ৰীতিলতাকে বীৱবেশে সাদ্ধাইয়া ঐ অভিযানের নেতুত্বের ভাব দিয়া সমরান্তনে পাঠাইয়া দিয়াছিলেন। প্রীভিলভা নিশ্চিত মরণ বরণ করিবার একান্ত আগ্ৰহ লইয়া সুৰ্যা সেনের নিকট হইতে বিদায় গ্ৰহণ কবিয়া আদেন। ঐ শেষ বিদায়ের পূর্ব্বে প্রীভিলভা ক্ষেক্থানি চিঠিপত্র লিখিয়া ঐ স্থানে বাধিয়া আদেন। ভাহারই একথানি "দাদা" স্থ্য সেনের উদ্দেশ্যে লিখিত। সেই পত্রধানি নিম্নে প্রকাশিত হইল। প্রীতিলতার মৃত্যুতে সূর্য্য সেন বিশেষ অভিভূত হইয়া পড়িয়াছিলেন এবং ভাহার একটি প্রবন্ধ লেখেন এবং কয়েকদিন পরে "অমুভূতি" নামে আর একটি প্রবন্ধ লেখেন। বর্ত্তমান প্রবন্ধে সূর্ব্য সেনের উদ্দেশে প্রীতিশতার লিখিত চিঠি এবং সূর্যা সেনের "বিষয়া" ও "অহভৃতি" প্রকাশিত হইল। এবং विপ्रवमः कां चानक कां भवन क्यां मानव निक्र পাওয়া গিয়াছিল।

#### প্ৰীভিশভাৰ চিঠি

नान-

জীবনের গোধৃলি বেলার ভগবান আমার তোমাকে দিয়েছিলেন। আমি মাথা পেতে আনন্দভরে তাঁর এই দান গ্রহণ করে ছিলাম। আজ আমার স্বাইকে ডেকে বলতে ইচ্ছা করছে—

"ওগো ভোমরা শুনে বাও—আমি এমন মান্ত্র পেরেছি বাকে পেলে ভোমরা নিজেদের ভাগ্যবান মনে করতে— আমি এমন একটি মহান্ হাদরের পরিচর পেরেছি বা আমার জীবনকে চলার পথে অনেকধানি এগিরে দিয়েছে।"

দাদা! তৃমি যে আমায় অনেক দিয়েছ হাদয় উপ্লাড় করে আমাকে শ্বেহ করেছ—প্রতিদানে কেবল ব্যথাই পেয়েছ—আন্ধ আমার দেই একমাত্র হংগ। তোমার শভ অহুরোধদরেও আমি তৃলতে পারলাম না—বে আমি ভোমায় ব্যথা দিয়েছি, তোমার আদেশ অমান্ত করেছি। কিন্তু দানা, তৃমি আমায় তুল বুঝেছিলে এবং আন্ধও আমি এই ধারণা নিয়েই যাচ্ছি বে তৃমি আমায় ঠিক বুঝনি। বুঝবার চেষ্টা করনি—একটু ভাবলেই বুঝতে রাণীর এতটুকু দোষ ছিল না। বদি সেইজন্ত একা আমি ছংগ পেয়ে বেতাম আমার আনন্দের সীমা থাকত না—আমি বে কারও এতটুকু হংগ দহু করতে পারি না দাদা। ভেবেছিলাম যাবার আগে কাউকে এতটুকু হংগ দিয়ে যাব না। হংগ পাবার জন্য আমি বরাবরই প্রস্তুত ছিলাম। কিন্তু হংগ দিতে আমি রাজী নই।

আমার হয়ত আরও হ'একটা কথা বলবার ছিল। ইচ্ছা করলে বলতে পারতাম, কিছু বলিনি এই ভেবে বে তুমি ঠিক বিখাস করবে না। আমি ভগবানের পায়েই আমার শেষ কথা নিবেদন করে দিলাম।

দোহাই দাদা! আমি একটা তৃ:খ নিমে গেলাম বলে তৃমি তৃ:খ পেও না—তা হলে বে আমার আছা শাস্তি পাবে না।

তৃমি আমার অনেক দিয়েছ—এতথানি পাব আমি কোন দিনও করনা কবিনি। তাই আমি এক একদিন ভাবতাম এত পাওরা আমার সইবে না। আমি বে এতথানি পাবার বোগ্য নই। তোমার মধ্যে আমি শিশুর সরলতা দেখেছি—তোমার নিঃস্বার্থ স্বেহ আমাকে মুগ্ধ করেছে—তৃমি বাত্তবিক্লই অতল। আমি ভোমার নাগাল পেলাম কই ? ভেবেছিলাম অনেক লিখবার আছে কিন্তু পারলাম না।

বিদায়ের বাশী করুণ স্থরে বেক্সে উঠেছে। মনটা কেবলই শুদীমের পানে ছুটে চলেছে। আমি চল্লাম লালা। আমার আশীর্কাদ কর, আমার সব লোব ক্রটা ডুলে বাও। তোমার কাছে কোন লোব করেছি বলৈ ত মনে হচ্ছে না—বদিও বা করে থাকি সে আমার মেরেলী মনের অভ্তপানা ছাড়া আর কিছুই নয়।

এই বিশ্বাদ বেন ভৌমার থাকে দাদা বে রাণী ভোমার কাছে বেমনটি এসেছিল ঠিক ভেমনটিই সে ফিরে গেছে। ইতি—

বোন্।

বিজয়া

তোমায় ঠাকুর বলব নিঠুর কোন মৃখে ? শাসন তোমার যতই গুরু ততই টেনে লও বুকে।

ষ্মাগুনের পরশমণি ছোঁয়াও প্রাণে এ জীবন পূর্ণ কর দহন দানে।

আমার এ কুদ্র জীবনে কত বিজয়াই তো এসে গেছে। কিছ আঞ্চকের বিজয়া আর অন্ত বিজয়ার মধ্যে কত তফাৎ --- এবারকার বিজয়া যেন সবচেয়ে বেশী মূল্যবান। জীবনে वा मिथिनि, जीवरन वा भारेनि, जीवरन वा निथिनि अमन কত অভিনব জিনিব নিয়েই বিজয়া এলো আজ আমার কাছে। কত নৃতন অভিজ্ঞতাই সে নিয়ে এলো। গত তুই মাদ যেন আমার জীবনের অভিনব অভূতপূর্ব্ব অধ্যায়। এই চু'মাদের অভিজ্ঞতা, অমুভৃতি, আনন্দ, বিষাদ, জালা जामाद जीवत्नद श्रुव वर्ष मक्ष्यहे दृश्च दहेन। जाज विक्याद দিনে মার কাছে প্রার্থনা করছি বেন এই অমূল্য সঞ্চয়টুকু আমার জীবনকে ঐশব্যময় করে তোলে। এই ছু'মাদের স্বকিছুর মধ্যে আনন্দই স্বচেয়ে ছাপিয়ে উঠেছে। এত चानम बीवान त्व शाहिनि, विवास चात्र जाना चानमात्क আরও মধুমর করে তুলেছে। আমার তুর্ভাগ্য-একাস্ত ছুর্ভাগ্য যে এমন প্রাণমাতান আনন্দের মধুর স্বতিই আৰু चामात्र चहत्रह राथा मिटच्ह। चामता हर्वन मानद,---আমাদের কাছে এত স্থলর আনলটুকুর চেয়ে এমন সানন্দের ঢেউ খেলিয়ে গেল তাকে হারাবার ব্যথাই বড় रुरव डिठेन ।

আড়াই বংসরের মধ্যে তিনটি বিজয়া এলো, এর মধ্যে কড অন্তর্গ বন্ধু, কত আদরের ভাইবোন জীবনের বিজয়াই চোখে দেখলাম—আর পূর্ণ দায়িন্থই ঘাড়ে নিলাম—আজ একে একে সব কথা মনে পড়ছে। আজ মনে পড়ছে কত স্থলর অব্ল্য বন্ধরাজি দেশের স্বাধীনভার কত জীবনের স্থা, সম্পাদ, ঐথব্য সব ভুক্ত করে হাসভে

श्रांत माज्य निर्देश निर्देश कार्य करिय करन लाइ, একটু विधा करवनि, একটু সংঘাচ করেনি, আনন্দে মাজে-ধারা হয়ে বেচ্ছার মরণের কোলে ব্রাপিয়ে পচ্ছে। আজ এমন পবিত্র দিনে তাঁদের কথা মনে করে আমার মুমত কঠিনহৃদয়ের চোথের জল আগছে—তাদের বীরত্বের কাহিনী মনে পড়ে আমার গৌরবে বুক ফুলে উঠছে। নরেশ বিধু, টেগরা, ত্রিপুরা, মধু, অর্দ্ধেন্দু, প্রভাদ, নির্মাল, পুলিন, মতি, শশাৰ, জিতেন, আন্দু, অমবেক্স, মনা, বঞ্চত, দেবু, चरिन, गायन, बामकृष्ण, निर्मन, ভোলা স্বারই কথা আৰু একে একে মনে পঁড়ছে। आत मुख्ति মধ্যে निया जामित বিজয়ার সম্ভাষণ জানাচ্ছি। কত জীবনের বিজয়ার নিমিত্তই হলাম-কড ক্ষেহ্ময়ী জননীর বুক শৃত্ত করে জার সোনার পুড়লিকে স্বাধীনভার বেদীমূলে আছ্ডি দিয়েছি—কভন্সনকে অন্তরীণে, কারাগারে, নির্কাসনে, দ্বীপান্তরে পাঠিয়েছি, খবে খবে হাহাকাবের স্ঠে করেছি—দেশের উপর গভর্ণ-মেণ্টের শভ্যাচারে নির্যাতন টেনে এনেছি। এ স্বের मायिष (थरक निरम्बरक वान मिट्टे कि करत्।

মা আনন্দময়ি মা আমার, আজ তোমার বিসর্জনের দিনে তোমায় একান্ত ব্যাকুল হয়েই জিল্লাদা করছি—মামি কি অক্তায় করে বাচ্ছি ? পনর বংসর আগে অনেক ভেবে চিতে, ভাল মন সব বিচার করে জীবনের বে লকা, বে আদর্শ এহণ করেছিলাম আজও তাই আঁকড়ে ধরে আছি। হর্মলতা কি আসতে চায় নি? কত রকমের হর্মলতা আসতে চেয়েছে কিন্তু তবুও নিজের লক্ষ্যটিকে ত ছাড়ি नि। जाज अपन इटक्ट, थूर निःमत्मदह यान इटक्ट जाबि বে পথে চলেছি দেশের অনেক লোক ভূল বুঝলেও সেই পর্বটাই ঠিক। এ বিশাদ এখনও আমার অটুট আছে, বে আমি অক্তায় করছি না, পাপ করছি না, দেশের স্বাধীনভার জ্ঞা যুদ্ধ করতে গেলে আমার দেশে যে হাহাকার, অত্যাচারের সৃষ্টি হয়েছে, এর চেয়ে আরও অনেক বেনীই— সব দেশেই তাই হয়েছে। আমার আদর্শের উপর সম্পূর্ণ বিশাস রেখেই আমার পথেই আমি চলেছি-এখনও কোন বিধা আসেনি। মা ভোমায় মিনতি জানাছি, বদি আমার ভূল হয়, আমার ভূল ভেলে দিও। আর বদি ঠিক পথেই আমি চলে থাকি তা হলে আমার বিশাসকে আরও শক্ত করে দাও, আমাকে আরও শক্তিমান- করে দাও--আমার মধ্যে বেন কোন বকমের চুর্বলতা না আসে, আমি বেন আমার পথ থেকে কোন দিন এক চুলও না সরি। আমি বেন বড় নিঠুর ছিলাম, কিন্তু গত ছ'মাসের পথ চলা বেন আমার নিঠুর হৃদরের মধ্যে মমতা এনে দিয়েছে. কাৰণ্যের স্থাট করেছে, ভাই অভি আগবের ছেলে, মেছে,

ভাইবোনকে হারিয়ে তাদের বে সব আত্মীয়বজন আজ বিষয়ার দিনে চোখের জলে বুক ভাগাচ্ছেন, তাঁদের কথা মনে করে আমার মনে আজ জীষণ লাগছে। হয়ত তাঁরা আমাকে তাঁদের বুকের ধন হারাবার নিমিত্ত মনে করে আমায় অভিশাপ দিচ্ছেন—দৈজন্য আমি চিন্তা করছি না, কিন্ত তাঁদের বুকভান্ধা ক্রন্দন, মর্মভেদী হাহাকার যে আমার বুকে ভীষণ বাজ্বছে। আমি স্পট দেখতে পাচ্ছি কত ক্ষেহ-ময়ী জননী তাঁর আদরের সন্তানকে হারিয়ে কি মর্মান্তিক কারাই ক দছেন। কি অন্ত বেদনায় তার হাদ্য অন্থির হয়ে উঠছে—বিজ্ঞাৰ এমন আনন্দের দিনটি তাঁৰ কাছে কত যন্ত্রণাদায়ক হয়েছে। বাপ তার আদরের তুলালকে হারিয়ে বিজ্ঞার দিনে সমন্ত উৎসবকে বিযাদময় করে তুলেছেন। ভাইবোন তাদের স্নেহের ভাইবোনকে হারিয়ে আজে কত অন্থনীয় যাতনাই ভোগ করছে। কত বড় অভাববোর তাদের হৃদয়কে ক্ষত বিক্ষত করেছে। এ সব ভেবে আমার মত পাধাণও আজ গলে থাচেছ। আবার তোমায় ক্সিঞ্চাদা করছি মা, আমি কি অন্যায় করে হাক্সি. এত মায়ের চোধের জল, এত বাপের বুকফাটা कान्ना. এত ভাইবোনদের হৃদয়ভেনী দীর্ঘশাস, এ সবের কারণ হয়েছি বংগই আনি কি অন্যায় করেছি। যদি তাই হয় তুনি আনার ভূল ভেঙ্গে দিও। আমায় ঠিক পথে চালিও। কিছু আমার মনে হয় আমি ঠিক পথে চলেছি। তাই চারিদিকে শ্বণান সৃষ্টি হচ্ছে দেখে মনে ব্যথা পেয়েও আমি আমার লক্ষাটিকে বুকে চেপে ধরে আহি-এই আশায় যে এ সকল পবিত্র শ্মণান স্তুপের উপরে একদিন স্বাধীনভার সৌধ নিশ্মিত হবে।

পনের দিন আগে যে নিখ্ত পবিত্র, স্থলর প্রতিনাটকে 
কে হাতে আয়ুধ, অন্য হাতে অমৃত দিয়ে বিস্ক্রন দিয়ে 
ক্রেছিলাম, তার কথাই আজ সবচেয়ে বেশী মনে পড়ছে। 
তার শ্বতি আজ সবকে ছাপিয়ে উঠেছে। বাকে নিজ 
হাতে বীরদাজে সাজিয়ে সমরাখনে পাঠিয়ে দিয়েছিলাম, 
নিশ্চিত মৃত্যুর কোলে ঝাপিয়ে পড়তে অমুমতি দিয়ে 
ক্রেছিলাম, তার শ্বতি বে মাজ পনের দিনের মধ্যে এক 
মুহুর্ত্ত ভূগতে পারলান না। সাজিয়ে দিয়ে য়খন কন্ধণভাবে 
বল্লাম, "তোকে এই শেব সাজিয়ে দিয়ে য়খন কন্ধণভাবে 
বল্লাম, "তোকে আই শেব সাজিয়ে দিয়ে য়খন কন্ধণভাবে 
বল্লাম, "তোকে আই কেন দিন সাজাবে না।" তখন প্রতিমা 
কেটু হেসেছিল, কি করণ দে হাদিটুকু! কত আনন্দের, 
কত বিবাদের, কত অভিমানের কথাই তাহার মধ্যে ছিল। 
সে নীরব হাদিটুকুর ভিতরে এফুরম্ব কথা আমার সারা 
জীবন ভার্ত্তিও শেব করতে পারব না—শেব করতে চাইও 
না। তা বেলুজামার জাবনে নিত্য নুতন চিন্তার উপকরণ

বৃণিয়ে দিয়ে আমার জীবনকে ঐবর্গামর করে তোলে, দিন
দিন উরান্ত করে তোলে। দে ত নিজ হাতে অমৃত পান
করে অমর হয়ে গেছে। কিন্ত মর জগতে আমরা
তার বিদর্জনের বাধা বে কিছুতেই ভূগতে পারছি
না। আজ বিজয়ার দিনে, দেই দিনের বিজয়ার করণ
স্বৃতি বে আমার মর্মে মর্মে কারার হুর তূলছে—
চোধের জল যে কিছুতেই রোধ করতে পারহি না—
"চাপিতে গেলে উঠে তুকুল ছাপিয়া।"

দে যে আমার আনন্দের উৎস ছিল—নির্দ্ধের, নিম্পাপ, ছিল— হ'লর, পবিত্র মহানু ছিল। তার মধ্যে এক ধারে যত গুণ দেখেছি আর কোন মান্থযের মধ্যে তত গুণ আনি पिथिनि। ভার অস্তরের দৌন্দর্য্য আমাধ্য মুগ্ধ করেছিল। তার মনের জ্বোর, দৃঢ় সংকল্প, সাহস, বীরত্ব কারও চেয়ে কম দেখিনি। ভার সরগতা, বাধ্যতা থুব স্থলার্ই ছিল। তার শিক্ষা, আদর্শের অহুভৃতি, হৃন্দর ব্যবহার ¢িছুরই অভাব ছিল না। সর্কোপরি কঠোর বিপ্লবী মনোভাবের মধ্যে ভগবানের উপর অটুট ভক্তি, বিশাস, সে যে ভাবে বজায় বেখেছিল তা দেখলে বাস্তবিকই তাকে শ্ৰদ্ধা করতে ইচ্ছা হয়। এত গুণের আধার ছিল বলে তাকে ধুবই স্বেহ করতাম--- হুদয়ের সমন্ত উদ্ধাড় করে তাকে नित्य नित्यिक्तिम-- প্রতিদানে অদীম আনন্দই পেয়েছি, এত আনন্দ জীবনে পাইনি, তাই এত স্নেহের, এত প্রতিমাকে নিজ হাতে বিসর্জন দিয়ে চলে म मिरनद कथा, आक किरनहें भरन इस्ह প্রতিমাটিকে। সে এত অফুরম্ভ আনন্দ আমায় দিল। এত গুণ দেখিয়ে গেল. এত মহৎ আত্মদান করে গেল. দেবভার মত শ্রহা আমায় দিল, সে সব কথা মনে করে আত্র আনন্দ না পেয়ে তাকে সরাবার ব্যথাই আমার প্রাণে এত বেশী বান্ধছে—মান্ধ আমার এই একমাত্র ত্ব:ধ।

অহ্বদলনী মা আমার। আন্ধ বিজয়ার দিনে ভোমার কাছে এই কামনা, তুমি আমায় এই বর দাও বেন তার স্থাতি আমাকে আনন্দ দেয়, তার গুণের কথা মনে হলে বেন আমি গৌরব অহুভব করি। তার অপূর্ব আন্ধানন আমার প্রাণে বেন আনন্দ দেয়, আমাকে বেন আরও শক্তিমান করে তোলে, তার প্রকা বেন আমাকে তার প্রকার উপযুক্ত করে তোলে—তাকে হারাবার ব্যথাটা এত আনন্দকে ছাপিয়ে বেন কিছুতেই না উঠে।

আমার স্বেহের প্রতিমানে বলছি—"বাণী, ভোকে আমি কতদিন কত বাধাই দিহেছি; আজ বিজয়ার দিনে তোর দাদার সব দোককটি ভূলে বা, আমার উপর আর অভি

মান বাখিদ না। তোকে হুদঃ উত্থাড় করে শ্রেহ করেছি, তোর গুণ দেখে দেখে আমি মৃগ্ধ হয়েছি—তোর ভগবৎ ভক্তি দেখে তোকে শ্ৰদ্ধা করেছি, তোর সঙ্গে প্রাণ খুলে নি:দক্ষোচে মিশেছি--এত আপনার করে নিয়েছিলাম বলেই হয়ত তোকে দামান্য দোষে অথবা বিনা দোষে কত গাল দিয়েছি, হয়ত কোন সময় ভূল বুঝে তোর মনে ব্যথা দিয়েছি, তোকে খুব স্নেহ্ করতাম বলে ভোকে গাল দিতে কোনো দিন ইভন্তত: ৰবেনি, মনে করতাম তোকে হাজার গাল দিলেও তুই আমার উপর রাগ করবি না, কোন দিন রাগ করিসও নাই—শেষ মুহুর্ত্তে ভোকে ভূল করে আমি একটু গাল দিয়েছিলাম বলে তুই হয়ত অভিমান নিয়ে গেছিস। আজকের দিনে তুই যেখানে আছিস সেখান থেকেই আমার সব দোব ত্রুটির জন্য আমায় ক্রমা করে যা। শেষ মৃহুর্ত্তে তোকে একটু কষ্ট দিয়েছি বলে আমি যে দিনরাত অশাস্তির দহনে দশ্ধ হচ্ছি তা তো তুই দেখছিস। তোর দাদা যেন শাস্তি পায় তার ব্যবস্থা তুই করে দে। তোর কি মনে নাই তুই তোর দাদার ত্রং একটুও সহু করতে পারতিদ না। তাই আবার বলছি আদকের এই পবিত্র দিনে আমার দোষকটি সব ভূলে গিয়ে হাসিমূৰে তোর দাদার বিজয়া-সম্ভাষণ গ্রহণ কর। আমার স্বেহের সম্ভাষণ—খন্ধার সম্ভাষণ তোকে জানাচ্ছি। আৰু মিলনের मिन, ज्ञां जिल्ला ज्ञांन वा अयो प्राप्त मिन, विवास, विश्वास, स्माय ক্রটি সবই ভূলে বাওয়ার দিন, আব্দ তুই আমার পাশে থাকলে বে আনন্দ আমি পেতাম দুর থেকেও সেই আনন্দ তই আৰু আমাকে দে। এমন ফুলর দিনে মায়ের নামটি নিয়ে প্রাণ খুলে বলতে ইচ্ছা হচ্ছে, তোর মত নির্দোব, নিস্পাপ, নিম্বন্ধ কাউকে আমি পাইনি। বাস্তবিক ফুলেরই মত তুই স্থলর, পবিত্র ও মহান ছিলি। তোর অপূর্বা আত্মদানে তোকে আরও হন্দর আরও মহনীয় করে তুলেছে।

বরদাত্তী মা আমার—সামায় আশীর্কাদ কর থেন আমার স্নেহের প্রতিমার মধ্যে বা কিছু স্থলর বা কিছু মহৎ দেখেছি তা বেন আমার এবং আমার প্রিয় ভাইবোনেরা জীবনে প্রতিফ্লিত করবার জন্য চেষ্টার ক্রটি না করে।

> "তোমার ইৰ্চ্ছা পূৰ্ণ হউক" শাস্তি! শাস্তি! শাস্তি! অমুডুতি

সেদিন বিজয়ার সন্ধ্যায় পাশের বাড়ীতে উঠানে কয়েক-

জন লোক হরিনাম কীর্ত্তন করছিল। শরতের জ্যোৎস্নায় সারা উঠান ভবে গিয়েছিল। আমার সে দিকে খেয়াল ছিল না—বে ক্ষেছের প্রভিমাটিকে পনের দিন আগে হারিষেছি। তার চিস্তায় বিভোর ছিলাম। वित्नव अधिमधुत रुष्ट्रिन ना। रुठार यन नाम-कीर्खनिंग আমার কানে মধুর ঠেকল। মাথা তুলে জানলার ফাঁক मिरत्र शासकरमय मिरक এक मृत्हे जाकिएस जन्न स्टा शान শুনতে লাগলাম। সঙ্গে সঙ্গে একটা স্থন্দর অনুভূতি এসে আমার অন্তরে একটা আনন্দের প্রবাহ সৃষ্টি করল। মনে মনে একটা স্থন্য শ্রীক্বফের ছবি খুঁজতে লাগলাম-মনে পড়ে গেল পনের দিন আগে বিস**র্জ্জ**নের দিনে প্রতিমার সঙ্গে ছোট শ্রীক্লফের ছবিটি দিয়েছিলাম। সেই স্থন্দর মুর্তিটি মান্দ নেত্রে দেখতে দেখতে হৃদয়ের মধ্যে তার ধানে করতে আৰম্ভ করলাম। কীর্ত্তনের হুর কানের মধ্যে মধুর বাজতে লাগল। মন প্রাণ পুলকিত হয়ে উঠল। সঙ্গে সঙ্গে মনে পড়ে গেল যার বিসর্জনের দিনে মুর্ভিটি সলে দিয়ে দিয়েছিল।ম সে কথা। মনে হ'ল হরিনাম কীর্ত্তন ভনলেই ভার হু' চোধ বেয়ে অল পড়ত এবং গায়কদের সাথে কণ্ঠ মিলিয়ে ভন্ময় হয়ে হরিনাম গাইত। আমার ধ্যানের মৃত্তিটিও সবে গেল না, অথচ মানস নেত্রে দেখতে পেলাম ষে কত ধর করে ফুলের আগন দান্ধিয়ে এই মৃর্জিটিকেই পূজা করছে—্যানন্তিমিভনেত্র মূর্বিটির পানে চেয়ে আছে—নিশ্চল নিম্পন্দ ভাবেই চেয়ে আছে। আর তার ত্<sup>'</sup>চো**খ বেয়ে দরবিগলি চ্থাবে অ**শ্রু গড়িয়ে পড়ছে। এমন পবিত্র দৃষ্ঠ দেখতে দেখতে আমার প্রাণ আন:ন্দ ভবে গেল। ধ্যানের মূর্তিটি এবং ধ্যানে নিরত মাহ্যটি ত্'বনকে এক সঙ্গে দেখতে দেখতে আনন্দে আমার চোখ বেয়ে জল পড়তে লাগল।

কতক্ষণ পরে আমার ধ্যান ভেকে গেল। চোথের জল মৃছে আমার অস্তৃতিটের কথা ভাবলাম। ভাবলাম যাকে হারিয়েছি তার শোকে সারা দিন রাত দগ্ধ না হয়ে এ ভাবের অস্তৃতির মৃত্যু নিজেকে ভূবিয়ে দিতে পার্লেই শান্তি-পাওয়া যায়—হারাবার ব্যথটোকে আনন্দে পরিণত করা বায়, আর সঙ্গে সংক্ হারিয়েছি তাকে যথার্থ ভাবে অস্ত্র করা বায়।

ভগবান, আমাদিগকে এত চুৰ্বল কৰেছ কেন ? এই আনন্দটুকুকে স্থায়ী কৰি নেওয়াৰ ক্ষমতা দাওনি কেন ?

### "হেপা নয়, অন্য কোন খানে"

#### **জীনলিনীকু**মার ভজ

আন্তেদী নাগাণাহাতের সাহ্রেশে তরফারাপ্রছর নিভূত একট পল্লী—নাম ভার ওয়:কচিং। পল্লীটভে কনিরাক নাগা– ধের বাস।

ওয়াক্চিং অবিতাকার পশ্চিমপ্রাম্ভে এক অনতি-উচ্চ গিরি-পুলের উপর নাগা-সর্থার শৌবার বাড়ী। সেধান থেকে যে দুর্ভ নকরে পড়ে তার আর তুলনা নেই।

উর্দ্ধে নিঃসীম শীল আকাশ, নিয়ে সিরিপাদমূল থেকে বিগতের প্রাক্তসীমা পর্যন্ত ভাষায়মান অন্ধপুত্র উপভ্যকার অবস্থ প্রসার। আকাশ ও বরণীর এই অসীম বিভারের মধ্যে ওয়াকুচিং যেম বর্গ থেকে বলে পভা একট নিরুশম লৌক্র্যান্ডবি।

এই পাৰ্ক্ষত্য পদ্ধীর শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি আংক বংশের নাগা-সর্বার শৌবা। বংশমর্বাদার আর প্রতিপদ্বিতে তার কৃতি নেই। ক্ষমিক্ষরাং বন-দৌলত তার প্রচুর, সাংসারিক কোন অভাবই ভার নেই। কিন্তু মনে তার সূব নেই। বড় ছেলে শাহকের বিজে নিয়ে মন্ত চুর্তাবনার পড়ে গেছে শৌবা।

অনেক বৌজার্ জির পর সর্ধার যথন তার নিজ গোষ্ঠার । একটি পান্তীর সন্থান পেলে তথন আগত হ'ল। পান্তীটি তার সপোন্ত চিংমাকের মেরে। গোটা গুরাক্চিং পুঞ্জীতে ধন-সম্পদ্ধ, পদমর্ব্যাদা, বংশ-পৌরব সব দিক দিরেই তার পরেই চিংমাকের ছান। চিংমাকের মেরেটর নাম শলা। শলাকে যেমন করেই হোক পুত্রবধূরণে দরে নিয়ে আসতে সর্ধার বন্ধ-পরিকর হ'ল। শাত্তকর বয়স তথন তের বংসর মান্ত। তার ভাবী বধু কিছ তার চেয়ে বারো বছরের বঢ়। সর্ধার ভাবলে তাতে ক্তি কি। তাদের সমাজে বঢ় দরে এ ধরণের ব্যাপার তাতে ক্তি কি। তাদের সমাজে বঢ় দরে এ ধরণের ব্যাপার তো আর মুত্যন নয়।

ষোট কথা শৌবা নিজের বংশমর্ব্যাদার দিকটাই দেবলে,
পুত্র এবং পুত্রবধুর ভবিগ্রং জীবনের স্থবশান্তির কথা মোটেই
ভাবলে না।

চিংমাক প্রবাবে একটু ইভন্ততঃ করেছিল, বলেছিল,—
"লর্জার, ছেলে যথন ভোষার বড় হবে তথন আমার মেরের
বরসের ভাঁটা পড়বে। তথন যদি শাককের শলাকে বনে না
বরে—আমি আমার মেরের তবিয়তের ক্যাই ভাবছি।

সর্ধার 'নধ্'র (বেনো বদ) পান্রটা এক চুর্কে নিঃপের করে সশব্দে হেনে উঠে বললে—"আরে রেবে দাও ভোষার বত সব হুর্তাবনা। এক সঙ্গে দর করলে সবই ঠিক হরে বার হে। আর আমি বেঁচে গাকতে শাক্ষকের পক্ষে শদার সব্দে সম্পর্ক ছিল্ল করা যে সঞ্জব নর তা ভূমি জান। কিন্তু এটাও সভ্যে যে, আমি চিরকাল গাক্ষব না। কিন্তু গাঁরের মাতক্ষরদের সাম্মে এবুনি আমি এমন ব্যবহা করিছি যে, আমার মৃত্যুর পর শাক্ষক যদি শদাকে ভালাক দিতে চার তা হলে ভাকে সর্ক্ষের হাত হবে। কাক্ষেই ভূমি নিশ্বিত্ব থেকো। এইমান বর্ষন বক্ষ হরে সব বুর্গতে পারবেন তর্পন আর রা কাক্ষেরন না।

এণিকে ছই বেরাই জানন্দে উংকুল হরে উঠল বটে, ওদিকে বর-কনে উভরের নিকটেই কিন্তু এ বিবাহ জাপাভভঃ অবহীন। বরট তো নাবালক মাত্র, সে বেলাগুলো নিম্নে সদী-সাধীলের সঙ্গে থেতে রইল। জার পূর্ণযৌবনা কনের নিকট এ বিরে হেলেবেলা বৈ জার কিছু নয়। কেবতে সে বেল স্ফরী। সে বয়প্রাপ্ত হবার সঙ্গে সঙ্গেই জবিবাহিত ভরুপের দল মধুলোভী ভূলের মভ ভার পালে এসে ভূটেছিল এবং ভালের মধ্যে বেলাং মোরাং-এরঃ একট ছেলের প্রতি সে হ্রেছিল প্রথম্বালা কলতে লাগল অব্যাহত ভাবে।।

বিষের কিছুকাল পরে শলার একট ছেলে জনাল। প্রথম বৌৰনের প্রণয়লীলার পালা শেষ করে এবার খণ্ডরবাড়ীতে গিরে এক নাবালকের বর করতে হবে ডেবে শলার মন বারাপ হরে গেল। বাতে এত শীত্র খণ্ডরবাড়ীতে না যেতে হয় সেক্তে সে এক মনে আকাশের দেবতা গাওয়াং-এর নিকট প্রার্থনা করতে লাগল। গাওয়াং ভার প্রার্থনা শুনলেন। ভূমিঠ হ্বার

শ্রেকে কনিয়াক নাগা প্রায় করেকট বোরাং-এ
বিভক্ত। এক এক গোটার লোকেরা এক এক যোরাং-এর
অন্তর্গত। ভিন্ন তির মোরাং-এর বব্যে বৈবাহিক সম্পর্কের
আবান-প্রদান হরে থাকে।

<sup>।</sup> ক্ষিয়াক্ষের সামাজিক বিধানমতে বিধাহ হওয়া সন্ত্রেও ক্ষেম যে পর্যন্ত না সভানের গর্তবারিদী হয় সে পর্যন্ত তাকে বাক্ততে হয় পিতৃগৃহে। এই সময় হামীর সকে তার হৈছিক কোন সময় বাক্তবে মা। মা হওয়ার সকে সকেই কিছ পূর্ব-প্রামীর সকে সম্পূর্বপে সম্পর্কজ্ঞের করে তাকে বেতে হবে হামীগৃহে। অন্যন্ধ প্রথমের করে ভাত সভান সামাজিক হাইতি লাভ করে। পতিগৃহে আসার পর স্ত্রীকে কিছ এক্ষিতা বভার বেবে চলতে হয়।

কিছুক্প পরেই হেলেট বারা গেল। আপন চুক্তন ভেবে শলা ব্যৱহা নিঃখাস ক্লেলে। সে রবে গেল বাপের বাড়ীভেই। বেশ আনক্ষে তার দিন কাঠতে লাগল।…

প্ৰায় এক ৰূপ পৱে শলা আবার গর্ভে সন্থান বারণ করলে। বধাসমতে ভূমিঠ হ'ল একট বেয়ে—মেয়েট কিছ টকে পেল। এবার আর যামীগুড়ে মা গিয়ে শলার উপার মেই।

বিষেষ দীর্থ বারে। বংসর পর মেরেটকে নিরে শলা যথন প্রথম হামীর হর করতে এল তথন সে প্রোচ্ছের প্রান্থ-সীমার পা দিরেছে। বরস তার সাঁইন্সি—বৌবনে ভাঁচা পড়ে গেছে। আর শাহ্মকের তথন প্রথম যৌবন—বরস তার পঁচিশু বংসর মান্ত্র। তার পেশীবছল স্থাটিত দেহের সোঠব বেমন অনিন্যা, তেমনি অনিত তার সাহস আর শক্তিমন্তা। হামীর পৌরুব-ব্যঞ্জক মৃষ্টিথানির পানে তাকিরে শলার বার বার এই কথাই মনে হতে লাগল বে, হামীগৃহে আগতে তার বড় দেরী হরে গেল। সে শুগু ভাবতে লাগল, নিজের চলে-যাওয়া বৌবনকে কিছুতেই কি আর কিরিয়ে আনা যার লা।

শঞাকে দেবেই কিছ শাহকের যন ভার উপর বিস্তপ হয়ে উঠল। এই বিগভযৌবনা নারীকে নিজের স্বীরূপে ক্লন। ক্রাও বে ছঃসাব্য।

শাইই সে তার মাকে জানিরে দিলে যে, শালার সলে বামী-গিরির অভিনর করা তার পক্ষে সভবপর হবে না। ফলে একই বাড়ীতে বামী-স্ত্রী হ'জনে তারা বাস করতে লাগল অপরিচিত অনাদ্ধীরের মত। পারতপক্ষে শাহক শলার মুব দেবত না।

শাহকের মতিগতি দেখে শৌবা হাদরে নিদারণ আঘাত পোলে। তারই অবিষয়কারিতার দরণ ছেলে আর ছেলের বৌরের জীবন নাই হতে চলেছে দেখে তার বড় অন্ততাপ হতে লাগল। ভাবতে ভাবতে বুড়ো শক্ত অনুবে পড়ল। এই অনুবাই হ'ল তার অভিন অনুবা—করেক দিনের মধ্যেই লে মারা গেল।

বাণের বৃত্যুর পর শাক্ত হ'ল বিপ্ল সম্পত্তির মালিক।
বাণ বা রেখে গেছে তাতে পারের উপর পা ভূলে বলে দিবিয়
আরামে লে জীবনটা কাটরে দিতে পারে। ওরাকাচং-এর
সিরিগাত্রছ আভাইশোট শভক্তেরে মালিক লে। এই সমভ ক্তেতে প্রতিবংসর বে পরিমাণ বান আর জমার উংপন্ন হয়
তাতে শাককদের চার চারট গোলাবর ভরতি হরে বার।

এই পরিপূর্ণ প্রাচুর্ব্যের মধ্যেও যরে কিন্তু তার শান্তি নেই। স্ত্রীর সংস্পর্ণ সে সাধ্যমত এড়িরে চলে। কিন্তু বৈবাং যদি ছ'লনে সামনাসামনি এসে পড়ে তো শলা বাক্য-বাব বর্বব করতে করতে তার কাব বালাপালা করে তোলে। তার উপর বা তো সারাক্ষণ তার উপরে চটেই আছে—চক্ষিশ মন্টা তার তর্থ সমার আর বিরাম নেই।… বাই হোক, শাক্ষকের বিনগুলো চলতে থাকে একই ভাষে।
সন্ধ্যার অবকার থনিবে এলেই সুক্ত হর তার নিশাচরবৃত্তি।
আন্ধ এ মোরাং-এ, কাল সে মোরাং-এ কাঠে তার রাত।
কিন্তু শেষ পর্যন্ত বিবৃত্তি ধরে যার—কোধাও গিরে সে বৃত্তি
পার না।

শীতের অবসামে মিপান তরুরাজি নব কিশাসরদলে তরে উঠেছে। উরত আরণ্য বৃষ্ণসমূহের শাধা-প্রশাধা এক রক্ষ ধাকা থোকা শালা কুলে সমাছের। বসন্ত সমাগ্রে বমন্ত্রি বেন কুমুন-ভূমণে সক্ষিত হরেছে। ওরাক্চিং-এর নাগা-পূঞ্জীতে পুরু হ'ল অউ-লিং-বু অর্থাং বসন্ত উৎসবের সমারোহ।

উৎসবদিনে ভোর হতে না হতেই বালা মোরাং-এর সর্বারের বাড়ীতে নাচার উপর প্রানের সকল কুমারীরা এসে বড়ো হ'ল, কুরু হ'ল তাদের প্রসাবনপর্য। নেরেরা সবাই ইটু গেড়ে সার.বেঁবে বসে গেছে—সর্বারের বেঁা নিজে তাদের কাঁচবঙ আর শাবের টুকরো ইত্যাদি দিরে তৈরি মালা আর রক্ষারি গরনাগাঁট পরিষে দিছে। মেরেদের চুল বাঁবতে আর সাজাতে সারা মুলুকে বালা মোরাং-এর সর্বারের বোঁরের ভুভি নেই—তাই নেরেরা সবাই আজ্ব ভার হারছ।

মাচানের এক পাশে বসেছিল শিক্ষা। থেপং যোরাংএর এক নগণ্য চাবীর মেরে সে—কিন্ত এমনি অনিজ্য তার
ম্থানী আর দেহসোঠব যে, কোনো আং-পরিবারে অথালেই
বুবি তাকে মানাত। তার প্রসাদলাতের জভ ওয়াকচিং-এর
তর্মণদের চেটার অভ ছিল না, কিন্তু আল পর্যান্ত কারুর পানে
সে অহ্বাপের চুটিতে তাকালে না। এই দীর্ঘানী তর্মণীর
ছলোমর দৃগু গতিজনী তর্মণদের হামরে দোলা দিত, কিন্তু
তার মুবের প্রতিট রেধার প্রবল ব্যক্তিন্মের এমনি একটা স্বলাই
হাপ ছিল বে, কৈউ তার কাছে থেবতে সাহ্য করত বা।

সকলের কেশবিভাস সমাপন করে শেবে সর্থারের বে শিকনাকে নিরে পড়ল। তার মাধার কেশে সমতে সিধি কেটে দীর্ষ একটি বিহুনি বেঁবে দিলে। এই একবেশীবরা নিক্ষেত্রন ব্যাপ্ত হ'ল নিকের দেহসন্ধার। পরনের মোটা কাপকটি পরিত্যাগ করে পরলে সে এক হাত চওড়া, নন্ধাপেতে একটি টকটকে লাল রঙের ব্যাবত, আনায়ত কীন কটতে বাঁবলে সারি সারি রঙীন কাঁচে বচিত একটি নীবিবদ ; তার পর নিক্ষের নিরাবরণ বেহকে সন্ধিত করলে সোনালী আর হলদে রঙের রক্ষারি পাণবের মালা, শাবের টুকরো আর পিছলনির্দ্ধিত অলম্র বিচিত্র গরনাগাঁট দিরে। অলহারের প্রাচুর্ব্যে ঢাকা পড়ে পেল তার স্থভোল নিটোল ক্ষ ভন্মর, তার স্ক্রার পেলব বাছ হুগানি একেবারে কলী বেকে কর্লুল পর্যান্ত আর্ভ হ'ল হরেক রক্ষাের রঙীন চুড়িতে। বেহসক্ষা শেষ করে শিক্ষা পারে বীবলে এককোচা মুঙুর— পদক্ষেপর সক্ষে সক্ষে সেওলো তালে তালে রুষুর্যু রবে বাজতে লাগল।

প্রসাধনপর্ক সমাপন হতে হতে বেলা হ'ল বিপ্রহর।
এবার ত্বরু হর কুমারীদের মৃত্য। ঘন্টার পর ঘন্টা তারা
মাচার উপর পরকারের হাত বরাধরি করে সমহরে সমীত
করতে করতে বুঞাকারে মৃত্যু করতে থাকে।

ভাদকে ছেলেরাও কিছ নিদ্ধির হরে বলে নেই। বছক্ষণ যাবং আংবান মোরাং-এ অবিবাহিত ব্যক্ষের আড্ডাগৃহে ভারা নিক্ষের বেশবিভাসে ব্যাপৃত। পরক্ষরের যাধার দীর্ঘ কেশ আঁচড়ে দিরে ভারা ভাষের শির্মাণসংলর লাল ছাগলোবের বুঁটির ওপর এককাতীর বন-বিহুকের হুইভর পালকথছে ওঁকে দিলে। অবশেষে সোনালী আর বেগুনিরভের ব্যক্ত্য কর্ণভূষণে পরে ভারা প্রসাধনের পালা শেষ করলে।

সাৰসক্ষা সমাণনাতে সুনীর্থ বর্ণা এবং স্থতীক্ষ বাগুলো প্রে গুরাতে গুরাতে গাঁরের পথে বেরিয়ে পড়ে তরুপের দল। তাদের প্রচ্ছ উদ্ধাসক্ষনিতে মুখরিত হরে উঠে বন্ধুর পার্কাত্য পল্লীপথ—বুদ্বাআয় বেরিয়েছে বেন কুর্ম্ম সৈনিকের দল। তাদের শির্লাণে গোঁকা পানীর পালক এবং রক্ত-রাঙা পশ্ত-লোবের বুঁটসমূহ ইতন্ততঃ আন্দোলিত হতে থাকে। উৎরাই পথ বেরে যথন তারা নিরে অবভরণ করতে থাকে তথন মনে হর আকাশ থেকে এক বাক বিচিত্রপক্ষ বিহ্ন বেন মাট্রর বুকে নেরে আসতে।

উংরাই পথ অতিক্রম করে তরুপের বল অবশেষে বালা মোরাং-এর সর্বারের বাস্তবদ-সংলগ্ধ উন্তুক্ত প্রাক্তে এসে হাজির হয়। ভাবের অভ্যাসমে মৃত্যপরা মেরেদের অংশিও অক্সাং অহাভাবিক ক্রত ভাবে শুক্তিত হয়ে উঠে, কারো কারো বাচের ভাল কেটে বার।

সহসা প্রচণ হর্ষধনি দহকারে ভাগব মৃত্যে বেতে উঠে তরণের দল, তাদের করগৃত শাণিত বর্ণাকলকে স্বর্গের আলো প্রতিফলিত হরে বক্ষক করতে থাকে। এবনি ভাবে বক্ষার পর ঘক্ষা থরে প্রোদমে চলতে থাকে নাচ—ক্রমে দিন অবদান হর, সৃত্যের হর সামরিক বিরতি। ছেলেরা তবন সার বেঁথে থেতে বসে বার, মেরেরা ভাগের ভাত শৃক্রের মাংস আর মন্য পরিবেশন করে।

বাওয়া-বাওয়ার পর আবার সুক্র হর নাচের পালা—এবার থেলেয়া আর বেরেরা নাচছে আলালা আলালা হু' ভারগার। রাতের অংকার বেবে এসেছে সূত্যপ্রাক্তন। মার্কথানে অলহে গনগনে কাঠের আগুন—তার আভার নাচিরেণের মুবগুলোকে বেবাছে রুক্তমর।

ৰীয়ে ৰীয়ে ভিক কৰে আসছে। নাচতে নাচতে ভক্লপেৱা

বেরেকের সৃত্য-ছলে এসে বিজ বিজ বংবাবীতাকে বিরে
অন্তর্ভাব হরে বাজে। বেবতে কেবতে তরণ-তরুদীরা প্রার
সবাই সৃত্য-প্রায়ণ পরিত্যাগ করে চলে গেল—এবন ভাঙা
আসরে অবিরাম নেচে চলেতে ক্ষেক্ট বাল হোট হোট
বালক-বালিকা।

শাক্ক একচ্টিতে তাকিবে আছে শিক্ষার পাবে।
শিক্ষারও অপলক চ্টি তার মুখের উপর নিবছ। আজ
শিক্ষা মন দিরে নাচতে পারে মি—বছরার তালতক হরেছে।
শাক্ষকের বীরস্বাঞ্জ মুর্ভি আর তার অপূর্বে মৃত্যতকী আজ
শিক্ষার রক্তে দোলা দিরেছে। নাচতে বাচতে আজ
লারাদিন বার বার সে তবু অপাকে শাক্ষকেই দেখেছে।
শিক্ষার সেই প্রশংসমান চ্টি শাক্ষকের চোব একার নি।
সে চাউনি তার মনে একটা অপূর্বে পুলকাস্তৃতি, একটা
অসন্তব আশার সকার করেছে।…

নাচতে নাচতে শাস্তক একেবারে শিক্ষার কাছে এসে দাঁভাষ। ক্ষণকাল ভারা পরন্দারের মুধের পানে নিম্পলক নেত্রে ভাক্তিরে থাকে। এই পরম ক্ষণে ভাদের হু'ক্ষের মধ্যে চোধে চোধে কি কথা হয় কে কানে ?

অক্সাং উভরে হাত ধরাধরি করে জনভিচ্রবর্তী বনাছকারে অনুষ্ঠ হরে বার।

বসন্ত উৎসবের বিনক্তক পরে। সন্ধ্যা উভীর্ণ হরেছে। বাওয়া-দাওয়া সেরে শাক্ষ রওনা হ'ল বেগং মোরাং-এর লর্কারের গুহাভিমুবে।

পাহাছের উপর শীল চক্রাভণের মত টাঙানো উমুক্ত উদার আকাশে প্রকাণ কাঞ্চল-পালার মত টাদ উঠেছে। আকাশ থেকে করে পদা প্লিক্ট ডক্র জ্যোৎস্বাধারা শীচেকার বনভূমিকে যেন রূপার পাতে মুক্ত বিরেছে। পশ্চিমে পাংশা প্রামের পেছন দিক্কার চক্রালোকোরাসিত আকাশ-শর্মী সুনীল পাহাছপ্রেই যেন কোন্ এক মারামর ছ্রবিগন্য সূত্র রহ্জলোকের আভাল ভানিরে হিচ্ছে।

চাদের আলো শাহকের মনে বেদ বেশা ধরিরে বিরেছে। সংসারটা তার কাছে বড় মধুমর ঠেকছে—চোণের সামনে বার বার তেসে উঠছে আকাশের চাদেরই মত গোল, শীতাত গৌর শিক্ষার সুক্ষর মুখবানি।…

ক্রত পা চালিবে, চড়াই পথ বেরে শাহুক উর্ব্বে আরোহণ করতে লাগল।

সর্বাবের বাড়ীতে গৌছে দে কুবারীবের বৌধ পরনাগারের+
বহির্দেশে গা-চাড়া বিবে বলে রইল।···

সেই অনতিবৃহৎ গৃহটির এক্ছিকে একট অত্যন্ত সভীৰ্থ প্রবেশ-৩-নির্গন পথ। গৃহনব্য সনাজ্যাল তাবে পাতা নরেহে কৃতক্তলো অপ্রশন্ত হোট হোট ভক্তপোষ। বরের নার্থানে নেবের ওপর চুলীতে কাঠ আলিরে আঞ্চন করা হরেছে—নেই অলভ অহিশিবা প্রায়াক্তার কক্ষে আলো-আনারির এক বিচিত্র নারা স্টি ক্রেছে। কুমারীরা নিজ নিজ লব্যার উপরে বনে উৎকঠাব্যাক্ত ভ্রহরে প্রণরীয়ের আগমন-প্রতীক্ষা করছে। এদিকে রাজি প্রথম প্রকর উভীর্ণ হরে পেল, কিছ এখনও পর্যাভ হারপ্রাভে তাহের প্রেমান্দদের পদশ্ব তো প্রকৃত হ'ল না। কুমারীদের অলরে আর্গ্য আলা আশকা—নাসক্সজাদের বসভ্রক্রনী বৃধি র্থাই যার। তথ্য স্বাই বিলে বক্ত কৃত্যণ এক বিষাদ্বাধা সভীত ভুড়ে দেয়—ভাতে বেক্তে ওঠে যেন কত মুগমুগাভরের বিরহ-বেদনা।

সদীতের মার্কথানেই হঠাং কছের মত ঘরের মধ্যে চুকে
পড়ে লাভক। সলে সদেই পেরে যার বিরহ্-সদীত। ... স্বাই
উংহক চক্ষে তাকার। কার ভাগ্য এভক্ষের প্রের হ'ল ?
সহসা স্বাই মিলে "চোর" "চোর" বলে সম্বরে টেচিরে উঠে
লাভককে ভাগটে বরে। একট মেরে লাভকের মুবের
কাহে মুব নিরে ভাল করে ভাকে নিরীক্ষণ করে উচ্চযরে
হেসে বলে উঠে—"আরে, এ যে দেবছি শিক্নার মনচোর।
নে ভাই শিক্লা-ভোর চোরকে এবার ভূই লাভি দে।"

ক্ষমে জ্বেম এক একজম করে প্রণরীরা সেই ক্ষে এসে
নিজ নিজ প্রণরিনীর পার্মে আসন এহণ করে। উচ্চ হাজে
লম্ পরিহাসে আনজ-গানে গৃহধানি মুধরিত হরে উঠে। ক্রমে
ক্রমে আগুনের দীপ্তি ভিমিত হতে হতে শেষে সম্পূর্বণে
নির্মাণ হরে যার, পাশাপাশি উপবিষ্ট জোড়া জোড়া প্রণরীদের
ক্রোলে প্রতিক্রিত হারাসুর্দ্ধিশ্রনো মিলিরে যার অবকারে।…

কাষ্টল বেশ কিছুক্ষণ প্ৰথাস্থ কলৱৰ নিৰ্মাণিত । ।
নিৰ্মাণদীপ অৰকাৱ-কক্ষেত্ৰক হবেছে প্ৰেমিক-প্ৰেমিকালের মুহ প্ৰণৱক্ষম। অতি সন্ধৰ্ণনে শব্যাত্যাগ করে উঠল শাকক আর শিক্ষা। ইপিটিণি তারা বাইরে বেরিরে এল। চারিছিক জ্যোৎসার প্লাবনে তেনে বাচ্ছে, পর্যভগাত্তম বেণুবন যেন জ্যোৎসারোকে স্বপ্ন দেবছে । প্রভাবনার আহিন রজে জ্যোৎসারোক ইবা দেবছে । পরত্রের ক্ষানিক্ষাবন্ধ হরে তারা বন্ধপ অভিক্রম করতে লাগল।

প্রিরভনাকে নিবে শাক্ত এসে পৌহল নিজের বহির্বাসীতে -গোলাবরের থোলা বারান্দার। নেবানে বানের আঁট বাটতে বিহিরে শিক্ষা শব্যারচনা করলে।

কিছ এবন রাতে চোবে বুন আসে না—কেনে বসে হ'লনে প্রক্র করলে অর্থহীন অজল আনাপন—সারাধিন কত ক্থাই না হ'লনের যনে ক্যা হরে হিল !

वांशीरण चात्र अपने आवेश विनित्त-त्रक्ती वांशन कर्राह्त---

নে শাহকের স্থী শলা। হয়দত হবে নে চুটে এল গোলাবরে।
এনেই একেবারে বোনার মত কেটে গড়ল। শাহক একট
কথাও বললে মা। শিক্ষার হাত বরে গোলাবর পরিত্যাগ
করে পথে বেরিরে পড়ল। বনপথের বাঁকে যথন তারা
অনুত হবে গেল তথন বরে কিরে গিরে ছ্মত বেরেটকে বুকে
ভড়িরে বরে সে একেবারে ভুকরে কেঁমে উঠল।

এদিকে জ্যোৎসালোকে আবার পুরু হর শাহক-শিক্ষার প্রচলা। অবশেবে সিরে পৌছর তারা প্রারপ্রভান্ত বাধ-ক্ষেতের বারে, শাহকের দোচালা ক্ষেত্রকীরে।

এমনি ভাবে পরিপূর্ণ মিলনামন্দের ভেতর দিয়ে কাইতে লাগল এই প্রণমীমূগলের দিনের পর দিন, মাসের পর মাস।

শাহকের দোচালা ক্ষেত্রইই এবন তাদের নিভ্ত গোপন বিলনের ছান। সেবাবে লোকালরের কোনো কোলাহল তাদের কানে পৌছর না। তবু শোনা যার, অনতিপূরে এক সিরিনদীর একচানা অঞ্জ গর্জন।

শিকনার আছুলগুলো নিয়ে খেলা করতে করতে হঠাং আবেগে উজুসিত হয়ে শাকক বলে ওঠে—"শিকনা, ভোষার না শেলে সংসারে যে এত পুখ আছে তা আমি স্বামতেও পারতাম না। বিশ্বাস করো, ঐ নদীর চেয়েও গভীর আমার ভালোবাসা, এর শ্রোভের চেয়েও বেশী তার বেগ।"

শিক্ষা কোষো কৰাৰ দেৱ মা, শুৰু কেমন বেন অসহায়ের
মত প্রিরতনের মুবের পানে তাকিরে বাকে। হঠাং বেদ
তার স্থলর মুবে নামে বেদমার পাগুর হারা—আনমনে সে বেন কি ভাবতে বাকে। শাহক তার এই ভাবাছরের কোন
হেতৃ বুঁজে পার মা। ••• দিন দিন শিক্ষার বিবাদের মানা
ক্রমেই বেন বেড়ে চলতে থাকে।

শেষে শিক্ষা একদিন সব কথা গুলে বললে, সে অভঃসভা।
ভবে শাহকের চোবের সামনে সারা পৃথিবীটা বেন খুরতে
লাগল—একেবারে মাধার হাত দিয়ে সে বলে পছল।

শিক্ষা গর্জে বারণ করেছে তার সভান, এতে তো ছ্নিরার সবচেরে বেশী আনক হওরার কথা ছিল তারই—কিছ এ অ-ছাত সভান বে তার অবাছিত। সে তো আসবে না তাবের উতরের বব্যে অচ্ছেত বোগছত ছাপন করতে। বে বৃহুর্জে স্ ভূমির্চ হবে সেই বৃহুর্জেই পছবে শাহক-শিক্ষার প্রণরে পূর্বছেই। শিক্ষা করেক বছর আরে বেকেই অপরের নিকট বাগ্ছা। বিরের প্রাথমিক অচ্চানামিও তব্যই হরে পেছে। বা হ্বার সঙ্গে সঙ্গেই হবে তার বৃক্ত ছাবীম জীবনের অবসান। চিরতরে পিত্রালর পরিত্যাগ করে নবজাত সভানকে শিরে চলে বেতে হবে তাকে ছাবীগৃহত্—শাহকের সকে হবে তার চিরবিজ্ঞেই।•••

কিন্তু সেই চয়ৰ ছবিঁদ আসতে এখনও নাসকল্পেক বাকী

আছে। শিক্ষার বাধার সম্মেক্ হাত বুলাতে বুলাতে পালক বললে,—"শিক্ষা, ভবিস্ততের হুর্তাবদা এবন রুলছুবী বাক। সমাজের বিবাদকে এক কিন তে! মাধা পেতে নিতে হবেই। কিছু আপাততঃ সমাজ সংসার সব নিতে, মনে হচ্ছে বেম হ্নিয়ার চুনি আর আমি হাড়া আর কেউ নেই।"

শিক্ষা একাভ অভ্রানের দৃষ্টিতে শাহকের মুখের পাষে ভাকালে—ভার মধে হ'ল ভাষের ছ'লনের এই যে নিবিচ্চ গোপন মিলন সংসারে একমাত্র ভা-ই সভ্য, বাকী সবকিছুই অবাভব, ছায়ার মতন মিধ্যা।

শাস্তক-শিক্ষার প্রণয়লীলা চলতে লাগল ঘণাপুর্বং, কিছ পরিপূর্ণ মিলনের যাবে চিরবিচ্ছেদের আশহা তালের ছ'ক্ষকে বিরে রইল ছঃবপ্লের মত।…

এখনি ভাবে কাটল করেক মাস। এখন শিক্ষা আসর-প্রস্বা – ভার চাকল্যের হরেছে অবসান, গতি হরেছে মছর। সে বুকতে পেরেছে শিগ্রীরই সে হবে সভানের জননী— ভাবতেও সারা বেহে যেন একটা পুলক-শিহরণ খেলে মার, কিছ সলে সলেই মনে পড়ে সভান ভার যেদিন প্রথম পৃথিবীর আলোবাভাসের স্পর্নাভ করবে সেই পরম আনস্কের দিনই হবে ভার কাছে চরম বেদনার দিন—সেই দিন খেকেই হবে ভার সভানের জন্মভাতার সলে ভার চির-বিচ্ছেদের স্ক্চনা।…

সেদিন সন্ধার পর ছ'জনে ভারা চলে পেল ওটিং-এর বনভ্বিতে। আকাশে টাদ উঠেছিল। বনভলে পা ছটিয়ে বসল শাহক, আর শিক্না ভার কোলে মাধা রেখে তৃণশয়ার ভরে পড়ল। ছ'জনেই চুপচাপ। হঠাং শিক্না ভার নিজেকে সামলে রাখতে পারলে না। শাহকের কোলে মুখ ওঁকে সুলে কুলে কুলিয়ে কুঁপিয়ে কাঁদতে লাগল।

এ কাছা কেন শাস্ত্ৰের তা ব্বতে বাকী রইল না। সে কোন কথা বললে না, তবু নীরবে তার মাধার হাত বুলিরে দিতে লাগল।

পর্যাধন যথারীতি সন্থার পর শাক্ষ গিরে হাজির হ'ল ধেশং যোরাং-এ কুমারীদের খৌশ শর্মাগারে। হরের ভেতরে চুকে দেশলে শিক্ষার চৌজির উপর পুরু শয্যাট পড়ে আছে। পরিচিতারা সকলেই উপহিত। কিছু তার উৎস্ক ব্যঞ্জ চুকু মুট্ট যার সন্থান করছে সেই শুধু নেই। তবে কি---শাক্ষের বুকু হুরু করে কেঁপে উঠল।

একট প্রগল্ভা নেরে বিল বিল করে হেলে বলে উঠল— "ওহিকে ভাকালে কি হবে মশাই। সে আর আসবে মা… শিক্ষার বে আফ হপুরে তেলে হরেতে গো।…

শাক্ষকের চোথের সামনে আচম্কা বেন নেমে এল গভীর অঙ্কার---যনে হ'ল সবকিছুই বেন হারার মন্ত পুড়ে বিলিয়ে বাচ্ছে। প্রার নেখের ওপরেই বলে পড়ে আর কি। অতি কঠে নিক্ষেকে সামলে নিম্নে মাতালের মত টলতে টলতে সেধান থেকে বেরিয়ে এল।…

নিজের বাড়ীতে কিবে এসে শাহক বহিবাঁটতে বাচার ওপরেই ক্লান্ত বেহু এলিবে বিষে ক্তরে পড়ল। বীর্ণ এক বংসর পরে আবার ক্ষক হ'ল তার একলা নিশিবাগনের পালা। ঘুন চোবে কিছুতেই আসে না। নিজেকে ক্ষেন বেন শিশুর মত অসহার মনে হর। ছঃসহ মানসিক বল্পার সারা রাত সে হটকট করতে লাগল।

পরদিন ভোরে বধন সে শব্যাত্যাগ করে উঠল তথন তাকে দেখলে আর চেনাই বার না। কৃষ্ণিত ললাটে তার ছল্ডিয়ার রেখা, নিশিকাগরণক্লাছ চোধের কোলে পড়েছে কালিয়া, মুখে সর্বাধ হারাণোর হাপ। এক রাজে সে ঘেন বৃত্তিরে গেছে—বরুস তার বেন বিশ বংসর বেড়ে গেছে।

বাড়ী থেকে বেরিরে উদ্বেশ্ছনিভাবে সে ধানক্ষেত্র অভিমুবে রওনা হ'ল। ক্ষেত্র্যিতে গিরে যথন পৌহল তথম দূর দিগভালীন পাতকোই পাহাচ্দ্রেশীর উপর দিরে প্রভাত-ছর্যা আকাশে উঠেছে। বিচিত্রবর্ণাহ্বঞ্জিত আকাশের পটভূষিকার নীল পাহাডের চূড়াসমূহ চালচিত্রের মত শোভনান। পাহাডের পশ্চিম দিককার গড়ানে অংশ এবনও হারার ঢাকা। নীচেকার উপত্যকাভূষি অক্স হিমকণার সমাছের—কে যেন রহত্তমরী প্রকৃতির হস্ত মুখের 'পরে শুজ কোষের অবগ্রহন টেনে দিয়েছে। ছর্ষ্যের সোনালী রশ্বিপাতে প্রকৃতির সেই মুখাবরধর্ণানি কলমল করছে।

এই মনোরম প্রভাতে বাদক্ষেতে ভরণ-ভরুণীদের ভিড় জমেছে—পুরু হরেছে কলল-ভাটার গান। পাছকের মনে পছল, আছ বেকেই আট নিবু (পল্য কর্ডন) উংসবের পুরু। ভরণ-ভরুণীদের মনে ভাই আৰু ভোরবেলা বেকেই গুনীর বাদ ভেকেছে। স্বাই উংস্বাদক্ষে ভরপুর, শুধু ভারই জীবন বেকে উৎস্ব নিরেছে চির্বিহার।

দূরে শাহকের আগবনশীল বৃষ্টিগানি দেশে তার বন্ধু-বাদবেরা পুরী হয়ে হর্ষধনি করে উঠল। কিছু সে কাছে এলে তার চেহারা দেশে স্বাই তো এক্ষেবারে হততহ। ব্যাপার্থানা কি ? শিক্ষার হেলে হওরার প্রয় ভালের ভানে তথ্যও গৌহর নি।

চিনইরাং-এর সক্ষেই তার সক্লের চাইতে বেশী হাছতা। সে ক্রিডেস করলে—"কি রে শাসু, আদ মদ্ধবের বিনে তোর এ তাব কেন? কুর্ত্তি-আমোদে বোগ বেওরা তো চ্রের কথা, চুই কথাই বলহিস না। তোর হ'ল কি, অপ্লব্ধ করেছে না কি?"

শাকক কৰাৰ দিলে, "না ভাই, অপুৰ্যবিপ্নৰ কিছুই নৱ। কাল শিক্ষার কেলে…" আর কিছু লে বলভে পারলে না, সকলের সাবৰে একেবারে বর বর করে কেঁকে কেললে। চিনইরাং ভার হাতে একটা বাঁত্নি বিরে বললে—"এা, একেবারে কেবেই কেললি। ছুই পুরুষ-বাঁচা, একটু শক্ত হ। আগে শলাকে ভালাক দে। ভার পর শিক্ষার ঘানীকে উপরুক্ত কভিপুরণ দিরে শিক্ষাকে বিরে করে কেল। ভা হলেই ভো লব লেঠা চুকে যার।"

চিনইরাং-এর কথা ভবে পাছক যেন অকুলে কুল দেবতে পেলে। সাংসারিক ব্যাপারে এবং সামাজিক নিরন-কাল্নাহিতে সন্পূর্ব অনভিজ্ঞ সে। মুক্তিল-আসানের এসব উপারের কথা ভার নমেই আসে নি। এখন চিনইরাং-এর পরামর্দেরে বেন অক্কারে একটুখানি কীণ আপার আলো দেবতে পেলে। বদুবাক্বদের কাছে বিধার নিরে সে বাড়ীর পথে রওনা হ'ল। পাছক দৃষ্টির আডালে গেলে স্বাই বলাবলি করতে লাগল, পাছকটা মেরেমাল্যেরও অবন।

বাঙবিক শাহক সাহসী বীরপুরুষ হলে কি হর। সে অভ্যন্ত ভাবপ্রবৰ, মনটা ভার ভারি মরম। ক্ষিয়াক নাগাদের সমাজে সে বাভিক্ষ।

শাকক শলাকে ভালাক দিতে চার শুনে এনায় পঞ্চারেতের মাতকররা তার বাড়ীতে এসে ক্যারেং হ'ল। তার খণ্ডর-খাণ্ডদীও এসে উপস্থিত হ'ল, শিকনার খামীর আখ্রীর-ফ্রন্মন্বেও ডেকে পাঠানো হ'ল। বধাসমন্ত্রে বসল বৈঠক।

বিবাহবিচ্ছেদ করতে হলে শাহককে ক্তিপুর্ব-যর্থ কি

কি দিতে হবে একে একে তার ক্র্ম উপহাশিত করা হতে
লাগল। শলার বাপ-মা অগন্তব রক্তর মোটা টাকা দাবি
করলে। শিক্ষার খামীর আত্মীর্যক্তনেরা বললে, শিক্ষার
বিরের প্রাথমিক অনুষ্ঠানের সময় তালের যে পরিমাণ টাকা
বরচ হয়েছিল তা একেবারে ক্যার গণ্ডার শোষ করে দিতে
হবে। সমাক্ষাতিরা ক্তোরা দিলেন, বিবাহবিচ্ছেদের
আগেই বাড়ীটকে ভেঙে আবার সূতন করে তৈরি করতে
হবে, কেম্মা বে ঘরে প্রথমা বী বাস করে গেছে সেই ঘরেই
বিতীয়াকে নিয়ে আসা সামাজিক বিবাদে নিষ্কি।

আং-সর্বাবের ছেলের বিবাহবিচ্ছেদ এ তো আর সাবারণ ব্যাপার মর। সমাজপতিরা দেবলে যোটা রক্ষের দাঁও মারবার এ একটা প্রব-স্থোগ—ভারা এ প্রযোগ ছাড়বে কেন? প্রায়া পঞ্চারেং জরিমানা-স্বরূপ যে টাকা দাবি করলে ভা দিতে হলে শাক্ষকে সর্বাধ বিঞ্জী করে কঠুর হতে হর।

প্রায়া পঞ্চারেতের বোচন লেমং দাকতকে সংখাবন করে বললে—"ওবে হোক্রা, ভোষার বাপের সলে আমাদের যে সব কথাবার্তা হরেছিল সেই অপুনারীই আবরা আমাদের দাবিনাওরা উপছিত করছি। তৃমি তবন নেহাত ছেলেয়াত্বর, এ সব ভোষার কাববার কথা মর। কিন্তু গাঁরের দশ ক্ষের তা অকাবা বর। যাই হোক, তুরি রাজী তো।"

भाकक बूबरन बांग चांत जब विक विरव चांडेवांडे (बैरव

গিৰেছে, কোণাও কোন কাঁক বেবে বার নি। নালকে ভালাক বিভে হলে বথাসর্বাধ বান-বিক্রী করে ভাকে পথের ভিথারী সাক্ষতে হবে। কিন্তু ভাতে সে পিহপা নর। নিক্ষার চেয়ে টাকাক্তি বনদৌলভ ক্ষমেরাং ভার কাছে বড় নর। ভবে কি এখনই স্যাক্ষপভিদের কথার সে স্বভিপ্রদান করবে ?

কিছুক্দণ সে চুপ করে ভাবতে লাগল। হঠাং ভার ববে
হ'ল, সে বলি এমন করে গৈড়ক সম্পত্তি নিঃলেব করে বের
ভা হলে কিংওয়াং-এর কি উপার হবে ? কিংওয়াং ভার
একমাত্র নাবালক ছোট ভাই। বরস ভার পাঁচ-ছর বছর মাত্র।
বহু হেলে বলে পাকক এবন বাপের সমুদ্র সম্পত্তির মালিক।
কিছ নিয়ম হচ্ছে কিংওয়াং যবন উপরুক্ত বরসে বিরে করে ঘর
বীববে ভবন শাক্ষককে ভার অংশ ভাকে গাঁহের মাভব্বরপের
সামনে ভাগ-বাঁচৌয়ারা করে দিয়ে লিভে হবে।

দারণ দোটানায় পড়ল শারক। বধাসর্ববের বিনিমরেও শিক্নাকে পেলে তার জীবনের সকল অভাব মিটবে সত্য, কিছ সেকতে কিংওয়াংকে সর্ববাস্ত করে, তার ভবিষ্যং মাট করবার কি অধিকার আছে ভার।…

আনেকজণ তেবে পাছক সমাধ-পতিদের বললে—"দর। করে আমার আককের দিনট সময় দিন। কাল সকালে আমার চরম মত কানাব।"

গভীর রাজে শব্যাত্যাগ করে উঠল শাক্ষ । তার সকল তাবনা দূর হরেছে, সকল ছলিভার হরেছে অবসাম—মন তরে উঠেছে বিমল আগ্রপ্রশাদে ।

পাশেই ছ্মিয়ে আছে কিংওরাং। ছোট ভাইটর ছুম্ভ মুবে চুমু বেরে শাহক তাকে প্রাণভরে আশীর্কাণ করলে— তারপর বর বেকে পবে বেরিয়ে এল।

আৰু সারাধিন সে অনেক ভেবেছে, ভেবে ভেবে অবশেষে সে তার কর্ত্তব্য হির করে নিরেছে। প্রেম তার অনেক বড়, কিছ তার চেরেও বড় আং-পরিবারের মর্ব্যালা। বছ পুরুবের কীর্ত্তিকলাপ আর সঞ্চিত সম্পাদের ওপর তাদের পারিবারিক গৌরবের তিতি। নিকের প্রথের ক্ষতে পুরুষাক্ষ্কমে সঞ্চিত সম্পাদের অপচর করে পারিবারিক প্রতিষ্ঠার ভিডিমূলকে সে শিবিল করে দেবে না। আরু সমাকের শীর্বহানে তাদের পরিবারের আভিন্ধাত্যের আসন, কিছ শলার সলে সম্পর্কছেদ করতে গিরে কাল বদি সে সর্ব্বাছ হর তা হলে ওরাক্টিং-এর স্বাই তাকে আর তার মা-ভাইকে দেববে অবজার চোবে। তারা তার প্রেনের মর্বাল। তো আর বুববে না, নাই সিউকে বলবে একটা মেরে-মান্থবের অভে শাহুক সর্ব্বার প্রত্রের আং-পরিবারের সর্ব্বান্শ ভেকে এনেছে। তার প্রেমের এক বছ অসন্থান বউতে সে ধেবে না। । ।

সে বাপের অবোগ্য হেলে কিছ কিংওরাং বড় হরে রাববে

বাপের নাম। সেই অব্ধ হোট ভাইটকে কিনা সে পথে বসাবার ব্যবহা করবে ?—না তা হব না। তার চেরে সে বলি বর হেছে চিরভরে পথে বেরিরে পড়ে তা হলেই তো কত সহক্ষে সকল সরভার সমাধান হরে বার। বরে তার কিসের মারা ? র্থরা প্রৌচা লীর প্রতি নেই তার কোনও আকর্ষণ। পরের সভান তার সভানরপে সমাকে পরিচিত। স্বাই এ বিধানকে বাভাথিক বলে বেনে নিরে আসহে। কিন্তু পাকক এ সমাক-বিধিকে প্রসর মনে বীকার করতে পারে না। এ সমাকে নিকেকে কেমন যেন বাপহাভাবলে ভার মনে হর—সে মর্বে মর্বে অমৃত্ব করে এবানে তার স্থান নেই।

নিব্যে একাকিবের অস্তৃতি তাকে অভিতৃত করে কেলে

—মনে হয় সংসারে তার মত নিঃসঙ্গ কেউ নেই। ভূছে
বন-সম্পদ, প্রিয়জনকে নিয়ে একবানি সুধনীয়ই যদি না বাঁধা
হ'ল তা হলে মিছামিছি দরে থেকে লাভ কি ?

ভাই বন্ন হেকে সে বেরিরেছে পথে। কন-পদ্ধী পরিভ্যাগ করে সে চলে বাবে এফন দূর দেশে বেবাবে পূর্জ-জীবনের সঙ্গে হবে ভার সম্পূর্ণরূপে সম্পর্কছে। বেবানে গেলে সূভর পরিবেশে শিক্নার কবা, ওরাক্টিং-এর কবা, সব্কিছু সে জুলতে পারবে।

জ্যোৎসার প্লাবনে পাহাড়-বন-অবিত্যকা-প্রান্তর পরি-প্লাবিত। ক্রতপদে বনপথ অতিক্রম করে সে এখতে লাগল। ঠিড়াবেম নিশিতে পাঞ্ডয়ার মত সে নিমুগ্ত প্রাবের উপর দিয়ে চলেছে। পল্লীর শেষপ্রান্তে বনগবের এক বাঁকে শিক্নার বাজী। থবকে বাঁজিরে মুমত বাজীবানির পাবে এক বার ভাকালে শাকক, ভাবলে বানীর বুকে ভরে শিক্ষা কি এবন বিগত বসত্তরজনীর বর বেবতে!

কিছ পিছটান আর নর—যাত্রা ভার ত্রুব্-পানে, সিয়িবন অভিক্রম করে, সিনইরাং নদী পেরিরে নরস্কুচ্ছেদক নাগাদের পরী পাংশার অভিযুবে।

শিক্ষার বাজী হাজিরে সে স্থক করে চড়াই পথ বেরে উর্ব্বে আরোহণ, পিছনে পড়ে থাকে শিক্ষারালকে প্রথমনীলার শত স্থতি-বিভাজত গুরাক্চিং পুঞী। গভীর নিশীবে হুর্গম গিরিপরে অভাষার উদ্দেশে অভিযানের আমন্দে ভার সর্ব্বেশনীর রোমাঞ্চিত হরে উঠে। হুচ পহক্ষেপে চড়াইরের শীর্বদেশে আরোহণ করে সে স্থমুবের সীবাহীন মহাশুন্যের পানে তাকার।

নভোগীন পাতকোই পর্বত্যালার অর্তেদী সারাষাট গিরিশৃদ যেন তাকে কোন সুদ্র রহন্তলোকের অভিমূবে হাতহানি দিয়ে ভাকে।

পল্লট সম্পূৰ্ণ কালনিক নৱ, সভ্য ঘটনাৰ্দক। অধিবার
মৃতত্ববিদ্ Christoph von Frirer Haimendorf তাঁর The
Naked Nag2s নামক পুতকে ছট কনিবাক নাগা তর্গতর্গীর যে বিরোগাভ প্রণরকাহিনী বর্ণনা করেছেন তাকেই
ভিত্তি করে বাত্তবে ক্লমার মেশানো এই গল্লট রচনা করা
হরেছে।

# তারা দেখাবেই আলোর পথ

এস. এম. মৃয্হকুল ইস্লাম

পৃথিবী হোবের বড়া নর, ইভিহাস ভাবে পৃথিবী মোদের বড়াা নর। ভরতু-ভীবন হিল হেখা মুগ-মুগাভর, ভরগাবে তার মুখরিত ভাজো নির্মাক দিক-দিগভর।

ভীর রাজিয়া এগেছিল যবে, মভতল রবির্নির্থান ক্ষাট আবারে পৃথিবীর বুক বির-ভূছিন,
পিলাচেরা এলে সেই আবারের পথ বরি'
হ্রকে বুচকে ভেঙেছিল কত নবজীবনের বঞ্চরী।
তথনো তো তারা নির্ভর-চিতে ভূচ্ছ করেছে অবকার,
কৃটিন হতে হেনেছে আবাত বুক্ত করিতে প্রভাত হার,
বক্ত বিরেছে কাঁসির বকে, বুলেটের বুবে বিরেছে প্রাণ
হল্যর বাবে তাহারা গেরেছে জীবনের ক্ষরুপ্ত গান।

ভারাই শহীদ, ভাদেরি যে বুলে লালে লাল লেই রক্ত-পৰ,

বুঁলে বুঁলে আৰু এবানে এবেছে নব-ছর্ব্যের আলোর রব।

পিশাচেরা আৰু পালারেছে দূরে—বোর-রাঞ্জির হরেছে শেষ,

দিনের আলোকে অবসান হ'ল বিশীবের ব্যবা-ছংবল্লেশ।

এই আলোকের বিনারে গাঁচারে শরি লেই শত শহীণ বীর, ভূলি নি তো নোরা, ভূলিতে কি পারি তালের বেওয়া সে লাল ক্রবির ?

ইতিহাস-বুকে সে মহাত্যাগের, সেই রভের সোনালী দাগ, অমুড আগরে আঁকা রবে আর হড়াবে মহং প্রেরণা-কাগ। সেই বিঠুর বেদনাকে শরি কেলিব না আছ অঞ্চলন, তব্ চাই---সেই রভ-লিখার পাই বেদ চির-মতুন বল, বিদি কোন বিদ আঁবারের বাবে চলিবার গতি হর-ই প্লব, তর বেই তবু, থাকি অলক্যে ভারা বেধাবেই আলোর পব।

# সুফী ভত্তালোচনা

#### অধ্যাপক ত্রীহরেন্দ্রচন্দ্র পাল

ত্বকী (বা বুকী) বুসলবান ধর্মের একট সন্তালারবিশেষ। ইহাদিগকে হিন্দুবর্মের বেলাভবাদীনের সহিত তুলনা করা ঘাইতে পারে। সুকী বর্মের মতে ভগবান এক; তাঁহার কোন তুলনা নাই। তিনি নিশুন, অর্থাং গুণের অতীত; তাঁহার কোন বর্ণনা হয় না। সেই রূপহীন, নিশুন ভগবং-ভত্তের আলোচনা কেনন করিয়া করা ঘাইতে পারে ? বোলানা ক্রমী তাহার মস-নবীতে লিখিয়াহেন,

গর্ক সিরি-ই-ম'রিকং অগ': শরী। লক্ষ বগকারী হয় ম'নী শরী।

যদি সেই গৃঢ় রহন্ত জানিবার ইচ্ছা থাকে, তাহা হইলে বাক্য বা বর্ণনা পরিত্যান করিয়া সেই সন্তাকে উপলব্ধি কর। প্রকৃতই ভগবংসভা উপলব্ধির জিনিব, ইহাকে বর্ণনা ধারা বুর্বাইবার উপায় নাই। আমরা দেখিতেও পাই যে, কোম ধর্মাত্রেই ভগবংসভার সরাসরি কোম বর্ণনা নাই—এবং ইহা হইতেও পারে না। ইহার সোলাক্ষমি কোন বর্ণনা করিতে গেলেই সাধারণ মাত্র্য ইহার গৃঢ় রহত্ত সঠিক বুর্বিতে লা পারিরা আন্তপর্বগামী হইবে। সেইজ্বত সকল শাত্রেই ভগবং-তত্ত্বের আলোচনা রূপকের সাহায্যেই করা হইরাহে। প্রকৃত, বীওরিই, হজরং মোহত্বদ প্রস্থুণ সকল ধর্মপ্রত্তক্তপনই রূপকের সাহায্যেই ভগবংসভার বর্ণনা করিয়াছেন। বেই পরম পুরুষকে পার্থিব চক্ষারা প্রত্যক্ষ করা হছর। যে ভাগ্যবান পুরুষ তাহার এই পার্থিব চক্ত্বেক আবান্ত্রিক দৃষ্টিসম্পন্ন করিছেল। গারিয়াছেন, তিনিই কেবল ভগবংসভার দর্শনলাভ করিয়াছেন।

এই অপকবর্ণনার যথেষ্ট উপকারিতাও বহিরাছে। সাধারণ নাছ্য এই অপককেই ভগবানের প্রকৃত সভা যনে করির। তৎ-প্রতি আকৃষ্ট হয় এবং ইহার আচার অপুঠান ও রীতিনীতি সমাক্তাবে পালন করিতে চেষ্টা করে। মুসলমান ধর্মণার মতে এই বাছিক আচার-অপুঠানকে বলা হয় 'পরি'রং'। 'পরি'রংনির্দিষ্ট' আচার-অপুঠানাদি ধর্ণোচিতভাবে পালন করিরা সাধারণ মাধ্য করে প্রকীনির্দিষ্ট 'প্রবীক্ত'-এ (পব) অপ্রসর হয়। সেথান হইতে সালিক্ ই-রহি (ভসবৎ-পথের প্রিক্) ক্রমে ক্রমে 'ম'রিক্তং' (ভগবং আন) ও হনীক্ত-এর (ভসবংসভার পৌছলে পর ক্রেনিতে পার বে, সকলই এক—এক ভগবান হাড়া আর ক্রিষ্ট নাই। ডিছ সেই ভরে পৌছিবার পূর্বে কেছ স্টিক অনরক্র করিতে পারে না বে, এক ভগবানই চরাচর ব্যাপিরা রহিষ'ছেন, তিনিই সব্কিপ্লতেই বিরাক্ত করিতেছেন এবং ভয়তীত আর ক্রোন ক্রিছেই অভিত্ব নাই। আররা

দেখিতে পাই, বর্ষপ্রছাদিও এরণ ভাবে লিখিত ছইবাছে বে, সেগুলিতে যদিও বাছিক আচার-অন্তান, রীতিনীতি ও নানা ভলোগদেশাদির অনেক বর্ণনাই আছে তথাপি এমন অনেক তথাপুর্ব বিষয়ও রূপকছেলে বর্ণনা করা ছইব'ছে যাহার আসল তাংপর্বা উপলম্ভি করা ছরছ বাপার। এই প্রসঙ্গে সুকী-কবিবের প্রেমপূর্ব্ব বিষয়ে কথা বলা বাইতে পারে।

হিন্দু ধর্মণাত্রকারগণ বলিয়া গিয়াছেন আছে ছাড়া আর কাহারো ধর্মগ্রহাদি পাঠ করা নিষেব। প্রকৃতই যাহার আছ বা ভগবান সহজে জানলাভ হয় নাট, তিনি কি করিয়া রাধাফুফের প্রধানীলার প্রকৃত ভার্ব ছালয়ন্নন করিতে পারিবেন ? কুফের প্রতি রাধার আছুড়োলা প্রেমের বল্প কর্মন সঠিক বুবিডে পারিরাছেন ? সেইক্টই দেখা বার ক্ষ্কনীলার অপব্যাখ্যা হুইরা থাকে। ক্ষপ্রেম সবছে বলা হুইরাছে,—

আছে ক্লিয় প্ৰীতি ইছা তারে বলি কাম
ফুকেন্দ্রির প্রীতি ইছা তার প্রেম নাম।
কান্দের তাংপর্য্য নিজ সন্তোগ কেবল
ফুকুরুর তাংপর্য্য মাত্র প্রেম ত প্রবল ।
কুকুরুর হৈছে করে ফুকুর ভজন।
ফুকুরুর হৈছে করে থেম সেবন ।
ইহাকে করি যে কুকু মুচু অসুরাগ।
বছর বোত বরে বেন নাহি কোন দার ।
কার অক্তর : প্রেম নির্মান ভারর ।
কার অক্তর : প্রেম নির্মান ভারর ।

—হৈতত চরিতায়ত—আধি**ৰত**।

ক্ষী ক্ৰিগণও টক এইলপ ভাবেই প্ৰেমের মহিনা গাহিলা-হেন ; বৌলনা ক্ষী বলিয়াহেন,

म'नी चान् मानुरम् कि कृत् व कत् कृतम् सत्म वा वत् सक्चं 'चानिक छत् कृतम्

— 'পর্য সভার প্রেম হৈছিক সৌক্ষের প্রতি আস্ক্রির ভার মাতৃক্তে অভ ও ববির করে মা।' কিছ বছক্ষণ মা মাতৃত্ব লেই প্রেমের আবাদ পার ভতক্ষণ সে পার্থিব প্রেমের প্রতিই আফুট হর এবং সেই ভগবংগ্রেমের রসাধাদ হইভে বক্ষিত থাকে। এই পার্থিব প্রেমও বাঁট হইলে বিক্লে বার মা—
ইহাই ক্রমে গাচ্চন হইরা ভগবংগ্রেমে পরিবর্তিত হয়। স'দী ভগবংগ্রেম সহতে গাহিরাছেন,—

(कोफ-रे-मेन् बाह मा हानी वर्त बान का महभूकी

এই প্রেম-রসের যাদকভা বতক্ষণ কা আহাদন করিবাছ, ততক্ষণ ইহা সঠিক হাষরদম করিতে পারিবে মা —।
সেই ভগবংগ্রেম কোন আক্ষরের বার বারে না। নিঃবার্ধ-পরতাই ইহার প্রেষ্ঠ প্রমাণ। কবি হাকিক, গাহিরাছেন,—
রাক্-ই-দরন্-ই-পর্য ক রিন্দান্-ই-মস্থ পূর্ব।
করিনু:হালু নী সুং কাহিন্-ই-'আলী-মুকাম্ রা।

इतिक नभीतम् आन् कि जिलम् किन् क छम् व'रेम्क्। ज्यास्य प्रदेशकतीक-के-'आस्य प्रदा'म्-रे-भा॥

"ভগবং প্রেমের গুঢ় রহন্ত প্রেমোরত্তদের নিকট হইতে আনিতে চেষ্টা কর: বাহ্নিক আড়খনবিশিষ্ট সাবুগণ ইহার প্রকৃত বরূপ জাত নহেন। ১০৮ ভগবংপ্রেমে বাঁহার অভঃকরণ সমীব তাহার কবনও মুগু নাই---আমাদের চিরম্বন অভিছ পুषिरौत পुर्छ ित्रमिन विमामांन शांकित्व।" এই स्न पक्ला यमन ভগবংগ্রেমের বর্ণনাদি আছে ও পুঞ্চীতত্তাদি আলোচনা করা হইয়াছে তেমনি অফীভৱের বিল্লেখণ এবং আব্যায়িক তাৎপর্যা মানা গল বা কাহিনীর মধ্যেও বিশেষ ভাবে পাওয়া যায়। चानक पूको कविहे— विमन, 'बश्चाद्, स्रमी, ज'ही, पूकी ज्ञु-जबूर नाना शरबद जाशारण जारलाहना कतिया शियारहन। क्वांदारंग्ड अहेबन चरनक नंदबंद नवार्यम चार्छ। अहे नकन গলের অর্থ ছই ভাবেই করা ঘাইতে পারে-এক সাধারণকে ভানদান করণার্থ নানা **উপদেশের সাহায্যে চলিভ রীতিনী**ভি ও चारेन-कायून गार्टिक मंत्रिक्ष बयुवाधी वार्का: विजीव. ম্ব্রীকং ও ম'ব্রিকং ( যোগমার্গ ও জ্ঞানমার্গ ) অবলম্বনে তগবং পছা অসুসমণ্কানীদের অভ আব্যান্থিক ব্যাখ্যা। কোৱাৰে এই দাৰ্থণ প্লোকের যথাক্তমে নামকরণ করা হইরাছে.---

(क) चन्ना९-१-वासिन९ ( जावात्रन व्याच्याव्य (झाक )

(ব) আহাৎ-ই-মৃত্তাবিহুৎ (আবায়িক ব্যাব্যাদিসন্দর দ্লোক)।
আবায়িক ব্যাব্যায়ুক্ত শ্লোকের নিম্পন-স্বরূপ কোরাবে
(১৭ সুরা বা অব্যারে) বণিত হুইরাছে: 'একলা প্রপ্রর্বর্মা ভগবানের নিকট ভাষার চেরে অবিক ভাষসন্দর পুরুষের সভাম প্রার্থনা করিলেন—এং এই সন্দর্শক বিভিরের মাম উরিবিত হুইল। কবিত আছে, বিভির একলম শ্লেট ভাষী পুরুষ এবং জীবনায়ত পান করিয়া অমরহ লাভ করিয়াছেন।
মুসাও সেই অমরত্বলাতের ভত চুই সাগরের সলমহলে উল্লেখ
অস্চ্যুস্ট উপ্রিত হুইলেম। দেখা পেল বে, ম্বাহ্যুক্তাভানের ভত আমীত ভালা মংভটর কবা উল্লেখ ভূলিয়া
প্রেলম এবং মংভটও বাবীন ভাবে অলে সাভার দিরা চলিয়া
পেলম এবং মংভটও বাবীন ভাবে অলে সাভার দিরা চলিয়া
পেল। তিরুদ্ধ অপ্রস্কর হুইয়া মুসা বাবাবের প্রান্ধ উর্লেখ
করিলে অহুচর পূর্বোক্ত ব্যাপার্টির ক্যা বলিল। মুসা আবার
সেই সাগর-সলম্বলে উপস্থিত হুইলেন এবং বিভিরের। ক্যা

প্রার্থন। করিলেন। কিন্তু বিভিন্ন আগতি করিরা বলিলেন বে, জাহার ভার্যভলাপ মুসা টিক ছবরমম করিতে পারিবেন না विना चट्नक नमद बहे नकन व्यापाटत देवर्ग बादव कर्ता ভাঁহার পক্ষে সহুব হুইবে মা। মুসা বলিলেন, ভগবং ইচ্ছার আৰি সকল বিষয়েই বৈৰ্য্য ৰাৱণ ক্ষত্ৰিতে পাত্ৰিব।... অভ:পর ভারারা উভরেই অএসর হটলেই এবং ভারাদের वावक्र भोकाहित्व विकित मुठी कविता विस्तर। दिलालन, जानि जादाशीपिरगत रावश्र लोका निका করিরা দিয়া বড় অভুত কাব করিলেন। বিক্রির ইহাতে উত্তর দিলেন, আবি পুর্বেই বলিয়াছিলাম বে, ভূমি আমার কাৰ্য্যকলাপে বৈৰ্য্যৰাৱণ ক্ষিত্তে পারিবে না। মুদা তৰ্ব ক্ষমপ্রার্থনা করিলেন। নৌকাট পরিভ্যাপ করিয়া ভাঁহারা আরও কিয়ংদূর অঞ্সর হইলেন এবং একট যুবকের সাকাং পাইলেন। বিভিন্ন মুবকটকে হত্যা করিয়া ফেলিলেন। মুসা क्षिकां न विद्यान, अक्षेत्र निशी ह बूदकरक रकन अनर्बक यह করিলেন ? বিকির আবার তাঁহার পূর্বের বক্তব্য শ্বরণ क्वारेबा पिरमम । रेराए मूजा क्याधार्या कविबा विमरमम, আবার যদি এরপ হয় ভাহা হইলে আপনি আর আনাকে আপনার অভুদরণ করিতে দিবেন না। তাঁহারা আরও অএসর হইয়া চলিলেন, এবং একট জনাকীর্ণ ছানে উপস্থিত হটলেন। সেধানকার লোকদের নিকট ভাহারা ধাবার প্রার্থনা क्विलन, किंद छाराता रेराए मार्टिर कर्नाछ क्विन मा। निक्रिकेट अकृष्टि प्रश्नाम जूबिजार क्रेश यारेट्ड प्रविश বিভিন্ন বতঃপ্রন্ত হটরা টহার সংকার করিলেন। ইহাতে মুগা প্রশ্ন করিলেন, আপনি ইচ্ছা করিলেই এই কার্য্য সম্পন্ন করার যথেষ্ট পূর্মার লাভ করিভে পারিভেন। বিকির উত্তরে বলিলেন, ভোমার এই প্রশ্ন আমাকে ভোমা হইতে বিচ্ছিত্ৰ ক্রিকা দিতেছে।

তবে যাইবার পূর্ব্বে আমি আমার কার্য্যকাপের নিপুচ রহত উদ্বাটন করিয়া যাইতেছি। পূর্ব্বোলিমিত নৌকাট ছিল করেকখন গরীবের এবং তাহারা এই সাগরেই ব্যবসা করিত। আমি নৌকাটকে ব্যবহারের অবোগ্য করিবার উদ্দেশ্তই হিন্দুক্ত করিয়া দেই—কারণ এই নৌকার উপরে ছিল একখন রাঝার নখর, যিনি প্রভাকে ব্যবহারযোগ্য নৌকাই ছোর করিয়া লইয়া যাইতেন। যে র্বকটকে হত্যা করি তার পিতানমাতা ছিলেন সং, কিন্তু র্বকট ছিল কাকের—তাহার নির্ভ্বনতার দক্ষন সং পিতামাতার লাঞ্মা হইবার তরে র্বকটকে বন করিয়া কেনি। পরে তগবং ফুপার একট সং ছেলে হুইলে তাহার হারা পিতামাতার অনেন স্থা হুইতে পারে। আর ঐ দেরালট ছিল ছুই খন পিত্যাত্হীন বালক্ষের—ক্ষাক্রের নীতে ছিল প্রারিত বনসপাদ এবং তাহামের পিতা ছিলেন একখন সং লোক। বেইছেই ভগবানের ইছা





হিল বেন হেলে ছুইট সাবালক হইরা ইহা ভোগ করিতে পারে। যদিও ভোষার মনে হইরাছিল বে, আমি আমার ইক্ষানতই এই সকল কার্ব্যাদি করিয়াছিলাম; কিন্তু মনে রাবিও আমি কোনটাই ভগবানের সংহত ভিন্ন করি নাই।"

বিভিন্ন ও বুলা শ্ৰেষ্ঠ অলু-লিভের প্ৰকৃষ্ট নিবৰ্ণন। পাৰিব ভান ও পরমাধিক ভানবল্লপ ছইট সমুজের সন্মন্থলে ভাহাদের মিল্ম হয়। ম'ভট পাবিব আনের রূপক, ইহা পরবাধিক আন্তর্মণ সমুদ্রে পৌছিলে আপনা হইতেই ভৰব্যে দুগু হইয়া বাইবে। তথন কুণা-ভূকার কোনই ধেরাল বাকে না-কিছ জান-পৰে অএসর হইতে হইলে শুরুর সাহায্য ছাড়া উপায় নাই। দেইবড অরুকরণ। বিশংসভুল পরমাধিক ভানবরণ সমুদ্রপথে গুরু মত বড় কাৰারী। ভিনি ৰৌকারণ আবাছিক উপদেশাদি সাহাব্যে **बहै महत्वयाका कृदिहारहम। जनद नारद मीहिहा ज्यार** প্ৰমাণিক আৰশিকা বিশ্বা পৰে নৌকাটতে প্ৰেমৰণ বিৰ করিয়া দিয়া ইহাকে অপর পারে অব্ভিত রাজা বর্ণাং এই পাৰিৰ ভূপতে বিৱাজ্যান শহতানের ব্যবহারের অযোগ্য क्तिका पिलाम । कावन त्यम-क्रकिनिकीम काम वाक्रिक्ट वह পাৰ্ষিৰ অগতে শহতানের কবল হইতে অব্যাহতি পাওয়ার উপার নাই। আব্যাদ্রিক পরে অপ্রদর হইবার ছত প্রব্যেই চাই প্রেম ও ভক্তির সহিত গুরুর সমুপদেশ অনুসরণ করিবা চলা। গুরুর দিভীর কার্ব্য হটল, বিজের কার্ম্-বাস্মা বিনষ্ট করিয়া দেওয়া। মুবকট কামনা-বসনার প্রতীক। কামনা-বাসনা পরিত্যার করিতে পারিলেই ভক্ত আব্যান্তিক শীবনে ক্রমশঃই উন্নতিলাভ করিতে পারেন। তৃতীয় ভরে ভজ সাৰাৱণ লোকের উপকারই করিতা ঘাইবেল কিছ ভাষাদের থিকট কিছুই প্রভ্যাদা করিতে পারিবেন না। বিকির বতঃপ্রবৃত্ত হটরাট ভর বেরালটর সংভার করিলেম---(महामक्रे वाद्यक चाठाव-चक्रुकाम वा चति वर-अव अवर পিতৃমাতৃহীন বালক ছুইট সাধুতার প্রতীক।

ৰহাত্মাণৰ ভাহাদের বাহিক অনুষ্ঠানাদি ছারা জন-লাধারণকে জনাচার, স্ঠন প্রকৃতি হৃত্ত হুতে চুরে রাধিরা শাত্তির রাজ্য প্রতিষ্ঠা করিরা দেন।

বোলাবা রথীর 'বস্-নর্ন-ই-বন 'রা' নামক আব্যাদ্বিক কবিতা হইতে স্কীতত্বপূর্ণ একট গলেরও উল্লেখ করা পেল। 'বস্-নর্ন-ই-বন'রী'কে অনেক সমর কারসী ভাষার কোরাব বলিরা অভিহিত করা হয় এবং ইহা স্কীতত্বের ব্যাখ্যানপূর্ণ একট প্রসিদ্ধ প্রছ। ইহার প্রথম গলটের নাম 'রাছা ও স্করী র্বতী'।— প্রাচীনকালে এক রাজা হিলেন, বাহার পাধিব ও আব্যাদ্বিক উত্তর শক্তিই করারত হিল। হঠাং এক বিন ভিনি পাঞ্জিন্ত দিলারে বাহির হইলেন, কিছ পথিবব্যে একট স্করী ব্রতীর প্রেকে পভ্লেন। রুবতীর

প্রতি ভাষার মন এত গভীরভাবে আরুষ্ট ব্টল বে, ভাষাকে তিনি ৱাজ্যানীতে লইৱা আসিলেন এবং ভাষাকে বিবাছ ক্ষিয়া সুৰে কালাভিপাত ক্ষিতে লাগিলেন। কিছ বীএই इरछीत अक्षे इर्वादांश गृति (एवं। पिन। চিকিংসকই ভাষার চিকিংসা করিলেন, কিন্তু মুবতী আরোগ্য-লাভ করিলেন না। পত্যভার না দেবিরা রাজা মস্ভিদে পিত্ৰা ভগবাৰের নিক্ট কাভর প্রার্থনা ভাষাইলেন। ভগবান ভাঁহার এই কাভৱোক্তি ভনিতে পাইরা বথে ভাহাকে ভাষাইলেন, "প্রদিন প্রাতঃকালে বে চিকিংসকের সঙ্গে ভোষার প্রথম দেবা হইবে ভাহাকে ভগবংপ্রেরিভ চিকিংসক বলিয়া ভাৰিবে"। নিৰ্ভিট সময়ে দৈব-চিকিৎসক উপস্থিত ছইলেন এবং রাজা ভাছাকে সাধরসভাষণপুর্মক অভঃপুরে नहेबा ११रनमः। टेपर-6िकिश्त्रक मिर्कम १८२ रवांशिनेटक विस्मय ভাবে পরীকা করিলেন, এবং রালাকে ভাকাইরা विनामन (स. हेर) मत्नत (तान: श्रेथशांपिट कान कांक एटेटर ना । এই धूरजी जमत्र चल्यत अक्यन वर्गकाद्वत প্রতি প্রণয়াসক।। সেই বর্ণকার মুবককে আনাইয়া বোগিয়র সহিত তাহার বিবাহের ব্যবহা করিতে হইবে। চিকিংসকের चारम्भ चन्नुशांती वर्गकांतरक मृतरम्भ स्टेट्ड चानद्यन कत्रा ছটল এবং যুবভীর সহিত পরিণয়-পাশে আবদ্ধ করা एरेण। भैजरे पूर्वणे पृर्वशिष्ठा कितिया भारेरनन। किन কয়েক্দিন পর ভাগবং ইচ্ছাপ্রযামীই সেই দৈব-চিকিৎসক পানের সহিত বিষ্প্রয়োগে সেই স্বর্ণারের প্রাণনাশের ব্যবস্থা করিলেন। সেই যুবতী প্রথমে জনতা বেশ একটু বেদনা অভ্যত্তব করিলেন। কিছু বর্ণকারের প্রতি তাহার আকর্ষণ কেবল মাত্র দৈহিক ছিল বলিয়া ভিনি একেবারে মুখ্যান হইয়া পঢ়িলেন মা এবং পরে রাভার সহিত পুনরার বিবাহত্ত্তে আবদ্ধ হয়। পুৰে কালাভিপাত ক্ষিতে লাগিলেন।

এই গল্পতে একট আবাাত্মিক তত্মনিহিত আছে।

রাজাকে তুলনা করা হইরাছে মনের সলে এবং এই দেহ তাহার

রাজবানী। মন পাবিব ও আবাাত্মিক এই উতর শক্তিতেই
শক্তিমান। অর্থাং সকল মাছ্মই লোবে ওবে ক্ষিত। রাজা

একদিন শিকারে বাহির হইলেন অর্থাং তগবং ভানলাভার্থে
বহির্গত হইলেন। কিছু সেই পার্র-মিল্ল বা মনের সহচর

অহুলার, কান প্রভৃতি রিপুর প্ররোচনার পবিষরে কামনা
বাসনার ক্ষিত হইলা ভোগাসক্ত হইলা পভিলেন।

কিছু বেইদিন ভোগ করিতে পারিলেন মা। র্বতীর

চিকিংসার ব্যবহা করা হইল—চিকিংসক্রপ হইলেন
পার্থিব ভক্রর প্রতীক। পার্থিব ভক্রপ, ভাহাবের বৃত্তি,

বেবা ও চিভাপক্তিবালা কেন্ন ক্রিলা মনের রোগ

আরোগ্য ক্রিতে পারিবেন গুর্থন রাজা (বা বন) হেবিলেন

বে, এই সকল চিকিংসক্রালা ক্রেনই ক্লোবর হুইতেছে

মা, তবন তিনি ভগবানের প্রতি নির্তরপরারণ হইরা উচ্চাক্তে সকল বিপদের কথা ভানাইলেন। নাত্র ববন ভগবানকে আপ্রর করে, তবন একটা উপার গুঁজিরা পাইবেই। ভগবানের প্রেরিভ চিকিংসকের বর্ণাং আদর্শ শুকর সাহায়ে তিনি ভানিতে পারিলেন বে, কামনার বিকার উপস্থিত হইরাছে। স্তরাং প্রথমে তিনি কামনার পার্থিব পরিভ্তিলাভের ব্যবহা করিরা দিলেন। দৈব চিকিংসক প্রথমই রাজার সকল অবহা বুজিতে পারিরাহিলেন, কিন্তু বাহ্নিক ভাবে রোগিইকে পরীকা করিলেন। সেই রূপ আদর্শগুরু প্রথম দুইতেই

শিৰোর বনের সকল অবহা ব্বিতে পারেন, কিছ বাছতঃ তাহা প্রকাশ করেন না। ব্বতীর মন নীচ প্রস্থাভিসন্থের বন্ধত হইরা রহিরাহে—তিনি বাসনা সকল আরও চরিতার্থ করিবার বাবহা করিবার পির, ওরু তগবং আদেশাহারী প্রস্থিতিকি দলন করিবা দিবার ব্যবহা করিলেন—ইহাই হইল বর্ণকারের প্রাণনাশের তাংপর্য। পরে হমিত কাম মনের সহিত একত্ত্রে আবহু হইরা নাভির পরে অপ্রসর হইতে লাগিল।

# অধ্যাপক সাঁহার আধুনিক গবেষণা

**अ**शिनाकी नान व:न्लाभाशाय

ভারতের বিদধ সমাকে ও কগতের বৈজ্ঞানিক মহলে অব্যাপক মেঘনাদ সাহা অপরিচিত নন। নামের সলে পরিচিত হলেও তার গবেষণার কটিল তথ্য অবৈজ্ঞানিক কনসাধারণের মধ্যে, অতি অল্প লোকেই আনেন এবং সেই তথ্য সাধারণ মাহযের সহকবোর্য করে পরিবেশন করাও হলর। এক কথার বলা যেতে পারে, সৌরলোকে পরমাণুদের ভাঙালভার ব্যাব্যা নিয়েই হ'ল অব্যাপক সাহার আধুনিক গবেষণা। সম্প্রতি হ'লন চৈনিক বিজ্ঞানীর পরীক্ষায়লক গবেষণার কলে অব্যাপক সাহার গবেষণার ফলে অব্যাপক সাহার গবেষণার ফলে অব্যাপক সাহার গবেষণার হলে অব্যাপক সাহার গবেষণার কলে অব্যাপক সাহার গবেষণার কলে অব্যাপক সাহার গবেষণার কলে অব্যাপক সাহার গবেষণার চেরে । অনেকে মনে করেন, অব্যাপক সাহার গবেষণাকে বিজ্ঞানীরা যদি মালুষের কাকে লাগাতে পারেম তা হলে বর্তমানের পরমাণু বোমার চেরে বহু শুল

प्रर्याद 'वर्षष्टिं।-मध्म' ७ किदीक्रिकां (क्रांमा) क्राक्रिके स्मीत्मत्र विरामय वर्गामी-द्वाचात्र वा त्मक्रोम माहेन छेड्डरवत्र ব্যাখ্যা অধ্যাপক সাহা ভার আধুনিক গবেষণায় করেছেন। গাাসদেহী খ্ৰ্যাকে ৰোটামুট ভাবে চাৱট মঙলে ভাগ ক্বা বার। অর্থার অপ্তরতম মওলকে বলা হয় আলোকমঙল বা কটোচ্ছিয়ার। হর্ষোর আলোক-মওলে গ্যাসের ঘনিমা (density ) ও ভাপের উক্তা সবচেরে বেশী এবং প্রবোর প্ৰায় সমন্ত আলোক-ভাপই আলোকমণ্ডল থেকে বিকীৰ্ণ एत । चारनाकम्बर्भनत क्रिक वास्तितत खत्रहेरक वना स्त '(वर्षा-एव' वा 'वर्ष-एव' मध्म ('विकामिर (मबाव' ), कावन अह মঙল অভিক্রম করবার সময় হর্ব্যের সপ্ত-বর্ণী আলোর বিভিন্ন বৰ্ণের বিশেষ বিশেষ ভরদমানার আলো শোষিভ হরে যার ও ভার কলে সৌর-বর্ণালীতে জ্বানহোকার (Fraunhofer) আবিত্বত কালো রেবাগুলির উত্তব হয়। বর্ণ-হর মণ্ডলে গ্যাসের খনিষা ও তাপের উক্তা, আলোক্ষওলের গালের খনিষা ও ভাপের উক্তার চেরে অপেকাক্সত কর। রেবা-ব্র-মঙলের

বাইরের অংশটকে বলা হর বর্ণছটা-মঙল ('কোমো-কিয়ার')। বর্ণছটা-মঙল হ'ল সৌর-আবহের ক্র শুর। এবানে গ্যাসপুঞ্জে নিয়তই প্রচঙ আলোড়ন চলে এবং আলোড়িত গ্যাসপুঞ্জের বছবিচিত্র রক্তশিবা এবান বেকে হর্ষের চক্রসীয়া ছাড়িয়ে বছ যোজন দূরে ছিটকে পড়ে। বর্ণছটা-মঙলে ভাপের উক্তা ও গ্যাসের ঘনিয়া বর্ণ-হর মঙলের চেবেও ক্য এবং বর্ণছটা মঙল বেকে ছিটকে

# छ्शनी गाक्ष निः

প্রধান কার্য্যালয় ৪৩, ধর্মতলা স্লীট. কেন্দ্রীয় কার্য্যালয় ৪২, চৌরজী

কলিকাতা।

কোন : গি, কে ৩৪৮ ফোন : পি, কে ৪৯৭৫ ( ৩ লাইন )

পশ্চিমবদের শিল্পাঞ্চলের প্রাণকেক্সে অবস্থিত ২১টা শাখা অফিস আপনার সেবায় নিয়োজিত।

"ব্যাহিং" ও সমাজ সেবার ফুম্পষ্ট বোগাযোগ রক্ষা আমাদের বৈশিষ্ট্য, আপনার সন্তুষ্টি আমাদের কর্মপন্থা-নির্দেশক।

> প্রীধীরেন্দ্রনারারণ মুখোপাধ্যার এব,এল,এ ম্যানেকিং ভাইরেক্টর

পড়া গ্যাসের শিধার অভাত মৌলের পরনাবুর চেরেও হিলিবন, হাইড্যোজেন ক্যালসিরমের আরনিত ('আইওনাইজ্ড') পরমাবুর আধিক্য সবচেরে বেশী।

অব্যাপক সাহার মতে ভূর্ব্যের অন্তর্তম প্রদেশ থেকে আলোও ভাপ-রূপে বিজীব তেজের কণা-বর্মী 'কণিয়ার' ('কোটন') সঙ্গে বর্ণছটা মওলে গ্যাসের পরমাণুভলির নিয়ভই 'অভিযাভ' তেজ-ক্ৰিয়ার **ग्रम**् এবং সংক অবিরাম অভিবাতের চাপে হাইড্রোজেন, হিলিয়নের মত হাকা ওকনের মৌলের পরমাণুগুলি প্রতিক্ষিপ্ত (রিক্ষেল্ড) হয় স্বচেয়ে বেশী, গৌর মহাক্রের টান কাটিয়ে সৰচেয়ে দূৱে ছিটকে পঞ্চে। প্রতিক্ষিপ্ত পরমাণুগুলি স্বৰ্ষের মধাকর্ষের টানে যখনই বর্গচ্ছটা মণ্ডলে ফিরতে চাইবে তৰ্ণই আলো, তাপের ক্লিমার সংখ ঠোকাঠুকির চাপ আবার ভাবের বাইরে ঠেলে দেবে। এই ভাবে গ্যাদের শিবার কুংকার অর্থ্যের বর্ণছেটা মণ্ডলে আলোড়িত হয়। ছোট ছেলে যেমন এক টুকরো পালক বা তুলোর আঁপকে সুঁ দিয়ে মাষ্ট্ৰতে পড়তে না দিয়ে হাওয়ায় নাচিয়ে ভাসিয়ে নিয়ে বেড়ায় অনেকটা সেই ধরণেই ভেঞ্জের কণিমাগুলি বর্ণছটা মণ্ডলে পর-ষাণুগুলিকে ভাগিয়ে নিয়ে বেড়ায়। ক্যালসিয়ামের (শব্মাল ) ইলেকট্রন বোয়ানো, আয়নিত (আইওনাইকড়) পরমাণ্ডলি

ভাদের প্রায় সমভার, মাঝারি ওজনের অভাভ মৌলের পরবাধুথলির চেরে একটি বিশেষ তরদ-মাঝার আলো অবিক মাঝার
শোষণ করতে পটু হরে ওঠে। অব্যাপক সাহার মতে অভাভ
মাঝারি ওজনের পরমাণ্যুক্ত মৌলদের চেরে আয়নিত ক্যালসিরম পরমাণ্থলির ওপরেই বিকিরপের চাপ (রেভিরেজন
প্রেমার) ভাই বেশী প্রকট হর এবং ভার কলে অভাভ মৌলখলির চেরে বর্ণছটো মওলের শিধা-ছটার (প্রমিনেনসেত্র)
ক্যালসিরম বহু দূরে বিক্তিও হয়। ক্যালসিরমের প্রাচুর্ব
বেশী বলে প্রেয়ির শিধা-ছটার রঙ প্রায় সব ক্ষেত্রেই হয়
ক্ষারুক্ত্রসঙ্গাণ রক্ত-লোহিত।

বর্ণছটা মণ্ডলের আলোর বর্ণলিশিতে আরনিত ক্যালসিরৰ পরমাণুর বৈশিষ্ট্যস্থচক রেবা ছাড়া যথাক্রমে একটি ও ছট ইলেকট্রন বোরানো উত্তেজিত (একসাইটেড) ছিলিয়ম পরমাণুর বৈশিষ্ট্যস্থচক রেবাও পাওয়া যায় । বিজ্ঞানীরা এতদিন পর্যান্ত কেওলের উত্তবের সন্তোমক্রমক ব্যাব্যা করতে পারেম নি । অব্যাপক সাহার আধুনিক গবেষণা অস্থায়ী এর ব্যাব্যা হ'ল নিয়োক্তরণ— স্বর্গের আলোক্ষভলের মব্যে বিভিন্ন মৌলের পরমাণুগুলির কেজের যে ভাঙাগড়া চলে তার ফলে প্রচ্ব পরিমাণে শক্তি ছাড়া পার এবং তৈরি হয় ছট ইলেকট্রম বোরানো ছিলিয়ম পরমাণু অবাং আল্কা-কণা (আল্কা-

# নেতাজীর অনুসরণে

বাংলার বিখ্যাত মৃত ব্যবসারী এঅশোকচন্দ্র রক্ষিত মহাশয় ও উহার "এ" মার্কা মৃতের মৃতন পরিচয় বাঙ্গলাদেশে নিপ্রার্গ্রাজন। আজকাল বাংলার প্রতি গৃহে, উৎসবে, আনন্দে 'এ' মৃতের ব্যবহার অত্যাবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে, বাজারে ভেজাল মৃতের যেরূপ প্রয়াস দেখা যায়, তাহার মধ্যে প্রীষ্ক্ত অশোকবারুর বিশুদ্ধ মৃত যে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে, তাহা মৃত ব্যবসায়ী মাত্রেরই অনুকরণীয়।

### শাঃ শ্রীসুভাষচন্দ্র বস্থ

পার্চিকেল )। পরমাপুথ নির কেন্দ্রের ভাঙনভাভ ইলেন্ট্রন বোরানো উভেন্তিত বিনিয়ন পরমাপুথনি অভাভ পরমাপুথনির অভিযাতের ফলে তাবের উভেন্তিত অবহার অনেকবানি শক্তি অপচিত করে প্রবনে একটিও তারপর হট হাড়া-পাওরা ইলেট্রন পাক্ডাও করে। এই ছট রুক্ত ইলেক্ট্রন সংগ্রহ করবার সমর উভেন্তিত অবহার বিনিয়ম পরমাপুথনি বে বর্ণনিশি পাঠার তারই কলে পুর্ব্বোক্ত রেবা ছটর উত্তব হর।

হুৰ্ব্যের বহিম ভলের নাম হ'ল সৌর কিরীটকা বা क्रिवेडिका-मध्न (भागांद-क्रांना)। वह मक्ष (यांचन ভূতে এর বিভার এবং প্রোর অভ তিনট মঙলের ভূলনায় এবাৰে গ্যাসের ঘনিমা ও তাপের উঞ্চা সবচেরে কম। সৌর-কিরীটকা ক্লদবাজ্পের অণু, পরমাণু ও আয়নিত পরমাণু-কৃণার ভিড়ে ভর্ত্তি এবং এর স্বাভাবিক দীন্তি প্রায় পূর্ণচন্তের দীপ্তির সমান। স্বর্ণোর আলোকমওলের প্রচও দীপ্তির কর সাধারণ দূরবীনের দৃষ্টিতে স্মালোক-মধন হাড়া তার অভাভ মঙলগুলিকে দেখা যার না। সাধারণ দূরধীন দিয়ে পর্যোর বর্ণছেটা মঙল ও লৌর কিরীটকা দেবতে হলে পর্ণপ্রাস অর্থাপ্রভাগের ভাল অপেকা করতে হয়। কিয়ীটকা (पटक विकीर्व चाटलांत वर्गलिशित क्षयम शर्द्धादात नमस विकानीया चाविकाव करवन रव, चर्रवात मध्यर्ग चारमारकव একটানা বর্ণালীর (কৃষ্টিনিউয়াস্ স্পেক্টাম) বছলে করেকট বিশেষ ভরত্মাত্রার আলোকের উল্লল রেখা কিরীটকার বৰ্ণালীতে (শেক্টাৰ) কুটে উঠেছে। বিজ্ঞানীয়া এই মবাবিক্লত রেবাগুলিকে তাঁদের স্থানা ও এতাবং স্থাবিক্লত योलिक भन्नार्वश्रीलव देवमहायुक्क द्वर्वश्रीलव गर्क छर्वन ৰেলাভে পাৱেৰ দি এবং মেলাভে না পেৱে বেৰাগুলিকে किरोहिका मध्यकत अक्षेत्र अकामा (भीत्वत दिनिहे) चहक दल ষ্মে করেন আর সেই অধানা মৌলটর নাম রাখেন করোনিরাম বা মুকুটকা যৌল। এর পর ১৯৪২ সালে সুইwas मूर्व विश्वविकामस्यत्र (काणिविकामी) त्वक्षे अक्रमास्य ( Bengt Edlen ) शरववनात करन कामा बाह, कित्रीहैकात ৰৰ্ণনিপিতে (স্পেক্টাম) আবিহৃত উচ্ছন ৱেখাণ্ডলি লোহা. मिटकन, क्यांनजिवम ७ बावनन-अहे ठाविके मार्वादि अवटनव

ৰৌলবেল্ব ইলেক্ট্ৰন ৰোৱাৰো প্ৰবাৰ্থলিৱই বৰ্ণলিপির दिनिक्षेत्रफ्र बर बुक्डेका (करवानिवय) राम एका चचामा बोलाव नव। जांव म्ह पूर्विका यहा कामध बोल সৌর-কিরীটকার পাক্তে পারে না--রুকুটকার অভিছ काश्वमिक । त्नांका, निर्कत, चांश्रम ७ क्रांनिश्वास्यद ইলেক্ট্ৰন বোৱালো উভেকিত প্রমাণুগুলি মাত্র বিশেষ অস্থায়ী অবস্থায় (মেটাটেবল টেট) কতকগুলি নিৰ্ভিট ভয়ক্ষাত্ৰা আলো করার খন্তই কিরীটকার বর্ণলিপিতে আবিষ্ণুত বেৰাগুলির উত্তর হয়। সৌর কিরীটকার বর্ণালীতে ব্যাক্তমে দলট, এগারট, তের্ট, চৌষ্ট ও পনেরট ইলেক্টন বোরানো লোহার পর্যাপুর, বারোট, ভেরট ও পনেরট ইলেক্ট্রন খোৱানে ক্যালসিৱৰ প্ৰমাণুৱ এবং দণ্ট ও চৌষ্ট ইলেক্ট্ৰৰ বোরানো আরগন পরমাণুর বৈশিষ্টাস্থচক মোট চৌষ্ট উল্লেল ৱেধার সন্ধান বর্ডমানে পাওয়া গেছে। বেশুনী পারের আলো থেকে সুত্ৰ কৰে লাল-উৰানী আলো পৰাছ প্ৰায় সকল বর্ণের আলোর এলাকার এই বেখাগুলির তর্মমাত্রা ছড়িয়ে चारह । अपन अन र'न राहे छारबन, रिनियम भन्नमानुष्कतिन চেরে বছ গুণ ভারী লোহা, নিকেল, ক্যালসিয়ম ও আরগনের পরমাণ্ডলি কোন প্রচণ্ড শক্তির বাড়ার এতগুলো করে ইলেকট্রন বোয়ানো এবং হর্ষ্যের অভয়তম মওলের সীমা हां जित्र महाकर्द्य क्षात्र के के नि अजित्य करत्र के माहेन के कृत्य फेर्रम, कित्रीविकात स्वना मिन, अवर जाननारमत देवनिक्रे फ्रक বৰ্ণলিপির উচ্ছল রেৰাগুলি উদ্ভেজিত হয়ে বিকিরণ করতে লাগল। তথু তেল-কণিকাদের ধাৰার এত শক্তি ভাষেত্র পক্ষে পাওয়া অসম্ভব । এই প্রচণ্ড দ'ক্তির উৎস কোধার গ

তার সাহ্যতিক গবেষণার অব্যাপক সাহা এই প্রপ্নের মীমাংসা করবার চেঙা করেছেন। অধ্যাপক সাহার সিম্বাপ্ত অহুসারে হর্ষের আলোকমন্তলের সীমান্তে ইউরেনিরম পর্মাপ্ত সূট্রন অভিযাতে (ছ্ট্রন-বোঘার্ডমেন্ট) চার ভাগে ভেঙে যাছে এবং এই ভাঙনের কলে ভৈরি হছে লোহা, নিকেল, ক্যালসিরম ও আরগমের ইলেকট্রন বোঘানো পরমাপু আর সেই সলে হাড়া পাছে অপরিষের শক্তি। আধুনিক পরমাপু-বোমার ইউরেনিরম পরমাপু মাত্র ছ্বতারী সৌরলোকে



वेषेरवनिवरमव जांकरमव अकि शवदान्-रवाबाद्द क्रिके - जां रिष (मही नर्रक्रे जल्या । रेक्टेरिवियम मिनेमां क्रांक् क्रांक क्रांक ভাঙার পর বে অমিত শক্তি হাড়া পার জীবই অভিবাহত लाए। निर्मन, क्यानिवास ७ बादनम अरे व्यक्ति द्वार्तन প্রভাক্টরই পরমাণু চৌক বেকে বোলট পর্যন্ত ইলেক্ট্রন ৰুইয়ে উত্তেজিত হয়, সৌর মহাকর্বের টান এড়িয়ে প্রচও বেরে আলোক-মওলের কয়েক লক মাইল উপরে किशीक्षेकां अर्छ। (मर्नात्न योमधिमत देतक्षेन र्वादात्ना পরমাণুগুলি বীরে বীরে ভালের বোয়ানো ইলেকট্রনগুলিকে পাক্ডাও করতে তুকু করে এবং এই আয়নিত অহায়ী অবস্থার উত্তেজনার তেজ ছেড়ে দিয়ে তার বৈশিষ্ট্যস্থচক তরঙ্গ-মান্তার আলো বিকিন্নণ করে বর্ণলিপিতে আপন অভিছের সম্বান দেয়। অধ্যাপক সাহার গবেষণা বহু বিরুদ্ধ সমালোচনার নিহসন করে কিরীটকার বর্ণালীর সংখাষ্ট্রমক ব্যাখ্যা করেছে अवर किवीक्रकांत विवर्गकरमंत्र गर्रम ७ दिनिरक्षांत छेनत ষ্থেই আলোকপাত করেছে। অব্যাপক সাহার মতে ক্রত-

বিপানী (র্যাণিত নি-এস্কেণি'র) অতি বেগবার ( হাই-জীও )
ইংলক্ট্রপ্তনির বেব দিরে কিরীটকার বহির্বকাট তৈরি
হর্মেটি এবং বর্ণফটা মওলের উপরের তরে লোহা ও
নিকেলের বেশী ইলেক্ট্রন বোরাবো পরমাণুদের সলে সৌর
মওলের অভাভ মৌলগুলির পরমাণুর সংবর্গ ঘটার কলেই
এই অতি বেগবান ইলেক্ট্রনগুলি ছাড়া পার।

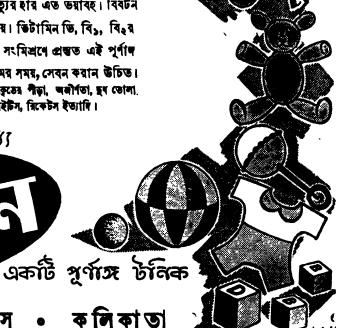
হাল আমলের ধবর হ'ল—চীনা বিজ্ঞানী ইং-সিয়েন-সান-সিয়াংগ (Tsien-San-Tsiang) এবং তার পত্নী প্রিয়ুক্তা হো-আছ্-উই (Ho-zah-Wei) বিধ্যাত করাসী বিজ্ঞানী জ্যোলিও কুরীর ভত্তাবধানে গবেষণা করে, ইনিস্টটিউট আক্ ভ্যাক্লিয়ার গবেষণাগারেই রাসায়ণিক উরেনিয়ম পরমাণ্র কেল্লের ফ্রি এবং চতু-ভাজনের (tri and quadri fission) অভিত্ব আবিজ্ঞার করেছেন। এই চীনা বৈজ্ঞানিক-দম্পতির গবেষণার কলে অধ্যাপক সাহার সৌরকিরীটকা সংক্রাজ্ঞ আব্নিক সিছাত্ত সত্য বলে সমর্থিত হওয়ার বিজ্ঞানীমহলে বেশ সাভা পত্তে গিয়েছে।

# 3173/3/2018

শিশুপালনের স্মাক্ জ্ঞানের অভাবে এদেশে শিশু-মৃত্যুর হার এত ভয়াবহ। বিবটন শিশুদের দৈহিক সর্বাদীণ পৃষ্টিবিধান করিতে অধিতীয়। ভিটামিন ভি, বি১, বি১র সহিত মৃল্যবান উদ্ভিক্ষ ও বাসায়নিক উপাদানের সংমিশ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাল টনিকটি প্রভাবে শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দখোদগমের সময়, সেবন করান উচিত। বিবটন নিয়নিখিত রোগে বিশেষ উপকারী:—শিশুদের বৃহত্তের পীড়া, অনীর্ণতা, হুণ ভোগা, প্রট হাণা, কোটকানিস্ক, সক্ষুত্তা, ক্রয়ভা, বহাইটিস, রিকেটস ইত্যাদি।



লিষ্ঠার এটিসেপটিকস্ • কলিকাতা



# भूकिक जाराध्य

দিল্লীশ্বরী (ৰিতীয় সংক্ষরণ)—শ্বিজেঞ্জনাথ বন্দ্যোপাখায়. একালক—৪ঞ্চলাস চটোপাখায় এও সন্স, কলিকাতা।

গ্রন্থকার স্থাসিত ঐতিহাসিক জীবৃত ব্রজেজনাথ বন্দ্যোপাধ্যার বাংলাসাহিত্যের অক্তম মহারথী। তিনি আচার্য্য বহুনাথের প্রবীণতম শিশ্য ।
ইতিহাসকে সরস প্রাণশন্দী সাহিত্যের রূপ দান করিতে ব্রজেজবার্
সিত্তহন্ত, তাঁহার প্রণীত 'বেগম সমরু', 'জহান্-আরা' 'মোগল-বিহুবী'
একাধারে উত্তম সাহিত্য অবচ নিপুঁৎ ইতিহাস। বর্ত্তমান পুত্তক 'নিশ্লীখরী'-র প্রথম সংকরণ ১৩০ সালে ২৫ বংমর পূর্কে প্রকাশিত হইরাছিল। উহার "নিবেদনে" তিনি লিখিরাছিলেন—"বাহাতে ইতিহাসের প্রতি জনসাধারণের অমুরাগ বৃদ্ধি হয়, সেইজক্ত ইতিহাসের মর্যাদা লক্তন না করিরাও রচনা যবাসন্তব সরস করিবার চেটা করিরাছি।" বলা বাছলা, ব্রজ্জবাবুর এই তুরহ প্রশ্নাসকল হইরাছে।

'দিলীখনী' পুত্তক ফুলভানা রঞ্জিরং এবং সম্রাক্তী নুরজাহানের ঐতি-হাসিক চিত্র-- ফুল্ল এবং ফুনিপুণ, অপচ সরম ও ফুপাঠা। রঞ্জিরং সভাই সাহস, কুটনীতি এবং শাসনদক্ষতার আনতামালের সন্তানগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ছিলেন; কিন্তু যুগধর্ম ও রাজনৈতিক পরিস্থিতি ছিল তাঁহার প্রতিকূল।

ব্ৰজেন্ত্ৰাবু লিখিয়াছেন, কৰ্ণাল জেলার কইখাল নামক ছানে সমাজী রিজন্ন 'তৃণতলে চিরসমাধি" লাভ করিয়াছেন। এই বিষয়ে কিঞ্চিৎ মতভেদ আছে। কইখালে তিনি নিহত হইরাছিলেন, তাঁহার মৃহদেহ আবিষ্কৃত হইরাছিল; কিন্তু উহার পরে ঐ শবদেহের কি গতি হইল ইতিহাসে লেখা নাই। অতি-বড় দুশমন্ হইলেও আলতামাশের পুরগণ ভন্নীর মৃতদেহ ঐ হানেই কেলিলা আসিনাছিল কিংবা মাটি চাপা দিরাছিল অসুমান করা যার না। বর্ত্তমানে পুরানা অর্থাৎ শাহজাহানের দিল্লী শহরের "তুর্কমান দরওরাজা"-র কাছে ভদ্র বাজ্তি—বিশেষতঃ হিন্দুর পক্ষে আগমা এক মহলার একটি সাধারণ মক্বরা আছে, উপরে ছাদ নাই। এইখানে দুইটি কবর আছে, শুর সৈরদ্ আহ্মদ ভাঁহার 'আশার উস-সনাদিদ' নামক পুরান্ত্ত-গ্রন্থ এইগুলিকে আলত্নিয়া ও রজিন্তং এর সমাধি লিখিলাছেন; যোধ হর জনশ্রতিই প্রমাণ। আমি একবার মুনলমানের ছয়বেশে

स्विश्व (मिश्वा किल्कि) प्रति वर किश्व विकास किश्व कि

আবাদের প্রকাশিত Guide to Bengalee Books (Catalogue)
একথত সংগ্রহ করন। ইহাতে নানাবিধ পুত্তকের বিভ্ত সভান
পাইবেন। বুল্যা। আনা। ভাকবার সহ ।/-, রেকিটারীডাকে সইডে
রেলে রেকেটারী ধরচা বতর। সাবাত কিছু কণি অবশিষ্ট আছে।

কুপু পাব্লিসিটি সোসাইটা অব ইণ্ডিয়া ১৯০ন আবহাই ব্লিট, কনিকাতা—১ মহরার ছেলেদের মধ্যে করেকটি ছুরানি বিতরণ করিরা সমাজীর কবরে "জিয়ারত" করিতে গিয়াছিলাম। রজিয়ণ্ডক বাহারা সোনা-জহরতের লোভে পুন করিয়াছিল ভাহারা জাট-চাবা, ইতিহাসে অবশু লেথা আছে "হিন্দু-জমিলার"—বাহা এজেজ্বাবু ব্যবহার করিয়াছেন। বাংলা দেশে বাংলা ভাষার "হিন্দু-জমিলার" পদবী এক বিশিষ্ট অভিজাত-ভেণীর পক্তে প্রবেজা। দিনী কুরক্জেত্র অঞ্চলে হিন্দু-মুসলমান-নির্বিলেবে কৃষক নিজেকে কাশ্তকারশ্বলিয়া পরিচর দের না, বুক কুনাইয়া বলে "জিয়ীলায়", ধর্তী-কা মালিক; কাসীতে কৃষক অর্থে এই হিন্দুছানা শব্দ ব্যবহার হইয়াছে। চবা ক্ষেত্রে পাশে নিরিত ব্রীলোককে চাবা ব্যতীত আর কের্ছ পুন করিতে পারে না—"হিন্দু কৃষক" বলিলে সব দিক রক্ষা হয়।

'দিলীখনী' পৃক্তকের দিতীর চরিত্র "নুরজহান" (পৃ ৪০ হইতে ৯০)। ফুল্মনী নুরজহানের ঐতিহাসিক পরিচর অনাবশুক। জাহার জীবন-চরিত এত সংক্ষেপে অথচ ফুচুভাবে লেখা কোখাও পড়িয়াছি বলিয়া মনে হয়না।

ব্ৰেক্স বাব্ৰ 'দিলীখনী' গুধু ছেলেরা নয়, ছেলেদের অভিভাবকেরাও
পড়িবেন, পড়িরা আনক লাভ করিবেন। গুধু বাংলা ভাষা নয়, ইংরেজীতেও
নুবজহানের এইরূপ বয়ং-সম্পূর্ণ কাহিনী এবং চরিত্র-সমালোচনা লিপিবছ
হর নাই।

শ্রীকালিকারঞ্জন কান্তুনগো

নমামি—- শ্রীক্তিতশচন্দ্র লাহিড়ী। প্রকাশক—বিমলারপ্তন চন্দ্র; খাগড়া, মুর্নিদাবাদ। ৭৮ পুঠা। মূল্য দেড় টাকা।

এই পৃথ্যিকার বাংলার বিধাবী ও সন্ত্রাসবাদী যুগের এমন করেকটি চিত্র আঁকা হইরাছে, বাহা ঐ যুগের মাহাজ্মাকে আমাদের চোধের উপর মৃতন করিরা ফুটাইরা তুলিরাছে। গরজ্জেল করেকজন বিপ্রবা-এধানের কাধ্য-কলাপ বর্ণনা করিরা লেখক তাঁহাদের কর্মপ্রচেষ্টা ও সময়কে পাঠকবর্গের নিকট জীবন্ত করিরাছেন; আমরা সেই যুগের বিধাবীদের মনোভাবের যে পরিচর পাই, বলার কৌশলে তাহা যে-কোন দেশের পক্ষে গ্লাঘনীর।

প্রথম বর্ণনাটি "মহারাজ" নামে পরিচিত প্রীক্রেলোক্যনাথ চক্রবর্ত্তী
মহাশরের জীবনের ঘটনা-সংলিট; তিনি নৌকার মাঝিরূপে, কালীচরণ
নমামি (নমংশৃছ) রূপে—"ছোট জাত"-রূপে, বাঙালীর স্মৃতিতে জমর হইরা
থাকিবেন। "বদেশী" ডাকাতির প্ররোজনে তাঁহাকে এই নৃতন বৃত্তিতে
হাত পাকাইতে হইরাছিল, চলাফেরা কথাবার্তার তিনি "নমামি" হইতে
পারিরাছিলেন বলিয়াই এমন করিরা ইংরেজের চক্ষে জনেক সমর
ধূলি নিক্ষেপ করিতে পারিতেন।

প্রতোকট বর্ণনা এক এক জন বাঙালী, অবাঙালী বিপ্লবীর জীবন-কণার উপর আলোকপাত করে। বীরভূম জিলার ভ্ৰুড়িবালা "নানী"র আত্মতোলা কর্যা কেবল ওঁছোর ব্যক্তিগত জীবনের মহত্ত্বের পরিচারক নহে, সেই মুগের নথাবিত হিন্দুসনাজের প্রায় প্রতি গরে এরপ না, নানী, দদি, ঠাকুরনা, দিলিনা, এবং পক্সী বিরাজ না করিলে বিপ্লবী আন্দোলন ত্রিশ বৎসর টিকিরা থাকিত না। প্রস্থকারকে ধক্তবাদ জানাইতেছি—তিনি সেই মুগের হিন্দু বাঙালীর চিন্তা ও কর্মপ্রচেষ্টার একাপের ছবি বর্জনান মুগের পাঠকদের দিকট উপস্থিত করিয়াহেন। ভাষার ভাঙার পৃত্ত হয় নাই, আসরা তাহা হইতে আরও দানের প্রতীকার থাকিব।

রাজনারারণ বস্থ — এনৈলের নিছে ও বীৰিটিয়বরণ নিছে, ওরিরেট বুক কোং, »বং ভাষাচরণ দে ইট, কলিকাতা। ৩২ পৃঠা। মূল্য বার আনা।

রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর--- এটেনলেশ বহু। ওরিরেট বুক কেং, ৭০ পুঠা। মূল্য বার আলা।

রামানন্দ চট্টোপাখ্যায়--- এবিনরকৃষ্ণ বোৰ। ওরিরেট বুকু কোং। ৭০ পুঠা। বুল্য বার আলা।

মহামান্ধ--- এই শৈলেণ বহু। ওরিরেট পুক কোং। ১নং ভাষাচরণ দে ট্রাট, কলিকাডা। ১৮৮ পুঠা। মূল্য ছই টাকা।

এই পাঁচখানি বইরে ভারতবর্বের এক শত বংসরের ইভিহাসের পরিচয় দিবার চেটা করা হইরাছে, পাঁচ জন বাঙালা ও একজন গুজরাটার জীবনের ঘটনা আত্রর করিয়া। রাজনারারণ বহু হইতে মোহনদান করমটাদ গালী পর্যন্ত বহু জনের কর্ম-থেচেটা ভারতবর্বের ঘাণীনতা আনিরাছে। ভার পূর্ব্যকথা রাজনারারণ বহুর জীবন-চরিতেই পাওরা ঘাইবে—রামমোহন রার হইতে মহবি দেবেজ্রনাথ ঠাকুরের জীবন-কথার বর্ণনার মধ্যে।

বদিও পৃথক কন্নথানি বালক-বালিকার লক্ত লিখিত, তথাপি তাহাদের পূর্বজ্ঞগণও ইহা পাঠ করিরা জ্ঞান এবং আনন্দ লাভ করিবেন। ইংরেজী নিকা আমাদের মধ্যে একটা মোহের স্তাই করে; ইংরেজের জ্ঞেচদের উপর বিবাদ আমাদের মনে নিকড় গাড়িরা বদে, আমাদের আভীর হীনতা আমরা বীকার করিরা লই। রাজনারারণ বহু সেই "Young Bon.bay"—"যুবক বাড়ালী", "যুবক বোড়াইরের" নেতৃত্বানীয় ছিলেন। কিন্তু বিশ বংগর ঘাইতে লা বাইতেই এই শ্রেণীর মধ্য হইতেই "বিজোহী" দলের উত্তব হইল, বাদের কার্ব্যের পরিপতি দেখিলাম ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগাই ভারিখে।

প্রথম তিনখানি বইরে এই বিজাহের ভাব-নারক, কবি, ও চিন্তা-নায়কের জীবন-কথা বর্ণিত হইরাছে, তৃতীর পুত্তকথানি সন্ত্রাসবাদী কুদিরাম বহু ও প্রকুল চাকির জীবনের তিনটি বংসরের কীর্ত্তি-কথার পূর্ণ। আল বরুসে পিতৃ-মাতৃহীন কুদিরাম জীবনের সব হুংধ আবাদ করিরা হইরাছিল "নীলকণ্ঠ", প্রকুল চাকির মধ্যে দেখিতে পাই ক্লজের বহিঃপ্রকাশ। এই হুই ভলের জীবনে জাতীরতাবাদের বে আবেগ বাঙালী-সমাজের বৃক্ হৃইতে কুদিরা উঠে, তাহাই প্রকাশ পাইরাছিল ১৮৯৭ ব্রীঃ মহারাট্রের দামোদর চাপেকারের মত যুবককে অবলম্বন করিরা। বাংলাদেশ হুইতে তাহা দিকে দিকে বিকীর্ণ হুইরা পড়িরাছিল।

এই "বিলোহের" পিছনে বে সমাজ-মন সক্রিয় হইরা উঠিতেছিল, তার জমি আবাদ করিরাছিলেন রাজনারারণ বস্থ-প্রমুখ মনীবীবৃশ্ধ তাহাতে ত্যাগ ও কর্মসাখনার কসল কলাইরাছিলেন "মহামানব" উপাধিতে ত্বিত নরপুরব। তাহার জীবন্ধ উদাহরণে দেশের গণ-মনে বে ভাব-সলার আবিতার হয়, তার বুকে আমাদের লাতীর তরক্তী নানা বাধা অভিক্রম করিরা রাষ্ট্রীয় মুক্তিয় ঘটে পৌছিরাছে। কিন্তু বাত্রা তার পেব হয় নাই। এই পাঁচখানি পুরুকে বর্ণিত ভাব ও কর্মের প্রয়োজন এখনও আছে। তাহা নানা লোকের দেহ মন আগ্রম্য করিরা নব রূপ পরিপ্রহ করিবে। এই প্রকৃষ্ণ তংগক্তে জানের ক্ষেত্র বিভ্ত করিতে হইবে। এই পুরুক কর্মধানির প্রকাশকর্ম্ব আমাদের দেশের ভাবী সংস্কর্মসাক্রমী রব্যে আন বিভারে সাহায্য করিয়া এক বিশেষ আভাব নোচনে অপ্রশীত ইরাছেন। তল্পক উহারা আমাদের ধ্যবাদার। অনেক অপ্রকাশিত ছবি সারিবিই হওয়াতে বইওলির সোচন বাভিরাছে।

এত প্রশংসার সংখ্য একট অপ্রশংসার কথা বা বলির। পারিলার বা । এরপ পুত্তকে মুহাকর-প্রবাদ বলিরা পরিচিত ফ্রটের বাহল্য বাহনীর সর। বানাবে ভুলও অনেক আছে।

অফুরেশচন্দ্র দেব

মান্ত বাদ—হুমার্ন কবির। ৩৩ রহমান এও ৩৩। পি১৬, গণেশচন্ত্র এডিনিউ, কলিকাতা। পুঠা ১০৭, মুল্য ২০০।

ভূষিকার প্রস্কার বলিরাহেন, "বাস বাদকে জানতে এবং বুরতে হলে ভার প্রতি শ্রদ্ধা থাকা চাই। কিব্র বেন ভার প্রত্যেকটি নিদ্ধান্ত বা বক্তব্যকে এব সত্য মনে করবার মতন মোহে পরিশত না হয়।" মান্সবাদ আলোচনার গ্রন্থকার এই শ্রন্থা সর্বতি বলার রাখিরাছেন এবং তুলনামূলক বৈজ্ঞানিক আলোচনা দারা পূর্ববৈতী দার্শনিকগণের মতামত বিজেবণ করিয়া যার্ক্সবাদের মর্শ্ব ব্রিভে ও ব্রুষ্টতে চেষ্টা করিয়াছেন। সার্ক্সীয় দর্শন, ঐতিহাসিক অভবাদ, ধনতত্র ও শ্রেকীসংগ্রাম এবং শ্রমিকরাল ও সাম্য-ৰাদ এই চারিটি অধ্যারে বর্জমান পুস্তক সম্পূর্ণ হইরাছে। এখন অধ্যারে মান্ত্ৰাদের দাৰ্শনিকভা কোৰার ও কেন তাহা হেনেলের বিজ্ঞানবাদ হইতে পুথক পথে গিয়াছে তাহাই দেখানো হইয়াছে। সোভা কথার হেগেলের শেষ সিদ্ধান্ত মান্ধের দার্শনিক বিচারের পূর্বগুভিজা। হাজার বংসরের ইউরোপীর বিজ্ঞানবাদী দর্শনের পরিণতি ঘটরাছে হেনেলীয় দর্শনে স্পার তাহার মোড় ফিরিরাছে কাল' মান্স সের বিপ্লবী চিন্তার। ঐতিহাসিক জড়বাদও এ চিন্তাধারার পরিণতি মাত্র। সাঙ্গ বাদীর মতে বান্তবের ভিডি কড় পদার্থ। সমাক প্রকৃতির অংশ। প্রচলিত উৎপাদন-বিধি মামুবের সামালিক, ঐতিহাসিক সন্তা নিদ্ধারিত করে, এই মানুবই সমস্ত কল্পনা ও ধারণার স্রষ্টা। স্থতরাং পরোকে উৎপাদন-বিধিই সমস্ত দর্শন, বিজ্ঞান ও ধর্ম্মের ভিত্তি। বাত্রিক জড়বাদ ও কালনিক বিজ্ঞানবাদ হইতে ঐতিহাসিক জড়বাদ শ্ৰেষ্ঠ—এ বিবরে মাজের মনে কোন সন্দেহ নাই। এই নৃতন দৰ্শনে শ্ৰেণীবিভাগ ও শ্ৰেণী-সংগ্ৰামের ওরত্ব অভান্ত বেশী। সান্ধীর দর্শনের অপর বিশেবত ধনতজ্ঞের বিলেবণ। এই দর্শনের মতে---সমত কিছুই আপেক্ষিক হইলেও অসমূল্যের পুত্র শাখত। ধনিকের 'অতিরিক্ত মুনাফার' উপরে ধুব জোর দেওয়া হইরাছে। ধনতমের উৎপায়ন দামাজিক প্ৰয়োজন বা কল্যাণে নহে, লাভের তাগিলে। এজন্ত অভিবৃদ্ধি ও वरिशाम मधा विद्या और उरशावन वर्ष निकिक महादेव रही करते। টাকা-পরসাকে মূলধন বা পু'লি হিসাবে ব বহার ধনতত্ত্বের অপর বৈশিষ্ট্য। একছই ধনতাত্রিক অর্থনীতি সমস্ত পুৰিবীমর পরিব্যাপ্ত না হইরা কাছ হর না। ধনতত্ত্বে পু'বিপতি শ্রম খাটাইরা নিক্ষের লাভের মাত্রা বাড়ার। সম্পংশালী পু' জিপতি ও সর্বাহারা এমিকের বার্যবন্ধ এেনীসংঘর্ষে রূপান্তরের আভাস দেখা দেৱ—এক কথার ধনতন্ত্রের ববিরোধ বিপ্লবী পরিছিতির সৃষ্ট করে। উৎপাদনের সঙ্গে উপভোগের সম্বর শিবিল হইরা পড়ে— আর্থাৎ উৎপাদন ও ৰণ্টন বিদ্দির হইরা পড়ে ও পদে পদে সঙ্কটের সৃষ্টি হর।

মান্দের সলে হেগেলের প্রধান মতবিরোধ অর্থনীতি ও রাইনীতির সক্ষবিচারে। হেগেলের মতে রাই মামুবের প্রজার চরম বিকাশ, ঐতিহাসিক
বিবর্তনের শেব পরিণতি ও তর। মার্দ্ধের মতে রাই শোবণের মহুনাল্ল, বতবিল প্রেণীবিভাগ ও শ্রেণীনগ্রোম থাকিবে, ওতদিন রাটের প্ররোজন। শ্রেণীহান সমালে উহার কোন অতিশ্ব থাকিবে না। সেই সান্মের ভিত্তিতে
প্রতিতিত সমালে শোবণের অবকাশ থাকিবে না—মানুবের সলে মানুবের
সহবোগিতার রাইন্দপ বিস্থা হইবে। স্বতরাং মার্দ্ধের সক্ষালের শেব
পরিণতি শোবণের পরিসমাভি এবং সমালে শেবীবিভাগের অবসান।
সমালত্রবাদ ও সার্যাদ উভরের লক্ষ্য বিরাধ। প্রমিক্তেরির তির্মাধর্ণ এক বাহে, একতই ইহাদের মধ্যে বিরোধ। প্রমিক্তেরীর একনারক্ষ বার্দ্ধের অপরা বিশেবত, ববিও ইহা প্রথম দৃষ্টিতে গণ্ডর-



সঞ্জয় ভট্টাচার্ব্যের 'কলোল'-উপস্থানে ঘটনায় মন তৈরী হওয়ার কাহিনীই লিপিবছ—
তাঁর 'মোঁচাকে' মনই ঘটনা তৈরী করে চলেছে। এ-শতকের পুরোভাগে যে একটি
মন জন্ম নিয়েছিল তা আজ, শতকের প্রথমার্জের অবসানে, কি কি ঘটনা তৈরী করে
ভবিষ্যতের দিকে তাকিয়ে আছে—'মোঁচাক' তারই ইতিয়্তু। এখানে চরিত্রগুলোর
বিকাশে কেবল লেখকই উপস্থিত নন, চরিত্রগুলোও পরস্পরকে উদ্যাটিত করে
অগ্রসর হচ্ছে। শুধু লেখকই কাহিনীকার নন, চরিত্রগুলোও কাহিনীকার।
উপমা টানলে বলা যায়, এখানে নিউটনের আর আইনফাইনের দৃষ্টিভঙ্গী
জড়াজ্জি করে আছে। এ-ধরণের আঙ্গিক উপস্থাস-সাহিত্যে নিঃসন্দেহে অভ্তপূর্ব্ব।
'মোঁচাকে' জীবন সম্পর্কে অনিশ্চয়তা নেই—যা তাঁর 'দিনাস্ত', 'ক্মোদেবায়',
'রাত্রি' বা 'কলোল'-এ অনিবার্য্যভাবে এসে দেখা দিয়েছিল। এখানে
লেখক জীবনের দিকে অভ্যন্ত পরিচছন্ন দৃষ্টিতে তাকাতে পারছেন—
জীবনের অতীত ও ভবিষ্যতকে বিচ্ছিন্নতায় নৈরাশ্যপূর্ণ দেখতে
পাচ্ছেন না। তাই জীবন এখানে সংপ্রসারণে ম্বর্বার, নবীনতায় উজ্জ্বল।

# स्रोधक

কাপড়ে বাঁধাই—৩৩৭ পৃষ্ঠা—দাম পাঁচ টাকা

সঞ্জন ভটাচাৰ্য্যের অভাভ উপভাস:

वृष्ठ आं., बद्रांबाहे श., दिवांच श., करेन्द्रस्वांत्र ४, वांबि ६, करकांव ६,

প্ৰকাশক:

# शूर्वाभा लिप्तिएण

পি ১৩,গনেশ চন্দ্র এভেন্যু ,কলিকাতা ১৩

বিরোধী বলিরাই মনে হর, কিন্তু সামাবাদীর বলস্থাক দৃষ্টিতে তাহা নতে।
অপচ নৈরাজ্যবাদীর সংজ্ মারের দৃষ্টিতজী পৃথক বদিও উভরের শেষ
পরিণতি এক হইতে বাধ্য—উভরের দার্শনিক দৃষ্টিতজী সম্পূর্ণ পৃথক
বলিরাই এরূপ হইরা পাকে। সাম্যবাদের মূলনীতি এই গাঁড়ার বে, সাধ্যমত
সকলে পরিশ্রম করিবে আর সকলে প্রয়োজনমত উহার কলভোগ করিবে।

বলভাবার মান্ধ বাদ সম্বন্ধে এইরূপ স্থচিস্তিত এবং পাণ্ডিতাপূর্ণ এছ ইতিপূর্ব্বে কেন্দ্র লিখিরাছেন বলিরা আমাদের জ্ঞানা নাই। অপক্ষপাত আলোচনা ও বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিভঙ্গীর সূঠ্য সমন্বর এই পৃত্তকের বৈশিষ্ট্য। জ্ঞানপিপাস্থ পাঠকমন্তলে এই পৃত্তক আদৃত হইবে বলিরা আশা করি।

#### ঐঅনাথবন্ধ দত্ত

শুধু গল্প — জীপিরীক্র সিংহ সম্পাদিত। দি বুক এমপোরিরম লিমিটেড, ২২-১, কর্পুরালিস দ্রীট, কলিকাতা। দাম এক টাকা।

এই গল্প-সঞ্চলনের একটি বিশেষ্য—ইহা মূলো হুলন্ড। আজিকার ছব লোর বাজারে এই ধবণে গল্পর পরিবেশনের চেটা সাহিত্য-প্রীতির পরিচারক, একত গল-পিপাত্ম পাঠকেরা প্রকাশককে অবস্থাই সাধুবাদ দিবেন। কিন্তু সম্পাদকের দারিছ উাহার সাহিত্য-বিচার-ক্ষমতার উপর বতটা নির্ভর করে ততটা বোধ হয় হুলন্ড-প্রকাশের সংসাহসে নহে। প্রসক্ত আশা করা বার, বল্প মূলো প্রাপ্ত বস্ত ভারে সমৃদ্ধ হইলেও রসেবন আদহীন না হর। লেখক ও লেখা নির্কাচনের সম্পূর্ণ দারিছ সম্পাদকের।

আলোচ্য গল্প সংগ্ৰহের সবগুলি গলই স্থানিব্যাচিত নহে—এরপ আনবধানতা ইচ্ছার বিরুদ্ধেও ঘটিয়া থাকে, কিন্তু আবাহরলালের প্রসঙ্গ কি শুধু গল্পের পর্যায়ে পড়ে ? যদিও সর্ব্যাপেকা দীর্ঘ লেখাটির মধ্যে অবাহর-লালের কথা বংসামান্তই আছে। গল্পের আসরে এটির অনধিকার-প্রবেশ সম্পাদনার শৈধিল্যেরই পরিচারক। স্থান্ত জিনিব সম্বন্ধে সর্ব্বকালের একটি অপবাদ আছে। এই অপবাদ বগুনের উপার নির্বিচারে নাম-করা সাহিত্যিকদের রচনাসংগ্রহ মহে, তাঁহাদের সাহিত্য নর্গাদার্ক নেথাগুলিকে চরন করা। তেখন দৃষ্টান্ত কিছুকাল পূর্বে প্রকত্তম মৃল্যের (মাত্র হু আন।) 'কবা ও ক।হিনী' সিরিঞ্জ প্রকাশের মধ্যে ছিল।

**জ্ররামপদ মূখোপাখ্যায়** 

সভ্যতার অভিশাপ— শ্রীনান্ত্রীন দান। নাগরিকা শ্বতি-মনির, যুযুডালা, কলিকাতা। দাম আট আনা।

'সভাতার অভিদাপ' গ্রী-ভূমিকা-বজ্ঞিত কিশোর-নাটক । আধুনিক সভাতার সর্বনাশা রূপটিই লেখক উক্ত নাটকের মাধ্যমে কৃটাইরা তুলিবার প্রন্নাস পাইরাছেন । আজকাল কিশোর-নাটকে কতকগুলি বড় বড় আদর্শের বুলি প্রচার করা একটা রেওয়াল হইয়া দাঁড়াইরাছে। নাট্য-রূস পরিবেশন করা অপেকা বড় বড় কথা বলার দিকেই বেন লেখকদের ঝে'াক বেশী। 'সভাতার অভিশাপ'ও ঠিক সেই ধরপের নাট্যরসহীন একথানি কিশোর নাটক। লেখকের উজ্জেশ্ম সাধু, কিন্তু নাটক হিসাবে এই বই রুসোন্তীর্ণ হয় নাই।

হ্যা মার্ব শ্রীমাণিকলাল সিংহ, এম-এ। প্রকাশক - শ্রীন্তীমচন্দ্র মাহিন্দার, ২১৯, রামকৃষপুর লেন, হাওড়া।

বদেশী-আন্দোলনের যুগ হইতে ১৯৪২ সালের গণ-আন্দোলন এবং আন্ধান হিন্দ কোন্ধের অভিযান পর্যন্ত জাতির মৃক্তিকামনা ও স্বাধীনতাআন্দোলনের রূপটি নাট্যকার বেশ মুন্সীয়ানার সঙ্গে একপুত্রে প্রথিত করিয়াছেন। লেধকের ভাষা নাটকের সম্পূর্ণ উপবোগী—তবে 'সিচ্যুরেপন' স্প্রতিতে অধিকতর নৈপুণা প্রদর্শনের ছারা নাটকটিতে গভিবেগ সঞ্চারের বধেন্ত মুবোগ ছিল—নাট্যকার তাহার পূর্ণ সন্ধাবহার করেন নাই। তবে বিবরবন্তুর রুপ্তই নাটকথানি পাঠকদের আগ্রহ উদ্বীপ্ত করিবে।

শ্রীমশ্বথকুমার চৌধুবী

# ক্ষেত্ৰজ্যান্তীর পান 🤝

## অনন্ত দেব মুখোপাধ্যায়

GE 7432 

এংডা নহে প্রেম এবে ওগো

৬ধু ক্মা চাওয়া ছিল বাকী

—ভাগনিব

# কুমার প্রভোৎ নারায়ণ

GE 7434 

তথু হুটি ফুল ফোটে

তথু হুটি ফোটা আঁথিজন

—আধনিব

#### বিনর রার, শ্রীমতী প্রীতি বন্দ্যোপাধ্যার কুমারী রেবা রার ও ভূপতি নদ্দী

GE 7433 { वर्ष वस्पना — ২ ভাগ

#### ৰিজেন মুখোপাধ্যায়

GE 7435 { কেন ছারমানা ফুলহারে জীবন-নদীর ছুই ভীরে জাগে — জাধনিক

কুমারী নমিতা ধর

কই বইলি ও মিতা

GE 7436

ও মোর ময়না ময়নারে

—ঝু

'চিত্ৰ মারা'র ভাষর ক্ষিষ্টি 'কবি' চিত্ৰের গান কলম্বিয়া বেকর্ডে পাবেন



# কলম্বিরা প্রাক্ষোকোন কোং লিঃ

কলিকাভা — বোম্বাই — দিল্লী — লাহোর – করাচী

# -প্রিম চিমে নিম-

রেকর্ড বাজাতে যে পিন বা নিজ্ল ব্যবহাত হয় ভার গুণাগুণের উপর পরিছের ও স্বাভাবিক স্বর প্রেক্রণ এবং রেকর্ডের স্থায়িছ নির্ভর করে। রেকর্ড দীর্ঘন্থারী রেখে প্রভ্যেকবারই স্বাভাবিক স্বর উৎপন্ন করতে হলে চাই বিশেষভাবে ভৈরী ইস্পাতের অতি স্ক্রাগ্র পিন। কলম্বিয়ার পিনগুলিতে এই গুণ আছে বলেই বিচক্ষণ লোকেরা বাজারের যা-তা পিন ব্যবহার না করে কেবল কলম্বিয়ার পিনই ব্যবহার করেন।

# গুণভেদে কলখিয়ীর করেকটি চমৎকার পিন

কলমিয়া 'হপার্ব' লাউডটোন নিড্ল্—২০০টির বাক্স—১৪০
কলমিয়া 'এক্সটা লাউডটোন' নিড্ল্—২০০টির বাক্স—১৪০
কলমিয়া কোমিয়াম নিড্ল্ ( এক পিনে বহু রেকর্ড বাজে ) ১০টির প্যাকেট ১২
কলমিয়া ডারা পোল্ড নিড্ল্ ( 'পিক্-আপ'-এর জন্য ) ১০০টির বাক্স—২৪০



# কলহিয়া প্রাফোকোন কোং লিঃ

কলিকাভা — বোম্বাই — দিল্লী — লাহোর — করাচী

# स्मा ३ स्मानी-

ক্ষণের ঐবর্ধ্য বিধাতার দাব; কিন্তু বাছুব সেই ক্ষণের উৎকর্থ সাধন করেছে প্রসাধন-বিজ্ঞানের সমস্থ অনুশীলনে। সামাভ ক্ষণের অধিকারিশীরাও তাঁলের ক্ষণ প্রাকৃতিভ করে ভুলভে পারের প্রকৃষ্ট প্রসাধনীর নিয়মিভ সন্থাবহারে। এ বিবরে ক্যালকেনিকোর নির্বাচিত প্রসাধনী সভার, রূপচর্ব্যা-কারিশীরের বিশেষ সহায়তা করতে পারে।





মার্গো সোপ • রেণুকা পাডভার

काष्ट्रेत्रन 🔸 मार्गि प्या ४ क्रांब

#### ক্যালকাঢ়া কোমক্যাল

গণ্ডীর ভেডর— **এতন্ত**নন্থ বহু। আই, এ, পি, কোং নিঃ। ৮-সি. রমানাথ মন্ত্রনার <u>ট্রা</u>ট, কলিকাডা। দাস এক টাকা।

ছেলেদের উপভাস। বিঃ রায় বদলি হইরা তিভিলরড়ে আসিগাহেন। রেলগারে কোপানীর একটা ছোট বিভাগীর আসিদের তিনি সর্বামর কর্তা। কতকটা ধারধেরালী এবং হরতো বা পাইবাদীও। প্রথম দিনেই তিনি আসিদের বহদিনের অভাত নিরমের কিছু পরিবর্তন সাধন করিলেন, বাহার দকন কর্বচারীদের দৃষ্টি তাঁর প্রতি সহকেই আকৃষ্ট হইল। কিছু আসল ঘটনা ক্ষর হইল বিভীয় দিনে, বাহা এই উপভাসের বলা বিয়ন্বর ।

মি: রার কাল ব্বিরা লইবার লক্ত বিভাগ দিনে বণ্টাথানেক পূর্বেই
আপিসে লাসিরাছেন। কোথাও লনপ্রানীর সাড়া নাই, আকস্মাৎ আলমারীর পিছনে একটা চাপা নি:বাস এবং মৃত্র খন বঁদ্ শব্দে তিনি উৎকর্ণ
ইরা উঠিলেন। "কে, কে ওথানে ?" একটা অজ্ঞাত রহক্তের আতক্তে
তার মদ ছলিতেছিল। এইখান হইতেই উপক্রানটি দানা বাঁবিয়া
উঠিরাছে। কোন এক রাজবন্দী কোন রক্তমে ট্রেন হইতে পলাইরা
মি: রারের আলমারীর পশ্চাতে আপ্রর লইরাছে। সে ধরা পড়িতে
চার না। তার লীবনের সাধনাকে সকল করিতে চার।" 'ভারত ছাড়'
এই মহামন্ত্রকে জীবনের প্রত করিরাছে বলিরাই সে বন্দী। মি: রারের
ক'ছে সে আপ্ররপ্রার্থনা করিল। মি: রার মহা সমস্তার পড়িলেন, তার
অক্তরের আদল মামুবটি সাড়া দিল। এই ছান হইতেই মি: রারের
চিরিত্রের বিশেবক আত্মকাশ করিতে লাগিল বিভিন্ন লটিল পরিছিতির
মধ্য দিরা।

একটির পার একটি ঘটনা অতি যত্নের সহিত চিন্তাকর্থক করিরা তুলিতে লেখক বণেষ্ট চেষ্টা করিরাছেন এবং তার এই চেষ্টা বহুল পরিমাণে সকল ক্ষুনাছে বলিয়া মনে হয়।

### ঞ্জীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত

ছাসিকান্নার দেশে — জীহনির্ন্নল বহু। বৃন্ধাবন ধর এও সল নিমিটেড, ং, কলেক কোরার, কনিকাতা। পৃঠা সংখা—৮৫; মূল্য— বুই টাকা।

নাম-করা শিশু-সাহিত্যিকের দিখিত ছোটারের কবিতার বই। কবিতার গর বা হরেছে। বইটির ছুই ভাগ—হাসির দেশে ও কারার দেশে। হাসির দেশের মোটা গল্পেন্স আর প্রানাটি মার্কা বংশলোচন কি করে 'ফ্লের বন' বে ফ্লের নর তার পরিচর পেল, কি করে তারা ত্রমণের পথে বাঘ, ডাকাত আর হাতীর পালকে তাড়িরে দিল, টক্-বালের কুছে কি করে লকারাজের কুটনৈতিক কন্দি ভেঁতুল-রাজাকে সন্ধি করাতে বাঘ্য করাল, গোবর-পোরা-বাঘা শ্রীবোবর কি করে বাগুর নাহের ইাড়ির বদলে গোবার মাণের ইাড়ি এনে বেতো রুপীর রোগ সারাল, তার কোতুককর বিবরণ শিশুচিন্তকে আরুই না করে পারে মা। কিন্তু এর চেরেও ভাল লাগে কারার দেশের কাহিনীজনো। এগুলি উন্তট করনা নর—এই পৃথিবীরই ছাবের কথা, নামুবের সহামুক্তিহীনতা, অহজার, কুসংকার ও নিঠুর সামানিক ব্যবহার কত মান্তবের শ্রীবন, কত নবীন ননকে নিয়ার্কণ বাখার ক্লিষ্ট করে তোলে। এর সঙ্গে কিশোরননের পরিচরের প্ররোজন আছে। কিশোর-ননেও বালুবের ছব্ধ-বেকনা স্বান্য ভাবে বাজে।

—"এরা ধনী টাকাই চেনে আর কিছু না কানে। তেলা নাথার তেল চালতে ওরা পরন পাকা, নোলের বীংন ওলের কাছে কেবল কাঁকি একেবারে কাঁকা।

ওলের কুকুর বোলের চেরে খনেক বেদী লানী, কি এনে বার কুবার খালার সরলে তুনি খানি।" পড়তে পড়তে এই নির্মনতার বিলবে এ সুগের কিলোন-মন বিজোহী হরে উঠনে।

বইখানি বেশ বড় জক্ষরে বরবারে করে হাপা, হবিভালিও হালার।
২২ পৃষ্ঠার বিতীর লাইনটিতে জক্ষরের আতিশব্যে হলপতন ঘটেছে।
"বতই হোক অক্সার বাড়ি"র এই ছলে 'বতই কেন হোক আনাড়ি' বা
এই বরণের কিছুতে পূর্ববাসর হলের বারা বলার থাকিত।

#### **बिनाबाय्य हत्य हत्य**

সেকালের রবী স্ত্রতীর্থ — প্রশাস আবিলার্স। পূরবী পাবলিশার্স। ১৬, শিবলারারণ দাস লেন, কলিকাভা। দাম রুই টাকা। রবীজ্ঞনাধের লীবন ও সাহিত্যের সহিত শিলাইদহের বোগ জতি ঘনিষ্ঠ। পলাতীরবর্ত্তী এই প্রামের সৌন্দর্য কবির চিন্তকে আকর্ষণ করিরাছিল এবং সাহিত্যস্কীর প্রেরণা দিরাছিল। এই প্রামাটকেই লেখক 'সেকালের রবীজ্রতীর্থ' বলিরাছেন এবং তাহার বিচিত্র কাহিনী সহস্ত ও সরল ভাবার গুলাইরাছেন। 'বুগল সা', 'আপানী মিন্ত্রীর বৌ' প্রভৃতির বুভান্ত চিন্তাক্ষক। কবি-পন্ত্রী মুণানিনী দেবীর কথাও প্রশ্বকার কিছু কিছু বলিরাছেন। মানুব রবীজ্ঞনাখকে আনিবান্ধ পক্ষে বইথানি সাহাব্য করিবে।

ব্ৰজ-বাঁশরী—একালিদাদ রার। ইউ, এন, ধর আও সন্স্ লি:। কলিকাতা। মূল্য আড়াই টাকা।

শ্রেষ্ঠ ব্রজন্তি পদাবলী এবং কবি কালিদাস রার কৃত সেগুলির এই বঙ্গাসুনাদ কাব্যরসিকের প্রম উপভোগ্য। বৈক্ষব কবিতার অনুরাগ এবং বীর রচনা-নৈপুণ্যে বছদিন পূর্বেই কবি বাঙালী পাঠকের শ্রছা অর্জন করিরাছেন। তাঁহার 'ব্রজবেণ্' এবং 'পূর্ণপূটের' বৃন্ধাবন-লীলারসাত্মক কবিতা আজিও অনেকের কণ্ঠছ। বর্তমান এছে কেবল ভাষাভরের দিকেনহে, মূলের মাধুগ্রকার দিকেও কবি লক্ষ্য রাধিরাছেন। অলসজ্ঞা গুণে উপহারের পক্ষেও কাব্য গ্রহুখানি উপবাসী হইরাছে।

#### अधीरतस्य नाथ मुस्थानाशांत्र

স্মরণীয় যাঁরা—এবারেজ্রমোহন আচার্য। বেজল পাবলিশাস ১৪, বছিম চ্যাটার্জি ট্রাট, কলিকাডা। মূল্য ১১, টাকা।

আদর্শের সন্ধান — श्रेष्ठमत्त्रज्ञनाथ नखः श्रेष्ठम नारेखनी, २०३, वर्भछानिम द्वीरे, वनिकाला। मना २८ गिका।

ছুইণানি পৃথ্যকেই ক্ষেত্ৰকন সমনীয় ব্ৰেণ্য ব্যক্তির জীবন-কাহিনী কিশোমদিগের জন্ত নিখিত হুইরাছে। প্রথমটি মনোজ বর্ণনার, রচনার উৎকর্ষে, কাগজে, ছাপার সব দিক দিরা শোভন ও উৎকৃষ্টতর। অন কথার অনেকথানি বলার কোশল প্রছকারের আরত, বর্ণনার জনীতে আর কথার আলোচ্য ব্যক্তির সমগ্র রূপটি শাই ও উজ্জ্ব হুইরা উর্টিরাছে। বিতীয় বুইখানি উপ্দেশ ও মন্তব্যের আভিশব্যে ভারাক্রান্ত, নিকৃষ্ট কাগজে ছাপা। অবজ্ঞ মলাটের চিন্রটি ক্ষর। প্রহকারের উল্লেখ্য ও চেটা প্রশাসনীয়। প্রথম প্রছে মনীবিগণের নামকরণেও বৈশিষ্ট্য লক্ষিত হয়, বর্ণা জানজিলু ক্রজান, বীর-সন্ত্রাসী, রাজ-ভিথারী, বিজ্ঞান-ভপবী, শতাক্ষীর পূর্বা, বালোর বাধ ও বীর বিজ্ঞাহী। বিতীয় বুইটিতে রালনোহন, হয়ানন্ত, জন্ম গোবিশ্যসিংহ, গান্ধী, ফুভাব, লেনিন, কামান, জনগান্টত হুইরাছে।

দেশমাতৃকা স্তুতি—এপুরশ্বন মুখোগাখার স্কলিত। প্রকাশক—ডাঃ বিবেশ্বর মুখোগাখার, ও রামক্ষণ বস্তু, বিবিষপুর, ক্ষিকাতা। মুল্য ৮০।

অভি অন্তৰ্যন্ত এই সংগ্ৰন্থখনি সাধান্তণ্য প্ৰচাৰ কৰিবাৰ বন্ধ প্ৰন্থকার বন্ধবাদাই। বাংলাৰ শ্ৰেচ সাহিত্যিকদের বেশান্তবোধক উত্থাপনামর কবিতা ও সলীত এবং বিভা, চাশকালোক, ভুলসীনাস প্রযুধ সামুখণের



# प कि राज भे खा थे अ ज राज

বসম্ভের নব কিশপয়ের সমারোহের দিকে চেয়ে শীতের ঝরাপাভার কথা কে মনে রাথে ? প্রকৃতির ভাগাগড়ার লীলায় বেধানে পাভা ঝরে আঘার সেধানে নৃতন:পাভা গজিয়ে ওঠে।

মাহবের দেহেও নিভাই এই ভাকাগড়ার থেলা চলছে। জানেন কি বে প্রতি ঘটার আমাদের দেহের রক্ষণ ও পোষণের কাজে লক্ষ রক্তকণিকা ক্ষ হয় ? এই বিরাট ক্ষ কে পূরণ করে তা জানেন ? এই ক্ষরপূরণ করে আমাদের লিভার—ভাই লিভারের সামান্ত মাত্র অন্তথে সাবধান না হলে বড় বিশদকে ভেকে আনা হয়।

কুমারেশ লিভারকে নীরোগ ও শক্তিশালী করে—রক্তকণিকা গঠন, দ্যিত পদার্থ শোধন, রোগ-প্রতিরোধ, খাভ পরিপাক প্রভৃতি কার্য্যে সাহায্য করে। তাই কুমারেশ ওধু জলীর্ণ, উদরাময়, শিভায়ক্ৎ, স্থিকা প্রভৃতি বোগের জমোঘ ঔষধই নয়, দেহের স্বাস্থ্যক্ষারও জমূল্য সহায়।



पि धीनदाकोल निमाक **८७ कार्यकाल क्यान** कि

গোঁহা অভৃতির সারাণে বছলণ করিয়া গ্রহকার দেশবাভ্কার উম্বেডে এই বৈবেড সাজাইয়াছেন।

সংস্কৃতি সমস্তা— প্রকাশক : ডাঃ আনল নাহিড়ী, প্রবৃতী, বাচি ও সংস্কৃত প্রেস ভিপক্তিটা, কলিকাতা।

বছ আন্নতাগ, সাধনা ও তপজার ফলে ভারতবর্ধ বাধীনতা অর্জন করিরাছে, কিন্তু এই বাধীনতাকে অনৃচ ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত করিতে হইলে আনাগিগকে দেশের গৌরবময় প্রাচীন ঐতিক্র ও সংস্কৃতির প্রতি উদাসীন হইলে চলিবে না। প্রস্থকার হিন্দুশান্তের অক্যা জানভাঙার হইতে একথানি মাত্র শান্ত্রগ্রেহ পাণ্ডিতাপূর্ণ বাধ্যা ও বিরেবণপূক্ষক দেখাইরাছেন বে, মহাভারত শুধু আধ্যান্ত্রিক নহে, রাজনৈতিক, সামাজিক ও লোকিক ইত্যাদি বাবতীয় জ্ঞান-বিজ্ঞান ভারতবাসীকে শিক্ষা দিবার উদ্বেশ্ডেই রচিত হইরাছে।

ঘুমিয়ে ছিল বাজকুমারী—এইনিরা দেবী। একক সাহিত্য সম্প্রদার, ৪৯৬/১, কালীঘাট রোড, কলিকাতা। মূল্য এক টাকা। কলিকাতা বেতার কেন্দ্রের "শিভ্নহলে"র পরিচালিকা ইন্দিরা দেবী

কালক। চা বেতার কেন্দ্রের শালক্ষরতোর সারচালক। হালরা দেবা ছোটদের হস্ত বেতার-কেন্দ্র ইইন্ড যে গল্পতাল বলিয়াছিলেল ভারই করেকটি এই বইরে সংগ্রহ করা হইরাছে। গরগুলি স্থাই, গল বলার জলীও স্থার। গলগুলি শিশুদের মনোরঞ্জন করিবে। ছবি, ছাপা ও মলাট উৎকৃষ্ট।

বাশীর ডাক---- শ্রীমধুসুদন চটোপাধায়। গুৰুদাস চটোপাধার এগু সন্স, ২০৩১)১, কর্ণগুরালিস হাট, কলিকাডা। বুলা এক টাকা।

ক্ৰিডার বই। সবঞ্চল ক্ৰিডাই এক একটি ছোট কাহিনী আবলখনে সহজ ছন্দে ও ভাষার রচিত। গাখা বা শীতিকবিতাগুলি ক্ৰি-জনরের ভাষাকুলতা ও সংবেদনশীলতার গুণে অস্তর স্পর্শ করে। মলাটের ছবিট ফলর।

অবজ্ঞাত, অস্তাঙ্গ, সমাজের সংবাদির তরে অবস্থিত মুক জনগণের জীবনেও যে উচ্চ অভিজাত-সম্প্রদায়ের মতই স্থ-ক্ষ্ণবোধ ও কজনাবিলাস কল্পবার মতই বহিরা চলিয়াছে, লেথক স্ক্র স্থাবেক্ষণভাতি ও অস্ত্র্যু করি সাহাবো তাহাদের কথা 'করেকটি গলে' লিখিয়া পাঠকদের গোচরীভূত করিয়াছেন। এমন কি তিন গৃহপালিত মুক পশুলবের মধ্যেও রোমাজের সন্ধান পাইরাছেন। 'কবেকটি গলে' মনতত্ত্বিরেবণের সার্থক পরিচব পাওয়া বায়। প্তক্রপানিতে লেখকের রুসস্টিক্ষতা ও রচনাশৈলীর বৈশিষ্ট্য সহজেই চিত্ত আকর্ষণ করে।

अविकासिक्क भीन

রামকমল দেন, কৃষ্ণমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়— জীবোলেনচক্র বাগল। বলীর সাহিত্য-পরিবল। ২০৩-১, জাপার সারকুলার রোড, কলিকাতা। মূল এক টাকা।

বর্ত্তমান পুত্তকথানি সাহিত্যসাধক চরিত্রমালার ৭২ সংখ্যক এর । ইহাতে উনবিংশ শতাকীর বাংলাদেশের ছুই জন এথাত সনীবী এবং সাহিত্যসাধকের জীবন ও কৃতির কথা আলোচিত হইরাছে।

রামকমল নিম্ন চেটার সামান্ত অবহা হইতে উন্নতির উচ্চ শিপরে আরোহণ করেন। একথা বৈধনিক দিক হইতে বেমন সত্য, পাঙিত্যের বিক হইতেও তেমনি সত্য । উনবিংশ শতাবীর বাংলার শিকা সংস্কৃতি সাহিত্যে ওাহার দান বথেই। কলিকাতা কুল বুক-সোসাইটি, হিন্দুক্লনের, সংস্কৃত কলেল, এশিরাটিক সোমাইটি, বেভিকাল কলেল প্রভৃতি নামা প্রতিটানের সঙ্গে তাহার ঘনিট বোগ ছিল। বিভালরের পাঠ্য প্রকের অভাব দুরীকরণার্থে ভিবি এসকল রচনারও মন দেন। ওাহার ইংরেলী-বাংলা অভিবান ভাগরে সাহিত্যসাধনার বিরাট কার্ত্তির পরিচারক।

পারী কৃত্যাহন ইটার্থে গাঁকিত হইরা হিন্দু-সবাজের প্রতিক্লভায়নক বছ কার্যে বোন দিয়াছিলেন বটে, কিন্তু ভাহার নাহিত্য-সাধনা হিন্দু, ব্যলমান, ইটান সকল সম্প্রদারের লোকের পক্ষেই কল্যাপকর হইরাছে। সাহিত্য, ইতিহাস, ভূগোল, বীবনচরিত, দর্শন প্রভৃতি বিবিধ বিবরক নানা প্রস্থ লিখিয়া তিনি মাতৃভাবার সম্পাদ বৃদ্ধি করিয়া নিয়াছেন। ভাহার ইংরেলী প্রস্তুও প্রচুর। কৃত্যাহন শেষ বীবনে রাজনৈতিক আন্দোলনেও বোগ দিয়াছিলেন।

বোলেলবার বর্তমান পুরুকধানিতে এই সকল বিবরে বধাবোগ্য প্রমাণাদির উপর নির্ভন করিয়া আলোচনা করিয়াছেন। পূর্ব-স্থরিদের সাহিত্যসাধনার পূর্বাঙ্গ পরিচয় প্রদান করিয়া তিনি সাহিত্যামূরাদী বঙালী পঠকমান্তেরই কৃতক্ততাভালন হইয়াছেন।

শ্রীনলিনীকুমার ভত্ত

রাতের ছায়ামূত্তি— এমণিলাল অধিকারী। রত্নাকর পাবলিশিং হাউদ। ১৬৬-এ রাসবিহারী এভিনিউ, কলিকাতা—২১। মুলা এক টাকা চার আনা।

শিশুপাঠ্য ডিটেক্টিড উপজাস। ইহা রছাকর সিরিজের ৩র এছ। কাহিনীটির সংকিপ্তানার এই: অপারাবত ব্রিদ এবং সথের ডিটেকটিড তাপাস চৌধুরী আর তার বল্ধ এবং সহকারী মলর অবসর বাপান করিতে গিলা উঠিলাছিল মধুপুরের অভিজাত হোটেল 'মূন লাইটে'। সেধানে তাহারা হোডেলের মানেজারের অমুধাং ঐ হোটেলে আগনত জ্ঞামল গুহ নামে এক ব্রক্তের রহস্তমন্ন হত্যা-কাহিনী জানিতে পারিল। হোটেলে রাত্রে মাঝে এক ছালামুর্ত্তির আবির্তাব হইত। তাপাস বুঝিতে পারিল বে, ঐ হত্যার সঙ্গে ছালামুর্ত্তির সংখাগ রহিরাছে। শেব পারান্ত তাপাস ও মলরের বুজিকৌশল ও জুলাইসিক ক্ম্পান্সাধনে ছালামুর্ত্তির ব্যরণ ও ভামল গুটুর হত্যার রহন্ত উদ্বাহিত হইল।

প্রচলিত ডিটেক্টিভ উপভাসের সজে ইহার পার্থক্য আছে—লেথক রহস্তমর পরিবেশ স্টাতে বথেষ্ট মুশীরানার পরিচর দিরাছেন। শিশু-পাঠক কম্পিত বক্ষে রুদ্ধ নিংবাসে কাহিনীট শেব করিবে।

অপমানিতা মানবী—জীপ্রশান্তি দেবী। ইণ্ডিয়ান এসো-সিয়েটেড পাবলিশিং কোং লিঃ। ৮ সি, রমানাথ মঞ্মদার খ্রীট, কলিকাতা। মুল্য ৩ টাকা।

নারীর উপর বুগ বুগ ধরিয়া পুক্ষ বে অবিচার, অভ্যাচার করিয়া আসিতেছে ভাহার প্রতিকার এ যুগের মেরেদের করিতে হইবে; নারীর অবমাননা আমাদের জাতির ললাটে বে কলঙকালিমা লেপিয়া দিয়াছে নারীকেই আজ অপ্রণী হইরা ভাহা মুছিয়া কেলিতে হইবে—এই মূল ভাবটই এই উপস্থাসের মধ্যে আগাগোড়া অসুস্থাত।

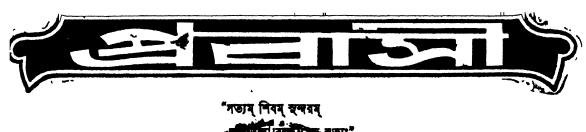
যুদ্ধের সমরকার ব্লাক-মাউটের কলিকাতার পটভূমিকার উপভাসথানি রচিত। বোমার তরে কলনা বাণ-মারের সজে চলিরা আদিল
কলিকাতার। তারপার নানা ঘটনাচক্রের আবর্জনে অবশেবে তাহাকে
মহানগরীতে চাকুরী লইতে হইল। এই নৃতন জীবন অবলঘন করিবার
পার, বুদ্ধের বাজারে পুক্ষরা নারীলের প্রতারিত করিয়া কিভাবে নারীদ্বের
অপমান করিতেহে তাহার প্রত্যক্ষ পরিচর পাইরা সে আতকে নিহরিয়া
উঠিল। সে ভাবিল ওখু আত্মরকা করিলেই তো চলিবে না, সমাজের
সকল অপমানিতা মানবীকে চরম কুর্গতির হাত হইতে আগ করিবার ব্রত
তাহাকেই গ্রহণ করিতে হইবে—এই মহাব্রত উদ্বাপনের অভাবে প্রথারী
প্রকাশের বিবাহ-প্রভাবকে প্রত্যাধ্যান করিয়া তাহার প্রেমের অপায়ুত্য
ঘটাইল।

উপজ্ঞানধানিতে লেখিকার ক্ষমতার পরিচর পাওরা বার। ওঁহোর সংলাপ নিথিবার হাত আছে। করনার চরিফ্রটিকে তিনি অন্তরের স্বটুকু বরু বিরা স্টে করিয়াহেন, কিন্তু স্কুলাভ চরিক্রের এক্ট্র বেশী বনোবোর দিলে ভাল হটুর্জ ১



কৃষ্ণ-বলরাম ও মাতা যশোদা শ্রীচিত্রনিভা চৌধুরী

अमार्गवात विकान करत्वरमत ३>৪> हरत्वकीत काशूनाती मारमत कवित्वनतम-मत्त्राक्षिमी नाग्रेष्ट्र



8**৮**째 **평**(최 국류 박영



ওষ্ট সংখ্যা

## मरदािकनी नार्डेष्ट

বাংলার আকাশ হইতে আর একট কোতিক অপসারিত হইল। সরোজনী বাংলা বাবেরই কণা, বলিও তাগ্যচক্রের করে উট্টার কর্মনর জীবনের প্রার সমন্তই বাংলার বাবিরে কাটরাছিল। সাহিত্য, কাবা, সমাল-সংভার, রাজনীতির মঞ্চ, সকল ক্রেকেই উট্টার প্রতিভার দীপ্তনিধা এরণ উদ্ধান ভাবে আলোভিত করে যে সারা ভারত উট্টার গৌরবে গৌরবাহিত হয়। তাই আল উট্টার মহাপ্ররাণের পর সমন্ত বেশে উট্টার অভাব অমূভ্ত হইতেছে। উট্টার মৃত্তে বিবের মহিলা-সমাজের এক মহীরসী মেনীর হান শৃত হইল। বে অভাব আমরা প্রত্যেকে অমূভ্ব ক্রিতেছি ভাতার প্রতিক্ষমিও বিশ্বনর হড়াইরা পড়িরাছে।

১৮৭> जात्मद ১७१ क्लबादी शंबबदाशात्म केशिद ক্ষর হয়। ভাহার পিতা ডাঃ অবোরনাণ চটোপাব্যার विक्रमन्द्रवद्य अक विभिष्ठे आचन नविवाद्यव महाम । चर्चाद-নাৰ এভিনবরা বিশ্ববিভালতে বসারনশালে "ভইর অফ সাহেজ" উপাবিলাভের পর জার্দ্রানীর হাইভেলবর্গ বিখ-বিভালখের বুলায়ন-বিভাগের তংকালীন অব্যক্ত কাৰিখ্যাত অধ্যাপক ক্যান্টকের ( Van t'Hoff ) নিক্ট রাসার্যনিক গবেষণা করেন। শোনা যাম ক্যানটকের লিখিত প্রবদাবলীর মধ্যে উচ্চার এই ভারতীয় ছাজের অসীম প্রতিভার টলেব चाटा चारवादमाय त्याम किविदा साम्यवादात्य निकाय करनक क्षत्रिक्षेत्र जाद अस्य करदम ७ मीर्चिम जासाद जमाक ছিলেন। তাঁহার জীবনকাহিনীও অভি আকর্ব্য হিল : কেননা ভাৰার উদার চরিত্র ও সর্বভোর্থী প্রতিভার প্রকাশ নানা विद्य एव । जिनि चांबीयम न्मर्गर्शनव महादम ( alchemy ) অক্লান্ত গৰেষণা ও পরীকা ,করেন। এই ব্যাপারে ভাঁছার পুত্র পত পত সাধুসভা সিদ্ধা কণীরের আনাগোদা হিল, উপরত্ব রসবেভার ওপরুষ বছুগোরীও 'বিল বিশাল। এই অপস্থপ ও অসাধারণ পরিবেশের বধ্যে সরোজিনীর শৈশং ও কৈশোর অভিবাহিত হয়।

অবোরবাধ বাতর জনতের পার্বরণির সহার পাইরাহিলের -কিলা জানি না, কেল বলে পাইরাহিলের, কেল বলে ভালা নর। কিল্প স্বোধিনীর জ্বর ও বনের স্বর্তনে ঐ "রসের" চিভাষণি" রডের আকর ছাপিভ হইরাছিল লে বিবরে সক্ষেষ্
নাত্র নাই। সাহিত্য ও কাব্যে তিনি উল্পুনিত প্রশংসা লাভ
করেন উহারই প্রভাবে এবং পরে রাইনীতির কটক্ষর কেতে,
শত কড-বঞ্চার মধ্যেও তিনি মধ্যর বাবী ও মধ্রতর বভাব
অভ্য ও অল্লান রাবিয়া কর্মবর জীবন অভিবাহিত ক্রিতে
সক্ষ হইরাছিলেন উহারই অলৌকিক ক্রেডে।

বে জ্যোতি ৭০ বংসর পূর্বে হারদরাবাদে প্রজনিত হয় তাহা উভরোতর বৃত্তিপ্রাপ্ত হইরা দেশকে আলোকিত করে। নির্মাণের পূর্বেদিন পর্যন্তও তাহা কণেকের তরেও সান হয় নাই, ইহাই সরোক্ষিণীর পরিচর। তাহার জীবনের সম্যন্ত্রাধ্যা বা তাহার ভণাবলীর পূর্ণ বিবরণ হান পরিজ্ঞার পূর্চার সভব নহে। তিনি পরিপূর্ণ জীবনবাপন করিয়া গেলের , তাহার পরিবার-পরিজন ও আলীর বন্ধুগণের বিশাল গোজীর সহিত সরবেদনা ভাগন করিয়া আমরাও মনের ও অবরেদ্ধ অপূর্ণতা ও অভাব ভানাইতেহি।

#### কিরণশঙ্কর রায়

কিরণশহর রাবের অভাল র্ভাতে বাঙালীর রাজনৈছিক ক্ষেত্র ইতে এক কুশলী নেড্ছের অবসান হইল। পূর্ববদ রানিকগঞ্জের তেওতার জমিদার-বংশে অবরহণ করিরা নেই রুগের উপবোদী ইল-বল সংছতির মধ্যে তিনি সুশিক্ষিত ও বর্ষিত হইরাছিলেন। সেই সংছতির প্রান্তনে বেশের রাভাবিক সমাল-নেড্বর্গ দেশের অভ্যক জীবন হইতে বিজিয় হইর পড়িয়াছিলেন; ৭০।৮০ বংসর পূর্বের ক্লভর্মের কল আমালের আতির জীবনে অবিভিন্ন মন্তন্তর ক্রাই। বর্জনান সুগের ঐতিহাসিকদের মতে, বিশেষ করিরা ভার্ল রাজসের বতে, সূত্র রুগের উংপাধন-পছতির ক্ল্যাণে এইল্লপ ক্ষংসের প্রোক্রম ছিল।

এই ভাঙাগড়ার কলে যে চিডাধারার উত্তর হয় ও বে জীবনবারা প্রবৃতিত হয়, কিরণলড়র হারের সকলেই ও সরবর্ত্তী পর্বাহেই হয় ভাহার শৈল্প প্রকাশ। বিংশ শভালীর ববাভাগে আসিরা আবর আব এক পরিণভিত্র হারে উপত্তিত হইরার্ত্তি। এই পরিণভিত্র প্রয়োজনে ভারতবর্তের সাহিত্যা, স্বাহ্ম-বিভাগ, বর্ত্ত ও বীভিনীতি জীবনের সর্বাহ্মের নানা জিজানা ও প্রয়োজন হয়।

কিরণশহরের পরিবারও এইস্কপ নানা বিরোধী তাবের তাঙ্গার বোর্ল্যমান বিলেন তারতবর্ধের ও বাংলাবেশের সক্ষ লক্ষ্প পরিবারের বত। নেইক্স বেধিতে পাই কিরণ শহরকে "লবুক পত্র" মালিক পত্রিকার লেবক-গোর্লির মধ্যে। এই পোরী রবীজনাথের বানসপুত্র; "সবুক পত্রে" তাহার নানা প্রবাণ কল কল করিতেছে। "নরম দল" ও "গরম দল" উভরের বিশ্বভেই একটা কুপানিপ্রিত তাচ্ছিল্যের তাব এই গোরীর লেবনীর মুধ্বে কুটনা উঠিত।

ক্রিপশন্তর ভাষার প্রভাব হইতে মুক্তিলাভ করেন গানী আন্দোলনের প্রারন্ধে; চিত্তরপ্রন দাশের নেড্ছেও সুভাবচপ্র বস্থর সাহচর্ব্যে উন্থার অভান্ত জীবনে এক্ত বিরাট পরিবর্ত্তন বেখা বেয়। এই আন্দোলনের ক্লু সাবন উন্থার প্রকৃতির
উপযোগী ছিল মা বলিয়াই তিনি এই আন্দোলনের কল্যানে
বে গণজাগরণের প্লাবন কেশের উপর দিয়া বহিরা যাইতেছিল,
ভাষা সংখত ও নিম্নত্রিত করিবার কার্ব্যে আত্মনিরোগ
করেন। এইজ্বত অনেক নিক্ষা ভাষাকে সহিতে হইরাছে।
কিন্ত ভাষার সংখত মন নিক্ষা-প্রশংসার উর্দ্ধে উটিয়া কর্ত্তবা
পালন করিবার চেষ্টা করিয়াছে। দেশের হুর্ভাগ্য যে, ভাষার
শক্তির পরিচয়ের প্রকৃষ্ট সমন্ত্র যথন আসিল ভাষনই ভাষাকে
চলিয়া যাইতে হুইল।

#### দমদমের ঘটনা

গত ২৬শে কেবরারী দমদমে ক্ষেপণ কোম্পানীর कांत्रवानांत्र अवर विमानवांक्रेटि (य वर्डन) वक्रेत्राटक अवर विज्ञत-হাট পৰ্যাত বাহার জের গড়াইয়াহে তাহা সারা ভারতবর্ষকে महिक्छ क्रियार । अछ वह प्रशास्त्रिक पहेना पूर क्रारे प्रमारकः। मुद्रीरम्य करतक्ष्री मृतक विम इनूरत अकृष्ठी तुवर কারবানার চড়াও হইয়া উহার তিন কন খেতাল কোরম্যানকে খনত চুৱীতে নিষ্ণেশ করিল, এক কনকে অগ্নাধাতে আহত দ্ইয়া হাসপাভালে মুচ্যুবরণ করিতে হইল। পুলিস ভাগে কিছু থানিল না, ঘটনার এক ঘন্টার মধ্যে অভুছলে উপস্থিত व्हेटक शांतिम भा, देशारक स्थान चाहेन ७ मुचना चाट्ह कि मा, क्रमभावातरवंत वरम (ज जल्क्स् क्रांतिरवरे। अरे व्यानात्रहे এতই শুক্লভর যে, এবিষয়ে একটু বিশাদ আলোচনা আবস্তক। প্রধানমন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র রাম ঘটনার সাত দিন পরে পুলিসের ৰিকট সকল সংবাদ লইব। যে বিবৃতি দিয়াছেন ভাদার বুল ক্ৰান্তলি বেওয়া গেল। বিভাৱিত বিবরণ বেওয়ার আব্রুক নাই, উহা সবিভাৱে সংবাহপত্তে প্রকাশিত হইরাছে।

णाः वारतव वक्षवा वरे :

- (১) অভিশন ভালতা অবস্থা স্ক্রীর এবুং অৱশন সংএত্বের ক্ত একট কুইভাবে পরিক্ষিত বছবর করা হইরাহিল। উত্তেড হিল প্রবর্ণ করা (bid to bring about a coup.)
- (৭) ৭**৬শে কেজানী ব্**ৰজেৱা কলিকাভা শংরের বিভিন্ন <del>আইন ব্ৰৈডে ৪ট ট্যান্তি ভাড়া করিবা বৰ্ণৰ বার</del>।

- (৩) বেলা ১১টা ১৫ বিনিটে কেসণ কোন্সানীকে বীজংস খ্যাপার ঘটে এবং ১৫ বিনিটের বব্যে উহা শেব হর। কেসণ কোন্সানীতে ভাহার হই বিন আনে অর্থাং ২৪শে কডক প্রবিক ইটিটি হর এবং এভত্বলকে গোলখোরের আন্ডা হিল। ২৫শে ভারিবে সেথানকার পুলিস পাহার। ছলিয়া বেওয়া হয়।
- (৪) মুৰকেরা টেনগান, বেশগান, বাাধনিক চিকিংলার সরঞ্জান ইত্যায়িতে সুসন্ধিত হইরা গিরাহিল।
- (৫) কেসপে হানার সকে সকে উহার বিপরীত বিকে অবহিত অঞ্চলত্ত্বের কারধানা আঞাত হয়।
- (৬) অভঃপর ইহার। সংখ্যার ২৫।৩০ জন হর এবং বিমানবাটতে নিরা হানা দের। সমস্বে কভক্ষণ ছিল ডাঃ বার তাহা বলেন নাই অর্থাং পুলিস ভাহাকে বলে মাই, তবে সেবানকার ঘটনার যে বিবরণ দেওবা হইরাছে তাহাতে আ্র ঘণ্টার কম লাগিবার কবা নহে।
- (१) পুলিস প্রথম ধবর পায় বেলা প্রায় বিপ্রকৃত্রে অর্থাৎ বারটার সময়। তথম কলিকাতা ও বারাকপুর হইতে পুলিস যায়। ইহাদের বরিবার কর চতুদিকে ববর বেওয়া হয়।
- (৮) অতঃপর তাঃ বাবের বিয়তিতে একট মূতন কৰা পাওয়া বাইতেছে—"500n after the raiders cut the telephone and telegraphic connections of the areas raided or about to be raided." হানা শেষ হওয়ার এক বন্ধা পর পুলিস চুট্টিয়াছে ইহা এই অবস্থার পরের কৰা।
- (>) ইহার পর মুবকেরা যশোর রোভ বরিয়া বসিরহাট যার এবং পথে গোরীপুর আক্রমণ করে। গৌরীপুর বানাকে হেতকোরাটার হইতে সভর্ক করিয়া দেওয়া হয়।
- (১০) বসিরহাটে বাণা এবং ইেবারী ও সাব-কেল আক্রমণ করিতে গিরা, তথাকার এককন্ বারোগা এবং ইেবারী ও কেলের প্রহরীবের সতর্ক হওরার কলে, ইহারা প্রেণগান টেমগান এবং ২৬ট রাইকেল হাতে বাকা সভ্যে হয়তক হয় এবং হই কম তথনই বরা পকে।

এবার ডাঃ রায়ের বিয়তির আলোচনা করিলে পুলিস অবঃপাতের কোন অতলে নামিয়াহে তাহা বুবা বাইবে।

পর ইনি তবল প্রবোশন পাইরা তেপুট ক্ষিপনার হইরাছেন।
প্রবান এসিঠান্ট ক্ষিপনার করা হইরাছে খৌদ ক্ষিপনার
সাহেবের ভরীপতিকে। ইংরেক আমলে ইনিও ইনস্পেটরের
উর্দ্ধে উটিতে পারেন নাই। অবভন কর্ম্মচারীকের মবো
অবিকাংশই প্তন, কিছু আমাতী এবং অপনার্থও আছে। এই
ঠাক সইরা কাক ক্ষিতে গেলে কল এইরপই হইবে। আফাশ
হইতে টাকা ঢালিরা ইহানিগকে তুবাইরা দিলেও 'একিনিরেলি'
বা বোগ্যতা বাছিবে না; এই বিভাগে সবিশেষ ভর্মনের পর
আমূল রদবদল ক্ষিয়া ইংরেজ-লীগ আমলের ক্ষ্যাতি হইতে
মুক্ত বদেই মনোভাবাপর লোক নিরোগ না ভূরিলে
রাইকোহীরা এইরপই নিচিত্ত মনে কাল ক্ষিতে বাছিবে।

(७. १. ५. ७ >) तना ১১-১৫ मिनिहे स्ट्रेंट श्रीत अक ৰকা দমদম এলাকা গোলাঞ্জিতে ও হভাাকাতে ভ্ৰমচ হুইয়া পেল, এশিয়ার একট বুহুত্ব বিষাদ্বাটি এবং ভারত-সরকারের অরের কারধানা আফ্রান্ত হটল, অবচ দশ मारेलात मत्या लाम शंकात याँके कात मश्याम भवाक भारेन मा । যে সৰ ভাষগাৰ হানা দেওৱা হইৱাছে ভাহাদেৱ প্ৰভাকটতে अकारिक किलारमान माहिन चारह: प्रमुख विश्वान वाहिए ज्ञानकश्वीत नार्रेम जारह । अरे जन द्यान क्रेट्ड श्वीज ध्राप्त সংবাদ কৰম পাইরাছিল ডা: রারের বক্তভার ভাতার উল্লেখ नारे। जारेम काठीत शब्दे शूजिटभत शतवर्थी क्वमा बनिया মনে হয়, কারণ হানা দেওয়ার পর কেসপ এবং বিমানবাঁটর ्टेनिटकान नारेन क्रिक दिन । **১১-১**৫ मिनिट्टे जाकान হওয়ার সলে সলে পুলিসের খবর পাওয়ার ব্যবস্থা অথবা পাইয়া বিশ্বাস করিবার ২ত সতর্কতা বাকিলে সাইরেন বাজাইয়া পুলিস ২০ মিনিটের মধ্যে দমদম উপস্থিত ছইয়া সেবাবেই বুৰকদের শ্ৰেপ্তার ক্ষরিতে পারিত। পুলিস প্রথম बबब शहिबाद दबना ১६ होत. चबीर ८६ विविहे शब देश छा: রারের নিজের কবা। ইহা লালবাঝার বেডকোরাটার্স এবং কঠোল ক্ষমের চরৰ গাকিলভি এবং অযোগ্যভার নিদর্শন। ভেসপে গোলবোগ চলিভেছিল: সেধানকার ইউনির**ন** আই-बन-है, रेक्ट-नि गर, चार्त-नि-नि-चारे : इरे जिन विन चारन रम्बारम भवम भवम चक्रुणांविक **स्टेबा भिवारक** हेराव পরেও কোন হিসাবে বিভীর দিনেই পুলিস ভূলিরা লওৱা হইল ? বলা হইৱাছে Extra Police ভোলা হইরাহে, দেবা বাইভেতে একটা লাল পাগড়ীও রাবা হয় নাই। রাখিলে দে অভতঃ ঠেলিকোন করিতে পারিত। **জ্মেশের লাইৰ ব্যবহার সম্ভব না হইলে পালেই এামে**|-কোৰ কোন্দাৰী এবং আরও অনেক টেলিকোনমুক্ত বড় বড় ৰাজী আছে, লেৰাৰ বৃষ্টতে দল বিনিটের মধ্যে ব্যৱচা পেঁছিতে পাত্তি। তাং বার প্রথমে বলিবাছেন ইবালের ব্যৱসায় কচ চছুহিকে ব্যৱ কেওৱা হয় এবং গৌৱীপুর বানা

সভৰ্ত হয়, আৰার পরক্ষণে বলিভেছেন হানা কেওৱার পর এবং বেওয়ার লক্ষ্যস্থলভালর টেলিকোন ও টেলিএাক সংযোগ কাটিরা দেওরা হয়। তাই যদি হয় তবে সরকার ধবর দিয়া-ছিলেৰ বেৰূপে তাহা আগে করা সম্ভব ছিল বা কি গ कनिकांकांत बाबाबनिएक मधर्क करा स्टेशांटिन कि ? अवीरम Dacoity alarm विनिध्न अक्षे वस सारह , जनस बामात के बनाई वांचारेश दिल छरक्यार शुनित वर वर्ष রাভার যোড় ভাটকাইরা হাভাইরা যার : সমভ গাড়ী তথন ভলাসী করা হয়। সালবাদার হটতে বাহির হওয়ার সময় পুলিস ভানিত নাইছারা কোন দিকে গিরাছে : কলিকাতার আসিয়া তীড়ে বিশিয়া যাওয়ার ববেই সভাবনা ছিল। সুভরাং Dacoity alarm বাৰাইৱা ভৱাসীর বভ প্রভত হইৱা হোটা উচিত ছিল। কিছু তাহা একেবারেই করা হর মাই। লাল-ৰাজার হেড-কোৱাটালে র অর্কাচীন তেপুট ক্ষিপনার এবং **७७ बुक्की मक्दना**नंछ नूनिन क्षिनमात इ'क्रम और रावश চালু রাধিরাছেন কি মা তাহাতেও সম্পেই আছে।

(১০) বক্বলের ক্রেক্ট প্রহুরী সময়নত সতর্ক হইরাছিল বলিরা ব্রেণগান, টেমগান এবং ২৬ট রাইকেলে সুসন্ধিত এই ফলট বরা পভিল। দমদ্বের ঘটনার পরই ইহারা যদি আর হলা না করিরা কলিকাভার কিরিরা আসিত তবে আলে বরা পভিত কি না সলেহ। ভিন্তন লেন হত্যাকাতে, মরদানে দারোগা হত্যা প্রভৃতির পর ক্রেক্ট ভর র্বক্কে লইরা টানাটানি করিরা শেব পর্যন্ত যেতাবে ববনিকাপাত হইরাছে এক্সেন্তেও তাহাই হইত। হুই ক্নকে বসিরহাটের টেম্বারী ও কেল প্রহুরীরা বরিরা দেওয়ার তবে অপর্যন্তর পাভা বিলিয়াছে এবং পরবর্ত্তী প্রের্ভার ও তল্পাস সন্তব হইরাছে। ইহারা লোর করিরা বরা দিরাছে এই ক্বাই আমরা বলিতে পারি; প্লিসের লেশ নাল কৃতিত ইহাতে নাই। ইহার সরলার্থ এই বে, কলিকাতা শহরে প্লিসের পিছনে আভাই কোট টাকা ঢালিরা আমরা ক্রিউনিইকের হ্রার উপর বির্ভ্তর করিরা বাস করিতেছি।

ব্যবহার ঘটনা পুলিলের অভতকার্যাতার প্রথম দৃষ্টাত্ব নর—চতুর্ব। প্রথম ঘটনা মহরম। ইহাতে ভারতীয় ইউনিয়নের মূর্বে চুমকালি পভিয়াহে। বিভীর ঘটনা টেলিকোন এজাচেঞ্জ। পুলিল এতদিনে উহাকে লাবোটাত্ব বলিতেহে অবচ ভার সহাম আলে পার নাই। ইহার পরও সভর্ক হয় নাই। তৃতীয় ঘটনা কলের কল লাবোটাত্বের চেটা। এটা ব্রিয়াহে এবং বহু করিয়াহে, কর্পোরেশন—পুলিল মহে। ভাহার পরেও পুলিলের চোর্ব বোলে নাই। চতুর্ব ঘটনা ঘ্রম্মন। কলিকাভা সহতে সম্পূর্ণ অবভিত্ত কর্মচারীবর্গকে উচ্চতম ও বিশেষ ভারত্বপূর্ণ পরগুলিতে বলাইলে এবং ভাহাবের হতে সমভ করতা অর্থন করিলে এ হাচা ভার কি অবছা ভ্রবে ? ভলিভাতা সম্বন্ধ আনাতী বাহারা, তাহারা নিজেবের ফল তারী ভ্রিবার জত City Police ও Bengal Police amalgamation-এর জত উঠিরা পঢ়িবা লাগিরাতে; ইহার পরিণার বিষয়র হাবে ইহা আমরা বার বার বলিরাতি। কর্ত্বপক্ষের বিপরীত ব্রিতে এই ব্যবহা অহুরোধিত হইলে ভহরাসীর বনপ্রাণ বিপন্ন হইবে একথা আমরা পুনর্কার বলিতেতি।

পর পর চারি বার কলিকাতা পুলিস মারাম্বক অবোগ্যতার পরিচর দিয়াছে। অপর হাবীন দেশের কথা তো বর্তব্যই নয়—ইংরেক আনলেও কলিকাতার উপরোক্ত চারিট ঘটনার প্রথমটিয় পরই বিশেষ তদত আরক্ত হইত। বর্তমান অবস্থার কিছ তিনট ঘটনার পর বর্তমান কমিশনার মহাশরের পদ পাকা হইরাছে। ঐলপ তদত্তের অভ এমুক্ত কিরণশন্বর বার পুলিস কমিট ছাপনের মিদারণ আবক্তকতা উপলব্ধি করিয়াহিলেন, যদিও তাহার যোক্রমা তিনি করিয়া যাইতে পারেন নাই। দেশ্বাসীর এখন বুবা প্রয়োক্তন যে, উচ্চত্য অবিকারী-বর্তের সাংখাতিক গাক্লিভির দক্ষন- তাহাদের বন-প্রাণের মুক্তাবেক্ত্র কি তাবে হটতেছে।

#### ব্যবস্থা-পরিষদে বাজেট আলোচনা

शिक्यवक वावक'-शतिवाक वात्कि जात्कावमात छा: शक्त (यांव विश्वास्त्र (य. यभीत यम युद्धि अवर प्रतिस्थित प्रतिस्था वृद्धित अकृष्ठे। मरनाकांव वर्त्तमान वारक्रिक मृत्न बता পঢ়িতেছে। ডাঃ খে'ষের যোটামুট বক্তব্য এই বে. (माक्रिकेश) स्वरहेत चंद्रह अधिमिन वाश्रिक्ट : (माक्रिकेश) स्वर् নিজৰ বেভনের সলে ২৫০ টাকা ভাতা এবং ভেণুট সেঞ্চে-ষ্টারীদের ১৫০ টাকা ভাতা লইবাই সম্ভই থাকা উচিত। একট ব্যৱসভোচ কমিট বসাইবার কথাও তিনি বলিয়াছেন। পৰী ছাভিলে বৃদ্ধি বাড়ে—ভা: বোৰকে এই বাক্যটির সার্থকভা প্রমাণ করিতে দেবিয়া আমরা সভাই হটয়াছি। পশ্চিমবল গৰৰে ক্টের বর্তমান শোচনীর অবহা এবং অন্তভ রক্ষের बार दृष्टिर एक मूनल: छा: (बाय मारी अ कथा चामता बहरात বলিয়াছি। সেঞ্চোরী ধইলেই ভাঁছার বেতন ২৭৫০ টাড়া হইবে, এক বাপে হাজার চাকা বেতন বৃদ্ধিতেও ভৃতি নাই---और मुद्रोचन छा: त्यावरे दमनारेश निशासन । अनम किनि সেক্ষেটারীদের বেডন সম্বন্ধে যাহা বলিভেছেন অভ সমস্ব व्यापम क्षेत्रम स्टेर्फरे छारा कविवादः । जावकर्रादः व्यापम-শুলির মধ্যে একমাত্র ডাঃ বোবই বেতদ বৃদ্ধির অবাভাবিক রক্ষের হরাক বন্দোবন্ত করিয়া নিরাছেন। বর্তমান মন্ত্রিসভা এই ঐতিহ্ন আর বদলান নাই, উহাকেই আর একটু বাড়াইরা ষ্টাদ্দ প্রথপিত প্রেরই অসুসরণ ক্রিরাছেন। বেসারত বিহাছে ও দিভেছে গহীৰ বেশবাসী।

ডা: খোষের করেকট অচুরকর্মী কাজের বিষয়র পরিধার সবেষাত্র কেবা বিভে আয়ত করিয়াতে। অভীত যুগে বে সক্

जबकाडी कर्यहाडी देश्टबच अवर जीन नवटव केटक छड़े कविया চাক্রির উন্নতি সাধনের ক্র বেশের অনিষ্ঠ ক্রিতে বির্ভ হুম মাই, বাছিয়া বাছিয়া সেইরূপ অনেক লোককে আনিয়া ভিনি বিভাগর শীর্ষদেশে অবিষ্ঠিত করিয়া গিরাছেন। সভীতে वीशांवा 'नवांनडे'व प्रथम (ववाहेबाट्यम अववक कांशांवाहे विमे ''नद्यान" स्टेर्टिन छो: र्याय এट जामा क्वियांव जनव अ क्या ভাবেন নাই বৈ ছুৰ্নীভিপৱাহৰ বা পুৰিধাবাদী স্বাৰ্ণৱন্তের 'লহ্যালট'র কোন মূল্য নাই। আৰু বদি ইহারা বুৰেন যে কংগ্ৰেস-রাজ শেষ হইয়া আসিয়াছে, এবার ক্যুদিটরা হটবে মৃত্তৰ প্ৰভু, ভবে ইহাদের 'লব্যালট্ট'র মোড় বুরিভে এক মুহূর্ত্তও লাগিবে না। ডাঃ ঘোষের এই মুতন শাসন-নীতিতে কেশের উপকার হওয়া দুরে পাকুক, চরিজবান এবং দেশভক্ত বে সব কৰ্মচাত্ৰী শত অসুবিধা সহু করিয়াও শীতি ৰৰ্ষে ক্লাঞ্জি দেন নাই ভাষাদের চক্ষে কংগ্রেস পাসকেরা ৰেলো হটয়া গিয়াছেন। ট্ছাডে শাসন্যয়ের morale রসাতলে গিয়াছে। যাহারা কার্যদক্ষ ভাহাদের কাকে উৎসাহ मारे. यानाता वार्यनिवित किक्टित राज जानात्तव कर्चरा-भागत्मत महत्र मारे. **भग्ना ८ द इर भार्ट कारा नरह**। वर्ष वक बानिद्वित बंबत जाबातन लाटक नाखतात बटनकं नदत সরকারী কর্মকর্তাদের কাবে পৌছে, ইহাই বেদ রেওরাজ হইরা উঠিতেছে। লোকের পর লোক বাড়াইরা এবং লক লক টাকা বেশী ধরচ করিয়াও কুল পাওয়া বাইছেছে না, 🥕 ৰুল সংখ্যার না হুইলে ছেলের লোকপিছ এক্সন করিয়া ২৭৫০ টাকার সেক্ষোরী বা ২৫০০টাকার পুলিস ক্রিশনার विवृक्त कविरमध देव विमिर्द ना ।

ভাঃ বোৰ অনাৰ্ভক ব্যৱস্থবিত আৰু একট সম্ভ বাডা বুলিরা বিরা পিরাছেন। শহর ও মক্বল পুলিস আলাকা ৱাৰার বে স্মাতন এবং পরীক্ষিত নিরম আবহুমানকাল হাবং বিশ্বৰূপতে প্ৰচলিত বহিবাছে ডা: বোৰ ভাষা উন্টাইৱা দিয়া কলিকাতা ও বেদল পুলিসকে একাকার করিরা সিয়াছেন। ইহার সর্বাদা দিক্টা জ্ঞ্মশঃ বোৰ হয় লোকে উপলব্ধি ক্রিতে আরম্ভ ক্রিয়াছে, কিছ ব্রচের দিক্টার এবনও নজর পছিরাছে বলিয়া বনে হইতেছে না। কলিকাতা পুলিসে कर्यकांबीयस नर्स्याक व्यवस रेमार्शकेत ७००, नांव-रेमार्शकेत २००, नाटकं २४०, अनिनहीकं नाव-देनां भेड़ ४०, अवर करमहेरन २३ होका। त्वनन श्रुनित्न के त्यक्रम स्थोक्करम ७००, ১७०, २२६, ४०, अवर २४, होका। निव्रष्टम বেতনের ভারতব্য এইরপ। উভর ক্লেরে কান্দের রক্ষ चानांग, मरदाद ठकुद, क्षणांच ७ जन्मरमानी किविनान नहिनांद ৰত এবং শিক্ষাৰীকার অঞ্জনর শহরবাসীর প্রয়োভন নিটাইবার ৰভ বোগাতা বেৰ বাকা ব্যকাৰ বলিয়া কলিকাতা পুলিবে নিবোগের বাণকাটি উচ্চ এবং বেতনও সেইক্চ বেশী। প্রায়ে अष प्रक्रेनण गारे, नारावर हृति-छाकाणिव किनावा क्रियाव पण डेकनिकिए लाक ना रहेला कि नाहे विनदा त्रवादन নিৰোগের বাণভাট হোট। ভলিভাভার লাব-ইলপেট- रहेरक रहेरन बाक्रवर्ड रहेरकर रहेरन, नक्तरन के कारकत क्य चारत गाष्ट्रिक नान स्टरलर हनिक, अपन चारे-अ स्टरलर वर्षक्षे। चूछवार त्वछम कम। अपन क्लिकाछ। ७ तक्ल পুলিস. এক করিবার রার দেওয়ার সমর ডাঃ বোব কি ভাবিরা (विदाबितन (व. इरेडे अकाकांत कवितन (वक्तव कांतका) ৱাৰা বাইবে মা, তৰন কি মকৰলের বেতন বাভিবে, না কলিকাভার বেভন কমিবে ? কলিকাভার বেভন কমাইলে भरत नामनाहेवात छेशमुक लाक शांख्या वाहेटव कि? मक्दरनद त्रज्य राष्ट्रांट्र होकांहै। क बिर्द ? क्निकांछ। ७ (वक्त श्रृतिम अक कविवाद मर्व्यवामा (वदान वीकारणद ৰাণা হইতে এখনও নামে নাই, তাঁহারা উহার এই দ্রিকটাও একট বিবেচনা করিরা দেখিলে ভাল করিভেন। কৃষি বিভাগেও অপচয়ের সদর রাভাট ডা: বোষ খুলিয়া দিয়া পিরাছেন। মেছিনীপুরের ব্যাভিসম্পন্ন ম্যাভিটেট মিঃ এন এম বাঁ ভিরেটর অফ এগ্রিকালচার বাকাকালে একট व्यवादानी जरकाती व्यवादीकाटन वामपानी कतिबाहितन। বাংলার কৃষি সহছে এই ব্যক্তির কোন যোগ্যভা বা কান মাই। ডাঃ বোষ ইহাকেই চাকুরীতে পাকা করিরা কার্য্যতঃ ক্ৰৰি বিভাগের ভার ইঁহারই হাতে অৰ্ণণ ক্রিরা গিরাহেন। এই ব্যক্তির ভত্বাবধানে কসল বৃদ্ধি আন্দোলন এবং ক্রষির অভাত বরাজের মধ্যে বছ কোট টাকা খরচ ছইরাছে তথবো অপচর কত হটয়াতে তাহা নির্দারণের কর একট ক্ষিপন বসাইলে আক্ষর্যালক বহু তথ্য উল্লেটিত হইবে বলিয়া আমাদের বিখাস। ডা: বোষের অভয়-আঞ্চম-গৰুৰে উ 'কৃষক মুক্তুর রাজের' নামে প্রকাসাবারণের বাচে জনাবভক ব্যৱের যে সব দরাক ব্যবস্থা করিয়া দিয়া গিয়াছেন ভাষার হিসাব নিকাশের সমর একদিন আসিবেই। এখনও বাঁহারা के भव जन्मत्व कृतिया हिनदार्थन के विभावनिकाम व्हेर्ल ভাঁহারাও রেহাই পাইবেন না। নিজের অভার আরম্ভ করা এবং পরের অভার অভসরণ করা উভরেরই কল সমান বিষময়। শাসন্যন্ত এমন্ট জিনিষ যে উহার শার্ষদেশে উপযুক্ত ও সং লোক না বসাইয়া পুবিধাবাধী বা ছুৰ্মীভিপরায়ণ বা অনুপযুক্ত লোড় বসাইলে ভাহার অবভভাবী পরিণাম ব্যৱস্থাভি ও **इष्टरिक विभुषना** ।

## ব্যয়র্দ্ধির কয়েকটি নমুনা

পশ্চিমবদ বাজেটের উপর্ক্ত সমালোচনা করিতে গেলে একট বই লিবিতে হয়। প্রতরাং এবাবে আর করেকট ব্যৱের মর্না দেওরা গেল। এই সব ব্যর হৃতির পর ঐ সকল বিভাগের কর্মকতা বাভিবে অধবা ক্যিবে ক্যানারণ ভাষা বিচার ক্রিবে।

	পড বংসৱের	व वश्मरबन्न
	বয়াখ	বরাক
•	<b>4,56,000</b> \	4,48,000

वडी

(এবলে উল্লেখবোগ্য ভারভবর্ণের স্কৃত প্রজেশের বব্যে পশ্চিমবলে মন্ত্রীসংখ্যা সবচেত্ত্বে বেশা।)

ৰৱাই বিভাগ	4,14,000	1,01,000
<b>पर्य</b> ,,	<b>0,36,</b> 000	8,02,400
বাহ্য " খানীর বায়ত-	পত বংগর পর্যান্ত এবার এক্ষমে ছিল, ফোট ব্যায়	प्रेटिंग जीनानी प्रेन (बाँहे नदांच
भौजय "	3, 40,800	2,00,200
<b>ভূ</b> ৰি "	re,roo,	3,84,000/
कृषि "	3,80,000	٧,٤٥,٥٥٥
শিকা "	18,000	۶,२৮, <b>৫</b> 00/

(এই বিভাগটও আগে খাহ্যও ছানীয় বারভশাসনের সলে একর হিল)

चहारा मांबा देशमारा

সহ সেক্টোরিয়েটের

<b>মোট বরাক</b>	ve,20,000\	40,68,400
বিভাগীয় কৰিশনার		٠,٥٥,٥٥٠ <sub>,</sub>
<b>ৰেলা শা</b> সন	40,27,400	10,02,000
<b>্ৰেল</b>	60,44,900	<b>48,41,400</b> \
ক্লিকাভা পুলিস	3,04,89,000	3,84,26,800
<del>ছেল</del> া পুলিস	··· \$,058,\00\	

কৃষি বিভাগের ব্যৱস্থা বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য। ১৯৪৩-৪৭ সালের অবিভক্ত বলের সলে উহার ভূলনা দেওরা হইল, ভাহাতে অবহাটা ভাল করিবা বুঝা বাইবে---

#### ক্ৰমি বিভাগ

অভিভঞ্জ বন্		বিভক্ত বদ	
	>>8 <del>6-</del> 81	7984-89	7989-40
ভিৱেকশন	3,66,000	2,00,000	۹,۹۶,۵00
ত্বপারিনটেভেন	4,40,000	88,27,000	ve,11,000 <sub>\</sub>
এক্সণিরিষেকীল			

কাৰ্দ্ম ৪,৪৮,৪০০, ২,৭১,০০০, ২,০৮,৫০০<sub>,</sub> ডিম্ম**্টেশ্**ম ও

শ্রোপাগা ১,০৬,৬২,৮০০ ১,৬৫,৯৬,০০০ ১,৬৫,৩৬,০০০ এই টাকার কি কাজ গত এক বংসরে হইরাহে তাহার হিসাব এবং রিপোর্ট বেওরার কোন নারিছ কি ভাহারও নাই ? পাবলিসিট বিভাগের ব্যর ক্রেরই অধাভাবিক হারে বাভিতেহে। গত সংখ্যার আমরা বাহা দেবাইরাহি এবার তাহার চেরেও অনেক বেশী বরচ বাভিরাহে। গত বংসর পাবলিসিটর বোট বরাছ হিল ৮,১০,১০০ ; এবার হইরাহে ১২,৪৭,৫০০ । ভ্রাব্যে গত বংসর অভিস বরচ বরা হইরাহিল ২,৮৫,০০০ , এবার হইরাহে ৭ লক্ষ্ টাকা। লোকে বহি কেবলই বেবে বে গবর্ষে উরাহে গলক ইবাহের হারিছ লইরা ইবা বিভে পারেন মা, চোরাভারবার বর হর মা, বাতে

ভেজাল নিবারণ হয় দা, অব্যযুদ্য কেবল বাভিতেই থাকে ভবে পাবলিসিট বিভাগের বঁয়চ বাভাইরা অসভোষ বন্ধ করা বাইবে কি ?

আমাদের মৃচ বিখাস একট উপর্ক্ত ক্ষিণ্ন বসাইয়া
অনুস্থান ক্ষিতে শাসন্যৱের ব্যৱহাসের অনেক উপার
বাহির হুইবে। ব্যৱহাসের প্রভাবকে ডাঃ রার glib talk
বলিয়া অভিহিত ক্ষিয়াহেন, এটা সমীচীন হয় মাই।
আমাবক্তক ব্যৱহ ও আভ্যর না ক্যাইলে সরকারী বিভাগগুলির
ক্ষতাও কিছুতেই বাভাবো বাইবে না।

#### বিক্রয়-কর সংশোধন

করলা, কাঠ, দেশলাই, সরিষার তেল প্রভৃতি নিভা-ব্যবহার্থ্য প্রবাহক বিজের করের আওতার আনিবার যে বাবহা হইরাহিল দেবা যাইভেছে গবর্দেও এবন ভাহা প্রভ্যাহারের দিকে মন দিয়াহেন। এই সবগুলিকেই করের আমল হইতে আবার বাদ দেওরার সিহান্ত করা হইভেছে। এ বিষয়ে গবলে ও জনমভের নিকট যে নভি বীকার করিয়া-হেন তাহা অভিশয় শুভলকণ।

. বিজ্ঞানকর আপিসের গলদ সম্বদ্ধে আমরা মাঝে মাঝে আলোচনা করিয়াছি। এবার এ বিষয়ে মন দেওয়া দরকার। কলিকাভা ভারতবর্ষের এখনও বৃহত্তম বাণিক্য-কেন্দ্র, বাংলার বিক্তর-করের হার সর্ব্বোচ্চ, তথাপি আহার এখানে অনেক श्राप्तान क्षेत्र क्षेत्र । है। स स्राप्तान श्रम हेशांत श्रम কারণ। কর্মচারীরা চ্যাত্ম আদারে সংও দক্ষ না হইলে <sup>ট</sup> এক দিকে গাকিলভি দেখা দেয়, অপর দিকে বাহিরের মানা প্রভাব ও প্রলোভন আসে। বিক্রব-কর এরপ কিছু ঘটভেছে কি না ভানা দ্বকার। সূত্র জিনিষগুলি করের আমলে আবার যৰ্গ ছাভিয়াই দেওয়া ভইভেতে ভৰন ঐ বিভাগে কৰ্মচারী সংখ্যা অনেক বাভাইবার বে বন্দোবন্ত হইরাছে তাহাও স্থানিত রাবিলেট হর। ক্ষিয়া লোক নিয়োগের ব্যবস্থা হওয়ার ৬০০—১০৫০, টাকা বেভনে একজন কারণ কি? এসিঠান্ট ক্ষিপনার বিহোগ পাবলিক সার্ভিস ক্ষিপনকে না কানাইয়া গোপনে সারিয়া লওয়ার চেঠাই বা হইভেছে কি উদ্বেষ্টে ? ৰাছতি অকিসারদের মধ্য হইতে একলন সাব-রেজিপ্লার ও সাবতেপুট কালেটারকে বিক্রবকর আপিসে निवक कवा रहेबादिन : दैराविनक नवाहेबा चाराव नुक्रम লোক লওৱা হইভেছে কেন ? কর-আভার বিভাগে এই ভাবে বার বার লোক বংলাইলে বছ টাকা বাকী পড়িয়া ন্ত্ৰ হয় কভ ভাষা ভানিৱাও এই ব্যবস্থা করিবার ভঙা নিহক অনুবৰ্ণিভাই দাবী অববা অপৱ কোন কাৱৰ আছে ভাষা অসুস্থান করা উচিত। বিজ্ঞান্তর বিভাগটন কার্য্যকর্ণাণ **परिवार अवके छेनबूक कविनातन होता करक रख्या कर्वना ।** 

কেন্দ্রীয় গবদ্মে ণ্টের ব্যয়ের বছর

ক্ষেীর গবরে তেঁর অধীনত্ব নানা বিভাগ কি করিরা কাঁপিরা উঠিরাহে, ভাতার একটা হিলাব তাতের কাছে আসিরাছে। বাভবিভাগের কর্মচারীর সংব্যা ছিল ৪০০, ভাতা নাকি ক্যাইরা আনা হইবে ২৮৯-তে; বান-বাহন বিভাগের সংব্যা ছিল ২০২, ভাতা ক্ষানো হইবে—৬৬-এ, সংবাদপ্রে সংবাদ সরবরাহ বিভাগ—৪৬৪; ক্ষিরা হইবে—৮৫, প্রচার বিভাগের উচ্চ কর্মচারী—১১, ক্ষিরা হইবে—৮৫, প্রচার বিভাগের উচ্চ কর্মচারী—১১, ক্ষিরা হইবে—৪। সংবাদ ক্যানো ব্যাপারটা কভদুর সকল হইবে ভাতা আনি না। ভবে এই কথা ভ্রমিরাছি ও দেবিভেছি যে নোক্রসাহীর (bureaucracy) কর্মপ্রভিত্ত সংব্যা-বৃত্তির ভাতনার পরিচালিত হয়।

আর একটা হিসাবে কেন্দ্রীয় গবর্ত্বের নামা বিভাগের ব্যয়ের বহর দেখিলাম। ১৯৩৮-৩৯ সাল ও ১৯৪৮-৪৯— এই ছই বংসরের ব্যয়ের ভূলনা ইহাতে পাওয়া বাইবে। মিরে ভাহা দেওয়া হইল:

		<b>60-406</b>	7>81-8>
		र है।का	नक हेका
ব-বাই মনীর	বিভাগ	5F.07	<b>⊘8</b> °9¢
<b>অ</b> ₹		74.92	F0, 44
ব্যবসায় বাণিজ্য	,	P.70	84.44
ট্ৰযান-বাহন		4.≯0	67.00
ু কৃষি		•••	₹ >. 8 ₹
<b>লিক</b> া	,	•••	২৯′৩৩
ৰাহ্য	,,	•••	9'20
শিল্প ও সরবরাহ		•••	€7.5€
পুৰৰ্বসভি	,	•••	7.00
পরবাট্ট	**	•••	<b>⊘</b> ⊌'08
<b>এ</b> চার		•••	205.AP
হিনাব পরীকা		21.12	>>>6×
পরবাই	_	<b>60.4</b> 8	402.27
আছিৰ অধিবাসী		>>'<0	. 64.64
শিল ও সরবাহ	•	•••	<b>⊘≥</b> 0.47
ভাকাশযান		₹>%8	670.0r
বেভার প্রচার		40'61	७७४.६४
পূৰ্ভ		<b>&gt;1'00</b>	601.07
-		_	_

এই ব্যবের বহর সথতে কোন কেন্দ্রীয় নদ্রী ভারত-রাট্রের নাগরিকরকের নিকট কোন কবাব দেন নাই। ব্যর বাছিয়াতে বা বাছিতেতে—ভার বেশী কোন কারণ প্রবর্গনের চেটা আনাদের নোচরে আলে নাই। কেন্দ্রীয় পরিবদের সভ্যরুক্ত কলাভরারিভাবে এই ব্যবের নিকা ক্ষরিবাবেন; কোন একট বিভাগে ব্যৱস্থতি সকতে কোন নত্তীকে জ্বাবদিহি জ্বিতে পাৱেন নাই। এক এক জন সভ্যমহাণর যদি এক এক বিভাগের ব্যৱের পুথারপুথারপ সমালোচনা করিতেন, তবে নত্তিনাবাবেরে উনক নভিত। বর্ত্তনানে অবস্থা দেখিরা যনে হর মত্তিনকালী ও সভ্যয়ক্ত এই ভাবিরা সাজ্বা লাভ করিতেহেন—"লাগে টাকা, বিবে গৌরী সেন।" ভারা নিজের নিজের সংসারের হিসাবে এই নীভির প্রশ্রের বেন কিনা জানিতে ইক্রা হয়।

## ভারতরাষ্ট্রের সামরিক ব্যয়

**क्लो**स चारेन-शतियस्यत वर्धमान चनिरवनरम चार्यण-ৱাষ্ট্ৰের সাম্বিক ব্যৱের ভালিকা পেশ ক্রিভে সিয়া সম্ব-जिंद प्रकार वनाएक जिरह किकिविक ३६५ (का है है।कांत्र ব্যয় বরাজের বর্ণনা করেন। সৈভবাহিনীর ভঙ ব্যর হইবে প্রায় ৬৫10 কোট টাকা: মৌ-বাহিনীর বঙ ৫ কোট ७० नक ठीकांद छेनद अवर विमान विचारनंद कर बाद ১७ কোট টাকা, অল্লখনের যোগান দিবার ব্যয় পভিবে পৌনে ২৬ কোট টাকা, এবং সমন্ত বিভাগের অ-সাম্রিক নামা বিভাগের অভ ব্যর পভিবে ১১।০ কোট টাকা। প্রকৃত ব্যর কিছ ইহা অপেকাও অনেক বেলী পঢ়িরাছে---এ বংসরেই। সর্বার বলদেও সিংকের উক্তি যে সভ্য ভাহা ১১৪১-৫০ সালের সভাব্য ব্যৱের বছর দেবিয়া বৃত্তিতে পারা যায়। ১৯৫০ সালের ৩১শে মার্চ পর্যাত্ত দেশরকার বিভিন্ন বিভাগের বার পভিবে ১৭১ জোট ১০ লক ১ হাছার টাকা। সপরিষদ রাইপাল এই দাবি উপছিত করিয়াছেন, এবং আইন পরিষদও এই ব্যয় মঞ্র করিয়াছে।

বিগভ মহাধুৰের অব্যবহিত পূর্ব্বে ভারতবর্বের সামরিক ব্যার হিল প্রার ৬০ কোট টাকার সমান। তথন নৌ-বিভাগ ও বিমান-বিভাগের অভিছ হিল না বলিলেই হয়। এই ৬০ কোট টাকা ব্যবের বিক্লছে আমরা প্রতি বংসর প্রবল আপত্তি জানাইতাম। আজ বিমা আপত্তিতে তার ভিদ ওপ ব্যার আমরা মানিয়া লইতেহি। সভার দেশ-রক্ষা করা বার না—খাবীনতা লাভ করিরা আমরা এই তত্ত্বে মাহান্ত্র্য বীকার করিতেহি; খাবীনতা রক্ষার দারিত্ব আমরা খীকার করিয়া লইতেহি।

বাৰীন রাট্রের পক্ষে এইরপ সাম্বিক ব্যয় অন্ধ-বিভয় অপরিবার্থ্য—বেবেচ্ছু আধুনিক সভ্যভার বিধানে পররাজ্য শক্ষরাজ্য বলিরা মনে করিছে হইবে। সেই দিনের "পাকিহান" কালীর আক্রমণ করিরা এই সভ্য প্রমাণ করি-রাছে। ভারভরাট্রের বপ্তরে এইরূপ বছ শক্ষর অভিছ সহতে গবেষণা চলিভেছে। এই গবেষণার উপর নির্ভর করে বাট্রের নাম্বিক ব্যর। পররাট্র বিভাগ নিকটের ও দ্বের শক্ষ-বিক্রের অবহার সহতে বেভাবে সভাগ বাজিবে, সেইভাবে ভারভরাট্রের পররাট্র নীভি নির্দ্ধিত ছইবে।

গত ২০শে কান্তন কেন্দ্রীয় পরিবাদে ভারতরাষ্ট্রের পর্যাষ্ট্র নীতি সহতে বে আলোচনা হইরাছে, ভর্পল্পে প্রার সকল গতাই এই অভিনত কোরের সহিত প্রকাশ করিয়াছেন বে, র্ভোডর র্পের রাষ্ট্রনীতির কেন্দ্রে আনাদের রাষ্ট্র নিরপেক্ষ থাকিতে প্রাণপণ চেঙা করিবে। আনেরিকার র্জরাষ্ট্র জাতিরেট ইউনিয়ন বে হইট বিরোণী রাষ্ট্রগোত্তীর নেড্ছ করিতেহে, তাহার কোনটাতেই আনরা বোগদান করিতে পারিব না। এই আকাজা পূর্ব করা সহক হবৈ না। গভিত নেহরু বলিয়াছেন, "ভূতীয় বিশ্বরুত্ব 'অনিবার্থা' বলিয়া আনেকেই মনে করিতেহেন এবং তাহার কল সকল রাষ্ট্রই কেবলমান সাময়িক দিক হইতেই প্রস্তুত্ত হুছের আরোজন চলিতেহে।" এই অবস্থায় ভারতরাষ্ট্রের পক্ষে এই উজরবিব "প্রস্তুত্তি" অনিবার্থা হইয়া পভিতেহে।

এই প্রস্থতির উপার কি, আয়োজনের ব্যবস্থা কি তাবে করা হতৈছে, তাহা আয়াদের করনা করিবা লইতে হততেছে। পভিত নেহর বা সর্থার বলদেও সিংহ এই কথা হাটের মধ্যে তাভিবেন না; তাভিতে পারেন না। মন্ত্রপ্তি বলিবা। একটা কথা রাজনীতিক্তেরে প্রচলিত আছে। গণভরেও তাহা। রক্ষীর। পভিত ক্যাহরলাল নেহর আমাদের শুনাইরাহেন। বে বৃত্তের সাক্ষরক্রাধের কও এখন পর্যন্ত আমাদের একাভঃ তাবে নির্ভর করিতে হইতেছে বিলাতের উপর। এই নির্ভরতাঃ বিলাতের সমরনারক ও রাষ্ট্রনীতিবিদ্দের নিকট আমাদের মন্ত্রপ্ত কারবারক করিটি (Combined Chiefs of Staff) তিলোলাttee) নিকটও আমাদের আয়োজন-উভোগ গোপনঃ থাকিতেছে না। এই পরনির্ভরশালতা হইতে মুক্তলাভ না করিতে পারিলে, আমাদের রাট্রের পক্ষে নির্দেশ থাকিবার কথা করনার পর্যাব্লিত হইবে।

ইংরেজী-ভাষাভাষী এই ছই রাষ্ট্রের সঞ্চে সহযোগিতা করিতে চাহিলে ভাহার ছল একটা বুলা দিতে ছইবে; সোভিরেট ইউনিয়নও অনুস্তুপ মূল্য হাবী করিবে। এই টামা-ইেচড়ার মধ্যে পভিয়া কর্ত্তব্য ছির করা ক্রিম। বে ছই রাষ্ট্র-গোজীর বিবাদের মধ্যে আমরা নিরপেন্দ থাকিতে চাই, ভাহা! সভব হইবে ভবনই যবন এই ছই শক্তিপৃঞ্জের সাহায়া ব্যতিরেকেও আমরা সামরিক বিক হইতে শক্তিশালী হইতে: পারিব।

#### সেনাপতিবর্গের শিক্ষা

ছুল কলেজের শিক্ষবর্গ ও ছাত্রবৃদ্ধের মধ্যে সান্ধরিক।
শিক্ষার ব্যবস্থা করিবার উদ্বেশ্ত গত সেপ্টেম্বর মানে কেন্দ্রীর
সভার আইন পাস ক্ষরাছে। ভবিস্ততে এই শিক্ষাপ্রাপ্ত লোকধের কেন্দ্র ক্ষেত্র সাম্বিক র্ডি অব্দর্ধক ক্ষরিবেল, এই ভর্মা

আৰৱা ক্ৰিতে পারি। ভারতরাষ্ট্রের নানা প্রবেশে এই ব্যবস্থা অনুবারী শিকা চলিভেছে। এই সম্বন্ধে বিশেষ কোন সংবাদ পশ্চিমবদের প্রচার বিভাগ কর্মক পরিবেশিত হইতেছে विन्ना बर्स शरू मा। अक्षांनि च-वाडानी देश्रवची देवनिक পঞ্জিবার দেবিলাম বে তুল-কলেজের শিক্ষমগুলী ও ছাত্র-বুলের সাহরিক শিক্ষার কার্য্যে বোষাই প্রদেশ প্রথম ছাম चिकात कतिएएए । छवात शात ७,৮७> वन निक्क छ ছাত্র এই নিকালাভ করিতেবেন। আমহা বেবিরা আনন্দিত হইলাম বে, দ্বিতীর স্থান অধিকার করিতেমেন পশ্চিমবদের निक्क ७ श्वास्त्रकती : अरे बार्याम निकारीय मरना १,२२०। কলেছের অব্যাপক্ষওলীও ছাত্রবৃশকে সিনিরার ভিবিসবে (Senior Division ) শিকা বেওয়া হয়, ছুলের শিকক ও ছাত্রক ভূনিয়ার ভিবিসনে শিকাপ্রাপ্ত হন। যে বিবরণী হুইতে এই ভব্যগুলি সংগ্ৰহ ক্ষিয়া দিয়াহি, ভাহাতে এমন কিছু দেবিলাম না বে, শিকার ব্যাপারে কোন ভারভন্য করা হর। আর একটা কথা পঢ়িয়া আনন্দিত হইরাহি বে, আগামী बीरचत प्रकेत भरतरे कुन-करनरकत बाबीरमत मरगाउ बरेसभ निकार श्रवस्य करा स्ट्रेटर ।

देश्टबक जांबरमञ्ज करमरकंद जन्मां नक ७ वांबदरकंद अवन मिकाब अक्डी वावदा दिन : ১৯১१-১৮ সালে বেবিতে পাই পুভাষ্চল বন্ন এরণ শিক্ষাপ্রাপ্ত হইতেছেন। কিন্তু সঙীর্ণ উদ্বেশ্ব সাধনের নিমিশ্ব সেই শিক্ষা দান করা হইত : পদাতিক বাহিমীর উপযোগ শিকার কির্দংশ দেওয়া হইত। ভারতরাঙ্কে এই শিক্ষাকে ব্যাপক হইরাছে , সামরিক বৃত্তির সকল বিভাগের শিকা দান করা हरेत-रिज-वाहिनीय निका, त्यो-वाहिनीय निका, वियान-वारिनीय निका एए छत्। वरेटन और शतिकत्रमा अञ्चलाद्य। वर्षवात्व अहे निकार्यी-वाहिमीत ১.७०.००० नश्या निर्विष्ठे व्हेबाद्य। '४৮ वरमञ्ज व्हेट्ड ७० वरमद्वन व्य क्वर अहे শিকার প্রবোগ এহণ করিতে পারেন। এই শিকার শিকিতেরা र्दिन्द नान्त नम्द नम्ब नामित्र वास्मित नृष्टेर्द नम्ब क्रि-(Second line of defence in an emergency) ইহারা ভবিভতে প্ররোজন অনুসারে সামরিক-বাহিনীর সচ্চ-সারণ কার্ব্যে আছনিয়োগ করিবেন।

এই শিকালাম কার্ব্যের কত ভারতরাইকে ৮ট অঞ্চল ভাগ করা হইবাছে—(১) দিলী; পূর্ব-পঞ্চাব; রাজহান; নংড-লেণ, মব্য-ভারত; জুপাল; পাতিরালা; পূর্ব্ব-পঞ্চাব ইউনিরন এবং হিবাচল প্রবেশ; (২) মুক্ত-প্রবেশ; রামপুর ও তেড়ী-গাড়ওরাল রাজ্য; এবং বিভাগ্রেশে; (৩) বব্যপ্রবেশ বেরার ও তব্যর্বত রাজ্যসমূহ; (৪) বোলাই প্রবেশ, ব্রোলা ও কোলাপুর রাজ্য ও সৌরাই ইউনিরন; (৫) বার্যাল, মূর্ব, মহীপুর, কোচিন, জিবাছুর; (৬) বিহার ও উচিতা ও ভদভূৰ্ণত ৱাক্য-সমষ্টি , (৭) পশ্চিম্বক , (৮) আসাম, মণিপুর, ত্রিপুরা ও কুচবিহার রাজ্য ।

এই ভাগ-বাঁটোৱাৱা সহছে একটা ব্যবস্থার প্রতি দৃষ্টি আকৰ্ষণ করিতে চাই। কুচৰিছার রাজ্যকে কেন পশ্চিন-বদ হটতে বিভিন্ন করা হইরাছে তাহার কারণ ব্রিলার না : আসাধের গবর্ণরকে কুচবিহার রাজ্য সংক্রান্ত ব্যাপারে क्लीर भराव कि बार्शिमिन मिक्साहम करा स्टेरांस क्म. **७९नवृद्ध शन्धिवरक नगरव (केंद्र कृत्रमेत्र किष्ट चाट्य किम्)**. তাহা আনাদের ভানিতে হইবে। বাঙালী-প্রধান ক্রিপুরা বাজ্যেরও সেই অবস্থা : এই বিষয়ে পশ্চিমবলের লোকের বক্তব্য ভনিবার প্রয়োজন আছে : এই কথাটা কেন্দ্রীর গবর্ষে উ ও পশ্চিম্বৰদ প্ৰথম কলৈ দ্বৰ কলাইয়া দিভে চাই। বাঙালী হিন্দুর জন্ত সম্প্রদারিত বাস্তভূমি চাই: পশ্চিমবদের পশ্চিমে বিহারের অভযুক্ত বাঙালীপ্রধান স্থান আছে: বাঙালীপ্রধান জিপুরা রাজ্যের উভরে বিভূত ভূবিবও অপেকা করিয়া আছে বাঙালী হিন্দুর ভ্রন্ত। বাহারা বাধ্য হইরা পূর্ববন্ধ হইতে সরিধা আসিতেছে—এই কবাটা ভুলিলে চলিবে না, এবং ভবিষ্ঠতের কথা ভাবিরাই আমরা সাম্বিক-শিক্ষা-ব্যবস্থার সঙ্গে বাঙালী হিন্দুর ভীবন-মরণ সমস্তার কথা ভুড়িরা দিয়াছি।

সাম্রিক-শিকার এই মুতন ব্যবস্থার আত্ম্যদিক আর একটা কৰা স্বরণে আনিতে চাই। ইংরেক আমলে বাঙালীর সামরিক केलिक महे क्रिया (ब्रथ्या क्रियाबिन। जाका शुनक्रवाद्यवः ভ্ৰম্ভ কেবল সেনাপতিবৰ্গ স্কট্টৱ চেটা করিলে চলিবে না : চাই ব্যাপক সামরিক শিকা যাহা সমাক্ষের সকল ভরের ও শ্ৰেণীর মধ্যে সামরিক ভাব ভাগাইরা ভূলিবে। একচ কেন্দ্রীর গৰৰে ঠের অভ্যতি লইয়া বাঙালীয় পক্ষে বাৰ্ডায়ুলক সাৰবিক শিক্ষার ব্যবস্থা করিতে হইবে। বাঙালী সেমাপতি, বাঙালী বিষান বিভাগের কর্তা দেখা গিয়াছে, কিছ এলপ চুইট বিখ-মুখের পরেও বাঙালী পদাভিক, বাঙালী গোলভাজ দেবা यात मारे। এर नष्मा पूत कविष्ठ - स्रेटन। शक्तिमनक भवत्य केटक धरे विवास चलने वहेटल वहेट्य । विकित छ দল-তদ বাঙালী সমাজকে সংবৰত কবিবার ভারিত প্রত্ন করিতে হইবে। এই বিষয়ে প্রয়োজন হইলে কেঞ্জীর সাম্বিক ৰীতি পরিবর্তনের দাবি করিতে বিধা করিবার সময় ভার নাই। এই কৰা ঢাকিয়া ৱাৰিবার উপায় আর নাই বে. এবনও সামরিক বিভাগে বিট্টশ প্রবর্তিত সামরিক কাভিকের (martial races) वर्षमान चारद। देशरवाक अपन चक्न হুইতে এবনও শতক্রা প্রায় ৭০ খন লোক সাধ্রিক বিভারে সংএই করা হয়; গত বিখ-যুহের কল্যানে হকিব ভারতের (लाक--माबाबी-माबाबि मखशास्त्र लाक---मछक्दा ১৫ स्तात का शांन कविटक नकत एरेबाट ; नाकी नक-कता ३० ক্ষন ভারতহাট্রের অভাত অঞ্চল হইতে সংগ্রহীত হয়।

এই অসৰ ব্যবহারের বিক্লবে প্রতিবাদ করা হইতেছে।
ভারতরাট্রের প্রবান দেবাপতি কারিরাপ্তা কলিকাতা
আসিরাছেল। তাহার নিকট এই বিহরে দ্রবার করা
হটরাছে এবং তিনি আরাদের আর্থত করিরাছেন বে, সাবরিক
বিতাপে লোক সংগ্রছে কোন কেন বিক্লেম বাজিবে না। এই
প্রতিশ্রুতির প্রবাপ প্রহণ করিবার কৌশল ভাঃ বিধানচন্দ্র
নারের অভানা বাকিবার কথা নর। পশ্চিববলে সাবরিক
শিক্ষা ও ব্যবহার ভারপ্রাপ্ত বর্ত্তীমহাশরকে সামরিক বৃভিতে
বাভালীর প্রবোগ সম্প্রসারণের কাকে আন্তনিরোগ করিবার
প্রবোধন হটরাছে, এবং এই বিহরে সকল তথ্য বাভালী
স্বাক্রের উপর বর্ত্তাইরাছে। এই কর্ত্তব্যে অবহলো করিবার,
গ্রিম্বিক করিরা স্বয়ন কাটাইবার অবকাশ আর নাই।

পশ্চিমবদে রক্ষীণল ও বেজাদেবক বল গঠন, শিক্ষাদান এবং শিক্ষিত হকী ও বেজাদেবকদিগকে ক্ষাপটু রাধার ব্যবহা এই বংসর হইতে করা হইতেহে ইহা আনন্দের বিষয়। কিন্তু এই কার্যের কত বেলপ আর্থিক ব্যবহা করা হইলাছে ভাহাতে মনে হর বে, এই বিষরের জলক বা ইহার প্রথাকনীরত। সম্পর্কে অর্থসিনিকে কিছুই জানানো হর নাই। ন হ্বা এলপ ব্যাপারে "বিটে কোঁটা" ব্যবহা হইবার কোনই জারণ ব্রিয়া পাওয়া বার না। বাঙালীর মধ্যে সামরিক মনো-মৃত্তি জাগাইবার জভ এক বিয়াট আরোজনের প্রয়োজন। হেলেবেলার ভাহা হইবার নহে।

#### পশ্চিমবঙ্গে শিক্ষার অবস্থা

গত মানের "প্রবাদী"তে এই বিষয়ে আহরা শিক্ষিত जवाद्यत बांगजिक मांगा वांगा जबत्य हरे-अकरे। रेकिंच कृतिया-ছিলাম। এই মালে পশ্চিমবলে শিক্ষার উন্নতিকলে বে সব बावशांत प्रवा सरेबाटर जरमबात किए बनिएक हारे। প্ৰাথমিক শিকা সহছে প্ৰচলিত শিকাও ব্ৰিয়াদি শিকার चावर्गमे ७ वावरावमे विद्याद्य मीवारमा अववक एव मारे। আৰৱা ভাৰি বে পশ্চিমবদের শিক্ষা-মন্ত্রী ও উচ্চার वर्षव वृतिवांकि निका मध्य वनविव कविएल शादिन नाहे : ভাঁহাৰের বিধার ভারণ সহত্তে প্রকাক্তে কোন কবা ভাঁহারা বলিভেবেৰ বা; ভাঁহাৰের বিহুক্ত ক্ষিটতে বাবা ভাণতি উটিবাহে যাতা উত্তাদের ক্লিমণ ভাবের পরিচারক। গভ ১০ই কাজৰ পশ্চিম্বক প্ৰাথমিক শিক্ষ সন্মেলনের ভিতীয় चित्रपटन निका-वडी जैएदिकमाप क्रीवृदी खापविक निकक-इत्यव चकारपूर्व चीवन जयत्व चत्वक कथा विज्ञात्वन । रेवनिक जरवांवनात्व बहे. वकुषांव त्व विवत्न श्रकांनिक হইবাহে ভাহার মধ্যে আমরা বৃশিবাধি শিকা সকরে কোন ৰভাৰতের ইকিত পাইলাব বা । ভিবি প্রাথবিত শিক্তরকতে

সান্ত্ৰাদাৰ কৰিতে চেটা কৰিবাৰেৰ এই বলিবা ৰে অব্যাকৰ ব্যৱস্থা অস্পাৰে জীহাৱা মাগুলিভাতাসহ ৩৬।০, ২৮।০ ও ২৪।০ টাকা কৰিবা বাসিক হুছি পাইবেন। এই হুছির পরও "সরকার বনে করেন বে প্রয়োকনাস্পাতে বেতন হুছি হুছ নাই।" কিন্তু জীহারা নিরুপার; পশ্চিমবদের এবন সম্বন্ধি নাই বে, ইহার অবিক প্রাথমিক শিক্ষবর্গকে কেওৱা বাইতে পারে। এই আধিক অন্তন্ম সম্পর্কে সম্বোধন কর্তাপতি প্রীবিশ্বরক্ষার ভটাচার্য্য মহাশ্যের বুক্তি প্রবিধানযোগ্য। বিশ্বরার গামালক আন্তর্শের, সর্কোদর সমাজের সাধক; বুনিবাদি শিক্ষা তিনি ব্রভরূপে প্রহাহেন। আর্থিক অন্টন সম্বন্ধে জাহারে গৃষ্টকলী সরকারী গৃষ্টকলী হুইতে পৃথক।

"শিক্ষকদের অভাবপুরশের দার সমাকের অর্থাং সম্প্র দেশের সমস্ত বরক জনসাবারণের। তবু তাহাই নহে, আদ বর্ণন দেশবাশী কুর্কিন ও অন্টন চলিয়াহে, তবন আম বরক শিকার্কীরাই বা মধ্যুদ্বের এই দার হইতে রেছাই শাইবে কেন ? সাব।মত এ দার ভাহারাও বীকার করিবে এবং শিশুকাল হইতেই এই দায়িত্ব বীকার করিরা চলার নৌরব অর্জন করিবে। এই প্রসচ্চে তিনি বুনিয়ালী শিক্ষার উল্লেখ করেন এবং বলেন, এই শিক্ষার হারা শিক্ষার্বিগণ প্রাথমিক শিক্ষার আংশিক বায়ভার বহনে সমর্থ হইবেন। ভিনি আরও বলেন বে, শিক্ষার বায়ভার শিক্ষার্বীরা যদি আংশিকভাবে বহন না করে তাহা হইলে এবেশে ক্ষমাবারণকে শিক্ষিত করিলা ভোলা সঙ্গর হইবে মা।"

এই ভ গেল প্রাথমিক শিক্ষার অবস্থা। অর্থের অভাবের ভন্ত পশ্চিমবদের শিক্ষা বিভাগ বয়ত শিক্ষার ধন্য গৃহীত পরি-क्वबादक दीकाविन पिश स्थ पिएक हाथ। ३० नक वरद ही-नुक्रायत निकात कर ७००हे इन नहेश कार्या चार्क इहेट्य । (वांचारे, वदाश्रदम्म, विराद ७ यूक्यायाम वदय निकाद चार्या-খন বিরাট, লোকের উৎসাহ খল-শ্রোতের মত পরিকল্পনাকে লাৰ্কভার বিকে ঠেলিয়া লইয়া ঘাইভেছে। ভনিয়াছি এক হাৰাৰ শিকাৰী নাকি ২৩০ হালের হবো এক একট কেলে निका नाक कविर तरह। शक्तिवर्यक विका विकासिक **ब्रिट्टक्टेंड यहाबरम्पन बर्ट्टांड क्रिट्टांन-बार्ट्डांक्ट राहिडां** चानिवादमः किनि कि स्विवा चानिवादम, कि छनिवादम, সেই অভিক্ৰডার কথা সাধারণের বিকট বলিবার প্রয়োজন **पक्रम करवद गाँर। जबकाबी कावशब, प्रशंध भरत वह**छ শিকার পরিকরনা রূপ এহন ক্রিডেছে। পাঁচ শত পুরুষ निक्र ७ ४ क पंड (यद निक्र क् मूडम जाद निका-বাবের খন্ত শূভন পাঠ দইতে হইভেছে।

बरेवण नवक-निकारात्य (व मन त्य-नवकांवी बार्किंग

গত ১০ ১৫ বংগর হুইতে হাত পাকাইতেহেব, তাংগদের অভিজ্ঞভান সাহাবা বা পাইলে এই প্রচেপ্তা সার্বক হুইবে যা, এই ক্যা কানিয়া আমতা আলা করি বে, শিক্ষা-বিভাগ ভাগদের সহবোগিতা আহ্বাব করিবেন। তাংগদের হাতে ১০০, টাকার ক্রান করিবেন।

बरे मन्दर्भ हरे वय बचारनीय मिकाविदश्य चिकाल क्षणा क्टिक हाहे। कालाता ववाजायायाय वसक-विकास केरणान-चारशक्त ७ छेगाव अच्रत च'कळा चक्रत्व चन चात्रिश-बिटनम्। (म'चवा किया कारावा मचडे स्रेवार्टम् चनिटनम्। कि माम माम और वारहाय हार धाकान कविराग (व. প্রাথমিক বিভালতের পরিপ্রাত শিক্ষরণকে বয়ক-শিকা कार्दा निष्क कथा स्रेशारह । अवारताम नावश मक्यम । भाष्ट्रिक्तनम् भत्रीका भाग कता पूरकदृष्टक वद माग वित्तव मिकामान कविया आदि गाउँ।हेश (मध्या एवं , छान्। एवं वाभिक विचन नाकि ১०० केका। अध्यक्ष छ निवादि वि, र्योध क्रिक्र्य क्रमार्थ उच्चरम्य मार्सक्नीय निका बाद मन्त्री। (म क्या वाक, बचायाम धरे न्यानक निकाशास्त्र बिशायक मिका-बंधीय काद्यमांव दिनाम मदकावी विकास सव : এট কাৰ্য্যের ভার ওলিয়া দেওবা হইয়াতে একট প্রতিঠাবের शास्त्र बाश श्राब-शबीय (autonomous)। नष करवक बारनद "প্ৰবাদী"তে আনৱাও এছণ বাৰীৰ প্ৰতিষ্ঠানের नगरक पूर्व अवर्गन कविद्यादि। वदय-निका कविष्ठे अरे बाचार बार्व कविटल भारतव बारे ; निका-विकास भवावर्गराका ক্ৰিট ( Advisory Committee ) এছৰে প্ৰিয়ুক বৰ र्वाजश क्रिशिक्षि । अहे विवाद बाय नामा विवा श्रीवर्व क्रिवाक बरे बूक्त बाराडी नक्त रहेक, बरे कांग्मा क्रि ।

# বাস্ত্রভ্যাগী সমস্থা

গভ ছই সভাবের ববো পৃথ্যকের বাভাগাই হিন্দুর সমত।
লশকে ভারভয়াট্রের কেন্দ্রীর গবরেন্ট একটু তংপর হইরাহেন
বলিয়া ববে হয়। কেন্দ্রীয় পরিবলে প্রশোভরক্ষলে ইহা শাই
হইরা পভিয়াহে বে, পূর্ববেদর বাভভাগীদের হরবহার প্রতি
ববোবোর বেওরা হর নাই , বিরী হইতে হুর বলিরা উহারা
কেন্দ্রীর গবর্ষেউকে অভিউ করিরা ভূলিতে পারে নাই বেনন
ভারিছে "পশ্চিম পাকিহানের" হিন্দু-শিব। পূর্ববেদর
বাভভাগীদের "বলুর" সংবা। এববভাবে বাভিন্ন গিরাহিল,
এবং ভারাহের গবর্ষে এত লোক অঞ্জন্ম হইরাহিলেন বে,
পশ্চিমক রবর্ষেউ বিশেহারার মত ভাক ভরিয়াহেন। এই
"বলু"বর্গের চীণভারে উত্যক্ত হটরা ভাহারা টাকা ছুড়িরা
বিরাহেন; "বলু"বর্গ ভাহা ভূডাইরাহে; বাভভাগীরা ভাহা
পার বাই। সম্ভাতি করেকট বাভালী পরিচালিত ব্যাহের

কৰ্পদীৰে। "লাল বাভি" আলিবাছে ; ভাবাদের মধ্যে আনেকেই বাজভাগীকের "বলুন" আছাদনে ভাবাদের সন্দিভ আৰু লইবাছে। এই প্রছন্ত পূঠ্বভার্ব্যে আইন কোন বাবা দিতে পারে নাই এবং পরবাপদারীর। ক্লিকাভার বুকের উপর বিরা বৃক্ত কুলাইরা বোটর ইাকাইরা বেড়ার।

এই সৰ ৰাজা কেন্দ্ৰীয় গৰলেক্টের জাবে পৌৰিয়াছে
নিজ্যই—বিলব্যে, এবং জাছারা বাজা লইবার জভ পুনর্বাসভি
সচিব প্রকৃতি বরেণ্য লোককের পাঠাইরাহিলেন। সর্বাশের
আসিরাহিলেন এই বিভাগের উপবেটা শ্রীবেহেরটার বারা।
তিনি যাহা বলিয়াহেন ভাহাতে মনে হয় বে কেন্দ্রীর প্রবর্বেক্ট
অবহার অক্ষটা ব্লিয়াহেন; পূর্ববনের বাজ্যানীকের লইরা
বে জ্যাচুরী চলিয়াহে ভাহার প্রকৃতি সহতে কিছু জানলাভ
ভরিরাহেন। বারা মহাপ্রের বিবৃতি হইতে নিয়লিবিভ
বাক্যগুলি উত্তুভ ভরিষা বিভেছি:

"হুর্তাগাক্তরে প্ররোজনের ভুলনার অপেক্ষাকৃত বেশ্বসংবাক প্রতিষ্ঠান আগ্রয়প্রার্থী দেবাকার্ব চালাইতেতে।
এইতাবে শক্তির অপচর অগোণে বন্ধ করা কর্ত্তবা।
সেবাকার্ব্যে হত প্রতিষ্ঠানগুলির মিলিও হইরা ফিলীর
নিবিল-ভারণ আগ্রয়প্রার্থী সমিতির অভুওপভাবে কার্ক
করা উচিত। প্রভাবে গঞ্জিত প্রতিষ্ঠান প্রতিনিবিদ্দক
হইরা হাকাইবে এবং কনসাবারন ও গ্রন্থেই উজর পক্ষের
নিক্ট উক্ত প্রতিষ্ঠানের মহ্যাকা ও অক্রম্ব স্থানি ।
আনার হুচ বিবাস, প্রভাবে গঞ্জির প্রতিষ্ঠানের সহিত্ত
সরকারী সহবোসিভা ঘনিষ্ঠানর হইরা উঠাবে এবং প্র
প্রতিষ্ঠান অবিকৃত্তর কার্য্যকরীভাবে কনসেবা ক্রিতে সমর্থ
হববে।

"হংগহর্ণনাঞ্জ ও স্বক্তাগ্য আঞ্চলার্থী নরনারীর ভাগ্য লইবা রাব্ধৈভিক ভুরার প্রবৃত্ত হওয়া দওনীর অপ্রাব ভুল্য।"

"ৰেণী সংগ্ৰহ প্ৰতিষ্ঠান" বাৰজ্যানী সংভাকে কটল করিবাছে; পশ্চিম্বংকের গ্ৰহে উ এই প্ৰতিষ্ঠানসমূহের লালগা সংগ্ৰছ করিতে চেষ্টা করেব নাই। কেন পারেব নাই, নেই প্রায় কুলিয়া আৰু কোন লাভ নাই। কিন্তু "হুঃবহুর্থণাএড ও নকভাগ্য আলবর্মার্থী নরনারীর ভাগ্য লইয়া" বাহার। "কুয়া বেলার প্রয়ভ হইয়া বঙ্গীর অপরাধ" করিবাছে, ভাহাদের আজিহাবে গ্রহে উ ভংগর হইভেছেন না কেন, সেই প্রয়ের উভয় আনবা চাহিতেছি।

ভারতরাট্টে খাদ্য-শদ্যের উৎপাদন

ক্ষেত্ৰীৰ পাত বিভাগের বিনাট বার বার্থ করিব। ভারত-বাট্রের ক্ষমতকূল কেন প্রযোজনীর পাত-পাতের উৎপাধন বৃদ্ধি ক্ষিতে পারিল বা ভংগমতে বানা বুলির নানা বভের অরপ্যে বিশেষারা ক্ষরা বাইতে হয়। এই বাক্য-রুত্ত বোগরাধ ভবিষার ইক্ষাও হয় না। ভারণ প্রায় নতলেই বভাবত প্রভাগ ভবিষা থালান; থাত-উংপাবনভাৱী প্রভুত ভবতের মূর্বে এই বিষয়ে তেত্ ভাবা ভূটাইতে পারেন নাই; ওাহারের নাবে বাহারা বভাবত প্রকাশ ভবেন, ওাহারা তেত্ই হাতে-ভনমে চাববাস ভবেন না। ভূচহাং আনরা বাণবনে ভার ভানার' বত হাতভাইরা বিনরত পাণভয় ভবিতেহি। অভীত ও বর্তমানের ব্যবভা লইরা ব্যেই আলোচনা হট্যারে। একট্ আশার কথা ভবিলে বনে শাভি পাওরা বাইবে, এই ভরসার ভেজীর পূর্ব ও বিহাং বিভাগের সেকেটারী বানি, তে. গোবালের বেভার বক্ষভার কিরহংশ ভূলিরা বিভেহি। ১৯৫১ নালের হবো হল ভোট মন থাত-শভের উংপাবনী হিছি পাইবে, এই আনা পভিত বেহর প্রকাশ ভবিবাহেন।

"বঙ্গানে প্ৰবেতির হাতে বে সকল নদী-উন্নন পরিকলনা বহিরাতে সেওলি কার্যাকরী হইলে প্রায় ৬০ লক একর (১৮০ লক বিবা) ক্ষতে কলসেচ করা **छनिद्य । पार्यायव পविकास द्यारा विद्या ७ अन्तिय-**राम > नम अकद, यांच्या शतिकत्वमा बांदा शर्क शक्षार ७० नकारिक अकड, कुम्बज्ञ शतिकत्रमा वादा माजाक ७ श्वत्वावारम किंद्र कम ३० मफ अक्ब, श्रीबाक्क शब-क्षमा वावा धेक्डिटिड ১० नक्षाविक अक्द विदिन (नह-कार्या इनिद्य । (कवार महीयाना, त्मह ७ व्यो इनाइन क्षिपम, लार्किक ७ विशेष बोका भवर्गमकेवित्रव चार्क अरेवन कराकडे नविकवना दक्षिताता । अरे नविकवना-जब्द कार्याकती एरेटन चिकित्रक ४० नक वैन बाज-पञ बर ১ काष्ट्र 80 नक किलावशंह कनठाकिछ विद्युर केरणः स्टेटरः वर्षार वामात्मय कनमन्त्रत्य कियम्य মুঠভাবে ব্যবহার করিতে পারিলে প্রতি বংগর ৩০০-৪০০ কোট টাকার মত অভিরিক্ত সন্দের পাওয়া वहिट्य ।

"বছৰুবী উন্নয়ৰ সমন্ত্ৰসাপেক। মনীয় উপর প্ল-উচ্চ বীধ বিশ্বপের পূর্বে পরিক্ষম। সম্পর্কে বিশেষ ও বিকৃত অহসভাৰ আবস্তুত। লত লত বংসবের অবহেলা মাত্র করের বংসবে প্রতিকার করা বার দা। কির আমাবের স্ববেরাধী বে ক্ষেক্ত পরিক্ষম। আহে দেওলি কার্যাক্ষী হইলে অপেকারুত কর বংসে বহু পরিমাণ ক্ষমিত সেচকার্য্য চালার বাইবে। স্বহুৎ পরিক্ষমাওলির মধ্যে সেচকার্য চালার বাইবে। স্বহুৎ পরিক্ষমাওলির মধ্যে সেচবারহা ম্বাসকর কার্যাক্ষী ক্ষার প্রচেটা চলিতেহে।" এই ক্ষমার ক্ষার ব্যবে বারবের ক্ষেত্রার ক্ষার ক্ষার ক্ষার

বাটোর নাগরিকরককে সরভ করিতেতে। এই বংসর নাকি বিবেশ হইতে ১০ কোট বন বাতশত আবলানী করিতে হইবে, ভজ্জত বরের পরনা বাহির করিয়া বিতে হইবে ১০০ কোট টাকা। ভক্ষাটের ও সৌরাটোর কোব কোব করেন ভ ইভিন্নেই বৃত্তিক দেখা বিভাবে, কেন্দ্রীর গবর্ণে সঞ্চার আহেন বলিরা ১৯৪৩ সালে বাংলা বে অভিন্তভার ভিতর বিহা বিভাবিল, ভাবার প্রৱভিনর হটবে না। নাডাকে লোডের বাত-শভের পরিবাব ক্যাইরা দেওরা হটরারে; পশ্চিমবক হটতে বাকি সে পরিবাব কর। ইভিনবো পাক্ষরকের চারীকে বানের দান বুভির আন্দোলন করার কল উভানী বেওরা হটভেবে; কলে চারী হাত ওটাটলে অবলাটা সভীন হটভেপারে। ভংসত্তেও পশ্চিমবক্ষের সরবরাহ বিভাবের সহ্নমন্ত্রী ভর্মার করা ভ্রমার করা ভ্রমার করা ভ্রমার করা ভ্রমার করা ভ্রমার করা ভ্রমার বর্ণা ভ্রম

"वर्षभारम रक्षा चारक, लामरल कवि छात्र करत अवन क्यांक्य मरना ४৮ मक कम अवर कांन्राचीय कृषि-म्बूब श्राप्त ১৭ जक । (बाँडे १८ जक करबद कर्बनक्रिय शहरे शक्तिय वांश्लाद बांध्यका विर्वद कदाए। (क्रांचे बक्दवा माना मार्य পরিচিত। কৃষি-মত্রদের কথা অনেকেই আনেন। এরা कनवानात बक्त वर्त अता मनेक भरता मिरत महरी बाटी मा बार्यद मन्द जांच दृष्टि चर्या हाल जान नरमच कि मन्द्री शाहा मनुतीय होत जर्छ जह जात वर जब मनुतीय विभिन्दहरे अहा पूर्व पूर्व बद्ध औ-गूळगर स्विकाटक मक्त स्टब ब्रास्ट्र अवर मदकादी मध्य मरअस्ति कथा छन्दि बायादग्र निर्देश बाक्यांत क्ष बहुत्ताव क्राउट्टन । दिशक वर्टन विद्यम एटक हिलाम नाम छैन्यकाम सामान वन हान किरम আৰতে হয়। ভার বব্যে উড়িয়া থেকে হু' লক সাভাৰ शकार वर् चार्मार (पटक केंग्यकाम शकार वर वर वरकी ६८ नक ৮० शकात वर्ष विद्यान वटल किर्माल व्यविका। काळन मार्टान मानामानि नर्वात अ वःग्रदात नान ७ ठारमह मध्यह गंछ वरमद्वत वह ममद्वत मध्यह चट्नका चान । ১৯১৯ नारन वीवकृत्य बाब ठांन नरवार ১৯৪৮ मारनव कुमबाब खाव বেছখৰ বেৰী। এবাৰে প্ৰভোক চাৰীয় বেছায় বিঞ্চীত বাৰ हाटन महकाती अमाम नटक देईटह । वर्डमाटनक बामावकन সংগ্ৰহ হচ্ছে। পশ্চিৰ বিনালপুৱে গভ বংসৱ প্ৰায় ১০ লক্ষ वन होन मध्येर स्टार्टन किन्द्र यानरास्ट्य सहादर बाब अन्त লক ৰণ কলকাতার আৰু। সময় হয়েছিল।'' এই বৰ্ণার মধ্যে আমরা ভরসা পাইভেছি না। পশ্চিমবলে উৎপাদন বাভিয়াছে, बहे चरा कविटा माहेरल चांक्षिक हहेकात।

# ভাবার ভিত্তির উপর প্রদেশ গঠন — শ্রীষ্মরবিন্দের মত

ভারতরাট্টের হুই ক্ষম সবপ্রধান নেতা প্রিত ক্ষমাংহ-লাল বেহুত্র ও সর্বাধ ব্রত্তাই প্যাটেল বর্ত্তাবে ভাষায় তিভিন্ন উপর ভারতহাট্টের পুনর্গঠনের বিরুদ্ধে বভ প্রভাশ ভবিষ্যাহেশ। এই যত প্রভাগেশ বব্যে ভাষ্টিয়ের একটা অসহিত্য এরণ ভাবে সুটরা উঠিরাতে বে, ভাষা আবাদের
বভ অনেককেই ব্যবিভ করিরাতে। ভারভরাটের শীবনে
এবন কতকণ্ডলি সম্ভা বেবা বিহাতে, ভাষা না নিটাইরা অভ
কোন ভাকে হাভ বিবার সামর্থ্য ও অবসর ওাহাদের নাই—
এই ক্বাক্রট ওাহারা বানা ভাবে আবাদের গুনাইভেত্মে।
কিও বেশের লোক ইহার মধ্যে কোন সান্ধা পাইভেত্মে ।
এবং মভই ভাষারা আনাদের সাবধান করিভেত্মে ভভই
কেশের লোক অনির হট্যা উঠিভেত্মে।

এমন কি, বাঁহারা রাজনীতিক গতাহগতিক আলাপআলোচনা হটতে চুরে আহেন, ওাঁহারা পর্যন্ত পঠিত ক্ষাহরলাল নেহর ও সর্থার বল্লভাই পাটেলের নানা উভিতে
আক্র্যাবিত হটতেহেন। এলরবিন্দ এই পর্যারভূক হইরা
পাঁচরাহেন। অন্ধ বিশ্ববিভালর ওাঁহার মাহারোর স্বীকৃতির
প্রমান-বল্লপ "একিটোনাকি রামলিক রেজ্ঞি কাতীর প্রভার"
এলরাবন্দের উভেতে প্রহান করেন। এতহপলকে বে অহুঠান
হয় ভাহাতে এলরবিন্দ একট "বাদী" প্রদান করেন। তাহার
যব্যে ভারত-ইতিহাদের বুল সত্য উদ্বাটন করিবার ক্য
"ইংরেকের কৃত কৃত্তির প্রদেশ ভাগের পরিবর্তে পূতন রক্ষ
একটা বাভাবিক দেশ বিভাগের হাবী" সহছে ওাঁহার মত
প্রকাশ করেন। আনহা ভাহা "সারবি" (সার্টাহিক)
হইতে নিরে উছত করিলাম।

"ভারতের প্রাচীন বে পছতি ঐক্যের মধ্যে বছয়—ভার উপর প্রতিষ্ঠিত। এক দিকে বিধানর আর এক দিকে ষ্টাগার, এই হুই সীমানার মাবে আবদ্ধ ভারত এক বৈশিঙ্যপূর্ণ লোকের বেশ; তাবের গুণাবলী খডাভ लाएक धनावनी एट प्लंडेर नुबक , नुबक छात्र अरङ्ख् ভার জীবনধারা, অভযাদ্বার ধারা ভের ভার শিক্তা-দীকা, ভার শিলকলা, ভার সমাক সংগঠন। যা-কিছু ভার মধ্যে এসে প্রবেশ করেছে ভাকেই সে খানীভূত করে নিরেছে, সকলের ওপর বিরেছে ভারতীয় द्यान, चित्रविष्यपूरी छेनावान तर छात विनिद्य बद्याद ভার বুল একথের বব্যে। ভবুও ভারভ চির্ভালই হিল একটা বহুছের সমাহার—ভাতে স্থান পেরেছে ৰহতর বন-সন্স, বিভিন্ন ভূবত, কত রাজভূজি-প্রাচীন-তর কালে প্রকাত্তি পর্যাত্ত—বহুতর গোলী, উপজাতি, —প্রভোকের,খাণন খাণন বৈশিষ্ট্য প্রভোকেই প্রকাশ **মতে চলেহে পুথক পুথক শিকা ও সংস্কৃতিত বাত্রা**— শিলক্ষা ও খাপভাৈর বহতর ধারা, কিন্তু সকলে মিলে কেন্দ গৰে তুলেছে একটা সাধারণ ভারতীয় শিক্ষালীকা श्व मरश्राच ।

"जाराज्य देजिलाम विवकान मूटके डेटर्टस अक्के। बाबा, अक्कें चित्रम (क्कें), अदे चेक्न डेनेक्स বৈচিত্ৰ্যকে একজ্জ সাত্ৰাক্ষ্যের মান্ত্রীয় একছের বব্যে পেটের ভুলভে—হাতে ভারতবর্ষ সংস্কৃতি হিসাবে বেমন মাই হিসাবেও ভেমনি এক হল্পে ওঠে। তবে বোসলেব कांकिरश्य देशशायम अवारम अक्टी विरम्प प्रदेशियम ভাবের সন্পূর্ণ ভিন্ন ধরণের ধর্ম ও সামাজিক ব্যবস্থা नित्व अरम---(नवादमक छवू बदाबब करनित निर्वे वाह्येव केरणाव बाराडी. इहे विकित मश्कृष्टि कारन मिनामन पिरक পরভা<u>রতে</u> প্রভাবারিত করে চলেছিল। এখন কি ছু' একট ছু:নাৰ্য প্ৰৱাস্ত হ্ৱেছিল বাতে ভাপাত-विद्यांनी वर्षपण इति विनिद्ध अकृति चर्च वर्षपण খাবিভার ভরা যার বা গভে ভোলা যার। এ ক্রেও अबहै चनवहैटक अवादिक करविता। क्यांनि कांद्रक्र ইভিহানে কৰনও ৱাহীৰ ঐক্য পূৰ্ণ সাবিভ হয় नार--- अक्रांविक (रुष्ट्र दिन छात्र। क्षप्त, चात्रछत्पत्र विनामका चान-चानाबदा वात्राद्यात्रम च वक्रमका-क्र बहे जब विकित्र लाक-मत्मद मत्मनाय वादा एहै। विजीवज: य देशांत व्यवनयन कता र'ज-देशांत र'न সাৰৱিক শক্তির কোরে সমগ্র দেশের ওপর একট জাতির বা রাভবংশের আবিপভ্য-ভার কলে হরেছে সামাজ্যের পর সামাজ্যের উবান-পভন, কোন সামাল্যই স্থায়ী হভে भारत वि। (महण्ड: अक्षे कृ भरकत्वत चर्मार यात मण्डा **এই সকল বিভিন্ন দেশবতকে দলে-পিয়ে এক অবত বস্ত** अ बटन होनाई क्या ।

"এর পরে এসে গেল বিষ্টিশ সামাক্য—সমস্ত দেশ বৃত্য করে তেতে গড়ল, বেশের আত্যন্তরীণ বাতাবিক সীমানা दिविद्यारक चर्यात करवे, चर्क छाटक मन्पूर्व विदलांभ मा करत, निरंबत श्रुविशांत करण एक कताल कृतिन धारम সৰ। ভারতবর্ধে বছপুর্বে হতেই ভার বিবিধ মুল ष्ठेभाषांवरक बरव अरक फेर्ट्स्टिन अक्टी फेशरयमवास्थित খাভাবিত গোষ্ঠ সৰ-ভিত্ৰ ভাষা, ভিত্ৰ সাহিত্য, ভিত্ৰ बीकिमीक निरम्-वर्ग, क्वानिक्यांक ठकुडेव, नम, बरावांड्रे चमवाहे, शकार, चात्रात, तियू, देविद्या, त्यशान, देखवा-**पटका रिमीणायो, बायगूणामा अवर विशंत । विष्टेम बायम** প্রাদেশিক শাসন-ব্যবহার এই সকল গোন্ধকে একীভূত করে নি. ভবে ভাবের উপর চাপিরে বিরেছিল সর্বাত্র এক चित्र भागमनाता, देश्टबको जावात जाकारका शतन्त्रदात মধ্যে খনিষ্ঠতর আহান-প্রহাবে অভাত করে ভূলেহিল चाद चाद निका-वावदाद एहे स्टब्स्न वाानकंगाद अकृष्ठे। दृद्देषु दिनद्वय, पारीनचात्र चाकाच्या चात्र स्म चाबीनका चर्करमञ्जू वह बारवायनीय क्षेत्रं। चाबीनका मार्ट्य गर्फ परपडे अक्डी दूर्याय अक्ष पर्क ट्यामांव चार्वेद्या क्या र'न चंटी, किंद्र वांबीनका बेटन देनला दर्व

নেল পূৰ্ণ একছ ভাতে এবে বের বি—ভবু তা নর, ভারতবর্ষকে বৃক্তি করে বভিত করা হ'ল, এই বেচ বিবে বে
ভারত হ'ল বৃট নেশন, হিন্দুহান ভার পাকিহান—ভার
এ তত্ত্বে বে কি বিষয়র কল তা ভাষয়া ভানি।

"—বাৰীমতা লাভের পূর্বে কংগ্রেল ব্যং প্রতিশ্রুতি বিরেছিল ভাষা অনুষারী প্রবেশ গঠন করবার—সে প্রতিশ্রুতি কার্ব্যে পরিণত করা অবিলবে বলি সভব মা হয়, অভতঃ ববাসভব শীল করাই সর্ব্যাপেকা পুরুছির কাক। ভারতের ভাতীর ভীবনের ভিভি তবন হবে তার বাতাবিক সামর্থ্যরাজি, বহুছের মধ্যে প্রক্যু এই তত্ত্বের সক্ষে ভার নিত্যবৈশ্রিভিক পরিচয় এবং এর প্রয়োগ হ'ল ভার সভার প্রকৃতির ব্ল-বারা—একের মধ্যে বহু—এই সত্যই তাকে প্রভিটিত করবে তার অটল ভিভিন্ন উপর, ভার হভাব ও হবর্শের উপর।

"এই পরিণতিই বে ভবিষ্যতে ভারতের অনিবার্থ্য ভাগ্য-বারা, একথা বেশ বলা বেতে পারে। জাবিদ্দ মঙলের অবিধানী সব ভাবের খারছ-শাসমের খতন্ত্র অবিকার দাবি করছে। মহারাইারেরাও অহুল্প অবিকার দাবি করছে। মহারাইারেরাও অহুল্প অবিকারের প্রত্যাশা করে—ভার অর্থ ওলরাতেরও ভদ্দুরূপ পরিণতি। কলে বিটিশ-রুভ নাজাক ও বোধাই প্রেনিভেলি লোপ পাবে। পুরাতন বাংলা প্রেনিভেলি ইতিমধ্যেই খণ্ডিত হরে নিরেছে এবং উট্নিয়া, বিহার আর আসাম প্রদেশ হিসাবে এবৰ খারছ-শাসন লাভ করেছে। ভারপর মধ্যপ্রেলেশর আর মুক্তপ্রহেশের হিন্দী-ভাষীরা সন্মিলিভ হলে এই পরিণতি সম্পূর্ণ হবে। খণ্ডিত-ভারত মুক্ত হলেও এই সাবারণ গতিবারার কিছু ইতর বিশেষ আসবে মা। রাজ্য-রাই সকলের এবং প্রদেশনত ভাতি সকলের সম্মেলনই হবে ভারতীয় এক্ষেণ্থ হল।"

শীলববিন্দের বাদীর পিছনে অর্জণভাষীব্যাপী গভীর চিন্তা এবং অতি হল ও অতি সংবত দৃষ্টির পর্ব্যবেদ্ধণের বারা রহিরাছে। ঐ দৃষ্টি আধিকার সামরিক রাই বিকোভ বা হবিধাবাদের ক্টনীভির ভাবে সন্থচিত হর নাই। পুভরাং বাঁহাদের বনে ভাষার ভিন্তিতে প্রদেশ গঠন সম্পর্কে কোন প্রর্থাতে ভার্যদের এই নভের সার্যন্ত্র প্রত্ন করা প্রবোজন।

"পাকিস্থানের" রাজ্য নীতি

"পাকিহানের" কেন্দ্রীর প্রব্রেক্টির বাংস্থিক আরব্যরের হিনাব লাগিল করিতে নিরা মন্ত্রী ওলাব বহুদ্রধ্যেব। করিবাহেন বে, ওাহারের ১১ লক্ষ্ টাকা উর্ভ
হইরাহে। এই থিকে ভারভরাট্রের মন্ত্রী কন নাগাই হিনাব
করিবা আবারের ভনাইরাহেন বে, ১৪ কোট টাকার উপর
বাইতি প্রিরাহে। এই মুইট ভব্যের উপর নানার্ত্রপ

আলোচনা চলিভেছে; এবং হই রাষ্ট্রের রাজ্য-নীতি সথকে বছৰা প্রকাশ করা হইতেহে। এতংসপ্তের্ক বিরলিবিভ বিবর্গন্ধ "পাকিহান" রাষ্ট্রের রীতি-নীতি সহতে কৌতুহল নিয়ন্ত করিবে। এইট জেলার নৌলবী বাজার শহরের "অতিবান" (সাঞ্চাহিক) প্রিকার সম্পাদকীর বছব্যে বিবর্গন্ধ প্রকাশিত হইরাহে।

"ভিকেলের (রাই-রক্ষার) নাবে গত কর যাস যাবং কর-সাধারণ হুইতে চালা আহার করা হুইতেছে। এই উদ্বেক্ত উচ্চ ও নির শ্রেণীর যোটর-বাঞ্জীদের নিকট হুইভে হাবা পিছ io আৰা ও Jo আৰা চাঁখা আখাৰ কৰা হইতেছে এবং তাহা আর কতবিদ চলিবে তাহার নিক্ষরতাও দাই। বাস-বাজীৱা বে ভবু সৰ্বের জন্তই জ্ঞান করিবা পাড়েন এলপ নছে, ভাৰ্য কাল্বৰে বিপদে পভিয়াই ভনসাধারণ তাহা করিতে বাবা হয় এবং বাঞীবের মধ্যে অবিকাংশ লোকেরই এই আর্থিক অসম্ভলতার দিলে 1/০ আলা. ভাভার খনে দৰ্শত আমা দেওয়া বে অভীব কঠকর ভাষা সহকেই অন্তবের এবং এক ব্যক্তিকে বিভিন্ন সময়ে বিভিন্ন महित्व बात करवक्षे अहे किमार्ट होयांत बार्ट है। स দিতে হইতেছে। দেশবাসী ট্যান্সের মালার প্রশীভিত, बाद छैनद पछिनद नहां परनश्रत है। स पानांत प्रकृष्ट् ভারসমত তাহা আমরা বুঁলিরা পাইতেছি না। ভার भव अ नकन चांवादी biri (?) धेक छश्रित नवश्रीवरे ক্ষা হর কি না ভাহাও সন্দেহ। কারণ রাভার বাত্রীবের निकृष्ठे स्टेट्ड काकांत्र जरह या होता जातात कता एव তাহার রলিদ দেওয়া হয় কি না, তাহা কর্ত্বপঞ্চ রাবেদ किया अवर विशव मा (पश्चा परेटन अवन बाहि दनाक कर क्रम चार्टम बाहाता प्रतान बाहरकृत मक चाहारीकृष টালা উচ্চ তত্বিলে যথানীতি ক্ষা দিতেছেৰ ?"

পশু-কল্যাণ সম্মেলন

ভারভরাট্রের কেন্দ্রীর গববে নেটর আবোকনে বিত্রী
নগরীতে একটি পশু-কল্যাণ সন্দেলনের অন্তর্গন হর। বাডও ক্ষমি-মন্ত্রী ঞ্জিবরামদাস দৌলভরাম এই সন্দেলনের
সভাপতিরূপে কার্য্য করেন। সন্দেলনের যে কার্য্য-বিষয়ই
কৈনিক সংবাদপত্রে প্রকাশিত হইরাকে, ভালা পঢ়িরা
ভবিষাতে পশু-সম্পদের উন্নভির অনেক পরিকল্পনার কথা
দেখিতে পাইলাম। ভংপুর্ব্যে ক্ষমিন্ত্রীর মুবে শুনিরাহিলার
বে গো- ও-মহিব-সম্পদের উন্নভিক্তে ১৯৪৮-৪৯ সালের
বার বাসে ও লক্ষ ১০ হাকার টাকা ব্যর হইরাত্রে; ১৯৪৯৫০ সালে হইবে ২ লক্ষ ৪৬ হাকার টাকা। এই ব্যর দ্রানের
ভারণ কি ভালা বলা হর নাই; এবং বর্ত্তনানে বে বারের
পরিবাদ নির্বিষ্ঠ হইরাকে ভালা অপ্রচ্ব মনে ক্ষরিবার ব্রেপ্ত

नक-नन्नरम्य डेश्डिकरम् त्व मन भाषक्रमनात क्या बहे সম্বেলনে বৰ্ণৰা করা হটৱাছে ভাড়া বাহি-প্রতিঠানের প্রতিঠাতা এগতীপচক্র যাপ্তর মহাপ্রের --ভারভবর্ষের গো-সম্পদ্ধ-- পাঠ ভারিবারি। चिट्टा कर्पक देवनिय चीन्द्र अधिकतिक कारत আমাদের দেশের লোকের ভাগে ধৈনিক ১২ ভোলা হয় शारे गाव मा . चारविकात बुक्रवारहे छात्रांता शाव देवनिक চলিপ ভোলা ছব। এই পাৰ্বভোৱ ভারণ ব'লিছা বালির क्विटि मा भावित्म स्वत्कद बाद वाकित्व मा. त्यत्वद बाहा धेवछ एरेटर न।। जाहाद वह दि नावनाद अ:बावन, जाहाद चर्चातः त्रहे हेळानकित चर्चात चांबात्वत चतीतत्व क्रिटिंग्ड इ.स्म. मनाक क्रिडिंग्ड चक्रक वार्यकार भूगे। और विवटन शक्तिवतम अन्यवादन भवत्रवादभक्ती दन मकान यांचा (है) कृतिए एह। ५०४० मार्जित कानवाती बार्ज একবার কলিকাতা নগরীতে ১,১৯৪ট ছম্বতী গাড়ী ও ७,०२० । महिष चामशानी एहेबाट्य विहात. बुक्रश्रद्धन छ পर्य-पद्माव एकेटक : भन्धिमवरकत माना (कता एकेटक ১०% यहिन कृतिकाछात्र जानमानौ स्टेशास्त्र ।

যুক্ত থেলের পরবেকি গো-সম্পলের উর্ল্ডির ক্ষত ৯ লক্ষ্
টাকা বার করিয়া পত বংগরে নাকি প্রার ১৪ লক্ষ্ টাকা লাভ ক্ষরির হৈছেন। আর পক্তিরবঙ্গের পরবেকি প্রায় ৫০ লক্ষ্ টাকা বারে নির্মিত একটা গোলালা উত্তরাবিহনে পাইরা পত কের বংগরের মবো একট গরু বা মহিব ক্রিপঘাটার লট্রা বাইতে পারেন বাই। কেনি সাহেবের কীর্তিগরাণ সেই গোলালা পর্যবেত্তর ক্রমিভিগরে অপরার্থতার কথা বিক্রে বিক্লে প্রচার ক্রিভেছে। মন্ত্রী প্রীয়ালবেক্স পাঁকা মহালয় অলাব্যরি এই সম্পত্তির সহাবহার ক্রিভে পারিলের না। এ রোগের চিকিংসা কোথার ?

#### পশ্চিমবঙ্গে জাহাজ-নির্মাণ

গত ১১ই কান্তৰ তাবিবে ভারতরাট্রের শিল্প ও সরবরাহ্
মন্ত্রী ডাঃ ভাগাপ্রদান মুবোপাবার বোষণা করেন বে,
কলিভাতার নিকটে তথ্যসূত্র অকলে একট সমুদ-যাত্রী আহাক
নির্দাণ কারবানা ছাপনের প্রভাব কেন্দ্রীর গবরেকেটর
বিবেচনাবীন আহে। এই বিবরে কর্তব্য হির করিবার
অক নৌ-শিল্পশনী এক করানী কোম্পানীর কাছে পরাধর্শ কইবার সিভাভ গ্রহণ করা হইবাছে। বীঃ অটাকশ শতাকীর
প্রবন্ধ ভাবের বাংলাবেশে সমুদ্যাত্রী আহাক নির্দিত হইত।
বৈবেক ভাহার প্রয়োকনে এই শিল্প নট করিবাহিল। প্রায়
১০০ বংগর বরিষা ভারতবর্ণের আহাকনির্দাণ শিল্প ইংরেকেল
ছাতে বিনত্ত ইইবাছে। ক্ষতি রবেশচক্র হডের ইভিহানে
ভাহার বিভ্ত বিবরণ পাওছা বার। ১৯৪৭ সালের ১০ই
আগটের পর বে ববরুপের ছচনা ছইবাকে সেই সকরে যাংলা দেশের "অব্ধ-শোতের" বিষয় অভিবাদ পুনরজীবিত করার চেঠা ভাতাবিত। একবন বাঙালী প্রধান এই বিষয়ে অএই হইতেবেন দেখিয়া আমহা আম্কিড হইয়াই।

কিছ ভাষাক নির্দাণ করিলেই চলিবে লা। স্তব
নাবিক প্রেম্বর স্ক্রী করিতে হইবে। এই বিষয়ে পশ্চিমবলের মন্ত্রিমণ্ডলীর একটা বিশেষ কর্তব্য ভাষে; দেশের
ক্রুর নৌ-বিভার ঐতিহ্ প্তন করিয়া স্ক্রী করিতে হইবে।
পূর্বেরদের "বালাসীর" উপর নির্ভর করিয়া বালা বিপক্ষনক।
ইতিমবো কলিকাতার ভাষাভ্যাটার "পাকিয়ানী" নাবিকেরা
বেষন করিয়া ভোট হাবিবার স্থযোগ পাইতেহে, ভাষার
প্রতি ভাঃ বিবানস্কারার স্ক্রীপাত না করিলে পরে পভাইতে
হইবে। কলিকাতার বকরে "পাকিহানীর" নিরোগ বভ্
হওরা উচিত। তাহার জন্ম পশ্চিমবন্ধের নাগরিকর্মের
নৌ-বিভার ব্তন পাঠ প্রহণ করিতে হইবে। নৌ-সেনাপতিপ্রেম্ব স্ক্রী না করিলে বিকলাক নৌবিভাগের স্ক্রী হইবে।
পশ্চিমবন্ধের নাগরিক নাবিক প্রেম্বতে বলে হলে ভর্মি ইইলে
নৌ-বিভা পূর্বর প্রাপ্ত হটবে। ভাঃ ভাষাপ্রসাদ মুবোপাব্যার
ও ভাঃ বিবানস্কারার এই বিবরে অবহিত হউন।

#### भिशु-मन्नल श्रामनी

কলিকাতা কর্ণোৱেশন কর্কুক পরিচালিত প্রচার-বিভাগ
ও শিল্পরবার বাহ্বর গত ১৪ই কান্তন হটতে ২০শা কান্তন শ
পর্যন্ত একটি শিশু-মদল প্রথমনীর আরোদন করিবা
কলিকাতার নাগরিকরুক্তরে আম্বর্জনিক লাভ করিবাছেন।
বর্তমান নাগরিক জীবনের নানা সমজার মধ্যে মানবশিশু ও
তাহার মাতাকে বাঁচাইরা প্রহ সবগ রাধা একট কৃতিন
সমজার পরিণত হটরছে। আর্থিক হরবহার সলে সলে
আলোবাতাসহীন নাগরিক জীবনের অশিকা, সুশিকা বিলিভ
হটরা এই সমজার উৎপত্তি করিবাছে। এই শিশু-মদল
প্রদর্শনী চোবে আপুন নিরা কলিকাতার নাগরিকরুক্তকে তাহার
কল ক্রোইরা নিও ছে। যাহ্বরের ভারপ্রাপ্ত জ্বিকালীচরন
বোর এই উপলক্ষে একবানি পুতিকা লিবিরা সম্ভার
নানা দিক আ্বালিসকে বুডাইরা দিবার চেঠা করিবাছেন।

বৃত্যুৰ হাৰ ভাততবৰ্ষে হাৰাবকৰা প্ৰায় ২৫ জন; আবেৰিক'ৰ বৃজ্ঞবাটো ১০ জনেৰ উপৰ; পিন্দ বৃত্যুৰ হাৰ সকলেৰ বাঙা হাৰাহাৰ পিছাহে বলিহা মনে হৰ—ভাৰতবৰ্ষে হাৰাবকৰা ১৬১ জন হিল ১৯৪৪ সালে; বুজুৱাটো হিল ৪০ জন ১৯৪০ সালে। এই সৰ ভব্য বেৰাল-পঞ্জিলাৰ লাভাবৰ্ণৰ উজ্জ জজাৱে হাপাইৰা প্ৰকৰ্ণনীৰ হৰ্ণজ্ঞতক আহা সকৰে জান কেওৱা ক্ইয়াহিল। এওপ প্ৰকৰ্ণনীৰ সাহায্যে ভলিভাভা নগভীৰ পাছাৰ পাছায়, পশ্চিমবন্ধেৰ ভিকে এই জান বিভৱিত হুইবে; ভাৰতবাটোৰ জ্ঞাভ প্ৰকেশেও অহুল্য কাৰ্য্য চলিভেছে।

এতংগশকে অন-বিভালরের হাত্রহাতীর ভার্য কেবিরা আপারিত হইরাহি। প্রয়োজনের ভূলনার অকিকিংকর হলেও আনাদের দেশ এই সমভা সবতে স্কাস হুইরা উট্টভেবে, এই প্রমাণ আশাপ্রক।

#### সংবাদপত্রের দায়িত্ব

পশ্চিমবদের প্রদেশপাল ডাঃ কৈলাসনাথ কাটন্ নিজেকে "একজন সাংবাদিক বলিহা মনে" করেন। কে'ন কোন সংবাদ-পত্রে ওাহার প্রবথাদি সম্রতি পাঠ করিয়াহি। কলিকাভার এক অভার্থনা সভার বক্তৃতা উপলক্ষে সংবাদপত্রে ছারিছ ও কর্ম্বরা সকরে তিনি করেকট মহুবা করিয়াহেন বাহা প্রশিশীন বোলা বলিয়া মনে করি। ভারতীয় সংবাদপত্রের একট ক্রটর প্রতি হৃষ্ট আকর্ষণ করিয়া তিনি আমাদের বহুবাদাই হুইয়াল্ডন।

শরবিষাসরীর সংবাদপত্তে প্রবন্ধ বিভাগ যথন দেখি,
আহার বিষয় লাগে। বেজিকো, বেইকট সম্পর্কে প্রবন্ধ
থাকে। কিও আমাদের সাংবাদিকগণ দেশের পত্তী অঞ্চল
ক্ষমণ করিবা বৈচিত্রাপূর্ণ প্রবন্ধ লিখিতে পারেন না কেন ?
আমাদের সমুবে বন্ধ সমস্যা রহিবাদে, সংবাদপত্রসমূদ্
উহার উপর আলোকপাত করিতে পারেন ভাহারা,
চিরাচরিত পরে প্রয়ণ, করিতেছেন কেন ?"

এট বক্তা পাঠ করিবা মনে হব যে, সংবাদপত্তে
সম্পাদকীর মভাবত প্রকাশের উপর কাটপু মহাশব বিশেষ
জলব আরোপ করেন না। "প্রকৃত ঘটনা জনসাবারণকে
জাপন করা, প্রকৃত তথা জানাইরা জনমতকে স্থাটিত করাই
ভাহাদের (সংবাদপত্তের) উভেও হওবা উচিত। জনসাবারণ
নিজেকের মভাবত নিজেরাই দ্বির ক্রিবেন।" এই কথাওলির
মবো সংবাদপত্তের কর্তবা সখতে একটা সভীর্থ বারণার ইলিত
পাই। প্রকৃত ঘটনাও প্রকৃত তথা একটা সামান্তিক পরিবেশের পরিচর প্রধান করে। এই পরিবেশের মর্ম্বরণ
সূচীইরা ভূলিবার জন্ত সম্পাদকীর মন্তব্যর প্রয়োজন হর।

# বিভক্ত পৃথিবী

ভাব, চিন্না ও কর্বের পার্বক্যের কলে আমারের পূবিবী হুই বতে বিভক্ত হুইরা পভিরাহে। আবেরিভার মুক্তরাই ও সোভিন্নেট ইউনিয়নের মবো বাক্-বিভঙার হারা অবহাট পরিস্ট হুইরা উঠিয়াহে। হুহং বিষ্ক্রে এই হুই রাষ্ট্রের বৃষ্টি-ভগী এক হুইতে পারিভেছে না; সূত্র বিষরেও ভালা হুইতেছে না। সন্মিলিত লাভি-সংখের বৈঠকে ভালার পরিচর পাওরা হার; সংবাহপরের প্রবন্ধে ও সংবাহ-পরিবেশনে সেই ভ্যাই ক্রেডিভ পাইভেছি। ভারভরাটে মুক্তরাটের পক্ষ হুইডে বে অবংবা প্রচারপর প্রেরিভ হুর ও বিরী মধ্বীর স্বোভিন্নেভ বংবার ও অভিনত্ত বাবে বে প্রচারপর প্রভাবিত হুর ভালার

ষধ্যে এই বিভর্কের গতি পরিবভিত্ত এবন একটা প্রবাণ প্রতি লগ্ধানে আবাদের কালে অবা হয় বে, ভাষা পঢ়িয়া প্রকৃত নভার-স্থান পাওয়া কটিন হইলা উটিভেছে। সোভিয়েট প্রচারপত্রে স্ক্রাটের প্রচারপত্রে বাই প্রধানবর্গের বস্তুতা ও বুকরাটের বছর্বী জীবন্যানা ও কর্মবারার বিবরণ বালে বেন।

ষ্ঠাত-বরুপ ইন্দোনেশিরা সকতে দিল্লী নগরীতে প্রাচ্য বেশনগুবের বে সন্দোন বিগিলাহিল, তংগবতে এই ছুইট প্রচার-প্রতিষ্ঠানের ঘৃট্টভলীর পার্থকা দেখিব। আক্র্যাবোধ ক্ষাতেহি। মুক্তরাষ্ট্রে প্রচারপত্রে সন্দোনের প্রভাবতলি প্রকাশিত ক্ষাতে; তথেশীর্ম সংবাদপত্রে প্রতিত নেহ্নর রাক্নীতিক সংব্য ও বুদ্ধিস্ভার উচ্ছুসিত প্রশংসা দেখিতে পাইরাহি।

সোভিষ্টে প্রচারণতে সংখলনের প্রভাবগুলি প্রকাশিত হইতে দেবি নাই; ভাহার চুহুকের উপর মহংগঙলৈ ভীত্রভূপে কোনি নিরাছে। ১১শে কেকরারী (১ই কার্ড্রন) ভারিবে শ্রীভালা পত্রিভার অভিষ্ণত প্রকাশ করিবা প্রচারণত্র সম্পাদক নিকের কর্ত্তবা সম্পন্ন করিবাছেন। এই পত্রিভা প্রথম প্রভাবের এই অহ্বাদ করিবাছে—"ইন্সোনেশিয়ার বিদেশী শাসন বন্ধার বাকিবে; ওসম্বাদেরা একট ভাবেকার রাষ্ট্রন্সংগঠনের যে প্রভাব করিবাছে ভাহারই ভিত্তির উপর ইহা গঠিত।"

সংস্ট সরকারগুলি "একবোগে আলোচনা করিবা একট বুল বল (apparatus) তৈবারী করিবেন," এই প্রভাবের উপর টলনী করা হইবাছে—"বল্লটির ব্যাব্যা করিতে পিরা উপাহরণ-স্বরণ পোন্ডাভা রাইসলাও আবঃ-আমেরিকান চুক্তি ইত্যাদির নাম উল্লেখ করা হইবাছে, অর্থাং দক্ষিণ-পূর্থ-এশিরার ব্যাব্যা হইবাছে।"

अक्षांनि क्यांनी शिक्षांत मरनावर्गाणांत मरनावर्ग हैटलरं क्या स्टेबाट्स—"बिटिंग क कान्यज्ञ सद्या अटे नामाद्य मण्ड्री सटेजका स्टेबाट्स द्यं, प्रक्रिय-मूर्क-अभिन्नात मानानाद्यत्व अनात द्यान कृतिएज स्टेबाट्स क्यांनिहे-विद्यांनी काजीतज्ञानायो मिक्किलिट्स मरन्छ कृतिएज स्टेट्स ।" अटे मरनाद्यत छैभव वक्ष्या क्या स्टेबाट्स—"टेसाटे स्टेल दिल्ली मट्याट्स स्थान क्या ।"

## মার্কিনের আর্থিক সহযোগিতা

নাজিব বেশের রাউপতি টুরাান উংহার উংহারণী বক্তথার পুৰিবীর শিল-বাণিকো অবএসর ভাতি-সমষ্ট্রর আধিক উছতি কলে বার্কিন পুরির সহবোগিতার ইঞ্চিত ক্ষিয়াহিলেন। এমণ সাহায্য হাবের প্রিক্ষনা পুত্র নহে। ইউরোগ্রুতের ১৬ট রাই ১৯৪৮ বাং "বার্ণাল লাহাব্যে" এট বাবে প্রার 
100 কোট টাকা ব্লোর প্রবাধি লাহাব্য রূপে পাইরাছে; 
এই প্রবাধির—কল-কলা, গাতশন্ত, কাঁচাবাল ইত্যাধির—
অবিকাংশই বার্কিন মূলুকে প্রস্তুত ও উৎপন্ন হইরাবিল।
স্কুতরাং এক দিক হইতে বিচার করিলে এই কথা বলা বার 
বে, মার্কিন বেশ এই সব দেশে আপনার বাল চালাইরা বিল।
কর্মনিইরা এই নীতিকে বার্কিন পুঁকিবাদের ক্ষরবারা বলিরা 
বাকে। কিন্তু এই কথা অধীকার করিবার উপার নাই বে, 
এই লাহাব্য হাকা ইউরোপবতের এই ১৬ট বেশ বুভের ফরণ 
বেল্প ক্তিএন্ড হইরাহিল ভাহা পূরণ করিবার চেঙা করিভেও 
পারিত না। সোভিরেট ইউনিরনের এরপ সাহাব্য করিবার 
লক্তি আছে বলিরা আব্রা তনি নাই।

গত হুই যাসের যথ্যে রাইপতি টু্য়ানের পরিকল্পনা সহছে অনেক আলোচনা চলিবাছে। বুক্তবাট্রের চলচ্চিত্র সন্দের সভাপতি এরিক ক্ষর্ত্তন এই বিষয়ে উহিবে কর্মনি ক্ষরাইরা বে ক্যা বলিরাছের ভাহা নানাধিক হুইতে অর্থপূর্ণ। তিনি "বুক্ত রাট্রের নেভৃত্বে একটি নিধিল-বিশ্ব শিলোররন পরিকল্পনা এহণ" করার সমর্থন করেন। ইহার সাহাযো "সারা বিশ্বের অনপ্রসর অঞ্জে নার্কিন অর্থনিরোগ ও নার্কিন বিশেষজ্ঞরে প্রেরণ করিতে হুইবে।…সেক্ত বুক্তরাই সরকার হুইতে ১০০ শত কোটি ভলারের প্রায় ৩৫০ শত কোটি ভলারের প্রায় ৩৫০ শত কোটি উলা। অর্থ নিরোগ করিবেন।" মার্কিন সরকারকে এই ব্যাপারে টানিরা আনিবার প্রয়োজন সম্পর্কে এরিক ক্ষরীন মান্ত্রী করা—হেন—

"বৃদ্ধি ক্ষমণ কোনো কেশে এই শিল্প কাতীর সম্প্রিতে পরিণত করা হয় বা শক্ত কোনো কারণে উহা বাজেরাও করা হয়, তবে মার্কিন সরকারের ঐ শুর্গ ইতে মার্কিন অংশীদারদের ক্ষতিপুর্গ করা হইবে।"

সাত্রাক্য-বিভাবের সজে পুঁজিবালের ঘনিঠ সহছের ক্ষা মনে করিয়া এরিক জনইন উচ্চার কথার আর্থ সহছে আমালের আহন্ত করিয়ার চেইা করিয়ালেন :

"এই পরিকল্পার আমি বিকেবের কচ অংশীবারত্ব চাহিরাছি; সাঞাব্য বিভারের আকাক্ষার কেশবাঞ্জ আমাদের মনে তান পার নাই; আমরা চাই ক্সভের অভাচ ভাতির সহিত বছুর মত সহবোগিতা করিতে, ভাহাকেও শোবৰ করা আমাদের উক্তেই নর।"

পৃথিবীর শিল-বাণিজ্যে অন্তর্গর দেশগুলি এই ক্থার আর্থ হইবে কিনা থানি না। কিছু গত ভিন শত বংসরের অভিল্পতার কলে আনরা বে সিল্বে বেদ বেধিরা তর পাইন, আহাও অবাভাবিক নর। হরত বিদ-বিধানে বিংশ শতাব্দীর আরম্ভ হইতে বার্কিনের অর্থানার গতিবেদ সকল বাবা অভিক্রম করিবা অঞ্জ্যর হইবে, বেনন হইরাহিল ত্রিটেনের অর্থানার আরম্ভ অন্তার্গ শতাব্দীর নব্যভাগ হইতে। বিঃবার্ণ ৰৰ লইবা কোৰ ভাতি প্ৰদেশকৈ আৰ্থিক দাহাব্য কৰিবাহে, এৱণ উদাহ্বৰ বাহুবের ইতিহানে পাওৱা বার বা। বাৰৰ গ্রহুতির এই ব্যৰ্থতার শেব ক্ষাও হইবে কিবা জাবি বা।

#### रिमयम छरमन

ভারতবর্ষের সঙ্গে প্রাচীন মিশর বেশের কি সম্বন্ধ ছিল. ভংগৰতে আমাৰের ভাৰ সভীৰ্। বুগলিয় সভাটৰের শাসন-কালে বে সহৰ হিল, তাহার প্রধাণও এবন পর্যন্ত অপ্রচর। ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগষ্ট ভইতে যে বর্গের প্রচনা ভইরাছে बबर नामा बारहेद जरू जाबारमद रव जबन महिना छेवैवाद সভাবনা দেবা দিয়াছে, সেই ভবিবাতের কথা বনে করিয়াই ভারভরাট্রের পক্ষ হইতে সৈর্থ হুসেনের রাইণুভ নিরোগ একট উল্লেখবোগ্য ঘটনা ছিল। ভারতবর্ষের বুসলিম সমাৰে "পাকিভানী" মৰোভাব উএ না হটলে, "পাকিভান" প্রতিষ্ঠিত দা হইলে, মিশরের রাষ্ট্রপুতের পদ ও প্রভাব বিশেষ মৰ্ব্যালার বোগ্য না হইতে পারিত। কিছ এই ছই ঘটনার বুসলিম রাষ্ট্রসমূহের সঙ্গে সম্বন্ধ স্থাপন করিবার পূর্বে অনেক ভাবিৱা-চিভিয়া ৱাইদুত নিৱোগ করিতে হয়। পঞ্জি ভবাহরদান মেহেকু যে বিভাগের কর্তা সে বিভাগ কি ভাবিয়া रेजवन सर्वनरक विभारत शार्शिक्षांस्थितन, छाना कवना कवा कठिय नव ।

কারণ সৈরদ হলেন যৌবনের প্রারভ হইতে ভারভবর্ষের ভাতীয়ভাবাদে বিখাসী ছিলেন। "বোখাই ক্ৰমিকেল" পঞ্জিকার বেঞ্চারিন ছবিয়ানের ছাতেগড়া যাল্য তিনি: এবং বিসেস এনি বেশ'বের নেড়বে বে "বোমরুল" আবোলনের খচনা হর, সেই সময়ে তিনি লেবক ও বভারণে প্রসিহিলাভ করেন। ধেলাকং আন্দোলনের সময় সেই ব্যাতি বিভারলাভ করে, এবং ধেলাকং প্রতিনিধিবর্গের সম্পাদকরণে তিনি विमाण नमन करवन । এই नमरबरे जिमि विवार विदय जावजीव খাতীবরাবের পঞ্চে প্রচারকার্ব্যের প্ররোজ্নীরতা ব্রিডে भारतम्, अवर श्राप्त गॅठिम वरमतकान चारमविकात मुख्यारहै ভারতবর্বের স্বার্থ ও সন্থান রক্ষার কার্ব্যে স্বাথনিয়োগ वर्षाद्वत्व नवद विष्टेभ नाजाकाराक निर्मक्कारन ,कांबारमंत्र कामा-कांकाकांत निरुद्ध कांबकांदी चानच क्रांदरांदी, छादक्यांप राच, বারত করে। হৈছে হুসেন প্রভৃতি ভারতপদ্মীগণ এই প্রচারকার্য্য বার্থ ক্ষিবার ক্রম কোক ক্ষিয়াছিলেন, ভাষার স্ব্যক্ত পরিচর এবনও দেশবাসী পার নাই। তথন "পাভিরানী" মনোভাবের বিক্লবেও ভাঁহাবের সংগ্রাব ভরিতে হর।

"পাকিছানী" প্রলোভন, "পাকিছানী" বন্ধ ভাষাকে কর্মন্ত প্রকাত করিছে পারে নাই। এই বৃচ্চতাই ভাষার জীবনের সৌরব। আব্দ ভাষার ভিরোধানে বৃত্তন করিছা এই বৃচ্চতার নাহান্ত আবরা উপলব্ধি করিছেছি।

# चहि:ग

#### এউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্ব

শান্তের বচন উদ্ধৃত না করিবাও বলা বার বে, অহিংসা
একটি উচ্চ ধর্ম। সভ্য, অত্যের প্রভৃতির সবে অহিংসার
প্রচুর প্রশংসা করা হইরাছে; আর সেই পরিমাণে হিংসার
নিলাও হইরাছে। হিংসার ছইটি রূপ আছে; মাহবের
প্রতি হিংসা, এবং মাহবেতর প্রাণীর প্রতি হিংসা। সেই
অহুসারে আবার অহিংসাও ছই প্রকার। মাহবেতর
প্রাণীর মধ্যে আবার পশু বিশেব ভাবে উল্লেখবোগ্য; কৈন
না, বৈদিক বজ্ঞাদিতে পশুবলির ব্যবস্থা ছিল এবং সেই
হিসাবে পশুহিংসা হইত। যুদ্ধ ছাড়া মাহ্রব মাহবেকে
হিংসা করিবে, এরপ বিবি আর কোখাও নাই; আর, যুদ্ধ প্রতিয়োক করিবে, এরপ বিবি আর কোখাও নাই; আর, যুদ্ধ প্রবিষ্ঠিত ধর্ম। আচার্য্য ল্রোণ, তার পুর
এবং পরশুরাম প্রভৃতি বে অল্প ধারণ করিয়াছিলেন তাহা
নিয়মের প্রতিপ্রসব। স্কুতরাং প্রাচীন কালে হিংসাআহিংসার প্রভেদ এবং হিংসার চেয়ে অহিংসা বে শ্রেষ্ঠ এই
ক্যাটা স্পাই হইয়া উঠে বজ্ঞে পশুবধ লইরা।

বৈদিক ছিন্দ্ধর্ম আর বৃদ্ধের ধর্মের প্রধান পার্থক্যও এইখানেই। বৃদ্ধ বৈদিক ধর্মের বিহ্নছে বে অভিযান ঘোষণা করেন সেটাও প্রধানতঃ পশুবলিকে কেন্দ্র করিয়াই হইয়াছিল। শুধু বৃদ্ধ কেন, নান্তিক চার্বাকও বজ্ঞে পশুবদ্ধরে কম-বর্ধ মান অভিযোগের উত্তরেই বোধ হয় বৈদিক পশুতেরা একটা মত প্রচার করিতে থাকেন এই বলিয়া বে, বজ্ঞে নিহত পশুর সম্ব মুক্তি হইয়া যায়—সে সোজা স্বর্গে চলিয়া যায়; স্বতরাং বজ্ঞে ভাহাকে হত করিয়া তাহার প্রতি প্রকারান্তরে অন্তকম্পাই দেখানো হয়। ঠাটা করিয়া চার্বাক বলিয়াছিলেন, তাই বদি হয়, তবে বজ্ঞমান নিজ্ঞের পিতাকে কেন সেখানে হত্যা করে না প্রতিত্তিক প্রবর্গ বিশ্বর ইহার চেরে সহজ্ব উপায় স্থার কি হইতে পারে প্র

"পণ্ডদেরিহতো বজে স্বর্গগামী ভবিস্তৃতি, স্ব-পিত। বজমানেন তত্র কন্মার হন্যতে ?"

এই লইয়া অনেক আলোচনা ও বিতর্ক হইয়া থাকিবে।
ভাহার কতকটা আভাসমাত্র ভিন্ন ভিন্ন শাস্ত্রপ্রহে পাওয়া বার।
ক্রমশঃ বৃদ্ধেরই কর হইল; অহিংসা শ্রেষ্ঠ বলিয়া স্বীকৃত
হইল এবং পশুহিংসা-নিন্দনীর মনে করা হইতে লাগিল।

কিন্ত ভথাপি এক শ্রেণীর লোক বহিলেন, বেদে বাহাদের বিশাস টলিল না। বেদে হিংসা বিহিভ বহিয়াছে, অবচ বৃক্তি বারা হিংসার সমর্থন কঠিন; স্বভরাং মীমাংসা नैाज़ारेन—'অহিংসা শ্রেষ্ঠ ধর্ম সন্দেহ নাই, কিন্তু ধেন-বিহিত হিংসা তো হিংসা নয় !'

"বা বেদ-বিহিতা হিংসা ন সা হিংসা প্রকীর্ষিতা।"

মন্ত্র এই মত প্রহণ করিরাছেন। বর্তমানেও গোঁড়া
বান্ধনদের মধ্যে অনেকে এই মত অংশতঃ অন্ত্রসরণ করেন।
তাঁহার। রথা-মাংস্ক প্রহণ করেন না, অধ্চ নিরামিবাশীও নছেন।

আন্দানের মধ্যে অনেকে এই মৃত অংশতঃ অনুসরণ করেন।
তাঁহারা বৃধা-মাংদুগ্রহণ করেননা, অধচ নিরামিবাশীও নহেন।
আবার অনেকে বেদে আস্থাবান্ হইয়াও—কোন্ যুক্তিতে
আনি ন:—পশুবলি এবং মাংসাহার সমর্থন করেন না।

ভবভূতির 'উত্তর-রামচরিতে'ও এই ছই শ্রেণীর ঋষির— ব্রাহ্মণ এবং ক্ষরিয়ের—দাকাং পাওয়া বায়। কাহারও আপ্যায়নের জন্য মধুপর্কে বংসভরী, মহোক বা মহাজ নির্বপিত হইত, আবার কাহারও জন্য নির্মাংস—শুধু দধি-মধু-রচিত—মধুপর্ক দেওয়া চইত।

वर्जनात भर्यव सक हिनारव পश्चवध हिन्सू । सूननमान उड़ धर्म हे वहिन्ना । स्व त्यारिव उपत साधूनिक निक्कित स्थानि ना । क्वि त्यारिव उपत साधूनिक निक्कित स्थानि साम भर्म भर्म निक्कित स्थानि साम स्थानिक पिक्कित स्थानिक पिक्कित स्थानिक पिक्कित स्थानिक प्रशास स्थानिक स्थानिक प्रशास स्थानिक स्थ

পশুবধের বেলার বেমন স্বীকৃত হইরাছে তেমনই সাধারণ ভাবে স্বীবমাত্রের বেলারও স্বহিংসাকে প্রশংসনীর মনে করা হইরাছে। স্বীবে দরা, বিপন্ন স্বীবের প্রতি স্বয়কশা বেমন প্রশংসার বিবর, তেমনি বিপন্ন নর, এমন কি হিংসা করিতে সমর্থ স্বীবের প্রতিও স্বহিংসা প্রশংসা পাইরাছে। একটা ক্রতরের প্রাণ রক্ষা করিতে গিট্টা নিম্নের মাংস দান করিয়া শিবি রাজা মহাভারতে প্রশংসা লাভ করিয়াছেন। এখানে বিপন্ন কণোতের প্রতি বেমন দরা, হিংল্ল শ্রেনের প্রতি তেমনি স্বহিংসা প্রকাশ পাইরাছে। শ্রেনটিকে হিংসা করিয়া, হত্যা করিয়াও রাজা কপোতের প্রাণ রক্ষা করিতে পারিতেন, কিছু তাহা করেন নাই; এবং সেইম্বর্ট তাহার বেশী প্রশংসা।

বে ছিংসাকে মছুবেডের জীবের বেলার প্রশংসনীর মনে করা হইবাছে, সেইটিকে বে মাছুবের বেলার উচ্চ প্রবৃত্তি মনে করা হইবে, ভাহাতে আর সম্পেহ কি ? বুজের এবং ঐটের ধর্মে বিশেব করিরা ইহার প্রশংসা রহিরাছে। ঐটের পূর্বে নীতি ছিল—'চোধের বদলে চোধ আর দাতের বদলে দাত।' বে অপরের চোধ বা দাত নই করিবে, সে নিজের সেই অল হারাইয়া সে পাপের প্রায়শিত করিবে এবং সে অপরাধের শান্তি লইবে। ইহাতে ক্ষমার কথা নাই—হিংসার বদলৈ হিংসা রহিয়াছে। কিন্তু ঐটের শিক্ষার্ম 'ভান গালে চড় ধাইলে বাম গাল ফিরাইয়া ধরা' উচ্চ ধর্ম বিলার প্রচারিত হইল। প্রীটের বহু পূর্বে বৃদ্ধও এই ধর্ম প্রচার করিয়াছেন। অকোধ ছারা ক্রোধকে, অহিংসা ছারা হিংসাকে জয় করিবে—এই মহুৎ নীতি ভিনি নানা ভাবে প্রচার করিয়া গিয়াছেন।

বৃদ্ধের এই শিক্ষা হিন্দু অবহেলা করিতে পারে নাই।
কিন্ধু পশুবধের বেলার বেমন এখানেও তেমনই এই নীতি
লীকার করিয়াও ইছার একটা প্রতিপ্রসব বাহির করা
হইয়াছে। পশুবধের বেলার বেমন বেদবিহিত হিংসা, হিংসা
নয় বলিয়া ঘোষণা করা হইয়াছিল, এখানেও তেমনই মুছে
হত্যা হিংসাপদবী-বাচা নয়, এই সিদ্ধান্ত গ্রহণ করা
হইয়াছে। গীতাও বলিয়াছেন, মুদ্ধ বে শুধু অধর্ম নয়, এমত
নহে, ক্ষরিয়ের পক্ষে উছা শ্রেষ্ঠ ধর্ম।

'ধৰ্মান্ধি যুকাৎ প্ৰেয়োহন্ত ক্ষত্ৰিয়ন্ত ন বিছতে।' অহিংসা ধৰ্ম সন্দেহ্ নাই; কিন্তু যুক্তও ধৰ্ম; স্ক্তরাং যুক্তের বাহিবে বে হিংসা ভাহাই শুধু নিন্দনীয়।

যুদ্ধ একের সদে একের হইতে পারে—বাহাকে
সাধারণতঃ দশ্ব-যুদ্ধ বলা হইত; আবার বছর সদ্ধে বছরও
বুদ্ধ হইতে পারে। হিংসাও তেমনই ব্যক্তিতে ব্যক্তিতে
অথবং জাতিতে জাতিতে দেখা দিতে পারে। হিংসার
বখন নিন্দা করা হয় তখন এই প্রভেদ অফুরেখ করিয়াই
নিন্দা হয়। সাধারণ ভাবে হিংসা উভয়এই নিন্দনীয়।
আবার যুদ্ধকে বে প্রতিপ্রস্ব মনে করা হয়, তাহাও উভয়
প্রকার যুদ্ধকে বেলায়ই করা হইয়া থাকে। কিছু প্রশ্ন এই—
সভাই কি যুদ্ধের হিংসা অহিংসার সমত্ল এবং প্রশংসার
বোগ্য ?

আমাদের চারিজনীতির একটা বৈশিষ্ট্য এই বে, ব্যক্তির আচরণে বে জিনিসটার আমরা নিন্দা করি, জাতির আচরণে ঠিক সেই জিনিসটি নিন্দনীর তো নরই, অনেক সময় প্রবংসাও পাইরা থাকে। রাজনীতি বলিরা বে জিনিসটি আছে সেটি সাধারণতঃ ব্যক্তিগত চারিজনীতির উধ্বেণ্টি একেশে কোটিল্য এবং ভাঁচার ভাবক ও শিশ্রেরা এই মত সমর্থন ও প্রচার করিরাছেন। আর ইউরোপেও কোটিল্যের লোসর ম্যাকিরাভেলির অন্ত নাই। কুটনীডি বলিরা রাজনীতির বে নৃতন অন্থ উপজাত হইরাছে, তাহাতে সত্য অপেকা সত্যের অপলাপ, একাধিক অর্থে বাক্যপ্রয়োগ, প্রয়োজনমত প্রতিশ্রুতিতক প্রভৃতি উচ্চ শ্রেণীর বৃদ্ধি বলিয়া প্রশংসিত হইয়া থাকে।

নীতির এই বৈভবিচার হিংসার ক্ষেত্রেও প্রবোজ্য। चहिংमा माधादनछाटन উচ্চধর্ম বলিয়া चोक्नछ हहेलाও জাতিতে জাতিতে বেখানে সম্পর্ক, সেখানে ত্যাগ, ভিতিকা ও অহিংসাকে তত বড় করিয়া কেহ ত এখনও দেখেন নাই। এই কথাটাই ক্লমেশীয় ঔপস্তাসিক ভট্যব্যেভন্ধী ভাহার এক বইমে তুলিয়াছেন; এই ক্পাটাই খে সদেশীয় দহা ও সেকলবের সেই পুরাতন, বছ-বিদিত কথোপকথনে প্রকাশ পাইয়াছে। একজনকে যে খুন করে, त्म धूनी, व्यवदारी, निस्मनीय ; এक ब्रत्यद विख त्य व्यवहर्व করে, সে চোর, অপরাধী, শান্তির যোগ্য। কিন্তু গোটা दिन र नुष्ठेन करत, नक नक लारकद शाननारमद र कांदन रम, रेजिरान जाराटक छेखन्दः नैमालन काट्य मराशुक्त, বীর বলিয়া প্রতিপন্ন করিয়া খাকে ৷—বেমন, নেপোলিয়ন, বেমন সেকলর। কিছু বাস্তবিকই প্রবৃত্তিহিসাবে উভয়ত্ত কোন তঞ্চাৎ আছে কি ?

কিন্তু তফাং আমরা করি। কোনো যুক্তি নাই, বিচার করিয়া দেখিলে অসত্য মনে হইবে, তথাপি মাহ্বৰ এই প্রেডেদ করিয়া আসিতেছে। ইহার একটা অর্থ এই বে, মাহ্ব নিজেকে বতটা সভ্য, সচ্চরিত্র ও ধার্মিক মনে করে, প্রকৃতপক্ষে সে ততটা নয়। মাহ্বের ভিতরে পশু বিশ্বমান রহিয়াছে; সে পশু শিকল দিয়া বাঁধা আছে মাত্র, কিন্তু বশ্বমানে নাই। সমাজে বাস করার সময় সে সভ্যভব্য আচরণ করে—সমাজের শাসনে, শিকলবাঁধা পশুর মত। কিন্তু বেধানে এই সমাজ-শাসন নাই অথবা শিথিল—বেমন রাষ্ট্রে রাষ্ট্রে সম্পর্কের বেলায়—সেথানেই এই পশু ভার বিকট নয়ভা লইয়া আত্মপ্রকাশ করে।

বৃৎদর সময় হইতে আরম্ভ করিয়া আৰু আড়াই হাজার বংসর ধরিয়া আহিংসার অবগান করার পরেও—বৃদ্ধ এবং ব্রীষ্টের শিক্ষার পরেও—আৰু জগতে হিংসার কি উন্নত্ত, বীভংস নৃত্যই না আমরা দেখিতেছি! শক্রুকে হত্যা হিংসা। কিন্তু এই হিংসার কত রকম প্রশংসাই না আমরা তনিতেছি। চিত্রে বাক্যে, আলোকে অন্ধলারে, আলোক-অভে, রাভার কোণে, চলভ গাড়ীতে—নানা ভাবে শক্রহত্যা বড় ধর্ম, এই ক্থাটাই সর্ব্র প্রচারিত ও বিজ্ঞাপিত হইয়া থাকে।

वार्डेद वहुद क्वशारी ७ छन्द। देश छन् चार्वद वहन, रकारना डेक्ट नीडि किश्ता चार्खिक क्षेत्रा चर्चना আকর্ষণের উপর ইহার ভিত্তি নর। স্বার্থ ত্যাগ করিয়া এই যৈত্রী কেহ রক্ষা করে না: আর স্বার্থে আঘাত পড়িলে মুহুর্জের মধ্যে ভাসের খরের মড উহা ভালিয়া পড়ে এবং এক টকরা ছেড়া কাগজের মত এই মৈত্রী ত্যাগ করিতে त्कह विधा करव ना। त्वनी नीर्च नित्नव हेिछ्हान चाँछिवाव প্রয়োজন নাই. ইংরেজ ও ফরাসীরা শতাব্দীর পর শতাব্দী ধরিয়া লড়াই করিয়াও বর্ত্তমান শতান্দীর প্রথম ভাগে হঠাৎ ম্বন্ধদ হইয়া গেল এবং গত যুদ্ধের প্রারম্ভেও তাহাই দ্বিল, এবং এখনও ভাহাই বহিয়াছে। ইংলণ্ডের ও ক্লিয়ার 'সিংহ-ভন্নকের' কলহ ইতিহাসপ্রসিদ্ধ ছিল। কিন্তু ১৯১৪ সালের মহাসমরে ভাহারা এক পকে। আবার কশিয়া বেই বোলশেভিক বনিয়া গেল. অমনই তাহাকে অপাংক্ৰেয় ক্রিয়া রাখা হইল। কিন্তু দিতীয় বিশ্বযুদ্ধে আবার প্রয়ো-অনের তাগিদে তাহাদের সৌহার্দ জমাট বাধিতেছিল— हेमानी श्वावाद, हा ध्या अञ्च मिरक वहिराज्य । आराजद যুদ্ধের সময় বাহারা এক পক্ষে ছিল, কুড়ি বৎসর পর তাহা-দেব কেচ কেচ আবাৰ প্ৰস্পবের শত্রু হইয়া গিয়াছে---त्यम हेरमथ ७ जानान।

ভালো-মন্দের কথা বলিতে চাই না। উত্তরকালে কোথার গণতত্র কারেম হইবে আর কোথার বৈর-শাসন প্রবর্তিত হইবে, তাহাও ভাবিতেছি না। এই দৃটাভগুলি হইতে দেখা বাইবে বে, রাষ্ট্রের শক্রতা ও মিক্রতা আর্বের উপরই প্রতিষ্ঠিত; আর, এই আর্থও আবার অবহার পরি-বর্তনে পরিবর্তিত হয়। আদর্শের কথা, নীতির কথা আদে উঠে না, এমন নয়। কিছ হায়ী হদমের বছন—ব্যক্তিতে ব্যক্তিতে বদ্ধুত্ব বলিলে বাহা বুঝায়, তেমন কিছু ইহাতে কোথাও আছে বলিয়া মনে হয় না। শক্রতার মধ্যেও অহি-নকুলের সহছের মত নিবিড হেতু কোথাও নাই। প্রায় অভিয় আতি ও এক-ধর্মী হইয়াও ইংলও আর্বানীর শক্র আর অবহাবিশেবে ভিয়ধর্মী, ভিয়ভাবাভাবী আপান স্বল্ব। ব্যক্তিতে ব্যক্তিতে বে সৌহার্দ বা শক্রতা হয়, তাহার প্রতিষ্ঠা ইহার চেরে দুচু।

বাট্রের মিত্রতা কিংবা শক্রতা কোন প্রাকৃতিক নিয়মের উপর প্রতিষ্ঠিত নর। এই অদৃঢ় ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত জাতীর হিংসা কিংবা জাতীর মৈত্রীর কথা এত জোর গলার বলার কি সার্থকতা থাকিতে গারে? শক্রকে মারা উচ্চ নীতি—উচ্চ অনেশ-বাংসল্য এবং বড় কর্তব্য বলিয়া ঘোষিত হয়। কিছ শক্র কে? আজ বাহারা মারা-মারি কাটাকাটি করিতেছে, কাল ভারায়া হাতে হাত

মিলাইরা ঋক টেবিলে বদিরা থানা থাইবে, এই দুখ্য অকলনীর নর। অতীতে এরপ ঘটিরাছে, ভবিস্ততেও ঘটিতে পারে। হুতরাং বে হিংসা ও বেব উদ্রিক্ত করা হুইতেছে, তাহার তো কোন নিদিষ্ট প্রয়োগকের নাই। তথু একটা নিন্দিত প্রবৃত্তিকে জাগরুক রাথার চেষ্টা হুইতেছে মাত্র।

একটা কথা আছে, বিপদে মাহ্ব হরির নাম লয়।

যুক্রে বাজারেও অনেক বড় বড় বুলি শুনিবার সৌভাগ্য

আমাদের হয়। ১৯১৪ সালের বুদ্ধে উড়ো উইলসনের 'চৌদ্ধ

দখা' প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিল। ফলে কুড়ি বংসর পরেই

গৃথিবী আর একটা অধিকতর নৃশংস যুদ্ধে লিগ্ন হইয়াছিল।

এই যুদ্ধেও 'অভলান্ধিক সনদ', 'ক্যাসাব্লাহা বৈঠক',
'কুয়েবেক সিয়ান্ধ' প্রভৃতি মানবের ভাগ্যাকাশে জ্যোভিয়ান্

ভারকার মত মাঝে মাঝে দেখা দিতেছিল। কিছু এই

সমন্তের পশ্চাতে বক্তা-শ্রোভার পরস্পারের স্থার্থ ও সমরনীতি ছাড়া সভ্য সভ্যই গভীরতর ভত্ব এবং উচ্চতর আদর্শ

কিছু বহিয়াছে কিনা, ইতিহাসই কেবল ভাহার বিচার

করিতে পারিবে। যুদ্ধের উত্তেজনার মধ্যে বিশ্বমানবের

হিত্তের কথা চিন্ডা করিবার মত দৈর্ঘ বাত্তবিকই মান্ধ্যের

থাকে কি?

কুককেজে গীতা কথিত হইরাছিল সত্য। তথন সেটা
সভব ছিল। রাজে বৃদ্ধ ইইত না। প্রাত্কালে শক্তকে
সতর্ক করিয়া দিয়া পরে আক্রমণ করা হইত। স্ত্তরাং
ধীরে স্থান্থ ধর্ম-আলোচনা সেধানে অসম্ভব ছিল না। কিছ
বর্তমানে তাহা সম্ভব কি । তথাপি উচ্চপ্রেণীর তম্বক্ষা
আমাদের কানে পৌছে। অদূর ভবিষ্যতে জগৎ অভাব
অধর্ম অত্যাচার হইতে বৃক্ত হইবে—বাক্যে ও ধর্মে পূর্ণ
স্বাধীনতা লাভ করিবে এবং রাইও প্রয়োজনমত—এ সব
কথা তো আজ প্রাত্তরাশের সঙ্গে আমরা রোজই গলাখঃকরণ করিতেছি। কিছ সঙ্গে সঙ্গে শিধিতেছি হিংসাকে
বড় করিয়া দেখিতে !

অহিংসার কথা আৰু কেছ বলিতে সাহস করে না।
কারণ শত্রুকে ত ধ্বংস করা চাই-ই। 'ভান গালে চড়
খাইরা বাম গাল ফিরাইরা ধরিলে' শত্রুর ধ্বংস হর না—
সে আকারা পার। স্তরাং 'মার মার' 'কাট কাট', এই
ধ্বনি আৰু আকাশে বাতাসে সর্বত্র শব্রিত হইতেছে।
কেছ সাহস করিরা অহিংসার কথা বলিতে চাহিলে কারাগারের বাহিরে ভাহার স্থান থাকিবে কিনা সন্দেহ।
পৃথিবীতে আৰু নিরপেক্ল লোকেরও অভাব। নিরপেক্
ক্লেও খুব বেশী নাই। স্পেদ, পড়ু গাল, আরার্গত ও
সুকী প্রস্তুক্তি করেকটি হোট হোট দেশ বার বিলে আক

সমন্ত দেশই কাহারও না কাহারও শত্রু হইরা আছে।
সমগ্র মানবজাতি এক বীতৎস, সুদ্ধ কাড়াকাড়িতে মন্ত
হইরা পড়িরাছে। ইহার মধ্যে জগতের ভবিবাৎ পরিকল্পনার কথা বলিও বা শুনি, অহিংসার কথা তো শুনি
না। ভবে কি এখন হইতে হিংসা একটা বড় ধর্ম বলিরা
গণ্য হইবে ?

মাঝে মাঝে মাছবের গৃহীত নীতির নৃতন করিয়া পরীকা হয় ত বা দরকার। ইতিহাসে তাহা ঘটিয়াছেও বহবার। অনাব্য ইহলী আতিতে জন্ম লইয়া বীও বে নীতি শিকা দিয়াছিলেন, গত শতানীতে 'নীট্শে প্রভৃতি দার্শনিকের কাছে ভাহার পুনবিচার প্রয়োজন হইয়াছিল এবং বিচারে ভাহার অধিকাংশই বর্জনীয় প্রতিপন্ন হইয়াছিল। বীওর মোলায়েম ধর্ম কাপুক্রবের ধর্ম—কীতদাসের নীতি, সিংহবিক্রমী আর্বের নয়, একবা আমরা তবন ভনিয়াছিলাম। আবারও কি এই কবাই ভনিব ৈ নহিলেছিংসাটা এত বড় হইয়া পড়িল কেন?

বধন ৰড় বহে, বৃদ্ধিমান লোকে তখন কোথাও আত্ৰয় महेबा मित्रवा माजाव जवर अंखेंगांक वहिया वाहेरे एम :--উহার সমুখীন হইয়া উহার সঙ্গে লড়াই করে না। শক্তি-দৃপ্ত, ক্ৰুদ্ধ জাতিৱা বধন উন্মন্ত সংগ্ৰামে লিপ্ত পাকে, ভধন ভাহাদিগকে ধর্মের কথা, নীভিন্ন কথা শোনানো সম্ভব নয়। ভাহা ছাড়া, বাহারা সে-সব কথা বলিবে, ভাহারাও কোন না কোন জাতির অস্তভুক্তি—তাহাদেরও দেশায়-বোধ আছে—তাহারাও শত্র-মিত্রের পার্থক্য করিয়া চিস্তা করেন-সীভায় উপদিষ্ট সমদৃষ্টি তাঁহাদের থাকে না। कार्या फेक विश्वाधातात (धर धाराता शतारेता कालान। উগ্র স্বাভীয়তা তথন ভাহাদিগকেও স্বভিত্বত ক্রিয়া ফেলে. উন্নতত্ত্ব মানবতা তথন ব্বনিকার অম্ভরালে সরিয়া দাঁডায়। বদিই বা তেমন মহাপুক্ষ কেহ কোনো দেশে থাকেন, ভবে ভাহার অদুটে কি ঘটে ? যাহাদের হাতে ক্ষমতা, শক্রর প্ৰতি হিংসাৰ তাঁহাদেৰ মন আছেন্ন এবং ক্ৰোধে ভাঁহাৰা অভিভূত। স্থতরাং সেই দেশে সেই মহাপুরুষের স্থান হয় এমন জায়গায় বেখান হইতে তিনি কাহাকেও কিছু चनारेट भारतन ना। ১৯১৪ बीहोरसत गुरबत मन्द ইংলঙের মন্ত দেশেও বে কোন দার্শনিক এই প্রকার মন্ত-প্রকাশের জন্য কারাগারে নিকিপ্ত হইয়াছিলেন, ভাহাতে ইহাই প্রমাণিত হয়। আর বিতীয় মহাবুদ্ধের সময়েও মহাত্মা গাড়ীর মত লোক ছিলেন কারাপ্রাচীরের অন্তরালে ?

আনল কথা এই বে, বুদ্ধে নত্য সত্যই খুব বড় নীতি কিছু থাকে না। পাণুপুৰোৱা বাজা হইতে বঞ্চিত না হুইলে কিংবা গৱে ছুৰ্ব্যোধন কুক্ষের সালিশী বানিবা সইলে কুৰুকেতেৰ বৃদ্ধ হইত না। বৃদ্ধকেতেও অব্দুনের বে ধর্বুদ্ধি উদিত হইয়াছিল, সেটাকে ক্লৈয়া বলিয়া উপহাসে উড़ाইया ना पितन इत्र छ ति नड़ाई दहेख ना। नयात्व राक्षण त्यंगीरा त्यंगीरा कमह हम-नाहारमय क्षाइ चारह আর বাহাদের নাই তাহাদের মধ্যে, তেমনই অগতে বাজে বাজ্যেও তাই। আধিক সম্পদ সমাজে এখনও কেহ বেৰী অধিকার করিয়া রহিয়াছে, আর কাহারও ভাগ্যে উহা নিভান্তই অপ্রচুর। সেইজন্য শ্রেণীতে বিভক্ত মানব-সমাজ কলহের হাত হইতে এখনও মুক্ত হইতে পাবে নাই। সমস্ত পুৰিবীৰ প্ৰাকৃতিক সম্পদ্ধ তেমনই বিভিন্ন জাতি ও দেশের মধ্যে সমানভাবে বণ্টিত হয় নাই। কাছারও বহি:সাম্রাজ্য বহিয়াছে, উপনিবেশ বহিয়াছে, নিজের দেশের সম্পদ ছাডাও বাহিরের অনেক সম্পদের উপর অধিকার রহিয়াছে; আর কেহ বা অত্তে এবং বণ-কোশলে হীন না হইয়াও ঐ সকল সম্পদ হইতে বঞ্চিত। স্থতরাং লডাই অনিবার্য হইয়াছে। লোভে লোভে, ভোগের সামগ্রী লইয়া হব। ইহার মধ্যে ভ্যাগের সান नाहे काथा - जागी कहहे हहेए हा मा। আদর্শকে বান্তবে পরিণত করিবার জন্ত কেহ প্রাণ দেয় কিনা সন্দেহ।

কিছুদিন আগে এদেশে একটা ভবিশ্বদাৰী প্রবন্ধের চলিতেছিল বে, সভাষ্গ শীত্রই ফিরিয়া আসিবে। তুর্ভাগ্য-ক্রমে ফিরিবার ভারিব চলিয়া গিয়াছে, অবচ সভাষ্গ বাত্তবিক আসে নাই। স্থতরাং আমরা এবনও কলির জীব। কলিকালে—হিন্দুদের পক্ষে অস্ততঃ—মহর্ষি পরাশরের শতিশান্তই মাস্ত।

"কলো পাবাশরী শ্বভিং"।
এই পরাশরের উপদেশ এই বে,
"খড় গেনাক্রম্য ভূঞীত বীরভোগ্যা বহুদ্ধরা"
খড়্গ দ্বারা ক্তম করিয়া ভোগ করিবে, বহুদ্ধরা বীর-ভোগ্যা।

হিন্দুর অক্ত শাস্ত্র সকলে না মানিলেও এইটুকু কার্য্যতঃ
সকলেই মানিভেছে। পৃথিবী বে বীরের ভোগ্যা, ইহা
দেখাইবার চেটা হইডেছে। সমস্ত মানবজাভিকে
জড়াইরা এক বিরাট শক্তিপরীকা আজ আরম্ভ হইরাছে।
ধনবল, জনবল, অস্ত্রবল কে কত সংগ্রহ করিতে পারে
দেখিবার চেটা চলিভেছে। অক্ত কথার বলিভে গেলে
বলিভে হয়, কে বড় বীর, ভাহার পরীকা হইডেছে।
বস্তুর্বা বে শেব পর্যন্ত বীরেরই অক্সারিনী হইবেন, সে
বিবরে সম্বেহ নাই। ইহার ভিতর অলোভ, অক্রোম,
অহিনোর ক্লান কোণার ?

किन्न अरेबार्सरे कि त्वर १ अवटी क्वा चाह्न दि, সৰ মেঘের ভিতরই একটি রূপালী আলোর বেখা থাকে। ভ্ৰমসাচ্ছন্ন মানব-মন আৰু বে ক্ৰোধে উন্মন্ত হইয়া উঠি-য়াছে, লোভে যোহিত হইয়া গিয়াছে, শক্তময়ের জন্য উদগ্রীব হইব। পড়িরাছে এবং হিংসার সদসদ-ভান পরি-ভ্যাগ করিয়াছে,—এর পরিণাম হয় সভ্যতার সম্পূর্ণ ধ্বংস, নম্ব ত আ্ব এক ধাপ উন্নতি। বর্তমানে যুষ্ধান পক্ষদের মধ্যে কাহাকেও অভিবিক্ত অসভা কিংবা অভিনিক্ত ধার্মিক মনে করিবার হেতুনাই। যুদ্ধে নিপ্ত হটয়া লুদ্ধ, ক্রন্ত্ব ও হিংশ্ৰ হইয়া উঠিলেও সম্ভাতার শুরে জার্মান-জাতির,স্থান ব্দগতের কোন ব্দাতির নিয়ে নয়: আর. আমাদের প্রতি-বেৰী হইৰেও জাপান আমেরিকার চেয়ে বেণী সভা কিংবা বেশী ধার্মিক নয়। কম-বেশী সমস্তবের সভা ভাতিরাই चाक ममरव निश्व। ইहावा अथन याहाहै वनुक ना रकन, — যুদ্ধের ক্লান্তি যথন আসিবে,—জন্ম-পরাজন্ম বাহারই হউক না কেন, কলহের সমাপ্তি যথন ঘটবে—যথন এই বর্তমান ঘতীতে পরিণত হইবে—তথন কি ইহারা একবার খতিয়ান क्रिया प्रिथित नां, ভবিশ্বং মানব-সমাজের জন্য ইহারা কি দিয়া যাইতেছে ? তখন কি ইহারা ব্ঝিবে না, লুক काफ़ाकाफ़ि भूगा नव जवर हिश्मा मद क्लाखरे निमनीय ? ৬ধু ব্যক্তির সহিত ব্যক্তির সম্পর্কে নয়, জাতির সহিত জাতির সম্পর্কেও উহা অপুণ্য।

সমাজে আর্থিক সম্পদ বন্টনের তারতম্য দ্র করিয়া
সমাজকে কলহ-মুক্ত করিবার কথা মাহ্যর ত ভাবিয়াছে।
কৃতকার্থ কতদ্র হইয়াছে সে সম্বন্ধে মততেল থাকিলেও
ইহা ঠিক বে, কশিয়াতে এই কলহ দ্র করিবার চেটাও
হইয়াছে এবং এখনও হইতেছে। তেমনই জগতের বাবতীয়
প্রাক্তিক সম্পদ্ বিভিন্ন জাতির মধ্যে ব্যাসম্ভব সমান
ভাবে এবং ক্লায়সঙ্গত রূপে বন্টন করিয়া দিতে পারিলে
মুক্রের কারণও ত তিরোহিত হয়। সেটা কি সম্ভব নয়?
কথাটা ইতিমধ্যে উঠিয়াছে। ইংলণ্ডে ও আমেরিকায়
চিম্বাশীল ব্যক্তিরা কেহ কেহ একাধিক বার সে কথা বলিয়াছেন; হয় ত অত্যম্ভ চাপা গলায়, তথাপি বলিয়াছেন।
ভাহাদের দেশ শেষ পর্যন্ত কতটুকু স্বার্থত্যাগ করিতে
পারিবে, ভবিয়্যৎ জানে। তথাপি কথাটা বে উঠিয়াছে,
ইহাই মেঘের মধ্যে ক্লপালী জালো।

এই বন্টন কৰিয়া দিবাৰ জন্য উধৰ্ত ব তৃতীয় শক্তি কোথাও পাওয়া বাইবে না। উল্লিক্ত ধৰ্মবৃদ্ধি লইয়া জাতিসমূহের নিজেদেবই উহা কৰিতে হইবে। কর্তব্য বীকৃত হইবে। বাগড়া না কৰিয়া আপোৰে বাঁটিয়া লওৱা উচিত—এই কথাটাও বে

আল কেছ কেছ বলিভেছেন, ইহাই মেষের কোলে কুণালী আলো।

"হডো বা প্রাঞ্চাদি স্বর্গং জিম্বা বা ভোক্যাদে মহীং"

বুকে নিহত হইল্পে স্বৰ্গবাস আর জয়ী হইলে পৃথিবী-ভোগ, এই বলিয়া গীতা ক্ষজিয়ের ধর্মযুক্তর প্রশংসা করিয়া-ছেন এবং ক্লফ অজ্জ্নকে যুদ্ধে উংসাহিত করিয়াছেন। শক্রজয়ী বীরকে আমরা বিজয়মাল্যে ভূষিত করি। শক্রজ্জারে অস্থানিহিত হিংসা এখনও বীরের ধর্ম। তাহার স্বর্গান করিরা এখনও করেন। বতই গর্ব করি না কেন, মাহুর আমরা খুব বেশী তত্র এখনও হই নাই। হিংস্প্র মত রক্তাক্ত লেলিহান জিহ্বা এখনও আমরা শক্রজ্জার পরিতৃপ্ত করিতে চাই। কিছ হিংসা হিংসাকেই উদ্রিক্ত করে। শক্রজ্গায়ে শক্রম্বুদ্ধি হয়—নৃতন শক্র হয়। ক্ষাত্রধর্মের দীর্ঘ ইতিহাসে আমরা ঘুরিয়া এই সত্যেরই সাক্ষাৎ পাই।

অলোভই লোভ জয় করে, অক্রোধ ধারাই ক্রোধকে বল করা যায়, আর অহিংসা ঘারাই হিংসাকে নভ করা চলে।

তবে কি শত্ৰুকে—আক্ৰমণকাথীকে সব ছাড়িয়া দিছে আত্মবক্ষা বলিয়া কি কোন জিনিস নাই? নিশুয়ই আছে। কি**ন্ত** হিংসাই কি **আত্মবক্ষার শ্রেষ্ঠ** উপায় ? উহাই কি বড় নীতি ? ব্যক্তির কিংবা জাতির বান্তব জীবন হিংসা বর্জন করিলে কিরূপ দাড়াইবে---কিরপে উহা পরিচালিত হইবে, সেটা খতম এর। নীতি হিসাবে অহিংসা শ্রেষ্ঠ, এইটি স্বীকৃত হইলে ঐ প্রশ্নের উত্তর আপনি মিলিবে। বাস্তব জীবনের কৃত্র কৃত্র জংশ কি আকার ধারণ করিবে, সাধারণ নীতি গৃহীত হইলে পর্ সে প্রশ্নের মীমাংসা অসম্ভব নয়। কিন্তু সাধারণ নীডি হিসাবে অহিংসা শ্রেষ্ঠ, একথা কি জগৎ মানিতে প্রস্তুত ? বীরধর্মের প্রশংসাকারীরা কি তাহা স্বীকার করিবে ? শক্তিমান বেমন ক্ষমাশীল হইতে পারে—শক্তির সংখ ক্ষমার বেমন কোন বিরোধ নাই, ভেমনই বীরও অহিংস হইতে পারে; বীরত্বের সঙ্গে অহিংসার মিলন অসম্ভব নয়, এই কথাটাই আমহা বলিতে চাই। আর ইহাও বলিতে চাই বে, বৃদ্ধ-খ্রীষ্টের আবিষ্ণুত ধর্মকে এখনও অধর্ম মনে ক্রিবার কোন হেতু মিলে নাই।

পৈতৃক সম্পত্তি লইয়া ভাইবে ভাইবে লাঠালাঠি করে; কিছ উহা অশোভন, অভ্যন্ত নিন্দনীয়। কেহ কাহারও ন্যায় অধিকার না ছাড়িয়াও লাঠালাঠি পরিভ্যাপ করিছে পারে। ভেমনই জগভের ভোগ্য ও প্রাকৃতিক সম্পরের কন্য আভিতে আভিতে বে কাড়াকাড়ি এবং যারামারি চলিতেছে, তাহাও নিশ্বনীয়, অপ্রশংসনীয়। কেছ কাহারও বাঁচিবার অধিকার—এমন কি বড় হইবার অধিকার পরিত্যাগ না করিয়াও কাঁচাকাটি বর্জন করিতে পারে।

শ্রাদ্ধে পিতৃপুক্ষের কাছে হিন্দু প্রার্থনা করে, 'গোজং নে। বর্ধতাং'—'আমাদের বংশ বাড়িয়া চলুক'। 'আর আমাদের বহু অন্ন হউক, অতিথি আফ্রব—মতিথি আসিয়া বেন ভাত পায়'। বংশের সঙ্গে সম্পদ্ধ বদি বাড়িয়া বায়, তবে ত লাভ্বিরোধ বর্জন করা একেবারে অসম্ভব হওয়ার কথা নয়। তেমনই, জগতের প্রত্যেক দ্বীপ এবং প্রত্যেক দেশের প্রাকৃতিক সম্পদ্দ বদি মানুষের আয়ত্ত হয় এবং বদি উহা বৃদ্ধিলাভ করে আর সঙ্গে বথাবথ ভাবে সকলের মধ্যে বিতরিত হয় তবে ত যুদ্ধ শুধু একটা নামে মাত্র পর্যাবদিত হইতে পারে। একবার একটা ধুয়া উঠিয়াছিল —যুদ্ধ বন্ধ করিবার জন্য যুদ্ধ করিতে হইবে। এইধানেই ত তাহার প্রশাস্ত ক্ষেত্র বৃহিয়াছে।

বর্তমানের কলহ বখন সমাপ্ত হইবে,—পরম্পারের আঘাতে কত-বিক্ষত মানব-সমাজ আবার বখন প্রকৃতিস্থ হইবে—লোভ বখন চরিতার্থ অথবা সংবত হইবে—ক্রোধ বখন শান্ত হইবে, আশা হয়, তখন মান্তব আবার এই উচ্চতর আদর্শের কথা ভাবিতে পারিবে। আশা হয়, অহিংসা পুনরায় ধর্ম বিশিয়া স্বীকৃত হইবে। সর্বজীবে না হউক, মান্তবের প্রতি মান্তবের হিংসা নিশিত হইবে। আর জাতির প্রতি জাতির বিবেষও প্রশংসার অবোগ্য বিবেচিত হইবে।

ৰিভীয় বিশ্বযুদ্ধ যখন চলিতেছিল তখন এই প্ৰবৃদ্ধ

লিখিত হইরাছিল। আন্ধ করেক বৎসর হইল সে বৃদ্ধ সমাপ্ত হইরাছে। ইতিমধ্যেই আবার দ্বীলানে কালো মেথের মত তৃতীয় বিশ্ব-মুদ্ধের সন্তাবনা অনেকে দেখিতেছেন। কিন্তু সলে আবার বিশ্ব-শান্তির কথাও অনেক শুনি। এইটি আশার আলো। কতটুকু এই আশা ফলবড়ী হইবে তাহা ভবিশ্বং বলিতে পারে। এখনও স্বার্থের সংঘাত, লোভের জিগীরা এবং পরস্পারের প্রতি সন্দেহ জগং হইতে দ্ব হয় নাই; ববং জাতিসমূহের পারস্পরিক সহতে উহা প্রচণ্ড ভাবেই বর্তমান রহিয়াছে। তবে আশার কথা এই বে, বিশ্ব এখন আর কৃত্র কৃত্র খণ্ড রাজ্যে বিভক্ত ও বিদ্ধির নয়। সমন্ত মানবজাতিকে এখন জাতি হিসাবে শ্বেত ও অশেত জাতিতে বিভক্ত মনে করিলে তৃল হইবে না; আর রাষ্ট্র ও সমাজের আদর্শে সাম্যবাদ ও গণতত্ত্ব এই চুইটি বিভাগই স্পাই।

স্তরাং বিশ্বকে, সমগ্র মানবজাতিকে, একীকরণের ক্রিয়া অনেক দূর বে অগ্রসর হইরাছে, এরপ মনে করা চলে। তবে ইহাও স্বীকার্ধ বে, এই চুইটি বিভেদের ভিতর প্রচণ্ড কলহের বীজ উপ রহিরাছে। বদি চুতীর মহাযুদ্ধ ঘটে তবে ইহারই জন্য ঘটিবে। যুদ্ধের ধারাই হুউক কিয়া অন্য উপায়েই হুউক এই কলহের বদি মীমাংসা হুইরা বায় তবে সমগ্র বিশ্ব এক, সমগ্র মানবজাতি এক, এই আদর্শটি কি তথনও স্থপ্তই থাকিয়া বাইবে? তথনও কি উহা রূপ ধারণ করিবে না? ভবিবাৎ হরত আমাদিগকে এক মানবজাতির ধারা অধ্যুবিত এক-বিশ্ব প্রদান করিবে অথবা বিশ্ব ও মানবজাতির ধ্বংসের কথা ভাবিবার জন্য মাহুবের মনকে প্রস্তুত হুইতে হুইবে।

## বনবাদে

#### ঐকালিদাস রায়

ৰৌৰন বাৰ নি একেবারে

'বন' বোর কেরি চারিপানে,
'বৌ' আহে ননের আঁবারে,

পঞ্চালোর্ডে আহি বন-বাসে।
লোকালর সমাজ সংসার

সবি বোর ক্টরাকে বন,
ভবি কাবে খাপ্য-ছকার,

মনে চলে অধ্য-ভঞ্জন।

ভীবনেরও 'ভী' হয়েছে দৌৰ
'বন'টুকু বাজি আছে ভার,
কে করিবে পথের নির্দেশ,
চারিছিকে গহন জাবার।
বনবালী এ বনে জোধার।
জোধা ভার বাদারী বাজার ?

# নদীর ডাক

# এননীমাধৰ চৌধুরী

নদী থকে ভাকিরাহিল। ভাকিরাহিল ও খনে নাবিরা আদিরা একটু বাঁচাইবে। নদী ওকে একটু আবর করিবে, ওর কণালে, ওর মাধার শীতল হাত বুলাইরা বিবে, ওর ঘন কালো দীর্ঘ কেশের মধ্যে বীরে বীরে অসুলী সঞ্চালিত করিবে, ওর পদকোরকের মত চোবের উপর আলসোহে একট চুলা বিবে।

ভক্তে বেৰিলা নদীর বুক অগাব নালার ভরিলা উঠে।
লাভি ওর সর্বাদেহ হইতে করিলা পভিতেছে। হালি ওর
কালো চোব হুটতে, পাংলা রাঙা ঠোঁট হ্বানিতে কুলের
গারে ভাহার রঙের বভ লাগিলা আছে। লাবণ্য ওর সবুক
লাজীবানার সভর্পন আভালে সুকাইলা আছে। দেখা অববি
ওর উপর নদীর বভ নালা, বভ স্বেহ পভিয়াছে। ভাই নদী
ওক্তে কাছে ভাকিরাহিল। ভাকিরাহিল ও অলে নামিলা
একট ইাভাইবে। ও সাভা দের নাই।

करन ७व वर ७व। धरे बांग हरे रहेन अशादव आस আসিরাছে। বিশ্বা মারের সঙ্গে, গাঁরের মেরেদের সঙ্গে ্বীরপনীতলার বাটে স্কালবেলা স্থান করিতে আসে। স্থান क्विए बार्ज क्रि के क्रम मार्थ मा। जमनत्रजी स्थातवा হাত ধরিরা টানে। ও বলে, সাভার ভানি না বে, ভূবে বাব। সদীৱা হাসিৱা উঠে। বলে, এত বছ বাছী মেরে, এত ভর কেব রে ? ভার, ভার। সে ভাসে না। হাত হাড়াইরা লইরা লে বার্টে টাড়াইরা হাসিতে পাকে। বিধবা वा राजन--वाकृ। धन्न वर्षम अठ चन्न, नारे-वा मानन। ঘটতে জল ভূলে যাধার দে যা। ভাহার সদীদের দিকে চাহিলা হাসিলা বলেন—হোট থেকে শহরে বাস করে এত তীকু হরেছে। কোমবিদ নদীতে, পুকুরে নামে নাই कि वा। अनिवा नकीवा शास्त्र। यस-छारे नांकि ? छारे नांकि ? जारांदा कननी जिंदा पर्के जिंदा कन जानियां अव যাবার চালিরা বের, বলে-বোস কলাবোঁ পিডিতে বোস। चावता (काबाद गारेख हि। कनती कनती पर्न पर्न चन चारावा धव मानाव ग्रामिवा (स्व । धव स्व वव रहेवा चार्म, ७ छेंद्रेश शानाव । दाविया विवया या अकृष्टे सारम ।

এননি করিবা তান সারিবা বিন্দা নারের নলে, সলী নেরেকের সলে অপসীভলার ঘাট হাছিরা ও এপারের গাঁরে চলিরা বার। চলিরা বাইতে বাইতে বকুল গাহুটার নীচে নকলে একটু হাছার। গাঁরের বৌধি বাহাকের কাঁবে কলনী আহে ভাহারা কাঁব বংলার। কপানের উপরে পঢ়া-ভিন্না চুল সরহিবা ও একবার বহাঁর বিকে ভাকার। ভার- পর পর করিতে করিতে সকলে নহীর আভালে চলিছা বার।

ল্পসীতলার বাট হাছিল। নদী পূর্বার্থে বাঁকিলাছে। ভারণরে আসে এপারে নেভাই ঘট। লোকে বলে এই বার্টে কাঁঠাল কাঠের ভজা পাতিরা ভাষার উপর ভাগত আহছাইত নেতা বোপানী অনেক দিন আগে সেই বৰম (रहना ७ निवन्त राहिता दिन। अभारत म्हारे पार्ड ওপারে বোড়াই পরের ঘাট। বোড়াই পর কে ছিল কেছ ভাষে না। কিছ ওপারের লোকেরা সে কথা খীকার করে ৰা। বলে, ঐ ভেঁতুল গাছের নীচে শীর সাহেবের আভানা ছিল। সেধানে বসিরা বসিরা তিনি দিনে ক্ষটকের বালা ভুৱাইভেদ আৰু বাৰে বাৰ হইবা বাছুৱ মাৰিৱা বাইবাৰ জভ সাঁতবাইৰা নদী পার হইতেন। পীর সাহেবের হাল যোজার হিল আক্ষীর শরীক। ভার আগে বাঞ্চিভেন ইভাবুল বুদুকে। ক্ষবের বাহপাছের অন্তরোধে কাবার মাট আবি-বার বত এক দিনে বোড়ার চড়িরা ইভাগুল বুলুক হইভে মকা সরীকে আসিলেন। কাবার মাটর দরকার হইরাছিল বাৰণাবেৰ কোলের ছেলেটার যালোয়ারী ব্যারাম সারাটবার ৰত। যভা শৰীকে আসিৱা ভাষার মনে কি বইল সৰ ছাভিয়া ছড়িয়া আরবী পঞ্চীরাজের পিঠে চড়িয়া এক রাবেয় মধ্যে উড়িরা আসিলেন আজমীয় শরীকে। আজমীয়ে বাভিবার সমতে আসম্বীর বাদশাহ ভাহার মুরীদ হইলেন। ভবে বাৰণাৰ মুৱীৰ ব্ইলে কি ব্যু তাঁবার ৰোভ প্ৰদ হাজিয় ক্ৰায় প্রির সাহেব উটিভেন বসিভেন। মহত্রৰ প্রন হাজির বাড়ী विन धरे गाँदा। चाक श्राव छिन कृष्ठि वरनव करेन छिनि अस्कान कविवादन। कांचा बदना चार गाँव। भवन-হাজির কথার পীর সাহেব বাহসাহের হেওছা ধনছোলভ কেলিয়া এই গাঁৱে চলিয়া খালেন। এই এামে থাকিবার লমরে ভাঁহার মহং কীর্ভিগ্রের ভালিকা এবনও ভৈয়ারী হয় नारे, धर्मान रहेए जिनि कान जरूरत सहान जिल्ला এ পৰ্যান্ত আবিহ্নত হয় বাই।

নদীর এণাবে নেতাই বাঁট, ওণারে বোড়াই পীরের বাঁট, প্রার সামনানামনি। এই ছুই বাঁট শিবনে রাখিলা মদী পার বাঁটা পর্যাত সোজা চলিরা সিরাছে। তারপর আবার বাঁজিরাছে বেখানে রাখাভালা তালগাহটা হাঁভাইরা আছে। বাজ পভিয়া গাহের বাখা পুড়িরা সিরাছিল ভাই নাম হুইরাছে রাখাভালা তালগাহ। পারবাটার এপারে রভাভালীর বন্দির, ওপারে সুবারর। রভাভালীর মন্দির হুইতে এড়টু ভকাতে বাঁ বিজে বোলা ভারগার হাটভলার ঘোট হোট একচালা বরগুলি। গুণারে জ্বাবরের কান্তে একটা বেডা শির্লগার আর বেগুবের ক্ষেত্র। ভারগর বাঁশবাড, বেগুবন, কলাগারের বাড়, আর-কাঁঠালের গারের আডালে এাবের বরবাড়ী।

শীতের সময়ে বর্ণন দলীর দল ক্ষিরা বার পার্যাটার ভবন বাঁশের সাঁকো পড়ে। নীচে ভিনবানা বাঁশ পালাপাশি বাঁণা, উপরে ভাল হিকে লখা বাঁশ বাঁণা বরিয়া পার হইবার দ্রুটা আবাঢ় মালে নহীতে বর্ষার দল আসিলে বাঁশের সাঁকো উঠিরা যায়, বেরা দৌকা চড়িরা ওপারের মাত্র এপারে আসে, এপারের মাত্র ওপারে বার।

আবাঢ় বাসে বছ গাঙের জল আসিরা বর্ণন নদীতে পদে,
নদীর জল ঘটার ঘটার বাছে। ধেবিতে দেবিতে কালো
জল বোলা হইরা বার। জলে জার লোভ আসে। বাঁলের
গাঁকো ভলাইরা যার। বাত্রী ও পণ্য লইরা নৌকার বাভারাভ
আরভ হর। কোথাকার বিল হইতে পুরুর হইতে হোট
হোট পানা ভাসিরা আসে নদীতে, কচুরী পানার বছ বছ বল
ভাসিরা আসে। লোভের বেগে ভাসিতে ভাসিতে চলিরা
বার। বছ বছ ভচুরী পানার ঘল নদীর কুল বেঁরিরা ভাসিরা
চলে, লখা ভাটার মাধার বেগুনী রঙের কুল বছ স্থলর
বেবার। ক্থনও ক্থনও স্বুদ্ধ রঙের লিক্লিকে সাপ ভাটা
ভভাইরা ভাসিরা চলে।

ষণগীতলার বাটের আগে ব'াকে আগিরা কচুরী পানার ফল বাবে বাবে আটকাইরা বার। ছোট ছোট বেরেরা কোঁড়ার বেগুলী ফুল লইবার ছড। সক্ষের একটু বড় ভাইরা ভাবাবের বর্ষার। বলে, ব্রর্ধার, হাত দিসনে, সাপ বাকে ওতে। লাটি দিরা ভাহারা পানা ঠেলিরা ক্ষের, বাভাবে আর আেত্রের টামে পানা আবার ভালিরা চলে।

মন্বীতে পুতৰ কল আলা দেখিতে ৰূপনীতলার বাটে ছেলে-বেৰো, বৌ-বিরা ভিড করে। আবাচের বৃষ্টি বুপ বৃপ করিবা নাবার পড়ে, তাহাদের আনক আরও বাড়ে। অবেলার কেহু কেহু কলে নামিরা পড়ে। হুই-চারট বৌধি এদিক ওবিক চাহিরা পাতীর আঁচল বিরা নাহু বরিতে বার। এ একটা আবোহ। ভারপর ভিকা কাপড়ে বাতী বার। বিভক্তী হরকা বিরা সভর্গবে বাতীতে প্রবেশ করে—বভরা বাহাতে লা বেবিতে পান।

প্রাবৰ স্থানে। স্বিরাষ স্থাইতে প্রবাট কাষার সুবিরা বার। বালবিল ভরিরা সিরা মধীর ক্ষেত্র লকে নিশে। স্থাইতে ভিজিষা হেলে মুলো বাহ বরিতে বাহির হর। কেবিতে কেবিতে নধীর পাকে কচুর বন বছ হইরা উঠে। কচুবনের বব্যে বছ বছ ব্যাও বিনরাত ভাকে। নাবে ধাবে পাপের ভাছা বাইরা নধীর ক্ষেত্র লাকাইরা প্রচে। নন্যার পূর্বা ভবিদ্যা এপাৰের লোক নদীতে সোলার সাপ ভাসাইরা দের। চালের ভঁড়ার বেহলা-সবিদর গড়াইরা কলার থোলে নদীতে ভাসাইরা দের। এপার ওপারের লোক বিলিরা হাটথোলার ব্যসার ভাসার গাল করে।

ভার খালে। ভার বালে এপারে রক্ষাকালীর পূজা হয়। ষ্টার পূজা। যেকা বসে, পরের দিব সে বেলা বাকে। দূর বেশ रहेरण कण वक वकरबंद भना त्वांबाहे त्वीका वांकी नांति। अछ बोका जारम व महीद कम रहना बाद मा। कमारवहांद्र वृष नार्त । बाबा एव । अभारतत बाबुता, (करनता मर्थत विद्विष्ठीत कृद्ध । नांबाश्य , वनवीत, প্রভাপাধিতা, এই সব वह नरेवा विरविधेद एव । श्रेशादवद लाक विदासिकांच प्रक्रिया बनादा बारन । नाहै (कहा, बान दहा, छविछवकादी (बहा, মৰুৱী করা পরসা বরচ করিরা মেলার সওদা করে। চার প্ৰসাৰ কিনিৰ চাৰ আনাৰ কিনিয়া ভাৰাৱা পাৰওৱালীৰ ৰোকাৰে গিয়া বলে। ধোনৰু বেওয়া পান বায়, টেডা মাৰ্কা বিভী কিনিয়া টানে, পাৰওয়ালীর দিকে ভ্যাবভেবে চোৰ ক্ৰিৱা চাত্ৰ, বোকার মত হালে। হল বাৰিৱা চাটাইছের উপর বসিরা সারারাভ কটক দাসের বাত্রা পোনে। স্বভন্রা-হরণ পালা। গৌভ হাভি ভাষানো চোরাভে চেহারার ৰমকালো শাভীপরা সুভন্তাকে দেবিরা ভাছারা বাহবা দের। ट्यादात विटक बाजा यानितन निरक्तमत्रं मर्या बाजाव शाज-পাত্ৰী সহত্বে নানা মছব্য করিতে করিতে, বাজার শোনা গানের কলি ভাঁৰিতে ভাঁৰিতে ধেৱা নৌকার চড়িয়া ভাৰারা ७भारत निरम्पत्व मारत हिन्दा बाद । त्व कर दिन त्वना हतन ক্ষেত বামারের কাল বন্ধ বাকে, সারা বিশ ভারারা এপারে ষেলার কাটার। কত বৃক্ষ কুর্ত্তি করে। বেলা ভালিয়া গেলে আবার বে বাহার কান্ধে মন দের। ভাঁতে হব লইরা, ৰামায় ভৱিভৱকারী, কল-বুল লইৱা, বভাৱ চাল, ভাল, সরিবা नरेश विका क्रिए चार्न ब्रभारत श्री-वाबारत। विनिन বেচিয়া সেই পরসায় বাছ কেনে খেলেখের কাছে. কেরোসিব তেল চিনি মসলা লবৰ জিনে মাৰব লা নিতৃত্ব ভালের र्वाकान स्रेटक, विकिष्ट किरन वर् शालब लाकान स्रेटक। नक्षम नावियां नमी भाव सरेवा छारावा क्षभाटन हनिया बाव ।

ওপারের লোকের হাতে চাব-বাস। তাহার। বাট হইতে
ক্সল উঠার আর সেই ক্সল বিজয় করে এপারের লোকের
কাছে। এপারের লোক গঞ্চ হইতে বিবিব কিবিরা আবিরা
সেই বিবিস আবার বেচে ওপারের লোকের কাছে। ওপারের
লোকের হাতে বাঁচিবার বাত ভোগাইবার তার, এপারের
লোকের হাতে গৃহহালীর প্ররোজনীর বিবিস সংগ্রহ করিবার
তার। ওপার হাতা এপারের চলে বা, এপার হাতা ওপারের
চলে বা। ওপারের লোকের সংব্যা বেনী। বাট বাহাবের
হাতে তাহাবের সংব্যা বেনী বুইরা বাঁকে। এপারের লোকের
হাতে তাহাবের সংব্যা বেনী বুইরা বাঁকে। এপারের লোকের

নংখ্যা কৰ। বোকানচাৰী, নহাকনী কৰিবা বাহাবা থাৰ— সংখ্যা ভাহাদের কম হইবা থাকে। হই বলের লেন-দেন এত বেশী হইলেও থাকে ভাহারা আলাবা, এক বল নদীর এপারে, অভ বল নদীর ওপারে।

ভাত্ৰ বাৰ আছিল আলে। এপাৰের গাঁৱের পুড়ব বোরা ভাত্র বান হইছে বিন গণে। আছিল পড়িলেই ভাহাবের বঙ্গবাড়ীর চিট্ট আলিবে– শ্রীনতীকে আনিবার জড় জোন্ ভারিবে নোকা পাঠাইৰ জানাইবেন। গাঁরের নেরেরা ভরে ভরে বাকে কবন ভাহাবের নইরা বাইবার জড় নৌকা রঙনা হইবার সংবাদ আলে। পুজার আলে বৌকিদের বাভারাভের নরঙন পড়ে। কেহ বার, কেহ আলে। বাপ, না, ভাই, বোন হাছিরা বাহারা বঙ্গরেবে বার—চোবের জল মুহিতে বুহিতে ভাহারা নোকার উঠে, লোকজন বাল বিহানা পোটলা-পুঁটলী নোকার চুলিরা দেব বাহারা বাপের বাড়ী আলে ভাহারা নৌকা ভাল কবিরা বাবিবার আলে নাবার বোনটা কেলিরা দিয়া লাক বিরা বাটে নামে। কড় হাসি, কড় কবা ভাহাবের মুবে।

আবোদ ভাষাদের বেশী বাষাদের বর কিছু খাবীন আর নৌবীন, নিজেরা বৌ লইরা বাইবার জভ নৌকা লইরা আসে। বাপ মাকে প্রধান করিবার সমর নেরে একটু কাঁলে, ভার পর নদীর ঘাঠে পা দিরাই মেরে ধুশীতে চঞ্চল ক্ইরা উঠে। বরের আসে পিরা নৌকার উঠিতে চার, নজার পারে না। নৌকা হাছিলে নৌকার বুধ বধন ঘুরিরা বার ভখন আবার ভাষার চোবে জল আসিরা পড়ে। বাভাস বাজিলে বাঁকের বাধার পাল ভূলিরা দেওরা হর, দেখিতে দেখিতে নৌকা চোবের আভাল ক্ইরা বার। ভখন ভাষার চোবে আবার একটু জল আসে। খুশীর হাওরার ভখনই সে জল ভকাইরা বার।

থপাবের গাঁরের বৌধিদেরও বাভারাতের বরগুর পাছে।
নাকে রূপার বং, হাতে রূপার বালু, গলার পুঁতির নালা
বুলাইরা তেল চপচপে চুলে বোঁপা বাবিরা বোমচার বুব
চাকিরা বৌ-বিরা চাটাইরের পাংলা হই-বেওরা তিলি বৌকার
চিন্তা বাপের বালী বার, খভরবালী আসে। তিলিতে
বাকে প্তন হাঁভিতে বুলিন, গুতর বারার চিন্তা, কল বাহার
বেষিতে হর সেই গাঁহের পাঞ্চা কাঁঠাল। তিলি চলিরা
পেলেও পালা কাঁঠালের গর আসে অনেক চুর পর্যাও। খভরপঞ্চ বাহারের পরলাওরালা চাবী ভাহারের তিলিতে হইরের
সামনে ও পিরবে কাপভ টালাইরা বেওরা হর, নেরে পর্যাবন্দীন হইরা খভরবরে বার। পর্যাবদীন মেরে হইরের
চাটাইরের কাঁকে আতুল মুকাইরা কাঁক বড় করে। সেই
কাঁক বিরা বর্ণার বাটে বোধিবের ছাল করা, নবীর ভীরের
বাচীবর, অভ বোকার আরোহীবের বেবে। তিলি স্পালীচলার বাটের কাঁকে আনিলে বে বোরের পেটে বেলে আরে

ৰে হাত তুলিৱা কপালে ছোঁৱাৰ, বৰে বৰে স্থপনীবাৰের খোৱা তিকা করে।

আখিৰ বাসে নদীর কল তর তর তর করিরা বাতিরা নদী কুলে কুলে তরিরা উঠে। পাল চুলিরা, টাড বাহিরা, শুন টানিরা কত নৌকা বার আলে। পারঘাটার নৌকা বাঁবিরা বাকিনারা, নৌকার আরোহীরা জিনিসপত্র কিনে নেডাই বাটে, বোডাই প্রিয়ের ঘাটে নৌকা বাঁবিরা ভাষারা স্থান করে, রারা করে। স্থাপতিলার ঘাটে বিদেশী নৌক। বাঁবিরেও ক্রের বা এপারের লোকেরা সে বাটে গাঁবের বৌকরা নামে ব'লরা।

সৰ বাট আছিলা নদীর মন পছিরা বাকে স্থাপনীতলার বাটে। স্থাপনীতলার বাটে নদী ওকে প্রথম দেবিয়াছিল।

রপসীতলার বাটের উপরে ভাব দিকে বাঠের মধ্যে রপসী গাছ। গাঁরে কোন বাড়ীতে ছেলেমেরে হইলে, উপনয়ন হইলে, বিবাহ হইলে সেই বাড়ীর নেরেরা রপসী তলার পূজা দিজে আসে। ছেলের বা নেরের না ইাসের ভিন্ন, ডাজললভা, হলুর রঙে ছোপান পূজন ক্লাপন, তেল, সিজুর ও পান জুপারি দূজন কুলার সাজাইরা সেই কুলা রাধার করিরা পূজা বিজে আসে। সলে আসে গাঁরের বোঝি, ছেলেমেরেরা। টোল আর কাসী বাজাইরা গাঁরের বাজন্দাররা আপে আপে চলে। ছেলের যা রপসী গাছকে প্রথান ভ্রিরা হই হাজে গাছকে একবার জড়াইরা বরে। গাছের গারে তেল সিঁচুর ভাজললভার কালী লেপিরা দের। ইাসের ভিন্ন ভাঙিরা গাছের গোলার বের। স্কলে উল্লেমি বের, দাঁব বাজার। গাল প্রথান বের, দাঁব বাজার। সকলে বিলিরা গাছ প্রকলিশ করে সাভ বার। এই ভাবে রপনী পূজা শেব ভ্রিয়া সকলে বাড়ী কিরে।

এপারে অপসী পূজা হয় ওপারে বৌরা প্রন হাজির দরগার চিনি বাভাসা দেয় হেলে হইলে। ভাহারা পাঁধ বাজার বা ভগু উন্ন দেয়। তেল সিঁচ্র দেয় বা, বাটর প্রদীপ আলাইরা দেয় বরগার। হল্ল-হোপান ভাগভ দেয় বা, পাল্ল টুকরা দেয় বরগার। আগে ভাহারাও অপসীভলার নির্নির চিনি বাভাসা পাঠাইরা দিত, এবন আর দেয় বা।

বজুমনার বাড়ীতে প্রথম নাতি হইরাছে। বজুমনাররা পরসাধরালা লোড়। হর দিনের দিন তিন ঢোল ভিন জালী বাজাইরা পাড়ার বৌধিনের সকে লইরা নাতির ঠাকুরা ও না রূপনী তলার পূজা বিতে আনিলেন। জোর বাজনা ভনিরা বৈশাবের নিজেল, বুরজ নদীর হন তালিরা গেল। বাজন্বার-দের পিছনে ছোট ছোট ছেলেনেরেরা ঢোলের ভালে ভালে নাচিতেরে। তাহাদের পিছনে ভভাগেতে শাড়ী পরিরা ছেলের বৌকে সকে লইরা বজুমনার-বাড়ীর গৃহিনী। শেবে পাড়ার বৌধিরা। স্বপনীতলার তীড় ভবিরা দেল। ঢোলের বাজনা ভবিরা ওপারের হুই-চারি জন বৌনদীর কুলে আলিরা ইাড়াইল, কৌছুখলী হইরা পূজা দেওরা হেখিতে লাগিল। এপারে বৌরেরা বর্ণন উলু বিল ভাহারাও উলু বিল। তেলেবেরের না ভ বটে, না বিরা পারে না। তেলেবেরের নহল সব বা চার।

পূলা দেখলা শেষ হইলে সদের বৌৰিরা লগনীতলার নাঠে হড়াইলা পড়িল। করেকট নেরে লগনীতলার বাঠে আসিরা ইড়াইল। নদী গাঁরের সব বৌৰিকে চিনিত। কেবিল দলের হবো একট সূত্য মেরে বাহাকে সে বাঠে ক্ষমও লেবে নাই। তাহাকে দেখিরা নদী চমকিত হইল, মুল্ল হটল।

ভাছার জীবনে সে একটা শরণীয় দিন। নিভাভ প্রাম্য মনী সে, বড় গাঙের একট ক্ত শাৰ্থায়াত্ত। श्रद्धांकी व्यवसादी ज कारन मां। विमानदाव ७ शादा ভিক্তের কোন গিরিগহার হটতে একপুত্র ক্রিয়াছে সে জামে মা। ঘৰ্ষৰী সিদ্ধর কথা সে শোমে মাই। বিদ্য-ছহিতা নৰ্ম্মলা ও গোদাবরী **991.** ভূমতন্ত্রার নাম ভাহার অপরিচিত। স্বর্গন্দী অল্কান্দার ভ্ৰাৱহিম প্ৰবাহের কল্পশা করিতে সে অক্ষ। সামাভ প্ৰামা নদী সে। বেভবন বাঁশবাড় কলাবাগান, কাঁচাওৱাল। वारणांशाह, चण्जी दृज, कृत्रम, मन्त्रम, कान्यम- अहे जक्ज প্রায়া উছিদ ভাষার সদী। চাষীও গুৰুছ বরের লোকক্ষ আর অন্ধবিত বেপারী লইরা ভাতার পরিচিত পুথিবী। শাভ, श्रावल, विश्वक, जाबाद्यव शर्दिरदालय घरवा छाड़ाद विव कार्टि । বংসরে কর বাস বর্ষার বারার উপচাইরা পড়া বাল-বিলের পাষ্টপচা ছল ৬ বছ গাঙের পছিল শ্রোভ ছাসিয়া ভাছার শীবনে একট চাঞ্চ্য ও গতি আনিয়া বের। সে কর মাস কাটিয়া গেলে আবার তাহার আগের শাভ, অর্কুযুঠ, বছর भीवमबाबाद बाहा किविदा चाटन।

খুৰত প্ৰাম্য নদী সে। ৰূপনীতদার বাটে ওকে দেবিরা সে বেন খুন ভালিরা ভারিরা উঠিল। আভর্ব্য হইরা ভাবিল, কেবল বৈশাবের অর্থেক চলিতেহে, বছ গাঙের খুল কি এবনই আলিয়া পড়িল ভাহার ছির খুলে ?

সানের বেলার বিশ্বণ নারের সকে ও নদীর বাটে আলে।

সান করিতে আসে কিন্তু নদীর জলে নানে লা। নদীর
নীবন ব্যাকুলভা, নিঃশব ভাতুতি ও বোবে না বোব হয়।

নদী ভাবে এত বেরে জলে নাবে ও কেন নাবে না? এইটুত্ কল ভাহার বুকে তবু এত ভর? ওর বুবের নিকে ওর চোবের বিকে নিম্পালক সৃষ্টিতে চাহিরা নীরবে নদী ভাকে,
এল, এল। আনি হোই নদী, ভোনার নভই শাভ, আনাকে কেবে ভর পাবার ভিছু ত নাই। আবার ভাকে, এল, বেনে
এল। লে কলে নাবে না। বাটে বসিরা ঘটতে জল ভূলিয়া
নাধার চালে। নদী বনে ভাবে, আহা, ঐ এক ঘট জলের ৰব্যে বহি ভাহার সমস্ত হেহটাকে বিলীৰ করিবা বিভে পারিত।

বিকাল বেলা সদীবের লইবা সে স্থাসীতলার বার্চে বেকাইতে আসে। দূর হইতে দদী ওর কচি কলাপাতা রঙের সাদী দেখিরা চিনিতে পারে। বতকণ ও বেকার গল্প করে নদী একনৃত্তে ওর দিকে চাহিরা থাকে। ও কথা বলিতে বলিতে হাসে, নদীর অগতীর কলে ধুনীর বৃদ্ধ ওঠে।

নদী নিজের মনেই ভাবে ভাহার উপর ওর একটু মারা পঢ়িরাছে বোব হর। ভাই যদি না হর ভবে শহরের মেরে ও, রূপসীতলার ঘাট কেন ওর এত ভাল লাগে? কেন ও বিকালে সাজিরা ভজিরা নদীর বাবে বেডাইতে আসে? সামাত এাব্য নদী বলিরা ভাহাকে ভ ও রুণা করে না? কলেও নামে না, নদী ওকে দূর হুইতে দেখিরাই সভাই হর, ভৃত্তি পার। ভাবে এক দিন আসিবে যথন ওর ভর দূর হুইবে, ভাহার কোলে বাণাইরা পড়িতে গিরা থন্ডিরা ইাড়াইবে না।

মধী আর ওর শীরব আলাপ এমনি করিছা চলিতে থাকে। আবাচ আসিল। বড় গাঙের জল আসিনার সময় হইল।

হঠাং কি হইল নদী কানে না ওপার আর এপারের মধ্যে কতকালের পুরাতন সম্পর্ক ভালিরা গেল। কি লইরা গোলঘোগের স্থাতন নদী কানে না। সামাত প্রায় নদী সে, কতটুকুই বা তাহার আনের পরিধি। পারঘাটার কাছে ক্যা-বরে সতা হর, কাককর্ম কেলিরা লোক কচ হইরা কিসের পরামর্শ করে। এপারের লোকের ওপারে যাতারাত কমিরা গেল। রূপসীতলার বাটে এপারের বৌধিরা আর লাম করিতে আসে না। করেক বিন হইল নদী আর ওকে দেখিতে পার না। সে ব্যাকুল হইরা উঠে, মনে নানা ছন্ডিভা আসে।

গুণারের লোকের বেন কি হইরাছে । ববন তবন দল বীবিরা তাহারা এণারে আসে। দিনে আসে রাজেও আসে। বীবের সালে, কত কি জিনিস নাবার, হাতে, কাঁবে বহিরা কিরিরা বার। এ ত এণারের হাটে সওলা করা জিনিস লইরা বাওরা নর। এ ত এণারের বেলার সওলা করা জিনিস লইরা বাওরা নর। এত জিনিস পার কোবা হুইতে ? উহাবের কাও কেবিরা নরী আরাক্ হর। নদী আরও লক্ষ্য করে গুণারে চিংকার, গোলমাল বাভিনা চলে, এণারে নিজম্বতা আরও মন হুইরা উঠে। এণারের লোকজনকে সে আর বভ কেবিতে পার না। রাজে হুর হুইতে কারার লব বেন ভনিতে পার নাকে মাকে। রাজির নিজম্বতা ও অভকারের মধ্যে ক্ষম করম আওবের শিবা বীশ্বন, আন-কার-কাঠালের বারাবের

মাধার উপর বিবা বেখা যার, আগতে বাঁশবাকের বাঁশ কাটবার শব্দ পাওরা বার। সব্দে সব্দে অবেক লোকের হলার অভিযাক আসে।

ছুল্ডিভার ব্যাকুল হইবা মধী ভাবে কি কাও ঘটতেছে কে বাবে ? কেভবামারের কাক কেলিরা ওপারের লোক এত বন বন এপারে আলে কেন ? পারবাটার হাটের বিন হাটুরে লোকের বাভারাত বর হইল কেন ? সভ্যাবেলার ওপারে এত ভোরে কোরে আজানের লক, এপারের দাবের লক পাওরা বার না কেন ? এপারের লোকজনের কি হইল ? ভীবনে মধী কবনও এরকম ব্যাপার হেবে নাই, ইহার কোন অর্থ সে বুধিতে পারে না।

লগনীতলার ঘাটে ঘাদ বছ হুইরা উঠে। ঘাট হুইতে বাঁরে বাইবার পারে চলার সরু পরিকার পথ লখা ঘাদে চাকিরা বার। এপারের লোককর কি বাজীবর, কোতজরি, বানের মরাই, গোরালের গরু, বাজীর সব জিনিয়পত্র কেলিরা, পূলাপার্বাণ সব বছ করিরা কোথার চলিরা গেল ? না মছক লাগিরা মরিরা গেল ? এপারের লোক মরিলে পারঘাটার ভাছে শ্রশানে আনিরা পোভার। এবন কি বুতন নিরম হুইরাছে—লোক মরিলে বাজীতে পোভাইতে হুইনে ? এত হম ঘম আগুম দেখা যার কেম ? বাঁরে চৈত্র বৈশাধ মানে কালেতরে হুই-একটা আগুম লাগে। অসমরে এত আগুম কেন ? ছোট প্রায় নদী লে, গেঁরো বুছিতে এসব কাণ্ডের কোম আর্থ করিতে পারে না, তবু আর্ছিত আর এক বুক ছুক্তিছা লইরা ছটকট করে। তাহার মীরব আলাপের সলী সে নেরেউকে কেন্দ্র করিয়া তাহার ছক্তিছা বাছিরা বার। ছত বিম্ব তাহার দেখা যার নাই, কি হুইল কে জানে ?

বড় গাঙের জল আসিরাছে নদীতে। নদী একটু একটু জরিরা সুলিতে আরম্ভ করিরাছে। সে তাবে বড় গাঙ আরও জল ছাড়ে না কেন ? বড় গাঙ লব জলটুত্ব ছাড়িরা দিলে সে রুপসীতলার বাট ছাপাইরা মাঠে উটিবে। মাঠ ছাপাইরা এপারে গাঁরের বব্যে হড়মুড় করিরা প্রবেশ করিবে। কোবার গেল গাঁরের লোক, কোবার গেল ও, সে বুঁজিরা বাহির করিবে। তার পর ওপারের গাঁরে ছাড়িবে। ওপারের লোকের কি হইরাছে, ক্লেতবামার ছাড়িরা কি তাহারা করিতেছে, কি ডাহারের আসল মনের কবা, সব জানিরা লইবে। কিছু বড় গাঙের এত জল বাজিতেও স্থাপের মত সে একটু একটু করিরা জল ছাড়িতেছে।

নদী ক্ৰমে ধূলিরা উট্টেডেবে। পার্থাটার বাঁপের সাঁকো কলে ভূবিবার মত হইল। নদী আন্দর্য হইবা বেবিদ এবনও বেহানৌকার দেবা নাই। বেহানৌকার দেবা নাই কিছু ভূপারের লোকের বাস কাটবার হোট হোট অনেক ভিদি বোকাই শীৰের বাঠে ও আঘাটার ভিভাবো আহে।
নদী লক্ষ্য করে বাস কাটবার ক্ষয় এই সব ভিদি ব্যবহার
হর না। হাবে এই সকল ভিদিতে চাপিরা ওপারের লোক
এপারে বাভারাত করে। কেন কে কাবে ?

সে বিন রাজেও ডিলি চাপিরা ওপারের করেক বল লোক এপারে আদিরা উঠিল। বুপ বুপ করিরা বৃষ্টি পঢ়িতেতে। চার বিক বোর অভকার। টাশিরা টাশিরা হাওরা বিতেতে। বাবে বাবে গর্জন করিরা বাবা-ভালা ভালগারের পিছনে বিহাং বিলিক বারিতেতে। নগী-পাভের কচ্বনের মধ্যে ব্যাঙ্ ডাকিভেচ্ছে, কারার মত শব্দ করিরা শেরাল ভাকিরা উঠিল। শেরালের ভাক ভশিরা এপারে হাউভলার ক্র্যভলি আর আগের মত চিংকার করিল না। কে ভানে ক্র্যভলির কি হইরাতে ?

মাধরার হুইরাছে। এবনও স্বানে বৃষ্টি পড়িতেছে।
এপার হুইতে করেক কন লোক কাঁবে করিরা কি বেব
আনিতেছে মনে হুইরা। কাছে আনিতে আবহা দেবা পেন
হুই কন লোক, কোন পোঁটলা-পুঁটুলী নর, একটা মান্তবের
বেহ বহিরা আনিতেছে। তাহাবের পিছনে আরও তিন
কন লোক। বাবার বিকটা বে বরিরাহে তাহার কাঁবও
বা বাহিরা লহা পোহা গোহা চুল বুলিরা পড়িরাছে।
এ কাহাকে কোবা হুইতে এক রাবে এবন করিরা আনিল
এরা গুঁ

পারবাচীর বীশের সাঁকে। তবন চার আত্ন করের নীচে, বাঁশের উপর দিরা তরতর করিবা শ্রোত চলিরাছে। দলট সাঁকোর কাছে আসিরা বাঁডাইল, বেহটা বাটতে কেলিরা বিল। বাধার বিকটা নবীর চালু অংশে কলের মধ্যে পড়িল পারের বিকটা উপরে বহিল। পর্বে কিছু নাই, সাড়ী বিলা ছই হাত বাঁবা।

লোকওলি ইড়াইবা পরামর্শ করিতে লাগিল। এক ক্ষম বলিল,—ছুঁড়িটার হাতে লোনার চুড়ি হেলরে, কেউ ভোরা সরাইছিল ? ভাই ড, এ বেরাল ভাহাবের কাহারও হর বাই। ফলের এক ক্ষম বলিল—ওটা আনার ভালে। আনি আগে ওটারে পাঁলা কোলে কইরা। ঘরের বাহার আনহিল্যান। চুড়ি বুর্লিবার অভ লে এক পা বাড়াইল। বাকী লোকওলি ভাহাকে ধনকাইরা উটল, বলিল—আগে আনহ আগে আগম কাম হাহিল করহ। আনরা চার নরতে ভো শালার বাঁটে বাইচি। চুড়িতে হাত বেবা ভ ইইভার কোপ ব্লাইরু ভর গলার। ভাল চাস ভ সইরা। বা। ভাহাকে বাড়া বিরা সরাইরা বিরা ভাহারা আগাইরা আলিল।

নবীর চালু পাড়ের নরম ভাষার ও জলের টানে বেষ্টা বীরে বীরে নবীর মধ্যে সরিয়া বাইতেছিল। এইবার সমভ বেষ্টা নিঃপকে গভাইরা নবীর মধ্যে পঞ্চিল। চুড়ির হাবীহার লোকগুলির একজন বলিল—আবে ছুঁড়িটা পালার কেনি। বর শালীরে, বর। আর ফলে নাবি। চুড়ি লিয়া ওটারে পাঁকের বাব্য পুঁত্যা ক্যালবা। চুড়ির প্রথম বাবীরার বাহাকে সকলে ব্যকাইরাহিল দে এতজনে হালিরা বলিল—হুংশালা, ওটা জেলা ছেল নাকি? আবি প্রলা উর্যারে খতর কইরা হিছি। তারী তিছবিড় করতেহিল। বাকী লোকগুলি কিছুক্ল হাঁ ক্রিরা রহিল। একজন লাকাইরা বভাকে বরিতে আলিল, গর্জন ক্রিরা বলিল—শালা, আবাসো রড়া বাওরাইহিল্। ঠাহর পাইনি আবারে। তাই ত কই লড়ে চড়ে না ক্যানে ? তরে আল প্লাব করর।

অওকারে, বৃষ্টির মধ্যে, নদীর পাড়ে মারাবারি আরভ হইল।

ষদী বিশ্বিভভাবে ইহাদের কাও দেবিভেছিল এভকণ। হেছটা জলের মধ্যে পড়াইয়া পড়িতে ভাড়াভাড়ি সে হই হাত ৰাড়াটয়া হেছটা মামাটয়া লইল। with with colon ৰামাইয়া ওর মুধের দিকে চাহিয়া নদী ভয়ানক চমকিয়া ইটিল। কে এণ কে রেণ এ বে নেই ৰূপনীতলার বাৰ্টের ভাষার কড পরিচিত কভ আদরের মেরেট, ভরে বে কলে নাৰিত না, বাটে ইাডাইয়া তণু হাসিত। আহা, কি হইবাহে ওর বে আৰু এই অৱকার বাদনা রাভে তাহার ভাকে এমন ভাবে লাড়া বিরা ভলে নামিয়া ভাগিল ? কেন ওর ছুৱে শাড়ীবাদা বুলিয়া শব্দ করিয়া ওর সুলের মত নর্ম হাত इबाबा वैविशास ? चावन शास ७३ कि नव्हा करत ना ? ७ (व वह रहेबाट (ज (वेबान कि काराबर्ध एवं मारे १ বিৰবা মাৰেল মেৰে ও, কিছ বাদীতে কি পুরুষমান্ত্র ছিল ৰা ১ - কেন ভাহাৱা বাৰা দিল না ? কেনন পুরুষ মাছয ভাহার। ? ওর গলার কালো দাগ কেন ? আহুলের দাগ বুৰি ? পলা টপিয়া ব্রিয়াহিল বুৰি ? আহা, ওর পাবীর গলার মত মরম গলা এমন করিয়া টীপিরাছে ? ওর বুকে গিঠে এত বাগ কেব ? কাঁচার ঘটিবা গিরাছে কি ? একটু বারা হর নাই ক্লের বত বরব দেহে এবন করিবা বারিতে ? বাগার, সজার, হুর্যবহারে ও বুর্তি বুর্জা গিরাছে ? না সজার চোব বছ করিবা আছে ? অপসীতলার বাটে নবী বেধিন ওকে এখন কেবিরাছিল ওর চাপা ক্লের বত রগে কেবিরা নবী তাবিরাছিল ওর গাড়, ক্লের, কেবী প্রতিষার বত রপ দেবিরা নবী তাবিরাছিল ও বুর্বি পল্লীলগ্রী। নবী ওকে বেবিরা বুর্ব হুইরাছিল। সেবিন ওকে নবী বিশ্ববিনীরূপে বেবিরাহিল আর আল এই বেশে কেবিতেরে এই তাবিরা বোব হর ওর লক্ষা হুইরাছে, তাই চোব বছ করিবা আছে। নবী ওকে তাকিরাছিল জনে নামিতে, লে কি এই বেশে সাড়া বিবার কর ?

আহুল হইরা নহী ওর সর্বাহেকে শীতল বারা বিতে লাগিল। ওর কপালে, চোবে, মাধার ঠাঙা হাত বুলাইতে লাগিল। ওর হীর্ব, কালো কেশের মধ্যে অফুলী সকালিত করিতে লাগিল। ও বেষল ভইরাহিল নহীর কোলে তেমনি ভইরা হবিল। পাতলা ঠোঁট হুটতে, হোট কপালে নহীর হেক্শিতল স্পর্বে একটু একটু করিবা রানির রেবা মুহিরা বাইতে লাগিল।

পরমত্বেং ওর কচি মুবের বিকে একদৃষ্টে চাহিরা, ওর সুনের মত কোনল দেহবানি কোলে করিরা নদী অপেকা করিতে লাগিল কবন ও জাগিরা উঠিবে।

ক্ষ আমা নদী সে, মান্ত্ৰের প্রতিদিনের ক্ষ পুৰত্ঃবের সদে ভাষার পরিচর হিল। মান্ত্ৰের সীমাধীন, লক্ষাধীন, বভ লালসার এই বীভংগ রূপের বারণা করিতে পারিতেহিল না সে। তাই ওর কচি রূপের হিকে একদ্ঠে চাহিরা, মারার অন হইরা সে অপেকা করিতে লাগিল কবন ও কাগিরা উঠিবে, ভাবিতে পারিল না ও আর কোন হিন কাগিবে না।

#### এক স্বপ্ন

#### बिञ्धोखनावायण निरवाती

ভোষার খাঁচল হেঁড়া—করু চুলে ভেল বাহি খোটে
এ লীন বৃহতি ববে বেহনার নিঙাতে পরাণ,
বিবর্ণ অথবে তব হাসির চামেলীরাদি কোটে,
উপবাস-রান বুবে স্থা-হাসি বরি কি অরান !
এ ছবি হর্জল লেহে তরে কের শক্তি হানবের,
পাথরে শাবল বেরে ববে হর কসল কলাই;
হামোলরে বাব বেঁবে কবে হবে বাবহা সেচের,

অত দিন বলে থাকি—এত বৈৰ্ব্য এ অভৱে নাই ।
হক্ষা থকেশে কৰে বৃদ্ধ হবে ভোমার বৌৰন,
চিত্তৰ কৰৱী কৰে সাজাইৰ মাৰবীয়াশিতে,
এক বৰ্ম নিম্নে আছি—ভান্নি লাগি সন্ত্ৰ সাৰন—
ভোন ভাৰনার হারা পভিবে না ভোনার হানিতে ।
ভন্মজ্যোৎয়া-পুল্কিত ব্যৱহা শীতন নিশীৰে
বোকের রুগন হিরা কৰন কি পারিবে মিশিতে ।

# বঙ্গাহিত্যে ইডিহাসের সাধনা

#### এবছনাথ সরকার

আমি বে এত বংসর ধরে সাহিত্য-পরিবং পরিচালনা করেছি, কর্মাদের দৈনিক কাজে ও পরামর্শে অভি নিকট-ভাবে সদী হয়ে আমাদের চেটাগুলি ফলপ্রাদ করবার সাহাব্য করেছি, এর মধ্যে আমার একটি লক্ষ্য লুকানো ছিল। সেটি আফ প্রকাশ ক'রে বলব। আমরা জানি বে সভা-সমিভি সর্কোচ্চ সাহিত্য স্বষ্ট করতে পারে না; কারণ প্রতিভাব জন্ম শুধু ভগবানের দ্যাব উপরই নির্ভর করে, মাছবের পরিক্রনা বা আয়োজনে হয় না। তবে আমরা কি করতে পারি ? আমরা পারি—বেখানে প্রতিভা আগে থেকে জন্মছে ভার বিকাশে সাহাব্য করতে, তাক্ষে অকালে শুকিরে বাওয়া থেকে বক্ষা করতে, তাকে সমাজে পরিচিত, সমাদৃত করতে। এই হ'ল পরিবদের পক্ষে সম্ভব কাজ, এ কাজ আমাদের আগেও অনেক সভা-সমিভি এবং শুণগ্রাই ধনীলোক ক'রে এসেছেন।

কিন্তু আমার উদ্দেশ্য ছিল, বাঙালী সাহিত্যকর্মীদের চেষ্টা একটা বিশেষ দিকে ঘুরিয়ে দেওয়া এবং সেই লক্ষ্যে দৃঢ় ক'রে রাখা, বার ফলে বাঙালী-চরিজের এক দিককার অভাব পূরণ হবে এবং আমাদের এক শ্রেণীর কাজ স্থায়ী হয়ে থাকবে। এই অভিপ্রায়টি এখন খুলে বলব।

বে সব বিলাতী পণ্ডিত ভারতবর্বে শিক্ষক হয়ে এসেছেন ভারা সহজেই ধরে ফেললেন বে, মোটের উপর ভারতীয় লোকদের প্রকৃতি ও মনোরুত্তি দর্শনের দিকে ঝোঁকে, পদার্থ-বিজ্ঞানের দিকে বড় কম। আমরা কল্পনা ও ভাবে বিভোর হয়ে থাকতে ভালবাসি, বাত্তব জগতে কাজের লোক হয়ে এবং তার উপযুক্ত প্রণালীতে চিন্তা করতে আমরা ভারতই চাই না বা পারি না। এই কারণে আমাদের বিলাতী শিক্ষকেরা অনেকবার বলেছেন বে, অর্থাগম ও মানব-ক্ষ্থ বাড়াবার জন্যে বিজ্ঞান-চর্চা ত সব দেশেই আবশ্রক। কিন্তু ভারতবর্বে তার উপর অন্য এক কারণে এটা আবশ্রক। সেই বিশেষ কারণটি হচ্ছে এই বে, বিজ্ঞান-শিক্ষার সংবম ও কঠোর ব্রশ্বচ্যর্ব ভিন্ন ভারতীয়দের মানসিক গঠন দ্বাড় ও বিচিত্র করা সম্ভব নহে।

আমাদের দেশে অতি প্রাচীন যুগে এক দল মনীবী বে বন্ধভাৱিক বৈজ্ঞানিক ছিলেন, একথা আমি অবীকার করি না। পাণিনির ব্যাকরণ, কৌটিল্যের অর্থশাল্প, স্থ্যসিদ্ধান্ত, চরকসংহিতা এবং মানসার বা স্থপতিশাল্প বে জাতি রচনা করেছিল, তারা ভাব-প্রবণ কর্মনা-বিলাসী ছিল না। কিছ আদ্ধ আমাদের বংশধরদের কোথার দেখতে পাই ? শত সহস্র বংসর ধরে আমাদের চিন্তা-নারকেরা, আমাদের বন্ধকারগণ, প্রাচীন ভারতের এই লক্ষ্য ভূলে শুধু ভাব ও দর্শনের বিকেই বুঁকে পড়েছেন। শভাকীর পর শভাকী ধ'রে বিধর্মী রাজার অধীনভা অন্ত্যাচার অব্যাননা ও দারিত্রা সম্ভ ক'রে বাঙালীর অর্ক্ষরিত প্রাণ বেদান্ত-চর্চার ও ভক্তিসাধনার শাশ্রর নিরে চিত্তের একমাত্র শাস্তি ও স্থা পেরেছে। এইজন্য আমাদের পূর্ববর্তী সাহিত্য-রচমিতাদের আমি দোব দিই না, ভাব ও দর্শনের ক্ষেত্রে তাদের হাত থেকে বলসাহিত্য বে অনেক রত্ন পেয়েছে দে-সম্বন্ধে আমি সম্পূর্ণ সচেতন।

কিছ আন বে বিষময় বিজ্ঞানের রাজত। আদ বে সব দেশেই, মানব-জীবনের ন্সব ক্ষেত্রেই বিজ্ঞানের প্রণালী ও মন্ত্রতন্ত্র একাধিপত্য করছে। এ রাজত শুরু রসায়ন ও পদার্থবিদ্যা, চিকিৎসা ও বন্ধপাতির কার্থানায় নয়; সাহিত্যের সব বিভাগেও—প্রকালেই হোক বা তলে তলে হোক, বৈজ্ঞানিক প্রণালী অগ্নস্ত হয়েছে।

প্রথম থেকে আমার বিশেব লক্য ছিল, কি ক'রে বঙ্গনাহিত্যের মধ্যে এই বৈজ্ঞানিক মনোবৃত্তি ও কর্মপ্রণালী আনা বায় ? এই কাজের জন্য চাই, ন্যায়ের তুর্কের জন্য আবশুক তীক্ষ ক্রধার মন্তিক নয়,—যা তথু তক্ক থড় কাটতে পারে; ভাবে উন্মন্ত বা ভক্তিরসে অশুসিক্ত তক্ক মন্তিক—যা মাটিতে গড়াগড়ি দেয়, তা নয়। এখন চাই—ধীর স্থির সংলগ্ন চিন্তাশক্তি; অদীম শুমশীলতা, পরীক্ষা না ক'রে কোন কথা গ্রহণ করব না—এই দৃঢ় প্রতিজ্ঞা; সমন্ত উপকরণ এক্জ ক'রে, সামঞ্জ ক'রে তার ভিতর থেকে সভ্যের থাটি নির্যাস বের করব, এই মজে দীক্ষা। অর্থাৎ এক কথায়, বাকে বৈজ্ঞানিক মনোবৃত্তি বলে। আমাদের সাহিত্য-পরিষৎ বর্ত্তমান যুগে এই কাজ আরম্ভ করেছে এবং তার এই প্রচেটায় উপদেশ ও সাহাব্য দিতে পেরে আমি চরিত্তার্থ হয়েছি।

দৃষ্টাস্থ দিয়ে কথাটা ব্ঝিয়ে দিচ্ছি। অধ্যাপক দীনেশচক্স ভট্টাচার্য্য আম্বণ ও পণ্ডিত, নৈয়ায়িকদের বংশধর, তাঁর কাজ যা পরিবং-পত্তিকায় প্রকাশিত হয়েছে এক দিকে রাখুন, আর প্রাচীনপদ্মী নৈয়ায়িকদের রচনা অক্ত দিকে রাখুন, এই তুইয়ের তুলনা কয়লেই পার্থক্য ব্রুতে পার্বেন। প্রাচীন আদশে কি ফল পেয়েছি ? ক্রির ভাষায় বলি—

"এক দিন নবৰীপে মহা ভৰ্ক হৈল ভৈলধার পাত্ত কিখা পাত্রাধার ভৈল ? বাহাতে ছুদ্ধিরে গেল উনিশ শিপে নক্ত।"

বাঙালী মন্তিকের তীক্ষতার ইহা ভিন্ন আর কোন ফলই বইল না। আর দেখুন, নবীন দীনেশচক্রের সাধনার ফলে বপীর ন্যার-রচিরভাদের পরস্পর। ও ভাববিন্তার এবং দেন-রাজাদের সমর থেকে মুসলমান স্থলভানদের রাজসভা পর্যন্ত বাঙালী হিন্দু বৈদ্যদের ইতিহাস অতি নির্ধৃত ও প্থায়পূথ্যরূপে উদ্ধার করা হয়েছে। আমাদের ভারতীর সংস্কৃতির এবং বাঙালী ভাতির অতীত গতির একটি অক্ষণার কুঠুরী সম্পূর্ণ আলোকিত হয়েছে। ভারতের মানচিত্রে অস্থুলি দিরে দীনেশচক্র দেখিরে দিক্ষেন হৈ

কোন কোন অঞ্চল কথন কথন কোন চিন্তা বা জান ছড়িয়ে পড়ল, গৌড়ীয় পণ্ডিত বাঞ্চলা খেকে কানী, কানী থেকে বৃদ্দেশখণ্ডে গিয়ে এছ বচনা করলেন, রাজসভায় জানের প্রদীপ জেলে দিলেন। আমাদের সামাজিক ও সাংস্কৃতিক ইতিহাসে এই গবেষণা অমৃল্য উপাদান হয়ে থাকবে। বাঙালী মন্তিকের তীক্ষতার এটাও জাজন্য প্রমাণ।

তেমনি ভারতীর ইতিহাসের ক্ষেত্রে আমার শিষ্ক রজেনাথ বন্দ্যোপাধ্যার বহুবর্ব ধ'রে অক্লান্ত পরিপ্রম ক'রে উনবিংশ শতাব্দীর প্রথমে ইংরেদ্ধ-শাসনে বন্দদেশে বে নবন্ধাগরণ হয় তার ইতিহাসের সব উপকবণ সংগ্রহ ক'রে তা থেকে বাঙালী সমান্ত, বদভাষার সংক্রাদপত্র, বাঙালীর নাট্যশালা এবং শিক্ষা ও সমান্ত-সংশ্বার বিস্তাবের প্রামাণ্য ইতিহাস এবং সাহিত্য-সাধকদের জীবনীর থাটি সত্য বিবরণ প্রকাশ ক'রে বন্ধসাহিত্যের পাঠকদের এবং বন্ধের ইতিহাসের ছাত্রদের চিরঞ্জী ক'রে রেথেছে। যোগেশচন্দ্র বাগল প্রভৃতি নবীন কর্ম্মিণ এই কান্ধে সহকারী হয়েছে। ব্রন্ধেনাথের এই সব রচনার সঙ্গে আমাদের কবিদের জন্মশতবার্ষিকীতে বে সব প্রবন্ধ পড়া হয় তার তুলনা করলেই ইতিহাস ও জীবনীর ক্ষেত্রেও এই বৈজ্ঞানিক প্রণালীর মূল্য কত বেশী তা বুঝতে পারবেন। এরূপ একান্ত সত্যনিষ্ঠাকে "পাথুরে ইতিহাস" ব'লে উপহাস করার দিন চলে গেছে।

ব্ৰজ্ঞেনাথ ও সজনীকান্ত দাস সেইমত বৃদ্ধি প্ৰভৃতি
সাহিত্যবহীদের গ্ৰন্থের নির্ভরবোগ্য শিক্ষাপ্রদ সংস্করণ প্রস্তুত
ক'বে সমন্ত দেশের সন্মুখে এক মহৎ দৃষ্টান্ত রেখেছে। এই
কাজটি বদীয়-সাহিত্য-পরিষং না করলে তার লক্ষা
চিরন্থায়ী হ'ত। তেমনি, আমার শিব্য অধ্যাপক কালিকাব্রন্ধন কান্ত্নগোর ইতিহাস-এম্ভলির সঙ্গে বজনীকান্ত

ধ্বের দেখা ভারত-ইতিহাস তুলনা করলেই নবীন ও পুরাতন দেখকদের মধ্যে গবেষণার প্রণালী এবং ফল-প্রস্তিতাতে কত পার্থক্য তা স্পষ্ট হবে।

এই সব নবীন কর্মীর স্তাস্পৃহা এত বেশী বে, তাদের প্রকাশিত লেখায় কোন ভূল বা ফ্রাট দেখিয়ে দিলে, তারা তা বিচার ক'রে তার সত্য অংশটুকু পরবর্ত্তী সংস্করণে বোগ ক'রে দেয়। এরপ নিজ্প অম স্বীকার করাকে তারা অপমানের কারণ ব'লে মনে করে না। এই ক্রমোরতির জন্য আগ্রহ, এই মুক্ত হৃদয়ে সত্য বরণ করার স্পৃহাই প্রকৃত পণ্ডিতের চিক্ত। আমার শিষ্যগণ তা ভোলে নি।

আমার ঐতিহাসিক শিষ্যগণ, এখানে এবং অন্যত্ত্ব, কখনও আর্থিক প্রস্কার থোঁজে নি, কাগজে প্রশংসা পাবার জন্যে বড়বন্ধ করে নি, বে দরবারে থোশামোদ করলে বেশ অর্থাগম হ'তে পারত, সেখানে তারা ধরণা দেয় নি। গবর্ণমেণ্ট অথবা কোন শিকা-প্রতিষ্ঠান তাদের এক প্রসার সাহাষ্যও করে নাই। আমি এটাকেই আমার জীবনের সর্ব্বপ্রেষ্ঠ গৌরব মনে করি। সংস্কৃতে আছে—

"সৰ্বত বিজয়ম্ ইচ্ছেৎ পুতাং ইচ্ছেং প্রাজয়ম্"

এখানে পুত্র শব্দের অর্থ শিষ্য অর্থাৎ মানস-সন্তান ধরতে হবে। আমার শিষ্য-প্রশিষ্যদের ধারা পুরুষ পুরুষাত্মক্রমেঞ্চ চলতে থাকুক, বদদেশ ও বদসাহিত্যকে তার। হায়ী দানে সমুদ্ধ করতে থাকুক, এই প্রার্থনা করেই আমি আমার সাহিত্যিক কর্মজীবনের দৃশ্রের উপর যবনিকা টেনে দিলাম।

### আচার্য্য যতুনাথ এনৈলেজক্ষ লাহা

অবন্ধ তবে হিল নেকালের তপভা কঠোর,
বিধিত পুরানে। আজো সত্যবুগ হরনি বিগত।
ত্ববুঃব তুল্ল করি' উদ্বাশিতে কীবনের রত
একার্শ্র-সাবনা-মর্ব, হে তপবী, তুমি আকৈলোর।
অভাতে করিলে ভাত, একে একে রচি বিলে ভোর
অসংব্য বিশ্বত তব্যে বিক্ষিপ্ত বা হিল ইতভত।
ত্বিগ্র-মব্যে চিন্ন তব শির বহিল উন্নত,
সভ্যের হর্পন শেলে ইতিহালে, হে ব্যান-বিভোর।

ব্ৰলের ভাগ্যচক, সারাজ্যের উথান-পতন, অপূর্ব শভাগীত্রর—উন্তাসিল ভোষার এবণা। হহারাই-দীবনের বেবালে বে লব ভাগরণ, শিবাদী দীবত হ'ল, প্রত্তা ভূমি, সার্থক সাবনা। এলো ভালো, স'রে পেল ভর্কার-মূন-ভারবন, তে ভাচার্যা, বত ভূমি, বত ভব বাই-ভারবনা।

লভা বহর্ব। ভার এক ব্ব অভীভের পানে কিরানো বে চিরদিন। ভোনারি লে রচনার নাবে লে র্বের পরিচর, লে রূপের রহত বিরাজে। বিশ্বভির পার হ'তে ইভিহাল শ্বভি কার আনে। বিশ্বভির পার হ'তে ইভিহাল শ্বভি কার আনে। সমরের বেলাভূবে ভবোরা বিকীর্ণ নানা ছানে, সিজুক্লে শথসম অনাকৃত বৃদ্ধিত ভারা বে, ভাবের অভবে বৃধি কালের ভরক্ষনি বাজে। কভালে পূর্বভা বিলে ভিলে ভিলে বহু-রূপনারে। বিগত হয় না গভ, জাবি জানি হে ঐভিহালিক, আচকল অভীভের নাবে ভনি জীবন-শক্ষন। কুলালে রন্ধের রাশি হে অজাভ পবের প্রকা, ভালে শোভে জয়দীকা, বর এই নাল্য ও চক্ষন। বংশের সৌরভে ভব, হে বরেণা, পূর্ব বিবিলিক, আচর্বা, এইণ ভর অভবের এ অভিনক্ষন।

বজীর সাহিত্য-পারিবং কর্ত্ত্বক জন্মউভ জাচার্য বহুনার সরকারের
সংবন না-সভার পঠিত।

# **উই**नित्रम ইरেत्र हेन

### প্রবোগেশচন্দ্র বাগল

শ্রীরানপুর ব্যাপটি নিশ্বের প্রতিঠাতা কেরী, বার্শব্যাব ও ওয়ার্ড শ্রীইবর্দ্ধ প্রচার ব্যাপবেশে ভারতীর ভাষা সাহিত্য, শিকা সংকৃতির ক্ষেত্রে বে সব কাল করে গেছেব সে সহছে আমরা অনেকেই অবগত আহি। এঁকের কিনিং পরবর্তী, অবচ এঁকেরই বলভূক আর একজন বিশিষ্ট পারী ছিলেন উইলিরন ইরেটুল। কেরী-বার্শব্যাব-ওরার্ভের চরিতকার বলেছেন, ইরেটুলও ছিলেন একজন প্রব্যাত ভাষাভত্তবিদ্ এবং প্রাচ্য ভাষাসন্থার শ্রীর বর্দ্ধগ্রাধির অভ্যাব প্রকাশে কেরীর পরেই ভার হান।

ইংলতে লো বরা নামক হানে ইবেট্ন ১৭৯৭ বিটালের ১৫ই ভিলেবর অব্যহন করেন। তাঁর বৃহ্য হয় ১৮৪৫ সনের তরা জ্লাই এতেনের সরিকট সর্ক্রবক্ষে। তিনি তবন বাহা পুনক্রবার মাননে এতেনের পথে জাহাজে হলেশাভির্বে রওনা হরেছিলেন। ইবেট্সের পীবিতকালের দীর্ঘ নিশ বংসরই এবেশে কাটে। বীর বিভাব্তি, শক্তিসামর্থ্য সর্বরই তিনি ভারতবাসীর সেবার নিরোজিত করেছিলেন। তবে অভাভদের সত তাঁর সম্পর্কেও একট কবা সরন রাবা কর্তব্য। তারতবাসীরা বিশ্বর্গের আওতার বেকে অসংখ্য কেবলেনীর পূজা করে ইহকালে স্থ এবং পরকালে শান্তি হুটোই হারাজে রূপ বুন বরে; বিটবর্গের আলোকে অভানতা হুর করে তালের স্থানাতি কিরিরে আনতে হবে—এই ছিল পানীদের অভিনেত। আর এ উৎছেও নিরেই ভারতবাসীদের আবৃনিক জান বিভাবে উর্ভ করার জন্ত ভাবের এতটা প্রবাদ।

ইরেটনের আনৈশব ভাষাবিজ্ঞানের হিচ্ছে বৌক। ক্ষেকা মহিলা বলেহেন, হেলেবেলার ইরেটস ভারের বাড়ীভে প্ৰাৱই বেতেন। তিনি ইংরেজী ব্যাকরণ সকরে অনবরত ক্ৰা কৃইতে ভালবাসতেন। তিনি ভাষার বিশের ও ক্ৰিয়াণৰ সহৰে এঘনভাবে আলোচনা ভুড়ে বিভেন বে, ভাতে মৰে হ'ড তিৰি বৱে ৰিভেৰ জাৱ শ্ৰোভাৱাও ঐ সৰ আলোচনার সমান উৎসাহী ৷ চতুর্বন বংগর বর:জ্বড়ালে रेरबहेन शामीय न्यानाहर हार्क शीका निर्मा । बिहेन दिन ্ৰ ব্যাপট্ট দিশনহীৰের একট প্ৰধান শিক্ষাক্ষে। रीका এখণাতে ইবেটুল এখানে এলে এট-শাত্র অধ্যয়ন করতে ভারত করলেন। বারা ব্যাপটিই চার্কের অভতু ত বেকে এইতভূ এচাবে মত হ্বার ইছা জাপন করতেন বিশেষ করে ভাঁচের अवीरन अदन चनावन कराक र'क। नारेन वरमह नवम अर्थ रथवात शृद्धीर रेखाहेन गांगडेडे हाटकंड खरीटन वर्षशहात-तक আহঠানিক ভাবে এছৰ ক্য়নের। এই অহঠান লভার হয় ১৮১৪ সনের ৩১শে আগই, ব্যাপটই চার্কের ভিন কম নেতৃছানীর ব্যক্তি—ভটর হাইল্যাড, রবার্ট হল এবং এন্ডু ফুলারের
সন্ধা। এর অল্পাল পরে চার্ক-কর্তৃপক্ষ ইরেইসক্ষে
ভারতীর শাবার সাহাব্যার্থ এলেশে প্রেরণ করেন। ১৮১৫
সন্বের এপ্রিল হালে 'ব্রহা' ক্ষাহাক্ষে ইরেইস ক্লিকাভার
উপনীত হন।

এবানে একট কথা বলা দ্বকার। কেরী, মার্শমান এবং ওয়ার্ভের বেলার কেথা বার তাঁরা হয় উভেও গোপন করে বিটিশ অবিকারে রয়েছেন, মছুবা দিনেমার রাজ্য জীরামপুরে সরাসরি চলে সিরে আপ্রয় নিরেছেন। প্রকান্ত ভাবে বিটেশ অবিকারে অবহান করেন নি। এর পক্ষে তথন তীবন বারা ছিল। কিছ এই বারা ১৯১০ বীটাম্বের সনন্দে নিরাক্ত হয়। মৃত্যু সনন্দে বিটিশ পার্লারেক দিট ইতিয়া কোন্দানীকে এই মর্শ্বে নির্দেশ দিলেন বে, বেসরকারী ইংরেজ কি পাল্লী সকলেই বিটিশ অবিকারে খাবীনভাবে নিজ নিজ কাজ করতে পারবেন। তবে কেউ বদি রাইবিরোধী কার্ব্যে নিও হয় ভা হলে তার উপরে যথাবিহিত ব্যবহা অবলখনের ক্ষমতা কর্তৃন্দককে পুরোপুরি বেওরা হ'ল। এর ছ'বংসর পরে ইরেইস এবেশে আসেন, কাজেই তাঁর ভাবনার কোনই কারণ ছিল না।

গ্রীরামপুরে পৌছে ইপিড কর্মের কর নিকেকে প্রস্তুত করার উদ্বেক্ত ইরেটুস কেরীর নেভুত্বে শিকানবিসী স্থল করে विराम । विकासका-विरामय करत ब्यासिकाय सकी करा হ'ল ভার এই সমরকার প্রধান কাজ। জ্রীরামপুর-বাসের বংসর-বাবেক পরে ১৮১৬ সনের মার্ক বাসে ইরেট্স খীর বৈশ্বিক কাৰ্য্য সম্বন্ধে বিলাভে ভটন হাইল্যাওকে এই মৰ্থে একবাৰি नव (मार्थन,—"चानि बरेजारन कांच करन करनि : खांच-রাশের পূর্বে বেড় ঘটাড়াল হিল্প পাঠ ছবি। উপালনাডে वाश्मा निकाब निविध रहे । बून औरकब नरन विनिर्द बांश्मा ঞ্চ বেৰাৰ কেরীকে সাহায্য করি। সংস্কৃত ৰাজুগুলি একবার-পঢ়েছি, কিন্তু ব্যাকরণপাঠ এবনও শেব হয় বি। আবি পভিতের সাহাব্যে রানারণ পাঠ করছি। অপরায়ন্তনি এক ও লাটন পুডক পাঠে ব্যবিভ হয়। ইংলও পরিভ্যাপের পর ৰণ ভাগ একৈ নাহিত্য পড়ে কেনেছি, কিছ নাটৰ পুডক ভিন বভের বেশী পড়ে উঠতে পারি বি। সাভা প্রার্থনার পর नावाबनकः देश्यको शक्ति ७ देश्यको क्षम व्यक्ति।"

ইবেট্স এর পর লেবেন বে, এইরপ বৈদ্যাল ভার্য ব্যতিরেকে প্রার্থনা পরিচালনার মত সভাবে একবার কি হ'বার তিবি ব্যারাকপুর বাব। প্রতি বাবে পালাক্তবে তাঁকে একড একবার করে কলকাতারও বেতে হর।

ইবেট্ন কিড বেশী দিন জীবাৰগুৱে বাইলেৰ না। জীবাৰগুৱ মিশন এবং বিলাভছ ব্যাপ ইট লোনাইটির বব্যে নানা কারণে মডানৈক্য উপছিত হ'ল। এট মডানৈক্য ১৮১৭ সনের নেপ্টেম্বর নাসে বিজেদে পরিণত হর। উইলিরন ইরেট্ন প্রমুখ নব্য মিশনরীগণ জীবানগুর ত্যাপ করে ঐ বংসরে কলকাভার আসেন এবং বিলাভছ ব্যাপ ইট লোনাইটির কর্জুছ দ্বীকার করে এবানে একট মডার ইউনিরন গঠন করেন। এর পর থেকেই কলকাভা হ'ল ইরেট্নের কর্মকেন।

ইবেটনের কলকাতা-বাস আমরা হ'ভাগে ভাগ করতে পারি। প্রথম ভাগ হ'ল ১৮১৭ বেকে ১৮২৭ সম। শেষোভ बरमदा छिनि विमाण योग. वरमदबीयम् भदा किरत जारमन । এর পর বেকে ব্যাকাল পর্বান্ত হ'ল তার কলকাতা-বাসের বিতীয় হব । কলভাভার আগমনের পর ইরেটস শিক্ষভা-कार्री बाठी एम. अरमीतरमञ्ज मरना नर्बश्राहाक कांत्र कर्वना ষধ্যে ছিল। এই ছট উপাৱে ইরেটসের কোনমতে জীবিকার সংস্থান হ'ত। কিছ তাঁর জান-চর্চা আর্থিক অসম্রুলতা এবং ৰালা বন্দৰ অপ্ৰবিধার মধ্যেও বরাবর অব্যাহত ছিল। ইরেটুল करम मरकुछ, बारमा, चात्रवी, हिनी, छेइ अहे मञ्चन छावात्रहे বাংণতিলাভ করলেন। কলিকাতা দুল বুক লোসাইটর সহে তার ঘনিষ্ঠ যোগ এবং এখান থেকে প্রকাশিত তার পাঠ্য পুভকাৰলীয় কৰা একট পৱেই বলা হবে। তিনি এবানে তাঁর সংস্কৃত-চর্চার কথা বিশেষ করে বলেন-নি। ডিনি जरक्र चारांत अवसानि वारशक्तिमां करविरामन (व. ১৮২৪ সনের পর্বেই তিনি এই ভাষার একধানি ব্যাকরণ রচনা করেন। সংহতে প্রায় হাকার পূঠাব্যাপী একবানি অভিবানও किनि जरक्रम करवन। दिखांशरून, नरनाव्य अकृष्टिव অভিনৰ বিশুদ্ধ সংগ্ৰহণও তংকৰ্ত্বক সম্পাদিত ও প্ৰকাশিত হয়। সংস্থত সাহিত্যে ইয়েটসের পাতিভার কথা বিষয় সমাবেও শীমই প্রচারিত হ'ল। এশিরাটক সোসাইট কর্তক একাশিত Asiatic Researches নামক সাময়িক প্ৰকে তিনি ছইট প্ৰবন্ধ নেবেন-একট সংস্কৃত অলভার সম্পর্কে. **णांशीय-निराजी** এখ-ৰচিভ देवदय-हविद्या আলোচনা। শেৰোক প্ৰবন্ধ ১৮৩৬ সনে সোনাইট কৰ্মক शृष्टकाकारः अकाभिक रह ।

ইনেইস নাড্ভাবা ইংরেজীভেও পুরুক নিবতেন। The Christian Observer নাবক পাত্রী-পরিচালিভ ইংরেজী নাসিকপত্রে হিলাও হিলুহানী ভাষার পাল, ব্যাকরণ প্রকৃতি সক্ষে আলোচদা-প্রবন্ধ লেখেন। ইংরেইস ব্যাকা রামবোহন রাজের সক্ষে বর্ষ সম্পর্কে বালাছ্বাবে প্রস্তুত ইংরেছিলেন। ভার লেখাগুলি Essays in Reply to Rammohan Ray

নানক পুডকাকাৰে তিনি প্ৰকাশিত কৰেন। Memoirs of Chamberlain ইংনট্নের আৰু একবানি উংকৃত প্রত্ন। এনৰ আকৃ প্রতিবিদ্যাল আৰু প্রতাদি তিনি নিবেছিল্লেন।

এটাৰ ধৰ্মতের অন্থবাদ প্রকাশে কেরীর পরেই ভার शान, शृद्धी नना स्टार्ट । अहे अञ्चनान-कार्द्यां क्या अकड़े বিশদ ভাবে বলা ভাবতক। বিলাভ অমণের ছই বংসর পূর্বে ১৮২৫ স্থে ইবেট্স লোৱার সার্ভলার রোভের চার্চের কর্ম-কৰ্মপাৰে অধিপ্ৰিত হন। খাৰেল থেকে কিয়েও জাকে এই চার্চের পাত্রীর পদ এবণ করতে হ'ল । এই সময় বেকে कीयरमद स्था प्रकृषेन वरमदकान देखारेम वर्षक्य प्रकृषास चांचनिरदात्र कराजव। जब्द वांहरवन क्षत्रवानि किनि वांश्ला णावात अञ्चाम करतम । मिष्ठ हिंडीरमध्ये अञ्चाम कतलम धर्म, বিদ্দী এবং সংকৃত ভাষার। বেবোক ভাষার ওপত ঠেই।-ब्यटकेंड अट्डकें। अनुविक र'न। अ रांका Bunvan's Pilarim's Progress ( धनम पक) अवर इहे अकवीनि वर्ष-ৰুলক পুতক তিনি বাংলার অভুবাদ করেন। ধর্মনা অভুবাদ-কাৰ্ব্যে ইরেটসের প্রবাদ সহকারী ছিলেদ পাত্রী বে ওরেদার। তিনিও প্রাচাবিভার বিশেষ ব্যংপদ ছিলের। তিনি ইরেটসের जन्नवान-कार्या मण्डा स्मर्थ स्टब स्टब्सिसम् । देखनेन विश्वक चर्क कारमधीत तहमात शक्तभाकी दिल्ला। महक मतन् ভাষার তিনি সর্বাদা ভাষপ্রভাশ করতে চেষ্টা করতেন, ভার এতে ডিনি বিশেষ সাক্ষাও লাভ ভৱেছিলেন।

केनिवरम मजानीय ध्यवादि व-नव भावी धांठाविण-**छ्छांव चल्ली स्टब्सिलन, धेर्टेलिबम स्टब्स्ट्रेन-धारवब मर्ट्स** অভভৰ, একৰা এবন আৰৱা খীকার না করে পারি না। কিছ এতহারা আমরা কতবানি উপকৃত হরেছি, আমাবের ভাষা-সাহিত্য সভ্যভা-সংস্থতি কভটকু সম্ভ হয়েছে সে नचर्च७ जाबारम्ब लाई बांबना बाका जावछक । अक्ट्रे जारनरे কলিকাতা ছল-বুক লোলাইটির ললে ইরেটদের ব্লিট বোগা-বোগের বিষয় উল্লেখ করেছি। ১৮১৩ এটান্থের সমুন্দের পর বহু ইংরেছ এবেশে ভালেন, ভবব্যে পানীয়া এলে নানা ছাবে ছল পাঠপালা ছাপন করতে আছত করলেন। এ সব ছলে বৈজ্ঞানিক প্ৰভিত্তে পঠন-পাঠবের ব্যবস্থা হ'ল। কিছ একার্য্য সাধনের পক্ষে প্রধান অভরার পাঠ্য পুতক্ষের অভাব। এ খভাব দুরীকরণের বছই ক্লিকাভার খুল-খুক লোনাইটর প্রতিষ্ঠা। ১৮১৭ সনের জুলাই যাস থেকে বীর্থকাল যাবং 🗚 নোনাইট পাঠ্য পুত্ৰকাদি উপযুক্ত লেবকদের দানা নিবিরে क्षणां ७ क्षणांत करविरामतः। मरक्रक, बारमां, चाववी. कांत्रमी, रिक्ति, केर्यु, देश्टबकी—गांना कांतास्कर शांक्र शूकक রচিত হ'ত। পাঞ্জী ইরেটন বহু বংলর বাবং ছল-মুক নোগাইটৰ নেকেটাৰী পৰে অধিটিভ ছিলেন এবং নোনাইটৰ बुल केरकंक निविद्य परंग्ये महाबका करवन । रेरब्रेन पर

ভাষাবিদ। তিনি নিজেও নোসাইটৰ জভ বিভিন্ন ভাষাৰ বহু पुष्क निर्दे विराम । कींद्र मरक्रक के देशदाकी कांचाद बहुनाद উল্লেখ পূৰ্বে করা হ্রেছে। ভিনি সংস্কৃত ব্যতীত উপরোভ ভাষাসমূহেও পুভকাষি লিপিবত করলেব। গল, কাহিনী, বিজ্ঞাৰ, ইভিহাস, জ্যোভিহ, সাহিত্য লালা বিভাগেই ভার বহ पुष्क । कीव बुक्राव अब The Christian Observer পৰিকাৰ অনুষ্ঠিত বিভিন্ন ভাষাৰ পুৰকাবলীর একট কিলিছি প্ৰকাশিত হয়। তা ৰেকে ভানা বাহ-তিনি ইংরেজী ছবানি. সংস্ত সাতবানি, হিল্ছানী বা উৰ্ ন'বানি, হিলি চালবানি, चात्रवी अक्षानि, वाश्मा प्रमानि शृष्टक स्मर्थन । अत चिछरत অভবাদ পুততভাল বরা হয় নি। বাংলা পুততভালির খবো গ্ৰ. বিজ্ঞান, জ্যোভিষ, ইভিহাস, সাহিত্য প্ৰভৃতি নাৰা বিষয়ের পুত্তকই রয়েছে। কলিকাভা ভূল-বুক সোগাই**ট**র সেক্ষেটারী হ্রপে এবং নিবে পাঠ্য-পুস্তক বচরিতা হিসাবে ইরেটস শিক্ষাপ্রচার ও প্রসারকার্ব্যে এদেশবাসীর যে উপকার সাৰৰ কৱেছেৰ এঘনট খত কাৰো খাৱা সাৰিত হয়েছে वर्षा मर्थ एवं मा।

72

च्छा कारका मर्था । इसके मानान वारान निका-विश्वाद व्याभारत अञ्चानि कृष्णि अपर्नन करविहरूनन । किन्द এতেই ভার কাক শেষ হয় নি। ভার চিন্তা, বৃদ্ধি এবং অভিজ্ঞতার সহারতা সরকারও ক্রবে এহণ করতে বাধ্য হলেব। সরকারের পঞ্চে শিক্ষা-পরিচালনা কার্ব্যের ভার हिल निका-नमाक वा कविष्ठेत छेनत । ১৮৩৫ जत्म वक्रमाठे नर्ड छेरेनियम (वर्णिटक्य निर्द्धां मिक्नाव्यवस्था अक्षे चानून পরিবর্তম হয়। এতদিন সরকারী বিভালরে সংকৃত, ভারবী ও ভারগীর মাধামে দেশ-বিদেশ জান-বিজ্ঞান শিকা দেওয়া ছঞ্জিল। এ সকলের পরিবর্তে ইংরেজীর মাধ্যমেই বাবতীর विवयं निका क्षत्रा कृत्व, ১৮৩৫ সনের নির্কেশে चित्र कृत्व দেল। এর পরে প্রশ্ন উঠল বাংলা এবং অভাত দেশভাষা-भवृद् त्यनीयाव कि नावचा एत्त । मिन्नजन विकासता अवर উচ্চ বিভালবের শীচের শ্রেণিগুলিতে বেশ-ভাষার মাধ্যমেই পঠন-পাঠনের ব্যবস্থা বলবং রইল। কিন্তু সময় ও অবস্থার পরিবর্তনের সলে বৃত্তন করে পাঠ্য পুত্তক রচনার প্ররো-ক্ৰীয়ভাও অনুভূত হ'ল। হিন্দু কলেক কৰ্ত্বপক বাংলা পাঠ-শালার জভ বে-সব পাঠাপুত্তক রচনা করাজিলেন সরকারের ভা মনঃপুত হয় নি। শিকা-সমাৰ (The Council of Education) বেশভাষার পাঠ্য পুতক রচনার বভ একট কৰিট शर्रेम कदारमय-अद नाम रक्षदा र'न "Section of the Council of Education for the Preparation of Vernacular Books ।" देशांनीचन कारन शवर्गवार्केस त्व (हेक्डे-यूक कविष्ठे, बहे '(नक्ष्मन'एक छोदहे पूर्वाक नना हरन।

পাঠ্য পুৰুত্ব বচনা সন্পৰ্কে ভাষা বভাৰতাই উইলিয়ৰ ইয়েটুলেয় भवावर्ग अवन कवा: नवीडीन बटन कवटनन । देरबडेन देखि-পূৰ্বেও কলিকাভা কুল-বুক লোগাইটার নেকেটারী বিগাধে



**छेरेलियम रेख**हेश

সরকারকে পরামর্শ দিবেছেন। এবাবেও( ১৮৪২, ২ সেপ্টেম্বর) তিনি এই মৰ্শ্বে লেখেন,---

'পাঠ্য পুডক রচনা স্থনিরন্ত্রণের পক্ষে সকল শ্রেমীর বই-ই প্ৰথৰে ইংৱেণীতে রচিত হওয়া আৰম্ভক। এণ্ডলি মৰঃপুত হলে তবে বাংলা ও অভার দেশতায়ার অনুদিত হওরা উচিত। अरमीय ७ विरमीय प्रशैवर्गक अहे अध्वान-कार्या निव्क করতে হবে।'

শিকা-সমাক ইয়েট্সের পরামর্শ এবণ করেন। ভবনকার মত বিলাত থেকে উপযুক্ত মানের পুত্রকাদি আময়নের ব্যবহা হ'ল। পাঠা পুৰকের ভিতর দিবে পাভান্তা ভাবৰার। व्यवर्त्तरमा अहे त्व पहला र'न अब बतन बतात भाकी केहेनियम ইরেটসের উপদেশ। পাঞ্চীদের কর্ম-প্রচেষ্টা বাংলাদেশ ভবা ভারতবর্ধকে ভাষা-সাহিত্য এবং শিকা-সংস্কৃতির ক্ষেত্রে কিল্লপ প্রভাবিত করেছে ইরেটুসের জীবন ভার সাজী।

খল-ইভিয়া রেভিও—কলিকাতা কেলে গল ১৫ই কেবাৰী ভারিৰে কৰিত। অল-ইভিয়া ৱেভিওর সৌভতে প্রকাশিত।"

### জাপানের কথা

### অসুনীলপ্রকাশ সোম

কাপানের ক্যা বলতে গেলে প্রথমেই মনে পড়ে লে বেশের সুমাজিত পরিজ্যতার ক্যা। কাপানে বোকানপাট, বসতবাটী ইত্যাবিতে শহরে বেঁবাবেঁবি ভাব নেই। প্রায় প্রত্যেক বাকীর সাধ্বে একট্টবানি বোলা কারগাও ভাতে করে। তাদের ক্থাবার্তার, চালচলনে এবন একটাশিটাচারের পরিচর পাওরা বার বা অভক হর্মত। তাদের কর্মতংপরতাও প্রশংসনীর।

দোকান-ঘরে ভারা ভিনিষপত্র এমনি পরিপাটী রূপে

সাধিরে রাবে যে তেতরে চুকেই বন
পুরী হয়ে ওঠে। উাদের নিয়নাল্লবর্তিতা এবং কার্যাপুন্যলাও প্রশংসনীর।
কাপানী মেরেরা আমাদের দেশের
মেরেদের অপেকা কোন কোন বিষয়ে
অবিকতর সামাদিক অবিকার লাভ
করলেও এবনও তারা পাল্ডান্ডের
মেরেদের ভার সকল বিষয়ে পুরুষদের সমকক হয়ে উঠতে পারেন
নি। ইউরোপ কিছা আমেরিকার
মেরেদের ভার আপানী মেরেদের
সর্বা বিষয়ে হুযোগ-পুবিবার ব্যবছা
এবনা হর নি। নারীকে উপযুক্ত
মর্যালা বিতে পুরুষ এবনা শেবন
নি। একটা সাবারণ দুইাত বিচ্ছি।



বিবাহের পূর্বে ভাবী বর-বধ্র মিগন

ছ'চাৰটে গাহপালা আছে। রাভা-খলি বুৰ চওড়া, কিছ সুটপাত নেই। যাভার ছই পার্যে ঐকাও প্রকাও ভাঠের বুঁট গাড়িরে আহে। এওলিভে টেলিগ্রাক ও টেলিকোনের ভার সংযুক্ত। শহরে রক্ষারি ৰোকানগাট অসংব্য। সেগুলির লাবৰে টাঙালো বিজ্ঞাপনের বাহার ভেৰবাৰ ভিৰিষ। বিৰেশী বিদাস-ত্রব্যের হোকান ভাপানের সর্বায় আছে--আৰু সেই সব হোকাৰে বিক্ৰেতা হ'ল বেৰেৱা। ছবির र्शकान, रहेनवादी रशकान, रशकिन, চারের ইল, ভাক্ষর, সওয়াগরী আপিস ইভ্যাদি সৰ ভারগাতেই ৰেৱেৱা কাৰ কৱেন। আপনি কোন

একটা বোকাৰে কিছু কিন্তে গেলে বেরেরা সসম্বে বলবেন, 'বাই-ই-ই' অবাং 'বাগতন্'। কেনাকাটার পর চলে থাবার সকর নতমতকে বলবেন "আহিগাতো" অবাং বভবার। আপানী বেরেকের বিনয়নত্র আচরণ বিবেশীর মনকে মুখ



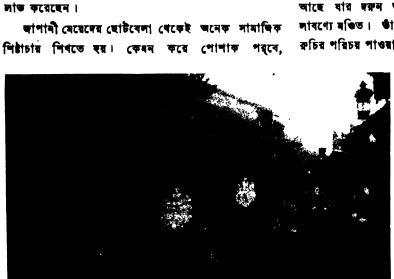
বিবাহের কথাবার্তা হির হইবার পর বর ভাবী বধুকে উপচার দিতেছে

ট্রামে কিবা বালে কোন নহিলা কাঁচিয়ে কঠ পাছেন বেবলেন। আপনি উঠে হয়ত বসবার অত আরগাট হেতে বিলেন, কিন্তু মহিলাট আসন এহন ক্রবার আগেই হয়তো এক্তম আপনী পুরুষ এলে ভারগাট হবল ক্রে বস্তোন। বুৰে ভার বহু হালি, কেলা নার দিয়া' গোছের ভাব। ভাগালে এছপ एक स्टिम्परि जानमात मक्टत नवद्य ।

जब ब्लट्टि ही ७ शूक्तव निरंत সমাজ গটিত, কিছ সকল দেশে नवाटक भी ७ शुक्रदवत नवान व्यविकाद ৰেট। দেশ-ভেদে সামাজিক নিয়ম-কাছবেরও বিভিন্নতা আছে। ভাপানে भी-शाबीमण चरनक मिन (बटक প্রচলিত, কিছ তা সত্ত্বে আছও লেখানে **ভীলোক** এবং প্রয়ের সামাভিক মৰ্ব্যাদার ভারতম্য ভাছে। অবর্ড ইদানীং অনেক ভাপানী ছীলোক নানা দিক দিয়ে পুরুষদের जनकम स्वाद अस ८०डी कदरस्य।

जाककान डाटन्द्र मरना जरमरक नमद-विश्वाप (वर्ग निश्ना क्षांच करवरस्य ।

জাপানী মেরেদের ছোটবেলা থেকেই অনেক সামাজিক



ৰিবাহের পূর্বাদিবস কলের আসবাৰপত্র এবং বাসন-কোসন ইত্যাদি বরের বাডীতে স্থানাম্বরিত হইতেছে

क्यांवाडी करेटव, बाहांत कत्तटव, बिंग्वांवन कतटव, कर्ह च्यीर्क ज्ञारन-- जनरे कार्यक निवर्क स्त्र । मरम क्यार्यक স্পার হলে ক্ষেৰ করে কোৰ দৰ্শ করে বুবে প্রসম্ভার ভাব এভাপ করতে হয় সে শিক্ষাও ভারা হোটবেলা বেকেই লাভ করে। ধবন কোন ভাগানী দ্রীলোক বুব ভাতে ভাতে চাণা-ननाव क्या गरम, क्यम ब्यस्क श्रव रम व्य (ब्रागरक।

कार्गामी (मरबरवर माक जार्गकी, कांच (बांके ७ पूर्वर



বিবাহের একটি বিলেব অমুঠান --বর কনে উভয়কে এই অমুঠানে নম বার করে 'সাকে' ( একপ্ৰকাৰ হুৱা ) পান কৰতে হুৱ

গড়ন নিৰুত না হলেও ডাঁদের চেহারার এমন একটা ক্রনীরভা আছে যার দরুন ভাবের পুরুষার দেহতলো এক অপুর্ব লাবণ্যে মভিত। তাঁদের প্রতি ক্যায় সহবং-শিকা ও মার্কিত ক্রচির পরিচয় পাওয়া বায়। তাঁদের অবস্থানৰ অনায়াস,

> ভাতে ৰভি-পুৰুৱ ও খোডন। ব্যস্তভা নেই, খণচ খণ্ডারও কোন লক্ষণ নেই। কাপানী বেরেবের चिवनाराभवरे यांचाच हुन चून पन, রেশ্যের মত কোষল ও পুন্দর। এএণ কেল-সৌন্দর্যা ক্রয়েডর বভাঙ ভাগানীদের প্রাচীন ভাতীয় প্রশা অভুসারে ভাপানী রম্বী বিধ্বা হলে পর জাকে নিক্সের কেপের কিয়দংশ কেটে কেলে শবাধারে রাথতে হয়। শবের সহিত ভাষা কৰৱত্বর। ভাপানী নেরেরা কেশের পারিপাট্যসাধনে মধেট বছ ७ बहुद नवदायन करवम । कारक्य নানাত্মণ চুলবাবার পছতি আছে। चानानी व्यक्तात्वक हमनीवाब धानानीक

विक्ति । काशास्त्र त्यादारा कृत वीववात क्षत्र माहेरम-कृता चानामा अक् यन श्रीत्माक चाटर। छात्रा विकारन पृश्वत वाफीटक बटन क्रिट्स्ट्रक हुन (बेटब बिट्स बास) अक्रवास हुन বাঁথলে ভিৰ চার দিন তা বোলা হর বা। ভূলোর বালিশে वाया विरय करन अवन नवरक दीया त्यांना नहे वरव बाव বলে বেরেরা অবেকে এক বরণেয় কাঠের বালিশে বাবা বেবে भवन करवन । किनियकै। स्टब्स् देशर्या अक निषर, टार्ट्स चिन

ইকি এবং হর ইকি উচ্চভাবিশিষ্ট এফট কাঠবত। এই কাঠবতের উপরের বিকটা ইাচিকাঠের বভ অর্থ-যুভাকারে কর্ডিড। বেরেরা ভাবের এইবারেশ এই কাঠের বাঁজের সব্যে রেবে ইনিক্রা বান। বাবা শুভে বাকার ভঙ্গ ভাবের বোপা নষ্ট হর না।

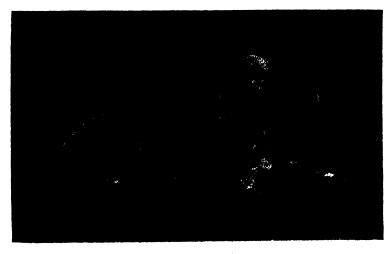
ভাগানী নেজেবের গোণাকপরিছের অত্যন্ত নরবাভিরাম।
একলোকে কিনোনো বলে। গোলাপী,
লাল, সবুজ, গোনালী প্রভৃতি হরেক
রঙের এই কিনোনোকলোভে ভাগানী
বেরেবের বেশ নানার। এই
পরিছেবের নব্যে হুটো করে বগলী
বাজে। সেওলোকে বলে গোলে।

নোবের ভিতরে তাবের ধরকারী টুকিটাকি জিনিব সবই বাকে—বেবৰ, একবানি হোট আরবা, হোট একট চিত্রনী, চিট্টপাল, ক্ষরাল, পাতলা কাগল (যা দিরে অবেক সময় ক্ষরালের কাল চালাবো বার) ইত্যাদি সবক্ষিত্রই সেই বগলীর মধ্যে বাকে। আক্ষাল অবেক সন্ত্রান্ত পরিবারের থেরেরা ইউরোপ ও আরেরিকার বেরেকের মত ভাট পরেন—কিছ বেনীর ভাগ বেরেই প্রধান পরিবের হচ্ছে কিমোনো।



খণ্ডৰ-শান্তভী এবং অভাভ গুৰুত্বনদের 'সাকে' নামক গানীর পরিবেশন-রভ কৰে

ভাগানী বেবেরা থালি পারে থাকেন না। তাঁরা নোভার নত একএকার পায়ছে ব্যবহার করেন, তাকে বলে 'ভাবি'। 'ভাবি' বেবতে হোভার নত, তবে বুব থাটো, পারের গোভালির উপরে পৌহার না। এওলি ভূলা-ভরতি ভাগড়ে ভৈরি, এবং পারের পিহন হিকে গোভালী বেকে হ'তিন ইকি উপর পর্বান্ত ভিন-চারটে আংটা হারা আইভানো থাকে। ভক্তমংকর বেবেরনের 'ভাবি' না প'রে বাভীর বাইরে বাওরা



আত্মীয়-সকলের সঙ্গে কমের ধামী-গৃহে আগমন

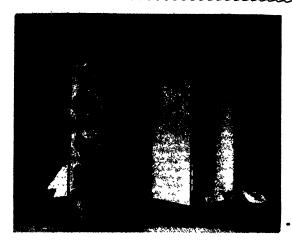
রীতিবিক্ত। তারা খবে বাইরে সব সমরেই সালা 'তাবি' পরেন। পুরুষদের 'তাবি'ও সাধারণতঃ সালা রঙের, তবে সমর সমর তারা কালো রঙের তাবিও পরে বাকেন।

জাপানী বেবেদের গ্রনাগাঁট অতি সামাত। বারা স্বাল ভারি ভারি সোনা-রপার ভালে আঞ্ছিভি করে উৎকট ক্রচির পরিচয় কেন না। কান সুঁকে বা নাক সুঁকে কৈহিক যয়পা সহু করে অলহার পরবার স্ব ভাঁচের নেই।

> বাধার গোঁজা চিক্লবী, সিজের কিডা, সোনার বা অপার প্রজাপতি এবং কুল, হোট একটা সোনার যতি বা মক্চেন্ ও আংট এই হ'ল বোটার্ট তাদের অলভার—আভ্যরহীন অপচ স্থার । তাদের পোলাক-পরিছের ও অলভারাধি বেশলে তাদের কুচির প্রশংসা না করে থাকা বার না।

> আগেকার দিনে ভাগানে বিভাচর্চার চেরে অরচর্চার উপর বেদী
> ভক্ত আরোগ করা হ'ত। সাবারব
> এককন সার্হাই বিভাচর্চাকে অবভার
> চোবে বেবত। কিন্তু বর্তনানে ভাগানে
> শিক্ষার ক্ষর বুব বেদী। দব্য
> ভাগানের শিক্ষা-প্রবাদীতে আবে-

রিকার আবর্ণ অব্সত। তাভার তেতিত বাবে বাবক একক্ষম আবেরিকান শিকাবিদ্ উনবিংশ শতাকীতে আপাবে
সর্কপ্রথম সাবারণ বিভাগর হাপন করে সর্কানারবের
মধ্যে শিকাবিভারের ব্যবহা করেন। ১৮৭৫-১৭ লাল পর্যাত্ত তিনি আপানের শিকাবলীর প্রবান পরাবর্ণবাতা হিলেন।
বাব্যভাত্তক অবৈতনিক প্রাথমিক শিকাপ্রতি তার পরারশেই
প্রথম আপাবে প্রবৃত্তিত হয়।



বিবাহ-অনুষ্ঠান সম্পন্ন হইবার পর কনে বাসর-ঘরে ঘাইতেছে

আপানী ছেলেমেরের। ছর-সাত বংসরে পা দিলেই ছুলে
বাওরা কুরু করে। তার পূর্বে বাড়ীতে তাদের শিক্ষা দেওরা
হর। মারের সদে শিশু বর্ধন বেড়াতে হার, তবন শিশুহলত
ভাতাবিক কৌতৃহলবশত: নূতন কিছু দেবলেই সে নাকে প্রর করে। মা-ও যবাসাব্য তার প্রশ্নের উত্তর দিরে তার কৌতৃহল নির্ভ করবার প্রবাস পান। শিশুকে চুপ কর, আলাতন করিস্ নে', বলে ব্যক্ত দিরে নিরাশ করেন না। এমনি করে বেড়াবার সময় শিশু তার মারের কাছে অনেককিছুই শেবে। আপানে প্রাথমিক শিক্ষা বাব্যতাব্লক। হয় বেকে বার বংসরের প্রত্যেক বালক-বালিকাকেই বিভালরে সিরে লেবা-পড়া শিবতে হয়। প্রাথমিক শিক্ষা শেষ করতে ভিন-চার বংসর লাগে। উচ্চ প্রাথমিক শিক্ষা স্বায়পন করতে আরও ছ্-তিম বংসর লাগে। মেরেদের লেবাপড়ার সকে সেলাই, গাব-



কলের বিবাহের পোশাক ( শিরো-মুদ্ ) পরিবর্ত্তন করালো হইতেছে

বাজনা, ছবি আঁকা ইত্যাদি এবং আরও নানাবিব ব্যবহারিক বিভা শেবানো হয়। ছবে জাপানী, চীনা ও ইংরেজী ভাষা, ইতিহাস, ভ্রোল, গণিত, বিজ্ঞান, পদাববিদ্যা, রসারন, কেশের শাসম-প্রণালী, রাইবিজ্ঞান, মিতাচার, শ্রীবচর্চা, ব্যারাম

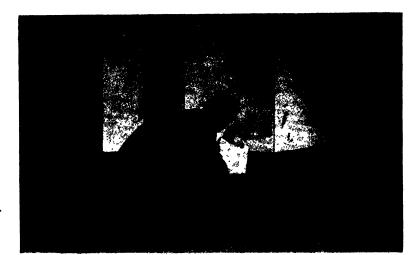
> ইত্যানি অনেক্লিছুই শিক্ষা নেওয়া হয়। গনীৰ বেলেমেরেকের নিনা বেতনে শিক্ষা কেওয়ার ব্যবস্থা আছে। যদি কারও বই কেনবার সম্বৃতি না বাকে তা হলে বিভালরের কর্তৃপক্ষ ভার বই বাভা ইত্যাদি কিনে দিরে বাকেন। বদি কারও কলবাবারের প্রসা না বাকে ভা হলে মূল বেকে ভাকে কলবাবার কেওয়া হয়।

ভাপাৰে বিহ্যালৱের সংব্যা ৪৬,০০০ এবং শিক্ষ-শিক্ষরিত্রীয় সংব্যা ৬,৫০,০০০ কব ।

৬ বেঁকে ১২ বংগর বর্নের লেথাণড়া-ছানা বালক-বালিভার গড়ণড়ভা হিলাব হ'ল ১১'৭৫---



विवाद উপनक्ष्म आध करनद शामाक-शतिष्क्ष चामवावश्य अवर च्छाड अव्याद अवर्गनी



প্রস্তির সাহাত্যকারিনী একটি ধাত্রী

দিছে। গত বিশ্বযুদ্ধে শাপানের মেরেরা শিল্প-বাণিজ্যের ক্ষেত্রে, ক্ষাকার্যো এবং সমর-প্রচেষ্টার সাহায্যকারিশীরণে যে



় এখন সাভূত্ব— সন্তানক্রোড়ে জননী

আৰাং জাপাৰে লেবাপড়া-জাৰা বালজ-বালিকাৰ সংখ্যা শতক্ষৰ প্ৰায় এক শত ক্ষম। পৃথিবীয় অভ কোন সভ্যা দেশে এত বেশী প্ৰাথমিক শিকাপ্ৰাপ্ত বালজ-বালিকা নাই।

বর্তমানে জাপানের পিজামন্ত্রী
শিক্ষাবৃত্তক চলভিত্তের সাহাব্যে
অধিকতর সূতৃতাবে ছেলেমেরেফের
শিক্ষাবানের ব্যবহা করছেন।
অনেকভলি সিমেমার তবু সংভতিবৃত্তক ছবি এবং 'নিউল রীল'
কোনো হয়। বর্তমান জাপান পিজাবীকা সংস্কৃতি ইত্যাদি নানা দিকে
এক বিরাট আহর্বে অভ্রাণিত হরে
উঠতে। ইদানীং জাপানের ম্পাক্ষাকে মেরেফের আধ্নিক বিজ্ঞান-

চক্ষা ও পিল-পিকার বিকে বিশেষ কোঁক দেবা যার।
আক্ষাল বেরেরা বেলেবের সকে বৈদন্দিন কীবনের
বিভিন্ন কেনে, কুল-কলেবের বিভর্কসভার, বেলার মাঠে,
হাসপাভালে, সমাক্ষ্যবার কেন্দ্রগুলিতে দলে দলে যে'গ



ক্ষের আত্মীগারা তার সন্তানের জন্ত দেবতার আত্মিকার লাভার্থ একটি তার্থ-সন্দিরে বাইত্তেছে

অপূর্ক কর্মনৈপুণ্যের পরিচয় বিষেষ্টিলেন তা সমগ্র পৃথিবীকে । নংক্রত করেছে। তা ছাতা ট্রানে-বাসে, রেল-আপিনে, নগুলাগরী আপিনে, বুলোপকরও তৈরির কারধানাতে সর্কারই আপানী নেরেরা কাল করছেন। সামাজিক জীবনে ছেলে এবং মেরেকের মধ্যে আবার মেলারেশার স্থবিবা থাকার আপানের জন্ন-তর্কারকের মধ্যে প্রারই পৃর্বারাপের সঞ্চার হয় এবং নিজেকের প্রকামত জীবনের সলী নির্বাচন করে তারা পরিগরক্ষের আবার হয়। মেরেকের সাধারণতঃ ১৮।২০ বংসরের পূর্বে বিবাহ হয় । মেরেকের সাধারণতঃ ১৮।২০ বংসরের পূর্বে বিবাহ হয় । মেরেকের সাধারণতঃ ১৮।২০ বংসরের পূর্বে বিবাহ হয় । মারেকের সাধারণতঃ ১৮।২০ বংসরের পূর্বে বিবাহ হয় । মারেকের সাধারণতঃ আইনসন্থত এবং বহ-বিবাহ আইন-অভ্নারে নিবিছ। তবে শ্রী বন্ধ্যা হলে সে কথা আলালা। ভাপানে বিবাহ-বিচ্ছেকে আইন আছে বটে, ক্ষিত্র সাধারণ আলালতে বিবাহ-বিচ্ছেকের মানলা হয় বলে অনেক শ্রীলোকই সন্ধাবশতঃ আলালতে বায় না।

আপাৰের বিবাহ-ব্যাপারে কলে দেবা, ক্ষেক্তে আম্বিনির করা, শোভাষান্তাসহ বরপক্ষের বিবাহ-বার্টান্তে বাওরা ইন্ডার্টি অনুঠার আমানের দেশেরই বন্ড। ভারতের বৌহবর্দ্ধ আপানের সংস্কৃতি-ক্ষেত্রে ও আতীর জীবনে বে কি গভীর প্রভাব বিভার করেছে, তার বন্ধ নিবর্শন আপানের সাহিত্যে, সামাজিক আচার ব্যবহারে, শিল্পে, স্থাপত্যে ও ভারতের আলও প্রপরিক্ট্র। আপানী মেরেরা এবন ক্রম্ভ প্রস্কৃতির পবে এসিরে চলেছে। নব আন্দর্শে অনুপ্রাধিত আপানী মেরেরা বিবাহিত জীবনেও সমাজ-সংখ্যারহুলক মানা আন্দোলনে এবং কর্মান্তের বিশিষ্ট স্থান অবিকার কর্মের বিশেষ্ট ।

## মহাপরিনির্বাণের পূর্বে

### ত্রীসুজিতকুমার মুখোপাধ্যায়

ুষ্র্বোর আলোর আলোকিত চলের আনন্দরারক রূপ আমরা মুন্ধনেত্রে দেশিরা থাকি। তুর্ব্য-প্রতিম মহামানবের অপূর্ব্য তেজঃ-প্রভাবে সমুজ্ল অভূগত জনের মধ্র চরিতপ্রভাও আমানিগকে আনকে অভিভূত করিয়া কেলে।

শ্রীর বোল বংসর আসেকার কথা। নাগপুর হইতে বোধাই বাইতেছিলাম। পথে ওয়ার্জা পড়ে। না নামিয়া থাকিতে পারিলাম না। ওয়াজার আশ্রমে বর্তমান কগতের সর্বাশ্রেষ্ঠ নানব অধিষ্ঠান ক্রিতেছেম, ভাহাকে না দেখিয়া কেমন ক্রিয়া বাই ;

শহরে এক যারাঠী ভন্তলোকের আভিব্য এইণ করিলায়।
শহর ইংতে কিছু পূরে মহাদ্মানীর আপ্রম। হুপুরের দিকে
সেবানে গেলাম। কর্ম্মকর্তা বলিলেন—"দেবা ইইবে মা।"
আমি পুনক্ষ অন্থরোধ করার বলিলেন—"আপনি কি কাগকে
পক্ষেন নাই, মহান্মানী কিছুদিন যাবং কাহারও সহিত দেবা
করিতেহেন মা।" ভনিরা মনটা হমিরা গেল। তবন ভন্তলোক
বলিলেন—"সভ্যার উপাসনার সমর সকলেই তাহার দর্শন
পান। আপনিও তবন আসিবেন।"

সকলের সলে এক হইরা উহিছে বেধার বেন আরাতি-বান ক্র হর। আমি একা উহিছে বেধিন, তিনি আমার সলে কথা বলিবেন, আমিও হুই-চারিট বছ বছ কথা বলিরা উহিছে আরুট করিতে চেটা করিব—মনের মধ্যে এইরপ তাব অবভাই বিল। কাজেই ঐরপ বর্ণনে আমার তৃতি ইইবার কথা নর। ভাই সাহুখনে নিজের পরিচর নিবার বছ রবীজনাবপ্রমুধ বছ বছ লোকের প্রশংসাপ্রসমূহ ভাষাকে দেবাইলাম। তিনি মুছ্ হাসিয়া বলিলেন—"যদি বরং দেবাহি-দেব মহাদেবও আসেন তবু বাপুনী এখন ভাষার সহিত দেবা করিবেন না।"

আমি বলিলাম—"খাই হোক, আপনি হয়া কৰিয়া আমার পরিচয়প্রশুলি ভাহাকে দেবাইবেম।" তিনি বীকৃত হটলেন।

ধণাসময়ে সাড্যোপাসনায় বোগ দিলাম। বড় ভাল লাগিল। এক থবির আশ্রমে অবস্থান করিতেছি—অন্তরে ইহা বেশ অন্তব করিলাম। উপাসনার বহু বেশবিধ্যাত ব্যক্তি উপস্থিত হিলেন। কিরিবার পবে লোক্সুবে তাঁহাজের পরিচয় পাইলাম।

আমি চলিয়া যাইতেছি—এবন সময় এক প্রেচ ব্যক্তি আমার নিকট আসিয়া বিনীতভাবে প্রশ্ন করিলেন—"আপনি কি বাংলাদেশ হুইতে আসিয়াছেন ?" আমিও সবিবদ্ধে উওব বিলান—"আজে ইয়া।" তিনি পুনহার প্রশ্ন করিলেন—"আপনি পূর্ববদে হয়িজনগণের মধ্যে কাক করিতেছেন ?" আমি বিনিতভাবে তাহার মুবের পানে চাহিয়া বলিলান— "হাঁ।।"

তিনি অপরিসীন বিনর ও সৌহার্কের সহিত বলিলেব—
"আনার নাম অর্তনাল ঠকর। আনিও হরিক্র-কর্তী।
বীবর্শালাল বাজাকের গৃহ-প্রাক্তের আনার তাঁবু। আপনি
বহি হয়া করিয়া আবা রাজে আনার আভিব্য প্রহণ করেব,

তবে আহি বড় আনকলাত কৃত্তি এবং আপনাত্র সকে আলাপ কৃত্তিয়াও উপতৃত হই। আপনাত্র অপ্রবিধা হইবে কি ?"

আৰি মুগণং বিষিত ও বুই হইবা পঢ়িলাব। ইনিই অব্যুত্তলাল ঠড়ত-নেবাবৰ্থে মহাদ্বার কমিণহত। এবন বিনত্তী, এত সভ্তল, এবন নিভহ্তার, নিবাড়য়র পুরুষ।

পরৰ আৰক্ষের সহিত আবি উহার সংক চলিলাম। 
ভাবুতে পৌছিলে তিনি সালরে সংস্লাহে আমাকে ভিতরে 
লইয়া পেলেন। নিজহতে তিনি অতিবির পরিচর্ব্যা করিতে 
লাসিলেন। আবার নিকট সব কিছুই বরের ভার বনে হইতে 
লাসিল।

আহারাদির পর পূর্কবদের হরিজনদের অবহার কবা,
আমি তাঁহাদের রব্যে বর্তমানে কি কাক করিতেছি ইত্যাদি
অতি আঞ্চলের সহিত জানিতে চাহিলেন। আমিও বর্ণাশক্তি
যাবতীয় বিষয় তাঁহাকে জানাইলাম। আলোচনা চলিতে
চলিতে রাজি অবিক হইরা পঢ়িল। তিনি তবন বরং আমার
বিহানা পাতিরা, মুলারি কেলিয়া শ্রনের ব্যবহা করিলেম।
শৌচাপারাদি বেবাইয়া দিলেন। শিররে পানীর জল রাবিলেম
এবং প্ররোজন হইলে তাঁহাকে জানাইতে বলিয়া রাজির মত
বিহার লইলেম।

প্রভাতে অন্বতলাল চলিয়া বাইবেন। তাঁহার বিদার-মৃত্য আবিও চন্দের সমূর্বে তাসিতেছে। ছেলেবেরেরা হড়াহতি করিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিতেছে। তাঁহাদের কনক-জননীরাও তাঁহার চরণে মাধা সূচীইতেছেন। বালক-বালিকা তর্নণ-ভক্তী, মুবক-মুবতী, প্রোচ-প্রোচা সকলেবই তিনি "ঠকর বাবা"। তাঁহার প্রতি তাঁহাদের কি প্রীতি, কি প্রছা। এমন সর্বাধনপ্রা চরণক্রলের বেণুক্ণার প্রলোভন সম্বরণ করা আহার প্রত্যে সন্তব হুইল না।

অন্বতলাল চলিয়া গেলেন। কিছ অভৱে আমার অন্ততর আমার হহিয়া গেল। উহিচকে দেবিয়া প্রকৃত মহন্ত বে কি বছ তাহার পরিচয় পাইলাম।

একটু পরে আন্তরে গেলার। এবানে সেবারে ছুরিছে ছুরিছে প্রাক্তন অভ্যাস-হোবে রঙ্ন-শালার চুকিয়া পঢ়িলায়। আনার লোল্প রসনা জীবনে অভ্যত এক বিন আনার ঠিক পথে লইরা গিরাছিল। সেবানে গিরা কেবিলান—মহান্তার সহ্বাদির পুলনীরা কভুরবা তরকারি কৃষ্টভেছেন। তাহাকে ক্রের ক্রিয়া আরও অনেকে বসিরা গিরাছেন। আনিও বেন নিজেরই অভ্যতসারে বসিরা পঢ়িরা তাহাকের সাহাব্য ক্রিছে লাগিলার।

ৰহীয়নী সেই নামী নেবাৰে এমন এক সহক, স্বৰ্থ পরিবেশ শুটী করিয়াহিলেন বে বৃহুৰ্তে ভ্লিয়া নেলাৰ—ভিনি এক কৰ্মপুক্য মহাপুক্তবের বহামাতা সহবাদিৰী এবং আনি এক ক্লম নিভান্ত অভান্ত অব্যাত সাবায়ন নাহ্য। ভাঁহার সরল, স্বেহনর নাড্রণে, নাড্বং আচরণে আনি বেশ-কাল-ফাভির কথা, তাহার ব্যবধান একেবারে জুলিয়া নেলান—নবে ব্ইল, আনি বেশ আনার নিজ বালির নায়াশরে না-নালীর নিকট বলিয়া বলিয়া গল করিভেছি।

এমৰ সহজে, সক্ষাতে, বিবা আভ্যানে প্রকে আপৰ ক্ষিবায় শক্তি উচ্চায় ছিল।

আন্তাৰেই স্নানাহার হইল। কর্ম্মকর্তা মহাশ্র হাসির্বে ববর দিলেন—"বাপুনী আপনার সহিত দেবা করিতে রাজী হইরাছেন।" অপরাত্রে নির্কিট্ট সমরে দেবা হইবে।

আৰীর আগ্রহে উচ্চার দর্শবের প্রতীক্ষার বহিলাব। পূর্বেই
বহাত্বাকে চ্ই-এক বার দেবিয়াহি। অতি নিকট চ্ইতেই
দেবিয়াহি। কিন্তু সকলের সদে নিলিয়া, গাঁচ জনের এক জন
হইরা দেবিয়াহি, কর্বনও একক মুবোমুবি বনিয়া ভাহার সহিত
আলাপ করিবার সৌভাগ্য আমার হয় নাই। সুতরাং অভরে
বে অপরিনিত আনজের উত্তব চ্ইয়াহিল—তাহা বলাই
বাহল্য। ঐ আনজের সহিত কিনিং দর্শও হিল। দর্শহারী
পরে ভাহা চুর্ণ করিয়াহিলেন।

ইতিমধ্যে ঘুরিরা ঘুরিরা আশ্রম দেখিতেছিলাম। আশ্রমবাসীদের বিনীভভাব চিন্তকে বিশেষ ভাবে আক্রই করিরাছিল।
নহাপুরুষের পার্যচরগণকে অনেক সমর বেশ গাঁকত দেখা
যার। দর্শনার্থী অভ্যাগত সাধারণ অনকে অনেক সমর ভাঁহারা
কুপান্নীতে দেখিরা থাকেন। কখনও কখনও ভূক্ষভাক্ষিন্যও
করিরা থাকেন। এথানে ভাহার ব্যতিক্রম দেখিলাম।

দর্শনের সমর হইরাছে। কর্মকর্তা বহালর আমাকে মহান্তার সকালে কাইরা গেলেন । তিনি তথন চরকা কাইতে-ছিলেন । সহাক্তমুবে আমাকে হাগত করিলেন । চরপনন্ধান প্রক সন্থবে উপবিষ্ট হইরা নিবেদন করিলান—"আমি হরিক্রন-কর্মী। বাংলাদেশ হইতে আসিরাছি। শান্তিনিক্রেম হইতে রবীজনাথের নির্দেশে আমি এই কাল করিতেছি।" তিনি শ্বিতরুবে আমাকে উংসাহ দিলেন।

রবীজ্ঞনাথ সথকে পৃত্য কিছু থবর দিরা মহাত্মাকে ধুনী করিবার লোভ হইল। একট শৃত্য থরোয়া সংবাদ দিয়া উহাকে সভাই করিবাহি ভাবিরা বনে বেশ গর্ম অভ্তর করিলায়। কিছু আমার গর্ম চুর্ণ করিবা ভিনি উত্তর হিলেন বে, তিনি উচা ইতিপ্রেই জানিবাছেন।

শাভিনিকেতনের এমন একট টাটকা অপ্রকাশিত সংবাদ তিনি ইংরাই মধ্যে এত চুর হইতে কেমন করিব। কানিলেন তাবিবা অবাক হইবা গেলান। কবির সহিত ভারার কিন্তুপ বনিঠতা হিল, এই ঘটনা হইতে পরে ভারা বোবগন্য হয়।

ইহার পর বাক্যহীৰ নীরবভার বহারানবের অভি সরিকটে বুবোর্ধি বসিরা রহিলাম। তাঁহার অব্যক্ত আশীর্কার আনার উপর বর্ষিত হইতেহে—অভরে আনার এইরূপ অনুকৃতি

कांत्रवर्षः, १।३३/२३ ।

ষ্টতে লাগিল। তাহার পর এগান করিরা বিহার লইলাম। পার্থবর্তী শিভ-শিভাগণ এবং বয়ং সহাতব্যন নহাছা আনাকে অতিবাহন করিলেন।

ভারের বাব ঐতিহাসিক গবেষণার বিষয়। ভারতের তপোবর এবন ঐতিহাসিক গবেষণার বিষয়। ভিত্ত সত্যিক্তারের এক তপোবন এই ভারতেই প্রত্যক্ষ করিলায়। বিবাসির তপভার বারা রাজণ হইরাহিলেন। উহা বৃতন হুগং হুট্ট করিতে পারিত। তপভার বারা বর্তমান ভারতে এই ভারতে পারিত। তপভার বারা বর্তমান ভারতে এই ভার একজন রাজণ্য লাভ করিরাহেন। বাহার জীবন ধর্মের জভ, বাহার জীবন পরের জভ, যিনি বিবাসার বৈর্ব্য বরিষা রহিরাহেন, সভ্যে বাহার একাভ আরহ, দান বাহার অপরিষের, সভ্য ইলিরকে যিনি ববে ভানিরাহেন, অহিংসাই

বীবার বর্দ্ধ, ক্ষাই বাহার ইইনছ, কীবের প্রতি ক্রণার প্রাণ বাহার ভরপুর, শুচিতা এবং সরলতার বিনি প্রতিস্থি, ফুল্ফ -সাধ্যার বিনি অভিতীয়—ভগবদিখাসে বিনি অটল—এই সেই ক্সতের সর্বপ্রেঠ মানব—ক্টবাসপরিহিত প্রাশ্বণ—গাড়ী।০

## कटेग्रा (मवाय

#### শ্ৰীআণতোষ সাকাল

मकत्व मकावनशानीय र'ता शांका अत्रवान .--বরাতলে কাঁদি আমি অসহার ভোমার সন্তান। **(र्य) बाह्य (हमाक्या) हैर्सनीय ब्लूब-विद्या**, সুবিতের তরে হেখা হখা নাহি আনে কোনো জন। ক্ষতক্তলে হেখা নাছি মিলে কামনার ধন. **জীবন রাখিতে ৩ধু পলে পলে যায় যে জীবন** ! কত হংৰ, কত প্লামি, কত ব্যৰাভৱা এ সংসাৱ---উচ্ছসিছে চতুৰিকে উভৱোল অঞ্চ-পাৱাবার ৷ উৰ্বনাভতম্বসম স্থলি' বিশ্ব কোন্ আদিকালে, चार्गम बरबष यहा. अ एक्टिव मृष्टि-चचवारम । विरांत क्षणाम यकि बादका क्षज् , वित्रमिकिकात-কোৰ প্ৰয়োজন ছিল অহৈছুক স্থন-দীলার ? विव योद--वाळि चारम, यक्षकु चारम चांत्र योद ব্যবৃদ্ধ, হঃবস্থৰ, কালাহাসি, আলোক-হালার **ঘটকার শহুসম বিখচক চলে আবর্ডিরা—** উদাসীন ৰঙাসৰ ভূমি ভবু দেবিত চাহিলা ! ভোষার অভিছে ভবে কগভের কোন্ প্ররোজন ?---মন্দিরে মন্দিরে ভবে রূপে রূপে কেন চিরভন উবাভ এ অবদীতি কোট কঠে উদ্ধেলিয়া---**८ प्रविद्य, ए निर्देश, निर्मिशन (कामादि नानिदा ?** 

चन कचनदान रिष्ठ छनिए चर्तर--দীনহ:বী, উৎপীড়িত, ব্যথিতের ভূমি কেছ নহ ৷ তবে ভূমি কার প্রভূ ?—যারা শুবু ভোমারি মতন বিপুল ঐশ্ব্যমাৰে নৰ্শ্বেলাসে কাটার ভীবন---খগতের হঃবব্যবা ভূলেও দেবে না কভূ চাহি' মুহুমুক্ত চলে যাত্ৰা সুখেৱ সোনাও তথী বাহি'---ভূমি কি তাদেরি ৩৭ ? তবে কেন নয়নের জলে বিখলোক ভাকে ভোষা ? সে কি শুবু আত্মভুৱি ছলে ? जनवा कि जब जुन १--जाबारमिति बरसद बजन ভোষাৰে গড়েছি যোৱা বুগে বুগে কৰিবা যভন। আমাদেরি স্নেহমায়া, ছঃৰম্বৰ তোমা আবোপিয়া जाकुमा बुँकिया मृदय अ जरजावमायमक विद्या । তাই তো এঁকেছি মোৱা কল্পনায় সুধৰৰ্গনায়, অনত ঐখৰ্ব্য ভূমি যেপায় ভূঞ্জিছ অবিৱাম ৷ হয়তো তুষিও নাই---খাহে শুবু শব এ প্রহৃতি, জীবন-উদেশ্বীন, বর্ম তার নিরম্বর গতি প্ৰাণহীন বছসৰ কৰ হ'তে শুবু কৰাৰৱ ;---গভীর জাঁধারে ঢাকা পরিণাধ তার জতঃপর ! খবাৰ্থ সকিত কৰ্ম---খলখ্য সে প্ৰাৱম্ব প্ৰাক্তম---ভাই যদি মাতুষের হু:ৰপুৰ করে নিয়ন্ত্ৰণ---**কাহারে জানাই ব্যবা ?—এ যে শুবু পরণ্যে রোলন** কৰ্মল্ৰাতে ভেলে বাই অসহায় ভূণের মন্তৰ।

## প্রবাহ

### ঐবিভূতিভূষণ গুপ্ত

30

্ষ্ত্র কৃছিল, ভোর হতে এবনও চের দেরি। আপনি ভতক্প এক্টু গভিরে নিন্না।

ছুনাইবার আঞাৰ নিলির দেখা গেল না। সে পুনরার বলিল, আমার হুর্ভাগ্যের কথা কাউকেই আনাব না ভেবে-ছিলাম, কিছ আমিও ভো মানুষ — একলা একলা এ বোকা আর বইতে পারহিলাম না। পুনরায় নিলির হু'চোব কাপসা হইয়া উটিল। চোবের কোল বাহিয়া হু-কোঁটা জল গড়াইয়া পঢ়িল। বুলর বাধা দিল না। নিলির বানিকটা কাণা দরকার। নইলে অভবের আগুনে ওর ভিতরটা হরতো একেবার অনিয়া-পুছিয়া বাক হইয়া যাইবে।

নিলি বৃহ কঠে কহিল, এক এক সময় আমার মনে হয়, এত বে শিক্ষার অহজার, আধুনিক সমাকে এক বিশিষ্ট বরণে চলাক্ষেরা, সে সব আমার রইল কোবার। সবাই আমাকে ক্লে বাবে, শুরু ভূলবে না আমার বিধ্যা পরিচয়কে—যা এক্ষোরেই আমার স্বন্ধণ নয়। নিজের কথা আর তেমন ক্রে তাবি না। তাবতে তালও লাগে না। কিছ—লিলি ক্রাচী সমান্ত না করিয়াই তক্ত হইয়া গেল।

র্থর অভ্যন্ত ভাবে উভর দিল, আমার মনে হয় এক দিন পুনির্বাল ভার ভূল বুকবে।···

লিলি ব্যৱতে ড্ৰার মাৰখানে থানাইরা দিল। তার 
কর্মন্ত তীকু হইরা উট্টবাছে। কহিল, তাতে আমার কিছুই
আসবে বাবে না। আমি ভেবে পাই না এর মধ্যে আপনি
ক্ষির্বালের ভূলটা কোধার দেখলেন। এ তার বভাব…লিলি
থামিল। তার নীরস কর্মন্ত সভবত তার নিজের কামেও
অভ্যন্ত বেলুরো ঠেকিয়াছে। সে অপ্রতিত হইল এবং মৃতুর্ভে
আত্মসংবরণ ক্ষিরা শাভ কঠে কহিল, যারা না জেনে ভূল
করে তাদের সঙ্গে আপোর করা চলে, কিছা ভূল করাটা
বাদের প্রকৃতিগত তাদের সন্ত্তে কোন ক্ষাই বলা চলে না।
ক্ষিত্র এসব ক্ষা এখন থাক, আমি বভ ক্লাভি বোধ করছি।
আর ভাবতে পারহি না।

ৰুম্ম বিলা প্ৰতিবাদে পুনৱার বাহিরের পানে চ্**ট্ট** কিয়াইল।

**পছरिय मकान** ।

আন বোৰ উটিবাছে। উঁচু পৰ্যত আকাশকে আঞ্চাল করিবা রাধিবাছে। দূরে নীল আকাশের গাঁর কে বেন অবৃত্ত হতে প্রতীয়ত্তর নীলের বাপ কাটিবা বিবাহে। ছ-পাশে আকাশের অসীন বিভার; নাৰধাৰে সোজা ইাড়াইরা আহে ছর্পন্য প্রতিবছক। চতুর্বিকে বনকুলের প্রাচ্ন্য, প্রকৃতির ভান অব্দেওদের পূর্ণ বিকাশ। বেল্ল ছুরাসের ছোট গাড়ী ক্রভ চলিরাহে—ক্থনও আলো ক্থনও হারার বুক্তে বেদ একটা সচেতন ভার্ব রাধিরা।

মহর। কুলের মন-মাতাল-করা সুবাস, বনকুলের তীত্র গছ বাতাসের সহিত মিশির। ছানটির দ্বপ পর্যন্ত বনলাইরা দিয়াছে। এক পাশে বাড়া পর্বাত, অপর পার্বে ছোট-বড় গাছের সারি। ডালপালা নাই বলিলেও চলে। নিরাভরণা বিষবার ভার সর্বাবিধ বাছলার্যন্তিত। এও এক প্রকারের সৌন্দর্য। গাছের মাধার পাতার পাতার রোজের বিভিনিকি; বনবিহসের কলকাকলি বামিরা গিয়াছে। বেলা বাড়িতেছে।

ট্রেন ছুটরা চলিয়াছে কবন মহর, কবনও ফ্রন্ত গতিতে।
চাবাগানের কুলি-কাষিনদের মধ্যে কাজের মরশুম পদিরাছে।
সাবনের দিকে দোলায়মান শিশুসভান, পিছনে লখাটে বরণের
বেতের বৃড়ি। চা-পাতা সংগ্রহে হাত উহাদের সমান ভাবে
চলিতেছে। ট্রেনের যাওয়া-আসার দৃষ্ঠ উহাদের অভ্যন্ত
হইরা গিরাছে, তাই মনে আর মুতন কোন সাঞা জাগার না।

ষ্পায় নীবৰে বসিয়া আছে। লিলিরও কোন সাড়াশস্থ নাই। এই কাষরার ওরাই ভগু যাত্রী নর, আরও বছ আছে— যদিও ভারা বাঙালী নর। কিছ ব্যায় লিলির কথা বেন ক্রাইরা গিরাছে। ব্যায় লিলির চিভাক্ল মুখের পানে চাহিরা চাহিরা ভাবিভেছিল বে, এভ বছ হংবটাকে ঐ থেরেট কেষন করিয়া বিনা প্রতিবাদে এরপ চূচভার সহিভ প্রহণ করিল। অক্যাং কল্পনার লিলির পাশে আসিয়া বেন টাড়াইল মঞ্জা। মুখে ভার ভিজ্ঞ বিজ্ঞপভারা হাসি—কোব ধিয়া বেন টিকরাইয়া পড়িভেছে, আভানের শিবা।

র্বর হঠাং চমকাইরা উঠিল। বসিরা থাকিতে থাকিতে তার তলা আসিরাহিল, আর সেই অ্যোসে মঞ্বা বেল তাহাকে চোথ রাঙাইরা সেল। র্বর একবার নভিয়া-চড়িরা বসিল। নিকেকে নিকে প্রর করিল—এ কি মুর, না নিক্রেই অভাতে এই সব উত্তই চিন্তাকে সে মনে মনে পোরণ করিরা আসিতেহিল আর তলার বোরে সেওলিই আমুপ্রকাশ করিরাহে। কিছু সে ত' কাহাকেও কাঁকি দের নাই। কিংবা প্রের বিবার চিন্তাও তাহার মনে ছান পার নাই। ব্যর নিকেকে বার বার প্রশ্ন করে, কিছু উত্তর মেলে যা। অবচ মনটা তাহার অকারণে ভারাকাভ হইরা থাকে। মনের উপর হুইতে এই পারাধ-বোরাকে বেন কিছুতেই মারাবো বার

না, বরং আরও ভক্তার হইরা তাহার বুকের উপর চাপিরা বসে। কিছ এসব কথা কাহাকেও বলিবার উপার নাই। বুলবের বন সহসা বেশের পথে চুটরা চলে। এবানকার কাজ শেব করিরা আর একট বুচুর্ভও সে অপচর করিবে না।

29

প্রবোদন হইলে নাছ্য যে কত অবলীলাক্রমে অভিনর করিতে পারে তার প্রমাণ আব্দ ছই-তিন দিন যাবং বুলর এবং লিলি দিরা আসিতেছে। বাহির হইতে কিছুই বুবিবার উপার নাই এবনি নিধুত এবং সহক তাবের অভিনর। তাই এবং বোন—এই তাবের পরিচর।

রাক্বাড়ীর সীমার মধ্যেই বাংলো টক করা হইরাছে। বাংলোধানি ছোট হইলেও সুত্তর। সত্ত্বেই একট কুলের ৰাগান, ভাহাতে নানাভাতীয় বহু পারচিত এবং নাম-না-कामा कृत्मत कर्म् नमार्यम । तार क्षारेता यात । किक ব্ৰব্যের এ ভারগাট ভাল লাগিতেছিল না। এর চেরে প্রামের के हुनीह बाहित १४, शबाब कल दालित देना... मूँ हैतारमद वक मीचिट्ड (बालाबाकदारमद चराव वाहरवन), किश्वा क्रवक হেলেদের নদীর কলে মাতামাতি-এখলিতে প্রকটা দীবছ অনুভূতির ব্দর্শ পাওয়া যায়। এমন কি. এই সময়ে পুঁটবামের কাঁচুনে খেরেটার একবেরে কাছাও খেন ভার কাছে বির্ভি-কর নয়। -- কিছ এবানকার আকাশ বঙ্গিত। ছানে ছানে চ্ঠ প্রতিহত হয়। কৰে কৰে বন-যোৱদের কর্বশ কণ্ঠদর নিভূত চিছার ব্যাঘাত জ্বার। এখানে তার কোন আকর্বনই নাই. বরং একটা গভীর ছুল্ডিভা তার চিভকে সারাক্ণ আছ্য় করিয়া রাখিয়াছে। তথাপি এখানে দিনকরেক তাহাকে থাকিতে ছইবে। এথানে পৌছিয়াই লিলি শহ্যার আশ্রয় লইরাছে, তার হইরাছে---বদিও বেশী নর। কিছ ভত্রতা বলিরা अकडी कथा चाटा. यन विश्वांश अकडी वस चाटा। निनि খবত বলিয়াছিল---সামাত খর যধন, তখন আপনাকে খার আঁচকে রাধা উচিত হবে মা।--কিছ লিলি বাহাই বলুক এবানে সে ভার সহোদরা স্ত্রণে পরিচিভা বার মর্ব্যাদা সকলের কাছেই আছে। ব্যৱ এথানে কোন দিক দিয়া कोरे वार्षिए চাহে ना।

রাজাবাবুর ছেলে আজ শিকারে যাইবে। মুখ্যের ডাক পজিরাছে। তার একান্ত অস্থ্যের বুলর যেন তার অস্থানী হর; নজুবা সে হঃখিত হইবে। ইতিমধ্যে ছেলেটর সহিত বুল্যের আলাপ-পরিচয় হইরাছে। চমংকার ছেলে।

ব্যবহকে লে ছাছিব। দিতে চাহে না, বলে, এবানেই তার বাবাকে বলিবা লে তার একটা ব্যবহা করিবা দিতে পারিবে। ব্যবহ কিছ প্রতিশ্রুতি দিতে পারে নাই। আপাততঃ দিন-করেকের হুত তার দেশে না গেলেই নর। তার উপর প্রীভার, ভ্লাক্লের উপর তাহার তবিবাৎ নির্ভর করিতেহে। বেলেটর ইক্ষা সে ব্যৱের কাছে ইংরেজী পোরে। কিছ এসব পরের করা। সময়মত চিছা করিরা বেবিলেও চলিবে। আপাততঃ তাহার সহিত বৃষ্তের শিকারে মা পেলেই নাকি নর। বৃষ্ত্র আপতি ভূলিল বটে, কিছ শেব পর্যন্ত তাহাকে নির্ভ করিতে পারা বাম নাই। লিলির অন্ত্রতার সংবাদ বিবার সকে সকে নাসের ব্যবহা করিবার জভ লোক পাঠানো হল। মোটের উপর বৃষ্ত্রকে আভক্তের দিনে ভার চাই-ই। হেলেটর সব ভাল, কিছ বভ একরোবা।

উহারা হরিণ শিকারে বাহির হটরাছে। স্তরাং হাতি-হাওদার প্রয়েশন নাই। মূহ সতর্ক ওদের গতি। হরিণও অত্যন্ত সাবধানী। গাছের পাতা ধসিরা পঢ়ার শক্তে অহুন্ত হটরা যার। আপাতত তাহারা চলিয়াছে অপেকারত হোট একটা পাহাডের গা বাহিরা। এবানে শুর্ বন-বোরগ এবং পাবী মেলে। বন-বোরগ যারা হরিণ শিকার অপেকা কট-সাব্য। উহাদের ডাক শুনিরা হানের দিশা পাওরা আরও শক্ত।

ছেলেট অনুষ্ঠন বকিয়া চলিয়াছে। বাৰ ভায়ুক এবিকেয় পাহাতে বভ একটা দেখা বার না। তারা থাকে আয়ঞ্জ নিবিভ অনুষ্ঠ দেখা বার না। তারা থাকে আয়ঞ্জ নিবিভ অনুষ্ঠ দেখা বার না। এমনি নিবিভ, এমনি বনসন্থিতি সেখানকার গাহ-পালা। সে সব পাহাছে ছোটবড় বরণার অভাব নাই। ছল ছল করিয়া বরণার অনুধারা অবিরাম বহিরা চলিয়াছে। সেখানে সব সময় শিকার সহজ্জভাত। পিপালা নিটাইডে বভজ্জর ঐ গভীর বনে বরণা ছাড়া আর অভ উপার নাই।

সহসা ছেলেট থামিল। নাকের কাছে র্থর মিট একটা গছ অহুতব করিল। কতকটা কামিনী-আতপের স্থগছের মত। অহুচর হ'জনকে পাহারী ভাষার কি বলিরা দে বুলরের উদ্বেশ্ত কহিল, একটু সাবধানে চলবেম। কাহাকাছি কোথাও পাহারী সাপ বেরিয়েছে। ছেলেট বন্দ্রটা বাগাইরা বরিরা অঞ্চনর হইরা চলিল। কিছ সাপের সাকাং মিলিল না। দেখা দিল রটা। সে তো বৃট্ট মর, বেন বর্ণার অঞ্চাপ ছারা কেছ তাহাদের বোঁচা মারিতেছে এমনি ভার বেগ। তাহারা সিক্ত বল্প অঞ্চনর হইরা চলিল।

অর্জণেই রোদ উট্টল। এবানে রোদ এবং বৃট্ট এমনি
পালাপালি দেবা দেৱ। এমনি সমরেই হরিণের সাজাং
মেলে। ছেলেট বৃদ্ধীতে চক্তল হইরা উট্টিল, যেন এবুনি
ভরানক একটা কিছু সে করিরা বসিবে। কিছ একটা কিছু
করিরা বসিবার পূর্বেই আর এক দিক বিরা অবহা কটল
হইরা ইাড়াইল। ছেলেট হাসিরা কহিল, ভর পাবেন না,
ও কিছু নর। কিছ বৃদ্ধর আর্থভ হইতে পারিল না।
বাক্তিরা বাক্তিরা লিহরিরা উট্টিতে লাসিল। কোবা হইতে
ছোট বড় অনংব্য কোঁক আসিরা কুটরাছে।

**ट्याम प्रवाद राजियूट करिन, या गारास छे**नत---

ন্তমন এমন তাবে লাকাইনা উঠিল বে উপস্থিত সকলে একসকে হাসিনা উঠিল। হেলেট তান পূৰ্ব-কথান পুননারভি করিনা সহাতে কহিল--ভাহলে হাতে থানিকটা ধূধু মেথে ধরে ধরে হুঁছে কেলে হেবেন। তানের কোন কারণ নেই।

পুনরার পুরু হইল উহাছের নিঃশব্দে প্রকান। অতি 
সাববানে পর চলিতে নিরা রুদ্ধর রীতিমত অভ্যনত হইরা 
পদিরাহিল, সহসা চমকাইরা উঠিল হেলেটর বন্দুকের 
আওরাকে। রুদ্ধর প্রমক্রিরা ইাড়াইল। সন্মুর্বে বানিকটা 
বোঁরার কুঞ্জী। বপ করিরা একটা শব্দ। পাবা বটপট 
করিরা তীত ও মন্ত পকীকুলের ফ্রুন্ত প্রদারন। তার পরে 
একেবারে সব চুপচাপ। কিছুক্ষণ পূর্বের যে এবানে কোন 
ব্যাপার বটনাহে তাহা যমেও হর মা।

হেলেট উচ্ছুসিত হইবা উঠিল। কহিল, শিকার পঞ্চেছে।

মন্ত হবিণ। হরিণটি সতাই বছ। তার তথন শেব অবহা।

একটা বন্ধপাছচক অব্যক্ত আর্ডনাদ বেন মাছ্যের নির্ভুরতার

বিরুদ্ধে নালিশ আনাইতেছে। ছট করণ চোঝে বে মৌন
বেদনার প্রকাশ রহিরাছে মাছ্র তাহা বুবিতে পারে না,

তাই এই নির্ব্বাক পশুর বেদনার নির্বিকার থাকিরা সাকল্যের
আনক্ষে উচ্ছুসিত হইরা উঠে। এমনি জীবন-মরণ লইবাই সর্ব্বের

নির্ভুর পেলা চলিরাছে। বর্ব্বর-রূপ হইতে স্কুর্ক করিবা সভ্য
জগতের কোথাও এর এভটুকু ব্যতিক্রম নাই। শুরু ক্ষতি এবং
প্রারোগের রক্ষক্রের। শুরু জীবন লইবা হিনিমিনি প্রকা—
ক্ষমণ্ড বা পশুর, ক্রমণ্ড বা মালুযের।

হেলেট হ্রিণটকে বহিনা লটনা বাইবার কর্ত অন্তর্গের বির্দ্ধেশ দিল। কিরিবার কর্ত সে ব্যন্ত হইনা উঠিনাছে। আজিকার ভোকের একটা বিভারিত তালিকা সে রুবে রুবে বলিরা গেল, ব্যরকে নিমন্ত্রণ করিতেও সে ভ্লিল,না। হেলেটর উদ্ধাস উভরোভর হৃদ্ধি পাইতেছিল। কবে সে পিভার সহিত হাতীর পিঠে চড়িরা বাদ শিকারে সিয়াছিল। কেন্দ্র করিরা তাবের শিকারী হাতী আগশক্তি ঘারা কাছে-পিঠে বাবের অভিবের আভাস পাইরা ও জ আন্দোলিত করিরা ইন্দিত ক্রিরাছিল, তাহার বাবা এক গুলিতে সাজে আট কুট লখা একটা বাবকে যারেল করিরাছিলেন, নিম্ম হাতে ক্ষতা পাইলে সপ্তাহে অভতঃ কুই নিম সে শিকারে হাইবে এবং অভিবেই বাবার চেরেও পাকা শিকারী হইনা উঠিবে—এই ক্রাঞ্জিই প্রসক্তমে সে মুল্বাকে বলিরা চলিল।

ৰ্মৰ কভক ভনিভেছিল কভক বা ভনিভেছিল না। হঠাং উংকৰ্ণ হইৱা বলিৱা উঠিল, 'আপনি ফি বলছিলেন ?'

হেলেট হাসিরা উভর দিল, শিকারের গর আগনার ভাল লাগে না বুবি ? এঃ--ভার ভাববানা এইরূপ বেন রুবর একটা অপরাধ করিয়া বসিরাহে। কিন্ত ব্যবহ তার উক্তির সহজ সারল্যে উৎকুল হইরা উঠিল।

বাংলোর কিরিতে ব্যৱের প্রায় সভ্যা হইরা গেল। হেলেটির সাবর আহ্বানকে লে উপেকা করিতে পারে নাই, কিছ কিরিয়া আসিয়া লিলির ব্যের তাপ বেবিয়া সে অত্যন্ত অবতি বোব করিল। নাস কেও ব্যব ব্যব্ত দেখা গেল।

লিলির জান ছিল না, মাবে মাবে এলোমেলো বকিতে-ছিল--নিজের লাছিত জীবনের অসমত ইতিহাস। নাস ইহাকে প্রলাপ মনে ক্রিলেও, মুম্বরের ক্তি টিক ভাহা মনে হইল না।

পরের দার খাড়ে লইরা মহা বিপদেই সে পছিরাছে।
এবন চলিরা যাইতেও বাবে—পছিরা থাকিতেও মন চাতে না।
লিলির ক্লিষ্ট বিবর্ণ মুখের পামে চোব পছিতেই কেমন মারা
হয়। সহায়সম্পদহীন বেচারী। মুখর খাটু হাতে লিলির
পরিচর্য্যা করিতে অঞ্জসর হয়। নাস বাবা দের, আমি যবন
রয়েছি—

মুখ্য কহিল, লে তো দেখতেই পাছি কিছ আমারও তো্ একটা কর্ত্তব্য আছে···

উভর মিলিল, তা আছে বৈ কি, কিছ আমরা এ কাজে অভ্যন্ত, আপনি তা নন।

কণাটা সত্য। তা ছাড়া মুখর এই মুহুর্ত্তে বড় ফ্লাড়। উপকার করিতে গিয়া ক্ষতি করিয়া বসিলে তবন বুঁকি লইবে কে? মুখর একটু যেন লক্ষিত কঠে কহিল, কথাটা যিব্যে বলেন নি আপনি, কিছা দরকার হলেই ভাক্বেন আমায়। আনি পালের ব্রেই আছি।

হ্বর প্রহানোভত হইরা পুনরার থামিল, কহিল—ওর মানসিক অবহা তাল নর, তাল থাকতেও পারে না। তবে একটা কথা আপনাকে কানিরে কেওরা আমি আবর্ভক বোধ কর্মি। লিলির শরীরের অবহা বুবে ঔষধপত্তের ব্যবহা করবেন। অবহাটা ভাজারকে জানানো হয়েছে ভো ?"

নাস ক্ৰিন, আপনার উপদেশ ভুলব না। তবে আমরা এই নিরেই তো দিনরাত আছি—দেখনেই টের পাই। ভাজারকে আমি সবই বলেছি। ব্যবস্থাও নেই মতই হরেছে।

बनव मार्न दक बक्रवाम विक्रा कव्म छात्र कविन ।

ব্ৰর পাইরা রাজাবাব্র পুঞ্জ আসিরা উপস্থিত হইরাছে।

চিকিংসার ব্যবহা করিরা নাস কৈ বার বার সাববাব করিরা।

বিল এবং মুমরকে শিকারে লইরা মাইবার ক্ষত বারক্ষেক্

হংবঞ্জাশ করিরা ভাহাকে উদ্দেশ করিরা কৃষ্টিল, ভা বলে
ভর পাবার কিছু বেই। এবান্ডার ক্ষল গারে প্রকাই প্রার

স্বাইকেই প্রব্ন প্রব্ন কুমতে হর এক-আব্বার। সরে
প্রেল আর হুর্তাবনা বাকে না।—

ण रवरण पार्क मा, किंद्र वृत्तरव विमर्शन त्वम

অহাতাবিক রকন হীর্থ হইরা উঠিরাছে। এবনি করিরা চূপ-চাপ রুদীর বরে বিন কাটানোতে সে অভ্যন্ত নর। তাই বদ অহতি বোব হয়। তা হাড়া সমস্ত ঘটনাটা তাহাকে বেন কৃতক্টা অভিতৃত করিয়া কেলিয়াছে।

বেলেট রোজই একবার করিলা বেখা দিলা যার। দূর ইতৈ দৈনজিন ব্যরাধ্যর লইলা যায়। কথাবার্তার থারা একটা নির্দিষ্ট গভীর মধ্যে আবদ্ধ থাকে। মুল্নয়ের এই নিংসকভা ভাল লাগে না।

লিলি এখন আরোগ্যের মুখে। অরটা মারাক্সক না হইলেও ভোগান্তি কম হইল না। সে প্রায় ছই সপ্তাহ এখানে আসিরাছে। নানা বকাটে পভিয়া মঞ্বা কিংবা তার বাবাকেও একটা সংবাদ দের নাই। না ভানি তারা কি ভাবিতেহেন। ঘটনাচকে পভিয়া সে এমনট করিতে বাধ্য হইয়াছে।

গত কাল লিলি অন্নপণ্য করিবাছে। আর মাত্র করেকটা দিন পরেই সে গ্রামের পণ্যে যাত্রা করিতে পারিবে। আর কোন থবর সে দিবে না—যখন এতদিনই দের নাই। অক্তর্যাং সকলকে বিশ্বিত করিবা দিবে। মা হরতো পূর্ব্বে না জানাইবার জভ থমকাইবেন—তার বাবা হরতো থড়ম পারে গ্রহুষ্ট করিবা আসিবা উপস্থিত হইবেন মার রামার তদারক করিতে। কিংবা রাত্রেই ক্ষেত হইতে গোটাকরেক কচি বেশ্বন ভূলিরা আনিবা ভালের সহিত ভালার ব্যবহা করিবেন।

ৰুদ্ৰর সহসা অভ্যনক হইরা পভিল। গ্রামের একধানি জীবত চিত্র ভার চোবের সন্থুবে যেন মূর্ত হইরা উ**টি**রাছে। পুঁটবামের বড় দীবির খাছ জল ভার চোবের সম্ববে যেন টলমল করিতেছে। পরস্ক রোদের শেষ মান আভা দীবির ছলে পভিয়া এক অপূর্ব্ব বর্ণবৈচিত্তোর স্কৃষ্টি করিয়াছে---আর সেঁখানে সাঁভার কাটভেছে বেলে ইাসের বাক। মাধার উপর দিরা উভিয়া চলিয়াছে সাদা বকের সারি। মেঠো পর্য ৰবিৰা ক্লৰকেৱা চলিহাছে লাকল কাঁৰে নিজ নিজ ঘৰের পানে। বুদর বেন একটা জীবত সভার অভ্তৃতিতে বিবাদ হইরা পভিল। দীবির পাড়ে ছলের কোল বেঁবিরা কত লোক হল বাঁৰিয়া বাছ ৰৱিতে বসিয়া সিয়াছে। এইবার হয়তো प्रात्यक्र हिन क्रीहिता शुर्स् कितिवात प्रात्ताक्य क्रिक्टिए। বোবের ব্লাল আভাইকুও হরতে। আর নাই। নারিকেল গাঁহের পাড়ার পাড়ার আলোর নাচন এডক্রে থামিরা পিরাছে। বরে বরে বাজিয়া উঠিয়াতে মদল-পথ। এক বার, আর এক আলে--এ বেদ তারই আহ্বাদ। রুবরের তাল नार्थ। अबू जानरे नार्थ मा। त्न जानवारन आस्मद अरे পারিপার্বিককে, ভার স্থ্ব আর ছংবকে--বার সলে ভার শাভীর বোগ।

লিলি বৃহ কঠে আহ্বাৰ ক্রিল:। ব্যর এক বৃহুর্তে ক্রবা

হইতে বাজবের কঠিন থরে কিরিরা আসিল। লিলি কবিল, কাল কিছ একটু বেশী দূরে নিরে বেতে হবে। এবন তো একটু সেরে উঠেছি আমি, দেহে বামিকটা কোরও পাছি। তা হাড়া আর কটা দিন আহেন আপনি।

একটু থানিরা লিলি পুনরার কহিল, বেশ হ'ল কিছ। সহত্ত দুইতে দেবতে গেলে আমরা একে অপরের আছীর নই, অবচ সভ্যিকারের একটা সহত্ত গড়ে উঠল। গড়ে যথম উঠলই তথ্য একেবারে তেওে কেলবেন না। আমি যে কত বছ অসহার তা আপনার চেরে বেশী তো আর কেউ বুর্ববে না।

মুলর শুবু বান্তিক হাসিল, কোন উত্তর দিল না। স্বর্থের পরে লিলি যেন বানিকটা ভাবপ্রবণ হইয়া উঠিয়াছে।

লিলি পুনক্ত কৃষ্িল, এবারে কিন্তু মঞ্জে সদে নিবে আসতে হবে।

ক্ষাটা বলিয়াই নিলি ক্তক্টা অভ্যনক হইয়া পঢ়িল, কিছ মুদ্রর্ডেই সামলাইয়া লইয়া সে কহিল, তা হলে তাকে আমার আসল পরিচয় না দিয়ে নিয়ে আসবেন না যেন।

এক মৃত্তে লিলি বদলাইয়া গেল। তাহাকে বেন আরও ক্যাকালে, আরও চুর্বল দেবাইতেছে।

মুখন সবই দেখিল, সবই বুৰিল। সোকা হুইরা উঠিরা বসিরা শাস্ত কঠে কহিল, ভোমার সভ্য পরিচরই আমি ভাকে দেব। ভাভে ভোমার গৌরব এভটুকু ক্লাম হবে মা। মা কেনে বে ভূল আমি করেছিলাম ভার লক্ষা এবং প্লামি আকও আমি ভূলতে পারি মি। আমার একথা ভূমি বিখাস কর লিলি।

লিলি নতমন্তকে চূপ করিয়া বলিয়া রহিল। বৃষয়ও তথনকার মত আর কোন কথা কহিল না। বলিবার মড কিছু হয়তো হিলও না। ...

সন্থা হইবা গিয়াছে। বি কিছুক্দণ হইল আলো বিয়া গিয়াছে। বৃদ্ধর সবিশ্বরে লক্ষ্য করিল লিলির হু'চোবের কোল বাহিরা কল বরিতেছে। কিছ না ধেবার জান করিয়া লে পুনরার কহিল, আমার ঠিকানা তো ভোষার কাছে রইল লিলি। বর্ণনই দর্কার বুক্বে আমার তেকো। আমার হারা ভোষার অস্থান ক্বনও হবে না।

ব্যর হরতো ব্রিল না যে, তার এই শেব কথার লিলির চোথের কলের বারা আরও প্রবল বেলে নামিল।

ব্যর পুনরার বলিরা উঠিল, যাহুবের সন্দে কি করে বনিঠতা বজার রাবতে হয় সে হিসাব কোন দিন আনি করে ধেবি নি, কিন্তু কোন দিন বদি আনার বব্যে আভরিকতার অতাব দেব আনার বিনা বিধার পরণ করিবে দিও। আনার মনে হয় আলীরতা এবং বনিঠতার এইটেই হ'ল তিন্তি।

উভৱে নীৱৰ। ভাৰা বেন হ'লনের অভসাং মৃক হইরা নিরাবে। ইবারই দিনক্ষেক পরে শীষ্ট আবার দেখা দিবার প্রতিষ্ঠতি বিরাহম্বর প্রথে বাজা করিল।

32

আছ বাটে টীবার ভিড়িতে বন্টাকরেক করি হইরাছে।
মর্থপথে চছার ঠেকিরা এই বিপতি। এমন প্রারই হইরা
বাকে। পরার ভাঙাগড়া প্রভিনিরতই চলিরাছে। বুবর
আছ চটীরা সিরাছে; রাগটা তার অকারণ নহে, কিছ
তাহা কোন ব্যক্তি বা বছ বিশেবের উপরে নহে। এ রাগের
বরণ আলাদা।

নিশুতি রাত; প্রাম তথা, তলাছের। বুবর তার চামভার স্টকেশট হাতে করিরা অপ্রসর হটরা চলিরাছে। কতটুকু আর পথ। এটা নিজেই বহিরা লইরা বাইতে পারিবে। ইহার ভভ আবার বুটের প্ররোজন কি; আর একটা বাঁকের পরেই মধুবাদের প্রকাণ অটালিকা, তারপর আর একটা বোড় শেষ হইলেই তাহাদের বাড়ী।

বঞ্চাদের বাড়ীর কাছে আসিতেই বুদরের বুকের ভিতরটা একটা অভানা আলভার কাঁপিয়া উঠন। কি আন্তর্যা। এতবৰ বাভীর কোৰাও একটা খালো নাই। প্রকাত বাছীটা বেন নিরেট একভূপ অরকারের মত নিশ্চন। ওর্ দেউতীর কটকে দরোৱান নিশ্চিতে গুমাইতেছে। এমন ত কোন বিন ছিল না। মুল্লর অভ্যনত ভাবে আগাইরা চলিল। ভাবিতে লাগিল, মঞ্যার মারের অপুর-বিপুর্ব কিছু হয় मारे ७ १ मरनद मरना रकमन अक्की जानका महेशा रूप नीरव ৰীৱে অঞ্চন্ত হইয়া চলিল। কিন্তু বিশ্বর ভার সীমা অভিক্রম **ক্ষরিল যথন বাড়ীর সম্বুধে আসিরা বিভর টেচারেচি ক্রিবার** পৰ কেবলৰাত্ৰ ভাষার মা হম হইতে উঠিয়া আসিলেন। পিভার त्वचीरे शोधवा शंन मा । बुचव छैश्कृतिककाद बादवव बूटबव পানে চাহিল। সেধানে আনন্দের অভিব্যক্তির পরিবর্তে ক্ষেদ একটা ক্লিষ্ট বেদদার ছাপ দেবা গেল। বছরের কোন প্রশ্ন করিতেও ভরদা হইতেছিল না। ভবপেরে পিভার ক্ৰা বিজ্ঞানা করিয়া সংক্রিপ্ত উত্তর পাইল ক'দিন ব্রেট জাঁর শরীরটা তেমন ভাল যাছে না। ভাই আর উঠলেন না।" কিছ এটা কেবৰ উভৱ। আৰু কভৰিন পরে সে বরে বিবিশ্বাহে, কিছ ভাষার জভ কোষাও যেন এভটুকু আএহ নাই, আনন্দের প্রকাশ নাই-ক্ষেন একটা নিরামক পরিবেশ বেন ভাৰাকে চাপিৱা ৰৈৱিৱাছে। কিছু একটা অবাছিত ব্যাপার ঘটরাছে--ইহা কেহ না বলিলেও সে অভ্যান করিয়া নইন্-কিছ পাছে বাভবের আক্ষিক আঘাত মুর্বাভিক হয় ুডাই আর এই বুরুর্ডে লে কোনও প্রশ্ন করিল বা---ভবু অভি-नान-पूर्व कर्छ गांदक करिन, वक विरव श्राद्यह । शर्व खांक अप श्रीन यम भर्गाय वीहे वि ।

বা কলের পুরুলের বত অঞ্জসর হইলেব---

পর্যবিদ একট অবিক বেলার মুখ্যরের মুখ ভাঙিল। রাজে সে ছুবাইতে পারে নাই। কেমন একটা অজানা ছক্তিভা দারা রাভ ভার নিক্রার ব্যাঘাত ক্রাইরাছে। শেব রাবের বিকে একট ভক্ৰার মত আসিরাছিল মাল। শব্যাভ্যাপ कवित्रा मार्क बाबाद कथा किकामा कवित्रा क्षामिन रव. किमि প্রামান্তরে গিয়াছেন। বিশ্বরের উপর বিশ্বর। হরবের বৈৰ্বোর শেষ সীমা বেন অভিক্রান্ত হইতে চলিয়াছে। সে প্রধ্নের পর প্রধ্নে বাকে অন্থির করিরা ভূলিল, কিছ করেক কোঁটা চোৰের জল ছাড়া জভ কোন উভৱ পাইল না। মারের এই নীৱবভাৱ অভৱালে যে কোনও নিয়াকৰ ব্যাপার রহিয়াছে ইছা মুদ্ধরের চোধে দিবালোকের মত বছ হইরা উঠিল, কিছ ভাবিত্ৰা ভাবিত্ৰা এই বিসমুখ আচরণের কোনই ঘৰ্ষ আবিভার করিতে পারিল না। রুমর চটরা গিরা রাভার বাহির হইরা পঢ়িল। কিছু তাহাতেও কি বাঁচোরা আহে। বাহার সহিত দেখা হয় সে-ই কেমন অৰ্ণূৰ্ণ দৃষ্টিতে ভার পানে চাरिया पारक--- कान कथा वरन ना, शाम कांकीरेया हिनया যায়। তাহাকে কোন প্ৰশ্ন ক্রিবার অবকাশ পর্বান্ত দের না।

মুখর ক্রতপদে অঞ্জর হইরা চলিল। একবার মঞ্যার সহিত বেখা করা তার একাত প্ররোজন, কিন্ত সেখান হইতে পু তাহাকে বিকলমনোরণ হইরা কিরিরা আসিতে হইল। দরোরান পণরোধ করিয়া জানাইল যে, বাবুলোক কেহ নাই।

মুখ্য অসহিষ্ণু ভাবে প্রশ্ন করিল, কোই মারীলোক।

ববোরান ব্রবরের মুবের পানে অবাক হইরা চাহিয়া থাকিয়া পুষরার জানাইরা দিল—কেউ নাই। বলিরাই ভাহাকে সেলাম করিল—ইহার অর্থ অতি পরিকার। বুলর পুনরার রাজা বরিল। থানিক পরে রাজা হাজিরা নাঠের খুকে আসিরা পঢ়িল, ভাবিল, একবার রাধু বোটনের কাছে বিরা ধেবিবে। আজ একই সলে ভার ষা, বাবা, গাঁরের লোক সবাই বে ভার কাছে ছুর্জোব্য হইরা উঠিল।

যুখর বেঠো পথ ধরিরা অভযনক তাবে অঞ্জনর ক্টরা চলিল। এক পালে লয়া, অপর পালে বেশুনের কেত— মাঝবান দিরা চলিরা সিরাছে আকারীকা রাভা।

এই তার প্রায়—বার কথা প্রবাসে তার স্থৃতিতে বছ রব্র হইরা লাগিরা উঠিত। প্রায় তার একাছ লাগনার—কত বচ গর্কের লিনিব তার করণারী। গাঁরের নাহ্বই তথু বে তার পরবাদীর তা নর, প্রধানকার নাট কল বারু স্বকিছুরই সক্ষেতার নাভীর বোগ; কিছু আৰু স্বই বেন তার বিরুদ্ধে বছবর ভ্রিরাছে। তার প্রায় স্থানরোব হইবার উপক্ষম। ইহাই ব্যার ভারণ কি তাই লে অন্তের নত পুঁকিরা কিরিভেছে। রাধু বোইন তার নাটীর ব্রের হাওরার বনিরা প্রকৃতারা

সংবোগে একট প্রভাতী বাউল গাহিতেছিল। ব্যৱকে সেই-বিক্তে ক্রত অপ্রসর হুইতে বেধিরা সে একভারাট বাঁশের পুঁটতে ঠেলাল বিরা রাধিরা ভাহার ক্রত সাপ্রহে অপেকা ক্রিতে লাগিল।

- ব্ৰহ ক্ৰম্ভ আসিত্ৰা হাওৱার উপর বসিত্রা পড়িল এবং কোন স্বিকা না করিবা এক নিঃখাসে বলিবা গেল, এ সব কি বোষ্ট্ৰ-ফা। গাঁৱের স্বাই আয়ার ওপর হঠাং বিরূপ হয়ে উঠল কেন ?

বাধু ইনিয়া টানিয়া কেষন এক বরণে হাসিতে লাগিল। বাধুর এমন হাসির সহিত ইভিপুর্কে বৃদ্ধরের পরিচর হয় নাই। শত হংবেও তার প্রাণবোলা হাসির এতটুকু ব্যত্যয় ক্বনও ঘটে নাই।

ৰুদ্ধ অসহিষ্ণু কঠে কহিল, ছুত ভোষার যাড়েও চেপেছে দেখছি।

রাধু হঠাৎ নিরভিশর গভীর হইরা উঠিল। শাভ কঠে কহিল, ভূত কার বাকে চেপেতে লে মীনাংসা পরে করো। এসেত বর্ণন বলো। ব্যন্ত হরো না।—বলিরাই অকরের বিকে মুখ কিরাইরা অভ্যত কঠে ইাক বিল, খরে অতিথিনারারণ এসেতেন সংকারের ব্যবহা কিছু হবে নাকি গো। পরে হলরের থিকে মুখ কিরাইরা হছ কঠে কহিল, নবছীপ খেকে বোটনীকে কিরিবে নিরে এসেতি দাদাঠাকুর। বোটনী ভার ভূল বীকার করেতে। তেবে কেখলাম ভূলচুক মাত্রই করে থাকে—ভা হাভা বুড়ো হরেতি। এ বরসে একজন দেখবার ভ্রমার লোকও চাই ভো।

ন্ত্ৰন ক্ষমশাই অধিকতর অসহিষ্ণু হইরা উঠিতেছিল। ক্ষিল, ব্যবহা ছুমি পরে করো। বা জানতে এসেছি, তাই আসে বলো।

রাবু শান্তকঠে কবিল, তোমরা এত লেখাপড়া শিবেছ দাবাঠাকুর, তবুও কত বড় জুলচা করলে বলো দেখি। এ বে কেউ কোম বিদ্য ভাবতেও পারে নি ভাই। মঞ্জিদির মা শেষ দিন্দীতেও ভোষার নাম করে গেছেন।

बुषव गैरकात कविवा धेवन, छिनि कि...

বাধা বিদ্যা বৃহ কঠে রাধু কবিল, বাঁা তিনি নারা গেছেন।
এত বড় আঘাত তিনি কেমন করে সইবেন বলো বেধি।
নিক্ষের বেলে ত বছদিনই পর হরে গেছে। তার পর বাকে
নিক্ষের বেলের চেরেও তালবাসতেন—বার বিকে চেরে এত
বিন আলার বৃড় বেঁবে হিলেন শেব পর্যন্ত তার কাছ বেকেও
পেতে হ'ল তাঁকে হারুণ আঘাত। ক্ষরাজার বেকে এলে
একট লভাহও কাটল না।

য়খন বিহলে গৃটিতে লাবুন মুখের পানে চাহিলা লহিল। লাধু বলিলা চলিল, আর ভোনার বন্ধু প্রবিশ্বনাব্রই বা কি আকেল। কথাটা এবন করে লাই বা করনেও পারতো। ছুই তো বাবু বন্ধুলোক। এইটেই কি বন্ধুর কাক ব্যেবে ? আমবয় চোল পিটবে দিলে।

র্থর বিঃশব্দে ভবিভেছিল, একটা প্রতিবাদ করিতে পর্যন্ত সে ভ্লিরা গেল-ভাবলেশহীন সৃষ্টতে রাধুর বৃধের পানে চাহিরা বহিল।

রাধুর কঠবর আরও বাবে নানিরা আসিল। কবিল, আছা লালঠাকুর, এক কবার এত বড় সম্পত্তি আর বঞ্চিত্র বড বেবেকে কিসের নোকে ভূমি ভ্যাগ করলে? বঞ্চিত্তি ভো ভোমার অবোগ্য ছিল না। অবন নেরে ক'ট নেলে ভাই। আবেগে রাধুর কঠবর রুদ্ধ ক্ইয়া আসিল—

কিছ অল্পণের মধ্যেই নিজেকে সাবলাইরা লইরা সে পুনরার বলিতে গাগিল, বাকে ছেলেবেলা থেকে দেখে আসহ, একসলে থেলাখুলো করে বহু হলে, তাকে ভূমি চিমলে না ? শেষ পর্যন্ত এতবড় আঘাতটা ভূমি তাকে দিলে।

বৃশ্বর বোকার মত অবহীন দৃষ্টতে রাধ্র বৃধের পামে
চাহিরা চাহিরা যেন তার ক্যাঞ্জির তাংপর্য উপলব্ধি
করিবার চেষ্টা করিতেহে। ওর চিছাশকি, বিচারবৃদ্ধি কেমন
বেন আছ্ম হইরা সিরাহে।

রাধ্ বলিতে লাগিল, মঞ্দিদির মারের বৃত্যসংবাদ পেরে থাকের বাড়ীতে গেলার। দিদি আমার ইবং দ্লাম হেসে বললে, বোর্টম-দা, মা চলে গেলেন। তার সে বুধ, সে হাসি আমি জীবনে ভূলব না। সান্ধুনা দেবার হলে বললাম, সবাইকে একদিন বেতে হবে দিদি। মঞ্ বিদি তেমনি হাসির্বেই জ্বাব দিলেন, সে তো দেখতেই গাল্ফি বোর্টম-দা। এক এক করে জনেকেই তো গেল।

बचव नीवव ।

রাধু বলিয়া চলিল, মিথ্যে তো লে বলে মি—ক্ষরাব দেব কি । তাই তাদের অনেক আগেই ত্যাগ করেছে। এবন বা চলে গেলেন চিরতরে। কিছ ভূমি কেন এবন কাক করলে দাদাঠাকুর । তোমার বারা একাছ আগনার অন তাদের কত বড় মনভাগের কারণ হলে বলো দেখি। একজন বুংবের আবাতে প্রাণ হারালেন। অবন বে শিবভূল্য বাছ্য, বুড়ো বরুসে তিনি বেরের হাত বরে বাজীবর ছেড়ে চলে গেলেন। প্রানে তিনি আর কিরবেন না। তাবতে পার দাদাঠাকুর ভোষার সামান্ত একটা বদ ধেরালের কভ কত বড় শোচনীর ব্যাপার বটলো। তোমার বুড়ো বাপ-যা লক্ষার কাউকে বুধ দেখাতে পারেন না। একটা প্রীঠান মেরের প্রতি আসভি তোমার এত বড় হরে উঠল বে, তার কাছে সমান্ত, সংসার, বাপ, মা সবকিছু ভেলে গেল। তবুও দিদি আমার একট বারও কার কাছে বালিশ আনার নি।

ব্যৱের চোবের সমূব হইতে একটা কালো পর্যা বেন বীরে বীরে সরিয়া সেল। লিলি টিক্ট বলিয়াহে, স্থনির্যাল বিলাভ

যায় নাই। শুৰু ভার চরম সর্ক্রনাশসালন ভরিবার ভঙ্ই পুৰোগের প্ৰতীকা করিতেহিল। কিছ কেন। কেন সে ভার এভ বড় সর্ক্ষাশ ক্রিল। ব্রুর ভ ভার ভভি করা দূরে পাৰুক, কুলেও ভার অনিষ্টচিত। করে নাই। আর কবি? সেও কি আগাগোড়া ভার সকে নিপুণ অভিনয় করিয়া গিরাছে ? बच्च भागरणव मछ बाबकरतक माना मानिम-- ठिक स्रेवारस---লিলির কোন ছাবিই বাহাতে ভবিছতে না উবাপিত হইতে পাৱে ইহা ভারই সুপরিক্লিত ষড়যন্ত। বুর্ব সে ভাই আগা-গোড়াই ভুল বুৰিৱাছে। কিন্তু ভূল সে করে নাই। একট ৰেৰেকে ভাৱ চৱম ছুৰিনে সামাভ একটু সাহায্য করিবাছে বাব। আৰু বাবা ভাকে ছেলেবেলা হইতে দেবিরা আসিতেছে, বাঁৰের সন্ধান বলিরা নিজেকে সে গৌরবাবিত মনে করে---জারা ভাকে সামাত বিশ্বাসটুকুও করিতে পারিলেন না। তাকে এভবড় নিঠুর অপদার্থ বলিয়া মনে করিভে ভাঁহারা বিশ্বাল ছিবা ক্রিলেন না। বুবর সংসা বলিরা উঠিরা ভীক্র কঠে কৃষিল, আর ভোষরা সকলেই বাকে কোন দিন চোবেই ৰেব নি ভার কৰা নিঃসংগরে বিখাস করলে, আকর্ষ্য !

হ্বরের তীর কঠহরে রাধ্ কিছুক্পের করু বিষ্চের বত ভার রুবের পানে চাছিরা বাজিরা বহু কঠে কহিল, ভাই কি নহতে কেউ বিধান করেছে হালা। এ নিবে কলকাভার ছুটাছুট পর্যান্ত কর হয় নি। তা হালা অভ লাকী প্রধান। সব-চেয়ে বড় প্রমান ভোষার অমন চোরের মন্ত পালিয়ে বাওরা। নারু কণকাল থানিরা একটু বেন উভেন্তিত কর্চেই পুনরার কহিল, ভূমি কি করেছ না করেছ লে প্রসদ না হয় আর ভূলব না—কিছ পরীকা-শেষে ভোষার কলকাভা হেকে ব্রুবেশে বাবার এডই বদি প্রয়োজন হয়েছিল একটা চিটি লিখেও ভালে ক্যা ভূমি জানাতে পারতে লালাটাত্র।

ৰশ্বৰ ভাই কঠে যেন আপন ননেই বলিবা চলিল, ভগবান বিৰূপ, নইলে এনন হবে কেন? একট গভীর দীর্বনিঃখাস ভাগ করিবা সে বীরে বীরে উঠিবা ইাড়াইল।

वार् करिन, अधूनि यादन ?

ষ্বর বছ করণ একটু হাসিরা কহিল, হাঁ বোটন-হা, আমি এবন যাই। কিছ যাবার আগে ভগু একটা কবাই বলে বাই

—তোষরা যা ভবেছ সব মিধ্যা। ছংব আমার বে ভোষরা সবাই আমার ভূল বুবলে। একটা মুবের কবাও কেউ বিজ্ঞেস করলে না। করলে আমি মিধ্যা-বলভাম না। শোন রাগুলা—না বাক, ভোষরা সবাই সমান।

बुबब छेडिया क्षेत्रां के

maret.

### ডাক

### 🗐 কুমুদরঞ্চন মল্লিক

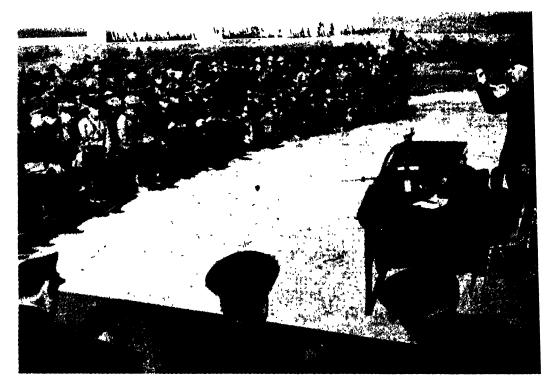
বয়বীর বাবে কিয়াকর্য আছে। বা অভংগর !
দ্ববিসমা মরণক্ত একাছ জনহীন,
রাধাল বালক সেই শব্দেতে চমকিত কত দিন।
রাষ্ট্রল বারতা—হত নরনারী দ্ব প্রাম নগরীর
ক্ষার গুহার মুবেতে দিত্য একটা মেলার ভিদ।
ক্রিতে পারে না নির্ণর কিছু—পার নাক সহার,
পাহাদের মুবে দেন ভাষা দিল কোন্ সে শক্ষিনান ?

পত্নী হইতে সংবাদ গেল বিলীর দরবারে—
হোমরাচোৰরা আনীর ওমরা হাসিরা উভার তারে।
বাহপাহ এই দ্বর বপর শুনিরা ক্ষেম হাসি,
'বান্ধার ভাক কেম যে পছিল চল সবে হেবে আসি.।'
পুত্রের সেই অভ্ত ভাক পশিতেহে বেন কানে,
রঙনা হলেন বাহপাহ সেই কৌভুকী আহ্বানে।
বিশ্রহ্রের বর রৌত্রেতে 'আবু পাহাডের' গারে,
প্রায় ভাক ইভিত্নের বিরা

উঠিতেহে ধ্বনি কীণ কৰ্বল প্ৰতিকট্ট অতিশব,
এ কি প্ৰহেলিকা ? নৱের কণ্ঠ শুনি বেন মনে হয়।
পাণরে আঘাত করিবা বাদ্লা হাঁড়ারে খহার আগে
বলেন 'হছুর কি লাগি তলব—নক্ষ আগেল যাগে।'
পক্ষাং হতে সন্নাসী আগি চাহি ভার মুখ পালে
কহেন 'ডাকের মূল্য বুবেহ ? বুবিতে পেরেছ মানে ?
ডাকে ভগবান আগে বলেছিছু করনি ক বিশ্বাস
মনে পড়ে তব অহমিকাভরা সে কুটন পরিহাস ?'

উপেকার এই ভাকে হুঠে বদি আসেন শাহানশাহা নিবিলের নাথ ভাকে আসিবেন অসন্তব কি ভাহা ? জেনো মান্তবের আনের বাইরে এমন জিনিব আছে যাহার প্রবল আকর্বণেতে ভগবান আসে কাছে। প্রবল প্রভাগ বাদশাহ ভূমি কতই অহভার, তব্ এই ভাকে এখানে আসিয়া ঠেলিছ পারাধ্বার। আসে ভগবান, নিক্তর আসে, নিক্তর আসে ভাকে, বে বলে একথা সভাই বলে—বিধান কর্মো ভাকে।

## त्माख्रित्रहे त्रांगियाय क्यानिकेत्मत्र गिक्काटकछ



अक्षन क्यानिहै चित्रतात्वन जिल्ली नक्ता नक्तान्य 🚣 .



চীবের ক্রুবিট সেনানারক্ষের হারাবহার চিত্র। ভরারলাল আনচিত্র ক্রিক ক্রেক ক্রেক



সর্বার প্যাটেল বাজাতে হিন্দী প্রচার-সভার গানীবঙ্গ এবং রক্ত করতী ভবশের ভিডিপ্রভর হাপন করিতেহেন



वववीरशय (वनरवारवर-अब अकड़े बाषांव वृष्ट

সিভ্ৰি হইতে কলিকাতা ১১ই মার্চ মদলবার রাজি সাড়ে এগারটার সিড্নির উপক্ষত রোজ উপসাধর হইতে ক্লাইং বোট উড়িল। আলোকোভাসিত जिङ् वि वश्री क्रम्भः पृष्टित चर्त्राच्य एरेन । चानता व्यवस জন যাত্রী। বিষামটাতে শহনের ব্যবস্থা আছে। বিমানের লেক্ষের মধ্যে করেকট বার্থ আছে। কয়েকট আস**্**কেও বার্থে পরিণত করা যার। । ইরার্ড আসিরা বলিল, আমাদের মোট ১৬ট বাৰ আছে। যাত্ৰীদের মধ্যে যোল ধন ভাহাতে শৱন ক্রিভে পারেন। আমি প্রথম শুইতে চাহি নাই। **(मेरव वार्य बांनि बांस्क एवंबिया विमान्बय कारबा मरबा** अक्षे वार्र नवम कविनाम। द्वन जावारमरे चुमारेनाम। এক যুমে রাজি কাষ্ট্রয়া গিয়াছে। প্রভাতে উটিয়া কাপড়-চোপড় পরিভেই বিমান বাউএন উপসাগরে অবভরণ করিল। वाष्ट्रियम क्रेमनाथ बाद्धे चवच्छि, निष्मी स्टेट्ड ১१८ मारेन। শৌকাবোগে উপসাগরতীরত একট ছোট খরে আমাদিগকে नरेवा यांश्रवा रहेन। (ज्ञांत्म लाख्वांन ज्ञांशन क्विवां পুৰৱাৰ নৌকাযোগে বিমানে কিবিলাম। সোঁ সোঁ শব্দে ক্রভবেপে কল কাট্টরা বিয়ান সগর্জনে আকাশে উঠিল। অট্টে-লিয়া মহাদেশ ভারত-মহাসাগরের মধ্যে ছইট হাতা বাড়াইয়া দিবাছে। একট প্ৰায় নিউগিনি পৰ্বাত উটিবাছে। অপরট ছোট। তাহারই মাধার পোর্ট ভারউইন। বাউএন হইতে ভারউইনের পৰে হাতা ছুইটির মধ্যবর্জী উপসাগরে আহরা সবেষাত্র পভিয়াহি, সহসা বিষানটভে বেশ ভোর করেকট ৰীকাৰি লাগিল। মুহুর্ভের মধ্যে বিধান ভাবার ছিরভাবে চলিতে লাগিল। বিষান সবেগে ছটবাছে। কিছ গৃহগামী मरमद मिक्डे देशांद राज चिक्र प्रमा । राजा शांद ১১।हो।द উপসাপর অভিজ্ঞষ করিলাম। পুনরার ত্লভাগ দৃষ্টগোচর र्रेन। উপকূল-ভাগে বন-চাষ বা বসতি আহে বলিয়া মনে হইভেছে না, ভবু পাতনা গাছ দেখা বাইভেছে। বৈকান ৩।টার বিবাদ ভারউইনের সমূত্রে নাবিল। নৌকাবোগে তীরে পৌহিলাব। সেধান হইতে গাড়ীতে হোটেলে নীত হইলাব: অৰণক্লাভ বাজীগণ স্থানাতি স্থাপন করিবা শহর বেৰিভে বাহির হইরা পঢ়িলেন। নীচে টেলিগ্রাম করি-বার ব্যবহা বেবিলাম। আমার আগন্দবার্তা কানাইরা ক্লিকাভার একট ভার পাঠাইলার। ভারপর আমিও শহর বেৰিতে বাছির হইরা পঢ়িলাব। শহরটতে ৩০০০ লোকের বাস। বলভি বিরল-জনপুভতা চোবে ঠেকে। নারিকেন গাহ, গোলুবোহর গাহ ও ভেঁচুল গাহ হেবিতে পাইলাব।

ব্ৰউভূল বাহথলি আঞ্চানে হোট, ফল কম। পেঁপে গাঁহ, কদবের বন এবং সপুলা অপরাহিতা লতা বেবিরা আনন্দিত रहेनाय । मरदात भवश्रीन तांचा निष्ठ वीवात्मा यह । त्वम ৰুৰিতে পারিভেছি বে. এশিয়া ও ভারতবর্ষে নিকটবর্তী হইতেছি। অট্রেলিয়ার এই অংশে আদিব অবিবাসীর সংব্যাই বেশী। অবেক ফুককার আছিন অবিবাসী দেখিলান। যদে एरेल रेराएव कीयमयांबाव मान निव्रत्ववित । (रांडिलव পালেই সমুদ্র বা উপসাধর। অভুরে সাধরতীরে ছানীয় শাসন-ক্রার কৃটি। কাছে একট "পায়ার" বা বাট। সেবাবে ছট-তিনট পুৱাতন প্ৰমাৱ হাড়াইয়া আছে। প্ৰমাৱগুলি হোট এবং বোৰ হয় বে-বেরামত অবস্থার আহে। শুনিলাম গত বুড়ের প্রথবে ভাপানীরা বোষাবর্ষণ করিয়া এথানে আটবামা ভাছাত ভুবাইয়া দেয়। সেওলি এবনও এবানেই কলগর্ভে নিমন্ত্রিত আহে। মাল একবানা ভাবাক নাকি পলাইয়া আত্মহুভা ক্রিরাছিল। উপসাগরভীরে অনেকৃত্ব বুরিলার। ওপারে দূরে বনাচ্ছাদিত ভূমি দেখা যাইতেছে। ভারিদে দূরে ভারত-মহাসাগর। বেলাভূমি বছুর ও শিলামর।

আমার সহযামীদের মধ্যে এককন সুইভিস্ ভব্লোক ছিলেন। ভদ্রলোক ছাবিলে বংসর যেলবোর্থে ফ্রিষ্ট্রাল কর্মনের ব্যবসা ক্রিয়া ব্রবহুসে সমীক দেশে ক্রিভেছেন। ভার-**छेरे**निव (सांहित **पश्चला**त्किव मत्न प्रत्यक्ष क्यांवाकी स्रेत । ভত্ৰলোক পূৰ্বে ইংৱেকী কামিভেন না। মাতৃভাষা ভিন্ন कतात्री, कार्याम ७ लाहेन कामिएकम । शरत समहवार्य कामित्रा रेश्टरको (मर्थम । आद्वेनियांत अविकश नश्यक अवटनांको बूद আশাবিত বন। ই হার মতে আঠ্রেলিয়া-সরকারের কোন পরি-কলনা নাই ; সরকারী কর্মচারীদের দৃষ্টি সভীর্ণ, মভামত বহু ক্ষেত্রে বালকোচিভ, এবেশের শ্রমিক আন্দোলন বুক্তিপ্রডিঠ नव , अवानकांत्र निवीदां डेरक्डे किमिन श्रव्हांक डेरमांकी मन । পৃষ্পানী প্ৰবাসী বৃদ্ধের মুধে তার স্বদেশের প্রশংসা ধুর ভাল नांत्रिन । श्रेर्टिंग बुद्दांटन मिद्रार्टिंग बाकाव बुद्दा बाहिए अ বেশটর গারে লাগে নাই। পুইডেনে সাবারণ লোকের অবস্থা সচ্চল। চিকিৎসার যথোবত ধুব তাল। প্রবিক্ষের বাস-পুত্ৰৰ ব্যবস্থা এবানে উভৰ। ক্ষমাবায়ণ প্ৰগতিশীল এবং णाशास्त्र मत्माणांन छेशात । स्विनैनिरहम सूत्राणि हुई एव मा ।

ভয়লোকট সুইডেন গৰ্মে আৰও অনেক কথা বলিলেন। সেবানে বেল-ভাড়া সভা; এক বাজির পথ বাজ ১৭ শিলিঙে বাঙরা বার। বাল্টিক সাগর পার হইছে লোককে পাড়ী-ববুল ক্সিডে হর না। গাড়ী ধেরার পার হয়; এঃ কঠা

লাগে। প্রবাদ রেলপবগুলির সর্বাছই বৈহাতিক শক্তিতে গাড়ী চলে। বেশে বর্তমানে চল্লিশ লক অখশক্তি কলবিহাং তৈরি হইতেহে, এক কোট দশ লক্ষ অখশক্তি পর্যন্ত বিহুং উংপর করা বাইতে পারে।

সেধানে কৃষি ও শিল্পে সমসংখ্যক লোক নিমুক্ত। ইন্পাত ও কাগৰ প্ৰথম শিল্প। হেশট প্ৰায় খ-সন্পূৰ্ব। তবে কৃষ্ণি ও জেল নাই। যে কৃষ্টি লোহার খনিতে কাল চলিতেহে সেওলি আরও ২৫০ বংসর চলিবে। ইহা হাড়া আরও ১৫ট খনি আছে, তাহাতে এখনও হাত দেওয়া হয় নাই।

ভদ্রলোক নোবেল পুরস্থারের প্রসদ স্থালিলেন। উছার পূর্ব্ব অভিজ্ঞতা অরণ করিয়া বলিলেন, "পুরস্থার আনিবার কভ মনীবিগণ প্রতি বংলর ইক্ছোমে সমবেত হন। রবীক্রমাণ বে বংসর নোবেল পুরস্থার পান সেবারকার কণা আনার মনে আছে। মনে পড়ে ইংরেজ সরকার রবীক্রমাণকে পুরস্থার আনিবার কভ ইক্ছোমে বাইতে ধেন নাই। কেন দেন নাই বলিতে পারেম কি ?"

আমি- এরপ কথা আমার ভাষা নাই।

ভন্তলোক— আনাভোল ফ্র'াস এবং কার্যাণ অব্যাপক নাই একই বংসর নোবেল পুরস্কার পান। পুরস্কার-বিভণীর সভায় ইছারা পরস্কারের ক্রমর্থন করেন। প্রথম বিশ্ব-মুদ্ধের পর ইছাই ক্রাসী-কার্যানীর প্রথম ক্রমর্থন।

ভারতইনের খোটেলে রাজি কাটাইরা ১৩ই মার্চ বৃহন্দতিবার সকাল সাড়ে ছয়টার পুনরার উভিলান। আমার পালে বসিয়াহিলেন একট প্রোচ ইংরেজ ভদ্রলোক। আমারের সামনে মুখোমুখি বসিয়াহিলেন এক জন বর্ষীয়াল্ মার্কিন ভদ্রলোক এবং এক জন অব্রৈলিয়ান মুখক। ইংরেজ ভদ্রলোক সরকারী কার্ব্যোপলকে অব্রেলিয়ান মুখক। ইংরেজ ভদ্রলোক সরকারী কার্ব্যোপলকে অব্রেলিয়া গিয়াছিলেন, এখন সিলাপুরে কিরিভেছেন। মার্কিন ভদ্রলোকট একট বছ মার্কিন কেমিক্যাল কোল্পানীর প্রেসিভেন্ট। পৃথিবী পর্যাইনে বাহির ক্রিয়ালেন। সিলাপুরে ক্রেক দিন থাকিয়া চীন ক্রয়া ভারভবর্ষে যাইবেন। অব্রেলিয়ান মুখকট একট কোল্পানীর কার্কেই লগ্ডন বাইভেছেন। আনার্দের চারি জ্যের মধ্যে মারাজ্য আলাপ-আলোচনা চলিভেছিল।

আষ্ট্রেলিয়ার হলভাগ অভিজ্ঞম করিয়া ভারত-মহাসাগরে পঢ়িলান। সাকে আটটার টনোর সাগর অভিজ্ঞম করিলান। পর্বাভ্যম টনোর খীপকে ভাহার দক্ষিণপ্রান্তের উপর দিয়া লব্দন করিলান। পরে ক্তুর ক্ষুর খীপনালা এক এক করিয়া পার হইলান। প্রবাবারা উপসাগরে ঘর্ণন নামিলাম ভর্ণন ভারতইন-সনর সাক্ষে চারটা, প্রবাবারা-সমর আভাইটা।

আকাশ হইতে স্থাবার্ত্তার বুট সুস্তর বেধাইতেছিল। তথ্য নবেষাত্র কোর বৃটি হইতা সিরাছে। সভঃস্থাত শহর। প্রভ্যেক বাতীতেই গাহপালা আছে। বেশ সাজানো-গোছালো। বাড়ীর

ছাত্তলি প্ৰায়ই লাল হতের। বেশীর ভাগ বাড়ীই বোডলা। इ-अक्ट्रे छिम्छना । धेननानद्व नावित्त्वरे भरद्वत्र त्र-विकास स्थ बक्त रहेन । वस्त्रकेत बाक्षिक रूप वरनायन । উপসাগরটার ভিন বিকে ছল। এক বিক ভারত নহাসাগরে ৰুক্ত। সমুদ্ৰপৰ্তে হয়-সাত্ৰানা কাহাক ক্ষমধা। প্ৰভাকটিয় চোং দেশ যাইতেছিল—মজনান মাছবের উর্বাসারিত বাছর মত। অপর করেকট বিশ্বস্থ ভাষাত্র ভ্রমধ্য হইতে পারে ভূলিয়া ষেরামত করা হইভেছে। নামিবার সময় ক্যাঞ্চেন আমাদিগকে বলিয়াছিলেন বে, তীরে নামিরা চা পান করিরা আৰ ঘটা বা প্রভাৱিশ মিনিট পরেই আমাদিগকে পুনৱার উভিতে হইবে। কিন্তু নামিয়াই ধনর পাইলাম যে, প্রতিকূল আবহাওয়ার বন্ধ আমাদিগকে আব্দ এবানেই থাকিতে হইবে। আমাদের যাওয়া পিছাইয়া পেল বটে: কিছ বাজিগণ সুরাবারা শহরট দেখিবার সুযোগ পাইরা বুশীই হইলেন। বাঁটভেই ক্ৰৈক সৰকাৰী কৰ্মচাৰী আমাদিগকে খানীৰ ৰুক্ৰা সরবরাছ ভরিলেম এবং অব্যয়িত অংশ প্রদিন কিনিয়া লইবার প্রতিশ্রুতি দিলেন। ওনিলাম মুদ্রাবিনিময়ের কালো-वासात अवारम वृत हान्। विधान-वाहित कर्वहातिशव जाबारमञ्ज जरबारमञ्ज अकन राज्यारे कविया बार्विबाहिरमम । বাস আসিরা আমাদিগকে ছোটেলে লইয়া গেল। ছোটেলটর , माम अतात्क (सार्टिन। मस्दात युस्यम तास्प्रत्य छेपव অবস্থিত। রাভাট বেশ প্রশন্ত। ছ'পালে দোকানের সারি। মাৰধান দিয়া টাম লাইন। ছোটেলট বেশ বছ। আসবাব-थव **व्यक्तांब--- चाडेनियांब य-काम कारिन व्**रेट कान। চেরারগুলির বেতের কাল বেষন মলবুত ভেষনি ছুণ্ড। ভবনট বৃহৎ ও ইহার প্রান প্রচিসম্বত ও অনিপুন, কিছ বর্তমানে বেন ললীহাড়া---হীনাবছ প্রাচীন ভ্রিনার-বাড়ীর यछ। शांबा ७ विवनी-वाकि चाद्य, किन्न करन वन गारे। काशामी यूक (क्य क्रेशाटक, किन्न वर्षमात्म अनकाक कर्युशक ইন্দোনেশীরগণের সহিত বুরুরত। যে স্থান হইতে শহরের কল সরবরাহ হয় সে ভারগাট এখনও ইন্সোনেশীয়দের হাতে --कारकरे नरदा कम गारे। नरदात वाकानभाकित७ यम লখীহাড়া ভাব। মনে হয় এড় সময় শহরট উৎসব-মুবর ছিল। বোটেলের খনৈক কর্মচারী বলিল, "এই রাভা ছাড়িয়া चण्य यारेवात स्त्य वारे अवर अरे बांचात्र वानिक पूरवृत (वने যাওৱা নিৰেব।" শহর দেবিবার জ্বল্প রাভার উপর একা বাহির হইরা পঞ্চিলাম। থানিকগুর ঘাইতেই একট দোকানের সামনে কৰৈক শিখ ভত্ৰলোককে ৰঙায়নাম বেৰিলায়। ভিনি ভাষাকে সাধ্যে দোভাষের ভিডর লইয়া গিয়া বসাইলেন। (याकामके रवन वह । काराव नरक जरमक्कन क्यांचार्ता स्टेन । তিমি বাহা বলিলেম ভাহার কর্ম এইলপ :

"আৰি ১৯৩৯ **এ**টাখের ২০শে কেল্যাৰী এবাৰে আদি।

বুৰের প্রথম অবস্থার ওলকাজগণ তত গা করে নাই। শেষে বৰৰ বীভিষ্ক আক্ৰমণের আশকা কেবা বিল ভবন ভাহাৱা कि है निक्रमध्येष कविन । किन्त देशांसव विमान वा है।। दिल ना । यथन जिलागृदयद गणन स्टेल छथन देशांदा अक्सभ নিরাশই হইল। ১৯৪২ এটাবের কেব্রায়ী নাসে ভাগান <sup>र</sup> जुबांबाबाद (बांबांबर्वन करता। जुबांबाबा व्हेटल आह २०० मरिन पूरत अक कनपूरक अनवाक-वन्छतीनपूर विभवीक एवं। ৰাৰ্চ মাসের ৩ ভারিৰে ভাপগৰ পুৱাৰায়ায় দশ মাইল দুৱে অবতরণ করে। ওলকাকণণ ভাহাদের মূল্যবান ক্রব্যসভার পুর্বেই অট্রেলিয়ার পাঠাইরা দিয়াছিল। এবন ভাছারা ৩০০ মাইল দূরে এক পর্কভে আন্তানা স্থাপন করিল। ভাপগণ বৰ্ণন অবতরণ করিয়া তাহাদিগকে চারি দিক দিয়াই ছিরিয়া কেলিল তখন ওলন্দাল-বাহিনী আত্মসমৰ্থণ করিতে বাধা र्देम । चांभरमञ्जू जरगर्रम-चक्कि विरमस क्षेत्ररमीय । जांक দিনের মধ্যেই ভাষারা যবধীপের যাবভীর কাককর্ম নিয়মিভ ৰূপে চালু করিবা দিল। সকলেবই জীবনবাত্রা ঠিক্ষত চলিতে লাগিল। সাড়ে তিন বংসর জাপগণ এখানে ছিল। উছাদের দ্বামায়া কম। কঠোর সাকা দিতে বা অত্যাচার উৎপ্রভন ক্ষিতে ইহারা পরামুধ নছে। ইহাদের গুল্পচর বিভাগ অতাত স্থনিপুৰ। ভাৰ্মানী যথন চুৰ্বাল ভ্টয়া পঞ্জিল তথন ্ ভাপানীরা বুবিল যে অভ্নত্তির পরাভয় ভনিবার্য। তথ্য ইহার' দেশীয় লোকেদের সহিত সদর ব্যবহার পুরু ক্রিল। ভাহাদিগকে ভাল ভাল কাজে নিযুক্ত করিল এবং খাবীনভার শ্বনিবার্যতা সহত্তে আশাহিত করিয়া তুলিল। এদেশীয়গণ জাপানীদের কাহেই জন্ধ-ব্যবহার শিবিল। জাপান ধর্বন আৰুসমৰ্পণ করিল তখন তাহার৷ ছানীয় ভাপানীদের আক্রমণ করিয়া তাহারের অল্লভার কাছিয়া লইল। এবন পর্যাত্ত ওলন্দাত্পণ মাত্র চারিট প্ররের অবিকারী। দেশের বাকী অংশ সমন্তই দেশীরগণের হাতে। উহারা এই শহর হইতে যাত্র দশ মাইল দূরে ছিল। দিন দশেক পূর্ব্বে ওলকাকগণ এক আক্রমণ চালাইরা উহাদিগকে আরও মাইল পঁচিশেক ষ্টাইরা দিয়াছে। বেধান হইতে শহরের জল সরবরাহ হইত (नदे चात्रशांके अवस्थ पेदारमत चार्छ। कारकरे नद्दत चन মাই। এবনও শহরের লোকামপার্ট টকমত চলে না। সভ্যার ষ্বৰোট বৃদ্ধ ছট্ডা বাৰ। বাজি ১১টা ছট্ডে ভোৱ পাঁচটা পৰ্যাত "কাত্ৰকিউ" :

আৰি দিজাসা করিলাম, "শীম এ গোলমাল মিটবে কি ?"
শিখ ভালোক বলিলেম, "না। একখল চার বাধীনতা।
অপর হল চার উহাহিগকে অধীন রাখিতে। কাকেই গোলমাল
নিটকে পারে মা। কেশীরগণের মধ্যে শিকার বড় অতাব।
ভারতবর্ধে বেরপ শিকিত ও আন্তর্জাতিক রাজনীতিতে অভিজ্ঞান্তবন্ধ আবেন এবাবে নেরপ কেই নাই। কাকেই ওলভাবের

বদি বোষণা করে বে, আংশিক হাবীনতা এবনই হিয়া দিবে তবে আরও হল-বার বংসর এনেশে ভালতাবেই বাকিতে পারে। কেন্দ্রিরে শিকালাতের কর এই সময়টুত্র প্ররোজন। কিন্তু ওলকাক্ষণ ইংরেকের মত রাজনীতিক নর। ইংরেক যেনন বর্বাসময়ে ভারত হাজিবার সংকর হোষণা করিয়া নিকের ও ভারতের মন্দলই করিয়াছে এবং ভাহাতে লক্ষা বোৰ করে নাই, ওলকাকের। সেরপ পারিবে বলিয়া মনে হয় না।"

জিঞাসা করিলাম, "এদেশে ভারতীয়ের সংব্যা কত হইবে ?"

শিব তথ্যলোক বলিলেন, "সমগ্র দেশে ২০।২৫ হাকার হইবে। আর এদেশের সভ্যতা তো বৃলভঃ ভারতীর। যদি পারেন ভবে একবার বলিনীপে যাইবেন। সেবানে ক্লক, রাম প্রভৃতির প্রভরসূপ্তি আছে। সেবানকার লোকেরা ভারতীরদের মতই বৃতি ও পারকী পরে। এই উভর দেশের অনেক ক্ষাও এক, যেমন—ক্লট, মসিব। ভারতবর্ষের মত ক্ষার স্কার বন্দিরও সেবানে আছে।

विकाम कविलाम, "निवकी, (क्टन वाटर मा ?"

শিৰের শ্বশ্রুল মূৰে হাসি দেখা দিল। বলিল, "দেশ থেকে চিঠি পাইরাছি। দোকানের ভার লইবার ৰভ দেশ হইতে লোক আসিতেছে। আসামী মাসেই দেশে রওমা হইতে পারিব বলিয়া আশা করিতেছি।"

শিব-ভন্তলোক আমাকে লেমোনেড্ পান করাইরা আপ্যায়িত করিলেন। তাঁছার সহিত আলাপাদিতে পরিত্থ হইরা আবার রাভার বাহির হইলাম। পাশেই দেবিলাম হইট সিম্পুর্যদেশবাসীর দোকান।

একট্ অপ্রসর হইতেই আবার সহযানীদের একট ধল দেখিলাম। উল্লেখ্য শহর দেখিতে বাহির হইরাহেম। উল্লেখ্য সহিত নিলিত হইলাম। ইঁল্লের মধ্যে চারি ক্ষম বিলাতের সংবাদপত্রের প্রতিনিধি। ইংলও-অট্রেলিয়া টেই ধেলার রিপোর্ট করিতে অট্রেলিয়া সিয়াহিলেন। এখন বংলপে কিরিতেহেন। অপর এক ক্ষম শুল্রকেল বৃদ্ধ। ২৭ বংসর অট্রেলিয়ার যাপন করিয়া বৃদ্ধররেল সুইট্লারল্যাওে বাস করিমার ক্ষম বাইতেহেন। বৃদ্ধ বেশ প্রস্কুল। এই শহর হুইতে স্থারক কোন একটি জিনিস কিনিতে ইচ্ছুক। একটি সোনা-রূপার লোকানে চুকিয়া এক জোড়া রূপার ভারের হুল কিনিলেন। কেবিলাম পাউও পাইলে লোকান্যারণ অনেক ক্ষম থাবে জিনিস বিক্রম ক্রিতে প্রস্কুত।

রাজে বাইবার সময় ববর আসিল বে, আগামী কাল আমরা সকাল ৮টার রওমা ক্টরা সিলাপুরে পৌছির। তথার রাজি বাপন করিব। ইহাতে আমাদের প্রোঞাম পুরা এক বিল পিতাইরা বাইবে। কিছ সিলাপুর বর্গনের প্রবোগ নিলিবে বলিরা কেহ বিশেব অধুকী হুইলেন না। ১৪ই বার্ক শুক্রবার ভোরে হোটেল ত্যাণ করিব। বিমান-বাঁটতে উপহিত হুইলাম। উপসাগর-তীরবর্তী বিমান-বাঁটতে বাঁটর বরট হোট। তাঠের বর। বলোবত সবই অহারী। সিভ্নী হুইতে লগুন পর্যন্ত এই বিমান-পর্যটা বিলিতী বি-ত্ত-এ-সি এবং অট্টেলিরার কোরান্টাস এন্সারার এরার ওরেত্বের সহবোসিতার পরিচালিত হয়। সিভ্নী হুইতে সিম্বাপুর পর্যন্ত বিমান কোরান্টাসের কর্মচারীগণের হাতে বাতে। সিম্বাপুরে জু বদল হয় এবং বি-ত্ত-এ-সি-র কর্মচারিগণ বিমানের লারিত প্রব্ ক্র ক্রেন। স্থরাবারার বে হালীর কর্মচারীটর উপর আমাদের দেবাগুনা ক্রিবারণ তার হিল তিনি অট্টেলিরাম। বিমান-বাঁটতে আমার মার্কিন সহবাত্রী উহার স্থবন্দোবন্ধের ভঙ্গ ভাহাকে বছবাহ দিয়া জিল্লাসা করিলেন, "গুল্লাক ও ইন্দোব্যন্ত বিবাহ ক্র দিয়ে বিটিবে ?"

ছানীর কর্মচারী—"কানি না। তবে বর্তমানে কোর খন্দব যে, আগানী সপ্তাহে ইহাদের নব্যে চুক্তি বাক্ষরিত হইবে। চুক্তির র্সাবিলা পূর্বেই তৈরি হইরাছে। ওলন্দান-গণ এবন আরও হুইট সর্ত বোগ করিতে চাহিতেছে। ইন্দো-নেশীরগণ তাহাতে আপত্তি করিতেছে। ইহাদের আপত্তিও বেরূপ মৃচ ভাহাতে মনে হর ওলন্দান্দগণ সর্ত হুইট ছাড়িরা বিতে রাজী হইবা বাইবে। চুক্তির সারনর্দ্ধ এই যে, হুই বংসবের মধ্যে ওলন্দান্দগণ ইন্দোনেশীরগণকে দেশের ভার ছাড়িরা থিবে। তবে শেষ পর্যন্ত হর ভো ওলন্দান্দগণ হুই বংসবের হুলে বিশ্বংসরই বাকিরা যাইবে।"

সহবাজী আট্রেলিয়ান যুবকট প্রশ্ন করিলেন, "ইন্সোনেশীর-দের শাসনপ্রবালী ` কি ওলকাক্ষের শাসন-প্রবালীর বত অ্লিপুর ?"

श्रांनीय कर्यकांची, "त्यांकिर मा ।"

আঠ্রেলিয়ান মুবক, "তবে ইন্দোনেশীরদের হাতে দাসন-ভার হাডিয়া বেওয়া উচিত নর।"

ছানীর কর্মচারী, "এ বুঁ কি লইতেই হইবে। ভারতবর্বে কি হইতেহে ?"

जानात रेश्तक जरुवाची अक्ट्रे जटाविक रहेरानन अवश् जानात रिटक वक मृष्टिगांक कतिरानन ।

সমুক্তে বিমান প্রস্তত। আমরা বৌকার চড়িয়া বিমানে উঠিলার। সোঁ সোঁ শব্দে কল কাটিয়া বিমান গর্জন করিয়া ফুটল।

বিষাদ্য টিয় অসমাও আলাপ বিষাদে বসিয়া আবার বুজ ত্তৈ।

ষাৰ্কিন ভব্ৰলোকট বলিলেন, আৰি ধেৰিয়াহি আৰহা অভেন্ন সমভা বা সুৰ্বহুংৰ বুৰিভেই পান্তি লা। অভেন্ন পানিভ কেশ আৰহা কিনিয়া বেৰিয়াহি কিন্তপে কেশবাসীনৰ ক্ষমণঃ ক্ষমিক হইয়া নিয়াহে। ভাষাকের শাসনব্যবস্থা ভাষাকের

হাতে হাতিরা দেওরাই বোধ হর শ্রেষ্ঠ পহা। আনরা ত ফিলিপাইনকে হাবীনতা দিতেহি। জানি না তাহাদের লাসন-ব্যবহা কত দুর হুফলপ্রদ হইবে।

ইংরেজ ভত্রলোক—কিলিপাইনই বসুন আর ভারভবর্থই বসুন, ইহাদের রাষ্ট্রীর জীবনের এবন সবে শৈশবাবছা। ইভি উঠা, কথা বলা প্রভৃতির সময়ে শিশুর বেরুপ বিপশ্ব উপস্থিত হয় ইহাদেরও অঞ্জগতির পথে মাঝে মাঝে বিপর্বার হইবেই, ভাহাতে বাবভাইলে চলিবে না।

নার্কিন ভন্তলোক— আমি একবার জিনিবাদে গিরাছিলাম। সেবানে অনৈক ভন্তলোক আমাকে বলিলেন, 'আনেরিকা বলি আমাদের ভার লইত তবে বছই ভাল হইত'। আমি বিশিত হইরা কারণ ভিজাসা করিলাম। তিমি বলিলেন, 'আমরা আমেরিকার হাতে আসিলে ভলার পাইতাম এবং ভলার পাইলে আমাদের অনেক স্থবিধা হইত।'

আমি-- ভাঁহার হুক্তি অধীকার করিবার উপার নাই।

আট্রেলিয়ান ম্বকট মার্কিন ভক্রলোককে দক্ষিণ-আবেরিক। বিষয়ে প্রশ্ন করিলেন। মার্কিন ভক্রলোক উভরে বলিলেন, । আমরা উভাদের শাসন-ব্যবহার কোনরপ হতক্ষেপ ভরি মা।

আঠ্রেলিরান র্বক — উহাদের শাসনব্যবস্থা কি ধুব স্থনিপুণ ?
মার্কিন ভদ্রলোক—না, তবে আমরা তাহাতে হতকেপ ,
করি না। কারণ আমরা তাহাদের সমস্থা বৃধি না। আমরা
তবু তাহাদের সকে ব্যবসা করিতে চাই। সে কারণে রাজ-

নৈতিক ব্যাপারে হতকেপ না করাই ভাল।
অট্টেলিয়ান ব্যক্তি সমন্ত্রে ক্রতেপ্টের কথা ভিজাস।

कतित्वम ।

মার্কিন ভদ্রলোক—"হাঁা, ক্ষতেণ্ট একট বড় বুছ বিশেষ রক্ষেই লড়িয়াহেন।"

মার্কিন ভত্রলোকটির সকল কথাতেই তাঁহার রিপাবলিকান দলীর মত পরিক্ষুট হইরা উঠিতেছিল।

ভারত-মহানাগরের উপর দিরা বিবাদ সগর্জনে ছুটরাছে।
ভাষাদের নানা বিবরে ভালাপ চলিতেছে। নার্কিন ভরলোকট
একবার ভাষাকে ভিজাসা করিলেন, "আমি চীন হইরা
ভারতবর্বে বাইব। ভারতবর্ব হইতে স্থতিচিহ্-বর্মণ ভাবি
কি ভিনিস ভাবিতে পারি গ"

আৰি—"কলে তৈরি জিনিবে আবেরিকা জারিতীর। তবে হাতের কাজের নৈপুণ্য ভারতবর্বে বিশেষ স্কপে দেবিতে পাইবেন। গালিচা, রেশম ও পশবের উপর হাতের কাজ, হাতীর ইাতের কাজ, নোনা-রূপার তাবের কাজ, বেত পাবরের কাজ প্রকৃতি আনিতে পাবেন।"

পুনীল ভারত-মহাসাগরের উপর বিরা উড়িতেছি। কতপুর আসিরাছি ধেরাল বাই। যাত্র ৪০০০ কুট উপর বিরা বভার ১৩০ বাইল বেগে বিবাল ফুটতেতে। স্থানীর

সমর বেলা ১টা ১০ মিনিটে ক্যাপ্টেন ঘটা ক্ৰিয়া প্রচার ক্রিলেন বে, আমরা কু-বিযুব রেখা অভিজ্ঞন করিতেছি। প্রশাস্ত হতাসাগরে ভূ-বিযুব রেণা অভিজ্ঞয ক্ষরিরা দক্ষিণ গোলার্ছে নামিরাছিলার। ভারত-মহাসাগরে পুনরার ভূ-বিবৃব রেখা অভিজ্ঞান করিয়া উভয় গোলার্ছে ষ্টিভিভি। ক্যাপ্টেৰ প্ৰভোক বাত্ৰীকে একৰাৰি করিবা সুমুখ ও সুদ্দরন্ত্রণে ছাপানো সার্টকিকেট দিলেন। আবার गाउँकित्वरहे तथा दिल-"वक्नवतात्वत चारवरण जैविनव-ভূষণ দাসপথ ভূ-বিযুব ৱেধার উপর দিরা উভিয়া খৰ্শ-गरन्पर्वक्रविष्ठ शृंगा चर्क्कवर्श्वक गर्व शांभग्नक **रहे**रत्य। অব্য হইতে তিনি স্বৰ্গীয় বাহিনীয় অভত্ত হইলেন 🖺 শীষ্ট ছল-সাহিব্য প্ৰকৃষ্ট হইতে লাগিল। ছ-একটা চর দেবা গেল। কোন কোন চর এখনও জলের নীচে। কোন কোন চরে বিভার গাছপালা, তন্তব্যে নারিকেল গাছের প্রাচুর্ব্য। क्षमणः जिलानुत भएत मुद्रैत्नाहत एटेल। पृत स्टेप्ड पत-বাছীপুলি কুন্দর দেখাইভেছিল। পোভাশ্ররে বুদের ধ্বংসলীলা বিশেষরূপে প্রকটিত। চারিবিকে শতাবিক ভাহাক, তথবো অনেক্তলি জলমা। পত বুবে পার্ল হারবার পর্যন্ত জাপানের রণতাওর চলিয়াছিল। পার্ল হারবার আভ নবকলেবর লাভ করিয়াছে। ভিত্ত ভার্টটন হটতে বরাবর ধ্বংসের চিহ্ন দেখিয়া আসিতেছি। কত ভাছাত্ৰই বে ভাগান ছুবাইরাহিল তাহা কিছু কিছু অনুযান করিতেহি। কিছ क्छ पित्न त्व धरे नवस स्कार रहेट स्वर्तन हिरूनवृर समुद्र হইবে ভাহা অভ্যান করিতে পারিভেছি না। বেলা প্রায় ৎটার (ছানীর সময়) সিদাপুরের সমুদ্রে বিমান নামিল। ৰোভাবোগে ভীৱে ইটিলার। কর্মবান্ত বিমানবাটির যাবভীর ৰন্দোৰভই বেল ভাল। ভাষাদের ইংরেছ বছুটর পদ্মী ভাঁহার বানীকে অভার্থনা করিতে বিষান্ধাইতে আসিরাছেন। चिनि चानारवद निकृष्ठे विवास नहेशा महत्त हिन्ता श्राह्म । ষার্কিন ভত্রলোক্ট এবানেই বাকিবেন। তিনিও হোটেলের সন্ধানে পেলেন। আমাদের ম্ব্যাছ-ভোজনের ব্যবস্থা বিমান-বাঁটির রেষ্ট রেকেই করা হইরাছিল। মধ্যাছ ভোজনের পর আবাদিগকে বে হোটেলে লইয়া যাওৱা হইল ভাহার নাম বাকেল হোটেল। শহরের কেন্দ্রছলে অবস্থিত এই হোটেলট হুবং ও 'ছুব্'।--বলোবভ ভাল। স্বাধীনভার উপানকদের এই সেই পুণ্যভূষি বেধানে কিছুদিন পূৰ্ব্বে নেভাদী স্থভাষ্চত্ত আকাদ বিন্দ কৌকের প্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন।

হোটেলে কিছুক্প বিশ্বান করিব। একট ট্যাজি লইবা প্রবা বেশিতে বাহির হইবা পঞ্চিলাব। ট্যাজিওবালা পঞ্চাবী। প্রবাট ভারতের পুরবো শহরের মৃতই বনে হইতেহে। করেকট রাভা বেশ প্রপত। বীচ্বোতে অবণ উপভোগ্য। প্রধানবিধান্তের স্বাহক ভক্তী হভাই বটি আকর্ষণ

করে। শহরটতে চীনাবের সংখ্যা সম্বিক। ভারতীয়ও বর্ষেই। ভারতীরদের মধ্যে পঞ্চাবী ও সিদ্ধী বেশী দেবিভেছি। বোখাই বাজার, হিন্দু রোড, বাবু রোড, ইরিস রোড প্রভৃতি নাম যেন পরিচিত। অরচার্ড রোড ও ভালাল বাসের রোভ ধ্ব **४८७। । दौरा**नद अकारम शर्काछमङ्ग, क्विविद्यम अवर वसवस्म। সেই দিকে গিয়া একট চীনা প্যাগোভা দেবিলাম। প্যাগোভাট পাহাতের উপর। ভিনট সোপানশ্রেণী অভিক্রম করিরা প্যাগোভার উঠিতে হয়। একট কেন্দ্রীয় গরুভকে বিরিয়া পাঁচটি গছল। ছানট পরন রমধীয়। প্যাগোডা হইতে সমুবের ৰুক্ত স্থান্ত । ভারগাট্ট এখন জনপুত । স্থান্ত প্যাগোডাট জরক্ষিত এবং খাৰে মাৰে ভগ্ন। ট্যাল্পিওয়ালা বলিল বুছের সময় আপানীরা চীনাজের ভাভাইরা ছিয়া মন্বিরটকে ভাবে ভাবে ভালিরা দের। সেধান হইতে হীপের পার্বভ্য অংশের দিকে চলিলাম। অদুৱে সেমানিবাস। পাশে ভাপ বন্দীবিবাস। ज्ञातक जानानी युवरकी (पश्चिमाम । के पिएक पुतिका नुमदाद **मह्दा श्रादम कविनाम । (वाहामिक शार्डाम मामिका पामिक** পায়চারি করিলাব। তুই দ্কীর নগর ও দ্বীপ পরিক্রমা করিবা হোটেলে কিরিলাম।

হোটেলে এক ঘরে আমাদের ভিন ক্ষের স্থান। অপর कृष्टे चन देश्राबच जारवाधिक, देवांदा चाहेलिया वहेटल हिंहे ষ্মাচের রিপোর্ট করিয়া দেশে কিরিতেছেন। শেষ রাজে উট্টিতে হইবে। আমি উট্টিয়া প্রাতঃকৃত্য সমাপন করিয়া সাংবাদিক্তরতে ভাগাইয়া দিলাম। তাঁহারা ক্রত তৈরি হইয়া লইলেন। সমন্ত্ৰপৰ্ক হুইতে ৬-১৫ মিনিটে বিমান উছিল। তথ্ৰ আলোক ও অৱকার যিশিয়া আছে। জ্রমণ: আলোক ফুটরা **पे**ठिन । त्यवास्त्र चाकात्म पूर्वतायह त्यवा त्यन मा । भीटा সাদা বব্ৰবে যেখ। সোজা মলম উপদ্বীপের উপর বিরা স্থনীল বুকাঞ্ছাদিত সমতল ভূতাগ দেখা বাইতেহে। সাদা যেবঙলি কোৰাও বুৰ কাঁকা, মনে হয় যেন মেঘৰভণ্ডলি গাছেয় মাৰার বসিরা আছে। কোৰাও মেবরাশি অবিচ্ছির। চলা-তপের নীচে যেন প্রকৃতির অপূর্ব্ব নীলা চলিতেছে। আমরা উপদীপের পশ্চিম উপকূল দিরা চলিয়াছি। গভিবেগ ৰ্কার ১৬২ মাইল, উচ্চতা ৬৫০০ কুট। নীচে ভালার এবং ছলে ইডছড: বিভিন্ন হোট ছোট পাহাত। মাৰে মাৰে জনবসভি বৃষ্ট হইভেছে। কোৰাও কুলানী প্ৰোভবিনী চপল চরণে আঁকিয়া-বাঁকিয়া চলিয়াছে। কুয়ালা লামপুর অতিক্রম ক্রিলাৰ ৭টা ৫০ মিনিটে। ইপি শহরের উপর বিশ্বা উড়ি-তেছি: বাজা ও ছোট ছোট নদী বেন সদে সদে পৰ্ণিন গতিতে চলিয়াহে। দ্বাভার উপর দিয়া মোটরগাড়ী ছটতেহে। বাড়ী-বরপ্রতি সাভাবো। পহরে বড টবের কারবারা আছে। তপ বিবিট পরে আর একট প্রর অভিক্রম করিলাম। প্ররট ছোট ও ছুবর। বাব ভনিলাব তাইপিং। পূর্ব্ব বিচ্ছে বুরে

পৰ্কভিষেত্ৰ। পশ্চিমে অনভিচুৱে সর্বা। একট নদী বেন বিনাটকার সাপের মত পড়িয়া আছে। বড় বড় ববার-বাগান দেবিভেছি। বাগানে গাছগুলি ব্যুহাড়ারে সাভানো। দেবিভে নবোজ। মাবে মাবে ফুলর ফুবিকেন্ত্র ও এটা দেবা বাইভেছে।

বিষানে ঠেইস টাইষ্প্ নামক একট সংবাদপত্ৰ আমাদিগতে পভিতে বেওৱা হইৱাহিল। ব্ৰের পর ১২ পৃঠার এই
কাগকট প্রথম বাহির হইৱা ঘোষণা করিতেহে বে, এখন হইতে
প্রতি মদল, বৃহস্পতি ও পনিবার ১২ পৃঠা এবং অভ দিন
৮ পৃঠা লইবা বাহির হইবে। কাগকে দেখিলাম সিলাপুরে
র্ভাপরাবে অভিযুক্ত সাভ কন কাপানী অভিসারের বিচার
চলিতেহে। ১৯৪২ প্রীটাব্দের কেক্সমারী নালে চালী উপক্লে
কাপানীরা যে বীভংস হভ্যাকাও করিবাহিল এককন চীনা
আলালতে ভাহার ভ্যাবহ বিবরণ দিয়াহে। কৃষিক রবারের
ভবিতং সম্বরে এবং কৃষিক রবার ও রাসারনিক রবারের
ভবিতং সম্বরে এবং কৃষিক রবার ও রাসারনিক রবারের

বিমান সগর্জনে ছুটরাছে। স্থলভাগ হাড়াইরা সমুদ্রে পঞ্জিলাম। জন্মলা: উপকৃল হইতে জনেক দূরে সরিরা পঞ্চিয়াছ। ১০টা ১৫ মিনিটে (সিলাপুর সময়) আবার "পক্টে" নগরীর উপরিভাগে প্রবেশ করিলাম। পক্টে সিলাপুর ও রেছুনের অর্জপথ বঞ্জ উপরীপের কুজের উপর অবছিত। শহরে প্রবেশ-পথের মূর্বে সমুদ্রের মধ্যে ছোট ছোট দ্বীপ ও পাহাছ হন্নানা। একটু পরেই আবার দিগছবিভূত সমুক্রে পঞ্চিলাম। আর স্থলভাগ হুই স্ট্রেডে না।

ক্যাপ্টেন বলিলেন বেজুনে এবন প্রস্থি ভাল হোটেলের বাবছা হর নাই। বন্ধরে বাঞীগণের খাল পরীকা করিবার বঙ কাইনস্ কর্মচারী নাই; তাহাহের বাষ্যপরীকা করিবার বঙ ডাক্টার নাই। বাঞীগণকে শহরে নামানো হইবে না। আব ঘন্টা বিপ্রামের পরই বিমান রেজুন ত্যাগ করিবে এবং ঘড়ই ক্লিকাতা পৌহিবে। শুনিরা মন প্রস্থুল হইরা উঠিল।

পার্ল হারবার হইতে হ্বাপানীদের ক্বত হ্বংসলীলার কথা ভনিতেছি এবং নিদর্শন দেখিতেছি। হ্বংসের পর পার্ল হারবার আমেরিকার বনবলে পুনরার নবকলেবর লাভ করি-রাছে। কিছু পুরাবারা, সিলাপুর ও রেজুনের এখনও বিহ্বভ অবহা। ভারউইনেও হ্বংসের বছ নিদর্শন হেখিরাছি। পুরাবারা ও সিলাপুরে বছ হুলবার হাছাক্র হেখিলার।

ভাপান আৰু পরাজিত। সিদাপুরে বহু ভাপ হুডবন্দী দেখি-রাহি। সামরিক বিচারালরে ভাপানীদের অভ্যাচার-ভাহিনী বিশ্বরূপে বর্ণিত হুইতেছে। এক হিন ভাপান হিল এশিরার পর্ক। অবেতকার ভাতির ক্রত উর্ভির উর্ভাহরণরূপে ভাপান এশিরার বনে আশার এবং অক্টেলিরার বনে তরের উল্লেক্ করিরাহিল। কাপানের প্রতাপবহিং আক নির্বাপিত। কিছ নিবিবার পূর্বে পার্ল হারবার হুইতে রেকুন পর্যন্ত বিরাট ভূবতের উপর কাপান বে বাবীনতা-শৃহার বর্তিকা আলাইরা দিয়াহে তাহা ক্বনও নির্বাণ হুইবার নয়।

দিগভবিভ্ত সমুদ্রের উপর দিরা উভিত্তেছি। সহসা
একবানা নৌকা দেবা গেল। নীল জল ক্রমণঃ বোলা হইতে
লাগিল। একট জলমর চর দৃষ্টপথে পতিত হইল। ইহার পর
ইরাবতী নদীর মোহানা। নদীর উপর দিরা উভিতেছি। উভর
কূলে পরিকার কমি। মাবে নাবে রক্ষারাপ্রাক্তর প্রান।
রেকুন নগরী দৃষ্টিগোচর হইল। বিমান নগরীর উপর দিরা উভিরা
গেল। প্রকার শহর, সোরেভাগো প্যাগোভার বর্ণীর্ব রোজে
চক্চক্ করিতেছিল। ইরাবতীর পার বরিরা উভিরা বিমান
নদীবক্ষে অবতরণ করিল। তবন বেলা ১টা। আফাশ হইতে
যে নদীকে অপরিসর দেবাইতেছিল তাহা প্রক্রে অভতঃ তিন
নাইল হইবে। নদীবক্ষে বছ জাহাক ও নৌকা। বিমান হইতে
আমাদিগকে একট মোটর-নৌকার নামানো হইল। আমাদের লইরা মোটর-নৌকাট ইরাবতীবক্ষে আব ঘন্টা মুরিল।
শেষে বিমানে ক্রিলাম। ১টা ৫০ মিনিটে বিমান প্ররার
উভিল। রেজন-সমর সিলাপর-সময়ের এক ঘন্টা পিছনে।

আজ ১৫ই মার্চ শনিবার। বিগত ১লা অক্টোবর বদেশ ত্যাগ করিরাছিলান, আৰু আবার নিজের দেশে কিরিতেছি। ছর মাসে কত দেশ দেখিলান। মহাকালের বিধানে পৃথিবীর কিরুপ পরিবর্ত্তন হুইতেছে তাহার কিছু কিছু প্রত্যক্ষ করি-লাম। তারতবর্বের রাজনৈতিক রুদমক্ষে যে ঘটনাবলী ক্রুত আবর্ত্তিত হুইতেছিল তাহাও বিদেশে বসিরা ভূনিতেছিলান।

মহায়ুখের বাজা বাইবার পর পুরিবী আজও ভাল সামলাইতে পারে নাই---সামলাইতে বেশ কিছবিন লাগিবে। পুৰিবী আৰু নানা শক্তির হারা মধিত ও আলোড়িত। এটম বোষা আবিষ্ণুত হইয়াছে। ফুলিয়া ভাহায় ৰূতন আহৰ্ণ, শক্তি এবং কৰ্মপদ্ধতি লইয়া পুথিবীকে বিষম মাড়া দিভেছে। ভার্থানীসং পূর্ব্ব-ইউরোপ ভাত কডালসার। পশ্চিম ইউরোপ হতবল। ইংলও এক বৃতন ক্ষেত্র রচনা করিয়া ভাহার মধ্যে দীভাইবার ভাষণা বুঁজিতেছে। এ বিষয়ে ভাছার উভয় ও ক্টসহিকুতা সত্যই প্রশংসমীয়। ফ্রান্স ভার দ্বাড়াইবে কি মা সে বিষয়ে অনেকে সন্দেহ করিতেহে। এশিরার চীন গৃহ-बुद्ध पर्वापक , काणाम कृतिकाती । पूर्व-अवितात प्रवक्षांत्रत দেবা দিয়াছে। কিন্তু সেবানে জনগণ দায়িজ্ঞা-নিম্পেৰিভ, শিক্ষার আলোকে বঞ্চিত। পশ্চিম এশিরা বৃহৎ পশ্চিপুঞ্জের প্রত্যক্ষ জীড়াভূমি: সেবত ভত্রত্য বেশসমূহের পক্ষে বড়ীর গৌরবে কেবীপ্যমান হওয়া হয়ত। অষ্ট্রেলিয়ার জীবনবাজার ব্যক্ত সভেও অবৈভয়তি তীতি ভাষাকে কডভাংকে ধর্ম · **परिवारकः। पारविका ७ कानावादे अवन महानेवरक तक-**

ভৱের ধাকা উড়াইভেছে। সেবাবে মার্বের জীবনবারা সহক, বাক্তল, চিত্তাবারা অব্যাহত—শক্তি-বিভাগের পথ উত্তত।

ভারতবর্বকে নাণা ভূলিরা খকীর বহিনার প্রভিষ্ঠিত হইতে रहेल नदाबीमणांव वक्त विच कवित्य रहेत्व, नृश्युक वक्ष ক্ষিতে হাবে, বহিঃশঞ্জির প্রভাক হস্তকেণ এড়াইয়া চলিতে হটবে এবং সাধারণ মালুষের জীবনযাত্রার পথ সুগম করিতে হইবে। আক ভাহার সন্থবে সুবর্ণ-সুবোগ উপস্থিত। ভারত-মাভার ভবিত্রং এবন ভাঁছায়ই সম্ভতিগণের কর্ম এবং আচরণের উপর মির্ভর করিবে। মহাকালের প্রচও আবাতে আৰু ভারত-মাভার শৃথল বসিহা পঢ়িভেছে। গৃহহুছের অবসান করাই এবন ভাঁহার বড় সমভা। নেতালীর আদর্শে উব্হ, মধেশ-প্রত্যার্ভ আজাদ ছিল কোঁৰের দুৱাতে ভারতবর্বে হিন্দু-মুসলমান মিলনের বভা বহিয়াছিল। স্থরাবর্জী ও সভীশ দাসগুর হাতে হাত হিলাইয়া কলিকাভার রাভার হিন্দু-মুসলমানের সন্মিলিত শোভাষাত্রায় মায়কত্ব করিয়াছিলেন। ১৯৪৬ সালের ১৬ই कांत्रहे कांत्रज्यस्य हेलिहारम अक्षे विस्मय मिन । के मिन পাকিস্থানের ভর মুসলিম লীগের প্রত্যক্ষ সংগ্রাম ক্ষর হয়; কলিকাভার রাভার হাজার হাজার হিন্দু-মুসলমানের রভে ভাছাদের মিলন-আন্দোলন ভাসিয়া বার। ইংরেজ বলিভেছে. ১৯৪৮এর ভুন মাদের মধ্যে ভাছারা ভারত হাভিবেই। মুক্তি আসিতেতে নিশ্চরই, কিন্তু কোন পথে আসিবে, কি ৰূপ লইয়া আসিবে, ভারতমাতার দেহ খণ্ডিত ইইবে, না অৰ্ভিডই ৰাকিবে-ইত্যাদি নানা সমস্তা ও সংশয় আৰু ভারতবাসীর মনকে অলোভিত করিতেছে।

ভারভবর্বের একট খুকীর চিভাবার। আছে। ব্যক্তিগত
চিভাবারাকে সম্পূর্বেশে অব্যাহত রাবিতে ভারত চিরকাল
চেটা করিয়াছে। ইহারই কলে বহু চিভাবারার সামঞ্জ্ঞসাবনেও
তাহার প্রতিভা অভুলনীর। খাবীন-চিভার সহিত সমাজবছনের মূচতা ভারতে এক সবরে বিশেষরূপে বিভ্যান হিল।
কিছু আনু তাহার চিভা শক্তি পরাবীন, সমাজ পরু। সমাজের
বছন রহিয়াছে, কিছু লীবনামর্শ নাই; বুছির তীক্ষতা আছে,
কিছু সু-প্ররোগ নাই। চিভাশক্তি কনীর মূল উৎস হইতে
বিচ্যুত হইরা মৌলিকত্ব হারাইয়া কেলিয়াছে। ব্যক্তি হিসাবে
ভারতবাসী ইংরেজ বা মার্কিম হইতে হীন ময়। বিভার ও
বুছিতে সম্পূর্বরূপেই ভারতবাসী ইংরেজ বা মার্কিনের সমকক্ষ।
কিছু ভারতবাসী আল খবর্জ্বচুত; কাকেই তাহার সংগঠন
মাই, সাকল্য নাই। আমাজের ছেলেয়া বে কোন স্বেশে
পরীক্ষার ভাল কল করে, কিছু জীবনের উষ্ক কেন্তে হটরা
বার।

পাশ্চাত্য তিয়োঞাটক বা গণতাব্রিক সমাজের করেকট বিশেষত কতঃই চোবে পজে। প্রথমতঃ স্থবোগ-লাব্য। সকলেই অভতঃ ব্যক্তিক পর্যন্ত কোণাপতা করিবার সুবোধ পার—পরবর্তী শিক্ষা জীবনবারার সহিত সমতালে চলে। বিভালরের উচ্চশিক্ষার দিকে কন হারাই যার। বরং আয়ারের দেশেই উচ্চ শিক্ষার পিছনে বেশী হারা ছুটে। বি-এ, এম-এ পান করা কেরাই আমারের দেশ হাতা অভ কোবাও দেখি নাই। আমানের দেশের শিক্ষা জীবনবারার সহিত্য তাল রাধিরা চলিতে না পারার আমানের শিক্ষিত সমাজ্য সাধারণ সমাজ হাতে বিজ্ঞির হইরা পড়িয়াহে। উভয় সমাজেয় মধ্যে ভাবের আদান-প্রদান কঠকর হইরা উঠিয়াছে।

পাশ্চাভা ভিষোক্তাইক সমাকে দারিজ্যের ভাতনা কর। নোটা ভাত, নোটা কাপত প্রায় সকলেরই আছে। বনী নিব'ন অবস্তই আছে, কিন্তু নিয়ন বিরল এবং কেন্ট্ই আলাহীয় হইয়া জীবন আরম্ভ করে না।

ইহাদের দৈনন্দিন শীবনবাঞ্জার সততা বিশেষরণে লক্ষ্য করিয়াছি। লগুনের হোটেলে ব্যাগ কেলিয়া আসিয়াছি, কেহ ন্পর্গও করে নাই। গুরানিংটনে বাস-যাঞ্জীগণের নিক্ষট কেহ টকিট দিয়া পরসা আদার্য করে না; যাঞ্জীরা নিজেরাই নিষ্টি বাজে পরসা কেলিয়া দিয়া যায়।

খান্ত বিষয়েও ইহাদের অনেকটা সমতা দেবিরাছি। মাছ,
মাংস, তরকারি, ছয় ও ছয়কাত ক্রবা—ইহাই সর্ব্ধন্ত মানুষের
খাত। কিন্তু আমাদের দেশে রামার বিভিন্নতা অনুমুত্ত।
পাশ্চান্ত্য দেশে সাবারণতঃ সিন্ধ ও ভাকার মব্যেই রামা সামাবহু। অবিকাংশ লোকেই হোটেলে খান্ত বলিয়া খাত-বিষয়ে
ফুচির পার্থক্যও কম। আমাদের প্রতি পরিবারেই খালোর
পার্থক্য। এমন কি একই পরিবারে এক এক ক্রের এক এক
রক্তর খালা।

ইহাদের সমাধ-ব্যবছার বিশেষ কট্টসভা দৃষ্ট হয় না। পরিবার বহুপ্রসারী নয়, অভ্যন্ত সীমাবর। পিভাপুত্রের সম্পর্কও অভ্যন্ত বলপরিসর।

সাধারণ লোকের চিন্তাধারা কটলতাপুত। ইহার। সব বিনিসের মধ্যে তড়জান বোঁকে না। নিরামির বা আমিধ আহারের অব্যান্তিক মূল্য বিচার করে না। অত্যন্ত জীবনধারা হ হ রুচি অনুসারে সহক তাবে অনুসরণ করিবা যার। এই সমস্ত কারবেই লে সব দেশে "লবারি" বা সামাজিক ভেনবুদ্ধি-মূলক অভিযান কম। আমেরিকা বা অট্রেলিয়ার ধনী নিধুন একই কেকেটেরিয়ার বসিয়া একই বাদ্য প্রমানকে ভোজন করে।

ইবাদের যানবাহনেও রক্ষারি কর। রাভার ওবু বৈছাতিক শক্তি চালিত গাড়ী বা মোটবগাড়ীই চলিতেছে। আবাদের দেশে একই রাভার বিদ্ধা, গরুর গাড়ী, বোডার গাড়ী, বোটর গাড়ী ও টাম গাড়ী ভিড করিয়া চলিরাছে। কলে প্রভ্যেকের গতিবের্গ ব্যাহত হুইতেছে এবং রাভার শুর্থলাও বভার থাজিতেতে না। ইহা বেন আবাদের সমাজেরই অভ্রাণ। নেথানে বৈদিক সন্থানী, বৌদ ভিন্দু, চার্কাকণহী, গোড়া বুসলমান ও উপ্র আধুনিকপহী একর ভিড় করিয়া যাত-প্রভিয়াতের সৃষ্টি ক্রিতেতে।

এত দাবিত্রা, এত অসাহ্য ও এত ঘটনতা যাহাতে আমানের বেশে ভিরেক্তাসির পরিপদ্ধী হইরা না উঠে সে विश्वतः विराम्य लका वार्षिए स्टेर्टर । देशांत जान विश्वादः আমাৰের ব্যক্তিগত অবৈধ্য ও কর্মবির্ণতা এবং সমাকে জীবনীপভিত্র জভাব। শিভিত সমাজের সহিত সাবারণ সমাজের বোগ নাই। কলে শিক্ষিত সমাক খীর বৃদ্ধিতে অভিনিক্ত বিশ্বাসী এবং সাধারণ সমাক্ষের বুধিতে আহাহীন। এক্সপ অবস্থা ভিক্টেইরশিপের অভুকুল। ভিষোক্রাসি সাধারণ মাছবের বৃদ্ধিতে আছাবান। ভিট্টেরলিপের উৎস একট. ভিষোক্রাসির উৎস অগণিত। সেইজন্য পরস্বরকে ববিবার চেষ্টা এবং পারন্দরিক সহাত্ত্তি ও সহযোগিতা ডিবোক্রাসির সাকল্যের পক্ষে অভ্যাবপ্তক। চুলচেরা বিচার করিরা পদাৰিকার বলে খ-খ ক্ষতার সম্পূর্ণ প্রয়োগ ভিষোক্রেসির পরিপদ্ধী। বেচ্ছার বক্ষরতা বর্জ করিয়া অভের দাবি মানিতে হইবে: প্রভাকের প্রাণ্য সন্থান প্রভোককে বেচ্ছার দিভে क्हेंद्र, वाकि, चाहेम-जला अवर विठाबानरबद शूर्व बद्यांचा দিতে হটবে--ইহাই ভিষোঞাসির নিরম। যদি আমরা जित्याकांत्रि हारे जत्य अ निरुष्त जामाप्तित्रक मानित्वहे इहेत्य । ভারতবর্বে এরণ শিক্ষার অভাব হিল না। আবার কি আমরা সেই শিক্ষা কিরাইয়া আমিরা ভারতমাতাকে স্বমহিমার প্রভিষ্ঠিত করিতে পারিব গ

এইৰপ নানা চিন্তার মন আলোড়িত হুইতেছে। বিমান বেছুন হাড়িরা সগর্জনে হুটরাহে। বেছুন হাড়িবার ২০।২৫ নিনিট পরে নহীতীরে স্কর একট হোট শহর অভিজ্ঞ করিয়া

किञ्चन छैनकून वेविया छैकिया जबूट्य नेकिमाय। छैनकून चमुराहे विक -- बार्च बार्च हव । बाबबा ১১००० कि के ह विश के किएक हि। क्रमनः के शक्त-कांत्र चतुक व्हेत । क्रांबिविटक দিগভবিভূত সমুদ্র বিরাট একধানি পার্টার মত পড়িয়া আছে। গুহুগানী মন চকল কালকেও পিছনে কেলিয়া চলিয়া বাইতে চাহিতেছে। সৰুৱের মধ্যে আবার ছ-একট চর দেবা বিল। ভৱদিৰীগণ সহত্ৰ বাৱার সমূত্ৰে বিলিভ হইভেছে। প্ৰকর সবুক বৰাৰী। বাবে বাবে গুৰুছদের বরবাড়ী। প্রভ্যেক বাড়ীডে বিশ্বত পরিকার প্রাক্ষ। বানের মরাই দেখা বাইতেছে। মাৰে মাৰে পুকুর। দুভ দেখিরা মন যেন ভরিরা উঠিতেছে। নীচেকার নারিকেল বুক্তরের বেন যাবা নাছিরা আমাকে नीति छाक्रिएएए। वरमद अछ माछा, स्रामद अछ मिर्चनछा এবং গুহুছ-কুটীরের এত পবিষ্ণতা তো কোবাও বেবি নাই। ক্রত কলিকাতা অভিযুধে অঞ্জয় হইতেছি। হিমান্তিশিধর হুইতে নাৰিয়া আসিয়া শত ভৱদিৰ বেখানে সিম্বুর সংক মিলিভেছে সেই মিলন-দীলান্দের দিগছের অভরালে মিলাইয়া গেল। বিমান গৰ্জন কবিয়া ছটভেছে। কলিকাভায় ভৰন (वक्त है।हेम हिल्हिट्टा प्रमान विमानवाहित छैनत विवा উভিয়াবিমান পাঁচটার গলার উপরে আসিরা উপস্থিত হইল। मिक्टिहे वालि जिक् ७ एकिटनचंदात ट्रांबैवक निवमित्र। ভভিভৱে মন্দিরের উদ্বেশ্যে প্রণাম করিলাম। অনুরে<sup>1</sup> কলিকাভার সৌধশ্রেই ও হাওড়া পোল। গলা-বক্ষে শত শভ त्नोका ७ द्वीमात । **जरवरत्र क्रम वि**हीरेका विमान त्रकावरक অবভয়ণ করিল। বিষাদ হইতে শৌকার নামিতেই দেবি অন্তিদুরে গদার পশ্চিম ভীরে দভারমান আমার দাদা, वोबि. ভাইরেরা, পুত্র-কভাগণ, আমার চারি বংসরের ভাইপে। हीनू, बहुबब अदिशिक्षमांच बाद अवर छाहारवज সকে আমার বোগমানা পদ্মী।

# বর্ত্তমান শিক্ষা-সমস্থা ও রবীন্দ্রনাথের ভাবধারা

জীকিতীশচন্দ্র নিয়োগী, এম্-এ, বি-টি

আমাধের দেশ এবন বাবীন হরেছে; কাজেই আমাদের শিক্ষাসমভার দিকে কর্তৃপক্ষের ও জনসাধারণের দৃষ্টি বিশেষভাবে
পাচেছে। এ অতি গুড সক্ষণ। শিক্ষাই বে জাভির সর্ক্ষবিধ
উন্নতির মৃলে, দেশের শিশুদের বধাববভাবে শিক্ষা দেওরা
না হলে, সে দেশের কোন বিষরেই উন্নতি বে হতে পারে
না—এ সভ্য সর্ক্ষমরিদিত; ভাই দেশ বাবীন হওরার সদে
সালে দেশের প্রচলিত বছ ক্রেটপূর্ব, অসম্পূর্ব, শিক্ষাপ্রভির
সংভারের প্রয়োজনীরভা সম্বাহ্ন স্বাই এড স্কাগ হরেছেন
আর চার্ছিকে সুত্র শিক্ষা-প্রিক্ষম্যা রচ্যার ভোভভোভ পাক

সিরেছে। এ অবস্থার শিক্ষা বিষয়ে মহামনীনী রবীক্রনাথের চিন্তাগারার কিছু সন্ধান করলে আমরা অবৃন্য সম্পাদলাভ করতে পারি। অনভসাধারণ প্রতিভা, হাবীন চিন্তাপভি ও 'বিশাল প্রাণ' কবিশুরুর থাকার, তিনি এখন এক ব্যাপক, উলার ও হুল দুট পেরেছিলেন বা দিরে তিনি সব বিষয়কেই ব্য তলিরে অতি বছুভাবে দেখতে পেতেন, আর সকলের ওপর এক বৃত্ন আলোকপাভ করতে পারতেন। ভাই শিক্ষা সম্বন্ধে তার নালাধিব লেখা ও বভুভা আলোচ্যা করলে আমরা আনাবের বর্তবান শিক্ষা-সমভা কি, আর ভার

সমাবাদের উপারই বা কি, তা তাল করে জানতে পারব, এ বিষয়ে সন্দেহ বেই ৷

শিক্ষবিবৰে কৰিওকৰ আৰ্থণ তাঁৰ নিক হাতে গড়া লাভিনিকেতন বিভাগৰে ও বিশ্বভাৰতীতে বুৰ্ড হবে উঠেছে। এই অভিনৰ শিক্ষায়তনগুলোৰ পৰিচালনাৰ অতে এবানকাৰ প্ৰবান প্ৰবান কৰাৰ নিকট নানা উপবেশ দিয়ে বিভিন্ন সময়ে বে সব চিটিপ্ৰ কৰিওক লিবেছিলেন তা পাঠ কৰলে আনবা বেৰ একটা সূত্ৰ আলো বেৰতে পাই, বা আমাদেৰ বৰ্ডনান সমভা সমাধানে ধুবই কাকে লাগৰে, যনে হয়।

ক্ৰিভন্নৰ মতে শিশুৱ হাবয়-মুকুলকে পূৰ্ণ বিকৃশিত ক্লা, অৰ্থাং ভার মধ্যে পরিপূর্ণ মন্থ্যাত্ত বিকাশের সাহাব্য করাই শিক্ষার মূব্য উৎেক্ত। এ শিক্ষাদানের পক্ষে শান্তবিধ প্রকৃতির লংব্দর্শ বিশেষ প্রয়োজনীয়। ভাই রবীজনাবের পাত্তি-নিকেতনের ছাত্রেরা পার প্রকৃতির স্থিক ভার্ন, যা শিকাকে করে ভূলে সরস ও সভীব। কবির ভাষার বলি, "এবানকার ( শাভিনিকেডনের ) এই প্রভাভের আলো ভাষল প্রাভয় গাছপালা যেন শিশুদের চিছকে স্পর্ণ করতে পারে। কারণ প্রকৃতির সাহচর্ব্য ভক্রণ চিত্তে আবন্দ স্কারের মরকার আছে. विराद वादिककात त्रमाशास करा ७ मकारमद चारमात ্ৰুল্যার প্রবাজের সৌন্ধর্ব উপভোগ করার যথ্য দিয়ে শিশুদের ভীবনের উরেষ আপনা বেকেই হতে বাকে। আবি চেৰেছিলুম যে ভারা অভুতৰ করুক যে বপুতরা ভাবের বাঞীর মত কোলে করে মাছৰ করছে—তারা শহরের যে ইট কাঠ পাণৱের মধ্যে ববিত হয় সেই অভভার কারাগার বেকে ভাবের বৃক্তি দিতে হবে । --- কারণ বিশ্বগ্রন্থতি থেকে বিচ্ছির করে যে শিকা বেবার ব্যবস্থা আহে তাতে করে শিক্তডিয়ে বিষয় কৃতি হয়েছে।" ভাই প্রকৃতির একাছ উপাসক क्रिक्ट रनाइन, 'बार्ग रियानम यनि दानन क्रिड रत, छत्व लोकानत रहेएछ मृत्त, विक्न तूक चाकान ও উচার প্রাথ্যে গাঁহপালার মধ্যে ভাষার ব্যবহা করা वाई।

শিশুর এই শিক্ষালাত বহি উমুক্ত প্রকৃতির মধ্যেই একটা হতে পারে, তবে শিক্ষকের প্রবোধনীয়তা কি? এ প্রান্তের ক্ষরেন্ত ক্ষরেন্ত ক্ষরিক ক্ষরিকর লেবার মধ্যে প্রক্রমতাবে ররেছে। তিনি লিবছেন, 'বহি তার (শিক্ষকের) ক্ষরিনের হারাভাবের মধ্যে ক্ষরিন সকার করিতে হর তাহার আনের হারাভাহার ভারের বাতি আলিতে হর, তাহার স্থেবের হারাভাহার কল্যাণনাবন করিতে হর, তবেই তিনি (শিক্ষকের)
সৌরবলাক ক্ষরিকে পারেন।' শিক্ষক হবেন সত্যকার
ভানাত্রামী। তার ভাবের সাবনা হারকে অভ্যাণিত করে
ভূলবে। রবীক্ষরার একচিটিতে লিবছেন, "ভাবের সাবনার ভঙ্গা ও শিব্যের গভীর বোর্গ, কেন না উতরেই হারা।"

একৰাখলোর নধ্যে কভ গভীর সভ্য নিবিভ রবেছে । ইবা এভ্যেক শিককের প্রশিবাদ করার বোগ্য।

এ ব্যে শিক্ষণ ও হাজের বব্যে আত্মীরতা বছন গর্কে উঠবে, শিক্ষণের স্থেহসিক্ত প্রাণের স্পর্লে। 'শিন্তর বন বোটেই কচ পদার্থ নর। এ হচ্ছে অভ্যন্ত সচল ও সঞ্জীব কৈব পদার্থ, এর উবোধন করতে হবে স্নেহ ও বনভাতরা সোনার কাঠিব স্পর্ণ দিরে।'

শিক্ষকের আর একট বছ তথ তার অসীন বৈর্য। ছাত্রের প্রতি অফুত্রিন স্নেহ থাকলে বৈর্য অবভি আপনা হতেই আসবে। কাই কবিগুরু শান্তিনিকেডনের ক্রেক্স অব্যাপককে এক পরে লিবছেন, "একে একে ছেলেম্বের ক্রমেকে উরোধিত করিয়া দিবার বে চেটা করিছেমে তাহাই বিদ্যালয়ের হথার্থ কার্জ। মান্ত্রের ক্রমাণ করিতে অসীম বৈর্যাের প্রয়োজন। কাহারও আশা পরিত্যাের ক্রমেলেন না—কল পাই বা না পাই প্রত্যেক ছাত্রের প্রতিই আমামের তপতা।" কবিগুরুর এই বাই শিক্ষক্রের মধ্যে এক নুত্র উভয়ও প্রেরণ এনে দের, সক্ষেত্র নাই।

উদার, উদ্ভ প্রকৃতির পরিবেশে ও আবর্ণ শিক্ষকের নাহচর্বো, আনশের ভিতর বিরে, প্রাণ ও বনের বিকাশ ও রস সকার হয়। এই পরিবেটনের মবো হাত্র ও শিক্ষকের একটা মধুর, পবিত্র সময় ছাপিত হয়ে বার—হাত্রদের বিরম্পৃথানা নানাবার ক্ষতে কোন বেগই পেতে হয় না। নিরম্পৃথানারের বাতে আরও সহক হয়, তার ক্ষতে রবীক্রমার ছাত্রদের হাতে বর্ষাসারা কর্ত্বত্ব বিতে বলেছেন। এ বিষয়ে তিনি নির্বাহন,

"বিভালরের সঙ্গে তারের সমন্ত সম্বন্ধ ভিতরকার সম্বন্ধ বেন হরে ওঠে—এতে বদি কিছু অপুবিধাও ঘটে তবে সেও বীকার করে নিতে হবে—হাঞ্জের কাঞ্চের্য্থে শর্মে আগরণে চালনাটাই বেন বন্ধ হরে না ওঠে, সাব্যাটাই বন্ধ হয়। হাজেরা বেন অক্তম করে বে, তারাও বিভালরের গতে তুলহে, আনে বে তারা এর প্রাণ। তাই বিদ্যালয়ের নানাপ্রকার ব্যবহা সম্বন্ধ তাকের নিজের ইছো চালনার মহনিব উপার করে কেওরা কর্তব্য, নানাপ্রকার কাজে তালেরও সম্বর্তির হান পাকা চাই। তাই সম্বন্ধ কিনিস্পর্যক্তে তালার তার তালের হাতে দিতে পাক—কেন না সঙ্গে তোলাই বে একটা মন্ধ নিকা। তাই তাক মহতে হাও, তাহাতেই ক্ল সমূলে নই হবে।" ক্বিওকর এই অনুল্য উপবেশ সকল শিকাবিদের, বিশেষতঃ শিক্ষম্বর্গের, প্রচুষ্ব চিন্নার বোরাক জোগাবে।

আমানের বর্তমান শিকাঞ্চণালীর একট প্রধান বোষ এই বে 'ইহাতে প্রাণ ও মনের বিকাশ হর না, ক্রনাশতি শুট্টকার্য্যচর্তার ব্যবহৃত হর না, যন অপরিণত থেকে বার, पृष्ठि, উडावनीपिक किष्टुबरे कृष्टि रव ना।' क्लन अवन रव, ভা কৰিওক আনাদের বুকিবে দিবেছের। ইংরেজী ভাষার মাধ্যৰে শিক্ষা ৰেওৱাৰ কলে ভাষা শিক্ষাৰ সংক ভাৰএহৰ रव ना, विद्यानिक ७ क्षत्रनानिक,--कीयनयांका निर्कारस्य পক্ষে বে ছইট অভ্যাবতক—ভার বিকাশের সহারভা कवा रव मा , कारकर कीरनरक निवनिष्ठ कवराव यक कुन, ফলেকের শিক্ষা থেকে বড় একটা কিছু পাওরা বার না। बर ७१८र, त्कान७ अकारर बक्बांबिरन भाग विरस् ठाकरी পাওয়ার বোগ্যভালাভ করার ভঙ্ই শিক্ষার প্রয়োভন-শিক্ষার উবেচকে এরণ সভীব ও বিরুত করার কলে সে শিকা এডটা ব্যৰ্থতা এবে হের। কেন না তা ভীবনের সত্য-कारबद धरबाकरम मार्ग मा । अहे वार्यका हुव क्वबाब करक ৰাতৃভাষার ৰাধ্যৰে শিকা দেওৱার প্রৱোজনীয়তা সহছে ভবিত্তর বহু পূর্বেই বিশেষ ভোর বিবে বলেছেন। তার ৰতে বাংলাভাষা ও সাহিত্যের ঘণাবণ অসুশীলন ও বিকাশের वरा विस्त निकाब जल भीवरमब अविन वृत क्रव, शबलाबब মধ্যে সামগ্রন্থ ছাপিত হবে। তিনি আরও বলেছেন বে. শীৰনবাঞার নানা সম্ভা হাঞ্চের কাহে উপস্থিত করে তার সমাধান সহছে আলোচনা করা চাই। প্রামের নানা সম্ভা---অৰ্থ নৈতিক বা সাহাজিক—তা সৰ সাকাংভাবে জেনে, ভার সমাধানের উপার চিন্ধা করা চাই। ক্লাসের শিকার চেরে बच्दना वर्ष निष्मा, बच्चा बबीक्षमांच प्यक्षेत्रादमा बदमदम । 'গ্রামবাসীর সকে আমাদের ছাত্রদের যোগে সেবার সহত্ত হাবা আবস্তক। এই বভীকুত্য শিকা আমাদের খত কোন শিক্ষার চেবে কম ওরতর নয়।'

ক্লাসে শিকালানের সমর শিক্ষ কিরপে হাত্রের স্বাধীন চিন্তার বিকাশসাধন করবেন তার কিছু ইন্দিতও ক্বিপ্তরুর এই লেবার মধ্যে পাই।

"হাজের। বেটুকু লিখনে তার সদে সদেই সেটুকু প্রকাশ করবার সাধনা প্রতিধিবই করা চাই। গুৰু তাই নর, হারবের ভাবাতে হবে। এবন কি তারা ববি পুঁবিগত বিষয় সহতে সাহস করে প্রতিবাদ করতে পারে তা হলেই বুবৰ তাবের ববেই শিকা হচ্ছে। পুঁবি বেন ববের ওপর আবিশত্য না করে, বনই পুঁবির ওপর আবিশত্য করবে।"

এমনি করে বিভার্জন করলে বিভা ও ব্যবহারের মধ্যে—নিজা ও জীবনের মধ্যে—হর্তেত ব্যবহান চূর হরে বাবে, শিকালাত সার্থক হবে।

আজ্ঞাল বনিবাধি শিক্ষার কথা পুব গুলা বাজে। এই
শিক্ষার একট বুল নীতি হজে এই বে, বাছবের শারীরিক ও
বাবসিক সকল শক্তির বব্যে একট অবও বোগ আছে।
পরশবের সহবাসিতার তারা শক্তিলাত করে। এ ত
ক্বিগুরুরই কথা—বহুড়াল আগেই তিনি লিবে সিরেছেন।

ভাই নানাবিৰ হভনিত্ৰ লেখা, শিকাৰ সন্পূৰ্ণতাৰ ক্ষ ৰে আৰম্ভক—এ বত কবিওল পোৰণ ক্ৰতেন। ভাঁৱ এক চিট্টতে ভিনি নিৰ্বেছন,

"আবার মত এই বে, আবাবের আঞ্জের প্রভ্যেক্ট হাত্রকেই বিশেষভাবে কোন না কোন হাতের কাকে বর্ণান্তর ক্রকে ক'রে বেওরা চাই। হাতের কাক শিকাই ভার মুব্য উচ্চেত্র মর, আগল কথা, এই রক্ষম বৈহিক কৃতিছ চর্চার মনও সকীর সভেক হরে ওঠে। বেসব হেলেকে আমরা নির্কোধ বলে মনে করি ভালের অনেকেরই স্থুচিত এই হৈহিক কর্ম্বন্ধভার সোনার কাঠির অর্ণ অপেকা করে আহে। বেহের অশিকা বনের শিক্ষার বল হরণ ক'রে নের। ভা হাড়া বার বেহ শিক্ষিত হর নি সে বত বছ পভিতই হোক, সংগারক্ষেরে অবিকাংশ বিবরেই ভাকে পরাসক্ত হরে ভীবনবারণ করতে হর—সে অসম্পূর্ণ বাছব। এ অসম্পূর্ণতা বেকে আবাবের প্রভ্যেক হাত্রকেই বাঁচাতে হবে।

ত্তরাং বেধা বাচ্ছে বে বনিয়াবি শিক্ষার মূল তত্ত্ব রবীজনাথ বহু পূর্বেই বলে বিয়েছেন। অবজি এই মূল নীতির প্ররোগ কি প্রধানীতে করতে হবে, সে হতত্ত্ব কথা।

প্রাণ ও মনের প্তথনকে সম্পূর্ণ বিক্ষিত করতে—
সম্পূর্ণ যাহ্য তৈরী করতে—মাহ্বের কোমল হাউজলোর আগরণের বে একাভ প্ররোজন, তা কবিওর ভাল করেই আনতেন, তাই সূত্যার শিলচর্চা, বিশেষতঃ হবি ও গান তার বিভালয়—শাভিনিকেতনে এক বিশিষ্ট হান লাভ করেছে।

বর্ষণিকাও শিকার একট অপরিহার্ব্য অল বলে কবিওল বনে করতেন। এইক প্রথনাথ বিশ্বীর কথার বলি,
"রবীজনাথের জগং তগবান, বাহুব ও প্রস্থৃতি নিলে। এই
তিন সভা স্বভেই ছারবিগকে সচেতন করে ভোলাই তাঁর
লক্ষ্য ছিল।" শিকাটা একেবারে হাতাবিকের সলে বিশ্ বাওয়াবার সময় ও প্রবিশ শিশুবের বিভে হবে, এই ছিল তাঁর বাই। হুতাবের নির্মের বব্যে থাকলেই শিশুরা আনন্দে, অবাবে বিকশিত হতে পারে, তাতে তাবের বেহের ও মনের সৌশর্ব্য হৃদ্বি পার তাবের পূর্ব বিকাশের সহারতা হুর। এর পরিবর্তে বর্ষশিকার উক্তেক্ত কৃতক্সলো নীতিশিক্ষা বেওয়ার ক্ষিপ্তর বোরতর বিরোধী ছিলেন। তাঁর মতে 'এতে সংক্ষাকে বিরুল ও বিকল তব্ ক্ষা হর', তার কল সহব্যস্থাকের পক্ষে বুব্ই ক্ষতিক্য।" তাই তিনি বলেহেন,

শ্বীবনের আরভে বনকে, চরিত্রকে গড়ে ভোলার সময় উপবেশ নতে, অস্থ্য অবহা এবং অস্থ্য নিরবই সকলের চেরে বেশ্বী আবর্জক।" এই অসূত্ৰ অবহা এবং অসূত্ৰ বিষয় বিশ্বাকৃতির মধ্যেই মহেছে; ধেবিরে বেবার কতে চাই উপযুক্ত শিক্ত, উপযুক্ত পরিবেশ।

শিকাকেরে বিভিন্ন সংস্কৃতির সময়র সাধনের প্ররোজনীরতা আজ বেনন প্রকট হরে উঠেছে, এর আগে এতটা কোন কালেই ছিল না; তার ভারণ ভারতে ইংরেজ শাসনের লোপ হওরার সভে সভে ইংরেজের, তথা পাভাছ্যের, শিকাও সংস্কৃতিকে বেন আমরা অধীকার না করি। বিশ্বের শিকাও সংস্কৃতির ক্ষেত্রে ভারতই মহাসময়র ঘটাবে, এই ছিল রবীক্রনাথের বাবী; নেই আমর্শ নিরে তিনি বিশ্বভারতীগতে ভূলেছেন, এবং আজ এই বিশ্বভারতী হরে উঠেছে বিশ্বের সংস্কৃতির মহামিলনতীর্থ। ক্ষরিক্রর অনমুক্রমীয় ভারার বলি, "সভ্যলাভের ক্ষেত্রে বিলনের বাবা বেই—বে গ্রহত্ব

ক্ষেণনাৰ আপন পৰিবাৰকে নিৰেই বাকে, আভিব্য ক্ষতে বার ক্ষপতা, সে বীবারা। ভবু গৃহছের কেন, প্রত্যেক বেশেরই ক্ষেন ভোকনশালা নিরে চলবে না, ভার অভিবিশালা চাই, বেবানে বিশ্বকে অভ্যৰ্থনা করে সে বছ হবে। শিকাকেনেই ভার প্রধান অভিবিশালা।"

শিকাকেরে ক্ৰিশুক্রর বহাব আবর্ণ ও ভাববার। আবাবের ব্যবহ ও ব্যকে নিক্তরই উব্দুদ্ধ করবে, আর আবাবের নানাবিধ শিকাসবভার স্বাবাবে এক বৃত্তন আলো বেধাবে, সংক্ষেত্র । ৮

 এই প্রবন্ধ লিবতে বিশ্বভারতী পঞ্জিলার প্রকাশিত কবিশুরুর বিভিন্ন পঞ্জাবলী থেকে বিশেষ সাহাব্য লওবা হরেছে—প্রবন্ধ-লেবক।

## ইতিহাস-শিক্ষা

এস. এম. ছদুক্লদ্দিন

ইতিহাস কালের সাজী। অভীত বর্ত্তবাম ও তবিজং বাঁধা পাকে ইতিহাসের পাতার পাতার। একে বলা বেতে পারে বাছবের জীবন-বেবের দ্বীকা, সভ্যতার বলিল। বাছবের জীবন, কর্বাবলী ও তার সভ্যতার বারা বুবতে হলে ইতি-হাসের শ্রণাপ্ত হতেই হবে।

অনেকে ইতিহাসকে বৃত অতীত বলে উপেকা করতে চান। তাঁবের মতে বর্তনানই আসল, অতীতকে ভূলে গেলেও চলে। কিছু আসলে তা নর। অতীতকে তিভি করেই আতির বর্তনান ও তবিস্তং গড়ে ওঠে। বাদের অতীত নেই, তাবের বর্তনান ও তবিস্তং নেই বললেই চলে। গৌরবোজ্প অতীত বাস্থ্যের মনে আনে কর্মপ্রেরণা, বর্তনান ও তবিস্তং সম্পর্কে তাই তার বৃষ্টি বাক্ষে সভাগ। অতীত বাদের নেই তারা সামনে পিত্রবে কোন দিকেই তাকাতে পারে না। বৃষ্টি ভাবের নীমাবত, কর্মপ্রেরণাও ভবৈষত।

পৃথিবী পরিবর্তনশ্বল। কিছ এই পরিবর্তন বোটেই
আক্ষিক নর। বিচিত্র বটনার বাতপ্রতিয়াত এই পরিবর্তনের ক্ষরিতা। ইতিহাস-পাঠেই ছাঞ্জন বৃহতে পারে
বে, বর্তনানের ক্ষর হর অতীতের গর্তে এবং তবিভাতের
কিং রচিত হর বর্তনানের উপর। বটনাবারা সহকেই এক
সমাক বেকে আত সমাকে সংক্ষরিত হতে পারে। মানব-মনের
আশা-আকাক্ষা এবং কাতির উবানপ্তন তাকের বিক বিক
কর্মবারা স্টিত ও সাধিত হচ্ছে। বুলে করে ইতিহালের

হচ্ছে পুনরারভি। অর্চাদ বে ভূল ভরাইনের ব্যক্তের করলেন, দৌলভ বাঁ ভাই করলেন পানিপথে—ধীরভাকর ও উমিচাদ পলানি-প্রাপ্তরে। বেংপালিরনের বেভাবে পভন হ'ল, ট্রুক সেই ভাবেই হ'ল হিচলারের পভন। ইভিহাস ভাই শুরু গরাই বলে না, অতীভের কাহিনীর ভিতর বিরে সে বর্ত্তরানকে ভূটরে ভোলে, ভবিভভের পথ-চলা সহক করে ভোলে। এইবানেই পুরাভন ও সূভন পরভিতে ইভিহাস শিকাবানের পার্বক্য। পুরাভন বরণের ইভিহাস-শিকা হিল ঘটনাসর্বাহ, বুভিবিচারবর্ত্তিভ। বর্ত্তরান ইভিহাস-শিকাপথভি ঘটনার উপর ভতবানি ভোর বের বা, বভবানি বের র্ভিবিচারের উপর।

ইতিহাস মহাকালের ইলিত ও সভর্বার । অভীতের বৃত্তে ইাভিরে সে অভুলি নির্কেশ করছে বর্তমান ও ভবিষ্ণতের বিক্লে, আর উচ্চারণ করছে মাহুবের অভ সাবধান-বার । ইতিহাস টিক্রত পাঠ করলে বৃত্তির প্রাথব্য, ভাবের পরিসর বাতে ও বিচারশক্তি পরিপক্তা লাভ করে । ইতিহাস-পাঠের উত্তেওও ভাই । কিছ ভাই বলে "শিক্ষক বেন ইতিহাস-পাঠকে বর্ত্তোগলেশে পরিণত না করেন । ছাত্রেরা বেন বিচারাসকে বলে ছাতিকে ও অভীতের মহাপুরুষকের ভাঠসভার ইাভ ভবিষে বিচার করবার প্রবাস না পার । তেওঁকিতি উপবেশের পরিবর্তে হাত্রেরা বীরভের মহিনা, নিঃরার্ণপরতা ও বিশ্বভার মর্যালা, সৃশংসতা ও ভাপুরুষভার প্রানি ববে-প্রাবে উপলব্ধি করবে । ইতিহাসের বটনা ভারা হরত ভুলেই বাবে, কিছ

ইতিহাস-পাঠের প্রভাব কাজ করতে বাক্তবে বটবা প্রে বাবারও বভ পরে।"১

ইতিহাসের ইঞ্চিত ও সতর্ববাদী বৃথতে হলে কল্পনা ও চিডা-শক্তির কিঞ্চিং প্রবাদন। এগার-বাবে। বংসর বরসের পূর্বে এ হুটোর পূর্ব-বিকাশের আশা করা বার না। কাকেই পঞ্চ প্রেণীর পূর্বে সভিচ্চার ইতিহাস-পাঠ আরম্ভ করা সভ্যপর নর। এইজ্ঞ প্রথম দিকে চিডা ও ক্রমার খোরাক হিসাবে শিশুকে গল্প ও উপক্ষার আপ্রায় নিতে হবে। এর ভিতর দিরেই তাদের ঐতিহাসিক বোব ও ক্লচি গজে উঠবে। ছাত্রমদক্তে এর ক্ষণ বাপের পর বাপ প্রস্তুত করতে হবে।

बाच्य वीत-श्वाती--विश्वय करत बानविष्ठ । वीतावना छ বীরপুরুষদের রোমাঞ্চর বীরত্ব-কাহিনী ভার ক্রনাকে দোলা দের। সেক্ত ইভিছাসের প্রথম পাঠ হবে দেশ-বিদেশের শতীত ও বর্তমান বীরপুরুষদের জীবন-ক্ষা। শিশুর বরস যত ক্ষ হবে, গৱে সেই পরিয়াণে হোয়াঞ্কর উপায়ানও রাখতে হবে ভত বেশী করে। সাধারণ মাছবের একবেরে জীবন শিল্প-মৰে সাভা ভাগার বা। রঙচঙে পোণাকের মত শিশুর ভঙ চাই উদীপদাপুৰ্ণ বোৰাঞ্চর চরিত্র। বর্ত্তবার অপেকা ঘতীতই এই উপকরণের ভঙ্গ অধিকতর প্রপত। অতীতের বীর ७ वैद्रांक्वाटक्द्र कारियी द्वश-क्यांद्र यक्तरे सम्बद्धांशे। अरे ক্ষত খাভাবিক নিৰমে এগুলিই পিওমনে প্ৰভাব বিভাৱ করে। এ বরসে ইতিহাস ও অপ-ক্বার মধ্যে প্রনির্দিষ্ট সীমারেবা চামা নিশুহোকন, এমন কি গলভানিকে বিশেষ বেশ, ভাতি অথবা ৰূপের মধ্যেও সীমাবত রাধা উচিত নয়। শিশুর প্রথম পাঠ্য-ইতিহাস হবে ভার বেলাহরের মতই টকিটাকি রঙচঙে किविद पिरत विष्ठि । अवीर्त जक्त राज्यत जक्त कार्जात. এবদ কি সকল জাতির ছ'চারটে স্থপ-কথা ও ঐতিহাসিক গল নিৰ্কিষাদে গলাগলি ভাবে থাকতে পাৱে।

ন্ধপ-কথার বাহ্বর থেকে আন্তে আন্তে শিশুকে ইতিহাসের প্রাণলীলা-কেন্দ্রে নিরে বেতে হবে। উপাধ্যান-ভাগ ও বিষর-যত সর্বাতরে শিশুর উপবােদী হওরা চাই। শিশুরা বা ভাল-ভাবে বুখতে পারে শিক্ষ ভাই সর্বাপ্রথম আলোচনা করবেন, বেনন,—ব্যক্তিগত চরিত্র, পরাক্ষর, হ:সাহসিক ভার্বা, আবিছার, উত্তাবন, বাহ্বের জীবন-বাঞার বারা ও কর্মপ্রধালী। এর পর ভাতীর জীবনের উবান-পতন এবং হাল আবলের নাগরিকের বাবি-বাঙরা ও কর্ত্তব্য সহত্রে প্রাথমিক বারণা ক্ষাতে হবে। এবানেও ববেই সাববানভার প্রভাকন। ছর্ম্বোব্য আইনভাত্রনের বারণ্যাচ বাহ বিরে অর্থনৈভিক, রাজনৈভিক

31 Board of Educa icn, London-Hand Book of Suggestions.

বিবাবের প্রধান প্রধান কার্যাকারণ ও কলাকল বতটুত্ব না আনলে নর, তথ্ ততটুত্ই শিশুর উপবােদী করে সহজ ও সরল তাবে আলোচনা করা বেতে পারে। বােট কবা, বর্ত্তানকে ব্রবার জন্ত অভীতের বজটুত্ব আনা প্রবােধন তথ্ ততটুত্বেপে, বাকীটা কেটে-বেঁটে বাল বিতে করে। ইতিহাসের সিলেবাস বা পাঠাভালিকা রচনার সর্বাহী বনে রাথতে করে, অভীতকে আনাটাই ইতিহাস-পাঠের উদ্বেশ্ত নর, বর্ত্তানকে বুবাই প্রকৃত উব্ধেন্ত।

ইতিহাসকে গুৰু ব্য-বৰ্ণনার নব্যে সীমাৰত রাবলে ইতিহাসশিক্ষা ব্যর্থ হয়। ব্যুট ইতিহাসের সবকিছু এবং হু'দশ্চী
ব্য-করই কাতির মহত্বের একমান্র মাণকাঠি—এই বারণা
হাজ্যম বেকে অপসারিত করতে হবে। তারা বেন ব্বতে
পারে বে, "ইতিহাসের আকর্ষণ-কেন্ত্র এবন আর ব্যু
মর, রাজনীতি—এবং ক্রমে ওবান বেকে সরে গিয়ে ওটা
ইাড়াছে সমাজনীতিতে। ভাতির ভাগ্যনির্গরে রাজারাইর
যদি কোন হাত না বেকে বাকে তবে উাবের পরিবর্তে
সত্যিকার ইতিহাস-এই। বারা ভারাই ইতিহাসে হান লাভ
করত্বের।"২

স্বাজের বিভিন্ন ভবে বে পরিবর্তন ঘটতে বুছ ভারই विशः श्रकान बाब । व्यविद्य हमाद्य श्रव (व्यव व्यव (व्यव) সমাজের চলার পথে তেমনি যুদ্ধ থিরোধ কতকটা অবস্ত-कारी। त्यर यक्ति करू रक्ष ए'क, शृथियी मक्कांबना वा रूख কবে রসাতলে বেত। মুক-বিএছই যদি সমাজের মুলমন্ত্র হয়, ভবে ভার পরিণতি কি হবে হিরোলিমাই ভার প্রমাণ। কাৰেই বুৰের উপর অভিবিক্ত কোর না দিরে সমাক-জীবনের সম্বাদ্ধের কন্তবারাগুলিকে বুঁজে বের করতে হবে। বিচ্ছান দর্শন, বর্ম প্রকৃতি বিবিধ বিষয়ে সামাজিক প্রগতির আসল রুপট উদ্যাটিত করতে হবে ছাত্রদের সামনে। রুপরীরের পরিবর্তে বর্ষবীর, কর্মবীর ও বিজ্ঞান-বীরের সাধনা ও সিভি रत रेजिरांत्रत विवत्तवस । अरे स्ट्रां मूलम करत रेजिरांत्र वहमा अवर गर्वनगार्वमा कवाल बुद्धव मधावमा जानकहै। কমে আসবে, পাত্তি কভক্টা কারেম হবে। ভারততর ইভিহাস সম্পর্কে একবা বিলেব দ্বপে প্রবোদ্য। বেশে পুৰণাত্তি কিবিরে আনতে হলে ভার পুনর্বঠন ও ইভিহাসের পুর্বনিধন প্রয়োজন। ঐতিহাসিক সভ্যের অপলাপ করে ভারতের শুভন ইভিহান লিখতে হবে না, বরং কঠোর সভ্যের উপর ভিভি করেই একে পুনরার লিপিবর করতে হবে। ইতিহান সভার প্রভীত। সভা-এতহার ভর্মের সভাই হবে ভার উপাহান। বিখ্যার আশ্রর বিলে ইভিহান আরু ইভিহান पारक ना. का एव धेनकान ७ धेनकवा। "श्रमीकि व्यवस

<sup>.</sup> a | P. B. Ballard-The New Examiner.

স্বাচার শিক্ষার বভ. এবৰ আরু আরহা ইভিতাস পাঠ করি ना। माठेकीय निविध प्राचेत प्रच्छ नव। जानता जानि এর বত ইতিহাস অপেকা উপক্ষা অধিকৃতর উপবোধী। ভাৰৰ ইতিহানের চেবে উপক্ষার ভার্যভারৰ সম্পর্কের সভে আমাদের বারণার মিল অবেক বেৰী। এতে বর্ণিত চরিত্র ঐতিহাসিক চরিত্র অপেকা অধিকতর নিজ্লয় ও বীর্ঘপূর্ণ, এর বৃষ্ঠাবলী বিচিত্রতর ও করুব। ভারবিতে বেষন ঘদেশভক্তি ও আলুগত্য বৃত্তির বল ইতিহাসের আঞ্রয় ৰেওৱা হয়, আৰৱা সেৱপ ক্ষতে চাই ৰে। নিক দেশ অধবা ঘলের প্রবিধার ভাতে একই বিজ্ঞান থেকে বিভিন্ন ব্যক্তির **जित्रवरी निकास अद्य कडा साम्राह्मणानिक यह वटन सामर्डी** উপলবি করি। এর কলে ব্যক্তিবিশেষের অভিকৃতি অভ্যারী रेजिरांत्रत भतिवर्त्तम मा स्टान्ड चन्नस्मि स्था प्राचानिक। সভাই বিভাবের প্রাণ, একথা আমরা উপল্বি করি এবং ইভিহানৈর নিকট বেকে সভ্য ছাড়া আমরা অভ কিছু প্রভ্যানা ভৱি যা।"৩

একদেশদর্শী বার্থাছ কোন কোন ঐতিহাসিকের লেখনী হারা ভারতের ইভিহাস যে নসীলিও হরেছে একথা বলাই বাহল্য। সিরাক্টদৌলা ও আওরংকেবের চরিত্রের উপর বথা-ক্রমে অকর্মার বৈত্রের ও সর বহুনার সরকার যে ভাবে আলোকপাত করেছেন সেটাই হবে ইতিহাস প্রনিধনের আবর্ণ। হতে নাকি প্রথম সমাবি-রচনা হয় সভ্যের। কলে ইভিহাস-রচনা ভরে ওঠে বিশ্বা বর্ণনার। প্রকৃত ঐতিহাসিক হবেন সভ্যসত। উচ্চে বিশ্বার ধ্বংসভূপ বুঁকে সভ্যকে বুঁকে পেতে বের করতে হবে।

এইখানেই ঐতিহাসিকের কাজ শেষ হ'ল না। ধনি খেকে মণি ভূলে ভাকে খেকে পুঁছে পরিকার করতে হবে, কক জহরীর মত উাকে উার আবিহুত উপক্রণকে বাছাই করে বাজারে বের করতে হবে। ঐতিহাসিক ভখ্যের এসিত-টেঁই বা অরি-পরীকার অভ একদিকে যেমন ভার অভর্তি ও হল সমালোচনা-শক্তি বাকা চাই, অপর বিকে ভেমনি চাই মুক্ত মন ও উদার বৃত্তিকী। আলবেকনির মভ সভ্যের অপলাপে বারা হালরে গভীর বেদনা অহুতব করেন, ভির বেশে ভির নভাবলহী ও পরবর্ষাবল্পীর বিহেববাবে বারা অটন, এক্যার ভারাই এ কাজের বোগ্য।

প্রভাক জাতির ইতিহাসই কোনো বা কোনো অভ্যাচারী রাজার অপকর্মে কলভিত হরেছে। ভারতে হীর্থ সাত-আট শত বংসর ব্সল্যান রাজ্যজালে হবি ছ্-চার ক্লম ঐরপ ন্বাব-বাহশার উত্তব হরে থাকে, তবে ভাতে বিশ্বরের কিছুই নেই। এবনই ছ্-চার ক্ষম রাজা-বাহশার অসম্ভ আচহন

সাবারণ বিরবের বাভিক্র যাত্র। বুসল্যান আরলে ভারতে প্রভারত্তক ত্রাকার অভাব হত্তনি। অভ্যাচারী ভাজা-वांवमांत्वत चलांवांवत्क कर्तां कृत्व वर्गमां कृतांव कांच छ ৰাই-ই, বরং ক্তির সভাবনাই বোল আমা। এক্টের কুকুৰ্বকে বড় করে না দেখে যদি তাঁদের সংকর্ষের অভসহান করা হয় তা হলে তার অভাব হবে বলে ত্রনে হয় मा । देवांच्य्रनंब्यम चांखदश्यात ७ निवाकीत सवा देवां करा বেতে পারে। আওরংকেবকে অনেক ক্ষেত্রে হিন্দ-বিছেরী ও निवाकीएक बुजनवान-विद्यवी वर्तन शांनि (बश्रवा वर्द्ध बाद्ध । কেবল ভাই মর, ললে সলে গোটা মুসলমান ও হিন্দু এই উভয় ভাতির প্রতি কটাক করা হয়। এটা যেমন হাতকর ভেষবি করণ। আওরংকেবের সুদীর্ব রাজ্যকালের মধ্যে ছিল্পু-মন্দিরের ক্ত হাকার হাকার দেবোতর ও কার্মীর-বাদের দুটাজের অভাব নেট, হিন্দু-প্ৰকার সুৰ্বাচ্ছন্দোর জন্ত ডিনি সচেট বিলেন এমন দুৱাছও আছে, অবচ সাবারণ ইভিভান সে সম্পর্কে মীরব। শিবামীর বেলারও তাই। ভার সাহস্ রণচাতর্বা ও বীরত্ব সভেও তাঁকে পার্কাত্য বৃহিক্তরণে চিত্রিভ করা হর। এটা সভ্যের অপলাপ ও একদেশদর্শিতা মার।

পুতদ ইতিহাস-রচনার একমাত্র বোডাকেই দৌরবমর আসম না দিয়ে বোডাকেও প্রভাঙ্গনি দিতে হবে, এ কবা পুর্বেই বলেতি। বুভের আগুন বারা হড়ালেন, তাঁদের চেত্রে শান্তিবারি বারা সিঞ্চন করলেন তাঁরাই কি অবিকৃত্র বর্ণীর নন ? কিছ ইতিহাসে তাঁদের ছান কৈ ?

ভব্তির অচের মতে হাকার রক্ষে ইভিহাস শিক্ষা দেওৱা বেতে পারে। কিন্তু আমরা যদি ছাত্রদের সাধ্যে সম্বর্জ মানবৰাতির ইতিহাসকে একট যাত্র বিরাট কাহিনী আকারে বরতে এবং ইতিহাস-শ্রপ্তাদের কর্মাবলী, প্রত্যেক্ট ঘটনা ও আনোলনকে একট অচ্ছেত খুৱে এবিত করতে না পারি, ভা হলে ইতিহাস-শিক্ষার উদ্দেশ বার্ব হরে যাবে। শিক্ষক যদি ভাষী ও ভারক হব তা হলে অভকার-রূপ থেকে আরম্ভ করে আলোকোন্দল বর্তমান কাল পর্যন্ত মানব-ছাতির আলা-আকাকা. উবান-পতন এবং বুদে বুদে মানুদ্রের সাধনা ও সিছির আলোচনার মধ্য দিরে তিনি অনারাসেই ছাত্রমনে উৎীপনা স্ষ্ট করতে পারেন। কিন্তু শিক্ষক সভ্যিকারের "कामी ७ कांयुक" मा एटन जनहे १७ इटन : क्रमादादा তিনি বলি দেশের গৌরবোন্দল ভবিষ্ঠতের ছবি দেখতে লা शान, कांत्र समय यक्ति मानवकांकित मनन-कांत्रवात केंद्र स मा হয়. ভা হলে তাঁর ইতিহাস-পাঠদান সাৰ্থক হতে পারে না। ब राजा निकरकद बाका हारे जदन ७ बाववस वर्गनामिता ভার বর্ণনাভদীর বাহু-প্রভাবে শিশুর কারে ইতিহাসের শীরস বটনা হবে হোটবাট এক একট গ্রহিশের। নিয় শ্রেইভে ভা বিশেষজ্ঞা প্ৰবোদ্য। উচ্চ শ্ৰেণ্ড বৰ্ণনা ও আলোচনার

Langlois and Scignoleos-Introduction to the History.

বারা ষ্টান বিষয়কে করতে হবে 'ক্লবং ভরনন্'। শিক্ষ বিভিন্ন বরণের সমসামন্ত্রিক হবি, পোশাক-পরিক্ষণ, মুমা প্রকৃতির সাহায্যে পাঠটকে জীবত করে ভূলবার চেটা করবেন। যত অভীত ভবেই হাত্রকের সাম্যে হবে জীবত।

ইভিহাস-পাঠদানে চার্ট, বিশেষ করে টাইন-চার্ট, বৃথই থারোজনীয়। এই নিয়ে বভতেত আছে। অনেকে সন ভাষিবের বিশেষ পক্ষপাতী, অনেকে আবার তা পরিভাগে করার প্রপারিশ করেব। ব্যালার্ড ভারিববিহীন ইভিহাসকে নাইল-চিহ্নবর্জিত পথ, সীমাহীন রাজ্য অথবা আলোকবাহী আহাজবিহীন অকুল সমুদ্রের সহিত ভূসনা করেছেন। আবার অভিবাজার ভারিব-সহলিত ইভিহাসকে ভিনি ভূসনা করেছেন কেউলিয়ার বৈচিত্র্যবিহীন গোরহামের সকে। "প্রাভবে হ'হলট হক্ষ ইভঙ্জঃ বিকিপ্ত বাক্লে সীমারেধার কাক্ষ করে, কিছ বুক্ষবিরল না হরে তা বথন বনসন্থিতিই বুক্ষবহল হত্তবন প্রাভবকে কাভার বলে ভূল করা বিচিত্র ময়। •••পরিবিত ভারিব প্রকলপ্রক। তা আমারের চিভাবারা প্রভূচ

করে এবং ঐতিহাসিক পারতার্য ও পারতারিক লতার্ক সকরে বারণা করার। এই বারণার শোচনীর অভাব আবাবের আহে।--ভারিব না হলেই বর। ভারিব হবে সংব্যার অভি অর, কিন্তু বিশেব উরেববোগ্য, মূচবর এবং নিভা ব্যবহৃত।"৪

প্রকৃত্বির ইভিহাস শিক্ষা বিকে পারলে "হাজেয়াই বে সকল মুর্গের উভরাপিকারী, শত সহস্র বংসরের অভিজ্ঞতা, উভাবন ও বিকরের ভাগ্যবান ভোগদবনকারী—হাজ্যবন বতই বিক্শিত হতে বাক্রে ততই তারা একবা মনে প্রাণে উপলব্ধি করে। পাশবিক জীবনের মুগ্য তর বেকে বর্তনামের বিচিত্র কর্গতের বর্ণাছরঞ্জিত তরে আবাবের উন্নরের গলই বে ইভিহাস, একবা উপলব্ধির সকে সকে আবাবের উভরাবিকার অনুধ রাববার পরিপূর্ণ চেষ্টাও হবে।"৫

## তামসিক

#### ঞ্জীনিক্লপমা দত্ত

এ পৰ্যান্ত হালয় উপদ্বীপের বিল্প অভীভের বেটুক্ ভব্য উল্লাটিভ হুইয়াহে ভালা হুইভে জালা নিয়াহে বে, অভি প্রাচীন



পূৰ্ব ভাৰতীয় বাণপুঞ্জ ভাল হইতে এই বেশট একট মহা এবৰ্ত্যশালী বাভাবিশেষ বিল। ভিত্ত আশ্চৰ্ব্যের বিষয়, যালবের বজিব-প্রাত্তে অবস্থিত

সিলাপুর হীপট সম্পর্কে বিশেষ কোন বভাত উক্ত পুঞাচীন ঐতিহালিক নিবর্ণবন্ধলির নব্যে পুঁলিরা পাওরা বার নাই। অবচ ইতিহালের পুঠার ববন দেবিতে পাই বে, এইপুর্বা ভূতীর শতাকীতে ভারতীর উপনিবেশিকেরা নালর উপবীপে আসিরা অনেকগুলি প্রতিপত্তিশালী রাজ্য প্রতিঠা ক্রিরাহিলেন ভবন বভাই একবা বনে হয় বে, অভূলনীর প্রাকৃতিক লৌকর্ব্যে বিভূষিত এই হীপট কি ভাহাবের বৃষ্টি আকর্ষণ করে নাই।

ইউবোপীরবের মধ্যে সার প্রান্দাকোর্ড ব্যাকেল্ল ১৮১৯
নীপ্রান্দের বাধ্য সার প্রান্দাকোর্ড ব্যাকেল্ল ১৮১৯
নীপ্রান্দের বাধ্য বাধ্য আবিকার করেন। ইবার বনামীরভিত ও লৈলবালা-সুশোভিত প্রাকৃতিক ত্রী বেধিরা তিনি বে কিরণ বৃথ বইরাহিলেন ভাবা নে সমরে কনৈক বৃথুকে নিবিভ ভাবার একবানি পত্র বইতে ভানিতে পারা বার। তিনি নিবিরাহিলেন,"…আনি কোণা বইতে এই পত্রধানি নিবিভেছি তা ভানিতে বইলে ভাগনাকে সভবভ এশিরার নানচিত্রের নাহাব্য লইতে বইবে। বালবের বন্দিন-প্রান্দে অবহিত কৃতকভানি ক্ষার ক্ষান্দের নব্যে এইট স্কাণেকা বৃহৎ ও নবোরন। ভানিতে আন্দ্র সভার র্যান্দ্র বার বার আবিহত ব্যান্দ্র হার বার নিকার্যা আবিহত ব্যাহ্য । ভানিতে আন্দ্র বহার বার বিলান্ত্রা (নিংবপুর) অর্থাৎ city of lion; অবর্ভ ইবা

<sup>8</sup> P. B. Ballard-The New Examiner.

e | Dr. G. P. Gooch—History (Education for Citizenship).

ভ্ৰিৱা বেৰ মৰে ভ্ৰিবেৰ বা বে, ইহাৰ বাসিবাৰা লৰ চতুলাৰ বিংল পঞ্চৱাল। ইহার ভৌগোলিক অবস্থাৰ পৰ্য্যবেক্ষণ ক্ষিণায় উচ্চেতে, এ ক্ষাধিৰ ক্ষাণত পৰ্যাইন कविशादि, किन्न देशांत शंकीत करान करवकी नवनतान ছাতা অত কোন বিংশ্ৰ অন্তর সাকাং পাই নাই। বালরের चरिवांनीरवर निक्र छनिराधि বে. পূৰ্বে विम अपने बरामभंदी अपर जावजीत रिम् मुगजिता এবাৰে বাজ্য করিতেন। অবশ্র বর্তমানে ইয়ার অভীত গৌরবের জোন চিক্ট পরিলম্পিত হয় না. এবন ইহার क्तिन-इक्ष्यीरम मधीत चत्रत्या नवाक्त अवर चाइँहै वीवत-পরিবার ব্যতীত আর কোন বছর-বসতি এবানে নাই। খাৰাৰ ইছা খাহে, এই দৌৰ্ব্যশালিনী ভূবতের বুকে একট वरायनही अधिका कृतिय अवर हेरात भन छे भूक मान-म्मना नः प्रदीष प्रदेश धरे प्रवाठीय निर्मापुरवंत अक्यांनि रेखिरान निर्वित ।"> इ:द्वेब विवत, जांब ड्रान्न्यत्वाई देवांब वांब व्य वश्नव भट्ट चक्रांटन भवटनांकश्रवम कट्टम । कांट्यरे कांराव छेण्ड रेम्हारे चपुर्व दक्ति याद ।

এটার ভতীর শতাবীর চীনা পর্যাটক অং-ভি-রাঙেরং অমণ-বভাভ সম্রতি এই বৰণীর বীপটার তরসারত ভতীতের উপর ষ্টবং আলোকসপাত করিয়াছে। সম্ভবত: এইার ডভীর শতকের প্রথমার্ছে ধর্মপ্রাণ অং-ভি-মাঙ ভগবান বুরের ভবভূষি অভিবৃধে কলপথে বাজা করিরাছিলেন। চার মাস কলপথে pनिराद शब एठार अक विम धनवक्ती महैका **ऐ**निक स्व। नद्रत्व देखान छद्रमांचाए चनवानवानि नकावडे स्टेबा हिनएछ পাকে। কিছুক্ৰ পৱে বড় পানিলে একট ভাষল বীমভিড ত্বৰত ত্বীপ বিগ্ৰহ-ৱেধার কোলে ভাসিয়া উঠে। বাত্ৰীয়া वानगर कनवानवानिक तारे विक ठानारेक बादक धरर অবশেৰে ভটভূৰিভে উপনীত হন। উপকৃলে অবভৰণ কৰিয়া ভাৰাৰা ভাৰিতে পাৱেন বে, উক্ত ৰীপট্টর নাম ভা-মা-সি-কে ( जावनिक ) अवर नि-मि-भा-ना ( अवृशान ) मामक ताकात বারা উহা পাসিত: অবিবাসীরা অবিকাংশই হিন্দু বেব-ৰেৰীর উপাসক। ইহারা ভাষবর্ণ, বিষয়ী ও অভিবিসেয়া-প্ৰাৰণ , ইতাবেৰ ব্ৰবাড়ী ভাঠনিৰ্মিত এবং হাচ বড়ে बाध्या : फान-रे-बान (फनान) नाती अकड़े सूत्र नवी উক্ত বীপের ভিতর বিহা প্রবাহিত। যার করেক বিন পূর্বে হক্তিৰ সাগৱে অবহিত শাৰ-পু (পড় ) হীপের রাজকভার সদে এবানকার রাঞার বিবাহ হইরাছে। সেই উৎসবের चावक-ठिक्रवयन बाकारम्य क्षेत्रमारव छपने कन प পুলাবাল্য সুলিভেহিল…।

কোৰ সভাত কাৰণে অবণলিপিথানির অবনিঠাংশ নঠ হইবা গিরাহে। তাৰসিকের তংকালীৰ পরিছিতির অবেক বিশ্বত কাহিনী হয় তো তাহাতে বর্ণিত ছিল। প্রবিধ্যাত লিপিতত্ববিদ্ তাঃ লাইন হান বলেন বে, অং-তি-রাভ বর্ণিত



উক্ত ভাষসিক বীণ্ট বে বৰ্ডমান সিলাপুর ভাষতে বিশ্বারও নন্দেহ নাই। সিলাপুরের হকিণ-পূর্ব বিক বিরা প্রবাহিত ক্র কালাং নবীটিই অং-ভি-রাঙ্ বর্ণিত কল্যাণ নবী প্রবং সিলাপুরের বন্দিণ-সর্জে অবহিত বর্ডমান পুলো-শভু বে উক্ত ভাষসিক-রাক্ষবিধীর পিঞালর হিল ভাষা ইয়ার নাম ও অবহিতি হইতে অনারাসেই প্রমাণিত হয়।

কিছু বিন পূর্বে কালাং নদীর বোহনার প্রাপ্ত লিপি-বোষিত একট প্রভাগন প্রস্থান্তিক বহলে বিশেষ বিষয় ও কৌত্বলের স্কট করে। অভানতা বলতঃ পি. তবলু, ভি-র একট প্রমিক উহাতে লোহ বুলরাবাত করার প্রভাট চারিট বতে বিভক্ত হইরা বার। উপহিত উহার একট বত কলিকাতা বাহ্বরে এবং অবলিট তিন বত হানীর বাহ্বরে রক্তিত আহে। (লিলালিপি নং ১, ২, ৩)। এই লিলাবতে কোন বিশ্বত কাতির লিপি উংকীর্ণ আহে। তবে বক্তিব-তারতের প্রাচীন লিপির সহিত ইহার কতকটা সাহুত বাকার স্থাসির লিপিতত্বিল্ তাঃ উইনটেত বলেন—বাহার। এই লিপি বোষিত করিরাহিলেন উহারা বাবিক ভাতির কোন বিস্তুর পাবার অরক্ত হিলেন। সিলাপুরের একট সিরিগাত্তেও অহ্বরণ লিপির কিরহংশ সম্রতি আবিহৃত হইরাহে। ইহার প্রতিলিপিট নিরে প্রবৃত্ত হইল (পিলা-লিপি নং ৪)।

উক্ত শিলালিশিখনি হইতে স্পষ্টই বুৱা বার বে, পুঞাচীন কালে এই বীপৰক্ষেও অনেকগুলি রাজ্যের অভ্যুখান ও পজন হইবাহিল—বহিও কালফোতে তাহাবের সর্বর স্বৃতি আজ বিস্তু হইবা সিরাহে। পুঞাচীন 'তাবসিক' নামট ইহাবেরই উভাবিত, অবর্ড এই নামটির ব্যুংশভিগত অর্থ কি ভাহা বলা ক্টিব। এবোনিরার পৌরাধিক কাহিনীতেও ভার্সিক নামট

<sup>&</sup>gt; । সিলাপুর বাহ্বরে রক্তি সার ট্রাম্পলোর্ড র্যাকেন্স লিখিত পুরে ( ১০. ১. ১৮১৯ )

e | Discovery of Tamasik-Prof. Khoo Ting Eng.

পুণরিচিত। উক্ত কাহিনী পাঠে থানা যার বে, এককালে তামসিক একট পরাক্ষমশালী রাজ্য বলিয়া পরিগণিত ছিল, এবং সম্বাধ মালবের নৃপতিবৃক্ষ ভাষসিক-রাক্ষের বর্ততা বীকার করিবাছিলেন। পামসিক-রাক্ষের সিংহাসন ছিল বর্ণনিবিত।



ভাষসিক বাজ্যের একট পুরনো কাহিনী এবানে সংক্ষেপে বলিভেছি:

ঘতীতে একদা শ্ৰীদেও নাৰে এক নুপতি ভাষসিকে রাজ্য করিতেন। ক্রণে খণে পৌর্ব্যে বীর্ব্যে ভিনি ছিলেন অবিতীয়। মুছবিভায় তিনি এত নিপুণ ছিলেন যে, উভয় প্রবেশের বিংশতি কন মৃপতিকে মুদ্ধে পরাক্তিত করিয়া ভিনি উক্ত দেশসমূহের উপর আধিপভ্য বিশ্বার ক্রিয়াছিলেন। काराव नक्तिरम व्यक्षी हेरमान नृषिवीय विकित प्रामित वह ৰূপতি আমল্লিত হইয়াছিলেন। সকলেই খ-খ ব্লাজ্যের শ্রেষ্ঠ জব্য উপটোকন-বর্ষ আনরন করিরাছিলেন, কিন্তু ভন্নতা পাঁচ কৰ বৃপতি আনিয়াছিলেৰ বতল্প বন্ধ-যাহার মূল্য ৰুদ্রার ৰিছাৱিত হয় না। তাঁহারা অবগত ছিলেন যে মহারাজ এদৈও তৰ্মও কুমার, তাই ভাঁহারা ভাঁহার হতে সম্প্রাম ক্রিতে প্রত্যেকে একট ক্রিয়া কলা সভে লইয়া আসিয়া-ছিলেন। রাজসভার সেই পাঁচ জন নুপতি পঞ্চলা সহ প্রবেশ ক্রিলে মহারাক জীবেও সিংহাসন হইতে উট্টয়া ननवारम **कौरारम्य वकार्यमा क**विरमन। **औरम्छ এই** नक কভাকে অভ:পূবে পাৰ্থাতার নিকট লইয়া যাইতে মন্ত্রীকে আবেশ করিলেন। বহু মন্ত্রী রাজ-ছাজা পালন করি-বার পূর্বেই কিন্তু পঞ্চভা পূর্ব শতদলের ভার রাভার চরণপ্রাম্ভে বিরা অর্জ বভাকারে উপবেশন করিলেন। মহারাজ সবিস্বরে হ'ণা পিছাইরা গিরা উক্ত দুপতি-ব্ৰব্যে প্ৰতি সপ্ৰশ্ন দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন। ভবন ঐ করত मुनचित्रा निवनत्त्र तरमन, महाताक, चाक चाननात ७७ অহতী উৎসবে আমাদের এই পঞ্চভারত আপনার হতে मच्चनाम परिमाम । चार्गान देशांत्रितक अर्व करिता चारता মুভার্থ হইব। ইহাতে মহারাক এলেওরের বিশ্বর সীমা অভিক্রম করিল। পদ্মাতে স্বাসীনা বাবত হিভাবের অপরপ লাৰণ্যৰভিত মুৰ্বের পালে বিষুচের ভার ক্পকাল তিনি চাছিলা विराजन, भारत जावार रहेवा वरावाका राजितन-जानवाद्वर र्कशर्या वर्षांपर धामरमनीय करन व बदानय क्रेमबाद वावन

ক্ষিবার পূর্বে আমার একবার মন্ত্রণাগারে গিরা মন্ত্রীদের সহিত পরামর্শ ক্ষিতে হইবে।"

যন্ত্ৰপাপুত্ৰ প্ৰবেশ ক্ৰিয়া ভিনি গভীৱভাবে যুদ্ধ প্ৰবাদ

AR 16)

AND AREA TO A THE TREE OF WAS AREA TO A THE TREE OF THE TR

निमा भिणि मंद्र २

অমাত্যকে ভিজালা করেন, "উপহারওলো কেবন বনে হচ্ছে আপনার"—

"অতি চমংকার । অতি সুকর ।"—বৃহ বলী সহাজে বলেন ।

এবৈও বলিলেন, "কিছ আমার মনে হছে এর মধ্যে একট কুট চকাছ নিহিত আছে।"—

"কৃট চক্ষাত্ব ? কি রক্ষ ?"—র্ছ মন্ত্রী সবিদরে বলিয়া উঠিলেন। বহারাক অবৈত্তরের বুববানা আরও পভীর হইয়া উঠিল। চিভিত ভাবে বলিলেন, ঐ পঞ্চ বৃপতি এককালে আমার পিতার বহা শক্র ছিলেন; স্কুতরাং আৰু হঠাৎ এরপ বিতালি করার উক্তেউটা ঠিক বুবতে পারহের বা ?"

মন্ত্ৰী বলিলেন, "যদি সেই মতলবই এঁবের বাকে তা হলে এঁয়া নিজ নিজ ছহিতাকে আদবেন কেন ?" এবৈও বলিলেন, "কিন্ত ওরা আসলে রাজ-ছহিতা কিনা তার উপর্ক্ত প্রমাণ আছে ?" কণকাল বামিয়া ইবং উত্তেশিত কর্তে তিনি বলিলেন, "আমি ঠিকই বলহি ওয়া ক্বনই রাজক্তা ময়, ওয়া শতিতা বন্ধী"!

"পভিতা" ৷ —মন্ত্ৰী মহাশৱ হতবাক হইৱা বান।

শ্রীবেও বলিলেন, "হাঁা, রাখ-ছবিভারা কবনও এভাবে কোন নৃপতির চরণ-বন্ধনা করে না; তা হাঁভা রাজকুভাবের ব্যাবরণও বভন্তপ্রকার। ঐ নৃপতিবর্গের উদ্বেভ এই পতিভা-দের হারসভ আহার রাজ্যের ওও ধ্বরপ্রতি কেনে নিরে আহার অভাকিতে আঞ্চন্ধ করা।"

এই ক্ৰাণ্ডলি বলিয়াই এদেও উক্ত পাঁচ কৰ বৃপতি এবং পঞ্চ ক্লাকে বন্ধী ক্ষিতে সৈত্ত্বের আবেশ দিলেন। ব্যাসবহে প্রয়াণিত হইল বে, বহারাক এদেওবের অহ্নান বর্ণে বর্ণে সভ্য। তবন উক্ত করণ রাজাদের শিরশ্ছেদৰ ক্রা হইল এবং ঐ পাঁচট ক্লাকে ভাষাদের বাভৃত্ত্বিতে পাঠাইরা বেওরা হইল।

য়াখা এবেও দৰ্মাণা য়াখকাৰ্য্যে বিয়তিশ্ব ব্যস্ত

থাকিতেন। কৰ্মলেনে বাবে বাবে তিনি ককিব-সমূত্রে কলক্তী শিকার করিতে বাইতেন।

এক বিৰ শিকাৰ কৰিবা সন্থাৰ পূত্ৰ কিবিবাৰ পথে একট আকু চুকু বহাৰাকের বৃটি আকর্ষণ করে। তিবি

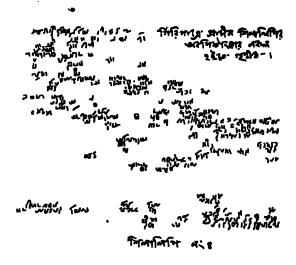


বেশেন, কিছু দূরে একট ক্ষ দীপের কিনারার উপবিটা এক পরবাহকারী নারী কতকগুলি অলহজীর মধ্য গালে সম্বেদ্ হাত বুলাইরা বিতেছেন। এই অসাবাতা রমনীর পরিচর আবিবার ছনিবার কৌতৃহল ঐবেওরের মনে জাসিরা উটিল। এক জন সাধারণ বণিকের বেশ বারণ করিবা তিনি একবানি ক্ষ বৌকার আবোহণ করিলেন এবং সমীবের রজরা লইরা ভাষনিকে কিরিয়া বাইবার আবেশ বিরা তিনি সেই নাম না জানা দীপের অভিমুখে নৌকা বাহিরা চলিলেন। রাজা তীরে টুর্ণীহিতেই জনহজীগুলি ভঙ্গিবেগে জলের মধ্যে ভূব মারিল। রমনী চক্তি বিশ্বরে আগন্তকের মুখের পানে চাহিরা বহিল, পরে দৃচ কঠে প্রশ্ন করিল, "কে ভূমি বিবেশী ?"

ব্যবীকে অভিবাদন করিবা আদেও বিনরনত্র কঠে বলিলেন, "আমি ভাষসিক-বীপ নিবাসী কনৈক সঙ্গাগর। হালমিহারা বীশে বাণিজ্য করে দেশে কিরে আসহিলাম, হঠাং অলগপ্রারা অভর্কিতে আক্রমণ করে আমার সর্বাহ সূঠন করে নিবে গেছে। আমি প্রাণ নিবে কোন রক্ষে পালিবে এসেহি এই বীশে। বহি আৰু বাত্রির বত একটু আপ্রার দেন তা হলে বছই বাবিত হই দেবী।"

রমই একটু দ্লান হাসিল। তার পর বলিল, "তনে অত্যন্ত হংবিত হলান ; কিন্ত সওদাগর, এবাবে কাউকে আগ্রন্থ বেবার অবিকার তো আগ্রার মেই।"—"আমি বে একান্ত নিরূপার দেবী" !—একবা বলিরা হলবেই রাজা রমইর অনিজ্যস্কর র্বের পানে অসহারের যত চাহিরা বাকেন। রমই কণকাল কি ভাবিল, তার পর বলিল—"আছা তবে এল, কিন্ত আগ্রার জীবন বিপন্ন করে তোগার এই অভ্রোব রাবলাম।"

বানিক দ্ব বাইতেই ছ'লবে আসিরা সিরিগারে নির্বিত একট হ্রম্য প্রানাধ-তোরণে পৌছিলেন। প্রানাধে প্রবেশ করার পূর্বের ববন বিলন, "নওবানর আমার প্রতিঞ্জতি বাও বে আসামী কাল প্রস্কাবে ভূমি এই বীপ ছেকে চলে বাবে।" বাকা বলিলেন, "তথাত দেবী।" আহারাতে রাজাকে একট সুসন্ধিত ককে নইবা নিরা মুখন বলিল, এইবানে ভূমি রাজি বাপন করবে। তবে একটা কবা মনে বেবো সওয়াগর, কাল ক্র্যোধ্যের পূর্বেই ভোষার পালাতে ক্রে, নইলে বিপকে পড়বে।" সহারাক জীবেও



মনের কৌতৃহল আর চাপিয়া রাখিতে পারিলের বা। বলিলের, "আছে। এই বীপটির কি নার ? আপনি কি এর রাই ?" রমই একট দীর্থনিধাস কেলিয়া বলিলের, "এর নাম প্লোব্লান (চক্রবীপ) আর আনি এর রাই নই, আরি এখানে বন্ধিনী।"

"—বলিনী !" একেও বিক্ষারিত নেত্রে কর্কাল চাহিরা বাকেন। তার পর কিলানা করেন, "কে আপনাকে এই বীপে বন্দী করে রেবেছে বেবী গ"

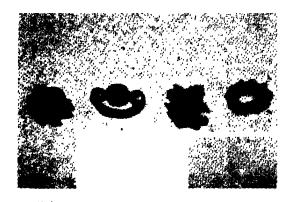
"—সে অনেক কথা সওয়াগর", ···বলিয়া রবই চুপ করিয়া বান। জীবেওব্রের শীকাশীভিতে অবশেবে তিনি আত্ম-পরিচয় বিলেন, করণ কঠে বলিলেন—"আমি হচ্ছি বাংশাওয়ান রাজ্যের রাজকভা মুভিয়ায়া ( মূর্লভ মুঞা)।"

ত্ৰীদেও সৰিখনে বলিলেন, "বাহাং মুছিয়ারা ? কিছ... ভৰেছিলাম যে তিনি আর জীবিত নেই।

ন্ত বাসিলা বৃতিয়ারা বলিলেন, "ইটা সংসারে তাই রটেছে বটে, কিও বা লটেছে আসলে তা বটে নি। আনার পিতার বৃত্যুর পর আমিই সিংহাসনের উভয়াবিভারিই হই, কিও আমার বৃত্তুতাত ভোর করে আমার সিংহাসন কেকে নিরে আমার এই জনমানবহীন বীপে বজিনী করে বেরেছেন।"

নিৰ্মাণিত। যাক্তভার বেহনাপূৰ্ণ কথাওলি ঐনেওরের কোনল চিডকে গভীর ভাবে আলোড়িত করিল। তিনি ববে ববে প্রতিজা করিলেন বেনন করিলাই হোক এই "হুর্গত বুডা"টকে বুডি বিলা নিজের ভীবন-সন্নিনীয়ণে ভাকে যাকাভঃপুরে ক্রডিটিভ ক্রিবেন।

किश्क क्रिकां वाकिका शिक्ष विकास-"(वरी. আৰি বহি ভাৰসিকে কিৰে সিৰে আবাৰের নহারাক बैदरथक जाननाइ कारिनी जानाह जा रतन जिनि निजारे 'আপনাকে ভারার্ভ ভরতে চেঠা ভরবেন। আশা ভরি আপৰায় এতে কোন আপতি ৰেই।"



কোট ক্যানিং-এ ধনন-কাৰ্য্য ছাৱা প্ৰাপ্ত হিন্দু জামলের বৰ্ণালছার 

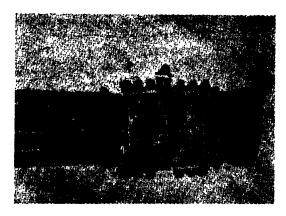
"ভোষাদের মহারাকের মহাত্তবভার কথা আমিও ওনেছি ভাঁছে ভানিয়ে ভাষার কথা।"

প্রবিদ মহারাজ এবেও তাবসিকে প্রত্যাবর্ত্তন করিলেন। व्यथानमञ्जीदक शोभरन जब कथा कानाहेश विज्ञान रव. আগামী কাল তিনি ধরং রাজকভাকে আনিতে ঘাইবেন, ভবে বাজ্যের মধ্যে উপস্থিত একশা যেন কেব ভানিতে না পাৰে। প্ৰবিদ নিৰ্দিষ্ট সমৰে তিনি চক্ৰছীপে গিছা পৌছিলেন। নেদিনও বুভিয়ারা তেমনি সাগর-সৈকতে বসিয়া কলক্তীদের আহর করিতেহিলেন। এমন সমর পুলামান্যে সুশোভিত এক श्चार मोका (बरक मध्यांगब-त्वन औरमध अवछवन कविवा बुधिबाबादक अधिवादन कविबा बाका औरक्षरवय नामाहिक একবানি পত্ৰ ভাঁহাকে দিলেন।" ভারপর ভাঁহাকে লইরা নৌকার আরোহণ করিলেন। নৌকা সমুরবক্তে ভাসিরা চলিল। ভাষণিক বৰুৱে পৌছিবামাত্ৰ ভাছাত্ৰা ছেৰিলেন, সৈতসামত সহ রাকার রপ ভাষাকের কত প্রতীকা করিতেতে। बुजियाबादक त्मरे बदय कृतिया विशा चल्रदि शाका विज्ञासन. আমার এবার বিবার দিব রাজকতা। মুভিয়ারার চোব চুট প্ৰক হইৱা উঠিল, বলিলেন,—"তোৰাত্ৰ কথা আবাত্ৰ চিত্ৰছিৰ মনে পাকৰে সংবাদর i

ৰুব বুৰবাম সহকালে বুভিয়ালার সহিত মহারাজ জীবেওবের विवार-छैरमय प्रमुख रहेन। श्वनिय प्रमुखाद हाति। नवनकरक वं4-गांनरकत छैनत वनिता विरामन बहातानै ৰুভিয়ারা। কিছুক্দ পরে, ককে আসিরা প্রবেশ করিলের ৰহাৰাত এবৈও। বাৰ বুভিবাৰা হাড়াইয়া উঠিয়া চড়িত

विचार प्रमिद्धमनं, "अ कि मध्यानव प्रति कि करव अवादन **4(4 )"** 

যালা কাৰিতেৰ, বিবাহের সময় হাই উাহাকে চিৰিতে शास्त्रम गरि । अरेगांत वर्षम औरम् । चाम्रशास्त्रम नकन कथा



সিলাপুরে ফোর্ট ক্যানিং-এ মাটর নীচে প্রাপ্ত সোণার চুড়ি ৰলিলেন ভবন খানীর মহডের পরিচর পাইরা বুভিরারার হুই চ্ছু বাহিরা আননাঞ্র বরিতে লাগিল।…

মধ্যবাত্তি। বাবে প্রচও করাবাতের পাওরাকে মহারাকের, ৰিক্লা ভাঙিয়া গেল। কী ব্যাপার ? প্রধান মন্ত্রী শশব্যতে আসিয়া ব্যৱ বিলেন, বাংশাওয়ান রাজ্যের দশ সহজ্র সৈত অভবিতে ভাষসিক আক্রমণ করিয়াছে।

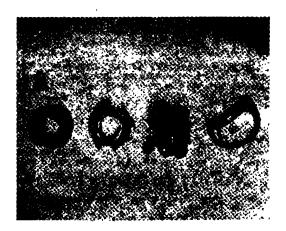
মহারাক শ্রীদেও বৃবিলেন বে, রাজকতা মুভিয়ারাকে মুক্তি দেওবার ভঙ্ট বাংশওরান-রাজের এই আক্ষিক আক্রমণ। বল্লীকে রব প্রস্তুত রাবিতে আবেশ দিরা সেই বাসর-রক্ষ্মীতেই তিনি রণক্ষেত্র অভিবৃধে যাত্রা ক্ষিলেন।

প্রবিদ প্রভাতে করেক ক্ষ্ম রোক্রহামানা পরিচারিকা মহারাম্বর শরবককে আসিরা জানাইল বে, বাংশাওয়ান-লৈড ভাষসিকের অর্কেকের বেশী শ্বর করিরাতে এবং বছারাজ এবৈও বৃহক্ষেত্রে নিহত হইবাবেন। বৃত্তিবারা বৃত্তিকেন ভাঁহারই ৰত পাতিপূৰ্ব ভাষসিক বাব্যের এইবাপ পোচনীর পরিবার। বন্ধাভ্যন্তর হইতে ভীকু হোৱাধানি বাহির করিবা তিনি আযুদ नित्यत बूट्य नगरेवा पिरमम 15 आवशव वरेट्ड आविनिक বাংশাওৱান-বাব্যের অভতু 🖝 হয়। সিলাপুরের দক্ষিণ-পূর্ব্ব সমুক্তে অনেকণ্ডলি ছোট-বড় বীপ আছে, ভন্নব্যে এড়টর নাব পুলো বৃতিয়ারা ( বুকা খীপ )। কবিত আছে, ক্ষেত্রক विषय बायकर्षाची वाने बुख्याबाव वृष्ट दन्हे हेक बीटन লইরা বিরা সংকার করিরাহিলেন। ১

১। এগৰানীয়ায় লোকেয়া আৰও এই ভাবিনীট অভিনয় ভাষিষ্য থাকে।

Tamilian Antiquity—Doroisinga m.

ইহা হাড়া বিশ-ভারতে প্রচলিত প্রাচীন ভাহিনী হইতেও ভারনিকের বিশ্বভগ্রার অভীতের একট গৌরবোজ্ঞ অধ্যার উলাটিত হইরাছে। বর্ণভূষির অপর্যাপ্ত বনসন্দর রভা ভবিবার বিবিভ নামবিক ক্ষেম্ব বা প্রধান নৌর্যাট হিসাবে



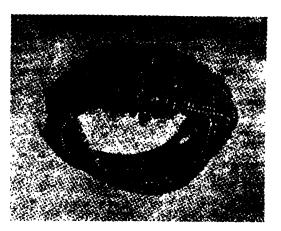
ভূমর্ভে প্রাপ্ত বিবিধ অলভার

ভাৰসিক্ষের ভৌগোলিক অবস্থান অতি প্রাচীনকাল হইতেই বিভিন্ন দেশের সংগ্রাবস্থান বৃপতিদিগের দৃষ্ট আকর্ষণ করিবাভিলেন। বহারাজাবিরাজ রাজেক্র চোলের রাজকালে
বর্ণভূমিতে (পূর্ব ভারতীর বীপপুঞ্জ) ভারতীর উপনিবেশিকদের সলে চীনা বণিকদের বিশেষ কোন কারণে বিবাদ
বাবিরা উঠে—উভর পক্ষে বুর আরম্ভ হর। তংকালীন চীন
স্লাট উক্ত অঞ্চল দুখল করিবার অভিপ্রারে রুণভন্নী প্রেরণ
করিবেন শুনিরা মহারাজ রাজেক্র চোল চীনাদের আক্রমণ
প্রতিবোধ করিতে একট শক্তিশালী নৌবহর ভারসিক বক্ষরে
প্রেরণ করেন। অবক্ত চীনা নৌবহুরের সলে কোন সংঘর্শের
বিবরণ উক্ত কাহিনীতে উদ্ধিতি নাই। তবে কিছুকালের
ক্রভ ভারসিক বে চোলরাজের একট প্রধান নৌবাট হিল
ভাহাতে সক্ষেহ নাই।

১৯২৮ সালে সিলাপুরের কোর্ট ক্যানিং কেরার একট আলার বনবকালে প্রাচীন হিন্দু আনলের ক্রেকট বর্ণালভার ক্সেত হইতে উদ্ধৃত হইরাহিল। উক্ত রব্যগুলি পরীক্ষা করিবা প্রস্তুত্ববিদ্যা বিলিয়েরে বে, অলভারগুলি বাহারা ব্যবহার করিকের তাহারা আনিরাহিলের সুগুর হাকিপাতা হইতে। ইহার পর চোল সাঝাক্যের পতন হইলে নিকটবর্তী অকলের> অভ কোন রাজা তারনিক বর্ণন করিবা কিছুকাল আনন করেব। কিন্তু হঠাং এক প্রাকৃতিক বিপর্বারের (ক্রিকম্প্রিকর) আর্রেকিবির বিক্ষোরণ) কলে তারনিক নগরী, বিশিক হইরা বার। তথ্য হইতে ক্রেক শ্রাকী তারনিক

লোকলোচবের অভয়ালে অভাত ও অবভাত অবহার পড়িয়া বাকে। কালকবে হতুত নৌধবালা ও পুলকুছে সুলোভিত ভাষসিক মধরী হুঅবেত মহারণ্যে পরিধত হয়।

প্ৰশাচীৰ ভাৰতিক নাৰ্ট কি কৰিবা তিংবপুৰ বা



ভগৰ্ভ হইতে-উদ্ধৃত প্ৰাচীৰ বুগের বৰ্ণালভার

নিকাপতে অপাত্তবিত হয় এবন সেই বিষয়ে আলোচনা করিয়া প্রবডের উপসংহার করিব। এপ্রীয় বর্ত্ত পড়কের ভারনিকের অৱণ্যৰহী ল্লেবে বৰ্ণনা আৰহা বেখিতে পাই বেছি ছাজপুত্ৰ সাং নীলোভনের অবণ-কাহিনীতে।২ কবিত আছে, তিনি শৈলেজ বংশের রাজপুত্র ছিলেন। দেশ পর্যাটন করা ছিল ভার সবচেরে বড় নেশা। একদা প্রদূর স্বর্ণভূমিতে পর্যাচন কালে দক্ষিণ-মালবের বিভাগ গিরিশিবর হুইতে ভাষ্টিকের অপূর্ব ভাষল কাভারের পটভূষিকার রূপালী বাগুকাষর লয়ুত্র-ভটভূষি ভাহার দৃষ্ট আকর্ষণ করে। পার্বভা অধিবাদীরা তাঁহাকে লানার বে, উহা একট অতি প্রাচীন জনবানবহীৰ ৰীণ—নাম ভাৰসিক। হাকপুত্ৰ **শীলোভ**ৰ ভাষসিকের দিকে কলপথে যাত্র। করেন। মারপথে প্রবল बक्रका देवित रक्षतात मनुवयक अवनृत जनममून क विकृष হুইৱা উঠে বে, ৰৌকার বোকা হাৰ্কা করিবার কল বাক-পুৰের মণিমাণিক্যথচিত খর্ণ-শিরোভূষণট পর্যন্ত সাগর-গর্ভে কেলিয়া বিতে হইরাছিল। ভাষসিকে অবভরণ করিয়া ভিনি रार्थन, चहुरत वनकृषिएक होई रक्षात्रक अकरन विवाहिकांत পশুৱাক বিচরণ করিতেতে। সবিদরে রাকপুর বলিলেব, ভাষ্ত্ৰিক বৰৰ এবৰ পুৰুত্ব কেশতীকূলেত্ব আৰাসভূষি ভৰ্ম ইছার বাব ছোক 'নিংছপুর'।

হন্দিৰ-ভারতের পুরায়ত হইতে ভাষসিকের এই বৃতৰ দাব সিংহপুর বা সিলাপুরের উংপত্তি সম্পর্কে আর একট বিবাস-বোগ্য ভাহিনী ভাষা যায়ত। অভি প্রাচীন ভাল হইতে এটার

History of Malay—R. O. Winshad.

অঠন পভাষী পৰ্যন্ত সৰ্ব্ব বৰ্ণভূষি ভাৰতীয় ঔপনিবেশিক-त्र कड़क मात्रिक दिल। केक दिलू वेशविद्यमित्कवा ভারতের বে বে অঞ্চ হুইতে আসিরাহিলেন পুতন বেশ নব-প্রতিষ্ঠিত পরী বা ভ্রমণহত্তনিকেও জারা সেই সেই অঞ্নের বাবে অভিবিত করেন। অবেকে আবার নিজেবের উপাত বেৰভাবের বাবে ভাৰসমূহের নাম্ভরণ করিভেন। এই সকল উভিয় বাৰাণ্য ভাষ, কাৰোক, বোণিও, বৰবীণ, श्रमाबा, मानव, त्निनिश्च (लेनिश्च ?) जाम्रामा ( আত্রবন ? ) ইভ্যাদি দেশসমূহের নগর ও পরীর সংস্কৃত वा मरकरण्य व्यवस्थ नाव एकेटल क्षत्रांविक एवं। लामिन कांवाबद् 'निज्ञाविकद्यन' दरेए बावा याद रा. विक्य ভারতের কলিক রাজ্যের রাজধানীর নান হিল সিংহপুর। फनिक्यांनीया विक्रिंगरण्ड महिल वायमा-वायिका बाहा ব্যবেশের কিন্তুপ এবিত্ব লাখন করিবাতিলেন ভালা বহুতর ভারতের ইভিয়ান-পাঠক বাতেই অবগত আহেব। ভারারা ভুতুৰ বৰ্ণভূমিতে নিৱা কভক্তলি দৰ্গৰ ও বাণিভাক্তে ভাপৰ ক্ষিয়াহিলের বলিয়া উচ্চ এছে বর্ণিক আছে। ভারত ও

নিংহলের মধ্য-পথে অবহিত আকুবা বীপও সে সময় ফলিক-বাসীরা অবিকার করিরাহিলেন। নিজেবের রাজবানীর नारबद जक्रकदर जाक नाव ध्यान जनगरहेव बान छारावा বিরাহিলেন 'সিংহপুর'। উভ সিংহপুর অধুনা সিংহনগর ৰাবে পহিচিত। হক্তিৰ-পূৰ্ব্ব এশিয়ার করেকট হাজ্যের चामक्कि नही ७ महरवद मारवद गरन गिरनम्ब क्क चारह। वर्षा, निरम्कृति-- प्रमाखा , निरम्नाति--वन्दीन , निरम्बाका---ৰলী । সিংহপুর---কাহোক ইত্যাদি। ডাঃ লাইন হান বলেন --উক্ত অনুপ্ৰপুলি প্ৰাচীৰ কলিছবাসীয়া প্ৰতিষ্ঠিত করিয়া-हिल्ल कि वा छारा विषय अर्थाना अवानिक एव नारे, छ्यानि মানয় এবং বোৰিও বীণে ফলিনবাসীয়া বে কিছুকান যাক্ষ कृतिशाहित्वन छान्। विनर्भन शामीत व्यवनामीत्वत छाना, चाहाब-बावसांब अवर कटरकी सांत्यब मांच स्टेटिंग बटरहे পরিষাৰে পাওছা বার । অহ্যাববি বালাই অবিবাসীরা কৃষ্ণার इक्नि-जावजीवरम्ब 'क्रमार क्रिक' वर्गार क्रिक्माजी प्रमिद्या वाटक । श्रुकतार देश व्हेटक नव्टकर क्षत्राविक वृत्त द्व, 'निरद-नुव' बाबके बांडीय फलिक्यांनी र्फपनिटयिकटरवरे बर्फ ।

### চট্টগ্রাম বিপ্লব-কাহিনী

### बी बीनव्य दाग्रहीभूती

গভ সংখ্যার চইপ্রায় বিপ্লব-ভাছিনী প্রসঙ্গে ভূষ্য সেব ও ঐতি-লভা ওয়াভাষারের করেকট চিট্ট এবং রচনা প্রকাশিত ব্ই-.বাবে। ঐতিলভা পাহাড়তলী ইউরোপীয়ান ভাব আক্রমণের **त्रिष्ठ अर्थ कविश्वादित्य । एम्पण्डि पूर्वा (मृद्य विक्**रे হইতে শেব বিহার এহণ করিবা আসিবার সময় সেই ছাবে करवक्षे किंद्रे थ क्रमा दाविका चारमन । कालाव बरवा पूर्वा-সেবের উক্তেড লিখিত প্রধানি পূর্ব্ব সংখ্যার প্রভাশিত रहेबाटा। अरे मर्यात क्विजिन्नात जात प्रदेशनि शब बंकानिक रहेन। ভাষার মধ্যে এবন প্রধানি "ব্রিয়া"র উত্তে নিৰিত। এই "মণিয়ার" পরিচয় সঞ্চিক জানা হার बार , शब रहेरछ बुबिएछ शाबा बाब (व. हैविह खैछिनछाएक विश्ववी-क्रां नश्यक् कृतिशांकितन् अवर के नवव किनि कांता-গাৰে অৰম্ভ হিলেন। পূৰ্ব্য সেন জাভাৱ বচনাৰ ইভাকে "অসীৰ" বলিয়া উল্লেখ কলিয়াছেব। "অসীৰ" বোৰ হয় তাঁহার প্রকৃত নাম নর, হয়নাম-প্রকৃত নাম ঐ বচনাম शांभव क्या रहेबाट्य विजया अञ्चान रह । इंडेबाटवर विश्ववी-ৰণ বোধ হয় জাহায় পরিচয় বুলিতে পারিবেন।

विशेष नवयानि कैकिनका केवाब कान विश्ववद्यक

উদ্দেশ্যে লিবিরাহিলেন। তাঁহায়ও পরিচর জানা বার নাই। তিনি ঐতিলভার "মণিয়া"র একজন বিশেব বছু এবং প্রথম পরে এ বিষয়ের উল্লেখ আছে।

ভূতীর প্রধানি ঐতিসভার নিবিভ একট কুর রচনা।
নরণের কোনে বাঁগাইরা পড়িবার পূর্বে ঐতিসভার অ্বরে
বে উবাহনা আসিরাহিল এই করেক হত্তে ভাহা পূর্ব প্রকাশ
পাইরাহে।

ত্ব্য সেন পুলিসের নিকট ধরা পঞ্চিবার সময় এই তিন-ধানি পত্ত গহিলা প্রাহে জাহার জাহে পাওয়া সিমাহিল।

চ্চূৰ্ব প্ৰধানি বেশবাসীয় প্ৰতি প্ৰতিসভাৱ অভিব বাই। এই প্ৰধানি প্ৰীতিসভাৱ হুড্হেছের ব্যৱহ বব্যে পাওৱা বাহ। প্ৰধানি ইংৱেজী ভাষার প্ৰীতিসভাৱ হুছ্ছে নিৰ্বিভ। এই পৰে ভাহার জীবনের ক্বা, ভাহার প্রবল বেশপ্রীতি, বেশের বভ আহ্বানের একাভ আভাব্যা ও এ বিবরে নারীয় বর্ষ প্রভৃতি বিশেষ প্রাঞ্জন ভাষার পরিপূর্ণরূপে প্রকাশ পাইরাহে।

ঞীভিলভার বৃত্যুত্ব পর হুর্ব্য দেব "Female organisation" অবাং বিশ্রবী নারী-সংহেদ একটি ইভিহান চচনা - मिंद्र अंगार्ड ' एसे त्यामां माने हमां कार्य क्षामुक्त क्षामां क्षामं कार्य कार्य माने कार्य कार्यार्ड-- तीक्ष माने कार्याः कार्याः कार्यः विभागः कार्याः कार्यः क्षामाः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः कार्यः

#### ঐতিলভার ১৭ং পরের এক বংশের প্রভিলিশি

ত্বেন। এই প্ৰবন্ধী অসৰাত অবহার উাহার নিজট পাওৱা বার। এই প্ৰবন্ধের একটি উৎসৰ্গনের প্রীভিলভার উদ্বেক্তে নিবিত একটি কুল বচনা আহে।

সর্বাদের রামকৃষ্ণ বিধানের মুইবানি পঞ্জ প্রকাশিত হটবে। পঞ্জ মুইবানি রামকৃষ্ণ আলিপুর সেন্ট্রাল জেল মুইতে বৈতিলভাকে লিবিরাহিলেন। শের পঞ্জবানি ২৯-৭-৬১ ভারিবে লিবিভ। ইয়ারই ৫ দিন পরে ৪ঠা আগঠ ভারিব রাজে রামক্ষকের কাঁলি হয়।

এই পত্র লিখিবার সময় রামকৃষ্ণ খবে তুগিতেছিলেন—পত্রে সে কথার উল্লেখ আছে। এই ছার অবস্থারই রামকৃষ্ণের কাঁলি হয়। এই পত্র ছুইখানি অভাভ কাগলগত্রের সহিত ২২-৬-৬২ তারিবে বলঘাটে পূর্ব্য সেনের আবাসকলে পাওরা গিরাছিল। নির্মাণ ও অপূর্ব্য সেনের ভারাসকলে পাওরা গিরাছিল। নির্মাণ ও অপূর্ব্য সেন ও ইতিকতা অনেকগুলি চিট্ট-পত্র ওবানে কেলিয়া আসেন। তাহার মধ্যে ইতিকালার বহুতে লিখিত রামকৃষ্ণ বিহাসের সহিত আলিপূর সেকুলি ভেলে সাকাং বিহারে একট দীর্ঘ বর্ম্মন্সর্দানি প্রথম ছিল, কিছ লেখকের নিকট ও প্রবহের কোনো নকল না থাকার উল্লেখনাক করা সভব হুইবে না। এই সকল পত্র ও রচনা ক্ষমণঃ প্রকাশিত হুইবে।

প্রীতিশ্ভার পত্র

শ্রীচরণেবু,—

মণিদা, এতদিন পর বৃঝি ভোমার স্বপ্ন সফল হতে চলল। তৃমি চেমেছিলে ভোমার বোনটিকে স্থানেলননীর পারে উপথার দাও, ডাই কোন্ এক শুভদিনে তৃমিই প্রথম সামাকে স্থিময়ে দীকা দিয়েছিলে। দেশমাতৃকা বে পৃথাভাৱে স্থান্ত, স্থোচারীর লাহনার উৎপীড়িতা—

দে কথা তৃষিই আমাকে প্রথম মনে করিবে দিবছিলে। ছাংখিনী মারের চোধের জল মৃছাতে তৃষিই আমার ভাক দিরেছিলে। তাই আজ দেই তাকে সাড়া দিতে গিরে কেবলই ডোমার কথা মনে পড়ছে। বিধির বিধানে আজ তৃষি কারাপ্রাচীরের অস্তরালে—বাকে তৃষি নিজের হাডে মাহুর করলে ভোমার দেই স্নেহের বোনটিকে বীরবেশে সাজিরে দিতে তৃষি পারলে না, তাতে ছাংগ করবার কিছুই নেই আমি জানি—আমার এই অভিবান তোমার বন্দী জীবনকে আনন্দমর গৌরবময় করে তুলবে। আলীকাদ কর বেন আমার উপর ভোমার বে বিশাস ছিল আমি তার বথার্থ মর্যাদা রক্ষা করতে পারি।

আমায় বেদিন তুমি খদেশবাণী শুনাও সেদিন সেই দেবতুল্য মানুষটির কথা আমান্ধ কাছে বলেছিলে, আমি তার সন্ধান পেয়েছি। তোমার প্রেরিত অর্ঘ্য-শ্বরূপ আমি নিজেকে তার পায়ে সঁপে দিয়েছি—তিনি আমাকে তোমার দেওয়া দানরূপেই গ্রহণ করেছেন—তোমার কড আশীর্কাদ করেছেন।

দাদা! বাবার আগে আমি অনেক পেরে গেলাম—
অন্তর আমার কানায় কানায় ভরে গেছে, কি ফুলর সল
আমি পেরেছি। কত ফুলর ফুলর, উদার মহৎ হদরের
পরিচর আমি পেলাম। আমার জীবন ধন্ত হয়েছে। কত
ফুলর গভীর অফুভৃতি আমার হদরকে ঐবর্গ্যমর করে
তুলেছে—স্থৃতির বোঝাও আজ কানায় কানার ভরে উপচে
পড়তে চার। থাক্, সে অনেক কথ — মামি লিখে জানাতে
পারব না। তুমি বাবার পর ভগবান আমার অফুরন্ড দিরেছেন—আমাকে দিনের পর দিন ভোষারই দেখান পথের
দিকে এগিরে এনেছেদ—আমি এগিরেই চলেছিলায়।

আমি ছ্'চোধ মেলে জনেক দেখেছি—আমারই ছ্'চোধের সামনে ভগবান ছিনটি জীবনের ববনিকা টেনে দিয়েছেন—আমি তাঁদের চিনেছিলাম—জেনেছিলাম অতি আপন করে পেয়েছিলাম। ভগবানের কুপা হলে একদিন সবই ভনবে। আমি লিখে জানাতে পারছি ন:—লিখতে গেলে হয়ত তার সবটুকু সৌন্দর্য ও মাধুর্য নই হয়ে বাবে।

অনেক ৰণাই মনে হচ্ছে—ছোমাকে হয়ত অনেক কিছুই বলার ছিল, কিন্তু বলতে না পেরেও আমার এতটুকু হঃখ নেই—আমি বেঁচে থাকি আর না থাকি আমার অন্তরের বাণী একদিন তোমার কানে পৌছবেই।

ভোমার বন্ধুটিকে বলো ভাকে আমি মনে করেছি, খুবই মনে পড়েছে ভার কথা—আমার বিপ্রবী জীবনে ভারও ত একটি মহৎ দান আছে। আমি আজ হাদয়ভরা কুতজ্ঞতা নিয়ে ভার কথা মৃনে করছি। ভাকে আমার সম্রন্ধ প্রণতি জানিয়ো।

বিদায়ের বাঁশী বৃঝি বেজে উঠল। আমি আমার সব-টুকু সমল নিয়ে বাবার জগু প্রস্তুত হয়েছি—জানি না আমার বাওয়া হবে কিনা। ভগবানের কাছে শুধু এই প্রার্থনা— আমার বেন আবার ফিরতে না হয়।

তোমার স্বেহানীর মাধায় করে আমি চললাম। আমার ভক্তিপ্রণতি ব্লেনো। ইতি স্নেহের বোনটি।

প্রিয়বরান্থ,

হয়ত ভাবছ, আমি তোমায় ভূলে গেছি। তবে না ভাবাটাই সম্ভব, কেন না তুমি ভাল করেই জান আমার বিপ্রবী-জাবনের সাক্ষীরূপেই আমি তোমাকে চেয়েছিলাম এবং সভিয়েলর চাওয়াই চেয়েছিলাম তাতে এতটুকু ফাঁকিছিল না। তুমি আমার মন ব্বেছিলে এবং বতদিন সামনে ছিলাম আমাকে খুব ভাল করেই ব্রুতে দিয়েছ বে তুমি আমায় খুবই ভালবাসতে। কিছ ভাই মনে পড়ে কি এক এক দিন আমি ভোমায় বল্তাম—আমাদের এই বহুবের বছন খাটি হবে সেদিন বেদিন তুমি সর্বাহ্ম ছেড়ে আমার আদর্শ ও সাধনাকে তোমার জীবনে বুর্ভ করে তুলবার জন্ম ছুটে আসবে। মনে পড়ে কি ভোমার ছোট থাতাটিতে লিখে দিয়েছিলাম—মামাকে ভূলে বেও কিছ বে বীণা তোমায় ভনিয়েছি তাহা ভূলো না। তবেই আমি তোমার ভালবাসাকে এতটুকু সন্দেহ করব না।

আমার আদর্শকে তৃমি স্থলর দেখেছিলে তাই তৃমি আমার এত ভালবাসতে। জানি না—তাই কিনা, কিছ षामाव राष्ट्र शावला, अवर छाड़े इरण षामि यूनी। किछ षामाव षाप्य रूपव रार्थ षामार छानरवर काछ इरण छानर वा छाड़े पामि अकाछ मरन छाड़े रव जूमि अकान छात्र काछ इरण छात्र काछ छूटि अम—रव मर्कछात्री महर राजकेव कथा षामि रहामाव काछ वरण हिनाम। षामि वफ्डे इर्थ निराइ अराहिनाम—जूमि षामाव कथा प्रांकित वरण। मरन मन्द्र करव अराहिनाम षाव अकान छान्छ। स्वामाव कवा ना—निराइ खीवन छर्मा करव राजार छान्छ। व्याप्त राजार राज्य व्याप्त रहा छान्छ। हव षामाव अविमान वर्णा वर्णा रहा छान्छ। इव षामाव अविमान वर्णा व

বিদায়ের বাঁশী বেদ্ধে উঠেছে। আমি চললাম ভাই। ভোমরা আমার জীবনে অনেক আনন্দই দিয়েছিলে—
তাই বাবার বেলায় তোমাদের মনে না করে পারছি না।
ভোমাদের মধুর সঙ্গ আমাকে অনেক হুংগই ভূলিয়ে
রেগেছিল তাই আন্ধ তোমাদের প্রতি হৃদয়ভরা কৃতক্রতা
নিয়ে বাচ্ছি। তোমার কাছে আমি আরও ঋণী।
আমার হুংগে তুমি কেঁদেছ, আমার মুগে তুমি হাসি
দেখলেই তুমি হেসেছ—মামার কত অক্সায় আব্দার তুমি
রক্ষা করেছ—এতথানি আপন তুমি আমায় করে
নিয়েছিলে। আমিও আন্ধ বাবার বেলায় ভোমাকে
খুবই মনে করছি এবং বুঝতে পারছি বে আমার অস্তরেও
সত্যিকার অক্সভৃতিই ছিল তোমার কন্য।

আদ বেশী বিছু বলবার নেই, অনেক কথাই তোমাকে বলা হয়েছে—অনেক কথাই তোমার শোনা হয়েছে—নৃতন করে বলবার কিছুই নেই।

বাবার বেলা ভোমাকে মনে করেছিলাম—এ কথাটা বাতে তুমি জান সেই উদ্দেশ্তেই ভোমার জন্য ছ'চারটে কথা লিখে গেলাম।

আন্তরিক ভালবাদা ও ভডেচ্ছা জেনো ইডি—

9

### প্রীতিশতার রচনা

ঐ বে বণভেরী বেদে উঠেছে, চল স্বাই চল, আর দেরী নয়—শুভ শুঝ বেদে উঠেছে—বিদ্যার নিশান উড়িয়ে চল আমরা মৃক্তিসংগ্রামে ঝালিয়ে পড়ি, আমাদের এই অভিযান ব্যর্থ হবে ন:—ইহা ভারতবাসীকে ভেকে বলছে "দিন আগত ঐ"।

মাগো ভোর শৃথ্যভার মোচন করতে আর কড বক্ত চাই মা? কড দিনে ভোর ছাগ ছুচবে মা? বুকের বর্জ নিবেও কি ভোব চোপের কল মুছাতে পারলাম না! তুই কি আরও কাদবি? আর কাদিসনে মা। একবার ভোর চোপে হাসি নেগতে চাই মা।

বুৰেছি আমি সব বুবেছি। তগবান আমাৰ আৱ একবার বাধা দিবে পর্থ করে দেখলেন, আমায় কাছে টানলেন, আমি বুকের মধ্যে তার দাড়া পেরেছি। আমি তাকে নিবিড়ভাবে অন্থভব করেছি। সে বে আমার বড়ই আপন সে কথা ভূলেছিলাম বলেই ত'এমন করে আমার ভূল ভেলে দিরে পেল, আমাকে সে বে বড়ই ভালবাসে।

B241

### সাহিত্য ও জনগণ

#### \* এনীলয়তন দাশ

সংসারের খাভ-প্রতিখাতে দৈনন্দিন ভীবন-সংগ্রামের সঙ্গে সলে যে ভাৰৱাশি মালুবের অভারে উরেলিত হইরা উঠে. ভাভাতে ভ্ৰপে হলে মভিভ করিয়া প্রকাশ করাই সাহিত্যের কাক। সাহিত্যের বৃদ্ধ উৎস রহিরাছে এই বাটর বাসুষের প্রাণভূষিতে এবং মুধ্যতঃ এই বাত্রকেই অবলয়ন করিয়া গভিয়া উঠে সাহিত্য, কাব্য ও শিল্পকা। • ক্ষৈক লেবক সভাই বলিয়াছেন—"মাছবের প্রথম ও শেষ পরিচর এই মার্টর সলে, কাৰেই কবি বা সাহিত্যিক মাট্টর মারা হেছে, পুৰিবীর বছৰ কাটাৰে এখন কোনও কগতের পরিচয় কানেন না, যার অবিবাসীরা ডাঁকে অভাবনীর কোনো বালম্পলার বোগান দিবে-- অচিভিতপূর্ব্ব কোনো কাব্য বা সাহিত্য বচনার ৰভ।" वष्ठः गरिष्ठात काम ७५ क्यमांक नरेश विनाग करारे নর-মাটর মাতুষের, মানব-সমাজের অফুট বেগনাকে হ্মণ বেওরাই ভাহার বুধ্য উদ্বেশ্য। কালের সলাটে সেই লাহিত্যই কোহিছবের মত দীপ্তি পার, বাহা মাছবকে ৰাছবের আত্মীয় করে, বাহা প্রাণের সলে প্রাণকে মিলাইয়া रात्र. सरवरक सरदाव निकर्त जारन । वनीक्षमां परनम---"অৰও মাছমকে প্ৰকাশ করাই সাহিত্যের কাৰ, বাহিরের ব্দাংকে ব্যৱহাৰ কাং, মাছবের কাং করিয়া ভোলাই লাহিত্যের উত্তেও।"..."লম্বর মানবকে প্রকাশের চেঠাই गांकित्जाद सीन ।"..."बाज्यदाद स्वांक क क करत हरन यात्रक . ভার সমুভ জীবনের সমুষ্ট আর কোবাও পাক্ষে না. **(क्वम महित्का बाक्टर)। अदेवक महित्कात अब बागत,** এইকটই সাহিত্য সর্কাদেশের বছবাছের অক্তর ভাতার।... আমার প্রবাদ ক্বাটা এই, সাহিত্যের ক্পং বাদেই হচ্ছে बाष्ट्रसम चीनरनम गर्न विक्रिक चनर । स्वम करमरे स्वि षायबा बाह्यरक्रे हारे. नांकार छाटन वा नरबाक्छारन। बाइरबर नवरक काठीरहेंका छक ठाउँरब, बुल बाइबछैरकरे ठाउँ। ভার "হাসি চাই, ভার কারা চাই, ভার অভবাগ বিবাগ षांवारवय चवरवय भरक श्रीवयद्विय वक ।"

श्रुन श्रून, त्राम त्राम त्र त्यां नारित्कात नहीं दरेतात्व

ভাহাভে আৰম্ভা দেখিভে পাই—সেই সেই মুগের ও বেশের বিশেষ বিশেষ অবস্থার মুক্তির আকৃতি। চিরকাল বিশেষ্ট অবংশতিত জীবৰুত মাজুবের মুক্তি-মন্ত্র বাহার। ক্যুক্তে বোৰণা করিয়াছেন, ভাঁহারা বিখের অমর সাহিত্যিক, কবি ७ निजीत्रांके । 'त्नाटके, मैनांब, एक्क्रेबान, फिक्केब एत्रां, টলাইর, গোলি, ডাইরভবি, বাররণ প্রার্থ ক্পতের শ্রেষ্ঠ সাহিত্যিকেরা মানব-সমাধ্যে বাছর অবস্থাকে অবসংস क्रिया अक्षा त्व त्वर्गीय क्ष्यपाया श्रीकानमा क्रियादित्नम्, ভাহাতে নিৰ্বাভিভ মাহুষের আলচেত্না উৰ্ভ ক্রিয়া क्षत्रण विकास अधिकार वानीर न्धं रहेश क्रियाटक। ভার-শাসিত রুশিয়ার লাহিত উংশীকৃত ভ্রমানারণ ভর্টের উপর ধোব বিবা বিনের পর বিন নীরবে অভিজ্ঞাতসভাবারের দুৰবাহন্য এবং সহলতা স্ট্ৰ ক্রার বড় প্রাণাড্ডর পরিশ্রম বারা নিবেদের জীবনীশক্তি কর করিয়া কোন প্রকারে ছুর্কিব্র শীবন শতিবাহিত করিরা চলিরাছিল। শভারের উপর সাহিত্যিকদের তীব্র কশাঘাত ও দরদী মনের বারীই সেই ক্লিয়ার বৃক্তিপ্রচে**ঠাকে অরবুক্ত ক্রিয়াছে। ক্রা**সী বিপ্লবের সম্পাম্থিক করাসী সাহিত্য সহছে রুৱীল্লমার ৰলিবাৰেন-"বুৰোপে ক্রানীবিপ্লৰ যাসুৰের চিক্তকে তে ৰাভা বিৱেছিল, সে ছিল বেড়াভারা যাড়া। বেৰতে বেৰতে তৰন সাহিত্যের আতিবেয়তা প্ৰকাশ পেষেছিল বিশ্বক্ৰীমন্ত্ৰণে। সে বেল বসস্ক্ৰীৰ সাৰ্বাভানিক বঞ । ভার মধ্যে হিল সর্কবাদবের বৃভিত্র বাবী।...লেই বিশ্বক্ল্যাণ ইচ্ছার আবহাওয়ার জেপে উঠেছিল বে সাভিত্য নে ৰহং, সে ৰুক্তৰার সাহিত্য সকল দেশে কালের ৰাছবের च्छ। সে এনেহিল আলো. এবেহিল আলা।"

একবা সাহিত্য ছিল অভিবাত-সন্তবারের জীবন্যাট্যের বুহুর। বিরাট নান্বস্বাক্ষের একপ্রান্তে বে এক বল বুট্টরের ব্যবারী ঐথব্য ও বিলাসের প্রাচুর্বের মধ্যে আপ্নাবের বভর অভিযক্তে বহুব করিবা চলিরাতে, ভাহাবিগকে জইরাই ছিল সাহিত্যের ভারবার। "সে বিবের সাহিত্যে ছিল রাজা- বাহশাদের রুষ্ট্রনির বীন্তি, রাজনন্দিনী আর বাহশাজালীদের পোণন প্রেমের কাহিনী, পৌরাণিক বেবদেরীর অলৌকিক নহিনা, বিরিক্ষী বহারবীবের অনির বকার আর বহুকের ইকার।" নাছবের বব্যে বাহার। অনাধারণ ভাহারাই ছিল লেবিন কাব্যের ও উপভালের নারক-নারিকা, আর বাহারা সাবারণ ভাহারা ছিল সাহিত্যে অল্পর্না— লাহিত্যের করবারে অপাণজের। কিছ কালজমে সাহিত্যেরর উলার ক্ষেত্রে সাবারণ মাছবের দাবি প্রভিত্তিত হইল। আনাবের বেশের বৈক্ষর সাহিত্য আলোচনা করিলে আমরা বেবিতে পাই, বৈক্ষর-ক্ষি মাত্ত্যের সার্বাক্ষীন অবিকার প্রতিষ্ঠার আবেষণ ক্ষানাইরা মাত্ত্যকে উলাভ কর্তে আহ্বান ক্ষিয়া ক্ষিলেন—

"খনহ মাত্ৰ ভাই,

সবার উপরে মাহুব সভ্য, ভাহার উপরে নাই।" ভাহারা উচ্চবর্ণের রচিত ভেষবৈষমানূলক সমাক্ষবিধির নাগণাশ হইতে অন সাধারণকৈ মুক্তি দিয়া সর্বাহাতিকে প্রভা করিবার अवर जकनक जानवाजियां यहांन जानने श्राह्म कतितन। রবীজনাবের ভাষার---"বৈক্ব কাব্যই আমাদের বেশের দাহিত্যকে প্ৰথম ৱাজ্যভাৱ সন্থীৰ্ণ আত্ৰৰ হইতে বুহং জনসমাজের মধ্যে বাহির করিয়া জানিল। পর্বভের ওহা एक प्रतिवा चंद्रशा वाहित एरेम ।···दिक्ववर्षद्वीवरमद नमन বিশ্বশ্রেষ বেবিষ বাংলাবেশে মানুষের মধ্যে সমন্ত কুত্রিম नदीर्यात राष्ट्रा चाढिया विद्या प्रेक्टनीठ चित-चचित जनगरकरे अफ क्रवात्मत चानकलाटक चास्ताम क्रिन, त्रहे पिनकात বাংলাদেশের গান বিবের গান হইরা জগতের নিতাগাহিত্যে ছান পাইরাছে। কিছ ভক্তবর্দ্ধ বর্ণন সর্বান্ত্রের মহের্ডরকে ष्ट्रदि वाचिवा माष्ट्रदिव मान्या क्लान नाम-निर्मात अवर क्लान-বিভেবের হুলাভিহুল সীহাবিভাগ করিতে ব্যস্ত হয়, তথ্য गोहिटकात तमझोरम ७६ रहेव। योत, (करम कर्वनिकर्क-वारविवाद्यत पूना देशहेबा चाकाम चाळ्य कविवा त्करन।"

বৈক্ৰ-সাহিত্যের পরে আমরা দেখিতে পাই, মাহ্যের জ্বগত অধিকার হইতে বকিত দেশবাসীকে সাহিত্যের ববা বিরা বিজেবের শোচনীর অবহা সহতে সচেতৰ করিরা ভোলেন টেকটাল, বভিষচক্র বীনবন্ধ, প্রমুখ সাহিত্যরবিগণ। সাহিত্যে এত কাল যাহারা হিল অপ্তর্ক, সেই হাসির সেখ আর রামা কৈয়র্ভের ললও আসন পাইল ইহাদের সাহিত্যে। ভাহাদের সাহিত্য আম্বত মাহ্যের মনে নাড়া দের এবং লাড়া ভাগার।

ৰভিষ-মূৰ্বের পর কেবি বদ-সাধিত্যের বিশাল অদম কবিওক ববীক্ষণাবের কঠোঁচোরিত সর্কার্যবের অরগাবে মুবরিত। কবি সারা জীবন "উবার হলে প্রয়ানকে" "নরক্ষেতার বক্ষা" করিয়াবেন। বিভাগুলিতে বে আকুল ক্ষণবের তুর কৰিব কঠ হইতে নিঃহত হইবাহে, ভাহাতে শুনিতে পাই
শুৰু প্ৰেৰে সৰ্কল বাছ্বেৰ সংল আপনাকে বুজ কৰিবাৰ
ব্যাহুল প্ৰাৰ্থনা। বাছ্বেৰ ভিককে অবীকাৰ কৰিবা,
বাছ্বের হাট হইতে চুরে বাকিবা ভগবানকে পাওৱাৰ চেঙা
বুধা,—এই বুলভত্ব বীভাঞ্জনিব অনেক গানে আছে। ভাই
ভো ভিনি বনিবাহেন, "বিশ্বক্ষের পারের ভলে খুলিন্ত্র বে
ছ্নি, সেই ভো খর্গভূমি।" ভাই ভ্ৰির প্রথম শীবনের আশা
ও আকাজন,—

"মরিতে চাহি বা আমি সুক্তর ভূবনে, মানবের মাঝে আমি বাঁচিবারে চাই।" এবং তাঁহার শেব জীববের উক্তিতে দরদী মনের সেই একই ব্যাকুলতা আমরা ভবিতে পাই,—

"আমি চাই বছুক্ম বারা,
তাহাদের হাতের পরশে—
মর্ড্যের অভিম প্রতিরদে

মিরে বাবো শীবনের চরম প্রসাদ,
মিরে বাবো মাহবের শেব আশীর্থান।"

রবীজ-ৰূপে শরং-সাহিত্যেও আমরা সাধারণ মাজুষের জ্বগান শুনিতে পাই। শরংচক্র সাহিত্যের দরবারে আমন্ত্রণ করিয়া লইয়া আসিলেন সেই সং নরনারী, যাহারা অত্যন্ত পরিচিত বলিয়াই আমালের কাছে পাইরাছে ৩৫ উপেকা चात्र चनामतः। जिनि जाशामिशत्क चनामत्त्रतः चावर्क्यमञ्ज इहेट इनिया चानिया छाहाटनय युनियनिन ननाटि भवारेया विराग अव। ७ श्रीचित्र क्यनचित्रकः। अ मेद्दा भारतिस বলিয়াছেন-"সংসারে যারা তবু দিলে, পেলে মা কিছুই; বারা বকিত, বারা ছর্মল, উংপীঞ্চত, বাসুষ বাবের চোবের क्रांच्य क्रथमक क्रिंग्य निर्म मा. मिक्रभाद इ:यमद कीराम यादा কোন দিন ভেবে পেলে না, সমন্ত থেকেও কেন ভাগের किहरकरे चिवकात त्वरे। अस्त्वरे त्वका विस्त चार्यात वृद বুলে: এরাই পাঁঠালে ভাষাকে মাহুষের ভাছে মাহুষের নালিশ দানাতে। ভাষের প্রতি ক্ত দেবেছি কুবিচার, ক্ত দেবেছি অবিচার, কত বেবেছি নির্কিচারে হঃসহ স্থবিচার। ভাই, আবার কারবার এদের নিরে।"

শরংচজের পর বর্তমান বুনে করেকখন শক্তিশালী সাহিত্যিক সমাধের উপেক্ষিত নির্বাতিত খনগণের বেদনাকে সার্বকভাবে সাহিত্যে ভ্রপারিত করিবার চেঠা করিবাছেন।

তৰ্ বিলাবের চিত্র আঁকিরা, সৌধিন সাহিত্য শিল্প ও কাব্য স্কট করিরা ভাববিলাসিত। চহিতার করিলে শিল্পর ভীববের বর্ত্ত্বরে গৌতে না, এবং সাহিত্যরস সরাজ-ভীববের একেবারে ব্লবেশে অভিনিক্তি না হইলে সরাজ্ তক বক্ষয়বিতে পরিবত হয়। আৰু কুল্মস্কত পেলবভার ভাতির গৌরুব আছার—ভাহার কর্ম-শক্তিতে আনিরাহে পছ্তা, জীবনে বেখা বিরাহে র্থীতি, চিতে আনিরাহে অবসাব। "এই অবসাবের বিগওব্যাণী অৱকারকে অপসারিত করার হত আহু প্রয়োজন সেই সাহিত্যের, যার শুটি চিতের সবলতা খেকে, বৃটির সমপ্রতা খেকে, জীবনের প্রাচ্ব্য খেকে।" আজিকার হাবীন গণতরের হুলে সাহিত্যিক, কবি ও শিলীরা মাত্রহকে এবং বাছবের সমাজকে ছুরে বা রাবিরা ভাষাবের সক্ষেবির্চাবের বিশিলা সাহিত্য ও শিলের ভিতর বিরা জাতির অভীলাকে করিরা ভূসুন উর্জন্ধী। তাঁহাবের কঠে বাবিরা উঠুক অনগণের অম-গান। তাঁহাবের স্কট্ট বেন আনাবের বৃট্টির সন্মুখ্রে, উল্লাইত করে জীবনের বিশাল বিগভকে, আনাবের চরিত্রকে করিরা ভূলে গৌরবের বহিনার সমুজ্বল—আনাবের চিডে আনিরা বের মবীন কর্মপ্রেরণা।

### কমলমণির ডাঙা

#### জ্রীনীহাররঞ্জন ছোষাল

ভাষনগরে প্রথম বেদিন পাটের কল চালু হ'ল সেদিনের কথা আৰু আর কারও অরণ নেই। কিছ 'ক্ষলমণির ভাঙা' সেদিনের স্থিকে এখনও বহুন করছে। সেদিন পূর্ক্বক থেকে কাঁচা পাট আসতে লাগল ভাষনগরে—'তৈরী হ'ল বভা, আর বুনাকার অভ বভাবলী হরে ক্ষতে লাগল বিলিতী ব্যাতে।

পার্টের কলের বড় সাহেব মুখুক্তে-বাড়ীয় বৈঠকথানার বসে গলাননবাবৃক্তে চাকরি নিতে অহুরোধ করে বললেন, "ব্যবসার করে সব টাড়া আমরা দেশে নিরে বেতে চাই নে। তোমাদের মধ্যেও কিছু টাড়া বিলিরে দিতে চাই। আমাদের একজন বড়বাবু দরকার। তোমাড়ে কালকেই কালে বোগ দিতে হবে।" সাহেব চলে বাওয়ার পর গজাননবাবৃর পিতা গামহা পরে গাড়ু হাতে এসে বৈঠকথানার প্রবেশ করলেন। সাহেব তজ্ঞপোশের বে-অংশটতে বলেহিলেন, সেই অংশট গাড়ুর জল. দিরে শোধন করে হেলেকে বললেন, "সাহেবের আপিসে বড়বাবুর চাকরী পাওয়া ভাগ্যের কথা, সে চাকরী বহি আবার বৈঠকথানার বসেই পাওয়া যার তবে ভানবে বে, আমাদের উপরে মা কালীর অসীম দলা আছে। অকিস-কেরত জানা কাপড়ঙলো গোরালঘরে রেবে এস। আমি সেখানে একটা ঘড়ি টাভিরে রাধব।"

বাইনর পাস-করা গলানন বাবু পরের ছিল পঞ্চান টাকার
নই লাগিরে বছবাবুর চেরারে গিরে বসলেন। উনবিংশ
শতাবীর নার্যানারি সমরে পঞ্চাল টাকা মাইনে পাওরা কেবল
না কালীর ব্যারই সভব হ'ত না, বাবা ভারকের্যরের
লোলাহুদ্দি পঞ্চাভিছ না বাক্তনে, বছবাবুর চাক্রী কেউ
পার না এটাই ছিল সকলের বিশ্বাস। গলানন মুবুজের
সৌভাগ্যে ভারনগরের অনেকেই উভাকালী হরে উঠল।
বিভেয় রাতে লেপের ভলার ভবে ক্ত ন্ব-বিবাহিতা
লী বানীর গারে বুছু আবাত করে ব্লেছে, "স্বাই ভো

ৰাচ্ছে পাঠের কলে চাকরী করতে। পঞ্চাশ বা পাও, পঁচিশ টাকা ভূমি নিভয়ই পাবে।"

শীতের প্রকোশে কুঁচকে-বাওরা পা চুটো তথন পর্যন্ত আনেক খানীরই গরন হরে ওঠে নি—তারা খনাব হিত, "নাইমর পাস করা গলানন বেবানে পঞাশ চীকা পার, সেবানে আহি বাব পঁচিশ চীকার চাকরী করতে ? ছ্যাঃ !"

"ভূষি ভো ওচাঁও পাস করতে পার বি।"

"কিন্তু বাবা আনার এন্টাল-পাস। স্থাননগরের এন্টাল-পাস বাপের কোন্ হেলে গেছে পাটের কলে গোলানি করতে ভনি ?"

সে রাত্রে অনেক খানীরই পা ছটো কুঁচকে হিল বটে, কিছ
আছ এই এক শ বছরের মধ্যে ভাষনগরের শভকরা নকাই জন
কুলবন্ব খানীই পাটের কলে গোলানি করে। করেক বছর
আগে বেষন ইংরেজের হরে লভাই করবার জভ ঢাক পিটারে
বছ লোককে সৈভলনে ভাই করা হ'ভ, সে-বুগে ভেমনি পাটের
কলে কেরানী ভাই করবার জভ বছসাছেব কেবলমার
এক্দিনই বুর্জে-বাভীর বৈঠকবানার পঞ্চাশ টাকার বভনী
কলে এনেছিলেন। সেই বছনী বরে আ্রন্ত বছসাহেবর। পুরো
ভাষনগরবানাকে ভাকে বেলাছেন।

বৃত্তে-বাছীর বৈঠকধানার তভগোশটাকে বধন থকা দিরে শোবন করা হরেছিল তারপর চার পুরুষ অভীত হরে গেছে। তথন ভাষনগরে বিভব জনের অভাব ছিল না। কিছ বিগত পঁচিশ বছরে অল দূবিত হরেছে, কুইনিন-নিক্চারের হরেছে প্রাচুর্য। স্বাই এখন কুইনিন থেরে পাটের কলে গোলাবি করতে বার। কলে কর্মকর লোকের অভাবে ভাষনগরের বাঠে বানের বহলে বলবাগভা অবাতে লাগল আর পুরুষকের আরু গেল করে। নাত্ত্বের আলাক্রা বিটবার আগেই অনেক ব্রতী বিবরা হ'ল। পাটের কলের ব্যাকার সক্রেপালা বির্বার ব্যাকার সক্রেপালা ব্যাকার ব্যা

বিধৰা-আশ্ৰমের টাবার বাভার বোটা অভের টোপর বাধার বিরে অনেক মহাক্ষন নাম সই করলেন বটে, কিন্তু বিধৰার সংব্যা ভাতে কমল না। তথু ইট, ক্রকী আর বাট-পালক বাহল।

বৃধ্জে-বাদীর কমলমণি বোল বছরে বিণবা হরেছে।
বছবাবু গলামন মুর্জের একমাত্র নাতি তপন মুর্জেও বংশগত অধিকারের ভোরে পাটের কলে চাকরী পেরেছিল।
প্রার এক শ বছর আগেও অনেকে নাতির অরপ্রাশন দেবে
গেছে। কিন্তু অব্না দেই পিতামহদের নাতিরা অনেকেই
সন্তামের মুব দেবতে পার না। তপন মুর্জেক পেলে না।
কমলমণির বরন যবন বোল, তবন সহসা তপন মুর্জে মারা
গেল। সবাই বলে, "তপনবাবুর বজা হরেছিল।"

ক্ষলমণি পেল একখানা ইনের ঘর, এক বিবে অনি আর সেই সলে একটা ভালগাছ। ভালগাছে কল হ'ত না একটাও, কিছ রস হ'ত প্রচুর। রসের ভাতে চুরুক থিরে, মৃল্থী সিভার ভিরিশ লক্ষ বিভি ছুঁকে জীবন কাইবে সেছে তপন মুর্জের বাবা আর তপন বিজে। পাটের কলে উপার্জিত টাকা বরচ হরে গেল ভালগাছের গোভার সার লাগাতে। পাটের কলে চাকরী হিল পিভাপুর উভবের পেশা, আর ভাতির রস বাওরা ভবের নেশা। পেশার চেরে নেশাই ক্ষমে ক্রমে বছ হরে উঠল, কলে পিভাপুর ছ'কনকেই অকালে সংসার হেকে এমন এক ভারগার বেতে হ'ল বেখানে সভবতঃ নেশার বালাই নেই।…

ক্ষলমণি বিহানার ভবে অনেক রাভ অবধি বুমোতে পারে না। বছকণ পরে ভলা আসে। বংগ্র দেখে, বামী ভার ভালগাহের ভলার এসে গাঁভিরে আহেন। ক্ষেন গৃচ্ বলিষ্ঠ ভার বেব। বিবের শুভল্টির সমর বেমন দেখেছিল ট্রক ভেনলট—ভাভির নেশার করে-বাধরা করালসার মুর্তি নর।…

খানী বেন নির্কেশ করছেন, ভবু ভালের পরিবারের নর, সারা গাঁরের সর্কানাশের বুল ঐ ভালগাহটাকে কেটে কেলভে।

---হঠাং করলমণির ভন্তা টুটে বার। নলখাগঢ়ার বনের কাঁক বিরে বহুক্দ লে এক চুট্টে চেরে খাকে ভালগাহটার বিকে। এবিকে প্রহর গঢ়িরে চলে। করলমণির চোখে খুল খাসে না।

---

তপ্ৰবাৰ যাবা বাওচার পর মুধুক্ষে-বাছীর তালগাছতলার ভাঙি-রসিক্ষের ভিড় আরও বাছতে লাগল। ক্ষলমণি কাউকে নিবেশ করলে না, কেউই বনিত হ'ল বা ভাঙির রস-পান থেকে। ক্ষতভার গ্রগদ হরে প্রার্থাসীরা ভালগাছতলার ক্ষিটুক্র নামকরণ করলে ক্ষলমণির ভাঙা। দীনবদ্ধু আর হরেন চাটুক্ষে প্রতিঃকালেই তালগাছতলার প্রসে ক্টডেলালন। দীনবদ্ধু আরও অনুষ্ঠিত লাগল। দীনবদ্ধু ভারও অনুষ্ঠিত না নিরেই শিপানের বভ

কলসীটা পিঠের দিকে বুলিরে বের, পাটের কল খেকে চুরি
করা চুরি বিরে ভালগাছের গারে থানিকটা বেনী করে গর্ছ
করে রাথে। সন্ধার সময় এসে আবার একটা পুত ভাও
বুলিরে রেথে বাবে। চাটুক্ষেই হোক আর নমন্ত্রই হোক,
এখানে সহ সমান—বিনি পরসার ভালের রস থেতে
বর্গাপ্রমের গারে আঁচক লাগে না।

প্রতিদিনই দীনবন্ধু আর হবেন চাটুন্দে রসের কসনী বিরে চলে যার, কনলমনির অধ্যরমহলের দিকে কিরেও তাকার না ওরা। কনল মনে যনে কৃত হরে উঠে। উতের সকালে বোঁপার নীচে বাকের দিকটা সহসা বেমে ওঠে। মনে মনে ভাবে যে, ভামনগরের কর পুরুবওলো সব মাটর কলনী হাতে করে কেবল ভালগাহই খুঁলে বেভার। বিশ্বর বোব করে ক্ষলমনি।

অন্নকাল পরেই ক্ষলম্পি লক্ষ্য ক্ষল বে, বাছীধানাক্ষে বেন উদিশ লক্ষ্য নল্পাগছায় বিবে কেলেছে। ওর বিধান ছিল বে, প্রামের পরিপূর্ণ বৌবনের পলিবাটতে বল্পাগছা ক্ষায় বা।

ক্ষার এবং বাঁচেও। বে মাইতে মাহুবের পদ্চিত্ত পতে
না, সেবানে আগাহাওলো বাবা উচু অরে ইাড়ার আর প্রচার
করে প্রকৃতির উভান বলিঠতা। শিলীর হোঁরাচ লাগলেই,
নাজির বিফালের মধ্যে আসে সৌক্ষা। তুইত গোলাপ আর
হাস্হহানাওলো এই সৌক্ষা বুকে নিরেই স্বাইকে এক দিন
মুখ করে দের। ক্ষলমণিও এমনি করে সুটে উঠতে
চেরেহিল। সে পারল না। তপন মুবুক্তে মারা গেল। হরেন
আর হীনবন্ধু মরে নি বটে, কিছ প্রাণ ওলের বৃত্পক করছে।
ওরা ভাই ক্ষলমণির ভাঙার ক্বেল ভাড়ির গ্রই পেল।

আসে প্রানে ভালগাছের অভাব ছিল বা; ভাভিও মিলত প্রচ্ন। কিন্ত এবন বড়ের অভাবে আর নলবাগভার বনের প্রভাবে সব শুকিরে মরে গিরে একটিতে নার ঠেকেবে, তাই ক্ষলমণির ভাঙার প্রতি ভাবের এত ভক্তি। এবিকে কিন্তু বুক্তে-বাভীর অবওঠন পরে রুক্তে-বাভীর বৌ ইাপিরে উঠেছে। বিভীর বহার্ছ আরম্ভ হরেছে প্রার চার বছর আসে। গ্রামনগরের রেল-লাইনের প্রতিকে আমেরিকান সাহেবরা উাবু কেলবে। তাই থরা কল চালিরে ক্ষল সাক্ষ করেছে। সেহ'একবার উকি বিরে কেবেছে। এক বকার মব্যেই বেল সারা নাঠ পরিকার হবে গেল। ইচ্ছে ক্রলে থরা ভানবগরের বুকের উপর বেকেও শতাকীর ক্লল কেটে পরিকার ক্রতে পার্ভ। বীভিত মাত্রপ্রতাকে ববি থরা বাঁচাতে পার্ভ ভবে শুক্রবাবি বর সারা প্রার আবার স্থান করে বিতে উঠত।

কিছ আমেদ্বিকান সাহেবেরা ভাষনগর আমকে কিংবা ক্ষলবণিকে বাঁচাতে আলে নি, ভারা এলেছে নিজেবের বার্বসিদ্ধির কলে। ভিত্ত ভ্ৰমন্ত্ৰীয় বে নিজের প্রান্ধকে বাঁচাভেই হবে। একটা ভালগাছের বব্যে বেব ভার জীবনের সবগুলো সমভা গিরে কেন্দ্রীসূত হরেছে। এই ভালগাছ বেন একট জীবন্ত সভা, তার বভরকে জার বামীকে জ্বলালে হত্যা করেছে, তিল ভিল করে শোবন জরছে গাঁরের লোকেবের জীবনীপজি। জীবনের সকল লাব বুবি ভার গলে গলে ভালরুক্ষের সর্বাহেরে পচা লিভারের সকার করছে। প্রাম্বাসীদের পৌরুষ ভাবের পচা লিভারের বব্যে গিরে আশ্রের নিজে। তাই সাক নিজের কাতিই উঠোনের বাজ্যু নলবাগভান্তালা কাইতে বসল। লাইনের ওপার বেকে ভবে সাহেবেরা মুবুজ্বোভীর ইনের বরবানা দেখতে পাবে। সেই সঙ্গে আরও দেখতে পাবে বে, ক্মলমনির ভাঙার কেবল নলবাগভাই জ্বার না। বুবতে পারবে, এবানকার পুরুষদের পৌরুষ না বাকলেও নেরের আছে শক্তি।

অনেক রাত অববি কমলমণি বুমোতে পারত মা। কিছ কাল হরতো সে একটু ভাভাভাভি বুমিরে পকেছিল। সাহেবদের কলের গান ভনতে ভনতে সে আজ ক'দিন থেকে একটু লকাল সকাল বুমিরে পকে। জাগরণে বাকে পাওরা সভব-নর, বুমিরে পকলে বরে উাকে পর্য করা বার অভি লক্ষ ভাবেই। বর্গে তপন এলে ভার ভাতে বালা, বেন ভাকে বলে, "ক্ষল, ভোষার বভরের এবং আমার অভাল-বুলুর প্রার্ভিত ভূমি কর, গাঁরের লোক্ষের বাঁচাও।

সেদিন ভোরবেলা কমল বরের বাইরে এসে দেবতে পেল বে. উঠোনে ভার মাছবের প্রদৃচিক্ত পড়েছে।

এলো হরেন চাটুজে। দীনবদু এবন পাটের কলের চাকরি ছেন্টে দিরে সাহেবদের কাছে ট্রকেনারী করছে। মাল কিমতে সে কলকাভার গেছে। হরেন চাটুজে বলল, "ভোষার দাওরার বলেই সাহেবদের শিবিরগুলো দেবা বার দেবছি। নলবাগভাগুলো সব কেটে কেললে কেন ?"

"উপায় কি চাইন্দে মণাই, এবন বেকে সাববান না হলে, ব্রের মব্যেও আগাহা করাবে। ভামনগরে আর আহে কি? ভব্ নলবাগভা।" "অবভ আপনাদের মত অকর্মা পুরুষের ফল বাক্তে গাঁরে মলবাগভা ছাভা আর কি করাতে পারে?"—বললে ক্যলম্বি।

"কি আমাদের ভূমি অকুৰা বললে ক্ষল ?" হরেন চাইন্ডে হলার হালনে। হাতে তার তাজির কলনী হিল। বেহের কুপনে বানিকটা রস উহলে মাউতে গেল পজে। নকে সকে টাই বোভার যত লাভিয়ে উঠে চাইন্ডে হাহাকার করে বলল, "তাগের বা গলা পার বা। গাঁচ জনে মিলে ভাগাভাগি করে এক কলনীতেই রাত কাটাতে হর। তার মধ্যে অতটা বলি গড়েই বার, ভবে হাত বে আর কাটতে চাইবে বা ক্ষল।" বলেই লে হল্ হল্ ভ্রে হুটে বেরিরে

গেল। বোহ্ন্যমান ভানিত্র ক্লনীতে ক্রন্তনি বেশ্তে পেল, সম্প্র ভাষ্মনহত্ত্ত্ব পৌকুর বেন হাল্লা হাওয়ার ভাল-পাভার বভ ভাইনে-বাঁত্তে হেলে-হলে পড়তে।

সভার দিকেই ক্ষলমণি আৰু নিজেয় কর্তন্য ছিল্ল করে নিরেছিল। নিজেয় হাতে মুগুজে-বাকীর এবং গাঁরেয় সর্কানাশের মূল ভালগাহটাকে সে কেটে কেলবে। মুগুজে-বংশের সর্কানাশের প্রোতে ভাষনগরের ভবিতংকে সে তেনে বেতে বেবে না। বিশ্বভগ্রার বক্তবার গলানম মুগুজের শেষ আয় গাঁঠা বলি বেওরার শাণিত বাঁভাটা সে সজোরে ছ'হাত দিয়ে ভূলে বরল। তার পর সে এগিরে গেল ভালগাহের বিকে। অভত ধ্বংসকারিই বিপ্লবী-শভিত্র মূলে শভিজাগালেন ইবর—সাহাব্য ক্রনেন উনবিংশ শভাকীর গলানন মুগুজে।

স্চীভেদ্য অন্ধকারের বব্যে বাঁচাটা চক্ চক্ করে উঠল কি না, ক্মলননি বেবতে পেলে না। বেবতে পেলে না এনন কি, দীনবন্ধু আর হরেন চাটুজে। প্রথম কোপ বর্বন দিতে গেল, তবন বেন লে শুনতে পেলে, কাতরকঠে কে বলতে "পূর্বাপুরুবের কীর্তি মই করো না।"

মনে হ'ল বশুরের কঠবর, পরকণেই বেন বেবলে চোবের লামনে ইাভিরে আহেন বানী, বলকঠে বেন আবেশ বিজ্ঞো— "আবাত কর করল, আবাত কর। অকল্যাবতে ধাংল কর।"

একটু ধনকে বাঁড়াল কনলননি। সে আবাত করল তাল-গাছের গোড়ার। উপরে বাঁথা নাটর কলনী একটু ছলে উঠল। অক্ষেপ করল না সে। রেল-লাইনের ওপারে পশ্চিবের সভ্যতা এসে তাঁরু কেলেছে। কমলননি আশা করেছিল, সাহেবেরা একদিন আসবে রেল-লাইনের এপারে। ক্ষল-ভাটা যন্ত্র বিরে ভাষনগরের তালগাহতলো কেটে ক্লেবে। সে-আশা তার সকল হর নি। রেল-লাইনের নীবার এসে সভ্যতার চাড়া গেছে আটকে।

বাঁচার বাবে ভালয়ক বৰন কভবিকত হবে উঠেছে, তবন চুরে দেবা গেল একজন সাহেবকে সলে নিয়ে দীনবন্ধুর আগননশীল নুষ্ঠিবানি। দীনবন্ধু আজকাল ভাননগরের বড় জিকোর। গাছকাটা প্রায় শেব হবে এলেছে—এবার ক্ষল-মণি দেহের সবটুকু শক্তি সংহত করে হানলে প্রচণ্ড আঘাত। শেব আঘাতে ভালগাছ গড়ল তেওে।

ভালগাৰের মীচে চাপা পড়ল ভপন মুধুজের বিৰবা মী 
ক্ষলমণি।

•

আগানী কল্যের প্রথম প্রভাতে, সভবতঃ স্তন সভ্যতার বীক্ষণন করা ক্বে ক্ষলমনির ভাঙার। এক বিন সে বীক্ষ ক্ষত ন্থীক্ষে পরিণত ক্বে। বিপ্লবের রসে মাট্র ক্লমী সেবিন নামার ক্লমীতে রণাভবিত ক্থবাও বিচিত্র নর। একটা নুষ্ঠ্ সভ্যতার ক্লাভ প্রথমিন বুকি ক্ষলমনির ভাঙার এসে থেরে পেল।

### **ভাগুর√উল** জীকু#বিহারী পাল

चात्रकित स्टेटलट्ट हीमानानाम स्टेटल श्रमक नवनवरमानदानि এক প্রকার ক্রমির আঁশ বা তছ। ক্রমিকাবে বরসম্ভার नमानाम बहे मुख्य महरू। छैनविश्म भूछांचीव स्पर्धार्दहे প্রাকৃতিক ব্রহানকারী পদার্থের অভুকরণে সর্বাধ্যম কুরিখ-ভাবে বন্ধপ্ৰভ-পছতি আবিহৃত হয়। কাৰ্ণাস-বন্ধ, মসিনা-বছ প্রভৃতির প্রধান উপাদান সেনুলোক নামে এক প্রকার কটন জৈব ৱাসাহনিক পদাৰ্থ এবং এই সেলুলোকের সাহায্য এহণ क्रिवारे क्रिय दानम वा दावन कियाती रहेवादिन। ১৮১৪ সালে রেশন, পশন প্রভৃতির অনুকরণে প্রোটন গঠিত আঁশ লকাপ্ৰথম প্ৰছত ভুইয়াছিল। কুলিম বেশ্ম উংপাদনে অভাৰিক সাকল্যাহের বছদিন যাবং অভ কোন সূতন কুত্রিম আঁশের দিকে তত বেদী মনোযোগ দেওরার প্রয়োকন হর ৰাই। ১৯৩৫ সালে ছন্ত্ৰৰাত 'কেসিন' নামে প্ৰোটন হইতে বে কৃত্রিম স্থতা তৈয়ারী হইয়াছিল তাহার নাম 'লেনিটল'। এদিকে মহন্ত-সমাতে বল্লের অভাব বহিত হওৱার নানাভাবে ভাষা ষিটাইবার চেঠা চলিতে থাকে। অর্থনৈভিক দিক দিয়া विচার করিলে দেবা যার যে, ছব অপেকা উভিক প্রোটন (বেমৰ সোৱাবিন, চীৰাবাদাম প্ৰভৃতি) কাঁচামাল হিসাবে ব্যবহার করা বিশেষ প্রবিধাক্ষক। তক্ষর সম্প্রতি চীথাবাদায লোৱাবিন, মংজের বজিত অংশ, পাৰীর পালক প্রভৃতি ছইডে ৰশ্ল নিৰ্বাণোপবোদী খুভা ভৈৱাত্ৰীত্ৰ পদভি আবিষ্কৃত হইৱাছে। পুৰিবীর সর্ব্যন্তই পাধীর পালক, মংজের বর্জিত অংশ আবর্জনা হিসাবে না করা হর ভাহা ছাড়া চীনাবাদাম প্রভৃতির প্ৰাচুৰ্য্যই লক্ষিত হয়। সুভৱাং যদি এই ছিনিসঞ্চল বল্লে ৰূপাছৱিত করা যায় তবে হয় তো ৰগতের প্রতিট মুলুরুই উপরক্ত পরিমাণে বন্ধ সংগ্রহ করিছে পারে। ইহাই হইল আর্ডিল আবিভারের গোভার তথা।

বিষ্টশ সারাজ্যের নামান্থানে বিশেষভাবে ভারতবর্ধ ও আরিকার এবং চীন, বোর্ণিও বীণ, আমেরিকা প্রভৃতি অঞ্চল প্রচর পরিবাবে চীনাবাদান উংগর হর। বিভীর নহার্ত্রের পূর্বে প্রতি বংগরে প্রার্থ আলি লক্ষ্ণ টীনাবাদান এই সমস্ত দেশে উংগাদিত হইত। ১৯০৯ সালে বিলাভের ইম্পিরিয়াল ক্ষেত্রাল ইভারীক সর্বপ্রথম চীনাবাদামের প্রোটন হইতে ছবিনভাবে বছরেরনোপরােরী হত। তৈরারী করিতে চেঙা করে। কেবা গেল, অতি অল বরচেই চীনাবাদান হইতে ছবিন পদন তৈরারী করা সপ্রব। ঐ বংসরই আরভিল নাম দিরা এই পদন হৈছেরী করা স্থব। ঐ বংসরই আরভিল নাম দিরা এই পদন রেছেরী করা স্থব। কিছ বিভীর নহাসমর আসিরা পঢ়ার সার্বাহকভাবে আরভিল তৈরারীর কার্ব্য হসিত রাবা হয়। র্ভবিরভির সলে সলে কোন্দানী পুনরার বৃত্তন উভবে কার্ব্য চালাইতে আরভ করিরাছে। ইতিমব্যে আমেরিকার রুজনাঞ্রের ক্ষবিভাগেও আরভিল তৈরারীর ব্যাপক বন্দোক্ত করা হইরাছে।

চীনাবাদানের ভিতর শতকরা প্রায় ৫০ ভাগ ভৈলাভ পদার্থ থাকে বাহা রাহার কান্দে এবং কৃত্রির মাধ্য কৈরারী করিছে ব্যবহৃত হয়। প্রোটন বাকে শতকরা ২৮ তাগ, বাকী অংশ পক্ল-মৰিষের বাভ হিসাবে ব্যবহার করা বাইতে পাঁরে। চীনা-বালাম উত্তৰভ্ৰণে পরিপক হইলে প্রোষ্টনের অংশ বৃদ্ধিত হইয়া থাকে। প্ৰথমে থোলা হাড়াইরা চীনাবাদান হইতে তৈল निकानन कविया नरेए एवं। এर नवत छेखान वाराए 80 विजीत प्रेशत मा पेर्टि (अक्टिक क्षेत्र तांचा विटम्ब क्षाराक्य । ভৈলম্ম চীনাবাদামের সহিত কম বন কার মিঞ্জিত করিলে প্রোষ্টনের ক্রবণ বিলিবে। এই ক্রবণ ছইতে কোন আর श्राद्धारंत भूमदाव श्राष्ट्रीय वाश्रिव कृषिया नहेवा काव-नाहारण এমন প্রোষ্টন জবণ করিতে হইবে যাহার ভিতর প্রোষ্টনের অংশ শতকরা ২০ হইতে ৩০ ভাগ থাকে। আরও করেকট প্রক্রিয়ার পর এই ত্রবণ অভিকুদ্র ছিত্রের ভিতর দিয়া চালিত করিলে স্থতার আকারে বহির্গত হইরা আসিবে। স্থতাগুলি বস্তবরনের উপযুক্ত করিতে হইলে আরও রাসারনিক প্রক্রিয়ার সাহাব্য লইতে হর।

আরভিল হতা দুচ্ভার পশম অপেকা কোন অংশে হীন
মহে। তবে ভিছাইলে ইহার দুচ্ভা অনেক ক্ষিরা যার।
সূতরাং প্রাণীক রেশম বা পশমের সহিত ইহা উপমুক্ত পরিমানে
নিপ্রিত করিলে বল্লবরম বিশেষ স্থবিধাক্ষক হয়। পরীকার
কোবা বিরাহে, শতকরা পঞ্চাশ ভাগ পশমের সহিত আরভিল
ব্যবহার করিলে তাহা বাঁটি পশম অপেকা কোন অংশেই
নিস্কান্ত হয় না এবং অবিক ধিন ছারীও হয়। রেশমের সহিত
এইলপ ভাগে ব্যবহার করিয়া দেখা গিয়াহে বে, এই নিপ্রিত
বল্ল রেশম অপেকা দীর্বকাল ছারী হয়; তাহা ছালা এই
পোশাক ভাগরক্ষক এবং ব্যবহারে আরামদারক। ভুলার
সক্ষেও আরভিল নিপ্রিত ক্রিয়া বয়নকার্ব্য চলিতে পারে।
বে সমন্ত বল্লে পশম, তুলা প্রভৃতি হইতে স্থতা কাটা এবং বল্ল
বরন করা হয়, সেই সব বল্লই আরভিলের কল অনারাসে
ব্যবহার করা যার। আরভিল বল্ল ক্ষমং হরিলাত।

পশন, তুলা প্রভৃতি রং করিবার নিষিত্ত যে সব রং ব্যবস্থত হব তাহা বারাই আরভিলও রং করা বাইতে পারে। পশরের সহিত নিশাইরা ব্যবহার করিতে হইলে হতাওলি কিবিং কৃষিত হওরা প্রবোধন, আরভিল তৈরারী করিবার সররই সেইরপ ব্যবহা করা হইরা থাকে। ভিকাইলে পশর বেরূপ সমূচিত হব আরভিলও তবহুরূপ সমূচিত হব বলিবা ব্যবহারে কোন অপ্রবিধা হর না। জলে ভিকাইলে আরভিল বর পচিরা বার না বা উহাতে কোন প্রকার হাতা বরে না। ছবির রেশন তৈরারী করিতে বে বরচ পড়ে আরভিল প্রত্তে তব্দেশাও কর বরচ পড়ে। এক টন চীনবালার হইতে পাঁচ শত পাউও আরভিল হতা পাওৱা বার।

### যুক্তরাষ্ট্রের ষরকল্লার কথা

### बैनोनिया छोधूत्री

बूक्तबाद्वेद विक-रेवर्ड महत्व भगार्थं करव त्यम रखवृत्ति रहत अक हेकरता कांत्रक त्यमान विश्व रव। बांबारस्य (मनाव । विद्याष्ट्री. भएत, (मरे चक्रुशांटा चनमः गांध विश्रुन, चाकानन्तर्भी ब्रुद्द चढे। निकानवृद, नदीव मीटा दीर्य ब्रुप्ट-भर रक रक धनदम (मृष्ट्र, करकी होत एक-कां**डे। पूर्य**भक्ष সোজা রাভা, সব কিছুই হাবরকে বিশবে অভিভূত করে। টাইন-ভোৱারের দীও আলোর ভৌনুন, চোধ বলসে দের। ধবরের কাগৰ বিজেভাবের হাঁকাহাঁকি নেই। অগণিত যোটৱগাড়ীর শ্রোত, প্রতি যোড়ে যোড়ে স্বতক্ষ সংক্তক—( Automatic Signalling ) দিবারাল লাল ও সবুক্ষের নিশানা এবং পণচারীদের সভর্ক করে রাভা পারা-शास्त्र जांगा (तथा । वांकी-यत मार्ठ महलान, वाज्, बांचा, ভূগর্ভে বিছাং-চালিভ ট্রেন পরিভার-পরিচ্ছন। এলেশে বাস্ত ভুগর্ভ-ট্রেনে টকিট-প্রবা নাই। সর্বাত্ত এক ভাড়া ভুগাঁচ ও দল भवना ; प्रक-ब क्लान वाबीबा काम वात्क । क्रेकिक भवीका कदांत क्यांकेत वा देन्त्र(शंकेत (सदे। याम द'न नम्ख খাৰ্কিন ভাতি বেন বছচালিতবং চলেছে। আবালবঙ্বনিতা সকলেই শুখলা ও নির্মাল্বভিতা মেনে চলছে। পঞ্ম এভিছার সু-উচ্চ হর্বা ও চোধ-ধাঁবানো পণাশালার সুৰ্মা অভিতৃত ও আৰু ই ক্রবার মতই। সম্প্র মুক্তরাট্রের भीवनवाळात त्वन अक बानमध--- छकार छव चाकारत। বে প্রামে তিন শত মাত্র লোকের বাস তার এবং নিট-देवर्क, निकारता, अवानिश्वेत नद्दवय वाञ्चिक वत वरनकी। একট বরণের। ট্রেনের ডভীর শ্রেণীর কাবরা পর্যন্ত শীভাতপ-निवयन रावहायुक्त । अस्य अधिनात्व कृष्टिक, माविका, अनमन श्व रहारीमका वारे ।

ब राप काफ हिन, यथा माहि बाखाब कूकूब विकास वक अकी मक्दा शक्त वाल वाम शक्त मा। अहे जब ক্লকের জীব এদেশে জীবনবারণ করবেই বা কি করে 🤊 अवीरन मृत्दत चारक्ता बाखात च विकृष्ठ कता एव मा । छाका দেওৱা বৰলা কেলাৰ গাড়ীর বিশানা পেলে গুহছেরা বে যার ৰাজীয় আৰক্ষনায় পাত্ৰ ৱাভায় নিয়ে আসেন, অথবা শেষৱাত্ৰে সেটাকে বান্ধার নামিরে বাবেন। গাড়ী এসে মরলা ঢেলে निरंद शोबहै द्वर्ष हरन याद । अ जब चावक्यांड शोबध हाका रिश्वा। छारे श्रृत्वाक कृत्वित कीवरमत बारात कृत्रेर काषा (बक ? वह वह द्रांटिन ६ हांत्रभाषात चावर्कना পুছিবে কেনবার বহু আছে। এ বেশের মুক্বলে পানা-पूर्वं,"देशस्त्राचान, विन, वन-वाशक क्रीक्षेत्रदात क्रांप চোবে পদে দা--- অভএব দশা দাছিবও উপত্ৰৰ বেই। বাভার

प्रत्म मानविक चारेट्य माचिव वावश् त्यरे वत्न चामाद्वय প্রতিবেশীরা অবলীলাক্তবে ও বছক্চিডে ভিন-চার ভলা উচু বাড়ী থেকে গুৰের যাবভীর আবর্জনা নীচে রাভার

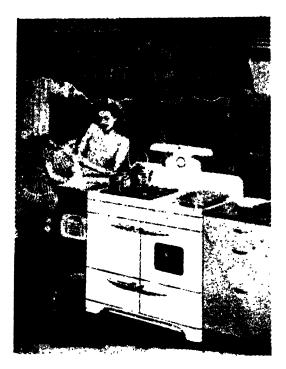


আমেরিকার রানাখর ও উথুন

উপর ছুঁছে কেলেন। এবিবরে শিক্ষিত ও অশিক্ষিত সকলেরই সমান আচরণ। সেই উপচীরমান আবর্জনারাশির উপর স্থর হা রাজ্যের পশুপন্দীর ভোজনপর্ম। ও দেশে কিছ शाका करकोटित ताका-नृत्ना ७ कामात वानार तिर। नकन वांशीएकर कांटक्ट कांगाना, ভাতে शुरनावानिह छेन्द्रव বেকে রক্ষা পাওরা যার। বেশটা বিভগ্রবান বলে ভানালা वह वांचरत कहे के मा।

चादिवकार केष्ट्यांत कीक्काक दश्य मान मान कार्य অবছার সলে আমার নিজের বেশের তুলনা প্রারট করভান। আৰৱা আমাদের প্রাচীন ঐতিহ ও সংস্কৃতি নিয়ে গর্কা করে ১ বাকি। স্বর্জ সভীতের প্রতি প্রহা প্রত্যেক কাভিয়ই বাকা উচিত, কিছ ভবু অতীতের গর্কে আছ্ছ হরে বর্ডমান বুৰবৰ্মকে তো পাশ কাটৰে বাওয়া সমীচীৰ ময়। এবেয় বছৰাৰী সভ্যতা বেকেও আমাৰের শিক্ষীর ও অভকরণ **भवराव जामक किन्नरे जाट्य**।

ৰাকিন দেশের শিক্ষা, বীভিনীভি, আচারব্যবহার, বাড, পোলাক-পরিছার,পারিবারিক জীবন সমন্তই আমাধের বেলের



बाबायरबन चान अकडि पुछ

সম্পূৰ্ণ বিপৰীত। এবেশে এসে এ বারণা মনে বছৰ্ল হ'ল বে, মাছবের আনের প্রকৃত মর্যালা ও উপর্ক্ত ব্ল্যা এরা বিভে শিবেছে। নারী ও প্রুক্ত উভরে এবানে সমান মর্যালা পেরছে। নারীরা অবনৈতিক হাবীনতা ভোগ করছে। পুরুষেরা ভাঁত্রে উপর্ক্ত সমান বিতে কৃতিত নর। কি লামাজিক, কি রাইনৈতিক সকল ক্ষেত্রে তারা পুরুষের বোগ্য সহক্ষিণী, পরালিত এবং পুরুষের মুবাপেকী কুপার পানীন্য।

এবেশ প্রায় শতকরা ত্রিশ কর নারী বাইরে আপিস ইত্যাবিতে কাল করে জীবিকা অর্জন করে থাকেন। বৈনিক আট বঙা উাবের কাল করতে হর, সপ্তাবে প্রো এক বিন দুট উাবের বরাক। উাবের স্বাস্থ্য-বীনা ও বেকার-বীনা বাব্যতার্কক। আপিসের কালের উপর আহে নিজেবের বরগৃহহালির কাল, আর স্বানী-পুর-পরিজনদের বোকান। কি চাকর রাধা বহু ব্যরসাপেক। প্রায় পাঁচশো টাকার কম মাইনেতে একট বি রাধা চলে মা। এবেশে সংসারের কাল চালাবার লভ চাকর, হারোরান, বেরারা, মুহই বার্ন, বোপা, জ্বান্বার, সুলি ও মালী ইত্যাবি ভিন্ন ভিন্ন লোক রাধার রেওয়াল্ন নেই। বিভিন্ন কালের ভরতেক এখানে নেই। প্রচুর মাইনে বিরে একট বি নিমুক্ত করলেন, সে ভার নির্বিট্ঠ আট বঙা সমবের মধ্যে উপরোক্ত বে-কোন কাল করে বেনে। বহু বার সাপেক বলে লে বেশে সাবারণ গৃহত্বের পক্ষে বি চাকর নির্ক্তকরা সভবপর হর বা। অনেকে বৈনিক বন্টা হিসাবে বা সাবাহিক বন্টা হিসাবে টকা লোক রাবেন। তাতেও বন্টার আচাই চাকা আনাক মন্থ্রী বিতে হর। সেকত রারাবারা, বাসন বাজা, কাপড় বোরা ও ইলি করা, বর পরিকার করা ইত্যাবি বর-সংসারের বাবতীর কাল বেরেরাই করে বাকেন, এবন কি বরকার পকলে ব্যাক পোঠ আপিস ইত্যাবিতেও বান। বরে বাইরে সকল কাকেই পুরুবেরা সাব্যয়ত তাবের সাহাব্য করেন।

আমেরিকার পরিবারখনো হোট—নিছক খানী-লী খ
পূল-কভা নিরে গঠিত। বহু আদ্বীর-বছন নিরে গঠিত
একারবর্তী পরিবার এবেশে নেই বলনেই চলে। হু' তিনটি
বিবাহিত তাই এক পরিবারভুক্ত হরে বাস করছে অথবা
কোনো বিবাহিতা হছিলা খডরশান্তলী নিরে ঘরকরা করছেন
এমন মুক্ত সে কেশে বিরল। সে কেশে বিজ্ঞানীরা বৈজ্ঞানিক
গবেবণা দ্বারা জীবনযালা সহক্ষ ও সরল করবার বছবিব পছা
আবিকার করছেন। এখানকার লোকেরা ব্যবহারিক বুছির
প্রায়েনে জীবনযালা নির্বাহকে সহজ্ঞান্য করে তোলে।
য়ার্কিন যেরেরা বুব কর্মান্ত। বাহ্বিরের নালা কর্ম্মের ও বরগুহুদ্বালীর কাকে তাবের নৈপুণ্যের পরিচর পেরে মুর্ক হরেছি।
এয় উপর এবের আমোদ-প্রমোদ, সভা-স্বিভি, নাচ-পান,
সিনেমা-বিরেটার এসব তো আছেই। নিজেকের বালগুর্কে
সুসন্ধিত কর্মার ছতে এরা প্রাণ্যেণ চেটা করে বাকে।

শীভপ্রবাদ দেশ, অধিবাসীদের অটুট খাছ্য। অপর্যাপ্ত ৰাদ্যক্ৰব্য ভাৰের ভাগ্যে ভোটে। সৰ্ব্যন্ত সভা বৈহ্যভিক আলোক ও গ্যাগের প্রচলন আছে, চ্বিশ বঠা উক ও শীভল ক্ল সরবরাহ হয়। বৈছাতিক বল্লের সাহাব্যে কাপ্ড বোরা ও ইন্নি করা হয়, কাঁচের বাসন ধোরা-বোহার কালও চলে। পৰের ধুলোবালিও যৱের সাহায্যে সাক হয়। বরে বরে সভা টেলিকোনের ব্যবহা আহে-প্রতিবারে কোন করতে नीह भवना बांब बंबह रुव। एवका द्वाना ७ वद क्वांब बंब, রেক্সিলারেটার, উভাপ-বন্ধ, এওলি অভি সাধারণ গৃহস্থানীর অপরিহার্ব্য অল। গুরুসংলর উল্যানের গাছপালার অল-সিঞ্বের বছটও অভিনব। প্রর বেকে এক শত বাইল চুরে কোন এক পদ্ধীবাবের কনৈক মার্কিন চাষীর গুছে রেডিও, টেলিখোৰ, গ্যাসের উত্ব, ফাপড় বোরার বস্তু, বাধন ভোলার ন वस, त्रा-त्वारत्वत वस, त्वावेत बाकी, क्वाक्वीत रेक्जावि त्वर्व চৰংক্ৰত হয়েছি। সামাত চাৰীর গুৰুত্বালীর উপকরণ আমানের ধনী-পরিবারেও কল্পনার অভীত।

আবেরিকান বারাবরের বন্দোবত চবংকার—রারাবারা, তাঁচারের জিনিবপত্র রাধা ও বাওরার ব্যবহা কত হত্ত-পরিপর কারগার হয়, বেশলে বিভিত্ত হতে হয়। রারাহরে क्रबनाव कानि ७ (वावाव नानार नार , क्रबल श्रीकाव-পৰিছের। কট নেঁকবার পর্যান্ত বৈদ্যাতিক বন্ধ আছে। কট নেঁকা হলে আপনি বকাঁ বেকে থঠে। প্ৰাইল কাঠা অবরাহ কট কিবতে পাওৱা বাব। কল কুটে উঠলে কেইনী আপৰি বিস দিৱে উঠে। অ-কলড (stainless) ইন্সাতের ও কাচের ভৈত্যপত্র বোরা-মোহা ধুব সহক। রারার ৰত বভচ্চৰ গ্যাস বা বিহাতের উত্তৰ-নেটও অভি-बर। नकारन कारक द्वा क्वांच शृर्व्य नर विक-ঠাক কৰে সাকিৰে গুছিৰে উপ্তৰে বাৰা চাপিৰে দিৰে গেলে নিৰ্দিষ্ট সময়ে আপনা খেকেই উত্তন অলে উঠে তৈত্তি হবে থাকবে। হকি বদানো আহে--বারা শেব ছলে निर्षिष्ठे नवदत्त छेलून मिट्न वाटन--शूट्ण वाधवात ज्य ৰেই। উত্তৰের উভাপ ইচ্ছাৰত বাড়ালো বা ক্ষানো यात । উत्पर्वत नाटत यह शांक्रिक निक्रे नानाटना, किन्द्रत বালা দেৰতে পাওলা বাল। এক সদে ছই তিন কিখা চার পদ ভৈরি করা বার। প্রেনার কুকারের এবন বুব बारमा । वि-काम तक्य यारम एम भागत विविद्धि निष হয় এবং ভরিভরকারি চার পাঁচ যিনিট ও ভাল-ভাভ সাভ আট বিবিটের বেশী লাগে বা। এতে বেষৰ হাছার সময় সংক্ৰেপ হয় ভেষনি গাাস ও বিছাভের বরচা কম লাগে। ভরিতরকারি মাহ মাংস কাটবার মানা অভিনৰ পছা আহে। बहे जर कविया त्य देशलंड त्यास्त्रा श्रीताहम राम बन्ना साह ভারা বর-সংসারের বাবভীর কারকর্ম করতে পারের।

কাগকের তৈরি পেরালা, গেলাস, ডিস, চারচে, টেবিল চাক্রা, ভাপকিন ইত্যাদির প্রচলন বুব বেশী। এখনি দাবেও বুব সভা। একবার ব্যবহার করে কেলে দিলেই হ'ল। শিশুদের ভাপকিন ও কাপজের কাঁথা ইত্যাদির পরিবর্জে নরম কাগকের ভাপকিন এখন বুব চালু হরেছে। এতে বেরেদের অনেক শ্রম লাখব হরেছে।

এবেশের দ্বী-পূরণ সকলেবই দেহ বাব্যের হীবিতে সর্কাণ। হর হুট উভভাবিশিই হেলেবেরে দে দেশে বিরল বর। গত পঞাপ বংসরে বেরেবের আরু গচপকতা ৩৯ রছি পৈরেছে। এর কারণ পৃষ্টিকর আহার্ব্যের ব্যবহা। সমর্থ রুজরাইে পরিক্রত পানীর কল ও Pasteurised হব সরবরাহ হয়। এবেশে শতকরা মক্ষই কম প্রভাহ হুই পান করেব। কল ও কলের রস এবের ব্র প্রির। প্রাতঃকালীর বা বৈশ ভোকবের সকে কল অপরিহার্ত্য। অভিধি অভ্যাগত-বের কলের রস পান করিবে পরিভৃত্ত করাবো হয়। গরবের সমর করলা, আহ্ব, আপেল, প্রেককুট ট্রাটোর রস আবেরিকানরা প্রচুর পরিয়াণে পান করে। কল বেশ সভা। কলের রস থের করবার উভ্যা একটি বল্প আহে—ভাই বিরে ১০০টা লেবুর রস থের করবাত গচ বিনিটের বেশী সমর লাগে

ৰা। ভাছাত ইনহাত কলের হন বাওৱারও বুব বেওৱাৰ খাছে। এ দেশের হৈ, খোল, জীব, পৰির ইত্যাধি খডি छेभारका बांका। अहा अञ्च भविवादन क्रम भाग करव बारक। देश्यक क देवेदबादभव चलाल चारम नावाब मनव चम मा ठारेटन भाउदा यात मा । किन नवज बुक्तारहे जाबाद्यत क्टिनंदरे यह कांक्टनंद नवद बीगावट्टांद नटन अस मीन कनक (पक्षा एवं। पिटम किम बात काता बाद बार बारबंद ধাৰার সভা ৬টা ধেকে ৮টার বধ্যে শেষ হবে যার। মাত মাংস ও ডিব এবের বাব্যের অপরিহার্য অস। প্রত্যুক্তারা কিছ कां जा पदा पार्क। कां हो बार्का, नामब, बाबाकिन, (मनति, (नहेन, (नैवांक, बाद-बारटनव मटक वाक्टवरे। निव, ভাৰা, দেঁকা (bake) ও বলগানো (boil) এই চার পদ্ভিতে ৰাহ ৰাংস ভৱকারি কেক্ল পুডিং ইত্যাদি সৰ বক্ষৰ বাছা করা यात । (मैंका ७ जनमारना व क्षेत्र व कार्यात्मत वार्यात উত্তৰে সমৰ বয়। এবানে ভা কিন্ত গ্যাস বা বৈচ্যভিক উত্তৰে कड़ा रह । एकिंछ ज्ञेता श्रेजभाक नतम अहा जाना नुतं एव बाद। दादाद क्ष्मिकां क्य। यनमा वा बाटनद माहे अक्यूय मारे ।

নিট ইয়র্কের বড় বড় হাঁসপাতালে চিকিংসকরণ ছাত্রবের बावराधिक निका (practical training) द्वताब कट स्वम সংক্ৰান্ত ব্যাৰি ও টাইক্ৰেড ৰোগের কেন বে উপৰক্ত পরিষাৰে भाग ना-अकरांत (मक्या केंद्राय कदाविद्यान । कटनता. व्यात्मविद्या. रमव. डेव्हिक्तक-ना श्रीक रशमद महामादी-बार्ग चार्मारवर रहरने राजी राज. तारे नव बाराबक वावित বীৰ সে দেশবাসীৱা নিৰ্দুল করেছে। সে কেশে মাছ মাংস-कित्न वांकीएक अत्न निरक्षांत्र कांकीय परकांत्र वस मा । शांश्य विद्युष्ठा क्यारे विकानरा (Butchers' School ) देवजाविक छैभारत निक्छि मा राम मश्छ गानमारत बार्ड राख भारत मा । পণ্ড বা পঞ্চীর বে-কোন অব্যের মাংস চান ভা করিত অবস্থার কাঁচের আলমারীতে বরকের মধ্যে সাঞ্চানো আছে। বেদিব রারা করতে ইচ্ছে হর না সেবিন বাইরে আহার সেরে নিতে পারেন। ভাষেরিকানরা বেধানে কাভ ভরে সেবানেই মধ্যাহেভোজন সেরে কেলে। বড় বড় বোড়ার वाक, श्रेष्याणव, कृणकाकीय वाकाय-गव कावशावह बाबाय পাওরা বার। এই সমভ হোটেল, রেভোরী, চা ও ভৃত্তির হোকাৰ, কাকেটারিরা ইত্যাদি সরকারী বাছা পরিদর্শকরণ নির্মিত ভাবে পরিবর্ণন করে বাকেন। কোবাও বাভরব্য নিৰ্দিষ্ট মানের চেয়ে নিজ্ঞ শ্ৰেণীর হলে সরকারী ভাতা বিভাগ **উক্ত** হোকাৰ বন্ধ করে বিতে পারেন।

্গত ১৬০ বংসবের বাব্যতাবৃদক অবৈত্যনিক শিকার কলে বুজরাট্রের অভি সাবারণ ভরের নরনারীও বাভের ওপাঙ্গ সহতে সচেত্য। এই অবৈত্যনিক শিকার ক্য সে- বেশে শতকরা কৃষ্টি ভাগ বিকরকর আহার করা হয়।
আবাদের যেরেকের জীবনের চ্ই-দৃতীরাংশ রহনশালার
অভিবাহিত হলেও বাভের ভণাওণ বিচারে ভাঁদের অভতা
অপরিসীন। নেই সনাতন করলার উত্থন ও বাভ প্রভাতের
পূরনো পছতি ভিন্ন নৃতন কিছু শিববার ব্যবহা ভাবের
নেই।

সর্বোপরি সে দেশে খামী স্ত্রী ঘর-গৃহছালীর কাজে পরস্বারকে সাহায্য করেন। এ ছাড়া মেরেছের স্থিবার অভ জেশে ও মার্সারি বিভালর ইত্যাদি তো আছেই। আমাদের দেশে নারীকে উপর্ক্ত মর্য্যাদার আসনে প্রভিত্তিত করতে হলে দেশের সম্প্র নারীসমাজের অশিকা ও কুসংভার দূর করে ভাবের মনে সামাজিক ছারিছবোর আপ্রত করবার চেষ্টা করতে হবে। তার অভ প্রথমেই চাই বালকবালিকাছের বাধ্যতার্লক অবৈভনিক শিকা।

খাৰীনতা অৰ্জনের পর সর্প্র ভারতে গঠনবৃদ্ধ ভার্ব্যের হচনা হরেছে। এই সময় দুতন চুট্টভনী অবলখন করে আমাদের বাত, পানীর, নিরক্ত্রতা, বাসগৃহ, বানবাহন ইত্যাধি যাবতীর সমভার সমাধান করতে হবে। এতধিন আমাদের দেশের জনসাধারণ সকল জাইর কচ বিট্টশক্তে দারী করে নিক্তি ছিল। কিছ এবন খাবীন রাষ্ট্রে রাষ্ট্রপরিচালক-দের উপরেই সকল দারিছভার ভত। বর্তমানে তাঁকের নিক্ট কেখাপ্রী বাব্যভাবৃদ্ধক অবৈভ্যাক শিক্ষা, সভা গ্যাস ও বৈহাতিক শক্তির ব্যাপক প্রচলন এবং পরিক্রত উক ও শীতন জল সরবরাহ ইত্যাধি বৈভানিক ব্যবহা প্রবর্তনের আশা করা নিক্ষই অসদত নর। এর কলে আমাদের মের্ছের সাংসারিক কর্মভার অনেক্টা লঘু হবে, এবং একমান্ত ব্যক্তরা ও রছনশালার বাইরে সংসারের সহল ক্যাণকর্মে আছ্বনিরোগ কর্মবার সময় ও প্রবাধ উল্লা পাবেন।

### খাত্য-বিভাগ সম্বন্ধে কয়েকটি কথা

ঐদেবেজ্রনাথ মিত্র

' সম্রতি ভারতীয় পার্লাবেঞ্চে করেক ধন সভ্য কেন্দ্রীর বাচ বিভাগের দীভি ও কার্যাবদী সহতে ভীত্র সমালোচনা ও মন্তব্য করিরাছেন। এ সকল সমালোচনা ও মন্তব্য পঞ্চিরা ৰাভ বিভাগ সমৰে অনাৱাসেই বলা যাৱ বে. 'চক্চকে সকল क्षवारे पर्व मरहा। वक्कान्धनरम नकानन बाच-फेरनामम विक ক্ষরিবার ও বাভ সরবরাহ অঠুতাবে পরিচালিত ক্রিবার ভ্ৰু নানাধকার পরিক্রনার আভাস হিরাহেন : উাহাবের মধ্যে বিঠার জ্যাত এউনি বাহা বলিরাছেন ভাহাই জনসাধারণের অধিকাংশের মত এবং ধারণা। তিনি বলিরাছের যে, সভাগৰ বে সকল অভিমত প্রকাশ করিবাছেন এবং বে সকল পরিকল্পার আভাস দিরাহেন তাহা বৃত্ত মহে; গভ হর বংসর যাবং এই সকল অভিযত ও পরিক্রনার আভাস বেওরা ব্ইভেবে: কিন্তু কেন্দ্রীর সরকার ও প্রাবেশিক সরকারসমূহ নীতি অভুসারে কাভ ক্রিতে পারেন নাই विनारे (वर्ष वाणावद्यात अञ्चल शतिविक वहेतारह। সম্রতি মাত্রাদে এক বক্তভার ভারতের পূর্বভন অবস্চিব বিঠার আর. কে. সমুবন চেটি বলিরাছেন, "১৯৪৩ সাল হইভে 'অবিক্তর বাচ উংপাদন কর' আন্দোলন চলিতেতে, কিছ देशांत कन चूंबरे जनखावजनक ७ देवतांकपूर्व हरेतांद्य। আমার নিজের স্কটিভিড নত এই বে, প্রাদেশিক সরকার-नवृत्द्व निक निक धारात्म कृषित छेत्रिकियान कृषा धारम হারিছ; কিন্তু এ ক্ষেত্রে ভাহার। ভাহারের হারিছ পূর্বভাবে

উপলব্ধি করেন নাই। বাভ সহতে প্রাবেশিক সরকারসমূর্ত্ব দৃষ্টিভদীর আমৃল পরিবর্তন আবস্তক।" চেট্ট মহাশরের উভিও জনসাধারণের সমর্থনবোগ্য।

"অবিক্তর বাভ উংপাদন কর" আন্দোলনের হুচনা হুইতে আন্ধ পর্যন্ত নামা কারবে (এবং অকারবেও) বিপুল অর্থ ব্যর হুইরাছে এবং কেনের বাভ-উংপাদন-যুবির অভ নামা পরিক্রনা এবং নামা মতামত প্রকাশিত হুইরাছে; এই সকল পরিক্রনা ও মতামত সহলিত পুডক-পুভিকার সংব্যাও কম নহে। এই পরিক্রনাঙ্গনির মধ্যে কতক্তলি ভার্ব্যে পরিণত করা হুইরাছে, আর কতক্তলি ভি কি ভারবে ভার্ব্যে পরিণত করা হুইরাছে, আর কতক্তলি ভি কি ভারবে ভার্ব্যে পরিণত করা হুই নাই তাহা সাবারবের ভানিবার উপার নাই। অবচ এবনও পরিক্রনা প্রভতের ভভ 'ক্ষিটি,' 'ক্নকারেজ,' 'ভেপ্টেশন' প্রভৃতির অভ নাই এবং এই উত্তেশ্বে অভ্যাধ বার হুইতেছে।

বিশেষজ্ঞগণের বত এই বে, উপর্ক্ত পরিষাণ জল সৈচনে লভকর। ৫০ হইতে ১০০ তাগ, উপর্ক্ত পরিষাণ সার প্ররোধে দলতকর। ৫০ হইতে ৪০ তাগ এবং উন্নত প্রেমীর বীজের ব্যবহারে শতকর। ৫ হইতে ১০ তাগ জরির কলম বাভানো বার। এই মতকে প্রশ্ব সভ্য বলিরা গণ্য করা বার বা। এই মত কভটুকু সভ্য তাহা নির্ণর করিবার কভ বিভিন্ন আকলের বিভিন্ন বাটতে ও বিভিন্ন আবহাওরার করেক বংগর বাবং ব্যাপক্তাবে ক্রপরিচালিত পরীক্ষার প্রয়োজন। এইরূপ

পরীকার কলে বিভিন্ন অঞ্চল বিভিন্ন বাডশভের সর্ব্বোচ্চ পরিবাণ বে কলন নির্ণীত হুইবে ভাহাই আবাদের লক্ষ্য হওয়া উচিত।

बाज-छैरभावन वृद्धि कतिवाद क्या वीर्य-(बहाबी अवर चन्नकान-त्यदांषी পविकत्रभाव श्रादांचम, किन्द वर्षमान महत्रेचनक অবস্থার অল্পাল-বেরাদী নানা পরিকলনা প্রথমেই একন ক্ষরিতে হইবে এবং অবিকৃতর উত্তম ও উৎসাহের সহিত উহাদিগকে কাৰ্য্যকরী করিতে হইবে। কিন্তু বুবই হুংখের বিষয় যে, বিভিন্ন অঞ্লের বিভিন্ন অবস্থার উপবোদী অল্পাল-মেরাদী বিবিৰ পরিকল্পনা ভেম্ম আঞ্জ সহকারে অবলম্বিত হর নাই। প্রার প্রভ্যেক প্রামেই অন্নবিভার- আবাদ-বোগ্য 'পতিত' ভ্ষমি ভাছে। ভ্ৰমেক ক্ষেত্ৰে ছোটখাটো পরিকলনার সাহাধ্যে বিভিন্ন কারণ দূর ক্রিয়া এই দকল 'পভিড' ভমিকে আবাদের উপযুক্ত করা যায়। देशांच्यन-च्यान वना यांव (य. चटनक (क्या (कार्टनार्टी) कन-সেচনের ব্যবস্থা বহুল পরিষাণ 'প্তিত' ভ্যাক্তিক "হাস্কতরা তণ **ক্ষেত্র" পরিণত করিতে পারে। আমার নিজের অঞ্চলের** একট যাত্র উদাহরণ দিব। আয়াদের অঞ্চলপ্রাট একট নদী हिन : वहरिन स्टेंटि छैरा 'राकिश मिकश' शिशाद : लाटक छेरांटक 'कांना मधी' वाल : ১৯२७ जातन चाद्या विकारनंत ভৰ্মান্ত্ৰীন পৰিচালক ভাজাৱ বেণ্টলীর সহিত কৰোপক্ষন-প্ৰসৰে "কাণা নদীর" উল্লেখ করাতে তিনি কতকথলি মাাপ दिश्वा जामादक विजाबितन (य. महीत माम 'काना मही' बर्ट, हेरांड नांच 'बाना नहीं', जानमांड नृद्धनुक्षन कर्डक क्रमात्रकारमञ्जूष्य अहे नहीं चनन कहा स्टेशांहिन।

দর্মাণেকা ছাবের বিষয় এই যে, দেশের প্রকৃত চাষী-দিনের সহিত ঘমিঠভাবে মিলিত হইয়া তাহাদের অভাব, অভিবোদ, সমতা প্রভৃতি নির্মারণ করিয়া তাহা দুরীভূত

ক্ষিবার তেম্ম কোন প্রহাস দেবিভেছি মা: ভাষাদের জান ও অভিজ্ঞতার সুযোগ গ্রহণ করিরা এবং ভাষাবের সভাবৰ ভবিষা বাড-উংপাদন বৃত্তির তেখন কোন ব্যাপভ পরি-कबना चांक्छ ग्रहीछ एव मारे। अरे केल्क्ट नग-चाट्यांनटमव প্তত্নী করিতে পারিলে বর্ডমান অবভারও সহত্যাধা প্রধানী चरमध्य कृतिहा कृषकर्य बाज-मर्क्य हैश्यांहम बाज़ारेरक পারে . ভবে এই সকল সহক্ষাব্য প্রণালী ভারাদের চোবের সামনে দেবাইরা দিতে হুইবে। উদাহরণ-সম্ভূপ হু'একটা সহক-সাধ্য প্রণালীর কথা বলিভেছি—(১) সবুস্থ সারের উপ-(২) গর্ডে গোময় ও গো-চোমা সংরক্ষণ, (৩) গোময়ের অপচয় নিবারণ ইত্যাদি। ক্রয়ক্দিগের দৈনবিদ সমস্তা সমাৰান সম্বৰে উপদেশ দিবার ও সাধায্য করিবার জভ, সর্বাসাবারণের উপকার ও উন্নতির জন্ম তাহাদিগকে সম্বন্ধ করিবার উদ্দেক্তে এবং গ্রামবাসীদের অভ্যাবস্থক দ্রব্যাদি সর-বরাছ ও ক্রমিকাত পণ্য বিজ্ঞারের অভ সমবার প্রণাদীতে প্রাম্য প্রতিষ্ঠান গড়িয়া ভূলিবার এমন কোন কার্যকরী প্রচেষ্টা coted পएए ना । ' · · व क्लाब (धनवाटर्वत हैवावत वामाएक চোবের সামনে রাধা দরকার। গ্রামবাসীম্বের সহিত এক-যোগে কাৰ কবিষা প্ৰাথবাসীদেৱ লইষাই এইবৰণ প্ৰতিষ্ঠান গভিষা ভূলিতে হইবে। কর্ত্তপক ভাহাছের উপর এইরপ প্রতিষ্ঠান চাপাইয়া দিলে ভাষা কার্যাকরী ছইবে না। শহর হইতে বড় বড় পরিকল্পনার কথা খোষণা ক্রিলে কোন স্বলই स्टेट्ट मा।

প্রার পঁচিল বংসর পূর্বে কলিকাতার মহারাজা কালিববাজার পলিটেক্নিক ছুলের প্রতিঠাতা ক্যাপটেন পেটাভেল
বলিরাছিলেন যে, সর্ব্ব বিষয়েই স্বর্গমেন্টের সাধারণ বুছির
ভাব দেখা যার। আশা করি, এখনও ভাহার উভি
সম্ভাবে প্রযোজ্য হইবে না।

### আলোচনা

### "দেনদীঘি মৎস্থের চাষ"

গত শৌৰ সংখ্যা "প্ৰবাসী"র বিবিধ প্রসঙ্গে "নেনদীবি মথন্তের চাব"
শীৰ্ষক একটি নিবন্ধ বাহির ছয়। সেনদীবি ২৪ পরগণার অন্তর্গত বোড়াল প্রায়ে অবছিত। এই প্রায়ের শীশীশিরপুরা ফুল্মরী সেবা-সমিতি ইহা সংখারের ভার প্রহণ করিয়াছেল। কলিকাতাত্ব ২৩ বি, মনোহরপুকুর রোভ হইতে শীবুক্ত দেবকুমার ঘোষ সেমদীঘির ঐতিহাসিক্ত সম্বন্ধে সন্দেহ এবং ঐ নিবন্ধে প্রকাশিত অভাভ তথ্যের (বেমন, সেনদীঘির অংশীদার ও মন্ধ-ভাষিক্রের) সভাতা সম্বন্ধে আপত্তি জানাইরা আমাধিগকে প্র

দিরাছেন। আমরা তাঁহার পাত্রের সারমর্শ্ব উক্ত সমিতির কর্তৃপক্ষকে
লিখিরা জানাইলে সমিতির সম্পাদক তাহার পাশ্টা জ্বাব
দিরাছেন এবং বোব মহাশরের উক্তিগুলির অসারতা দেবাইরা লিখিত
প্রতিবাদ জানাইরাছেন। কোন জনহিতকর কার্ব্যে ব্যাপৃত হইরা
তৎসম্পর্কে পত্রিকার পৃষ্ঠার বাদামুবাদে প্রবৃত্ত হইলে মূল উদ্দেশ্তই গঞ্জ
হর আমাদের এইরপ ধারণা এবং এইরক্ত আমরা দেবকুমার বাবু ও
ত্রিপুরাক্ষ্মরী সেবা-সমিতির কর্তৃপক্ষ উভয়কেই এ সম্পর্কে নিজেনের
মধ্যে মীমানো করিরা লাইতে অমুরোধ করিতেছি। এ বিবরে বালপ্রতিবাদ প্রকাশ করা আমাদের অভিপ্রত নছে।—প্রবাসীর সম্পাদক।

### যুদ্ধকালীন সোভিয়েট কবিতা

### এভবানীগোপাল সান্যাল

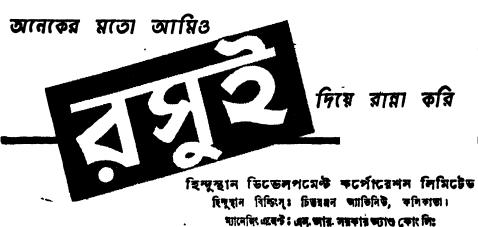
প্রাচ্য পাশ্চান্ত্য উভয়ন্তই কবিগণ বিষয় পাঠকবঙলীর কচ ভাষাত্ত্ৰী ভৱিষার অভিনাধ প্ৰকাশ ভৱিষাবেদ। এই বে নিৰ্কাচিত সমৰ্থী পাঠকগোৱী—ইহাবের মুমকে পূৰ্ণ ক্রিতে পারিলেই হয়ত কবিভার সার্বকভা। প্রভরাং ক্ষসাবারণের সহিত ঐ কাৰ্যৱস্থাৱার অধ্রপত বোগাবোগ সামাভই। कांबाहर वा कांद्याह कांद्यक्य नवश्रहरू, स्वत्रक्य कविया জীবনকে পূর্বভয়ন্ত্রণে উপলব্ধি করিবার সৌভাগ্য ক্ষ্যাবা-রণের ক্ষ। সাধু ভারদক্ত এক ছালে মত্তব্য করিবাছেন বে, ভোঠ ক্ৰিডা আমাদের জীবদকে গঠন করে, আমকে পরিপ্লাবিত করে ও বুজ্যান মনকে সঞ্জীবিত করিয়া ভোলে। উপরত্ব আর্টের বিচারে ভবিভার নৈর্বাভিক বিশিইভার শীকৃতি ব্যতিরেকেও জীবদের কেত্রে ভাষার बावशांतिक बृताहेश नवांताहकत्र नवर्षेत कविवारस्य ! পুতরাং ক্বিভার হুইট রূপ বা সভা পারণীর। ধর্মের ক্ষেত্রে अवगण्ड इरेडे नणांड क्या मार्थ चारमक कारांद कानांड अध बर्गार्क' बाद्य चारनाज्यां कविदार्थमः। अक्षे छत्यव विक. অভট ভাষার দৌভিক আবেষদ। মহাপুরুষ্টের অভুসভ ৰৰ্শ-জীবন ও লোকসমাজে ভাছার প্রচারের মধ্যে এই ছই বিক আমরা লক্ষা করি। এটিচতর অভবেদরে সহিত ভক্তি-রস আখাদন করিতেন, কিন্তু বাহিত্রে জনসাধারণের সাহচর্ব্যে নামকীর্ত্তন করিভেন। ক্ষরিভার ক্ষেত্রেও ভত্তবিচারে ভাহার विवयनक क जानित्कय नमक्त सहेश नार्वक वाश्रमा एडे হইরাছে কিনা ভাষা আলোচনার বেরণ অবকাশ আছে. ভেম্বি লোক-জীবন-প্রবাহের উপরে কবিতা কণ্ডবালি প্রভাব विश्वात श्रादिष्ठ देशत्वात्र जावाक विष्ठां । अवविष्ठ श्राद ষেত্ৰণ ব্যান করেন, 'পাছি সত্য, শিব সত্য, সত্য সেই চিরছৰ এক'--- বছৰিকে ভাষার উপলব এই সভ্য পরীক্ষিত হয় বৰ-সাৰায়ণের উপত্রে ইছা কভদুর কার্যাকরী হইরাছে ভাষা चौचा ।

শেলিয় নতে কৰিত। পাঠকের ক্রমাণ্ডিকে উচ্ছুৰ করে এবং ইহার কলে বে 'ক্রমানীবাসনসা' বাহা পুলর তাহাকে পরিপূর্ব তাবে এহন করিতে পারে। এইজভ করি এক্সানে বছবা করিরাহেন বে, নৈতিক উৎকর্বের আবর্শের ছারা তিনি ক্রমার সম্ভ প্রোভ্রমানীকে অবাং তাহারের ননকে উচ্ছুর করিতে চান। প্রভরাং এবানে লক্ষ্য করা বাইবে বে কাব্যের ব্যবহারিক বিকট শেলি বীকার করিরাহেন। কিন্তু তাহার ববার্ব নৌল্ব্য-উপলব্ধির ক্ষতা মুট্টবের বিষয় পাঠকনগলীর নব্যে আবর বাকিবে ইহাই

তাহার অভিপ্রার । অবাং কাব্যাহ্রার ক্ষনাবারণের কাব্যপার্টের নিলা বাকিলেই হইবে না, ভাহাবের ক্ষনা বাকিভ
ও রসাবাহবের শক্তি গভীর হওলা প্ররোজন । কবি নিজ বন
হইতে অভের মনে তাহার অভিজ্ঞভার সম্প্র ভাবই স্কার
করিরা হিতে চান । এই সম্প্র ভাব বনিতে আমরা বুধি ক্ষির
চিন্তাবারা ও চিন্তাবারার পন্ততি । সম্প্রভার উপলবি সাবারণের
শক্তির অভীত, কাব্যের লোকিক স্কুণ সমর্থন ক্রিরা কাব্য
রসাবাহবে রসাবাহক্ষেক্তকে সমূচিত করা একটু অসম্ভ বনিয়া
মনে হর । প্রত্ব অভীতে কবিভা বিল মানব-মনের ভাবরাশি ব্যক্ত করিবার এক্যান্ত মাধ্যম । কিন্ত কালক্রমে কবিভা
ব্যক্তি-মানসের অস্কৃতির ক্ষেত্রে অনেকটা আবন হইরা
প্রেত্ত

আৰু সোভিয়েট ক্লশিয়ার ক্বিতা ক্রিছ ক্ষমপ্রের ক্রেই রচিত হটতেতে। তথার সাধারণ পাঠকেরা ওবুষাত্র কাব্য পাঠেই পরিভূপ্ত দা হইরা ইহাকে জীবনের ক্ষেত্রে প্ররোগপৃত্তক विविश्वत्र वाचायम क्वियांत श्रद्धांत्र शान । क्रमितांत काद्यांत चारवस्तरक महीर्य विनास काशाह मार्यक्का चरीकाह कहा হটবে। যাদবিকতা ক্লীয়-কাব্যকে সমুদ্ধ ক্রিয়াছে। ক্লখিয়ার হৰকালীন কবিত। সাম্প্ৰতিক ঘটনা হাৱা প্ৰভাবিত। ভাৰেনী क्कृष क्षित्र चाकाच रहेता चननावातन अहे शृहदत चक्रच অগ্ৰাবন করিতে সমর্থ ত্ইল। সাম্প্রিক মুদ্ধের কর প্রস্তুত হুইয়া তাহায়া ভাহাথের সমষ্ট্রগড ব্যাপক প্রভিরোধ-वावश्र प्रक कविदा पिन। জনসাধারণ ধৌলিক জৰিকার শুলিকে বন্দা কৰিবাৰ নিমিত বেশব্যাণী এই প্ৰতিবোধ ব্যবহা এহণ করিল। সম্রে হেশবাসী একট মার বির আদর্শ ও উবেও বারা অভ্নাণিত হইল। আঘৰ্শ ভাংকালিক সোভিৱেট কাব্যসাহিত্যকে সমুদ্ৰ করি-बाटि, कविटिय कांबाबह्या कविवाद बहुट्यवर्ग वांशिह-রাহে। সোভিরেট রুছদালীন কবিভার মধ্যে দুরপ্রসারী ইদিত আহে। যাদবিকভার দিক দিরা এই ক্বিভাগুলির बुका चनाबादन, কোন কৰিতা পাঠকচিত্তে ভাৰগভ क्षेकारबाव एक्टै कविरक शास्त्र कि मा जाना बाबारे ज हेनाब নাৰ্বকতা নিৰ্বীত হয়। কবিও অন্তন্ত্ৰণ ঐভাবোৰের (बंदनीय क्रांनाक्ट्रीरक क्रमानिक रून। अरे केन्य्रार्वादक উপদ্ভি আহাদের ব্যাধ সম্ভূপ উপদ্ভি ভ্রিতে সাহায্য करतः। वनीक्षनाय देशांत मात्र विश्वविद्यान विश्ववित्र । "बाक्रवित्र ছটো লগ একটা তার বিশেষরণ আর একটা তার বিশ্বরণ। तिरे विषेत्रतिरे ति चनीर्यत नरक अक. तिरे वक नकांत्र वरवा







**২ ,৫, ১॰, ৩৭ প**টেও **টিলে পাও**য়া যায়। %

হুচভাবে সভ্যভাবে প্ৰভিঞ্জিত হতে প।বলে মাছুবের আর কোন তর থাকে না।" কবিভার মাব্যনেই এই হুহৎ নভ্যোপদক্ষি সভব।

বৃৎকালীন সোভিষেট কবিভার উত্তব হইরাছে জনগণের জারাভ বন হইছে। এই কবিভাগুলির বব্যে ভাহাছের উবুছ বনোভাব বিবৃত হইরাছে। সোভিষেট জনগণের হাবেশিকতা, জীবনের প্রতি গভীর আনজি ও ভবিত্ততের ব্রতি প্রভূচ বিবাস সাম্প্রতিক কবিভাবলীতে ধ্বনিভ হইরা উটিরাছে। এই তিনট কারন আলাভিভাবে সম্বর্জন শক্রর প্রতি ভীর বৈরভাব এই কবিভাগুলির মর্ম্বর্লে রসস্কিন করিয়াছে। ইহা দেশের প্রতি প্রবাচ ভালবাসা হটতে সঞ্চাভ হইরাছে।

আলোচ্যমান মুহকালীন কবিভাগুলিকে প্ৰধানতঃ তিন শ্ৰেণীতে বিভক্ত করা যায়। এই তিন শ্ৰেণী রূপ-ভার্মান মুদ্ধের ভিন পর্যায়ের সলে সম্বয়ুক্ত রাধিয়া ভাগ করা **हरन। क्षरम चरम महहेकान का विभर्दारहद दरमदश्राम।** এই সময়ে লেনিনগ্রাত অবক্রছ হয় ও প্রালিনগ্রাতকে জয় ক্রিবার বন্ধ আর্দ্রামী সর্ব্বশক্তি প্ররোগ করে। ক্রশিয়াও ম্বৰণৰ কৰে যে, লেনিমগ্ৰাভ বা টালিমগ্ৰাভ কোনজমে পক্রছন্তে সংর্পণ করা চলিবে না। অবক্তম লেনিনপ্রাডে ৰসিয়া টকোনত, মাৰ্গাৱিটা আলিগার ও বেরখোলজ ভাঁহাথের কবিভা রচনা করেন। ছিভীয় শ্রেণ্ড লক্ষ্য করা যাইবে বে যভই নাংসী আৰ্থানীর অভ্যাচার রুশিয়ার প্ৰতিবোৰ-সম্ভাকে চুৰ্ব কৱিবার জন্ত বাড়িয়া চলিয়াহে ভভই ক্লেমার জনগণের আহত আত্মভিমান ও ক্লম্র রোষ উৎীও হটরা উঠিতেছে। সৈত্রবাহিনীর অমিত বিক্রম, জীবনকে ভুচ্ছ **ক্ষরিয়া পদ্চাৎ হইভে শত্রুর বুহেকে বিপন্ন ক্রিবার প্রয়াস** এই পর্যায়ে লক্ষ্য করা যাইবে। ভূতীয় শ্রেণীতে দেখি প্ৰতিবোৰ-বাবস্থা হইতে অভিযান। 'দি বোড টু দি ওয়েষ্ট'---এই পর্বাহের বড় প্রোগান। সমস্ত অভার অভ্যাচার ও नियेत्रत्वत्र चदनाम एहत्य यक्षि कानिहे कार्यानीत्क शर्रावक ও উৎদাণিত করা যার। যে অত্যাচার রুশিরাকে পরিতে হইরাছে, দেশের নৈতিক শক্তিকে বিধান্ত করিবার হুত অধিকৃত রুশিহার দ্রীলোক ও শিশুদের উপরে যে অবৰ্ণনীয় নিশীভন একদা চলিয়াছিল ভাষার যোগ্য প্রভাতর দেওৱা হর যদি আক্রমণকারী আর্থানীর শর্মিত দলকে চুর্ণ জাৰ্মানীর পভষে ভবু রুশিরা নহে সমগ্র পুৰিবী রক্ষা পাইবে। এই প্রেরণা তৃতীয় পর্ব্যায়ের কবিভাগুলিকে অভুগ্রাণিত করিয়াছে।

সঙ্টকালের ক্বিগণের হব্যে ইকোনত, আলিগার প্রভৃতির মান উল্লেখযোগ্য। অবরুত্ব লেনিন্থাত শহুরে বুলিরা অপরিসীয় হৈছিক ও মান্সিক ক্লেশ সভু ভূরিছা ইহারা ভাষ্য স্ট করিবাহেন। কিন্ত ইহানের বচনার
পিতৃত্বিকে রজা করিবার বে অনননীর বৃচতা প্রকাশ
পাইরাহে তাহা বিশ্বরকর। শক্ত বরে হানা বিতেহে।
চতুর্ধিক হইতে শহরে বাকে বাকে পোলাখলি আসিতেহে,
গোলা কাটরা পভিতেহে এবং আকাশ হইতে বোরা আসিরা
বৃহ ও আশ্ররহুলগুলিকে বিশ্বরু করিবা বিতেহে। একলা ক্রমীর
নরনারী ভীষন-প্রাচুর্ব্য উপভোগ করিবাহিল, আল সেই
উচ্ছল ভীবনবাঝাকে শক্ত বিনই করিতে চাহে। উকোনভ
নরনারী নির্মিশেরে সকলকে আহ্বান করিবা বলিতেহেন:

Fasten a grenade to your belt And bullets' silvery veins.

দেশ ও ভাতি বৰ্ষ বিপৰ্যায়ের সমূৰীন তৰ্ম ভয় ও কাপুক্ষতা অমাৰ্ক্ষমীয় অপরাধ। সম্প্র ভাতিকে একট সমীতের প্রহারা উদ্বন্ধ হইতে হইবে:

Let songs of national revenge Replace all other songs for you.

পৰিত্ৰ নেভা নদীর ভীরে লেনিনঞাডের বীর সৈচগণ
দণ্ডায়নান। নগরীর এইরূপ মনোব্রকর রূপ পূর্বে কোন
দিন দেবা বার নাই। স্বভার আলোকে নগরী অপূর্ব এ ও
গোল্বা বারণ করিয়াছে:

Never have I seen our city look so beautiful As now in the silent close of day.

এই মুদ্ধের পরিণাম কি হইবে ভাহা কেহ খানে না, ভবুও যে নীভি সৈলগণ ও জনগণকে উদুদ্ধ করিয়া ভূলিয়াছে ভাহা এই যে লেনিনের পুণ্যস্থতি বিজ্ঞান্ত মগরী শক্ষয় নিকটে আনুসমর্গণ করিবে না। Our city shall never see a foe—ইহাই সকলের সকল।

এই সুষ্চ সম্ভ্ৰ আৰু বেন নেভা নদীর উচ্চল ভরদভাদে অনিত হুইয়া উঠিবাৰে:

We may die but no foot of the foeman Shall ever our city profane.

ইতিমধ্যে শক্ষর আক্রমণবের বাঁদিরা চলিরাছে। এই আক্রমণ প্রতিহত করিতে পারিলে ভগুবার ফ্রশিরা রক্ষা পাইবে তাহা নয়—সমগ্র ইউরোপের বাধীনভাও রক্ষা পাইবে।

বেরখোলখ-এর একট কবিভার প্রতিবেশীর সহিভ 
কবোপকথন লিপিবছ হুইরাছে। ১৯৪১ ব্রীটাখে আর্থান
আক্রমণ লেনিনপ্রাতে সর্বাণেকা প্রচত হুইরাছিল, বিমান
আক্রমণের সভেজ্ঞানি দশ হুইতে বার ঘটা থাকিত। বাতরেশনের পরিমাণ বছল পরিমাণে ব্লাসপ্রাপ্ত হুইরা নরমায়ীর
মুংবকে আরও ভীরভর করিয়া ছুলিভেছিল। মুভ্যুসমান্ত্রীর্ণ
লেনিনপ্রাতে মবে মাবে মবে নৈরাক্ত আসিরা বেবা বেব।
এই নৈরাল্য ও ভীতির উর্ব্দেশির উল্লোলম করিয়া
মুইপুরহারা অমমী ভাহার স্ক্রেশের সভামকে মুছে পাঠাইতে
বিরত হুল মাঃ

সঙ্গে পরিচয় না রাখা মানে অগ্রগমনের দিনে পিছিয়ে থাকা

### जन काजादबढ़े

মারিয়া রেমার্ক বিষের সাহিত্যসমাজে অভুত চাঞ্চা এমেছিল এই উপভান : আধুনিক যুদ্ধের ব্যর্বঠা ও অসঙ্গতির নির্মম कारिनी। दरम्यात्र विषयमीनछा चाट्ट बटारे এ वरेश्वत्र আবেষৰ কথৰো কোনো দেশে নিশুভ হবার বর। षञ्चनांच क्टब्रट्न जाहननांन भटनाभाशाः। पात्र २।•

রেয়ার্কের এখন এথনের উপভাগ। ছুই বুছের স্থাবর্তী শান্তির সন্বীর্ণ ভূমিতে এেমের এই পট জাকা। হোটেলে আৰহত্যা, বেতোৱাঁৰ গণিকার ভিড়, চোৰাগোণ্ডা পুৰ, চারদিকে রাজনৈতিক শুগুনি --- বুদ্ধোন্তর আর্থানীর এই ধাংসভাপের যথ্য দিয়ে পা কেলে চলেছে তিনভান প্রাক্তন সৈনিক। ভারেরই একজনের অপ্রত্যাশিত প্রেম আর অন্তবের দ্বাকুঠ আত্মত্যাগের কাহিনী। অভ্যবাদ করেছেন হীরেন্দ্রবাদ হস্ত। ৬৭৫ পাতার বিরাট উপস্থাস। দাস ८১

### ডি. এইচ. লরেন লরেকের গৰ

'ইরোজী সাহিতো সরেন্দর আবির্ভাব অপ্রত্যাশিত ও বিশ্বরকর। ইলেওের বনেবী চালের সাহিত্যজগতে তিনি কিছদিন বৌক্রমী ৰভের মতো বরে গেছেন। লরেনের সাহিতা-প্রতিভার উৎকর পরিচর পাঠক পাবেন এই বইএ। সম্পাদনা করেছেন প্রেমেক্স নিত্র। অভ্বাদ করেছেন বুছদেব বহু, ক্ষিতীপ সায় ও থেষেক্স দির। দাস ৩।•

লেডি চ্যাটার্লির প্রেষ ৰীডিবাদীদের কড়া পাহার৷ সবেও লরেন্সের এই উপস্থাস বে আবো চাপলোর স্ঠ ছুরে ভার কারণ লরেলের অসাবাস্ত প্রতিভা। অভুবাদ করেছেন হীরেপ্রবাধ বস্ত । বিতীয় সংকরণ বস্তুর ।

### नमात्रुटम् मग् ৰদএর গৰ

वन-अन्न न्नामा चार्फर्य, चश्चम, चगरवा চরিত্রের অফুরম্ভ এক এদর্শনী। ভার রচনার 'বুৰৰ প্ৰয়, সরল ও বাহল্যবজিত, ক্ষিত্ত সম্পূৰিক্সা বেথানে শেব হয় সেধানকার অপ্রত্যাদিত বিশ্বর একেবারে মর্বে সিমে লাগে। সম্পাদক: থেবেন্দ্র কিন্তু। দাব 🔍

### লুইজি পিরানদেয়ে৷ পিরানদেরোর গল

ইডালির শ্রেষ্ঠ সাহিত্যিক পিরানদেলোর শ্রেষ্ঠ গরের সংকলন। গভীর বেদনারসে রচনাগুলি পরিমুত। এ বেদনা কখনো মধুরের আভাস এনে দের, কখনো বিজ্ঞপের বাঁকা হাসি, কথনো বা অঞ্জল। সম্পাদনা क्रांत्रहान वृक्षामन वर्ष । गान 🔍

### **অ**স্কার ওয়াইন্ড

জীবনে বত রচনা ওয়াইন্ড কল্লেছেন ভার ভিতর সর্বশ্রেষ্ঠ নিজের ছেলেমের জন্ম লেখা ভার গদগুলি। প্রতিটি গদোর প্রতিটি কবা ৰকীয় প্ৰতিভায় উল্ফল। দালা য়ঙে রঙিন, থামথেরালি, কোমলমধুর এই পরভালি শিওসাহিত্যের অমূল্য সম্পদ। অফুবার क्टब्रस्क वृद्धस्य वद्धः। मध्यि। श्रीय श्र

### ইভানক, সোলোখক ইভ্যাদি আৰুনিক সোভিয়েট গ্ৰহ

সারা দেশে এ বই অভাবিত চাৰ্চ্যা अध्यक्ति, क्रांक बारमंत्र क्रांहर कृतिरह हिम अब यथम मरफ्ता । विद्यीत मरफ्तर পাঁচটি ৰতুৰ পৰা সংবোজিত হলেছে---আধুনিকতম লেখকদের পাঁচট্ট পর। এতে বইএর সাহিত্যিক ও ঐতিহাসিক ছয়কর वर्गागारे त्यस् त्यस्य । अञ्चलार करत्रस्थ परिचार्त्रमात्र त्मनक्ष्य । मान अ॰

### বিশ্ব-রহুম্ম

জেম্স

গ্রহলোক ও আপলোক সৃষ্টির রহস্ত নিবে আরম্ভ করে শাক্ষরকারতের কেশকালের বিরাট পরিমাণ পরিমাণ পড়িবেগ যুৱস্থ ও ভার অগ্নি আবর্ডের চিন্তনাভীত बाह्यकात विकासका तराकत कथा विन्म और आह पारि ছুবার ও প্রাপ্তন ভাষার বিবৃত করেছেন। অভুবার क्राह्म्य व्यवस्थाप (मनक्ष्यः। महित्रः। शाय ७,

#### ৰুক্তপত্থে নক্ষত্ৰ

আধুনিক সুরবীন জ্যোতিবিক্সান ও বিষয়হন্তের বে ভূমিকা शृष्टि क्रांतर्स अहे अरम् छात्रहे चालाह्या क्या हरहरह। বিজ্ঞানে অনভিজ্ঞ জনসাধারণের জভেই গ্রন্থটি বিশেষ-**ভাবে দেখা, অভিনৰ বহুসংখ্যক ম্যাপ ও আলোকচিত্ৰের** माशास्त्रा विवयस्य महस्रदाश क्या स्टब्ट्स । अञ्चराप क्रकट्न (थायत क्रिय । याद ।

সিগনেট প্রেসের প্রবর্তনার বাংলার ভর্তমাসাহিত্যের বে নৃতন রূপ উদ্বাটিভ হল তাকে আমরা সাদরে আহ্বান

Let not thy parents' home be shamed By conquest and captivity. Never will we accept defeat Never to slavery shall be brought That city where Vladimir Lenin The courage of endurance taught.

ক্ৰিতার শেষাংশে" সমগ্র ক্লিয়ার মৃত্তিপ্রাসী আছা বেদ মুর্ত হটরা উঠিয়াছে।

Dry are all the meadows Sad are the harvest fields.

বেশের এই বিষাদ্যাবা ক্লপ পরিবর্তিত হৃইবে। সময় আসিয়াছে,
—বেশব্যাপী বিপর্বারের একদা অবসাম হৃইবে। শক্রাস্ত কেশ হৃইতে বিভাচিত হৃইবে। ক্লীয় সৈত পালারমপর শক্রসৈতের পদ্যাতে পশ্চিম দিকে ধাব্যান হুইবে।

We live through storms, we live through tempests searing

But life returns, new cranes will soon be rearing Fortune soon out to sea our ships be steering Their course lies west.

May nothing disturb.

নৰ শীৰনের আবির্ভাবে সৌভাগ্য-খ্রের উদর হইবে। সেবিন পভিম বিকে ক্লীর সৈতের জরবানার পথ উন্থত হইবে,
ক্লীবার গৌরবমর বিজয় তব্ তার নিজেরই সৌভাগ্য বহন
ভরিরা আনিবে না—ইহা সমগ্র পৃথিবীর পক্তে জল্যাণকর
হইবে। সর্বাধ্রকার ভীতি হইতে পরিস্তাণ লাভ করিরা
পৃথিবী এক সাম্যবাদস্তাক রাষ্ট্রগঠনের বিকে অঞ্জনর হইবে।
নমভারিক সমাজ-ব্যবদ্বার অবসানে সামাজ্যবাদ-পরিপৃষ্ট
দেশগত বাবা বিজের ও আছ্মবাতী প্রতিষ্থিতা বিস্তা হইবে।
ভবির আশাধীর সমীত সম্ভ ক্রতের নিকটে পৃত্য আবাস
বহ্ম করিয়া আনিতেত্তে:

One happiness for all, as one sky for the earth One, universal happiness, Frontierless unconfined.

ষিতীর পর্ব্যারের কবিতাগুলিতে প্রাণস্কার করিরাহে অত্যাচারী শক্তকে পর্ব্যক্ত করিবার তীক্ত-বাসনা। অবিহৃত
কলিরার উপরে বিজয়ী গার্থান সৈত নির্দ্ধর অত্যাচার
করিরাছে। তাগুলের নির্চ্বতা হইতে নিও বা ব্রীলোক
কেই পরিক্রাণ পার নাই। সক্ত সক্ত রুতদেক ভূবারাক্তর
কর্ম ভূপকেকে ইতভতঃ বিক্রির অবহার পঢ়িয়া আছে। ভন
নদী-তীর্হ ভূতান, ইউক্তেনের উর্ক্বর কৃক্ত-বৃত্তিকা, কলিরার
পার্কত্য উবর অঞ্চল সক্তল হানে একই ব্যাপারে পুনরারতি
ব্রীরাছে। যে শভ্রতায়ল প্রাত্তর এককা লোক্চিতকে বিরুধ
করিত, পক্ত শত্তের প্রাচ্ব্য অবিত্যকার আবিত্যকার
নাইটলেলের প্রবৃর কর্ম-ক্ষমিত হইত , তাহার পরিবর্ধে
বেবা বিরাহে পরিকীর্ণ ক্যাল-বৃত্তি। যথ প্রাত্তর ক্যান্তর্যার
আদিরাকে আন্ধ প্রত্যাবাতের ।

See in ashes a small charred body there A dead child lies.

His burning home
Is amouldering still in the calm morning skies,
And in the empty street
A crater yawns,
Bleeding with strata of the murdered earth.

পিছ এই চুড জনসাধারণ ভূলিবে না : We shall remember all

The blood, the murdered child.
কোভালেমক ভের একট ক্বিভার:

When the hour will strike there shall be no

One word revenge upon your flag shall flame.

বাত্যাবাতের অভিবার ভোতক এই কবিভাগুলি সাবারণ তাবে
বিচার করিলে প্রচার-মূলক বলিরা মনে হয়। এই প্রচারের
উক্তের কনসাবারণকে সামপ্রিক হতে উরুদ্ধ করিরা ভোলা।
তথু মান সাক্ষতিক বুল্যের বিক হইতে এই কবিভাগুলিকে
বিচার করিলে ভুল হইবে। এই কবিভাগুলির মব্যে আমরা
লক্ষ্য করি সমসামরিক জীবনের পূর্ণাল প্রতিক্ষ্যি ও জীবনবিপ্লেমণ। অভীত ও বর্তমানকে এক বিরাট পরিপ্রেক্ষিতে
বিবৃত করিরা জীবন ও জীবনের অন্তর্নাহিত গুচু রহ্তকে
উদ্ঘাটন করিবরি প্রয়াসও বিশ্বরকর। এই রহ্ত ক্রপং ও
জীবনক্ষে এক ক্ষেত্র এবিভ করিরা জিরাছে। ইহারই কলে
প্রচার্ব্লক হইলেও এই কবিভাগুলি মনকে শুর্ণা করে।

কোভালেনকত একট কবিতার তাঁহার রচিত সদীত ও ভবিতার ব্যুক্ত বাধ্যা করিতে বাইরা বলিয়াছেন:

A song and a verse
Are bomb and a banner
And the voice of a singer
Can raise a class from the dust.

শেব হত্তে আধুনিক সোভিষেট কবিভাগুলির বর্ত্তকথা প্রকাশিক ইইরাছে। বেশ ও জাভির প্রভি গভীর অনুরাগ এই কবিভাগুলিতে প্রাণ ও রসসকার করিরাছে। জাভির জীবনে বৰন হুর্ব্যোগ বনাইরা আদিরাছে তবন কবিও জোঁহার নিশীভিত বেশবাসীর পার্বে আদিরা ইাড়াইরাছেন। আজার-বাইজানের এক কবি লিখিরাছেন:

It is no shame to die for the land we hold dear Westward the Soviet armies are pressing on without fear

Westward, ever westward rides Kyor-Oglu.

ক্তিৱ-ওগ্লু 'আজার বাইজান' উপাধ্যানের বিধ্যাত বীর।
প্রথম হলে স্বস্থার প্রতি যে ম্যতা প্রকাশ করা হইরাহে
তাহা বিউপার্ট জন্তের ক্যা স্বরণ ক্রাইরা বের।

নবৰিবাহিতা বৰ্ণ তাহার প্রেমান্দক্তে সংখাবন করিব। বলিতেতে বে, ববুরাও আজ হুর্ব্যোগের এই বিনে দর্শ্বসহচরী নতে:

But through dark clouds of war and fiery tempests Shoulder to shoulder with their men they go. इटीट्यंड बरे बिटन वननविनेषांचार न्यूट्यटन नामक्ट्य ভীক্শনকেশে কম্পিতবক্তে বাইতে আগ্রহায়িত। নহেন। ভরদ-ব্রার রণসর্মতীরে দাঁড়াইরা ভাঁহারা সভ্যের সন্ধীন হুইতে চাহেন,

বিষয় শীনতা
সন্ধানের বোগ্য নতে তার
কেলে দেব আফ্রাগন মুর্বাল সজার।
কেথা কবে জুম্ব সিমূতীরে
ভরণ গর্জনোজ্ঞান বিলয়ের বিষয় ক্ষমিরে
দিগজের বক্ষে নিজেপিতে।

ভূতীর অবের কবিতা ক্লণ-কার্দ্রীন মুক্রের তৃতীর পর্যার অবলবনে লিবিত। এই পর্যারে ক্লণ সৈত প্রচণ্ড উদ্বাদনার করোরাসে উবছ হইলা পশ্চিম দিকে ক্রতগতিতে অপ্রসর হউতেতে। বহু বংসরের আকাক্রা—আক্রমণকারী শক্তুসৈত পর্যায়ত করা, নিজেবের পিড্ভূমি অবিকার করিবার বপ্প আক্রমার্ক হইতে চলিরাহে। আলেজি ক্রম্ভের ক্রিভাগুলি এক দিকে বিশ্বস্থিলা, অত দিকে অপ্রস্তি ও ক্রমান্ত্রার কামনার উন্ধ্র হইরা তংকালীন ক্লশ্বের মনোভাব সম্যক্ত্রণে ব্যক্ত করিতেতে।

'দি অর্ডার অফ দি তে' নামক কবিভার হুর্থ কশাক বুবক নৈভদের চিত্র অন্ধিত হইরাছে। ভাহারাও পিতৃদন্ত ভরবারির সমান রক্ষার সুবোগ পাইয়া নিজেদের বছ মনে ক্রিভেছে। পুরক্তের জনপ্রিয় কবিভা 'দি রোড লিভ সূ টু দি ওবেটে' রূপ আভির অভীত ইতিহাস স্বরণ করা হইরাছে। যেরূপভাবে একদা নেপোলিয়ন বোনাপার্টের সৈভ মড়ে হুইতে পরাভূত ও হন্তত্ত হুইয়া পলায়ন করিয়াছিল অস্ক্রপ ভাগ্য ভার্মান-ভাতির ইতিহাস ক্লাছিত ক্রিবে।

স্থাক্তের ক্বিতাঙ্গনির সামন্ত্রিক ব্ল্য বংগঠ বলিয়া এগুলি একবা ক্ষমিন্তা লাভ ক্ষিরাহিল, কিন্তু কাব্য-সৌক্রেয় বিক হটতে বিচার ক্ষিলে ইহাবের বিশেষ সাধ্কতা উপলব্ধি করা ক্ষমি। ইলিয়া ফ্রেনকেলের "লিবারেটেড ভিলেক" নাৰক কবিভাৱ আৰ্থান সৈভেৱ পশ্চাৰণসৱৰে আছিপুৰ্ব আম্য-কীব্যবালার বে চিল্ল অভিভ করা ক্ইরাছে ভাষা বৰ্জপর্নী। একট হলে বর্ণনা করা ক্ইরাছে—In the village smithy yesterday silent, iron peacefully tinkles—ইয়ার বব্যে সম্প্র প্রাম্য কীব্যের নিজ্পুর্যে বাষা বেন বৃদ্ধ ক্ইরা উঠিবাছে। যানসপ্তেট ভাসিরা উঠে—

Familiar long-awaited seemingly unending Streehes the smoky line of huts.

লবেডেভ কুষাকের "বি রেড প্রার" নামক জনপ্রির কবিড। প্রালিন পুরকার প্রার্ড। রক্তবর্ণ তারকার হল-সংঘাত চিক্তিভ অস্ত্যালরের ইতিকাস প্রবণ ক্ষিত্রা কবি বর্ণনা ক্ষিতেছেন

For home, for all we love and for all that love us Thou callest us again to righteous war.

त्मव चराक अरे बूद्धव बामविक चानर्ग वर्षिण व्हेबारह.

Strike comrades with new strength for liberation For human rights for our beloved nation Lead us to battle, red October star.

সাক্ষতিক কবিতা মানবিক্তার স্পর্নে সাধক ছইয়া উঠিয়াছে। সোভিষ্টেই মুছকালীন কবিতার মূল্য এইবানে বীকৃত বে, ইবা সর্ববেশের নরমারীর জ্বর স্পর্শ করে।

#### সুৰৰ্গ সুযোগ

ওজন: — হুর্মনভানাশক ও শক্তিবর্মক। গেনী ও সাধু সভেদ করে—। ১ কাইড্রোকিল: —বিনা অল্লে হাইছোনিন নিযুল করে ও বাভাবিক আকারে আনে—৫১।

ক্যাট্যার্যক্টো:—বিনা অরে বতগিনের হউক চকুর হাবি কাটনা পূর্ণ দুষ্টপতি দান করে। সকল বকম চকুরোগে অব্যর্থ—৩,। তেইমফুড:—রাভ্যেগার, হঠাৎ মন্তিকে বজ্ঞারার, মুদ্দী ইত্যাবি মারাম্মক রোগের অমোম মন্ত্র। ইতা মন্তিক শীতল রাবে, ধারণাশতি ও স্বৃতিশক্তি বৃদ্ধি করে। হাত্র ও মানসিক পরিমানীকের পরম বন্ধু—৩,। কুমারকল্যার্থ:—পরীনের প্রধান বন্ধ বকুত বিকল হইলে মুড়া অবস্তুতাবী, সেই বিকল বকুতকে সংখ্যার ও বিশেষ কার্যকরী করিতে কুমারকল্যাণ অবিতীয়। বিশেষতঃ বৃদ্ধ ও শিশুর ইতা শীবনরক্তক—১,। ভাঙার লি, ভাইটার্মী—১২০, আন্তর্ভোব মুখাজি রোভ, কলিকাতা।

### বাঙ্গালা-রূপের উদ্ভবকাল বিচার

শ্রীস্থরেশচন্দ্র নাথ-মজুমদার

ৰাত্তাৰা প্ৰম প্ৰভাৱ বস্ত। আমৱা বালালী, আমাৰের ৰাত্তাৰা বালালা। এই বালালা ভাৰার প্ৰায় লাভে পাঁচ কোট লোক ক্ষা বলে। এই ভাষা-ভাষীর সংব্যা সম্প্র পৃথিবীতে লগুৰ। বালালা ভাষার আদি লেকক্ষের ক্ষা আলোচনা ক্ষয়িতে গেলে স্বপ্রথম মনে হয়, ইয়ার উৎপত্তি এবং ক্ষপের

আবির্তাব হইল কবে ? এ সহতে ভটর দাহীছ্লাব্ বলেন— "বুটার সঙ্গন শতকের আগে বালালারপের আবির্তাব হর নাই, একথা সকলেই বেলে নিরেছেন। ভিড বালালা ভাষার উৎপত্তির সময় নিরে নানা ব্রির নানা রভ। বভ চুর হলিল-প্রমাণ আময়া পেরেছি ভাতে আমাবের বলতে হয় বে বীননাথই বাজালা ভাষার আছিব লেবক। ভার লেবা চার লাইনের একট শ্লোক বৌদ্ধ গানের দ্বীকার উদ্ভুভ করা হরেছে। লে প্লোকট এই—

> ক্ৰি শুক্ল প্রমাধ্যে বাট কর্ম ক্রল সমাধিক পাট। ক্ষল বিক্লিল ক্ৰিছৰ ভ্ষরা ক্ষল মধু পিবিধি ধোকেন ভ্যরা।

এই লোকে 'পরবার্বের' 'বিক্শিল' আবৃনিক বালালা-ব্রপের স্থান। শব্দ ও ব্যাক্রণ-বিচারে আম্রা একে প্রাচীন বালালা বলব।...

মাৰপদ্মার আদি শুক্ল এই মীনমাৰ। এটা বালালীর গৌরবের বিষয় বে. একজন বালালী গোটা ভারতবর্বকে একটা वर्षमण पिरविद्यालम ।" ( भमिनारवद विक्री, चाचिम-- ১৩৫) ৰাং, ৩৮০-৩৮৬ পু: )। মহামহোপাব্যার হরপ্রসাধ পাত্রী উক্ত প্লোকের আলোচনা-প্রসকে বলেন---"লৈব বোদীদের ছু' একট বোল পু'বিতে ভোলা খাছে ৷ একট নাথদের খাদি धक मीमनात्पद लागा. चंद्रिद ৮०० भछ वहद्वद लागा. गांग বালালা, এবনও বুৰিতে কঠ হয় না" (বলীয় সাহিত্য-পরিষদের ত্রিপুরা-শাবার ৫ম বার্ষিক অবিবেশবের সভাপতির অভিভাৰণ)। মীননাৰ বালালা ভাষার আদি লেবক এ সহছে मण्डण मारे। किंड जाः मरीश्वार् वनिरण्डम--१म ৰীঠান্দের আপে বাদলা-রূপের আবিষ্ঠাব হর নাই এবং শালী बराभव वनिवादम. एक स्त्रांक्ष्ठे ५म बेहेस्स्य (नव)। ब जव **উक्टित** मत्ता पुक्ति-श्रमात्तेत चर्चात चाटा विका मत्त रह । इते बनिवीकांच क्षेत्रांनी बरामंड बरनब---"बाय-निकांत्रत्य नमह मिर्नेड कदा योगांनात्मत्य नाहित्छाद अवर ইতিহাসের বত বতাত বাবতক।" (গোপীটাদের সন্থাস--e>-৬০ পঃ)। এবন বাদালা-রপের উত্তবকাল ছির ক্রিতে হইলে মীননাথের সময় নির্ণয় করা আবস্তক। পাল্লী মহাপর এবং ডা: শহীছয়াত সভবত: বি:সলেতে মীননাবের সময় निर्वत मा कविदा थे छैकि कविदारसम ।

শীখণানৰ ও শীণিবশহর সিংহ প্রশীত এবং কেছি জ বিখ-বিভাগর কর্তৃ প্রকাশিত নেপালের ইতিহাসে আছে বে, নিজ বেশের বাদশ বর্ষবাশী অধার্ত্তি ও ছুডিক্ষ নিবারণের উপার উদ্ভাবনের কত নেপালরাক ৫২২ শ্রীটাক্ষে বিশেষভাবে আবন্ত্রণ করিরা সিঘা-মীন্দ্রাপকে নেপালের ললিত পভনে লইরা বিহা-ছিলেন। নেপালের অভত্য শ্রেট বর্ষপ্রস্থ 'কর্তব্যুহে' শীন-নাবের জীবনী আলোচিত ও এই মত সম্বিত হইরাহে।

रङ्गम वरमम--जानारमञ्जूष्टमक भर्वछ हरेरछ मीममार ৰেপালে মীভ হুইয়াছিলেন। তিনি অভুমান করেন ৫ম बैडीए मीमनाथ त्मशाल यान अवर छवाकात जमावहै 💌 ছতিক হুৱ ক্ৰিয়া বেন (R. A. S. J. Series VII. Part I, page 137, and Language Literature and Religion of Nepal and Tibet)। विकार চৈনিক পরিত্রাক্ষক হয়েন সাঙ বলেন, কপিলের শিশু কর্বাং जारबाम्यायनको क्वविद्यक eeo बिहारक विद्यामान्द्रविद्यान । ভিনি নীননাবের সহিত বেবা করেন (রেভারেও বিলা সাংখ্যের প্রস্থবাধিত সির্কী এছ )। বিধ্যাত করাসী পঞ্জি -निनर्णा (नणे जाराब Le Nepal बाद निर्विद्यादन, बैडाट्य दाका नदरक्रायदर दाक्यकारम भीगमान त्मर्ग. हिटलम । भीममार्थव निम्न श्रीवक्षमार्थ अवर श्रीवक्षमार्थव শিল পরবন্ধ সরোক্ষর বা পরসভব। প্রসিদ্ধ ভার্রান পণ্ডিড Schlaginlweit नार्ट्य ध्याप कृतिबार्ट्य-वरे भवन्यव ৭২১-২২ এটাতে ভন্তরহণ করিয়াছিলেন। এসব উভি বিচার-বিবেচনা করিয়া প্রথমোক্ত মতকে নিঃসলেতে প্রামাণিক विना अरु क्यार ब्रिक्टनक्छ स्टेर्स । छारा स्टेरन मीन-मार्चत ममत निःमर्क्ट १२२ बेडोक । मीनमावर यवन বালালা ভাষার ভালি লেবক, তবন বালালা-ল্লণের ভাবির্ভাব १म बेहात्कत शत एरेबाट छाः मरीहब्रास्त अरे छेकि यथान (बाब एवं मा। मि:मत्कार वना बाव वानाना-वार्भव व्यक्तिव क्ष बैद्रोटकरे करेबाटक ।

বালালালেশে কেন্দ্র কেন্দ্র মনে করেন বে, কুজিবাসই বালালা ভাষার আদি কবি এবং বৈক্রম মন্ত্রনাপনই বালালা প্রাবালী সাহিত্যের প্রবর্ত । এই বারণা কিন্তু প্রমান্ত । ভবে বৈক্রম মন্ত্রনাপ্রকার হতেই যে বালালা প্রাবালী-লাহিত্যের চরম উংকর্ম লাবিত ন্ট্রাছে ভাষা আধীকার করিবার উপার নাই। কবি কুজিবালের সমর আপ্রমানিক ১৪শ বীর্টার । প্রাবালী লাহিত্যে বালালার চতীবাস এবং নিবিলার বিভাপতির বুব প্রমান আছে। ইন্যার সৌরাল-বেবের পূর্বে আবিভূত ন্ট্রাছিলেন। ইন্তরের প্রথম ভাগ, এবং গৌরাল্বেবের সমর ১৪শ বীর্টারের প্রথম ভাগ, এবং গৌরাল্বেবের সমর ১৪৮৫ বীর্টার । উপরে উল্লুভ নীন্নার্ডের নেবাট কবিভা। ভাষা ন্ট্রেল থেবা বাইভেত্তে, কবি ক্রজিবালের প্রার্থ হালার বংসর পূর্বে বালালা কবিভার জন্ম ন্ট্রাছিল। প্রভাবে নিঃসজেন্তে বলা বার, মীন্নাবাই বালালা। আদি কবি।

## পুশুক - পার্চয়

নব-সন্ত্যাস (প্রথম ও বিভার ৭৬)— মবিস্ভিসুমণ মুখো-পাখার। বেলল পার্নিশাস—১৪, বহিন চাট্নের ব্লীট, কলিকাতা। মূল্য বধারমে—১, ও ৩, টাকা।

পরাধীন দেশের ভাবপ্রবণ বুবশক্তিকে অবুর্গ্গ আলোকপ্রাপ্তির বোছ

ইইনে বিরাইরা আনিরা বর্তাচুমির কর্ম্মবাহে বুক করিরা বেওরার

মহিমাই উপভাসধানির মধ্যে বড় হইরা উঠিরাই। এই সর্ববিত্যাগের
সাধনাতেই সন্নাসের নূতন রূপক বিপ্লবের পটভূমিকার জীবনদর্শনের

এই বলিও ভলীকে, জন্মভূমির ব্রুমনোচনের এই আদর্শকে উজ্জ্ঞ করিরা
আঁকিবার প্রহান উপভাসগামিতে দেখা বার—অবচ আদর্শবান ইহার
কাহিনাকে আন্তাম করিতে পারে নাই। জীবনের গভীর প্রবাভিত্তা—
তরুপ মনের ভাবে-কর্মান আদর্শে মেশানো বৃত্তিগুলি, কর্মনিও সেবার
বাাক্লতার—ক্ষন্ত নূতন কৃত্তির নেশার—ক্ষন্ত কড়ের দোলার—
ক্ষন্ত বা বসন্ত-বার্ডার প্লকে সাতরতা বির্ণের মত ব্রুমনা করিরা
উঠিলাকে, ভাগানের বৈচিন্তা ও প্রসারের সীমা নাই। ঘটনাগ্রলি বিভিন্ন
লীলাপ্রবাহেন ভূম্বতে বার্লার অভিম্বতে গ্রাইরা গিরাকে

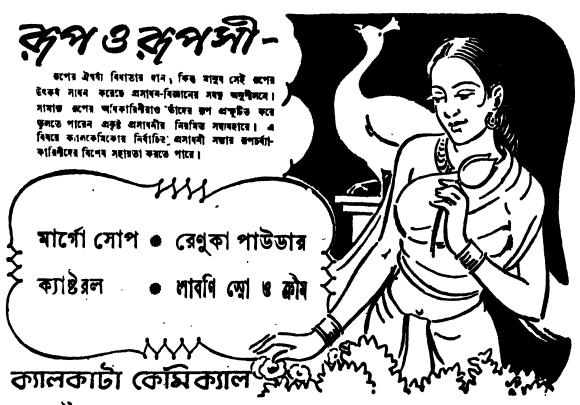
অলুর রাখিরা একটি পূর্ণস্ভার অভিম্বতে গ্রাইকে টানিরা লইরা গিরাকে।

উপগুলিখানি ছুট খন্তে বিভক্ত। এখন খন্তে আছে ব্রিলা বহাকরের খনিচন্দের চিত্র—কললাখনির মন্ত্রন্তরারা অসিকদের মধ্যে মান্তবকে খুলিলা পাইবার চেঠা—বার কলে মাতলিচরণ দাস, তার বৈরিণী কলা চন্দা, বৃদ্ধিধীন বন্দালী, ইংাদের চারি পালের নোরো বন্ধি, করলার কালিতে কালো মা গাল আব ক্সলহীন কক মাটি, এই সব উপাদান আবিকাঠের মতই সংগৃহীত হইরাছে। অলিহোত্রী মান্তার মহালয় আসিলা গাঁড়াইলাছেন এই সকলের প্রোভাগে এবং এই পটভুষিকাতেই অনুর্ব্ধ আলোক-

পিপাল, ভাৰপ্ৰৰণ ব্যক টুস্কে নৃতন স্বাসময়ে বীকা বিষাহেন ভিনি ।
এই গঙাঁট অপেকাকৃত দীৰ্থ—গৱের গভিষের বাড়াইবার বন্ধ লেখক বিশ্বমাত্র প্রবাস পান নাই, চমক লাগাইবার মত উপকরণ কইরাও নেওলিকে
কাহিনীর মুখা বন্ধ করেন নাই। বেনন --বিশ্বর বাত্তব চিত্রে গোটা বভিটার
আলোক-চিত্র পাওরা বার না, তব্ বভিটিকে চিনিতে ভুগ হর না।
কু-চিত্রপে জিনিবটাকে ভুকারগ্রহক না করিয়াও সংঘদ-কৌশলে বাভ্যকে
অ-মহিমার প্রকাশ করা সভ্য—ভাহার উদ্দেস দৃষ্টান্ত চন্দা। মিশনরী ভূলে
বন্ধ নিকালাপ্ত এই; বুলী-ভঞ্জীর বৈগাচার অমুরাগের আগুলে পুড়িরা
বাঁটি সোনা হইরাছে। এ ছাড়া খনির মান্দেজারের প্রতিকৃপতা সইয়া বেশ
খানিকটা নাটক্টির ব্যাপার স্কটি করা চলিত—সেট্কু ব্যাসভ্য সংক্ষেপে
সারা হইয়াছে।

এই বতে লবগতি ঘটনার সঙ্গে চল্পা-টুগ্র ভীবনপ্রবাহ কৌতুংলকে তেমন উলিছ করে না—ঘদিও ইহাফের মনোলগতের গীলামাধুল মনের কোবার বেন লাগিরা বাকে। এই বঙাটকে হস্-প্রভাৱ ক্ষেত্র বলা বরে। ইহাতে উত্তেজক ঘটনাপ্রির পাঠককে খানিকটা ক্ষুর করে কিন্তু রস্প্রাহী পাঠক রসবিভাবের এই প্রধানক অভিনশিতই করিবেন।

প্রধন থকের শেবাংশে টুলুর আসংবত আচরণের কল—ছিতীর থকে পৌছিবার আগ্রহকে অভিযারার উজীও করিরা ভুলে। ছিতীর থকে জাট বংসরের বাবধানে ভাই করিরা বরাকরের মাট ছাড়িরা মেদিনীপুরের মাটতে কাহিনীর কুল। এই মাট নহিলে আবীনভার সংরামকে ভীর করিবার উপাদানই বা মিলিত কোগায়? এথানে মাটার মশাই নাই— কিন্ত বে আগুনে ভিনি আরাহিতি ছিলাছেন, ভাহা শান্তি-আগ্রমের অপ্তরে পুর্ণাক্তিতে বিভয়ান। ভার এক একটি ক্লিল, মরোন্তম, বালক হীরক



প্রস্থাত আধ্যমের কর্মীবৃন্দ। টুনুর জীবনকে পরিপূর্ণভাবে বিকশিত করিতে আসিমাতে ডটনী। বিসবের ঘন-ঘটা বাছিরে এবং অন্তরে—ঘর বাঁবিবার, সেবা করিবার নেশার সজে ঘর ভাসিবার, বাবীন হইবার সাধনাতে মিশিরা ঘটনার পর ঘটনার স্টে করিরাছে। আগষ্ট বিশ্লব, বজা, জাতীর সরকার প্রতিষ্ঠা, মেদিনীপুরের বুকে জাতীরভাবোবের শক্তিকে জাগ্রত ও প্রতিষ্ঠা করিবার আরোজনে শেব হর নাই, টুনুর নিরাসক্ত সর্যাস জীবনে, পূশিমার টাদ ও বসত্ত-বায়ু মারা বিত্তার করিরাছে। এই ছল্ফাছিনীর রস এবং ইতিহাসের তথ্য, বিশ্লবীর জীবনদর্শনের সত্যকে মেলিরা ধরিয়াছে, আর সমস্ত চরিত্র তারই আলোর পথ বাছিরা অবক্তম্বারী পরিশতিতে পৌছিয়াছে। নব-সর্যাস আমাদের খাধীনতার, সাধনার সার্থক চিত্র, এমন চিত্র বাংলা উপভাসে পুব বেশী নাই। প্রক্রদেশট প্রশংসনীর।

🗃 রামপদ মুখোপাখ্যায়

মনীষী মওলানা আবৃল কালাম আজাদ — নেজাউল করীম-এম্ এ, বি এল। নৃর লাইরেরী, ১২।১, সালেক লেন, ক্লিকাডাৰ মূল্য ৩,।

গ্রন্থন বাংলাসাহিত্য স্থানিচিত , ওঁছার লিখনজ্জী সহল, কোণাও লড়তা নাই। মওলানা আলাদ সাহেবের জীবন-পরিচিত বাংলা ভাষার প্রকাশিত করিয়া তিনি অতি সঙ্গত কাল করিয়াছেন। প্রলোকগত মহাদেব দেশাই প্রশীত ইংরেজী এছ হইতে সমস্ত উপাদান সংগৃহীত হইলেও ইহা অমুবাদ নহে, বিশেব করিয়া মওলানার ধর্মতের ব্যাখ্যা অতি স্কল্পর হইরাছে—হিন্দু মুসলমান নিবিবলেধে সকলে ইহা পাঠে উপকৃত হইবেন।

নান। অনিবার্থা কারণবশতঃ প্রধ্কার ১৯৪০-এর পরবন্ধী ঘটনাবলীর ও তাহার মধ্যে মওলানা আঞ্চাদ সাহেবের চরিত্রকুর্ত্তির বিবরণ আলোচ্য এথে (বিতীয় সংকরণ) সরিবেলিত করিছে পারেন নাই। পাঠকমাত্রেই এ বিবরে অভাববোধ করিবেন। তাহার পারিবারিক জীবন সম্বদ্ধে সংবাদপত্রে সামাক্ত বাহা কিছু বাহির হইরাছিল, তাহার উপ্রেখনাত্র করিলেও পুস্তকের উপবোগিতা আরও বাড়িত।

আল-হেলালের প্রাক্তনপট দেওরা সত্ত্বেও প্রতকের মূলা বেশী ধরা ইইরাছে বলিয়া এনে হয়।

🗟 প্রিয়ুরঞ্জন সেন

সন্ধ্যামালতী—এলাক্তোৰ সাঞ্চাল। উৰা পাৰ্বালিং হাউস, ৩৪, মহিম হালদার ট্রাট, কালীবাট, কলিকাতা। দাম ১৮০।

এবানি কবিভার বই। অধাাপক আগুতোৰ সাজাল কবিভা লিখিরা প্রভিটালাভ করিয়াছেন। "সন্ত্যামালতী" তাঁহার বপ অসুর রাখিবে। কবিভাঞ্জিতে লেখকের অন্তপূ ত বেদনা প্রকাশ পাইরাছে।

ভূলতে পারি সকল কথা—পারি না সেই স্থতিটি , পালিরে গেছে কোকিল, তবু কর্ণে বাবে গীতিটি । তিনি বলিতেছেন.

বদি এল অমারাতি নিয়ে তার সাক্র অক্কার, কোন্ এরোজন হিল কপুর-ধনল জ্যোহনার? সন্দেহ জাগিতেছে,

, ভাল কি লাগিবে মোর ভালবাসা, আমার বপন—কএমা—আশা ?

এগ ক্রিতেছেন,

সন্মানালতী বলিতে পারিস্ কে ভোরে বাসিত ভালো ? দিনের অভে সালাভিস্ তুই কার কুম্বল কালো ?

ৰিজাসার উত্তর মেলে না,

বনের কাটা তুলতে পারি, মনের কাটা বার না তোলা, মরমে বা রইল গাঁবা, সহজে তা বার কি ভোলা ?

শক্ষ্যন, পদমাধুৰ্য এবং ছক্ষ-বৈচিত্ত্য "সন্মামানতী"কে মনোহর করিয়াছে। তুমি বেন বিল্লা,

काखनमावनी-मन समग्रहातिकै।

"সন্ধা**ষালতী" পাঠকের মনকে নশ্বিত করি**বে ৷

বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়ের শ্রেষ্ঠ গল্প— বেলন পাবনিশাস, ১৪, বহিষ চাট্রে ষ্ট্রেট, কনিকাতা। দাম পাঁচ টাকা।

সাহিত্যাপুরাণীর নিকট বিভূতিভূবণের নুতন করিয়া পরিচর ছিতে হইবে না। "প্রবাসী"র পাঠকের নিকট ত তিনি একান্ত ফুপরিচিত। বইবানি সকলনগ্রন্থ। বিভূতিভূবণ মুবোপাখ্যার হোট গল রচনার সিক্তর্যা সেওলি নানাধরণের। উহার রচিত গলও অসংখ্য। বিভিন্ন অসী ও শ্রেণীর নিদর্শন-অবাণ একএকটি বিশিষ্ট গল নইয়া প্রস্থানি সকলিত। রাণুর প্রথম ভাগ, বর্ষাত্রী, ননীচোরা, চেতালী, হৈমন্ত্রী, বর্ষায়, ত্রবাঙ্গণ, মাসী প্রভূতি পানরটি গল ইহাতে আছে। বিভূতিভূবণের গলের এক প্রধান বৈশিষ্ট্য প্রস্কৃত। তারার গলে হাসি ও অঞ্চ ছুই-ই আছে। গোড়ার প্রজ্ঞাগণীশ ভটাচার্থ। বিভিত্ত একটি ভূমিকা আছে। এই মিন্ধতা হাসি-অঞ্চ-রজ-রহস্ততরা তাঁহার গলভালিকে ফুলর করিয়াছে। এই মিন্ধতা ভাষার শিশু ও কিশোর চরিত্রকে স্বম্বুর করিয়াছে। খাঁহারা আগেই গড়িরাছেন এবং গাহারা নৃত্রন পড়িবেন, উভরপ্রক্রার পাঠকের পক্ষেই এই স্থানিবাচিত গল্পাংগ্রহ আনন্দের কারণ হইবে।

শ্ৰীশৈলেন্দ্ৰকৃষ্ণ লাহা

'পদ্মা প্রবন্ধা বদী' ও 'রাজধানী'র প্রসিদ্ধ লেখক

সুবোধ বসু-র

### পাখির বাসা

করম : "রুচি-বৈদধ্যে, যাধুর্য-ক্ষরে এক বজুব রসলোক গড়িয়া উটিয়াছে।" বৃল্য ২০০ টাকা।

পদ ধ্ব নি

নতুন কালের নতুন উপভাগ। ২র সংকরণ। ব্লা ৩।•

বৈশাথে ভিন্ন বাহির হইবে

এছাগার: পি ০৮ ল্যালভাউন রোভ, কলিকাডা---২>



নিয়োগ বিষয়ক অর্থনাত্ত্তের বিলেষণ — জ্বাণক কল্পনাল নান্যানী। ১২৩ নং চিন্তরপ্রন এভিনিউ, কলিকাতা হইতে এছকার কর্ত্তক প্রকাশিত। পূঠা ৭৪। মূল্য ২০০।

বর্তমান প্রন্থে লেখক খনবিজ্ঞানের একট জটল বিষয়ের আলোচনা ক্রিরাছেন। একাদশট অধ্যারে প্রস্কার কেইলস্ ও সেকেলে (ज्ञानिकान) वर्षनाज, वर्षरेनिकिक नमका, क्वेन्तिन वर्षरेनिकिक পরিভাষা, সঞ্ম ও পুঁজি নিরোগ, নিরোগ ( এশ্ররফেট ), হুদ, নিরোগ সরবরাহের (সাগাই) দিক, ব্যবসার চক্রাবর্ত্ত (টেড সাইকেল) প্রভৃতি ৰিপুণতার সহিত আলোচনা করিয়াছেন। লেখকের মতে "প্রত্যেক দেশ বদি পর্ব্যাপ্ত পরিষাণে প্রয়োজনীর সামগ্রী উৎপাদন করিতে থাকে এবং ধন বিভরণ বৈৰম্য বদি নিৰ্দিষ্ট সীমা-রেধার বাইরে না বার, ভা হলে ্ৰিৰা ৰজপাতে, বিনা পৰিশ্ৰমে এমন সব রাষ্ট্ৰ পৃথিবীৰ বুকে পড়ে উঠবে বা সমাজতাত্রিক ব্যবহার বগ্গকে ধনতাত্রিক ব্যবহার কাঠামোর মঁধ্যেই সকল করতে পারবে।" পরেই লেখক বলিতেছেন, "সারাটা পৃথিবী লোডা পূৰ্ণ নিৰোগ বেদিন আসৰে সেদিনই কেবল বিখ-শান্তি সভৰ হবে, তার আগে নর " খুব থাঁট কথা। 'অতিমূল' বা মূলাকীতি সকলেও লেখক প্ৰদক্ষমে আলোচনা করিয়াছেন। বিখ্যাত ইংরেজ অর্থনীতিবিদ কেইলুসের মতবাদ গ্রন্থকার বিশেবভাবে আলোচনা করিয়া উহার মূল্য নির্দারণে প্রয়াস পাইরাছেন। অবশ্র বে মতবাদ আমাদের নব নব আৰ্থিক পরিছিভির ব্যাখ্যা করিতে পারে এবং উহার সমাধানের উপর আলোকপাত করিবে ভাহাই সুধীসমালে গ্রহণীর। বিশেব কোন দেশের বিশেষ সময়ের **অবছার ভিত্তিতে বে ধনবিজ্ঞানের** সূত্র রচিত **হই**রা নির্বিচারে দেশ-বিদেশে শীকৃত হইবে সেদিন আর নাই। বাস্তবের

দৃষ্টিতে এবং সমগ্রতাবে মানবকল্যাপের পরিপ্রেম্পিতে বৈজ্ঞানিক কুট্রের নে মূল্য ধনবিজ্ঞানের মতামতও সেই মূলাই প্রত্যাশা করিতে পারে—উহার বেশী নহে। বাত্তব জ্ঞান গণিতের নির্মে চলে না—বনবিজ্ঞানীর একথা সর্বাদ্য সরণ রাখা প্রয়োজন। সণিতবিশারণ অর্থণারীরা একথা অনেক সময় ভূলিরা বান বলিরা নানা ভ্রান্ত সিদ্ধান্তে উপনীত হন।

এই পৃত্তকের শেবে একটা মূল্যবান পরিভাষা-তালিকা কেওরার বিবর-বস্তব লটিল আলোচনা পাঠকের নিকট সরল হইরাছে। এরপ এই আরও ভাল কাগলে ছাপা উচিত ছিল। এইখানি ধনবিজ্ঞানের পাঠকমহলে, বিশেষ ভাবে ছাত্রসমালে আগর-লাভ করিবে বলিরা আশা করি।

স্বাধীন ভারতের জাতীয় পতাকা—এরাখালদাস সোম। দাশগুর এও কোম্পানী, কলিকাডা। পুঠা ৬০, মূল্য ৩, ।

ৰাতীয় পতাকা সম্বন্ধে বই জ্ঞাত্তৰ্য তথ্য এই পুন্ধকৈ সমিবিট হইরাছে। ১০ই আগষ্ট ১৯৪৭ তারিখে বাধীন ভারত যে পতাকা উজ্জীন করিরাছে তাহার পশ্চাতে রহিরাছে শতান্দীর সাধনা, আশ্ববলি ও রজ্জের আছতি। এই দিনের আনন্দে বেন আমরা অতীতকে না ভূলি লেখক তাহা দেশের ভাই-বোনদের স্মরণ করাইরা দিরাছেন। পুন্ধকে করেক-বানি ছবি দেওরা ইইরাছে।

ঞ্জিঅনাথবন্ধু দত্ত

ভারত কি করে স্বাধীন হল— প্রবিভাস দে। ছাটর
আসর। ৭, সোরালো দেন। ৭৭ নং বর, কলিকাতা। বৃল্য দশ আনা।
সহল ভাষার দিখিত কিশোর-কিশোরীদিসের পাঠবোগ্য ভারতবর্বের
বাধীনতা-সংগ্রামের ইতিহাস। ব্রিটশ শাসনের গোড়াগন্তন হইতে
বাধীনতালাভ পর্যন্ত প্রধান ঘটনাঞ্জি স্বত্বে বৃধিত হইরাছে।

### নৰ ৰসভেৱ গীভিমাল্য

শন্তম ভট্টাচার্ম (পরজনমেতে ভোষারে GE 7454 (হাডে নিরে যণিমালা -আধনিক শ্রবীন মুদ্রোপাধ্যার
GE 7455 (ভোমার ভীবনে এসেছিছ
লোনগো মানসী প্রতিমা
—মাধূনিক

কলছিয়া হোলি পাৰ্টি
GE 7462
বাৰ এলো হোলি
—হোলির গান

GE 7457 (প্রাণ বদ্ধরে
হাররে আমার বদ্ধ কই
—ইসলামী সলীত

লাৱলা আজুমন্দ বান্ত

জীমভী ইলা সেন (আমার না বলা বাণীর GE 7456 বিদি জানতেম —রবীশ্র-সঞ্চীত ভাৰস্থল হালিম চৌধুৱী

(প্ৰাণ বঁধুৱা কই স্কালো

(কোথা গেল প্ৰাণ গোবিৰে

—পন্ধী-সজীৎ

'চিত্রমারার 'ক্বি' বালীচিত্রের গান-



### ক্ষিকান কে

কলিকাভা — বোম্বাই — দিল্লী — লাহোর — করাচী

সাধু সভাপতি স্বামী শ্রীষ্তেশ্ব গিরি মহারাজ স্বতিকথা—বামী সভাষত গিরি। বহেণ লাইরেরী। বর্ণনোলিস ইট, কলিকাতা। মুল্য ২, টাকা।

ৰীবন সকৰে বাঁহারা তছজিজাত্ব ভাঁহারা নিরি মহারাজের স্থৃতিকৰা পড়িয়া শিক্ষা এবং আনক্ষ উভয়ই পাইবেন। নিরি মহারাজ আধুনিক পাশ্চান্তা শিক্ষা এহন এবং সংসাব-আগ্রনে প্রবেশ করিয়াছিলেন, দেশী ও বিদেশী ধর্মলাত্র পড়িয়াছিলেন—জাঁহার উপদেশ গভীর চিন্তা ও অভিজ্ঞতা-প্রস্ত ।

নিশাঠাকুরের কড়চা--- এশনিভূষণ দাশগুর। এগুর লাইরের। ২০৪, কর্ণজ্বানিস ব্লট, কলিকাতা। মূল্য কেড টাকা।

গভ-কবিতা এখনও নানা পরীক্ষার মধা দিয়ে চলেছে। কারও হাতে কুটে উঠছে ছন্দলাবণো, কারও হাতে হরে পড়ছে বর্গনাগদীন, নারদ। বর্তমান কাবাপ্রছে কবি নিপৃণ্থাতে প্রয়োগ করেছেন এই নব রীতিকে, গছে পছে দিয়েছেন জোড় মিলিয়ে। মাবে মাবে হঠাছ হু' চার পাছির পেবে বেজে ভঠে ধ্বনির মিল, লাগে মুহু ফুরের নভার। আবার চলতে খাকে স্থাতিভাহিনী অপেকার্কত অবাভ্বর ভলীতে। আমাবের পুরাহন প্রায়া জীবনে ছিল এত বহা, এত করনা, এত বহুত্ত। আলোহারার বিটিন্স রঙে কবি একে গছেন হবির পর হবি। সেই বালকাড়—বার ভিতরে একবার ছুকলে "নহুনা কিরতে পারত না কেই।" আর "তে-কোণা দীবি" বাতে চৈত্র সংফাভির দিনে "হব হব মহাদেব" বলে সল্লাসীলা জলে পড়ত কাপিয়ে"। ":সনিন গেছে ক্রিয়ে—সকালের সোনার আলো—অলে বার বেনন সালের আল্রা—যলে বার বেনন সালের আলো—অলে বার বেনন সালের আল্রান।" প্রথম কবিভার নামে বইরের নাম। ভা হাড়া আছে 'ব্যন্থা নাঠা, 'ভামকলা', 'দেখা ও দর্শন' এবং 'এক বে

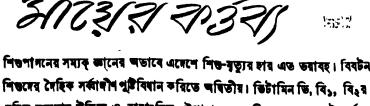
ছিল মাপুৰ' নামে চারট কবিতা। এবেৰ কবিতার রহস্ত-বন পুরাতন কাহিনীর মধ্যে পাঠক মধ্যমুখ হবেন।

विशेदबन्ताथ मूर्याणाशाव

द्वारियशं व्यम्पानम् अस् नर्वः -- विवासक्षतः हक्स्स्वी। क्षत्रांभकः --- व. हक्ष्स्वी, वि. व. व्यक्षसाही। मृना २५०।

অবাছিত ঘটনাপূর্ব পরিবেশী ও. অসংবত বর্ণনা ভারাক্রান্ত একখানি উপভাস। পড়িতে পড়িতে বৈর্ণচাতি ঘটে।

উপভাগ। নারক অসিত নর শত টাকা বেতনের চাক্রে। ফুপরুষ এবং ভাল ঘরের ছেলে—অবিবাহিত। ফুডরাং তাহাকে কেন্দ্র করিবা বহু কুমারী মেরের করনার অন্ত নাই, কিন্ত অসিতকে অতাত আকর্মিক ভাবে রেখা নাবে একটি মেরের প্রেলে পড়িতে দেখা সেল—বাহার সহিত প্রথম সাক্ষাথ ঘটে তার ভালহোসী কোরাহের মোড়ে। কিন্তু এই সাক্ষাথকে পরিসরের পর্যারে লইরা আসিতে নিরা যে সপ্তা পরিবেশের কৃষ্ট করা হুইরাছে ভাহার প্রশংসা করা বার না। ইহার পরে নানা ঘটনাবৈচিয়োর ভিত্তর দিরা উভরের বিবাহ ঘটনা রেখা আর্ফা চরিত্র নারী। সে ভাকার। অরুগত্ব পরি মনে একট ছোই হাসপাতাল করিবাছে, এবং সেবাধর্মকে মে জীবনের চরন আল্প বলিয়া প্রহণ করিবাছে। বিবাহের স্থান একটা মৌধিক প্রতিশ্রাতি দিলেও বিবাহের পরে ক্ষামিতের সে



সহিত স্বাবান উদ্ভিক্ষ ও রাসায়নিক উপানানের সংমিপ্রণে প্রস্তুত এই পূর্ণাক টনিকটি প্রস্তোক শিশুকেই, বিশেষ করিয়া দন্তোদসমের সময়, সেবন করান উচিত। বিষটন নিয়নিধিত রোগে বিশেষ উপানারী:—শিশুদের বৃহত্তের শীড়া, অবীর্ণতা, হ্ব ভোলা, পেট দীপা, কোটকাটিত, রজপ্ততা, সমতা, ব্যাইটস, বিকেটস ইতাাদি।



লিষ্টার এটি সেপটিকস্ • কলিকাতা



ভাহাকে হার যানিতে হয়। অবলেবে অসিভের জীবনপথে দীলার সাক্ষাৎ মেলে।

বেখা এবং শীলার চবিত্র চৰংকার কুটরাছে। ছুট চরিত্রই বিভিন্নথাঁ থালার এবং পকীরভার জুশরিকুট। কিন্তু আদিতের প্রভিন্নলবিকা অবিচার করিলাছেন। নারী-চরিত্রগুলিকে প্রাথান্ত ছিতে হইবে
লিরাই অসিতকে এভাবে চিত্রিত করা উচিত হর নাই।

় সামাত কতকভানি ফ্রেট বার দিলে উপভাসবানি অধিকতর প্রবণাঠ্য ইত।

বিসর্জ্জনের পর—লীবেলকুমার লার। প্রীণীপ্তেলকুমার রায় কর্তৃক রহস্তলহরী পাবলিশিং হাউস, রাণাঘাট, নদীরা হইতে
প্রকাশিত। মূল্য :।।।

পুত্তকথানি বহুতলহরী উপজাসনালার ২১৬.নং উপজাস। দীনেঞ্কুনার রাবের নুতন করিরা পরিচর দিবার প্ররোজন নাই। এই শ্রেনীর উপজাস নিথিরা তিনি এক্রেনীর পাঠক্ষহলে বিশেব পরিচিত্ত হইরাছিলেন। আলোচা উপজাসথানিতেও জার বচনানৈপুলোর পরিচর পাওরা বার। পড়িতে পড়িতে একটা বিশেব ধরণের আগ্রহের কটি হর। কিন্তু বানান ও হাপার ভুল অভ্যন্ত বেশী।

8। বৌনাঞ্জ এখন বঙঃ— এমসিডকুমার চটোপাথার স্কলিত; রোমাঞ্ এখাগার, ১২, হরীতকী বাগান দেন, কলিকাতা। মুলা ২১।

এই সম্বলনে ছয়ট গৰ স্থান লাভ কৰিয়াছে। বাঁহায়া এই শ্ৰেণীয় কৃষ্ণ বুৰ্ণ গণ্ড ভে ভালৰাসেন, ভাঁহায়া বইখানি পড়িয়া আনন্দ পাইবেন বুলিয়া আনাদের বিযাস। বইখানি এক নিঃবানে পড়িয়া কেলা চলে। বিশেষ করিয়া রাডের অভিষি, বিভীষিকা, সংঘর্ষ ও লবুজিয়া সামক প্রম কর্মট বিশেষ চিন্তাকর্থক হইরাছে।

বানান ভুন পুত্তকবানির একটি বড় ফটি। প্রাক্তরণট কুলর।

শি শু-কবিত। — শ্রীমাণ্ডটোৰ কাৰ্যতীর্থ সম্পাধিত। বীতাস কর্ণার—এমং শক্ষর ঘোর্য দেন, কলিকাতা।

ছোটদের কৰিহা-সকলন। বৰীজনাথ ঠাকুর হইতে আরভ করিয়া বহু থাভিনামা কৰির মোট ১৯ট কবিতা ইহাতে খানলাত করিয়াছে। প্রায় সবঞ্জি কবিতাই ফালখিত। পুত্তকথানি ছোটদের কাছে আয়ুত হইবে।

ঞ্জীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত

মিকুর গল্প — এবিষল বহু। পরিবেশক – ছো:দের আসর। ১৬-এ, ডক ট্রাট, কলিকাতা।

বছর দলেক আগে 'সতিয় না বর্ধ' এই নাবে সমালোচ্য প্রকর্ণানির প্রথম সংবরণ প্রকাশিত হয়। এই পৃত্তকের গরগুলি কলিকাতা বেতারে তথনকার ছোটদের আগরের পঠিত হইগা বিশেষ সমাদরলাত করিছাছিল। দীর্ঘকাল পরে ইহার দির্ভীয় সংস্করণ প্রকাশিত করিছা বেতারের আগরের নির্মালতাই অধু ছোটদেরই নয়, বড়দেরও কৃত্তপ্রভাজন হইগাছেম। এই বইরের প্রভোকট গলই বশিষ্কার মত নিটোল, অনাবিল হাজবংগ সম্পাদ। নিলী সমর দের আঁকা রমনীর প্রক্রণেট প্রকর্ণানিকে শিত্তবের নিক্টির প্রতিশত লোজনীয় করিয়া তুলিরাছে।

ছবি ছড়ায় নেভাজী— শ্রীবিল্লন্তন বসাক। সি সি বসাক এও স্প। ১২৭, সম্প্রিদ্বাড়ী টুট, কলিকাতা। দাম দশ আনা।

ইহাতে ছবি ও ছড়ার সাহাব্যে শিগুদের উপবোধী করিয়া নেতারী কুড়াবচন্দ্রের জীবনের প্রধান প্রধান বটনাগুলি বর্ণনা করা ছইয়াছে।

# ইউনিয়ন ব্যাঙ্ক অফ বেঙ্গল লিঃ

(১৯৩০ সালে স্থাপিত)

হৈড অফিস—৮নং নেতাঙ্কী স্মভাষ ব্লোড, কলিকাতা

পোষ্ট বন্ধ নং ২২৪৭

ফোন নং ব্যাহ ১৯:৬

### সর্বপ্রকার ব্যাঞ্জিং কার্হ্য করা হয়।

### শাখাসমূহ

লেকমার্কেট (কলিকাতা), সাউধ কলিকাতা, বর্দ্ধমান, চন্দ্রনগর, মেমারী, কীর্ণাহার (বীরভূম), আসানসোল, ধানংগর, সম্বলপুর, ঝাড়হগুলা (উড়িয়া), ও রাণাঘাট।

> ম্যানেজিং ডিরেক্টর এইচ, এল, সেনগুপ্ত

छन्ति — श्रीयहर सनाल तमन । চल्रमाल नाहेर असी, नीहरें। मृत्य ১।• টाকা।

প্রস্থার সাহিত্যক্ষেরে ন্থাগত নহেন। উহার 'আবচার' নামক প্রকথানি বিভিন্ন সামরিক পত্রিকার প্রশাসত হইরাচে। বর্তমান প্রকথানি গল্প দক্ষন। ইংতে ছন্দা, ল্যোংখা, বান্ধবী, বোগাবোগ, চাদ নর মাট, দান নর পাওনা এবং আল ও কাল—সবস্থ এই সাতটি গল্প লান পাইরাছে। 'ল্যোংখা' গল্পটি যোপাসার একটি বিখাত গল্পের ছারা অবলম্বনে লেখা—বাকিগুলি যৌলিক। লেখাকের গল্প বনাব ভঙ্গীটি চিন্তাক্ষ্ক

রবীকুনাথের কথা—শার্রচরণ বন্দ্যোপাধার। সাভাল এও কোম্পানী ১-১ এ, কলেজ খোরার স্বষ্ট, কলিকাতা। মূল্য তিন টাকা আট আনা।

লেখক 'বলীয় শক্কেবির' স্কলিয়িতা হিসাবে বিশেব প্রতিষ্ঠানান্ত করিয়াছেন। রবীক্রনাধের প্রস্থান অনুসারেই তিনি এই অভিধান স্বলন কাব্যে প্রবৃত্ত হন। শান্তিনিক্তেন প্রক্রচন্যাক্রম প্রতিষ্ঠার পোড়ার দিকেই তিনি অধ্যাপকরূপে ইহাতে গোগদান করেন এবং রবীক্রনাধের সাহচব্য লাভ করিয়া জাহাকে ঘনিষ্ঠভাবে জানিবার ছুল'ভ সোভাগ্যের অধিকারী হন। বর্ত্তমান পুত্রকে তিনি আঁর সেই প্রতাক্ত অভিজ্ঞতার কথাই লিপিবছ করিবাছেন। তহা 'মানুব' রবীক্রনাথকে আনিবার ও ব্যবহার পক্ষে বিশেষ সহারক হইরাছে। শান্তিনিক্তেন আশ্রমের আদিপর্প সম্বর্ধে গাঠক সাধারণের কৌতৃহত্বের অন্ত নাই—এই পুত্তক হইতে সেই কৌতৃহ্ল কথকিং নিবৃত্ত হইবে। 'বাশ্মীকির ভূমিকার ক্রীক্রনাথ' অধ্যারে লেখক প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা হইতে 'বাশ্মীকির প্রতিভা'র

অভিনরের কথা এমন নিপুণভাবে বর্ণনা করিরাছেন বে, অভিনর-বৃশ্বটি বেন চোখের সামনে ভাসিরা উঠে। রবীক্রনাথের কডকঞাল কবিভার এবং গছ রচনার বে সকল সমালোচনা ইহাতে সরিবিট হইরাছে ভাহাতে মুপণ্ডিত লেখক বে মুপরিণত রসবোধেরও অবিভারী সে পরিচর পাওরা বার। 'আলাপচারী রবীক্রনাথ' হইতে তিনি মণিমুক্তার মত মহার্ঘ্য, রবীক্রনাপের কতকগুলি উন্তিও এই পুতকে সক্রন করিরা দিরাছেন। এই বইরে নানা দৃষ্টিকোণ হউতে রবীক্রনাথের ব্যক্তিবরূপের উপর আলোক সম্পাত করিবার চেষ্টা করা হইরাছে।

ভট্টর অমির চক্রবর্ত্তী ভূমিকার সভাই বলিরাছেন— 'বাঁরা অন্তর্ণ' টি-পূব জনে-গভীব এই রচনাটি পাঠ করবেন রবীক্র-সাহিত্যের বহু তোরণ ভালের সম্মুধে খুলে বাবে গ নিবরে সম্মেহ নেই।" কথাগুলি খুবই বাঁটি।

### ঞ্রীনলিনীকুমার ভজ

যোগচত ইয়—ৰামী ফুৰৱানৰ। উৰোধন কাব্যালয়, ১নং উৰোধন লেন, বাগবাজার, কলিকাডা—৩। ১৩৯ পৃষ্ঠা। বুলা ছই টাকা।

প্রমহংস রামকৃষ্ণদেবের নিজ জীবনে আচরিত সমবর-সাধন-ধারার বোগ চতুটর বধা—ভঙ্জিবোগ, কর্মবোগ, রাজবোগ ও জ্ঞানবোগ বে ভাবে বিকশিত হটরাছিল, বার সারকথা খামী বিবেকানন্দের বাণী ও লেখনীতে সম্জ্লুল হইরা উঠিয়াছিল, সেগুলিরই সবিভার সরল বিরেবণ, বিভিন্ন শারীর আক্রপ্রশ্বর প্রমাণ-প্ররোগ সহ ফ্পণ্ডিত গ্রহকার কর্তৃক প্রথমে 'উরোধন' পত্রিকার সন্পাদকীর নিবজে ধারাবাহিক রূপে প্রকাশিত হব। তৎসমুদ্ধ প্রবোজনমত পরিবর্ত্তন ও পরিবর্জনক্ষেত্র

বান্ধবীকে গান শোনাডে
ভাকতে হয় সভীশকে,
হুদয়খানা ঘূরে মরে
গ্রামোফোনের ভিচ্ছে!

---ব্ৰীস্তনাথ

গ্রামোকোন রেকর্ড সবচেরে স্থব্দর করে বাজাতে চাই

### \_\_\_কলম্বিরা পিন\_\_\_

একবার ব্যবহার করলে বান্ধারের হান্ধার রকম পিন্ হডে এর শ্রেষ্ঠভা বুরতে পারবেন। তাই তো বলি, পিন্স ভিত্রে নিন্স-ক্ষান্ধান্ত গ্র

বাজারের সেরা <del>কলে ছিন্</del>রা প্রামোকোন ভীলারদের কার্ডে পাবেন



কলস্থিয়া প্রাকোকোন কোং লিঃ

কলিকাভা — বোম্বাই — দিল্লী — লাহোর — করাচী



সঞ্জয় ভট্টাচার্য্যের 'কল্লোল'-উপন্থাদে ঘটনায় মন তৈরী হওয়ার কাহিনীই লিপিবছ্ধ—
তাঁর 'মোচাকে' মনই ঘটনা তৈরী করে চলেছে। এ-শতকের পুরোভাগে যে একটি
মন জন্ম নিয়েছিল তা আজ, শতকের প্রথমার্জের অবসানে, কি কি ঘটনা তৈরী করে
ভবিষ্যতের দিকে তাকিয়ে আছে—'মোচাক' তারই ইতিবৃত্ত। এথানে চরিত্রগুলোর
বিকাশে কেবল লেখকই উপস্থিত নন, চরিত্রগুলোও পরস্পারকে উদ্ঘাটিত করে
অগ্রসর হচ্ছে। শুধু লেখকই কাহিনীকার নন, চরিত্রগুলোও কাহিনীকার।
উপমা টানলে বলা যায়, এখানে নিউটনের আর আইনন্টাইনের দৃষ্টিভঙ্গী
জড়াজ্জি করে আছে। এ-ধরণের আঙ্গিক উপন্যাদ-সাহিত্যে নিঃদন্দেহে অভ্তপূর্ব্ব।
'মোচাকে' জীবন সম্পর্কে অনিশ্চয়তা নেই—যা তাঁর 'দিনাস্ত', 'কম্মেদেবায়',
'রাত্রি' বা 'কল্লোল'-এ অনিবার্যাভাবে এসে দেখা দিয়েছিল। এখানে
লেখক জীবনের দিকে অত্যন্ত পরিচ্ছন্ন দৃষ্টিতে তাকাতে পারছেন—
জীবনের অতীত ও ভবিষ্যতকে বিচ্ছিন্নতায় নৈরাশ্যপূর্ণ দেখতে
পাচ্ছেন না। তাই জীবন এখানে সংপ্রদারণে ছ্র্ব্বার, নবীনতায় উচ্ছন্ন।

### মৌচাক

কাপড়ে বাঁধাই—৩৩৭ পৃষ্ঠা—দাম পাঁচ টাকা

সঞ্জর ভটাচার্ব্যের অভাভ উপভাস: বৃত্ত ২৮৮০, সরামাটি ২০০, দিনাত ৩০০, কলৈনেবার ৩১, রাজি ৫১, কলোল ৫১

প্রকাশক :

# शूर्वाभा लिप्तिछि

পি ১৩,গনেশ চন্দ্র এভেন্যু ,কলিকাতা ১৩

বর্তমান এছে সামিণিট হইলাছে। সাবী বিবেকানন্দ-পরিকলিত বোগ-চতুইলের বে প্রতীক্-চিত্র সামকৃষ্ণ-মিশনের বাব চীর পুরকানিতে সৃষ্ট হর ভাষা বর্তমান এছেনও মলাটে বেদীপানান এবং উচার ভাংপর্য প্রস্থ-মধ্যে সমল ভাবে বাাখ্যাত হইলাছে।

সাধন ভলনে আগ্রহাবিত লোকের সংখ্যা বেমন কম তেমনই এ বিবরে

নির্ফোন্যানে সমর্থ সমূপদেষ্টা এবং সংক্রোধ্য প্রথা বিও কম। আলোচ্য-প্রছে প্রধান চারিট বোগের তত্ব বৃথিবার সহায়তা তো হইবেই, উপরঙ্জ সাধন-পদ্ধতিও ইহাতে বর্ণিত হওলার এই পুত্তক ধর্মামুলাবীদের করেই উপকারে সাধিবে।

এউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

### দেশ-বিদেশের কথা

ভারত সেবাশ্রম সঞ্জ দাধাহৰ সহিভিত্ন বার্ষিক অবিবেশন

গত ২৭শে কেজারী ভারত সেবাপ্রম সন্দের প্রধান कार्यामस्य मध्य-मधार्थात जीवर वांधी मध्यिमस्यो बहाबादयव म्बान्डिट्ड म्ह्या मार्थासन मिन्डिस वार्तिक व्यक्तिसम्ब स्टेसा विशास । विकित अरम एरेट जान उनम-नशानी ७ प्रय मकाश्रेष हेर्हाएक (योगयान कट्राम । मध्येत श्रेष्ट्रीम मन्यायक श्रीयर चांथी (वहायक्षेत्री यहांबाक मध्यव वार्षिक कार्यावनीव [ ১৯৪७-৪९ ] विभव विवतन मार्ड कटवन। केंक्र विवतन इरेट कामा यात्र-कालाठा वर्ष जल्ब विकिश स्राटक्षम ভারতের বিভিন্ন প্রবেশন প্রধান প্রধান শহর ও তিন সহত্র এাবে ব্যাপকভাবে হিন্দু বর্ষের আবর্ষ ও সংস্কৃতি প্রচার क्रांद्रम, अवर मान्यद मानकान कानि, नंद्रां, बादानं, प्रकारमं, পুরী প্রভৃতি ভীবহানে বাত্রীকের পুরব্রবিধার কল বিশেষ चार्य चान्निरक्षां करवन । अव्यक्तंक छीर्यवाद्यीरम्ब चारांव, আত্রত এবং পাবের ইত্যাদির ব্যবস্থা করা হয়। বর্ষপ্রচার ব্যতীত শিকা-বিভার, সমার-সংকার, অন্যুত্তা-বিবারণ, অপশ্ৰতা নাত্ৰীৰ উভাৱ, বিলম-মন্দির প্রতিষ্ঠা, রক্ষীয়ল পঠন, निकारक दानव, क्-मश्कात पृतीकतन श्रकृष्ठि विविध क्य-क्नान्यम क्रिक जनकर्क व्यक्ति एव ।

আলোচ্য বর্ষে সব্দ কলিকাডা, নোরাবালি ও রিপুরার বালাবিদ্ধত অঞ্চল এবং চইপ্রাম ও কেবর বভাপীভিত হাবে ব্যাপভভাবে সেবা-ভার্ব্যের অভ্যতীত হংছ ব্যক্তিকের অভ ভভিপর দাতব্য চিকিংসালরও প্রতিষ্ঠা করা হুইরাছে। সভার পূর্ববেদের উরাভগণের দেবা ও পূমর্বসভি-ভার্ব্যের স্থব্যবহা, বহির্ভারতে ভারতীয় সংস্কৃতি ও বিশ্ব-বর্ষের ব্যাপক প্রচার-ব্যবহা ইত্যাধি সম্পর্কিত ভরেকট প্রভাব বৃহীত হুইরাছে।

### वितानविशानी ७४

বিগত ১৫ই কান্ত্ৰৰ বিৰোহবিহানী **ওও বহাণৰ পৰিণত** বহুলে আলাৰলোকে পহলোকসমুম কহিছাছেব। খণ্ড মহাদার আই, জি, আর্ম, এন, এন-এর সব্-এজেট ভূপে ক্রমীনন আছত ক্ষেম। চটুগ্রার সাইন বাহাদের



रिव्यापविद्यांती ६ छ

উভোগে বোলা হয় ভিনি ছিলেন ওঁছাবের অভতর। এই চাহ্রী ছাছিলা প্রথমে তিনি করেক বংলর বেলল কেনিক্যাল এক কার্যানিউটক্যাল ওয়ার্কনে এবং পরে বারবধ কোন্দানীতে চিক একাউটাার্ট হপে কাজ করেন; কিছ ঘানীন ব্যবসারের প্রতি বৌক বাকার তিনি অবশেবে প্রতিভ্রমান করেন। এ ছাড়া আরো হোটবাটো নানা ব্যবসারের সক্ষে উছোর যোগ ছিল। অবশেবে তিনি ছগলী ইনার নাজিনে বোগ দেন এবং উক্ত কোন্দানী কান বেভিগেশনে ছণাছরিত হইলে ভাহার ন্যাবেরিং একেট হন।

খণ্ড মহাশর একখন সক্ষম ও সহালাপী ব্যক্তি হিলেন। ভাঁহার গোপন হান হিল প্রচুর। ভাঁহার পুঞ্জ শ্রীবিভূতিভূবণ খণ্ড বাংলা মানি দ-পত্রিকা পাঠক্ষদলে প্রিচিতি লাভ